धर्मशास्त्र

अर्थात्

पुराना और नया धर्म नियम



बाइबल सोसायटी ऑफ इण्डिया
२०६ महात्मा गांधी रोड
बंगलौर - ५६० ००१

THE HOLY BIBLE

Hindi - O.V. (LT)

10G 0056/93-94/4.5M HB
ISBN 81-221-3734-2

Published by:
The Bible Society of India
206 Mahatma Gandhi Road
Bangalore – 560 001

Printed in India by Photo offset process at
Swapna Printing works pvt. Ltd, Calcutta-9

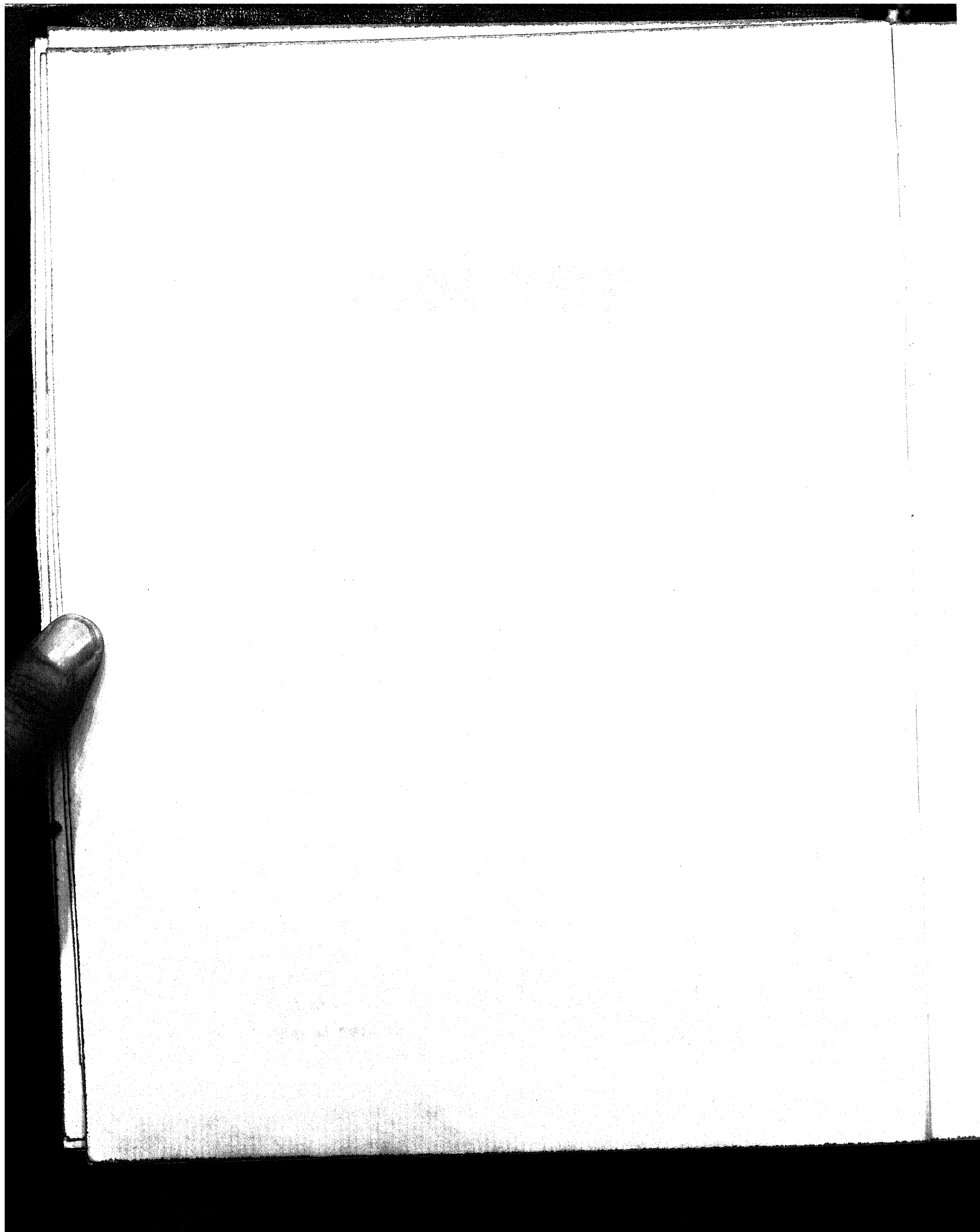
पुराने नियम की पुस्तकों का

सूचीपत्र

नये नियम की पुस्तकों का

सूचीपत्र

पुराना नियम



उत्पत्ति

(सृष्टि का वर्णन)

१ आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की। २ और पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी; और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था: तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डलाता था। ३ तब परमेश्वर ने कहा, उजियाला हो: तो उजियाला हो गया। ४ और परमेश्वर ने उजियाले को देखा कि अच्छा है; और परमेश्वर ने उजियाले को अन्धियारे से अलग किया। ५ और परमेश्वर ने उजियाले को दिन और अन्धियारे को रात कहा। तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार पहिला दिन हो गया॥

६ फिर परमेश्वर ने कहा, जल के बीच एक ऐसा अन्तर हो कि जल दो भाग हो जाए। ७ तब परमेश्वर ने एक अन्तर करके उसके नीचे के जल और उसके ऊपर के जल को अलग अलग किया; और वैसा ही हो गया। ८ और परमेश्वर ने उस अन्तर को आकाश कहा। तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार दूसरा दिन हो गया॥

९ फिर परमेश्वर ने कहा, आकाश के नीचे का जल एक स्थान में इकट्ठा हो जाए और सूखी भूमि दिखाई दे; और वैसा ही हो गया। १० और परमेश्वर ने सूखी भूमि को पृथ्वी कहा; तथा जो जल इकट्ठा हुआ उसको उस ने समुद्र कहा: और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। ११ फिर परमेश्वर ने कहा, पृथ्वी से हरी घास, तथा बीजवाले छोटे छोटे पेड़, और फलदाई वृक्ष भी जिनके बीज उन्हीं में एक एक की जाति के अनुसार होते हैं पृथ्वी पर उगें; और वैसा ही हो गया। १२ तो पृथ्वी से हरी घास, और छोटे छोटे पेड़ जिन में अपनी अपनी जाति के अनुसार बीज होता है, और फलदाई वृक्ष जिनके बीज एक एक की जाति के अनुसार उन्हीं में होते हैं उगे: और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। १३ तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार तीसरा दिन हो गया॥

१४ फिर परमेश्वर ने कहा, दिन को रात से अलग करने के लिये आकाश के अन्तर में ज्योतियां हों; और वे चिन्हों, और नियत समयों, और दिनों, और वर्षों के कारण हों। १५ और वे ज्योतियां आकाश के अन्तर में पृथ्वी पर प्रकाश देनेवाली भी ठहरें; और वैसा ही हो गया। १६ तब परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियां बनाईं; उन में से बड़ी ज्योति को दिन पर प्रभुता करने के लिये, और छोटी ज्योति को रात पर प्रभुता करने के लिये बनाया: और तारागण को भी बनाया। १७ परमेश्वर ने उनको आकाश के अन्तर में इसलिये रखा कि वे पृथ्वी पर प्रकाश दें, १८ तथा दिन और रात पर प्रभुता करें और उजियाले को अन्धियारे से अलग करें: और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। १९ तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार चौथा दिन हो गया॥

२० फिर परमेश्वर ने कहा, जल जीवित प्राणियों से बहुत ही भर जाए, और पक्षी पृथ्वी के ऊपर आकाश के अन्तर में उड़ें। २१ इसलिये परमेश्वर ने जाति जाति के बड़े बड़े जल-जन्तुओं की, और उन सब जीवित प्राणियों की भी सृष्टि की जो चलते फिरते हैं जिन से जल बहुत ही भर गया और एक एक जाति के उड़नेवाले पक्षियों की भी सृष्टि की : और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। २२ और परमेश्वर ने यह कहके उनको आशीष दी, कि फूलो-फलो, और समुद्र के जल में भर जाओ, और पक्षी पृथ्वी पर बढ़ें। २३ तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार पांचवां दिन हो गया ॥

२४ फिर परमेश्वर ने कहा, पृथ्वी से एक एक जाति के जीवित प्राणी, अर्थात् घरेलू पशु, और रेंगनेवाले जन्तु, और पृथ्वी के वनपशु, जाति जाति के अनुसार उत्पन्न हों; और वैसा ही हो गया। २५ सो परमेश्वर ने पृथ्वी के जाति जाति के वन-पशुओं को, और जाति जाति के घरेलू पशुओं को, और जाति जाति के भूमि पर सब रेंगनेवाले जन्तुओं को बनाया : और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। २६ फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगनेवाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें। २७ तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उस ने मनुष्यों की सृष्टि की। २८ और परमेश्वर ने उनको आशीष दी : और उन से कहा, फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो। २९ फिर परमेश्वर ने उन से कहा, सुनो, जितने बीजवाले छोटे छोटे पेड़ सारी पृथ्वी के ऊपर हैं और जितने वृक्षों में बीजवाले फल होते हैं, वे सब मैं ने तुम को दिए हैं; वे तुम्हारे भोजन के लिये हैं : ३० और जितने पृथ्वी के पशु, और आकाश के पक्षी, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले जन्तु हैं, जिन में जीवन के प्राण हैं, उन सब के खाने के लिये मैं ने सब हरे हरे छोटे पेड़ दिए हैं ; और वैसा ही हो गया। ३१ तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है। तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार छठवां दिन हो गया ॥

२ यों आकाश और पृथ्वी और उनकी सारी सेना का बनाना समाप्त हो गया। २ और परमेश्वर ने अपना काम जिसे वह करता था सातवें दिन समाप्त किया। और उस ने अपने किए हुए सारे काम से सातवें दिन विश्राम किया। ३ और परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी और पवित्र ठहराया; क्योंकि उस में उस ने अपनी सृष्टि की रचना के सारे काम से विश्राम लिया ॥

(मनुष्य की उत्पत्ति)

४ आकाश और पृथ्वी की उत्पत्ति का वृत्तान्त * यह है कि जब वे उत्पन्न हुए

* मूल में—की वंशावली।

अर्थात् जिस दिन यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी और आकाश को बनाया: ५ तब मैदान का कोई पौधा भूमि पर न था, और न मैदान का कोई छोटा पेड़ उगा था, क्योंकि यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी पर जल नहीं बरसाया था, और भूमि पर खेती करने के लिये मनुष्य भी नहीं था; ६ तौभी कुहरा पृथ्वी से उठता था जिस से सारी भूमि सिंच जाती थी। ७ और यहोवा परमेश्वर ने आदम * को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया; और आदम * जीवता प्राणी बन गया। ८ और यहोवा परमेश्वर ने पूर्व की ओर अदन देश में एक बाटिका लगाई; और वहां आदम * को जिसे उस ने रचा था, रख दिया। ९ और यहोवा परमेश्वर ने भूमि से सब भांति के वृक्ष, जो देखने में मनोहर और जिनके फल खाने में अच्छे हैं उगाए, और बाटिका के बीच में जीवन के वृक्ष को और भले या बुरे के ज्ञान के वृक्ष को भी लगाया। १० और उस बाटिका को सींचने के लिये एक महानदी अदन से निकली और वहां से आगे बहकर चार धारा † में हो गई। ११ पहिली धारा का नाम पीशोन् है, यह वही है जो हवीला नाम के सारे देश को जहां सोना मिलता है घेरे हुए है। १२ उस देश का सोना चोखा होता है, वहां मोती और सुलैमानी पत्थर भी मिलते हैं। १३ और दूसरी नदी का नाम गीहोन् है, यह वही है जो कूश् के सारे देश को घेरे हुए है। १४ और तीसरी नदी का नाम हिद्देकेल् है, यह वही है जो अश्शूर् के पूर्व की ओर बहती है। और चौथी नदी का नाम फरात है। १५ जब यहोवा परमेश्वर ने आदम * को लेकर अदन की बाटिका में रख दिया, कि वह उस में काम करे और उसकी रक्षा करे, १६ तब यहोवा परमेश्वर ने आदम * को यह आज्ञा दी, कि तू बाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है: १७ पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा॥

१८ फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, आदम * का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊंगा जो उस से मेल खाए। १९ और यहोवा परमेश्वर भूमि में से सब जाति के बनैले पशुओं, और आकाश के सब भांति के पक्षियों को रचकर आदम * के पास ले आया कि देखे, कि वह उनका क्या क्या नाम रखता है; और जिस जिस जीवित प्राणी का जो जो नाम आदम * ने रखा वही उसका नाम हो गया। २० सो आदम * ने सब जाति के घरेलू पशुओं, और आकाश के पक्षियों, और सब जाति के बनैले पशुओं के नाम रखे; परन्तु आदम के लिये कोई ऐसा सहायक न मिला जो उस से मेल खा सके। २१ तब यहोवा परमेश्वर ने आदम * को भारी नीन्द में डाल दिया, और जब वह सो गया तब उस ने उसकी एक पसुली निकालकर उसकी सन्ती मांस भर दिया। २२ और यहोवा परमेश्वर ने उस पसुली को जो उस ने आदम * में से निकाली थी, स्त्री बना दिया; और उसको आदम के पास

* वा मनुष्य।
† मूल में—बंटके चार सिर।

* वा मनुष्य।

ले आया। २३ और आदम * ने कहा, अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है: सो इसका नाम नारी होगा, क्योंकि यह नर में से निकाली गई है। २४ इस कारण पुरुष अपने माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक ही तन बने रहेंगे। २५ और आदम * और उसकी पत्नी दोनों नङ्गे थे, पर लजाते न थे॥

(मनुष्य के पापी हो जाने का वर्णन)

३ यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त था, और उस ने स्त्री से कहा, क्या सच है, कि परमेश्वर ने कहा, कि तुम इस बाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना? २ स्त्री ने सर्प से कहा, इस बाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं। ३ पर जो वृक्ष बाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे। ४ तब सर्प ने स्त्री से कहा, तुम निश्चय न मरोगे, ५ वरन परमेश्वर आप जानता है, कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे। ६ सो जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य भी है, तब उस ने उस में से तोड़कर खाया; और अपने पति को भी दिया, और उस ने भी खाया। ७ तब उन दोनों की आंखें खुल गईं, और उनको मालूम हुआ कि वे नङ्गे हैं; सो उन्हों ने अंजीर के पत्ते जोड़ जोड़ कर लंगोट बना लिये। ८ तब यहोवा परमेश्वर जो दिन के ठंडे समय * बाटिका में फिरता था उसका शब्द उनको सुनाई दिया। तब आदम और उसकी पत्नी बाटिका के वृक्षों के बीच यहोवा परमेश्वर से छिप गए। ९ तब यहोवा परमेश्वर ने पुकारकर आदम से पूछा, तू कहां है? १० उस ने कहा, मैं तेरा शब्द बारी में सुनकर डर गया क्योंकि मैं नङ्गा था; इसलिये छिप गया। ११ उस ने कहा, किस ने तुझे चिताया कि तू नङ्गा है? जिस वृक्ष का फल खाने को मैं ने तुझे बर्जा था, क्या तू ने उसका फल खाया है? १२ आदम ने कहा जिस स्त्री को तू ने मेरे संग रहने को दिया है उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया, और मैं ने खाया। १३ तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा, तू ने यह क्या किया है? स्त्री ने कहा, सर्प ने मुझे बहका दिया तब मैं ने खाया। १४ तब यहोवा परमेश्वर ने सर्प से कहा, तू ने जो यह किया है इसलिये तू सब घरेलू पशुओं, और सब बनैले पशुओं से अधिक शापित है; तू पेट के बल चला करेगा, और जीवन भर मिट्टी चाटता रहेगा: १५ और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूंगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा। १६ फिर स्त्री से उस ने कहा, मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दुःख को बहुत बढ़ाऊंगा; तू पीड़ित होकर बालक उत्पन्न करेगी; और तेरी लालसा तेरे

* वा मनुष्य।

* मूल में—दिन की वायु में।

पति की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा। १७ और आदम से उस ने कहा, तू ने जो अपनी पत्नी की बात सुनी, और जिस वृक्ष के फल के विषय में ने तुझे आज्ञा दी थी कि तू उसे न खाना उसको तू ने खाया है, इसलिये भूमि तेरे कारण शापित है; तू उसकी उपज जीवन भर दुःख के साथ खाया करेगा: १८ और वह तेरे लिये कांटे और ऊंटकटारे उगाएगी; और तू खेत की उपज खाएगा; १९ और अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा, और अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा; क्योंकि तू उसी में से निकाला गया है, तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा। २० और आदम ने अपनी पत्नी का नाम हव्वा* रखा; क्योंकि जितने मनुष्य जीवित हैं उन सब की आदिमाता वही हुई। २१ और यहोवा परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के लिये चमड़े के अंगरखे बनाकर उनको पहिना दिए।

२२ फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है: इसलिये अब ऐसा न हो, कि वह हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष का फल भी तोड़ के खा ले और सदा जीवित रहे। २३ तब यहोवा परमेश्वर ने उसको अदन की बाटिका में से निकाल दिया कि वह उस भूमि पर खेती करे जिस में से वह बनाया† गया था। २४ इसलिये आदम को उस ने निकाल दिया और जीवन के वृक्ष के मार्ग का पहरा देने के लिये अदन की बाटिका के पूर्व की ओर करूबों को, और चारों ओर घूमनेवाली ज्वालामय तलवार को भी नियुक्त कर दिया॥

* अर्थात् जीवन।

† मूल में—लिया।

(आदम के पुत्रों का वर्णन)

४ जब आदम अपनी पत्नी हव्वा के पास गया तब उस ने गर्भवती होकर कैन को जन्म दिया और कहा, मैं ने यहोवा की सहायता से एक पुरुष पाया है। २ फिर वह उसके भाई हाबिल को भी जन्मी, और हाबिल तो भेड़-बकरियों का चरवाहा बन गया, परन्तु कैन भूमि की खेती करने वाला किसान बना। ३ कुछ दिनों के पश्चात् कैन यहोवा के पास भूमि की उपज में से कुछ भेंट ले आया। ४ और हाबिल भी अपनी भेड़-बकरियों के कई एक पहिलौठे बच्चे भेंट चढ़ाने ले आया और उनकी चर्बी भेंट चढ़ाई; तब यहोवा ने हाबिल और उसकी भेंट को तो ग्रहण किया, ५ परन्तु कैन और उसकी भेंट को उस ने ग्रहण न किया। तब कैन अति क्रोधित हुआ, और उसके मुंह पर उदासी छा गई। ६ तब यहोवा ने कैन से कहा, तू क्यों क्रोधित हुआ? और तेरे मुंह पर उदासी क्यों छा गई है? ७ यदि तू भला करे, तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न की जाएगी? और यदि तू भला न करे, तो पाप द्वार पर छिपा रहता है, और उसकी लालसा तेरी ओर होगी, और तू उस पर प्रभुता करेगा। ८ तब कैन ने अपने भाई हाबिल से कुछ कहा: और जब वे मैदान में थे, तब कैन ने अपने भाई हाबिल पर चढ़कर उसे घात किया। ९ तब यहोवा ने कैन से पूछा, तेरा भाई हाबिल कहां है? उस ने कहा मालूम नहीं: क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूं? १० उस ने

क़हा, तू ने क्या किया है? तेरे भाई का लोहू भूमि में से मेरी ओर चिल्लाकर मेरी दोहाई दे रहा है! ११ इसलिये अब भूमि जिस ने तेरे भाई का लोहू तेरे हाथ से पीने के लिये अपना मुंह खोला है, उसकी ओर से तू शापित है। १२ चाहे तू भूमि पर खेती करे, तौभी उसकी पूरी उपज फिर तुझे न मिलेगी,* और तू पृथ्वी पर बहेतू और भगोड़ा होगा। १३ तब कैन ने यहोवा से कहा, मेरा दण्ड सहने से† बाहर है। १४ देख, तू ने आज के दिन मुझे भूमि पर से निकाला है और मैं तेरी दृष्टि की आड़ में रहूंगा और पृथ्वी पर बहेतू और भगोड़ा रहूंगा; और जो कोई मुझे पाएगा, मुझे घात करेगा। १५ इस कारण यहोवा ने उस से कहा, जो कोई कैन को घात करेगा उस से सात गुणा पलटा लिया जाएगा। और यहोवा ने कैन के लिये एक चिन्ह ठहराया ऐसा न हो कि कोई उसे पाकर मार डाले॥

१६ तब कैन यहोवा के सम्मुख से निकल गया, और नोद् नाम देश में, जो अदन के पूर्व की ओर है, रहने लगा। १७ जब कैन अपनी पत्नी के पास गया तब वह गर्भवती हुई और हनोक को जन्मी, फिर कैन ने एक नगर बसाया और उस नगर का नाम अपने पुत्र के नाम पर हनोक रखा। १८ और हनोक से ईराद उत्पन्न हुआ, और ईराद ने महूयाएल को जन्म दिया, और महूयाएल ने मतूशाएल को, और मतूशाएल ने लेमेक को जन्म दिया। १९ और लेमेक ने दो स्त्रियां ब्याह लीं: जिन में से एक का नाम आदा, और दूसरी का सिल्ला है। २० और आदा ने याबाल को जन्म दिया। वह तम्बुओं में रहना और जानवरों का पालन इन दोनों रीतियों का उत्पादक हुआ*। २१ और उसके भाई का नाम यूबाल है: वह वीणा और बांसुरी आदि बाजों के बजाने की सारी रीति का उत्पादक हुआ†। २२ और सिल्ला ने भी तूबल्कैन नाम एक पुत्र को जन्म दिया: वह पीतल और लोहे के सब धारवाले हथियारों का गढ़नेवाला हुआ: और तूबल्कैन की बहिन नामा थी। २३ और लेमेक ने अपनी पत्नियों से कहा,

हे आदा और हे सिल्ला मेरी सुनो;
हे लेमेक की पत्नियों, मेरी बात पर
कान लगाओ:
मैंने एक पुरुष को जो मेरे चोट
लगाता था,
अर्थात् एक जवान को जो मुझे
घायल करता था, घात किया है।
२४ जब कैन का पलटा सातगुणा लिया
जाएगा।
तो लेमेक का सतहत्तरगुणा लिया
जाएगा।

२५ और आदम अपनी पत्नी के पास फिर गया; और उस ने एक पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम यह कह के शेत रखा, कि परमेश्वर ने मेरे लिये हाबिल की सन्ती, जिसको कैन ने घात किया, एक और वंश ठहरा दिया है। २६ और शेत के भी एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और उस ने उसका नाम एनोश रखा, उसी

* मूल में—वह तुझे फिर अपना बल न देगी।

† वा मेरा अधर्म क्षमा होने से।

* मूल में—तम्बू में रहनेहारों और ढोरों का पिता हुआ।

† मूल में—वीणा और बांसुरी के सब बजानेवालों का पिता हुआ।

समय से लोग यहोवा से प्रार्थना करने लगे ॥

(आदम की वंशावली)

५ आदम की वंशावली यह है। जब परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की तब अपने ही स्वरूप में उसको बनाया; २ उस ने नर और नारी करके मनुष्यों की सृष्टि की और उन्हें आशीष दी, और उनकी सृष्टि के दिन उनका नाम आदम * रखा। ३ जब आदम एक सौ तीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा उसकी समानता में उस ही के स्वरूप के अनुसार एक पुत्र उत्पन्न हुआ उसका नाम शेत रखा। ४ और शेत के जन्म के पश्चात् आदम आठ सौ वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। ५ और आदम की कुल अवस्था नौ सौ तीस वर्ष की हुई : तत्पश्चात् वह मर गया ॥

६ जब शेत एक सौ पांच वर्ष का हुआ, तब उस ने एनोश को जन्म दिया। ७ और एनोश के जन्म के पश्चात् शेत आठ सौ सात वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। ८ और शेत की कुल अवस्था नौ सौ बारह वर्ष की हुई : तत्पश्चात् वह मर गया ॥

९ जब एनोश नब्बे वर्ष का हुआ, तब उस ने केनान को जन्म दिया। १० और केनान के जन्म के पश्चात् एनोश आठ सौ पन्द्रह वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। ११ और एनोश की कुल अवस्था नौ सौ पांच वर्ष की हुई : तत्पश्चात् वह मर गया ॥

१२ जब केनान सत्तर वर्ष का हुआ, तब उस ने महललेल को जन्म दिया। १३ और महललेल के जन्म के पश्चात् केनान आठ सौ चालीस वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। १४ और केनान की कुल अवस्था नौ सौ दस वर्ष की हुई : तत्पश्चात् वह मर गया ॥

१५ जब महललेल पैंसठ वर्ष का हुआ, तब उस ने येरेद को जन्म दिया। १६ और येरेद के जन्म के पश्चात् महललेल आठ सौ तीस वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। १७ और महललेल की कुल अवस्था आठ सौ पंचानबे वर्ष की हुई : तत्पश्चात् वह मर गया ॥

१८ जब येरेद एक सौ बासठ वर्ष का हुआ, तब उस ने हनोक को जन्म दिया। १९ और हनोक के जन्म के पश्चात् येरेद आठ सौ वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। २० और येरेद की कुल अवस्था नौ सौ बासठ वर्ष की हुई : तत्पश्चात् वह मर गया ॥

२१ जब हनोक पैंसठ वर्ष का हुआ, तब उस ने मतूशेलह को जन्म दिया। २२ और मतूशेलह के जन्म के पश्चात् हनोक तीन सौ वर्ष तक परमेश्वर के साथ साथ चलता रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। २३ और हनोक की कुल अवस्था तीन सौ पैंसठ वर्ष की हुई। २४ और हनोक परमेश्वर के साथ साथ चलता था; फिर वह लोप हो गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया।

२५ जब मतूशेलह एक सौ सत्तासी वर्ष का हुआ, तब उस ने लेमेक को जन्म दिया। २६ और लेमेक के जन्म के पश्चात् मतूशेलह सात सौ बयासी वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। २७ और मतूशेलह की कुल अवस्था

---

* वा मनुष्य।

नौ सौ उनहत्तर वर्ष की हुई : तत्पश्चात् वह मर गया ।।

२८ जब लेमेक एक सौ बयासी वर्ष का हुआ, तब उस ने एक पुत्र जन्म दिया। २९ और यह कहकर उसका नाम नूह रखा, कि यहोवा ने जो पृथ्वी को शाप दिया है, उसके विषय यह लड़का हमारे काम में, और उस कठिन परिश्रम में जो हम करते हैं,* हम को शान्ति देगा। ३० और नूह के जन्म के पश्चात् लेमेक पांच सौ पंचानबे वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। ३१ और लेमेक की कुल अवस्था सात सौ सतहत्तर वर्ष की हुई : तत्पश्चात् वह मर गया ।।

३२ और नूह पांच सौ वर्ष का हुआ; और नूह ने शेम, और हाम, और येपेत को जन्म दिया ।।

(जल प्रलय का वर्णन)

६ फिर जब मनुष्य भूमि के ऊपर बहुत बढ़ने लगे, और उनके बेटियां उत्पन्न हुईं, २ तब परमेश्वर के पुत्रों ने मनुष्य की पुत्रियों को देखा, कि वे सुन्दर हैं; सो उन्हों ने जिस जिसको चाहा उन से ब्याह कर लिया। ३ और यहोवा ने कहा, मेरा आत्मा मनुष्य से सदा लों विवाद करता न रहेगा, क्योंकि मनुष्य भी शरीर ही है†: उसकी आयु एक सौ बीस वर्ष की होगी। ४ उन दिनों में पृथ्वी पर दानव रहते थे; और इसके पश्चात् जब परमेश्वर के पुत्र मनुष्य की पुत्रियों के पास गए तब उनके द्वारा जो सन्तान उत्पन्न हुए, वे पुत्र शूरवीर होते थे, जिनकी कीर्त्ति प्राचीनकाल से प्रचलित है। ५ और यहोवा ने देखा, कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है सो निरन्तर बुरा ही होता है। ६ और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछताया, और वह मन में अति खेदित हुआ। ७ तब यहोवा ने सोचा, कि मैं मनुष्य को जिसकी मैं ने सृष्टि की है पृथ्वी के ऊपर से मिटा दूंगा; क्या मनुष्य, क्या पशु, क्या रेंगनेवाले जन्तु, क्या आकाश के पक्षी, सब को मिटा दूंगा क्योंकि मैं उनके बनाने से पछताता हूं। ८ परन्तु यहोवा की अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही ।।

९ नूह की वंशावली यह है। नूह धर्मी पुरुष और अपने समय के लोगों में खरा था, और नूह परमेश्वर ही के साथ साथ चलता रहा। १० और नूह से, शेम, और हाम, और येपेत नाम, तीन पुत्र उत्पन्न हुए। ११ उस समय पृथ्वी परमेश्वर की दृष्टि में बिगड़ गई थी, और उपद्रव से भर गई थी। १२ और परमेश्वर ने पृथ्वी पर जो दृष्टि की तो क्या देखा, कि वह बिगड़ी हुई है; क्योंकि सब प्राणियों ने पृथ्वी पर अपनी अपनी चाल चलन बिगाड़ ली थी ।।

१३ तब परमेश्वर ने नूह से कहा, सब प्राणियों के अन्त करने का प्रश्न मेरे साम्हने आ गया है*; क्योंकि उनके कारण पृथ्वी उपद्रव से भर गई है, इसलिये मैं उनको पृथ्वी समेत नाश कर डालूंगा। १४ इसलिये तू गोपेर वृक्ष की

* मूल में—हमारे हाथ के कठिन परिश्रम में।

† वा भटक जाने से शरीर ही ठहरा।

* मूल में—अन्त मेरे साम्हने आ गया है।

लकड़ी का एक जहाज़ बना ले, उस में कोठरियां बनाना, और भीतर बाहर उस पर राल लगाना। १५ और इस ढंग से उसको बनाना: जहाज़ की लम्बाई तीन सौ हाथ, चौड़ाई पचास हाथ, और ऊंचाई तीस हाथ की हो। १६ जहाज़ में एक खिड़की * बनाना, और इसके एक हाथ ऊपर से उसकी छत बनाना, और जहाज़ की एक अलंग में एक द्वार रखना, और जहाज़ में पहिला, दूसरा, तीसरा खण्ड बनाना। १७ और सुन, मैं आप पृथ्वी पर जलप्रलय करके सब प्राणियों को, जिन में जीवन की आत्मा है, आकाश के नीचे से नाश करने पर हूं: और सब जो पृथ्वी पर हैं मर जाएंगे। १८ परन्तु तेरे संग मैं वाचा बान्धता हूं: इसलिये तू अपने पुत्रों, स्त्री, और बहुओं समेत जहाज़ में प्रवेश करना। १९ और सब जीवित प्राणियों में से, तू एक एक जाति के दो दो, अर्थात् एक नर और एक मादा जहाज़ में ले जाकर, अपने साथ जीवित रखना। २० एक एक जाति के पक्षी, और एक एक जाति के पशु, और एक एक जाति के भूमि पर रेंगनेवाले, सब में से दो दो तेरे पास आएंगे, कि तू उनको जीवित रखे। २१ और भांति भांति का भोज्य पदार्थ जो खाया जाता है, उनको तू लेकर अपने पास इकट्ठा कर रखना; सो तेरे और उनके भोजन के लिये होगा। २२ परमेश्वर की इस आज्ञा के अनुसार नूह ने किया॥

७ और यहोवा ने नूह से कहा, तू अपने सारे घराने समेत जहाज़ में जा; क्योंकि मैं ने इस समय के लोगों में से केवल तुझी को अपनी दृष्टि में धर्मी देखा है। २ सब जाति के शुद्ध पशुओं में से तो तू सात सात, अर्थात् नर और मादा लेना: पर जो पशु शुद्ध नहीं हैं, उन में से दो दो लेना, अर्थात् नर और मादा: ३ और आकाश के पक्षियों में से भी, सात सात, अर्थात् नर और मादा लेना: कि उनका वंश बचकर सारी पृथ्वी के ऊपर बना रहे। ४ क्योंकि अब सात दिन और बीतने पर मैं पृथ्वी पर चालीस दिन और चालीस रात तक जल बरसाता रहूंगा; और जितनी वस्तुएं मैं ने बनाईं हैं सब को भूमि के ऊपर से मिटा दूंगा। ५ यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार नूह ने किया।

६ नूह की अवस्था छः सौ वर्ष की थी, जब जलप्रलय पृथ्वी पर आया। ७ नूह अपने पुत्रों, पत्नी, और बहुओं समेत, जलप्रलय से बचने के लिये जहाज़ में गया। ८ और शुद्ध, और अशुद्ध, दोनों प्रकार के पशुओं में से, पक्षियों, ९ और भूमि पर रेंगनेवालों में से भी, दो दो, अर्थात् नर और मादा, जहाज़ में नूह के पास गए, जिस प्रकार परमेश्वर ने नूह को आज्ञा दी थी। १० सात दिन के उपरान्त प्रलय का जल पृथ्वी पर आने लगा। ११ जब नूह की अवस्था के छः सौवें वर्ष के दूसरे महीने का सत्तरहवां दिन आया; उसी दिन बड़े गहिरे समुद्र के सब सोते फूट निकले और आकाश के झरोखे खुल गए। १२ और वर्षा चालीस दिन और चालीस रात निरन्तर पृथ्वी पर होती रही। १३ ठीक उसी दिन नूह अपने पुत्र शेम, हाम, और येपेत, और अपनी पत्नी, और तीनों बहुओं समेत, १४ और उनके संग एक एक जाति के

* मूल में—उजियाला।

सब बनैले पशु, और एक एक जाति के सब घरेलू पशु, और एक एक जाति के सब पृथ्वी पर रेंगनेवाले, और एक एक जाति के सब उड़नेवाले पक्षी, जहाज़ में गए। १५ जितने प्राणियों में जीवन की आत्मा थी उनकी सब जातियों में से दो दो नूह के पास जहाज़ में गए। १६ और जो गए, वह परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार सब जाति के प्राणियों में से नर और मादा गए। तब यहोवा ने उसका द्वार बन्द कर दिया। १७ और पृथ्वी पर चालीस दिन तक प्रलय होता रहा; और पानी बहुत बढ़ता ही गया, जिस से जहाज़ ऊपर को उठने लगा, और वह पृथ्वी पर से ऊंचा उठ गया। १८ और जल बढ़ते बढ़ते पृथ्वी पर बहुत ही बढ़ गया, और जहाज़ जल के ऊपर ऊपर तैरता रहा। १९ और जल पृथ्वी पर अत्यन्त बढ़ गया, यहां तक कि सारी धरती पर* जितने बड़े बड़े पहाड़ थे, सब डूब गए। २० जल तो पन्द्रह हाथ ऊपर बढ़ गया, और पहाड़ भी डूब गए। २१ और क्या पक्षी, क्या घरेलू पशु, क्या बनैले पशु, और पृथ्वी पर सब चलनेवाले प्राणी, और जितने जन्तु पृथ्वी में बहुतायत से भर गए थे, वे सब, और सब मनुष्य मर गए। २२ जो जो स्थल पर थे, उन में से जितनों के नथनों में जीवन का श्वास था, सब मर मिटे। २३ और क्या मनुष्य, क्या पशु, क्या रेंगनेवाले जन्तु, क्या आकाश के पक्षी, जो जो भूमि पर थे, सो सब पृथ्वी पर से मिट गए; केवल नूह, और जितने उसके संग जहाज़ में थे, वे ही बच गए। २४ और जल पृथ्वी पर एक सौ पचास दिन तक प्रबल रहा॥

८ और परमेश्वर ने नूह की, और जितने बनैले पशु, और घरेलू पशु उसके संग जहाज़ में थे, उन सभों की सुधि ली: और परमेश्वर ने पृथ्वी पर पवन बहाई, और जल घटने लगा। २ और गहिरे समुद्र के सोते और आकाश के झरोखे बंद हो गए; और उस से जो वर्षा होती थी सो भी थम गई। ३ और एक सौ पचास दिन के पश्चात् जल पृथ्वी पर से लगातार घटने लगा। ४ सातवें महीने के सत्तरहवें दिन को, जहाज़ अरारात नाम पहाड़ पर टिक गया। ५ और जल दसवें महीने तक घटता चला गया, और दसवें महीने के पहिले दिन को, पहाड़ों की चोटियां दिखलाई दीं। ६ फिर ऐसा हुआ कि चालीस दिन के पश्चात् नूह ने अपने बनाए हुए जहाज़ की खिड़की को खोलकर, एक कौआ उड़ा दिया: ७ वह जब तक जल पृथ्वी पर से सूख न गया, तब तक इधर उधर फिरता रहा। ८ फिर उस ने अपने पास से एक कबूतरी को भी उड़ा दिया, कि देखें कि जल भूमि पर से घट गया कि नहीं। ९ उस कबूतरी को अपने पैर के तले टेकने के लिये कोई आधार न मिला, सो वह उसके पास जहाज़ में लौट आई: क्योंकि सारी पृथ्वी के ऊपर जल ही जल छाया था तब उस ने हाथ बढ़ाकर उसे अपने पास जहाज़ में ले लिया। १० तब और सात दिन तक ठहरकर, उस ने उसी कबूतरी को जहाज़ में से फिर उड़ा दिया। ११ और कबूतरी सांझ के समय उसके पास आ गई, तो

* मूल में—सारे आकाश के तले।

क्या देखा कि उसकी चोंच में जलपाई का एक नया पत्ता है; इस से नूह ने जान लिया, कि जल पृथ्वी पर घट गया है। १२ फिर उस ने सात दिन और ठहरकर उसी कबूतरी को उड़ा दिया; और वह उसके पास फिर कभी लौटकर न आई। १३ फिर ऐसा हुआ कि छः सौ एक वर्ष के पहिले महीने के पहिले दिन जल पृथ्वी पर से सूख गया। तब नूह ने जहाज़ की छत खोलकर क्या देखा कि धरती सूख गई है। १४ और दूसरे महीने के सताईसवें दिन को पृथ्वी पूरी रीति से सूख गई॥

१५ तब परमेश्वर ने, नूह से कहा, १६ तू अपने पुत्रों, पत्नी, और बहुओं समेत जहाज़ में से निकल आ। १७ क्या पक्षी, क्या पशु, क्या सब भांति के रेंगनेवाले जन्तु जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, जितने शरीरधारी जीवजन्तु तेरे संग हैं, उन सब को अपने साथ निकाल ले आ, कि पृथ्वी पर उन से बहुत बच्चे उत्पन्न हों; और वे फूलें-फलें, और पृथ्वी पर फैल जाएं। १८ तब नूह, और उसके पुत्र, और पत्नी, और बहुएं, निकल आईं: १९ और सब चौपाए, रेंगनेवाले जन्तु, और पक्षी, और जितने जीवजन्तु पृथ्वी पर चलते फिरते हैं, सो सब जाति जाति करके जहाज़ में से निकल आए। २० तब नूह ने यहोवा के लिये एक वेदी बनाई; और सब शुद्ध पशुओं, और सब शुद्ध पक्षियों में से, कुछ कुछ लेकर वेदी पर होमबलि चढ़ाया। २१ इस पर यहोवा ने सुखदायक सुगन्ध पाकर सोचा, कि मनुष्य के कारण मैं फिर कभी भूमि को शाप न दूंगा, यद्यपि मनुष्य के मन में बचपन से जो कुछ उत्पन्न होता है सो बुरा ही होता है; तौभी जैसा मैं ने सब जीवों को अब मारा है, वैसा उनको फिर कभी न मारूंगा। २२ अब से जब तक पृथ्वी बनी रहेगी, तब तक बोने और काटने के समय, ठण्ड और तपन, धूपकाल और शीतकाल, दिन और रात, निरन्तर होते चले जाएंगे॥

९ फिर परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों को आशीष दी और उन से कहा कि फूलो-फलो, और बढ़ो, और पृथ्वी में भर जाओ। २ और तुम्हारा डर और भय पृथ्वी के सब पशुओं, और आकाश के सब पक्षियों, और भूमि पर के सब रेंगनेवाले जन्तुओं, और समुद्र की सब मछलियों पर बना रहेगा: वे सब तुम्हारे वश में कर दिए जाते हैं। ३ सब चलनेवाले जन्तु तुम्हारा आहार होंगे: जैसा तुम को हरे हरे छोटे पेड़ दिए थे, वैसा ही अब सब कुछ देता हूं। ४ पर मांस को प्राण समेत अर्थात् लोहू समेत तुम न खाना। ५ और निश्चय मैं तुम्हारा लोहू अर्थात् प्राण का पलटा लूंगा: सब पशुओं, और मनुष्यों, दोनों से मैं उसे लूंगा: मनुष्य के प्राण का पलटा मैं एक एक के भाई बन्धु से लूंगा। ६ जो कोई मनुष्य का लोहू बहाएगा उसका लोहू मनुष्य ही से बहाया जाएगा क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप के अनुसार बनाया है। ७ और तुम तो फूलो-फलो, और बढ़ो, और पृथ्वी में बहुत बच्चे जन्मा के उस में भर जाओ॥

८ फिर परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों से कहा, ९ सुनो, मैं तुम्हारे साथ और तुम्हारे पश्चात् जो तुम्हारा वंश होगा उसके साथ भी वाचा बान्धता हूं।

१० और सब जीवित प्राणियों से भी जो तुम्हारे संग हैं क्या पक्षी क्या घरेलू पशु, क्या पृथ्वी के सब बनैले पशु, पृथ्वी के जितने जीवजन्तु जहाज़ से निकले हैं; सब के साथ भी मेरी यह वाचा बन्धती है: ११ और मैं तुम्हारे साथ अपनी इस वाचा को पूरा करूंगा; कि सब प्राणी फिर जलप्रलय से नाश न होंगे: और पृथ्वी के नाश करने के लिये फिर जलप्रलय न होगा। १२ फिर परमेश्वर ने कहा, जो वाचा मैं तुम्हारे साथ, और जितने जीवित प्राणी तुम्हारे संग हैं उन सब के साथ भी युग युग की पीढ़ियों के लिये बान्धता हूं; उसका यह चिन्ह है: १३ कि मैं ने बादल में अपना धनुष रखा है वह मेरे और पृथ्वी के बीच में वाचा का चिन्ह होगा। १४ और जब मैं पृथ्वी पर बादल फैलाऊं तब बादल में धनुष देख पड़ेगा। १५ तब मेरी जो वाचा तुम्हारे और सब जीवित शरीरधारी प्राणियों के साथ बन्धी है; उसको मैं स्मरण करूंगा, तब ऐसा जलप्रलय फिर न होगा जिस से सब प्राणियों का विनाश हो। १६ बादल में जो धनुष होगा मैं उसे देख के यह सदा की वाचा स्मरण करूंगा जो परमेश्वर के और पृथ्वी पर के सब जीवित शरीरधारी प्राणियों के बीच बन्धी है। १७ फिर परमेश्वर ने नूह से कहा जो वाचा मैं ने पृथ्वी भर के सब प्राणियों के साथ बान्धी है, उसका चिन्ह यही है॥

१८ नूह के जो पुत्र जहाज़ में से निकले, वे शेम, हाम, और येपेत थे: और हाम तो कनान का पिता हुआ। १९ नूह के तीन पुत्र ये ही हैं, और इनका वंश सारी पृथ्वी पर फैल गया।

२० और नूह किसानी करने लगा, और उस ने दाख की बारी लगाई। २१ और वह दाखमधु पीकर मतवाला हुआ; और अपने तम्बू के भीतर नङ्गा हो गया। २२ तब कनान के पिता हाम ने, अपने पिता को नङ्गा देखा, और बाहर आकर अपने दोनों भाइयों को बतला दिया। २३ तब शेम और येपेत दोनों ने कपड़ा लेकर अपने कन्धों पर रखा, और पीछे की ओर उलटा चलकर अपने पिता के नङ्गे तन को ढांप दिया, और वे अपना मुख पीछे किए हुए थे इसलिये उन्हों ने अपने पिता को नङ्गा न देखा। २४ जब नूह का नशा उतर गया, तब उस ने जान लिया कि उसके छोटे पुत्र ने उस से क्या किया है।

२५ इसलिये उस ने कहा,
कनान शापित हो:
वह अपने भाई बन्धुओं के दासों का
दास हो।
२६ फिर उस ने कहा,
शेम का परमेश्वर यहोवा धन्य है,
और कनान शेम * का दास होवे।
२७ परमेश्वर येपेत के वंश को फैलाए;
और वह शेम के तम्बुओं में बसे,
और कनान उसका दास होवे।

२८ जलप्रलय के पश्चात् नूह साढ़े तीन सौ वर्ष जीवित रहा। २९ और नूह की कुल अवस्था साढ़े नौ सौ वर्ष की हुई: तत्पश्चात् वह मर गया॥

(नूह की वंशावली)

१० नूह के पुत्र जो शेम, हाम, और येपेत थे उनके पुत्र जलप्रलय के पश्चात् उत्पन्न हुए: उनकी वंशावली यह है॥

* मूल में—उस।

२ येपेत के पुत्र : गोमेर, मागोग, मादै, यावान, तूबल, मेशेक, और तीरास हुए। ३ और गोमेर के पुत्र : अशकनज, रीपत, और तोगर्मा हुए। ४ और यावान के वंश में एलीशा, और तर्शीश, और कित्ती, और दोदानी लोग हुए। ५ इनके वंश अन्यजातियों के द्वीपों के देशों में ऐसे बंट गए, कि वे भिन्न भिन्न भाषाओं, कुलों, और जातियों के अनुसार अलग अलग हो गए॥

६ फिर हाम के पुत्र : कूश, और मिस्र, और फूत और कनान हुए। ७ और कूश के पुत्र सबा, हवीला, सबता, रामा, और सबूतका हुए: और रामा के पुत्र शबा, और ददान हुए। ८ और कूश के वंश में निम्रोद भी हुआ; पृथ्वी पर पहिला वीर वही हुआ है। ९ वह यहोवा की दृष्टि में पराक्रमी शिकार खेलनेवाला ठहरा, इस से यह कहावत चली है; कि निम्रोद के समान यहोवा की दृष्टि में पराक्रमी शिकार खेलनेवाला। १० और उसके राज्य का आरम्भ शिनार देश में बाबुल, और अक्कद, और कलने हुआ। ११ उस देश से वह निकलकर अश्शूर को गया, और नीनवे, रहोबोतीर, और कालह को, १२ और नीनवे और कालह के बीच जो रेसेन है, उसे भी बसाया, बड़ा नगर यही है। १३ और मिस्र के वंश में लूदी, अनामी, लहाबी, नप्तूही, १४ और पत्रूसी, कसलूही, और कप्तोरी लोग हुए, कसलूहियों में से तो पलिश्ती लोग निकले॥

१५ फिर कनान के वंश में उसका ज्येष्ठ सीदोन, तब हित्त, १६ और यबूसी, एमोरी, गिर्गाशी, १७ हिव्वी, अर्की, सीनी, १८ अर्वदी, समारी, और हमाती लोग भी हुए: फिर कनानियों के कुल भी फैल गए। १९ और कनानियों का सिवाना सीदोन से लेकर गरार के मार्ग से होकर अज्जा तक और फिर सदोम और अमोरा और अदमा और सबोयीम के मार्ग से होकर लाशा तक हुआ। २० हाम के वंश में ये ही हुए; और ये भिन्न भिन्न कुलों, भाषाओं, देशों, और जातियों के अनुसार अलग अलग हो गए॥

२१ फिर शेम, जो सब एबेरवंशियों का मूलपुरुष हुआ, और जो येपेत का ज्येष्ठ भाई था*, उसके भी पुत्र उत्पन्न हुए। २२ शेम के पुत्र : एलाम, अश्शूर, अर्पक्षद्, लूद और आराम हुए। २३ और आराम के पुत्र : ऊस, हूल, गेतेर और मश हुए। २४ और अर्पक्षद् ने शेलह को, और शेलह ने एबेर को जन्म दिया। २५ और एबेर के दो पुत्र उत्पन्न हुए, एक का नाम पेलेग इस कारण रखा गया कि उसके दिनों में पृथ्वी बंट गई, और उसके भाई का नाम योक्तान है। २६ और योक्तान ने अल्मोदाद, शेलेप, हसर्मावेत, येरह, २७ यदोरवाम, ऊजाल, दिक्ला, २८ ओबाल, अबीमाएल, शबा, २९ ओपीर, हवीला और योबाब को जन्म दिया : ये ही सब योक्तान के पुत्र हुए। ३० इनके रहने का स्थान मेशा से लेकर सपारा जो पूर्व में एक पहाड़ है, उसके मार्ग तक हुआ। ३१ शेम के पुत्र ये ही हुए; और ये भिन्न भिन्न कुलों, भाषाओं, देशों और जातियों के अनुसार अलग अलग हो गए॥

३२ नूह के पुत्रों के घराने ये ही हैं : और उनकी जातियों के अनुसार उनकी वंशावलियां ये ही हैं; और जलप्रलय

* वा जिसका बड़ा भाई येपेत था।

के पश्चात् पृथ्वी भर की जातियां इन्हीं में से होकर बंट गईं ।।

(मनुष्य की भाषाओं में गड़बड़ी पड़ने का वर्णन)

११ सारी पृथ्वी पर एक ही भाषा, और एक ही बोली थी। २ उस समय लोग पूर्व की ओर चलते चलते शिनार देश में एक मैदान पाकर उस में बस गए। ३ तब वे आपस में कहने लगे, कि आओ; हम ईंटें बना बना के भली भांति आग में पकाएं, और उन्हों ने पत्थर के स्थान में ईंट से, और चूने के स्थान में मिट्टी के गारे से काम लिया। ४ फिर उन्हों ने कहा, आओ, हम एक नगर और एक गुम्मट बना लें, जिसकी चोटी आकाश से बातें करे, इस प्रकार से हम अपना नाम करें ऐसा न हो कि हम को सारी पृथ्वी पर फैलना पड़े। ५ जब लोग नगर और गुम्मट बनाने लगे; तब इन्हें देखने के लिये यहोवा उतर आया। ६ और यहोवा ने कहा, मैं क्या देखता हूं, कि सब एक ही दल के हैं, और भाषा भी उन सब की एक ही है, और उन्हों ने ऐसा ही काम भी आरम्भ किया; और अब जितना वे करने का यत्न करेंगे, उस में से कुछ उनके लिये अनहोना न होगा। ७ इसलिये आओ, हम उतर के उनकी भाषा में बड़ी गड़बड़ी डालें, कि वे एक दूसरे की बोली को न समझ सकें। ८ इस प्रकार यहोवा ने उनको, वहां से सारी पृथ्वी के ऊपर फैला दिया; और उन्हों ने उस नगर का बनाना छोड़ दिया। ९ इस कारण उस नगर का नाम बाबुल * पड़ा; क्योंकि सारी पृथ्वी की भाषा में जो गड़बड़ी है, सो यहोवा ने वहीं डाली, और वहीं से यहोवा ने मनुष्यों को सारी पृथ्वी के ऊपर फैला दिया ।।

(शेम की वंशावली)

१० शेम की वंशावली यह है। जल-प्रलय के दो वर्ष पश्चात् जब शेम एक सौ वर्ष का हुआ, तब उस ने अर्पक्षद् को जन्म दिया। ११ और अर्पक्षद् के जन्म के पश्चात् शेम पांच सौ वर्ष जीवित रहा; और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ।।

१२ जब अर्पक्षद् पैंतीस वर्ष का हुआ, तब उस ने शेलह को जन्म दिया। १३ और शेलह के जन्म के पश्चात् अर्पक्षद् चार सौ तीन वर्ष और जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ।।

१४ जब शेलह तीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा एबेर का जन्म हुआ। १५ और एबेर के जन्म के पश्चात् शेलह चार सौ तीन वर्ष और जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ।।

१६ जब एबेर चौंतीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा पेलेग का जन्म हुआ। १७ और पेलेग के जन्म के पश्चात् एबेर चार सौ तीस वर्ष और जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ।।

१८ जब पेलेग तीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा रू का जन्म हुआ। १९ और रू के जन्म के पश्चात् पेलेग दो सौ नौ वर्ष और जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ।।

२० जब रू बत्तीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा सरूग का जन्म हुआ। २१ और सरूग के जन्म के पश्चात् रू दो

* अर्थात् गड़बड़।

सौ सात वर्ष और जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥

२२ जब सरूग तीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा नाहोर का जन्म हुआ। २३ और नाहोर के जन्म के पश्चात् सरूग दो सौ वर्ष और जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥

२४ जब नाहोर उनतीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा तेरह का जन्म हुआ। २५ और तेरह के जन्म के पश्चात् नाहोर एक सौ उन्नीस वर्ष और जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥

२६ जब तक तेरह सत्तर वर्ष का हुआ, तब तक उसके द्वारा अब्राम, और नाहोर, और हारान उत्पन्न हुए॥

२७ तेरह की यह वंशावली है। तेरह ने अब्राम, और नाहोर, और हारान को जन्म दिया; और हारान ने लूत को जन्म दिया। २८ और हारान अपने पिता के साम्हने ही, कसदियों के ऊर नाम नगर में, जो उसकी जन्मभूमि थी, मर गया। २९ अब्राम और नाहोर ने स्त्रियां ब्याह लीं: अब्राम की पत्नी का नाम तो सारै, और नाहोर की पत्नी का नाम मिल्का था, यह उस हारान की बेटी थी, जो मिल्का और यिस्का दोनों का पिता था। ३० सारै तो बांझ थी; उसके सन्तान न हुई। ३१ और तेरह अपना पुत्र अब्राम, और अपना पोता लूत जो हारान का पुत्र था, और अपनी बहू सारै, जो उसके पुत्र अब्राम की पत्नी थी इन सभों को लेकर कसदियों के ऊर नगर से निकल कनान देश जाने को चला; पर हारान नाम देश में पहुंचकर वहीं रहने लगा। ३२ जब तेरह दो सौ पांच वर्ष का हुआ, तब वह हारान देश में मर गया ॥

(परमेश्वर की ओर से इब्राहीम के बुलाए जाने का वर्णन)

१२ यहोवा ने अब्राम से कहा, अपने देश, और अपनी जन्मभूमि, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा। २ और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा, और तुझे आशीष दूंगा, और तेरा नाम बड़ा करूंगा, और तू आशीष का मूल होगा। ३ और जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूंगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूंगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे। ४ यहोवा के इस वचन के अनुसार अब्राम चला; और लूत भी उसके संग चला; और जब अब्राम हारान देश से निकला उस समय वह पचहत्तर वर्ष का था। ५ सो अब्राम अपनी पत्नी सारै, और अपने भतीजे लूत को, और जो धन उन्हों ने इकट्ठा किया था, और जो प्राणी उन्हों ने हारान में प्राप्त किए थे, सब को लेकर कनान देश में जाने को निकल चला; और वे कनान देश में आ भी गए। ६ उस देश के बीच से जाते हुए अब्राम शकेम में, जहां मोरे का बांज वृक्ष है, पहुंचा; उस समय उस देश में कनानी लोग रहते थे। ७ तब यहोवा ने अब्राम को दर्शन देकर कहा, यह देश मैं तेरे वंश को दूंगा: और उस ने वहां यहोवा के लिये जिस ने उसे दर्शन दिया था, एक वेदी बनाई। ८ फिर वहां से कूच करके, वह उस पहाड़ पर आया, जो बेतेल के पूर्व की ओर है; और अपना तम्बू उस स्थान में खड़ा किया जिसकी पच्छिम की ओर तो बेतेल, और पूर्व की ओर ऐ है; और वहां भी उस ने यहोवा के लिये एक वेदी बनाई: और

यहोवा से प्रार्थना की। ६ और अब्राम कूच करके दक्खिन देश की ओर चला गया॥

१० और उस देश में अकाल पड़ा: और अब्राम मिस्र देश को चला गया कि वहां परदेशी होकर रहे—क्योंकि देश में भयंकर अकाल पड़ा था। ११ फिर ऐसा हुआ कि मिस्र के निकट पहुंचकर, उस ने अपनी पत्नी सारै से कहा, सुन, मुझे मालूम है, कि तू एक सुन्दर स्त्री है: १२ इस कारण जब मिस्री तुझे देखेंगे, तब कहेंगे, यह उसकी पत्नी है, सो वे मुझ को तो मार डालेंगे, पर तुझ को जीती रख लेंगे। १३ सो यह कहना, कि मैं उसकी बहिन हूं; जिस से तेरे कारण मेरा कल्याण हो, और मेरा प्राण तेरे कारण बचे। १४ फिर ऐसा हुआ कि जब अब्राम मिस्र में आया, तब मिस्रियों ने उसकी पत्नी को देखा कि यह अति सुन्दर है। १५ और फ़िरौन के हाकिमों ने उसको देखकर फ़िरौन के साम्हने उसकी प्रशंसा की: सो वह स्त्री फ़िरौन के घर में रखी गई। १६ और उस ने उसके कारण अब्राम की भलाई की; सो उसको भेड़-बकरी, गाय-बैल, दास-दासियां, गदहे-गदहियां, और ऊंट मिले। १७ तब यहोवा ने फ़िरौन और उसके घराने पर, अब्राम की पत्नी सारै के कारण बड़ी बड़ी विपत्तियां डालीं। १८ सो फ़िरौन ने अब्राम को बुलवाकर कहा, तू ने मुझ से क्या किया है? तू ने मुझे क्यों नहीं बताया कि वह तेरी पत्नी है? १९ तू ने क्यों कहा, कि वह तेरी बहिन है? मैं ने उसे अपनी ही पत्नी बनाने के लिये लिया; परन्तु अब अपनी पत्नी को लेकर यहां से चला जा। २० और फ़िरौन ने अपने आदमियों को उसके विषय में आज्ञा दी और उन्हों ने उसको और उसकी पत्नी को, सब सम्पत्ति समेत जो उसका था, विदा कर दिया॥

(इब्राहीम और लूत के अलग होने का वर्णन)

१३ तब अब्राम अपनी पत्नी, और अपनी सारी सम्पत्ति लेकर, लूत को भी संग लिये हुए, मिस्र को छोड़कर कनान के दक्खिन देश में आया। २ अब्राम भेड़-बकरी, गाय-बैल, और सोने-रूपे का बड़ा धनी था। ३ फिर वह दक्खिन देश से चलकर, बेतेल के पास, उसी स्थान को पहुंचा, जहां उसका तम्बू पहले पड़ा था, जो बेतेल और ऐ के बीच में है। ४ यह स्थान उस वेदी का है, जिसे उस ने पहले बनाई थी, और वहां अब्राम ने फिर यहोवा से प्रार्थना की। ५ और लूत के पास भी, जो अब्राम के साथ चलता था, भेड़-बकरी, गाय-बैल, और तम्बू थे। ६ सो उस देश में उन दोनों की समाई न हो सकी कि वे इकट्ठे रहें: क्योंकि उनके पास बहुत धन था इसलिये वे इकट्ठे न रह सके। ७ सो अब्राम, और लूत की भेड़-बकरी, और गाय-बैल के चरवाहों में झगड़ा हुआ: और उस समय कनानी, और परिज्जी लोग, उस देश में रहते थे। ८ तब अब्राम लूत से कहने लगा, मेरे और तेरे बीच, और मेरे और तेरे चरवाहों के बीच में झगड़ा न होने पाए; क्योंकि हम लोग भाई बन्धु हैं। ९ क्या सारा देश तेरे साम्हने नहीं? सो मुझ से अलग हो, यदि तू बाईं ओर जाए तो मैं दहिनी ओर जाऊंगा; और यदि तू दहिनी ओर जाए, तो मैं बाईं ओर जाऊंगा। १० तब लूत ने आंख उठाकर, यरदन नदी के पास वाली सारी तराई को देखा, कि वह सब सिंची हुई है।

जब तक यहोवा ने सदोम और अमोरा को नाश न किया था, तब तक सोअर के मार्ग तक वह तराई यहोवा की बाटिका, और मिस्र देश के समान उपजाऊ थी। ११ सो लूत अपने लिये यरदन की सारी तराई को चुन के पूर्व की ओर चला, और वे एक दूसरे से अलग हो गए। १२ अब्राम तो कनान देश में रहा, पर लूत उस तराई के नगरों में रहने लगा; और अपना तम्बू सदोम के निकट खड़ा किया। १३ सदोम के लोग यहोवा के लेखे में बड़े दुष्ट और पापी थे। १४ जब लूत अब्राम से अलग हो गया तब उसके पश्चात् यहोवा ने अब्राम से कहा, आंख उठाकर जिस स्थान पर तू है वहां से उत्तर-दक्खिन, पूर्व-पच्छिम, चारों ओर दृष्टि कर। १५ क्योंकि जितनी भूमि तुझे दिखाई देती है, उस सब को मैं तुझे और तेरे वंश को युग युग के लिये दूंगा। १६ और मैं तेरे वंश को पृथ्वी की धूल के किनकों की नाईं बहुत करूंगा, यहां तक कि जो कोई पृथ्वी की धूल के किनकों को गिन सकेगा वही तेरा वंश भी गिन सकेगा। १७ उठ, इस देश की लम्बाई और चौड़ाई में चल फिर; क्योंकि मैं उसे तुझी को दूंगा। १८ इसके पश्चात् अब्राम अपना तम्बू उखाड़कर, मम्रे के बांजों के बीच जो हेब्रोन में थे जाकर रहने लगा, और वहां भी यहोवा की एक वेदी बनाई॥

(इब्राहीम के विजय और मेल्कीसेदेक के दर्शन देने का वर्णन)

१४ शिनार के राजा अम्रापेल, और एल्लासार के राजा अर्योक, और एलाम के राजा कदोर्लाओमेर, और गोयीम के राजा तिदाल के दिनों में ऐसा हुआ, २ कि उन्हों ने सदोम के राजा बेरा, और अमोरा के राजा बिर्शा, और अद्मा के राजा शिनाब, और सबोयीम के राजा शेमेबेर, और बेला जो सोअर भी कहलाता है, इन राजाओं के विरुद्ध युद्ध किया। ३ इन पांचों ने सिद्दीम नाम तराई में, जो खारे ताल के पास है, एका किया। ४ बारह वर्ष तक तो ये कदोर्लाओमेर के अधीन रहे; पर तेरहवें वर्ष में उसके विरुद्ध उठे। ५ सो चौदहवें वर्ष में कदोर्लाओमेर, और उसके संगी राजा आए, और अशतरोत्कनम में रपाइयों को, और हाम में जूजियों को, और शावेकिर्यातैम में एमियों को, ६ और सेईर नाम पहाड़ में होरियों को, मारते मारते उस एल्पारान तक जो जंगल के पास है पहुंच गए। ७ वहां से वे लौटकर एन्मिशपात को आए, जो कादेश भी कहलाता है, और अमालेकियों के सारे देश को, और उन एमोरियों को भी जीत लिया, जो हससोन्तामार में रहते थे। ८ तब सदोम, अमोरा, अदमा, सबोयीम, और बेला, जो सोअर भी कहलाता है, इनके राजा निकले, और सिद्दीम नाम तराई में, उनके साथ युद्ध के लिये पांति बान्धी। ९ अर्थात् एलाम के राजा कदोर्लाओमेर, गोयीम के राजा तिदाल, शिनार के राजा अम्रापेल, और एल्लासार के राजा अर्योक, इन चारों के विरुद्ध उन पांचों ने पांति बान्धी। १० सिद्दीम नाम तराई में जहां लसार मिट्टी के गड़हे ही गड़हे थे; सदोम और अमोरा के राजा भागते भागते उन में गिर पड़े, और जो बचे वे पहाड़ पर भाग गए। ११ तब वे सदोम और अमोरा के सारे धन और भोजन वस्तुओं को लूट लाट कर चले गए। १२ और अब्राम का भतीजा

लूत, जो सदोम में रहता था, उसको भी धन समेत वे लेकर चले गए। १३ तब एक जन जो भागकर बच निकला था उस ने जाकर इब्री अब्राम को समाचार दिया; अब्राम तो एमोरी मम्रे, जो एश्कोल और आनेर का भाई था, उसके बांज वृक्षों के बीच में रहता था; और ये लोग अब्राम के संग वाचा बान्धे हुए थे। १४ यह सुनकर कि उसका भतीजा बन्धुआई में गया है, अब्राम ने अपने तीन सौ अठारह शिक्षित, युद्ध कौशल में निपुण दासों को लेकर जो उसके कुटुम्ब में उत्पन्न हुए थे, अस्त्र शस्त्र धारण करके दान तक उनका पीछा किया। १५ और अपने दासों के अलग अलग दल बान्धकर रात को उन पर चढ़ाई करके उनको मार लिया और होबा तक, जो दमिश्क की उत्तर ओर है, उनका पीछा किया। १६ और वह सारे धन को, और अपने भतीजे लूत, और उसके धन को, और स्त्रियों को, और सब बन्धुओं को, लौटा ले आया। १७ जब वह कदोर्लाओमेर और उसके साथी राजाओं को जीतकर लौटा आता था तब सदोम का राजा शावे नाम तराई में, जो राजा की भी कहलाती है, उस से भेंट करने के लिये आया। १८ तब शालेम का राजा मेल्कीसेदेक, जो परमप्रधान ईश्वर का याजक था, रोटी और दाखमधु ले आया। १९ और उस ने अब्राम को यह आशीर्वाद दिया, कि परमप्रधान ईश्वर की ओर से, जो आकाश और पृथ्वी का अधिकारी है, तू धन्य हो। २० और धन्य है परमप्रधान ईश्वर, जिस ने तेरे द्रोहियों को तेरे वश में कर दिया है। तब अब्राम ने उसको सब का दशमांश दिया। २१ तब सदोम के राजा ने अब्राम से कहा, प्राणियों को तो मुझे दे, और धन को अपने पास रख। २२ अब्राम ने सदोम के राजा से कहा, परमप्रधान ईश्वर यहोवा, जो आकाश और पृथ्वी का अधिकारी है, २३ उसकी मैं यह शपथ खाता हूं, कि जो कुछ तेरा है उस में से न तो मैं एक सूत, और न जूती का बन्धन, न कोई और वस्तु लूंगा; कि तू ऐसा न कहने पाए, कि अब्राम मेरे ही कारण धनी हुआ। २४ पर जो कुछ इन जवानों ने खा लिया है और उनका भाग जो मेरे साथ गए थे: अर्थात् आनेर, एश्कोल, और मम्रे, मैं नहीं लौटाऊंगा वे तो अपना अपना भाग रख लें॥

(इब्राहीम के साथ यहोवा के वाचा बान्धने का वर्णन)

१५ इन बातों के पश्चात् यहोवा का यह वचन दर्शन में अब्राम के पास पहुंचा, कि हे अब्राम, मत डर; तेरी ढाल और तेरा अत्यन्त बड़ा फल मैं हूं। २ अब्राम ने कहा, हे प्रभु यहोवा मैं तो निर्वंश हूं, और मेरे घर का वारिस यह दमिश्की एलीएजेर होगा, सो तू मुझे क्या देगा? ३ और अब्राम ने कहा, मुझे तो तू ने वंश नहीं दिया, और क्या देखता हूं, कि मेरे घर में उत्पन्न हुआ एक जन मेरा वारिस होगा। ४ तब यहोवा का यह वचन उसके पास पहुंचा, कि यह तेरा वारिस न होगा; तेरा जो निज पुत्र होगा, वही तेरा वारिस होगा। ५ और उस ने उसको बाहर ले जाके कहा, आकाश की ओर दृष्टि करके तारागण को गिन, क्या तू उनको गिन सकता है? फिर उस ने उस से कहा, तेरा वंश ऐसा ही होगा। ६ उस ने यहोवा पर विश्वास किया;

और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना। ७ और उस ने उस से कहा मैं वही यहोवा हूं जो तुझे कस्दियों के ऊर नगर से बाहर ले आया, कि तुझ को इस देश का अधिकार दूं। ८ उस ने कहा, हे प्रभु यहोवा मैं कैसे जानूं कि मैं इसका अधिकारी हूंगा? ९ यहोवा ने उस से कहा, मेरे लिये तीन वर्ष की एक कलोर, और तीन वर्ष की एक बकरी, और तीन वर्ष का एक मेंढ़ा, और एक पिण्डुक और कबूतर का एक बच्चा ले। १० और इन सभों को लेकर, उस ने बीच से दो टुकड़े कर दिया, और टुकड़ों को आम्हने-साम्हने रखा: पर चिड़ियाओं को उस ने टुकड़े न किया। ११ और जब मांसाहारी पक्षी लोथों पर झपटे, तब अब्राम ने उन्हें उड़ा दिया। १२ जब सूर्य अस्त होने लगा, तब अब्राम को भारी नींद आई; और देखो, अत्यन्त भय और महा अन्धकार ने उसे छा लिया। १३ तब यहोवा ने अब्राम से कहा, यह निश्चय जान कि तेरे वंश पराए देश में परदेशी होकर रहेंगे, और उस देश के लोगों के दास हो जाएंगे; और वे उनको चार सौ वर्ष लों दुःख देंगे; १४ फिर जिस देश के वे दास होंगे उसको मैं दण्ड दूंगा: और उसके पश्चात् वे बड़ा धन वहां से लेकर निकल आएंगे। १५ तू तो अपने पितरों में कुशल के साथ मिल जाएगा; तुझे पूरे बुढ़ापे में मिट्टी दी जाएगी। १६ पर वे चौथी पीढ़ी में यहां फिर आएंगे: क्योंकि अब तक एमोरियों का अधर्म पूरा नहीं हुआ। १७ और ऐसा हुआ कि जब सूर्य अस्त हो गया और घोर अन्धकार छा गया, तब एक अंगेठी जिस में से धूआं उठता था और एक जलता हुआ पलीता देख पड़ा जो उन टुकड़ों के बीच में से होकर निकल गया। १८ उसी दिन यहोवा ने अब्राम के साथ यह वाचा बान्धी, कि मिस्र के महानद से लेकर परात नाम बड़े नद तक जितना देश है, १९ अर्थात्, केनियों, कनिज्जियों, कद्मोनियों, २० हित्तियों, परीज्जियों, रपाइयों, २१ एमोरियों, कनानियों, गिर्गाशियों और यबूसियों का देश मैं ने तेरे वंश को दिया है॥

(इश्माएल की उत्पत्ति का वर्णन)

१६ अब्राम की पत्नी सारै के कोई सन्तान न थी: और उसके हाजिरा नाम की एक मिस्री लौंडी थी। २ सो सारै ने अब्राम से कहा, देख, यहोवा ने तो मेरी कोख बन्द कर रखी है सो मैं तुझ से बिनती करती हूं कि तू मेरी लौंडी के पास जा: सम्भव है कि मेरा घर उसके द्वारा बस जाए। ३ सो सारै की यह बात अब्राम ने मान ली। सो जब अब्राम को कनान देश में रहते दस वर्ष बीत चुके तब उसकी स्त्री सारै ने अपनी मिस्री लौंडी हाजिरा को लेकर अपने पति अब्राम को दिया, कि वह उसकी पत्नी हो। ४ और वह हाजिरा के पास गया, और वह गर्भवती हुई: और जब उस ने जाना कि वह गर्भवती है, तब वह अपनी स्वामिनी को अपनी दृष्टि में तुच्छ समझने लगी। ५ तब सारै ने अब्राम से कहा, जो मुझ पर उपद्रव हुआ सो तेरे ही सिर पर हो: मैं ने तो अपनी लौंडी को तेरी पत्नी कर दिया; पर जब उस ने जाना कि वह गर्भवती है, तब वह मुझे तुच्छ समझने लगी, सो यहोवा मेरे और तेरे बीच में न्याय करे। ६ अब्राम ने सारै से कहा, देख तेरी लौंडी तेरे वश में

है : जैसा तुझे भला लगे वैसा ही उसके साथ कर। सो सारै उसको दुःख देने लगी और वह उसके साम्हने से भाग गई। ७ तब यहोवा के दूत ने उसको जंगल में शूर के मार्ग पर जल के एक सोते के पास पाकर कहा, ८ हे सारै की लौंडी हाजिरा, तू कहां से आती और कहां को जाती है? उस ने कहा, मैं अपनी स्वामिनी सारै के साम्हने से भाग आई हूं। ९ यहोवा के दूत ने उस से कहा, अपनी स्वामिनी के पास लौट जा और उसके वश में रह। १० और यहोवा के दूत ने उस से कहा, मैं तेरे वंश को बहुत बढ़ाऊंगा, यहां तक कि बहुतायत के कारण उसकी गणना न हो सकेगी। ११ और यहोवा के दूत ने उस से कहा, देख, तू गर्भवती है, और पुत्र जनेगी, सो उसका नाम इश्माएल * रखना; क्योंकि यहोवा ने तेरे दुःख का हाल सुन लिया है। १२ और वह मनुष्य बनैले गदहे के समान होगा उसका हाथ सब के विरुद्ध उठेगा, और सब के हाथ उसके विरुद्ध उठेंगे; और वह अपने सब भाई बन्धुओं के मध्य में बसा रहेगा। १३ तब उस ने यहोवा का नाम जिस ने उस से बातें की थीं, अत्ताएलरोई † रखकर कहा, कि, क्या मैं यहां भी उसको जाते हुए देखने ‡ पाई जो मेरा देखनेहारा है? १४ इस कारण उस कुएं का नाम लहैरोई § कुआं पड़ा; वह तो कादेश और बेरेद के बीच में है। १५ सो हाजिरा अब्राम के द्वारा एक पुत्र जनी: और अब्राम ने अपने पुत्र का नाम, जिसे हाजिरा जनी, इश्माएल रखा। १६ जब हाजिरा ने अब्राम के द्वारा इश्माएल को जन्म दिया उस समय अब्राम छियासी वर्ष का था॥

* अर्थात् ईश्वर सुननेहारा।
† अर्थात् तू सर्व्वदर्शी ईश्वर है।
‡ मूल में—उसके पीछे देखने।
§ अर्थात् जाते देखनेहारे का।

(खतना की विधि के ठहरने का वर्णन और इसहाक की उत्पत्ति की प्रतिज्ञा)

१७ जब अब्राम निन्नानवे वर्ष का हो गया, तब यहोवा ने उसको दर्शन देकर कहा मैं सर्वशक्तिमान् ईश्वर हूं; मेरी उपस्थिति में चल * और सिद्ध होता जा। २ और मैं तेरे साथ वाचा बान्धूंगा, और तेरे वंश को अत्यन्त ही बढ़ाऊंगा। ३ तब अब्राम मुंह के बल गिरा: और परमेश्वर उस से यों बातें कहता गया, ४ देख, मेरी वाचा तेरे साथ बन्धी रहेगी, इसलिये तू जातियों के समूह का मूलपिता हो जाएगा। ५ सो अब से तेरा नाम अब्राम † न रहेगा परन्तु तेरा नाम इब्राहीम ‡ होगा क्योंकि मैं ने तुझे जातियों के समूह का मूलपिता ठहरा दिया है। ६ और मैं तुझे अत्यन्त ही फुलाऊं फलाऊंगा, और तुझ को जाति जाति का मूल बना दूंगा, और तेरे वंश में राजा उत्पन्न होंगे। ७ और मैं तेरे साथ, और तेरे पश्चात् पीढ़ी पीढ़ी तक तेरे वंश के साथ भी इस आशय की युग युग की वाचा बान्धता हूं, कि मैं तेरा और तेरे पश्चात् तेरे वंश का भी परमेश्वर रहूंगा। ८ और मैं तुझ को, और तेरे पश्चात् तेरे वंश को भी, यह सारा कनान देश, जिस में तू परदेशी होकर रहता है, इस रीति दूंगा कि वह युग युग उनकी निज भूमि रहेगी,

* मूल में—मेरे साम्हने चल।
† अर्थात् उन्नत पिता।
‡ अर्थात् बहुतों का पिता।

और मैं उनका परमेश्वर रहूंगा। ९ फिर परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, तू भी मेरे साथ बान्धी हुई वाचा का पालन करना; तू और तेरे पश्चात् तेरा वंश भी अपनी अपनी पीढ़ी में उसका पालन करे। १० मेरे साथ बान्धी हुई वाचा, जो तुझे और तेरे पश्चात् तेरे वंश को पालनी पड़ेगी, सो यह है, कि तुम में से एक एक पुरुष का ख़तना हो। ११ तुम अपनी अपनी खलड़ी का ख़तना करा लेना; जो वाचा मेरे और तुम्हारे बीच में है, उसका यही चिन्ह होगा। १२ पीढ़ी पीढ़ी में केवल तेरे वंश ही के लोग नहीं पर जो तेरे घर में उत्पन्न हों, वा परदेशियों को रूपा देकर मोल लिये जाएं, ऐसे सब पुरुष भी जब आठ दिन के हो जाएं, तब उनका ख़तना किया जाए। १३ जो तेरे घर में उत्पन्न हो, अथवा तेरे रूपे से मोल लिया जाए, उसका ख़तना अवश्य ही किया जाए; सो मेरी वाचा जिसका चिन्ह तुम्हारी देह में होगा वह युग युग रहेगी। १४ जो पुरुष ख़तनारहित रहे, अर्थात् जिसकी खलड़ी का ख़तना न हो, वह प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाए, क्योंकि उस ने मेरे साथ बान्धी हुई वाचा को तोड़ दिया॥

१५ फिर परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, तेरी जो पत्नी सारै है, उसको तू अब सारै न कहना, उसका नाम सारा होगा। १६ और मैं उसको आशीष दूंगा, और तुझ को उसके द्वारा एक पुत्र दूंगा; और मैं उसको ऐसी आशीष दूंगा, कि वह जाति जाति की मूलमाता हो जाएगी; और उसके वंश में राज्य राज्य के राजा उत्पन्न होंगे। १७ तब इब्राहीम मुंह के बल गिर पड़ा और हंसा, और अपने मन ही मन कहने लगा, क्या सौ वर्ष के पुरुष के भी सन्तान होगा और क्या सारा जो नव्वे वर्ष की है पुत्र जनेगी? १८ और इब्राहीम ने परमेश्वर से कहा, इश्माएल तेरी दृष्टि में बना रहे! यही बहुत है। १९ तब परमेश्वर ने कहा, निश्चय तेरी पत्नी सारा के तुझ से एक पुत्र उत्पन्न होगा; और तू उसका नाम इसहाक रखना: और मैं उसके साथ ऐसी वाचा बान्धूंगा जो उसके पश्चात् उसके वंश के लिये युग युग की वाचा होगी। २० और इश्माएल के विषय में भी मैं ने तेरी सुनी है: मैं उसको भी आशीष दूंगा, और उसे फुलाऊं फलाऊंगा और अत्यन्त ही बढ़ा दूंगा; उस से बारह प्रधान उत्पन्न होंगे, और मैं उस से एक बड़ी जाति बनाऊंगा। २१ परन्तु मैं अपनी वाचा इसहाक ही के साथ बान्धूगा जो सारा से अगले वर्ष के इसी नियुक्त समय में उत्पन्न होगा। २२ तब परमेश्वर ने इब्राहीम से बातें करनी बन्द कीं और उसके पास से ऊपर चढ़ गया। २३ तब इब्राहीम ने अपने पुत्र इश्माएल को, और उसके घर में जितने उत्पन्न हुए थे, और जितने उसके रुपये से मोल लिये गए थे, निदान उसके घर में जितने पुरुष थे, उन सभों को लेके उसी दिन परमेश्वर के वचन के अनुसार उनकी खलड़ी का ख़तना किया। २४ जब इब्राहीम की खलड़ी का ख़तना हुआ तब वह निन्नानवे वर्ष का था। २५ और जब उसके पुत्र इश्माएल की खलड़ी का ख़तना हुआ तब वह तेरह वर्ष का था। २६ इब्राहीम और उसके पुत्र इश्माएल दोनों का ख़तना एक ही दिन हुआ। २७ और उसके घर में जितने पुरुष थे जो घर में उत्पन्न हुए, तथा जो परदेशियों

के हाथ से मोल लिये गए थे, सब का खतना उसके साथ ही हुआ ॥

१८ इब्राहीम मम्रे के बांजों के बीच कड़ी धूप के समय तम्बू के द्वार पर बैठा हुआ था, तब यहोवा ने उसे दर्शन दिया : २ और उस ने आंख उठाकर दृष्टि की तो क्या देखा, कि तीन पुरुष उसके साम्हने खड़े हैं : जब उस ने उन्हें देखा तब वह उन से भेंट करने के लिये तम्बू के द्वार से दौड़ा, और भूमि पर गिरकर दण्डवत् की और कहने लगा, ३ हे प्रभु, यदि मुझ पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि है तो मैं बिनती करता हूं, कि अपने दास के पास से चले न जाना। ४ मैं थोड़ा सा जल लाता हूं और आप अपने पांव धोकर इस वृक्ष के तले विश्राम करें। ५ फिर मैं एक टुकड़ा रोटी ले आऊं और उस से आप अपने अपने जीव को तृप्त करें; तब उसके पश्चात् आगे बढ़ें: क्योंकि आप अपने दास के पास इसी लिये पधारे हैं। उन्हों ने कहा, जैसा तू कहता है वैसा ही कर। ६ सो इब्राहीम ने तम्बू में सारा के पास फुर्ती से जाकर कहा, तीन सआ * मैदा फुर्ती से गून्ध, और फुलके बना। ७ फिर इब्राहीम गाय बैल के झुण्ड में दौड़ा, और एक कोमल और अच्छा बछड़ा लेकर अपने सेवक को दिया, और उस ने फुर्ती से उसको पकाया। ८ तब उस ने मक्खन, और दूध, और वह बछड़ा, जो उस ने पकवाया था, लेकर उनके आगे परोस दिया; और आप वृक्ष के तले उनके पास खड़ा रहा, और वे खाने लगे। ९ उन्हों ने उस से पूछा, तेरी पत्नी सारा कहां है? उस ने कहा, वह तो तम्बू में है। १० उस ने कहा मैं वसन्त ऋतु में * निश्चय तेरे पास फिर आऊंगा; और तब तेरी पत्नी सारा के एक पुत्र उत्पन्न होगा। और सारा तम्बू के द्वार पर जो इब्राहीम के पीछे था, सुन रही थी। ११ इब्राहीम और सारा दोनों बहुत बूढ़े थे; और सारा का स्त्रीधर्म बन्द हो गया था। १२ सो सारा मन में हंस कर कहने लगी, मैं तो बूढ़ी हूं, और मेरा पति भी बूढ़ा है, तो क्या मुझे यह सुख होगा? १३ तब यहोवा ने इब्राहीम से कहा, सारा यह कहकर क्यों हंसी, कि क्या मेरे, जो ऐसी बुढ़िया हो गई हूं, सचमुच एक पुत्र उत्पन्न होगा? १४ क्या यहोवा के लिये कोई काम कठिन है? नियत समय में, अर्थात् वसन्त ऋतु में,* मैं तेरे पास फिर आऊंगा, और सारा के पुत्र उत्पन्न होगा। १५ तब सारा डर के मारे यह कहकर मुकर गई, कि मैं नहीं हंसी। उस ने कहा, नहीं; तू हंसी तो थी ॥

(सदोम आदि नगरों के विनाश का वर्णन)

१६ फिर वे पुरुष वहां से चलकर, सदोम की ओर ताकने लगे : और इब्राहीम उन्हें विदा करने के लिये उनके संग संग चला। १७ तब यहोवा ने कहा, यह जो मैं करता हूं सो क्या इब्राहीम से छिपा रखूं? १८ इब्राहीम से तो निश्चय एक बड़ी और सामर्थी जाति उपजेगी, और पृथ्वी की सारी जातियां उसके द्वारा आशीष पाएंगी। १९ क्योंकि मैं जानता हूं, कि वह अपने पुत्रों और परिवार को जो उसके पीछे रह जाएंगे आज्ञा देगा कि वे यहोवा के मार्ग में अटल बने रहें, और धर्म और न्याय करते रहें, इसलिये कि जो कुछ

* यह नपुआ विशेष है।

* मूल में—जीवन के समय में।

यहोवा ने इब्राहीम के विषय में कहा है उसे पूरा करे। २० फिर यहोवा ने कहा, सदोम और अमोरा की चिल्लाहट बढ़ गई है, और उनका पाप बहुत भारी हो गया है; २१ इसलिये मैं उतरकर देखूंगा, कि उसकी जैसी चिल्लाहट मेरे कान तक पहुंची है, उन्हों ने ठीक वैसा ही काम किया है कि नहीं: और न किया हो तो मैं उसे जान लूंगा। २२ सो वे पुरुष वहां से मुड़ के सदोम की ओर जाने लगे: पर इब्राहीम यहोवा के आगे खड़ा रह गया। २३ तब इब्राहीम उसके समीप जाकर कहने लगा, क्या तू सचमुच दुष्ट के संग धर्मी को भी नाश करेगा? २४ कदाचित् उस नगर में पचास धर्मी हों: तो क्या तू सचमुच उस स्थान को नाश करेगा और उन पचास धर्मियों के कारण जो उस में हों न छोड़ेगा? २५ इस प्रकार का काम करना तुझ से दूर रहे कि दुष्ट के संग धर्मी को भी मार डाले और धर्मी और दुष्ट दोनों की एक ही दशा हो। यह तुझ से दूर रहे: क्या सारी पृथ्वी का न्यायी न्याय न करे? २६ यहोवा ने कहा, यदि मुझे सदोम में पचास धर्मी मिलें, तो उनके कारण उस सारे स्थान को छोड़ूंगा। २७ फिर इब्राहीम ने कहा, हे प्रभु, सुन, मैं तो मिट्टी और राख हूं; तौभी मैं ने इतनी ढिठाई की कि तुझ से बातें करूं। २८ कदाचित् उन पचास धर्मियों में पांच घट जाएं: तो क्या तू पांच ही के घटने के कारण उस सारे नगर का नाश करेगा? उस ने कहा, यदि मुझे उस में पैंतालीस भी मिलें, तौभी उसका नाश न करूंगा। २९ फिर उस ने उस से यह भी कहा, कदाचित् वहां चालीस मिलें। उस ने कहा, तो मैं चालीस के कारण भी ऐसा न करूंगा। ३० फिर उस ने कहा, हे प्रभु, क्रोध न कर, तो मैं कुछ और कहूं: कदाचित् वहां तीस मिलें। उस ने कहा, यदि मुझे वहां तीस भी मिलें, तौभी ऐसा न करूंगा। ३१ फिर उस ने कहा, हे प्रभु, सुन, मैं ने इतनी ढिठाई तो की है कि तुझ से बातें करूं: कदाचित् उस में बीस मिलें। उस ने कहा, मैं बीस के कारण भी उसका नाश न करूंगा। ३२ फिर उस ने कहा, हे प्रभु, क्रोध न कर, मैं एक ही बार और कहूंगा: कदाचित् उस में दस मिलें। उस ने कहा, तो मैं दस के कारण भी उसका नाश न करूंगा। ३३ जब यहोवा इब्राहीम से बातें कर चुका, तब चला गया: और इब्राहीम अपने घर को लौट गया॥

१९ सांझ को वे दो दूत सदोम के पास आए: और लूत सदोम के फाटक के पास बैठा था: सो उनको देखकर वह उन से भेंट करने के लिये उठा; और मुंह के बल झुककर दण्डवत् कर कहा; २ हे मेरे प्रभुओ, अपने दास के घर में पधारिए, और रात भर विश्राम कीजिए, और अपने पांव धोइये, फिर भोर को उठकर अपने मार्ग पर जाइए। उन्हों ने कहा, नहीं; हम चौक ही में रात बिताएंगे। ३ और उस ने उन से बहुत विनती करके उन्हें मनाया; सो वे उसके साथ चलकर उसके घर में आए; और उस ने उनके लिये जेवनार तैय्यार की, और बिना ख़मीर की रोटियां बनाकर उनको खिलाई। ४ उनके सो जाने से पहिले, उस सदोम नगर के पुरुषों ने, जवानों से लेकर बूढ़ों तक, वरन चारों ओर के सब लोगों ने आकर उस

घर को घेर लिया; ५ और लूत को पुकारकर कहने लगे, कि जो पुरुष आज रात को तेरे पास आए हैं वे कहां हैं? उनको हमारे पास बाहर ले आ, कि हम उन से भोग करें। ६ तब लूत उनके पास द्वार के बाहर गया, और किवाड़ को अपने पीछे बन्द करके कहा, ७ हे मेरे भाइयो, ऐसी बुराई न करो। ८ सुनो, मेरी दो बेटियां हैं जिन्हों ने अब तक पुरुष का मुंह नहीं देखा, इच्छा हो तो मैं उन्हें तुम्हारे पास बाहर ले आऊं, और तुम को जैसा अच्छा लगे वैसा व्यवहार उन से करो: पर इन पुरुषों से कुछ न करो; क्योंकि ये मेरी छत के तले आए* हैं। ९ उन्हों ने कहा, हट जा। फिर वे कहने लगे, तू एक परदेशी होकर यहां रहने के लिये आया पर अब न्यायी भी बन बैठा है: सो अब हम उन से भी अधिक तेरे साथ बुराई करेंगे। और वे उस पुरुष लूत को बहुत दबाने लगे, और किवाड़ तोड़ने के लिये निकट आए। १० तब उन पाहुनों† ने हाथ बढ़ाकर, लूत को अपने पास घर में खींच लिया, और किवाड़ को बन्द कर दिया। ११ और उन्हों ने क्या छोटे, क्या बड़े, सब पुरुषों को जो घर के द्वार पर थे अन्धा कर दिया, सो वे द्वार को टटोलते टटोलते थक गए। १२ फिर उन पाहुनों† ने लूत से पूछा, यहां तेरे और कौन कौन हैं? दामाद, बेटे, बेटियां, वा नगर में तेरा जो कोई हो, उन सभों को लेकर इस स्थान से निकल जा। १३ क्योंकि हम यह स्थान नाश करने पर हैं, इसलिये कि इसकी चिल्लाहट यहोवा के सम्मुख बढ़ गई है; और यहोवा ने हमें इसका सत्यानाश करने के लिये भेज दिया है। १४ तब लूत ने निकलकर अपने दामादों को, जिनके साथ उसकी बेटियों की सगाई हो गई थी, समझा के कहा, उठो, इस स्थान से निकल चलो: क्योंकि यहोवा इस नगर को नाश किया चाहता है। पर वह अपने दामादों की दृष्टि में ठट्ठा करनेहारा सा जान पड़ा। १५ जब पह फटने लगी, तब दूतों ने लूत से फुर्ती कराई और कहा, कि उठ, अपनी पत्नी और दोनों बेटियों को जो यहां हैं ले जा: नहीं तो तू भी इस नगर के अधर्म में भस्म हो जाएगा। १६ पर वह विलम्ब करता रहा, इस से उन पुरुषों ने उसका और उसकी पत्नी, और दोनों बेटियों का हाथ पकड़ लिया; क्योंकि यहोवा की दया उस पर थी: और उसको निकालकर नगर के बाहर कर दिया। १७ और ऐसा हुआ कि जब उन्हों ने उनको बाहर निकाला, तब उस ने कहा, अपना प्राण लेकर भाग जा; पीछे की ओर न ताकना, और तराई भर में न ठहरना; उस पहाड़ पर भाग जाना, नहीं तो तू भी भस्म हो जाएगा। १८ लूत ने उन से कहा, हे प्रभु, ऐसा न कर: १९ देख, तेरे दास पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि हुई है, और तू ने इस में बड़ी कृपा दिखाई, कि मेरे प्राण को बचाया है; पर मैं पहाड़ पर भाग नहीं सकता, कहीं ऐसा न हो, कि कोई विपत्ति मुझ पर आ पड़े, और मैं मर जाऊं: २० देख, वह नगर ऐसा निकट है कि मैं वहां भाग सकता हूं, और वह छोटा भी है: मुझे वहीं भाग जाने दे, क्या वह छोटा नहीं है? और मेरा प्राण बच जाएगा। २१ उस ने उस से कहा, देख, मैं ने इस

* मूल में—इसलिये आए।
† मूल में—मनुष्यों।

विषय में भी तेरी बिनती अंगीकार की है, कि जिस नगर की चर्चा तू ने की है, उसको में नाश न करूंगा। २२ फुर्ती से वहां भाग जा; क्योंकि जब तक तू वहां न पहुंचे तब तक मैं कुछ न कर सकूंगा। इसी कारण उस नगर का नाम सोअर * पड़ा। २३ लूत के सोअर के निकट पहुंचते ही सूर्य पृथ्वी पर उदय हुआ। २४ तब यहोवा ने अपनी ओर से सदोम और अमोरा पर आकाश से गन्धक और आग बरसाई; २५ और उन नगरों को और उस सम्पूर्ण तराई को, और नगरों के सब निवासियों को, भूमि की सारी उपज समेत नाश कर दिया। २६ लूत की पत्नी ने जो उसके पीछे थीं दृष्टि फेर के पीछे की ओर देखा, और वह नमक का खम्भा बन गई। २७ भोर को इब्राहीम उठकर उस स्थान को गया, जहां वह यहोवा के सम्मुख खड़ा था; २८ और सदोम, और अमोरा, और उस तराई के सारे देश की ओर आंख उठाकर क्या देखा, कि उस देश में से धधकती हुई भट्ठी का सा धूआं उठ रहा है। २९ और ऐसा हुआ, कि जब परमेश्वर ने उस तराई के नगरों को, जिन में लूत रहता था, उलट पुलट कर नाश किया, तब उस ने इब्राहीम को याद करके लूत को उस घटना से बचा लिया ॥

३० और लूत ने सोअर को छोड़ दिया, और पहाड़ पर अपनी दोनों बेटियों समेत रहने लगा; क्योंकि वह सोअर में रहने से डरता था: इसलिये वह और उसकी दोनों बेटियां वहां एक गुफ़ा में रहने लगे। ३१ तब बड़ी बेटी ने छोटी से कहा, हमारा पिता बूढ़ा है, और पृथ्वी * भर में कोई ऐसा पुरुष नहीं जो ससार की रीति के अनुसार हमारे पास आए: ३२ सो आ, हम अपने पिता को दाखमधु पिलाकर, उसके साथ सोएं, जिस से कि हम अपने पिता के वंश को बचाए रखें। ३३ सो उन्हों ने उसी दिन रात के समय अपने पिता को दाखमधु पिलाया, तब बड़ी बेटी जाकर अपने पिता के पास लेट गई; पर उस ने न जाना, कि वह कब लेटी, और कब उठ गई। ३४ और ऐसा हुआ कि दूसरे दिन बड़ी ने छोटी से कहा, देख, कल रात को मैं अपने पिता के साथ सोई: सो आज भी रात को हम उसको दाखमधु पिलाएं; तब तू जाकर उसके साथ सोना कि हम अपने पिता के द्वारा वंश उत्पन्न करें। ३५ सो उन्हों ने उस दिन भी रात के समय अपने पिता को दाखमधु पिलाया: और छोटी बेटी जाकर उसके पास लेट गई: पर उसको उसके भी सोने और उठने के समय का ज्ञान न था। ३६ इस प्रकार से लूत की दोनों बेटियां अपने पिता से गर्भवती हुईं। ३७ और बड़ी एक पुत्र जनी, और उसका नाम मोआब † रखा: वह मोआब नाम जाति का जो आज तक है मूलपिता हुआ। ३८ और छोटी भी एक पुत्र जनी, और उसका नाम बेनम्मी ‡ रखा; वह अम्मोन्‌-वंशियों का जो आज तक हैं मूलपिता हुआ ॥

(इसहाक की उत्पत्ति का वर्णन)

२० फिर इब्राहीम वहां से कूच कर दक्खिन देश में आकर कादेश

* अर्थात् छोटा।

* वा देश।
† अर्थात् पिता का वीर्य्य।
‡ अर्थात् मेरे कुटुम्बी का बेटा।

और शूर के बीच में ठहरा, और गरार में रहने लगा। २ और इब्राहीम अपनी पत्नी सारा के विषय में कहने लगा, कि वह मेरी बहिन है: सो गरार के राजा अबीमेलेक ने दूत भेजकर सारा को बुलवा लिया। ३ रात को परमेश्वर ने स्वप्न में अबीमेलेक के पास आकर कहा, सुन, जिस स्त्री को तू ने रख लिया है, उसके कारण तू मर जाएगा, क्योंकि वह सुहागिन है। ४ परन्तु अबीमेलेक तो उसके पास न गया था: सो उस ने कहा, हे प्रभु, क्या तू निर्दोष जाति का भी घात करेगा? ५ क्या उसी ने स्वयं मुझ से नहीं कहा, कि वह मेरी बहिन है? और उस स्त्री ने भी आप कहा, कि वह मेरा भाई है: मैं ने तो अपने मन की खराई और अपने व्यवहार की सच्चाई से * यह काम किया। ६ परमेश्वर ने उस से स्वप्न में कहा, हां, मैं भी जानता हूं कि अपने मन की खराई से तू ने यह काम किया है, और मैं ने तुझे रोक भी रखा कि तू मेरे विरुद्ध पाप न करे: इसी कारण मैं ने तुझ को उसे छूने नहीं दिया। ७ सो अब उस पुरुष की पत्नी को उसे फेर दे; क्योंकि वह नबी है, और तेरे लिये प्रार्थना करेगा, और तू जीता रहेगा: पर यदि तू उसको न फेर दे तो जान रख, कि तू, और तेरे जितने लोग हैं, सब निश्चय मर जाएंगे। ८ बिहान को अबीमेलेक ने तड़के उठकर अपने सब कर्मचारियों को बुलवाकर ये सब बातें सुनाईं: और वे लोग बहुत डर गए। ९ तब अबीमेलेक ने इब्राहीम को बुलवाकर कहा, तू ने हम से यह क्या किया है? और मैं ने तेरा क्या बिगाड़ा था, कि तू ने मेरे और मेरे राज्य के ऊपर ऐसा बड़ा पाप डाल दिया है? तू ने मुझ से वह काम किया है जो उचित न था। १० फिर अबीमेलेक ने इब्राहीम से पूछा, तू ने क्या समझकर ऐसा काम किया? ११ इब्राहीम ने कहा, मैं ने यह सोचा था, कि इस स्थान में परमेश्वर का कुछ भी भय न होगा; सो ये लोग मेरी पत्नी के कारण मेरा घात करेंगे। १२ और फिर भी सचमुच वह मेरी बहिन है, वह मेरे पिता की बेटी तो है, पर मेरी माता की बेटी नहीं; फिर वह मेरी पत्नी हो गई। १३ और ऐसा हुआ कि जब परमेश्वर ने मुझे अपने पिता का घर छोड़कर निकलने की आज्ञा दी, तब मैं ने उस से कहा, इतनी कृपा तुझे मुझ पर करनी होगी: कि हम दोनों जहां जहां जाएं वहां वहां तू मेरे विषय में कहना, कि यह मेरा भाई है। १४ तब अबीमेलेक ने भेड़-बकरी, गाय-बैल, और दास-दासियां लेकर इब्राहीम को दीं, और उसकी पत्नी सारा को भी उसे फेर दिया। १५ और अबीमेलेक ने कहा, देख, मेरा देश तेरे साम्हने है; जहां तुझे भावे वहां रह। १६ और सारा से उस ने कहा, देख, मैं ने तेरे भाई को रुपे के एक हज़ार|टुकड़े दिए हैं: देख, तेरे सारे संगियों के साम्हने वही तेरी आंखों का पर्दा बनेगा, और सभों के साम्हने तू ठीक होगी। १७ तब इब्राहीम ने यहोवा से प्रार्थना की, और यहोवा ने अबीमेलेक, और उसकी पत्नी, और दासियों को चंगा किया और वे जनने लगीं। १८ क्योंकि यहोवा ने इब्राहीम की पत्नी सारा के कारण अबीमेलेक के घर की सब स्त्रियों की कोखों को पूरी रीति से बन्द कर दिया था॥

* मूल में—अपनी हथेलियों की निर्दोषता से।

२१ सो यहोवा ने जैसा कहा था वैसा ही सारा की सुधि लेके उसके साथ अपने वचन के अनुसार किया। २ सो सारा को इब्राहीम से गर्भवती होकर उसके बुढ़ापे में उसी नियुक्त समय पर जो परमेश्वर ने उस से ठहराया था एक पुत्र उत्पन्न हुआ। ३ और इब्राहीम ने अपने उस पुत्र का नाम जो सारा से उत्पन्न हुआ था इसहाक * रखा। ४ और जब उसका पुत्र इसहाक आठ दिन का हुआ, तब उस ने परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार उसका ख़तना किया। ५ और जब इब्राहीम का पुत्र इसहाक उत्पन्न हुआ तब इब्राहीम एक सौ वर्ष का था। ६ और सारा ने कहा, परमेश्वर ने मुझे प्रफुल्लित कर दिया है; इसलिये सब सुननेवाले भी मेरे साथ प्रफुल्लित होंगे। ७ फिर उस ने यह भी कहा, कि क्या कोई कभी इब्राहीम से कह सकता था, कि सारा लड़कों को दूध पिलाएगी? पर देखो, मुझ से उसके बुढ़ापे में एक पुत्र उत्पन्न हुआ। ८ और वह लड़का बढ़ा और उसका दूध छुड़ाया गया: और इसहाक के दूध छुड़ाने के दिन इब्राहीम ने बड़ी जेवनार की। ९ तब सारा को मिस्री हाजिरा का पुत्र, जो इब्राहीम से उत्पन्न हुआ था, हंसी करता हुआ देख पड़ा। १० सो इस कारण उस ने इब्राहीम से कहा, इस दासी को पुत्र सहित बरबस निकाल दे: क्योंकि इस दासी का पुत्र मेरे पुत्र इसहाक के साथ भागी न होगा। ११ यह बात इब्राहीम को अपने पुत्र के कारण बहुत बुरी लगी। १२ तब परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, उस लड़के और अपनी दासी के कारण तुझे बुरा न लगे; जो बात सारा तुझ से कहे, उसे मान, क्योंकि जो तेरा वंश कहलाएगा सो इसहाक ही से चलेगा। १३ दासी के पुत्र से भी मैं एक जाति उत्पन्न करूंगा इसलिये कि वह तेरा वंश है। १४ सो इब्राहीम ने बिहान को तड़के उठकर रोटी और पानी से भरी चमड़े की थैली भी हाजिरा को दी, और उसके कन्धे पर रखी, और उसके लड़के को भी उसे देकर उसको विदा किया: सो वह चली गई, और बेर्शेबा के जंगल में भ्रमण करने लगी। १५ जब थैली का जल चुक गया, तब उस ने लड़के को एक झाड़ी के नीचे छोड़ दिया। १६ और आप उस से तीर भर के टप्पे पर दूर जाकर उसके साम्हने यह सोचकर बैठ गई, कि मुझ को लड़के की मृत्यु देखनी न पड़े। तब वह उसके साम्हने बैठी हुई चिल्ला चिल्ला के रोने लगी। १७ और परमेश्वर ने उस लड़के की सुनी; और उसके दूत ने स्वर्ग मे हाजिरा को पुकार के कहा, हे हाजिरा तुझे क्या हुआ? मत डर; क्योंकि जहां तेरा लड़का है वहां से उसकी आवाज़ परमेश्वर को सुन पड़ी है। १८ उठ, अपने लड़के को उठा और अपने हाथ से सम्भाल क्योंकि मैं उसके द्वारा एक बड़ी जाति बनाऊंगा। १९ परमेश्वर ने उसकी आंखें खोल दीं, और उसको एक कुआं दिखाई पड़ा; सो उस ने जाकर थैली को जल से भरकर लड़के को पिलाया। २० और परमेश्वर उस लड़के के साथ रहा; और जब वह बड़ा हुआ, तब जंगल में रहते रहते धनुर्धारी बन गया। २१ वह तो पारान नाम जंगल में रहा करता था: और उसकी माता ने उसके लिये मिस्र देश से एक स्त्री मंगवाई॥

* अर्थात् हंसी।

२२ उन दिनों में ऐसा हुआ कि अबीमेलेक अपने सेनापति पीकोल को संग लेकर इब्राहीम से कहने लगा, जो कुछ तू करता है उस में परमेश्वर तेरे संग रहता है : २३ सो अब मुझ से यहां इस विषय में परमेश्वर की किरिया खा, कि तू न तो मुझ से छल करेगा, और न कभी मेरे वंश से करेगा, परन्तु जैसी करुणा में ने तुझ पर की है, वैसी ही तू मुझ पर और इस देश पर भी जिस में तू रहता है करेगा। २४ इब्राहीम ने कहा, मैं किरिया खाऊंगा। २५ और इब्राहीम ने अबीमेलेक को एक कुएं के विषय में, जो अबीमेलेक के दासों ने बरीयाई से ले लिया था, उलहना दिया। २६ तब अबीमेलेक ने कहा, मैं नहीं जानता कि किस ने यह काम किया : और तू ने भी मुझे नहीं बताया, और न मैं ने आज से पहिले इसके विषय में कुछ सुना। २७ तब इब्राहीम ने भेड़-बकरी, और गाय-बैल लेकर अबीमेलेक को दिए; और उन दोनों ने आपस में वाचा बान्धी। २८ और इब्राहीम ने भेड़ की सात बच्ची अलग कर रखीं। २९ तब अबीमेलेक ने इब्राहीम से पूछा, इन सात बच्चियों का, जो तू ने अलग कर रखी हैं, क्या प्रयोजन है? ३० उस ने कहा, तू इन सात बच्चियों को इस बात की साक्षी जानकर मेरे हाथ से ले, कि मैं ने यह कुआं खोदा है। ३१ उन दोनों ने जो उस स्थान में आपस में किरिया खाई, इसी कारण उसका नाम बेर्शेबा* पड़ा। ३२ जब उन्हों ने बेर्शेबा में परस्पर वाचा बान्धी, तब अबीमेलेक, और उसका सेनापति पीकोल उठकर पलिश्तियों के देश में लौट गए। ३३ और इब्राहीम ने बेर्शेबा में झाऊ का एक वृक्ष लगाया, और वहां यहोवा, जो सनातन ईश्वर है, उस से प्रार्थना की। ३४ और इब्राहीम पलिश्तियों के देश में बहुत दिनों तक परदेशी होकर रहा॥

* अर्थात् किरिया का कुआं।

(इब्राहीम के परीक्षा में पड़ने का वर्णन)

२२ इन बातों के पश्चात् ऐसा हुआ कि परमेश्वर ने, इब्राहीम से यह कहकर उसकी परीक्षा की, कि हे इब्राहीम : उस ने कहा, देख, मैं यहां हूं*। २ उस ने कहा, अपने पुत्र को अर्थात् अपने एकलौते पुत्र इसहाक को, जिस से तू प्रेम रखता है, संग लेकर मोरिय्याह देश में चला जा; और वहां उसको एक पहाड़ के ऊपर जो मैं तुझे बताऊंगा होमबलि करके चढ़ा। ३ सो इब्राहीम बिहान को तड़के उठा और अपने गदहे पर काठी कसकर अपने दो सेवक, और अपने पुत्र इसहाक को संग लिया, और होमबलि के लिये लकड़ी चीर ली; तब कूच करके उस स्थान की ओर चला, जिसकी चर्चा परमेश्वर ने उस से की थी। ४ तीसरे दिन इब्राहीम ने आंखें उठाकर उस स्थान को दूर से देखा। ५ और उस ने अपने सेवकों से कहा, गदहे के पास यहीं ठहरे रहो; यह लड़का और मैं वहां तक जाकर, और दण्डवत् करके, फिर तुम्हारे पास लौट आऊंगा। ६ सो इब्राहीम ने होमबलि की लकड़ी ले अपने पुत्र इसहाक पर लादी, और आग और छुरी को अपने हाथ में लिया; और वे दोनों एक साथ चल पड़े। ७ इसहाक ने अपने पिता इब्राहीम से कहा,

* मूल में—मुझे देख।

हे मेरे पिता; उस ने कहा, हे मेरे पुत्र, क्या बात है * उस ने कहा, देख, आग और लकड़ी तो हैं; पर होमबलि के लिये भेड़ कहां है ? ८ इब्राहीम ने कहा, हे मेरे पुत्र, परमेश्वर होमबलि की भेड़ का उपाय आप ही करेगा। ९ सो वे दोनों संग संग आगे चलते गए। और वे उस स्थान को जिसे परमेश्वर ने उसको बताया था पहुंचे; तब इब्राहीम ने वहां वेदी बनाकर लकड़ी को चुन चुनकर रखा, और अपने पुत्र इसहाक को बान्ध के वेदी पर की लकड़ी के ऊपर रख दिया। १० और इब्राहीम ने हाथ बढ़ाकर छुरी को ले लिया कि अपने पुत्र को बलि करे। ११ तब यहोवा के दूत ने स्वर्ग से उसको पुकार के कहा, हे इब्राहीम, हे इब्राहीम; उस ने कहा, देख, मैं यहां हूं *। १२ उस ने कहा, उस लड़के पर हाथ मत बढ़ा, और न उस से कुछ कर: क्योंकि तू ने जो मुझ से अपने पुत्र, वरन अपने एकलौते पुत्र को भी, नहीं रख छोड़ा; इस से मैं अब जान गया कि तू परमेश्वर का भय मानता है। १३ तब इब्राहीम ने आंखें उठाईं, और क्या देखा, कि उसके पीछे एक मेढ़ा अपने सींगों से एक झाड़ी में बझा हुआ है: सो इब्राहीम ने जाके उस मेढ़े को लिया, और अपने पुत्र की सन्ती होमबलि करके चढ़ाया। १४ और इब्राहीम ने उस स्थान का नाम यहोवा यिरे † रखा: इसके अनुसार आज तक भी कहा जाता है, कि यहोवा के पहाड़ पर उपाय किया जाएगा। १५ फिर यहोवा के दूत ने दूसरी बार स्वर्ग से इब्राहीम को पुकार के कहा, १६ यहोवा की यह वाणी है, कि मैं अपनी ही यह शपथ खाता हूं, कि तू ने जो यह काम किया है कि अपने पुत्र, वरन अपने एकलौते पुत्र को भी, नहीं रख छोड़ा; १७ इस कारण मैं निश्चय तुझे आशीष दूंगा; और निश्चय तेरे वंश को आकाश के तारागण, और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान अनगिनित करूंगा, और तेरा वंश अपने शत्रुओं के नगरों * का अधिकारी होगा: १८ और पृथ्वी की सारी जातियां अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी: क्योंकि तू ने मेरी बात मानी है। १९ तब इब्राहीम अपने सेवकों के पास लौट आया, और वे सब बेर्शेबा को संग संग गए; और इब्राहीम बेर्शेबा में रहता रहा॥

२० इन बातों के पश्चात् ऐसा हुआ कि इब्राहीम को यह सन्देश मिला, कि मिल्का के तेरे भाई नाहोर से सन्तान उत्पन्न हुए हैं। २१ मिल्का के पुत्र तो ये हुए, अर्थात् उसका जेठा ऊस, और ऊस का भाई बूज, और कमूएल, जो अराम का पिता हुआ। २२ फिर केसेद, हज़ो, पिल्दाश, यिद्लाप, और बतूएल। २३ इन आठों को मिल्का इब्राहीम के भाई नाहोर के जन्माए जनी। और बतूएल ने रिबका को उत्पन्न किया। २४ फिर नाहोर के रूमा नाम एक रखेली भी थी; जिस से तेबह, गहम, तहश, और माका, उत्पन्न हुए॥

(सारा की मृत्यु और अन्त्यक्रिया का वर्णन)

२३ सारा तो एक सौ सत्ताईस बरस की अवस्था को पहुंची; और जब सारा की इतनी अवस्था हुई, २ तब वह किर्यतर्बा में मर गई। यह तो कनान देश में है; और हेब्रोन भी कहलाता है:

* मूल में—मुझे देख।

† अर्थात् यहोवा उपाय करेगा।

* मूल में—फाटक।

सो इब्राहीम सारा के लिये रोने पीटने को वहां गया। ३ तब इब्राहीम अपने मुर्दे के पास से उठकर हित्तियों से कहने लगा, ४ मैं तुम्हारे बीच पाहुन और परदेशी हूं: मुझे अपने मध्य में क़ब्रिस्तान के लिये ऐसी भूमि दो जो मेरी निज की हो जाए, कि मैं अपने मुर्दे को गाड़के अपनी आंख की ओट करूं। ५ हित्तियों ने इब्राहीम से कहा, ६ हे हमारे प्रभु, हमारी सुन: तू तो हमारे बीच में बड़ा * प्रधान है: सो हमारी क़ब्रों में से जिसको तू चाहे उस में अपने मुर्दे को गाड़; हम में से कोई तुझे अपनी क़ब्र के लेने से न रोकेगा, कि तू अपने मुर्दे को उस में गाड़ने न पाए। ७ तब इब्राहीम उठकर खड़ा हुआ, और हित्तियों के सम्मुख, जो उस देश के निवासी थे, दण्डवत् करके कहने लगा, ८ यदि तुम्हारी यह इच्छा हो कि मैं अपने मुर्दे को गाड़के अपनी आंख की ओट करूं, तो मेरी प्रार्थना है, कि सोहर के पुत्र एप्रोन से मेरे लिये बिनती करो, ९ कि वह अपनी मकपेलावाली गुफ़ा, जो उसकी भूमि की सीमा पर है; उसका पूरा दाम लेकर मुझे दे दे, कि वह तुम्हारे बीच क़ब्रिस्तान के लिये मेरी निज भूमि हो जाए। १० और एप्रोन तो हित्तियों के बीच वहां बैठा हुआ था। सो जितने हित्ती उसके नगर के फाटक से होकर भीतर जाते थे, उन सभों के साम्हने उस ने इब्राहीम को उत्तर दिया, ११ कि हे मेरे प्रभु, ऐसा नहीं, मेरी सुन; वह भूमि मैं तुझे देता हूं, और उस में जो गुफ़ा है, वह भी मैं तुझे देता हूं; अपने जातिभाइयों के सम्मुख मैं उसे तुझ को दिए देता हूं: सो अपने मुर्दे को क़ब्र में रख। १२ तब इब्राहीम ने उस देश के निवासियों के साम्हने दण्डवत् की। १३ और उनके सुनते हुए एप्रोन से कहा, यदि तू ऐसा चाहे, तो मेरी सुन: उस भूमि का जो दाम हो, वह मैं देना चाहता हूं; उसे मुझ से ले ले, तब मैं अपने मुर्दे को वहां गाड़ूंगा। १४ एप्रोन ने इब्राहीम को यह उत्तर दिया, १५ कि, हे मेरे प्रभु, मेरी बात सुन; उस भूमि का दाम तो चार सौ शेकेल रूपा है; पर मेरे और तेरे बीच में यह क्या है? अपने मुर्दे को क़ब्र में रख। १६ इब्राहीम ने एप्रोन की मानकर उसको उतना रूपा तौल दिया, जितना उस ने हित्तियों के सुनते हुए कहा था, अर्थात् चार सौ ऐसे शेकेल जो व्यापारियों में चलते थे। १७ सो एप्रोन की भूमि, जो मम्रे के सम्मुख की मकपेला में थी, वह गुफ़ा समेत, और उन सब वृक्षों समेत भी जो उस में और उसके चारों ओर सीमा पर थे, १८ जितने हित्ती उसके नगर के फाटक से होकर भीतर जाते थे, उन सभों के साम्हने इब्राहीम के अधिकार में पक्की रीति से आ गई। १९ इसके पश्चात् इब्राहीम ने अपनी पत्नी सारा को, उस मकपेला-वाली भूमि की गुफ़ा में जो मम्रे के अर्थात् हेब्रोन के साम्हने कनान देश में है, मिट्टी दी। २० और वह भूमि गुफ़ा समेत, जो उस में थी, हित्तियों की ओर से क़ब्रिस्तान के लिये इब्राहीम के अधिकार में पक्की रीति से आ गई॥

(इसहाक के विवाह का वर्णन)

२४ इब्राहीम वृद्ध था और उसकी आयु बहुत थी और यहोवा ने सब

* मूल में—परमेश्वर का।

बातों में उसको आशीष दी थी। २ सो इब्राहीम ने अपने उस दास से, जो उसके घर में पुरनिया और उसकी सारी सम्पत्ति पर अधिकारी था, कहा, अपना हाथ मेरी जांघ के नीचे रख : ३ और मुझ से आकाश और पृथ्वी के परमेश्वर यहोवा की इस विषय में शपथ खा, कि तू मेरे पुत्र के लिये कनानियों की लड़कियों में से, जिनके बीच मैं रहता हूं, किसी को न ले आएगा। ४ परन्तु तू मेरे देश में मेरे ही कुटुम्बियों के पास जाकर मेरे पुत्र इसहाक के लिये एक पत्नी ले आएगा। ५ दास ने उस से कहा, कदाचित् वह स्त्री इस देश में मेरे साथ आना न चाहे; तो क्या मुझे तेरे पुत्र को उस देश में जहां से तू आया है ले जाना पड़ेगा? ६ इब्राहीम ने उस से कहा, चौकस रह, मेरे पुत्र को वहां कभी न ले जाना। ७ स्वर्ग का परमेश्वर यहोवा, जिस ने मुझे मेरे पिता के घर से और मेरी जन्मभूमि से ले आकर मुझ से शपथ खाकर कहा, कि मैं यह देश तेरे वंश को दूंगा; वही अपना दूत तेरे आगे आगे भेजेगा, कि तू मेरे पुत्र के लिये वहां से एक स्त्री ले आए। ८ और यदि वह स्त्री तेरे साथ आना न चाहे तब तो तू मेरी इस शपथ से छूट जाएगा : पर मेरे पुत्र को वहां न ले जाना। ९ तब उस दास ने अपने स्वामी इब्राहीम की जांघ के नीचे अपना हाथ रखकर उस से इसी विषय की शपथ खाई। १० तब वह दास अपने स्वामी के ऊंटों में से दस ऊंट छांटकर उसके सब उत्तम उत्तम पदार्थों में से कुछ कुछ लेकर चला : और मसोपोटामिया * में नाहोर के नगर के पास पहुंचा। ११ और उस ने ऊंटों को नगर के बाहर एक कुएं के पास बैठाया, वह संध्या का समय था, जिस समय स्त्रियां जल भरने के लिये निकलती हैं। १२ सो वह कहने लगा, हे मेरे स्वामी इब्राहीम के परमेश्वर, यहोवा, आज मेरे कार्य को सिद्ध कर, और मेरे स्वामी इब्राहीम पर करुणा कर। १३ देख, मैं जल के इस सोते के पास खड़ा हूं; और नगरवासियों की बेटियां जल भरने के लिये निकली आती हैं : १४ सो ऐसा होने दे, कि जिस कन्या से मैं कहूं, कि अपना घड़ा मेरी ओर झुका, कि मैं पीऊं; और वह कहे, कि ले, पी ले, पीछे मैं तेरे ऊंटों को भी पिलाऊंगी : सो वही हो जिसे तू ने अपने दास इसहाक के लिये ठहराया हो; इसी रीति मैं जान लूंगा कि तू ने मेरे स्वामी पर करुणा की है। १५ और ऐसा हुआ कि जब वह कह ही रहा था कि रिबका, जो इब्राहीम के भाई नाहोर के जन्माये मिल्का के पुत्र, बतूएल की बेटी थी, वह कन्धे पर घड़ा लिये हुए आई। १६ वह अति सुन्दर, और कुमारी थी, और किसी पुरुष का मुंह न देखा था : वह कुएं में सोते के पास उतर गई, और अपना घड़ा भर के फिर ऊपर आई। १७ तब वह दास उस से भेंट करने को दौड़ा, और कहा, अपने घड़े में से थोड़ा पानी मुझे पिला दे। १८ उस ने कहा, हे मेरे प्रभु, ले, पी ले : और उस ने फुर्ती से घड़ा उतारकर हाथ में लिये लिये उसको पिला दिया। १९ जब वह उसको पिला चुकी, तब कहा, मैं तेरे ऊंटों के लिये भी तब तक पानी भर भर लाऊंगी, जब तक वे पी न चुकें। २० तब वह फुर्ती से अपने घड़े का जल हौदे में उण्डेलकर

* अर्थात् दोआब में का अराम।

फिर कुएं पर भरने को दौड़ गई, और उसके सब ऊंटों के लिये पानी भर दिया। २१ और वह पुरुष उसकी ओर चुपचाप अचम्भे के साथ ताकता हुआ यह सोचता था, कि यहोवा ने मेरी यात्रा को सुफल किया है कि नहीं। २२ जब ऊंट पी चुके, तब उस पुरुष ने आध तोले सोने का एक नत्थ निकालकर उसको दिया, और दस तोले सोने के कंगन उसके हाथों में पहिना दिए; २३ और पूछा, तू किस की बेटी है? यह मुझ को बता दे। क्या तेरे पिता के घर में हमारे टिकने के लिये स्थान है? २४ उस ने उत्तर दिया, मैं तो नाहोर के जन्माए मिल्का के पुत्र बतूएल की बेटी हूं। २५ फिर उस ने उस से कहा, हमारे वहां पुआल और चारा बहुत है, और टिकने के लिये स्थान भी है। २६ तब उस पुरुष ने सिर झुकाकर यहोवा को दण्डवत् करके कहा, २७ धन्य है मेरे स्वामी इब्राहीम का परमेश्वर यहोवा, कि उस ने अपनी करुणा और सच्चाई को मेरे स्वामी पर से हटा नहीं लिया: यहोवा ने मुझ को ठीक मार्ग पर चलाकर मेरे स्वामी के भाईबन्धुओं के घर पर पहुंचा दिया है। २८ और उस कन्या ने दौड़कर अपनी माता के घर में यह सारा वृत्तान्त कह सुनाया। २९ तब लाबान जो रिबका का भाई था, सो बाहर कुएं के निकट उस पुरुष के पास दौड़ा गया। ३० और ऐसा हुआ कि जब उस ने वह नत्थ और अपनी बहिन रिबका के हाथों में वे कंगन भी देखे, और उसकी यह बात भी सुनी, कि उस पुरुष ने मुझ से ऐसी बातें कहीं; तब वह उस पुरुष के पास गया; और क्या देखा, कि वह सोते के निकट ऊंटों के पास खड़ा है। ३१ उस ने कहा, हे यहोवा की ओर से धन्य पुरुष भीतर आ: तू क्यों बाहर खड़ा है? मैं ने घर को, और ऊंटों के लिये भी स्थान तैयार किया है। ३२ और वह पुरुष घर में गया; और लाबान ने ऊंटों की काठियां खोलकर पुआल और चारा दिया; और उसके, और उसके संगी जनों के पांव धोने को जल दिया। ३३ तब इब्राहीम के दास के आगे जलपान के लिये कुछ रखा गया: पर उस ने कहा, मैं जब तक अपना प्रयोजन न कह दूं, तब तक कुछ न खाऊंगा। लाबान ने कहा, कह दे। ३४ तब उस ने कहा, मैं तो इब्राहीम का दास हूं। ३५ और यहोवा ने मेरे स्वामी को बड़ी आशीष दी है; सो वह महान पुरुष हो गया है; और उस ने उसको भेड़-बकरी, गाय-बैल, सोना-रूपा, दास-दासियां, ऊंट और गदहे दिए हैं। ३६ और मेरे स्वामी की पत्नी सारा के बुढ़ापे में उस से एक पुत्र उत्पन्न हुआ है: और उस पुत्र को इब्राहीम ने अपना सब कुछ दे दिया है। ३७ और मेरे स्वामी ने मुझे यह शपथ खिलाई, कि मैं उसके पुत्र के लिये कनानियों की लड़कियों में से, जिन के देश में वह रहता है, कोई स्त्री न ले आऊंगा। ३८ मैं उसके पिता के घर, और कुल के लोगों के पास जाकर उसके पुत्र के लिये एक स्त्री ले आऊंगा। ३९ तब मैं ने अपने स्वामी से कहा, कदाचित् वह स्त्री मेरे पीछे न आए। ४० तब उस ने मुझ से कहा, यहोवा, जिसके साम्हने मैं चलता आया हूं, वह तेरे संग अपने दूत को भेजकर तेरी यात्रा को सुफल करेगा; सो तू मेरे कुल, और मेरे पिता के घराने में से मेरे पुत्र के लिये एक स्त्री ले आ सकेगा।

४१ तू तब ही मेरी इस शपथ से छूटेगा, जब तू मेरे कुल के लोगों के पास पहुंचेगा; अर्थात् यदि वे मुझे कोई स्त्री न दें, तो तू मेरी शपथ से छूटेगा। ४२ सो मैं आज उस कुएं के निकट आकर कहने लगा, हे मेरे स्वामी इब्राहीम के परमेश्वर यहोवा, यदि तू मेरी इस यात्रा को सुफल करता हो: ४३ तो देख मैं जल के इस कुएं के निकट खड़ा हूं; सो ऐसा हो, कि जो कुमारी जल भरने के लिये निकल आए, और मैं उस से कहूं, अपने घड़े में से मुझे थोड़ा पानी पिला; ४४ और वह मुझ से कहे, पी ले और मैं तेरे ऊंटों के पीने के लिये भी पानी भर दूंगी: वह वही स्त्री हो जिसको तू ने मेरे स्वामी के पुत्र के लिये ठहराया हो। ४५ मैं मन ही मन यह कह ही रहा था, कि देख रिबका कन्धे पर घड़ा लिये हुए निकल आई; फिर वह सोते के पास उतरके भरने लगी: और मैं ने उस से कहा, मुझे पिला दे। ४६ और उस ने फुर्ती से अपने घड़े को कन्धे पर से उतारके कहा, ले, पी ले, पीछे मैं तेरे ऊंटों को भी पिलाऊंगी: सो मैं ने पी लिया, और उस ने ऊंटों को भी पिला दिया। ४७ तब मैं ने उस से पूछा, कि तू किस की बेटी है? और उस ने कहा, मैं तो नाहोर के जन्माए मिल्का के पुत्र बतूएल की बेटी हूं: तब मैं ने उसकी नाक में वह नत्थ, और उसके हाथों में वे कंगन पहिना दिए। ४८ फिर मैं ने सिर झुकाकर यहोवा को दण्डवत् किया, और अपने स्वामी इब्राहीम के परमेश्वर यहोवा को धन्य कहा, क्योंकि उस ने मुझे ठीक मार्ग से पहुंचाया कि मैं अपने स्वामी के पुत्र के लिये उसकी भतीजी को ले जाऊं। ४९ सो अब, यदि तुम मेरे स्वामी के साथ कृपा और सच्चाई का व्यवहार करना चाहते हो, तो मुझ से कहो: और यदि नहीं चाहते हो, तौभी मुझ से कह दो; ताकि मैं दाहिनी ओर, वा बाईं ओर फिर जाऊं। ५० तब लाबान और बतूएल ने उत्तर दिया, यह बात यहोवा की ओर से हुई है: सो हम लोग तुझ से न तो भला कह सकते हैं न बुरा। ५१ देख, रिबका तेरे साम्हने है, उसको ले जा, और वह यहोवा के वचन के अनुसार, तेरे स्वामी के पुत्र की पत्नी हो जाए। ५२ उनका यह वचन सुनकर, इब्राहीम के दास ने भूमि पर गिरके यहोवा को दण्डवत् किया। ५३ फिर उस दास ने सोने और रूपे के गहने, और वस्त्र निकालकर रिबका को दिए: और उसके भाई और माता को भी उस ने अनमोल अनमोल वस्तुएं दीं। ५४ तब उस ने अपने संगी जनों समेत भोजन किया, और रात वहीं बिताई: और तड़के उठकर कहा, मुझ को अपने स्वामी के पास जाने के लिये विदा करो। ५५ रिबका के भाई और माता ने कहा, कन्या को हमारे पास कुछ दिन, अर्थात् कम से कम दस दिन रहने दे; फिर उसके पश्चात् वह चली जाएगी। ५६ उस ने उन से कहा, यहोवा ने जो मेरी यात्रा को सुफल किया है; सो तुम मुझे मत रोको अब मुझे विदा कर दो, कि मैं अपने स्वामी के पास जाऊं। ५७ उन्हों ने कहा, हम कन्या को बुलाकर पूछते हैं, और देखेंगे, कि वह क्या कहती है। ५८ सो उन्हों ने रिबका को बुलाकर उस से पूछा, क्या तू इस मनुष्य के संग जाएगी? उस ने कहा, हां मैं जाऊंगी। ५९ तब उन्हों ने अपनी बहिन रिबका, और उसकी धाय और

इब्राहीम के दास, और उसके साथी सभों को विदा किया। ६० और उन्हों ने रिबका को आशीर्वाद देके कहा, हे हमारी बहिन, तू हजारों लाखों की आदिमाता हो, और तेरा वंश अपने बैरियों के नगरों * का अधिकारी हो। ६१ इस पर रिबका अपनी सहेलियों समेत चली; और ऊंट पर चढ़के उस पुरुष के पीछे हो ली: सो वह दास रिबका को साथ लेकर चल दिया। ६२ इसहाक जो दक्खिन देश में रहता था, सो लहैरोई नाम कुएं से होकर चला आता था। ६३ और सांझ के समय वह मैदान में ध्यान करने के लिये निकला था: और उस ने आंखें उठाकर क्या देखा, कि ऊंट चले आ रहे हैं। ६४ और रिबका ने भी आंख उठाकर इसहाक को देखा, और देखते ही ऊंट पर से उतर पड़ी। ६५ तब उस ने दास से पूछा, जो पुरुष मैदान पर हम से मिलने को चला आता है, सो कौन है? दास ने कहा, वह तो मेरा स्वामी है। तब रिबका ने घूंघट लेकर अपने मुंह को ढांप लिया। ६६ और दास ने इसहाक से अपना सारा वृत्तान्त वर्णन किया। ६७ तब इसहाक रिबका को अपनी माता सारा के तम्बू में ले आया, और उसको ब्याहकर उस से प्रेम किया: और इसहाक को माता की मृत्यु के पश्चात † शान्ति हुई॥

(इब्राहीम के उत्तरचरित्र और मृत्यु का वर्णन)

२५ तब इब्राहीम ने एक और पत्नी ब्याह ली जिसका नाम कतूरा था। २ और उस से जिम्रान, योक्षान, मदना, मिद्यान, यिशबाक, और शूह उत्पन्न हुए। ३ और योक्षान से शबा और ददान उत्पन्न हुए। और ददान के वंश में अश्शूरी, लतूशी, और लुम्मी लोग हुए। ४ और मिद्यान के पुत्र एपा, एपेर, हनोक, अबीदा, और एल्दा हुए, ये सब कतूरा के सन्तान हुए। ५ इसहाक को तो इब्राहीम ने अपना सब कुछ दिया। ६ पर अपनी रखेलियों के पुत्रों को, कुछ कुछ देकर अपने जीते जी अपने पुत्र इसहाक के पास से पूरब देश में भेज दिया। ७ इब्राहीम की सारी अवस्था एक सौ पचहत्तर वर्ष की हुई। ८ और इब्राहीम का दीर्घायु होने के कारण अर्थात् पूरे बुढ़ापे की अवस्था में प्राण छूट गया। और वह अपने लोगों में जा मिला। ९ और उसके पुत्र इसहाक और इश्माएल ने, हित्ती सोहर के पुत्र एप्रोन की मम्रे के सम्मुखवाली भूमि में, जो मकपेला की गुफ़ा थी, उस में उसको मिट्टी दी; १० अर्थात् जो भूमि इब्राहीम ने हित्तियों से मोल ली थी: उसी में इब्राहीम, और उस की पत्नी सारा, दोनों को मिट्टी दी गई। ११ इब्राहीम के मरने के पश्चात् परमेश्वर ने उसके पुत्र इसहाक को जो लहैरोई नाम कुएं के पास रहता था आशीष दी॥

(इश्माएल की वंशावली)

१२ इब्राहीम का पुत्र इश्माएल जो सारा की लौंडी हाजिरा मिस्री से उत्पन्न हुआ था, उसकी यह वंशावली है। १३ इश्माएल के पुत्रों के नाम और वंशावली यह है: अर्थात् इश्माएल का जेठा पुत्र नबायोत, फिर केदार, अद्बेल, मिबसाम, १४ मिश्मा, दूमा, मस्सा, १५ हदर, तेमा, यतूर, नापीश, और केदमा। १६ इश्माएल के पुत्र ये ही हुए, और इन्हीं के नामों

* मूल में—फाटक।
† मूल में—अपनी माता के पीछे।

के अनुसार इनके गांवों, और छावनियों के नाम भी पड़े; और ये ही बारह अपने अपने कुल के प्रधान * हुए। १७ इश्माएल की सारी अवस्था एक सौ सैंतीस वर्ष की हुई: तब उसके प्राण छूट गए, और वह अपने लोगों में जा मिला। १८ और उसके वंश हवीला से शूर तक, जो मिस्र के सम्मुख अश्शूर के मार्ग में है, बस गए। और उनका भाग उनके सब भाईबन्धुओं के सम्मुख पड़ा॥

(इसहाक के पुत्रों की उत्पत्ति का वर्णन)

१९ इब्राहीम के पुत्र इसहाक की वंशावली यह है: इब्राहीम से इसहाक उत्पन्न हुआ। २० और इसहाक ने चालीस वर्ष का होकर रिबका को, जो पद्दनराम † के वासी, अरामी बतूएल की बेटी, और अरामी लाबान की बहिन थी, ब्याह लिया। २१ इसहाक की पत्नी तो बांझ थी, सो उस ने उसके निमित्त यहोवा से बिनती की: और यहोवा ने उसकी बिनती सुनी, सो उसकी पत्नी रिबका गर्भवती हुई। २२ और लड़के उसके गर्भ में आपस में लिपटके एक दूसरे को मारने लगे: तब उस ने कहा, मेरी जो ऐसी ही दशा रहेगी तो मैं क्योंकर जीवित रहूंगी? और वह यहोवा की इच्छा पूछने को गई।

२३ तब यहोवा ने उस से कहा,
तेरे गर्भ में दो जातियां हैं,
और तेरी कोख से निकलते ही दो
राज्य के लोग अलग अलग होंगे,
और एक राज्य के लोग दूसरे से
अधिक सामर्थी होंगे और बड़ा
बेटा छोटे के अधीन होगा।

* मूल में—अनुसार।
† अर्थात् अराम का मैदान।

२४ जब उसके पुत्र उत्पन्न होने का समय आया, तब क्या प्रगट हुआ, कि उसके गर्भ में जुड़वे बालक हैं। २५ और पहिला जो उत्पन्न हुआ सो लाल निकला, और उसका सारा शरीर कम्बल के समान रोममय था; सो उसका नाम एसाव * रखा गया। २६ पीछे उसका भाई अपने हाथ से एसाव की एड़ी पकड़े हुए उत्पन्न हुआ; और उसका नाम याक़ूब † रखा गया। और जब रिबका ने उनको जन्म दिया तब इसहाक साठ वर्ष का था। २७ फिर वे लड़के बढ़ने लगे और एसाव तो वनवासी होकर चतुर शिकार खेलनेवाला हो गया, पर याक़ूब सीधा मनुष्य था, और तम्बुओं में रहा करता था। २८ और इसहाक तो एसाव के अहेर का मांस खाया करता था, इसलिये वह उस से प्रीति रखता था: पर रिबका याक़ूब से प्रीति रखती थी॥

२९ याक़ूब भोजन के लिये कुछ दाल पका रहा था: और एसाव मैदान से थका हुआ आया। ३० तब एसाव ने याक़ूब से कहा, वह जो लाल वस्तु है, उसी लाल वस्तु में से मुझे कुछ खिला, क्योंकि मैं थका हूं। इसी कारण उसका नाम एदोम् ‡ भी पड़ा। ३१ याक़ूब ने कहा, अपना पहिलौठे का अधिकार आज मेरे हाथ बेच दे। ३२ एसाव ने कहा, देख, मैं तो अभी मरने पर हूं: सो पहिलौठे के अधिकार से मेरा क्या लाभ होगा? ३३ याक़ूब ने कहा, मुझ से अभी शपथ खा: सो उस ने उस से शपथ खाई: और अपना पहिलौठे का अधिकार याक़ूब

* अर्थात् रोंआर।
† अर्थात् अड़ङ्गा मारनेहारा।
‡ अर्थात् लाल।

के हाथ बेच डाला। ३४ इस पर याकूब ने एसाव को रोटी और पकाई हुई मसूर की दाल दी; और उस ने खाया पिया, तब उठकर चला गया। यों एसाव ने अपना पहिलौठे का अधिकार तुच्छ जाना॥

(इसहाक का वृत्तान्त)

२६ और उस देश में अकाल पड़ा, वह उस पहिले अकाल से अलग था जो इब्राहीम के दिनों में पड़ा था! सो इसहाक गरार को पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक के पास गया। २ वहां यहोवा ने उसको दर्शन देकर कहा, मिस्र में मत जा; जो देश मैं तुझे बताऊं उसी में रह। ३ तू इसी देश में रह, और मैं तेरे संग रहूंगा, और तुझे आशीष दूंगा; और ये सब देश मैं तुझ को, और तेरे वंश को दूंगा; और जो शपथ मैं ने तेरे पिता इब्राहीम से खाई थी, उसे मैं पूरी करूंगा। ४ और मैं तेरे वंश को आकाश के तारागण के समान करूंगा। और मैं तेरे वंश को ये सब देश दूंगा, और पृथ्वी की सारी जातियां तेरे वंश के कारण अपने को धन्य मानेंगी। ५ क्योंकि इब्राहीम ने मेरी मानी, और जो मैं ने उसे सौंपा था उसको और मेरी आज्ञाओं विधियों, और व्यवस्था का पालन किया। ६ सो इसहाक गरार में रह गया। ७ जब उस स्थान के लोगों ने उसकी पत्नी के विषय में पूछा, तब उस ने यह सोचकर कि यदि मैं उसको अपनी पत्नी कहूं, तो यहां के लोग रिबका के कारण जो परम सुन्दरी है मुझ को मार डालेंगे, उत्तर दिया, वह तो मेरी बहिन है। ८ जब उसको वहां रहते बहुत दिन बीत गए, तब एक दिन पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक ने खिड़की में से झांकके क्या देखा, कि इसहाक अपनी पत्नी रिबका के साथ क्रीड़ा कर रहा है। ९ तब अबीमेलेक ने इसहाक को बुलवाकर कहा, वह तो निश्चय तेरी पत्नी है; फिर तू ने क्योंकर उसको अपनी बहिन कहा? इसहाक ने उत्तर दिया, मैं न सोचा था, कि ऐसा न हो कि उसके कारण मेरी मृत्यु हो। १० अबीमेलेक ने कहा, तू ने हम से यह क्या किया? ऐसे तो प्रजा में से कोई तेरी पत्नी के साथ सहज से कुकर्म कर सकता, और तू हम को पाप में फंसाता। ११ और अबीमेलेक ने अपनी सारी प्रजा को आज्ञा दी, कि जो कोई उस पुरुष को वा उस स्त्री को छूएगा, सो निश्चय मार डाला जाएगा। १२ फिर इसहाक ने उस देश में जोता बोया, और उसी वर्ष में सौ गुणा फल पाया: और यहोवा ने उसको आशीष दी। १३ और वह बढ़ा, और उसकी उन्नति होती चली गई, यहां तक कि वह अति महान पुरुष हो गया। १४ जब उसके भेड़-बकरी, गाय-बैल, और बहुत से दास-दासियां हुईं, तब पलिश्ती उस से डाह करने लगे। १५ सो जितने कुओं को उसके पिता इब्राहीम के दासों ने इब्राहीम के जीते जी खोदा था, उनको पलिश्तियों ने मिट्टी से भर दिया। १६ तब अबीमेलेक ने इसहाक से कहा, हमारे पास से चला जा; क्योंकि तू हम से बहुत सामर्थी हो गया है। १७ सो इसहाक वहां से चला गया, और गरार के नाले में अपना तम्बू खड़ा करके वहां रहने लगा। १८ तब जो कुएं उसके पिता इब्राहीम के दिनों में खोदे गए थे, और इब्राहीम के मरने के पीछे पलिश्तियों ने भर दिए थे, उनको इसहाक ने फिर से खुदवाया; और उनके वे ही

नाम रखे, जो उसके पिता ने रखे थे। १६ फिर इसहाक के दासों को नाले में खोदते खोदते बहते जल का एक सोता मिला। २० तब गरारी चरवाहों ने इसहाक के चरवाहों से झगड़ा किया, और कहा, कि यह जल हमारा है। सो उस ने उस कुएं का नाम एसेक * रखा; इसलिये कि वे उस से झगड़े थे। २१ फिर उन्हों ने दूसरा कुआं खोदा; और उन्हों ने उसके लिये भी झगड़ा किया, सो उस ने उसका नाम सित्रा † रखा। २२ तब उस ने वहां से कूच करके एक और कुआं खुदवाया; और उसके लिये उन्हों ने झगड़ा न किया; सो उस ने उसका नाम यह कहकर रहोबोत ‡ रखा, कि अब तो यहोवा ने हमारे लिये बहुत स्थान दिया है, और हम इस देश में फूलें-फलेंगे। २३ वहां से वह बेर्शेबा को गया। २४ और उसी दिन यहोवा ने रात को उसे दर्शन देकर कहा, मैं तेरे पिता इब्राहीम का परमेश्वर हूं; मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूं, और अपने दास इब्राहीम के कारण तुझे आशीष दूंगा, और तेरा वंश बढ़ाऊंगा। २५ तब उस ने वहां एक वेदी बनाई, और यहोवा से प्रार्थना की, और अपना तम्बू वहीं खड़ा किया; और वहां इसहाक के दासों ने एक कुआं खोदा। २६ तब अबीमेलेक अपने मित्र अहुज्जत, और अपने सेनापति पीकोल को संग लेकर, गरार से उसके पास गया। २७ इसहाक ने उन से कहा, तुम ने मुझ से बैर करके अपने बीच से निकाल दिया था; सो अब मेरे पास क्यों आए हो? २८ उन्हों ने कहा, हम ने तो प्रत्यक्ष देखा

* अर्थात् झगड़ा।
† अर्थात् विरोध।
‡ अर्थात् चौड़ा स्थान।

है, कि यहोवा तेरे साथ रहता है: सो हम ने सोचा, कि तू तो यहोवा की ओर से धन्य है, सो हमारे तेरे बीच में शपथ खाई जाए, और हम तुझ से इस विषय की वाचा बन्धाएं; २६ कि जैसे हम ने तुझे नहीं छूआ, वरन तेरे साथ निरी भलाई की है, और तुझ को कुशल क्षेम से विदा किया, उसके अनुसार तू भी हम से कोई बुराई न करेगा। ३० तब उस ने उनकी जेवनार की, और उन्हों ने खाया पिया। ३१ बिहान को उन सभों ने तड़के उठकर आपस में शपथ खाई; तब इसहाक ने उनको विदा किया, और वे कुशल क्षेम से उसके पास से चले गए। ३२ उसी दिन इसहाक के दासों ने आकर अपने उस खोदे हुए कुएं का वृत्तान्त सुना के कहा, कि हम को जल का एक सोता मिला है। ३३ तब उस ने उसका नाम शिबा * रखा: इसी कारण उस नगर का नाम आज तक बेर्शेबा † पड़ा है॥

३४ जब एसाव चालीस वर्ष का हुआ, तब उस ने हित्ती बेरी की बेटी यहूदीत, और हित्ती एलोन की बेटी बाशमत को ब्याह लिया। ३५ और इन स्त्रियों के कारण इसहाक और रिबका के मन को खेद हुआ॥

(याकूब और एसाव को आशीर्वाद मिलने का वर्णन)

२७ जब इसहाक बूढ़ा हो गया, और उसकी आंखें ऐसी धुंधली पड़ गईं, कि उसको सूझता न था, तब उस ने अपने जेठे पुत्र एसाव को बुलाकर कहा, हे मेरे पुत्र; उस ने कहा, क्या

* अर्थात् शपथ।
† अर्थात् किरिया का कुआं।

आज्ञा। २ उस ने कहा, सुन, मैं तो बूढ़ा हो गया हूं, और नहीं जानता कि मेरी मृत्यु का दिन कब होगा: ३ सो अब तू अपना तरकश और धनुष आदि हथियार लेकर मैदान में जा, और मेरे लिये हिरन का अहेर कर ले आ। ४ तब मेरी रुचि के अनुसार स्वादिष्ट भोजन बनाकर मेरे पास ले आना, कि मैं उसे खाकर मरने से पहले तुझे जी भर के आशीर्वाद दूं। ५ तब एसाव अहेर करने को मैदान में गया। जब इसहाक एसाव से यह बात कह रहा था, तब रिबका सुन रही थी। ६ सो उस ने अपने पुत्र याक़ूब से कहा सुन, मैं ने तेरे पिता को तेरे भाई एसाव से यह कहते सुना, ७ कि तू मेरे लिये अहेर करके उसका स्वादिष्ट भोजन बना, कि मैं उसे खाकर तुझे यहोवा के आगे मरने से पहिले आशीर्वाद दूं। ८ सो अब, हे मेरे पुत्र, मेरी सुन, और यह आज्ञा मान, ९ कि बकरियों के पास जाकर बकरियों के दो अच्छे अच्छे बच्चे ले आ; और मैं तेरे पिता के लिये उसकी रुचि के अनुसार उन के मांस का स्वादिष्ट भोजन बनाऊंगी। १० तब तू उसको अपने पिता के पास ले जाना, कि वह उसे खाकर मरने से पहिले तुझ को आशीर्वाद दे। ११ याक़ूब ने अपनी माता रिबका से कहा, सुन, मेरा भाई एसाव तो रोंआर पुरुष है, और मैं रोमहीन पुरुष हूं। १२ कदाचित मेरा पिता मुझे टटोलने लगे, तो मैं उसकी दृष्टि में ठग ठहरूंगा; और आशीष के बदले शाप ही कमाऊंगा। १३ उसकी माता ने उस से कहा, हे मेरे पुत्र, शाप तुझ पर नहीं* मुझी पर पड़े, तू केवल मेरी सुन, और जाकर वे बच्चे मेरे पास ले आ। १४ तब याक़ूब जाकर उनको अपनी माता के पास ले आया, और माता ने उसके पिता की रुचि के अनुसार स्वादिष्ट भोजन बना दिया। १५ तब रिबका ने अपने पहिलौठे पुत्र एसाव के सुन्दर वस्त्र, जो उसके पास घर में थे, लेकर अपने लहुरे पुत्र याक़ूब को पहिना दिए। १६ और बकरियों के बच्चों की खालों को उसके हाथों में और उसके चिकने गले में लपेट दिया। १७ और वह स्वादिष्ट भोजन और अपनी बनाई हुई रोटी भी अपने पुत्र याक़ूब के हाथ में दे दी। १८ सो वह अपने पिता के पास गया, और कहा, हे मेरे पिता: उस ने कहा क्या बात है*? हे मेरे पुत्र, तू कौन है? १९ याक़ूब ने अपने पिता से कहा, मैं तेरा जेठा पुत्र एसाव हूं। मैं ने तेरी आज्ञा के अनुसार किया है; सो उठ और बैठकर मेरे अहेर के मांस में से खा, कि तू जी से मुझे आशीर्वाद दे। २० इसहाक ने अपने पुत्र से कहा, हे मेरे पुत्र, क्या कारण है कि वह तुझे इतनी जल्दी मिल गया? उस ने यह उत्तर दिया, कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने उसको मेरे साम्हने कर दिया। २१ फिर इसहाक ने याक़ूब से कहा, हे मेरे पुत्र, निकट आ, मैं तुझे टटोलकर जानूं, कि तू सचमुच मेरा पुत्र एसाव है वा नहीं। २२ तब याक़ूब अपने पिता इसहाक के निकट गया, और उस ने उसको टटोलकर कहा, बोल तो याक़ूब का सा है, पर हाथ एसाव ही के से जान पड़ते हैं। २३ और उस ने उसको नहीं चीन्हा, क्योंकि उसके हाथ उसके भाई

* मूल में—तेरा शाप।

* मूल में—मुझे देख।

के से रोंआर थे। सो उस ने उसको आशीर्वाद दिया। २४ और उस ने पूछा, क्या तू सचमुच मेरा पुत्र एसाव है? उस ने कहा, हां मैं हूं। २५ तब उस ने कहा, भोजन को मेरे निकट ले आ, कि मैं, अपने पुत्र के अहेर के मांस में से खाकर, तुझे जी से आशीर्वाद दूं। तब वह उसको उसके निकट ले आया, और उस ने खाया; और वह उसके पास दाखमधु भी लाया, और उस ने पिया। २६ तब उसके पिता इसहाक ने उस से कहा, हे मेरे पुत्र, निकट आकर मुझे चूम। २७ उस ने निकट जाकर उसको चूमा। और उस ने उसके वस्त्रों का सुगन्ध पाकर उसको वह आशीर्वाद दिया, कि

देख, मेरे पुत्र का सुगन्ध जो
ऐसे खेत का सा है जिस पर यहोवा
ने आशीष दी हो:
२८ सो परमेश्वर तुझे आकाश से ओस,
और भूमि की उत्तम से उत्तम
उपज,
और बहुत सा अनाज और नया
दाखमधु दे:
२९ राज्य राज्य के लोग तेरे अधीन हों,
और देश देश के लोग तुझे दण्डवत्
करें:
तू अपने भाइयों का स्वामी हो,
और तेरी माता के पुत्र तुझे
दण्डवत् करें:
जो तुझे शाप दें सो आप ही
स्रापित हों,
और जो तुझे आशीर्वाद दें सो
आशीष पाएं॥

३० यह आशीर्वाद इसहाक याक़ूब को दे ही चुका, और याक़ूब अपने पिता इसहाक के साम्हने से निकला ही था, कि एसाव अहेर लेकर आ पहुंचा। ३१ तब वह भी स्वादिष्ट भोजन बनाकर अपने पिता के पास ले आया, और उस से कहा, हे मेरे पिता, उठकर अपने पुत्र के अहेर का मांस खा, ताकि मुझे जी से आशीर्वाद दे। ३२ उसके पिता इसहाक ने पूछा, तू कौन है? उस ने कहा, मैं तेरा जेठा पुत्र एसाव हूं। ३३ तब इसहाक ने अत्यन्त थरथर कांपते हुए कहा, फिर वह कौन था जो अहेर करके मेरे पास ले आया था, और मैं ने तेरे आने से पहिले सब में से कुछ कुछ खा लिया और उसको आशीर्वाद दिया? वरन उसको आशीष लगी भी रहेगी। ३४ अपने पिता की यह बात सुनते ही एसाव ने अत्यन्त ऊंचे और दुःख भरे स्वर से चिल्लाकर अपने पिता से कहा, हे मेरे पिता, मुझ को भी आशीर्वाद दे। ३५ उस ने कहा, तेरा भाई धूर्तता से आया, और तेरे आशीर्वाद को लेके चला गया। ३६ उस ने कहा, क्या उसका नाम याक़ूब यथार्थ नहीं रखा गया? उस ने मुझे दो बार अड़ङ्गा मारा, मेरा पहिलौठे का अधिकार तो उस ने ले ही लिया था: और अब देख, उस ने मेरा आशीर्वाद भी ले लिया है: फिर उस ने कहा, क्या तू ने मेरे लिये भी कोई आशीर्वाद नहीं सोच रखा है? ३७ इसहाक ने एसाव को उत्तर देकर कहा, सुन, मैं ने उसको तेरा स्वामी ठहराया, और उसके सब भाइयों को उसके अधीन कर दिया, और अनाज और नया दाखमधु देकर उसको पुष्ट किया है: सो अब, हे मेरे पुत्र, मैं तेरे लिये क्या करूं? ३८ एसाव ने अपने पिता से कहा, हे मेरे पिता, क्या तेरे मन में एक ही आशीर्वाद है? हे मेरे पिता, मुझ को भी आशीर्वाद दे: यों कहकर एसाव फूट

फूटके रोया। ३९ उसके पिता इसहाक ने उस से कहा,

सुन, तेरा निवास उपजाऊ भूमि
पर हो,
और ऊपर से आकाश की ओस उस
पर पड़े॥
४० और तू अपनी तलवार के बल से
जीवित रहे,
और अपने भाई के अधीन तो
होए;
पर जब तू स्वाधीन हो जाएगा,
तब उसके जूए को अपने कन्धे *
पर से तोड़ फेंके।

४१ एसाव ने तो याक़ूब से अपने पिता के दिए हुए आशीर्वाद के कारण बैर रखा; सो उस ने सोचा, कि मेरे पिता के अन्तकाल † का दिन निकट है, फिर मैं अपने भाई याक़ूब को घात करूंगा। ४२ जब रिबका को अपने पहिलौठे पुत्र एसाव की ये बातें बताई गईं, तब उस ने अपने लहुरे पुत्र याक़ूब को बुलाकर कहा, सुन, तेरा भाई एसाव तुझे घात करने के लिये अपने मन को धीरज दे रहा है। ४३ सो अब, हे मेरे पुत्र, मेरी सुन, और हारान को मेरे भाई लाबान के पास भाग जा; ४४ और थोड़े दिन तक, अर्थात् जब तक तेरे भाई का क्रोध न उतरे तब तक उसी के पास रहना। ४५ फिर जब तेरे भाई का क्रोध तुझ पर से उतरे, और जो काम तू ने उस से किया है उसको वह भूल जाए; तब मैं तुझे वहां से बुलवा भेजूंगी: ऐसा क्यों हो कि एक ही दिन में मुझे तुम दोनों से रहित होना पड़े?

* मूल में—अपनी गर्दन।
† मूल में—शोक।

४६ फिर रिबका ने इसहाक से कहा, हित्ती लड़कियों के कारण मैं अपने प्राण से घिन करती हूं; सो यदि ऐसी हित्ती लड़कियों में से, जैसी इस देश की लड़कियां हैं, याक़ूब भी एक को कहीं ब्याह ले, तो मेरे जीवन में क्या लाभ होगा?

२८ तब इसहाक ने याक़ूब को बुलाकर आशीर्वाद दिया, और आज्ञा दी, कि तू किसी कनानी लड़की को न ब्याह लेना। २ पद्दनराम में अपने नाना बतूएल के घर जाकर वहां अपने मामा लाबान की एक बेटी को ब्याह लेना। ३ और सर्वशक्तिमान ईश्वर तुझे आशीष दे, और फुला-फलाकर बढ़ाए, और तू राज्य राज्य की मण्डली का मूल हो। ४ और वह तुझे और तेरे वंश को भी इब्राहीम की सी आशीष दे, कि तू यह देश जिस में तू परदेशी होकर रहता है, और जिसे परमेश्वर ने इब्राहीम को दिया था, उसका अधिकारी हो जाए। ५ और इसहाक ने याक़ूब को विदा किया, और वह पद्दनराम को अरामी बतूएल के उस पुत्र लाबान के पास चला, जो याक़ूब और एसाव की माता रिबका का भाई था। ६ जब इसहाक ने याक़ूब को आशीर्वाद देकर पद्दनराम भेज दिया, कि वह वहीं से पत्नी ब्याह लाए, और उसको आशीर्वाद देने के समय यह आज्ञा भी दी, कि तू किसी कनानी लड़की को ब्याह न लेना; ७ और याक़ूब माता पिता की मानकर पद्दनराम को चल दिया; ८ तब एसाव यह सब देख के और यह भी सोचकर, कि कनानी लड़कियां मेरे पिता इसहाक को बुरी लगती हैं, ९ इब्राहीम के पुत्र इश्माएल के पास गया, और इश्माएल की बेटी महलत

को, जो नबायोत की बहिन थी, ब्याहकर अपनी पत्नियों में मिला लिया ॥

(याक़ूब के परदेश जाने का वर्णन)

१० सो याक़ूब बेर्शेबा से निकलकर हारान की ओर चला। ११ और उस ने किसी स्थान में पहुंचकर रात वहीं बिताने का विचार किया, क्योंकि सूर्य अस्त हो गया था; सो उस ने उस स्थान के पत्थरों में से एक पत्थर ले अपना तकिया बनाकर रखा, और उसी स्थान में सो गया। १२ तब उस ने स्वप्न में क्या देखा, कि एक सीढ़ी पृथ्वी पर खड़ी है, और उसका सिरा स्वर्ग तक पहुंचा है: और परमेश्वर के दूत उस पर से चढ़ते उतरते हैं। १३ और यहोवा उसके ऊपर खड़ा होकर कहता है, कि मैं यहोवा, तेरे दादा इब्राहीम का परमेश्वर, और इसहाक का भी परमेश्वर हूं: जिस भूमि पर तू पड़ा है, उसे मैं तुझ को और तेरे वंश को दूंगा। १४ और तेरा वंश भूमि की धूल के किनकों के समान बहुत होगा, और पच्छिम, पूरब, उत्तर, दक्खिन, चारों ओर फैलता जाएगा: और तेरे और तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे कुल आशीष पाएंगे। १५ और सुन, मैं तेरे संग रहूंगा, और जहां कहीं तू जाए वहां तेरी रक्षा करूंगा, और तुझे इस देश में लौटा ले आऊंगा: मैं अपने कहे हुए को जब तक पूरा न कर लूं तब तक तुझ को न छोड़ूंगा। १६ तब याक़ूब जाग उठा, और कहने लगा, निश्चय इस स्थान में यहोवा है; और मैं इस बात को न जानता था। १७ और भय खाकर उस ने कहा, यह स्थान क्या ही भयानक है! यह तो परमेश्वर के भवन को छोड़ और कुछ नहीं हो सकता; वरन यह स्वर्ग का फाटक ही होगा। १८ भोर को याक़ूब तड़के उठा, और अपने तकिए का पत्थर लेकर उसका खम्भा खड़ा किया, और उसके सिरे पर तेल डाल दिया। १९ और उस ने उस स्थान का नाम बेतेल* रखा; पर उस नगर का नाम पहिले लूज था। २० और याक़ूब ने यह मन्नत मानी, कि यदि परमेश्वर मेरे संग रहकर इस यात्रा में मेरी रक्षा करे, और मुझे खाने के लिये रोटी, और पहिनने के लिये कपड़ा दे, २१ और मैं अपने पिता के घर में कुशल क्षेम से लौट आऊं: तो यहोवा मेरा परमेश्वर ठहरेगा। २२ और यह पत्थर, जिसका मैं ने खम्भा खड़ा किया है, परमेश्वर का भवन ठहरेगा: और जो कुछ तू मुझे दे उसका दशमांश मैं अवश्य ही तुझे दिया करूंगा ॥

(याक़ूब के विवाहों और उसके पुत्रों की उत्पत्ति का वर्णन)

२९ फिर याक़ूब ने अपना मार्ग लिया, और पूर्बियों के देश में आया। २ और उस ने दृष्टि करके क्या देखा, कि मैदान में एक कुआं है, और उसके पास भेड़-बकरियों के तीन झुण्ड बैठे हुए हैं; क्योंकि जो पत्थर उस कुएं के मुंह पर धरा रहता था, जिस में से झुण्डों को जल पिलाया जाता था, वह भारी था। ३ और जब सब झुण्ड वहां इकट्ठे हो जाते तब चरवाहे उस पत्थर को कुएं के मुंह पर से लुढ़काकर भेड़-बकरियों को पानी पिलाते, और फिर पत्थर को कुएं के मुंह पर ज्यों का त्यों रख देते थे। ४ सो याक़ूब ने चरवाहों से पूछा, हे मेरे भाइयो,

* अर्थात् ईश्वर का भवन।

तुम कहां के हो? उन्हों ने कहा, हम हारान के हैं। ५ तब उस ने उन से पूछा, क्या तुम नाहोर के पोते लाबान को जानते हो? उन्हों ने कहा, हां, हम उसे जानते हैं। ६ फिर उस ने उन से पूछा, क्या वह कुशल से है? उन्हों ने कहा, हां, कुशल से तो है और वह देख, उसकी बेटी राहेल भेड़-बकरियों को लिये हुए चली आती है। ७ उस ने कहा, देखो, अभी तो दिन बहुत है, पशुओं के इकट्ठे होने का समय नहीं: सो भेड़-बकरियों को जल पिलाकर फिर ले जाकर चराओ। ८ उन्हों ने कहा, हम अभी ऐसा नहीं कर सकते, जब सब झुण्ड इकट्ठे होते हैं तब पत्थर कुएं के मुंह पर से लुढ़काया जाता है, और तब हम भेड़-बकरियों को पानी पिलाते हैं। ९ उनकी यह बातचीत हो ही रही थी, कि राहेल जो पशु चराया करती थी, सो अपने पिता की भेड़-बकरियों को लिये हुए आ गई। १० अपने मामा लाबान की बेटी राहेल को, और उसकी भेड़-बकरियों को भी देखकर याक़ूब ने निकट जाकर कुएं के मुंह पर से पत्थर को लुढ़काकर अपने मामा लाबान की भेड़-बकरियों को पानी पिलाया। ११ तब याक़ूब ने राहेल को चूमा, और ऊंचे स्वर से रोया। १२ और याक़ूब ने राहेल को बता दिया, कि मैं तेरा फुफेरा भाई हूं, अर्थात् रिबका का पुत्र हूं: तब उस ने दौड़ के अपने पिता से कह दिया। १३ अपने भानजे याक़ूब का समाचार पाते ही लाबान उस से भेंट करने को दौड़ा, और उसको गले लगाकर चूमा, फिर अपने घर ले आया। और याक़ूब ने लाबान से अपना सब वृत्तान्त वर्णन किया। १४ तब लाबान ने याक़ूब से कहा, तू तो सचमुच मेरी हड्डी और मांस है। सो याक़ूब एक महीना भर उसके साथ रहा। १५ तब लाबान ने याक़ूब से कहा, भाईबन्धु होने के कारण तुझ से सेंतमेंत सेवा कराना मुझे उचित नहीं है, सो कह मैं तुझे सेवा के बदले क्या दूं? १६ लाबान के दो बेटियां थीं, जिन में से बड़ी का नाम लिआः, और छोटी का राहेल था। १७ लिआः के तो धुन्धली आंखें थीं, पर राहेल रूपवती और सुन्दर थी। १८ सो याक़ूब ने, जो राहेल से प्रीति रखता था, कहा, मैं तेरी छोटी बेटी राहेल के लिये सात बरस तेरी सेवा करूंगा। १९ लाबान ने कहा, उसे पराए पुरुष को देने से तुझ को देना उत्तम होगा; सो मेरे पास रह। २० सो याक़ूब ने राहेल के लिये सात बरस सेवा की; और वे उसको राहेल की प्रीति के कारण थोड़े ही दिनों के बराबर जान पड़े। २१ तब याक़ूब ने लाबान से कहा, मेरी पत्नी मुझे दे, और मैं उसके पास जाऊंगा, क्योंकि मेरा समय पूरा हो गया है। २२ सो लाबान ने उस स्थान के सब मनुष्यों को बुलाकर इकट्ठा किया, और उनकी जेवनार की। २३ सांझ के समय वह अपनी बेटी लिआः को याक़ूब के पास ले गया, और वह उसके पास गया। २४ और लाबान ने अपनी बेटी लिआः को उसकी लौंडी होने के लिये अपनी लौंडी जिल्पा दी। २५ भोर को मालूम हुआ कि यह तो लिआः है, सो उस ने लाबान से कहा, यह तू ने मुझ से क्या किया है? मैं ने तेरे साथ रहकर जो तेरी सेवा की, सो क्या राहेल के लिये नहीं की? फिर तू ने मुझ से क्यों ऐसा छल किया है? २६ लाबान ने कहा, हमारे यहां ऐसी

रीति नहीं, कि जेठी से पहिले दूसरी का विवाह कर दें। २७ इसका सप्ताह तो पूरा कर; फिर दूसरी भी तुझे उस सेवा के लिये मिलेगी जो तू मेरे साथ रहकर और सात वर्ष तक करेगा। २८ सो याकूब ने ऐसा ही किया, और लिआः के सप्ताह को पूरा किया; तब लाबान ने उसे अपनी बेटी राहेल को भी दिया, कि वह उसकी पत्नी हो। २९ और लाबान ने अपनी बेटी राहेल की लौंडी होने के लिये अपनी लौंडी बिल्हा को दिया। ३० तब याकूब राहेल के पास भी गया, और उसकी प्रीति लिआः से अधिक उसी पर हुई, और उस ने लाबान के साथ रहकर सात वर्ष और उसकी सेवा की॥

३१ जब यहोवा ने देखा, कि लिआः अप्रिय हुई, तब उस ने उसकी कोख खोली, पर राहेल बांझ रही। ३२ सो लिआः गर्भवती हुई, और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और उस ने यह कहकर उसका नाम रूबेन * रखा, कि यहोवा ने मेरे दुःख पर दृष्टि की है: सो अब मेरा पति मुझ से प्रीति रखेगा। ३३ फिर वह गर्भवती हुई और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; तब उस ने यह कहा कि यह सुनके, कि मैं अप्रिय हूं, यहोवा ने मुझे यह भी पुत्र दिया: इसलिये उस ने उसका नाम शिमोन † रखा। ३४ फिर वह गर्भवती हुई और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और उस ने कहा, अब की बार तो मेरा पति मुझ से मिल जाएगा, क्योंकि उस से मेरे तीन पुत्र उत्पन्न हुए: इसलिये उसका नाम लेवी ‡ रखा गया। ३५ और फिर वह गर्भवती हुई और उसके एक और पुत्र उत्पन्न हुआ; और उस ने कहा, अब की बार तो मैं यहोवा का धन्यवाद करूंगी, इसलिये उस ने उसका नाम यहूदा * रखा; तब उसकी कोख बन्द हो गई॥

३० जब राहेल ने देखा, कि याकूब के लिये मुझ से कोई सन्तान नहीं होता, तब वह अपनी बहिन से डाह करने लगी: और याकूब से कहा, मुझे भी सन्तान दे, नहीं तो मर जाऊंगी। २ तब याकूब ने राहेल से क्रोधित होकर कहा, क्या मैं परमेश्वर हूं? तेरी कोख तो उसी ने बन्द कर रखी है। ३ राहेल ने कहा, अच्छा, मेरी लौंडी बिल्हा हाज़िर है: उसी के पास जा, वह मेरे घुटनों पर जनेगी, और उसके द्वारा मेरा भी घर बसेगा। ४ तो उस ने उसे अपनी लौंडी बिल्हा को दिया, कि वह उसकी पत्नी हो; और याकूब उसके पास गया। ५ और बिल्हा गर्भवती हुई और याकूब से उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। ६ और राहेल ने कहा, परमेश्वर ने मेरा न्याय चुकाया और मेरी सुनकर मुझे एक पुत्र दिया: इसलिये उस ने उसका नाम दान † रखा। ७ और राहेल की लौंडी बिल्हा फिर गर्भवती हुई और याकूब से एक पुत्र और उत्पन्न हुआ। ८ तब राहेल ने कहा, मैं ने अपनी बहिन के साथ बड़े बल से लिपटकर मल्लयुद्ध किया और अब जीत गई: सो उस ने उसका नाम नप्ताली ‡ रखा। ९ जब लिआः ने देखा कि मैं जनने से रहित हो गई हूं, तब उस ने

* अर्थात् देखो बेटा।
† अर्थात् सुन लेना।
‡ अर्थात् जुटना।

* अर्थात् जिसका धन्यवाद हुआ हो।
† अर्थात् न्यायी।
‡ अर्थात् मेरा मल्लयुद्ध।

अपनी लौंडी जिल्पा को लेकर याक़ूब की पत्नी होने के लिये दे दिया। १० और लिआः की लौंडी जिल्पा के भी याक़ूब से एक पुत्र उत्पन्न हुआ। ११ तब लिआः ने कहा, अहो भाग्य! सो उस ने उसका नाम गाद * रखा। १२ फिर लिआः की लौंडी जिल्पा के याक़ूब से एक और पुत्र उत्पन्न हुआ। १३ तब लिआः ने कहा, मैं धन्य हूं; निश्चय स्त्रियां † मुझे धन्य कहेंगी: सो उस ने उसका नाम आशेर ‡ रखा। १४ गेहूं की कटनी के दिनों में रूबेन को मैदान में दूदाफल मिले, और वह उनको अपनी माता लिआः के पास ले गया, तब राहेल ने लिआः से कहा, अपने पुत्र के दूदाफलों में से कुछ मुझे दे। १५ उस ने उस से कहा, तू ने जो मेरे पति को ले लिया है सो क्या छोटी बात है? अब क्या तू मेरे पुत्र के दूदाफल भी लेने चाहती है? राहेल ने कहा, अच्छा, तेरे पुत्र के दूदाफलों के बदले वह आज रात को तेरे संग सोएगा। १६ सो सांझ को जब याक़ूब मैदान से आ रहा था, तब लिआः उस से भेंट करने को निकली, और कहा, तुझे मेरे ही पास आना होगा, क्योंकि मैं ने अपने पुत्र के दूदाफल देकर तुझे सचमुच मोल लिया। तब वह उस रात को उसी के संग सोया। १७ तब परमेश्वर ने लिआः की सुनी, सो वह गर्भवती हुई और याक़ूब से उसके पांचवां पुत्र उत्पन्न हुआ। १८ तब लिआः ने कहा, मैं ने जो अपने पति को अपनी लौंडी दी, इसलिये परमेश्वर ने मुझे मेरी मजूरी दी है: सो उस ने उसका नाम इस्साकार § रखा। १९ और लिआः फिर गर्भवती हुई और याक़ूब से उसके छठवां पुत्र उत्पन्न हुआ। २० तब लिआः ने कहा, परमेश्वर ने मुझे अच्छा दान दिया है; अब की बार मेरा पति मेरे संग बना रहेगा, क्योंकि मेरे उस से छः पुत्र उत्पन्न हो चुके हैं: सो उस ने उसका नाम जबूलून् * रखा। २१ तत्पश्चात् उसके एक बेटी भी हुई, और उस ने उसका नाम दीना रखा। २२ और परमेश्वर ने राहेल की भी सुधि ली, और उसकी सुनकर उसकी कोख खोली। २३ सो वह गर्भवती हुई और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; सो उस ने कहा, परमेश्वर ने मेरी नामधराई को दूर कर दिया है। २४ सो उस ने यह कहकर उसका नाम यूसुफ † रखा, कि परमेश्वर मुझे एक पुत्र और भी देगा॥

२५ जब राहेल से यूसुफ उत्पन्न हुआ, तब याक़ूब ने लाबान से कहा, मुझे विदा कर, कि मैं अपने देश और स्थान को जाऊं। २६ मेरी स्त्रियां और मेरे लड़केबाले, जिनके लिये मैं ने तेरी सेवा की है, उन्हें मुझे दे, कि मैं चला जाऊं; तू तो जानता है कि मैं ने तेरी कैसी सेवा की है। २७ लाबान ने उस से कहा, यदि तेरी दृष्टि में मैं ने अनुग्रह पाया है, तो रह जा: क्योंकि मैं ने अनुभव से जान लिया है, कि यहोवा ने तेरे कारण से मुझे आशीष दी है। २८ फिर उस ने कहा, तू ठीक बता कि मैं तुझ को क्या दूं, और मैं उसे दूंगा। २९ उस ने उस से कहा तू जानता है कि मैं ने तेरी कैसी सेवा की, और तेरे पशु मेरे पास किस प्रकार से रहे। ३० मेरे

* अर्थात् सौभाग्य।
† मूल में—बेटियां। ‡ अर्थात् धन्य।
§ अर्थात् मजूरी में मिला।

* अर्थात् निवास।
† अर्थात् वह दूर करता है। वा वह और भी देगा।

आने से पहिले वे कितने थे, और अब कितने हो गए हैं; और यहोवा ने मेरे आने पर तुझे तो आशीष दी है: पर मैं अपने घर का काम कब करने पाऊंगा? ३१ उस ने फिर कहा, मैं तुझे क्या दूं? याक़ूब ने कहा, तू मुझे कुछ न दे; यदि तू मेरे लिये एक काम करे, तो मैं फिर तेरी भेड़-बकरियों को चराऊंगा, और उनकी रक्षा करूंगा। ३२ मैं आज तेरी सब भेड़-बकरियों के बीच होकर निकलूंगा, और जो भेड़ वा बकरी चित्तीवाली वा चित्कबरी हो, और जो भेड़ काली हो, और जो बकरी चित्कबरी वा चित्तीवाली हो, उन्हें मैं अलग कर रखूंगा: और मेरी मजदूरी में वे ही ठहरेंगी। ३३ और जब आगे को मेरी मजदूरी की चर्चा तेरे साम्हने चले, तब धर्म की यही साक्षी होगी; अर्थात् बकरियों में से जो कोई न चित्तीवाली न चित्कबरी हो, और भेड़ों में से जो कोई काली न हो, सो यदि मेरे पास निकलें, तो चोरी की ठहरेंगी। ३४ तब लाबान ने कहा, तेरे कहने के अनुसार हो। ३५ सो उस ने उसी दिन सब धारीवाले और चित्कबरे बकरों, और सब चित्तीवाली और चित्कबरी बकरियों को, अर्थात् जिन में कुछ उजलापन था, उनको और सब काली भेड़ों को भी अलग करके अपने पुत्रों के हाथ सौंप दिया। ३६ और उस ने अपने और याक़ूब के बीच में तीन दिन के मार्ग का अन्तर ठहराया: सो याक़ूब लाबान की भेड़-बकरियों को चराने लगा। ३७ और याक़ूब ने चनार, और बादाम, और अर्मोन वृक्षों की हरी हरी छड़ियां लेकर, उनके छिलके कहीं कहीं छीलके, उन्हें धारीदार बना दिया, ऐसी कि उन छड़ियों की सफ़ेदी दिखाई देने लगी। ३८ और तब छीली हुई छड़ियों को भेड़-बकरियों के साम्हने उनके पानी पीने के कठौतों में खड़ा किया; और जब वे पानी पीने के लिये आईं तब गाभिन हो गईं। ३९ और छड़ियों के साम्हने गाभिन होकर, भेड़-बकरियां धारीवाले, चित्तीवाले और चित्कबरे बच्चे जनीं। ४० तब याक़ूब ने भेड़ों के बच्चों को अलग अलग किया, और लाबान की भेड़-बकरियों के मुंह को चित्ती-वाले और सब काले बच्चों की ओर कर दिया; और अपने झुण्डों को उन से अलग रखा, और लाबान की भेड़-बकरियों से मिलने न दिया। ४१ और जब जब बलवन्त भेड़-बकरियां गाभिन होती थीं, तब तब याक़ूब उन छड़ियों को कठौतों में उनके साम्हने रख देता था; जिस से वे छड़ियों को देखती हुई गाभिन हो जाएं। ४२ पर जब निर्बल भेड़-बकरियां गाभिन होती थीं, तब वह उन्हें उनके आगे नहीं रखता था। इस से निर्बल निर्बल लाबान की रहीं, और बलवन्त बलवन्त याक़ूब की हो गईं। ४३ सो वह पुरुष अत्यन्त धनाढ्य हो गया, और उसके बहुत सी भेड़-बकरियां, और लौंडियां और दास, और ऊंट और गदहे हो गए॥

(याक़ूब के घर जाने का वर्णन)

३१ फिर लाबान के पुत्रों की ये बातें याक़ूब के सुनने में आईं, कि याक़ूब ने हमारे पिता का सब कुछ छीन लिया है, और हमारे पिता के धन के कारण उसकी यह प्रतिष्ठा है। २ और याक़ूब ने लाबान के मुखड़े पर दृष्टि की और ताड़ लिया, कि वह उसके प्रति पहिले के समान नहीं है। ३ तब यहोवा ने

याक़ूब से कहा, अपने पितरों के देश और अपनी जन्मभूमि को लौट जा, और मैं तेरे संग रहूंगा। ४ तब याक़ूब ने राहेल और लिआः को, मैदान में अपनी भेड़-बकरियों के पास, बुलवाकर कहा, ५ तुम्हारे पिता के मुखड़े से मुझे समझ पड़ता है, कि वह तो मुझे पहिले की नाईं अब नहीं देखता; पर मेरे पिता का परमेश्वर मेरे संग है। ६ और तुम भी जानती हो, कि मैं ने तुम्हारे पिता की सेवा शक्ति भर की है। ७ और तुम्हारे पिता ने मुझ से छल करके मेरी मज़दूरी को दस बार बदल दिया; परन्तु परमेश्वर ने उसको मेरी हानि करने नहीं दिया। ८ जब उस ने कहा, कि चित्तीवाले बच्चे तेरी मज़दूरी ठहरेंगे, तब सब भेड़-बकरियां चित्तीवाले ही जनने लगीं, और जब उस ने कहा, कि धारीवाले बच्चे तेरी मज़दूरी ठहरेंगे, तब सब भेड़-बकरियां धारीवाले जनने लगीं। ९ इस रीति से परमेश्वर ने तुम्हारे पिता के पशु लेकर मुझ को दे दिए। १० भेड़-बकरियों के गाभिन होने के समय में ने स्वप्न में क्या देखा, कि जो बकरे बकरियों पर चढ़ रहे हैं, सो धारीवाले, चित्तीवाले, और धब्बेवाले हैं। ११ और परमेश्वर के दूत ने स्वप्न में मुझ से कहा, हे याक़ूब : मैं ने कहा, क्या आज्ञा *। १२ उस ने कहा, आंखें उठाकर उन सब बकरों को, जो बकरियों पर चढ़ रहे हैं, देख, कि वे धारीवाले, चित्तीवाले, और धब्बेवाले हैं; क्योंकि जो कुछ लाबान तुझ से करता है, सो मैं ने देखा है। १३ मैं उस बेतेल का ईश्वर हूं, जहां तू ने एक खम्भे पर तेल डाल दिया, और मेरी मन्नत मानी थी : अब चल, इस देश से निकलकर अपनी जन्मभूमि को लौट जा। १४ तब राहेल और लिआः ने उस से कहा, क्या हमारे पिता के घर में अब भी हमारा कुछ भाग वा अंश बचा है? १५ क्या हम उसकी दृष्टि में पराये न ठहरीं? देख, उस ने हम को तो बेच डाला, और हमारे रूपे को खा बैठा है। १६ सो परमेश्वर ने हमारे पिता का जितना धन ले लिया है, सो हमारा, और हमारे लड़केबालों का है : अब जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा है, सो कर। १७ तब याक़ूब ने अपने लड़केबालों और स्त्रियों को ऊंटों पर चढ़ाया; १८ और जितने पशुओं को वह पद्दनराम में इकट्ठा करके धनाढ्य हो गया था, सब को कनान में अपने पिता इसहाक के पास जाने की मनसा से, साथ ले गया। १९ लाबान तो अपनी भेड़ों का ऊन कतरने के लिये चला गया था। और राहेल अपने पिता के गृहदेवताओं को चुरा ले गई। २० सो याक़ूब लाबान अरामी के पास से चोरी से चला गया, उसको न बताया कि मैं भागा जाता हूं। २१ वह अपना सब कुछ लेकर भागा : और महानद के पार उतरकर अपना मुंह गिलाद के पहाड़ी देश की ओर किया॥

२२ तीसरे दिन लाबान को समाचार मिला, कि याक़ूब भाग गया है। २३ सो उस ने अपने भाइयों को साथ लेकर उसका सात दिन तक पीछा किया, और गिलाद के पहाड़ी देश में उसको जा पकड़ा। २४ तब परमेश्वर ने रात के स्वप्न में अरामी लाबान के पास आकर कहा, सावधान रह, तू याक़ूब से न तो भला कहना और न बुरा। २५ और लाबान याक़ूब के पास पहुंच गया, याक़ूब तो अपना

* मूल में—मुझे देख।

तम्बू गिलाद नाम पहाड़ी देश में खड़ा किए पड़ा था: और लाबान ने भी अपने भाइयों के साथ अपना तम्बू उसी पहाड़ी देश में खड़ा किया। २६ तब लाबान याक़ूब से कहने लगा, तू ने यह क्या किया, कि मेरे पास से चोरी से चला आया, और मेरी बेटियों को ऐसा ले आया, जैसा कोई तलवार के बल से बन्दी बनाए गए? २७ तू क्यों चुपके से भाग आया, और मुझ से बिना कुछ कहे मेरे पास से चोरी से चला आया; नहीं तो मैं तुझे आनन्द के साथ मृदंग और वीणा बजवाते, और गीत गवाते विदा करता? २८ तू ने तो मुझे अपने बेटे बेटियों को चूमने तक न दिया? तू ने मूर्खता की है। २९ तुम लोगों की हानि करने की शक्ति मेरे हाथ में तो है; पर तुम्हारे पिता के परमेश्वर ने मुझ से बीती हुई रात में कहा, सावधान रह, याक़ूब से न तो भला कहना और न बुरा। ३० भला, अब तू अपने पिता के घर का बड़ा अभिलाषी होकर चला आया तो चला आया, पर मेरे देवताओं को तू क्यों चुरा ले आया है? ३१ याक़ूब ने लाबान को उत्तर दिया, मैं यह सोचकर डर गया था: कि कहीं तू अपनी बेटियों को मुझ से छीन न ले। ३२ जिस किसी के पास तू अपने देवताओं को पाए, सो जीता न बचेगा। मेरे पास तेरा जो कुछ निकले, सो भाई-बन्धुओं के साम्हने पहिचानकर ले ले। क्योंकि याक़ूब न जानता था कि राहेल गृहदेवताओं को चुरा ले आई है। ३३ यह सुनकर लाबान, याक़ूब और लिआः और दोनों दासियों के तम्बुओं में गया; और कुछ न मिला। तब लिआः के तम्बू में से निकलकर राहेल के तम्बू में गया। ३४ राहेल तो गृहदेवताओं को ऊंट की काठी में रखके उन पर बैठी थी। सो लाबान ने उसके सारे तम्बू में टटोलने पर भी उन्हें न पाया। ३५ राहेल ने अपने पिता से कहा, हे मेरे प्रभु; इस से अप्रसन्न न हो, कि मैं तेरे साम्हने नहीं उठी; क्योंकि मैं स्त्रीधर्म से हूं। सो उसके ढूंढ़ ढांढ़ करने पर भी गृहदेवता उसको न मिले। ३६ तब याक़ूब क्रोधित होकर लाबान से झगड़ने लगा, और कहा, मेरा क्या अपराध है? मेरा क्या पाप है, कि तू ने इतना क्रोधित होकर मेरा पीछा किया है? ३७ तू ने जो मेरी सारी सामग्री को टटोलकर देखा, सो तुझ को अपने घर की सारी सामग्री में से क्या मिला? कुछ मिला हो तो उसको यहां अपने और मेरे भाइयों के साम्हने रख दे, और वे हम दोनों के बीच न्याय करें। ३८ इन बीस वर्षों से मैं तेरे पास रहा; इन में न तो तेरी भेड़-बकरियों के गर्भ गिरे, और न तेरे मेढ़ों का मांस मैं ने कभी खाया। ३९ जिसे वनैले जन्तुओं ने फाड़ डाला उसको मैं तेरे पास न लाता था, उसकी हानि मैं ही उठाता था; चाहे दिन को चोरी जाता चाहे रात को, तू मुझ ही से उसको ले लेता था। ४० मेरी तो यह दशा थी, कि दिन को तो घाम और रात को पाला मुझे खा गया; और नीन्द मेरी आंखों से भाग जाती थी। ४१ बीस वर्ष तक मैं तेरे घर में रहा; चौदह वर्ष तो मैं ने तेरी दोनों बेटियों के लिये, और छः वर्ष तेरी भेड़-बकरियों के लिये सेवा की: और तू ने मेरी मज़दूरी को दस बार बदल डाला। ४२ मेरे पिता का परमेश्वर, अर्थात् इब्राहीम का परमेश्वर, जिसका

भय इसहाक भी मानता है, यदि मेरी ओर न होता, तो निश्चय तू अब मुझे छूछे हाथ जाने देता। मेरे दुःख और मेरे हाथों के परिश्रम को देखकर परमेश्वर ने बीती हुई रात में तुझे दपटा। ४३ लाबान ने याक़ूब से कहा, ये बेटियां तो मेरी ही हैं, और ये पुत्र भी मेरे ही हैं, और ये भेड़-बकरियां भी मेरी ही हैं, और जो कुछ तुझे देख पड़ता है सो सब मेरा ही है: और अब मैं अपनी इन बेटियों वा इनके सन्तान से क्या कर सकता हूं? ४४ अब आ मैं और तू दोनों आपस में वाचा बान्धें, और वह मेरे और तेरे बीच साक्षी ठहरी रहे। ४५ तब याक़ूब ने एक पत्थर लेकर उसका खम्भा खड़ा किया। ४६ तब याक़ूब ने अपने भाई-बन्धुओं से कहा, पत्थर इकट्ठा करो; यह सुनकर उन्हों ने पत्थर इकट्ठा करके एक ढेर लगाया और वहीं ढेर के पास उन्हों ने भोजन किया। ४७ उस ढेर का नाम लाबान ने तो यज्र सहादुथा,* पर याक़ूब ने जिलियाद † रखा। ४८ लाबान ने कहा, कि यह ढेर आज से मेरे और तेरे बीच साक्षी रहेगा। इस कारण उसका नाम जिलियाद रखा गया, ४९ और मिज़पा ‡ भी; क्योंकि उस ने कहा, कि जब हम एक दूसरे से दूर रहें तब यहोवा मेरी और तेरी देखभाल करता रहे। ५० यदि तू मेरी बेटियों को दुःख दे, वा उनके सिवाय और स्त्रियां ब्याह ले, तो हमारे साथ कोई मनुष्य तो न रहेगा; पर देख मेरे तेरे बीच में परमेश्वर साक्षी रहेगा। ५१ फिर लाबान ने याक़ूब से कहा, इस ढेर को देख और इस खम्भे को भी देख, जिनको मैं ने अपने और तेरे बीच में खड़ा किया है। ५२ यह ढेर और यह खम्भा दोनों इस बात के साक्षी रहें, कि हानि करने की मनसा से न तो मैं इस ढेर को लांघकर तेरे पास जाऊंगा, न तू इस ढेर और इस खम्भे को लांघकर मेरे पास आएगा। ५३ इब्राहीम और नाहोर और उनके पिता; तीनों का जो परमेश्वर है, सो हम दोनों के बीच न्याय करे। तब याक़ूब ने उसकी शपथ खाई जिसका भय उसका पिता इसहाक मानता था। ५४ और याक़ूब ने उस पहाड़ पर मेल-बलि चढ़ाया, और अपने भाई-बन्धुओं को भोजन करने के लिये बुलाया, सो उन्हों ने भोजन करके पहाड़ पर रात बिताई। ५५ बिहान को लाबान तड़के उठा, और अपने बेटे बेटियों को चूमकर और आशीर्वाद देकर चल दिया, और अपने स्थान को लौट गया।

३२ और याक़ूब ने भी अपना मार्ग लिया और परमेश्वर के दूत उसे आ मिले। २ उनको देखते ही याक़ूब ने कहा, यह तो परमेश्वर का दल है सो उस ने उस स्थान का नाम महनैम * रखा॥

(याक़ूब के एसाव से मिलने और उसके इस्राएल नाम रखे जाने का वर्णन)

३ तब याक़ूब ने सेईर देश में, अर्थात् एदोम देश में, अपने भाई एसाव के पास अपने आगे दूत भेज दिए। ४ और उस ने उन्हें यह आज्ञा दी, कि मेरे प्रभु एसाव से यों कहना; कि तेरा दास याक़ूब तुझ से यों कहता है, कि मैं लाबान के यहां परदेशी होकर अब तक रहा; ५ और मेरे पास गाय-बैल, गदहे, भेड़-बकरियां, और दास-

---

* अर्थात् अरामी भाषा में, साक्षी का ढेर।
† अर्थात् इब्रानी भाषा में, साक्षी का ढेर।
‡ अर्थात् ताकने का स्थान।

* अर्थात् दो दल।

दासियां हैं: सो मैं ने अपने प्रभु के पास इसलिये संदेशा भेजा है, कि तेरी अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो। ६ वे दूत याक़ूब के पास लौटके कहने लगे, हम तेरे भाई एसाव के पास गए थे, और वह भी तुझ से भेंट करने को चार सौ पुरुष संग लिये हुए चला आता है। ७ तब याक़ूब निपट डर गया, और संकट में पड़ा: और यह सोचकर, अपने संगवालों के, और भेड़-बकरियों, और गाय-बैलों, और ऊंटों के भी अलग अलग दो दल कर लिये, ८ कि यदि एसाव आकर पहिले दल को मारने लगे, तो दूसरा दल भागकर बच जाएगा। ६ फिर याक़ूब ने कहा, हे यहोवा, हे मेरे दादा इब्राहीम के परमेश्वर, हे मेरे पिता इसहाक के परमेश्वर, तू ने तो मुझ से कहा, कि अपने देश और जन्मभूमि में लौट जा, और मैं तेरी भलाई करूंगा: १० तू ने जो जो काम अपनी करुणा और सच्चाई से अपने दास के साथ किए हैं, कि मैं जो अपनी छड़ी ही लेकर इस यरदन नदी के पार उतर आया, सो अब मेरे दो दल हो गए हैं, तेरे ऐसे ऐसे कामों में से मैं एक के भी योग्य तो नहीं हूं। ११ मेरी बिनती सुनकर मुझे मेरे भाई एसाव के हाथ से बचा: मैं तो उस से डरता हूं, कहीं ऐसा न हो कि वह आकर मुझे और मां समेत लड़कों को भी मार डाले। १२ तू ने तो कहा है, कि मैं निश्चय तेरी भलाई करूंगा, और तेरे वंश को समुद्र की बालू के किनकों के समान बहुत करूंगा, जो बहुतायत के मारे गिने नहीं जा सकते। १३ और उस ने उस दिन की रात वहीं बिताई; और जो कुछ उसके पास था उस में से अपने भाई एसाव की भेंट के लिये छांट छांटकर निकाला; १४ अर्थात् दो सौ बकरियां, और बीस बकरे, और दो सौ भेड़ें, और बीस मेढ़े, १५ और बच्चों समेत दूध देनेवाली तीस ऊंटनियां, और चालीस गायें, और दस बैल, और बीस गदहियां और उनके दस बच्चे। १६ इनको उस ने झुण्ड झुण्ड करके, अपने दासों को सौंपकर उन से कहा, मेरे आगे बढ़ जाओ; और झुण्डों के बीच बीच में अन्तर रखो। १७ फिर उस ने अगले झुण्ड के रखवाले को यह आज्ञा दी, कि जब मेरा भाई एसाव तुझे मिले, और पूछने लगे, कि तू किस का दास है, और कहां जाता है, और ये जो तेरे आगे आगे हैं, सो किस के हैं? १८ तब कहना, कि यह तेरे दास याक़ूब के हैं। हे मेरे प्रभु एसाव, ये भेंट के लिये तेरे पास भेजे गए हैं, और वह आप भी हमारे पीछे पीछे आ रहा है। १६ और उस ने दूसरे और तीसरे रखवालों को भी, वरन उन सभों को जो झुण्डों के पीछे पीछे थे ऐसी ही आज्ञा दी, कि जब एसाव तुम को मिले तब इसी प्रकार उस से कहना। २० और यह भी कहना, कि तेरा दास याक़ूब हमारे पीछे पीछे आ रहा है। क्योंकि उस ने यह सोचा, कि यह भेंट जो मेरे आगे आगे जाती है, इसके द्वारा मैं उसके क्रोध को शान्त करके तब उसका दर्शन करूंगा; हो सकता है वह मुझ से प्रसन्न हो जाए। २१ सो वह भेंट याक़ूब से पहिले पार उतर गई, और वह आप उस रात को छावनी में रहा॥

२२ उसी रात को वह उठा और अपनी दोनों स्त्रियों, और दोनों लौण्डियों, और ग्यारहों लड़कों को संग लेकर घाट से यब्बोक नदी के पार उतर गया। २३ और उस ने उन्हें उस नदी के पार उतार दिया

बरन अपना सब कुछ पार उतार दिया। २४ और याक़ूब आप अकेला रह गया; तब कोई पुरुष आकर पह फटने तक उस से मल्लयुद्ध करता रहा। २५ जब उस ने देखा, कि मैं याक़ूब पर प्रबल नहीं होता, तब उसकी जांघ की नस को छूआ; सो याक़ूब की जांघ की नस उस से मल्लयुद्ध करते ही करते चढ़ गई। २६ तब उस ने कहा, मुझे जाने दे, क्योंकि भोर हुआ चाहता है; याक़ूब ने कहा जब तक तू मुझे आशीर्वाद न दे, तब तक मैं तुझे जाने न दूंगा। २७ और उस ने याक़ूब से पूछा, तेरा नाम क्या है? उस ने कहा याक़ूब। २८ उस ने कहा, तेरा नाम अब याक़ूब नहीं, परन्तु इस्राएल * होगा, क्योंकि तू परमेश्वर से और मनुष्यों से भी युद्ध करके प्रबल हुआ है। २९ याक़ूब ने कहा, मैं बिनती करता हूं, मुझे अपना नाम बता। उस ने कहा, तू मेरा नाम क्यों पूछता है? तब उस ने उसको वहीं आशीर्वाद दिया। ३० तब याक़ूब ने यह कहकर उस स्थान का नाम पनीएल † रखा: कि परमेश्वर को आम्हने-साम्हने देखने पर भी मेरा प्राण बच गया है। ३१ पनूएल के पास से चलते चलते सूर्य उदय हो गया, और वह जांघ से लंगड़ाता था। ३२ इस्राएली जो पशुओं की जांघ की जोड़वाले जंघानस को आज के दिन तक नहीं खाते, इसका कारण यही है, कि उस पुरुष ने याक़ूब की जांघ की जोड़ में जंघानस को छूआ था॥

३३ और याक़ूब ने आंखें उठाकर यह देखा, कि एसाव चार सौ पुरुष संग लिये हुए चला आता है। तब उस ने लड़केबालों को अलग अलग बांटकर लिआः, और राहेल, और दोनों लौण्डियों को सौंप दिया। २ और उस ने सब के आगे लड़कों समेत लौण्डियों को उसके पीछे लड़कों समेत लिआः को, और सब के पीछे राहेल और यूसुफ को रखा, ३ और आप उन सब के आगे बढ़ा, और सात बार भूमि पर गिरके दण्डवत् की, और अपने भाई के पास पहुंचा। ४ तब एसाव उस से भेंट करने को दौड़ा, और उसको हृदय से लगाकर, गले से लिपटकर चूमा: फिर वे दोनों रो पड़े। ५ तब उस ने आंखें उठाकर स्त्रियों और लड़केबालों को देखा; और पूछा, ये जो तेरे साथ हैं सो कौन हैं? उस ने कहा, ये तेरे दास के लड़के हैं, जिन्हें परमेश्वर ने अनुग्रह करके मुझ को दिया है। ६ तब लड़कों समेत लौण्डियों ने निकट आकर दण्डवत् की। ७ फिर लड़कों समेत लिआः निकट आई, और उन्हों ने भी दण्डवत् की: पीछे यूसुफ और राहेल ने भी निकट आकर दण्डवत् की। ८ तब उस ने पूछा, तेरा यह बड़ा दल जो मुझ को मिला, उसका क्या प्रयोजन है? उस ने कहा, यह कि मेरे प्रभु की अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो। ९ एसाव ने कहा, हे मेरे भाई, मेरे पास तो बहुत है; जो कुछ तेरा है सो तेरा ही रहे। १० याक़ूब ने कहा, नहीं नहीं, यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर हो, तो मेरी भेंट ग्रहण कर: क्योंकि मैं ने तेरा दर्शन पाकर, मानो परमेश्वर का दर्शन पाया है, और तू मुझ से प्रसन्न हुआ है। ११ सो यह भेंट, जो तुझे भेजी गई है, ग्रहण कर: क्योंकि परमेश्वर ने मुझ पर अनुग्रह किया है, और मेरे पास बहुत है।

* अर्थात् ईश्वर से युद्ध करनेहारा।
† अर्थात् ईश्वर का मुख।

जब उस ने उसको दबाया, तब उस ने भेंट को ग्रहण किया। १२ फिर एसाव ने कहा, आ, हम बढ़ चलें: और मैं तेरे आगे आगे चलूंगा। १३ याक़ूब ने कहा,-हे मेरे प्रभु, तू जानता ही है कि मेरे साथ सुकुमार लड़के, और दूध देनेहारी भेड़-बकरियां और गायें हैं; यदि ऐसे पशु एक दिन भी अधिक हांके जाएं, तो सब के सब मर जाएंगे। १४ सो मेरा प्रभु अपने दास के आगे बढ़ जाए, और मैं इन पशुओं की गति के अनुसार, जो मेरे आगे हैं, और लड़केबालों की गति के अनुसार धीरे धीरे चलकर सेईर में अपने प्रभु के पास पहुंचूंगा। १५ एसाव ने कहा, तो अपने संगवालों में से मैं कई एक तेरे साथ छोड़ जाऊं। उस ने कहा, यह क्यों? इतना ही बहुत है, कि मेरे प्रभु की अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर बनी रहे। १६ तब एसाव ने उसी दिन सेईर जाने को अपना मार्ग लिया। १७ और याक़ूब वहां से कूच करके सुक्कोत को गया, और वहां अपने लिये एक घर, और पशुओं के लिये झोंपड़े बनाए: इसी कारण उस स्थान का नाम सुक्कोत * पड़ा॥

१८ और याक़ूब जो पद्दनराम से आया था, सो कनान देश के शकेम नगर के पास कुशल क्षेम से पहुंचकर नगर के साम्हने डेरे खड़े किए। १९ और भूमि के जिस खण्ड पर उस ने अपना तम्बू खड़ा किया, उसको उस ने शकेम के पिता हमोर के पुत्रों के हाथ से एक सौ कसीतों † में मोल लिया। २० और वहां उस ने एक वेदी बनाकर उसका नाम एलेलोहे इस्राएल ‡ रखा॥

* अर्थात् झोंपड़े।
† इनका मूल्य संदिग्ध है।
‡ अर्थात् ईश्वर इस्राएल का परमेश्वर।

(दीना के भ्रष्ट किये जाने का वर्णन)

३४ और लिआः की बेटी दीना, जो याक़ूब से उत्पन्न हुई थी, उस देश की लड़कियों से भेंट करने को निकली। २ तब उस देश के प्रधान हिव्वी हमोर के पुत्र शकेम ने उसे देखा, और उसे ले जाकर उसके साथ कुकर्म करके उसको भ्रष्ट कर डाला। ३ तब उसका मन याक़ूब की बेटी दीना से लग गया, और उस ने उस कन्या से प्रेम की बातें कीं, और उस से प्रेम करने लगा। ४ और शकेम ने अपने पिता हमोर से कहा, मुझे इस लड़की को मेरी पत्नी होने के लिये दिला दे। ५ और याक़ूब ने सुना, कि शकेम ने मेरी बेटी दीना को अशुद्ध कर डाला है, पर उसके पुत्र उस समय पशुओं के संग मैदान में थे, सो वह उनके आने तक चुप रहा। ६ और शकेम का पिता हमोर निकलकर याक़ूब से बातचीत करने के लिये उसके पास गया। ७ और याक़ूब के पुत्र सुनते ही मैदान से बहुत उदास और क्रोधित होकर आए: क्योंकि शकेम ने याक़ूब की बेटी के साथ कुकर्म करके इस्राएल के घराने से मूर्खता का ऐसा काम किया था, जिसका करना अनुचित था। ८ हमोर ने उन सब से कहा, मेरे पुत्र शकेम का मन तुम्हारी बेटी पर बहुत लगा है, सो उसे उसकी पत्नी होने के लिये उसको दे दो। ९ और हमारे साथ ब्याह किया करो; अपनी बेटियां हम को दिया करो, और हमारी बेटियों को आप लिया करो। १० और हमारे संग बसे रहो: और यह देश तुम्हारे सामने पड़ा है; इस में रहकर लेनदेन करो, और इसकी भूमि को अपने लिये ले लो। ११ और शकेम ने भी दीना के पिता और भाइयों से

कहा, यदि मुझ पर तुम लोगों की अनुग्रह की दृष्टि हो, तो जो कुछ तुम मुझ से कहो, सो मैं दूंगा। १२ तुम मुझ से कितना ही मूल्य वा बदला क्यों न मांगो, तौभी मैं तुम्हारे कहे के अनुसार दूंगा: परन्तु उस कन्या को पत्नी होने के लिये मुझे दो। १३ तब यह सोचकर, कि शकेम ने हमारी बहिन दीना को अशुद्ध किया है, याक़ूब के पुत्रों ने शकेम और उसके पिता हमोर को छल के साथ यह उत्तर दिया, १४ कि हम ऐसा काम नहीं कर सकते, कि किसी खतनारहित पुरुष को अपनी बहिन दें; क्योंकि इस से हमारी नामधराई होगी: १५ इस बात पर तो हम तुम्हारी मान लेंगे, कि हमारी नाईं तुम में से हर एक पुरुष का खतना किया जाए। १६ तब हम अपनी बेटियां तुम्हें ब्याह देंगे, और तुम्हारी बेटियां ब्याह लेंगे, और तुम्हारे संग बसे भी रहेंगे, और हम दोनों एक ही समुदाय के मनुष्य हो जाएंगे। १७ पर यदि तुम हमारी बात न मानकर अपना खतना न कराओगे, तो हम अपनी लड़की को लेके यहां से चले जाएंगे। १८ उनकी इस बात पर हमोर और उसका पुत्र शकेम प्रसन्न हुए। १९ और वह जवान, जो याक़ूब की बेटी को बहुत चाहता था, इस काम को करने में उस ने विलम्ब न किया। वह तो अपने पिता के सारे घराने में अधिक प्रतिष्ठित था। २० सो हमोर और उसका पुत्र शकेम अपने नगर के फाटक के निकट जाकर नगरवासियों को यों समझाने लगे; २१ कि वे मनुष्य तो हमारे संग मेल से रहना चाहते हैं; सो उन्हें इस देश में रहके लेनदेन करने दो; देखो, यह देश उनके लिये भी बहुत है; फिर हम लोग उनकी बेटियों को ब्याह लें, और अपनी बेटियों को उन्हें दिया करें। २२ वे लोग केवल इस बात पर हमारे संग रहने और एक ही समुदाय के मनुष्य हो जाने को प्रसन्न हैं, कि उनकी नाईं हमारे सब पुरुषों का भी खतना किया जाए। २३ क्या उनकी भेड़-बकरियां, और गाय-बैल वरन उनके सारे पशु और धन सम्पत्ति हमारी न हो जाएगी? इतना ही करें कि हम लोग उनकी बात मान लें, तो वे हमारे संग रहेंगे। २४ सो जितने उस नगर के फाटक से निकलते थे, उन सभों ने हमोर की और उसके पुत्र शकेम की बात मानी; और हर एक पुरुष का खतना किया गया, जितने उस नगर के फाटक से निकलते थे। २५ तीसरे दिन, जब वे लोग पीड़ित पड़े थे, तब ऐसा हुआ कि शिमोन और लेवी नाम याक़ूब के दो पुत्रों ने, जो दीना के भाई थे, अपनी अपनी तलवार ले उस नगर में निधड़क घुसकर सब पुरुषों को घात किया। २६ और हमोर और उसके पुत्र शकेम को उन्हों ने तलवार से मार डाला, और दीना को शकेम के घर से निकाल ले गए। २७ और याक़ूब के पुत्रों ने घात कर डालने पर भी चढ़कर नगर को इसलिये लूट लिया, कि उस में उनकी बहिन अशुद्ध की गई थी। २८ उन्हों ने भेड़-बकरी, और गाय-बैल, और गदहे, और नगर और मैदान में जितना धन था ले लिया। २९ उस सब को, और उनके बाल-बच्चों, और स्त्रियों को भी हर ले गए, वरन घर घर में जो कुछ था, उसको भी उन्हों ने लूट लिया। ३० तब याक़ूब ने शिमोन और लेवी से कहा, तुम ने जो इस देश के निवासी कनानियों और परिज्जियों के

मन में मेरी ओर घृणा उत्पन्न कराई है,* इस से तुम ने मुझे संकट में डाला है, क्योंकि मेरे साथ तो थोड़े ही लोग हैं,† सो अब वे इकट्ठे होकर मुझ पर चढ़ेंगे, और मुझे मार डालेंगे, सो मैं अपने घराने समेत सत्यानाश हो जाऊंगा। ३१ उन्हों ने कहा, क्या वह हमारी बहिन के साथ वेश्या की नाईं बर्ताव करे ?

(बिन्यामीन की उत्पत्ति और राहेल की मृत्यु का वर्णन)

३५ तब परमेश्वर ने याक़ूब से कहा, यहां से कूच करके बेतेल को जा, और वहीं रह: और वहां ईश्वर के लिये वेदी बना, जिस ने तुझे उस समय दर्शन दिया, जब तू अपने भाई एसाव के डर से भागा जाता था। २ तब याक़ूब ने अपने घराने से, और उन सब से भी जो उसके संग थे, कहा, तुम्हारे बीच में जो पराए देवता हैं, उन्हें निकाल फेंको; और अपने अपने को शुद्ध करो, और अपने वस्त्र बदल डालो; ३ और आओ, हम यहां से कूच करके बेतेल को जाएं; वहां मैं ईश्वर के लिये एक वेदी बनाऊंगा, जिस ने संकट के दिन मेरी सुन ली, और जिस मार्ग से मैं चलता था, उस में मेरे संग रहा। ४ सो जितने पराए देवता उनके पास थे, और जितने कुण्डल उनके कानों में थे, उन सभों को उन्हों ने याक़ूब को दिया; और उस ने उनको उस सिन्दूर वृक्ष के नीचे, जो शकेम के पास है, गाड़ दिया। ५ तब उन्हों ने कूच किया: और उनके चारों ओर के नगर निवासियों के मन में परमेश्वर की ओर से ऐसा भय समा गया, कि उन्हों ने याक़ूब के पुत्रों का पीछा न किया। ६ सो याक़ूब उन सब समेत, जो उसके संग थे, कनान देश के लूज नगर को आया। वह नगर बेतेल भी कहलाता है। ७ वहां उस ने एक वेदी बनाई, और उस स्थान का नाम एलबेतेल* रखा; क्योंकि जब वह अपने भाई के डर से भागा जाता था तब परमेश्वर उस पर वहीं प्रगट हुआ था। ८ और रिबका की दूध पिलानेहारी धाय दबोरा मर गई, और बेतेल के नीचे सिन्दूर वृक्ष के तले उसको मिट्टी दी गई, और उस सिन्दूर वृक्ष का नाम अल्लोनबक्कूत† रखा गया॥

९ फिर याक़ूब के पद्दनराम से आने के पश्चात् परमेश्वर ने दूसरी बार उसको दर्शन देकर आशीष दी। १० और परमेश्वर ने उस से कहा, अब तक तो तेरा नाम याक़ूब रहा है; पर आगे को तेरा नाम याक़ूब न रहेगा, तू इस्राएल कहलाएगा: सो उस ने उसका नाम इस्राएल रखा। ११ फिर परमेश्वर ने उस से कहा, मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर हूं: तू फूले-फले और बढ़े; और तुझ से एक जाति वरन जातियों की एक मण्डली भी उत्पन्न होगी, और तेरे वंश में राजा उत्पन्न होंगे। १२ और जो देश मैं ने इब्राहीम और इसहाक को दिया है, वही देश तुझे देता हूं, और तेरे पीछे तेरे वंश को भी दूंगा। १३ तब परमेश्वर उस स्थान में, जहां उस ने याक़ूब से बातें कीं, उसके पास से ऊपर चढ़ गया। १४ और जिस स्थान में परमेश्वर ने याक़ूब से बातें कीं, वहां याक़ूब ने पत्थर का एक खम्भा खड़ा किया,

* मूल में—परिज्जियों में मुझे दुर्गन्धित किया।

† मूल में—मैं थोड़े ही लोग हूं।

* अर्थात् बेतेल का ईश्वर।

† अर्थात् रुलाई का बांज।

और उस पर अर्घ देकर तेल डाल दिया। १५ और जहां परमेश्वर ने याक़ूब से बातें की, उस स्थान का नाम उस ने बेतेल रखा। १६ फिर उन्हों ने बेतेल से कूच किया; और एप्राता थोड़ी ही दूर रह गया था, कि राहेल को बच्चा जनने की बड़ी पीड़ा आने लगी। १७ जब उसको बड़ी बड़ी पीड़ा उठती थी तब धाय ने उस से कहा, मत डर; अब की भी तेरे बेटा ही होगा। १८ तब ऐसा हुआ, कि वह मर गई, और प्राण निकलते निकलते उस ने उस बेटे का नाम बेनोनी * रखा: पर उसके पिता ने उसका नाम बिन्यामीन † रखा। १९ यों राहेल मर गई, और एप्राता, अर्थात् बेतेलहेम के मार्ग में, उसको मिट्टी दी गई। २० और याक़ूब ने उसकी क़ब्र पर एक खम्भा खड़ा किया : राहेल की क़ब्र का वही खम्भा आज तक बना है। २१ फिर इस्राएल ने कूच किया, और एदेर नाम गुम्मट के आगे बढ़कर अपना तम्बू खड़ा किया। २२ जब इस्राएल उस देश में बसा था, तब एक दिन ऐसा हुआ, कि रूबेन ने जाकर अपने पिता की रखेली बिल्हा के साथ कुकर्म किया : और यह बात इस्राएल को मालूम हो गई।।

२३ याक़ूब के बारह पुत्र हुए। उन में से लिआः के पुत्र ये थे; अर्थात् याक़ूब का जेठा, रूबेन, फिर शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार, और जबूलून। २४ और राहेल के पुत्र ये थे; अर्थात् यूसुफ, और बिन्यामीन। २५ और राहेल की लौन्डी बिल्हा के पुत्र ये थे; अर्थात् दान, और नप्ताली। २६ और लिआः की लौन्डी जिल्पा के पुत्र ये थे : अर्थात् गाद, और आशेर; याक़ूब के ये ही पुत्र हुए, जो उस से पद्दनराम में उत्पन्न हुए।।

२७ और याक़ूब मम्रे में, जो करियत-अर्बा, अर्थात् हेब्रोन है, जहां इब्राहीम और इसहाक परदेशी होकर रहे थे, अपने पिता इसहाक के पास आया। २८ इसहाक की अवस्था एक सौ अस्सी बरस की हुई। २९ और इसहाक का प्राण छूट गया, और वह मर गया, और वह बूढ़ा और पूरी आयु का होकर अपने लोगों में जा मिला : और उसके पुत्र एसाव और याक़ूब ने उसको मिट्टी दी।।

(एसाव की वंशावली)

३६ एसाव जो एदोम भी कहलाता है, उसकी यह वंशावली है। २ एसाव ने तो कनानी लड़कियां ब्याह लीं; अर्थात् हित्ती एलोन की बेटी आदा को, और ओहोलीबामा को जो अना की बेटी, और हिव्वी सिबोन की नतिनी थी। ३ फिर उस ने इश्माएल की बेटी बासमत को भी, जो नबायोत की बहिन थी, ब्याह लिया। ४ आदा ने तो एसाव के जन्माए एलीपज को, और बासमत ने रूएल को उत्पन्न किया। ५ और ओहोलीबामा ने यूश, और यालाम, और कोरह को उत्पन्न किया, एसाव के ये ही पुत्र कनान देश में उत्पन्न हुए। ६ और एसाव अपनी पत्नियों, और बेटे-बेटियों, और घर के सब प्राणियों, और अपनी भेड़-बकरी, और गाय-बैल आदि सब पशुओं, निदान अपनी सारी सम्पत्ति को, जो उस ने कनान देश में संचय की थी, लेकर अपने भाई याक़ूब के पास से दूसरे देश को चला गया। ७ क्योंकि उनकी सम्पत्ति इतनी हो गई

* अर्थात् मेरा शोक मूल पुत्र।
† अर्थात् दहिने हाथ का पुत्र।

थी, कि वे इकट्ठे न रह सके; और पशुओं की बहुतायत के मारे उस देश में, जहां वे परदेशी होकर रहते थे, उनकी समाई न रही। ८ एसाव जो एदोम भी कहलाता है: सो सेईर नाम पहाड़ी देश में रहने लगा। ९ सेईर नाम पहाड़ी देश में रहनेहारे एदोमियों के मूल पुरुष एसाव की वंशावली यह है: १० एसाव के पुत्रों के नाम ये हैं; अर्थात् एसाव की पत्नी आदा का पुत्र एलीपज, और उसी एसाव की पत्नी बासमत का पुत्र रूएल। ११ और एलीपज के ये पुत्र हुए; अर्थात् तेमान, ओमार, सपो, गाताम, और कनज। १२ और एसाव के पुत्र एलीपज के तिम्ना नाम एक सुरैतिन थी, जिस ने एलीपज के जन्माए अमालेक को जन्म दिया: एसाव की पत्नी आदा के वंश में ये ही हुए। १३ और रूएल के ये पुत्र हुए; अर्थात् नहत, जेरह, शम्मा, और मिज्जा: एसाव की पत्नी बासमत के वंश में ये ही हुए। १४ और ओहोलीबामा जो एसाव की पत्नी, और सिबोन की नतिनी और अना की बेटी थी, उसके ये पुत्र हुए: अर्थात् उस ने एसाव के जन्माए यूश, यालाम और कोरह को जन्म दिया। १५ एसाववंशियों के अधिपति ये हुए: अर्थात् एसाव के जेठे एलीपज के वंश में से तो तेमान अधिपति, ओमार अधिपति, सपो अधिपति, कनज अधिपति, १६ कोरह अधिपति, गाताम अधिपति, अमालेख अधिपति: एलीपज-वंशियों में से, एदोम देश में ये ही अधिपति हुए: और ये ही आदा के वंश में हुए। १७ और एसाव के पुत्र रूएल के वंश में ये हुए; अर्थात् नहत अधिपति, जेरह अधिपति, शम्मा अधिपति, मिज्जा अधिपति: रूएलवंशियों में से, एदोम देश में ये ही अधिपति हुए; और ये ही एसाव की पत्नी बासमत के वंश में हुए। १८ और एसाव की पत्नी ओहोलीबामा के वंश में ये हुए; अर्थात् यूश अधिपति, यालाम अधिपति, कोरह अधिपति, अना की बेटी ओहोलीबामा जो एसाव की पत्नी थी उसके वंश में ये ही हुए। १९ एसाव जो एदोम भी कहलाता है, उसके वंश ये ही हैं, और उनके अधिपति भी ये ही हुए॥

२० सेईर जो होरी नाम जाति का था, उसके ये पुत्र उस देश में पहिले से रहते थे; अर्थात् लोतान, शोबाल, शिबोन, अना, २१ दीशोन, एसेर, और दीशान; एदोम देश में सेईर के ये ही होरी जातिवाले अधिपति हुए। २२ और लोतान के पुत्र, होरी, और हेमाम हुए; और लोतान की बहिन तिम्ना थी। २३ और शोबाल के ये पुत्र हुए; अर्थात् आल्वान, मानहत, एबाल, शपो, और ओनाम। २४ और सिबोन के ये पुत्र हुए; अर्थात् अय्या, और अना; यह वही अना है जिस को जंगल में अपने पिता सिबोन के गदहों को चराते चराते गरम पानी के झरने मिले। २५ और अना के दीशोन नाम पुत्र हुआ, और उसी अना के ओहोलीबामा नाम बेटी हुई। २६ और दीशोन के ये पुत्र हुए; अर्थात् हेमदान, एश्बान, यित्रान, और करान। २७ एसेर के ये पुत्र हुए; अर्थात् बिल्हान, जावान, और अकान। २८ दीशान के ये पुत्र हुए; अर्थात् ऊस, और अरान। २९ होरियों के अधिपति ये हुए; अर्थात् लोतान अधिपति, शोबाल अधिपति, शिबोन अधिपति, अना अधिपति, ३० दीशोन अधिपति, एसेर अधिपति, दीशान अधिपति, सेईर देश में होरी जातिवाले ये ही अधिपति हुए॥

३१ फिर जब इस्राएलियों पर किसी राजा ने राज्य न किया था, तब भी एदोम के देश में ये राजा हुए; ३२ अर्थात् बोर के पुत्र बेला ने एदोम में राज्य किया, और उसकी राजधानी का नाम दिन्हाबा है। ३३ बेला के मरने पर, बोस्रानिवासी जेरह का पुत्र योबाब उसके स्थान पर राजा हुआ। ३४ और योबाब के मरने पर, तेमानियों के देश का निवासी हूशाम उसके स्थान पर राजा हुआ। ३५ फिर हूशाम के मरने पर, बदद का पुत्र हदद उसके स्थान पर राजा हुआ: यह वही है जिस ने मिद्यानियों को मोआब के देश में मार लिया, और उसकी राजधानी का नाम अवीत है। ३६ और हदद के मरने पर, मस्रेकावासी सम्ला उसके स्थान पर राजा हुआ। ३७ फिर सम्ला के मरने पर, शाऊल जो महानद के तटवाले रहोबोत नगर का था, सो उसके स्थान पर राजा हुआ। ३८ और शाऊल के मरने पर, अकबोर का पुत्र बाल्हानान उसके स्थान पर राजा हुआ। ३९ और अकबोर के पुत्र बाल्हानान के मरने पर, हदर उसके स्थान पर राजा हुआ: और उसकी राजधानी का नाम पाऊ है; और उसकी पत्नी का नाम महेतबेल है, जो मेजाहब की नतिनी और मत्रेद की बेटी थी। ४० फिर एसाववंशियों के अधिपतियों के कुलों, और स्थानों के अनुसार उनके नाम ये हैं; अर्थात् तिम्ना अधिपति, अल्वा अधिपति, यतेत अधिपति, ४१ ओहोलीबामा अधिपति, एला अधिपति, पीनोन अधिपति, ४२ कनज अधिपति, तेमान अधिपति, मिबसार अधिपति, ४३ मग्दीएल अधिपति, ईराम अधिपति: एदोमवंशियों ने जो देश अपना कर लिया था, उसके निवासस्थानों में उनके ये ही अधिपति हुए। और एदोमी जाति का मूलपुरुष एसाव है॥

(यूसुफ के बेचे जाने का वर्णन)

३७ याक़ूब तो कनान देश में रहता था, जहां उसका पिता परदेशी होकर रहा था। २ और याक़ूब के वंश का वृत्तान्त * यह है: कि यूसुफ सतरह वर्ष का होकर अपने भाइयों के संग भेड़-बकरियों को चराता था; और वह लड़का अपने पिता की पत्नी बिल्हा, और जिल्पा के पुत्रों के संग रहा करता था: और उनकी बुराइयों का समाचार अपने पिता के पास पहुंचाया करता था। ३ और इस्राएल अपने सब पुत्रों से बढ़के यूसुफ से प्रीति रखता था, क्योंकि वह उसके बुढ़ापे का पुत्र था: और उस ने उसके लिये रंगबिरंगा अंगरखा बनवाया। ४ सो जब उसके भाइयों ने देखा, कि हमारा पिता हम सब भाइयों से अधिक उसी से प्रीति रखता है, तब वे उस से बैर करने लगे और उसके साथ ठीक तौर से बात भी नहीं करते थे। ५ और यूसुफ ने एक स्वप्न देखा, और अपने भाइयों से उसका वर्णन किया: तब वे उस से और भी द्वेष करने लगे। ६ और उस ने उन से कहा, जो स्वप्न मैं ने देखा है, सो सुनो: ७ हम लोग खेत में पूले बान्ध रहे हैं, और क्या देखता हूं कि मेरा पूला उठकर सीधा खड़ा हो गया; तब तुम्हारे पूलों ने मेरे पूले को चारों तरफ से घेर लिया और उसे दण्डवत् किया। ८ तब उसके भाइयों ने उस से कहा, क्या सचमुच तू हमारे ऊपर राज्य करेगा? वा सचमुच तू हम पर प्रभुता करेगा? सो वे उसके स्वप्नों और उसकी बातों के कारण उस से और भी अधिक बैर

* मूल में—याक़ूब की वंशावली।

करने लगे। ९ फिर उस ने एक और स्वप्न देखा, और अपने भाइयों से उसका भी यों वर्णन किया, कि सुनो, मैं ने एक और स्वप्न देखा है, कि सूर्य और चन्द्रमा, और ग्यारह तारे मुझे दण्डवत् कर रहे हैं। १० यह स्वप्न उस ने अपने पिता, और भाइयों से वर्णन किया: तब उसके पिता ने उसको दपटके कहा, यह कैसा स्वप्न है जो तू ने देखा है? क्या सचमुच मैं और तेरी माता और तेरे भाई सब जाकर तेरे आगे भूमि पर गिरके दण्डवत् करेंगे? ११ उसके भाई तो उससे डाह करते थे; पर उसके पिता ने उसके उस वचन को स्मरण रखा। १२ और उसके भाई अपने पिता की भेड़-बकरियों को चराने के लिये शकेम को गए। १३ तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा, तेरे भाई तो शकेम ही में भेड़-बकरी चरा रहे होंगे, सो जा, मैं तुझे उनके पास भेजता हूं। उस ने उस से कहा जो आज्ञा * मैं हाज़िर हूं। १४ उस ने उस से कहा, जा, अपने भाइयों और भेड़-बकरियों का हाल देख आ कि वे कुशल से तो हैं, फिर मेरे पास समाचार ले आ। सो उस ने उसको हेब्रोन की तराई में विदा कर दिया, और वह शकेम में आया। १५ और किसी मनुष्य ने उसको मैदान में इधर उधर भटकते हुए पाकर उस से पूछा, तू क्या ढूंढता है? १६ उस ने कहा, मैं तो अपने भाइयों को ढूंढता हूं: कृपा कर मुझे बता, कि वे भेड़-बकरियों को कहां चरा रहे हैं? १७ उस मनुष्य ने कहा, वे तो यहां से चले गए हैं: और मैं ने उनको यह कहते सुना, कि आओ, हम दोतान को चलें। सो यूसुफ अपने भाइयों के पास चला, और उन्हें दोतान में पाया। १८ और ज्योंही उन्हों ने उसे दूर से आते देखा, तो उसके निकट आने के पहिले ही उसे मार डालने की युक्ति की। १९ और वे आपस में कहने लगे, देखो, वह स्वप्न देखनेहारा आ रहा है। २० सो आओ, हम उसको घात करके किसी गड़हे में डाल दें, और यह कह देंगे, कि कोई दुष्ट पशु उसको खा गया। फिर हम देखेंगे कि उसके स्वप्नों का क्या फल होगा। २१ यह सुनके रूबेन ने उसको उनके हाथ से बचाने की मनसा से कहा, हम उसको प्राण से तो न मारें। २२ फिर रूबेन ने उन से कहा, लोहू मत बहाओ, उसको जंगल के इस गड़हे में डाल दो, और उस पर हाथ मत उठाओ। वह उसको उनके हाथ से छुड़ाकर पिता के पास फिर पहुंचाना चाहता था। २३ सो ऐसा हुआ, कि जब यूसुफ अपने भाइयों के पास पहुंचा तब उन्हों ने उसका रंगबिरंगा अंगरखा, जिसे वह पहिने हुए था, उतार लिया: २४ और यूसुफ को उठाकर गड़हे में डाल दिया: वह गड़हा तो सूखा था और उस में कुछ जल न था। २५ तब वे रोटी खाने को बैठ गए: और आंखें उठाकर क्या देखा, कि इश्माएलियों का एक दल ऊंटों पर सुगन्धद्रव्य, बलसान, और गन्धरस लादे हुए, गिलाद से मिस्र को चला जा रहा है। २६ तब यहूदा ने अपने भाइयों से कहा, अपने भाई को घात करने और उसका खून छिपाने से क्या लाभ होगा? २७ आओ, हम उसे इश्माएलियों के हाथ बेच डालें, और अपना हाथ उस पर न उठाएं, क्योंकि वह हमारा भाई और हमारी ही हड्डी और मांस है, सो उसके भाइयों ने उसकी बात मान ली। तब मिद्यानी व्यापारी उधर से होकर उनके पास पहुंचे: २८ सो यूसुफ के भाइयों ने उसको उस गड़हे में से खींचके बाहर

---

* मूल में—मुझे देख।

निकाला, और इश्माएलियों के हाथ चांदी के बीस टुकड़ों में बेच दिया: और वे यूसुफ को मिस्र में ले गए। २६ और रूबेन ने गड़हे पर लौटकर क्या देखा, कि यूसुफ गड़हे में नहीं हैं; सो उस ने अपने वस्त्र फाड़े। ३० और अपने भाइयों के पास लौटकर कहने लगा, कि लड़का तो नहीं है; अब मैं किधर जाऊं? ३१ और तब उन्हों ने यूसुफ का अंगरखा लिया, और एक बकरे को मारके उसके लोहू में उसे डुबा दिया। ३२ और उन्हों ने उस रंगबिरंगे अंगरखे को अपने पिता के पास भेजकर कहला दिया; कि यह हम को मिला है, सो देखकर पहिचान ले, कि यह तेरे पुत्र का अंगरखा है कि नहीं। ३३ उस ने उसको पहिचान लिया, और कहा, हां यह मेरे ही पुत्र का अंगरखा है; किसी दुष्ट पशु ने उसको खा लिया है; निःसन्देह यूसुफ फाड़ डाला गया है। ३४ तब याकूब ने अपने वस्त्र फाड़े और कमर में टाट लपेटा, और अपने पुत्र के लिये बहुत दिनों तक विलाप करता रहा। ३५ और उसके सब बेटे-बेटियों ने उसको शान्ति देने का यत्न किया; पर उसको शान्ति न मिली; और वह यही कहता रहा, मैं तो विलाप करता हुआ अपने पुत्र के पास अधोलोक में उतर जाऊंगा। इस प्रकार उसका पिता उसके लिये रोता ही रहा। ३६ और मिद्यानियों * ने यूसुफ को मिस्र में ले जाकर पोतीपर नाम, फ़िरौन के एक हाकिम, और जल्लादों के प्रधान, के हाथ बेच डाला॥

(यहूदा के पुत्रों की उत्पत्ति का वर्णन)

३८ उन्हीं दिनों में ऐसा हुआ, कि यहूदा अपने भाइयों के पास से चला गया, और हीरा नाम एक अदुल्लामवासी पुरुष के पास डेरा किया। २ वहां यहूदा ने शूआ नाम एक कनानी पुरुष की बेटी को देखा; और उसको ब्याहकर उसके पास गया। ३ वह गर्भवती हुई, और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और यहूदा ने उसका नाम एर रखा। ४ और वह फिर गर्भवती हुई, और उसके एक पुत्र और उत्पन्न हुआ, और उसका नाम ओनान रखा गया। ५ फिर उसके एक पुत्र और उत्पन्न हुआ, और उसका नाम शेला रखा गया: और जिस समय इसका जन्म हुआ उस समय यहूदा कजीब में रहता था। ६ और यहूदा ने तामार नाम एक स्त्री से अपने जेठे एर का विवाह कर दिया। ७ परन्तु यहूदा का वह जेठा एर यहोवा के लेखे में दुष्ट था, इसलिये यहोवा ने उसको मार डाला। ८ तब यहूदा ने ओनान से कहा, अपनी भौजाई के पास जा, और उसके साथ देवर का धर्म पूरा करके अपने भाई के लिये सन्तान उत्पन्न कर। ९ ओनान तो जानता था कि सन्तान तो मेरी न ठहरेगी: सो ऐसा हुआ, कि जब वह अपनी भौजाई के पास गया, तब उस ने भूमि पर वीर्य गिराकर नाश किया, जिस से ऐसा न हो कि उसके भाई के नाम से वंश चले। १० यह काम जो उस ने किया उस से यहोवा अप्रसन्न हुआ: और उस ने उसको भी मार डाला। ११ तब यहूदा ने इस डर के मारे, कि कहीं ऐसा न हो कि अपने भाइयों की नाईं शेला भी मरे, अपनी बहू तामार से कहा, जब तक मेरा पुत्र शेला सियाना न हो तब तक अपने पिता के घर में विधवा ही बैठी रह, सो तामार अपने पिता के घर में जाकर रहने लगी। १२ बहुत समय के बीतने पर यहूदा की पत्नी जो शूआ की बेटी थी सो मर गई; फिर यहूदा शोक से

* मूल में—मदानियों।

छूटकर अपने मित्र हीरा अदुल्लामवासी समेत अपनी भेड़-बकरियों का ऊन कतरने-वालों के पास तिम्नाथ को गया। १३ और तामार को यह समाचार मिला, कि तेरा ससुर अपनी भेड़-बकरियों का ऊन कतराने के लिये तिम्नाथ को जा रहा है। १४ तब उस ने यह सोचकर, कि शेला सियाना तो हो गया पर मैं उसकी स्त्री नहीं होने पाई; अपना विधवापन का पहिरावा उतारा, और घूंघट डालकर अपने को ढांप लिया, और एनैम नगर के फाटक के पास, जो तिम्नाथ के मार्ग में है, जा बैठी: १५ जब यहूदा ने उसको देखा, उस ने उस को वेश्या समझा; क्योंकि वह अपना मुंह ढांपे हुए थी। १६ और वह मार्ग से उसकी ओर फिरा, और उस से कहने लगा, मुझे अपने पास आने दे, (क्योंकि उसे यह मालूम न था कि वह उसकी बहू है)। और वह कहने लगी, कि यदि मैं तुझे अपने पास आने दूं, तो तू मुझे क्या देगा? १७ उस ने कहा, मैं अपनी बकरियों में से बकरी का एक बच्चा तेरे पास भेज दूंगा। तब उस ने कहा, भला उसके भेजने तक क्या तू हमारे पास कुछ रेहन रख जाएगा? १८ उस ने पूछा, मैं तेरे पास क्या रेहन रख जाऊं? उस ने कहा, अपनी मुहर, और बाजूबन्द, और अपने हाथ की छड़ी। तब उस ने उसको वे वस्तुएं दे दीं, और उसके पास गया, और वह उस से गर्भवती हुई। १९ तब वह उठकर चली गई, और अपना घूंघट उतारके अपना विधवापन का पहिरावा फिर पहिन लिया। २० तब यहूदा ने बकरी का एक बच्चा अपन मित्र उस अदुल्लामवासी के हाथ भेज दिया, कि वह रेहन रखी हुई वस्तुएं उस स्त्री के हाथ से छुड़ा ले आए; पर वह स्त्री उसको न मिली। २१ तब उस ने वहां के लोगों से पूछा, कि वह देवदासी जो एनैम में मार्ग की एक ओर बैठी थी, कहां है? उन्हों ने कहा, यहां तो कोई देवदासी न थी। २२ सो उस ने यहूदा के पास लौटके कहा, मुझे वह नहीं मिली; और उस स्थान के लोगों ने कहा, कि यहां तो कोई देवदासी न थी। २३ तब यहूदा ने कहा, अच्छा, वह बन्धक उसी के पास रहने दे, नहीं तो हम लोग तुच्छ गिने जाएंगे: देख, मैं ने बकरी का यह बच्चा भेज दिया, पर वह तुझे नहीं मिली। २४ और तीन महीनें के पीछे यहूदा को यह समाचार मिला, कि तेरी बहू ने व्यभिचार किया है; वरन वह व्यभिचार से गर्भवती भी हो गई है। तब यहूदा ने कहा, उसको बाहर ले आओ, कि वह जलाई जाए। २५ जब उसे बाहर निकाल रहे थे, तब उस ने अपने ससुर के पास यह कहला भेजा, कि जिस पुरुष की ये वस्तुएं हैं, उसी से मैं गर्भवती हूं; फिर उस ने यह भी कहलाया, कि पहिचान तो सही, कि यह मुहर, और बाजूबन्द, और छड़ी किस की हैं। २६ यहूदा ने उन्हें पहिचानकर कहा, वह तो मुझ से कम दोषी है; क्योंकि मैं ने उसे अपने पुत्र शेला को न ब्याह दिया। और उस ने उस से फिर कभी प्रसंग न किया। २७ जब उसके जनने का समय आया, तब यह जान पड़ा कि उसके गर्भ में जुड़वे बच्चे हैं। २८ और जब वह जनने लगी तब एक बालक ने अपना हाथ बढ़ाया: और धाय ने लाल सूत लेकर उसके हाथ में यह कहते हुये बान्ध दिया, कि पहिले यही उत्पन्न हुआ। २९ जब उस ने हाथ समेट लिया, तब उसका भाई उत्पन्न हो गया: तब उस धाय ने कहा, तू क्यों बरबस निकल आया है?

इसलिये उसका नाम पेरेस * रखा गया। ३० पीछे उसका भाई जिसके हाथ में लाल सूत बन्धा था उत्पन्न हुआ, और उसका नाम जेरह रखा गया॥

(यूसुफ के बन्दीगृह में पड़ने और उस से छूटने का वर्णन)

३९ जब यूसुफ मिस्र में पहुंचाया गया, तब पोतीपर नाम एक मिस्री, जो फ़िरौन का हाकिम, और जल्लादों का प्रधान था, उस ने उसको इश्माएलियों के हाथ से, जो उसे वहां ले गए थे, मोल लिया। २ और यूसुफ अपने मिस्री स्वामी के घर में रहता था, और यहोवा उसके संग था; सो वह भाग्यवान् पुरुष हो गया। ३ और यसुफ के स्वामी ने देखा, कि यहोवा उसके संग रहता है, और जो काम वह करता है उसको यहोवा उसके हाथ से सुफल कर देता है। ४ तब उसकी अनुग्रह की दृष्टि उस पर हुई, और वह उसकी सेवा टहल करने के लिये नियुक्त किया गया: फिर उस ने उसको अपने घर का अधिकारी बनाके अपना सब कुछ उसके हाथ में सौंप दिया। ५ और जब से उस ने उसको अपने घर का और अपनी सारी सम्पत्ति का अधिकारी बनाया, तब से यहोवा यूसुफ के कारण उस मिस्री के घर पर आशीष देने लगा; और क्या घर में, क्या मैदान में, उसका जो कुछ था, सब पर यहोवा की आशीष होने लगी। ६ सो उस ने अपना सब कुछ यूसुफ के हाथ में यहां तक छोड़ दिया: कि अपने खाने की रोटी को छोड़, वह अपनी सम्पत्ति का हाल कुछ न जानता था। और यूसुफ सुन्दर और रूपवान् था। ७ इन बातों के पश्चात् ऐसा हुआ, कि उसके स्वामी की पत्नी ने यूसुफ की ओर आंख लगाई; और कहा, मेरे साथ सो। ८ पर उस ने अस्वीकार करते हुए अपने स्वामी की पत्नी से कहा, सुन, जो कुछ इस घर में है मेरे हाथ में है; उसे मेरा स्वामी कुछ नहीं जानता, और उस ने अपना सब कुछ मेरे हाथ में सौंप दिया है। ९ इस घर में मुझ से बड़ा कोई नहीं; और उस ने, तुझे छोड़, जो उसकी पत्नी है; मुझ से कुछ नहीं रख छोड़ा; सो भला, मैं ऐसी बड़ी दुष्टता करके परमेश्वर का अपराधी क्योंकर बनूं? १० और ऐसा हुआ, कि वह प्रति दिन यूसुफ से बातें करती रही, पर उस ने उसकी न मानी, कि उसके पास लेटे वा उसके संग रहे। ११ एक दिन क्या हुआ, कि यूसुफ अपना काम काज करने के लिये घर में गया, और घर के सेवकों में से कोई भी घर के अन्दर न था। १२ तब उस स्त्री ने उसका वस्त्र पकड़कर कहा, मेरे साथ सो, पर वह अपना वस्त्र उसके हाथ में छोड़कर भागा, और बाहर निकल गया। १३ यह देखकर, कि वह अपना वस्त्र मेरे हाथ में छोड़कर बाहर भाग गया, १४ उस स्त्री ने अपने घर के सेवकों को बुलाकर कहा, देखो, वह एक इब्री मनुष्य को हमारा तिरस्कार करने के लिये हमारे पास ले आया है। वह तो मेरे साथ सोने के मतलब से मेरे पास अन्दर आया था और मैं ऊंचे स्वर से चिल्ला उठी। १५ और मेरी बड़ी चिल्लाहट सुनकर वह अपना वस्त्र मेरे पास छोड़कर भागा, और बाहर निकल गया। १६ और वह उसका वस्त्र उसके स्वामी के घर आने तक अपने पास रखे रही। १७ तब उस ने उस से इस प्रकार की बातें कहीं, कि वह इब्री दास जिसको तू हमारे पास ले आया है, सो मुझ से हंसी करने के

* अर्थात् टूट पड़ना।

लिये मेरे पास आया था। १८ और जब मैं ऊंचे स्वर से चिल्ला उठी, तब वह अपना वस्त्र मेरे पास छोड़कर बाहर भाग गया। १९ अपनी पत्नी की ये बातें सुनकर, कि तेरे दास ने मुझ से ऐसा ऐसा काम किया, यूसुफ के स्वामी का कोप भड़का। २० और यूसुफ के स्वामी ने उसको पकड़कर बन्दीगृह में, जहां राजा के क़ैदी बन्द थे, डलवा दिया: सो वह उस बन्दीगृह में रहने लगा। २१ पर यहोवा यूसुफ के संग संग रहा, और उस पर करुणा की, और बन्दीगृह के दारोगा के अनुग्रह की दृष्टि उस पर हुई। २२ सो बन्दीगृह के दारोगा ने उन सब बन्धुओं को, जो कारागार में थे, यूसुफ के हाथ में सौंप दिया; और जो जो काम वे वहां करते थे, वही उसी की आज्ञा से होता था। २३ बन्दीगृह के दारोगा के वश में जो कुछ था; क्योंकि उस में से उसको कोई भी वस्तु देखनी न पड़ती थी; इसलिये कि यहोवा यूसुफ के साथ था; और जो कुछ वह करता था, यहोवा उसको उस में सफलता देता था॥

४० इन बातों के पश्चात् ऐसा हुआ, कि मिस्र के राजा के पिलानेहारे और पकानेहारे ने अपने स्वामी का कुछ अपराध किया। २ तब फ़िरौन ने अपने उन दोनों हाकिमों पर, अर्थात् पिलानेहारों के प्रधान, और पकानेहारों के प्रधान पर क्रोधित होकर ३ उन्हें क़ैद कराके, जल्लादों के प्रधान के घर के उसी बन्दीगृह में, जहां यूसुफ बन्धुआ था, डलवा दिया। ४ तब जल्लादों के प्रधान ने उनको यूसुफ के हाथ सौंपा, और वह उनकी सेवा टहल करने लगा: सो वे कुछ दिन तक बन्दीगृह में रहे। ५ और मिस्र के राजा का पिलानेहारा और पकानेहारा, जो बन्दीगृह में बन्द थे, उन दोनों ने एक ही रात में, अपने अपने होनहार के अनुसार,* स्वप्न देखा। ६ बिहान को जब यूसुफ उनके पास अन्दर गया, तब उन पर उस ने जो दृष्टि की, तो क्या देखता है, कि वे उदास हैं। ७ सो उस ने फ़िरौन के उन हाकिमों से, जो उसके साथ उसके स्वामी के घर के बन्दीगृह में थे, पूछा, कि आज तुम्हारे मुंह क्यों उदास हैं? ८ उन्हों ने उस से कहा, हम दोनों ने स्वप्न देखा है, और उनके फल का बतानेवाला कोई भी नहीं। यूसुफ ने उन से कहा, क्या स्वप्नों का फल कहना परमेश्वर का काम नहीं है? मुझे अपना अपना स्वप्न बताओ। ९ तब पिलानेहारों का प्रधान अपना स्वप्न यूसुफ को यों बताने लगा: कि मैं ने स्वप्न में देखा, कि मेरे साम्हने एक दाखलता है; १० और उस दाखलता में तीन डालियां हैं: और उस में मानो कलियां लगीं हैं, और वे फूलीं और उसके गुच्छों में दाख लगकर पक गईं: ११ और फ़िरौन का कटोरा मेरे हाथ में था: सो मैं ने उन दाखों को लेकर फ़िरौन के कटोरे में निचोड़ा, और कटोरे को फ़िरौन के हाथ में दिया। १२ यूसुफ ने उस से कहा, इसका फल यह है; कि तीन डालियों का अर्थ तीन दिन है: १३ सो अब से तीन दिन के भीतर फ़िरौन तेरा सिर ऊंचा करेगा,† और फिर से तेरे पद पर तुझे नियुक्त करेगा, और तू पहले की नाईं फ़िरौन का पिलानेहारा होकर उसका कटोरा उसके हाथ में फिर दिया करेगा। १४ सो जब तेरा भला हो जाए तब मुझे स्मरण

* मूल में—अपने अपने स्वप्न के फल कहने के अनुसार।

† मूल में—तेरा सिर उठाएगा।

करना, और मुझ पर कृपा करके, फ़िरौन से मेरी चर्चा चलाना, और इस घर से मुझे छुड़वा देना। १५ क्योंकि सचमुच इब्रानियों के देश से मुझे चुरा कर ले आए हैं, और यहां भी मैं ने कोई ऐसा काम नहीं किया, जिसके कारण मैं इस कारागार में डाला जाऊं। १६ यह देखकर, कि उसके स्वप्न का फल अच्छा निकला, पकानेहारों के प्रधान ने यूसुफ से कहा, मैं ने भी स्वप्न देखा है, वह यह है: मैं ने देखा, कि मेरे सिर पर सफेद रोटी की तीन टोकरियां हैं: १७ और ऊपर की टोकरी में फ़िरौन के लिये सब प्रकार की पकी पकाई वस्तुएं हैं; और पक्षी मेरे सिर पर की टोकरी में से उन वस्तुओं को खा रहे हैं। १८ यूसुफ ने कहा, इसका फल यह है; कि तीन टोकरियों का अर्थ तीन दिन है। १९ सो अब से तीन दिन के भीतर फ़िरौन तेरा सिर कटवाकर * तुझे एक वृक्ष पर टंगवा देगा, और पक्षी तेरे मांस को नोच नोच कर खाएंगे। २० और तीसरे दिन फ़िरौन का जन्मदिन था, उस ने अपने सब कर्मचारियों की जेवनार की, और उन में से पिलानेहारों के प्रधान, और पकानेहारों के प्रधान दोनों को बन्दीगृह से निकलवाया †। २१ और पिलानेहारों के प्रधान को तो पिलानेहारे के पद पर फिर से नियुक्त किया, और वह फ़िरौन के हाथ में कटोरा देने लगा। २२ पर पकानेहारों के प्रधान को उस ने टंगवा दिया, जैसा कि यूसुफ ने उनके स्वप्नों का फल उन से कहा था। २३ फिर भी पिलानेहारों के प्रधान ने यूसुफ को स्मरण न रखा; परन्तु उसे भूल गया॥

* मूल में—तेरा सिर तुझ पर से उठाके।
† मूल में—दोनों के सिर उठाये।

४१ पूरे दो बरस के बीतने पर फ़िरौन ने यह स्वप्न देखा, कि वह नील नदी * के किनारे पर खड़ा है। २ और उस नदी में से सात सुन्दर और मोटी मोटी गायें निकलकर कछार की घास चरने लगीं। ३ और, क्या देखा, कि उनके पीछे और सात गायें, जो कुरूप और दुर्बल हैं, नदी से निकलीं; और दूसरी गायों के निकट नदी के तट पर जा खड़ी हुईं। ४ तब ये कुरूप और दुर्बल गायें उन सात सुन्दर और मोटी मोटी गायों को खा गईं। तब फ़िरौन जाग उठा। ५ और वह फिर सो गया और दूसरा स्वप्न देखा, कि एक डंठी में से सात मोटी और अच्छी अच्छी बालें निकलीं। ६ और, क्या देखा, कि उनके पीछे सात बालें पतली और पुरवाई से मुरझाई हुई निकलीं। ७ और इन पतली बालों ने उन सातों मोटी और अन्न से भरी हुई बालों को निगल लिया। तब फ़िरौन जागा, और उसे मालूम हुआ कि यह स्वप्न ही था। ८ भोर को फ़िरौन का मन व्याकुल हुआ; और उस ने मिस्र के सब ज्योतिषियों, और पण्डितों को बुलवा भेजा; और उनको अपने स्वप्न बताए; पर उन में से कोई भी उनका फल फ़िरौन से न कह सका। ९ तब पिलानेहारों का प्रधान फ़िरौन से बोल उठा, कि मेरे अपराध आज मुझे स्मरण आए: १० जब फ़िरौन अपने दासों से क्रोधित हुआ था, और मुझे और पकानेहारों के प्रधान को क़ैद कराके जल्लादों के प्रधान के घर के बन्दीगृह में डाल दिया था; ११ तब हम दोनों ने, एक ही रात में, अपने अपने होनहार के अनुसार,†

* मूल में—योर।
† मूल में—अपने अपने स्वप्न के फल कहने के अनुसार।

स्वप्न देखा; १२ और वहां हमारे साथ एक इब्री जवान था, जो जल्लादों के प्रधान का दास था; सो हम ने उसको बताया, और उस ने हमारे स्वप्नों का फल हम से कहा, हम में से एक एक के स्वप्न का फल उस ने बता दिया। १३ और जैसा जैसा फल उस ने हम से कहा था, वैसा ही हुआ भी, अर्थात् मुझ को तो मेरा पद फिर मिला, पर वह फांसी पर लटकाया गया। १४ तब फ़िरौन ने यूसुफ को बुलवा भेजा। और वह झटपट बन्दीगृह से बाहर निकाला गया, और बाल बनवाकर, और वस्त्र बदलकर फ़िरौन के साम्हने आया। १५ फ़िरौन ने यूसुफ से कहा, मैं ने एक स्वप्न देखा है, और उसके फल का बतानेवाला कोई भी नहीं; और मैं ने तेरे विषय में सुना है, कि तू स्वप्न सुनते ही उसका फल बता सकता है। १६ यूसुफ ने फ़िरौन से कहा, मैं तो कुछ नहीं जानता *: परमेश्वर ही फ़िरौन के लिये शुभ वचन देगा। १७ फिर फ़िरौन यूसुफ से कहने लगा, मैं ने अपने स्वप्न में देखा, कि मैं नील नदी के किनारे पर खड़ा हूं। १८ फिर, क्या देखा, कि नदी में से सात मोटी और सुन्दर सुन्दर गायें निकलकर कछार की घास चरने लगीं। १९ फिर, क्या देखा, कि उनके पीछे सात और गायें निकलीं, जो दुबली, और बहुत कुरूप, और दुर्बल हैं; मैं ने तो सारे मिस्र देश में ऐसी कुडौल गायें कभी नहीं देखीं। २० और इन दुर्बल और कुडौल गायों ने उन पहली सातों मोटी मोटी गायों को खा लिया। २१ और जब वे उनको खा गईं तब यह मालूम नहीं होता था कि वे उनको खा गई हैं, क्योंकि वे पहिले की नाईं जैसी की तैसी कुडौल रहीं। तब मैं जाग उठा। २२ फिर मैं ने दूसरा स्वप्न देखा, कि एक ही डंठी में सात अच्छी अच्छी और अन्न से भरी हुई बालें निकलीं। २३ फिर, क्या देखता हूं, कि उनके पीछे और सात बालें छूछी छूछी और पतली और पुरवाई से मुरझाई हुई निकलीं। २४ और इन पतली बालों ने उन सात अच्छी अच्छी बालों को निगल लिया। इसे मैं ने ज्योतिषियों को बताया, पर इस का समझानेहारा कोई नहीं मिला। २५ तब यूसुफ ने फ़िरौन से कहा, फ़िरौन का स्वप्न एक ही है, परमेश्वर जो काम किया चाहता है, उसको उस ने फ़िरौन को जताया है। २६ वे सात अच्छी अच्छी गायें सात वर्ष हैं; और वे सात अच्छी अच्छी बालें भी सात वर्ष हैं; स्वप्न एक ही है। २७ फिर उनके पीछे जो दुर्बल और कुडौल गायें निकलीं, और जो सात छूछी और पुरवाई से मुरझाई हुई बालें निकलीं, वे अकाल के सात वर्ष होंगे। २८ यह वही बात है, जो मैं फ़िरौन से कह चुका हूं, कि परमेश्वर जो काम किया चाहता है, उसे उस ने फ़िरौन को दिखाया है। २९ सुन, सारे मिस्र देश में सात वर्ष तो बहुतायत की उपज के होंगे। ३० उनके पश्चात् सात वर्ष अकाल के आयेंगे, और सारे मिस्र देश में लोग इस सारी उपज को भूल जायेंगे; और अकाल से देश का नाश होगा। ३१ और सुकाल (बहुतायत की उपज) देश में फिर स्मरण न रहेगा क्योंकि अकाल अत्यन्त भयंकर होगा। ३२ और फ़िरौन ने जो यह स्वप्न दो बार देखा है इसका भेद यही है, कि यह बात परमेश्वर की ओर से नियुक्त हो चुकी है, और परमेश्वर इसे शीघ्र ही पूरा करेगा। ३३ इसलिये अब

* मूल में—मेरे बिना।

फ़िरौन किसी समझदार और बुद्धिमान् पुरुष को ढूंढ करके उसे मिस्र देश पर प्रधान मंत्री ठहराए। ३४ फ़िरौन यह करे, कि देश पर अधिकारियों को नियुक्त करे, और जब तक सुकाल के सात वर्ष रहें तब तक वह मिस्र देश की उपज का पंचमांश लिया करे। ३५ और वे इन अच्छे वर्षों में सब प्रकार की भोजनवस्तु इकट्ठा करें, और नगर नगर में भण्डार घर भोजन के लिये फ़िरौन के वश में करके उसकी रक्षा करें। ३६ और वह भोजनवस्तु अकाल के उन सात वर्षों के लिये, जो मिस्र देश में आएंगे, देश के भोजन के निमित्त रखी रहे, जिस से देश उस अकाल से सत्यानाश न हो जाए। ३७ यह बात फ़िरौन और उसके सारे कर्मचारियों को अच्छी लगी। ३८ सो फ़िरौन ने अपने कर्मचारियों से कहा, कि क्या हम को ऐसा पुरुष जैसा यह है, जिस में परमेश्वर का आत्मा रहता है, मिल सकता है? ३९ फिर फ़िरौन ने यूसुफ से कहा, परमेश्वर ने जो तुझे इतना ज्ञान दिया है, कि तेरे तुल्य कोई समझदार और बुद्धिमान् नहीं; ४० इस कारण तू मेरे घर का अधिकारी होगा, और तेरी आज्ञा के अनुसार मेरी सारी प्रजा चलेगी, केवल राजगद्दी के विषय में तुझ से बड़ा ठहरूंगा। ४१ फिर फ़िरौन ने यूसुफ से कहा, सुन, मैं तुझ को मिस्र के सारे देश के ऊपर अधिकारी ठहरा देता हूं। ४२ तब फ़िरौन ने अपने हाथ से अंगूठी निकालके यूसुफ के हाथ में पहिना दी; और उसको बढ़िया मलमल के वस्त्र पहिनवा दिए, और उसके गले में सोने की जंजीर डाल दी; ४३ और उसको अपने दूसरे रथ पर चढ़वाया; और लोग उसके आगे आगे यह प्रचार करते चले, कि घुटने टेककर दण्डवत् करो* और उस ने उसको मिस्र के सारे देश के ऊपर प्रधान मंत्री ठहराया। ४४ फिर फ़िरौन ने यूसुफ से कहा, फ़िरौन तो मैं हूं, और सारे मिस्र देश में कोई भी तेरी आज्ञा के बिना हाथ पांव न हिलाएगा। ४५ और फ़िरौन ने यूसुफ का नाम सापनत्पानेह† रखा। और ओन नगर के याजक पोतीपेरा की बेटी आसनत से उसका ब्याह करा दिया। और यूसुफ मिस्र के सारे देश में दौरा करने लगा। ४६ जब यूसुफ मिस्र के राजा फ़िरौन के सम्मुख खड़ा हुआ, तब वह तीस वर्ष का था। सो वह फ़िरौन के सम्मुख से निकलकर मिस्र के सारे देश में दौरा करने लगा। ४७ सुकाल के सातों वर्षों में भूमि बहुतायत से अन्न‡ उपजाती रही। ४८ और यूसुफ उन सातों वर्षों में सब प्रकार की भोजनवस्तुएं, जो मिस्र देश में होती थीं, जमा करके नगरों में रखता गया, और हर एक नगर के चारों ओर के खेतों की भोजनवस्तुओं को वह उसी नगर में इकट्ठा करता गया। ४९ सो यूसुफ ने अन्न को समुद्र की बालू के समान अत्यन्त बहुतायत से राशि राशि करके रखा, यहां तक कि उस ने उनका गिनना छोड़ दिया; क्योंकि वे असंख्य हो गईं। ५० अकाल के प्रथम वर्ष के आने से पहिले यूसुफ के दो पुत्र, ओन के याजक पोतीपेरा की बेटी आसनत से जन्मे। ५१ और यूसुफ ने अपने जेठे का नाम यह कहके मनश्शे§ रखा, कि परमेश्वर ने मुझ से मेरा सारा क्लेश, और मेरे पिता का सारा घराना भुला दिया है।

* मूल में—अब्रेक। इस मिस्री शब्द का अर्थ निश्चित नहीं।

† इस मिस्री शब्द के अर्थ में सन्देह है।

‡ मूल में—मुट्ठी भर भरके।

§ अर्थात् बिसरवानेहारा।

५२ और दूसरे का नाम उस ने यह कहकर एप्रैम * रखा, कि मुझे दु:ख भोगने के देश में परमेश्वर ने फुलाया फलाया है। ५३ और मिस्र देश के सुकाल के वे सात वर्ष समाप्त हो गए। ५४ और यूसुफ के कहने के अनुसार सात वर्षों के लिये अकाल आरम्भ हो गया। और सब देशों में अकाल पड़ने लगा; परन्तु सारे मिस्र देश में अन्न था। ५५ जब मिस्र का सारा देश भूखों मरने लगा; तब प्रजा फ़िरौन से चिल्ला चिल्लाकर रोटी मांगने लगी: और वह सब मिस्रियों से कहा करता था, यूसुफ के पास जाओ: और जो कुछ वह तुम से कहे, वही करो। ५६ सो जब अकाल सारी पृथ्वी पर फैल गया, और मिस्र देश में काल का भयंकर रूप हो गया, तब यूसुफ सब भण्डारों को खोल खोलके मिस्रियों के हाथ अन्न बेचने लगा। ५७ सो सारी पृथ्वी के लोग मिस्र में अन्न मोल लेने के लिये यूसुफ के पास आने लगे, क्योंकि सारी पृथ्वी पर भयंकर अकाल था॥

(यूसुफ के भाइयों के उस से मिलने का वर्णन)

४२ जब याक़ूब ने सुना कि मिस्र में अन्न है, तब उस ने अपने पुत्रों से कहा, तुम एक दूसरे का मुंह क्यों देख रहे हो। २ फिर उस ने कहा, मैं ने सुना है कि मिस्र में अन्न है; इसलिये तुम लोग वहां जाकर हमारे लिये अन्न मोल ले आओ, जिस से हम न मरें, वरन जीवित रहें। ३ सो यूसुफ के दस भाई अन्न मोल लेने के लिये मिस्र को गए। ४ पर यूसुफ के भाई बिन्यामीन को याक़ूब ने यह सोचकर भाइयों के साथ न भेजा, कि कहीं ऐसा न हो कि

* अर्थात् अत्यन्त उपजाऊ।

उस पर कोई विपत्ति आ पड़े। ५ सो जो लोग अन्न मोल लेने आए उनके साथ इस्राएल के पुत्र भी आए; क्योंकि कनान देश में भी भारी अकाल था। ६ यूसुफ तो मिस्र देश का अधिकारी था, और उस देश के सब लोगों के हाथ वही अन्न बेचता था; इसलिये जब यूसुफ के भाई आए तब भूमि पर मुंह के बल गिरके उसको दण्डवत् किया। ७ उनको देखकर यूसुफ ने पहिचान तो लिया, परन्तु उनके साम्हने भोला बनके कठोरता के साथ उन से पूछा, तुम कहां से आते हो? उन्हों ने कहा, हम तो कनान देश से अन्न मोल लेने के लिये आए हैं। ८ यूसुफ ने तो अपने भाइयों को पहिचान लिया, परन्तु उन्हों ने उसको न पहिचाना। ९ तब यूसुफ अपने उन स्वप्नों को स्मरण करके जो उस ने उनके विषय में देखे थे, उन से कहने लगा, तुम भेदिए हो; इस देश की दुर्दशा * को देखने के लिये आए हो। १० उन्हों ने उस से कहा, नहीं, नहीं, हे प्रभु, तेरे दास भोजनवस्तु मोल लेने के लिये आए हैं। ११ हम सब एक ही पिता के पुत्र हैं, हम सीधे मनुष्य हैं, तेरे दास भेदिए नहीं। १२ उस ने उन से कहा, नहीं नहीं, तुम इस देश की दुर्दशा देखने ही को आए हो। १३ उन्हों ने कहा, हम तेरे दास बारह भाई हैं, और कनान देशवासी एक ही पुरुष के पुत्र हैं, और छोटा इस समय हमारे पिता के पास है, और एक जाता रहा। १४ तब यूसुफ ने उन से कहा, मैं ने तो तुम से कह दिया, कि तुम भेदिए हो; १५ सो इसी रीति से तुम परखे जाओगे, फ़िरौन के जीवन की शपथ, जब तक तुम्हारा छोटा भाई यहां न आए तब तक तुम यहां से

* मूल में—नंगेपन।

न निकलने पाग्रोगे। १६ सो अपने में से एक को भेज दो, कि वह तुम्हारे भाई को ले आए, और तुम लोग बन्धुआई में रहोगे; इस प्रकार तुम्हारी बातें परखी जाएंगी, कि तुम में सच्चाई है कि नहीं। यदि सच्चे न ठहरे तब तो फ़िरौन के जीवन की शपथ तुम निश्चय ही भेदिए समझे जाग्रोगे। १७ तब उस ने उनको तीन दिन तक बन्दीगृह में रखा। १८ तीसरे दिन यूसुफ ने उन से कहा, एक काम करो तब जीवित रहोगे; क्योंकि मैं परमेश्वर का भय मानता हूं; १९ यदि तुम सीधे मनुष्य हो, तो तुम सब भाइयों में से एक जन इस बन्दीगृह में बन्धुआ रहे; और तुम अपने घरवालों की भूख बुझाने के लिये अन्न ले जाओ। २० और अपने छोटे भाई को मेरे पास ले आओ; इस प्रकार तुम्हारी बातें सच्ची ठहरेंगी, और तुम मार डाले न जाओगे। तब उन्हों ने वैसा ही किया। २१ उन्हों ने आपस में कहा, निःसन्देह हम अपने भाई के विषय में दोषी हैं, क्योंकि जब उस ने हम से गिड़गिड़ाके बिनती की, तौभी हम ने यह देखकर, कि उसका जीवन कैसे संकट में पड़ा है, उसकी न सुनी; इसी कारण हम भी अब इस संकट में पड़े हैं। २२ रूबेन ने उन से कहा, क्या मैं ने तुम से न कहा था, कि लड़के के अपराधी मत बनो? परन्तु तुम ने न सुना: देखो, अब उसके लोहू का पलटा दिया जाता है। २३ यूसुफ की और उनकी बातचीत जो एक दुभाषिया के द्वारा होती थी; इस से उनको मालूम न हुआ कि वह उनकी बोली समझता है। २४ तब वह उनके पास से हटकर रोने लगा; फिर उनके पास लौटकर और उन से बातचीत करके उन में से शिमोन को छांट निकाला और उसके साम्हने बन्धुआ रखा। २५ तब यूसुफ ने आज्ञा दी, कि उनके बोरे अन्न से भरो और एक एक जन के बोरे में उसके रुपये को भी रख दो, फिर उनको मार्ग के लिये सीधा दो: सो उनके साथ ऐसा ही किया गया। २६ तब वे अपना अन्न अपने गदहों पर लादकर वहां से चल दिए। २७ सराय में जब एक ने अपने गदहे को चारा देने के लिये अपना बोरा खोला, तब उसका रुपया बोरे के मोहड़े पर रखा हुआ दिखलाई पड़ा। २८ तब उस ने अपने भाइयों से कहा, मेरा रुपया तो फेर दिया गया है, देखो, वह मेरे बोरे में है; तब उनके जी में जी न रहा, और वे एक दूसरे की ओर भय से ताकने लगे, और बोले, परमेश्वर ने यह हम से क्या किया है? २९ और वे कनान देश में अपने पिता याक़ूब के पास आए, और अपना सारा वृत्तान्त उस से इस प्रकार वर्णन किया: ३० कि जो पुरुष उस देश का स्वामी है, उस ने हम से कठोरता के साथ बातें कीं, और हम को देश के भेदिए कहा। ३१ तब हम ने उस से कहा, हम सीधे लोग हैं, भेदिए नहीं। ३२ हम बारह भाई एक ही पिता के* पुत्र हैं, एक तो जाता रहा, परन्तु छोटा इस समय कनान देश में हमारे पिता के पास है। ३३ तब उस पुरुष ने, जो उस देश का स्वामी है, हम से कहा, इस से मालूम हो जाएगा कि तुम सीधे मनुष्य हो; तुम अपने में से एक को मेरे पास छोड़के अपने घरवालों की भूख बुझाने के लिये कुछ ले जाओ। ३४ और अपने छोटे भाई को मेरे पास ले आओ। तब मुझे विश्वास हो जाएगा कि तुम भेदिए नहीं, सीधे लोग हो। फिर मैं तुम्हारे भाई को तुम्हें सौंप दूंगा, और तुम इस देश में लेन

* मूल में—अपने पिता के।

देन कर सकोगे। ३५ यह कहकर वे अपने अपने बोरे से अन्न निकालने लगे, तब, क्या देखा, कि एक एक जन के रुपये की थैली उसी के बोरे में रखी है: तब रुपये की थैलियों को देखकर वे और उनका पिता बहुत डर गए। ३६ तब उनके पिता याक़ूब ने उन से कहा, मुझ को तुम ने निर्वंश कर दिया, देखो, यूसुफ नहीं रहा, और शिमोन भी नहीं आया, और अब तुम बिन्यामीन को भी ले जाना चाहते हो : ये सब विपत्तियां मेरे ऊपर आ पड़ी हैं। ३७ रूबेन ने अपने पिता से कहा, यदि मैं उसको तेरे पास न लाऊं, तो मेरे दोनों पुत्रों को मार डालना; तू उसको मेरे हाथ में सौंप दे, मैं उसे तेरे पास फिर पहुंचा दूंगा। ३८ उस ने कहा, मेरा पुत्र तुम्हारे संग न जाएगा; क्योंकि उसका भाई मर गया है, और वह अब अकेला रह गया : इसलिये जिस मार्ग से तुम जाओगे, उस में यदि उस पर कोई विपत्ति आ पड़े, तब तो तुम्हारे कारण मैं इस बुढ़ापे की अवस्था में शोक के साथ अधोलोक में उतर जाऊंगा * ॥

४३ और अकाल देश में और भी भयंकर होता गया। २ जब वह अन्न जो वे मिस्र से ले आए थे समाप्त हो गया तब उनके पिता ने उन से कहा, फिर जाकर हमारे लिये थोड़ी सी भोजनवस्तु मोल ले आओ। ३ तब यहूदा ने उस से कहा, उस पुरुष ने हम को चितावनी देकर कहा, कि यदि तुम्हारा भाई तुम्हारे संग न आए, तो तुम मेरे सम्मुख न आने पाओगे। ४ इसलिये यदि तू हमारे भाई को हमारे संग भेजे, तब तो हम जाकर तेरे लिये भोजनवस्तु मोल ले आएंगे; ५ परन्तु यदि तू उसको न भेजे, तो हम न जाएंगे : क्योंकि उस पुरुष ने हम से कहा, कि यदि तुम्हारा भाई तुम्हारे संग न हो, तो तुम मेरे सम्मुख न आने पाओगे। ६ तब इस्राएल ने कहा, तुम ने उस पुरुष को यह बताकर, कि हमारा एक और भाई है, क्यों मुझ से बुरा बर्ताव किया ? ७ उन्हों ने कहा, जब उस पुरुष ने हमारी और हमारे कुटुम्बियों की दशा को इस रीति पूछा, कि क्या तुम्हारा पिता अब तक जीवित है ? क्या तुम्हारे कोई और भाई भी है ? तब हम ने इन प्रश्नों के अनुसार उस से वर्णन किया; फिर हम क्या जानते थे कि वह कहेगा, कि अपने भाई को यहां ले आओ। ८ फिर यहूदा ने अपने पिता इस्राएल से कहा, उस लड़के को मेरे संग भेज दे, कि हम चले जाएं; इस से हम, और तू, और हमारे बालबच्चे मरने न पाएंगे, वरन जीवित रहेंगे। ९ मैं उसका जामिन होता हूं; मेरे ही हाथ से तू उसको फेर लेना : यदि मैं उसको तेरे पास पहुंचाकर साम्हने न खड़ाकर दूं, तब तो मैं सदा के लिये तेरा अपराधी ठहरूंगा। १० यदि हम लोग बिलम्ब न करते, तो अब तक दूसरी बार लौट आते। ११ तब उनके पिता इस्राएल ने उन से कहा, यदि सचमुच ऐसी ही बात है, तो यह करो; इस देश की उत्तम उत्तम वस्तुओं में से कुछ कुछ अपने बोरों में उस पुरुष के लिये भेंट ले जाओ : जैसे थोड़ा सा बलसान, और थोड़ा सा मधु, और कुछ सुगन्ध द्रव्य, और गन्धरस, पिस्ते, और बादाम। १२ फिर अपने अपने साथ दूना रुपया ले जाओ; और जो रुपया तुम्हारे बोरों के मुंह पर रखकर फेर दिया गया था, उसको भी लेते जाओ; कदाचित् यह भूल से हुआ हो। १३ और अपने भाई

* मूल में—तुम मेरे पक्के बाल अधोलोक में शोक के साथ उतारोगे।

को भी संग लेकर उस पुरुष के पास फिर जाओ, १४ और सर्वशक्तिमान् ईश्वर उस पुरुष को तुम पर दयालु करेगा, जिस से कि वह तुम्हारे दूसरे भाई को और बिन्यामीन को भी आने दे : और यदि मैं निर्वंश हुआ तो होने दो।

१५ तब उन मनुष्यों ने वह भेंट, और दूना रुपया, और बिन्यामीन को भी संग लिया, और चल दिए और मिस्र में पहुंचकर यूसुफ के साम्हने खड़े हुए। १६ उनके साथ बिन्यामीन को देखकर यूसुफ ने अपने घर के अधिकारी से कहा, उन मनुष्यों को घर में पहुंचा दो, और पशु मारके भोजन तैयार करो; क्योंकि वे लोग दोपहर को मेरे संग भोजन करेंगे। १७ तब वह अधिकारी पुरुष यूसुफ के कहने के अनुसार उन पुरुषों को यूसुफ के घर में ले गया। १८ जब वे यूसुफ के घर को पहुंचाए गए तब वे आपस में डरकर कहने लगे, कि जो रुपया पहिली बार हमारे बोरों में फेर दिया गया था, उसी के कारण हम भीतर पहुंचाए गए हैं; जिस से कि वह पुरुष हम पर टूट पड़े, और हमें बश में करके अपने दास बनाए, और हमारे गदहों को भी छीन ले। १९ तब वे यूसुफ के घर के अधिकारी के निकट जाकर घर के द्वार पर इस प्रकार कहने लगे, २० कि हे हमारे प्रभु, जब हम पहिली बार अन्न मोल लेने को आए थे, २१ तब हम ने सराय में पहुंचकर अपने बोरों को खोला, तो क्या देखा, कि एक एक जन का पूरा पूरा रुपया उसके बोरे के मुंह पर रखा है; इसलिये हम उसको अपने साथ फिर लेते आए हैं। २२ और दूसरा रुपया भी भोजनवस्तु मोल लेने के लिये लाए हैं; हम नहीं जानते कि हमारा रुपया हमारे बोरों में किस ने रख दिया था। २३ उस ने कहा, तुम्हारा कुशल हो, मत डरो : तुम्हारा परमेश्वर, जो तुम्हारे पिता का भी परमेश्वर है, उसी ने तुम को तुम्हारे बोरों में धन दिया होगा, तुम्हारा रुपया तो मुझ को मिल गया था : फिर उस ने शिमोन को निकालकर उनके संग कर दिया। २४ तब उस जन ने उन मनुष्यों को यूसुफ के घर में ले जाकर जल दिया, तब उन्हों ने अपने पांवों को धोया; फिर उस ने उनके गदहों के लिये चारा दिया। २५ तब यह सुनकर, कि आज हम को यहीं भोजन करना होगा, उन्हों ने यूसुफ के आने के समय तक, अर्थात् दोपहर तक, उस भेंट को इकट्ठा कर रखा। २६ जब यूसुफ घर आया तब वे उस भेंट को, जो उनके हाथ में थी, उसके सम्मुख घर में ले गए, और भूमि पर गिरकर उसको दण्डवत् किया। २७ उस ने उनका कुशल पूछा, और कहा, क्या तुम्हारा वह बूढ़ा पिता, जिसकी तुम ने चर्चा की थी, कुशल से है? क्या वह अब तक जीवित है? २८ उन्हों ने कहा, हां, तेरा दास हमारा पिता कुशल से है और अब तक जीवित है; तब उन्हों ने सिर झुकाकर फिर दण्डवत् किया। २९ तब उस ने आंखें उठाकर और अपने सगे भाई बिन्यामीन को देखकर पूछा, क्या तुम्हारा वह छोटा भाई, जिसकी चर्चा तुम ने मुझ से की थी, यही है? फिर उस ने कहा, हे मेरे पुत्र, परमेश्वर तुझ पर अनुग्रह करे। ३० तब अपने भाई के स्नेह से मन भर आने के कारण और यह सोचकर, कि मैं कहां जाकर रोऊं, यूसुफ फुर्ती से अपनी कोठरी में गया, और वहां रो पड़ा। ३१ फिर अपना मुंह धोकर निकल आया, और अपने को शांतकर कहा, भोजन परोसो। ३२ तब उन्हों ने उसके लिये तो अलग, और भाइयों के लिये भी अलग, और

जो मिस्री उसके संग खाते थे, उनके लिये भी अलग, भोजन परोसा; इसलिये कि मिस्री इब्रियों के साथ भोजन नहीं कर सकते, वरन मिस्री ऐसा करना घृणा समझते थे। **३३** सो यूसुफ के भाई उसके साम्हने, बड़े बड़े पहिले, और छोटे छोटे पीछे, अपनी अपनी अवस्था के अनुसार, क्रम से बैठाए गए : यह देख वे विस्मित होकर एक दूसरे की ओर देखने लगे। **३४** तब यूसुफ अपने साम्हने से भोजन-वस्तुएं उठा उठाके उनके पास भेजने लगा, और बिन्यामीन को अपने भाइयों से पचगुणी अधिक भोजनवस्तु मिली। और उन्हों ने उसके संग मनमाना खाया पिया॥

४४ तब उस ने अपने घर के अधिकारी को आज्ञा दी, कि इन मनुष्यों के बोरों में जितनी भोजनवस्तु समा सके उतनी भर दे, और एक एक जन के रुपये को उसके बोरे के मुंह पर रख दे। **२** और मेरा चांदी का कटोरा छोटे के बोरे के मुंह पर उसके अन्न के रुपये के साथ रख दे। यूसुफ की इस आज्ञा के अनुसार उस ने किया। **३** बिहान को भोर होते ही वे मनुष्य अपने गदहों समेत विदा किए गए। **४** वे नगर से निकले ही थे, और दूर न जाने पाए थे, कि यूसुफ ने अपने घर के अधिकारी से कहा, उन मनुष्यों का पीछा कर, और उनको पाकर उन से कह, कि तुम ने भलाई की सन्ती बुराई क्यों की है? **५** क्या यह वह वस्तु नहीं जिस में मेरा स्वामी पीता है, और जिस से वह शकुन भी बिचारा करता है? तुम ने यह जो किया है सो बुरा किया। **६** तब उस ने उन्हें जा लिया, और ऐसी ही बातें उन से कहीं। **७** उन्हों ने उस से कहा, हे हमारे प्रभु, तू ऐसी बातें क्यों कहता है? ऐसा काम करना तेरे दासों से दूर रहे। **८** देख, जो रुपया हमारे बोरों के मुंह पर निकला था, जब हम ने उसको कनान देश से ले आकर तुझे फेर दिया, तब, भला, तेरे स्वामी के घर में से हम कोई चांदी वा सोने की वस्तु क्योंकर चुरा सकते हैं? **९** तेरे दासों में से जिस किसी के पास वह निकले, वह मार डाला जाए, और हम भी अपने उस प्रभु के दास हो जाएं। **१०** उस ने कहा, तुम्हारा ही कहना सही, जिसके पास वह निकले सो मेरा दास होगा; और तुम लोग निरपराध ठहरोगे। **११** इस पर वे फुर्ती से अपने अपने बोरे को उतार भूमि पर रखकर उन्हें खोलने लगे। **१२** तब वह ढूंढ़ने लगा, और बड़े के बोरे से लेकर छोटे के बोरे तक खोज की : और कटोरा बिन्यामीन के बोरे में मिला। **१३** तब उन्हों ने अपने अपने वस्त्र फाड़े, और अपना अपना गदहा लादकर नगर को लौट गए। **१४** जब यहूदा और उसके भाई यूसुफ के घर पर पहुंचे, और यूसुफ वहीं था, तब वे उसके साम्हने भूमि पर गिरे। **१५** यूसुफ ने उन से कहा, तुम लोगों ने यह कैसा काम किया है? क्या तुम न जानते थे, कि मुझ सा मनुष्य शकुन बिचार सकता है? **१६** यहूदा ने कहा, हम लोग अपने प्रभु से क्या कहें? हम क्या कहकर अपने को निर्दोषी ठहराएं? परमेश्वर ने तेरे दासों के अधर्म को पकड़ लिया है : हम, और जिसके पास कटोरा निकला वह भी, हम सब के सब अपने प्रभु के दास ही हैं। **१७** उस ने कहा, ऐसा करना मुझ से दूर रहे : जिस जन के पास कटोरा निकला है, वही मेरा दास होगा; और तुम लोग अपने पिता के पास कुशल क्षेम से चले जाओ॥

१८ तब यहूदा उसके पास जाकर कहने लगा, हे मेरे प्रभु, तेरे दास को अपने प्रभु से एक बात कहने की आज्ञा हो, और तेरा कोप तेरे दास पर न भड़के; तू तो फ़िरौन के तुल्य है। १९ मेरे प्रभु ने अपने दासों से पूछा था, कि क्या तुम्हारे पिता वा भाई है? २० और हम ने अपने प्रभु से कहा, हां, हमारा बूढ़ा पिता तो है, और उसके बुढ़ापे का एक छोटा सा बालक भी है, परन्तु उसका भाई मर गया है, इसलिये वह अब अपनी माता का अकेला ही रह गया है, और उसका पिता उस से स्नेह रखता है। २१ तब तू ने अपने दासों से कहा था, कि उसको मेरे पास ले आओ, जिस से मैं उसको देखूं। २२ तब हम ने अपने प्रभु से कहा था, कि वह लड़का अपने पिता को नहीं छोड़ सकता; नहीं तो उसका पिता मर जाएगा। २३ और तू ने अपने दासों से कहा, यदि तुम्हारा छोटा भाई तुम्हारे संग न आए, तो तुम मेरे सम्मुख फिर न आने पाओगे। २४ सो जब हम अपने पिता तेरे दास के पास गए, तब हम ने उस से अपने प्रभु की बातें कहीं। २५ तब हमारे पिता ने कहा, फिर जाकर हमारे लिये थोड़ी सी भोजनवस्तु मोल ले आओ। २६ हम ने कहा, हम नहीं जा सकते, हां, यदि हमारा छोटा भाई हमारे संग रहे, तब हम जाएंगे: क्योंकि यदि हमारा छोटा भाई हमारे संग न रहे, तो हम उस पुरुष के सम्मुख न जाने पाएंगे। २७ तब तेरे दास मेरे पिता ने हम से कहा, तुम तो जानते हो कि मेरी स्त्री से दो पुत्र उत्पन्न हुए। २८ और उन में से एक तो मुझे छोड़ ही गया, और मैं ने निश्चय कर लिया, कि वह फाड़ डाला गया होगा; और तब से मैं उसका मुंह न देख पाया। २९ सो यदि तुम इसको भी मेरी आंख की आड़ में ले जाओ, और कोई विपत्ति इस पर पड़े, तो तुम्हारे कारण मैं इस पक्के बाल की अवस्था में दुःख के साथ अधोलोक में उतर जाऊंगा*। ३० सो जब मैं अपने पिता तेरे दास के पास पहुंचूं, और यह लड़का संग न रहे, तब, उसका प्राण जो इसी पर अटका रहता है, ३१ इस कारण, यह देखके कि लड़का नहीं है, वह तुरन्त ही मर जाएगा। तब तेरे दासों के कारण तेरा दास हमारा पिता, जो पक्के बालों की अवस्था का है, शोक के साथ अधोलोक में उतर जाएगा†। ३२ फिर तेरा दास अपने पिता के यहां यह कहके इस लड़के का जामिन हुआ है, कि यदि मैं इसको तेरे पास न पहुंचा दूं, तब तो मैं सदा के लिये तेरा अपराधी ठहरूंगा। ३३ सो अब तेरा दास इस लड़के की सन्ती अपने प्रभु का दास होकर रहने की आज्ञा पाए, और यह लड़का अपने भाइयों के संग जाने दिया जाए। ३४ क्योंकि लड़के के बिना संग रहे मैं क्योंकर अपने पिता के पास जा सकूंगा; ऐसा न हो कि मेरे पिता पर जो दुःख पड़ेगा वह मुझे देखना पड़े॥

४५ तब यूसुफ उन सब के साम्हने, जो उसके आस पास खड़े थे, अपने को और रोक न सका; और पुकार के कहा, मेरे आस पास से सब लोगों को बाहर कर दो। भाइयों के साम्हने अपने को प्रगट करने के समय यूसुफ के संग और कोई न रहा। २ तब वह चिल्ला चिल्लाकर रोने लगा: और मिस्रियों ने सुना, और फ़िरौन के घर के लोगों को भी इसका समाचार

* मूल में—तुम मेरे पक्के बाल अधोलोक में दुःख के साथ उतारोगे।

† मूल में—तेरे दास हमारे पिता के पक्के बाल शोक के साथ अधोलोक में उतारेंगे।

मिला। ३ तब यूसुफ अपने भाइयों से कहने लगा, मैं यूसुफ हूं, क्या मेरा पिता अब तक जीवित है? इसका उत्तर उसके भाई न दे सके; क्योंकि वे उसके साम्हने घबरा गए थे। ४ फिर यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा, मेरे निकट आओ। यह सुनकर वे निकट गए। फिर उस ने कहा, मैं तुम्हारा भाई यूसुफ हूं, जिसको तुम ने मिस्र आनेहारों के हाथ बेच डाला था। ५ अब तुम लोग मत पछताओ, और तुम ने जो मुझे यहां बेच डाला, इस से उदास मत हो; क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हारे प्राणों को बचाने के लिये मुझे आगे से भेज दिया है। ६ क्योंकि अब दो वर्ष से इस देश में अकाल है; और अब पांच वर्ष और ऐसे ही होंगे, कि उन में न तो हल चलेगा और न अन्न काटा जाएगा। ७ सो परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे आगे इसी लिये भेजा, कि तुम पृथ्वी पर जीवित रहो, और तुम्हारे प्राणों के बचने से तुम्हारा वंश बढ़े। ८ इस रीति अब मुझ को यहां पर भेजनेवाले तुम नहीं, परमेश्वर ही ठहरा: और उसी ने मुझे फ़िरौन का पिता सा, और उसके सारे घर का स्वामी, और सारे मिस्र देश का प्रभु ठहरा दिया है। ९ सो शीघ्र मेरे पिता के पास जाकर कहो, तेरा पुत्र यूसुफ इस प्रकार कहता है, कि परमेश्वर ने मुझे सारे मिस्र का स्वामी ठहराया है; इसलिये तू मेरे पास बिना बिलम्ब किए चला आ। १० और तेरा निवास गोशेन देश में होगा, और तू, बेटे, पोतों, भेड़-बकरियों, गाय-बैलों, और अपने सब कुछ समेत मेरे निकट रहेगा। ११ और अकाल के जो पांच वर्ष और होंगे, उन में मैं वहीं तेरा पालन पोषण करूंगा; ऐसा न हो कि तू, और तेरा घराना, वरन जितने तेरे हैं, सो भूखों मरें*। १२ और तुम अपनी आंखों से देखते हो, और मेरा भाई बिन्यामीन भी अपनी आंखों से देखता है, कि जो हम से बातें कर रहा है सो यूसुफ है। १३ और तुम मेरे सब विभव का, जो मिस्र में है और जो कुछ तुम ने देखा है, उस सब का मेरे पिता से वर्णन करना; और तुरन्त मेरे पिता को यहां ले आना। १४ और वह अपने भाई बिन्यामीन के गले से लिपटकर रोया; और बिन्यामीन भी उसके गले से लिपटकर रोया। १५ तब वह अपने सब भाइयों को चूमकर उन से मिलकर रोया: और इसके पश्चात् उसके भाई उस से बातें करने लगे॥

१६ इस बात की चर्चा, कि यूसुफ के भाई आए हैं, फ़िरौन के भवन तक पहुंच गई, और इस से फ़िरौन और उसके कर्मचारी प्रसन्न हुए। १७ सो फ़िरौन ने यूसुफ से कहा, अपने भाइयों से कह, कि एक काम करो, अपने पशुओं को लादकर कनान देश में चले जाओ। १८ और अपने पिता और अपने अपने घर के लोगों को लेकर मेरे पास आओ; और मिस्र देश में जो कुछ अच्छे से अच्छा है वह मैं तुम्हें दूंगा, और तुम्हें देश के उत्तम से उत्तम पदार्थ खाने को मिलेंगे। १९ और तुझे आज्ञा मिली है, तुम एक काम करो, कि मिस्र देश से अपने बालबच्चों और स्त्रियों के लिये गाड़ियां ले जाओ, और अपने पिता को ले आओ। २० और अपनी सामग्री का मोह न करना; क्योंकि सारे मिस्र देश में जो कुछ अच्छे से अच्छा है सो तुम्हारा है। २१ और इस्राएल के पुत्रों ने वैसा ही किया। और यूसुफ ने फ़िरौन की मानके उन्हें गाड़ियां दीं, और मार्ग के लिये

* मूल में—निर्धन हो जाएं।

सीधा भी दिया। २२ उन में से एक एक जन को तो उस ने एक एक जोड़ा वस्त्र भी दिया; और बिन्यामीन को तीन सौ रूपे के टुकड़े और पांच जोड़े वस्त्र दिए। २३ और अपने पिता के पास उस ने जो भेजा वह यह है, अर्थात् मिस्र की अच्छी वस्तुओं से लदे हुए दस गदहे, और अन्न और रोटी और उसके पिता के मार्ग के लिये भोजनवस्तु से लदी हुई दस गदहियां। २४ और उस ने अपने भाइयों को विदा किया, और वे चल दिए: और उस ने उन से कहा, मार्ग में कहीं झगड़ा न करना। २५ मिस्र से चलकर वे कनान देश में अपने पिता याक़ूब के पास पहुंचे। २६ और उस से यह वर्णन किया, कि यूसुफ अब तक जीवित है, और सारे मिस्र देश पर प्रभुता वही करता है। पर उस ने उनकी प्रतीत न की, और वह अपने आपे में न रहा। २७ तब उन्हों ने अपने पिता याक़ूब से यूसुफ की सारी बातें, जो उस ने उन से कही थीं, कह दीं; जब उस ने उन गाड़ियों को देखा, जो यूसुफ ने उसके ले आने के लिये भेजीं थीं, तब उसका चित्त स्थिर हो गया। २८ और इस्राएल ने कहा, बस, मेरा पुत्र यूसुफ अब तक जीवित है: मैं अपनी मृत्यु से पहिले जाकर उसको देखूंगा॥

(याक़ूब के सारे परिवार समेत मिस्र में बस जाने का वर्णन)

४६ तब इस्राएल अपना सब कुछ लेकर कूच करके बेर्शेबा को गया, और वहां अपने पिता इसहाक के परमेश्वर को बलिदान चढ़ाए। २ तब परमेश्वर ने इस्राएल से रात को दर्शन में कहा, हे याक़ूब, हे याक़ूब। उस ने कहा, क्या आज्ञा*। ३ उस ने कहा, मैं ईश्वर तेरे पिता का परमेश्वर हूं, तू मिस्र में जाने से मत डर; क्योंकि मैं तुझ से वहां एक बड़ी जाति बनाऊंगा। ४ मैं तेरे संग संग मिस्र को चलता हूं; और मैं तुझे वहां से फिर निश्चय ले आऊंगा: और यूसुफ अपना हाथ तेरी आंखों पर लगाएगा। ५ तब याक़ूब बेर्शेबा से चला: और इस्राएल के पुत्र अपने पिता याक़ूब, और अपने बाल-बच्चों, और स्त्रियों को उन गाड़ियों पर, जो फ़िरौन ने उनके ले आने को भेजी थीं, चढ़ाकर चल पड़े। ६ और वे अपनी भेड़-बकरी, गाय-बैल, और कनान देश में अपने इकट्ठा किए हुए सारे धन को लेकर मिस्र में आए। ७ और याक़ूब अपने बेटे-बेटियों, पोते-पोतियों, निदान अपने वंश भर को अपने संग मिस्र में ले आया॥

८ याक़ूब के साथ जो इस्राएली, अर्थात् उसके बेटे, पोते, आदि मिस्र में आए, उनके नाम ये हैं: याक़ूब का जेठा तो रूबेन था। ९ और रूबेन के पुत्र, हनोक, पल्लू, हेस्रोन और कर्म्मी थे। १० और शिमोन के पुत्र, यमूएल, यामीन, ओहद, याकीन, सोहर, और एक कनानी स्त्री से जन्मा हुआ शाऊल भी था। ११ और लेवी के पुत्र, गेर्शोन, कहात, और मरारी थे। १२ और यहूदा के एर, ओनान, शेला, पेरेस, और जेरह नाम पुत्र हुए तो थे; पर एर और ओनान कनान देश में मर गए थे। और पेरेस के पुत्र, हेस्रोन और हामूल थे। १३ और इस्साकार के पुत्र, तोला, पुव्वा, योब, और शिम्रोन थे। १४ और जबूलून के पुत्र, सेरेद, एलोन, और यहलेल थे। १५ लिआः के पुत्र, जो याक़ूब से पद्दनराम में उत्पन्न हुए थे, उनके बेटे पोते ये ही थे, और इन से अधिक उस ने उसके साथ एक बेटी दीना को भी जन्म दिया: यहां तक तो याक़ूब के सब

* मूल में—मुझे देख।

वंशवाले * तेंतीस प्राणी हुए। १६ फिर गाद के पुत्र, सिय्योन, हाग्गी, शूनी, एसबोन, एरी, अरोदी, और अरेली थे। १७ और आशेर के पुत्र, यिम्ना, यिश्वा, यिस्वी, और बरीआ थे, और उनकी बहिन सेरह थी: और बरीआ के पुत्र, हेबेर और मल्कीएल थे। १८ जिल्पा, जिसे लाबान ने अपनी बेटी लिआः को दिया था, उसके बेटे पोते आदि ये ही थे; सो उसके द्वारा याक़ूब के सोलह प्राणी उत्पन्न हुए॥

१९ फिर याक़ूब की पत्नी राहेल के पुत्र यूसुफ और बिन्यामीन थे। २० और मिस्र देश में ओन के याजक पोतीपेरा की बेटी आसनत से यूसुफ के ये पुत्र उत्पन्न हुए, अर्थात् मनश्शे और एप्रैम। २१ और बिन्यामीन के पुत्र, बेला, बेकेर, अश्बेल, गेरा, नामान, एही, रोश, मुप्पीम, हुप्पीम, और आर्द थे। २२ राहेल के पुत्र जो याक़ूब से उत्पन्न हुए उनके ये ही पुत्र थे; उसके ये सब बेटे पोते चौदह प्राणी हुए। २३ फिर दान का पुत्र हूशीम था। २४ और नप्ताली के पुत्र, यहसेल, गूनी, सेसेर, और शिल्लेम थे। २५ बिल्हा, जिसे लाबान ने अपनी बेटी राहेल को दिया, उसके बेटे पोते ये ही हैं; उसके द्वारा याक़ूब के वंश में सात प्राणी हुए। २६ याक़ूब के निज वंश के जो प्राणी मिस्र में आए, वे उसकी बहुओं को छोड़ सब मिलकर छियासठ प्राणी हुए। २७ और यूसुफ के पुत्र, जो मिस्र में उस से उत्पन्न हुए, वे दो प्राणी थे: इस प्रकार याक़ूब के घराने के जो प्राणी मिस्र में आए सो सब मिलकर सत्तर हुए॥

२८ फिर उस ने यहूदा को अपने आगे यूसुफ के पास भेज दिया, कि वह उसको गोशेन का मार्ग दिखाए; और वे गोशेन देश में आए। २९ तब यूसुफ अपना रथ जुतवाकर अपने पिता इस्राएल से भेंट करने के लिये गोशेन देश को गया, और उस से भेंट करके उसके गले से लिपटा, और कुछ देर तक उसके गले से लिपटा हुआ रोता रहा। ३० तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा, मैं अब मरने से भी प्रसन्न हूं, क्योंकि तुझे जीवित पाया और तेरा मुंह देख लिया। ३१ तब यूसुफ ने अपने भाइयों से और अपने पिता के घराने से कहा, मैं जाकर फ़िरौन को यह कहकर समाचार दूंगा, कि मेरे भाई और मेरे पिता के सारे घराने के लोग, जो कनान देश में रहते थे, वे मेरे पास आ गए हैं। ३२ और वे लोग चरवाहे हैं, क्योंकि वे पशुओं को पालते आए हैं; इसलिये वे अपनी भेड़-बकरी, गाय-बैल, और जो कुछ उनका है, सब ले आए हैं। ३३ जब फ़िरौन तुम को बुलाके पूछे, कि तुम्हारा उद्यम क्या है? ३४ तब यह कहना, कि तेरे दास लड़कपन से लेकर आज तक पशुओं को पालते आए हैं, वरन हमारे पुरखा भी ऐसा ही करते थे। इस से तुम गोशेन देश में रहने पाओगे; क्योंकि सब चरवाहों से मिस्री लोग घृणा करते हैं॥

४७ तब यूसुफ ने फ़िरौन के पास जाकर यह समाचार दिया, कि मेरा पिता और मेरे भाई, और उनकी भेड़-बकरियां, गाय-बैल, और जो कुछ उनका है, सब कनान देश से आ गया है; और अभी तो वे गोशेन देश में हैं। २ फिर उस ने अपने भाइयों में से पांच जन लेकर फ़िरौन के साम्हने खड़े कर दिए। ३ फ़िरौन ने उसके भाइयों से पूछा, तुम्हारा उद्यम क्या है? उन्हों ने फ़िरौन से कहा, तेरे दास चरवाहे

* मूल में—बेटे बेटियां।

हैं, और हमारे पुरखा भी ऐसे ही रहे। ४ फिर उन्हों ने फ़िरौन से कहा, हम इस देश में परदेशी की भांति रहने के लिये आए हैं; क्योंकि कनान देश में भारी अकाल होने के कारण तेरे दासों को भेड़-बकरियों के लिये चारा न रहा: सो अपने दासों को गोशेन देश में रहने की आज्ञा दे। ५ तब फ़िरौन ने यूसुफ से कहा, तेरा पिता और तेरे भाई तेरे पास आ गए हैं, ६ और मिस्र देश तेरे साम्हने पड़ा है; इस देश का जो सब से अच्छा भाग हो, उस में अपने पिता और भाइयों को बसा दे; अर्थात् वे गोशेन ही देश में रहें: और यदि तू जानता हो, कि उन में से परिश्रमी पुरुष हैं, तो उन्हें मेरे पशुओं के अधिकारी ठहरा दे। ७ तब यूसुफ ने अपने पिता याक़ूब को ले आकर फ़िरौन के सम्मुख खड़ा किया: और याक़ूब ने फ़िरौन को आशीर्वाद दिया। ८ तब फ़िरौन ने याक़ूब से पूछा, तेरी अवस्था कितने दिन की हुई है? ९ याक़ूब ने फ़िरौन से कहा, मैं तो एक सौ तीस वर्ष परदेशी होकर अपना जीवन बिता चुका हूं; मेरे जीवन के दिन थोड़े और दुःख से भरे हुए भी थे, और मेरे बापदादे परदेशी होकर जितने दिन तक जीवित रहे उतने दिन का मैं अभी नहीं हुआ। १० और याक़ूब फ़िरौन को आशीर्वाद देकर उसके सम्मुख से चला गया। ११ तब यूसुफ ने अपने पिता और भाइयों को बसा दिया, और फ़िरौन की आज्ञा के अनुसार मिस्र देश के अच्छे से अच्छे भाग में, अर्थात् रामसेस नाम देश में, भूमि देकर उनको सौंप दिया। १२ और यूसुफ अपने पिता का, और अपने भाइयों का, और पिता के सारे घराने का, एक एक के बालबच्चों के घराने की गिनती के अनुसार, भोजन दिला दिलाकर उनका पालन पोषण करने लगा॥

१३ और उस सारे देश में खाने को कुछ न रहा; क्योंकि अकाल बहुत भारी था, और अकाल के कारण मिस्र और कनान दोनों देश नाश हो गए। १४ और जितना रुपया मिस्र और कनान देश में था, सब को यूसुफ ने उस अन्न की सन्ती जो उनके निवासी मोल लेते थे इकट्ठा करके फ़िरौन के भवन में पहुंचा दिया। १५ जब मिस्र और कनान देश का रुपया चुक गया, तब सब मिस्री यूसुफ के पास आ आकर कहने लगे, हम को भोजनवस्तु दे, क्या हम रुपये के न रहने से तेरे रहते हुए मर जाएं? १६ यूसुफ ने कहा, यदि रुपये न हों तो अपने पशु दे दो, और मैं उनकी सन्ती तुम्हें खाने को दूंगा। १७ तब वे अपने पशु यूसुफ के पास ले आए; और यूसुफ उनको घोड़ों, भेड़-बकरियों, गाय-बैलों और गदहों की सन्ती खाने को देने लगा: उस वर्ष में वह सब जाति के पशुओं की सन्ती भोजन देकर उनका पालन पोषण करता रहा। १८ वह वर्ष तो यों कट गया; तब अगले वर्ष में उन्हों ने उसके पास आकर कहा, हम अपने प्रभु से यह बात छिपा न रखेंगे कि हमारा रुपया चुक गया है, और हमारे सब प्रकार के पशु हमारे प्रभु के पास आ चुके हैं; इसलिये अब हमारे प्रभु के साम्हने हमारे शरीर और भूमि छोड़कर और कुछ नहीं रहा। १९ हम तेरे देखते क्यों मरें, और हमारी भूमि क्यों उजड़ जाए? हमको और हमारी भूमि को भोजन वस्तु की सन्ती मोल ले, कि हम अपनी भूमि समेत फ़िरौन के दास हों: और हमको बीज दे, कि हम मरने न पाएं, वरन जीवित रहें, और भूमि न उजड़े *। २० तब यूसुफ ने मिस्र की सारी भूमि को फ़िरौन के लिये मोल

* मूल में—हम और हमारी भूमि क्यों मरे।

लिया; क्योंकि उस कठिन अकाल के पड़ने से मिस्रियों को अपना अपना खेत बेच डालना पड़ा : इस प्रकार सारी भूमि फ़िरौन की हो गई। २१ और एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक सारे मिस्र देश में जो प्रजा रहती थी, उसको उस ने नगरों में लाकर बसा दिया। २२ पर याजकों की भूमि तो उस ने न मोल ली : क्योंकि याजकों के लिये फ़िरौन की ओर से नित्य भोजन का बन्दोबस्त था, और नित्य जो भोजन फ़िरौन उनको देता था वही वे खाते थे; इस कारण उनको अपनी भूमि बेचनी न पड़ी। २३ तब यूसुफ ने प्रजा के लोगों से कहा, सुनो, मैं ने आज के दिन तुम को और तुम्हारी भूमि को भी फ़िरौन के लिये मोल लिया है; देखो, तुम्हारे लिये यहां बीज है, इसे भूमि में बोओ। २४ और जो कुछ उपजे उसका पंचमांश फ़िरौन को देना, बाकी चार अंश तुम्हारे रहेंगे, कि तुम उसे अपने खेतों में बोओ, और अपने अपने बालबच्चों और घर के और लोगों समेत खाया करो। २५ उन्हों ने कहा, तू ने हमको बचा लिया है : हमारे प्रभु के अनुग्रह की दृष्टि हम पर बनी रहे, और हम फ़िरौन के दास होकर रहेंगे। २६ सो यूसुफ ने मिस्र की भूमि के विषय में ऐसा नियम ठहराया, जो आज के दिन तक चला आता है, कि पंचमांश फ़िरौन को मिला करे; केवल याजकों ही की भूमि फ़िरौन की नहीं हुई। २७ और इस्राएली मिस्र के गोशेन देश में रहने लगे; और वहां की भूमि को अपने वश में कर लिया, और फूले-फले, और अत्यन्त बढ़ गए॥

(इस्राएल के आशीर्वादों और मृत्यु का वर्णन)

२८ मिस्र देश में याक़ूब सतरह वर्ष जीवित रहा : इस प्रकार याक़ूब की सारी आयु एक सौ सैंतालीस वर्ष की हुई। २९ जब इस्राएल के मरने का दिन निकट आ गया, तब उस ने अपने पुत्र यूसुफ को बुलवाकर कहा, यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर हो, तो अपना हाथ मेरी जांघ के तले रखकर **शपथ खा**, कि मैं तेरे साथ कृपा और सच्चाई का यह काम करूंगा, कि तुझे मिस्र में मिट्टी न दूंगा। ३० जब तू अपने बापदादों के संग सो जाएगा, तब मैं तुझे मिस्र से उठा ले जाकर उन्हीं के क़बरिस्तान में रखूंगा; तब यूसुफ ने कहा, मैं तेरे बचन के अनुसार करूंगा। ३१ फिर उस ने कहा, मुझ से शपथ खा : सो उस ने उस से शपथ खाई। तब इस्राएल ने खाट के सिरहाने की ओर सिर झुकाया॥

४८ इन बातों के पश्चात् किसी ने यूसुफ से कहा, सुन, तेरा पिता बीमार है; तब वह मनश्शे और एप्रैम नाम अपने दोनों पुत्रों को संग लेकर उसके पास चला। २ और किसी ने याक़ूब को बता दिया, कि तेरा पुत्र यूसुफ तेरे पास आ रहा है; तब इस्राएल अपने को सम्भालकर खाट पर बैठ गया। ३ और याक़ूब ने यूसुफ से कहा, सर्वशक्तिमान् ईश्वर ने कनान देश के लूज नगर के पास मुझे दर्शन देकर आशीष दी, ४ और कहा, सुन, मैं तुझे फुलाफलाकर बढ़ाउंगा, और तुझे राज्य राज्य की मण्डली का मूल बनाऊंगा, और तेरे पश्चात् तेरे वंश को यह देश दे दूंगा, जिस से कि वह सदा तक उनकी निज भूमि बनी रहे। ५ और अब तेरे दोनों पुत्र, जो मिस्र में मेरे आने से पहिले उत्पन्न हुए हैं, वे मेरे ही ठहरेंगे; अर्थात् जिस रीति से रूबेन और शिमोन मेरे हैं, उसी रीति से एप्रैम और मनश्शे भी मेरे ठहरेंगे।

६ और उनके पश्चात् जो सन्तान उत्पन्न हो, वह तेरे तो ठहरेंगे; परन्तु बंटवारे के समय वे अपने भाइयों ही के वंश में गिने जाएंगे*। ७ जब मैं पद्दान† से आता था, तब एप्राता पहुंचने से थोड़ी ही दूर पहिले राहेल कनान देश में, मार्ग में, मेरे साम्हने मर गई: और मैं ने उसे वहीं, अर्थात् एप्राता जो बेतलेहेम भी कहलाता है, उसी के मार्ग में मिट्टी दी। ८ तब इस्राएल को यूसुफ के पुत्र देख पड़े, और उस ने पूछा, ये कौन हैं? ६ यूसुफ ने अपने पिता से कहा, ये मेरे पुत्र हैं, जो परमेश्वर ने मुझे यहां दिए हैं: उस ने कहा, उनको मेरे पास ले आ कि मैं उन्हें आशीर्वाद दूं। १० इस्राएल की आंखें बुढ़ापे के कारण धुन्धली हो गई थीं, यहां तक कि उसे कम सूझता था। तब यूसुफ उन्हें उनके पास ले गया; और उस ने उन्हें चूमकर गले लगा लिया। ११ तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा, मुझे आशा न थी, कि मैं तेरा मुख फिर देखने पाऊंगा: परन्तु देख, परमेश्वर ने मुझे तेरा वंश भी दिखाया है। १२ तब यूसुफ ने उन्हें अपने घुटनों के बीच से हटाकर और अपने मुंह के बल भूमि पर गिरके दण्डवत् की। १३ तब यूसुफ ने उन दोनों को लेकर, अर्थात् एप्रैम को अपने दहिने हाथ से, कि वह इस्राएल के बाएं हाथ पड़े, और मनश्शे को अपने बाएं हाथ से, कि इस्राएल के दहिने हाथ पड़े, उन्हें उसके पास ले गया। १४ तब इस्राएल ने अपना दहिना हाथ बढ़ाकर एप्रैम के सिर पर जो छोटा था, और अपना बायां हाथ बढ़ाकर मनश्शे के सिर पर रख दिया; उस ने तो जान बूझकर ऐसा किया; नहीं तो जेठा मनश्शे ही था। १५ फिर उस ने यूसुफ को आशीर्वाद देकर कहा, परमेश्वर जिसके सम्मुख मेरे बापदादे इब्राहीम और इसहाक (अपने को जानकर*) चलते थे वही परमेश्वर मेरे जन्म से लेकर आज के दिन तक मेरा चरवाहा बना है; १६ और वही दूत मुझे सारी बुराई से छुड़ाता आया है, वही अब इन लड़कों को आशिष दे; और ये मेरे और मेरे बापदादे इब्राहीम और इसहाक के कहलाएं; और पृथ्वी में बहुतायत से बढ़ें। १७ जब यूसुफ ने देखा, कि मेरे पिता ने अपना दहिना हाथ एप्रैम के सिर पर रखा है, तब यह बात उसको बुरी लगी: सो उस ने अपने पिता का हाथ इस मनसा से पकड़ लिया, कि एप्रैम के सिर पर से उठाकर मनश्शे के सिर पर रख दे। १८ और यूसुफ ने अपने पिता से कहा, हे पिता, ऐसा नहीं: क्योंकि जेठा यही है; अपना दहिना हाथ इसके सिर पर रख। १६ उसके पिता ने कहा, नहीं, सुन, हे मेरे पुत्र, मैं इस बात को भली भांति जानता हूं: यद्यपि इस से भी मनुष्यों की एक मण्डली उत्पन्न होगी, और यह भी महान् हो जाएगा, तौभी इसका छोटा भाई इस से अधिक महान् हो जाएगा, और उसके वंश से बहुत सी जातियां निकलेंगी। २० फिर उस ने उसी दिन यह कहकर उनको आशीर्वाद दिया, कि इस्राएली लोग तेरा नाम ले लेकर ऐसा आशीर्वाद दिया करेंगे, कि परमेश्वर तुझे एप्रैम और मनश्शे के समान बना दे: और उस ने मनश्शे से पहिले एप्रैम का नाम लिया। २१ तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा, देख, मैं तो मरने पर हूं: परन्तु परमेश्वर तुम लोगों के संग रहेगा, और तुम को

* मूल में—भाइयों के धाम पर कहाएंगे।
† अर्थात् पद्दनराम।

* मूल में—जिसके साम्हने मेरे बापदादे इब्राहीम और इसहाक चले।

तुम्हारे पितरों के देश में फिर पहुंचा देगा। २२ और मैं तुझ को तेरे भाइयों से अधिक भूमि का एक भाग देता हूं, जिसको मैं ने एमोरियों के हाथ से अपनी तलवार और धनुष के बल से ले लिया है॥

४९ फिर याक़ूब ने अपने पुत्रों को यह कहकर बुलाया, कि इकट्ठे हो जाओ, मैं तुम को बताऊंगा, कि अन्त के दिनों में तुम पर क्या क्या बीतेगा। २ हे याक़ूब के पुत्रो, इकट्ठे होकर सुनो, अपने पिता इस्राएल की ओर कान लगाओ।

३ हे रूबेन, तू मेरा जेठा, मेरा बल, और मेरे पौरुष का पहिला फल है;
प्रतिष्ठा का उत्तम भाग, और शक्ति का भी उत्तम भाग तू ही है।
४ तू जो जल की नाईं उबलनेवाला है, इसलिये औरों से श्रेष्ठ न ठहरेगा;
क्योंकि तू अपने पिता की खाट पर चढ़ा,
तब तू ने उसको अशुद्ध किया; वह मेरे बिछौने पर चढ़ गया॥
५ शिमोन और लेवी तो भाई भाई हैं,
उनकी तलवारें उपद्रव के हथियार हैं।
६ हे मेरे जीव, उनके मर्म में न पड़,
हे मेरी महिमा, उनकी सभा में मत मिल;
क्योंकि उन्हों ने कोप से मनुष्यों को घात किया,
और अपनी ही इच्छा पर चलकर बैलों की पूंछें काटी हैं॥
७ धिक्कार उनके कोप को, जो प्रचण्ड था;
और उनके रोष को, जो निर्दय था;
मैं उन्हें याक़ूब में अलग अलग
और इस्राएल में तित्तर बित्तर कर दूंगा॥
८ हे यहूदा, तेरे भाई तेरा धन्यवाद करेंगे,
तेरा हाथ तेरे शत्रुओं की गर्दन पर पड़ेगा;
तेरे पिता के पुत्र तुझे दण्डवत् करेंगे॥
९ यहूदा सिंह का डांवरू है।
हे मेरे पुत्र, तू अहेर करके गुफा में गया है: *
वह सिंह वा सिंहनी की नाईं दबकर बैठ गया;
फिर कौन उसको छेड़ेगा॥
१० जब तक शीलो न आए
तब तक न तो यहूदा से राजदण्ड छूटेगा,
न उसके वंश से † व्यवस्था देनेवाला अलग होगा;
और राज्य राज्य के लोग उसके अधीन हो जाएंगे॥
११ वह अपने जवान गदहे को दाखलता में,
और अपनी गदही के बच्चे को उत्तम जाति की दाखलता में बान्धा करेगा;
उस ने अपने वस्त्र दाखमधु में,
और अपना पहिरावा दाखों के रस ‡ में धोया है॥
१२ उसकी आंखें दाखमधु से चमकीली,
और उसके दांत दूध से श्वेत होंगे॥

---

* मूल में—अहेर से चढ़ गया है।
† मूल में—उसके पैरों के बीच से।
‡ मूल में—लोहू।

१३ जबूलून समुद्र के तीर पर निवास
करेगा, वह जहाज़ों के लिये
बन्दरगाह का काम देगा,
और उसका परला भाग सीदोन के
निकट पहुंचेगा ॥
१४ इस्साकार एक बड़ा और बलवन्त
गदहा है,
जो पशुओं के बाड़ों के बीच में
दबका रहता है ॥
१५ उस ने एक विश्रामस्थान देखकर,
कि अच्छा है, और एक देश, कि
मनोहर है,
अपने कन्धे को बोझ उठाने के लिये
झुकाया,
और बेगारी में दास का सा काम
करने लगा ॥
१६ दान इस्राएल का एक गोत्र होकर
अपने जातिभाइयों का न्याय
करेगा ॥
१७ दान मार्ग में का एक सांप,
और रास्ते में का एक नाग होगा,
जो घोड़े की नली को डंसता है,
जिस से उसका सवार पछाड़
खाकर गिर पड़ता है ॥
१८ हे यहोवा, मैं तुझी से उद्धार पाने
की बाट जोहता आया हूं ॥
१९ गाद पर एक दल चढ़ाई तो
करेगा; पर वह उसी दल के
पिछले भाग पर छापा मारेगा ॥
२० आशेर से जो अन्न उत्पन्न होगा वह
उत्तम होगा,
और वह राजा के योग्य स्वादिष्ट
भोजन दिया करेगा ॥
२१ नप्ताली एक छूटी हुई हरिणी है;
वह सुन्दर बातें बोलता है ॥
२२ यूसुफ बलवन्त लता की एक
शाखा * है,
वह सोते के पास लगी हुई फल-
वन्त लता की एक शाखा * है;
उसकी डालियां † भीत पर से
चढ़कर फैल जाती हैं ॥
२३ धनुर्धारियों ने उसको खेदित
किया,
और उस पर तीर मारे, और
उसके पीछे पड़े हैं ॥
२४ पर उसका धनुष दृढ़ रहा,
और उसकी बांह और हाथ
याक़ूब के उसी शक्तिमान ईश्वर के
हाथों के द्वारा फुर्तीले हुए,
जिसके पास से वह चरवाहा
आएगा, जो इस्राएल का पत्थर
भी ठहरेगा ॥
२५ यह तेरे पिता के उस ईश्वर का
काम है, जो तेरी सहायता करेगा,
उस सर्वशक्तिमान् का जो तुझे
ऊपर से आकाश में की आशीषें,
और नीचे से गहिरे जल में की
आशीषें,
और स्तनों, और गर्भ की आशीषें
देगा ॥
२६ तेरे पिता के आशीर्वाद,
मेरे पितरों के आशीर्वादों से अधिक
बढ़ गए हैं
और सनातन पहाड़ियों की मन-
चाही वस्तुओं की नाईं बने
रहेंगे : वे यूसुफ के सिर पर,
जो अपने भाइयों में से न्यारा
हुआ, उसी के सिर के
मुकुट पर फूले फलेंगे ॥

* मूल में—पुत्र।
† मूल में—बेटियां।

२७ बिन्यामीन फाड़नेहारा हुण्डार है,
सवेरे तो वह अहेर भक्षण करेगा,
और सांझ को लूट बांट लेगा ॥

२८ इस्राएल के बारहों गोत्र ये ही हैं: और उनके पिता ने जिस जिस वचन से उनको आशीर्वाद दिया, सो ये ही हैं; एक एक को उसके आशीर्वाद के अनुसार उस ने आशीर्वाद दिया। २९ तब उस ने यह कहकर उनको आज्ञा दी, कि मैं अपने लोगों के साथ मिलने पर हूं: इसलिये मुझे हित्ती एप्रोन की भूमिवाली गुफा में मेरे बापदादों के साथ मिट्टी देना, ३० अर्थात् उसी गुफा में जो कनान देश में मम्रे के साम्हनेवाली मकपेला की भूमि में है; उस भूमि को तो इब्राहीम ने हित्ती एप्रोन के हाथ से इसी निमित्त मोल लिया था, कि वह क़बरिस्तान के लिये उसकी निज भूमि हो। ३१ वहां इब्राहीम और उसकी पत्नी सारा को मिट्टी दी गई; और वहीं इसहाक और उसकी पत्नी रिबका को भी मिट्टी दी गई; और वहीं मैं ने लिआः को भी मिट्टी दी। ३२ वह भूमि और उस में की गुफा हित्तियों के हाथ से मोल ली गई। ३३ यह आज्ञा जब याक़ूब अपने पुत्रों को दे चुका, तब अपने पांव खाट पर समेट प्राण छोड़े, और अपने लोगों में जा मिला।

५० तब यूसुफ अपने पिता के मुंह पर गिरकर रोया और उसे चूमा। २ और यूसुफ ने उन वैद्यों को, जो उसके सेवक थे, आज्ञा दी, कि मेरे पिता की लोथ में सुगन्धद्रव्य भरो; तब वैद्यों ने इस्राएल की लोथ में सुगन्धद्रव्य भर दिए। ३ और उसके चालीस दिन पूरे हुए। क्योंकि जिनकी लोथ में सुगन्धद्रव्य भरे जाते हैं, उनको इतने ही दिन पूरे लगते हैं: और मिस्री लोग उसके लिये सत्तर दिन तक विलाप करते रहे॥

४ जब उसके विलाप के दिन बीत गए, तब यूसुफ फ़िरौन के घराने के लोगों से कहने लगा, यदि तुम्हारी अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो तो मेरी यह बिनती फ़िरौन को सुनाओ, ५ कि मेरे पिता ने यह कहकर, कि देख मैं मरने पर हूं, मुझे यह शपथ खिलाई, कि जो कबर तू ने अपने लिये कनान देश में खुदवाई है उसी में मैं तुझे मिट्टी दूंगा। इसलिये अब मुझे वहां जाकर अपने पिता को मिट्टी देने की आज्ञा दे, तत्पश्चात् मैं लौट आऊंगा। ६ तब फ़िरौन ने कहा, जाकर अपने पिता की खिलाई हुई शपथ के अनुसार उनको मिट्टी दे। ७ सो यूसुफ अपने पिता को मिट्टी देने के लिये चला, और फ़िरौन के सब कर्मचारी, अर्थात् उसके भवन के पुरनिये, और मिस्र देश के सब पुरनिये उसके संग चले। ८ और यूसुफ के घर के सब लोग, और उसके भाई, और उसके पिता के घर के सब लोग भी संग गए: पर वे अपने बालबच्चों, और भेड़-बकरियों, और गाय-बैलों को गोशेन देश में छोड़ गए। ९ और उसके संग रथ और सवार गए, सो भीड़ बहुत भारी हो गई। १० जब वे आताद के खलिहान तक, जो यरदन नदी के पार है पहुंचे, तब वहां अत्यन्त भारी विलाप किया, और यूसुफ ने अपने पिता के लिये सात दिन का विलाप कराया। ११ आताद के खलिहान में के विलाप को देखकर उस देश के निवासी कनानियों ने कहा, यह तो मिस्रियों का कोई भारी विलाप होगा, इसी कारण उस स्थान का नाम आबेलमिस्रैम * पड़ा, और वह यरदन के पार है। १२ और

* अर्थात् मिस्रियों का विलाप।

इस्राएल के पुत्रों ने उस से वही काम किया, जिसकी उस ने उनको आज्ञा दी थी: **१३** अर्थात् उन्हों ने उसको कनान देश में ले जाकर मकपेला की उस भूमिवाली गुफा में, जो मम्रे के साम्हने है, मिट्टी दी; जिसको इब्राहीम ने हित्ती एप्रोन के हाथ से इस निमित्त मोल लिया था, कि वह क़बरिस्तान के लिये उसकी निज भूमि हो ॥

(यूसुफ का उत्तर चरित्र)

१४ अपने पिता को मिट्टी देकर यूसुफ अपने भाइयों और उन सब समेत, जो उसके पिता को मिट्टी देने के लिये उसके संग गए थे, मिस्र में लौट आया। **१५** जब यूसुफ के भाइयों ने देखा कि हमारा पिता मर गया है, तब कहने लगे, कदाचित् यूसुफ अब हमारे पीछे पड़े, और जितनी बुराई हम ने उस से की थी सब का पूरा पलटा हम से ले। **१६** इसलिये उन्हों ने यूसुफ के पास यह कहला भेजा, कि तेरे पिता ने मरने से पहिले हमें यह आज्ञा दी थी, **१७** कि तुम लोग यूसुफ से इस प्रकार कहना, कि हम बिनती करते हैं, कि तू अपने भाइयों के अपराध और पाप को क्षमा कर; हम ने तुझ से बुराई तो की थी, पर अब अपने पिता के परमेश्वर के दासों का अपराध क्षमा कर। उनकी ये बातें सुनकर यूसुफ रो पड़ा। **१८** और उसके भाई आप भी जाकर उसके साम्हने गिर पड़े, और कहा, देख, हम तेरे दास हैं। **१९** यूसुफ ने उन से कहा, मत डरो, क्या मैं परमेश्वर की जगह पर हूं? **२०** यद्यपि तुम लोगों ने मेरे लिये बुराई का विचार किया था; परन्तु परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार किया, जिस से वह ऐसा करे, जैसा आज के दिन प्रगट है, कि बहुत से लोगों के प्राण बचे हैं। **२१** सो अब मत डरो: मैं तुम्हारा और तुम्हारे बाल-बच्चों का पालन पोषण करता रहूंगा; इस प्रकार उस ने उनको समझा बुझाकर शान्ति दी ॥

२२ और यूसुफ अपने पिता के घराने समेत मिस्र में रहता रहा, और यूसुफ एक सौ दस वर्ष जीवित रहा। **२३** और यूसुफ एप्रैम के परपोतों तक देखने पाया: और मनश्शे के पोते, जो माकीर के पुत्र थे, वे उत्पन्न होकर यूसुफ से गोद में लिए गए*। **२४** और यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा, मैं तो मरने पर हूं; परन्तु परमेश्वर निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा, और तुम्हें इस देश से निकालकर उस देश में पहुंचा देगा, जिसके देने की उस ने इब्राहीम, इसहाक, और याक़ूब से शपथ खाई थी। **२५** फिर यूसुफ ने इस्राएलियों से यह कहकर, कि परमेश्वर निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा, उनको इस विषय की शपथ खिलाई, कि हम तेरी हड्डियों को वहां से **उस देश में** ले जाएंगे। **२६** निदान यूसुफ एक सौ दस वर्ष का होकर मर गया: और उसकी लोथ में सुगन्धद्रव्य भरे गए, और वह लोथ मिस्र में एक सन्दूक में रखी गई ॥

---

* **मूल में**—यूसुफ के घुटनों पर जन्मे।

निर्गमन नाम पुस्तक

(मिस्र में इस्राएलियों की दुर्दशा)

१ इस्राएल के पुत्रों के नाम, जो अपने अपने घराने को लेकर याक़ूब के साथ मिस्र देश में आए, ये हैं: २ अर्थात् रूबेन, शिमोन, लेवी, यहूदा, ३ इस्साकर, जबूलून, बिन्यामीन, ४ दान, नप्ताली, गाद और आशेर। ५ और यूसुफ तो मिस्र में पहिले ही आ चुका था। याक़ूब के निज वंश में जो उत्पन्न हुए वे सब सत्तर प्राणी थे। ६ और यूसुफ, और उसके सब भाई, और उस पीढ़ी के सब लोग मर मिटे। ७ और इस्राएल की सन्तान फूलने फलने लगी; और वे लोग अत्यन्त सामर्थी बनते चले गए; और इतना अधिक बढ़ गए कि कुल देश उन से भर गया॥

८ मिस्र में एक नया राजा गद्दी पर बैठा जो यूसुफ को नहीं जानता था। ९ और उस ने अपनी प्रजा से कहा, देखो, इस्राएली हम से गिनती और सामर्थ्य में अधिक बढ़ गए हैं। १० इसलिये आओ, हम उनके साथ बुद्धिमानी से बर्ताव करें, कहीं ऐसा न हो कि जब वे बहुत बढ़ जाएं, और यदि संग्राम का समय आ पड़े, तो हमारे बैरियों से मिलकर हम से लड़ें और इस देश से निकल जाएं। ११ इसलिये उन्हों ने उन पर बेगारी करानेवालों को नियुक्त किया कि वे उन पर भार डाल डालकर उनको दुःख दिया करें; तब उन्हों ने फ़िरौन के लिये पितोम और रामसेस नाम भण्डार-वाले नगरों को बनाया। १२ पर ज्यों ज्यों वे उनको दुःख देते गए त्यों त्यों वे बढ़ते और फैलते चले गए; इसलिये वे इस्राएलियों से अत्यन्त डर गए। १३ तौभी मिस्रियों ने इस्राएलियों से कठोरता के साथ सेवकाई करवाई। १४ और उनके जीवन को गारे, ईंट और खेती के भांति भांति के काम की कठिन सेवा से दुःखी * कर डाला; जिस किसी काम में वे उन से सेवा करवाते थे उस में वे कठोरता का व्यवहार करते थे॥

१५ शिप्रा और पूआ नाम दो इब्री धाइयों को मिस्र के राजा ने आज्ञा दी, १६ कि जब तुम इब्री स्त्रियों को बच्चा उत्पन्न होने के समय जन्मने के पत्थरों पर बैठी देखो, तब यदि बेटा हो, तो उसे मार डालना; और बेटी हो, तो जीवित रहने देना। १७ परन्तु वे धाइयां परमेश्वर का भय मानती थीं, इसलिये मिस्र के राजा की आज्ञा न मानकर लड़कों को भी जीवित छोड़ देती थीं। १८ तब मिस्र के राजा ने उनको बुलवाकर पूछा, तुम जो लड़कों को जीवित छोड़ देती हो, तो ऐसा क्यों करती हो? १९ धाइयों ने फ़िरौन को उत्तर दिया, कि इब्री स्त्रियां मिस्री स्त्रियों के समान नहीं हैं; वे ऐसी फुर्तीली हैं कि धाइयों के पहुंचने से पहिले ही उनको बच्चा उत्पन्न हो जाता है। २० इसलिये परमेश्वर ने धाइयों के साथ भलाई की; और वे लोग बढ़कर बहुत सामर्थी हो गए। २१ और धाइयां इसलिये कि वे परमेश्वर का भय मानती थीं उस ने उनके घर बसाए †। २२ तब फ़िरौन ने अपनी सारी प्रजा के लोगों को आज्ञा दी, कि इब्रियों के

---

* मूल में—कड़ुआ।

† मूल में—उनके लिये घर बनाए।

जितने बेटे उत्पन्न हों उन सभों को तुम नील नदी * में डाल देना, और सब बेटियों को जीवित रख छोड़ना ॥

(मूसा की उत्पत्ति और आदि चरित्र)

२ लेवी के घराने के एक पुरुष ने एक लेवी वंश की स्त्री को ब्याह लिया। २ और वह स्त्री गर्भवती हुई और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और यह देखकर कि यह बालक सुन्दर है, उसे तीन महीने तक छिपा रखा। ३ और जब वह उसे और छिपा न सकी तब उसके लिये सरकंडों की एक टोकरी लेकर, उस पर चिकनी मिट्टी और राल लगाकर, उस में बालक को रखकर नील नदी * के तीर पर कांसों के बीच छोड़ आई। ४ उस बालक की बहिन दूर खड़ी रही, कि देखे इसका क्या हाल होगा। ५ तब फ़िरौन की बेटी नहाने के लिये नदी * के तीर आई; उसकी सखियां नदी * के तीर तीर टहलने लगीं; तब उस ने कांसों के बीच टोकरी को देखकर अपनी दासी को उसे ले आने के लिये भेजा। ६ तब उस ने उसे खोलकर देखा, कि एक रोता हुआ बालक है; तब उसे तरस आया और उस ने कहा, यह तो किसी इब्री का बालक होगा। ७ तब बालक की बहिन ने फ़िरौन की बेटी से कहा, क्या मैं जाकर इब्री स्त्रियों में से किसी धाई को तेरे पास बुला ले आऊं जो तेरे लिये बालक को दूध पिलाया करे? ८ फ़िरौन की बेटी ने कहा, जा। तब लड़की जाकर बालक की माता को बुला ले आई। ९ फ़िरौन की बेटी ने उस से कहा, तू इस बालक को ले जाकर मेरे लिये दूध पिलाया कर, और मैं तुझे मजदूरी दूंगी। तब वह स्त्री बालक को ले जाकर दूध पिलाने लगी। १० जब बालक कुछ बड़ा हुआ तब वह उसे फ़िरौन की बेटी के पास ले गई, और वह उसका बेटा ठहरा; और उस ने यह कहकर उसका नाम मूसा * रखा, कि मैं ने इसको जल से निकाल लिया ॥

११ उन दिनों में ऐसा हुआ कि जब मूसा जवान हुआ, और बाहर अपने भाई बन्धुओं के पास जाकर उनके दुःखों पर दृष्टि करने लगा; तब उस ने देखा, कि कोई मिस्री जन मेरे एक इब्री भाई को मार रहा है। १२ जब उस ने इधर उधर देखा कि कोई नहीं है, तब उस मिस्री को मार डाला और बालू में छिपा दिया ॥

१३ फिर दूसरे दिन बाहर जाकर उस ने देखा कि दो इब्री पुरुष आपस में मारपीट कर रहे हैं; उस ने अपराधी से कहा, तू अपने भाई को क्यों मारता है? १४ उस ने कहा, किस ने तुझे हम लोगों पर हाकिम और न्यायी ठहराया? जिस भांति तू ने मिस्री को घात किया क्या उसी भांति तू मुझे भी घात करना चाहता है? तब मूसा यह सोचकर डर गया, कि निश्चय वह बात खुल गई है। १५ जब फ़िरौन ने यह बात सुनी तब मूसा को घात करने की युक्ति की। तब मूसा फ़िरौन के साम्हने से भागा, और मिद्यान देश में जाकर रहने लगा; और वह वहां एक कुएं के पास बैठ गया। १६ मिद्यान के याजक की सात बेटियां थीं; और वे वहां आकर जल भरने लगीं, कि कठौतों में भरके अपने पिता की भेड़-बकरियों को पिलाएं। १७ तब चरवाहे आकर उनको हटाने लगे; इस पर मूसा ने खड़ा होकर उनकी सहायता की, और भेड़-

* मूल में—योर।

* अर्थात् जल से निकाला हुआ।

बकरियों को पानी पिलाया। १८ जब वे अपने पिता रूएल के पास फिर आई, तब उस ने उन से पूछा, क्या कारण है कि आज तुम ऐसी फुर्ती से आई हो? १९ उन्हों ने कहा, एक मिस्री पुरुष ने हम को चरवाहों के हाथ से छुड़ाया, और हमारे लिये बहुत जल भरके भेड़-बकरियों को पिलाया। २० तब उस ने अपनी बेटियों से कहा, वह पुरुष कहां है? तुम उसको क्यों छोड़ आई हो? उसको बुला ले आओ कि वह भोजन करे। २१ और मूसा उस पुरुष के साथ रहने को प्रसन्न हुआ; उस ने उसे अपनी बेटी सिप्पोरा को ब्याह दिया। २२ और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ, तब मूसा ने यह कहकर, कि मैं अन्य देश में परदेशी हूं, उसका नाम गेर्शोम * रखा॥

(यहोवा के मूसा को दर्शन देकर फ़िरौन के पास भेजने का वर्णन)

२३ बहुत दिनों के बीतने पर मिस्र का राजा मर गया। और इस्राएली कठिन सेवा के कारण लम्बी लम्बी सांस लेकर आहें भरने लगे, और पुकार उठे, और उनकी दोहाई जो कठिन सेवा के कारण हुई वह परमेश्वर तक पहुंची। २४ और परमेश्वर ने उनका कराहना सुनकर अपनी वाचा को, जो उस ने इब्राहीम, और इसहाक, और याकूब के साथ बान्धी थी, स्मरण किया। २५ और परमेश्वर ने इस्राएलियों पर दृष्टि करके उन पर चित्त लगाया॥

३ मूसा अपने ससुर यित्रो नाम मिद्यान के याजक की भेड़-बकरियों को चराता था; और वह उन्हें जंगल की परली ओर होरेब नाम परमेश्वर के पर्वत के पास ले गया। २ और परमेश्वर के दूत ने एक कटीली झाड़ी के बीच आग की लौ में उसको दर्शन दिया; और उस ने दृष्टि उठाकर देखा कि झाड़ी जल रही है, पर भस्म नहीं होती। ३ तब मूसा ने सोचा, कि मैं उधर फिरके इस बड़े अचम्भे को देखूंगा, कि वह झाड़ी क्यों नहीं जल जाती। ४ जब यहोवा ने देखा कि मूसा देखने को मुड़ा चला आता है, तब परमेश्वर ने झाड़ी के बीच से उसको पुकारा, कि हे मूसा, हे मूसा। मूसा ने कहा, क्या आज्ञा *। ५ उस ने कहा इधर पास मत आ, और अपने पांवों से जूतियों को उतार दे, क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है वह पवित्र भूमि है। ६ फिर उस ने कहा, मैं तेरे पिता का परमेश्वर, और इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूं। तब मूसा ने जो परमेश्वर की ओर निहारने से डरता था अपना मुंह ढांप लिया। ७ फिर यहोवा ने कहा, मैं ने अपनी प्रजा के लोग जो मिस्र में हैं उनके दुःख को निश्चय देखा है, और उनकी जो चिल्लाहट परिश्रम करानेवालों के कारण होती है उसको भी मैं ने सुना है, और उनकी पीड़ा पर मैं ने चित्त लगाया है; ८ इसलिये अब मैं उतर आया हूं कि उन्हें मिस्रियों के वश से छुड़ाऊं, और उस देश से निकालकर एक अच्छे और बड़े देश में जिस में दूध और मधु की धारा बहती है, अर्थात् कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिव्वी, और यबूसी लोगों के स्थान में पहुंचाऊं। ९ सो अब सुन, इस्राएलियों की चिल्लाहट मुझे सुनाई पड़ी है, और मिस्रियों का उन पर अन्धेर करना भी मुझे दिखाई

* अर्थात् वहां परदेशी था, निकाल दिया जाना।

* मूल में—मुझे देख।

पड़ा है। १० इसलिये आ, मैं तुझे फ़िरौन के पास भेजता हूं कि तू मेरी इस्राएली प्रजा को मिस्र से निकाल ले आए। ११ तब मूसा ने परमेश्वर से कहा, मैं कौन हूं जो फ़िरौन के पास जाऊं, और इस्राएलियों को मिस्र से निकाल ले आऊं? १२ उस ने कहा, निश्चय मैं तेरे संग रहूंगा; और इस बात का कि तेरा भेजनेवाला मैं हूं, तेरे लिये यह चिन्ह होगा; कि जब तू उन लोगों को मिस्र से निकाल चुके तब तुम इसी पहाड़ पर परमेश्वर की उपासना करोगे। १३ मूसा ने परमेश्वर से कहा, जब मैं इस्राएलियों के पास जाकर उन से यह कहूं, कि तुम्हारे पितरों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, तब यदि वे मुझ से पूछें, कि उसका क्या नाम है? तब मैं उनको क्या बताऊं? १४ परमेश्वर ने मूसा से कहा, मैं जो हूं सो हूं।* फिर उस ने कहा, तू इस्राएलियों से यह कहना, कि जिसका नाम मैं हूं† है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। १५ फिर परमेश्वर ने मूसा से यह भी कहा, कि तू इस्राएलियों से यह कहना, कि तुम्हारे पितरों का परमेश्वर, अर्थात् इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याक़ूब का परमेश्वर, यहोवा, उसी ने मुझ को तुम्हारे पास भेजा है। देख, सदा तक मेरा नाम यही रहेगा, और पीढ़ी पीढ़ी में मेरा स्मरण इसी से हुआ करेगा। १६ इसलिये अब जाकर इस्राएली पुरनियों को इकट्ठा कर, और उन से कह, कि तुम्हारे पितर इब्राहीम, इसहाक, और याक़ूब के परमेश्वर, यहोवा ने मुझे दर्शन देकर यह कहा है, कि मैं ने तुम पर और तुम से जो बर्ताव मिस्र में किया जाता है उस पर भी चित्त लगाया है; १७ और मैं ने ठान लिया है कि तुम को मिस्र के दुखों में से निकालकर कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी हिव्वी, और यबूसी लोगों के देश में ले चलूंगा, जो ऐसा देश है कि जिस में दूध और मधु की धारा बहती है। १८ तब वे तेरी मानेंगे; और तू इस्राएली पुरनियों को संग लेकर मिस्र के राजा के पास जाकर उस से यों कहना, कि इब्रियों के परमेश्वर, यहोवा से हम लोगों की भेंट हुई है; इसलिये अब हम को तीन दिन के मार्ग पर जंगल में जाने दे, कि अपने परमेश्वर यहोवा को बलिदान चढ़ाएं। १९ मैं जानता हूं कि मिस्र का राजा तुम को जाने न देगा वरन बड़े बल से दबाए जाने पर भी जाने न देगा। २० इसलिये मैं हाथ बढ़ाकर उन सब आश्चर्यकर्मों से जो मिस्र के बीच करूंगा उस देश को मारूंगा; और उसके पश्चात् वह तुम को जाने देगा। २१ तब मैं मिस्रियों से अपनी इस प्रजा पर अनुग्रह करवाऊंगा; और जब तुम निकलोगे तब छूछे हाथ न निकलोगे। २२ वरन तुम्हारी एक एक स्त्री अपनी अपनी पड़ोसिन, और अपने अपने घर की पाहुनी से सोने चांदी के गहने, और वस्त्र मांग लेगी, और तुम उन्हें अपने बेटों और बेटियों को पहिराना; इस प्रकार तुम मिस्रियों को लूटोगे॥

४ तब मूसा ने उत्तर दिया, कि वे मेरी प्रतीति न करेंगे और न मेरी सुनेंगे, वरन कहेंगे, कि यहोवा ने तुझ को दर्शन नहीं दिया। २ यहोवा ने उस से कहा, तेरे हाथ में वह क्या है? वह बोला, लाठी। ३ उस ने कहा, उसे भूमि पर डाल दे; जब उस ने उसे

* कितने टीकाकार कहते हैं, मैं जो हूं सो हूं।

† कितने टीकाकार कहते हैं, मैं हूं।

भूमि पर डाला तब वह सर्प बन गई, और मूसा उसके साम्हने से भागा। ४ तब यहोवा ने मूसा से कहा, हाथ बढ़ाकर उसकी पूंछ पकड़ ले कि वे लोग प्रतीति करें कि तुम्हारे पितरों के परमेश्वर अर्थात् इब्राहीम के परमेश्वर, इसहाक के परमेश्वर, और याक़ूब के परमेश्वर, यहोवा ने तुझ को दर्शन दिया है। ५ जब उस ने हाथ बढ़ाकर उसको पकड़ा तब वह उसके हाथ में फिर लाठी बन गई। ६ फिर यहोवा ने उस से यह भी कहा, कि अपना हाथ छाती पर रखकर ढांप। सो उस ने अपना हाथ छाती पर रखकर ढांप लिया; फिर जब उसे निकाला तब क्या देखा, कि उसका हाथ कोढ़ के कारण हिम के समान श्वेत हो गया है। ७ तब उस ने कहा, अपना हाथ छाती पर फिर रखकर ढांप। और उस ने अपना हाथ छाती पर रखकर ढांप लिया; और जब उस ने उसको छाती पर से निकाला तब क्या देखता है, कि वह फिर सारी देह के समान हो गया। ८ तब यहोवा ने कहा, यदि वे तेरी बात की प्रतीति न करें, और पहिले चिन्ह को न मानें, तो दूसरे चिन्ह की प्रतीति करेंगे। ९ और यदि वे इन दोनों चिन्हों की प्रतीति न करें और तेरी बात को न मानें, तब तू नील नदी * से कुछ जल लेकर सूखी भूमि पर डालना; और जो जल तू नदी से निकालेगा वह सूखी भूमि पर लोहू बन जायगा। १० मूसा ने यहोवा से कहा, हे मेरे प्रभु, मैं बोलने में निपुण नहीं, न तो पहिले था, और न जब से तू अपने दास से बातें करने लगा; मैं तो मुंह और जीभ का भद्दा हूं। ११ यहोवा ने उस से कहा, मनुष्य का मुंह किस ने बनाया है? और मनुष्य को गूंगा, वा बहिरा, वा देखनेवाला, वा अन्धा, मुझ यहोवा को छोड़ कौन बनाता है? १२ अब जा, मैं तेरे मुख के संग होकर जो तुझे कहना होगा वह तुझे सिखलाता जाऊंगा। १३ उस ने कहा, हे मेरे प्रभु, जिसको तू चाहे उसी के हाथ से भेज। १४ तब यहोवा का कोप मूसा पर भड़का और उस ने कहा, क्या तेरा भाई लेवीय हारून नहीं है? मुझे तो निश्चय है कि वह बोलने में निपुण है, और वह तेरी भेंट के लिये निकला भी आता है, और तुझे देखकर मन में आनन्दित होगा। १५ इसलिये तू उसे ये बातें सिखाना; * और मैं उसके मुख के संग और तेरे मुख के संग होकर जो कुछ तुम्हें करना होगा वह तुम को सिखलाता जाऊंगा। १६ और वह तेरी ओर से लोगों से बातें किया करेगा; वह तेरे लिये मुंह और तू उसके लिये परमेश्वर ठहरेगा। १७ और तू इस लाठी को हाथ में लिए जा, और इसी से इन चिन्हों को दिखाना॥

१८ तब मूसा अपने ससुर यित्रो के पास लौटा और उस से कहा, मुझे बिदा कर, कि मैं मिस्र में रहनेवाले अपने भाइयों के पास जाकर देखूं कि वे अब तक जीवित हैं वा नहीं। यित्रो ने कहा, कुशल से जा। १९ और यहोवा ने मिद्यान देश में मूसा से कहा, मिस्र को लौट जा; क्योंकि जो मनुष्य तेरे प्राण के प्यासे थे वे सब मर गए हैं २० तब मूसा अपनी पत्नी और बेटों को गदहे पर चढ़ाकर मिस्र देश की ओर परमेश्वर की उस लाठी को हाथ में लिये हुए लौटा। २१ और यहोवा ने मूसा से कहा, जब तू मिस्र में पहुंचे तब सावधान हो

* मूल में—योर।

* मूल में—उससे बातें करना और उसके मुंह में ये बातें डालना।

जाना, और जो चमत्कार मैं ने तेरे वश में किए हैं उन सभों को फ़िरौन को दिखलाना; परन्तु मैं उसके मन को हठीला करूंगा, और वह मेरी प्रजा को जाने न देगा। २२ और तू फ़िरौन से कहना, कि यहोवा यों कहता है, कि इस्राएल मेरा पुत्र वरन मेरा जेठा है, २३ और मैं जो तुझ से कह चुका हूं, कि मेरे पुत्र को जाने दे कि वह मेरी सेवा करे; और तू ने अब तक उसे जाने नहीं दिया, इस कारण मैं अब तेरे पुत्र वरन तेरे जेठे को घात करूंगा। २४ और ऐसा हुआ कि मार्ग पर सराय में यहोवा ने मूसा से भेंट करके उसे मार डालना चाहा। २५ तब सिप्पोरा ने एक तेज चकमक पत्थर लेकर अपने बेटे की खलड़ी को काट डाला, और मूसा के पांवों पर यह कहकर फेंक दिया, कि निश्चय तू लोहू बहानेवाला मेरा पति है। २६ तब उस ने उसको छोड़ दिया। और उसी समय खतने के कारण वह बोली, तू लोहू बहानेवाला पति है॥

(मूसा के इस्राएलियों और फ़िरौन से भेंट करने का वर्णन)

२७ तब यहोवा ने हारून से कहा, मूसा से भेंट करने को जंगल में जा। और वह गया, और परमेश्वर के पर्वत पर उस से मिला और उसको चूमा। २८ तब मूसा ने हारून को यह बतलाया कि यहोवा ने क्या क्या बातें कहकर उसको भेजा है, और कौन कौन से चिन्ह दिखलाने की आज्ञा उसे दी है। २९ तब मूसा और हारून ने जाकर इस्राएलियों के सब पुरनियों को इकट्ठा किया। ३० और जितनी बातें यहोवा ने मूसा से कही थीं वह सब हारून ने उन्हें सुनाईं, और लोगों के साम्हने वे चिन्ह भी दिखलाए। ३१ और लोगों ने उनकी प्रतीति की; और यह सुनकर, कि यहोवा ने इस्राएलियों की सुधि ली और उनके दुःखों पर दृष्टि की है, उन्हों ने सिर झुकाकर दण्डवत् की॥

५ इसके पश्चात् मूसा और हारून ने जाकर फ़िरौन से कहा, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे, कि वे जंगल में मेरे लिये पर्ब्ब करें। २ फ़िरौन ने कहा, यहोवा कौन है, कि मैं उसका वचन मानकर इस्राएलियों को जाने दूं? मैं यहोवा को नहीं जानता, और मैं इस्राएलियों को नहीं जाने दूंगा। ३ उन्हों ने कहा, इब्रियों के परमेश्वर ने हम से भेंट की है; सो हमें जंगल में तीन दिन के मार्ग पर जाने दे, कि अपने परमेश्वर यहोवा के लिये बलिदान करें, ऐसा न हो कि वह हम में मरी फैलाए वा तलवार चलवाए। ४ मिस्र के राजा ने उन से कहा, हे मूसा, हे हारून, तुम क्यों लोगों से काम छुड़वाने चाहते हो? तुम जाकर अपने अपने बोझ को उठाओ। ५ और फ़िरौन ने कहा, सुनो, इस देश में वे लोग बहुत हो गए हैं, फिर तुम उनको परिश्रम से विश्राम दिलाना चाहते हो! ६ और फ़िरौन ने उसी दिन उन परिश्रम करवानेवालों को जो उन लोगों के ऊपर थे, और उनके सरदारों को यह आज्ञा दी, ७ कि तुम जो अब तक ईंटें बनाने के लिये लोगों को पुआल दिया करते थे सो आगे को न देना; वे आप ही जाकर अपने लिये पुआल इकट्ठा करें। ८ तौभी जितनी ईंटें अब तक उन्हें बनानी पड़ती थीं उतनी ही आगे को भी उन से बनवाना, ईंटों की गिनती कुछ भी न घटाना; क्योंकि वे आलसी हैं; इस कारण यह कहकर चिल्लाते हैं, कि हम

जाकर अपने परमेश्वर के लिये बलिदान करें। ९ उन मनुष्यों से और भी कठिन सेवा करवाई जाए कि वे उस में परिश्रम करते रहें और झूठी बातों पर ध्यान न लगाएं। १० तब लोगों के परिश्रम करानेवालों ने और सरदारों ने बाहर जाकर उन से कहा, फ़िरौन इस प्रकार कहता है, कि मैं तुम्हें पुआल नहीं दूंगा। ११ तुम ही जाकर जहां कहीं पुआल मिले वहां से उसको बटोर कर ले आओ; परन्तु तुम्हारा काम कुछ भी नहीं घटाया जाएगा। १२ सो वे लोग सारे मिस्र देश में तितर-बितर हुए कि पुआल की संती खूंटी बटोरें। १३ और परिश्रम करनेवाले यह कह कहकर उन से जल्दी करते रहे, कि जिस प्रकार तुम पुआल पाकर किया करते थे उसी प्रकार अपना प्रतिदिन का काम अब भी पूरा करो। १४ और इस्राएलियों में से जिन सरदारों को फ़िरौन के परिश्रम करानेवालों ने उनका अधिकारी ठहराया था, उन्हों ने मार खाई, और उन से पूछा गया, कि क्या कारण है कि तुम ने अपनी ठहराई हुई ईंटों की गिनती के अनुसार पहिले की नाईं कल और आज पूरी नहीं कराई? १५ तब इस्राएलियों के सरदारों ने जाकर फ़िरौन की दोहाई यह कहकर दी, कि तू अपने दासों से ऐसा बर्ताव क्यों करता है? १६ तेरे दासों को पुआल तो दिया ही नहीं जाता और वे हम से कहते रहते हैं, ईंटें बनाओ, ईंटें बनाओ, और तेरे दासों ने भी मार खाई है; परन्तु दोष तेरे ही लोगों का है। १७ फ़िरौन ने कहा, तुम आलसी हो, आलसी; इसी कारण कहते हो कि हमें यहोवा के लिये बलिदान करने को जाने दे। १८ और अब जाकर अपना काम करो; और पुआल तुम को नहीं दिया जाएगा, परन्तु ईंटों की गिनती पूरी करनी पड़ेगी। १९ जब इस्राएलियों के सरदारों ने यह बात सुनी कि उनकी ईंटों की गिनती न घटेगी, और प्रतिदिन उतना ही काम पूरा करना पड़ेगा, तब वे जान गए कि उनके दुर्भाग्य के दिन आ गए हैं। २० जब वे फ़िरौन के सम्मुख से बाहर निकल आए तब मूसा और हारून, जो उन से भेंट करने के लिये खड़े थे, उन्हें मिले। २१ और उन्हों ने मूसा और हारून से कहा, यहोवा तुम पर दृष्टि करके न्याय करे, क्योंकि तुम ने हम को फ़िरौन और उसके कर्मचारियों की दृष्टि में घृणित* ठहरवाकर हमें घात करने के लिये उनके हाथ में तलवार दे दी है। २२ तब मूसा ने यहोवा के पास लौटकर कहा, हे प्रभु, तू ने इस प्रजा के साथ ऐसी बुराई क्यों की? और तू ने मुझे यहां क्यों भेजा? २३ जब से मैं तेरे नाम से फ़िरौन के पास बातें करने के लिये गया तब से उसने इस प्रजा के साथ बुरा ही व्यवहार किया है, और तू ने अपनी प्रजा का कुछ भी छुटकारा नहीं किया॥

६ तब यहोवा ने मूसा से कहा, अब तू देखेगा कि मैं फ़िरौन से क्या करूंगा; जिस से वह उनको बरबस निकालेगा, वह तो उन्हें अपने देश से बरबस निकाल देगा॥

२ और परमेश्वर ने मूसा से कहा, कि मैं यहोवा हूं। ३ मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम से इब्राहीम, इसहाक, और याक़ूब को दर्शन देता था, परन्तु यहोवा के नाम से मैं उन पर प्रगट न हुआ। ४ और मैं ने उनके साथ अपनी वाचा दृढ़ की है, अर्थात् कनान देश जिस में वे परदेशी होकर रहते थे, उसे उन्हें दे दूं। ५ और इस्राएली जिन्हें मिस्री

* मूल में—दुर्गन्धित।

लोग दासत्व में रखते हैं उनका कराहना भी सुनकर मैं ने अपनी वाचा को स्मरण किया है। ६ इस कारण तू इस्राएलियों से कह, कि मैं यहोवा हूं, और तुम को मिस्रियों के बोझों के नीचे से निकालूंगा, और उनके दासत्व से तुम को छुड़ाऊंगा, और अपनी भुजा बढ़ाकर और भारी दण्ड देकर तुम्हें छुड़ा लूंगा, ७ और मैं तुम को अपनी प्रजा बनाने के लिये अपना लूंगा, और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूंगा; और तुम जान लोगे कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं जो तुम्हें मिस्रियों के बोझों के नीचे से निकाल ले आया। ८ और जिस देश के देने की शपथ * मैं ने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब से खाई थी † उसी में मैं तुम्हें पहुंचाकर उसे तुम्हारा भाग कर दूंगा। मैं तो यहोवा हूं। ९ और ये बातें मूसा ने इस्राएलियों को सुनाई; परन्तु उन्हों ने मन की बेचैनी और दासत्व की क्रूरता के कारण उसकी न सुनी॥

१० तब यहोवा ने मूसा से कहा, ११ तू जाकर मिस्र के राजा फ़िरौन से कह, कि इस्राएलियों को अपने देश में से निकल जाने दे। १२ और मूसा ने यहोवा से कहा, देख, इस्राएलियों ने मेरी नहीं सुनी; फिर फ़िरौन मुझ भद्दे बोलनेवाले ‡ की क्योंकर सुनेगा? १३ और यहोवा ने मूसा और हारून को इस्राएलियों और मिस्र के राजा फ़िरौन के लिये आज्ञा इस अभिप्राय से दी कि वे इस्राएलियों को मिस्र देश से निकाल ले जाएं॥

१४ उनके पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष ये हैं: इस्राएल के जेठा रूबेन के पुत्र: हनोक, पल्लू, हेस्रोन और कर्म्मी थे; इन्हीं से रूबेन के कुल निकले। १५ और शिमोन के पुत्र: यमूएल, यामीन, ओहद, याकिन और सोहर थे, और एक कनानी स्त्री का बेटा शाउल भी था; इन्हीं से शिमोन के कुल निकले। १६ और लेवी के पुत्र जिन से उनकी वंशावली चली है, उनके नाम ये हैं: अर्थात् गेर्शोन, कहात और मरारी, और लेवी की पूरी अवस्था एक सौ सैंतीस वर्ष की हुई। १७ गेर्शोन के पुत्र जिन से उनका कुल चला: लिबनी और शिमी थे। १८ और कहात के पुत्र: अम्राम, यिसहार, हेब्रोन और उज्जीएल थे, और कहात की पूरी अवस्था एक सौ सैंतीस वर्ष की हुई। १९ और मरारी के पुत्र: महली और मूशी थे। लेवियों के कुल जिन से उनकी वंशावली चली ये ही हैं। २० अम्राम ने अपनी फूफी योकेबेद को ब्याह लिया और उस से हारून और मूसा उत्पन्न हुए, और अम्राम की पूरी अवस्था एक सौ सैंतीस वर्ष की हुई। २१ और यिसहार के पुत्र: कोरह, नेपेग और जिक्री थे। २२ और उज्जीएल के पुत्र: मीशाएल, एलसापन और सित्री थे। २३ और हारून ने अम्मीनादाब की बेटी, और नहशोन की बहिन एलीशेबा को ब्याह लिया; और उस से नादाब, अबीहू, ऐलाजार और ईतामार उत्पन्न हुए। २४ और कोरह के पुत्र: अस्सीर, एलकाना और अबीआसाप थे; और इन्हीं से कोरहियों के कुल निकले। २५ और हारून के पुत्र एलाजार ने पूतीएल की एक बेटी को ब्याह लिया; और उस से पीनहास उत्पन्न हुआ जिन से उनका कुल चला। लेवियों के पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष ये ही हैं। २६ हारून और मूसा वे ही हैं जिनको यहोवा ने यह आज्ञा दी, कि इस्राएलियों को

* मूल में—को हाथ।
† मूल में—उठाया था।
‡ मूल में—खतनारहित होंठवाले।

दल दल करके उनके जत्थों के अनुसार मिस्र देश से निकाल ले आओ। २७ ये वही मूसा और हारून हैं जिन्हों ने मिस्र के राजा फ़िरौन से कहा, कि हम इस्राएलियों को मिस्र से निकाल ले जाएंगे ॥

२८ जब यहोवा ने मिस्र देश में मूसा से यह बात कही, २९ कि मैं तो यहोवा हूं; इसलिये जो कुछ मैं तुम से कहूंगा वह सब मिस्र के राजा फ़िरौन से कहना। ३० और मूसा ने यहोवा को उत्तर दिया, कि मैं तो बोलने में भद्दा हूं *; और फ़िरौन क्योंकर मेरी सुनेगा ?

७ तब यहोवा ने मूसा से कहा, सुन, मैं तुझे फ़िरौन के लिये परमेश्वर सा ठहराता हूं; और तेरा भाई हारून तेरा नबी ठहरेगा। २ जो जो आज्ञा मैं तुझे दूं वही तू कहना, और हारून उसे फ़िरौन से कहेगा जिस से वह इस्राएलियों को अपने देश से निकल जाने दे। ३ और मैं फ़िरौन के मन को कठोर कर दूंगा, और अपने चिन्ह और चमत्कार मिस्र देश में बहुत से दिखलाऊंगा। ४ तौभी फ़िरौन तुम्हारी न सुनेगा; और मैं मिस्र देश पर अपना हाथ बढ़ाकर मिस्रियों को भारी दण्ड देकर अपनी सेना अर्थात् अपनी इस्राएली प्रजा को मिस्र देश से निकाल लूंगा। ५ और जब मैं मिस्र पर हाथ बढ़ाकर इस्राएलियों को उनके बीच से निकालूंगा तब मिस्री जान लेंगे, कि मैं यहोवा हूं। ६ तब मूसा और हारून ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार ही किया। ७ और जब मूसा और हारून फ़िरौन से बात करने लगे तब मूसा तो अस्सी वर्ष का, और हारून तिरासी वर्ष का था ॥

८ फिर यहोवा ने, मूसा और हारून से इस प्रकार कहा, ९ कि जब फ़िरौन तुम से कहे, कि अपने प्रमाण का कोई चमत्कार दिखाओ, तब तू हारून से कहना, कि अपनी लाठी को लेकर फ़िरौन के साम्हने डाल दे, कि वह अजगर बन जाए। १० तब मूसा और हारून ने फ़िरौन के पास जाकर यहोवा की आज्ञा के अनुसार किया; और जब हारून ने अपनी लाठी को फ़िरौन और उसके कर्मचारियों के साम्हने डाल दिया, तब वह अजगर बन गया। ११ तब फ़िरौन ने पण्डितों और टोनहा करनेवालों को बुलवाया; और मिस्र के जादूगरों ने आकर अपने अपने तंत्र मंत्र से वैसा ही किया। १२ उन्हों ने भी अपनी अपनी लाठी को डाल दिया, और वे भी अजगर बन गए। पर हारून की लाठी उनकी लाठियों को निगल गई। १३ परन्तु फ़िरौन का मन और हठीला हो गया, और यहोवा के वचन के अनुसार उस ने मूसा और हारून की बातों को नहीं माना ॥

(मिस्रियों पर दस भारी विपत्तियों के पड़ने का वर्णन)

१४ तब यहोवा ने मूसा से कहा, फ़िरौन का मन कठोर हो गया है और वह इस प्रजा को जाने नहीं देता। १५ इसलिये बिहान को फ़िरौन के पास जा, वह तो जल की ओर बाहर आएगा; और जो लाठी सर्प बन गई थी, उसको हाथ में लिए हुए नील नदी * के तट पर उस से भेंट करने के लिये खड़ा रहना। १६ और उस से इस प्रकार कहना, कि इब्रियों के परमेश्वर यहोवा ने मुझे यह कहने के लिये तेरे पास भेजा है, कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे

* मूल में—खतनारहित होंठवाला हूं।

* मूल में—योर।

कि जिस से वे जंगल में मेरी उपासना करें; और अब तक तू ने मेरा कहना नहीं माना। १७ यहोवा यों कहता है, इस से तू जान लेगा कि मैं ही परमेश्वर हूं; देख, मैं अपने हाथ की लाठी को नील नदी * के जल पर मारूंगा, और जल लोहू बन जाएगा, १८ और जो मछलियां नील नदी * में हैं वे मर जाएंगी, और नील नदी * बसाने लगेगी, और नदी का पानी पीने के लिये मिस्रियों का जी न चाहेगा। १९ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, हारून से कह, कि अपनी लाठी लेकर मिस्र देश में जितना जल है, अर्थात् उसकी नदियां, नहरें, झीलें, और पोखरे, सब के ऊपर अपना हाथ बढ़ा कि उनका जल लोहू बन जाए; और सारे मिस्र देश में काठ और पत्थर दोनों भांति के जलपात्रों में लोहू ही लोहू हो जाएगा। २० तब मूसा और हारून ने यहोवा की आज्ञा ही के अनुसार किया, अर्थात् उस ने लाठी को उठाकर फ़िरौन और उसके कर्मचारियों के देखते नील नदी * के जल पर मारा, और नदी का सब जल लोहू बन गया। २१ और नील नदी * में जो मछलियां थीं वे मर गईं; और नदी * से दुर्गन्ध आने लगी, और मिस्री लोग नदी का पानी न पी सके; और सारे मिस्र देश में लोहू हो गया। २२ तब मिस्र के जादूगरों ने भी अपने तंत्र-मंत्रों से वैसा ही किया; तौभी फ़िरौन का मन हठीला हो गया, और यहोवा के कहने के अनुसार उस ने मूसा और हारून की न मानी। २३ फ़िरौन ने इस पर भी ध्यान नहीं दिया, और मुंह फेर के अपने घर में चला गया। २४ और सब मिस्री लोग पीने के जल के लिये नील नदी * के आस

* मूल में—योर।

पास खोदने लगे, क्योंकि वे नदी * का जल नहीं पी सकते थे। २५ और जब यहोवा ने नील नदी * को मारा था तब से सात दिन हो चुके थे॥

८ और तब यहोवा ने फिर मूसा से कहा, फ़िरौन के पास जाकर कह, यहोवा तुझ से इस प्रकार कहता है, कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे जिस से वे मेरी उपासना करें। २ और यदि उन्हें जाने न देगा तो सुन, मैं मेंढक भेजकर तेरे सारे देश को हानि पहुंचानेवाला हूं। ३ और नील नदी मेंढकों से भर जाएगी, और वे तेरे भवन में, और तेरे बिछौने पर, और तेरे कर्मचारियों के घरों में, और तेरी प्रजा पर, वरन तेरे तन्दूरों और कठौतियों में भी चढ़ जाएंगे। ४ और तुझ पर, और तेरी प्रजा, और तेरे कर्मचारियों, सभों पर मेंढक चढ़ जाएंगे। ५ फिर यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी, कि हारून से कह दे, कि नदियों, नहरों, और झीलों के ऊपर लाठी के साथ अपना हाथ बढ़ाकर मेंढकों को मिस्र देश पर चढ़ा ले आए। ६ तब हारून ने मिस्र के जलाशयों के ऊपर अपना हाथ बढ़ाया; और मेंढकों ने मिस्र देश पर चढ़कर उसे छा लिया। ७ और जादूगर भी अपने तंत्र-मंत्रों से उसी प्रकार मिस्र देश पर मेंढक चढ़ा ले आए। ८ तब फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलवाकर कहा, यहोवा से बिनती करो कि वह मेंढकों को मुझ से और मेरी प्रजा से दूर करे; और मैं इस्राएली लोगों को जाने दूंगा जिस से वे यहोवा के लिये बलिदान करें। ९ तब मूसा ने फ़िरौन से कहा, इतनी बात पर तो मुझ पर तेरा घमंड रहे, अब मैं तेरे, और तेरे कर्मचारियों, और

* मूल में—योर।

प्रजा के निमित्त कब बिनती करूं, कि यहोवा तेरे पास से और तेरे घरों में से मेंढकों को दूर करे, और वे केवल नील नदी * में पाए जाएं? १० उस ने कहा, कल। उस ने कहा, तेरे वचन के अनुसार होगा, जिस से तुझे यह ज्ञात हो जाए कि हमारे परमेश्वर यहोवा के तुल्य कोई दूसरा नहीं है। ११ और मेंढक तेरे पास से, और तेरे घरों में से, और तेरे कर्मचारियों और प्रजा के पास से दूर होकर केवल नदी में रहेंगे। १२ तब मूसा और हारून फ़िरौन के पास से निकल गए; और मूसा ने उन मेंढकों के विषय यहोवा की दोहाई दी जो उस ने फ़िरौन पर भेजे थे। १३ और यहोवा ने मूसा के कहने के अनुसार किया; और मेंढक घरों, आंगनों, और खेतों में मर गए। १४ और लोगों ने इकट्ठे करके उनके ढेर लगा दिए, और सारा देश दुर्गन्ध से भर गया। १५ परन्तु जब फ़िरौन ने देखा कि अब आराम मिला है तब यहोवा के कहने के अनुसार उस ने फिर अपने मन को कठोर किया, और उनकी न सुनी ॥

१६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, हारून को आज्ञा दे, कि तू अपनी लाठी बढ़ाकर भूमि की धूल पर मार, जिस से वह मिस्र देश भर में कुटकियां बन जाएं। १७ और उन्हों ने वैसा ही किया; अर्थात् हारून ने लाठी को ले हाथ बढ़ाकर भूमि की धूल पर मारा, तब मनुष्य और पशु दोनों पर कुटकियां हो गईं वरन सारे मिस्र देश में भूमि की धूल कुटकियां बन गईं। १८ तब जादूगरों ने चाहा कि अपने तंत्र मंत्रों के बल से हम भी कुटकियां ले आएं, परन्तु यह उन से न हो सका। और मनुष्यों और पशुओं दोनों पर कुटकियां बनी ही रहीं। १९ तब जादूगरों ने फ़िरौन से कहा, यह तो परमेश्वर के हाथ का काम है।* तौभी यहोवा के कहने के अनुसार फ़िरौन का मन कठोर होता गया, और उस ने मूसा और हारून की बात न मानी ॥

२० फिर यहोवा ने मूसा से कहा, बिहान को तड़के उठकर फ़िरौन के साम्हने खड़ा होना, वह तो जल की ओर आएगा, और उस से कहना, कि यहोवा तुझ से यह कहता है, कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे, कि वे मेरी उपासना करें। २१ यदि तू मेरी प्रजा को न जाने देगा तो सुन, मैं तुझ पर, और तेरे कर्मचारियों और तेरी प्रजा पर, और तेरे घरों में झुंड के झुंड डांस भेजूंगा; और मिस्रियों के घर और उनके रहने की भूमि भी डांसों से भर जाएगी। २२ उस दिन मैं गोशेन देश को जिस में मेरी प्रजा रहती है अलग करूंगा, और उस में डांसों के झुंड न होंगे; जिस से तू जान ले कि पृथ्वी के बीच में ही यहोवा हूं। २३ और मैं अपनी प्रजा और तेरी प्रजा में अन्तर ठहराऊंगा। यह चिन्ह कल होगा। २४ और यहोवा ने वैसा ही किया, और फ़िरौन के भवन, और उसके कर्मचारियों के घरों में, और सारे मिस्र देश में डांसों के झुंड के झुंड भर गए, और डांसों के मारे वह देश नाश हुआ। २५ तब फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलवाकर कहा, तुम जाकर अपने परमेश्वर के लिये इसी देश में बलिदान करो। २६ मूसा ने कहा, ऐसा करना उचित नहीं; क्योंकि हम अपने परमेश्वर यहोवा के लिये मिस्रियों की घृणित वस्तु बलिदान करेंगे; और यदि हम

* मूल में—योर।

* मूल में—वह परमेश्वर की अंगुली है।

मिस्त्रियों के देखते उनकी घृणित वस्तु बलिदान करें तो क्या वे हम को पत्थरवाह न करेंगे? २७ हम जंगल में तीन दिन के मार्ग पर जाकर अपने परमेश्वर यहोवा के लिये जैसा वह हम से कहेगा वैसा ही बलिदान करेंगे। २८ फ़िरौन ने कहा, मैं तुम को जंगल में जाने दूंगा कि तुम अपने परमेश्वर यहोवा के लिये जंगल में बलिदान करो; केवल बहुत दूर न जाना, और मेरे लिये बिनती करो। २९ तब मूसा ने कहा, सुन, मैं तेरे पास से बाहर जाकर यहोवा से बिनती करूंगा कि डांसों के झुंड तेरे, और तेरे कर्मचारियों, और प्रजा के पास से कल ही दूर हों; पर फ़िरौन आगे को कपट करके हमें यहोवा के लिये बलिदान करने को जाने देने के लिये नाहीं न करे। ३० सो मूसा ने फ़िरौन के पास से बाहर जाकर यहोवा से बिनती की। ३१ और यहोवा ने मूसा के कहे के अनुसार डांसों के झुण्डों को फ़िरौन, और उसके कर्मचारियों, और उसकी प्रजा से दूर किया; यहां तक कि एक भी न रहा। ३२ तब फ़िरौन ने इस बार भी अपने मन को सुन्न किया, और उन लोगों को जाने न दिया॥

९ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, फ़िरौन के पास जाकर कह, कि इब्रियों का परमेश्वर यहोवा तुझ से इस प्रकार कहता है, कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे, कि मेरी उपासना करें। २ और यदि तू उन्हें जाने न दे और अब भी पकड़े रहे, ३ तो सुन, तेरे जो घोड़े, गदहे, ऊँट, गाय-बैल, भेड़-बकरी आदि पशु मैदान में हैं, उन पर यहोवा का हाथ ऐसा पड़ेगा कि बहुत भारी मरी होगी। ४ और यहोवा इस्राएलियों के पशुओं में और मिस्त्रियों के पशुओं में ऐसा अन्तर करेगा, कि जो इस्राएलियों के हैं उन में से कोई भी न मरेगा। ५ फिर यहोवा ने यह कहकर एक समय ठहराया, कि मैं यह काम इस देश में कल करूंगा। ६ दूसरे दिन यहोवा ने ऐसा ही किया; और मिस्र के तो सब पशु मर गए, परन्तु इस्राएलियों का एक भी पशु न मरा। ७ और फ़िरौन ने लोगों को भेजा, पर इस्राएलियों के पशुओं में से एक भी नहीं मरा था। तौभी फ़िरौन का मन सुन्न हो गया, और उस ने उन लोगों को जाने न दिया॥

८ फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, कि तुम दोनों भट्ठी में से एक एक मुट्ठी राख ले लो, और मूसा उसे फ़िरौन के साम्हने आकाश की ओर उड़ा दे। ९ तब वह सूक्ष्म धूल होकर सारे मिस्र देश में मनुष्यों और पशुओं दोनों पर फफोले और फोड़े बन जाएगी। १० सो वे भट्ठी में की राख लेकर फ़िरौन के साम्हने खड़े हुए, और मूसा ने उसे आकाश की ओर उड़ा दिया, और वह मनुष्यों और पशुओं दोनों पर फफोले और फोड़े बन गई। ११ और उन फोड़ों के कारण जादूगर मूसा के साम्हने खड़े न रह सके, क्योंकि वे फोड़े जैसे सब मिस्त्रियों के वैसे ही जादूगरों के भी निकले थे। १२ तब यहोवा ने फ़िरौन के मन को कठोर कर दिया, और जैसा यहोवा ने मूसा से कहा था, उस ने उसकी न सुनी॥

१३ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, बिहान को तड़के उठकर फ़िरौन के साम्हने खड़ा हो, और उस से कह इब्रियों का परमेश्वर यहोवा इस प्रकार कहता है, कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे, कि वे मेरी उपासना करें। १४ नहीं तो अब की बार

में तुझ पर, * और तेरे कर्मचारियों और तेरी प्रजा पर सब प्रकार की विपत्तियां डालूंगा, जिससे तू जान ले कि सारी पृथ्वी पर मेरे तुल्य कोई दूसरा नहीं है। १५ मैं ने तो अभी हाथ बढ़ाकर तुझे और तेरी प्रजा को मरी से मारा होता, और तू पृथ्वी पर से सत्यानाश हो गया होता; १६ परन्तु सचमुच मैं ने इसी कारण तुझे बनाए रखा है, कि तुझे अपना सामर्थ्य दिखाऊं, और अपना नाम सारी पृथ्वी पर प्रसिद्ध करूं। १७ क्या तू अब भी मेरी प्रजा के साम्हने अपने आप को बड़ा समझता है, और उन्हें जाने नहीं देता? १८ सुन, कल मैं इसी समय ऐसे भारी भारी ओले बरसाऊंगा, कि जिन के तुल्य मिस्र की नेव पड़ने के दिन से लेकर अब तक कभी नहीं पड़े। १९ सो अब लोगों को भेजकर अपने पशुओं को और मैदान में जो कुछ तेरा है सब को फुर्ती से आड़ में छिपा ले; नहीं तो जितने मनुष्य वा पशु मैदान में रहें और घर में इकट्ठे न किए जाएं उन पर ओले गिरेंगे, और वे मर जाएंगे। २० इसलिये फ़िरौन के कर्मचारियों में से जो लोग यहोवा के वचन का भय मानते थे उन्हों ने तो अपने अपने सेवकों और पशुओं को घर में हाँक दिया। २१ पर जिन्हों ने यहोवा के वचन पर मन न लगाया उन्हों ने अपने सेवकों और पशुओं को मैदान में रहने दिया॥

२२ तब यहोवा ने मूसा से कहा, अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ा, कि सारे मिस्र देश के मनुष्यों पशुओं और खेतों की सारी उपज पर ओले गिरें। २३ तब मूसा ने अपनी लाठी को आकाश की ओर उठाया; और यहोवा मेघ गरजाने और ओले बरसाने लगा, और आग पृथ्वी तक आती रही। इस प्रकार यहोवा ने मिस्र देश पर ओले बरसाए। २४ जो ओले गिरते थे उनके साथ आग भी मिली हुई थी, और वे ओले इतने भारी थे कि जब से मिस्र देश बसा था तब से मिस्र भर में ऐसे ओले कभी न गिरे थे। २५ इसलिये मिस्र भर के खेतों में क्या मनुष्य, क्या पशु, जितने थे सब ओलों से मारे गए, और ओलों से खेत की सारी उपज नष्ट हो गई, और मैदान के सब वृक्ष भी टूट गए। २६ केवल गोशेन देश में जहां इस्राएली बसते थे ओले नहीं गिरे। २७ तब फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलवा भेजा और उन से कहा, कि इस बार मैं ने पाप किया है; यहोवा धर्मी है, और मैं और मेरी प्रजा अधर्मी हैं। २८ मेघों का गरजना और ओलों का बरसना तो बहुत हो गया; अब भविष्य में यहोवा से बिनती करो; तब मैं तुम लोगों को जाने दूंगा, और तुम न रोके जाओगे। २९ मूसा ने उस से कहा, नगर से निकलते ही मैं यहोवा की ओर हाथ फैलाऊंगा, तब बादल का गरजना बन्द हो जाएगा, और ओले फिर न गिरेंगे, इस से तू जान लेगा कि पृथ्वी यहोवा ही की है। ३० तौभी मैं जानता हूं, कि न तो तू और न तेरे कर्मचारी यहोवा परमेश्वर का भय मानेंगे। ३१ सन और जव तो ओलों से मारे गए, क्योंकि जव की बालें निकल चुकी थीं और सन में फूल लगे हुए थे। ३२ पर गेहूं और कठिया गेहूं जो बढ़े न थे, इस कारण वे मारे न गए। ३३ जब मूसा ने फ़िरौन के पास से नगर के बाहर निकलकर यहोवा की ओर हाथ फैलाए, तब बादल का गरजना और ओलों का बरसना बन्द हुआ, और फिर बहुत मेंह भूमि पर न पड़ा।

* मूल में—तेरे हृदय पर।

३४ यह देखकर कि मेंह और ओलों और बादल का गरजना बन्द हो गया फ़िरौन ने अपने कर्मचारियों समेत फिर अपने मन को कठोर करके पाप किया। ३५ और फ़िरौन का मन हठीला होता गया, और उस ने इस्राएलियों को जाने न दिया; जैसा कि यहोवा ने मूसा के द्वारा कहलवाया था॥

१० फिर यहोवा ने मूसा से कहा, फ़िरौन के पास जा; क्योंकि मैं ही ने उसके और उसके कर्मचारियों के मन को इसलिये कठोर कर दिया है, कि अपने चिन्ह उनके बीच में दिखलाऊं। २ और तुम लोग अपने बेटों और पोतों से इसका वर्णन करो कि यहोवा ने मिस्रियों को कैसे ठट्ठों में उड़ाया और अपने क्या क्या चिन्ह उनके बीच प्रगट किए हैं; जिस से तुम यह जान लोगे कि मैं यहोवा हूं। ३ तब मूसा और हारून ने फ़िरौन के पास जाकर कहा, कि इब्रियों का परमेश्वर यहोवा तुझ से इस प्रकार कहता है, कि तू कब तक मेरे साम्हने दीन होने से संकोच करता रहेगा? मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे, कि वे मेरी उपासना करें। ४ यदि तू मेरी प्रजा को जाने न दे तो सुन, कल मैं तेरे देश में टिड्डियां ले आऊंगा। ५ और वे धरती को ऐसा छा लेंगी, कि वह देख न पड़ेगी; और तुम्हारा जो कुछ ओलों से बच रहा है उसको वे चट कर जाएंगी, और तुम्हारे जितने वृक्ष मैदान में लगे हैं उनको भी वे चट कर जाएंगी, ६ और वे तेरे और तेरे सारे कर्मचारियों, निदान सारे मिस्रियों के घरों में भर जाएंगी; इतनी टिड्डियां तेरे बापदादों ने वा उनके पुरखाओं ने जब से पृथ्वी पर जन्मे तब से आज तक कभी न देखीं। और वह मुंह फेरकर फ़िरौन के पास से बाहर गया। ७ तब फ़िरौन के कर्मचारी उस से कहने लगे, वह जन कब तक हमारे लिये फन्दा बना रहेगा? उन मनुष्यों को जाने दे, कि वे अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करें; क्या तू अब तक नहीं जानता, कि सारा मिस्र नाश हो गया है? ८ तब मूसा और हारून फ़िरौन के पास फिर बुलवाए गए, और उस ने उन से कहा, चले जाओ, अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करो; परन्तु वे जो जानेवाले हैं, कौन कौन हैं? ९ मूसा ने कहा, हम तो बेटों बेटियों, भेड़-बकरियों, गाय-बैलों समेत वरन बच्चों से बूढ़ों तक सब के सब जाएंगे, क्योंकि हमें यहोवा के लिये पर्ब्ब करना है। १० उस ने इस प्रकार उन से कहा, यहोवा तुम्हारे संग रहे जब कि मैं तुम्हें बच्चों समेत जाने देता हूं; देखो, तुम्हारे आगे को बुराई है। ११ नहीं, ऐसा नहीं होने पाएगा; तुम पुरुष ही जाकर यहोवा की उपासना करो, तुम यही तो चाहते थे। और वे फ़िरौन के सम्मुख से निकाल दिए गए॥

१२ तब यहोवा ने मूसा से कहा, मिस्र देश के ऊपर अपना हाथ बढ़ा, कि टिड्डियां मिस्र देश पर चढ़के भूमि का जितना अन्न आदि ओलों से बचा है सब को चट कर जाएं। १३ और मूसा ने अपनी लाठी को मिस्र देश के ऊपर बढ़ाया, तब यहोवा ने दिन भर और रात भर देश पर पुरवाई बहाई; और जब भोर हुआ तब उस पुरवाई में टिड्डियां आईं। १४ और टिड्डियों ने चढ़के मिस्र देश के सारे स्थानों में बसेरा किया, उनका दल बहुत भारी था, वरन न तो उनसे पहिले ऐसी टिड्डियां आई थीं, और न उनके पीछे ऐसी फिर आएंगी।

१५ वे तो सारी धरती पर छा गईं, यहां तक कि देश अन्धेरा हो गया, और उसका सारा अन्न आदि और वृक्षों के सब फल, निदान जो कुछ ओलों से बचा था, सब को उन्हों ने चट कर लिया; यहां तक कि मिस्र देश भर में न तो किसी वृक्ष पर कुछ हरियाली रह गई और न खेत में अनाज रह गया। १६ तब फ़िरौन ने फुर्ती से मूसा और हारून को बुलवाके कहा, मैं ने तो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का और तुम्हारा भी अपराध किया है। १७ इसलिये अब की बार मेरा अपराध क्षमा करो, और अपने परमेश्वर यहोवा से बिनती करो, कि वह केवल मेरे ऊपर से इस मृत्यु को दूर करे। १८ तब मूसा ने फ़िरौन के पास से निकल कर यहोवा से बिनती की। १९ तब यहोवा ने बहुत प्रचण्ड पछुवा बहाकर टिड्डियों को उड़ाकर लाल समुन्द्र में डाल दिया, और मिस्र के किसी स्थान में एक भी टिड्डी न रह गई। २० तौभी यहोवा ने फ़िरौन के मन को कठोर कर दिया, जिस से उस ने इस्राएलियों को जाने न दिया॥

२१ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ा कि मिस्र देश के ऊपर अन्धकार छा जाए, ऐसा अन्धकार कि टटोला जा सके। २२ तब मूसा ने अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ाया, और सारे मिस्र देश में तीन दिन तक घोर अन्धकार छाया रहा। २३ तीन दिन तक न तो किसी ने किसी को देखा, और न कोई अपने स्थान से उठा; परन्तु सारे इस्राएलियों के घरों में उजियाला रहा। २४ तब फ़िरौन ने मूसा को बुलवाकर कहा, तुम लोग जाओ, यहोवा की उपासना करो; अपने बालकों को भी संग ले जाओ; केवल अपनी भेड़-बकरी और गाय-बैल को छोड़ जाओ। २५ मूसा ने कहा, तुझ को हमारे हाथ मेलबलि और होमबलि के पशु भी देने पड़ेंगे, जिन्हें हम अपने परमेश्वर यहोवा के लिये चढ़ाएं। २६ इसलिये हमारे पशु भी हमारे संग जाएंगे, उनका एक खुर तक न रह जाएगा, क्योंकि उन्हीं में से हम को अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना का सामान लेना होगा, और हम जब तक वहां न पहुंचें तब तक नहीं जानते कि क्या क्या लेकर यहोवा की उपासना करनी होगी। २७ पर यहोवा ने फ़िरौन का मन हठीला कर दिया, जिस से उस ने उन्हें जाने न दिया। २८ तब फ़िरौन ने उस से कहा, मेरे साम्हने से चला जा; और सचेत रह; मुझे अपना मुख फिर न दिखाना; क्योंकि जिस दिन तू मुझे मुंह दिखलाए उसी दिन तू मारा जाएगा। २९ मूसा ने कहा, कि तू ने ठीक कहा है; मैं तेरे मुंह को फिर कभी न देखूंगा॥

११ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, एक और विपत्ति मैं फ़िरौन और मिस्र देश पर डालता हूं, उसके पश्चात् वह तुम लोगों को वहां से जाने देगा; और जब वह जाने देगा तब तुम सभों को निश्चय निकाल देगा। २ मेरी प्रजा को मेरी यह आज्ञा सुना, कि एक एक पुरुष अपने अपने पड़ोसी, और एक एक स्त्री अपनी अपनी पड़ोसिन से सोने चांदी के गहने मांग ले। ३ तब यहोवा ने मिस्रियों को अपनी प्रजा पर दयालु किया। और इससे अधिक वह पुरुष मूसा मिस्र देश में फ़िरौन के कर्मचारियों और साधारण लोगों की दृष्टि में अति महान् था॥

४ फिर मूसा ने कहा, यहोवा इस प्रकार कहता है, कि आधी रात के लगभग

में मिस्र देश के बीच में होकर चलूंगा। ५ तब मिस्र में सिंहासन पर विराजने वाले फ़िरौन से लेकर चक्की पीसनेवाली दासी तक के पहिलौठे; वरन पशुओं तक के सब पहिलौठे मर जाएंगे। ६ और सारे मिस्र देश में बड़ा हाहाकार मचेगा, यहां तक कि उसके समान न तो कभी हुआ और न होगा। ७ पर इस्राएलियों के विरुद्ध, क्या मनुष्य क्या पशु, किसी पर कोई कुत्ता भी न भोंकेगा; जिस से तुम जान लो कि मिस्रियों और इस्राएलियों में मैं यहोवा अन्तर करता हूं। ८ तब तेरे ये सब कर्मचारी मेरे पास आ मुझे दण्डवत् करके यह कहेंगे, कि अपने सब अनुचरों समेत निकल जा। और उसके पश्चात् मैं निकल जाऊंगा। यह कह कर मूसा बड़े क्रोध में फ़िरौन के पास से निकल गया॥

९ यहोवा ने मूसा से कह दिया था, कि फ़िरौन तुम्हारी न सुनेगा; क्योंकि मेरी इच्छा है कि मिस्र देश में बहुत से चमत्कार करूं। १० मूसा और हारून ने फ़िरौन के साम्हने ये सब चमत्कार किए; पर यहोवा ने फ़िरौन का मन और कठोर कर दिया, सो उसने इस्राएलियों को अपने देश से जाने न दिया॥

(फसह नाम पर्ब्ब का विधान और इस्राएलियों का कूच करना)

१२ फिर यहोवा ने मिस्र देश में मूसा और हारून से कहा, २ कि यह महीना तुम लोगों के लिये आरम्भ का ठहरे; अर्थात् वर्ष का पहिला महीना यही ठहरे। ३ इस्राएल की सारी मण्डली से इस प्रकार कहो, कि इसी महीने के दसवें दिन को तुम अपने अपने पितरों के घरानों के अनुसार, घराने पीछे एक एक मेम्ना ले रखो। ४ और यदि किसी के घराने में एक मेम्ने के खाने के लिये मनुष्य कम हों, तो वह अपने सब से निकट रहनेवाले पड़ोसी के साथ प्राणियों की गिनती के अनुसार एक मेम्ना ले रखे; और तुम हर एक के खाने के अनुसार मेम्ने का हिसाब करना। ५ तुम्हारा मेम्ना निर्दोष और पहिले वर्ष का नर हो, और उसे चाहे भेड़ों में से लेना चाहे बकरियों में से। ६ और इस महीने के चौदहवें दिन तक उसे रख छोड़ना, और उस दिन गोधूलि के समय इस्राएल की सारी मण्डली के लोग उसे बलि करें। ७ तब वे उसके लोहू में से कुछ लेकर जिन घरों में मेम्ने को खाएंगे उनके द्वार के दोनों अलंगों और चौखट के सिरे पर लगाएं। ८ और वे उसके मांस को उसी रात आग में भूंजकर अख़मीरी रोटी और कड़वे सागपात के साथ खाएं। ९ उसको सिर, पैर, और अतड़ियों समेत आग में भूंजकर खाना, कच्चा वा जल में कुछ भी पकाकर न खाना। १० और उस में से कुछ बिहान तक न रहने देना, और यदि कुछ बिहान तक रह भी जाए, तो उसे आग में जला देना। ११ और उसके खाने की यह विधि है; कि कमर बान्धे, पांव में जूती पहिने, और हाथ में लाठी लिए हुए उसे फुर्ती से खाना; वह तो यहोवा का पर्ब्ब* होगा। १२ क्योंकि उस रात को मैं मिस्र देश के बीच में होकर जाऊंगा, और मिस्र देश के क्या मनुष्य क्या पशु, सब के पहिलौठों को मारूंगा; और मिस्र के सारे देवताओं को भी मैं दण्ड दूंगा; मैं तो यहोवा हूं। १३ और जिन घरों में तुम रहोगे उन पर वह

---

* अर्थात् लांघनपर्ब्ब।

लोहू तुम्हारे निमित्त चिन्ह ठहरेगा; अर्थात् मैं उस लोहू को देखकर तुम को छोड़ * जाऊंगा, और जब मैं मिस्र देश के लोगों को मारूंगा, तब वह विपत्ति तुम पर न पड़ेगी और तुम नाश न होगे। १४ और वह दिन तुम को स्मरण दिलानेवाला ठहरेगा, और तुम उसको यहोवा के लिये पर्ब्ब करके मानना; वह दिन तुम्हारी पीढ़ियों में सदा की विधि जानकर पर्ब्ब माना जाए। १५ सात दिन तक अखमीरी रोटी खाया करना, उन में से पहिले ही दिन अपने अपने घर में से खमीर उठा डालना, वरन जो कोई पहिले दिन से लेकर सातवें दिन तक कोई खमीरी वस्तु खाए, वह प्राणी इस्राएलियों में से नाश किया जाए। १६ और पहिले दिन एक पवित्र सभा, और सातवें दिन भी एक पवित्र सभा करना; उन दोनों दिनों में कोई काम न किया जाए; केवल जिस प्राणी का जो खाना हो उसके काम करने की आज्ञा है। १७ इसलिये तुम बिना खमीर की रोटी का पर्ब्ब मानना, क्योंकि उसी दिन † मानो मैं ने तुम को दल दल करके मिस्र देश से निकाला है; इस कारण वह दिन तुम्हारी पीढ़ियों में सदा की विधि जानकर माना जाए। १८ पहीले महीने के चौदहवें दिन की सांझ से लेकर इक्कीसवें दिन की सांझ तक तुम अखमीरी रोटी खाया करना। १९ सात दिन तक तुम्हारे घरों में कुछ भी खमीर न रहे, वरन जो कोई किसी खमीरी वस्तु को खाए, चाहे वह देशी हो चाहे परदेशी, वह प्राणी इस्राएलियों की मण्डली से नाश किया जाए। २० कोई खमीरी वस्तु न खाना; अपने सब घरों में बिना खमीर की रोटी खाया करना॥

२१ तब मूसा ने इस्राएल के सब पुरनियों को बुलाकर कहा, तुम अपने अपने कुल के अनुसार एक एक मेम्ना अलग कर रखो, और फसह का पशु बलि करना। २२ और उसका लोहू जो तसले में होगा उस में जूफा का एक गुच्छा डुबाकर उसी तसले में के लोहू से द्वार * के चौखट के सिरे और दोनों अलंगों पर कुछ लगाना; और भोर तक तुम में से कोई घर से बाहर न निकले। २३ क्योंकि यहोवा देश के बीच होकर मिस्रियों को मारता जाएगा; इसलिये जहां जहां वह चौखट के सिरे, और दोनों अलंगों पर उस लोहू को देखेगा, वहां वहां वह उस द्वार को छोड़ जाएगा, और नाश करनेवाले को तुम्हारे घरों में मारने के लिये न जाने देगा। २४ फिर तुम इस विधि को अपने और अपने वंश के लिये सदा की विधि जानकर माना करो। २५ जब तुम उस देश में जिसे यहोवा अपने कहने के अनुसार तुम को देगा प्रवेश करो, तब वह काम किया करना। २६ और जब तुम्हारे लड़केबाले तुम से पूछें, कि इस काम से तुम्हारा क्या मतलब है? २७ तब तुम उनको यह उत्तर देना, कि यहोवा ने जो मिस्रियों के मारने के समय मिस्र में रहनेवाले हम इस्राएलियों के घरों को छोड़कर † हमारे घरों को बचाया, इसी कारण उसके फसह * का यह बलिदान किया जाता है। तब लोगों ने सिर झुकाकर दण्डवत् की। २८ और इस्राएलियों ने जाकर, जो आज्ञा यहोवा ने मूसा और हारून को दी थी, उसी के अनुसार किया॥

* मूल में—लांघके।
† मूल में—आज ही के दिन।

* अर्थात् लांघनपर्ब्ब।
† मूल में—लांघ।

२९ और ऐसा हुआ कि आधी रात को यहोवा ने मिस्र देश में सिंहासन पर विराजनेवाले फ़िरौन से लेकर गड़हे में पड़े हुए बन्धुए तक सब के पहिलौठों को, वरन पशुओं तक के सब पहिलौठों को मार डाला। ३० और फ़िरौन रात ही को उठ बैठा, और उसके सब कर्मचारी, वरन सारे मिस्री उठे; और मिस्र में बड़ा हाहाकार मचा, क्योंकि एक भी ऐसा घर न था जिसमें कोई मरा न हो। ३१ तब फ़िरौन ने रात ही रात में मूसा और हारून को बुलवाकर कहा, तुम इस्राएलियों समेत मेरी प्रजा के बीच से निकल जाओ; और अपने कहने के अनुसार जाकर यहोवा की उपासना करो। ३२ अपने कहने के अनुसार अपनी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को साथ ले जाओ; और मुझे आशीर्वाद दे जाओ। ३३ और मिस्री जो कहते थे, कि हम तो सब मर मिटे हैं, उन्हों ने इस्राएली लोगों पर दबाव डालकर कहा, कि देश से झटपट निकल जाओ। ३४ तब उन्हों ने अपने गून्धे गुन्धाए आटे को बिना खमीर दिए ही कठौतियों समेत कपड़ों में बान्धके अपने अपने कन्धे पर डाल लिया। ३५ और इस्राएलियों ने मूसा के कहने के अनुसार मिस्रियों से सोने चांदी के गहने और वस्त्र मांग लिये। ३६ और यहोवा ने मिस्रियों को अपनी प्रजा के लोगों पर ऐसा दयालु किया, कि उन्हों ने जो जो मांगा वह सब उनको दिया। इस प्रकार इस्राएलियों ने मिस्रियों को लूट लिया॥

३७ तब इस्राएली रामसेस से कूच करके सुक्कोत को चले, और बालबच्चों को छोड़ वे कोई छः लाख पुरुष प्यादे थे। ३८ और उनके साथ मिली जुली हुई एक भीड़ गई, और भेड़-बकरी, गाय-बैल, बहुत से पशु भी साथ गए। ३९ और जो गून्धा आटा वे मिस्र से साथ ले गए उसकी उन्हों ने बिना खमीर दिए रोटियां बनाईं; क्योंकि वे मिस्र से ऐसे बरबस निकाले गए, कि उन्हें अवसर भी न मिला की मार्ग में खाने के लिये कुछ पका सकें, इसी कारण वह गून्धा हुआ आटा बिना खमीर का था। ४० मिस्र में बसे हुए इस्राएलियों को चार सौ तीस वर्ष बीत गए थे। ४१ और उन चार सौ तीस वर्षों के बीतने पर, ठीक उसी दिन, यहोवा की सारी सेना मिस्र देश से निकल गई। ४२ यहोवा इस्राएलियों को मिस्र देश से निकाल लाया, इस कारण वह रात उसके निमित्त मानने के अति योग्य है; यह यहोवा की वही रात है जिसका पीढ़ी पीढ़ी में मानना इस्राएलियों के लिये अति अवश्य है॥

४३ फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, पर्ब्ब * की विधि यह है; कि कोई परदेशी उस में से न खाए; ४४ पर जो किसी का मोल लिया हुआ दास हो, और तुम लोगों ने उसका खतना किया हो, वह तो उस में से खा सकेगा। ४५ पर परदेशी और मज़दूर उस में से न खाएं। ४६ उसका खाना एक ही घर में हो; अर्थात् तुम उसके मांस में से कुछ घर से बाहर न ले जाना; और बलिपशु की कोई हड्डी न तोड़ना। ४७ पर्ब्ब * का मानना इस्राएल की सारी मण्डली का कर्त्तव्य कर्म है। ४८ और यदि कोई परदेशी तुम लोगों के संग रहकर यहोवा के लिये पर्ब्ब * को मानना चाहे, तो वह अपने यहां के सब पुरुषों का खतना कराए, तब वह समीप आकर उसको माने; और वह देशी

* अर्थात् लांघनपर्ब्ब।

मनुष्य के तुल्य ठहरेगा। पर कोई खतना-रहित पुरुष उस में से न खाने पाए। ४६ उसकी व्यवस्था देशी और तुम्हारे बीच में रहनेवाले परदेशी दोनों के लिये एक ही हो। ५० यह आज्ञा जो यहोवा ने मूसा और हारून को दी उसके अनुसार सारे इस्राएलियों ने किया। ५१ और ठीक उसी दिन यहोवा इस्राएलियों को मिस्र देश से दल दल करके निकाल ले गया॥

१३ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ कि क्या मनुष्य के क्या पशु के, इस्राएलियों में जितने अपनी अपनी मां के जेठे हों, उन्हें मेरे लिये पवित्र मानना; वह तो मेरा ही है॥

३ फिर मूसा ने लोगों से कहा, इस दिन को स्मरण रखो, जिस में तुम लोग दासत्व के घर, अर्थात् मिस्र से निकल आए हो; यहोवा तो तुम को वहां से अपने हाथ के बल से निकाल लाया; इस में खमीरी रोटी न खाई जाए। ४ आबीब के महीने में आज के दिन तुम निकले हो। ५ इसलिये जब यहोवा तुम को कनानी, हित्ती, एमोरी, हिव्वी, और यबूसी लोगों के देश में पहुंचाएगा, जिसे देने की उस ने तुम्हारे पुरखाओं से शपथ खाई थी, और जिस में दूध और मधु की धारा बहती हैं, तब तुम इसी महीने में पर्ब्ब करना। ६ सात दिन तक अखमीरी रोटी खाया करना, और सातवें दिन * यहोवा के लिये पर्ब्ब मानना। ७ इन सातों दिनों में अखमीरी रोटी खाई जाए; वरन तुम्हारे देश भर में न खमीरी रोटी, न खमीर तुम्हारे पास देखने में आए। ८ और उस दिन तुम अपने अपने पुत्रों को यह कहके समझा देना, कि यह तो हम उसी काम के कारण करते हैं, जो यहोवा ने हमारे मिस्र से निकल आने के समय हमारे लिये किया था। ९ फिर यह तुम्हारे लिये तुम्हारे हाथ में एक चिन्ह होगा, और तुम्हारी आंखों के साम्हने स्मरण करानेवाली वस्तु ठहरे; जिस से यहोवा की व्यवस्था तुम्हारे मुंह पर रहे: क्योंकि यहोवा ने तुम्हें अपने बलवन्त हाथों से मिस्र से निकाला है। १० इस कारण तुम इस विधि को प्रति वर्ष नियत समय पर माना करना॥

११ फिर जब यहोवा उस शपथ के अनुसार, जो उस ने तुम्हारे पुरखाओं से और तुम से भी खाई है, तुम्हें कनानियों के देश में पहुंचाकर उसको तुम्हें दे देगा, १२ तब तुम में से जितने अपनी अपनी मां के जेठे हों उनको, और तुम्हारे पशुओं में जो ऐसे हों उनको भी यहोवा के लिये अर्पण करना; सब नर बच्चे तो यहोवा के हैं। १३ और गदही के हर एक पहिलौठे की सन्ती मेम्ना देकर उसको छुड़ा लेना, और यदि तुम उसे छुड़ाना न चाहो तो उसका गला तोड़ देना। पर अपने सब पहिलौठे पुत्रों को बदला देकर छुड़ा लेना। १४ और आगे के दिनों में जब तुम्हारे पुत्र तुम से पूछें, कि यह क्या है? तो उन से कहना, कि यहोवा हम लोगों को दासत्व के घर से, अर्थात् मिस्र देश से अपने हाथों के बल से निकाल लाया है। १५ उस समय जब फ़िरौन ने कठोर होकर हम को जाने देना न चाहा, तब यहोवा ने मिस्र देश में मनुष्य से लेकर पशु तक सब के पहिलौठों को मार डाला। इसी कारण पशुओं में से तो जितने अपनी अपनी मां के पहिलौठे नर हैं, उन्हें हम यहोवा के लिये बलि करते हैं; पर अपने सब जेठे पुत्रों को हम बदला देकर छुड़ा लेते हैं। १६ और यह तुम्हारे

* मूल में—उस दिन।

हाथों पर एक चिन्ह सा और तुम्हारी भौंहों के बीच टीका सा ठहरे; क्योंकि यहोवा हम लोगों को मिस्र से अपने हाथों के बल से निकाल लाया है॥

१७ जब फ़िरौन ने लोगों को जाने की आज्ञा दे दी, तब यद्यपि पलिश्तियों के देश में होकर जो मार्ग जाता है वह छोटा था; तौभी परमेश्वर यह सोच कर उनको उस मार्ग से नहीं ले गया, कि कहीं ऐसा न हो कि जब ये लोग लड़ाई देखें तब पछताकर मिस्र को लौट आएं। १८ इसलिये परमेश्वर उनको चक्कर खिलाकर लाल समुद्र के जंगल के मार्ग से ले चला। और इस्राएली पांति बान्धे हुए मिस्र से निकल गए। १९ और मूसा यूसुफ की हड्डियों को साथ लेता गया; क्योंकि यूसुफ ने इस्राएलियों से यह कहके, कि परमेश्वर निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा, उनको इस विषय की दृढ़ शपथ खिलाई थी, कि वे उसकी हड्डियों को अपने साथ यहां से ले जाएंगे। २० फिर उन्हों ने सुक्कोत से कूच करके जंगल की छोर पर एताम में डेरा किया। २१ और यहोवा उन्हें दिन को मार्ग दिखाने के लिये मेघ के खम्भे में, और रात को उजियाला देने के लिये आग के खम्भे में होकर उनके आगे आगे चला करता था, जिससे वे रात और दिन दोनों में चल सकें। २२ उस ने न तो बादल के खम्भे को दिन में और न आग के खम्भे को रात में लोगों के आगे से हटाया॥

(इस्राएल के लाल समुद्र के पार जाने का वर्णन)

१४ यहोवा ने मूसा से कहा, २ इस्राएलियों को आज्ञा दे, कि वे लौटकर मिगदोल और समुद्र के बीच, पीहाहीरोत के सम्मुख, बालसपोन के साम्हने अपने डेरे खड़े करें, उसी के साम्हने समुद्र के तट पर डेरे खड़े करें। ३ तब फ़िरौन इस्राएलियों के विषय में सोचेगा, कि वे देश के उलझनों में फंसे हैं और जंगल में घिर गए हैं। ४ तब मैं फ़िरौन के मन को कठोर कर दूंगा, और वह उनका पीछा करेगा, तब फ़िरौन और उसकी सारी सेना के द्वारा मेरी महिमा होगी; और मिस्री जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं। और उन्हों ने वैसा ही किया। ५ जब मिस्र के राजा को यह समाचार मिला कि वे लोग भाग गए, तब फ़िरौन और उसके कर्मचारियों का मन उनके विरुद्ध पलट गया, और वे कहने लगे, हम ने यह क्या किया, कि इस्राएलियों को अपनी सेवकाई से छुटकारा देकर जाने दिया? ६ तब उस ने अपना रथ जुतवाया और अपनी सेना को संग लिया। ७ उस ने छः सौ अच्छे से अच्छे रथ वरन मिस्र के सब रथ लिए और उन सभों पर सरदार बैठाए। ८ और यहोवा ने मिस्र के राजा फ़िरौन के मन को कठोर कर दिया। सो उस ने इस्राएलियों का पीछा किया; परन्तु इस्राएली तो बेखटके * निकले चले जाते थे। ९ पर फ़िरौन के सब घोड़ों, और रथों, और सवारों समेत मिस्री सेना ने उनका पीछा करके उन्हें, जो पीहाहीरोत के पास, बालसपोन के साम्हने, समुद्र के तीर पर डेरे डाले पड़े थे, जा लिया॥

१० जब फ़िरौन निकट आया, तब इस्राएलियों ने आंखें उठाकर क्या देखा, कि मिस्री हमारा पीछा किए चले आ रहे हैं; और इस्राएली अत्यन्त डर गए, और चिल्लाकर यहोवा की दोहाई दी। ११ और

* मूल में—ऊंचे हाथ के साथ।

वे मूसा से कहने लगे, क्या मिस्र में क़बरें न थीं जो तू हम को वहां से मरने के लिये जंगल में ले आया है? तू ने हम से यह क्या किया, कि हम को मिस्र से निकाल लाया? १२ क्या हम तुझ से मिस्र में यही बात न कहते रहे, कि हमें रहने दे कि हम मिस्रियों की सेवा करें? हमारे लिये जंगल में मरने से मिस्रियों की सेवा करनी अच्छी थी। १३ मूसा ने लोगों से कहा, डरो मत, खड़े खड़े वह उद्धार का काम देखो, जो यहोवा आज तुम्हारे लिये करेगा; क्योंकि जिन मिस्रियों को तुम आज देखते हो, उनको फिर कभी न देखोगे। १४ यहोवा आप ही तुम्हारे लिये लड़ेगा, इसलिये तुम चुपचाप रहो॥

१५ तब यहोवा ने मूसा से कहा, तू क्यों मेरी दोहाई दे रहा है? इस्राएलियों को आज्ञा दे कि यहां से कूच करें। १६ और तू अपनी लाठी उठाकर अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ा, और वह दो भाग हो जाएगा; तब इस्राएली समुद्र के बीच होकर स्थल ही स्थल पर चले जाएंगे। १७ और सुन, मैं आप मिस्रियों के मन को कठोर करता हूं, और वे उनका पीछा करके समुद्र में घुस पड़ेंगे, तब फ़िरौन और उसकी सारी सेना, और रथों, और सवारों के द्वारा मेरी महिमा होगी। १८ और जब फ़िरौन, और उसके रथों, और सवारों के द्वारा मेरी महिमा होगी, तब मिस्री जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं। १९ तब परमेश्वर का दूत जो इस्राएली सेना के आगे आगे चला करता था जाकर उनके पीछे हो गया; और बादल का खम्भा उनके आगे से हटकर उनके पीछे जा ठहरा। २० इस प्रकार वह मिस्रियों की सेना और इस्राएलियों की सेना के बीच में आ गया; और बादल और अन्धकार तो हुआ, तौभी उससे रात को उन्हें प्रकाश मिलता रहा; और वे रात भर एक दूसरे के पास न आए। २१ और मूसा ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया; और यहोवा ने रात भर प्रचण्ड पुरवाई चलाई, और समुद्र को दो भाग करके जल ऐसा हटा दिया, जिससे कि उसके बीच सूखी भूमि हो गई। २२ तब इस्राएली समुद्र के बीच स्थल ही स्थल पर होकर चले, और जल उनकी दहिनी और बाईं ओर दीवार का काम देता था। २३ तब मिस्री, अर्थात् फ़िरौन के सब घोड़े, रथ, और सवार उनका पीछा किए हुए समुद्र के बीच में चले गए। २४ और रात के पिछले पहर में यहोवा ने बादल और आग के खम्भे में से मिस्रियों की सेना पर दृष्टि करके उन्हें घबरा दिया। २५ और उस ने उनके रथों के पहियों को निकाल डाला, जिससे उनका चलाना कठिन हो गया; तब मिस्री आपस में कहने लगे, आओ, हम इस्राएलियों के साम्हने से भागें; क्योंकि यहोवा उनकी ओर से मिस्रियों के विरुद्ध युद्ध कर रहा है॥

२६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ा, कि जल मिस्रियों, और उनके रथों, और सवारों पर फिर बहने लगे। २७ तब मूसा ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया, और भोर होते होते क्या हुआ, कि समुद्र फिर ज्यों का त्यों अपने बल पर आ गया; और मिस्री उलटे भागने लगे, परन्तु यहोवा ने उनको समुद्र के बीच ही में झटक दिया। २८ और जल के पलटने से, जितने रथ और सवार इस्राएलियों के पीछे समुद्र में आए थे, सो सब वरन फ़िरौन की सारी सेना उस में डूब गई, और उस में से एक भी न बचा। २९ परन्तु इस्राएली समुद्र के बीच स्थल ही स्थल पर

होकर चले गए, और जल उनकी दहिनी और बाईं दोनों ओर दीवार का काम देता था। ३० और यहोवा ने उस दिन इस्राएलियों को मिस्रियों के वश से इस प्रकार छुड़ाया; और इस्राएलियों ने मिस्रियों को समुद्र के तट पर मरे पड़े हुए देखा। ३१ और यहोवा ने मिस्रियों पर जो अपना पराक्रम दिखलाया था, उसको देखकर इस्राएलियों ने यहोवा का भय माना और यहोवा की और उसके दास मूसा की भी प्रतीति की॥

१५ तब मूसा और इस्राएलियों ने यहोवा के लिये यह गीत गाया। उन्हों ने कहा,

मैं यहोवा का गीत गाऊंगा, क्योंकि
वह महाप्रतापी ठहरा है;
घोड़ों समेत सवारों को उस ने
समुद्र में डाल दिया है॥
२ यहोवा मेरा बल और भजन का
विषय है,
और वही मेरा उद्धार भी ठहरा है;
मेरा ईश्वर वही है, मैं उसी की
स्तुति करूंगा, (मैं उसके लिये
निवासस्थान बनाऊंगा),
मेरे पूर्वजों का परमेश्वर वही है,
मैं उसको सराहूंगा॥
३ यहोवा योद्धा है;
उसका नाम यहोवा है॥
४ फ़िरौन के रथों और सेना को
उस ने समुद्र में डाल दिया;
और उसके उत्तम से उत्तम रथी
लाल समुद्र में डूब गए॥
५ गहिरे जल ने उन्हें ढांप लिया;
वे पत्थर की नाईं गहिरे स्थानों में
डूब गए॥
६ हे यहोवा, तेरा दहिना हाथ शक्ति
में महाप्रतापी हुआ
हे यहोवा, तेरा दहिना हाथ शत्रु
को चकनाचूर कर देता है॥
७ और तू अपने विरोधियों को अपने
महाप्रताप से गिरा देता है;
तू अपना कोप भड़काता, और वे
भूसे की नाईं भस्म हो जाते हैं॥
८ और तेरे नथनों की सांस से जल
एकत्र हो गया,
धाराएं ढेर की नाईं थम गईं;
समुद्र के मध्य में गहिरा जल जम
गया॥
९ शत्रु ने कहा था,
मैं पीछा करूंगा, मैं जा पकड़ूंगा,
मैं लूट के माल को बांट लूंगा,
उन से मेरा जी भर जाएगा।
मैं अपनी तलवार खींचते ही अपने
हाथ से उनको नाश कर
डालूंगा॥
१० तू ने अपने श्वास का पवन चलाया,
तब समुद्र ने उनको ढांप लिया;
वे महाजलराशि में सीसे की नाईं
डूब गए॥
११ हे यहोवा, देवताओं में तेरे तुल्य
कौन है?
तू तो पवित्रता के कारण महा-
प्रतापी, और अपनी स्तुति करने
वालों के भय के योग्य,
और आश्चर्य कर्म का कर्त्ता है॥
१२ तू ने अपना दहिना हाथ बढ़ाया,
और पृथ्वी ने उनको निगल
लिया है॥
१३ अपनी करुणा से तू ने अपनी
छुड़ाई हुई प्रजा की अगुवाई की
है,

अपने बल से तू उसे अपने पवित्र निवासस्थान को ले चला है ॥

१४ देश देश के लोग सुनकर कांप उठेंगे; पलिश्तियों के प्राणों के लाले पड़ जाएंगे ॥

१५ एदोम के अधिपति व्याकुल होंगे; मोआब के पहलवान थरथरा उठेंगे; सब कनान निवासियों के मन पिघल जाएंगे ॥

१६ उन में डर और घबराहट समा जाएगा;
तेरी बांह के प्रताप से वे पत्थर की नाईं अबोल होंगे,
जब तक, हे यहोवा, तेरी प्रजा के लोग निकल न जाएं,
जब तक तेरी प्रजा के लोग जिनको तू ने मोल लिया है पार न निकल जाएं ॥

१७ तू उन्हें पहुंचाकर अपने निज भाग-वाले पहाड़ पर बसाएगा, यह वही स्थान है, हे यहोवा, जिसे तू ने अपने निवास के लिये बनाया,
और वही पवित्रस्थान है जिसे, हे प्रभु, तू ने आप ही स्थिर किया है ॥

१८ यहोवा सदा सर्वदा राज्य करता रहेगा ॥

१९ यह गीत गाने का कारण यह है, कि फ़िरौन के घोड़े रथों और सवारों समेत समुद्र के बीच में चले गए, और यहोवा उनके ऊपर समुद्र का जल लौटा ले आया; परन्तु इस्राएली समुद्र के बीच स्थल ही स्थल पर होकर चले गए। २० और हारून की बहिन मरियम नाम नबिया ने हाथ में डफ लिया; और सब स्त्रियां डफ लिए नाचती हुई उसके पीछे हो लीं। २१ और मरियम उनके साथ यह टेक गाती गई कि :—

यहोवा का गीत गाओ, क्योंकि वह महा-प्रतापी ठहरा है;
घोड़ों समेत सवारों को उस ने समुद्र में डाल दिया है ॥

२२ तब मूसा इस्राएलियों को लाल समुद्र से आगे ले गया, और वे शूर नाम जंगल में आए; और जंगल में जाते हुए तीन दिन तक पानी का सोता न मिला। २३ फिर मारा नाम एक स्थान पर पहुंचे, वहां का पानी खारा था, उसे वे न पी सके; इस कारण उस स्थान का नाम मारा * पड़ा। २४ तब वे यह कहकर मूसा के विरुद्ध बकझक करने लगे, कि हम क्या पीएं? २५ तब मूसा ने यहोवा की दोहाई दी, और यहोवा ने उसे एक पौधा बतला दिया, जिसे जब उस ने पानी में डाला, तब वह पानी मीठा हो गया। वहीं यहोवा ने उनके लिये एक विधि और नियम बनाया, और वहीं उस ने यह कहकर उनकी परीक्षा की, २६ कि यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा का वचन तन मन से सुने, और जो उसकी दृष्टि में ठीक है वही करे, और उसकी आज्ञाओं पर कान लगाए, और उसकी सब विधियों को माने, तो जितने रोग मैं ने मिस्रियों पर भेजा है उन में से एक भी तुझ पर न भेजूंगा; क्योंकि मैं तुम्हारा चंगा करनेवाला यहोवा हूं ॥

(इस्राएलियों को आकाश से रोटी और चट्टान में से पानी मिलने का वर्णन)

२७ तब वे एलीम को आए, जहां पानी के बारह सोते और सत्तर खजूर के पेड़ थे;

* अर्थात् खारा वा कड़ुआ।

और वहां उन्हों ने जल के पास डेरे खड़े किए ॥

१६ फिर एलीम से कूच करके इस्राएलियों की सारी मण्डली, मिस्र देश से निकलने के महीने के दूसरे महीने के पंद्रहवें दिन को, सीन नाम जंगल में, जो एलीम और सीनै पर्वत के बीच में है, आ पहुंची। २ जंगल में इस्राएलियों की सारी मण्डली मूसा और हारून के विरुद्ध बकझक करने लगी। ३ और इस्राएली उन से कहने लगे, कि जब हम मिस्र देश में मांस की हांडियों के पास बैठकर मनमाना भोजन खाते थे, तब यदि हम यहोवा के हाथ से मार डाले भी जाते तो उत्तम वही था; पर तुम हम को इस जंगल में इसलिये निकाल ले आए हो कि इस सारे समाज को भूखों मार डालो। ४ तब यहोवा ने मूसा से कहा, देखो, मैं तुम लोगों के लिये आकाश से भोजन वस्तु बरसाऊंगा; और ये लोग प्रतिदिन बाहर जाकर प्रतिदिन का भोजन इकट्ठा करेंगे, इस से मैं उनकी परीक्षा करूंगा, कि ये मेरी व्यवस्था पर चलेंगे कि नहीं। ५ और ऐसा होगा कि छठवें दिन वह भोजन और दिनों से दूना होगा, इसलिये जो कुछ वे उस दिन बटोरें उसे तैयार कर रखें। ६ तब मूसा और हारून ने सारे इस्राएलियों से कहा, सांझ को तुम जान लोगे कि जो तुम को मिस्र देश से निकाल ले आया है वह यहोवा है। ७ और भोर को तुम्हें यहोवा का तेज देख पड़ेगा, क्योंकि तुम जो यहोवा पर बुड़बुड़ाते हो उसे वह सुनता है। और हम क्या हैं, कि तुम हम पर बुड़बुड़ाते हो? ८ फिर मूसा ने कहा, यह तब होगा जब यहोवा सांझ को तुम्हें खाने के लिये मांस और भोर को रोटी मनमाने देगा; क्योंकि तुम जो उस पर बुड़बुड़ाते हो उसे वह सुनता है। और हम क्या हैं? तुम्हारा बुड़बुड़ाना हम पर नहीं यहोवा ही पर होता है। ९ फिर मूसा ने हारून से कहा, इस्राएलियों की सारी मण्डली को आज्ञा दे, कि यहोवा के साम्हने वरन उसके समीप आवे, क्योंकि उस ने उनका बुड़बुड़ाना सुना है। १० और ऐसा हुआ कि जब हारून इस्राएलियों की सारी मण्डली से ऐसी ही बातें कर रहा था, कि उन्हों ने जंगल की ओर दृष्टि करके देखा, और उनको यहोवा का तेज बादल में दिखलाई दिया। ११ तब यहोवा ने मूसा से कहा, १२ इस्राएलियों का बुड़बुड़ाना मैं ने सुना है; उन से कह दे, कि गोधूलि के समय तुम मांस खाओगे और भोर को तुम रोटी से तृप्त हो जाओगे; और तुम यह जान लोगे कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। १३ और ऐसा हुआ कि सांझ को बटेरें आकर सारी छावनी पर बैठ गईं; और भोर को छावनी के चारों ओर ओस पड़ी। १४ और जब ओस सूख * गई तो वे क्या देखते हैं, कि जंगल की भूमि पर छोटे छोटे छिलके छोटाई में पाले के किनकों के समान पड़े हैं। १५ यह देखकर इस्राएली, जो न जानते थे कि यह क्या वस्तु है, सो आपस में कहने लगे यह तो मन्ना † है। तब मूसा ने उन से कहा, यह तो वही भोजनवस्तु है जिसे यहोवा तुम्हें खाने के लिये देता है। १६ जो आज्ञा यहोवा ने दी है वह यह है, कि तुम उस में से अपने अपने खाने के योग्य बटोरा करना, अर्थात् अपने अपने प्राणियों की गिनती के अनुसार, प्रति मनुष्य के पीछे एक एक ओमेर बटोरना; जिसके डेरे में जितने हों वह उन्हीं भर के लिये

* मूल—में चढ़।

† अर्थात् क्या, वा अंश।

बटोरा करे। १७ और इस्राएलियों ने वैसा ही किया; और किसी ने अधिक, और किसी ने थोड़ा बटोर लिया। १८ और जब उन्हों ने उसको ओमेर से नापा, तब जिसके पास अधिक था उसके कुछ अधिक न रह गया, और जिसके पास थोड़ा था उसको कुछ घटी न हुई; क्योंकि एक एक मनुष्य ने अपने खाने के योग्य ही बटोर लिया था। १९ फिर मूसा ने उन से कहा, कोई इस में से कुछ बिहान तक न रख छोड़े। २० तौभी उन्हों ने मूसा की बात न मानी; इसलिये जब किसी किसी मनुष्य ने उस में से कुछ बिहान तक रख छोड़ा, तो उस में कीड़े पड़ गए और वह बसाने लगा; तब मूसा उन पर क्रोधित हुआ। २१ और वे भोर को प्रतिदिन अपने अपने खाने के योग्य बटोर लेते थे, और जब धूप कड़ी होती थी, तब वह गल जाता था। २२ और ऐसा हुआ कि छठवें दिन उन्हों ने दूना, अर्थात् प्रति मनुष्य के पीछे दो दो ओमेर बटोर लिया, और मण्डली के सब प्रधानों ने आकर मूसा को बता दिया। २३ उस ने उन से कहा, यह तो वही बात है जो यहोवा ने कही, क्योंकि कल परमविश्राम, अर्थात् यहोवा के लिये पवित्र विश्राम होगा; इसलिये तुम्हें जो तन्दूर में पकाना हो उसे पकाओ, और जो सिझाना हो उसे सिझाओ, और इस में से जितना बचे उसे बिहान के लिये रख छोड़ो। २४ जब उन्हों ने उसको मूसा की इस आज्ञा के अनुसार बिहान तक रख छोड़ा, तब न तो वह बसाया, और न उस में कीड़े पड़े। २५ तब मूसा ने कहा, आज उसी को खाओ, क्योंकि आज यहोवा का विश्रामदिन है; इसलिये आज तुम को वह मैदान में न मिलेगा। २६ छः दिन तो तुम उसे बटोरा करोगे; परन्तु सातवां दिन तो विश्राम का दिन है, उस में वह न मिलेगा। २७ तौभी लोगों में से कोई कोई सातवें दिन भी बटोरने के लिये बाहर गए, परन्तु उनको कुछ न मिला। २८ तब यहोवा ने मूसा से कहा, तुम लोग मेरी आज्ञाओं और व्यवस्था को कब तक नहीं मानोगे? २९ देखो, यहोवा ने जो तुम को विश्राम का दिन दिया है, इसी कारण वह छठवें दिन को दो दिन का भोजन तुम्हें देता है; इसलिये तुम अपने अपने यहां बैठे रहना, सातवें दिन कोई अपने स्थान से बाहर न जाना। ३० लोगों ने सातवें दिन विश्राम किया। ३१ और इस्राएल के घरानेवालों ने उस वस्तु का नाम मन्ना रखा; और वह धनिया के समान श्वेत था, और उसका स्वाद मधु के बने हुए पूए का सा था। ३२ फिर मूसा ने कहा, यहोवा ने जो आज्ञा दी वह यह है, कि इस में से ओमेर भर अपने वंश की पीढ़ी पीढ़ी के लिये रख छोड़ो, जिससे वे जानें कि यहोवा हमको मिस्र देश से निकालकर जंगल में कैसी रोटी खिलाता था। ३३ तब मूसा ने हारून से कहा, एक पात्र लेकर उस में ओमेर भर लेकर उसे यहोवा के आगे धर दे, कि वह तुम्हारी पीढ़ियों के लिये रखा रहे। ३४ जैसी आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी, उसी के अनुसार हारून ने उसको साक्षी के सन्दूक के आगे धर दिया, कि वह वहीं रखा रहे। ३५ इस्राएली जब तक बसे हुए देश में न पहुंचे तब तक, अर्थात् चालीस बर्ष तक मन्ना को खाते रहे; वे जब तक कनान देश के सिवाने पर नहीं पहुंचे तब तक मन्ना को खाते रहे। ३६ एक ओमेर तो एपा का दसवां भाग है।

१७ फिर इस्राएलियों की सारी मण्डली सीन नाम जंगल से निकल

चली, और यहोवा के आज्ञानुसार कूच करके रपीदीम में अपने डेरे खड़े किए; और वहां उन लोगों को पीने का पानी न मिला। २ इसलिये वे मूसा से वादविवाद करके कहने लगे, कि हमें पीने का पानी दे। मूसा ने उन से कहा, तुम मुझ से क्यों वादविवाद करते हो? और यहोवा की परीक्षा क्यों करते हो? ३ फिर वहां लोगों को पानी की प्यास लगी तब वे यह कहकर मूसा पर बुड़बुड़ाने लगे, कि तू हमें लड़केबालों और पशुओं समेत प्यासों मार डालने के लिये मिस्र से क्यों ले आया है? ४ तब मूसा ने यहोवा की दोहाई दी, और कहा, इन लोगों से मैं क्या करूं? ये सब मुझे पत्थरवाह करने को तैयार हैं। ५ यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएल के वृद्ध लोगों में से कुछ को अपने साथ ले ले; और जिस लाठी से तू ने नील नदी* पर मारा था, उसे अपने हाथ में लेकर लोगों के आगे बढ़ चल। ६ देख, मैं तेरे आगे चलकर होरेब पहाड़ की एक चट्टान पर खड़ा रहूंगा; और तू उस चट्टान पर मारना, तब उस में से पानी निकलेगा, जिससे ये लोग पीएं। तब मूसा ने इस्राएल के वृद्ध लोगों के देखते वैसा ही किया। ७ और मूसा ने उस स्थान का नाम मस्सा† और मरीबा‡ रखा, क्योंकि इस्राएलियों ने वहां वादविवाद किया था, और यहोवा की परीक्षा यह कहकर की, कि क्या यहोवा हमारे बीच है वा नहीं?

(अमालेकियों पर विजय)

८ तब अमालेकी आकर रपीदीम में इस्राएलियों से लड़ने लगे। ९ तब मूसा ने यहोशू से कहा, हमारे लिये कई एक पुरुषों को चुनकर छांट ले, और बाहर जाकर अमालेकियों से लड़; और मैं कल परमेश्वर की लाठी हाथ में लिये हुए पहाड़ी की चोटी पर खड़ा रहूंगा। १० मूसा की इस आज्ञा के अनुसार यहोशू अमालेकियों से लड़ने लगा; और मूसा, हारून, और हूर पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गए। ११ और जब तक मूसा अपना हाथ उठाए रहता था तब तक तो इस्राएल प्रबल होता था; परन्तु जब जब वह उसे नीचे करता तब तब अमालेक प्रबल होता था। १२ और जब मूसा के हाथ भर गए, तब उन्हों ने एक पत्थर लेकर मूसा के नीचे रख दिया, और वह उस पर बैठ गया, और हारून और हूर एक एक अलंग में उसके हाथों को सम्भाले रहे; और उसके हाथ सूर्यास्त तक स्थिर रहे। १३ और यहोशू ने अनुचरों समेत अमालेकियों को तलवार के बल से हरा दिया। १४ तब यहोवा ने मूसा से कहा, स्मरणार्थ इस बात को पुस्तक में लिख ले और यहोशू को सुना दे, कि मैं आकाश के नीचे से अमालेक का स्मरण भी पूरी रीति से मिटा डालूंगा। १५ तब मूसा ने एक वेदी बनाकर उसका नाम यहोवानिस्सी* रखा; १६ और कहा, यहोवा ने शपथ खाई है, कि यहोवा अमालेकियों से पीढ़ियों तक लड़ाई करता रहेगा॥

(मूसा की अपने ससुर से भेंट करने का वर्णन)

१८ और मूसा के ससुर मिद्यान के याजक यित्रो ने यह सुना, कि परमेश्वर ने मूसा और अपनी प्रजा इस्राएल के लिये क्या क्या किया है, अर्थात् यह कि किस रीति से यहोवा इस्राएलियों को मिस्र

---

* मूल में—योर।
† अर्थात् परीक्षा। ‡ अर्थात् झगड़ा।

* अर्थात् ईश्वर सहाय।

से निकाल ले आया। २ तब मूसा के ससुर यित्रो मूसा की पत्नी सिप्पोरा को, जो पहिले नैहर भेज दी गई थी, ३ और उसके दोनों बेटों को भी ले आया; इन में से एक का नाम मूसा ने यह कहकर गेर्शोम रखा था, कि मैं अन्य देश में परदेशी हुआ हूं। ४ और दूसरे का नाम उस ने यह कहकर एलीएजेर* रखा, कि मेरे पिता के परमेश्वर ने मेरा सहायक होकर मुझे फ़िरौन की तलवार से बचाया। ५ मूसा की पत्नी और पुत्रों को उसका ससुर यित्रो संग लिए मूसा के पास जंगल के उस स्थान में आया, जहां परमेश्वर के पर्वत के पास उसका डेरा पड़ा था। ६ और आकर उस ने मूसा के पास यह कहला भेजा, कि मैं तेरा ससुर यित्रो हूं, और दोनों बेटों समेत तेरी पत्नी को तेरे पास ले आया हूं। ७ तब मूसा अपने ससुर से भेंट करने के लिये निकला, और उसको दण्डवत् करके चूमा; और वे परस्पर कुशल क्षेम पूछते हुए डेरे पर आ गए। ८ वहां मूसा ने अपने ससुर से वर्णन किया, कि यहोवा ने इस्राएलियों के निमित्त फ़िरौन और मिस्रियों से क्या क्या किया, और इस्राएलियों ने मार्ग में क्या क्या कष्ट उठाया, फिर यहोवा उन्हें कैसे कैसे छुड़ाता आया है। ९ तब यित्रो ने उस समस्त भलाई के कारण जो यहोवा ने इस्राएलियों के साथ की थी, कि उन्हें मिस्रियों के वश से छुड़ाया था, मग्न होकर कहा, १० धन्य है यहोवा, जिस ने तुम को फ़िरौन और मिस्रियों के वश से छुड़ाया, जिस ने तुम लोगों को मिस्रियों की मुट्ठी में से छुड़ाया है। ११ अब मैं ने जान लिया है कि यहोवा सब देवताओं से बड़ा है; वरन उस विषय में भी जिस में उन्हों ने इस्राएलियों से अभिमान किया था। १२ तब मूसा के ससुर यित्रो ने परमेश्वर के लिये होमबलि और मेलबलि चढ़ाए, और हारून इस्राएलियों के सब पुरनियों समेत मूसा के ससुर यित्रो के संग परमेश्वर के आगे भोजन करने को आया। १३ दूसरे दिन मूसा लोगों का न्याय करने को बैठा, और भोर से सांझ तक लोग मूसा के आस-पास खड़े रहे। १४ यह देखकर कि मूसा लोगों के लिये क्या क्या करता है, उसके ससुर ने कहा, यह क्या काम है जो तू लोगों के लिये करता है? क्या कारण है कि तू अकेला बैठा रहता है, और लोग भोर से सांझ तक तेरे आसपास खड़े रहते हैं? १५ मूसा ने अपने ससुर से कहा, इसका कारण यह है कि लोग मेरे पास परमेश्वर से पूछने आते हैं। १६ जब जब उनका कोई मुक़द्दमा होता है तब तब वे मेरे पास आते हैं, और मैं उनके बीच न्याय करता, और परमेश्वर की विधि और व्यवस्था उन्हें जताता हूं। १७ मूसा के ससुर ने उस से कहा, जो काम तू करता है वह अच्छा नहीं। १८ और इस से तू क्या, वरन ये लोग भी जो तेरे संग हैं निश्चय हार जाएंगे, क्योंकि यह काम तेरे लिये बहुत भारी है; तू इसे अकेला नहीं कर सकता। १९ इस-लिये अब मेरी सुन ले, मैं तुझ को सम्मति देता हूं, और परमेश्वर तेरे संग रहे। तू तो इन लोगों के लिये परमेश्वर के सम्मुख जाया कर, और इनके मुकद्दमों को परमेश्वर के पास तू पहुंचा दिया कर। २० इन्हें विधि और व्यवस्था प्रगट कर करके, जिस मार्ग पर इन्हें चलना, और जो जो काम इन्हें करना हो, वह इनको जता दिया कर। २१ फिर तू इन सब लोगों में से ऐसे पुरुषों

* अर्थात् यहोवा मेरा झण्डा है।

को छांट ले, जो गुणी, और परमेश्वर का भय मानने वाले, सच्चे, और अन्याय के लाभ से घृणा करने वाले हों; और उनको हज़ार-हज़ार, सौ-सौ, पचास-पचास, और दस-दस मनुष्यों पर प्रधान नियुक्त कर दे। २२ और वे सब समय इन लोगों का न्याय किया करें; और सब बड़े बड़े मुकद्दमों को तो तेरे पास ले आया करें, और छोटे छोटे मुकद्दमों का न्याय आप ही किया करें; तब तेरा बोझ हलका होगा, क्योंकि इस बोझ को वे भी तेरे साथ उठाएंगे। २३ यदि तू यह उपाय करे, और परमेश्वर तुझ को ऐसी आज्ञा दे, तो तू ठहर सकेगा, और ये सब लोग अपने स्थान को कुशल से पहुंच सकेंगे। २४ अपने ससुर की यह बात मान कर मूसा ने उसके सब वचनों के अनुसार किया। २५ सो उस ने सब इस्राएलियों में से गुणी गुणी पुरुष चुनकर उन्हें हज़ार-हज़ार, सौ-सौ, पचास-पचास, दस-दस लोगों के ऊपर प्रधान ठहराया। २६ और वे सब लोगों का न्याय करने लगे; जो मुकद्दमा कठिन होता उसे तो वे मूसा के पास ले आते थे, और सब छोटे मुकद्दमों का न्याय वे आप ही किया करते थे। २७ और मूसा ने अपने ससुर को विदा किया, और उस ने अपने देश का मार्ग लिया॥

(सीनै पर्वत पर यहोवा के दर्शन देने का वर्णन)

१९ इस्राएलियों को मिस्र देश से निकले हुए जिस दिन तीन महीने बीत चुके, उसी दिन वे सीनै के जंगल में आए। २ और जब वे रपीदीम से कूच करके सीनै के जंगल में आए, तब उन्हों ने जंगल में डेरे खड़े किए; और वहीं पर्वत के आगे इस्राएलियों ने छावनी डाली। ३ तब मूसा पर्वत पर परमेश्वर के पास चढ़ गया, और यहोवा ने पर्वत पर से उसको पुकारकर कहा, याक़ूब के घराने से ऐसा कह, और इस्राएलियों को मेरा यह वचन सुना, ४ कि तुम ने देखा है कि मैं ने मिस्रियों से क्या क्या किया; तुम को मानो उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूं। ५ इसलिये अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा को पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी है। ६ और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे। जो बातें तुझे इस्राएलियों से कहनी हैं वे ये ही हैं। ७ तब मूसा ने आकर लोगों के पुरनियों को बुलवाया, और ये सब बातें, जिनके कहने की आज्ञा यहोवा ने उसे दी थी, उनको समझा दीं। ८ और सब लोग मिलकर बोल उठे, जो कुछ यहोवा ने कहा है वह सब हम नित करेंगे। लोगों की यह बातें मूसा ने यहोवा को सुनाईं। ९ तब यहोवा ने मूसा से कहा, सुन, मैं बादल के अंधियारे में होकर तेरे पास आता हूं, इसलिये कि जब मैं तुझ से बातें करूं तब वे लोग सुनें, और सदा तेरी प्रतीति करें। और मूसा ने यहोवा से लोगों की बातों का वर्णन किया। १० तब यहोवा ने मूसा से कहा, लोगों के पास जा और उन्हें आज और कल पवित्र करना, और वे अपने वस्त्र धो लें, ११ और वे तीसरे दिन तक तैयार हो रहें; क्योंकि तीसरे दिन यहोवा सब लोगों के देखते सीनै पर्वत पर उतर आएगा। १२ और तू लोगों के लिये चारों ओर बाड़ा बान्ध देना, और उन से कहना, कि तुम सचेत रहो कि पर्वत पर न चढ़ो और उसके सिवाने को भी न छूओ; और

जो कोई पहाड़ को छूए वह निश्चय मार डाला जाए। १३ उसको कोई हाथ से तो न छूए, परन्तु वह निश्चय पत्थरवाह किया जाए, वा तीर से छेदा जाए; चाहे पशु हो चाहे मनुष्य, वह जीवित न बचे। जब महाशब्द वाले नरसिंगे का शब्द देर तक सुनाई दे, तब लोग पर्वत के पास आएं। १४ तब मूसा ने पर्वत पर से उतरकर लोगों के पास आकर उनको पवित्र कराया; और उन्हों ने अपने वस्त्र धो लिए। १५ और उस ने लोगों से कहा, तीसरे दिन तक तैयार हो रहो; स्त्री के पास न जाना। १६ जब तीसरा दिन आया तब भोर होते बादल गरजने और बिजली चमकने लगी, और पर्वत पर काली घटा छा गई, फिर नरसिंगे का शब्द बड़ा भारी हुआ, और छावनी में जितने लोग थे सब कांप उठे। १७ तब मूसा लोगों को परमेश्वर से भेंट करने के लिये छावनी से निकाल ले गया; और वे पर्वत के नीचे खड़े हुए। १८ और यहोवा जो आग में होकर सीनै पर्वत पर उतरा था, इस कारण समस्त पर्वत धुएं से भर गया; और उसका धुआं भट्टे का सा उठ रहा था, और समस्त पर्वत बहुत कांप रहा था। १९ फिर जब नरसिंगे का शब्द बढ़ता और बहुत भारी होता गया, तब मूसा बोला, और परमेश्वर ने वाणी सुनाकर उसको उत्तर दिया। २० और यहोवा सीनै पर्वत की चोटी पर उतरा; और मूसा को पर्वत की चोटी पर बुलाया, और मूसा ऊपर चढ़ गया। २१ तब यहोवा ने मूसा से कहा, नीचे उतरके लोगों को चितावनी दे, कहीं ऐसा न हो कि वे बाड़ा तोड़के यहोवा के पास देखने को घुसें, और उन में से बहुत नाश हो जाएं। २२ और याजक जो यहोवा के समीप आया करते हैं वे भी अपने को पवित्र करें, कहीं ऐसा न हो कि यहोवा उन पर टूट पड़े। २३ मूसा ने यहोवा से कहा, वे लोग सीनै पर्वत पर नहीं चढ़ सकते; तू ने तो आप हम को यह कहकर चिताया, कि पर्वत के चारों ओर बाड़ा बान्धकर उसे पवित्र रखो। २४ यहोवा ने उस से कहा, उतर तो जा, और हारून समेत तू ऊपर आ; परन्तु याजक और साधारण लोग कहीं यहोवा के पास बाड़ा तोड़के न चढ़ आएं, कहीं ऐसा न हो कि वह उन पर टूट पड़े। २५ ये ही बातें मूसा ने लोगों के पास उतरके उनको सुनाईं॥

(सब इस्राएलियों को दस आज्ञाओं के सुनाये जाने का वर्णन)

२० तब परमेश्वर ने ये सब वचन कहे, २ कि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूं, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है॥

३ तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना॥

४ तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी कि प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, वा पृथ्वी पर, वा पृथ्वी के जल में है। ५ तू उनको दण्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला ईश्वर हूं, और जो मुझ से बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूं, ६ और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन हज़ारों पर करुणा किया करता हूं॥

७ तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ * न लेना; क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ * ले वह उसको निर्दोष न ठहराएगा॥

---

* वा झूठी बात पर।

८ तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना। ९ छः दिन तो तू परिश्रम करके अपना सब काम काज करना; १० परन्तु सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्रामदिन है। उस में न तो तू किसी भांति का काम काज करना, और न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरे पशु, न कोई परदेशी जो तेरे फाटकों के भीतर हो। ११ क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश, और पृथ्वी, और समुद्र, और जो कुछ उन में हैं, सब को बनाया, और सातवें दिन विश्राम किया; इस कारण यहोवा ने विश्रामदिन को आशीष दी और उसको पवित्र ठहराया।।

१२ तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, जिस से जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में तू बहुत दिन तक रहने पाए।।

१३ तू खून न करना।।

१४ तू व्यभिचार न करना।।

१५ तू चोरी न करना।।

१६ तू किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना।।

१७ तू किसी के घर का लालच न करना; न तो किसी की स्त्री का लालच करना, और न किसी के दास-दासी, वा बैल गदहे का, न किसी की किसी वस्तु का लालच करना।।

१८ और सब लोग गरजने और बिजली और नरसिंगे के शब्द सुनते, और धुआं उठते हुए पर्वत को देखते रहे, और देखके, कांपकर दूर खड़े हो गए; १९ और वे मूसा से कहने लगे, तू ही हम से बातें कर, तब तो हम सुन सकेंगे; परन्तु परमेश्वर हम से बातें न करे, ऐसा न हो कि हम मर जाएं। २० मूसा ने लोगों से कहा, डरो मत; क्योंकि परमेश्वर इस निमित्त आया है कि तुम्हारी परीक्षा करे, और उसका भय तुम्हारे मन में * बना रहे, कि तुम पाप न करो। २१ और वे लोग तो दूर ही खड़े रहे, परन्तु मूसा उस घोर अन्धकार के समीप गया जहां परमेश्वर था।।

(मूसा से कही हुई यहोवा की व्यवस्था)

२२ तब यहोवा ने मूसा से कहा, तू इस्राएलियों को मेरे ये वचन सुना, कि तुम लोगों ने तो आप ही देखा है कि मैं ने तुम्हारे साथ आकाश से बातें की हैं। २३ तुम मेरे साथ किसी को सम्मिलित न करना, अर्थात् अपने लिये चान्दी वा सोने से देवताओं को न गढ़ लेना। २४ मेरे लिये मिट्टी की एक वेदी बनाना, और अपनी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों के होमबलि और मेलबलि को उस पर चढ़ाना; जहां जहां मैं अपने नाम का स्मरण कराऊं वहां वहां मैं आकर तुम्हें आशीष दूंगा। २५ और यदि तुम मेरे लिये पत्थरों की वेदी बनाओ, तो तराशे हुए पत्थरों से न बनाना; क्योंकि जहां तुम ने उस पर अपना हथियार लगाया वहां तू उसे अशुद्ध कर देगा। २६ और मेरी वेदी पर सीढ़ी से कभी न चढ़ना, कहीं ऐसा न हो कि तेरा तन उस पर नंगा देख पड़े।।

२१ फिर जो नियम तुझे उनको समझाने हैं वे ये हैं।।

२ जब तुम कोई इब्री दास मोल लो, तब वह छः वर्ष तक सेवा करता रहे, और सातवें वर्ष स्वतन्त्र होकर सेंतमेंत चला जाए। ३ यदि वह अकेला आया हो, तो

* मूल में—तुम्हारे साम्हने।

अकेला ही चला जाए; और यदि पत्नी सहित आया हो, तो उसके साथ उसकी पत्नी भी चली जाए। ४ यदि उसके स्वामी ने उसको पत्नी दी हो और उस से उसके बेटे वा बेटियां उत्पन्न हुई हों, तो उसकी पत्नी और बालक उस स्वामी के ही रहें, और वह अकेला चला जाए। ५ परन्तु यदि वह दास दृढ़ता से कहे, कि मैं अपने स्वामी, और अपनी पत्नी, और बालकों से प्रेम रखता हूं; इसलिये मैं स्वतन्त्र होकर न चला जाऊंगा; ६ तो उसका स्वामी उसको परमेश्वर * के पास ले चले; फिर उसको द्वार के किवाड़ वा बाजू के पास ले जाकर उसके कान में सुतारी से छेद करे; तब वह सदा उसकी सेवा करता रहे॥

७ यदि कोई अपनी बेटी को दासी होने के लिये बेच डाले, तो वह दासी की नाईं बाहर न जाए। ८ यदि उसका स्वामी उसको अपनी पत्नी बनाए, और फिर उस से प्रसन्न न रहे, तो वह उसे दाम से छुड़ाई जाने दे; उसका विश्वासघात करने के बाद उसे ऊपरी लोगों के हाथ बेचने का उसको अधिकार न होगा। ९ और यदि उस ने उसे अपने बेटे को ब्याह दिया हो, तो उस से बेटी का सा व्यवहार करे। १० चाहे वह दूसरी पत्नी कर ले, तौभी वह उसका भोजन, वस्त्र, और संगति न घटाए। ११ और यदि वह इन तीन बातों में घटी करे, तो वह स्त्री सेतमेंत बिना दाम चुकाए ही चली जाए॥

१२ जो किसी मनुष्य को ऐसा मारे कि वह मर जाए, तो वह भी निश्चय मार डाला जाए। १३ यदि वह उसकी घात में न बैठा हो, और परमेश्वर की इच्छा ही से वह उसके हाथ में पड़ गया हो, तो ऐसे मारनेवाले के भागने के निमित्त मैं एक स्थान ठहराऊंगा जहां वह भाग जाए। १४ परन्तु यदि कोई ढिठाई से किसी पर चढ़ाई करके उसे छल से घात करे, तो उसको मार डालने के लिये मेरी वेदी के पास से भी अलग ले जाना॥

१५ जो अपने पिता वा माता को मारे-पीटे वह निश्चय मार डाला जाए॥

१६ जो किसी मनुष्य को चुराए, चाहे उसे ले जाकर बेच डाले, चाहे वह उसके यहां पाया जाए, तो वह भी निश्चय मार डाला जाए॥

१७ जो अपने पिता वा माता को श्राप दे वह भी निश्चय मार डाला जाए॥

१८ यदि मनुष्य झगड़ते हों, और एक दूसरे को पत्थर वा मुक्के से ऐसा मारे कि वह मरे नहीं परन्तु बिछौने पर पड़ा रहे, १९ तो जब वह उठकर लाठी के सहारे से बाहर चलने फिरने लगे, तब वह मारनेवाला निर्दोष ठहरे; उस दशा में वह उसके पड़े रहने के समय की हानि तो भर दे, और उसको भला चंगा भी करा दे॥

२० यदि कोई अपने दास वा दासी को सोंटे से ऐसा मारे कि वह उसके मारने से मर जाए, तब तो उसको निश्चय दण्ड दिया जाए। २१ परन्तु यदि वह दो एक दिन जीवित रहे, तो उसके स्वामी को दण्ड न दिया जाए; क्योंकि वह दास उसका धन है॥

२२ यदि मनुष्य आपस में मारपीट करके किसी गर्भिणी स्त्री को ऐसी चोट पहुंचाए, कि उसका गर्भ गिर जाए, परन्तु और कुछ हानि न हो, तो मारनेवाले से उतना दण्ड लिया जाए जितना उस स्त्री का पति पंच की सम्मति से ठहराए।

* वा न्यायियों।

२३ परन्तु यदि उसको और कुछ हानि पहुंचे, तो प्राण की सन्ती प्राण का, २४ और आंख की सन्ती आंख का, और दांत की सन्ती दांत का, और हाथ की सन्ती हाथ का, और पांव की सन्ती पांव का, २५ और दाग की सन्ती दाग का, और घाव की सन्ती घाव का, और मार की सन्ती मार का दण्ड हो॥

२६ जब कोई अपने दास वा दासी की आंख पर ऐसा मारे कि फूट जाए, तो वह उसकी आंख की सन्ती उसे स्वतन्त्र करके जाने दे। २७ और यदि वह अपने दास वा दासी को मारके उसका दांत तोड़ डाले, तो वह उसके दांत की सन्ती उसे स्वतन्त्र करके जाने दे॥

२८ यदि बैल किसी पुरुष वा स्त्री को ऐसा सींग मारे कि वह मर जाए, तो वह बैल तो निश्चय पत्थरवाह करके मार डाला जाए, और उसका मांस खाया न जाए; परन्तु बैल का स्वामी निर्दोष ठहरे। २९ परन्तु यदि उस बैल की पहिले से सींग मारने की बान पड़ी हो, और उसके स्वामी ने जताए जाने पर भी उसको न बान्ध रखा हो, और वह किसी पुरुष वा स्त्री को मार डाले, तब तो वह बैल पत्थरवाह किया जाए, और उसका स्वामी भी मार डाला जाए। ३० यदि उस पर छुड़ौती ठहराई जाए, तो प्राण छुड़ाने को जो कुछ उसके लिये ठहराया जाए उसे उतना ही देना पड़ेगा। ३१ चाहे बैल ने किसी बेटे को, चाहे बेटी को मारा हो, तौभी इसी नियम के अनुसार उसके स्वामी के साथ व्यवहार किया जाए। ३२ यदि बैल ने किसी दास वा दासी को सींग मारा हो, तो बैल का स्वामी उस दास के स्वामी को तीस शेकेल रूपा दे, और वह बैल पत्थरवाह किया जाए॥

३३ यदि कोई मनुष्य गड़हा खोलकर वा खोदकर उसको न ढांपे, और उस में किसी का बैल वा गदहा गिर पड़े, ३४ तो जिसका वह गड़हा हो वह उस हानि को भर दे; वह पशु के स्वामी को उसका मोल दे, और लोथ गड़हेवाले की ठहरे॥

३५ यदि किसी का बैल किसी दूसरे के बैल को ऐसी चोट लगाए, कि वह मर जाए, तो वे दोनों मनुष्य जीते बैल को बेचकर उसका मोल आपस में आधा आधा बांट लें; और लोथ को भी वैसा ही बांटें। ३६ यदि यह प्रगट हो कि उस बैल की पहिले से सींग मारने की बान पड़ी थी, पर उसके स्वामी ने उसे बान्ध नहीं रखा, तो निश्चय यह बैल की सन्ती बैल भर दे, पर लोथ उसी की ठहरे॥

२२

यदि कोई मनुष्य बैल, वा भेड़, वा बकरी चुराकर उसका घात करे वा बेच डाले, तो वह बैल की सन्ती पाँच बैल, और भेड़-बकरी की सन्ती चार भेड़-बकरी भर दे। २ यदि चोर सेंध लगाते हुए पकड़ा जाए, और उस पर ऐसी मार पड़े कि वह मर जाए, तो उसके खून का दोष न लगे; ३ यदि सूर्य निकल चुके, तो उसके खून का दोष लगे; अवश्य है कि वह हानि को भर दे, और यदि उसके पास कुछ न हो, तो वह चोरी के कारण बेच दिया जाए। ४ यदि चुराया हुआ बैल, वा गदहा, वा भेड़, वा बकरी उसके हाथ में जीवित पाई जाए, तो वह उसका दूना भर दे॥

५ यदि कोई अपने पशु से किसी का खेत वा दाख की बारी चराए, अर्थात् अपने पशु को ऐसा छोड़ दे कि वह पराए खेत को चर ले, तो वह अपने खेत की और अपनी

दाख की बारी की उत्तम से उत्तम उपज में से उस हानि को भर दे॥

६ यदि कोई आग जलाए, और वह कांटों में लग जाए और फूलों के ढेर वा अनाज वा खड़ा खेत जल जाए, तो जिस ने आग जलाई हो वह हानि को निश्चय भर दे॥

७ यदि कोई दूसरे को रुपए वा सामग्री की धरोहर धरे, और वह उसके घर से चुराई जाए, तो यदि चोर पकड़ा जाए, तो दूना उसी को भर देना पड़ेगा। ८ और यदि चोर न पकड़ा जाए, तो घर का स्वामी परमेश्वर के पास लाया जाए, कि निश्चय हो जाय कि उस ने अपने भाई बन्धु की सम्पत्ति पर हाथ लगाया है वा नहीं। ९ चाहे बैल, चाहे गदहे, चाहे भेड़ वा बकरी, चाहे वस्त्र, चाहे किसी प्रकार की ऐसी खोई हुई वस्तु के विषय अपराध क्यों न लगाया जाय, जिसे दो जन अपनी अपनी कहते हों, तो दोनों का मुकद्दमा परमेश्वर * के पास आए; और जिसको परमेश्वर दोषी ठहराए † वह दूसरे को दूना भर दे॥

१० यदि कोई दूसरे को गदहा वा बैल वा भेड़-बकरी वा कोई और पशु रखने के लिये सौंपे, और किसी के बिना देखे वह मर जाए, वा चोट खाए, वा हांक दिया जाए, ११ तो उन दोनों के बीच यहोवा की शपथ खिलाई जाए कि मैं ने इसकी सम्पत्ति पर हाथ नहीं लगाया; तब सम्पत्ति का स्वामी इसको सच माने, और दूसरे को उसे कुछ भी भर देना न होगा। १२ यदि वह सचमुच उसके यहां से चुराया गया हो, तो वह उसके स्वामी को उसे भर दे। १३ और यदि वह फाड़ डाला गया हो, तो वह फाड़े हुए को प्रमाण के लिये ले आए, तब उसे उसको भी भर देना न पड़ेगा॥

१४ फिर यदि कोई दूसरे से पशु मांग लाए, और उसके स्वामी के संग न रहते उसको चोट लगे वा वह मर जाए, तो वह निश्चय उसकी हानि भर दे। १५ यदि उसका स्वामी संग हो, तो दूसरे को उसकी हानि भरना न पड़े; और यदि वह भाड़े का हो तो उसकी हानि उसके भाड़े में आ गई॥

१६ यदि कोई पुरुष किसी कन्या को जिसके ब्याह की बात न लगी हो फुसलाकर उसके संग कुकर्म करे, तो वह निश्चय उसका मोल देके उसे ब्याह ले। १७ परन्तु यदि उसका पिता उसे देने को बिलकुल इनकार करे, तो कुकर्म करनेवाला कन्याओं के मोल की रीति के अनुसार रुपये तौल दे॥

१८ तू डाइन को जीवित रहने न देना॥

१९ जो कोई पशुगमन करे वह निश्चय मार डाला जाए॥

२० जो कोई यहोवा को छोड़ किसी और देवता के लिये बलि करे वह सत्यानाश किया जाए। २१ और परदेशी को न सताना और न उस पर अन्धेर करना, क्योंकि मिस्र देश में तुम भी परदेशी थे। २२ किसी विधवा वा अनाथ बालक को दुःख न देना। २३ यदि तुम ऐसों को किसी प्रकार का दुःख दो, और वे कुछ भी मेरी दोहाई दें, तो मैं निश्चय उनकी दोहाई सुनूंगा; २४ तब मेरा क्रोध भड़केगा, और मैं तुम को तलवार से मरवाऊंगा, और तुम्हारी पत्नियां विधवा और तुम्हारे बालक अनाथ हो जाएंगे॥

२५ यदि तू मेरी प्रजा में से किसी दीन को जो तेरे पास रहता हो रुपए का ऋण दे, तो उस से महाजन की नाईं ब्याज न

* वा न्यायियों।
† वा न्यायी दोषी ठहराए।

लेना। २६ यदि तू कभी अपने भाईबन्धु के वस्त्र को बन्धक करके रख भी ले, तो सूर्य के अस्त होने तक उसको लौटा देना; २७ क्योंकि वह उसका एक ही ओढ़ना है, उसकी देह का वही अकेला वस्त्र होगा; फिर वह किसे ओढ़कर सोएगा? तौभी जब वह मेरी दोहाई देगा तब मैं उसकी सुनूंगा, क्योंकि मैं तो करुणामय हूं॥

२८ परमेश्वर* को श्राप न देना, और न अपने लोगों के प्रधान को श्राप देना। २९ अपने खेतों की उपज और फलों के रस में से कुछ मुझे देने में विलम्ब न करना। अपने बेटों में से पहिलौठे को मुझे देना। ३० वैसे ही अपनी गायों और भेड़-बकरियों के पहिलौठे भी देना; सात दिन तक तो बच्चा अपनी माता के संग रहे, और आठवें दिन तू उसे मुझ को दे देना। ३१ और तुम मेरे लिये पवित्र मनुष्य बनना; इस कारण जो पशु मैदान में फाड़ा हुआ पड़ा मिले उसका मांस न खाना, उसको कुत्तों के आगे फेंक देना॥

२३ झूठी बात न फैलाना। अन्यायी साक्षी होकर दुष्ट का साथ न देना। २ बुराई करने के लिये न तो बहुतों के पीछे हो लेना; और न उनके पीछे फिरके मुकद्दमे में न्याय बिगाड़ने को साक्षी देना; ३ और कंगाल के मुकद्दमे में उसका भी पक्ष न करना॥

४ यदि तेरे शत्रु का बैल वा गदहा भटकता हुआ तुझे मिले, तो उसे उसके पास अवश्य फेर ले आना। ५ फिर यदि तू अपने बैरी के गदहे को बोझ के मारे दबा हुआ देखे, तो चाहे उसको उसके स्वामी के लिये छुड़ाने के लिये तेरा मन न चाहे, तौभी अवश्य स्वामी का साथ देकर उसे छुड़ा लेना॥

६ तेरे लोगों में से जो दरिद्र हों उसके मुकद्दमे में न्याय न बिगाड़ना। ७ झूठे मुकद्दमे से दूर रहना, और निर्दोष और धर्मी को घात न करना, क्योंकि मैं दुष्ट को निर्दोष न ठहराऊंगा। ८ घूस न लेना, क्योंकि घूस देखने वालों को भी अन्धा कर देता, और धर्मियों की बातें पलट देता है। ९ परदेशी पर अन्धेर न करना; तुम तो परदेशी के मन की बातें जानते हो, क्योंकि तुम भी मिस्र देश में परदेशी थे॥

१० छः वर्ष तो अपनी भूमि में बोना और उसकी उपज इकट्ठी करना; ११ परन्तु सातवें वर्ष में उसको परती रहने देना और वैसा ही छोड़ देना, तो तेरे भाई बन्धुओं में के दरिद्र लोग उस से खाने पाएं, और जो कुछ उन से भी बचे वह बनैले पशुओं के खाने के काम में आए। और अपनी दाख और जलपाई की बारियों को भी ऐसे ही करना। १२ छः दिन तक तो अपना काम काज करना, और सातवें दिन विश्राम करना; कि तेरे बैल और गदहे सुस्ताएं, और तेरी दासियों के बेटे और परदेशी भी अपना जी ठंडा कर सकें। १३ और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है उस में सावधान रहना; और दूसरे देवताओं के नाम की चर्चा न करना, वरन वे तुम्हारे मुंह से सुनाई भी न दें।

१४ प्रति वर्ष तीन बार मेरे लिये पर्ब्ब मानना। १५ अखमीरी रोटी का पर्ब्ब मानना; उस में मेरी आज्ञा के अनुसार अबीब महीने के नियत समय पर सात दिन तक अखमीरी रोटी खाया करना, क्योंकि उसी महीने में तुम मिस्र से निकल आए। और मुझ को कोई छूछे हाथ अपना मुंह

---

* वा न्यायियों।

न दिखाए। १६ और जब तेरी बोई हुई खेती की पहिली उपज तैयार हो, तब कटनी का पर्ब्ब मानना। और वर्ष के अन्त में जब तू परिश्रम के फल बटोर के ढेर लगाए, तब बटोरन का पर्ब्ब मानना। १७ प्रति वर्ष तीनों बार तेरे सब पुरुष प्रभु यहोवा को अपना मुंह दिखाएं॥

१८ मेरे बलिपशु का लोहू खमीरी रोटी के संग न चढ़ाना, और न मेरे पर्ब्ब के उत्तम बलिदान * में से कुछ बिहान तक रहने देना। १९ अपनी भूमि की पहिली उपज का पहिला भाग अपने परमेश्वर यहोवा के भवन में ले आना। बकरी का बच्चा उसकी माता के दूध में न पकाना॥

२० सुन, मैं एक दूत तेरे आगे आगे भेजता हूं जो मार्ग में तेरी रक्षा करेगा, और जिस स्थान को मैं ने तैयार किया है उस में तुझे पहुंचाएगा। २१ उसके साम्हने सावधान रहना, और उसकी मानना, उसका विरोध न करना, क्योंकि वह तुम्हारा अपराध क्षमा न करेगा; इसलिये कि उस में मेरा नाम रहता है। २२ और यदि तू सचमुच उसकी माने और जो कुछ मैं कहूं वह करे, तो मैं तेरे शत्रुओं का शत्रु और तेरे द्रोहियों का द्रोही बनूंगा। २३ इस रीति मेरा दूत तेरे आगे आगे चलकर तुझे एमोरी, हित्ती, परज्जी, कनानी, हिब्बी, और यबूसी लोगों के यहां पहुंचाएगा, और मैं उनको सत्यानाश कर डालूंगा। २४ उनके देवताओं को दण्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना, और न उनके से काम करना, वरन उन मूरतों को पूरी रीति से सत्यानाश कर डालना, और उन लोगों की लाटों को टुकड़े टुकड़े कर देना। २५ और तुम अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करना, तब वह तेरे अन्न जल पर आशीष देगा, और तेरे बीच में से रोग दूर करेगा। २६ तेरे देश में न तो किसी का गर्भ गिरेगा और न कोई बांझ होगी; और तेरी आयु मैं पूरी करूंगा। २७ जितने लोगों के बीच तू जायगा उन सभों के मन में मैं अपना भय पहिले से ऐसा समवा दूंगा कि उनको व्याकुल कर दूंगा, और मैं तुझे सब शत्रुओं की पीठ दिखाऊंगा। २८ और मैं तुझ से पहिले बर्रों को भेजूंगा जो हिब्बी, कनानी, और हित्ती लोगों को तेरे साम्हने से भगा के दूर कर देंगी। २९ मैं उनको तेरे आगे से एक ही वर्ष में तो न निकाल दूंगा, ऐसा न हो कि देश उजाड़ हो जाए, और बनैले पशु बढ़कर तुझे दुःख देने लगें। ३० जब तक तू फूल फलकर देश को अपने अधिकार में न कर ले तब तक मैं उन्हें तेरे आगे से थोड़ा थोड़ा करके निकालता रहूंगा। ३१ मैं लाल समुद्र से लेकर पलिश्तियों के समुद्र तक और जंगल से लेकर महानद तक के देश को तेरे वश में कर दूंगा; मैं उस देश के निवासियों को भी तेरे वश में कर दूंगा, और तू उन्हें अपने साम्हने से बरबस निकालेगा। ३२ तू न तो उन से वाचा बान्धना और न उनके देवताओं से। ३३ वे तेरे देश में रहने न पाएं, ऐसा न हो कि वे तुझ से मेरे विरुद्ध पाप कराएं; क्योंकि यदि तू उनके देवताओं की उपासना करे, तो यह तेरे लिये फंदा बनेगा॥

(यहोवा और इस्राएलियों के बीच वाचा बांधने का वर्णन)

२४ फिर उस ने मूसा से कहा, तू, हारून, नादाब, अबीहू, और इस्राएलियों के सत्तर पुरनियों समेत यहोवा के

* मूल में—की चर्बी।

पास ऊपर आकर दूर से दण्डवत् करना। २ और केवल मूसा यहोवा के समीप आए; परन्तु वे समीप न आएं, और दूसरे लोग उसके संग ऊपर न आएं। ३ तब मूसा ने लोगों के पास जाकर यहोवा की सब बातें और सब नियम सुना दिए; तब सब लोग एक स्वर से बोल उठे, कि जितनी बातें यहोवा ने कही हैं उन सब बातों को हम मानेंगे। ४ तब मूसा ने यहोवा के सब वचन लिख दिए। और बिहान को सबेरे उठकर पर्वत के नीचे एक वेदी और इस्राएल के बारहों गोत्रों के अनुसार बारह खम्भे भी बनवाए। ५ तब उस ने कई इस्राएली जवानों को भेजा, जिन्हों ने यहोवा के लिये होमबलि और बैलों के मेलबलि चढ़ाए। ६ और मूसा ने आधा लोहू तो लेकर कटोरों में रखा, और आधा वेदी पर छिड़क दिया। ७ तब वाचा की पुस्तक को लेकर लोगों को पढ़ सुनाया; उसे सुनकर उन्हों ने कहा, जो कुछ यहोवा ने कहा है उस सब को हम करेंगे, और उसकी आज्ञा मानेंगे। ८ तब मूसा ने लोहू को लेकर लोगों पर छिड़क दिया, और उन से कहा, देखो, यह उस वाचा का लोहू है जिसे यहोवा ने इन सब वचनों पर तुम्हारे साथ बान्धी है। ९ तब मूसा, हारून, नादाब, अबीहू और इस्राएलियों के सत्तर पुरनिए ऊपर गए, १० और इस्राएल के परमेश्वर का दर्शन किया; और उसके चरणों के तले नीलमणि का चबूतरा सा कुछ था, जो आकाश के तुल्य ही स्वच्छ था। ११ और उस ने इस्राएलियों के प्रधानों पर हाथ न बढ़ाया; तब उन्हों ने परमेश्वर का दर्शन किया, और खाया पिया॥

१२ तब यहोवा ने मूसा से कहा, पहाड़ पर मेरे पास चढ़, और वहां रह; और मैं तुझे पत्थर की पटियाएं, और अपनी लिखी हुई व्यवस्था और आज्ञा दूंगा, कि तू उनको सिखाए। १३ तब मूसा यहोशू नाम अपने टहलुए समेत परमेश्वर के पर्वत पर चढ़ गया। १४ और पुरनियों से वह यह कह गया, कि जब तक हम तुम्हारे पास फिर न आएं तब तक तुम यहीं हमारी बाट जोहते रहो; और सुनो, हारून और हूर तुम्हारे संग हैं; तो यदि किसी का मुकद्दमा हो तो उन्हीं के पास जाए। १५ तब मूसा पर्वत पर चढ़ गया, और बादल ने पर्वत को छा लिया। १६ तब यहोवा के तेज ने सीनै पर्वत पर निवास किया, और वह बादल उस पर छः दिन तक छाया रहा; और सातवें दिन उस ने मूसा को बादल के बीच में से पुकारा। १७ और इस्राएलियों की दृष्टि में यहोवा का तेज पर्वत की चोटी पर प्रचण्ड आग सा देख पड़ता था। १८ तब मूसा बादल के बीच में प्रवेश करके पर्वत पर चढ़ गया। और मूसा पर्वत पर चालीस दिन और चालीस रात रहा॥

(सामान सहित पवित्रस्थान के बनाने की आज्ञाएं)

२५ यहोवा ने मूसा से कहा, २ इस्राएलियों से यह कहना, कि मेरे लिये भेंट लाएं; जितने अपनी इच्छा से देना चाहें उन्हीं सभों से मेरी भेंट लेना! ३ और जिन वस्तुओं की भेंट उन से लेनी हैं वे ये हैं; अर्थात् सोना, चांदी, पीतल, ४ नीले, बैंजनी और लाल रंग का कपड़ा, सूक्ष्म सनी का कपड़ा, बकरी का बाल, ५ लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों की खालें, सुइसों की खालें, बबूल की लकड़ी, ६ उजियाले के लिये तेल, अभिषेक के तेल के लिये और सुगन्धित धूप के लिये सुगन्ध

द्रव्य, ७ एपोद और चपरास के लिये सुलैमानी पत्थर, और जड़ने के लिये मणि। ८ और वे मेरे लिये एक पवित्रस्थान बनाएं, कि मैं उनके बीच निवास करूं। ९ जो कुछ मैं तुझे दिखाता हूं, अर्थात् निवासस्थान और उसके सब सामान का नमूना, उसी के अनुसार तुम लोग उसे बनाना ॥

१० बबूल की लकड़ी का एक सन्दूक बनाया जाए; उसकी लम्बाई अढ़ाई हाथ, और चौड़ाई और ऊंचाई डेढ़ डेढ़ हाथ की हों। ११ और उसको चोखे सोने से भीतर और बाहर मढ़वाना, और सन्दूक के ऊपर चारों ओर सोने की बाड़ बनवाना। १२ और सोने के चार कड़े ढलवाकर उसके चारों पायों पर, एक अलंग दो कड़े और दूसरी अलंग भी दो कड़े लगवाना। १३ फिर बबूल की लकड़ी के डण्डे बनवाना, और उन्हें भी सोने से मढ़वाना। १४ और डण्डों को सन्दूक की दोनों अलंगों के कड़ों में डालना जिस से उनके बल सन्दूक उठाया जाए। १५ वे डण्डे सन्दूक के कड़ों में लगे रहें; और उस से अलग न किए जाएं। १६ और जो साक्षीपत्र मैं तुझे दूंगा उसे उसी सन्दूक में रखना। १७ फिर चोखे सोने का एक प्रायश्चित्त का ढकना बनवाना; उसकी लम्बाई अढ़ाई हाथ, और चौड़ाई डेढ़ हाथ की हो। १८ और सोना ढालकर दो करूब बनवाकर प्रायश्चित्त के ढकने के दोनों सिरों पर लगवाना। १९ एक करूब तो एक सिरे पर और दूसरा करूब दूसरे सिरे पर लगवाना; और करूबों को और प्रायश्चित्त के ढकने को एक ही टुकड़े से बनाकर उसके दोनों सिरों पर लगवाना। २० और उन करूबों के पंख ऊपर से ऐसे फैले हुए बनें कि प्रायश्चित्त का ढकना उन से ढंपा रहे, और उनके मुख आम्हने-साम्हने और प्रायश्चित्त के ढकने की ओर रहें। २१ और प्रायश्चित्त के ढकने को सन्दूक के ऊपर लगवाना; और जो साक्षीपत्र मैं तुझे दूंगा उसे सन्दूक के भीतर रखना। २२ और मैं उसके ऊपर रहकर * तुझ से मिला करूंगा; और इस्राएलियों के लिये जितनी आज्ञाएं मुझ को तुझे देनी होंगी, उन सभों के विषय मैं प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर से और उन करूबों के बीच में से, जो साक्षीपत्र के सन्दूक पर होंगे, तुझ से वार्तालाप किया करूंगा ॥

२३ फिर बबूल की लकड़ी की एक मेज बनवाना; उसकी लम्बाई दो हाथ, चौड़ाई एक हाथ, और ऊंचाई डेढ़ हाथ की हो। २४ उसे चोखे सोने से मढ़वाना, और उसके चारों ओर सोने की एक बाड़ बनवाना। २५ और उसके चारों ओर चार अंगुल चौड़ी एक पटरी बनवाना, और इस पटरी के चारों ओर सोने की एक बाड़ बनवाना। २६ और सोने के चार कड़े बनवाकर मेज के उन चारों कोनों में लगवाना जो उसके चारों पायों में होंगे। २७ वे कड़े पटरी के पास ही हों, और डण्डों के घरों का काम दें कि मेज़ उन्हीं के बल उठाई जाए। २८ और डण्डों को बबूल की लकड़ी के बनवाकर सोने से मढ़वाना, और मेज़ उन्हीं से उठाई जाए। २९ और उसके परात और धूपदान, और चमचे और उंडेलने के कटोरे, सब चोखे सोने के बनवाना। ३० और मेज़ पर मेरे आगे भेंट की रोटियां नित्य रखा करना ॥

---

* मूल में—मैं वहां।

३१ फिर चोखे सोने की एक दीवट बनवाना। सोना ढलवाकर वह दीवट, पाये और डण्डी सहित बनाया जाए; उसके पुष्पकोष, गांठ और फूल, सब एक ही टुकड़े के बनें; ३२ और उसकी अलंगों से छः डालियां निकलें, तीन डालियां तो दीवट की एक अलंग से और तीन डालियां उसकी दूसरी अलंग से निकली हुई हों; ३३ एक एक डाली में बादाम के फूल के समान तीन तीन पुष्पकोष, एक एक गांठ, और एक एक फूल हों; दीवट से निकली हुई छहों डालियों का यही आकार या रूप हो; ३४ और दीवट की डण्डी में बादाम के फूल के समान चार पुष्पकोष अपनी अपनी गांठ और फूल समेत हों; ३५ और दीवट से निकली हुई छहों डालियों में से दो दो डालियों के नीचे एक एक गांठ हो, वे दीवट समेत एक ही टुकड़े के बने हुए हों। ३६ उनकी गांठें और डालियां, सब दीवट समेत एक ही टुकड़े की हों, चोखा सोना ढलवाकर पूरा दीवट एक ही टुकड़े का बनवाना। ३७ और सात दीपक बनवाना; और दीपक जलाए जाएं कि वे दीवट के साम्हने प्रकाश दें। ३८ और उसके गुल-तराश और गुलदान सब चोखे सोने के हों। ३९ वह सब इन समस्त सामान समेत किक्कार भर चोखे सोने का बने। ४० और सावधान रहकर इन सब वस्तुओं को उस नमूने के समान बनवाना, जो तुझे इस पर्वत पर दिखाया गया है॥

२६ फिर निवासस्थान के लिये दस परदे बनवाना; इनको बटी हुई सनीवाले और नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े का कढ़ाई के काम किए हुए करूबों के साथ बनवाना। २ एक एक परदे की लम्बाई अट्ठाईस हाथ और चौड़ाई चार हाथ की हो; सब परदे एक ही नाप के हों। ३ पांच परदे एक दूसरे से जुड़े हुए हों; और फिर जो पांच परदे रहेंगे वे भी एक दूसरे से जुड़े हुए हों। ४ और जहां ये दोनों परदे जोड़े जाएं वहां की दोनों छोरों पर नीली नीली फलियां लगवाना। ५ दोनों छोरों में पचास पचास फलियां ऐसे लगवाना कि वे आम्हने-साम्हने हों। ६ और सोने के पचास अंकड़े बनवाना; और परदों के पंचों को अंकड़ों के द्वारा एक दूसरे से ऐसा जुड़वाना कि निवासस्थान मिलकर एक ही हो जाए। ७ फिर निवास के ऊपर तम्बू का काम देने के लिये बकरी के बाल के ग्यारह परदे बनवाना। ८ एक एक परदे की लम्बाई तीस हाथ और चौड़ाई चार हाथ की हो; ग्यारहों परदे एक ही नाप के हों। ९ और पांच परदे अलग और फिर छः परदे अलग जुड़वाना, और छटवें परदे को तम्बू के साम्हने मोड़ कर दुहरा कर देना। १० और तू पचास अंकड़े उस परदे की छोर में जो बाहर से मिलाया जाएगा और पचास ही अंकड़े दूसरी ओर के परदे की छोर में जो बाहर से मिलाया जाएगा बनवाना। ११ और पीतल के पचास अंकड़े बनाना, और अंकड़ों को फलियों में लगाकर तम्बू को ऐसा जुड़वाना कि वह मिलकर एक ही हो जाए। १२ और तम्बू के परदों का लटका हुआ भाग, अर्थात् जो आधा पट रहेगा, वह निवास की पिछली ओर लटका रहे। १३ और तम्बू के परदों की लम्बाई में से हाथ भर इधर, और हाथ भर उधर निवास के ढांकने के लिये उसकी दोनों अलंगों पर लटका हुआ रहे। १४ फिर तम्बू के लिये लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों की

खालों का एक ओढ़ना और उसके ऊपर सूइसों की खालों का भी एक ओढ़ना बनवाना ॥

१५ फिर निवास को खड़ा करने के लिये बबूल की लकड़ी के तख़्ते बनवाना। १६ एक एक तख़्ते की लम्बाई दस हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ की हो। १७ एक एक तख़्ते में एक दूसरे से जोड़ी हुई दो दो चूलें हों; निवास के सब तख़्तों को इसी भांति से बनवाना। १८ और निवास के लिये जो तख़्ते तू बनवाएगा उन में से बीस तख़्ते तो दक्खिन की ओर के लिये हों; १९ और बीसों तख़्तों के नीचे चांदी की चालीस कुर्सियां बनवाना, अर्थात् एक एक तख़्ते के नीचे उसके चूलों के लिये दो दो कुर्सियां। २० और निवास की दूसरी अलंग, अर्थात् उत्तर की ओर बीस तख़्ते बनवाना। २१ और उनके लिये चांदी की चालीस कुर्सियां बनवाना, अर्थात् एक एक तख़्ते के नीचे दो दो कुर्सियां हों। २२ और निवास की पिछली अलंग, अर्थात् पश्चिम की ओर के लिये छः तख़्ते बनवाना। २३ और पिछले अलंग में निवास के कोनों के लिये दो तख़्ते बनवाना; २४ और ये नीचे से दो दो भाग के हों, और दोनों भाग ऊपर के सिरे तक एक एक कड़े में मिलाये जाएं; दोनों तख़्तों का यही रूप हो; ये तो दोनों कोनों के लिये हों। २५ और आठ तख़्ते हों, और उनकी चांदी की सोलह कुर्सियां हों; अर्थात् एक एक तख़्ते के नीचे दो दो कुर्सियां हों। २६ फिर बबूल की लकड़ी के बेंड़े बनवाना, अर्थात् निवास की एक अलंग के तख़्तों के लिये पांच, २७ और निवास की दूसरी अलंग के तख़्तों के लिये पांच बेंड़े, और निवास की जो अलंग पश्चिम की ओर पिछले भाग में होगी, उसके लिये पांच बेंड़े बनवाना। २८ और बीचवाला बेंड़ा जो तख़्तों के मध्य में होगा वह तम्बू के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुंचे। २९ फिर तख़्तों को सोने से मढ़वाना, और उनके कड़े जो बेंड़ों के घरों का काम देंगे उन्हें भी सोने के बनवाना; और बेंड़ों को भी सोने से मढ़वाना। ३० और निवास को इस रीति खड़ा करना जैसा इस पर्वत पर तुझे दिखाया गया है ॥

३१ फिर नीले, बैंजनी और लाल रंग के और बटी हुई सूक्ष्म सनीवाले कपड़े का एक बीचवाला पर्दा बनवाना; वह कढ़ाई के काम किये हुए करूबों के साथ बने। ३२ और उसको सोने से मढ़े हुए बबूल के चार खम्भों पर लटकाना, इनकी अंकड़ियां सोने की हों, और ये चांदी की चार कुर्सियों पर खड़ी रहें। ३३ और बीचवाले पर्दे को अंकड़ियों के नीचे लटकाकर, उसकी आड़ में साक्षीपत्र का सन्दूक भीतर लिवा ले जाना; सो वह बीचवाला पर्दा तुम्हारे लिये पवित्रस्थान को परमपवित्रस्थान से अलग किये रहे। ३४ फिर परमपवित्र-स्थान में साक्षीपत्र के सन्दूक के ऊपर प्रायश्चित्त के ढकने को रखना। ३५ और उस पर्दे के बाहर निवास की उत्तर अलंग मेज़ रखना; और उसकी दक्खिन अलंग मेज़ के साम्हने दीवट को रखना। ३६ फिर तम्बू के द्वार के लिये नीले, बैंजनी और लाल रंग के और बटी हुई सूक्ष्म सनीवाले कपड़े का कढ़ाई का काम किया हुआ एक पर्दा बनवाना। ३७ और इस पर्दे के लिये बबूल के पांच खम्भे बनवाना, और उनको सोने से मढ़वाना; उनकी कंड़ियां सोने की हों, और उनके लिये पीतल की पांच कुर्सियां ढलवा कर बनवाना ॥

२७ फिर वेदी को बबूल की लकड़ी की, पांच हाथ लम्बी और पांच हाथ चौड़ी बनवाना; वेदी चौकोर हो, और उसकी ऊंचाई तीन हाथ की हो। २ और उसके चारों कोनों पर चार सींग बनवाना; वे उस समेत एक ही टुकड़े के हों, और उसे पीतल से मढ़वाना। ३ और उसकी राख उठाने के पात्र, और फावड़ियां, और कटोरे, और कांटे, और अंगीठियां बनवाना; उसका कुल सामान पीतल का बनवाना। ४ और उसके पीतल की जाली एक झंझरी बनवाना; और उसके चारों सिरों में पीतल के चार कड़े लगवाना। ५ और उस झंझरी को वेदी के चारों ओर की कंगनी के नीचे ऐसे लगवाना, कि वह वेदी की ऊंचाई के मध्य तक पहुंचे। ६ और वेदी के लिये बबूल की लकड़ी के डण्डे बनवाना, और उन्हें पीतल से मढ़वाना। ७ और डंडे कड़ों में डाले जाएं, कि जब जब वेदी उठाई जाए तब वे उसकी दोनों अलंगों पर रहें। ८ वेदी को तख़्तों से खोखली बनवाना; जैसी वह इस पर्वत पर तुझे दिखाई गई है वैसी ही बनाई जाए॥

९ फिर निवास के आंगन को बनवाना। उसकी दक्खिन अलंग के लिये तो बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े के सब पर्दों को मिलाए कि उसकी लम्बाई सौ हाथ की हो; एक अलंग पर तो इतना ही हो। १० और उनके बीस खम्भे बनें, और इनके लिये पीतल की बीस कुर्सियां बनें, और खम्भों के कुन्डे और उनकी पट्टियां चांदी की हों। ११ और उसी भांति आंगन की उत्तर अलंग की लम्बाई में भी सौ हाथ लम्बे पर्दे हों, और उनके भी बीस खम्भे और इनके लिये भी पीतल के बीस ख़ाने हों; और उन खम्भों के कुन्डे और पट्टियां चांदी की हों। १२ फिर आंगन की चौड़ाई में पच्छिम की ओर पचास हाथ के पर्दे हों, उनके खम्भे दस और ख़ाने भी दस हों। १३ और पूरब अलंग पर आंगन की चौड़ाई पचास हाथ की हो। १४ और आंगन के द्वार की एक ओर पन्द्रह हाथ के पर्दे हों, और उनके खम्भे तीन और ख़ाने तीन हों। १५ और दूसरी ओर भी पन्द्रह हाथ के पर्दे हों, उनके भी खम्भे तीन और ख़ाने तीन हों। १६ और आंगन के द्वार के लिये एक पर्दा बनवाना, जो नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े और बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े का कामदार बना हुआ बीस हाथ का हो, उसके खम्भे चार और ख़ाने भी चार हों। १७ आंगन की चारों ओर के सब खम्भे चांदी की पट्टियों से जुड़े हुए हों, उनके कुन्डे चांदी के और ख़ाने पीतल के हों। १८ आंगन की लम्बाई सौ हाथ की, और उसकी चौड़ाई बराबर पचास हाथ की, और उसकी कनात की ऊंचाई पांच हाथ की हो, उसकी कनात बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े की बने, और खम्भों के ख़ाने पीतल के हों। १९ निवास के भांति भांति के बर्तन और सब सामान और उसके सब खूंटे और आंगन के भी सब खूंटे पीतल ही के हों॥

२० फिर तू इस्राएलियों को आज्ञा देना, कि मेरे पास दीवट के लिये कूट के निकाला हुआ जलपाई का निर्मल तेल ले आना, जिस से दीपक नित्य जलता * रहे। २१ मिलाप के तम्बू में, उस बीचवाले पर्दे से बाहर जो साक्षीपत्र के आगे होगा, हारून और उसके पुत्र दीवट सांझ से भोर

* मूल में—चढ़ा।

तक यहोवा के साम्हने सजा कर रखें। यह विधि इस्राएलियों की पीढ़ियों के लिये सदैव बनी रहेगी॥

(याजकों के पवित्र वस्त्र बनाने और उनके संस्कार होने की आज्ञाएं)

२८ फिर तू इस्राएलियों में से अपने भाई हारून, और नादाब, अबीहू, एलिआज़ार और ईतामार नाम उसके पुत्रों को अपने समीप ले आना कि वे मेरे लिये याजक का काम करें। २ और तू अपने भाई हारून के लिये विभव और शोभा के निमित्त पवित्र वस्त्र बनवाना। ३ और जितनों के हृदय में बुद्धि है, जिनको मैं ने बुद्धि देनेवाली आत्मा से परिपूर्ण किया है, उनको तू हारून के वस्त्र बनाने की आज्ञा दे कि वह मेरे निमित्त याजक का काम करने के लिये पवित्र बनें। ४ और जो वस्त्र उन्हें बनाने होंगे वे ये हैं, अर्थात् सीनाबन्द, और एपोद, और जामा, चार-खाने का अंगरखा, पुरोहित का टोप, और कमरबन्द; ये ही पवित्र वस्त्र तेरे भाई हारून और उसके पुत्रों के लिये बनाए जाएं कि वे मेरे लिये याजक का काम करें। ५ और वे सोने और नीले और बैंजनी और लाल रंग का और सूक्ष्म सनी का कपड़ा लें॥

६ और वे एपोद को सोने, और नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े का और बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े का बनाएं, जो कि निपुण कढ़ाई के काम करनेवाले के हाथ का काम हो। ७ और वह इस तरह से जोड़ा जाए कि उसके दोनों कन्धों के सिरे आपस में मिले रहें। ८ और एपोद पर जो काढ़ा हुआ पटुका होगा उसकी बनावट उसी के समान हो, और वे दोनों बिना जोड़ के हों, और सोने और नीले, बैंजनी और लाल रंगवाले और बटी हुई सूक्ष्म सनीवाले कपड़े के हों। ९ फिर दो सुलैमानी मणि लेकर उन पर इस्राएल के पुत्रों के नाम खुदवाना, १० उनके नामों में से छः तो एक मणि पर, और शेष छः नाम दूसरे मणि पर, इस्राएल के पुत्रों की उत्पत्ति के अनुसार खुदवाना। ११ मणि खोदनेवाले के काम से जैसे छापा खोदा जाता है, वैसे ही उन दो मणियों पर इस्राएल के पुत्रों के नाम खुदवाना; और उनको सोने के ख़ानों में जड़वा देना। १२ और दोनों मणियों को एपोद के कन्धों पर लगवाना, वे इस्राएलियों के निमित्त स्मरण दिलवाने वाले मणि ठहरेंगे; अर्थात् हारून उनके नाम यहोवा के आगे अपने दोनों कन्धों पर स्मरण के लिये लगाए रहे॥

१३ फिर सोने के ख़ाने बनवाना, १४ और डोरियों की नाईं गूंथे हुए दो जंजीर चोखे सोने के बनवाना; और गूंथे हुए जंजीरों को उन ख़ानों में जड़वाना। १५ फिर न्याय की चपरास को भी कढ़ाई के काम का बनवाना; एपोद की नाईं सोने, और नीले, बैंजनी और लाल रंग के और बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े की उसे बनवाना। १६ वह चौकोर और दोहरी हो, और उसकी लम्बाई और चौड़ाई एक एक बित्ते की हों। १७ और उस में चार पांति मणि जड़ाना। पहिली पांति में तो माणिक्य, पद्मराग और लालड़ी हों; १८ दूसरी पांति में मरकत, नीलमणि और हीरा; १९ तीसरी पांति में लशम, सूर्यकांत और नीलम; २० और चौथी पांति में फीरोज़ा, सुलैमानी मणि और यशब हों; ये सब सोने के ख़ानों में जड़े जाएं। २१ और इस्राएल के पुत्रों के जितने नाम

हैं उतने मणि हों, अर्थात् उनके नामों की गिनती के अनुसार बारह नाम खुदें, बारहों गोत्रों में से एक एक का नाम एक एक मणि पर ऐसे खुदे जैसे छापा खोदा जाता है। २२ फिर चपरास पर डोरियों की नाईं गूंथे हुए चोखे सोने की जंजीर लगवाना; २३ और चपरास में सोने की दो कड़ियां लगवाना, और दोनों कड़ियों को चपरास के दोनों सिरों पर लगवाना। २४ और सोने के दोनों गूंथे जंजीरों को उन दोनों कड़ियों में जो चपरास के सिरों पर होंगी लगवाना; २५ और गूंथे हुए दोनों जंजीरों के दोनों बाकी सिरों को दोनों खानों में जड़वा के एपोद के दोनों कन्धों के बंधनों पर उसके साम्हने लगवाना। २६ फिर सोने की दो और कड़ियां बनवाकर चपरास के दोनों सिरों पर, उसकी उस कोर पर जो एपोद की भीतर की ओर होगी लगवाना। २७ फिर उनके सिवाय सोने की दो और कड़ियां बनवाकर एपोद के दोनों कन्धों के बंधनों पर, नीचे से उसके साम्हने और उसके जोड़ के पास एपोद के काढ़े हुए पटुके के ऊपर लगवाना। २८ और चपरास अपनी कड़ियों के द्वारा एपोद की कड़ियों में नीले फीते से बांधी जाए, इस रीति वह एपोद के काढ़े हुए पटुके पर बनी रहे, और चपरास एपोद पर से अलग न होने पाए। २९ और जब जब हारून पवित्रस्थान में प्रवेश करे, तब तब वह न्याय की चपरास पर अपने हृदय के ऊपर इस्राएलियों के नामों को लगाए रहे, जिस से यहोवा के साम्हने उनका स्मरण नित्य रहे। ३० और तू न्याय की चपरास में ऊरीम * और तुम्मीम † को रखना, और जब जब हारून यहोवा के साम्हने प्रवेश करे, तब तब वे उसके हृदय के ऊपर हों; इस प्रकार हारून इस्राएलियों के न्याय पदार्थ को अपने हृदय के ऊपर यहोवा के साम्हने नित्य लगाए रहे॥

३१ फिर एपोद के बागे को सम्पूर्ण नीले रंग का बनवाना। ३२ और उसकी बनावट ऐसी हो कि उसके बीच में सिर डालने के लिये छेद हो, और उस छेद की चारों ओर बखतर के छेद की सी एक बुनी हुई कोर हो, कि वह फटने न पाए। ३३ और उसके नीचेवाले घेरे में चारों ओर नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े के अनार बनवाना, और उनके बीच बीच चारों ओर सोने की घंटियां लगवाना, ३४ अर्थात् एक सोने की घंटी और एक अनार, फिर एक सोने की घंटी और एक अनार, इसी रीति बागे के नीचेवाले घेरे में चारों ओर ऐसा ही हो। ३५ और हारून उस बागे को सेवा टहल करने के समय पहिना करे, कि जब जब वह पवित्रस्थान के भीतर यहोवा के साम्हने जाए, वा बाहर निकले, तब तब उसका शब्द सुनाई दे, नहीं तो वह मर जाएगा॥

३६ फिर चोखे सोने का एक टीका बनवाना, और जैसे छापे में वैसे ही उस में ये अक्षर खोदे जाएं, अर्थात् यहोवा के लिये पवित्र। ३७ और उसे नीले फीते से बांधना; और वह पगड़ी के साम्हने के हिस्से पर रहे। ३८ और वह हारून के माथे पर रहे, इसलिये कि इस्राएली जो कुछ पवित्र ठहराएं, अर्थात् जितनी पवित्र वस्तुएं भेंट में चढ़ावें उन पवित्र वस्तुओं का दोष हारून उठाए रहे, और वह नित्य उसके माथे पर रहे, जिस से यहोवा उन से प्रसन्न रहे॥

३९ और अंगरखे को सूक्ष्म सनी के कपड़े का चारखाना बुनवाना, और एक

* अर्थात् ज्योतियां।
† अर्थात् पूर्णताएं।

पगड़ी भी सूक्ष्म सनी के कपड़े की बनवाना, और कारचोबी काम किया हुआ एक कमरबन्द भी बनवाना ॥

४० फिर हारून के पुत्रों के लिये भी अंगरखे और कमरबन्द और टोपियां बनवाना; ये वस्त्र भी विभव और शोभा के लिये बनें। ४१ अपने भाई हारून और उसके पुत्रों को ये ही सब वस्त्र पहिनाकर उनका अभिषेक और संस्कार* करना, और उन्हें पवित्र करना, कि वे मेरे लिये याजक का काम करें। ४२ और उनके लिये सनी के कपड़े की जांघिया बनवाना जिन से उनका तन ढपा रहे; वे कमर से जांघ तक की हों; ४३ और जब जब हारून वा उसके पुत्र मिलापवाले तम्बू में प्रवेश करें, वा पवित्र स्थान में सेवा टहल करने को वेदी के पास जाएं तब तब वे उन जांघियों को पहिने रहें, न हो कि वे पापी ठहरें और मर जाएं। यह हारून के लिये और उसके बाद उसके वंश के लिये भी सदा की विधि ठहरें ॥

२९ और उन्हें पवित्र करने को जो काम तुझे उन से करना है, कि वे मेरे लिये याजक का काम करें वह यह है। एक निर्दोष बछड़ा और दो निर्दोष मेढ़े लेना, २ और अख़मीरी रोटी, और तेल से सने हुए मैदे के अख़मीरी फुलके, और तेल से चुपड़ी हुई अख़मीरी पपड़ियां भी लेना। ये सब गेहूं के मैदे के बनवाना। ३ इनको एक टोकरी में रखकर उस टोकरी को उस बछड़े और उन दोनों मेढ़ों समेत समीप ले आना। ४ फिर हारून और उसके पुत्रों को मिलापवाले तम्बू के द्वार के समीप ले आकर जल से नहलाना। ५ तब उन वस्त्रों को लेकर हारून को अंगरखा और एपोद का बागा पहिनाना, और एपोद और चपरास बान्धना, और एपोद का काढ़ा हुआ पटुका भी बान्धना; ६ और उसके सिर पर पगड़ी को रखना, और पगड़ी पर पवित्र मुकुट को रखना। ७ तब अभिषेक का तेल ले उसके सिर पर डालकर उसका अभिषेक करना। ८ फिर उसके पुत्रों को समीप ले आकर उनको अंगरखे पहिनाना, ९ और उनके अर्थात् हारून और उसके पुत्रों के कमर बान्धना और उनके सिर पर टोपियां रखना; जिस से याजक के पद पर सदा उनका हक रहे। इसी प्रकार हारून और उसके पुत्रों का संस्कार करना। १० और बछड़े को मिलापवाले तम्बू के साम्हने समीप ले आना। और हारून और उसके पुत्र बछड़े के सिर पर अपने अपने हाथ रखें, ११ तब उस बछड़े को यहोवा के सम्मुख मिलापवाले तम्बू के द्वार पर बलिदान करना, १२ और बछड़े के लोहू में से कुछ लेकर अपनी उंगली से वेदी के सींगों पर लगाना, और शेष सब लोहू को वेदी के पाए पर उंडेल देना। १३ और जिस चरबी से अंतड़ियां ढपी रहती हैं, और जो झिल्ली कलेजे के ऊपर होती है, उनको और दोनों गुर्दों को उनके ऊपर की चरबी समेत लेकर सब को वेदी पर जलाना। १४ और बछड़े का मांस, और खाल, और गोबर, छावनी से बाहर आग में जला देना; क्योंकि यह पापबलि होगा। १५ फिर एक मेढ़ा लेना, और हारून और उसके पुत्र उसके सिर पर अपने अपने हाथ रखें, १६ तब उस मेढ़े को बलि करना, और उसका लोहू लेकर

---

* यहां, और जहां कहीं याजकों के संस्कार वा याजकों के संस्कार की चर्चा हो वहां जानो, कि मूल का शब्दार्थ हाथ भर देना वा भर लेना है।

वेदी पर चारों ओर छिड़कना। १७ और उस मेढ़े को टुकड़े टुकड़े काटना, और उसकी अंतड़ियों और पैरों को धोकर उसके टुकड़ों और सिर के ऊपर रखना, १८ तब उस पूरे मेढ़े को वेदी पर जलाना; वह तो यहोवा के लिये होमबलि होगा; वह सुखदायक सुगन्ध और यहोवा के लिये हवन * होगा। १९ फिर दूसरे मेढ़े को लेना; और हारून और उसके पुत्र उसके सिर पर अपने अपने हाथ रखें, २० तब उस मेढ़े को बलि करना, और उसके लोहू में से कुछ लेकर हारून और उसके पुत्रों के दहिने कान के सिरे पर, और उनके दहिने हाथ और दहिने पांव के अंगूठों पर लगाना, और लोहू को वेदी पर चारों ओर छिड़क देना। २१ फिर वेदी पर के लोहू, और अभिषेक के तेल, इन दोनों में से कुछ कुछ लेकर हारून और उसके वस्त्रों पर, और उसके पुत्रों और उनके वस्त्रों पर भी छिड़क देना; तब वह अपने वस्त्रों समेत, और उसके पुत्र भी अपने अपने वस्त्रों समेत पवित्र हो जाएंगे। २२ तब मेढ़े को संस्कारवाला जानकर उस में से चरबी और मोटी पूंछ को, और जिस चरबी से अंतड़ियां ढपी रहती हैं उसको, और कलेजे पर की झिल्ली को, और चरबी समेत दोनों गुर्दों को, और दहिने पुट्ठे को लेना, २३ और अख़मीरी रोटी की टोकरी जो यहोवा के आगे धरी होगी उस में से भी एक रोटी, और तेल से सने हुए मैदे का एक फुलका, और एक पपड़ी लेकर, २४ इन सब को हारून और उसके पुत्रों के हाथों में रखकर हिलाए जाने की भेंट ठहराके यहोवा के आगे हिलाया जाए। २५ तब उन वस्तुओं को उनके हाथों से लेकर होमबलि की वेदी पर जला देना, जिस से वह यहोवा के साम्हने सुखदायक सुगन्ध ठहरे; वह तो यहोवा के लिये हवन होगा। २६ फिर हारून के संस्कार का जो मेढ़ा होगा उसकी छाती को लेकर हिलाए जाने की भेंट के लिये यहोवा के आगे हिलाना; और वह तेरा भाग ठहरेगा। २७ और हारून और उसके पुत्रों के संस्कार का जो मेढ़ा होगा, उस में से हिलाए जाने की भेंटवाली छाती जो हिलाई जाएगी, और उठाए जाने का भेंटवाला पुट्ठा जो उठाया जाएगा, इन दोनों को पवित्र ठहराना। २८ और ये सदा की विधि की रीति पर इस्राएलियों की ओर से उसका और उसके पुत्रों का भाग ठहरे, क्योंकि ये उठाए जाने की भेंटें ठहरी हैं; और यह इस्राएलियों की ओर से उनके मेलबलियों में से यहोवा के लिये उठाए जाने की भेंट होगी। २९ और हारून के जो पवित्र वस्त्र होंगे वह उसके बाद उसके बेटे पोते आदि को मिलते रहें, जिस से उन्हीं को पहिने हुए उनका अभिषेक और संस्कार किया जाए। ३० उसके पुत्रों में से जो उसके स्थान पर याजक होगा, वह जब पवित्रस्थान में सेवा टहल करने को मिलाप वाले तम्बू में पहिले आए, तब उन वस्त्रों को सात दिन तक पहिने रहे। ३१ फिर याजक के संस्कार का जो मेढ़ा होगा उसे लेकर उसका मांस किसी पवित्र स्थान में पकाना; ३२ तब हारून अपने पुत्रों समेत उस मेढे का मांस और टोकरी की रोटी, दोनों को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर खाए। ३३ और जिन पदार्थों से उनका संस्कार और उन्हें पवित्र करने के लिये प्रायश्चित्त किया जाएगा उनको तो वे खाएं, परन्तु पराए कुल का कोई उन्हें न खाने पाए, क्योंकि वे पवित्र

* अर्थात् जो वस्तु अग्नि में छोड़के चढ़ाई जाए।

होंगे। ३४ और यदि संस्कारवाले मांस वा रोटी में से कुछ बिहान तक बचा रहे, तो उस बचे हुए को आग में जलाना, वह खाया न जाए; क्योंकि वह पवित्र होगा। ३५ और मैं ने तुझे जो जो आज्ञा दी हैं, उन सभों के अनुसार तू हारून और उसके पुत्रों से करना; और सात दिन तक उनका संस्कार करते रहना, ३६ अर्थात् पापबलि का एक बछड़ा प्रायश्चित्त के लिये प्रतिदिन चढ़ाना। और वेदी को भी प्रायश्चित्त करने के समय शुद्ध करना, और उसे पवित्र करने के लिये उसका अभिषेक करना। ३७ सात दिन तक वेदी के लिये प्रायश्चित्त करके उसे पवित्र करना, और वेदी परमपवित्र ठहरेगी; और जो कुछ उस से छू जाएगा वह भी पवित्र हो जाएगा॥

३८ जो तुझे वेदी पर नित्य चढ़ाना होगा वह यह है; अर्थात् प्रतिदिन एक एक वर्ष के दो भेड़ी के बच्चे। ३९ एक भेड़ के बच्चे को तो भोर के समय, और दूसरे भेड़ के बच्चे को गोधूलि के समय चढ़ाना। ४० और एक भेड़ के बच्चे के संग हीन की चौथाई कूटके निकाले हुए तेल से सना हुआ एपा का दसवां भाग मैदा, और अर्घ के लिये हीन की चौथाई दाखमधु देना। ४१ और दूसरे भेड़ के बच्चे को गोधूलि के समय चढ़ाना, और उसके साथ भोर की रीति अनुसार अन्नबलि और अर्घ दोनों देना, जिस से वह सुखदायक सुगन्ध और यहोवा के लिये हवन ठहरे। ४२ तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में यहोवा के आगे मिलापवाले तम्बू के द्वार पर नित्य ऐसा ही होमबलि हुआ करे; यह वह स्थान है जिस में मैं तुम लोगों से इसलिये मिला करूंगा, कि तुझ से बातें करूं। ४३ और मैं इस्राएलियों से वहीं मिला करूंगा, और वह तम्बू मेरे तेज से पवित्र किया जाएगा। ४४ और मैं मिलापवाले तम्बू और वेदी को पवित्र करूंगा, और हारून और उसके पुत्रों को भी पवित्र करूंगा, कि वे मेरे लिये याजक का काम करें। ४५ और मैं इस्राएलियों के मध्य निवास करूंगा, और उनका परमेश्वर ठहरूंगा। ४६ तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा उनका परमेश्वर हूं, जो उनको मिस्र देश से इसलिये निकाल ले आया, कि उनके मध्य निवास करूं; मैं ही उनका परमेश्वर यहोवा हूं॥

(भांति भांति की पवित्र वस्तुएं बनाने और भांति भांति की रीति चलाने की आज्ञाएं)

३० फिर धूप जलाने के लिये बबूल की लकड़ी की वेदी बनाना। २ उसकी लम्बाई एक हाथ और चौड़ाई एक हाथ की हो, वह चौकोर हो, और उसकी ऊंचाई दो हाथ की हो, और उसके सींग उसी टुकड़े से बनाए जाएं। ३ और वेदी के ऊपरवाले पल्ले और चारों ओर की अलंगों और सींगों को चोखे सोने से मढ़ना, और इसकी चारों ओर सोने की एक बाड़ बनाना। ४ और इसकी बाड़ के नीचे इसके दोनों पल्ले पर सोने के दो दो कड़े बनाकर इसके दोनों ओर लगाना, वे इसके उठाने के डण्डों के खानों का काम देंगे। ५ और डण्डों को बबूल की लकड़ी के बनाकर उनको सोने से मढ़ना। ६ और तू उसको उस पर्दे के आगे रखना जो साक्षीपत्र के सन्दूक के साम्हने है, अर्थात् प्रायश्चित्तवाले ढकने के आगे जो साक्षीपत्र के ऊपर है, वहीं मैं तुझ से मिला करूंगा। ७ और उसी वेदी पर हारून सुगन्धित धूप जलाया करे; प्रतिदिन भोर को जब वह दीपक को ठीक करे तब वह धूप को जलाए, ८ तब गोधूलि के समय जब हारून दीपकों को

जलाए * तब धूप जलाया करे, यह धूप यहोवा के साम्हने तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में नित्य जलाया जाए। ९ और उस वेदी पर तुम और प्रकार का धूप न जलाना, और न उस पर होमबलि और न अन्नबलि चढ़ाना; और न इस पर अर्घ देना। १० और हारून वर्ष में एक बार इसके सींगों पर प्रायश्चित्त करे; और तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में वर्ष में एक बार प्रायश्चित्त के पापबलि के लोहू से इस पर प्रायश्चित्त किया जाए; यह यहोवा के लिये परमपवित्र है॥

११ और तब यहोवा ने मूसा से कहा, १२ जब तू इस्राएलियों की गिनती लेने लगे, तब वे गिनने के समय जिनकी गिनती हुई हो अपने अपने प्राणों के लिये यहोवा को प्रायश्चित्त दें, जिस से जब तू उनकी गिनती कर रहा हो उस समय कोई विपत्ति उन पर न आ पड़े। १३ जितने लोग गिने जाएं † वे पवित्रस्थान के शेकेल के लिये आधा शेकेल दें, यह शेकेल बीस गेरा का होता है, यहोवा की भेंट आधा शेकेल हो। १४ बीस वर्ष के वा उस से अधिक अवस्था के जितने गिने जाएं † उन में से एक एक जन यहोवा की भेंट दे। १५ जब तुम्हारे प्राणों के प्रायश्चित्त के निमित्त यहोवा की भेंट दी जाए, तब न तो धनी लोग आधे शेकेल से अधिक दें, और न कंगाल लोग उस से कम दें। १६ और तू इस्राएलियों से प्रायश्चित्त का रुपया लेकर मिलापवाले तम्बू के काम में लगाना; जिस से वह यहोवा के सम्मुख इस्राएलियों के स्मरणार्थ चिन्ह ठहरे, और उनके प्राणों का प्रायश्चित्त भी हो॥

१७ और यहोवा ने मूसा से कहा, १८ धोने के लिये पीतल की एक हौदी और उसका पाया पीतल का बनाना। और उसे मिलापवाले तम्बू और वेदी के बीच में रखकर उस में जल भर देना; १९ और उस में हारून और उसके पुत्र अपने अपने हाथ पांव धोया करें। २० जब जब वे मिलापवाले तम्बू में प्रवेश करें तब तब वे हाथ पांव जल से धोएं, नहीं तो मर जाएंगे; और जब जब वे वेदी के पास सेवा टहल करने, अर्थात् यहोवा के लिये हव्य जलाने को आएं तब तब वे हाथ पांव धोएं, न हो कि मर जाएं। २१ यह हारून और उसके पीढ़ी पीढ़ी के वंश के लिये सदा की विधि ठहरे॥

२२ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २३ तू मुख्य मुख्य सुगन्ध द्रव्य, अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार पांच सौ शेकेल अपने आप निकला हुआ गन्धरस, और उसका आधा, अर्थात् अढ़ाई सौ शेकेल सुगन्धित दालचीनी, और अढ़ाई सौ शेकेल सुगन्धित अगर, २४ और पांच सौ शेकेल तज, और एक हीन जलपाई का तेल लेकर २५ उन से अभिषेक का पवित्र तेल, अर्थात् गन्धी की रीति से तैयार किया हुआ सुगन्धित तेल बनवाना; यह अभिषेक का पवित्र तेल ठहरे। २६ और उस से मिलापवाले तम्बू का, और साक्षीपत्र के सन्दूक का, २७ और सारे सामान समेत मेज़ का, और सामान समेत दीवट का, और धूपवेदी का, २८ और सारे सामान समेत होमवेदी का, और पाए समेत हौदी का अभिषेक करना। २९ और उनको पवित्र करना, जिस से वे परमपवित्र ठहरें; और जो कुछ उन से छू जाएगा वह पवित्र हो जाएगा। ३० फिर हारून का उसके पुत्रों के साथ अभिषेक करना, और इस प्रकार उन्हें मेरे लिये याजक का काम करने के लिये पवित्र करना। ३१ और

* मूल में—चढ़ाएगा।
† मूल में—गिने हुओं के पास पार जाएं।

इस्राएलियों को मेरी यह आज्ञा सुनाना, कि वह तेल तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में मेरे लिये पवित्र अभिषेक का तेल होगा। ३२ वह किसी मनुष्य की देह पर न डाला जाए, और मिलावट में उसके समान और कुछ न बनाना; वह तो पवित्र होगा, वह तुम्हारे लिये पवित्र होगा। ३३ जो कोई उसके समान कुछ बनाए, वा जो कोई उस में से कुछ पराए कुलवाले पर लगाए, वह अपने लोगों में से नाश किया जाए॥

३४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, बोल, नखी और कुन्दरू, ये सुगन्ध द्रव्य निर्मल लोबान समेत ले लेना, ये सब एक तौल के हों, ३५ और इनका धूप अर्थात् लोन मिलाकर गन्धी की रीति के अनुसार चोखा और पवित्र सुगन्ध द्रव्य बनवाना; ३६ फिर उस में से कुछ पीसकर बुकनी कर डालना, तब उस में से कुछ मिलापवाले तम्बू में साक्षीपत्र के आगे, जहां पर मैं तुझ से मिला करूंगा वहां रखना; वह तुम्हारे लिये परमपवित्र होगा। ३७ और जो धूप तू बनवाएगा, मिलावट में उसके समान तुम लोग अपने लिये और कुछ न बनवाना; वह तुम्हारे आगे यहोवा के लिये पवित्र होगा। ३८ जो कोई सूंघने के लिये उसके समान कुछ बनाए वह अपने लोगों में से नाश किया जाए॥

३१ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ सुन, मैं ऊरी के पुत्र बसलेल को, जो हूर का पोता और यहूदा के गोत्र का है, नाम लेकर बुलाता हूं। ३ और मैं उसको परमेश्वर की आत्मा से जो बुद्धि, प्रवीणता, ज्ञान, और सब प्रकार के कार्यों की समझ देनेवाली आत्मा है परिपूर्ण करता हूं, ४ जिस से वह कारीगरी के कार्य बुद्धि से निकाल निकालकर सब भांति की बनावट में, अर्थात् सोने, चांदी, और पीतल में, ५ और जड़ने के लिये मणि काटने में, और लकड़ी के खोदने में काम करे। ६ और सुन, मैं दान के गोत्रवाले अहीसामाक के पुत्र ओहोलीआब को उसके संग कर देता हूं; वरन जितने बुद्धिमान हैं उन सभों के हृदय में मैं बुद्धि देता हूं, जिस से जितनी वस्तुओं की आज्ञा मैं ने तुझे दी है उन सभों को वे बनाएं; ७ अर्थात् मिलापवाला तम्बू, और साक्षीपत्र का सन्दूक, और उस पर का प्रायश्चित्तवाला ढकना, और तम्बू का सारा सामान, ८ और सामान सहित मेज़, और सारे सामान समेत चोखे सोने की दीवट, और धूपवेदी, ९ और सारे सामान सहित होमवेदी, और पाए समेत हौदी, १० और काढ़े हुए वस्त्र, और हारून याजक के याजकवाले काम के पवित्र वस्त्र, और उसके पुत्रों के वस्त्र, ११ और अभिषेक का तेल, और पवित्र-स्थान के लिये सुगन्धित धूप, इन सभों को वे उन सब आज्ञाओं के अनुसार बनाएं जो मैं ने तुझे दी हैं॥

१२ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १३ तू इस्राएलियों से यह भी कहना, कि निश्चय तुम मेरे विश्रामदिनों को मानना, क्योंकि तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में मेरे और तुम लोगों के बीच यह एक चिन्ह ठहरा है, जिस से तुम यह बात जान रखो कि यहोवा हमारा पवित्र करनेहारा है। १४ इस कारण तुम विश्रामदिन को मानना, क्योंकि वह तुम्हारे लिये पवित्र ठहरा है; जो उसको अपवित्र करे वह निश्चय मार डाला जाए; जो कोई उस दिन में कुछ कामकाज करे वह प्राणी अपने लोगों के बीच से नाश किया जाए। १५ छः दिन तो काम काज किया जाए, पर सातवां दिन परमविश्राम का दिन और

यहोवा के लिये पवित्र है; इसलिये जो कोई विश्राम के दिन में कुछ काम काज करे वह निश्चय मार डाला जाए। १६ सो इस्राएली विश्रामदिन को माना करें, वरन पीढ़ी पीढ़ी में उसको सदा की वाचा का विषय जानकर माना करें। १७ वह मेरे और इस्राएलियों के बीच सदा एक चिन्ह रहेगा, क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी को बनाया, और सातवें दिन विश्राम करके अपना जी ठण्डा किया।।

१८ जब परमेश्वर मूसा से सीनै पर्वत पर ऐसी बातें कर चुका, तब उस ने उसको अपनी उंगली से लिखी हुई साक्षी देनेवाली पत्थर की दोनों तख्तियां दीं।।

(इस्राएलियों के मूर्तिपूजा में फंसने का वर्णन)

३२ जब लोगों ने देखा कि मूसा को पर्वत से उतरने में विलम्ब हो रहा है, तब वे हारून के पास इकट्ठे होकर कहने लगे, अब हमारे लिये देवता बना, जो हमारे आगे आगे चले; क्योंकि उस पुरुष मूसा को जो हमें मिस्र देश से निकाल ले आया है, हम नहीं जानते कि उसे क्या हुआ? २ हारून ने उन से कहा, तुम्हारी स्त्रियों और बेटे बेटियों के कानों में सोने की जो बालियां हैं उन्हें तोड़कर उतारो, और मेरे पास ले आओ। ३ तब सब लोगों ने उनके कानों से सोने की बालियों को तोड़कर उतारा, और हारून के पास ले आए। ४ और हारून ने उन्हें उनके हाथ से लिया, और एक बछड़ा ढालकर बनाया, और टांकी से गढ़ा; तब वे कहने लगे, कि हे इस्राएल तेरा परमेश्वर जो तुझे मिस्र देश से छुड़ा लाया है वह यही है। ५ यह देखके हारून ने उसके आगे एक वेदी बनवाई; और यह प्रचार किया, कि कल यहोवा के लिये पर्ब्ब होगा। ६ और दूसरे दिन लोगों ने तड़के उठकर होमबलि चढ़ाए, और मेलबलि ले आए; फिर बैठकर खाया पिया, और उठकर खेलने लगे।।

७ तब यहोवा ने मूसा से कहा, नीचे उतर जा, क्योंकि तेरी प्रजा के लोग, जिन्हें तू मिस्र देश से निकाल ले आया है, सो बिगड़ गए हैं; ८ और जिस मार्ग पर चलने की आज्ञा मैं ने उनको दी थी उसको झटपट छोड़कर उन्हों ने एक बछड़ा ढालकर बना लिया, फिर उसको दण्डवत् किया, और उसके लिये बलिदान भी चढ़ाया, और यह कहा है, कि हे इस्राएलियो तुम्हारा परमेश्वर जो तुम्हें मिस्र देश से छुड़ा ले आया है वह यही है। ९ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, मैं ने इन लोगों को देखा, और सुन, वे हठीले हैं*। १० अब मुझे मत रोक, मेरा कोप उन पर भड़क उठा है जिस से मैं उन्हें भस्म करूं; परन्तु तुझ से एक बड़ी जाति उपजाऊंगा। ११ तब मूसा अपने परमेश्वर यहोवा को यह कहके मनाने लगा, कि हे यहोवा, तेरा कोप अपनी प्रजा पर क्यों भड़का है, जिसे तू बड़े सामर्थ्य और बलवन्त हाथ के द्वारा मिस्र देश से निकाल लाया है? १२ मिस्री लोग यह क्यों कहने पाएं, कि वह उनको बुरे अभिप्राय से, अर्थात् पहाड़ों में घात करके धरती पर से मिटा डालने की मनसा से निकाल ले गया? तू अपने भड़के हुए कोप को शांत कर, और अपनी प्रजा को ऐसी हानि पहुंचाने से फिर जा। १३ अपने दास इब्राहीम, इसहाक, और याक़ूब को स्मरण कर, जिन से तू ने अपनी ही किरिया खाकर यह कहा था, कि मैं तुम्हारे वंश को आकाश के तारों के तुल्य बहुत करूंगा, और

* मूल में—कड़ी गर्दन वाले।

यह सारा देश जिसकी मैं ने चर्चा की है तुम्हारे वंश को दूंगा, कि वह उसके अधिकारी सदैव बने रहें। १४ तब यहोवा अपनी प्रजा की हानि करने से जो उस ने कहा था पछताया ।।

१५ तब मूसा फिरकर साक्षी की दोनों तख्तियों को हाथ में लिये हुए पहाड़ से उतर गया, उन तख्तियों के तो इधर और उधर दोनों अलंगों पर कुछ लिखा हुआ था। १६ और वे तख्तियां परमेश्वर की बनाई हुई थीं, और उन पर जो खोदकर लिखा हुआ था वह परमेश्वर का लिखा हुआ था ।।

१७ जब यहोशू को लोगों के कोलाहल का शब्द सुनाई पड़ा, तब उस ने मूसा से कहा, छावनी से लड़ाई का सा शब्द सुनाई देता है। १८ उस ने कहा, वह जो शब्द है वह न तो जीतनेवालों का है, और न हारनेवालों का, मुझे तो गाने का शब्द सुन पड़ता है। १९ छावनी के पास आते ही मूसा को वह बछड़ा और नाचना देख पड़ा, तब मूसा का कोप भड़क उठा, और उस ने तख्तियों को अपने हाथों से पर्वत के नीचे पटककर तोड़ डाला। २० तब उस ने उनके बनाए हुए बछड़े को लेकर आग में डालके फूंक दिया। और पीसकर चूर चूरकर डाला, और जल के ऊपर फेंक दिया, और इस्राएलियों को उसे पिलवा दिया। २१ तब मूसा हारून से कहने लगा, उन लोगों ने तुझ से क्या किया कि तू ने उनको इतने बड़े पाप में फंसाया? २२ हारून ने उत्तर दिया, मेरे प्रभु का कोप न भड़के; तू तो उन लोगों को जानता ही है, कि वे बुराई में मन लगाए रहते हैं। २३ और उन्हों ने मुझ से कहा, कि हमारे लिये देवता बनवा जो हमारे आगे आगे चले; क्योंकि उस पुरुष मूसा को, जो हमें मिस्र देश से छुड़ा लाया है, हम नहीं जानते कि उसे क्या हुआ? २४ तब मैं ने उन से कहा, जिस जिसके पास सोने के गहने हों, वे उनको तोड़कर उतार लाएं; और जब उन्हों ने मुझ को दिया, मैं ने उन्हें आग में डाल दिया, तब यह बछड़ा निकल पड़ा। २५ हारून ने उन लोगों को ऐसा निरंकुश कर दिया था कि वे अपने विरोधियों के बीच उपहास* के योग्य हुए, २६ उनको निरंकुश देखकर मूसा ने छावनी के निकास पर खड़े होकर कहा, जो कोई यहोवा की ओर का हो वह मेरे पास आए; तब सारे लेवीय उस के पास इकट्ठे हुए। २७ उस ने उन से कहा, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि अपनी अपनी जांघ पर तलवार लटकाकर छावनी से एक निकास से दूसरे निकास तक घूम घूमकर अपने अपने भाइयों, संगियों, और पड़ोसियों को घात करो। २८ मूसा के इस वचन के अनुसार लेवियों ने किया; और उस दिन तीन हज़ार के अटकल लोग मारे गए। २९ फिर मूसा ने कहा, आज के दिन यहोवा के लिये अपना याजकपद का संस्कार करो†, वरन अपने अपने बेटों और भाइयों के भी विरुद्ध होकर ऐसा करो जिस से वह आज तुम को आशीष दे। ३० दूसरे दिन मूसा ने लोगों से कहा, तुम ने बड़ा ही पाप किया है। अब मैं यहोवा के पास चढ़ जाऊंगा; सम्भव है कि मैं तुम्हारे पाप का प्रायश्चित्त कर सकूं। ३१ तब मूसा यहोवा के पास जाकर कहने लगा, कि हाय, हाय, उन लोगों ने सोने का देवता बनवाकर बड़ा ही पाप किया है। ३२ तौभी अब तू उनका पाप क्षमा कर— नहीं तो अपनी लिखी हुई पुस्तक में से मेरे नाम को काट

* मूल में—फुसफुसाहट।

† मूल में—अपना हाथ भरो।

दे*। ३३ यहोवा ने मूसा से कहा, जिस ने मेरे विरुद्ध पाप किया है उसी का नाम मैं अपनी पुस्तक में से काट दूंगा। ३४ अब तो तू जाकर उन लोगों को उस स्थान में ले चल जिसकी चर्चा मैं ने तुझ से की थी; देख, मेरा दूत तेरे आगे आगे चलेगा। परन्तु जिस दिन मैं दण्ड देने लगूंगा उस दिन उनको इस पाप का भी दण्ड दूंगा। ३५ और यहोवा ने उन लोगों पर विपत्ति डाली, क्योंकि हारून के बनाए हुए बछड़े को उन्हीं ने बनवाया था॥

३३ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, तू उन लोगों को जिन्हें मिस्र देश से छुड़ा लाया है संग लेकर उस देश को जा, जिसके विषय में मैं ने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब से शपथ खाकर कहा था, कि मैं उसे तुम्हारे वंश को दूंगा। २ और मैं तेरे आगे आगे एक दूत को भेजूंगा, और कनानी, एमोरी, हित्ती, परिज्जी, हिव्वी, और यबूसी लोगों को बरबस निकाल दूंगा। ३ तुम लोग उस देश को जाओ जिस में दूध और मधु की धारा बहती है; परन्तु तुम हठीले हो, इस कारण मैं तुम्हारे बीच में होके न चलूंगा, ऐसा न हो कि मैं मार्ग में तुम्हारा अन्त कर डालूं। ४ यह बुरा समाचार सुनकर वे लोग विलाप करने लगे; और कोई अपने गहने पहिने हुए न रहा। ५ क्योंकि यहोवा ने मूसा से कह दिया था, कि इस्राएलियों को मेरा यह वचन सुना, कि तुम लोग तो हठीले हो; जो मैं पल भर के लिये तुम्हारे बीच होकर चलूं, तो तुम्हारा अन्त कर डालूंगा। इसलिये अब अपने अपने गहने अपने अंगों से उतार दो, कि मैं जानूं कि तुम्हारे साथ क्या करना चाहिए। ६ तब इस्राएली होरेब पर्वत से लेकर आगे को अपने गहने उतारे रहे॥

(मूसा के इस्राएलियों के लिये पापमोचन मांगने का वर्णन)

७ मूसा तम्बू को छावनी से बाहर वरन दूर खड़ा कराया करता था, और उसको मिलापवाला तम्बू कहता था। और जो कोई यहोवा को ढूंढ़ता वह उस मिलापवाले तम्बू के पास जो छावनी के बाहर था निकल जाता था। ८ और जब जब मूसा तम्बू के पास जाता, तब तब सब लोग उठकर अपने अपने डेरे के द्वार पर खड़े हो जाते, और जब तक मूसा उस तम्बू में प्रवेश न करता था तब तक उसकी ओर ताकते रहते थे। ९ और जब मूसा उस तम्बू में प्रवेश करता था, तब बादल का खम्भा उतर के तम्बू के द्वार पर ठहर जाता था, और यहोवा मूसा से बातें करने लगता था। १० और सब लोग जब बादल के खम्भे को तम्बू के द्वार पर ठहरा देखते थे, तब उठकर अपने अपने डेरे के द्वार पर से दण्डवत् करते थे। ११ और यहोवा मूसा से इस प्रकार आम्हने-साम्हने बातें करता था, जिस प्रकार कोई अपने भाई से बातें करे। और मूसा तो छावनी में फिर आता था, पर यहोशू नाम एक जवान, जो नून का पुत्र और मूसा का टहलुआ था, वह तम्बू में से न निकलता था॥

१२ और मूसा ने यहोवा से कहा, सुन तू मुझ से कहता है, कि इन लोगों को ले चल; परन्तु यह नहीं बताया कि तू मेरे संग किसको भेजेगा। तौभी तू ने कहा है, कि तेरा नाम मेरे चित्त में बसा है,* और तुझ पर मेरे अनुग्रह की दृष्टि है। १३ और अब यदि मुझ पर तेरे अनुग्रह की

* मूल में—मुझी को मिटा।

* मूल में—मैं तुझे नाम से जानता हूं।

दृष्टि हो, तो मुझे अपनी गति समझा दे, जिस से जब मैं तेरा ज्ञान पाऊं तब तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर बनी रहे। फिर इसकी भी सुधि कर कि यह जाति तेरी प्रजा है। १४ यहोवा ने कहा, मैं आप चलूंगा* और तुझे विश्राम दूंगा। १५ उस ने उस से कहा, यदि तू आप† न चले, तो हमें यहां से आगे न ले जा। १६ यह कैसे जाना जाए कि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर और अपनी प्रजा पर है? क्या इस से नहीं कि तू हमारे संग संग चले, जिस से मैं और तेरी प्रजा के लोग पृथ्वी भर के सब लोगों से अलग ठहरें?

१७ यहोवा ने मूसा से कहा, मैं यह काम भी जिसकी चर्चा तू ने की है करूंगा; क्योंकि मेरे अनुग्रह की दृष्टि तुझ पर है, और तेरा नाम मेरे चित्त में बसा है‡। १८ उस ने कहा मुझे अपना तेज दिखा दे। १९ उस ने कहा, मैं तेरे सम्मुख होकर चलते हुए तुझे अपनी सारी भलाई दिखाऊंगा,§ और तेरे सम्मुख यहोवा नाम का प्रचार करूंगा, और जिस पर मैं अनुग्रह करना चाहूं उसी पर अनुग्रह करूंगा, और जिस पर दया करना चाहूं उसी पर दया करूंगा। २० फिर उस ने कहा, तू मेरे मुख का दर्शन नहीं कर सकता; क्योंकि मनुष्य मेरे मुख का दर्शन करके जीवित नहीं रह सकता। २१ फिर यहोवा ने कहा, सुन, मेरे पास एक स्थान है, तू उस चट्टान पर खड़ा हो; २२ और जब तक मेरा तेज तेरे साम्हने होके चलता रहे* तब तक मैं तुझे चट्टान के दरार में रखूंगा, और जब तक मैं तेरे साम्हने होकर न निकल जाऊं तब तक अपने हाथ से तुझे ढांपे रहूंगा; २३ फिर मैं अपना हाथ उठा लूंगा, तब तू मेरी पीठ का तो दर्शन पाएगा, परन्तु मेरे मुख का दर्शन नहीं मिलेगा॥

३४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, पहिली तख्तियों के समान पत्थर की दो और तख्तियां गढ़ ले; तब जो वचन उन पहिली तख्तियों पर लिखे थे, जिन्हें तू ने तोड़ डाला, वे ही वचन मैं उन तख्तियों पर भी लिखूंगा। २ और बिहान को तैयार रहना, और भोर को सीनै पर्वत पर चढ़कर उसकी चोटी पर मेरे साम्हने खड़ा होना। ३ और तेरे संग कोई न चढ़ पाए, वरन पर्वत भर पर कोई मनुष्य कहीं दिखाई न दे; और न भेड़-बकरी और गाय-बैल भी पर्वत के आगे चरने पाएं। ४ तब मूसा ने पहिली तख्तियों के समान दो और तख्तियां गढ़ीं; और बिहान को सबेरे उठकर अपने हाथ में पत्थर की वे दोनों तख्तियां लेकर यहोवा की आज्ञा के अनुसार सीनै पर्वत पर चढ़ गया। ५ तब यहोवा ने बादल में उतरके उसके संग वहां खड़ा होकर यहोवा नाम का प्रचार किया। ६ और यहोवा उसके साम्हने होकर यों प्रचार करता हुआ चला, कि यहोवा, यहोवा, ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करुणामय और सत्य, ७ हज़ारों पीढ़ियों तक निरन्तर करुणा करनेवाला, अधर्म और अपराध और पाप का क्षमा करनेवाला है, परन्तु दोषी को वह किसी

* मूल में—मेरा मुंह चलेगा।
† मूल में—तेरा मुंह।
‡ मूल में—मैं तुझे नाम से जानता हूं।
§ मूल में—अपनी सारी भलाई तेरे साम्हने से चलाऊंगा।

* मूल में—मेरा तेज तेरे साम्हने होके चलता रहे।

प्रकार निर्दोष न ठहराएगा, वह पितरों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों वरन पोतों और परपोतों को भी देनेवाला है। ८ तब मूसा ने फुर्ती कर पृथ्वी की ओर झुककर दण्डवत् की। ९ और उस ने कहा, हे प्रभु, यदि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो तो प्रभु, हम लोगों के बीच में होकर चले, ये लोग हठीले तो हैं, तौभी हमारे अधर्म और पाप को क्षमा कर, और हमें अपना निज भाग मानके ग्रहण कर। १० उस ने कहा, सुन, मैं एक वाचा बान्धता हूं। तेरे सब लोगों के साम्हने में ऐसे आश्चर्य कर्म करूंगा जैसा पृथ्वी पर और सब जातियों में कभी नहीं हुए; और वे सारे लोग जिनके बीच तू रहता है यहोवा के कार्य को देखेंगे; क्योंकि जो मैं तुम लोगों से करने पर हूं वह भय योग्य काम है। ११ जो आज्ञा मैं आज तुम्हें देता हूं उसे तुम लोग मानना। देखो, मैं तुम्हारे आगे से एमोरी, कनानी, हित्ती, परिज्जी, हिव्वी, और यबूसी लोगों को निकालता हूं। १२ इसलिये सावधान रहना कि जिस देश में तू जानेवाला है उसके निवासियों से वाचा न बान्धना; कहीं ऐसा न हो कि वह तेरे लिये फंदा ठहरे। १३ वरन उनकी वेदियों को गिरा देना, उनकी लाठों को तोड़ डालना, और उनकी अशेरा नाम मूर्त्तियों को काट डालना; १४ क्योंकि तुम्हें किसी दूसरे को ईश्वर करके दण्डवत् करने की आज्ञा नहीं, क्योंकि यहोवा जिसका नाम जलनशील है, वह जल उठनेवाला ईश्वर है ही, १५ ऐसा न हो कि तू उस देश के निवासियों से वाचा बान्धे, और वे अपने देवताओं के पीछे होने का व्यभिचार करें, और उनके लिये बलिदान भी करें, और कोई तुझे नेवता दे और तू भी उसके बलिपशु का प्रसाद खाए, १६ और तू उनकी बेटियों को अपने बेटों के लिये लावे, और उनकी बेटियां जो आप अपने देवताओं के पीछे होने का व्यभिचार करती हैं तेरे बेटों से भी अपने देवताओं के पीछे होने का व्यभिचार करवाएं। १७ तुम देवताओं की मूर्त्तियां ढालकर न बना लेना। १८ अखमीरी रोटी का पर्ब्ब मानना। उस में मेरी आज्ञा के अनुसार आबीब महीने के नियत समय पर सात दिन तक अखमीरी रोटी खाया करना; क्योंकि तू मिस्र से आबीब महीने में निकल आया। १९ हर एक पहिलौठा मेरा है; और क्या बछड़ा, क्या मेम्ना, तेरे पशुओं में से जो नर पहिलौठे हों वे सब मेरे ही हैं। २० और गदही के पहिलौठे की सन्ती मेम्ना देकर उसको छुड़ाना, यदि तू उसे छुड़ाना न चाहे तो उसकी गर्दन तोड़ देना। परन्तु अपने सब पहिलौठे बेटों को बदला देकर छुड़ाना। मुझे कोई छूछे हाथ अपना मुंह न दिखाए। २१ छः दिन तो परिश्रम करना, परन्तु सातवें दिन विश्राम करना; वरन हल जोतने और लवने के समय में भी विश्राम करना। २२ और तू अठवारों का पर्ब्ब मानना जो पहिले लवे हुए गेहूं का पर्ब्ब कहलाता है, और वर्ष के अन्त में बटोरन का भी पर्ब्ब मानना। २३ वर्ष में तीन बार तेरे सब पुरुष इस्राएल के परमेश्वर प्रभु यहोवा को अपने मुंह दिखाएं। २४ मैं तो अन्यजातियों को तेरे आगे से निकालकर तेरे सिवानों को बढ़ाऊंगा; और जब तू अपने परमेश्वर यहोवा को अपना मुंह दिखाने के लिये वर्ष में तीन बार आया करे, तब कोई तेरी भूमि का लालच न करेगा। २५ मेरे बलिदान के लोहू को खमीर सहित न चढ़ाना, और न फसह के पर्ब्ब के बलिदान में से कुछ बिहान तक रहने देना।

२६ अपनी भूमि की पहिली उपज का पहिला भाग अपने परमेश्वर यहोवा के भवन में ले आना। बकरी के बच्चे को उसकी मां के दूध में न सिझाना। २७ और यहोवा ने मूसा से कहा, ये वचन लिख ले; क्योंकि इन्हीं वचनों के अनुसार मैं तेरे और इस्राएल के साथ वाचा बान्धता हूं। २८ मूसा तो वहां यहोवा के संग चालीस दिन और रात रहा; और तब तक न तो उस ने रोटी खाई और न पानी पिया। और उस ने उन तख्तियों पर वाचा के वचन अर्थात् दस आज्ञाएं * लिख दीं॥

२९ जब मूसा साक्षी की दोनों तख्तियां हाथ में लिये हुए सीनै पर्वत से उतरा आता था तब यहोवा के साथ बातें करने के कारण उसके चेहरे से किरणें † निकल रही थीं, परन्तु वह यह नहीं जानता था कि उसके चेहरे से किरणें † निकल रही हैं। ३० जब हारून और सब इस्राएलियों ने मूसा को देखा कि उसके चेहरे से किरणें † निकलती हैं, तब वे उसके पास जाने से डर गए। ३१ तब मूसा ने उनको बुलाया; और हारून मण्डली के सारे प्रधानों समेत उसके पास आया, और मूसा उन से बातें करने लगा। ३२ इसके बाद सब इस्राएली पास आए, और जितनी आज्ञाएं यहोवा ने सीनै पर्वत पर उसके साथ बात करने के समय दी थीं, वे सब उस ने उन्हें बताईं। ३३ जब तक मूसा उन से बात न कर चुका तब तक अपने मुंह पर ओढ़ना डाले रहा। ३४ और जब जब मूसा भीतर यहोवा से बात करने को उसके साम्हने जाता तब तब वह उस ओढ़नी को निकलते समय तक उतारे हुए रहता था; फिर बाहर आकर जो जो आज्ञा उसे मिलतीं उन्हें इस्राएलियों से कह देता था। ३५ सो इस्राएली मूसा का चेहरा देखते थे कि उस से किरणें * निकलती हैं; और जब तक वह यहोवा से बात करने को भीतर न जाता तब तक वह उस ओढ़नी को डाले रहता था॥

(सारे सामान समेत पवित्रस्थान और याजकों के वस्त्र बनाए जाने का वर्णन)

३५ मूसा ने इस्राएलियों की सारी मण्डली इकट्ठी करके उन से कहा, जिन कामों के करने की आज्ञा यहोवा ने दी है वे ये हैं। २ छः दिन तो काम काज किया जाए, परन्तु सातवां दिन तुम्हारे लिये पवित्र और यहोवा के लिये परमविश्राम का दिन ठहरे; उस में जो कोई काम काज करे वह मार डाला जाए; ३ वरन विश्राम के दिन तुम अपने अपने घरों में आग तक न जलाना॥

४ फिर मूसा ने इस्राएलियों की सारी मण्डली से कहा, जिस बात की आज्ञा यहोवा ने दी है वह यह है। ५ तुम्हारे पास से यहोवा के लिये भेंट ली जाए, अर्थात् जितने अपनी इच्छा से देना चाहें वे यहोवा की भेंट करके ये वस्तुएं ले आएं; अर्थात् सोना, रुपा, पीतल; ६ नीले, बैंजनी और लाल रंग का कपड़ा, सूक्ष्म सनी का कपड़ा; बकरी का बाल, ७ लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों की खालें, सूइसों की खालें; बबूल की लकड़ी, ८ उजियाला देने के लिये तेल, अभिषेक का तेल, और धूप के लिये सुगन्धद्रव्य, ९ फिर एपोद और चपरास के लिये सुलैमानी मणि और जड़ने के लिये मणि। १० और तुम में से जितनों के हृदय में बुद्धि का प्रकाश है वे सब आकर जिस जिस वस्तु की आज्ञा

* मूल में—वचन। † मूल में—सींग।

* मूल में—सींग।

यहोवा ने दी है वे सब बनाएं। ११ अर्थात् तम्बू, और ओहार समेत निवास, और उसकी घुंडी, तख़्ते, बेंड़े, खम्भे और कुर्सियां; १२ फिर डण्डों समेत सन्दूक, और प्रायश्चित्त का ढकना, और बीचवाला पर्दा; १३ डण्डों और सब सामान समेत मेज़, और भेंट की रोटियां; १४ सामान और दीपकों समेत उजियाला देनेवाला दीवट, और उजियाला देने के लिये तेल; १५ डण्डों समेत धूपवेदी, अभिषेक का तेल, सुगन्धित धूप, और निवास के द्वार का पर्दा; १६ पीतल की झंझरी, डण्डों आदि सारे सामान समेत होमवेदी, पाए समेत हौदी; १७ खम्भों और उनकी कुर्सियों समेत आंगन के पर्दे, और आंगन के द्वार के पर्दे; १८ निवास और आंगन दोनों के खूंटे, और डोरियां; १९ पवित्रस्थान में सेवा टहल करने के लिये काढ़े हुए वस्त्र, और याजक का काम करने के लिये हारून याजक के पवित्र वस्त्र, और उसके पुत्रों के वस्त्र भी॥

२० तब इस्राएलियों की सारी मण्डली मूसा के साम्हने से लौट गई। २१ और जितनों को उत्साह हुआ, * और जितनों के मन † में ऐसी इच्छा उत्पन्न हुई थी, वे मिलापवाले तम्बू के काम करने और उसकी सारी सेवकाई और पवित्र वस्त्रों के बनाने के लिये यहोवा की भेंट ले आने लगे। २२ क्या स्त्री, क्या पुरुष, जितनों के मन में ऐसी इच्छा उत्पन्न हुई थी वे सब जुगनू, नथुनी, मुंदरी, और कंगन आदि सोने के गहने ले आने लगे, इस भांति जितने मनुष्य यहोवा के लिये सोने की भेंट के देनेवाले थे वे सब उनको ले आए। २३ और जिस जिस पुरुष के पास नीले, बैंजनी वा लाल रंग का कपड़ा, वा सूक्ष्म सनी का कपड़ा, वा बकरी का बाल, वा लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों की खालें, वा सूइसों की खालें थीं वे उन्हें ले आए। २४ फिर जितने चांदी, वा पीतल की भेंट के देनेवाले थे वे यहोवा के लिये वैसी भेंट ले आए; और जिस जिसके पास सेवकाई के किसी काम के लिये बबूल की लकड़ी थी वे उसे ले आए। २५ और जितनी स्त्रियों के हृदय में बुद्धि का प्रकाश था वे अपने हाथों से सूत कात कातकर नीले, बैंजनी और लाल रंग के, और सूक्ष्म सनी के काते हुए सूत को ले आईं। २६ और जितनी स्त्रियों के मन में ऐसी बुद्धि का प्रकाश था उन्हों ने बकरी के बाल भी काते। २७ और प्रधान लोग एपोद और चपरास के लिये सुलैमानी मणि, और जड़ने के लिये मणि, २८ और उजियाला देने और अभिषेक और धूप के सुगन्धद्रव्य और तेल ले आये। २९ जिस जिस वस्तु के बनाने की आज्ञा यहोवा ने मूसा के द्वारा दी थी उसके लिये जो कुछ आवश्यक था, उसे वे सब पुरुष और स्त्रियां ले आईं, जिनके हृदय में ऐसी इच्छा उत्पन्न हुई थी। इस प्रकार इस्राएली यहोवा के लिये अपनी ही इच्छा से भेंट ले आए॥

३० तब मूसा ने इस्राएलियों से कहा सुनो, यहोवा ने यहूदा के गोत्रवाले बसलेल को, जो ऊरी का पुत्र और हूर का पोता है, नाम लेकर बुलाया है। ३१ और उस ने उसको परमेश्वर के आत्मा से ऐसा परिपूर्ण किया है कि सब प्रकार की बनावट के लिये उसको ऐसी बुद्धि, समझ, और ज्ञान मिला है, ३२ कि वह कारीगरी की युक्तियां निकालकर सोने, चांदी, और पीतल में, ३३ और जड़ने के लिये मणि काटने में

* मूल में—जितनों को उनके मन ने उठाया।

† मूल में—आत्मा।

और लकड़ी के खोदने में, वरन बुद्धि से सब भांति की निकाली हुई बनावट में काम कर सके। ३४ फिर यहोवा ने उसके मन में और दान के गोत्रवाले अहीसामाक के पुत्र ओहोलीआब के मन में भी शिक्षा देने की शक्ति दी है। ३५ इन दोनों के हृदय को यहोवा ने ऐसी बुद्धि से परिपूर्ण किया है, कि वे खोदने और गढ़ने और नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े, और सूक्ष्म सनी के कपड़े में काढ़ने और बुनने, वरन सब प्रकार की बनावट में, और बुद्धि से काम निकालने में सब भांति के काम करें॥

३६ और बसलेल और ओहोलीआब और सब बुद्धिमान जिनको यहोवा ने ऐसी बुद्धि और समझ दी हो, कि वे यहोवा की सारी आज्ञाओं के अनुसार पवित्रस्थान की सेवकाई के लिये सब प्रकार का काम करना जानें, वे सब यह काम करें॥

२ तब मूसा ने बसलेल और ओहोली-आब और सब बुद्धिमानों को जिनके हृदय में यहोवा ने बुद्धि का प्रकाश दिया था, अर्थात् जिस जिसको पास आकर काम करने का उत्साह हुआ था * उन सभों को बुलवाया। ३ और इस्राएली जो जो भेंट पवित्रस्थान की सेवकाई के काम और उसके बनाने के लिये ले आए थे, उन्हें उन पुरुषों ने मूसा के हाथ से ले लिया। तब भी लोग प्रति भोर को उसके पास भेंट अपनी इच्छा से लाते रहे; ४ और जितने बुद्धिमान पवित्र-स्थान का काम करते थे वे सब अपना अपना काम छोड़कर मूसा के पास आए, ५ और कहने लगे, जिस काम के करने की आज्ञा यहोवा ने दी है उसके लिये जितना चाहिये उससे अधिक वे ले आए हैं। ६ तब मूसा ने सारी छावनी में इस आज्ञा का प्रचार करवाया, कि क्या पुरुष, क्या स्त्री, कोई पवित्रस्थान के लिये और भेंट न लाए, इस प्रकार लोग और भेंट लाने से रोके गए। ७ क्योंकि सब काम बनाने के लिये जितना सामान आवश्यक था उतना वरन उससे अधिक बनाने वालों के पास आ चुका था॥

८ और काम करनेवाले जितने बुद्धिमान थे उन्हों ने निवास के लिये बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े के, और नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े के दस पटों को काढ़े हुए करूबों सहित बनाया। ९ एक एक पट की लम्बाई अट्ठाईस हाथ और चौड़ाई चार हाथ की हुई; सब पट एक ही नाप के बने। १० उस ने पांच पट एक दूसरे से जोड़ दिए, और फिर दूसरे पांच पट भी एक दूसरे से जोड़ दिए। ११ और जहां ये पट जोड़े गए वहां की दोनों छोरों पर उस ने नीली नीली फलियां लगाईं। १२ उस ने दोनों छोरों में पचास पचास फलियां इस प्रकार लगाईं कि वे आम्हने-साम्हने हुईं। १३ और उस ने सोने की पचास घुंडियां बनाईं, और उनके द्वारा पटों को एक दूसरे से ऐसा जोड़ा कि निवास मिलकर एक हो गया। १४ फिर निवास के ऊपर के तम्बू के लिये उस ने बकरी के बाल के ग्यारह पट बनाए। १५ एक एक पट की लम्बाई तीस हाथ और चौड़ाई चार हाथ की हुई; और ग्यारहों पट एक ही नाप के थे। १६ इन में से उस ने पांच पट अलग और छः पट अलग जोड़ दिए। १७ और जहां दोनों जोड़े गए वहां की छोरों में उस ने पचास पचास फलियां लगाईं। १८ और

* मूल में—जिसको काम करने के लिये पास आने को उसके मन ने उठाया हो।

उस ने तम्बू के जोड़ने के लिये पीतल की पचास घुंडियां भी बनाईं जिस से वह एक हो जाए। **१९** और उस ने तम्बू के लिये लाल रंग से रंगी हुई मेंढ़ों की खालों का एक ओढ़ना और उसके ऊपर के लिये सूइसों की खालों का भी एक ओढ़ना बनाया॥

२० फिर उस ने निवास के लिये बबूल की लकड़ी के तख़्तों को खड़े रहने के लिये बनाया। २१ एक एक तख़्ते की लम्बाई दस हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ की हुई। २२ एक एक तख़्ते में एक दूसरी से जोड़ी हुई दो दो चूलें बनीं, निवास के सब तख़्तों के लिये उस ने इसी भांति बनाईं। २३ और उस ने निवास के लिये तख़्तों को इस रीति से बनाया, कि दक्खिन की ओर बीस तख़्ते लगे। २४ और इन बीसों तख़्तों के नीचे चांदी की चालीस कुर्सियां, अर्थात् एक एक तख़्ते के नीचे उसकी दो चूलों के लिये उस ने दो कुर्सियां बनाईं। २५ और निवास की दूसरी अलंग, अर्थात् उत्तर की ओर के लिये भी उस ने बीस तख़्ते बनाए। २६ और इनके लिये भी उस ने चांदी की चालीस कुर्सियां, अर्थात् एक एक तख़्ते के नीचे दो दो कुर्सियां बनाईं। २७ और निवास की पिछली अलंग, अर्थात् पश्चिम ओर के लिये उस ने छः तख़्ते बनाए। २८ और पिछली अलंग में निवास के कोनों के लिये उस ने दो तख़्ते बनाए। २९ और वे नीचे से दो दो भाग के बने, और दोनों भाग ऊपर के सिरे तक उन दोनों तख़्तों का ढब ऐसा ही बनाया। ३० इस प्रकार आठ तख़्ते हुए, और उनकी चांदी की सोलह कुर्सियां हुईं, अर्थात् एक एक तख़्ते के नीचे दो दो कुर्सियां हुईं। ३१ फिर उस ने बबूल की लकड़ी के बेंड़े बनाए, अर्थात् निवास की एक अलंग के तख़्तों के लिये पांच बेंड़े, ३२ और निवास की दूसरी अलंग के तख़्तों के लिये पांच बेंड़े, और निवास की जो अलंग पश्चिम ओर पिछले भाग में थी उसके लिये भी पांच बेंड़े, बनाए। ३३ और उस ने बीचवाले बेंड़े को तख़्तों के मध्य में तम्बू के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुंचने के लिये बनाया। ३४ और तख़्तों को उस ने सोने से मढ़ा, और बेंड़ों के घर का काम देनेवाले कड़ों को सोने के बनाया, और बेंड़ों को भी सोने से मढ़ा॥

३५ फिर उस ने नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े का, और बटी हुई सूक्ष्म सनीवाले कपड़े का बीचवाला पर्दा बनाया; वह कढ़ाई के काम किये हुए करूबों के साथ बना। ३६ और उस ने उसके लिये बबूल के चार खम्भे बनाए, और उनको सोने से मढ़ा; उनकी घुंडियां सोने की बनीं, और उस ने उनके लिये चांदी की चार कुर्सियां ढालीं। ३७ और उस ने तम्बू के द्वार के लिये नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े का, और बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े का कढ़ाई का काम किया हुआ पर्दा बनाया। ३८ और उस ने घुंडियों समेत उसके पांच खम्भे भी बनाए, और उनके सिरों और जोड़ने की छड़ों को सोने से मढ़ा, और उनकी पांच कुर्सियां पीतल की बनाईं॥

३७ फिर बसलेल ने बबूल की लकड़ी का सन्दूक बनाया; उसकी लम्बाई अढ़ाई हाथ, चौड़ाई डेढ़ हाथ, और ऊंचाई डेढ़ हाथ की थी। २ और उस ने उसको भीतर बाहर चोखे सोने से मढ़ा, और उसके चारों ओर सोने की बाड़ बनाई।

३ और उसके चारों पायों पर लगाने को उस ने सोने के चार कड़े ढाले, दो कड़े एक अलंग और दो कड़े दूसरी अलंग पर लगे। ४ फिर उस ने बबूल के डण्डे बनाए, और उन्हें सोने से मढ़ा, ५ और उनको सन्दूक की दोनों अलंगों के कड़ों में डाला कि उनके बल सन्दूक उठाया जाए। ६ फिर उस ने चोखे सोने के प्रायश्चित्तवाले ढकने को बनाया; उसकी लम्बाई अढ़ाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ की थी। ७ और उस ने सोना गढ़कर दो करूब प्रायश्चित्त के ढकने के दोनों सिरों पर बनाए; ८ एक करूब तो एक सिरे पर, और दूसरा करूब दूसरे सिरे पर बना; उस ने उनको प्रायश्चित्त के ढकने के साथ एक ही टुकड़े के दोनों सिरों पर बनाया। ९ और करूबों के पंख ऊपर से फैले हुए बने, और उन पंखों से प्रायश्चित्त का ढकना ढपा हुआ बना, और उनके मुख आम्हने-साम्हने और प्रायश्चित्त के ढकने की ओर किए हुए बने ॥

१० फिर उस ने बबूल की लकड़ी की मेज़ को बनाया; उसकी लम्बाई दो हाथ, चौड़ाई एक हाथ, और ऊंचाई डेढ़ हाथ की थी; ११ और उस ने उसको चोखे सोने से मढ़ा, और उस में चारों ओर सोने की एक बाड़ बनाई। १२ और उस ने उसके लिये चार अंगुल चौड़ी एक पटरी, और इस पटरी के लिये चारों ओर सोने की एक बाड़ बनाई। १३ और उस ने मेज़ के लिये सोने के चार कड़े ढालकर उन चारों कोनों में लगाया, जो उसके चारों पायों पर थे। १४ वे कड़े पटरी के पास मेज़ उठाने के डण्डों के खानों का काम देने को बने। १५ और उस ने मेज़ उठाने के लिये डण्डों को बबूल की लकड़ी के बनाया, और सोने से मढ़ा। १६ और उस ने मेज़ पर का सामान अर्थात् परात, धूपदान, कटोरे, और उंडेलने के बर्तन सब चोखे सोने के बनाए ॥

१७ फिर उस ने चोखा सोना गढ़के पाए और डण्डी समेत दीवट को बनाया; उसके पुष्पकोष, गांठ, और फूल सब एक ही टुकड़े के बने। १८ और दीवट से निकली हुई छः डालियां बनीं; तीन डालियां तो उसकी एक अलंग से और तीन डालियां उसकी दूसरी अलंग से निकली हुई बनीं। १९ एक एक डाली में बादाम के फूल के सरीखे तीन तीन पुष्पकोष, एक एक गांठ, और एक एक फूल बना; दीवट से निकली हुई, उन छहों डालियों का यही ढब हुआ। २० और दीवट की डण्डी में बादाम के फूल के समान अपनी अपनी गांठ और फूल समेत चार पुष्पकोष बने। २१ और दीवट से निकली हुई छहों डालियों में से दो दो डालियों के नीचे एक एक गांठ दीवट के साथ एक ही टुकड़े की बनी। २२ गांठें और डालियां सब दीवट के साथ एक ही टुकड़े की बनीं; सारा दीवट गढ़े हुए चोखे सोने का और एक ही टुकड़े का बना। २३ और उस ने दीवट के सातों दीपक, और गुलतराश, और गुलदान, चोखे सोने के बनाए। २४ उस ने सारे सामान समेत दीवट को किक्कार भर सोने का बनाया ॥

२५ फिर उस ने बबूल की लकड़ी की धूपवेदी भी बनाई; उसकी लम्बाई एक हाथ और चौड़ाई एक हाथ की थी; वह चौकोर बनी, और उसकी ऊंचाई दो हाथ की थी; और उसके सींग उसके साथ बिना जोड़ के बने थे। २६ और ऊपरवाले पल्लों, और चारों ओर की अलंगों, और सींगों समेत उस ने उस वेदी को चोखे सोने से मढ़ा; और उसकी चारों ओर सोने की एक बाड़ बनाई, २७ और उस बाड़ के नीचे उसके

दोनों पल्लों पर उस ने सोने के दो कड़े बनाए, जो उसके उठाने के डण्डों के खानों का काम दें। २८ और डण्डों को उस ने बबूल की लकड़ी का बनाया, और सोने से मढ़ा। २९ और उस ने अभिषेक का पवित्र तेल, और सुगन्धद्रव्य का धूप, गन्धी की रीति के अनुसार बनाया॥

३८ फिर उस ने बबूल की लकड़ी की होमवेदी भी बनाई; उसकी लम्बाई पांच हाथ और चौड़ाई पांच हाथ की थी; इस प्रकार से वह चौकोर बनी, और ऊंचाई तीन हाथ की थी। २ और उस ने उसके चारों कोनों पर उसके चार सींग बनाए, वे उसके साथ बिना जोड़ के बने; और उस ने उसको पीतल से मढ़ा। ३ और उस ने वेदी का सारा सामान, अर्थात् उसकी हांड़ियों, फावड़ियों, कटोरों, कांटों, और करछों को बनाया। उसका सारा सामान उस ने पीतल का बनाया। ४ और वेदी के लिये उसके चारों ओर की कंगनी के तले उस ने पीतल की जाली की एक झंझरी बनाई, वह नीचे से वेदी की ऊंचाई के मध्य तक पहुंची। ५ और उस ने पीतल की झंझरी के चारों कोनों के लिये चार कड़े ढाले, जो डण्डों के खानों का काम दें। ६ फिर उस ने डण्डों को बबूल की लकड़ी का बनाया, और पीतल से मढ़ा। ७ तब उस ने डण्डों को वेदी की अलंगों के कड़ों में वेदी के उठाने के लिये डाल दिया। वेदी को उस ने तख़्तों से खोखली बनाया॥

८ और उस ने हौदी और उसका पाया दोनों पीतल के बनाए, यह मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सेवा करनेवाली महिलाओं के दर्पणों के लिये पीतल के बनाए गए॥

९ फिर उस ने आंगन बनाया; और दक्खिन अलंग के लिये आंगन के पर्दे बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े के थे, और सब मिलाकर सौ हाथ लम्बे थे; १० उनके लिये बीस खम्भे, और इनकी पीतल की बीस कुर्सियां बनीं; और खम्भों की घुंडियां और जोड़ने की छड़ें चांदी की बनीं। ११ और उत्तर अलंग के लिये भी सौ हाथ लम्बे पर्दे बने; और उनके लिये बीस खम्भे, और इनकी पीतल की बीस ही कुर्सियां बनीं, और खम्भों की घुंडियां और जोड़ने की छड़ें चांदी की बनीं। १२ और पश्चिम अलंग के लिये सब पर्दे मिलाकर पचास हाथ के थे; उनके लिये दस खम्भे, और दस ही उनकी कुर्सियां थीं, और खम्भों की घुंडियां और जोड़ने की छड़ें चांदी की थीं। १३ और पूरब अलंग में भी वह पचास हाथ के थे। १४ आंगन के द्वार के एक ओर के लिये पंद्रह हाथ के पर्दे बने; और उनके लिये तीन खम्भे और तीन कुर्सियां थीं। १५ और आंगन के द्वार की दूसरी ओर भी वैसा ही बना था; और आंगन के दरवाज़े के इधर और उधर पंद्रह पंद्रह हाथ के पर्दे बने थे; और उनके लिये तीन ही तीन खम्भे, और तीन ही तीन इनकी कुर्सियां भी थीं। १६ आंगन की चारों ओर सब पर्दे सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े के बने हुए थे। १७ और खम्भों की कुर्सियां पीतल की, और घुंडियां और छड़ें चांदी की बनी, और उनके सिरे चांदी से मढ़े गए, और आंगन के सब खम्भे चांदी के छड़ों से जोड़े गए थे। १८ आंगन के द्वार के पर्दे पर बेल बूटे का काम किया हुआ था, और वह नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े का, और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े के बने थे; और उसकी लम्बाई बीस हाथ की थी, और उसकी ऊंचाई आंगन की कनात

की चौड़ाई के समान पांच हाथ की बनी। १९ और उनके लिये चार खम्भे, और खम्भों की चार ही कुर्सियां पीतल की बनीं, उनकी घुंडियां चांदी की बनीं, और उनके सिरे चांदी से मढ़े गए, और उनकी छड़ें चांदी की बनीं। २० और निवास और आंगन की चारों ओर के सब खूंटे पीतल के बने थे॥

२१ साक्षीपत्र के निवास का सामान जो लेवियों की सेवकाई के लिये बना, और जिसकी गिनती हारून याजक के पुत्र ईतामार के द्वारा मूसा के कहने से हुई थी, उसका वर्णन यह है। २२ जिस जिस वस्तु के बनाने की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी उसको यहूदा के गोत्रवाले बसलेल ने, जो हूर का पोता और ऊरी का पुत्र था, बना दिया। २३ और उसके संग दान के गोत्रवाले, अहीसामाक का पुत्र, ओहोलीआब था, जो खोदने और काढ़नेवाला और नीले, बैंजनी और लाल रंग के और सूक्ष्म सनी के कपड़े में कारचोब करनेवाला निपुण कारीगर था॥

२४ पवित्रस्थान के सारे काम में जो भेंट का सोना लगा वह उनतीस किक्कार, और पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से सात सौ तीन शेकेल था। २५ और मण्डली के गिने हुए लोगों की भेंट की चांदी सौ किक्कार, और पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से सतरह सौ पचहत्तर शेकेल थी। २६ अर्थात् जितने बीस बरस के और उससे अधिक अवस्था के गिने गए थे, वे छः लाख तीन हज़ार साढ़े पांच सौ पुरुष थे, और एक एक जन की ओर से पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार आधा शेकेल, जो एक बेका होता है मिला। २७ और वह सौ किक्कार चांदी पवित्रस्थान और बीचवाले पर्दे दोनों की कुर्सियों के ढालने में लग गई; सौ किक्कार से सौ कुर्सियां बनीं, एक एक कुर्सी एक किक्कार की बनी। २८ और सतरह सौ पचहत्तर शेकेल जो बच गए उन से खम्भों की घुंडियां बनाई गईं, और खम्भों की चोटियां मढ़ी गईं, और उनकी छड़ें भी बनाई गईं। २९ और भेंट का पीतल सत्तर किक्कार और दो हज़ार चार सौ शेकेल था; ३० उससे मिलापवाले तम्बू के द्वार की कुर्सियां, और पीतल की वेदी, पीतल की झंझरी, और वेदी का सारा सामान; ३१ और आंगन के चारों ओर की कुर्सियां, और उसके द्वार की कुर्सियां, और निवास, और आंगन की चारों ओर के खूंटे भी बनाए गए॥

३९ फिर उन्हों ने नीले, बैंजनी और लाल रंग के काढ़े हुए कपड़े पवित्रस्थान की सेवकाई के लिये, और हारून के लिये भी पवित्र वस्त्र बनाए; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी॥

२ और उस ने एपोद को सोने, और नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े का, और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े का बनाया। ३ और उन्हों ने सोना पीट-पीटकर उसके पत्तर बनाए, फिर पत्तरों को काट-काटकर तार बनाए, और तारों को नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े में, और सूक्ष्म सनी के कपड़े में कढ़ाई की बनावट से मिला दिया। ४ एपोद के जोड़ने को उन्हों ने उसके कन्धों पर के बन्धन बनाए, वह तो अपने दोनों सिरों से जोड़ा गया। ५ और उसके कसने के लिये जो काढ़ा हुआ पटुका उस पर बना, वह उसके साथ बिना जोड़ का, और उसी की बनावट के अनुसार, अर्थात् सोने और नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े का, और सूक्ष्म बटी हुई सनी

के कपड़े का बना; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी ॥

६ और उन्हों ने सुलैमानी मणि काटकर उनमें इस्राएल के पुत्रों के नाम जैसा छापा खोदा जाता है वैसे ही खोदे, और सोने के ख़ानों में जड़ दिए। ७ और उस ने उनको एपोद के कन्धे के बन्धनों पर लगाया, जिस से इस्राएलियों के लिये स्मरण करानेवाले मणि ठहरें; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी ॥

८ और उस ने चपरास को एपोद की नाईं सोने की, और नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े की, और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े में बेल बूटे का काम किया हुआ बनाया। ९ चपरास तो चौकोर बनी; और उन्हों ने उसको दोहरा बनाया, और वह दोहरा होकर एक बित्ता लम्बा और एक बित्ता चौड़ा बना। १० और उन्हों ने उस में चार पांति मणि जड़े। पहिली पांति में तो माणिक्य, पद्मराग, और लालड़ी जड़े गए; ११ और दूसरी पांति में मरकत, नीलमणि, और हीरा; १२ और तीसरी पांति में लशम, सूर्यकान्त, और नीलम; १३ और चौथी पांति में फीरोजा, सुलैमानी मणि, और यशब जड़े; ये सब अलग अलग सोने के ख़ानों में जड़े गए। १४ और ये मणि इस्राएल के पुत्रों के नामों की गिनती के अनुसार बारह थे; बारहों गोत्रों में से एक एक का नाम जैसा छापा खोदा जाता है वैसा ही खोदा गया। १५ और उन्हों ने चपरास पर डोरियों की नाईं गूंथे हुए चोखे सोने की जंजीर बनाकर लगाई; १६ फिर उन्हों ने सोने के दो ख़ाने, और सोने की दो कड़ियां बनाकर दोनों कड़ियों को चपरास के दोनों सिरों पर लगाया; १७ तब उन्हों ने सोने की दोनों गूंथी हुई जंजीरों को चपरास के सिरों पर की दोनों कड़ियों में लगाया। १८ और गूंथी हुई दोनों जंजीरों के दोनों बाकी सिरों को उन्हों ने दोनों ख़ानों में जड़के, एपोद के साम्हने दोनों कन्धों के बन्धनों पर लगाया। १९ और उन्हों ने सोने की और दो कड़ियां बनाकर चपरास के दोनों सिरों पर उसकी उस कोर पर, जो एपोद की भीतरी भाग में थी, लगाईं। २० और उन्हों ने सोने की दो और कड़ियां भी बनाकर एपोद के दोनों कन्धों के बन्धनों पर नीचे से उसके साम्हने, और जोड़ के पास, एपोद के काढ़े हुए पटुके के ऊपर लगाईं। २१ तब उन्हों ने चपरास को उसकी कड़ियों के द्वारा एपोद की कड़ियों में नीले फीते से ऐसा बान्धा, कि वह एपोद के काढ़े हुए पटुके के ऊपर रहे, और चपरास एपोद से अलग न होने पाए; जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी ॥

२२ फिर एपोद का बागा सम्पूर्ण नीले रंग का बनाया गया। २३ और उसकी बनावट ऐसी हुई कि उसके बीच बख़्तर के छेद के समान एक छेद बना, और छेद के चारों ओर एक कोर बनी, कि वह फटने न पाए। २४ और उन्हों ने उसके नीचेवाले घेरे में नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े के अनार बनाए। २५ और उन्हों ने चोखे सोने की घंटियां भी बनाकर बागे के नीचेवाले घेरे के चारों ओर अनारों के बीचोंबीच लगाईं; २६ अर्थात् बागे के नीचेवाले घेरे की चारों ओर एक सोने की घंटी, और एक अनार, फिर एक सोने की घंटी, और एक अनार लगाया गया कि उन्हें पहिने हुए सेवा टहल करें; जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी ॥

२७ फिर उन्हों ने हारून, और उसके पुत्रों के लिये बुनी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े

के अंगरखे, २८ और सूक्ष्म सनी के कपड़े की पगड़ी, और सूक्ष्म सनी के कपड़े की सुन्दर टोपियां, और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े की जांघिया, २९ और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े की और नीले, बैंजनी और लाल रंग की कारचोबी काम की हुई पगड़ी; इन सभों को जिस तरह यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी वैसा ही बनाया ॥

३० फिर उन्हों ने पवित्र मुकुट की पटरी चोखे सोने की बनाई; और जैसे छापे में वैसे ही उस में ये अक्षर खोदे गए, अर्थात् यहोवा के लिये पवित्र। ३१ और उन्हों ने उस में नीला फीता लगाया, जिस से वह ऊपर पगड़ी पर रहे, जिस तरह यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी ॥

३२ इस प्रकार मिलापवाले तम्बू के निवास का सब काम समाप्त हुआ, और जिस जिस काम की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी, इस्राएलियों ने उसी के अनुसार किया ॥

३३ तब वे निवास को मूसा के पास ले आए, अर्थात् घुंडियां, तख्ते, बेंड़े, खम्भे, कुर्सियां आदि सारे सामान समेत तम्बू; ३४ और लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों की खालों का ओढ़ना, और सूइसों की खालों का ओढ़ना, और बीच का पर्दा; ३५ डण्डों सहित साक्षीपत्र का सन्दूक, और प्रायश्चित्त का ढकना; ३६ सारे सामान समेत मेज़, और भेंट की रोटी; ३७ सारे सामान सहित दीवट, और उसकी सजावट के दीपक, और उजियाला देने के लिये तेल; ३८ सोने की वेदी, और अभिषेक का तेल, और सुगन्धित धूप, और तम्बू के द्वार का पर्दा; ३९ पीतल की झंझरी, डण्डों, और सारे सामान समेत पीतल की वेदी; और पाए समेत हौदी; ४० खम्भों, और कुर्सियों समेत आंगन के पर्दे, और आंगन के द्वार का पर्दा, और डोरियां, और खूंटे, और मिलापवाले तम्बू के निवास की सेवकाई का सारा सामान; ४१ पवित्रस्थान में सेवा टहल करने के लिये बेल बूटा काढ़े हुए वस्त्र, और हारून याजक के पवित्र वस्त्र, और उसके पुत्रों के वस्त्र जिन्हें पहिनकर उन्हें याजक का काम करना था। ४२ अर्थात् जो जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थीं उन्हीं के अनुसार इस्राएलियों ने सब काम किया। ४३ तब मूसा ने सारे काम का निरीक्षण करके देखा, कि उन्हों ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार सब कुछ किया है। और मूसा ने उनको आशीर्वाद दिया ॥

(यहोवा के निवास के खड़े किए जाने और उसकी प्रतिष्ठा होने का वर्णन)

४० फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ पहिले महीने के पहिले दिन को तू मिलापवाले तम्बू के निवास को खड़ा करा देना। ३ और उस में साक्षीपत्र के सन्दूक को रखकर बीचवाले पर्दे की ओट में करा देना। ४ और मेज़ को भीतर ले जाकर जो कुछ उस पर सजाना है उसे सजवा देना; तब दीवट को भीतर ले जाकर उसके दीपकों को जला देना। ५ और साक्षीपत्र के सन्दूक के साम्हने सोने की वेदी को जो धूप के लिये है उसे रखना, और निवास के द्वार के पर्दे को लगा देना। ६ और मिलापवाले तम्बू के निवास के द्वार के साम्हने होमवेदी को रखना। ७ और मिलापवाले तम्बू और वेदी के बीच हौदी को रखके उस में जल भरना। ८ और चारों ओर के आंगन की कनात को खड़ा करना, और उस आंगन के द्वार पर पर्दे को लटका देना। ९ और अभिषेक का तेल लेकर निवास को और जो कुछ उस में होगा सब कुछ का अभिषेक

करना, और सारे सामान समेत उसको पवित्र करना; तब वह पवित्र ठहरेगा। १० और सब सामान समेत होमवेदी का अभिषेक करके उसको पवित्र करना; तब वह परमपवित्र ठहरेगी। ११ और पाए समेत हौदी का भी अभिषेक करके उसे पवित्र करना। १२ और हारून और उसके पुत्रों को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर ले जाकर जल से नहलाना, १३ और हारून को पवित्र वस्त्र पहिनाना, और उसका अभिषेक करके उसको पवित्र करना, कि वह मेरे लिये याजक का काम करे। १४ और उसके पुत्रों को ले जाकर अंगरखे पहिनाना, १५ और जैसे तू उनके पिता का अभिषेक करे वैसे ही उनका भी अभिषेक करना, कि वे मेरे लिये याजक का काम करें; और उनका अभिषेक उनकी पीढ़ी पीढ़ी के लिये उनके सदा के याजकपद का चिन्ह ठहरेगा। १६ और मूसा ने जो जो आज्ञा यहोवा ने उसको दी थी उसी के अनुसार किया॥

१७ और दूसरे बरस के पहिले महीने के पहिले दिन को निवास खड़ा किया गया। १८ और मूसा ने निवास को खड़ा करवाया, और उसकी कुर्सियां धर उसके तख़्ते लगाके उन में बेंड़े डाले, और उसके खम्भों को खड़ा किया; १९ और उस ने निवास के ऊपर तम्बू को फैलाया, और तम्बू के ऊपर उस ने ओढ़ने को लगाया; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। २० और उस ने साक्षीपत्र को लेकर सन्दूक में रखा, और सन्दूक में डण्डों को लगाके उसके ऊपर प्रायश्चित्त के ढकने को धर दिया; २१ और उस ने सन्दूक को निवास में पहुंचवाया, और बीचवाले पर्दे को लटकवाके साक्षीपत्र के सन्दूक को उसके अन्दर किया; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। २२ और उस ने मिलापवाले तम्बू में निवास की उत्तर अलंग पर बीच के पर्दे से बाहर मेज़ को लगवाया, २३ और उस पर उस ने यहोवा के सम्मुख रोटी सजाकर रखी; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। २४ और उस ने मिलापवाले तम्बू में मेज़ के साम्हने निवास की दक्खिन अलंग पर दीवट को रखा, २५ और उस ने दीपकों को यहोवा के सम्मुख जला दिया; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। २६ और उस ने मिलापवाले तम्बू में बीच के पर्दे के साम्हने सोने की वेदी को रखा, २७ और उस ने उस पर सुगन्धित धूप जलाया; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। २८ और उस ने निवास के द्वार पर पर्दे को लगाया। २९ और मिलापवाले तम्बू के निवास के द्वार पर होमवेदी को रखकर उस पर होमबलि और अन्नबलि को चढ़ाया; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। ३० और उस ने मिलापवाले तम्बू और वेदी के बीच हौदी को रखकर उस में धोने के लिये जल डाला, ३१ और मूसा और हारून और उसके पुत्रों ने उस में अपने अपने हाथ पांव धोए; ३२ और जब जब वे मिलापवाले तम्बू में वा वेदी के पास जाते थे तब तब वे हाथ पांव धोते थे; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। ३३ और उस ने निवास की चारों ओर और वेदी के आसपास आंगन की कनात को खड़ा करवाया, और आंगन के द्वार के पर्दे को लटका दिया। इस प्रकार मूसा ने सब काम को पूरा कर समाप्त किया॥

३४ तब बादल मिलापवाले तम्बू पर छा गया, और यहोवा का तेज निवासस्थान

में भर गया। ३५ और बादल जो मिलापवाले तम्बू पर ठहर गया, और यहोवा का तेज जो निवासस्थान में भर गया, इस कारण मूसा उस में प्रवेश न कर सका। ३६ और इस्राएलियों की सारी यात्रा में ऐसा होता था, कि जब जब वह बादल निवास के ऊपर उठ जाता तब तब वे कूच करते थे। ३७ और यदि वह न उठता, तो जिस दिन तक वह न उठता था उस दिन तक वे कूच नहीं करते थे। ३८ इस्राएल के घराने की सारी यात्रा में दिन को तो यहोवा का बादल निवास पर, और रात को उसी बादल में आग उन सभों को दिखाई दिया करती थी॥

लैव्यव्यवस्था

(होमबलि की विधि)

१ यहोवा ने मिलापवाले तम्बू में से मूसा को बुलाकर उस से कहा, २ इस्राएलियों से कह, कि तुम में से यदि कोई मनुष्य यहोवा के लिये पशु का चढ़ावा चढ़ाए, तो उसका बलिपशु गाय-बैलों वा भेड़-बकरियों में से एक का हो॥

३ यदि वह गाय-बैलों में से होमबलि करे, तो निर्दोष नर मिलापवाले तम्बू के द्वार पर चढ़ाए, कि यहोवा उसे ग्रहण करे। ४ और वह अपना हाथ होमबलिपशु के सिर पर रखे, और वह उनके लिये प्रायश्चित्त करने को ग्रहण किया जाएगा। ५ तब वह उस बछड़े को यहोवा के साम्हने बलि करे; और हारून के पुत्र जो याजक हैं वे लोहू को समीप ले जाकर उस वेदी की चारों अलंगों पर छिड़कें जो मिलापवाले तम्बू के द्वार पर है। ६ फिर वह होमबलिपशु की खाल निकालकर उस पशु को टुकड़े टुकड़े करे; ७ तब हारून याजक के पुत्र वेदी पर आग रखें, और आग पर लकड़ी सजाकर धरें; ८ और हारून के पुत्र जो याजक हैं वे सिर और चरबी समेत पशु के टुकड़ों को उस लकड़ी पर जो वेदी की आग पर होगी सजाकर धरें; ९ और वह उसकी अंतड़ियों और पैरों को जल से धोए। तब याजक सब को वेदी पर जलाए, कि वह होमबलि यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्ध-वाला हवन ठहरे॥

१० और यदि वह भेड़ों वा बकरों का होमबलि चढ़ाए, तो निर्दोष नर को चढ़ाए। ११ और वह उसको यहोवा के आगे वेदी की उत्तरवाली अलंग पर बलि करे; और हारून के पुत्र जो याजक हैं वे उसके लोहू को वेदी की चारों अलंगों पर छिड़कें। १२ और वह उसको टुकड़े टुकड़े करे, और सिर और चरबी को अलग करे, और याजक इन सब को उस लकड़ी पर सजाकर धरे जो वेदी की आग पर होगी; १३ और वह उसकी अंतड़ियों और पैरों को जल से धोए। और याजक सब को समीप ले जाकर वेदी पर जलाए, कि वह होमबलि और यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्धवाला हवन ठहरे॥

१४ और यदि वह यहोवा के लिये पक्षियों का होमबलि चढ़ाए, तो पंडुकों वा कबूतरों का चढ़ावा चढ़ाए। १५ याजक उसको वेदी के समीप ले जाकर उसका गला मरोड़के सिर को धड़ से अलग करे, और वेदी पर जलाए; और उसका सारा लोहू उस वेदी की अलंग पर गिराया जाए; १६ और वह उसका ओझर मल सहित निकालकर वेदी की पूरब की ओर से राख डालने के स्थान पर फेंक दे; १७ और वह उसको पंखों के बीच से फाड़े, पर अलग अलग न करे। तब याजक उसको वेदी पर उस लकड़ी के ऊपर रखकर जो आग पर होगी जलाए, कि वह होमबलि और यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्धवाला हवन ठहरे॥

(अन्नबलि की विधि)

२ और जब कोई यहोवा के लिये अन्नबलि का चढ़ावा चढ़ाना चाहे, तो वह मैदा चढ़ाए; और उस पर तेल डालकर उसके ऊपर लोबान रखे; २ और वह उसको हारून के पुत्रों के पास जो याजक हैं लाए। और अन्नबलि के तेल मिले हुए मैदे में से इस तरह अपनी मुट्ठी भरकर निकाले कि सब लोबान उस में आ जाए; और याजक उन्हें स्मरण दिलानेवाले भाग के लिये वेदी पर जलाए, कि यह यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्धित हवन ठहरे। ३ और अन्नबलि में से जो बचा रहे सो हारून और उसके पुत्रों का ठहरे; यह यहोवा के हवनों में से परमपवित्र वस्तु होगी॥

४ और जब तू अन्नबलि के लिये तन्दूर में पकाया हुआ चढ़ावा चढ़ाए, तो वह तेल से सने हुए अखमीरी मैदे के फुलकों, वा तेल से चुपड़ी हुई अखमीरी चपातियों का हो। ५ और यदि तेरा चढ़ावा तवे पर पकाया हुआ अन्नबलि हो, तो वह तेल से सने हुए अखमीरी मैदे का हो; ६ उसको टुकड़े टुकड़े करके उस पर तेल डालना, तब वह अन्नबलि हो जाएगा। ७ और यदि तेरा चढ़ावा कढ़ाही में तला हुआ अन्नबलि हो, तो वह मैदे से तेल में बनाया जाए। ८ और जो अन्नबलि इन वस्तुओं में से किसी का बना हो उसे यहोवा के समीप ले जाना; और जब वह याजक के पास लाया जाए, तब याजक उसे वेदी के समीप ले जाए। ९ और याजक अन्नबलि में से स्मरण दिलानेवाला भाग निकालकर वेदी पर जलाए, कि वह यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्धवाला हवन ठहरे; १० और अन्नबलि में से जो बचा रहे वह हारून और उसके पुत्रों का ठहरे; वह यहोवा के हवनों में परमपवित्र वस्तु होगी। ११ कोई अन्नबलि जिसे तुम यहोवा के लिये चढ़ाओ खमीर मिलाकर बनाया न जाए; तुम कभी हवन में यहोवा के लिये खमीर और मधु न जलाना। १२ तुम इनको पहिली उपज का चढ़ावा करके यहोवा के लिये चढ़ाना, पर वे सुखदायक सुगन्ध के लिये वेदी पर चढ़ाए न जाएं। १३ फिर अपने सब अन्नबलियों को नमकीन बनाना; और अपना कोई अन्नबलि अपने परमेश्वर के साथ बन्धी हुई वाचा के नमक से रहित होने न देना; अपने सब चढ़ावों के साथ नमक भी चढ़ाना॥

१४ और यदि तू यहोवा के लिये पहिली उपज का अन्नबलि चढ़ाए, तो अपनी पहिली उपज के अन्नबलि के लिये आग से झुलसाई हुई हरी हरी बालें, अर्थात् हरी हरी बालों को मींजके निकाल लेना, तब अन्न को चढ़ाना। १५ और उस में तेल डालना, और उसके ऊपर लोबान रखना; तब वह

अन्नबलि हो जाएगा। १६ और याजक मींजकर निकाले हुए अन्न को, और तेल को, और सारे लोबान को स्मरण दिलानेवाला भाग करके जला दे; वह यहोवा के लिये हवन ठहरे॥

(मेलबलि की विधि)

३ और यदि उसका चढ़ावा मेलबलि का हो, और यदि वह गाय-बैलों में से किसी को चढ़ाए, तो चाहे वह पशु नर हो या मादा, पर जो निर्दोष हो उसी को वह यहोवा के आगे चढ़ाए। २ और वह अपना हाथ अपने चढ़ावे के पशु के सिर पर रखे और उसको मिलापवाले तम्बू के द्वार पर बलि करे; और हारून के पुत्र जो याजक हैं वे उसके लोहू को वेदी की चारों अलंगों पर छिड़कें। ३ और वह मेलबलि में से यहोवा के लिये हवन करे, अर्थात् जिस चरबी से अंतड़ियां ढपी रहती हैं, और जो चरबी उन में लिपटी रहती है वह भी, ४ और दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चरबी जो कमर के पास रहती है, और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली, इन सभों को वह अलग करे। ५ और हारून के पुत्र इनको वेदी पर उस होमबलि के ऊपर जलाएं, जो उन लकड़ियों पर होगी जो आग के ऊपर हैं, कि यह यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्धवाला हवन ठहरे॥

६ और यदि यहोवा के मेलबलि के लिये उसका चढ़ावा भेड़-बकरियों में से हो, तो चाहे वह नर हो या मादा, पर जो निर्दोष हो उसी को वह चढ़ाए। ७ यदि वह भेड़ का बच्चा चढ़ाता हो, तो उसको यहोवा के साम्हने चढ़ाए, ८ और वह अपने चढ़ावे के पशु के सिर पर हाथ रखे और उसको मिलापवाले तम्बू के आगे बलि करे; और हारून के पुत्र उसके लोहू को वेदी की चारों अलंगों पर छिड़कें। ९ और मेलबलि में से चरबी को यहोवा के लिये हवन करे, अर्थात् उसकी चरबी भरी मोटी पूंछ को वह रीढ़ के पास से अलग करे, और जिस चरबी से अंतड़ियां ढपी रहती हैं, और जो चरबी उन में लिपटी रहती है, १० और दोनों गुर्दे, और जो चरबी उनके ऊपर कमर के पास रहती है, और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली, इन सभों को वह अलग करे। ११ और याजक इन्हें वेदी पर जलाए; यह यहोवा के लिये हवन रूपी भोजन ठहरे॥

१२ और यदि वह बकरा वा बकरी चढ़ाए, तो उसे यहोवा के साम्हने चढ़ाए। १३ और वह अपना हाथ उसके सिर पर रखे, और उसको मिलापवाले तम्बू के आगे बलि करे; और हारून के पुत्र उसके लोहू को वेदी की चारों अलंगों पर छिड़कें। १४ और वह उस में से अपना चढ़ावा यहोवा के लिये हवन करके चढ़ाए, अर्थात् जिस चरबी से अंतड़ियां ढपी रहती हैं, और जो चरबी उन में लिपटी रहती है वह भी, १५ और दोनों गुर्दे और जो चरबी उनके ऊपर कमर के पास रहती है, और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली, इन सभों को वह अलग करे। १६ और याजक इन्हें वेदी पर जलाए; यह तो हवन रूपी भोजन है जो सुखदायक सुगन्ध के लिये होता है; क्योंकि सारी चरबी यहोवा की है। १७ यह तुम्हारे निवासों में तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी के लिये सदा की विधि ठहरेगी कि तुम चरबी और लोहू कभी न खाओ॥

(पापबलि की विधि)

४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा २ कि इस्राएलियों से यह कह, कि यदि

कोई मनुष्य उन कामों में से जिनको यहोवा ने मना किया है किसी काम को भूल से करके पापी हो जाए; ३ और यदि अभिषिक्त याजक ऐसा पाप करे, जिस से प्रजा दोषी ठहरे, तो अपने पाप के कारण वह एक निर्दोष बछड़ा यहोवा को पापबलि करके चढ़ाए। ४ और वह उस बछड़े को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के आगे ले जाकर उसके सिर पर हाथ रखे, और उस बछड़े को यहोवा के साम्हने बलि करे। ५ और अभिषिक्त याजक बछड़े के लोहू में से कुछ लेकर मिलापवाले तम्बू में ले जाए; ६ और याजक अपनी उंगली लोहू में डुबो डुबोकर और उस में से कुछ लेकर पवित्रस्थान के बीचवाले पर्दे के आगे यहोवा के साम्हने सात बार छिड़के। ७ और याजक उस लोहू में से कुछ और लेकर सुगन्धित धूप की वेदी के सींगों पर जो मिलापवाले तम्बू में है यहोवा के साम्हने लगाए; फिर बछड़े के सब लोहू को वेदी के पाए पर जो मिलापवाले तम्बू के द्वार पर है उंडेल दे। ८ फिर वह पापबलि के बछड़े की सब चरबी को उस से अलग करे, अर्थात् जिस चरबी से अंतड़ियां ढपी रहती हैं, और जितनी चरबी उन में लिपटी रहती है, ९ और दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चरबी जो कमर के पास रहती है, और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली, इन सभों को वह ऐसे अलग करे, १० जैसे मेलबलिवाले चढ़ावे के बछड़े से अलग किए जाते हैं, और याजक इनको होमबलि की वेदी पर जलाए। ११ और उस बछड़े की खाल, पांव, सिर, अंतड़ियां, गोबर, १२ और सारा मांस, निदान समूचा बछड़ा छावनी से बाहर शुद्ध स्थान में, जहां राख डाली जाएगी, ले जाकर लकड़ी पर रखकर आग से जलाए; जहां राख डाली जाती है वह वहीं जलाया जाए॥

१३ और यदि इस्राएल की सारी मण्डली अज्ञानता के कारण पाप करे और वह बात मण्डली की आँखों से छिपी हो, और वे यहोवा की किसी आज्ञा के विरुद्ध कुछ करके दोषी ठहरे हों; १४ तो जब उनका किया हुआ पाप प्रगट हो जाए तब मण्डली एक बछड़े को पापबलि करके चढ़ाए। वह उसे मिलापवाले तम्बू के आगे ले जाए, १५ और मण्डली के वृद्ध लोग अपने अपने हाथों को यहोवा के आगे बछड़े के सिर पर रखें, और वह बछड़ा यहोवा के साम्हने बलि किया जाए। १६ और अभिषिक्त याजक बछड़े के लोहू में से कुछ मिलापवाले तम्बू में ले जाए; १७ और याजक अपनी उंगली लोहू में डुबो डुबोकर उसे बीचवाले पर्दे के आगे सात बार यहोवा के साम्हने छिड़के। १८ और उसी लोहू में से वेदी के सींगों पर जो यहोवा के आगे मिलापवाले तम्बू में है लगाए; और बचा हुआ सब लोहू होमबलि की वेदी के पाए पर जो मिलापवाले तम्बू के द्वार पर है उंडेल दे। १९ और वह बछड़े की कुल चरबी निकालकर वेदी पर जलाए। २० और जैसे पापबलि के बछड़े से किया था वैसे ही इस से भी करे; इस भांति याजक इस्राएलियों के लिये प्रायश्चित्त करे, तब उनका वह पाप क्षमा किया जाएगा। २१ और वह बछड़े को छावनी से बाहर ले जाकर उसी भांति जलाए जैसे पहिले बछड़े को जलाया था; यह तो मण्डली के निमित्त पापबलि ठहरेगा॥

२२ जब कोई प्रधान पुरुष पाप करके, अर्थात् अपने परमेश्वर यहोवा की किसी आज्ञा के विरुद्ध भूल से कुछ करके दोषी हो

जाए, २३ और उसका पाप उस पर प्रगट हो जाए, तो वह एक निर्दोष बकरा बलिदान करने के लिये ले आए; २४ और बकरे के सिर पर अपना हाथ धरे, और बकरे को उस स्थान पर बलि करे जहां होमबलिपशु यहोवा के आगे बलि किये जाते हैं; यह तो पापबलि ठहरेगा। २५ और याजक अपनी उंगली से पापबलिपशु के लोहू में से कुछ लेकर होमबलि की वेदी के सींगों पर लगाए, और उसका लोहू होमबलि की वेदी के पाए पर उंडेल दे। २६ और वह उसकी कुल चरबी को मेलबलि की चरबी की नाईं वेदी पर जलाए; और याजक उसके पाप के विषय में प्रायश्चित्त करे, तब वह क्षमा किया जाएगा॥

२७ और यदि साधारण लोगों में से कोई अज्ञानता से पाप करे, अर्थात् कोई ऐसा काम जिसे यहोवा ने मना किया हो करके दोषी हो, और उसका वह पाप उस पर प्रगट हो जाए, २८ तो वह उस पाप के कारण एक निर्दोष बकरी बलिदान के लिये ले आए; २९ और वह अपना हाथ पापबलिपशु के सिर पर रखे, और होमबलि के स्थान पर पापबलिपशु का बलिदान करे। ३० और याजक उसके लोहू में से अपनी उंगली से कुछ लेकर होमबलि की वेदी के सींगों पर लगाए, और उसके सब लोहू को उसी वेदी के पाए पर उंडेल दे। ३१ और वह उसकी सब चरबी को मेलबलिपशु की चरबी की नाईं अलग करे, तब याजक उसको वेदी पर यहोवा के निमित्त सुखदायक सुगन्ध के लिये जलाए; और इस प्रकार याजक उसके लिये प्रायश्चित्त करे, तब उसे क्षमा मिलेगी॥

३२ और यदि वह पापबलि के लिये एक भेड़ी का बच्चा ले आए, तो वह निर्दोष मादा हो, ३३ और वह अपना हाथ पापबलि-पशु के सिर पर रखे, और उसको पापबलि के लिये वहीं बलिदान करे जहां होमबलिपशु बलि किया जाता है। ३४ और याजक अपनी उंगली से पापबलि के लोहू में से कुछ लेकर होमबलि की वेदी के सींगों पर लगाए, और उसके सब लोहू को वेदी के पाए पर उंडेल दे। ३५ और वह उसकी सब चरबी को मेलबलिवाले भेड़ के बच्चे की चरबी की नाईं अलग करे, और याजक उसे वेदी पर यहोवा के हवनों के ऊपर जलाए; और इस प्रकार याजक उसके पाप के लिये प्रायश्चित्त करे, और वह क्षमा किया जाएगा॥

(दोषबलि की विधि)

५ और यदि कोई साक्षी होकर ऐसा पाप करे कि शपथ खिलाकर पूछने पर भी, कि क्या तू ने यह सुना अथवा जानता है, और वह बात प्रगट न करे, तो उसको अपने अधर्म का भार उठाना पड़ेगा। २ और यदि कोई किसी अशुद्ध वस्तु को अज्ञानता से छू ले, तो चाहे वह अशुद्ध बनैले पशु की, चाहे अशुद्ध घरेलू पशु की, चाहे अशुद्ध रेंगनेवाले जीव-जन्तु की लोथ हो, तो वह अशुद्ध होकर दोषी ठहरेगा। ३ और यदि कोई मनुष्य किसी अशुद्ध वस्तु को अज्ञानता से छू ले, चाहे वह अशुद्ध वस्तु किसी भी प्रकार की क्यों न हो जिस से लोग अशुद्ध हो जाते है, तो जब वह उस बात को जान लेगा तब वह दोषी ठहरेगा। ४ और यदि कोई बुरा वा भला करने को बिना सोचे समझे शपथ खाए, चाहे किसी प्रकार की बात वह बिना सोचे विचारे शपथ खाकर कहे, तो ऐसी बात में वह दोषी उस समय ठहरेगा जब उसे मालूम हो जाएगा। ५ और जब वह इन बातों में से

किसी भी बात में दोषी हो, तब जिस विषय में उस ने पाप किया हो वह उसको मान ले, ६ और वह यहोवा के साम्हने अपना दोषबलि ले आए, अर्थात् उस पाप के कारण वह एक भेड़ वा बकरी पापबलि करने के लिये ले आए; तब याजक उस पाप के विषय उसके लिये प्रायश्चित्त करे। ७ और यदि उसे भेड़ वा बकरी देने की सामर्थ्य न हो, तो अपने पाप के कारण दो पंडुकी वा कबूतरी के दो बच्चे दोषबलि चढ़ाने के लिये यहोवा के पास ले आए, उन में से एक तो पापबलि के लिये और दूसरा होमबलि के लिये। ८ और वह उनको याजक के पास ले आए, और याजक पापबलिवाले को पहिले चढ़ाए, और उसका सिर गले से मरोड़ डाले, पर अलग न करे, ९ और वह पापबलिपशु के लोहू में से कुछ वेदी की अलंग पर छिड़के, और जो लोहू शेष रहे वह वेदी के पाए पर गिराया जाए; वह तो पापबलि ठहरेगा। १० और दूसरे पक्षी को वह विधि के अनुसार होमबलि करे, और याजक उसके पाप का प्रायश्चित्त करे, और तब वह क्षमा किया जाएगा ॥

११ और यदि वह दो पंडुकी वा कबूतरी के दो बच्चे भी न दे सके, तो वह अपने पाप के कारण अपना चढ़ावा एपा का दसवां भाग मैदा पापबलि करके ले आए; उस पर न तो वह तेल डाले, और न लोबान रखे, क्योंकि वह पापबलि होगा। १२ वह उसको याजक के पास ले जाए, और याजक उस में से अपनी मुट्ठी भर स्मरण दिलानेवाला भाग जानकर वेदी पर यहोवा के हवनों के ऊपर जलाए; वह तो पापबलि ठहरेगा। १३ और इन बातों में से किसी भी बात के विषय में जो कोई पाप करे, याजक उसका प्रायश्चित्त करे, और तब वह पाप क्षमा किया जाएगा। और इस पापबलि का शेष अन्नबलि के शेष की नाईं याजक का ठहरेगा ॥

१४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १५ यदि कोई यहोवा की पवित्र की हुई वस्तुओं के विषय में भूल से विश्वासघात करे और पापी ठहरे, तो वह यहोवा के पास एक निर्दोष मेढ़ा दोषबलि के लिये ले आए; उसका दाम पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार उतने ही शेकेल रुपये का हो जितना याजक ठहराए। १६ और जिस पवित्र वस्तु के विषय उस ने पाप किया हो, उस में वह पांचवां भाग और बढ़ाकर याजक को दे; और याजक दोषबलि का मेढ़ा चढ़ाकर उसके लिये प्रायश्चित्त करे, तब उसका पाप क्षमा किया जाएगा ॥

१७ और यदि कोई ऐसा पाप करे, कि उन कामों में से जिन्हें यहोवा ने मना किया है किसी काम को करे, तो चाहे वह उसके अनजाने में हुआ हो, तौभी वह दोषी ठहरेगा, और उसको अपने अधर्म का भार उठाना पड़ेगा। १८ इसलिये वह एक निर्दोष मेढ़ा दोषबलि करके याजक के पास ले आए, वह उतने ही दाम का हो जितना याजक ठहराए, और याजक उसके लिये उसकी उस भूल का जो उस ने अनजाने में की हो प्रायश्चित्त करे, और वह क्षमा किया जाएगा। १९ यह दोषबलि ठहरे; क्योंकि वह मनुष्य निःसन्देह यहोवा के सम्मुख दोषी ठहरेगा ॥

६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ यदि कोई यहोवा का विश्वासघात करके पापी ठहरे, जैसा कि धरोहर, वा लेनदेन, वा लूट के विषय में अपने भाई से छल करे, वा उस पर अन्धेर करे, ३ वा पड़ी

हुई वस्तु को पाकर उसके विषय झूठ बोले और झूठी शपथ भी खाए; ऐसी कोई भी बात क्यों न हो जिसे करके मनुष्य पापी ठहरते हैं, ४ तो जब वह ऐसा काम करके दोषी हो जाए, तब जो भी वस्तु उस ने लूट, वा अन्धेर करके, वा धरोहर, वा पड़ी पाई हो; ५ चाहे कोई वस्तु क्यों न हो जिसके विषय में उस ने झूठी शपथ खाई हो; तो वह उसको पूरा पूरा लौटा दे, और पांचवां भाग भी बढ़ाकर भर दे, जिस दिन यह मालूम हो कि वह दोषी है, उसी दिन वह उस वस्तु को उसके स्वामी को लौटा दे। ६ और वह यहोवा के सम्मुख अपना दोषबलि भी ले आए, अर्थात् एक निर्दोष मेढ़ा दोषबलि के लिये याजक के पास ले आए, वह उतने ही दाम का हो जितना याजक ठहराए। ७ इस प्रकार याजक उसके लिये यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करे, और जिस काम को करके वह दोषी हो गया है उसकी क्षमा उसे मिलेगी ।।

(भांति भांति के बलिदानों की विधि)

८ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, ९ हारून और उसके पुत्रों को आज्ञा देकर यह कह, कि होमबलि की व्यवस्था यह है; अर्थात् होमबलि ईंधन के ऊपर रात भर भोर तक वेदी पर पड़ा रहे, और वेदी की अग्नि वेदी पर जलती रहे। १० और याजक अपने सनी के वस्त्र और अपने तन पर अपनी सनी की जांघिया पहिनकर होमबलि की राख, जो आग के भस्म करने से वेदी पर रह जाए, उसे उठाकर वेदी के पास रखे। ११ तब वह अपने ये वस्त्र उतारकर दूसरे वस्त्र पहिनकर राख को छावनी से बाहर किसी शुद्ध स्थान पर ले जाए। १२ और वेदी पर अग्नि जलती रहे, और कभी बुझने न पाए; और याजक भोर भोर उस पर लकड़ियां जलाकर होमबलि के टुकड़ों को उसके ऊपर सजाकर धर दे, और उसके ऊपर मेलबलियों की चरबी को जलाया करे। १३ वेदी पर आग लगातार जलती रहे; वह कभी बुझने न पाए ।।

१४ अन्नबलि की व्यवस्था इस प्रकार है, कि हारून के पुत्र उसको वेदी के आगे यहोवा के समीप ले आएं। १५ और वह अन्नबलि के तेल मिले हुए मैदे में से मुट्ठी भर और उस पर का सब लोबान उठाकर अन्नबलि के स्मरणार्थ के इस भाग को यहोवा के सम्मुख सुखदायक सुगन्ध के लिये वेदी पर जलाए। १६ और उस में से जो शेष रह जाए उसे हारून और उसके पुत्र खा जाएं; वह बिना ख़मीर पवित्र स्थान में खाया जाए, अर्थात् वे मिलापवाले तम्बू के आंगन में उसे खाएं। १७ वह ख़मीर के साथ पकाया न जाए; क्योंकि मैं ने अपने हव्य में से उसको उनका निज भाग होने के लिये उन्हें दिया है; इसलिये जैसा पापबलि और दोषबलि परमपवित्र हैं, वैसा ही वह भी है। १८ हारून के वंश के सब पुरुष उस में से खा सकते हैं, तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में यहोवा के हवनों में से यह उनका भाग सदैव बना रहेगा; जो कोई उन हवनों को छूए वह पवित्र ठहरेगा ।।

१९ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २० जिस दिन हारून का अभिषेक हो उस दिन वह अपने पुत्रों के साथ यहोवा को यह चढ़ावा चढ़ाए; अर्थात् एपा का दसवां भाग मैदा नित्य अन्नबलि में चढ़ाए, उस में से आधा भोर को और आधा सन्ध्या के समय चढ़ाए। २१ वह तवे पर तेल के साथ पकाया जाए; जब वह तेल से तर हो जाए तब उसे ले आना, इस अन्नबलि के पके

हुए टुकड़े यहोवा के सुखदायक सुगन्ध के लिये चढ़ाना। २२ और उसके पुत्रों में से जो भी उस याजकपद पर अभिषिक्त होगा, वह भी उसी प्रकार का चढ़ावा चढ़ाया करे; यह विधि सदा के लिये है, कि यहोवा के सम्मुख वह सम्पूर्ण चढ़ावा जलाया जाये। २३ याजक के सम्पूर्ण अन्नबलि भी सब जलाए जाएं; वह कभी न खाया जाए॥

२४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २५ हारून और उसके पुत्रों से यह कह, कि पापबलि की व्यवस्था यह है; अर्थात् जिस स्थान में होमबलिपशु बध किया जाता है उसी में पापबलिपशु भी यहोवा के सम्मुख बलि किया जाए; वह परमपवित्र है। २६ और जो याजक पापबलि चढ़ावे वह उसे खाए; वह पवित्र स्थान में, अर्थात् मिलापवाले तम्बू के आँगन में खाया जाए। २७ जो कुछ उसके मांस से छू जाए, वह पवित्र ठहरेगा; और यदि उसके लोहू के छींटे किसी वस्त्र पर पड़ जाएं, तो उसे किसी पवित्रस्थान में धो देना। २८ और वह मिट्टी का पात्र जिस में वह पकाया गया हो तोड़ दिया जाए; यदि वह पीतल के पात्र में सिझाया गया हो, तो वह मांजा जाए, और जल से धो लिया जाए। २९ और याजकों में से सब पुरुष उसे खा सकते हैं; वह परमपवित्र वस्तु है। ३० पर जिस पापबलिपशु के लोहू में से कुछ भी खून मिलापवाले तम्बू के भीतर पवित्रस्थान में प्रायश्चित्त करने को पहुंचाया जाए तब तो उसका मांस कभी न खाया जाए; वह आग में जला दिया जाए॥

७ फिर दोषबलि की व्यवस्था यह है। वह परमपवित्र है; २ जिस स्थान पर होमबलिपशु का वध करते हैं उसी स्थान पर दोषबलिपशु का भी बलि करें, और उसके लोहू को याजक वेदी पर चारों ओर छिड़के। ३ और वह उस में की सब चरबी को चढ़ाए, अर्थात् उसकी मोटी पूंछ को, और जिस चरबी से अंतड़ियां ढपी रहती हैं वह भी, ४ और दोनों गुर्दे और जो चरबी उनके ऊपर और कमर के पास रहती है, और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली, इन सभों को वह अलग करे; ५ और याजक इन्हें वेदी पर यहोवा के लिये हवन करे; तब वह दोषबलि होगा। ६ याजकों में के सब पुरुष उस में से खा सकते हैं; वह किसी पवित्रस्थान में खाया जाए; क्योंकि वह परमपवित्र है। ७ जैसा पापबलि है वैसा ही दोषबलि भी है, उन दोनों की एक ही व्यवस्था है; जो याजक उन बलियों को चढ़ा के प्रायश्चित्त करे वही उन वस्तुओं को ले ले। ८ और जो याजक किसी के लिये होमबलि को चढ़ाए उस होमबलिपशु की खाल को वही याजक ले ले। ९ और तंदूर में, वा कढ़ाही में, वा तवे पर पके हुए सब अन्नबलि उसी याजक की होंगी जो उन्हें चढ़ाता है। १० और सब अन्नबलि, जो चाहे तेल से सने हुए हों चाहे रूखे हों, वे हारून के सब पुत्रों को एक समान मिले॥

११ और मेलबलि की जिसे कोई यहोवा के लिये चढ़ाए व्यवस्था यह है। १२ यदि वह उसे धन्यवाद के लिये चढ़ाए, तो धन्यवाद-बलि के साथ तेल से सने हुए अखमीरी फुलके, और तेल से चुपड़ी हुई अखमीरी रोटियां, और तेल से सने हुए मैदे के फुलके तेल से तर चढ़ाए। १३ और वह अपने धन्यवादवाले मेलबलि के साथ अखमीरी रोटियां भी चढ़ाए। १४ और ऐसे एक एक चढ़ावे में से वह एक एक रोटी यहोवा

को उठाने की भेंट करके चढ़ाए; वह मेलबलि के लोहू के छिड़कनेवाले याजक की होगी। १५ और उस धन्यवादवाले मेलबलि का मांस बलिदान चढ़ाने के दिन ही खाया जाए; उस में से कुछ भी भोर तक शेष न रह जाए। १६ पर यदि उसके बलिदान का चढ़ावा मन्नत का वा स्वेच्छा का हो, तो उस बलिदान को जिस दिन वह चढ़ाया जाए उसी दिन वह खाया जाए, और उस में से जो शेष रह जाए वह दूसरे दिन भी खाया जाए। १७ परन्तु जो कुछ बलिदान के मांस में से तीसरे दिन तक रह जाए वह आग में जला दिया जाए। १८ और उसके मेलबलि के मांस में से यदि कुछ भी तीसरे दिन खाया जाए, तो वह ग्रहण न किया जाएगा, और न पुन में गिना जाएगा; वह घृणित कर्म समझा जाएगा, और जो कोई उस में से खाए उसका अधर्म उसी के सिर पर पड़ेगा। १९ फिर जो मांस किसी अशुद्ध वस्तु से छू जाए वह न खाया जाए; वह आग में जला दिया जाए। फिर मेलबलि का मांस जितने शुद्ध हों वे ही खाएं, २० परन्तु जो अशुद्ध होकर यहोवा के मेलबलि के मांस में से कुछ खाए वह अपने लोगों में से नाश किया जाए। २१ और यदि कोई किसी अशुद्ध वस्तु को छूकर यहोवा के मेलबलिपशु के मांस में से खाए, तो वह भी अपने लोगों में से नाश किया जाए, चाहे वह मनुष्य की कोई अशुद्ध वस्तु वा अशुद्ध पशु वा कोई भी अशुद्ध और घृणित वस्तु हो॥

२२ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २३ इस्राएलियों से इस प्रकार कह, कि तुम लोग न तो बैल की कुछ चरबी खाना और न भेड़ वा बकरी की। २४ और जो पशु स्वयं मर जाए, और जो दूसरे पशु से फाड़ा जाए, उसकी चरबी और और काम में लाना, परन्तु उसे किसी प्रकार से खाना नहीं। २५ जो कोई ऐसे पशु की चरबी खाएगा जिस में से लोग कुछ यहोवा के लिये हवन करके चढ़ाया करते हैं वह खानेवाला अपने लोगों में से नाश किया जाएगा। २६ और तुम अपने घर में किसी भांति का लोहू, चाहे पक्षी का चाहे पशु का हो, न खाना। २७ हर एक प्राणी जो किसी भांति का लोहू खाएगा वह अपने लोगों में से नाश किया जाएगा॥

२८ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २९ इस्राएलियों से इस प्रकार कह, कि जो यहोवा के लिये मेलबलि चढ़ाए वह उसी मेलबलि में से यहोवा के पास भेंट ले आए; ३० वह अपने ही हाथों से यहोवा के हव्य को, अर्थात् छाती समेत चरबी को ले आए, कि छाती हिलाने की भेंट करके यहोवा के साम्हने हिलाई जाए। ३१ और याजक चरबी को तो वेदी पर जलाए, परन्तु छाती हारून और उसके पुत्रों की होगी। ३२ फिर तुम अपने मेलबलियों में से दहिनी जांघ को भी उठाने की भेंट करके याजक को देना; ३३ हारून के पुत्रों में से जो मेलबलि के लोहू और चरबी को चढ़ाए दहिनी जांघ उसी का भाग होगा। ३४ क्योंकि इस्राएलियों के मेलबलियों में से हिलाने की भेंट की छाती और उठाने की भेंट की जांघ को लेकर मैं ने याजक हारून और उसके पुत्रों को दिया है, कि यह सर्वदा इस्राएलियों की ओर से उनका हक़ बना रहे॥

३५ जिस दिन हारून और उसके पुत्र यहोवा के समीप याजक पद के लिये लाए गए उसी दिन यहोवा के हव्यों में से उनका यही अभिषिक्त भाग ठहराया गया;

३६ अर्थात् जिस दिन यहोवा ने उनका अभिषेक किया उसी दिन उस ने आज्ञा दी कि उनको इस्राएलियों की ओर से ये ही भाग नित मिला करें; उनकी पीढ़ी पीढ़ी के लिये उनका यही हक़ ठहराया गया। ३७ होमबलि, अन्नबलि, पापबलि, दोषबलि, याजकों के संस्कार बलि, और मेलबलि की व्यवस्था यही है; ३८ जब यहोवा ने सीनै पर्वत के पास के जंगल में मूसा को आज्ञा दी कि इस्राएली मेरे लिये क्या क्या चढ़ावे चढ़ाएं, तब उस ने उनको यही व्यवस्था दी थी।।

(याजकों के संस्कार का वर्णन)

८ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ तू हारून और उसके पुत्रों के वस्त्रों, और अभिषेक के तेल, और पापबलि के बछड़े, और दोनों मेढ़ों, और अख़मीरी रोटी की टोकरी को ३ मिलापवाले तम्बू के द्वार पर ले आ, और वहीं सारी मण्डली को इकट्ठा कर। ४ यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने किया; और मण्डली मिलापवाले तम्बू के द्वार पर इकट्ठी हुई। ५ तब मूसा ने मण्डली से कहा, जो काम करने की आज्ञा यहोवा ने दी है वह यह है। ६ फिर मूसा ने हारून और उसके पुत्रों को समीप ले जाकर जल से नहलाया। ७ तब उस ने उनको अंगरखा पहिनाया, और कटिबन्द लपेटकर बागा पहिना दिया, और एपोद लगाकर एपोद के काढ़े हुए पटुके से एपोद को बान्धकर कस दिया। ८ और उस न उनके चपरास लगाकर चपरास में ऊरीम और तुम्मीम रख दिए। ९ तब उस ने उसके सिर पर पगड़ी बान्धकर पगड़ी के साम्हने पर सोने के टीके को, अर्थात् पवित्र मुकुट को लगाया, जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। १० तब मूसा ने अभिषेक का तेल लेकर निवास का और जो कुछ उस में था उन सब का भी अभिषेक करके उन्हें पवित्र किया। ११ और उस तेल में से कुछ उस ने वेदी पर सात बार छिड़का, और कुल सामान समेत वेदी का और पाए समेत हौदी का अभिषेक करके उन्हें पवित्र किया। १२ और उस ने अभिषेक के तेल में से कुछ हारून के सिर पर डालकर उसका अभिषेक करके उसे पवित्र किया। १३ फिर मूसा ने हारून के पुत्रों को समीप ले आकर, अंगरखे पहिनाकर, फेटे बान्ध के उनके सिर पर टोपी रख दी, जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। १४ तब वह पापबलि के बछड़े को समीप ले गया; और हारून और उसके पुत्रों ने अपने अपने हाथ पापबलि के बछड़े के सिर पर रखे। १५ तब वह बलि किया गया, और मूसा ने लोहू को लेकर उंगली से वेदी के चारों सींगों पर लगाकर पवित्र किया, और लोहू को वेदी के पाए पर उंडेल दिया, और उसके लिये प्रायश्चित्त करके उसको पवित्र किया। १६ और मूसा ने अंतड़ियों पर की सब चरबी, और कलेजे पर की झिल्ली, और चरबी समेत दोनों गुर्दों को लेकर वेदी पर जलाया। १७ और बछड़े में से जो कुछ शेष रह गया उसको, अर्थात् गोबर समेत उसकी खाल और मांस को उस ने छावनी से बाहर आग में जलाया, जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। १८ फिर वह होमबलि के मेढ़े को समीप ले गया, और हारून और उसके पुत्रों ने अपने अपने हाथ मेढ़े के सिर पर रखे। १९ तब वह बलि किया गया, और मूसा ने उसका लोहू वेदी पर चारों ओर छिड़का। २० तब मेढ़ा टुकड़े टुकड़े

किया गया, और मूसा ने सिर और चरबी समेत टुकड़ों को जलाया। २१ तब अंतड़ियां और पांव जल से धोये गए, और मूसा ने पूरे मेढ़े को वेदी पर जलाया, और वह सुखदायक सुगन्ध देने के लिये होमबलि और यहोवा के लिये हव्य हो गया, जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। २२ फिर वह दूसरे मेढ़े को जो संस्कार का मेढ़ा था समीप ले गया, और हारून और उसके पुत्रों ने अपने अपने हाथ मेढ़े के सिर पर रखे। २३ तव वह बलि किया गया, और मूसा ने उसके लोहू में से कुछ लेकर हारून के दहिने कान के सिरे पर और उसके दहिने हाथ और दहिने पांव के अंगूठों पर लगाया। २४ और वह हारून के पुत्रों को समीप ले गया, और लोहू में से कुछ एक एक के दहिने कान के सिरे पर और दहिने हाथ और दहिने पांव के अंगूठों पर लगाया; और मूसा ने लोहू को वेदी पर चारों ओर छिड़का। २५ और उस ने चरबी, और मोटी पूंछ, और अंतड़ियों पर की सब चरबी, और कलेजे पर की झिल्ली समेत दोनों गुर्दे, और दहिनी जांघ, ये सब लेकर अलग रखे; २६ और अखमीरी रोटी की टोकरी जो यहोवा के आगे रखी गई थी उस में से एक रोटी, और तेल से सने हुए मैदे का एक फुलका, और एक रोटी लेकर चरबी और दहिनी जांघ पर रख दी; २७ और ये सब वस्तुएं हारून और उसके पुत्रों के हाथों पर धर दी गईं, और हिलाने की भेंट के लिये यहोवा के आगे हिलाई गईं। २८ और मूसा ने उन्हें फिर उनके हाथों पर से लेकर उन्हें वेदी पर होमबलि के ऊपर जलाया, यह सुखदायक सुगन्ध देने के लिये संस्कार की भेंट और यहोवा के लिये हव्य था। २९ तब मूसा ने छाती को लेकर हिलाने की भेंट के लिये यहोवा के आगे हिलाया; और संस्कार के मेढ़े में से मूसा का भाग यही हुआ जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। ३० और मूसा ने अभिषेक के तेल और वेदी पर के लोहू, दोनों में से कुछ लेकर हारून और उसके वस्त्रों पर, और उसके पुत्रों और उनके वस्त्रों पर भी छिड़का; और उस ने वस्त्रों समेत हारून को और वस्त्रों समेत उसके पुत्रों को भी पवित्र किया। ३१ और मूसा ने हारून और उसके पुत्रों से कहा, मांस को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर पकाओ, और उस रोटी को जो संस्कार की टोकरी में है वहीं खाओ, जैसा मैं ने आज्ञा दी है, कि हारून और उसके पुत्र उसे खाएं। ३२ और मांस और रोटी में से जो शेष रह जाए उसे आग में जला देना। ३३ और जब तक तुम्हारे संस्कार के दिन पूरे न हों तब तक, अर्थात् सात दिन तक मिलापवाले तम्बू के द्वार के बाहर न जाना, क्योंकि वह सात दिन तक तुम्हारा संस्कार करता रहेगा। ३४ जिस प्रकार आज किया गया है वैसा ही करने की आज्ञा यहोवा ने दी है, जिस से तुम्हारा प्रायश्चित्त किया जाए। ३५ इसलिये तुम मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सात दिन तक दिन रात ठहरे रहना, और यहोवा की आज्ञा को मानना, ताकि तुम मर न जाओ; क्योंकि ऐसी ही आज्ञा मुझे दी गई है। ३६ तब यहोवा की इन्हीं सब आज्ञाओं के अनुसार जो उस ने मूसा के द्वारा दी थीं हारून और उसके पुत्रों ने उनका पालन किया॥

९ आठवें दिन मूसा ने हारून और उसके पुत्रों को और इस्राएली पुरनियों को बुलवाकर हारून से कहा,

२ पापबलि के लिये एक निर्दोष बछड़ा, और होमबलि के लिये एक निर्दोष मेढ़ा लेकर यहोवा के साम्हने भेंट चढ़ा। ३ और इस्राएलियों से यह कह, कि तुम पापबलि के लिये एक बकरा, और होमबलि के लिये एक बछड़ा और एक भेड़ का बच्चा लो, जो एक वर्ष के हों और निर्दोष हों, ४ और मेलबलि के लिये यहोवा के सम्मुख चढ़ाने के लिये एक बैल और एक मेढ़ा, और तेल से सने हुए मैदे का एक अन्नबलि भी ले लो; क्योंकि आज यहोवा तुम को दर्शन देगा। ५ और जिस जिस वस्तु की आज्ञा मूसा ने दी उन सब को वे मिलापवाले तम्बू के आगे ले आए; और सारी मण्डली समीप जाकर यहोवा के साम्हने खड़ी हुई। ६ तब मूसा ने कहा, यह वह काम है जिसके करने के लिये यहोवा ने आज्ञा दी है कि तुम उसे करो; और यहोवा की महिमा का तेज तुम को दिखाई पड़ेगा। ७ और मूसा ने हारून से कहा, यहोवा की आज्ञा के अनुसार वेदी के समीप जाकर अपने पापबलि और होमबलि को चढ़ाकर अपने और सब जनता के लिये प्रायश्चित्त कर; और जनता के चढ़ावे को भी चढ़ाकर उनके लिये प्रायश्चित्त कर। ८ इसलिये हारून ने वेदी के समीप जाकर अपने पापबलि के बछड़े का बलिदान किया। ९ और हारून के पुत्र लोहू को उसके पास ले गए, तब उस ने अपनी उंगली को लोहू में डुबाकर वेदी के सींगों पर लोहू को लगाया, और शेष लोहू को वेदी के पाए पर उंडेल दिया; १० और पापबलि में की चरबी और गुर्दों और कलेजे पर की झिल्ली को उस ने वेदी पर जलाया, जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। ११ और मांस और खाल को उस ने छावनी से बाहर आग में जलाया। १२ तब होमबलिपशु का बलिदान किया; और हारून के पुत्रों ने लोहू को उसके हाथ में दिया, और उस ने उसको वेदी पर चारों ओर छिड़क दिया। १३ तब उन्हों ने होमबलिपशु का टुकड़ा टुकड़ा करके सिर सहित उसके हाथ में दे दिया और उस ने उनको वेदी पर जला दिया। १४ और उस ने अंतड़ियों और पांवों को धोकर वेदी पर होमबलि के ऊपर जलाया। १५ और उस ने लोगों के चढ़ावे को आगे लेकर और उस पापबलि के बकरे को जो उनके लिये था लेकर उसका बलिदान किया, और पहिले के समान उसे भी पापबलि करके चढ़ाया। १६ और उस ने होमबलि को भी समीप ले जाकर विधि के अनुसार चढ़ाया। १७ और अन्नबलि को भी समीप ले जाकर उस में से मुट्ठी भर वेदी पर जलाया, यह भोर के होमबलि के अलावा चढ़ाया गया। १८ और बैल और मेढ़ा, अर्थात् जो मेलबलिपशु जनता के लिये थे वे भी बलि किये गए; और हारून के पुत्रों ने लोहू को उसके हाथ में दिया, और उस ने उसको वेदी पर चारों ओर छिड़क दिया; १९ और उन्हों ने बैल की चरबी को, और मेढ़े में से मोटी पूंछ को, और जिस चरबी से अंतड़ियां ढपी रहती हैं उसको, और गुर्दों सहित कलेजे पर की झिल्ली को भी उसके हाथ में दिया; २० और उन्हों ने चरबी को छातियों पर रखा; और उस ने वह चरबी वेदी पर जलाई, २१ परन्तु छातियों और दहिनी जांघ को हारून ने मूसा की आज्ञा के अनुसार हिलाने की भेंट के लिये यहोवा के साम्हने हिलाया। २२ तब हारून ने लोगों की ओर हाथ बढ़ाकर उन्हें आशीर्वाद दिया; और पापबलि, होमबलि, और मेलबलियों को चढ़ाकर वह नीचे

उतर आया। २३ तब मूसा और हारून मिलापवाले तम्बू में गए, और निकलकर लोगों को आशीर्वाद दिया; तब यहोवा का तेज सारी जनता को दिखाई दिया। २४ और यहोवा के साम्हने से आग निकलकर चरबी सहित होमबलि को वेदी पर भस्म कर दिया; इसे देखकर जनता ने जय जयकार का नारा मारा, और अपने अपने मुंह के बल गिरकर दण्डवत् किया॥

(नादाब और अबीहू के भस्म होने का वर्णन)

१० तब नादाब और अबीहू नामक हारून के दो पुत्रों ने अपना अपना धूपदान लिया, और उन में आग भरी, और उस में धूप डालकर उस ऊपरी आग की जिसकी आज्ञा यहोवा ने नहीं दी थी यहोवा के सम्मुख आरती दी। २ तब यहोवा के सम्मुख से आग निकलकर उन दोनों को भस्म कर दिया, और वे यहोवा के साम्हने मर गए। ३ तब मूसा ने हारून से कहा, यह वही बात है जिसे यहोवा ने कहा था, कि जो मेरे समीप आए अवश्य है कि वह मुझे पवित्र जाने, और सारी जनता के साम्हने मेरी महिमा करे। और हारून चुप रहा। ४ तब मूसा ने मीशाएल और एलसाफान को जो हारून के चाचा उज्जीएल के पुत्र थे बुलाकर कहा, निकट आओ, और अपने भतीजों को पवित्रस्थान के आगे से उठाकर छावनी के बाहर ले जाओ। ५ मूसा की इस आज्ञा के अनुसार वे निकट जाकर उनको अंगरखों सहित उठाकर छावनी के बाहर ले गए। ६ तब मूसा ने हारून से और उसके पुत्र एलीआजर और ईतामार से कहा, तुम लोग अपने सिरों के बाल मत बिखराओ, और न अपने वस्त्रों को फाड़ो, ऐसा न हो कि तुम भी मर जाओ, और सारी मण्डली पर उसका क्रोध भड़क उठे; परन्तु वह इस्राएल के कुल घराने के लोग जो तुम्हारे भाईबन्धु हैं यहोवा की लगाई हुई आग पर विलाप करें। ७ और तुम लोग मिलापवाले तम्बू के द्वार के बाहर न जाना, ऐसा न हो कि तुम मर जाओ; क्योंकि यहोवा के अभिषेक का तेल तुम पर लगा हुआ है। मूसा के इस वचन के अनुसार उन्हों ने किया॥

८ फिर यहोवा ने हारून से कहा, ९ कि जब जब तू वा तेरे पुत्र मिलापवाले तम्बू में आएं तब तब तुम में से कोई न तो दाखमधु पिए हो न और किसी प्रकार का मद्य, कहीं ऐसा न हो कि तुम मर जाओ; तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में यह विधि प्रचलित रहे, १० जिस से तुम पवित्र और अपवित्र में, और शुद्ध और अशुद्ध में अन्तर कर सको, ११ और इस्राएलियों को उन सब विधियों को सिखा सको जिसे यहोवा ने मूसा के द्वारा उनको सुनवा दी हैं॥

१२ फिर मूसा ने हारून से और उसके बचे हुए दोनों पुत्र ईतामार और एलीआज़र से भी कहा, यहोवा के हव्य में से जो अन्नबलि बचा है उसे लेकर वेदी के पास बिना खमीर खाओ, क्योंकि वह परमपवित्र है; १३ और तुम उसे किसी पवित्रस्थान में खाओ, वह तो यहोवा के हव्य में से तेरा और तेरे पुत्रों का हक है; क्योंकि मैं ने ऐसी ही आज्ञा पाई है। १४ और हिलाई हुई भेंट की छाती और उठाई हुई भेंट की जांघ को तुम लोग, अर्थात् तू और तेरे बेटे-बेटियां सब किसी शुद्ध स्थान में खाओ; क्योंकि वे इस्राएलियों के मेलबलियों में से तुझे और तेरे लड़केबालों को हक ठहरा दी गई हैं। १५ चरबी के हव्यों समेत जो उठाई हुई

जांघ और हिलाई हुई छाती यहोवा के साम्हने हिलाने के लिये आया करेंगी, ये भाग यहोवा की आज्ञा के अनुसार सर्वदा की विधि की व्यवस्था से तेरे और तेरे लड़केवालों के लिये हैं ॥

१६ फिर मूसा ने पापबलि के बकरे की जो ढूंढ़-ढांढ़ की, तो क्या पाया, कि वह जलाया गया है, सो एलीआज़र और ईतामार जो हारून के पुत्र बचे थे उन से वह क्रोध में आकर कहने लगा, १७ कि पापबलि जो परमपवित्र है और जिसे यहोवा ने तुम्हें इसलिये दिया है कि तुम मण्डली के अधर्म का भार अपने पर उठाकर उनके लिये यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करो, तुम ने उसका मांस पवित्रस्थान में क्यों नहीं खाया? १८ देखो, उसका लोहू पवित्रस्थान के भीतर तो लाया ही नहीं गया, निःसन्देह उचित था कि तुम मेरी आज्ञा के अनुसार उसके मांस को पवित्रस्थान में खाते। १९ इसका उत्तर हारून ने मूसा को इस प्रकार दिया, कि देख, आज ही उन्हों ने अपने पापबलि और होमबलि को यहोवा के साम्हने चढ़ाया; फिर मुझ पर ऐसी विपत्तियां आ पड़ी हैं! इसलिये यदि मैं आज पापबलि का मांस खाता तो क्या यह बात यहोवा के सम्मुख भली होती? २० जब मूसा ने यह सुना तब उसे संतोष हुआ ॥

(शुद्ध और अशुद्ध मांस की विधि)

११ फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, २ इस्राएलियों से कहो, कि जितने पशु पृथ्वी पर हैं उन सभों में से तुम इन जीवधारियों का मांस खा सकते हो। ३ पशुओं में से जितने चिरे वा फटे खुर के होते हैं और पागुर करते हैं उन्हें खा सकते हो। ४ परन्तु पागुर करनेवाले वा फटे खुरवालों में से इन पशुओं को न खाना, अर्थात् ऊंट, जो पागुर तो करता है परन्तु चिरे खुर का नहीं होता, इसलिये वह तुम्हारे लिये अशुद्ध ठहरा है। ५ और शापान, जो पागुर तो करता है परन्तु चिरे खुर का नहीं होता, वह भी तुम्हारे लिये अशुद्ध है। ६ और खरहा, जो पागुर तो करता है परन्तु चिरे खुर का नहीं होता, इसलिये वह भी तुम्हारे लिये अशुद्ध है। ७ और सूअर, जो चिरे अर्थात् फटे खुर का होता तो है परन्तु पागुर नहीं करता, इसलिये वह तुम्हारे लिये अशुद्ध है। ८ इनके मांस में से कुछ न खाना, और इनकी लोथ को छूना भी नहीं; ये तो तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं ॥

९ फिर जितने जलजन्तु हैं उन में से तुम इन्हें खा सकते हो, अर्थात् समुद्र वा नदियों के जलजन्तुओं में से जितनों के पंख और चोंयेटे होते हैं उन्हें खा सकते हो। १० और जलचरी प्राणियों में से जितने जीवधारी बिना पंख और चोंयेटे के समुद्र वा नदियों में रहते हैं वे सब तुम्हारे लिये घृणित हैं। ११ वे तुम्हारे लिये घृणित ठहरें; तुम उनके मांस में से कुछ न खाना, और उनकी लोथों को अशुद्ध जानना। १२ जल में जिस किसी जन्तु के पंख और चोंयेटे नहीं होते वह तुम्हारे लिये अशुद्ध है ॥

१३ फिर पक्षियों में से इनको अशुद्ध जानना, ये अशुद्ध होने के कारण खाए न जाएं, अर्थात् उकाब, हड़फोड़, कुरर, १४ शाही, और भांति भांति की चील, १५ और भांति भांति के सब काग, १६ शुतुर्मुर्ग, तखमास, जलकुक्कुट, और भांति भांति के बाज, १७ हवासिल, हाड़गील, उल्लू, १८ राजहँस, धनेश, गिद्ध, १९ लगलग, भांति भांति के बगुले, टिटीहरी और चमगीदड़ ॥

२० जितने पंखवाले चार पांवों के बल चलते हैं वे सब तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं। २१ पर रेंगनेवाले और पंखवाले जो चार पांवों के बल चलते हैं, जिनके भूमि पर कूदने फांदने को टांगें होती हैं उनको तो खा सकते हो। २२ वे ये हैं, अर्थात् भांति भांति की टिड्डी, भांति भांति के फनगे, भांति भांति के हर्गोल, और भांति भांति के हागाब। २३ परन्तु और सब रेंगनेवाले पंखवाल जो चार पांववाले होते हैं वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं॥

२४ और इनके कारण तुम अशुद्ध ठहरोगे; जिस किसी से इनकी लोथ छू जाए वह सांझ तक अशुद्ध ठहरे। २५ और जो कोई इनकी लोथ में का कुछ भी उठाए वह अपने वस्त्र धोए और सांझ तक अशुद्ध रहे। २६ फिर जितने पशु चिरे खुर के होते हैं परन्तु न तो बिलकुल फटे खुर और न पागुर करनेवाले हैं वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं; जो कोई उन्हें छूए वह अशुद्ध ठहरेगा। २७ और चार पांव के बल चलनेवालों में से जितने पंजों के बल चलते हैं वे सब तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं; जो कोई उनकी लोथ छूए वह सांझ तक अशुद्ध रहे। २८ और जो कोई उनकी लोथ उठाए वह अपने वस्त्र धोए और सांझ तक अशुद्ध रहे; क्योंकि वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं॥

२९ और जो पृथ्वी पर रेंगते हैं उन में से ये रेंगनेवाले तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं, अर्थात् नेवला, चूहा, और भांति भांति के गोह, ३० और छिपकली, मगर, टिकटिक, सांडा, और गिरगिटान। ३१ सब रेंगनेवालों में से ये ही तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं; जो कोई इनकी लोथ छूए वह सांझ तक अशुद्ध रहे। ३२ और इन में से किसी की लोथ जिस किसी वस्तु पर पड़ जाए वह भी अशुद्ध ठहरे, चाहे वह काठ का कोई पात्र हो, चाहे वस्त्र, चाहे खाल, चाहे बोरा, चाहे किसी काम का कैसा ही पात्रादि क्यों न हो; वह जल में डाला जाए, और सांझ तक अशुद्ध रहे, तब शुद्ध समझा जाए। ३३ और यदि मिट्टी का कोई पात्र हो जिस में इन जन्तुओं में से कोई पड़े, तो उस पात्र में जो कुछ हो वह अशुद्ध ठहरे, और पात्र को तुम तोड़ डालना। ३४ उस में जो खाने के योग्य भोजन हो, जिस में पानी का छुआव हो वह सब अशुद्ध ठहरे; फिर यदि ऐसे पात्र में पीने के लिये कुछ हो तो वह भी अशुद्ध ठहरे। ३५ और यदि इनकी लोथ में का कुछ तंदूर वा चूल्हे पर पड़े तो वह भी अशुद्ध ठहरे, और तोड़ डाला जाए; क्योंकि वह अशुद्ध हो जाएगा, वह तुम्हारे लिये भी अशुद्ध ठहरे। ३६ परन्तु सोता वा तालाब जिस में जल इकट्ठा हो वह तो शुद्ध ही रहे; परन्तु जो कोई इनकी लोथ को छूए वह अशुद्ध ठहरे। ३७ और यदि इनकी लोथ में का कुछ किसी प्रकार के बीज पर जो बोने के लिये हो पड़े, तो वह बीज शुद्ध रहे; ३८ पर यदि बीज पर जल डाला गया हो और पीछे लोथ में का कुछ उस पर पड़ जाए, तो वह तुम्हारे लिये अशुद्ध ठहरे॥

३९ फिर जिन पशुओं के खाने की आज्ञा तुम को दी गई है यदि उन में से कोई पशु मरे, तो जो कोई उसकी लोथ छूए वह सांझ तक अशुद्ध रहे। ४० और उसकी लोथ में से जो कोई कुछ खाए वह अपने वस्त्र धोए और सांझ तक अशुद्ध रहे; और जो कोई उसकी लोथ उठाए वह भी अपने वस्त्र धोए और सांझ तक अशुद्ध रहे। ४१ और सब प्रकार के पृथ्वी पर रेंगनेवाले जन्तु घिनौने हैं; वे खाए न जाएं। ४२ पृथ्वी पर सब रेंगनेवालों में से जितने

पेट वा चार पांवों के बल चलते हैं, वा अधिक पांववाले होते हैं, उन्हें तुम न खाना; क्योंकि वे घिनौने हैं। ४३ तुम किसी प्रकार के रेंगनेवाले जन्तु के द्वारा अपने आप को घिनौना न करना; और न उनके द्वारा अपने को अशुद्ध करके अपवित्र ठहराना। ४४ क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं; इस कारण अपने को शुद्ध करके पवित्र बने रहो, क्योंकि मैं पवित्र हूं। इसलिये तुम किसी प्रकार के रेंगनेवाले जन्तु के द्वारा जो पृथ्वी पर चलता है अपने आप को अशुद्ध न करना। ४५ क्योंकि मैं वह यहोवा हूं जो तुम्हें मिस्र देश से इसलिये निकाल ले आया हूं कि तुम्हारा परमेश्वर ठहरूं; इसलिये तुम पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं॥

४६ पशुओं, पक्षियों, और सब जलचरी प्राणियों, और पृथ्वी पर सब रेंगनेवाले प्राणियों के विषय में यही व्यवस्था है, ४७ कि शुद्ध अशुद्ध और भक्षय और अभक्षय जीवधारियों में भेद किया जाए॥

(प्रसूता के विषय की विधि)

१२ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ इस्राएलियों से कह, कि जो स्त्री गर्भिणी हो और उसके लड़का हो, तो वह सात दिन तक अशुद्ध रहेगी; जिस प्रकार वह ऋतुमती होकर अशुद्ध रहा करती। ३ और आठवें दिन लड़के का खतना किया जाए। ४ फिर वह स्त्री अपने शुद्ध करनेवाले रुधिर में तेंतीस दिन रहे; और जब तक उसके शुद्ध हो जाने के दिन पूरे न हों तब तक वह न तो किसी पवित्र वस्तु को छूए, और न पवित्रस्थान में प्रवेश करे। ५ और यदि उसके लड़की पैदा हो, तो उसको ऋतुमती की सी अशुद्धता चौदह दिन की लगे; और फिर छियासठ दिन तक अपने शुद्ध करनेवाले रुधिर में रहे। ६ और जब उसके शुद्ध हो जाने के दिन पूरे हों, तब चाहे उसके बेटा हुआ हो चाहे बेटी, वह होमबलि के लिये एक वर्ष का भेड़ी का बच्चा, और पापबलि के लिये कबूतरी का एक बच्चा वा पंडुकी मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक के पास लाए। ७ तब याजक उसको यहोवा के साम्हने भेंट चढ़ाके उसके लिये प्रायश्चित्त करे; और वह अपने रुधिर के बहने की अशुद्धता से छूटकर शुद्ध ठहरेगी। जिस स्त्री के लड़का वा लड़की उत्पन्न हो उसके लिये यही व्यवस्था है। ८ और यदि उसके पास भेड़ वा बकरी देने की पूंजी न हो, तो दो पंडुकी वा कबूतरी के दो बच्चे, एक तो होमबलि और दूसरा पापबलि के लिये दे; और याजक उसके लिये प्रायश्चित्त करे, तब वह शुद्ध ठहरेगी॥

(कोढ़ की विधि)

१३ फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, २ जब किसी मनुष्य के शरीर के चर्म में सूजन वा पपड़ी वा फूल हो, और इस से उसके चर्म में कोढ़ की व्याधि सा कुछ देख पड़े, तो उसे हारून याजक के पास या उसके पुत्र जो याजक हैं उन में से किसी के पास ले जाएं। ३ जब याजक उसके चर्म की व्याधि को देखे, और यदि उस व्याधि के स्थान के रोएं उजले हो गए हों और व्याधि चर्म से गहरी देख पड़े, तो वह जान ले कि कोढ़ की व्याधि है; और याजक उस मनुष्य को देखकर उसको अशुद्ध ठहराए। ४ और यदि वह फूल उसके चर्म में उजला तो हो, परन्तु चर्म से गहरा न देख पड़े, और न वहां के रोएं उजले हो गए हों, तो याजक उनको सात दिन तक बन्दकर

रखे; ५ और सातवें दिन याजक उसको देखे, और यदि वह व्याधि जैसी की तैसी बनी रहे और उसके चर्म में न फैली हो, तो याजक उसको और भी सात दिन तक बन्दकर रखे; ६ और सातवें दिन याजक उसको फिर देखे, और यदि देख पड़े कि व्याधि की चमक कम है और व्याधि चर्म पर फैली न हो, तो याजक उसको शुद्ध ठहराए; क्योंकि उसके तो चर्म में पपड़ी है; और वह अपने वस्त्र धोकर शुद्ध हो जाए। ७ और यदि याजक की उस जांच के पश्चात् जिस में वह शुद्ध ठहराया गया था, वह पपड़ी उसके चर्म पर बहुत फैल जाए, तो वह फिर याजक को दिखाया जाए; ८ और यदि याजक को देख पड़े कि पपड़ी चर्म में फैल गई है, तो वह उसको अशुद्ध ठहराए; क्योंकि वह कोढ़ ही है॥

९ यदि कोढ़ की सी व्याधि किसी मनुष्य के हो, तो वह याजक के पास पहुंचाया जाए; १० और याजक उसको देखे, और यदि वह सूजन उसके चर्म में उजली हो, और उसके कारण रोएं भी उजले हो गए हों, और उस सूजन में बिना चर्म का मांस हो, ११ तो याजक जाने कि उसके चर्म में पुराना कोढ़ है, इसलिये वह उसको अशुद्ध ठहराए; और बन्द न रखे, क्योंकि वह तो अशुद्ध है। १२ और यदि कोढ़ किसी के चर्म में फूटकर यहां तक फैल जाए, कि जहां कहीं याजक देखे व्याधित के सिर से पैर के तलवे तक कोढ़ ने सारे चर्म को छा लिया हो, १३ तो याजक ध्यान से देखे, और यदि कोढ़ ने उसके सारे शरीर को छा लिया हो, तो वह उस व्याधित को शुद्ध ठहराए; और उसका शरीर जो बिलकुल उजला हो गया है वह शुद्ध ही ठहरे। १४ पर जब उस में चर्महीन मांस देख पड़े, तब तो वह अशुद्ध ठहरे। १५ और याजक चर्महीन मांस को देखकर उसको अशुद्ध ठहराए; क्योंकि वैसा चर्महीन मांस अशुद्ध ही होता है; वह कोढ़ है। १६ पर यदि वह चर्महीन मांस फिर उजला हो जाए, तो वह मनुष्य याजक के पास जाए, १७ और याजक उसको देखे, और यदि वह व्याधि फिर से उजली हो गई हो, तो याजक व्याधित को शुद्ध जाने; वह शुद्ध है॥

१८ फिर यदि किसी के चर्म में फोड़ा होकर चंगा हो गया हो, १९ और फोड़े के स्थान में उजली सी सूजन वा लाली लिये हुए उजला फूल हो, तो वह याजक को दिखाया जाए। २० और याजक उस सूजन को देखे, और यदि वह चर्म से गहिरा देख पड़े, और उसके रोएं भी उजले हो गए हों, तो याजक यह जानकर उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए; क्योंकि वह कोढ़ की व्याधि है जो फोड़े में से फूटकर निकली है। २१ और यदि याजक देखे कि उस में उजले रोएं नहीं हैं, और वह चर्म से गहिरी नहीं, और उसकी चमक कम हुई है, तो याजक उस मनुष्य को सात दिन तक बन्द कर रखे। २२ और यदि वह व्याधि उस समय तक चर्म में सचमुच फैल जाए, तो याजक उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए; क्योंकि वह कोढ़ की व्याधि है। २३ परन्तु यदि वह फूल न फैले और अपने स्थान ही पर बना रहे, तो वह फोड़े का दाग है; याजक उस मनुष्य को शुद्ध ठहराए॥

२४ फिर यदि किसी के चर्म में जलने का घाव हो, और उस जलने के घाव में चर्महीन फूल लाली लिये हुए उजला वा उजला ही हो जाए, २५ तो याजक उसको देखे, और यदि उस फूल में के रोएं उजले हो गए हों और वह चर्म से गहिरा देख पड़े, तो वह कोढ़ है; जो उस जलने के दाग में से फूट निकला है; याजक उस मनुष्य को अशुद्ध

ठहराए; क्योंकि उस में कोढ़ की व्याधि है। २६ और यदि याजक देखे, कि फूल में उजले रोएं नहीं और न वह चर्म से कुछ गहिरा है, और उसकी चमक कम हुई है, तो वह उसको सात दिन तक बन्द कर रखे, २७ और सातवें दिन याजक उसको देखे, और यदि वह चर्म में फैल गई हो, तो वह उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए; क्योंकि उसको कोढ़ की व्याधि है। २८ परन्तु यदि वह फूल चर्म में नहीं फैला और अपने स्थान ही पर जहां का तहां ही बना हो, और उसकी चमक कम हुई हो, तो वह जल जाने के कारण सूजा हुआ है, याजक उस मनुष्य को शुद्ध ठहराए; क्योंकि वह दाग़ जल जाने के कारण से है॥

२६ फिर यदि किसी पुरुष वा स्त्री के सिर पर, वा पुरुष की डाढ़ी में व्याधि हो, ३० तो याजक व्याधि को देखे, और यदि वह चर्म से गहिरी देख पड़े, और उस में भूरे भूरे पतले बाल हों, तो याजक उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए; वह व्याधि सेंहुआं, अर्थात् सिर वा डाढ़ी का कोढ़ है। ३१ और यदि याजक सेंहुएं की व्याधि को देखे, कि वह चर्म से गहिरी नहीं है और उस में काले काले बाल नहीं हैं, तो वह सेंहुए के व्याधित को सात दिन तक बन्द कर रखे, ३२ और सातवें दिन याजक व्याधि को देखे, तब यदि वह सेंहुआं फैला न हो, और उस में भूरे भूरे बाल न हों, और सेंहुआं चर्म से गहिरा न देख पड़े, ३३ तो यह मनुष्य मूंड़ा तो जाए, परन्तु जहां सेंहुआं हो वहां न मूंड़ा जाए; और याजक उस सेंहुएंवाले को और भी सात दिन तक बन्द करे; ३४ और सातवें दिन याजक सेंहुएं को देखे, और यदि वह सेंहुआं चर्म में फैला न हो और चर्म से गहिरा न देख पड़े, तो याजक उस मनुष्य को शुद्ध ठहराए; और वह अपने वस्त्र धोके शुद्ध ठहरे। ३५ और यदि उसके शुद्ध ठहरने के पश्चात् सेंहुआं चर्म में कुछ भी फैले, ३६ तो याजक उसको देखे, और यदि वह चर्म में फैला हो, तो याजक यह भूरे बाल न ढूंढ़े; क्योंकि वह मनुष्य अशुद्ध है। ३७ परन्तु यदि उसकी दृष्टि में वह सेंहुआं जैसे का तैसा बना हो, और उस में काले-काले बाल जमे हों, तो वह जाने कि सेंहुआं चंगा हो गया है, और वह मनुष्य शुद्ध है; याजक उसको शुद्ध ही ठहराए॥

३८ फिर यदि किसी पुरुष वा स्त्री के चर्म में उजले फूल हों, ३६ तो याजक देखे, और यदि उसके चर्म में वे फूल कम उजले हों, तो वह जाने कि उसको चर्म में निकली हुई चाई ही है; वह मनुष्य शुद्ध ठहरे॥

४० फिर जिसके सिर के बाल झड़ गए हों, तो जानना कि वह चन्दुला तो है परन्तु शुद्ध है। ४१ और जिसके सिर के आगे के बाल झड़ गए हों, तो वह माथे का चन्दुला तो है परन्तु शुद्ध है। ४२ परन्तु यदि चन्दुले सिर पर वा चन्दुले माथे पर लाली लिये हुए उजली व्याधि हो, तो जानना कि वह उसके चन्दुले सिर पर वा चन्दुले माथे पर निकला हुआ कोढ़ है। ४३ इसलिये याजक उसको देखे, और यदि व्याधि की सूजन उसके चन्दुले सिर वा चन्दुले माथे पर ऐसी लाली लिये हुए उजली हो जैसा चर्म के कोढ़ में होता है, ४४ तो वह मनुष्य कोढ़ी है और अशुद्ध है; और याजक उसको अवश्य अशुद्ध ठहराए; क्योंकि वह व्याधि उसके सिर पर है॥

४५ और जिस में वह व्याधि हो उस कोढ़ी के वस्त्र फटे और सिर के बाल बिखरे रहें, और वह अपने ऊपरवाले होंठ को ढांपे

हुए अशुद्ध, अशुद्ध पुकारा करे। ४६ जितने दिन तक वह व्याधि उस में रहे उतने दिन तक वह तो अशुद्ध रहेगा; और वह अशुद्ध ठहरा रहे; इसलिये वह अकेला रहा करे, उसका निवास स्थान छावनी के बाहर हो॥

४७ फिर जिस वस्त्र में कोढ़ की व्याधि हो, चाहे वह वस्त्र ऊन का हो चाहे सनी का, ४८ वह व्याधि चाहे उस सनी वा ऊन के वस्त्र के ताने में हो चाहे बाने में, वा वह व्याधि चमड़े में वा चमड़े की बनी हुई किसी वस्तु में हो, ४९ यदि वह व्याधि किसी वस्त्र के चाहे ताने में चाहे बाने में, वा चमड़े में वा चमड़े की किसी वस्तु में हरी हो वा लाल सी हो, तो जानना कि वह कोढ़ की व्याधि है और वह याजक को दिखाई जाए। ५० और याजक व्याधि को देखे, और व्याधिवाली वस्तु को सात दिन के लिये बन्द करे; ५१ और सातवें दिन वह उस व्याधि को देखे, और यदि वह वस्त्र के चाहे ताने में चाहे बाने में, वा चमड़े में वा चमड़े की बनी हुई किसी वस्तु में फैल गई हो, तो जानना कि व्याधि गलित कोढ़ है, इसलिये वह वस्तु, चाहे कैसे ही काम में क्यों न आती हो, तौभी अशुद्ध ठहरेगी। ५२ वह उस वस्त्र को जिसके ताने वा बाने में वह व्याधि हो, चाहे वह ऊन का हो चाहे सनी का, वा चमड़े की वस्तु हो, उसको जला दे, वह व्याधि गलित कोढ़ की है; वह वस्तु आग में जलाई जाए। ५३ और यदि याजक देखे कि वह व्याधि उस वस्त्र के ताने वा बाने में, वा चमड़े की उस वस्तु में नहीं फैली, ५४ तो जिस वस्तु में व्याधि हो उसके धोने की आज्ञा दे, तब उसे और भी सात दिन तक बन्द कर रखे; ५५ और उसके धोने के बाद याजक उसको देखे, और यदि व्याधि का न तो रंग बदला हो, और न व्याधि फैली हो, तो जानना कि वह अशुद्ध है; उसे आग में जलाना, क्योंकि चाहे वह व्याधि भीतर चाहे ऊपरी हो तौभी वह खा जाने वाली व्याधि है। ५६ और यदि याजक देखे, कि उसके धोने के पश्चात् व्याधि की चमक कम हो गई, तो वह उसको वस्त्र के चाहे ताने चाहे बाने में से, वा चमड़े में से फाड़के निकाले; ५७ और यदि वह व्याधि तब भी उस वस्त्र के ताने वा बाने में, वा चमड़े की उस वस्तु में देख पड़े, तो जानना कि वह फूट के निकली हुई व्याधि है; और जिस में वह व्याधि हो उसे आग में जलाना। ५८ और यदि उस वस्त्र से जिसके ताने वा बाने में व्याधि हो, वा चमड़े की जो वस्तु हो उस से जब धोई जाए और व्याधि जाती रही, तो वह दूसरी बार धुल कर शुद्ध ठहरे। ५९ ऊन वा सनी के वस्त्र में के ताने वा बाने में, वा चमड़े की किसी वस्तु में जो कोढ़ की व्याधि हो उसके शुद्ध और अशुद्ध ठहराने की यही व्यवस्था है॥

१४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ कोढ़ी के शुद्ध ठहराने की व्यवस्था यह है, कि वह याजक के पास पहुंचाया जाए। ३ और याजक छावनी के बाहर जाए, और याजक उस कोढ़ी को देखे, और यदि उसके कोढ़ की व्याधि चंगी हुई हो, ४ तो याजक आज्ञा दे कि शुद्ध ठहरानेवाले के लिये दो शुद्ध और जीवित पक्षी, देवदारु की लकड़ी, और लाल रंग का कपड़ा और जूफा ये सब लिये जाएं; ५ और याजक आज्ञा दे कि एक पक्षी बहते हुए जल के ऊपर मिट्टी के पात्र में बलि किया जाए। ६ तब वह जीवित पक्षी को देवदारु की लकड़ी और लाल रंग के कपड़े और जूफा इन सभों को लेकर एक संग

उस पक्षी के लोहू में जो बहते हुए जल के ऊपर बलि किया गया है डुबा दे; ७ और कोढ़ से शुद्ध ठहरनेवाले पर सात बार छिड़ककर उसको शुद्ध ठहराए, तब उस जीवित पक्षी को मैदान में छोड़ दे। ८ और शुद्ध ठहरनेवाला अपने वस्त्रों को धोए, और सब बाल मुंड़वाकर जल से स्नान करे, तब वह शुद्ध ठहरेगा; और उसके बाद वह छावनी में आने पाए, परन्तु सात दिन तक अपने डेरे से बाहर ही रहे। ९ और सातवें दिन वह सिर, डाढ़ी और भौहों के सब बाल मुंड़ाए, और सब अंग मुण्डन कराए, और अपने वस्त्रों को धोए, और जल से स्नान करे, तब वह शुद्ध ठहरेगा। १० और आठवें दिन वह दो निर्दोष भेड़ के बच्चे, और एक वर्ष की निर्दोष भेड़ की बच्ची, और अन्नबलि के लिये तेल से सना हुआ एपा का तीन दहाई अंश मैदा, और लोज भर तेल लाए। ११ और शुद्ध ठहरानेवाला याजक इन वस्तुओं समेत उस शुद्ध होनेवाले मनुष्य को यहोवा के सम्मुख मिलापवाले तम्बू के द्वार पर खड़ा करे। १२ तब याजक एक भेड़ का बच्चा लेकर दोषबलि के लिये उसे और उस लोज भर तेल को समीप लाए, और इन दोनों को हिलाने की भेंट के लिये यहोवा के साम्हने हिलाए; १३ और वह उस भेड़ के बच्चे को उसी स्थान में जहां वह पापबलि और होमबलि पशुओं का बलिदान किया करेगा, अर्थात् पवित्रस्थान में बलिदान करे; क्योंकि जैसा पापबलि याजक का निज भाग होगा वैसा ही दोषबलि भी उसी का निज भाग ठहरेगा; वह परमपवित्र है। १४ तब याजक दोषबलि के लोहू में से कुछ लेकर शुद्ध ठहरनेवाले के दहिने कान के सिरे पर, और उसके दहिने हाथ और दहिने पांव के अंगूठों पर लगाए। १५ और याजक उस लोज भर तेल में से कुछ लेकर अपने बाएं हाथ की हथेली पर डाले, १६ और याजक अपने दहिने हाथ की उंगली को अपने बाईं हथेली पर के तेल में डुबाकर उस तेल में से कुछ अपनी उंगली से यहोवा के सम्मुख सात बार छिड़के। १७ और जो तेल उसकी हथेली पर रह जाएगा याजक उस में से कुछ शुद्ध होनेवाले के दहिने कान के सिरे पर, और उसके दहिने हाथ और दहिने पांव के अंगूठों पर दोषबलि के लोहू के ऊपर लगाए; १८ और जो तेल याजक की हथेली पर रह जाए उसको वह शुद्ध होनेवाले के सिर पर डाल दे। और याजक उसके लिये यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करे। १९ और याजक पापबलि को भी चढ़ाकर उसके लिये जो अपनी अशुद्धता से शुद्ध होनेवाला हो प्रायश्चित्त करे; और उसके बाद होमबलि पशु का बलिदान करके: २० अन्नबलि समेत वेदी पर चढ़ाए: और याजक उसके लिये प्रायश्चित्त करे, और वह शुद्ध ठहरेगा॥

२१ परन्तु यदि वह दरिद्र हो और इतना लाने के लिये उसके पास पूंजी न हो, तो वह अपना प्रायश्चित्त करवाने के निमित्त, हिलाने के लिये भेड़ का बच्चा दोषबलि के लिये, और तेल से सना हुआ एपा का दसवां अंश मैदा अन्नबलि करके, और लोज भर तेल लाए; २२ और दो पंडुक, वा कबूतरी के दो बच्चे लाए, जो वह ला सके; और इन में से एक तो पापबलि के लिये और दूसरा होमबलि के लिये हो। २३ और आठवें दिन वह इन सभों को अपने शुद्ध ठहरने के लिये मिलापवाले तम्बू के द्वार पर, यहोवा के सम्मुख, याजक के पास ले

आए; २४ तब याजक उस लोज भर तेल और दोष बलिवाले भेड़ के बच्चे को लेकर हिलाने की भेंट के लिये यहोवा के साम्हने हिलाए। २५ फिर दोषबलि के भेड़ के बच्चे का बलिदान किया जाए; और याजक उसके लोहू में से कुछ लेकर शुद्ध ठहरनेवाले के दहिने कान के सिरे पर, और उसके दहिने हाथ और दहिने पांव के अंगूठों पर लगाए। २६ फिर याजक उस तेल में से कुछ अपने बाएं हाथ की हथेली पर डालकर, २७ अपने दहिने हाथ की उंगली से अपनी बाईं हथेली पर के तेल में से कुछ यहोवा के सम्मुख सात बार छिड़के; २८ फिर याजक अपनी हथेली पर के तेल में से कुछ शुद्ध ठहरनेवाले के दहिने कान के सिरे पर, और उसके दहिने हाथ और दहिने पांव के अंगूठों पर, दोषबलि के लोहू के स्थान पर, लगाए। २९ और जो तेल याजक की हथेली पर रह जाए उसे वह शुद्ध ठहरनेवाले के लिये यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करने को उसके सिर पर डाल दे। ३० तब वह पंडुकों वा कबूतरी के बच्चों में से जो वह ला सका हो एक को चढ़ाए, ३१ अर्थात् जो पक्षी वह ला सका हो, उन में से वह एक को पापबलि के लिये और अन्नबलि समेत दूसरे को होमबलि के लिये चढ़ाए; इस रीति से याजक शुद्ध ठहरनेवाले के लिये यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करे। ३२ जिसे कोढ़ की व्याधि हुई हो, और उसके इतनी पूंजी न हो कि वह शुद्ध ठहरने की सामग्री को ला सके, तो उसके लिये यही व्यवस्था है॥

३३ फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, ३४ जब तुम लोग कनान देश में पहुंचो, जिसे मैं तुम्हारी निज भूमि होने के लिये तुम्हें देता हूं, उस समय यदि मैं कोढ़ की व्याधि तुम्हारे अधिकार के किसी घर में दिखाऊं, ३५ तो जिसका वह घर हो वह आकर याजक को बता दे, कि मुझे ऐसा देख पड़ता है कि घर में मानो कोई व्याधि है। ३६ तब याजक आज्ञा दे, कि उस घर में व्याधि देखने के लिये मेरे जाने से पहिले उसे खाली करो, कहीं ऐसा न हो कि जो कुछ घर में हो वह सब अशुद्ध ठहरे; और पीछे याजक घर देखने को भीतर जाए। ३७ तब वह उस व्याधि को देखे; और यदि वह व्याधि घर की दीवारों पर हरी हरी वा लाल लाल मानो खुदी हुई लकीरों के रूप में हो, और ये लकीरें दीवार में गहिरी देख पड़ती हों, ३८ तो याजक घर से बाहर द्वार पर जाकर घर को सात दिन तक बन्द कर रखे। ३९ और सातवें दिन याजक आकर देखे; और यदि वह व्याधि घर की दीवारों पर फैल गई हो, ४० तो याजक आज्ञा दे, कि जिन पत्थरों को व्याधि है उन्हें निकाल कर नगर से बाहर किसी अशुद्ध स्थान में फेंक दें; ४१ और वह घर के भीतर ही भीतर चारों ओर खुरचवाए, और वह खुरचन की मिट्टी नगर से बाहर किसी अशुद्ध स्थान में डाली जाए; ४२ और उन पत्थरों के स्थान में और दूसरे पत्थर लेकर लगाएं और याजक ताजा गारा लेकर घर की जुड़ाई करे। ४३ और यदि पत्थरों के निकाले जाने और घर के खुरचे और लेसे जाने के बाद वह व्याधि फिर घर में फूट निकले, ४४ तो याजक आकर देखे; और यदि वह व्याधि घर में फैल गई हो, तो वह जान ले कि घर में गलित कोढ़ है; वह अशुद्ध है। ४५ और वह सब गारे समेत पत्थर, लकड़ी और घर को खुदवा-कर गिरा दे; और उन सब वस्तुओं को उठवाकर नगर से बाहर किसी अशुद्ध स्थान

पर फिंकवा दे। ४६ और जब तक वह घर बन्द रहे तब तक यदि कोई उस में जाए तो वह सांझ तक अशुद्ध रहे; ४७ और जो कोई उस घर में सोए वह अपने वस्त्रों को धोए; और जो कोई उस घर में खाना खाए वह भी अपने वस्त्रों को धोए। ४८ और यदि याजक आकर देखे कि जब से घर लेसा गया है तब से उस में व्याधि नहीं फैली है, तो यह जानकर कि वह व्याधि दूर हो गई है, घर को शुद्ध ठहराए। ४९ और उस घर को पवित्र करने के लिये दो पक्षी, देवदारु की लकड़ी, लाल रंग का कपड़ा और जूफा लिवा लाए, ५० और एक पक्षी बहते हुए जल के ऊपर मिट्टी के पात्र में बलिदान करे, ५१ तब वह देवदारु की लकड़ी, लाल रंग के कपड़े और जूफा और जीवित पक्षी इन सभों को लेकर बलिदान किए हुए पक्षी के लोहू में और बहते हुए जल में डुबा दे, और उस घर पर सात बार छिड़के। ५२ और वह पक्षी के लोहू, और बहते हुए जल, और जीवित पक्षी, और देवदारु की लकड़ी, और जूफा और लाल रंग के कपड़े के द्वारा घर को पवित्र करे; ५३ तब वह जीवित पक्षी को नगर से बाहर मैदान में छोड़ दे; इसी रीति से वह घर के लिये प्रायश्चित्त करे, तब वह शुद्ध ठहरेगा॥

५४ सब भांति के कोढ़ की व्याधि, और सेंहुएं, ५५ और वस्त्र, और घर के कोढ़, ५६ और सूजन, और पपड़ी, और फूल के विषय में, ५७ शुद्ध और अशुद्ध ठहराने की शिक्षा की व्यवस्था यही है। सब प्रकार के कोढ़ की व्यवस्था यही है॥

(ऐसे लोगों की विधि जिनके प्रमेह हो)

१५ फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, २ कि इस्राएलियों से कहो, कि जिस जिस पुरुष के प्रमेह हो, तो वह प्रमेह के कारण से अशुद्ध ठहरे। ३ और चाहे बहता रहे, चाहे बहना बन्द भी हो, तौभी उसकी अशुद्धता बनी रहेगी। ४ जिसके प्रमेह हो वह जिस जिस बिछौने पर लेटे वह अशुद्ध ठहरे, और जिस जिस वस्तु पर वह बैठे वह भी अशुद्ध ठहरे। ५ और जो कोई उसके बिछौने को छूए वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे, और सांझ तक अशुद्ध ठहरा रहे। ६ और जिसके प्रमेह हो और वह जिस वस्तु पर बैठा हो, उस पर जो कोई बैठे वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे, और सांझ तक अशुद्ध ठहरा रहे। ७ और जिसके प्रमेह हो उस से जो कोई छू जाए वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे और सांझ तक अशुद्ध रहे। ८ और जिसके प्रमेह हो यदि वह किसी शुद्ध मनुष्य पर थूके, तो वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे, और सांझ तक अशुद्ध रहे। ९ और जिसके प्रमेह हो वह सवारी की जिस वस्तु पर बैठे वह अशुद्ध ठहरे। १० और जो कोई किसी वस्तु को जो उसके नीचे रही हो छूए वह सांझ तक अशुद्ध रहे; और जो कोई ऐसी किसी वस्तु को उठाए वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे, और सांझ तक अशुद्ध रहे। ११ और जिसके प्रमेह हो वह जिस किसी को बिना हाथ धोए छूए वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे, और सांझ तक अशुद्ध रहे। १२ और जिसके प्रमेह हो वह मिट्टी के जिस किसी पात्र को छूए वह तोड़ डाला जाए, और काठ के सब प्रकार के पात्र जल से धोए जाएं। १३ फिर जिसके प्रमेह हो वह जब अपने रोग से चंगा हो जाए, तब से शुद्ध ठहरने के सात दिन

गिन ले, और उनके बीतने पर अपने वस्त्रों को धोकर बहते हुए जल से स्नान करे; तब वह शुद्ध ठहरेगा। १४ और आठवें दिन वह दो पंडुक वा कबूतरी के दो बच्चे लेकर मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के सम्मुख जाकर उन्हें याजक को दे। १५ तब याजक उन में से एक को पापबलि, और दूसरे को होमबलि के लिये भेंट चढ़ाए; और याजक उसके लिये उसके प्रमेह के कारण यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करे॥

१६ फिर यदि किसी पुरुष का वीर्य्य स्खलित हो जाए, तो वह अपने सारे शरीर को जल से धोए, और सांझ तक अशुद्ध रहे। १७ और जिस किसी वस्त्र वा चमड़े पर वह वीर्य्य पड़े वह जल से धोया जाए, और सांझ तक अशुद्ध रहे। १८ और जब कोई पुरुष स्त्री से प्रसंग करे, तो वे दोनों जल से स्नान करें, और सांझ तक अशुद्ध रहें॥

१९ फिर जब कोई स्त्री ऋतुमती रहे, तो वह सात दिन तक अशुद्ध ठहरी रहे, और जो कोई उसको छूए वह सांझ तक अशुद्ध रहे। २० और जब तक वह अशुद्ध रहे तब तक जिस जिस वस्तु पर वह लेटे, और जिस जिस वस्तु पर वह बैठे वे सब अशुद्ध ठहरें। २१ और जो कोई उसके बिछौने को छूए वह अपने वस्त्र धोकर जल से स्नान करे, और सांझ तक अशुद्ध रहे। २२ और जो कोई किसी वस्तु को छूए जिस पर वह बैठी हो वह अपने वस्त्र धोकर जल से स्नान करे, और सांझ तक अशुद्ध रहे। २३ और यदि बिछौने वा और किसी वस्तु पर जिस पर वह बैठी हो छूने के समय उसका रुधिर लगा हो, तो छूनेहारा सांझ तक अशुद्ध रहे। २४ और यदि कोई पुरुष उस से प्रसंग करे, और उसका रुधिर उसके लग जाए, तो वह पुरुष सात दिन तक अशुद्ध रहे, और जिस जिस बिछौने पर वह लेटे वे सब अशुद्ध ठहरें॥

२५ फिर यदि किसी स्त्री के अपने मासिक धर्म के नियुक्त समय से अधिक दिन तक रुधिर बहता रहे, वा उस नियुक्त समय से अधिक समय तक ऋतुमती रहे, तो जब तक वह ऐसी दशा में रहे तब तक वह अशुद्ध ठहरी रहे। २६ उसके ऋतुमती रहने के सब दिनों में जिस जिस बिछौने पर वह लेटे वे सब उसके मासिक धर्म के बिछौने के समान ठहरें; और जिस जिस वस्तु पर वह बैठे वे भी उसके ऋतुमती रहने के दिनों की नाईं अशुद्ध ठहरें। २७ और जो कोई उन वस्तुओं को छूए वह अशुद्ध ठहरे, इसलिये वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे, और सांझ तक अशुद्ध रहे। २८ और जब वह स्त्री अपने ऋतुमती से शुद्ध हो जाए, तब से वह सात दिन गिन ले, और उन दिनों के बीतने पर वह शुद्ध ठहरे। २९ फिर आठवें दिन वह दो पंडुक या कबूतरी के दो बच्चे लेकर मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक के पास जाए। ३० तब याजक एक को पापबलि और दूसरे को होमबलि के लिये चढ़ाए; और याजक उसके लिये उसके मासिक धर्म की अशुद्धता के कारण यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करे॥

३१ इस प्रकार से तुम इस्राएलियों को उनकी अशुद्धता से न्यारे रखा करो, कहीं ऐसा न हो कि वे यहोवा के निवास को जो उनके बीच में है अशुद्ध करके अपनी अशुद्धता में फंसे हुए मर जाएं॥

३२ जिसके प्रमेह हो और जो पुरुष वीर्य्य स्खलित होने से अशुद्ध हो; ३३ और जो स्त्री ऋतुमती हो; और क्या पुरुष

क्या स्त्री, जिस किसी के धातुरोग हो, और जो पुरुष अशुद्ध स्त्री से प्रसंग करे, इन सभों के लिये यही व्यवस्था है ।।

(प्रायश्चित्त के दिन का आचार)

१६ जब हारून के दो पुत्र यहोवा के साम्हने समीप जाकर मर गए, उसके बाद यहोवा ने मूसा से बातें कीं; २ और यहोवा ने मूसा से कहा, अपने भाई हारून से कह, कि सन्दूक के ऊपर के प्रायश्चित्तवाले ढकने के आगे, बीचवाले पर्दे के अन्दर, पवित्रस्थान में हर समय न प्रवेश करे, नहीं तो मर जाएगा; क्योंकि मैं प्रायश्चित्तवाले ढकने के ऊपर बादल में दिखाई दूंगा। ३ और जब हारून पवित्रस्थान में प्रवेश करे तब इस रीति से प्रवेश करे, अर्थात् पापबलि के लिये एक बछड़े को और होमबलि के लिये एक मेढ़े को लेकर आए। ४ वह सनी के कपड़े का पवित्र अंगरखा, और अपने तन पर सनी के कपड़े की जांघिया पहिने हुए, और सनी के कपड़े का कटिबन्द, और सनी के कपड़े की पगड़ी भी बांधे हुए प्रवेश करे; ये पवित्र वस्त्र हैं, और वह जल से स्नान करके इन्हें पहिने। ५ फिर वह इस्राएलियों की मण्डली के पास से पापबलि के लिये दो बकरे और होमबलि के लिये एक मेढ़ा ले। ६ और हारून उस पापबलि के बछड़े को जो उसी के लिये होगा चढ़ाकर अपने और अपने घराने के लिये प्रायश्चित्त करे। ७ और उन दोनों बकरों को लेकर मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के साम्हने खड़ा करे; ८ और हारून दोनों बकरों पर चिट्ठियां डाले, एक चिट्ठी यहोवा के लिये और दूसरी अजाजेल के लिये हो। ९ और जिस बकरे पर यहोवा के नाम की चिट्ठी निकले उसको हारून पापबलि के लिये चढ़ाए; १० परन्तु जिस बकरे पर अजाजेल के लिये चिट्ठी निकले वह यहोवा के साम्हने जीवता खड़ा किया जाए कि उस से प्रायश्चित्त किया जाए, और वह अजाजेल के लिये जंगल में छोड़ा जाए। ११ और हारून उस पापबलि के बछड़े को जो उसी के लिये होगा समीप ले आए, और उसको बलिदान करके अपने और अपने घराने के लिये प्रायश्चित्त करे। १२ और जो वेदी यहोवा के सम्मुख है उस पर के जलते हुए कोयलों से भरे हुए धूपदान को लेकर, और अपनी दोनों मुट्ठियों को फूटे हुए सुगन्धित धूप से भरकर, बीचवाले पर्दे के भीतर ले आकर १३ उस धूप को यहोवा के सम्मुख आग में डाले, जिस से धूप का धूआं साक्षीपत्र के ऊपर के प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर छा जाए, नहीं तो वह मर जाएगा; १४ तब वह बछड़े के लोहू में से कुछ लेकर पूरब की ओर प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर अपनी उंगली से छिड़के, और फिर उस लोहू में से कुछ उंगली के द्वारा उस ढकने के साम्हने भी सात बार छिड़क दे। १५ फिर वह उस पापबलि के बकरे को जो साधारण जनता के लिये होगा बलिदान करके उसके लोहू को बीचवाले पर्दे के भीतर ले आए, और जिस प्रकार बछड़े के लोहू से उस ने किया था ठीक वैसा ही वह बकरे के लोहू से भी करे, अर्थात् उसको प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर और उसके साम्हने छिड़के। १६ और वह इस्राएलियों की भांति भांति की अशुद्धता, और अपराधों, और उनके सब पापों के कारण पवित्रस्थान के लिये प्रायश्चित्त करे; और मिलापवाला तम्बू जो उनके संग उनकी भांति भांति की अशुद्धता के

बीच रहता है * उसके लिये भी वह वैसा ही करे। १७ और जब हारून प्रायश्चित्त करने के लिये पवित्रस्थान में प्रवेश करे, तब से जब तक वह अपने और अपने घराने और इस्राएल की सारी मण्डली के लिये प्रायश्चित्त करके बाहर न निकले तब तक कोई मनुष्य मिलापवाले तम्बू में न रहे। १८ फिर वह निकलकर उस वेदी के पास जो यहोवा के साम्हने है जाए और उसके लिये प्रायश्चित्त करे, अर्थात् बछड़े के लोहू और बकरे के लोहू दोनों में से कुछ लेकर उस वेदी के चारों कोनों के सींगों पर लगाए। १९ और उस लोहू में से कुछ अपनी उंगली के द्वारा सात बार उस पर छिड़ककर उसे इस्राएलियों की भांति भांति की अशुद्धता छुड़ाकर शुद्ध और पवित्र करे। २० और जब वह पवित्रस्थान और मिलापवाले तम्बू और वेदी के लिये प्रायश्चित्त कर चुके, तब जीवित बकरे को आगे ले आए; २१ और हारून अपने दोनों हाथों को जीवित बकरे पर रखकर इस्राएलियों के सब अधर्म के कामों, और उनके सब अपराधों, निदान उनके सारे पापों को अंगीकार करे, और उनको बकरे के सिर पर धरकर उसको किसी मनुष्य के हाथ जो इस काम के लिये तैयार हो जंगल में भेजके छुड़वा दे। २२ और वह बकरा उनके सब अधर्म के कामों को अपने ऊपर लादे हुए किसी निराले देश में उठा ले जाएगा; इसलिये वह मनुष्य उस बकरे को जंगल में छोड़ दे। २३ तब हारून मिलापवाले तम्बू में आए, और जिस सनी के वस्त्रों को पहिने हुए उस ने पवित्रस्थान में प्रवेश किया था उन्हें उतारकर वहीं पर रख दे। २४ फिर वह किसी पवित्र स्थान में जल से स्नान कर अपने निज वस्त्र पहिन ले, और बाहर जाकर अपने होमबलि और साधारण जनता के होमबलि को चढ़ाकर अपने और जनता के लिये प्रायश्चित्त करे। २५ और पापबलि की चरबी को वह वेदी पर जलाए। २६ और जो मनुष्य बकरे को अजाजेल के लिये छोड़कर आए वह भी अपने वस्त्रों को धोए, और जल से स्नान करे, और तब वह छावनी में प्रवेश करे। २७ और पापबलि का बछड़ा और पापबलि का बकरा भी जिनका लोहू पवित्रस्थान में प्रायश्चित्त करने के लिये पहुंचाया जाए वे दोनों छावनी से बाहर पहुंचाए जाएं; और उनका चमड़ा, मांस, और गोबर आग में जला दिया जाए। २८ और जो उनको जलाए वह अपने वस्त्रों को धोए, और जल से स्नान करे, और इसके बाद वह छावनी में प्रवेश करने पाए॥

२९ और तुम लोगों के लिये यह सदा की विधि होगी कि सातवें महीने के दसवें दिन को तुम अपने अपने जीव को दुःख देना, और उस दिन कोई, चाहे वह तुम्हारे निज देश का हो चाहे तुम्हारे बीच रहने वाला कोई परदेशी हो, कोई भी किसी प्रकार का काम काज न करे; ३० क्योंकि उस दिन तुम्हें शुद्ध करने के लिये तुम्हारे निमित्त प्रायश्चित्त किया जाएगा; और तुम अपने सब पापों से यहोवा के सम्मुख पवित्र ठहरोगे। ३१ यह तुम्हारे लिये परमविश्राम का दिन ठहरे, और तुम उस दिन अपने अपने जीव को दुःख देना; यह सदा की विधि है। ३२ और जिसका अपने पिता के स्थान पर याजक पद के लिये अभिषेक और संस्कार किया जाए वह

---

* मूल में—बास किए रहता है।

याजक प्रायश्चित्त किया करे, अर्थात् वह सनी के पवित्र वस्त्रों को पहिनकर, ३३ पवित्रस्थान, और मिलापवाले तम्बू, और वेदी के लिये प्रायश्चित्त करे; और याजकों के और मण्डली के सब लोगों के लिये भी प्रायश्चित्त करे। ३४ और यह तुम्हारे लिये सदा की विधि होगी, कि इस्राएलियों के लिये प्रतिवर्ष एक बार तुम्हारे सारे पापों के लिये प्रायश्चित्त किया जाए। यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार जो उस ने मूसा को दी थी हारून ने किया।।

(बलिदान केवल पवित्र तम्बू के साम्हने करने की आज्ञा)

१७ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ हारून और उसके पुत्रों से और कुल इस्राएलियों से कह, कि यहोवा ने यह आज्ञा दी है, ३ कि इस्राएल के घराने में से कोई मनुष्य हो जो बैल वा भेड़ के बच्चे, वा बकरी को, चाहे छावनी में चाहे छावनी से बाहर घात करके ४ मिलापवाले तम्बू के द्वार पर, यहोवा के निवास के साम्हने यहोवा को चढ़ाने के निमित्त न ले जाए, तो उस मनुष्य को लोहू बहाने का दोष लगेगा; और वह मनुष्य जो लोहू बहाने वाला ठहरेगा, वह अपने लोगों के बीच से नाश किया जाए। ५ इस विधि का यह कारण है कि इस्राएली अपने बलिदान जिनको वह खुले मैदान में बध करते हैं, वे उन्हें मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक के पास, यहोवा के लिये ले जाकर उसी के लिये मेलबलि करके बलिदान किया करें; ६ और याजक लोहू को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा की वेदी के ऊपर छिड़के, और चरबी को उसके सुखदायक सुगन्ध के लिये जलाए। ७ और वे जो बकरों के पूजक * होकर व्यभिचार करते हैं, वे फिर अपने बलिपशुओं को उनके लिये बलिदान न करें। तुम्हारी पीढ़ियों के लिये यह सदा की विधि होगी।।

८ और तू उन से कह, कि इस्राएल के घराने के लोगों में से वा उनके बीच रहनेहारे परदेशियों में से कोई मनुष्य क्यों न हो जो होमबलि वा मेलबलि चढ़ाए, ९ और उसको मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के लिये चढ़ाने को न ले आए; वह मनुष्य अपने लोगों में से नाश किया जाए।।

(लोहू की पवित्रता)

१० फिर इस्राएल के घराने के लोगों में से वा उनके बीच रहनेवाले परदेशियों में से कोई मनुष्य क्यों न हो जो किसी प्रकार का लोहू खाए, मैं उस लोहू खानेवाले के विमुख होकर उसको उसके लोगों के बीच में से नाश कर डालूंगा। ११ क्योंकि शरीर का प्राण लोहू में रहता है; और उसको मैं ने तुम लोगों को वेदी पर चढ़ाने के लिये दिया है, कि तुम्हारे प्राणों के लिये प्रायश्चित्त किया जाए; क्योंकि प्राण के कारण लोहू ही से प्रायश्चित्त होता है। १२ इस कारण मैं इस्राएलियों से कहता हूं, कि तुम में से कोई प्राणी लोहू न खाए, और जो परदेशी तुम्हारे बीच रहता हो वह भी लोहू कभी न खाए।।

१३ और इस्राएलियों में से वा उनके बीच रहनेवाले परदेशियों में से कोई मनुष्य क्यों न हो जो अहेर करके खाने के योग्य पशु वा पक्षी को पकड़े, वह उसके लोहू को उंडेलकर धूलि से ढांप दे। १४ क्योंकि शरीर का प्राण जो है वह उसका लोहू ही

* मूल में—के पीछे।

है जो उसके प्राण के साथ एक है; इसी लिये मैं इस्राएलियों से कहता हूं, कि किसी प्रकार के प्राणी के लोहू को तुम न खाना, क्योंकि सब प्राणियों का प्राण उनका लोहू ही है; जो कोई उसको खाए वह नाश किया जाएगा। १५ और चाहे वह देशी हो वा परदेशी हो, जो कोई किसी लोथ वा फाड़े हुए पशु का मांस खाए वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे, और सांझ तक अशुद्ध रहे; तब वह शुद्ध होगा। १६ और यदि वह उनको न धोए और न स्नान करे, तो उसको अपने अधर्म का भार स्वयं उठाना पड़ेगा॥

(भांति भांति के घिनौने कामों का निषेध)

१८ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ इस्राएलियों से कह, कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। ३ तुम मिस्र देश के कामों के अनुसार जिस में तुम रहते थे न करना; और कनान देश के कामों के अनुसार भी जहां मैं तुम्हें ले चलता हूं न करना; और न उन देशों की विधियों पर चलना। ४ मेरे ही नियमों को मानना, और मेरी ही विधियों को मानते हुए उन पर चलना। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। ५ इसलिये तुम मेरे नियमों और मेरी विधियों को निरन्तर मानना; जो मनुष्य उनको माने वह उनके कारण जीवित रहेगा। मैं यहोवा हूं। ६ तुम में से कोई अपनी किसी निकट कुटुम्बिन का तन उघाड़ने को उसके पास न जाए। मैं यहोवा हूं। ७ अपनी माता का तन जो तुम्हारे पिता का तन है न उघाड़ना; वह तो तुम्हारी माता है, इसलिये तुम उसका तन न उघाड़ना। ८ अपनी सौतेली माता का भी तन न उघाड़ना; वह तो तुम्हारे पिता ही का तन है। ९ अपनी बहिन चाहे सगी हो चाहे सौतेली हो, चाहे वह घर में उत्पन्न हुई हो चाहे बाहर, उसका तन न उघाड़ना। १० अपनी पोती वा अपनी नतिनी का तन न उघाड़ना, उनकी देह तो मानो तुम्हारी ही है। ११ तुम्हारी सौतेली बहिन जो तुम्हारे पिता से उत्पन्न हुई, वह तुम्हारी बहिन है, इस कारण उसका तन न उघाड़ना। १२ अपनी फूफी का तन न उघाड़ना; वह तो तुम्हारे पिता की निकट कुटुम्बिन है। १३ अपनी मौसी का तन न उघाड़ना; क्योंकि वह तुम्हारी माता की निकट कुटुम्बिन है। १४ अपने चाचा का तन न उघाड़ना, अर्थात् उसकी स्त्री के पास न जाना; वह तो तुम्हारी चाची है। १५ अपनी बहू का तन न उघाड़ना; वह तो तुम्हारे बेटे की स्त्री है, इस कारण तुम उसका तन न उघाड़ना। १६ अपनी भौजी का तन न उघाड़ना; वह तो तुम्हारे भाई ही का तन है। १७ किसी स्त्री और उसकी बेटी दोनों का तन न उघाड़ना, और उसकी पोती को वा उसकी नतिनी को अपनी स्त्री करके उसका तन न उघाड़ना; वे तो निकट कुटुम्बिन हैं; ऐसा करना महापाप है। १८ और अपनी स्त्री की बहिन को भी अपनी स्त्री करके उसकी सौत न करना, कि पहली के जीवित रहते हुए उसका तन भी उघाड़े। १९ फिर जब तक कोई स्त्री अपने ऋतु के कारण अशुद्ध रहे तब तक उसके पास उसका तन उघाड़ने को न जाना। २० फिर अपने भाईबन्धु की स्त्री से कुकर्म करके अशुद्ध न हो जाना। २१ और अपने सन्तान में से किसी को मोलेक के लिये होम करके न चढ़ाना, और न अपने परमेश्वर के नाम को अपवित्र

ठहराना; मैं यहोवा हूं। २२ स्त्रीगमन की रीति से पुरुषगमन न करना; वह तो घिनौना काम है। २३ किसी जाति के पशु के साथ पशुगमन करके अशुद्ध न हो जाना, और न कोई स्त्री पशु के साम्हने इसलिये खड़ी हो कि उसके संग कुकर्म करे; यह तो उलटी बात है॥

२४ ऐसा ऐसा कोई भी काम करके अशुद्ध न हो जाना, क्योंकि जिन जातियों को मैं तुम्हारे आगे से निकालने पर हूं वे ऐसे ऐसे काम करके अशुद्ध हो गई हैं; २५ और उनका देश भी अशुद्ध हो गया है, इस कारण मैं उस पर उसके अधर्म का दण्ड देता हूं, और वह देश अपने निवासियों को उगल देता है। २६ इस कारण तुम लोग मेरी विधियों और नियमों को निरन्तर मानना, और चाहे देशी चाहे तुम्हारे बीच रहनेवाला परदेशी हो तुम में से कोई भी ऐसा घिनौना काम न करे; २७ क्योंकि ऐसे सब घिनौने कामों को उस देश के मनुष्य जो तुम से पहिले उस में रहते थे वे करते आए हैं, इसी से वह देश अशुद्ध हो गया है। २८ अब ऐसा न हो कि जिस रीति से जो जाति तुम से पहिले उस देश में रहती थी उसको उस ने उगल दिया, उसी रीति जब तुम उसको अशुद्ध करो, तो वह तुम को भी उगल दे। २९ जितने ऐसा कोई घिनौना काम करें वे सब प्राणी अपने लोगों में से नाश किए जाएं। ३० यह आज्ञा जो मैं ने तुम्हारे मानने को दी है उसे तुम मानना, और जो घिनौनी रीतियां तुम से पहिले प्रचलित हैं उन में से किसी पर न चलना, और न उनके कारण अशुद्ध हो जाना। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं॥

(भांति भांति का आचार)

१९ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ इस्राएलियों की सारी मण्डली से कह, कि तुम पवित्र बने रहो; क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा पवित्र हूं। ३ तुम अपनी अपनी माता और अपने अपने पिता का भय मानना, और मेरे विश्राम दिनों को मानना; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। ४ तुम मूरतों की ओर न फिरना, और देवताओं की प्रतिमाएं ढालकर न बना लेना; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। ५ जब तुम यहोवा के लिये मेलबलि करो, तब ऐसा बलिदान करना जिससे मैं तुम से प्रसन्न हो जाऊं। ६ उसका मांस बलिदान के दिन और दूसरे दिन खाया जाए, परन्तु तीसरे दिन तक जो रह जाए वह आग में जला दिया जाए। ७ और यदि उस में से कुछ भी तीसरे दिन खाया जाए, तो यह घृणित ठहरेगा, और ग्रहण न किया जाएगा। ८ और उसका खानेवाला यहोवा के पवित्र पदार्थ को अपवित्र ठहराता है, इसलिये उसको अपने अधर्म का भार स्वयं उठाना पड़ेगा; और वह प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाएगा॥

९ फिर जब तुम अपने देश के खेत काटो तब अपने खेत के कोने कोने तक पूरा न काटना, और काटे हुए खेत की गिरी पड़ी बालों को न चुनना। १० और अपनी दाख की बारी का दाना दाना न तोड़ लेना, और अपनी दाख की बारी के झड़े हुए अंगूरों को न बटोरना; उन्हें दीन और परदेशी लोगों के लिये छोड़ देना; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। ११ तुम चोरी न करना, और एक दूसरे से न तो कपट करना, और न झूठ बोलना। १२ तुम मेरे नाम की झूठी शपथ खाके अपने परमेश्वर का

नाम अपवित्र न ठहराना; मैं यहोवा हूं। १३ एक दूसरे पर अन्धेर न करना, और न एक दूसरे को लूट लेना। और मज़दूर की मज़दूरी तेरे पास सारी रात बिहान तक न रहने पाए। १४ बहिरे को शाप न देना, और न अंन्धे के आगे ठोकर रखना; और अपने परमेश्वर का भय मानना; मैं यहोवा हूं। १५ न्याय में कुटिलता न करना; और न तो कंगाल का पक्ष करना और न बड़े मनुष्यों का मुंह देखा विचार करना; एक दूसरे का न्याय धर्म से करना। १६ लुतरा बनके अपने लोगों में न फिरा करना, और एक दूसरे के लोहू बहाने की युक्तियां न बान्धना; मैं यहोवा हूं। १७ अपने मन में एक दूसरे के प्रति बैर न रखना; अपने पड़ोसी को अवश्य डांटना नहीं, तो उसके पाप का भार तुझ को उठाना पड़ेगा। १८ पलटा न लेना, और न अपने जाति भाइयों से बैर रखना, परन्तु एक दूसरे से अपने ही समान प्रेम रखना; मैं यहोवा हूं। १९ तुम मेरी विधियों को निरन्तर मानना। अपने पशुओं को भिन्न जाति के पशुओं से मेल खाने न देना; अपने खेत में दो प्रकार के बीज इकट्ठे न बोना; और सनी और ऊन की मिलावट से बना हुआ वस्त्र न पहिनना। २० फिर कोई स्त्री दासी हो, और उसकी मंगनी किसी पुरुष से हुई हो, परन्तु वह न तो दाम से और न सेंतमेंत स्वाधीन की गई हो; उस से यदि कोई कुकर्म करे, तो उन दोनों को दण्ड तो मिले, पर उस स्त्री के स्वाधीन न होने के कारण वे दोनों मार न डाले जाएं। २१ पर वह पुरुष मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के पास एक मेढ़ा दोषबलि के लिये ले आए। २२ और याजक उसके किये हुए पाप के कारण दोषबलि के मेढ़े के द्वारा उसके लिये यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करे; तब उसका किया हुआ पाप क्षमा किया जाएगा। २३ फिर जब तुम कनान देश में पहुंचकर किसी प्रकार के फल के वृक्ष लगाओ, तो उनके फल तीन वर्ष तक तुम्हारे लिये मानो खतनारहित ठहरे रहें; इसलिये उन में से कुछ न खाया जाए। २४ और चौथे वर्ष में उनके सब फल यहोवा की स्तुति करने के लिये पवित्र ठहरें। २५ तब पांचवें वर्ष में तुम उनके फल खाना, इसलिये कि उन से तुम को बहुत फल मिलें; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। २६ तुम लोहू लगा हुआ कुछ मांस न खाना। और न टोना करना, और न शुभ वा अशुभ मुहूर्तों को मानना। २७ अपने सिर में घेरा रखकर न मुंड़ाना, और न अपने गाल के बालों को मुंड़ाना। २८ मुर्दों के कारण अपने शरीर को बिलकुल न चीरना, और न उस में छाप लगाना; मैं यहोवा हूं। २९ अपनी बेटियों को वेश्या बनाकर अपवित्र न करना, ऐसा न हो कि देश वेश्यागमन के कारण महापाप से भर जाए। ३० मेरे विश्रामदिन को माना करना, और मेरे पवित्रस्थान का भय निरन्तर मानना; मैं यहोवा हूं। ३१ ओझाओं और भूत साधने वालों की ओर न फिरना, और ऐसों की खोज करके उनके कारण अशुद्ध न हो जाना; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। ३२ पक्के बालवाले के साम्हने उठ खड़े होना, और बूढ़े का आदरमान करना, और अपने परमेश्वर का भय निरन्तर मानना; मैं यहोवा हूं। ३३ और यदि कोई परदेशी तुम्हारे देश में तुम्हारे संग रहे, तो उसको दुःख न देना। ३४ जो परदेशी तुम्हारे संग रहे वह तुम्हारे लिये देशी के समान हो,

और उस से अपने ही समान प्रेम रखना; क्योंकि तुम भी मिस्र देश में परदेशी थे; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। ३५ तुम न्याय में, और परिमाण में, और तौल में, और नाप में कुटिलता न करना। ३६ सच्चा तराजू, धर्म के बटखरे, सच्चा एपा, और धर्म का हीन * तुम्हारे पास रहें; मैं तुम्हारा वह परमेश्वर यहोवा हूं जो तुम को मिस्र देश से निकाल ले आया। ३७ इसलिये तुम मेरी सब विधियों और सब नियमों को मानते हुए निरन्तर पालन करो; मैं यहोवा हूं॥

(प्राणदण्ड के योग्य भांति भांति के पापों का वर्णन)

२० फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ इस्राएलियों से कह, कि इस्राएलियों में से, वा इस्राएलियों के बीच रहनेवाले परदेशियों में से, कोई क्यों न हो जो अपनी कोई सन्तान मोलेक को बलिदान करे वह निश्चय मार डाला जाए; और जनता उसको पत्थरवाह करे। ३ और मैं भी उस मनुष्य के विरुद्ध होकर उसको उसके लोगों में से इस कारण नाश करूंगा, कि उस ने अपनी सन्तान मोलेक को देकर मेरे पवित्रस्थान को अशुद्ध किया, और मेरे पवित्र नाम को अपवित्र ठहराया। ४ और यदि कोई अपनी सन्तान मोलेक को बलिदान करे, और जनता उसके विषय में आनाकानी करे, और उसको मार न डाले, ५ तब तो मैं स्वयं उस मनुष्य और उसके घराने के विरुद्ध होकर उसको और जितने उसके पीछे होकर मोलेक के साथ व्यभिचार करें उन सभों को भी उनके लोगों के बीच में से नाश करूंगा। ६ फिर जो प्राणी ओझाओं वा भूतसाधनेवालों की ओर फिरके, और उनके पीछे होकर व्यभिचारी बने, तब मैं उस प्राणी के विरुद्ध होकर उसको उसके लोगों के बीच में से नाश कर दूंगा। ७ इसलिये तुम अपने आप को पवित्र करो; और पवित्र बने रहो; क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। ८ और तुम मेरी विधियों को मानना, और उनका पालन भी करना; क्योंकि मैं तुम्हारा पवित्र करनेवाला यहोवा हूं। ९ कोई क्यों न हो जो अपने पिता वा माता को शाप दे वह निश्चय मार डाला जाए; उस ने अपने पिता वा माता को शाप दिया है, इस कारण उसका खून उसी के सिर पर पड़ेगा। १० फिर यदि कोई पराई स्त्री के साथ व्यभिचार करे, तो जिस ने किसी दूसरे की स्त्री के साथ व्यभिचार किया हो तो वह व्यभिचारी और वह व्यभिचारिणी दोनों निश्चय मार डाले जाएं। ११ और यदि कोई अपनी सौतेली माता के साथ सोए, वह जो अपने पिता ही का तन उघाड़नेवाला ठहरेगा; सो इसलिये वे दोनों निश्चय मार डाले जाएं, उनका खून उन्हीं के सिर पर पड़ेगा। १२ और यदि कोई अपनी पतोहू के साथ सोए, तो वे दोनों निश्चय मार डाले जाएं; क्योंकि वे उलटा काम करनेवाले ठहरेंगे, और उनका खून उन्हीं के सिर पर पड़ेगा। १३ और यदि कोई जिस रीति स्त्री से उसी रीति पुरुष से प्रसंग करे, तो वे दोनों घिनौना काम करनेवाले ठहरेंगे; इस कारण वे निश्चय मार डाले जाएं, उनका खून उन्हीं के सिर पर पड़ेगा। १४ और यदि कोई अपनी पत्नी और अपनी सास दोनों को रखे, तो यह महापाप है; इसलिये वह पुरुष और वे स्त्रियां तीनों के तीनों आग में जलाए जाएं,

* हीन—तौल बराबर ६ हंडरवेट के।

जिस से तुम्हारे बीच महापाप न हो। १५ फिर यदि कोई पुरुष पशुगामी हो, तो पुरुष और पशु दोनों निश्चय मार डाले जाएं। १६ और यदि कोई स्त्री पशु के पास जाकर उसके संग कुकर्म करे, तो तू उस स्त्री और पशु दोनों को घात करना; वे निश्चय मार डाले जाएं, उनका खन उन्हीं के सिर पर पड़ेगा। १७ और यदि कोई अपनी बहिन का, चाहे उसकी सगी बहिन हो चाहे सौतेली, उसका नग्न तन देखे, और उसकी बहिन भी उसका नग्न तन देखे, तो यह निन्दित बात है, वे दोनों अपने जाति भाइयों की आंखों के साम्हने नाश किए जाएं; क्योंकि जो अपनी बहिन का तन उघाड़नेवाला ठहरेगा उसे अपने अधर्म का भार स्वयं उठाना पड़ेगा। १८ फिर यदि कोई पुरुष किसी ऋतुमती स्त्री के संग सोकर उसका तन उघाड़े, तो वह पुरुष उसके रुधिर के सोते का उघाड़नेवाला ठहरेगा, और वह स्त्री अपने रुधिर के सोते की उघाड़नेवाली ठहरेगी; इस कारण वे दोनों अपने लोगों के बीच में से नाश किए जाएं। १९ और अपनी मौसी वा फूफी का तन न उघाड़ना, क्योंकि जो उसे उघाड़े वह अपनी निकट कुटुम्बिन को नङ्गा करता है; इसलिये उन दोनों को अपने अधर्म का भार उठाना पड़ेगा। २० और यदि कोई अपनी चाची के संग सोए, तो वह अपने चाचा का तन उघाड़नेवाला ठहरेगा; इसलिये वे दोनों अपने पाप के भार को उठाए हुए निर्वंश मर जाएंगे। २१ और यदि कोई अपनी भौजी वा भयाहू को अपनी पत्नी बनाए, तो इसे घिनौना काम जानना; और वह अपने भाई का तन उघाड़नेवाला ठहरेगा, इस कारण वे दोनों निर्वंश रहेंगे॥

२२ तुम मेरी सब विधियों और मेरे सब नियमों को समझ के साथ मानना; जिससे यह न हो कि जिस देश में मैं तुम्हें लिये जा रहा हूं वह तुम को उगल देवे। २३ और जिस जाति के लोगों को मैं तुम्हारे आगे से निकालता हूं उनकी रीति रस्म पर न चलना; क्योंकि उन लोगों ने जो ये सब कुकर्म किए हैं, इसी कारण मुझे उन से घृणा हो गई है। २४ और मैं तुम लोगों से कहता हूं, कि तुम तो उनकी भूमि के अधिकारी होगे, और मैं इस देश को जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं तुम्हारे अधिकार में कर दूंगा; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं जिस ने तुम को और देशों के लोगों से अलग किया है। २५ इस कारण तुम शुद्ध और अशुद्ध पशुओं में, और शुद्ध और अशुद्ध पक्षियों में भेद करना; और कोई पशु वा पक्षी वा किसी प्रकार का भूमि पर रेंगनेवाला जीवजन्तु क्यों न हो, जिसको मैं ने तुम्हारे लिये अशुद्ध ठहराकर वर्जित किया है, उस से अपने आप को अशुद्ध न करना। २६ और तुम मेरे लिये पवित्र बने रहना; क्योंकि मैं यहोवा स्वयं पवित्र हूं, और मैं ने तुम को और देशों के लोगों से इसलिये अलग किया है कि तुम निरन्तर मेरे ही बने रहो॥

२७ यदि कोई पुरुष वा स्त्री ओझाई वा भूत की साधना करे, तो वह निश्चय मार डाला जाए; ऐसों का पत्थरवाह किया जाए, उनका खून उन्हीं के सिर पर पड़ेगा॥

(याजकों के लिये विशेष विशेष विधियां)

२१ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, हारून के पुत्र जो याजक हैं उन से कह, कि तुम्हारे लोगों में से कोई भी मरे, तो

उसके कारण तुम में से कोई अपने को अशुद्ध न करे; २ अपने निकट कुटुम्बियों, अर्थात् अपनी माता, वा पिता, वा बेटे, वा बेटी, वा भाई के लिये, ३ वा अपनी कुंवारी बहिन जिसका विवाह न हुआ हो, जिनका समीपी सम्बन्ध है; उनके लिये वह अपने को अशुद्ध कर सकता है। ४ पर याजक होने के नाते से वह अपने लोगों में प्रधान है, इसलिये वह अपने को ऐसा अशुद्ध न करे कि अपवित्र हो जाए। ५ वे न तो अपने सिर मुंड़ाएं, और न अपने गाल के बालों को मुंड़ाएं, और न अपने शरीर चीरें। ६ वे अपने परमेश्वर के लिये पवित्र बने रहें, और अपने परमेश्वर का नाम अपवित्र न करें; क्योंकि वे यहोवा के हव्य को जो उनके परमेश्वर का भोजन है चढ़ाया करते हैं; इस कारण वे पवित्र बने रहें। ७ वे वेश्या वा भ्रष्टा को ब्याह न लें; और न त्यागी हुई को ब्याह लें; क्योंकि याजक अपने परमेश्वर के लिये पवित्र होता है। ८ इसलिये तू याजक को पवित्र जानना, क्योंकि वह तुम्हारे परमेश्वर का भोजन चढ़ाया करता है; इसलिये वह तेरी दृष्टि में पवित्र ठहरे; क्योंकि मैं यहोवा, जो तुम को पवित्र करता हूं, पवित्र हूं। ९ और यदि याजक की बेटी वेश्या बनकर अपने आप को अपवित्र करे, तो वह अपने पिता को अपवित्र ठहराती है; वह आग में जलाई जाए॥

१० और जो अपने भाइयों में महायाजक हो, जिसके सिर पर अभिषेक का तेल डाला गया हो, और जिसका पवित्र वस्त्रों को पहिनने के लिये संस्कार हुआ हो, वह अपने सिर के बाल बिखरने न दे, और न अपने वस्त्र फाड़े; ११ और न वह किसी लोथ के पास जाए, और न अपने पिता वा माता के कारण अपने को अशुद्ध करे; १२ और वह पवित्रस्थान से बाहर भी न निकले, और न अपने परमेश्वर के पवित्रस्थान को अपवित्र ठहराए; क्योंकि वह अपने परमेश्वर के अभिषेक का तेलरूपी मुकुट धारण * किए हुए है; मैं यहोवा हूं। १३ और वह कुंवारी ही स्त्री को ब्याहे। १४ जो विधवा, वा त्यागी हुई, वा भ्रष्ट, वा वेश्या हो, ऐसी किसी को वह न ब्याहे, वह अपने ही लोगों के बीच में की किसी कुंवारी कन्या को ब्याहे; १५ और वह अपने वीर्य्य को अपने लोगों में अपवित्र न करे; क्योंकि मैं उसका पवित्र करनेवाला यहोवा हूं॥

१६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १७ हारून से कह, कि तेरे वंश की पीढ़ी-पीढ़ी में जिस किसी के कोई भी दोष हो वह अपने परमेश्वर का भोजन चढ़ाने के लिये समीप न आए। १८ कोई क्यों न हो जिस में दोष हो वह समीप न आए, चाहे वह अन्धा हो, चाहे लंगड़ा, चाहे नकचपटा हो, चाहे उसके कुछ अधिक अंग हो, १९ वा उसका पांव, वा हाथ टूटा हो, २० वा वह कुबड़ा, वा बौना हो, वा उसकी आंख में दोष हो, वा उस मनुष्य के चाईं वा खजुली हो, वा उसके अंड पिचके हों; २१ हारून याजक के वंश में से जिस किसी में कोई भी दोष हो वह यहोवा के हव्य चढ़ाने के लिये समीप न आए; वह जो दोषयुक्त है कभी भी अपने परमेश्वर का भोजन चढ़ाने के लिये समीप न आए। २२ वह अपने परमेश्वर के पवित्र और परमपवित्र दोनों प्रकार के भोजन को खाए, २३ परन्तु उसके दोष के कारण वह न तो बीचवाले पर्दे के भीतर आए और न वेदी के समीप, जिस से ऐसा

* वा, का तेल जो उसके न्यारे किये जाने का चिन्ह है उसे।

न हो कि वह मेरे पवित्रस्थानों को अपवित्र करे; क्योंकि मैं उनका पवित्र करनेवाला यहोवा हूं। २४ इसलिये मूसा ने हारून और उसके पुत्रों को तथा कुल इस्राएलियों को यह बातें कह सुनाई ॥

२२ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ हारून और उसके पुत्रों से कह, कि इस्राएलियों की पवित्र की हुई वस्तुओं से जिनको वे मेरे लिये पवित्र करते हैं न्यारे रहें, और मेरे पवित्र नाम को अपवित्र न करें; मैं यहोवा हूं। ३ और उन से कह, कि तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में तुम्हारे सारे वंश में से जो कोई अपनी अशुद्धता की दशा में उन पवित्र की हुई वस्तुओं के पास जाए, जिन्हें इस्राएली यहोवा के लिये पवित्र करते हैं, वह प्राणी मेरे साम्हने से नाश किया जाएगा; मैं यहोवा हूं। ४ हारून के वंश में से कोई क्यों न हो जो कोढ़ी हो, वा उसके प्रमेह हो, वह मनुष्य जब तक शुद्ध न हो जाए तब तक पवित्र की हुई वस्तुओं में से कुछ न खाए। और जो लोथ के कारण अशुद्ध हुआ हो, वा जिसका वीर्य्य स्खलित हुआ हो, ऐसे मनुष्य को जो कोई छूए, ५ और जो कोई किसी ऐसे रेंगनेहारे जन्तु को छूए जिस से लोग अशुद्ध हो सकते हैं, वा किसी ऐसे मनुष्य को छूए जिस में किसी प्रकार की अशुद्धता हो जो उसको भी लग सकती है, ६ तो वह प्राणी जो इन में से किसी को छूए सांझ तक अशुद्ध ठहरा रहे, और जब तक जल से स्नान न कर ले तब तक पवित्र वस्तुओं में से कुछ न खाए। ७ तब सूर्य अस्त होने पर वह शुद्ध ठहरेगा; और तब वह पवित्र वस्तुओं में से खा सकेगा, क्योंकि उसका भोजन वही है। ८ जो जानवर आप से मरा हो वा पशु से फाड़ा गया हो उसे खाकर वह अपने आप को अशुद्ध न करे; मैं यहोवा हूं। ९ इसलिये याजक लोग मेरी सौंपी हुई वस्तुओं की रक्षा करें, ऐसा न हो कि वे उनको अपवित्र करके पाप का भार उठाएं, और इसके कारण मर भी जाएं; मैं उनका पवित्र करनेवाला यहोवा हूं। १० पराए कुल का जन किसी पवित्र वस्तु को न खाने पाए, चाहे वह याजक का पाहुन हो वा मज़दूर हो, तौभी वह कोई पवित्र वस्तु न खाए। ११ यदि याजक किसी प्राणी को रुपया देकर मोल ले, तो वह प्राणी उस में से खा सकता है; और जो याजक के घर में उत्पन्न हुए हों वे भी उसके भोजन में से खाएं। १२ और यदि याजक की बेटी पराए कुल के किसी पुरुष से ब्याही गई हो, तो वह भेंट की हुई पवित्र वस्तुओं में से न खाए। १३ यदि याजक की बेटी विधवा वा त्यागी हुई हो, और उसकी सन्तान न हो, और वह अपनी बाल्यावस्था की रीति के अनुसार अपने पिता के घर में रहती हो, तो वह अपने पिता के भोजन में से खाए; पर पराए कुल का कोई उस में से न खाने पाए। १४ और यदि कोई मनुष्य किसी पवित्र वस्तु में से कुछ भूल से खा जाए, तो वह उसका पांचवां भाग बढ़ाकर उसे याजक को भर दे। १५ और वे इस्राएलियों की पवित्र की हुई वस्तुओं को, जिन्हें वे यहोवा के लिये चढ़ाएं, अपवित्र न करें। १६ वे उनको अपनी पवित्र वस्तुओं में से खिलाकर उन से अपराध का दोष न उठवाएं; मैं उनका पवित्र करनेवाला यहोवा हूं ॥

१७ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १८ हारून और उसके पुत्रों से और इस्राएलियों से समझाकर कह, कि इस्राएल के घराने वा इस्राएलियों में रहनेवाले

परदेशियों में से कोई क्यों न हो जो मन्नत वा स्वेच्छाबलि करने के लिये यहोवा को कोई होमबलि चढ़ाए, १९ तो अपने निमित्त ग्रहणयोग्य ठहरने के लिये बैलों वा भेड़ों वा बकरियों में से निर्दोष नर चढ़ाया जाए। २० जिस में कोई भी दोष हो उसे न चढ़ाना; क्योंकि वह तुम्हारे निमित्त ग्रहणयोग्य न ठहरेगा। २१ और जो कोई बैलों वा भेड़-बकरियों में से विशेष वस्तु संकल्प करने के लिये वा स्वेच्छाबलि के लिये यहोवा को मेलबलि चढ़ाए, तो ग्रहण होने के लिये अवश्य है कि वह निर्दोष हो, उस में कोई भी दोष न हो। २२ जो अन्धा वा अंग का टूटा वा लूला हो, वा उस में रसौली वा खौरा वा खुजली हो, ऐसों को यहोवा के लिये न चढ़ाना, उनको वेदी पर यहोवा के लिये हव्य न चढ़ाना। २३ जिस किसी बैल वा भेड़ वा बकरे का कोई अंग अधिक वा कम हो उसको स्वेच्छाबलि के लिये चढ़ा सकते हो, परन्तु मन्नत पूरी करने के लिये वह ग्रहण न होगा। २४ जिसके अंड दबे वा कुचले वा टूटे वा कट गए हों उसको यहोवा के लिये न चढ़ाना, और अपने देश में भी ऐसा काम न करना। २५ फिर इन में से किसी को तुम अपने परमेश्वर का भोजन जानकर किसी परदेशी से लेकर न चढ़ाओ; क्योंकि उन में उनका बिगाड़ वर्तमान है, उन में दोष है, इसलिये वे तुम्हारे निमित्त ग्रहण न होंगे॥

२६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २७ जब बछड़ा वा भेड़ वा बकरी का बच्चा उत्पन्न हो, तो वह सात दिन तक अपनी मां के साथ रहे; फिर आठवें दिन से आगे को वह यहोवा के हव्यवाह चढ़ावे के लिये ग्रहणयोग्य ठहरेगा। २८ चाहे गाय, चाहे भेड़ी वा बकरी हो, उसको और उसके बच्चे को एक ही दिन में बलि न करना। २९ और जब तुम यहोवा के लिये धन्यवाद का मेलबलि चढ़ाओ, तो उसे इसी प्रकार से करना जिस से वह ग्रहणयोग्य ठहरे। ३० वह उसी दिन खाया जाए, उस में से कुछ भी बिहान तक रहने न पाए; मैं यहोवा हूं। ३१ और तुम मेरी आज्ञाओं को मानना और उनका पालन करना; मैं यहोवा हूं। ३२ और मेरे पवित्र नाम को अपवित्र न ठहराना, क्योंकि मैं इस्राएलियों के बीच अवश्य ही पवित्र माना जाऊंगा; मैं तुम्हारा पवित्र करनेवाला यहोवा हूं, ३३ जो तुम को मिस्र देश से निकाल लाया हूं जिस से तुम्हारा परमेश्वर बना रहूं; मैं यहोवा हूं॥

(वर्ष भर के नियत त्योहारों की विधियां)

२३ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ इस्राएलियों से कह, कि यहोवा के पर्ब्ब जिनका तुम को पवित्र सभा एकत्रित करने के लिये नियत समय पर प्रचार करना होगा, मेरे वे पर्ब्ब ये हैं। ३ छः दिन कामकाज किया जाए, पर सातवां दिन परमविश्राम का और पवित्र सभा का दिन है; उस में किसी प्रकार का कामकाज न किया जाए; वह तुम्हारे सब घरों में यहोवा का विश्राम दिन ठहरे॥

४ फिर यहोवा के पर्ब्ब जिन में से एक एक के ठहराये हुए समय में तुम्हें पवित्र सभा करने के लिये प्रचार करना होगा वे ये हैं। ५ पहिले महीने के चौदहवें दिन को गोधूलि के समय यहोवा का फसह हुआ करे। ६ और उसी महीने के पंद्रहवें दिन को यहोवा के लिये अखमीरी रोटी का पर्ब्ब हुआ करे; उस में तुम सात दिन तक अखमीरी रोटी खाया करना। ७ उन में से

पहिले दिन तुम्हारी पवित्र सभा हो; और उस दिन परिश्रम का कोई काम न करना। ८ और सातों दिन तुम यहोवा को हव्य चढ़ाया करना; और सातवें दिन पवित्र सभा हो; उस दिन परिश्रम का कोई काम न करना॥

९ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १० इस्राएलियों से कह, कि जब तुम उस देश में प्रवेश करो जिसे यहोवा तुम्हें देता है और उस में के खेत काटो, तब अपने अपने पक्के खेत की पहिली उपज का पूला याजक के पास ले आया करना; ११ और वह उस पूले को यहोवा के साम्हने हिलाए, कि वह तुम्हारे निमित्त ग्रहण किया जाए; वह उसे विश्रामदिन के दूसरे दिन हिलाए। १२ और जिस दिन तुम पूले को हिलवाओ उसी दिन एक वर्ष का निर्दोष भेड़ का बच्चा यहोवा के लिये होमबलि चढ़ाना। १३ और उसके साथ का अन्नबलि एपा के दो दसवें अंश तेल से सने हुए मैदे का हो, वह सुखदायक सुगन्ध के लिये यहोवा का हव्य हो; और उसके साथ का अर्घ हीन भर की चौथाई दाखमधु हो। १४ और जब तक तुम इस चढ़ावे को अपने परमेश्वर के पास न ले जाओ, उस दिन तक नये खेत में से न तो रोटी खाना और न भूना हुआ अन्न और न हरी बालें; यह तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में तुम्हारे सारे घरानों में सदा की विधि ठहरे॥

१५ फिर उस विश्रामदिन के दूसरे दिन से, अर्थात् जिस दिन तुम हिलाई जानेवाली भेंट के पूले को लाओगे, उस दिन से पूरे सात विश्रामदिन गिन लेना; १६ सातवें विश्रामदिन के दूसरे दिन तक पचास दिन गिनना, और पचासवें दिन यहोवा के लिये नया अन्नबलि चढ़ाना। १७ तुम अपने घरों में से एपा के दो दसवें अंश मैदे की दो रोटियां हिलाने की भेंट के लिये ले आना; वे ख़मीर के साथ पकाई जाएं, और यहोवा के लिये पहिली उपज ठहरें। १८ और उस रोटी के संग एक एक वर्ष के सात निर्दोष भेड़ के बच्चे, और एक बछड़ा, और दो मेढ़े चढ़ाना; वे अपने अपने साथ के अन्नबलि और अर्घ समेत यहोवा के लिये होमबलि के समान चढ़ाए जाएं, अर्थात् वे यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्ध देनेवाला हव्य ठहरें। १९ फिर पापबलि के लिये एक बकरा, और मेलबलि के लिये एक एक वर्ष के दो भेड़ के बच्चे चढ़ाना। २० तब याजक उनको पहिली उपज की रोटी समेत यहोवा के साम्हने हिलाने की भेंट के लिये हिलाए, और इन रोटियों के संग वे दो भेड़ के बच्चे भी हिलाए जाएं; वे यहोवा के लिये पवित्र, और याजक का भाग ठहरें। २१ और तुम उसी दिन यह प्रचार करना, कि आज हमारी एक पवित्र सभा होगी; और परिश्रम का कोई काम न करना; यह तुम्हारे सारे घरानों में तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में सदा की विधि ठहरे॥

२२ जब तुम अपने देश में के खेत काटो, तब अपने खेत के कोनों को पूरी रीति से न काटना, और खेत में गिरी हुई बालों को न इकट्ठा करना; उसे दीनहीन और परदेशी के लिये छोड़ देना; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं॥

२३ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २४ इस्राएलियों से कह, कि सातवें महीने के पहिले दिन को तुम्हारे लिये परमविश्राम हो; उस में स्मरण दिलाने के लिये नरसिंगे फूंके जाएं, और एक पवित्र सभा इकट्ठी हो। २५ उस दिन तुम परिश्रम का कोई काम न करना, और यहोवा के लिये एक हव्य चढ़ाना॥

२६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २७ उसी सातवें महीने का दसवां दिन प्रायश्चित्त का दिन माना जाए; वह तुम्हारी पवित्र सभा का दिन होगा, और उस में तुम अपने अपने जीव को दुःख देना और यहोवा का हव्य चढ़ाना। २८ उस दिन तुम किसी प्रकार का कामकाज न करना; क्योंकि वह प्रायश्चित्त का दिन नियुक्त किया गया है जिस में तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के साम्हने तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त किया जाएगा। २९ इसलिये जो प्राणी उस दिन दुःख न सहे वह अपने लोगों में से नाश किया जाएगा। ३० और जो प्राणी उस दिन किसी प्रकार का कामकाज करे उस प्राणी को मैं उसके लोगों के बीच में से नाश कर डालूंगा। ३१ तुम किसी प्रकार का कामकाज न करना; यह तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में तुम्हारे घरानों में सदा की विधि ठहरे। ३२ वह दिन तुम्हारे लिये परमविश्राम का हो, उस में तुम अपने अपने जीव को दुःख देना; और उस महीने के नवें दिन की सांझ से लेकर दूसरी सांझ तक अपना विश्रामदिन माना करना॥

३३ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, ३४ इस्राएलियों से कह, कि उसी सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन से सात दिन तक यहोवा के लिये झोंपड़ियों का पर्ब्ब रहा करे। ३५ पहिले दिन पवित्र सभा हो; उस में परिश्रम का कोई काम न करना। ३६ सातों दिन यहोवा के लिये हव्य चढ़ाया करना, फिर आठवें दिन तुम्हारी पवित्र सभा हो, और यहोवा के लिये हव्य चढ़ाना; वह महासभा का दिन है, और उस में परिश्रम का कोई काम न करना॥

३७ यहोवा के नियत पर्ब्ब ये ही हैं, इन में तुम यहोवा को हव्य चढ़ाना, अर्थात् होमबलि, अन्नबलि मेलबलि, और अर्घ, प्रत्येक अपने अपने नियत समय पर चढ़ाया जाए और पवित्र सभा का प्रचार करना। ३८ इन सभों से अधिक यहोवा के विश्रामदिनों को मानना, और अपनी भेंटों, और सब मन्नतों, और स्वेच्छाबलियों को जो यहोवा को अर्पण करोगे चढ़ाया करना॥

३९ फिर सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन को, जब तुम देश की उपज को इकट्ठा कर चुको, तब सात दिन तक यहोवा का पर्ब्ब मानना; पहिले दिन परमविश्राम हो, और आठवें दिन परमविश्राम हो। ४० और पहिले दिन तुम अच्छे अच्छे वृक्षों की उपज, और खजूर के पत्ते, और घने वृक्षों की डालियां, और नालों में के मजनू को लेकर अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने सात दिन तक आनन्द करना। ४१ और प्रतिवर्ष सात दिन तक यहोवा के लिये यह पर्ब्ब माना करना; यह तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में सदा की विधि ठहरे, कि सातवें महीने में यह पर्ब्ब माना जाए। ४२ सात दिन तक तुम झोंपड़ियों में रहा करना, अर्थात् जितने जन्म के इस्राएली हैं वे सब के सब झोंपड़ियों में रहें, ४३ इसलिये कि तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी के लोग जान रखें, कि जब यहोवा हम इस्राएलियों को मिस्र देश से निकाल कर ला रहा था तब उस ने उनको झोंपड़ियों में टिकाया था; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। ४४ और मूसा ने इस्राएलियों को यहोवा के पर्ब्ब के नियत समय कह सुनाए॥

(पवित्र दीपकों और रोटियों की विधि)

२४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ इस्राएलियों को यह आज्ञा दे, कि मेरे पास उजियाला देने के लिये कूट के निकाला हुआ जलपाई का निर्मल तेल ले

आना, कि दीपक नित्य जलता रहे * । ३ हारून उसको, मिलापवाले तम्बू में, साक्षीपत्र के बीचवाले पर्दे से बाहर, यहोवा के साम्हने नित्य सांझ से भोर तक सजाकर रखे; यह तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी के लिये सदा की विधि ठहरे। ४ वह दीपकों के स्वच्छ दीवट पर यहोवा के साम्हने नित्य सजाया करे ।।

५ और तू मैदा लेकर बारह रोटियां पकवाना, प्रत्येक रोटी में एपा का दो दसवां अंश मैदा हो। ६ तब उनकी दो पांति † करके, एक एक पांति में ‡ छः छः रोटियां, स्वच्छ मेज पर यहोवा के साम्हने धरना। ७ और एक एक पांति पर § चोखा लोबान रखना, कि वह रोटी पर स्मरण दिलानेवाला वस्तु और यहोवा के लिये हव्य हो। ८ प्रति विश्रामदिन को वह उसे नित्य यहोवा के सम्मुख क्रम से रखा करे, यह सदा की वाचा की रीति इस्राएलियों की ओर से हुआ करे। ९ और वह हारून और उसके पुत्रों की होंगी, और वे उसको किसी पवित्र स्थान में खाएं, क्योंकि वह यहोवा के हव्यों में से सदा की विधि के अनुसार हारून के लिये परम-पवित्र वस्तु ठहरी है ।।

(यहोवा की निन्दा आदि प्राणदण्ड योग्य पापों की व्यवस्था)

१० उन दिनों में किसी इस्राएली स्त्री का बेटा, जिसका पिता मिस्री पुरुष था, इस्राएलियों के बीच चला गया; और वह इस्राएली स्त्री का बेटा और एक इस्राएली पुरुष छावनी के बीच आपस में मारपीट करने लगे, ११ और वह इस्राएली स्त्री का बेटा यहोवा के नाम की निन्दा करके शाप देने लगा। यह सुनकर लोग उसको मूसा के पास ले गए। उसकी माता का नाम शलोमीत था, जो दान के गोत्र के दिब्री की बेटी थी। १२ उन्हों ने उसको हवालात में बन्द किया, जिस से यहोवा की आज्ञा से इस बात पर विचार किया जाए ।।

१३ तब यहोवा ने मूसा से कहा, १४ तुम लोग उस शाप देने वाले को छावनी से बाहर लिवा ले जाओ; और जितनों ने वह निन्दा सुनी हो वे सब अपने अपने हाथ उसके सिर पर टेकें, तब सारी मण्डली के लोग उसको पत्थरवाह करें। १५ और तू इस्राएलियों से कह, कि कोई क्यों न हो जो अपने परमेश्वर को शाप दे उसे अपने पाप का भार उठाना पड़ेगा। १६ यहोवा के नाम की निन्दा करनेवाला निश्चय मार डाला जाए; सारी मण्डली के लोग निश्चय उसको पत्थरवाह करें; चाहे देशी हो चाहे परदेशी, यदि कोई उस नाम की निन्दा करे तो वह मार डाला जाए। १७ फिर जो कोई किसी मनुष्य को प्राण से मारे वह निश्चय मार डाला जाए। १८ और जो कोई किसी घरेलू पशु को प्राण से मारे वह उसे भर दे, अर्थात् प्राणी की सन्ती प्राणी दे। १९ फिर यदि कोई किसी दूसरे को चोट पहुंचाए, * तो जैसा उस ने किया हो वैसा ही उसके साथ भी किया जाए, २० अर्थात् अंग भंग करने की सन्ती अंग भंग किया जाए, आंख की सन्ती आंख, दांत की सन्ती दांत, जैसी चोट जिस ने किसी को पहुंचाई हो वैसी ही उसको भी पहुंचाई जाए। २१ और पशु का मार डालनेवाला उसको भर दे, परन्तु

---

* मूल में—चढाया जाया करे।
† वा उनके दो ढेर। ‡ वा एक एक ढेर में।
§ वा एक एक ढेर पर।

* मूल में—यदि कोई अपने भाईबन्धु में दोष दे।

मनुष्य का मार डालनेवाला मार डाला जाए। २२ तुम्हारा नियम एक ही हो, जैसा देशी के लिये वैसा ही परदेशी के लिये भी हो; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। २३ और मूसा ने इस्राएलियों को यही समझाया; तब उन्हों ने उस शाप देनेवाले को छावनी से बाहर ले जाकर उसको पत्थरवाह किया। और इस्राएलियों ने वैसा ही किया जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी ॥

(सातवें वर्ष और पचासवें वर्ष के विश्राम-कालों की विधि)

२५ फिर यहोवा ने सीनै पर्वत के पास मूसा से कहा, २ इस्राएलियों से कह, कि जब तुम उस देश में प्रवेश करो जो मैं तुम्हें देता हूं, तब भूमि को यहोवा के लिये विश्राम मिला करे। ३ छः वर्ष तो अपना अपना खेत बोया करना, और छहों वर्ष अपनी अपनी दाख की बारी छांट छांटकर देश की उपज इकट्ठी किया करना; ४ परन्तु सातवें वर्ष भूमि को यहोवा के लिये परमविश्रामकाल मिला करे; उस में न तो अपना खेत बोना और न अपनी दाख की बारी छांटना। ५ जो कुछ काटे हुए खेत में अपने आप से उगे उसे न काटना, और अपनी बिन छांटी हुई दाखलता की दाखों को न तोड़ना; क्योंकि वह भूमि के लिये परम-विश्राम का वर्ष होगा। ६ और भूमि के विश्रामकाल ही की उपज से तुम को, और तुम्हारे दास-दासी को, और तुम्हारे साथ रहनेवाले मजदूरों और परदेशियों को भी भोजन मिलेगा; ७ और तुम्हारे पशुओं का और देश में जितने जीवजन्तु हों उनका भी भोजन भूमि की सब उपज से होगा ॥

८ और सात विश्रामवर्ष, अर्थात् सात-गुना सात वर्ष गिन लेना, सातों विश्राम-वर्षों का यह समय उनचास वर्ष होगा। ९ तब सातवें महीने के दसवें दिन को, अर्थात् प्रायश्चित्त के दिन, जय जयकार के महाशब्द का नरसिंगा अपने सारे देश में सब कहीं फुंकवाना। १० और उस पचासवें वर्ष को पवित्र करके मानना, और देश के सारे निवासियों के लिये छुटकारे का प्रचार करना; वह वर्ष तुम्हारे यहां जुबली * कहलाए; उस में तुम अपनी अपनी निज भूमि और अपने अपने घराने में लौटने पाओगे। ११ तुम्हारे यहां वह पचासवां वर्ष जुबली का वर्ष कहलाए; उस में तुम न बोना, और जो अपने आप ऊगे उसे भी न काटना, और न बिन छांटी हुई दाखलता की दाखों को तोड़ना। १२ क्योंकि वह जो जुबली का वर्ष होगा; वह तुम्हारे लिये पवित्र होगा; तुम उसकी उपज खेत ही में से ले लेके खाना। १३ इस जुबली के वर्ष में तुम अपनी अपनी निज भूमि को लौटने पाओगे। १४ और यदि तुम अपने भाईबन्धु के हाथ कुछ बेचो वा अपने भाईबन्धु से कुछ मोल लो, तो तुम एक दूसरे पर अन्धेर न करना। १५ जुबली * के पीछे जितने वर्ष बीते हों उनकी गिनती के अनुसार दाम ठहराके एक दूसरे से मोल लेना, और शेष वर्षों की उपज के अनुसार वह तेरे हाथ बेचे। १६ जितने वर्ष और रहें उतना ही दाम बढ़ाना, और जितने वर्ष कम रहें उतना ही दाम घटाना, क्योंकि वर्ष की उपज जितनी हों उतनी ही वह तेरे हाथ बेचेगा। १७ और तुम अपने अपने भाईबन्धु पर अन्धेर न करना; अपने

* अर्थात् नरसिंगे का शब्द।

परमेश्वर का भय मानना; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। १८ इसलिये तुम मेरी विधियों को मानना, और मेरे नियमों पर समझ बूझकर चलना; क्योंकि ऐसा करने से तुम उस देश में निडर बसे रहोगे। १९ और भूमि अपनी उपज उपजाया करेगी, और तुम पेट भर खाया करोगे, और उस देश में निडर बसे रहोगे। २० और यदि तुम कहो, कि सातवें वर्ष में हम क्या खाएंगे, न तो हम बोएंगे न अपने खेत की उपज इकट्ठी करेंगे? २१ तो जानो कि मैं तुम को छठवें वर्ष में ऐसी आशीष दूंगा, * कि भूमि की उपज तीन वर्ष तक काम आएगी। २२ तुम आठवें वर्ष में बोओगे, और पुरानी उपज में से खाते रहोगे, और नवें वर्ष की उपज जब तक न मिले तब तक तुम पुरानी उपज में से खाते रहोगे। २३ भूमि सदा के लिये तो बेची न जाए, क्योंकि भूमि मेरी है; और उस में तुम परदेशी और बाहरी होगे। २४ लेकिन तुम अपने भाग के सारे देश में भूमि को छुड़ा लेने देना॥

२५ यदि तेरा कोई भाईबन्धु कंगाल होकर अपनी निज भूमि में से कुछ बेच डाले, तो उसके कुटुम्बियों में से जो सब से निकट हो वह आकर अपने भाईबन्धु के बेचे हुए भाग को छुड़ा ले। २६ और यदि किसी मनुष्य के लिये कोई छुड़ानेवाला न हो, और उसके पास इतना धन हो कि आप ही अपने भाग को छुड़ा ले सके, २७ तो वह उसके बिकने के समय से वर्षों की गिनती करके शेष वर्षों की उपज का दाम उसको जिस ने उसे मोल लिया हो फेर दे; तब वह अपनी निज भूमि का अधिकारी हो जाए। २८ परन्तु यदि उसके इतनी पूंजी न हो कि उसे फिर अपनी कर सके, तो उसकी बेची हुई भूमि जुबली * के वर्ष तक मोल लेनेवालों के हाथ में रहे; और जुबली * के वर्ष में छूट जाए तब वह मनुष्य अपनी निज भूमि का फिर अधिकारी हो जाए॥

२९ फिर यदि कोई मनुष्य शहरपनाह-वाले नगर में बसने का घर बेचे, तो वह बेचने के बाद वर्ष भर के अन्दर उसे छुड़ा सकेगा, अर्थात् पूरे वर्ष भर उस मनुष्य को छुड़ाने का अधिकार रहेगा। ३० परन्तु यदि वह वर्ष भर में न छुड़ाए, तो वह घर जो शहरपनाहवाले नगर में हो मोल लेनेवाले का बना रहे, और पीढ़ी-पीढ़ी में उसी के वंश का बना रहे; और जुबली * के वर्ष में भी न छूटे। ३१ परन्तु बिना शहरपनाह के गांवों के घर तो देश के खेतों के समान गिने जाएं; उनका छुड़ाना भी हो सकेगा, और वे जुबली * के वर्ष में छूट जाएं। ३२ और लेवियों के निज भाग के नगरों के जो घर हों उनको लेवीय जब चाहें तब छुड़ाएं। ३३ और यदि कोई लेवीय अपना भाग न छुड़ाए, तो वह बेचा हुआ घर जो उसके भाग के नगर में हो जुबली * के वर्ष में छूट जाए; क्योंकि इस्राएलियों के बीच लेवियों का भाग उनके नगरों में वे घर ही हैं। ३४ और उनके नगरों की चारों ओर की चराई की भूमि बेची न जाए; क्योंकि वह उनका सदा का भाग होगा॥

३५ फिर यदि तेरा कोई भाईबन्धु कंगाल हो जाए, और उसकी दशा तेरे साम्हने तरस योग्य हो जाए, तो तू उसको संभालना; वह परदेशी वा यात्री की नाईं तेरे संग रहे। ३६ उस से ब्याज वा बढ़ती न

* मूल में—अपनी आशीष को आज्ञा दूंगा।

* अर्थात् महाशब्दवाले नरसिंगे का शब्द।

लेना; अपने परमेश्वर का भय मानना; जिस से तेरा भाईबन्धु तेरे संग जीवन निर्वाह कर सके। ३७ उसको ब्याज पर रुपया न देना, और न उसको भोजनवस्तु लाभ के लालच से देना। ३८ मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं; मैं तुम्हें कनान देश देने के लिये और तुम्हारा परमेश्वर ठहरने की मनसा से तुम को मिस्र देश से निकाल लाया हूं ॥

३९ फिर यदि तेरा कोई भाईबन्धु तेरे साम्हने कंगाल होकर अपने आप को तेरे हाथ बेच डाले, तो उस से दास के समान सेवा न करवाना। ४० वह तेरे संग मज़दूर वा यात्री की नाईं रहे, और जुबली * के वर्ष तक तेरे संग रहकर सेवा करता रहे; ४१ तब वह बालबच्चों समेत तेरे पास से निकल जाए, और अपने कुटुम्ब में और अपने पितरों की निज भूमि में लौट जाए। ४२ क्योंकि वे मेरे ही दास हैं, जिनको मैं मिस्र देश से निकाल लाया हूं; इसलिये वे दास की रीति से न बेचे जाएं। ४३ उस पर कठोरता से अधिकार न करना; अपने परमेश्वर का भय मानते रहना। ४४ तेरे जो दास-दासियां हों वे तुम्हारी चारों ओर की जातियों में से हों, और दास और दासियां उन्हीं में से मोल लेना। ४५ और जो यात्री लोग तुम्हारे बीच में परदेशी होकर रहेंगे, उन में से और उनके घरानों में से भी जो तुम्हारे आस पास हों, और जो तुम्हारे देश में उत्पन्न हुए हों, उन में से तुम दास और दासी मोल लो; और वे तुम्हारा भाग ठहरें। ४६ और तुम अपने पुत्रों को भी जो तुम्हारे बाद होंगे उनके अधिकारी कर सकोगे, और वे उनका भाग ठहरें; उन में से तुम सदा अपने लिये दास लिया करना, परन्तु तुम्हारे भाईबन्धु जो इस्राएली हों उन पर अपना अधिकार कठोरता से न जताना ॥

४७ फिर यदि तेरे साम्हने कोई परदेशी वा यात्री धनी हो जाए, और उसके साम्हने तेरा भाई कंगाल होकर अपने आप को तेरे साम्हने उस परदेशी वा यात्री वा उसके वंश के हाथ बेच डाले, ४८ तो उसके बिक जाने के बाद वह फिर छुड़ाया जा सकता है; उसके भाइयों में से कोई उसको छुड़ा सकता है, ४९ वा उसका चाचा, वा चचेरा भाई, तथा उसके कुल का कोई भी निकट कुटुम्बी उसको छुड़ा सकता है; वा यदि वह धनी हो जाए, तो वह आप ही अपने को छुड़ा सकता है। ५० वह अपने मोल लेनेवाले के साथ अपने बिकने के वर्ष से जुबली के वर्ष तक हिसाब करे, और उसके बिकने का दाम वर्षों की गिनती के अनुसार हो, अर्थात् वह दाम मज़दूर के दिवसों के समान उसके साथ होगा। ५१ यदि जुबली * के बहुत वर्ष रह जाएं, तो जितने रुपयों से वह मोल लिया गया हो उन में से वह अपने छुड़ाने का दाम उतने वर्षों के अनुसार फेर दे। ५२ और यदि जुबली * के वर्ष के थोड़े वर्ष रह गए हों, तौभी वह अपने स्वामी के साथ हिसाब करके अपने छुड़ाने का दाम उतने ही वर्षों के अनुसार फेर दे। ५३ वह अपने स्वामी के संग उस मज़दूर के समान रहे जिसकी वार्षिक मज़दूरी ठहराई जाती हो; और उसका स्वामी उस पर तेरे साम्हने कठोरता से अधिकार न जताने पाए। ५४ और यदि वह इन रीतियों से छुड़ाया न जाए, तो वह जुबली * के वर्ष में अपने बाल-बच्चों समेत छूट जाए। ५५ क्योंकि इस्राएली मेरे ही दास हैं; वे मिस्र देश

* अर्थात् महाशब्दवाले नरसिंगे का शब्द।

* अर्थात् महाशब्दवाले नरसिंगे का शब्द।

से मेरे ही निकाले हुए दास हैं; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं ।।

(धर्म तथा अधर्म के फल)

२६ तुम अपने लिये मूरतें न बनाना, और न कोई खुदी हुई मूर्ति वा लाट अपने लिये खड़ी करना, और न अपने देश में दण्डवत् करने के लिये नक्काशीदार पत्थर स्थापन करना; क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। २ तुम मेरे विश्रामदिनों का पालन करना और मेरे पवित्रस्थान का भय मानना; मैं यहोवा हूं ।।

३ यदि तुम मेरी विधियों पर चलो और मेरी आज्ञाओं को मानकर उनका पालन करो, ४ तो मैं तुम्हारे लिये समय समय पर मेंह बरसाऊंगा, तथा भूमि अपनी उपज उपजाएगी, और मैदान के वृक्ष अपने अपने फल दिया करेंगे; ५ यहां तक कि तुम दाख तोड़ने के समय भी दावनी करते रहोगे, और बोने के समय भी भर पेट दाख तोड़ते रहोगे, और तुम मनमानी रोटी खाया करोगे, और अपने देश में निश्चिन्त बसे रहोगे। ६ और मैं तुम्हारे देश में सुख चैन दूंगा, और तुम सोओगे और तुम्हारा कोई डरानेवाला न होगा; और मैं उस देश में दुष्ट जन्तुओं को न रहने दूंगा, और तलवार तुम्हारे देश में न चलेगी। ७ और तुम अपने शत्रुओं को मार भगा दोगे, और वे तुम्हारी तलवार से मारे जाएंगे। ८ और तुम में से पांच मनुष्य सौ को और सौ मनुष्य दस हजार को खदेड़ेंगे; और तुम्हारे शत्रु तलवार से तुम्हारे आगे आगे मारे जाएंगे; ९ और मैं तुम्हारी ओर कृपा दृष्टि रखूंगा और तुम को फलवन्त करूंगा और बढ़ाऊंगा, और तुम्हारे संग अपनी वाचा को पूर्ण करूंगा। १० और तुम रखे हुए पुराने अनाज को खाओगे, और नये के रहते भी पुराने को निकालोगे। ११ और मैं तुम्हारे बीच अपना निवासस्थान बनाए रखूंगा, और मेरा जी तुम से घृणा नहीं करेगा। १२ और मैं तुम्हारे मध्य चला फिरा करूंगा, और तुम्हारा परमेश्वर बना रहूंगा, और तुम मेरी प्रजा बने रहोगे। १३ मैं तो तुम्हारा वह परमेश्वर यहोवा हूं, जो तुम को मिस्र देश से इसलिये निकाल ले आया कि तुम मिस्रियों के दास न बने रहो; और मैं ने तुम्हारे जूए को तोड़ डाला है, और तुम को सीधा खड़ा करके चलाया है ।।

१४ यदि तुम मेरी न सुनोगे, और इन सब आज्ञाओं को न मानोगे, १५ और मेरी विधियों को निकम्मा जानोगे, और तुम्हारी आत्मा मेरे निर्णयों से घृणा करे, और तुम मेरी सब आज्ञाओं का पालन न करोगे, वरन मेरी वाचा को तोड़ोगे, १६ तो मैं तुम से यह करूंगा; अर्थात् मैं तुम को बेचैन करूंगा, और क्षयीरोग और ज्वर से पीड़ित करूंगा, और इनके कारण तुम्हारी आंखें धुंधली हो जाएंगी, और तुम्हारा मन अति उदास होगा। और तुम्हारा बीज बोना व्यर्थ होगा, क्योंकि तुम्हारे शत्रु उसकी उपज खा लेंगे; १७ और मैं भी तुम्हारे विरुद्ध हो जाऊंगा, और तुम अपने शत्रुओं से हार जाओगे; और तुम्हारे बैरी तुम्हारे ऊपर अधिकार करेंगे, और जब कोई तुम को खदेड़ता भी न होगा तब भी तुम भागोगे। १८ और यदि तुम इन बातों के उपरान्त भी मेरी न सुनो, तो मैं तुम्हारे पापों के कारण तुम्हें सातगुणी ताड़ना और दूंगा, १९ और मैं तुम्हारे बल का घमण्ड तोड़ डालूंगा, और तुम्हारे लिये आकाश को मानो लोहे का और भूमि को मानो पीतल की बना दूंगा; २० और तुम्हारा बल अकारथ

गंवाया जाएगा, क्योंकि तुम्हारी भूमि अपनी उपज न उपजाएगी, और मैदान के वृक्ष अपने फल न देंगे। २१ और यदि तुम मेरे विरुद्ध चलते ही रहो, और मेरा कहना न मानो, तो मैं तुम्हारे पापों के अनुसार तुम्हारे ऊपर और सातगुणा संकट डालूंगा। २२ और मैं तुम्हारे बीच बन पशु भेजूंगा, जो तुम को निर्वंश करेंगे, और तुम्हारे घरेलू पशुओं को नाशकर डालेंगे, और तुम्हारी गिनती घटाएंगे, जिस से तुम्हारी सड़कें सूनी पड़ जाएंगी। २३ फिर यदि तुम इन बातों पर भी मेरी ताड़ना से न सुधरो, और मेरे विरुद्ध चलते ही रहो, २४ तो मैं भी तुम्हारे विरुद्ध चलूंगा, और तुम्हारे पापों के कारण मैं आप ही तुम को सातगुणा मारूंगा। २५ और मैं तुम पर एक ऐसी तलवार चलवाऊंगा, जो वाचा तोड़ने का पूरा पूरा पलटा लेगी; और जब तुम अपने नगरों में जा जाकर इकट्ठे होगे तब मैं तुम्हारे बीच मरी फैलाऊंगा, और तुम अपने शत्रुओं के वश में सौंप दिए जाओगे। २६ और जब मैं तुम्हारे लिये अन्न के आधार को दूर कर डालूंगा, तब दस स्त्रियां तुम्हारी रोटी एक ही तंदूर में पकाकर तौल तौलकर बांट देंगी; और तुम खाकर भी तृप्त न होगे॥

२७ फिर यदि तुम इसके उपरान्त भी मेरी न सुनोगे, और मेरे विरुद्ध चलते ही रहोगे, २८ तो मैं अपने न्याय में तुम्हारे विरुद्ध चलूंगा, और तुम्हारे पापों के कारण तुम को सातगुणी ताड़ना और भी दूंगा। २९ और तुम को अपने बेटों और बेटियों का मांस खाना पड़ेगा। ३० और मैं तुम्हारे पूजा के ऊंचे स्थानों को ढा दूंगा, और तुम्हारे सूर्य की प्रतिमाएं तोड़ डालूंगा, और तुम्हारी लोथों को तुम्हारी तोड़ी हुई मूरतों पर फेंक दूंगा; और मेरी आत्मा को तुम से घृणा हो जाएगी। ३१ और मैं तुम्हारे नगरों को उजाड़ दूंगा, और तुम्हारे पवित्र स्थानों को उजाड़ दूंगा, और तुम्हारा सुखदायक सुगन्ध ग्रहण न करूंगा। ३२ और मैं तुम्हारे देश को सूना कर दूंगा, और तुम्हारे शत्रु जो उस में रहते हैं वे इन बातों के कारण चकित होंगे। ३३ और मैं तुम को जाति जाति के बीच तितर-बितर करूंगा, और तुम्हारे पीछे पीछे तलवार खींचे रहूंगा; और तुम्हारा देश सुना हो जाएगा, और तुम्हारे नगर उजाड़ हो जाएंगे। ३४ तब जितने दिन वह देश सूना पड़ा रहेगा और तुम अपने शत्रुओं के देश में रहोगे उतने दिन वह अपने विश्रामकालों को मानता रहेगा, तब ही वह देश विश्राम पाएगा, अर्थात् अपने विश्रामकालों को मानता रहेगा। ३५ और जितने दिन वह सूना पड़ा रहेगा उतने दिन उसको विश्राम रहेगा, अर्थात् जो विश्राम उसको तुम्हारे वहां बसे रहने के समय तुम्हारे विश्रामकालों में न मिला होगा वह उसको तब मिलेगा। ३६ और तुम में से जो बच रहेंगे और अपने शत्रुओं के देश में होंगे उनके हृदय में मैं कायरता उपजाऊंगा; और वे पत्ते के खड़कने से भी भाग जाएंगे, और वे ऐसे भागेंगे जैसे कोई तलवार से भागे, और किसी के बिना पीछा किए भी वे गिर गिर पड़ेंगे। ३७ और जब कोई पीछा करनेवाला न हो तब भी मानो तलवार के भय से वे एक दूसरे से ठोकर खाकर गिरते जाएंगे, और तुम को अपने शत्रुओं के साम्हने ठहरने की कुछ शक्ति न होगी। ३८ तब तुम जाति जाति के बीच पहुंचकर नाश हो जाओगे, और तुम्हारे शत्रुओं की भूमि तुम को खा जाएगी। ३९ और तुम में से जो

बचे रहेंगे वे अपने शत्रुओं के देशों में अपने अधर्म के कारण गल जाएंगे; और अपने पुरखाओं के अधर्म के कामों के कारण भी वे उन्हीं की नाईं गल जाएंगे। ४० तब वे अपने और अपने पितरों के अधर्म को मान लेंगे, अर्थात् उस विश्वासघात को जो वे मेरा करेंगे, और यह भी मान लेंगे, कि हम यहोवा के विरुद्ध चले थे, ४१ इसी कारण वह हमारे विरुद्ध होकर हमें शत्रुओं के देश में ले आया है। यदि उस समय उनका खतनारहित हृदय दब जाएगा और वे उस समय अपने अधर्म के दण्ड को अंगीकार करेंगे; ४२ तब जो वाचा मैं ने याकूब के संग बान्धी थी उसको मैं स्मरण करूंगा, और जो वाचा मैं ने इसहाक से और जो वाचा मैं ने इब्राहीम से बान्धी थी उनको भी स्मरण करूंगा, और इस देश को भी मैं स्मरण करूंगा। ४३ और वह देश उन से रहित होकर सूना पड़ा रहेगा, और उनके बिना सूना रहकर भी अपने विश्रामकालों को मानता रहेगा; और वे लोग अपने अधर्म के दण्ड को अंगीकार करेंगे, इसी कारण से कि उन्हों ने मेरी आज्ञाओं का उलंघन किया था, और उनकी आत्माओं को मेरी विधियों से घृणा थी। ४४ इतने पर भी जब वे अपने शत्रुओं के देश में होंगे तब मैं उनको इस प्रकार नहीं छोड़ूंगा, और न उन से ऐसी घृणा करूंगा कि उनका सर्वनाश कर डालूं और अपनी उस वाचा को तोड़ दूं जो मैं ने उन से बान्धी है; क्योंकि मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूं; ४५ परन्तु मैं उनके भलाई के लिये उनके पितरों से बान्धी हुई वाचा को स्मरण करूंगा, जिन्हें मैं अन्यजातियों की आंखों के साम्हने मिस्र देश से निकालकर लाया कि मैं उनका परमेश्वर ठहरूं; मैं यहोवा हूं॥

४६ जो जो विधियां और नियम और व्यवस्था यहोवा ने अपनी ओर से इस्राएलियों के लिये सीनै पर्वत पर मूसा के द्वारा ठहराई थीं वे ये ही हैं॥

(विशेष संकल्प की विधि)

२७ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ इस्राएलियों से यह कह, कि जब कोई विशेष संकल्प माने, तो संकल्प किए हुए प्राणी तेरे ठहराने के अनुसार यहोवा के होंगे; ३ इसलिये यदि वह बीस वर्ष वा उस से अधिक और साठ वर्ष से कम अवस्था का पुरुष हो, तो उसके लिये पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार पचास शेकेल का रुपया ठहरे। ४ और यदि वह स्त्री हो, तो तीस शेकेल ठहरे। ५ फिर यदि उसकी अवस्था पांच वर्ष वा उससे अधिक और बीस वर्ष से कम की हो, तो लड़के के लिये तो बीस शेकेल, और लड़की के लिये दस शेकेल ठहरे। ६ और यदि उसकी अवस्था एक महीने वा उस से अधिक और पांच वर्ष से कम की हो, तो लड़के के लिये तो पांच, और लड़की के लिये तीन शेकेल ठहरे। ७ फिर यदि उसकी अवस्था साठ वर्ष की वा उस से अधिक हो, और वह पुरुष हो तो उसके लिये पंद्रह शेकेल, और स्त्री हो तो दस शेकेल ठहरे। ८ परन्तु यदि कोई इतना कंगाल हो कि याजक का ठहराया हुआ दाम न दे सके, तो वह याजक के साम्हने खड़ा किया जाए, और याजक उसकी पूंजी ठहराए, अर्थात् जितना संकल्प करनेवाले से हो सके, याजक उसी के अनुसार ठहराए॥

९ फिर जिन पशुओं में से लोग यहोवा को चढ़ावा चढ़ाते हैं, यदि ऐसों में से कोई संकल्प किया जाए, तो जो पशु कोई यहोवा

को दे वह पवित्र ठहरेगा। १० वह उसे किसी प्रकार से न बदले, न तो वह बुरे की सन्ती अच्छा, और न अच्छे की सन्ती बुरा दे; और यदि वह उस पशु की सन्ती दूसरा पशु दे, तो वह और उसका बदला दोनों पवित्र ठहरेंगे। ११ और जिन पशुओं में से लोग यहोवा के लिये चढ़ावा नहीं चढ़ाते ऐसों में से यदि वह हो, तो वह उसको याजक के साम्हने खड़ा कर दे, १२ तब याजक पशु के गुण अवगुण दोनों विचारकर उसका मोल ठहराए; और जितना याजक ठहराए उसका मोल उतना ही ठहरे। १३ और यदि संकल्प करनेवाला उसे किसी प्रकार से छुड़ाना चाहे, तो जो मोल याजक ने ठहराया हो उस में उसका पांचवां भाग और बढ़ाकर दे॥

१४ फिर यदि कोई अपना घर यहोवा के लिये पवित्र ठहराकर संकल्प करे, तो याजक उसके गुण-अवगुण दोनों विचारकर उसका मोल ठहराए; और जितना याजक ठहराए उसका मोल उतना ही ठहरे। १५ और यदि घर का पवित्र करनेवाला उसे छुड़ाना चाहे, तो जितना रुपया याजक ने उसका मोल ठहराया हो उस में वह पांचवां भाग और बढ़ाकर दे, तब वह घर उसी का रहेगा॥

१६ फिर यदि कोई अपनी निज भूमि का कोई भाग यहोवा के लिये पवित्र ठहराना चाहे, तो उसका मोल इसके अनुसार ठहरे, कि उस में कितना बीज पड़ेगा; जितना भूमि में होमेर भर जौ पड़े उतनी का मोल पचास शेकेल ठहरे। १७ यदि वह अपना खेत जुबली* के वर्ष ही में पवित्र ठहराए, तो उसका दाम तेरे ठहराने के अनुसार ठहरे; १८ और यदि वह अपना खेत जुबली* के वर्ष के बाद पवित्र ठहराए, तो जितने वर्ष दूसरे जुबली* के वर्ष के बाकी रहें उन्हीं के अनुसार याजक उसके लिये रुपये का हिसाब करे, तब जितना हिसाब में आए उतना याजक के ठहराने से कम हो। १९ और यदि खेत का पवित्र ठहरानेवाला उसे छुड़ाना चाहे, तो जो दाम याजक ने ठहराया हो उस में वह पांचवां भाग और बढ़ाकर दे, तब खेत उसी का रहेगा। २० और यदि वह खेत को छुड़ाना न चाहे, वा उस ने उसको दूसरे के हाथ बेचा हो, तो खेत आगे को कभी न छुड़ाया जाए; २१ परन्तु जब वह खेत जुबली* के वर्ष में छूटे, तब पूरी रीति से अर्पण किए हुए खेत की नाईं यहोवा के लिये पवित्र ठहरे, अर्थात् वह याजक ही की निज भूमि हो जाए। २२ फिर यदि कोई अपना मोल लिया हुआ खेत, जो उसकी निज भूमि के खेतों में का न हो, यहोवा के लिये पवित्र ठहराए, २३ तो याजक जुबली* के वर्ष तक का हिसाब करके उस मनुष्य के लिये जितना ठहराए उतना ही वह यहोवा के लिये पवित्र जानकर उसी दिन दे दे। २४ और जुबली* के वर्ष में वह खेत उसी के अधिकार में जिस से वह मोल लिया गया हो फिर आ जाए, अर्थात् जिसकी वह निज भूमि हो उसी की फिर हो जाए। २५ और जिस जिस वस्तु का मोल याजक ठहराए उसका मोल पवित्रस्थान ही के शेकेल के हिसाब से ठहरे: शेकेल बीस गेरा का ठहरे॥

२६ पर घरेलू पशुओं का पहिलौठा, जो यहोवा का पहिलौठा ठहरा है, उसको तो

* अर्थात् नरसिंगे का शब्द।

* अर्थात् नरसिंगे का शब्द।

कोई पवित्र न ठहराए; चाहे वह बछड़ा हो, चाहे भेड़ वा बकरी का बच्चा, वह यहोवा ही का है। २७ परन्तु यदि वह अशुद्ध पशु का हो, तो उसका पवित्र ठहरानेवाला उसको याजक के ठहराए हुए मोल के अनुसार उसका पांचवां भाग और बढ़ाकर छुड़ा सकता है; और यदि वह न छुड़ाया जाए, तो याजक के ठहराए हुए मोल पर बेच दिया जाए ॥

२८ परन्तु अपनी सारी वस्तुओं में से जो कुछ कोई यहोवा के लिये अर्पण करे, चाहे मनुष्य हो चाहे पशु, चाहे उसकी निज भूमि का खेत हो, ऐसी कोई अर्पण की हुई वस्तु न तो बेची जाए और न छुड़ाई जाए; जो कुछ अर्पण किया जाए वह यहोवा के लिये परमपवित्र ठहरे। २९ मनुष्यों में से जो कोई अर्पण किया जाए, वह छुड़ाया न जाए; निश्चय वह मार डाला जाए ॥

३० फिर भूमि की उपज का सारा दशमांश, चाहे वह भूमि का बीज हो चाहे वृक्ष का फल, वह यहोवा ही का है; वह यहोवा के लिये पवित्र ठहरे। ३१ यदि कोई अपने दशमांश में से कुछ छुड़ाना चाहे, तो पांचवां भाग बढ़ाकर उसको छुड़ाए। ३२ और गाय-बैल और भेड़-बकरियां, निदान जो जो पशु गिनने के लिये लाठी के तले निकल जानेवाले हैं उनका दशमांश, अर्थात् दस दस पीछे एक एक पशु यहोवा के लिये पवित्र ठहरे। ३३ कोई उसके गुण अवगुण न विचारे, और न उसको बदले; और यदि कोई उसको बदल भी ले, तो वह और उसका बदला दोनों पवित्र ठहरें; और वह कभी छुड़ाया न जाए ॥

३४ जो आज्ञाएं यहोवा ने इस्राएलियों के लिये सीनै पर्वत पर मूसा को दी थीं वे ये ही हैं ॥

गिनती नाम पुस्तक

(इस्राएलियों की गिनती)

१ इस्राएलियों के मिस्र देश से निकल जाने के दूसरे वर्ष के दूसरे महीने के पहिले दिन को, यहोवा ने सीनै के जंगल में, मिलापवाले तम्बू में, मूसा से कहा, २ इस्राएलियों की सारी मण्डली के कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार, एक एक पुरुष की गिनती नाम ले लेकर करना; ३ जितने इस्राएली बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्था के हों, और जो युद्ध करने के योग्य हों, उन सभों को उनके दलों के अनुसार तू और हारून गिन ले। ४ और तुम्हारे साथ एक एक गोत्र का एक एक पुरुष भी हो जो अपने पितरों के घराने का मुख्य पुरुष हो। ५ तुम्हारे उन साथियों के नाम ये हैं, अर्थात् रूबेन के गोत्र में से शदेऊर का पुत्र एलीसूर; ६ शिमोन के गोत्र में से सूरीशद्दै का पुत्र शलूमीएल; ७ यहूदा के गोत्र में से अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन; ८ इस्साकार के गोत्र में से सूआर का पुत्र नतनेल; ९ जबूलून के गोत्र में से हेलोन का पुत्र एलीआब; १० युसुफवंशियों में से

ये हैं, अर्थात् एप्रैम के गोत्र में से अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा, और मनश्शे के गोत्र में से पदासूर का पुत्र गम्लीएल; ११ बिन्यामीन के गोत्र में से गिदोनी का पुत्र अबीदान; १२ दान के गोत्र में से अम्मीशद्दै का पुत्र अहीएजेर; १३ आशेर के गोत्र में से ओक्रान का पुत्र पगीएल; १४ गाद के गोत्र में से दूएल का पुत्र एल्यासाप; १५ नप्ताली के गोत्र में से एनाम का पुत्र अहीरा। १६ मण्डली में से जो पुरुष अपने अपने पितरों के गोत्रों के प्रधान होकर बुलाए गए वे ये ही हैं, और ये इस्राएलियों के हज़ारों* में मुख्य पुरुष थे। १७ और जिन पुरुषों के नाम ऊपर लिखे हैं उनको साथ लेकर, १८ मूसा और हारून ने दूसरे महीने के पहिले दिन सारी मण्डली इकट्ठी की, तब इस्राएलियों ने अपने अपने कुल और अपने अपने पितरों के घराने के अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्थावालों के नामों की गिनती करवाके अपनी अपनी वंशावली लिखवाई; १९ जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को जो आज्ञा दी थी उसी के अनुसार उस ने सीनै के जंगल में उनकी गणना की ॥

२० और इस्राएल के पहिलौठे रूबेन के वंश ने जितने पुरुष अपने कुल और अपने पितरों के घराने के अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्था के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने अपने नाम से गिने गए: २१ और रूबेन के गोत्र के गिने हुए पुरुष साढ़े छियालीस हज़ार थे ॥

२२ और शिमोन के वंश के लोग जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्था के थे, और जो युद्ध करने के योग्य थे वे सब अपने अपने नाम से गिने गए: २३ और शिमोन के गोत्र के गिने हुए पुरुष उनसठ हज़ार तीन सौ थे ॥

२४ और गाद के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्था के थे और जो युद्ध करन के योग्य थे, वे सब अपने अपने नाम से गिने गए: २५ और गाद के गोत्र के गिने हुए पुरुष पैंतालीस सज़ार साढ़े छः सौ थे ॥

२६ और यहूदा के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्था के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने अपने नाम से गिने गए: २७ और यहूदा के गोत्र के गिने हुए पुरुष चौहत्तर हज़ार छः सौ थे ॥

२८ और इस्साकार के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्था के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने अपने नाम से गिने गए: २९ और इस्साकार के गोत्र के गिने हुए पुरुष चौवन हज़ार चार सौ थे ॥

३० और जबूलून के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्था के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने अपने नाम से गिने गए: ३१ और जबूलून के गोत्र के गिने हुए पुरुष सत्तावन हज़ार चार सौ थे ॥

३२ और यूसुफ के वंश में से एप्रैम के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्था के थे और जो युद्ध

* वा कुलों।

करने के योग्य थे, वे सब अपने अपने नाम से गिने गए : ३३ और एप्रैम गोत्र के गिने हुए पुरुष साढ़े चालीस हज़ार थे ।।

३४ और मनश्शे के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्था के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने अपने नाम से गिने गए : ३५ और मनश्शे के गोत्र के गिने हुए पुरुष बत्तीस हज़ार दो सौ थे ।।

३६ और बिन्यामीन के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्था के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने अपने नाम से गिने गए : ३७ और बिन्यामीन के गोत्र के गिने हुए पुरुष पैंतीस हज़ार चार सौ थे ।।

३८ और दान के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्था के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने अपने नाम से गिने गए : ३९ और दान के गोत्र के गिने हुए पुरुष बासठ हज़ार सात सौ थे ।।

४० और आशेर के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष वा उससे अधिक अवस्था के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने अपने नाम से गिने गए : ४१ और आशेर के गोत्र के गिने हुए पुरुष साढ़े एकतालीस हज़ार थे ।।

४२ और नप्ताली के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्था के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने अपने नाम से गिने गए : ४३ और नप्ताली के गोत्र के गिने हुए पुरुष तिरपन हज़ार चार सौ थे ।।

४४ इस प्रकार मूसा और हारून और इस्राएल के बारह प्रधानों ने, जो अपने अपने पितरों के घराने के प्रधान थे, उन सभों को गिन लिया और उनकी गिनती यही थी। ४५ सो जितने इस्राएली बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्था के होने के कारण युद्ध करने के योग्य थे वे अपने पितरों के घरानों के अनुसार गिने गए, ४६ और वे सब गिने हुए पुरुष मिलाकर छः लाख तीन हज़ार साढ़े पांच सौ थे ।।

४७ इन में लेवीय अपने पितरों के गोत्र के अनुसार नहीं गिने गए। ४८ क्योंकि यहोवा ने मूसा से कहा था, ४९ कि लेवीय गोत्र की गिनती इस्राएलियों के संग न करना; ५० परन्तु तू लेवियों को साक्षी के तम्बू पर, और उसके कुल सामान पर, निदान जो कुछ उस से सम्बन्ध रखता है उस पर अधिकारी नियुक्त करना; और कुल सामान सहित निवास को वे ही उठाया करें, और वे ही उस में सेवा टहल भी किया करें, और तम्बू के आसपास वे ही अपने डेरे डाला करें। ५१ और जब जब निवास का कूच हो तब तब लेवीय उसको गिरा दें, और जब जब निवास को खड़ा करना हो तब तब लेवीय उसको खड़ा किया करें; और यदि कोई दूसरा समीप आए तो वह मार डाला जाए। ५२ और इस्राएली अपना अपना डेरा अपनी अपनी छावनी में और अपने अपने झण्डे के पास खड़ा किया करें; ५३ पर लेवीय अपने डेरे साक्षी के तम्बू ही की चारों ओर खड़े किया करें, कहीं ऐसा न हो कि इस्राएलियों की मण्डली पर कोप भड़के; और लेवीय साक्षी के तम्बू की रक्षा किया करें। ५४ जो आज्ञाएं यहोवा ने

मूसा को दी थीं इस्राएलियों ने उन्हीं के अनुसार किया ॥

(इस्राएलियों की छावनी का क्रम)

२ फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, २ इस्राएली मिलापवाले तम्बू की चारों ओर और उसके साम्हने अपने अपने झण्डे और अपने अपने पितरों के घराने के निशान के समीप अपने डेरे खड़े करें। ३ और जो अपने पूर्व दिशा की ओर जहां सूर्योदय होता है अपने अपने दलों के अनुसार डेरे खड़े किया करें वे ही यहूदा की छावनीवाले झण्डे के लोग होंगे, और उनका प्रधान अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन होगा, ४ और उनके दल के गिने हुए पुरुष चौहत्तर हज़ार छः सौ हैं। ५ उनके समीप जो डेरे खड़े किया करें वे इस्साकार के गोत्र के हों, और उनका प्रधान सूआर का पुत्र नतनेल होगा, ६ और उनके दल के गिने हुए पुरुष चौवन हज़ार चार सौ हैं। ७ इनके पास जबूलून के गोत्रवाले रहेंगे, और उनका प्रधान हेलोन का पुत्र एलीआब होगा, ८ और उनके दल के गिने हुए पुरुष सत्तावन हज़ार चार सौ हैं। ९ इस रीति से यहूदा की छावनी में जितने अपने अपने दलों के अनुसार गिने गए वे सब मिलकर एक लाख छियासी हज़ार चार सौ हैं। पहिले ये ही कूच किया करें ॥

१० दक्खिन अलंग पर रूबेन की छावनी के झण्डे के लोग अपने अपने दलों के अनुसार रहें, और उनका प्रधान शदेऊर का पुत्र एलीसूर होगा, ११ और उनके दल के गिने हुए पुरुष साढ़े छियालीस हज़ार हैं। १२ उनके पास जो डेरे खड़े किया करें वे शिमोन के गोत्र के होंगे, और उनका प्रधान सूरीशद्दै का पुत्र शलूमीएल होगा, १३ और उनके दल के गिने हुए पुरुष उनसठ हज़ार तीन सौ हैं। १४ फिर गाद के गोत्र के रहें, और उनका प्रधान रूएल का पुत्र एल्यासाप होगा, १५ और उनके दल के गिने हुए पुरुष पैंतालीस हज़ार साढ़े छः सौ हैं। १६ रूबेन की छावनी में जितने अपने अपने दलों के अनुसार गिने गए वे सब मिलकर डेढ़ लाख एक हज़ार साढ़े चार सौ हैं। दूसरा कूच इनका हो ॥

१७ उनके पीछे और सब छावनियों के बीचोबीच लेवियों की छावनी समेत मिलापवाले तम्बू का कूच हुआ करे; जिस क्रम से वे डेरे खड़े करें उसी क्रम से वे अपने अपने स्थान पर अपने अपने झण्डे के पास पास चलें ॥

१८ पच्छिम अलंग पर एप्रैम की छावनी के झण्डे के लोग अपने अपने दलों के अनुसार रहें, और उनका प्रधान अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा होगा, १९ और उनके दल के गिने हुए पुरुष साढ़े चालीस हज़ार हैं। २० उनके समीप मनश्शे के गोत्र के रहें, और उनका प्रधान पदासूर का पुत्र गम्लीएल होगा, २१ और उनके दल के गिने हुए पुरुष बत्तीस हज़ार दो सौ हैं। २२ फिर बिन्यामीन के गोत्र के रहें, और उनका प्रधान गिदोनी का पुत्र अबीदान होगा, २३ और उनके दल के गिने हुए पुरुष पैंतीस हज़ार चार सौ हैं। २४ एप्रैम की छावनी में जितने अपने अपने दलों के अनुसार गिने गए वे सब मिलकर एक लाख आठ हज़ार एक सौ पुरुष हैं। तीसरा कूच इनका हो ॥

२५ उत्तर अलंग पर दान की छावनी के झण्डे के लोग अपने अपने दलों के अनुसार रहें, और उनका प्रधान अम्मीशद्दै का पुत्र अहीएजेर होगा, २६ और उनके दल के

गिने हुए पुरुष बासठ हज़ार सात सौ हैं। २७ और उनके पास जो डेरे खड़े करें वे आशेर के गोत्र के रहें, और उनका प्रधान ओक्रान का पुत्र पगीएल होगा, २८ और उनके दल के गिने हुए पुरुष साढ़े इकतालीस हज़ार हैं। २९ फिर नप्ताली के गोत्र के रहें, और उनका प्रधान एनान का पुत्र अहीरा होगा, ३० और उनके दल के गिने हुए पुरुष तिरपन हज़ार चार सौ हैं। ३१ और दान की छावनी में जितने गिने गए वे सब मिलकर डेढ़ लाख सात हज़ार छः सौ हैं। ये अपने अपने झण्डे के पास पास होकर सब से पीछे कूच करें॥

३२ इस्राएलियों में से जो अपने अपने पितरों के घराने के अनुसार गिने गए वे ये ही हैं; और सब छावनियों के जितने पुरुष अपने अपने दलों के अनुसार गिने गए वे सब मिलकर छः लाख तीन हज़ार साढ़े पांच सौ थे। ३३ परन्तु यहोवा ने मूसा को जो आज्ञा दी थी उसके अनुसार लेवीय तो इस्राएलियों में गिने नहीं गए। ३४ और जो जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी इस्राएली उन आज्ञाओं के अनुसार अपने अपने कुल और अपने अपने पितरों के घरानों के अनुसार, अपने अपने झण्डे के पास डेरे खड़े करते और कूच भी करते थे॥

(पहिलौठों की सन्ती लेवियों का यहोवा से ग्रहण किया जाना)

३ जिस समय यहोवा ने सीनै पर्वत के पास मूसा से बातें की उस समय हारून और मूसा की यह वंशावली थी। २ हारून के पुत्रों के नाम ये हैं: नादाब जो उसका जेठा था, और अबीहू, एलीआज़ार और ईतामार; ३ हारून के पुत्र, जो अभिषिक्त याजक थे, और उनका संस्कार याजक का काम करने के लिये हुआ था उनके नाम ये ही हैं। ४ नादाब और अबीहू जिस समय सीनै के जंगल में यहोवा के सम्मुख ऊपरी आग ले गए उसी समय यहोवा के साम्हने मर गए थे; और वे पुत्रहीन भी थे। एलीआज़ार और ईतामार अपने पिता हारून के साम्हने याजक का काम करते रहे॥

५ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, ६ लेवी गोत्रवालों को समीप ले आकर हारून याजक के साम्हने खड़ा कर, कि वे उसकी सेवा टहल करें। ७ और जो कुछ उसकी ओर से और सारी मण्डली की ओर से उन्हें सौंपा जाए उसकी रक्षा वे मिलापवाले तम्बू के साम्हने करें, इस प्रकार वे तम्बू की सेवा करें; ८ वे मिलापवाले तम्बू के कुल सामान की और इस्राएलियों की सौंपी हुई वस्तुओं की भी रक्षा करें, इस प्रकार वे तम्बू की सेवा करें। ९ और तू लेवियों को हारून और उसके पुत्रों को सौंप दे; और वे इस्राएलियों की ओर से हारून को सम्पूर्ण रीति से अर्पण किए हुए हों। १० और हारून और उसके पुत्रों को याजक के पद पर नियुक्त कर, और वे अपने याजक-पद की रक्षा किया करें; और यदि अन्य मनुष्य समीप आए, तो वह मार डाला जाए॥

११ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १२ सुन इस्राएली स्त्रियों के सब पहिलौठों की सन्ती मैं इस्राएलियों में से लेवियों को ले लेता हूं; सो लेवीय मेरे ही हों। १३ सब पहिलौठे मेरे हैं; क्योंकि जिस दिन मैं ने मिस्र देश में के सब पहिलौठों को मारा, उसी दिन मैं ने क्या मनुष्य क्या पशु इस्राएलियों के सब पहिलौठों को अपने लिये पवित्र ठहराया; इसलिये वे मेरे ही ठहरेंगे; मैं यहोवा हूं॥

१४ फिर यहोवा ने सीनै के जंगल में मूसा से कहा, १५ लेवियों में से जितने पुरुष एक महीने वा उस से अधिक अवस्था के हों उनको उनके पितरों के घरानों और उनके कुलों के अनुसार गिन ले। १६ यह आज्ञा पाकर मूसा ने यहोवा के कहे के अनुसार उनको गिन लिया। १७ लेवी के पुत्रों के नाम ये हैं, अर्थात् गेर्शोन, कहात, और मरारी। १८ और गेर्शोन के पुत्र जिन से उसके कुल चले उनके नाम ये हैं, अर्थात् लिब्नी और शिमी। १९ कहात के पुत्र जिन से उसके कुल चले ये हैं, अर्थात् अम्राम, यिसहार, हेब्रोन, और उज्जीएल। २० और मरारी के पुत्र जिन से उनके कुल चले ये हैं, अर्थात् महली और मूशी। ये लेवियों के कुल अपने पितरों के घरानों के अनुसार हैं॥

२१ गेर्शोन से लिब्नियों और शिमियों के कुल चले; गेर्शोनवंशियों के कुल ये ही हैं। २२ इन में से जितने पुरुषों की अवस्था एक महीने की वा उस से अधिक थी, उन सभों की गिनती साढ़े सात हज़ार थी। २३ गेर्शोनवाले कुल निवास के पीछे पच्छिम की ओर अपने डेरे डाला करें; २४ और गेर्शोनियों के मूलपुरुष से घराने का प्रधान लाएल का पुत्र एल्यासाप हो। २५ और मिलापवाले तम्बू की जो वस्तुएं गेर्शोनवंशियों को सौंपी जाएं वे ये हों, अर्थात् निवास और तम्बू, और उसका ओहार, और मिलापवाले तम्बू के द्वार का पर्दा, २६ और जो आंगन निवास और वेदी की चारों ओर है उसके पर्दे, और उसके द्वार का पर्दा, और सब डोरियां जो उस में काम आती हैं॥

२७ फिर कहात से अम्रामियों, यिसहारियों, हेब्रोनियों, और उज्जीएलियों के कुल चले; कहातियों के कुल ये ही हैं। २८ उन में से जितने पुरुषों की अवस्था एक महीने की वा उस से अधिक थी उनकी गिनती आठ हज़ार छः सौ थी। वे पवित्र स्थान की रक्षा के उत्तरदायित्व थे। २९ कहातियों के कुल निवास की उस अलंग पर अपने डेरे डाला करें जो दक्खिन की ओर है; ३० और कहातवाले कुलों से मूलपुरुष के घराने का प्रधान उज्जीएल का पुत्र एलीसापान हो। ३१ और जो वस्तुएं उनको सौंपी जाएं वे सन्दूक, मेज़, दीवट, वेदियां, और पवित्रस्थान का वह सामान जिस से सेवा टहल होती है, और पर्दा; निदान पवित्रस्थान में काम में आनेवाला सारा सामान हो। ३२ और लेवियों के प्रधानों का प्रधान हारून याजक का पुत्र एलीआज़ार हो, और जो लोग पवित्रस्थान की सौंपी हुई वस्तुओं की रक्षा करेंगे उन पर वही मुखिया ठहरे॥

३३ फिर मरारी से महलियों और मूशियों के कुल चले; मरारी के कुल ये ही हैं। ३४ इन में से जितने पुरुषों की अवस्था एक महीने की वा उस से अधिक थी उन सभों की गिनती छः हज़ार दो सौ थी। ३५ और मरारी के कुलों के मूलपुरुष के घराने का प्रधान अबीहैल का पुत्र सूरीएल हो; ये लोग निवास के उत्तर की ओर अपने डेरे खड़े करें। ३६ और जो वस्तुएं मरारीवंशियों को सौंपी जाएं, कि वे उनकी रक्षा करें, वे निवास के तख़्ते, बेंड़े, खम्भे, कुर्सियां, और सारा सामान; निदान जो कुछ उसके बरतने में काम आए; ३७ और चारों ओर के आंगन के खम्भे, और उनकी कुर्सियां, खूंटे और डोरियां हों। ३८ और जो मिलापवाले तम्बू के साम्हने, अर्थात् निवास के साम्हने, पूरब की ओर जहां से सूर्योदय

होता है, अपने डेरे डाला करें, वे मूसा और हारून और उसके पुत्रों के डेरे हों, और पवित्रस्थान की रखवाली इस्राएलियों के बदले वे ही किया करें, और दूसरा जो कोई उसके समीप आए वह मार डाला जाए। ३६ यहोवा की इस आज्ञा को पाकर एक महीने की वा उस से अधिक अवस्थावाले जितने लेवीय पुरुषों को मूसा और हारून ने उनके कुलों के अनुसार गिन लिया, वे सब के सब बाईस हज़ार थे ।।

४० फिर यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएलियों के जितने पहिलौठे पुरुषों की अवस्था एक महीने की वा उस से अधिक है, उन सभों को नाम ले लेकर गिन ले। ४१ और मेरे लिये इस्राएलियों के सब पहिलौठों की सन्ती लेवियों को, और इस्राएलियों के पशुओं के सब पहिलौठों की सन्ती लेवियों के पशुओं को ले; मैं यहोवा हूं। ४२ यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने इस्राएलियों के सब पहिलौठों को गिन लिया। ४३ और सब पहिलौठे पुरुष जिनकी अवस्था एक महीने की वा उस से अधिक थी, उनके नामों की गिनती बाईस हज़ार दो सौ तिहत्तर थी ।।

४४ तब यहोवा ने मूसा से कहा, ४५ इस्राएलियों के सब पहिलौठों की सन्ती लेवियों को, और उनके पशुओं की सन्ती लेवियों के पशुओं को ले; और लेवीय मेरे ही हों; मैं यहोवा हूं। ४६ और इस्राएलियों के पहिलौठों में से जो दो सौ तिहत्तर गिनती में लेवियों से अधिक हैं, उनके छुड़ाने के लिये, ४७ पुरुष पीछे पांच शेकेल ले; वे पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से हों, अर्थात् बीस गेरा का शेकेल हो। ४८ और जो रुपया उन अधिक पहिलौठों की छुड़ौती का होगा उसे हारून और उसके पुत्रों को दे देना। ४९ और जो इस्राएली पहिलौठे लेवियों के द्वारा छुड़ाए हुओं से अधिक थे उनके हाथ से मूसा ने छुड़ौती का रुपया लिया। ५० और एक हज़ार तीन सौ पैंसठ शेकेल रुपया पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से वसूल हुआ। ५१ और यहोवा की आज्ञा के अनुसार मूसा ने छुड़ाए हुओं का रुपया हारून और उसके पुत्रों को दे दिया ।।

(लेवियों के कर्त्तव्य कर्म)

४ फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, २ लेवियों में से कहातियों की, उनके कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार, गिनती करो, ३ अर्थात् तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की अवस्थावालों की सेना में, जितने मिलापवाले तम्बू में कामकाज करने को भरती हैं। ४ और मिलापवाले तम्बू में परमपवित्र वस्तुओं के विषय कहातियों का यह काम होगा, ५ अर्थात् जब जब छावनी का कूच हो तब तब हारून और उसके पुत्र भीतर आकर, बीचवाले पर्दे को उतार के उस से साक्षीपत्र के सन्दूक को ढांप दें; ६ तब वे उस पर सूइसों की खालों का ओहार डालें, और इसके ऊपर सम्पूर्ण नीले रंग का कपड़ा डालें, और सन्दूक में डण्डों को लगाएं। ७ फिर भेंटवाली रोटी की मेज़ पर नीला कपड़ा बिछाकर उस पर परातों, धूपदानों, करवों, और उंडेलने के कटोरों को रखें; और नित्य की रोटी भी उस पर हो; ८ तब वे उन पर लाल रंग का कपड़ा बिछाकर उसको सूइसों की खालों के ओहार से ढांपे, और मेज़ के डण्डों को लगा दें। ९ फिर वे नीले रंग का कपड़ा लेकर दीपकों, गलतराशों, और गुलदानों

समेत उजियाला देनेवाले दीवट को, और उसके सब तेल के पात्रों को जिन से उसकी सेवा टहल होती है ढांपें; १० तब वे सारे सामान समेत दीवट को सूइसों की खालों के ओहार के भीतर रखकर डण्डे पर धर दें। ११ फिर वे सोने की वेदी पर एक नीला कपड़ा बिछाकर उसको सूइसों की खालों के ओहार से ढांपे, और उसके डण्डों को लगा दें; १२ तब वे सेवा टहल के सारे सामान को लेकर, जिस से पवित्रस्थान में सेवा टहल होती है, नीले कपड़े के भीतर रखकर सूइसों की खालों के ओहार से ढांपें, और डण्डे पर धर दें। १३ फिर वे वेदी पर से सब राख उठाकर वेदी पर बैंजनी रंग का कपड़ा बिछाएं; १४ तब जिस सामान से वेदी पर की सेवा टहल होती है वह सब, अर्थात् उसके करछे, कांटे, फावड़ियां, और कटोरे आदि, वेदी का सारा सामान उस पर रखें; और उसके ऊपर सूइसों की खालों का ओहार बिछाकर वेदी में डण्डों को लगाएं। १५ और जब हारून और उसके पुत्र छावनी के कूच के समय पवित्रस्थान और उसके सारे सामान को ढांप चुकें, तब उसके बाद कहाती उसके उठाने के लिये आएं, पर किसी पवित्र वस्तु को न छूएं, कहीं ऐसा न हो कि मर जाएं। कहातियों के उठाने के लिये मिलापवाले तम्बू की ये ही वस्तुएं हैं। १६ और जो वस्तुएं हारून याजक के पुत्र एलीआज़ार को रक्षा के लिये सौंपी जाएं वे ये हैं, अर्थात् उजियाला देने के लिये तेल, और सुगन्धित धूप, और नित्य अन्नबलि, और अभिषेक का तेल, और सारे निवास, और उस में की सब वस्तुएं, और पवित्रस्थान और उसके कुल समान॥

१७ फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, १८ कहातियों के कुलों के गोत्रियों को लेवियों में से नाश न होने देना; १९ उनके साथ ऐसा करो, कि जब वे परमपवित्र वस्तुओं के समीप आएं तब न मरें परन्तु जीवित रहें; अर्थात् हारून और उसके पुत्र भीतर आकर एक एक के लिये उसकी सेवकाई और उसका भार ठहरा दें, २० और वे पवित्र वस्तुओं के देखने को क्षण भर के लिये भी भीतर आने न पाएं, कहीं ऐसा न हो कि मर जाएं॥

२१ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २२ गेर्शोनियों की भी गिनती उनके पितरों के घरानों और कुलों के अनुसार कर; २३ तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की अवस्थावाले, जितने मिलापवाले तम्बू में सेवा करने को सेना में भरती हों उन सभों को गिन ले। २४ सेवा करने और भार उठाने में गेर्शोनियों के कुलवालों की यह सेवकाई हो; २५ अर्थात् वे निवास के पटों, और मिलापवाले तम्बू और उसके ओहार, और इसके ऊपरवाले सूइसों की खालों के ओहार, और मिलापवाले तम्बू के द्वार के पर्दे, २६ और निवास, और वेदी की चारों ओर के आंगन के पर्दों, और आंगन के द्वार के पर्दे, और उनकी डोरियों, और उन में बरतने के सारे सामान, इन सभों को वे उठाया करें; और इन वस्तुओं से जितना काम होता है वह सब भी उनकी सेवकाई में आए। २७ और गेर्शोनियों के वंश की सारी सेवकाई हारून और उसके पुत्रों के कहने से हुआ करे, अर्थात् जो कुछ उनको उठाना, और जो जो सेवकाई उनको करनी हो, उनका सारा भार तुम ही उन्हें सौंपा करो। २८ मिलापवाले तम्बू में गेर्शोनियों के कुलों की यही सेवकाई ठहरे; और उन पर हारून याजक का पुत्र ईतामार अधिकार रखे॥

२६ फिर मरारियों को भी तू उनके कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार गिन ले; ३० तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की अवस्थावाले, जितने मिलापवाले तम्बू की सेवा करने को सेना में भरती हों, उन सभों को गिन ले। ३१ और मिलापवाले तम्बू में की जिन वस्तुओं के उठाने की सेवकाई उनको मिले वे ये हों, अर्थात् निवास के तख़्ते, बेंड़े, खम्भे, और कुर्सियां, ३२ और चारों ओर के आंगन के खम्भे, और इनकी कुर्सियां, खूंटे, डोरियां, और भांति भांति के बरतने का सारा सामान; और जो जो सामान ढोने के लिये उनको सौंपा जाए उस में से एक एक वस्तु का नाम लेकर तुम गिन दो। ३३ मरारियों के कुलों की सारी सेवकाई जो उन्हें मिलापवाले तम्बू के विषय करनी होगी वह यही है; वह हारून याजक के पुत्र ईतामार के अधिकार में रहे॥

३४ तब मूसा और हारून और मण्डली के प्रधानों ने कहातियों के वंश को, उनके कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार, ३५ तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष की अवस्था के, जितने मिलापवाले तम्बू की सेवकाई करने को सेना में भरती हुए थे, उन सभों को गिन लिया; ३६ और जो अपने अपने कुल के अनुसार गिने गए वे दो हज़ार साढ़े सात सौ थे। ३७ कहातियों के कुलों में से जितने मिलापवाले तम्बू में सेवा करने वाले गिने गए वे इतने ही थे; जो आज्ञा यहोवा ने मूसा के द्वारा दी थी उसी के अनुसार मूसा और हारून ने इनको गिन लिया॥

३८ और गेर्शोनियों में से जो अपने कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार गिने गए, ३९ अर्थात् तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की अवस्था के, जो मिलापवाले तम्बू की सेवकाई करने को सेना में भरती हुए थे, ४० उनकी गिनती उनके कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार दो हज़ार छः सौ तीस थी। ४१ गेर्शोनियों के कुलों में से जितने मिलापवाले तम्बू में सेवा करनेवाले गिने गए वे इतने ही थे; यहोवा की आज्ञा के अनुसार मूसा और हारून ने इनको गिन लिया॥

४२ फिर मरारियों के कुलों में से जो अपने कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार गिने गए, ४३ अर्थात् तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की अवस्था के, जो मिलापवाले तम्बू की सेवकाई करने को सेना में भरती हुए थे, ४४ उनकी गिनती उनके कुलों के अनुसार तीन हज़ार दो सौ थी। ४५ मरारियों के कुलों में से जिनको मूसा और हारून ने, यहोवा की उस आज्ञा के अनुसार जो मूसा के द्वारा मिली थी, गिन लिया वे इतने ही थे॥

४६ लेवियों में से जिनको मूसा और हारून और इस्राएली प्रधानों ने उनके कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार गिन लिया, ४७ अर्थात् तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की अवस्थावाले, जितने मिलापवाले तम्बू की सेवकाई करने और बोझ उठाने का काम करने को हाज़िर होने वाले थे, ४८ उन सभों की गिनती आठ हज़ार पांच सौ अस्सी थी। ४९ ये अपनी अपनी सेवा और बोझ ढोने के अनुसार यहोवा के कहने पर गए। जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी उसी के अनुसार वे गिने गए॥

(कोढ़ी आदि अशुद्ध लोगों का बाहर कर दिया जाना)

५ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ इस्राएलियों को आज्ञा दे, कि वे

सब कोढ़ियों को, और जितनों के प्रमेह हो, और जितने लोथ के कारण अशुद्ध हों, उन सभों को छावनी से निकाल दें; ३ ऐसों को चाहे पुरुष हों चाहे स्त्री छावनी से निकालकर बाहर कर दें, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारी छावनी, जिसके बीच में निवास करता हूं, उनके कारण अशुद्ध हो जाए। ४ और इस्राएलियों ने वैसा ही किया, अर्थात् ऐसे लोगों को छावनी से निकालकर बाहर कर दिया; जैसा यहोवा ने मूसा से कहा था इस्राएलियों ने वैसा ही किया॥

(दोषों की हानि भरने की विधि)

५ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, ६ इस्राएलियों से कह, कि जब कोई पुरुष वा स्त्री कोई ऐसा पाप करके जो लोग किया करते हैं यहोवा का विश्वासघात करे, और वह प्राणी दोषी हो, ७ तब वह अपना किया हुआ पाप मान ले; और पूरे मूल में पांचवां अंश बढ़ाकर अपने दोष के बदले में उसी को दे, जिसके विषय दोषी हुआ हो। ८ परन्तु यदि उस मनुष्य का कोई कुटुम्बी न हो जिसे दोष का बदला भर दिया जाए, तो उस दोष का जो बदला यहोवा को भर दिया जाए वह याजक का हो, और वह उस प्रायश्चित्तवाले मेढ़े से अधिक हो जिस से उसके लिये प्रायश्चित्त किया जाए। ९ और जितनी पवित्र की हुई वस्तुएं इस्राएली उठाई हुई भेंट करके याजक के पास लाएं, वे उसी की हों; १० सब मनुष्यों की पवित्र की हुई वस्तुएं उसी की ठहरें; कोई जो कुछ याजक को दे वह उसका ठहरे॥

(पति के अपनी स्त्री पर जलने की व्यवस्था)

११ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १२ इस्राएलियों से कह, कि यदि किसी मनुष्य की स्त्री कुचाल चलकर* उसका विश्वासघात करे, १३ और कोई पुरुष उसके साथ कुकर्म करे, परन्तु यह बात उसके पति से छिपी हो और खुली न हो, और वह अशुद्ध हो गई, परन्तु न तो उसके विरुद्ध कोई साक्षी हो, और न वह कुकर्म करते पकड़ी गई हो; १४ और उसके पति के मन में जलन उत्पन्न हो, अर्थात् वह अपनी स्त्री पर जलने लगे और वह अशुद्ध हुई हो; वा उसके मन में जलन उत्पन्न हो, अर्थात् वह अपनी स्त्री पर जलने लगे परन्तु वह अशुद्ध न हुई हो; १५ तो वह पुरुष अपनी स्त्री को याजक के पास ले जाए, और उसके लिये एपा का दसवां अंश जव का मैदा चढ़ावा करके ले आए; परन्तु उस पर तेल न डाले, न लोबान रखे, क्योंकि वह जलनवाला और स्मरण दिलानेवाला, अर्थात् अधर्म का स्मरण करानेवाला अन्नबलि होगा। १६ तब याजक उस स्त्री को समीप ले जाकर यहोवा के साम्हने खड़ी करे; १७ और याजक मिट्टी के पात्र में पवित्र जल ले, और निवासस्थान की भूमि पर की धूलि में से कुछ लेकर उस जल में डाल दे। १८ तब याजक उस स्त्री को यहोवा के साम्हने खड़ी करके उसके सिर के बाल बिखराए, और स्मरण दिलानेवाले अन्नबलि को जो जलनवाला है उसके हाथों पर धर दे। और अपने हाथ में याजक कड़वा जल लिये रहे जो शाप लगाने का कारण होगा। १९ तब याजक स्त्री को शपथ धरवाकर कहे, कि यदि किसी पुरुष ने तुझ से कुकर्म न किया हो, और तू पति को छोड़ दूसरे की ओर फिरके अशुद्ध न हो गई हो, तो तू इस कड़वे जल के गुण से जो शाप का कारण

* मूल में—हटके।

होता है बची रहे। २० पर यदि तू अपने पति को छोड़ दूसरे की ओर फिरके अशुद्ध हुई हो, और तेरे पति को छोड़ किसी दूसरे पुरुष ने तुझ से प्रसंग किया हो, २१ (और याजक उसे शाप देनेवाली शपथ धराकर कहे,) यहोवा तेरी जांघ सड़ाए और तेरा पेट फुलाए, और लोग तेरा नाम लेकर शाप और धिक्कार * दिया करें; २२ अर्थात् वह जल जो शाप का कारण होता है तेरी अंतड़ियों में जाकर तेरे पेट को फुलाए, और तेरी जांघ को सड़ा दे। तब वह स्त्री कहे, आमीन, आमीन। २३ तब याजक शाप के ये शब्द पुस्तक में लिखकर उस कड़वे जल से मिटाके, २४ उस स्त्री को वह कड़वा जल पिलाए जो शाप का कारण होता है, और वह जल जो शाप का कारण होगा उस स्त्री के पेट में जाकर कड़वा हो जाएगा। २५ और याजक स्त्री के हाथ में से जलनवाले अन्नबलि को लेकर यहोवा के आगे हिलाकर वेदी के समीप पहुंचाए; २६ और याजक उस अन्नबलि में से उसका स्मरण दिलानेवाला भाग, अर्थात् मुट्ठी भर लेकर वेदी पर जलाए, और उसके बाद स्त्री को वह जल पिलाए। २७ और जब वह उसे वह जल पिला चुके, तब यदि वह अशुद्ध हुई हो और अपने पति का विश्वासघात किया हो, तो वह जल जो शाप का कारण होता है उस स्त्री के पेट में जाकर कड़ुआ हो जाएगा, और उसका पेट फूलेगा, और उसकी जांघ सड़ जाएगी, और उस स्त्री का नाम उसके लोगों के बीच स्रापित होगा। २८ पर यदि वह स्त्री अशुद्ध न हुई हो और शुद्ध ही हो, तो वह निर्दोष ठहरेगी और गर्भिणी हो सकेगी। २९ जलन की व्यवस्था यही है, चाहे कोई स्त्री अपने पति को छोड़ दूसरे की ओर फिरके अशुद्ध हो, ३० चाहे पुरुष के मन में जलन उत्पन्न हो और वह अपनी स्त्री पर जलने लगे; तो वह उसको यहोवा के सम्मुख खड़ी कर दे, और याजक उस पर यह सारी व्यवस्था पूरी करे। ३१ तब पुरुष अधर्म से बचा रहेगा, और स्त्री अपने अधर्म का बोझ आप उठाएगी॥

(नाज़ीरों की व्यवस्था)

६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ इस्राएलियों से कह, कि जब कोई पुरुष वा स्त्री नाज़ीर * की मन्नत, अर्थात् अपने को यहोवा के लिये न्यारा करने की विशेष मन्नत माने, ३ तब वह दाखमधु आदि मदिरा से न्यारा रहे; वह न दाखमधु का, न और मदिरा का सिरका पीए, और न दाख का कुछ रस भी पीए, वरन दाख न खाए, चाहे हरी हो चाहे सूखी। ४ जितने दिन वह न्यारा रहे उतने दिन तक वह बीज से ले छिलके तक, जो कुछ दाखलता से उत्पन्न होता है, उस में से कुछ न खाए। ५ फिर जितने दिन उस ने न्यारे रहने की मन्नत मानी हो उतने दिन तक वह अपने सिर पर छुरा न फिराए; और जब तक वे दिन पूरे न हों जिन में वह यहोवा के लिये न्यारा रहे तब तक वह पवित्र ठहरेगा, और अपने सिर के बालों को बढ़ाए रहे। ६ जितने दिन वह यहोवा के लिये न्यारा रहे उतने दिन तक किसी लोथ के पास न जाए। ७ चाहे उसका पिता, वा माता, वा भाई, वा बहिन भी मरे, तौभी वह उनके कारण अशुद्ध न हो; क्योंकि अपने परमेश्वर के लिये न्यारे रहने का चिन्ह † उसके सिर

* मूल में—किरिया।

* अर्थात् न्यारा किया हुआ।

† वा उसके परमेश्वर का मुकुट।

पर होगा। ८ अपने न्यारे रहने के सारे दिनों में वह यहोवा के लिये पवित्र ठहरा रहे। ९ और यदि कोई उसके पास अचानक मर जाए, और उसके न्यारे रहने का जो चिन्ह * उसके सिर पर होगा वह अशुद्ध हो जाए, तो वह शुद्ध होने के दिन, अर्थात् सातवें दिन अपना सिर मुड़ाए। १० और आठवें दिन वह दो पंडुक वा कबूतरी के दो बच्चे मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक के पास ले जाए, ११ और याजक एक को पापबलि, और दूसरे को होमबलि करके उसके लिये प्रायश्चित्त करे, क्योंकि वह लोथ के कारण पापी ठहरा है। और याजक उसी दिन उसका सिर फिर पवित्र करे, १२ और वह अपने न्यारे रहने के दिनों को फिर यहोवा के लिये न्यारे ठहराए, और एक वर्ष का एक भेड़ का बच्चा दोषबलि करके ले आए; और जो दिन इस से पहिले बीत गए हों वे व्यर्थ गिने जाएं, क्योंकि उसके न्यारे रहने का चिन्ह † अशुद्ध हो गया।।

१३ फिर जब नाज़ीर के न्यारे रहने के दिन पूरे हों, उस समय के लिये उसकी यह व्यवस्था है; अर्थात् वह मिलापवाले तम्बू के द्वार पर पहुंचाया जाए, १४ और वह यहोवा के लिये होमबलि करके एक वर्ष का एक निर्दोष भेड़ का बच्चा पापबलि करके, और एक वर्ष की एक निर्दोष भेड़ की बच्ची, और मेलबलि के लिये एक निर्दोष मेढ़ा, १५ और अखमीरी रोटियों की एक टोकरी, अर्थात् तेल से सने हुए मैदे के फुलके, और तेल से चुपड़ी हुई अखमीरी पपड़ियां, और उन बलियों के अन्नबलि और अर्घ; ये सब चढ़ावे समीप ले जाए। १६ इन सब को याजक यहोवा के साम्हने पहुंचाकर उसके पापबलि और होमबलि को चढ़ाए, १७ और अखमीरी रोटी की टोकरी समेत मेढ़े को यहोवा के लिये मेलबलि करके, और उस मेलबलि के अन्नबलि और अर्घ को भी चढ़ाए। १८ तब नाज़ीर अपने न्यारे रहने के चिन्हवाले सिर को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर मुण्डाकर अपने बालों को उस आग पर डाल दे जो मेलबलि के नीचे होगी। १९ फिर जब नाज़ीर अपने न्यारे रहने के चिन्हवाले * सिर को मुण्डा चुके तब याजक मेढ़े का पकाया हुआ कन्धा, और टोकरी में से एक अखमीरी रोटी, और एक अखमीरी पपड़ी लेकर नाज़ीर के हाथों पर धर दे, २० और याजक इनको हिलाने की भेंट करके यहोवा के साम्हने हिलाए; हिलाई हुई छाती और उठाई हुई जांघ समेत ये भी याजक के लिये पवित्र ठहरें; इसके बाद वह नाज़ीर दाखमधु पी सकेगा। २१ नाज़ीर की मन्नत की, और जो चढ़ावा उसको अपने न्यारे होने के कारण यहोवा के लिये चढ़ाना होगा उसकी भी यही व्यवस्था है। जो चढ़ावा वह अपनी पूंजी के अनुसार चढ़ा सके, उस से अधिक जैसी मन्नत उस ने मानी हो, वैसे ही अपने न्यारे रहने की व्यवस्था के अनुसार उसे करना होगा।।

(याजकों के आशीर्वाद देने की रीति)

२२ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २३ हारून और उसके पुत्रों से कह, कि तुम इस्राएलियों को इन बचनों से आशीर्वाद दिया करना कि,

२४ यहोवा तुझे आशीष दे और तेरी रक्षा करे:

* वा उसका जो मुकुट।
† वा उसका मुकुट।

* वा अपने मुकुटवाले।

२५ यहोवा तुझ पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए, और तुझ पर अनुग्रह करे : २६ यहोवा अपना मुख तेरी ओर करे, और तुझे शांति दे। २७ इस रीति वे मेरे * नाम को इस्राएलियों पर रखें, और मैं उन्हें आशीष दिया करूंगा।।

(वेदी के अभिषेक के उत्सव की भेंटें)

७ फिर जब मूसा ने निवास को खड़ा किया, और सारे सामान समेत उसका अभिषेक करके उसको पवित्र किया, और सारे सामान समेत वेदी का भी अभिषेक करके उसे पवित्र किया, २ तब इस्राएल के प्रधान जो अपने अपने पितरों के घरानो के मुख्य पुरुष, और गोत्रों के भी प्रधान होकर गिनती लेने के काम पर नियुक्त थे, ३ वे यहोवा के साम्हने भेंट ले आए, और उनकी भेंट छः छाई हुई गाड़ियां और बारह बैल थे, अर्थात् दो दो प्रधान की ओर से एक एक गाड़ी, और एक एक प्रधान की ओर से एक एक बैल; इन्हें वे निवास के साम्हने यहोवा के समीप ले गए। ४ तब यहोवा ने मूसा से कहा, ५ उन वस्तुओं को तू उन से ले ले, कि मिलापवाले तम्बू के बरतन में काम आएं, सो तू उन्हें लेवियों के एक एक कुल की विशेष सेवकाई के अनुसार उनको बांट दे। ६ सो मूसा ने वे सब गाड़ियां और बैल लेकर लेवियों को दे दिए। ७ गेर्शोनियों को उनकी सेवकाई के अनुसार उस ने दो गाड़ियां और चार बैल दिए; ८ और मरारियों को उनकी सेवकाई के अनुसार उस ने चार गाड़ियां और आठ बैल दिए; ये सब हारून याजक के पुत्र ईतामार के अधिकार में किए गए। ९ और कहातियों को उस ने कुछ न दिया, क्योंकि उनके लिये पवित्र वस्तुओं की यह सेवकाई थी कि वह उसे अपने कन्धों पर उठा लिया करें।।

१० फिर जब वेदी का अभिषेक हुआ तब प्रधान उसके संस्कार की भेंट वेदी के आगे समीप ले जाने लगे। ११ तब यहोवा ने मूसा से कहा, वेदी के संस्कार के लिये प्रधान लोग अपनी अपनी भेंट अपने अपने नियत दिन पर चढ़ाएं।।

१२ सो जो पुरुष पहिले दिन अपनी भेंट ले गया वह यहूदा गोत्रवाले अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन था; १३ उसकी भेंट यह थी, अर्थात् पवित्रस्थानवाले शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे; १४ फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; १५ होमबलि के लिये एक बछड़ा, एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; १६ पापबलि के लिये एक बकरा; १७ और मेलबलि के लिये दो बैल, और पांच मेढ़े, और पांच बकरे, और एक एक वर्ष के पांच भेड़ी के बच्चे। अम्मीनादाब के पुत्र नहशोन की यही भेंट थी।।

१८ और दूसरे दिन इस्साकार का प्रधान सूआर का पुत्र नतनेल भेंट ले आया; १९ वह यह थी, अर्थात् पवित्रस्थानवाले शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे; २० फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; २१ होमबलि के लिये एक

* मूल में—और वे मेरा नाम इस्राएलियों पर धरें।

बछड़ा, एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; २२ पापबलि के लिये एक बकरा; २३ और मेलबलि के लिये दो बैल, और पांच मेढ़े, और पांच बकरे, और एक एक वर्ष के पांच भेड़ी के बच्चे। सूआर के पुत्र नतनेल की यही भेंट थी॥

२४ और तीसरे दिन जबूलूनियों का प्रधान हेलोन का पुत्र एलीआब यह भेंट ले आया, २५ अर्थात् पवित्रस्थानवाले शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे; २६ फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; २७ होमबलि के लिये एक बछड़ा, एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; २८ पापबलि के लिये एक बकरा; २९ और मेलबलि के लिये दो बैल, और पांच मेढ़े, और पांच बकरे, और एक एक वर्ष के पांच भेड़ी के बच्चे। हेलोन के पुत्र एलीआब की यही भेंट थी॥

३० और चौथे दिन रूबेनियों का प्रधान शदेऊर का पुत्र एलीसूर यह भेंट ले आया, ३१ अर्थात् पवित्रस्थानवाले शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे; ३२ फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; ३३ होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; ३४ पापबलि के लिये एक बकरा; ३५ और मेलबलि के लिये दो बैल, और पांच मेढ़े, और पांच बकरे, और एक एक वर्ष के पांच भेड़ी के बच्चे। शदेऊर के पुत्र एलीसूर की यही भेंट थी॥

३६ और पांचवें दिन शिमोनियों का प्रधान सूरीशद्दै का पुत्र शलूमीएल यह भेंट ले आया, ३७ अर्थात् पवित्रस्थानवाले शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे; ३८ फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; ३९ होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; ४० पापबलि के लिये एक बकरा; ४१ और मेलबलि के लिये दो बैल, और पांच मेढ़े, और पांच बकरे, और एक एक वर्ष के पांच भेड़ी के बच्चे। सूरीशद्दै के पुत्र शलूमीएल की यही भेंट थी॥

४२ और छठवें दिन गादियों का प्रधान दूएल का पुत्र एल्यासाप यह भेंट ले आया, ४३ अर्थात् पवित्रस्थानवाले शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे; ४४ फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; ४५ होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; ४६ पापबलि के लिये एक बकरा; ४७ और मेलबलि के लिये दो बैल, और पांच मेढ़े, और पांच बकरे, और एक एक वर्ष के पांच भेड़ी के बच्चे। दूएल के पुत्र एल्यासाप की यही भेंट थी॥

४८ और सातवें दिन एप्रैमियों का प्रधान अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा यह भेंट ले आया, ४९ अर्थात् पवित्रस्थानवाले शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के

लिये तेल से सन हुए और मैदे से भरे हुए थे; ५० फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; ५१ होमबलि के लिये एक बछड़ा, एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; ५२ पापबलि के लिये एक बकरा; ५३ और मेलबलि के लिये दो बैल, और पांच मेढ़े, और पांच बकरे, और एक एक वर्ष के पांच भेड़ी के बच्चे। अम्मीहूद के पुत्र एलीशामा की यही भेंट थी॥

५४ और आठवें दिन मनश्शेइयों का प्रधान पदासूर का पुत्र गम्लीएल यह भेंट ले आया, ५५ अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा; ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे; ५६ फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; ५७ होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; ५८ पापबलि के लिये एक बकरा; ५९ और मेलबलि के लिये दो बैल, और पांच मेढ़े, और पांच बकरे, और एक एक वर्ष के पांच भेड़ी के बच्चे। पदासूर के पुत्र गम्लीएल की यही भेंट थी॥

६० और नवें दिन बिन्यामीनियों का प्रधान गिदोनी का पुत्र अबीदान यह भेंट ले आया, ६१ अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे; ६२ फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; ६३ होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; ६४ पापबलि के लिये एक बकरा; ६५ और मेलबलि के लिये दो बैल, और पांच मेढ़े, और पांच बकरे, और एक एक वर्ष के पांच भेड़ी के बच्चे। गिदोनी के पुत्र अबीदान की यही भेंट थी॥

६६ और दसवें दिन दानियों का प्रधान अम्मीशद्दै का पुत्र अखीआज़र यह भेंट ले आया, ६७ अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे; ६८ फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; ६९ होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; ७० पापबलि के लिये एक बकरा; ७१ और मेलबलि के लिये दो बैल, और पांच मेढ़े, और पांच बकरे, और एक एक वर्ष के पांच भेड़ी के बच्चे। अम्मीशद्दै के पुत्र अखीआज़र की यही भेंट थी॥

७२ और ग्यारहवें दिन आशेरियों का प्रधान ओक्रान का पुत्र पजीएल यह भेंट ले आया ७३ अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे; ७४ फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; ७५ होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; ७६ पापबलि के लिये एक बकरा; ७७ और मेलबलि के लिये दो बैल, और पांच मेढ़े, और पांच बकरे, और एक एक वर्ष के पांच भेड़ी के बच्चे। ओक्रान के पुत्र पजीएल की यही भेंट थी॥

७८ और बारहवें दिन नप्तालियों का प्रधान एनान का पुत्र अहीरा यह भेंट ले आया, ७९ अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल

के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चांदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे; ८० फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; ८१ होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; ८२ पापबलि के लिये एक बकरा; ८३ और मेलबलि के लिये दो बैल, और पांच मेढ़े, और पांच बकरे, और एक एक वर्ष के पांच भेड़ी के बच्चे। एनान के पुत्र अहीरा की यही भेंट थी॥

८४ वेदी के अभिषेक के समय इस्राएल के प्रधानों की ओर से उसके संस्कार की भेंट यही हुई, अर्थात् चांदी के बारह परात, चांदी के बारह कटोरे, और सोने के बारह धूपदान। ८५ एक एक चांदी का परात एक सौ तीस शेकेल का, और एक एक चांदी का कटोरा सत्तर शेकेल का था; और पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से ये सब चांदी के पात्र दो हज़ार चार सौ शेकेल के थे। ८६ फिर धूप से भरे हुए सोने के बारह धूपदान जो पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से दस दस शेकेल के थे, वे सब धूपदान एक सौ बीस शेकेल सोने के थे। ८७ फिर होमबलि के लिये सब मिलाकर बारह बछड़े, बारह मेढ़े, और एक एक वर्ष के बारह भेड़ी के बच्चे, अपने अपने अन्नबलि सहित थे; फिर पापबलि के सब बकरे बारह थे; ८८ और मेलबलि के लिये सब मिला कर चौबीस बैल, और साठ मेढ़े, और साठ बकरे, और एक एक वर्ष के साठ भेड़ी के बच्चे थे। वेदी के अभिषेक होने के बाद उसके संस्कार की भेंट यही हुई। ८९ और जब मूसा यहोवा से बातें करने को मिलापवाले तम्बू में गया, तब उस ने प्रायश्चित्त के ढकने पर से, जो साक्षीपत्र के सन्दूक के ऊपर था, दोनों करूबों के मध्य में से उसकी आवाज़ सुनी ज़ो उस से बातें कर रहा था; और उस ने (यहोवा) उस से बातें की॥

(दीवट के बारने की रीति)

८ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ हारून को समझाकर यह कह, कि जब जब तू दीपकों को बारे तब तब सातों दीपक का प्रकाश दीवट के साम्हने हो। ३ निदान हारून ने वैसा ही किया, अर्थात् जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी उसी के अनुसार उस ने दीपकों को बारा, कि वे दीवट के साम्हने उजियाला दे। ४ और दीवट की बनावट यह थी, अर्थात् यह पाए से लेकर फूलों तक गढ़े हुए सोने का बनाया गया था; जो नमूना यहोवा ने मूसा को दिखलाया था उसी के अनुसार उस ने दीवट को बनाया॥

(लेवियों के नियुक्त होने का वर्णन)

५ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, ६ इस्राएलियों के मध्य में से लेवियों को अलग लेकर शुद्ध कर। ७ उन्हें शुद्ध करने के लिये तू ऐसा कर, कि पावन करने वाला जल उन पर छिड़क दे, फिर वे सर्वाङ्ग मुण्डन कराएं, और वस्त्र धोएं, और वे अपने को स्वच्छ करें। ८ तब वे तेल से सने हुए मैदे के अन्नबलि समेत एक बछड़ा ले लें, और तू पापबलि के लिये एक दूसरा बछड़ा लेना। ९ और तू लेवियों को मिलापवाले तम्बू के साम्हने समीप पहुंचाना, और इस्राएलियों की सारी मण्डली को इकट्ठा करना। १० तब तू लेवियों को यहोवा के आगे समीप ले आना, और इस्राएली अपने अपने हाथ उन पर रखें, ११ तब हारून लेवियों को यहोवा के साम्हने इस्राएलियों की ओर

से हिलाई हुई भेंट करके अर्पण करे, कि वे यहोवा की सेवा करनेवाले ठहरें। १२ और लेवीय अपने अपने हाथ उन बछड़ों के सिरों पर रखें; तब तू लेवियों के लिये प्रायश्चित्त करने को एक बछड़ा पापबलि और दूसरा होमबलि करके यहोवा के लिये चढ़ाना। १३ और लेवियों को हारून और उसके पुत्रों के सम्मुख खड़ा करना, और उनको हिलाने की भेंट के लिये यहोवा को अर्पण करना। १४ और उन्हें इस्राएलियों में से अलग करना, सो वे मेरे ही ठहरेंगे। १५ और जब तू लेवियों को शुद्ध करके हिलाई हुई भेंट के लिये अर्पण कर चुके, उसके बाद वे मिलापवाले तम्बू सम्बन्धी सेवा टहल करने के लिये अन्दर आया करें। १६ क्योंकि वे इस्राएलियों में से मुझे पूरी रीति से अर्पण किए हुए हैं; मैं ने उनको सब इस्राएलियों में से एक एक स्त्री के पहिलौठे की सन्ती अपना कर लिया है। १७ इस्राएलियों के पहिलौठे, चाहे मनुष्य के हों चाहे पशु के, सब मेरे हैं; क्योंकि मैं ने उन्हें उस समय अपने लिये पवित्र ठहराया जब मैं ने मिस्र देश के सब पहिलौठों को मार डाला। १८ और मैं ने इस्राएलियों के सब पहिलौठों के बदले लेवियों को लिया है। १९ उन्हें लेकर मैं ने हारून और उसके पुत्रों को इस्राएलियों में से दान करके दे दिया है, कि वे मिलापवाले तम्बू में इस्राएलियों के निमित्त सेवकाई और प्रायश्चित्त किया करें, कहीं ऐसा न हो कि जब इस्राएली पवित्रस्थान के समीप आएं तब उन पर कोई महाविपत्ति आ पड़े। २० लेवियों के विषय यहोवा की यह आज्ञा पाकर मूसा और हारून और इस्राएलियों की सारी मण्डली ने उनके साथ ठीक वैसा ही किया। २१ लेवियों ने तो अपने को पाप से पावन किया, और अपने वस्त्रों को धो डाला; और हारून ने उन्हें यहोवा के साम्हने हिलाई हुई भेंट के निमित्त अर्पण किया, और उन्हें शुद्ध करने को उनके लिये प्रायश्चित्त भी किया। २२ और उसके बाद लेवीय हारून और उसके पुत्रों के साम्हने मिलापवाले तंम्बू में अपनी अपनी सेवकाई करने को गए; और जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को लेवियों के विषय में दी थी उसी के अनुसार वे उन से व्यवहार करने लगे॥

२३ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २४ जो लेवियों को करना है वह यह है, कि पच्चीस वर्ष की अवस्था से लेकर उस से अधिक आयु में वे मिलापवाले तम्बू सम्बन्धी काम करने के लिये भीतर उपस्थित हुआ करें; २५ और जब पचास वर्ष के हों तो फिर उस सेवा के लिये न आए और न काम करें; २६ परन्तु वे अपने भाई बन्धुओं के साथ मिलापवाले तम्बू के पास रक्षा का काम किया करें, और किसी प्रकार की सेवकाई न करें। लेवियों को जो जो काम सौंपे जाएं उनके विषय तू उन से ऐसा ही करना॥

(दूसरी बार फसह का माना जाना, और सदा के लिये फसह की विधि)

९ इस्राएलियों के मिस्र देश से निकलने के दूसरे वर्ष के पहिले महीने में यहोवा ने सीनै के जंगल में मूसा से कहा, २ इस्राएली फसह नाम पर्ब्ब को उसके नियत समय पर माना करें। ३ अर्थात् इसी महीने के चौदहवें दिन को गोधूलि के समय तुम लोग उसे सब विधियों और नियमों के अनुसार मानना। ४ तब मूसा ने इस्राएलियों से फसह मानने के लिये कह

दिया। ५ और उन्हों ने पहले महीने के चौदहवें दिन को गोधूलि के समय सीनै के जंगल में फसह को माना; और जो जो आज्ञाएं यहोवा ने मूसा को दी थीं उन्हीं के अनुसार इस्राएलियों ने किया। ६ परन्तु कितने लोग किसी मनुष्य की लोथ के द्वारा अशुद्ध होने के कारण उस दिन फसह को न मान सके; वे उसी दिन मूसा और हारून के समीप जाकर मूसा से कहने लगे, ७ हम लोग एक मनुष्य की लोथ के कारण अशुद्ध हैं; परन्तु हम क्यों रुके रहें, और इस्राएलियों के संग यहोवा का चढ़ावा नियत समय पर क्यों न चढ़ाएं? ८ मूसा ने उन से कहा, ठहरे रहो, मैं सुन लूं कि यहोवा तुम्हारे विषय में क्या आज्ञा देता है॥

९ यहोवा ने मूसा से कहा, १० इस्राएलियों से कह, कि चाहे तुम लोग चाहे तुम्हारे वंश में से कोई भी किसी लोथ के कारण अशुद्ध हो, वा दूर की यात्रा पर हो, तौभी वह यहोवा के लिये फसह को माने। ११ वे उसे दूसरे महीने के चौदहवें दिन को गोधूलि के समय मानें; और फसह के बलिपशु के मांस को अखमीरी रोटी और कड़ुए सागपात के साथ खाएं। १२ और उस में से कुछ भी बिहान तक न रख छोड़ें, और न उसकी कोई हड्डी तोड़ें; वे उस पर्ब्ब को फसह की सारी विधियों के अनुसार मानें। १३ परन्तु जो मनुष्य शुद्ध हो और यात्रा पर न हो, परन्तु फसह के पर्ब्ब को न माने, वह प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाए, उस मनुष्य को यहोवा का चढ़ावा नियत समय पर न ले आने के कारण अपने पाप का बोझ उठाना पड़ेगा। १४ और यदि कोई परदेशी तुम्हारे साथ रहकर चाहे कि यहोवा के लिये फसह माने, तो वह उसी विधि और नियम के अनुसार उसको माने; देशी और परदेशी दोनों के लिये तुम्हारी एक ही विधि हो॥

(इस्राएलियों की यात्रा की रीति)

१५ जिस दिन निवास जो साक्षी का तम्बू भी कहलाता है खड़ा किया गया, उस दिन बादल उस पर छा गया; और सन्ध्या को वह निवास पर आग सा दिखाई दिया और भोर तक दिखाई देता रहा। १६ और नित्य ऐसा ही हुआ करता था; अर्थात् दिन को बादल छाया रहता, और रात को आग दिखाई देती थी। १७ और जब जब वह बादल तम्बू पर से उठ जाता तब इस्राएली प्रस्थान करते थे; और जिस स्थान पर बादल ठहर जाता वहीं इस्राएली अपने डेरे खड़े करते थे। १८ यहोवा की आज्ञा से इस्राएली कूच करते थे, और यहोवा ही की आज्ञा से वे डेरे खड़े भी करते थे; और जितने दिन तक वह बादल निवास पर ठहरा रहता उतने दिन तक वे डेरे डाले पड़े रहते थे। १९ और जब जब बादल बहुत दिन निवास पर छाया रहता तब इस्राएली यहोवा की आज्ञा मानते, और प्रस्थान नहीं करते थे। २० और कभी कभी वह बादल थोड़े ही दिन तक निवास पर रहता, और तब भी वे यहोवा की आज्ञा से डेरे डाले पड़े रहते थे; और फिर यहोवा की आज्ञा ही से वह प्रस्थान करते थे। २१ और कभी कभी बादल केवल सन्ध्या से भोर तक रहता; और जब वह भोर को उठ जाता था तब वे प्रस्थान करते थे, और यदि वह रात दिन बराबर रहता तो जब बादल उठ जाता तब ही वे प्रस्थान करते थे। २२ वह बादल चाहे दो दिन, चाहे एक महीना, चाहे वर्ष भर, जब तक निवास पर ठहरा रहता तब तक इस्राएली अपने डेरों में रहते और प्रस्थान

नहीं करते थे; परन्तु जब वह उठ जाता तब वे प्रस्थान करते थे। २३ यहोवा की आज्ञा से वे अपने डेरे खड़े करते, और यहोवा ही की आज्ञा से वे प्रस्थान करते थे; जो आज्ञा यहोवा मूसा के द्वारा देता था उसको वे माना करते थे॥

(चांदी की तुरहियों के बनाने और व्यवहार में लाने की विधि)

१० फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ चांदी की दो तुरहियां गढ़के बनाई जाएं; तू उनको मण्डली के बुलाने, और छावनियों के प्रस्थान करने में काम में लाना। ३ और जब वे दोनों फूंकी जाएं, तब सारी मण्डली मिलापवाले तम्बू के द्वार पर तेरे पास इकट्ठी हो जाए। ४ और यदि एक ही तुरही फूंकी जाए, तो प्रधान लोग जो इस्राएल के हज़ारों के मुख्य पुरुष हैं तेरे पास इकट्ठे हो जाएं। ५ जब तुम लोग सांस बान्धकर फूंको, तो पूरब दिशा की छावनियों का प्रस्थान हो। ६ और जब तुम दूसरी बेर सांस बान्धकर फूंको, तब दक्खिन दिशा की छावनियों का प्रस्थान हो। उनके प्रस्थान करने के लिये वे सांस बान्धकर फूंकें। ७ और जब लोगों को इकट्ठा करके सभा करनी हो तब भी फूंकना, परन्तु सांस बान्धकर नहीं। ८ और हारून के पुत्र जो याजक हैं वे उन तुरहियों को फूंका करें। यह बात तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी के लिये सर्वदा की विधि रहे। ९ और जब तुम अपने देश में किसी सतानेवाले बैरी से लड़ने को निकलो, तब तुरहियों को सांस बान्धकर फूंकना, तब तुम्हारे परमेश्वर यहोवा को तुम्हारा स्मरण आएगा, और तुम अपने शत्रुओं से बचाए जाओगे। १० और अपने आनन्द के दिन में, और अपने नियत पर्व्वों में, और महीनों के आदि में, अपने होमबलियों और मेलबलियों के साथ उन तुरहियों को फूंकना; इस से तुम्हारे परमेश्वर को तुम्हारा स्मरण आएगा; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं॥

(इस्राएलियों का सीनै पर्वत से प्रस्थान करना)

११ और दूसरे वर्ष के दूसरे महीने के बीसवें दिन को बादल साक्षी के निवास पर से उठ गया, १२ तब इस्राएली सीनै के जंगल में से निकलकर प्रस्थान करके निकले; और बादल पारान नाम जंगल में ठहर गया। १३ उनका प्रस्थान यहोवा की उस आज्ञा के अनुसार जो उस ने मूसा को दी थी आरम्भ हुआ। १४ और सब से पहले तो यहूदियों की छावनी के झंडे का प्रस्थान हुआ, और वे दल बान्धकर चले; और उन-का सेनापति अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन था। १५ और इस्साकारियों के गोत्र का सेनापति सूआर का पुत्र नतनेल था। १६ और जबूलूनियों के गोत्र का सेनापति हेलोन का पुत्र एलीआब था। १७ तब निवास उतारा गया, और गेर्शोनियों और मरारियों ने जो निवास को उठाते थे प्रस्थान किया। १८ फिर रूबेन की छावनी झंडे का कूच हुआ, और वे भी दल बनाकर चले; और उनका सेनापति शदेऊर का पुत्र एलीशूर था। १९ और शिमोनियों के गोत्र का सेनापति सूरीशद्दै का पुत्र शलूमी-एल था। २० और गादियों के गोत्र का सेनापति दूएल का पुत्र एल्यासाप था। २१ तब कहातियों ने पवित्र वस्तुओं को उठाए हुए प्रस्थान किया, और उनके पहुंचने तक गेर्शोनियों और मरारियों ने निवास को खड़ा कर दिया। २२ फिर एप्रैमियों की छावनी के झंडे का कूच हुआ, और वे भी

दल बनाकर चले; और उनका सेनापति अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा था। २३ और मनश्शेइयों के गोत्र का सेनापति पदासूर का पुत्र गम्लीएल था। २४ और बिन्यामीनियों के गोत्र का सेनापति गिदोनी का पुत्र अबीदान था। २५ फिर दानियों की छावनी जो सब छावनियों के पीछे थी, उसके झंडे का प्रस्थान हुआ, और वे भी दल बनाकर चले; और उनका सेनापति अम्मीशद्दै का पुत्र अखीआज़र था। २६ और आशेरियों के गोत्र का सेनापति ओक्रान का पुत्र पजीएल था। २७ और नप्तालियों के गोत्र का सेनापति एनान का पुत्र अहीरा था। २८ इस्राएली इसी प्रकार अपने अपने दलों के अनुसार प्रस्थान करते, और आगे बढ़ा करते थे।

२९ और मूसा ने अपने ससुर रूएल मिद्यानी के पुत्र होबाब से कहा, हम लोग उस स्थान की यात्रा करते हैं जिसके विषय में यहोवा ने कहा है, कि मैं उसे तुम को दूंगा; सो तू भी हमारे संग चल, और हम तेरी भलाई करेंगे; क्योंकि यहोवा ने इस्राएल के विषय में भला ही कहा है। ३० होबाब ने उसे उत्तर दिया, कि मैं नहीं जाऊंगा; मैं अपने देश और कुटुम्बियों में लौट जाऊंगा। ३१ फिर मूसा ने कहा, हम को न छोड़, क्योंकि हमें जंगल में कहां कहां डेरा खड़ा करना चाहिये, यह तुझे ही मालूम है, तू हमारे लिये आंखों का काम देना। ३२ और यदि तू हमारे संग चले, तो निश्चय जो भलाई यहोवा हम से करेगा उसी के अनुसार हम भी तुझ से वैसा ही करेंगे॥

३३ फिर इस्राएलियों ने * यहोवा के पर्वत से प्रस्थान करके तीन दिन की यात्रा की; और उन तीनों दिनों के मार्ग में यहोवा की वाचा का सन्दूक उनके लिये विश्राम का स्थान ढूंढ़ता हुआ उनके आगे आगे चलता रहा। ३४ और जब वे छावनी के स्थान से प्रस्थान करते थे तब दिन भर यहोवा का बादल उनके ऊपर छाया रहता था। ३५ और जब जब सन्दूक का प्रस्थान होता था तब तब मूसा यह कहा करता था, कि हे यहोवा, उठ, और तेरे शत्रु तितर बितर हो जाएं, और तेरे बैरी तेरे साम्हने से भाग जाएं। ३६ और जब जब वह ठहर जाता था तब तब मूसा कहा करता था, कि हे यहोवा, हज़ारों-हज़ार इस्राएलियों में लौटकर आ जा॥

(इस्राएलियों का कुड़कुड़ाना, और इसका दण्ड भोगना)

११ फिर वे लोग बुड़बुड़ाने और यहोवा के सुनते बुरा कहने लगे; निदान यहोवा ने सुना, और उसका कोप भड़क उठा, और यहोवा की आग उनके मध्य में जल उठी, और छावनी के एक किनारे से भस्म करने लगी। २ तब लोग मूसा के पास आकर चिल्लाए; और मूसा ने यहोवा से प्रार्थना की, तब वह आग बुझ गई, ३ और उस स्थान का नाम तबेरा * पड़ा, क्योंकि यहोवा की आग उन में जल उठी थी॥

४ फिर जो मिली-जुली भीड़ उनके साथ थी वह कामुकता करने लगी; और इस्राएली भी फिर रोने और कहने लगे, कि हमें मांस खाने को कौन देगा। ५ हमें वे मछलियां स्मरण हैं जो हम मिस्र में सेंतमेंत खाया करते थे और वे खीरे, और खरबूजे, और गन्दने, और प्याज, और लहसुन

* मूल में—उन्हों ने।

* अर्थात् जलन।

भी; ६ परन्तु अब हमारा जी घबरा गया है, यहां पर इस मन्ना को छोड़ और कुछ भी देख नहीं पड़ता। ७ मन्ना तो धनिये के समान था, और उसका रंग रुप मोती का सा था। ८ लोग इधर उधर जाकर उसे बटोरते, और चक्की में पीसते वा ओखली में कूटते थे, फिर तसले में पकाते, और उसके फुलके बनाते थे; और उसका स्वाद तेल में बने हुए पूए का सा था। ९ और रात को जब छावनी में ओस पड़ती थी तब उसके साथ मन्ना भी गिरता था। १० और मूसा ने सब घरानों के आदमियों को अपने अपने डेरे के द्वार पर रोते सुना; और यहोवा का कोप अत्यन्त भड़का, और मूसा को भी बुरा मालूम हुआ। ११ तब मूसा ने यहोवा से कहा, तू अपने दास से यह बुरा व्यवहार क्यों करता है? और क्या कारण है कि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह नहीं पाया, कि तू ने इन सब लोगों का भार मुझ पर डाला है? १२ क्या ये सब लोग मेरे ही कोख में पड़े थे? क्या मैं ही ने उनको उत्पन्न किया, जो तू मुझ से कहता है, कि जैसे पिता दूध पीते बालक को अपनी गोद में उठाए उठाए फिरता है, वैसे ही मैं इन लोगों को अपनी गोद में उठाकर उस देश में ले जाऊं, जिसके देने की शपथ तू ने उनके पूर्वजों से खाई है? १३ मुझे इतना मांस कहां से मिले कि इन सब लोगों को दूं? ये तो यह कह कहकर मेरे पास रो रहे हैं, कि तू हमें मांस खाने को दे। १४ मैं अकेला इन सब लोगों का भार नहीं सम्भाल सकता, क्योंकि यह मेरी शक्ति के बाहर है। १५ और जो तुझे मेरे साथ यही व्यवहार करना है, तो मुझ पर तेरा इतना अनुग्रह हो, कि तू मेरे प्राण एकदम ले ले, जिस से मैं अपनी दुर्दशा न देखने पाऊं॥

१६ यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएली पुरनियों में से सत्तर ऐसे पुरुष मेरे पास इकट्ठे कर, जिनको तू जानता है कि वे प्रजा के पुरनिये और उनके सरदार हैं; और मिलापवाले तम्बू के पास ले आ, कि वे तेरे साथ यहां खड़े हों। १७ तब मैं उतरकर तुझ से वहां बातें करूंगा; और जो आत्मा तुझ में है उस में से कुछ लेकर उन में समवाऊंगा; और वे इन लोगों का भार तेरे संग उठाए रहेंगे, और तुझे उसको अकेले उठाना न पड़ेगा। १८ और लोगों से कह, कल के लिये अपने को पवित्र करो, तब तुम्हें मांस खाने को मिलेगा; क्योंकि तुम यहोवा के सुनते हुए यह कह कहकर रोए हो, कि हमें मांस खाने को कौन देगा? हम मिस्र ही में भले थे। सो यहोवा तुम को मांस खाने को देगा, और तुम खाना। १९ फिर तुम एक दिन, वा दो, वा पांच, वा दस, वा बीस दिन ही नहीं, २० परन्तु महीने भर उसे खाते रहोगे, जब तक वह तुम्हारे नथनों से निकलने न लगे और तुम को उस से घृणा न हो जाए, क्योंकि तुम लोगों ने यहोवा को जो तुम्हारे मध्य में है तुच्छ जाना है, और उसके साम्हने यह कहकर रोए हो, कि हम मिस्र से क्यों निकल आए? २१ फिर मूसा ने कहा, जिन लोगों के बीच मैं हूं उन में से छः लाख तो प्यादे ही हैं; और तू ने कहा है, कि मैं उन्हें इतना मांस दूंगा, कि वे महीने भर उसे खाते ही रहेंगे। २२ क्या वे सब भेड़-बकरी गाय-बैल उनके लिये मारे जाएं, कि उनको मांस मिले? वा क्या समुद्र की सब मछलियां उनके लिये इकट्ठी की जाएं, कि उनको मांस मिले?

२३ यहोवा ने मूसा से कहा, क्या यहोवा का हाथ छोटा हो गया है? अब तू देखेगा, कि मेरा वचन जो मैं ने तुझ से कहा है वह

पूरा होता है कि नहीं। २४ तब मूसा ने बाहर जाकर प्रजा के लोगों को यहोवा की बातें कह सुनाईं; और उनके पुरनियों में से सत्तर पुरुष इकट्ठे करके तम्बू के चारों ओर खड़े किए। २५ तब यहोवा बादल में होकर उतरा और उस ने मूसा से बातें कीं, और जो आत्मा उस में थी उस में से लेकर उन सत्तर पुरनियों में समवा दिया; और जब वह आत्मा उन में आई तब वे नबूवत करने लगे। परन्तु फिर और कभी न की। २६ परन्तु दो मनुष्य छावनी में रह गए थे, जिन में से एक का नाम एलदाद और दूसरे का मेदाद था, उन में भी आत्मा आई; ये भी उन्हीं में से थे जिनके नाम लिख लिये गये थे, पर तम्बू के पास न गए थे, और वे छावनी ही में नबूवत करने लगे। २७ तब किसी जवान ने दौड़ कर मूसा को बतलाया, कि एलदाद और मेदाद छावनी में नबूवत कर रहे हैं। २८ तब नून का पुत्र यहोशू, जो मूसा का टहलुआ और उसके चुने हुए वीरों में से था,* उस ने मूसा से कहा, हे मेरे स्वामी मूसा, उनको रोक दे। २९ मूसा ने उस से कहा, क्या तू मेरे कारण जलता है? भला होता कि यहोवा की सारी प्रजा के लोग नबी होते, और यहोवा अपना आत्मा उन सभों में समवा देता! ३० तब फिर मूसा इस्राएल के पुरनियों समेत छावनी में चला गया। ३१ तब यहोवा की ओर से एक बड़ी आंधी आई, और वह समुद्र से बटेरें उड़ाके छावनी पर और उसके चारों ओर इतनी ले आई, कि वे इधर उधर एक दिन के मार्ग तक भूमि पर दो हाथ के लगभग ऊंचे तक छा गए। ३२ और लोगों ने उठकर उस दिन भर और रात भर, और दूसरे दिन भी दिन भर बटेरों को बटोरते रहे; जिस ने कम से कम बटोरा उस ने दस होमेर बटोरा; और उन्हों ने उन्हें छावनी के चारों ओर फैला दिया। ३३ मांस उनके मुंह ही में था, और वे उसे खाने न पाए थे, कि यहोवा का कोप उन पर भड़क उठा, और उस ने उनको बहुत बड़ी मार से मारा। ३४ और उस स्थान का नाम किब्रोथ-तावा* पड़ा, क्योंकि जिन लोगों ने कामुकता की थी उनको वहां मिट्टी दी गई। ३५ फिर इस्राएली किब्रोथत्तावा से प्रस्थान करके हसेरोत में पहुंचे, और वहीं रहे॥

(मूसा की श्रेष्ठता का प्रमाण)

१२ मूसा ने तो एक कूशी स्त्री के साथ ब्याह कर लिया था। सो मरियम और हारून उसकी उस ब्याहिता कूशी स्त्री के कारण उसकी निन्दा करने लगे; २ उन्हों ने कहा, क्या यहोवा ने केवल मूसा ही के साथ बातें की हैं? क्या उस ने हम से भी बातें नहीं कीं? उनकी यह बात यहोवा ने सुनी। ३ मूसा तो पृथ्वी भर के रहने वाले सब मनुष्यों से बहुत अधिक नम्र स्वभाव का था। ४ सो यहोवा ने एकाएक मूसा और हारून और मरियम से कहा, तुम तीनों मिलापवाले तम्बू के पास निकल आओ। तब वे तीनों निकल आए। ५ तब यहोवा ने बादल के खम्भे में उतरकर तम्बू के द्वार पर खड़ा होकर हारून और मरियम को बुलाया; सो वे दोनों उसके पास निकल आए। ६ तब यहोवा ने कहा, मेरी बातें सुनो: यदि तुम में कोई नबी हो, तो उस पर मैं यहोवा दर्शन के द्वारा अपने आप को प्रगट करूंगा, वा स्वप्न में उस से बातें करूंगा। ७ परन्तु

* मूल में—उसके चुने हुओं में से।

* अर्थात् तृष्णा की कबरें।

मेरा दास मूसा ऐसा नहीं है; वह तो मेरे सब घरानों में विश्वास योग्य है। ८ उस से मैं गुप्त रीति से नहीं, परन्तु आम्हने-साम्हने और प्रत्यक्ष होकर बातें करता हूं; और वह यहोवा का स्वरूप निहारने पाता है। सो तुम मेरे दास मूसा की निन्दा करते हुए क्यों नहीं डरे? ९ तब यहोवा का कोप उन पर भड़का, और वह चला गया; १० तब वह बादल तम्बू के ऊपर से उठ गया, और मरियम कोढ़ से हिम के समान श्वेत हो गई। और हारून ने मरियम की ओर दृष्टि की, और देखा, कि वह कोढ़िन हो गई है। ११ तब हारून मूसा से कहने लगा, हे मेरे प्रभु, हम दोनों ने जो मूर्खता की वरन पाप भी किया, यह पाप हम पर न लगने दे। १२ और मरियम को उस मरे हुए के समान न रहने दे, जिसकी देह अपनी मां के पेट से निकलते ही अधगली हो। १३ सो मूसा ने यह कहकर यहोवा की दोहाई दी, कि हे ईश्वर, कृपा कर, और उसको चंगा कर। १४ यहोवा ने मूसा से कहा, यदि उसका पिता उसके मुंह पर थूका ही होता, तो क्या सात दिन तक वह लज्जित न रहती? सो वह सात दिन तक छावनी से बाहर बन्द रहे, उसके बाद वह फिर भीतर आने पाए। १५ सो मरियम सात दिन तक छावनी से बाहर बन्द रही, और जब तक मरियम फिर आने न पाई तब तक लोगों ने प्रस्थान न किया। १६ उसके बाद उन्हों ने हसेरोत से प्रस्थान करके पारान नाम जंगल में अपने डेरे खड़े किए॥

(इस्राएलियों के कनान देश में जाने से नाह करने और इसके दण्ड पाने का वर्णन)

१३ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ कनान देश जिसे मैं इस्राएलियों को देता हूं उसका भेद लेने के लिये पुरुषों को भेज; वे उनके पितरों के प्रति गोत्र का एक प्रधान पुरुष हों। ३ यहोवा से यह आज्ञा पाकर मूसा ने ऐसे पुरुषों को पारान जंगल से भेज दिया, जो सब के सब इस्राएलियों के प्रधान थे। ४ उनके नाम ये हैं, अर्थात् रूबेन के गोत्र में से जक्कूर का पुत्र शम्मू; ५ शिमोन के गोत्र में से होरी का पुत्र शापात; ६ यहूदा के गोत्र में से यपुन्ने का पुत्र कालेब; ७ इस्साकार के गोत्र में से योसेप का पुत्र यिगाल; ८ एप्रैम के गोत्र में से नून का पुत्र होशे; ९ बिन्यामीन के गोत्र में से रापू का पुत्र पलती; १० जबूलून के गोत्र में से सोदी का पुत्र गद्दीएल; ११ यूसुफ वंशियों में, मनश्शे के गोत्र में से सूसी का पुत्र गद्दी; १२ दान के गोत्र में से गमल्ली का पुत्र अम्मीएल; १३ आशेर के गोत्र में से मीकाएल का पुत्र सतूर; १४ नप्ताली के गोत्र में से वोप्सी का पुत्र नहूबी; १५ गाद के गोत्र में से माकी का पुत्र गूएल। १६ जिन पुरुषों को मूसा ने देश का भेद लेने के लिये भेजा था उनके नाम ये ही हैं। और नून के पुत्र होशे का नाम उस ने यहोशू रखा। १७ उनको कनान देश के भेद लेने को भेजते समय मूसा ने कहा, इधर से, अर्थात् दक्षिण देश होकर जाओ, १८ और पहाड़ी देश में जाकर उस देश को देख लो कि कैसा है, और उस में बसे हुए लोगों को भी देखो कि वे बलवान् हैं वा निर्बल, थोड़े हैं वा बहुत, १९ और जिस देश में वे बसे हुए हैं सो कैसा है, अच्छा वा बुरा, और वे कैसी कैसी बस्तियों में बसे हुए हैं, और तम्बुओं में रहते हैं वा गढ़ वा किलों में रहते हैं, २० और वह देश कैसा है, उपजाऊ है वा बंजर है, और उस में वृक्ष हैं

वा नहीं। और तुम हियाव बान्धे चलो, और उस देश की उपज में से कुछ लेते भी आना। वह समय पहली पक्की दाखों का था। २१ सो वे चल दिए, और सीन नाम जंगल से ले रहोब तक, जो हमात के मार्ग में है, सारे देश को देखभालकर उसका भेद लिया। २२ सो वे दक्षिण देश होकर चले, और हेब्रोन तक गए; वहां अहीमन, शेशै, और तल्मै नाम अनाकवंशी रहते थे। हेब्रोन तो मिस्र के सोअन से सात वर्ष पहिले बसाया गया था। २३ तब वे एशकोल नाम नाले तक गए, और वहां से एक डाली दाखों के गुच्छे समेत तोड़ ली, और दो मनुष्य उसे एक लाठी पर लटकाए हुए उठा ले चले गए; और वे अनारों और अंजीरों में से भी कुछ कुछ ले आए। २४ इस्राएली वहां से जो दाखों का गुच्छा तोड़ ले आए थे, इस कारण उस स्थान का नाम एशकोल * नाला रखा गया। २५ चालीस दिन के बाद वे उस देश का भेद लेकर लौट आए। २६ और पारान जंगल के कादेश नाम स्थान में मूसा और हारून और इस्राएलियों की सारी मण्डली के पास पहुंचे; और उनको और सारी मण्डली को संदेशा दिया, और उस देश के फल उनको दिखाए। २७ उन्हों ने मूसा से यह कहकर वर्णन किया, कि जिस देश में तू ने हम को भेजा था उस में हम गए; उस में सचमुच दूध और मधु की धाराएं बहती हैं, और उसकी उपज में से यही है। २८ परन्तु उस देश के निवासी बलवान् हैं, और उसके नगर गढ़वाले हैं और बहुत बड़े हैं; और फिर हम ने वहां अनाकवंशियों को भी देखा। २९ दक्षिण देश में तो अमालेकी बसे हुए हैं; और पहाड़ी देश में हित्ती, यबूसी, और एमोरी रहते हैं; और समुद्र के किनारे किनारे और यरदन नदी के तट पर कनानी बसे हुए हैं। ३० पर कालेब ने मूसा के साम्हने प्रजा के लोगों को चुप कराने की मनसा से कहा, हम अभी चढ़के उस देश को अपना कर लें; क्योंकि निःसन्देह हम में ऐसा करने की शक्ति है। ३१ पर जो पुरुष उसके संग गए थे उन्हों ने कहा, उन लोगों पर चढ़ने की शक्ति हम में नहीं है; क्योंकि वे हम से बलवान् हैं। ३२ और उन्हों ने इस्राएलियों के साम्हने उस देश की जिसका भेद उन्हों ने लिया था यह कहकर निन्दा भी की, कि वह देश जिसका भेद लेने को हम गए थे ऐसा है, जो अपने निवासियों को निगल जाता है; और जितने पुरुष हम ने उस में देखे वे सब के सब बड़े डील डौल के हैं। ३३ फिर हम ने वहां नपीलों को, अर्थात् नपीली जातिवाले अनाकवंशियों को देखा; और हम अपनी दृष्टि में तो उनके साम्हने टिड्डे के समान दिखाई पड़ते थे, और ऐसे ही उनकी दृष्टि में मालूम पड़ते थे॥

१४ तब सारी मण्डली चिल्ला उठी; और रात भर वे लोग रोते ही रहे। २ और सब इस्राएली मूसा और हारून पर बुड़बुड़ाने लगे; और सारी मण्डली उन से कहने लगी, कि भला होता कि हम मिस्र ही में मर जाते! वा इस जंगल ही में मर जाते! ३ और यहोवा हम को उस देश में ले जाकर क्यों तलवार से मरवाना चाहता है? हमारी स्त्रियां और बालबच्चे तो लूट में चले जाएंगे; क्या हमारे लिये अच्छा नहीं कि हम मिस्र देश को लौट जाएं? ४ फिर वे आपस में कहने लगे, आओ, हम किसी को अपना प्रधान बना लें, और मिस्र को

* अर्थात् दाखों का गुच्छा।

लौट चलें। ५ तब मूसा और हारून इस्राएलियों की सारी मण्डली के साम्हने मुंह के बल गिरे। ६ और नून का पुत्र यहोशू और यपुन्ने का पुत्र कालिब, जो देश के भेद लेनेवालों में से थे, अपने अपने वस्त्र फाड़कर, ७ इस्राएलियों की सारी मण्डली से कहने लगे, कि जिस देश का भेद लेने को हम इधर उधर घूम कर आए हैं, वह अत्यन्त उत्तम देश है। ८ यदि यहोवा हम से प्रसन्न हो, तो हम को उस देश में, जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं, पहुंचाकर उसे हमें दे देगा। ९ केवल इतना करो कि तुम यहोवा के विरुद्ध बलवा न करो; और न तो उस देश के लोगों से डरो, क्योंकि वे हमारी रोटी ठहरेंगे; छाया उनके ऊपर से हट गई है, और यहोवा हमारे संग है; उन से न डरो। १० तब सारी मण्डली चिल्ला उठी, कि इनको पत्थरवाह करो। तब यहोवा का तेज सब इस्राएलियों पर प्रकाशमान हुआ॥

११ तब यहोवा ने मूसा से कहा, वे लोग कब तक मेरा तिरस्कार करते रहेंगे? और मेरे सब आश्चर्यकर्म देखने पर भी कब तक मुझ पर विश्वास न करेंगे? १२ मैं उन्हें मरी से मारूंगा, और उनके निज भाग से उन्हें निकाल दूंगा, और तुझ से एक जाति उपजाऊंगा जो उन से बड़ी और बलवन्त होगी। १३ मूसा ने यहोवा से कहा, तब तो मिस्री जिनके मध्य में से तू अपनी सामर्थ्य दिखाकर उन लोगों को निकाल ले आया है यह सुनेंगे, १४ और इस देश के निवासियों से कहेंगे। उन्होंने तो यह सुना है, कि तू जो यहोवा है इन लोगों के मध्य में रहता है; और प्रत्यक्ष दिखाई देता है, और तेरा बादल उनके ऊपर ठहरा रहता है, और तू दिन को बादल के खम्भे में, और रात को अग्नि के खम्भे में होकर इनके आगे आगे चला करता है। १५ इसलिये यदि तू इन लोगों को एक ही बार में मार डाले, तो जिन जातियों ने तेरी कीर्त्ति सुनी है वे कहेंगी, १६ कि यहोवा उन लोगों को उस देश में जिसे उस ने उन्हें देने की शपथ खाई थी पहुंचा न सका, इस कारण उस ने उन्हें जंगल में घात कर डाला है। १७ सो अब प्रभु की सामर्थ्य की महिमा तेरे इस कहने के अनुसार हो, १८ कि यहोवा कोप करने में धीरजवन्त और अति करुणामय है, और अधर्म और अपराध का क्षमा करनेवाला है, परन्तु वह दोषी को किसी प्रकार से निर्दोष न ठहराएगा, और पूर्वजों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों, और पोतों, और परपोतों को देता है। १९ अब इन लोगों के अधर्म को अपनी बड़ी करुणा के अनुसार, और जैसे तू मिस्र से लेकर यहां तक क्षमा करता रहा है वैसे ही अब भी क्षमा कर दे। २० यहोवा ने कहा, तेरी विनती के अनुसार मैं क्षमा करता हूं; २१ परन्तु मेरे जीवन की शपथ सचमुच सारी पृथ्वी यहोवा की महिमा से परिपूर्ण हो जाएगी; २२ उन सब लोगों ने जिन्हों ने मेरी महिमा मिस्र देश में और जंगल में देखी, और मेरे किए हुए आश्चर्यकर्मों को देखने पर भी दस बार मेरी परीक्षा की, और मेरी बातें नहीं मानीं, २३ इसलिये जिस देश के विषय में ने उनके पूर्वजों से शपथ खाई, उसको वे कभी देखने न पाएंगे; अर्थात् जितनों ने मेरा अपमान किया है उन में से कोई भी उसे देखने न पाएगा। २४ परन्तु इस कारण से कि मेरे दास कालिब के साथ और ही आत्मा है, और उस ने पूरी रीति से मेरा अनुकरण किया है, मैं उसको उस देश में जिस में वह हो आया है पहुंचाऊंगा, और

उसका वंश उस देश का अधिकारी होगा। २५ अमालेकी और कनानी लोग तराई में रहते हैं, सो कल तुम घूमकर प्रस्थान करो, और लाल समुद्र के मार्ग से जंगल में जाओ॥

२६ फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, २७ यह बुरी मण्डली मुझ पर बुड़बुड़ाती रहती है, उसको मैं कब तक सहता रहूं? इस्राएली जो मुझ पर बुड़बुड़ाते रहते हैं, उनका यह बुड़बुड़ाना मैं ने तो सुना है। २८ सो उन से कह, कि यहोवा की यह वाणी है, कि मेरे जीवन की शपथ जो बातें तुम ने मेरे सुनते कही हैं, निःसन्देह मैं उसी के अनुसार तुम्हारे साथ व्यवहार करूंगा। २९ तुम्हारी लोथें इसी जंगल में पड़ी रहेंगी; और तुम सब में से बीस वर्ष की वा उस से अधिक अवस्था के जितने गिने गए थे, और मुझ पर बुड़बुड़ाते थे, ३० उन में से यपुन्ने के पुत्र कालिब और नून के पुत्र यहोशू को छोड़ कोई भी उस देश में न जाने पाएगा, जिसके विषय मैं ने शपथ खाई* है कि तुम को उस में बसाऊंगा। ३१ परन्तु तुम्हारे बालबच्चे जिनके विषय तुम ने कहा है, कि ये लूट में चले जाएंगे, उनको मैं उस देश में पहुंचा दूंगा; और वे उस देश को जान लेंगे जिसको तुम ने तुच्छ जाना है। ३२ परन्तु तुम लोगों की लोथें इसी जंगल में पड़ी रहेंगी। ३३ और जब तक तुम्हारी लोथें जंगल में न गल जाएं तब तक, अर्थात् चालीस वर्ष तक, तुम्हारे बालबच्चे जंगल में तुम्हारे व्यभिचार का फल भोगते हुए चरवाही करते रहेंगे। ३४ जितने दिन तुम उस देश का भेद लेते रहे, अर्थात् चालीस दिन, उनकी गिनती के अनुसार, दिन पीछे एक वर्ष, अर्थात् चालीस वर्ष तक तुम अपने अधर्म का दण्ड उठाए रहोगे, तब तुम जान लोगे कि मेरा विरोध क्या है। ३५ मैं यहोवा यह कह चुका हूं, कि इस बुरी मण्डली के लोग जो मेरे विरुद्ध इकट्ठे हुए हैं इसी जंगल में मर मिटेंगे; और निःसन्देह ऐसा ही करूंगा भी। ३६ तब जिन पुरुषों को मूसा ने उस देश के भेद लेने के लिये भेजा था, और उन्हों ने लौटकर उस देश की नामधराई करके सारी मण्डली को कुड़कुड़ाने के लिये उभारा था, ३७ उस देश की वे नामधराई करनेवाले पुरुष यहोवा के मारने से उसके साम्हने मर गये। ३८ परन्तु देश के भेद लेनेवाले पुरुषों में से नून का पुत्र यहोशू और यपुन्ने का पुत्र कालिब दोनों जीवित रहे। ३९ तब मूसा ने ये बातें सब इस्राएलियों को कह सुनाईं और वे बहुत विलाप करने लगे। ४० और वे बिहान को सवेरे उठकर यह कहते हुए पहाड़ की चोटी पर चढ़ने लगे, कि हम ने पाप किया है; परन्तु अब तैयार हैं, और उस स्थान को जाएंगे जिसके विषय यहोवा ने वचन दिया था। ४१ तब मूसा ने कहा, तुम यहोवा की आज्ञा का उल्लंघन क्यों करते हो? यह सुफल न होगा। ४२ यहोवा तुम्हारे मध्य में नहीं है, मत चढ़ो, नहीं तो शत्रुओं से हार जाओगे। ४३ वहां तुम्हारे आगे अमालेकी और कनानी लोग हैं, सो तुम तलवार से मारे जाओगे; तुम यहोवा को छोड़कर फिर गए हो, इसलिये वह तुम्हारे संग नहीं रहेगा। ४४ परन्तु वे ढिठाई करके पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए, परन्तु यहोवा की वाचा का सन्दूक, और मूसा, छावनी से न हटे। ४५ तब अमालेकी और कनानी जो उस पहाड़ पर रहते थे उन

* मूल में—हाथ उठाया।

पर चढ़ आए, और होर्मा तक उनको मारते चले आए ॥

(अन्नबलियों और अर्घों की विधि)

१५ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ इस्राएलियों से कह, कि जब तुम अपने निवास के देश में पहुंचो, जो मैं तुम्हें देता हूं, ३ और यहोवा के लिये क्या होमबलि, क्या मेलबलि, कोई हव्य चढ़ावो, चाहे वह विशेष मन्नत पूरी करने का हो चाहे स्वेच्छाबलि का हो, चाहे तुम्हारे नियत समयों में का हो, या वह चाहे गाय-बैल चाहे भेड़-बकरियों में का हो, जिस से यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्ध हो; ४ तब उस होमबलि वा मेलबलि के संग भेड़ के बच्चे पीछे यहोवा के लिये चौथाई हिन तेल से सना हुआ एपा का दसवां अंश मैदा अन्नबलि करके चढ़ाना, ५ और चौथाई हिन दाखमधु अर्घ करके देना। ६ और मेढ़े पीछे तिहाई हिन तेल से सना हुआ एपा का दो दसवां अंश मैदा अन्नबलि करके चढ़ाना; ७ और उसका अर्घ यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला तिहाई हिन दाखमधु देना। ८ और जब तू यहोवा को होमबलि वा किसी विशेष मन्नत पूरी करने के लिये बलि वा मेलबलि करके बछड़ा चढ़ाए, ९ तब बछड़े का चढ़ानेवाला उसके संग आध हिन तेल से सना हुआ एपा का तीन दसवां अंश मैदा अन्नबलि करके चढ़ाए। १० और उसका अर्घ आध हिन दाखमधु चढ़ाए, वह यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला हव्य होगा। ११ एक एक बछड़े, वा मेढ़े, वा भेड़ के बच्चे, वा बकरी के बच्चे के साथ इसी रीति चढ़ावा चढ़ाया जाए। १२ तुम्हारे बलिपशुओं की जितनी गिनती हो, उसी गिनती के अनुसार एक एक के साथ ऐसा ही किया करना। १३ जितने देशी हों वे यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला हव्य चढ़ाते समय ये काम इसी रीति से किया करें। १४ और यदि कोई परदेशी तुम्हारे संग रहता हो, वा तुम्हारी किसी पीढ़ी में तुम्हारे बीच कोई रहनेवाला हो, और वह यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला हव्य चढ़ाना चाहे, तो जिस प्रकार तुम करोगे उसी प्रकार वह भी करे। १५ मण्डली के लिये, अर्थात् तुम्हारे और तुम्हारे संग रहनेवाले परदेशी दोनों के लिये एक ही विधि हो; तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में यह सदा की विधि ठहरे, कि जैसे तुम हो वैसे ही परदेशी भी यहोवा के लिये ठहरता है। १६ तुम्हारे और तुम्हारे संग रहनेवाले परदेशियों के लिये एक ही व्यवस्था और एक ही नियम है ॥

१७ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १८ इस्राएलियों को मेरा यह वचन सुना, कि जब तुम उस देश में पहुंचो जहां मैं तुम को लिये जाता हूं, १९ और उस देश की उपज का अन्न खाओ, तब यहोवा के लिये उठाई हुई भेंट चढ़ाया करो। २० अपने पहिले गूंधे हुए आटे की एक पपड़ी उठाई हुई भेंट करके यहोवा के लिये चढ़ाना; जैसे तुम खलिहान में से उठाई हुई भेंट चढ़ाओगे वैसे ही उसको भी उठाया करना। २१ अपनी पीढ़ी पीढ़ी में अपने पहिले गूंधे हुए आटे में से यहोवा को उठाई हुई भेंट दिया करना ॥

(अनजाने और जान बूझ के किए हुए पापों का भेद)

२२ फिर जब तुम इन सब आज्ञाओं में से जिन्हें यहोवा ने मूसा को दिया है किसी का उल्लंघन भूल से करो, २३ अर्थात्

जिस दिन से यहोवा आज्ञा देने लगा, और आगे की तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में उस दिन से उस ने जितनी आज्ञाएं मूसा के द्वारा दी हैं, २४ उस में यदि भूल से किया हुआ पाप मण्डली के बिना जाने हुआ हो, तो सारी मण्डली यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला होमबलि करके एक बछड़ा, और उसके संग नियम के अनुसार उसका अन्नबलि और अर्घ चढ़ाए, और पापबलि करके एक बकरा चढ़ाए। २५ तब याजक इस्राएलियों की सारी मण्डली के लिये प्रायश्चित्त करे, और उनकी क्षमा की जाएगी; क्योंकि उनका पाप भूल से हुआ, और उन्हों ने अपनी भूल के लिये अपना चढ़ावा, अर्थात् यहोवा के लिये हव्य और अपना पापबलि उसके साम्हने चढ़ाया। २६ सो इस्राएलियों की सारी मण्डली का, और उसके बीच रहनेवाले परदेशी का भी, वह पाप क्षमा किया जाएगा, क्योंकि वह सब लोगों के अनजान में हुआ। २७ फिर यदि कोई प्राणी भूल से पाप करे, तो वह एक वर्ष की एक बकरी पापबलि करके चढ़ाए। २८ और याजक भूल से पाप करनेवाले प्राणी के लिये यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करे; सो इस प्रायश्चित्त के कारण उसका वह पाप क्षमा किया जाएगा। २९ जो कोई भूल से कुछ करे, चाहे वह इस्राएलियों में देशी हो, चाहे तुम्हारे बीच परदेशी होकर रहता हो, सब के लिये तुम्हारी एक ही व्यवस्था हो। ३० परन्तु क्या देशी क्या परदेशी, जो प्राणी ढिठाई से कुछ करे, वह यहोवा का अनादर करनेवाला ठहरेगा, और वह प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाए। ३१ वह जो यहोवा का वचन तुच्छ जानता है, और उसकी आज्ञा का टालनेवाला है, इसलिये वह प्राणी निश्चय नाश किया जाए; उसका अधर्म उसी के सिर पड़ेगा॥

३२ जब इस्राएली जंगल में रहते थे, उन दिनों एक मनुष्य विश्राम के दिन लकड़ी बीनता हुआ मिला। ३३ और जिनको वह लकड़ी बीनता हुआ मिला, वे उसको मूसा और हारून, और सारी मण्डली के पास ले गए। ३४ उन्हों ने उसको हवालात में रखा, क्योंकि ऐसे मनुष्य से क्या करना चाहिये वह प्रकट नहीं किया गया था। ३५ तब यहोवा ने मूसा से कहा, वह मनुष्य निश्चय मार डाला जाए; सारी मण्डली के लोग छावनी के बाहर उस पर पत्थरवाह करें। ३६ सो जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी उसी के अनुसार सारी मण्डली के लोगों ने उसको छावनी से बाहर ले जाकर पत्थरवाह किया, और वह मर गया॥

३७ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, ३८ इस्राएलियों से कह, कि अपनी पीढ़ी पीढ़ी में अपने वस्त्रों के कोर पर झालर लगाया करना, और एक एक कोर की झालर पर एक नीला फीता लगाया करना; ३९ और वह तुम्हारे लिये ऐसी झालर ठहरे, जिस से जब जब तुम उसे देखो तब तब यहोवा की सारी आज्ञाएं तुम को स्मरण आ जाएं; और तुम उनका पालन करो, और तुम अपने अपने मन और अपनी अपनी दृष्टि के वश में होकर व्यभिचार न करते फिरो जैसे करते आए हो। ४० परन्तु तुम यहोवा की सब आज्ञाओं को स्मरण करके उनका पालन करो, और अपने परमेश्वर के लिये पवित्र बनो। ४१ मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूं, जो तुम्हें मिस्र देश से निकाल ले आया कि तुम्हारा परमेश्वर ठहरूं; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं॥

(कोरह दातान और अबीराम का मचाया हुआ बलवा)

१६ कोरह जो लेवी का परपोता, कहात का पोता, और यिसहार का पुत्र था, वह एलीआब के पुत्र दातान और अबीराम, और पेलेत के पुत्र ओन, २ इन तीनों रूबेनियों से मिलकर मण्डली के अढ़ाई सौ प्रधान, जो सभासद और नामी थे, उनको संग लिया; ३ और वे मूसा और हारून के विरुद्ध उठ खड़े हुए, और उन से कहने लगे, तुम ने बहुत किया, अब बस करो; क्योंकि सारी मण्डली का एक एक मनुष्य पवित्र है, और यहोवा उनके मध्य में रहता है; इसलिये तुम यहोवा की मण्डली में ऊंचे पदवाले क्यों बन बैठे हो? ४ यह सुनकर मूसा अपने मुंह के बल गिरा; ५ फिर उस ने कोरह और उसकी सारी मण्डली से कहा, कि बिहान को यहोवा दिखला देगा कि उसका कौन है, और पवित्र कौन है, और उसको अपने समीप बुला लेगा; जिसको वह आप चुन लेगा उसी को अपने समीप बुला भी लेगा। ६ इसलिये, हे कोरह, तुम अपनी सारी मण्डली समेत यह करो, अर्थात् अपना अपना धूपदान ठीक करो; ७ और कल उन में आग रखकर यहोवा के साम्हने धूप देना, तब जिसको यहोवा चुन ले वही पवित्र ठहरेगा। हे लेवियो, तुम भी बड़ी बड़ी बातें करते हो, अब बस करो। ८ फिर मूसा ने कोरह से कहा, हे लेवियो, सुनो, ९ क्या यह तुम्हें छोटी बात जान पड़ती है, कि इस्राएल के परमेश्वर ने तुम को इस्राएल की मण्डली से अलग करके अपने निवास की सेवकाई करने, और मण्डली के साम्हने खड़े होकर उसकी भी सेवा टहल करने के लिये अपने समीप बुला लिया है; १० और तुझे और तेरे सब लेवी भाइयों को भी अपने समीप बुला लिया है? फिर भी तुम याजक पद के भी खोजी हो? ११ और इस कारण तू ने अपनी सारी मण्डली को यहोवा के विरुद्ध इकट्ठी किया है; हारून कौन है कि तुम उस पर बुड़बुड़ाते हो? १२ फिर मूसा ने एलीआब के पुत्र दातान और अबीराम को बुलवा भेजा; और उन्हों ने कहा, हम तेरे पास नहीं आएंगे। १३ क्या यह एक छोटी बात है, कि तू हम को ऐसे देश से जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं इसलिये निकाल लाया है, कि हमें जंगल में मार डाले, फिर क्या तू हमारे ऊपर प्रधान भी बनकर अधिकार जताता है? १४ फिर तू हमें ऐसे देश में जहां दूध और मधु की धाराएं बहती हैं नहीं पहुंचाया, और न हमें खेतों और दाख की बारियों के अधिकारी किया। क्या तू इन लोगों की आंखों में धूलि* डालेगा? हम तो नहीं आएंगे। १५ तब मूसा का कोप बहुत भड़क उठा, और उस ने यहोवा से कहा, उन लोगों की भेंट की ओर दृष्टि न कर। मैं ने तो उन से एक गदहा नहीं लिया, और न उन में से किसी की हानि की है। १६ तब मूसा ने कोरह से कहा, कल तू अपनी सारी मण्डली को साथ लेकर हारून के साथ यहोवा के साम्हने हाज़िर होना; १७ और तुम सब अपना अपना धूपदान लेकर उन में धूप देना, फिर अपना अपना धूपदान जो सब समेत अढ़ाई सौ होंगे यहोवा के साम्हने ले जाना; विशेष करके तू और हारून अपना अपना धूपदान ले जाना। १८ सो उन्हों ने अपना अपना धूपदान लेकर और उन में आग रखकर उन पर धूप डाला; और मूसा

---

* मूल में—आंखें फोड़।

और हारून के साथ मिलापवाले तम्बू के द्वार पर खड़े हुए। १६ और कोरह ने सारी मण्डली को उनके विरुद्ध मिलापवाले तम्बू के द्वार पर इकट्ठा कर लिया। तब यहोवा का तेज सारी मण्डली को दिखाई दिया॥

२० तब यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, २१ उस मण्डली के बीच में से अलग हो जाओ। कि मैं उन्हें पल भर में भस्म कर डालूं। २२ तब वे मुंह के बल गिरके कहने लगे, हे ईश्वर, हे सब प्राणियों के आत्माओं के परमेश्वर, क्या एक पुरुष के पाप के कारण तेरा क्रोध सारी मण्डली पर होगा? २३ यहोवा ने मूसा से कहा, २४ मण्डली के लोगों से कह, कि कोरह, दातान, और अबीराम के तम्बुओं के आसपास से हट जाओ। २५ तब मूसा उठकर दातान और अबीराम के पास गया; और इस्राएलियों के वृद्ध लोग उसके पीछे पीछे गए। २६ और उस ने मण्डली के लोगों से कहा, तुम उन दुष्ट मनुष्यों के डेरों के पास से हट जाओ, और उनकी कोई वस्तु न छूओ, कहीं ऐसा न हो कि तुम भी उनके सब पापों में फंसकर मिट जाओ। २७ यह सुन वे कोरह, दातान, और अबीराम के तम्बुओं के आसपास से हट गए; परन्तु दातान और अबीराम निकलकर अपनी पत्नियों, बेटों, और बालबच्चों समेत अपने अपने डेरे के द्वार पर खड़े हुए। २८ तब मूसा ने कहा, इस से तुम जान लोगे कि यहोवा ने मुझे भेजा है कि यह सब काम करूं, क्योंकि मैं ने अपनी इच्छा से कुछ नहीं किया। २९ यदि उन मनुष्यों की मृत्यु और सब मनुष्यों के समान हो, और उनका दण्ड सब मनुष्यों के समान हो, तब जानो कि मैं यहोवा का भेजा हुआ नहीं हूं। ३० परन्तु यदि यहोवा अपनी अनोखी शक्ति प्रकट करे, * और पृथ्वी अपना मुंह पसारकर उनको, और उनका सब कुछ निगल जाए, और वे जीते जी अधोलोक में जा पड़ें, तो तुम समझ लो कि इन मनुष्यों ने यहोवा का अपमान किया है। ३१ वह ये सब बातें कह ही चुका था, कि भूमि उन लोगों के पांव के नीचे फट गई; ३२ और पृथ्वी ने अपना मुंह खोल दिया और उनका, और उनका घरद्वार का सामान, और कोरह के सब मनुष्यों और उनकी सारी सम्पत्ति को भी निगल लिया। ३३ और वे और उनका सारा घरबार जीवित ही अधोलोक में जा पड़े; और पृथ्वी ने उनको ढांप लिया, और वे मण्डली के बीच में से नष्ट हो गए। ३४ और जितने इस्राएली उनके चारों ओर थे वे उनका चिल्लाना सुन यह कहते हुए भागे, कि कहीं पृथ्वी हम को भी निगल न ले! ३५ तब यहोवा के पास से आग निकली, और उन अढ़ाई सौ धूप चढ़ानेवालों को भस्म कर डाला॥

३६ तब यहोवा ने मूसा से कहा, ३७ हारून याजक के पुत्र एलीआज़ार से कह, कि उन धूपदानों को आग में से उठा ले; और आग के अंगारों को उधर ही छितरा दे, क्योंकि वे पवित्र हैं। ३८ जिन्हों ने पाप करके अपने ही प्राणों की हानि की है, उनके धूपदानों के पत्तर पीट पीटकर बनाए जाएं जिस से कि वह वेदी के मढ़ने के काम आवे; क्योंकि उन्हों ने यहोवा के साम्हने रखा था; इस से वे पवित्र हैं। इस प्रकार वह इस्राएलियों के लिये एक निशान ठहरेगा।

* मूल में—यहोवा सृष्टि सिरजे।

३६ सो एलीआज़र याजक ने उन पीतल के धूपदानों को, जिन में उन जले हुए मनुष्यों ने धूप चढ़ाया था, लेकर उनके पत्तर पीटकर वेदी के मढ़ने के लिये बनवा दिए, ४० कि इस्राएलियों को इस बात का स्मरण रहे, कि कोई दूसरा, जो हारून के वंश का न हो, यहोवा के साम्हने धूप चढ़ाने को समीप न जाए, ऐसा न हो कि वह भी कोरह और उसकी मण्डली के समान नष्ट हो जाए, जैसे कि यहोवा ने मूसा के द्वारा उसको आज्ञा दी थी ॥

४१ दूसरे दिन इस्राएलियों की सारी मण्डली यह कहकर मूसा और हारून पर बुड़बुड़ाने लगी, कि यहोवा की प्रजा को तुम ने मार डाला है। ४२ और जब मण्डली के लोग मूसा और हारून के विरुद्ध इकट्ठे हो रहे थे, तब उन्हों ने मिलापवाले तम्बू की ओर दृष्टि की; और देखा, कि बादल ने उसे छा लिया है, और यहोवा का तेज दिखाई दे रहा है। ४३ तब मूसा और हारून मिलापवाले तम्बू के साम्हने आए, ४४ तब यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, ४५ तुम उस मण्डली के लोगों के बीच से हट जाओ, कि मैं उन्हें पल भर में भस्म कर डालूं। तब वे मुंह के बल गिरे। ४६ और मूसा ने हारून से कहा, धूपदान को लेकर उस में वेदी पर से आग रखकर उस पर धूप डाल, मण्डली के पास फुरती से जाकर उसके लिये प्रायश्चित्त कर; क्योंकि यहोवा का कोप अत्यन्त भड़का है,* और मरी फैलने लगी है। ४७ मूसा की आज्ञा के अनुसार हारून धूपदान लेकर मण्डली के बीच में दौड़ा गया; और यह देखकर कि लोगों में मरी फैलने लगी है, उस ने धूप जलाकर लोगों के लिये प्रायश्चित्त किया। ४८ और वह मुर्दों और जीवित के मध्य में खड़ा हुआ; तब मरी थम गई। ४९ और जो कोरह के सङ्ग भागी होकर मर गए थे, उन्हें छोड़ जो लोग इस मरी से मर गए वे चौदह हज़ार सात सौ थे। ५० तब हारून मिलापवाले तम्बू के द्वार पर मूसा के पास लौट गया, और मरी थम गई ॥

* मूल में—यहोवा के सम्मुख से क्रोध निकला है।

(याजकों और लेवियों की मर्यादा और कर्तव्य कर्म)

१७ तब यहोवा ने मूसा से कहा, २ इस्राएलियों से बातें करके उनके पूर्वजों के घरानों के अनुसार, उनके सब प्रधानों के पास से एक एक छड़ी ले; और उन बारह छड़ियों में से एक एक पर एक एक के मूल पुरुष का नाम लिख, ३ और लेवियों की छड़ी पर हारून का नाम लिख। क्योंकि इस्राएलियों के पूर्वजों के घरानों के एक एक मुख्य पुरुष की एक एक छड़ी होगी। ४ और उन छड़ियों को मिलापवाले तम्बू में साक्षीपत्र के आगे, जहां मैं तुम लोगों से मिला करता हूं, रख दे। ५ और जिस पुरुष को मैं चुनूंगा उसकी छड़ी में कलियां फूट निकलेंगी; और इस्राएली जो तुम पर बुड़बुड़ाते रहते हैं, वह बुड़बुड़ाना मैं अपने ऊपर से दूर करूंगा। ६ सो मूसा ने इस्राएलियों से यह बात कही; और उनके सब प्रधानों ने अपने अपने लिये, अपने अपने पूर्वजों के घरानों के अनुसार, एक एक छड़ी उसे दी, सो बारह छड़ियां हुईं; और उनकी छड़ियों में हारून की भी छड़ी थी। ७ उन छड़ियों को मूसा ने साक्षीपत्र के तम्बू में यहोवा के साम्हने रख दिया। ८ दूसरे दिन मूसा साक्षीपत्र के तम्बू में गया; तो क्या देखा, कि हारून की छड़ी जो लेवी के

घराने के लिये थी उस में कलियां फूट निकली, अर्थात् उस में कलियां लगीं, और फूल भी फूले, और पके बादाम भी लगे हैं। ६ सो मूसा उन सब छड़ियों को यहोवा के साम्हने से निकालकर सब इस्राएलियों के पास ले गया; और उन्हों ने अपनी अपनी छड़ी पहिचानकर ले ली। १० फिर यहोवा ने मूसा से कहा, हारून की छड़ी को साक्षीपत्र के साम्हने फिर धर दे, कि यह उन दंगा करनेवालों के लिये एक निशान बनकर रखी रहे, कि तू उनका बुड़बुड़ाना जो मेरे विरुद्ध होता रहता है भविष्य में रोक रखे, ऐसा न हो कि वे मर जाएं। ११ और मूसा ने यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार ही किया॥

१२ तब इस्राएली मूसा से कहने लगे, देख, हमारे प्राण निकला चाहते हैं, हम नष्ट हुए, हम सब के सब नष्ट हुए जाते हैं। १३ जो कोई यहोवा के निवास के समीप जाता है वह मारा जाता है। तो क्या हम सब के सब मर ही जाएंगे॥

१८ फिर यहोवा ने हारून से कहा, कि पवित्रस्थान के अधर्म का भार तुझ पर, और तेरे पुत्रों और तेरे पिता के घराने पर होगा; और तुम्हारा याजक कर्म के अधर्म का भार भी तेरे पुत्रों पर होगा। २ और लेवी का गोत्र, अर्थात् तेरे मूलपुरुष के गोत्रवाले जो तेरे भाई हैं, उनको भी अपने साथ ले आया कर, और वे तुझ से मिल जाएं, और तेरी सेवा टहल किया करें, परन्तु साक्षीपत्र के तम्बू के साम्हने तू और तेरे पुत्र ही आया करें। ३ जो तुझे सौंपा गया है उसकी और सारे तम्बू की भी वे रक्षा किया करें; परन्तु पवित्रस्थान के पात्रों के और वेदी के समीप न आएं, ऐसा न हो कि वे और तुम लोग भी मर जाओ। ४ सो वे तुझ से मिल जाएं, और मिलापवाले तम्बू की सारी सेवकाई की वस्तुओं की रक्षा किया करें; परन्तु जो तेरे कुल का न हो वह तुम लोगों के समीप न आने पाए। ५ और पवित्रस्थान और वेदी की रखवाली तुम ही किया करो, जिस से इस्राएलियों पर फिर कोप न भड़के। ६ परन्तु मैं ने आप तुम्हारे लेवी भाइयों को इस्राएलियों के बीच से अलग कर लिया है, और वे मिलापवाले तम्बू की सेवा करने के लिये तुम को और यहोवा को सौंप दिये गए हैं। ७ पर वेदी की और बीचवाले पर्दे के भीतर की बातों की सेवकाई के लिये तू और तेरे पुत्र अपने याजकपद की रक्षा करना, और तुम ही सेवा किया करना; क्योंकि मैं तुम्हें याजकपद की सेवकाई दान करता हूं; और जो तेरे कुल का न हो वह यदि समीप आए तो मार डाला जाए॥

८ फिर यहोवा ने हारून से कहा, सुन, मैं ने तुझ को उठाई हुई भेंटें सौंप देता हूं, अर्थात् इस्राएलियों की पवित्र की हुई वस्तुएं; जितनी हों उन्हें मैं तेरा अभिषेकवाला भाग ठहराकर तुझे और तेरे पुत्रों को सदा का हक़ करके दे देता हूं। ६ जो परमपवित्र वस्तुएं आग में होम न की जाएंगी वे तेरी ही ठहरें, अर्थात् इस्राएलियों के सब चढ़ावों में से उनके सब अन्नबलि, सब पापबलि, और सब दोषबलि, जो वे मुझ को दें, वह तेरे और तेरे पुत्रों के लिये परमपवित्र ठहरें। १० उनको परमपवित्र वस्तु जानकर खाया करना; उनको हर एक पुरुष खा सकता है; वे तेरे लिये पवित्र हैं। ११ फिर ये वस्तुएं भी तेरी ठहरें, अर्थात् जितनी भेंटें इस्राएली हिलाने के लिये दें, उनको मैं तुझे और तेरे बेटे-बेटियों को सदा

का हक़ करके दे देता हूं; तेरे घराने में जितने शुद्ध हों वह उन्हें खा सकेंगे। १२ फिर उत्तम से उत्तम ताजा तेल, और उत्तम से उत्तम नया दाखमधु, और गेहूं, अर्थात् इनकी पहली उपज जो वे यहोवा को दें, वह मैं तुझ को देता हूं। १३ उनके देश के सब प्रकार की पहली उपज, जो वे यहोवा के लिये ले आएं, वह तेरी ही ठहरे; तेरे घराने में जितने शुद्ध हों वे उन्हें खा सकेंगे। १४ इस्राएलियों में जो कुछ अर्पण किया जाए वह भी तेरा ही ठहरे। १५ सब प्राणियों में से जितने अपनी अपनी मां के पहिलौठे हों, जिन्हें लोग यहोवा के लिये चढ़ाएं, चाहे मनुष्य के चाहे पशु के पहिलौठे हों, वे सब तेरे ही ठहरें; परन्तु मनुष्यों और अशुद्ध पशुओं के पहिलौठों को दाम लेकर छोड़ देना। १६ और जिन्हें छुड़ाना हो, जब वे महीने भर के हों तब उनके लिये अपने ठहराए हुए मोल के अनुसार, अर्थात् पवित्रस्थान के बीस गेरा के शेकेल के हिसाब से पांच शेकेल लेके उन्हें छोड़ना। १७ पर गाय, वा भेड़ी, वा बकरी के पहिलौठे को न छोड़ना; वे तो पवित्र हैं। उनके लोहू को वेदी पर छिड़क देना, और उनकी चरबी को हव्य करके जलाना, जिस से यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्ध हो; १८ परन्तु उनका मांस तेरा ठहरे, और हिलाई हुई छाती, और दहिनी जांघ भी तेरा ही ठहरे। १९ पवित्र वस्तुओं की जितनी भेंटें इस्राएली यहोवा को दें, उन सभों को मैं तुझे और तेरे बेटे-बेटियों को सदा का हक़ करके दे देता हूं: यह तो तेरे और तेरे वंश के लिये यहोवा की * सदा के लिये नमक की अटल वाचा है। २० फिर यहोवा ने हारून से कहा, इस्राएलियों के देश में तेरा कोई भाग न होगा, और न उनके बीच तेरा कोई अंश होगा; उनके बीच तेरा भाग और तेरा अंश मैं ही हूं॥

२१ फिर मिलापवाले तम्बू की जो सेवा लेवी करते हैं उसके बदले मैं उनको इस्राएलियों का सब दशमांश उनका निज भाग कर देता हूं। २२ और भविष्य में इस्राएली मिलापवाले तम्बू के समीप न आएं, ऐसा न हो कि उनके सिर पर पाप लगे, और वे मर जाएं। २३ परन्तु लेवी मिलापवाले तम्बू की सेवा किया करें, और उनके अधर्म का भार वे ही उठाया करें; यह तुम्हारी पीढ़ियों में सदा की विधि ठहरे; और इस्राएलियों के बीच उनका कोई निज भाग न होगा। २४ क्योंकि इस्राएली जो दशमांश यहोवा को उठाई हुई भेंट करके देंगे, उसे मैं लेवियों को निज भाग करके देता हूं, इसीलिये मैं ने उनके विषय में कहा है, कि इस्राएलियों के बीच कोई भाग उनको न मिले॥

२५ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २६ तू लेवियों से कह, कि जब जब तुम इस्राएलियों के हाथ से वह दशमांश लो जिसे यहोवा तुम को तुम्हारा निज भाग करके उन से दिलाता है, तब तब उस में से यहोवा के लिये एक उठाई हुई भेंट करके दशमांश का दशमांश देना। २७ और तुम्हारी उठाई हुई भेंट तुम्हारे हित के लिये ऐसी गिनी जाएगी जैसा खलिहान में का अन्न, वा रसकुण्ड में का दाखरस गिना जाता है। २८ इस रीति तुम भी अपने सब दशमांशों में से, जो इस्राएलियों की ओर से पाओगे, यहोवा को एक उठाई हुई भेंट देना; और यहोवा की यह उठाई हुई भेंट हारून याजक को दिया करना। २९ जितने दान तुम पाओ उन में से हर एक का उत्तम से

* मूल में—के साम्हने।

उत्तम भाग, जो पवित्र ठहरा है, सो उसे यहोवा के लिये उठाई हुई भेंट करके पूरी पूरी देना। ३० इसलिये तू लेवियों से कह, कि जब तुम उस में का उत्तम से उत्तम भाग उठाकर दो, तब यह तुम्हारे लिये खलिहान में के अन्न, और रसकुण्ड के रस के तुल्य गिना जाएगा; ३१ और उसको तुम अपने घरानों समेत सब स्थानों में खा सकते हो, क्योंकि मिलापवाले तम्बू की जो सेवा तुम करोगे उसका बदला यही ठहरा है। ३२ और जब तुम उसका उत्तम से उत्तम भाग उठाकर दो तब उसके कारण तुम को पाप न लगेगा। परन्तु इस्राएलियों की पवित्र की हुई वस्तुओं को अपवित्र न करना, ऐसा न हो कि तुम मर जाओ॥

(लोथ आदि को स्पर्शजन्य अशुद्धता के निवारण का उपाय)

१९ फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, २ व्यवस्था की जिस विधि की आज्ञा यहोवा देता है वह यह है; कि तू इस्राएलियों से कह, कि मेरे पास एक लाल निर्दोष बछिया ले आओ, जिस में कोई भी दोष न हो, और जिस पर जूआ कभी न रखा गया हो। ३ तब उसे एलीआजर याजक को दो, और वह उसे छावनी से बाहर ले जाए, और कोई उसको उसके साम्हने बलिदान करे; ४ तब एलीआजर याजक अपनी उंगली से उसका कुछ लोहू लेकर मिलापवाले तम्बू के साम्हने की ओर सात बार छिड़क दे। ५ तब कोई उस बछिया को खाल, मांस, लोहू, और गोबर समेत उसके साम्हने जलाए; ६ और याजक देवदारु की लकड़ी, जूफा, और लाल रङ्ग का कपड़ा लेकर उस आग में जिस में बछिया जलती हो डाल दे। ७ तब वह अपने वस्त्र धोए और स्नान करे, इसके बाद छावनी में तो आए, परन्तु सांझ तक अशुद्ध रहे। ८ और जो मनुष्य उसको जलाए वह भी जल से अपने वस्त्र धोए और स्नान करे, और सांझ तक अशुद्ध रहे। ९ फिर कोई शुद्ध पुरुष उस बछिया की राख बटोरकर छावनी के बाहर किसी शुद्ध स्थान में रख छोड़े; और वह राख इस्राएलियों की मण्डली के लिये अशुद्धता से छुड़ानेवाले जल के लिये रखी रहे; वह तो पापबलि है। १० और जो मनुष्य बछिया की राख बटोरे वह अपने वस्त्र धोए, और सांझ तक अशुद्ध रहे। और यह इस्राएलियों के लिये, और उनके बीच रहनेवाले परदेशियों के लिये भी सदा की विधि ठहरे। ११ जो किसी मनुष्य की लोथ छूए वह सात दिन तक अशुद्ध रहे; १२ ऐसा मनुष्य तीसरे दिन उस जल से पाप छुड़ाकर अपने को पावन करे, और सातवें दिन शुद्ध ठहरे; परन्तु यदि वह तीसरे दिन आप को पाप छुड़ाकर पावन न करे, तो सातवें दिन शुद्ध न ठहरेगा। १३ जो कोई किसी मनुष्य की लोथ छूकर पाप छुड़ाकर अपने को पावन न करे, वह यहोवा के निवासस्थान का अशुद्ध करनेवाला ठहरेगा, और वह प्राणी इस्राएल में से नाश किया जाए; अशुद्धता से छुड़ानेवाला जल उस पर न छिड़का गया, इस कारण वह अशुद्ध ठहरेगा, उसकी अशुद्धता उस में बनी रहेगी। १४ यदि कोई मनुष्य डेरे में मर जाए तो व्यवस्था यह है, कि जितने उस डेरे में रहें, वा उस में जाएं, वे सब सात दिन तक अशुद्ध रहें। १५ और हर एक खुला हुआ पात्र, जिस पर कोई ढकना लगा न हो, वह अशुद्ध ठहरे। १६ और जो कोई मैदान में तलवार से मारे हुए को, वा अपनी मृत्यु से मरे हुए को, वा मनुष्य की हड्डी को,

वा किसी कब्र को छूए, तो सात दिन तक अशुद्ध रहे। १७ अशुद्ध मनुष्य के लिये जलाए हुए पापबलि की राख में से कुछ लेकर पात्र में डालकर उस पर सोते का जल डाला जाए; १८ तब कोई शुद्ध मनुष्य जूफा लेकर उस जल में डुबाकर जल को उस डेरे पर, और जितने पात्र और मनुष्य उस में हों, उन पर छिड़के, और हड्डी के, वा मारे हुए के, वा अपनी मृत्यु से मरे हुए के, वा कब्र के छूनेवाले पर छिड़क दे; १९ वह शुद्ध पुरुष तीसरे दिन और सातवें दिन उस अशुद्ध मनुष्य पर छिड़के; और सातवें दिन वह उसके पाप छुड़ाकर उसको पावन करे, तब वह अपने वस्त्रों को धोकर और जल से स्नान करके सांझ को शुद्ध ठहरे। २० और जो कोई अशुद्ध होकर अपने पाप छुड़ाकर अपने को पावन न कराए, वह प्राणी यहोवा के पवित्र स्थान का अशुद्ध करनेवाला ठहरेगा, इस कारण वह मडणली के बीच में से नाश किया जाए; अशुद्धता से छुड़ानेवाला जल उस पर न छिड़का गया, इस कारण वह अशुद्ध ठहरेगा। २१ और यह उनके लिये सदा की विधि ठहरे। जो अशुद्धता से छुड़ानेवाला जल छिड़के वह अपने वस्त्रों को धोए; और जिस जन से अशुद्धता से छुड़ानेवाला जल छू जाए वह भी सांझ तक अशुद्ध रहे। २२ और जो कुछ वह अशुद्ध मनुष्य छूए वह भी अशुद्ध ठहरे; और जो प्राणी उस वस्तु को छूए वह भी सांझ तक अशुद्ध रहे॥

(मूसा और हारून का पाप और उस पाप का दण्ड)

२० पहिले महीने में सारी इस्राएली मण्डली के लोग सीनै नाम जंगल में आ गए, और कादेश में रहने लगे; और वहां मरियम मर गई, और वहीं उसको मिट्टी दी गई। २ वहां मण्डली के लोगों के लिये पानी न मिला; सो वे मूसा और हारून के विरुद्ध इकट्ठे हुए। ३ और लोग यह कहकर मूसा से झगड़ने लगे, कि भला होता कि हम उस समय ही मर गए होते जब हमारे भाई यहोवा के साम्हने मर गए! ४ और तुम यहोवा की मण्डली को इस जंगल में क्यों ले आए हो, कि हम अपने पशुओं समेत यहां मर जाएं? ५ और तुम ने हम को मिस्र से क्यों निकालकर इस बुरे स्थान में पहुंचाया है? यहां तो बीज, वा अंजीर, वा दाखलता, वा अनार, कुछ नहीं है, यहां तक कि पीने को कुछ पानी भी नहीं है। ६ तब मूसा और हारून मण्डली के साम्हने से मिलापवाले तम्बू के द्वार पर जाकर अपने मुंह के बल गिरे। और यहोवा का तेज उनको दिखाई दिया। ७ तब यहोवा ने मूसा से कहा, ८ उस लाठी को ले, और तू अपने भाई हारून समेत मण्डली को इकट्ठा करके उनके देखते उस चट्टान से बातें कर, तब वह अपना जल देगी; इस प्रकार से तू चट्टान में से उनके लिये जल निकाल कर मण्डली के लोगों और उनके पशुओं को पिला। ९ यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने उसके साम्हने से लाठी को ले लिया। १० और मूसा और हारून ने मण्डली को उस चट्टान के साम्हने इकट्ठा किया, तब मूसा ने उस से कहा, हे दंगा करनेवालो, सुनो; क्या हम को इस चट्टान में से तुम्हारे लिये जल निकालना होगा? ११ तब मूसा ने हाथ उठाकर लाठी चट्टान पर दो बार मारी; और उस में से बहुत पानी फूट निकला, और मण्डली के लोग अपने पशुओं समेत पीने लगे। १२ परन्तु मूसा और

हारून से यहोवा ने कहा, तुम ने जो मुझ पर विश्वास नहीं किया, और मुझे इस्राएलियों की दृष्टि में पवित्र नहीं ठहराया, इसलिये तुम इस मण्डली को उस देश में पहुंचाने न पाओगे जिसे मैं ने उन्हें दिया है। १३ उस सोते का नाम मरीबा पड़ा, क्योंकि इस्राएलियों ने यहोवा से झगड़ा किया था, और वह उनके बीच पवित्र ठहराया गया॥

(एदोमियों का इस्राएलियों को अपने पास होकर चलने से बरजना)

१४ फिर मूसा ने कादेश से एदोम के राजा के पास दूत भेजे, कि तेरा भाई इस्राएल यों कहता है, कि हम पर जो जो क्लेश पड़े हैं वह तू जानता होगा; १५ अर्थात् यह कि हमारे पुरखा मिस्र में गए थे, और हम मिस्र में बहुत दिन रहे; और मिस्रियों ने हमारे पुरखाओं के साथ और हमारे साथ भी बुरा बर्ताव किया; १६ परन्तु जब हम ने यहोवा की दोहाई दी तब उस ने हमारी सुनी, और एक दूत को भेजकर हमें मिस्र से निकाल ले आया है; सो अब हम कादेश नगर में हैं जो तेरे सिवाने ही पर है। १७ सो हमें अपने देश में से होकर जाने दे। हम किसी खेत वा दाख की बारी से होकर न चलेंगे, और कूओं का पानी न पीएंगे; सड़क-सड़क होकर चले जाएंगे, और जब तक तेरे देश से बाहर न हो जाएं, तब तक न दहिने न बाएं मुड़ेंगे। १८ परन्तु एदोमियों ने उसके पास कहला भेजा, कि तू मेरे देश में से होकर मत जा, नहीं तो मैं तलवार लिये हुए तेरा साम्हना करने को निकलूंगा। १९ इस्राएलियों ने उसके पास फिर कहला भेजा, कि हम सड़क ही सड़क चलेंगे, और यदि हम और हमारे पशु तेरा पानी पीएं, तो उसका दाम देंगे, हम को और कुछ नहीं, केवल पांव पांव चलकर निकल जाने दे। २० परन्तु उस ने कहा, तू आने न पाएगा। और एदोम बड़ी सेना लेकर भुजबल से उसका साम्हना करने को निकल आया। २१ इस प्रकार एदोम ने इस्राएल को अपने देश के भीतर से होकर जाने देने से इन्कार किया; इसलिये इस्राएल उसकी ओर से मुड़ गए॥

(हारून की मृत्यु)

२२ तब इस्राएलियों की सारी मण्डली कादेश से कूच करके होर नाम पहाड़ के पास आ गई। २३ और एदोम देश के सिवाने पर होर पहाड़ में यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, २४ हारून अपने लोगों में जा मिलेगा; क्योंकि तुम दोनों ने जो मरीबा नाम सोते पर मेरा कहना छोड़कर मुझ से बलवा किया है, इस कारण वह उस देश में जाने न पाएगा जिसे मैं ने इस्राएलियों को दिया है। २५ सो तू हारून और उसके पुत्र एलीआजर को होर पहाड़ पर ले चल; २६ और हारून के वस्त्र उतारके उसके पुत्र एलीआजर को पहिना; तब हारून वहीं मरकर अपने लोगों में जा मिलेगा। २७ यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने किया; और वे सारी मण्डली के देखते होर पहाड़ पर चढ़ गए। २८ तब मूसा ने हारून के वस्त्र उतारके उसके पुत्र एलीआजर को पहिनाए और हारून वहीं पहाड़ की चोटी पर मर गया। तब मूसा और एलीआजर पहाड़ पर से उतर आए। २९ और जब इस्राएल की सारी मण्डली ने देखा कि हारून का प्राण छूट गया है, तब इस्राएल के सब घराने के लोग उसके लिये तीस दिन तक रोते रहे॥

(कनानी राजा पर जय)

२१ तब अराद का कनानी राजा, जो दक्खिन देश में रहता था, यह सुनकर, कि जिस मार्ग से वे भेदिये आए थे उसी मार्ग से अब इस्राएली आ रहे हैं, इस्राएल से लड़ा, और उन में से कितनों को बन्धुआ कर लिया। २ तब इस्राएलियों ने यहोवा से यह कहकर मन्नत मानी, कि यदि तू सचमुच उन लोगों को हमारे वश में कर दे, तो हम उनके नगरों को सत्यानाश कर देंगे। ३ इस्राएल की यह बात सुनकर यहोवा ने कनानियों को उनके वश में कर दिया; सो उन्हों ने उनके नगरों समेत उनको भी सत्यानाश किया; इस से उस स्थान का नाम होर्मा * रखा गया॥

(पीतल का बना हुआ सर्प)

४ फिर उन्हों ने होर पहाड़ से कूच करके लाल समुद्र का मार्ग लिया, कि एदोम देश से बाहर बाहर घूमकर जाएं; और लोगों का मन मार्ग के कारण बहुत व्याकुल हो गया। ५ सो वे परमेश्वर के विरुद्ध बात करने लगे, और मूसा से कहा, तुम लोग हम को मिस्र से जंगल में मरने के लिये क्यों ले आए हो? यहां न तो रोटी है, और न पानी, और हमारे प्राण इस निकम्मी रोटी से दुखित हैं। ६ सो यहोवा ने उन लोगों में तेज विषवाले † सांप भेजे, जो उनको डसने लगे, और बहुत से इस्राएली मर गए। ७ तब लोग मूसा के पास जाकर कहने लगे, हम ने पाप किया है, कि हम ने यहोवा के और तेरे विरुद्ध बातें की हैं; यहोवा से प्रार्थना कर, कि वह सांपों को हम से दूर करे। तब मूसा ने उनके लिये प्रार्थना की। ८ यहोवा ने मूसा से कहा, एक तेज विषवाले * सांप की प्रतिमा बनवाकर खम्भे पर लटका; तब जो सांप से डसा हुआ उसको देख ले वह जीवित बचेगा। ९ सो मूसा ने पीतल का एक सांप बनवाकर खम्भे पर लटकाया; तब सांप के डसे हुओं में से जिस जिस ने उस पीतल के सांप की ओर देखा वह जीवित बच गया। १० फिर इस्राएलियों ने कूच करके ओबोत में डेरे डाले। ११ और ओबोत से कूच करके अबारीम नाम डीहों में डेरे डाले, जो पूरब की ओर मोआब के साम्हने के जंगल में है। १२ वहां से कूच करके उन्हों ने जेरेद नाम नाले में डेरे डाले। १३ वहां से कूच करके उन्हों ने अर्नोन नदी, जो जंगल में बहती और एमोरियों के देश से निकलती है, उसकी परली ओर डेरे खड़े किए; क्योंकि अर्नोन मोआबियों और एमोरियों के बीच होकर मोआब देश का सिवाना ठहरा है। १४ इस कारण यहोवा के संग्राम नाम पुस्तक में इस प्रकार लिखा है,

कि सूपा में वाहेब,
और अर्नोन के नाले,
१५ और उन नालों की ढलान
जो आर नाम नगर की ओर है,
और जो मोआब के सिवाने पर
है †।

१६ फिर वहां से कूच करके वे बेर तक गए; वहां वही कूआं है जिसके विषय में यहोवा ने मूसा से कहा था, कि उन लोगों को इकट्ठा कर, और मैं उन्हें पानी दूंगा॥

---

* अर्थात् सत्यानाश।
† मूल में—जलते हुए।

* मूल में—जलते हुए।
† मूल में—उठंगी है।

१७ उस समय इस्राएल ने यह गीत गाया, कि

हे कूएं, उबल आ, उस कूएं के
विषय में गाओ !
१८ जिसको हाकिमों ने खोदा,
और इस्राएल के रईसों ने
अपने सोंटों और लाठियों से खोद
लिया ।।

१९ फिर वे जंगल से मत्ताना को, और मत्ताना से नहलीएल को, और नहलीएल से बामोत को, २० और बामोत से कूच करके उस तराई तक जो मोआब के मैदान में है, और पिसगा के उस सिरे तक भी जो यशीमोन की ओर झुका है पहुंच गए ।।

(सीहोन और ओग नाम राजाओं का पराजय और उनका देश इस्राएलियों के वश में आना)

२१ तब इस्राएल ने एमोरियों के राजा सीहोन के पास दूतों से यह कहला भेजा, २२ कि हमें अपने देश में होकर जाने दे; हम मुड़कर किसी खेत वा दाख की बारी में तो न जाएंगे; न किसी कूएं का पानी पीएंगे; और जब तक तेरे देश से बाहर न हो जाएं तब तक सड़क ही से चले जाएंगे। २३ तौभी सीहोन ने इस्राएल को अपने देश से होकर जाने न दिया; वरन अपनी सारी सेना को इकट्ठा करके इस्राएल का साम्हना करने को जंगल में निकल आया, और यहस को आकर उन से लड़ा। २४ तब इस्राएलियों ने उसको तलवार से मार लिया, और अर्नोन से यब्बोक नदी तक, जो अम्मोनियों का सिवाना था, उसके देश के अधिकारी हो गए; अम्मोनियों का सिवाना तो दृढ़ था। २५ सो इस्राएल ने एमोरियों के सब नगरों को ले लिया, और उन में, अर्थात् हेशबोन और उसके आस पास के नगरों में रहने-लगे। २६ हेशबोन एमोरियों के राजा सीहोन का नगर था; उस ने मोआब के अगले राजा से लड़के उसका सारा देश अर्नोन तक उसके हाथ से छीन लिया था। २७ इस कारण गूढ़ बात के कहनेवाले कहते हैं, कि

हेशबोन में आओ,
सीहोन का नगर बसे, और दृढ़
किया जाए।
२८ क्योंकि हेशबोन से आग,
अर्थात् सीहोन के नगर से लौ
निकली;
जिस से मोआब देश का आर नगर,
और अर्नोन के ऊंचे स्थानों के
स्वामी भस्म हुए।
२९ हे मोआब, तुझ पर हाय !
कमोश देवता की प्रजा नाश हुई,
उस ने अपने बेटों को भगेड़ू,
और अपनी बेटियों को एमोरी राजा
सीहोन की दासी कर दिया।
३० हम ने उन्हें गिरा दिया है, हेशबोन
दीबोन तक नष्ट हो गया है,
और हम ने नोपह और
मेदबा तक भी उजाड़ दिया है ।।

३१ सो इस्राएल एमोरियों के देश में रहने लगा। ३२ तब मूसा ने याजेर नगर का भेद लेने को भेजा; और उन्हों ने उसके गांवों को ले लिया, और वहां के एमोरियों को उस देश से निकाल दिया। ३३ तब वे मुड़के बाशान के मार्ग से जाने लगे; और बाशान के राजा ओग ने उनका साम्हना किया, अर्थात् लड़ने को अपनी सारी सेना समेत एद्रेई में निकल आया। ३४ तब यहोवा ने मूसा से कहा, उस से मत डर; क्योंकि मैं उसको सारी सेना और देश समेत तेरे हाथ में कर देता हूं; और जैसा तू ने

एमोरियों के राजा हेशबोनवासी सीहोन के साथ किया है, वैसा ही उसके साथ भी करना। ३५ तब उन्हों ने उसको, और उसके पुत्रों और सारी प्रजा को यहां तक मारा कि उसका कोई भी न बचा; और वे उसके देश के अधिकारी हो गए।

२२ तब इस्राएलियों ने कूच करके यरीहो के पास यरदन नदी के इस पार मोआब के अराबा में डेरे खड़े किए॥

(बिलाम का चरित्र)

२ और सिप्पोर के पुत्र बालाक ने देखा कि इस्राएल ने एमोरियों से क्या क्या किया है। ३ इसलिये मोआब यह जानकर, कि इस्राएली बहुत हैं, उन लोगों से अत्यन्त डर गया; यहां तक कि मोआब इस्राएलियों के कारण अत्यन्त व्याकुल हुआ। ४ तब मोआबियों ने मिद्यानी पुरनियों से कहा, अब वह दल हमारे चारों ओर के सब लोगों को ऐसा चट कर जाएगा, जिस तरह बैल खेत की हरी घास को चट कर जाता है। उस समय सिप्पोर का पुत्र बालाक मोआब का राजा था; ५ और इस ने पतोर नगर को, जो महानद के तट पर बोर के पुत्र बिलाम के जातिभाइयों की भूमि थी, वहां बिलाम के पास दूत भेजे, कि वे यह कहकर उसे बुला लाएं, कि सुन एक दल मिस्र से निकल आया है, और भूमि उन से ढक गई है, और अब वे मेरे साम्हने ही आकर बस गए हैं। ६ इसलिये आ, और उन लोगों को मेरे निमित्त शाप दे, क्योंकि वे मुझ से अधिक बलवन्त हैं; तब सम्भव है कि हम उन पर जयवन्त हों, और हम सब इनको अपने देश से मारकर निकाल दें; क्योंकि यह तो मैं जानता हूं कि जिसको तू आशीर्वाद देता है वह धन्य होता है, और जिसको तू शाप देता है वह स्रापित होता है। ७ तब मोआबी और मिद्यानी पुरनिये भावी कहने की दक्षिणा लेकर चले, और बिलाम के पास पहुंचकर बालाक की बातें कह सुनाईं। ८ उस ने उन से कहा, आज रात को यहां टिको, और जो बात यहोवा मुझ से कहेगा, उसी के अनुसार मैं तुम को उत्तर दूंगा; तब मोआब के हाकिम बिलाम के यहां ठहर गए। ९ तब परमेश्वर ने बिलाम के पास आकर पूछा, कि तेरे यहां ये पुरुष कौन हैं? १० बिलाम ने परमेश्वर से कहा, सिप्पोर के पुत्र मोआब के राजा बालाक ने मेरे पास यह कहला भेजा है, ११ कि सुन, जो दल मिस्र से निकल आया है उस से भूमि ढंप गई है; इसलिये आकर मेरे लिये उन्हें शाप दे; सम्भव है कि मैं उनसे लड़कर उनको बरबस निकाल सकूंगा। १२ परमेश्वर ने बिलाम से कहा, तू इनके संग मत जा; उन लोगों को शाप मत दे, क्योंकि वे आशीष के भागी हो चुके हैं। १३ भोर को बिलाम ने उठकर बालाक के हाकिमों से कहा, तुम अपने देश को चले जाओ; क्योंकि यहोवा मुझे तुम्हारे साथ जाने की आज्ञा नहीं देता। १४ तब मोआबी हाकिम चले गए और बालाक के पास जाकर कहा, कि बिलाम ने हमारे साथ आने से नाह किया है। १५ इस पर बालाक ने फिर और हाकिम भेजे, जो पहिलों से प्रतिष्ठित और गिनती में भी अधिक थे। १६ उन्हों ने बिलाम के पास आकर कहा, कि सिप्पोर का पुत्र बालाक यों कहता है, कि मेरे पास आने से किसी कारण नाह न कर; १७ क्योंकि मैं निश्चय तेरी बड़ी प्रतिष्ठा करूंगा, और जो कुछ तू मुझ से कहे वही मैं करूंगा; इसलिये आ, और उन लोगों को मेरे निमित्त शाप दे। १८ बिलाम ने बालाक के

कर्मचारियों को उत्तर दिया, कि चाहे बालाक अपने घर को सोने चांदी से भरकर मुझे दे दे, तौभी मैं अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा को पलट नहीं सकता, कि उसे घटाकर वा बढ़ाकर मानूं। १९ इसलिये अब तुम लोग आज रात को यहीं टिक रहो, ताकि मैं जान लूं, कि यहोवा मुझ से और क्या कहता है। २० और परमेश्वर ने रात को बिलाम के पास आकर कहा, यदि वे पुरुष तुझे बुलाने आए हैं, तो तू उठकर उनके संग जा; परन्तु जो बात मैं तुझ से कहूं उसी के अनुसार करना। २१ तब बिलाम भोर को उठा, और अपनी गदही पर काठी बान्धकर, मोआबी हाकिमों के संग चल पड़ा। २२ और उसके जाने के कारण परमेश्वर का कोप भड़क उठा, और यहोवा का दूत उसका विरोध करने के लिये मार्ग रोककर खड़ा हो गया। वह तो अपनी गदही पर सवार होकर जा रहा था, और उसके संग उसके दो सेवक भी थे। २३ और उस गदही को यहोवा का दूत हाथ में नंगी तलवार लिये हुए मार्ग में खड़ा दिखाई पड़ा; तब गदही मार्ग छोड़कर खेत में चली गई; तब बिलाम ने गदही को मारा, कि वह मार्ग पर फिर आ जाए। २४ तब यहोवा का दूत दाख की बारियों के बीच की गली में, जिसके दोनों ओर बारी की दीवार थी, खड़ा हुआ। २५ यहोवा के दूत को देखकर गदही दीवार से ऐसी सट गई, कि बिलाम का पांव दीवार से दब गया; तब उस ने उसको फिर मारा। २६ तब यहोवा का दूत आगे बढ़कर एक सकेत स्थान पर खड़ा हुआ, जहां न तो दहिनी ओर हटने की जगह थी और न बाईं ओर। २७ वहां यहोवा के दूत को देखकर गदही बिलाम को लिये दिये बैठ गई; फिर तो बिलाम का कोप भड़क उठा, और उस ने गदही को लाठी से मारा। २८ तब यहोवा ने गदही का मुंह खोल दिया, और वह बिलाम से कहने लगी, मैं ने तेरा क्या किया है, कि तू ने मुझे तीन बार मारा? २९ बिलाम ने गदही से कहा, यह कि तू ने मुझ से नटखटी की। यदि मेरे हाथ में तलवार होती तो मैं तुझे अभी मार डालता। ३० गदही ने बिलाम से कहा, क्या मैं तेरी वही गदही नहीं जिस पर तू जन्म से आज तक चढ़ता आया है? क्या मैं तुझ से कभी ऐसा करती थी? वह बोला, नहीं। ३१ तब यहोवा ने बिलाम की आंखें खोलीं, और उसको यहोवा का दूत हाथ में नंगी तलवार लिये हुए मार्ग में खड़ा दिखाई पड़ा; तब वह झुक गया, और मुंह के बल गिरके दण्डवत की। ३२ यहोवा के दूत ने उस से कहा, तू ने अपनी गदही को तीन बार क्यों मारा? सुन, तेरा विरोध करने को मैं ही आया हूं, इसलिये कि तू मेरे साम्हने उलटी चाल चलता है; ३३ और यह गदही मुझे देखकर मेरे साम्हने से तीन बार हट गई। जो वह मेरे साम्हने से हट न जाती, तो निःसन्देह मैं अब तक तुझे तो मार ही डालता, परन्तु उसको जीवित छोड़ देता। ३४ तब बिलाम ने यहोवा के दूत से कहा, मैं ने पाप किया है; मैं नहीं जानता था कि तू मेरा साम्हना करने को मार्ग में खड़ा है। इसलिये अब यदि तुझे बुरा लगता है, तो मैं लौट जाता हूं। ३५ यहोवा के दूत ने बिलाम से कहा, इन पुरुषों के संग तू चला जा; परन्तु केवल वही बात कहना जो मैं तुझ से कहूंगा। तब बिलाम बालाक के हाकिमों के संग चला गया। ३६ यह सुनकर, कि बिलाम आ रहा है, बालाक उस से भेंट करने के लिये मोआब के उस नगर तक जो उस देश के

अर्नोनवाले सिवाने पर है गया। ३७ बालाक ने बिलाम से कहा, क्या मैं ने बड़ी आशा से तुझे नहीं बुलवा भेजा था? फिर तू मेरे पास क्यों नहीं चला आया? क्या मैं इस योग्य नहीं कि सचमुच तेरी उचित प्रतिष्ठा कर सकता? ३८ बिलाम ने बालाक से कहा, देख, में तेरे पास आया तो हूं! परन्तु अब क्या में कुछ कह सकता हूं? जो बात परमेश्वर मेरे मुंह में डालेगा वही बात मैं कहूंगा। ३९ तब बिलाम बालाक के संग संग चला, और वे किर्यथूसोत तक आए। ४० और बालाक ने बैल और भेड़-बकरियों को बलि किया, और बिलाम और उसके साथ के हाकिमों के पास भेजा। ४१ बिहान को बालाक बिलाम को बालू के ऊंचे स्थानों पर चढ़ा ले गया; और वहां से उसको सब इस्राएली लोग दिखाई पड़े॥

२३ तब बिलाम ने बालाक से कहा, यहां पर मेरे लिये सात वेदियां बनवा, और इसी स्थान पर सात बछड़े और सात मेढ़े तैयार कर। २ तब बालाक ने बिलाम के कहने के अनुसार किया; और बालाक और बिलाम ने मिलकर प्रत्येक वेदी पर एक बछड़ा और एक मेढ़ा चढ़ाया। ३ फिर बिलाम ने बालाक से कहा, तू अपने होमबलि के पास खड़ा रह, और मैं जाता हूं; सम्भव है कि यहोवा मुझ से भेंट करने को आए; और जो कुछ वह मुझ पर प्रकाश करेगा वही मैं तुझ को बताऊंगा। तब वह एक मुण्डे पहाड़ पर गया। ४ और परमेश्वर बिलाम से मिला; और बिलाम ने उस से कहा, मैं ने सात वेदियां तैयार की हैं, और प्रत्येक वेदी पर एक बछड़ा और एक मेढ़ा चढ़ाया है। ५ यहोवा ने बिलाम के मुंह में एक बात डाली, और कहा, बालाक के पास लौट जा, और यों कहना। ६ और वह उसके पास लौटकर आ गया, और क्या देखता है, कि वह सारे मोआबी हाकिमों समेत अपने होमबलि के पास खड़ा है। ७ तब बिलाम ने अपनी गूढ़ बात आरम्भ की, और कहने लगा,

बालाक ने मुझे आराम से, अर्थात्
मोआब के राजा ने मुझे पूरब के
पहाड़ों से बुलवा भेजा :
आ, मेरे लिये याक़ूब को शाप दे,
आ, इस्राएल को धमकी दे!
८ परन्तु जिन्हें ईश्वर ने नहीं शाप
दिया उन्हें मैं क्यों शाप दूं? और
जिन्हें यहोवा ने धमकी नहीं
दी उन्हें मैं कैसे धमकी दूं?
९ चट्टानों की चोटी पर से वे मुझे
दिखाई पड़ते हैं,
पहाड़ियों पर से मैं उनको देखता
हूं;
वह ऐसी जाति है जो अकेली बसी
रहेगी,
और अन्यजातियों से अलग गिनी
जाएगी!
१० याक़ूब के धूलि के किनके को कौन
गिन सकता है,
वा इस्राएल की चौथाई की
गिनती कौन ले सकता है?
सौभाग्य यदि मेरी मृत्यु धर्मियों
की सी,
और मेरा अन्त भी उन्हीं के समान
हो!

११ तब बालाक ने बिलाम से कहा, तू ने मुझ से क्या किया है? मैं ने तुझे अपने शत्रुओं को शाप देने को बुलवाया था, परन्तु तू ने उन्हें आशीष ही आशीष दी है। १२ उस ने कहा, जो बात

यहोवा ने मुझे सिखलाई क्या मुझे उसी को सावधानी से बोलना न चाहिये? १३ बालाक ने उस से कहा, मेरे संग दूसरे स्थान पर चल, जहां से वे तुझे दिखाई देंगे; तू उन सभों को तो नहीं, केवल बाहरवालों को देख सकेगा; वहां से उन्हें मेरे लिये शाप दे। १४ तब वह उसको सोपीम नाम मैदान में पिसगा के सिरे पर ले गया, और वहां सात वेदियां बनवाकर प्रत्येक पर एक बछड़ा और एक मेढ़ा चढ़ाया। १५ तब बिलाम ने बालाक से कहा, अपने होमबलि के पास यहीं खड़ा रह, और मैं उधर जाकर यहोवा से भेंट करूं। १६ और यहोवा ने बिलाम से भेंट की, और उस ने उसके मुंह में एक बात डाली, और कहा, कि बालाक के पास लौट जा, और यों कहना। १७ और वह उसके पास गया, और क्या देखता है, कि वह मोआबी हाकिमों समेत अपने होमबलि के पास खड़ा है। और बालाक ने पूछा, कि यहोवा ने क्या कहा है? १८ तब बिलाम ने अपनी गूढ़ बात आरम्भ की, और कहने लगा,

हे बालाक, मन लगाकर * सुन,
हे सिप्पोर के पुत्र, मेरी बात पर कान लगा:
१९ ईश्वर मनुष्य नहीं, कि झूठ बोले,
और न वह आदमी है, कि अपनी इच्छा बदले।
क्या जो कुछ उस ने कहा उसे न करे?
क्या वह वचन देकर उसे पूरा न करे?
२० देख, आशीर्वाद ही देने की आज्ञा मैं ने पाई है:
वह आशीष दे चुका है, और मैं उसे नहीं पलट सकता।
२१ उस ने याकूब में अनर्थ नहीं पाया;
और न इस्राएल में अन्याय देखा है।
उसका परमेश्वर यहोवा उसके संग है,
और उन में राजा की सी ललकार होती है।
२२ उनको मिस्र में से ईश्वर ही निकाले लिये आ रहा है,
वह तो बनैले सांड़ के समान बल रखता है।
२३ निश्चय कोई मंत्र याकूब पर नहीं चल सकता, और इस्राएल पर भावी कहना कोई अर्थ नहीं रखता;
परन्तु याकूब और इस्राएल के विषय अब यह कहा जाएगा,
कि ईश्वर ने क्या ही विचित्र काम किया है!
२४ सुन, वह दल सिंहनी की नाईं उठेगा,
और सिंह की नाईं खड़ा होगा;
वह जब तक अहेर को न खा ले,
और मारे हुओं के लोहू को न पी ले,
तब तक न लेटेगा॥

२५ तब बालाक ने बिलाम से कहा, उनको न तो शाप देना, और न आशीष देना। २६ बिलाम ने बालाक से कहा, क्या मैं ने तुझ से नहीं कहा, कि जो कुछ यहोवा मुझ से कहेगा, वही मुझे करना पड़ेगा? २७ बालाक ने बिलाम से कहा, चल, मैं तुझ को एक और स्थान पर ले चलता हूं; सम्भव है कि परमेश्वर की इच्छा हो कि तू वहां से उन्हें मेरे लिये शाप दे।

---

* मूल में—उठकर।

२८ तब बालाक बिलाम को पोर के सिरे पर, जहां से यशीमोन देश दिखाई देता है, ले गया। २९ और बिलाम ने बालाक से कहा, यहां पर मेरे लिये सात वेदियां बनवा, और यहां सात बछड़े और सात मेढ़े तैयार कर। ३० बिलाम के कहने के अनुसार बालाक ने प्रत्येक वेदी पर एक बछड़ा और एक मेढ़ा चढ़ाया॥

२४ यह देखकर, कि यहोवा इस्राएल को आशीष ही दिलाना चाहता है, बिलाम पहिले की नाईं शकुन देखने को न गया, परन्तु अपना मुंह जंगल की ओर कर लिया। २ और बिलाम ने आंखें उठाईं, और इस्राएलियों को अपने गोत्र गोत्र के अनुसार बसे हुए देखा। और परमेश्वर का आत्मा उस पर उतरा। ३ तब उसने अपनी गूढ़ बात आरम्भ की, और कहने लगा, कि

बोर के पुत्र बिलाम की यह वाणी है,
जिस पुरुष की आंखें बन्द थीं उसी की यह वाणी है,
४ ईश्वर के वचनों का सुननेवाला,
जो दण्डवत में पड़ा हुआ खुली हुई आंखों से
सर्वशक्तिमान का दर्शन पाता है,
उसी की यह वाणी है: कि
५ हे याकूब, तेरे डेरे,
और हे इस्राएल, तेरे निवासस्थान क्या ही मनभावने हैं!
६ वे तो नालों वा घाटियों की नाईं,
और नदी के तट की वाटिकाओं के समान ऐसे फैले हुए हैं,
जैसे कि यहोवा के लगाए हुए अगर के वृक्ष,
और जल के निकट के देवदारु।
७ और उसके डोलों से जल उमण्डा करेगा,
और उसका बीज बहुतेरे जलभरे खेतों में पड़ेगा,
और उसका राजा अगाग से भी महान होगा,
और उसका राज्य बढ़ता ही जाएगा।
८ उसको मिस्र में से ईश्वर ही निकाले लिये आ रहा है;
वह तो बनैले सांड़ के समान बल रखता है,
जाति जाति के लोग जो उसके द्रोही हैं उनको वह खा जायेगा,
और उनकी हड्डियों को टुकड़े टुकड़े करेगा,
और अपने तीरों से उनको बेधेगा।
९ वह दबका बैठा है, वह सिंह वा सिंहनी की नाईं लेट गया है;
अब उसको कौन छेड़े?
जो कोई तुझे आशीर्वाद दे सो आशीष पाए,
और जो कोई तुझे शाप दे वह स्रापित हो॥

१० तब बालाक का कोप बिलाम पर भड़क उठा; और उस ने हाथ पर हाथ पटककर बिलाम से कहा, मैं ने तुझे अपने शत्रुओं के शाप देने के लिये बुलवाया, परन्तु तू ने तीन बार उन्हें आशीर्वाद ही आशीर्वाद दिया है। ११ इसलिये अब तू अपने स्थान पर भाग जा; मैं ने तो सोचा था कि तेरी बड़ी प्रतिष्ठा करूंगा, परन्तु अब यहोवा ने तुझे प्रतिष्ठा पाने से रोक रखा है। १२ बिलाम ने बालाक से कहा, जो दूत तू ने मेरे पास भेजे थे, क्या मैं ने उन से भी न कहा था, १३ कि चाहे बालाक अपने घर

को सोने चांदी से भरकर मुझे दे, तौभी में यहोवा की आज्ञा तोड़कर अपने मन से न तो भला कर सकता हूं और न बुरा; जो कुछ यहोवा कहेगा वही में कहूंगा? १४ अब सुन, में अपने लोगों के पास लौट कर जाता हूं; परन्तु पहिले में तुझे चिता देता हूं कि अन्त के दिनों में वे लोग तेरी प्रजा से क्या क्या करेंगे। १५ फिर वह अपनी गूढ़ बात आरम्भ करके कहने लगा, कि

बोर के पुत्र बिलाम की यह वाणी है,
जिस पुरुष की आंखें बन्द थी उसी की यह वाणी है,
१६ ईश्वर के वचनों का सुननेवाला,
और परमप्रधान के ज्ञान का जाननेवाला,
जो दण्डवत में पड़ा हुआ खुली हुई आंखों से
सर्वशक्तिमान का दर्शन पाता है,
उसी की यह वाणी है: कि
१७ में उसको देखूंगा तो सही, परन्तु अभी नहीं;
में उसको निहारूंगा तो सही, परन्तु समीप होके नहीं:
याकूब में से एक तारा उदय होगा,
और इस्राएल में से एक राज दण्ड उठेगा;
जो मोआब की अलंगों को चूर कर देगा,
और सब दंगा करनेवालों को गिरा देगा।
१८ तब एदोम और सेईर भी, जो उसके शत्रु हैं,
दोनों उसके वश में पड़ेंगे,
और इस्राएल वीरता दिखाता जाएगा।
१९ और याकूब ही में से एक अधिपति आवेगा जो प्रभुता करेगा,
और नगर में से बचे हुओं को भी सत्यानाश करेगा॥
२० फिर उस ने अमालेक पर दृष्टि करके अपनी गूढ़ बात आरम्भ की, और कहने लगा,
अमालेक अन्यजातियों में श्रेष्ठ तो था,
परन्तु उसका अन्त विनाश ही है॥
२१ फिर उस ने केनियों पर दृष्टि करके अपनी गूढ़ बात आरम्भ की, और कहने लगा,
तेरा निवासस्थान अति दृढ़ तो है,
और तेरा बसेरा चट्टान पर तो है;
२२ तौभी केन उजड़ जाएगा।
और अन्त में अश्शूर तुझे बन्धुआई में ले आएगा॥
२३ फिर उस ने अपनी गूढ़ बात आरम्भ की, और कहने लगा,
हाय जब ईश्वर यह करेगा तब कौन जीवित बचेगा?
२४ तौभी कित्तियों के पास से जहाज़-वाले आकर अश्शूर को और एबेर को भी दुःख देंगे;
और अन्त में उसका भी विनाश हो जाएगा॥
२५ तब बिलाम चल दिया, और अपने स्थान पर लौट गया; और बालाक ने भी अपना मार्ग लिया॥

(इस्राएलियों का वेश्यागमन और उसका दण्ड)

२५ इस्राएली शित्तीम में रहते थे, और लोग मोआबी लड़कियों के संग कुकर्म करने लगे। २ और जब उन स्त्रीयों ने उन लोगों को अपने देवताओं के यज्ञों में नेवता दिया, तब वे लोग खाकर उनके देवताओं को दण्डवत करने लगे। ३ यों इस्राएली बालपोर देवता को पूजने लगे। तब यहोवा का कोप इस्राएल पर भड़क उठा; ४ और यहोवा ने मूसा से कहा, प्रजा के सब प्रधानों को पकड़कर यहोवा के लिये धूप में लटका दे, जिस से मेरा भड़का हुआ कोप इस्राएल के ऊपर से दूर हो जाए। ५ तब मूसा ने इस्राएली न्यायियों से कहा, तुम्हारे जो जो आदमी बालपोर के संग मिल गए हैं उन्हें घात करो॥

६ और जब इस्राएलियों की सारी मण्डली मिलापवाले तम्बू के द्वार पर रो रही थी, तो एक इस्राएली पुरुष मूसा और सब लोगों की आंखों के सामने एक मिद्यानी स्त्री को अपने साथ अपने भाइयों के पास ले आया। ७ इसे देखकर एलीआज़र का पुत्र पीनहास, जो हारून याजक का पोता था, उस ने मण्डली में से उठकर हाथ में एक बरछी ली, ८ और उस इस्राएली पुरुष के डेरे में जाने के बाद वह भी भीतर गया, और उस पुरुष और उस स्त्री दोनों के पेट में बरछी बेध दी। इस पर इस्राएलियों में जो मरी फैल गई थी वह थम गई। ९ और मरी से चौबीस हज़ार मनुष्य मर गए॥

१० तब यहोवा ने मूसा से कहा, ११ हारून याजक का पोता एलीआज़र का पुत्र पीनहास, जिसे इस्राएलियों के बीच मेरी सी जलन उठी, उस ने मेरी जलजलाहट को उन पर से यहां तक दूर किया है, कि मैं ने जलकर उनका अन्त नहीं कर डाला। १२ इसलिये तू कह दे, कि मैं उस से शांति की वाचा बान्धता हूं*; १३ और वह उसके लिये, और उसके बाद उसके वंश के लिये, सदा के याजकपद की वाचा होगी, क्योंकि उसे अपने परमेश्वर के लिये जलन उठी, और उस ने इस्राएलियों के लिये प्रायश्चित्त किया। १४ जो इस्राएली पुरुष मिद्यानी स्त्री के संग मारा गया, उसका नाम जिम्री था, वह साल का पुत्र और शिमोनियों में से अपने पितरों के घराने का प्रधान था। १५ और जो मिद्यानी स्त्री मारी गई उसका नाम कोजबी था, वह सूर की बेटी थी, जो मिद्यानी पितरों के एक घराने के लोगों का प्रधान था॥

१६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १७ मिद्यानियों को सता, और उन्हें मार; १८ क्योंकि पोर के विषय और कोजबी के विषय वे तुम को छल करके सताते हैं। कोजबी तो एक मिद्यानी प्रधान की बेटी और मिद्यानियों की जाति बहिन थी, और मरी के दिन में पोर के मामले में मारी गई॥

(इस्राएलियों की दूसरी बार गिनती लिए जाने का वर्णन)

२६ फिर यहोवा ने मूसा और एलीआज़र नाम हारून याजक के पुत्र से कहा, २ इस्राएलियों की सारी मण्डली में जितने बीस वर्ष के, वा उस से अधिक अवस्था के होने से इस्राएलियों के बीच युद्ध करने के योग्य हैं, उनके पितरों के घरानों के अनुसार उन सभों की गिनती

* मूल में—मैं उसे अपनी शांतिवाली वाचा देता हूं।

करो। ३ सो मूसा और एलीआज़र याजक ने यरीहो के पास यरदन नदी के तीर पर मोआब के अराबा में उन से समझाके कहा, ४ बीस वर्ष के और उस से अधिक अवस्था के लोगों की गिनती लो, जैसे कि यहोवा ने मूसा और इस्राएलियों को मिस्र देश से निकल आने के समय आज्ञा दी थी॥

५ रूबेन जो इस्राएल का जेठा था; उसके ये पुत्र थे; अर्थात् हनोक, जिस से हनोकियों का कुल चला; और पल्लू, जिस से पल्लूइयों का कुल चला; ६ हेस्रोन, जिस से हेस्रोनियों का कुल चला; और कर्म्मी, जिस से कर्म्मियों का कुल चला। ७ रूबेनवाले कुल ये ही थे; और इन में से जो गिने गए वे तैंतालीस हज़ार सात सौ तीस पुरुष थे। ८ और पल्लू का पुत्र एलीआब था। ९ और एलीआब के पुत्र नमूएल, दातान, और अबीराम थे। ये वही दातान और अबीराम हैं जो सभासद थे; और जिस समय कोरह की मण्डली ने यहोवा से झगड़ा किया था, उस समय उस मण्डली में मिलकर वे भी मूसा और हारून से झगड़े थे; १० और जब उन अढ़ाई सौ मनुष्यों के आग में भस्म हो जाने से वह मण्डली मिट गई, उसी समय पृथ्वी ने मुंह खोलकर कोरह समेत इनको भी निगल लिया; और वे एक दृष्टान्त ठहरे। ११ परन्तु कोरह के पुत्र तो नहीं मरे थे॥

१२ शिमोन के पुत्र जिन से उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् नमूएल, जिस से नमूएलियों का कुल चला; और यामीन, जिस से यामीनियों का कुल चला; और याकीन, जिस से याकीनियों का कुल चला; १३ और जेरह, जिस से जेरहियों का कुल चला; और शाऊल, जिस से शाऊलियों का कुल चला। १४ शिमोनवाले कुल ये ही थे; इन में से बाईस हज़ार दो सौ पुरुष गिने गए॥

१५ और गाद के पुत्र जिन से उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् सपोन, जिस से सपोनियों का कुल चला; और हाग्गी, जिस से हाग्गियों का कुल चला; और शूनी, जिस से शूनियों का कुल चला; और ओजनी, जिस से ओजनियों का कुल चला; १६ और एरी, जिस से एरियों का कुल चला; और अरोद, जिस से अरोदियों का कुल चला; १७ और अरेली, जिस से अरेलियों का कुल चला। १८ गाद के वंश के कुल ये ही थे; इन में से साढ़े चालीस हज़ार पुरुष गिने गए॥

१९ और यहूदा के एर और ओनान नाम पुत्र तो हुए, परन्तु वे कनान देश में मर गए। २० और यहूदा के जिन पुत्रों से उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् शेला, जिस से शेलियों का कुल चला; और पेरेस, जिस से पेरेसियों का कुल चला; और जेरह, जिस से जेरहियों का कुल चला। २१ और पेरेस के पुत्र ये थे; अर्थात् हेस्रोन, जिस से हेस्रोनियों का कुल चला; और हामूल, जिस से हामूलियों का कुल चला। २२ यहूदियों के कुल ये ही थे; इन में से साढ़े छिहत्तर हज़ार पुरुष गिने गए॥

२३ और इस्साकार के पुत्र जिन से उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् तोला, जिस से तोलियों का कुल चला; और पुव्वा, जिस से पुव्वियों का कुल चला; २४ और याशूब, जिस से याशूबियों का कुल चला; और शिम्रोन, जिस से शिम्रोनियों का कुल चला। २५ इस्साकारियों के कुल ये ही थे; इन में से चौसठ हज़ार तीन सौ पुरुष गिने गए॥

२६ और जबूलून के पुत्र जिन से उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् सेरेद, जिस से

सेरेदियों का कुल चला; और एलोन, जिन से एलोनियों का कुल चला; और यहलेल, जिस से यहलेलियों का कुल चला। २७ जबूलूनियों के कुल ये ही थे; इन में से साढ़े साठ हज़ार पुरुष गिने गए॥

२८ और यूसुफ के पुत्र जिन से उनके कुल निकले वे मनश्शे और एप्रैम थे। २९ मनश्शे के पुत्र ये थे; अर्थात् माकीर, जिस से माकीरियों का कुल चला; और माकीर से गिलाद उत्पन्न हुआ; और गिलाद से गिलादियों का कुल चला। ३० गिलाद के तो पुत्र ये थे; अर्थात् ईएजेर, जिस से ईएजेरियों का कुल चला; ३१ और हेलेक, जिस से हेलेकियों का कुल चला और अस्रीएल, जिस से अस्रीएलियों का कुल चला; और शेकेम, जिस से शेकेमियों का कुल चला; और शमीदा, जिस से शमीदियों का कुल चला; ३२ और हेपेर, जिस से हेपेरियों का कुल चला। ३३ और हेपेर के पुत्र सलोफाद के बेटे नहीं, केवल बेटियां हुईं; इन बेटियों के नाम महला, नोआ, होग्ला, मिल्का, और तिर्सा हैं। ३४ मनश्शेवाले कुल ये ही थे; और इन में से जो गिने गए वे बावन हज़ार सात सौ पुरुष थे॥

३५ और एप्रैम के पुत्र जिन से उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् शूतेलह, जिस से शूतेलहियों का कुल चला; और बेकेर, जिस से बेकेरियों का कुल चला; और तहन, जिस से तहनियों का कुल चला। ३६ और शूतेलह के यह पुत्र हुआ; अर्थात् एरान, जिस से एरानियों का कुल चला। ३७ एप्रैमियों के कुल ये ही थे; इन में से साढ़े बत्तीस हज़ार पुरुष गिने गए। अपने कुलों के अनुसार यूसुफ के वंश के लोग ये ही थे॥

३८ और बिन्यामीन के पुत्र जिन से उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् बेला जिस से बेलियों का कुल चला; और अशबेल, जिस से अशबेलियों का कुल चला; और अहीराम, जिस से अहीरामियों का कुल चला; ३९ और शपूपाम, जिस से शपूपामियों का कुल चला; और हूपाम, जिस से हूपामियों का कुल चला। ४० और बेला के पुत्र अर्द और नामान थे; तथा अर्द से तो अर्दियों का कुल, और नामान से नामानियों का कुल चला। ४१ अपने कुलों के अनुसार बिन्यामीनी ये ही थे; और इन में से जो गिने गए वे पैंतालीस हज़ार छः सौ पुरुष थे॥

४२ और दान का पुत्र जिस से उनका कुल निकला यह था; अर्थात् शूहाम, जिस से शूहामियों का कुल चला। और दान का कुल यही था। ४३ और शूहामियों में से जो गिने गए उनके कुल में चौंसठ हज़ार चार सौ पुरुष थे॥

४४ और आशेर के पुत्र जिन से उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् यिम्ना, जिस से यिम्नियों का कुल चला; यिश्वी, जिस से यिश्वियों का कुल चला; और बरीआ, जिस से बरीइयों का कुल चला। ४५ फिर बरीआ के ये पुत्र हुए; अर्थात् हेबेर, जिस से हेबेरियों का कुल चला; और मल्कीएल, जिस से मल्कीएलियों का कुल चला। ४६ और आशेर की बेटी का नाम सेरह है। ४७ आशेरियों के कुल ये ही थे; इन में से तिर्पन हज़ार चार सौ पुरुष गिने गए॥

४८ और नप्ताली के पुत्र जिन से उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् यहसेल, जिस से यहसेलियों का कुल चला; और गूनी, जिस से गूनियों का कुल चला; ४९ येसेर, जिस से येसेरियों का कुल चला; और शिल्लेम, जिस से शिल्लेमियों का कुल चला। ५० अपने कुलों के अनुसार नप्ताली के कुल

ये ही थे; और इन में से जो गिने गए वे पैंतालीस हज़ार चार सौ पुरुष थे।।

५१ सब इस्राएलियों में से जो गिने गए थे वे ये ही थे; अर्थात् छः लाख एक हज़ार सात सौ तीस पुरुष थे।।

५२ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, ५३ इनको, इनकी गिनती के अनुसार, वह भूमि इनका भाग होने के लिये बांट दी जाए। ५४ अर्थात् जिस कुल में अधिक हों उनको अधिक भाग, और जिस में कम हों उनको कम भाग देना; प्रत्येक गोत्र को उसका भाग उसके गिने हुए लोगों के अनुसार दिया जाए। ५५ तौभी देश चिट्ठी डालकर बांटा जाए; इस्राएलियों के पितरों के एक एक गोत्र का नाम, जैसे जैसे निकले वैसे वैसे वे अपना अपना भाग पाएं। ५६ चाहे बहुतों का भाग हो चाहे थोड़ों का हो, जो जो भाग बांटे जाएं वह चिट्ठी डालकर बांटे जाएं।।

५७ फिर लेवियों में से जो अपने कुलों के अनुसार गिने गए वे ये हैं; अर्थात् गेर्शोनियों से निकला हुआ गेर्शोनियों का कुल; कहात से निकला हुआ कहातियों का कुल; और मरारी से निकला हुआ मरारियों का कुल। ५८ लेवियों के कुल ये हैं; अर्थात् लिब्नियों का, हेब्रोनियों का, महलियों का, मूशियों का, और कोरहियों का कुल। और कहात से अम्राम उत्पन्न हुआ। ५९ और अम्राम की पत्नी का नाम योकेबेद है, वह लेवी के वंश की थी जो लेवी के वंश में मिस्र देश में उत्पन्न हुई थी; और वह अम्राम से हारून और मूसा और उनकी बहिन मरियम को भी जनी। ६० और हारून से नादाब, अबीहू, एलीआज़र, और ईतामार उत्पन्न हुए। ६१ नादाब और अबीहू तो उस समय मर गए थे, जब वे यहोवा के साम्हने ऊपरी आग ले गए थे। ६२ सब लेवियों में से जो गिने गये, अर्थात् जितने पुरुष एक महीने के वा उस से अधिक अवस्था के थे, वे तेईस हज़ार थे; वे इस्राएलियों के बीच इसलिये नहीं गिने गए, क्योंकि उनको देश का कोई भाग नहीं दिया गया था।।

६३ मूसा और एलीआज़र याजक जिन्हों ने मोआब के अराबा में यरीहो के पास की यरदन नदी के तट पर इस्राएलियों को गिन लिया, उनके गिने हुए लोग इतने ही थे। ६४ परन्तु जिन इस्राएलियों को मूसा और हारून याजक ने सीनै के जंगल में गिना था, उन में से एक भी पुरुष इस समय के गिने हुओं में न था। ६५ क्योंकि यहोवा ने उनके विषय कहा था, कि वे निश्चय जंगल में मर जाएंगे, इसलिये यपुन्ने के पुत्र कालेब और नून के पुत्र यहोशू को छोड़, उन में से एक भी पुरुष नहीं बचा।।

(सलोफाद की बेटियों की बिनती)

२७ तब युसुफ के पुत्र मनश्शे के वंश के कुलों में से सलोफाद, जो हेपेर का पुत्र, और गिलाद का पोता, और मनश्शे के पुत्र माकीर का परपोता था, उसकी बेटियां जिनके नाम महला, नोवा, होग्ला, मिलका, और तिर्सा हैं वे पास आईं। २ और वे मूसा और एलीआज़र याजक और प्रधानों और सारी मण्डली के साम्हने मिलापवाले तम्बू के द्वार पर खड़ी होकर कहने लगीं, ३ हमारा पिता जंगल में मर गया; परन्तु वह उस मण्डली में का न था जो कोरह की मण्डली के संग होकर यहोवा के विरूद्ध इकट्ठी हुई थी, वह अपने ही पाप के कारण मरा; और उसके कोई पुत्र न था। ४ तो हमारे पिता का नाम उसके कुल में से पुत्र न होने के कारण क्यों

मिट जाए? हमारे चाचाओं के बीच हमें भी कुछ भूमि निज भाग करके दे। ५ उनकी यह बिनती मूसा ने यहोवा को सुनाई। ६ यहोवा ने मूसा से कहा, ७ सलोफाद की बेटियां ठीक कहती हैं; इसलिये तू उनके चाचाओं के बीच उनको भी अवश्य ही कुछ भूमि निज भाग करके दे, अर्थात् उनके पिता का भाग उनके हाथ सौंप दे। ८ और इस्राएलियों से यह कह, कि यदि कोई मनुष्य निपुत्र मर जाए, तो उसका भाग उसकी बेटी के हाथ सौंपना। ९ और यदि उसके कोई बेटी भी न हो, तो उसका भाग उसके भाइयों को देना। १० और यदि उसके भाई भी न हों, तो उसका भाग उसके चाचाओं को देना। ११ और यदि उसके चाचा भी न हों, तो उसके कुल में से उसका जो कुटुम्बी सब से समीप हो उसको उसका भाग देना, कि वह उसका अधिकारी हो। इस्राएलियों के लिये यह न्याय की विधि ठहरेगी, जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी॥

(यहोशू के मूसा के स्थान पर नियुक्त किए जाने का वर्णन)

१२ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, इस अबारीम नाम पर्वत के ऊपर चढ़के उस देश को देख ले जिसे मैं ने इस्राएलियों को दिया है। १३ और जब तू उसको देख लेगा, तब अपने भाई हारून की नाईं तू भी अपने लोगों में जा मिलेगा, १४ क्योंकि सीन नाम जंगल में तुम दोनों ने मण्डली के झगड़ने के समय मेरी आज्ञा को तोड़कर मुझ से बलवा किया, और मुझे सोते के पास उनकी दृष्टि में पवित्र नहीं ठहराया। (यह मरीबा नाम सोता है जो सीन नाम जंगल के कादेश में है)। १५ मूसा ने यहोवा से कहा, १६ यहोवा, जो सारे प्राणियों की आत्माओं का परमेश्वर है, वह इस मण्डली के लोगों के ऊपर किसी पुरुष को नियुक्त कर दे, १७ जो उसके साम्हने आया जाया करे, और उनका निकालने और पैठानेवाला हो; जिस से यहोवा की मण्डली बिना चरवाहे की भेड़ बकरियों के समान न रहे। १८ यहोवा ने मूसा से कहा, तू नून के पुत्र यहोशू को लेकर उस पर हाथ रख; वह तो ऐसा पुरुष है जिस में मेरा आत्मा बसा है; १९ और उसको एलीआज़र याजक के और सारी मण्डली के साम्हने खड़ा करके उनके साम्हने उसे आज्ञा दे। २० और अपनी महिमा में से कुछ उसे दे, जिस से इस्राएलियों की सारी मण्डली उसकी माना करे। २१ और वह एलीआज़र याजक के साम्हने खड़ा हुआ करे, और एलीआज़र उसके लिये यहोवा से ऊरीम की आज्ञा पूछा करे; और वह इस्राएलियों की सारी मण्डली समेत उसके कहने से जाया करे, और उसी के कहने से लौट भी आया करे। २२ यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने यहोशू को लेकर, एलीआज़र याजक और सारी मण्डली के साम्हने खड़ा करके, २३ उस पर हाथ रखे, और उसको आज्ञा दी जैसे कि यहोवा ने मूसा के द्वारा कहा था॥

(नियत नियत समयों के विशेष विशेष बलिदान)

२८ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ इस्राएलियों को यह आज्ञा सुना, कि मेरा चढ़ावा, अर्थात् मुझे सुखदायक सुगन्ध देनेवाला मेरा हव्यरूपी भोजन, तुम लोग मेरे लिये उनके नियत समयो पर चढ़ाने के लिये स्मरण रखना। ३ और तू उन से कह, कि जो जो तुम्हें यहोवा के

लिये चढ़ाना होगा वे ये हैं; अर्थात् नित्य होमबलि के लिये एक एक वर्ष के दो निर्दोष भेड़ी के बच्चे प्रतिदिन चढ़ाया करे। ४ एक बच्चे को भोर को और दूसरे को गोधूलि के समय चढ़ाना; ५ और भेड़ के बच्चे के पीछे एक चौथाई हीन कूटके निकाले हुए तेल से सने हुए एपा के दसवें अंश मैदे का अन्नबलि चढ़ाना। ६ यह नित्य होमबलि है, जो सीनै पर्वत पर यहोवा का सुखदायक सुगन्धवाला हव्य होने के लिये ठहराया गया। ७ और उसका अर्घ प्रति एक भेड़ के बच्चे के संग एक चौथाई हीन हो; मदिरा का यह अर्घ यहोवा के लिये पवित्रस्थान में देना। ८ और दूसरे बच्चे को गोधूलि के समय चढ़ाना; अन्नबलि और अर्घ समेत भोर के होमबलि की नाईं उसे यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला हव्य करके चढ़ाना॥

९ फिर विश्रामदिन को दो निर्दोष भेड़ के एक साल के नर बच्चे, और अन्नबलि के लिये तेल से सना हुआ एपा का दो दसवां अंश मैदा अर्घ समेत चढ़ाना। १० नित्य होमबलि और उसके अर्घ के अलावा प्रत्येक विश्रामदिन का यही होमबलि ठहरा है॥

११ फिर अपने महीनों के आरम्भ में प्रतिमास यहोवा के लिये होमबलि चढ़ाना; अर्थात् दो बछड़े, एक मेढ़ा, और एक एक वर्ष के निर्दोष भेड़ के सात बच्चे; १२ और बछड़े पीछे तेल से सना हुआ एपा का तीन दसवां अंश मैदा, और उस एक मेढ़े के साथ तेल से सना हुआ एपा का दो दसवा अंश मैदा; १३ और प्रत्येक भेड़ के बच्चे के पीछे तेल से सना हुआ एपा का दसवां अंश मैदा, उन सभों को अन्नबलि करके चढ़ाना; वह सुखदायक सुगन्ध देने के लिये होमबलि और यहोवा के लिये हव्य ठहरेगा। १४ और उनके साथ ये अर्घ हों; अर्थात् बछड़े पीछे आध हीन, मेढ़े के साथ तिहाई हीन, और भेड़ के बच्चे पीछे चौथाई हीन दाखमधु दिया जाए; वर्ष के सब महीनों में से प्रति एक महीने का यही होमबलि ठहरे। १५ और एक बकरा पापबलि करके यहोवा के लिये चढ़ाया जाए; यह नित्य होमबलि और उसके अर्घ के अलावा चढ़ाया जाए॥

१६ फिर पहिले महीने के चौदहवें दिन को यहोवा का फसह हुआ करे। १७ और उसी महीने के पन्द्रहवें दिन को पर्ब्ब लगा करे; सात दिन तक अखमीरी रोटी खाई जाए। १८ पहिले दिन पवित्र सभा हो; और उस दिन परिश्रम का कोई काम न किया जाए; १९ उस में तुम यहोवा के लिये एक हव्य, अर्थात् होमबलि चढ़ाना; सो दो बछड़े, एक मेढ़ा, और एक एक वर्ष के सात भेड़ के बच्चे हों; ये सब निर्दोष हों; २० और उनका अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो; बछड़े पीछे एपा का तीन दसवां अंश और मेढ़े के साथ एपा का दो दसवां अंश मैदा हो। २१ और सातों भेड़ के बच्चों में से प्रति एक बच्चे पीछे एपा का दसवां अंश चढ़ाना। २२ और एक बकरा भी पापबलि करके चढ़ाना, जिस से तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त हो। २३ भोर का होम-बलि जो नित्य होमबलि ठहरा है, उसके अलावा इनको चढ़ाना। २४ इस रीति से तुम उन सातों दिनों में भी हव्य का भोजन चढ़ाना, जो यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देने के लिये हो; यह नित्य होमबलि और उसके अर्घ के अलावा चढ़ाया जाए। २५ और सातवें दिन भी तुम्हारी पवित्र सभा हो; और उस दिन परिश्रम का कोई काम न करना॥

२६ फिर पहिली उपज के दिन में, जब तुम अपने अठवारे नाम पर्ब्ब में यहोवा के लिये नया अन्नबलि चढ़ाओगे, तब भी तुम्हारी पवित्र सभा हो; और परिश्रम का कोई काम न करना। २७ और एक होमबलि चढ़ाना, जिस से यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्ध हो; अर्थात् दो बछड़े, एक मेढ़ा, और एक एक वर्ष के सात भेड़ के बच्चे; २८ और उनका अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो; अर्थात् बछड़े पीछे एपा का तीन दसवां अंश, और मेढ़े के संग एपा का दो दसवां अंश, २९ और सातों भेड़ के बच्चों में से एक एक बच्चे के पीछे एपा का दसवां अंश मैदा चढ़ाना। ३० और एक बकरा भी चढ़ाना, जिस से तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त हो। ३१ ये सब निर्दोष हों; और नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा इसको भी चढ़ाना॥

२९ फिर सातवें महीने के पहिले दिन को तुम्हारी पवित्र सभा हो; उस में परिश्रम का कोई काम न करना। वह तुम्हारे लिये जयजयकार का नरसिंगा फूंकने का दिन ठहरा है; २ तुम होमबलि चढ़ाना, जिस से यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्ध हो; अर्थात् एक बछड़ा, एक मेढ़ा, और एक एक वर्ष के सात निर्दोष भेड़ के बच्चे; ३ और उनका अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो; अर्थात् बछड़े के साथ एपा का तीन दसवां अंश, और मेढ़े के साथ एपा का दो दसवां अंश, ४ और सातों भेड़ के बच्चों में से एक एक बच्चे पीछे एपा का दसवां अंश मैदा चढ़ाना। ५ और एक बकरा भी पापबलि करके चढ़ाना, जिस से तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त हो। ६ इन सभों से अधिक नए चांद का होमबलि और उसका अन्नबलि, और नित्य होमबलि और उसका अन्नबलि, और उन सभों के अर्घ भी उनके नियम के अनुसार सुखदायक सुगन्ध देने के लिये यहोवा का हव्य करके चढ़ाना॥

७ फिर उसी सातवें महीने के दसवें दिन को तुम्हारी पवित्र सभा हो; तुम अपने अपने प्राण को दुःख देना, और किसी प्रकार का कामकाज न करना; ८ और यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्ध देने को होमबलि; अर्थात् एक बछड़ा, एक मेढ़ा, और एक एक वर्ष के सात भेड़ के बच्चे चढ़ाना; फिर ये सब निर्दोष हों; ९ और उनका अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो; अर्थात् बछड़े के साथ एपा का तीन दसवां अंश, और मेढ़े के साथ एपा का दो दसवां अंश, १० और सातों भेड़ के बच्चों में से एक एक बच्चे के पीछे एपा का दसवां अंश मैदा चढ़ाना। ११ और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये सब प्रायश्चित्त के पापबलि और नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि के, और उन सभों के अर्घों के अलावा चढ़ाए जाएं॥

१२ फिर सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन को तुम्हारी पवित्र सभा हो; और उस में परिश्रम का कोई काम न करना, और सात दिन तक यहोवा के लिये पर्ब्ब मानना; १३ तुम होमबलि यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देने के लिये हव्य करके चढ़ाना; अर्थात् तेरह बछड़े, और दो मेढ़े, और एक एक वर्ष के चौदह भेड़ के बच्चे; ये सब निर्दोष हों; १४ और उनका अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो; अर्थात् तेरहों बछड़ों में से एक एक बछड़े के पीछे एपा का तीन दसवां अंश, और दोनों मेढ़ों में से एक एक मेढ़े के पीछे एपा का दो दसवां अंश, १५ और चौदहों भेड़ के बच्चों में से एक

एक बच्चे के पीछे एपा का दसवां अंश मैदा चढ़ाना। १६ और पापबलि के लिये एक बकरा चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाए जाएं॥

१७ फिर दूसरे दिन बारह बछड़े, और दो मेढ़े, और एक एक वर्ष के चौदह निर्दोष भेड़ के बच्चे चढ़ाना; १८ और बछड़ों, और मेढ़ों, और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अन्नबलि और अर्घ, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना। १९ और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाए जाएं॥

२० फिर तीसरे दिन ग्यारह बछड़े, और दो मेढ़े, और एक एक वर्ष के चौदह निर्दोष भेड़ के बच्चे चढ़ाना; २१ और बछड़ों, और मेढ़ों, और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अन्नबलि और अर्घ, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना। २२ और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाए जाएं॥

२३ और फिर चौथे दिन दस बछड़े, और दो मेढ़े, और एक एक वर्ष के चौदह निर्दोष भेड़ के बच्चे चढ़ाना; २४ बछड़ों, और मेढ़ों, और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अन्नबलि और अर्घ, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना। २५ और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाए जाएं॥

२६ फिर पांचवें दिन नौ बछड़े, दो मेढ़े, और एक एक वर्ष के चौदह निर्दोष भेड़ के बच्चे चढ़ाना; २७ और बछड़ों, मेढ़ों, और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अन्नबलि और अर्घ, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना। २८ और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाए जाएं॥

२९ फिर छठवें दिन आठ बछड़े, और दो मेढ़े, और एक एक वर्ष के चौदह निर्दोष भेड़ के बच्चे चढ़ाना; ३० और बछड़ों, और मेढ़ों, और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अन्नबलि और अर्घ, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना। ३१ और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाए जाएं॥

३२ फिर सातवें दिन सात बछड़े, और दो मेढ़े, और एक एक वर्ष के चौदह निर्दोष भेड़ के बच्चे चढ़ाना; ३३ और बछड़ों, और मेढ़ों, और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अन्नबलि और अर्घ, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना। ३४ और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाए जाएं॥

३५ फिर आठवें दिन तुम्हारी एक महासभा हो; उस में परिश्रम का कोई काम न करना, ३६ और उस में होमबलि यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देने के लिये हव्य करके चढ़ाना; वह एक बछड़े, और एक मेढ़े, और एक एक वर्ष के सात निर्दोष भेड़ के बच्चों का हो; ३७ बछड़े, और मेढ़े, और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अन्नबलि और अर्घ, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना। ३८ और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाए जाएं॥

३९ अपनी मन्नतों और स्वेच्छाबलियों के अलावा, अपने अपने नियत समयों में, ये ही होमबलि, अन्नबलि, अर्घ, और मेलबलि, यहोवा के लिये चढ़ाना। ४० यह सारी आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी जो उस ने इस्राएलियों को सुनाई॥

(मन्नत मानने की विधि)

३० फिर मूसा ने इस्राएली गोत्रों के मुख्य मुख्य पुरुषों से कहा, यहोवा ने यह आज्ञा दी है, २ कि जब कोई पुरुष यहोवा की मन्नत माने, वा अपने आप को वाचा से बान्धने के लिये शपथ खाए, तो वह अपना वचन न टाले; जो कुछ उसके मुंह से निकला हो उसके अनुसार वह करे। ३ और जब कोई स्त्री अपनी कुंवारी अवस्था में, अपने पिता के घर से रहते हुए, यहोवा की मन्नत माने, वा अपने को वाचा से बान्धे, ४ तो यदि उसका पिता उसकी मन्नत वा उसका वह वचन सुनकर, जिस से उसने अपने आप को बान्धा हो, उस से कुछ न कहे; तब तो उसकी सब मन्नतें स्थिर बनी रहें, और कोई बन्धन क्यों न हो, जिस से उस ने अपने आप को बान्धा हो, वह भी स्थिर रहे। ५ परन्तु यदि उसका पिता उसकी सुनकर उसी दिन उसको बरजे, तो उसकी मन्नतें वा और प्रकार के बन्धन, जिन से उस ने अपने आप को बान्धा हो, उन में से एक भी स्थिर न रहे, और यहोवा यह जान कर, कि उस स्त्री के पिता ने उसे मना कर दिया है, उसका यह पाप क्षमा करेगा। ६ फिर यदि वह पति के अधीन हो और मन्नत माने, वा बिना सोच विचार किए ऐसा कुछ कहे जिस से वह बन्धन में पड़े, ७ और यदि उसका पति सुनकर उस दिन उससे कुछ न कहे; तब तो उसकी मन्नतें स्थिर रहें, और जिन बन्धनों से उस ने अपने आप को बान्धा हो वह भी स्थिर रहें। ८ परन्तु यदि उसका पति सुनकर उसी दिन उसे मना कर दे, तो जो मन्नत उस ने मानी है, और जो बात बिना सोच विचार किए कहने से उस ने अपने आप को वाचा से बान्धा हो, वह टूट जाएगी; और यहोवा उस स्त्री का पाप क्षमा करेगा। ९ फिर विधवा वा त्यागी हुई स्त्री की मन्नत, वा किसी प्रकार की वाचा का बन्धन क्यों न हो, जिस से उस ने अपने आप को बान्धा हो, तो वह स्थिर ही रहे। १० फिर यदि कोई स्त्री अपने पति के घर में रहते मन्नत माने, वा शपथ खाकर अपने आप को बान्धे, ११ और उसका पति सुनकर कुछ न कहे, और न उसे मना करे; तब तो उसकी सब मन्नतें स्थिर बनी रहें, और हर एक बन्धन क्यों न हो, जिस से उस ने अपने आप को बान्धा हो, वह स्थिर रहे। १२ परन्तु यदि उसका पति उसकी मन्नत आदि सुनकर उसी दिन पूरी रीति से तोड़ दे, तो उसकी मन्नतें आदि, जो कुछ उसके मुंह से अपने बन्धन के विषय निकला हो, उस में से एक बात भी स्थिर न रहे; उसके पति ने सब तोड़ दिया है; इसलिये यहोवा उस स्त्री का वह पाप क्षमा करेगा। १३ कोई भी मन्नत वा शपथ क्यों न हो, जिस से उस स्त्री ने अपने जीव को दुःख देने की वाचा बान्धी हो, उसको उसका पति चाहे तो दृढ़ करे, और चाहे तो तोड़े; १४ अर्थात् यदि उसका पति दिन प्रति दिन उस से कुछ भी न कहे, तो वह उसको सब मन्नतें आदि बन्धनों को जिन से वह बन्धी हो दृढ़ कर देता है; उस ने उनको दृढ़ किया है, क्योंकि सुनने के दिन उस ने कुछ नहीं कहा। १५ और यदि वह उन्हें सुनकर पीछे तोड़ दे, तो अपनी स्त्री

के अधर्म का भार वही उठाएगा। १६ पति-पत्नी के बीच, और पिता और उसके घर में रहती हुई कुंवारी बेटी के बीच, जिन विधियों की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी वे ये ही हैं॥

(मिद्यानियों से पलटा लेने का वर्णन)

३१ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ मिद्यानियों से इस्राएलियों का पलटा ले; बाद को तू अपने लोगों में जा मिलेगा। ३ तब मूसा ने लोगों से कहा, अपने में से पुरुषों को युद्ध के लिये हथियार बन्धाओ, कि वे मिद्यानियों पर चढ़के उन से यहोवा का पलटा लें। ४ इस्राएल के सब गोत्रों में से प्रत्येक गोत्र के एक एक हज़ार पुरुषों को युद्ध करने के लिये भेजो। ५ तब इस्राएल के सब गोत्रों में से प्रत्येक गोत्र के एक एक हज़ार पुरुष चुने गये, अर्थात् युद्ध के लिये हथियार-बन्द बारह हज़ार पुरुष। ६ प्रत्येक गोत्र में से उन हज़ार हज़ार पुरुषों को, और एलीआज़र याजक के पुत्र पिनहास को, मूसा ने युद्ध करने के लिये भेजा, और उसके हाथ में पवित्रस्थान के पात्र और वे तुरहियां थीं जो सांस बान्ध बान्ध कर फूंकी जाती थीं। ७ और जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी, उसके अनुसार उन्हों ने मिद्यानियों से युद्ध करके सब पुरुषों को घात किया। ८ और दूसरे जूझे हुओं को छोड़ उन्हों ने एवी, रेकेम, सूर, हूर, और रेबा नाम मिद्यान के पांचों राजाओं को घात किया; और बोर के पुत्र बिलाम को भी उन्हों ने तलवार से घात किया। ९ और इस्राएलियों ने मिद्यानी स्त्रियों को बालबच्चों समेत बन्धुआई में कर लिया; और उनके गाय-बैल, भेड़-बकरी, और उनकी सारी सम्पत्ति को लूट लिया। १० और उनके निवास के सब नगरों, और सब छावनियों को फूंक दिया; ११ तब वे, क्या मनुष्य क्या पशु, सब बन्धुओं और सारी लूट-पाट को लेकर १२ यरीहो के पास की यरदन नदी के तीर पर, मोआब के अराबा में, छावनी के निकट, मूसा और एलीआज़र याजक और इस्राएलियों की मण्डली के पास आए॥

१३ तब मूसा और एलीआज़र याजक और मण्डली के सब प्रधान छावनी के बाहर उनका स्वागत करने को निकले। १४ और मूसा सहस्रपति-शतपति आदि, सेनापतियों से, जो युद्ध करके लौटे आते थे क्रोधित होकर कहने लगा, १५ क्या तुम ने सब स्त्रियों को जीवित छोड़ दिया? १६ देखो, बिलाम की सम्मति से, पोर के विषय में इस्राएलियों से यहोवा का विश्वासघात इन्हीं ने कराया, और यहोवा की मण्डली में मरी फैली। १७ सो अब बालबच्चों में से हर एक लड़के को, और जितनी स्त्रियों ने पुरुष का मुंह देखा हो उन सभों को घात करो। १८ परन्तु जितनी लड़कियों ने पुरुष का मुंह न देखा हो उन सभों को तुम अपने लिये जीवित रखो। १९ और तुम लोग सात दिन तक छावनी के बाहर रहो, और तुम में से जितनों ने किसी प्राणी को घात किया, और जितनों ने किसी मरे हुए को छूआ हो, वे सब अपने अपने बन्धुओं समेत तीसरे और सातवें दिनों में अपने अपने को पाप छुड़ाकर पावन करें। २० और सब वस्त्रों, और चमड़े की बनी हुई सब वस्तुओं, और बकरी के बालों की और लकड़ी की बनी हुई सब वस्तुओं को पावन कर लो। २१ तब एलीआज़र याजक ने सेना के उन पुरुषों से जो युद्ध करने गए थे कहा, व्यवस्था की जिस विधि की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी है वह यह

है, २२ कि सोना, चांदी, पीतल, लोहा, रांगा, और सीसा, २३ जो कुछ आग में ठहर सके उसको आग में डालो, तब वह शुद्ध ठहरेगा; तौभी वह अशुद्धता से छुड़ानेवाले जल के द्वारा पावन किया जाए; परन्तु जो कुछ आग में न ठहर सके उसे जल में डुबाओ। २४ और सातवें दिन अपने वस्त्रों को धोना, तब तुम शुद्ध ठहरोगे; और तब छावनी में आना॥

२५ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २६ एलीआज़र याजक और मण्डली के पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुषों को साथ लेकर तू लूट के मनुष्यों और पशुओं की गिनती कर; २७ तब उनको आधा-आधा करके एक भाग उन सिपाहियों को जो युद्ध करने को गए थे, और दूसरा भाग मण्डली को दे। २८ फिर जो सिपाही युद्ध करने को गए थे, उनके आधे में से यहोवा के लिये, क्या मनुष्य, क्या गाय-बैल, क्या गदहे, क्या भेड़-बकरियां, २९ पांच सौ के पीछे एक को कर मानकर ले ले; और यहोवा की भेंट करके एलीआज़र याजक को दे दे। ३० फिर इस्राएलियों के आधे में से, क्या मनुष्य, क्या गाय-बैल, क्या गदहे, क्या भेड़-बकरियां, क्या किसी प्रकार का पशु हो, पचास के पीछे एक लेकर यहोवा के निवास की रखवाली करनेवाले लेवियों को दे। ३१ यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार जो उस ने मूसा को दी मूसा और एलीआज़र याजक ने किया। ३२ और जो वस्तुएं सेना के पुरुषों ने अपने अपने लिये लूट ली थीं उन से अधिक की लूट यह थी; अर्थात् छः लाख पचहत्तर हज़ार भेड़-बकरियां, ३३ बहत्तर हज़ार गाय-बैल, ३४ इकसठ हज़ार गदहे, ३५ और मनुष्यों में से जिन स्त्रियों ने पुरुष का मुंह नहीं देखा था वह सब बत्तीस हज़ार थीं। ३६ और इसका आधा, अर्थात् उनका भाग जो युद्ध करने को गए थे, उस में भेड़-बकरियां तीन लाख साढ़े सैंतीस हज़ार, ३७ जिन में से पौने सात सौ भेड़-बकरियां यहोवा का कर ठहरीं। ३८ और गाय-बैल छत्तीस हज़ार, जिन में से बहत्तर यहोवा का कर ठहरे। ३९ और गदहे साढ़े तीस हज़ार, जिन में से इकसठ यहोवा का कर ठहरे। ४० और मनुष्य सोलह हज़ार जिन में से बत्तीस प्राणी यहोवा का कर ठहरे। ४१ इस कर को जो यहोवा की भेंट थी मूसा ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार एलीआज़र याजक को दिया। ४२ और इस्राएलियों की मण्डली का आधा ४३ तीन लाख साढ़े सैंतिस हज़ार भेड़-बकरियां, ४४ छत्तीस हज़ार गाय-बैल, ४५ साढ़े तीस हज़ार गदहे, ४६ और सोलह हज़ार मनुष्य हुए। ४७ इस आधे में से, जिसे मूसा ने युद्ध करनेवाले पुरुषों के पास से अलग किया था, यहोवा की आज्ञा के अनुसार मूसा ने, क्या मनुष्य क्या पशु, पचास पीछे एक लेकर यहोवा के निवास की रखवाली करनेवाले लेवियों को दिया। ४८ तब सहस्रपति-शतपति आदि, जो सरदार सेना के हज़ारों के ऊपर नियुक्त थे, वे मूसा के पास आकर कहने लगे, ४९ जो सिपाही हमारे अधीन थे उनकी तेरे दासों ने गिनती ली, और उन में से एक भी नहीं घटा। ५० इसलिये पायजेब, कड़े, मुंदरियां, बालियां, बाजूबन्द, सोने के जो गहने, जिस ने पाया है, उनको हम यहोवा के साम्हने अपने प्राणों के निमित्त प्रायश्चित्त करने को यहोवा की भेंट करके ले आए हैं। ५१ तब मूसा और एलीआज़र याजक ने उन से वे सब सोने के नक्काशीदार गहने ले

लिए। ५२ और सहस्रपतियों और शतपतियों ने जो भेंट का सोना यहोवा की भेंट करके दिया वह सब का सब सोलह हज़ार साढ़े सात सौ शेकेल का था। (५३ योद्धाओं ने तो अपने अपने लिये लूट ले ली थी।) ५४ यह सोना मूसा और एलीआज़र याजक ने सहस्रपतियों और शतपतियों से लेकर मिलापवाले तम्बू में पहुंचा दिया, कि इस्राएलियों के लिये यहोवा के साम्हने स्मरण दिलानेवाली वस्तु ठहरे॥

(अढ़ाई गोत्र के इस्राएलियों को यरदन के इसी पार का भाग मिलने का वर्णन)

३२ रूबेनियों और गादियों के पास बहुत जानवर थे। जब उन्हों ने याजेर और गिलाद देशों को देखकर विचार किया, कि वह ढोरों के योग्य देश है, २ तब मूसा और एलीआज़र याजक और मण्डली के प्रधानों के पास जाकर कहने लगे, ३ अतारोत, दीबोन, याजेर, निम्रा, हेशबोन, एलाले, सबाम, नबो, और बोन नगरों का देश ४ जिस पर यहोवा ने इस्राएल की मण्डली को विजय दिलवाई है, वह ढोरों के योग्य है; और तेरे दासों के पास ढोर हैं। ५ फिर उन्हों ने कहा, यदि तेरा अनुग्रह तेरे दासों पर हो, तो यह देश तेरे दासों को मिले कि उनकी निज भूमि हो; हमें यरदन पार न ले चल। ६ मूसा ने गादियों और रूबेनियों से कहा, जब तुम्हारे भाई युद्ध करने को जाएंगे तब क्या तुम यहां बैठे रहोगे? ७ और इस्राएलियों से भी उस पार के देश जाने के विषय जो यहोवा ने उन्हें दिया है तुम क्यों अस्वीकार करवाते हो? ८ जब मैं ने तुम्हारे बापदादों को कादेशबर्ने से कनान देश देखने के लिये भेजा, तब उन्हों ने भी ऐसा ही किया था। ९ अर्थात् जब उन्हों ने एशकोल नाम नाले तक पहुंचकर देश को देखा, तब इस्राएलियों से उस देश के विषय जो यहोवा ने उन्हें दिया था अस्वीकार करा दिया। १० इसलिये उस समय यहोवा ने कोप करके यह शपथ खाई कि, ११ निःसन्देह जो मनुष्य मिस्र से निकल आए हैं उन में से, जितने बीस वर्ष के वा उस से अधिक अवस्था के हैं, वे उस देश को देखने न पाएंगे, जिसके देने की शपथ मैं ने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब से खाई है, क्योंकि वे मेरे पीछे पूरी रीति से नहीं हो लिये; १२ परन्तु यपुन्ने कनजी का पुत्र कालेब, और नून का पुत्र यहोशू, ये दोनों जो मेरे पीछे पूरी रीति से हो लिये हैं ये तो उसे देखने पाएंगे। १३ सो यहोवा का कोप इस्राएलियों पर भड़का, और जब तक उस पीढ़ी के सब लोगों का अन्त न हुआ, जिन्हों ने यहोवा के प्रति बुरा किया था, तब तक अर्थात् चालीस वर्ष तक वह उन्हें जंगल में मारे मारे फिराता रहा। १४ और सुनो, तुम लोग उन पापियों के बच्चे होकर इसी लिये अपने बाप-दादों के स्थान पर प्रकट हुए हो, कि इस्राएल के विरुद्ध यहोवा से भड़के हुए कोप को और भी भड़काओ! १५ यदि तुम उसके पीछे चलने से फिर जाओ, तो वह फिर हम सभों को जंगल में छोड़ देगा; इस प्रकार तुम इन सारे लोगों का नाश कराओगे। १६ तब उन्हों ने मूसा के और निकट आकर कहा, हम अपने ढोरों के लिये यहीं भेड़शाले बनाएंगे, और अपने बालबच्चों के लिये यहीं नगर बसाएंगे, १७ परन्तु आप इस्राएलियों के आगे आगे हथियार-बन्द तब तक चलेंगे, जब तक उनको उनके स्थान में न पहुंचा दें; परन्तु हमारे बालबच्चे इस देश के निवासियों के डर से गढ़वाले नगरों

में रहेंगे। १८ परन्तु जब तक इस्राएली अपने अपने भाग के अधिकारी न हों तब तक हम अपने घरों को न लौटेंगे। १९ हम उनके साथ यरदन पार वा कहीं आगे अपना भाग न लेंगे, क्योंकि हमारा भाग यरदन के इसी पार पूरब की ओर मिला है। २० तब मूसा ने उन से कहा, यदि तुम ऐसा करो, अर्थात् यदि तुम यहोवा के आगे आगे युद्ध करने को हथियार बान्धो, २१ और हर एक हथियार-बन्द यरदन के पार तब तक चले, जब तक यहोवा अपने आगे से अपने शत्रुओं को न निकाले २२ और देश यहोवा के वश में न आए; तो उसके पीछे तुम यहां लौटोगे, और यहोवा के और इस्राएल के विषय निर्दोष ठहरोगे; और यह देश यहोवा के प्रति तुम्हारी निज भूमि ठहरेगा। २३ और यदि तुम ऐसा न करो, तो यहोवा के विरुद्ध पापी ठहरोगे; और जान रखो कि तुम को तुम्हारा पाप लगेगा। २४ तुम अपने बालबच्चों के लिये नगर बसाओ, और अपनी भेड़-बकरियों के लिये भेड़शाले बनाओ; और जो तुम्हारे मुंह से निकला है वही करो। २५ तब गादियों और रूबेनियों ने मूसा से कहा, अपने प्रभु की आज्ञा के अनुसार तेरे दास करेंगे। २६ हमारे बालबच्चे, स्त्रियां, भेड़-बकरी आदि, सब पशु तो यहीं गिलाद के नगरों में रहेंगे; २७ परन्तु अपने प्रभु के कहे के अनुसार तेरे दास सब के सब युद्ध के लिये हथियार-बन्द यहोवा के आगे आगे लड़ने को पार जाएंगे। २८ तब मूसा ने उनके विषय में एलीआज़र याजक, और नून के पुत्र यहोशू, और इस्राएलियों के गोत्रों के पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुषों को यह आज्ञा दी, २९ कि यदि सब गादी और रूबेनी पुरुष युद्ध के लिये हथियार-बन्द तुम्हारे संग यरदन पार जाएं, और देश तुम्हारे वश में आ जाए, तो गिलाद देश उनकी निज भूमि होने को उन्हें देना। ३० परन्तु यदि वे तुम्हारे संग हथियार-बन्द पार न जाएं, तो उनकी निज भूमि तुम्हारे बीच कनान देश में ठहरे। ३१ तब गादी और रूबेनी बोल उठे, यहोवा ने जैसा तेरे दासों से कहलाया है वैसा ही हम करेंगे। ३२ हम हथियार-बन्द यहोवा के आगे आगे उस पार कनान देश में जाएंगे, परन्तु हमारी निज भूमि यरदन के इसी पार रहे॥

३३ तब मूसा ने गादियों और रूबेनियों को, और यूसुफ के पुत्र मनश्शे के आधे गोत्रियों को एमोरियों के राजा सीहोन और बाशान के राजा ओग, दोनों के राज्यों का देश, नगरों, और उनके आसपास की भूमि समेत दे दिया। ३४ तब गादियों ने दीबोन, अतारोत, अरोएर, ३५ अत्रोत, शोपान, याजेर, योगबहा, ३६ बेतनिम्रा, और बेथारान नाम नगरों को दृढ़ किया, और उन में भेड़-बकरियों के लिये भेड़शाले बनाए। ३७ और रूबेनियों ने हेशबोन, एलाले, और किर्यातैम को, ३८ फिर नबो और बालमोन के नाम बदलकर उनको, और सिबमा को दृढ़ किया; और उन्हों ने अपने दृढ़ किए हुए नगरों के और और नाम रखे। ३९ और मनश्शे के पुत्र माकीर के वंशवालों ने गिलाद देश में जाकर उसे ले लिया, और जो एमोरी उस में रहते थे उनको निकाल दिया। ४० तब मूसा ने मनश्शे के पुत्र माकीर के वंश को गिलाद दे दिया, और वे उस में रहने लगे। ४१ और मनश्शेई याईर ने जाकर गिलाद की कितनी बस्तियां ले लीं, और उनके नाम

हव्वोत्याईर * रखे। ४२ और नोबह ने जाकर गांवों समेत कनात को ले लिया, और उसका नाम अपने नाम पर नोबह रखा॥

(इस्राएलियों के पड़ाव पड़ाव की नामावली)

३३ जब से इस्राएली मूसा और हारून की अगुवाई से † दल बान्धकर मिस्र देश से निकले, तब से उनके ये पड़ाव हुए। २ मूसा ने यहोवा से आज्ञा पाकर उनके कूच उनके पड़ावों के अनुसार लिख दिए; और वे ये हैं। ३ पहिले महीने के पन्द्रहवें दिन को उन्हों ने रामसेस से कूच किया; फसह के दूसरे दिन इस्राएली सब मिस्रियों के देखते बेखटके ‡ निकल गए, ४ जब कि मिस्री अपने सब पहिलौठों को मिट्टी दे रहे थे जिन्हें यहोवा ने मारा था; और उस ने उनके देवताओं को भी दण्ड दिया था। ५ इस्राएलियों ने रामसेस से कूच करके सुक्कोत में डेरे डाले। ६ और सुक्कोत से कूच करके एताम में, जो जंगल के छोर पर है, डेरे डाले। ७ और एताम से कूच करके वे पीहहीरोत को मुड़ गए, जो बालसपोन के साम्हने है; और मिगदोल के साम्हने डेरे खड़े किए। ८ तब वे पीहहीरोत के साम्हने से कूच कर समुद्र के बीच होकर जंगल में गए, और एताम नाम जंगल में तीन दिन का मार्ग चलकर मारा में डेरे डाले। ९ फिर मारा से कूच करके वे एलीम को गए, और एलीम में जल के बारह सोते और सत्तर खजूर के वृक्ष मिले, और उन्हों ने वहां डेरे खड़े किए। १० तब उन्हों ने एलीम से कूच करके लाल समुद्र के तीर पर डेरे खड़े किए। ११ और लाल समुद्र से कूच करके सीन नाम जंगल में डेरे खड़े किए। १२ फिर सीन नाम जंगल से कूच करके उन्हों ने दोपका में डेरा किया। १३ और दोपका से कूच करके आलूश में डेरा किया। १४ और आलूश से कूच करके रपीदीम में डेरा किया, और वहां उन लोगों को पीने का पानी न मिला। १५ फिर उन्हों ने रपीदीम से कूच करके सीनै के जंगल में डेरे डाले। १६ और सीनै के जंगल से कूच करके किब्रोथत्तावा में डेरा किया। १७ और किब्रोथत्तावा से कूच करके हसेरोत में डेरे डाले। १८ और हसेरोत से कूच करके रित्मा में डेरे डाले। १९ फिर उन्हों ने रित्मा से कूच करके रिम्मोनपेरेस में डेरे खड़े किए। २० और रिम्मोनपेरेस से कूच करके लिब्ना में डेरे खड़े किए। २१ और लिब्ना से कूच करके रिस्सा में डेरे खड़े किए। २२ और रिस्सा से कूच करके कहेलाता में डेरा किया। २३ और कहेलाता से कूच करके शेपेर पर्वत के पास डेरा किया। २४ फिर उन्हों ने शेपेर पर्वत से कूच करके हरादा में डेरा किया। २५ और हरादा से कूच करके मखेलोत में डेरा किया। २६ और मखेलोत से कूच करके तहत में डेरे खड़े किए। २७ और तहत से कूच करके तेरह में डेरे डाले। २८ और तेरह से कूच करके मित्का में डेरे डाले। २९ फिर मित्का से कूच करके उन्हों ने हशमोना में डेरे डाले। ३० और हशमोना से कूच करके मोसेरोत में डेरे खड़े किए। ३१ और मोसेरोत से कूच करके याकानियों के बीच डेरा किया। ३२ और याकानियों के बीच से कूच करके होर्हग्गिदगाद में डेरा किया। ३३ और होर्हग्गिदगाद से कूच करके योतबाता में

* अर्थात् याईर की बस्तियां।
† मूल में—के हाथ से।
‡ मूल में—ऊंचे हाथ से।

डेरा किया। ३४ और योतबाता से कूच करके अब्रोना में डेरे खड़े किए। ३५ और अब्रोना से कूच करके एस्योनगेबेर में डेरे खड़े किए। ३६ और एस्योनगेबेर से कूच करके उन्हों ने सीन नाम जंगल के कादेश में डेरा किया। ३७ फिर कादेश से कूच करके होर पर्वत के पास, जो एदोम देश के सिवाने पर है, डेरे डाले। ३८ वहां इस्राएलियों के मिस्र देश से निकलने के चालीसवें वर्ष के पांचवें महीने के पहिले दिन को हारून याजक यहोवा की आज्ञा पाकर होर पर्वत पर चढ़ा, और वहां मर गया। ३९ और जब हारून होर पर्वत पर मर गया तब वह एक सौ तेईस वर्ष का था। ४० और अरात का कनानी राजा, जो कनान देश के दक्खिन भाग में रहता था, उस ने इस्राएलियों के आने का समाचार पाया। ४१ तब इस्राएलियों ने होर पर्वत से कूच करके सलमोना में डेरे डाले। ४२ और सलमोना से कूच करके पूनोन में डेरे डाले। ४३ और पूनोन से कूच करके ओबोत में डेरे डाले। ४४ और ओबोत से कूच करके अबारीम नाम डीहों में जो मोआब के सिवाने पर हैं, डेरे डाले। ४५ तब उन डीहों से कूच करके उन्हों ने दीबोनगाद में डेरा किया। ४६ और दीबोनगाद से कूच करके अल्मोनदिबलातैम में डेरा किया। ४७ और अल्मोनदिबलातैम से कूच करके उन्हों ने अबारीम नाम पहाड़ों में नबो के साम्हने डेरा किया। ४८ फिर अबारीम पहाड़ों से कूच करके मोआब के अराबा में, यरीहो के पास यरदन नदी के तट पर डेरा किया। ४९ और वे मोआब के अराबा में बेत्यशीमोत से लेकर आबेलशित्तीम तक यरदन के तीर तीर डेरे डाले॥

५० फिर मोआब के अराबा में, यरीहो के पास की यरदन नदी के तट पर, यहोवा ने मूसा से कहा, ५१ इस्राएलियों को समझाकर कह, जब तुम यरदन पार होकर कनान देश में पहुंचो, ५२ तब उस देश के निवासियों को उनके देश से निकाल देना; और उनके सब नक्काशे पत्थरों को और ढली हुई मूर्त्तियों को नाश करना, और उनके सब पूजा के ऊंचे स्थानों को ढा देना। ५३ और उस देश को अपने अधिकार में लेकर उस में निवास करना, क्योंकि मैं ने वह देश तुम्हीं को दिया है कि तुम उसके अधिकारी हो। ५४ और तुम उस देश को चिट्ठी डालकर अपने कुलों के अनुसार बांट लेना; अर्थात् जो कुल अधिकवाले हैं उन्हें अधिक, और जो थोड़ेवाले हैं उनको थोड़ा भाग देना; जिस कुल की चिट्ठी जिस स्थान के लिये निकले वही उसका भाग ठहरे; अपने पितरों के गोत्रों के अनुसार अपना अपना भाग लेना। ५५ परन्तु यदि तुम उस देश के निवासियों को अपने आगे से न निकालोगे, तो उन में से जिनको तुम उस में रहने दोगे वे मानो तुम्हारी आंखों में कांटे और तुम्हारे पांजरों में कीलें ठहरेंगे, और वे उस देश में जहां तुम बसोगे तुम्हें संकट में डालेंगे। ५६ और उन से जैसा बर्ताव करने की मनसा मैं ने की है वैसा ही तुम से करूंगा॥

(कनान देश के सिवाने)

३४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ इस्राएलियों को यह आज्ञा दे, कि जो देश तुम्हारा भाग होगा वह तो चारों ओर के सिवाने तक का कनान देश है, इसलिये जब तुम कनान देश में पहुंचो, ३ तब तुम्हारा दक्खिनी प्रान्त सीन नाम

जंगल से ले एदोम देश के किनारे किनारे होता हुआ चला जाए, और तुम्हारा दक्खिनी सिवाना खारे ताल के सिरे पर आरम्भ होकर पश्चिम की ओर चले; ४ वहां से तुम्हारा सिवाना अक्रब्बीम नाम चढ़ाई की दक्खिन की ओर पहुंचकर मुड़े, और सीन तक आए, और कादेशबर्ने की दक्खिन की ओर निकले, और हसरद्दार तक बढ़के अस्मोन तक पहुंचे; ५ फिर वह सिवाना अस्मोन से घूमकर मिस्र के नाले तक पहुंचे, और उसका अन्त समुद्र का तट ठहरे। ६ फिर पच्छिमी सिवाना महासमुद्र हो; तुम्हारा पच्छिमी सिवाना यही ठहरे। ७ और तुम्हारा उत्तरीय सिवाना यह हो, अर्थात् तुम महासमुद्र से ले होर पर्वत तक सिवाना बान्धना; ८ और होर पर्वत से हमात की घाटी तक सिवाना बान्धना, और वह सदाद पर निकले; ९ फिर वह सिवाना जिप्रोन तक पहुंचे, और हसरेनान पर निकले; तुम्हारा उत्तरीय सिवाना यही ठहरे। १० फिर अपना पूरबी सिवाना हसरेनान से शपाम तक बान्धना; ११ और वह सिवाना शपाम से रिबला तक, जो ऐन की पूर्व की ओर है, नीचे को उतरते उतरते किन्नेरेत नाम ताल के पूर्व से लग जाए; १२ और वह सिवाना यरदन तक उतरके खारे ताल के तट पर निकले। तुम्हारे देश के चारों सिवाने ये ही ठहरें। १३ तब मूसा ने इस्राएलियों से फिर कहा, जिस देश के तुम चिट्ठी डालकर अधिकारी होगे, और यहोवा ने उसे साढ़े नौ गोत्र के लोगों को देने की आज्ञा दी है, वह यही है; १४ परन्तु रूबेनियों और गादियों के गोत्र तो अपने अपने पितरों के कुलों के अनुसार अपना अपना भाग पा चुके हैं, और मनश्शे के आधे गोत्र के लोग भी अपना भाग पा चुके हैं; १५ अर्थात् उन अढ़ाई गोत्रों के लोग यरीहो के पास की यरदन के पार पूर्व दिशा में, जहां सूर्योदय होता है, अपना अपना भाग पा चुके हैं॥

१६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १७ कि जो पुरुष तुम लोगों के लिये उस देश को बांटेंगे उनके नाम ये हैं; अर्थात् एलीआज़र याजक और नून का पुत्र यहोशू। १८ और देश को बांटने के लिये एक एक गोत्र का एक एक प्रधान ठहराना। १९ और इन पुरुषों के नाम ये हैं; अर्थात् यहूदागोत्री यपुन्ने का पुत्र कालेब, २० शिमोनगोत्री अम्मीहूद का पुत्र शमूएल, २१ बिन्यामीनगोत्री किसलोन का पुत्र एलीदाद, २२ दानियों के गोत्र का प्रधान योग्ली का पुत्र बुक्की, २३ यूसुफियों में से मनश्शेइयों के गोत्र का प्रधान एपोद का पुत्र हन्नीएल, २४ और एप्रैमियों के गोत्र का प्रधान शिप्तान का पुत्र कमूएल, २५ जबूलूनियों के गोत्र का प्रधान पर्नाक का पुत्र एलीसापान, २६ इस्साकारियों के गोत्र का प्रधान अज्जान का पुत्र पलतीएल, २७ आशेरियों के गोत्र का प्रधान शलोमी का पुत्र अहीहूद, २८ और नप्तालियों के गोत्र का प्रधान अम्मीहूद का पुत्र पदहेल। २९ जिन पुरुषों को यहोवा ने कनान देश को इस्राएलियों के लिये बांटने की आज्ञा दी वे ये ही हैं॥

(लेवियों के नगरों की और शरणनगरों की विधि)

३५ फिर यहोवा ने, मोआब के अराबा में, यरीहो के पास की यरदन नदी के तट पर मूसा से कहा, २ इस्राएलियों को आज्ञा दे, कि तुम अपने अपने निज भाग की भूमि में से लेवियों को

रहने के लिये नगर देना; और नगरों के चारों ओर की चराइयां भी उनको देना। ३ नगर तो उनके रहने के लिये, और चराइयां उनके गाय-बैल और भेड़-बकरी आदि, उनके सब पशुओं के लिये होंगी। ४ और नगरों की चराइयां, जिन्हें तुम लेवियों को दोगे, वह एक एक नगर की शहरपनाह से बाहर चारों ओर एक एक हज़ार हाथ तक की हों। ५ और नगर के बाहर पूर्व, दक्खिन, पच्छिम, और उत्तर अलंग, दो दो हज़ार हाथ इस रीति से नापना कि नगर बीचोंबीच हो; लेवियों के एक एक नगर की चराई इतनी ही भूमि की हो। ६ और जो नगर तुम लेवियों को दोगे उन में से छः शरणनगर हों, जिन्हें तुम को खूनी के भागने के लिये ठहराना होगा, और उन से अधिक बयालीस नगर और भी देना। ७ जितने नगर तुम लेवियों को दोगे वे सब अड़तालीस हों, और उनके साथ चराइयां देना। ८ और जो नगर तुम इस्राएलियों की निज भूमि में से दो, वे जिनके बहुत नगर हों उन से बहुत, और जिनके थोड़े नगर हों उन से थोड़े लेकर देना; सब अपने अपने नगरों में से लेवियों को अपने ही अपने भाग के अनुसार दें॥

९ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १० इस्राएलियों से कह, कि जब तुम यरदन पार होकर कनान देश में पहुंचो, ११ तब ऐसे नगर ठहराना जो तुम्हारे लिये शरण-नगर हों, कि जो कोई किसी को भूल से मारके खूनी ठहरा हो वह वहां भाग जाए। १२ वे नगर तुम्हारे निमित्त पलटा लेने-वाले से शरण लेने के काम आएंगे, कि जब तक खूनी न्याय के लिये मण्डली के साम्हने खड़ा न हो तब तक वह न मार डाला जाए। १३ और शरण के जो नगर तुम दोगे वे छः हों। १४ तीन नगर तो यरदन के इस पार, और तीन कनान देश में देना; शरण-नगर इतने ही रहें। १५ ये छहों नगर इस्राएलियों के और उनके बीच रहनेवाले परदेशियों के लिये भी शरणस्थान ठहरें, कि जो कोई किसी को भूल से मार डाले वह वहीं भाग जाए। १६ परन्तु यदि कोई किसी को लोहे के किसी हथियार से ऐसा मारे कि वह मर जाए, तो वह खूनी ठहरेगा; और वह खूनी अवश्य मार डाला जाए। १७ और यदि कोई ऐसा पत्थर हाथ में लेकर, जिस से कोई मर सकता है, किसी को मारे, और वह मर जाए, तो वह भी खूनी ठहरेगा; और वह खूनी अवश्य मार डाला जाए। १८ वा कोई हाथ में ऐसी लकड़ी लेकर, जिस से कोई मर सकता है, किसी को मारे, और वह मर जाए, तो वह भी खूनी ठहरेगा; और वह खूनी अवश्य मार डाला जाए। १९ लोहू का पलटा लेनेवाला आप ही उस खूनी को मार डाले; जब भी वह मिले तब ही वह उसे मार डाले। २० और यदि कोई किसी को बैर से ढकेल दे, वा घात लगाकर कुछ उस पर ऐसे फेंक दे कि वह मर जाए, २१ वा शत्रुता से उसको अपने हाथ से ऐसा मारे कि वह मर जाए, तो जिस ने मारा हो वह अवश्य मार डाला जाए; वह खूनी ठहरेगा; लोहू का पलटा लेनेवाला जब भी वह खूनी उसे मिल जाए तब ही उसको मार डाले। २२ परन्तु यदि कोई किसी को बिना सोचे, और बिना शत्रुता रखे ढकेल दे, वा बिना घात लगाए उस पर कुछ फेंक दे, २३ वा ऐसा कोई पत्थर लेकर, जिस से कोई मर सकता है, दूसरे को बिना देखे उस पर फेंक दे, और वह मर जाए, परन्तु वह न

उसका शत्रु हो, और न उसकी हानि का खोजी रहा हो; २४ तो मण्डली मारनेवाले और लोहू के पलटा लेनेवाले के बीच इन नियमों के अनुसार न्याय करे; २५ और मण्डली उस खूनी को लोहू के पलटा लेनेवाले के हाथ से बचाकर उस शरणनगर में जहां वह पहिले भाग गया हो लौटा दे, और जब तक पवित्र तेल से अभिषेक किया हुआ महायाजक न मर जाए तब तक वह वहीं रहे। २६ परन्तु यदि वह खूनी उस शरणनगर के सिवाने से जिस में वह भाग गया हो बाहर निकलकर और कहीं जाए, २७ और लोहू का पलटा लेनेवाला उसको शरणनगर के सिवाने के बाहर कहीं पाकर मार डाले, तो वह लोहू बहाने का दोषी न ठहरे। २८ क्योंकि खूनी को महायाजक की मृत्यु तक शरणनगर में रहना चाहिये; और महायाजक के मरने के पश्चात् वह अपनी निज भूमि को लौट सकेगा। २९ तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में तुम्हारे सब रहने के स्थानों में न्याय की यह विधि होगी। ३० और जो कोई किसी मनुष्य को मार डाले वह साक्षियों के कहने पर मार डाला जाए, परन्तु एक ही साक्षी की साक्षी से कोई न मार डाला जाए। ३१ और जो खूनी प्राणदण्ड के योग्य ठहरे उस से प्राणदण्ड के बदले में जुरमाना न लेना; वह अवश्य मार डाला जाए। ३२ और जो किसी शरणनगर में भागा हो उसके लिये भी इस मतलब से जुरमाना न लेना, कि वह याजक के मरने से पहिले फिर अपने देश में रहने को लौटने पाए। ३३ इसलिये जिस देश में तुम रहोगे उसको अशुद्ध न करना; खून से तो देश अशुद्ध हो जाता है, और जिस देश में जब खून किया जाए तब केवल खूनी के लोहू बहाने ही से उस देश का प्रायश्चित्त हो सकता है। ३४ जिस देश में तुम निवास करोगे उसके बीच मैं रहूंगा, उसको अशुद्ध न करना; मैं यहोवा तो इस्राएलियों के बीच रहता हूं॥

(गोत्र गोत्र के भाग में गड़बड़ पड़ने का निषेध)

३६ फिर यूसुफियों के कुलों में से गिलाद, जो माकीर का पुत्र और मनश्शे का पोता था, उसके वंश के कुल के पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुष मूसा के समीप जाकर उन प्रधानों के साम्हने, जो इस्राएलियों के पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष थे, कहने लगे, २ यहोवा ने हमारे प्रभु को आज्ञा दी थी, कि इस्राएलियों को चिट्ठी डालकर देश बांट देना; और फिर यहोवा की यह भी आज्ञा हमारे प्रभु को मिली, कि हमारे सगोत्री सलोफाद का भाग उसकी बेटियों को देना। ३ तो यदि वे इस्राएलियों के और किसी गोत्र के पुरुषों से ब्याही जाएं, तो उनका भाग हमारे पितरों के भाग से छूट जाएगा, और जिस गोत्र में वे ब्याही जाएं उसी गोत्र के भाग में मिल जाएगा; तब हमारा भाग घट जाएगा। ४ और जब इस्राएलियों की जुबली * होगी, तब जिस गोत्र में वे ब्याही जाएं उसके भाग में उनका भाग पक्की रीति से मिल जाएगा; और वह हमारे पितरों के गोत्र के भाग से सदा के लिये छूट जाएगा। ५ तब यहोवा से आज्ञा पाकर मूसा ने इस्राएलियों से कहा, यूसुफियों के गोत्री ठीक कहते हैं। ६ सलोफाद की बेटियों के विषय में यहोवा ने यह आज्ञा दी है, कि जो वर जिसकी दृष्टि में अच्छा लगे वह उसी से ब्याही जाए; परन्तु वे

* अर्थात् महाशब्दवाले नरसिंगे का शब्द।

अपने मूलपुरुष ही के गोत्र के कुल में ब्याही जाएं। ७ और इस्राएलियों के किसी गोत्र का भाग दूसरे गोत्र के भाग में न मिलने पाए; इस्राएली अपने अपने मूलपुरुष के गोत्र के भाग पर बने रहें। ८ और इस्राएलियों के किसी गोत्र में किसी की बेटी हो जो भाग पानेवाली हो, वह अपने ही मूलपुरुष के गोत्र के किसी पुरुष से ब्याही जाए, इसलिये कि इस्राएली अपने अपने मूलपुरुष के भाग के अधिकारी रहें। ९ किसी गोत्र का भाग दूसरे गोत्र के भाग में मिलने न पाए; इस्राएलियों के एक एक गोत्र के लोग अपने अपने भाग पर बने रहें। १० यहोवा की आज्ञा के अनुसार जो उस ने मूसा को दी सलोफाद की बेटियों ने किया। ११ अर्थात् महला, तिर्सा, होग्ला, मिलका, और नोआ, जो सलोफाद की बेटियां थीं, उन्हों ने अपने चचेरे भाइयों से ब्याह किया। १२ वे यूसुफ के पुत्र मनश्शे के वंश के कुलों में ब्याही गईं, और उनका भाग उनके मूलपुरुष के कुल के गोत्र के अधिकार में बना रहा॥

१३ जो आज्ञाएं और नियम यहोवा ने मोआब के अराबा में यरीहो के पास की यरदन नदी के तीर पर मूसा के द्वारा इस्राएलियों को दिए वे ये ही हैं॥

व्यवस्थाविवरण

(पूर्व वृत्तान्त का विवरण)

१ जो बातें मूसा ने यरदन के पार जंगल में, अर्थात् सूप के साम्हने के अराबा में, और पारान और तोपेल के बीच, और लाबान हसेरोत और दीजाहाब में, सारे इस्राएलियों से कहीं वे ये हैं। २ होरेब से कादेशबर्ने तक सेइर पहाड़ का मार्ग ग्यारह दिन का है। ३ चालीसवें वर्ष के ग्यारहवें महीने के पहिले दिन को जो कुछ यहोवा ने मूसा को इस्राएलियों से कहने की आज्ञा दी थी, उसके अनुसार मूसा उन से ये बातें कहने लगा। ४ अर्थात् जब मूसा ने एमोरियों के राजा हेशबोनवासी सीहोन और बाशान के राजा अशतारोतवासी ओग को एद्रेई में मार डाला, ५ उसके बाद यरदन के पार मोआब देश में वह व्यवस्था का विवरण यों करने लगा, ६ कि हमारे परमेश्वर यहोवा ने होरेब के पास हम से कहा था, कि तुम लोगों को इस पहाड़ के पास रहते हुए बहुत दिन हो गए हैं; ७ इसलिये अब यहां से कूच करो, और एमोरियों के पहाड़ी देश को, और क्या अराबा में, क्या पहाड़ों में, क्या नीचे के देश में, क्या दक्खिन देश में, क्या समुद्र के तीर पर, जितने लोग एमोरियों के पास रहते हैं उनके देश को, अर्थात् लबानोन पर्वत तक और परात नाम महानद तक रहनेवाले कनानियों के देश को भी चले जाओ। ८ सुनो, मैं उस देश को तुम्हारे साम्हने किए देता हूं; जिस देश के विषय यहोवा ने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब, तुम्हारे पितरों से शपथ खाकर कहा था, कि मैं

इसे तुम को और तुम्हारे बाद तुम्हारे वंश को दूंगा, उसको अब जाकर अपने अधिकार में कर लो। ९ फिर उसी समय मैं ने तुम से कहा, कि मैं तुम्हारा भार अकेला नहीं सह सकता; १० क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को यहां तक बढ़ाया है, कि तुम गिनती में आज आकाश के तारों के समान हो गए हो। ११ तुम्हारे पितरों का परमेश्वर तुम को हजारगुणा और भी बढ़ाए, और अपने वचन के अनुसार तुम को आशीष भी देता रहे! १२ परन्तु तुम्हारे जंजाल, और भार, और झगड़े रगड़े को मैं अकेला कहां तक सह सकता हूं? १३ सो तुम अपने एक एक गोत्र में से बुद्धिमान और समझदार और प्रसिद्ध पुरुष चुन लो, और मैं उन्हें तुम पर मुखिया ठहराऊंगा। १४ इसके उत्तर में तुम ने मुझ से कहा, जो कुछ तू हम से कहता है उसका करना अच्छा है। १५ इसलिये मैं ने तुम्हारे गोत्रों के मुख्य पुरुषों को जो बुद्धिमान और प्रसिद्ध पुरुष थे चुनकर तुम पर मुखिया नियुक्त किया, अर्थात् हज़ार-हज़ार, सौ-सौ, पचास-पचास, और दस-दस के ऊपर प्रधान और तुम्हारे गोत्रों के सरदार भी नियुक्त किए। १६ और उस समय मैं ने तुम्हारे न्यायियों को आज्ञा दी, कि तुम अपने भाइयों के मुकद्दमे सुना करो, और उनके बीच और उनके पड़ोसियों और परदेशियों के बीच भी धर्म से न्याय किया करो। १७ न्याय करते समय किसी का पक्ष न करना; जैसे बड़े की वैसे ही छोटे मनुष्य की भी सुनना; किसी का मुंह देखकर न डरना, क्योंकि न्याय परमेश्वर का काम है; और जो मुकद्दमा तुम्हारे लिये कठिन हो, वह मेरे पास ले आना, और मैं उसे सुनूंगा। १८ और मैं ने उसी समय तुम्हारे सारे कर्त्तव्य कर्म तुम को बता दिए॥

१९ और हम होरेब से कूच करके अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार उस सारे बड़े और भयानक जंगल में होकर चले, जिसे तुम ने एमोरियों के पहाड़ी देश के मार्ग में देखा, और हम कादेशबर्ने तक आए। २० वहां मैं ने तुम से कहा, तुम एमोरियों के पहाड़ी देश तक आ गए हो जिसको हमारा परमेश्वर यहोवा हमें देता है। २१ देखो, उस देश को तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे साम्हने किए देता है, इसलिये अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा के वचन के अनुसार उस पर चढ़ो, और उसे अपने अधिकार में ले लो; न तो तुम डरो और न तुम्हारा मन कच्चा हो। २२ और तुम सब मेरे पास आकर कहने लगे, हम अपने आगे पुरुषों को भेज देंगे, जो उस देश का पता लगाकर हम को यह सन्देश दें, कि कौन सा मार्ग होकर चलना होगा और किस किस नगर में प्रवेश करना पड़ेगा? २३ इस बात से प्रसन्न होकर मैं ने तुम में से बारह पुरुष, अर्थात् गोत्र पीछे एक पुरुष चुन लिया; २४ और वे पहाड़ पर चढ़ गए, और एशकोल नाम नाले को पहुंचकर उस देश का भेद लिया। २५ और उस देश के फलों में से कुछ हाथ में लेकर हमारे पास आए, और हम को यह सन्देश दिया, कि जो देश हमारा परमेश्वर यहोवा हमें देता है वह अच्छा है। २६ तौभी तुम ने वहां जाने से नाह किया, किन्तु अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के विरुद्ध होकर २७ अपने अपने डेरे में यह कहकर कुड़कुड़ाने लगे, कि यहोवा हम से बैर रखता है, इस कारण हम को मिस्र देश से निकाल ले आया है, कि हम को एमोरियों के वश में

करके सत्यानाश कर डाले। २८ हम किधर जाएं ? हमारे भाइयों ने यह कहके हमारे मन को कच्चा कर दिया है, कि वहां के लोग हम से बड़े और लम्बे हैं; और वहां के नगर बड़े बड़े हैं, और उनकी शहरपनाह आकाश से बातें करती हैं*; और हम ने वहां अनाकवंशियों को भी देखा है। २९ मैं ने तुम से कहा, उनके कारण त्रास मत खाओ और न डरो। ३० तुम्हारा परमेश्वर यहोवा जो तुम्हारे आगे आगे चलता है वह आप तुम्हारी ओर से लड़ेगा, जैसे कि उस ने मिस्र में तुम्हारे देखते तुम्हारे लिये किया; ३१ फिर तुम ने जंगल में भी देखा, कि जिस रीति कोई पुरुष अपने लड़के को उठाए चलता है, उसी रीति हमारा परमेश्वर यहोवा हम को इस स्थान पर पहुंचने तक, उस सारे मार्ग में जिस से हम आए हैं, उठाये रहा। ३२ इस बात पर भी तुम ने अपने उस परमेश्वर यहोवा पर विश्वास नहीं किया, ३३ जो तुम्हारे आगे आगे इसलिये चलता रहा, कि डेरे डालने का स्थान तुम्हारे लिये ढूंढ़े, और रात को आग में और दिन को बादल में प्रगट होकर चला, ताकि तुम को वह मार्ग दिखाए जिस से तुम चलो। ३४ परन्तु तुम्हारी वे बातें सुनकर यहोवा का कोप भड़क उठा, और उस ने यह शपथ खाई, ३५ कि निश्चय इस बुरी पीढ़ी के मनुष्यों में से एक भी उस अच्छे देश को देखने न पाएगा, जिसे मैं ने उनके पितरों को देने की शपथ खाई थी। ३६ यपुन्ने का पुत्र कालेब ही उसे देखने पाएगा, और जिस भूमि पर उसके पांव पड़े हैं उसे मैं उसको और उसके वंश को भी दूंगा; क्योंकि वह मेरे पीछे पूरी रीति से हो लिया है। ३७ और मुझ पर भी यहोवा तुम्हारे कारण क्रोधित हुआ, और यह कहा, कि तू भी वहां जाने न पाएगा; ३८ नून का पुत्र यहोशू जो तेरे साम्हने खड़ा रहता है, वह तो वहां जाने पाएगा; सो तू उसको हियाव दे, क्योंकि उस देश को इस्राएलियों के अधिकार में वही कर देगा। ३९ फिर तुम्हारे बालबच्चे जिनके विषय में तुम कहते हो, कि ये लूट में चले जाएंगे, और तुम्हारे जो लड़केबाले अभी भले बुरे का भेद नहीं जानते, वे वहां प्रवेश करेंगे, और उनको मैं वह देश दूंगा, और वे उसके अधिकारी होंगे। ४० परन्तु तुम लोग घूमकर कूच करो, और लाल समुद्र के मार्ग से जंगल की ओर जाओ। ४१ तब तुम ने मुझ से कहा, हम ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है; अब हम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार चढ़ाई करेंगे और लड़ेंगे। तब तुम अपने अपने हथियार बान्धकर पहाड़ पर बिना सोचे समझे चढ़ने को तैयार हो गए। ४२ तब यहोवा ने मुझ से कहा, उन से कह दे, कि तुम मत चढ़ो, और न लड़ो; क्योंकि मैं तुम्हारे मध्य में नहीं हूं; कहीं ऐसा न हो कि तुम अपने शत्रुओं से हार जाओ। ४३ यह बात मैं ने तुम से कह दी, परन्तु तुम ने न मानी; किन्तु ढिठाई से यहोवा की आज्ञा का उल्लंघन करके पहाड़ पर चढ़ गए। ४४ तब उस पहाड़ के निवासी एमोरियों ने तुम्हारा साम्हना करने को निकलकर मधुमक्खियों की नाईं तुम्हारा पीछा किया, और सेईर देश के होर्मा तक तुम्हें मारते मारते चले आए। ४५ तब तुम लौटकर यहोवा के साम्हने रोने लगे; परन्तु यहोवा ने तुम्हारी न सुनी, न तुम्हारी बातों पर कान लगाया। ४६ और तुम कादेश में

* मूल में—नगर बड़े और आकाश लों दृढ़ हैं।

बहुत दिनों तक पड़े रहे, यहां तक कि एक जुग हो गया ॥

२ तब उस आज्ञा के अनुसार, जो यहोवा ने मुझ को दी थी, हम ने घूमकर कूच किया, और लाल समुद्र के मार्ग के जंगल की ओर चले; और बहुत दिन तक सेईर पहाड़ के बाहर बाहर चलते रहे। २ तब यहोवा ने मुझ से कहा, ३ तुम लोगों को इस पहाड़ के बाहर बाहर चलते हुए बहुत दिन बीत गए, अब घूमकर उत्तर की ओर चलो। ४ और तू प्रजा के लोगों को मेरी यह आज्ञा सुना, कि तुम सेईर के निवासी अपने भाई एसावियों के सिवाने के पास होकर जाने पर हो; और वे तुम से डर जाएंगे। इसलिये तुम बहुत चौकस रहो; ५ उन्हें न छेड़ना; क्योंकि उनके देश में से मैं तुम्हें पांव धरने का ठौर तक न दूंगा, इस कारण कि मैं ने सेईर पर्वत एसावियों के अधिकार में कर दिया है। ६ तुम उन से भोजन रुपये से मोल लेकर खा सकोगे, और रुपया देकर कुंओं से पानी भरके पी सकोगे। ७ क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे हाथों के सब कामों के विषय तुम्हें आशीष देता आया है; इस भारी जंगल में तुम्हारा चलना फिरना वह जानता है; इन चालीस वर्षों में तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे संग संग रहा है; और तुम को कुछ घटी नहीं हुई। ८ यों हम सेईर निवासी और अपने भाई एसावियों के पास से होकर, अराबा के मार्ग, और एलत और एस्योनगेबेर को पीछे छोड़कर चले ॥

फिर हम मुड़कर मोआब के जंगल के मार्ग से होकर चले। ९ और यहोवा ने मुझ से कहा, मोआबियों को न सताना और न लड़ाई छेड़ना, क्योंकि मैं उनके देश में से कुछ भी तेरे अधिकार में न कर दूंगा क्योंकि मैं ने आर को लूतियों के अधिकार में किया है। (१० अगले दिनों में वहां एमी लोग बसे हुए थे, जो अनाकियों के समान बलवन्त और लम्बे लम्बे और गिनती में बहुत थे; ११ और अनाकियों की नाईं वे भी रपाई गिने जाते थे, परन्तु मोआबी उन्हें एमी कहते हैं। १२ और अगले दिनों में सेईर में होरी लोग बसे हुए थे, परन्तु एसावियों ने उनको उस देश से निकाल दिया, और अपने साम्हने से नाश करके उनके स्थान पर आप बस गए; जैसे कि इस्राएलियों ने यहोवा के दिए हुए अपने अधिकार के देश में किया।) १३ अब तुम लोग कूच करके जेरेद नदी के पार जाओ; तब हम जेरेद नदी के पार आए। १४ और हमारे कादेशबर्ने को छोड़ने से लेकर जेरेद नदी पार होने तक अड़तीस वर्ष बीत गए, उस बीच में यहोवा की शपथ के अनुसार उस पीढ़ी के सब योद्धा छावनी में से नाश हो गए। १५ और जब तक वे नाश न हुए तब तक यहोवा का हाथ उन्हें छावनी में से मिटा डालने के लिये उनके विरुद्ध बढ़ा ही रहा ॥

१६ जब सब योद्धा मरते मरते लोगों के बीच में से नाश हो गए, १७ तब यहोवा ने मुझ से कहा, १८ अब मोआब के सिवाने, अर्थात् आर को पार कर; १९ और जब तू अम्मोनियों के साम्हने जाकर उनके निकट पहुंचे, तब उनको न सताना और न छेड़ना, क्योंकि मैं अम्मोनियों के देश में से कुछ भी तेरे अधिकार में न करूंगा, क्योंकि मैं ने उसे लूतियों के अधिकार में कर दिया है। (२० वह देश भी रपाइयों का गिना जाता था, क्योंकि अगले दिनों में रपाई, जिन्हें

अम्मोनी जमजुम्मी कहते थे, वे वहां रहते थे; २१ वे भी अनाकियों के समान बलवान और लम्बे लम्बे और गिनती में बहुत थे; परन्तु यहोवा ने उनको अम्मोनियों के साम्हने से नाश कर डाला, और उन्हों ने उनको उस देश से निकाल दिया, और उनके स्थान पर आप रहने लगे; २२ जैसे कि उस ने सेईर के निवासी एसावियों के साम्हने से होरियों को नाश किया, और उन्हों ने उनको उस देश से निकाल दिया, और आज तक उनके स्थान पर वे आप निवास करते हैं। २३ वैसा ही अव्वियों को, जो अज्जा नगर तक गांवों में बसे हुए थे, उनको कप्तोरियों ने जो कप्तोर से निकले थे नाश किया, और उनके स्थान पर आप रहने लगे।) २४ अब तुम लोग उठकर कूच करो, और अर्नोन के नाले के पार चलो; सुन, मैं देश समेत हेशबोन के राजा एमोरी सीहोन को तेरे हाथ में कर देता हूं; इसलिये उस देश को अपने अधिकार में लेना आरम्भ करो, और उस राजा से युद्ध छेड़ दो। २५ और जितने लोग धरती पर* रहते हैं उन सभों के मन में मैं आज ही के दिन से तेरे कारण डर और थरथराहट समवाने लगूंगा; वे तेरा समाचार पाकर तेरे डर के मारे कांपेंगे और पीड़ित होंगे॥

२६ और मैं ने कदेमोत नाम जंगल से हेशबोन के राजा सीहोन के पास मेल की ये बातें कहने को दूत भेजे, २७ कि मुझे अपने देश में से होकर जाने दे; मैं राजपथ पर चला जाऊंगा, और दहिने और बांए हाथ न मुड़ूंगा। २८ तू रुपया लेकर मेरे हाथ भोजनवस्तु देना कि मैं खाऊं, और पानी भी रुपया लेकर मुझ को देना कि मैं पीऊं; केवल मुझे पांव पांव चले जाने दे, २९ जैसा सेईर के निवासी एसावियों ने और आर के निवासी मोआबियों ने मुझ से किया, वैसा ही तू भी मुझ से कर, इस रीति मैं यरदन पार होकर उस देश में पहुंचूंगा जो हमारा परमेश्वर यहोवा हमें देता है। ३० परन्तु हेशबोन के राजा सीहोन ने हम को अपने देश में से होकर चलने न दिया; क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने उसका चित्त कठोर और उसका मन हठीला कर दिया था, इसलिये कि उसको तुम्हारे हाथ में कर दे, जैसा कि आज प्रगट है। ३१ और यहोवा ने मुझ से कहा, सुन, मैं देश समेत सीहोन को तेरे वश में कर देने पर हूं; उस देश को अपने अधिकार में लेना आरम्भ कर। ३२ तब सीहोन अपनी सारी सेना समेत निकल आया, और हमारा साम्हना करके युद्ध करने को यहस तक चढ़ आया। ३३ और हमारे परमेश्वर यहोवा ने उसको हमारे द्वारा हरा दिया, और हम ने उसको पुत्रों और सारी सेना समेत मार डाला। ३४ और उसी समय हम ने उसके सारे नगर ले लिए, और एक एक बसे हुए नगर का स्त्रियों और बाल-बच्चों समेत यहां तक सत्यानाश किया कि कोई न छूटा; ३५ परन्तु पशुओं को हम ने अपना कर लिया, और उन नगरों की लूट भी हम ने ले ली जिनको हम ने जीत लिया था। ३६ अर्नोन के नाले के छोरवाले अरोएर नगर से लेकर, और उस नाले में के नगर से लेकर, गिलाद तक कोई नगर ऐसा ऊंचा न रहा जो हमारे साम्हने ठहर सकता था; क्योंकि हमारे परमेश्वर यहोवा ने सभों को हमारे वश में कर दिया। ३७ परन्तु हम अम्मोनियों

* मूल में—आकाश के तले।

के देश के निकट, वरन यब्बोक नदी के उस पार जितना देश है, और पहाड़ी देश के नगर जहां जहां जाने से हमारे परमेश्वर यहोवा ने हम को मना किया था, वहां हम नहीं गए॥

३ तब हम मुड़कर बाशान के मार्ग से चढ़ चले; और बाशान का ओग नाम राजा अपनी सारी सेना समेत हमारा साम्हना करने को निकल आया, कि एद्रेई में युद्ध करे। २ तब यहोवा ने मुझ से कहा, उस से मत डर; क्योंकि मैं उसको सारी सेना और देश समेत तेरे हाथ में किए देता हूं; और जैसा तू ने हेशबोन के निवासी एमोरियों के राजा सीहोन से किया है वैसा ही उस से भी करना। ३ सो इस प्रकार हमारे परमेश्वर यहोवा ने सारी सेना समेत बाशान के राजा ओग को भी हमारे हाथ में कर दिया; और हम उसको यहां तक मारते रहे कि उन में से कोई भी न बच पाया। ४ उसी समय हम ने उनके सारे नगरों को ले लिया, कोई ऐसा नगर न रह गया जिसे हम ने उन से न ले लिया हो, इस रीति अर्गोब का सारा देश, जो बाशान में ओग के राज्य में था और उस में साठ नगर थे, वह हमारे वश में आ गया। ५ ये सब नगर गढ़वाले थे, और उनके ऊंची ऊंची शहरपनाह, और फाटक, और बेड़े थे, और इनको छोड़ बिना शहरपनाह के भी बहुत से नगर थे। ६ और जैसा हम ने हेशबोन के राजा सीहोन के नगरों से किया था वैसा ही हम ने इन नगरों से भी किया, अर्थात् सब बसे हुए नगरों को स्त्रियों और बालबच्चों समेत सत्यानाश कर डाला। ७ परन्तु सब घरेलू पशु और नगरों की लूट हम ने अपनी कर ली। ८ यों हम ने उस समय यरदन के इस पार रहनेवाले एमोरियों के दोनों राजाओं के हाथ से अर्नोन के नाले से लेकर हेर्मोन पर्वत तक का देश ले लिया। (९ हेर्मोन को सीदोनी लोग सिर्योन, और एमोरी लोग सनीर कहते हैं।) १० समथर देश के सब नगर, और सारा गिलाद, और सल्का, और एद्रेई तक जो ओग के राज्य के नगर थे, सारा बाशान हमारे वश में आ गया। ११ जो रपाई रह गए थे, उन में से केवल बाशान का राजा ओग रह गया था, उसकी चारपाई जो लोहे की है वह तो अम्मोनियों के रब्बा नगर में पड़ी है, साधारण पुरुष के हाथ के हिसाब से उसकी लम्बाई नौ हाथ की और चौड़ाई चार हाथ की है। १२ जो देश हम ने उस समय अपने अधिकार में ले लिया वह यह है, अर्थात् अर्नोन के नाले के किनारेवाले अरोएर नगर से ले सब नगरों समेत गिलाद के पहाड़ी देश का आधा भाग, जिसे मैं ने रूबेनियों और गादियों को दे दिया, १३ और गिलाद का बचा हुआ भाग, और सारा बाशान, अर्थात् अर्गोब का सारा देश जो ओग के राज्य में था, इन्हें मैं ने मनश्शे के आधे गोत्र को दे दिया। (सारा बाशान तो रपाइयों का देश कहलाता है। १४ और मनश्शेई याईर ने गशूरियों और माकावासियों के सिवानों तक अर्गोब का सारा देश ले लिया, और बाशान के नगरों का नाम अपने नाम पर हव्वोत्याईर* रखा, और वही नाम आज तक बना है।) १५ और मैं ने गिलाद देश माकीर को दे दिया, १६ और रूबेनियों और गादियों को मैं ने गिलाद से ले अर्नोन के नाले तक

* अर्थात् याईर की बस्तियां।

का देश दे दिया, अर्थात् उस नाले का बीच उनका सिवाना ठहराया, और यब्बोक नदी तक जो अम्मोनियों का सिवाना है; १७ और किन्नेरेत से ले पिसगा की सलामी के नीचे के अराबा के ताल तक, जो खारा ताल भी कहलाता है, अराबा और यरदन की पूर्व की ओर का सारा देश भी मैं ने उन्हीं को दे दिया॥

१८ और उस समय मैं ने तुम्हें यह आज्ञा दी, कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें यह देश दिया है कि उसे अपने अधिकार में रखो; तुम सब योद्धा हथियार-बन्द होकर अपने भाई इस्राएलियों के आगे आगे पार चलो। १९ परन्तु तुम्हारी स्त्रियां, और बालबच्चे, और पशु, जिन्हें मैं जानता हूं कि बहुत से हैं, वह सब तुम्हारे नगरों में जो मैं ने तुम्हें दिए हैं रह जाएं। २० और जब यहोवा तुम्हारे भाइयों को वैसा विश्राम दे जैसा कि उस ने तुम को दिया है, और वे उस देश के अधिकारी हो जाएं जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उन्हें यरदन पार देता है; तब तुम भी अपने अपने अधिकार की भूमि पर जो मैं ने तुम्हें दी है लौटोगे। २१ फिर मैं ने उसी समय यहोशू से चिताकर कहा, तू ने अपनी आंखों से देखा है कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने इन दोनों राजाओं से क्या क्या किया है; वैसा ही यहोवा उन सब राज्यों से करेगा जिन में तू पार होकर जाएगा। २२ उन से न डरना; क्योंकि जो तुम्हारी ओर से लड़नेवाला है वह तुम्हारा परमेश्वर यहोवा है॥

२३ उसी समय मैं ने यहोवा से गिड़-गिड़ाकर बिनती की, कि हे प्रभु यहोवा, २४ तू अपने दास को अपनी महिमा और बलवन्त हाथ दिखाने लगा है; स्वर्ग में और पृथ्वी पर ऐसा कौन देवता है जो तेरे से काम और पराक्रम के कर्म कर सके? २५ इसलिये मुझे पार जाने दे कि यरदन पारके उस उत्तम देश को, अर्थात् उस उत्तम पहाड़ और लबानोन को भी देखने पाऊं। २६ परन्तु यहोवा तुम्हारे कारण मुझ से रुष्ट हो गया, और मेरी न सुनी; किन्तु यहोवा ने मुझ से कहा, बस कर; इस विषय में फिर कभी मुझ से बातें न करना। २७ पिसगा पहाड़ की चोटी पर चढ़ जा, और पूर्व, पच्छिम, उत्तर, दक्खिन, चारों ओर दृष्टि करके उस देश को देख ले; क्योंकि तू इस यरदन के पार जाने न पाएगा। २८ और यहोशू को आज्ञा दे, और उसे ढाढ़स देकर दृढ़ कर; क्योंकि इन लोगों के आगे आगे वही पार जाएगा, और जो देश तू देखेगा उसको वही उनका निज भाग करा देगा। २९ तब हम बेतपोर के साम्हने की तराई में ठहरे रहे॥

(मूसा का उपदेश)

४ अब, हे इस्राएल, जो जो विधि और नियम मैं तुम्हें सिखाना चाहता हूं उन्हें सुन लो, और उन पर चलो; जिस से तुम जीवित रहो, और जो देश तुम्हारे पितरों का परमेश्वर यहोवा तुम्हें देता है उस में जाकर उसके अधिकारी हो जाओ। २ जो आज्ञा मैं तुम को सुनाता हूं उस में न तो कुछ बढ़ाना, और न कुछ घटाना; तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की जो जो आज्ञा मैं तुम्हें सुनाता हूं उन्हें तुम मानना। ३ तुम ने तो अपनी आंखों से देखा है कि बालपोर के कारण यहोवा ने क्या क्या किया; अर्थात् जितने मनुष्य बालपोर के पीछे हो लिये थे उन सभों को तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे बीच में से

सत्यानाश कर डाला; ४ परन्तु तुम जो अपने परमेश्वर यहोवा के साथ लिपटे रहे हो सब के सब आज तक जीवित हो। ५ सुनो, मैं ने तो अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार तुम्हें विधि और नियम सिखाए हैं, कि जिस देश के अधिकारी होने जाते हो उस में तुम उनके अनुसार चलो। ६ सो तुम उनको धारण करना और मानना; क्योंकि और देशों के लोगों के साम्हने तुम्हारी बुद्धि और समझ इसी से प्रगट होगी, अर्थात् वे इन सब विधियों को सुनकर कहेंगे, कि निश्चय यह बड़ी जाति बुद्धिमान और समझदार है। ७ देखो, कौन ऐसी बड़ी जाति है जिसका देवता उसके ऐसे समीप रहता हो जैसा हमारा परमेश्वर यहोवा, जब कि हम उस को पुकारते हैं? ८ फिर कौन ऐसी बड़ी जाति है जिसके पास ऐसी धर्ममय विधि और नियम हों, जैसी कि यह सारी व्यवस्था जिसे मैं आज तुम्हारे साम्हने रखता हूं? ९ यह अत्यन्त आवश्यक है कि तुम अपने विषय में सचेत रहो, और अपने मन की बड़ी चौकसी करो, कहीं ऐसा न हो कि जो जो बातें तुम ने अपनी आंखों से देखीं उनको भूल जाओ, और वह जीवन भर के लिये तुम्हारे मन से जाती रहे; किन्तु तुम उन्हें अपने बेटों पोतों को सिखाना। १० विशेष करके उस दिन की बातें जिस में तुम होरेब के पास अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने खड़े थे, जब यहोवा ने मुझ से कहा था, कि उन लोगों को मेरे पास इकट्ठा कर कि मैं उन्हें अपने वचन सुनाऊं, जिस से वे सीखें, ताकि जितने दिन वे पृथ्वी पर जीवित रहें उतने दिन मेरा भय मानते रहें, और अपने लड़के बालों को भी यही सिखाएं। ११ तब तुम समीप जाकर उस पर्वत के नीचे खड़े हुए, और वह पहाड़ आग से धधक रहा था, और उसकी लौ आकाश तक पहुंचती थी, और उसके चारों ओर अन्धियारा, और बादल, और घोर अन्धकार छाया हुआ था। १२ तब यहोवा ने उस आग के बीच में से तुम से बातें कीं; बातों का शब्द तो तुम को सुनाई पड़ा, परन्तु कोई रूप न देखा; केवल शब्द ही शब्द सुन पड़ा। १३ और उस ने तुम को अपनी वाचा के दसों वचन बताकर उनके मानने की आज्ञा दी; और उन्हें पत्थर की दो पटियाओं पर लिख दिया। १४ और मुझ को यहोवा ने उसी समय तुम्हें विधि और नियम सिखाने की आज्ञा दी, इसलिये कि जिस देश के अधिकारी होने को तुम पार जाने पर हो उस में तुम उनको माना करो। १५ इसलिये तुम अपने विषय में बहुत सावधान रहना। क्योंकि जब यहोवा ने तुम से होरेब पर्वत पर आग के बीच में से बातें कीं तब तुम को कोई रूप न देख पड़ा, १६ कहीं ऐसा न हो कि तुम बिगड़कर चाहे पुरुष चाहे स्त्री के, १७ चाहे पृथ्वी पर चलनेवाले किसी पशु, चाहे आकाश में उड़नेवाले किसी पक्षी के, १८ चाहे भूमि पर रेंगनेवाले किसी जन्तु, चाहे पृथ्वी के जल में* रहनेवाली किसी मछली के रूप की कोई मूर्त्ति खोदकर बना लो, १९ वा जब तुम आकाश की ओर आंखें उठाकर सूर्य, चंद्रमा, और तारों को, अर्थात् आकाश का सारा तारागण देखो, तब बहककर उन्हें दण्डवत् करके उनकी सेवा करने लगो जिनको तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने धरती पर के सब देशवालों के लिये रखा† है। २० और तुम को यहोवा लोहे के भट्ठे

* मूल में—पृथ्वी के नीचे जल में।
† मूल में—बांट दिया।

के सरीखे मिस्र देश से निकाल ले आया है, इसलिये कि तुम उसकी प्रजारूपी निज भाग ठहरो, जैसा आज प्रगट है। २१ फिर तुम्हारे कारण यहोवा ने मुझ से क्रोध करके यह शपथ खाई, कि तू यरदन पार जाने न पाएगा, और जो उत्तम देश इस्राएलियों का परमेश्वर यहोवा उन्हें उनका निज भाग करके देता है उस में तू प्रवेश करने न पाएगा। २२ किन्तु मुझे इसी देश में मरना है, मैं तो यरदन पार नहीं जा सकता; परन्तु तुम पार जाकर उस उत्तम देश के अधिकारी हो जाओगे। २३ इसलिये अपने विषय में तुम सावधान रहो, कहीं ऐसा न हो कि तुम उस वाचा को भूलकर, जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम से बान्धी है, किसी और वस्तु की मूर्त्ति खोदकर बनाओ, जिसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को मना किया है। २४ क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा भस्म करनेवाली आग है; वह जल उठनेवाला ईश्वर है॥

२५ यदि उस देश में रहते रहते बहुत दिन बीत जाने पर, और अपने बेटे-पोते उत्पन्न होने पर, तुम बिगड़कर किसी वस्तु के रूप की मूर्त्ति खोदकर बनाओ, और इस रीति अपने परमेश्वर यहोवा के प्रति बुराई करके उसे अप्रसन्न कर दो, २६ तो मैं आज आकाश और पृथ्वी को तुम्हारे विरुद्ध साक्षी करके कहता हूं, कि जिस देश के अधिकारी होने के लिये तुम यरदन पार जाने पर हो उस में तुम जल्दी बिल्कुल नाश हो जाओगे; और बहुत दिन रहने न पाओगे, किन्तु पूरी रीति से नष्ट हो जाओगे। २७ और यहोवा तुम को देश देश के लोगों में तितर बितर करेगा, और जिन जातियों के बीच यहोवा तुम को पहुंचाएगा उन में तुम थोड़े ही से रह जाओगे। २८ और वहां तुम मनुष्य के बनाए हुए लकड़ी और पत्थर के देवताओं की सेवा करोगे, जो न देखते, और न सुनते, और न खाते, और न सूंघते हैं। २९ परन्तु वहां भी यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा को ढूंढ़ोगे, तो वह तुम को मिल जाएगा, शर्त यह है कि तुम अपने पूरे मन से और अपने सारे प्राण से उसे ढूंढ़ो। ३० अन्त के दिनों में जब तुम संकट में पड़ो, और ये सब विपत्तियां तुम पर आ पड़ेंगी, तब तुम अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो और उसकी मानना; ३१ क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा दयालु ईश्वर है, वह तुम को न तो छोड़ेगा और न नष्ट करेगा, और जो वाचा उस ने तेरे पितरों से शपथ खाकर बान्धी है उसको नहीं भूलेगा। ३२ और जब से परमेश्वर ने मनुष्य को उत्पन्न करके पृथ्वी पर रखा तब से लेकर तू अपने उत्पन्न होने के दिन तक की बातें पूछ, और आकाश के एक छोर से दूसरे छोर तक की बातें पूछ, क्या ऐसी बड़ी बात कभी हुई वा सुनने में आई है? ३३ क्या कोई जाति कभी परमेश्वर की वाणी आग के बीच में से आती हुई सुनकर जीवित रही, जैसे कि तू ने सुनी है? ३४ फिर क्या परमेश्वर ने और किसी जाति को दूसरी जाति के बीच से निकालने को कमर बान्धकर परीक्षा, और चिन्ह, और चमत्कार, और युद्ध, और बली हाथ, और बढ़ाई हुई भुजा से ऐसे बड़े भयानक काम किए, जैसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने मिस्र में तुम्हारे देखते किए? ३५ यह सब तुझ को दिखाया गया, इसलिये कि तू जान रखे कि यहोवा ही परमेश्वर है; उसको छोड़ और कोई है ही नहीं। ३६ आकाश में से उस ने तुझे अपनी वाणी सुनाई कि तुझे शिक्षा दे;

ग्रौर पृथ्वी पर उस ने तुझे अपनी बड़ी आग दिखाई, और उसके वचन आग के बीच में से आते हुए तुझे सुन पड़े। ३७ और उस ने जो तेरे पितरों से प्रेम रखा, इस कारण उनके पीछे उनके वंश को चुन लिया, और प्रत्यक्ष होकर तुझे अपने बड़े सामर्थ्य के द्वारा मिस्र से इसलिये निकाल लाया, ३८ कि तुझ से बड़ी और सामर्थी जातियों को तेरे आगे से निकालकर तुझे उनके देश में पहुंचाए, और उसे तेरा निज भाग कर दे, जैसा आज के दिन दिखाई पड़ता है; ३९ सो आज जान ले, और अपने मन में सोच भी रख, कि ऊपर आकाश में और नीचे पृथ्वी पर यहोवा ही परमेश्वर है; और कोई दूसरा नहीं। ४० और तू उसकी विधियों और आज्ञाओं को जो मैं आज तुझे सुनाता हूं मानना, इसलिये कि तेरा और तेरे पीछे तेरे वंश का भी भला हो, और जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में तेरे दिन बहुत वरन सदा के लिये हों॥

४१ तब मूसा ने यरदन के पार पूर्व की ओर तीन नगर अलग किए, ४२ इसलिये कि जो कोई बिना जाने और बिना पहले से बैर रखे अपने किसी भाई को मार डाले, वह उन में से किसी नगर में भाग जाए, और भागकर जीवित रहे: ४३ अर्थात् रूबेनियों का बेसेर नगर जो जंगल के समथर देश में है, और गादियों के गिलाद का रामोत, और मनश्शेइयों के बाशान का गोलान॥

४४ फिर जो व्यवस्था मूसा ने इस्राएलियों को दी वह यह है; ४५ ये ही वे चितौनियां और नियम हैं जिन्हें मूसा ने इस्राएलियों को उस समय कह सुनाया जब वे मिस्र से निकले थे, ४६ अर्थात् यरदन के पार बेतपोर के साम्हने की तराई में, एमोरियों के राजा हेशबोनवासी सीहोन के देश में, जिस राजा को उन्हों ने मिस्र से निकलने के पीछे मारा। ४७ और उन्हों ने उसके देश को, और बाशान के राजा ओग के देश को, अपने वश में कर लिया; यरदन के पार सूर्योदय की ओर रहनेवाले एमोरियों के राजाओं के ये देश थे। ४८ यह देश अर्नोन के नाले के छोरवाले अरोएर से लेकर सीओन, जो हेर्मोन भी कहलाता है, ४९ उस पर्वत तक का सारा देश, और पिसगा की सलामी के नीचे के अराबा के ताल तक, यरदन पार पूर्व की ओर का सारा अराबा है॥

५ मूसा ने सारे इस्राएलियों को बुलवाकर कहा, हे इस्राएलियो, जो जो विधि और नियम मैं आज तुम्हें सुनाता हूं वे सुनो, इसलिये कि उन्हें सीखकर मानने में चौकसी करो। २ हमारे परमेश्वर यहोवा ने तो होरेब पर हम से वाचा बान्धी। ३ इस वाचा को यहोवा ने हमारे पितरों से नहीं, हम ही से बान्धा, जो यहां आज के दिन जीवित हैं। ४ यहोवा ने उस पर्वत पर आग के बीच में से तुम लोगों से आम्हने साम्हने बातें कीं; ५ उस आग के डर के मारे तुम पर्वत पर न चढ़े, इसलिये मैं यहोवा के और तुम्हारे बीच उसका वचन तुम्हें बताने को खड़ा रहा। तब उस ने कहा,

६ तेरा परमेश्वर यहोवा, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश में से निकाल लाया है, वह मैं हूं॥

७ मुझे छोड़ दूसरों को परमेश्वर करके न मानना *॥

* वा मेरे साम्हने पराए देवताओं को न मानना।

८ तू अपने लिये कोई मूर्त्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना जो आकाश में, वा पृथ्वी पर, वा पृथ्वी के जल में* है; ९ तू उनको दण्डवत् न करना और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखनेवाला ईश्वर हूं, और जो मुझ से बैर रखते हैं उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को पितरों का दण्ड दिया करता हूं, १० और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं उन हज़ारों पर करुणा किया करता हूं ।।

११ तू अपने परमेश्वर यहोवा का नाम व्यर्थ न लेना; क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ † ले वह उनको निर्दोष न ठहराएगा ।।

१२ तू विश्रामदिन को मानकर पवित्र रखना, जैसे तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे आज्ञा दी। १३ छः दिन तो परिश्रम करके अपना सारा कामकाज करना; १४ परन्तु सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्रामदिन है; उस में न तू किसी भांति का कामकाज करना, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरा बैल, न तेरा गदहा, न तेरा कोई पशु, न कोई परदेशी भी जो तेरे फाटकों के भीतर हो; जिस से तेरा दास और तेरी दासी भी तेरी नाईं विश्राम करे। १५ और इस बात को स्मरण रखना कि मिस्र देश में तू आप दास था, और वहां से तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा निकाल लाया; इस कारण तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे विश्रामदिन मानने की आज्ञा देता है ।।

* मूल में—पृथ्वी के नीचे के जल में।
† वा झूठी बात पर।

१६ अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, जैसे कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे आज्ञा दी है; जिस से जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में तू बहुत दिन तक रहने पाए, और तेरा भला हो ।।

१७ तू हत्या न करना ।।

१८ तू व्यभिचार न करना ।।

१९ तू चोरी न करना ।।

२० तू किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना ।।

२१ तू न किसी की पत्नी का लालच करना, और न किसी के घर का लालच करना, न उसके खेत का, न उसके दास का, न उसकी दासी का, न उसके बैल वा गदहे का, न उसकी किसी और वस्तु का लालच करना ।।

२२ यही वचन यहोवा ने उस पर्वत पर आग, और बादल, और घोर अन्धकार के बीच में से तुम्हारी सारी मण्डली से पुकारकर कहा; और इस से अधिक और कुछ न कहा। और उन्हें उस ने पत्थर की दो पटियाओं पर लिखकर मुझे दे दिया। २३ जब पर्वत आग से दहक रहा था, और तुम ने उस शब्द को अन्धियारे के बीच में से आते सुना, तब तुम और तुम्हारे गोत्रों के सब मुख्य मुख्य पुरुष और तुम्हारे पुरनिए मेरे पास आए; २४ और तुम कहने लगे, कि हमारे परमेश्वर यहोवा ने हम को अपना तेज और अपनी महिमा दिखाई है, और हम ने उसका शब्द आग के बीच में से आते हुए सुना; आज हम ने देख लिया कि यद्यपि परमेश्वर मनुष्य से बातें करता है तौभी मनुष्य जीवित रहता है। २५ अब हम क्यों मर जाएं? क्योंकि ऐसी बड़ी आग

से हम भस्म हो जाएंगे; और यदि हम अपने परमेश्वर यहोवा का शब्द फिर सुनें, तब तो मर ही जाएंगे। २६ क्योंकि सारे प्राणियों में से कौन ऐसा है जो हमारी नाईं जीवित और अग्नि के बीच में से बोलते हुए परमेश्वर का शब्द सुनकर जीवित बचा रहे? २७ इसलिये तू समीप जा, और जो कुछ हमारा परमेश्वर यहोवा कहे उसे सुन ले; फिर जो कुछ हमारा परमेश्वर यहोवा कहे उसे हम से कहना; और हम उसे सुनेंगे और उसे मानेंगे। २८ जब तुम मुझ से ये बातें कह रहे थे तब यहोवा ने तुम्हारी बातें सुनीं; तब उस ने मुझ से कहा, कि इन लोगों ने जो जो बातें तुझ से कही हैं मैं ने सुनी हैं; इन्हों ने जो कुछ कहा वह ठीक ही कहा। २९ भला होता कि उनका मन सदैव ऐसा ही बना रहे, कि वे मेरा भय मानते हुए मेरी सब आज्ञाओं पर चलते रहें, जिस से उनकी और उनके वंश की सदैव भलाई होती रहे! ३० इसलिये तू जाकर उन से कह दे, कि अपने अपने डेरों को लौट जाओ। ३१ परन्तु तू यहीं मेरे पास खड़ा रह, और मैं वे सारी आज्ञाएं और विधियां और नियम जिन्हें तुझे उनको सिखाना होगा तुझ से कहूंगा, जिस से वे उन्हें उस देश में जिसका अधिकार मैं उन्हें देने पर हूं मानें। ३२ इसलिये तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार करने में चौकसी करना; न तो दहिने मुड़ना और न बाएं। ३३ जिस मार्ग पर चलने की आज्ञा तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को दी है उस सारे मार्ग पर चलते रहो, कि तुम जीवित रहो, और तुम्हारा भला हो, और जिस देश के तुम अधिकारी होगे उस में तुम बहुत दिनों के लिये बने रहो॥

६ यह वह आज्ञा, और वे विधियां और नियम हैं जो तुम्हें सिखाने की तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने आज्ञा दी है, कि तुम उन्हें उस देश में मानो जिसके अधिकारी होने को पार जाने पर हो; २ और तू और तेरा बेटा और तेरा पोता यहोवा का भय मानते हुए उसकी उन सब विधियों और आज्ञाओं पर, जो मैं तुझे सुनाता हूं, अपने जीवन भर चलते रहें, जिस से तू बहुत दिन तक बना रहे। ३ हे इस्राएल, सुन, और ऐसा ही करने की चौकसी कर; इसलिये कि तेरा भला हो, और तेरे पितरों के परमेश्वर यहोवा के वचन के अनुसार उस देश में जहां दूध और मधु की धाराएं बहती हैं तुम बहुत हो जाओ॥

४ हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है; ५ तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना। ६ और ये आज्ञाएं जो मैं आज तुझ को सुनाता हूं वे तेरे मन में बनी रहें; ७ और तू इन्हें अपने बालबच्चों को समझाकर सिखाया करना, और घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते, इनकी चर्चा किया करना। ८ और इन्हें अपने हाथ पर चिन्हानी करके बान्धना, और ये तेरी आंखों के बीच टीके का काम दें। ९ और इन्हें अपने अपने घर के चौखट की बाजुओं और अपने फाटकों पर लिखना॥

१० और जब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे उस देश में पहुंचाए जिसके विषय में उस ने इब्राहीम, इसहाक, और याक़ूब नाम, तेरे पूर्वजों से तुझे देने की शपथ खाई, और जब वह तुझ को बड़े बड़े और अच्छे नगर, जो तू ने नहीं बनाए, ११ और अच्छे अच्छे पदार्थों से भरे हुए घर, जो तू ने नहीं भरे,

और खुदे हुए कूएं, जो तू ने नहीं खोदे, और दाख की बारियां और जलपाई के वृक्ष, जो तू ने नहीं लगाए, ये सब वस्तुएं जब वह दे, और तू खाके तृप्त हो, १२ तब सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि तू यहोवा को भूल जाए, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है। १३ अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना; उसी की सेवा करना, और उसी के नाम की शपथ खाना। १४ तुम पराए देवताओं के, अर्थात् अपने चारों ओर के देशों के लोगों के देवताओं के पीछे न हो लेना; १५ क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा जो तेरे बीच में है वह जल उठनेवाला ईश्वर है; कहीं ऐसा न हो कि तेरे परमेश्वर यहोवा का कोप तुझ पर भड़के, और वह तुझ को पृथ्वी पर से नष्ट कर डाले॥

१६ तुम अपने परमेश्वर यहोवा की परीक्षा न करना, जैसे कि तुम ने मस्सा में उसकी परीक्षा की थी। १७ अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं, चितौनियों, और विधियों को, जो उस ने तुझ को दी हैं, सावधानी से मानना। १८ और जो काम यहोवा की दृष्टि में ठीक और सुहावना है वही किया करना, जिस से कि तेरा भला हो, और जिस उत्तम देश के विषय में यहोवा ने तेरे पूर्वजों से शपथ खाई उस में तू प्रवेश करके उसका अधिकारी हो जाए, १९ कि तेरे सब शत्रु तेरे साम्हने से दूर कर दिए जाएं, जैसा कि यहोवा ने कहा था॥

२० फिर आगे को जब तेरा लड़का तुझ से पूछे, कि ये चितौनियां और विधि और नियम, जिनके मानने की आज्ञा हमारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को दी है, इनका प्रयोजन क्या है? २१ तब अपने लड़के से कहना, कि जब हम मिस्र में फ़िरौन के दास थे, तब यहोवा बलवन्त हाथ से हम को मिस्र में से निकाल ले आया; २२ और यहोवा ने हमारे देखते मिस्र में फ़िरौन और उसके सारे घराने को दुःख देनेवाले बड़े बड़े चिन्ह और चमत्कार दिखाए; २३ और हम को वह वहां से निकाल लाया, इसलिये कि हमें इस देश में पहुंचाकर, जिसके विषय में उस ने हमारे पूर्वजों से शपथ खाई थी, इसको हमें सौंप दे। २४ और यहोवा ने हमें ये सब विधियां पालने की आज्ञा दी, इसलिये कि हम अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानें, और इस रीति सदैव हमारा भला हो, और वह हम को जीवित रखे, जैसा कि आज के दिन है। २५ और यदि हम अपने परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में उसकी आज्ञा के अनुसार इन सारे नियमों के मानने में चौकसी करें, तो यह हमारे लिये धर्म ठहरेगा॥

७ फिर जब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे उस देश में जिसके अधिकारी होने को तू जाने पर है पहुंचाए, और तेरे साम्हने से हित्ती, गिर्गाशी, एमोरी, कनानी, परिज्जी, हिव्वी, और यबूसी नाम, बहुत सी जातियों को, अर्थात् तुम से बड़ी और सामर्थी सातों जातियों को निकाल दे, २ और तेरा परमेश्वर यहोवा उन्हें तेरे द्वारा हरा दे, और तू उन पर जय प्राप्त कर ले; तब उन्हें पूरी रीति से नष्ट कर डालना; उन से न वाचा बान्धना, और न उन पर दया करना। ३ और न उन से ब्याह शादी करना, न तो अपनी बेटी उनके बेटे को ब्याह देना, और न उनकी बेटी को अपने बेटे के लिये ब्याह लेना। ४ क्योंकि वे तेरे बेटे को मेरे पीछे चलने से बहकाएंगी, और दूसरे देवताओं

की उपासना करवाएंगी; और इस कारण यहोवा का कोप तुम पर भड़क उठेगा, और वह तुझ को शीघ्र सत्यानाश कर डालेगा। ५ उन लोगों से ऐसा बर्ताव करना, कि उनकी वेदियों को ढा देना, उनकी लाठों को तोड़ डालना, उनकी अशेरा नाम मूर्त्तियों को काट काटकर गिरा देना, और उनकी खुदी हुई मूर्त्तियों को आग में जला देना। ६ क्योंकि तू अपने परमेश्वर यहोवा की पवित्र प्रजा है; यहोवा ने पृथ्वी भर के सब देशों के लोगों में से तुझ को चुन लिया है कि तू उसकी प्रजा और निज धन ठहरे। ७ यहोवा ने जो तुम से स्नेह करके तुम को चुन लिया, इसका कारण यह नहीं था कि तुम गिनती में और सब देशों के लोगों से अधिक थे, किन्तु तुम तो सब देशों के लोगों से गिनती में थोड़े थे; ८ यहोवा ने जो तुम को बलवन्त हाथ के द्वारा दासत्व के घर में से, और मिस्र के राजा फ़िरौन के हाथ से छुड़ाकर निकाल लिया, इसका यही कारण है कि वह तुम से प्रेम रखता है, और उस शपथ को भी पूरी करना चाहता है जो उस ने तुम्हारे पूर्वजों से खाई थी। ६ इसलिये जान रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा ही परमेश्वर है, वह विश्वासयोग्य ईश्वर है; और जो उस से प्रेम रखते और उसकी आज्ञाएं मानते हैं उनके साथ वह हज़ार पीढ़ी तक अपनी वाचा पालता, और उन पर करुणा करता रहता है; १० और जो उस से बैर रखते हैं वह उनके देखते उन से बदला लेकर नष्ट कर डालता है; अपने बैरी के विषय वह विलम्ब न करेगा, उसके देखते ही उस से बदला लेगा। ११ इसलिये इन आज्ञाओं, विधियों, और नियमों को, जो मैं आज तुझे चिताता हूं, मानने में चौकसी करना॥

१२ और तुम जो इन नियमों को सुनकर मानोगे और इन पर चलोगे, तो तेरा परमेश्वर यहोवा भी उस करूणामय वाचा को पालेगा जिसे उस ने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर बान्धी थी; १३ और वह तुझ से प्रेम रखेगा, और तुझे आशीष देगा, और गिनती में बढ़ाएगा; और जो देश उस ने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर तुझे देने को कहा है उस में वह तेरी सन्तान पर, और अन्न, नये दाखमधु, और टटके तेल आदि, भूमि की उपज पर आशीष दिया करेगा, और तेरी गाय-बैल और भेड़-बकरियों की बढ़ती करेगा। १४ तू सब देशों के लोगों से अधिक धन्य होगा; तेरे बीच में न पुरुष न स्त्री निर्वंश होगी, और तेरे पशुओं में भी ऐसा कोई न होगा। १५ और यहोवा तुझ से सब प्रकार के रोग दूर करेगा; और मिस्र की बुरी बुरी व्याधियां जिन्हें तू जानता है उन में से किसी को भी तुझे लगने न देगा, ये सब तेरे बैरियों ही को लगेंगे। १६ और देश देश के जितने लोगों को तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे वश में कर देगा, तू उन सभों को सत्यानाश करना; उन पर तरस की दृष्टि न करना, और न उनके देवताओं की उपासना करना, नहीं तो तू फन्दे में फंस जाएगा। १७ यदि तू अपने मन में सोचे, कि वे जातियां जो मुझ से अधिक हैं; तो मैं उनको क्योंकर देश से निकाल सकूंगा? १८ तौभी उन से न डरना, जो कुछ तेरे परमेश्वर यहोवा ने फ़िरौन से और सारे मिस्र से किया उसे भली भांति स्मरण रखना। १९ जो बड़े बड़े परीक्षा के काम तू ने अपनी आंखों से देखे, और जिन चिन्हों, और चमत्कारों, और जिस बलवन्त हाथ, और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को निकाल लाया, उनके

अनुसार तेरा परमेश्वर यहोवा उन सब लोगों से भी जिन से तू डरता है करेगा। २० इस से अधिक तेरा परमेश्वर यहोवा उनके बीच बर्रें भी भेजेगा, यहां तक कि उन में से जो बचकर छिप जाएंगे वे भी तेरे साम्हने से नाश हो जाएंगे। २१ उन से भय न खाना; क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच में है, और वह महान् और भय योग्य ईश्वर है। २२ तेरा परमेश्वर यहोवा उन जातियों को तेरे आगे से धीरे धीरे निकाल देगा; तो तू एक दम से उनका अन्त न कर सकेगा, नहीं तो बनैले पशु बढ़कर तेरी हानि करेंगे। २३ तौभी तेरा परमेश्वर यहोवा उनको तुझ से हरवा देगा, और जब तक वे सत्यानाश न हो जाएं तब तक उनको अति व्याकुल करता रहेगा। २४ और वह उनके राजाओं को तेरे हाथ में करेगा, और तू उनका भी नाम धरती पर से * मिटा डालेगा; उन में से कोई भी तेरे साम्हने खड़ा न रह सकेगा, और अन्त में तू उन्हें सत्यानाश कर डालेगा। २५ उनके देवताओं की खुदी हुई मूर्तियां तुम आग में जला देना; जो चांदी वा सोना उन पर मढ़ा हो उसका लालच करके न ले लेना, नहीं तो तू उसके कारण फन्दे में फंसेगा; क्योंकि ऐसी वस्तुएं तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में घृणित हैं। २६ और कोई घृणित वस्तु अपने घर में न ले आना, नहीं तो तू भी उसके समान नष्ट हो जाने की वस्तु ठहरेगा; उसे सत्यानाश की वस्तु जानकर उस से घृणा करना और उसे कदापि न चाहना; क्योंकि वह अशुद्ध वस्तु है।

८ जो जो आज्ञा मैं आज तुझे सुनाता हूं उन सभों पर चलने की चौकसी करना, इसलिये कि तुम जीवित रहो और बढ़ते रहो, और जिस देश के विषय में यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों से शपथ खाई है उस में जाकर उसके अधिकारी हो जाओ। २ और स्मरण रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा उन चालीस वर्षों में तुझे सारे जंगल के मार्ग में से इसलिये ले आया है, कि वह तुझे नम्र बनाए, और तेरी परीक्षा करके यह जान ले कि तेरे मन में क्या क्या है, और कि तू उसकी आज्ञाओं का पालन करेगा वा नहीं। ३ उस ने तुझ को नम्र बनाया, और भूखा भी होने दिया, फिर वह मन्ना, जिसे न तू और न तेरे पुरखा ही जानते थे, वही तुझ को खिलाया; इसलिये कि वह तुझ को सिखाए कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं जीवित रहता, परन्तु जो जो वचन यहोवा के मुंह से निकलते हैं उन ही से वह जीवित रहता है। ४ इन चालीस वर्षों में तेरे वस्त्र पुराने न हुए, और तेरे तन से भी नहीं गिरे, और न तेरे पांव फूले। ५ फिर अपने मन में यह तो विचार कर, कि जैसा कोई अपने बेटे को ताड़ना देता है वैसे ही तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को ताड़ना देता है। ६ इसलिये अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं का पालन करते हुए उसके मार्गों पर चलना, और उसका भय मानते रहना। ७ क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे एक उत्तम देश में लिये जा रहा है, जो जल की नदियों का, और तराइयों और पहाड़ों से निकले हुए गहिरे गहिरे सोतों का देश है। ८ फिर वह गेहूं, जौ, दाखलताओं, अंजीरों, और अनारों का देश है; और तेलवाली जलपाई और मधु का भी देश है। ९ उस देश में अन्न की महंगी न होगी, और न उस में तुझे किसी पदार्थ की घटी

* मूल में—आकाश के तले से।

होगी; वहां के पत्थर लोहे के हैं,* और वहां के पहाड़ों में से तू तांबा खोदकर निकाल सकेगा। १० और तू पेट भर खाएगा, और उस उत्तम देश के कारण जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देगा उसका धन्य मानेगा। ११ इसलिये सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि अपने परमेश्वर यहोवा को भूलकर उसकी जो जो आज्ञा, नियम, और विधि मैं आज तुझे सुनाता हूं उनका मानना छोड़ दे; १२ ऐसा न हो कि जब तू खाकर तृप्त हो, और अच्छे अच्छे घर बनाकर उन में रहने लगे, १३ और तेरी गाय-बैलों और भेड़-बकरियों की बढ़ती हो, और तेरा सोना, चांदी, और तेरा सब प्रकार का धन बढ़ जाए, १४ तब तेरे मन में अहंकार समा जाए, और तू अपने परमेश्वर यहोवा को भूल जाए, जो तुझ को दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है, १५ और उस बड़े और भयानक जंगल में से ले आया है, जहां तेज विषवाले† सर्प और बिच्छू हैं, और जलरहित सूखे देश में उस ने तेरे लिये चकमक की चट्टान से जल निकाला, १६ और तुझे जंगल में मन्ना खिलाया, जिसे तुम्हारे पुरखा जानते भी न थे, इसलिये कि वह तुझे नम्र बनाए, और तेरी परीक्षा करके अन्त में तेरा भला ही करे। १७ और कहीं ऐसा न हो कि तू सोचने लगे, कि यह सम्पत्ति मेरे ही सामर्थ्य और मेरे ही भुजबल से मुझे प्राप्त हुई। १८ परन्तु तू अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण रखना, क्योंकि वही है जो तुझे सम्पत्ति प्राप्त करने का सामर्थ्य इसलिये देता है, कि जो वाचा उस ने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर बान्धी थी उसको पूरा करे, जैसा आज प्रगट है। १९ यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा को भूलकर दूसरे देवताओं के पीछे हो लेगा, और उनकी उपासना और उनको दण्डवत् करेगा, तो मैं आज तुम को चिता देता हूं कि तुम निःसन्देह नष्ट हो जाओगे। २० जिन जातियों को यहोवा तुम्हारे सम्मुख से नष्ट करने पर है, उन्हीं की नाईं तुम भी अपने परमेश्वर यहोवा का वचन न मानने के कारण नष्ट हो जाओगे॥

९ हे इस्राएल, सुन, आज तू यरदन पार इसलिये जानेवाला है, कि ऐसी जातियों को जो तुझ से बड़ी और सामर्थी हैं, और ऐसे बड़े नगरों को जिनकी शहरपनाह आकाश से बातें करती हैं,* अपने अधिकार में ले ले। २ उन में बड़े बड़े और लम्बे लम्बे लोग, अर्थात् अनाकवंशी रहते हैं, जिनका हाल तू जानता है, और उनके विषय में तू ने यह सुना है, कि अनाकवंशियों के साम्हने कौन ठहर सकता है? ३ इसलिये आज तू यह जान ले, कि जो तेरे आगे भस्म करनेवाली आग की नाईं पार जानेवाला है वह तेरा परमेश्वर यहोवा है; और वह उनका सत्यानाश करेगा, और वह उनको तेरे साम्हने दबा देगा; और तू यहोवा के वचन के अनुसार उनको उस देश से निकालकर शीघ्र ही नष्ट कर डालेगा। ४ जब तेरा परमेश्वर यहोवा उन्हें तेरे साम्हने से निकाल चुके तब यह न सोचना, कि यहोवा तेरे धर्म के कारण तुझे इस देश का अधिकारी होने को ले आया है, किन्तु उन जातियों की दुष्टता ही के कारण यहोवा उनको तेरे साम्हने से निकालता है। ५ तू जो उनके देश का अधिकारी होने के लिये जा रहा है, इसका

* मूल में—जिसके पत्थर लोहा हैं।
† मूल में—जलते हुए।

* मूल में—आकाश तक गढ़वाले नगरों को।

कारण तेरा धर्म वा मन की सिधाई नहीं है; तेरा परमेश्वर यहोवा जो उन जातियों को तेरे साम्हने से निकालता है, उसका कारण उनकी दुष्टता है, और यह भी कि जो वचन उस ने इब्राहीम, इसहाक, और याक़ूब, तेरे पूर्वजों को शपथ खाकर दिया था, उसको वह पूरा करना चाहता है। ६ इसलिये यह जान ले कि तेरा परमेश्वर यहोवा, जो तुझे वह अच्छा देश देता है कि तू उसका अधिकारी हो, उसे वह तेरे धर्म के कारण नहीं दे रहा है; क्योंकि तू तो एक हठीली * जाति है। ७ इस बात का स्मरण रख और कभी भी न भूलना, कि जंगल में तू ने किस किस रीति से अपने परमेश्वर यहोवा को क्रोधित किया; और जिस दिन से तू मिस्र देश से निकला है जब तक तुम इस स्थान पर न पहुंचे तब तक तुम यहोवा से बलवा ही बलवा करते आए हो। ८ फिर होरेब के पास भी तुम ने यहोवा को क्रोधित किया, और वह क्रोधित होकर तुम्हें नष्ट करना चाहता था। ९ जब मैं उस वाचा के पत्थर की पटियाओं को जो यहोवा ने तुम से बान्धी थी लेने के लिये पर्वत के ऊपर चढ़ गया, तब चालीस दिन और चालीस रात पर्वत ही के ऊपर रहा; और मैं ने न तो रोटी खाई न पानी पिया। १० और यहोवा ने मुझे अपने ही हाथ † की लिखी हुई पत्थर की दोनों पटियाओं को सौंप दिया, और वे ही वचन जिन्हें यहोवा ने पर्वत के ऊपर आग के मध्य में से सभा के दिन तुम से कहे थे वे सब उन पर लिखे हुए थे। ११ और चालीस दिन और चालीस रात के बीत जाने पर यहोवा ने पत्थर की वे दो वाचा की पटियाएं मुझे दे दीं। १२ और यहोवा ने मुझ से कहा, उठ, यहां से झटपट नीचे जा; क्योंकि तेरी प्रजा के लोग जिनको तू मिस्र से निकालकर ले आया है वे बिगड़ गए हैं; जिस मार्ग पर चलने की आज्ञा मैं ने उन्हें दी थी उसको उन्हों ने झटपट छोड़ दिया है; अर्थात् उन्हों ने तुरन्त अपने लिये एक मूर्त्ति ढालकर बना ली है। १३ फिर यहोवा ने मुझ से यह भी कहा, कि मैं ने उन लोगों को देख लिया, वे हठीली जाति * के लोग हैं; १४ इसलिये अब मुझे तू मत रोक, ताकि मैं उन्हें नष्ट कर डालूं, और धरती के ऊपर से † उनका नाम वा चिन्ह तक मिटा डालूं, और मैं उन से बढ़कर एक बड़ी और सामर्थी जाति तुझी से उत्पन्न करूंगा। १५ तब मैं उलटे पैर पर्वत से नीचे उतर चला, और पर्वत अग्नि से दहक रहा था; और मेरे दोनों हाथों में वाचा की दोनों पटियाएं थीं। १६ और मैं ने देखा कि तुम ने अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध महापाप किया; और अपने लिये एक बछड़ा ढालकर बना लिया है, और तुरन्त उस मार्ग से जिस पर चलने की आज्ञा यहोवा ने तुम को दी थी उसको तुम ने तज दिया। १७ तब मैं ने उन दोनों पटियाओं को अपने दोनों हाथों से लेकर फेंक दिया, और तुम्हारी आंखों के साम्हने उनको तोड़ डाला। १८ तब तुम्हारे उस महापाप के कारण जिसे करके तुम ने यहोवा की दृष्टि में बुराई की, और उसे रीस दिलाई थी, मैं यहोवा के साम्हने मुंह के बल गिर पड़ा, और पहिले की नाईं, अर्थात् चालीस दिन और चालीस रात तक, न तो रोटी खाई और न पानी पिया। १९ मैं तो यहोवा के उस कोप और जल-

* मूल में—कड़ी गर्दनवाली।
† मूल में—परमेश्वर की अंगुली।

* मूल में—कड़ी गर्दनवाले।
† मूल में—आकाश के तले से।

जलाहट से डर रहा था, क्योंकि वह तुम से अप्रसन्न होकर तुम्हें सत्यानाश करने को था। परन्तु यहोवा ने उस बार भी मेरी सुन ली। २० और यहोवा हारून से इतना कोपित हुआ कि उसे भी सत्यानाश करना चाहा; परन्तु उसी समय मैं ने हारून के लिये भी प्रार्थना की। २१ और मैं ने वह बछड़ा जिसे बनाकर तुम पापी हो गए थे लेकर, आग में डालकर फूंक दिया; और फिर उसे पीस पीसकर ऐसा चूर चूरकर डाला कि वह धूल की नाईं जीर्ण हो गया; और उसकी उस राख को उस नदी में फेंक दिया जो पर्वत से निकलकर नीचे बहती थी। २२ फिर तबेरा, और मस्सा, और किब्रोतहत्तावा में भी तुम ने यहोवा को रीस दिलाई थी। २३ फिर जब यहोवा ने तुम को कादेशबर्ने से यह कहकर भेजा, कि जाकर उस देश के जिसे मैं ने तुम्हें दिया है अधिकारी हो जाओ, तब भी तुम ने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के विरुद्ध बलवा किया, और न तो उसका विश्वास किया, और न उसकी बात ही मानी। २४ जिस दिन से मैं तुम्हें जानता हूं उस दिन से तुम यहोवा से बलवा ही करते आए हो। २५ मैं यहोवा के साम्हने चालीस दिन और चालीस रात मुंह के बल पड़ा रहा, क्योंकि यहोवा ने कह दिया था, कि वह तुम को सत्यानाश करेगा। २६ और मैं ने यहोवा से यह प्रार्थना की, कि हे प्रभु यहोवा, अपना प्रजारूपी निज भाग, जिनको तू ने अपने महान् प्रताप से छुड़ा लिया है, और जिनको तू ने अपने बलवन्त हाथ से मिस्र से निकाल लिया है, उन्हें नष्ट न कर। २७ अपने दास इब्राहीम, इसहाक, और याकूब को स्मरण कर; और इन लोगों की कठोरता, और दुष्टता, और पाप पर दृष्टि न कर, २८ जिस से ऐसा न हो कि जिस देश से तू हम को निकालकर ले आया है, वहां के लोग कहने लगें, कि यहोवा उन्हें उस देश में जिसके देने का वचन उनको दिया था नहीं पहुंचा सका, और उन से बैर भी रखता था, इसी कारण उस ने उन्हें जंगल में निकालकर मार डाला है। २९ ये लोग तेरी प्रजा और निज भाग हैं, जिनको तू ने अपने बड़े सामर्थ्य और बलवन्त भुजा के द्वारा निकाल ले आया है॥

१० उस समय यहोवा ने मुझ से कहा, पहिली पटियाओं के समान पत्थर की दो और पटियाएं गढ़ ले, और उन्हें लेकर मेरे पास पर्वत के ऊपर आ जा, और लकड़ी का एक सन्दूक भी बनवा ले। २ और मैं उन पटियाओं पर वे ही वचन लिखूंगा, जो उन पहिली पटियाओं पर थे, जिन्हें तू ने तोड़ डाला, और तू उन्हें उस सन्दूक में रखना। ३ तब मैं ने बबूल की लकड़ी का एक सन्दूक बनवाया, और पहिली पटियाओं के समान पत्थर की दो और पटियाएं गढ़ीं, तब उन्हें हाथों में लिये हुए पर्वत पर चढ़ गया। ४ और जो दस वचन यहोवा ने सभा के दिन पर्वत पर अग्नि के मध्य में से तुम से कहे थे, वे ही उस ने पहिलों के समान उन पटियाओं पर लिखे; और उनको मुझे सौंप दिया। ५ तब मैं पर्वत से नीचे उतर आया, और पटियाओं को अपने बनवाए हुए सन्दूक में धर दिया; और यहोवा की आज्ञा के अनुसार वे वहीं रखी हुई हैं। (६ तब इस्राएली याकानियों के कूओं से कूच करके मोसेरा तक आए। वहां हारून मर गया, और उसको वहीं मिट्टी दी गई; और उसका पुत्र

एलीआजर उसके स्थान पर याजक का काम करने लगा। ७ वे वहां से कूच करके गुदगोदा को, और गुदगोदा से योतबाता को चले, इस देश में जल की नदियां है। ८ उस समय यहोवा ने लेवी गोत्र को इसलिये अलग किया कि वे यहोवा की वाचा का सन्दूक उठाया करें, और यहोवा के सम्मुख खड़े होकर उसकी सेवाटहल किया करें, और उसके नाम से आशीर्वाद दिया करें, जिस प्रकार कि आज के दिन तक होता आ रहा है। ९ इस कारण लेवियों को अपने भाइयों के साथ कोई निज अंश वा भाग नहीं मिला; यहोवा ही उनका निज भाग है, जैसे कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने उन से कहा था।) १० मैं तो पहिले की नाईं उस पर्वत पर चालीस दिन और चालीस रात ठहरा रहा, और उस बार भी यहोवा ने मेरी सुनी, और तुझे नाश करने की मनसा छोड़ दी। ११ फिर यहोवा ने मुझ से कहा, उठ, और तू इन लोगों की अगुवाई कर, ताकि जिस देश के देने को मैं ने उनके पूर्वजों से शपथ खाकर कहा था उस में वे जाकर उसको अपने अधिकार में कर लें॥

१२ और अब, हे इस्राएल, तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से इसके सिवाय और क्या चाहता है, कि तू अपने परमेश्वर यहोवा का भय माने, और उसके सारे मार्गों पर चले, उस से प्रेम रखे, और अपने पूरे मन और अपने सारे प्राण से उसकी सेवा करे, १३ और यहोवा की जो जो आज्ञा और विधि मैं आज तुझे सुनाता हूं उनको ग्रहण करे, जिस से तेरा भला हो? १४ सुन, स्वर्ग और सब से ऊंचा स्वर्ग भी, और पृथ्वी और उस में जो कुछ है, वह सब तेरे परमेश्वर यहोवा ही का है; १५ तौभी यहोवा ने तेरे पूर्वजों से स्नेह और प्रेम रखा, और उनके बाद तुम लोगों को जो उनकी सन्तान हो सर्व देशों के लोगों के मध्य में से चुन लिया, जैसा कि आज के दिन प्रकट है। १६ इसलिये अपने अपने हृदय का खतना करो, और आगे को हठीले* न रहो। १७ क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा वही ईश्वरों का परमेश्वर और प्रभुओं का प्रभु है, वह महान् पराक्रमी और भय योग्य ईश्वर है, जो किसी का पक्ष नहीं करता और न घूस लेता है। १८ वह अनाथों और विधवा का न्याय चुकाता, और परदेशियों से ऐसा प्रेम करता है कि उन्हें भोजन और वस्त्र देता है। १९ इसलिये तुम भी परदेशियों से प्रेम भाव रखना; क्योंकि तुम भी मिस्र देश में परदेशी थे। २० अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना; उसी की सेवा करना और उसी से लिपटे रहना, और उसी के नाम की शपथ खाना। २१ वही तुम्हारी स्तुति के योग्य है†; और वही तेरा परमेश्वर है, जिस ने तेरे साथ वे बड़े महत्व के और भयानक काम किए हैं जिन्हें तू ने अपनी आंखों से देखा है। २२ तेरे पुरखा जब मिस्र में गए तब सत्तर ही मनुष्य थे; परन्तु अब तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरी गिनती आकाश के तारों के समान बहुत कर दिया है॥

११ इसलिये तू अपने परमेश्वर यहोवा से अत्यन्त प्रेम रखना, और जो कुछ उस ने तुझे सौंपा है उसका, अर्थात् उसकी विधियों, नियमों, और आज्ञाओं का नित्य पालन करना। २ और तुम आज यह सोच समझ लो (क्योंकि मैं तो तुम्हारे बाल-

* मूल में—कड़ी गर्दनवाले।
† मूल में—वही तेरी स्तुति है।

बच्चों से नहीं कहता,) जिन्हों ने न तो कुछ देखा और न जाना है कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने क्या क्या ताड़ना की, और कैसी महिमा, और बलवन्त हाथ, और बढ़ाई हुई भुजा दिखाई, ३ और मिस्र में वहां के राजा फ़िरौन को कैसे कैसे चिन्ह दिखाए, और उसके सारे देश में कैसे कैसे चमत्कार के काम किए; ४ और उस ने मिस्र की सेना के घोड़ों और रथों से क्या किया, अर्थात् जब वे तुम्हारा पीछा कर रहे थे तब उस ने उनको लाल समुद्र में डुबोकर किस प्रकार नष्ट कर डाला, कि आज तक उनका पता नहीं; ५ और तुम्हारे इस स्थान में पहुंचने तक उस ने जंगल में तुम से क्या क्या किया; ६ और उस ने रूबेनी एलीआब के पुत्र दातान और अबीराम से क्या क्या किया; अर्थात् पृथ्वी ने अपना मुंह पसारके उनको घरानों, और डेरों, और सब अनुचरों समेत सब इस्राएलियों के देखते * देखते कैसे निगल लिया; ७ परन्तु यहोवा के इन सब बड़े बड़े कामों को तुम ने अपनी आंखों से देखा है। ८ इस कारण जितनी आज्ञाएं मैं आज तुम्हें सुनाता हूं उन सभों को माना करना, इसलिये कि तुम सामर्थी होकर उस देश में जिसके अधिकारी होने के लिये तुम पार जा रहे हो प्रवेश करके उसके अधिकारी हो जाओ, ९ और उस देश में बहुत दिन रहने पाओ, जिसे तुम्हें और तुम्हारे वंश को देने की शपथ यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों से खाई थी, और उस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं। १० देखो, जिस देश के अधिकारी होने को तुम जा रहे हो वह मिस्र देश के समान नहीं है, जहां से निकलकर आए हो, जहां तुम बीज बोते थे और हरे साग के खेत की रीति के अनुसार अपने पांव से नालियां बनाकर सींचते थे; ११ परन्तु जिस देश के अधिकारी होने को तुम पार जाने पर हो वह पहाड़ों और तराइयों का देश है, और आकाश की वर्षा के जल से सिंचता है; १२ वह ऐसा देश है जिसकी तेरे परमेश्वर यहोवा को सुधि रहती है; और वर्ष के आदि से लेकर अन्त तक तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि उस पर निरन्तर लगी रहती है॥

१३ और यदि तुम मेरी आज्ञाओं को जो आज मैं तुम्हें सुनाता हूं ध्यान से सुनकर, अपने सम्पूर्ण मन और सारे प्राण के साथ, अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखो और उसकी सेवा करते रहो, १४ तो मैं तुम्हारे देश में बरसात के आदि और अन्त दोनों समयों की वर्षा को अपने अपने समय पर बरसाऊंगा, जिस से तू अपना अन्न, नया दाखमधु, और टटका तेल संचय कर सकेगा। १५ और मैं तेरे पशुओं के लिये तेरे मैदान में घास उपजाऊंगा, और तू पेट भर खाएगा और सन्तुष्ट रहेगा। १६ इसलिये अपने विषय में सावधान रहो, ऐसा न हो कि तुम्हारे मन धोखा खाएं, और तुम बहककर दूसरे देवताओं की पूजा करने लगो और उनको दण्डवत् करने लगो, १७ और यहोवा का कोप तुम पर भड़के, और वह आकाश की वर्षा बन्द कर दे, और भूमि अपनी उपज न दे, और तुम उस उत्तम देश में से जो यहोवा तुम्हें देता है शीघ्र नष्ट हो जाओ। १८ इसलिये तुम मेरे ये वचन अपने अपने मन और प्राण में धारण किए रहना, और चिन्हानी के लिये अपने हाथों पर बान्धना, और वे तुम्हारी आंखों के मध्य में टीके का काम दें। १९ और तुम घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते-उठते इनकी

* मूल में—बीच में।

चर्चा करके अपने लड़केबालों को सिखाया करना। २० और इन्हें अपने अपने घर के चौखट के बाजुओं और अपने फाटकों के ऊपर लिखना; २१ इसलिये कि जिस देश के विषय यहोवा ने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर कहा था, कि मैं उसे तुम्हें दूंगा, उस में तुम्हारे और तुम्हारे लड़केबालों की दीर्घायु हो, और जब तक पृथ्वी के ऊपर का आकाश बना रहे तब तक वे भी बने रहें। २२ इसलिये यदि तुम इन सब आज्ञाओं के मानने में जो मैं तुम्हें सुनाता हूं पूरी चौकसी करके अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखो, और उसके सब मार्गों पर चलो, और उस से लिपटे रहो, २३ तो यहोवा उन सब जातियों को तुम्हारे आगे से निकाल डालेगा, और तुम अपने से बड़ी और सामर्थी जातियों के अधिकारी हो जाओगे। २४ जिस जिस स्थान पर तुम्हारे पांव के तलवे पड़ें वे सब तुम्हारे ही हो जाएंगे, अर्थात् जंगल से लबानोन तक, और परात नाम महानद से लेकर पश्चिम के समुद्र तक तुम्हारा सिवाना होगा। २५ तुम्हारे साम्हने कोई भी खड़ा न रह सकेगा; क्योंकि जितनी भूमि पर तुम्हारे पांव पड़ेंगे उस सब पर **रहनेवालों के मन** में तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तुम्हारे कारण उन में डर और थरथराहट उत्पन्न कर देगा॥

२६ सुनो, मैं आज के दिन तुम्हारे आगे आशीष और शाप दोनों रख देता हूं। २७ अर्थात् यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की इन आज्ञाओं को जो मैं आज तुम्हें सुनाता हूं मानो, तो तुम पर आशीष होगी, २८ और यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को नहीं मानोगे, और जिस मार्ग की आज्ञा मैं आज सुनाता हूं उसे तजकर दूसरे देवताओं के पीछे हो लोगे जिन्हें तुम नहीं जानते हो, तो तुम पर शाप पड़ेगा॥

२९ और जब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को उस देश में पहुंचाए जिसके अधिकारी होने को तू जाने पर है, तब आशीष गरीज्जीम पर्वत पर से और शाप एबाल पर्वत पर से सुनाना *। ३० क्या वे यरदन के पार, सूर्य के अस्त होने की ओर, अराबा के निवासी कनानियों के देश में, गिलगाल के साम्हने, मोरे के बांज वृक्षों के पास नहीं हैं? ३१ तुम तो यरदन पार इसी लिये जाने पर हो, कि जो देश तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें देता है उसके अधिकारी हो जाओ; और तुम उसके अधिकारी होकर उस में निवास करोगे; ३२ इसलिये जितनी विधियां और नियम मैं आज तुम को सुनाता हूं उन सभों के मानने में चौकसी करना॥

१२ जो देश तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें अधिकार में लेने को दिया है, उस में जब तक तुम भूमि पर जीवित रहो तब तक इन विधियों और नियमों के मानने में चौकसी करना। २ जिन जातियों के तुम अधिकारी होगे उनके लोग ऊंचे ऊंचे पहाड़ों वा टीलों पर, वा किसी भांति के हरे वृक्ष के तले, जितने स्थानों में अपने देवताओं की उपासना करते हैं, उन सभों को तुम पूरी रीति से नष्ट कर डालना; ३ उनकी वेदियों को ढा देना, उनकी लाठों को तोड़ डालना, उनकी अशेरा नाम मूर्त्तियों को आग में जला देना, और उनके देवताओं की खुदी हुई मूर्त्तियों को काटकर गिरा देना, कि उस देश में से उनके नाम तक मिट जाएं। ४ फिर जैसा

* मूल में—पर्वत पर रखना।

वे करते हैं, तुम अपने परमेश्वर यहोवा के लिये वैसा न करना। ५ किन्तु जो स्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे सब गोत्रों में से चुन लेगा, कि वहां अपना नाम बनाए रखे, उसके उसी निवासस्थान के पास जाया करना; ६ और वहीं तुम अपने होमबलि, और मेलबलि, और दशमांश, और उठाई हुई भेंट, और मन्नत की वस्तुएं, और स्वेच्छाबलि, और गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के पहिलौठे ले जाया करना; ७ और वहीं तुम अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने भोजन करना, और अपने अपने घराने समेत उन सब कामों पर, जिन में तुम ने हाथ लगाया हो, और जिन पर तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की आशीष मिली हो, आनन्द करना। ८ जैसे हम आजकल यहां जो काम जिसको भाता है वही करते हैं वैसा तुम न करना; ९ जो विश्रामस्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे भाग में देता है वहां तुम अब तक तो नहीं पहुंचे। १० परन्तु जब तुम यरदन पार जाकर उस देश में जिसके भागी तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें करता है बस जाओ, और वह तुम्हारे चारों ओर के सब शत्रुओं से तुम्हें विश्राम दे, ११ और तुम निडर रहने पाओ, तब जो स्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास ठहराने के लिये चुन ले उसी में तुम अपने होमबलि, और मेलबलि, और दशमांश, और उठाई हुई भेंटें, और मन्नतों की सब उत्तम उत्तम वस्तुएं जो तुम यहोवा के लिये संकल्प करोगे, निदान जितनी वस्तुओं की आज्ञा मैं तुम को सुनाता हूं उन सभों को वहीं ले जाया करना। १२ और वहां तुम अपने अपने बेटे बेटियों और दास दासियों सहित अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने आनन्द करना, और जो लेवीय तुम्हारे फाटकों में रहे वह भी आनन्द करे, क्योंकि उसका तुम्हारे संग कोई निज भाग वा अंश न होगा। १३ और सावधान रहना कि तू अपने होमबलियों को हर एक स्थान पर जो देखने में आए न चढ़ाना; १४ परन्तु जो स्थान तेरे किसी गोत्र में यहोवा चुन ले वहीं अपने होमबलियों को चढ़ाया करना, और जिस जिस काम की आज्ञा मैं तुझ को सुनाता हूं उसको वहीं करना। १५ परन्तु तू अपने सब फाटकों के भीतर अपने जी की इच्छा और अपने परमेश्वर यहोवा की दी हुई आशीष के अनुसार पशु मारके खा सकेगा, शुद्ध और अशुद्ध मनुष्य दोनों खा सकेंगे, जैसे कि चिकारे और हरिण का मांस। १६ परन्तु उसका लोहू न खाना; उसे जल की नाईं भूमि पर उंडेल देना। १७ फिर अपने अन्न, वा नये दाखमधु, वा टटके तेल का दशमांश, और अपने गाय-बैलों वा भेड़-बकरियों के पहिलौठे, और अपनी मन्नतों की कोई वस्तु, और अपने स्वेच्छाबलि, और उठाई हुई भेंटें अपने सब फाटकों के भीतर न खाना; १८ उन्हें अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने उसी स्थान पर जिसको वह चुने अपने बेटे बेटियों और दास दासियों के, और जो लेवीय तेरे फाटकों के भीतर रहेंगे उनके साथ खाना, और तू अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने अपने सब कामों पर जिन में हाथ लगाया हो आनन्द करना। १९ और सावधान रह कि जब तक तू भूमि पर जीवित रहे तब तक लेवियों को न छोड़ना॥

२० जब तेरा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तेरा देश बढ़ाए, और तेरा जी मांस खाना चाहे, और तू सोचने लगे, कि मैं मांस खाऊंगा, तब जो मांस तेरा जी

चाहे वही खा सकेगा। २१ जो स्थान तेरा परमेश्वर यहोवा अपना नाम बनाए रखने के लिये चुन ले वह यदि तुझ से बहुत दूर हो, तो जो गाय-बैल भेड़-बकरी यहोवा ने तुझे दी हों, उन में से जो कुछ तेरा जी चाहे, उसे मेरी आज्ञा के अनुसार मारके अपने फाटकों के भीतर खा सकेगा। २२ जैसे चिकारे और हरिण का मांस खाया जाता है वैसे ही उनको भी खा सकेगा, शुद्ध और अशुद्ध दोनों प्रकार के मनुष्य उनका मांस खा सकेंगे। २३ परन्तु उनका लोहू किसी भांति न खाना; क्योंकि लोहू जो है वह प्राण ही है, और तू मांस के साथ प्राण कभी भी न खाना। २४ उसको न खाना; उसे जल की नाईं भूमि पर उंडेल देना। २५ तू उसे न खाना; इसलिये कि वह काम करने से जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है तेरा और तेरे बाद तेरे वंश का भी भला हो। २६ परन्तु जब तू कोई वस्तु पवित्र करे, वा मन्नत माने, तो ऐसी वस्तुएं लेकर उस स्थान को जाना जिसको यहोवा चुन लेगा, २७ और वहां अपने होमबलियों के मांस और लोहू दोनों को अपने परमेश्वर यहोवा की वेदी पर चढ़ाना, और मेलबलियों का लोहू उसकी वेदी पर उंडेलकर उनका मांस खाना। २८ इन बातों को जिनकी आज्ञा मैं तुझे सुनाता हूं चित्त लगाकर सुन, कि जब तू वह काम करे जो तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में भला और ठीक है, तब तेरा और तेरे बाद तेरे वंश का भी सदा भला होता रहे॥

२९ जब तेरा परमेश्वर यहोवा उन जातियों को जिनका अधिकारी होने को तू जा रहा है तेरे आगे से नष्ट करे, और तू उनका अधिकारी होकर उनके देश में बस जाए, ३० तब सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि उनके सत्यानाश होने के बाद तू भी उनकी नाईं फंस जाए, अर्थात् यह कहकर उनके देवताओं के सम्बन्ध में यह पूछपाछ न करना, कि उन जातियों के लोग अपने देवताओं की उपासना किस रीति करते थे?—मैं भी वैसी ही करूंगा। ३१ तू अपने परमेश्वर यहोवा से ऐसा व्यवहार न करना; क्योंकि जितने प्रकार के कामों से यहोवा घृणा करता है और बैर-भाव रखता है, उन सभों को उन्हों ने अपने देवताओं के लिये किया है, यहां तक कि अपने बेटे बेटियों को भी वे अपने देवताओं के लिये अग्नि में डालकर जला देते हैं॥

३२ जितनी बातों की मैं तुम को आज्ञा देता हूं उनको चौकस होकर माना करना; और न तो कुछ उन में बढ़ाना और न उन में से कुछ घटाना॥

१३ यदि तेरे बीच कोई भविष्यद्वक्ता वा स्वप्न देखनेवाला प्रगट होकर तुझे कोई चिन्ह वा चमत्कार दिखाए, २ और जिस चिन्ह वा चमत्कार को प्रमाण ठहराकर वह तुझ से कहे, कि आओ हम पराए देवताओं के अनुयायी होकर, जिन से तुम अब तक अनजान रहे, उनकी पूजा करें, ३ तब तुम उस भविष्यद्वक्ता वा स्वप्न देखनेवाले के वचन पर कभी कान न धरना; क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारी परीक्षा लेगा, जिस से यह जान ले, कि ये मुझ से अपने सारे मन और सारे प्राण के साथ प्रेम रखते हैं वा नहीं? ४ तुम अपने परमेश्वर यहोवा के पीछे चलना, और उसका भय मानना, और उसकी आज्ञाओं पर चलना, और उसका वचन मानना, और उसकी सेवा करना, और उसी से लिपटे रहना। ५ और ऐसा भविष्यद्वक्ता वा स्वप्न

देखनेवाला जो तुम को तुम्हारे उस परमेश्वर यहोवा से फेरके, जिस ने तुम को मिस्र देश से निकाला और दासत्व के घर से छुड़ाया है, तेरे उसी परमेश्वर यहोवा के मार्ग से बहकाने की बात कहनेवाला ठहरेगा, इस कारण वह मार डाला जाए। इस रीति से तू अपने बीच में से ऐसी बुराई को दूर कर देना ॥

६ यदि तेरा सगा भाई, वा बेटा, वा बेटी, वा तेरी अर्द्धांगिन *, वा प्राणप्रिय तेरा कोई मित्र निराले में तुझ को यह कहकर फुसलाने लगे, कि आओ हम दूसरे देवताओं की उपासना वा पूजा करें, जिन्हें न तो तू न तेरे पुरखा जानते थे, ७ चाहे वे तुम्हारे निकट रहनेवाले आस पास के लोगों के, चाहे पृथ्वी के एक छोर से लेके दूसरे छोर तक दूर दूर के रहनेवालों के देवता हों, ८ तो तू उसकी न मानना, और न तो उसकी बात सुनना, और न उस पर तरस खाना, और न कोमलता दिखाना, और न उसको छिपा रखना; ९ उसको अवश्य घात करना; उसके घात करने में पहिले तेरा हाथ उठे, पीछे सब लोगों के हाथ उठें। १० उस पर ऐसा पत्थरवाह करना कि वह मर जाए, क्योंकि उस ने तुझको तेरे उस परमेश्वर यहोवा से, जो तुझ को दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है, बहकाने का यत्न किया है। ११ और सब इस्राएली सुनकर भय खाएंगे, और ऐसा बुरा काम फिर तेरे बीच न करेंगे ॥

१२ यदि तेरे किसी नगर के विषय में, जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे रहने के लिये देता है, ऐसी बात तेरे सुनने में आए, १३ कि कितने अधम पुरुषों ने तेरे ही बीच में से निकलकर अपने नगर के निवासियों को यह कहकर बहका दिया है, कि आओ हम और देवताओं की जिन से अब तक अनजान रहे उपासना करें, १४ तो पूछपाछ करना, और खोजना, और भली भांति पता लगाना; और यदि यह बात सच हो, और कुछ भी सन्देह न रहे कि तेरे बीच ऐसा घिनौना काम किया जाता है, १५ तो अवश्य उस नगर के निवासियों को तलवार से मार डालना, और पशु आदि उस सब समेत जो उस में हो उसको तलवार से सत्यानाश करना। १६ और उस में की सारी लूट चौक के बीच इकट्ठी करके उस नगर को लूट समेत अपने परमेश्वर यहोवा के लिये मानो सर्व्वांग होम करके जलाना; और वह सदा के लिये डीह रहे, वह फिर बसाया न जाए। १७ और कोई सत्यानाश की वस्तु तेरे हाथ न लगने पाए; जिस से यहोवा अपने भड़के हुए कोप से शान्त होकर जैसा उस ने तेरे पूर्वजों से शपथ खाई थी वैसा ही तुझ से दया का व्यवहार करे, और दया करके तुझ को गिनती में बढ़ाए। १८ यह तब होगा जब तू अपने परमेश्वर यहोवा की जितनी आज्ञाएं मैं आज तुझे सुनाता हूं उन सभों को मानेगा, और जो तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में ठीक है वही करेगा ॥

१४ तुम अपने परमेश्वर यहोवा के पुत्र हो; इसलिये मरे हुओं के कारण न तो अपना शरीर चीरना, और न भौहों के बाल मुंडाना *। २ क्योंकि तू अपने परमेश्वर यहोवा के लिये एक पवित्र

* मूल में—तुम्हारी गोद की स्त्री।

* मूल में—अपनी आंखों के बीच गंजापन न करना।

समाज है, और यहोवा ने तुझ को पृथ्वी भर के समस्त देशों के लोगों में से अपनी निज सम्पत्ति होने के लिये चुन लिया है।।

३ तू कोई घिनौनी वस्तु न खाना। ४ जो पशु तुम खा सकते हो वे ये हैं, अर्थात् गाय-बैल, भेड़-बकरी, ५ हरिण, चिकारा, यखमूर, बनैली बकरी, साबर, नीलगाय, और बनैली भेड़। ६ निदान पशुओं में से जितने पशु चिरे वा फटे खुर-वाले और पागुर करनेवाले होते हैं उनका मांस तुम खा सकते हो। ७ परन्तु पागुर करनेवाले वा चिरे खुरवालों में से इन पशुओं को, अर्थात् ऊंट, खरहा, और शापान को न खाना; क्योंकि ये पागुर तो करते हैं परन्तु चिरे खुर के नहीं होते, इस कारण वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं। ८ फिर सूअर, जो चिरे खुर का तो होता है परन्तु पागुर नहीं करता, इस कारण वह तुम्हारे लिये अशुद्ध है। तुम न तो इनका मांस खाना, और न इनकी लोथ छूना।।

९ फिर जितने जलजन्तु हैं उन में से तुम इन्हें खा सकते हो, अर्थात् जितनों के पंख और छिलके होते हैं। १० परन्तु जितने बिना पंख और छिलके के होते हैं उन्हें तुम न खाना; क्योंकि वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं।।

११ सब शुद्ध पक्षियों का मांस तो तुम खा सकते हो। १२ परन्तु इनका मांस न खाना, अर्थात् उकाब, हड़फोड़, कुरर; १३ गरुड़, चील और भांति भांति के शाही; १४ और भांति भांति के सब काग; १५ शुतर्मुर्ग, तहमास, जलकुक्कुट, और भांति भांति के बाज; १६ छोटा और बड़ा दोनों जाति का उल्लू, और घुग्घू; १७ धनेश, गिद्ध, हाड़गील; १८ सारस, भांति भांति के बगुले, नौवा, और चमगीदड़। १९ और जितने रेंगनेवाले पखेरु हैं वे सब तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं; वे खाए न जाएं। २० परन्तु सब शुद्ध पंखवालों का मांस तुम खा सकते हो।।

२१ जो अपनी मृत्यु से मर जाए उसे तुम न खाना; उसे अपने फाटकों के भीतर किसी परदेशी को खाने के लिये दे सकते हो, वा किसी पराए के हाथ बेच सकते हो; परन्तु तू तो अपने परमेश्वर यहोवा के लिये पवित्र समाज है। बकरी का बच्चा उसकी माता के दूध में न पकाना।।

२२ बीज की सारी उपज में से जो प्रतिवर्ष खेत में उपजे उसका दशमांश अवश्य अलग करके रखना। २३ और जिस स्थान को तेरा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास ठहराने के लिये चुन ले उस में अपने अन्न, और नये दाखमधु, और टटके तेल का दशमांश, और अपने गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के पहिलौठे अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने खाया करना; जिस से तुम उसका भय नित्य मानना सीखोगे। २४ परन्तु यदि वह स्थान जिस-को तेरा परमेश्वर यहोवा अपना नाम बनाए रखने के लिये चुन लेगा बहुत दूर हो, और इस कारण वहां की यात्रा तेरे लिये इतनी लम्बी हो कि तू अपने परमेश्वर यहोवा की आशीष से मिली हुई वस्तुएं वहां न ले जा सके, २५ तो उसे बेचके, रुपये को बान्ध, हाथ में लिये हुए उस स्थान पर जाना जो तेरा परमेश्वर यहोवा चुन लेगा, २६ और वहां गाय-बैल, वा भेड़-बकरी, वा दाखमधु, वा मदिरा, वा किसी भांति की वस्तु क्यों न हो, जो तेरा जी चाहे, उसे उसी रुपये से मोल लेकर अपने घराने समेत अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने खाकर आनन्द करना। २७ और अपने फाटकों

के भीतर के लेवीय को न छोड़ना, क्योंकि तेरे साथ उसका कोई भाग वा अंश न होगा ।।

२८ तीन तीन वर्ष के बीतने पर तीसरे * वर्ष की उपज का सारा दशमांश निकालकर अपने फाटकों के भीतर इकट्ठा कर रखना; २९ तब लेवीय जिसका तेरे संग कोई निज भाग वा अंश न होगा वह, और जो परदेशी, और अनाथ, और विधवाएं तेरे फाटकों के भीतर हों, वे भी आकर पेट भर खाएं; जिस से तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे सब कामों में तुझे आशीष दे ।।

१५ सात सात वर्ष बीतने पर तुम छुटकारा दिया करना, २ अर्थात् जिस किसी ऋण देनेवाले ने अपने पड़ोसी को कुछ उधार दिया हो, तो वह उसे छोड़ दे; और अपने पड़ोसी वा भाई से उसको बरबस न भरवा ले, क्योंकि यहोवा के नाम से इस छुटकारे का प्रचार हुआ है। ३ परदेशी मनुष्य से तू उसे बरबस भरवा सकता है, परन्तु जो कुछ तेरे भाई के पास तेरा हो उसको तू बिना भरवाए छोड़ देना। ४ तेरे बीच कोई दरिद्र न रहेगा, क्योंकि जिस देश को तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा भाग करके तुझे देता है, कि तू उसका अधिकारी हो, उस में वह तुझे बहुत ही आशीष देगा। ५ इतना अवश्य है कि तू अपने परमेश्वर यहोवा की बात चित्त लगाकर सुने, और इन सारी आज्ञाओं के मानने में जो मैं आज तुझे सुनाता हूं चौकसी करे। ६ तब तेरा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तुझे आशीष देगा, और तू बहुत जातियों को उधार देगा, परन्तु तुझे उधार लेना न पड़ेगा; और तू बहुत जातियों पर प्रभुता करेगा, परन्तु वे तेरे ऊपर प्रभुता न करने पाएंगी ।।

७ जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसके किसी फाटक के भीतर यदि तेरे भाइयों में से कोई तेरे पास दरिद्र हो, तो अपने उस दरिद्र भाई के लिये न तो अपना हृदय कठोर करना, और न अपनी मुट्ठी कड़ी करना; ८ जिस वस्तु की घटी उसको हो, उसका जितना प्रयोजन हो उतना अवश्य अपना हाथ ढीला करके उसको उधार देना। ९ सचेत रह कि तेरे मन में ऐसी अधम चिन्ता न समाए, कि सातवां वर्ष जो छुटकारे का वर्ष है वह निकट है, और अपनी दृष्टि तू अपने उस दरिद्र भाई की ओर से क्रूर करके उसे कुछ न दे, और वह तेरे विरुद्ध यहोवा की दोहाई दे, तो यह तेरे लिये पाप ठहरेगा। १० तू उसको अवश्य देना, और उसे देते समय तेरे मन को बुरा न लगे; क्योंकि इसी बात के कारण तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे सब कामों में जिन में तू अपना हाथ लगाएगा तुझे आशीष देगा। ११ तेरे देश में दरिद्र तो सदा पाए जाएंगे; इसलिये मैं तुझे यह आज्ञा देता हूं, कि तू अपने देश में अपने दीन-दरिद्र भाइयों को अपना हाथ ढीला करके अवश्य दान देना ।।

१२ यदि तेरा कोई भाईबन्धु, अर्थात् कोई इब्री वा इब्रिन, तेरे हाथ विके, और वह छः वर्ष तेरी सेवा कर चुके, तो सातवें वर्ष उसको अपने पास से स्वतन्त्र करके जाने देना। १३ और जब तू उसको स्वतन्त्र करके अपने पास से जाने दे तब उसे छूछे हाथ न जाने देना; १४ वरन अपनी भेड़-बकरियों, और खलिहान, और दाखमधु के कुण्ड में से उसको बहुतायत से देना; तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे जैसी आशीष दी

* मूल में—उस।

हो उसी के अनुसार उसे देना। १५ और इस बात को स्मरण रखना कि तू भी मिस्र देश में दास था, और तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे छुड़ा लिया; इस कारण मैं आज तुझे यह आज्ञा सुनाता हूं। १६ और यदि वह तुझ से और तेरे घराने से प्रेम रखता, और तेरे संग आनन्द से रहता हो, और इस कारण तुझ से कहने लगे, कि मैं तेरे पास से न जाऊंगा, १७ तो सुतारी लेकर उसका कान किवाड़ पर लगाकर छेदना, तब वह सदा तेरा दास बना रहेगा। और अपनी दासी से भी ऐसा ही करना। १८ जब तू उसको अपने पास से स्वतन्त्र करके जाने दे, तब उसे छोड़ देना तुझ को कठिन न जान पड़े; क्योंकि उस ने छः वर्ष दो मजदूरों के बराबर तेरी सेवा की है। और तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे सारे कामों में तुझ को आशीष देगा॥

१९ तेरी गायों और भेड़-बकरियों के जितने पहिलौठे नर हों उन सभों को अपने परमेश्वर यहोवा के लिये पवित्र रखना; अपनी गायों के पहिलौठे से कोई काम न लेना, और न अपनी भेड़-बकरियों के पहिलौठे का ऊन कतरना। २० उस स्थान पर जो तेरा परमेश्वर यहोवा चुन लेगा तू यहोवा के साम्हने अपने अपने घराने समेत प्रति वर्ष उसका मांस खाना। २१ परन्तु यदि उस में किसी प्रकार का दोष हो, अर्थात् वह लंगड़ा वा अन्धा हो, वा उस में किसी और ही प्रकार की बुराई का दोष हो, तो उसे अपने परमेश्वर यहोवा के लिये बलि न करना। २२ उसको अपने फाटकों के भीतर खाना; शुद्ध और अशुद्ध दोनों प्रकार के मनुष्य जैसे चिकारे और हरिण का मांस खाते हैं वैसे ही उसका भी खा सकेंगे। २३ परन्तु उसका लोहू न खाना; उसे जल की नाईं भूमि पर उंडेल देना॥

१६ आबीब महीने को स्मरण करके अपने परमेश्वर यहोवा के लिये फसह का पर्ब्ब मानना; क्योंकि आबीब महीने में तेरा परमेश्वर यहोवा रात को तुझे मिस्र से निकाल लाया। २ इसलिये जो स्थान यहोवा अपने नाम का निवास ठहराने को चुन लेगा, वहीं अपने परमेश्वर यहोवा के लिये भेड़-बकरियों और गाय-बैल फसह करके बलि करना। ३ उसके संग कोई खमीरी वस्तु न खाना; सात दिन तक अखमीरी रोटी जो दुःख की रोटी है खाया करना; क्योंकि तू मिस्र देश से उतावली करके निकला था; इस रीति से तुझ को मिस्र देश से निकलने का दिन जीवन भर स्मरण रहेगा। ४ सात दिन तक तेरे सारे देश में तेरे पास कहीं खमीर देखने में भी न आए; और जो पशु तू पहिले दिन की संध्या को बलि करे उसके मांस में से कुछ बिहान तक रहने न पाए। ५ फसह को अपने किसी फाटक के भीतर, जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे दे बलि न करना; ६ जो स्थान तेरा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास करने के लिये चुन ले केवल वहीं, वर्ष के उसी समय जिस में तू मिस्र से निकला था, अर्थात् सूरज डूबने पर संध्याकाल को, फसह का पशुबलि करना। ७ तब उसका मांस उसी स्थान में जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा चुन ले भूंजकर खाना; फिर बिहान को उठकर अपने अपने डेरे को लौट जाना। ८ छः दिन तक अखमीरी रोटी खाया करना; और सातवें दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के

लिये महासभा हो; उस दिन किसी प्रकार का कामकाज न किया जाए।।

९ फिर जब तू खेत में हंसुआ लगाने लगे, तब से आरम्भ करके सात अठवारे गिनना। १० तब अपने परमेश्वर यहोवा की आशीष के अनुसार उसके लिये स्वेच्छाबलि देकर अठवारों नाम पर्ब्ब मानना; ११ और उस स्थान में जो तेरा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास करने को चुन ले अपने अपने बेटे-बेटियों, दास-दासियों समेत तू और तेरे फाटकों के भीतर जो लेवीय हों, और जो जो परदेशी, और अनाथ, और विधवाएं तेरे बीच में हों, वे सब के सब अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने आनन्द करें। १२ और स्मरण रखना कि तू भी मिस्र में दास था; इसलिये इन विधियों के पालन करने में चौकसी करना।।

१३ तू जब अपने खलिहान और दाखमधु के कुण्ड में से सब कुछ इकट्ठा कर चुके, तब झोंपड़ियों नाम पर्ब्ब सात दिन मानते रहना; १४ और अपने इस पर्ब्ब में अपने अपने बेटे-बेटियों, दास-दासियों समेत तू और जो लेवीय, और परदेशी, और अनाथ, और विधवाएं तेरे फाटकों के भीतर हों वे भी आनन्द करें। १५ जो स्थान यहोवा चुन ले उस में तू अपने परमेश्वर यहोवा के लिये सात दिन तक पर्ब्ब मानते रहना; क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरी सारी बढ़ती में और तेरे सब कामों में तुझ को आशीष देगा; तू आनन्द ही करना। १६ वर्ष में तीन बार, अर्थात् अखमीरी रोटी के पर्ब्ब, और अठवारों के पर्ब्ब, और झोपड़ियों के पर्ब्ब, इन तीनों पर्ब्बों में तुम्हारे सब पुरुष अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने उस स्थान में जो वह चुन लेगा जाएं। और देखो, छूछे हाथ यहोवा के साम्हने कोई न जाए; १७ सब पुरुष अपनी अपनी पूंजी, और उस आशीष के अनुसार जो तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझ को दी हो, दिया करें।।

१८ तू अपने एक एक गोत्र में से, अपने सब फाटकों के भीतर जिन्हें तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को देता है न्यायी और सरदार नियुक्त कर लेना, जो लोगों का न्याय धर्म से किया करें। १९ तुम न्याय न बिगाड़ना; तू न तो पक्षपात करना; और न तो घूस लेना, क्योंकि घूस बुद्धिमान की आंखें अन्धी कर देती है, और धर्मियों की बातें पलट देती है। २० जो कुछ नितान्त ठीक है उसी का पीछा पकड़े रहना, जिस से तू जीवित रहे, और जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसका अधिकारी बना रहे।।

२१ तू अपने परमेश्वर यहोवा की जो वेदी बनाएगा उसके पास किसी प्रकार की लकड़ी की बनी हुई अशेरा का स्थापन न करना। २२ और न कोई लाठ खड़ी करना, क्योंकि उस से तेरा परमेश्वर यहोवा घृणा करता है।।

१७

तू अपने परमेश्वर यहोवा के लिये कोई बैल वा भेड़-बकरी बलि न करना जिस में दोष वा किसी प्रकार की खोट हो; क्योंकि ऐसा करना तेरे परमेश्वर यहोवा के समीप घृणित है।।

२ जो बस्तियां * तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, यदि उन में से किसी में कोई पुरुष वा स्त्री ऐसी पाई जाए, जिस ने तेरे परमेश्वर यहोवा की वाचा तोड़कर ऐसा काम किया हो, जो उसकी दृष्टि में बुरा है, ३ अर्थात् मेरी आज्ञा उल्लंघन करके पराए

* मूल में—फाटक।

देवताओं की, वा सूर्य, वा चंद्रमा, वा आकाश के गण में से किसी की उपासना की हो, वा उनको दण्डवत किया हो, ४ और यह बात तुझे बतलाई जाए और तेरे सुनने में आए; तब भली भांति पूछपाछ करना, और यदि यह बात सच ठहरे कि इस्राएल में ऐसा घृणित कर्म किया गया है, ५ तो जिस पुरुष वा स्त्री ने ऐसा बुरा काम किया हो, उस पुरुष वा स्त्री को बाहर अपने फाटकों पर ले जाकर ऐसा पत्थरवाह करना कि वह मर जाए। ६ जो प्राणदण्ड के योग्य ठहरे वह एक ही की साक्षी से न मार डाला जाए, किन्तु दो वा तीन मनुष्यों की साक्षी से मार डाला जाए। ७ उसके मार डालने के लिये सब से पहिले साक्षियों के हाथ, और उनके बाद और सब लोगों के हाथ उस पर उठें। इसी रीति से ऐसी बुराई को अपने मध्य में से दूर करना॥

८ यदि तेरी बस्तियों * के भीतर कोई झगड़े की बात हो, अर्थात् आपस के खून, वा विवाद, वा मारपीट का कोई मुकद्दमा उठे, और उसका न्याय करना तेरे लिये कठिन जान पड़े, तो उस स्थान को जाकर जो तेरा परमेश्वर यहोवा चुन लेगा; ९ लेवीय याजकों के पास और उन दिनो के न्यायियों के पास जाकर पूछपाछ करना, कि वे तुम को न्याय की बातें बतलाएं। १० और न्याय की जैसी बात उस स्थान के लोग जो यहोवा चुन लेगा तुझे बता दें, उसी के अनुसार करना; और जो व्यवस्था वे तुझे दें उसी के अनुसार चलने में चौकसी करना; ११ व्यवस्था की जो बात वे तुझे बताएं, और न्याय की जो बात वे तुझ से कहें, उसी के अनुसार करना; जो बात वे तुझ को बताएं उस से दहिने वा बाएं न मुड़ना। १२ और जो मनुष्य अभिमान करके उस याजक की, जो वहां तेरे परमेश्वर यहोवा की सेवा टहल करने को उपस्थित रहेगा, न माने, वा उस न्यायी की न सुने, तो वह मनुष्य मार डाला जाए; इस प्रकार तू इस्राएल में से ऐसी बुराई को दूर कर देना। १३ इस से सब लोग सुनकर डर जाएंगे, और फिर अभिमान नहीं करेंगे॥

१४ जब तू उस देश में पहुंचे जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, और उसका अधिकारी हो, और उन में बसकर कहने लगे, कि चारों ओर की सब जातियों की नाईं मैं भी अपने ऊपर राजा ठहराऊंगा; १५ तब जिसको तेरा परमेश्वर यहोवा चुन ले अवश्य उसी को राजा ठहराना। अपने भाइयों ही में से किसी को अपने ऊपर राजा ठहराना; किसी परदेशी को जो तेरा भाई न हो तू अपने ऊपर अधिकारी नहीं ठहरा सकता। १६ और वह बहुत घोड़े न रखे, और न इस मनसा से अपनी प्रजा के लोगों को मिस्र में भेजे कि उसके पास बहुत से घोड़े हो जाएं, क्योंकि यहोवा ने तुम से कहा है, कि तुम उस मार्ग से फिर कभी न लौटना। १७ और वह बहुत स्त्रियां भी न रखे, ऐसा न हो कि उसका मन यहोवा की ओर से पलट जाए; और न वह अपना सोना रूपा बहुत बढ़ाए। १८ और जब वह राजगद्दी पर विराजमान हो, तब इसी व्यवस्था की पुस्तक, जो लेवीय याजकों के पास रहेगी, उसकी एक नकल अपने लिये कर ले। १९ और वह उसे अपने पास रखे, और अपने जीवन भर उसको पढ़ा करे, जिस से वह अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना, और इस व्यवस्था और इन विधियों की सारी बातों के मानने में चौकसी करना

* मूल में—फाटक।

सीखे; २० जिस से वह अपने मन में घमण्ड करके अपने भाइयों को तुच्छ न जाने, और इन आज्ञाओं से न तो दहिने मुड़े और न बाएं; जिस से कि वह और उसके वंश के लोग इस्राएलियों के मध्य बहुत दिनों तक राज्य करते रहें।।

१८ लेवीय याजकों का, वरन सारे लेवीय गोत्रियों का, इस्राएलियों के संग कोई भाग वा अंश न हो; उनका भोजन हव्य और यहोवा का दिया हुआ भाग हो। २ उनका अपने भाइयों के बीच कोई भाग न हो; क्योंकि अपने वचन के अनुसार यहोवा उनका निज भाग ठहरा है। ३ और चाहे गाय-बैल चाहे भेड़-बकरी का मेलबलि हो, उसके करनेवाले लोगों की ओर से याजकों का हक यह हो, कि वे उसका कन्धा और दोनों गाल और झोझ याजक को दें। ४ तू उसको अपनी पहिली उपज का अन्न, नया दाखमधु, और टटका तेल, और अपनी भेड़ों का वह ऊन देना जो पहिली बार कतरा गया हो। ५ क्योंकि तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरे सब गोत्रियों में से उसी को चुन लिया है, कि वह और उसके वंश सदा उसके नाम से सेवा टहल करने को उपस्थित हुआ करें।।

६ फिर यदि कोई लेवीय इस्राएल की बस्तियों * में से किसी से, जहां वह परदेशी की नाईं रहता हो, अपने मन की बड़ी अभिलाषा से उस स्थान पर जाए जिसे यहोवा चुन लेगा, ७ तो अपने सब लेवीय भाइयों की नाईं, जो वहां अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने उपस्थित हों, वह भी उसके नाम से सेवा टहल करे। ८ और अपने पूर्वजों के भाग के मोल को छोड़ उसको भोजन का भाग भी उनके समान मिला करे।।

९ जब तू उस देश में पहुंचे जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, तब वहां की जातियों के अनुसार घिनौना काम करने को न सीखना। १० तुझ में कोई ऐसा न हो जो अपने बेटे वा बेटी को आग में होम करके चढ़ानेवाला, वा भावी कहनेवाला, वा शुभ अशुभ मुहूर्त्तों का माननेवाला, वा टोन्हा, वा तान्त्रिक, ११ वा बाजीगर, वा ओझों से पूछनेवाला, वा भूत साधनेवाला, वा भूतों का जगानेवाला हो। १२ क्योंकि जितने ऐसे ऐसे काम करते हैं वे सब यहोवा के सम्मुख घृणित हैं; और इन्हीं घृणित कामों के कारण तेरा परमेश्वर यहोवा उनको तेरे साम्हने से निकालने पर है। १३ तू अपने परमेश्वर यहोवा के सम्मुख सिद्ध बना रहना। १४ वे जातियां जिनका अधिकारी तू होने पर है शुभ-अशुभ मुहूर्त्तों के माननेवालों और भावी कहनेवालों की सुना करती हैं; परन्तु तुझ को तेरे परमेश्वर यहोवा ने ऐसा करने नहीं दिया। १५ तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे मध्य से, अर्थात् तेरे भाइयों में से मेरे समान एक नबी को उत्पन्न करेगा; तू उसी की सुनना; १६ यह तेरी उस बिनती के अनुसार होगा, जो तू ने होरेब पहाड़ के पास सभा के दिन अपने परमेश्वर यहोवा से की थी, कि मुझे न तो अपने परमेश्वर यहोवा का शब्द फिर सुनना, और न वह बड़ी आग फिर देखनी पड़े, कहीं ऐसा न हो कि मर जाऊं। १७ तब यहोवा ने मुझ से कहा, कि वे जो कुछ कहते हैं सो ठीक कहते हैं। १८ सो मैं उनके लिये उनके भाइयों के बीच में से तेरे समान एक नबी को उत्पन्न करूंगा; और अपना वचन उसके मुंह में डालूंगा; और जिस जिस बात की मैं उसे

* मूल में—फाटक।

आज्ञा दूंगा वही वह उनको कह सुनाएगा। १९ और जो मनुष्य मेरे वह वचन जो वह मेरे नाम से कहेगा ग्रहण न करेगा, तो मैं उसका हिसाब उस से लूंगा। २० परन्तु जो नबी अभिमान करके मेरे नाम से कोई ऐसा वचन कहे जिसकी आज्ञा मैं ने उसे न दी हो, वा पराए देवताओं के नाम से कुछ कहे, वह नबी मार डाला जाए। २१ और यदि तू अपने मन में कहे, कि जो वचन यहोवा ने नहीं कहा उसको हम किस रीति से पहिचानें? २२ **तो पहिचान यह है कि** जब कोई नबी यहोवा के नाम से कुछ कहे, तब यदि वह वचन न घटे और पूरा न हो जाए, तो वह वचन यहोवा का कहा हुआ नहीं; परन्तु उस नबी ने वह बात अभिमान करके कही है, तू उस से भय न खाना॥

१९ जब तेरा परमेश्वर यहोवा उन जातियों को नाश करे जिनका देश वह तुझे देता है, और तू उनके देश का अधिकारी हो के उनके नगरों और घरों में रहने लगे, २ तब अपने देश के बीच जिसका अधिकारी तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे कर देता है तीन नगर अपने लिये अलग कर देना। ३ और तू अपने लिये मार्ग भी तैयार करना, और अपने देश के जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे सौंप देता है तीन भाग करना, ताकि हर एक खूनी वहीं भाग जाए। ४ और जो खूनी वहां भागकर अपने प्राण को बचाए, वह इस प्रकार का हो; अर्थात् वह किसी से बिना पहिले बैर रखे वा उसको बिना जाने बूझे मार डाला हो—५ जैसे कोई किसी के संग लकड़ी काटने को जंगल में जाए, और वृक्ष काटने को कुल्हाड़ी हाथ से उठाए, और कुल्हाड़ी बेंट से निकलकर उस भाई को ऐसी लगे कि वह मर जाए—तो वह उन नगरों में से किसी में भागकर जीवित रहे; ६ ऐसा न हो कि मार्ग की लम्बाई के कारण खून का पलटा लेनेवाला अपने क्रोध के ज्वलन में उसका पीछा करके उसको जा पकड़े, और मार डाले, यद्यपि वह प्राणदण्ड के योग्य नहीं, क्योंकि उस से बैर नहीं रखता था। ७ इसलिये मैं तुझे यह आज्ञा देता हूं, कि अपने लिये तीन नगर अलग कर रखना। ८ और यदि तेरा परमेश्वर यहोवा उस शपथ के अनुसार जो उस ने तेरे पूर्वजों से खाई थी तेरे सिवानों को बढ़ाकर वह सारा देश तुझे दे, जिसके देने का वचन उस ने तेरे पूर्वजों को दिया था—९ यदि तू इन सब आज्ञाओं के मानने में जिन्हें मैं आज तुझ को सुनाता हूं चौकसी करे, और अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखे और सदा उसके मार्गों पर चलता रहे—तो इन तीन नगरों से अधिक और भी तीन नगर अलग कर देना, १० इसलिये कि तेरे उस देश में जो तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा निज भाग करके देता है किसी निर्दोष का खून न बहाया जाए, और **उसका दोष** तुझ पर न लगे। ११ परन्तु यदि कोई किसी से बैर रखकर उसकी घात में लगे, और उस पर लपककर उसे ऐसा मारे कि वह मर जाए, और फिर उन नगरों में से किसी में भाग जाए, १२ तो उसके नगर के पुरनिये किसी को भेजकर उसको वहां से मंगाकर खून के पलटा लेनेवाले के हाथ में सौंप दें, कि वह मार डाला जाए। १३ उस पर तरस न खाना, परन्तु निर्दोष के खून **का दोष** इस्राएल से दूर करना, जिस से तुम्हारा भला हो॥

१४ जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को देता है, उसका जो भाग तुझे

मिलेगा, उस में किसी का सिवाना जिसे अगले लोगों ने ठहराया हो न हटाना ॥

१५ किसी मनुष्य के विरुद्ध किसी प्रकार के अधर्म वा पाप के विषय में, चाहे उसका पाप कैसा ही क्यों न हो, एक ही जन की साक्षी न सुनना, परन्तु दो वा तीन साक्षियों के कहने से बात पक्की ठहरे। १६ यदि कोई झूठी साक्षी देनेवाला किसी के विरुद्ध यहोवा से फिर जाने की साक्षी देने को खड़ा हो, १७ तो वे दोनों मनुष्य, जिनके बीच ऐसा मुकद्दमा उठा हो, यहोवा के सम्मुख, अर्थात् उन दिनों के याजकों और न्यायियों के साम्हने खड़े किए जाएं; १८ तब न्यायी भली भांति पूछपाछ करें, और यदि यह निर्णय पाए कि वह झूठा साक्षी है, और अपने भाई के विरुद्ध झूठी साक्षी दी है १९ तो अपने भाई की जैसी भी हानि करवाने की युक्ति उस ने की हो वैसी ही तुम भी उसकी करना; इसी रीति से अपने बीच में से ऐसी बुराई को दूर करना। २० और दूसरे लोग सुनकर डरेंगे, और आगे को तेरे बीच फिर ऐसा बुरा काम नहीं करेंगे। २१ और तू बिलकुल तरस न खाना; प्राण की सन्ती प्राण का, आंख की सन्ती आंख का, दांत की सन्ती दांत का, हाथ की सन्ती हाथ का, पांव की सन्ती पांव का दण्ड देना ॥

२० जब तू अपने शत्रुओं से युद्ध करने को जाए, और घोड़े, रथ, और अपने से अधिक सेना को देखे, तब उन से न डरना; तेरा परमेश्वर यहोवा जो तुझ को मिस्र देश से निकाल ले आया है वह तेरे संग है। २ और जब तुम युद्ध करने को शत्रुओं के निकट जाओ, तब याजक सेना के पास आकर कहे, ३ हे इस्राएलियों सुनो, आज तुम अपने शत्रुओं से युद्ध करने को निकट आए हो; तुम्हारा मन कच्चा न हो; तुम मत डरो, और न थरथराओ, और न उनके साम्हने भय खाओ; ४ क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे शत्रुओं से युद्ध करने और तुम्हें बचाने के लिये तुम्हारे संग संग चलता है। ५ फिर सरदार सिपाहियों से यह कहें, कि तुम में से कौन है जिस ने नया घर बनाया हो और उसका समर्पण न किया हो? तो वह अपने घर को लौट जाए, कहीं ऐसा न हो कि वह युद्ध में मर जाए और दूसरा मनुष्य उसका समर्पण करे। ६ और कौन है जिस ने दाख की बारी लगाई हो, परन्तु उसके फल न खाए हों? वह भी अपने घर को लौट जाए, ऐसा न हो कि वह संग्राम में मारा जाए, और दूसरा मनुष्य उसके फल खाए। ७ फिर कौन है जिस ने किसी स्त्री से ब्याह की बात लगाई हो, परन्तु उसको ब्याह न लाया हो? वह भी अपने घर को लौट जाए, ऐसा न हो कि वह युद्ध में मारा जाए, और दूसरा मनुष्य उस से ब्याह कर ले। ८ इसके अलावा सरदार सिपाहियों से यह भी कहें, कि कौन कौन मनुष्य है जो डरपोक और कच्चे मन का है, वह भी अपने घर को लौट जाए, ऐसा न हो कि उसकी देखादेखी उसके भाइयों का भी हियाव टूट जाए। ९ और जब प्रधान सिपाहियों से यह कह चुकें, तब उन पर प्रधानता करने के लिये सेनापतियों को नियुक्त करे ॥

१० जब तू किसी नगर से युद्ध करने को उसके निकट जाए, तब पहिले उस से सन्धि करने का समाचार दे। ११ और यदि वह सन्धि करना अंगीकार करे और तेरे लिये अपने फाटक खोल दे, तब जितने उस में हों वे सब तेरे अधीन होकर तेरे लिये बेगार

करनेवाले ठहरें। १२ परन्तु यदि वे तुझ से सन्धि न करें, परन्तु तुझ से लड़ना चाहें, तो तू उस नगर को घेर लेना; १३ और जब तेरा परमेश्वर यहोवा उसे तेरे हाथ में सौंप दे तब उस में के सब पुरुषों को तलवार से मार डालना। १४ परन्तु स्त्रियां और बालबच्चे, और पशु आदि जितनी लूट उस नगर में हो उसे अपने लिये रख लेना; और तेरे शत्रुओं की लूट जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे दे उसे काम में लाना। १५ इस प्रकार उन नगरों से करना जो तुझ से बहुत दूर हैं, और इन जातियों के नगर नहीं हैं। १६ परन्तु जो नगर इन लोगों के हैं, जिनका अधिकारी तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को ठहराने पर है, उन में से किसी प्राणी को जीवित न रख छोड़ना, १७ परन्तु उनको अवश्य सत्यानाश करना, अर्थात् हित्तियों, एमोरियों, कनानियों, परिज्जियों, हिव्वियों, और यबूसियों को, जैसे कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे आज्ञा दी है; १८ ऐसा न हो कि जितने घिनौने काम वे अपने देवताओं की सेवा में करते आए हैं वैसा ही करना तुम्हें भी सिखाएं, और तुम अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप करने लगो॥

१९ जब तू युद्ध करते हुए किसी नगर को जीतने के लिये उसे बहुत दिनों तक घेरे रहे, तब उसके वृक्षों पर कुल्हाड़ी चलाकर उन्हें नाश न करना, क्योंकि उनके फल तेरे खाने के काम आएंगे, इसलिये उन्हें न काटना। क्या मैदान के वृक्ष भी मनुष्य हैं कि तू उनको भी घेर रखे? २० परन्तु जिन वृक्षों के विषय में तू यह जान ले कि इनके फल खाने के नहीं हैं, तो उनको काटकर नाश करना, और उस नगर के विरुद्ध उस समय तक कोट बान्धे रहना जब तक वह तेरे वश में न आ जाए॥

२१ यदि उस देश के मैदान में जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है किसी मारे हुए की लोथ पड़ी हुई मिले, और उसको किस ने मार डाला है यह जान न पड़े, २ तो तेरे सियाने * लोग और न्यायी निकलकर उस लोथ से चारों ओर के एक एक नगर की दूरी को नापें; ३ तब जो नगर उस लोथ के सब से निकट ठहरे, उसके सियाने * लोग एक ऐसी कलोर ले रखें, जिस से कुछ काम न लिया गया हो, और जिस पर जूआ कभी न रखा गया हो। ४ तब उस नगर के सियाने * लोग उस कलोर को एक बारहमासी नदी की ऐसी तराई में जो न जोती और न बोई गई हो ले जाएं, और उसी तराई में उस कलोर का गला तोड़ दें। ५ और लेवीय याजक भी निकट आएं, क्योंकि तेरे परमेश्वर यहोवा ने उनको चुन लिया है कि उसकी सेवा टहल करें और उसके नाम से आशीर्वाद दिया करें, और उनके कहने के अनुसार हर एक झगड़े और मारपीट के मुकद्दमे का निर्णय हो। ६ फिर जो नगर उस लोथ के सब से निकट ठहरे, उसके सब सियाने * लोग उस कलोर के ऊपर जिसका गला तराई में तोड़ा गया हो अपने अपने हाथ धोकर कहें, ७ यह खून हम से नहीं किया गया, और न यह हमारी आंखों का देखा हुआ काम है। ८ इसलिये, हे यहोवा, अपनी छुड़ाई हुई इस्राएली प्रजा का पाप ढांपकर निर्दोष के खून का पाप अपनी इस्राएली प्रजा के सिर पर से उतार। तब उस खून का दोष उनको क्षमा कर दिया जाएगा। ९ यों वह काम करके जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है तू निर्दोष के खून का दोष अपने मध्य में से दूर करना॥

* वृद्ध लोग, वा पुरनिये।

१० जब तू अपने शत्रुओं से युद्ध करने को जाए, और तेरा परमेश्वर यहोवा उन्हें तेरे हाथ में कर दे, और तू उन्हें बन्धुआ कर ले, ११ तब यदि तू बन्धुओं में किसी सुन्दर स्त्री को देखकर उस पर मोहित हो जाए, और उस से ब्याह कर लेना चाहे, १२ तो उसे अपने घर के भीतर ले आना, और वह अपना सिर मुंड़ाए, नाखून कटाए, १३ और अपने वन्धुआई के वस्त्र उतारके तेरे घर में महीने भर रहकर अपने माता पिता के लिये विलाप करती रहे; उसके बाद तू उसके पास जाना, और तू उसका पति और वह तेरी पत्नी बने। १४ फिर यदि वह तुझ को अच्छी न लगे, तो जहां वह जाना चाहे वहां उसे जाने देना; उसको रुपया लेकर कहीं न बेचना, और तू ने जो उसकी पत-पानी ली, इस कारण उस से दासी का सा व्यवहार न करना॥

१५ यदि किसी पुरुष की दो पत्नियां हों, और उसे एक प्रिय और दूसरी अप्रिय हो, और प्रिया और अप्रिया दोनों स्त्रियां बेटे जने, परन्तु जेठा अप्रिया का हो, १६ तो जब वह अपने पुत्रों को अपनी सम्पत्ति का बटवारा करे, तब यदि अप्रिया का बेटा जो सचमुच जेठा है यदि जीवित हो, तो वह प्रिया के बेटे को जेठांस न दे सकेगा; १७ वह यह जानकर कि अप्रिया का बटा मेरे पौरुष का पहिला फल है, और जेठे का अधिकार उसी का है, उसी को अपनी सारी सम्पत्ति में से दो भाग देकर जेठांसी माने॥

१८ यदि किसी के हठीला और दंगैत बेटा हो, जो अपने माता-पिता की बात न माने, किन्तु ताडना देने पर भी उनकी न सुने, १९ तो उसके माता-पिता उसे पकड़कर अपने नगर से बाहर फाटक के निकट नगर के सियानों* के पास ले जाएं, २० और वे नगर के सियानों* से कहें, कि हमारा यह बेटा हठीला और दंगैत है, यह हमारी नहीं सुनता; यह उड़ाऊ और पियक्कड़ है। २१ तब उस नगर के सब पुरुष उसको पत्थरवाह करके मार डाले, यों तू अपने मध्य में से ऐसी बुराई को दूर करना, तब सारे इस्राएली सुनकर भय खाएंगे॥

२२ फिर यदि किसी से प्राणदण्ड के योग्य कोई पाप हुआ हो जिस से वह मार डाला जाए, और तू उसकी लोथ को वृक्ष पर लटका दे, २३ तो वह लोथ रात को वृक्ष पर टंगी न रहे, अवश्य उसी दिन उसे मिट्टी देना, क्योंकि जो लटकाया गया हो वह परमेश्वर की ओर से शापित ठहरता है; इसलिये जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा भाग करके देता है उसकी भूमि को अशुद्ध न करना॥

२२ तू अपने भाई के गाय-बैल वा भेड़-बकरी को भटकी हुई देखकर अनदेखी न करना, उसको अवश्य उसके पास पहुंचा देना। २ परन्तु यदि तेरा वह भाई निकट न रहता हो, वा तू उसे न जानता हो, तो उस पशु को अपने घर के भीतर ले आना, और जब तक तेरा वह भाई उसको न ढूंढ़े तब तक वह तेरे पास रहे; और जब वह उसे ढूंढ़े तब उसको दे देना। ३ और उसके गदहे वा वस्त्र के विषय, वरन उसकी कोई वस्तु क्यों न हो, जो उस से खो गई हो और तुझ को मिले, उसके विषय में भी ऐसा ही करना; तू देखी-अनदेखी न करना॥

४ तू अपने भाई के गदहे वा बैल को मार्ग पर गिरा हुआ देखकर अनदेखी न

---

* वृद्ध लोग, वा पुरनिये।

करना; उसके उठाने में अवश्य उसकी सहायता करना॥

५ कोई स्त्री पुरुष का पहिरावा न पहिने, और न कोई पुरुष स्त्री का पहिरावा पहिने; क्योंकि ऐसे कामों के सब करनेवाले तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में घृणित हैं॥

६ यदि वृक्ष वा भूमि पर तेरे साम्हने मार्ग में किसी चिड़िया का घोंसला मिले, चाहे उस में बच्चे हों चाहे अण्डे, और उन बच्चों वा अण्डों पर उनकी मां बैठी हुई हो, तो बच्चों समेत मां को न लेना; ७ बच्चों को अपने लिये ले तो ले, परन्तु मां को अवश्य छोड़ देना; इसलिये कि तेरा भला हो, और तेरी आयु के दिन बहुत हों॥

८ जब तू नया घर बनाए तब उसकी छत पर आड़ के लिये मुण्डेर बनाना, ऐसा न हो कि कोई छत पर से गिर पड़े, और तू अपने घराने पर खून का दोष लगाए। ९ अपनी दाख की बारी में दो प्रकार के बीज न बोना, ऐसा न हो कि उसकी सारी उपज, अर्थात् तेरा बोया हुआ बीज और दाख की बारी की उपज दोनों अपवित्र ठहरें। १० बैल और गदहा दोनों संग जोतकर हल न चलाना। ११ ऊन और सनी की मिलावट से बना हुआ वस्त्र न पहिनना॥

१२ अपने ओढ़ने के चारों ओर की कोर पर झालर लगाया करना॥

१३ यदि कोई पुरुष किसी स्त्री को ब्याहे, और उसके पास जाने के समय वह उसको अप्रिय लगे, १४ और वह उस स्त्री की नामधराई करे, और यह कहकर उस पर कुकर्म का दोष लगाए, कि इस स्त्री को मैं ने ब्याहा, और जब उस से संगति की तब उस में कुंवारी अवस्था के लक्षण न पाए, १५ तो उस कन्या के माता-पिता उसके कुंवारीपन के चिन्ह लेकर नगर के वृद्ध लोगों के पास फाटक के बाहर जाएं; १६ और उस कन्या का पिता वृद्ध लोगों से कहे, मैं ने अपनी बेटी इस पुरुष को ब्याह दी, और वह उसको अप्रिय लगती है; १७ और वह तो यह कहकर उस पर कुकर्म का दोष लगाता है, कि मैं ने तेरी बेटी में कुंवारीपन के लक्षण नहीं पाए। परन्तु मेरी बेटी के कुंवारीपन के चिन्ह ये हैं। तब उसके माता-पिता नगर के वृद्ध लोगों के साम्हने उस चद्दर को फैलाएं। १८ तब नगर के सियाने * लोग उस पुरुष को पकड़कर ताड़ना दें; १९ और उस पर सौ शेकेल रूपे का दण्ड भी लगाकर उस कन्या के पिता को दें, इसलिये कि उस ने एक इस्राएली कन्या की नामधराई की है; और वह उसी की पत्नी बनी रहे, और वह जीवन भर उस स्त्री को त्यागने न पाए। २० परन्तु यदि उस कन्या के कुंवारीपन के चिन्ह पाए न जाएं, और उस पुरुष की बात सच ठहरे, २१ तो वे उस कन्या को उसके पिता के घर के द्वार पर ले जाएं, और उस नगर के पुरुष उसको पत्थरवाह करके मार डालें; उस ने तो अपने पिता के घर में वेश्या का काम करके बुराई की है; यों तू अपने मध्य में से ऐसी बुराई को दूर करना॥

२२ यदि कोई पुरुष दूसरे पुरुष की ब्याही हुई स्त्री के संग सोता हुआ पकड़ा जाए, तो जो पुरुष उस स्त्री के संग सोया हो वह और वह स्त्री दोनों मार डाले जाएं; इस प्रकार तू ऐसी बुराई को इस्राएल में से दूर करना॥

२३ यदि किसी कुंवारी कन्या के ब्याह की बात लगी हो, और कोई दूसरा पुरुष उसे नगर में पाकर उस से कुकर्म करे, २४ तो

* वृद्ध लोग, वा पुरनिये।

तुम उन दोनों को उस नगर के फाटक के बाहर ले जाकर उनको पत्थरवाह करके मार डालना, उस कन्या को तो इसलिये कि वह नगर में रहते हुए भी नहीं चिल्लाई, और उस पुरुष को इस कारण कि उस ने अपने पड़ोसी की स्त्री की पत-पानी ली है; इस प्रकार तू अपने मध्य में से ऐसी बुराई को दूर करना।।

२५ परन्तु यदि कोई पुरुष किसी कन्या को जिसके ब्याह की बात लगी हो मैदान में पाकर बरबस उस से कुकर्म करे, तो केवल वह पुरुष मार डाला जाए जिस ने उस से कुकर्म किया हो। २६ और उस कन्या से कुछ न करना; उस कन्या का पाप प्राणदण्ड के योग्य नहीं, क्योंकि जैसे कोई अपने पड़ोसी पर चढ़ाई करके उसे मार डाले, वैसी ही यह बात भी ठहरेगी; २७ कि उस पुरुष ने उस कन्या को मैदान में पाया, और वह चिल्लाई तो सही, परन्तु उसको कोई बचानेवाला न मिला।।

२८ यदि किसी पुरुष को कोई कुंवारी कन्या मिले जिसके ब्याह की बात न लगी हो, और वह उसे पकड़कर उसके साथ कुकर्म करे, और वे पकड़े जाएं, २९ तो जिस पुरुष ने उस से कुकर्म किया हो वह उस कन्या के पिता को पचास शेकेल रूपा दे, और वह उसी की पत्नी हो, उस ने उस-की पत-पानी ली; इस कारण वह जीवन भर उसे न त्यागने पाए।।

३० कोई अपनी सौतेली माता को अपनी स्त्री न बनाए, वह अपने पिता का ओढ़ना न उघारे।।

२३ जिसके अण्ड. कुचले गए वा लिंग काट डाला गया हो वह यहोवा की सभा में न आने पाए।।

२ कोई कुकर्म से जन्मा हुआ यहोवा की सभा में न आने पाए; किन्तु दस पीढ़ी तक उसके वंश का कोई यहोवा की सभा में न आने पाए।।

३ कोई अम्मोनी वा मोआबी यहोवा की सभा में न आने पाए; उनकी दसवीं पीढ़ी तक का कोई यहोवा की सभा में कभी न आने पाए; ४ इस कारण से कि जब तुम मिस्र से निकलकर आते थे तब उन्हों ने अन्न जल लेकर मार्ग में तुम से भेंट नहीं की, और यह भी कि उन्हों ने अरम्नहरैम देश के पतोर नगरवाले बोर के पुत्र बिलाम को तुझे शाप देने के लिये दक्षिणा दी। ५ परन्तु तेरे परमेश्वर यहोवा ने बिलाम की न सुनी; किन्तु तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरे निमित्त उसके शाप को आशीष से पलट दिया, इसलिये कि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से प्रेम रखता था। ६ तू जीवन भर उनका कुशल और भलाई कभी न चाहना।।

७ किसी एदोमी से घृणा न करना, क्योंकि वह तेरा भाई है; किसी मिस्री से भी घृणा न करना, क्योंकि उसके देश में तू परदेशी होकर रहा था। ८ उनके जो परपोते उत्पन्न हों वे यहोवा की सभा में आने पाएं।।

९ जब तू शत्रुओं से लड़ने को जाकर छावनी डाले, तब सब प्रकार की बुरी बातों से बचा रहना। १० यदि तेरे बीच कोई पुरुष उस अशुद्धता से जो रात्रि को आप से आप हुआ करती है अशुद्ध हुआ हो, तो वह छावनी से बाहर जाए, और छावनी के भीतर न आए; ११ परन्तु संध्या से कुछ पहिले वह स्नान करे, और जब सूर्य डूब जाए तब छावनी में आए। १२ छावनी के बाहर तेरे दिशा फिरने का एक स्थान हुआ करे, और वहीं दिशा फिरने को जाया करना;

१३ और तेरे पास के हथियारों में एक खनती भी रहे; और जब तू दिशा फिरने को बैठे, तब उस से खोदकर अपने मल को ढांप देना। १४ क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को बचाने और तेरे शत्रुओं को तुझ से हरवाने को तेरी छावनी के मध्य घूमता रहेगा, इसलिये तेरी छावनी पवित्र रहनी चाहिये, ऐसा न हो कि वह तेरे मध्य में कोई अशुद्ध वस्तु देखकर तुझ से फिर जाए।।

१५ जो दास अपने स्वामी के पास से भागकर तेरी शरण ले उसको उसके स्वामी के हाथ न पकड़ा देना; १६ वह तेरे बीच जो नगर उसे अच्छा लगे उसी में तेरे संग रहने पाए; और तू उस पर अन्धेर न करना।।

१७ इस्राएली स्त्रियों में से कोई देव-दासी न हो, और न इस्राएलियों में से कोई पुरुष ऐसा बुरा काम करनेवाला हो। १८ तू वेश्यापन की कमाई वा कुत्ते की कमाई किसी मन्नत को पूरी करने के लिये अपने परमेश्वर यहोवा के घर में न लाना; क्योंकि तेरे परमेश्वर यहोवा के समीप ये दोनों की **दोनों कमाई** घृणित कर्म है।।

१९ अपने किसी भाई को ब्याज पर ऋण न देना, चाहे रुपया हो, चाहे भोजन-वस्तु हो, चाहे कोई वस्तु हो जो ब्याज पर दी जाति है, उसे ब्याज न देना। २० तू परदेशी को ब्याज पर ऋण तो दे, परन्तु अपने किसी भाई से ऐसा न करना, ताकि जिस देश का अधिकारी होने को तू जा रहा है, वहां जिस जिस काम में अपना हाथ लगाए उन सभों में तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे आशीष दे।।

२१ जब तू अपने परमेश्वर यहोवा के लिये मन्नत माने, तो उसके पूरी करने में विलम्ब न करना; क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा उसे निश्चय तुझ से ले लेगा, और **विलम्ब करने से** तू पापी ठहरेगा। २२ परन्तु यदि तू मन्नत न माने, तो तेरा कोई पाप नहीं। २३ जो कुछ तेरे मुंह से निकले उसके पूरा करने में चौकसी करना; तू अपने मुंह से वचन देकर अपनी इच्छा से अपने परमेश्वर यहोवा की जैसी मन्नत माने, वैसी ही स्वतन्त्रता पूर्वक उसे पूरा करना।।

२४ जब तू किसी दूसरे की दाख की बारी में जाए, तब पेट भर मनमाने दाख खा तो खा, परन्तु अपने पात्र में कुछ न रखना। २५ और जब तू किसी दूसरे के खड़े खेत में जाए, तब तू हाथ से बालें तोड़ सकता है, परन्तु किसी दूसरे के खड़े खेत पर हंसुआ न लगाना।।

२४ यदि कोई पुरुष किसी स्त्री को ब्याह ले, और उसके बाद उसमें कुछ लज्जा की बात पाकर उस से अप्रसन्न हो, तो वह उसके लिये त्यागपत्र लिखकर और उसके हाथ में देकर उसको अपने घर से निकाल दे। २ और जब वह उसके घर से निकल जाए, तब दूसरे पुरुष की हो सकती है। ३ परन्तु यदि वह उस दूसरे पुरुष को भी अप्रिय लगे, और वह उसके लिये त्यागपत्र लिखकर और उसके हाथ में देकर उसे अपने घर से निकाल दे, वा वह दूसरा पुरुष जिस ने उसको अपनी स्त्री कर लिया हो मर जाए, ४ तो उसका पहिला पति, जिस ने उसको निकाल दिया हो, उसके अशुद्ध होने के बाद उसे अपनी पत्नी न बनाने पाए क्योंकि यह यहोवा के सम्मुख घृणित बात है। इस प्रकार तू उस देश को जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा भाग करके तुझे देता है पापी न बनाना *।।

---

* **मूल में—**देश से पाप न कराना।

५ जो पुरुष हाल का ब्याहा हुआ हो, वह सेना के साथ न जाए और न किसी काम का भार उस पर डाला जाए; वह वर्ष भर अपने घर में स्वतंत्रता से रहकर अपनी ब्याही हुई स्त्री को प्रसन्न करता रहे। ६ कोई मनुष्य चक्की को वा उसके ऊपर के पाट को बन्धक न रखे; क्योंकि वह तो मानो प्राण ही को बन्धक रखना है॥

७ यदि कोई अपने किसी इस्राएली भाई को दास बनाने वा बेच डालने की मनसा से चुराता हुआ पकड़ा जाए, तो ऐसा चोर मार डाला जाए; ऐसी बुराई को अपने मध्य में से दूर करना॥

८ कोढ़ की व्याधि के विषय में चौकस रहना, और जो कुछ लेवीय याजक तुम्हें सिखाएं उसी के अनुसार यत्न से करने में चौकसी करना; जैसी आज्ञा मैं ने उनको दी है वैसा करने में चौकसी करना। ९ स्मरण रख कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने, जब तुम मिस्र से निकलकर आ रहे थे, तब मार्ग में मरियम से क्या किया॥

१० जब तू अपने किसी भाई को कुछ उधार दे, तब बन्धक की वस्तु लेने के लिये उसके घर के भीतर न घुसना। ११ तू बाहर खड़ा रहना, और जिसको तू उधार दे वही बन्धक की वस्तु को तेरे पास बाहर ले आए। १२ और यदि वह मनुष्य कंगाल हो, तो उसका बन्धक अपने पास रखे हुए न सोना; १३ सूर्य अस्त होते होते उसे वह बन्धक अवश्य फेर देना, इसलिये कि वह अपना ओढ़ना ओढ़कर सो सके और तुझे आशीर्वाद दे; और यह तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में धर्म का काम ठहरेगा॥

१४ कोई मजदूर जो दीन और कंगाल हो, चाहे वह तेरे भाइयों में से हो चाहे तेरे देश के फाटकों के भीतर रहनेवाले परदेशियों में से हो, उस पर अन्धेर न करना; १५ यह जानकर, कि वह दीन है और उसका मन मजदूरी में लगा रहता है, मजदूरी करने ही के दिन सूर्यास्त से पहिले तू उसकी मजदूरी देना; ऐसा न हो कि वह तेरे कारण यहोवा की दोहाई दे, और तू पापी ठहरे॥

१६ पुत्र के कारण पिता न मार डाला जाए, और न पिता के कारण पुत्र मार डाला जाए; जिस ने पाप किया हो वही उस पाप के कारण मार डाला जाए॥

१७ किसी परदेशी मनुष्य वा अनाथ बालक का न्याय न बिगाड़ना, और न किसी विधवा के कपड़े को बन्धक रखना; १८ और इसको स्मरण रखना कि तू मिस्र में दास था, और तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे वहां से छुड़ा लाया है; इस कारण मैं तुझे यह आज्ञा देता हूं॥

१९ जब तू अपने पक्के खेत को काटे, और एक पूला खेत में भूल से छूट जाए, तो उसे लेने को फिर न लौट जाना; वह परदेशी, अनाथ, और विधवा के लिये पड़ा रहे; इसलिये कि परमेश्वर यहोवा तेरे सब कामों में तुझ को आशीष दे। २० जब तू अपने जलपाई के वृक्ष को झाड़े, तब डालियों को दूसरी बार न झाड़ना; वह परदेशी, अनाथ, और विधवा के लिये रह जाए। २१ जब तू अपनी दाख की बारी के फल तोड़े, तो उसका दाना दाना न तोड़ लेना; वह परदेशी, अनाथ और विधवा के लिये रह जाए। २२ और इसको स्मरण रखना कि तू मिस्र देश में दास था; इस कारण मैं तुझे यह आज्ञा देता हूं॥

२५ यदि मनुष्यों के बीच कोई झगड़ा हो, और वे न्याय करवाने के लिये न्यायियों के पास जाएं, और वे

उनका न्याय करें, तो निर्दोष को निर्दोष और दोषी को दोषी ठहराएं, २ और यदि दोषी मार खाने के योग्य ठहरे, तो न्यायी उसको गिरवाकर अपने साम्हने जैसा उसका दोष हो उसके अनुसार कोड़े गिन गिनकर लगवाए। ३ वह उसे चालीस कोड़े तक लगवा सकता है, इस से अधिक नहीं लगवा सकता; ऐसा न हो कि इस से अधिक बहुत मार खिलवाने से तेरा भाई तेरी दृष्टि में तुच्छ ठहरे॥

४ दांवते समय चलते हुए बैल का मुंह न बान्धना॥

५ जब कई भाई संग रहते हों, और उन में से एक निपुत्र मर जाए, तो उसकी स्त्री का ब्याह परगोत्री से न किया जाए; उसके पति का भाई उसके पास जाकर उसे अपनी पत्नी कर ले, और उस से पति के भाई का धर्म पालन करे। ६ और जो पहिला बेटा उस स्त्री से उत्पन्न हो वह उस मरे हुए भाई के नाम का ठहरे, जिस से कि उसका नाम इस्राएल में से मिट न जाए। ७ यदि उस स्त्री के पति के भाई को उसे ब्याहना न भाए, तो वह स्त्री नगर के फाटक पर वृद्ध लोगों के पास जाकर कहे, कि मेरे पति के भाई ने अपने भाई का नाम इस्राएल में बनाए रखने से नकार दिया है, और मुझ से पति के भाई का धर्म पालन करना नहीं चाहता। ८ तब उस नगर के वृद्ध लोग उस पुरुष को बुलवाकर उसको समझाएं; और यदि वह अपनी बात पर अड़ा रहे, और कहे, कि मुझे इसको ब्याहना नहीं भावता, ९ तो उसके भाई की पत्नी उन वृद्ध लोगों के साम्हने उसके पास जाकर उसके पांव से जूती उतारे, और उसके मुंह पर थूक दे; और कहे, जो पुरुष अपने भाई के वंश को चलाना न चाहे उस से इसी प्रकार का व्यवहार किया जाएगा। १० तब इस्राएल में उस पुरुष का यह नाम पड़ेगा, अर्थात् जूती उतारे हुए पुरुष का घराना॥

११ यदि दो पुरुष आपस में मारपीट करते हों, और उन में से एक की पत्नी अपने पति को मारनेवाले के हाथ से छुड़ाने के लिये पास जाए, और अपना हाथ बढ़ाकर उसके गुप्त अंग को पकड़े, १२ तो उस स्त्री का हाथ काट डालना; उस पर तरस न खाना॥

१३ अपनी थैली में भांति भांति के, अर्थात् घटती-बढ़ती बटखरे न रखना। १४ अपने घर में भांति भांति के, अर्थात् घटती-बढ़ती नपुए न रखना। १५ तेरे बटखरे और नपुए पूरे पूरे और धर्म के हों; इसलिये कि जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में तेरी आयु बहुत हो। १६ क्योंकि ऐसे कामों में जितने कुटिलता करते हैं वे सब तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में घृणित हैं॥

१७ स्मरण रख कि जब तू मिस्र से निकलकर आ रहा था तब अमालेक ने तुझ से मार्ग में क्या किया, १८ अर्थात् उनको परमेश्वर का भय न था; इस कारण उस ने जब तू मार्ग में थका मांदा था, तब तुझ पर चढ़ाई करके जितने निर्बल होने के कारण सब से पीछे थे उन सभों को मारा। १९ इसलिये जब तेरा परमेश्वर यहोवा उस देश में, जो वह तेरा भाग करके तेरे अधिकार में कर देता है, तुझे चारों ओर के सब शत्रुओं से विश्राम दे, तब अमालेक का नाम धरती पर से * मिटा डालना; और तुम इस बात को न भूलना॥

२६ फिर जब तू उस देश में जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा निज

* मूल में—आकाश के तले से।

भाग करके तुझे देता है पहुंचे, और उसका अधिकारी होकर उस में बस जाए, २ तब जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, उसकी भूमि की भांति भांति की जो पहिली उपज तू अपने घर लाएगा, उस में से कुछ टोकरी में लेकर उस स्थान पर जाना, जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास करने को चुन ले। ३ और उन दिनों के याजक के पास जाकर यह कहना, कि मैं आज तेरे परमेश्वर यहोवा के साम्हने निवेदन करता हूं, कि यहोवा ने हम लोगों को जिस देश के देने की हमारे पूर्वजों से शपथ खाई थी उस में मैं आ गया हूं। ४ तब याजक तेरे हाथ से वह टोकरी लेकर तेरे परमेश्वर यहोवा की वेदी के साम्हने धर दे। ५ तब तू अपने परमेश्वर यहोवा से इस प्रकार कहना, कि मेरा मूलपुरुष एक अरामी मनुष्य था जो मरने पर था; और वह अपने छोटे से परिवार समेत मिस्र को गया, और वहां परदेशी होकर रहा; और वहां उस से एक बड़ी, और सामर्थी, और बहुत मनुष्यों से भरी हुई जाति उत्पन्न हुई। ६ और मिस्रियों ने हम लोगों से बुरा बर्ताव किया, और हमें दुःख दिया, और हम से कठिन सेवा ली। ७ परन्तु हम ने अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा की दोहाई दी, और यहोवा ने हमारी सुनकर हमारे दुख-श्रम और अन्धेर पर दृष्टि की; ८ और यहोवा ने बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से अति भयानक चिन्ह और चमत्कार दिखलाकर हम को मिस्र से निकाल लाया; ९ और हमें इस स्थान पर पहुंचाकर यह देश जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं हमें दे दिया है। १० अब हे यहोवा, देख, जो भूमि तू ने मुझे दी है उसकी पहली उपज मैं तेरे पास ले आया हूं। तब तू उसे अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने रखना; और यहोवा को दण्डवत करना; ११ और जितने अच्छे पदार्थ तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे और तेरे घराने को दे, उनके कारण तू लेवीयों और अपने मध्य में रहनेवाले परदेशियों सहित आनन्द करना॥

१२ तीसरे वर्ष जो दशमांश देने का वर्ष ठहरा है, जब तू अपनी सब भांति की बढ़ती के दशमांश को निकाल चुके, तब उसे लेवीय, परदेशी, अनाथ, और विधवा को देना, कि वे तेरे फाटकों के भीतर खाकर तृप्त हों; १३ और तू अपने परमेश्वर यहोवा से कहना, कि मैं ने तेरी सब आज्ञाओं के अनुसार पवित्र ठहराई हुई वस्तुओं को अपने घर से निकाला, और लेवीय, परदेशी, अनाथ, और विधवा को दे दिया है; तेरी किसी आज्ञा को मैं ने न तो टाला है, और न भूला है। १४ उन वस्तुओं में से मैं ने शोक के समय नहीं खाया, और न उन में से कोई वस्तु अशुद्धता की दशा में घर से निकाली, और न कुछ शोक करनेवालों को * दिया; मैं ने अपने परमेश्वर यहोवा की सुन ली, मैं ने तेरी सब आज्ञाओं के अनुसार किया है। १५ तू स्वर्ग में से जो तेरा पवित्र धाम है दृष्टि करके अपनी प्रजा इस्राएल को आशीष दे, और इस दूध और मधु की धाराओं के देश की भूमि पर आशीष दे, जिसे तू ने हमारे पूर्वजों से खाई हुई शपथ के अनुसार हमें दिया है॥

१६ आज के दिन तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को इन्हीं विधियों और नियमों के मानने की आज्ञा देता है; इसलिये अपने सारे मन और सारे प्राण से इनके मानने में चौकसी

* मूल में—मुर्दे के लिये।

करना। १७ तू ने तो आज यहोवा को अपना परमेश्वर मानकर यह वचन दिया है, कि मैं तेरे बनाए हुए मार्गों पर चलूंगा, और तेरी विधियों, आज्ञाओं, और नियमों को माना करूंगा, और तेरी सुना करूंगा। १८ और यहोवा ने भी आज तुझ को अपने वचन के अनुसार अपना प्रजारूपी निज धन-सम्पत्ति माना है, कि तू उसकी सब आज्ञाओं को माना करे, १९ और कि वह अपनी बनाई हुई सब जातियों से अधिक प्रशंसा, नाम, और शोभा के विषय में तुझ को प्रतिष्ठित करे, और तू उसके वचन के अनुसार अपने परमेश्वर यहोवा की पवित्र प्रजा बना रहे॥

(आशीष और श्राप)

२७ फिर इस्राएल के वृद्ध लोगों समेत मूसा ने प्रजा के लोगों को यह आज्ञा दी, कि जितनी आज्ञाएं मैं आज तुम्हें सुनाता हूं उन सब को मानना। २ और जब तुम यरदन पार होके उस देश में पहुंचो, जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, तब बड़े बड़े पत्थर खड़े कर लेना, और उन पर चूना पोतना; ३ और पार होने के बाद उन पर इस व्यवस्था के सारे वचनों को लिखना, इसलिये कि जो देश तेरे पूर्वजों का परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तुझे देता है, और जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं, उस देश में तू जाने पाए। ४ फिर जिन पत्थरों के विषय में मैं ने आज आज्ञा दी है, उन्हें तुम यरदन के पार होकर एबाल पहाड़ पर खड़ा करना, और उन पर चूना पोतना। ५ और वहीं अपने परमेश्वर यहोवा के लिये पत्थरों की एक वेदी बनाना, उन पर कोई औज़ार न चलाना। ६ अपने परमेश्वर यहोवा की वेदी अनगढ़े पत्थरों की बनाकर उस पर उसके लिये होमबलि चढ़ाना; ७ और वहीं मेलबलि भी चढ़ाकर भोजन करना, और अपने परमेश्वर यहोवा के सम्मुख आनन्द करना। ८ और उन पत्थरों पर इस व्यवस्था के सब वचनों को शुद्ध रीति से लिख देना॥

९ फिर मूसा और लेवीय याजकों ने सब इस्राएलियों से यह भी कहा, कि हे इस्राएल, चुप रहकर सुन; आज के दिन तू अपने परमेश्वर यहोवा की प्रजा हो गया है। १० इसलिये अपने परमेश्वर यहोवा की बात मानना, और उसकी जो जो आज्ञा और विधि मैं आज तुझे सुनाता हूं उनका पालन करना॥

११ फिर उसी दिन मूसा ने प्रजा के लोगों को यह आज्ञा दी, १२ कि जब तुम यरदन पार हो जाओ तब शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार, यूसुफ, और बिन्यामीन, ये गिरिज्जीम पहाड़ पर खड़े होकर आशीर्वाद सुनाएं। १३ और रूबेन, गाद, आशेर, जबूलून, दान, और नप्ताली, ये एबाल पहाड़ पर खड़े होके शाप सुनाएं। १४ तब लेवीय लोग सब इस्राएली पुरुषों से पुकारके कहें,

१५ कि शापित हो वह मनुष्य जो कोई मूर्त्ति कारीगर से खुदवाकर वा ढलवाकर निराले स्थान में स्थापन करे, क्योंकि इस से यहोवा को घृणा लगती है। तब सब लोग कहें, आमीन॥

१६ शापित हो वह जो अपने पिता वा माता को तुच्छ जाने। तब सब लोग कहें, आमीन॥

१७ शापित हो वह जो किसी दूसरे के सिवाने को हटाए। तब सब लोग कहें, आमीन॥

१८ शापित हो वह जो अन्धे को मार्ग से भटका दे। तब सब लोग कहें, आमीन ।।

१९ शापित हो वह जो परदेशी, अनाथ, वा विधवा का न्याय बिगाड़े। तब सब लोग कहें, आमीन ।।

२० शापित हो वह जो अपनी सौतेली माता से कुकर्म करे, क्योंकि वह अपने पिता का ओढ़ना उघारता है। तब सब लोग कहें, आमीन ।।

२१ शापित हो वह जो किसी प्रकार के पशु से कुकर्म करे। तब सब लोग कहें, आमीन ।।

२२ शापित हो वह जो अपनी बहिन, चाहे सगी हो चाहे सौतेली, उस से कुकर्म करे। तब सब लोग कहें, आमीन ।।

२३ शापित हो वह जो अपनी सास के संग कुकर्म करे। तब सब लोग कहें, आमीन ।।

२४ शापित हो वह जो किसी को छिपकर मारे। तब सब लोग कहें, आमीन ।।

२५ शापित हो वह जो निर्दोष जन के मार डालने के लिये धन ले। तब सब लोग कहें, आमीन ।।

२६ शापित हो वह जो इस व्यवस्था के वचनों को मानकर पूरा न करे। तब सब लोग कहें, आमीन ।।

२८ यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाएं, जो मैं आज तुझे सुनाता हूं, चौकसी से पूरी करने को चित्त लगाकर उसकी सुने, तो वह तुझे पृथ्वी की सब जातियों में श्रेष्ठ करेगा। २ फिर अपने परमेश्वर यहोवा की सुनने के कारण ये सब आशीर्वाद तुझ पर पूरे होंगे। ३ धन्य हो तू नगर में, धन्य हो तू खेत में। ४ धन्य हो तेरी सन्तान, और तेरी भूमि की उपज, और गाय और भेड़-बकरी आदि पशुओं के बच्चे। ५ धन्य हो तेरी टोकरी और तेरी कठौती। ६ धन्य हो तू भीतर आते समय, और धन्य हो तू बाहर जाते समय। ७ यहोवा ऐसा करेगा कि तेरे शत्रु जो तुझ पर चढ़ाई करेंगे वे तुझ से हार जाएंगे; वे एक मार्ग से तुझ पर चढ़ाई करेंगे, परन्तु तेरे साम्हने से सात मार्ग से होकर भाग जाएंगे। ८ तेरे खत्तों पर और जितने कामों में तू हाथ लगाएगा उन सभों पर यहोवा आशीष देगा; इसलिये जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में वह तुझे आशीष देगा। ९ यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को मानते हुए उसके मार्गों पर चले, तो वह अपनी शपथ के अनुसार तुझे अपनी पवित्र प्रजा करके स्थिर रखेगा। १० और पृथ्वी के देश देश के सब लोग यह देखकर, कि तू यहोवा का कहलाता है*, तुझ से डर जाएंगे। ११ और जिस देश के विषय यहोवा ने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर तुझे देने को कहा था, उस में वह तेरी सन्तान की, और भूमि की उपज की, और पशुओं की बढ़ती करके तेरी भलाई करेगा। १२ यहोवा तेरे लिये अपने आकाशरूपी उत्तम भण्डार को खोलकर तेरी भूमि पर समय पर मेंह बरसाया करेगा, और तेरे सारे कामों पर आशीष देगा; और तू बहुतेरी जातियों को उधार देगा, परन्तु किसी से तुझे उधार लेना न पड़ेगा। १३ और यहोवा तुझ को पूंछ नहीं, किन्तु सिर ही ठहराएगा, और तू नीचे नहीं, परन्तु ऊपर

* मूल में—यहोवा का नाम तुझ पर पुकारा गया है।

ही रहेगा; यदि परमेश्वर यहोवा की आज्ञाएं जो मैं आज तुझ को सुनाता हूं, तू उनके मानने में मन लगाकर चौकसी करे; १४ और जिन वचनों की मैं आज तुझे आज्ञा देता हूं उन में से किसी से दहिने वा बाएं मुड़के पराये देवताओं के पीछे न हो ले, और न उनकी सेवा करे॥

१५ परन्तु यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की बात न सुने, और उसकी सारी आज्ञाओं और विधियों के पालने में जो मैं आज सुनाता हूं चौकसी नहीं करेगा, तो ये सब शाप तुझ पर आ पड़ेंगे। १६ अर्थात् शापित हो तू नगर में, शापित हो तू खेत में। १७ शापित हो तेरी टोकरी और तेरी कठौती। १८ शापित हो तेरी सन्तान, और भूमि की उपज, और गायों और भेड़-बकरियों के बच्चे। १९ शापित हो तू भीतर आते समय, और शापित हो तू बाहर जाते समय। २० फिर जिस जिस काम में तू हाथ लगाए, उस में यहोवा तब तक तुझ को शाप देता, और भयातुर करता, और धमकी देता रहेगा, जब तक तू मिट न जाए, और शीघ्र नष्ट न हो जाए; यह इस कारण होगा कि तू यहोवा को त्यागकर दुष्ट काम करेगा। २१ और यहोवा ऐसा करेगा कि मरी तुझ में फैलकर उस समय तक लगी * रहेगी, जब तक जिस भूमि के अधिकारी होने के लिये तू जा रहा है उस पर से तेरा अन्त न हो जाए। २२ यहोवा तुझ को क्षयीरोग से, और ज्वर, और दाह, और बड़ी जलन से, और तलवार, और झुलस, और गेरूई से मारेगा; और ये उस समय तक तेरा पीछा किये रहेंगे, जब तक तू सत्यानाश न हो जाए। २३ और तेरे सिर के ऊपर आकाश पीतल का, और तेरे पांव के तले भूमि लोहे की हो जाएगी। २४ यहोवा तेरे देश में पानी के बदले बालू और धूलि बरसाएगा; वह आकाश से तुझ पर यहां तक बरसेगी कि तू सत्यानाश हो जाएगा। २५ यहोवा तुझ को शत्रुओं से हरवाएगा; और तू एक मार्ग से उनका साम्हना करने को जाएगा, परन्तु सात मार्ग से होकर उनके साम्हने से भाग जाएगा; और पृथ्वी के सब राज्यों में मारा मारा फिरेगा। २६ और तेरी लोथ आकाश के भांति भांति के पक्षियों, और धरती के पशुओं का आहार होगी; और उनका कोई हांकनेवाला न होगा। २७ यहोवा तुझ को मिस्र के से फोड़े, और बवासीर, और दाद, और खुजली से ऐसा पीड़ित करेगा, कि तू चंगा न हो सकेगा। २८ यहोवा तुझे पागल और अन्धा कर देगा, और तेरे मन को अत्यन्त घबरा देगा; २९ और जैसे अन्धा अन्धियारे में टटोलता है वैसे ही तू दिन दुपहरी में टटोलता फिरेगा, और तेरे काम काज सुफल न होंगे; और तू सदैव केवल अन्धेर सहता और लुटता ही रहेगा, और तेरा कोई छुड़ानेवाला न होगा। ३० तू स्त्री से ब्याह की बात लगाएगा, परन्तु दूसरा पुरुष उसको भ्रष्ट करेगा; घर तू बनाएगा, परन्तु उस में बसने न पाएगा; दाख की बारी तू लगाएगा, परन्तु उसके फल खाने न पाएगा। ३१ तेरा बैल तेरी आंखों के साम्हने मारा जाएगा, और तू उसका मांस खाने न पाएगा; तेरा गदहा तेरी आंख के साम्हने लूट में चला जाएगा, और तुझे फिर न मिलेगा; तेरी भेड़-बकरियां तेरे शत्रुओं के हाथ लग जाएंगी, और तेरी ओर से उनका कोई छुड़ानेवाला न होगा। ३२ तेरे बेटे-बेटियां दूसरे देश के लोगों के हाथ लग

* मूल में—चिमटी।

जाएंगे, और उनके लिये चाव से देखते देखते तेरी आंखें रह जाएंगी; और तेरा कुछ बस न चलेगा। ३३ तेरी भूमि की उपज और तेरी सारी कमाई एक अनजाने देश के लोग खा जाएंगे; और सर्वदा तू केवल अन्धेर सहता और पीसा जाता रहेगा; ३४ यहां तक कि तू उन बातों के कारण जो अपनी आंखों से देखेगा पागल हो जाएगा। ३५ यहोवा तेरे घुटनों और टांगों में, वरन नख* से शिख तक भी असाध्य फोड़े निकालकर तुझ को पीड़ित करेगा। ३६ यहोवा तुझ को उस राजा समेत, जिसको तू अपने ऊपर ठहराएगा, तेरी और तेरे पूर्वजों से अनजानी एक जाति के बीच पहुंचाएगा; और उनके मध्य में रहकर तू काठ और पत्थर के दूसरे देवताओं की उपासना और पूजा करेगा। ३७ और उन सब जातियों में जिनके मध्य में यहोवा तुझ को पहुंचाएगा, वहां के लोगों के लिये तू चकित होने का, और दृष्टान्त और शाप का कारण समझा जाएगा। ३८ तू खेत में बीज तो बहुत सा ले जाएगा, परन्तु उपज थोड़ी ही बटोरेगा; क्योंकि टिड्डियां उसे खा जाएंगी। ३९ तू दाख की बारियां लगाकर उन में काम तो करेगा, परन्तु उनकी दाख का मधु पीने न पाएगा, वरन फल भी तोड़ने न पाएगा; क्योंकि कीड़े उनको खा जाएंगे। ४० तेरे सारे देश में जलपाई के वृक्ष तो होंगे, परन्तु उनका तेल तू अपने शरीर में लगाने न पाएगा; क्योंकि वे झड़ जाएंगे। ४१ तेरे बेटे-बेटियां तो उत्पन्न होंगे, परन्तु तेरे रहेंगे नहीं; क्योंकि वे बन्धुआई में चले जाएंगे। ४२ तेरे सब वृक्ष और तेरी भूमि की उपज टिड्डियां खा जाएंगी। ४३ जो परदेशी तेरे मध्य में रहेगा वह तुझ से बढ़ता जाएगा; और तू आप घटता चला जाएगा। ४४ वह तुझ को उधार देगा, परन्तु तू उसको उधार न दे सकेगा; वह तो सिर और तू पूंछ ठहरेगा। ४५ तू जो अपने परमेश्वर यहोवा की दी हुई आज्ञाओं और विधियों के मानने को उसकी न सुनेगा, इस कारण ये सब शाप तुझ पर आ पड़ेंगे, और तेरे पीछे पड़े रहेंगे, और तुझ को पकड़ेंगे, और अन्त में तू नष्ट हो जाएगा। ४६ और वे तुझ पर और तेरे वंश पर सदा के लिये बने रहकर चिन्ह और चमत्कार ठहरेंगे; ४७ तू जो सब पदार्थ की बहुतायत होने पर भी आनन्द और प्रसन्नता के साथ अपने परमेश्वर यहोवा की सेवा नहीं करेगा, ४८ इस कारण तुझ को भूखा, प्यासा, नङ्गा, और सब पदार्थों से रहित होकर अपने उन शत्रुओं की सेवा करनी पड़ेगी जिन्हें यहोवा तेरे विरुद्ध भेजेगा; और जब तक तू नष्ट न हो जाए तब तक वह तेरी गर्दन पर लोहे का जूआ डाल रखेगा। ४९ यहोवा तेरे विरुद्ध दूर से, वरन पृथ्वी के छोर से वेग उड़नेवाले उकाब सी एक जाति को चढ़ा लाएगा जिसकी भाषा को तू न समझेगा; ५० उस जाति के लोगों का व्यवहार क्रूर होगा, वे न तो बूढ़ों का मुंह देखकर आदर करेंगे, और न बालकों पर दया करेंगे; ५१ और वे तेरे पशुओं के बच्चे और भूमि की उपज यहां तक खा जाएंगे कि तू नष्ट हो जाएगा; और वे तेरे लिये न अन्न, और न नया दाखमधु, और न टटका तेल, और न बछड़े, न मेम्ने छोड़ेंगे, यहां तक कि तू नाश हो जाएगा। ५२ और वे तेरे परमेश्वर यहोवा के दिए हुए सारे देश के सब फाटकों के भीतर तुझे घेर

* मूल में—पांव के तलवे।

रखेंगे; वे तेरे सब फाटकों के भीतर तुझे उस समय तक घेरेंगे, जब तक तेरे सारे देश में तेरी ऊंची ऊंची और दृढ़ शहरपनाहें जिन पर तू भरोसा करेगा गिर न जाएं। ५३ तब घिर जाने और उस सकेती के समय जिस में तेरे शत्रु तुझ को डालेंगे, तू अपने निज जन्माए बेटे-बेटियों का मांस जिन्हें तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को देगा खाएगा। ५४ और तुझ में जो पुरुष कोमल और अति सुकुमार हो वह भी अपने भाई, और अपनी प्राणप्यारी, और अपने बचे हुए बालकों को क्रूर दृष्टि से देखेगा; ५५ और वह उन में से किसी को भी अपने बालकों के मांस में से जो वह आप खाएगा कुछ न देगा, क्योंकि घिर जाने और उस सकेती में, जिस में तेरे शत्रु तेरे सारे फाटकों के भीतर तुझे घेर डालेंगे, उसके पास कुछ न रहेगा। ५६ और तुझ में जो स्त्री यहां तक कोमल और सुकुमार हो कि सुकुमारपन और कोमलता के मारे भूमि पर पांव धरते भी डरती हो, वह भी अपने प्राणप्रिय पति, और बेटे, और बेटी को, ५७ अपनी खेरी, वरन अपने जने हुए बच्चों को क्रूर दृष्टि से देखेगी, क्योंकि घिर जाने और उस सकेती के समय जिस में तेरे शत्रु तुझे तेरे फाटकों के भीतर घेरकर रखेंगे, वह सब वस्तुओं की घटी के मारे उन्हें छिप के खाएगी। ५८ यदि तू इन व्यवस्था के सारे वचनों के पालने में, जो इस पुस्तक में लिखे हैं, चौकसी करके उस आदरनीय और भययोग्य नाम का, जो यहोवा तेरे परमेश्वर का है भय न माने, ५९ तो यहोवा तुझ को और तेरे वंश को अनोखे अनोखे दण्ड देगा, वे दुष्ट और बहुत दिन रहनेवाले रोग और भारी भारी दण्ड होंगे। ६० और वह मिस्र के उन सब रोगों को फिर तेरे ऊपर लगा देगा, जिन से तू भय खाता था; और वे तुझ में लगे रहेंगे। ६१ और जितने रोग आदि दण्ड इस व्यवस्था की पुस्तक में नहीं लिखे हैं, उन सभों को भी यहोवा तुझ को यहां तक लगा देगा, कि तू सत्यानाश हो जाएगा। ६२ और तू जो अपने परमेश्वर यहोवा की न मानेगा, इस कारण आकाश के तारों के समान अनगिनित होने की सन्ती तुझ में से थोड़े ही मनुष्य रह जाएंगे। ६३ और जैसे अब यहोवा को तुम्हारी भलाई और बढ़ती करने से हर्ष होता है, वैसे ही तब उसको तुम्हें नाश वरन सत्यानाश करने से हर्ष होगा; और जिस भूमि के अधिकारी होने को तुम जा रहे हो उस पर से तुम उखाड़े जाओगे। ६४ और यहोवा तुझ को पृथ्वी के इस छोर से लेकर उस छोर तक के सब देशों के लोगों में तितर बितर करेगा; और वहां रहकर तू अपने और अपने पुरखाओं के अनजाने काठ और पत्थर के दूसरे देवताओं की उपासना करेगा। ६५ और उन जातियों में तू कभी चैन न पाएगा, और न तेरे पांव को ठिकाना मिलेगा; क्योंकि वहां यहोवा ऐसा करेगा कि तेरा हृदय कांपता रहेगा, और तेरी आंखें धुंधली पड़ जाएंगी, और तेरा मन कलपता रहेगा; ६६ और तुझ को जीवन का नित्य सन्देह रहेगा; और तू दिन रात थरथराता रहेगा, और तेरे जीवन का कुछ भरोसा न रहेगा। ६७ तेरे मन में जो भय बना रहेगा, और तेरी आंखों को जो कुछ दीखता रहेगा, उसके कारण तू भोर को आह मारके कहेगा, कि सांझ कब होगी! और सांझ को आह मारके कहेगा, कि भोर कब होगा! ६८ और यहोवा तुझ को नावों पर चढ़ाकर मिस्र में उस मार्ग से लौटा देगा, जिसके

विषय में मैं ने तुझ से कहा था, कि वह फिर तेरे देखने में न आएगा; और वहां तुम अपने शत्रुओं के हाथ दास-दासी होने के लिये बिकाऊ तो रहोगे, परन्तु तुम्हारा कोई ग्राहक न होगा ॥

२९ इस्राएलियों से जिस वाचा के बान्धने की आज्ञा यहोवा ने मूसा को मोआब के देश में दी उसके ये ही वचन हैं, और जो वाचा उस ने उन से होरेब पहाड़ पर बान्धी थी यह उस से अलग है ॥

२ फिर मूसा ने सब इस्राएलियों को बुलाकर कहा, जो कुछ यहोवा ने मिस्र देश में तुम्हारे देखते फ़िरौन और उसके सब कर्मचारियों, और उसके सारे देश से किया वह तुम ने देखा है; ३ वे बड़े बड़े परीक्षा के काम, और चिन्ह, और बड़े बड़े चमत्कार तेरी आंखों के साम्हने हुए; ४ परन्तु यहोवा ने आज तक तुम को न तो समझने की बुद्धि, और न देखने की आंखें, और न सुनने के कान दिए हैं। ५ मैं तो तुम को जंगल में चालीस वर्ष लिए फिरा; और न तुम्हारे तन पर वस्त्र पुराने हुए, और न तेरी जूतियां तेरे पैरों में पुरानी हुई; ६ रोटी जो तुम नहीं खाने पाए, और दाखमधु और मदिरा जो तुम नहीं पीने पाए, वह इसलिये हुआ कि तुम जानो कि मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूं। ७ और जब तुम इस स्थान पर आए, तब हेशबोन का राजा सीहोन और बाशान का राजा ओग, ये दोनों युद्ध के लिये हमारा साम्हना करने को निकल आए, और हम ने उनको जीतकर उनका देश ले लिया; ८ और रूबेनियों, गादियों, और मनश्शे के आधे गोत्र के लोगों को निज भाग करके दे दिया। ९ इसलिये इस वाचा की बातों का पालन करो, ताकि जो कुछ करो वह सुफल हो ॥

१० आज क्या वृद्ध लोग, क्या सरदार, तुम्हारे मुख्य मुख्य पुरुष, क्या गोत्र गोत्र के तुम सब इस्राएली पुरुष, ११ क्या तुम्हारे बालबच्चे और स्त्रियां, क्या लकड़हारे, क्या पनभरे, क्या तेरी छावनी में रहनेवाले परदेशी, तुम सब के सब अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने इसलिये खड़े हुए हो, १२ कि जो वाचा तेरा परमेश्वर यहोवा आज तुझ से बान्धता है, और जो शपथ वह आज तुझ को खिलाता है, उस में तू साझी हो जाए; १३ इसलिये कि उस वचन के अनुसार जो उसने तुझ को दिया, और उस शपथ के अनुसार जो उसने इब्राहीम, इसहाक, और याक़ूब, तेरे पूर्वजों से खाई थी, वह आज तुझ को अपनी प्रजा ठहराए, और आप तेरा परमेश्वर ठहरे। १४ फिर मैं इस वाचा और इस शपथ में केवल तुम को नहीं, १५ परन्तु उनको भी, जो आज हमारे संग यहां हमारे परमेश्वर यहोवा के साम्हने खड़े हैं, और जो आज यहां हमारे संग नहीं हैं, साझी करता हूं। १६ तुम जानते हो कि जब हम मिस्र देश में रहते थे, और जब मार्ग में की जातियों के बीचों बीच होकर आ रहे थे, १७ तब तुम ने उनकी कैसी कैसी घिनौनी वस्तुएं, और काठ, पत्थर, चांदी, सोने की कैसी मूरतें देखीं। १८ इसलिये ऐसा न हो, कि तुम लोगों में ऐसा कोई पुरुष, वा स्त्री, वा कुल, वा गोत्र के लोग हों जिनका मन आज हमारे परमेश्वर यहोवा से फिर जाए, और वे जाकर उन जातियों के देवताओं की उपासना करें; फिर ऐसा न हो कि तुम्हारे मध्य ऐसी कोई जड़ हो, जिस से विष वा कड़ुआ बीज उगा हो, १९ और

ऐसा मनुष्य इस शाप के वचन सुनकर अपने को आशीर्वाद के योग्य माने, और यह सोचे कि चाहे मैं अपने मन के हठ पर चलूं, और तृप्त होकर प्यास को मिटा डालूं *, तौभी मेरा कुशल होगा। २० यहोवा उसका पाप क्षमा नहीं करेगा, वरन यहोवा के कोप और जलन का धूआं उसको छा लेगा, और जितने शाप इस पुस्तक में लिखे हैं वे सब उस पर आ पड़ेंगे, और यहोवा उसका नाम धरती पर से † मिटा देगा। २१ और व्यवस्था की इस पुस्तक में जिस वाचा की चर्चा है उसके सब शापों के अनुसार यहोवा उसको इस्राएल के सब गोत्रों में से हानि के लिये अलग करेगा। २२ और आनेवाली पीढ़ियों में तुम्हारे वंश के लोग जो तुम्हारे बाद उत्पन्न होंगे, और परदेशी मनुष्य भी जो दूर देश से आएंगे, वे उस देश की विपत्तियां और उस में यहोवा के फैलाए हुए रोग देखकर, २३ और यह भी देखकर कि इसकी सब भूमि गन्धक और लोन से भर गई है, और यहां तक जल गई है कि इस में न कुछ बोया जाता, और न कुछ जम सकता, और न घास उगती है, वरन सदोम और अमोरा, अदमा और सबोयीम के समान हो गया है जिन्हें यहोवा ने अपने कोप और जलजलाहट में उलट दिया था; २४ और सब जातियों के लोग पूछेंगे, कि यहोवा ने इस देश से ऐसा क्यों किया? और इस बड़े कोप के भड़कने का क्या कारण है? २५ तब लोग यह उत्तर देंगे, कि उनके पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा ने जो वाचा उनके साथ मिस्र देश से निकालने के समय बान्धी थी उसको उन्हों ने तोड़ा है, २६ और पराए देवताओं की उपासना की है जिन्हें वे पहिले नहीं जानते थे, और यहोवा ने उनको नहीं दिया था; २७ इसलिये यहोवा का कोप इस देश पर भड़क उठा है, कि पुस्तक में लिखे हुए सब शाप इस पर आ पड़ें; २८ और यहोवा ने कोप, और जलजलाहट, और बड़ा ही क्रोध करके उन्हें उनके देश में से उखाड़कर दूसरे देश में फेंक दिया, जैसा कि आज प्रगट है॥

२९ गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहोवा के वश में हैं; परन्तु जो प्रगट की गई हैं वे सदा के लिये हमारे और हमारे वंश के वश में रहेंगी, इसलिये कि इस व्यवस्था की सब बातें पूरी की जाएं॥

३० फिर जब आशीष और शाप की ये सब बातें जो मैं ने तुझ को कह सुनाई हैं तुझ पर घटें, और तू उन सब जातियों के मध्य में रहकर, जहां तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को बरबस पहुंचाएगा, इन बातों को स्मरण करे, २ और अपनी सन्तान सहित अपने सारे मन और सारे प्राण से अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरकर उसके पास लौट आए, और इन सब आज्ञाओं के अनुसार जो मैं आज तुझे सुनाता हूं उसकी बातें माने; ३ तब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को बन्धुआई से लौटा ले आएगा, और तुझ पर दया करके उन सब देशों के लोगों में जिनके मध्य में वह तुझ को तितर बितर कर देगा फिर इकट्ठा करेगा ४ चाहे धरती * के छोर तक तेरा बरबस पहुंचाया जाना हो, तौभी तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को वहां से ले आकर इकट्ठा करेगा। ५ और तेरा परमेश्वर

* वा प्यास पर मतवालापन भी बढ़ाऊं, वा प्यासे और तृप्त दोनों को मिटा डालूं।

† मूल में—आकाश के तले से।

* मूल में—आकाश।

यहोवा तुझे उसी देश में पहुंचाएगा जिसके तेरे पुरखा अधिकारी हुए थे, और तू फिर उसका अधिकारी होगा; और वह तेरी भलाई करेगा, और तुझ को तेरे पुरखाओं से भी गिनती में अधिक बढ़ाएगा। ६ और तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे और तेरे वंश के मन का खतना करेगा, कि तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन और सारे प्राण के साथ प्रेम करे, जिस से तू जीवित रहे। ७ और तेरा परमेश्वर यहोवा ये सब शाप की बातें तेरे शत्रुओं पर जो तुझ से बैर करके तेरे पीछे पड़ेंगे भेजेगा। ८ और तू फिरेगा और यहोवा की सुनेगा, और इन सब आज्ञाओं को मानेगा जो मैं आज तुझ को सुनाता हूं। ९ और यहोवा तेरी भलाई के लिये तेरे सब कामों में, और तेरी सन्तान, और पशुओं के बच्चों, और भूमि की उपज में तेरी बढ़ती करेगा; क्योंकि यहोवा फिर तेरे ऊपर भलाई के लिये वैसा ही आनन्द करेगा, जैसा उस ने तेरे पूर्वजों के ऊपर किया था; १० क्योंकि तू अपने परमेश्वर यहोवा की सुनकर उसकी आज्ञाओं और विधियों को जो इस व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हैं माना करेगा, और अपने परमेश्वर यहोवा की ओर अपने सारे मन और सारे प्राण से मन फिराएगा॥

११ देखो, यह जो आज्ञा मैं आज तुझे सुनाता हूं, वह न तो तेरे लिये अनोखी, और न दूर है। १२ और न तो यह आकाश में है, कि तू कहे, कि कौन हमारे लिये आकाश में चढ़कर उसे हमारे पास ले आए, और हम को सुनाए कि हम उसे मानें? १३ और न यह समुद्र पार है, कि तू कहे, कौन हमारे लिये समुद्र पार जाए, और उसे हमारे पास ले आए, और हम को सुनाए कि हम उसे मानें? १४ परन्तु यह वचन तेरे बहुत निकट, वरन तेरे मुंह और मन ही में है, ताकि तू इस पर चले॥

१५ सुन, आज मैं ने तुझ को जीवन और मरण, हानि और लाभ दिखाया है। १६ क्योंकि मैं आज तुझे आज्ञा देता हूं, कि अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करना, और उसके मार्गों पर चलना, और उसकी आज्ञाओं, विधियों, और नियमों को मानना, जिस से तू जीवित रहे, और बढ़ता जाए, और तेरा परमेश्वर यहोवा उस देश में जिसका अधिकारी होने को तू जा रहा है, तुझे आशीष दे। १७ परन्तु यदि तेरा मन भटक जाए, और तू न सुने, और भटककर पराए देवताओं को दण्डवत् करे और उनकी उपासना करने लगे, १८ तो मैं तुम्हें आज यह चितौनी दिए देता हूं कि तुम निःसन्देह नष्ट हो जाओगे; और जिस देश का अधिकारी होने के लिये तू यरदन पार जा रहा है, उस देश में तुम बहुत दिनों के लिये रहने न पाओगे। १९ मैं आज आकाश और पृथ्वी दोनों को तुम्हारे साम्हने इस बात की साक्षी बनाता हूं, कि मैं ने जीवन और मरण, आशीष और शाप को तुम्हारे आगे रखा है; इसलिये तू जीवन ही को अपना ले, कि तू और तेरा वंश दोनों जीवित रहें; २० इसलिये अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करो, और उसकी बात मानो, और उस से लिपटे रहो; क्योंकि तेरा जीवन और दीर्घजीवन यही है, और ऐसा करने से जिस देश को यहोवा ने इब्राहीम, इसहाक, और याक़ूब, तेरे पूर्वजों को देने की शपथ खाई थी उस देश में तू बसा रहेगा॥

(मूसा का प्रसिद्ध गीत)

३१ और मूसा ने जाकर यह बातें सब इस्राएलियों को सुनाईं। २ और उस ने उन से यह भी कहा, कि आज मैं एक सौ बीस वर्ष का हूं; और अब मैं चल फिर नहीं सकता; क्योंकि यहोवा ने मुझ से कहा है, कि तू इस यरदन पार नहीं जाने पाएगा। ३ तेरे आगे पार जानेवाला तेरा परमेश्वर यहोवा ही है; वह उन जातियों को तेरे साम्हने से नष्ट करेगा, और तू उनके देश का अधिकारी होगा; और यहोवा के वचन के अनुसार यहोशू तेरे आगे आगे पार जाएगा। ४ और जिस प्रकार यहोवा ने एमोरियों के राजा सीहोन और ओग और उनके देश को नष्ट किया है, उसी प्रकार वह उन सब जातियों से भी करेगा। ५ और जब यहोवा उनको तुम से हरवा देगा, तब तुम उन सारी आज्ञाओं के अनुसार उन से करना जो मैं ने तुम को सुनाई हैं। ६ तू हियाव बान्ध और दृढ़ हो, उन से न डर और न भयभीत हो; क्योंकि तेरे संग चलनेवाला तेरा परमेश्वर यहोवा है; वह तुझ को धोखा न देगा और न छोड़ेगा। ७ तब मूसा ने यहोशू को बुलाकर सब इस्राएलियों के सम्मुख कहा, कि तू हियाव बान्ध और दृढ़ हो जा; क्योंकि इन लोगों के संग उस देश में जिसे यहोवा ने इनके पूर्वजों से शपथ खाकर देने को कहा था तू जाएगा; और तू इनको उसका अधिकारी कर देगा। ८ और तेरे आगे आगे चलनेवाला यहोवा है; वह तेरे संग रहेगा, और न तो तुझे धोखा देगा और न छोड़ देगा; इसलिये मत डर और तेरा मन कच्चा न हो॥

९ फिर मूसा ने यही व्यवस्था लिखकर लेवीय याजकों को, जो यहोवा की वाचा के सन्दूक उठानेवाले थे, और इस्राएल के सब वृद्ध लोगों को सौंप दी। १० तब मूसा ने उनको आज्ञा दी, कि सात सात वर्ष के बीतने पर, अर्थात् उगाही न होने के वर्ष के झोपड़ीवाले पर्ब्ब में, ११ जब सब इस्राएली तेरे परमेश्वर यहोवा के उस स्थान पर जिसे वह चुन लेगा आकर इकट्ठे हों, तब यह व्यवस्था सब इस्राएलियों को पढ़कर सुनाना। १२ क्या पुरुष, क्या स्त्री, क्या बालक, क्या तुम्हारे फाटकों के भीतर के परदेशी, सब लोगों को इकट्ठा करना कि वे सुनकर सीखें, और तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का भय मानकर, इस व्यवस्था के सारे वचनों के पालन करने में चौकसी करें, १३ और उनके लड़केबाले जिन्हों ने ये बातें नहीं सुनीं वे भी सुनकर सीखें, कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का भय उस समय तक मानते रहें, जब तक तुम उस देश में जीवित रहो जिसके अधिकारी होने को तुम यरदन पार जा रहे हो॥

१४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, तेरे मरने का दिन निकट है; तू यहोशू को बुलवा, और तुम दोनों मिलापवाले तम्बू में आकर उपस्थित हो कि मैं उसको आज्ञा दूं। तब मूसा और यहोशू जाकर मिलापवाले तम्बू में उपस्थित हुए। १५ तब यहोवा ने उस तम्बू में बादल के खम्भे में होकर दर्शन दिया; और बादल का खम्भा तम्बू के द्वार पर ठहर गया। १६ तब यहोवा ने मूसा से कहा, तू तो अपने पुरखाओं के संग सो जाने पर है; और ये लोग उठकर उस देश के पराये देवताओं के पीछे जिनके मध्य वे जाकर रहेंगे व्यभिचारी हो जाएंगे, और मुझे त्यागकर उस वाचा को जो मैं ने उन से बान्धी है तोड़ेंगे। १७ उस समय मेरा कोप इन पर भड़केगा, और मैं भी इन्हें त्यागकर इन से अपना मुंह छिपा

लूंगा, और ये आहार हो जाएंगे; और बहुत सी विपत्तियां और क्लेश इन पर आ पड़ेंगे, यहां तक कि ये उस समय कहेंगे, क्या ये विपत्तियां हम पर इस कारण तो नहीं आ पड़ीं, क्योंकि हमारा परमेश्वर हमारे मध्य में नहीं रहा? १८ उस समय मैं उन सब बुराइयों के कारण जो ये पराये देवताओं की ओर फिरकर करेंगे निःसन्देह उन से अपना मुंह छिपा लूंगा। १९ सो अब तुम यह गीत लिख लो, और तू इसे इस्राएलियों को सिखाकर कंठ करा देना, इसलिये कि यह गीत उनके विरुद्ध मेरा साक्षी ठहरे। २० जब मैं इनको उस देश में पहुंचाऊंगा जिसे देने की मैं ने इनके पूर्वजों से शपथ खाई थी, और जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं, और खाते-खाते इनका पेट भर जाए, और ये हृष्ट-पुष्ट हो जाएंगे; तब ये पराये देवताओं की ओर फिरकर उनकी उपासना करने लगेंगे, और मेरा तिरस्कार करके मेरी वाचा को तोड़ देंगे। २१ वरन अभी भी जब मैं इन्हें उस देश में जिसके विषय में ने शपथ खाई हैं पहुंचा नहीं चुका, मुझे मालूम है, कि ये क्या क्या कल्पना कर रहे हैं; इसलिये जब बहुत सी विपत्तियां और क्लेश इन पर आ पड़ेंगे, तब यह गीत इन पर साक्षी देगा, क्योंकि इनकी सन्तान इसको कभी भी नहीं भूलेगी। २२ तब मूसा ने उसी दिन यह गीत लिखकर इस्राएलियों को सिखाया। २३ और उस ने नून के पुत्र यहोशू को यह आज्ञा दी, कि हियाव बान्ध और दृढ़ हो; क्योंकि इस्राएलियों को उस देश में जिसे उन्हें देने को मैं ने उन से शपथ खाई है तू पहुंचाएगा; और मैं आप तेरे संग रहूंगा॥

२४ जब मूसा इस व्यवस्था के वचन को आदि से अन्त तक पुस्तक में लिख चुका, २५ तब उस ने यहोवा के सन्दूक उठानेवाले लेवियों को आज्ञा दी, २६ कि व्यवस्था की इस पुस्तक को लेकर अपने परमेश्वर यहोवा की वाचा के सन्दूक के पास रख दो, कि यह वहां तुझ पर साक्षी देती रहे। २७ क्योंकि तेरा बलवा और हठ मुझे मालूम है; देखो, मेरे जीवित और संग रहते हुए भी तुम यहोवा से बलवा करते आए हो; फिर मेरे मरने के बाद भी क्यों न करोगे! २८ तुम अपने गोत्रों के सब वृद्ध लोगों को और अपने सरदारों को मेरे पास इकट्ठा करो, कि मैं उनको ये वचन सुनाकर उनके विरुद्ध आकाश और पृथ्वी दोनों को साक्षी बनाऊं। २९ क्योंकि मुझे मालूम है कि मेरी मृत्यु के बाद तुम बिलकुल बिगड़ जाओगे, और जिस मार्ग में चलने की आज्ञा मैं ने तुम को सुनाई है उसको भी तुम छोड़ दोगे; और अन्त के दिनों में जब तुम वह काम करके जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, अपनी बनाई हुई वस्तुओं की पूजा करके उसको रिस दिलाओगे, तब तुम पर विपत्ति आ पड़ेगी॥

३० तब मूसा ने इस्राएल की सारी सभा को इस गीत के वचन आदि से अन्त तक कह सुनाए:

३२ हे आकाश, कान लगा, कि मैं बोलूं; और हे पृथ्वी, मेरे मुंह की बातें सुन॥

२ मेरा उपदेश मेंह की नाईं बरसेगा,
और मेरी बातें ओस की नाईं टपकेंगी,
जैसे कि हरी घास पर झीसी,
और पौधों पर झड़ियां॥

३ मैं तो यहोवा नाम का प्रचार करूंगा। तुम अपने परमेश्वर की महिमा को मानो!

४ वह चट्टान है, उसका काम खरा है;
और उसकी सारी गति न्याय की है। वह सच्चा ईश्वर है, उस में कुटिलता नहीं, वह धर्मी और सीधा है।।

५ परन्तु इसी जाति * के लोग टेढ़े और तिर्छे हैं; ये बिगड़ गए, ये उसके पुत्र नहीं; यह उनका कलंक है।।

६ हे मूढ़ और निर्बुद्धि लोगो,
क्या तुम यहोवा को यह बदला देते हो?
क्या वह तेरा पिता नहीं है,
जिस ने तुझ को मोल लिया है?
उस ने तुझ को बनाया और स्थिर भी किया है।।

७ प्राचीनकाल के दिनों को स्मरण करो,
पीढ़ी पीढ़ी के वर्षों को विचारो;
अपने बाप से पूछो, और वह तुम को बताएगा;
अपने वृद्ध लोगों से प्रश्न करो,
और वे तुझ से कह देंगे।।

८ जब परमप्रधान ने एक एक जाति को निज निज भाग बांट दिया,
और आदमियों को अलग अलग बसाया,
तब उस ने देश देश के लोगों के सिवाने
इस्राएलियों की गिनती के अनुसार ठहराए।।

९ क्योंकि यहोवा का अंश उसकी प्रजा है;

* मूल में—पीढ़ी।

याक़ूब उसका नपा हुआ निज भाग है।।

१० उस ने उसको जंगल में,
और सुनसान और गरजनेवालों से भरी हुई मरुभूमि में पाया;
उस ने उसके चहुं ओर रहकर उसकी रक्षा की,
और अपनी आंख की पुतली की नाईं उसकी सुधि रखी।।

११ जैसे उकाब अपने घोंसले को हिला हिलाकर अपने बच्चों के ऊपर ऊपर मण्डलाता है,
वैसे ही उस ने अपने पंख फैलाकर उसको अपने परों पर उठा लिया।।

१२ यहोवा अकेला ही उसकी अगुवाई करता रहा,
और उसके संग कोई पराया देवता न था।।

१३ उस ने उसको पृथ्वी के ऊंचे ऊंचे स्थानों पर सवार कराया,
और उसको खेतों की उपज खिलाई;
उस ने उसे चट्टान में से मधु
और चकमक की चट्टान में से तेल चुसाया।।

१४ गायों का दही, और भेड़-बकरियों का दूध, मेम्नों की चर्बी,
बकरे और बाशान की जाति के मेढ़े,
और गेहूं का उत्तम से उत्तम आटा भी;
और तू दाखरस का मधु पिया करता था।।

१५ परन्तु यशूरून मोटा होकर लात मारने लगा;

तू मोटा और हृष्ट-पुष्ट हो गया,
और चर्बी से छा गया है;
तब उस ने अपने सृजनहार ईश्वर को तज दिया,
और अपने उद्धारमूल चट्टान को तुच्छ जाना॥
१६ उन्हों ने पराए देवताओं को मानकर उस में जलन उपजाई;
और घृणित कर्म करके उसको रिस दिलाई॥
१७ उन्हों ने पिशाचों के लिये जो ईश्वर न थे बलि चढ़ाए,
और उनके लिये वे अनजाने देवता थे,
वे तो नये नये देवता थे जो थोड़े ही दिन से प्रकट हुए थे,
और जिन से उनके पुरखा कभी डरे नहीं।
१८ जिस चट्टान से तू उत्पन्न हुआ उसको तू भूल गया,
और ईश्वर जिस से तेरी उत्पत्ति हुई उसको भी तू भूल गया है॥
१९ इन बातों को देखकर यहोवा ने उन्हें तुच्छ जाना,
क्योंकि उसके बेटे-बेटियों ने उसे रिस दिलाई थी॥
२० तब उस ने कहा, मैं उन से अपना मुख छिपा लूंगा,
और देखूंगा कि उनका अन्त कैसा होगा,
क्योंकि इस जाति * के लोग बहुत टेढ़े हैं
और धोखा देनेवाले पुत्र हैं।

* मूल में—पीढ़ी।

२१ उन्हों ने ऐसी वस्तु मानकर जो ईश्वर नहीं है, मुझ में जलन उत्पन्न की,
और अपनी व्यर्थ वस्तुओं के द्वारा मुझे रिस दिलाई।
इसलिये मैं भी उनके द्वारा जो मेरी प्रजा नहीं हैं उनके मन में जलन उत्पन्न करूंगा;
और एक मूढ़ जाति के द्वारा उन्हें रिस दिलाऊंगा॥
२२ क्योंकि मेरे कोप की आग भड़क उठी है,
जो पाताल की तह तक जलती जाएगी,
और पृथ्वी अपनी उपज समेत भस्म हो जाएगी,
और पहाड़ों की नेवों में भी आग लगा देगी॥
२३ मैं उन पर विपत्ति पर विपत्ति भेजूंगा;
और उन पर मैं अपने सब तीरों को छोड़ूंगा॥
२४ वे भूख से दुबले हो जाएंगे, और अंगारों से
और कठिन महारोगों से ग्रसित हो जाएंगे;
और मैं उन पर पशुओं के दांत लगवाऊंगा,
और धूलि पर रेंगनेवाले सर्पों का विष छोड़ दूंगा॥
२५ बाहर वे तलवार से मरेंगे,
और कोठरियों के भीतर भय से;
क्या कुंवारे और क्या कुंवारियां,
क्या दूध पीता हुआ बच्चा क्या पक्के बालवाले, सब इसी प्रकार बरबाद होंगे।

२६ मैं ने कहा था, कि मैं उनको दूर दूर तक तितर-बितर करूंगा,
और मनुष्यों में से उनका स्मरण तक मिटा डालूंगा;
२७ परन्तु मुझे शत्रुओं की छेड़ छाड़ का डर था,
ऐसा न हो कि द्रोही इसको उलटा समझकर यह कहने लगें, कि हम अपने ही बाहुबल से प्रबल हुए,
और यह सब यहोवा से नहीं हुआ॥
२८ यह जाति युक्तहीन तो है,
और इन में समझ है ही नहीं॥
२९ भला होता कि ये बुद्धिमान होते, कि इसको समझ लेते,
और अपने अन्त का विचार करते!
३० यदि उनकी चट्टान ही उनको न बेच देती,
और यहोवा उनको औरों के हाथ में न कर देता;
तो यह क्योंकर हो सकता कि उनके हज़ार का पीछा एक मनुष्य करता,
और उनके दस हज़ार को दो मनुष्य भगा देते?
३१ क्योंकि जैसी हमारी चट्टान है वैसी उनकी चट्टान नहीं है,
चाहे हमारे शत्रु ही क्यों न न्यायी हों॥
३२ क्योंकि उनकी दाखलता सदोम की दाखलता से निकली,
और अमोरा की दाख की बारियों में की है;
उनकी दाख विषभरी,
और उनके गुच्छे कड़ुवे हैं;
३३ उनका दाखमधु सांपों का सा विष,
और काले नागों का सा हलाहल है॥
३४ क्या यह बात मेरे मन में संचित,
और मेरे भण्डारों में मुहरबन्द नहीं है?
३५ पलटा लेना और बदला देना मेरा ही काम है, यह उनके पांव फिसलने के समय प्रगट होगा;
क्योंकि उनकी विपत्ति का दिन निकट है, और जो दुःख उन पर पड़नेवाले हैं वे शीघ्र आ रहे हैं॥
३६ क्योंकि जब यहोवा देखेगा कि मेरी प्रजा की शक्ति जाती रही,
और क्या बन्धुआ और क्या स्वाधीन, उन में कोई बचा नहीं रहा,
तब यहोवा अपने लोगों का न्याय करेगा,
और अपने दासों के विषय तरस खाएगा॥
३७ तब वह कहेगा, उनके देवता कहां हैं,
अर्थात वह चट्टान कहां जिस पर उनका भरोसा था,
३८ जो उनके बलिदानों की चर्बी खाते,
और उनके तपावनों का दाखमधु पीते थे?
वे ही उठकर तुम्हारी सहायता करें,
और तुम्हारी आड़ हों!
३९ इसलिये अब तुम देख लो कि मैं ही वह हूं,
और मेरे संग कोई देवता नहीं;
मैं ही मार डालता, और मैं जिलाता भी हूं;

मैं ही घायल करता, और मैं ही
चंगा भी करता हूं;
और मेरे हाथ से कोई नहीं छुड़ा
सकता॥
४० क्योंकि मैं अपना हाथ स्वर्ग की
ओर उठाकर कहता हूं,
क्योंकि मैं अनन्त काल के लिये
जीवित हूं,
४१ सो यदि मैं बिजली की तलवार
पर सान धरकर झलकाऊं,
और न्याय अपने हाथ में ले लूं,
तो अपने द्रोहियों से बदला लूंगा,
और अपने बैरियों को बदला
दूंगा॥
४२ मैं अपने तीरों को लोहू से मतवाला
करूंगा,
और मेरी तलवार मांस खाएगी—
वह लोहू, मारे हुओं और बन्धुओं
का, और वह मांस, शत्रुओं के
प्रधानों के शीश का होगा॥
४३ हे अन्यजातियो, उसकी प्रजा के
साथ आनन्द मनाओ;
क्योंकि वह अपने दासों के लोहू
का पलटा लेगा,
और अपने द्रोहियों को बदला
देगा,
और अपने देश और अपनी प्रजा
के पाप के लिये प्रायश्चित्त देगा।

४४ इस गीत के सब वचन मूसा ने नून के पुत्र होशे समेत आकर लोगों को सुनाए। ४५ जब मूसा ये सब वचन सब इस्राएलियों से कह चुका, ४६ तब उस ने उन से कहा, कि जितनी बातें मैं आज तुम से चिताकर कहता हूं उन सब पर अपना अपना मन लगाओ, और उनके अर्थात् इस व्यवस्था की सारी बातों के मानने में चौकसी करने की आज्ञा अपने लड़केबालों को दो। ४७ क्योंकि यह तुम्हारे लिये व्यर्थ काम नहीं, परन्तु तुम्हारा जीवन ही है, और ऐसा करने से उस देश में तुम्हारी आयु के दिन बहुत होंगे, जिसके अधिकारी होने को तुम यरदन पार जा रहे हो॥

४८ फिर उसी दिन यहोवा ने मूसा से कहा, ४९ उस अबारीम पहाड़ की नबो नाम चोटी पर, जो मोआब देश में यरीहो के साम्हने है, चढ़कर कनान देश जिसे मैं इस्राएलियों की निज भूमि कर देता हूं उसको देख ले। ५० तब जैसा तेरा भाई हारून होर पहाड़ पर मरकर अपने लोगों में मिल गया, वैसा ही तू इस पहाड़ पर चढ़कर मर जाएगा, और अपने लोगों में मिल जाएगा। ५१ इसका कारण यह है, कि सीन जंगल में, कादेश के मरीबा नाम सोते पर, तुम दोनों ने मेरा अपराध किया, क्योंकि तुम ने इस्राएलियों के मध्य में मुझे पवित्र न ठहराया। ५२ इसलिये वह देश जो मैं इस्राएलियों को देता हूं, तू अपने साम्हने देख लेगा, परन्तु वहां जाने न पाएगा॥

(मूसा का इस्राएलियों को दिया हुआ आशीर्वाद)

३३ जो आशीर्वाद परमेश्वर के जन मूसा ने अपनी मृत्यु से पहिले इस्राएलियों को दिया वह यह है॥

२ उस ने कहा,
यहोवा सीनै से आया,
और सेईर से उनके लिये उदय
हुआ;
उस ने पारान पर्वत पर से अपना
तेज दिखाया,
और लाखों पवित्रों के मध्य में से
आया,

उसके दहिने हाथ से उनके लिये
ज्वालामय विधियां निकलीं॥
३ वह निश्चय देश देश के लोगों से
प्रेम करता है;
उसके सब पवित्र लोग तेरे हाथ
में हैं:
वे तेरे पांवों के पास बैठे रहते
हैं,
एक एक तेरे वचनों से लाभ उठाता
है॥
४ मूसा ने हमें व्यवस्था दी,
और याकूब की मण्डली का निज
भाग ठहरी॥
५ जब प्रजा के मुख्य मुख्य पुरुष,
और इस्राएल के गोत्री एक संग
होकर एकत्रित हुए, तब वह
यशूरून में राजा ठहरा॥
६ रूबेन न मरे, वरन जीवित रहे,
तौभी उसके यहां के मनुष्य थोड़े
हों॥
७ और यहूदा पर यह आशीर्वाद
हुआ जो मूसा ने कहा,
हे यहोवा, तू यहूदा की सुन,
और उसे उसके लोगों के पास
पहुंचा।
वह अपने लिये आप अपने हाथों
से लड़ा,
और तू ही उसके द्रोहियों के विरुद्ध
उसका सहायक हो॥
८ फिर लेवी के विषय में उस ने
कहा,
तेरे तुम्मीम और ऊरीम तेरे भक्त
के पास हैं, जिसको तू ने मस्सा
में परख लिया,
और जिसके साथ मरीबा नाम
सोते पर तेरा वादविवाद हुआ;
९ उस ने तो अपने माता पिता के
विषय में कहा, कि मैं उनको
नहीं जानता;
और न तो उस ने अपने भाइयों
को अपना माना,
और न अपने पुत्रों को पहिचाना।
क्योंकि उन्हों ने तेरी बातें मानीं,
और वे तेरी वाचा का पालन
करते हैं॥
१० वे याकूब को तेरे नियम,
और इस्राएल को तेरी व्यवस्था
सिखाएंगे;
और तेरे आगे धूप,
और तेरी वेदी पर सर्वाङ्ग पशु
को होमबलि करेंगे॥
११ हे यहोवा, उसकी सम्पत्ति पर
आशीष दे,
और उसके हाथों की सेवा को
ग्रहण कर;
उसके विरोधियों और बैरियों की
कमर पर ऐसा मार, कि वे फिर
न उठ सकें॥
१२ फिर उस ने बिन्यामीन के विषय
में कहा,
यहोवा का वह प्रिय जन, उसके
पास निडर वास करेगा;
और वह दिन भर उस पर छाया
करेगा,
और वह उसके कन्धों के बीच रहा
करता है॥
१३ फिर यूसुफ के विषय में उस ने
कहा;
इसका देश यहोवा से आशीष पाए,
अर्थात् आकाश के अनमोल पदार्थ
और ओस,
और वह गहिरा जल जो नीचे है,

१४ और सूर्य के पकाए हुए अनमोल फल,
और जो अनमोल पदार्थ चंद्रमा के उगाए उगते हैं,
१५ और प्राचीन पहाड़ों के उत्तम पदार्थ,
और सनातन पहाड़ियों के अनमोल पदार्थ,
१६ और पृथ्वी और जो अनमोल पदार्थ उस में भरे हैं,
और जो झाड़ी में रहता था उसकी प्रसन्नता।
इन सभों के विषय में यूसुफ के सिर पर,
अर्थात् उसी के सिर के चांद पर जो अपने भाइयों से न्यारा हुआ था आशीष ही आशीष फले॥
१७ वह प्रतापी है, मानो गाय का पहिलौठा है,
और उसके सींग बनैले बैल के से हैं;
उन से वह देश देश के लोगों को, वरन पृथ्वी के छोर तक के सब मनुष्यों को ढकेलेगा;
वे एप्रैम के लाखों लाख,
और मनश्शे के हज़ारों हज़ार हैं॥
१८ फिर जबूलून के विषय में उस ने कहा,
हे जबूलून, तू बाहर निकलते समय,
और हे इस्साकार, तू अपने डेरों में आनन्द करे॥
१९ वे देश देश के लोगों को पहाड़ पर बुलाएंगे;
वे वहां धर्मयज्ञ करेंगे;
क्योंकि वे समुद्र का धन,
और बालू में छिपे हुए अनमोल पदार्थ से लाभ उठाएंगे॥
२० फिर गाद के विषय में उस ने कहा,
धन्य वह है जो गाद को बढ़ाता है!
गाद तो सिंहनी के समान रहता है,
और बांह को, वरन सिर के चांद तक को फाड़ डालता है॥
२१ और उस ने पहिला अंश तो अपने लिये चुन लिया,
क्योंकि वहां रईस के योग्य भाग रखा हुआ था;
तब उस ने प्रजा के मुख्य मुख्य पुरुषों के संग आकर
यहोवा का ठहराया हुआ धर्म,
और इस्राएल के साथ होकर उसके नियम का प्रतिपालन किया॥
२२ फिर दान के विषय में उस ने कहा,
दान तो बाशान से कूदनेवाला सिंह का बच्चा है॥
२३ फिर नप्ताली के विषय में उस ने कहा,
हे नप्ताली, तू जो यहोवा की प्रसन्नता से तृप्त,
और उसकी आशीष से भरपूर है,
तू पच्छिम और दक्खिन के देश का अधिकारी हो॥
२४ फिर आशेर के विषय में उस ने कहा,
आशेर पुत्रों के विषय में आशीष पाए;
वह अपने भाइयों में प्रिय रहे,
और अपना पांव तेल में डुबोए॥

२५ तेरे जूते लोहे और पीतल के होंगे,
और जैसे तेरे दिन वैसी ही तेरी शक्ति हो * ।।

२६ हे यशूरून, ईश्वर के तुल्य और कोई नहीं है,
वह तेरी सहायता करने को आकाश पर,
और अपना प्रताप दिखाता हुआ आकाशमण्डल पर सवार होकर चलता है।।

२७ अनादि परमेश्वर तेरा गृहधाम है,
और नीचे सनातन भुजाएं हैं।
वह शत्रुओं को तेरे साम्हने से निकाल देता,
और कहता है, उनको सत्यानाश कर दे।।

२८ और इस्राएल निडर बसा रहता है,
अन्न और नये दाखमधु के देश में याक़ूब का सोता अकेला ही रहता है;
और उसके ऊपर के आकाश से ओस पड़ा करती है।।

२९ हे इस्राएल, तू क्या ही धन्य है !
हे यहोवा से उद्धार पाई हुई प्रजा, तेरे तुल्य कौन है ?
वह तो तेरी सहायता के लिये ढाल,
और तेरे प्रताप के लिये तलवार है; तेरे शत्रु तुझे सराहेंगे,
और तू उनके ऊंचे स्थानों को रौंदेगा।।

(मूसा की मृत्यु)

३४ फिर मूसा मोआब के अराबा से नबो पहाड़ पर, जो पिसगा की एक चोटी और यरीहो के साम्हने है, चढ़ गया; और यहोवा ने उसको दान तक का गिलाद नाम सारा देश, २ और नप्ताली का सारा देश, और एप्रैम और मनश्शे का देश, और पच्छिम के समुद्र तक का यहूदा का सारा देश, ३ और दक्खिन देश, और सोअर तक की यरीहो नाम खजूरवाले नगर की तराई, यह सब दिखाया। ४ तब यहोवा ने उस से कहा, जिस देश के विषय में मैं ने इब्राहीम, इसहाक, और याक़ूब से शपथ खाकर कहा था, कि मैं इसे तेरे वंश को दूंगा वह यही है। मैं ने इसको तुझे साक्षात दिखला दिया है, परन्तु तू पार होकर वहां जाने न पाएगा। ५ तब यहोवा के कहने के अनुसार उसका दास मूसा वहीं मोआब के देश में मर गया, ६ और उस ने उसे मोआब के देश में बेतपोर के साम्हने एक तराई में मिट्टी दी; और आज के दिन तक कोई नहीं जानता कि उसकी कब्र कहां है। ७ मूसा अपनी मृत्यु के समय एक सौ बीस वर्ष का था; परन्तु न तो उसकी आंखें धुंधली पड़ीं, और न उसका पौरुष घटा था। ८ और इस्राएली मोआब के अराबा में मूसा के लिये तीस दिन तक रोते रहे; तब मूसा के लिये रोने और विलाप करने के दिन पूरे हुए। ९ और नून का पुत्र यहोशू बुद्धिमानी की आत्मा से परिपूर्ण था, क्योंकि मूसा ने अपने हाथ उस पर रखे थे; और इस्राएली उस आज्ञा के अनुसार जो यहोवा ने मूसा को दी थी उसकी मानते रहे। १० और मूसा के तुल्य इस्राएल में ऐसा कोई नबी नहीं उठा, जिस से यहोवा ने आम्हने-साम्हने बातें कीं, * ११ और उसको यहोवा ने

* मूल में—जैसे तेरे दिन वैसा तेरा चैन।

* मूल में—उसको आम्हने-साम्हने जाना।

फ़िरौन और उसके सब कर्मचारियों के साम्हने, और उसके सारे देश में, सब चिन्ह और चमत्कार करने को भेजा था, १२ और उस ने सारे इस्राएलियों की दृष्टि में बलवन्त हाथ और बड़े भय के काम कर दिखाए॥

यहोशू

(यहोशू का हियाव बन्धाया जाना)

१ यहोवा के दास मूसा की मृत्यु के बाद यहोवा ने उसके सेवक यहोशू से जो नून का पुत्र था कहा, २ मेरा दास मूसा मर गया है; सो अब तू उठ, कमर बान्ध, और इस सारी प्रजा समेत यरदन पार होकर उस देश को जा जिसे मैं उनको अर्थात् इस्राएलियों को देता हूं। ३ उस वचन के अनुसार जो मैं ने मूसा से कहा, अर्थात् जिस जिस स्थान पर तुम पांव धरोगे वह सब मैं तुम्हें दे देता हूं। ४ जंगल और उस लबानोन से लेकर परात महानद तक, और सूर्यास्त की ओर महासमुद्र तक हित्तियों का सारा देश तुम्हारा भाग ठहरेगा। ५ तेरे जीवन भर कोई तेरे साम्हने ठहर न सकेगा; जैसे मैं मूसा के संग रहा वैसे ही तेरे संग भी रहूंगा; और न तो मैं तुझे धोखा दूंगा, और तुझ को छोड़ूंगा। ६ इसलिये हियाव बान्धकर दृढ़ हो जा; क्योंकि जिस देश के देने की शपथ मैं ने इन लोगों के पूर्वजों से खाई थी उसका अधिकारी तू इन्हें करेगा। ७ इतना हो कि तू हियाव बान्धकर और बहुत दृढ़ होकर जो व्यवस्था मेरे दास मूसा ने तुझे दी है उन सब के अनुसार करने में चौकसी करना; और उस से न तो दहिने मुड़ना और न बाएं, तब जहां जहां तू जाएगा वहां वहां तेरा काम सुफल होगा। ८ व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, * इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना, इसलिये कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सुफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा। ९ क्या मैं ने तुझे आज्ञा नहीं दी? हियाव बान्धकर दृढ़ हो जा; भय न खा, और तेरा मन कच्चा न हो; क्योंकि जहां जहां तू जाएगा वहां वहां तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहेगा॥

(चढ़ाई गोत्रों का आज्ञा मानना)

१० तब यहोशू ने प्रजा के सरदारों को यह आज्ञा दी, ११ कि छावनी में इधर उधर जाकर प्रजा के लोगों को यह आज्ञा दो, कि अपने अपने लिये भोजन तैयार कर रखो; क्योंकि तीन दिन के भीतर तुम को इस यरदन के पार उतरकर उस देश को अपने अधिकार में लेने के लिये जाना है जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे अधिकार में देनेवाला है॥

---

* मूल में—पुस्तक तेरे मुंह से न हटे।

१२ फिर यहोशू ने रूबेनियों, गादियों, और मनश्शे के आधे गोत्र के लोगों से कहा, १३ जो बात यहोवा के दास मूसा ने तुम से कही थी, कि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें विश्राम देता है, और यही देश तुम्हें देगा, उसकी सुधि करो। १४ तुम्हारी स्त्रियां, बालबच्चे, और पशु तो इस देश में रहें जो मूसा ने तुम्हें यरदन के इसी पार दिया, परन्तु तुम जो शूरवीर हो पांति बान्धे हुए अपने भाइयों के आगे आगे पार उतर चलो, और उनकी सहायता करो; १५ और जब यहोवा उनको ऐसा विश्राम देगा जैसा वह तुम्हें दे चुका है, और वे भी तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के दिए हुए देश के अधिकारी हो जाएंगे; तब तुम अपने अधिकार के देश में, जो यहोवा के दास मूसा ने यरदन के इस पार सूर्योदय की ओर तुम्हें दिया है, लौटकर इसके अधिकारी होगे। १६ तब उन्हों ने यहोशू को उत्तर दिया, कि जो कुछ तू ने हमें करने की आज्ञा दी है वह हम करेंगे, और जहां कहीं तू हमें भेजे वहां हम जाएंगे। १७ जैसे हम सब बातों में मूसा की मानते थे वैसे ही तेरी भी माना करेंगे; इतना हो कि तेरा परमेश्वर यहोवा जैसा मूसा के संग रहता था वैसा ही तेरे संग भी रहे। १८ कोई क्यों न हो जो तेरे विरुद्ध बलवा करे, और जितनी आज्ञाएं तू दे उनको न माने, तो वह मार डाला जाएगा। परन्तु तू दृढ़ और हियाव बान्धे रह॥

(यरीहो का भेद लिया जाना)

२ तब नून के पुत्र यहोशू ने दो भेदियों को शित्तीम से चुपके से भेज दिया, और उन से कहा, जाकर उस देश और यरीहो को देखो। तुरन्त वे चल दिए, और राहाब नाम किसी वेश्या के घर में जाकर सो गए। २ तब किसी ने यरीहो के राजा से कहा, कि आज की रात कई एक इस्राएली हमारे देश का भेद लेने को यहां आए हुए हैं। ३ तब यरीहो के राजा ने राहाब के पास यों कहला भेजा, कि जो पुरुष तेरे यहां आए हैं उन्हें बाहर ले आ; क्योंकि वे सारे देश का भेद लेने को आए हैं। ४ उस स्त्री ने दोनों पुरुषों को छिपा रखा; और इस प्रकार कहा, कि मेरे पास कई पुरुष आए तो थे, परन्तु मैं नहीं जानती कि वे कहां के थे; ५ और जब अन्धेरा हुआ, और फाटक बन्द होने लगा, तब वे निकल गए; मुझे मालूम नहीं कि वे कहां गए; तुम फुर्ती करके उनका पीछा करो तो उन्हें जा पकड़ोगे। ६ उस ने उनको घर की छत पर चढ़ाकर सनई की लकड़ियों के नीचे छिपा दिया था जो उस ने छत पर सजा कर रखी थी। ७ वे पुरुष तो यरदन का मार्ग ले उनकी खोज में घाट तक चले गए; और ज्यों ही उनको खोजनेवाले फाटक से निकले त्यों ही फाटक बन्द किया गया। ८ और ये लेटने न पाए थे कि वह स्त्री छत पर इनके पास जाकर ९ इन पुरुषों से कहने लगी, मुझे तो निश्चय है कि यहोवा ने तुम लोगों को यह देश दिया है, और तुम्हारा भय हम लोगों के मन में समाया है, और इस देश के सब निवासी तुम्हारे कारण घबरा रहे हैं*। १० क्योंकि हम ने सुना है कि यहोवा ने तुम्हारे मिस्र से निकलने के समय तुम्हारे साम्हने लाल समुद्र का जल सुखा दिया। और तुम लोगों ने सीहोन और ओग नाम यरदन पार रहनेवाले एमोरियों के दोनों राजाओं को सत्यानाश कर डाला है।

* मूल में—पिघल गए।

११ और यह सुनते ही हमारा मन पिघल गया, और तुम्हारे कारण किसी के जी में जी न रहा; क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा ऊपर के आकाश का और नीचे की पृथ्वी का परमेश्वर है। १२ अब मैं ने जो तुम पर दया की है, इसलिये मुझ से यहोवा की शपथ खाओ कि तुम भी मेरे पिता के घराने पर दया करोगे, और इसकी सच्ची चिन्हानी मुझे दो, १३ कि तुम मेरे माता-पिता, भाइयों और बहिनों को, और जो कुछ उनका है उन सभों को भी जीवित रख छोड़ो, और हम सभों का प्राण मरने से बचाओगे। १४ तब उन पुरुषों ने उस से कहा, यदि तू हमारी यह बात किसी पर प्रगट न करे, तो तुम्हारे प्राण के बदले हमारा प्राण जाए; और जब यहोवा हम को यह देश देगा, तब हम तेरे साथ कृपा और सच्चाई से बर्ताव करेंगे। १५ तब राहाब जिसका घर शहरपनाह पर बना था, और वह वहीं रहती थी, उस ने उनको खिड़की से रस्सी के बल उतारके नगर के बाहर कर दिया। १६ और उस ने उन से कहा, पहाड़ को चले जाओ, ऐसा न हो कि खोजनेवाले तुम को पाएं; इसलिये जब तक तुम्हारे खोजनेवाले लौट न आएं तब तक, अर्थात् तीन दिन वहीं छिपे रहना, उसके बाद अपना मार्ग लेना। १७ उन्हों ने उस से कहा, जो शपथ तू ने हम को खिलाई है उसके विषय में हम तो निर्दोष रहेंगे। १८ सुन, जब हम लोग इस देश में आएंगे, तब जिस खिड़की से तू ने हम को उतारा है उस में यही लाल रंग के सूत की डोरी बान्ध देना; और अपने माता-पिता, भाइयों, वरन अपने पिता के सारे घराने को इसी घर में अपने पास इकट्ठा कर रखना। १९ तब जो कोई तेरे घर के द्वार से बाहर निकले, उसके खून का दोष उसी के सिर पड़ेगा, और हम निर्दोष ठहरेंगे: परन्तु यदि तेरे संग घर में रहते हुए किसी पर किसी का हाथ पड़े, तो उसके खून का दोष हमारे सिर पर पड़ेगा। २० फिर यदि तू हमारी यह बात किसी पर प्रगट करे, तो जो शपथ तू ने हम को खिलाई है उस से हम निर्बन्ध ठहरेंगे। २१ उस ने कहा, तुम्हारे वचनों के अनुसार हो। तब उस ने उनको विदा किया, और वे चले गए; और उस ने लाल रंग की डोरी को खिड़की में बान्ध दिया। २२ और वे जाकर पहाड़ पर पहुंचे, और वहां खोजनेवालों के लौटने तक, अर्थात् तीन दिन तक रहे; और खोजनेवाले उनको सारे मार्ग में ढूंढ़ते रहे और कहीं न पाया। २३ तब वे दोनों पुरुष पहाड़ से उतरे, और पार जाकर नून के पुत्र यहोशू के पास पहुंचकर जो कुछ उन पर बीता था उसका वर्णन किया। २४ और उन्हों ने यहोशू से कहा, निःसन्देह यहोवा ने वह सारा देश हमारे हाथ में कर दिया है; फिर इसके सिवाय उसके सारे निवासी हमारे कारण घबरा रहे हैं*॥

(इस्राएलियों का यरदन पार उतर जाना)

३ बिहान को यहोशू सबेरे उठा, और सब इस्राएलियों को साथ ले शित्तीम से कूच कर यरदन के किनारे आया; और वे पार उतरने से पहिले वहीं टिक गए। २ और तीन दिन के बाद सरदारों ने छावनी के बीच जाकर ३ प्रजा के लोगों को यह आज्ञा दी, कि जब तुम को अपने परमेश्वर यहोवा की वाचा का सन्दूक और उसे उठाए हुए लेवीय याजक भी देख पड़ें, तब अपने स्थान से कूच करके उसके पीछे पीछे चलना, ४ परन्तु उसके और तुम्हारे बीच में दो

* मूल में—पिघल गए।

हज़ार हाथ के अटकल अन्तर रहे; तुम सन्दूक के निकट न जाना। ताकि तुम देख सको, कि किस मार्ग से तुम को चलना है, क्योंकि अब तक तुम इस मार्ग पर होकर नहीं चले। ५ फिर यहोशू ने प्रजा के लोगों से कहा, तुम अपने आप को पवित्र करो; क्योंकि कल के दिन यहोवा तुम्हारे मध्य में आश्चर्यकर्म करेगा। ६ तब यहोशू ने याजकों से कहा, वाचा का सन्दूक उठाकर प्रजा के आगे आगे चलो। तब वे वाचा का सन्दूक उठाकर आगे आगे चले। ७ तब यहोवा ने यहोशू से कहा, आज के दिन से मैं सब इस्राएलियों के सम्मुख तेरी प्रशंसा करना आरम्भ करूंगा, जिस से वे जान लें कि जैसे मैं मूसा के संग रहता था वैसे ही मैं तेरे संग भी हूं। ८ और तू वाचा के सन्दूक के उठानेवाले याजकों को यह आज्ञा दे, कि जब तुम यरदन के जल के किनारे पहुंचो, तब यरदन में खड़े रहना॥

९ तब यहोशू ने इस्राएलियों से कहा, कि पास आकर अपने परमेश्वर यहोवा के वचन सुनो। १० और यहोशू कहने लगा, कि इस से तुम जान लोगे कि जीवित ईश्वर तुम्हारे मध्य में है, और वह तुम्हारे साम्हने से निःसन्देह कनानियों, हित्तियों, हिव्वियों, परिज्जियों, गिर्गाशियों, एमोरियों, और यबूसियों को उनके देश में से निकाल देगा। ११ सुनो, पृथ्वी भर के प्रभु की वाचा का सन्दूक तुम्हारे आगे आगे यरदन में जाने पर है। १२ इसलिये अब इस्राएल के गोत्रों में से बारह पुरुषों को चुन लो, वे एक एक गोत्र में से एक पुरुष हो। १३ और जिस समय पृथ्वी भर के प्रभु यहोवा की वाचा का सन्दूक उठानेवाले याजकों के पांव यरदन के जल में पड़ेंगे, उस समय यरदन का ऊपर से बहता हुआ जल थम जाएगा, और ढेर होकर ठहरा रहेगा। १४ सो जब प्रजा के लोगों ने अपने डेरों से यरदन पार जाने को कूच किया, और याजक वाचा का सन्दूक उठाए हुए प्रजा के आगे आगे चले, १५ और सन्दूक के उठानेवाले यरदन पर पहुंचे, और सन्दूक के उठानेवाले याजकों के पांव यरदन के तीर के जल में डूब गए (यरदन का जल तो कटनी के समय के सब दिन कड़ारों के ऊपर ऊपर बहा करता है), १६ तब जो जल ऊपर की ओर से बहा आता था वह बहुत दूर, अर्थात् आदाम नगर के पास जो सारतान के निकट है रुककर एक ढेर हो गया, और दीवार सा उठा रहा, और जो जल अराबा का ताल, जो खारा ताल भी कहलाता है, उसकी ओर बहा जाता था, वह पूरी रीति से सूख गया; और प्रजा के लोग यरीहो के साम्हने पार उतर गए। १७ और याजक यहोवा की वाचा का सन्दूक उठाए हुए यरदन के बीचोबीच पहुंचकर स्थल पर स्थिर खड़े रहे, और सब इस्राएली स्थल ही स्थल पार उतरते रहे, निदान उस सारी जाति के लोग यरदन पार हो गए॥

४ जब उस सारी जाति के लोग यरदन के पार उतर चुके, तब यहोवा ने यहोशू से कहा, २ प्रजा में से बारह पुरुष, अर्थात् गोत्र पीछे एक एक पुरुष को चुनकर यह आज्ञा दे, ३ कि तुम यरदन के बीच में, जहां याजकों ने पांव धरे थे वहां से बारह पत्थर उठाकर अपने साथ पार ले चलो, और जहां आज की रात पड़ाव होगा वहीं उनको रख देना। ४ तब यहोशू ने उन बारह पुरुषों को, जिन्हें उस ने इस्राएलियों के प्रत्येक गोत्र में से छांटकर ठहरा रखा था, ५ बुलवाकर कहा, तुम अपने परमेश्वर

यहोवा के सन्दूक के आगे यरदन के बीच में जाकर इस्राएलियों के गोत्रों की गिनती के अनुसार एक एक पत्थर उठाकर अपने अपने कन्धे पर रखो, ६ जिस से यह तुम लोगों के बीच चिन्हानी ठहरे, और आगे को जब तुम्हारे बेटे यह पूछें, कि इन पत्थरों का क्या मतलब है? ७ तब तुम उन्हें यह उत्तर दो, कि यरदन का जल यहोवा की वाचा के सन्दूक के साम्हने से दो भाग हो गया था; क्योंकि जब वह यरदन पार आ रहा था, तब यरदन का जल दो भाग हो गया। सो वे पत्थर इस्राएल को सदा के लिये स्मरण दिलानेवाले ठहरेंगे। ८ यहोशू की इस आज्ञा के अनुसार इस्राएलियों ने किया, जैसा यहोवा ने यहोशू से कहा था वैसा ही उन्हों ने इस्राएली गोत्रों की गिनती के अनुसार बारह पत्थर यरदन के बीच में से उठा लिए; और उनको अपने साथ ले जाकर पड़ाव में रख दिया। ९ और यरदन के बीच, जहां याजक वाचा के सन्दूक को उठाए हुए अपने पांव धरे थे वहां यहोशू ने बारह पत्थर खड़े कराए; वे आज तक वहीं पाए जाते हैं। १० और याजक सन्दूक उठाए हुए उस समय तक यरदन के बीच खड़े रहे जब तक वे सब बातें पूरी न हो चुकीं, जिन्हें यहोवा ने यहोशू को लोगों से कहने की आज्ञा दी थी। तब सब लोग फुर्ती से पार उतर गए; ११ और जब सब लोग पार उतर चुके, तब याजक और यहोवा का सन्दूक भी उनके देखते पार हुए। १२ और रूबेनी, गादी, और मनश्शे के आधे गोत्र के लोग मूसा के कहने के अनुसार इस्राएलियों के आगे पांति बान्धे हुए पार गए; १३ अर्थात् कोई चालीस हज़ार पुरुष युद्ध के हथियार बान्धे हुए संग्राम करने के लिये यहोवा के साम्हने पार उतरकर यरीहो के पास के अराबा में पहुंचे। १४ उस दिन यहोवा ने सब इस्राएलियों के साम्हने यहोशू की महिमा बढ़ाई; और जैसे वे मूसा का भय मानते थे वैसे ही यहोशू का भी भय उसके जीवन भर मानते रहे॥

१५ और यहोवा ने यहोशू से कहा, १६ कि साक्षी का सन्दूक उठानेवाले याजकों को आज्ञा दे कि यरदन में से निकल आएं। १७ तो यहोशू ने याजकों को आज्ञा दी, कि यरदन में से निकल आओ। १८ और ज्यों ही यहोवा की वाचा का सन्दूक उठानेवाले याजक यरदन के बीच में से निकल आए, और उनके पांव स्थल पर पड़े, त्यों ही यरदन का जल अपने स्थान पर आया, और पहिले की नाईं कड़ारों के ऊपर फिर बहने लगा। १९ पहिले महीने के दसवें दिन को प्रजा के लोगों ने यरदन में से निकलकर यरीहो के पूर्वी सिवाने पर गिलगाल में अपने डेरे डाले। २० और जो बारह पत्थर यरदन में से निकाले गए थे, उनको यहोशू ने गिलगाल में खड़े किए। २१ तब उस ने इस्राएलियों से कहा, आगे को जब तुम्हारे लड़केबाले अपने अपने पिता से यह पूछें, कि इन पत्थरों का क्या मतलब है? २२ तब तुम यह कहकर उनको बताना, कि इस्राएली यरदन के पार स्थल ही स्थल चले आए थे। २३ क्योंकि जैसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने लाल समुद्र को हमारे पार हो जाने तक हमारे साम्हने से हटाकर सुखा रखा था, वैसे ही उस ने यरदन का भी जल तुम्हारे पार हो जाने तक तुम्हारे साम्हने से हटाकर सुखा रखा; २४ इसलिये कि पृथ्वी के सब देशों के लोग जान लें कि यहोवा का हाथ बलवन्त है; और तुम सर्वदा अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानते रहो॥

(इस्राएलियों का खतना किया जाना और फसह मानना)

५ जब यरदन के पच्छिम की ओर रहनेवाले एमोरियों के सब राजाओं ने, और समुद्र के पास रहनेवाले कनानियों के सब राजाओं ने यह सुना, कि यहोवा ने इस्राएलियों के पार होने तक उनके साम्हने से यरदन का जल हटाकर सुखा रखा है, तब इस्राएलियों के डर के मारे उनका मन घबरा * गया, और उनके जी में जी न रहा॥

२ उस समय यहोवा ने यहोशू से कहा, चकमक की छुरियां बनवाकर दूसरी बार इस्राएलियों का खतना करा दे। ३ तब यहोशू ने चकमक की छुरियां बनवाकर खलड़ियां नाम टीले पर इस्राएलियों का खतना कराया। ४ और यहोशू ने जो खतना कराया, इसका कारण यह है, कि जितने युद्ध के योग्य पुरुष मिस्र से निकले थे वे सब मिस्र से निकलने पर जंगल के मार्ग में मर गए थे। ५ जो पुरुष मिस्र से निकले थे उन सब का तो खतना हो चुका था, परन्तु जितने उनके मिस्र से निकलने पर जंगल के मार्ग में उत्पन्न हुए उन में से किसी का खतना न हुआ था। ६ क्योंकि इस्राएली तो चालीस वर्ष तक जंगल में फिरते रहे, जब तक उस सारी जाति के लोग, अर्थात् जितने युद्ध के योग्य लोग मिस्र से निकले थे वे नाश न हो गए, क्योंकि उन्हों ने यहोवा की न मानी थी; सो यहोवा ने शपथ खाकर उन से कहा था, कि जो देश मैं ने तुम्हारे पूर्वजों से शपथ खाकर तुम्हें देने को कहा था, और उस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं, वह देश मैं तुम को नहीं दिखाने का। ७ तो उन लोगों के पुत्र जिनको यहोवा ने उनके स्थान पर उत्पन्न किया था, उनका खतना यहोशू से कराया, क्योंकि मार्ग में उनके खतना न होने के कारण वे खतनारहित थे। ८ और जब उस सारी जाति के लोगों का खतना हो चुका, तब वे चंगे हो जाने तक अपने अपने स्थान पर छावनी में रहे। ९ तब यहोवा ने यहोशू से कहा, तुम्हारी नामधराई जो मिस्रियों में हुई है उसे मैं ने आज दूर की है।* इस कारण उस स्थान का नाम आज के दिन तक गिलगाल † पड़ा है॥

१० सो इस्राएली गिलगाल में डेरे डाले हुए रहे, और उन्हों ने यरीहो के पास के अराबा में पूर्णमासी की सन्ध्या के समय फसह माना। ११ और फसह के दूसरे दिन वे उस देश की उपज में से अखमीरी रोटी और उसी दिन से भुना हुआ दाना भी खाने लगे। १२ और जिस दिन वे उस देश की उपज में से खाने लगे, उसी दिन के बिहान को मन्ना बन्द हो गया; और इस्राएलियों को आगे फिर कभी मन्ना न मिला, परन्तु उस वर्ष उन्हों ने कनान देश की उपज में से खाई॥

(यरीहो का ले लिया जाना)

१३ जब यहोशू यरीहो के पास था तब उस ने अपनी आंखें उठाईं, और क्या देखा, कि हाथ में नंगी तलवार लिये हुए एक पुरुष साम्हने खड़ा है; और यहोशू ने उसके पास जाकर पूछा, क्या तू हमारी ओर का है, वा हमारे बैरियों की ओर का? १४ उस ने उत्तर दिया, कि नहीं; मैं यहोवा की सेना का प्रधान होकर अभी आया हूं। तब यहोशू ने पृथ्वी पर मुंह के बल गिरकर दण्डवत् किया,

* मूल में—गल।

* मूल में—लुढ़का दी है।
† अर्थात् लुढ़कना।

और उस से कहा, अपने दास के लिये मेरे प्रभु की क्या आज्ञा है? १५ यहोवा की सेना के प्रधान ने यहोशू से कहा, अपनी जूती पांव से उतार डाल, क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है वह पवित्र है। तब यहोशू ने वैसा ही किया॥

६ और यरीहो के सब फाटक इस्राएलियों के डर के मारे लगातार बन्द रहे, और कोई बाहर भीतर आने जाने नहीं पाता था। २ फिर यहोवा ने यहोशू से कहा, सुन, मैं यरीहो को उसके राजा और शूरवीरों समेत तेरे वश में कर देता हूं। ३ सो तुम में जितने योद्धा हैं नगर को घेर लें, और उस नगर के चारों ओर एक बार घूम आएं। और छः दिन तक ऐसा ही किया करना। ४ और सात याजक सन्दूक के आगे आगे जुबली * के सात नरसिंगे लिये हुए चलें; फिर सातवें दिन तुम नगर के चारों ओर सात बार घूमना, और याजक भी नरसिंगे फूंकते चलें। ५ और जब वे जुबली के नरसिंगे देर तक फूंकते रहें, तब सब लोग नरसिंगे का शब्द सुनते ही बड़ी ध्वनि से जयजयकार करें; तब नगर की शहरपनाह नेव से गिर जाएगी, और सब लोग अपने अपने साम्हने चढ़ जाएं। ६ सो नून के पुत्र यहोशू ने याजकों को बुलवाकर कहा, वाचा के सन्दूक को उठा लो, और सात याजक यहोवा के सन्दूक के आगे आगे जुबली के सात नरसिंगे लिए चलें। ७ फिर उस ने लोगों से कहा, आगे बढ़कर नगर के चारों ओर घूम आओ; और हथियारबन्द पुरुष यहोवा के सन्दूक के आगे आगे चलें। ८ और जब यहोशू ये बातें लोगों से कह चुका, तो वे सात याजक जो यहोवा के साम्हने सात नरसिंगे लिए हुए थे नरसिंगे फूंकते हुए चले, और यहोवा की वाचा का सन्दूक उनके पीछे पीछे चला। ९ और हथियारबन्द पुरुष नरसिंगे फूंकनेवाले याजकों के आगे आगे चले, और पीछेवाले सन्दूक के पीछे पीछे चले, और याजक नरसिंगे फूंकते हुए चले। १० और यहोशू ने लोगों को आज्ञा दी, कि जब तक मैं तुम्हें जयजयकार करने की आज्ञा न दूं, तब तक जयजयकार न करो, और न तुम्हारा कोई शब्द सुनने में आए, न कोई बात तुम्हारे मुंह से निकलने पाए; आज्ञा पाते ही जयजयकार करना। ११ उस ने यहोवा के सन्दूक को एक बार नगर के चारों ओर घुमवाया; तब वे छावनी में आए, और रात वहीं काटी॥

१२ बिहान को यहोशू सवेरे उठा, और याजकों ने यहोवा का सन्दूक उठा लिया। १३ और उन सात याजकों ने जुबली * के सात नरसिंगे लिए और यहोवा के सन्दूक के आगे आगे फूंकते हुए चले; और उनके आगे हथियारबन्द पुरुष चले, और पीछेवाले यहोवा के सन्दूक के पीछे पीछे चले, और याजक नरसिंगे फूंकते चले गए। १४ इस प्रकार वे दूसरे दिन भी एक बार नगर के चारों ओर घूमकर छावनी में लौट आए। और इसी प्रकार उन्हों ने छः दिन तक किया। १५ फिर सातवें दिन वे भोर को बड़े तड़के उठकर उसी रीति से नगर के चारों ओर सात बार घूम आए; केवल उसी दिन वे सात बार घूमे। १६ तब सातवीं बार जब याजक नरसिंगे फूकते थे, तब यहोशू ने लोगों से कहा, जयजयकार करो; क्योंकि यहोवा ने यह नगर तुम्हें दे दिया है।

* मेढ़ों के सींगों के।

* मेढ़ों के सींगों के।

१७ और नगर और जो कुछ उस में है यहोवा के लिये अर्पण की वस्तु ठहरेगी; केवल राहाब वेश्या और जितने उसके घर में हों वे जीवित छोड़े जाएंगे, क्योंकि उस ने हमारे भेजे हुए दूतों को छिपा रखा था। १८ और तुम अर्पण की हुई वस्तुओं से सावधानी से अपने आप को अलग रखो, ऐसा न हो कि अर्पण की वस्तु ठहराकर पीछे उसी अर्पण की वस्तु में से कुछ ले लो, और इस प्रकार इस्राएली छावनी को भ्रष्ट करके उसे कष्ट में डाल दो। १९ सब चांदी, सोना, और जो पात्र पीतल और लोहे के हैं, वे यहोवा के लिये पवित्र हैं, और उसी के भण्डार में रखे जाएं। २० तब लोगों ने जयजयकार किया, और याजक नरसिंगे फूंकते रहे। और जब लोगों ने नरसिंगे का शब्द सुना तो फिर बड़ी ही ध्वनि से उन्हों ने जयजयकार किया, तब शहरपनाह नेव से गिर पड़ी, और लोग अपने अपने साम्हने से उस नगर में चढ़ गए, और नगर को ले लिया। २१ और क्या पुरुष, क्या स्त्री, क्या जवान, क्या बूढ़े, वरन बैल, भेड़-बकरी, गदहे, और जितने नगर में थे, उन सभों को उन्हों ने अर्पण की वस्तु जानकर तलवार से मार डाला। २२ तब यहोशू ने उन दोनों पुरुषों से जो उस देश का भेद लेने गए थे कहा, अपनी शपथ के अनुसार उस वेश्या के घर में जाकर उसको और जो उसके पास हों उन्हें भी निकाल ले आओ। २३ तब वे दोनों जवान भेदिए भीतर जाकर राहाब को, और उसके माता-पिता, भाइयों, और सब को जो उसके यहां रहते थे, वरन उसके सब कुटुम्बियों को निकाल लाए, और इस्राएल की छावनी से बाहर बैठा दिया। २४ तब उन्हों ने नगर को, और जो कुछ उस में था, सब को आग लगाकर फूंक दिया; केवल चांदी, सोना, और जो पात्र पीतल और लोहे के थे, उनको उन्हों ने यहोवा के भवन के भण्डार में रख दिया। २५ और यहोशू ने राहाब वेश्या और उसके पिता के घराने को, वरन उसके सब लोगों को जीवित छोड़ दिया; और आज तक उसका वंश इस्राएलियों के बीच में रहता है, क्योंकि जो दूत यहोशू ने यरीहो के भेद लेने को भेजे थे उनको उस ने छिपा रखा था। २६ फिर उसी समय यहोशू ने इस्राएलियों के सम्मुख शपथ रखी, और कहा, कि जो मनुष्य उठकर इस नगर यरीहो को फिर से बनाए वह यहोवा की ओर से शापित हो। जब वह उसकी नेव डालेगा तब तो उसका जेठा पुत्र मरेगा, और जब वह उसके फाटक लगवाएगा तब उसका छोटा पुत्र मर जाएगा *। २७ और यहोवा यहोशू के संग रहा; और यहोशू की कीर्ति उस सारे देश में फैल गई॥

(आकान का पाप)

७ परन्तु इस्राएलियों ने अर्पण की वस्तु के विषय में विश्वासघात किया; अर्थात् यहूदा गोत्र का आकान, जो जेरहवंशी जब्दी का पोता और कर्म्मी का पुत्र था, उस ने अर्पण की वस्तुओं में से कुछ ले लिया; इस कारण यहोवा का कोप इस्राएलियों पर भड़क उठा॥

२ और यहोशू ने यरीहो से ऐ नाम नगर के पास, जो बेतावेन से लगा हुआ बेतेल की पूर्व की ओर है, कितने पुरुषों को यह कहकर भेजा, कि जाकर देश का भेद ले आओ। और उन पुरुषों ने जाकर ऐ का भेद लिया।

* मूल में—वह अपने जेठे के बदले में उसकी नेव डालेगा, और अपने लहुरे के बदले में उसके फाटक खड़े करेगा।

३ और उन्हों ने यहोशू के पास लौटकर कहा, सब लोग वहां न जाएं, कोई दो वा तीन हज़ार पुरुष जाकर ऐ को जीत सकते हैं; सब लोगों को वहां जाने का कष्ट न दे, क्योंकि वे लोग थोड़े ही हैं। ४ इसलिये कोई तीन हज़ार पुरुष वहां गए; परन्तु ऐ के रहनेवालों के साम्हने से भाग आए, ५ तब ऐ के रहनेवालों ने उन में से कोई छत्तीस पुरुष मार डाले, और अपने फाटक से शबारीम तक उनका पीछा करके उतराई में उनको मारते गए। तब लोगों का मन पिघलकर* जल सा बन गया। ६ तब यहोशू ने अपने वस्त्र फाड़े, और वह और इस्राएली वृद्ध लोग यहोवा के सन्दूक के साम्हने मुंह के बल गिरकर पृथ्वी पर सांझ तक पड़े रहे; और उन्हों ने अपने अपने सिर पर धूल डाली। ७ और यहोशू ने कहा, हाय, प्रभु यहोवा, तू अपनी इस प्रजा को यरदन पार क्यों ले आया? क्या हमें एमोरियों के वश में करके नष्ट करने के लिये ले आया है? भला होता कि हम संतोष करके यरदन के उस पार रह जाते! ८ हाय, प्रभु मैं क्या कहूं, जब इस्राएलियों ने अपने शत्रुओं को पीठ दिखाई है! ९ क्योंकि कनानी वरन इस देश के सब निवासी यह सुनकर हम को घेर लेंगे, और हमारा नाम पृथ्वी पर से मिटा डालेंगे; फिर तू अपने बड़े नाम के लिये क्या करेगा? १० यहोवा ने यहोशू से कहा, उठ, खड़ा हो जा, तू क्यों इस भांति मुंह के बल पृथ्वी पर पड़ा है? ११ इस्राएलियों ने पाप किया है; और जो वाचा मैं ने उन से अपने साथ बन्धाई थी उसको उन्हों ने तोड़ दिया है, उन्हों ने अर्पण की वस्तुओं में से ले लिया, वरन चोरी भी की, और छल करके उसको अपने सामान में रख लिया है। १२ इस कारण इस्राएली अपने शत्रुओं के साम्हने खड़े नहीं रह सकते; वे अपने शत्रुओं को पीठ दिखाते हैं, इसलिये कि वे आप अर्पण की वस्तु बन गए हैं। और यदि तुम अपने मध्य में से अर्पण की वस्तु को सत्यानाश न कर डालोगे, तो मैं आगे को तुम्हारे संग नहीं रहूंगा। १३ उठ, प्रजा के लोगों को पवित्र कर, उन से कह, कि बिहान तक अपने अपने को पवित्र कर रखो; क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, कि हे इस्राएल, तेरे मध्य में अर्पण की वस्तु है; इसलिये जब तक तू अर्पण की वस्तु को अपने मध्य में से दूर न करे तब तक तू अपने शत्रुओं के साम्हने खड़ा न रह सकेगा। १४ इसलिये बिहान को तुम गोत्र गोत्र के अनुसार समीप खड़े किए जाओगे; और जिस गोत्र को यहोवा पकड़े वह एक एक कुल करके पास आए; और जिस कुल को यहोवा पकड़े सो घराना घराना करके पास आए; फिर जिस घराने को यहोवा पकड़े वह एक एक पुरुष करके पास आए। १५ तब जो पुरुष अर्पण की वस्तु रखे हुए पकड़ा जाएगा, वह और जो कुछ उसका हो सब आग में डालकर जला दिया जाए; क्योंकि उस ने यहोवा की वाचा को तोड़ा है, और इस्राएल में अनुचित कर्म किया है॥

१६ बिहान को यहोशू सवेरे उठकर इस्राएलियों को गोत्र गोत्र करके समीप लिवा ले गया, और यहूदा का गोत्र पकड़ा गया; १७ तब उस ने यहूदा के परिवार को समीप किया, और जेरहवंशियों का कुल पकड़ा गया; फिर जेरहवंशियों के घराने के एक एक पुरुष को समीप लाया, और जब्दी पकड़ा गया; १८ तब उस ने उसके घराने

---

* मूल में—गलकर।

के एक एक पुरुष को समीप खड़ा किया, और यहूदा गोत्र का आकान, जो जेरहवंशी जब्दी का पोता और कर्म्मी का पुत्र था, पकड़ा गया। १९ तब यहोशू आकान से कहने लगा, हे मेरे बेटे, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का आदर कर, और उसके आगे अंगीकार कर; और जो कुछ तू ने किया है वह मुझ को बता दे, और मुझ से कुछ मत छिपा। २० और आकान ने यहोशू को उत्तर दिया, कि सचमुच मैं ने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप किया है, और इस प्रकार मैं ने किया है. २१ कि जब मुझे लूट में शिनार देश का एक सुन्दर ओढ़ना, और दो सौ शेकेल चांदी, और पचास शेकेल सोने की एक ईंट देख पड़ी, तब मैं ने उनका लालच करके उन्हें रख लिया; वे मेरे डेरे के भीतर भूमि में गड़े हैं, और सब के नीचे चांदी है। २२ तब यहोशू ने दूत भेजे, और वे उस डेरे में दौड़े गए; और क्या देखा, कि वे वस्तुएं उसके डेरे में गड़ी हैं, और सब के नीचे चांदी है। २३ उनको उन्हों ने डेरे में से निकालकर यहोशू और सब इस्राएलियों के पास लाकर यहोवा के साम्हने रख दिया। २४ तब सब इस्राएलियों समेत यहोशू जेरहवंशी आकान को, और उस चांदी और ओढ़ने और सोने की ईंट को, और उसके बेटे-बेटियों को, और उसके बैलों, गदहों और भेड़-बकरियों को, और उसके डेरे को, निदान जो कुछ उसका था उन सब को आकोर नाम तराई में ले गया। २५ तब यहोशू ने उस से कहा, तू ने हमें क्यों कष्ट दिया है? आज के दिन यहोवा तुझी को कष्ट देगा। तब सब इस्राएलियों ने उसको पत्थरवाह किया; और उनको आग में डालकर जलाया, और उनके ऊपर पत्थर डाल दिए। २६ और उन्हों ने उसके ऊपर पत्थरों का बड़ा ढेर लगा दिया जो आज तक बना है; तब यहोवा का भड़का हुआ कोप शान्त हो गया। इस कारण उस स्थान का नाम आज तक आकोर * तराई पड़ा है॥

(ऐ नगर का ले लिया जाना)

८ तब यहोवा ने यहोशू से कहा, मत डर, और तेरा मन कच्चा न हो; कमर बान्धकर सब योद्धाओं को साथ ले, और ऐ पर चढ़ाई कर; सुन, मैं ने ऐ के राजा को उसकी प्रजा और उसके नगर और देश समेत तेरे वश में किया है। २ और जैसा तू ने यरीहो और उसके राजा से किया वैसा ही ऐ और उसके राजा के साथ भी करना; केवल तुम पशुओं समेत उसकी लूट तो अपने लिये ले सकोगे; इसलिये उस नगर के पीछे की ओर अपने पुरुष घात में लगा दो। ३ सो यहोशू ने सब योद्धाओं समेत ऐ पर चढ़ाई करने की तैयारी की; और यहोशू ने तीस हज़ार पुरुषों को जो शूरवीर थे चुनकर रात ही को आज्ञा देकर भेजा। ४ और उनको यह आज्ञा दी, कि सुनो, तुम उस नगर के पीछे की ओर घात लगाए बैठे रहना; नगर से बहुत दूर न जाना, और सब के सब तैयार रहना; ५ और मैं अपने सब साथियों समेत उस नगर के निकट जाऊंगा। और जब वे पहिले की नाईं हमारा साम्हना करने को निकलें, तब हम उनके आगे से भागेंगे; ६ तब वे यह सोचकर, कि वे पहिले की भांति हमारे साम्हने से भागे जाते हैं, हमारा पीछा करेंगे; इस प्रकार हम उनके साम्हने से भागकर उन्हें नगर से दूर निकाल ले जाएंगे; ७ तब तुम घात में से उठकर नगर को अपना कर

* अर्थात् कष्ट देना।

लेना; क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उसको तुम्हारे हाथ में कर देगा। ८ और जब नगर को ले लो, तब उस में आग लगा-कर फूंक देना, यहोवा की आज्ञा के अनुसार ही काम करना; सुनो, में ने तुम्हें आज्ञा दी है। ९ तब यहोशू ने उनको भेज दिया; और वे घात में बैठने को चले गए, और बेतेल और ऐ के मध्य में और ऐ की पश्चिम की ओर बैठे रहे; परन्तु यहोशू उस रात को लोगों के बीच टिका रहा॥

१० बिहान को यहोशू सवेरे उठा, और लोगों की गिनती लेकर इस्राएली वृद्ध लोगों समेत लोगों के आगे आगे ऐ की ओर चला। ११ और उसके संग के सब योद्धा चढ़ गए, और ऐ नगर के निकट पहुंचकर उसके साम्हने उत्तर की ओर डेरे डाल दिए, और उनके और ऐ के बीच एक तराई थी। १२ तब उस ने कोई पांच हज़ार पुरुष चुन-कर बेतेल और ऐ के मध्यस्त नगर की पश्चिम की ओर उनको घात में बैठा दिया। १३ और जब लोगों ने नगर की उत्तर ओर की सारी सेना को और उसकी पश्चिम ओर घात में बैठे हुओं को भी ठिकाने पर कर दिया, तब यहोशू उसी रात तराई के बीच गया। १४ जब ऐ के राजा ने यह देखा, तब वे फुर्ती करके सवेरे उठे, और राजा अपनी सारी प्रजा को लेकर इस्राएलियों के साम्हने उन से लड़ने को निकलकर ठहराए हुए स्थान पर जो अराबा के साम्हने है पहुंचा; और वह नहीं जानता था कि नगर की पिछली ओर लोग घात लगाए बैठे हैं। १५ तब यहोशू और सब इस्राएली उन से मानो हार मानकर जंगल का मार्ग लेकर भाग निकले। १६ तब नगर के सब लोग इस्राएलियों का पीछा करनेको पुकार पुकार-के बुलाए गए; और वे यहोशू का पीछा करते हुए नगर से दूर निकल गए। १७ और न ऐ में और न बेतेल में कोई पुरुष रह गया, जो इस्राएलियों का पीछा करने को न गया हो; और उन्हों ने नगर को खुला हुआ छोड़कर इस्राएलियों का पीछा किया। १८ तब यहोवा ने यहोशू से कहा, अपने हाथ का बर्छा ऐ की ओर बढ़ा; क्योंकि मैं उसे तेरे हाथ में दे दूंगा। और यहोशू ने अपने हाथ के बर्छे को नगर की ओर बढ़ाया। १९ उसके हाथ बढ़ाते ही जो लोग घात में बैठे थे वे झटपट अपने स्थान से उठे, और दौड़कर नगर में प्रवेश किया और उसको ले लिया; और झटपट उस में आग लगा दी। २० जब ऐ के पुरुषों ने पीछे की ओर फिरकर दृष्टि की, तो क्या देखा, कि नगर का धूआं आकाश की ओर उठ रहा है; और उन्हें न तो इधर भागने की शक्ति रही, और न उधर, और जो लोग जंगल की ओर भागे जाते थे वे फिरकर अपने खदेड़ने-वालों पर टूट पड़े। २१ जब यहोशू और सब इस्राएलियों ने देखा कि घातियों ने नगर को ले लिया, और उसका धूआं उठ रहा है, तब घूमकर ऐ के पुरुषों को मारने लगे। २२ और उनका साम्हना करने को दूसरे भी नगर से निकल आए; सो वे इस्राएलियों के बीच में पड़ गए, कुछ इस्राएली तो उनके आगे, और कुछ उनके पीछे थे; सो उन्हों ने उनको यहां तक मार डाला कि उन में से न तो कोई बचने और न भागने पाया। २३ और ऐ के राजा को वे जीवित पकड़कर यहोशू के पास ले आए। २४ और जब इस्राएली ऐ के सब निवासियों को मैदान में, अर्थात् उस जंगल में जहां उन्हों ने उनका पीछा किया था घात कर चुके, और वे सब के सब तलवार से मारे गए यहां तक कि उनका अन्त ही हो गया, तब सब

इस्राएलियों ने ऐ को लौटकर उसे भी तलवार से मारा। २५ और स्त्री पुरुष, सब मिलाकर जो उस दिन मारे गए वे बारह हज़ार थे, और ऐ के सब पुरुष इतने ही थे। २६ क्योंकि जब तक यहोशू ने ऐ के सब निवासियों को सत्यानाश न कर डाला तब तक उस ने अपना हाथ, जिस से बर्छा बढ़ाया था, फिर न खींचा। २७ यहोवा की उस आज्ञा के अनुसार जो उस ने यहोशू को दी थी इस्राएलियों ने पशु आदि नगर की लूट अपनी कर ली। २८ तब यहोशू ने ऐ को फूंकवा दिया, और उसे सदा के लिये खंडहर कर दिया: वह आज तक उजाड़ पड़ा है। २९ और ऐ के राजा को उस ने सांझ तक वृक्ष पर लटका रखा; और सूर्य डूबते डूबते यहोशू की आज्ञा से उसकी लोथ वृक्ष पर से उतारकर नगर के फाटक के साम्हने डाल दी गई, और उस पर पत्थरों का बड़ा ढेर लगा दिया, जो आज तक बना है॥

(आशीर्वाद और शाप का सुनाया जाना)

३० तब यहोशू ने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिये एबाल पर्वत पर एक वेदी बनवाई, ३१ जैसा यहोवा के दास मूसा ने इस्राएलियों को आज्ञा दी थी, और जैसा मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा है, उस ने समूचे पत्थरों की एक वेदी बनवाई जिस पर औज़ार नहीं चलाया गया था। और उस पर उन्हों ने यहोवा के लिये होमबलि चढ़ाए, और मेलबलि किए। ३२ उसी स्थान पर यहोशू ने इस्राएलियों के साम्हने उन पत्थरों के ऊपर मूसा की व्यवस्था, जो उस ने लिखी थी, उसकी नक़ल कराई। ३३ और वे, क्या देशी क्या परदेशी, सारे इस्राएली अपने वृद्ध लोगों, सरदारों, और न्यायियों समेत यहोवा की वाचा का सन्दूक उठानेवाले लेवीय याजकों के साम्हने उस सन्दूक के इधर उधर खड़े हुए, अर्थात् आधे लोग तो गिरिज्जीम पर्वत के, और आधे एबाल पर्वत के साम्हने खड़े हुए, जैसा कि यहोवा के दास मूसा ने पहिले से आज्ञा दी थी, कि इस्राएली प्रजा को आशीर्वाद दिए जाएं। ३४ उसके बाद उस ने आशीष और शाप की व्यवस्था के सारे वचन, जैसे जैसे व्यवस्था की पुस्तक में लिखे हुए हैं वैसे वैसे पढ़ पढ़कर सुना दिए। ३५ जितनी बातों की मूसा ने आज्ञा दी थी, उन में से कोई ऐसी बात नहीं रह गई जो यहोशू ने इस्राएल की सारी सभा, और स्त्रियों, और बाल-बच्चों, और उनके साथ रहनेवाले * परदेशी लोगों के साम्हने भी पढ़कर न सुनाई॥

(गिबोनियों का छल)

९ यह सुनकर हित्ती, एमोरी, कनानी, परिज्जी, हिव्वी, और यबूसी, जितने राजा यरदन के इस पार पहाड़ी देश में और नीचे के देश में, और लबानोन के साम्हने के महासागर के तट पर रहते थे, २ वे एक मन होकर यहोशू और इस्राएलियों से लड़ने को इकट्ठे हुए॥

३ जब गिबोन के निवासियों ने सुना कि यहोशू ने यरीहो और ऐ से क्या क्या किया है, ४ तब उन्हों ने छल किया, और राजदूतों का भेष बनाकर अपने गदहों पर पुराने बोरे, और पुराने फटे, और जोड़े हुए मदिरा के कुप्पे लादकर ५ अपने पांवों में पुरानी गांठी हुई जूतियां, और तन पर पुराने वस्त्र पहिने, और अपने भोजन के लिये सूखी और फफूंदी लगी हुई रोटी ले ली। ६ तब वे गिलगाल की छावनी में

* मूल में—चलते हुए।

यहोशू के पास जाकर उस से और इस्राएली पुरुषों से कहने लगे, हम दूर देश से आए हैं; इसलिये अब तुम हम से वाचा बान्धो। ७ इस्राएली पुरुषों ने उन हिव्वियों से कहा, क्या जाने तुम हमारे मध्य में ही रहते हो; फिर हम तुम से वाचा कैसे बान्धें? ८ उन्हों ने यहोशू से कहा, हम तेरे दास हैं। तब यहोशू ने उन से कहा, तुम कौन हो? और कहां से आए हो? ९ उन्हों ने उस से कहा, तेरे दास बहुत दूर के देश से तेरे परमेश्वर यहोवा का नाम सुनकर आए हैं; क्योंकि हम ने यह सब सुना है, अर्थात् उसकी कीर्ति और जो कुछ उस ने मिस्र में किया, १० और जो कुछ उस ने एमोरियों के दोनों राजाओं से किया जो यरदन के उस पार रहते थे, अर्थात् हेश्बोन के राजा सीहोन से, और बाशान के राजा ओग से जो अशतारोत में था। ११ इसलिये हमारे यहां के वृद्धलोगों ने और हमारे देश के सब निवासियों ने हम से कहा, कि मार्ग के लिये अपने साथ भोजन-वस्तु लेकर उन से मिलने को जाओ, और उन से कहना, कि हम तुम्हारे दास हैं; इस-लिये अब तुम हम से वाचा बान्धो। १२ जिस दिन हम तुम्हारे पास चलने को निकले उस दिन तो हम ने अपने अपने घर से यह रोटी गरम और ताजी ली थी; परन्तु अब देखो, यह सूख गई है और इस में फफूंदी लग गई है। १३ फिर ये जो मदिरा के कुप्पे हम ने भर लिये थे, तब तो नये थे, परन्तु देखो अब ये फट गए हैं; और हमारे ये वस्त्र और जूतियां बड़ी लम्बी यात्रा के कारण पुरानी हो गई हैं। १४ तब उन पुरुषों ने यहोवा से बिना सलाह लिये उनके भोजन में से कुछ ग्रहण किया। १५ तब यहोशू ने उन से मेल करके उन से यह वाचा बान्धी, कि तुम को जीवित छोड़ेंगे; और मण्डली के प्रधानों ने उन से शपथ खाई। १६ और उनके साथ वाचा बान्धने के तीन दिन के बाद उनको यह समाचार मिला, कि वे हमारे पड़ोस के रहनेवाले लोग हैं, और हमारे ही मध्य में बसे हैं। १७ तब इस्राएली कूच करके तीसरे दिन उनके नगरों को जिनके नाम गिबोन, कपीरा, बेरोत, और किर्यत्यारीम है पहुंच गए, १८ और इस्राएलियों ने उनको न मारा, क्योंकि मण्डली के प्रधानों ने उनके संग इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की शपथ खाई थी। तब सारी मण्डली के लोग प्रधानों के विरुद्ध कुड़कुड़ाने लगे। १९ तब सब प्रधानों ने सारी मण्डली से कहा, हम ने उन से इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की शपथ खाई है, इसलिये अब उनको छू नहीं सकते। २० हम उन से यही करेंगे, कि उस शपथ के अनुसार हम उनको जीवित छोड़ देंगे, नहीं तो हमारी खाई हुई शपथ के कारण हम पर क्रोध पड़ेगा। २१ फिर प्रधानों ने उन से कहा, वे जीवित छोड़े जाएं। सो प्रधानों के इस वचन के अनुसार वे सारी मण्डली के लिये लकड़हारे और पानी भरने-वाले बने। २२ फिर यहोशू ने उनको बुलवाकर कहा, तुम तो हमारे ही बीच में रहते हो, फिर तुम ने हम से यह कहकर क्यों छल किया है, कि हम तुम से बहुत दूर रहते हैं? २३ इसलिये अब तुम शापित हो, और तुम में से ऐसा कोई न रहेगा जो दास, अर्थात् मेरे परमेश्वर के भवन के लिये लकड़हारा और पानी भरनेवाला न हो। २४ उन्हों ने यहोशू को उत्तर दिया, तेरे दासों को यह निश्चय बतलाया गया था, कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने अपने दास मूसा को आज्ञा दी थी कि तुम को वह सारा देश दे, और उसके सारे निवासियों को तुम्हारे

साम्हने से सर्वनाश करे; इसलिये हम लोगों को तुम्हारे कारण से अपने प्राणों के लाले पड़ गए, इसलिये हम ने ऐसा काम किया। २५ और अब हम तेरे वश में हैं, जैसा बर्ताव तुझे भला लगे और ठीक जान पड़े, वैसा ही व्यवहार हमारे साथ कर। २६ तब उस ने उन से वैसा ही किया, और उन्हें इस्राएलियों के हाथ से ऐसा बचाया, कि वे उन्हें घात करने न पाए। २७ परन्तु यहोशू ने उसी दिन उनको मण्डली के लिये, और जो स्थान यहोवा चुन ले उस में उसकी वेदी के लिये, लकड़हारे और पानी भरनेवाले नियुक्त कर दिया, जैसा आज तक है॥

(कनान के दक्खिनी भाग का जीता जाना)

१० जब यरूशलेम के राजा अदोनीसेदेक ने सुना कि यहोशू ने ऐ को ले लिया, और उसको सत्यानाश कर डाला है, और जैसा उस ने यरीहो और उसके राजा से किया था वैसा ही ऐ और उसके राजा से भी किया है, और यह भी सुना कि गिबोन के निवासियों ने इस्राएलियों से मेल किया, और उनके बीच रहने लगे हैं, २ तब वे निपट डर गए, क्योंकि गिबोन बड़ा नगर वरन राजनगर के तुल्य और ऐ से बड़ा था, और उसके सब निवासी शूरवीर थे। ३ इसलिये यरूशलेम के राजा अदोनीसेदेक ने हेब्रोन के राजा होहाम, यर्मूत के राजा पिराम, लाकीश के राजा यापी, और एग्लोन के राजा दबीर के पास यह कहला भेजा, ४ कि मेरे पास आकर मेरी सहायता करो, और चलो हम गिबोन को मारें; क्योंकि उस ने यहोशू और इस्राएलियों से मेल कर लिया है। ५ इसलिये यरूशलेम, हेब्रोन, यर्मूत, लाकीश, और एग्लोन के पांचों एमोरी राजाओं ने अपनी अपनी सारी सेना इकट्ठी करके चढ़ाई कर दी, और गिबोन के साम्हने डेरे डालकर उस से युद्ध छेड़ दिया। ६ तब गिबोन के निवासियों ने गिलगाल की छावनी में यहोशू के पास यों कहला भेजा, कि अपने दासों की ओर से तू अपना हाथ न हटाना; शीघ्र हमारे पास आकर हमें बचा ले, और हमारी सहायता कर; क्योंकि पहाड़ पर रहनेवाले एमोरियों के सब राजा हमारे विरुद्ध इकट्ठे हुए हैं। ७ तब यहोशू सारे योद्धाओं और सब शूरवीरों को संग लेकर गिलगाल से चल पड़ा*। ८ और यहोवा ने यहोशू से कहा, उन से मत डर, क्योंकि मैं ने उनको तेरे हाथ में कर दिया है; उन में से एक पुरुष भी तेरे साम्हने टिक न सकेगा। ९ तब यहोशू रातोरात गिलगाल से जाकर एकाएक उन पर टूट पड़ा। १० तब यहोवा ने ऐसा किया कि वे इस्राएलियों से घबरा गए, और इस्राएलियों ने गिबोन के पास उनका बड़ा संहार किया, और बेथोरोन के चढ़ाव पर उनका पीछा करके अजेका और मक्केदा तक उनको मारते गए। ११ फिर जब वे इस्राएलियों के साम्हने से भागकर बेथोरोन की उतराई पर आए, तब अजेका पहुंचने तक यहोवा ने आकाश से बड़े बड़े पत्थर उन पर बरसाए, और वे मर गए; जो ओलों से मारे गए उनकी गिनती इस्राएलियों की तलवार से मारे हुओं से अधिक थी॥

१२ और उस समय, अर्थात् जिस दिन यहोवा ने एमोरियों को इस्राएलियों के वश में कर दिया, उस दिन यहोशू ने यहोवा से इस्राएलियों के देखते इस प्रकार कहा,

हे सूर्य, तू गिबोन पर,
और हे चन्द्रमा, तू अय्यालोन की
तराई के ऊपर थमा रह॥

---

* मूल में—चढ़ा।

१३ और सूर्य उस समय तक थमा रहा,
और चन्द्रमा उस समय तक
ठहरा रहा *,
जब तक उस जाति के लोगों
ने अपने शत्रुओं से पलटा न
लिया ।।

क्या यह बात याशार नाम पुस्तक में नहीं लिखी है कि सूर्य आकाशमण्डल के बीचोबीच ठहरा रहा, और लगभग चार पहर तक न डूबा? १४ न तो उस से पहिले कोई ऐसा दिन हुआ और न उसके बाद, जिस में यहोवा ने किसी पुरुष की सुनी हो; क्योंकि यहोवा तो इस्राएल की ओर से लड़ता था ।।

१५ तब यहोशू सारे इस्राएलियों समेत गिलगाल की छावनी को लौट गया ।।

१६ और वे पांचों राजा भागकर मक्केदा के पास की गुफा में जा छिपे। १७ तब यहोशू को यह समाचार मिला, कि पांचों राजा मक्केदा के पास की गुफा में छिपे हुए हमें मिले हैं। १८ यहोशू ने कहा, गुफा के मुंह पर बड़े बड़े पत्थर लुढ़काकर उनकी देख भाल के लिये मनुष्यों को उसके पास बैठा दो; १९ परन्तु तुम मत ठहरो, अपने शत्रुओं का पीछा करके उन में से जो जो पिछड़ गए हैं उनको मार डालो, उन्हें अपने अपने नगर में प्रवेश करने का अवसर न दो; क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने उनको तुम्हारे हाथ में कर दिया है। २० जब यहोशू और इस्राएली उनका संहार करके नाश कर चुके, और उन में से जो बच गए वे अपने अपने गढ़वाले नगर में घुस गए, २१ तब सब लोग मक्केदा की छावनी को यहोशू के पास कुशल-क्षेम से लौट आए; और इस्राएलियों के विरुद्ध किसी ने जीभ तक न हिलाई *। २२ तब यहोशू ने आज्ञा दी, कि गुफा का मुंह खोलकर उन पांचों राजाओं को मेरे पास निकाल ले आओ। २३ उन्हों ने ऐसा ही किया, और यरूशलेम, हेब्रोन, यर्मूत, लाकीश, और एग्लोन के उन पांचों राजाओं को गुफा में से उसके पास निकाल ले आए। २४ जब वे उन राजाओं को यहोशू के पास निकाल ले आए, तब यहोशू ने इस्राएल के सब पुरुषों को बुलाकर अपने साथ चलनेवाले योद्धाओं के प्रधानों से कहा, निकट आकर अपने अपने पांव इन राजाओं की गर्दनों पर रखो। और उन्हों ने निकट जाकर अपने अपने पांव उनकी गर्दनों पर रखे। २५ तब यहोशू ने उन से कहा, डरो मत, और न तुम्हारा मन कच्चा हो; हियाव बान्धकर दृढ़ हो; क्योंकि यहोवा तुम्हारे सब शत्रुओं से जिन से तुम लड़नेवाले हो ऐसा ही करेगा। २६ इसके बाद यहोशू ने उनको मरवा डाला, और पांच वृक्षों पर लटका दिया। और वे सांझ तक उन वृक्षों पर लटके रहे। २७ सूर्य डूबते डूबते यहोशू से आज्ञा पाकर लोगों ने उन्हें उन वृक्षों पर से उतारके उसी गुफा में जहां वे छिप गए थे डाल दिया, और उस गुफा के मुंह पर बड़े बड़े पत्थर धर दिए, वे आज तक वहीं धरे हुए हैं ।।

२८ उसी दिन यहोशू ने मक्केदा को ले लिया, और उसको तलवार से मारा, और उसके राजा को सत्यानाश किया; और जितने प्राणी उस में थे उन सभों में से किसी को जीवित न छोड़ा; और जैसा उस ने यरीहो के राजा के साथ किया था वैसा ही मक्केदा के राजा से भी किया ।।

* मूल में—चुप हो गया।

* मूल में—सान न चढ़ाई।

२९ तब यहोशू सब इस्राएलियों समेत मक्केदा से चलकर लिब्ना को गया, और लिब्ना से लड़ा; ३० और यहोवा ने उसको भी राजा समेत इस्राएलियों के हाथ में कर दिया; और यहोशू ने उसको और उस में के सब प्राणियों को तलवार से मारा; और उस में से किसी को भी जीवित न छोड़ा; और उसके राजा से वैसा ही किया जैसा उस ने यरीहो के राजा के साथ किया था।।

३१ फिर यहोशू सब इस्राएलियों समेत लिब्ना से चलकर लाकीश को गया, और उसके विरुद्ध छावनी डालकर लड़ा; ३२ और यहोवा ने लाकीश को इस्राएल के हाथ में कर दिया, और दूसरे दिन उस ने उसको जीत लिया; और जैसा उस ने लिब्ना के सब प्राणियों को तलवार से मारा था वैसा ही उस ने लाकीश से भी किया।।

३३ तब गेजेर का राजा होराम लाकीश की सहायता करने को चढ़ आया; और यहोशू ने प्रजा समेत उसको भी ऐसा मारा कि उसके लिये किसी को जीवित न छोड़ा।।

३४ फिर यहोशू सब इस्राएलियों समेत लाकीश से चलकर एग्लोन को गया; और उसके विरुद्ध छावनी डालकर युद्ध करने लगा; ३५ और उसी दिन उन्हों ने उसको ले लिया, और उसको तलवार से मारा; और उसी दिन जैसा उस ने लाकीश के सब प्राणियों को सत्यानाश कर डाला था वैसा ही उस ने एग्लोन से भी किया।।

३६ फिर यहोशू सब इस्राएलियों समेत एग्लोन से चलकर हेब्रोन को गया, और उस से लड़ने लगा; ३७ और उन्हों ने उसे ले लिया, और उसको और उसके राजा और सब गांवों को और उन में के सब प्राणियों को तलवार से मारा; जैसा यहोशू ने एग्लोन से किया था वैसा ही उस ने हेब्रोन में भी किसी को जीवित न छोड़ा; उस ने उसको और उस में के सब प्राणियों को सत्यानाश कर डाला।।

३८ तब यहोशू सब इस्राएलियों समेत घूमकर दबीर को गया, और उस से लड़ने लगा; ३९ और राजा समेत उसे और उसके सब गांवों को ले लिया; और उन्हों ने उनको तलवार से घात किया, और जितने प्राणी उन में थे सब को सत्यानाश कर डाला; किसी को जीवित न छोड़ा, जैसा यहोशू ने हेब्रोन और लिब्ना और उसके राजा से किया था वैसा ही उस ने दबीर और उसके राजा से भी किया।।

४० इसी प्रकार यहोशू ने उस सारे देश को, अर्थात् पहाड़ी देश, दक्खिन देश, नीचे के देश, और ढालू देश को, उनके सब राजाओं समेत मारा; और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार किसी को जीवित न छोड़ा, वरन जितने प्राणी थे सभों को सत्यानाश कर डाला। ४१ और यहोशू ने कादेशबर्ने से ले अज्जा तक, और गिबोन तक के सारे गोशेन देश के लोगों को मारा। ४२ इन सब राजाओं को उनके देशों समेत यहोशू ने एक ही समय में ले लिया, क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस्राएलियों की ओर से लड़ता था। ४३ तब यहोशू सब इस्राएलियों समेत गिलगाल की छावनी में लौट आया।।

(कनान के उत्तरीय भाग का जीता जाना)

११ यह सुनकर हासोर के राजा याबीन ने मादोन के राजा योबाब, और शिम्रोन और अक्षाप के राजाओं को, २ और जो जो राजा उत्तर की ओर पहाड़ी देश में, और किन्नेरेत की दक्खिन के

अराबा में, और नीचे के देश में, और पच्छिम की ओर दोर के ऊंचे देश में रहते थे, उनको, ३ और पूरब पच्छिम दोनों ओर के रहनेवाले कनानियों, और एमोरियों, हित्तियों, परिज्जियों, और पहाड़ी यबूसियों, और मिस्पा देश में हेर्मोन पहाड़ के नीचे रहनेवाले हिव्वियों को बुलवा भेजा। ४ और वे अपनी अपनी सेना समेत, जो समुद्र के किनारे की बालू के किनकों के समान बहुत थीं, मिलकर निकल आए, और उनके साथ बहुत ही घोड़े और रथ भी थे। ५ तब ये सब राजा सम्मति करके इकट्ठे हुए, और इस्राएलियों से लड़ने को मेरोम नाम ताल के पास आकर एक संग छावनी डाली। ६ तब यहोवा ने यहोशू से कहा, उन से मत डर, क्योंकि कल इसी समय में उन सभों को इस्राएलियों के वश करके मरवा डालूंगा; तब तू उनके घोड़ों के सुम की नस कटवाना, और उनके रथ भस्म कर देना। ७ और यहोशू सब योद्धाओं समेत मेरोम नाम ताल के पास अचानक पहुंचकर उन पर टूट पड़ा। ८ और यहोवा ने उनको इस्राएलियों के हाथ में कर दिया, इसलिये उन्हों ने उन्हें मार लिया, और बड़े नगर सीदोन और मिस्रपोतमैम तक, और पूर्व की ओर मिस्पे के मैदान तक उनका पीछा किया; और उनको मारा, और उन में से किसी को जीवित न छोड़ा। ९ तब यहोशू ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार उन से किया, अर्थात् उनके घोड़ों के सुम की नस कटवाई, और उनके रथ आग में जलाकर भस्म कर दिए॥

१० उस समय यहोशू ने घूमकर हासोर को जो पहिले उन सब राज्यों में मुख्य नगर था ले लिया, और उसके राजा को तलवार से मार डाला। ११ और जितने प्राणी उस में थे उन सभों को उन्हों ने तलवार से मारकर सत्यानाश किया; और किसी प्राणी को जीवित न छोड़ा, और हासोर को यहोशू ने आग लगाकर फुंकवा दिया। १२ और उन सब नगरों को उनके सब राजाओं समेत यहोशू ने ले लिया, और यहोवा के दास मूसा की आज्ञा के अनुसार उनको तलवार से घात करके सत्यानाश किया। १३ परन्तु हासोर को छोड़कर, जिसे यहोशू ने फुंकवा दिया, इस्राएल ने और किसी नगर को जो अपने टीले पर बसा था नहीं जलाया। १४ और इन नगरों के पशु और इनकी सारी लूट को इस्राएलियों ने अपना कर लिया; परन्तु मनुष्यों को उन्हों ने तलवार से मार डाला, यहां तक उनको सत्यानाश कर डाला कि एक भी प्राणी को जीवित नहीं छोड़ा गया। १५ जो आज्ञा यहोवा ने अपने दास मूसा को दी थी उसी के अनुसार मूसा ने यहोशू को आज्ञा दी थी, और ठीक वैसा ही यहोशू ने किया भी; जो जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी उन में से यहोशू ने कोई भी पूरी किए बिना न छोड़ी॥

(समस्त कनान का राजाओं समेत जीता जाना)

१६ तब यहोशू ने उस सारे देश को, अर्थात पहाड़ी देश, और सारे दक्खिनी देश, और कुल गोशेन देश, और नीचे के देश, अराबा, और इस्राएल के पहाड़ी देश, और उसके नीचेवाले देश को, १७ हालाक नाम पहाड़ से ले, जो सेईर की चढ़ाई पर है, बालगाद तक, जो लबानोन के मैदान में हेर्मोन पर्वत के नीचे है, जितने देश हैं उन सब को जीत लिया और उन देशों के सारे राजाओं को पकड़कर मार डाला। १८ उन

सब राजाओं से युद्ध करते करते यहोशू को बहुत दिन लग गए। १९ गिबोन के निवासी हिव्वियों को छोड़ और किसी नगर के लोगों ने इस्राएलियों से मेल न किया; और सब नगरों को उन्हों ने लड़ लड़कर जीत लिया। २० क्योंकि यहोवा की जो मनसा थी, कि अपनी उस आज्ञा के अनुसार जो उस ने मूसा को दी थी उन पर कुछ भी दया न करे, वरन सत्यानाश कर डाले, इस कारण उस ने उनके मन ऐसे कठोर कर दिए, कि उन्हों ने इस्राएलियों का साम्हना करके उन से युद्ध किया॥

२१ उस समय यहोशू ने पहाड़ी देश में आकर हेब्रोन, दबीर, अनाब, वरन यहूदा और इस्राएल दोनों के सारे पहाड़ी देश में रहनेवाले अनाकियों को नाश किया; यहोशू ने नगरों समेत उन्हें सत्यानाश कर डाला। २२ इस्राएलियों के देश में कोई अनाकी न रह गया; केवल अज्जा, गत, और अशदोद में कोई कोई रह गए। २३ जैसा यहोवा ने मूसा से कहा था, वैसा ही यहोशू ने वह सारा देश ले लिया; और उसे इस्राएल के गोत्रों और कुलों के अनुसार बांट करके उन्हें दे दिया। और देश को लड़ाई से शान्ति मिली॥

१२ यरदन पार सूर्योदय की ओर, अर्थात् अर्नोन नाले से लेकर हेर्मोन पर्वत तक के देश, और सारे पूर्वी अराबा के जिन राजाओं को इस्राएलियों ने मारकर उनके देश को अपने अधिकार में कर लिया था ये हैं; २ एमोरियों का हेशबोनवासी राजा सीहोन, जो अर्नोन नाले के किनारे के अरोएर से लेकर, और उसी नाले के बीच के नगर को छोड़कर यब्बोक नदी तक, जो अम्मोनियों का सिवाना है, आधे गिलाद पर, ३ और किन्नेरेत नाम ताल से लेकर बेत्यशीमोत से होकर अराबा के ताल तक, जो खारा ताल भी कहलाता है, पूर्व की ओर के अराबा, और दक्खिन की ओर पिसगा की सलामी के नीचे नीचे के देश पर प्रभुता रखता था। ४ फिर बचे हुए रपाइयों में से बाशान के राजा ओग का देश था, जो अशतारोत और एद्रेई में रहा करता था, ५ और हेर्मोन पर्वत सलका, और गशूरियों, और माकियों के सिवाने तक कुल बाशान में, और हेशबोन के राजा सीहोन के सिवाने तक आधे गिलाद में भी प्रभुता करता था। ६ इस्राएलियों और यहोवा के दास मूसा ने इनको मार लिया; और यहोवा के दास मूसा ने इनका देश रूबेनियों और गादियों और मनश्शे के आधे गोत्र के लोगों को दे दिया॥

७ और यरदन के पश्चिम की ओर, लबानोन के मैदान में के बालगात से लेकर सेईर की चढ़ाई के हालाक पहाड़ तक के देश के जिन राजाओं को यहोशू और इस्राएलियों ने मारकर उनका देश इस्राएलियों को गोत्रों और कुलों के अनुसार भाग करके दे दिया था वे ये हैं, ८ हित्ती, और एमोरी, और कनानी, और परिज्जी, और हिव्वी, और यबूसी, जो पहाड़ी देश में, और नीचे के देश में, और अराबा में, और ढालू देश में, और जंगल में, और दक्खिनी देश में रहते थे। ९ एक, यरीहो का राजा; एक, बेतेल के पास के ऐ का राजा; १० एक, यरूशलेम का राजा; एक, हेब्रोन का राजा; ११ एक, यर्मूत का राजा; एक, लाकीश का राजा; १२ एक, एग्लोन का राजा; एक, गेजेर का राजा; १३ एक, दबीर का राजा; एक, गेदेर का राजा; १४ एक, होर्मा का राजा; एक, अराद का राजा; १५ एक, लिब्ना का

राजा; एक, अदुल्लाम का राजा; १६ एक, मक्केदा का राजा; एक, बेतेल का राजा; १७ एक, तप्पूह का राजा; एक, हेपेर का राजा; १८ एक, अपेक का राजा; एक, लश्शारोन का राजा; १९ एक, मादोन का राजा; एक, हासोर का राजा; २० एक, शिम्रोन्मरोन का राजा; एक, अक्षाप का राजा; २१ एक, तानाक का राजा; एक, मगिद्दो का राजा; २२ एक, केदेश का राजा; एक, कर्मेल में के योकनाम का राजा; २३ एक, दोर नाम ऊंचे देश में के दोर का राजा; एक, गिलगाल में के गोयीम का राजा; २४ और एक, तिर्सा का राजा है; इस प्रकार सब राजा इकतीस हुए॥

(कनान देश का इस्राएली गोत्र गोत्र में बांटा जाना)

१३ यहोशू बूढ़ा और बहुत उम्र का हो गया; और यहोवा ने उस से कहा, तू बूढ़ा और बहुत उम्र का हो गया है, और बहुत देश रह गए हैं, जो इस्राएल के अधिकार में अभी तक नहीं आए। २ ये देश रह गए हैं, अर्थात् पलिश्तियों का सारा प्रान्त, और सारे गशूरी ३ (मिस्र के आगे शीहोर से लेकर उत्तर की ओर एक्रोन के सिवाने तक जो कनानियों का भाग गिना जाता है; और पलिश्तियों के पांचों सरदार, अर्थात् अज्जा, अशदोद, अशकलोन, गत, और एक्रोन के लोग), और दक्खिनी ओर अव्वी भी, ४ फिर अपेक और एमोरियों के सिवाने तक कनानियों का सारा देश, और सीदोनियों का मारा नाम देश, ५ फिर गबालियों का देश, और सूर्योदय की ओर हेर्मोन पर्वत के नीचे के बालगाद से लेकर हमात की घाटी तक सारा लबानोन, ६ फिर लबानोन से लेकर मिस्रपोतमैम तक सीदोनियों के पहाड़ी देश के निवासी। इनको मैं इस्राएलियों के साम्हने से निकाल दूंगा; इतना हो कि तू मेरी आज्ञा के अनुसार चिट्ठी डाल डालकर उनका देश इस्राएल को बांट दे। ७ इसलिये तू अब इस देश को नवों गोत्रों और मनश्शे के आधे गोत्र को उनका भाग होने के लिये बांट दे॥

८ इसके साथ रूबेनियों और गादियों को तो वह भाग मिल चुका था, जिसे मूसा ने उन्हें यरदन के पूर्व की ओर दिया था, क्योंकि यहोवा के दास मूसा ने उन्हीं को दिया था, ९ अर्थात् अर्नोन नाम नाले के किनारे के अरोएर से लेकर, और उसी नाले के बीच के नगर को छोड़कर दीबोन तक मेदबा के पास का सारा चौरस देश; १० और अम्मोनियों के सिवाने तक हेशबोन में विराजनेवाले एमोरियों के राजा सीहोन के सारे नगर; ११ और गिलाद देश, और गशूरियों और माकावासियों का सिवाना, और सारा हेर्मोन पर्वत, और सल्का तक कुल बाशान, १२ फिर अशतारोत और एद्रेई में विराजनेवाले उस ओग का सारा राज्य जो रपाइयों में से अकेला बच गया था; क्योंकि इन्हीं को मूसा ने मारकर उनकी प्रजा को उस देश से निकाल दिया था। १३ परन्तु इस्राएलियों ने गशूरियों और माकियों को उनके देश से न निकाला; इसलिये गशूरी और माकी इस्राएलियों के मध्य में आज तक रहते हैं। १४ और लेवी के गोत्रियों को उस ने कोई भाग न दिया; क्योंकि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के वचन के अनुसार उसी के हव्य उनके लिये भाग ठहरे हैं॥

१५ मूसा ने रूबेन के गोत्र को उनके कुलों के अनुसार दिया, १६ अर्थात् अर्नोन नाम नाले के किनारे के अरोएर से लेकर और उसी नाले के बीच के नगर को छोड़-कर मेदबा के पास का सारा चौरस देश; १७ फिर चौरस देश में का हेशबोन और उसके सब गांव; फिर दीबोन, बामोतबाल, बेतबाल्मोन, १८ यहसा, कदेमोत, मेपात, १९ किर्यातैम, सिबमा, और तराई में के पहाड़ पर बसा हुआ सेरेथश्शहर, २० बेत-पोर, पिसगा की सलामी और बेत्यशीमोत, २१ निदान चौरस देश में बसे हुए हेशबोन में विराजनेवाले एमोरियों के उस राजा सीहोन के राज्य के कुल नगर जिन्हें मूसा ने मार लिया था। मूसा ने एवी, रेकेम, सूर, हूर, और रेबा नाम मिद्यान के प्रधानों को भी मार डाला था जो सीहोन के ठहराए हुए हाकिम और उसी देश के निवासी थे। २२ और इस्राएलियों ने उनके और मारे हुओं के साथ बोर के पुत्र भावी कहनेवाले बिलाम को भी तलवार से मार डाला। २३ और रूबेनियों का सिवाना यरदन का तीर ठहरा। रूबेनियों का भाग उनके कुलों के अनुसार नगरों और गांवों समेत यही ठहरा॥

२४ फिर मूसा ने गाद के गोत्रियों को भी कुलों के अनुसार उनका निज भाग करके बांट दिया। २५ तब यह ठहरा, अर्थात् याजेर आदि गिलाद के सारे नगर, और रब्बा के साम्हने के अरोएर तक अम्मोनियों का आधा देश, २६ और हेशबोन से रामतमिस्पे और बतोनीम् तक, और महनैम से दबीर के सिवाने तक, २७ और तराई में बेथारम, बेतनिम्रा, सुक्कोत, और सापोन, और हेश्बोन के राजा सीहोन के राज्य के बचे हुए भाग, और किन्नेरेत नाम ताल के सिरे तक, यरदन के पूर्व की ओर का वह देश जिसका सिवाना यरदन है। २८ गादियों का भाग उनके कुलों के अनुसार नगरों और गांवों समेत यही ठहरा॥

२९ फिर मूसा ने मनश्शे के आधे गोत्रियों को भी उनका निज भाग कर दिया; वह मनश्शेइयों के आधे गोत्र का निज भाग उनके कुलों के अनुसार ठहरा। ३० वह यह है, अर्थात् महनैम से लेकर बाशान के राजा ओग के राज्य का सब देश, और बाशान में बसी हुई याईर की साठों बस्तियां, ३१ और गिलाद का आधा भाग, और अश्तारोत, और एद्रेई, जो बाशान में ओग के राज्य के नगर थे, ये मनश्शे के पुत्र माकीर के वंश का, अर्थात् माकीर के आधे वंश का निज भाग कुलों के अनुसार ठहरे॥

३२ जो भाग मूसा ने मोआब के अराबा में यरीहो के पास के यरदन के पूर्व की ओर बांट दिए वे ये ही हैं। ३३ परन्तु लेवी के गोत्र को मूसा ने कोई भाग न दिया; इस्राएल का परमेश्वर यहोवा ही अपने वचन के अनुसार उनका भाग ठहरा॥

१४ जो जो भाग इस्राएलियों ने कनान देश में पाए, जिन्हें एलीआजर याजक, और नून के पुत्र यहोशू, और इस्राएली गोत्रों के पूर्वजों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुषों ने उनको दिया वे ये हैं। २ जो आज्ञा यहोवा ने मूसा के द्वारा साढ़े नौ गोत्रों के लिये दी थी, उसके अनुसार उनके भाग चिट्ठी डाल डालकर दिए गए। ३ मूसा ने तो अढ़ाई गोत्रों के भाग यरदन पार दिए थे; परन्तु लेवियों को उसने उनके बीच कोई भाग न दिया था। ४ यूसुफ के

वंश के तो दो गोत्र हो गए थे, अर्थात् मनश्शे और एप्रैम; और उस देश में लेवियों को कुछ भाग न दिया गया, केवल रहने के नगर, और पशु आदि धन रखने को और चराइयां उनको मिलीं। ५ जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी उसके अनुसार इस्राएलियों ने किया; और उन्हों ने देश को बांट लिया॥

६ तब यहूदी यहोशू के पास गिलगाल में आए; और कनजी यपुन्ने के पुत्र कालेब ने उस से कहा, तू जानता होगा कि यहोवा ने कादेशबर्ने में परमेश्वर के जन मूसा से मेरे और तेरे विषय में क्या कहा था। ७ जब यहोवा के दास मूसा ने मुझे इस देश का भेद लेने के लिये कादेशबर्ने से भेजा था तब मैं चालीस वर्ष का था; और मैं सच्चे मन से * उसके पास सन्देश ले आया। ८ और मेरे साथी जो मेरे संग गए थे उन्हों ने तो प्रजा के लोगों का मन निराश कर दिया †, परन्तु मैं ने अपने परमेश्वर यहोवा की पूरी रीति से बात मानी। ९ तब उस दिन मूसा ने शपथ खाकर मुझ से कहा, तू ने पूरी रीति से मेरे परमेश्वर यहोवा की बातों का अनुकरण किया है, इस कारण निःसन्देह जिस भूमि पर तू अपने पांव धर आया है वह सदा के लिये तेरा और तेरे वंश का भाग होगी। १० और अब देख, जब से यहोवा ने मूसा से यह वचन कहा था तब से पैंतालीस वर्ष हो चुके हैं, जिन में इस्राएली जंगल में घूमते फिरते रहे; उन में यहोवा ने अपने कहने के अनुसार मुझे जीवित रखा है; और अब मैं पचासी वर्ष का हूं। ११ जितना बल मूसा के भेजने के दिन मुझ में था उतना बल अभी तक मुझ में हैं; युद्ध करने, वा भीतर बाहर आने जाने के लिये जितनी उस समय मुझ में सामर्थ्य थी उतनी ही अब भी मुझ में सामर्थ्य है। १२ इसलिये अब वह पहाड़ी मुझे दे जिसकी चर्चा यहोवा ने उस दिन की थी; तू ने तो उस दिन सुना होगा कि उस में अनाकवंशी रहते हैं, और बड़े बड़े गढ़वाले नगर भी हैं; परन्तु क्या जाने सम्भव है कि यहोवा मेरे संग रहे, और उसके कहने के अनुसार मैं उन्हें उनके देश से निकाल दूं। १३ तब यहोशू ने उसको आशीर्वाद दिया; और हेब्रोन को यपुन्ने के पुत्र कालेब का भाग कर दिया। १४ इस कारण हेब्रोन कनजी यपुन्ने के पुत्र कालेब का भाग आज तक बना है, क्योंकि वह इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का पूरी रीति से अनुगामी था। १५ पहिले समय में तो हेब्रोन का नाम किर्यतर्बा था; वह अर्बा अनाकियों में सब से बड़ा पुरुष था। और उस देश को लड़ाई से शान्ति मिली॥

१५ यहूदियों के गोत्र का भाग उनके कुलों के अनुसार चिट्ठी डालने से एदोम के सिवाने तक, और दक्खिन की ओर सीन के जंगल तक जो दक्खिनी सिवाने पर है ठहरा। २ उनके भाग का दक्खिनी सिवाना खारे ताल के उस सिरेवाले कोल से आरम्भ हुआ जो दक्खिन की ओर बढ़ा है; ३ और वह अक्रब्बीम नाम चढ़ाई की दक्खिनी ओर से निकलकर सीन होते हुए कादेशबर्ने के दक्खिन की ओर को चढ़ गया, फिर हेस्रोन के पास हो अद्दार को चढ़कर कर्काआ की ओर मुड़ गया, ४ वहां से अस्मोन होते हुए वह मिस्र के नाले पर निकला, और उस सिवाने का

* मूल में—जैसा मेरे मन के साथ था वैसा ही।
† मूल में—गला दिया।

अन्त समुद्र हुआ। तुम्हारा दक्खिनी सिवाना यही होगा। ५ फिर पूर्वी सिवाना यरदन के मुहाने तक खारा ताल ही ठहरा, और उत्तर दिशा का सिवाना यरदन के मुहाने के पास के ताल के कोल से आरम्भ करके, ६ बेथोग्ला को चढ़ते हुए बेतराबा की उत्तर की ओर होकर रूबेनी बोहनवाले नाम पत्थर तक चढ़ गया; ७ और वही सिवाना आकोर नाम तराई से दबीर की ओर चढ़ गया, और उत्तर होते हुए गिलगाल की ओर झुका जो नाले की दक्खिन ओर की अदुम्मीम की चढ़ाई के साम्हने है; वहां से वह एनशेमेश नाम सोते के पास पहुंचकर एनरोगेल पर निकला; ८ फिर वही सिवाना हिन्नोम के पुत्र की तराई से होकर यबूस * (जो यरूशलेम कहलाता है) उसकी दक्खिन अलंग से चढ़ते हुए उस पहाड़ की चोटी पर पहुंचा, जो पश्चिम की ओर हिन्नोम की तराई के साम्हने और रपाईम की तराई के उत्तरवाले सिरे पर है; ९ फिर वही सिवाना उस पहाड़ की चोटी से नेप्तोह नाम सोते को चला गया, और एप्रोन पहाड़ के नगरों पर निकला; फिर वहां से बाला को (जो किर्यत्यारीम भी कहलाता है) पहुंचा; १० फिर वह बाला से पश्चिम की ओर मुड़कर सेईर पहाड़ तक पहुंचा, और यारीम पहाड़ (जो कसालोन भी कहलाता है) उसकी उत्तरवाली अलंग से होकर बेतशेमेश को उतर गया, और वहां से तिम्ना पर निकला; ११ वहां से वह सिवाना एक्रोन की उत्तरी अलंग के पास होते हुए शिक्करोन गया, और बाला पहाड़ होकर यब्नेल पर निकला; और उस सिवाने का अन्त समुद्र का तट हुआ। १२ और पश्चिम का सिवाना महासमुद्र का तीर ठहरा। यहूदियों को जो भाग उनके कुलों के अनुसार मिला उसकी चारों ओर का सिवाना यही हुआ॥

१३ और यपुन्ने के पुत्र कालेब को उसने यहोवा की आज्ञा के अनुसार यहूदियों के बीच भाग दिया, अर्थात् किर्यतर्बा जो हेब्रोन भी कहलाता है (वह अर्बा अनाक का पिता था)। १४ और कालेब ने वहां से शेशै, अहीमन, और तल्मै नाम, अनाक के तीनों पुत्रों को निकाल दिया। १५ फिर वहां से वह दबीर के निवासियों पर चढ़ गया; पूर्वकाल में तो दबीर का नाम किर्यत्सेपेर था। १६ और कालेब ने कहा, जो किर्यत्सेपेर को मारकर ले ले उसे मैं अपनी बेटी अकसा को ब्याह दूंगा। १७ तब कालेब के भाई ओत्नीएल कनजी ने उसे ले लिया; और उस ने उसे अपनी बेटी अकसा को ब्याह दिया। १८ और जब वह उसके पास आई, तब उस ने उसको पिता से कुछ भूमि मांगने को उभारा, फिर वह अपने गदहे पर से उतर पड़ी, और कालेब ने उस से पूछा, तू क्या चाहती है? १९ वह बोली, मुझे आशीर्वाद दे; तू ने मुझे दक्खिन देश में की कुछ भूमि तो दी है, मुझे जल के सोते भी दे। तब उस ने ऊपर के सोते, नीचे के सोते, दोनों उसे दिए॥

२० यहूदियों के गोत्र का भाग तो उनके कुलों के अनुसार यही ठहरा॥

२१ और यहूदियों के गोत्र के किनारेवाले नगर दक्खिन देश में एदोम के सिवाने की ओर ये हैं, अर्थात् कबसेल, एदेर, यागूर, २२ कीना, दीमोना, अदादा, २३ केदेश, हासोर, यित्नान, २४ जीप, तेलेम, बालोत, २५ हासोर्हदत्ता, करिय्योथेस्रोन, (जो हासोर भी कहलाता है), २६ और अमाम,

* मूल में—यबूसी।

शमा, मोलादा, २७ हसर्गद्दा, हेशमोन, बेत्पालेत, २८ हसर्शूआल, बेर्शेबा, बिज्योत्या, २९ बाला, इय्यीम, एसेम, ३० एलतोलद, कसील, होर्मा, ३१ सिकलग, मदमन्ना, सनसन्ना, ३२ लबाओत, शिल्हीम, ऐन, और रिम्मोन; ये सब नगर उन्तीस हैं, और इनके गांव भी हैं॥

३३ और नीचे के देश में ये हैं; अर्थात् एशताओल सोरा, अशना, ३४ जानोह, एनगन्नीम, तप्पूह, एनाम, ३५ यर्मूत, अदुल्लाम, सोको, अजेका, ३६ शारैम, अदीतैम, गदेरा, और गदेरोतैम; ये सब चौदह नगर हैं, और इनके गांव भी हैं॥

३७ फिर सनान, हदाशा, मिगदलगाद, ३८ दिलान, मिस्पे, योक्तेल, ३९ लाकीश, बोस्कत, एग्लोन, ४० कब्बोन, लहमास, कितलीश, ४१ गदेरोत, बेतदागोन, नामा, और मक्केदा; ये सोलह नगर हैं, और इनके गांव भी हैं॥

४२ फिर लिब्ना, ऐतेर, आशान, ४३ यिप्ताह, अशना, नसीब, ४४ कीला, अकजीब और मारेशा; ये नौ नगर हैं, और इनके गांव भी हैं॥

४५ फिर नगरों और गांवों समेत एक्रोन, ४६ और एक्रोन से लेकर समुद्र तक, अपने अपने गांवों समेत जितने नगर अशदोद की अलंग पर हैं॥

४७ फिर अपने अपने नगरों और गांवों समेत अशदोद, और अज्जा, वरन मिस्र के नाले तक और महासमुद्र के तीर तक जितने नगर हैं॥

४८ और पहाड़ी देश में ये हैं; अर्थात् शामीर, यत्तीर, सोको, ४९ दन्ना, किर्यत्सन्ना (जो दबीर भी कहलाता है), ५० अनाब, एशतमो, आनीम, ५१ गोशेन, होलोन, और गीलो; ये ग्यारह नगर हैं, और इनके गांव भी हैं॥

५२ फिर अराब, दूमा, एशान, ५३ यानीम, बेत्तप्पूह, अपेका, ५४ हुमता, किर्यतर्बा (जो हेब्रोन भी कहलाता है, और सीओर;) ये नौ नगर हैं, और इनके गांव भी हैं॥

५५ फिर माओन, कर्मेल, जीप, यूता, ५६ यिज्रेल, योकदाम, जानोह, ५७ कैन, गिबा, और तिम्ना; ये दस नगर हैं, और इनके गांव भी हैं॥

५८ फिर हलहूल, बेतसूर, गदोर, ५९ मरात, बेतनोत, और एलतकोन; ये छः नगर हैं, और इनके गांव भी हैं॥

६० फिर किर्यतबाल (जो किर्यत्यारीम भी कहलाता है), और रब्बा; ये दो नगर हैं, और इनके गांव भी हैं॥

६१ और जंगल में ये नगर हैं, अर्थात् बेतराबा, मिद्दीन, सकाका; ६२ निबशान, लोनवाला नगर, और एनगदी, ये छः नगर हैं, और इनके गांव भी हैं॥

६३ यरूशलेम के निवासी यबूसियों को यहूदी न निकाल सके; इसलिये आज के दिन तक यबूसी यहूदियों के संग यरूशलेम में रहते हैं॥

१६ फिर यूसुफ की सन्तान का भाग चिट्ठी डालने से ठहराया गया, उनका सिवाना यरीहो के पास की यरदन नदी से, अर्थात् पूर्ब की ओर यरीहो के जल से आरम्भ होकर उस पहाड़ी देश से होते हुए, जो जंगल में है, बेतेल को पहुंचा; २ वहां से वह लूज तक पहुंचा, और एरेकियों के सिवाने होते हुए अतारोत पर जा निकला; ३ और पश्चिम की ओर यपलेतियों के सिवाने से उतरकर फिर नीचेवाले बेयोरोन के सिवाने से होकर

गेजेर को पहुंचा, और समुद्र पर निकला। ४ तब मनश्शे और एप्रैम नाम यूसुफ के दोनों पुत्रों की सन्तान ने अपना अपना भाग लिया। ५ एप्रैमियों का सिवाना उनके कुलों के अनुसार यह ठहरा; अर्थात् उनके भाग का सिवाना पूर्व से आरम्भ होकर अत्रोतदार से होते हुए ऊपरवाले बेथोरोम तक पहुंचा; ६ और उत्तरी सिवाना पश्चिम की ओर के मिकमतात से आरम्भ होकर पूर्व की ओर मुड़कर तानतशीलो को पहुंचा, और उसके पास से होते हुए यानोह तक पहुंचा; ७ फिर यानोह से वह अतारोत और नारा को उतरता हुआ यरीहो के पास होकर यरदन पर निकला। ८ फिर वही सिवाना तप्पूह से निकलकर, और पश्चिम की ओर जाकर, काना के नाले तक होकर समुद्र पर निकला। एप्रैमियों के गोत्र का भाग उनके कुलों के अनुसार यही ठहरा। ९ और मनश्शेइयों के भाग के बीच भी कई एक * नगर अपने अपने गांवों समेत एप्रैमियों के लिये अलग किये गए। १० परन्तु जो कनानी गेजेर में बसे थे उनको एप्रैमियों ने वहां से नहीं निकाला; इसलिये वे कनानी उनके बीच आज के दिन तक बसे हैं, और बेगारी में दास के समान काम करते हैं॥

१७ फिर यूसुफ के जेठे मनश्शे के गोत्र का भाग चिट्ठी डालने से यह ठहरा। मनश्शे का जेठा पुत्र गिलाद का पिता माकीर योद्धा था, इस कारण उसके वंश को गिलाद और बाशान मिला। २ इसलिये यह भाग दूसरे मनश्शेइयों के लिये उनके कुलों के अनुसार ठहरा, अर्थात् अबीएजेर, हेलेक, असीएल, शेकेम, हेपेर, और शमीदा; जो अपने अपने कुलों के अनुसार यूसुफ के पुत्र मनश्शे के वंश में के पुरुष थे, उनके अलग अलग वंशों के लिये ठहरा। ३ परन्तु हेपेर जो गिलाद का पुत्र, माकीर का पोता, और मनश्शे का परपोता था, उसके पुत्र सलोफाद के बेटे नहीं, बेटियां ही हुईं; और उनके नाम महला, नोआ, होग्ला, मिलका, और तिर्सा हैं। ४ तब वे एलीआज़र याजक, नून के पुत्र यहोशू, और प्रधानों के पास जाकर कहने लगीं, यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी, कि वह हम को हमारे भाइयों के बीच भाग दे। तो यहोशू ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार उन्हें उनके चचाओं के बीच भाग दिया। ५ तब मनश्शे को, यरदन पार गिलाद देश और बाशान को छोड़, दस भाग मिले; ६ क्योंकि मनश्शेइयों के बीच में मनश्शेई स्त्रियों को भी भाग मिला। और दूसरे मनश्शेइयों को गिलाद देश मिला। ७ और मनश्शे का सिवाना आशेर से लेकर मिकमतात तक पहुंचा, जो शकेम के साम्हने है; फिर वह दक्खिन की ओर बढ़कर एनतप्पूह के निवासियों तक पहुंचा। ८ तप्पूह की भूमि तो मनश्शे को मिली, परन्तु तप्पूह नगर जो मनश्शे के सिवाने पर बसा है वह एप्रैमियों का ठहरा। ९ फिर वहां से वह सिवाना काना के नाले तक उतरके उसके दक्खिन की ओर तक पहुंच गया; ये नगर यद्यपि मनश्शे के नगरों के बीच में थे तौभी एप्रैम के ठहरे; और मनश्शे का सिवाना उस नाले की उत्तर की ओर से जाकर समुद्र पर निकला; १० दक्खिन की ओर का देश तो एप्रैम को और उत्तर की ओर का मनश्शे को मिला, और उसका सिवाना समुद्र ठहरा; और वे उत्तर की ओर आशेर से और पूर्व की ओर इस्साकार

* मूल में—सब।

से जा मिले। ११ और मनश्शे को, इस्साकार और आशेर अपने अपने नगरों समेत बेतशान, यिबलाम, और अपने नगरों समेत दोर के निवासी, और अपने नगरों समेत एनदोर के निवासी, और अपने नगरों समेत तानाक के निवासी, और अपने नगरों समेत मगिद्दो के निवासी, ये तीनों जो ऊंचे स्थानों पर बसे हैं मिले। १२ परन्तु मनश्शेई उन नगरों के निवासियों को उन में से नहीं निकाल सके; इसलिये वे कनानी उस देश में बरियाई से बसे ही रहे। १३ तौभी जब इस्राएली सामर्थी हो गए, तब कनानियों से बेगारी तो कराने लगे, परन्तु उनको पूरी रीति से निकाल बाहर न किया॥

१४ यूसुफ की सन्तान यहोशू से कहने लगी, हम तो गिनती में बहुत हैं, क्योंकि अब तक यहोवा हमें आशीष ही देता आया है, फिर तू ने हमारे भाग के लिये चिट्ठी डालकर क्यों एक ही अंश दिया है? १५ यहोशू ने उन से कहा, यदि तुम गिनती में बहुत हो, और एप्रैम का पहाड़ी देश तुम्हारे लिये छोटा हो, तो परिज्जयों और रपाइयों का देश जो जंगल है उसमें जाकर पेड़ों को काट डालो। १६ यूसुफ की सन्तान ने कहा, वह पहाड़ी देश हमारे लिये छोटा है; और क्या बेतशान और उसके नगरों में रहनेवाले, क्या यिज्रेल की तराई में रहनेवाले, जितने कनानी नीचे के देश में रहते हैं, उन सभों के पास लोहे के रथ हैं। १७ फिर यहोशू ने, क्या एप्रैमी क्या मनश्शेई, अर्थात् यूसुफ के सारे घराने से कहा, हां तुम लोग तो गिनती में बहुत हो, और तुम्हारी बड़ी सामर्थ्य भी है, इसलिये तुम को केवल एक ही भाग न मिलेगा; १८ पहाड़ी देश भी तुम्हारा हो जाएगा; क्योंकि वह जंगल तो है, परन्तु उसके पेड़ काट डालो, तब उसके आस पास का देश भी तुम्हारा हो जाएगा; क्योंकि चाहे कनानी सामर्थी हों, और उनके पास लोहे के रथ भी हों, तौभी तुम उन्हें वहां से निकाल सकोगे॥

१८ फिर इस्राएलियों की सारी मण्डली ने शीलो में इकट्ठी होकर वहां मिलापवाले तम्बू को खड़ा किया; क्योंकि देश उनके वश में आ गया था। २ और इस्राएलियों में से सात गोत्रों के लोग अपना अपना भाग बिना पाये रह गए थे। ३ तब यहोशू ने इस्राएलियों से कहा, जो देश तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दिया है, उसे अपने अधिकार में कर लेने में तुम कब तक ढिलाई करते रहोगे? ४ अब प्रति गोत्र के पीछे तीन मनुष्य ठहरा लो, और मैं उन्हें इसलिये भेजूंगा कि वे चलकर देश में घूमें फिरें, और अपने अपने गोत्र के भाग के प्रयोजन के अनुसार उसका हाल लिख लिखकर मेरे पास लौट आएं। ५ और वे देश के सात भाग लिखें, यहूदी तो दक्खिन की ओर अपने भाग में, और यूसुफ के घराने के लोग उत्तर की ओर अपने भाग में रहें। ६ और तुम देश के सात भाग लिखकर मेरे पास ले आओ; और मैं यहां तुम्हारे लिये अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने चिट्ठी डालूंगा। ७ और लेवियों का तुम्हारे मध्य में कोई भाग न होगा, क्योंकि यहोवा का दिया हुआ याजकपद ही उनका भाग है; और गाद, रूबेन, और मनश्शे के आधे गोत्र के लोग यरदन के पूर्व की ओर यहोवा के दास मूसा का दिया हुआ अपना अपना भाग पा चुके हैं। ८ तो वे पुरुष उठकर चल दिए; और जो उस देश का हाल

लिखने को चले उन्हें यहोशू ने यह आज्ञा दी, कि जाकर देश में घूमो फिरो, और उसका हाल लिखकर मेरे पास लौट आओ; और मैं यहां शिलो में यहोवा के साम्हने तुम्हारे लिये चिट्ठी डालूंगा। ९ तब वे पुरुष चल दिए, और उस देश में घूमे, और उसके नगरों के सात भाग करके उनका हाल पुस्तक में लिखकर शीलो की छावनी में यहोशू के पास आए। १० तब यहोशू ने शीलो में यहोवा के साम्हने उनके लिये चिट्ठियां डालीं; और वहीं यहोशू ने इस्राएलियों को उनके भागों के अनुसार देश बांट दिया॥

११ और बिन्यामीनियों के गोत्र की चिट्ठी उनके कुलों के अनुसार निकली, और उनका भाग यहूदियों और यूसुफियों के बीच में पड़ा। १२ और उनका उत्तरी सिवाना यरदन से आरम्भ हुआ, और यरीहो की उत्तर अलंग से चढ़ते हुए पश्चिम की ओर पहाड़ी देश में होकर बेतावेन के जंगल में निकला; १३ वहां से वह लूज को पहुंचा (जो बेतेल भी कहलाता है), और लूज की दक्खिन अलंग से होते हुए निचले बेथोरोन की दक्खिन ओर के पहाड़ के पास हो अत्रोतद्दार को उतर गया। १४ फिर पश्चिमी सिवाना मुड़के बेथोरोन के साम्हने और उसकी दक्खिन ओर के पहाड़ से होते हुए किर्यतबाल नाम यहूदियों के एक नगर पर निकला (जो किर्यत्यारीम भी कहलाता है); पश्चिम का सिवाना यही ठहरा। १५ फिर दक्खिन अलंग का सिवाना पश्चिम से आरम्भ होकर किर्यत्यारीम के सिरे से निकलकर नेप्तोह के सोते पर पहुंचा; १६ और उस पहाड़ के सिरे पर उतरा, जो हिन्नोम के पुत्र की तराई के साम्हने और रपाईम नाम तराई की उत्तर ओर है; वहां से वह हिन्नोम की तराई में, अर्थात् यबूस की दक्खिन अलंग होकर एनरोगेल को उतरा; १७ वहां से वह उत्तर की ओर मुड़कर एनशेमेश को निकलकर उस गलीलोत की ओर गया, जो अदुम्मीम की चढ़ाई के साम्हने है, फिर वहां से वह रूबेन के पुत्र बोहन के पत्थर तक उतर गया; १८ वहां से वह उत्तर की ओर जाकर अराबा के साम्हने के पहाड़ की अलंग में होते हुए अराबा को उतरा; १९ वहां से वह सिवाना बेथोग्ला की उत्तर अलंग में जाकर खारे ताल की उत्तर ओर के कोल में यरदन के मुहाने पर * निकला दक्खिन का सिवाना यही ठहरा। २० और पूर्व की ओर का सिवाना यरदन ही ठहरा। बिन्यामीनियों का भाग, चारों ओर के सिवानों सहित, उनके कुलों के अनुसार, यही ठहरा। २१ और बिन्यामीनियों के गोत्र को उनके कुलों के अनुसार ये नगर मिले, अर्थात् यरीहो, बेथोग्ला, एमेक्कसीस, २२ बेतराबा, समारैम, बेतेल, २३ अव्वीम, पारा, ओप्रा, २४ कपरम्मोनी, ओप्नी और गेबा; ये बारह नगर और इनके गांव मिले। २५ फिर गिबोन, रामा, बेरोत, २६ मिस्पे, कपीरा, मोसा, २७ रेकेम, यिर्पेल, तरला, २८ सेला, एलेप, यबूस (जो यरूशलेम भी कहलाता है), गिबत और किर्यत; ये चौदह नगर और इनके गांव उन्हें मिले। बिन्यामीनियों का भाग उनके कुलों के अनुसार यही ठहरा॥

१९

दूसरी चिट्ठी शिमोन के नाम पर, अर्थात् शिमोनियों के कुलों के अनुसार उनके गोत्र के नाम पर निकली; और उनका भाग यहूदियों के भाग के

---

* मूल में—दक्खिनी सिरे पर।

बीच में ठहरा। २ उनके भाग में ये नगर हैं, अर्थात् बेर्शेबा, शेबा, मोलादा, ३ हसर्शूआल, बाला, एसेम, ४ एलतोलद, बतूल होर्मा, ५ सिक्लग, बेत्मर्काबोत, हसर्शूसा, ६ बेतलबाओत, और शारूहेन; ये तेरह नगर और इनके गांव उन्हें मिले। ७ फिर ऐन, रिम्मोन, एतेर, और आशान, ये चार नगर गांवों समेत; ८ और बालत्बेर जो दक्खिन देश का रामा भी कहलाता है, वहां तक इन नगरों के चारों ओर के सब गांव भी उन्हें मिले। शिमोनियों के गोत्र का भाग उनके कुलों के अनुसार यही ठहरा। ९ शिमोनियों का भाग तो यहूदियों के अंश में से दिया गया; क्योंकि यहूदियों का भाग उनके लिये बहुत था, इस कारण शिमोनियों का भाग उन्हीं के भाग के बीच ठहरा॥

१० तीसरी चिट्ठी जबूलूनियों के कुलों के अनुसार उनके नाम पर निकली। और उनके भाग का सिवाना सारीद तक पहुंचा; ११ और उनका सिवाना पश्चिम की ओर मरला को चढ़कर दब्बेशेत को पहुंचा, और योकनाम के साम्हने के नाले तक पहुंच गया; १२ फिर सारीद से वह सूर्योदय की ओर मुड़कर किसलोत्ताबोर के सिवाने तक पहुंचा, और वहां से बढ़ते बढ़ते दाबरत में निकला, और यापी की ओर जा निकला; १३ वहां से वह पूर्व की ओर आगे बढ़कर गथेपेर और इत्कासीन को गया, और उस रिम्मोन में निकला जो नेआ तक फैला हुआ है; १४ वहां से वह सिवाना उसके उत्तर की ओर से मुड़कर हन्नातोन पर पहुंचा, और यिप्तहेल की तराई में जा निकला; १५ कत्तात, नहलाल, शिम्रोन, यिदला, और बेतलेहम; ये बारह नगर उनके गांवों समेत उसी भाग के ठहरे। १६ जबूलूनियों का भाग उनके कुलों के अनुसार यही ठहरा; और उस में अपने अपने गांवों समेत ये ही नगर हैं॥

१७ चौथी चिट्ठी इस्साकारियों के कुलों के अनुसार उनके नाम पर निकली। १८ और उनका सिवाना यिज्रेल, कसुल्लोत, शूनेम १९ हपारैम, शीओन, अनाहरत, २० रब्बीत, किश्योत, एबेस, २१ रेमेत, एनगन्नीम, एनहद्दा, और बेत्पस्सेस तक पहुंचा। २२ फिर वह सिवाना ताबोर-शहसूमा और बेतशेमेश तक पहुंचा, और उनका सिवाना यरदन नदी पर जा निकला; इस प्रकार उनको सोलह नगर अपने अपने गांवों समेत मिले। २३ कुलों के अनुसार इस्साकारियों के गोत्र का भाग नगरों और गांवों समेत यही ठहरा॥

२४ पांचवीं चिट्ठी आशेरियों के गोत्र के कुलों के अनुसार उनके नाम पर निकली। २५ उनके सिवाने में हेल्कत, हली, बेतेन, अक्षाप, २६ अलाम्मेल्लेक, अमाद, और मिशाल थे; और वह पश्चिम की ओर कार्म्मेल तक और शीहोर्लिब्नात तक पहुंचा; २७ फिर वह सूर्योदय की ओर मुड़कर बेतदागोन को गया, और जबलून के भाग तक, और यिप्तहेल की तराई से उत्तर की ओर होकर बेतेमेक और नीएल तक पहुंचा; और उत्तर की ओर जाकर काबूल पर निकला, २८ और वह एब्रोन, रहोब, हम्मोन, और काना से होकर बड़े सीदोन को पहुंचा; २९ वहां से वह सिवाना मुड़कर रामा से होते हुए सोर नाम गढ़वाले नगर तक चला गया; फिर सिवाना होसा की ओर मुड़कर और अकजीब के पास के देश में होकर समुद्र पर निकला, ३० उम्मा, अपेक, और रहोब भी उनके भाग में ठहरे;

इस प्रकार बाईस नगर अपने अपने गांवों समेत उनको मिले। ३१ कुलों के अनुसार आशेरियों के गोत्र का भाग नगरों और गांवों समेत यही ठहरा ॥

३२ छठवीं चिट्ठी नप्तालियों के कुलों के अनुसार उनके नाम पर निकली। ३३ और उनका सिवाना हेलेप से, और सांनन्नीम में के बांज बृक्ष से, अदामीनेकेब और यब्नेल से होकर, और लक्कूम को जाकर यरदन पर निकला; ३४ वहां से वह सिवाना पश्चिम की ओर मुड़कर अजनोत्ताबोर को गया, और वहां से हुक्कोक को गया, और दक्खिन, और जबूलून के भाग तक, और पश्चिम की ओर आशेर के भाग तक, और सूर्योदय की ओर यहूदा के भाग के पास की यरदन नदी पर पहुंचा। ३५ और उनके गढ़वाले नगर ये हैं, अर्थात् सिद्दीम, सेर, हम्मत, रक्कत, किन्नेरेत, ३६ अदामा, रामा, हासोर, ३७ केदेश, एद्रेई, एन्हासेर, ३८ यिरोन, मिगदलेल, होरेम, बेतनात, और बेतशेमेश; ये उन्नीस नगर गांवों समेत उनको मिले। ३९ कुलों के अनुसार नप्तालियों के गोत्र का भाग नगरों और उनके गांवों समेत यही ठहरा ॥

४० सातवीं चिट्ठी कुलों के अनुसार दानियों के गोत्र के नाम पर निकली। ४१ और उनके भाग के सिवाने में सोरा, एशताओल, ईरशेमेश, ४२ शालब्बीन, अय्यालोन, यितला, ४३ एलोन, तिम्ना, एक्रोन, ४४ एलतके, गिब्बतोन, बालात, ४५ यहूद, बनेबराक, गत्रिम्मोन, ४६ मेयर्कोन, और रक्कोन ठहरे, और यापो के साम्हने का सिवाना भी उनका था। ४७ और दानियों का भाग इस से * अधिक हो गया, अर्थात् दानी लेशेम पर चढ़कर उस से लड़े, और उसे लेकर तलवार से मार डाला, और उसको अपने अधिकार में करके उस में बस गए, और अपने मूलपुरुष के नाम पर लेशेम का नाम दान रखा। ४८ कुलों के अनुसार दानियों के गोत्र का भाग नगरों और गांवों समेत यही ठहरा ॥

४९ जब देश का बांटा जाना सिवानों के अनुसार निपट गया, तब इस्राएलियों ने नून के पुत्र यहोशू को भी अपने बीच में एक भाग दिया। ५० यहोवा के कहने के अनुसार उन्हों ने उसको उसका मांगा हुआ नगर दिया, यह एप्रैम के पहाड़ी देश में का तिम्नत्सेरह है; और वह उस नगर को बसाकर उस में रहने लगा ॥

५१ जो जो भाग एलीआज़र याजक, और नून के पुत्र यहोशू, और इस्राएलियों के गोत्रों के घरानों के पूर्वजों के मुख्य मुख्य पुरुषों ने शीलो में, मिलापवाले तम्बू के द्वार पर, यहोवा के साम्हने चिट्ठी डाल डालके बांट दिए वे ये ही हैं। निदान उन्हों ने देश विभाजन का काम निपटा दिया ॥

(शरण नगरों का ठहराया जाना)

२० फिर यहोवा ने यहोशू से कहा, २ इस्राएलियों से यह कह, कि मैं ने मूसा के द्वारा तुम से शरण नगरों की जो चर्चा की थी उसके अनुसार उनको ठहरा लो, ३ जिस से जो कोई भूल से बिना जाने किसी को मार डाले, वह उन में से किसी में भाग जाए; इसलिये वे नगर खून के पलटा लेनेवाले से बचने के लिये तुम्हारे शरणस्थान ठहरें। ४ वह उन नगरों में से किसी को भाग जाए, और उस नगर के फाटक में से खड़ा होकर उसके पुरनियों को अपना मुकद्दमा कह सुनाए; और वे उसको

* मूल में—उन से।

अपने नगर में अपने पास टिका लें, और उसे कोई स्थान दें, जिस में वह उनके साथ रहे। ५ और यदि खून का पलटा लेनेवाला उसका पीछा करे, तो वे यह जानकर कि उस ने अपने पड़ोसी को बिना जाने, और पहिले उस से बिना बैर रखे मारा, उस खूनी को उसके हाथ में न दें। ६ और जब तक वह मण्डली के साम्हने न्याय के लिये खड़ा न हो, और जब तक उन दिनों का महायाजक न मर जाए, तब तक वह उसी नगर में रहे; उसके बाद वह खूनी अपने नगर को लौटकर जिस से वह भाग आया हो अपने घर में फिर रहने पाए। ७ और उन्हों ने नप्ताली के पहाड़ी देश में गलील के केदेश को, और एप्रैम के पहाड़ी देश में शकेम को, और यहूदा के पहाड़ी देश में किर्य्यतर्बा को, (जो हेब्रोन भी कहलाता है) पवित्र ठहराया। ८ और यरीहो के पास के यरदन के पूर्व की ओर उन्हों ने रूबेन के गोत्र के भाग में बेसेर को, जो जंगल में चौरस भूमि पर बसा हुआ है, और गाद के गोत्र के भाग में गिलाद के रामोत को, और मनश्शे के गोत्र के भाग में बाशान के गोलान को ठहराया। ९ सारे इस्राएलियों के लिये, और उन से बीच रहनेवाले परदेशियों के लिये भी, जो नगर इस मनसा से ठहराए गए कि जो कोई किसी प्राणी को भूल से मार डाले वह उन में से किसी में भाग जाए, और जब तक न्याय के लिये मण्डली के साम्हने खड़ा न हो, तब तक खून का पलटा लेनेवाला उसे मार डालने न पाए, वे ये ही हैं॥

(लेवियों को बसने के नगरों का दिया जाना)

२१ तब लेवियों के पूर्वजों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुष एलीआज़र याजक, और नून के पुत्र यहोशू, और इस्राएली गोत्रों के पूर्वजों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुषों के पास आकर २ कनान देश के शीलो नगर में कहने लगे, यहोवा ने मूसा से हमें बसने के लिये नगर, और हमारे पशुओं के लिये उन्हीं नगरों की चराइयां भी देने की आज्ञा दिलाई थी। ३ तब इस्राएलियों ने यहोवा के कहने के अनुसार अपने अपने भाग में से लेवियों को चराइयों समेत ये नगर दिए॥

४ और कहातियों के कुलों के नाम पर चिट्ठी निकली। इसलिये लेवियों में से हारून याजक के वंश को यहूदी, शिमोन, और बिन्यामीन के गोत्रों के भागों में से तेरह नगर मिले॥

५ और बाकी कहातियों को एप्रैम के गोत्र के कुलों, और दान के गोत्र, और मनश्शे के आधे गोत्र के भागों में से चिट्ठी डाल डालकर दस नगर दिए गए॥

६ और गेर्शोनियों को इस्साकार के गोत्र के कुलों, और आशेर, और नप्ताली के गोत्रों के भागों में से, और मनश्शे के उस आधे गोत्र के भागों में से भी जो बाशान में था चिट्ठी डाल डालकर तेरह नगर दिए गए॥

७ और कुलों के अनुसार मरारियों को रूबेन, गाद, और जबूलून के गोत्रों के भागों में से बारह नगर दिए गए॥

८ जो आज्ञा यहोवा ने मूसा से दिलाई थी उसके अनुसार इस्राएलियों ने लेवियों को चराइयों समेत ये नगर चिट्ठी डाल डालकर दिए। ९ उन्हों ने यहूदियों और शिमोनियों के गोत्रों के भागों में से ये नगर जिनके नाम लिखे हैं दिए; १० ये नगर लेवीय कहाती कुलों में से हारून के वंश के लिये थे; क्योंकि पहिली चिट्ठी उन्हीं के नाम

पर निकली थी। ११ अर्थात् उन्हों ने उनको यहूदा के पहाड़ी देश में चारों ओर की चराइयों समेत किर्यतर्बा नगर दे दिया, जो अनाक के पिता अर्बा के नाम पर कहलाया और हेब्रोन भी कहलाता है। १२ परन्तु उस नगर के खेत और उसके गांव उन्हों ने यपुन्ने के पुत्र कालेब को उसकी निज भूमि करके दे दिए॥

१३ तब उन्हों ने हारून याजक के वंश को चराइयों समेत खूनी के शरण नगर हेब्रोन, और अपनी अपनी चराइयों समेत लिब्ना, १४ यत्तीर, एशतमो, १५ होलोन, दबीर, ऐन, १६ युत्ता और बेतशेमेश दिए; इस प्रकार उन दोनों गोत्रों के भागों में से नौ नगर दिए गए। १७ और बिन्यामीन के गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत ये चार नगर दिए गए, अर्थात् गिबोन, गेबा, १८ अनातोत और अल्मोन। १९ इस प्रकार हारूनवंशी याजकों को तेरह नगर और उनकी चराइयां मिलीं॥

२० फिर बाकी कहाती लेवियों के कुलों के भाग के नगर चिट्ठी डाल डालकर एप्रैम के गोत्र के भाग में से दिए गए। २१ अर्थात् उनको चराइयों समेत एप्रैम के पहाड़ी देश में खूनी के शरण लेने का शकेम नगर दिया गया, फिर अपनी अपनी चराइयों समेत गेजेर, २२ किबसैम, और बेथोरोन; ये चार नगर दिए गए। २३ और दान के गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत, एलतके, गिब्बतोन, २४ अय्यालोन, और गत्रिम्मोन; ये चार नगर दिए गए। २५ और मनश्शे के आधे गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत तानाक और गत्रिम्मोन; ये दो नगर दिए गए। २६ इस प्रकार बाकी कहातियों के कुलों के सब नगर चराइयों समेत दस ठहरे॥

२७ फिर लेवियों के कुलों में के गेर्शोनियों को मनश्शे के आधे गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत खूनी के शरण नगर बाशान का गोलान और बेशतरा; ये दो नगर दिए गए। २८ और इस्साकार के गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत किश्योन, दाबरत, २९ यर्मूत, और एनगन्नीम; ये चार नगर दिए गए। ३० और आशेर के गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत मिशाल, अब्दोन, ३१ हेल्कात, और रहोब; ये चार नगर दिए गए। ३२ और नप्ताली के गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत खूनी के शरण नगर गलील का केदेश, फिर हम्मोतदोर, और कर्तान; ये तीन नगर दिए गए। ३३ गेर्शोनियों के कुलों के अनुसार उनके सब नगर अपनी अपनी चराइयों समेत तेरह ठहरे॥

३४ फिर बाकी लेवियों, अर्थात् मरारियों के कुलों को जबूलून के गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत योक्नाम, कर्ता, ३५ दिम्ना, और नहलाल; ये चार नगर दिए गए। ३६ और रूबेन के गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत बेसेर, यहसा, ३७ कदेमोत, और मेपात; ये चार नगर दिए गए। ३८ और गाद के गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत खूनी के शरण नगर गिलाद में का रामोत, फिर महनैम, ३९ हेशबोन, और याजेर, जो सब मिलाकर चार नगर हैं दिए गए। ४० लेवियों के बाकी कुलों अर्थात् मरारियों के कुलों के अनुसार उनके सब नगर ये ही ठहरे, इस प्रकार उनको बारह नगर चिट्ठी डाल डालकर दिए गए॥

४१ इस्राएलियों की निज भूमि के बीच लेवियों के सब नगर अपनी अपनी चराइयों

समेत अड़तालीस ठहरे। ४२ ये सब नगर अपने अपने चारों ओर की चराइयों के साथ ठहरे; इन सब नगरों की यही दशा थी॥

४३ इस प्रकार यहोवा ने इस्राएलियों को वह सारा देश दिया, जिसे उस ने उनके पूर्वजों से शपथ खाकर देने को कहा था; और वे उसके अधिकारी होकर उस में बस गए। ४४ और यहोवा ने उन सब बातों के अनुसार, जो उस ने उनके पूर्वजों से शपथ खाकर कही थीं, उन्हें चारों ओर से विश्राम दिया; और उनके शत्रुओं में से कोई भी उनके साम्हने टिक न सका; यहोवा ने उन सभों को उनके वश में कर दिया। ४५ जितनी भलाई की बातें यहोवा ने इस्राएल के घराने से कही थीं उन में से कोई बात भी न छूटी; सब की सब पूरी हुई॥

२२ उस समय यहोशू ने रूबेनियों, गादियों, और मनश्शे के आधे गोत्रियों को बुलवाकर कहा, २ जो जो आज्ञा यहोवा के दास मूसा ने तुम्हें दी थीं वे सब तुम ने मानी हैं, और जो जो आज्ञा मैं ने तुम्हें दी हैं उन सभों को भी तुम ने माना है; ३ तुम ने अपने भाइयों को इस मुद्दत में आज के दिन तक नहीं छोड़ा, परन्तु अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा तुम ने चौकसी से मानी है। ४ और अब तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे भाइयों को अपने वचन के अनुसार विश्राम दिया है; इसलिये अब तुम लौटकर अपने अपने डेरों को, और अपनी निज भूमि में, जिसे यहोवा के दास मूसा ने यरदन पार तुम्हें दिया है चले जाओ। ५ केवल इस बात की पूरी चौकसी करनी कि जो जो आज्ञा और व्यवस्था यहोवा के दास मूसा ने तुम को दी है उसको मानकर अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखो, उसके सारे मार्गों पर चलो, उसकी आज्ञाएं मानो, उसकी भक्ति में लौलीन रहो, और अपने सारे मन और सारे प्राण से उसकी सेवा करो। ६ तब यहोशू ने उन्हें आशीर्वाद देकर विदा किया; और वे अपने अपने डेरे को चले गए॥

७ मनश्शे के आधे गोत्रियों को मूसा ने बाशान में भाग दिया था; परन्तु दूसरे आधे गोत्र को यहोशू ने उनके भाइयों के बीच यरदन के पश्चिम की ओर भाग दिया। उनको जब यहोशू ने विदा किया कि अपने अपने डेरे को जाएं, ८ तब उनको भी आशीर्वाद देकर कहा, बहुत से पशु, और चांदी, सोना, पीतल, लोहा, और बहुत से वस्त्र, और बहुत धन-सम्पत्ति लिए हुए अपने अपने डेरे को लौट जाओ; और अपने शत्रुओं की लूट की सम्पत्ति को अपने भाइयों के संग बांट लेना॥

९ तब रूबेनी, गादी, और मनश्शे के आधे गोत्री इस्राएलियों के पास से, अर्थात् कनान देश के शीलो नगर से, अपनी गिलाद नाम निज भूमि में, जो मूसा से दिलाई हुई, यहोवा की आज्ञा के अनुसार उनकी निज भूमि हो गई थी, जाने की मनसा से लौट गए। १० और जब रूबेनी, गादी, और मनश्शे के आधे गोत्री यरदन की उस तराई में पहुंचे जो कनान देश में है, तब उन्हों ने वहां देखने के योग्य एक बड़ी वेदी बनाई। ११ और इसका समाचार इस्राएलियों के सुनने में आया, कि रूबेनियों, गादियों, और मनश्शे के आधे गोत्रियों ने कनान देश के साम्हने यरदन की तराई में, अर्थात् उसके उस पार जो इस्राएलियों का है, एक वेदी बनाई है। १२ जब इस्राएलियों ने यह सुना, तब इस्राएलियों की सारी मण्डली

उन से लड़ने के लिये चढ़ाई करने को शीलो में इकट्ठी हुई॥

१३ तब इस्राएलियों ने रूबेनियों, गादियों, और मनश्शे के आधे गोत्रियों के पास गिलाद देश में एलीआज़र याजक के पुत्र पीनहास को, १४ और उसके संग दस प्रधानों को, अर्थात् इस्राएल के एक एक गोत्र में से पूर्वजों के घरानों के एक एक प्रधान को भेजा, और वे इस्राएल के हज़ारों में अपने अपने पूर्वजों के घरानों के मुख्य पुरुष थे। १५ वे गिलाद देश में रूबेनियों, गादियों, और मनश्शे के आधे गोत्रियों के पास जाकर कहने लगे, १६ यहोवा की सारी मण्डली यह कहती है, कि तुम ने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का यह कैसा विश्वासघात किया; आज जो तुम ने एक वेदी बना ली है, इस में तुम ने उसके पीछे चलना छोड़कर उसके विरुद्ध आज बलवा किया है? १७ सुनो, पोर के विषय का अधर्म हमारे लिये कुछ कम था, यद्यपि यहोवा की मण्डली को भारी दण्ड मिला तौभी आज के दिन तक हम उस अधर्म से शुद्ध नहीं हुए; क्या वह तुम्हारी दृष्टि में एक छोटी बात है, १८ कि आज तुम यहोवा को त्यागकर उसके पीछे चलना छोड़ देते हो? आज तुम यहोवा से फिर जाते हो, और कल वह इस्राएल की सारी मण्डली से क्रोधित होगा। १९ परन्तु यदि तुम्हारी निज भूमि अशुद्ध हो, तो पार आकर यहोवा की निज भूमि में, जहां यहोवा का निवास रहता है, हम लोगों के बीच में अपनी अपनी निज भूमि कर लो; परन्तु हमारे परमेश्वर यहोवा की वेदी को छोड़ और कोई वेदी बनाकर न तो यहोवा से बलवा करो, और न हम से। २० देखो, जब जेरह के पुत्र आकान ने अर्पण की हुई वस्तु के विषय में विश्वासघात किया, तब क्या यहोवा का कोप इस्राएल की पूरी मण्डली पर न भड़का? और उस पुरुष के अधर्म का प्राणदण्ड अकेले उसी को न मिला॥

२१ तब रूबेनियों, गादियों, और मनश्शे के आधे गोत्रियों ने इस्राएल के हज़ारों के मुख्य पुरुषों को यह उत्तर दिया, २२ कि यहोवा जो ईश्वरों का परमेश्वर है, ईश्वरों का परमेश्वर यहोवा इसको जानता है, और इस्राएली भी इसे जान लेंगे, कि यदि यहोवा से फिरके वा उसका विश्वासघात करके हम ने यह काम किया हो, तो तू आज हम को जीवित न छोड़, २३ यदि आज के दिन हम ने वेदी को इसलिये बनाया हो कि यहोवा के पीछे चलना छोड़ दें, वा इसलिये कि उस पर होमबलि, अन्नबलि, वा मेलबलि चढ़ाएं, तो यहोवा आप इसका हिसाब ले; २४ परन्तु हम ने इसी विचार और मनसा से यह किया है कि कहीं भविष्य में तुम्हारी सन्तान हमारी सन्तान से यह न कहने लगे, कि तुम को इस्राएल के परमेश्वर यहोवा से क्या काम? २५ क्योंकि, हे रूबेनियो, हे गादियो, यहोवा ने जो हमारे और तुम्हारे बीच में यरदन को हद्द ठहरा दिया है, इसलिये यहोवा में तुम्हारा कोई भाग नहीं है। ऐसा कहकर तुम्हारी सन्तान हमारी सन्तान में से यहोवा का भय छुड़ा देगी। २६ इसीलिये हम ने कहा, आओ, हम अपने लिये एक वेदी बना लें, वह होमबलि वा मेलबलि के लिये नहीं, २७ परन्तु इसलिये कि हमारे और तुम्हारे, और हमारे बाद हमारे और तुम्हारे वंश के बीच में साक्षी का काम दे; इसलिये कि हम होमबलि, मेलबलि, और बलिदान चढ़ाकर यहोवा के सम्मुख उसकी उपासना करें; और भविष्य में तुम्हारी सन्तान हमारी

सन्तान से यह न कहने पाए, कि यहोवा में तुम्हारा कोई भाग नहीं। २८ इसलिये हम ने कहा, कि जब वे लोग भविष्य में हम से वा हमारे वंश से यों कहने लगें, तब हम उन से कहेंगे, कि यहोवा के वेदी के नमूने पर बनी हुई इस वेदी को देखो, जिसे हमारे पुरखाओं ने होमबलि वा मेलबलि के लिये नहीं बनाया; परन्तु इसलिये बनाया था कि हमारे और तुम्हारे बीच में साक्षी का काम दे। २९ यह हम से दूर रहे कि यहोवा से फिरकर आज उसके पीछे चलना छोड़ दें, और अपने परमेश्वर यहोवा की उस वेदी को छोड़कर जो उसके निवास के साम्हने है होमबलि, और अन्नबलि, वा मेलबलि के लिये दूसरी वेदी बनाएं॥

३० रूबेनियों, गादियों, और मनश्शे के आधे गोत्रियों की इन बातों को सुनकर पीनहास याजक और उसके संग मण्डली के प्रधान, जो इस्राएल के हजारों के मुख्य पुरुष थे, वे अति प्रसन्न हुए। ३१ और एलीआजर याजक के पुत्र पीनहास ने रूबेनियों, गादियों, और मनश्शेइयों से कहा, तुम ने जो यहोवा का ऐसा विश्वासघात नहीं किया, इस से आज हम ने यह जान लिया कि यहोवा हमारे बीच में है: और तुम लोगों ने इस्राएलियों को यहोवा के हाथ से बचाया है। ३२ तब एलीआजर याजक का पुत्र पीनहास प्रधानों समेत रूबेनियों और गादियों के पास से गिलाद होते हुए कनान देश में इस्राएलियों के पास लौट गया: और यह वृत्तान्त उनको कह सुनाया। ३३ तब इस्राएली प्रसन्न हुए; और परमेश्वर को धन्य कहा, और रूबेनियों और गादियों से लड़ने और उनके रहने का देश उजाड़ने के लिये चढ़ाई करने की चर्चा फिर न की। ३४ और रूबेनियों और गादियों ने यह कहकर, कि यह वेदी हमारे और उनके मध्य में इस बात का साक्षी ठहरी है, कि यहोवा ही परमेश्वर है: उस वेदी का नाम एद* रखा॥

(यहोशू के पिछले उपदेश)

२३ इसके बहुत दिनों के बाद, जब यहोवा ने इस्राएलियों को उनके चारों ओर के शत्रुओं से विश्राम दिया, और यहोशू बूढ़ा और बहुत आयु का हो गया, २ तब यहोशू सब इस्राएलियों को, अर्थात् पुरनियों, मुख्य पुरुषों, न्यायियों, और सरदारों को बुलवाकर कहने लगा, मैं तो अब बूढ़ा और बहुत आयु का हो गया हूं; ३ और तुम ने देखा है कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे निमित्त इन सब जातियों से क्या क्या किया है, क्योंकि जो तुम्हारी ओर लड़ता आया है वह तुम्हारा परमेश्वर यहोवा है। ४ देखो, मैं ने इन बची हुई जातियों को चिट्ठी डाल डालकर तुम्हारे गोत्रों का भाग कर दिया है; और यरदन से लेकर सूर्यास्त की ओर के बड़े समुद्र तक रहनेवाली उन सब जातियों को भी ऐसा ही दिया है, जिनको मैं ने काट डाला है। ५ और तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उनको तुम्हारे साम्हने से उनके देश से निकाल देगा; और तुम अपने परमेश्वर यहोवा के वचन के अनुसार उनके देश के अधिकारी हो जाओगे। ६ इसलिये बहुत हियाव बान्धकर, जो कुछ मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा है उसके पूरा करने में चौकसी करना, उस से न तो दाहिने मुड़ना और न बाएं। ७ ये जो जातियां तुम्हारे बीच रह गई हैं इनके बीच न जाना, और न इनके देवताओं के नामों की चर्चा करना, और

* अर्थात् साक्षी।

न उनकी शपथ खिलाना, और न उनकी उपासना करना, और न उनको दण्डवत् करना, ८ परन्तु जैसे आज के दिन तक तुम अपने परमेश्वर यहोवा की भक्ति में लवलीन रहते हो, वैसे ही रहा करना। ६ यहोवा ने तुम्हारे साम्हने से बड़ी बड़ी और बलवन्त जातियां निकाली हैं; और तुम्हारे साम्हने आज के दिन तक कोई ठहर नहीं सका। १० तुम में से एक मनुष्य हज़ार मनुष्यों को भगाएगा, क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तुम्हारी ओर से लड़ता है। ११ इसलिये अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखने की पूरी चौकसी करना। १२ क्योंकि यदि तुम किसी रीति यहोवा से फिरकर इन जातियों के बाकी लोगों से मिलने लगो जो तुम्हारे बीच बचे हुए रहते हैं, और इन से ब्याह शादी करके इनके साथ समधियाना रिश्ता जोड़ो, १३ तो निश्चय जान लो कि आगे को तुम्हारा परमेश्वर यहोवा इन जातियों को तुम्हारे साम्हने से नहीं निकालेगा; और ये तुम्हारे लिये जाल और फंदे, और तुम्हारे पांजरों के लिये कोड़े, और तुम्हारी आंखों में कांटे ठहरेंगी, और अन्त में तुम इस अच्छी भूमि पर से जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दी है नष्ट हो जाओगे। १४ सुनो, मैं तो अब सब संसारियों* की गति पर जानेवाला हूं, और तुम सब अपने अपने हृदय और मन में जानते हो, कि जितनी भलाई की बातें हमारे परमेश्वर यहोवा ने हमारे विषय में कहीं उन में से एक भी बिना पूरी हुए नहीं रही; वे सब की सब तुम पर घट गई हैं, उन में से एक भी बिना पूरी हुए नहीं रही। १५ तो जैसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की कही हुई सब भलाई की बातें तुम पर घटी है, वैसे ही यहोवा विपत्ति की सब बातें भी तुम पर घटाते घटाते तुम को इस अच्छी भूमि के ऊपर से, जिसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दिया है, सत्यानाश कर डालेगा। १६ जब तुम उस वाचा को, जिसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को आज्ञा देकर अपने साथ बन्धाया है, उल्लंघन करके पराये देवताओं की उपासना और उनको दण्डवत् करने लगो, तब यहोवा का कोप तुम पर भड़केगा, और तुम इस अच्छे देश में से जिसे उस ने तुम को दिया है शीघ्र नाश हो जाओगे॥

२४ फिर यहोशू ने इस्राएल के सब गोत्रों को शकेम में इकट्ठा किया, और इस्राएल के वृद्ध लोगों, और मुख्य पुरुषों, और न्यायियों, और सरदारों को बुलवाया; और वे परमेश्वर के साम्हने उपस्थित हुए। २ तब यहोशू ने उन सब लोगों से कहा, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस प्रकार कहता है, कि प्राचीन काल में इब्राहीम और नाहोर का पिता तेरह आदि, तुम्हारे पुरखा परात महानद के उस पार रहते हुए दूसरे देवताओं की उपासना करते थे। ३ और मैं ने तुम्हारे मूलपुरुष इब्राहीम को महानद के उस पार से ले आकर कनान देश के सब स्थानों में फिराया, और उसका वंश बढ़ाया। और उसे इसहाक को दिया; ४ फिर मैं ने इसहाक को याकूब और एसाव दिया। और एसाव को मैं ने सेईर नाम पहाड़ी देश दिया कि वह उसका अधिकारी हो, परन्तु याकूब बेटों-पोतों समेत मिस्र को गया। ५ फिर मैं ने मूसा और हारून को भेजकर उन सब कामों के द्वारा जो मैं ने

* मूल में—सारी पृथ्वी।

मिस्र में किए उस देश को मारा; और उसके बाद तुम को निकाल लाया। ६ और मैं तुम्हारे पुरखाओं को मिस्र में से निकाल लाया, और तुम समुद्र के पास पहुंचे; और मिस्रियों ने रथ और सवारों को संग लेकर लाल समुद्र तक तुम्हारा पीछा किया। ७ और जब तुम ने यहोवा की दोहाई दी तब उस ने तुम्हारे और मिस्रियों के बीच में अन्धियारा कर दिया, और उन पर समुद्र को बहाकर उनको डुबा दिया; और जो कुछ मैं ने मिस्र में किया उसे तुम लोगों ने अपनी आंखों से देखा; फिर तुम बहुत दिन तक जंगल में रहे। ८ तब मैं तुम को उन एमोरियों के देश में ले आया, जो यरदन के उस पार बसे थे; और वे तुम से लड़े, और मैं ने उन्हें तुम्हारे वश में कर दिया, और तुम उनके देश के अधिकारी हो गए, और मैं ने उनको तुम्हारे साम्हने से सत्यानाश कर डाला। ९ फिर मोआब के राजा सिप्पोर का पुत्र बालाक उठकर इस्राएल से लड़ा; और तुम्हें शाप देने के लिये बोर के पुत्र बिलाम को बुलवा भेजा, १० परन्तु मैं ने बिलाम की सुनने के लिये नाहीं की; वह तुम को आशीष ही आशीष देता गया; इस प्रकार मैं ने तुम को उसके हाथ से बचाया। ११ तब तुम यरदन पार होकर यरीहो के पास आए, और जब यरीहो के लोग, और एमोरी, परिज्जी, कनानी, हित्ती, गिर्गाशी, हिब्बी, और यबूसी तुम से लड़े, तब मैं ने उन्हें तुम्हारे वश में कर दिया। १२ और मैं ने तुम्हारे आगे बर्रों को भेजा, और उन्हों ने एमोरियों के दोनों राजाओं को तुम्हारे साम्हने से भगा दिया; देखो, यह तुम्हारी तलवार वा धनुष का काम नहीं हुआ। १३ फिर मैं ने तुम्हें ऐसा देश दिया जिस में तुम ने परिश्रम न किया था, और ऐसे नगर भी दिए हैं जिन्हें तुम ने न बसाया था, और तुम उन में बसे हो; और जिन दाख और जलपाई के बगीचों के फल तुम खाते हो उन्हें तुम ने नहीं लगाया था। १४ इसलिये अब यहोवा का भय मानकर उसकी सेवा खराई और सच्चाई से करो; और जिन देवताओं की सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के उस पार और मिस्र में करते थे, उन्हें दूर करके यहोवा की सेवा करो। १५ और यदि यहोवा की सेवा करनी तुम्हें बुरी लगे, तो आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे, चाहे उन देवताओं की जिनकी सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के उस पार करते थे, और चाहे एमोरियों के देवताओं की सेवा करो जिनके देश में तुम रहते हो; परन्तु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा नित करूंगा। १६ तब लोगों ने उत्तर दिया, यहोवा को त्यागकर दूसरे देवताओं की सेवा करनी हम से दूर रहे; १७ क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा वही है जो हम को और हमारे पुरखाओं को दासत्व के घर, अर्थात् मिस्र देश से निकाल ले आया, और हमारे देखते देखते बड़े बड़े आश्चर्य कर्म किए, और जिस मार्ग पर और जितनी जातियों के मध्य में से हम चले आते थे उन में हमारी रक्षा की; १८ और हमारे साम्हने से इस देश में रहनेवाली एमोरी आदि सब जातियों को निकाल दिया है; इसलिये हम भी यहोवा की सेवा करेंगे, क्योंकि हमारा परमेश्वर वही है। १९ यहोशू ने लोगों से कहा, तुम से यहोवा की सेवा नहीं हो सकती; क्योंकि वह पवित्र परमेश्वर है; वह जलन रखनेवाला ईश्वर है; वह तुम्हारे अपराध और पाप क्षमा न करेगा। २० यदि तुम यहोवा को त्यागकर पराए देवताओं की सेवा करने लगोगे, तो

यद्यपि वह तुम्हारा भला करता आया है तौभी वह फिरकर तुम्हारी हानि करेगा, और तुम्हारा अन्त भी कर डालेगा। २१ लोगों ने यहोशू से कहा, नहीं; हम यहोवा ही की सेवा करेंगे। २२ यहोशू ने लोगों से कहा, तुम आप ही अपने साक्षी हो कि तुम ने यहोवा की सेवा करनी अंगीकार कर ली है। उन्हों ने कहा, हां, हम साक्षी हैं। २३ यहोशू ने कहा, अपने बीच में से पराए देवताओं को दूर करके अपना अपना मन इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की ओर लगाओ। २४ लोगों ने यहोशू से कहा, हम तो अपने परमेश्वर यहोवा ही की सेवा करेंगे, और उसी की बात मानेंगे। २५ तब यहोशू ने उसी दिन उन लोगों से वाचा बन्धाई, और शकेम में उनके लिये विधि और नियम ठहराया ॥

२६ यह सारा वृत्तान्त यहोशू ने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में लिख दिया; और एक बड़ा पत्थर चुनकर वहां उस बांज-वृक्ष के तले खड़ा किया, जो यहोवा के पवित्र स्थान में था। २७ तब यहोशू ने सब लोगों से कहा, सुनो, यह पत्थर हम लोगों का साक्षी रहेगा, क्योंकि जितने वचन यहोवा ने हम से कहे हैं उन्हें इस ने सुना है; इसलिये यह तुम्हारा साक्षी रहेगा, ऐसा न हो कि तुम अपने परमेश्वर से मुकर जाओ। २८ तब यहोशू ने लोगों को अपने अपने निज भाग पर जाने के लिये विदा किया ॥

(यहोशू और एलीआज़र का मरना)

२९ इन बातों के बाद यहोवा का दास, नून का पुत्र यहोशू, एक सौ दस वर्ष का होकर मर गया। ३० और उसको तिम्नत्सेरह में, जो एप्रैम के पहाड़ी देश में गाश नाम पहाड़ की उत्तर अलंग पर है, उसी के भाग में मिट्टी दी गई। ३१ और यहोशू के जीवन भर, और जो वृद्ध लोग यहोशू के मरने के बाद जीवित रहे और जानते थे कि यहोवा ने इस्राएल के लिये कैसे कैसे काम किए थे, उनके भी जीवन भर इस्राएली यहोवा ही की सेवा करते रहे। ३२ फिर यूसुफ की हड्डियां जिन्हें इस्राएली मिस्र से ले आए थे वे शकेम की भूमि के उस भाग में गाड़ी गईं, जिसे याकूब ने शकेम के पिता हमोर से एक सौ चांदी के सिक्कों में मोल लिया था; इसलिये वह यूसुफ की सन्तान का निज भाग हो गया। ३३ और हारून का पुत्र एलीआज़र भी मर गया; और उसको एप्रैम के पहाड़ी देश में उस पहाड़ी पर मिट्टी दी गई, जो उसके पुत्र पीनहास के नाम पर गिबत्पीनहास कहलाती है और उसको दे दी गई थी ॥

न्यायियों

(कनानियों में से किसी किसी का नष्ट होना और किसी किसी का बच जाना)

१ यहोशू के मरने के बाद इस्राएलियों ने यहोवा से पूछा, कि कनानियों के विरुद्ध लड़ने को हमारी ओर से पहिले कौन चढ़ाई करेगा? २ यहोवा ने उत्तर दिया, यहूदा चढ़ाई करेगा; सुनो, मैं ने इस देश को उसके हाथ में दे दिया है। ३ तब यहूदा ने अपने भाई शिमोन से कहा, मेरे संग मेरे भाग में आ, कि हम कनानियों से लड़ें; और मैं भी तेरे भाग में जाऊंगा। सो शिमोन उसके संग चला। ४ और यहूदा ने चढ़ाई की, और यहोवा ने कनानियों और परिज्जियों को उसके हाथ में कर दिया; तब उन्हों ने बेजेक में उन में से दस हजार पुरुष मार डाले। ५ और बेजेक में अदोनीबेजेक को पाकर वे उस से लड़े, और कनानियों और परिज्जियों को मार डाला। ६ परन्तु अदोनीबेजेक भागा; तब उन्हों ने उसका पीछा करके उसे पकड़ लिया, और उसके हाथ पांव के अंगूठे काट डाले। ७ तब अदोनीबेजेक ने कहा, हाथ पांव के अंगूठे काटे हुए सत्तर राजा मेरी मेज़ के नीचे टुकड़े बीनते थे; जैसा मैं ने किया था, वैसा ही बदला परमेश्वर ने मुझे दिया है। तब वे उसे यरूशलेम को ले गए और वहां वह मर गया॥

८ और यहूदियों ने यरूशलेम से लड़कर उसे ले लिया, और तलवार से उसके निवासियों को मार डाला, और नगर को फूंक दिया। ९ और तब यहूदी पहाड़ी देश, और दक्खिन देश, और नीचे के देश में रहनेवाले कनानियों से लड़ने को गए। १० और यहूदा ने उन कनानियों पर चढ़ाई की जो हेब्रोन में रहते थे (हेब्रोन का नाम तो पूर्वकाल में किर्यतर्बा था); और उन्हों ने शेशै, अहीमन, और तल्मै को मार डाला। ११ वहां से उस ने जाकर दबीर के निवासियों पर चढ़ाई की। (दबीर का नाम तो पूर्वकाल में किर्यत्सेपेर था।) १२ तब कालेब ने कहा, जो किर्यत्सेपेर को मारके ले ले उसे मैं अपनी बेटी अकसा को ब्याह दूंगा। १३ इस पर कालेब के छोटे भाई कनजी ओत्नीएल ने उसे ले लिया; और उस ने उसे अपनी बेटी अकसा को ब्याह दिया। १४ और जब वह ओत्नीएल के पास आई, तब उस ने उसको अपने पिता से कुछ भूमि मांगने को उभारा; फिर वह अपने गदहे पर से उतरी, तब कालेब ने उस से पूछा, तू क्या चाहती है? १५ वह उस से बोली मुझे आशीर्वाद दे; तू ने मुझे दक्खिन देश तो दिया है, तो जल के सोते भी दे। इस प्रकार कालेब ने उसको ऊपर और नीचे के दोनों सोते दे दिए॥

१६ और मूसा के साले, एक केनी मनुष्य के सन्तान, यहूदी के संग खजूर वाले नगर से यहूदा के जंगल में गए जो अराद के दक्खिन की ओर है, और जाकर इस्राएली लोगों के साथ रहने लगे। १७ फिर यहूदा ने अपने भाई शिमोन के संग जाकर सपत में रहनेवाले कनानियों

को मार लिया, और उस नगर को सत्यानाश कर डाला। इसलिये उस नगर का नाम होर्मा * पड़ा। १८ और यहूदा ने चारों ओर की भूमि समेत अज्जा, अशकलोन, और एक्रोन को ले लिया। १९ और यहोवा यहूदा के साथ रहा, इसलिये उस ने पहाड़ी देश के निवासियों को निकाल दिया; परन्तु तराई के निवासियों के पास लोहे के रथ थे, इसलिये वह उन्हें न निकाल सका। २० और उन्हों ने मूसा के कहने के अनुसार हेब्रोन कालेब को दे दिया: और उस ने वहां से अनाक के तीनों पुत्रों को निकाल दिया। २१ और यरूशलेम में रहनेवाले यबूसियों को बिन्यामीनियों ने न निकाला; इसलिये यबूसी आज के दिन तक यरूशलेम में बिन्यामीनियों के संग रहते हैं॥

२२ फिर यूसुफ के घराने ने बेतेल पर चढ़ाई की; और यहोवा उनके संग था। २३ और यूसुफ के घराने ने बेतेल का भेद लेने को लोग भेजे। (और उस नगर का नाम पूर्वकाल में लूज था।) २४ और पहरुओं ने एक मनुष्य को उस नगर से निकलते हुए देखा, और उस से कहा, नगर में जाने का मार्ग हमें दिखा, और हम तुझ पर दया करेंगे। २५ जब उस ने उन्हें नगर में जाने का मार्ग दिखाया, तब उन्हों ने नगर को तो तलवार से मारा, परन्तु उस मनुष्य को सारे घराने समेत छोड़ दिया। २६ उस मनुष्य ने हित्तियों के देश में जाकर एक नगर बसाया, और उसका नाम लूज रखा; और आज के दिन तक उसका नाम वही है॥

* अर्थात् सत्यानाश करना।

२७ मनश्शे ने अपने अपने गांवों समेत बेतशान, तानाक, दोर, यिबलाम, और मगिद्दों के निवासियों को न निकाला; इस प्रकार कनानी उस देश में बसे ही रहे। २८ परन्तु जब इस्राएली सामर्थी हुए, तब उन्हों ने कनानियों से बेगारी ली, परन्तु उन्हें पूरी रीति से न निकाला॥

२९ और एप्रैम ने गेजेर में रहनेवाले कनानियों को न निकाला; इसलिये कनानी गेजेर में उनके बीच में बसे रहे॥

३० जबलून ने कित्रोन और नहलोल के निवासियों को न निकाला; इसलिये कनानी उनके बीच में बसे रहे, और उनके वश में हो गए॥

३१ आशेर ने अक्को, सीदोन, अहलाब, अकजीब, हेलबा, अपीक, और रहोब के निवासियों को न निकाला; ३२ इसलिये आशेरी लोग देश के निवासी कनानियों के बीच में बस गए; क्योंकि उन्हों ने उनको न निकाला था॥

३३ नप्ताली ने बेतशेमेश और बेतनात के निवासियों को न निकाला, परन्तु देश के निवासी कनानियों के बीच में बस गए; तौभी बेतशेमेश और बेतनात के लोग उनके वश में हो गए॥

३४ और एमोरियों ने दानियों को पहाड़ी देश में भगा दिया, और तराई में आने न दिया; ३५ इसलिये एमोरी हेरेस नाम पहाड़, अय्यलोन और शालबीम में बसे ही रहे, तौभी यूसुफ का घराना यहां तक प्रबल हो गया कि वे उनके वश में हो गए। ३६ और एमोरियों के देश का सिवाना अक्रब्बीम नाम पर्वत की चढ़ाई से आरम्भ करके ऊपर की ओर था॥

(इस्राएलियों का बिगड़ना और उसका दण्ड भोगना, और फिर पश्चात्ताप करके छुटकारा पाना)

२ और यहोवा का दूत गिलगाल से बोकीम को जाकर कहने लगा, कि मैं ने तुम को मिस्र से ले आकर इस देश में पहुंचाया है, जिसके विषय में मैं ने तुम्हारे पुरखाओं से शपथ खाई थी। और मैं ने कहा था, कि जो वाचा मैं ने तुम से बान्धी है, उसे मैं कभी न तोड़ूंगा; २ इसलिये तुम इस देश के निवासियों से वाचा न बान्धना; तुम उनकी वेदियों को ढा देना। परन्तु तुम ने मेरी बात नहीं मानी। तुम ने ऐसा क्यों किया है? ३ इसलिये मैं कहता हूं, कि मैं उन लोगों को तुम्हारे साम्हने से न निकालूंगा; और वे तुम्हारे पांजर में कांटे, और उनके देवता तुम्हारे लिये फंदे ठहरेंगे। ४ जब यहोवा के दूत ने सारे इस्राएलियों से ये बातें कहीं, तब वे लोग चिल्ला चिल्लाकर रोने लगे। ५ और उन्हों ने उस स्थान का नाम बोकीम* रखा। और वहां उन्हों ने यहोवा के लिये बलि चढ़ाया॥

६ जब यहोशू ने लोगों को विदा किया था, तब इस्राएली देश को अपने अधिकार में कर लेने के लिये अपने अपने निज भाग पर गए। ७ और यहोशू के जीवन भर, और उन वृद्ध लोगों के जीवन भर जो यहोशू के मरने के बाद जीवित रहे और देख चुके थे कि यहोवा ने इस्राएल के लिये कैसे कैसे बड़े काम किए हैं, इस्राएली लोग यहोवा की सेवा करते रहे। ८ निदान यहोवा का दास नून का पुत्र यहोशू एक सौ दस वर्ष का होकर मर गया। ९ और उसको तिम्नथेरेस में जो एप्रैम के पहाड़ी देश में गाश नाम पहाड़ की उत्तर अलंग पर है, उसी के भाग में मिट्टी दी गई। १० और उस पीढ़ी के सब लोग भी अपने अपने पितरों में मिल गए; तब उसके बाद जो दूसरी पीढ़ी हुई उसके लोग न तो यहोवा को जानते थे और न उस काम को जो उस ने इस्राएल के लिये किया था॥

११ इसलिये इस्राएली वह करने लगे जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, और बाल नाम देवताओं की उपासना करने लगे; १२ वे अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा को, जो उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया था, त्यागकर पराये देवताओं, अर्थात् आसपास के लोगों के देवताओं की उपासना करने लगे, और उन्हें दण्डवत् किया; और यहोवा को रिस दिलाई। १३ वे यहोवा को त्याग कर के बाल देवताओं और अशतोरेत देवियों की उपासना करने लगे। १४ इसलिये यहोवा का कोप इस्राएलियों पर भड़क उठा, और उस ने उनको लुटेरों के हाथ में कर दिया जो उन्हें लूटने लगे; और उस ने उनको चारों ओर के शत्रुओं के आधीन कर दिया; और वे फिर अपने शत्रुओं के साम्हने ठहर न सके। १५ जहां कहीं वे बाहर जाते वहां यहोवा का हाथ उनकी बुराई में लगा रहता था, जैसे यहोवा ने उन से कहा था, वरन यहोवा ने शपथ भी खाई थी; इस प्रकार वे बड़े संकट में पड़ गए। १६ तौभी यहोवा उनके लिये न्यायी ठहराता था जो उन्हें लूटने वाले के हाथ से छुड़ाते थे। १७ परन्तु वे अपने न्यायियों की भी नहीं मानते थे; वरन व्यभिचारिन की नाईं पराये

* अर्थात् रोनेवाले।

देवताओं के पीछे चलते और उन्हें दण्डवत् करते थे; उनके पूर्वज जो यहोवा की आज्ञाएं मानते थे, उनकी उस लीक को उन्हों ने शीघ्र ही छोड़ दिया, और उनके अनुसार न किया। १८ और जब जब यहोवा उनके लिये न्यायी को ठहराता तब तब वह उस न्यायी के संग रहकर उसके जीवन भर उन्हें शत्रुओं के हाथ से छुड़ाता था; क्योंकि यहोवा उनका कराहना जो अन्धेर और उपद्रव करनेवालों के कारण होता था सुनकर दु:खी था। १९ परन्तु जब न्यायी मर जाता, तब वे फिर पराये देवताओं के पीछे चलकर उनकी उपासना करते, और उन्हें दण्डवत् करके अपने पुरखाओं से अधिक बिगड़ जाते थे; और अपने बुरे कामों और हठीली चाल को नहीं छोड़ते थे। २० इसलिये यहोवा का कोप इस्राएल पर भड़क उठा; और उस ने कहा, इस जाति ने उस वाचा को जो मैं ने उनके पूर्वजों से बान्धी थी तोड़ दिया, और मेरी बात नहीं मानी, २१ इस कारण जिन जातियों को यहोशू मरते समय छोड़ गया है उन में से मैं अब किसी को उनके साम्हने से न निकालूंगा; २२ जिस से उनके द्वारा मैं इस्राएलियों की परीक्षा करूं, कि जैसे उनके पूर्वज मेरे मार्ग पर चलते थे वैसे ही ये भी चलेंगे कि नहीं। २३ इसलिये यहोवा ने उन जातियों को एकाएक न निकाला, वरन रहने दिया, और उस ने उन्हें यहोशू के हाथ में भी उनको न सौंपा था॥

३ इस्राएलियों में से जितने कनान में की लड़ाइयों में भागी न हुए थे, उन्हें परखने के लिये यहोवा ने इन जातियों को देश में इसलिये रहने दिया; २ कि पीढ़ी पीढ़ी के इस्राएलियों में से जो लड़ाई को पहिले न जानते थे वे सीखें, और जान लें, ३ अर्थात् पांचों सरदारों समेत पलिश्तियों, और सब कनानियों, और सीदोनियों, और बालहेर्मोन नाम पहाड़ से लेकर हमात की तराई तक लबानोन पर्वत में रहनेवाले हिव्वियों को। ४ ये इसलिये रहने पाए * कि इनके द्वारा इस्राएलियों की इस बात में परीक्षा हो, कि जो आज्ञाएं यहोवा ने मूसा के द्वारा उनके पूर्वजों को दिलाई थीं उन्हें वे मानेंगे वा नहीं। ५ इसलिये इस्राएली कनानियों, हित्तियों, एमोरियों, परिज्जियों, हिव्वियों, और यबूसियों के बीच में बस गए; ६ तब वे उनकी बेटियां ब्याह में लेने लगे, और अपनी बेटियां उनके बेटों को ब्याह में देने लगे; और उनके देवताओं की भी उपासना करने लगे॥

(ओत्नीएल का चरित्र)

७ इस प्रकार इस्राएलियों ने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, और अपने परमेश्वर यहोवा को भूलकर बाल नाम देवताओं और अशेरा नाम देवियों की उपासना करने लग गए। ८ तब यहोवा का क्रोध इस्राएलियों पर भड़का, और उस ने उनको अरम्नहरैम के राजा कूशन्रिश्आतइम के अधीन कर दिया; सो इस्राएली आठ वर्ष तक कूशन्रिशातैम के अधीन में रहे। ९ तब इस्राएलियों ने यहोवा की दोहाई दी, और उसने इस्राएलियों के लिये कालेब के छोटे भाई ओत्नीएल नाम एक कनजी छुड़ानेवाले को ठहराया, और उस ने उनको छुड़ाया। १० उस में यहोवा का आत्मा समाया, और वह

* मूल में—हुए।

इस्राएलियों का न्यायी बन गया, और लड़ने को निकला, और यहोवा ने अराम के राजा कूशत्रिशातैम को उसके हाथ में कर दिया; और वह कूशत्रिशातैम पर जयवन्त हुआ। ११ तब चालीस वर्ष तक देश में शान्ति बनी रही। और उन्हीं दिनों में कनजी ओत्नीएल मर गया॥

(एहूद का चरित्र)

१२ तब इस्राएलियों ने फिर यहोवा की दृष्टि में बुरा किया; और यहोवा ने मोआब के राजा एग्लोन को इस्राएल पर प्रबल किया, क्योंकि उन्हों ने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया था। १३ इसलिये उस ने अम्मोनियों और अमालेकियों को अपने पास इकट्ठा किया, और जाकर इस्राएल को मार लिया; और खजूरवाले नगर को अपने वश में कर लिया। १४ तब इस्राएली अठारह वर्ष तक मोआब के राजा एग्लोन के अधीन में रहे। १५ फिर इस्राएलियों ने यहोवा की दोहाई दी, और उस ने गेरा के पुत्र एहूद नाम एक बिन्यामीनी को उनका छुड़ानेवाला ठहराया; वह बंहत्था था। इस्राएलियों ने उसी के हाथ से मोआब के राजा एग्लोन के पास कुछ भेंट भेजी। १६ एहूद ने हाथ भर लम्बी एक दोधारी तलवार बनवाई थी, और उसको अपने वस्त्र के नीचे दाहिनी जांघ पर लटका लिया। १७ तब वह उस भेंट को मोआब के राजा एग्लोन के पास जो बड़ा मोटा पुरुष था ले गया। १८ जब वह भेंट को दे चुका, तब भेंट के लानेवाले को विदा किया। १९ परन्तु वह आप गिलगाल के निकट की खुदी हुई मूरतों के पास लौट गया और एग्लोन के पास कहला भेजा, कि हे राजा, मुझे तुझ से एक भेद की बात कहनी है। तब राजा ने कहा, थोड़ी देर के लिये बाहर जाओ*। तब जितने लोग उसके पास उपस्थित थे वे सब बाहर चले गए। २० तब एहूद उसके पास गया; वह तो अपनी एक हवादार अटारी में अकेला बैठा था। एहूद ने कहा, परमेश्वर की ओर से मुझे तुझ से एक बात कहनी है। तब वह गद्दी पर से उठ खड़ा हुआ। २१ इतने में एहूद ने अपना बायां हाथ बढ़ाकर अपनी दाहिनी जांघ पर से तलवार खींचकर उसकी तोंद में घुसेड़ दी; २२ और फल के पीछे मूठ भी पैठ गई, और फल चर्बी में धंसा रहा, क्योंकि उस ने तलवार को उसकी तोंद में से न निकाला; वरन वह उसके आरपार निकल गई। २३ तब एहूद छज्जे से निकलकर बाहर गया, और अटारी के किवाड़ खींचकर उसको बन्द करके ताला लगा दिया। २४ उसके निकल जाते ही राजा† के दास आए, तो क्या देखते हैं, कि अटारी के किवाड़ों में ताला लगा है; इस कारण वे बोले, कि निश्चय वह हवादार कोठरी में लघुशंका करता होगा। २५ वे बाट जोहते जोहते लज्जित हो गए; तब यह देखकर कि वह अटारी के किवाड़ नहीं खोलता, उन्हों ने कुंजी लेकर किवाड़ खोले तो क्या देखा, कि उनका स्वामी भूमि पर मरा पड़ा है। २६ जब तक वे सोच विचार कर ही रहे थे तब तक एहूद भाग निकला, और खुदी हुई मूरतों की परली ओर होकर सेइरे में जाकर शरण ली। २७ वहां पहुंचकर उस ने

* मूल में—चुप रहो।

† मूल में—उस।

एप्रैम के पहाड़ी देश में नरसिंगा फूंका; तब इस्राएली उसके संग होकर पहाड़ी देश से उसके पीछे पीछे नीचे गए। २८ और उस ने उन से कहा, मेरे पीछे पीछे चले आओ; क्योंकि यहोवा ने तुम्हारे मोआबी शत्रुओं को तुम्हारे हाथ में कर दिया है। तब उन्हों ने उसके पीछे पीछे जाके यरदन के घाटों को जो मोआब देश की ओर हैं ले लिया, और किसी को उतरने न दिया। २९ उस समय उन्हों ने कोई दस हज़ार मोआबियों को मार डाला; वे सब के सब हृष्ट पुष्ट और शूरवीर थे, परन्तु उन में से एक भी न बचा। ३० इस प्रकार उस समय मोआब इस्राएल के हाथ के तले दब गया। तब अस्सी वर्ष तक देश में शान्ति बनी रही॥

३१ उसके बाद अनात का पुत्र शमगर हुआ, उस ने छः सौ पलिश्ती पुरुषों को बैल के पैने से मार डाला; इस कारण वह भी इस्राएल का छुड़ानेवाला हुआ॥

(दबोरा और बाराक का चरित्र)

४ जब एहूद मर गया तब इस्राएलियों ने फिर यहोवा की दृष्टि में बुरा किया। २ इसलिये यहोवा ने उनको हासोर में बिराजनेवाले कनान के राजा याबीन के अधीन में कर दिया, जिसका सेनापति सीसरा था, जो अन्यजातियों की हरोशेत का निवासी था। ३ तब इस्राएलियों ने यहोवा की दोहाई दी; क्योंकि सीसरा के पास लोहे के नौ सौ रथ थे, और वह इस्राएलियों पर बीस वर्ष तक बड़ा अन्धेर करता रहा॥

४ उस समय लप्पीदोत की स्त्री दबोरा जो नबिया थी इस्राएलियों का न्याय करती थी। ५ वह एप्रैम के पहाड़ी देश में रामा और बेतेल के बीच में दबोरा के खजूर के तले बैठा करती थी, और इस्राएली उसके पास न्याय के लिये जाया करते थे। ६ उस ने अबीनोअम के पुत्र बाराक को केदेश नप्ताली में से बुलाकर कहा, क्या इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने यह आज्ञा नहीं दी, कि तू जाकर ताबोर पहाड़ पर चढ़*, और नप्तालियों और जबूलूनियों में के दस हज़ार पुरुषों को संग ले जा? ७ तब मैं याबीन के सेनापति सीसरा के रथों और भीड़भाड़ समेत कीशोन नदी तक तेरी ओर खींच ले आऊंगा; और उसको तेरे हाथ में कर दूंगा। ८ बाराक ने उस से कहा, यदि तू मेरे संग चलेगी तो मैं जाऊंगा, नहीं तो न जाऊंगा। ९ उस ने कहा, निःसन्देह मैं तेरे संग चलूंगी; तौभी इस यात्रा से तेरी तो कुछ बड़ाई न होगी, क्योंकि यहोवा सीसरा को एक स्त्री के अधीन कर देगा। तब दबोरा उठकर बाराक के संग केदेश को गई। १० तब बाराक ने जबूलून और नप्ताली के लोगों को केदेश में बुलवा लिया; और उसके पीछे दस हज़ार पुरुष चढ़ गए; और दबोरा उसके संग चढ़ गई। ११ हेबेर नाम केनी ने उन केनियों में से, जो मूसा के साले होबाब के वंश के थे, अपने को अलग करके केदेश के पास के सानन्नीम के बांजवृक्ष तक जाकर अपना डेरा वहीं डाला था। १२ जब सीसरा को यह समाचार मिला कि अबीनोअम का पुत्र बाराक ताबोर पहाड़ पर चढ़ गया है, १३ तब सीसरा ने अपने सब रथ, जो लोहे के नौ सौ रथ थे, और अपने संग

* मूल में—खींच।

की सारी सेना को अन्यजातियों के हरोशेत से कीशोन नदी पर बुलवाया। १४ तब दबोरा ने बाराक से कहा, उठ! क्योंकि आज वह दिन है जिस में यहोवा सीसरा को तेरे हाथ में कर देगा। क्या यहोवा तेरे आगे नहीं निकला है? इस पर बाराक और उसके पीछे पीछे दस हजार पुरुष ताबोर पहाड़ से उतर पड़े। १५ तब यहोवा ने सारे रथों वरन सारी सेना समेत सीसरा को तलवार से बाराक के साम्हने घबरा दिया; और सीसरा रथ पर से उतरके पांव पांव भाग चला। १६ और बाराक ने अन्यजातियों के हरोशेत तक रथों और सेना का पीछा किया, और तलवार से सीसरा की सारी सेना नष्ट की गई; और एक भी मनुष्य न बचा॥

१७ परन्तु सीसरा पांव पांव हेबेर केनी की स्त्री याएल के डेरे को भाग गया; क्योंकि हासोर के राजा याबीन और हेबेर केनी में मेल था। १८ तब याएल सीसरा की भेंट के लिये निकलकर उस से कहने लगी, हे मेरे प्रभु, आ, मेरे पास आ, और न डर। तब वह उसके पास डेरे में गया, और उस ने उसके ऊपर कम्बल डाल दिया। १९ तब सीसरा ने उस से कहा, मुझे प्यास लगी है, मुझे थोड़ा पानी पिला। तब उस ने दूध की कुप्पी खोलकर उसे दूध पिलाया, और उसको ओढ़ा दिया। २० तब उस ने उस से कहा, डेरे के द्वार पर खड़ी रह, और यदि कोई आकर तुझ से पूछे, कि यहां कोई पुरुष है? तब कहना, कोई भी नहीं। २१ इसके बाद हेबेर की स्त्री याएल ने डेरे की एक खूंटी ली, और अपने हाथ में एक हथौड़ा भी लिया, और दबे पांव उसके पास जाकर खूंटी को उसकी कनपटी में ऐसा ठोक दिया कि खूंटी पार होकर भूमि में धंस गई; वह तो थका था ही इसलिये गहरी नींद में सो रहा था। सो वह मर गया। २२ जब बाराक सीसरा का पीछा करता हुआ आया, तब याएल उस से भेंट करने के लिये निकली, और कहा, इधर आ, जिसका तू खोजी है उसको मैं तुझे दिखाऊंगी। तब उस ने उसके साथ जाकर क्या देखा; कि सीसरा मरा पड़ा है, और वह खूंटी उसकी कनपटी में गड़ी है। २३ इस प्रकार परमेश्वर ने उस दिन कनान के राजा याबीन को इस्राएलियों के साम्हने नीचा दिखाया। २४ और इस्राएली कनान के राजा याबीन पर प्रबल होते गए, यहां तक कि उन्हों ने कनान के राजा याबीन को नष्ट कर डाला॥

(दबोरा का गीत)

५ उसी दिन दबोरा और अबीनोअम के पुत्र बाराक ने यह गीत गाया,

२ कि इस्राएल के अगुवों ने जो अगुवाई की और प्रजा जो अपनी ही इच्छा से भरती हुई, इसके लिये यहोवा को धन्य कहो!

३ हे राजाओ, सुनो; हे अधिपतियो, कान लगाओ, मैं आप यहोवा के लिये गीत गाऊंगी;
इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का मैं भजन करूंगी॥

४ हे यहोवा, जब तू सेईर से निकल चला,
जब तू ने एदोम के देश से प्रस्थान किया,

तब पृथ्वी डोल उठी, और आकाश टूट पड़ा,
बादल से भी जल बरसने लगा॥
५ यहोवा के प्रताप से पहाड़,
इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के प्रताप से वह सीनै पिघलकर बहने लगा॥
६ अनात के पुत्र शमगर के दिनों में,
और याएल के दिनों में सड़कें सूनी पड़ी थीं,
और बटोही पगदंडियों से चलते थे॥
७ जब तक मैं दबोरा न उठी,
जब तक मैं इस्राएल में माता होकर न उठी,
तब तक गांव सूने पड़े थे॥*
८ नये नये देवता माने गए,
उस समय फाटकों में लड़ाई होती थी।
क्या चालीस हजार इस्राएलियों में भी
ढाल वा बर्छी कहीं देखने में आती थी?
९ मेरा मन इस्राएल के हाकिमों की ओर लगा है,
जो प्रजा के बीच में अपनी ही इच्छा से भरती हुए।
यहोवा को धन्य कहो॥
१० हे उजली गदहियों पर चढ़नेवालो,
हे फर्शों पर विराजनेवालो,
हे मार्ग पर पैदल चलनेवालो, ध्यान रखो॥
११ पनघटों के आस पास धनुर्धारियों की बात के कारण,

* वा इस्राएलियों में कोई प्रधान न रहा।

वहां वे यहोवा के धर्ममय कामों का,
इस्राएल के लिये उसके धर्ममय कामों का बखान करेंगे।
उस समय यहोवा की प्रजा के लोग फाटकों के पास गए॥
१२ जाग, जाग, हे दबोरा!
जाग, जाग, गीत सुना!
हे बाराक, उठ, हे अबीनोअम के पुत्र, अपने बन्धुओं को बन्धुआई में ले चल।
१३ उस समय थोड़े से* रईस प्रजा समेत उतर पड़े;
यहोवा शूरवीरों के विरुद्ध† मेरे हित उतर आया॥
१४ एप्रैम में से वे आए जिसकी जड़ अमालेक में है;
हे बिन्यामीन, तेरे पीछे तेरे दलों में,
माकीर में से हाकिम, और जबूलून में से सेनापति का दण्ड लिए हुए उतरे;
१५ और इस्साकार के हाकिम दबोरा के संग हुए,
जैसा इस्साकार वैसा ही बाराक भी था;
उसके पीछे लगे हुए वे तराई में झपटकर गए।
रूबेन की नदियों के पास
बड़े बड़े काम मन में ठाने गए॥
१६ तू चरवाहों‡ का सीटी बजाना सुनने को

* मूल में—प्रजा के बचे हुए।
† वा संग।
‡ मूल में—भेड़-बकरियों के झुंडों।

भेड़शालों के बीच क्यों बैठा
रहा ?
रूबेन की नदियों के पास बड़े बड़े
काम सोचे गए ॥
१७ गिलाद यरदन पार रह गया;
और दान क्यों जहाजों में रह
गया ?
आशेर समुद्र के तीर पर बैठा
रहा,
और उसकी खाड़ियों के पास
रह गया ॥
१८ जबलून अपने प्राण पर खेलने-
वाले लोग ठहरे;
नप्ताली भी देश के ऊंचे ऊंचे
स्थानों पर वैसा ही ठहरा ।
१९ राजा आकर लड़े,
उस समय कनान के राजा मगिद्दो
के सोतों के पास तानाक में
लड़े;
पर रुपयों का कुछ लाभ न
पाया ॥
२० आकाश की ओर से भी लड़ाई
हुई;
वरन ताराओं ने अपने अपने
मण्डल से सीसरा से लड़ाई
की ॥
२१ कीशोन नदी ने उनको बहा दिया,
अर्थात् वही प्राचीन नदी जो
कीशोन नदी है ।
हे मन, हियाव बान्धे आगे बढ़ ॥
२२ उस समय घोड़े के खुरों से टाप
का शब्द होने लगा,
उनके बलिष्ट घोड़ों के कूदने
से यह हुआ ॥
२३ यहोवा का दूत कहता है, कि
मेरोज को शाप दो,
उसके निवासियों को भारी शाप
दो,
क्योंकि वे यहोवा की सहायता
करने को,
शूरवीरों के विरुद्ध यहोवा की
सहायता करने को न आए ॥
२४ सब स्त्रियों में से केनी हेबेर की
स्त्री याएल धन्य ठहरेगी;
डेरों में से रहनेवाली सब स्त्रियों
में वह धन्य ठहरेगी ॥
२५ सीसरा ने पानी मांगा, उस ने
दूध दिया,
रईसों के योग्य बर्तन में वह
मक्खन ले आई ॥
२६ उस ने अपना हाथ खूंटी की ओर,
अपना दाहिना हाथ बढ़ई के
हथौड़े की ओर बढ़ाया;
और हथौड़े से सीसरा को मारा,
उसके सिर को फोड़ डाला,
और उसकी कनपटी को आर-
पार छेद दिया ॥
२७ उस स्त्री के पांवों पर वह
झुका, वह गिरा, वह पड़ा
रहा;
उस स्त्री के पांवों पर वह झुका,
वह गिरा; जहां झुका, वहीं
मरा पड़ा रहा ॥
२८ खिड़की में से एक स्त्री झांककर
चिल्लाई,
सीसरा की माता ने झिलमिली
की ओट से पुकारा,
कि उसके रथ के आने में इतनी
देर क्यों लगी ?
उसके रथों के पहियों को अबेर
क्यों हुई है ?

२९ उसकी बुद्धिमान प्रतिष्ठित
स्त्रियों ने उसे उत्तर दिया,
वरन उस ने अपने आप को इस
प्रकार उत्तर दिया,
३० कि क्या उन्हों ने लूट पाकर बांट
नहीं ली?
क्या एक एक पुरुष को एक एक
वरन दो दो कुंवारियां;
और सीसरा को रंगे हुए वस्त्र
की लूट,
वरन बूटे काढ़े हुए रंगीले वस्त्र
की लूट,
और लूटे हुओं के गले में दोनों
ओर बूटे काढ़े हुए रंगीले वस्त्र
नहीं मिले?
३१ हे यहोवा, तेरे सब शत्रु ऐसे ही
नाश हो जाएं!
परन्तु उसके प्रेमी लोग प्रताप के
साथ उदय होते हुए सूर्य के
समान तेजोमय हों ॥

फिर देश में चालीस वर्ष तक शान्ति रही ॥

(गिदोन का चरित्र)

६ तब इस्राएलियों ने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, इसलिये यहोवा ने उन्हें मिद्यानियों के वश में सात वर्ष कर रखा। २ और मिद्यानी इस्राएलियों पर प्रबल हो गए। मिद्यानियों के डर के मारे इस्राएलियों ने पहाड़ों के गहिरे खड्डों, और गुफाओं, और किलों को अपने निवास बना लिए। ३ और जब जब इस्राएली बीज बोते तब तब मिद्यानी और अमालेकी और पूर्वी लोग उनके विरुद्ध चढ़ाई करके ४ अज्जा तक छावनी डाल डालकर भूमि की उपज नाश कर डालते थे, और इस्राएलियों के लिये न तो कुछ भोजनवस्तु, और न भेड़-बकरी, और न गाय-बैल, और न गदहा छोड़ते थे। ५ क्योंकि वे अपने पशुओं और डेरों को लिए हुए चढ़ाई करते, और टिड्डियों के दल के समान बहुत आते थे; और उनके ऊंट भी अनगिनत होते थे; और वे देश को उजाड़ने के लिये उस में आया करते थे। ६ और मिद्यानियों के कारण इस्राएली बड़ी दुर्दशा में पड़ गए; तब इस्राएलियों ने यहोवा की दोहाई दी ॥

७ जब इस्राएलियों ने मिद्यानियों के कारण यहोवा की दोहाई दी, ८ तब यहोवा ने इस्राएलियों के पास एक नबी को भेजा, जिस ने उन से कहा, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि मैं तुम को मिस्र में से ले आया, और दासत्व के घर से निकाल ले आया; ९ और मैं ने तुम को मिस्रियों के हाथ से, वरन जितने तुम पर अन्धेर करते थे उन सभों के हाथ से छुड़ाया, और उनको तुम्हारे साम्हने से बरबस निकाल-कर उनका देश तुम्हें दे दिया; १० और मैं ने तुम से कहा, कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं; एमोरी लोग जिनके देश में तुम रहते हो उनके देवताओं का भय न मानना। परन्तु तुम ने मेरा कहना नहीं माना ॥

११ फिर यहोवा का दूत आकर उस बांजवृक्ष के तले बैठ गया, जो ओप्रा में अबीएजेरी योआश का था, और उसका पुत्र गिदोन एक दाखरस के कुण्ड में गेहूं इसलिये झाड़ रहा था कि उसे मिद्यानियों से छिपा रखे। १२ उसको यहोवा के दूत ने दर्शन देकर कहा, हे शूरवीर सूरमा, यहोवा तेरे संग है। १३ गिदोन

ने उस से कहा, हे मेरे प्रभु, बिनती सुन, यदि यहोवा हमारे संग होता, तो हम पर यह सब विपत्ति • क्यों पड़ती? और जितने आश्चर्यकर्मों का वर्णन हमारे पुरखा यह कहकर करते थे, कि क्या यहोवा हम को मिस्र से छुड़ा नहीं लाया, वे कहां रहे? अब तो यहोवा ने हम को त्याग दिया, और मिद्यानियों के हाथ कर दिया है। १४ तब यहोवा ने उस पर दृष्टि करके कहा, अपनी इसी शक्ति पर जा और तू इस्राएलियों को मिद्यानियों के हाथ से छुड़ाएगा; क्या मैं ने तुझे नहीं भेजा? १५ उस ने कहा, हे मेरे प्रभु, बिनती सुन, मैं इस्राएल को क्योंकर छुड़ाऊं? देख, मेरा कुल मनश्शे में सब से कंगाल है, फिर मैं अपने पिता के घराने में सब से छोटा हूं। १६ यहोवा ने उस से कहा, निश्चय मैं तेरे संग रहूंगा; सो तू मिद्यानियों को ऐसा मार लेगा जैसा एक मनुष्य को। १७ गिदोन ने उस से कहा, यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर हो, तो मुझे इसका कोई चिन्ह दिखा कि तू ही मुझ से बातें कर रहा है। १८ जब तक मैं तेरे पास फिर आकर अपनी भेंट निकालकर तेरे साम्हने न रखूं, तब तक तू यहां से न जा। उस ने कहा, मैं तेरे लौटने तक ठहरा रहूंगा। १९ तब गिदोन ने जाकर बकरी का एक बच्चा और एक एपा मैदे की अखमीरी रोटियां तैयार कीं; तब मांस को टोकरी में, और जूस को तसले में रखकर बांजवृक्ष के तले उसके पास ले जाकर दिया। २० परमेश्वर के दूत ने उस से कहा, मांस और अखमीरी रोटियों को लेकर इस चट्टान पर रख दे, और जूस को उण्डेल दे। उस ने ऐसा ही किया। २१ तब यहोवा के दूत ने अपने हाथ की लाठी को बढ़ाकर मांस और अखमीरी रोटियों को छूआ; और चट्टान से आग निकली जिस से मांस और अखमीरी रोटियां भस्म हो गईं; तब यहोवा का दूत उसकी दृष्टि से अन्तरध्यान हो गया। २२ जब गिदोन ने जान लिया कि वह यहोवा का दूत था, तब गिदोन कहने लगा, हाय, प्रभु यहोवा! मैं ने तो यहोवा के दूत को साक्षात देखा है। २३ यहोवा ने उस से कहा, तुझे शान्ति मिले; मत डर, तू न मरेगा। २४ तब गिदोन ने वहां यहोवा की एक वेदी बनाकर उसका नाम यहोवा शालोम * रखा। वह आज के दिन तक अबीएजेरियों के ओप्रा में बनी है॥

२५ फिर उसी रात को यहोवा ने गिदोन से कहा, अपने पिता का जवान बैल, अर्थात् दूसरा सात वर्ष का बैल ले, और बाल की जो वेदी तेरे पिता की है उसे गिरा दे, और जो अशेरा देवी उसके पास है उसे काट डाल; २६ और उस दृढ़ स्थान की चोटी पर ठहराई हुई रीति से अपने परमेश्वर यहोवा की एक वेदी बना; तब उस दूसरे बैल को ले, और उस अशेरा की लकड़ी जो तू काट डालेगा जलाकर होमबलि चढ़ा। २७ तब गिदोन ने अपने संग दस दासों को लेकर यहोवा के वचन के अनुसार किया; परन्तु अपने पिता के घराने और नगर के लोगों के डर के मारे वह काम दिन को न कर सका, इसलिये रात में किया। २८ बिहान को नगर के लोग सवेरे उठकर क्या देखते हैं, कि बाल की वेदी गिरी पड़ी है, और उसके पास की अशेरा कटी पड़ी है, और दूसरा बैल

* अर्थात् यहोवा शान्ति [देनेवाला है।]

बनाई हुई वेदी पर चढ़ाया हुआ है। २९ तब वे आपस में कहने लगे, यह काम किस ने किया? और पूछपाछ और ढूंढ़-ढांढ़ करके वे कहने लगे, कि यह योआश के पुत्र गिदोन का काम है। ३० तब नगर के मनुष्यों ने योआश से कहा, अपने पुत्र को बाहर ले आ, कि मार डाला जाए, क्योंकि उस ने बाल की वेदी को गिरा दिया है, और उसके पास की अशेरा को भी काट डाला है। ३१ योआश ने उन सभों से जो उसके साम्हने खड़े हुए थे कहा, क्या तुम बाल के लिये वाद विवाद करोगे? क्या तुम उसे बचाओगे? जो कोई उसके लिये वाद विवाद करे वह मार डाला जाएगा। बिहान तक ठहरे रहो; तब तक यदि वह परमेश्वर हो, तो जिस ने उसकी वेदी गिराई है उस से वह आप ही अपना वाद विवाद करे। ३२ इसलिये उस दिन गिदोन का नाम यह कहकर यरुब्बाल * रखा गया, कि इस ने जो बाल की वेदी गिराई है तो इस पर बाल आप वाद विवाद कर ले॥

३३ इसके बाद सब मिद्यानी और अमालेकी और पूर्वी इकट्ठे हुए, और पार आकर यिज्रेल की तराई में डेरे डाले। ३४ तब यहोवा का आत्मा गिदोन में समाया†; और उस ने नरसिंगा फूंका, तब अबीएजेरी उसकी सुनने के लिये इकट्ठे हुए। ३५ फिर उस ने कुल मनश्शे के पास अपने दूत भेजे; और वे भी उसके समीप इकट्ठे हुए। और उस ने आशेर, जबूलून, और नप्ताली के पास भी दूत भेजे; तब वे भी उस से मिलने को चले आए। ३६ तब गिदोन ने परमेश्वर से कहा, यदि तू अपने वचन के अनुसार इस्राएल को मेरे द्वारा छुड़ाएगा, ३७ तो सुन, मैं एक भेड़ी की ऊन खलिहान में रखूंगा, और यदि ओस केवल उस ऊन पर पड़े, और उसे छोड़ सारी भूमि सूखी रह जाए, तो मैं जान लूंगा कि तू अपने वचन के अनुसार इस्राएल को मेरे द्वारा छुड़ाएगा। ३८ और ऐसा ही हुआ। इसलिये जब उस ने बिहान को सवेरे उठकर उस ऊन को दबाकर उस में से ओस निचोड़ी, तब एक कटोरा भर गया। ३९ फिर गिदोन ने परमेश्वर से कहा, यदि मैं एक बार फिर कहूं, तो तेरा क्रोध मुझ पर न भड़के; मैं इस ऊन से एक बार और भी तेरी परीक्षा करूं, अर्थात् केवल ऊन ही सूखी रहे, और सारी भूमि पर ओस पड़े। ४० उस रात को परमेश्वर ने ऐसा ही किया; अर्थात् केवल ऊन ही सूखी रह गई, और सारी भूमि पर ओस पड़ी॥

७ तब गिदोन जो यरुब्बाल भी कहलाता है और सब लोग जो उसके संग थे सवेरे उठे, और हरोद नाम सोते के पास अपने डेरे खड़े किए; और मिद्यानियों की छावनी उनकी उत्तरी ओर मोरे नाम पहाड़ी के पास तराई में पड़ी थी॥

२ तब यहोवा ने गिदोन से कहा, जो लोग तेरे संग हैं वे इतने हैं कि मैं मिद्यानियों को उनके हाथ नहीं कर सकता, नहीं तो इस्राएल यह कहकर मेरे विरुद्ध अपनी बड़ाई मारने लगे, कि हम अपने ही भुजबल के द्वारा बचे हैं। ३ इसलिये

* अर्थात् बाल वाद विवाद करे।

† मूल में—आत्मा ने गिदोन को पहिन लिया।

तू जाकर लोगों में यह प्रचार करके सुना दे, कि जो कोई डर के मारे थरथराता हो, वह गिलाद पहाड़ से लौटकर चला जाए। तब बाईस हज़ार लोग लौट गए, और केवल दस हज़ार रह गए।।

४ फिर यहोवा ने गिदोन से कहा, अब भी लोग अधिक हैं; उन्हें सोते के पास नीचे ले चल, वहां मैं उन्हें तेरे लिये परखूंगा; और जिस जिसके विषय में मैं तुझ से कहूं, कि यह तेरे संग चले, वह तो तेरे संग चले; और जिस जिसके विषय में मैं कहूं, कि यह तेरे संग न जाए, वह न जाए। ५ तब वह उनको सोते के पास नीचे ले गया; वहां यहोवा ने गिदोन से कहा, जितने कुत्ते की नाईं जीभ से पानी चपड़ चपड़ करके पीएं उनको अलग रख; और वैसा ही उन्हें भी जो घुटने टेककर पीएं। ६ जिन्हों ने मुंह में हाथ लगा चपड़ चपड़ करके पानी पिया उनकी तो गिनती तीन सौ ठहरी; और बाकी सब लोगों ने घुटने टेककर पानी पिया। ७ तब यहोवा ने गिदोन से कहा, इन तीन सौ चपड़ चपड़ करके पीनेवालों के द्वारा मैं तुम को छुड़ाऊंगा, और मिद्यानियों को तेरे हाथ में कर दूंगा; और सब लोग अपने अपने स्थान को लौट जाएं। ८ तब उन लोगों ने हाथ में सीधा और अपने अपने नरसिंगे लिए; और उस ने इस्राएल के सब पुरुषों को अपने अपने डेरे की ओर भेज दिया, परन्तु उन तीन सौ पुरुषों को अपने पास रख छोड़ा; और मिद्यान की छावनी उसके नीचे तराई में पड़ी थी।।

९ उसी रात को यहोवा ने उस से कहा, उठ, छावनी पर चढ़ाई कर; क्योंकि मैं उसे तेरे हाथ कर देता हूं। १० परन्तु यदि तू चढ़ाई करते डरता हो, तो अपने सेवक फूरा को संग लेकर छावनी के पास जाकर सुन, ११ कि वे क्या कह रहे हैं; उसके बाद तुझे उस छावनी पर चढ़ाई करने का हियाव होगा। तब वह अपने सेवक फूरा को संग ले उन हथियार-बन्दों के पास जो छावनी की छोर पर थे उतर गया। १२ मिद्यानी और अमालेकी और सब पूर्वी लोग तो टिड्डियों के समान बहुत से तराई में फैले पड़े थे; और उनके ऊंट समुद्रतीर के बालू के किनकों के समान गिनती से बाहर थे। १३ जब गिदोन वहां आया, तब एक जन अपने किसी संगी से अपना स्वप्न यों कह रहा था, कि सुन, मैं ने स्वप्न में क्या देखा है कि जौ की एक रोटी लुढ़कते लुढ़कते मिद्यान की छावनी में आई, और डेरे को ऐसा टक्कर मारा कि वह गिर गया, और उसको ऐसा उलट दिया, कि डेरा गिरा पड़ा रहा। १४ उसके संगी ने उत्तर दिया, यह योआश के पुत्र गिदोन नाम एक इस्राएली पुरुष की तलवार को छोड़ कुछ नहीं है; उसी के हाथ में परमेश्वर ने मिद्यान को सारी छावनी समेत कर दिया है।।

१५ उस स्वप्न का वर्णन और फल सुनकर गिदोन ने दण्डवत् की; और इस्राएल की छावनी में लौटकर कहा, उठो, यहोवा ने मिद्यानी सेना को तुम्हारे वश में कर दिया है। १६ तब उस ने उन तीन सौ पुरुषों के तीन झुण्ड किए, और एक एक पुरुष के हाथ में एक नरसिंगा और खाली घड़ा दिया, और घड़ों के भीतर एक मशाल थी। १७ फिर उस ने उन से कहा, मुझे देखो, और वैसा ही करो; सुनो, जब मैं उस छावनी की

छोर पर पहुंचूं, तब जैसा मैं करूं वैसा ही तुम भी करना। १८ अर्थात् जब मैं और मेरे सब संगी नरसिंगा फूंकें तब तुम भी छावनी की चारों ओर नरसिंगे फूंकना, और ललकारना, कि यहोवा की और गिदोन की तलवार॥

१९ बीचवाले पहर के आदि में ज्योंही पहरुओं की बदली हो गई थी त्योंही गिदोन अपने संग के सौ पुरुषों समेत छावनी की छोर पर गया; और नरसिंगे को फूंक दिया और अपने हाथ के घड़ों को तोड़ डाला। २० तब तीनों झुण्डों ने नरसिंगों को फूंका और घड़ों को तोड़ डाला; और अपने अपने बाएं हाथ में मशाल और दहिने हाथ में फूंकने को नरसिंगा लिए हुए चिल्ला उठे, यहोवा की तलवार और गिदोन की तलवार। २१ तब वे छावनी के चारों ओर अपने अपने स्थान पर खड़े रहे, और सब सेना के लोग दौड़ने लगे; और उन्हों ने चिल्ला चिल्लाकर उन्हें भगा दिया। २२ और उन्हों ने तीन सौ नरसिंगों को फूंका, और यहोवा ने एक एक पुरुष की तलवार उसके संगी पर और सब सेना पर चलवाई; तो सेना के लोग सरेरा की ओर बेतशित्ता तक और तब्बात के पास के आबेलमहोला तक भाग गए। २३ तब इस्राएली पुरुष नप्ताली और आशेर और मनश्शे के सारे देश से इकट्ठे होकर मिद्यानियों के पीछे पड़े। २४ और गिदोन ने एप्रैम के सब पहाड़ी देश में यह कहने को दूत भेज दिए, कि मिद्यानियों से मुठभेड़ करने को चले आओ, और यरदन नदी के घाटों को बेतबारा तक उन से पहिले अपने वश में कर लो। तब सब एप्रैमी पुरुषों ने इकट्ठे होकर यरदन नदी को बेतबारा तक अपने वश में कर लिया। २५ और उन्हों ने ओरेब और जेब नाम मिद्यान के दो हाकिमों को पकड़ा; और ओरेब को ओरेब नाम चट्टान पर, और जेब को जेब नाम दाखरस के कुण्ड पर घात किया; और वे मिद्यानियों के पीछे पड़े; और ओरेब और जेब के सिर यरदन के पार गिदोन के पास ले गए॥

८ तब एप्रैमी पुरुषों ने गिदोन से कहा, तू ने हमारे साथ ऐसा बर्ताव क्यों किया है, कि जब तू मिद्यान से लड़ने को चला तब हम को नहीं बुलवाया? सो उन्हों ने उस से बड़ा झगड़ा किया। २ उस ने उन से कहा, मैं ने तुम्हारे समान भला अब किया ही क्या है? क्या एप्रैम की छोड़ी हुई दाख भी अबीएजेर की सब फसल से अच्छी नहीं है? ३ तुम्हारे ही हाथों में परमेश्वर ने ओरेब और जेब नाम मिद्यान के हाकिमों को कर दिया; तब तुम्हारे बराबर मैं कर ही क्या सका? जब उस ने यह बात कही, तब उनका जी उसकी ओर से ठंडा हो गया॥

४ तब गिदोन और उसके संग तीनों सौ पुरुष, जो थके मान्दे थे तौभी खदेड़ते ही रहे थे, यरदन के तीर आकर पार हो गए। ५ तब उस ने सुक्कोत के लोगों से कहा, मेरे पीछे इन आनेवालों को रोटियां दो, क्योंकि ये थके मान्दे हैं; और मैं मिद्यान के जेबह और सल्मुन्ना नाम राजाओं का पीछा कर रहा हूं। ६ सुक्कोत के हाकिमों ने उत्तर दिया, क्या जेबह और सल्मुन्ना तेरे हाथ में पड़ चुके हैं, कि हम तेरी सेना को रोटी

दें? ७ गिदोन ने कहा, जब यहोवा जेबह और सल्मुन्ना को मेरे हाथ में कर देगा, तब मैं इस बात के कारण तुम को जंगल के कटीले और बिच्छू पेड़ों से नुचवाऊंगा। ८ वहां से वह पनूएल को गया, और वहां के लोगों* से ऐसी ही बात कही; और पनूएल के लोगों ने सुक्कोत के लोगों का सा उत्तर दिया। ९ उस ने पनूएल के लोगों से कहा, जब मैं कुशल से लौट आऊंगा, तब इस गुम्मट को ढा दूंगा ॥

१० जेबह और सल्मुन्ना तो कर्कोर में थे, और उनके साथ कोई पन्द्रह हज़ार पुरुषों की सेना थी, क्योंकि पूर्वियों की सारी सेना में से उतने ही रह गए थे; और जो मारे गए थे वे एक लाख बीस हज़ार हथियारबन्द थे। ११ तब गिदोन ने नोबह और योग्बहा के पूर्व की ओर डेरों में रहनेवालों के मार्ग से चढ़कर उस सेना को जो निडर पड़ी थी मार लिया। १२ और जब जेबह और सल्मुन्ना भागे, तब उस ने उनका पीछा करके मिद्यानियों के उन दोनों राजाओं, अर्थात् जेबह और सल्मुन्ना को पकड़ लिया, और सारी सेना को भगा दिया। १३ और योआश का पुत्र गिदोन हेरेस नाम चढ़ाई पर से लड़ाई से लौटा†। १४ और सुक्कोत के एक जवान पुरुष को पकड़कर उस से पूछा, और उस ने सुक्कोत के सतहत्तरों हाकिमों और वृद्ध लोगों के पते लिखवाये। १५ तब वह सुक्कोत के मनुष्यों के पास जाकर कहने लगा, जेबह और सल्मुन्ना को देखो, जिनके विषय में तुम ने यह कहकर मुझे चिढ़ाया था, कि क्या जेबह और सल्मुन्ना अभी तेरे हाथ में हैं, कि हम तेरे थके मान्दे जनों को रोटी दें? १६ तब उस ने उस नगर के वृद्ध लोगों को पकड़ा, और जंगल के कटीले और बिच्छू पेड़ लेकर सुक्कोत के पुरुषों को कुछ सिखाया। १७ और उस ने पनूएल के गुम्मट को ढा दिया, और उस नगर के मनुष्यों को घात किया। १८ फिर उस ने जेबह और सल्मुन्ना से पूछा, जो मनुष्य तुम ने ताबोर पर घात किए थे वे कैसे थे? उन्हों ने उत्तर दिया, जैसा तू वैसे ही वे भी थे, अर्थात् एक एक का रूप राजकुमार का सा था। १९ उस ने कहा, वे तो मेरे भाई, वरन मेरे सहोदर भाई थे; यहोवा के जीवन की शपथ, यदि तुम ने उनको जीवित छोड़ा होता, तो मैं तुम को घात न करता। २० तब उस ने अपने जेठे पुत्र यतेरे से कहा, उठकर इन्हें घात कर। परन्तु जवान ने अपनी तलवार न खींची, क्योंकि वह उस समय तक लड़का ही था, इसलिये वह डर गया। २१ तब जेबह और सल्मुन्ना ने कहा, तू उठकर हम पर प्रहार कर; क्योंकि जैसा पुरुष हो, वैसा ही उसका पौरुष भी होगा। तब गिदोन ने उठकर जेबह और सल्मुन्ना को घात किया; और उनके ऊंटों के गलों के चन्द्रहारों को ले लिया ॥

२२ तब इस्राएल के पुरुषों ने गिदोन से कहा, तू हमारे ऊपर प्रभुता कर, तू और तेरा पुत्र और पोता भी प्रभुता करे; क्योंकि तू ने हम को मिद्यान के हाथ से छुड़ाया है। २३ गिदोन ने उन से कहा, मैं तुम्हारे ऊपर प्रभुता न करूंगा,

* मूल में—उन।

† वा सूर्य उदय न होने पाया कि योआश का पुत्र गिदोन लड़ाई से लौटा।

और न मेरा पुत्र तुम्हारे ऊपर प्रभुता करेगा; यहोवा ही तुम पर प्रभुता करेगा। २४ फिर गिदोन ने उन से कहा, मैं तुम से कुछ मांगता हूं; अर्थात् तुम मुझ को अपनी अपनी लूट में की बालियां दो। (वे तो इशमाएली थे, इस कारण उनकी बालियां सोने की थीं।) उन्हों ने कहा, निश्चय हम देंगे। २५ तब उन्हों ने कपड़ा बिछाकर उस में अपनी अपनी लूट में से निकालकर बालियां डाल दीं। २६ जो सोने की बालियां उस ने मांग लीं उनका तौल एक हजार सात सौ शेकेल हुआ; और उनको छोड़ चन्द्रहार, झुमके, और बैंगनी रंग के वस्त्र जो मिद्यानियों के राजा पहिने थे, और उनके ऊंटों के गलों की जंजीर। २७ उनका गिदोन ने एक एपोद बनवाकर अपने ओप्रा नाम नगर में रखा; और सब इस्राएल वहां व्यभिचारिणी की नाईं उसके पीछे हो लिया, और वह गिदोन और उसके घराने के लिये फन्दा ठहरा। २८ इस प्रकार मिद्यान इस्राएलियों से दब गया, और फिर सिर न उठाया। और गिदोन के जीवन भर अर्थात् चालीस वर्ष तक देश चैन से रहा॥

२९ योआश का पुत्र यरुब्बाल तो जाकर अपने घर में रहने लगा। ३० और गिदोन के सत्तर बेटे उत्पन्न हुए, क्योंकि उसके बहुत स्त्रियां थीं। ३१ और उसकी जो एक रखेली शकेम में रहती थी उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और गिदोन ने उसका नाम अबीमेलेक रखा। ३२ निदान योआश का पुत्र गिदोन पूरे बुढ़ापे में मर गया, और अबीएजेरियों के ओप्रा नाम गांव में उसके पिता योआश की कबर में उसको मिट्टी दी गई॥

३३ गिदोन के मरते ही इस्राएली फिर गए, और व्यभिचारिणी की नाईं बाल देवताओं के पीछे हो लिए, और बालबरीत को अपना देवता मान लिया। ३४ और इस्राएलियों ने अपने परमेश्वर यहोवा को, जिस ने उनको चारों ओर के सब शत्रुओं के हाथ से छुड़ाया था, स्मरण न रखा; ३५ और न उन्हों ने यरुब्बाल अर्थात् गिदोन की उस सारी भलाई के अनुसार जो उस ने इस्राएलियों के साथ की थी उसके घराने को प्रीति दिखाई॥

(अबीमेलेक का चरित्र)

९ यरुब्बाल का पुत्र अबीमेलेक शकेम को अपने मामाओं के पास जाकर उन से और अपने नाना के सब घराने से यों कहने लगा, २ शकेम के सब मनुष्यों से यह पूछो, कि तुम्हारे लिये क्या भला है? क्या यह कि यरुब्बाल के सत्तर पुत्र तुम पर प्रभुता करें? वा यह कि एक ही पुरुष तुम पर प्रभुता करे? और यह भी स्मरण रखो कि मैं तुम्हारा हाड़ मांस हूं। ३ तब उसके मामाओं ने शकेम के सब मनुष्यों से ऐसी ही बातें कहीं; और उन्हों ने यह सोचकर कि अबीमेलेक तो हमारा भाई है अपना मन उसके पीछे लगा दिया। ४ तब उन्हों ने बालबरीत के मन्दिर में से सत्तर टुकड़े रूपे उसको दिए, और उन्हें लगाकर अबीमेलेक ने नीच और लुच्चे जन रख लिए, जो उसके पीछे हो लिए। ५ तब उस ने ओप्रा में अपने पिता के घर जाके अपने भाइयों को जो यरुब्बाल के सत्तर पुत्र थे एक ही पत्थर पर घात किया; परन्तु यरुब्बाल का योताम नाम लहुरा पुत्र छिपकर बच गया॥

६ तब शकेम के सब मनुष्यों और बेतमिल्लो के सब लोगों ने इकट्ठे होकर शकेम के खम्भे के पासवाले बांजवृक्ष के पास अबीमेलेक को राजा बनाया। ७ इसका समाचार सुनकर योताम गरिज्जीम पहाड़ की चोटी पर जाकर खड़ा हुआ, और ऊंचे स्वर से पुकार के कहने लगा, हे शकेम के मनुष्यो, मेरी सुनो, इसलिये कि परमेश्वर तुम्हारी सुने। ८ किसी युग में वृक्ष किसी का अभिषेक करके अपने ऊपर राजा ठहराने को चले; तब उन्हों ने जलपाई के वृक्ष से कहा, तू हम पर राज्य कर। ९ तब जलपाई के वृक्ष ने कहा, क्या मैं अपनी उस चिकनाहट को छोड़कर, जिस से लोग परमेश्वर और मनुष्य दोनों का आदर मान करते हैं, वृक्षों का अधिकारी होकर इधर उधर डोलने को चलूं? १० तब वृक्षों ने अंजीर के वृक्ष से कहा, तू आकर हम पर राज्य कर। ११ अंजीर के वृक्ष ने उन से कहा, क्या मैं अपने मीठेपन और अपने अच्छे अच्छे फलों को छोड़ वृक्षों का अधिकारी होकर इधर उधर डोलने को चलूं? १२ फिर वृक्षों ने दाखलता से कहा, तू आकर हम पर राज्य कर। १३ दाखलता ने उन से कहा, क्या मैं अपने नये मधु को छोड़, जिस से परमेश्वर और मनुष्य दोनों को आनन्द होता है, वृक्षों की अधिकारिणी होकर इधर उधर डोलने को चलूं? १४ तब सब वृक्षों ने झड़बेड़ी से कहा, तू आकर हम पर राज्य कर। १५ झड़बेड़ी ने उन वृक्षों से कहा, यदि तुम अपने ऊपर राजा होने को मेरा अभिषेक सच्चाई से करते हो, तो आकर मेरी छांह में शरण लो; और नहीं तो, झड़बेड़ी से आग निकलेगी जिस से लबानोन के देवदारु भी भस्म हो जाएंगे। १६ इसलिये अब यदि तुम ने सच्चाई और खराई से अबीमेलेक को राजा बनाया है, और यरुब्बाल और उसके घराने से भलाई की, और उस से उसके काम के योग्य बर्ताव किया हो, तो भला। १७ (मेरा पिता तो तुम्हारे निमित्त लड़ा, और अपने प्राण पर खेलकर तुम को मिद्यानियों के हाथ से छुड़ाया; १८ परन्तु तुम ने आज मेरे पिता के घराने के विरुद्ध उठकर बलवा किया, और उस सत्तर पुत्र एक ही पत्थर पर घात किए, और उसकी लौंडी के पुत्र अबीमेलेक को इसलिये शकेम के मनुष्यों के ऊपर राजा बनाया है कि वह तुम्हारा भाई है); १९ इसलिये यदि तुम लोगों ने आज के दिन यरुब्बाल और उसके घराने से सच्चाई और खराई से बर्ताव किया हो, तो अबीमेलेक के कारण आनन्द करो, और वह भी तुम्हारे कारण आनन्द करे; २० और नहीं, तो अबीमेलेक से ऐसी आग निकले जिस से शकेम के मनुष्य और बेतमिल्लो भस्म हो जाएं: और शकेम के मनुष्यों और बेतमिल्लो से ऐसी आग निकले जिस से अबीमेलेक भस्म हो जाए। २१ तब योताम भागा, और अपने भाई अबीमेलेक के डर के मारे बेर को जाकर वहीं रहने लगा॥

२२ और अबीमेलेक इस्राएल के ऊपर तीन वर्ष हाकिम रहा। २३ तब परमेश्वर ने अबीमेलेक और शकेम के मनुष्यों के बीच एक बुरी आत्मा भेज दी; सो शकेम के मनुष्य अबीमेलेक का विश्वासघात करने लगे; २४ जिस से यरुब्बाल के सत्तर पुत्रों पर किए हुए उपद्रव का

फल भोगा जाए*, और उनका खून उनके घात करनेवाले उनके भाई अबीमेलेक के सिर पर, और उसके अपने भाइयों के घात करने में उसकी सहायता करनेवाले शकेम के मनुष्यों के सिर पर भी हो। २५ तब शकेम के मनुष्यों ने पहाड़ों की चोटियों पर उसके लिये घातकों को बैठाया, जो उस मार्ग से सब आने जानेवालों को लूटते थे; और इसका समाचार अबीमेलेक को मिला॥

२६ तब एबेद का पुत्र गाल अपने भाइयों समेत शकेम में आया; और शकेम के मनुष्यों ने उसका भरोसा किया। २७ और उन्हों ने मैदान में जाकर अपनी अपनी दाख की बारियों के फल तोड़े और उनका रस रौन्दा, और स्तुति का बलिदान कर अपने देवता के मन्दिर में जाकर खाने पीने और अबीमेलेक को कोसने लगे। २८ तब एबेद के पुत्र गाल ने कहा, अबीमेलेक कौन है? शकेम कौन है कि हम उसके अधीन रहें? क्या वह यरुब्बाल का पुत्र नहीं? क्या जबूल उसका नाइब नहीं? शकेम के पिता हमोर के लोगों के तो अधीन हो, परन्तु हम उसके अधीन क्यों रहें? २९ और यह प्रजा मेरे वश में होती तो क्या ही भला होता! तब तो मैं अबीमेलक को दूर करता। फिर उस ने अबीमेलेक से कहा, अपनी सेना की गिनती बढ़ाकर निकल आ। ३० एबेद के पुत्र गाल की वे बातें सुनकर नगर के हाकिम जबूल का क्रोध भड़क उठा। ३१ और उस ने अबीमेलेक के पास छिपके† दूतों से कहला भेजा, कि एबेद का पुत्र गाल और उसके भाई शकेम में आके नगरवालों को तेरा विरोध करने को उसका रहे हैं। ३२ इसलिये तू अपने संगवालों समेत रात को उठकर मैदान में घात लगा। ३३ फिर बिहान को सवेरे सूर्य के निकलते ही उठकर इस नगर पर चढ़ाई करना; और जब वह अपने संगवालों समेत तेरा साम्हना करने को निकले तब जो तुझ से बन पड़े वही उस से करना॥

३४ तब अबीमेलेक और उसके संग के सब लोग रात को उठ चार झुण्ड बान्धकर शकेम के विरुद्ध घात में बैठ गए। ३५ और एबेद का पुत्र गाल बाहर जाकर नगर के फाटक में खड़ा हुआ; तब अबीमेलेक और उसके संगी घात छोड़कर उठ खड़े हुए। ३६ उन लोगों को देखकर गाल जबूल से कहने लगा, देख, पहाड़ों की चोटियों पर से लोग उतरे आते हैं! जबूल ने उस से कहा, वह तो पहाड़ों की छाया है जो तुझे मनुष्यों के समान देख पड़ती है। ३७ गाल ने फिर कहा, देख, लोग देश के बीचोंबीच होकर उतरे आते हैं, और एक झुण्ड मोननीम नाम बांज वृक्ष के मार्ग से चला आता है। ३८ जबूल ने उस से कहा, तेरी यह बात कहां रही, कि अबीमेलेक कौन है कि हम उसके अधीन रहें? ये तो वे ही लोग हैं जिनको तू ने निकम्मा जाना था; इसलिये अब निकलकर उन से लड़। ३९ तब गाल शकेम के पुरुषों का अगुआ हो बाहर निकलकर अबीमेलेक से लड़ा। ४० और अबीमेलेक ने उसको खदेड़ा, और वह अबीमेलेक के साम्हने से भागा; और नगर के फाटक तक पहुंचते पहुंचते बहुतेरे घायल होकर गिर पड़े। ४१ तब

* मूल में—उपद्रव आए।
† मूल में—चतुराई से।

अबीमेलेक अरूमा में रहने लगा; और जबूल ने गाल और उसके भाइयों को निकाल दिया, और शकेम में रहने न दिया। ४२ दूसरे दिन लोग मैदान में निकल गए; और यह अबीमेलेक को बताया गया। ४३ और उस ने अपनी सेना के तीन दल बान्धकर मैदान में घात लगाई; और जब देखा कि लोग नगर से निकले आते हैं तब उन पर चढ़ाई करके उन्हें मार लिया। ४४ अबीमेलेक अपने संग के दलों समेत आगे दौड़कर नगर के फाटक पर खड़ा हो गया, और दो दलों ने उन सब लोगों पर धावा करके जो मैदान में थे उन्हें मार डाला। ४५ उसी दिन अबीमेलेक ने नगर से दिन भर लड़कर उसको ले लिया, और उसके लोगों को घात करके नगर को ढा दिया, और उस पर नमक छिड़कवा दिया॥

४६ यह सुनकर शकेम के गुम्मट के सब रहनेवाले एलबरीत के मन्दिर के गढ़ में जा घुसे। ४७ जब अबीमेलेक को यह समाचार मिला कि शकेम के गुम्मट के सब मनुष्य इकट्ठे हुए हैं, ४८ तब वह अपने सब संगियों समेत सलमोन नाम पहाड़ पर चढ़ गया; और हाथ में कुल्हाड़ी ले पेड़ों में से एक डाली काटी, और उसे उठाकर अपने कन्धे पर रख ली। और अपने संगवालों से कहा कि जैसा तुम ने मुझे करते देखा वैसा ही तुम भी झटपट करो। ४९ तब उन सब लोगों ने भी एक एक डाली काट ली, और अबीमेलेक के पीछे हो उनको गढ़ पर डालकर गढ़* में आग लगाई; तब शकेम के गुम्मट के सब स्त्री पुरुष जो अटकल एक हजार थे मर गए॥

५० तब अबीमेलेक ने तेबेस को जाकर उसके साम्हने डेरे खड़े करके उस को ले लिया। ५१ परन्तु उस नगर के बीच एक दृढ़ गुम्मट था, सो क्या स्त्री क्या पुरुष, नगर के सब लोग भागकर उस में घुसे; और उसे बन्द करके गुम्मट की छत पर चढ़ गए। ५२ तब अबीमेलेक गुम्मट के निकट जाकर उसके विरुद्ध लड़ने लगा, और गुम्मट के द्वार तक गया कि उस में आग लगाए। ५३ तब किसी स्त्री ने चक्की के ऊपर का पाट अबीमेलेक के सिर पर डाल दिया, और उसकी खोपड़ी फट गई। ५४ तब उस ने झट अपने हथियारों के ढोनेवाले जवान को बुलाकर कहा, अपनी तलवार खींचकर मुझे मार डाल, ऐसा न हो कि लोग मेरे विषय में कहने पाएं, कि उसको एक स्त्री ने घात किया। तब उसके जवान ने तलवार भोंक दी, और वह मर गया। ५५ यह देखकर कि अबीमेलेक मर गया है इस्राएली अपने अपने स्थान को चले गए। ५६ इस प्रकार जो दुष्ट काम अबीमेलेक ने अपने सत्तर भाइयों को घात करके अपने पिता के साथ किया था, उसको परमेश्वर ने उसके सिर पर लौटा दिया; ५७ और शकेम के पुरुषों के भी सब दुष्ट काम परमेश्वर ने उनके सिर पर लौटा दिए, और यरुब्बाल के पुत्र योताम का शाप उन पर घट गया॥

(तोला और याईर के चरित्र)

१० अबीमेलेक के बाद इस्राएल के छुड़ाने के लिये तोला नाम एक

* मूल में—उनके ऊपर गढ़।

इस्साकारी उठा, वह दोदो का पोता और पूआ का पुत्र था; और एप्रैम के पहाड़ी देश के शामीर नगर में रहता था। २ वह तेईस वर्ष तक इस्राएल का न्याय करता रहा। तब मर गया, और उसको शामीर में मिट्टी दी गई॥

३ उसके बाद गिलादी याईर उठा, वह बाईस वर्ष तक इस्राएल का न्याय करता रहा। ४ और उसके तीस पुत्र थे जो गदहियों के तीस बच्चों पर सवार हुआ करते थे; और उनके तीस नगर भी थे जो गिलाद देश में हैं, और आज तक हब्बोत्याईर* कहलाते हैं। ५ और याईर मर गया, और उसको कामोन में मिट्टी दी गई॥

६ तब इस्राएलियों ने फिर यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, अर्थात् बाल देवताओं और अश्तोरेत देवियों और आराम, सीदोन, मोआब, अम्मोनियों, और पलिश्तियों के देवताओं की उपासना करने लगे; और यहोवा को त्याग दिया, और उसकी उपासना न की। ७ तब यहोवा का क्रोध इस्राएल पर भड़का, और उस ने उन्हें पलिश्तियों और अम्मोनियों के अधीन कर दिया, ८ और उस वर्ष ये इस्राएलियों को सताते और पीसते रहे। वरन यरदन पार एमोरियों के देश गिलाद में रहनेवाले सब इस्राएलियों पर अठारह वर्ष तक अन्धेर करते रहे। ९ अम्मोनी यहूदा और बिन्यामीन से और एप्रैम के घराने से लड़ने को यरदन पार जाते थे, यहां तक कि इस्राएल बड़े संकट में पड़ गया। १० तब इस्राएलियों ने यह कहकर यहोवा की दोहाई दी, कि हम ने जो अपने परमेश्वर को त्यागकर बाल देवताओं की उपासना की है, यह हम ने तेरे विरुद्ध महा पाप किया है। ११ यहोवा ने इस्राएलियों से कहा, क्या मैं ने तुम को मिस्रियों, एमोरियों, अम्मोनियों, और पलिश्तियों के हाथ से न छुड़ाया था? १२ फिर जब सीदोनी, और अमालेकी, और माओनी लोगों ने तुम पर अन्धेर किया; और तुम ने मेरी दोहाई दी, तब मैं ने तुम को उनके हाथ से भी न छुड़ाया? १३ तौभी तुम ने मुझे त्यागकर पराये देवताओं की उपासना की है; इसलिये मैं फिर तुम को न छुड़ाऊंगा। १४ जाओ, अपने माने हुए देवताओं की दोहाई दो; तुम्हारे संकट के समय वे ही तुम्हें छुड़ाएं। १५ इस्राएलियों ने यहोवा से कहा, हम ने पाप किया है; इसलिये जो कुछ तेरी दृष्टि में भला हो वही हम से कर; परन्तु अभी हमें छुड़ा। १६ तब वे पराए देवताओं को अपने मध्य में से दूर करके यहोवा की उपासना करने लगे; और वह इस्राएलियों के कष्ट के कारण खेदित हुआ॥

१७ तब अम्मोनियों ने इकट्ठे होकर गिलाद में अपने डेरे डाले; और इस्राएलियों ने भी इकट्ठे होकर मिस्पा में अपने डेरे डाले। १८ तब गिलाद के हाकिम एक दूसरे से कहने लगे, कौन पुरुष अम्मोनियों से संग्राम आरम्भ करेगा? वही गिलाद के सब निवासियों का प्रधान ठहरेगा॥

११ यिप्तह नाम गिलादी बड़ा शूरवीर था, और वह वेश्या का बेटा था; और गिलाद से यिप्तह उत्पन्न हुआ

* अर्थात् याईर की बस्तियां।

था। २ गिलाद की स्त्री के भी बेटे उत्पन्न हुए; और जब वे बड़े हो गए तब यिप्तह को यह कहकर निकाल दिया, कि तू तो पराई स्त्री का बेटा है; इस कारण हमारे पिता के घराने में कोई भाग न पाएगा। ३ तब यिप्तह अपने भाइयों के पास से भागकर तोब देश में रहने लगा; और यिप्तह के पास लुच्चे मनुष्य इकट्ठे हो गए; और उसके संग फिरने लगे।।

४ और कुछ दिनों के बाद अम्मोनी इस्राएल से लड़ने लगे। ५ जब अम्मोनी इस्राएल से लड़ते थे, तब गिलाद के वृद्ध लोग यिप्तह को तोब देश से ले आने को गए; ६ और यिप्तह से कहा, चलकर हमारा प्रधान हो जा, कि हम अम्मोनियों से लड़ सकें। ७ यिप्तह ने गिलाद के वृद्ध लोगों से कहा, क्या तुम ने मुझ से बैर करके मुझे मेरे पिता के घर से निकाल न दिया था? फिर अब संकट में पड़कर मेरे पास क्यों आए हो? ८ गिलाद के वृद्ध लोगों ने यिप्तह से कहा, इस कारण हम अब तेरी ओर फिरे हैं, कि तू हमारे संग चलकर अम्मोनियों से लड़; तब तू हमारी ओर से गिलाद के सब निवासियों का प्रधान ठहरेगा। ९ यिप्तह ने गिलाद के वृद्ध लोगों से पूछा, यदि तुम मुझे अम्मोनियों से लड़ने को फिर मेरे घर ले चलो, और यहोवा उन्हें मेरे हाथ कर दे, तो क्या मैं तुम्हारा प्रधान ठहरूंगा? १० गिलाद के वृद्ध लोगों ने यिप्तह से कहा, निश्चय हम तेरी इस बात के अनुसार करेंगे; यहोवा हमारे और तेरे बीच में इन वचनों का सुननेवाला है। ११ तब यिप्तह गिलाद के वृद्ध लोगों के संग चला, और लोगों ने उसको अपने ऊपर मुखिया और प्रधान ठहराया; और यिप्तह ने अपनी सब बातें मिस्पा में यहोवा के सम्मुख कह सुनाईं।।

१२ तब यिप्तह ने अम्मोनियों के राजा के पास दूतों से यह कहला भेजा, कि तुझे मुझ से क्या काम, कि तू मेरे देश में लड़ने को आया है? १३ अम्मोनियों के राजा ने यिप्तह के दूतों से कहा, कारण यह है, कि जब इस्राएली मिस्र से आए, तब अर्नोन से यब्बोक और यरदन तक जो मेरा देश था उसको उन्हों ने छीन लिया; इसलिये अब उसको बिना झगड़ा किए फेर दे। १४ तब यिप्तह ने फिर अम्मोनियों के राजा के पास यह कहने को दूत भेजे, १५ कि यिप्तह तुझ से यों कहता है, कि इस्राएल ने न तो मोआब का देश ले लिया और न अम्मोनियों का, १६ वरन जब वे मिस्र से निकले, और इस्राएली जंगल में होते हुए लाल समुद्र तक चले, और कादेश को आए, १७ तब इस्राएल ने एदोम के राजा के पास दूतों से यह कहला भेजा, कि मुझे अपने देश में होकर जाने दे; और एदोम के राजा ने उनकी न मानी। इसी रीति उस ने मोआब के राजा से भी कहला भेजा, और उस ने भी न माना। इसलिये इस्राएल कादेश में रह गया। १८ तब उस ने जंगल में चलते चलते एदोम और मोआब दोनों देशों के बाहर बाहर घूमकर मोआब देश की पूर्व ओर से आकर अर्नोन के इसी पार अपने डेरे डाले; और मोआब के सिवाने के भीतर न गया, क्योंकि मोआब का सिवाना अर्नोन था। १९ फिर इस्राएल ने एमोरियों के राजा सीहोन के पास जो हेश्बोन

का राजा था दूतों से यह कहला भेजा, कि हमें अपने देश में से होकर हमारे स्थान को जाने दे। २० परन्तु सीहोन ने इस्राएल का इतना विश्वास न किया कि उसे अपने देश में से होकर जाने देता; वरन अपनी सारी प्रजा को इकट्ठी कर अपने डेरे यहस में खड़े करके इस्राएल से लड़ा। २१ और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने सीहोन को सारी प्रजा समेत इस्राएल के हाथ में कर दिया, और उन्हों ने उनको मार लिया; इसलिये इस्राएल उस देश के निवासी एमोरियों के सारे देश का अधिकारी हो गया। २२ अर्थात् वह अर्नोन से यब्बोक तक और जंगल से ले यरदन तक एमोरियों के सारे देश का अधिकारी हो गया। २३ इसलिये अब इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने अपनी इस्राएली प्रजा के साम्हने से एमोरियों को उनके देश से निकाल दिया है; फिर क्या तू उसका अधिकारी होने पाएगा? २४ क्या तू उसका अधिकारी न होगा, जिसका तेरा कमोश देवता तुझे अधिकारी कर दे? इसी प्रकार से जिन लोगों को हमारा परमेश्वर यहोवा हमारे साम्हने से निकाले, उनके देश के अधिकारी हम होंगे। २५ फिर क्या तू मोआब के राजा सिप्पोर के पुत्र बालाक से कुछ अच्छा है? क्या उस ने कभी इस्राएलियों से कुछ भी झगड़ा किया? क्या वह उन से कभी लड़ा? २६ जब कि इस्राएल हेश्बोन और उसके गावों में, और अरोएर और उसके गांवों में, और अर्नोन के किनारे के सब नगरों में तीन सौ वर्ष से बसा है, तो इतने दिनों में तुम लोगों ने उसको क्यों नहीं छुड़ा लिया? २७ मैं ने तेरा अपराध नहीं किया; तू ही मुझ से युद्ध छेड़कर बुरा व्यवहार करता है; इसलिये यहोवा जो न्यायी है, वह इस्राएलियों और अम्मोनियो के बीच में आज न्याय करे। २८ तौभी अम्मोनियों के राजा ने यिप्तह की ये बातें न मानीं जिनको उस ने कहला भेजा था॥

२९ तब यहोवा का आत्मा यिप्तह में समा गया, और वह गिलाद और मनश्शे से होकर गिलाद के मिस्पे में आया, और गिलाद के मिस्पे से होकर अम्मोनियों की ओर चला। ३० और यिप्तह ने यह कहकर यहोवा की मन्नत मानी, कि यदि तू निःसन्देह अम्मोनियों को मेरे हाथ में कर दे, ३१ तो जब मैं कुशल के साथ अम्मोनियों के पास से लौट आऊं तब जो कोई मेरे भेंट के लिये मेरे घर के द्वार से निकले वह यहोवा का ठहरेगा, और मैं उसे होमबलि करके चढ़ाऊंगा। ३२ तब यिप्तह अम्मोनियों से लड़ने को उनकी ओर गया; और यहोवा ने उनको उसके हाथ में कर दिया। ३३ और वह अरोएर से ले मिन्नीत तक, जो बीस नगर हैं, वरन आबेलकरामीम तक जीतते जीतते उन्हें बहुत बड़ी मार से मारता गया। और अम्मोनी इस्राएलियों से हार गए॥

३४ जब यिप्तह मिस्पा को अपने घर आया, तब उसकी बेटी डफ बजाती और नाचती हुई उसकी भेंट के लिये निकल आई; वह उसकी एकलौती थी; उसको छोड़ उसके न तो कोई बेटा था और कोई न बेटी। ३५ उसको देखते ही उस ने अपने कपड़े फाड़कर कहा, हाय, मेरी बेटी! तू ने कमर तोड़ दी*, और तू भी मेरे कष्ट देनेवालों में

* मूल में—तू ने मुझे बहुत झुकाया है।

हो गई है; क्योंकि मैं ने यहोवा को वचन दिया है, और उसे टाल नहीं सकता। ३६ उस ने उस से कहा, हे मेरे पिता, तू ने जो यहोवा को वचन दिया है, तो जो बात तेरे मुंह से निकली है उसी के अनुसार मुझ से बर्ताव कर, क्योंकि यहोवा ने तेरे अम्मोनी शत्रुओं से तेरा पलटा लिया है। ३७ फिर उस ने अपने पिता से कहा, मेरे लिये यह किया जाए, कि दो महीने तक मुझे छोड़े रह, कि मैं अपनी सहेलियों सहित जाकर पहाड़ों पर फिरती हुई अपनी कुंवारीपन पर रोती रहूं। ३८ उस ने कहा, जा। तब उस ने उसे दो महीने की छुट्टी दी; इसलिये वह अपनी सहेलियों सहित चली गई, और पहाड़ों पर अपनी कुंवारीपन पर रोती रही। ३९ दो महीने के बीतने पर वह अपने पिता के पास लौट आई, और उस ने उसके विषय में अपनी मानी हुई मन्नत को पूरी किया। और उस कन्या ने पुरुष का मुंह कभी न देखा था। इसलिये इस्राएलियों में यह रीति चली ४० कि इस्राएली स्त्रियां प्रतिवर्ष यिप्तह गिलादी की बेटी का यश गाने को वर्ष में चार दिन तक जाया करती थीं॥

१२ तब एप्रैमी पुरुष इकट्ठे होकर सापोन को जाकर यिप्तह से कहने लगे, कि जब तू अम्मोनियों से लड़ने को गया तब हमें संग चलने को क्यों नहीं बुलवाया? हम तेरा घर तुझ समेत जला देंगे। २ यिप्तह ने उन से कहा, मेरा और मेरे लोगों का अम्मोनियों से बड़ा झगड़ा हुआ था; और जब मैं ने तुम से सहायता मांगी, तब तुम ने मुझे उनके हाथ से नहीं बचाया। ३ तब यह देखकर कि तुम मुझे नहीं बचाते मैं अपने प्राणों को हथेली पर रखकर अम्मोनियों के विरुद्ध चला, और यहोवा ने उनको मेरे हाथ में कर दिया; फिर तुम अब मुझ से लड़ने को क्यों चढ़ आए हो? ४ तब यिप्तह गिलाद के सब पुरुषों को इकट्ठा करके एप्रैम से लड़ा, और एप्रैम जो कहता था, कि हे गिलादियो, तुम तो एप्रैम और मनश्शे के बीच रहनेवाले एप्रैमियों के भगोड़े हो, और गिलादियों ने उनको मार लिया। ५ और गिलादियों ने यरदन का घाट उन से पहिले अपने वश में कर लिया। और जब कोई एप्रैमी भगोड़ा कहता, कि मुझे पार जाने दो, तब गिलाद के पुरुष उस से पूछते थे, क्या तू एप्रैमी * है? और यदि वह कहता, नहीं, ६ तो वे उस से कहते, अच्छा, शिब्बोलेत कह, और वह कहता सिब्बोलेत, क्योंकि उस से वह ठीक बोला नहीं जाता था; तब वे उसको पकड़कर यरदन के घाट पर मार डालते थे। इस प्रकार उस समय बयालीस हज़ार एप्रैमी मारे गए॥

७ यिप्तह छः वर्ष तक इस्राएल का न्याय करता रहा। तब यिप्तह गिलादी मर गया, और उसको गिलाद के किसी नगर में † मिट्टी दी गई॥

८ उसके बाद बेतलेहेम का निवासी इबसान इस्राएल का न्याय करने लगा। ९ और उसके तीस बेटे हुए; और उस ने अपनी तीस बेटियां बाहर ब्याह दीं, और बाहर से अपने बेटों का ब्याह करके तीस बहू ले आया। और वह इस्राएल

* मूल में—एप्राती।
† मूल में—नगरों में।

का न्याय सात वर्ष तक करता रहा। १० तब इबसान मर गया, और उसको बेतलेहेम में मिट्टी दी गई॥

११ उसके बाद जबूलूनी एलोन इस्राएल का न्याय करने लगा; और वह इस्राएल का न्याय दस वर्ष तक करता रहा। १२ तब एलोन जबूलूनी मर गया, और उसको जबूलून के देश के अय्यालोन में मिट्टी दी गई॥

१३ उसके बाद हिल्लेल का पुत्र पिरातोनी अब्दोन इस्राएल का न्याय करने लगा। १४ और उसके चालीस बेटे और तीस पोते हुए, जो गदहियों के सत्तर बच्चों पर सवार हुआ करते थे। वह आठ वर्ष तक इस्राएल का न्याय करता रहा। १५ तब हिल्लेल का पुत्र पिरातोनी अब्दोन मर गया, और उसको एप्रैम के देश के पिरातोन में, जो अमालेकियों के पहाड़ी देश में है, मिट्टी दी गई॥

(शिमशोन का चरित्र)

१३ और इस्राएलियों ने फिर यहोवा की दृष्टि में बुरा किया; इसलिये यहोवा ने उनको पलिश्तियों के वश में चालीस वर्ष के लिये रखा॥

२ दानियों के कुल का सोरावासी मानोह नाम एक पुरुष था, जिसकी पत्नी के बांझ होने के कारण कोई पुत्र न था। ३ इस स्त्री को यहोवा के दूत ने दर्शन देकर कहा, सुन, बांझ होने के कारण तेरे बच्चा नहीं; परन्तु अब तू गर्भवती होगी और तेरे बेटा होगा। ४ इसलिये अब सावधान रह, कि न तो तू दाखमधु वा और किसी भांति की मदिरा पिए, और न कोई अशुद्ध वस्तु खाए, ५ क्योंकि तू गर्भवती होगी और तेरे एक बेटा उत्पन्न होगा। और उसके सिर पर छुरा न फिरे, क्योंकि वह जन्म ही से परमेश्वर का नाज़ीर रहेगा; और इस्राएलियों को पलिश्तियों के हाथ से छुड़ाने में वही हाथ लगाएगा। ६ उस स्त्री ने अपने पति के पास जाकर कहा, परमेश्वर का एक जन मेरे पास आया था जिसका रूप परमेश्वर के दूत का सा अति भययोग्य था; और मैं ने उस से न पूछा कि तू कहां का है? और न उस ने मुझे अपना नाम बताया; ७ परन्तु उस ने मुझ से कहा, सुन तू गर्भवती होगी और तेरे एक बेटा होगा; इसलिये अब न तो दाखमधु वा और किसी भांति की मदिरा पीना, और न कोई अशुद्ध वस्तु खाना, क्योंकि वह लड़का जन्म से मरण के दिन तक परमेश्वर का नाज़ीर रहेगा। ८ तब मानोह ने यहोवा से यह बिनती की, कि हे प्रभु, बिनती सुन, परमेश्वर का वह जन जिसे तू ने भेजा था फिर हमारे पास आए, और हमें सिखलाए कि जो बालक उत्पन्न होनेवाला है उस से हम क्या क्या करें। ९ मानोह की यह बात परमेश्वर ने सुन ली, इसलिये जब वह स्त्री मैदान में बैठी थी, और उसका पति मानोह उसके संग न था, तब परमेश्वर का वही दूत उसके पास आया। १० तब उस स्त्री ने झट दौड़कर अपने पति को यह समाचार दिया, कि जो पुरुष उस दिन मेरे पास आया था उसी ने मुझे दर्शन दिया है। ११ यह सुनते ही मानोह उठकर अपनी पत्नी के पीछे चला, और उस पुरुष के पास आकर पूछा, कि क्या तू वही पुरुष है जिसने इस स्त्री से बातें की थीं? उस ने कहा, मैं वही हूं।

१२ मानोह ने कहा, अब तेरे वचन पूरे हो जाएं तो, उस बालक का कैसा ढंग और उसका क्या काम होगा? १३ यहोवा के दूत ने मानोह से कहा, जितनी वस्तुओं की चर्चा मैं ने इस स्त्री से की थी उन सब से यह परे रहे। १४ यह कोई वस्तु जो दाखलता से उत्पन्न होती है न खाए, और न दाखमधु वा और किसी भांति की मदिरा पीए, और न कोई अशुद्ध वस्तु खाए; जो जो आज्ञा मैं ने इसको दी थी उसी को यह माने। १५ मानोह ने यहोवा के दूत से कहा, हम तुझ को रोक लें, कि तेरे लिये बकरी का एक बच्चा पकाकर तैयार करें। १६ यहोवा के दूत ने मानोह से कहा, चाहे तू मुझे रोक रखे, परन्तु मैं तेरे भोजन में से कुछ न खाऊंगा; और यदि तू होमबलि करना चाहे तो यहोवा ही के लिये कर। (मानोह तो न जानता था, कि यह यहोवा का दूत है।) १७ मानोह ने यहोवा के दूत से कहा, अपना नाम बता*, इसलिये कि जब तेरी बातें पूरी हों तब हम तेरा आदरमान कर सकें। १८ यहोवा के दूत ने उस से कहा, मेरा नाम तो अद्भुत है, इसलिये तू उसे क्यों पूछता है? १९ तब मानोह ने अन्नबलि समेत बकरी का एक बच्चा लेकर चट्टान पर यहोवा के लिये चढ़ाया, तब उस दूत ने मानोह और उसकी पत्नी के देखते देखते एक अद्भुत काम किया। २० अर्थात् जब लौ उस वेदी पर से आकाश की ओर उठ रही थी, तब यहोवा का दूत उस वेदी की लौ में होकर मानोह और उसकी पत्नी के देखते देखते चढ़ गया; तब वे भूमि पर मुंह के बल गिरे। २१ परन्तु यहोवा के दूत ने मानोह और उसकी पत्नी को फिर कभी दर्शन न दिया। तब मानोह ने जान लिया कि वह यहोवा का दूत था। २२ तब मानोह ने अपनी पत्नी से कहा, हम निश्चय मर जाएंगे, क्योंकि हम ने परमेश्वर का दर्शन पाया है। २३ उसकी पत्नी ने उस से कहा, यदि यहोवा हमें मार डालना चाहता, तो हमारे हाथ से होमबलि और अन्नबलि ग्रहण न करता, और न वह ऐसी सब बातें हम को दिखाता, और न वह इस समय हमें ऐसी बातें सुनाता। २४ और उस स्त्री के एक बेटा उत्पन्न हुआ, और उसका नाम शिमशोन रखा; और वह बालक बढ़ता गया, और यहोवा उसको आशीष देता रहा। २५ और यहोवा का आत्मा सोरा और एशताओल के बीच महनेदान* में उसको उभारने लगा॥

१४ शिमशोन तिम्ना को गया, और तिम्ना में एक पलिश्ती स्त्री को देखा। २ तब उस ने जाकर अपने माता पिता से कहा, तिम्ना में मैं ने एक पलिश्ती स्त्री को देखा है, सो अब तुम उस से मेरा ब्याह करा दो। ३ उसके माता पिता ने उस से कहा, क्या तेरे भाइयों की बेटियों में, वा हमारे सब लोगों में कोई स्त्री नहीं है, कि तू खतनाहीन पलिश्तियों में से स्त्री ब्याहने चाहता है? शिमशोन ने अपने पिता से कहा, उसी से मेरा ब्याह करा दे; क्योंकि मुझे वही अच्छी लगती है। ४ उसके माता पिता न जानते थे कि यह बात यहोवा की ओर

* मूल में—तेरा नाम क्या है।

* अर्थात् दान की छावनी।

से होती है, कि वह पलिश्तियों के विरुद्ध दांव ढूंढ़ता है। उस समय तो पलिश्ती इस्राएल पर प्रभुता करते थे॥

५ तब शिमशोन अपने माता पिता को संग ले तिम्ना को चलकर तिम्ना की दाख की बारी के पास पहुंचा, वहां उसके साम्हने एक जवान सिंह गरजने लगा। ६ तब यहोवा का आत्मा उस पर बल से उतरा, और यद्यपि उसके हाथ में कुछ न था, तौभी उस ने उसको ऐसा फाड़ डाला जैसा कोई बकरी का बच्चा फाड़े। अपना यह काम उसने अपने पिता वा माता को न बतलाया। ७ तब उस ने जाकर उस स्त्री से बातचीत की; और वह शिमशोन को अच्छी लगी। ८ कुछ दिनों के बीतने पर वह उसे लाने को लौट चला; और उस सिंह की लोथ देखने के लिये मार्ग से मुड़ गया, तो क्या देखा, कि सिंह की लोथ में मधुमक्खियों का एक झुण्ड और मधु भी है। ९ तब वह उस में से कुछ हाथ में लेकर खाते खाते अपने माता पिता के पास गया, और उनको यह बिना बताए, कि मैं ने इसको सिंह की लोथ में से निकाला है, कुछ दिया, और उन्हों ने भी उसे खाया। १० तब उसका पिता उस स्त्री के यहां गया, और शिमशोन ने जवानों की रीति के अनुसार वहां जेवनार की। ११ उसको देखकर वे उसके संग रहने के लिये तीस संगियों को ले आए। १२ शिमशोन ने उन से कहा, मैं तुम से एक पहेली कहता हूं; यदि तुम इस जेवनार के सातों दिनों के भीतर उसे बूझकर अर्थ बता दो, तो मैं तुम को तीस कुरते और तीस जोड़े कपड़े दूंगा; १३ और यदि तुम उसे न बता सको, तो तुम को मुझे तीस कुर्ते और तीस जोड़े कपड़े देने पड़ेंगे। उन्हों ने उस से कहा, अपनी पहेली कह, कि हम उसे सुनें। १४ उस ने उन से कहा,

खानेवाले में से खाना,
और बलवन्त में से मीठी वस्तु
निकली।

इस पहेली का अर्थ वे तीन दिन के भीतर न बता सके। १५ सातवें दिन उन्हों ने शिमशोन की पत्नी से कहा, अपने पति को फुसला कि वह हमें पहेली का अर्थ बताए, नहीं तो हम तुझे तेरे पिता के घर समेत आग में जलाएंगे। क्या तुम लोगों ने हमारा धन लेने के लिये हमारा नेवता किया है? क्या यही बात नहीं है? १६ तब शिमशोन की पत्नी यह कहकर उसके साम्हने रोने लगी, कि तू तो मुझ से प्रेम नहीं, बैर ही रखता है; कि तू ने एक पहेली मेरी जाति के लोगों से तो कही है, परन्तु मुझ को उसका अर्थ भी नहीं बताया। उस ने कहा, मैं ने उसे अपनी माता वा पिता को भी नहीं बताया, फिर क्या मैं तुझ को बता दूं? १७ और जेवनार के सातों दिनों में वह स्त्री उसके साम्हने रोती रही; और सातवें दिन जब उस ने उसको बहुत तंग किया; तब उस ने उसको पहेली का अर्थ बता दिया। तब उस ने उसे अपनी जाति के लोगों को बता दिया। १८ तब सातवें दिन सूर्य डूबने न पाया कि उस नगर के मनुष्यों ने शिमशोन से कहा, मधु से अधिक क्या मीठा? और सिंह से अधिक क्या बलवन्त है? उस ने उन से कहा,

यदि तुम मेरी कलोर को हल में न
जोतते,
तो मेरी पहेली को कभी न बूझते॥

१९ तब यहोवा का आत्मा उस पर बल से उतरा, और उस ने अश्कलोन को जाकर वहां के तीस पुरुषों को मार डाला, और उनका धन लूटकर तीस जोड़े कपड़ों को पहेली के बतानेवालों को दे दिया। तब उसका क्रोध भड़का, और वह अपने पिता के घर गया। २० और शिमशोन की पत्नी उसके एक संगी को जिस से उस ने मित्र का सा बर्ताव किया था ब्याह दी गई॥

१५ परन्तु कुछ दिनों बाद, गेहूं की कटनी के दिनों में, शिमशोन ने बकरी का एक बच्चा लेकर अपनी ससुराल में जाकर कहा, मैं अपनी पत्नी के पास कोठरी में जाऊंगा। परन्तु उसके ससुर ने उसे भीतर जाने से रोका। २ और उसके ससुर ने कहा, मैं सचमुच यह जानता था कि तू उस से बैर ही रखता है, इसलिये मैं ने उसे तेरे संगी को ब्याह दिया। क्या उसकी छोटी बहिन उस से सुन्दर नहीं है? उसके बदले उसी को ब्याह ले। ३ शिमशोन ने उन लोगों से कहा, अब चाहे मैं पलिश्तियों की हानि भी करूं, तौभी उनके विषय में निर्दोष ही ठहरूंगा। ४ तब शिमशोन ने जाकर तीन सौ लोमड़ियां पकड़ीं, और मशाल लेकर दो दो लोमड़ियों की पूंछ एक साथ बान्धी, और उनके बीच एक एक मशाल बान्धा। ५ तब मशालों में आग लगाकर उस ने लोमड़ियों को पलिश्तियों के खड़े खेतों में छोड़ दिया; और पूलियों के ढेर वरन खड़े खेत और जलपाई की बारियां भी जल गईं। ६ तब पलिश्ती पूछने लगे, यह किस ने किया है? लोगों ने कहा, उस तिम्नी के दामाद शिमशोन ने यह इसलिये किया, कि उसके ससुर ने उसकी पत्नी उसके संगी को ब्याह दी। तब पलिश्तियों ने जाकर उस पत्नी और उसके पिता दोनों को आग में जला दिया। ७ शिमशोन ने उन से कहा, तुम जो ऐसा काम करते हो, इसलिये मैं तुम से पलटा लेकर ही चुप रहूंगा। ८ तब उस ने उनको अति निठुरता के साथ* बड़ी मार से मार डाला; तब जाकर एताम नाम चट्टान की एक दरार में रहने लगा॥

९ तब पलिश्तियों ने चढ़ाई करके यहूदा देश में डेरे खड़े किए, और लही में फैल गए। १० तब यहूदी मनुष्यों ने उन से पूछा, तुम हम पर क्यों चढ़ाई करते हो? उन्हों ने उत्तर दिया, शिमशोन को बान्धने के लिये चढ़ाई करते हैं, कि जैसे उस ने हम से किया वैसे ही हम भी उस से करें। ११ तब तीन हज़ार यहूदी पुरुष एताम नाम चट्टान की दरार में जाकर शिमशोन से कहने लगे, क्या तू नहीं जानता कि पलिश्ती हम पर प्रभुता करते हैं? फिर तू ने हम से ऐसा क्यों किया है? उस ने उन से कहा, जैसा उन्हों ने मुझ से किया था, वैसा ही मैं ने भी उन से किया है। १२ उन्हों ने उस से कहा, हम तुझे बान्धकर पलिश्तियों के हाथ में कर देने के लिये आए हैं। शिमशोन ने उन से कहा, मुझ से यह शपथ खाओ कि तुम मुझ पर प्रहार न करोगे। १३ उन्हों ने कहा, ऐसा न होगा; हम तुझे कसकर उनके हाथ में कर देंगे; परन्तु तुझे किसी रीति मार न डालेंगे।

---

* मूल में—जांघ पर टांग।

तब वे उसको दो नई रस्सियों से बान्धकर उस चट्टान में से ले गए। १४ वह लही तक आ गया था, कि पलिश्ती उसको देखकर ललकारने लगे; तब यहोवा का आत्मा उस पर बल से उतरा, और उसकी बांहों की रस्सियां आग में जले हुए सन के समान हो गईं, और उसके हाथों के बन्धन मानों गलकर टूट पड़े। १५ तब उसको गदहे के जबड़े की एक नई हड्डी मिली, और उस ने हाथ बढ़ा उसे लेकर एक हज़ार पुरुषों को मार डाला। १६ तब शिमशोन ने कहा,

गदहे के जबड़े की हड्डी से ढेर के ढेर लग गए,
गदहे के जबड़े की हड्डी ही से मैं ने हज़ार पुरुषों को मार डाला॥

१७ जब वह ऐसा कह चुका, तब उस ने ज़बड़े की हड्डी फेंक दी; और उस स्थान का नाम रामत-लही* रखा गया। १८ तब उसको बड़ी प्यास लगी, और उस ने यहोवा को पुकार के कहा, तू ने अपने दास से यह बड़ा छुटकारा कराया है; फिर क्या मैं अब प्यासों मरके उन खतनाहीन लोगों के हाथ में पड़ूं? १९ तब परमेश्वर ने लही में ओखली सा गढ़हा कर दिया, और उस में से पानी निकलने लगा; और जब शिमशोन ने पीया, तब उसके जी में जी आया, और वह फिर ताज़ा दम हो गया। इस कारण उस सोते का नाम एनहक्कोरे† रखा गया, वह आज के दिन तक लही में है। २० शिमशोन तो पलिश्तियों के दिनों में बीस वर्ष तक इस्राएल का न्याय करता रहा॥

* अर्थात् जबड़े का टीला।
† अर्थात् पुकारनेहारे का सोता।

१६ तब शिमशोन अज्जा को गया, और वहां एक वेश्या को देखकर उसके पास गया। २ जब अज्जियों को इसका समाचार मिला कि शिमशोन यहां आया है, तब उन्हों ने उसको घेर लिया, और रात भर नगर के फाटक पर उसकी घात में लगे रहे; और यह कहकर रात भर चुपचाप रहे, कि बिहान को भोर होते ही हम उसको घात करेंगे। ३ परन्तु शिमशोन आधी रात तक पड़ा रह कर, आधी रात को उठकर, उस ने नगर के फाटक के दोनों पल्लों और दोनों बाजुओं को पकड़कर बेंड़ों समेत उखाड़ लिया, और अपने कन्धों पर रखकर उन्हें उस पहाड़ की चोटी पर ले गया, जो हेब्रोन के साम्हने है॥

४ इसके बाद वह सोरेक नाम नाले में रहनेवाली दलीला नाम एक स्त्री से प्रीति करने लगा। ५ तब पलिश्तियों के सरदारों ने उस स्त्री के पास जाके कहा, तू उसको फुसलाकर बूझ ले कि उसके महाबल का भेद क्या है, और कौन उपाय करके हम उस पर ऐसे प्रबल हों, कि उसे बान्धकर दबा रखें; तब हम तुझे ग्यारह ग्यारह सौ टुकड़े चान्दी देंगे। ६ तब दलीला ने शिमशोन से कहा, मुझे बता दे कि तेरे बड़े बल का भेद क्या है, और किस रीति से कोई तुझे बान्धकर दबा रख सके। ७ शिमशोन ने उस से कहा, यदि मैं सात ऐसी नई नई तातों से बान्धा जाऊं जो सुखाई न गई हों, तो मेरा बल घट जायेगा, और मैं साधारण मनुष्य सा हो जाऊंगा। ८ तब पलिश्तियों के सरदार दलीला के पास ऐसी नई नई सात तातें ले गए जो सुखाई न गई थीं, और उन से उस ने शिमशोन को बान्धा।

९ उसके पास तो कुछ मनुष्य कोठरी में घात लगाए बैठे थे। तब उस ने उस से कहा, हे शिमशोन, पलिश्ती तेरी घात में हैं! तब उस ने तांतों को ऐसा तोड़ा जैसा सन का सूत आग से छूते ही टूट जाता है। और उसके बल का भेद न खुला। १० तब दलीला ने शिमशोन से कहा, सुन, तू ने तो मुझ से छल किया, और झूठ कहा है; अब मुझे बता दे कि तू किस वस्तु से बन्ध सकता है। ११ उस ने उस से कहा, यदि मैं ऐसी नई नई रस्सियों से जो किसी काम में न आई हों कसकर बान्धा जाऊं, तो मेरा बल घट जाएगा, और मैं साधारण मनुष्य के समान हो जाऊंगा। १२ तब दलीला ने नई नई रस्सियां लेकर और उसको बान्धकर कहा, हे शिमशोन, पलिश्ती तेरी घात में हैं! कितने मनुष्य तो उस कोठरी में घात लगाए हुए थे। तब उस ने उनको सूत की नाईं अपनी भुजाओं पर से तोड़ डाला। १३ तब दलीला ने शिमशोन से कहा, अब तक तू मुझ से छल करता, और झूठ बोलता आया है; अब मुझे बता दे कि तू काहे से बन्ध सकता है? उस ने कहा, यदि तू मेरे सिर की सातों लटें ताने में बुने तो बन्ध सकूंगा। १४ सो उस ने उसे खूंटी से जकड़ा। तब उस से कहा, हे शिमशोन, पलिश्ती तेरी घात में हैं! तब वह नींद से चौंक उठा, और खूंटी को धरन में से उखाड़कर उसे ताने समेत ले गया। १५ तब दलीला ने उस से कहा, तेरा मन तो मुझ से नहीं लगा, फिर तू क्यों कहता है, कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूं? तू ने ये तीनों बार मुझ से छल किया, और मुझे नहीं बताया कि तेरे बड़े बल का भेद क्या है। १६ सो जब उस ने हर दिन बातें करते करते उसको तंग किया, और यहां तक हठ किया, कि उसके नाकों में दम आ गया, १७ तब उस ने अपने मन का सारा भेद खोलकर उस से कहा, मेरे सिर पर छुरा कभी नहीं फिरा, क्योंकि मैं मां के पेट ही से परमेश्वर का नाज़ीर हूं, यदि मैं मूड़ा जाऊं, तो मेरा बल इतना घट जाएगा, कि मैं साधारण मनुष्य सा हो जाऊंगा। १८ यह देखकर, कि उस ने अपने मन का सारा भेद मुझ से कह दिया है, दलीला ने पलिश्तियों के सरदारों के पास कहला भेजा, कि अब की बार फिर आओ, क्योंकि उस ने अपने मन का सब भेद मुझे बता दिया है। तब पलिश्तियों के सरदार हाथ में रुपया लिए हुए उसके पास गए। १९ तब उस ने उसको अपने घुटनों पर सुला रखा; और एक मनुष्य बुलवाकर उसके सिर की सातों लटें मुण्डवा डालीं। और वह उसको दबाने लगी, और वह निर्बल हो गया। २० तब उस ने कहा, हे शिमशोन, पलिश्ती तेरी घात में हैं! तब वह चौंककर सोचने लगा, कि मैं पहिले की नाईं बाहर जाकर झटकूंगा। वह तो न जानता था, कि यहोवा उसके पास से चला गया है। २१ तब पलिश्तियों ने उसको पकड़कर उसकी आंखें फोड़ डालीं, और उसे अज्जा को ले जाके पीतल की बेड़ियों से जकड़ दिया; और वह बन्दीगृह में चक्की पीसने लगा। २२ उसके सिर के बाल मुण्ड जाने के बाद फिर बढ़ने लगे॥

२३ तब पलिश्तियों के सरदार अपने दागोन नाम देवता के लिये बड़ा यज्ञ,

और आनन्द करने को यह कहकर इकट्ठे हुए, कि हमारे देवता ने हमारे शत्रु शिमशोन को हमारे हाथ में कर दिया है। २४ और जब लोगों ने उसे देखा, तब यह कहकर अपने देवता की स्तुति की, कि हमारे देवता ने हमारे शत्रु और हमारे देश के नाश करनेवाले को, जिस ने हम में से बहुतों को मार भी डाला, हमारे हाथ में कर दिया है। २५ जब उनका मन मगन हो गया, तब उन्हों ने कहा, शिमशोन को बुलवा लो, कि वह हमारे लिये तमाशा करे। इसलिये शिमशोन बन्दीगृह में से बुलवाया गया, और उनके लिये तमाशा करने लगा, और खम्भों के बीच खड़ा कर दिया गया। २६ तब शिमशोन ने उस लड़के से जो उसका हाथ पकड़े था कहा, मुझे उन खम्भों को जिन से घर सम्भला हुआ है छूने दे, कि मैं उस पर टेक लगाऊं। २७ वह घर तो स्त्री पुरुषों से भरा हुआ था; और पलिश्तियों के सब सरदार भी वहां थे, और छत पर कोई तीन हजार स्त्री पुरुष थे, जो शिमशोन को तमाशा करते हुए देख रहे थे। २८ तब शिमशोन ने यह कहकर यहोवा की दोहाई दी, कि हे प्रभु यहोवा, मेरी सुधि ले; हे परमेश्वर, अब की बार मुझे बल दे, कि मैं पलिश्तियों से अपनी दोनों आंखों का एक ही पलटा लूं। २९ तब शिमशोन ने उन दोनों बीचवाले खम्भों को जिन से घर सम्भला हुआ था पकड़कर एक पर तो दाहिने हाथ से और दूसरे पर बाएं हाथ से बल लगा दिया। ३० और शिमशोन ने कहा, पलिश्तियों के संग मेरा प्राण भी जाए। और वह अपना सारा बल लगाकर झुका; तब वह घर सब सरदारों और उस में के सारे लोगों पर गिर पड़ा। सो जिनको उस ने मरते समय मार डाला वे उन से भी अधिक थे जिन्हें उस ने अपने जीवन में मार डाला था। ३१ तब उसके भाई और उसके पिता के सारे घराने के लोग आए, और उसे उठाकर ले गए, और सोरा और एशताओल के मध्य उसके पिता मानोह की कबर में मिट्टी दी। उसने इस्राएल का न्याय बीस वर्ष तक किया था॥

१७ एप्रैम के पहाड़ी देश में मीका नाम एक पुरुष था। २ उस ने अपनी माता से कहा, जो ग्यारह सौ टुकड़े चान्दी तुझ से ले लिए गए थे, जिनके विषय में तू ने मेरे सुनते भी शाप दिया था, वे मेरे पास हैं; मैं ने ही उनको ले लिया था। उसकी माता ने कहा, मेरे बेटे पर यहोवा की ओर से आशीष होए। ३ जब उस ने वे ग्यारह सौ टुकड़े चान्दी अपनी माता को फेर दिए; तब माता ने कहा, मैं अपनी ओर से अपने बेटे के लिये यह रुपया यहोवा को निश्चय अर्पण करती हूं ताकि उस से एक मूरत खोदकर, और दूसरी ढालकर बनाई जाए, सो अब मैं उसे तुझ को फेर देती हूं। ४ जब उस ने वह रुपया अपनी माता को फेर दिया, तब माता ने दो सौ टुकड़े ढलवैयों को दिए, और उस ने उन से एक मूर्त्ति खोदकर, और दूसरी ढालकर बनाई; और वे मीका के घर में रहीं। ५ मीका के पास एक देवस्थान था, तब उस ने एक एपोद, और कई एक गृहदेवता बनवाए; और अपने एक बेटे का संस्कार करके उसे अपना पुरोहित ठहरा लिया। ६ उन दिनों में इस्राएलियों का कोई राजा न

था; जिसको जो ठीक सूझ पड़ता था वही वह करता था ॥

७ यहूदा के कुल का एक जवान लेवीय यहूदा के बेतलेहेम में परदेशी होकर रहता था। ८ वह यहूदा के बेतलेहेम नगर से इसलिये निकला, कि जहां कहीं स्थान मिले वहां जा रहे। चलते चलते वह एप्रैम के पहाड़ी देश में मीका के घर पर आ निकला। ९ मीका ने उस से पूछा, तू कहां से आता है? उस ने कहा, मैं तो यहूदा के बेतलेहेम से आया हुआ एक लेवीय हूं, और इसलिये चला जाता हूं, कि जहां कहीं ठिकाना मुझे मिले वहीं रहूं। १० मीका ने उस से कहा, मेरे संग रहकर मेरे लिये पिता और पुरोहित बन, और मैं तुझे प्रति वर्ष दस टुकड़े रूपे, और एक जोड़ा कपड़ा, और भोजनवस्तु दिया करूंगा; तब वह लेवीय भीतर गया। ११ और वह लेवीय उस पुरुष के संग रहने को प्रसन्न हुआ; और वह जवान उसके साथ बेटा सा बना रहा। १२ तब मीका ने उस लेवीय का संस्कार किया, और वह जवान उसका पुरोहित होकर मीका के घर में रहने लगा। १३ और मीका सोचता था, कि अब मैं जानता हूं कि यहोवा मेरा भला करेगा, क्योंकि मैं ने एक लेवीय को अपना पुरोहित कर रखा है ॥

(दानियों का लैश को जीतकर उस में बस जाने की कथा)

१८ उन दिनों में इस्राएलियों का कोई राजा न था। और उन्हीं दिनों में दानियों के गोत्र के लोग रहने के लिये कोई भाग ढूंढ़ रहे थे; क्योंकि इस्राएली गोत्रों के बीच उनका भाग उस समय तक न मिला था। २ तब दानियों ने अपने सब कुल में से पांच शूरवीरों को सोरा और एश्ताओल से देश का भेद लेने और उस में देख भाल करने के लिये यह कहकर भेज दिया, कि जाकर देश में देख भाल करो। इसलिये वे एप्रैम के पहाड़ी देश में मीका के घर तक जाकर वहां टिक गए। ३ जब वे मीका के घर के पास आए, तब उस जवान लेवीय का बोल पहचाना; इसलिये वहां मुड़कर उस से पूछा, तुझे यहां कौन ले आया? और तू यहां क्या करता है? और यहां तेरे पास क्या है? ४ उस ने उन से कहा, मीका ने मुझ से ऐसा ऐसा व्यवहार किया है, और मुझे नौकर रखा है, और मैं उसका पुरोहित हो गया हूं। ५ उन्हों ने उस से कहा, परमेश्वर से सलाह ले, कि हम जान लें कि जो यात्रा हम करते हैं वह सफल होगी वा नहीं। ६ पुरोहित ने उन से कहा, कुशल से चले जाओ। जो यात्रा तुम करते हो वह ठीक यहोवा के साम्हने है ॥

७ तब वे पांच मनुष्य चल निकले, और लैश को जाकर वहां के लोगों को देखा कि सीदोनियों की नाईं निडर, बेखटके, और शान्ति से रहते हैं; और इस देश का कोई अधिकारी नहीं है, जो उन्हें किसी काम में रोके*, और वे सीदोनियों से दूर रहते हैं, और दूसरे मनुष्यों से कुछ व्यवहार नहीं रखते। ८ तब वे सोरा और एश्ताओल को अपने भाइयों के पास गए, और उनके भाइयों ने उन से पूछा, तुम क्या समाचार ले आए हो?

* मूल में—लजवाए।

९ उन्हों ने कहा, आओ, हम उन लोगों पर चढ़ाई करें; क्योंकि हम ने उस देश को देखा कि वह बहुत अच्छा है। तुम क्यों चुपचाप रहते हो? वहां चलकर उस देश को अपने वश में कर लेने में आलस न करो। १० वहां पहुंचकर तुम निडर रहते हुए लोगों को, और लम्बा चौड़ा देश पाओगे; और परमेश्वर ने उसे तुम्हारे हाथ में दे दिया है। वह ऐसा स्थान है जिस में पृथ्वी भर के किसी पदार्थ की घटी नहीं है ॥

११ तब वहां से अर्थात् सोरा और एश्ताओल से दानियों के कुल के छः सौ पुरुषों ने युद्ध के हथियार बान्धकर प्रस्थान किया। १२ उन्हों ने जाकर यहूदा देश के किर्य्यत्यारीम नगर में डेरे खड़े किए। इस कारण उस स्थान का नाम महनेदान * आज तक पड़ा है, वह तो किर्य्यत्यारीम के पश्चिम की ओर है। १३ वहां से वे आगे बढ़कर एप्रैम के पहाड़ी देश में मीका के घर के पास आए। १४ तब जो पांच मनुष्य लैश के देश का भेद लेने गए थे, वे अपने भाइयों से कहने लगे, क्या तुम जानते हो कि इन घरों में एक एपोद, कई एक गृहदेवता, एक खुदी और एक ढली हुई मूरत है? इसलिये अब सोचो, कि क्या करना चाहिये। १५ वे उधर मुड़कर उस जवान लेवीय के घर गए, जो मीका का घर था, और उसका कुशल क्षेम पूछा। १६ और वे छः सौ दानी पुरुष फाटक में हथियार बान्धे हुए खड़े रहे। १७ और जो पांच मनुष्य देश का भेद लेने गए थे, उन्हों ने वहां घुसकर उस खुदी हुई मूरत, और एपोद, और गृहदेवताओं, और ढली हुई मूरत को ले लिया, और वह पुरोहित फाटक में उन हथियार बान्धे हुए छः सौ पुरुषों के संग खड़ा था। १८ जब वे पांच मनुष्य मीका के घर में घुसकर खुदी हुई मूरत, एपोद, गृहदेवता, और ढली हुई मूरत को ले आए थे, तब पुरोहित ने उन से पूछा, यह तुम क्या करते हो? १९ उन्हों ने उस से कहा, चुप रह, अपने मुंह को हाथ से बन्दकर, और हम लोगों के संग चलकर, हमारे लिये पिता और पुरोहित बन। तेरे लिये क्या अच्छा है? यह, कि एक ही मनुष्य के घराने का पुरोहित हो, वा यह, कि इस्राएलियों के एक गोत्र और कुल का पुरोहित हो? २० तब पुरोहित प्रसन्न हुआ, सो वह एपोद, गृहदेवता, और खुदी हुई मूरत को लेकर उन लोगों के संग चला गया। २१ तब वे मुड़े, और बालबच्चों, पशुओं, और सामान को अपने आगे करके चल दिए। २२ जब वे मीका के घर से दूर निकल गए थे, तब जो मनुष्य मीका के घर के पासवाले घरों में रहते थे उन्हों ने इकट्ठे होकर दानियों को जा लिया। २३ और दानियों को पुकारा, तब उन्हों ने मुंह फेर के मीका से कहा, तुझे क्या हुआ कि तू इतना बड़ा दल लिए आता है*? २४ उस ने कहा, तुम तो मेरे बनवाए हुए देवताओं और पुरोहित को ले चले हो; फिर मेरे पास क्या रह गया? तो तुम मुझ से क्यों पूछते हो, कि तुझे क्या हुआ है? २५ दानियों ने उस से कहा, तेरा बोल हम लोगों में सुनाई न दे, कहीं ऐसा न हो कि क्रोधी जन तुम

* अर्थात् दान की छावनी।

* मूल में—तू इकट्ठा हुआ है।

लोगों पर प्रहार करें, और तू अपना और अपने घर के लोगों के भी प्राण को खो दे। २६ तब दानियों ने अपना मार्ग लिया; और मीका यह देखकर कि वे मुझ से अधिक बलवन्त हैं फिरके अपने घर लौट गया। २७ और वे मीका के बनवाए हुए पदार्थों और उसके पुरोहित को साथ ले लैश के पास आए, जिसके लोग शान्ति से और बिना खटके रहते थे, और उन्हों ने उनको तलवार से मार डाला, और नगर को आग लगाकर फूंक दिया। २८ और कोई बचानेवाला न था, क्योंकि वह सीदोन से दूर था, और वे और मनुष्यों से कुछ व्यवहार न रखते थे। और वह बेत्रहोब की तराई में था। तब उन्हों ने नगर को दृढ़ किया, और उस में रहने लगे। २९ और उन्हों ने उस नगर का नाम इस्राएल के एक पुत्र अपने मूलपुरुष दान के नाम पर दान रखा; परन्तु पहिले तो उस नगर का नाम लैश था। ३० तब दानियों ने उस खुदी हुई मूरत को खड़ा कर लिया; और देश की बन्धुआई के समय वह योनातान जो गेर्शोम का पुत्र और मूसा * का पोता था, वह और उसके वंश के लोग दान गोत्र के पुरोहित बने रहे। ३१ और जब तक परमेश्वर का भवन शीलो में बना रहा, तब तक वे मीका की खुदवाई हुई मूरत को स्थापित किए रहे॥

(बिन्यामीनियों के पाप में पड़े रहने और प्रायः नाश किए जाने की कथा)

१९ उन दिनों में जब इस्राएलियों का कोई राजा न था, तब एक लेवीय पुरुष एप्रैम के पहाड़ी देश की परली ओर परदेशी होकर रहता था, जिस ने यहूदा के बेतलेहेम में की एक सुरैतिन रख ली थी। २ उसकी सुरैतिन व्यभिचार करके यहूदा के बेतलेहेम को अपने पिता के घर चली गई, और चार महीने वहीं रही। ३ तब उसका पति अपने साथ एक सेवक और दो गदहे लेकर चला, और उसके यहां गया, कि उसे समझा बुझाकर ले आए। वह उसे अपने पिता के घर ले गई; और उस जवान स्त्री का पिता उसे देखकर उसकी भेंट से आनन्दित हुआ। ४ तब उसके ससुर अर्थात् उस स्त्री के पिता ने बिनती करके उसे रोक लिया, और वह तीन दिन तक उसके पास रहा; सो वे वहां खाते पिते टिके रहे। ५ चौथे दिन जब वे भोर को सवेरे उठे, और वह चलने को हुआ; तब स्त्री के पिता ने अपने दामाद से कहा, एक टुकड़ा रोटी खाकर अपना जी ठण्डा कर, तब तुम लोग चले जाना। ६ तब उन दोनों ने बैठकर संग संग खाया पिया; फिर स्त्री के पिता ने उस पुरुष से कहा, और एक रात टिके रहने को प्रसन्न हो और आनन्द कर। ७ वह पुरुष विदा होने को उठा, परन्तु उसके ससुर ने बिनती करके उसे दबाया, इसलिये उस ने फिर उसके यहां रात बिताई। ८ पांचवें दिन भोर को वह तो विदा होने को सवेरे उठा; परन्तु स्त्री के पिता ने कहा, अपना जी ठण्डा कर, और तुम दोनों दिन ढलने तक रुके रहो। तब उन दोनों ने रोटी खाई। ९ जब वह पुरुष अपनी सुरैतिन और सेवक समेत विदा होने को उठा, तब उसके ससुर अर्थात् स्त्री के पिता ने उस से कहा, देख दिन तो ढल चला है, और सांझ होने

* वा मनश्शे।

पर है; इसलिये तुम लोग रात भर टिके रहो। देख, दिन तो डूबने पर है; सो यहीं आनन्द करता हुआ रात बिता, और बिहान को सवेरे उठकर अपना मार्ग लेना, और अपने डेरे को चले जाना। १० परन्तु उस पुरुष ने उस रात को टिकना न चाहा, इसलिये वह उठकर विदा हुआ, और काठी बान्धे हुए दो गदहे और अपनी सुरैतिन संग लिए हुए यबूस के साम्हने तक (जो यरूशलेम कहलाता है) पहुंचा। ११ वे यबूस के पास थे, और दिन बहुत ढल गया था, कि सेवक ने अपने स्वामी से कहा, आ, हम यबूसियों के इस नगर में मुड़कर टिकें। १२ उसके स्वामी ने उस से कहा, हम पराए नगर में जहां कोई इस्राएली नहीं रहता, न उतरेंगे; गिबा तक बढ़ जाएंगे। १३ फिर उस ने अपने सेवक से कहा, आ, हम उधर के स्थानों में से किसी के पास जाएं, हम गिबा वा रामा में रात बिताएं। १४ और वे आगे की ओर चले; और उनके बिन्यामीन के गिबा के निकट पहुंचते पहुंचते सूर्य अस्त हो गया, १५ इसलिये वे गिबा में टिकने के लिये उसकी ओर मुड़ गए। और वह भीतर जाकर उस नगर के चौक में बैठ गया, क्योंकि किसी ने उनको अपने घर में न टिकाया। १६ तब एक बूढ़ा अपने खेत के काम को निपटाकर सांझ को चला आया; वह तो एप्रैम के पहाड़ी देश का था, और गिबा में परदेशी होकर रहता था; परन्तु उस स्थान के लोग बिन्यामीनी थे। १७ उस ने आंखें उठाकर उस यात्री को नगर के चौक में बैठे देखा; और उस बूढ़े ने पूछा, तू किधर जाता, और कहां से आता है? १८ उस ने उस से कहा, हम लोग तो यहूदा के बेतलेहेम से आकर एप्रैम के पहाड़ी देश की परली ओर जाते हैं, मैं तो वहीं का हूं; और यहूदा के बेतलेहेम तक गया था, और यहोवा के भवन को जाता हूं, परन्तु कोई मुझे अपने घर में नहीं टिकाता। १९ हमारे पास तो गदहों के लिये पुआल और चारा भी है, और मेरे और तेरी इस दासी और इस जवान के लिये भी जो तेरे दासों के संग है रोटी और दाखमधु भी है; हमें किसी वस्तु की घटी नहीं है। २० बूढ़े ने कहा, तेरा कल्याण हो; तेरे प्रयोजन की सब वस्तुएं मेरे सिर हों; परन्तु रात को चौक में न बिता। २१ तब वह उसको अपने घर ले चला, और गदहों को चारा दिया; तब वे पांव धोकर खाने पीने लगे। २२ वे आनन्द कर रहे थे, कि नगर के लुच्चों ने घर को घेर लिया, और द्वार को खटखटा-खटखटाकर घर के उस बूढ़े स्वामी से कहने लगे, जो पुरुष तेरे घर में आया, उसे बाहर ले आ, कि हम उस से भोग करें। २३ घर का स्वामी उनके पास बाहर जाकर उन से कहने लगा, नहीं, नहीं, हे मेरे भाइयो, ऐसी बुराई न करो; यह पुरुष जो मेरे घर पर आया है, इस से ऐसी मूढ़ता का काम मत करो। २४ देखो, यहां मेरी कुंवारी बेटी है, और उस पुरुष की सुरैतिन भी है; उनको मैं बाहर ले आऊंगा। और उनका पत-पानी लो तो लो, और उन से तो जो चाहो सो करो; परन्तु इस पुरुष से ऐसी मूढ़ता का काम मत करो। २५ परन्तु उन मनुष्यों ने उसकी न मानी। तब उस पुरुष ने अपनी

सुरैतिन को पकड़कर उनके पास बाहर कर दिया; और उन्हों ने उस से कुकर्म किया, और रात भर क्या भोर तक उस से लीला क्रीड़ा करते रहे। और पह फटते ही उसे छोड़ दिया। २६ तब वह स्त्री पह फटते हुए जाके उस मनुष्य के घर के द्वार पर जिस में उसका पति था गिर गई, और उजियाले के होने तक वहीं पड़ी रही। २७ सवेरे जब उसका पति उठ, घर का द्वार खोल, अपना मार्ग लेने को बाहर गया, तो क्या देखा, कि मेरी सुरैतिन घर के द्वार के पास डेवढ़ी पर हाथ फैलाए हुए पड़ी है। २८ उस ने उस से कहा, उठ, हम चलें। जब कोई न बोला, तब वह उसको गदहे पर लादकर अपने स्थान को गया। २९ जब वह अपने घर पहुंचा, तब छूरी ले सुरैतिन को अंग अंग अलग करके काटा; और उसे बारह टुकड़े करके इस्राएल के देश में भेज दिया। ३० जितनों ने उसे देखा, वे सब आपस में कहने लगे, इस्राएलियों के मिस्र देश से चले आने के समय से लेकर आज के दिन तक ऐसा कुछ कभी नहीं हुआ, और न देखा गया; सो इसको सोचकर सम्मति करो, और बताओ॥

२० तब दान से लेकर बर्शेबा तक के सब इस्राएली और गिलाद के लोग भी निकले, और उनकी मण्डली एक मत होकर मिस्पा में यहोवा के पास इकट्ठी हुई। २ और सारी प्रजा के प्रधान लोग, वरन सब इस्राएली गोत्रों के लोग जो चार लाख तलवार चलानेवाले प्यादे थे, परमेश्वर की प्रजा की सभा में उपस्थित हुए। ३ (बिन्यामीनियों ने तो सुना कि इस्राएली मिस्पा को आए हैं।) और इस्राएली पूछने लगे, हम से कहो, यह बुराई कैसे हुई? ४ उस मार डाली हुई स्त्री के लेवीय पति ने उत्तर दिया, मैं अपनी सुरैतिन समेत बिन्यामीन के गिबा में टिकने को गया था। ५ तब गिबा के पुरुषों ने मुझ पर चढ़ाई की, और रात के समय घर को घेरके मुझे घात करना चाहा; और मेरी सुरैतिन से इतना कुकर्म किया कि वह मर गई। ६ तब मैं ने अपनी सुरैतिन को लेकर टुकड़े टुकड़े किया, और इस्राएलियों के भाग के सारे देश में भेज दिया, उन्हों ने तो इस्राएल में महापाप और मूढ़ता का काम किया है। ७ सुनो, हे इस्राएलियो, सब के सब देखो, और यहीं अपनी सम्मति दो। ८ तब सब लोग एक मन हो, उठकर कहने लगे, न तो हम में से कोई अपने डेरे जाएगा, और न कोई अपने घर की ओर मुड़ेगा। ९ परन्तु अब हम गिबा से यह करेंगे, अर्थात् हम चिट्ठी डाल डालकर उस पर चढ़ाई करेंगे, १० और हम सब इस्राएली गोत्रों में सौ पुरुषों में से दस, और हजार पुरुषों में से एक सौ, और दस हज़ार में से एक हजार पुरुषों को ठहराएं, कि वे सेना के लिये भोजनवस्तु पहुंचाएं; इसलिये कि हम बिन्यामीन के गिबा में पहुंचकर उसको उस मूढ़ता का पूरा फल भुगता सकें जो उन्हों ने इस्राएल में की है। ११ तब सब इस्राएली पुरुष उस नगर के विरुद्ध एक पुरुष की नाईं जुटे हुए इकट्ठे हो गए॥

१२ और इस्राएली गोत्रियों ने बिन्यामीन के सारे गोत्रियों में कितने मनुष्य यह पूछने को भेजे, कि यह क्या बुराई

है जो तुम लोगों में की गई है? १३ अब उन गिबावासी लुच्चों को हमारे हाथ कर दो, कि हम उनको जान से मार के इस्राएल में से बुराई नाश करें। परन्तु बिन्यामीनियों ने अपने भाई इस्राएलियों की मानने से इनकार किया। १४ और बिन्यामीनी अपने अपने नगर में से आकर गिबा में इसलिये इकट्ठे हुए, कि इस्राएलियों से लड़ने को निकलें। १५ और उसी दिन गिबावासी पुरुषों को छोड़, जिनकी गिनती सात सौ चुने हुए पुरुष ठहरी, और और नगरों से आए हुए तलवार चलानेवाले बिन्यामीनियों की गिनती छब्बीस हजार पुरुष ठहरी। १६ इन सब लोगों में से सात सौ बैंहत्थे चुने हुए पुरुष थे, जो सब के सब ऐसे थे कि गोफन से पत्थर मारने में बाल भर भी न चूकते थे। १७ और बिन्यामीनियों को छोड़ इस्राएली पुरुष चार लाख तलवार चलानेवाले थे; ये सब के सब योद्धा थे॥

१८ सब इस्राएली उठकर बेतेल को गए, और यह कहकर परमेश्वर से सलाह ली, और इस्राएलियों ने पूछा, कि हम में से कौन बिन्यामीनियों से लड़ने को पहिले चढ़ाई करे? यहोवा ने कहा, यहूदा पहिले चढ़ाई करे। १९ तब इस्राएलियों ने बिहान को उठकर गिबा के साम्हने डेरे डाले। २० और इस्राएली पुरुष बिन्यामीनियों से लड़ने को निकल गए; और इस्राएली पुरुषों ने उस से लड़ने को गिबा के विरुद्ध पांति बान्धी। २१ तब बिन्यामीनियों ने गिबा से निकल उसी दिन बाईस हजार इस्राएली पुरुषों को मारके मिट्टी में मिला दिया। २२ तौभी इस्राएली पुरुष लोगों ने हियाव बान्धकर उसी स्थान में जहां उन्हों ने पहिले दिन पांति बान्धी थी, फिर पांति बान्धी। २३ और इस्राएली जाकर सांझ तक यहोवा के साम्हने रोते रहे; और यह कहकर यहोवा से पूछा, कि क्या हम अपने भाई बिन्यामीनियों से लड़ने को फिर पास जाएं? यहोवा ने कहा, हां, उन पर चढ़ाई करो॥

२४ तब दूसरे दिन इस्राएली बिन्यामीनियों के निकट पहुंचे। २५ तब बिन्यामीनियों ने दूसरे दिन उनका साम्हना करने को गिबा से निकलकर फिर अठारह हजार इस्राएली पुरुषों को मारके, जो सब के सब तलवार चलानेवाले थे, मिट्टी में मिला दिया। २६ तब सब इस्राएली, वरन सब लोग बेतेल को गए; और रोते हुए यहोवा के साम्हने बैठे रहे, और उस दिन सांझ तक उपवास किए रहे, और यहोवा को होमबलि और मेलबलि चढ़ाए। २७ और इस्राएलियों ने यहोवा से सलाह ली (उस समय तो परमेश्वर का वाचा का सन्दूक वहीं था, २८ और पीनहास, जो हारून का पोता और एलीआजर का पुत्र था, उन दिनों में उसके साम्हने हाजिर रहा करता था) उन्हों ने पूछा, क्या मैं एक और बार अपने भाई बिन्यामीनियों से लड़ने को निकल जाऊं, वा उनको छोड़ूं? यहोवा ने कहा, चढ़ाई कर; क्योंकि कल मैं उनको तेरे हाथ में कर दूंगा। २९ तब इस्राएलियों ने गिबा के चारों ओर लोगों को घात में बैठाया॥

३० तीसरे दिन इस्राएलियों ने बिन्यामीनियों पर फिर चढ़ाई की, और पहिले की नाईं गिबा के विरुद्ध पांति बान्धी। ३१ तब बिन्यामीनी उन लोगों का

साम्हना करने को निकले, और नगर के पास से खींचे गए; और जो दो सड़क, एक बेतेल को और दूसरी गिबा को गई है, उन में लोगों को पहिले की नाईं मारने लगे, और मैदान में कोई तीस इस्राएली मारे गए। ३२ बिन्यामीनी कहने लगे, वे पहिले की नाईं हम से मारे जाते हैं। परन्तु इस्राएलियों ने कहा, हम भागकर उनको नगर में से सड़कों में खींच ले आएं। ३३ तब सब इस्राएली पुरुषों ने अपने स्थान से उठकर बालतामार में पांति बान्धी; और घात में बैठे हुए इस्राएली अपने स्थान से, अर्थात् मारेगेबा से अचानक निकले। ३४ तब सब इस्राएलियों में से छांटे हुए दस हजार पुरुष गिबा के साम्हने आए, और घोर लड़ाई होने लगी; परन्तु वे न जानते थे कि हम पर विपत्ति अभी पड़ा चाहती है। ३५ तब यहोवा ने बिन्यामीनियों को इस्राएल से हरवा दिया, और उस दिन इस्राएलियों ने पचीस हजार एक सौ बिन्यामीनी पुरुषों को नाश किया, जो सब के सब तलवार चलानेवाले थे ॥

३६ तब बिन्यामीनियों ने देखा कि हम हार गए। और इस्राएली पुरुष उन घातकों का भरोसा करके जिन्हें उन्हों ने गिबा के पास बैठाया था बिन्यामीनियों के साम्हने से चले गए। ३७ परन्तु घातक लोग फुर्ती करके गिबा पर झपट गए; और घातकों ने आगे बढ़कर कुल नगर को तलवार से मारा। ३८ इस्राएली पुरुषों और घातकों के बीच तो यह चिन्ह ठहराया गया था, कि वे नगर में से बहुत बड़ा धूएं का खम्भा उठाएं। ३९ इस्राएली पुरुष तो लड़ाई में हटने लगे, और बिन्यामीनियों ने यह कहकर कि निश्चय वे पहिली लड़ाई की नाईं हम से हारे जाते हैं, इस्राएलियों को मार डालने लगे, और तीस एक पुरुषों को घात किया। ४० परन्तु जब वह धूएं का खम्भा नगर में से उठने लगा, तब बिन्यामीनियों ने अपने पीछे जो दृष्टि की तो क्या देखा, कि नगर का नगर धूआं होकर आकाश की ओर उड़ रहा है। ४१ तब इस्राएली पुरुष घूमे, और बिन्यामीनी पुरुष यह देखकर घबरा गए, कि हम पर विपत्ति आ पड़ी है। ४२ इसलिये उन्हों ने इस्राएली पुरुषों को पीठ दिखाकर जंगल का मार्ग लिया; परन्तु लड़ाई उन से होती ही रही, और जो और नगरों में से आए थे उनको इस्राएली रास्ते में नाश करते गए। ४३ उन्हों ने बिन्यामीनियों को घेर लिया, और उन्हें खदेड़ा, वे मनूहा में वरन गिबा के पूर्व की ओर तक उन्हें लताड़ते गए। ४४ और बिन्यामीनियों में से अठारह हज़ार पुरुष जो सब के सब शूरवीर थे मारे गए। ४५ तब वे घूमकर जंगल में की रिम्मोन नाम चट्टान की ओर तो भाग गए; परन्तु इस्राएलियों ने उन में से पांच हज़ार को बीनकर सड़कों में मार डाला; फिर गिदोम तक उनके पीछे पड़के उन में से दो हज़ार पुरुष मार डाले। ४६ तब बिन्यामीनियों में से जो उस दिन मारे गए वे पचीस हज़ार तलवार चलानेवाले पुरुष थे, और ये सब शूरवीर थे। ४७ परन्तु छः सौ पुरुष घूमकर जंगल की ओर भागे, और रिम्मोन नाम चट्टान में पहुंच गए, और चार महीने वहीं रहे। ४८ तब इस्राएली पुरुष लौटकर बिन्यामीनियों पर लपके और नगरों में क्या मनुष्य, क्या

पशु, क्या जो कुछ मिला, सब को तलवार से नाश कर डाला। और जितने नगर उन्हें मिले उन सभों को आग लगाकर फूंक दिया ॥

२१ इस्राएली पुरुषों ने तो मिस्पा में शपथ खाकर कहा था, कि हम मे कोई अपनी बेटी किसी बिन्यामीनी को न ब्याह देगा। २ वे बेतेल को जाकर सांझ तक परमेश्वर के साम्हने बैठे रहे, और फूट फूटकर बहुत रोते रहे। ३ और कहते थे, हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा, इस्राएल में ऐसा क्यों होने पाया, कि आज इस्राएल में एक गोत्र की घटी हुई है? ४ फिर दूसरे दिन उन्हों ने सवेरे उठ वहां वेदी बनाकर होमबलि और मेलबलि चढ़ाए। ५ तब इस्राएली पूछने लगे, इस्राएल के सारे गोत्रों में से कौन है जो यहोवा के पास सभा में न आया था? उन्हों ने तो भारी शपथ खाकर कहा था, कि जो कोई मिस्पा को यहोवा के पास न आए वह निश्चय मार डाला जाएगा। ६ तब इस्राएली अपने भाई बिन्यामीन के विषय में यह कहकर पछ-ताने लगे, कि आज इस्राएल में से एक गोत्र कट गया है। ७ हम ने जो यहोवा की शपथ खाकर कहा है, कि हम उन्हें अपनी किसी बेटी को न ब्याह देंगे, इसलिये बचे हुओं को स्त्रियां मिलने के लिये क्या करें? ८ जब उन्हों ने यह पूछा, कि इस्राएल के गोत्रों में से कौन है जो मिस्पा को यहोवा के पास न आया था? तब यह मालूम हुआ, कि गिलादी याबेश से कोई छावनी में सभा को न आया था। ९ अर्थात् जब लोगों की गिनती की गई, तब यह जाना गया कि गिलादी याबेश के निवासियों में से कोई यहां नहीं है। १० इसलिये मण्डली ने बारह हजार शूरवीरों को वहां यह आज्ञा देकर भेज दिया, कि तुम जाकर स्त्रियों और बालबच्चों समेत गिलादी याबेश को तलवार से नाश करो। ११ और तुम्हें जो करना होगा वह यह है, कि सब पुरुषों को और जितनी स्त्रियों ने पुरुष का मुंह देखा हो उनको सत्यानाश कर डालना। १२ और उन्हें गिलादी याबेश के निवासियों में से चार सौ जवान कुमारियां मिलीं जिन्हों ने पुरुष का मुंह नहीं देखा था; और उन्हें वे शीलो को जो कनान देश में है छावनी में ले आए ॥

१३ तब सारी मण्डली ने उन बिन्या-मीनियों के पास जो रिम्मोन नाम चट्टान पर थे कहला भेजा, और उन से संधि का प्रचार कराया। १४ तब बिन्यामीन उसी समय लौट गए; और उनको वे स्त्रियां दी गईं जो गिलादी याबेश की स्त्रियों में से जीवित छोड़ी गई थीं; तौभी वे उनके लिये थोड़ी थीं। १५ तब लोग बिन्यामीन के विषय फिर यह कहके पछताये, कि यहोवा ने इस्राएल के गोत्रों में घटी की है ॥

१६ तब मण्डली के वृद्ध गोत्रों ने कहा, कि बिन्यामीनी स्त्रियां जो नाश हुई हैं, तो बचे हुए पुरुषों के लिये स्त्री पाने का हम क्या उपाय करें? १७ फिर उन्हों ने कहा, बचे हुए बिन्यामीनियों के लिये कोई भाग चाहिये, ऐसा न हो कि इस्राएल में से एक गोत्र मिट जाए। १८ परन्तु हम तो अपनी किसी बेटी को उन्हें ब्याह नहीं दे सकते, क्योंकि इस्राएलियों ने यह कहकर शपथ खाई

है कि शापित हो वह जो किसी बिन्यामीनी को अपनी लड़की ब्याह दे। १९ फिर उन्हों ने कहा, सुनो, शीलो जो बेतेल की उत्तर ओर, और उस सड़क की पूर्व ओर है जो बेतेल से शकेम को चली गई है, और लबोना की दक्खिन ओर है, उस में प्रति वर्ष यहोवा का एक पर्व माना जाता है। २० इसलिये उन्हों ने बिन्यामीनियों को यह आज्ञा दी, कि तुम जाकर दाख की बारियों के बीच घात लगाए बैठे रहो, २१ और देखते रहो; और यदि शीलो की लड़कियां नाचने को निकलें, तो तुम दाख की बारियों से निकलकर शीलो की लड़कियों में से अपनी अपनी स्त्री को पकड़कर बिन्यामीन के देश को चले जाना। २२ और जब उनके पिता वा भाई हमारे पास झगड़ने को आएंगे, तब हम उन से कहेंगे, कि अनुग्रह करके उनको हमें दे दो, क्योंकि लड़ाई के समय हम ने उन में से एक एक के लिये स्त्री नहीं बचाई*, और तुम लोगों ने तो उनको ब्याह नहीं दिया, नहीं तो तुम अब दोषी ठहरते। २३ तब बिन्यामीनियों ने ऐसा ही किया, अर्थात् उन्हों ने अपनी गिनती के अनुसार उन नाचनेवालियों में से पकड़कर स्त्रियां ले लीं; तब अपने भाग को लौट गए, और नगरों को बसाकर उन में रहने लगे। २४ उसी समय इस्राएली वहां से चलकर अपने अपने गोत्र और अपने अपने घराने को गए, और वहां से वे अपने अपने निज भाग को गए। २५ उन दिनों में इस्राएलियों का कोई राजा न था; जिसको जो ठीक सूझ पड़ता था वही वह करता था॥

* मूल में—ली।

रूत

१ जिन दिनों में न्यायी लोग न्याय करते थे उन दिनों में देश में अकाल पड़ा, तब यहूदा के बेतलेहेम का एक पुरुष अपनी स्त्री और दोनों पुत्रों को संग लेकर मोआब के देश में परदेशी होकर रहने के लिये चला। २ उस पुरुष का नाम एलीमेलेक, और उसकी पत्नि का नाम नाओमी, और उसके दो बेटों के नाम महलोन और किल्योन थे; ये एप्राती अर्थात् यहूदा के बेतलेहेम के रहनेवाले थे। और मोआब के देश में आकर वहां रहे। ३ और नाओमी का पति एलीमेलेक मर गया, और नाओमी और उसके दोनों पुत्र रह गए। ४ और इन्हों ने एक एक मोआबिन ब्याह ली; एक स्त्री का नाम तो ओर्पा और दूसरी का नाम रूत था। फिर वे वहां कोई दस वर्ष रहे। ५ जब महलोन और किल्योन दोनों मर गए, तब नाओमी अपने दोनों पुत्रों और पति से रहित हो

गई। ६ तब वह मोआब के देश में यह सुनकर, कि यहोवा ने अपनी प्रजा के लोगों की सुधि लेके उन्हें भोजनवस्तु दी है, उस देश से अपनी दोनों बहुओं समेत लौट जाने को चली। ७ तब वह अपनी दोनों बहुओं समेत उस स्थान से जहां रहती थीं निकलीं, और वे यहूदा देश को लौट जाने का मार्ग लिया। ८ तब नाओमी ने अपनी दोनों बहुओं से कहा, तुम अपने अपने मैके लौट जाओ। और जैसे तुम ने उन से जो मर गए हैं और मुझ से भी प्रीति की है, वैसे ही यहोवा तुम्हारे ऊपर कृपा करे। ९ यहोवा ऐसा करे कि तुम फिर पति करके उनके घरों में विश्राम पाओ। तब उस ने उनको चूमा, और वे चिल्ला चिल्लाकर रोने लगीं, १० और उस से कहा, निश्चय हम तेरे संग तेरे लोगों के पास चलेंगीं। ११ नाओमी ने कहा, हे मेरी बेटियो, लौट जाओ, तुम क्यों मेरे संग चलोगी? क्या मेरी कोख में और पुत्र हैं जो तुम्हारे पति हों? १२ हे मेरी बेटियो, लौटकर चली जाओ, क्योंकि मैं पति करने को बूढ़ी हूं। और चाहे मैं कहती भी, कि मुझे आशा है, और आज की रात मेरे पति होता भी, और मेरे पुत्र भी होते, १३ तौभी क्या तुम उनके सयाने होने तक आशा लगाए ठहरी रहतीं? और उनके निमित्त पति करने से रुकी रहतीं? हे मेरी बेटियो, ऐसा न हो, क्योंकि मेरा दुःख * तुम्हारे दुःख से बहुत बढ़कर है; देखो, यहोवा का हाथ मेरे विरुद्ध उठा है। १४ तब वे फिर से उठीं; और ओर्पा ने तो अपनी सास को चूमा, परन्तु रूत उस से अलग न हुई। १५ तब उस ने कहा, देख, तेरी जिठानी * तो अपने लोगों और अपने देवता के पास लौट गई है; इसलिये तू अपनी जिठानी * के पीछे लौट जा। १६ रूत बोली, तू मुझ से यह बिनती न कर, कि मुझे त्याग वा छोड़कर लौट जा; क्योंकि जिधर तू जाए उधर मैं भी जाऊंगी, जहां तू टिके वहां मैं भी टिकूंगी; तेरे लोग मेरे लोग होंगे, और तेरा परमेश्वर मेरा परमेश्वर होगा; १७ जहां तू मरेगी वहां मैं भी मरूंगी, और वहीं मुझे मिट्टी दी जाएगी। यदि मृत्यु छोड़ और किसी कारण मैं तुझ से अलग होऊं, तो यहोवा मुझ से वैसा ही वरन उस से भी अधिक करे। १८ जब उस ने यह देखा कि वह मेरे संग चलने को स्थिर है, तब उस ने उस से और बात न कही। १९ सो वे दोनों चल निकलीं और बेतलेहेम को पहुंची। और उनके बेतलेहेम में पहुंचने पर कुल नगर में उनके कारण धूम मची; और स्त्रियां कहने लगीं, क्या यह नाओमी है? २० उस ने उन से कहा, मुझे नाओमी † न कहो, मुझे मारा ‡ कहो, क्योंकि सर्वशक्तिमान् ने मुझ को बड़ा दुःख दिया § है। २१ मैं भरी पूरी चली गई थी, परन्तु यहोवा ने मुझे छूछी करके लौटाया है। सो जब कि यहोवा ही ने मेरे विरुद्ध साक्षी दी, और सर्वशक्तिमान् ने मुझे दुःख दिया है, फिर तुम मुझे क्यों नाओमी कहती हो? २२ इस प्रकार नाओमी अपनी मोआबिन बहू रूत के

* मूल में—कड़वाहट।

* वा देवरानी। † अर्थात् मनोहर।
‡ अर्थात् दुखियारी। मूल में—कड़वी।
§ मूल में—मुझ से बहुत कड़वा व्यवहार किया।

साथ लौटी, जो मोआब देश से आई थी। और वे जौ कटने के आरम्भ के समय बेतलेहेम में पहुंचीं॥

२ नाओमी के पति एलीमेलेक के कुल में उसका एक बड़ा धनी कुटुम्बी था, जिसका नाम बोअज़ था। २ और मोआबिन रूत ने नाओमी से कहा, मुझे किसी खेत में जाने दे, कि जो मुझ पर अनुग्रह की दृष्टि करे, उसके पीछे पीछे मैं सिला बीनती जाऊं। उस ने कहा, चली जा, बेटी। ३ सो वह जाकर एक खेत में लवनेवालों के पीछे बीनने लगी, और जिस खेत में* वह संयोग से गई थी वह एलीमेलेक के कुटुम्बी बोअज़ का था। ४ और बोअज़ बेतलेहेम से आकर लवनेवालों से कहने लगा, यहोवा तुम्हारे संग रहे, और वे उस से बोले, यहोवा तुझे आशीष दे। ५ तब बोअज़ ने अपने उस सेवक से जो लवनेवालों के ऊपर ठहराया गया था पूछा, वह किस की कन्या है। ६ जो सेवक लवनेवालों के ऊपर ठहराया गया था उस ने उत्तर दिया, वह मोआबिन कन्या है, जो नाओमी के संग मोआब देश से लौट आई है। ७ उस ने कहा था, मुझे लवनेवालों के पीछे पीछे पूलों के बीच बीनने और बालें बटोरने दे। तो वह आई, और भोर से अब तक यहीं है, केवल थोड़ी देर तक घर में रही थी। ८ तब बोअज़ ने रूत से कहा, हे मेरी बेटी, क्या तू सुनती है? किसी दूसरे के खेत में बीनने को न जाना, मेरी ही दासियों के संग यहीं रहना। ९ जिस खेत को वे लवती हों उसी पर तेरा ध्यान बन्धा रहे, और उन्हीं के पीछे पीछे चला करना। क्या मैं ने जवानों को आज्ञा नहीं दी, कि तुझ से न बोलें? और जब जब तुझे प्यास लगे, तब तब तू बरतनों के पास जाकर जवानों का भरा हुआ पानी पीना। १० तब वह भूमि तक झुककर मुंह के बल गिरी, और उस से कहने लगी, क्या कारण है कि तू ने मुझ परदेशिन पर अनुग्रह की दृष्टि करके मेरी सुधि ली है? ११ बोअज़ ने उत्तर दिया, जो कुछ तू ने पति मरने के पीछे अपनी सास से किया है, और तू किस रीति अपने माता पिता और जन्मभूमि को छोड़कर ऐसे लोगों में आई है जिनको पहिले तू न जानती थी, यह सब मुझे विस्तार के साथ बताया गया है। १२ यहोवा तेरी करनी का फल दे, और इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जिसके पंखों तले तू शरण लेने आई है तुझे पूरा बदला दे। १३ उस ने कहा, हे मेरे प्रभु, तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर बनी रहे, क्योंकि यद्यपि मैं तेरी दासियों में से किसी के भी बराबर नहीं हूं, तौभी तू ने अपनी दासी के मन में पैठनेवाली बातें कहकर मुझे शान्ति दी है। १४ फिर खाने के समय बोअज़ ने उस से कहा, यहीं आकर रोटी खा, और अपना कौर सिरके में बोर। तो वह लवनेवालों के पास बैठ गई, और उस ने उसको भुनी हुई बालें दीं; और वह खाकर तृप्त हुई, वरन कुछ बचा भी रखा। १५ जब वह बीनने को उठी, तब बोअज़ ने अपने जवानों को आज्ञा दी, कि उसको पूलों के बीच बीच में भी बीनने दो, और दोष मत लगाओ। १६ वरन मुट्ठी भर जाने पर कुछ कुछ निकाल कर गिरा भी दिया करो, और

* मूल में—जिस खेत के भाग में।

उसके बीनने के लिये छोड़ दो, और उसे घुड़को मत। १७ सो वह सांझ तक खेत में बीनती रही; तब जो कुछ बीन चुकी उसे फटका, और वह कोई एपा भर जौ निकला। १८ तब वह उसे उठाकर नगर में गई, और उसकी सास ने उसका बीना हुआ देखा, और जो कुछ उस ने तृप्त होकर बचाया था उसको उस ने निकालकर अपनी सास को दिया। १९ उसकी सास ने उस से पूछा, आज तू कहां बीनती, और कहां काम करती थी? धन्य वह हो जिस ने तेरी सुधि ली है। तब उस ने अपनी सास को बता दिया, कि मैं ने किस के पास काम किया, और कहा, कि जिस पुरुष के पास मैं ने आज काम किया उसका नाम बोअज है। २० नाओमी ने अपनी बहू से कहा, वह यहोवा की ओर से आशीष पाए, क्योंकि उस ने न तो जीवित पर से और न मरे हुओं पर से अपनी करुणा हटाई! फिर नाओमी ने उस से कहा, वह पुरुष तो हमारा एक कुटुम्बी है, वरन उन में से है जिनको हमारी भूमि छुड़ाने का अधिकार है। २१ फिर रूत मोआबिन बोली, उस ने मुझ से यह भी कहा, कि जब तक मेरे सेवक मेरी सारी कटनी पूरी न कर चुकें तब तक उन्हीं के संग संग लगी रह। २२ नाओमी ने अपनी बहू रूत से कहा, मेरी बेटी यह अच्छा भी है, कि तू उसी की दासियों के साथ साथ जाया करे, और वे तुझ से दूसरे के खेत में न मिलें। २३ इसलिये रूत जौ और गेहूं दोनों की कटनी के अन्त तक बीनने के लिये बोअज की दासियों के साथ साथ लगी रही; और अपनी सास के यहां रहती थी॥

३ उसकी सास नाओमी ने उस से कहा, हे मेरी बेटी, क्या मैं तेरे लिये ठांव न ढूंढूं कि तेरा भला हो? २ अब जिसकी दासियों के पास तू थी, क्या वह बोअज हमारा कुटुम्बी नहीं है? वह तो आज रात को खलिहान में जौ फटकेगा। ३ तू स्नान कर तेल लगा, वस्त्र पहिनकर खलिहान को जा; परन्तु जब तक वह पुरुष खा पी न चुके तब तक अपने को उस पर प्रगट न करना। ४ और जब वह लेट जाए, तब तू उस के लेटने के स्थान को देख लेना; फिर भीतर जा उसके पांव उघारके लेट जाना; तब वही तुझे बताएगा कि तुझे क्या करना चाहिये। ५ उस ने उस से कहा, जो कुछ तू कहती है वह सब मैं करूंगी। ६ तब वह खलिहान को गई और अपनी सास की आज्ञा के अनुसार ही किया। ७ जब बोअज खा पी चुका, और उसका मन आनन्दित हुआ, तब जाकर राशि के एक सिरे पर लेट गया। तब वह चुपचाप गई, और उसके पांव उघार के लेट गई। ८ आधी रात को वह पुरुष चौंक पड़ा, और आगे की ओर झुककर क्या पाया, कि मेरे पांवों के पास कोई स्त्री लेटी है। ९ उस ने पूछा, तू कौन है? तब वह बोली, मैं तो तेरी दासी रूत हूं; तू अपनी दासी को अपनी चद्दर ओढ़ा दे, क्योंकि तू हमारी भूमि छुड़ानेवाला कुटुम्बी है। १० उस ने कहा, हे बेटी, यहोवा की ओर से तुझ पर आशीष हो; क्योंकि तू ने अपनी पिछली प्रीति पहिली से अधिक दिखाई, क्योंकि तू, क्या धनी, क्या कंगाल, किसी जवान के पीछे नहीं लगी। ११ इसलिये अब, हे मेरी बेटी, मत डर, जो कुछ तू कहेगी मैं तुझ

से करूंगा; क्योंकि मेरे नगर के सब लोग * जानते हैं कि तू भली स्त्री है। १२ और अब सच तो है कि मैं छुड़ानेवाला कुटुम्बी हूं, तौभी एक और है जिसे मुझ से पहिले ही छुड़ाने का अधिकार है। १३ सो रात भर ठहरी रह, और सवेरे यदि वह तेरे लिये छुड़ानेवाले का काम करना चाहे; तो अच्छा, वही ऐसा करे; परन्तु यदि वह तेरे लिये छुड़ानेवाले का काम करने को प्रसन्न न हो, तो यहोवा के जीवन की शपथ मैं ही वह काम करूंगा। भोर तक लेटी रह। १४ तब वह उसके पांवों के पास भोर तक लेटी रही, और उस से पहिले कि कोई दूसरे को चीन्ह सके वह उठी; और बोअज़ ने कहा, कोई जानने न पाए कि खलिहान में कोई स्त्री आई थी। १५ तब बोअज़ ने कहा, जो चद्दर तू ओढ़े है उसे फैलाकर थाम्भ ले। और जब उस ने उसे थाम्भा तब उस ने छः नपुए जौ नापकर उसको उठा दिया; फिर वह नगर में चली गई। १६ जब रूत अपनी सास के पास आई तब उस ने पूछा, हे बेटी, क्या हुआ † ? तब जो कुछ उस पुरुष ने उस से किया था वह सब उस ने उसे कह सुनाया। १७ फिर उस ने कहा, यह छः नपुए जौ उस ने यह कहकर मुझे दिया, कि अपनी सास के पास छूछे हाथ मत जा। १८ उस ने कहा, हे मेरी बेटी, जब तक तू न जाने कि इस बात का कैसा फल निकलेगा, तब तक चुपचाप बैठी रह, क्योंकि आज उस पुरुष को यह काम बिना निपटाए चैन न पड़ेगा ॥

* मूल में—मेरे लोगों का सारा फाटक।
† मूल में—तू कौन है?

४ तब बोअज़ फाटक के पास जाकर बैठ गया; और जिस छुड़ानेवाले कुटुम्बी की चर्चा बोअज़ ने की थी, वह भी आ गया। तब बोअज़ ने कहा, हे फुलाने, इधर आकर यहीं बैठ जा; तो वह उधर जाकर बैठ गया। २ तब उस ने नगर के दस वृद्ध लोगों को बुलाकर कहा, यहीं बैठ जाओ; वे भी बैठ गए। ३ तब वह उस छुड़ानेवाले कुटुम्बी से कहने लगा, नाओमी जो मोआब देश से लौट आई है वह हमारे भाई एलीमेलेक की एक टुकड़ा भूमि बेचना चाहती है। ४ इसलिये मैं ने सोचा कि यह बात तुझ को जताकर कहूंगा, कि तू उसको इन बैठे हुओं के साम्हने और मेरे लोगों के इन वृद्ध लोगों के साम्हने मोल ले। और यदि तू उसको छुड़ाना चाहे, तो छुड़ा; और यदि तू छुड़ाना न चाहे, तो मुझे ऐसा ही बता दे, कि मैं समझ लूं; क्योंकि तुझे छोड़ उसके छुड़ाने का अधिकार और किसी को नहीं है, और तेरे बाद मैं हूं। उस ने कहा, मैं उसे छुड़ाऊंगा। ५ फिर बोअज़ ने कहा, जब तू उस भूमि को नाओमी के हाथ से मोल ले, तब उसे रूत मोआबीन के हाथ से भी जो मरे हुए की स्त्री है इस मनसा से मोल लेना पड़ेगा, कि मरे हुए का नाम उसके भाग में स्थिर कर दे। ६ उस छुड़ानेवाले कुटुम्बी ने कहा, मैं उसको छुड़ा नहीं सकता, ऐसा न हो कि मेरा निज भाग बिगड़ जाए। इसलिये मेरा छुड़ाने का अधिकार तू ले ले, क्योंकि मुझ से वह छुड़ाया नहीं जाता। ७ अगले समय में इस्राएल में छुड़ाने और बदलने के विषय में सब पक्का करने के लिये यह व्यवहार था, कि मनुष्य अपनी जूती

उतार के दूसरे को देता था। इस्राएल में गवाही इसी रीति होती थी। ८ इसलिये उस छुड़ानेवाले कुटुम्बी ने बोअज़ से यह कहकर, कि तू उसे मोल ले, अपनी जूती उतारी। ९ तब बोअज़ ने वृद्ध लोगों और सब लोगों से कहा, तुम आज इस बात के साक्षी हो कि जो कुछ एलीमेलेक का और जो कुछ किल्योन और महलोन का था, वह सब मैं नाओमी के हाथ से मोल लेता हूं। १० फिर महलोन की स्त्री रूत मोआबिन को भी मैं अपनी पत्नी करने के लिये इस मनसा से मोल लेता हूं, कि मरे हुए का नाम उसके निज भाग पर स्थिर करूं, कहीं ऐसा न हो कि मरे हुए का नाम उसके भाइयों में से और उसके स्थान के फाटक से मिट जाए; तुम लोग आज साक्षी ठहरे हो। ११ तब फाटक के पास जितने लोग थे उन्हों ने और वृद्ध लोगों ने कहा, हम साक्षी हैं। यह जो स्त्री तेरे घर में आती है उसको यहोवा इस्राएल के घराने की दो उपजानेवाली * राहेल और लिआः के समान करे। और तू एप्राता में वीरता करे, और बेतलेहेम में तेरा बड़ा नाम हो; १२ और जो सन्तान यहोवा इस जवान स्त्री के द्वारा तुझे दे उसके कारण से तेरा घराना पेरेस का सा हो जाए, जो तामार से यहूदा के द्वारा उत्पन्न हुआ। १३ तब बोअज़ ने रूत को ब्याह लिया, और वह उसकी पत्नी हो गई; और जब वह उसके पास गया तब यहोवा की दया से उसको गर्भ रहा, और उसके एक बेटा उत्पन्न हुआ। १४ तब स्त्रियों ने नाओमी से कहा, यहोवा धन्य है, जिस ने तुझे आज छुड़ानेवाले कुटुम्बी के बिना नहीं छोड़ा; इस्राएल में इसका बड़ा नाम हो। १५ और यह तेरे जी में जी ले आनेवाला और तेरा बुढ़ापे में पालनेवाला हो, क्योंकि तेरी बहू जो तुझ से प्रेम रखती और सात बेटों से भी तेरे लिये श्रेष्ठ है उसी का यह बेटा है। १६ फिर नाओमी उस बच्चे को अपनी गोद में रखकर उसकी धाई का काम करने लगी। १७ और उसकी पड़ोसिनों ने यह कहकर, कि नाओमी के एक बेटा उत्पन्न हुआ है, लड़के का नाम ओबेद रखा। यिशै का पिता और दाऊद का दादा वही हुआ॥

१८ पेरेस की यह वंशावली है, अर्थात् पेरेस से हेस्रोन, १९ और हेस्रोन से राम, और राम से अम्मीनादाब, २० और अम्मीनादाब से नहशोन, और नहशोन से सल्मोन, २१ और सल्मोन से बोअज़, और बोअज़ से ओबेद, २२ और ओबेद से यिशै, और यिशै से दाऊद उत्पन्न हुआ॥

* मूल में—घर की बनानेवाली।

शमूएल की पहिली पुस्तक

(शमूएल के जन्म और लड़कपन का वर्णन)

१ एप्रैम के पहाड़ी देश के रामातैम-सोपीम **नाम नगर** का निवासी एल्काना नाम एक पुरुष था, वह एप्रैमी था, और सूप के पुत्र तोहू का परपोता, एलीहू का पोता, और यरोहाम का पुत्र था। २ और उसके दो पत्नियां थीं; एक का तो नाम हन्ना और दूसरी का पनिन्ना था। और पनिन्ना के तो बालक हुए, परन्तु हन्ना के कोई बालक न हुआ। ३ वह पुरुष प्रति वर्ष अपने नगर से सेनाओं के यहोवा को दण्डवत् करने और मेलबलि चढ़ाने के लिये शीलो में जाता था; और वहां होप्नी और पीनहास नाम एली के दोनों पुत्र रहते थे, जो यहोवा के याजक थे। ४ और जब जब एल्काना मेलबलि चढ़ाता था तब तब वह अपनी पत्नी पनिन्ना को और उसके सब बेटे-बेटियों को दान दिया करता था; ५ परन्तु हन्ना को वह दूना दान दिया करता था, क्योंकि वह हन्ना से प्रीति रखता था; तौभी यहोवा ने उसकी कोख बन्द कर रखी थी। ६ परन्तु उसकी सौत इस कारण से, कि यहोवा ने उसकी कोख बन्द कर रखी थी, उसे अत्यन्त चिढ़ाकर कुढ़ाती रहती थी। ७ और वह तो प्रति वर्ष ऐसा ही करता था; और जब हन्ना यहोवा के भवन को जाती थी तब पनिन्ना उसको चिढ़ाती थी। इसलिये वह रोती और खाना न खाती थी। ८ इसलिये उसके पति एल्काना ने उस से कहा, हे हन्ना, तू क्यों रोती है? और खाना क्यों नहीं खाती? और तेरा मन क्यों उदास है? क्या तेरे लिये मैं दस बेटों से भी अच्छा नहीं हूं? ९ तब शीलो में खाने और पीने के बाद हन्ना उठी। और यहोवा के मन्दिर के चौखट के एक अलंग के पास एली याजक कुर्सी पर बैठा हुआ था। १० और यह मन में व्याकुल * होकर यहोवा से प्रार्थना करने और बिलख बिलखकर रोने लगी। ११ और उस ने यह मन्नत मानी, कि हे सेनाओं के यहोवा, यदि तू अपनी दासी के दुःख पर सचमुच दृष्टि करे, और मेरी सुधि ले, और अपनी दासी को भूल न जाए, और अपनी दासी को पुत्र दे, तो मैं उसे उसके जीवन भर के लिये यहोवा को अर्पण करूंगी, और उसके सिर पर छुरा फिरने न पाएगा। १२ जब वह यहोवा के साम्हने ऐसी प्रार्थना कर रही थी, तब एली उसके मुंह की ओर ताक रहा था। १३ हन्ना मन ही मन कह रही थी; उसके होंठ तो हिलते थे परन्तु उसका शब्द न सुन पड़ता था; इसलिये एली ने समझा कि वह नशे में है। १४ तब एली ने उस से कहा, तू कब तक नशे में रहेगी? अपना नशा उतार †। १५ हन्ना ने कहा, नहीं, हे मेरे प्रभु, मैं तो दुःखिया हूं; मैं ने न तो दाखमधु पिया है और न मदिरा, मैं ने अपने मन

* मूल में—कड़वी।

† मूल में—अपना दाखमधु अपने घर से दूर कर।

की बात खोलकर यहोवा से कही है *। १६ अपनी दासी को ओछी स्त्री न जान, जो कुछ मैं ने अब तक कहा है, वह बहुत ही शोकित होने और चिढ़ाई जाने के कारण कहा है। १७ एली ने कहा, कुशल से चली जा; इस्राएल का परमेश्वर तुझे मन चाहा वर दे। १८ उस ने कहा, तेरी दासी तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाए। तब वह स्त्री चली गई और खाना खाया, और उसका मुंह फिर उदास न रहा। १९ बिहान को वे सवेरे उठ यहोवा को दण्डवत् करके रामा में अपने घर लौट गए। और एल्काना अपनी स्त्री हन्ना के पास गया, और यहोवा ने उसकी सुधि ली; २० तब हन्ना गर्भवती हुई और समय पर उसके एक पुत्र हुआ, और उसका नाम शमूएल † रखा, क्योंकि वह कहने लगी, मैं ने यहोवा से मांगकर इसे पाया है। २१ फिर एल्काना अपने पूरे घराने समेत यहोवा के साम्हने प्रति वर्ष की मेलबलि चढ़ाने और अपनी मन्नत पूरी करने के लिये गया। २२ परन्तु हन्ना अपने पति से यह कहकर घर में रह गई ‡, कि जब बालक का दूध छूट जाएगा तब मैं उसको ले जाऊंगी, कि वह यहोवा को मुंह दिखाए, और वहां सदा बना रहे। २३ उसके पति एल्काना ने उस से कहा, जो तुझे भला लगे वही कर, जब तक तू उसका दूध न छुड़ाए तब तक यहीं ठहरी रह; केवल इतना हो कि यहोवा अपना वचन पूरा करे। इसलिये वह स्त्री वहीं घर पर रह गई और अपने पुत्र के दूध छूटने के समय तक उसको पिलाती रही। २४ जब उस ने उसका दूध छुड़ाया तब वह उसको संग ले गई, और तीन बछड़े, और एपा भर आटा, और कुप्पी भर दाखमधु भी ले गई, और उस लड़के को शीलो में यहोवा के भवन में पहुंचा दिया; उस समय वह लड़का ही था। २५ और उन्हों ने बछड़ा बलि करके बालक को एली के पास पहुंचा दिया। २६ तब हन्ना ने कहा, हे मेरे प्रभु, तेरे जीवन की शपथ, हे मेरे प्रभु, मैं वही स्त्री हूं जो तेरे पास यहीं खड़ी होकर यहोवा से प्रार्थना करती थी। २७ यह वही बालक है जिसके लिये मैं ने प्रार्थना की थी; और यहोवा ने मुझे मुंह मांगा वर दिया है। २८ इसी लिये मैं भी उसे यहोवा को अर्पण कर देती हूं *; कि यह अपने जीवन भर यहोवा ही का बना रहे †। तब उस ने वहीं यहोवा को दण्डवत् किया॥

२ और हन्ना ने प्रार्थना करके कहा,
मेरा मन यहोवा के कारण मगन है;
मेरा सींग यहोवा के कारण ऊंचा, हुआ है।
मेरा मुंह मेरे शत्रुओं के विरुद्ध खुल गया,
क्योंकि मैं तेरे किए हुए उद्धार से आनन्दित हूं॥
२ यहोवा के तुल्य कोई पवित्र नहीं,
क्योंकि तुझ को छोड़ और कोई है ही नहीं;

* मूल में—मैं ने अपना जीव यहोवा के साम्हने उण्डेल दिया।
† अर्थात् ईश्वर का सुना हुआ।
‡ मूल में—न चढ़ गई।

* मूल में—मैं ने इसे यहोवा का मांगा हुआ मान लिया।
† मूल में—यहोवा ही का मां ़ हुआ ठहरे।

और हमारे परमेश्वर के समान
कोई चट्टान नहीं है ॥
३ फूलकर अहंकार की और बातें
मत करो,
और अन्धेर की बातें तुम्हारे
मुंह से न निकलें;
क्योंकि यहोवा ज्ञानी ईश्वर है,
और कामों का तौलनेवाला है ॥
४ शूरवीरों के धनुष टूट गए,
और ठोकर खानेवालों की कटि
में बल का फेंटा कसा गया ॥
५ जो पेट भरते थे उन्हें रोटी के
लिये मज़दूरी करनी पड़ी,
ज़ो भूखे थे वे फिर ऐसे न रहे।
वरन जो बांझ थी उसके सात
हुए,
और अनेक बालकों की माता
घुलती जाती है ॥
६ यहोवा मारता है और जिलाता
भी है;
वही अधोलोक में उतारता और
उस से निकालता भी * है ॥
७ यहोवा निर्धन करता है और
धनी भी बनाता है,
वही नीचा करता और ऊंचा
भी करता है ॥
८ वह कङ्गाल को धूलि में से
उठाता;
और दरिद्र को घूरे में से निकाल
खड़ा करता है,
ताकि उनको अधिपतियों के संग
बिठाए,
और महिमायुक्त सिंहासन के
अधिकारी बनाए।
क्योंकि पृथ्वी के खम्भे यहोवा
के हैं,
और उस ने उन पर जगत को
धरा है ॥
९ वह अपने भक्तों के पांवों को
सम्भाले रहेगा,
परन्तु दुष्ट अन्धियारे में चुपचाप
पड़े रहेंगे;
क्योंकि कोई मनुष्य अपने बल
के कारण प्रबल न होगा ॥
१० जो यहोवा से झगड़ते हैं वे
चकनाचूर होंगे;
वह उनके विरुद्ध आकाश में
गरजेगा।
यहोवा पृथ्वी की छोर तक
न्याय करेगा;
और अपने राजा को बल देगा,
और अपने अभिषिक्त के सींग
को ऊंचा करेगा ॥

११ तब एल्काना रामा को अपने घर चला गया। और वह बालक एली याजक के साम्हने यहोवा की सेवा टहल करने लगा ॥

१२ एली के पुत्र तो लुच्चे थे; उन्हों ने यहोवा को न पहिचाना। १३ और याजकों की रीति लोगों के साथ यह थी, कि जब कोई मनुष्य मेलबलि चढ़ाता था तब याजक का सेवक मांस पकाने के समय एक त्रिशूली कांटा हाथ में लिये हुए आकर १४ उसे कड़ाही, वा हांडी, वा हंडे, वा तसले के भीतर डालता था; और जितना मांस कांटे में लग जाता था उतना याजक आप लेता था। यों ही वे शीलो में सारे इस्राएलियों से किया करते थे जो वहां आते थे। १५ और चर्बी जलाने से पहिले भी याजक का

* मूल में—और उस ने चढ़ाया।

सेवक आकर मेलबलि चढ़ानेवाले से कहता था, कि कबाब के लिये याजक को मांस दे; वह तुझ से पका हुआ नहीं, कच्चा ही मांस लेगा। १६ और जब कोई उस से कहता, कि निश्चय चर्बी अभी जलाई जाएगी, तब जितना तेरा जी चाहे उतना ले लेना, तब वह कहता था, नहीं, अभी दे; नहीं तो मैं छीन लूंगा। १७ इसलिये उन जवानों का पाप यहोवा की दृष्टि में बहुत भारी हुआ; क्योंकि वे मनुष्य यहोवा की भेंट का तिरस्कार करते थे॥

१८ परन्तु शमूएल जो बालक था सनी का एपोद पहिने हुए यहोवा के साम्हने सेवा टहल किया करता था। १९ और उसकी माता प्रति वर्ष उसके लिये एक छोटा सा बागा बनाकर जब अपने पति के संग प्रति वर्ष की मेलबलि चढ़ाने आती थी तब बागे को उसके पास लाया करती थी। २० और एली ने एल्काना और उसकी पत्नी को आशीर्वाद देकर कहा, यहोवा इस अर्पण किए हुए बालक की सन्ती जो उसको अर्पण किया गया है* तुझ को इस पत्नी से वंश दे; तब वे अपने यहां चले गए। २१ और यहोवा ने हन्ना की सुधि ली, और वह गर्भवती हुई और उसके तीन बेटे और दो बेटियां उत्पन्न हुई। और शमूएल बालक यहोवा के संग रहता हुआ बढ़ता गया॥

२२ और एली तो अति बूढ़ा हो गया था, और उस ने सुना कि मेरे पुत्र सारे इस्राएल से कैसा कैसा व्यवहार करते हैं, वरन मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सेवा करनेवाली स्त्रियों के संग कुकर्म भी करते हैं। २३ तब उस ने उन से कहा, तुम ऐसे ऐसे काम क्यों करते हो? मैं तो इन सब लोगों से तुम्हारे कुकर्मों की चर्चा सुना करता हूं। २४ हे मेरे बेटो, ऐसा न करो; क्योंकि जो समाचार मेरे सुनने में आता है वह अच्छा नहीं; तुम तो यहोवा की प्रजा से अपराध कराते हो। २५ यदि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का अपराध करे, तब तो परमेश्वर* उसका न्याय करेगा; परन्तु यदि कोई मनुष्य यहोवा के विरुद्ध पाप करे, तो उसके लिये कौन बिनती करेगा? तौभी उन्हों ने अपने पिता की बात न मानी; क्योंकि यहोवा की इच्छा उन्हें मार डालने की थी। २६ परन्तु शमूएल बालक बढ़ता गया और यहोवा और मनुष्य दोनों उस से प्रसन्न रहते थे॥

२७ और परमेश्वर का एक जन एली के पास जाकर उस से कहने लगा, यहोवा यों कहता है, कि जब तेरे मूलपुरुष का घराना मिस्र में फिरौन के घराने के वश में था, तब क्या मैं उस पर निश्चय प्रगट न हुआ था? २८ और क्या मैं ने उसे इस्राएल के सब गोत्रों में से इसलिये चुन नहीं लिया था, कि मेरा याजक होकर मेरी वेदी के ऊपर चढ़ावे चढ़ाए, और धूप जलाए, और मेरे साम्हने एपोद पहिना करे? और क्या मैं ने तेरे मूलपुरुष के घराने को इस्राएलियों के कुल हव्य न दिए थे? २९ इसलिये मेरे मेलबलि और अन्नबलि जिनको मैं ने अपने धाम में चढ़ाने की आज्ञा दी है, उन्हें तुम लोग क्यों

* मूल में—इस मांगी हुई वस्तु की सन्ती जो उसके निमित्त मांगी गई है।

* वा न्यायी।

पांव तले रौंदते हो? और तू क्यों अपने पुत्रों का आदर मेरे आदर से अधिक करता है, कि तुम लोग मेरी इस्राएली प्रजा की अच्छी से अच्छी भेटें खा खाके मोटे हो जाओ? ३० इसलिये इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, कि मैं ने कहा तो था, कि तेरा घराना और तेरे मूलपुरुष का घराना मेरे साम्हने सदैव चला करेगा; परन्तु अब यहोवा की वाणी यह है, कि यह बात मुझ से दूर हो; क्योंकि जो मेरा आदर करें मैं उनका आदर करूंगा, और जो मुझे तुच्छ जानें वे छोटे समझे जाएंगे। ३१ सुन, वे दिन आते हैं, कि मैं तेरा भुजबल और तेरे मूलपुरुष के घराने का भुजबल ऐसा तोड़ डालूंगा, कि तेरे घराने में कोई बूढ़ा होने न पाएगा। ३२ इस्राएल का कितना ही कल्याण क्यों न हो, तौभी तुझे मेरे धाम का दुःख देख पड़ेगा, और तेरे घराने में कोई कभी बूढ़ा न होने पाएगा। ३३ मैं तेरे कुल के सब किसी से तो अपनी वेदी की सेवा न छीनूंगा, परन्तु तौभी तेरी आंखें देखती रह जाएंगी, और तेरा मन शोकित होगा, और तेरे घर की बढ़ती सब अपनी पूरी जवानी ही में मर मिटेंगे। ३४ और मेरी इस बात का चिन्ह वह विपत्ति होगी जो होप्नी और पीनहास नाम तेरे दोनों पुत्रों पर पड़ेगी; अर्थात् वे दोनों के दोनों एक ही दिन मर जाएंगे। ३५ और मैं अपने लिये एक विश्वासयोग्य याजक ठहराऊंगा, जो मेरे हृदय और मन की इच्छा के अनुसार किया करेगा, और मैं उसका घर बसाऊंगा और स्थिर करूंगा*, और वह मेरे अभिषिक्त के आगे आगे सब दिन चला फिरा करेगा। ३६ और ऐसा होगा कि जो कोई तेरे घराने में बचा रहेगा वह उसी के पास जाकर एक छोटे से टुकड़े चान्दी के वा एक रोटी के लिये दण्डवत् करके कहेगा, याजक के किसी काम में मुझे लगा, जिस से मुझे एक टुकड़ा रोटी मिले॥

३ और वह बालक शमूएल एली के साम्हने यहोवा की सेवा टहल करता था। और उन दिनों में यहोवा का वचन दुर्लभ था; और दर्शन कम मिलता था। २ और उस समय ऐसा हुआ कि (एली की आंखें तो धुंधली होने लगी थीं और उसे न सूझ पड़ता था) जब वह अपने स्थान में लेटा हुआ था, ३ और परमेश्वर का दीपक अब तक बुझा नहीं था, और शमूएल यहोवा के मन्दिर में जहां परमेश्वर का सन्दूक था लेटा था; ४ तब यहोवा ने शमूएल को पुकारा; और उस ने कहा, क्या आज्ञा! ५ तब उस ने एली के पास दौड़कर कहा, क्या आज्ञा, तू ने तो मुझे पुकारा है। वह बोला, मैं ने नहीं पुकारा; फिर जा लेट रह। तो वह जाकर लेट गया। ६ तब यहोवा ने फिर पुकार के कहा, हे शमूएल! शमूएल उठकर एली के पास गया, और कहा, क्या आज्ञा, तू ने तो मुझे पुकारा है। उस ने कहा, हे मेरे बेटे, मैं ने नहीं पुकारा; फिर जा लेट रह। ७ उस समय तक तो शमूएल यहोवा को नहीं पहचानता था, और न तो यहोवा का वचन ही उस पर प्रगट हुआ था। ८ फिर

* मूल में—मैं उसके लिये एक स्थिर घर बनाऊंगा।

तीसरी वार यहोवा ने शमूएल को पुकारा। और वह उठके एली के पास गया, और कहा, क्या आज्ञा, तू ने तो मुझे पुकारा है। तब एली ने समझ लिया कि इस बालक को यहोवा ने पुकारा है। ९ इसलिये एली ने शमूएल से कहा, जा लेट रह; और यदि वह तुझे फिर पुकारे, तो तू कहना, कि हे यहोवा, कह, क्योंकि तेरा दास सुन रहा है। तब शमूएल अपने स्थान पर जाकर लेट गया। १० तब यहोवा आ खड़ा हुआ, और पहिले की नाईं पुकारा, शमूएल! शमूएल! शमूएल ने कहा, कह, क्योंकि तेरा दास सुन रहा है। ११ यहोवा ने शमूएल से कहा, सुन, मैं इस्राएल में एक ऐसा काम करने पर हूं, जिससे सब सुननेवालों पर बड़ा सन्नाटा छा जाएगा*। १२ उस दिन मैं एली के विरुद्ध वह सब कुछ पूरा करूंगा जो मैं ने उसके घराने के विषय में कहा, उसे आरम्भ से अन्त तक पूरा करूंगा। १३ क्योंकि मैं तो उसको यह कहकर जता चुका हूं, कि मैं उस अधर्म का दण्ड जिसे वह जानता है सदा के लिये उसके घर का न्याय करूंगा, क्योंकि उसके पुत्र आप शापित हुए हैं, और उस ने उन्हें नहीं रोका। १४ इस कारण मैं ने एली के घराने के विषय यह शपथ खाई, कि एली के घराने के अधर्म का प्रायश्चित न तो मेलबलि से कभी होगा, और न अन्नबलि से। १५ और शमूएल भोर तक लेटा रहा; तब उस ने यहोवा के भवन के किवाड़ों को खोला। और शमूएल एली को उस दर्शन की बातें बताने से

* मूल में—उस के दोनों कान सनसनाएंगे।

डरा। १६ तब एली ने शमूएल को पुकारकर कहा, हे मेरे बेटे, शमूएल। वह बोला, क्या आज्ञा। १७ तब उस ने पूछा, वह कौन सी बात है जो यहोवा ने तुझ से कही है? उसे मुझ से न छिपा। जो कुछ उस ने तुझ से कहा हो यदि तू उस में से कुछ भी मुझ से छिपाए, तो परमेश्वर तुझ से वैसा ही वरन उस से भी अधिक करे। १८ तब शमूएल ने उसको रत्ती रत्ती बातें कह सुनाईं, और कुछ भी न छिपा रखा। वह बोला, वह तो यहोवा है; जो कुछ वह भला जाने वही करे। १९ और शमूएल बड़ा होता गया, और यहोवा उसके संग रहा, और उस ने उसकी कोई भी बात निष्फल होने* नहीं दी। २० और दान से बेर्शेबा तक के रहनेवाले सारे इस्राएलियों ने जान लिया कि शमूएल यहोवा का नबी होने के लिये नियुक्त किया गया है। २१ और यहोवा ने शीलो में फिर दर्शन दिया, क्योंकि यहोवा ने अपने आप को शीलो में शमूएल पर अपने वचन के द्वारा प्रगट किया॥

(पवित्र सन्दूक की बन्धुआई और लौटाया जाना)

४ और शमूएल का वचन सारे इस्राएल के पास पहुंचा। और इस्राएली पलिश्तियों से युद्ध करने को निकले; और उन्हों ने तो एबेनेज़ेर के आस-पास छावनी डाली, और पलिश्तियों ने अपेक में छावनी डाली। २ तब पलिश्तियों ने इस्राएल के विरुद्ध पांति बान्धी, और जब घमासान युद्ध होने लगा तब इस्राएली पलिश्तियों से हार गए, और उन्हों

* मूल में—भूमि पर गिरने।

ने कोई चार हज़ार इस्राएली सेना के पुरुषों को मैदान ही में मार डाला। ३ और जब वे लोग छावनी में लौट आए, तब इस्राएल के वृद्ध लोग कहने लगे, कि यहोवा ने आज हमें पलिश्तियों से क्यों हरवा दिया है? आओ, हम यहोवा की वाचा का सन्दूक शीलो से मांग ले आएं, कि वह हमारे बीच में आकर हमें शत्रुओं के हाथ से बचाए। ४ तब उन लोगों ने शीलो में भेजकर वहां से करूबों के ऊपर विराजनेवाले सेनाओं के यहोवा की वाचा का सन्दूक मंगा लिया; और परमेश्वर की वाचा के सन्दूक के साथ एली के दोनों पुत्र, होप्नी और पिनहास भी वहां थे। ५ जब यहोवा की वाचा का सन्दूक छावनी में पहुंचा, तब सारे इस्राएली इतने बल से ललकार उठे, कि भूमि गूंज उठी। ६ इस ललकार का शब्द सुनकर पलिश्तियों ने पूछा, इब्रियों की छावनी में ऐसी बड़ी ललकार का क्या कारण है? तब उन्हों ने जान लिया, कि यहोवा का सन्दूक छावनी में आया है। ७ तब पलिश्ती डरकर कहने लगे, उस छावनी में परमेश्वर आ गया है। फिर उन्हों ने कहा, हाय! हम पर ऐसी बात पहिले नहीं हुई थी। ८ हाय! ऐसे महाप्रतापी देवताओं के हाथ से हम को कौन बचाएगा? ये तो वे ही देवता हैं जिन्हों ने मिस्रियों पर जंगल में सब प्रकार की विपत्तियां डाली थीं। ९ हे पलिश्तियो, तुम हियाव बान्धो, और पुरुषार्थ जगाओ, कहीं ऐसा न हो कि जैसे इब्री तुम्हारे अधीन हो गए वैसे तुम भी उनके अधीन हो जाओ; पुरुषार्थ करके संग्राम करो। १० तब पलिश्ती लड़ाई के मैदान में टूट पड़े, और इस्राएली हारकर अपने अपने डेरे को भागने लगे; और ऐसा अत्यन्त संहार हुआ, कि तीस हज़ार इस्राएली पैदल खेत आए। ११ और परमेश्वर का सन्दूक छीन लिया गया; और एली के दोनों पुत्र, होप्नी और पीनहास, भी मारे गए। १२ तब एक बिन्यामीनी मनुष्य ने सेना में से दौड़कर उसी दिन अपने वस्त्र फाड़े और सिर पर मिट्टी डाले हुए शीलो में पहुंचा। १३ वह जब पहुंचा उस समय एली, जिसका मन परमेश्वर के सन्दूक की चिन्ता से थरथरा रहा था, वह मार्ग के किनारे कुर्सी पर बैठा बाट जोह रहा था। और ज्योंही उस मनुष्य ने नगर में पहुंचकर वह समाचार दिया त्योंही सारा नगर चिल्ला उठा। १४ चिल्लाने का शब्द सुनकर एली ने पूछा, ऐसे हुल्लड़ और हाहाकार मचने का क्या कारण है? और उस मनुष्य ने झट जाकर एली को पूरा हाल सुनाया। १५ एली तो अट्ठानवे वर्ष का था, और उसकी आंखें धुन्धली पड़ गई थीं, और उसे कुछ सूझता न था। १६ उस मनुष्य ने एली से कहा, मैं वही हूं जो सेना में से आया हूं; और मैं सेना से आज ही भाग आया। वह बोला, हे मेरे बेटे, क्या समाचार है? १७ उस समाचार देनेवाले ने उत्तर दिया, कि इस्राएली पलिश्तियों के साम्हने से भाग गए हैं, और लोगों का बड़ा भयानक संहार भी हुआ है, और तेरे दोनों पुत्र होप्नी और पीनहास भी मारे गए, और परमेश्वर का सन्दूक भी छीन लिया गया है। १८ ज्योंही उस ने परमेश्वर के सन्दूक का नाम लिया त्योंही एली फाटक

के पास कुर्सी पर से पछाड़ खाकर गिर पड़ा; और बूढ़े और भारी होने के कारण उसकी गर्दन टूट गई, और वह मर गया। उस ने तो इस्राएलियों का न्याय चालीस वर्ष तक किया था। १६ उसकी बहू पीनहास की स्त्री गर्भवती थी, और उसका समय समीप था। और जब उस ने परमेश्वर के सन्दूक के छीन लिए जाने, और अपने ससुर और पति के मरने का समाचार सुना, तब उसको जच्चा का दर्द उठा, और वह दुहर गई, और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। २० उसके मरते मरते उन स्त्रियों ने जो उसके आस पास खड़ी थीं उस से कहा, मत डर, क्योंकि तेरे पुत्र उत्पन्न हुआ है। परन्तु उस ने कुछ उत्तर न दिया, और न कुछ ध्यान दिया। २१ और परमेश्वर के सन्दूक के छीन लिए जाने और अपने ससुर और पति के कारण उस ने यह कहकर उस बालक का नाम ईकाबोद * रखा, कि इस्राएल में से महिमा उठ गई! २२ फिर उस ने कहा, इस्राएल में से महिमा उठ गई है, क्योंकि परमेश्वर का सन्दूक छीन लिया गया है॥

५ और पलिश्तियों ने परमेश्वर का सन्दूक एबनेज़ेर से उठाकर अशदोद में पहुंचा दिया; २ फिर पलिश्तियों ने परमेश्वर के सन्दूक को उठाकर दागोन के मन्दिर में पहुंचाकर दागोन के पास धर दिया। ३ बिहान को अशदोदियों ने तड़के उठकर क्या देखा, कि दागोन यहोवा के सन्दूक के साम्हने औंधे मुंह भूमि पर गिरा पड़ा है। तब उन्हों ने दागोन को उठाकर उसी के स्थान पर फिर खड़ा किया। ४ फिर बिहान को जब वे तड़के उठे, तब क्या देखा, कि दागोन यहोवा के सन्दूक के साम्हने औंधे मुंह भूमि पर गिरा पड़ा है; और दागोन का सिर और दोनों हथेलियां डेवढ़ी पर कटी हुई पड़ी हैं; निदान दागोन का केवल धड़ समूचा रह गया। ५ इस कारण आज के दिन तक भी दागोन के पुजारी और जितने दागोन के मन्दिर में जाते हैं, वे अशदोद में दागोन की डेवढ़ी पर पांव नहीं धरते॥

६ तब यहोवा का हाथ अशदोदियों के ऊपर भारी पड़ा, और वह उन्हें नाश करने लगा; और उस ने अशदोद और उसके आस पास के लोगों के गिलटियां निकालीं। ७ यह हाल देखकर अशदोद के लोगों ने कहा, इस्राएल के देवता का सन्दूक हमारे मध्य रहने नहीं पाएगा; क्योंकि उसका हाथ हम पर और हमारे देवता दागोन पर कठोरता के साथ पड़ा है। ८ तब उन्हों ने पलिश्तियों के सब सरदारों को बुलवा भेजा, और उन से पूछा, हम इस्राएल के देवता के सन्दूक से क्या करें? वे बोले, इस्राएल के देवता का सन्दूक घुमाकर गत नगर में पहुंचाया जाए। तो उन्हों ने इस्राएल के परमेश्वर के सन्दूक को घुमाकर गत में पहुंचा दिया। ९ जब वे उसको घुमाकर वहां पहुंचे, तो यूं हुआ कि यहोवा का हाथ उस नगर के विरुद्ध ऐसा उठा कि उस में अत्यन्त बड़ी हलचल मच गई; और उस ने छोटे से बड़े तक उस नगर के सब लोगों को मारा, और उनके गिलटियां निकलने लगीं। १० तब उन्हों ने परमेश्वर का सन्दूक एक्रोन को भेजा। और ज्योंही परमेश्वर का सन्दूक एक्रोन

* अर्थात् महिमा जाती रही।

में पहुंचा त्योंही एक्रोनी यह कहकर चिल्लाने लगे, कि इस्राएल के देवता का सन्दूक घुमाकर हमारे पास इसलिये पहुंचाया गया है, कि हम और हमारे लोगों को मरवा डाले। ११ तब उन्हों ने पलिश्तियों के सब सरदारों को इकट्ठा किया, और उन से कहा, इस्राएल के देवता के सन्दूक को निकाल दो, कि वह अपने स्थान पर लौट जाए, और हम को और हमारे लोगों को मार डालने न पाए। उस समस्त नगर में तो मृत्यु के भय की हलचल मच रही थी, और परमेश्वर का हाथ वहां बहुत भारी पड़ा था। १२ और जो मनुष्य न मरे वे भी गिलटियों के मारे पड़े रहे; और नगर की चिल्लाहट आकाश तक पहुंची॥

६ यहोवा का सन्दूक पलिश्तियों के देश में सात महीने तक रहा। २ तब पलिश्तियों ने याजकों और भावी कहनेवालों को बुलाकर पूछा, कि यहोवा के सन्दूक से हम क्या करें? हमें बताओ कि क्या प्रायश्चित देकर हम उसे उसके स्थान पर भेजें? ३ वे बोले, यदि तुम इस्राएल के देवता का सन्दूक वहां भेजो, तो उसे वैसे ही न भेजना; उसकी हानि भरने के लिये अवश्य ही दोषबलि देना। तब तुम चंगे हो जाओगे, और तुम जान लोगे कि उसका हाथ तुम पर से क्यों नहीं उठाया गया। ४ उन्हों ने पूछा, हम उसकी हानि भरने के लिये कौन सा दोषबलि दें? वे बोले, पलिश्ती सरदारों की गिनती के अनुसार सोने की पांच गिलटियां, और सोने के पांच चूहे; क्योंकि तुम सब और तुम्हारे सरदार दोनों एक ही रोग से ग्रसित हो। ५ तो तुम * अपनी गिलटियों और अपने देश के नाश करनेवाले चूहों की भी मूरतें बनाकर इस्राएल के देवता की महिमा मानो; सम्भव है वह अपना हाथ तुम पर से और तुम्हारे देवताओं और देश पर से उठा ले। ६ तुम अपने मन क्यों ऐसे हठीले करते हो जैसे मिस्रियों और फ़िरौन ने अपने मन हठीले कर दिए थे? जब उस ने उनके मध्य में अचम्भित काम किए, तब क्या उन्हों ने उन लोगों को जाने न दिया, और क्या वे चले न गए? ७ सो अब तुम एक नई गाड़ी बनाओ, और ऐसी दो दुधार गायें लो जो जूए तले न आई हों, और उन गायों को उस गाड़ी में जोतकर उनके बच्चों को उनके पास से लेकर घर को लौटा दो। ८ तब यहोवा का सन्दूक लेकर उस गाड़ी पर धर दो, और सोने की जो वस्तुएं तुम उसकी हानि भरने के लिये दोषबलि की रीति से दोगे उन्हें दूसरे सन्दूक में धर के उसके पास रख दो। फिर उसे रवाना कर दो कि चली जाए। ९ और देखते रहना; यदि वह अपने देश के मार्ग से होकर बेतशेमेश को चले, तो जानो कि हमारी यह बड़ी हानि उसी की ओर से हुई: और यदि नहीं, तो हम को निश्चय होगा कि यह मार हम पर उसकी ओर से नहीं, परन्तु संयोग ही से हुई। १० उन मनुष्यों ने वैसा ही किया; अर्थात् दो दुधार गायें लेकर उस गाड़ी में जोतीं, और उनके बच्चों को

* मूल में—उन।

घर में बन्द कर दिया। ११ और यहोवा का सन्दूक, और दूसरा सन्दूक, और सोने के चूहों और अपनी गिलटियों की मूरतों को गाड़ी पर रख दिया। १२ तब गायों ने बेतशेमेश का सीधा मार्ग लिया; वे सड़क ही सड़क बम्बाती हुई चली गईं, और न दाहिने मुड़ीं और न बायें; और पलिश्तियों के सरदार उनके पीछे पीछे बेतशेमेश के सिवाने तक गए। १३ और बेतशेमेश के लोग तराई में गेहूं काट रहे थे; और जब उन्हों ने आंखें उठाकर सन्दूक को देखा, तब उसके देखने से आनन्दित हुए। १४ और गाड़ी यहोशू नाम एक बेतशेमेशी के खेत में जाकर वहां ठहर गई, जहां एक बड़ा पत्थर था। तब उन्हों ने गाड़ी की लकड़ी को चीरा और गायों को होमबलि करके यहोवा के लिये चढ़ाया। १५ और लेवीयों ने यहोवा के सन्दूक को उस सन्दूक के समेत जो साथ था, जिस में सोने की वस्तुएं थी, उतारके उस बड़े पत्थर पर धर दिया; और बेतशेमेश के लोगों ने उसी दिन यहोवा के लिये होमबलि और मेलबलि चढ़ाए। १६ यह देखकर पलिश्तियों के पांचों सरदार उसी दिन एक्रोन को लौट गए॥

१७ सोने की गिलटियां जो पलिश्तियों ने यहोवा की हानि भरने के लिये दोषबलि करके दे दीं थीं उन में से एक तो अशदोद की ओर से, एक अज्जा, एक अश्कलोन, एक गत, और एक एक्रोन की ओर से दी गई थी। १८ और वह सोने के चूहे, क्या शहरपनाहवाले नगर, क्या बिना शहरपनाह के गांव, वरन जिस बड़े पत्थर पर यहोवा का सन्दूक धरा गया था वहां पलिश्तियों के पांचों सरदारों के अधिकार तक की सब बस्तियों की गिनती के अनुसार दिए गए। वह पत्थर तो आज तक बेतशेमेशी यहोशू के खेत में है। १९ फिर इस कारण से कि बेतशेमेश के लोगों ने यहोवा के सन्दूक के भीतर झांका था उस ने उन में से सत्तर मनुष्य, और फिर पचास हज़ार मनुष्य मार डाले; और वहां के लोगों ने इसलिये विलाप किया कि यहोवा ने लोगों का बड़ा ही संहार किया था। २० तब बेतशेमेश के लोग कहने लगे, इस पवित्र परमेश्वर यहोवा के साम्हने कौन खड़ा रह सकता है? और वह हमारे पास से किस के पास चला जाए? २१ तब उन्हों ने किर्यत्यारीम के निवासियों के पास यों कहने को दूत भेजे, कि पलिश्तियों ने यहोवा का सन्दूक लौटा दिया है; इसलिये तुम आकर उसे अपने यहां ले जाओ॥

७ तब किर्यत्यारीम के लोगों ने जाकर यहोवा के सन्दूक को उठाया, और अबीनादाब के घर में जो टीले पर बना था रखा, और यहोवा के सन्दूक की रक्षा करने के लिये अबीनादाब के पुत्र एलीआज़ार को पवित्र किया॥

(शमूएल नबी और न्यायी के कार्य)

२ किर्यत्यारीम में रहते रहते सन्दूक को बहुत दिन हुए, अर्थात् बीस वर्ष बीत गए, और इस्राएल का सारा घराना विलाप करता हुआ यहोवा के पीछे चलने लगा। ३ तब शमूएल ने इस्राएल के सारे घराने से कहा, यदि तुम अपने पूर्ण मन से यहोवा की ओर फिरे हो, तो पराए देवताओं और अश्तोरेत देवियों को अपने

बीच में से दूर करो, और यहोवा की ओर अपना मन लगाकर केवल उसी की उपासना करो, तब वह तुम्हें पलिश्तियों के हाथ से छुड़ाएगा। ४ तब इस्राएलियों ने बाल देवताओं और अश्तोरेत देवियों को दूर किया, और केवल यहोवा ही की उपासना करने लगे॥

५ फिर शमूएल ने कहा, सब इस्राएलियों को मिस्पा में इकट्ठा करो, और मैं तुम्हारे लिये यहोवा से प्रार्थना करूंगा। ६ तब वे मिस्पा में इकट्ठे हुए, और जल भरके यहोवा के साम्हने उंडेल दिया, और उस दिन उपवास किया, और वहां कहने लगे, कि हम ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है। और शमूएल ने मिस्पा में इस्राएलियों का न्याय किया। ७ जब पलिश्तियों ने सुना कि इस्राएली मिस्पा में इकट्ठे हुए हैं, तब उनके सरदारों ने इस्राएलियों पर चढ़ाई की। यह सुनकर इस्राएली पलिश्तियों से भयभीत हुए। ८ और इस्राएलियों ने शमूएल से कहा, हमारे लिये हमारे परमेश्वर यहोवा की दोहाई देना न छोड़, जिस से वह हम को पलिश्तियों के हाथ से बचाए। ९ तब शमूएल ने एक दूधपिउवा मेम्ना ले सर्वाङ्ग होमबलि करके यहोवा को चढ़ाया; और शमूएल ने इस्राएलियों के लिये यहोवा की दोहाई दी, और यहोवा ने उसकी सुन ली। १० और जिस समय शमूएल होमबलि को चढ़ा रहा था उस समय पलिश्ती इस्राएलियों के संग युद्ध करने के लिये निकट आ गए, तब उसी दिन यहोवा ने पलिश्तियों के ऊपर बादल को बड़े कड़क के साथ गरजाकर उन्हें घबरा दिया; और वे इस्राएलियों से हार गए। ११ तब इस्राएली पुरुषों ने मिस्पा से निकलकर पलिश्तियों को खदेड़ा, और उन्हें बेतकर के नीचे तक मारते चले गए। १२ तब शमूएल ने एक पत्थर लेकर मिस्पा और शेन के बीच में खड़ा किया, और यह कहकर उसका नाम एबेनेज़ेर* रखा, कि यहां तक यहोवा ने हमारी सहायता की है। १३ तब पलिश्ती दब गए, और इस्राएलियों के देश में फिर न आए, और शमूएल के जीवन भर यहोवा का हाथ पलिश्तियों के विरुद्ध बना रहा। १४ और एक्रोन और गत तक जितने नगर पलिश्तियों ने इस्राएलियों के हाथ से छीन लिए थे, वे फिर इस्राएलियों के वश में आ गए; और उनका देश भी इस्राएलियों ने पलिश्तियों के हाथ से छुड़ाया। और इस्राएलियों और एमोरियों के बीच भी सन्धि हो गई। १५ और शमूएल जीवन भर इस्राएलियों का न्याय करता रहा। १६ वह प्रति वर्ष बेतेल और गिलगाल और मिस्पा में घूम-घूमकर उन सब स्थानों में इस्राएलियों का न्याय करता था। १७ तब वह रामा में जहां उसका घर था लौट आया, और वहां भी इस्राएलियों का न्याय करता था, और वहां उस ने यहोवा के लिये एक वेदी बनाई॥

(शाऊल को राजपद का मिलना)

८ जब शमूएल बूढ़ा हुआ, तब उस ने अपने पुत्रों को इस्राएलियों पर न्यायी ठहराया। २ उसके जेठे पुत्र का नाम योएल, और दूसरे का नाम अबिय्याह था; ये बेर्शेबा में न्याय करते थे। ३ परन्तु उसके पुत्र उसकी राह

* अर्थात् सहायता का पत्थर।

पर न चले, अर्थात् लालच में आकर* घूस लेते और न्याय बिगाड़ते थे ॥

४ तब सब इस्राएली वृद्ध लोग इकट्ठे होकर रामा में शमूएल के पास जाकर ५ उस से कहने लगे, सुन, तू तो अब बूढ़ा हो गया, और तेरे पुत्र तेरी राह पर नहीं चलते; अब हम पर न्याय करने के लिये सब जातियों की रीति के अनुसार हमारे लिये एक राजा नियुक्त कर दे। ६ परन्तु जो बात उन्हों ने कही, कि हम पर न्याय करने के लिये हमारे ऊपर राजा नियुक्त कर दे, यह बात शमूएल को बुरी लगी। और शमूएल ने यहोवा से प्रार्थना की। ७ और यहोवा ने शमूएल से कहा, वे लोग जो कुछ तुझ से कहें उसे मान ले; क्योंकि उन्हों ने तुझ को नहीं परन्तु मुझी को निकम्मा जाना है, कि मैं उनका राजा न रहूं। ८ जैसे जैसे काम वे उस दिन से, जब से मैं उन्हें मिस्र से निकाल लाया, आज के दिन तक करते आए हैं, कि मुझ को त्यागकर पराए देवताओं की उपासना करते आए हैं, वैसे ही वे तुझ से भी करते हैं। ९ इसलिये अब तू उनकी बात मान; तौभी तू गम्भीरता से उनको भली भांति समझा दे, और उनको बतला भी दे कि जो राजा उन पर राज्य करेगा उसका व्यवहार किस प्रकार होगा ॥

१० और शमूएल ने उन लोगों को जो उस से राजा चाहते थे यहोवा की सब बातें कह सुनाईं। ११ और उस ने कहा जो राजा तुम पर राज्य करेगा उसकी यह चाल होगी, अर्थात् वह तुम्हारे पुत्रों को लेकर अपने रथों और घोड़ों के काम पर नौकर रखेगा, और वे उसके रथों के आगे आगे दौड़ा करेंगे; १२ फिर वह उनको हजार हजार और पचास पचास के ऊपर प्रधान बनाएगा, और कितनों से वह अपने हल जुतवाएगा, और अपने खेत कटवाएगा, और अपने लिये युद्ध के हथियार और रथों के साज बनवाएगा। १३ फिर वह तुम्हारी बेटियों को लेकर उन से सुगन्धद्रव्य और रसोई और रोटियां बनवाएगा। १४ फिर वह तुम्हारे खेतों और दाख और जलपाई की बारियों में से जो अच्छी से अच्छी होंगे उन्हें ले लेकर अपने कर्मचारियों को देगा। १५ फिर वह तुम्हारे बीज और दाख की बारियों का दसवां अंश ले लेकर अपने हाकिमों और कर्मचारियों को देगा। १६ फिर वह तुम्हारे दास-दासियों को, और तुम्हारे अच्छे से अच्छे जवानों को, और तुम्हारे गदहों को भी लेकर अपने काम में लगाएगा। १७ वह तुम्हारी भेड़-बकरियों का भी दसवां अंश लेगा; निदान तुम लोग उसके दास बन जाओगे। १८ और उस दिन तुम अपने उस चुने हुए राजा के कारण दोहाई दोगे, परन्तु यहोवा उस समय तुम्हारी न सुनेगा। १९ तौभी उन लोगों ने शमूएल की बात न सुनी; और कहने लगे, नहीं! हम निश्चय अपने लिये राजा चाहते हैं, २० जिस से हम भी और सब जातियों के समान हो जाएं, और हमारा राजा हमारा न्याय करे, और हमारे आगे आगे चलकर हमारी ओर से युद्ध किया करे। २१ लोगों की ये सब बातें सुनकर शमूएल ने यहोवा के कानों तक पहुंचाया। २२ यहोवा ने शमूएल से कहा, उनकी बात मानकर उनके

* मूल में—लालच के पीछे मुड़के।

लिये राजा ठहरा दे। तब शमूएल ने इस्राएली मनुष्यों से कहा, तुम सब अपने अपने नगर को चले जाओ॥

९ बिन्यामीन के गोत्र में कीश नाम का एक पुरुष था, जो अपीह के पुत्र, बकोरत का परपोता, और सरोर का पोता, और अबीएल का पुत्र था; वह एक बिन्यामीनी पुरुष का पुत्र और बड़ा शक्तिशाली सूरमा था। २ उसके शाऊल नाम एक जवान पुत्र था, जो सुन्दर था, और इस्राएलियों में कोई उस से बढ़कर सुन्दर न था; वह इतना लम्बा था कि दूसरे लोग उसके कान्धे ही तक आते थे। ३ जब शाऊल के पिता कीश की गदहियां खो गईं, तब कीश ने अपने पुत्र शाऊल से कहा, एक सेवक को अपने साथ ले जा और गदहियों को ढूंढ़ ला। ४ तब वह एप्रैम के पहाड़ी देश और शलीशा देश होते हुए गया, परन्तु उन्हें न पाया। तब वे शालीम नाम देश भी होकर गए, और वहां भी न पाया। फिर बिन्यामीन के देश में गए, परन्तु गदहियां न मिलीं। ५ जब वे सूफ नाम देश में आए, तब शाऊल ने अपने साथ के सेवक से कहा, आ, हम लौट चलें, ऐसा न हो कि मेरा पिता गदहियों की चिन्ता छोड़कर हमारी चिन्ता करने लगे। ६ उस ने उस से कहा, सुन, इस नगर में परमेश्वर का एक जन है जिसका बड़ा आदरमान होता है; और जो कुछ वह कहता है वह बिना पूरा हुए नहीं रहता। अब हम उधर चलें, सम्भव है वह हम को हमारा मार्ग बताए कि किधर जाएं। ७ शाऊल ने अपने सेवक से कहा, सुन, यदि हम उस पुरुष के पास चलें तो उसके लिये क्या ले चलें? देख, हमारी थैलियों में की रोटी चुक गई है और भेंट के योग्य कोई वस्तु है ही नहीं, जो हम परमेश्वर के उस जन को दें। हमारे पास क्या है? ८ सेवक ने फिर शाऊल से कहा, कि मेरे पास तो एक शेकेल चान्दी की चौथाई है, वही मैं परमेश्वर के जन को दूंगा, कि वह हम को बताए कि किधर जाएं। (९ पूर्वकाल में तो इस्राएल में जब कोई परमेश्वर से प्रश्न करने जाता तब ऐसा कहता था, कि चलो, हम दर्शी के पास चलें; क्योंकि जो आज कल नबी कहलाता है वह पूर्वकाल में दर्शी कहलाता था।) १० तब शाऊल ने अपने सेवक से कहा, तू ने भला कहा है; हम चलें। सो वे उस नगर को चले जहां परमेश्वर का जन था। ११ उस नगर की चढ़ाई पर चढ़ते समय उन्हें कई एक लड़कियां मिलीं जो पानी भरने को निकली थीं; उन्हों ने उन से पूछा, क्या दर्शी यहां है? १२ उन्हों ने उत्तर दिया, कि है; देखो, वह तुम्हारे आगे है। अब फुर्ती करो; आज ऊंचे स्थान पर लोगों का यज्ञ है, इसलिये वह आज नगर में आया हुआ है। १३ ज्योंही तुम नगर में पहुंचो त्योंही वह तुम को ऊंचे स्थान पर खाना खाने को जाने से पहिले मिलेगा; क्योंकि जब तक वह न पहुंचे तब तक लोग भोजन न करेंगे, इसलिये कि यज्ञ के विषय में वही धन्यवाद करता; तब उसके पीछे ही न्योतहरी भोजन करते हैं। इसलिये तुम अभी चढ़ जाओ, इसी समय वह तुम्हें मिलेगा। १४ वे नगर में चढ़ गए और ज्योंही नगर के भीतर पहुंचे त्योंही शमूएल ऊंचे

स्थान पर चढ़ने की मनसा से उनके साम्हने आ रहा था ॥

१५ शाऊल के आने से एक दिन पहिले यहोवा ने शमूएल को यह चिता रखा* था, १६ कि कल इसी समय मैं तेरे पास बिन्यामीन के देश से एक पुरुष को भेजूंगा, उसी को तू मेरी इस्राएली प्रजा के ऊपर प्रधान होने के लिये अभिषेक करना। और वह मेरी प्रजा को पलिश्तियों के हाथ से छुड़ाएगा; क्योंकि मैं ने अपनी प्रजा पर कृपा दृष्टि की है, इसलिये कि उनकी चिल्लाहट मेरे पास पहुंची है। १७ फिर जब शमूएल को शाऊल देख पड़ा, तब यहोवा ने उस से कहा, जिस पुरुष की चर्चा मैं ने तुझ से की थी वह यही है; मेरी प्रजा पर यही अधिकार करेगा। १८ तब शाऊल फाटक में शमूएल के निकट जाकर कहने लगा, मुझे बता कि दर्शी का घर कहां है? १९ उस ने कहा, दर्शी तो मैं हूं; मेरे आगे आगे ऊंचे स्थान पर चढ़ जा, क्योंकि आज के दिन तुम मेरे साथ भोजन खाओगे, और बिहान को जो कुछ तेरे मन में हो सब कुछ मैं तुझे बताकर बिदा करूंगा। २० और तेरी गदहियां जो तीन दिन हुए खो गई थीं उनकी कुछ भी चिन्ता न कर, क्योंकि वे मिल गईं। और इस्राएल में जो कुछ मनभाऊ है वह किस का है? क्या वह तेरा और तेरे पिता के सारे घराने का नहीं है? २१ शाऊल ने उत्तर देकर कहा, क्या मैं बिन्यामिनी, अर्थात् सब इस्राएली गोत्रों में से छोटे गोत्र का नहीं हूं? और क्या मेरा कुल बिन्यामीनी के गोत्र के सारे कुलों में से छोटा नहीं है? इसलिये तू मुझ से ऐसी बातें क्यों कहता है? २२ तब शमूएल ने शाऊल और उसके सेवक को कोठरी में पहुंचाकर न्योताहारी, जो लगभग तीस जन थे, उनके साथ मुख्य स्थान पर बैठा दिया। २३ फिर शमूएल ने रसोइये से कहा, जो टुकड़ा मैं ने तुझे देकर, अपने पास रख छोड़ने को कहा था, उसे ले आ। २४ तो रसोइये ने जांघ को मांस समेत उठाकर शाऊल के आगे धर दिया; तब शमूएल ने कहा, जो रखा गया था उसे देख, और अपने साम्हने धरके खा; क्योंकि वह तेरे लिये इसी नियत समय तक, जिसकी चर्चा करके मैं ने लोगों को न्योता दिया, रखा हुआ है। और शाऊल ने उस दिन शमूएल के साथ भोजन किया। २५ तब वे ऊंचे स्थान से उतरकर नगर में आए, और उस ने घर की छत पर शाऊल से बातें कीं। २६ बिहान को वे तड़के उठे, और पह फटते फटते शमूएल ने शाऊल को छत पर बुलाकर कहा, उठ, मैं तुझ को बिदा करूंगा। तब शाऊल उठा, और वह और शमूएल दोनों बाहर निकल गए। २७ और नगर के सिरे की उतराई पर चलते चलते शमूएल ने शाऊल से कहा, अपने सेवक को हम से आगे बढ़ने की आज्ञा दे, (वह आगे बढ़ गया,) परन्तु तू अभी खड़ा रह कि मैं तुझे परमेश्वर का वचन सुनाऊं ॥

१० तब शमूएल ने एक कुप्पी तेल लेकर उसके सिर पर उंडेला, और उसे चूमकर कहा, क्या इसका कारण यह नहीं कि यहोवा ने अपने निज भाग

* मूल में—शमूएल का कान खोला।

के ऊपर प्रधान होने को तेरा अभिषेक किया है? २ आज जब तू मेरे पास से चला जाएगा, तब राहेल की कब्र के पास जो बिन्यामीन के देश के सिवाने पर सेलसह में है दो जन तुझे मिलेंगे, और कहेंगे, कि जिन गदहियों को तू ढूंढ़ने गया था वे मिली हैं; और सुन, तेरा पिता गदहियों की चिन्ता छोड़कर तुम्हारे कारण कुढ़ता हुआ कहता है, कि मैं अपने पुत्र के लिये क्या करूं? ३ फिर वहां से आगे बढ़कर जब तू ताबोर के बांजवृक्ष के पास पहुंचेगा, तब वहां तीन जन परमेश्वर के पास बेतेल को जाते हुए तुझे मिलेंगे, जिन में से एक तो बकरी के तीन बच्चे, और दूसरा तीन रोटी, और तीसरा एक कुप्पा दाखमधु लिए हुए होगा। ४ और वे तेरा कुशल पूछेंगे, और तुझे दो रोटी देंगे, और तू उन्हें उनके हाथ से ले लेना। ५ तब तू परमेश्वर के पहाड़ पर पहुंचेगा * जहां पलिश्तियों की चौकी है; और जब तू वहां नगर में प्रवेश करे, तब नबियों का एक दल ऊंचे स्थान से उतरता हुआ तुझे मिलेगा; और उनके आगे सितार, डफ, बांसुली, और बीणा होंगे; और वे नबूवत करते होंगे। ६ तब यहोवा का आत्मा तुझ पर बल से उतरेगा, और तू उनके साथ होकर नबूवत करने लगेगा, और तू परिवर्तित होकर और ही मनुष्य हो जाएगा। ७ और जब ये चिन्ह तुझे देख पड़ेंगे, तब जो काम करने का अवसर तुझे मिले उस में लग जाना; क्योंकि परमेश्वर तेरे संग रहेगा। ८ और तू मुझ से पहिले गिलगाल को जाना; और मैं होमबलि और मेलबलि चढ़ाने के लिये तेरे पास आऊंगा। तू सात दिन तक मेरी बाट जोहते रहना, तब मैं तेरे पास पहुंचकर तुझे बताऊंगा कि तुझ को क्या क्या करना है। ९ ज्योंही उस ने शमूएल के पास से जाने को पीठ फेरी त्योंही परमेश्वर ने उसके मन को परिवर्तन किया; और वे सब चिन्ह उसी दिन प्रगट हुए॥

१० जब वे उधर उस पहाड़ के पास * आए, तब नबियों का एक दल उसको मिला; और परमेश्वर का आत्मा उस पर बल से उतरा, और वह उनके बीच में नबूवत करने लगा। ११ जब उन सभों ने जो उसे पहिले से जानते थे यह देखा कि वह नबियों के बीच में नबूवत कर रहा है, तब आपस में कहने लगे, कि कीश के पुत्र को यह क्या हुआ? क्या शाऊल भी नबियों में का है? १२ वहां के एक मनुष्य ने उत्तर दिया, भला, उनका बाप कौन है? इस पर यह कहावत चलने लगी, कि क्या शाऊल भी नबियों में का है? १३ जब वह नबूवत कर चुका, तब ऊंचे स्थान पर चढ़ गया॥

१४ तब शाऊल के चचा ने उस से और उसके सेवक से पूछा, कि तुम कहां गए थे? उस ने कहा, हम तो गदहियों को ढूंढ़ने गए थे; और जब हम ने देखा कि वे कहीं नहीं मिलतीं, तब शमूएल के पास गए। १५ शाऊल के चचा ने कहा, मुझे बतला दे कि शमूएल ने तुम से क्या कहा। १६ शाऊल ने अपने चचा से कहा, कि उस ने हमें निश्चय

* वा तू परमेश्वर की पहाड़ी को पहुंचेगा।

* वा पहाड़ी।

करके बताया कि गदहियां मिल गईं। परन्तु जो बात शमूएल ने राज्य के विषय में कही थी वह उस ने उसको न बताई ॥

१७ तब शमूएल ने प्रजा के लोगों को मिस्पा में यहोवा के पास बुलवाया; १८ तब उस ने इस्राएलियों से कहा, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि मैं तो इस्राएल को मिस्र देश से निकाल लाया, और तुम को मिस्रियों के हाथ से, और उन सब राज्यों के हाथ से जो तुम पर अन्धेर करते थे छुड़ाया है। १९ परन्तु तुम ने आज अपने परमेश्वर को जो सब विपत्तियों और कष्टों से तुम्हारा छुड़ानेवाला है तुच्छ जाना; और उस से कहा है, कि हम पर राजा नियुक्त कर दे। इसलिये अब तुम गोत्र गोत्र और हज़ार हज़ार करके यहोवा के साम्हने खड़े हो जाओ। २० तब शमूएल सारे इस्राएली गोत्रियों को समीप लाया, और चिट्ठी बिन्यामीन के नाम पर निकली *। २१ तब वह बिन्यामीन के गोत्र को कुल कुल करके समीप लाया, और चिट्ठी मत्री के कुल के नाम पर निकली †; फिर चिट्ठी कीश के पुत्र शाऊल के नाम पर निकली ‡। और जब वह ढूंढ़ा गया, तब न मिला। २२ तब उन्हों ने फिर यहोवा से पूछा, क्या यहां कोई और आनेवाला है? यहोवा ने कहा, हां, सुनो, वह सामान के बीच में छिपा हुआ है। २३ तब वे दौड़कर उसे वहां से लाए; और वह लोगों के बीच में खड़ा हुआ, और वह कान्धे से सिर तक § सब लोगों से लम्बा * था। २४ शमूएल ने सब लोगों से कहा, क्या तुम ने यहोवा के चुने हुए को देखा है कि सारे लोगों में कोई उसके बराबर नहीं? तब सब लोग ललकारके बोल उठे, राजा चिरंजीव रहे ॥

२५ तब शमूएल ने लोगों से राजनीति का वर्णन किया, और उसे पुस्तक में लिखकर यहोवा के आगे रख दिया। और शमूएल ने सब लोगों को अपने अपने घर जाने को विदा किया। २६ और शाऊल गिबा को अपने घर चला गया, और उसके साथ एक दल भी गया जिनके मन को परमेश्वर ने उभारा था। २७ परन्तु कई लुच्चे लोगों ने कहा, यह जन हमारा क्या उद्धार करेगा? और उन्हों ने उसको तुच्छ जाना, और उसके पास भेंट न लाए। तौभी वह सुनी अनसुनी करके चुप रहा † ॥

(अम्मोनियों पर शाऊल की जय)

११ तब अम्मोनी नाहाश ने चढ़ाई करके गिलाद के याबेश के विरुद्ध छावनी डाली; और याबेश के सब पुरुषों ने नाहाश से कहा, हम से वाचा बान्ध, और हम तेरी अधीनता मान लेंगे। २ अम्मोनी नाहाश ने उन से कहा, मैं तुम से वाचा इस शर्त पर बान्धूगा, कि मैं तुम सभों की दाहिनी आंखें फोड़कर इसे सारे इस्राएल की नामधराई का कारण कर दूं। ३ याबेश के वृद्ध लोगों ने उस से कहा, हमें सात दिन का अवकाश दे तब तक हम इस्राएल के सारे देश में दूत भेजेंगे। और यदि हम को कोई बचाने-

* मूल में—बिन्यामीन का गोत्र लिया गया।
† मूल में—मत्री का कुल लिया गया।
‡ मूल में—कीश का पुत्र शाऊल लिया गया।
§ मूल में—ऊपर।

* मूल में—सब लोग उसके कान्धे तक थे।
† मूल में—वह बहिरा सा हो गया।

वाला न मिलेगा, तो हम तेरे ही पास निकल आएंगे। ४ दूतों ने शाऊलवाले गिबा में आकर लोगों को यह सन्देश सुनाया, और सब लोग चिल्ला चिल्लाकर रोने लगे। ५ और शाऊल बैलों के पीछे पीछे मैदान से चला आता था; और शाऊल ने पूछा, लोगों को क्या हुआ कि वे रोते हैं? उन्हों ने याबेश के लोगों का सन्देश उसे सुनाया। ६ यह सन्देश सुनते ही शाऊल पर परमेश्वर का आत्मा बल से उतरा, और उसका कोप बहुत भड़क उठा। ७ और उस ने एक जोड़ी बैल लेकर उसके टुकड़े टुकड़े काटे, और यह कहकर दूतों के हाथ से इस्राएल के सारे देश में कहला भेजा, कि जो कोई आकर शाऊल और शमूएल के पीछे न हो लेगा उसके बैलों से ऐसा ही किया जाएगा। तब यहोवा का भय लोगों में ऐसा समाया कि वे एक मन होकर* निकल आए। ८ तब उस ने उन्हें बेजेक में गिन लिया, और इस्राएलियों के तीन लाख, और यहूदियों के तीस हजार ठहरे। ९ और उन्हों ने उन दूतों से जो आए थे कहा, तुम गिलाद में के याबेश के लोगों से यों कहो, कि कल धूप तेज होने की घड़ी तक तुम छुटकारा पाओगे। तब दूतों ने जाकर याबेश के लोगों को सन्देश दिया, और वे आनन्दित हुए। १० तब याबेश के लोगों ने कहा, कल हम तुम्हारे पास निकल आएंगे, और जो कुछ तुम को अच्छा लगे वही हम से करना। ११ दूसरे दिन शाऊल ने लोगों के तीन दल किए; और उन्हों ने रात के पिछले पहर में छावनी के बीच में आकर अम्मोनियों को मारा; और घाम के कड़े होने के समय तक ऐसे मारते रहे कि जो बच निकले वे यहां तक तितर बितर हुए कि दो जन भी एक संग कहीं न रहे। १२ तब लोग शमूएल से कहने लगे, जिन मनुष्यों ने कहा था, कि क्या शाऊल हम पर राज्य करेगा? उनको लाओ कि हम उन्हें मार डालें। १३ शाऊल ने कहा, आज के दिन कोई मार डाला न जाएगा; क्योंकि आज यहोवा ने इस्राएलियों को छुटकारा दिया है॥

(सभा में शमूएल का उपदेश)

१४ तब शमूएल ने इस्राएलियों से कहा, आओ, हम गिलगाल को चलें, और वहां राज्य को नये सिरे से स्थापित करें। १५ तब सब लोग गिलगाल को चले, और वहां उन्हों ने गिलगाल में यहोवा के साम्हने शाऊल को राजा बनाया; और वहीं उन्हों ने यहोवा को मेलबलि चढ़ाए; और वहीं शाऊल और सब इस्राएली लोगों ने अत्यन्त आनन्द मनाया॥

१२ तब शमूएल ने सारे इस्राएलियों से कहा, सुनो, जो कुछ तुम ने मुझ से कहा था उसे मानकर मैं ने एक राजा तुम्हारे ऊपर ठहराया है। २ और अब देखो, वह राजा तुम्हारे आगे आगे चलता है*; और अब मैं बूढ़ा हूं, और मेरे बाल उजले हो गए हैं, और मेरे पुत्र तुम्हारे पास हैं; और मैं लड़कपन से लेकर आज तक तुम्हारे साम्हने काम करता† रहा

* मूल में—एक पुरुष के समान।

* मूल में—तुम्हारे साम्हने चल फिर रहा है।

† मूल में—हमारे साम्हने चलता फिरता।

हूं। ३ मैं उपस्थित हूं; इसलिये तुम यहोवा के साम्हने, और उसके अभिषिक्त के सामने मुझ पर साक्षी दो, कि मैं ने किस का बैल ले लिया? वा किस का गदहा ले लिया? वा किस पर अन्धेर किया? वा किस को पीसा? वा किस के हाथ से अपनी आंखें बन्द करने के लिये घूस लिया? बताओ, और मैं वह तुम को फेर दूंगा? ४ वे बोले, तू ने न तो हम पर अन्धेर किया, न हमें पीसा, और न किसी के हाथ से कुछ लिया है। ५ उस ने उन से कहा, आज के दिन यहोवा तुम्हारा साक्षी, और उसका अभिषिक्त इस बात का साक्षी है, कि मेरे यहां कुछ नहीं निकला। वे बोले, हां, वह साक्षी है। ६ फिर शमूएल लोगों से कहने लगा, जो मूसा और हारून को ठहराकर तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र देश से निकाल लाया वह यहोवा ही है। ७ इसलिये अब तुम खड़े रहो, और मैं यहोवा के साम्हने उसके सब धर्म के कामों के विषय में, जिन्हें उस ने तुम्हारे साथ और तुम्हारे पूर्वजों के साथ किया है, तुम्हारे साथ विचार करूंगा। ८ याकूब मिस्र में गया, और तुम्हारे पूर्वजों ने यहोवा की दोहाई दी; तब यहोवा ने मूसा और हारून को भेजा, और उन्हों ने तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र से निकाला, और इस स्थान में बसाया। ९ फिर जब वे अपने परमेश्वर यहोवा को भूल गए, तब उस ने उन्हें हासोर के सेनापति सीसरा, और पलिश्तियों और मोआब के राजा के अधीन कर दिया*; और वे उन से लड़े। १० तब उन्हों ने यहोवा की दोहाई देकर कहा, हम ने यहोवा को त्यागकर और बाल देवताओं और अश्तोरेत देवियों की उपासना करके महा पाप किया है; परन्तु अब तू हम को हमारे शत्रुओं के हाथ से छुड़ा, तो हम तेरी उपासना करेंगे। ११ इसलिये यहोवा ने यरुब्बाल, बदान, यिप्तह, और शमूएल को भेजकर तुम को तुम्हारे चारों ओर के शत्रुओं के हाथ से छुड़ाया; और तुम निडर रहने लगे। १२ और जब तुम ने देखा कि अम्मोनियों का राजा नाहाश हम पर चढ़ाई करता है, तब यद्यपि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारा राजा था तौभी तुम ने मुझ से कहा, नहीं, हम पर एक राजा राज्य करेगा। १३ अब उस राजा को देखो जिसे तुम ने चुन लिया, और जिसके लिये तुम ने प्रार्थना की थी; देखो, यहोवा ने एक राजा तुम्हारे ऊपर नियुक्त कर दिया है। १४ यदि तुम यहोवा का भय मानते, उसकी उपासना करते, और उसकी बात सुनते रहो, और यहोवा की आज्ञा को टालकर उस से बलवा न करो, और तुम और वह जो तुम पर राजा हुआ है दोनों अपने परमेश्वर यहोवा के पीछे पीछे चलनेवाले बने रहो, तब तो भला होगा; १५ परन्तु यदि तुम यहोवा की बात न मानो, और यहोवा की आज्ञा को टालकर उस से बलवा करो, तो यहोवा का हाथ जैसे तुम्हारे पुरखाओं के विरुद्ध हुआ वैसे ही तुम्हारे भी विरुद्ध उठेगा। १६ इसलिये अब तुम खड़े रहो, और इस बड़े काम को देखो जिसे यहोवा तुम्हारी आंखों के साम्हने करने पर है। १७ आज क्या गेहूं की कटनी नहीं हो रही? मैं यहोवा को पुकारूंगा, और

* मूल में—के हाथ बेच डाला।

वह मेघ गरजाएगा और मेंह बरसाएगा; तब तुम जान लोगे, और देख भी लोगे, कि तुम ने राजा मांगकर यहोवा की दृष्टि में बहुत बड़ी बुराई की है। १८ तब शमूएल ने यहोवा को पुकारा, और यहोवा ने उसी दिन मेघ गरजाया और मेंह बरसाया; और सब लोग यहोवा से और शमूएल से अत्यन्त डर गए। १९ और सब लोगों ने शमूएल से कहा, अपने दासों के निमित्त अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना कर, कि हम मर न जाएं; क्योंकि हम ने अपने सारे पापों से बढ़कर यह बुराई की है कि राजा मांगा है। २० शमूएल ने लोगों से कहा, डरो मत; तुम ने यह सब बुराई तो की है, परन्तु अब यहोवा के पीछे चलने से फिर मत मुड़ना; परन्तु अपने सम्पूर्ण मन से उस की उपासना करना; २१ और मत मुड़ना; नहीं तो ऐसी व्यर्थ वस्तुओं के पीछे चलने लगोगे जिन से न कुछ लाभ पहुंचेगा, और न कुछ छुटकारा हो सकता है, क्योंकि वे सब व्यर्थ ही हैं। २२ यहोवा तो अपने बड़े नाम के कारण अपनी प्रजा को न तजेगा, क्योंकि यहोवा ने तुम्हें अपनी ही इच्छा से अपनी प्रजा बनाया है। २३ फिर यह मुझ से दूर हो कि मैं तुम्हारे लिये प्रार्थना करना छोड़कर यहोवा के विरुद्ध पापी ठहरूं; मैं तो तुम्हें अच्छा और सीधा मार्ग दिखाता रहूंगा। २४ केवल इतना हो कि तुम लोग यहोवा का भय मानो, और सच्चाई से अपने सम्पूर्ण मन के साथ उसकी उपासना करो; क्योंकि यह तो सोचो कि उस ने तुम्हारे लिये कैसे बड़े बड़े काम किए हैं। २५ परन्तु यदि तुम बुराई करते ही रहोगे, तो तुम और तुम्हारा राजा दोनों के दोनों मिट जाओगे॥

(शाऊल राजा का पहिला अपराध और उसका फल)

१३ शाऊल तीस वर्ष का होकर राज्य करने लगा, और उस ने इस्राएलियों पर दो * वर्ष तक राज्य किया। २ फिर शाऊल ने इस्राएलियों में से तीन हज़ार पुरुषों को अपने लिये चुन लिया; और उन में से दो हज़ार शाऊल के साथ मिकमाश में और बेतेल के पहाड़ पर रहे, और एक हज़ार योनातान के साथ बिन्यामीन के गिबा में रहे; और दूसरे सब लोगों को उस ने अपने अपने डेरे में जाने को विदा किया। ३ तब योनातान ने पलिश्तियों की उस चौकी को जो गिबा में थी मार लिया; और इसका समाचार पलिश्तियों के कानों में पड़ा। तब शाऊल ने सारे देश में नरसिंगा फुंकवाकर यह कहला भेजा, कि इब्री लोग सुनें। ४ और सब इस्राएलियों ने यह समाचार सुना कि शाऊल ने पलिश्तियों की चौकी को मारा है, और यह भी कि पलिश्ती इस्राएल से घृणा करने लगे हैं। तब लोग शाऊल के पीछे चलकर गिलगाल में इकट्ठे हो गए॥

५ और पलिश्ती इस्राएल से युद्ध करने के लिये इकट्ठे हो गए, अर्थात् तीस हज़ार रथ, और छः हज़ार सवार, और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान बहुत से लोग इकट्ठे हुए; और बेतावेन के पूर्व की ओर जाकर मिकमाश में छावनी डाली। ६ जब

* जान पड़ता है कि दो से अधिक कोई संख्या यहां छूट गई है, यथा बत्तीस बयालीस इत्यादि।

इस्राएली पुरुषों ने देखा कि हम सकेती में पड़े हैं (और सचमुच लोग संकट में पड़े थे), तब वे लोग गुफ़ाओं, झाड़ियों, चट्टानों, गढ़ियों, और गढ़हों में जा छिपे। ७ और कितने इब्री यरदन पार होकर गाद और गिलाद के देशों में चले गए; परन्तु शाऊल गिलगाल ही में रहा, और सब लोग थरथराते हुए उसके पीछे हो लिए॥

८ वह शमूएल के ठहराए हुए समय, अर्थात् सात दिन तक बाट जोहता रहा; परन्तु शमूएल गिलगाल में न आया, और लोग उसके पास से इधर उधर होने लगे। ९ तब शाऊल ने कहा, होमबलि और मेलबलि मेरे पास लाओ। तब उस ने होमबलि को चढ़ाया। १० ज्योंही वह होमबलि को चढ़ा चुका, तो क्या देखता है कि शमूएल आ पहुंचा; और शाऊल उस से मिलने और नमस्कार करने को निकला। ११ शमूएल ने पूछा, तू ने क्या किया? शाऊल ने कहा, जब मैं ने देखा कि लोग मेरे पास से इधर उधर हो चले हैं, और तू ठहराए हुए दिनों के भीतर नहीं आया, और पलिश्ती मिकमाश में इकट्ठे हुए हैं, १२ तब मैं ने सोचा कि पलिश्ती गिलगाल में मुझ पर अभी आ पड़ेंगे, और मैं ने यहोवा से बिनती भी नहीं की है; सो मैं ने अपनी इच्छा न रहते भी होमबलि चढ़ाया। १३ शमूएल ने शाऊल से कहा, तू ने मूर्खता का काम किया है; तू ने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा को नहीं माना; नहीं तो यहोवा तेरा राज्य इस्राएलियों के ऊपर सदा स्थिर रखता। १४ परन्तु अब तेरा राज्य बना न रहेगा; यहोवा ने अपने लिये एक ऐसे पुरुष को ढूंढ़ लिया है जो उसके मन के अनुसार है; और यहोवा ने उसी को अपनी प्रजा पर प्रधान होने को ठहराया है, क्योंकि तू ने यहोवा की आज्ञा को नहीं माना॥

१५ तब शमूएल चल निकला, और गिलगाल से बिन्यामीन के गिबा को गया। और शाऊल ने अपने साथ के लोगों को गिनकर कोई छः सौ पाए। १६ और शाऊल और उसका पुत्र योनातान और जो लोग उनके साथ थे वे बिन्यामीन के गिबा में रहे; और पलिश्ती मिकमाश में डेरे डाले पड़े रहे। १७ और पलिश्तियों की छावनी से नाश करनेवाले तीन दल बान्धकर निकले; एक दल ने शूआल नाम देश की ओर फिर के ओप्रा का मार्ग लिया, १८ एक और दल ने मुड़कर बेथोरोन का मार्ग लिया, और एक और दल ने मुड़कर उस देश का मार्ग लिया जो सबोईम नाम तराई की ओर जंगल की तरफ है॥

१९ और इस्राएल के पूरे देश में लोहार कहीं नहीं मिलता था, क्योंकि पलिश्तियों ने कहा था, कि इब्री तलवार वा भाला बनाने न पाएं; २० इसलिये सब इस्राएली अपने अपने हल की फाली, और भाले, और कुल्हाड़ी, और हंसुआ तेज़ करने के लिये पलिश्तियों के पास जाते थे; २१ परन्तु उनके हंसुओं, फालों, खेती के त्रिशूलों, और कुल्हाड़ियों की धारें, और पैनों की नोकें ठीक करने के लिये वे रेती रखते थे। २२ सो युद्ध के दिन शाऊल और योनातान के साथियों में से किसी के पास न तो तलवार थी और न भाला, वे केवल शाऊल और उसके पुत्र योनातान के पास रहे।

२३ और पलिश्तियों की चौकी के सिपाही निकलकर मिकमाश की घाटी को गए ॥

(योनातान की जय और शाऊल का हठ)

१४ एक दिन शाऊल के पुत्र योनातान ने अपने पिता से बिना कुछ कहे अपने हथियार ढोनेवाले जवान से कहा, आ, हम उधर पलिश्तियों की चौकी के पास चलें। २ शाऊल तो गिबा के सिरे पर मिग्रोन में के अनार के पेड़ के तले टिका हुआ था, और उसके संग के लोग कोई छः सौ थे; ३ और एली जो शीलो में यहोवा का याजक था, उसके पुत्र पीनहास का पोता, और ईकाबोद के भाई, अहीतूब का पुत्र अहिय्याह भी एपोद पहिने हुए संग था। परन्तु उन लोगों को मालूम न था कि योनातान चला गया है। ४ उन घाटियों के बीच में, जिन से होकर योनातान पलिश्तियों की चौकी को जाना चाहता था, दोनों अलंगों पर एक एक नोकीली चट्टान थी; एक चट्टान का नाम तो बोसेस, और दूसरी का नाम सेने था। ५ एक चट्टान तो उत्तर की ओर मिकमाश के साम्हने, और दूसरी दक्खिन की ओर गेबा के साम्हने खड़ी है। ६ तब योनातान ने अपने हथियार ढोनेवाले जवान से कहा, आ, हम उन खतनारहित लोगों की चौकी के पास जाएं; क्या जाने यहोवा हमारी सहायता करे; क्योंकि यहोवा को कुछ रोक नहीं, कि चाहे तो बहुत लोगों के द्वारा चाहे थोड़े लोगों के द्वारा छुटकारा दे। ७ उसके हथियार ढोनेवाले ने उस से कहा, जो कुछ तेरे मन में हो वही कर; उधर चल, मैं तेरी इच्छा के अनुसार तेरे संग रहूंगा। ८ योनातान ने कहा, सुन, हम उन मनष्यों के पास जाकर अपने को उन्हें दिखाएं। ९ यदि वे हम से यों कहें, हमारे आने तक ठहरे रहो, तब तो हम उसी स्थान पर खड़े रहें, और उनके पास न चढ़ें। १० परन्तु यदि वे यह कहें, कि हमारे पास चढ़ आओ, तो हम यह जानकर चढ़ें, कि यहोवा उन्हें हमारे साथ कर देगा। हमारे लिये यही चिन्ह हो। ११ तब उन दोनों ने अपने को पलिश्तियों की चौकी पर प्रगट किया, तब पलिश्ती कहने लगे, देखो, इब्री लोग उन बिलों में से जहां वे छिप रहे थे निकले आते हैं। १२ फिर चौकी के लोगों ने योनातान और उसके हथियार ढोनेवाले से पुकार के कहा, हमारे पास चढ़ आओ, तब हम तुम को कुछ सिखाएंगे। तब योनातान ने अपने हथियार ढोनेवाले से कहा, मेरे पीछे पीछे चढ़ आ; क्योंकि यहोवा उन्हें इस्राएलियों के हाथ में कर देगा। १३ और योनातान अपने हाथों और पांवों के बल चढ़ गया, और उसका हथियार ढोनेवाला भी उसके पीछे पीछे चढ़ गया। और पलिश्ती योनातान के साम्हने गिरते गए, और उसका हथियार ढोनेवाला उसके पीछे पीछे उन्हें मारता गया। १४ यह पहिला संहार जो योनातान और उसके हथियार ढोनेवाले से हुआ, उस में आधे बीघे* भूमि में बीस एक पुरुष मारे गए। १५ और छावनी में, और मैदान पर, और उन सब लोगों में थरथराहट हुई; और चौकी-वाले और नाश करनेवाले भी थरथराने लगे; और भुईंडोल भी हुआ; और

* मूल में—आधे बीघे की रेघारी।

अत्यन्त बड़ी थरथराहट * हुई। १६ और बिन्यामीन के गिबा में शाऊल के पहरुओं ने दृष्टि करके देखा कि वह भीड़ घटती † जाती है, और वे लोग इधर उधर चले जाते हैं॥

१७ तब शाऊल ने अपने साथ के लोगों से कहा, अपनी गिनती करके देखो कि हमारे पास से कौन चला गया है। उन्हों ने गिनकर देखा, कि योनातान और उसका हथियार ढोनेवाला यहां नहीं है। १८ तब शाऊल ने अहिय्याह से कहा, परमेश्वर का सन्दूक इधर ला। उस समय तो परमेश्वर का सन्दूक इस्राएलियों के साथ था। १९ शाऊल याजक से बातें कर रहा था, कि पलिश्तियों की छावनी में हुल्लड़ अधिक होता गया; तब शाऊल ने याजक से कहा, अपना हाथ खींच। २० तब शाऊल और उसके संग के सब लोग इकट्ठे होकर लड़ाई में गए; वहां उन्हों ने क्या देखा, कि एक एक पुरुष की तलवार अपने अपने साथी पर चल रही है, और बहुत बड़ा कोलाहल मच रहा है। २१ और जो इब्री पहिले की नाईं पलिश्तियों की ओर के थे, और उनके साथ चारों ओर से छावनी में गए थे, वे भी शाऊल और योनातान के संग के इस्राएलियों में मिल गए। २२ और जितने इस्राएली पुरुष एप्रैम के पहाड़ी देश में छिप गए थे, वे भी यह सुनकर कि पलिश्ती भागे जाते हैं, लड़ाई में आ उनका पीछा करने में लग गए। २३ तब यहोवा ने उस दिन इस्राएलियों को छुटकारा दिया; और लड़नेवाले बेतावेन की परली ओर तक चले गए।

२४ परन्तु इस्राएली पुरुष उस दिन तंग हुए, क्योंकि शाऊल ने उन लोगों को शपथ धराकर कहा, शापित हो वह, जो सांझ से पहिले कुछ खाए; इसी रीति मैं अपने शत्रुओं से पलटा ले सकूंगा। तब उन लोगों में से किसी ने कुछ भी भोजन न किया। २५ और सब लोग * किसी वन में पहुंचे, जहां भूमि पर मधु पड़ा हुआ था। २६ जब लोग वन में आए तब क्या देखा, कि मधु टपक रहा है, तौभी शपथ के डर के मारे कोई अपना हाथ अपने मुंह तक न ले गया। २७ परन्तु योनातान ने अपने पिता को लोगों को शपथ धराते न सुना था, इसलिये उस ने अपने हाथ की छड़ी की नोक बढ़ाकर मधु के छत्ते में डुबाया, और अपना हाथ अपने मुंह तक लगाया; तब उसकी आंखों में ज्योति आई। २८ तब लोगों में से एक मनुष्य ने कहा, तेरे पिता ने लोगों को दृढ़ता से शपथ धरा के कहा, शापित हो वह, जो आज कुछ खाए। और लोग थके मांदे थे। २९ योनातान ने कहा, मेरे पिता ने लोगों को † कष्ट दिया है; देखो, मैं ने इस मधु को थोड़ा सा चखा, और मुझे आंखों से कैसा सूझने लगा। ३० यदि आज लोग अपने शत्रुओं की लूट से जिसे उन्हों ने पाया मनमाना खाते, तो कितना अच्छा होता; अभी तो बहुत पलिश्ती मारे नहीं गए। ३१ उस दिन वे मिकमाश से लेकर अय्यालोन तक पलिश्तियों को मारते गए; और लोग बहुत ही थक गए। ३२ सो वे लूट पर टूटे, और भेड़-बकरी, और गाय-बैल, और बछड़े लेकर भूमि पर

* मूल में—परमेश्वर की थरथराहट
† मूल में—गलती।

* मूल में—सारा देश।
† मूल में—देश को।

मारके उनका मांस लोहू समेत खाने लगे। ३३ जब इसका समाचार शाऊल को मिला, कि लोग लोहू समेत मांस खाकर यहोवा के विरुद्ध पाप करते हैं। तब उस ने उन से कहा, तुम ने तो विश्वासघात किया है; अभी एक बड़ा पत्थर मेरे पास लुढ़का दो। ३४ फिर शाऊल ने कहा, लोगों के बीच में इधर उधर फिरके उन से कहो, कि अपना अपना बैल और भेड़ शाऊल के पास ले जाओ, और वहीं बलि करके खाओ; और लोहू समेत खाकर यहोवा के विरुद्ध पाप न करो। तब सब लोगों ने उसी रात अपना अपना बैल ले जाकर वहीं बलि किया। ३५ तब शाऊल ने यहोवा के लिये एक वेदी बनवाई; वह तो पहिली वेदी है जो उस ने यहोवा के लिये बनवाई॥

३६ फिर शाऊल ने कहा, हम इसी रात को पलिश्तियों का पीछा करके उन्हें भोर तक लूटते रहें; और उन में से एक मनुष्य को भी जीवित न छोड़ें। उन्हों ने कहा, जो कुछ तुझे अच्छा लगे वही कर। परन्तु याजक ने कहा, हम इधर परमेश्वर के समीप आएं। ३७ तब शाऊल ने परमेश्वर से पुछवाया, कि क्या मैं पलिश्तियों का पीछा करूं? क्या तू उन्हें इस्राएल के हाथ में कर देगा? परन्तु उसे उस दिन कुछ उत्तर न मिला। ३८ तब शाऊल ने कहा, हे प्रजा के मुख्य लोगो, इधर आकर बूझो; और देखो कि आज पाप किस प्रकार से हुआ है। ३९ क्योंकि इस्राएल के छुड़ानेवाले यहोवा के जीवन की शपथ, यदि वह पाप मेरे पुत्र योनातान से हुआ हो, तौभी निश्चय वह मार डाला जाएगा। परन्तु लोगों में से किसी ने उसे उत्तर न दिया। ४० तब उस ने सारे इस्राएलियों से कहा, तुम एक ओर हो, और मैं और मेरा पुत्र योनातान दूसरी ओर होंगे। लोगों ने शाऊल से कहा, जो कुछ तुझे अच्छा लगे वही कर। ४१ तब शाऊल ने यहोवा से कहा, हे इस्राएल के परमेश्वर, सत्य बात बता*। तब चिट्ठी योनातान और शाऊल के नाम पर निकली†, और प्रजा बच गई। ४२ फिर शाऊल ने कहा, मेरे और मेरे पुत्र योनातान के नाम पर चिट्ठी डालो। तब चिट्ठी योनातान के नाम पर निकली‡। ४३ तब शाऊल ने योनातान से कहा, मुझे बता, कि तू ने क्या किया है। योनातान ने बताया, और उस से कहा, मैं ने अपने हाथ की छड़ी की नोक से थोड़ा सा मधु चख तो लिया है; और देख, मुझे मरना है। ४४ शाऊल ने कहा, परमेश्वर ऐसा ही करे, वरन इस से भी अधिक करे; हे योनातान, तू निश्चय मारा जाएगा। ४५ परन्तु लोगों ने शाऊल से कहा, क्या योनातान मारा जाए, जिस ने इस्राएलियों का ऐसा बड़ा छुटकारा किया है? ऐसा न होगा! यहोवा के जीवन की शपथ, उसके सिर का एक बाल भी भूमि पर गिरने न पाएगा; क्योंकि आज के दिन उस ने परमेश्वर के साथ होकर काम किया है। तब प्रजा के लोगों ने योनातान को बचा लिया, और वह मारा न गया। ४६ तब शाऊल पलिश्तियों का पीछा छोड़कर लौट गया; और पलिश्ती भी अपने स्थान को चले गए॥

---

* मूल में—खराई दे।

† मूल में—योनातान और शाऊल पकड़े गए।

‡ मूल में—योनातान पकड़ा गया।

४७ जब शाऊल इस्राएलियों के राज्य में स्थिर हो गया *, तब वह मोग्राबी, अम्मोनी, एदोमी, और पलिश्ती, अपने चारों ओर के सब शत्रुओं से, और सोबा के राजाओं से लड़ा; और जहां जहां वह जाता वहां जय पाता था। ४८ फिर उस ने वीरता करके अमालेकियों को जीता, और इस्राएलियों को लूटनेवालों के हाथ से छुड़ाया॥

४६ शाऊल के पुत्र योनातान, यिशवी, और मलकीश थे; और उसकी दो बेटियों के नाम ये थे, बड़ी का नाम तो मेरब और छोटी का नाम मीकल था। ५० और शाऊल की स्त्री का नाम अहीनोअम था जो अहीमास की बेटी थी। और उसके प्रधान सेनापति का नाम अब्नेर था जो शाऊल के चचा नेर का पुत्र था। ५१ और शाऊल का पिता कीश था, और अब्नेर का पिता नेर अबीएल का पुत्र था॥

५२ और शाऊल जीवन भर पलिश्तियों से संग्राम करता रहा; जब जब शाऊल को कोई वीर वा अच्छा योद्धा दिखाई पड़ा, तब तब उस ने उसे अपने पास रख लिया॥

(शाऊल का दूसरा अपराध और उसका फल)

१५ शमूएल ने शाऊल से कहा, यहोवा ने अपनी प्रजा इस्राएल पर राज्य करने के लिये तेरा अभिषेक करने को मुझे भेजा था; इसलिये अब यहोवा की बातें सुन ले। २ सेनाओं का यहोवा यों कहता है, कि मुझे चेत आता है कि अमालेकियों ने इस्राएलियों से क्या किया; और जब इस्राएली मिस्र से आ रहे थे, तब उन्हों ने मार्ग में उनका साम्हना किया। ३ इसलिये अब तू जाकर अमालेकियों को मार, और जो कुछ उनका है उसे बिना कोमलता किए सत्यानाश कर; क्या पुरुष, क्या स्त्री, क्या बच्चा, क्या दूधपिउवा, क्या गाय-बैल, क्या भेड़-बकरी, क्या ऊंट, क्या गदहा, सब को मार डाल॥

४ तब शाऊल ने लोगों को बुलाकर इकट्ठा किया, और उन्हें तलाईम में गिना, और वे दो लाख प्यादे, और दस हजार यहूदी पुरुष भी थे। ५ तब शाऊल ने अमालेक नगर के पास जाकर एक नाले में घातकों को बिठाया। ६ और शाऊल ने केनियों से कहा, कि वहां से हटो, अमालेकियों के मध्य में से निकल जाओ, कहीं ऐसा न हो कि मैं उनके साथ तुम्हारा भी अन्त कर डालूं; क्योंकि तुम ने सब इस्राएलियों पर उनके मिस्र से आते समय प्रीति दिखाई थी। और केनी अमालेकियों के मध्य में से निकल गए। ७ तब शाऊल ने हवीला से लेकर शूर तक जो मिस्र के साम्हने है अमालेकियों को मारा। ८ और उनके राजा अगाग को जीवित पकड़ा, और उसकी सब प्रजा को तलवार से सत्यानाश कर डाला। ९ परन्तु अगाग पर, और अच्छी से अच्छी भेड़-बकरियों, गाय-बैलों, मोटे पशुओं, और मेम्नों, और जो कुछ अच्छा था, उन पर शाऊल और उसकी प्रजा ने कोमलता की, और उन्हें सत्यानाश करना न चाहा; परन्तु जो कुछ तुच्छ और निकम्मा था उसको उन्हों ने सत्यानाश किया॥

* मूल में—शाऊल ने इस्राएल पर राज्य ले लिया।

१० तब यहोवा का यह वचन शमूएल के पास पहुंचा, ११ कि मैं शाऊल को राजा बना के पछताता हूं; क्योंकि उस ने मेरे पीछे चलना छोड़ दिया, और मेरी आज्ञाओं का पालन नहीं किया। तब शमूएल का क्रोध भड़का; और वह रात भर यहोवा की दोहाई देता रहा। १२ बिहान को जब शमूएल शाऊल से भेंट करने के लिये सवेरे उठा; तब शमूएल को यह बताया गया, कि शाऊल कर्मेल को आया था, और अपने लिये एक निशानी खड़ी की, और घूमकर गिलगाल को चला गया है। १३ तब शमूएल शाऊल के पास गया, और शाऊल ने उस से कहा, तुझे यहोवा की ओर से आशीष मिले; मैं ने यहोवा की आज्ञा पूरी की है। १४ शमूएल ने कहा, फिर भेड़-बकरियों का यह मिमियाना, और गाय-बैलों का यह बंबाना जो मुझे सुनाई देता है, यह क्यों हो रहा है? १५ शाऊल ने कहा, वे तो अमालेकियों के यहां से आए हैं; अर्थात् प्रजा के लोगों ने अच्छी से अच्छी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये बलि करने को छोड़ दिया है; और बाकी सब को तो हम ने सत्यानाश कर दिया है। १६ तब शमूएल ने शाऊल से कहा, ठहर जा! और जो बात यहोवा ने आज रात को मुझ से कही है वह मैं तुझ को बताता हूं। उस ने कहा, कह दे। १७ शमूएल ने कहा, जब तू अपनी दृष्टि में छोटा था, तब क्या तू इस्राएली गोत्रियों का प्रधान न हो गया? और क्या यहोवा ने इस्राएल पर राज्य करने को तेरा अभिषेक नहीं किया? १८ और यहोवा ने तुझे यात्रा करने की आज्ञा दी, और कहा, जाकर उन पापी अमालेकियों को सत्यानाश कर, और जब तक वे मिट न जाएं, तब तक उन से लड़ता रह। १९ फिर तू ने किस लिये यहोवा की वह बात टालकर लूट पर टूट के वह काम किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है? २० शाऊल ने शमूएल से कहा, निःसन्देह मैं ने यहोवा की बात मानकर जिधर यहोवा ने मुझे भेजा उधर चला, और अमालेकियों के राजा को ले आया हूं, और अमालेकियों को सत्यानाश किया है। २१ परन्तु प्रजा के लोग लूट में से भेड़-बकरियों, और गाय-बैलों, अर्थात् सत्यानाश होने की उत्तम उत्तम वस्तुओं को गिलगाल में तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये बलि चढ़ाने को ले आए हैं। २२ शमूएल ने कहा, क्या यहोवा होमबलियों और मेलबलियों से उतना प्रसन्न होता है, जितना कि अपनी बात के माने जाने से प्रसन्न होता है? सुन, मानना तो बलि चढ़ाने से, और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है। २३ देख, बलवा करना और भावी कहनेवालों से पूछना एक ही समान पाप है, और हठ करना मूरतों और गृहदेवताओं की पूजा के तुल्य है। तू ने जो यहोवा की बात को तुच्छ जाना, इसलिये उस ने तुझे राजा होने के लिये तुच्छ जाना है। २४ शाऊल ने शमूएल से कहा, मैं ने पाप किया है; मैं ने तो अपनी प्रजा के लोगों का भय मानकर और उनकी बात सुनकर यहोवा की आज्ञा और तेरी बातों का उल्लंघन किया है। २५ परन्तु अब मेरे पाप को क्षमा कर, और मेरे साथ लौट आ, कि मैं यहोवा को दण्डवत् करूं। २६ शमूएल ने शाऊल से कहा,

में तेरे साथ न लौटूंगा; क्योंकि तू ने यहोवा की बात को तुच्छ जाना है, और यहोवा ने तुझे इस्राएल के राजा होने के लिये तुच्छ जाना है। २७ तब शमूएल जाने के लिये घूमा, और शाऊल ने उसके बागे की छोर को पकड़ा, और वह फट गया। २८ तब शमूएल ने उस से कहा, आज यहोवा ने इस्राएल के राज्य को फाड़कर तुझ से छीन लिया, और तेरे एक पड़ोसी को जो तुझ से अच्छा है दे दिया है। २९ और जो इस्राएल का बलमूल है वह न तो झूठ बोलता और न पछताता है; क्योंकि वह मनुष्य नहीं है, कि पछताए। ३० उस ने कहा, मैं ने पाप तो किया है; तौभी मेरी प्रजा के पुरनियों और इस्राएल के साम्हने मेरा आदर कर, और मेरे साथ लौट, कि मैं तेरे परमेश्वर यहोवा को दण्डवत् करूं। ३१ तब शमूएल लौटकर शाऊल के पीछे गया; और शाऊल ने यहोवा को दण्डवत् की॥

३२ तब शमूएल ने कहा, अमालेकियों के राजा अगाग को मेरे पास ले आओ। तब अगाग आनन्द के साथ यह कहता हुआ उसके पास गया, कि निश्चय मृत्यु का दुःख जाता रहा। ३३ शमूएल ने कहा, जैसे स्त्रियां तेरी तलवार से निर्वंश हुई हैं, वैसे ही तेरी माता स्त्रियों में निर्वंश होगी। तब शमूएल ने अगाग को गिलगाल में यहोवा के साम्हने टुकड़े टुकड़े किया॥

३४ तब शमूएल रामा को चला गया; और शाऊल अपने नगर गिबा को अपने घर गया। ३५ और शमूएल ने अपने जीवन भर शाऊल से फिर भेंट न की, क्योंकि शमूएल शाऊल के लिये विलाप करता रहा। और यहोवा शाऊल को इस्राएल का राजा बनाकर पछताता था॥

(दाऊद का राज्याभिषेक)

१६ और यहोवा ने शमूएल से कहा, मैं ने शाऊल को इस्राएल पर राज्य करने के लिये तुच्छ जाना है, तू कब तक उसके विषय विलाप करता रहेगा? अपने सींग में तेल भर के चल; मैं तुझ को बेतलेहेमी यिशै के पास भेजता हूं, क्योंकि मैं ने उसके पुत्रों में से एक को राजा होने के लिये चुना है। २ शमूएल बोला, मैं क्योंकर जा सकता हूं? यदि शाऊल सुन लेगा, तो मुझे घात करेगा। यहोवा ने कहा, एक बछिया साथ ले जाकर कहना, कि मैं यहोवा के लिये यज्ञ करने को आया हूं। ३ और यज्ञ पर यिशै को न्योता देना, तब मैं तुझे जता दूंगा कि तुझ को क्या करना है; और जिसको मैं तुझे बताऊं उसी का मेरी ओर से अभिषेक करना। ४ तब शमूएल ने यहोवा के कहने के अनुसार किया, और बेतलहेम को गया। उस नगर के पुरनिये थरथराते हुए उस से मिलने को गए, और कहने लगे, क्या तू मित्रभाव से आया है कि नहीं? ५ उस ने कहा, हां, मित्रभाव से आया हूं; मैं यहोवा के लिये यज्ञ करने को आया हूं; तुम अपने अपने को पवित्र करके मेरे साथ यज्ञ में आओ। तब उस ने यिशै और उसके पुत्रों को पवित्र करके यज्ञ में आने का न्योता दिया। ६ जब वे आए, तब उस ने एलीआब पर दृष्टि करके सोचा, कि निश्चय जो यहोवा के साम्हने है वही उसका अभिषिक्त होगा। ७ परन्तु यहोवा ने शमूएल

से कहा, न तो उसके रूप पर दृष्टि कर, और न उसके डील की ऊंचाई पर, क्योंकि मैं ने उसे अयोग्य जाना है; क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है। ८ तब यिशै ने अबीनादाब को बुलाकर शमूएल के साम्हने भेजा। और उस ने कहा, यहोवा ने इसको भी नहीं चुना। ९ फिर यिशै ने शम्मा को साम्हने भेजा। और उस ने कहा, यहोवा ने इसको भी नहीं चुना। १० योंही यिशै ने अपने सात पुत्रों को शमूएल के साम्हने भेजा। और शमूएल यिशै से कहता गया, यहोवा ने इन्हें नहीं चुना। ११ तब शमूएल ने यिशै से कहा, क्या सब लड़के आ गए? वह बोला, नहीं, लहुरा तो रह गया, और वह भेड़-बकरियों को चरा रहा है। शमूएल ने यिशै से कहा, उसे बुलवा भेज; क्योंकि जब तक वह यहां न आए तब तक हम खाने * को न बैठेंगे। १२ तब वह उसे बुलाकर भीतर ले आया। उसके तो लाली झलकती थी, और उसकी आंखें सुन्दर, और उसका रूप सुडौल था। तब यहोवा ने कहा, उठकर इस का अभिषेक कर: यही है। १३ तब शमूएल ने अपना तेल का सींग लेकर उसके भाइयों के मध्य में उसका अभिषेक किया; और उस दिन से लेकर भविष्य को यहोवा का आत्मा दाऊद पर बल से उतरता रहा। तब शमूएल उठकर रामा को चला गया॥

१४ और यहोवा का आत्मा शाऊल पर से उठ गया, और यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा उसे घबराने लगा। १५ और शाऊल के कर्मचारियों ने उस से कहा, सुन, परमेश्वर की ओर से एक दुष्ट आत्मा तुझे घबराता है। १६ हमारा प्रभु अपने कर्मचारियों को जो उपस्थित हैं आज्ञा दे, कि वे किसी अच्छे वीणा बजानेवाले को ढूंढ़ ले आएं; और जब जब परमेश्वर की ओर से दुष्ट आत्मा तुझ पर चढ़े, तब तब वह अपने हाथ से बजाए, और तू अच्छा हो जाए। १७ शाऊल ने अपने कर्मचारियों से कहा, अच्छा, एक उत्तम बजवैया देखो, और उसे मेरे पास लाओ। १८ तब एक जवान ने उत्तर देके कहा, सुन, मैं ने बेतलेहेमी यिशै के एक पुत्र को देखा जो वीणा बजाना जानता है, और वह वीर योद्धा भी है, और बात करने में बुद्धिमान और रूपवान भी है; और यहोवा उसके साथ रहता है। १९ तब शाऊल ने दूतों के हाथ यिशै के पास कहला भेजा, कि अपने पुत्र दाऊद को जो भेड़-बकरियों के साथ रहता है मेरे पास भेज दे। २० तब यिशै ने रोटी से लदा हुआ एक गदहा, और कुप्पा भर दाखमधु, और बकरी का एक बच्चा लेकर अपने पुत्र दाऊद के हाथ से शाऊल के पास भेज दिया। २१ और दाऊद शाऊल के पास जाकर उसके साम्हने उपस्थित रहने लगा। और शाऊल उस से बहुत प्रीति करने लगा, और वह उसका हथियार ढोनेवाला हो गया। २२ तब शाऊल ने यिशै के पास कहला भेजा, कि दाऊद को मेरे साम्हने उपस्थित रहने दे, क्योंकि मैं उस से बहुत प्रसन्न हूं। २३ और जब जब परमेश्वर की ओर से वह आत्मा शाऊल पर चढ़ता था, तब तब दाऊद

* मूल में—हम चारों ओर।

वीणा लेकर बजाता; और शाऊल चैन पाकर अच्छा हो जाता था, और वह दुष्ट आत्मा उस में से हट जाता था ॥

(दाऊद का गोलियत को मार डालना)

१७ अब पलिश्तियों ने युद्ध के लिये अपनी सेनाओं को इकट्ठा किया; और यहूदा देश के सोको में एक साथ होकर सोको और अजेका के बीच एपेसदम्मीम में डेरे डाले। २ और शाऊल और इस्राएली पुरुषों ने भी इकट्ठे होकर एला नाम तराई में डेरे डाले, और युद्ध के लिये पलिश्तियों के विरुद्ध पांती बान्धी। ३ पलिश्ती तो एक ओर के पहाड़ पर और इस्राएली दूसरी ओर के पहाड़ पर खड़े रहे; और दोनों के बीच तराई थी। ४ तब पलिश्तियों की छावनी में से एक वीर * गोलियत नाम निकला, जो गत नगर का था, और उसके डील की लम्बाई छः हाथ एक बित्ता थी। ५ उसके सिर पर पीतल का टोप था; और वह एक पत्तर का झिलम पहिने हुए था, जिसका तौल पांच हज़ार शेकेल पीतल का था। ६ उसकी टांगों पर पीतल के कवच थे, और उस से कन्धों के बीच बरछी बन्धी थी। ७ उसके भाले की छड़ जुलाहे के डोंगी के समान थी, और उस भाले का फल छः सौ शेकेल लोहे का था, और बड़ी ढाल लिए हुए एक जन उसके आगे आगे चलता था। ८ वह खड़ा होकर इस्राएली पांतियों को ललकार के बोला, तुम ने यहां आकर लड़ाई के लिये क्यों पांति बान्धी है? क्या मैं पलिश्ती नहीं हूं, और तुम शाऊल के अधीन नहीं हो? अपने में से एक पुरुष चुनो, कि वह मेरे पास उतर आए। ९ यदि वह मुझ से लड़कर मुझे मार सके, तब तो हम तुम्हारे अधीन हो जाएंगे; परन्तु यदि मैं उस पर प्रबल होकर मारूं, तो तुम को हमारे अधीन होकर हमारी सेवा करनी पड़ेगी। १० फिर वह पलिश्ती बोला, मैं आज के दिन इस्राएली पांतियों को ललकारता हूं, किसी पुरुष को मेरे पास भेजो *, कि हम एक दूसरे से लड़ें। ११ उस पलिश्ती की इन बातों को सुनकर शाऊल और समस्त इस्राएलियों का मन कच्चा हो गया, और वे अत्यन्त डर गए ॥

१२ दाऊद तो यहूदा के बेतलेहेम के उस एप्राती पुरुष का पुत्र था, जिसका नाम यिशै था, और उसके आठ पुत्र थे और वह पुरुष शाऊल के दिनों में बूढ़ा और निर्बल हो गया था। १३ यिशै के तीन बड़े पुत्र शाऊल के पीछे होकर लड़ने को गए थे; और उसके तीन पुत्रों के नाम जो लड़ने को गए थे ये थे, अर्थात् ज्येष्ठ का नाम एलीआब, दूसरे का अबीनादाब, और तीसरे का शम्मा था। १४ और सब से छोटा दाऊद था; और तीनों बड़े पुत्र शाऊल के पीछे होकर गए थे, १५ और दाऊद बेतलेहेम में अपने पिता की भेड़ बकरियां चराने को शाऊल के पास से आया जाया करता था ॥

१६ वह पलिश्ती तो चालीस दिन तक सवेरे और सांझ को निकट जाकर खड़ा हुआ करता था। १७ और यिशै ने अपने पुत्र दाऊद से कहा, यह एपा भर चबैना, और ये दस रोटियां लेकर छावनी में अपने भाइयों के पास दौड़

* मूल में—दोनों ओर का पुरुष।

* मूल में—मुझे दो।

जा; १८ और पनीर की ये दस टिकियां उनके सहस्रपति के लिये ले जा। और अपने भाइयों का कुशल देखकर उन-की कोई चिन्हानी ले आना। १९ शाऊल, और वे भाई, और समस्त इस्राएली पुरुष एला नाम तराई में पलिश्तियों से लड़ रहे थे। २० और दाऊद बिहान को सवेरे उठ, भेड़ बकरियों को किसी रख-वाले के हाथ में छोड़कर, उन वस्तुओं को लेकर चला; और जब सेना रणभूमि को जा रही, और संग्राम के लिये ललकार रही थी, उसी समय वह गाड़ियों के पड़ाव पर पहुंचा। २१ तब इस्राएलियों और पलिश्तियों ने अपनी अपनी सेना आम्हने-साम्हने करके पांति बान्धी। २२ और दाऊद अपनी सामग्री सामान के रखवाले के हाथ में छोड़कर रणभूमि को दौड़ा, और अपने भाइयों के पास जाकर उनका कुशल क्षेम पूछा। २३ वह उनके साथ बातें कर ही रहा था, कि पलिश्तियों की पांतियों में से वह वीर, अर्थात् गतवासी गोलियात नाम वह पलिश्ती योद्धा चढ़ आया, और पहिले की सी बातें कहने लगा। और दाऊद ने उन्हें सुना। २४ उस पुरुष को देखकर सब इस्राएली अत्यन्त भय खाकर उसके साम्हने से भागे। २५ फिर इस्राएली पुरुष कहने लगे, क्या तुम ने उस पुरुष को देखा है जो चढ़ा आ रहा है? निश्चय वह इस्रा-एलियों को ललकारने को चढ़ा आता है; और जो कोई उसे मार डालेगा उसको राजा बहुत धन देगा, और अपनी बेटी ब्याह देगा, और उसके पिता के घराने को इस्राएल में स्वतन्त्र कर देगा। २६ तब दाऊद ने उन पुरुषों से जो उसके आस पास खड़े थे पूछा, कि जो उस पलिश्ती को मारके इस्राएलियों की नामधराई दूर करेगा उसके लिये क्या किया जाएगा? वह खतनारहित पलिश्ती तो क्या है कि जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारे? २७ तब लोगों ने उस से वही बातें कहीं, अर्थात् यह, कि जो कोई उसे मारेगा उस से ऐसा ऐसा किया जाएगा। २८ जब दाऊद उन मनुष्यों से बातें कर रहा था, तब उसका बड़ा भाई एलीआब सुन रहा था; और एलीआब दाऊद से बहुत क्रोधित होकर कहने लगा, तू यहां क्यों आया है? और जंगल में उन थोड़ी सी भेड़ बकरियों को तू किस के पास छोड़ आया है? तेरा अभिमान और तेरे मन की बुराई मुझे मालूम है; तू तो लड़ाई देखने के लिये यहां आया है। २९ दाऊद ने कहा, मैं ने अब क्या किया है? वह तो निरी बात थी? ३० तब उस ने उसके पास से मुंह फेरके दूसरे के सम्मुख होकर वैसी ही बात कही; और लोगों ने उसे पहिले की नाईं उत्तर दिया। ३१ जब दाऊद की बातों की चर्चा हुई, तब शाऊल को भी सुनाई गई; और उस ने उसे बुलवा भेजा। ३२ तब दाऊद ने शाऊल से कहा, किसी मनुष्य का मन उसके कारण कच्चा न हो; तेरा दास जाकर उस पलिश्ती से लड़ेगा। ३३ शाऊल ने दाऊद से कहा, तू जाकर उस पलिश्ती के विरुद्ध नहीं युद्ध कर सकता; क्योंकि तू तो लड़का ही है, और वह लड़कपन ही से योद्धा है। ३४ दाऊद ने शाऊल से कहा, तेरा दास अपने पिता की भेड़ बकरियां चराता था; और जब कोई सिंह वा भालू झुंड में से मेम्ना उठा ले गया, ३५ तब मैं ने उसका पीछा करके उसे मारा, और मेम्ने को

उसके मुंह से छुड़ाया; और जब उस ने मुझ पर चढ़ाई की, तब मैं ने उसके केश को पकड़कर उसे मार डाला। ३६ तेरे दास ने सिंह और भालू दोनों को मार डाला; और वह खतनारहित पलिश्ती उनके समान हो जाएगा, क्योंकि उस ने जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारा है। ३७ फिर दाऊद ने कहा, यहोवा जिस ने मुझे सिंह और भालू दोनों के पंजे से बचाया है, वह मुझे उस पलिश्ती के हाथ से भी वचाएगा। शाऊल ने दाऊद से कहा, जा, यहोवा तेरे साथ रहे। ३८ तब शाऊल ने अपने वस्त्र दाऊद को पहिनाए, और पीतल का टोप उसके सिर पर रख दिया, और झिलम उसको पहिनाया। ३९ और दाऊद से उसकी तलवार वस्त्र के ऊपर कसी, और चलने का यत्न किया; उस ने तो उनको न परखा था। इसलिये दाऊद ने शाऊल से कहा, इन्हें पहिने हुए मुझ से चला नहीं जाता, क्योंकि मैं ने नहीं परखा। और दाऊद ने उन्हें उतार दिया। ४० तब उस ने अपनी लाठी हाथ में ले नाले में से पांच चिकने पत्थर छांटकर अपनी चरवाही की थैली, अर्थात् अपने झोले में रखे; और अपना गोफन हाथ में लेकर पलिश्ती के निकट चला। ४१ और पलिश्ती चलते चलते दाऊद के निकट पहुंचने लगा, और जो जन उसकी बड़ी ढाल लिए था वह उसके आगे आगे चला। ४२ जब पलिश्ती ने दृष्टि करके दाऊद को देखा, तब उसे तुच्छ जाना; क्योंकि वह लड़का ही था, और उसके मुख पर लाली झलकती थी, और वह सुन्दर था। ४३ तब पलिश्ती ने दाऊद से कहा, क्या मैं कुत्ता हूं, कि तू लाठी लेकर मेरे पास आता है? तब पलिश्ती अपने देवताओं के नाम लेकर दाऊद को कोसने लगा। ४४ फिर पलिश्ती ने दाऊद से कहा, मेरे पास आ, मैं तेरा मांस आकाश के पक्षियों और बनपशुओं को दे दूंगा। ४५ दाऊद ने पलिश्ती से कहा, तू तो तलवार और भाला और सांग लिए हुए मेरे पास आता है; परन्तु मैं सेनाओं के यहोवा के नाम से तेरे पास आता हूं, जो इस्राएली सेना का परमेश्वर है, और उसी को तू ने ललकारा है। ४६ आज के दिन यहोवा तुझ को मेरे हाथ में कर देगा, और मैं तुझ को मारूंगा, और तेरा सिर तेरे धड़ से अलग करूंगा; और मैं आज के दिन पलिश्ती सेना की लोथें आकाश के पक्षियों और पृथ्वी के जीव जन्तुओं को दे दूंगा; तब समस्त पृथ्वी के लोग जान लेंगे कि इस्राएल में एक परमेश्वर है। ४७ और यह समस्त मण्डली जान लेगी कि यहोवा तलवार वा भाले के द्वारा जयवन्त नहीं करता, इसलिये कि संग्राम तो यहोवा का है, और वही तुम्हें हमारे हाथ में कर देगा। ४८ जब पलिश्ती उठकर दाऊद का साम्हना करने के लिये निकट आया, तब दाऊद सेना की ओर पलिश्ती का साम्हना करने के लिये फुर्ती से दौड़ा। ४९ फिर दाऊद ने अपनी थैली में हाथ डालकर उस में से एक पत्थर निकाला, और उसे गोफन में रखकर पलिश्ती के माथे पर ऐसा मारा कि पत्थर उसके माथे के भीतर घुस गया, और वह भूमि पर मुंह के बल गिर पड़ा। ५० यों दाऊद ने पलिश्ती पर गोफन और एक ही पत्थर के द्वारा प्रबल होकर उसे मार डाला; परन्तु दाऊद के हाथ में तलवार न थी।

५१ तब दाऊद दौड़कर पलिश्ती के ऊपर खड़ा हुआ, और उसकी तलवार पकड़कर मियान से खींची, और उसको घात किया, और उसका सिर उसी तलवार से काट डाला। यह देखकर कि हमारा वीर मर गया पलिश्ती भाग गए। **५२** इस पर इस्राएली और यहूदी पुरुष ललकार उठे, और गत * और एक्रोन से फाटकों तक पलिश्तियों का पीछा करते गए, और घायल पलिश्ती शारैम के मार्ग में और गत और एक्रोन तक गिरते गए। **५३** तब इस्राएली पलिश्तियों का पीछा छोड़कर लौट आए, और उनके डेरों को लूट लिया। **५४** और दाऊद पलिश्ती का सिर यरूशलेम में ले गया; और उसके हथियार अपने डेरे में धर लिए॥

(शाऊल की शत्रुता का आरम्भ और बढ़ती)

५५ जब शाऊल ने दाऊद को उस पलिश्ती का साम्हना करने के लिये जाते देखा, तब उस ने अपने सेनापति अब्नेर से पूछा, हे अब्नेर, वह जवान किस का पुत्र है? अब्नेर ने कहा, हे राजा, तेरे जीवन की शपथ, मैं नहीं जानता। **५६** राजा ने कहा, तू पूछ ले कि वह जवान किस का पुत्र है। **५७** जब दाऊद पलिश्ती को मारकर लौटा, तब अब्नेर ने उसे पलिश्ती का सिर हाथ में लिए हुए शाऊल के साम्हने पहुंचाया। **५८** शाऊल ने उस से पूछा, हे जवान, तू किस का पुत्र है? दाऊद ने कहा, मैं तो तेरे दास बेतलेहेमी यिशै का पुत्र हूं॥

१८ जब वह शाऊल से बातें कर चुका, तब योनातन का मन दाऊद पर ऐसा लग गया, कि योनातन उसे अपने प्राण के बराबर प्यार करने लगा। **२** और उस दिन से शाऊल ने उसे अपने पास रखा, और पिता के घर को फिर लौटने न दिया। **३** तब योनातन ने दाऊद से वाचा बान्धी, क्योंकि वह उसको अपने प्राण के बराबर प्यार करता था। **४** और योनातन ने अपना बागा जो वह स्वयं पहिने था उतारकर अपने वस्त्र समेत दाऊद को दे दिया, वरन अपनी तलवार और धनुष और कटिबन्द भी उसको दे दिए। **५** और जहां कहीं शाऊल दाऊद को भेजता था वहां वह जाकर बुद्धिमानी के साथ काम करता था; और शाऊल ने उसे योद्धाओं का प्रधान नियुक्त किया। और समस्त प्रजा के लोग और शाऊल के कर्मचारी उस से प्रसन्न थे॥

६ जब दाऊद उस पलिश्ती को मारकर लौटा आता था, और वे सब लोग भी आ रहे थे, तब सब इस्राएली नगरों से स्त्रियों ने निकलकर डफ और तिकोने बाजे लिए हुए, आनन्द के साथ गाती और नाचती हुई, शाऊल राजा के स्वागत में निकलीं। **७** और वे स्त्रियां नाचती हुई एक दूसरी के साथ यह गाती गईं, कि

शाऊल ने तो हजारों को,
परन्तु दाऊद ने लाखों को मारा है॥

८ तब शाऊल अति क्रोधित हुआ, और यह बात उसको बुरी लगी; और वह कहने लगा, उन्हों ने दाऊद के लिये तो लाखों और मेरे लिये हजारों ही ठहराया; इसलिये अब राज्य को छोड़ उसको अब क्या मिलना बाकी है? **९** तब उस दिन से भविष्य में शाऊल दाऊद की ताक में लगा रहा॥

* वा तराई।

१० दूसरे दिन परमेश्वर की ओर से एक दुष्ट आत्मा शाऊल पर बल से उतरा, और वह अपने घर के भीतर नबूवत करने लगा; दाऊद प्रति दिवस की नाईं अपने हाथ से बजा रहा था। और शाऊल अपने हाथ में अपना भाला लिए हुए था; ११ तब शाऊल ने यह सोचकर, कि मैं ऐसा मारूंगा कि भाला दाऊद को बेधकर भीत में धंस जाए, भाले को चलाया, परन्तु दाऊद उसके साम्हने से दो बार हट गया। १२ और शाऊल दाऊद से डरा करता था, क्योंकि यहोवा दाऊद के साथ था और शाऊल के पास से अलग हो गया था। १३ शाऊल ने उसको अपने पास से अलग करके सहस्र-पति किया, और वह प्रजा के साम्हने आया जाया करता था। १४ और दाऊद अपनी समस्त चाल में बुद्धिमानी दिखाता था; और यहोवा उसके साथ साथ था। १५ और जब शाऊल ने देखा कि वह बहुत बुद्धिमान है, तब वह उस से डर गया। १६ परन्तु इस्राएल और यहूदा के समस्त लोग दाऊद से प्रेम रखते थे; क्योंकि वह उनके देखते आया जाया करता था॥

१७ और शाऊल ने यह सोचकर, कि मेरा हाथ नहीं, वरन पलिश्तियों ही का हाथ दाऊद पर पड़े, उस से कहा, सुन, मैं अपनी बड़ी बेटी मेरब को तुझे ब्याह दूंगा; इतना कर, कि तू मेरे लिये वीरता के साथ यहोवा की ओर से युद्ध कर। १८ दाऊद ने शाऊल से कहा, मैं क्या हूं, और मेरा जीवन क्या है, और इस्राएल में मेरे पिता का कुल क्या है, कि मैं राजा का दामाद हो जाऊं? १९ जब समय आ गया कि शाऊल की बेटी मेरब दाऊद से ब्याही जाए, तब वह महोलाई अद्रीएल से ब्याही गई। २० और शाऊल की बेटी मीकल दाऊद से प्रीति रखने लगी; और जब इस बात का समाचार शाऊल को मिला, तब वह प्रसन्न हुआ। २१ शाऊल तो सोचता था, कि वह उसके लिये फन्दा हो, और पलिश्तियों का हाथ उस पर पड़े। और शाऊल ने दाऊद से कहा, अब की बार तो तू अवश्य ही* मेरा दामाद हो जाएगा। २२ फिर शाऊल ने अपने कर्मचारियों को आज्ञा दी, कि दाऊद से छिपकर ऐसी बातें करो, कि सुन, राजा तुझ से प्रसन्न है, और उसके सब कर्मचारी भी तुझ से प्रेम रखते हैं; इसलिये अब तू राजा का दामाद हो जा। २३ तब शाऊल के कर्मचारियों ने दाऊद से ऐसी ही बातें कहीं। परन्तु दाऊद ने कहा, मैं तो निर्धन और तुच्छ मनुष्य हूं, फिर क्या तुम्हारी दृष्टि में राजा का दामाद होना छोटी बात है? २४ जब शाऊल के कर्मचारियों ने उसे बताया, कि दाऊद ने ऐसी ऐसी बातें कहीं। २५ तब शाऊल ने कहा, तुम दाऊद से यों कहो, कि राजा कन्या का मोल तो कुछ नहीं चाहता, केवल पलिश्तियों की एक सौ खलड़ियां चाहता है, कि वह अपने शत्रुओं से पलटा ले। शाऊल की मनसा यह थी, कि पलिश्तियों से दाऊद को मरवा डाले। २६ जब उसके कर्मचारियों ने दाऊद को ये बातें बताईं, तब वह राजा का दामाद होने को प्रसन्न हुआ। जब ब्याह के दिन कुछ रह गए, २७ तब दाऊद अपने जनों को संग लेकर चला, और पलिश्तियों के दो

* मूल में—आज दूसरी रीति पर तू।

सौ पुरुषों को मारा; तब दाऊद उनकी खलड़ियों को ले आया, और वे राजा को गिन गिन कर दी गईं, इसलिये कि वह राजा का दामाद हो जाए। और शाऊल ने अपनी बेटी मीकल को उसे ब्याह दिया। २८ जब शाऊल ने देखा, और निश्चय किया कि यहोवा दाऊद के साथ है, और मेरी बेटी मीकल उस से प्रेम रखती है, २९ तब शाऊल दाऊद से और भी डर गया। और शाऊल सदा के लिये दाऊद का बैरी बन गया॥

३० फिर पलिश्तियों के प्रधान निकल आए, और जब जब वे निकल आए तब तब दाऊद ने शाऊल के और सब कर्मचारियों से अधिक बुद्धिमानी दिखाई; इस से उसका नाम बहुत बडा हो गया*॥

१९ और शाऊल ने अपने पुत्र योनातन और अपने सब कर्मचारियों से दाऊद को मार डालने की चर्चा की। परन्तु शाऊल का पुत्र योनातन दाऊद से बहुत प्रसन्न था। २ और योनातन ने दाऊद को बताया, कि मेरा पिता तुझे मरवा डालना चाहता है; इसलिये तू बिहान को सावधान रहना, और किसी गुप्त स्थान में बैठा हुआ छिपा रहना; ३ और मैं मैदान में जहां तू होगा वहां जाकर अपने पिता के पास खड़ा होकर उस से तेरी चर्चा करूंगा; और यदि मुझे कुछ मालूम हो तो तुझे बताऊंगा। ४ और योनातन ने अपने पिता शाऊल से दाऊद की प्रशंसा करके उस से कहा, कि हे राजा, अपने दास दाऊद का अपराधी न हो; क्योंकि उस ने तेरा कुछ अपराध नहीं किया, वरन उसके सब काम तेरे बहुत हित के हैं; ५ उस ने अपने प्राण पर खेलकर उस पलिश्ती को मार डाला, और यहोवा ने समस्त इस्राएलियों की बड़ी जय कराई। इसे देखकर तू आनन्दित हुआ था; और तू दाऊद को अकारण मारकर निर्दोष के खून का पापी क्यों बने? ६ तब शाऊल ने योनातन की बात मानकर यह शपथ खाई, कि यहोवा के जीवन की शपथ, दाऊद मार डाला न जाएगा। ७ तब योनातन ने दाऊद को बुलाकर ये समस्त बातें उसको बताईं। फिर योनातन दाऊद को शाऊल के पास ले गया, और वह पहिले की नाईं उसके साम्हने रहने लगा॥

८ तब फिर लड़ाई होने लगी; और दाऊद जाकर पलिश्तियों से लड़ा, और उन्हें बड़ी मार से मारा, और वे उसके साम्हने से भाग गए। ९ और जब शाऊल हाथ में भाला लिए हुए घर में बैठा था; और दाऊद हाथ से बजा रहा था, तब यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा शाऊल पर चढ़ा। १० और शाऊल ने चाहा, कि दाऊद को ऐसा मारे कि भाला उसे बेधते हुए भीत में धंस जाए; परन्तु दाऊद शाऊल के साम्हने से ऐसा हट गया कि भाला जाकर भीत ही में धंस गया। और दाऊद भागा, और उस रात को बच गया। ११ और शाऊल ने दाऊद के घर पर दूत इसलिये भेजे कि वे उसकी घात में रहें, और बिहान को उसे मार डालें, तब दाऊद की स्त्री मीकल ने उसे यह कहकर जताया, कि यदि तू इस रात को अपना प्राण न बचाए, तो बिहान को मारा जाएगा। १२ तब मीकल ने दाऊद को खिड़की से उतार दिया;

* मूल में—अनमोल।

और वह भाग कर बच निकला। १३ तब मीकल ने गृहदेवताओं को ले चारपाई पर लिटाया, और बकरियों के रोएं की तकिया उसके सिरहाने पर रखकर उनको वस्त्र ओढ़ा दिए। १४ जब शाऊल ने दाऊद को पकड़ लाने के लिये दूत भेजे, तब वह बोली, वह तो बीमार है। १५ तब शाऊल ने दूतों को दाऊद के देखने के लिये भेजा, और कहा, उसे चारपाई समेत मेरे पास लाओ कि मैं उसे मार डालूं। १६ जब दूत भीतर गए, तब क्या देखते हैं कि चारपाई पर गृहदेवता पड़े हैं, और सिरहाने पर बकरियों के रोएं की तकिया है। १७ सो शाऊल ने मीकल से कहा, तू ने मुझे ऐसा धोखा क्यों दिया? तू ने मेरे शत्रु को ऐसा क्यों जाने दिया कि वह बच निकला है? मीकल ने शाऊल से कहा, उस ने मुझ से कहा, कि मुझे जाने दे; मैं तुझे क्यों मार डालूं॥

१८ और दाऊद भागकर बच निकला, और रामा में शमूएल के पास पहुंचकर जो कुछ शाऊल ने उस से किया था सब उसे कह सुनाया। तब वह और शमूएल जाकर नबायोत * में रहने लगे। १९ जब शाऊल को इसका समाचार मिला कि दाऊद रामा में के नबायोत * में है, २० तब शाऊल ने दाऊद के पकड़ लाने के लिये दूत भेजे; और जब शाऊल के दूतों ने नबियों के दल को नबूवत करते हुए, और शमूएल को उनकी प्रधानता करते हुए देखा, तब परमेश्वर का आत्मा उन पर चढ़ा, और वे भी नबूवत करने लगे। २१ इसका समाचार

* अर्थात् कई वासस्थान।

पाकर शाऊल ने और दूत भेजे, और वे भी नबूवत करने लगे। फिर शाऊल ने तीसरी बार दूत भेजे, और वे भी नबूवत करने लगे। २२ तब वह आप ही रामा को चला, और उस बड़े गड़हे पर जो सेकू में है पहुंचकर पूछने लगा, कि शमूएल और दाऊद कहां है? किसी ने कहा, वे तो रामा के नबायोत * में हैं। २३ तब वह उधर, अर्थात् रामा के नबायोत * को चला; और परमेश्वर का आत्मा उस पर भी चढ़ा, और वह रामा के नबायोत * को पहुंचने तक नबूवत करता हुआ चला गया। २४ और उस ने भी अपने वस्त्र उतारे, और शमूएल के साम्हने नबूवत करने लगा, और भूमि पर गिरकर दिन और रात नङ्गा पड़ा रहा। इस कारण से यह कहावत चली, कि क्या शाऊल भी नबियों में से है?

(दाऊद का भागना और शाऊल के डर के मारे इधर उधर घूमना)

२० फिर दाऊद रामा के नबायोत * से भागा, और योनातन के पास जाकर कहने लगा, मैं ने क्या किया है? मुझ से क्या पाप हुआ? मैं ने तेरे पिता की दृष्टि में ऐसा कौन सा अपराध किया है, कि वह मेरे प्राण की खोज में रहता है? २ उस ने उस से कहा, ऐसी बात नहीं है; तू मारा न जाएगा। सुन, मेरा पिता मुझ को बिना जताए न तो कोई बड़ा काम करता है और न कोई छोटा; फिर वह ऐसी बात को मुझ से क्यों छिपाएगा? ऐसी कोई बात नहीं है। ३ फिर दाऊद ने शपथ खाकर कहा, तेरा पिता निश्चय जानता है कि तेरे

* अर्थात कई वासस्थान।

अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर है; और वह सोचता होगा, कि योनातन इस बात को न जानने पाए, ऐसा न हो कि वह खेदित हो जाए। परन्तु यहोवा के जीवन की शपथ और तेरे जीवन की शपथ, निःसन्देह, मेरे और मृत्यु के बीच डग ही भर का अन्तर है। ४ योनातन ने दाऊद से कहा, जो कुछ तेरा जी चाहे वही मैं तेरे लिये करूंगा। ५ दाऊद ने योनातन से कहा, सुन कल नया चाँद होगा, और मुझे उचित है कि राजा के साथ बैठकर भोजन करूं; परन्तु तू मुझे बिदा कर, और मैं परसों सांझ तक मैदान में छिपा रहूंगा। ६ यदि तेरा पिता मेरी कुछ चिन्ता करे, तो कहना, कि दाऊद ने अपने नगर बेतलेहेम को शीघ्र जाने के लिये मुझ से बिनती करके छुट्टी मांगी है; क्योंकि वहां उसके समस्त कुल के लिये वार्षिक यज्ञ है। ७ यदि वह यों कहे, कि अच्छा! तब तो तेरे दास के लिये कुशल होगा; परन्तु यदि उसका क्रोध बहुत भड़क उठे, तो जान लेना कि उस ने बुराई ठानी है। ८ और तू अपने दास से कृपा का व्यवहार करना, क्योंकि तू ने यहोवा की शपथ खिलाकर अपने दास को अपने साथ वाचा बन्धाई है। परन्तु यदि मुझ से कुछ अपराध हुआ हो, तो तू आप मुझे मार डाल; तू मुझे अपने पिता के पास क्यों पहुंचाए? ९ योनातन ने कहा, ऐसी बात कभी न होगी! यदि मैं निश्चय जानता कि मेरे पिता ने तुझ से बुराई करनी ठानी है, तो क्या मैं तुझ को न बताता? १० दाऊद ने योनातन से कहा, यदि तेरा पिता तुझ को कठोर उत्तर दे, तो कौन मुझे बताएगा? ११ योनातन ने दाऊद से कहा, चल, हम मैदान को निकल जाएं। और वे दोनों मैदान की ओर चले गए॥

१२ तब योनातन दाऊद से कहने लगा, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की शपथ, जब मैं कल वा परसों इसी समय अपने पिता का भेद पाऊं, तब यदि दाऊद की भलाई देखूं, तो क्या मैं उसी समय तेरे पास दूत भेजकर तुझे न बताऊंगा? १३ यदि मेरे पिता का मन तेरी बुराई करने का हो, और मैं तुझ पर यह प्रगट करके तुझे विदा न करूं कि तू कुशल के साथ चला जाए, तो यहोवा योनातन से ऐसा ही वरन इस से भी अधिक करे। और यहोवा तेरे साथ वैसा ही रहे जैसा वह मेरे पिता के साथ रहा। १४ और न केवल जब तक मैं जीवित रहूं, तब तक मुझ पर यहोवा की सी कृपा ऐसा करना, कि मैं न मरूं; १५ परन्तु मेरे घराने पर से भी अपनी कृपादृष्टि कभी न हटाना। वरन जब यहोवा दाऊद के हर एक शत्रु को पृथ्वी पर से नाश कर चुकेगा, तब भी ऐसा न करना। १६ इस प्रकार योनातन ने दाऊद के घराने से यह कहकर वाचा बन्धाई, कि यहोवा दाऊद के शत्रुओं से पलटा ले। १७ और योनातन दाऊद से प्रेम रखता था, और उस ने उसको फिर शपथ खिलाई; क्योंकि वह उस से अपने प्राण के बराबर प्रेम रखता था। १८ तब योनातन ने उस से कहा, कल नया चाँद होगा; और तेरी चिन्ता की जाएगी, क्योंकि तेरी कुर्सी खाली रहेगी। १९ और तू तीन दिन के बीतने पर तुरन्त आना, और उस स्थान पर जाकर जहां तू उस काम के दिन छिपा था, अर्थात् एजेल नाम पत्थर के पास रहना। २० तब

में उसकी अलंग, मानो अपने किसी ठहराए हुए चिन्ह पर तीन तीर चलाऊंगा। २१ फिर मैं अपने टहलुए छोकरे को यह कहकर भेजूंगा, कि जाकर तीरों को ढूंढ़ ले आ। यदि मैं उस छोकरे से साफ साफ कहूं, कि देख, तीर इधर तेरी इस अलंग पर हैं, तो तू उसे ले आ, क्योंकि यहोवा के जीवन की शपथ, तेरे लिये कुशल को छोड़ और कुछ न होगा। २२ परन्तु यदि मैं छोकरे से यों कहूं, कि सुन, तीर उधर तेरे उस अलंग पर है, तो तू चला जाना, क्योंकि यहोवा ने तुझे विदा किया है। २३ और उस बात के विषय जिसकी चर्चा मैं ने और तू ने आपस में की है, यहोवा मेरे और तेरे मध्य में सदा रहे॥

२४ इसलिये दाऊद मैदान में जा छिपा; और जब नया चाँद हुआ, तब राजा भोजन करने को बैठा। २५ राजा तो पहिले की नाईं अपने उस आसन पर बैठा जो भीत के पास था; और योनातन खड़ा हुआ, और अब्नेर शाऊल के निकट बैठा, परन्तु दाऊद का स्थान खाली रहा। २६ उस दिन तो शाऊल यह सोचकर चुप रहा, कि इसका कोई न कोई कारण होगा; वह अशुद्ध होगा, निःसन्देह शुद्ध न होगा। २७ फिर नये चाँद के दूसरे दिन को दाऊद का स्थान खाली रहा। और शाऊल ने अपने पुत्र योनातन से पूछा, क्या कारण है कि यिशै का पुत्र न तो कल भोजन पर आया था, और न आज ही आया है? २८ योनातन ने शाऊल से कहा, दाऊद ने बेतलेहेम जाने के लिये मुझ से बिनती करके छुट्टी मांगी; २९ और कहा, मुझे जाने दे; क्योंकि उस नगर में हमारे कुल का यज्ञ है, और मेरे भाई ने मुझ को वहां उपस्थित होने की आज्ञा दी है। और अब यदि मुझ पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि हो, तो मुझे जाने दे कि मैं अपने भाइयों से भेंट कर आऊं। इसी कारण वह राजा की मेज पर नहीं आया। ३० तब शाऊल का कोप योनातन पर भड़क उठा, और उस ने उस से कहा, हे कुटिला राजद्रोही के पुत्र, क्या मैं नहीं जानता कि तेरा मन तो यिशै के पुत्र पर लगा है? इसी से तेरी आशा का टूटना और तेरी माता का अनादर ही होगा। ३१ क्योंकि जब तक यिशै का पुत्र भूमि पर जीवित रहेगा, तब तक न तो तू और न तेरा राज्य स्थिर रहेगा। इसलिये अभी भेजकर उसे मेरे पास ला, क्योंकि निश्चय वह मार डाला जाएगा। ३२ योनातन ने अपने पिता शाऊल को उत्तर देकर उस से कहा, वह क्यों मारा जाए? उस ने क्या किया है? ३३ तब शाऊल ने उसको मारने के लिये उस पर भाला चलाया; इससे योनातन ने जान लिया, कि मेरे पिता ने दाऊद को मार डालना ठान लिया है। ३४ तब योनातन क्रोध से जलता हुआ मेज़ पर से उठ गया, और महीने के दूसरे दिन को भोजन न किया, क्योंकि वह बहुत खेदित था, इसलिये कि उसके पिता ने दाऊद का अनादर किया था॥

३५ बिहान को योनातन एक छोटा लड़का संग लिए हुए मैदान में दाऊद के साथ ठहराए हुए स्थान को गया। ३६ तब उस ने अपने छोकरे से कहा, दौड़कर जो जो तीर मैं चलाऊं उन्हें ढूंढ़ ले आ। छोकरा दौड़ता ही था, कि उस ने एक तीर उसके परे चलाया। ३७ जब छोकरा

योनातन के चलाए तीर के स्थान पर पहुंचा, तब योनातन ने उसके पीछे से पुकारके कहा, तीर तो तेरी परली ओर है। ३८ फिर योनातन ने छोकरे के पीछे से पुकारके कहा, बड़ी फुर्ती कर, ठहर मत। और योनातन का छोकरा तीरों को बटोरके अपने स्वामी के पास ले आया। ३९ इसका भेद छोकरा तो कुछ न जानता था; केवल योनातन और दाऊद उस बात को जानते थे। ४० और योनातन ने अपने हथियार अपने छोकरे को देकर कहा, जा, इन्हें नगर को पहुंचा। ४१ ज्योंही छोकरा चला गया, त्योंही दाऊद दक्खिन दिशा की अलंग से निकला, और भूमि पर औंधे मुंह गिरके तीन बार दण्डवत् की; तब उन्हों ने एक दूसरे को चूमा, और एक दूसरे के साथ रोए, परन्तु दाऊद का रोना अधिक था। ४२ तब योनातन ने दाऊद से कहा, कुशल से चला जा; क्योंकि हम दोनों ने एक दूसरे से यह कहके यहोवा के नाम की शपथ खाई है, कि यहोवा मेरे और तेरे मध्य, और मेरे और तेरे वंश के मध्य में सदा रहे। तब वह उठकर चला गया; और योनातन नगर में गया।।

२१ और दाऊद नोब को अहीमेलेक याजक के पास आया; और अहीमेलेक दाऊद से भेंट करने को थरथराता हुआ निकला, और उस से पूछा, क्या कारण है कि तू अकेला है, और तेरे साथ कोई नहीं? २ दाऊद ने अहीमेलेक याजक से कहा, राजा ने मुझे एक काम करने की आज्ञा देकर मुझ से कहा, जिस काम को मैं तुझे भेजता, और जो आज्ञा मैं तुझे देता हूं, वह किसी पर प्रकट न होने पाए; और मैं ने जवानों को फलाने स्थान पर जाने को समझाया है। ३ अब तेरे हाथ में क्या है? पांच रोटी, वा जो कुछ मिले उसे मेरे हाथ में दे। ४ याजक ने दाऊद से कहा, मेरे पास साधारण रोटी तो कुछ नहीं है, केवल पवित्र रोटी है; इतना हो कि वे जवान स्त्रियों से अलग रहे हों। ५ दाऊद ने याजक को उत्तर देकर उस से कहा, सच है कि हम तीन दिन से स्त्रियों से अलग हैं; फिर जब मैं निकल आया, तब तो जवानों के बर्तन पवित्र थे; यद्यपि यात्रा साधारण है तो आज उनके बर्तन अवश्य ही पवित्र होंगे। ६ तब याजक ने उसको पवित्र रोटी दी; क्योंकि दूसरी रोटी वहां न थी, केवल भेंट की रोटी थी जो यहोवा के सम्मुख से उठाई गई थी, कि उसके उठा लेने के दिन गरम रोटी रखी जाए। ७ उसी दिन वहां दोएग नाम शाऊल का एक कर्मचारी यहोवा के आगे रुका हुआ था; वह एदोमी और शाऊल के चरवाहों का मुखिया था। ८ फिर दाऊद ने अहीमेलेक से पूछा, क्या यहां तेरे पास कोई भाला व तलवार नहीं है? क्योंकि मुझे राजा के काम की ऐसी जल्दी थी कि मैं न तो अपनी तलवार साथ लाया हूं, और न अपना कोई हथियार ही लाया। ९ याजक ने कहा, हां, पलिश्ती गोलियात जिसे तू ने एला तराई में घात किया उसकी तलवार कपड़े में लपेटी हुई एपोद के पीछे धरी है; यदि तू उसे लेना चाहे, तो ले ले, उसे छोड़ और कोई यहां नहीं है। दाऊद बोला, उसके तुल्य कोई नहीं; वही मुझे दे।।

१० तब दाऊद चला, और उसी दिन शाऊल के डर के मारे भागकर गत के

राजा आकीश के पास गया। ११ और आकीश के कर्मचारियों ने आकीश से कहा, क्या वह उस देश का राजा दाऊद नहीं है? क्या लोगों ने उसी के विषय नाचते नाचते एक दूसरे के साथ यह गाना न गाया था, कि

शाऊल ने हजारों को,
और दाऊद ने लाखों को मारा है?

१२ दाऊद ने ये बातें अपने मन में रखीं, और गत के राजा आकीश से अत्यन्त डर गया। १३ तब वह उनके साम्हने दूसरी चाल चली, और उनके हाथ में पड़कर बौड़हा, अर्थात् पागल बन गया; और फाटक के किवाड़ों पर लकीरें खींचते, और अपनी लार अपनी दाढ़ी पर बहाने लगा। १४ तब आकीश ने अपने कर्मचारियों से कहा, देखो, वह जन तो बावला है; तुम उसे मेरे पास क्यों लाए हो? १५ क्या मेरे पास बावलों की कुछ घटी है, कि तुम उसको मेरे साम्हने बावलापन करने के लिये लाए हो? क्या ऐसा जन मेरे भवन में आने पाएगा?

२२ और दाऊद वहां से चला, और अदुल्लाम की गुफा में पहुंचकर बच गया; और यह सुनकर उसके भाई, वरन उसके पिता का समस्त घराना वहां उसके पास गया। २ और जितने संकट में पड़े थे, और जितने ऋणी थे, और जितने उदास थे, वे सब उसके पास इकट्ठे हुए; और वह उनका प्रधान हुआ। और कोई चार सौ पुरुष उसके साथ हो गए॥

३ वहां से दाऊद ने मोआब के मिसपे को जाकर मोआब के राजा से कहा, मेरे पिता को अपने पास तब तक आकर रहने दो, जब तक कि मैं न जानूं कि परमेश्वर मेरे लिये क्या करेगा। ४ और वह उनको मोआब के राजा के सम्मुख ले गया, और जब तक दाऊद उस गढ़ में रहा, तब तक वे उसके पास रहे। ५ फिर गाद नाम एक नबी ने दाऊद से कहा, इस गढ़ में मत रह; चल, यहूदा के देश में जा। और दाऊद चलकर हेरेत के बन में गया॥

६ तब शाऊल ने सुना कि दाऊद और उसके संगियों का पता लग गया है। उस समय शाऊल गिबा के ऊंचे स्थान पर, एक झाऊ के पेड़ के तले, हाथ में अपना भाला लिए हुए बैठा था, और उसके सब कर्मचारी उसके आसपास खड़े थे। ७ तब शाऊल अपने कर्मचारियों से जो उसके आसपास खड़े थे कहने लगा, हे बिन्यामीनियो, सुनो; क्या यिशै का पुत्र तुम सभों को खेत और दाख की बारियां देगा? क्या वह तुम सभों को सहस्रपति और शतपति करेगा? ८ तुम सभों ने मेरे विरुद्ध क्यों राजद्रोह की गोष्ठी की है? और जब मेरे पुत्र ने यिशै के पुत्र से वाचा बान्धी, तब किसी ने मुझ पर प्रगट नहीं किया; और तुम में से किसी ने मेरे लिये शोकित होकर मुझ पर प्रगट नहीं किया, कि मेरे पुत्र ने मेरे कर्मचारी को मेरे विरुद्ध ऐसा घात लगाने को उभारा है, जैसा आज के दिन है। ९ तब एदोमी दोएग ने, जो शाऊल के सेवकों के ऊपर ठहराया गया था, उत्तर देकर कहा, मैं ने तो यिशै के पुत्र को नोब में अहीतूब के पुत्र अहीमेलेक के पास आते देखा, १० और उस ने उसके लिये यहोवा से पूछा, और उसे भोजन वस्तु दी, और पलिश्ती गोलियात

की तलवार भी दी। ११ और राजा ने अहीतूब के पुत्र अहीमेलेक याजक को और उसके पिता के समस्त घराने को, अर्थात् नोब में रहनेवाले याजकों को बुलवा भेजा; और जब वे सब के सब शाऊल राजा के पास आए, १२ तब शाऊल ने कहा, हे अहीतूब के पुत्र, सुन, वह बोला, हे प्रभु, क्या आज्ञा? १३ शाऊल ने उस से पूछा, क्या कारण है कि तू और यिशै के पुत्र दोनों ने मेरे विरुद्ध राजद्रोह की गोष्ठी की है? तू ने उसे रोटी और तलवार दी, और उसके लिये परमेश्वर से पूछा भी, जिस से वह मेरे विरुद्ध उठे, और ऐसा घात लगाए जैसा आज के दिन है? १४ अहीमेलेक ने राजा को उत्तर देकर कहा, तेरे समस्त कर्मचारियों में दाऊद के तुल्य विश्वासयोग्य कौन है? वह तो राजा का दामाद है, और तेरी राजसभा में उपस्थित हुआ करता, और तेरे परिवार में प्रतिष्ठित है। १५ क्या मैं ने आज ही उसके लिये परमेश्वर से पूछना आरम्भ किया है? वह मुझ से दूर रहे! राजा न तो अपने दास पर ऐसा कोई दोष लगाए, न मेरे पिता के समस्त घराने पर, क्योंकि तेरा दास इन सब बखेड़ों के विषय कुछ भी * नहीं जानता। १६ राजा ने कहा, हे अहीमेलेक, तू और तेरे पिता का समस्त घराना निश्चय मार डाला जाएगा। १७ फिर राजा ने उन पहरुओं से जो उसके आसपास खड़े थे आज्ञा दी, कि मुड़ो और यहोवा के याजकों को मार डालो; क्योंकि उन्हों ने भी दाऊद की सहायता की है, और उसका भागना जानने पर भी मुझ पर प्रगट नहीं किया। परन्तु राजा के सेवक यहोवा के याजकों को मारने के लिये हाथ बढ़ाना न चाहते थे। १८ तब राजा ने दोएग से कहा, तू मुड़कर याजकों को मार डाल। तब एदोमी दोएग ने मुड़कर याजकों को मारा, और उस दिन सनीवाला एपोद पहिने हुए पचासी पुरुषों को घात किया। १९ और याजकों के नगर नोब को उस ने स्त्रियों-पुरुषों, और बालबच्चों, और दूधपिउवों, और बैलों, गदहों, और भेड़-बकरियों समेत तलवार से मारा। २० परन्तु अहीतूब के पुत्र अहीमेलेक का एब्यातार नाम एक पुत्र बच निकला, और दाऊद के पास भाग गया। २१ तब एब्यातार ने दाऊद को बताया, कि शाऊल ने यहोवा के याजकों को बध किया है। २२ और दाऊद ने एब्यातार से कहा, जिस दिन एदोमी दोएग वहां था, उसी दिन मैं ने जान लिया, कि वह निश्चय शाऊल को बताएगा। तेरे पिता के समस्त घराने के मारे जाने का कारण मैं ही हुआ। २३ इसलिये तू मेरे साथ निडर रह; जो मेरे प्राण का ग्राहक है वही तेरे प्राण का भी ग्राहक है; परन्तु मेरे साथ रहने से तेरी रक्षा होगी॥

२३ और दाऊद को यह समाचार मिला कि पलिश्ती लोग कीला नगर से युद्ध कर रहे हैं, और खलिहानों को लूट रहे हैं। २ तब दाऊद ने यहोवा से पूछा, कि क्या मैं जाकर पलिश्तियों को मारूं? यहोवा ने दाऊद से कहा, जा, और पलिश्तियों को मार के कीला को बचा। ३ परन्तु दाऊद के जनों ने उस से कहा, हम तो इस यहूदा देश में भी

* मूल में—छोटा और बड़ा।

डरते रहते हैं; यदि हम कीला जाकर पलिश्तियों की सेना का साम्हना करें, तो क्या बहुत अधिक डर में न पड़ेंगे? ४ तब दाऊद ने यहोवा से फिर पूछा, और यहोवा ने उसे उत्तर देकर कहा, कमर बान्धकर कीला को जा; क्योंकि मैं पलिश्तियों को तेरे हाथ में कर दूंगा। ५ इसलिये दाऊद अपने जनों को संग लेकर कीला को गया, और पलिश्तियों से लड़कर उनके पशुओं को हांक लाया, और उन्हें बड़ी मार से मारा। यों दाऊद ने कीला के निवासियों को बचाया। ६ जब अहीमेलेक का पुत्र एब्यातार दाऊद के पास कीला को भाग गया था, तब हाथ में एपोद लिए हुए गया था॥

७ तब शाऊल को यह समाचार मिला कि दाऊद कीला को गया है। और शाऊल ने कहा, परमेश्वर ने उसे मेरे हाथ में कर दिया है; वह तो फाटक और बेंड़ेवाले नगर में घुसकर बन्द हो गया है। ८ तब शाऊल ने अपनी सारी सेना को लड़ाई के लिये बुलवाया, कि कीला को जाकर दाऊद और उसके जनों को घेर ले। ९ तब दाऊद ने जान लिया कि शाऊल मेरी हानि की युक्ति कर रहा है; इसलिये उस ने एब्यातार याजक से कहा, एपोद को निकट ले आ। १० तब दाऊद ने कहा, हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा, तेरे दास ने निश्चय सुना है कि शाऊल मेरे कारण कीला नगर नाश करने को आना चाहता है। ११ क्या कीला के लोग मुझे उसके वश में कर देंगे? क्या जैसे तेरे दास ने सुना है, वैसे ही शाऊल आएगा? हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा, अपने दास को यह बता। यहोवा ने कहा, हां, वह आएगा। १२ फिर दाऊद ने पूछा, क्या कीला के लोग मुझे और मेरे जनों को शाऊल के वश में कर देंगे? यहोवा ने कहा, हां, वे कर देंगे। १३ तब दाऊद और उसके जन जो कोई छः सौ थे कीला मे निकल गए, और इधर उधर जहां कहीं जा सके वहां गए। और जब शाऊल को यह बताया गया कि दाऊद कीला से निकल भागा है, तब उस ने वहां जाने की मनसा छोड़ दी॥

१४ तब दाऊद तो जंगल के गढ़ों में रहने लगा, और पहाड़ी देश के जीप नाम जंगल में रहा। और शाऊल उसे प्रति दिन ढूंढ़ता रहा, परन्तु परमेश्वर ने उसे उसके हाथ में न पड़ने दिया। १५ और दाऊद ने जान लिया कि शाऊल मेरे प्राण की खोज में निकला है। और दाऊद जीप नाम जंगल के होरेश नाम स्थान में था; १६ कि शाऊल का पुत्र योनातन उठकर उसके पास होरेश में गया, और परमेश्वर की चर्चा करके उसको ढाढ़स दिलाया *। १७ उस ने उस से कहा, मत डर; क्योंकि तू मेरे पिता शाऊल के हाथ में न पड़ेगा; और तू ही इस्राएल का राजा होगा, और मैं तेरे नीचे हूंगा; और इस बात को मेरा पिता शाऊल भी जानता है। १८ तब उन दोनों ने यहोवा की शपथ खाकर † आपस में वाचा बान्धी; तब दाऊद होरेश में रह गया, और योनातान अपने घर चला गया। १९ तब जीपी लोग गिबा में शाऊल के पास जाकर कहने लगे, दाऊद तो हमारे पास होरेश के गढ़ों में, अर्थात् उस हकीला नाम पहाड़ी पर छिपा रहता

* मूल में—परमेश्वर ने उसके हाथ बली किए।

† मूल में—यहोवा के साम्हने।

है, जो यशीमोन के दक्खिन की ओर है। २० इसलिये अब, हे राजा, तेरी जो इच्छा आने की है, तो आ; और उसको राजा के हाथ में पकड़वा देना हमारा काम होगा। २१ शाऊल ने कहा, यहोवा की आशीष तुम पर हो, क्योंकि तुम ने मुझ पर दया की है। २२ तुम चलकर और भी निश्चय कर लो; और देख भालकर जान लो, और उसके अड्डे का पता लगा लो, और बूझो कि उसको वहां किसने देखा है; क्योंकि किसी ने मुझ से कहा है, कि वह बड़ी चतुराई से काम करता है। २३ इसलिये जहां कहीं वह छिपा करता है उन सब स्थानों को देख देखकर पहिचानो, तब निश्चय करके मेरे पास लौट आना। और मैं तुम्हारे साथ चलूंगा, और यदि वह उस देश में कहीं भी हो, तो मैं उसे यहूदा के हज़ारों में से ढूंढ़ निकालूंगा। २४ तब वे चलकर शाऊल से पहिले जीप को गए। परन्तु दाऊद अपने जनों समेत माओन नाम जंगल में चला गया था, जो अराबा में यशीमोन के दक्खिन की ओर है। २५ तब शाऊल अपने जनों को साथ लेकर उसकी खोज में गया। इसका समाचार पाकर दाऊद पर्वत पर से उतरके माओन जंगल में रहने लगा। यह सुन शाऊल ने माओन जंगल में दाऊद का पीछा किया। २६ शाऊल तो पहाड़ की एक ओर, और दाऊद अपने जनों समेत पहाड़ की दूसरी ओर जा रहा था; और दाऊद शाऊल के डर के मारे जल्दी जा रहा था, और शाऊल अपने जनों समेत दाऊद और उसके जनों को पकड़ने के लिये घेरा बनाना चाहता था, २७ कि एक दूत ने शाऊल के पास आकर कहा, फुर्ती से चला आ; क्योंकि पलिश्तियों ने देश पर चढ़ाई की है। २८ यह सुन शाऊल दाऊद का पीछा छोड़कर पलिश्तियों का साम्हना करने को चला; इस कारण उस स्थान का नाम सेलाहम्महलकोत * पड़ा। २९ वहां से दाऊद चढ़कर एनगदी के गढ़ों में रहने लगा॥

२४ जब शाऊल पलिश्तियों का पीछा करके लौटा, तब उसको यह समाचार मिला, कि दाऊद एनगदी के जंगल में है। २ तब शाऊल समस्त इस्राएलियों में से तीन हज़ार को छांटकर दाऊद और उसके जनों को बनैले बकरों की चट्टानों पर खोजने गया। ३ जब वह मार्ग पर के भेड़शालों के पास पहुंचा जहां एक गुफ़ा थी, तब शाऊल दिशा फिरने को उसके भीतर गया। और उसी गुफ़ा के कोनों में दाऊद और उसके जन बैठे हुए थे। ४ तब दाऊद के जनों ने उस से कहा, सुन, आज वही दिन है जिसके विषय यहोवा ने तुझ से कहा था, कि मैं तेरे शत्रु को तेरे हाथ में सौंप दूंगा, कि तू उस से मनमाना बर्ताव कर ले। तब दाऊद ने उठकर शाऊल के बागे की छोर को छिपकर काट लिया। ५ इसके पीछे दाऊद शाऊल के बागे की छोर काटने से पछताया †। ६ और अपने जनों से कहने लगा, यहोवा न करे कि मैं अपने प्रभु से जो यहोवा का अभिषिक्त है ऐसा काम करूं, कि उस पर हाथ चलाऊं, क्योंकि वह यहोवा का अभिषिक्त है। ७ ऐसी बातें कहकर दाऊद ने अपने जनों को घुड़की लगाई, और उन्हें शाऊल

* अर्थात् बच निकलने का ढंग।
† मूल में—दाऊद के मन ने उसे मारा।

की हानि करने को उठने न दिया। फिर शाऊल उठकर गुफ़ा से निकला और अपना मार्ग लिया। ८ उसके पीछे दाऊद भी उठकर गुफ़ा से निकला, और शाऊल को पीछे से पुकार के बोला, हे मेरे प्रभु, हे राजा। जब शाऊल ने फिर के देखा, तब दाऊद ने भूमि की ओर सिर झुकाकर दण्डवत् की। ९ और दाऊद ने शाऊल से कहा, जो मनुष्य कहते हैं, कि दाऊद तेरी हानि चाहता है उनकी तू क्यों सुनता है? १० देख, आज तू ने अपनी आंखों से देखा है कि यहोवा ने आज गुफ़ा में तुझे मेरे हाथ सौंप दिया था; और किसी किसी ने तो मुझ से तुझे मारने को कहा था, परन्तु मुझे तुझ पर तरस आया; और मैं ने कहा, मैं अपने प्रभु पर हाथ न चलाऊंगा; क्योंकि वह यहोवा का अभिषिक्त है। ११ फिर, हे मेरे पिता, देख, अपने बागे की छोर मेरे हाथ में देख; मैं ने तेरे बागे की छोर तो काट ली, परन्तु तुझे घात न किया; इस से निश्चय करके जान ले, कि मेरे मन * में कोई बुराई वा अपराध का सोच नहीं है। और मैं ने तेरा कुछ अपराध नहीं किया, परन्तु तू मेरे प्राण लेने को मानो उसका अहेर करता रहता है। १२ यहोवा मेरा और तेरा न्याय करे, और यहोवा तुझ से मेरा पलटा ले; परन्तु मेरा हाथ तुझ पर न उठेगा। १३ प्राचीनों के नीति वचन के अनुसार दुष्टता दुष्टों से होती है; परन्तु मेरा हाथ तुझ पर न उठेगा। १४ इस्राएल का राजा किस का पीछा करने को निकला है? और किस के पीछे पड़ा है? एक मरे कुत्ते के पीछे! एक पिस्सू के पीछे! १५ इसलिये यहोवा न्यायी होकर मेरा तेरा विचार करे, और विचार करके मेरा मुकद्दमा लड़े, और न्याय करके मुझे तेरे हाथ से बचाए। १६ दाऊद शाऊल से ये बातें कही चुका था, कि शाऊल ने कहा, हे मेरे बेटे दाऊद, क्या यह तेरा बोल है? तब शाऊल चिल्लाकर रोने लगा। १७ फिर उस ने दाऊद से कहा, तू मुझ से अधिक धर्मी है; तू ने तो मेरे साथ भलाई की है, परन्तु मैं ने तेरे साथ बुराई की। १८ और तू ने आज यह प्रगट किया है, कि तू ने मेरे साथ भलाई की है, कि जब यहोवा ने मुझे तेरे हाथ में कर दिया, तब तू ने मुझे घात न किया। १९ भला! क्या कोई मनुष्य अपने शत्रु को पाकर कुशल से जाने देता है? इसलिये जो तू ने आज मेरे साथ किया है, इसका अच्छा बदला यहोवा तुझे दे। २० और अब, मुझे मालूम हुआ है कि तू निश्चय राजा हो जाएगा, और इस्राएल का राज्य तेरे हाथ में स्थिर होगा। २१ अब मुझ से यहोवा की शपथ खा, कि मैं तेरे वंश को तेरे पीछे नाश न करूंगा, और तेरे पिता के घराने में से तेरा नाम मिटा न डालूंगा। २२ तब दाऊद ने शाऊल से ऐसी ही शपथ खाई। तब शाऊल अपने घर चला गया; और दाऊद अपने जनों समेत गढ़ों में चला गया॥

२५ और शमूएल मर गया; और समस्त इस्राएलियों ने इकट्ठे होकर उसके लिये छाती पीटी, और उसके घर ही में जो रामा में था उसको मिट्टी दी। तब दाऊद उठकर पारान जंगल को चला गया॥

* मूल में—हाथ।

२ माओन में एक पुरुष रहता था जिसका माल कर्मेल में था। और वह पुरुष बहुत बड़ा था, और उसके तीन हज़ार भेड़ें, और एक हज़ार बकरियां थीं; और वह अपनी भेड़ों का ऊन कतर रहा था। ३ उस पुरुष का नाम नाबाल, और उसकी पत्नी का नाम अबीगैल था। स्त्री तो बुद्धिमान और रूपवती थी, परन्तु पुरुष कठोर, और बुरे बुरे काम करनेवाला था; वह तो कालेबवंशी था। ४ जब दाऊद ने जंगल में समाचार पाया, कि नाबाल अपनी भेड़ों का ऊन कतर रहा है; ५ तब दाऊद ने दस जवानों को वहां भेज दिया, और दाऊद ने उन जवानों से कहा, कि कर्मेल में नाबाल के पास जाकर मेरी ओर से उसका कुशलक्षेम पूछो। ६ और उस से यों कहो, कि तू चिरंजीव रहे, तेरा कल्याण हो, और तेरा घराना कल्याण से रहे, और जो कुछ तेरा है वह कल्याण से रहे। ७ मैं ने सुना है, कि जो तू ऊन कतर रहा है; तेरे चरवाहे हम लोगों के पास रहे, और न तो हम ने उनकी कुछ हानि की *, और न उनका कुछ खोया गया। ८ अपने जवानों से यह बात पूछ ले, और वे तुझ को बताएंगे। सो इन जवानों पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि हो; हम तो आनन्द के समय में आए हैं, इसलिये जो कुछ तेरे हाथ लगे वह अपने दासों और अपने बेटे दाऊद को दे। ९ ऐसी ऐसी बातें दाऊद के जवान जाकर उसके नाम से नाबाल को सुनाकर चुप रहे †। १० नाबाल ने दाऊद के जनों को उत्तर देकर उन से कहा, दाऊद कौन है? यिशै का पुत्र कौन है? आज कल बहुत से दास अपने अपने स्वामी के पास से भाग जाते हैं। ११ क्या मैं अपनी रोटी-पानी और जो पशु मैं ने अपने कतरनेवालों के लिये मारे हैं लेकर ऐसे लोगों को दे दूं, जिनको मैं नहीं जानता कि कहां के हैं? १२ तब दाऊद के जवानों ने लौटकर अपना मार्ग लिया, और लौटकर उसको ये सब बातें ज्यों की त्यों सुना दीं। १३ तब दाऊद ने अपने जनों से कहा, अपनी अपनी तलवार बान्ध लो। तब उन्हों ने अपनी अपनी तलवार बान्ध ली; और दाऊद ने भी अपनी तलवार बान्ध ली; और कोई चार सौ पुरुष दाऊद के पीछे पीछे चले, और दो सौ सामान के पास रह गए। १४ परन्तु एक सेवक ने नाबाल की पत्नी अबीगैल को बताया, कि दाऊद ने जंगल से हमारे स्वामी को आशीर्वाद देने के लिये दूत भेजे थे; और उस ने उन्हें ललकार दिया। १५ परन्तु वे मनुष्य हम से बहुत अच्छा बर्ताव रखते थे, और जब तक हम मैदान में रहते हुए उनके पास आया जाया करते थे, तब तक न तो हमारी कुछ हानि हुई *, और न हमारा कुछ खोया गया; १६ जब तक हम उनके साथ भेड़-बकरियां चराते रहे, तब तक वे रात दिन हमारी आड़ बने रहे। १७ इसलिये अब सोच विचार कर कि क्या करना चाहिए; क्योंकि उन्हों ने हमारे स्वामी की और उसके समस्त घराने की हानि ठानी होगी, वह तो ऐसा दुष्ट है कि उस से कोई बोल भी नहीं सकता। १८ तब अबीगैल ने फुर्ती से दो सौ रोटी, और दो कुप्पी दाखमधु,

* मूल में—उनको लजवाया।
† मूल में—विश्राम किया।

* मूल में—न हम लजवाए गए।

और पांच भेड़ियों का मांस, और पांच सआ * भूना हुआ अनाज, और एक सौ गुच्छे किशमिश, और अंजीरों की दो सौ टिकियां लेकर गदहों पर लदवाई। १९ और उस ने अपने जवानों से कहा, तुम मेरे आगे आगे चलो, मैं तुम्हारे पीछे पीछे आती हूं; परन्तु उस ने अपने पति नाबाल से कुछ न कहा। २० वह गदहे पर चढ़ी हुई पहाड़ की आड़ में उतरी जाती थी, और दाऊद अपने जनों समेत उसके साम्हने उतरा आता था; और वह उनको मिली। २१ दाऊद ने तो सोचा था, कि मैं ने जो जंगल में उसके सब माल की ऐसी रक्षा की कि उसका कुछ भी न खोया, यह निःसन्देह व्यर्थ हुआ; क्योंकि उस ने भलाई के बदले मुझ से बुराई ही की है। २२ यदि बिहान को उजियाला होने तक उस जन के समस्त लोगों में से एक लड़के को भी मैं जीवित छोड़ूं, तो परमेश्वर मेरे सब शत्रुओं से ऐसा ही, वरन इस से भी अधिक करे। २३ दाऊद को देख अबीगैल फुर्ती करके गदहे पर से उतर पड़ी, और दाऊद के सम्मुख मुंह के बल भूमि पर गिरकर दण्डवत् की। २४ फिर वह उसके पांव पर गिरके कहने लगी, हे मेरे प्रभु, यह अपराध मेरे ही सिर पर हो; तेरी दासी तुझ से कुछ कहना चाहती है, और तू अपनी दासी की बातों को सुन ले। २५ मेरा प्रभु उस दुष्ट नाबाल पर चित्त न लगाए; क्योंकि जैसा उसका नाम है वैसा ही वह आप है; उसका नाम तो नाबाल † है, और सचमुच उस में मूढ़ता पाई जाती है; परन्तु मुझ तेरी दासी ने अपने प्रभु के जवानों को जिन्हें तू ने भेजा था न देखा था। २६ और अब, हे मेरे प्रभु, यहोवा के जीवन की शपथ और तेरे जीवन की शपथ, कि यहोवा ने जो तुझे खून से और अपने हाथ के द्वारा अपना पलटा लेने से रोक रखा है, इसलिये अब तेरे शत्रु और मेरे प्रभु की हानि के चाहनेवाले नाबाल ही के समान ठहरें। २७ और अब यह भेंट जो तेरी दासी अपने प्रभु के पास लाई है, उन जवानों को दी जाए जो मेरे प्रभु के साथ चलते हैं। २८ अपनी दासी का अपराध क्षमा कर; क्योंकि यहोवा निश्चय मेरे प्रभु का घर बसाएगा और स्थिर करेगा, इसलिये कि मेरा प्रभु यहोवा की ओर से लड़ता है; और जन्म भर तुझ में कोई बुराई नहीं पाई जाएगी। २९ और यद्यपि एक मनुष्य तेरा पीछा करने और तेरे प्राण का ग्राहक होने को उठा है, तौभी मेरे प्रभु का प्राण तेरे परमेश्वर यहोवा की जीवनरूपी गठरी में बन्धा रहेगा, और तेरे शत्रुओं के प्राणों को वह मानो गोफ़न में रखकर फेंक देगा। ३० इसलिये जब यहोवा मेरे प्रभु के लिये यह समस्त भलाई करेगा जो उस ने तेरे विषय में कही है, और तुझे इस्राएल पर प्रधान करके ठहराएगा, ३१ तब तुझे इस कारण पछताना न होगा, वा मेरे प्रभु का हृदय पीड़ित न * होगा कि तू ने अकारण खून किया, और मेरे प्रभु ने अपना पलटा आप लिया है। फिर जब यहोवा मेरे प्रभु से भलाई करे तब अपनी दासी को स्मरण करना। ३२ दाऊद ने अबीगैल से कहा, इस्राएल का परमेश्वर

* यह विशेष नपुए का नाम है।
† अर्थात मूढ़।

* मूल में—हृदय का ठोकर खाना।

यहोवा धन्य है, जिस ने आज के दिन मुझ से भेंट करने के लिये तुझे भेजा है ! ३३ और तेरा विवेक धन्य है, और तू आप भी धन्य है, कि तू ने मुझे आज के दिन खून करने और अपना पलटा आप लेने से रोक लिया है। ३४ क्योंकि सचमुच इस्राएल का परमेश्वर यहोवा, जिस ने मुझे तेरी हानि करने से रोका है, उसके जीवन की शपथ, यदि तू फुर्ती करके मुझ से भेंट करने को न आती, तो निःसन्देह बिहान को उजियाला होने तक नाबाल का कोई लड़का भी न बचता। ३५ तब दाऊद ने उसे ग्रहण किया जो वह उसके लिये लाई थी; फिर उस से उस ने कहा, अपने घर कुशल से जा; सुन, मैं ने तेरी बात मानी है और तेरी बिनती ग्रहण कर ली है। ३६ तब अबीगैल नाबाल के पास लौट गई; और क्या देखती है, कि वह घर में राजा की सी जेवनार कर रहा है। और नाबाल का मन मगन है, और वह नशे में अति चूर हो गया है; इसलिये उस ने भोर के उजियाले होने से पहिले उस से कुछ भी * न कहा। ३७ बिहान को जब नाबाल का नशा उतर गया, तब उसकी पत्नी ने उसे कुल हाल सुना दिया, तब उसके मन का हियाव जाता रहा †, और वह पत्थर सा सुन्न हो गया। ३८ और दस दिन के पश्चात् यहोवा ने नाबाल को ऐसा मारा, कि वह मर गया। ३९ नाबाल के मरने का हाल सुनकर दाऊद ने कहा, धन्य है यहोवा जिस ने नाबाल के साथ मेरी नामधराई का मुकद्दमा लड़कर अपने दास को बुराई से रोक रखा; और यहोवा ने नाबाल की बुराई को उसी के सिर पर लाद दिया है। तब दाऊद ने लोगों को अबीगैल के पास इसलिये भेजा कि वे उस से उसकी पत्नी होने की बातचीत करें। ४० तो जब दाऊद के सेवक कर्मेल को अबीगैल के पास पहुंचे, तब उस से कहने लगे, कि दाऊद ने हमें तेरे पास इसलिये भेजा है कि तू उसकी पत्नी बने। ४१ तब वह उठी, और मुंह के बल भूमि पर गिर दण्डवत् करके कहा, तेरी दासी अपने प्रभु के सेवकों के चरण धोने के लिये लौंडी बने। ४२ तब अबीगैल फुर्ती से उठी, और गदहे पर चढ़ी, और उसकी पांच सहेलियां उसके पीछे पीछे हो लीं; और वह दाऊद के दूतों के पीछे पीछे गई, और उसकी पत्नी हो गई। ४३ और दाऊद ने यिज्रेल नगर की अहिनोअम को भी ब्याह लिया, तो वे दोनों उसकी पत्नियां हुई। ४४ परन्तु शाऊल ने अपनी बेटी दाऊद की पत्नी मीकल को लैश के पुत्र गल्लीमवासी पलती को दे दिया था॥

२६ फिर जीपी लोग गिबा में शाऊल के पास जाकर कहने लगे, क्या दाऊद उस हकीला नाम पहाड़ी पर जो यशीमोन के साम्हने है छिपा नहीं रहता ? २ तब शाऊल उठकर इस्राएल के तीन हज़ार छांटे हुए योद्धा संग लिए हुए गया कि दाऊद को जीप के जंगल में खोजे। ३ और शाऊल ने अपनी छावनी मार्ग के पास हकीला नाम पहाड़ी पर जो यशीमोन के साम्हने है डाली। परन्तु दाऊद जंगल में रहा; और उस ने जान लिया, कि शाऊल मेरा पीछा करने को जंगल में

* मूल में—छोटा और बड़ा कुछ।

† मूल में—उसका हृदय उसके अन्तर में मर गया।

आया है; ४ तब दाऊद ने भेदियों को भेजकर निश्चय कर लिया कि शाऊल सचमुच आ गया है। ५ तब दाऊद उठकर उस स्थान पर गया जहां शाऊल पड़ा था; और दाऊद ने उस स्थान को देखा जहां शाऊल अपने सेनापति नेर के पुत्र अब्नेर समेत पड़ा था; शाऊल तो गाड़ियों की आड़ में पड़ा था, और उसके लोग उसके चारों ओर डेरे डाले हुए थे। ६ तब दाऊद ने हित्ती अहीमेलेक और जरूयाह के पुत्र योआब के भाई अबीशै से कहा, मेरे साथ उस छावनी में शाऊल के पास कौन चलेगा? अबीशै ने कहा, तेरे साथ मैं चलूंगा। ७ सो दाऊद और अबीशै रातों रात उन लोगों के पास गए, और क्या देखते हैं, कि शाऊल गाड़ियों की आड़ में पड़ा सो रहा है, और उसका भाला उसके सिरहाने भूमि में गड़ा है; और अब्नेर और योद्धा लोग उसके चारों ओर पड़े हुए हैं। ८ तब अबीशै ने दाऊद से कहा, परमेश्वर ने आज तेरे शत्रु को तेरे हाथ में कर दिया है; इसलिये अब मैं उसको एक बार ऐसा मारूं कि भाला उसे बेधता हुआ भूमि में धंस जाए, और मुझ को उसे दूसरी बार मारना न पड़ेगा। ९ दाऊद ने अबीशै से कहा, उसे नाश न कर; क्योंकि यहोवा के अभिषिक्त पर हाथ चलाकर कौन निर्दोष ठहर सकता है? १० फिर दाऊद ने कहा, यहोवा के जीवन की शपथ यहोवा ही उसको मारेगा; वा वह अपनी मृत्यु से मरेगा *; वा वह लड़ाई में जाकर मर जाएगा। ११ यहोवा न करे कि मैं अपना हाथ यहोवा के अभिषिक्त पर बढ़ाऊं; अब उसके सिरहाने से भाला और पानी की झारी उठा ले, और हम यहां से चले जाएं। १२ तब दाऊद ने भाले और पानी की झारी को शाऊल के सिरहाने से उठा लिया; और वे चले गए। और किसी ने इसे न देखा, और न जाना, और न कोई जागा; क्योंकि वे सब इस कारण सोए हुए थे, कि यहोवा की ओर से उन में भारी नींद समा गई थी। १३ तब दाऊद परली ओर जाकर दूर के पहाड़ की चोटी पर खड़ा हुआ, और दोनों के बीच बड़ा अन्तर था; १४ और दाऊद ने उन लोगों को, और नेर के पुत्र अब्नेर को पुकार के कहा, हे अब्नेर, क्या तू नहीं सुनता? अब्नेर ने उत्तर देकर कहा, तू कौन है जो राजा को पुकारता है? १५ दाऊद ने अब्नेर से कहा, क्या तू पुरुष नहीं है? इस्राएल में तेरे तुल्य कौन है? तू ने अपने स्वामी राजा की चौकसी क्यों नहीं की? एक जन तो तेरे स्वामी राजा को नाश करने घुसा था। १६ जो काम तू ने किया है वह अच्छा नहीं। यहोवा के जीवन की शपथ तुम लोग मारे जाने के योग्य हो, क्योंकि तुम ने अपने स्वामी, यहोवा के अभिषिक्त की चौकसी नहीं की। और अब देख, राजा का भाला और पानी की झारी जो उसके सिरहाने थी वे कहां हैं? १७ तब शाऊल ने दाऊद का बोल पहिचानकर कहा, हे मेरे बेटे दाऊद, क्या यह तेरा बोल है? दाऊद ने कहा, हां, मेरे प्रभु राजा, मेरा ही बोल है। १८ फिर उस ने कहा, मेरा प्रभु अपने दास का पीछा क्यों करता है? मैं ने क्या किया है? और मुझ से कौन सी बुराई हुई

* मूल में—उसका दिन आएगा और वह मरेगा।

है * ? १६ अब मेरा प्रभु राजा, अपने दास की बातें सुन ले। यदि यहोवा ने तुझे मेरे विरुद्ध उसकाया हो, तब तो वह भेंट ग्रहण करे † ; परन्तु यदि आदमियों ने ऐसा किया हो, तो वे यहोवा की ओर से शापित हों, क्योंकि उन्हों ने अब मुझे निकाल दिया कि मैं यहोवा के निज भाग में न रहूं, और उन्हों ने कहा है, कि जा, पराए देवताओं की उपासना कर। २० इसलिये अब मेरा लोहू यहोवा की आंखों की ओट में भूमि पर न बहने ‡ पाए; इस्राएल का राजा तो एक पिस्सू ढूंढ़ने आया है, जैसा कि कोई पहाड़ों पर तीतर का अहेर करे। २१ शाऊल ने कहा, मैं ने पाप किया है; हे मेरे बेटे दाऊद, लौट आ; मेरा प्राण आज के दिन तेरी दृष्टि में अनमोल ठहरा, इस कारण मैं फिर तेरी कुछ हानि न करूंगा; सुन, मैं ने मूर्खता की, और मुझ से बड़ी भूल हुई है। २२ दाऊद ने उत्तर देकर कहा, हे राजा, भाले को देख, कोई जवान इधर आकर इसे ले जाए। २३ यहोवा एक एक को अपने अपने धर्म और सच्चाई का फल देगा; देख, आज यहोवा ने तुझ को मेरे हाथ में कर दिया था, परन्तु मैं ने यहोवा के अभिषिक्त पर अपना हाथ बढ़ाना उचित न समझा। २४ इसलिये जैसे तेरे प्राण आज मेरी दृष्टि में प्रिय § ठहरे, वैसे ही मेरे प्राण भी यहोवा की दृष्टि में प्रिय ठहरे, और वह मुझे समस्त विपत्तियों से छुड़ाए। २५ शाऊल ने दाऊद से कहा, हे मेरे बेटे दाऊद, तू धन्य है! तू बड़े बड़े काम करेगा और तेरे काम सुफल होंगे। तब दाऊद ने अपना मार्ग लिया, और शाऊल भी अपने स्थान को लौट गया॥

* मूल में—मेरे हाथ में क्या बुराई है।
† मूल में—सूंघे।
‡ मूल में—गिरने।
§ मूल में—बड़ा।

(दाऊद का पलिश्तियों के यहां शरण लेना और शाऊल और योनातान का मारा जाना)

२७ और दाऊद सोचने लगा, अब मैं किसी न किसी दिन शाऊल के हाथ से नाश हो जाऊंगा; अब मेरे लिये उत्तम यह है कि मैं पलिश्तियों के देश में भाग जाऊं; तब शाऊल मेरे विषय निराश होगा, और मुझे इस्राएल के देश के किसी भाग में फिर न ढूंढ़ेगा, यों मैं उसके हाथ से बच निकलूंगा। २ तब दाऊद अपने छः सौ संगी पुरुषों को लेकर चला गया, और गत के राजा माओक के पुत्र आकीश के पास गया। ३ और दाऊद और उसके जन अपने अपने परिवार समेत गत में आकीश के पास रहने लगे। दाऊद तो अपनी दो स्त्रियों के साथ, अर्थात् यिज्रेली अहीनोअम, और नाबाल की स्त्री कर्मेली अबीगैल के साथ रहा। ४ जब शाऊल को यह समाचार मिला कि दाऊद गत को भाग गया है, तब उस ने उसे फिर कभी न ढूंढ़ा॥

५ दाऊद ने आकीश से कहा, यदि मुझ पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि हो, तो देश की किसी बस्ती में मुझे स्थान दिला दे जहां मैं रहूं; तेरा दास तेरे साथ राजधानी में क्यों रहे? ६ तब आकीश ने उसे उसी दिन सिकलग बस्ती दी; इस कारण से सिकलग आज के दिन तक यहूदा के राजाओं का बना है॥

७ पलिश्तियों के देश में रहते रहते दाऊद को एक वर्ष चार महीने बीत गए।

८ और दाऊद ने अपने जनों समेत जाकर गशूरियों, गिर्जियों, और अमालेकियों पर चढ़ाई की; ये जातियां तो प्राचीन काल से उस देश में रहती थीं जो शूर के मार्ग में मिस्र देश तक है। ९ दाऊद ने उस देश को नाश किया, और स्त्री पुरुष किसी को जीवित न छोड़ा, और भेड़-बकरी, गाय-बैल, गदहे, ऊंट, और वस्त्र लेकर लौटा, और आकीश के पास गया। १० आकीश ने पूछा, आज तुम ने चढ़ाई तो नहीं की? दाऊद ने कहा, हां, यहूदा यरहमेलियों और केनियों की दक्खिन दिशा में। ११ दाऊद ने स्त्री पुरुष किसी को जीवित न छोड़ा कि उन्हें गत में पहुंचाए; उस ने सोचा था, कि ऐसा न हो कि वे हमारा काम बताकर यह कहें, कि दाऊद ने ऐसा ऐसा किया है। वरन जब से वह पलिश्तियों के देश में रहता है, तब से उसका काम ऐसा ही है। १२ तब आकीश ने दाऊद की बात सच मानकर कहा, यह अपने इस्राएली लोगों की दृष्टि में अति घृणित हुआ है; इसलिये यह सदा के लिये मेरा दास बना रहेगा॥

२८ उन दिनों में पलिश्तियों ने इस्राएल से लड़ने के लिये अपनी सेना इकट्ठी की। और आकीश ने दाऊद से कहा, निश्चय जान कि तुझे अपने जनों समेत मेरे साथ सेना में जाना होगा। २ दाऊद ने आकीश से कहा, इस कारण तू जान लेगा कि तेरा दास क्या करेगा। आकीश ने दाऊद से कहा, इस कारण मैं तुझे अपने सिर का रक्षक सदा के लिये ठहराऊंगा॥

३ शमूएल तो मर गया था, और समस्त इस्राएलियों ने उसके विषय छाती पीटी, और उसको उसके नगर रामा में मिट्टी दी थी। और शाऊल ने ओझों और भूतसिद्धि करनेवालों को देश से निकाल दिया था॥

४ जब पलिश्ती इकट्ठे हुए, और शूनेम में छावनी डाली, तो शाऊल ने सब इस्राएलियों को इकट्ठा किया, और उन्हों ने गिलबो में छावनी डाली। ५ पलिश्तियों की सेना को देखकर शाऊल डर गया, और उसका मन अत्यन्त भयभीत हो कांप उठा। ६ और जब शाऊल ने यहोवा से पूछा, तब यहोवा ने न तो स्वप्न के द्वारा उसे उत्तर दिया, और न ऊरीम के द्वारा, और न भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा। ७ तब शाऊल ने अपने कर्मचारियों से कहा, मेरे लिये किसी भूतसिद्धि करनेवाली को ढूंढो, कि मैं उसके पास जाकर उस से पूछूं। उसके कर्मचारियों ने उस से कहा, एन्दोर में एक भूतसिद्धि करनेवाली रहती है। ८ तब शाऊल ने अपना भेष बदला, और दूसरे कपड़े पहिनकर, दो मनुष्य संग लेकर, रातोंरात चलकर उस स्त्री के पास गया; और कहा, अपने सिद्धि भूत से मेरे लिये भावी कहलवा, और जिसका नाम मैं लूंगा उसे बुलवा * दे। ९ स्त्री ने उस से कहा, तू जानता है कि शाऊल ने क्या किया है, कि उस ने ओझों और भूतसिद्धि करनेवालों को देश से नाश किया है। फिर तू मेरे प्राण के लिये क्यों फंदा लगाता है कि मुझे मरवा डाले। १० शाऊल ने यहोवा की शपथ खाकर उस से कहा, यहोवा के जीवन की शपथ, इस बात के कारण तुझे दण्ड न मिलेगा।

* मूल में—चढ़ा।

११ स्त्री ने पूछा, मैं तेरे लिये किस को बुलाऊं*? उस ने कहा, शमूएल को मेरे लिये बुला। १२ जब स्त्री ने शमूएल को देखा, तब ऊंचे शब्द से चिल्लाई; और शाऊल से कहा, तू ने मुझे क्यों धोखा दिया? तू तो शाऊल है। १३ राजा ने उस से कहा, मत डर; तुझे क्या देख पड़ता है? स्त्री ने शाऊल से कहा, मुझे एक देवता पृथ्वी में से चढ़ता हुआ दिखाई पड़ता है। १४ उस ने उस से पूछा, उसका कैसा रूप है? उस ने कहा, एक बूढ़ा पुरुष बागा ओढ़े हुए चढ़ा आता है। तब शाऊल ने निश्चय जानकर कि वह शमूएल है, औंधे मुंह भूमि पर गिरके दण्डवत् किया। १५ शमूएल ने शाऊल से पूछा, तू ने मुझे ऊपर बुलवाकर क्यों सताया है? शाऊल ने कहा, मैं बड़े संकट में पड़ा हूं; क्योंकि पलिश्ती मेरे साथ लड़ रहे हैं और परमेश्वर ने मुझे छोड़ दिया, और अब मुझे न तो भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा उत्तर देता है, और न स्वप्नों के; इसलिये मैं ने तुझे बुलाया कि तू मुझे जता दे कि मैं क्या करूं। १६ शमूएल ने कहा, जब यहोवा तुझे छोड़कर तेरा शत्रु बन गया, तब तू मुझ से क्यों पूछता है? १७ यहोवा ने तो जैसे मुझ से कहलवाया था वैसा ही उस ने व्यवहार किया है; अर्थात् उस ने तेरे हाथ से राज्य छीनकर तेरे पड़ोसी दाऊद को दे दिया है। १८ तू ने जो यहोवा की बात न मानी, और न अमालेकियों को उसके भड़के हुए कोप के अनुसार दण्ड दिया था, इस कारण यहोवा ने तुझ से आज ऐसा बर्ताव किया। १९ फिर यहोवा तुझ समेत इस्राएलियों को पलिश्तियों के हाथ में कर देगा; और तू अपने बेटों समेत कल मेरे साथ होगा; और इस्राएली सेना को भी यहोवा पलिश्तियों के हाथ में कर देगा। २० तब शाऊल तुरन्त मुंह के बल भूमि पर गिर पड़ा, और शमूएल की बातों के कारण अत्यन्त डर गया; उस ने पूरे दिन और रात भोजन न किया था, इस से उस में बल कुछ भी न रहा। २१ तब वह स्त्री शाऊल के पास गई, और उसको अति व्याकुल देखकर उस से कहा, सुन, तेरी दासी ने तो तेरी बात मानी; और मैं ने अपने प्राण पर खेलकर तेरे वचनों को सुन लिया जो तू ने मुझ से कहा। २२ तो अब तू भी अपनी दासी की बात मान; और मैं तेरे साम्हने एक टुकड़ा रोटी रखूं; तू उसे खा, कि जब तू अपना मार्ग ले तब तुझे बल आ जाए। २३ उस ने इनकार करके कहा, मैं न खाऊंगा। परन्तु उसके सेवकों और स्त्री ने मिलकर यहां तक उसे दबाया कि वह उनकी बात मानकर, भूमि पर से उठकर खाट पर बैठ गया। २४ स्त्री के घर में तो एक तैयार किया हुआ बछड़ा था, उस ने फुर्ती करके उसे मारा, फिर आटा लेकर गूंधा, और अखमीरी रोटी बनाकर २५ शाऊल और उसके सेवकों के आगे लाई; और उन्हों ने खाया। तब वे उठकर उसी रात चले गए॥

२९ पलिश्तियों ने अपनी समस्त सेना को अपेक में इकट्ठा किया; और इस्राएली यिज्रेल के निकट के सोते के पास डेरे डाले हुए थे। २ तब पलिश्तियों के सरदार अपने अपने सैकड़ों और हजारों

* मूल में—चढ़ाऊं।

समेत आगे बढ़ गए, और सेना के पीछे पीछे आकीश के साथ दाऊद भी अपने जनों समेत बढ़ गया। ३ तब पलिश्ती हाकिमों ने पूछा, उन इब्रियों का यहां क्या काम है? आकीश ने पलिश्ती सरदारों से कहा, क्या वह इस्राएल के राजा शाऊल का कर्मचारी दाऊद नहीं है, जो क्या जाने कितने दिनों से वरन वर्षों से मेरे साथ रहता है, और जब से वह भाग आया, तब से आज तक मैंने उस में कोई दोष नहीं पाया। ४ तब पलिश्ती हाकिम उस से क्रोधित हुए; और उस से कहा, उस पुरुष को लौटा दे, कि वह उस स्थान पर जाए जो तू ने उसके लिये ठहराया है; वह हमारे संग लड़ाई में न आने पाएगा, कहीं ऐसा न हो कि वह लड़ाई में हमारा विरोधी बन जाए। फिर वह अपने स्वामी से किस रीति से मेल करे? क्या लोगों के सिर कटवाकर न करेगा? ५ क्या यह वही दाऊद नहीं है, जिसके विषय में लोग नाचते और गाते हुए एक दूसरे से कहते थे, कि

शाऊल ने हज़ारों को,
पर दाऊद ने लाखों को मारा है?

६ तब आकीश ने दाऊद को बुलाकर उस से कहा, यहोवा के जीवन की शपथ तू तो सीधा है, और सेना में तेरा मेरे संग आना जाना भी मुझे भावता है; क्योंकि जब से तू मेरे पास आया तब से लेकर आज तक मैं ने तो तुझ में कोई बुराई नहीं पाई। तौभी सरदार लोग तुझे नहीं चाहते। ७ इसलिये अब तू कुशल से लौट जा; ऐसा न हो कि पलिश्ती सरदार तुझ से अप्रसन्न हों। ८ दाऊद ने आकीश से कहा, मैं ने क्या किया है? और जब से मैं तेरे साम्हने आया तब से आज तक तू ने अपने दास में क्या पाया है कि मैं अपने प्रभु राजा के शत्रुओं से लड़ने न पाऊं? ९ आकीश ने दाऊद को उत्तर देकर कहा, हां, यह मुझे मालूम है, तू मेरी दृष्टि में तो परमेश्वर के दूत के समान अच्छा लगता है; तौभी पलिश्ती हाकिमों ने कहा है, कि वह हमारे संग लड़ाई में न जाने पाएगा। १० इसलिये अब तू अपने प्रभु के सेवकों को लेकर जो तेरे साथ आए हैं बिहान को तड़के उठना; और तुम बिहान को तड़के उठकर उजियाला होते ही चले जाना। ११ इसलिये बिहान को दाऊद अपने जनों समेत तड़के उठकर पलिश्तियों के देश को लौट गया। और पलिश्ती यिज्रेल को चढ़ गए॥

३० तीसरे दिन जब दाऊद अपने जनों समेत सिकलग पहुंचा, तब उन्हों ने क्या देखा, कि अमालेकियों ने दक्खिन देश और सिकलग पर चढ़ाई की। और सिकलग को मार के फूंक दिया, २ और उस में की स्त्री आदि छोटे बड़े जितने थे, सब को बन्धुआई में ले गए; उन्हों ने किसी को मार तो नहीं डाला, परन्तु सभों को लेकर अपना मार्ग लिया। ३ इसलिये जब दाऊद अपने जनों समेत उस नगर में पहुंचा, तब नगर तो जला पड़ा था, और स्त्रियां और बेटे-बेटियां बन्धुआई में चली गई थीं। ४ तब दाऊद और वे लोग जो उसके साथ थे चिल्लाकर इतना रोए, कि फिर उन में रोने की शक्ति न रही। ५ और दाऊद की दो स्त्रियां, यिज्रेली अहीनोअम, और कर्मेली नाबाल की स्त्री अबीगैल, बन्धुआई में गई थीं। ६ और दाऊद बड़े संकट में पड़ा; क्योंकि

लोग अपने बेटे-बेटियों के कारण बहुत शोकित होकर उस पर पत्थरवाह करने की चर्चा कर रहे थे। परन्तु दाऊद ने अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण करके * हियाव बान्धा ॥

७ तब दाऊद ने अहीमेलेक के पुत्र एब्यातार याजक से कहा, एपोद को मेरे पास ला। तब एब्यातार एपोद को दाऊद के पास ले आया। ८ और दाऊद ने यहोवा से पूछा, क्या मैं इस दल का पीछा करूं? क्या उसको जा पकड़ूंगा? उस ने उस से कहा, पीछा कर; क्योंकि तू निश्चय उसको पकड़ेगा, और निःसन्देह सब कुछ छुड़ा लाएगा; ९ तब दाऊद अपने छः सौ साथी जनों को लेकर बसोर नाम नाले तक पहुंचा; वहां कुछ लोग छोड़े जाकर रह गए। १० दाऊद तो चार सौ पुरुषों समेत पीछा किए चला गया; परन्तु दो सौ जो ऐसे थक गए थे, कि बसोर नाले के पार न जा सके, वहीं रहे। ११ उनको एक मिस्री पुरुष मैदान में मिला, उन्हों ने उसे दाऊद के पास ले जाकर रोटी दी; और उस ने उसे खाया, तब उसे पानी पिलाया. १२ फिर उन्हों ने उसको अंजीर की टिकिया का एक टुकड़ा और दो गुच्छे किशमिश दिए। और जब उस ने खाया, तब उसके जी में जी आया; उस ने तीन दिन और तीन रात से न तो रोटी खाई थी और न पानी पिया था। १३ तब दाऊद ने उस से पूछा, तू किस का जन है? और कहां का है? उस ने कहा, मैं तो मिस्री जवान और एक अमालेकी मनुष्य का दास हूं; और तीन दिन हुए कि मैं बीमार पड़ा, और मेरा स्वामी मुझे छोड़ गया। १४ हम लोगों ने करेतियों की दक्खिन दिशा में, और यहूदा के देश में, और कालेब की दक्खिन दिशा में चढ़ाई की; और सिकलग को आग लगाकर फूंक दिया था। १५ दाऊद ने उस से पूछा, क्या तू मुझे उस दल के पास पहुंचा देगा? उस ने कहा, मुझ से परमेश्वर की यह शपथ खा, कि मैं तुझे न तो प्राण से मारूंगा, और न तेरे स्वामी के हाथ कर दूंगा, तब मैं तुझे उस दल के पास पहुंचा दूंगा। १६ जब उस ने उसे पहुंचाया, तब देखने में आया कि वे सब भूमि पर छिटके हुए खाते पीते, और उस बड़ी लूट के कारण, जो वे पलिश्तियों के देश और यहूदा देश से लाए थे, नाच रहे हैं। १७ इसलिये दाऊद उन्हें रात के पहिले पहर से लेकर दूसरे दिन की सांझ तक मारता रहा; यहां तक कि चार सौ जवान को छोड़, जो ऊंटों पर चढ़कर भाग गए, उन में से एक भी मनुष्य न बचा। १८ और जो कुछ अमालेकी ले गए थे वह सब दाऊद ने छुड़ाया; और दाऊद ने अपनी दोनों स्त्रियों को भी छुड़ा लिया। १९ वरन उनके क्या छोटे, क्या बड़े, क्या बेटे, क्या बेटियां, क्या लूट का माल, सब कुछ जो अमालेकी ले गए थे, उस में से कोई वस्तु न रही जो उनको न मिली हो; क्योंकि दाऊद सब का सब लौटा लाया। २० और दाऊद ने सब भेड़-बकरियां, और गाय-बैल भी लूट लिए; और इन्हें लोग यह कहते हुए अपने जानवरों के आगे हांकते गए, कि यह दाऊद की लूट है। २१ तब दाऊद उन दो सौ पुरुषों के पास आया, जो

* मूल में—यहोवा में।

ऐसे थक गए थे कि दाऊद के पीछे पीछे न जा सके थे, और बसोर नाले के पास छोड़ दिए गए थे; और वे दाऊद से और उसके संग के लोगों से मिलने को चले; और दाऊद ने उनके पास पहुंचकर उनका कुशल क्षेम पूछा। २२ तब उन लोगों में से जो दाऊद के संग गए थे सब दुष्ट और ओछे लोगों ने कहा, ये लोग हमारे साथ नहीं चले थे, इस कारण हम उन्हें अपने छुड़ाए हुए लूट के माल में से कुछ न देंगे, केवल एक एक मनुष्य को उसकी स्त्री और बाल बच्चे देंगे, कि वे उन्हें लेकर चले जाएं। २३ परन्तु दाऊद ने कहा, हे मेरे भाइयो, तुम उस माल के साथ ऐसा न करने पाओगे जिसे यहोवा ने हमें दिया है; और उसने हमारी रक्षा की, और उस दल को जिस ने हमारे ऊपर चढ़ाई की थी हमारे हाथ में कर दिया है। २४ और इस विषय में तुम्हारी कौन सुनेगा? लड़ाई में जानेवाले का जैसा भाग हो, सामान के पास बैठे हुए का भी वैसा ही भाग होगा; दोनों एक ही समान भाग पाएंगे। २५ और दाऊद ने इस्राएलियों के लिये ऐसी ही विधि और नियम ठहराया, और वह उस दिन से लेकर आगे को वरन आज लों बना है।

२६ सिकलग में पहुंचकर दाऊद ने यहूदी पुरनियों के पास जो उसके मित्र थे लूट के माल में से कुछ कुछ भेजा, और यह कहलाया, कि यहोवा के शत्रुओं से ली हुई लूट में से तुम्हारे लिये यह भेंट है। २७ अर्थात् बेतेल के दक्खिन देश के रामोत, यत्तीर, २८ अरोएर, सिपमोत, एश्तमो, २९ राकाल, यरहमेलियों के नगरों, केनियों के नगरों, ३० होर्मा, कोराशान, अताक, ३१ हेब्रोन आदि जितने स्थानों में दाऊद अपने जनों समेत फिरा करता था, उन सब के पुरनियों के पास उसने कुछ कुछ भेजा॥

३१ पलिश्ती तो इस्राएलियों से लड़े; और इस्राएली पुरुष पलिश्तियों के साम्हने से भागे, और गिलबो नाम पहाड़ पर मारे गए। २ और पलिश्ती शाऊल और उसके पुत्रों के पीछे लगे रहे; और पलिश्तियों ने शाऊल के पुत्र योनातन, अबीनादाब, और मल्कीश को मार डाला। ३ और शाऊल के साथ घमासान युद्ध हो रहा था, और धनुर्धारियों ने उसे जा लिया, और वह उनके कारण अत्यन्त व्याकुल हो गया। ४ तब शाऊल ने अपने हथियार ढोनेवाले से कहा, अपनी तलवार खींचकर मुझे भोंक दे, ऐसा न हो कि वे खतनारहित लोग आकर मुझे भोंक दें, और मेरी ठट्ठा करें। परन्तु उसके हथियार ढोनेवाले ने अत्यन्त भय खाकर ऐसा करने से इन्कार किया। तब शाऊल अपनी तलवार खड़ी करके उस पर गिर पड़ा। ५ यह देखकर कि शाऊल मर गया, उसका हथियार ढोनेवाला भी अपनी तलवार पर आप गिरकर उसके साथ मर गया। ६ यों शाऊल, और उसके तीनों पुत्र, और उसका हथियार ढोनेवाला, और उसके समस्त जन उसी दिन एक संग मर गए। ७ यह देखकर कि इस्राएली पुरुष भाग गए, और शाऊल और उसके पुत्र मर गए, उस तराई की परली ओर वाले और यरदन के पार रहनेवाले भी इस्राएली मनुष्य अपने अपने नगरों को छोड़कर भाग गए; और पलिश्ती आकर उन में रहने लगे॥

८ दूसरे दिन जब पलिश्ती मारे हुओं के माल को लूटने आए, तब उनको शाऊल और उसके तीनों पुत्र गिलबो पहाड़ पर पड़े हुए मिले। ९ तब उन्हों ने शाऊल का सिर काटा, और हथियार लूट लिए, और पलिश्तियों के देश के सब स्थानों में दूतों को इसलिये भेजा, कि उनके देवालयों और साधारण लोगों में यह शुभ समाचार देते जाएं। १० तब उन्हों ने उसके हथियार तो आश्तोरेत नाम देवियों के मन्दिर में रखे, और उसकी लोथ बेतशान की शहरपनाह में जड़ दी। ११ जब गिलादवाले याबेश के निवासियों ने सुना कि पलिश्तियों ने शाऊल से क्या क्या किया है, १२ तब सब शूरवीर चले, और रातोंरात जाकर शाऊल और उसके पुत्रों की लोथें बेतशान की शहरपनाह पर से याबेश में ले आए, और वहीं फूंक दीं। १३ तब उन्हों ने उनकी हड्डियां लेकर याबेश के झाऊ के पेड़ के नीचे गाड़ दीं, और सात दिन तक उपवास किया॥

दूसरा शमूएल

(दाऊद का शाऊल के खून का दण्ड देना)

१ शाऊल के मरने के बाद, जब दाऊद अमालेकियों को मारकर लौटा, और दाऊद को सिकलग में रहते हुए दो दिन हो गए, २ तब तीसरे दिन ऐसा हुआ कि छावनी में से शाऊल के पास से एक पुरुष कपड़े फाड़े सिर पर धूलि डाले हुए आया। और जब वह दाऊद के पास पहुंचा, तब भूमि पर गिरा और दण्डवत् किया। ३ दाऊद ने उस से पूछा, तू कहां से आया है? उस ने उस से कहा, मैं इस्राएली छावनी में से बचकर आया हूं। ४ दाऊद ने उस से पूछा, वहां क्या बात हुई? मुझे बता। उस ने कहा, यह, कि लोग रणभूमि छोड़कर भाग गए, और बहुत लोग मारे गए; और शाऊल और उसका पुत्र योनातन भी मारे गए हैं। ५ दाऊद ने उस समाचार देनेवाले जवान से पूछा, कि तू कैसे जानता है कि शाऊल और उसका पुत्र योनातन मर गए? ६ समाचार देनेवाले जवान ने कहा, संयोग से मैं गिलबो पहाड़ पर था; तो क्या देखा, कि शाऊल अपने भाले की टेक लगाए हुए है; फिर मैं ने यह भी देखा कि उसका पीछा किए हुए रथ और सवार बड़े वेग से दौड़े आ रहे हैं। ७ उस ने पीछे फिरकर मुझे देखा, और मुझे पुकारा। मैं ने कहा, क्या आज्ञा? ८ उस ने मुझ से पूछा, तू कौन है? मैं ने उस से कहा, मैं तो अमालेकी हूं। ९ उस ने मुझ से कहा, मेरे पास * खड़ा होकर मुझे मार डाल;

* वा मुझ पर।

क्योंकि मेरा सिर तो घूमा जाता है, परन्तु प्राण नहीं निकलता *। १० तब मैं ने यह निश्चय जान लिया, कि वह गिर जाने के पश्चात् नहीं बच सकता, उसके पास † खड़े होकर उसे मार डाला; और मैं उसके सिर का मुकुट और उसके हाथ का कंगन लेकर यहां अपने प्रभु के पास आया हूं। ११ तब दाऊद ने अपने कपड़े पकड़कर फाड़े; और जितने पुरुष उसके संग थे उन्हों ने भी वैसा ही किया; १२ और वे शाऊल, और उसके पुत्र योनातन, और यहोवा की प्रजा, और इस्राएल के घराने के लिये छाती पीटने और रोने लगे, और सांझ तक कुछ न खाया, इस कारण कि वे तलवार से मारे गए थे। १३ फिर दाऊद ने उस समाचार देनेवाले जवान से पूछा, तू कहां का है? उस ने कहा, मैं तो परदेसी का बेटा अर्थात् अमालेकी हूं। १४ दाऊद ने उस से कहा, तू यहोवा के अभिषिक्त को नाश करने के लिये हाथ बढ़ाने से क्यों नहीं डरा? १५ तब दाऊद ने एक जवान को बुलाकर कहा, निकट जाकर उस पर प्रहार कर। तब उस ने उसे ऐसा मारा कि वह मर गया। १६ और दाऊद ने उस से कहा, तेरा खून तेरे ही सिर पर पड़े; क्योंकि तू ने यह कहकर कि मैं ही ने यहोवा के अभिषिक्त को मार डाला, अपने मुंह से अपने ही विरुद्ध साक्षी दी है॥

(शाऊल और योनातन के लिये दाऊद का बनाया हुआ विलापगीत)

१७ तब दाऊद ने शाऊल और उसके पुत्र योनातन के विषय यह विलापगीत बनाया, १८ और यहूदियों को यह धनुष नाम गीत सिखाने की आज्ञा दी; यह याशार नाम पुस्तक में लिखा हुआ है:

१९ हे इस्राएल, तेरा शिरोमणि तेरे ऊंचे स्थान पर मारा गया॥
हाय, शूरवीर क्योंकर गिर पड़े हैं!
२० गत में यह न बताओ,
और न अश्कलोन की सड़कों में प्रचार करना;
न हो कि पलिश्ती स्त्रियां आनन्दित हों,
न हो कि खतनारहित लोगों की बेटियां गर्व करने लगें॥
२१ हे गिलबो पहाड़ो,
तुम पर न ओस पड़े, और न वर्षा हो, और न भेंट के योग्य उपजवाले खेत पाए जाएं!
क्योंकि वहां शूरवीरों की ढालें अशुद्ध हो गईं,
और शाऊल की ढाल बिना तेल लगाए रह गई॥
२२ जूझे हुओं के लोहू बहाने से,
और शूरवीरों की चर्बी खाने से,
योनातन का धनुष लौट न जाता था,
और न शाऊल की तलवार छूछी फिर आती थी॥
२३ शाऊल और योनातन जीवनकाल में तो प्रिय और मनभाऊ थे,
और अपनी मृत्यु के समय अलग न हुए;
वे उकाब से भी वेग चलनेवाले,
और सिंह से भी अधिक पराक्रमी थे॥

---

* मूल में—मेरा प्राण मुझ में अब तक है
† वा उस पर।

२४ हे इस्राएली स्त्रियो, शाऊल के लिये रोग्रो,
वह तो तुम्हें लाल रंग के वस्त्र पहिनाकर सुख देता,
और तुम्हारे वस्त्रों के ऊपर सोने के गहने पहिनाता था।।
२५ हाय, युद्ध के बीच शूरवीर कैसे काम आए!
हे योनातन, हे ऊंचे स्थानों पर जूझे हुए,
२६ हे मेरे भाई योनातन, मैं तेरे कारण दु:खित हूं;
तू मुझे बहुत मनभाऊ जान पड़ता था;
तेरा प्रेम मुझ पर अद्भुत,
वरन स्त्रियों के प्रेम से भी बढ़कर था।।
२७ हाय, शूरवीर क्योंकर गिर गए,
और युद्ध के हथियार कैसे नाश हो गए हैं!

(दाऊद के हेब्रोन में राज्य करने का वृत्तान्त)

२ इसके बाद दाऊद ने यहोवा से पूछा, कि क्या मैं यहूदा के किसी नगर में जाऊं? यहोवा ने उस से कहा, हां, जा। दाऊद ने फिर पूछा, किस नगर में जाऊं? उस ने कहा, हेब्रोन में। २ तब दाऊद यिज्रेली अहीनोअम, और कर्मेली नाबाल की स्त्री अबीगैल नाम, अपनी दोनों पत्नियों समेत वहां गया। ३ और दाऊद अपने साथियों को भी एक एक के घराने समेत वहां ले गया; और वे हेब्रोन के गांवों में रहने लगे। ४ और यहूदी लोग गए, और वहां दाऊद का अभिषेक किया कि वह यहूदा के घराने का राजा हो।।

५ और दाऊद को यह समाचार मिला, कि जिन्हों ने शाऊल को मिट्टी दी वे गिलाद के याबेश नगर के लोग हैं। तब दाऊद ने दूतों से गिलाद के याबेश के लोगों के पास यह कहला भेजा, कि यहोवा की आशिष तुम पर हो, क्योंकि तुम ने अपने प्रभु शाऊल पर यह कृपा करके उसको मिट्टी दी। ६ इसलिये अब यहोवा तुम से कृपा और सच्चाई का बर्त्ताव करे; और मैं भी तुम्हारी इस भलाई का बदला तुम को दूंगा, क्योंकि तुम ने यह काम किया है। ७ और अब हियाव बान्धो, और पुरुषार्थ करो; क्योंकि तुम्हारा प्रभु शाऊल मर गया, और यहूदा के घराने ने अपने ऊपर राजा होने को मेरा अभिषेक किया है।।

८ परन्तु नेर का पुत्र अब्नेर जो शाऊल का प्रधान सेनापति था, उस ने शाऊल के पुत्र ईशबोशेत को संग ले पार जाकर महनैम में पहुंचाया; ९ और उसे गिलाद अशूरियों के देश यिज्रेल, एप्रैम, बिन्यामीन, वरन समस्त इस्राएल के देश पर राजा नियुक्त किया। १० शाऊल का पुत्र ईशबोशेत चालीस वर्ष का था जब वह इस्राएल पर राज्य करने लगा, और दो वर्ष तक राज्य करता रहा। परन्तु यहूदा का घराना दाऊद के पक्ष में रहा। ११ और दाऊद के हेब्रोन में यहूदा के घराने पर राज्य करने का समय साढ़े सात वर्ष था।।

१२ और नेर का पुत्र अब्नेर, और शाऊल के पुत्र ईशबोशेत के जन, महनैम से गिबोन को आए। १३ तब सरूयाह का पुत्र योआब, और दाऊद के जन, हेब्रोन से निकलकर उन से गिबोन के पोखरे के पास मिले; और दोनों दल

उस पोखरे की एक एक ओर बैठ गए। १४ तब अब्नेर ने योआब से कहा, जवान लोग उठकर हमारे साम्हने खेलें। योआब ने कहा, वे उठें। १५ तब वे उठे, और बिन्यामीन, अर्थात् शाऊल के पुत्र ईशबोशेत के पक्ष के लिये बारह जन गिनकर निकले, और दाऊद के जनों में से भी बारह निकले। १६ और उन्हों ने एक दूसरे का सिर पकड़कर अपनी अपनी तलवार एक दूसरे के पांजर में भोंक दी; और वे एक ही संग मरे। इस से उस स्थान का नाम हेल्कथस्सूरीम * पड़ा, वह गिबोन में है। १७ और उस दिन बड़ा घोर युद्ध हुआ; और अब्नेर और इस्राएल के पुरुष दाऊद के जनों से हार गए। १८ वहां तो योआब, अबीशै, और असाहेल नाम सरूयाह के तीनों पुत्र थे। और असाहेल बनैले चिकारे के समान वेग दौड़नेवाला था। १९ तब असाहेल अब्नेर का पीछा करने लगा, और उसका पीछा करते हुए न तो दाहिनी ओर मुड़ा न बाईं ओर। २० अब्नेर ने पीछे फिरके पूछा, क्या तू असाहेल है? उस ने कहा, हां मैं वही हूं। २१ अब्नेर ने उस से कहा, चाहे दाहिनी, चाहे बाईं ओर मुड़, किसी जवान को पकड़कर उसका बकतर ले ले। परन्तु असाहेल ने उसका पीछा न छोड़ा। २२ अब्नेर ने असाहेल से फिर कहा, मेरा पीछा छोड़ दे; मुझ को क्यों तुझे मारके मिट्टी में मिला देना पड़े? ऐसा करके मैं तेरे भाई योआब को अपना मुख कैसे दिखाऊंगा? २३ तौभी उस ने हट जाने को नकारा; तब अब्नेर ने अपने भाले की पिछाड़ी उसके पेट में ऐसे मारी, कि भाला आरपार होकर पीछे निकला; और वह वहीं गिरके मर गया। और जितने लोग उस स्थान पर आए जहां असाहेल गिरके मर गया, वहां वे सब खड़े रहे। २४ परन्तु योआब और अबीशै अब्नेर का पीछा करते रहे; और सूर्य डूबते डूबते वे अम्मा नाम उस पहाड़ी तक पहुंचे, जो गिबोन के जंगल के मार्ग में गीह के साम्हने है। २५ और बिन्यामीनी अब्नेर के पीछे होकर एक दल हो गए, और एक पहाड़ी की चोटी पर खड़े हुए। २६ तब अब्नेर योआब को पुकारके कहने लगा, क्या तलवार सदा मारती रहे? क्या तू नहीं जानता कि इसका फल दुःखदाई * होगा? तू कब तक अपने लोगों को आज्ञा न देगा, कि अपने भाइयों का पीछा छोड़कर लौटो? २७ योआब ने कहा, परमेश्वर के जीवन की शपथ, कि यदि तू न बोला होता, तो निःसन्देह लोग सवेरे ही चले जाते, और अपने अपने भाई का पीछा न करते। २८ तब योआब ने नरसिंगा फूंका; और सब लोग ठहर गए, और फिर इस्राएलियों का पीछा न किया, और लड़ाई फिर न की। २९ और अब्नेर अपने जनों समेत उसी दिन रातोंरात अराबा से होकर गया; और यरदन के पार हो समस्त बित्रोन देश में होकर महनैम में पहुंचा। ३० और योआब अब्नेर का पीछा छोड़कर लौटा; और जब उस ने सब लोगों को इकट्ठा किया, तब क्या देखा, कि दाऊद के जनों में से उन्नीस पुरुष और असाहेल भी नहीं हैं। ३१ परन्तु दाऊद के जनों ने बिन्यामीनियों और अब्नेर

* अर्थात्, छुरियों का खेत।

* मूल में—कड़ुवाहट।

के जनों को ऐसा मारा कि उन में से तीन सौ साठ जन मर गए। ३२ और उन्हों ने असाहेल को उठाकर उसके पिता के क़ब्रिस्तान में, जो बेतलेहेम में था, मिट्टी दी। तब योआब अपने जनों समेत रात भर चलकर पह फटते हेब्रोन में पहुंचा ॥

३ शाऊल के घराने और दाऊद के घराने के मध्य बहुत दिन तक लड़ाई होती रही; परन्तु दाऊद प्रबल होता गया, और शाऊल का घराना निर्बल पड़ता गया ॥

२ और हेब्रोन में दाऊद के पुत्र उत्पन्न हुए; उसका जेठा बेटा अम्नोन था, जो यिज्रेली अहीनोअम से उत्पन्न हुआ था; ३ और उसका दूसरा किलाब था, जिसकी मां कर्मेली नाबाल की स्त्री अबीगैल थी; तीसरा अबशालोम, जो गशूर के राजा तल्मै की बेटी माक़ा से उत्पन्न हुआ था; ४ चौथा अदोनिय्याह, जो हग्गीत से उत्पन्न हुआ था; पांचवां शपत्याह, जिसकी मां अबीतल थी; ५ छठवां यित्राम, जो एग्ला नाम दाऊद की स्त्री से उत्पन्न हुआ। हेब्रोन में दाऊद से ये ही सन्तान उत्पन्न हुए ॥

६ जब शाऊल और दाऊद दोनों के घरानों के मध्य लड़ाई हो रही थी, तब अब्नेर शाऊल के घराने की सहायता में बल बढ़ाता गया। ७ शाऊल की एक रखेली थी जिसका नाम रिस्पा था, वह अय्या की बेटी थी; और ईशबोशेत ने अब्नेर से पूछा, तू मेरे पिता की रखेली के पास क्यों गया? ८ ईशबोशेत की बातों के कारण अब्नेर अति क्रोधित होकर कहने लगा, क्या मैं यहूदा के कुत्ते का सिर हूं? आज तक मैं तेरे पिता शाऊल के घराने और उसके भाइयों और मित्रों को प्रीति दिखाता आया हूं, और तुझे दाऊद के हाथ पड़ने नहीं दिया; फिर तू अब मुझ पर उस स्त्री के विषय में दोष लगाता है? ९ यदि मैं दाऊद के साथ ईश्वर की शपथ के अनुसार बर्ताव न करूं, तो परमेश्वर अब्नेर से वैसा ही, वरन उस से भी अधिक करे; १० अर्थात् मैं राज्य को शाऊल के घराने से छीनूंगा, और दाऊद की राजगद्दी दान से लेकर बेर्शेबा तक इस्राएल और यहूदा के ऊपर स्थिर करूंगा। ११ और वह अब्नेर को कोई उत्तर न दे सका, इसलिये कि वह उस से डरता था ॥

१२ तब अब्नेर ने उसके नाम से दाऊद के पास दूतों से कहला भेजा, कि देश किस का है? और यह भी कहला भेजा, कि तू मेरे साथ वाचा बान्ध, और मैं तेरी सहायता करूंगा कि समस्त इस्राएल के मन तेरी ओर फेर दूं। १३ दाऊद ने कहा, भला, मैं तेरे साथ वाचा तो बान्धूंगा; परन्तु एक बात मैं तुझ से चाहता हूं; कि जब तू मुझ से भेंट करने आए, तब यदि तू पहिले शाऊल की बेटी मीकल को न ले आए, तो मुझ से भेंट न होगी। १४ फिर दाऊद ने शाऊल के पुत्र ईशबोशेत के पास दूतों से यह कहला भेजा, कि मेरी पत्नी मीकल, जिसे मैं ने एक सौ पलिश्तियों की खलड़ियां देकर अपनी कर लिया था, उसको मुझे दे दे। १५ तब ईशबोशेत ने लोगों को भेजकर उसे लैश के पुत्र पलतीएल के पास से छीन लिया। १६ और उसका पति उसके साथ चला, और बहूरीम तक उसके पीछे रोता हुआ चला गया। तब

अब्नेर ने उस से कहा, लौट जा; और वह लौट गया ॥

१७ और अब्नेर ने इस्राएल के पुरनियों के संग इस प्रकार की बातचीत की, कि पहिले तो तुम लोग चाहते थे कि दाऊद हमारे ऊपर राजा हो। १८ अब वैसा करो; क्योंकि यहोवा ने दाऊद के विषय में यह कहा है, कि अपने दास दाऊद के द्वारा मैं अपनी प्रजा इस्राएल को पलिश्तियों, वरन उनके सब शत्रुओं के हाथ से छुड़ाऊंगा। १९ फिर अब्नेर ने बिन्यामीन से भी बातें कीं; तब अब्नेर हेब्रोन को चला गया, कि इस्राएल और बिन्यामीन के समस्त घराने को जो कुछ अच्छा लगा, वह दाऊद को सुनाए। २० तब अब्नेर बीस पुरुष संग लेकर हेब्रोन में आया, और दाऊद ने उसके और उसके संगी पुरुषों के लिये जेवनार की। २१ तब अब्नेर ने दाऊद से कहा, मैं उठकर जाऊंगा, और अपने प्रभु राजा के पास सब इस्राएल को इकट्ठा करूंगा, कि वे तेरे साथ वाचा बान्धें, और तू अपनी इच्छा के अनुसार राज्य कर सके। तब दाऊद ने अब्नेर को विदा किया, और वह कुशल से चला गया। २२ तब दाऊद के कई एक जन योआब समेत कहीं चढ़ाई करके * बहुत सी लूट लिये हुए आ गए। और अब्नेर दाऊद के पास हेब्रोन में न था, क्योंकि उस ने उसको विदा कर दिया था, और वह कुशल से चला गया था। २३ जब योआब और उसके साथ की समस्त सेना आई, तब लोगों ने योआब को बताया, कि नेर का पुत्र अब्नेर राजा के पास आया था, और उस ने उसको विदा कर दिया, और वह कुशल से चला गया। २४ तब योआब ने राजा के पास जाकर कहा, तू ने यह क्या किया है? अब्नेर जो तेरे पास आया था, तो क्या कारण है कि तू ने उसको जाने दिया, और वह चला गया है? २५ तू नेर के पुत्र अब्नेर को जानता होगा कि वह तुझे धोखा देने, और तेरे आने जाने, और कुल काम का भेद लेने आया था। २६ योआब ने दाऊद के पास से निकलकर दाऊद के अनजाने अब्नेर के पीछे दूत भेजे, और वे उसको सीरा नाम कुण्ड से लौटा ले आए। २७ जब अब्नेर हेब्रोन को लौट आया, तब योआब उस से एकान्त में बातें करने के लिये उसको फाटक के भीतर अलग ले गया, और वहां अपने भाई असाहेल के खून के पलटे में उसके पेट में ऐसा मारा कि वह मर गया। २८ इसके बाद जब दाऊद ने यह सुना, तो कहा, नेर के पुत्र अब्नेर के खून के विषय में अपनी प्रजा समेत यहोवा की दृष्टि में सदैव निर्दोष रहूंगा। २९ वह योआब और उसके पिता के समस्त घराने को लगे; और योआब के वंश में कोई न कोई प्रमेह का रोगी, और कोढ़ी, और बैसाखी का लगानेवाला, और तलवार से खेत आनेवाला, और भूखों मरनेवाला सदा होता रहे। ३० योआब और उसके भाई अबीशै ने अब्नेर को इस कारण घात किया, कि उस ने उनके भाई असाहेल को गिबोन में लड़ाई के समय मार डाला था ॥

३१ तब दाऊद ने योआब और अपने सब संगी लोगों से कहा, अपने वस्त्र फाड़ो, और कमर में टाट बान्धकर अब्नेर

* मूल में—दल से।

के आगे आगे चलो। और दाऊद राजा स्वयं अर्थी के पीछे पीछे चला। ३२ अब्नेर को हेब्रोन में मिट्टी दी गई; और राजा अब्नेर की कब्र के पास फूट फूटकर रोया; और सब लोग भी रोए। ३३ तब दाऊद ने अब्नेर के विषय यह विलापगीत बनाया कि,

क्या उचित था कि अब्नेर मूढ़
की नाईं मरे?
३४ न तो तेरे हाथ बान्धे गए, और
न तेरे पांवों में बेड़ियां डाली
गईं;
जैसे कोई कुटिल मनुष्यों से मारा
जाए, वैसे ही तू मारा गया॥

३५ तब सब लोग उसके विषय फिर रो उठे। तब सब लोग कुछ दिन रहते दाऊद को रोटी खिलाने आए; परन्तु दाऊद ने शपथ खाकर कहा, यदि मैं सूर्य के अस्त होने से पहिले रोटी वा और कोई वस्तु खाऊं, तो परमेश्वर मुझ से ऐसा ही, वरन इस से भी अधिक करे। ३६ और सब लोगों ने इस पर विचार किया और इस से प्रसन्न हुए, वैसे ही जो कुछ राजा करता था उस से सब लोग प्रसन्न होते थे। ३७ तब उन सब लोगों ने, वरन समस्त इस्राएल ने भी, उसी दिन जान लिया कि नेर के पुत्र अब्नेर का घात किया जाना राजा की ओर से नहीं हुआ। ३८ और राजा ने अपने कर्मचारियों से कहा, क्या तुम लोग नहीं जानते कि इस्राएल में आज के दिन एक प्रधान और प्रतापी मनुष्य मरा है? ३९ और यद्यपि मैं अभिषिक्त राजा हूं तौभी आज निर्बल हूं; और वे सरूयाह के पुत्र मुझ से अधिक प्रचण्ड हैं। परन्तु यहोवा बुराई करनेवाले को उसकी बुराई के अनुसार ही पलटा दे॥

४ जब शाऊल के पुत्र ने सुना, कि अब्नेर हेब्रोन में मारा गया, तब उसके हाथ ढीले पड़ गए, और सब इस्राएली भी घबरा गए। २ शाऊल के पुत्र के दो जन थे जो दलों के प्रधान थे; एक का नाम बाना, और दूसरे का नाम रेकाब था, ये दोनों बेरोतवासी बिन्यामीनी रिम्मोन के पुत्र थे, (क्योंकि बेरोत भी बिन्यामीन के भाग में गिना जाता है; ३ और बेरोती लोग गित्तैम को भाग गए, और आज के दिन तक वहीं परदेशी होकर रहते हैं॥)

४ शाऊल के पुत्र योनातन के एक लंगड़ा बेटा था। जब यिज्रेल से शाऊल और योनातन का समाचार आया तब वह पांच वर्ष का था; उस समय उसकी धाई उसे उठाकर भागी; और उसके उतावली से भागने के कारण वह गिरके लंगड़ा हो गया। और उसका नाम मपीबोशेत था॥

५ उस बेरोती रिम्मोन के पुत्र रेकाब और बाना कड़े घाम के समय ईशबोशेत के घर में जब वह दोपहर को विश्राम कर रहा था आए। ६ और गेहूं ले जाने के बहाने से घर में घुस गए; और उसके पेट में मारा; तब रेकाब और उसका भाई बाना भाग निकले। ७ जब वे घर में घुसे, और वह सोने की कोठरी में चारपाई पर सोता था, तब उन्हों ने उसे मार डाला, और उसका सिर काट लिया, और उसका सिर लेकर रातोंरात अराबा के मार्ग से चले। ८ और वे ईशबोशेत का सिर हेब्रोन में दाऊद के पास ले जाकर राजा से कहने लगे, देख, शाऊल जो तेरा शत्रु और तेरे प्राणों का गाहक था, उसके पुत्र ईशबोशेत का यह सिर है;

तो आज के दिन यहोवा ने शाऊल और उसके वंश से मेरे प्रभु राजा का पलटा लिया है। ९ दाऊद ने बेरोती रिम्मोन के पुत्र रेकाब और उसके भाई बाना को उत्तर देकर उन से कहा, यहोवा जो मेरे प्राण को सब विपत्तियों से छुड़ाता आया है, उसके जीवन की शपथ, १० जब किसी ने यह जानकर, कि मैं शुभ समाचार देता हूं, सिकलग में मुझ को शाऊल के मरने का समाचार दिया, तब मैं ने उसको पकड़कर घात कराया; अर्थात् उसको समाचार का यही बदला मिला। ११ फिर जब दुष्ट मनुष्यों ने एक निर्दोष मनुष्य को उसी के घर में, वरन उसकी चारपाई ही पर घात किया, तो मैं अब अवश्य ही उसके खून का पलटा तुम से लूंगा, और तुम्हें धरती पर से नष्ट कर डालूंगा। १२ तब दाऊद ने जवानों को आज्ञा दी, और उन्हों ने उनको घात करके उनके हाथ पांव काट दिए, और उनकी लोथों को हेब्रोन के पोखरे के पास टांग दिया। तब ईशबोशेत के सिर को उठाकर हेब्रोन में अब्नेर की कब्र में गाड़ दिया॥

(दाऊद के यरूशलेम में राज्य करने का आरम्भ)

५ तब इस्राएल के सब गोत्र दाऊद के पास हेब्रोन में आकर कहने लगे, सुन, हम लोग और तू एक ही हाड़ मांस हैं। २ फिर भूतकाल में जब शाऊल हमारा राजा था, तब भी इस्राएल का अगुवा तू ही था; और यहोवा ने तुझ से कहा, कि मेरी प्रजा इस्राएल का चरवाहा, और इस्राएल का प्रधान तू ही होगा। ३ सो सब इस्राएली पुरनिये हेब्रोन में राजा के पास आए; और दाऊद राजा ने उनके साथ हेब्रोन में यहोवा के साम्हने वाचा बान्धी, और उन्हों ने इस्राएल का राजा होने के लिये दाऊद का अभिषेक किया॥

४ दाऊद तीस वर्ष का होकर राज्य करने लगा, और चालीस वर्ष तक राज्य करता रहा। ५ साढ़े सात वर्ष तक तो उस ने हेब्रोन में यहूदा पर राज्य किया, और तेंतीस वर्ष तक यरूशलेम में समस्त इस्राएल और यहूदा पर राज्य किया। ६ तब राजा ने अपने जनों को साथ लिए हुए यरूशलेम को जाकर यबूसियों पर चढ़ाई की, जो उस देश के निवासी थे। उन्हों ने यह समझकर, कि दाऊद यहां पैठ न सकेगा, उस से कहा, जब तक तू अन्धों और लंगड़ों को दूर न करे, तब तक यहां पैठने पाएगा। ७ तौभी दाऊद ने सिय्योन न ा गढ़ को ले लिया, वही दाऊदपुर भी कहलाता है। ८ उस दिन दाऊद ने कहा, जो कोई यबूसियों को मारना चाहे, उसे चाहिये कि नाले से होकर चढ़े, और अन्धे और लंगड़े जिन से दाऊद मन से घिन करता है उन्हें मारे। इस से यह कहावत चली, कि अन्धे और लंगड़े भवन में आने न पाएंगे। ९ और दाऊद उस गढ़ में रहने लगा, और उसका नाम दाऊदपुर रखा। और दाऊद ने चारों ओर मिल्लो से लेकर भीतर की ओर शहरपनाह बनवाई। १० और दाऊद की बड़ाई अधिक होती गई, और सेनाओं का परमेश्वर यहोवा उसके संग रहता था॥

११ और सोर के राजा हीराम ने दाऊद के पास दूत, और देवदारू की लकड़ी, और बढ़ई, और राजमिस्त्री भेजे, और उन्हों ने दाऊद के लिये एक भवन

बनाया। १२ और दाऊद को निश्चय हो गया कि यहोवा ने मुझे इस्राएल का राजा करके स्थिर किया, और अपनी इस्राएली प्रजा के निमित्त मेरा राज्य बढ़ाया है॥

१३ जब दाऊद हेब्रोन से आया तब उसके बाद उस ने यरूशलेम की और और रखेलियां रख लीं, और पत्नियां बना लीं; और उसके और बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। १४ उसके जो सन्तान यरूशलेम में उत्पन्न हुए, उनके ये नाम हैं, अर्थात् शम्मू, शोबाब, नातान, सुलैमान, १५ यिभार, एलोशू, नेपेग, यापी, १६ एलीशामा, एल्यादा, और एलीपेलेत॥

१७ जब पलिश्तियों ने यह सुना कि इस्राएल का राजा होने के लिये दाऊद का अभिषेक हुआ, तब सब पलिश्ती दाऊद की खोज में निकले; यह सुनकर दाऊद गढ़ में चला गया। १८ तब पलिश्ती आकर रपाईम नाम तराई में फैल गए। १९ तब दाऊद ने यहोवा से पूछा, क्या मैं पलिश्तियों पर चढ़ाई करूं? क्या तू उन्हें मेरे हाथ कर देगा? यहोवा ने दाऊद से कहा, चढ़ाई कर; क्योंकि मैं निश्चय पलिश्तियों को तेरे हाथ कर दूंगा। २० तब दाऊद बालपरासीम को गया, और दाऊद ने उन्हें वहीं मारा; तब उस ने कहा, यहोवा मेरे साम्हने होकर मेरे शत्रुओं पर जल की धारा की नाईं टूट पडा है। इस कारण उस ने उस स्थान का नाम बालपरासीम * रखा। २१ वहां उन्हों ने अपनी मूरतों को छोड़ दिया, और दाऊद और उसके जन उन्हें उठा ले गए॥

* अर्थात्—टूट पड़ने का स्थान।

२२ फिर दूसरी बार पलिश्ती चढ़ाई करके रपाईम नाम तराई में फैल गए। २३ जब दाऊद ने यहोवा से पूछा, तब उस ने कहा, चढ़ाई न कर; उनके पीछे से घूमकर तूत वृक्षों के साम्हने से उन पर छापा मार। २४ और जब तूत वृक्षों की फुनगियों में से सेना के चलने की सी आहट तुझे सुनाई पड़े, तब यह जानकर फुर्ती करना, कि यहोवा पलिश्तियों की सेना के मारने को मेरे आगे अभी पधारा है। २५ यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार दाऊद गेबा से लेकर गेजेर तक पलिश्तियों को मारता गया॥

(पवित्र सन्दूक का यरूशलेम में पहुंचाया जाना)

६ फिर दाऊद ने एक और बार इस्राएल में से सब बड़े वीरों को, जो तीस हजार थे, इकट्ठा किया। २ तब दाऊद और जितने लोग उसके संग थे, वे सब उठकर यहूदा के बाले नाम स्थान से चले, कि परमेश्वर का वह सन्दूक ले आएं, जो करूबों पर विराजनेवाले सेनाओं के यहोवा का कहलाता है *। ३ तब उन्हों ने परमेश्वर का सन्दूक एक नई गाड़ी पर चढ़ाकर टीले पर रहनेवाले अबीनादाब के घर से निकाला; और अबीनादाब के उज्जा और अह्यो नाम दो पुत्र उस नई गाड़ी को हांकने लगे। ४ और उन्हों ने उसको परमेश्वर के सन्दूक समेत टीले पर रहनेवाले अबीनादाब के घर से बाहर निकाला; और अह्यो सन्दूक के आगे आगे चला। ५ और

* मूल में—जिस पर नाम करूबों पर विराजनेवाले सेनाओं के यहोवा का नाम पुकारा गया।

दाऊद और इस्राएल का समस्त घराना यहोवा के आगे सनौवर की लकड़ी के बने हुए सब प्रकार के बाजे और वीणा, सारंगियां, डफ, डमरू, झांझ बजाते रहे।

६ जब वे नाकोन के खलिहान तक आए, तब उज्जा ने अपना हाथ परमेश्वर के सन्दूक की ओर बढ़ाकर उसे थाम लिया, क्योंकि बैलों ने ठोकर खाई। ७ तब यहोवा का कोप उज्जा पर भड़क उठा; और परमेश्वर ने उसके दोष के कारण उसको वहां ऐसा मारा, कि वह वहां परमेश्वर के सन्दूक के पास मर गया। ८ तब दाऊद अप्रसन्न हुआ, इसलिये कि यहोवा उज्जा पर टूट पड़ा था; और उस ने उस स्थान का नाम पेरेसुज्जा * रखा, यह नाम आज के दिन तक वर्तमान है। ९ और उस दिन दाऊद यहोवा से डरकर कहने लगा, यहोवा का सन्दूक मेरे यहां क्योंकर आए? १० इसलिये दाऊद ने यहोवा के सन्दूक को अपने यहां दाऊदपुर में पहुंचाना न चाहा; परन्तु गतवासी ओबेदेदोम के यहां पहुंचाया। ११ और यहोवा का सन्दूक गती ओबेदेदोम के घर में तीन महीने रहा; और यहोवा ने ओबेदेदोम और उसके समस्त घराने को आशिष दी। १२ तब दाऊद राजा को यह बताया गया, कि यहोवा ने ओबेदेदोम के घराने पर, और जो कुछ उसका है, उस पर भी परमेश्वर के सन्दूक के कारण आशिष दी है। तब दाऊद ने जाकर परमेश्वर के सन्दूक को ओबेदेदोम के घर से दाऊदपुर में आनन्द के साथ पहुंचा दिया। १३ जब यहोवा के सन्दूक के उठानेवाले छः कदम चल चुके, तब दाऊद ने एक बैल और एक पाला पोसा हुआ बछड़ा बलि कराया। १४ और दाऊद सनी का एपोद कमर में कसे हुए यहोवा के सम्मुख तन मन से नाचता रहा। १५ यों दाऊद और इस्राएल का समस्त घराना यहोवा के सन्दूक को जय जयकार करते और नरसिंगा फूंकते हुए ले चला। १६ जब यहोवा का सन्दूक दाऊदपुर में आ रहा था, तब शाऊल की बेटी मीकल ने खिड़की में से झांककर दाऊद राजा को यहोवा के सम्मुख नाचते कूदते देखा, और उसे मन ही मन तुच्छ जाना। १७ और लोग यहोवा का सन्दूक भीतर ले आए, और उसके स्थान में, अर्थात् उस तम्बू में रखा, जो दाऊद ने उसके लिये खड़ा कराया था; और दाऊद ने यहोवा के सम्मुख होमबलि और मेलबलि चढ़ाए। १८ जब दाऊद होमबलि और मेलबलि चढ़ा चुका, तब उस ने सेनाओं के यहोवा के नाम से प्रजा को आशीर्वाद दिया। १९ तब उस ने समस्त प्रजा को, अर्थात्, क्या स्त्री क्या पुरुष, समस्त इस्राएली भीड़ के लोगों को एक एक रोटी, और एक एक टुकड़ा मांस, और किशमिश की एक एक टिकिया बंटवा दी। तब प्रजा के सब लोग अपने अपने घर चले गए। २० तब दाऊद अपने घराने को आशीर्वाद देने के लिये लौटा। और शाऊल की बेटी मीकल दाऊद से मिलने को निकली, और कहने लगी, आज इस्राएल का राजा जब अपना शरीर अपने कर्मचारियों की लौंडियों के साम्हने ऐसा उघाड़े हुए था, जैसा कोई निकम्मा अपना तन उघाड़े रहता है, तब क्या ही प्रतापी देख पड़ता था! २१ दाऊद ने मीकल से कहा,

* अर्थात् उज्जा पर टूट पड़ना।

की प्रभुता * उनके हाथ से छीन ली। २ फिर उस ने मोआबियों को भी जीता, और इनको भूमि पर लिटाकर डोरी से मापा; तब दो डोरी से लोगों को मापकर घात किया, और डोरी भर के लोगों को जीवित छोड़ दिया। तब मोआबी दाऊद के अधीन होकर भेंट ले आने लगे। ३ फिर जब सोबा का राजा रहोब का पुत्र हददेजेर महानद के पास अपना राज्य † फिर ज्यों का त्यों करने को जा रहा था, तब दाऊद ने उसको जीत लिया। ४ और दाऊद ने उस से एक हज़ार सात सौ सवार, और बीस हज़ार प्यादे छीन लिए; और सब रथवाले घोड़ों के सुम की नस कटवाई, परन्तु एक सौ रथवाले घोड़े बचा रखे। ५ और जब दमिश्क के अरामी सोबा के राजा हददेजेर की सहायता करने को आए, तब दाऊद ने अरामियों में से बाईस हज़ार पुरुष मारे। ६ तब दाऊद ने दमिश्क में अराम के सिपाहियों की चौकियां बैठाईं; इस प्रकार अरामी दाऊद के अधीन होकर भेंट ले आने लगे। और जहां जहां दाऊद जाता था वहां वहां यहोवा उसको जयवन्त करता था। ७ और हददेजेर के कर्मचारियों के पास सोने की जो ढालें थीं उन्हें दाऊद लेकर यरूशलेम को आया। ८ और बेतह और बरौतै नाम हददेजेर के नगरों से दाऊद राजा बहुत सा पीतल ले आया। ९ और जब हमात के राजा तोई ने सुना कि दाऊद ने हददेजेर की समस्त सेना को जीत लिया है, १० तब तोई ने योराम नाम अपने पुत्र को दाऊद राजा के पास उसका कुशल क्षेम पूछने, और उसे इसलिये बधाई देने को भेजा, कि उस ने हददेजेर से लड़ कर उसको जीत लिया था; क्योंकि हददेजेर तोई से लड़ा करता था। और योराम चांदी, सोने और पीतल के पात्र लिए हुए आया। ११ इनको दाऊद राजा ने यहोवा के लिये पवित्र करके रखा; और वैसा ही अपने जीती हुई सब जातियों के सोने चांदी से भी किया, १२ अर्थात् अरामियों, मोआबियों, अम्मोनियों, पलिश्तियों, और अमालेकियों के सोने चांदी को, और रहोब के पुत्र सोबा के राजा हददेजेर की लूट को भी रखा। १३ और जब दाऊद लोमवाली तराई में अठारह हजार अरामियों को मारके लौट आया, तब उसका बड़ा नाम हो गया। १४ फिर उस ने एदोम में सिपाहियों की चौकियां बैठाईं; पूरे एदोम में उस ने सिपाहियों की चौकियां बैठाईं, और सब एदोमी दाऊद के अधीन हो गए। और दाऊद जहां जहां जाता था वहां वहां यहोवा उसको जयवन्त करता था॥

(दाऊद के कर्मचारियों की नामावली)

१५ दाऊद तो समस्त इस्राएल पर राज्य करता था, और दाऊद अपनी समस्त प्रजा के साथ न्याय और धर्म के काम करता था। १६ और प्रधान सेनापति सरूयाह का पुत्र योआब था; इतिहास का लिखनेवाला अहीलूद का पुत्र यहोशापात था; १७ प्रधान याजक अहीतूब का पुत्र सादोक और एब्यातर का पुत्र अहीमेलेक थे; मंत्री सरायाह था; १८ करेतियों और पलेतियों का प्रधान यहोयादा का पुत्र बनायाह था; और दाऊद के पुत्र भी मंत्री * थे॥

* मूल में—पलिश्तियों की माता का बाग।
† मूल में—हाथ।

* वा याजक।

(मपीबोशेत का ऊंचा पद प्राप्त करना)

९ दाऊद ने पूछा, क्या शाऊल के घराने में से कोई अब तक बचा है, जिसको मैं योनातन के कारण प्रीति दिखाऊं? २ शाऊल के घराने का सीबा नाम एक कर्मचारी था, वह दाऊद के पास बुलाया गया; और जब राजा ने उस से पूछा, क्या तू सीबा है? तब उस ने कहा, हां, तेरा दास वही है। ३ राजा ने पूछा, क्या शाऊल के घराने में से कोई अब तक बचा है, जिसको मैं परमेश्वर की सी प्रीति दिखाऊं? सीबा ने राजा से कहा, हां, योनातन का एक बेटा तो है, जो लंगड़ा है। ४ राजा ने उस से पूछा, वह कहां है? सीबा ने राजा से कहा, वह तो लोदबार नगर में, अम्मीएल के पुत्र माकीर के घर में रहता है। ५ तब राजा दाऊद ने दूत भेजकर उसको लोदबार से, अम्मीएल के पुत्र माकीर के घर से बुलवा लिया। ६ जब मपीबोशेत, जो योनातन का पुत्र और शाऊल का पोता था, दाऊद के पास आया, तब मुंह के बल गिरके दण्डवत् किया। दाऊद ने कहा, हे मपीबोशेत! उस ने कहा, तेरे दास को क्या आज्ञा? ७ दाऊद ने उस से कहा, मत डर; तेरे पिता योनातन के कारण मैं निश्चय तुझ को प्रीति दिखाऊंगा, और तेरे दादा शाऊल की सारी भूमि तुझे फेर दूंगा; और तू मेरी मेज पर नित्य भोजन किया कर। ८ उस ने दण्डवत् करके कहा, तेरा दास क्या है, कि तू मुझ ऐसे मरे कुत्ते की ओर दृष्टि करे? ९ तब राजा ने शाऊल के कर्मचारी सीबा को बुलवाकर उस से कहा, जो कुछ शाऊल और उसके समस्त घराने का था वह मैं ने तेरे स्वामी के पोते को दे दिया है। १० अब से तू अपने बेटों और सेवकों समेत उसकी भूमि पर खेती करके उसकी उपज ले आया करना, कि तेरे स्वामी के पोते को भोजन मिला करे; परन्तु तेरे स्वामी का पोता मपीबोशेत मेरी मेज पर नित्य भोजन किया करेगा। और सीबा के तो पन्द्रह पुत्र और बीस सेवक थे। ११ सीबा ने राजा से कहा, मेरा प्रभु राजा अपने दास को जो जो आज्ञा दे, उन सभों के अनुसार तेरा दास करेगा। दाऊद ने कहा, मपीबोशेत राजकुमारों की नाईं मेरी मेज पर भोजन किया करे। १२ मपीबोशेत के भी मीका नाम एक छोटा बेटा था। और सीबा के घर में जितने रहते थे वे सब मपीबोशेत की सेवा करते थे। १३ और मपीबोशेत यरूशलेम में रहता था; क्योंकि वह राजा की मेज पर नित्य भोजन किया करता था। और वह दोनों पांवों का पंगुला था॥

(अम्मोनियों के साथ युद्ध होने का वर्णन)

१० इसके बाद अम्मोनियों का राजा मर गया, और उसका हानून नाम पुत्र उसके स्थान पर राजा हुआ। २ तब दाऊद ने यह सोचा, कि जैसे हानून के पिता नाहाश ने मुझ को प्रीति दिखाई थी, वैसे ही मैं भी हानून को प्रीति दिखाऊंगा। तब दाऊद ने अपने कई कर्मचारियों को उसके पास उसके पिता के विषय शान्ति देने के लिये भेज दिया। और दाऊद के कर्मचारी अम्मोनियों के देश में आए। ३ परन्तु अम्मोनियों के हाकिम अपने स्वामी हानून से कहने लगे, दाऊद ने जो तेरे पास शान्ति देनेवाले भेजे हैं, वह क्या तेरी समझ में तेरे पिता का आदर

करने की मनसा मे भेजे हैं? क्या दाऊद ने अपने कर्मचारियों को तेरे पास इसी मनसा से नहीं भेजा कि इस नगर में ढूंढ़ ढांढ़ करके और इसका भेद लेकर इसको उलट दें? ४ इसलिये हानून ने दाऊद के कर्मचारियों को पकड़ा, और उनकी आधी-आधी डाढ़ी मुड़वाकर और आधे वस्त्र, अर्थात् नितम्ब तक कटवाकर, उनको जाने दिया। ५ इसका समाचार पाकर दाऊद ने लोगों को उन से मिलने के लिये भेजा, क्योंकि वे बहुत लजाते थे। और राजा ने यह कहा, कि जब तक तुम्हारी डाढ़ियां बढ़ न जाएं तब तक यरीहो में ठहरे रहो, तब लौट आना। ६ जब अम्मोनियों ने देखा कि हम से दाऊद अप्रसन्न हैं, तब अम्मोनियों ने बेत्रहोब और सोबा के बीस हज़ार अरामी प्यादों को, और हजार पुरुषों समेत माका के राजा को, और बारह हज़ार तोबी पुरुषों को, वेतन पर बुलवाया। ७ यह सुनकर दाऊद ने योआब और शूरवीरों की समस्त सेना को भेजा। ८ तब अम्मोनी निकले और फाटक ही के पास पांती बान्धी; और सोबा और रहोब के अरामी और तोब और माका के पुरुष उन से न्यारे मैदान में थे। ९ यह देखकर कि आगे पीछे दोनों ओर हमारे विरुद्ध पांति बन्धी है, योआब ने सब बड़े बड़े इस्राएली वीरों में से बहुतों को छांटकर अरामियों के साम्हने उनकी पांति बन्धाई, १० और और लोगों को अपने भाई अबीशै के हाथ सौंप दिया, और उस ने अम्मोनियों के साम्हने उनकी पांति बन्धाई। ११ फिर उस ने कहा, यदि अरामी मुझ पर प्रबल होने लगें, तो तू मेरी सहायता करना; और यदि अम्मोनी तुझ पर प्रबल होने लगेंगे, तो मैं आकर तेरी सहायता करूंगा। १२ तू हियाव बान्ध, और हम अपने लोगों और अपने परमेश्वर के नगरों के निमित्त पुरुषार्थ करें; और यहोवा जैसा उसको अच्छा लगे वैसा करे। १३ तब योआब और जो लोग उसके साथ थे अरामियों से युद्ध करने को निकट गए; और वे उसके साम्हने से भागे। १४ यह देखकर कि अरामी भाग गए हैं अम्मोनी भी अबीशै के साम्हने से भागकर नगर के भीतर घुसे। तब योआब अम्मोनियों के पास से लौटकर यरूशलेम को आया। १५ फिर यह देखकर कि हम इस्राएलियों से हार गए अरामी इकट्ठे हुए। १६ और हददेजेर ने दूत भेजकर महानद के पार के अरामियों को बुलवाया; और वे हददेजेर के सेनापति शोबक को अपना प्रधान बनाकर हेलाम को आए। १७ इसका समाचार पाकर दाऊद ने समस्त इस्राएलियों को इकट्ठा किया, और यरदन के पार होकर हेलाम में पहुंचा। तब अराम दाऊद के विरुद्ध पांति बान्धकर उस से लड़ा। १८ परन्तु अरामी इस्राएलियों से भागे, और दाऊद ने अरामियों में से सात सौ रथियों और चालीस हजार सवारों को मार डाला, और उनके सेनापति शोबक को ऐसा घायल किया कि वह वहीं मर गया। १९ यह देखकर कि हम इस्राएल से हार गए हैं, जितने राजा हददेजेर के अधीन थे उन सभों ने इस्राएल के साथ संधि की, और उसके अधीन हो गए। और अरामी अम्मोनियों की और सहायता करने से डर गए॥

(दाऊद के पाप में फंसने का वर्णन)

११ फिर जिस समय राजा लोग युद्ध करने को निकला करते हैं, उस

समय, अर्थात् वर्ष के आरम्भ में दाऊद ने योआब को, और उसके संग अपने सेवकों और समस्त इस्राएलियों को भेजा; और उन्हों ने अम्मोनियों को नाश किया, और रब्बा नगर को घेर लिया। परन्तु दाऊद यरूशलेम में रह गया॥

२ सांझ के समय दाऊद पलंग पर से उठकर राजभवन की छत पर टहल रहा था, और छत पर से उसको एक स्त्री, जो अति सुन्दर थी, नहाती हुई देख पड़ी। ३ जब दाऊद ने भेजकर उस स्त्री को पुछवाया, तब किसी ने कहा, क्या यह एलीआम की बेटी, और हित्ती ऊरिय्याह की पत्नी बतशेबा नहीं है? ४ तब दाऊद ने दूत भेजकर उसे बुलवा लिया; और वह दाऊद के पास आई, और वह उसके साथ सोया। (वह तो ऋतु मे शुद्ध हो गई थी)। तब वह अपने घर लौट गई। ५ और वह स्त्री गर्भवती हुई, तब दाऊद के पास कहला भेजा, कि मुझे गर्भ है। ६ तब दाऊद ने योआब के पास कहला भेजा, कि हित्ती ऊरिय्याह को मेरे पास भेज, तब योआब ने ऊरिय्याह को दाऊद के पास भेज दिया। ७ जब ऊरिय्याह उसके पास आया, तब दाऊद ने उस से योआब और सेना का कुशल क्षेम और युद्ध का हाल पूछा। ८ तब दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, अपने घर जाकर अपने पांव धो। और ऊरिय्याह राजभवन से निकला, और उसके पीछे राजा के पास से कुछ इनाम भेजा गया। ९ परन्तु ऊरिय्याह अपने स्वामी के सब सेवकों के संग राजभवन के द्वार में लेट गया, और अपने घर न गया। १० जब दाऊद को यह समाचार मिला, कि ऊरिय्याह अपने घर नहीं गया, तब दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, क्या तू यात्रा करके नहीं आया? तो अपने घर क्यों नहीं गया? ११ ऊरिय्याह ने दाऊद से कहा, जब सन्दूक और इस्राएल और यहूदा झोपड़ियों में रहते हैं, और मेरा स्वामी योआब और मेरे स्वामी के सेवक खुले मैदान पर डेरे डाले हुए हैं, तो क्या मैं घर जाकर खाऊं, पीऊं, और अपनी पत्नी के साथ सोऊं? तेरे जीवन की शपथ, और तेरे प्राण की शपथ, कि मैं ऐसा काम नहीं करने का। १२ दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, आज यहीं रह, और कल मैं तुझे विदा करूंगा। इसलिये ऊरिय्याह उस दिन और दूसरे दिन भी यरूशलेम में रहा। १३ तब दाऊद ने उसे नेवता दिया, और उस ने उसके साम्हने खाया पिया, और उसी ने उसे मतवाला किया; और सांझ को वह अपने स्वामी के सेवकों के संग अपनी चारपाई पर सोने को निकला, परन्तु अपने घर न गया। १४ बिहान को दाऊद ने योआब के नाम पर एक चिट्ठी लिखकर ऊरिय्याह के हाथ से भेज दी। १५ उस चिट्ठी में यह लिखा था, कि सब से घोर युद्ध के साम्हने ऊरिय्याह को रखना, तब उसे छोड़कर लौट आओ, कि वह घायल होकर मर जाए। १६ और योआब ने नगर को अच्छी रीति से देख भालकर जिस स्थान में वह जानता था कि वीर हैं, उसी में ऊरिय्याह को ठहरा दिया। १७ तब नगर के पुरुषों ने निकलकर योआब से युद्ध किया, और लोगों में से, अर्थात् दाऊद के सेवकों में से कितने खेत आए; और उन में हित्ती ऊरिय्याह भी मर गया। १८ तब योआब ने भेजकर दाऊद को युद्ध का पूरा हाल बताया; १९ और दूत को आज्ञा दी,

कि जब तू युद्ध का पूरा हाल राजा को बता चुके, २० तब यदि राजा जलकर कहने लगे, कि तुम लोग लड़ने को नगर के ऐसे निकट क्यों गए? क्या तुम न जानते थे कि वे शहरपनाह पर से तीर छोड़ेंगे? २१ यरुब्बेशेत के पुत्र अबीमेलेक को किसने मार डाला? क्या एक स्त्री ने शहरपनाह पर से चक्की का उपरला पाट उस पर ऐसा न डाला कि वह तेबेस में मर गया? फिर तुम शहरपनाह के ऐसे निकट क्यों गए? तो तूं यों कहना, कि तेरा दास ऊरिय्याह हित्ती भी मर गया। २२ तब दूत चल दिया, और जाकर दाऊद से योआब की सब बातें वर्णन कीं। २३ दूत ने दाऊद से कहा, कि वे लोग हम पर प्रबल होकर मैदान में हमारे पास निकल आए, फिर हम ने उन्हें फाटक तक खदेड़ा। २४ तब धनुर्धारियों ने शहरपनाह पर से तेरे जनों पर तीर छोड़े; और राजा के कितने जन मर गए, और तेरा दास ऊरिय्याह हित्ती भी मर गया। २५ दाऊद ने दूत से कहा, योआब से यों कहना, कि इस बात के कारण उदास न हो, क्योंकि तलवार जैसे इसको वैसे उसको नाश करती है; तो तू नगर के विरुद्ध अधिक दृढ़ता से लड़कर उसे उलट दे। और तू उसे हियाव बन्धा। २६ जब ऊरिय्याह की स्त्री ने सुना कि मेरा पति मर गया, तब वह अपने पति के लिये रोने पीटने लगी। २७ और जब उसके विलाप के दिन बीत चुके, तब दाऊद ने उसे बुलवाकर अपने घर में रख लिया, और वह उसकी पत्नी हो गई, और उसके पुत्र उत्पन्न हुआ। परन्तु उस काम से जो दाऊद ने किया था यहोवा क्रोधित हुआ॥

१२ तब यहोवा ने दाऊद के पास नातान को भेजा, और वह उसके पास जाकर कहने लगा, एक नगर में दो मनुष्य रहते थे, जिन में से एक धनी और एक निर्धन था। २ धनी के पास तो बहुत सी भेड़-बकरियां और गाय बैल थे; ३ परन्तु निर्धन के पास भेड़ की एक छोटी बच्ची को छोड़ और कुछ भी न था, और उसको उस ने मोल लेकर जिलाया था। और वह उसके यहां उसके बालबच्चों के साथ ही बढ़ी थी; वह उसके टुकड़े में से खाती, और उसके कटोरे में से पीती, और उसकी गोद में सोती थी, और वह उसकी बेटी के समान थी। ४ और धनी के पास एक बटोही आया, और उस ने उस बटोही के लिये, जो उसके पास आया था, भोजन बनवाने को अपनी भेड़-बकरियों वा गाय बैलों में से कुछ न लिया, परन्तु उस निर्धन मनुष्य की भेड़ की बच्ची लेकर उस जन के लिये, जो उसके पास आया था, भोजन बनवाया। ५ तब दाऊद का कोप उस मनुष्य पर बहुत भड़का; और उस ने नातान से कहा, यहोवा के जीवन की शपथ, जिस मनुष्य ने ऐसा काम किया वह प्राण दण्ड के योग्य है; ६ और उसको वह भेड़ की बच्ची का चौगुणा भर देना होगा, क्योंकि उस ने ऐसा काम किया, और कुछ दया नहीं की।

७ तब नातान ने दाऊद से कहा, तू ही वह मनुष्य है। इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि मैं ने तेरा अभिषेक कराके तुझे इस्राएल का राजा ठहराया, और मैं ने तुझे शाऊल के हाथ से बचाया; ८ फिर मैं ने तेरे स्वामी का भवन तुझे दिया, और तेरे स्वामी की पत्नियां तेरे भोग के लिये दीं; और मैं ने इस्राएल

और यहूदा का घराना तुझे दिया था; और यदि यह थोड़ा था, तो मैं तुझे और भी बहुत कुछ देनेवाला था। ९ तू ने यहोवा की आज्ञा तुच्छ जानकर क्यों वह काम किया जो उसकी दृष्टि में बुरा है? हित्ती ऊरिय्याह को तू ने तलवार से घात किया, और उसकी पत्नी को अपनी कर लिया है, और ऊरिय्याह को अम्मोनियों की तलवार से मरवा डाला है। १० इसलिये अब तलवार तेरे घर से कभी दूर न होगी, क्योंकि तू ने मुझे तुच्छ जानकर हित्ती ऊरिय्याह की पत्नी को अपनी पत्नी कर लिया है। ११ यहोवा यों कहता है, कि सुन, मैं तेरे घर में से विपत्ति उठाकर तुझ पर डालूंगा; और तेरी पत्नियों को तेरे साम्हने लेकर दूसरे को दूंगा, और वह दिन दुपहरी में तेरी पत्नियों से कुकर्म करेगा। १२ तू ने तो वह काम छिपाकर किया; पर मैं यह काम सब इस्राएलियों के साम्हने दिन दुपहरी कराऊंगा। १३ तब दाऊद ने नातान से कहा, मैं ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है। नातान ने दाऊद से कहा, यहोवा ने तेरे पाप को दूर किया है; तू न मरेगा। १४ तौभी तू ने जो इस काम के द्वारा यहोवा के शत्रुओं को तिरस्कार करने का बड़ा अवसर दिया है, इस कारण तेरा जो बेटा उत्पन्न हुआ है वह अवश्य ही मरेगा। १५ तब नातान अपने घर चला गया॥

और जो बच्चा ऊरिय्याह की पत्नी से दाऊद के द्वारा उत्पन्न था, वह यहोवा का मारा बहुत रोगी हो गया। १६ और दाऊद उस लड़के के लिये परमेश्वर से विनती करने लगा; और उपवास किया, और भीतर जाकर रात भर भूमि पर पड़ा रहा। १७ तब उसके घराने के पुरनिये उठकर उसे भूमि पर से उठाने के लिये उसके पास गए; परन्तु उस ने न चाहा, और उनके संग रोटी न खाई। १८ सातवें दिन बच्चा मर गया, और दाऊद के कर्मचारी उसको बच्चे के मरने का समाचार देने से डरे; उन्हों ने तो कहा था, कि जब तक बच्चा जीवित रहा, तब तक उस ने हमारे समझाने पर मन न लगाया; यदि हम उसको बच्चे के मर जाने का हाल सुनाएं, तो वह बहुत ही अधिक दुःखी होगा। १९ अपने कर्मचारियों को आपस में फुसफुसाते देखकर दाऊद ने जान लिया कि बच्चा मर गया; तो दाऊद ने अपने कर्मचारियों से पूछा, क्या बच्चा मर गया? उन्हों ने कहा, हां, मर गया है। २० तब दाऊद भूमि पर से उठा, और नहाकर तेल लगाया, और वस्त्र बदला; तब यहोवा के भवन में जाकर दण्डवत् की; फिर अपने भवन में आया; और उसकी आज्ञा पर रोटी उसको परोसी गई, और उस ने भोजन किया। २१ तब उसके कर्मचारियों ने उस से पूछा, तू ने यह क्या काम किया है? जब तक बच्चा जीवित रहा, तब तक तू उपवास करता हुआ रोता रहा; परन्तु ज्योंही बच्चा मर गया, त्योंही तू उठकर भोजन करने लगा। २२ उस ने उत्तर दिया, कि जब तक बच्चा जीवित रहा तब तक तो मैं यह सोचकर उपवास करता और रोता रहा, कि क्या जाने यहोवा मुझ पर ऐसा अनुग्रह करे कि बच्चा जीवित रहे। २३ परन्तु अब वह मर गया, फिर मैं उपवास क्यों करूं? क्या मैं उसे लौटा ला सकता हूं? मैं तो उसके पास जाऊंगा,

परन्तु वह मेरे पास लौट न आएगा। २४ तब दाऊद ने अपनी पत्नी बतशेबा को शान्ति दी, और वह उसके पास गया; और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और उस ने उसका नाम सुलैमान रखा। और वह यहोवा का प्रिय हुआ। २५ और उस ने नातान भविष्यद्वक्ता के द्वारा सन्देश भेज दिया; और उस ने यहोवा के कारण उसका नाम यदीद्याह * रखा॥

२६ और योआब ने अम्मोनियों के रब्बा नगर से लड़कर राजनगर को ले लिया। २७ तब योआब ने दूतों से दाऊद के पास यह कहला भेजा, कि मैं रब्बा से लड़ा और जलवाले नगर को ले लिया है। २८ सो अब रहे हुए लोगों को इकट्ठा करके नगर के विरुद्ध छावनी डालकर उसे भी ले ले; ऐसा न हो कि मैं उसे ले लूं, और वह मेरे नाम पर कहलाए †। २९ तब दाऊद सब लोगों को इकट्ठा करके रब्बा को गया, और उस से युद्ध करके उसे ले लिया। ३० तब उस ने उनके राजा ‡ का मुकुट, जो तौल में किक्कार भर सोने का था, और उस में मणि जड़े थे, उसको उसके सिर पर से उतारा, और वह दाऊद के सिर पर रखा गया। फिर उस ने उस नगर की बहुत ही लूट पाई। ३१ और उस ने उसके रहनेवालों को निकालकर आरों से दो दो टुकड़े कराया, और लोहे के हेंगे उन पर फिरवाए, और लोहे की कुल्हाड़ियों से उन्हें कटवाया, और ईंट के पजावे में से चलवाया *; और अम्मोनियों के सब नगरों से भी उस ने ऐसा ही किया। तब दाऊद समस्त लोगों समेत यरूशलेम को लौट आया॥

(अम्नोन का कुकर्म करना और मार डाला जाना)

१३ इसके बाद तामार नाम एक सुन्दरी जो दाऊद के पुत्र अबशालोम की बहिन थी, उस पर दाऊद का पुत्र अम्नोन मोहित हुआ। २ और अम्नोन अपनी बहिन तामार के कारण ऐसा विकल हो गया कि बीमार पड़ गया; क्योंकि वह कुमारी थी, और उसके साथ कुछ करना अम्नोन को कठिन जान पड़ता था। ३ अम्नोन के योनादाब नाम एक मित्र था, जो दाऊद के भाई शिमा का बेटा था; और वह बड़ा चतुर था। ४ और उस ने अम्नोन से कहा, हे राजकुमार, क्या कारण है कि तू प्रति दिन ऐसा दुबला होता जाता है क्या तू मुझे न बताएगा? अम्नोन ने उस से कहा, मैं तो अपने भाई अबशालोम की बहिन तामार पर मोहित हूं। ५ योनादाब ने उस से कहा, अपने पलंग पर लेटकर बीमार बन जा; और जब तेरा पिता तुझे देखने को आए, तब उस से कहना, मेरी बहिन तामार आकर मुझे रोटी खिलाए, और भोजन को मेरे साम्हने बनाए, कि मैं उसको देखकर उसके हाथ से खाऊं। ६ और अम्नोन लेटकर बीमार बना; और जब राजा उसे देखने आया, तब अम्नोन ने राजा से कहा, मेरी बहिन तामार आकर मेरे देखते दो पूरी बनाए,

---

* अर्थात् यहोवा का प्रिय।

† मूल में—मेरा नाम उस पर पुकारा जावे।

‡ वा मल्काम।

* वा आरों, लोहे के हेंगों, और लोहे की कुल्हाड़ियों के काम पर लगाया और उन से ईंट के पजावे में परिश्रम कराया।

कि मैं उसके हाथ से खाऊं। ७ और दाऊद ने अपने घर तामार के पास यह कहला भेजा, कि अपने भाई अम्नोन के घर जाकर उसके लिये भोजन बना। ८ तब तामार अपने भाई अम्नोन के घर गई, और वह पड़ा हुआ था। तब उस ने आटा लेकर गूंधा, और उसके देखते पूरियां पकाईं। ९ तब उस ने थाल लेकर उनको उसके लिये परोसा, परन्तु उस ने खाने से इनकार किया। तब अम्नोन ने कहा, मेरे आस पास से सब लोगों को निकाल दो, तब सब लोग उसके पास से निकल गए। १० तब अम्नोन ने तामार से कहा, भोजन को कोठरी में ले आ, कि मैं तेरे हाथ से खाऊं। तो तामार अपनी बनाई हुई पूरियों को उठाकर अपने भाई अम्नोन के पास कोठरी में ले गई। ११ जब वह उनको उसके खाने के लिये निकट ले गई, तब उस ने उसे पकड़कर कहा, हे मेरी बहिन, आ, मुझ से मिल। १२ उस ने कहा, हे मेरे भाई, ऐसा नहीं, मुझे भ्रष्ट न कर; क्योंकि इस्राएल में ऐसा काम होना नहीं चाहिये; ऐसी मूढ़ता का काम न कर। १३ और फिर मैं अपनी नामधराई लिये हुए कहां जाऊंगी? और तू इस्राएलियों में एक मूढ़ गिना जाएगा। तू राजा से बातचीत कर, वह मुझ को तुझे ब्याह देने के लिये मना न करेगा। १४ परन्तु उस ने उसकी न सुनी; और उस से बलवान होने के कारण उसके साथ कुकर्म करके उसे भ्रष्ट किया। १५ तब अम्नोन उस से अत्यन्त बैर रखने लगा; यहां तक कि यह बैर उसके पहिले मोह से बढ़कर हुआ। तब अम्नोन ने उस से कहा, उठकर चली जा। १६ उस ने कहा, ऐसा नहीं, क्योंकि यह बड़ा उपद्रव, अर्थात् मुझे निकाल देना उस पहिले से बढ़कर है जो तू ने मुझ से किया है। परन्तु उस ने उसकी न सुनी। १७ तब उस ने अपने टहलुए जवान को बुलाकर कहा, इस स्त्री को मेरे पास से बाहर निकाल दे, और उसके पीछे किवाड़ में चिटकनी लगा दे। १८ वह तो रंगबिरंगी कुर्ती पहिने थी; क्योंकि जो राजकुमारियां कुंवारी रहती थीं वे ऐसे ही वस्त्र पहिनती थीं। सो अम्नोन के टहलुए ने उसे बाहर निकालकर उसके पीछे किवाड़ में चिटकनी लगा दी। १९ तब तामार ने अपने सिर पर राख डाली, और अपनी रंगबिरंगी कुर्ती को फाड़ डाला; और सिर पर हाथ रखे चिल्लाती हुई चली गई। २० उसके भाई अबशालोम ने उस से पूछा, क्या तेरा भाई अम्नोन तेरे साथ रहा है? परन्तु अब, हे मेरी बहिन, चुप रह, वह तो तेरा भाई है; इस बात की चिन्ता न कर। तब तामार अपने भाई अबशालोम के घर में मन मारे बैठी रही। २१ जब ये सब बातें दाऊद राजा के कान में पड़ीं, तब वह बहुत झुंझला उठा। २२ और अबशालोम ने अम्नोन से भला-बुरा कुछ न कहा, क्योंकि अम्नोन ने उसकी बहिन तामार को भ्रष्ट किया था, इस कारण अबशालोम उस से घृणा रखता था॥

२३ दो वर्ष के बाद अबशालोम ने एप्रैम के निकट के बाल्हासोर में अपनी भेड़ों का ऊन कतरवाया और अबशालोम ने सब राजकुमारों को नेवता दिया। २४ वह राजा के पास जाकर कहने लगा, विनती यह है, कि तेरे दास की भेड़ों का ऊन कतरा जाता है, इसलिये राजा अपने कर्मचारियों समेत अपने दास

के संग चले। २५ राजा ने अबशालोम से कहा, हे मेरे बेटे, ऐसा नहीं; हम सब न चलेंगे, ऐसा न हो कि तुझे अधिक कष्ट हो। तब अबशालोम ने उसे विनती करके दबाया, परन्तु उस ने जाने से इनकार किया, तौभी उसे आशीर्वाद दिया। २६ तब अबशालोम ने कहा, यदि तू नहीं तो मेरे भाई अम्नोन को हमारे संग जाने दे। राजा ने उस से पूछा, वह तेरे संग क्यों चले? २७ परन्तु अबशालोम ने उसे ऐसा दबाया कि उस ने अम्नोन और सब राजकुमारों को उसके साथ जाने दिया। २८ और अबशालोम ने अपने सेवकों को आज्ञा दी, कि सावधान रहो और जब अम्नोन दाखमधु पीकर नशे में आ जाए, और मैं तुम से कहूं, अम्नोन को मारो, तब निडर होकर उसको मार डालना। क्या इस आज्ञा का देनेवाला मैं नहीं हूं? हियाव बान्धकर पुरुषार्थ करना। २९ तो अबशालोम के सेवकों ने अम्नोन के साथ अबशालोम की आज्ञा के अनुसार किया। तब सब राजकुमार उठ खड़े हुए, और अपने अपने खच्चर पर चढ़कर भाग गए। ३० वे मार्ग ही में थे, कि दाऊद को यह समाचार मिला कि अबशालोम ने सब राजकुमारों को मार डाला, और उन में से एक भी नहीं बचा। ३१ तब दाऊद ने उठकर अपने वस्त्र फाड़े, और भूमि पर गिर पड़ा, और उसके सब कर्मचारी वस्त्र फाड़े हुए उसके पास खड़े रहे। ३२ तब दाऊद के भाई शिमा के पुत्र योनादाब ने कहा, मेरा प्रभु यह न समझे कि सब जवान, अर्थात् राजकुमार मार डाले गए हैं, केवल अम्नोन मारा गया है; क्योंकि जिस दिन उस ने अबशालोम की बहिन तामार को भ्रष्ट किया, उसी दिन से अबशालोम की आज्ञा से ऐसी ही बात ठनी थी। ३३ इसलिये अब मेरा प्रभु राजा अपने मन में यह समझकर कि सब राजकुमार मर गए उदास न हो; क्योंकि केवल अम्नोन ही मर गया है। ३४ इतने में अबशालोम भाग गया। और जो जवान पहरा देता था उस ने आंखें उठाकर देखा, कि पीछे की ओर से पहाड़ के पास के मार्ग से बहुत लोग चले आ रहे हैं। ३५ तब योनादाब ने राजा से कहा, देख, राजकुमार तो आ गए हैं; जैसा तेरे दास ने कहा था वैसा ही हुआ। ३६ वह कह ही चुका था, कि राजकुमार पहुंच गए, और चिल्ला चिल्लाकर रोने लगे; और राजा भी अपने सब कर्मचारियों समेत बिलख बिलख कर रोने लगा। ३७ अबशालोम तो भागकर गशूर के राजा अम्मीहूर के पुत्र तल्मै के पास गया। और दाऊद अपने पुत्र के लिये दिन दिन विलाप करता रहा॥

(अबशालोम के राजद्रोह की गोष्ठी)

३८ जब अबशालोम भागकर गशूर को गया, तब वहां तीन वर्ष तक रहा। ३९ और दाऊद के मन में अबशालोम के पास जाने की बड़ी लालसा रही; क्योंकि अम्नोन जो मर गया था, इस कारण उस ने उसके विषय में शान्ति पाई॥

१४ और सरूयाह का पुत्र योआब ताड़ गया कि राजा का मन अबशालोम की ओर लगा है। २ इसलिये योआब ने तको नगर में दूत भेजकर वहां से एक बुद्धिमान स्त्री को बुलवाया, और उस से कहा, शोक करनेवाली बन, अर्थात् शोक

का पहिरावा पहिन, और तेल न लगा; परन्तु ऐसी स्त्री बन जो बहुत दिन से मुए के लिये विलाप करती रही हो। ३ तब राजा के पास जाकर ऐसी ऐसी बातें कहना। और योआब ने उसको जो कुछ कहना था वह सिखा दिया। ४ जब वह तकोइन राजा से बातें करने लगी, तब मुंह के बल भूमि पर गिर दण्डवत् करके कहने लगी, राजा की दोहाई। ५ राजा ने उस से पूछा, तुझे क्या चाहिये? उस ने कहा, सचमुच मेरा पति मर गया, और मैं विधवा हो गई। ६ और तेरी दासी के दो बेटे थे, और उन दोनों ने मैदान में मार पीट की; और उनको छुड़ानेवाला कोई न था, इसलिये एक ने दूसरे को ऐसा मारा कि वह मर गया। ७ और यह सुन सब कुल के लोग तेरी दासी के विरुद्ध उठकर यह कहते हैं, कि जिस ने अपने भाई को घात किया उसको हमें सौंप दे, कि उसके मारे हुए भाई के प्राण के पलटे में उसको प्राण दण्ड दें; और वारिस को भी नाश करें। इस तरह वे मेरे अंगारे को जो बच गया है बुझाएंगे, और मेरे पति का नाम और सन्तान धरती पर से मिटा डालेंगे। ८ राजा ने स्त्री से कहा, अपने घर जा, और मैं तेरे विषय आज्ञा दूंगा। ९ तकोइन ने राजा से कहा, हे मेरे प्रभु, हे राजा, दोष मुझी को और मेरे पिता के घराने ही को लगे; और राजा अपनी गद्दी समेत निर्दोष ठहरे। १० राजा ने कहा, जो कोई तुझ से कुछ बोले उसको मेरे पास ला, तब वह फिर तुझे छूने न पाएगा। ११ उस ने कहा, राजा अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण करे, कि खून का पलटा लेनेवाला और नाश करने न पाए, और मेरे बेटे का नाश न होने पाए। उस ने कहा, यहोवा के जीवन की शपथ, तेरे बेटे का एक बाल भी भूमि पर गिरने न पाएगा। १२ स्त्री बोली, तेरी दासी अपने प्रभु राजा से एक बात कहने पाए। १३ उस ने कहा, कहे जा। स्त्री कहने लगी, फिर तू ने परमेश्वर की प्रजा की हानि के लिये ऐसी ही युक्ति क्यों की है? राजा ने जो यह वचन कहा है, इस से वह दोषी सा ठहरता है, क्योंकि राजा अपने निकाले हुए को लौटा नहीं लाता। १४ हम को तो मरना ही है, और भूमि पर गिरे हुए जल के समान ठहरेंगे, जो फिर उठाया नहीं जाता; तौभी परमेश्वर प्राण नहीं लेता, वरन ऐसी युक्ति करता है कि निकाला हुआ उसके पास से निकाला हुआ न रहे। १५ और अब मैं जो अपने प्रभु राजा से यह बात कहने को आई हूं, इसका कारण यह है, कि लोगों ने मुझे डरा दिया था; इसलिये तेरी दासी ने सोचा, कि मैं राजा से बोलूंगी, कदाचित राजा अपनी दासी की बिनती को पूरी करे। १६ निःसन्देह राजा सुनकर अवश्य अपनी दासी को उस मनुष्य के हाथ से बचाएगा जो मुझे और मेरे बेटे दोनों को परमेश्वर के भाग में से नाश करना चाहता है। १७ सो तेरी दासी ने सोचा, कि मेरे प्रभु राजा के वचन से शान्ति मिले; क्योंकि मेरा प्रभु राजा परमेश्वर के किसी दूत की नाईं भले-बुरे में भेद कर सकता है; इसलिये तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहे। १८ राजा ने उत्तर देकर उस स्त्री से कहा, जो बात मैं तुझ से पूछता हूं उसे मुझ से न छिपा। स्त्री ने कहा, मेरा

प्रभु राजा कहे जाए। १६ राजा ने पूछा, इस बात में क्या योआब तेरा संगी है? स्त्री ने उत्तर देकर कहा, हे मेरे प्रभु, हे राजा, तेरे प्राण की शपथ, जो कुछ मेरे प्रभु राजा ने कहा है, उस से कोई न दाहिनी ओर मुड़ सकता है और न बाईं। तेरे दास योआब ही ने मुझे आज्ञा दी, और ये सब बातें उसी ने तेरी दासी को सिखाई हैं। २० तेरे दास योआब ने यह काम इसलिये किया कि बात का रंग बदले। और मेरा प्रभु परमेश्वर के एक दूत के तुल्य बुद्धिमान् है, यहां तक कि धरती पर जो कुछ होता है उन सब को वह जानता है। २१ तब राजा ने योआब से कहा, सुन, मैं ने यह बात मानी है; तू जाकर अबशालोम जवान को लौटा ला। २२ तब योआब ने भूमि पर मुंह के बल गिर दण्डवत् कर राजा को आशीर्वाद दिया; और योआब कहने लगा, हे मेरे प्रभु, हे राजा, आज तेरा दास जान गया कि मुझ पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि है, क्योंकि राजा ने अपने दास की विनती सुनी है। २३ और योआब उठकर गशूर को गया, और अबशालोम को यरूशलेम ले आया। २४ तब राजा ने कहा, वह अपने घर जाकर रहे; और मेरा दर्शन न पाए। तब अबशालोम अपने घर जा रहा, और राजा का दर्शन न पाया॥

२५ समस्त इस्राएल में सुन्दरता के कारण बहुत प्रशंसा योग्य अबशालोम के तुल्य और कोई न था; वरन उस में नख से सिख तक कुछ दोष न था। २६ और वह वर्ष के अन्त में अपना सिर मुंड़वाता था (उसके बाल उसको भारी जान पड़ते थे, इस कारण वह उसे मुंड़ाता था); और जब जब वह उसे मुंड़ाता तब तब अपने सिर के बाल तौलकर राजा के तौल के अनुसार दो सौ शेकेल भर पाता था। २७ और अबशालोम के तीन बेटे, और तामार नाम एक बेटी उत्पन्न हुई थी; और यह रूपवती स्त्री थी॥

२८ और अबशालोम राजा का दर्शन बिना पाए यरूशलेम में दो वर्ष रहा। २९ तब अबशालोम ने योआब को बुलवा भेजा कि उसे राजा के पास भेजे; परन्तु योआब ने उसके पास आने से इनकार किया। और उस ने उसे दूसरी बार बुलवा भेजा, परन्तु तब भी उस ने आने से इनकार किया। ३० तब उस ने अपने सेवकों से कहा, सुनो, योआब का एक खेत मेरी भूमि के निकट है, और उस में उसका जव खड़ा है; तुम जाकर उस में आग लगाओ। और अबशालोम के सेवकों ने उस खेत में आग लगा दी। ३१ तब योआब उठा, और अबशालोम के घर में उसके पास जाकर उस से पूछने लगा, तेरे सेवकों ने मेरे खेत में क्यों आग लगाई है? ३२ अबशालोम ने योआब से कहा, मैं ने तो तेरे पास यह कहला भेजा था, कि यहां आना कि मैं तुझे राजा के पास यह कहने को भेजूं, कि मैं गशूर से क्यों आया? मैं अब तक वहां रहता तो अच्छा होता। इसलिये अब राजा मुझे दर्शन दे; और यदि मैं दोषी हूं, तो वह मुझे मार डाले। ३३ तो योआब ने राजा के पास जाकर उसको यह बात सुनाई; और राजा ने अबशालोम को बुलवाया। और वह उसके पास गया, और उसके सम्मुख भूमि पर मुंह के बल गिरके दण्डवत् की; और राजा ने अबशालोम को चूमा॥

१५ इसके बाद अबशालोम ने रथ और घोड़े, और अपने आगे आगे दौड़नेवाले पचास मनुष्य रख लिए। २ और अबशालोम सवेरे उठकर फाटक के मार्ग के पास खड़ा हुआ करता था; और जब जब कोई मुद्दई राजा के पास न्याय के लिये आता, तब तब अबशालोम उसको पुकारके पूछता था, तू किस नगर से आता है? ३ और वह कहता था, कि तेरा दास इस्राएल के फुलाने गोत्र का है। तब अबशालोम उस से कहता था, कि सुन, तेरा पक्ष तो ठीक और न्याय का है; परन्तु राजा की ओर से तेरी सुननेवाला कोई नहीं है। ४ फिर अबशालोम यह भी कहा करता था, कि भला होता कि मैं इस देश में न्यायी ठहराया जाता! कि जितने मुकद्दमावाले होते वे सब मेरे ही पास आते, और मैं उनका न्याय चुकाता। ५ फिर जब कोई उसे दण्डवत् करने को निकट आता, तब वह हाथ बढ़ाकर उसको पकड़के चूम लेता था। ६ और जितने इस्राएली राजा के पास अपना मुकद्दमा तै करने को आते उन सभों से अबशालोम ऐसा ही व्यवहार किया करता था; इस प्रकार अबशालोम ने इस्राएली मनुष्यों के मन को हर लिया॥

७ चार * वर्ष के बीतने पर अबशालोम ने राजा से कहा, मुझे हेब्रोन जाकर अपनी उस मन्नत को पूरी करने दे, जो मैं ने यहोवा की मानी है। ८ तेरा दास तो जब आराम के गशूर में रहता था, तब यह कहकर यहोवा की मन्नत मानी, कि यदि यहोवा मुझे सचमुच यरूशलेम को लौटा ले जाए, तो मैं यहोवा की उपासना करूंगा। ९ राजा ने उस से कहा, कुशल क्षेम से जा। और वह चलकर हेब्रोन को गया। १० तब अबशालोम ने इस्राएल के समस्त गोत्रों में यह कहने के लिये भेदिए भेजे, कि जब नरसिंगे का शब्द तुम को सुन पड़े, तब कहना, कि अबशालोम हेब्रोन में राजा हुआ! ११ और अबशालोम के संग दो सौ नेवतहारी यरूशलेम से गए; वे सीधे मन से उसका भेद बिना जाने गए। १२ फिर जब अबशालोम का यज्ञ हुआ, तब उस ने गीलोवासी अहीतोपेल को, जो दाऊद का मंत्री था, बुलवा भेजा कि वह अपने नगर गीलो से आए। और राजद्रोह की गोष्ठी ने बल पकड़ा, क्योंकि अबशालोम के पक्ष के लोग बराबर बढ़ते गए॥

(दाऊद का भागना)

१३ तब किसी ने दाऊद के पास जाकर यह समाचार दिया, कि इस्राएली मनुष्यों के मन अबशालोम की ओर हो गए हैं। १४ तब दाऊद ने अपने सब कर्मचारियों से जो यरूशलेम में उसके संग थे कहा, आओ, हम भाग चलें; नहीं तो हम में से कोई भी अबशालोम से न बचेगा; इसलिये फुर्ती करते चले चलो, ऐसा न हो कि वह फुर्ती करके हमें आ घेरे, और हमारी हानि करे, और इस नगर को तलवार से मार ले। १५ राजा के कर्मचारियों ने उस से कहा, जैसा हमारे प्रभु राजा को अच्छा जान पड़े, वैसा ही करने के लिये तेरे दास तैयार हैं। १६ तब राजा निकल गया, और उसके पीछे उसका समस्त घराना निकला। और राजा दस रखेलियों को भवन की चौकसी करने के लिये छोड़ गया। १७ और

* वा चालीस

राजा निकल गया, और उसके पीछे* सब लोग निकले; और वे बेतमेर्हक† में ठहर गए। १८ और उसके सब कर्मचारी उसके पास से होकर आगे गए; और सब करेती, और सब पलेती, और सब गती, अर्थात् जो छः सौ पुरुष गत से उसके पीछे हो लिए थे वे सब राजा के साम्हने से होकर आगे चले। १९ तब राजा ने गती इत्तै से पूछा, हमारे संग तू क्यों चलता है? लौटकर राजा के पास रह; क्योंकि तू परदेशी और अपने देश से दूर है, इसलिये अपने स्थान को लौट जा। २० तू तो कल ही आया है, क्या मैं आज तुझे अपने साथ मारा मारा फिराऊं? मैं तो जहां जा सकूंगा वहां जाऊंगा। तू लौट जा, और अपने भाइयों को भी लौटा दे; ईश्वर की करुणा और सच्चाई तेरे संग रहे। २१ इत्तै ने राजा को उत्तर देकर कहा, यहोवा के जीवन की शपथ, और मेरे प्रभु राजा के जीवन की शपथ, जिस किसी स्थान में मेरा प्रभु राजा रहेगा, चाहे मरने के लिये हो चाहे जीवित रहने के लिये, उसी स्थान में तेरा दास भी रहेगा। २२ तब दाऊद ने इत्तै से कहा, पार चल। सो गती इत्तै अपने समस्त जनों और अपने साथ के सब बाल-बच्चों समेत पार हो गया। २३ सब रहनेवाले‡ चिल्ला चिल्लाकर रोए; और सब लोग पार हुए, और राजा भी किद्रोन नाम नाले के पार हुआ, और सब लोग नाले के पार जंगल के मार्ग की ओर पार होकर चल पड़े। २४ तब क्या देखने में आया, कि सादोक भी और उसके संग सब लेवीय परमेश्वर की वाचा का सन्दूक उठाए हुए हैं; और उन्हों ने परमेश्वर के सन्दूक को धर दिया, तब एब्यातार चढ़ा, और जब तक सब लोग नगर से न निकले तब तक वहीं रहा। २५ तब राजा ने सादोक से कहा, परमेश्वर के सन्दूक को नगर में लौटा ले जा। यदि यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो, तो वह मुझे लौटाकर उसको और अपने वासस्थान को भी दिखाएगा; २६ परन्तु यदि वह मुझ से ऐसा कहे, कि मैं तुझ से प्रसन्न नहीं, तौभी मैं हाजिर हूं, जैसा उसको भाए वैसा ही वह मेरे साथ बर्त्ताव करे। २७ फिर राजा ने सादोक याजक से कहा, क्या तू दर्शी नहीं है? सो कुशल क्षेम से नगर में लौट जा, और तेरा पुत्र अहीमास, और एब्यातार का पुत्र योनातन, दोनों तुम्हारे संग लौटें। २८ सुनो, मैं जङ्गल के घाट के पास तब तक ठहरा रहूंगा, जब तक तुम लोगों से मुझे हाल का समाचार न मिले। २९ तब सादोक और एब्यातार ने परमेश्वर के सन्दूक को यरूशलेम में लौटा दिया; और आप वहीं रहे॥

३० तब दाऊद जलपाइयों के पहाड़ की चढ़ाई पर सिर ढांपे, नंगे पांव, रोता हुआ चढ़ने लगा; और जितने लोग उसके संग थे, वे भी सिर ढांपे रोते हुए चढ़ गए। ३१ तब दाऊद को यह समाचार मिला, कि अबशालोम के संगी राजद्रोहियों के साथ अहीतोपेल है। दाऊद ने कहा, हे यहोवा, अहीतोपेल की सम्मति को मूर्खता बना दे। ३२ जब दाऊद चोटी तक पहुंचा, जहां परमेश्वर को दण्डवत्

---

* मूल में—उसके पांवों पर।
† अर्थात् दूराश्रम।
‡ मूल में—सारा देश।

किया करते थे, तब एरेकी हूशै अंगरखा फाड़े, सिर पर मिट्टी डाले हुए उस से मिलने को आया। ३३ दाऊद ने उस से कहा, यदि तू मेरे संग आगे जाए, तब तो मेरे लिये भार ठहरेगा। ३४ परन्तु यदि तू नगर को लौटकर अबशालोम से कहने लगे, हे राजा, मैं तेरा कर्मचारी हूंगा; जैसा मैं बहुत दिन तेरे पिता का कर्मचारी रहा, वैसा ही अब तेरा रहूंगा, तो तू मेरे हित के लिये अहीतोपेल की सम्मति को निष्फल कर सकेगा। ३५ और क्या वहां तेरे संग सादोक और एब्यातार याजक न रहेंगे? इसलिये राजभवन में से जो हाल तुझे सुन पड़े, उसे सादोक और एब्यातार याजकों को बताया करना। ३६ उनके साथ तो उनके दो पुत्र, अर्थात् सादोक का पुत्र अहीमास, और एब्यातार का पुत्र योनातन, वहां रहेंगे; तो जो समाचार तुम लोगों को मिले उसे मेरे पास उन्हीं के हाथ भेजा करना। ३७ और दाऊद का मित्र, हूशै, नगर को गया, और अबशालोम भी यरूशलेम में पहुंच गया॥

१६ दाऊद चोटी पर से थोड़ी दूर बढ़ गया था, कि मपीबोशेत का कर्मचारी सीबा एक जोड़ी जीन बान्धे हुए गदहों पर दो सौ रोटी, किशमिश की एक सौ टिकिया, धूपकाल के फल की एक सौ टिकिया, और कुप्पी भर दाखमधु, लादे हुए उस से आ मिला। २ राजा ने सीबा से पूछा, इन से तेरा क्या प्रयोजन है? सीबा ने कहा, गदहे तो राजा के घराने की सवारी के लिये हैं, और रोटी और धूपकाल के फल जवानों के खाने के लिये हैं, और दाखमधु इसलिये है कि जो कोई जंगल में थक जाए वह उसे पीए। ३ राजा ने पूछा, फिर तेरे स्वामी का बेटा कहां है? सीबा ने राजा से कहा, वह तो यह कहकर यरूशलेम में रह गया, कि अब इस्राएल का घराना मुझे मेरे पिता का राज्य फेर देगा। ४ राजा ने सीबा से कहा, जो कुछ मपीबोशेत का था वह सब तुझे मिल गया। सीबा ने कहा, प्रणाम; हे मेरे प्रभु, हे राजा, मुझ पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि बनी रहे॥

५ जब दाऊद राजा बहूरीम तक पहुंचा, तब शाऊल का एक कुटुम्बी वहां से निकला, वह गेरा का पुत्र शिमी नाम का था; और वह कोसता हुआ चला आया। ६ और दाऊद पर, और दाऊद राजा के सब कर्मचारियों पर पत्थर फेंकने लगा; और शूरवीरों समेत सब लोग उसकी दाहिनी बाईं दोनों ओर थे। ७ और शिमी कोसता हुआ यों बकता गया, कि दूर हो खूनी, दूर हो ओछे, निकल जा, निकल जा! ८ यहोवा ने तुझ से शाऊल के घराने के खून का पूरा पलटा लिया है, जिसके स्थान पर तू राजा बना है; यहोवा ने राज्य को तेरे पुत्र अबशालोम के हाथ कर दिया है। और इसलिये कि तू खूनी है, तू अपनी बुराई में आप फंस गया। ९ तब सरूयाह के पुत्र अबीशै ने राजा से कहा, यह मरा हुआ कुत्ता मेरे प्रभु राजा को क्यों शाप देने पाए? मुझे उधर जाकर उसका सिर काटने दे। १० राजा ने कहा, सरूयाह के बेटो, मुझे तुम से क्या काम? वह जो कोसता है, और यहोवा ने जो उस से कहा है, कि दाऊद को शाप दे, तो उस से कौन पूछ सकता, कि तू ने

ऐसा क्यों किया? ११ फिर दाऊद ने अबीशै और अपने सब कर्मचारियों से कहा, जब मेरा निज पुत्र भी मेरे प्राण का खोजी है, तो यह बिन्यामीनी अब ऐसा क्यों न करे? उसको रहने दो, और शाप देने दो; क्योंकि यहोवा ने उस से कहा है। १२ कदाचित् यहोवा इस उपद्रव पर, जो मुझ पर हो रहा है, दृष्टि करके आज के शाप की सन्ती मुझे भला बदला दे। १३ तब दाऊद अपने जनों समेत अपना मार्ग चला गया, और शिमी उसके साम्हने के पहाड़ की अलंग पर से शाप देता, और उस पर पत्थर और धूलि फेंकता हुआ चला गया। १४ निदान राजा अपने संग के सब लोगों समेत अपने ठिकाने पर थका हुआ पहुंचा; और वहां विश्राम किया॥

१५ अबशालोम सब इस्राएली लोगों समेत यरूशलेम को आया, और उसके संग अहीतोपेल भी आया। १६ जब दाऊद का मित्र एरेकी हूशै अबशालोम के पास पहुंचा, तब हूशै ने अबशालोम से कहा, राजा चिरंजीव रहे! राजा चिरंजीव रहे! १७ अबशालोम ने उस से कहा, क्या यह तेरी प्रीति है जो तू अपने मित्र से रखता है? तू अपने मित्र के संग क्यों नहीं गया? १८ हूशै ने अबशालोम से कहा, ऐसा नहीं; जिसको यहोवा और वे लोग, क्या वरन सब इस्राएली लोग चाहें, उसी का मैं हूं, और उसी के संग मैं रहूंगा। १९ और फिर मैं किसकी सेवा करूं? क्या उसके पुत्र के साम्हने रहकर सेवा न करूं? जैसा मैं तेरे पिता के साम्हने रहकर सेवा करता था, वैसा ही तेरे साम्हने रहकर सेवा करूंगा। २० तब अबशालोम ने अहीतोपेल से कहा, तुम लोग अपनी सम्मति दो, कि क्या करना चाहिये? २१ अहीतोपेल ने अबशालोम से कहा, जिन रखेलियों को तेरा पिता भवन की चौकसी करने को छोड़ गया, उनके पास तू जा, और जब सब इस्राएली यह सुनेंगे, कि अबशालोम का पिता उस से घिन करता है, तब तेरे सब संगी हियाव बान्धेंगे। २२ सो उसके लिये भवन की छत के ऊपर एक तम्बू खड़ा किया गया, और अबशालोम समस्त इस्राएल के देखते अपने पिता की रखेलियों के पास गया। २३ उन दिनों जो सम्मति अहीतोपेल देता था, वह ऐसी होती थी कि मानो कोई परमेश्वर का वचन पूछ लेता हो; अहीतोपेल चाहे दाऊद को चाहे अबशालोम को, जो जो सम्मति देता वह ऐसी ही होती थी॥

१७

फिर अहीतोपेल ने अबशालोम से कहा, मुझे बारह हज़ार पुरुष छांटने दे, और मैं उठकर आज ही रात को दाऊद का पीछा करूंगा। २ और जब वह थकित और निर्बल होगा, तब मैं उसे पकड़ूंगा, और डराऊंगा; और जितने लोग उसके साथ हैं सब भागेंगे। और मैं राजा ही को मारूंगा, ३ और मैं सब लोगों को तेरे पास लौटा लाऊंगा; जिस मनुष्य का तू खोजी है उसके मिलने मे समस्त प्रजा का मिलना हो जाएगा, और समस्त प्रजा कुशल क्षेम से रहेगी। ४ यह बात अबशालोम और सब इस्राएली पुरनियों को उचित मालूम पड़ी॥

५ फिर अबशालोम ने कहा, एरेकी हूशै को भी बुला ला, और जो वह कहेगा हम उसे भी सुनें। ६ जब हूशै अबशालोम के पास आया, तब अबशालोम ने उस से

कहा, अहीतोपेल ने तो इस प्रकार की बात कही है; क्या हम उसकी बात मानें कि नहीं? यदि नहीं, तो तू कह दे। हूशै ने अबशालोम से कहा, जो सम्मति अहीतोपेल ने इस बार दी वह अच्छी नहीं। ८ फिर हूशै ने कहा, तू तो अपने पिता और उसके जनों को जानता है कि वे शूरवीर हैं, और बच्चा छीनी हुई रीछनी के समान क्रोधित होंगे। और तेरा पिता योद्धा है; और और लोगों के साथ रात नहीं बिताता। ९ इस समय तो वह किसी गढ़हे, वा किसी दूसरे स्थान में छिपा होगा। जब इन में से पहिले पहिले कोई कोई मारे जाएं, तब इसके सब सुननेवाले कहने लगेंगे, कि अबशालोम के पक्षवाले हार गए। १० तब वीर का हृदय, जो सिंह का सा होता है, उसका भी हियाव छूट जाएगा; समस्त इस्राएल तो जानता है कि तेरा पिता वीर है, और उसके संगी बड़े योद्धा हैं। ११ इसलिये मेरी सम्मति यह है कि दान से लेकर बेर्शेबा तक रहनेवाले समस्त इस्राएली तेरे पास समुद्रतीर की बालू के किनकों के समान इकट्ठे किए जाएं, और तू आप ही * युद्ध को जाए। १२ और जब हम उसको किसी न किसी स्थान में जहां वह मिले जा पकड़ेंगे, तब जैसे ओस भूमि पर गिरती है वैसे ही हम उस पर टूट पड़ेंगे; तब न तो वह बचेगा, और न उसके संगियों में से कोई बचेगा। १३ और यदि वह किसी नगर में घुसा हो, तो सब इस्राएली उस नगर के पास रस्सियां ले आएंगे, और हम उसे नाले में खींचेंगे, यहां तक कि उसका एक छोटा सा पत्थर भी न रह जाएगा। १४ तब अबशालोम और सब इस्राएली पुरुषों ने कहा, एरेकी हूशै की सम्मति अहीतोपेल की सम्मति से उत्तम है। यहोवा ने तो अहीतोपेल की अच्छी सम्मति को निष्फल करने के लिये ठाना था, कि वह अबशालोम ही पर विपत्ति डाले॥

१५ तब हूशै ने सादोक और एब्यातार याजकों से कहा, अहीतोपेल ने तो अबशालोम और इस्राएली पुरनियों को इस इस प्रकार की सम्मति दी; और मैं ने इस इस प्रकार की सम्मति दी है। १६ इसलिये अब फुर्ती कर दाऊद के पास कहला भेजो, कि आज रात जंगली घाट के पास न ठहरना, अवश्य पार ही हो जाना; ऐसा न हो कि राजा और जितने लोग उसके संग हों, सब नाश हो जाएं। १७ योनातन और अहीमास एनरोगेल के पास ठहरे रहे; और एक लौंडी जाकर उन्हें सन्देशा दे आती थी, और वे जाकर राजा दाऊद को सन्देशा देते थे; क्योंकि वे किसी के देखते नगर में नहीं जा सकते थे। १८ एक छोकरे ने तो उन्हें देखकर अबशालोम को बताया; परन्तु वे दोनों फुर्ती से चले गए, और एक बहूरीमवासी मनुष्य के घर पहुंचकर जिसके आंगन में कुंआ था उस में उतर गए। १९ तब उसकी स्त्री ने कपड़ा लेकर कुंए के मुंह पर बिछाया, और उसके ऊपर दला हुआ अन्न फैला दिया; इसलिये कुछ मालूम न पड़ा। २० तब अबशालोम के सेवक उस घर में उस स्त्री के पास जाकर कहने लगे, अहीमास और योनातन कहां हैं? स्त्री ने उन से कहा, वे तो उस छोटी नदी के पार गए। तब उन्हों ने उन्हें ढूंढा, और न पाकर यरूशलेम को लौटे। २१ जब वे

* मूल में—तेरा मुख।

चले गए, तब ये कुंए में से निकले, और जाकर दाऊद राजा को समाचार दिया; और दाऊद से कहा, तुम लोग चलो, फुर्ती करके नदी के पार हो जाओ; क्योंकि अहीतोपेल ने तुम्हारी हानि की ऐसी ऐसी सम्मति दी है। २२ तब दाऊद अपने सब संगियों समेत उठकर यरदन पार हो गया; और पह फटने तक उन में से एक भी न रह गया जो यरदन के पार न हो गया हो। २३ जब अहीतोपेल ने देखा कि मेरी सम्मति के अनुसार काम नहीं हुआ, तब उस ने अपने गदहे पर काठी कसी, और अपने नगर में जाकर अपने घर में गया। और अपने घराने के विषय जो जो आज्ञा देनी थी वह देकर अपने को फांसी लगा ली; और वह मर गया, और उसके पिता के कब्रिस्तान में उसे मिट्टी दे दी गई॥

२४ दाऊद तो महनैम में पहुंचा। और अबशालोम सब इस्राएली पुरुषों समेत यरदन के पार गया। २५ और अबशालोम ने अमासा को योआब के स्थान पर प्रधान सेनापति ठहराया। यह अमासा एक पुरुष का पुत्र था जिसका नाम इस्राएली यित्रो था, और वह योआब की माता, सरूयाह की बहिन, अबीगल नाम नाहाश की बेटी के संग सोया था। २६ और इस्राएलियों ने और अबशालोम ने गिलाद देश में छावनी डाली॥

२७ जब दाऊद महनैम में आया, तब अम्मोनियों के रब्बा के निवासी नाहाश का पुत्र शोबी, और लोदबरवासी अम्मीएल का पुत्र माकीर, और रोगलीमवासी गिलादी बर्जिल्लै, २८ चारपाइयां, तसले मिट्टी के बर्तन, गेहूं, जव, मैदा, लोबिया, मसूर, चबेना, २९ मधु, मक्खन, भेड़-बकरियां, और गाय के दही का पनीर, दाऊद और उसके संगियों के खाने को यह सोचकर ले आए, कि जंगल में वे लोग भूखे प्यासे और थके मांदे होंगे॥

१८ तब दाऊद ने अपने संग के लोगों की गिनती ली, और उन पर सहस्त्र-पति और शतपति ठहराए। २ फिर दाऊद ने लोगों की एक तिहाई तो योआब के, और एक तिहाई सरूयाह के पुत्र योआब के भाई अबीशै के, और एक तिहाई गती इत्तै के, अधिकार में करके युद्ध में भेज दिया। और राजा ने लोगों से कहा, मैं भी अवश्य तुम्हारे साथ चलूंगा। ३ लोगों ने कहा, तू जाने न पाएगा। क्योंकि चाहे हम भाग जाएं, तौभी वे हमारी चिन्ता न करेंगे; वरन चाहे हम में से आधे मारे भी जाएं, तौभी वे हमारी चिन्ता न करेंगे। क्योंकि हमारे सरीखे दस हज़ार पुरुष हैं; इसलिये अच्छा यह है कि तू नगर में से हमारी सहायता करने को तैयार रहे। ४ राजा ने उन से कहा, जो कुछ तुम्हें भाए वही मैं करूंगा। और राजा फाटक की एक ओर खड़ा रहा, और सब लोग सौ सौ, और हज़ार हज़ार, करके निकलने लगे। ५ और राजा ने योआब, अबीशै, और इत्तै को आज्ञा दी, कि मेरे निमित्त उस जवान, अर्थात् अबशालोम से कोमलता करना। यह आज्ञा राजा ने अबशालोम के विषय सब प्रधानों को सब लोगों के सुनते दी। ६ सो लोग इस्राएल का साम्हना करने को मैदान में निकले; और एप्रैम नाम वन में युद्ध हुआ। ७ वहां इस्राएली लोग दाऊद के जनों से हार

गए, और उस दिन ऐसा बड़ा संहार हुआ कि बीस हजार खेत आए। ८ और युद्ध उस समस्त देश में फैल गया; और उस दिन जितने लोग तलवार से मारे गए, उन से भी अधिक बन के कारण मर गए। ९ संयोग से अबशालोम और दाऊद के जनों की भेंट हो गई। अबशालोम तो एक खच्चर पर चढ़ा हुआ जा रहा था, कि खच्चर एक बड़े बांज वृक्ष की घनी डालियों के नीचे से गया, और उसका सिर उस बांज वृक्ष में अटक गया, और वह अधर में लटका रह गया, और उसका खच्चर निकल गया। १० इसको देखकर किसी मनुष्य ने योआब को बताया, कि मैं ने अबशालोम को बांज वृक्ष में टंगा हुआ देखा। ११ योआब ने बतानेवाले से कहा, तू ने यह देखा! फिर क्यों उसे वहीं मारके भूमि पर न गिरा दिया? तो मैं तुझे दस टुकड़े चांदी और एक कटिबन्द देता। १२ उस मनुष्य ने योआब से कहा, चाहे मेरे हाथ में हजार टुकड़े चांदी तौलकर दिए जाएं, तौभी राजकुमार के विरुद्ध हाथ न बढ़ाऊंगा; क्योंकि हम लोगों के सुनते राजा ने तुझे और अबीशै और इत्तै को यह आज्ञा दी, कि तुम में से कोई क्यों न हो उस जवान अर्थात् अबशालोम को न छूए। १३ यदि मैं धोखा देकर उसका प्राण लेता, तो तू आप मेरा विरोधी हो जाता, क्योंकि राजा से कोई बात छिपी नहीं रहती। १४ योआब ने कहा, मैं तेरे संग योंही ठहरा नहीं रह सकता! सो उस ने तीन लकड़ी हाथ में लेकर अबशालोम के हृदय में, जो बांज वृक्ष में जीवित लटका था, छेद डाला। १५ तब योआब के दस हथियार ढोनेवाले जवानों ने अबशालोम को घेरके ऐसा मारा कि वह मर गया। १६ फिर योआब ने नरसिंगा फूंका, और लोग इस्राएल का पीछा करने से लौटे; क्योंकि योआब प्रजा को बचाना चाहता था। १७ तब लोगों ने अबशालोम को उतारके उस बन के एक बड़े गड़हे में डाल दिया, और उस पर पत्थरों का एक बहुत बड़ा ढेर लगा दिया; और सब इस्राएली अपने अपने डेरे को भाग गए। १८ अपने जीते जी अबशालोम ने यह सोचकर कि मेरे नाम का स्मरण करानेवाला कोई पुत्र मेरे नहीं है, अपने लिये वह लाठ खड़ी कराई थी जो राजा की तराई में है; और लाठ का अपना ही नाम रखा, जो आज के दिन तक अबशालोम की लाठ कहलाती है॥

१९ और सादोक के पुत्र अहीमास ने कहा, मुझे दौड़कर राजा को यह समाचार देने दे, कि यहोवा ने न्याय करके तुझे तेरे शत्रुओं के हाथ से बचाया है। २० योआब ने उस से कहा, तू आज के दिन समाचार न दे; दूसरे दिन समाचार देने पाएगा, परन्तु आज समाचार न दे, इसलिये कि राजकुमार मर गया है। २१ तब योआब ने एक कूशी से कहा जो कुछ तू ने देखा है वह जाकर राजा को बता दे। तो वह कूशी योआब को दण्डवत् करके दौड़ गया। २२ फिर सादोक के पुत्र अहीमास ने दूसरी बार योआब से कहा, जो हो सो हो, परन्तु मुझे भी कूशी के पीछे दौड़ जाने दे। योआब ने कहा, हे मेरे बेटे, तेरे समाचार का कुछ बदला न मिलेगा, फिर तू क्यों दौड़ जाना चाहता है? २३ उस ने यह कहा, जो हो सो हो, परन्तु मुझे दौड़

यरूशलेम को छोड़ आया, उस दिन तेरे दास ने जो कुटिल काम किया, उसे ऐसा स्मरण न कर कि राजा उसे अपने ध्यान में रखे। २० क्योंकि तेरा दास जानता है कि मैं ने पाप किया; देख, आज अपने प्रभु राजा से भेंट करने के लिये यूसुफ के समस्त घराने में से मैं ही पहिला आया हूं। २१ तब सरूयाह के पुत्र अबीशै ने कहा, शिमी ने जो यहोवा के अभिषिक्त को शाप दिया था, इस कारण क्या उसको वध करना न चाहिये? २२ दाऊद ने कहा, हे सरूयाह के बेटों, मुझे तुम से क्या काम, कि तुम आज मेरे विरोधी ठहरे हो? आज क्या इस्राएल में किसी को प्राण दण्ड मिलेगा? क्या मैं नहीं जानता कि आज मैं इस्राएल का राजा हुआ हूं? २३ फिर राजा ने शिमी से कहा, तुझे प्राण दण्ड न मिलेगा। और राजा ने उस से शपथ भी खाई॥

२४ तब शाऊल का पोता मपीबोशेत राजा से भेंट करने को आया; उस ने राजा के चले जाने के दिन से उसके कुशल क्षेम से फिर आने के दिन तक न अपने पावों के नाखून काटे, और न अपनी दाढ़ी बनवाई, और न अपने कपड़े धुलवाए थे। २५ तो जब यरूशलेमी राजा से मिलने को गए, तब राजा ने उस से पूछा, हे मपीबोशेत, तू मेरे संग क्यों नहीं गया था? २६ उस ने कहा, हे मेरे प्रभु, हे राजा, मेरे कर्मचारी ने मुझे धोखा दिया था; तेरा दास जो पंगु है; इसलिये तेरे दास ने सोचा, कि मैं गदहे पर काठी कसवाकर उस पर चढ़ राजा के साथ चला जाऊंगा। २७ और मेरे कर्मचारी ने मेरे प्रभु राजा के साम्हने मेरी चुगली खाई है। परन्तु मेरा प्रभु राजा परमेश्वर के दूत के समान है; और जो कुछ तुझे भाए वही कर। २८ मेरे पिता का समस्त घराना तेरी ओर से प्राण दण्ड के योग्य था; परन्तु तू ने अपने दास को अपनी मेज पर खानेवालों में गिना है। मुझे क्या हक है कि मैं राजा की ओर दोहाई दूं? २९ राजा ने उस से कहा, तू अपनी बात की चर्चा क्यों करता रहता है? मेरी आज्ञा यह है, कि उस भूमि को तुम और सीबा दोनों आपस में बांट लो। ३० मपीबोशेत ने राजा से कहा, मेरे प्रभु राजा जो कुशल क्षेम से अपने घर आया है, इसलिये सीबा ही सब कुछ ले ले॥

३१ तब गिलादी बर्जिल्लै रोगलीम से आया, और राजा के साथ यरदन पार गया, कि उसको यरदन के पार पहुंचाए। ३२ बर्जिल्लै तो वृद्ध पुरुष था, अर्थात् अस्सी वर्ष की आयु का था; जब तक राजा महनैम में रहता था तब तक वह उसका पालन पोषण करता रहा; क्योंकि वह बहुत धनी था। ३३ तब राजा ने बर्जिल्लै से कहा, मेरे संग पार चल, और मैं तुझे यरूशलेम में अपने पास रखकर तेरा पालन पोषण करूंगा। ३४ बर्जिल्लै ने राजा से कहा, मुझे कितने दिन जीवित रहना है, कि मैं राजा के संग यरूशलेम को जाऊं? ३५ आज मैं अस्सी वर्ष का हूं; क्या मैं भले-बुरे का विवेक कर सकता हूं? क्या तेरा दास जो कुछ खाता पीता है उसका स्वाद पहिचान सकता है? क्या मुझे गवैय्यों वा गायिकाओं का शब्द अब सुन पड़ता है? तेरा दास अब अपने प्रभु राजा के लिये क्यों बोझ का कारण हो? ३६ तेरा दास राजा के संग यरदन पार ही तक जाएगा। राजा इसका ऐसा

बड़ा बदला मुझे क्यों दे? ३७ अपने दास को लौटने दे, कि मैं अपने ही नगर में अपने माता पिता के कब्रिस्तान के पास मरूं। परन्तु तेरा दास किम्हाम उपस्थित है; मेरे प्रभु राजा के संग वह पार जाए; और जैसा तुझे भाए वैसा ही उस से व्यवहार करना। ३८ राजा ने कहा, हां, किम्हान मेरे संग पार चलेगा, और जैसा तुझे भाए वैसा ही मैं उस से व्यवहार करूंगा; वरन जो कुछ तू मुझ से चाहेगा वह मैं तेरे लिये करूंगा। ३९ तब सब लोग यरदन पार गए, और राजा भी पार हुआ; तब राजा ने बर्जिल्लै को चूमकर आशीर्वाद दिया, और वह अपने स्थान को लौट गया॥

(शेबा की राजद्रोह की गोष्ठी)

४० तब राजा गिल्गाल की ओर पार गया, और उसके संग किम्हाम पार हुआ; और सब यहूदी लोगों ने और आधे इस्राएली लोगों ने राजा को पार पहुंचाया। ४१ तब सब इस्राएली पुरुष राजा के पास आए, और राजा से कहने लगे, क्या कारण है कि हमारे यहूदी भाई तुझे चोरी से ले आए, और परिवार समेत राजा को और उसके सब जनों को भी यरदन पार ले आए हैं? ४२ सब यहूदी पुरुषों ने इस्राएली पुरुषों को उत्तर दिया, कि कारण यह है कि राजा हमारे गोत्र का है। तो तुम लोग इस बात से क्यों रूठ गए हो? क्या हम ने राजा का दिया हुआ कुछ खाया है? वा उस ने हमें कुछ दान दिया है? ४३ इस्राएली पुरुषों ने यहूदी पुरुषों को उत्तर दिया, राजा में दस अंश हमारे हैं; और दाऊद में हमारा भाग तुम्हारे भाग से बड़ा है। तो फिर तुम ने हमें क्यों तुच्छ जाना? क्या अपने राजा के लौटा ले आने की चर्चा पहिले हम ही ने न की थी? और यहूदी पुरुषों ने इस्राएली पुरुषों से अधिक कड़ी बातें कहीं॥

२० वहां संयोग से शेबा नाम एक बिन्यामीनी था, वह ओछा पुरुष बिक्री का पुत्र था; वह नरसिंगा फूंककर कहने लगा, दाऊद में हमारा कुछ अंश नहीं, और न यिशै के पुत्र में हमारा कोई भाग है; हे इस्राएलियो, अपने अपने डेरे को चले जाओ! २ इसलिये सब इस्राएली पुरुष दाऊद के पीछे चलना छोड़कर बिक्री के पुत्र शेबा के पीछे हो लिए; परन्तु सब यहूदी पुरुष यरदन से यरूशलेम तक अपने राजा के संग लगे रहे॥

३ तब दाऊद यरूशलेम को अपने भवन में आया; और राजा ने उन दस रखेलियों को, जिन्हें वह भवन की चौकसी करने को छोड़ गया था, अलग एक घर में रखा, और उनका पालन पोषण करता रहा, परन्तु उन से सहवास न किया। इसलिये वे अपनी अपनी मृत्यु के दिन तक विधवापन की सी दशा में जीवित ही बन्द रहीं॥

४ तब राजा ने अमासा से कहा, यहूदी पुरुषों को तीन दिन के भीतर मेरे पास बुला ला, और तू भी यहां उपस्थित रहना। ५ तब अमासा यहूदियों को बुलाने गया; परन्तु उसके ठहराए हुए समय से अधिक रह गया। ६ तब दाऊद ने अबीशै से कहा, अब बिक्री का पुत्र शेबा अबशालोम से भी हमारी अधिक हानि करेगा; इसलिये तू अपने प्रभु के लोगों को लेकर उसका पीछा कर, ऐसा न हो कि वह

गढ़वाले नगर पाकर हमारी दृष्टि से छिप जाए *। ७ तब योआब के जन, और करेती और पलेती लोग, और सब शूरवीर उसके पीछे हो लिए; और बिक्री के पुत्र शेबा का पीछा करने को यरूशलेम से निकले। ८ वे गिबोन में उस भारी पत्थर के पास पहुंचे ही थे, कि अमासा उन से आ मिला। योआब तो योद्धा का वस्त्र फेंटे से कसे हुए था, और उस फेंटे में एक तलवार उसकी कमर पर अपनी म्यान में बन्धी हुई थी; और जब वह चला, तब वह निकलकर गिर पड़ी। ९ तो योआब ने अमासा से पूछा, हे मेरे भाई, क्या तू कुशल से है? तब योआब ने अपना दाहिना हाथ बढ़ाकर अमासा को चूमने के लिये उसकी दाढ़ी पकड़ी। १० परन्तु अमासा ने उस तलवार की कुछ चिन्ता न की जो योआब के हाथ में थी; और उस ने उसे अमासा के पेट में भोंक दी, जिस से उसकी अन्तड़ियां निकलकर धरती पर गिर पड़ी, और उस ने उसको दूसरी बार न मारा; और वह मर गया। तब योआब और उसका भाई अबीशै बिक्री के पुत्र शेबा का पीछा करने को चले। ११ और उसके पास योआब का एक जवान खड़ा होकर कहने लगा, जो कोई योआब के पक्ष और दाऊद की ओर का हो वह योआब के पीछे हो ले। १२ अमासा तो सड़क के मध्य अपने लोहू में लोट रहा था। तो जब उस मनुष्य ने देखा कि सब लोग खड़े हो गए हैं, तब अमासा को सड़क पर से मैदान में उठा ले गया, और जब देखा कि जितने उसके पास आते हैं वे खड़े हो जाते हैं, तब उस ने उसके ऊपर एक कपड़ा डाल दिया। १३ उसके सड़क पर से सरकाए जाने पर, सब लोग बिक्री के पुत्र शेबा का पीछा करने को योआब के पीछे हो लिए। १४ और वह सब इस्राएली गोत्रों में होकर आबेल और बेतमाका और बेरियों के देश तक पहुंचा; और वे भी इकट्ठे होकर उसके पीछे हो लिए। १५ तब उन्हों ने उसको बेतमाका के आबेल में घेर लिया; और नगर के साम्हने ऐसा दमदमा बान्धा कि वह शहरपनाह से सट गया; और योआब के संग के सब लोग शहरपनाह को गिराने के लिये धक्का देने लगे। १६ तब एक बुद्धिमान स्त्री ने नगर में से पुकारा, सुनो! सुनो! योआब से कहो, कि यहां आए, ताकि मैं उस से कुछ बातें करूं। १७ जब योआब उसके निकट गया, तब स्त्री ने पूछा, क्या तू योआब है? उस ने कहा, हां, मैं वही हूं। फिर उस ने उस से कहा, अपनी दासी के वचन सुन। उस ने कहा, मैं तो सुन रहा हूं। १८ वह कहने लगी, प्राचीनकाल में तो लोग कहा करते थे, कि आबेल में पूछा जाए; और इस रीति झगड़े को निपटा देते थे। १९ मैं तो मेलमिलापवाले और विश्वासयोग्य इस्राएलियों में से हूं; परन्तु तू एक प्रधान नगर * नाश करने का यत्न करता है; तू यहोवा के भाग को क्यों निगल जाएगा? २० योआब ने उत्तर देकर कहा, यह मुझ से दूर हो, दूर, कि मैं निगल जाऊं वा नाश करूं! २१ बात ऐसी नहीं है। शेबा नाम एप्रैम के पहाड़ी देश का एक पुरुष जो बिक्री का पुत्र है, उस ने दाऊद

* मूल में—हमारी आंख निकाले।

* मूल में—नगर और मां।

राजा के विरुद्ध हाथ उठाया है; सो तुम लोग केवल उसी को सौंप दो, तब मैं नगर को छोड़कर चला जाऊंगा। स्त्री ने योआब से कहा, उसका सिर शहरपनाह पर से तेरे पास फेंक दिया जाएगा। २२ तब स्त्री अपनी बुद्धिमानी से सब लोगों के पास गई। तब उन्हों ने बिक्री के पुत्र शेबा का सिर काटकर योआब के पास फेंक दिया। तब योआब ने नरसिंगा फूंका, और सब लोग नगर के पास से अलग अलग होकर अपने अपने डेरे को गए। और योआब यरूशलेम को राजा के पास लौट गया।।

२३ योआब तो समस्त इस्राएली सेना के ऊपर प्रधान रहा; और यहोयादा का पुत्र बनायाह करेतियों और पलेतियों के ऊपर था; २४ और अदोराम बेगारों के ऊपर था; और अहीलूद का पुत्र यहोशापात इतिहास का लेखक था; २५ और शया मंत्री था; और सादोक और एब्यातार याजक थे; २६ और याईरी ईरा भी दाऊद का एक मंत्री था।।

(गिबोनियों का पलटा लिया जाना)

२१ दाऊद के दिनों में लगातार तीन बरस तक अकाल पड़ा; तो दाऊद ने यहोवा से प्रार्थना की *। यहोवा ने कहा, यह शाऊल और उसके खूनी घराने के कारण हुआ, क्योंकि उस ने गिबोनियों को मरवा डाला था। २ तब राजा ने गिबोनियों को बुलाकर उन से बातें कीं। गिबोनी लोग तो इस्राएलियों में से नहीं थे, वे बचे हुए एमोरियों में से थे; और इस्राएलियों ने उनके साथ शपथ खाई थी, परन्तु शाऊल को जो इस्राएलियों और यहूदियों के लिये जलन हुई थी, इस से उस ने उन्हें मार डालने के लिये यत्न किया था।।

३ तब दाऊद ने गिबोनियों से पूछा, मैं तुम्हारे लिये क्या करूं? और क्या करके ऐसा प्रायश्चित करूं, कि तुम यहोवा के निज भाग को आशीर्वाद दे सको? ४ गिबोनियों ने उस से कहा, हमारे और शाऊल वा उसके घराने के मध्य रुपये पैसे * का कुछ झगड़ा नहीं; और न हमारा काम है कि किसी इस्राएली को मार डालें। उस ने कहा, जो कुछ तुम कहो, वही मैं तुम्हारे लिये करूंगा। ५ उन्हों ने राजा से कहा, जिस पुरुष ने हम को नाश कर दिया, और हमारे विरुद्ध ऐसी युक्ति दी कि हम ऐसे सत्यानाश हो जाएं, कि इस्राएल के देश में आगे को न रह सकें, ६ उसके वंश के सात जन हमें सौंप दिए जाएं, और हम उन्हें यहोवा के लिये यहोवा के चुने हुए शाऊल की गिबा नाम बस्ती में फांसी देंगे। राजा ने कहा, मैं उनको सौंप दूंगा। ७ परन्तु दाऊद ने और शाऊल के पुत्र योनातन ने आपस में यहोवा की शपथ खाई थी, इस कारण राजा ने योनातन के पुत्र मपीबोशेत को जो शाऊल का पोता था बचा रखा। ८ परन्तु अर्मोनी और मपीबोशेत नाम, अय्या की बेटी रिस्पा के दोनों पुत्र जो शाऊल से उत्पन्न हुए थे; और शाऊल की बेटी मीकल के पांचों बेटे, जो वह महोलवासी बर्जिल्लै के पुत्र अद्रीएल की ओर से थे, इनको राजा ने पकड़वाकर ९ गिबोनियों के हाथ सौंप दिया, और उन्हों ने उन्हें पहाड़ पर यहोवा के साम्हने

* मूल में—यहोवा का दर्शन ढूंढा।

* मूल में—सोने चान्दी।

फांसी दी, और सातों एक साथ नाश हुए। उनका मार डाला जाना तो कटनी के पहिले दिनों में, अर्थात् जव की कटनी के आरम्भ में हुआ। १० तब अय्या की बेटी रिस्पा ने टाट लेकर, कटनी के आरम्भ से लेकर जब तक आकाश से उन पर अत्यन्त वृष्टि न पड़ी, तब तक चट्टान पर उसे अपने नीचे बिछाये रही; और न तो दिन में आकाश के पक्षियों को, और न रात में बनैले पशुओं को उन्हें छूने * दिया। ११ जब अय्या की बेटी शाऊल की रखेली रिस्पा के इस काम का समाचार दाऊद को मिला, १२ तब दाऊद ने जाकर शाऊल और उसके पुत्र योनातन की हड्डियों को गिलादी याबेश के लोगों से ले लिया, जिन्हों ने उन्हें बेतशान के उस चौक से चुरा लिया था, जहां पलिश्तियों ने उन्हें उस दिन टांगा था, जब उन्हों ने शाऊल को गिल्बो पहाड़ पर मार डाला था; १३ तो वह वहां से शाऊल और उसके पुत्र योनातन की हड्डियों को ले आया; और फांसी पाए हुओं की हड्डियां भी इकट्ठी की गईं। १४ और शाऊल और उसके पुत्र योनातन की हड्डियां बिन्यामीन के देश के जेला में शाऊल † के पिता कीश के क़ब्रिस्तान गाड़ी गईं; और दाऊद की सब आज्ञाओं के अनुसार काम हुआ। और उसके बाद परमेश्वर ने देश के लिये प्रार्थना सुन ली।

(दाऊद का पलिश्तियों पर विजय पाना)

१५ पलिश्तियों ने इस्राएल से फिर युद्ध किया, और दाऊद अपने जनों समेत जाकर पलिश्तियों से लड़ने लगा; परन्तु दाऊद थक गया। १६ तब यिशबोबनोब, जो रपाई के वंश का था, और उसके भाले का फल तौल में तीन सौ शेकेल पीतल का था, और वह नई तलवार * बान्धे हुए था, उस ने दाऊद को मारने को ठाना। १७ परन्तु सरूयाह के पुत्र अबीशै ने दाऊद की सहायता करके उस पलिश्ती को ऐसा मारा कि वह मर गया। तब दाऊद के जनों ने शपथ खाकर उस से कहा, तू फिर हमारे संग युद्ध को जाने न पाएगा, ऐसा न हो कि तेरे मरने से इस्राएल का दिया बुझ जाए॥

१८ इसके बाद पलिश्तियों के साथ गोब में फिर युद्ध हुआ; उस समय हूशाई सिब्बकै ने रपाईवंशी सप को मारा। १९ और गोब में पलिश्तियों के साथ फिर युद्ध हुआ; उस में बेतलेहेमवासी यारयोरगीम के पुत्र एल्हनान ने गती गोल्यत को मार डाला, जिसके बर्छे की छड़ जोलाहे की डोंगी के समान थी। २० फिर गत में भी युद्ध हुआ, और वहां एक बड़ी डील का रपाईवंशी पुरुष था, जिसके एक एक हाथ पांव में, छः छः उंगली, अर्थात् गिनती में चौबीस उंगलियां थीं। २१ जब उस ने इस्राएल को ललकारा, तब दाऊद के भाई शिमा के पुत्र यहोनातान ने उसे मारा। २२ ये ही चार गत में उस रपाई से उत्पन्न हुए थे; और वे दाऊद और उसके जनों से मार डाले गए॥

(दाऊद का एक भजन)

२२ और जिस समय यहोवा ने दाऊद को उसके सब शत्रुओं और शाऊल के हाथ से बचाया था, तब उस ने

* मूल में—उन पर विश्राम करने।
† मूल में—उस।

* वा नये हथियार।

यहोवा के लिये इस गीत के वचन गाए :
२ उस ने कहा,
यहोवा मेरी चट्टान, और मेरा गढ़, मेरा छुड़ानेवाला,
३ मेरा चट्टानरूपी परमेश्वर है, जिसका मैं शरणागत हूं,
मेरी ढाल, मेरा बचानेवाला सींग, मेरा ऊंचा गढ़, और मेरा शरणस्थान है,
हे मेरे उद्धारकर्त्ता, तू उपद्रव से मेरा उद्धार किया करता है ।।
४ मैं यहोवा को जो स्तुति के योग्य है पुकारूंगा,
और अपने शत्रुओं से बचाया जाऊंगा ।।
५ मृत्यु के तरंगों ने तो मेरे चारों ओर घेरा डाला,
नास्तिकपन की धाराओं ने मुझ को घबड़ा दिया था;
६ अधोलोक की रस्सियां मेरे चारों ओर थीं,
मृत्यु के फन्दे मेरे साम्हने थे ।।
७ अपने संकट में मैं ने यहोवा को पुकारा;
और अपने परमेश्वर के सम्मुख चिल्लाया।
और उस ने मेरी बात को अपने मन्दिर में से सुन लिया,
और मेरी दोहाई उसके कानों में पहुंची ।।
८ तब पृथ्वी हिल गई और डोल उठी;
और आकाश की नेवें कांपकर बहुत ही हिल गईं,
क्योंकि वह अति क्रोधित हुआ था।।
९ उसके नथनों से धुंआ निकला,
और उसके मुंह से आग निकलकर भस्म करने लगी;
जिस से कोयले दहक उठे ।।
१० और वह स्वर्ग को झुकाकर नीचे उतर आया;
और उसके पांवों के तले घोर अंधकार छाया था ।।
११ और वह करूब पर सवार होकर उड़ा,
और पवन के पंखों पर चढ़कर दिखाई दिया ।।
१२ और उस ने अपने चारों ओर के अंधियारे को, मेघों * के समूह, और आकाश की काली घटाओं को अपना मण्डप बनाया ।।
१३ उसके सम्मुख की झलक तो उसके आगे आगे थी,
आग के कोयले दहक उठे ।।
१४ यहोवा आकाश में से गरजा,
और परमप्रधान ने अपनी वाणी सुनाई ।।
१५ उस ने तीर चला चलाकर मेरे शत्रुओं को † तितर बितर कर दिया,
और बिजली गिरा गिराकर उसको परास्त कर दिया ।।
१६ तब समुद्र की थाह दिखाई देने लगी,
और जगत की नेवें खुल गईं,
यह तो यहोवा की डांट से,
और उसके नथनों की सांस की झोंक से हुआ ।।

* मूल में—जलों।
† मूल में—उनको।

१७ उस ने ऊपर से हाथ बढ़ाकर
मुझे थांम लिया,
और मुझे गहरे जल में से खींचकर
बाहर निकाला ।।
१८ उस ने मुझे मेरे बलवन्त शत्रु से,
और मेरे बैरियों से, जो मुझ से
अधिक सामर्थी थे, मुझे छुड़ा
लिया ।।
१९ उन्हों ने मेरी विपत्ति के दिन मेरा
साम्हना तो किया;
परन्तु यहोवा मेरा आश्रय था ।।
२० और उस ने मुझे निकालकर चौड़े
स्थान में पहुंचाया;
उस ने मुझ को छुड़ाया, क्योंकि
वह मुझ से प्रसन्न था ।।
२१ यहोवा ने मुझ से मेरे धर्म के
अनुसार व्यवहार किया;
मेरे कामों की शुद्धता के अनुसार
उस ने मुझे बदला दिया ।।
२२ क्योंकि मैं यहोवा के मार्गों पर
चलता रहा,
और अपने परमेश्वर से मुंह
मोड़कर दुष्ट न बना ।।
२३ उसके सब नियम तो मेरे साम्हने
बने रहे,
और मैं उसकी विधियों से हट
न गया ।।
२४ और मैं उसके साथ खरा बना
रहा,
और अधर्म से अपने को बचाए
रहा, जिस में मेरे फंसने का
डर था* ।।
२५ इसलिये यहोवा ने मुझे मेरे धर्म
के अनुसार बदला दिया,
मेरी उस शुद्धता के अनुसार जिसे
वह देखता था ।।
२६ दयावन्त के साथ तू अपने को
दयावन्त दिखाता;
खरे पुरुष के साथ तू अपने को
खरा दिखाता है;
२७ शुद्ध के साथ तू अपने को शुद्ध
दिखाता;
और टेढ़े के साथ तू तिरछा
बनता है ।।
२८ और दीन लोगों को तो तू बचाता
है,
परन्तु अभिमानियों पर दृष्टि
करके उन्हें नीचा करता है ।।
२९ हे यहोवा, तू ही मेरा दीपक है,
और यहोवा मेरे अन्धियारे को
दूर करके उजियाला कर देता
है ।।
३० तेरी सहायता से मैं दल पर धावा
करता,
अपने परमेश्वर की सहायता से
मैं शहरपनाह को फांद जाता
हूं ।।
३१ ईश्वर की गति खरी है;
यहोवा का वचन ताया हुआ है;
वह अपने सब शरणागतों की
ढाल है ।।
३२ यहोवा को छोड़ क्या कोई ईश्वर
है ?
हमारे परमेश्वर को छोड़ क्या
और कोई चट्टान है ?
३३ यह वही ईश्वर है, जो मेरा अति
दृढ़ क़िला है,
वह खरे मनुष्य को अपने मार्ग
में लिए चलता है ।।

* मूल में—अपने अधर्म से।

३४ वह मेरे पैरों को हरिणियों के से
　बना देता है,
　और मुझे ऊंचे स्थानों* पर
　खड़ा करता है ।।
३५ वह मेरे हाथों को युद्ध करना
　सिखाता है,
　यहां तक कि मेरी बांहें पीतल के
　धनुष को झुका देती हैं ।।
३६ और तू ने मुझ को अपने उद्धार
　की ढाल दी है,
　और तेरी नम्रता मुझे बढ़ाती है ।
३७ तू मेरे पैरों के लिये स्थान चौड़ा
　करता है,
　और मेरे पैर नहीं फिसले ।।
३८ मैं ने अपने शत्रुओं का पीछा करके
　उन्हें सत्यानाश कर दिया,
　और जब तक उनका अन्त न
　किया तब तक न लौटा ।।
३९ और मैं ने उनका अन्त किया;
　और उन्हें ऐसा छेद डाला है
　कि वे उठ नहीं सकते;
　वरन वे तो मेरे पांवों के नीचे
　गिरे पड़े हैं ।।
४० और तू ने युद्ध के लिये मेरी कमर
　बलवन्त की;
　और मेरे विरोधियों को मेरे ही
　साम्हने परास्त कर दिया ।।
४१ और तू ने मेरे शत्रुओं की पीठ
　मुझे दिखाई,
　ताकि मैं अपने बैरियों को काट
　डालूं ।।
४२ उन्हों ने बाट तो जोही, परन्तु
　कोई बचानेवाला न मिला;
　उन्हों ने यहोवा की भी बाट जोही,
　परन्तु उस ने उनको कोई
　उत्तर न दिया ।।
४३ तब मैं ने उनको कूट कूटकर
　भूमि की धूलि के समान कर
　दिया,
　मैं ने उन्हें सड़कों और गली कूचों
　की कीचड़ के समान पटककर
　चारों ओर फैला दिया ।।
४४ फिर तू ने मुझे प्रजा के झगड़ों से
　छुड़ाकर अन्य जातियों का प्रधान
　होने के लिये मेरी रक्षा की;
　जिन लोगों को मैं न जानता था
　वे भी मेरे आधीन हो जाएंगे ।।
४५ परदेशी मेरी चापलूसी करेंगे;
　वे मेरा नाम सुनते ही मेरे वश
　में आएंगे ।।
४६ परदेशी मुर्झाएंगे,
　और अपने कोठों में से थरथराते
　हुए निकलेंगे ।।
४७ यहोवा जीवित है; मेरी चट्टान
　धन्य है,
　और परमेश्वर जो मेरे उद्धार
　की चट्टान है, उसकी महिमा
　हो ।।
४८ धन्य है मेरा पलटा लेनेवाला
　ईश्वर,
　जो देश देश के लोगों को मेरे
　वश में कर देता है,
४९ और मुझे मेरे शत्रुओं के बीच से
　निकालता है;
　हां, तू मुझे मेरे विरोधियों से
　ऊंचा करता है,
　और उपद्रवी पुरुष से बचाता है ।।
५० इस कारण, हे यहोवा, मैं जाति
　जाति के साम्हने तेरा धन्यवाद
　करूंगा,

* मूल में—मेरे ऊंचे स्थानों।

और तेरे नाम का भजन गाऊंगा ।।
५१ वह अपने ठहराए हुए राजा का
बड़ा उद्धार करता है,
वह अपने अभिषिक्त दाऊद, और
उसके वंश पर युगानुयुग करुणा
करता रहेगा ।।

(दाऊद के जीवन के अन्तिम समय के वचन)

२३ दाऊद के अन्तिम वचन ये हैं :
यिशै के पुत्र की यह वाणी है,
उस पुरुष की वाणी है जो ऊंचे पर खड़ा
किया गया,
और याकूब के परमेश्वर का
अभिषिक्त,
और इस्राएल का मधुर भजन
गानेवाला है :
२ यहोवा का आत्मा मुझ में होकर
बोला,
और उसी का वचन मेरे मुंह
में * आया ।।
३ इस्राएल के परमेश्वर ने कहा है,
इस्राएल की चट्टान ने मुझ से
बातें की है, कि मनुष्यों में
प्रभुता करनेवाला एक धर्मी
होगा,
जो परमेश्वर का भय मानता
हुआ प्रभुता करेगा,
४ वह मानो भोर का प्रकाश होगा
जब सूर्य निकलता है,
ऐसा भोर जिस में बादल न हों,
जैसा वर्षा के बाद निर्मल प्रकाश
के कारण भूमि से हरी हरी
घास उगती है ।।

* मूल में—मेरी जीभ पर।

५ क्या मेरा घराना ईश्वर की
दृष्टि में ऐसा नहीं है ?
उस ने तो मेरे साथ सदा की
एक ऐसी वाचा बान्धी है,
जो सब बातों में ठीक की हुई
और अटल भी है।
क्योंकि चाहे वह उसको प्रगट न
करे *,
तौभी † मेरा पूर्ण उद्धार और
पूर्ण अभिलाषा का विषय
वही है ।।
६ परन्तु ओछे लोग सब के सब
निकम्मी झाड़ियों के समान
हैं जो हाथ से पकड़ी नहीं जातीं;
७ और जो पुरुष उनको छूए उसे
लोहे और भाले की छड़ से ‡
सुसज्जित होना चाहिये।
इसलिये वे अपने ही स्थान में
आग से भस्म कर दिए जाएंगे ।।

(दाऊद के वीरों की नामावली)

८ दाऊद के शूरवीरों के नाम ये हैं: अर्थात् तहकमोनी योशेब्बश्शेबेत, जो सरदारों में मुख्य था; वह एस्नी अदीनो भी कहलाता था; जिस ने एक ही समय में आठ सौ पुरुष मार डाले। ९ उसके बाद अहोही दोदै का पुत्र एलीआज़र था। वह उस समय दाऊद के संग के तीनों वीरों में से था, जब कि उन्हों ने युद्ध के लिये एकत्रित हुए पलिश्तियों को ललकारा, और इस्राएली पुरुष चले गए थे। १० वह कमर बान्धकर पलिश्तियों को तब तक

* मूल में—न उगाए। वा, सो क्या वह उसको न फंसाएगा।
† वा इस कारण।
‡ मूल में—से भरा।

मारता रहा जब तक उसका हाथ थक न गया, और तलवार हाथ से चिपट न गई; और उस दिन यहोवा ने बड़ी विजय कराई; और जो लोग उसके पीछे हो लिए वे केवल लूटने ही के लिये उसके पीछे हो लिए। ११ उसके बाद आगे नाम एक पहाड़ी का पुत्र शम्मा था। पलिश्तियों ने इकट्ठे होकर एक स्थान में दल बान्धा, जहां मसूर का एक खेत था; और लोग उनके डर के मारे भागे। १२ तब उस ने खेत के मध्य में खड़े होकर उसे बचाया, और पलिश्तियों को मार लिया; और यहोवा ने बड़ी विजय दिलाई। १३ फिर तीसों मुख्य सरदारों में से तीन जन कटनी के दिनों में दाऊद के पास अदुल्लाम नाम गुफ़ा में आए, और पलिश्तियों का दल रपाईम नाम तराई में छावनी किए हुए था। १४ उस समय दाऊद गढ़ में था; और उस समय पलिश्तियों की चौकी बेतलेहेम में थी। १५ तब दाऊद ने बड़ी अभिलाषा के साथ कहा, कौन मुझे बेतलेहेम के फाटक के पास के कुएं का पानी पिलाएगा? १६ तो वे तीनों वीर पलिश्तियों की छावनी में टूट पड़े, और बेतलेहेम के फाटक के कुंए से पानी भरके दाऊद के पास ले आए। परन्तु उस ने पीने से इनकार किया, और यहोवा के साम्हने अर्घ करके उण्डेला, १७ और कहा, हे यहोवा, मुझ से ऐसा काम दूर रहे। क्या मैं उन मनुष्यों का लोहू पीऊं जो अपने प्राणों पर खेलकर गए थे? इसलिये उस ने उस पानी को पीने से इनकार किया। इन तीन वीरों ने तो ये ही काम किए। १८ और अबीशै जो सरूयाह के पुत्र योआब का भाई था, वह तीनों में से मुख्य था। उस ने अपना भाला चलाकर तीन सौ को मार डाला, और तीनों में नामी हो गया। १९ क्या वह तीनों से अधिक प्रतिष्ठित न था? और इसी से वह उनका प्रधान हो गया; परन्तु मुख्य तीनों के पद को न पहुंचा। २० फिर यहोयादा का पुत्र बनायाह था, जो कबसेलवासी एक बड़े काम करनेवाले वीर का पुत्र था; उस ने सिंह सरीखे दो मोआबियों को मार डाला। और बर्फ के समय उस ने एक गड़हे में उतरके एक सिंह को मार डाला। २१ फिर उस ने एक रूपवान् मिस्री पुरुष को मार डाला। मिस्री तो हाथ में भाला लिए हुए था; परन्तु बनायाह एक लाठी ही लिए हुए उसके पास गया, और मिस्री के हाथ से भाला को छीनकर उसी के भाले से उसे घात किया। २२ ऐसे ऐसे काम करके यहोयादा का पुत्र बनायाह उन तीनों वीरों में नामी हो गया। २३ वह तीसों से अधिक प्रतिष्ठित तो था, परन्तु मुख्य तीनों के पद को न पहुंचा। उसको दाऊद ने अपनी निज सभा का सभासद नियुक्त किया।

२४ फिर तीसों में योआब का भाई असाहेल; बेतलेहेमी दोदो का पुत्र एल्हानान, २५ हेरोदी शम्मा, और एलीका, पेलेती हेलेस, २६ तकोई इक्केश का पुत्र ईरा, २७ अनातोती अबीएज़ेर, हूशाई मबुन्ने, २८ अहोही सल्मोन, नतोपाही महरै, २९ एक और नतोपाही बाना का पुत्र हेलेब, बिन्यामीनियों के गिबा नगर के रीबै का पुत्र इत्तै, ३० पिरातोनी, बनायाह, गाश के नालों के पास रहनेवाला हिद्दै, ३१ अराबा का अबीअल्बोन, बहूरीमी अजमावेत, ३२ शालबोनी एल्यहबा, याशेन के वंश में से योनातन, ३३ पहाड़ी

शम्मा, अरारी शारार का पुत्र अहीआम, ३४ अहसबै का पुत्र एलीपेलेप्त माका देश का, गीलोई अहीतोपेल का पुत्र एलीआम, ३५ कर्म्मेली हेस्रो, अराबी पारै ३६ सोबाई नातान का पुत्र यिगाल, गादी बानी, ३७ अम्मोनी सेलेक, बेरोती नहरै को सरूयाह के पुत्र योआब का हथियार ढोनेवाला था, ३८ येतेरी ईरा, और गारेब, ३९ और हित्ती ऊरिय्याह था: सब मिलाकर सैंतीस थे।

(दाऊद का अपनी प्रजा की गिनती लेना, और इस पाप का दण्ड भोगना, और पापमोचन पाना)

२४ और यहोवा का कोप इस्राएलियों पर फिर भड़का, और उस ने दाऊद को इनकी हानि के लिये यह कहकर उभारा, कि इस्राएल और यहूदा की गिनती ले। २ सो राजा ने योआब सेनापति से जो उसके पास था कहा, तू दान से बेर्शेबा तक रहनेवाले सब इस्राएली गोत्रों में इधर उधर घूम, और तुम लोग प्रजा की गिनती लो, ताकि मैं जान लूं कि प्रजा की कितनी गिनती है। ३ योआब ने राजा से कहा, प्रजा के लोग कितने ही क्यों न हों, तेरा परमेश्वर यहोवा उनको सौगुणा बढ़ा दे, और मेरा प्रभु राजा इसे अपनी आंखों से देखने भी पाए; परन्तु, हे मेरे प्रभु, हे राजा, यह बात तू क्यों चाहता है? ४ तौभी राजा की आज्ञा योआब और सेनापतियों पर प्रबल हुई। सो योआब और सेनापति राजा के सम्मुख से इस्राएली प्रजा की गिनती लेने को निकल गए। ५ उन्हों ने यरदन पार जाकर अरोएर नगर की दाहिनी ओर डेरे खड़े किए, जो गाद के नाले के मध्य में और याजेर की ओर है। ६ तब वे गिलाद में और तहतीम्होदशी नाम देश में गए, फिर दान्यान को गए, और चक्कर लगाकर सीदोन में पहुंचे; ७ तब वे सोर नाम दृढ़ गढ़, और हिव्वियों और कनानियों के सब नगरों में गए; और उन्हों ने यहूदा देश की दक्खिन दिशा में बेर्शेबा में दौरा निपटाया। ८ और सब देश में इधर उधर घूम घूमकर वे नौ महीने और बीस दिन के बीतने पर यरूशलेम को आए। ९ तब योआब ने प्रजा की गिनती का जोड़ राजा को सुनाया; और तलवार चलानेवाले योद्धा इस्राएल के तो आठ लाख, और यहूदा के पांच लाख निकले॥

१० प्रजा की गणना करने के बाद दाऊद का मन व्याकुल हुआ। और दाऊद ने यहोवा से कहा, यह काम जो मैं ने किया वह महापाप है। तो अब, हे यहोवा, अपने दास का अधर्म दूर कर; क्योंकि मुझ से बड़ी मूर्खता हुई है। ११ बिहान को जब दाऊद उठा, तब यहोवा का यह वचन गाद नाम नबी के पास जो दाऊद का दर्शी था पहुंचा, १२ कि जाकर दाऊद से कह, कि यहोवा यों कहता है, कि मैं तुझ को तीन विपत्तियां दिखाता हूं; उन में से एक को चुन ले, कि मैं उसे तुझ पर डालूं। १३ सो गाद ने दाऊद के पास जाकर इसका समाचार दिया, और उस से पूछा, क्या तेरे देश में सात वर्ष का अकाल पड़े? वा तीन महीने तक तेरे शत्रु तेरा पीछा करते रहें और तू उन से भागता रहे? वा तेरे देश में तीन दिन तक मरी फैली रहे? अब सोच विचार कर, कि मैं अपने भेजनेवाले को क्या उत्तर दूं। १४ दाऊद ने गाद से कहा, मैं बड़े

संकट में हूं; हम यहोवा के हाथ में पड़ें, क्योंकि उसकी दया बड़ी है; परन्तु मनुष्य के हाथ में मैं न पड़ूंगा। १५ तब यहोवा इस्राएलियों में बिहान से ले ठहराए हुए समय तक मरी फैलाए रहा; और दान से लेकर बेर्शेबा तक रहनेवाली प्रजा में से सत्तर हजार पुरुष मर गए। १६ परन्तु जब दूत ने यरूशलेम का नाश करने को उस पर अपना हाथ बढ़ाया, तब यहोवा वह विपत्ति डालकर शोकित हुआ, और प्रजा के नाश करनेवाले दूत से कहा, बस कर; अब अपना हाथ खींच। और यहोवा का दूत उस समय अरौना नाम एक यबूसी के खलिहान के पास था। १७ तो जब प्रजा का नाश करनेवाला दूत दाऊद को दिखाई पड़ा, तब उस ने यहोवा से कहा, देख, पाप तो मैं ही ने किया, और कुटिलता मैं ही ने की है; परन्तु इन भेड़ों ने क्या किया है? सो तेरा हाथ मेरे और मेरे पिता के घराने के विरुद्ध हो॥

१८ उसी दिन गाद ने दाऊद के पास आकर उस से कहा, जाकर अरौना यबूसी के खलिहान में यहोवा की एक वेदी बनवा। १९ सो दाऊद यहोवा की आज्ञा के अनुसार गाद का वह वचन मानकर वहां गया। २० जब अरौना ने दृष्टि कर दाऊद को कर्मचारियों समेत अपनी ओर आते देखा, तब अरौना ने निकलकर भूमि पर मुंह के बल गिर राजा को दण्डवत् की। २१ और अरौना ने कहा, मेरा प्रभु राजा अपने दास के पास क्यों पधारा है? दाऊद ने कहा, तुझ से यह खलिहान मोल लेने आया हूं, कि यहोवा की एक वेदी बनवाऊं, इसलिये कि यह व्याधि प्रजा पर से दूर की जाए। २२ अरौना ने दाऊद से कहा, मेरा प्रभु राजा जो कुछ उसे अच्छा लगे सो लेकर चढ़ाए; देख, होमबलि के लिये तो बैल हैं, और दांवने के हथियार, और बैलों का सामान ईंधन का काम देंगे। २३ यह सब अरौना ने राजा को दे दिया। फिर अरौना ने राजा से कहा, तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से प्रसन्न होए। २४ राजा ने अरौना से कहा, ऐसा नहीं, मैं ये वस्तुएं तुझ से अवश्य दाम देकर लूंगा; मैं अपने परमेश्वर यहोवा को सेंतमेंत के होमबलि नहीं चढ़ाने का। सो दाऊद ने खलिहान और बैलों को चांदी के पचास शेकेल में मोल लिया। २५ और दाऊद ने वहां यहोवा की एक वेदी बनवाकर होमबलि और मेलबलि चढ़ाए। और यहोवा ने देश के निमित्त बिनती सुन ली, तब वह व्याधि इस्राएल पर से दूर हो गई॥

राजाओं का वृत्तान्त—पहिला भाग

(अदोनिय्याह की राजद्रोह की गोष्ठी और उसका तोड़ा जाना)

१ दाऊद राजा बूढ़ा वरन बहुत पुरनिया हुआ; और यद्यपि उसको कपड़ें ओढ़ाये जाते थे, तौभी वह गर्म न होता था। २ सो उसके कर्मचारियों ने उस से कहा, हमारे प्रभु राजा के लिये कोई जवान कुंवारी ढूंढ़ी जाए, जो राजा के सम्मुख रहकर उसकी सेवा किया करे और तेरे पास * लेटा करे, कि हमारे प्रभु राजा को गर्मी पहुंचे। ३ तब उन्हों ने समस्त इस्राएली देश में सुन्दर कुंवारी ढूंढ़ते ढूंढ़ते अबीशग नाम एक शूनेमिन को पाया, और राजा के पास ले आए। ४ वह कन्या बहुत ही सुन्दर थी; और वह राजा की दासी होकर उसकी सेवा करती रही; परन्तु राजा उस से सहबास न हुआ॥

५ तब हग्गीत का पुत्र अदोनिय्याह सिर ऊंचा करके कहने लगा कि मैं राजा हूंगा; सो उस ने रथ और सवार और अपने आगे आगे दौड़ने को पचास पुरुष रख लिए। ६ उसके पिता ने तो जन्म से लेकर उसे कभी यह कहकर उदास न किया था कि तू ने ऐसा क्यों किया। वह बहुत रूपवान था, और अबशालोम के पीछे उसका जन्म हुआ था। ७ और उस ने सरूयाह के पुत्र योआब से और एब्यातार याजक से बातचीत की, और उन्हों ने उसके पीछे होकर उसकी सहायता की। ८ परन्तु सादोक याजक यहोयादा का पुत्र बनायाह, नातान नबी, शिमी रेई, और दाऊद के शूरवीरों ने अदोनिय्याह का साथ न दिया। ९ और अदोनिय्याह ने जोहेलेत नाम पत्थर के पास जो एनरोगेल के निकट है, भेड़-बैल और तैयार किए हुए पशु बलि किए, और अपने भाई सब राजकुमारों को, और राजा के सब यहूदी कर्मचारियों को बुला लिया। १० परन्तु नातान नबी, और बनायाह और शूरवीरों को और अपने भाई सुलैमान को उस ने न बुलाया॥

११ तब नातान ने सुलैमान की माता बतशेबा से कहा, क्या तू ने सुना है कि हग्गीत का पुत्र अदोनिय्याह राजा बन बैठा है और हमारा प्रभु दाऊद इसे नहीं जानता? १२ इसलिये अब आ, मैं तुझे ऐसी सम्मति देता हूं, जिस से तू अपना और अपने पुत्र सुलैमान का प्राण बचाए। १३ तू दाऊद राजा के पास जाकर, उस से यों पूछ, कि हे मेरे प्रभु! हे राजा! क्या तू ने शपथ खाकर अपनी दासी से नहीं कहा, कि तेरा पुत्र सुलैमान मेरे पीछे राजा होगा, और वह मेरी राजगद्दी पर विराजेगा? फिर अदोनिय्याह क्यों राजा बन बैठा है? १४ और जब तू वहां राजा से ऐसी बातें करती रहेगी, तब मैं तेरे पीछे आकर, तेरी बातों को पुष्ट करूंगा॥

१५ तब बतशेबा राजा के पास कोठरी में गई: राजा तो बहुत बूढ़ा था, और उसकी सेवा टहल शूनेमिन अबीशग करती थी। १६ और बतशेबा ने झुककर राजा को दण्डवत् की, और राजा ने पूछा, तू क्या चाहती है? १७ उस ने उत्तर दिया, हे मेरे प्रभु, तू ने तो अपने परमेश्वर यहोवा की

* मूल में—तेरी गोद में।

शपथ खाकर अपनी दासी से कहा था कि तेरा पुत्र सुलैमान मेरे पीछे राजा होगा और वह मेरी गद्दी पर विराजेगा। १८ अब देख अदोनिय्याह राजा बन बैठा है, और अब तक मेरा प्रभु राजा इसे नहीं जानता। १९ और उस ने बहुत से बैल तैयार किए, पशु और भेड़ें बलि कीं, और सब राजकुमारों को और एब्यातार याजक और योआब सेनापति को बुलाया है, परन्तु तेरे दास सुलैमान को नहीं बुलाया। २० और हे मेरे प्रभु! हे राजा! सब इस्राएली तुझे ताक रहे हैं कि तू उन से कहे, कि हमारे प्रभु राजा की गद्दी पर उसके पीछे कौन बैठेगा। २१ नहीं तो जब हमारा प्रभु राजा, अपने पुरखाओं के संग सोएगा, तब मैं और मेरा पुत्र सुलैमान दोनों अपराधी गिने जाएंगे।।

२२ यों बतशेबा राजा से बातें कर ही रही थी, कि नातान नबी भी आ गया। २३ और राजा से कहा गया कि नातान नबी हाज़िर है; तब वह राजा के सम्मुख आया, और मुंह के बल गिरकर राजा को दण्डवत् की। २४ और नातान कहने लगा, हे मेरे प्रभु, हे राजा! क्या तू ने कहा है, कि अदोनिय्याह मेरे पीछे राजा होगा और वह मेरी गद्दी पर विराजेगा? २५ देख उस ने आज नीचे जाकर बहुत से बैल, तैयार किए हुए पशु और भेड़ें बलि की हैं, और सब राजकुमारों और सेनापतियों को और एब्यातार याजक को भी बुला लिया है; और वे उसके सम्मुख खाते पीते हुए कह रहे हैं कि अदोनिय्याह राजा जीवित रहे। २६ परन्तु मुझ तेरे दास को, और सादोक याजक और यहोयादा के पुत्र बनायाह, और तेरे दास सुलैमान को उस ने नहीं बुलाया। २७ क्या यह मेरे प्रभु राजा की ओर से हुआ? तू ने तो अपने दास को यह नहीं जताया है, कि प्रभु राजा की गद्दी पर कौन उसके पीछे विराजेगा।।

२८ दाऊद राजा ने कहा, बतशेबा को मेरे पास बुला लाओ। तब वह राजा के पास आकर उसके साम्हने खड़ी हुई। २९ राजा ने शपथ खाकर कहा, यहोवा जो मेरा प्राण सब जोखिमों से बचाता आया है, ३० उसके जीवन की शपथ, जैसा मैं ने तुझ से इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की शपथ खाकर कहा था, कि तेरा पुत्र सुलैमान मेरे पीछे राजा होगा, और वह मेरे बदले मेरी गद्दी पर विराजेगा, वैसा ही मैं निश्चय आज के दिन करूंगा। ३१ तब बतशेबा ने भूमि पर मुंह के बल गिर राजा को दण्डवत् करके कहा, मेरा प्रभु राजा दाऊद सदा तक जीवित रहे! ३२ तब दाऊद राजा ने कहा, मेरे पास सादोक याजक नातान नबी, यहोयादा के पुत्र बनायाह को बुला लाओ। सो वे राजा के साम्हने आए। ३३ राजा ने उन से कहा, अपने प्रभु के कर्मचारियों को साथ लेकर मेरे पुत्र सुलैमान को मेरे निज खच्चर पर चढ़ाओ; और गीहोन को ले जाओ; ३४ और वहां सादोक याजक और नातान नबी इस्राएल का राजा होने को उसका अभिषेक करें; तब तुम सब नरसिंगा फूंककर कहना, राजा सुलैमान जीवित रहे। ३५ और तुम उसके पीछे पीछे इधर आना, और वह आकर मेरे सिंहासन पर विराजे, क्योंकि मेरे बदले में वही राजा होगा: और उसी को मैं ने इस्राएल और यहूदा का प्रधान होने को ठहराया है। ३६ तब यहोयादा के पुत्र बनायाह ने कहा, आमीन! मेरे प्रभु राजा का परमेश्वर यहोवा भी ऐसा ही कहे। ३७ जिस रीति यहोवा मेरे प्रभु राजा के संग रहा, उसी रीति वह सुलैमान के भी संग रहे, और

उसका राज्य मेरे प्रभु दाऊद राजा के राज्य से भी अधिक बढ़ाए ।।

३८ तब सादोक याजक और नातान नबी और यहोयादा का पुत्र बनायाह करेतियों और पलेतियों को संग लिए हुए नीचे गए, और सुलैमान को राजा दाऊद के खच्चर पर चढ़ाकर गीहोन को ले चले। ३९ तब सादोक याजक ने यहोवा के तम्बू में से तेल भरा हुआ सींग निकाला, और सुलैमान का राज्याभिषेक किया। और वे नरसिंगे फूंकने लगे; और सब लोग बोल उठे, राजा सुलैमान जीवित रहे। ४० तब सब लोग उसके पीछे पीछे बांसुली बजाते और इतना बड़ा आनन्द करते हुए ऊपर गए, कि उनकी ध्वनि से पृथ्वी डोल उठी * ।।

४१ जब अदोनिय्याह और उसके सब नेवतहरी खा चुके थे, तब यह ध्वनि उनको सुनाई पड़ी। और योआब ने नरसिंगे का शब्द सुनकर पूछा, नगर में हलचल और चिल्लाहट का शब्द क्यों हो रहा है? ४२ वह यह कहता ही था, कि एब्यातार याजक का पुत्र योनातन आया और अदोनिय्याह ने उस से कहा, भीतर आ; तू तो भला मनुष्य है, और भला † समाचार भी लाया होगा। ४३ योनातन ने अदोनिय्याह से कहा, सचमुच हमारे प्रभु राजा दाऊद ने सुलैमान को राजा बना दिया। ४४ और राजा ने सादोक याजक, नातान नबी और यहोयादा के पुत्र बनायाह और करेतियों और पलेतियों को उसके संग भेज दिया, और उन्हों ने उसको राजा के खच्चर पर चढ़ाया है। ४५ और सादोक याजक, और नातान नबी ने गीहोन में उसका राज्याभिषेक किया है; और वे वहां से ऐसा आनन्द करते हुए ऊपर गए हैं कि नगर में हलचल मच गई, और जो शब्द तुम को सुनाई पड़ रहा है वही है। ४६ सुलैमान राजगद्दी पर विराज भी रहा है। ४७ फिर राजा के कर्मचारी हमारे प्रभु दाऊद राजा को यह कहकर धन्य कहने आए, कि तेरा परमेश्वर, सुलैमान का नाम, तेरे नाम से भी महान करे, और उसका राज्य तेरे राज्य से भी अधिक बढ़ाए; और राजा ने अपने पलंग पर दण्डवत् की। ४८ फिर राजा ने यह भी कहा, कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा धन्य है, जिस ने आज मेरे देखते एक को मेरी गद्दी पर विराजमान किया है ।।

४९ तब जितने नेवतहरी अदोनिय्याह के संग थे वे सब थरथरा गए, और उठकर अपना अपना मार्ग लिया। ५० और अदोनिय्याह सुलैमान से डर कर उठा, और जाकर वेदी के सींगों को पकड़ लिया। ५१ तब सुलैमान को यह समाचार मिला कि अदोनिय्याह सुलैमान राजा से ऐसा डर गया है कि उस ने वेदी के सींगों को यह कहकर पकड़ लिया है, कि आज राजा सुलैमान शपथ खाए कि अपने दास को तलवार से न मार डालेगा। ५२ सुलैमान ने कहा, यदि वह भलमनसी दिखाए तो उसका एक बाल भी भूमि पर गिरने न पाएगा, परन्तु यदि उस में दुष्टता पाई जाए, तो वह मारा जाएगा। ५३ तब राजा सुलैमान ने लोगों को भेज दिया जो उसको वेदी के पास से उतार ले आए तब उस ने आकर राजा सुलैमान को दण्डवत् की और सुलैमान ने उस से कहा, अपने घर चला जा ।।

* मूल में—फट गई।
† मूल में—अच्छा।

(दाऊद की मृत्यु और सुलैमान के राज्य का आरम्भ)

२ जब दाऊद के मरने का समय निकट आया, तब उस ने अपने पुत्र सुलैमान से कहा, २ कि मैं लोक की रीति पर कूच करनेवाला हूं इसलिये तू हियाव बांधकर पुरुषार्थ दिखा। ३ और जो कुछ तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे सौंपा है, उसकी रक्षा करके उसके मार्गों पर चला करना और जैसा मूसा की व्यवस्था में लिखा है, वैसा ही उसकी विधियों तथा आज्ञाओं, और नियमों, और चितौनियों का पालन करते रहना; जिस से जो कुछ तू करे और जहां कहीं तू जाए, उस में तू सफल होए; ४ और यहोवा अपना वह वचन पूरा करे जो उस ने मेरे विषय में कहा था, कि यदि तेरी सन्तान अपनी चाल के विषय में ऐसे सावधान रहें, कि अपने सम्पूर्ण हृदय और सम्पूर्ण प्राण से सच्चाई के साथ नित मेरे सम्मुख चलते रहें* तब तो इस्राएल की राजगद्दी पर विराजनेवाले की, तेरे कुल परिवार में घटी कभी न होगी।।

५ फिर तू स्वयं जानता है, कि सरूयाह के पुत्र योआब ने मुझ से क्या क्या किया! अर्थात् उस ने नेर के पुत्र अब्नेर, और येतेर के पुत्र अमासा, इस्राएल के इन दो सेनापतियों से क्या क्या किया। उस ने उन दोनों को घात किया, और मेल के समय युद्ध का लोहू बहाकर उस से अपनी कमर का कमरबन्द और अपने पांवों की जूतियां भिगो दीं। ६ इसलिये तू अपनी बुद्धि से काम लेना और उस पक्के बालवाले को अधोलोक में शांति से उतरने न देना। ७ फिर गिलादी बर्जिल्लै के पुत्रों पर कृपा रखना, और वे तेरी मेज़ पर खानेवालों में रहें, क्योंकि जब मैं तेरे भाई अबशालोम के साम्हने से भागा जा रहा था, तब उन्हों ने मेरे पास आकर वैसा ही किया था। ८ फिर सुन, तेरे पास बिन्यामीनी गेरा का पुत्र बहूरीमी शिमी रहता है, जिस दिन मैं महनैम को जाता था उस दिन उस ने मुझे कड़ाई से शाप दिया था पर जब वह मेरी भेंट के लिये यरदन को आया, तब मैं ने उस से यहोवा की यह शपथ खाई, कि मैं तुझे तलवार से न मार डालूंगा। ९ परन्तु अब तू इसे निर्दोष न ठहराना, तू तो बुद्धिमान पुरुष है; तुझे मालूम होगा कि उसके साथ क्या करना चाहिये, और उस पक्के बालवाले का लोहू बहाकर उसे अधोलोक में उतार देना।।

१० तब दाऊद अपने पुरखाओं के संग सो गया और दाऊदपुर में उसे मिट्टी दी गई। ११ दाऊद ने इस्राएल पर चालीस वर्ष राज्य किया, सात वर्ष तो उस ने हेब्रोन में और तैंतीस वर्ष यरूशलेम में राज्य किया था। १२ तब सुलैमान अपने पिता दाऊद की गद्दी पर विराजमान हुआ और उसका राज्य बहुत दृढ़ हुआ।।

१३ और हग्गीत का पुत्र अदोनिय्याह, सुलैमान की माता बतशेबा के पास आया, और बतशेबा ने पूछा, क्या तू मित्रभाव से आता है? १४ उस ने उत्तर दिया, हां, मित्रभाव से! फिर वह कहने लगा, मुझे तुझ से एक बात कहनी है। उस ने कहा, कह! १५ उस ने कहा, तुझे तो मालूम है कि राज्य मेरा हो गया था, और समस्त इस्राएली मेरी ओर मुंह किए थे, कि मैं राज्य करूं; परन्तु अब राज्य पलटकर मेरे भाई का हो गया है, क्योंकि वह यहोवा की ओर से उसको मिला है। १६ इसलिये

* मूल में—मेरे साम्हने चलते रहें।

अब मैं तुझ से एक बात मांगता हूं, मुझ से नाही न करना उस ने कहा, कहे जा। १७ उस ने कहा, राजा सुलैमान तुझ से नाही न करेगा; इसलिये उस से कह, कि वह मुझे शूनेमिन अबीशग को ब्याह दे। १८ बतशेबा ने कहा, अच्छा, मैं तेरे लिये राजा से कहूंगी। १९ तब बतशेबा अदोनिय्याह के लिये राजा सुलैमान से बातचीत करने को उसके पास गई, और राजा उसकी भेंट के लिये उठा, और उसे दण्डवत् करके अपने सिंहासन पर बैठ गया : फिर राजा ने अपनी माता के लिये एक सिंहासन रख दिया, और वह उसकी दाहिनी ओर बैठ गई। २० तब वह कहने लगी, मैं तुझ से एक छोटा सा वरदान मांगती हूं इसलिये मुझ से नाही न करना, राजा ने कहा, हे माता मांग; मैं तुझ से नाही न करूंगा। २१ उस ने कहा, वह शूनेमिन अबीशग तेरे भाई अदोनिय्याह को ब्याह दी जाए। २२ राजा सुलैमान ने अपनी माता को उत्तर दिया, तू अदोनिय्याह के लिये शूनेमिन अबीशग ही को क्यों मांगती है ? उसके लिये राज्य भी मांग, क्योंकि वह तो मेरा बड़ा भाई है, और उसी के लिये क्या ! एब्यातार याजक और सरूयाह के पुत्र योआब के लिये भी मांग। २३ और राजा सुलैमान ने यहोवा की शपथ खाकर कहा, यदि अदोनिय्याह ने यह बात अपने प्राण पर खेलकर न कही हो तो परमेश्वर मुझ से वैसा ही क्या वरन उस से भी अधिक करे। २४ अब यहोवा जिस ने मुझे स्थिर किया, और मेरे पिता दाऊद की राजगद्दी पर विराजमान किया है और अपने वचन के अनुसार मेरा घर बसाया है, उसके जीवन की शपथ आज ही अदोनिय्याह मार डाला जाएगा। २५ और राजा सुलैमान ने यहोयादा के पुत्र बनायाह को भेज दिया और उस ने जाकर, उसको ऐसा मारा कि वह मर गया।।

२६ और एब्यातार याजक से राजा ने कहा, अनातोत में अपनी भूमि को जा; क्योंकि तू भी प्राणदण्ड के योग्य है। आज के दिन तो मैं तुझे न मार डालूंगा, क्योंकि तू मेरे पिता दाऊद के साम्हने प्रभु यहोवा का सन्दूक उठाया करता था; और उन सब दुःखों में जो मेरे पिता पर पड़े थे तू भी दुःखी था। २७ और सुलैमान ने एब्यातार को यहोवा के याजक होने के पद से उतार दिया, इसलिये कि जो वचन यहोवा ने एली के वंश के विषय में शीलो में कहा था, वह पूरा हो जाए।।

२८ इसका समाचार योआब तक पहुंचा; योआब अबशालोम के पीछे तो नहीं हो लिया था, परन्तु अदोनिय्याह के पीछे हो लिया था। तब योआब यहोवा के तम्बू को भाग गया, और वेदी के सींगों को पकड़ लिया। २९ जब राजा सुलैमान को यह समाचार मिला, कि योआब यहोवा के तम्बू को भाग गया है, और वह वेदी के पास है, तब सुलैमान ने यहोयादा के पुत्र बनायाह को यह कहकर भेज दिया, कि तू जाकर उसे मार डाल। ३० तब बनायाह ने यहोवा के तम्बू के पास जाकर उससे कहा, राजा की यह आज्ञा है, कि निकल आ। उस ने कहा, नहीं, मैं यहीं मर जाऊंगा। तब बनायाह ने लौटकर यह सन्देश राजा को दिया कि योआब ने मुझे यह उत्तर दिया। ३१ राजा ने उस से कहा, उसके कहने के अनुसार उसको मार डाल, और उसे मिट्टी दे; ऐसा करके निर्दोषों का जो खून योआब ने किया है, उसका दोष तू मुझ पर से और मेरे पिता के घराने पर से दूर करेगा। ३२ और यहोवा उसके सिर वह खून लौटा देगा

क्योंकि उस ने मेरे पिता दाऊद के बिना जाने अपने से अधिक धर्मी और भले दो पुरुषों पर, अर्थात् इस्राएल के प्रधान सेनापति नेर के पुत्र अब्नेर और यहूदा के प्रधान सेनापति येतेर के पुत्र अमासा पर टूटकर उनको तलवार से मार डाला था। ३३ यों योआब के सिर पर और उसकी सन्तान के सिर पर खून सदा तक रहेगा, परन्तु दाऊद और उसके वंश और उसके घराने और उसके राज्य पर * यहोवा की ओर से शांति सदैव तक रहेगी। ३४ तब यहोयादा के पुत्र बनायाह ने जाकर योआब को मार डाला; और उसको जंगल में उसी के घर में मिट्टी दी गई। ३५ तब राजा ने उसके स्थान पर यहोयादा के पुत्र बनायाह को प्रधान सेनापति ठहराया; और एब्यातार के स्थान पर सादोक याजक को ठहराया ।।

३६ और राजा ने शिमी को बुलवा भेजा, और उस से कहा, तू यरूशलेम में अपना एक घर बनाकर वहीं रहना : और नगर से बाहर कहीं न जाना। ३७ तू निश्चय जान रख कि जिस दिन तू निकलकर किद्रोन नाले के पार उतरे, उसी दिन तू निःसन्देह मार डाला जाएगा, और तेरा लोहू तेरे ही सिर पर पड़ेगा। ३८ शिमी ने राजा से कहा, बात अच्छी है : जैसा मेरे प्रभु राजा ने कहा है, वैसा ही तेरा दास करेगा। तब शिमी बहुत दिन यरूशलेम में रहा। ३९ परन्तु तीन वर्ष के व्यतीत होने पर शिमी के दो दास, गत नगर के राजा माका के पुत्र आकीश के पास भाग गए, और शिमी को यह समाचार मिला, कि तेरे दास गत में हैं। ४० तब शिमी उठकर अपने गदहे पर काठी कसकर, अपने दास को ढूंढ़ने के लिये गत को आकीश के पास गया, और अपने दासों को गत से ले आया। ४१ जब सुलैमान राजा को इसका समाचार मिला, कि शिमी यरूशलेम से गत को गया, और फिर लौट आया है, ४२ तब उस ने शिमी को बुलवा भेजा, और उस से कहा, क्या मैं ने तुझे यहोवा की शपथ न खिलाई थी? और तुझ से चिताकर न कहा था, कि यह निश्चय जान रख कि जिस दिन तू निकलकर कहीं चला जाए, उसी दिन तू निःसन्देह मार डाला जाएगा? और क्या तू ने मुझ से न कहा था, कि जो बात मैं ने सुनी, वह अच्छी है? ४३ फिर तू ने यहोवा की शपथ और मेरी दृढ़ आज्ञा क्यों नहीं मानी? ४४ और राजा ने शिमी से कहा, कि तू आप ही अपने मन में उस सब दुष्टता को जानता है, जो तू ने मेरे पिता दाऊद से की थी? इसलिये यहोवा तेरे सिर पर तेरी दुष्टता लौटा देगा। ४५ परन्तु राजा सुलैमान धन्य रहेगा, और दाऊद का राज्य यहोवा के साम्हने सदैव दृढ़ रहेगा। ४६ तब राजा ने यहोयादा के पुत्र बनायाह को आज्ञा दी, और उस ने बाहर जाकर, उसको ऐसा मारा कि वह भी मर गया। और सुलैमान के हाथ में राज्य दृढ़ हो गया ।।

३ फिर राजा सुलैमान मिस्र के राजा फ़िरौन की बेटी को ब्याह कर उसका दामाद बन गया, और उसको दाऊदपुर में लाकर जब तक अपना भवन और यहोवा का भवन और यरूशलेम के चारों ओर की शहरपनाह न बनवा चुका, तब तक उसको वहीं रखा। २ क्योंकि प्रजा के लोग तो ऊंचे स्थानों पर बलि चढ़ाते थे और उन दिनों तक यहोवा के नाम का कोई भवन नहीं बना था ।।

* मूल में—उसकी राजगद्दी पर।

३ सुलैमान यहोवा से प्रेम रखता था और अपने पिता दाऊद की विधियों पर चलता तो रहा, परन्तु वह ऊंचे स्थानों पर भी बलि चढ़ाया और धूप जलाया करता था। ४ और राजा गिबोन को बलि चढ़ाने गया, क्योंकि मुख्य ऊंचा स्थान वही था, तब वहां की वेदी पर सुलैमान ने एक हज़ार होमबलि चढ़ाए। ५ गिबोन में यहोवा ने रात को स्वप्न के द्वारा सुलैमान को दर्शन देकर कहा, जो कुछ तू चाहे कि मैं तुझे दूं, वह मांग। ६ सुलैमान ने कहा, तू अपने दास मेरे पिता दाऊद पर बड़ी करुणा करता रहा, क्योंकि वह अपने को तेरे सम्मुख जानकर तेरे साथ सच्चाई और धर्म और मन की सीधाई से चलता रहा; और तू ने यहां तक उस पर करुणा की थी कि उसे उसकी गद्दी पर बिराजनेवाला एक पुत्र दिया है, जैसा कि आज वर्तमान है। ७ और अब हे मेरे परमेश्वर यहोवा ! तू ने अपने दास को मेरे पिता दाऊद के स्थान पर राजा किया है, परन्तु मैं छोटा लड़का सा हूं जो भीतर बाहर आना जाना नहीं जानता। ८ फिर तेरा दास तेरी चुनी हुई प्रजा के बहुत से लोगों के मध्य में है, जिनकी गिनती बहुतायत के मारे नहीं हो सकती। ९ तू अपने दास को अपनी प्रजा का न्याय करने के लिये समझने की ऐसी शक्ति * दे, कि मैं भले बुरे को परख सकूं : क्योंकि कौन ऐसा है कि तेरी इतनी बड़ी प्रजा का न्याय कर सके ? १० इस बात से प्रभु प्रसन्न हुआ, कि सुलैमान ने ऐसा वरदान मांगा है। ११ तब परमेश्वर ने उस से कहा, इसलिये कि तू ने यह वरदान मांगा है, और न तो दीर्घायु और न धन और न अपने शत्रुओं का नाश मांगा है, परन्तु समझने के विवेक का वरदान मांगा है इसलिये सुन, १२ मैं तेरे वचन के अनुसार करता हूं, तुझे बुद्धि और विवेक से भरा मन देता हूं; यहां तक कि तेरे समान न तो तुझ से पहिले कोई कभी हुआ, और न बाद में कोई कभी होगा। १३ फिर जो तू ने नहीं मांगा, अर्थात् धन और महिमा, वह भी मैं तुझे यहां तक देता हूं, कि तेरे जीवन भर कोई राजा तेरे तुल्य न होगा। १४ फिर यदि तू अपने पिता दाऊद की नाईं मेरे मार्गों में चलता हुआ, मेरी विधियों और आज्ञाओं को मानता रहेगा तो मैं तेरी आयु को बढ़ाऊंगा ।।

१५ तब सुलैमान जाग उठा; और देखा कि यह स्वप्न था; फिर वह यरूशलेम को गया, और यहोवा की वाचा के सन्दूक के साम्हने खड़ा होकर, होमबलि और मेलबलि चढ़ाए, और अपने सब कर्मचारियों के लिये जेवनार की ।।

१६ उस समय दो वेश्याएं राजा के पास आकर उसके सम्मुख खड़ी हुईं। १७ उन में से एक स्त्री कहने लगी, हे मेरे प्रभु ! मैं और यह स्त्री दोनों एक ही घर में रहती हैं; और इसके संग घर में रहते हुए मेरे एक बच्चा हुआ। १८ फिर मेरे ज़च्चा के तीन दिन के बाद ऐसा हुआ कि यह स्त्री भी ज़च्चा हो गई; हम तो संग ही संग थीं, हम दोनों को छोड़कर घर में और कोई भी न था। १९ और रात में इस स्त्री का बालक इसके नीचे दबकर मर गया। २० तब इस ने आधी रात को उठकर, जब तेरी दासी सो ही रही थी, तब मेरा लड़का मेरे पास से लेकर अपनी छाती में रखा, और अपना मरा हुआ बालक मेरी छाती में लिटा दिया। २१ भोर को जब मैं अपना बालक दूध पिलाने को उठी, तब उसे मरा हुआ पाया;

* मूल में—सुननेहारा मन।

परन्तु भोर को मैं ने ध्यान से यह देखा, कि वह मेरा पुत्र नहीं है। २२ तब दूसरी स्त्री ने कहा, नहीं जीवित पुत्र मेरा है, और मरा पुत्र तेरा है। परन्तु वह कहती रही, नहीं, मरा हुआ तेरा पुत्र है और जीवित मेरा पुत्र है, यों वे राजा के साम्हने बातें करती रहीं। २३ राजा ने कहा, एक तो कहती है जो जीवित है, वही मेरा पुत्र है, और मरा हुआ तेरा पुत्र है; और दूसरी कहती है, नहीं, जो मरा है वही तेरा पुत्र है, और जो जीवित है, वह मेरा पुत्र है। २४ फिर राजा ने कहा, मेरे पास तलवार ले आओ; सो एक तलवार राजा के साम्हने लाई गई। २५ तब राजा बोला, जीवित बालक को दो टुकड़े करके आधा इसको और आधा उसको दो। २६ तब जीवित बालक की माता का मन अपने बेटे के स्नेह से भर आया, और उस ने राजा से कहा,हे मेरे प्रभु! जीवित बालक उसी को दे, परन्तु उसको किसी भांति न मार। दूसरी स्त्री ने कहा, वह न तो मेरा हो और न तेरा, वह दो टुकड़े किया जाए। २७ तब राजा ने कहा, पहिली को जीवित बालक दो; किसी भांति उसको न मारो; क्योंकि उसकी माता वही है। २८ जो न्याय राजा ने चुकाया था, उसका समाचार समस्त इस्राएल को मिला, और उन्हों ने राजा का भय माना, क्योंकि उन्हों ने यह देखा, कि उसके मन में न्याय करने के लिये परमेश्वर की बुद्धि है॥

(सुलैमान का राजप्रबन्ध और माहात्म्य)

४ राजा सुलैमान तो समस्त इस्राएल के ऊपर राजा नियुक्त हुआ था। २ और उसके हाकिम ये थे, अर्थात् सादोक का पुत्र अजर्याह याजक, और शीशा के पुत्र एलीहोरेप और अहिय्याह प्रधान मन्त्री थे। ३ अहीलूद का पुत्र यहोशापात, इतिहास का लेखक था। ४ फिर यहोयादा का पुत्र बनायाह प्रधान सेनापति था, और सादोक और एब्यातार याजक थे! ५ और नातान का पुत्र अजर्याह भण्डारियों के ऊपर था, और नातान का पुत्र जाबूद याजक, और राजा का मित्र भी था। ६ और अहीशार राजपरिवार के ऊपर था, और अब्दा का पुत्र अदोनीराम बेगारों के ऊपर मुखिया था। ७ और सुलैमान के बारह भण्डारी थे, जो समस्त इस्राएलियों के अधिकारी होकर राजा और उसके घराने के लिये भोजन का प्रबन्ध करते थे। एक एक पुरुष प्रति वर्ष अपने अपने नियुक्त महीने में प्रबन्ध करता था। ८ और उनके नाम ये थे, अर्थात् एप्रैम के पहाड़ी देश में बेन्हूर। ९ और माकस, शाल्बीम बेतशेमेश और एलोनबेथानान में बेन्देकेर था। १० अरुब्बोत में बेन्हेसेद जिसके अधिकार में सोको और हेपेर का समस्त देश था। ११ दोर के समस्त ऊंचे देश में बेनबीनादाब जिसकी स्त्री सुलैमान की बेटी तापत थी। १२ और अहीलूद का पुत्र बाना जिसके अधिकार में तानाक, मगिद्दो और बेतशान का वह सब देश था, जो सारतान के पास और यिज्रेल के नीचे और पेतशान से ले आबेलमहोला तक अर्थात् योकमाम की परली ओर तक है। १३ और गिला के रामोत में बेनगेबेर था, जिसके अधिकार में मनश्शेई याईर के गिलाद के गांव थे, अर्थात् इसी के अधिकार में बाशान के अर्गोब का देश था, जिस में शहरपनाह और पीतल के बेड़ेवाले साठ बड़े बड़े नगर थे। १४ और इद्दो के पुत्र अहीनादाब के हाथ में महनैम था। १५ नप्ताली में अहीमास था, जिस ने सुलैमान की बासमत नाम बेटी को ब्याह लिया था।

१६ और आशेर और आलोत में हूशै का पुत्र बाना, १७ इस्साकार में पारुह का पुत्र यहोशापात, १८ और बिन्यामीन में एला का पुत्र शिमी था। १९ ऊरी का पुत्र गेबेर गिलाद में अर्थात् एमोरियों के राजा सीहोन और बाशान के राजा ओग के देश में था, इस समस्त देश में वही भण्डारी था। २० यहूदा और इस्राएल के लोग बहुत थे, वे समुद्र के तीर पर की बालू के किनकों के समान बहुत थे, और खाते-पीते और आनन्द करते रहे।।

२१ सुलैमान तो महानद से लेकर पलिश्तियों के देश, और मिस्र के सिवाने तक के सब राज्यों के ऊपर प्रभुता करता था और उनके लोग सुलैमान के जीवन भर भेंट लाते, और उसके अधीन रहते थे। २२ और सुलैमान की एक दिन की रसोई में इतना उठता था, अर्थात् तीस कोर मैदा, २३ साठ कोर आटा, दस तैयार किए हुए बैल और चराइयों में से बीस बैल और सौ भेड़-बकरी और इनको छोड़ २४ हरिन, चिकारे, यखमूर और तैयार किए हुए पक्षी क्योंकि महानद के इस पार के समस्त देश पर अर्थात् तिप्सह से लेकर अज्जा तक जितने राजा थे, उन सभों पर सुलैमान प्रभुता करता, और अपने चारों ओर के सब रहनेवालों से मेल रखता था। २५ और दान से बेर्शेबा तक के सब यहूदी और इस्राएली अपनी अपनी दाखलता और अंजीर के वृक्ष तले सुलैमान के जीवन भर निडर रहते थे। २६ फिर उसके रथ के घोड़ों के लिये सुलैमान के चालीस हज़ार थान थे, और उसके बारह हज़ार सवार थे। २७ और वे भण्डारी अपने अपने महीने में राजा सुलैमान के लिये और जितने उसकी मेज़ पर आते थे, उन सभों के लिये भोजन का प्रबन्ध करते थे, किसी वस्तु की घटी होने नहीं पाती थी। २८ और घोड़ों और वेग चलनेवाले घोड़ों के लिये जव और पुआल जहां प्रयोजन पड़ता था वहां आज्ञा के अनुसार एक एक जन पहुंचाया करता था।।

२९ और परमेश्वर ने सुलैमान को बुद्धि दी, और उसकी समझ बहुत ही बढ़ाई, और उसके हृदय में समुद्र तट की बालू के किनकों के तुल्य अनगिनित गुण * दिए। ३० और सुलैमान की बुद्धि पूर्व देश के सब निवासियों और मिस्रियों की भी बुद्धि से बढ़कर बुद्धि थी। ३१ वह तो और सब मनुष्यों से वरन एतान, एज्रेही और हेमान, और माहोल के पुत्र कलकोल, और दर्दा से भी अधिक बुद्धिमान था: और उसकी कीर्त्ति चारों ओर की सब जातियों में फैल गई। ३२ उस ने तीन हज़ार नीतिवचन कहे, और उसके एक हज़ार पांच गीत भी हैं। ३३ फिर उस ने लबानोन के देवदारुओं से लेकर भीत में से उगते हुए जूफा तक के सब पेड़ों की चर्चा और पशुओं पक्षियों और रेंगनेवाले जन्तुओं और मछलियों की चर्चा की। ३४ और देश देश के लोग पृथ्वी के सब राजाओं की ओर से जिन्हों ने सुलैमान की बुद्धि की कीर्त्ति सुनी थी, उसकी बुद्धि की बातें सुनने को आया करते थे।

(मन्दिर के बनने की तैयारी)

५ और सोर नगर के हीराम राजा ने अपने दूत सुलैमान के पास भेजे, क्योंकि उस ने सुना था, कि वह अभिषिक्त होकर अपने पिता के स्थान पर राजा हुआ है: और दाऊद के जीवन भर हीराम उसका मित्र बना रहा। २ और सुलैमान ने हीराम के पास यों कहला भेजा, कि तुझे मालूम है,

---

* मूल में—हृदय की चौड़ाई।

३ कि मेरा पिता दाऊद अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन इसलिये न बनवा सका कि वह चारों ओर लड़ाइयों में तब तक बझा रहा, जब तक यहोवा ने उसके शत्रुओं को उसके पांव तले न कर दिया। ४ परन्तु अब मेरे परमेश्वर यहोवा ने मुझे चारों ओर से विश्राम दिया है और न तो कोई विरोधी है, और न कुछ विपत्ति देख पड़ती है। ५ मैं ने अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनवाने को ठाना है अर्थात् उस बात के अनुसार जो यहोवा ने मेरे पिता दाऊद से कही थी; कि तेरा पुत्र जिसे मैं तेरे स्थान में गद्दी पर बैठाऊंगा, वही मेरे नाम का भवन बनवाएगा। ६ इसलिये अब तू मेरे लिये लबानोन पर से देवदारु काटने की आज्ञा दे, और मेरे दास तेरे दासों के संग रहेंगे, और जो कुछ मज़दूरी तू ठहराए, वही मैं तुझे तेरे दासों के लिये दूंगा, तुझे मालूम तो है, कि सीदोनियों के बराबर लकड़ी काटने का भेद हम लोगों में से कोई भी नहीं जानता। ७ सुलैमान की ये बातें सुनकर, हीराम बहुत आनन्दित हुआ, और कहा, आज यहोवा धन्य है, जिस ने दाऊद को उस बड़ी जाति पर राज्य करने के लिये एक बुद्धिमान पुत्र दिया है। ८ तब हीराम ने सुलैमान के पास यों कहला भेजा कि जो तू ने मेरे पास कहला भेजा है वह मेरी समझ में आ गया, देवदारु और सनोवर की लकड़ी के विषय जो कुछ तू चाहे, वही मैं करूंगा। ९ मेरे दास लकड़ी को लबानोन से समुद्र तक पहुंचाएंगे, फिर मैं उनके बेड़े बनवाकर, जो स्थान तू मेरे लिये ठहराए, वहीं पर समुद्र के मार्ग से उनको पहुंचवा दूंगा : वहां मैं उनको खोलकर डलवा दूंगा, और तू उन्हें ले लेना : और तू मेरे परिवार के लिये भोजन देकर, मेरी भी इच्छा पूरी करना। १० इस प्रकार हीराम सुलैमान की इच्छा के अनुसार उसको देवदारु और सनोवर की लकड़ी देने लगा। ११ और सुलैमान ने हीराम के परिवार के खाने के लिये उसे बीस हज़ार कोर गेहूं और बीस कोर पेरा हुआ तेल दिया; इस प्रकार सुलैमान हीराम को प्रति वर्ष दिया करता था। १२ और यहोवा ने सुलैमान को अपने वचन के अनुसार बुद्धि दी, और हीराम और सुलैमान के बीच मेल बना रहा वरन उन दोनों ने आपस में वाचा भी बान्ध ली॥

१३ और राजा सुलैमान ने पूरे इस्राएल में से तीन हज़ार पुरुष बेगार लगाए, १४ और उन्हें लबानोन पहाड़ पर पारी पारी करके, महीने महीने दस हज़ार भेज दिया करता था और एक महीना तो वे लबानोन पर, और दो महीने घर पर रहा करते थे; और बेगारियों के ऊपर अदोनीराम ठहराया गया। १५ और सुलैमान के सत्तर हज़ार बोझ ढोनेवाले और पहाड़ पर अस्सी हज़ार वृक्ष काटनेवाले और पत्थर निकालनेवाले थे। १६ इनको छोड़ सुलैमान के तीन हज़ार तीन सौ मुखिये थे, जो काम करनेवालों के ऊपर थे। १७ फिर राजा की आज्ञा से बड़े बड़े अनमोल पत्थर इसलिये खोदकर निकाले गए कि भवन की नेव, गढ़े हुए पत्थरों से डाली जाए। १८ और सुलैमान के कारीगरों और हीराम के कारीगरों और गबालियों ने उनको गढ़ा, और भवन के बनाने के लिये लकड़ी और पत्थर तैयार किए॥

(मन्दिर आदि की बनावट)

६ इस्राएलियों के मिस्र देश से निकलने के चार सौ अस्सीवें वर्ष के बाद जो सुलैमान के इस्राएल पर राज्य करने का चौथा वर्ष था, उसके जीव नाम दूसरे

महीने में वह यहोवा का भवन बनाने लगा। २ और जो भवन राजा सुलैमान ने यहोवा के लिये बनाया उसकी लम्बाई साठ हाथ, चौड़ाई बीस हाथ और ऊंचाई तीस हाथ की थी। ३ और भवन के मन्दिर के साम्हने के ओसारे की लम्बाई बीस हाथ की थी, अर्थात् भवन की चौड़ाई के बराबर थी, और ओसारे की चौड़ाई जो भवन के साम्हने थी, वह दस हाथ की थी। ४ फिर उस ने भवन में स्थिर झिलमिलीदार खिड़कियां बनाईं। ५ और उस ने भवन के आसपास की भीतों से सटे हुए अर्थात् मन्दिर और दर्शन-स्थान दोनों भीतों के आसपास उस ने मंज़िलें और कोठरियां बनाईं। ६ सब से नीचेवाली मंज़िल की चौड़ाई पांच हाथ, और बीचवाली की छः हाथ, और ऊपरवाली की सात हाथ की थी, क्योंकि उस ने भवन के आसपास भीत को बाहर की ओर कुर्सीदार बनाया था इसलिये कि कड़ियां भवन की भीतों को पकड़े हुए न हों। ७ और बनते समय भवन ऐसे पत्थरों का बनाया गया, जो वहां ले आने से पहिले गढ़कर ठीक किए गए थे, और भवन के बनते समय हथौड़े वसूली वा और किसी प्रकार के लोहे के औजार का शब्द कभी सुनाई नहीं पड़ा। ८ बाहर की बीचवाली कोठरियों का द्वार भवन की दाहिनी अलंग में था, और लोग चक्करदार सीढ़ियों पर होकर बीचवाली कोठरियों में जाते, और उन से ऊपरवाली कोठरियों पर जाया करते थे। ९ उस ने भवन को बनाकर पूरा किया, और उसकी छत देवदारु की कड़ियों और तख्तों से बनी थी। १० और पूरे भवन से लगी हुई जो मंज़िलें उस ने बनाईं वह पांच हाथ ऊंची थीं, और वे देवदारु की कड़ियों के द्वारा भवन से मिलाई गई थीं॥

११ तब यहोवा का यह वचन सुलैमान के पास पहुंचा, कि यह भवन जो तू बना रहा है, १२ यदि तू मेरी विधियों पर चलेगा, और मेरे नियमों को मानेगा, और मेरी सब आज्ञाओं पर चलता हुआ उनका पालन करता रहेगा, तो जो वचन मैं ने तेरे विषय में तेरे पिता दाऊद को दिया था उसको मैं पूरा करूंगा। १३ और मैं इस्राएलियों के मध्य में निवास करूंगा, और अपनी इस्राएली प्रजा को न तजूंगा॥

१४ सो सुलैमान ने भवन को बनाकर पूरा किया। १५ और उस ने भवन की भीतों पर भीतरवार देवदारु की तख्ताबंदी की; और भवन के फ़र्श से छत तक भीतों में भीतरवार लकड़ी की तख्ताबंदी की, और भवन के फ़र्श को उस ने सनोवर के तख्तों से बनाया। १६ और भवन की पिछली अलंग में भी उस ने बीस हाथ की दूरी पर फ़र्श से ले भीतों के ऊपर तक देवदारु की तख्ताबंदी की; इस प्रकार उस ने परमपवित्र स्थान के लिये भवन की एक भीतरी कोठरी बनाई। १७ उसके साम्हने का भवन अर्थात् मन्दिर की लम्बाई चालीस हाथ की थी। १८ और भवन की भीतों पर भीतर-वार देवदारु की लकड़ी की तख्ताबंदी थी, और उस में इन्द्रायन और खिले हुए फूल खुदे थे, सब देवदारु ही था: पत्थर कुछ नहीं दिखाई पड़ता था। १९ भवन के भीतर उस ने एक दर्शन-स्थान यहोवा की वाचा का सन्दूक रखने के लिये तैयार किया। २० और उस दर्शन-स्थान की लम्बाई चौड़ाई और ऊंचाई बीस बीस हाथ की थी; और उस ने उस पर चोखा सोना मढ़वाया और वेदी की तख्ताबंदी देवदारु से की। २१ फिर सुलैमान ने भवन को भीतर भीतर चोखे सोने से मढ़वाया, और दर्शन-

स्थान के साम्हने सोने की सांकलें लगाईं; और उसको भी सोने से मढ़वाया। २२ और उस ने पूरे भवन को सोने से मढ़वाकर उसका पूरा काम निपटा दिया। और दर्शन-स्थान की पूरी वेदी को भी उस ने सोने से मढ़वाया॥

२३ दर्शन-स्थान में उस ने दस दस हाथ ऊंचे जलपाई की लकड़ी के दो करूब बना रखे। २४ एक करूब का एक पंख पांच हाथ का था, और उसका दूसरा पंख भी पांच हाथ का था, एक पंख के सिरे से, दूसरे पंख के सिरे तक दस हाथ थे। २५ और दूसरा करूब भी दस हाथ का था; दोनों करूब एक ही नाप और एक ही आकार के थे। २६ एक करूब की ऊंचाई दस हाथ की, और दूसरे की भी इतनी ही थी। २७ और उस ने करूबों को भीतरवाले स्थान में धरवा दिया; और करूबों के पंख ऐसे फैले थे, कि एक करूब का एक पंख, एक भीत से, और दूसरे का दूसरा पंख, दूसरी भीत से लगा हुआ था, फिर उनके दूसरे दो पंख भवन के मध्य में एक दूसरे से लगे हुए थे। २८ और करूबों को उस ने सोने से मढ़वाया। २९ और उस ने भवन की भीतों में बाहर और भीतर चारों ओर करूब, खजूर और खिले हुए फूल खुदवाए। ३० और भवन के भीतर और बाहरवाले फर्श उस ने सोने से मढ़वाए। ३१ और दर्शन-स्थान के द्वार पर उस ने जलपाई की लकड़ी के किवाड़ लगाए और चौखट के सिरहाने और बाजुओं की **लम्बाई भवन की चौड़ाई** का पांचवां भाग थी। ३२ दोनों किवाड़ जलपाई की लकड़ी के थे, और उस ने उन में करूब, खजूर के वृक्ष और खिले हुए फूल खुदवाए और सोने से मढ़ा और करूबों और खजूरों के ऊपर सोना मढ़वा दिया गया। ३३ इसी की रीति उस ने मन्दिर के द्वार के लिये भी जलपाई की लकड़ी के चौखट के बाजू बनाए और वह भवन की चौड़ाई की चौथाई थी। ३४ दोनों किवाड़ सनोवर की लकड़ी के थे, जिन में से एक किवाड़ के दो पल्ले थे; और दूसरे किवाड़ के दो पल्ले थे जो पलटकर दुहर जाते थे। ३५ और उन पर भी उस ने करूब और खजूर के वृक्ष और खिले हुए फूल खुदवाए और खुदे हुए काम पर उस ने सोना मढ़वाया। ३६ और उस ने भीतर-वाले आंगन के घेरे को गढ़े हुए पत्थरों के तीन रद्दे, और एक परत देवदारू की कड़ियां लगा कर बनाया। ३७ चौथे वर्ष के जीव नाम महीने में यहोवा के भवन की नेव डाली गई। ३८ और ग्यारहवें वर्ष के बूल नाम आठवें महीने में, वह भवन उस सब समेत जो उस में उचित समझा गया बन चुका: इस रीति सुलैमान को उसके बनाने में सात वर्ष लगे॥

७ और सुलैमान ने अपने महल को बनाया, और उसके पूरा करने में तेरह वर्ष लगे। २ और उस ने लबानोनी वन नाम महल बनाया जिसकी लम्बाई सौ हाथ, चौड़ाई पचास हाथ और ऊंचाई तीस हाथ की थी; वह तो देवदारु के खम्भों की चार पांति पर बना और खम्भों पर देवदारु की कड़ियां धरी गईं। ३ और खम्भों के ऊपर देवदारु की छतवाली पैंतालीस कोठरियां अर्थात् एक एक महल में पन्द्रह कोठरियां बनीं। ४ तीनों महलों में कड़ियां धरी गईं, और तीनों में खिड़कियां आम्हने साम्हने बनीं। ५ और सब द्वार और बाजुओं की कड़ियां भी चौकोर थीं, और तीनों महलों में खिड़कियां

आम्हने साम्हने बनीं। ६ और उस ने एक खम्भेवाला ओसारा भी बनाया जिसकी लम्बाई पचास हाथ और चौड़ाई तीस हाथ की थी, और इन खम्भों के साम्हने एक खम्भेवाला ओसारा और उसके साम्हने डेवढ़ी बनाई। ७ फिर उस ने न्याय के सिंहासन के लिये भी एक ओसारा बनाया, जो न्याय का ओसारा कहलाया; और उस में एक फ़र्श से दूसरे फ़र्श तक देवदारु की तख़्ताबन्दी थी ॥

८ और उसी के रहने का भवन जो उस ओसारे के भीतर के एक और आंगन में बना, वह भी उसी ढब से बना। फिर उसी ओसारे के ढब से सुलैमान ने फ़िरौन की बेटी के लिये जिसको उस ने ब्याह लिया था, एक और भवन बनाया। ९ ये सब घर बाहर भीतर नेव से मुंडेर तक ऐसे अनमोल और गढ़े हुए पत्थरों के बने जो नापकर, और आरों से चीरकर तैयार किये गए थे और बाहर के आंगन से ले बड़े आंगन तक लगाए गए। १० उसकी नेव तो बड़े मोल के बड़े बड़े अर्थात् दस दस और आठ आठ हाथ के पत्थरों की डाली गई थी। ११ और ऊपर भी बड़े मोल के पत्थर थे, जो नाप से गढ़े हुए थे, और देवदारु की लकड़ी भी थी। १२ और बड़े आंगन के चारों ओर के घेरे में गढ़े हुए पत्थरों के तीन रद्दे, और देवदारु की कड़ियों का एक परत था, जैसे कि यहोवा के भवन के भीतरवाले आंगन और भवन के ओसारे में लगे थे ॥

१३ फिर राजा सुलैमान ने सोर से हीराम को बुलवा भेजा। १४ वह नप्ताली के गोत्र की किसी विधवा का बेटा था, और उसका पिता एक सोरवासी ठठेरा था, और वह पीतल की सब प्रकार की कारीगरी में पूरी बुद्धि, निपुणता और समझ रखता था। सो वह राजा सुलैमान के पास आकर उसका सब काम करने लगा। १५ उस ने पीतल ढालकर अठारह अठारह हाथ ऊंचे दो खम्भे बनाए, और एक एक का घेरा बारह हाथ के सूत का था। १६ और उस ने खम्भों के सिरों पर लगाने को पीतल ढालकर दो कंगनी बनाई; एक एक कंगनी की ऊंचाई, पांच पांच हाथ की थी। १७ और खम्भों के सिरों पर की कंगनियों के लिये चारखाने की सात सात जालियां, और सांकलों की सात सात झालरें बनीं। १८ और उस ने खम्भों को भी इस प्रकार बनाया; कि खम्भों * के सिरों पर की एक एक कंगनी के ढांपने को चारों ओर जालियों की एक एक पांति पर अनारों की दो पांतियां हों। १९ और जो कंगनियां ओसारों में खम्भों के सिरों पर बनीं, उन में चार चार हाथ ऊंचे सोसन के फूल बने हुए थे। २० और एक एक खम्भे के सिरे पर, उस गोलाई के पास जो जाली से लगी थी, एक और कंगनी बनी, और एक एक कंगनी पर जो अनार चारों ओर पांति पांति करके बने थे वह दो सौ थे। २१ उन खम्भों को उस ने मन्दिर के ओसारे के पास खड़ा किया, और दाहिनी ओर के खम्भे को खड़ा करके उसका नाम याकीन † रखा; फिर बाईं ओर के खम्भे को खड़ा करके उसका नाम बोआज़ ‡ रखा। २२ और खम्भों के सिरों पर सोसन के फूल का काम बना था

* मूल में—अनारों।
† अर्थात् वह स्थिर रखे।
‡ अर्थात् उसी में बल।

खम्भों का काम इसी रीति हुआ। २३ फिर उस ने एक ढाला हुआ एक बड़ा हौज़ बनाया, जो एक छोर से दूसरी छोर तक दस हाथ चौड़ा था, उसका आकार गोल था, और उसकी ऊंचाई पांच हाथ की थी, और उसके चारों ओर का घेरा तीस हाथ के सूत के बराबर था। २४ और उसके चारों ओर मोहड़े के नीचे एक एक हाथ में दस दस इन्द्रायन बने, जो हौज को घेरे थीं; जब वह ढाला गया; तब ये इन्द्रायन भी दो पांति करके ढाले गए। २५ और वह बारह बने हुए बैलों पर रखा गया जिन में से तीन उत्तर, तीन पश्चिम, तीन दक्खिन, और तीन पूर्व की ओर मुंह किए हुए थे; और उन ही के ऊपर हौज था, और उन सभों का पिछला अंग भीतर की ओर था। २६ और उसका दल चौबा भर का था, और उसका मोहड़ा कटोरे के मोहड़े की नाईं सोसन के फूलों के काम से बना था, और उस में दो हज़ार बत की समाई थी॥

२७ फिर उस ने पीतल के दस पाये बनाए, एक एक पाये की लम्बाई चार हाथ, चौड़ाई भी चार हाथ और ऊंचाई तीन हाथ की थी। २८ उन पायों की बनावट इस प्रकार थी; उनके पटरियां थीं, और पटरियों के बीचों बीच जोड़ भी थे। २९ और जोड़ों के बीचों बीच की पटरियों पर सिंह, बैल, और करूब बने थे और जोड़ों के ऊपर भी एक एक और पाया बना और सिंहों और बैलों के नीचे लटकते हुए हार बने थे। ३० और एक एक पाये के लिये पीतल के चार पहिये और पीतल की धुरियां बनी; और एक एक के चारों कोनों से लगे हुए कंधे भी ढालकर बनाए गए जो हौदी के नीचे तक पहुंचते थे, और एक एक कंधे के पास हार बने हुए थे। ३१ और हौदी का मोहड़ा जो पाये की कंगनी के भीतर और ऊपर भी था वह एक हाथ ऊंचा था, और पाये का मोहड़ा जिसकी चौड़ाई डेढ़ हाथ की थी, वह पाये की बनावट के समान गोल बना; और पाये के उसी मोहड़े पर भी कुछ खुदा हुआ काम था और उनकी पटरियां गोल नहीं, चौकोर थीं। ३२ और चारों पहिये, पटरियों के नीचे थे, और एक एक पाये के पहियों में धुरियां भी थीं; और एक एक पहिये की ऊंचाई डेढ़ डेढ़ हाथ की थी। ३३ पहियों की बनावट, रथ के पहिये की सी थी, और उनकी धुरियां, पुट्ठियां, आरे, और नाभें सब ढाली हुई थीं। ३४ और एक एक पाये के चारों कोनों पर चार कंधे थे, और कंधे और पाये दोनों एक ही टुकड़े के बने थे। ३५ और एक एक पाये के सिरे पर आध हाथ ऊंची चारों ओर गोलाई थी, और पाये के सिरे पर की टेकें और पटरियां पाये से जुड़े हुए एक ही टुकड़े के बने थे। ३६ और टेकों के पाटों और पटरियों पर जितनी जगह जिस पर थी, उस में उस ने करूब, और सिंह, और खजूर के वृक्ष खोद कर भर दिये, और चारों ओर हार भी बनाए। ३७ इसी प्रकार से उस ने दसों पायों को बनाया; सभों का एक ही सांचा और एक ही नाप, और एक ही आकार था॥

३८ और उस ने पीतल की दस हौदी बनाईं। एक एक हौदी में चालीस चालीस बत की समाई थी; और एक एक, चार चार हाथ चौड़ी थी, और दसों पायों

में से एक एक पर, एक एक हौदी थी। ३९ और उस ने पांच हौदी भवन की दक्खिन की ओर, और पांच उसकी उत्तर की ओर रख दीं; और हौज़ को भवन की दाहिनी ओर अर्थात् पूर्व की ओर, और दक्खिन के साम्हने धर दिया। ४० और हीराम ने हौदियों *, फावड़ियों, और कटोरों को भी बनाया। सो हीराम ने राजा सुलैमान के लिये यहोवा के भवन में जितना काम करना था, वह सब निपटा दिया, ४१ अर्थात् दो खम्भे, और उन कंगनियों की गोलाइयां जो दोनों खम्भों के सिरे पर थीं, और दोनों खम्भों के सिरों पर की गोलाइयों के ढांपने को दो दो जालियां, और दोनों जालियों के लिये चार चार सौ अनार, ४२ अर्थात् खम्भों के सिरों पर जो गोलाइयां थीं, उनके ढांपने के लिये अर्थात् एक एक जाली के लिये अनारों की दो दो पांति: ४३ दस पाये और इन पर की दस हौदी, ४४ एक हौज़ और उसके नीचे के बारह बैल, और हंडे, फावडियां, ४५ और कटोरे बने। ये सब पात्र जिन्हें हीराम ने यहोवा के भवन के निमित्त राजा सुलैमान के लिये बनाया, वह झलकाये हुए पीतल के बने। ४६ राजा ने उनको यरदन की तराई में अर्थात् सुक्कोत और सारतान के मध्य की चिकनी मिट्टीवाली भूमि में ढाला। ४७ और सुलैमान ने सब पात्रों को बहुत अधिक होने के कारण बिना तौले छोड़ दिया, पातल के तौल का वज़न मालूम न हो सका॥

४८ यहोवा के भवन के जितने पात्र थे सुलैमान ने सब बनाए, अर्थात् सोने की वेदी, और सोने की वह मेज़ जिस पर भेंट की रोटी रखी जाती थी, ४९ और चोखे सोने की दीवटें जो भीतरी कोठरी के आगे पांच तो दक्खिन की ओर, और पांच उत्तर की ओर रखी गईं; और सोने के फूल, ५० दीपक और चिमटे, और चोखे सोने के तसले, कैंचियां, कटोरे, धूपदान, और करछे और भीतरवाला भवन जो परमपवित्र स्थान कहलाता है, और भवन जो मन्दिर कहलाता है, दोनों के किवाड़ों के लिये सोने के कब्जे बने। ५१ निदान जो जो काम राजा सुलैमान ने यहोवा के भवन के लिये किया, वह सब पूरा किया गया। तब सुलैमान ने अपने पिता दाऊद के पवित्र किए हुए सोने चांदी और पात्रों को भीतर पहुंचा कर यहोवा के भवन के भण्डारों में रख दिया॥

(मन्दिर की प्रतिष्ठा)

८ तब सुलैमान ने इस्राएली पुरनियों को और गोत्रों के सब मुख्य पुरुष जो इस्राएलियों के पूर्वजों के घरानों के प्रधान थे, उनको भी यरूशलेम में अपने पास इस मनसा से इकट्ठा किया, कि वे यहोवा की वाचा का सन्दूक दाऊदपुर अर्थात् सियोन से ऊपर ले आएं। २ सो सब इस्राएली पुरुष एतानीम नाम सातवें महीने के पर्व के समय राजा सुलैमान के पास इकट्ठे हुए। ३ जब सब इस्राएली पुरनिये आए, तब याजकों ने सन्दूक को उठा लिया। ४ और यहोवा का सन्दूक, और मिलाप का तम्बू, और जितने पवित्र पात्र उस तम्बू में थे, उन सभों को याजक और लेवीय लोग ऊपर ले गए। ५ और राजा सुलैमान और समस्त इस्राएली मंडली, जो उसके पास इकट्ठी हुई थी,

* वा हंडों।

वे सब सन्दूक के साम्हने इतनी भेड़ और बैल बलि कर रहे थे, जिनकी गिनती किसी रीति से नहीं हो सकती थी। ६ तब याजकों ने यहोवा की वाचा का सन्दूक उसके स्थान को अर्थात् भवन के दर्शन-स्थान में, जो परमपवित्र स्थान है, पहुंचाकर करूबों के पङ्खों के तले रख दिया। ७ करूब तो सन्दूक के स्थान के ऊपर पंख ऐसे फैलाए हुए थे, कि वे ऊपर से सन्दूक और उसके डंडों को ढांके थे। ८ डंडे तो ऐसे लम्बे थे, कि उनके सिरे उस पवित्र स्थान से जो दर्शन-स्थान के साम्हने था दिखाई पड़ते थे परन्तु बाहर से वे दिखाई नहीं पड़ते थे। वे आज के दिन तक यहीं वर्तमान हैं। ९ सन्दूक में कुछ नहीं था, उन दो पटरियों को छोड़ जो मूसा ने होरेब में उसके भीतर उस समय रखीं, जब यहोवा ने इस्राएलियों के मिस्र से निकलने पर उनके साथ वाचा बान्धी थी। १० जब याजक पवित्रस्थान से निकले, तब यहोवा के भवन में बादल भर आया। ११ और बादल के कारण याजक सेवा टहल करने को खड़े न रह सके, क्योंकि यहोवा का तेज यहोवा के भवन में भर गया था॥

१२ तब सुलैमान कहने लगा, यहोवा ने कहा था, कि मैं घोर अंधकार में बास किए रहूंगा। १३ सचमुच मैं ने तेरे लिये एक वासस्थान, वरन ऐसा दृढ़ स्थान बनाया है, जिस में तू युगानुयुग बना रहे। १४ और राजा ने इस्राएल की पूरी सभा की ओर मुंह फेरकर उसको आशीर्वाद दिया; और पूरी सभा खड़ी रही। १५ और उस ने कहा, धन्य है इस्राएल का परमेश्वर यहोवा! जिस ने अपने मुंह से मेरे पिता दाऊद को यह वचन दिया था, और अपने हाथ से उसे पूरा किया है, १६ कि जिस दिन से मैं अपनी प्रजा इस्राएल को मिस्र से निकाल लाया, तब से मैं ने किसी इस्राएली गोत्र का कोई नगर नहीं चुना, जिस में मेरे नाम के निवास के लिये भवन बनाया जाए; परन्तु मैं ने दाऊद को चुन लिया, कि वह मेरी प्रजा इस्राएल का अधिकारी हो। १७ मेरे पिता दाऊद की यह मनसा तो थी कि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनाए। १८ परन्तु यहोवा ने मेरे पिता दाऊद से कहा, यह जो तेरी मनसा है, कि यहोवा के नाम का एक भवन बनाए, ऐसी मनसा करके तू ने भला तो किया; १९ तौभी तू उस भवन को न बनाएगा; तेरा जो निज पुत्र होगा, वही मेरे नाम का भवन बनाएगा। २० यह जो वचन यहोवा ने कहा था, उसे उस ने पूरा भी किया है, और मैं अपने पिता दाऊद के स्थान पर उठकर, यहोवा के वचन के अनुसार इस्राएल की गद्दी पर विराजमान हूं, और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के नाम से इस भवन को बनाया है। २१ और इस में मैं ने एक स्थान उस सन्दूक के लिये ठहराया है, जिस में यहोवा की वह वाचा है, जो उस ने हमारे पुरखाओं को मिस्र देश से निकालने के समय उन से बान्धी थी॥

२२ तब सुलैमान इस्राएल की पूरी सभा के देखते यहोवा की वेदी के साम्हने खड़ा हुआ, और अपने हाथ स्वर्ग की ओर फैलाकर कहा, हे यहोवा! २३ हे इस्राएल के परमेश्वर! तेरे समान न तो ऊपर स्वर्ग में, और न नीचे पृथ्वी पर कोई ईश्वर है : तेरे जो दास अपने सम्पूर्ण

मन से अपने को तेरे सम्मुख जानकर * चलते हैं, उनके लिये तू अपनी वाचा पूरी करता, और करुणा करता रहता है। २४ जो वचन तू ने मेरे पिता दाऊद को दिया था, उसका तू ने पालन किया है, जैसा तू ने अपने मुंह से कहा था, वैसा ही अपने हाथ से उसको पूरा किया है, जैसा आज है। २५ इसलिये अब हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा! इस वचन को भी पूरा कर, जो तू ने अपने दास मेरे पिता दाऊद को दिया था, कि तेरे कुल में, मेरे साम्हने इस्राएल की गद्दी पर विराजनेवाले सदैव बने रहेंगे: इतना हो कि जैसे तू स्वयं मुझे सम्मुख जानकर † चलता रहा, वैसे ही तेरे वंश के लोग अपनी चालचलन में ऐसी ही चौकसी करें। २६ इसलिये अब हे इस्राएल के परमेश्वर अपना जो वचन तू ने अपने दास मेरे पिता दाऊद को दिया था उसे सच्चा सिद्ध कर। २७ क्या परमेश्वर सचमुच पृथ्वी पर वास करेगा, स्वर्ग में वरन सब से ऊंचे स्वर्ग में भी तू नहीं समाता, फिर मेरे बनाए हुए इस भवन में क्योंकर समाएगा। २८ तौभी हे मेरे परमेश्वर यहोवा! अपने दास की प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट की ओर कान लगाकर, मेरी चिल्लाहट और यह प्रार्थना सुन! जो मैं आज तेरे साम्हने कर रहा हूं; २९ कि तेरी आंख इस भवन की ओर अर्थात् इसी स्थान की ओर जिसके विषय तू ने कहा है, कि मेरा नाम वहां रहेगा, रात दिन खुली रहें: और जो प्रार्थना तेरा दास इस स्थान की ओर करे, उसे तू सुन ले। ३० और तू अपने दास, और अपनी प्रजा इस्राएल की प्रार्थना जिसको वे इस स्थान की ओर गिड़गिड़ा के करें उसे सुनना, वरन स्वर्ग में से जो तेरा निवासस्थान है सुन लेना, और सुनकर क्षमा करना। ३१ जब कोई किसी दूसरे का अपराध करे, और उसको शपथ खिलाई जाए, और वह आकर इस भवन में तेरी वेदी के साम्हने शपथ खाए, ३२ तब तू स्वर्ग में सुन कर, अर्थात् अपने दासों का न्याय करके दुष्ट को दुष्ट ठहरा और उसकी चाल उसी के सिर लौटा दे, और निर्दोष को निर्दोष ठहराकर, उसके धर्म के अनुसार उसको फल देना। ३३ फिर जब तेरी प्रजा इस्राएल तेरे विरुद्ध पाप करने के कारण अपने शत्रुओं से हार जाए, और तेरी ओर फिरकर तेरा नाम ले और इस भवन में तुझ से गिड़गिड़ाहट के साथ प्रार्थना करे, ३४ तब तू स्वर्ग में से सुनकर अपनी प्रजा इस्राएल का पाप क्षमा करना: और उन्हें इस देश में लौटा ले आना, जो तू ने उनके पुरखाओं को दिया था। ३५ जब वे तेरे विरुद्ध पाप करें, और इस कारण आकाश बन्द हो जाए, कि वर्षा न होए, ऐसे समय यदि वे इस स्थान की ओर प्रार्थना करके तेरे नाम को मानें जब तू उन्हें दुःख देता है, और अपने पाप से फिरें, तो तू स्वर्ग में से सुनकर क्षमा करना, ३६ और अपने दासों, अपनी प्रजा इस्राएल के पाप को क्षमा करना; तू जो उनको वह भला मार्ग दिखाता है, जिस पर उन्हें चलना चाहिये, इसलिये अपने इस देश पर, जो तू ने अपनी प्रजा का भाग कर दिया है, पानी बरसा देना। ३७ जब

* मूल में—तेरे साम्हने।
† मूल में—तेरे साम्हने।

इस देश में काल वा मरी वा झुलस हो वा गेरुई वा टिड्डियां वा कीड़े लगें वा उनके शत्रु उनके देश के फाटकों में उन्हें घेर रखें, अथवा कोई विपत्ति वा रोग क्यों न हों, ३८ तब यदि कोई मनुष्य वा तेरी प्रजा इस्राएल अपने अपने मन का दुःख जान लें, और गिड़गिड़ाहट के साथ प्रार्थना करके अपने हाथ इस भवन की ओर फैलाएं; ३९ तो तू अपने स्वर्गीय निवासस्थान में से सुनकर क्षमा करना, और ऐसा करना, कि एक एक के मन को जानकर उसकी समस्त चाल के अनुसार उसको फल देना : तू ही तो सब आदमियों के मन के भेदों का जानने वाला है। ४० तब वे जितने दिन इस देश में रहें, जो तू ने उनके पुरखाओं को दिया था, उतने दिन तक तेरा भय मानते रहें। ४१ फिर परदेशी भी जो तेरी प्रजा इस्राएल का न हो, जब वह तेरा नाम सुनकर, दूर देश से आए, ४२ वह तो तेरे बड़े नाम और बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा का समाचार पाए; इसलिये जब ऐसा कोई आकर इस भवन की ओर प्रार्थना करें, ४३ तब तू अपने स्वर्गीय निवासस्थान में से सुन, और जिस बात के लिये ऐसा परदेशी तुझे पुकारे, उसी के अनुसार व्यवहार करना जिस से पृथ्वी के सब देशों के लोग तेरा नाम जानकर तेरी प्रजा इस्राएल की नाईं तेरा भय मानें, और निश्चय जानें, कि यह भवन जिसे मैं ने बनाया है, वह तेरा ही कहलाता है। ४४ जब तेरी प्रजा के लोग जहां कहीं तू उन्हें भेजे, वहां अपने शत्रुओं से लड़ाई करने को निकल जाएं, और इस नगर की ओर जिसे तू ने चुना है, और इस भवन की ओर जिसे मैं ने तेरे नाम पर बनाया है, यहोवा से प्रार्थना करें, ४५ तब तू स्वर्ग में से उनकी प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट सुनकर उनका न्याय कर। ४६ निष्पाप तो कोई मनुष्य नहीं है : यदि ये भी तेरे विरुद्ध पाप करें, और तू उन पर कोप करके उन्हें शत्रुओं के हाथ कर दे, और वे उनको बन्धुआ करके अपने देश को चाहे वह दूर हो, चाहे निकट ले जाएं, ४७ तो यदि वे बन्धुआई के देश में सोच विचार करें, और फिरकर अपने बन्धुआ करनेवालों के देश में तुझ से गिड़गिड़ाकर कहें, कि हम ने पाप किया, और कुटिलता और दुष्टता की है; ४८ और यदि वे अपने उन शत्रुओं के देश में जो उन्हें बन्धुआ करके ले गए हों, अपने सम्पूर्ण मन और सम्पूर्ण प्राण से तेरी ओर फिरें और अपने इस देश की ओर जो तू ने उनके पुरखाओं को दिया था, और इस नगर की ओर जिसे तू ने चुना है, और इस भवन की ओर जिसे मैं ने तेरे नाम का बनाया है, तुझ से प्रार्थना करें, ४९ तो तू अपने स्वर्गीय निवासस्थान में से उनकी प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट सुनना; और उनका न्याय करना, ५० और जो पाप तेरी प्रजा के लोग तेरे विरुद्ध करेंगे, और जितने अपराध वे तेरे विरुद्ध करेंगे, सब को क्षमा करके, उनके बन्धुआ करनेवालों के मन में ऐसी दया उपजाना कि वे उन पर दया करें। ५१ क्योंकि वे तो तेरी प्रजा और तेरा निज भाग हैं, जिन्हें तू लोहे के भट्ठे के मध्य में से अर्थात् मिस्र से निकाल लाया है। ५२ इसलिये तेरी आंखें तेरे दास की गिड़गिड़ाहट और तेरी प्रजा इस्राएल की गिड़गिड़ाहट की ओर ऐसी खुली रहें, कि जब जब

वे तुझे पुकारें, तब तब तू उनकी सुन ले; ५३ क्योंकि हे प्रभु यहोवा अपने उस वचन के अनुसार, जो तू ने हमारे पुरखाओं को मिस्र से निकालने के समय अपने दास मूसा के द्वारा दिया था, तू ने इन लोगों को अपना निज भाग होने के लिये पृथ्वी की सब जातियों से अलग किया है ॥

५४ जब सुलैमान यहोवा से यह सब प्रार्थना गिड़गिड़ाहट के साथ कर चुका, तब वह जो घुटने टेके और आकाश की ओर हाथ फैलाए हुए था, सो यहोवा की वेदी के साम्हने से उठा, ५५ और खड़ा हो, समस्त इस्राएली सभा को ऊंचे स्वर से यह कहकर आशीर्वाद दिया, कि धन्य है यहोवा, ५६ जिस ने ठीक अपने कथन के अनुसार अपनी प्रजा इस्राएल को विश्राम दिया है, जितनी भलाई की बातें उसने अपने दास मूसा के द्वारा कही थीं, उन में से एक भी बिना पूरी हुए नहीं रही। ५७ हमारा परमेश्वर यहोवा जैसे हमारे पुरखाओं के संग रहता था, वैसे ही हमारे संग भी रहे, वह हम को त्याग न दे और न हम को छोड़ दे। ५८ वह हमारे मन अपनी ओर ऐसा फिराए रखे, कि हम उसके सब मार्गों पर चला करें, और उसकी आज्ञाएं और विधियां और नियम जिन्हें उसने हमारे पुरखाओं को दिया था, नित माना करें। ५९ और मेरी ये बातें जिनकी मैं ने यहोवा के साम्हने बिनती की है, वह दिन और रात हमारे परमेश्वर यहोवा के मन में बनी रहें *, और जैसा दिन दिन प्रयोजन हो वैसा ही वह अपने दास का और अपनी प्रजा इस्राएल का भी न्याय किया करे, ६० और इस से पृथ्वी की सब जातियां यह जान लें, कि यहोवा ही परमेश्वर है; और कोई दूसरा नहीं। ६१ तो तुम्हारा मन हमारे परमेश्वर यहोवा की ओर ऐसी पूरी रीति से लगा रहे, कि आज की नाईं उसकी विधियों पर चलते और उसकी आज्ञाएं मानते रहो। ६२ तब राजा समस्त इस्राएल समेत यहोवा के सम्मुख मेलबलि चढ़ाने लगा। ६३ और जो पशु सुलैमान ने मेलबलि में यहोवा को चढ़ाए, सो बाईस हजार बैल और एक लाख बीस हजार भेड़ें थीं। इस रीति राजा ने सब इस्राएलियों समेत यहोवा के भवन की प्रतिष्ठा की। ६४ उस दिन राजा ने यहोवा के भवन के साम्हनेवाले आंगन के मध्य भी एक स्थान पवित्र किया और होमबलि, और अन्नबलि और मेलबलियों की चरबी वहीं चढ़ाई; क्योंकि जो पीतल की वेदी यहोवा के साम्हने थी, वह उनके लिये छोटी थी। ६५ और सुलैमान ने और उसके संग समस्त इस्राएल की एक बड़ी सभा ने जो हमात की घाटी से लेकर मिस्र के नाले तक के सब देशों से इकट्ठी हुई थी, दो सप्ताह तक अर्थात् चौदह दिन तक हमारे परमेश्वर यहोवा के साम्हने पर्व को माना। फिर आठवें दिन उस ने प्रजा के लोगों को बिदा किया। ६६ और वे राजा को धन्य, धन्य, कहकर उस सब भलाई के कारण जो यहोवा ने अपने दास दाऊद और अपनी प्रजा इस्राएल से की थी, आनन्दित और मगन होकर अपने अपने डेरे को चले गए ॥

* मूल में—यहोवा के निकट रहें।

९ जब सुलैमान यहोवा के भवन और राजभवन को बना चुका, और जो कुछ उस ने करना चाहा था, उसे कर चुका, २ तब यहोवा ने जैसे गिबोन में उसको दर्शन दिया था, वैसे ही दूसरी बार भी उसे दर्शन दिया। ३ और यहोवा ने उस से कहा, जो प्रार्थना गिड़गिड़ाहट के साथ तू ने मुझ से की है, उसको मैं ने सुना है, यह जो भवन तू ने बनाया है, उस में मैं ने अपना नाम सदा के लिये रखकर उसे पवित्र किया है; और मेरी आंखें और मेरा मन नित्य वहीं लगे रहेंगे। ४ और यदि तू अपने पिता दाऊद की नाईं मन की खराई और सिधाई से अपने को मेरे साम्हने जानकर* चलता रहे, और मेरी सब आज्ञाओं के अनुसार किया करे, और मेरी विधियों और नियमों को मानता रहे, तो मैं तेरा राज्य† इस्राएल के ऊपर सदा के लिये स्थिर करूंगा; ५ जैसे कि मैं ने तेरे पिता दाऊद को वचन दिया था, कि तेरे कुल में इस्राएल की गद्दी पर विराजनेवाले सदा बने रहेंगे। ६ परन्तु यदि तुम लोग वा तुम्हारे वंश के लोग मेरे पीछे चलना छोड़ दें; और मेरी उन आज्ञाओं और विधियों को जो मैं ने तुम को दी हैं, न मानें, और जाकर पराये देवताओं की उपासना करे और उन्हें दण्डवत करने लगें, ७ तो मैं इस्राएल को इस देश में से जो मैं ने उनको दिया है, काट डालूंगा और इस भवन को जो मैं ने अपने नाम के लिये पवित्र किया है, अपनी दृष्टि से उतार दूंगा; और सब देशों के लोगों में इस्राएल की उपमा दी जायेगी और उसका दृष्टान्त चलेगा। ८ और यह भवन जो ऊंचे पर रहेगा, तो जो कोई इसके पास होकर चलेगा, वह चकित होगा, और ताली बजाएगा और वे पूछेंगे, कि यहोवा ने इस देश और इस भवन के साथ क्यों ऐसा किया है; ९ तब लोग कहेंगे, कि उन्हों ने अपने परमेश्वर यहोवा को जो उनके पुरखाओं को मिस्र देश से निकाल लाया था। तजकर पराये देवताओं को पकड़ लिया, और उनको दण्डवत की और उनकी उपासना की इस कारण यहोवा ने यह सब विपत्ति उन पर डाल दी॥

१० सुलैमान को तो यहोवा के भवन और राजभवन दोनों के बनाने में बीस वर्ष लग गए। ११ तब सुलैमान ने सोर के राजा हीराम को जिस ने उसके मनमाने देवदारू और सनोवर की लकड़ी और सोना दिया था, गलील देश के बीस नगर दिए। १२ जब हीराम ने सोर से जाकर उन नगरों को देखा, जो सुलैमान ने उसको दिए थे, तब वे उसको अच्छे न लगे। १३ तब उस ने कहा, हे मेरे भाई, ये नगर क्या तू ने मुझे दिए हैं? और उस ने उनका नाम कबूल देश रखा। १४ और यही नाम आज के दिन तक पड़ा है। फिर हीराम ने राजा के पास साठ किक्कार सोना भेज दिया॥

१५ राजा सुलैमान ने लोगों को जो बेगारी में रखा, इसका प्रयोजन यह था, कि यहोवा का और अपना भवन बनाए, और मिल्लो और यरूशलेम की शहरपनाह और हासोर, मगिद्दो और गेजेर नगरों को दृढ़ करे। १६ गेजेर पर तो मिस्र के

* मूल में—मेरे साम्हने।
† मूल में—राजगद्दी।

राजा फ़िरौन ने चढ़ाई करके उसे ले लिया और आग लगाकर फूंक दिया, और उस नगर में रहनेवाले कनानियों को मार डालकर, उसे अपनी बेटी सुलैमान की रानी का निज भाग करके दिया था, १७ सो सुलैमान ने गेजेर और नीचेवाले बथोरेन, १८ बालात और तामार को जो जंगल में हैं, दृढ़ किया, ये तो देश में हैं। १९ फिर सुलैमान के जितने भण्डार के नगर थे, और उसके रथों और सवारों के नगर, उनको वरन जो कुछ सुलैमान ने यरूशलेम, लबानोन और अपने राज्य के सब देशों में बनाना चाहा, उन सब को उस ने दृढ़ किया। २० एमोरी, हित्ती, परिज्जी, हिव्वी और यबूसी जो रह गए थे, जो इस्राएलियों में के न थे, २१ उनके वंश जो उनके बाद देश में रह गए, और उनको इस्राएली सत्यानाश न कर सके, उनको तो सुलैमान ने दास कर के बेगारी में रखा, और आज तक उनकी वही दशा है। २२ परन्तु इस्राएलियों में से सुलैमान ने किसी को दास न बनाया; वे तो योद्धा और उसके कर्मचारी, उसके हाकिम, उसके सरदार, और उसके रथों, और सवारों के प्रधान हुए। २३ जो मुख्य हाकिम सुलैमान के कामों के ऊपर ठहर के काम करनेवालों पर प्रभुता करते थे, ये पांच सौ पचास थे ॥

२४ जब फ़िरौन की बेटी दाऊदपुर में से अपने उस भवन को आ गई, जो उस ने उसके लिये बनाया था तब उस ने मिल्लो को बनाया। २५ और सुलैमान उस वेदी पर जो उस ने यहोवा के लिये बनाई थी, प्रति वर्ष में तीन बार होमबलि और मेलबलि चढ़ाया करता था और साथ ही उस वेदी पर जो यहोवा के सम्मुख थी, धूप जलाया करता था, इस प्रकार उस ने उस भवन को तैयार कर दिया ॥

(सुलैमान की धनसम्पत्ति और व्योपार और शीबा की रानी का आना)

२६ फिर राजा सुलैमान ने एस्योनगेबेर में जो एदोम देश में लाल समुद्र के तीर एलोत के पास है, जहाज बनाए। २७ और जहाजों में हीराम ने अपने अधिकार के मल्लाहों को, जो समुद्र से जानकारी रखते थे, सुलैमान के सेवकों के संग भेज दिया। २८ उन्हों ने ओपोर को जाकर वहां से चार सौ बीस किक्कार सोना, राजा सुलैमान को लाकर दिया ॥

१० जब शीबा की रानी ने यहोवा के नाम के विषय सुलैमान की कीर्त्ति सुनी, तब वह कठिन कठिन प्रश्नों से उसकी परीक्षा करने को चल पड़ी। २ वह तो बहुत भारी दल, और मसालों, और बहुत सोने, और मणि से लदे ऊंट साथ लिये हुए यरूशलेम को आई; और सुलैमान के पास पहुंचकर अपने मन की सब बातों के विषय में उस से बातें करने लगी। ३ सुलैमान ने उसके सब प्रश्नों का उत्तर दिया, कोई बात राजा की बुद्धि से ऐसी बाहर न रही * कि वह उसको न बता सका। ४ जब शीबा की रानी ने सुलैमान की सब बुद्धिमानी और उसका बनाया हुआ भवन, और उसकी मेज पर का भोजन देखा, ५ और उसके कर्मचारी किस रीति बैठते, और उसके टहलुए किस रीति खड़े रहते, और कैसे कैसे कपड़े पहिने रहते हैं, और उसके पिलानेवाले कैसे हैं, और वह कैसी चढ़ाई

* मूल में—कोई बात राजा से न छिपी।

है, जिस से वह यहोवा के भवन को जाया करता है, यह सब जब उस ने देखा, तब वह चकित हो गई। ६ तब उस ने राजा से कहा, तेरे कामों और बुद्धिमानी की जो कीर्त्ति मैं ने अपने देश में सुनी थी वह सच ही है। ७ परन्तु जब तक मैं ने आप ही आकर अपनी आंखों से यह न देखा, तब तक मैं ने उन बातों की प्रतीत न की, परन्तु इसका आधा भी मुझे न बताया गया था; तेरी बुद्धिमानी और कल्याण उस कीर्त्ति से भी बढ़कर है, जो मैं ने सुनी थी। ८ धन्य हैं तेरे जन! धन्य हैं तेरे ये सेवक! जो नित्य तेरे सम्मुख उपस्थित रहकर तेरी बुद्धि की बातें सुनते हैं। ९ धन्य है तेरा परमेश्वर यहोवा! जो तुझ से ऐसा प्रसन्न हुआ कि तुझे इस्राएल की राजगद्दी पर विराजमान किया: यहोवा इस्राएल से सदा प्रेम रखता है, इस कारण उस ने तुझे न्याय और धर्म करने को राजा बना दिया है। १० और उस ने राजा को एक सौ बीस किक्कार सोना, बहुत सा सुगन्ध द्रव्य, और मणि दिया; जितना सुगन्ध द्रव्य शीबा की रानी ने राजा सुलैमान को दिया, उतना फिर कभी नहीं आया। ११ फिर हीराम के जहाज भी जो ओपीर से सोना लाते थे, वह बहुत सी चन्दन की लकड़ी और मणि भी लाए। १२ और राजा ने चन्दन की लकड़ी से यहोवा के भवन और राजभवन के लिये जंगले और गवैयों के लिये वीणा और सारंगियां बनवाईं: ऐसी चन्दन की लकड़ी आज तक फिर नहीं आई, और न दिखाई पड़ी है। १३ और शीबा की रानी ने जो कुछ चाहा, वही राजा सुलैमान ने उसकी इच्छा के अनुसार उसको दिया, फिर राजा सुलैमान ने उसको अपनी उदारता से बहुत कुछ दिया, तब वह अपने जनों समेत अपने देश को लौट गई॥

१४ जो सोना प्रति वर्ष सुलैमान के पास पहुंचा करता था, उसका तौल छः सौ छियासठ किक्कार था। १५ इस से अधिक सौदागरों से, और व्योपारियों के लेन देन से, और दोगली जातियों के सब राजाओं, और अपने देश के गवर्नरों से भी बहुत कुछ मिलता था। १६ और राजा सुलैमान ने सोना गढ़वाकर दो सौ बड़ी बड़ी ढालें बनवाईं; एक एक ढाल में छः छः सौ शेकेल सोना लगा। १७ फिर उस ने सोना गढ़वाकर तीन सौ छोटी ढालें भी बनवाईं; एक एक छोटी ढाल में, तीन माने सोना लगा; और राजा ने उनको लबानोनी वन नाम भवन में रखवा दिया। १८ और राजा ने हाथीदांत का एक बड़ा सिंहासन बनवाया, और उत्तम कुन्दन से मढ़वाया। १९ उस सिंहासन में छः सीढ़ियां थीं; और सिंहासन का सिरहाना पिछाड़ी की ओर गोल था, और बैठने के स्थान की दोनों अलंग टेक लगी थीं, और दोनों टेकों के पास एक एक सिंह खड़ा हुआ बना था। २० और छहों सीढ़ियों की दोनों अलंग एक एक सिंह खड़ा हुआ बना था, कुल बारह हुए। किसी राज्य में ऐसा कभी नहीं बना। २१ और राजा सुलैमान के पीने के सब पात्र सोने के बने थे, और लबानोनी वन नाम भवन के सब पात्र भी चोखे सोने के थे, चांदी का कोई भी न था। सुलैमान के दिनों में उसका कुछ लेखा न था। २२ क्योंकि समुद्र पर हीराम के जहाजों के साथ

राजा भी तर्शीश के जहाज़ रखता था, और तीन तीन वर्ष पर तर्शीश के जहाज़ सोना, चांदी, हाथीदांत, बन्दर और मयूर ले आते थे। २३ इस प्रकार राजा सुलैमान, धन और बुद्धि में पृथ्वी के सब राजाओं से बढ़कर हो गया। २४ और समस्त पृथ्वी के लोग उसकी बुद्धि की बातें सुनने को जो परमेश्वर ने उसके मन में उत्पन्न की थीं, सुलैमान का दर्शन पाना चाहते थे। २५ और वे प्रति वर्ष अपनी अपनी भेंट, अर्थात् चांदी और सोने के पात्र, वस्त्र, शस्त्र, सुगन्ध द्रव्य, घोड़े, और खच्चर ले आते थे। २६ और सुलैमान ने रथ और सवार इकट्ठे कर लिए, तो उसके चौदह सौ रथ, और बारह हजार सवार हुए, और उनको उस ने रथों के नगरों में, और यरूशलेम में राजा के पास ठहरा रखा। २७ और राजा ने बहुतायत के कारण, यरूशलेम में चांदी को तो ऐसा कर दिया जैसे पत्थर और देवदारू को जैसे नीचे के देश के गूलर। २८ और जो घोड़े सुलैमान रखता था, वे मिस्र से आते थे, और राजा के व्योपारी उन्हें झुण्ड झुण्ड करके ठहराए हुए दाम पर लिया करते थे। २९ एक रथ तो छः सौ शेकेल चांदी पर, और एक घोड़ा डेढ़ सौ शेकेल पर, मिस्र से आता था, और इसी दाम पर वे हित्तियों और अराम के सब राजाओं के लिये भी व्योपारियों के द्वारा आते थे॥

(सुलैमान का बिगाड़ और ईश्वर का क्रोध और सुलैमान की मृत्यु)

११ परन्तु राजा सुलैमान फ़िरौन की बेटी, और बहुतेरी और पराये स्त्रियों से, जो मोआबी, अम्मोनी, एदोमी, सीदोनी, और हित्ती थीं, प्रीति करने लगा। २ वे उन जातियों की थीं, जिनके विषय में यहोवा ने इस्राएलियों से कहा था, कि तुम उनके मध्य में न जाना, और न वे तुम्हारे मध्य में आने पाएं, वे तुम्हारा मन अपने देवताओं की ओर निःसन्देह फेरेंगी; उन्हीं की प्रीति में सुलैमान लिप्त हो गया। ३ और उसके सात सौ रानियां, और तीन सौ रखेलियां हो गईं थीं और उसकी इन स्त्रियों ने उसका मन बहका दिया। ४ सो जब सुलैमान बूढ़ा हुआ, तब उसकी स्त्रियों ने उसका मन पराये देवताओं की ओर बहका दिया, और उसका मन अपने पिता दाऊद की नाईं अपने परमेश्वर यहोवा पर पूरी रीति से लगा न रहा। ५ सुलैमान तो सीदोनियों की अशतोरेत नाम देवी, और अम्मोनियों के मिल्कोम नाम घृणित देवता के पीछे चला। ६ और सुलैमान ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, और यहोवा के पीछे अपने पिता दाऊद की नाईं पूरी रीति से न चला। ७ उन दिनों सुलैमान ने यरूशलेम के साम्हने के पहाड़ पर मोआबियों के कमोश नाम घृणित देवता के लिये और अम्मोनियों के मोलेक नाम घृणित देवता के लिये एक एक ऊंचा स्थान बनाया। ८ और अपनी सब पराये स्त्रियों के लिये भी, जो अपने अपने देवताओं को धूप जलातीं, और बलिदान करती थीं, उस ने ऐसा ही किया॥

९ तब यहोवा ने सुलैमान पर क्रोध किया, क्योंकि उसका मन इस्राएल के परमेश्वर यहोवा से फिर गया था जिस ने दो बार उसको दर्शन दिया था। १० और उस ने इसी बात के विषय में

आज्ञा दी थी, कि पराये देवताओं के पीछे न हो लेना, तौभी उस ने यहोवा की आज्ञा न मानी। ११ और यहोवा ने सुलैमान से कहा, तुझ से जो ऐसा काम हुआ है, और मेरी बन्धाई हुई वाचा और दी हुई विधि तू ने पूरी नहीं की, इस कारण मैं राज्य को निश्चय तुझ से छीनकर तेरे एक कर्मचारी को दे दूंगा। १२ तौभी तेरे पिता दाऊद के कारण तेरे दिनों में तो ऐसा न करूंगा; परन्तु तेरे पुत्र के हाथ से राज्य छीन लूंगा। १३ फिर भी मैं पूर्ण राज्य तो न छीन लूंगा, परन्तु अपने दास दाऊद के कारण, और अपने चुने हुए यरूशलेम के कारण, मैं तेरे पुत्र के हाथ में एक गोत्र छोड़ दूंगा॥

१४ सो यहोवा ने एदोमी हदद को जो एदोमी राजवंश का था, सुलैमान का शत्रु बना दिया। १५ क्योंकि जब दाऊद एदोम में था, और योआब सेनापति मारे हुओं को मिट्टी देने गया, १६ (योआब तो समस्त इस्राएल समेत वहां छः महीने रहा, जब तक कि उस ने एदोम के सब पुरुषों को नाश न कर दिया)। १७ तब हदद जो छोटा लड़का था, अपने पिता के कई एक एदोमी सेवकों के संग मिस्र को जाने की मनसा से भागा। १८ और वे मिद्यान से होकर पारान को आए, और पारान में से कई पुरुषों को संग लेकर मिस्र में फ़िरौन राजा के पास गए, और फ़िरौन ने उसको घर दिया, और उसको भोजन मिलने की आज्ञा दी और कुछ भूमि भी दी। १९ और हदद पर फ़िरौन की बड़े अनुग्रह की दृष्टि हुई, और उस ने उसको अपनी साली अर्थात् तहपनेस रानी की बहिन ब्याह दी। २० और तहपनेस की बहिन से गनूबत उत्पन्न हुआ और इसका दूध तहपनेस ने फ़िरौन के भवन में छुड़ाया; तब गनूबत फ़िरौन के भवन में उसी के पुत्रों के साथ रहता था। २१ जब हदद ने मिस्र में रहते यह सुना, कि दाऊद अपने पुरखाओं के संग सो गया, और योआब सेनापति भी मर गया है, तब उस ने फ़िरौन से कहा, मुझे आज्ञा दे कि मैं अपने देश को जाऊं! २२ फ़िरौन ने उस से कहा, क्यों? मेरे यहां तुझे क्या घटी हुई कि तू अपने देश को चला जाना चाहता है? उस ने उत्तर दिया, कुछ नहीं हुई, तौभी मुझे अवश्य जाने दे॥

२३ फिर परमेश्वर ने उसका एक और शत्रु कर दिया, अर्थात् एल्यादा के पुत्र रजोन को, वह तो अपने स्वामी सोबा के राजा हददेजेर के पास से भागा था; २४ और जब दाऊद ने सोबा के जनों को घात किया, तब रजोन अपने पास कई पुरुषों को इकट्ठे करके, एक दल का प्रधान हो गया, और वह दमिश्क को जाकर वहीं रहने और राज्य करने लगा। २५ और उस हानि को छोड़ जो हदद ने की, रजोन भी, सुलैमान के जीवन भर इस्राएल का शत्रु बना रहा; और वह इस्राएल से घृणा रखता हुआ अराम पर राज्य करता था॥

२६ फिर नबात का और सरूआह नाम एक विधवा का पुत्र यारोबाम नाम एक एप्रैमी सरेदावासी जो सुलैमान का कर्मचारी था, उस ने भी राजा के विरुद्ध सिर* उठाया। २७ उसका राजा के विरुद्ध सिर* उठाने का यह कारण हुआ, कि सुलैमान मिल्लो को बना रहा था और अपने पिता दाऊद के नगर के

* मूल में—हाथ।

दरार बन्द कर रहा था। २८ यारोबाम बड़ा शूरवीर था, और जब सुलैमान ने जवान को देखा, कि यह परिश्रमी है, तब उस ने उसको यूसुफ के घराने के सब काम पर मुखिया ठहराया। २९ उन्हीं दिनों में यारोबाम यरूशलेम से निकलकर जा रहा था, कि शीलोवासी अहिय्याह नबी, नई चद्दर ओढ़े हुए मार्ग पर उस से मिला; और केवल वे ही दोनों मैदान में थे। ३० और अहिय्याह ने अपनी उस नई चद्दर को ले लिया, और उसे फाड़कर बारह टुकड़े कर दिए। ३१ तब उस ने यारोबाम से कहा, दस टुकड़े ले ले; क्योंकि, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि सुन, मैं राज्य को सुलैमान के हाथ से छीन कर दस गोत्र तेरे हाथ में कर दूंगा। ३२ परन्तु मेरे दास दाऊद के कारण और यरूशलेम के कारण जो मैं ने इस्राएल के सब गोत्रों में से चुना है, उसका एक गोत्र बना रहेगा। ३३ इसका कारण यह है कि उन्हों ने मुझे त्याग कर सीदोनियों की देवी अश्तोरेत और मोआबियों के देवता कमोश, और अम्मोनियों के देवता मिल्कोम को दण्डवत की, और मेरे मार्गों पर नहीं चले: और जो मेरी दृष्टि में ठीक है, वह नहीं किया, और मेरी विधियों और नियमों को नहीं माना जैसा कि उसके पिता दाऊद ने किया। ३४ तौभी मैं उसके हाथ से पूर्ण राज्य न ले लूंगा, परन्तु मेरा चुना हुआ दास दाऊद जो मेरी आज्ञाएं और विधियां मानता रहा, उसके कारण मैं उसको जीवन भर प्रधान ठहराए रखूंगा। ३५ परन्तु उसके पुत्र के हाथ से मैं राज्य अर्थात् दस गोत्र लेकर तुझे दे दूंगा। ३६ और उसके पुत्र को मैं एक गोत्र दूंगा, इसलिये कि यरूशलेम अर्थात् उस नगर में जिसे अपना नाम रखने को मैं ने चुना है, मेरे दास दाऊद का दीपक मेरे साम्हने सदैव बना रहे। ३७ परन्तु तुझे मैं ठहरा लूंगा, और तू अपनी इच्छा भर इस्राएल पर राज्य करेगा। ३८ और यदि तू मेरे दास दाऊद की नाईं मेरी सब आज्ञाएं माने, और मेरे मार्गों पर चले, और जो काम मेरी दृष्टि में ठीक है, वही करे, और मेरी विधियां और आज्ञाएं मानता रहे, तो मैं तेरे संग रहूंगा, और जिस तरह मैं ने दाऊद का घराना बनाए रखा है, वैसे ही तेरा भी घराना बनाए रखूंगा, और तेरे हाथ इस्राएल को दूंगा। ३९ इस पाप के कारण मैं दाऊद के वंश को दुःख दूंगा, तौभी सदा तक नहीं। ४० और सुलैमान ने यारोबाम को मार डालना चाहा, परन्तु यारोबाम मिस्र के राजा शीशक के पास भाग गया, और सुलैमान के मरने तक वहीं रहा॥

४१ सुलैमान की और सब बातें और उसके सब काम और उसकी बुद्धिमानी का वर्णन, क्या सुलैमान के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? ४२ सुलैमान को यरूशलेम में सब इस्राएल पर राज्य करते हुए चालीस वर्ष बीते। ४३ और सुलैमान अपने पुरखाओं के संग सोया, और उसको उसके पिता दाऊद के नगर में मिट्टी दी गई, और उसका पुत्र रहूबियाम उसके स्थान पर राजा हुआ॥

(इस्राएल के राज्य का दो भाग हो जाना)

१२ रहूबियाम तो शकेम को गया, क्योंकि सब इस्राएली उसको राजा बनाने के लिये वहीं गए थे। २ और

जब नबात के पुत्र यारोबाम ने यह सुना, (जो अब तक मिस्र में रहता था, क्योंकि यारोबाम सुलैमान राजा के डर के मारे भागकर मिस्र में रहता था। ३ सो उन लोगों ने उसको बुलवा भेजा) तब यारोबाम और इस्राएल की समस्त सभा रहूबियाम के पास जाकर यों कहने लगी, ४ कि तेरे पिता ने तो हम लोगों पर भारी जूआ डाल रखा था, तो अब तू अपने पिता की कठिन सेवा को, और उस भारी जूए को, जो उस ने हम पर डाल रखा है, कुछ हलका कर; तब हम तेरे अधीन रहेंगे। ५ उस ने कहा, अभी तो जाओ, और तीन दिन के बाद मेरे पास फिर आना। तब वे चले गए। ६ तब राजा रहूबियाम ने उन बूढ़ों से जो उसके पिता सुलैमान के जीवन भर उसके साम्हने उपस्थित रहा करते थे सम्मति ली, कि इस प्रजा को कैसा उत्तर देना उचित है, इस में तुम क्या सम्मति देते हो? ७ उन्हों ने उसको यह उत्तर दिया, कि यदि तू अभी प्रजा के लोगों का दास बनकर उनके अधीन हो और उन से मधुर बातें कहे, तो वे सदैव तेरे अधीन बने रहेंगे। ८ रहूबियाम ने उस सम्मति को छोड़ दिया, जो बूढ़ों ने उसको दी थी, और उन जवानों से सम्मति ली, जो उसके संग बड़े हुए थे, और उसके सम्मुख उपस्थित रहा करते थे। ९ उन से उस ने पूछा, मैं प्रजा के लोगों को कैसा उत्तर दूं? इस में तुम क्या सम्मति देते हो? उन्हों ने तो मुझ से कहा है, कि जो जूआ तेरे पिता ने हम पर डाल रखा है, उसे तू हलका कर। १० जवानों ने जो उसके संग बड़े हुए थे उसको यह उत्तर दिया, कि उन लोगों ने तुझ से कहा है, कि तेरे पिता ने हमारा जूआ भारी किया था, परन्तु तू उसे हमारे लिये हलका कर; तू उन से यों कहना, कि मेरी छिंगुलिया मेरे पिता की कमर से भी मोटी है। ११ मेरे पिता ने तुम पर जो भारी जूआ रखा था, उसे मैं और भी भारी करूंगा; मेरा पिता तो तुम को कोड़ों से ताड़ना देता था, परन्तु मैं बिच्छुओं से दूंगा। १२ तीसरे दिन, जैसे राजा ने ठहराया था, कि तीसरे दिन मेरे पास फिर आना, वैसे ही यारोबाम और समस्त प्रजागण रहूबियाम के पास उपस्थित हुए। १३ तब राजा ने प्रजा से कड़ी बातें कीं, १४ और बूढ़ों की दी हुई सम्मति छोड़कर, जवानों की सम्मति के अनुसार उन से कहा, कि मेरे पिता ने तो तुम्हारा जूआ भारी कर दिया, परन्तु मैं उसे और भी भारी कर दूंगा: मेरे पिता ने तो कोड़ों से तुम को ताड़ना दी, परन्तु मैं तुम को बिच्छुओं से ताड़ना दूंगा। १५ सो राजा ने प्रजा की बात नहीं मानी, इसका कारण यह है, कि जो वचन यहोवा ने शीलोवासी अहिय्याह के द्वारा नबात के पुत्र यारोबाम से कहा था, उसको पूरा करने के लिये उस ने ऐसा ही ठहराया था। १६ जब सब इस्राएल ने देखा कि राजा हमारी नहीं सुनता, तब वे बोले *, कि दाऊद के साथ हमारा क्या अंश? हमारा तो यिशै के पुत्र में कोई भाग नहीं! हे इस्राएल अपने अपने डेरे को चले जाओ: अब हे दाऊद, अपने ही घराने की चिन्ता कर। १७ सो इस्राएल अपने अपने डेरे को चले गए। केवल जितने इस्राएली यहूदा

* मूल में—राजा को उत्तर दिया।

के नगरों में बसे हुए थे उन पर रहूबियाम राज्य करता रहा। १८ तब राजा रहूबियाम ने अदोराम को जो सब बेगारों पर अधिकारी था, भेज दिया, और सब इस्राएलियों ने उसको पत्थरवाह किया, और वह मर गया: तब रहूबियाम फुर्ती से अपने रथ पर चढ़कर यरूशलेम को भाग गया। १९ और इस्राएल दाऊद के घराने से फिर गया, और आज तक फिरा हुआ है। २० यह सुनकर कि यारोबाम लौट आया है, समस्त इस्राएल ने उसको मण्डली में बुलवा भेजकर, पूर्ण इस्राएल के ऊपर राजा नियुक्त किया, और यहूदा के गोत्र को छोड़कर दाऊद के घराने से कोई मिला न रहा॥

२१ जब रहूबियाम यरूशलेम को आया, तब उस ने यहूदा के पूर्ण घराने को, और बिन्यामीन के गोत्र को, जो मिलकर एक लाख अस्सी हजार अच्छे योद्धा थे, इकट्ठा किया, कि वे इस्राएल के घराने के साथ लड़कर सुलैमान के पुत्र रहूबियाम के वश में फिर राज्य कर दें। २२ तब परमेश्वर का यह वचन परमेश्वर के जन शमायाह के पास पहुंचा कि यहूदा के राजा सुलैमान के पुत्र रहूबियाम से, २३ और यहूदा और बिन्यामीन के सब घराने से, और सब लोगों से कह, यहोवा यों कहता है, २४ कि अपने भाई इस्राएलियों पर चढ़ाई करके युद्ध न करो; तुम अपने अपने घर लौट जाओ, क्योंकि यह बात मेरी ही ओर से हुई है। यहोवा का यह वचन मानकर उन्हीं ने उसके अनुसार लौट जाने को अपना अपना मार्ग लिया॥

(यारोबाम का मूर्त्तिपूजा चलाना)

२५ तब यारोबाम एप्रैम के पहाड़ी देश के शकेम नगर को दृढ़ करके उस में रहने लगा; फिर वहां से निकलकर पनूएल को भी दृढ़ किया। २६ तब यारोबाम सोचने लगा, कि अब राज्य दाऊद के घराने का हो जाएगा। २७ यदि प्रजा के लोग यरूशलेम में बलि करने को जाएं, तो उनका मन अपने स्वामी यहूदा के राजा रहूबियाम की ओर फिरेगा, और वे मुझे घात करके यहूदा के राजा रहूबियाम के हो जाएंगे। २८ तो राजा ने सम्मति लेकर सोने के दो बछड़े बनाए और लोगों से कहा, यरूशलेम को जाना तुम्हारी शक्ति से बाहर है इसलिये हे इस्राएल अपने देवताओं को देखो, जो तुम्हें मिस्र देश से निकाल लाए हैं। २९ तो उस ने एक बछड़े को बेतेल, और दूसरे को दान में स्थापित किया। ३० और यह बात पाप का कारण हुई; क्योंकि लोग उस एक के साम्हने दण्डवत करने को दान तक जाने लगे। ३१ और उस ने ऊंचे स्थानों के भवन बनाए, और सब प्रकार के लोगों * में से जो लेवीवंशी न थे, याजक ठहराए। ३२ फिर यारोबाम ने आठवें महीने के पन्द्रहवें दिन यहूदा के पर्व के समान एक पर्व ठहरा दिया, और वेदी पर बलि चढ़ाने लगा; इस रीति उस ने बेतेल में अपने बनाए हुए बछड़ों के लिये वेदी पर, बलि किया, और अपने बनाए हुए ऊंचे स्थानों के याजकों को बेतेल में ठहरा दिया॥

(यहूदी नबी की कथा)

३३ और जिस महीने की उस ने अपने मन में कल्पना की थी अर्थात्

---

* मूल में—अन्त के लोगों।

आठवें महीने के पन्द्रहवें दिन को वह बेतेल में अपनी बनाई हुई वेदी के पास चढ़ गया। उस ने एस्राएलियों के लिये एक पर्व्व ठहरा दिया, और धूप जलाने को वेदी के पास चढ़ गया॥

१३ तब यहोवा से वचन पाकर परमेश्वर का एक जन यहूदा से बेतेल को आया, और यारोबाम धूप जलाने के लिये वेदी के पास खड़ा था। २ उस जन ने यहोवा से वचन पाकर वेदी के विरुद्ध यों पुकारा, कि वेदी, हे वेदी! यहोवा यों कहता है, कि सुन, दाऊद के कुल में योशिय्याह नाम एक लड़का उत्पन्न होगा, वह उन ऊंचे स्थानों के याजकों को जो तुझ पर धूप जलाते हैं, तुझ पर बलि कर देगा; और तुझ पर मनुष्यों की हड्डियां जलाई जाएंगी। ३ और उस ने, उसी दिन यह कहकर उस बात का एक चिह्न भी बताया, कि यह वचन जो यहोवा ने कहा है, इसका चिह्न यह है कि यह वेदी फट जाएगी, और इस पर की राख गिर जाएगी। ४ तब ऐसा हुआ कि परमेश्वर के जन का यह वचन सुनकर जो उस ने बेतेल के विरुद्ध पुकार कर कहा, यारोबाम ने वेदी के पास से हाथ बढ़ाकर कहा, उसको पकड़ लो: तब उसका हाथ जो उसकी ओर बढ़ाया गया था, सूख गया और वह उसे अपनी ओर खींच न सका। ५ और वेदी फट गई, और उस पर की राख गिर गई; सो वह चिह्न पूरा हुआ, जो परमेश्वर के जन ने यहोवा से वचन पाकर कहा था। ६ तब राजा ने परमेश्वर के जन से कहा, अपने परमेश्वर यहोवा को मना और मेरे लिये प्रार्थना कर, कि मेरा हाथ ज्यों का त्यों हो जाए: तब परमेश्वर के जन ने यहोवा को मनाया और राजा का हाथ फिर ज्यों का त्यों हो गया। ७ तब राजा ने परमेश्वर के जन से कहा, मेरे संग घर चलकर अपना प्राण ठंडा कर, और मैं तुझे दान भी दूंगा। ८ परमेश्वर के जन ने राजा से कहा, चाहे तू मुझे अपना आधा घर भी दे, तौभी तेरे घर न चलूंगा; और इस स्थान में मैं न तो रोटी खाऊंगा और न पानी पीऊंगा। ९ क्योंकि यहोवा के वचन के द्वारा मुझे यों आज्ञा मिली है, कि न तो रोटी खाना, और न पानी पीना, और न उस मार्ग से लौटना जिस से तू जाएगा। १० इसलिये वह उस मार्ग से जिसे बेतेल को गया था न लौटकर, दूसरे मार्ग से चला गया॥

११ बेतेल में एक बूढ़ा नबी रहता था, और उसके एक बेटे ने आकर उस से उन सब कामों का वर्णन किया जो परमेश्वर के जन ने उस दिन बेतेल में किए थे; और जो बातें उस ने राजा से कही थीं, उनको भी उस ने अपने पिता से कह सुनाया। १२ उसके बेटों ने तो यह देखा था, कि परमेश्वर का वह जन जो यहूदा से आया था, किस मार्ग से चला गया, सो उनके पिता ने उन से पूछा, वह किस मार्ग से चला गया? १३ और उस ने अपने बेटों से कहा, मेरे लिये गदहे पर काठी बान्धो; तब उन्हों ने गदहे पर काठी बान्धी, और वह उस पर चढ़ा, १४ और परमेश्वर के जन के पीछे जाकर उसे एक बांजवृक्ष के तले बैठा हुआ पाया; और उस से पूछा, परमेश्वर का जो जन यहूदा से आया था, क्या तू वही है? १५ उस

ने कहा हां, वही हूं। उस ने उस से कहा, मेरे संग घर चलकर भोजन कर। १६ उस ने उस से कहा, मैं न तो तेरे संग लौट सकता, और न तेरे संग घर में जा सकता हूं और न मैं इस स्थान में तेरे संग रोटी खाऊंगा, वा पानी पीऊंगा। १७ क्योंकि यहोवा के वचन के द्वारा मुझे यह आज्ञा मिली है, कि वहां न तो रोटी खाना और न पानी पीना, और जिस मार्ग से तू जाएगा उस से न लौटना। १८ उस ने कहा, जैसा तू नबी है वैसा ही मैं भी नबी हूं; और मुझ से एक दूत ने यहोवा से वचन पाकर कहा, कि उस पुरुष को अपने संग अपने घर लौटा ले आ, कि वह रोटी खाए, और पानी पीए। यह उस ने उस से झूठ कहा। १९ अतएव वह उसके संग लौट गया और उसके घर में रोटी खाई और पानी पीया। २० और जब वे मेज़ पर बैठे ही थे, कि यहोवा का वचन उस नबी के पास पहुंचा, जो दूसरे को लौटा ले आया था। २१ और उस ने परमेश्वर के उस जन को जो यहूदा से आया था, पुकार के कहा, यहोवा यों कहता है इसलिये कि तू ने यहोवा का वचन न माना, और जो आज्ञा तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे दी थी उसे भी नहीं माना; २२ परन्तु जिस स्थान के विषय उस ने तुझ से कहा था, कि उस में न तो रोटी खाना और न पानी पीना, उसी में तू ने लौट कर रोटी खाई, और पानी भी पिया है इस कारण तुझे अपने पुरखाओं के कब्रिस्तान में मिट्टी नहीं दी जाएगी। २३ जब वह खा पी चुका, तब उस ने परमेश्वर के उस जन के लिये जिसको वह लौटा ले आया था गदहे पर काठी बन्धाई। २४ जब वह मार्ग में चल रहा था, तो एक सिंह उसे मिला, और उसको मार डाला, और उसकी लोथ मार्ग पर पड़ी रही, और गदहा उसके पास खड़ा रहा और सिंह भी लोथ के पास खड़ा रहा। २५ जो लोग उधर से चले आ रहे थे उन्हों ने यह देख कर कि मार्ग पर एक लोथ पड़ी है, और उसके पास सिंह खड़ा है, उस नगर में जाकर जहां वह बूढ़ा नबी रहता था यह समाचार सुनाया। २६ यह सुनकर उस नबी ने जो उसको मार्ग पर से लौटा ले आया था, कहा, परमेश्वर का वही जन होगा, जिस ने यहोवा के वचन के विरुद्ध किया था, इस कारण यहोवा ने उसको सिंह के पंजे में पड़ने दिया; और यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उस ने उस से कहा था, सिंह ने उसे फाड़कर मार डाला होगा। २७ तब उस ने अपने बेटों से कहा, मेरे लिये गदहे पर काठी बान्धो; जब उन्हों ने काठी बान्धी, २८ तब उस ने जाकर उस जन की लोथ मार्ग पर पड़ी हुई, और गदहे, और सिंह दोनों को लोथ के पास खड़े हुए पाया, और यह भी कि सिंह ने न तो लोथ को खाया, और न गदहे को फाड़ा है। २९ तब उस बूढ़े नबी ने परमेश्वर के जन की लोथ उठाकर गदहे पर लाद ली, और उसके लिये छाती पीटने लगा, और उसे मिट्टी देने को अपने नगर में लौटा ले गया। ३० और उस ने उसकी लोथ को अपने कब्रिस्तान में रखा, और लोग हाय, मेरे भाई! यह कहकर छाती पीटने लगे। ३१ फिर उसे मिट्टी देकर उस ने अपने बेटों से कहा, जब मैं मर जाऊंगा तब मुझे इसी कब्रिस्तान में रखना, जिस में परमेश्वर का यह जन रखा गया

है, और मेरी हड्डियां उसी की हड्डियों के पास धर देना। ३२ क्योंकि जो वचन उस ने यहोवा से पाकर बेतेल की वेदी और शोमरोन के नगरों के सब ऊंचे स्थानों के भवनों के विरुद्ध पुकार के कहा है, वह निश्चय पूरा हो जाएगा।।

(यारोबाम का अन्तकाल)

३३ इसके बाद यारोबाम अपनी बुरी चाल से न फिरा। उस ने फिर सब प्रकार के लोगों में से ऊंचे स्थानों के याजक बनाए, वरन जो कोई चाहता था, उसका संस्कार करके, वह उसको ऊंचे स्थानों का याजक होने को ठहरा देता था। ३४ और यह बात यारोबाम के घराने का पाप ठहरी, इस कारण उसका विनाश हुआ, और वह धरती पर से नाश किया गया।।

१४ उस समय यारोबाम का बेटा अबिय्याह रोगी हुआ। २ तब यारोबाम ने अपनी स्त्री से कहा, ऐसा भेष बना कि कोई तुझे पहिचान न सके कि यह यारोबाम की स्त्री है, और शीलो को चली जा, वहां तो अहिय्याह नबी रहता है जिस ने मुझ से कहा था कि तू इस प्रजा का राजा हो जाएगा। ३ उसके पास तू दस रोटी, और पपड़ियां और एक कुप्पी मधु लिये हुए जा, और वह तुझे बताएगा कि लड़के को क्या होगा। ४ यारोबाम की स्त्री ने वैसा ही किया, और चलकर शीलो को पहुंची और अहिय्याह के घर पर आई: अहिय्याह को तो कुछ सूझ न पड़ता था, क्योंकि बुढ़ापे के कारण उसकी आंखें धुन्धली पड़ गई थीं। ५ और यहोवा ने अहिय्याह से कहा, सुन यारोबाम की स्त्री तुझ से अपने बेटे के विषय में जो रोगी है कुछ पूछने को आती है, तू उस से ये ये बातें कहना; वह तो आकर अपने को दूसरी औरत बनाएगी। ६ जब अहिय्याह ने द्वार में आते हुए उसके पांव की आहट सुनी तब कहा, हे यारोबाम की स्त्री! भीतर आ; तू अपने को क्यों दूसरी स्त्री बनाती है? मुझे तेरे लिये भारी सन्देशा मिला है। ७ तू जाकर यारोबाम से कह कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा तुझ से यों कहता है, कि मैं ने तो तुझ को प्रजा में से बढ़ाकर अपनी प्रजा इस्राएल पर प्रधान किया, ८ और दाऊद के घराने से राज्य छीनकर तुझ को दिया, परन्तु तू मेरे दास दाऊद के समान न हुआ जो मेरी आज्ञाओं को मानता, और अपने पूर्ण मन से मेरे पीछे पीछे चलता, और केवल वही करता था जो मेरी दृष्टि में ठीक है। ९ तू ने उन सभों से बढ़कर जो तुझ से पहिले थे बुराई की है, और जाकर पराये देवता की उपासना की और मूरतें ढालकर बनाईं, जिस से मुझे क्रोधित कर दिया और मुझे तो पीठ के पीछे फेंक दिया है। १० इस कारण मैं यारोबाम के घराने पर विपत्ति डालूंगा, वरन मैं यारोबाम के कुल में से हर एक लड़के को और क्या बन्धुए, क्या स्वाधीन इस्राएल के मध्य हर एक रहनेवाले को भी नष्ट कर डालूंगा: और जैसा कोई गोबर को तब तक उठाता रहता है जब तक वह सब उठा नहीं लिया जाता, वैसे ही मैं यारोबाम के घराने की सफाई कर दूंगा। ११ यारोबाम के घराने का जो कोई नगर में मर जाए, उसको कुत्ते खाएंगे; और जो मैदान में मरे, उसको आकाश के पक्षी

खा जाएंगे; क्योंकि यहोवा ने यह कहा है! १२ इसलिये तू उठ और अपने घर जा, और नगर के भीतर तेरे पांव पड़ते ही वह बालक मर जाएगा। १३ उसे तो समस्त इस्राएली छाती पीटकर मिट्टी देंगे; यारोबाम के सन्तानों में से केवल उसी को कबर मिलेगी, क्योंकि यारोबाम के घराने में से उसी में कुछ पाया जाता है जो यहोवा इस्राएल के प्रभु की दृष्टि में भला है। १४ फिर यहोवा इस्राएल के लिये एक ऐसा राजा खड़ा करेगा जो उसी दिन यारोबाम के घराने को नाश कर डालेगा, परन्तु कब? १५ यह अभी होगा। क्योंकि यहोवा इस्राएल को ऐसा मारेगा, जैसा जल की धारा से नरकट हिलाया जाता है, और वह उनको इस अच्छी भूमि में से जो उस ने उनके पुरखाओं को दी थी उखाड़कर महानद के पार तित्तर-बित्तर करेगा; क्योंकि उन्हों ने अशेरा नाम मूरतें अपने लिये बनाकर यहोवा को क्रोध दिलाया है। १६ और उन पापों के कारण जो यारोबाम ने किए और इस्राएल से कराए थे, यहोवा इस्राएल को त्याग देगा। १७ तब यारोबाम की स्त्री बिदा होकर चली और तिर्जा को आई, और वह भवन की डेवढ़ी पर जैसे ही पहुंची कि वह बालक मर गया। १८ तब यहोवा के वचन के अनुसार जो उस ने अपने दास अहिय्याह नबी से कहलाया था, समस्त इस्राएल ने उसको मिट्टी देकर उसके लिये शोक मनाया। १९ यारोबाम के और काम अर्थात् उस ने कैसा कैसा युद्ध किया, और कैसा राज्य किया, यह सब इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखा है। २० यारोबाम बाईस वर्ष तक राज्य करके अपने पुरखाओं के साथ सो गया और नादाब नाम उसका पुत्र उसके स्थान पर राजा हुआ॥

(रहूबियाम का राज्य)

२१ और सुलैमान का पुत्र रहूबियाम यहूदा में राज्य करने लगा। रहूबियाम इकतालीस वर्ष का होकर राज्य करने लगा; और यरूशलेम जिसको यहोवा ने सारे इस्राएली गोत्रों में से अपना नाम रखने के लिये चुन लिया था, उस नगर में वह सत्रह वर्ष तक राज्य करता रहा; और उसकी माता का नाम नामा था जो अम्मोनी स्त्री थी। २२ और यहूदी लोग वह करने लगे जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, और अपने पुरखाओं से भी अधिक पाप करके उसकी जलन भड़काई। २३ उन्हों ने तो सब ऊंचे टीलों पर, और सब हरे वृक्षों के तले, ऊंचे स्थान, और लाठें, और अशेरा नाम मूरतें बना लीं। २४ और उनके देश में पुरुषगामी भी थे; निदान वे उन जातियों के से सब घिनौने काम करते थे जिन्हें यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने से निकाल दिया था। २५ राजा रहूबियाम के पांचवें वर्ष में मिस्र का राजा शीशक, यरूशलेम पर चढ़ाई करके, २६ यहोवा के भवन की अनमोल वस्तुएं और राजभवन की अनमोल वस्तुएं, सब की सब उठा ले गया; और सोने की जो ढालें सुलैमान ने बनाई थीं सब को वह ले गया। २७ इसलिये राजा रहूबियाम ने उनके बदले पीतल की ढालें बनवाईं और उन्हें पहरुओं के प्रधानों के हाथ सौंप दिया जो राजभवन के द्वार की रखवाली करते थे। २८ और जब जब राजा यहोवा के भवन में जाता था

तब तब पहरुए उन्हें उठा ले चलते, और फिर अपनी कोठरी में लौटाकर रख देते थे। २९ रहूबियाम के और सब काम जो उस ने किए वह क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? ३० रहूबियाम और यारोबाम में तो सदा लड़ाई होती रही। ३१ और रहूबियाम जिसकी माता नामा नाम एक अम्मोनिन थी, अपने पुरखाओं के साथ सो गया; और उन्हीं के पास दाऊदपुर में उसको मिट्टी दी गई: और उसका पुत्र अबिय्याम उसके स्थान पर राज्य करने लगा॥

(अबिय्याम का राज्य)

१५ नाबात के पुत्र यारोबाम के राज्य के अठारहवें वर्ष में अबिय्याम यहूदा पर राज्य करने लगा। २ और वह तीन वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। उसकी माता का नाम माका था जो अबशालोम की पुत्री थी: ३ वह वैसे ही पापों की लीक पर चलता रहा जैसे उसके पिता ने उस से पहिले किए थे और उसका मन अपने परमेश्वर यहोवा की ओर अपने परदादा दाऊद की नाईं पूरी रीति से सिद्ध न था: ४ तौभी दाऊद के कारण उसके परमेश्वर यहोवा ने यरूशलेम में उसे एक दीपक दिया अर्थात् उसके पुत्र को उसके बाद ठहराया और यरूशलेम को बनाए रखा। ५ क्योंकि दाऊद वह किया करता था जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था और हित्ती ऊरिय्याह की बात के सिवाय और किसी बात में यहोवा की किसी आज्ञा से जीवन भर कभी न मुड़ा। ६ रहूबियाम के जीवन भर तो उसके और यारोबाम के बीच लड़ाई होती रही। ७ अबिय्याम के और सब काम जो उस ने किए, क्या वे यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? और अबिय्याम की यारोबाम के साथ लड़ाई होती रही। ८ निदान अबिय्याम अपने पुरखाओं के संग सोया, और उसको दाऊदपुर में मिट्टी दी गई, और उसका पुत्र आसा उसके स्थान पर राज्य करने लगा॥

(आसा का राज्य)

९ इस्राएल के राजा यारोबाम के बीसवें वर्ष में आसा यहूदा पर राज्य करने लगा; १० और यरूशलेम में इकतालीस वर्ष तक राज्य करता रहा, और उसकी माता अबशालोम की पुत्री माका थी। ११ और आसा ने अपने मूलपुरुष दाऊद की नाईं वही किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था। १२ उस ने तो पुरुषगामियों को देश से निकाल दिया, और जितनी मूरतें उसके पुरखाओं ने बनाई थीं उन सभों को उस ने दूर कर दिया। १३ वरन उसकी माता माका जिस ने अशेरा के लिये एक घिनौनी मूरत बनाई थी उसको उस ने राजमाता के पद से उतार दिया, और आसा ने उसकी मूरत को काट डाला और किद्रोन के नाले में फूंक दिया। १४ परन्तु ऊंचे स्थान तो ढाए न गए; तौभी आसा का मन जीवन भर यहोवा की ओर पूरी रीति से लगा रहा। १५ और जो सोना चांदी और पात्र उसके पिता ने अर्पण किए थे, और जो उसने स्वयं अर्पण किए थे, उन सभों को उस ने यहोवा के भवन में पहुंचा दिया। १६ और आसा और इस्राएल के राजा बाशा के बीच उनके

जीवन भर युद्ध होता रहा। १७ और इस्राएल के राजा बाशा ने यहूदा पर चढ़ाई की, और रामा को इसलिये दृढ़ किया कि कोई यहूदा के राजा आसा के पास आने जाने न पाए। १८ तब आसा नें जितना सोना चांदी यहोवा के भवन और राजभवन के भण्डारों में रह गया था उस सब को निकाल अपने कर्मचारियों के हाथ सौंपकर, दमिश्कवासी अराम के राजा बेन्हदद के पास जो हेज्योन का पोता और तब्रिम्मोन का पुत्र था भेजकर यह कहा, कि जैसा मेरे और तेरे पिता के मध्य में वैसा ही मेरे और तेरे मध्य भी वाचा बान्धी जाए: १९ देख, मैं तेरे पास चांदी सोने की भेंट भेजता हूं, इसलिये आ, इस्राएल के राजा बाशा के साथ की अपनी वाचा को टाल दे, कि वह मेरे पास से चला जाए। २० राजा आसा की यह बात मानकर बेन्हदद ने अपने दलों के प्रधानों से इस्राएली नगरों पर चढ़ाई करवाकर इय्योन, दान, आबेल्बेत्माका और समस्त किन्नेरेत को और नप्ताली के समस्त देश को पूरा जीत लिया। २१ यह सुनकर बाशा ने रामा को दृढ़ करना छोड़ दिया, और तिर्सा में रहने लगा। २२ तब राजा आसा ने सारे यहूदा में प्रचार करवाया और कोई अनसुना न रहा, तब वे रामा के पत्थरों और लकड़ी को जिन से बाशा उसे दृढ़ करता था उठा ले गए, और उन से राजा आसा ने बिन्यामीन के गेबा और मिस्पा को दृढ़ किया। २३ आसा के और काम और उसकी वीरता और जो कुछ उस ने किया, और जो नगर उस ने दृढ़ किए, यह सब क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? २४ परन्तु उसके बुढ़ापे में तो उसे पांवों का रोग लग गया। निदान आसा अपने पुरखाओं के संग सो गया, और उसे उसके मूलपुरुष दाऊद के नगर में उन्हीं के पास मिट्टी दी गई और उसका पुत्र यहोशापात उसके स्थान पर राज्य करने लगा।।

(नादाब का राज्य)

२५ यहूदा के राजा आसा के दूसरे वर्ष में यारोबाम का पुत्र नादाब इस्राएल पर राज्य करने लगा; और दो वर्ष तक राज्य करता रहा। २६ उस ने वह काम किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था और अपने पिता के मार्ग पर वही पाप करता हुआ चलता रहा जो उस ने इस्राएल से करवाया था। २७ नादाब सब इस्राएल समेत पलिश्तियों के देश के गिब्बतोन नगर को घेरे था। और इस्साकार के गोत्र के अहिय्याह के पुत्र बाशा ने उसके विरुद्ध राजद्रोह की गोष्ठी करके गिब्बतोन के पास उसको मार डाला। २८ और यहूदा के राजा आसा के तीसरे वर्ष में बाशा ने नादाब को मार डाला, और उसके स्थान पर राजा बन गया। २९ राजा होते ही बाशा ने यारोबाम के समस्त घराने को मार डाला; उस ने यारोबाम के वंश को यहां तक नष्ट किया कि एक भी जीवित न रहा। यह सब यहोवा के उस वचन के अनुसार हुआ जो उस ने अपने दास शीलोवासी अहिय्याह से कहवाया था। ३० यह इस कारण हुआ कि यारोबाम ने स्वयं पाप किए, और इस्राएल से भी करवाए थे, और उस ने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को क्रोधित किया था।

३१ नादाब के और सब काम जो उस ने किए, वह क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? ३२ आसा और इस्राएल के राजा बाशा के मध्य में तो उनके जीवन भर युद्ध होता रहा ॥

(बाशा का राज्य)

३३ यहूदा के राजा आसा के तीसरे वर्ष में अहिय्याह का पुत्र बाशा, तिर्सा में समस्त इस्राएल पर राज्य करने लगा, और चौबीस वर्ष तक राज्य करता रहा। ३४ और उस ने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, और यारोबाम के मार्ग पर वही पाप करता रहा जिसे उस ने इस्राएल से करवाया था ॥

१६ और बाशा के विषय यहोवा का यह वचन हनानी के पुत्र येहू के पास पहुंचा, २ कि मैं ने तुझ को मिट्टी पर से उठाकर अपनी प्रजा इस्राएल का प्रधान किया, परन्तु तू यारोबाम की सी चाल चलता और मेरी प्रजा इस्राएल से ऐसे पाप कराता आया है जिन से वे मुझे क्रोध दिलाते हैं। ३ सुन, मैं बाशा और उसके घराने की पूरी रीति से सफाई कर दूंगा और तेरे घराने को नबात के पुत्र यारोबाम के समान कर दूंगा। ४ बाशा के घर का जो कोई नगर में मर जाए, उसको कुत्ते खा डालेंगे, और उसका जो कोई मैदान में मर जाए, उसको आकाश के पक्षी खा डालेंगे॥

५ बाशा के और सब काम जो उस ने किए, और उसकी वीरता यह सब क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? ६ निदान बाशा अपने पुरखाओं के संग सो गया और तिर्सा में उसे मिट्टी दी गई, और उसका पुत्र एला उसके स्थान पर राज्य करने लगा। ७ यहोवा का जो वचन हनानी के पुत्र येहू के द्वारा बाशा और उसके घराने के विरुद्ध आया, वह न केवल उन सब बुराइयों के कारण आया जो उस ने यारोबाम के घराने के समान होकर यहोवा की दृष्टि में किया था और अपने कामों से उसको क्रोधित किया, वरन इस कारण भी आया, कि उस ने उसको मार डाला था ॥

(एला का राज्य)

८ यहूदा के राजा आसा के छब्बीसवें वर्ष में बाशा का पुत्र एला तिर्सा में इस्राएल पर राज्य करने लगा, और दो वर्ष तक राज्य करता रहा। ९ जब वह तिर्सा में अर्सा नाम भण्डारी के घर में जो उसके तिर्सावाले भवन का प्रधान था, दारू पीकर मतवाला हो गया था, तब उसके जिम्री नाम एक कर्मचारी ने जो उसके आधे रथों का प्रधान था, १० राजद्रोह की गोष्ठी की और भीतर जाकर उसको मार डाला, और उसके स्थान पर राजा बन गया। यह यहूदा के राजा आसा के सत्ताइसवें वर्ष में हुआ। ११ और जब वह राज्य करने लगा, तब गद्दी पर बैठते ही उस ने बाशा के पूरे घराने को मार डाला, वरन उस ने न तो उसके कुटुम्बियों और न उसके मित्रों में से एक लड़के को भी जीवित छोड़ा। १२ इस रीति यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उस ने येहू नबी के द्वारा बाशा के विरुद्ध कहा था, जिम्री ने बाशा का समस्त घराना नष्ट कर दिया। १३ इसका कारण बाशा के सब पाप

और उसके पुत्र एला के भी पाप थे, जो उन्हों ने स्वयं आप करके और इस्राएल से भी करवा के इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को व्यर्थ बातों से क्रोध दिलाया था। १४ एला के और सब काम जो उस ने किए, वह क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं।।

(जिम्री का राज्य)

१५ यहूदा के राजा आसा के सत्ताईसवें वर्ष में जिम्री तिर्सा में राज्य करने लगा, और तिर्सा में सात दिन तक राज्य करता रहा। उस समय लोग पलिश्तियों के देश गिब्बतोन के विरुद्ध डेरे किए हुए थे। १६ तो जब उन डेरे लगाए हुए लोगों ने सुना, कि जिम्री ने राजद्रोह की गोष्ठी करके राजा को मार डाला, तब उसी दिन समस्त इस्राएल ने ओम्री नाम प्रधान सेनापति को छावनी में इस्राएल का राजा बनाया। १७ तब ओम्री ने समस्त इस्राएल को संग ले गिब्बतोन को छोड़कर तिर्सा को घेर लिया। १८ जब जिम्री ने देखा, कि नगर ले लिया गया है, तब राजभवन के गुम्मट में जाकर राजभवन में आग लगा दी, और उसी में स्वयं जल मरा। १९ यह उसके पापों के कारण हुआ क्योंकि उस ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, क्योंकि वह यारोबाम की सी चाल और उसके किए हुए और इस्राएल से करवाए हुए पाप की लीक पर चला। २० जिम्री के और काम और जो राजद्रोह की गोष्ठी उस ने की, यह सब क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है?

(ओम्री का राज्य)

२१ तब इस्राएली प्रजा के दो भाग किए गए, प्रजा के आधे लोग तो तिब्नी नाम गीनत के पुत्र को राजा करने के लिये उसी के पीछे हो लिए, और आधे ओम्री के पीछे हो लिए। २२ अन्त में जो लोग ओम्री के पीछे हुए थे वे उन पर प्रबल हुए जो गीनत के पुत्र तिब्नी के पीछे हो लिए थे, इसलिये तिब्नी मारा गया और ओम्री राजा बन गया। २३ यहूदा के राजा आसा के इकतीसवें वर्ष में ओम्री इस्राएल पर राज्य करने लगा, और बारह वर्ष तक राज्य करता रहा; उसने छः वर्ष तो तिर्सा में राज्य किया। २४ और उस ने शेमेर से शोमरोन पहाड़ को दो किक्कार चांदी में मोल लेकर, उस पर एक नगर बसाया; और अपने बसाए हुए नगर का नाम पहाड़ के मालिक शेमेर के नाम पर शोमरोन रखा। २५ और ओम्री ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था वरन उन सभों से भी जो उससे पहिले थे अधिक बुराई की। २६ वह नबात के पुत्र यारोबाम की सी सब चाल चला, और उसके सब पापों के अनुसार जो उस ने इस्राएल से करवाए थे जिसके कारण इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को उन्हों ने अपने व्यर्थ कर्मों से क्रोध दिलाया था। २७ ओम्री के और काम जो उस ने किए, और जो वीरता उस ने दिखाई, यह सब क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? २८ निदान ओम्री अपने पुरखाओं के संग सो गया और शोमरोन में उसको मिट्टी दी गई, और उसका पुत्र अहाब उसके स्थान पर राज्य करने लगा।।

(अहाब के राज्य का आरम्भ)

२९ यहूदा के राजा आसा के अड़तीसवें वर्ष में ओम्री का पुत्र अहाब इस्राएल पर राज्य करने लगा, और इस्राएल पर शोमरोन में बाईस वर्ष तक राज्य करता रहा। ३० और ओम्री के पुत्र अहाब ने उन सब से अधिक जो उस से पहिले थे, वह कर्म किए जो यहोवा की दृष्टि में बुरे थे। ३१ उस ने तो नबात के पुत्र यारोबाम के पापों में चलना हलकी सी बात जानकर, सीदोनियों के राजा एतबाल की बेटी ईज़ेबेल को ब्याह कर बाल देवता की उपासना की और उसको दण्डवत किया। ३२ और उस ने बाल का एक भवन शोमरोन में बनाकर उस में बाल की एक वेदी बनाई। ३३ और अहाब ने एक अशेरा भी बनाया, वरन उस ने उन सब इस्राएली राजाओं से बढ़कर जो उस से पहिले थे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को क्रोध दिलाने के काम किए। ३४ उसके दिनों में बेतेलवासी हीएल ने यरीहो को फिर बसाया; जब उस ने उसकी नेव डाली तब उसका जेठा पुत्र अबीराम मर गया, और जब उस ने उसके फाटक खड़े किए तब उसका लहुरा पुत्र सगूब मर गया, यह यहोवा के उस वचन के अनुसार हुआ, जो उस ने नून के पुत्र यहोशू के द्वारा कहलवाया था।।

(एलिय्याह के काम का आरम्भ)

१७ और तिशबी एलिय्याह जो गिलाद के परदेसियों में से था उस ने अहाब से कहा, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जिसके सम्मुख मैं उपस्थित रहता हूं, उसके जीवन की शपथ इन वर्षों में मेरे बिना कहे, न तो मेंह बरसेगा, और न ओस पड़ेगी। २ तब यहोवा का यह वचन उसके पास पहुंचा, ३ कि यहां से चलकर पूरब ओर मुख करके करीत नाम नाले में जो यरदन के साम्हने है छिप जा। ४ उसी नाले का पानी तू पिया कर, और मैं ने कौवों को आज्ञा दी है कि वे तुझे वहां खिलाएं*। ५ यहोवा का यह वचन मानकर वह यरदन के साम्हने के करीत नाम नाले में जाकर छिपा रहा। ६ और सवेरे और सांझ को कौवे उसके पास रोटी और मांस लाया करते थे और वह नाले का पानी पिया करता था। ७ कुछ दिनों के बाद उस देश में वर्षा न होने के कारण नाला सूख गया।।

८ तब यहोवा का यह वचन उसके पास पहुंचा, ९ कि चलकर सीदोन के सारपत नगर में जाकर वहीं रह: सुन, मैं ने वहां की एक विधवा को तेरे खिलाने की आज्ञा दी है। १० सो वह वहां से चल दिया, और सारपत को गया; नगर के फाटक के पास पहुंचकर उस ने क्या देखा कि, एक विधवा लकड़ी बीन रही है, उसको बुलाकर उस ने कहा, किसी पात्र में मेरे पीने को थोड़ा पानी ले आ। ११ जब वह लेने जा रही थी, तो उस ने उसे पुकार के कहा अपने हाथ में एक टुकड़ा रोटी भी मेरे पास लेती आ। १२ उस ने कहा, तेरे परमेश्वर यहोवा के जीवन की शपथ मेरे पास एक भी रोटी नहीं है केवल घड़े में मुट्ठी भर मैदा और कुप्पी में थोड़ा सा तेल है, और मैं दो एक लकड़ी बीनकर लिए

* मूल में—तेरे पालने पोसने की।

जाती हूं कि अपने और अपने बेटे के लिये उसे पकाऊं, और हम उसे खाएं, फिर मर जाएं। १३ एलिय्याह ने उस से कहा, मत डर; जाकर अपनी बात के अनुसार कर, परन्तु पहिले मेरे लिये एक छोटी सी रोटी बनाकर मेरे पास ले आ, फिर इसके बाद अपने और अपने बेटे के लिये बनाना। १४ क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि जब तक यहोवा भूमि पर मेंह न बरसाएगा तब तक न तो उस घड़े का मैदा चुकेगा, और न उस कुप्पी का तेल घटेगा। १५ तब वह चली गई, और एलिय्याह के वचन के अनुसार किया, तब से वह और स्त्री और उसका घराना बहुत दिन तक खाते रहे। १६ यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उस ने एलिय्याह के द्वारा कहा था, न तो उस घड़े का मैदा चुका, और न उस कुप्पी का तेल घट गया। १७ इन बातों के बाद उस स्त्री का बेटा जो घर की स्वामिनी थी, रोगी हुआ, और उसका रोग यहां तक बढ़ा कि उसका सांस लेना बन्द हो गया। १८ तब वह एलिय्याह से कहने लगी, हे परमेश्वर के जन! मेरा तुझ से क्या काम? क्या तू इसलिये मेरे यहां आया है कि मेरे बेटे की मृत्यु का कारण हो और मेरे पाप का स्मरण दिलाए? १९ उस ने उस से कहा अपना बेटा मुझे दे; तब वह उसे उसकी गोद से लेकर उस अटारी पर ले गया जहां वह स्वयं रहता था, और अपनी खाट पर लिटा दिया। २० तब उस ने यहोवा को पुकारकर कहा, हे मेरे परमेश्वर यहोवा! क्या तू इस विधवा का बेटा मार डालकर जिसके यहां मैं टिका हूं, इस पर भी विपत्ति ले आया है? २१ तब वह बालक पर तीन बार पसर गया और यहोवा को पुकारकर कहा, हे मेरे परमेश्वर यहोवा! इस बालक का प्राण इस में फिर डाल दे। २२ एलिय्याह की यह बात यहोवा ने सुन ली, और बालक का प्राण उस में फिर आ गया और वह जी उठा। २३ तब एलिय्याह बालक को अटारी पर से नीचे घर में ले गया, और एलिय्याह ने यह कहकर उसकी माता के हाथ में सौंप दिया, कि देख तेरा बेटा जीवित है। २४ स्त्री ने एलिय्याह से कहा, अब मुझे निश्चय हो गया है कि तू परमेश्वर का जन है, और यहोवा का जो वचन तेरे मुंह से निकलता है, वह सच होता है॥

(यहोवा की विजय और बाल का पराजय)

१८ बहुत दिनों के बाद, तीसरे वर्ष में यहोवा का यह वचन एलिय्याह के पास पहुंचा, कि जाकर अपने आप को अहाब को दिखा, और मैं भूमि पर मेंह बरसा दूंगा। २ तब एलिय्याह अपने आप को अहाब को दिखाने गया। उस समय शोमरोन में अकाल भारी था। ३ इसलिये अहाब ने ओबद्याह को जो उसके घराने का दीवान था बुलवाया। ४ ओबद्याह तो यहोवा का भय यहां तक मानता था कि जब ईज़ेबेल यहोवा के नबियों को नाश करती थी, तब ओबद्याह ने एक सौ नबियों को लेकर पचास-पचास करके गुफाओं में छिपा रखा; और अन्न जल देकर उनका पालन-पोषण करता रहा। ५ और अहाब ने ओबद्याह से कहा, कि देश में जल के सब सोतों और सब नदियों के पास जा, कदाचित इतनी

घास मिले कि हम घोड़ों और खच्चरों को जीवित बचा सकें, ६ और हमारे सब पशु न मर जाएं। और उन्हों ने आपस में देश बांटा कि उस में होकर चलें; एक ओर अहाब और दूसरी ओर ओबद्याह चला। ७ ओबद्याह मार्ग में था, कि एलिय्याह उसको मिला; उसे चीन्ह कर वह मुंह के बल गिरा, और कहा, हे मेरे प्रभु एलिय्याह, क्या तू है? ८ उस ने कहा हां मैं ही हूं: जाकर अपने स्वामी से कह, कि एलिय्याह मिला है। ९ उस ने कहा, मैं ने ऐसा क्या पाप किया है कि तू मुझे मरवा डालने के लिये अहाब के हाथ करना चाहता है? १० तेरे परमेश्वर यहोवा के जीवन की शपथ कोई ऐसी जाति वा राज्य नहीं, जिस में मेरे स्वामी ने तुझे ढूंढ़ने को न भेजा हो, और जब उन लोगों ने कहा, कि वह यहां नहीं है, तब उस ने उस राज्य वा जाति को इसकी शपथ खिलाई कि एलिय्याह नहीं मिला। ११ और अब तू कहता है कि जाकर अपने स्वामी से कह, कि एलिय्याह मिला! १२ फिर ज्यों ही मैं तेरे पास से चला जाऊंगा, त्यों ही यहोवा का आत्मा तुझे न जाने कहां उठा ले जाएगा, सो जब मैं जाकर अहाब को बताऊंगा, और तू उसे न मिलेगा, तब वह मुझे मार डालेगा: परन्तु मैं तेरा दास अपने लड़कपन से यहोवा का भय मानता आया हूं! १३ क्या मेरे प्रभु को यह नहीं बताया गया, कि जब ईज़ेबेल यहोवा के नबियों को घात करती थी तब मैं ने क्या किया? कि यहोवा के नबियों में से एक सौ लेकर पचास-पचास करके गुफाओं में छिपा रखा, और उन्हें अन्न जल देकर पालता रहा। १४ फिर अब तू कहता है, जाकर अपने स्वामी से कह, कि एलिय्याह मिला है! तब वह मुझे घात करेगा। १५ एलिय्याह ने कहा, सेनाओं का यहोवा जिसके साम्हने मैं रहता हूं, उसके जीवन की शपथ आज मैं अपने आप को उसे दिखाऊंगा। १६ तब ओबद्याह अहाब से मिलने गया, और उसको बता दिया, सो अहाब एलिय्याह से मिलने चला। १७ एलिय्याह को देखते ही अहाब ने कहा, हे इस्राएल के सतानेवाले क्या तू ही है? १८ उस ने कहा, मैं ने इस्राएल को कष्ट नहीं दिया, परन्तु तू ही ने और तेरे पिता के घराने ने दिया है; क्योंकि तुम यहोवा की आज्ञाओं को टालकर बाल देवताओं की उपासना करने लगे। १९ अब दूत भेजकर सारे इस्राएल को और बाल के साढ़े चार सौ नबियों और अशेरा के चार सौ नबियों को जो ईज़ेबेल की मेज पर खाते हैं, मेरे पास कर्म्मेल पर्वत पर इकट्ठा कर ले॥

२० तब अहाब ने सारे इस्राएलियों को बुला भेजा और नबियों को कर्म्मेल पर्वत पर इकट्ठा किया। २१ और एलिय्याह सब लोगों के पास आकर कहने लगा, तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे, यदि यहोवा परमेश्वर हो, तो उसके पीछे हो लेओ; और यदि बाल हो, तो उसके पीछे हो लेओ। लोगों ने उसके उत्तर में एक भी बात न कही। २२ तब एलिय्याह ने लोगों से कहा, यहोवा के नबियों में से केवल मैं ही रह गया हूं; और बाल के नबी साढ़े चार सौ मनुष्य हैं। २३ इसलिये दो बछड़े लाकर हमें दिए जाएं, और वे एक अपने

लिये चुनकर उसे टुकड़े टुकड़े काटकर लकड़ी पर रख दें, और कुछ आग न लगाएं; और मैं दूसरे बछड़े को तैयार करके लकड़ी पर रखूंगा, और कुछ आग न लगाऊंगा। २४ तब तुम तो अपने देवता से प्रार्थना करना, और मैं यहोवा से प्रार्थना करूंगा; और जो आग गिराकर उत्तर दे वही परमेश्वर ठहरे। तब सब लोग बोल उठे, अच्छी बात। २५ और एलिय्याह ने बाल के नबियों से कहा, पहिले तुम एक बछड़ा चुनकर तैयार कर लो, क्योंकि तुम तो बहुत हो; तब अपने देवता से प्रार्थना करना, परन्तु आग न लगाना। २६ तब उन्हों ने उस बछड़े को जो उन्हें दिया गया था लेकर तैयार किया, और भोर से लेकर दोपहर तक वह यह कहकर बाल से प्रार्थना करते रहे, कि हे बाल हमारी सुन, हे बाल हमारी सुन! परन्तु न कोई शब्द और न कोई उत्तर देनेवाला हुआ। तब वे अपनी बनाई हुई वेदी पर उछलने कूदने लगे। २७ दोपहर को एलिय्याह ने यह कहकर उनका ठट्ठा किया, कि ऊंचे शब्द से पुकारो, वह तो देवता है; वह तो ध्यान लगाए होगा, वा कहीं गया होगा वा यात्रा में होगा, वा हो सकता है कि सोता हो और उसे जगाना चाहिए। २८ और उन्हों ने बड़े शब्द से पुकार पुकार के अपनी रीति के अनुसार छुरियों और बर्छियों से अपने अपने को यहां तक घायल किया कि लोहू लुहान हो गए। २९ वे दोपहर भर ही क्या, वरन भेंट चढ़ाने के समय तक नबूवत करते रहे, परन्तु कोई शब्द सुन न पड़ा; और न तो किसी ने उत्तर दिया और न कान लगाया॥

३० तब एलिय्याह ने सब लोगों से कहा, मेरे निकट आओ; और सब लोग उसके निकट आए। तब उस ने यहोवा की वेदी को जो गिराई गई थी मरम्मत की। ३१ फिर एलिय्याह ने याकूब के पुत्रों की गिनती के अनुसार जिसके पास यहोवा का यह वचन आया था, ३२ कि तेरा नाम इस्राएल होगा, बारह पत्थर छांटे, और उन पत्थरों से यहोवा के नाम की एक वेदी बनाई; और उसके चारों ओर इतना बड़ा एक गड़हा खोद दिया, कि उस में दो सआ बीज समा सके। ३३ तब उस ने वेदी पर लकड़ी को सजाया, और बछड़े को टुकड़े टुकड़े काटकर लकड़ी पर धर दिया, और कहा, चार घड़े पानी भर के होमबलि, पशु और लकड़ी पर उण्डेल दो। ३४ तब उस ने कहा, दूसरी बार वैसा ही करो; तब लोगों ने दूसरी बार वैसा ही किया। फिर उस ने कहा, तीसरी बार करो; तब लोगों ने तीसरी बार भी वैसा ही किया। ३५ और जल वेदी के चारों ओर बह गया, और गड़हे को भी उस ने जल से भर दिया। ३६ फिर भेंट चढ़ाने के समय एलिय्याह नबी समीप जाकर कहने लगा, हे इब्राहीम, इसहाक और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा! आज यह प्रगट कर कि इस्राएल में तू ही परमेश्वर है, और मैं तेरा दास हूं, और मैं ने ये सब काम तुझ से वचन पाकर किए हैं। ३७ हे यहोवा! मेरी सुन, मेरी सुन, कि ये लोग जान लें कि हे यहोवा, तू ही परमेश्वर है, और तू ही उनका मन लौटा लेता है। ३८ तब यहोवा की आग आकाश से प्रगट हुई और होमबलि को लकड़ी और पत्थरों

और धूलि समेत भस्म कर दिया, और गड़हे में का जल भी सुखा दिया। ३९ यह देख सब लोग मुंह के बल गिरकर बोल उठे, यहोवा ही परमेश्वर है, यहोवा ही परमेश्वर है; ४० एलिय्याह ने उन से कहा, बाल के नबियों को पकड़ लो, उन में से एक भी छूटने न पाए; तब उन्हों ने उनको पकड़ लिया, और एलिय्याह ने उन्हें नीचे किशोन के नाले में ले जाकर मार डाला ॥

४१ फिर एलिय्याह ने अहाब से कहा, उठकर खा पी, क्योंकि भारी वर्षा की सनसनाहट सुन पड़ती है। ४२ तब अहाब खाने पीने चला गया, और एलिय्याह कर्म्मेल की चोटी पर चढ़ गया, और भूमि पर गिर कर अपना मुंह घुटनों के बीच किया। ४३ और उस ने अपने सेवक से कहा, चढ़कर समुद्र की ओर दृष्टि कर देख, तब उस ने चढ़कर देखा और लौटकर कहा, कुछ नहीं दीखता। एलिय्याह ने कहा, फिर सात बार जा। ४४ सातवीं बार उस ने कहा, देख समुद्र में से मनुष्य का हाथ सा एक छोटा बादल उठ रहा है। एलिय्याह ने कहा, अहाब के पास जाकर कह, कि रथ जुतवा कर नीचे जा, कहीं ऐसा न हो कि तू वर्षा के कारण रुक जाए। ४५ थोड़ी ही देर में आकाश वायु से उड़ाई हुई घटाओं, और आन्धी से काला हो गया और भारी वर्षा होने लगी; और अहाब सवार होकर यिज्रेल को चला। ४६ तब यहोवा की शक्ति * एलिय्याह पर ऐसी हुई, कि वह कमर बान्धकर अहाब के आगे आगे यिज्रेल तक दौड़ता चला गया ॥

* मूल में—का हाथ।

(एलिय्याह का निराश होना और फिर हियाव बान्धना)

१९ तब अहाब ने ईज़ेबेल को एलिय्याह के सब काम विस्तार से बताए कि उस ने सब नबियों को तलवार से किस प्रकार मार डाला। २ तब ईज़ेबेल ने एलिय्याह के पास एक दूत के द्वारा कहला भेजा, कि यदि मैं कल इसी समय तक तेरा प्राण उनका सा न कर डालूं तो देवता मेरे साथ वैसा ही वरन उस से भी अधिक करें। ३ यह देख एलिय्याह अपना प्राण लेकर भागा, और यहूदा के बेर्शेबा को पहुंचकर अपने सेवक को वहीं छोड़ दिया। ४ और आप जंगल में एक दिन के मार्ग पर जाकर एक झाऊ के पेड़ के तले बैठ गया, वहां उस ने यह कह कर अपनी मृत्यु मांगी कि हे यहोवा बस है, अब मेरा प्राण ले ले, क्योंकि मैं अपने पुरखाओं से अच्छा नहीं हूं। ५ वह झाऊ के पेड़ तले लेटकर सो गया और देखो एक दूत ने उसे छूकर कहा, उठकर खा। ६ उस ने दृष्टि करके क्या देखा कि मेरे सिरहाने पत्थरों पर पकी हुई एक रोटी, और एक सुराही पानी धरा है; तब उस ने खाया और पिया और फिर लेट गया। ७ दूसरी बार यहोवा का दूत आया और उसे छूकर कहा, उठकर खा, क्योंकि तुझे बहुत भारी यात्रा करनी है। ८ तब उस ने उठकर खाया पिया; और उसी भोजन से बल पाकर चालीस दिन रात चलते चलते परमेश्वर के पर्वत होरेब को पहुंचा। ९ वहां वह एक गुफा में जाकर टिका और यहोवा का यह वचन उसके पास पहुंचा, कि हे एलिय्याह तेरा यहां क्या काम? १० उस ने उत्तर दिया सेनाओं

के परमेश्वर यहोवा के निमित्त मुझे बड़ी जलन हुई है, क्योंकि इस्राएलियों ने तेरी वाचा टाल दी, तेरी वेदियों को गिरा दिया, और तेरे नबियों को तलवार से घात किया है, और मैं ही अकेला रह गया हूं; और वे मेरे प्राणों के भी खोजी हैं। ११ उस ने कहा, निकलकर यहोवा के सम्मुख पर्वत पर खड़ा हो। और यहोवा पास से होकर चला, और यहोवा के साम्हने एक बड़ी प्रचण्ड आन्धी से पहाड़ फटने और चट्टानें टूटने लगीं, तौभी यहोवा उस आन्धी में न था; फिर आन्धी के बाद भूंईडोल हुआ, तौभी यहोवा उस भूंईडोल में न था। १२ फिर भूंईडोल के बाद आग दिखाई दी, तौभी यहोवा उस आग में न था; फिर आग के बाद एक दबा हुआ धीमा शब्द सुनाई दिया। १३ यह सुनते ही एलिय्याह ने अपना मुंह चद्दर से ढांपा, और बाहर जाकर गुफा के द्वार पर खड़ा हुआ। फिर एक शब्द उसे सुनाई दिया, कि हे एलिय्याह तेरा यहां क्या काम? १४ उस ने कहा, मुझे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा के निमित्त बड़ी जलन हुई, क्योंकि इस्राएलियों ने तेरी वाचा टाल दी, और तेरी वेदियों को गिरा दिया है और तेरे नबियों को तलवार से घात किया है; और मैं ही अकेला रह गया हूं; और वे मेरे प्राणों के भी खोजी हैं। १५ यहोवा ने उस से कहा, लौटकर दमिश्क के जंगल को जा, और वहां पहुंचकर अराम का राजा होने के लिये हजाएल का, १६ और इस्राएल का राजा होने को निमशी के पोते येहू का, और अपने स्थान पर नबी होने के लिये आबेलमहोला के शापात के पुत्र एलीशा का अभिषेक करना। १७ और हजाएल की तलवार से जो कोई बच जाए उसको येहू मार डालेगा; और जो कोई येहू की तलवार से बच जाए उसको एलीशा मार डालेगा। १८ तौभी मैं सात हजार इस्राएलियों को बचा रखूंगा। ये तो वे सब हैं, जिन्हों ने न तो बाल के आगे घुटने टेके, और न मुंह से उसे चूमा है॥

१९ तब वह वहां से चल दिया, और शापात का पुत्र एलीशा उसे मिला जो बारह जोड़ी बैल अपने आगे किए हुए आप बारहवीं के साथ होकर हल जोत रहा था। उसके पास जाकर एलिय्याह ने अपनी चद्दर उस पर डाल दी। २० तब वह बैलों को छोड़कर एलिय्याह के पीछे दौड़ा, और कहने लगा, मुझे अपने माता-पिता को चूमने दे, तब मैं तेरे पीछे चलूंगा। उस ने कहा, लौट जा, मैं ने तुझ से क्या किया है? २१ तब वह उसके पीछे से लौट गया, और एक जोड़ी बैल लेकर बलि किए, और बैलों का सामान जलाकर उनका मांस पका के अपने लोगों को दे दिया, और उन्हों ने खाया; तब वह कमर बान्धकर एलिय्याह के पीछे चला, और उसकी सेवा टहल करने लगा॥

(अरामियों पर विजय)

२० और अराम के राजा बेन्हदद ने अपनी सारी सेना इकट्ठी की, और उसके साथ बत्तीस राजा और घोड़े और रथ थे; उन्हें संग लेकर उस ने शोमरोन पर चढ़ाई की, और उसे घेर के उसके विरुद्ध लड़ा। २ और उस ने नगर में इस्राएल के राजा अहाब के पास दूतों को यह कहने के लिये भेजा,

कि बेन्हदद तुझ से यों कहता है, ३ कि तेरा चान्दी सोना मेरा है, और तेरी स्त्रियों और लड़केबालों में जो जो उत्तम हैं वह भी सब मेरे हैं। ४ इस्राएल के राजा ने उसके पास कहला भेजा, हे मेरे प्रभु! हे राजा! तेरे वचन के अनुसार मैं और मेरा जो कुछ है, सब तेरा है। ५ उन्हीं दूतों ने फिर आकर कहा बेन्हदद तुझ से यों कहता है, कि मैं ने तेरे पास यह कहला भेजा था कि तुझे अपनी चान्दी सोना और स्त्रियां और बालक भी मुझे देने पड़ेंगे। ६ परन्तु कल इसी समय मैं अपने कर्मचारियों को तेरे पास भेजूंगा और वे तेरे और तेरे कर्मचारियों के घरों में ढूंढ़-ढांढ़ करेंगे, और तेरी जो जो मनभावनी वस्तुएं निकालें उन्हें वे अपने अपने हाथ में लेकर आएंगे। ७ तब इस्राएल के राजा ने अपने देश के सब पुरनियों को बुलवाकर कहा, सोच विचार करो, कि वह मनुष्य हमारी हानि ही का अभिलाषी है; उस ने मुझ से मेरी स्त्रियां, बालक, चान्दी सोना मंगा भेजा है, और मैं ने इन्कार न किया। ८ तब सब पुरनियों ने और सब साधारण लोगों ने उस से कहा, उसकी न सुनना; और न मानना। ९ तब राजा ने बेन्हदद के दूतों से कहा, मेरे प्रभु राजा से मेरी ओर से कहो, जो कुछ तू ने पहिले अपने दास से चाहा था वह तो मैं करूंगा, परन्तु यह मुझ से न होगा। तब बेन्हदद के दूतों ने जाकर उसे यह उत्तर सुना दिया। १० तब बेन्हदद ने अहाब के पास कहला भेजा, यदि शोमरोन में इतनी धूलि निकले कि मेरे सब पीछे चलनेहारों की मुट्ठी भर कर अट जाए तो देवता मेरे साथ ऐसा ही वरन इस से भी अधिक करें। ११ इस्राएल के राजा ने उत्तर देकर कहा, उस से कहो, कि जो हथियार बान्धता हो वह उसकी नाईं न फूले जो उन्हें उतारता हो। १२ यह वचन सुनते ही वह जो और राजाओं समेत डेरों में पी रहा था, उस ने अपने कर्मचारियों से कहा, पांति बान्धो, तब उन्हों ने नगर के विरुद्ध पांति बान्धी॥

१३ तब एक नबी ने इस्राएल के राजा अहाब के पास जाकर कहा, यहोवा तुझ से यों कहता है, यह बड़ी भीड़ जो तू ने देखी है, उस सब को मैं आज तेरे हाथ में कर दूंगा, इस से तू जान लेगा, कि मैं यहोवा हूं। १४ अहाब ने पूछा, किस के द्वारा? उस ने कहा यहोवा यों कहता है, कि प्रदेशों के हाकिमों के सेवकों के द्वारा! फिर उस ने पूछा, युद्ध को कौन आरम्भ करे? उस ने उत्तर दिया, तू ही। १५ तब उस ने प्रदेशों के हाकिमों के सेवकों की गिनती ली, और वे दो सौ बत्तीस निकले; और उनके बाद उस ने सब इस्राएली लोगों की गिनती ली, और वे सात हजार निकले। १६ ये दोपहर को निकल गए, उस समय बेन्हदद अपने सहायक बत्तीसों राजाओं समेत डेरों में दारू पीकर मतवाला हो रहा था। १७ प्रदेशों के हाकिमों के सेवक पहिले निकले। तब बेन्हदद ने दूत भेजे, और उन्हों ने उस से कहा, शोमरोन से कुछ मनुष्य निकले आते हैं। १८ उस ने कहा, चाहे वे मेल करने को निकले हों, चाहे लड़ने को, तौभी उन्हें जीवित ही पकड़ लाओ। १९ तब प्रदेशों के हाकिमों के सेवक और उनके पीछे की सेना के सिपाही नगर से निकले। २० और वे अपने अपने साम्हने के पुरुष

को मारने लगे; और अरामी भागे, और इस्राएल ने उनका पीछा किया, और अराम का राजा बेन्हदद, सवारों के संग घोड़े पर चढ़ा, और भागकर बच गया। २१ तब इस्राएल के राजा ने भी निकलकर घोड़ों और रथों को मारा, और अरामियों को बड़ी मार से मारा ।।

२२ तब उस नबी ने इस्राएल के राजा के पास जाकर कहा, जाकर लड़ाई के लिये अपने को दृढ़ कर, और सचेत होकर सोच, कि क्या करना है, क्योंकि नये वर्ष के लगते ही अराम का राजा फिर तुझ पर चढ़ाई करेगा ।।

२३ तब अराम के राजा के कर्मचारियों ने उस से कहा, उन लोगों का देवता पहाड़ी देवता है, इस कारण वे हम पर प्रबल हुए; इसलिये हम उन से चौरस भूमि पर लड़ें तो निश्चय हम उन पर प्रबल हो जाएंगे। २४ और यह भी काम कर, अर्थात् सब राजाओं का पद ले ले, और उनके स्थान पर सेनापतियों को ठहरा दे। २५ फिर एक और सेना जो तेरी उस सेना के बराबर हो जो नष्ट हो गई है, घोड़े के बदले घोड़ा, और रथ के बदले रथ, अपने लिये गिन ले; तब हम चौरस भूमि पर उन से लड़ें, और निश्चय उन पर प्रबल हो जाएंगे। उनकी यह सम्मति मानकर बेन्हदद ने वैसा ही किया ।।

२६ और नये वर्ष के लगते ही बेन्हदद ने अरामियों को इकट्ठा किया, और इस्राएल से लड़ने के लिये अपेक को गया। २७ और इस्राएली भी इकट्ठे किए गए, और उनके भोजन की तैयारी हुई; तब वे उनका साम्हना करने को गए, और इस्राएली उनके साम्हने डेरे डालकर बकरियों के दो छोटे झुण्ड से देख पड़े, परन्तु अरामियों से देश भर गया। २८ तब परमेश्वर के उसी जन ने इस्राएल के राजा के पास जाकर कहा, यहोवा यों कहता है, अरामियों ने यह कहा है, कि यहोवा पहाड़ी देवता है, परन्तु नीची भूमि का नहीं है; इस कारण मैं उस बड़ी भीड़ को तेरे हाथ में कर दूंगा, तब तुम्हें बोध हो जाएगा कि मैं यहोवा हूं। २९ और वे सात दिन आम्हने साम्हने डेरे डाले पड़े रहे; तब सातवें दिन युद्ध छिड़ गया; और एक दिन में इस्राएलियों ने एक लाख अरामी पियादे मार डाले। ३० जो बच गए, वह अपेक को भागकर नगर में घुसे, और वहां उन बचे हुए लोगों में से सत्ताईस हजार पुरुष शहरपनाह की दीवाल के गिरने से दब कर मर गए। बेन्हदद भी भाग गया और नगर की एक भीतरी कोठरी में गया। ३१ तब उसके कर्मचारियों ने उस से कहा, सुन, हम ने तो सुना है, कि इस्राएल के घराने के राजा दयालु राजा होते हैं, इसलिये हमें कमर में टाट और सिर पर रस्सियां बान्धे हुए इस्राएल के राजा के पास जाने दे, सम्भव है कि वह तेरा प्राण बचा ले। ३२ तब वे कमर में टाट और सिर पर रस्सियां बान्ध कर इस्राएल के राजा के पास जाकर कहने लगे, तेरा दास बेन्हदद तुझ से कहता है, कृपा कर के मुझे जीवित रहने दे। राजा ने उत्तर दिया, क्या वह अब तक जीवित है? वह तो मेरा भाई है। ३३ उन लोगों ने इसे शुभ शकुन जानकर, फुर्ती से बूझ लेने का यत्न किया कि यह उसके मन की बात है कि नहीं, और कहा, हां तेरा भाई बेन्हदद। राजा ने

कहा, जाकर उसको ले आओ। तब बेन्हदद उसके पास निकल आया, और उस ने उसे अपने रथ पर चढ़ा लिया। ३४ तब बेन्हदद ने उस से कहा, जो नगर मेरे पिता ने तेरे पिता से ले लिए थे, उनको मैं फेर दूंगा; और जैसे मेरे पिता ने शोमरोन में अपने लिये सड़कें बनवाईं, वैसे ही तू दमिश्क में सड़कें बनवाना। अहाब ने कहा, मैं इसी वाचा पर तुझे छोड़ देता हूं, तब उस ने बेन्हदद से वाचा बान्धकर, उसे स्वतन्त्र कर दिया ।।

३५ इसके बाद नबियों के चेलों में से एक जन ने यहोवा से वचन पाकर अपने संगी से कहा, मुझे मार, जब उस मनुष्य ने उसे मारने से इनकार किया, ३६ तब उस ने उस से कहा, तू ने यहोवा का वचन नहीं माना, इस कारण सुन, ज्योंही तू मेरे पास से चला जाएगा, त्योंही सिंह से मार डाला जाएगा। तब ज्योंही वह उसके पास से चला गया, त्योंही उसे एक सिंह मिला, और उसको मार डाला। ३७ फिर उसको दूसरा मनुष्य मिला, और उस से भी उस ने कहा, मुझे मार। और उस ने उसको ऐसा मारा कि वह घायल हुआ। ३८ तब वह नबी चला गया, और आंखों को पगड़ी से ढांपकर राजा की बाट जोहता हुआ मार्ग पर खड़ा रहा। ३९ जब राजा पास होकर जा रहा था, तब उस ने उसकी दोहाई देकर कहा, कि जब तेरा दास युद्ध क्षेत्र में गया था तब कोई मनुष्य मेरी ओर मुड़कर किसी मनुष्य को मेरे पास ले आया, और मुझ से कहा, इस मनुष्य की चौकसी कर; यदि यह किसी रीति छूट जाए, तो उसके प्राण के बदले तुझे अपना प्राण देना होगा; नहीं तो किक्कार भर चान्दी देना पड़ेगा। ४० उसके बाद तेरा दास इधर उधर काम में फंस गया, फिर वह न मिला। इस्राएल के राजा ने उस से कहा, तेरा ऐसा ही न्याय होगा; तू ने आप अपना न्याय किया है। ४१ नबी ने झट अपनी आंखों से पगड़ी उठाई, तब इस्राएल के राजा ने उसे पहिचान लिया, कि वह कोई नबी है। ४२ तब उस ने राजा से कहा, यहोवा तुझ से यों कहता है, इसलिये कि तू ने अपने हाथ से ऐसे एक मनुष्य को जाने दिया, जिसे मैं ने सत्यानाश हो जाने को ठहराया था,* तुझे उसके प्राण की सन्ती अपना प्राण और उसकी प्रजा की सन्ती, अपनी प्रजा देनी पड़ेगी। ४३ तब इस्राएल का राजा उदास और अप्रसन्न होकर घर की ओर चला, और शोमरोन को आया ।।

(नाबोत की हत्या और ईश्वर का क्रोध)

२१ नाबोत नाम एक यिज्रेली की एक दाख की बारी शोमरोन के राजा अहाब के राजमन्दिर के पास यिज्रेल में थी। २ इन बातों के बाद अहाब ने नाबोत से कहा, तेरी दाख की बारी मेरे घर के पास है, तू उसे मुझे दे कि मैं उस में साग पात की बारी लगाऊं; और मैं उसके बदले तुझे उस से अच्छी एक बाटिका दूंगा, नहीं तो तेरी इच्छा हो तो मैं तुझे उसका मूल्य दे दूंगा। ३ नाबोत ने अहाब से कहा, यहोवा न करे कि मैं अपने पुरखाओं का निज भाग तुझे दूं। ४ यिज्रेली नाबोत के इस वचन के कारण कि मैं तुझे अपने पुरखाओं का निज भाग न दूंगा, अहाब उदास और

* मूल में—मेरे सत्यानाश के मनुष्य को हाथ से जाने दिया।

अप्रसन्न होकर अपने घर गया, और बिछौने पर लेट गया और मुंह फेर लिया, और कुछ भोजन न किया। ५ तब उसकी पत्नी ईज़ेबेल ने उसके पास आकर पूछा, तेरा मन क्यों ऐसा उदास है कि तू कुछ भोजन नहीं करता? ६ उस ने कहा, कारण यह है, कि मैं ने यिज्रेली नाबोत से कहा कि रुपया लेकर मुझे अपनी दाख की बारी दे, नहीं तो यदि तू चाहे तो मैं उसकी सन्ती दूसरी दाख की बारी दूंगा; और उसने कहा, मैं अपनी दाख की बारी तुझे न दूंगा। ७ उसकी पत्नी ईज़ेबेल ने उस से कहा, क्या तू इस्राएल पर राज्य करता है कि नहीं? उठकर भोजन कर; और तेरा मन आनन्दित हो; यिज्रेली नाबोत की दाख की बारी मैं तुझे दिलवा दूंगी। ८ तब उस ने अहाब के नाम से चिट्ठी लिखकर उसकी अंगूठी की छाप लगाकर, उन पुरनियों और रईसों के पास भेज दी जो उसी नगर में नाबोत के पड़ोस में रहते थे। ९ उस चिट्ठी में उस ने यों लिखा, कि उपवास का प्रचार करो, और नाबोत को लोगों के साम्हने ऊंचे स्थान पर बैठाना। १० तब दो नीच जनों को उसके साम्हने बैठाना जो साक्षी देकर उस से कहें, तू ने परमेश्वर और राजा दोनों की निन्दा की *। तब तुम लोग उसे बाहर ले जाकर उसको पत्थरवाह करना, कि वह मर जाए। ११ ईज़ेबेल की चिट्ठी में की आज्ञा के अनुसार नगर में रहनेवाले पुरनियों और रईसों ने उपवास का प्रचार किया, १२ और नाबोत को लोगों के साम्हने ऊंचे स्थान पर बैठाया। १३ तब दो नीच जन आकर उसके सम्मुख बैठ गए; और उन नीच जनों ने लोगों के साम्हने नाबोत के विरुद्ध यह साक्षी दी, कि नाबोत ने परमेश्वर और राजा दोनों की निन्दा की *। इस पर उन्हों ने उसे नगर से बाहर ले जाकर उसको पत्थरवाह किया, और वह मर गया। १४ तब उन्हों ने ईज़ेबेल के पास यह कहला भेजा कि नाबोत पत्थरवाह करके मार डाला गया है। १५ यह सुनते ही कि नाबोत पत्थरवाह करके मार डाला गया है, ईज़ेबेल ने अहाब से कहा, उठकर यिज्रेली नाबोत की दाख की बारी को जिसे उस ने तुझे रुपया लेकर देने से भी इनकार किया था अपने अधिकार में ले, क्योंकि नाबोत जीवित नहीं परन्तु वह मर गया है। १६ यिज्रेली नाबोत की मृत्यु का समाचार पाते ही अहाब उसकी दाख की बारी अपने अधिकार में लेने के लिये वहा जाने को उठ खड़ा हुआ॥

१७ तब यहोवा का यह वचन तिशबी एलिय्याह के पास पहुंचा, कि चल, १८ शोमरोन में रहनेवाले इस्राएल के राजा अहाब से मिलने को जा; वह तो नाबोत की दाख की बारी में है, उसे अपने अधिकार में लेने को वह वहां गया है। १९ और उस से यह कहना, कि यहोवा यों कहता है, कि क्या तू ने घात किया, और अधिकारी भी बन बैठा? फिर तू उस से यह भी कहना, कि यहोवा यों कहता है, कि जिस स्थान पर कुत्तों ने नाबोत का लोहू चाटा, उसी स्थान पर कुत्ते तेरा भी लोहू चाटेंगे। २० एलिय्याह को देखकर अहाब ने कहा, हे मेरे शत्रु! क्या तू ने मेरा पता लगाया है? उस ने कहा हां, लगाया तो है; और इसका

* मूल में—दोनों को बिदा किया।

* मूल में—दोनों को बिदा किया।

कारण यह है, कि जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, उसे करने के लिये तू ने अपने को बेच डाला है। २१ मैं तुझ पर ऐसी विपत्ति डालूंगा, कि तुझे पूरी रीति से मिटा डालूंगा; और अहाब के घर के एक एक लड़के को और क्या बन्धुए, क्या स्वाधीन इस्राएल में हर एक रहनेवाले को भी नाश कर डालूंगा। २२ और मैं तेरा घराना नबात के पुत्र यारोबाम, और अहिय्याह के पुत्र बाशा का सा कर दूंगा; इसलिये कि तू ने मुझे क्रोधित किया है, और इस्राएल से पाप करवाया है। २३ और ईज़ेबेल के विषय में यहोवा यह कहता है, कि यिज्रेल के किले के पास कुत्ते ईज़ेबेल को खा डालेंगे। २४ अहाब का जो कोई नगर में मर जाएगा उसको कुत्ते खा लेंगे; और जो कोई मैदान में मर जाएगा उसको आकाश के पक्षी खा जाएंगे॥

२५ सचमुच अहाब के तुल्य और कोई न था जिसने अपनी पत्नी ईज़ेबेल के उसकाने पर वह काम करने को जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, अपने को बेच डाला था। २६ वह तो उन एमोरियों की नाईं जिनको यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने से देश से निकाला था बहुत ही घिनौने काम करता था, अर्थात् मूरतों की उपासना करने लगा था। २७ एलिय्याह के ये वचन सुनकर अहाब ने अपने वस्त्र फाड़े, और अपनी देह पर टाट लपेटकर उपवास करने और टाट ही ओढ़े पड़ा रहने लगा, और दबे पांवों चलने लगा। २८ और यहोवा का यह वचन तिशबी एलिय्याह के पास पहुंचा, कि क्या तू ने देखा है कि अहाब मेरे साम्हने नम्र बन गया है? इस कारण कि वह मेरे साम्हने नम्र बन गया है मैं वह विपत्ति उसके जीते जी उस पर न डालूंगा परन्तु उसके पुत्र के दिनों में मैं उसके घराने पर वह विपत्ति भेजूंगा॥

(अहाब की मृत्यु)

२२ और तीन वर्ष तक अरामी और इस्राएली बिना युद्ध रहे। २ तीसरे वर्ष में यहूदा का राजा यहोशापात इस्राएल के राजा के पास गया। ३ तब इस्राएल के राजा ने अपने कर्मचारियों से कहा, क्या तुम को मालूम है, कि गिलाद का रामोत हमारा है? फिर हम क्यों चुपचाप रहते और उसे अराम के राजा के हाथ से क्यों नहीं छीन लेते हैं? ४ और उस ने यहोशापात से पूछा, क्या तू मेरे संग गिलाद के रामोत से लड़ने के लिये जाएगा? यहोशापात ने इस्राएल के राजा को उत्तर दिया, जैसा तू है वैसा मैं भी हूं। जैसी तेरी प्रजा है वैसी ही मेरी भी प्रजा है, और जैसे तेरे घोड़े हैं वैसे ही मेरे भी घोड़े हैं। ५ फिर यहोशापात ने इस्राएल के राजा से कहा, ६ कि आज यहोवा की इच्छा मालूम कर ले, तब इस्राएल के राजा ने नबियों को जो कोई चार सौ पुरुष थे इकट्ठा करके उन से पूछा, क्या मैं गिलाद के रामोत से युद्ध करने के लिये चढ़ाई करूं, वा रुका रहूं? उन्हों ने उत्तर दिया, चढ़ाई कर: क्योंकि प्रभु उसको राजा के हाथ में कर देगा। ७ परन्तु यहोशापात ने पूछा, क्या यहां यहोवा का और भी कोई नबी नहीं है जिस से हम पूछ लें? ८ इस्राएल के राजा ने यहोशापात से कहा, हां, यिम्ला का पुत्र मीकायाह एक पुरुष और है जिसके द्वारा हम यहोवा

से पूछ सकते हैं ? परन्तु मैं उस से घृणा रखता हूं, क्योंकि वह मेरे विषय कल्याण की नहीं वरन हानि ही की भविष्यद्वाणी करता है। ८ यहोशापात ने कहा, राजा ऐसा न कहे। तब इस्राएल के राजा ने एक हाकिम को बुलवा कर कहा, यिम्ला के पुत्र मीकायाह को फुर्ती से ले आ। १० इस्राएल का राजा और यहूदा का राजा यहोशापात, अपने अपने राजवस्त्र पहिने हुए शोमरोन के फाटक में एक खुले स्थान में अपने अपने सिंहासन पर विराजमान थे और सब भविष्यद्वक्ता उनके सम्मुख भविष्यद्वाणी कर रहे थे। ११ तब कनाना के पुत्र सिदकिय्याह ने लोहे के सींग बनाकर कहा, यहोवा यों कहता है, कि इन से तू अरामियों को मारते मारते नाश कर डालेगा। १२ और सब नबियों ने इसी आशय की भविष्यद्वाणी करके कहा, गिलाद के रामोत पर चढ़ाई कर और तू कृतार्थ हो; क्योंकि यहोवा उसे राजा के हाथ में कर देगा ॥

१३ और जो दूत मीकायाह को बुलाने गया था उस ने उस से कहा, सुन, भविष्यद्वक्ता एक ही मुंह से राजा के विषय शुभ वचन कहते हैं तो तेरी बातें उनकी सी हों; तू भी शुभ वचन कहना। १४ मीकायाह ने कहा, यहोवा के जीवन की शपथ जो कुछ यहोवा मुझ से कहे, वही मैं कहूंगा। १५ जब वह राजा के पास आया, तब राजा ने उस से पूछा, हे मीकायाह! क्या हम गिलाद के रामोत से युद्ध करने के लिये चढ़ाई करें वा रुके रहें ? उस ने उसको उत्तर दिया हां, चढ़ाई कर और तू कृतार्थ हो; और यहोवा उसको राजा के हाथ में कर दे। १६ राजा ने उस से कहा, मुझे कितनी बार तुझे शपथ धराकर चिताना होगा, कि तू यहोवा का स्मरण करके मुझ से सच ही कह। १७ मीकायाह ने कहा मुझे समस्त इस्राएल बिना चरवाहे की भेड़-बकरियों की नाईं पहाड़ों पर; तित्तर बित्तर देख पड़ा, और यहोवा का यह वचन आया, कि वे तो अनाथ हैं; अतएव वे अपने अपने घर कुशल क्षेम से लौट जाएं। १८ तब इस्राएल के राजा ने यहोशापात से कहा, क्या मैं ने तुझ से न कहा था, कि वह मेरे विषय कल्याण की नहीं हानि ही की भविष्यद्वाणी करेगा। १९ मीकायाह ने कहा इस कारण तू यहोवा का यह वचन सुन! मुझे सिंहासन पर विराजमान यहोवा और उसके पास दाहिने बांयें खड़ी हुई स्वर्ग की समस्त सेना दिखाई दी है। २० तब यहोवा ने पूछा, अहाब को कौन ऐसा बहकाएगा, कि वह गिलाद के रामो पर चढ़ाई करके खेत आए तब किसी ने कुछ, और किसी ने कुछ कहा। २१ निदान एक आत्मा पास आकर यहोवा के सम्मुख खड़ी हुई, और कहने लगी, मैं उसको बहकाऊंगी : यहोवा ने पूछा, किस उपाय से ? २२ उस ने कहा, मैं जाकर उसके सब भविष्यद्वक्ताओं में पैठकर उन से झूठ बुलवाऊंगी *। यहोवा ने कहा, तेरा उसको बहकाना सुफल होगा, जाकर ऐसा ही कर। २३ तो अब सुन यहोवा ने तेरे इन सब भविष्यद्वक्ताओं के मुंह में एक झूठ बोलनेवाली आत्मा पैठाई है, और यहोवा ने तेरे विषय हानि की बात कही है ॥

२४ तब कनाना के पुत्र सिदकिय्याह ने मीकायाह के निकट जा, उसके गाल पर

* मूल में—झूठा आत्मा हूंगा।

थपेड़ा मारकर पूछा, यहोवा का आत्मा मुझे छोड़कर तुझ से बातें करने को किधर गया? २५ मीकायाह ने कहा, जिस दिन तू छिपने के लिये कोठरी से कोठरी में भागेगा, तब तुझे बोध होगा। २६ तब इस्राएल के राजा ने कहा, मीकायाह को नगर के हाकिम आमोन और योआश राजकुमार के पास ले जा; २७ और उन से कह, राजा यों कहता है, कि इसको बन्दीगृह में डालो, और जब तक मैं कुशल से न आऊं, तब तक इसे दु:ख की रोटी और पानी दिया करो। २८ और मीकायाह ने कहा, यदि तू कभी कुशल से लौटे, तो जान कि यहोवा ने मेरे द्वारा नहीं कहा। फिर उस ने कहा, हे लोगो तुम सब के सब सुन लो।।

२९ तब इस्राएल के राजा और यहूदा के राजा यहोशापात दोनों ने गिलाद के रामोत पर चढ़ाई की। ३० और इस्राएल के राजा ने यहोशापात से कहा, मैं तो भेष बदलकर युद्ध क्षेत्र में जाऊंगा, परन्तु तू अपने ही वस्त्र पहिने रहना। तब इस्राएल का राजा भेष बदलकर युद्ध क्षेत्र में गया। ३१ और अराम के राजा ने तो अपने रथों के बत्तीसों प्रधानों को आज्ञा दी थी, कि न तो छोटे से लड़ो और न बड़े से, केवल इस्राएल के राजा से युद्ध करो। ३२ तो जब रथों के प्रधानों ने यहोशापात को देखा, तब कहा, निश्चय इस्राएल का राजा वही है। और वे उसी से युद्ध करने को मुड़े; तब यहोशापात चिल्ला उठा। ३३ यह देखकर कि वह इस्राएल का राजा नहीं है, रथों के प्रधान उसका पीछा छोड़कर लौट गए। ३४ तब किसी ने अटकल से एक तीर चलाया और वह इस्राएल के राजा के झिलम और निचले वस्त्र के बीच छेदकर लगा; तब उसने अपने सारथी से कहा, मैं घायल हो गया हूं इसलिये बागडोर* फेर कर मुझे सेना में से बाहर निकाल ले चल। ३५ और उस दिन युद्ध बढ़ता गया और राजा अपने रथ में औरों के सहारे अरामियों के सम्मुख खड़ा रहा, और सांझ को मर गया; और उसके घाव का लोहू बहकर रथ के पौदान में भर गया। ३६ सूर्य डूबते हुए सेना में यह पुकार हुई, कि हर एक अपने नगर और अपने देश को लौट जाए।।

३७ जब राजा मर गया, तब शोमरोन को पहुंचाया गया और शोमरोन में उसे मिट्टी दी गई। ३८ और यहोवा के वचन के अनुसार जब उसका रथ शोमरोन के पोखरे में धोया गया, तब कुत्तों ने उसका लोहू चाट लिया, और वेश्याएं यहीं स्नान करती थीं। ३९ अहाब के और सब काम जो उस ने किए, और हाथीदांत का जो भवन उस ने बनाया, और जो जो नगर उस ने बसाए थे, यह सब क्या इस्राएली राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? ४० निदान अहाब अपने पुरखाओं के संग सो गया और उसका पुत्र अहज्याह उसके स्थान पर राज्य करने लगा।।

(यहोशापात का राज्य)

४१ इस्राएल के राजा अहाब के चौथे वर्ष में आसा का पुत्र यहोशापात यहूदा पर राज्य करने लगा। ४२ जब यहोशापात राज्य करने लगा, तब वह पैंतीस वर्ष का था। और पचीस वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। और उसकी माता का नाम अजूबा था, जो शिल्ही की बेटी थी। ४३ और उसकी चाल सब प्रकार से उसके पिता आसा की सी थी, अर्थात जो यहोवा

* मूल में—अपना हाथ।

की दृष्टि में ठीक है वही वह करता रहा, और उस से कुछ न मुड़ा। तौभी ऊंचे स्थान ढाए न गए, प्रजा के लोग ऊंचे स्थानों पर उस समय भी बलि किया करते थे और धूप भी जलाया करते थे। ४४ यहोशापात ने इस्राएल के राजा से मेल किया। ४५ और यहोशापात के काम और जो वीरता उस ने दिखाई, और उस ने जो जो लड़ाइयां कीं, यह सब क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? ४६ पुरुषगामियों में से जो उसके पिता आसा के दिनों में रह गए थे, उनको उस ने देश में से नाश किया।।

४७ उस समय एदोम में कोई राजा न था; एक नायब राजकाज का काम करता था। ४८ फिर यहोशापात ने तर्शीश के जहाज सोना लाने के लिये ओपीर जाने को बनवा लिए, परन्तु वे एश्योनगेबेर में टूट गए, इसलिये वहां न जा सके। ४९ तब अहाब के पुत्र अहज्याह ने यहोशापात से कहा, मेरे जहाजियों को अपने जहाजियों के संग, जहाजों में जाने दे, परन्तु यहोशापात ने इनकार किया। ५० निदान यहोशापात अपने पुरखाओं के संग सो गया और उसको उसके पुरखाओं के साथ उसके मूलपुरुष दाऊद के नगर में मिट्टी दी गई। और उसका पुत्र यहोराम उसके स्थान पर राज्य करने लगा।।

(अहज्याह का राज्य)

५१ यहूदा के राजा यहोशापात के सत्रहवें वर्ष में अहाब का पुत्र अहज्याह शोमरोन में इस्राएल पर राज्य करने लगा और दो वर्ष तक इस्राएल पर राज्य करता रहा। ५२ और उस ने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था। और उसकी चाल उसके माता पिता, और नबात के पुत्र यारोबाम की सी थी जिस ने इस्राएल से पाप करवाया था। ५३ जैसे उसका पिता बाल की उपासना और उसे दण्डवत करने से इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को क्रोधित करता रहा वैसे ही अहज्याह भी करता रहा।।

राजाओं का वृत्तान्त—दूसरा भाग

(अहज्याह की मृत्यु)

१ अहाब के मरने के बाद मोआब इस्राएल के विरुद्ध हो गया। २ और अहज्याह एक झिलमिलीदार खिड़की में से, जो शोमरोन में उसकी अटारी में थी, गिर पड़ा, और बीमार हो गया। तब उस ने दूतों को यह कहकर भेजा, कि तुम जाकर एक्रोन के बालजबूब* नाम देवता से यह पूछ आओ, कि क्या मैं इस बीमारी से बचूंगा कि नहीं? ३ तब यहोवा के दूत ने तिशबी एलिय्याह से कहा, उठकर शोमरोन के राजा के दूतों से मिलने को जा, और उन से कह, क्या इस्राएल में कोई परमेश्वर नहीं जो तुम

* अर्थात् मक्खियों का नाथ।

एक्रोन के बालजबूब देवता से पूछने जाते हो? ४ इसलिये अब यहोवा तुझ से यों कहता है, कि जिस पलंग पर तू पड़ा है, उस पर से कभी न उठेगा, परन्तु मर ही जाएगा। तब एलिय्याह चला गया। ५ जब अहज्याह के दूत उसके पास लौट आए, तब उस ने उन से पूछा, तुम क्यों लौट आए हो? ६ उन्हों ने उस से कहा, कि एक मनुष्य हम से मिलने को आया, और कहा, कि जिस राजा ने तुम को भेजा उसके पास लौटकर कहो, यहोवा यों कहता है, कि क्या इस्राएल में कोई परमेश्वर नहीं जो तू एक्रोन के बालजबूब देवता से पूछने को भेजता है? इस कारण जिस पलंग पर तू पड़ा है, उस पर से कभी न उठेगा, परन्तु मर ही जाएगा। ७ उस ने उन से पूछा, जो मनुष्य तुम से मिलने को आया, और तुम से ये बातें कहीं, उसका कैसा रंग-रूप था? ८ उन्हों ने उसको उत्तर दिया, वह तो रोंआर मनुष्य था और अपनी कमर में चमड़े का फेंटा बान्धे हुए था। उस ने कहा, वह तिशबी एलिय्याह होगा। ९ तब उस ने उसके पास पचास सिपाहियों के एक प्रधान को, उसके पचासों सिपाहियों समेत भेजा। प्रधान ने उसके पास जाकर क्या देखा कि वह पहाड़ की चोटी पर बैठा है। और उस ने उस से कहा, हे परमेश्वर के भक्त राजा ने कहा है, कि तू उतर आ। १० एलिय्याह ने उस पचास सिपाहियों के प्रधान से कहा, यदि मैं परमेश्वर का भक्त हूं तो आकाश से आग गिरकर तुझे तेरे पचासों समेत भस्म कर डाले। तब आकाश से आग उतरी और उसे उसके पचासों समेत भस्म कर दिया। ११ फिर राजा ने उसके पास पचास सिपाहियों के एक और प्रधान को, पचासों सिपाहियों समेत भेज दिया। प्रधान ने उस से कहा हे परमेश्वर के भक्त राजा ने कहा है, कि फुर्ती से तू उतर आ। १२ एलिय्याह ने उत्तर देकर उन से कहा, यदि मैं परमेश्वर का भक्त हूं तो आकाश से आग गिरकर तुझे, तेरे पचासों समेत भस्म कर डाले; तब आकाश से परमेश्वर की आग उतरी और उसे उसके पचासों समेत भस्म कर दिया। १३ फिर राजा ने तीसरी बार पचास सिपाहियों के एक और प्रधान को, पचासों सिपाहियों समेत भेज दिया, और पचास का वह तीसरा प्रधान चढ़कर, एलिय्याह के साम्हने घुटनों के बल गिरा, और गिड़गिड़ा कर उस से कहने लगा, हे परमेश्वर के भक्त मेरा प्राण और तेरे इन पचास दासों के प्राण तेरी दृष्टि में अनमोल ठहरें। १४ पचास पचास सिपाहियों के जो दो प्रधान अपने अपने पचासों समेत पहिले आए थे, उनको तो आग ने आकाश से गिरकर भस्म कर डाला, परन्तु अब मेरा प्राण तेरी दृष्टि में अनमोल ठहरे। १५ तब यहोवा के दूत ने एलिय्याह से कहा, उसके संग नीचे जा, उस से मत डर। तब एलिय्याह उठकर उसके संग राजा के पास नीचे गया। १६ और उस से कहा, यहोवा यों कहता है, कि तू ने तो एक्रोन के बालजबूब देवता से पूछने को दूत भेजे थे तो क्या इस्राएल में कोई परमेश्वर नहीं कि जिस से तू पूछ सके? इस कारण तू जिस पलंग पर पड़ा है, उस पर से कभी न उठेगा, परन्तु मर ही जाएगा। १७ यहोवा के इस वचन के अनुसार जो एलिय्याह ने कहा था, वह मर गया। और उसके सन्तान न होने के कारण यहोराम उसके स्थान पर यहूदा के राजा यहोशापात के पुत्र यहोराम के दूसरे वर्ष में राज्य करने लगा। १८ अहज्याह के और काम जो उस ने किए वह क्या

इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं ?

(एलिय्याह का स्वर्गारोहण)

२ जब यहोवा एलिय्याह को बवंडर के द्वारा स्वर्ग में उठा लेने को था, तब एलिय्याह और एलीशा दोनों संग संग गिलगाल से चले। २ एलिय्याह ने एलीशा से कहा, यहोवा मुझे बेतेल तक भेजता है इसलिये तू यहीं ठहरा रह। एलीशा ने कहा, यहोवा के और तेरे जीवन की शपथ मैं तुझे नहीं छोड़ने का; इसलिये वे बेतेल को चले गए। ३ और बेतेलवासी भविष्यद्वक्ताओं के चेले एलीशा के पास आकर कहने लगे, क्या तुझे मालूम है कि आज यहोवा तेरे स्वामी को तेरे ऊपर से उठा लेने पर है ? उस ने कहा, हां, मुझे भी यह मालूम है, तुम चुप रहो। ४ और एलिय्याह ने उस से कहा, हे एलीशा, यहोवा मुझे यरीहो को भेजता है; इसलिये तू यहीं ठहरा रह; उस ने कहा, यहोवा के और तेरे जीवन की शपथ मैं तुझे नहीं छोड़ने का; सो वे यरीहो को आए। ५ और यरीहोवासी भविष्यद्वक्ताओं के चेले एलीशा के पास आकर कहने लगे, क्या तुझे मालूम है कि आज यहोवा तेरे स्वामी को तेरे ऊपर से उठा लेने पर है ? उस ने उत्तर दिया, हां मुझे भी मालूम है, तुम चुप रहो। ६ फिर एलिय्याह ने उस से कहा, यहोवा मुझे यरदन तक भेजता है, सो तू यहीं ठहरा रह; उस ने कहा, यहोवा के और तेरे जीवन की शपथ मैं तुझे नहीं छोड़ने का; सो वे दोनों आगे चले। ७ और भविष्यद्वक्ताओं के चेलों में से पचास जन जाकर उनके साम्हने दूर खड़े हुए, और वे दोनों यरदन के तीर खड़े हुए। ८ तब एलिय्याह ने अपनी चद्दर पकड़कर ऐंठ ली, और जल पर मारा, तब वह इधर उधर दो भाग हो गया; और वे दोनों स्थल ही स्थल पार उतर गए। ९ उनके पार पहुंचने पर एलिय्याह ने एलीशा से कहा, उस से पहिले कि मैं तेरे पास से उठा लिया जाऊं जो कुछ तू चाहे कि मैं तेरे लिये करूं वह मांग; एलीशा ने कहा, तुझ में जो आत्मा है, उसका दूना भाग मुझे मिल जाए। १० एलिय्याह ने कहा, तू ने कठिन बात मांगी है, तौभी यदि तू मुझे उठा लिये जाने के बाद देखने पाए तो तेरे लिये ऐसा ही होगा; नहीं तो न होगा। ११ वे चलते चलते बातें कर रहे थे, कि अचानक एक अग्निमय रथ और अग्निमय घोड़ों ने उनको अलग अलग किया, और एलिय्याह बवंडर में होकर स्वर्ग पर चढ़ गया। १२ और उसे एलीशा देखता और पुकारता रहा, हाय मेरे पिता ! हाय मेरे पिता ! हाय इस्राएल के रथ और सवारो ! जब वह उसको फिर देख न पड़ा, तब उस ने अपने वस्त्र पकड़े और फाड़कर दो भाग कर दिए। १३ फिर उस ने एलिय्याह की चद्दर उठाई जो उस पर से गिरी थी, और वह लौट गया, और यरदन के तीर पर खड़ा हुआ। १४ और उस ने एलिय्याह की वह चद्दर जो उस पर से गिरी थी, पकड़ कर जल पर मारी और कहा, एलिय्याह का परमेश्वर यहोवा कहां है ? जब उस ने जल पर मारा, तब वह इधर उधर दो भाग हो गया और एलीशा पार हो गया। १५ उसे देखकर भविष्यद्वक्ताओं के चेले जो यरीहो में उसके साम्हने थे, कहने लगे, एलिय्याह में जो आत्मा थी, वही एलीशा पर ठहर गई है; सो वे उस से मिलने को आए और उसके साम्हने भूमि तक झुककर दण्डवत की। १६ तब उन्हों ने उस से कहा, सुन, तेरे दासों के पास पचास बलवान पुरुष हैं, वे जाकर

तेरे स्वामी को ढूढ़ें, सम्भव है कि क्या जाने यहोवा के आत्मा ने उसको उठाकर किसी पहाड़ पर वा किसी तराई में डाल दिया हो; उस ने कहा, मत भेजो। १७ जब उन्हों ने उसको यहां तक दबाया कि वह लज्जित हो गया, तब उस ने कहा, भेज दो; सो उन्हों ने पचास पुरुष भेज दिए, और वे उसे तीन दिन तक ढूढ़ते रहे परन्तु न पाया। १८ उस समय तक वह यरीहो में ठहरा रहा, सो जब वे उसके पास लौट आए, तब उस ने उन से कहा, क्या मैं ने तुम से न कहा था, कि मत जाओ?

(एलीशा के दो आश्चर्य कर्म)

१९ उस नगर के निवासियों ने एलीशा से कहा, देख, यह नगर मनभावने स्थान पर बसा है, जैसा मेरा प्रभु देखता है परन्तु पानी बुरा है; और भूमि गर्भ गिरानेवाली है। २० उस ने कहा, एक नये प्याले में नमक डालकर मेरे पास ले आओ; वे उसे उसके पास ले आए। २१ तब वह जल के सोते के पास निकल गया, और उस में नमक डालकर कहा, यहोवा यों कहता है, कि मैं यह पानी ठीक कर देता हूं, जिस से वह फिर कभी मृत्यु वा गर्भ गिरने का कारण न होगा। २२ एलीशा के इस वचन के अनुसार पानी ठीक हो गया, और आज तक ऐसा ही है॥

२३ वहां से वह बेतेल को चला, और मार्ग की चढ़ाई में चल रहा था कि नगर से छोटे लड़के निकलकर उसका ठट्ठा करके कहने लगे, हे चन्दुए चढ़ जा, हे चन्दुए चढ़ जा। २४ तब उस ने पीछे की ओर फिर कर उन पर दृष्टि की और यहोवा के नाम से उनको शाप दिया, तब जंगल में से दो रीछिनियों ने निकलकर उन में से बयालीस लड़के फाड़ डाले। २५ वहां से वह कर्म्मेल को गया, और फिर वहां से शोमरोन को लौट गया॥

(यहोराम के राज्य का आरम्भ)

३ यहूदा के राजा यहोशापात के अठारहवें वर्ष में अहाब का पुत्र यहोराम शिमरोन में राज्य करने लगा, और बारह वर्ष तक राज्य करता रहा। २ उस ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है तौभी उस ने अपने माता-पिता के बराबर नहीं किया वरन अपने पिता की बनवाई हुई बाल की लाठ को दूर किया। ३ तौभी वह नबात के पुत्र यारोबाम के ऐसे पापों में जैसे उस ने इस्राएल से भी कराए लिपटा रहा और उन से न फिरा॥

(मोआब पर विजय)

४ मोआब का राजा मेशा बहुत सी भेड़-बकरियां रखता था, और इस्राएल के राजा को एक लाख बच्चे और एक लाख मेढ़ों का ऊन कर की रीति से दिया करता था। ५ जब अहाब मर गया, तब मोआब के राजा ने इस्राएल के राजा से बलवा किया। ६ उस समय राजा यहोराम ने शोमरोन से निकलकर सारे इस्राएल की गिनती ली। ७ और उस ने जाकर यहूदा के राजा यहोशापात के पास यों कहला भेजा, कि मोआब के राजा ने मुझ से बलवा किया है, क्या तू मेरे संग मोआब से लड़ने को चलेगा? उस ने कहा, हां मैं चलूंगा, जैसा तू वैसा मैं, जैसी तेरी प्रजा वैसी मेरी प्रजा, और जैसे तेरे घोड़े वैसे मेरे भी घोड़े हैं। ८ फिर उस ने पूछा, हम किस मार्ग से जाएं? उस ने उत्तर दिया, एदोम के जंगल से होकर॥

९ तब इस्राएल का राजा, और यहूदा का राजा, और एदोम का राजा चले और जब सात दिन तक घूमकर चल चुके, तब सेना और उसके पीछे पीछे चलनेवाले पशुओं के लिये कुछ पानी न मिला। १० और इस्राएल के राजा ने कहा, हाय! यहोवा ने इन तीन राजाओं को इसलिये इकट्ठा किया, कि उनको मोआब के हाथ में कर दे। ११ परन्तु यहोशापात ने कहा, क्या यहां यहोवा का कोई नबी नहीं है, जिसके द्वारा हम यहोवा से पूछें? इस्राएल के राजा के किसी कर्मचारी ने उत्तर देकर कहा, हां, शापात का पुत्र एलीशा जो एलिय्याह के हाथों को धुलाया करता था वह तो यहां है। १२ तब यहोशापात ने कहा, उसके पास यहोवा का वचन पहुंचा करता है। तब इस्राएल का राजा और यहोशापात और एदोम का राजा उसके पास गए। १३ तब एलीशा ने इस्राएल के राजा से कहा, मेरा तुझ से क्या काम है? अपने पिता के भविष्यद्वक्ताओं और अपनी माता के नबियों के पास जा। इस्राएल के राजा ने उस से कहा, ऐसा न कह, क्योंकि यहोवा ने इन तीनों राजाओं को इसलिये इकट्ठा किया, कि इनको मोआब के हाथ में कर दे। १४ एलीशा ने कहा, सेनाओं का यहोवा जिसके सम्मुख मैं उपस्थित रहा करता हूं, उसके जीवन की शपथ यदि मैं यहूदा के राजा यहोशापात का आदर मान न करता, तो मैं न तो तेरी ओर मुंह करता और न तुझ पर दृष्टि करता। १५ अब कोई बजवैय्या मेरे पास ले आओ। जब बजवैय्या बजाने लगा, तब यहोवा की शक्ति * एलीशा पर हुई। १६ और उस ने कहा, इस नाले में तुम लोग इतना खोदो, कि इस में गड़हे ही गड़हे हो जाएं। १७ क्योंकि यहोवा यों कहता है, कि तुम्हारे साम्हने न तो वायु चलेगी, और न वर्षा होगी; तौभी यह नाला पानी से भर जाएगा; और अपने गाय बैलों और पशुओं समेत तुम पीने पाओगे। १८ और इसको हलकी सी बात जानकर यहोवा मोआब को भी तुम्हारे हाथ में कर देगा। १९ तब तुम सब गढ़वाले और उत्तम नगरों को नाश करना, और सब अच्छे वृक्षों को काट डालना, और जल के सब सोतों को भर देना, और सब अच्छे खेतों में पत्थर फेंककर उन्हें बिगाड़ देना। २० बिहान को अन्नबलि चढ़ाने के समय एदोम की ओर से जल बह आया, और देश जल से भर गया। २१ यह सुनकर कि राजाओं ने हम से युद्ध करने के लिये चढाई की है, जितने मोआबियों की अवस्था हथियार बान्धने योग्य थी, वे सब बुलाकर इकट्ठे किए गए, और सिवाने पर खड़े हुए। २२ बिहान को जब वे उठे उस समय सूर्य की किरणें उस जल पर ऐसी पड़ीं कि वह मोआबियों की परली ओर से लोहू सा लाल दिखाई पड़ा। २३ तो वे कहने लगे वह तो लोहू होगा, निःसन्देह वे राजा एक दूसरे को मारकर नाश हो गए हैं, इसलिये अब हे मोआबियो लूट लेने को जाओ; २४ और जब वे इस्राएल की छावनी के पास आए ही थे, कि इस्राएली उठकर मोआबियों को मारने लगे और वे उनके साम्हने से भाग गए; और वे मोआब को मारते मारते उनके देश में * पहुंच गए। २५ और उन्हों ने नगरों को ढा दिया, और सब अच्छे खेतों में एक एक पुरुष ने अपना अपना पत्थर डाल

* मूल में—हाथ।

* मूल में—उस में।

कर उन्हें भर दिया; और जल के सब सोतों को भर दिया; और सब अच्छे अच्छे वृक्षों को काट डाला, यहां तक कि कीर्हरेशेत के पत्थर तो रह गए, परन्तु उसको भी चारों ओर गोफन चलानेवालों ने जाकर मारा। २६ यह देखकर कि हम युद्ध में हार चले, मोआब के राजा ने सात सौ तलवार रखनेवाले पुरुष संग लेकर एदोम के राजा तक पांति चीरकर पहुंचने का यत्न किया परन्तु पहुंच न सका। २७ तब उस ने अपने जेठे पुत्र को जो उसके स्थान में राज्य करनेवाला था पकड़कर शहरपनाह पर होमबलि चढ़ाया। इस कारण इस्राएल पर बड़ा ही क्रोध हुआ, सो वे उसे छोड़कर अपने देश को लौट गए।।

(एलीशा के चार आश्चर्य कर्म)

४ भविष्यद्वक्ताओं के चेलों की पत्नियों में से एक स्त्री ने एलीशा की दोहाई देकर कहा, तेरा दास मेरा पति मर गया, और तू जानता है कि वह यहोवा का भय माननेवाला था, और जिसका वह कर्जदार था वह आया है कि मेरे दोनों पुत्रों को अपने दास बनाने के लिये ले जाए। २ एलीशा ने उस से पूछा, मैं तेरे लिये क्या करूं? मुझ से कह, कि तेरे घर में क्या है? उस ने कहा, तेरी दासी के घर में एक हांड़ी तेल को छोड़ और कुछ नहीं है। ३ उस ने कहा, तू बाहर जाकर अपनी सब पड़ोसिनों से खाली बरतन मांग ले आ, और थोड़े बरतन न लाना। ४ फिर तू अपने बेटों समेत अपने घर में जा, और द्वार बन्द करके उन सब बरतनों में तेल उण्डेल देना, और जो भर जाए उन्हें अलग रखना। ५ तब वह उसके पास से चली गई, और अपने बेटों समेत अपने घर जाकर द्वार बन्द किया; तब वे तो उसके पास बरतन लाते गए और वह उण्डेलती गई। ६ जब बरतन भर गए, तब उस ने अपने बेटे से कहा, मेरे पास एक और भी ले आ, उस ने उस से कहा, और बरतन तो नहीं रहा। तब तेल थम गया। ७ तब उस ने जाकर परमेश्वर के भक्त को यह बता दिया। और उस ने कहा, जा तेल बेचकर ऋण भर दे; और जो रह जाए, उस से तू अपने पुत्रों सहित अपना निर्वाह करना।।

८ फिर एक दिन की बात है कि एलीशा शूनेम को गया, जहां एक कुलीन स्त्री थी, और उस ने उसे रोटी खाने के लिये बिनती करके विवश किया। और जब जब वह उधर से जाता, तब तब वह वहां रोटी खाने को उतरता था। ९ और उस स्त्री ने अपने पति से कहा, सुन यह जो बार बार हमारे यहां से होकर जाया करता है वह मुझे परमेश्वर का कोई पवित्र भक्त जान पड़ता है। १० तो हम भीत पर एक छोटी उपरौठी कोठरी बनाएं, और उस में उसके लिये एक खाट, एक मेज, एक कुर्सी और एक दीवट रखें, कि जब जब वह हमारे यहां आए, तब तब उसी में टिका करे। ११ एक दिन की बात है, कि वह वहां जाकर उस उपरौठी कोठरी में टिका और उसी में लेट गया। १२ और उस ने अपने सेवक गेहजी से कहा, उस शूनेमिन को बुला ले। उसके बुलाने से वह उसके साम्हने खड़ी हुई। १३ तब उस ने गेहजी से कहा, इस से कह, कि तू ने हमारे लिये ऐसी बड़ी चिन्ता की है, तो तेरे लिये क्या किया जाए? क्या तेरी चर्चा राजा, वा प्रधान सेनापति से की जाए? उस ने उत्तर दिया मैं तो अपने ही लोगों में रहती हूं। १४ फिर उस ने कहा, तो इसके लिये क्या किया जाए? गेहजी

ने उत्तर दिया, निश्चय उसके कोई लड़का नहीं, और उसका पति बूढ़ा है। १५ उस ने कहा, उसको बुला ले। और जब उस ने उसे बुलाया, तब वह द्वार में खड़ी हुई। १६ तब उस ने कहा, बसन्त ऋतु में दिन पूरे होने पर तू एक बेटा छाती से लगाएगी। स्त्री ने कहा, हे मेरे प्रभु! हे परमेश्वर के भक्त ऐसा नहीं, अपनी दासी को धोखा न दे। १७ और स्त्री को गर्भ रहा, और वसन्त ऋतु का जो समय एलीशा ने उस से कहा था, उसी समय जब दिन पूरे हुए, तब उसके पुत्र उत्पन्न हुआ। १८ और जब लड़का बड़ा हो गया, तब एक दिन वह अपने पिता के पास लवनेवालों के निकट निकल गया। १९ और उस ने अपने पिता से कहा, आह! मेरा सिर, आह! मेरा सिर। तब पिता ने अपने सेवक से कहा, इसको इसकी माता के पास ले जा। २० वह उसे उठाकर उसकी माता के पास ले गया, फिर वह दोपहर तक उसके घुटनों पर बैठा रहा, तब मर गया। २१ तब उस ने चढ़कर उसको परमेश्वर के भक्त की खाट पर लिटा दिया, और निकलकर किवाड़ बन्द किया, तब उतर गई। २२ और उस ने अपने पति से पुकारकर कहा, मेरे पास एक सेवक और एक गदही तुरन्त भेज दे कि मैं परमेश्वर के भक्त के यहां झट पट हो आऊं। २३ उस ने कहा, आज तू उसके यहां क्यों जाएगी? आज न तो नये चांद का, और न विश्राम का दिन है; उस ने कहा, कल्याण होगा *। २४ तब उस स्त्री ने गदही पर काठी बान्धकर अपने सेवक से कहा, हांके चल; और मेरे कहे बिना हांकने में ढिलाई न करना। २५ तो वह चलते चलते कर्मेल पर्वत को परमेश्वर के भक्त के निकट पहुंची। उसे दूर से देखकर परमेश्वर के भक्त ने अपने सेवक गेहजी से कहा, देख, उधर तो वह शूनेमिन है। २६ अब उस से मिलने को दौड़ जा, और उस से पूछ, कि तू कुशल से है? तेरा पति भी कुशल से है? और लड़का भी कुशल से है? पूछने पर स्त्री ने उत्तर दिया, हां, कुशल से हैं। २७ वह पहाड़ पर परमेश्वर के भक्त के पास पहुंची, और उसके पांव पकड़ने लगी, तब गेहजी उसके पास गया, कि उसे धक्का देकर हटाए, परन्तु परमेश्वर के भक्त ने कहा, उसे छोड़ दे, उसका मन व्याकुल है; परन्तु यहोवा ने मुझ को नहीं बताया, छिपा ही रखा है। २८ तब वह कहने लगी, क्या मैं ने अपने प्रभु से पुत्र का वर मांगा था? क्या मैं ने न कहा था मुझे धोखा न दे? २९ तब एलीशा ने गेहजी से कहा, अपनी कमर बान्ध, और मेरी छड़ी हाथ में लेकर चला जा, मार्ग में यदि कोई तुझे मिले तो उसका कुशल न पूछना, और कोई तेरा कुशल पूछे, तो उसको उत्तर न देना, और मेरी यह छड़ी उस लड़के के मुंह पर धर देना। ३० तब लड़के की मां ने एलीशा से कहा, यहोवा के और तेरे जीवन की शपथ मैं तुझे न छोड़ूंगी। तो वह उठकर उसके पीछे पीछे चला। ३१ उन से पहिले पहुंचकर गेहजी ने छड़ी को उस लड़के के मुंह पर रखा, परन्तु कोई शब्द न सुन पड़ा, और न उस ने कान लगाया, तब वह एलीशा से मिलने को लौट आया, और उसको बतला दिया, कि लड़का नहीं जागा। ३२ जब एलीशा घर में आया, तब क्या देखा, कि लड़का मरा हुआ उसकी खाट पर पड़ा है। ३३ तब उस ने अकेला भीतर जाकर किवाड़ बन्द किया, और यहोवा से प्रार्थना की। ३४ तब वह चढ़कर लड़के पर इस

* मूल में—उस ने कहा कुशल।

रीति से लेट गया कि अपना मुंह उसके मुंह से और अपनी आंखें उसकी आंखों से और अपने हाथ उसके हाथों से मिला दिये और वह लड़के पर पसर गया, तब लड़के की देह गर्म होने लगी। ३५ और वह उसे छोड़कर घर में इधर उधर टहलने लगा, और फिर चढ़कर लड़के पर पसर गया; तब लड़के ने सात बार छींका, और अपनी आंखें खोलीं। ३६ तब एलीशा ने गेहजी को बुलाकर कहा, शूनेमिन को बुला ले। जब उसके बुलाने से वह उसके पास आई, तब उस ने कहा, अपने बेटे को उठा ले। ३७ वह भीतर गई, और उसके पावों पर गिर भूमि तक झुककर दण्डवत किया; फिर अपने बेटे को उठाकर निकल गई।।

३८ तब एलीशा गिलगाल को लौट गया। उस समय देश में अकाल था, और भविष्यद्वक्ताओं के चेले उसके साम्हने बैठे हुए थे, और उस ने अपने सेवक से कहा, हण्डा चढ़ाकर भविष्यद्वक्ताओं के चेलों के लिये कुछ पका। ३९ तब कोई मैदान में साग तोड़ने गया, और कोई जंगली लता पाकर अपनी अंकवार भर इन्द्रायण तोड़ ले आया, और फांक फांक करके पकने के लिये हण्डे में डाल दिया, और वे उसको न पहिचानते थे। ४० तब उन्हों ने उन मनुष्यों के खाने के लिये हण्डे में से परोसा। खाते समय वे चिल्लाकर बोल उठे, हे परमेश्वर के भक्त हण्डे में माहुर * है, और वे उस में से खा न सके। ४१ तब एलीशा ने कहा, अच्छा, कुछ मैदा ले आओ, तब उस ने उसे हण्डे में डाल कर कहा, उन लोगों के खाने के लिये परोस दे, फिर हण्डे में कुछ हानि की वस्तु न रही।।

४२ और कोई मनुष्य बालशालीशा से, पहिले उपजे हुए जव की बीस रोटियां, और अपनी बोरी में हरी बालें परमेश्वर के भक्त के पास ले आया; तो एलीशा ने कहा, उन लोगों को खाने के लिये दे। ४३ उसके टहलुए ने कहा, क्या मैं सौ मनुष्यों के साम्हने इतना ही रख दूं? उस ने कहा, लोगों को दे दे कि खाएं, क्योंकि यहोवा यों कहता है, उनके खाने के बाद कुछ बच भी जाएगा। ४४ तब उस ने उनके आगे धर दिया, और यहोवा के वचन के अनुसार उनके खाने के बाद कुछ बच भी गया।।

(नामान कोढ़ी का शुद्ध किया जाना)

५ अराम के राजा का नामान नाम सेनापति अपने स्वामी की दृष्टि में बड़ा और प्रतिष्ठित पुरुष था, क्योंकि यहोवा ने उसके द्वारा अरामियों को विजयी किया था, और यह शूरवीर था, परन्तु कोढ़ी था। २ अरामी लोग दल बान्धकर इस्राएल के देश में जाकर वहां से एक छोटी लड़की बन्धुवाई में ले आए थे और वह नामान की पत्नी की सेवा करती थी। ३ उस ने अपनी स्वामिन से कहा, जो मेरा स्वामी शोमरोन के भविष्यद्वक्ता के पास होता, तो क्या ही अच्छा होता! क्योंकि वह उसको कोढ़ से चंगा कर देता। ४ तो किसी ने उसके प्रभु के पास जाकर कह दिया, कि इस्राएली लड़की इस प्रकार कहती है। ५ अराम के राजा ने कहा, तू जा, मैं इस्राएल के राजा के पास एक पत्र भेजूंगा; तब वह दस किक्कार चान्दी और छः हजार टुकड़े सोना, और दस जोड़े कपड़े साथ लेकर रवाना हो गया। ६ और वह इस्राएल के राजा के पास वह पत्र ले गया जिस में यह लिखा था, कि जब यह पत्र तुझे मिले, तब जानना कि मैं ने

---

* मूल में—मृत्यु।

नामान नाम अपने एक कर्मचारी को तेरे पास इसलिये भेजा है, कि तू उसका कोढ़ दूर कर दे। ७ इस पत्र के पढ़ने पर इस्राएल का राजा अपने वस्त्र फाड़कर बोला, क्या मैं मारनेवाला और जिलानेवाला परमेश्वर हूं कि उस पुरुष ने मेरे पास किसी को इसलिये भेजा है कि मैं उसका कोढ दूर करूं? सोच विचार तो करो, वह मुझ से झगड़े का कारण ढूंढ़ता होगा। ८ यह सुनकर कि इस्राएल के राजा ने अपने वस्त्र फाड़े हैं, परमेश्वर के भक्त एलीशा ने राजा के पास कहला भेजा, तू ने क्यों अपने वस्त्र फाड़े हैं? वह मेरे पास आए, तब जान लेगा, कि इस्राएल में भविष्यद्वक्ता तो है। ९ तब नामान घोड़ों और रथों समेत एलीशा के द्वार पर आकर खड़ा हुआ। १० तब एलीशा ने एक दूत से उसके पास यह कहला भेजा, कि तू जाकर यरदन में सात बार डुबकी मार, तब तेरा शरीर ज्यों का त्यों हो जाएगा, और तू शुद्ध होगा। ११ परन्तु नामान क्रोधित हो यह कहता हुआ चला गया, कि मैं ने तो सोचा था, कि अवश्य वह मेरे पास बाहर आएगा, और खड़ा होकर अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करके कोढ़ के स्थान पर अपना हाथ फेरकर कोढ़ को दूर करेगा! १२ क्या दमिश्क की अबाना और पर्पर नदियां इस्राएल के सब जलाशयों से उत्तम नहीं हैं? क्या मैं उन में स्नान करके शुद्ध नहीं हो सकता हूं? इसलिये वह जलजलाहट से भरा हुआ लौटकर चला गया। १३ तब उसके सेवक पास आकर कहने लगे, हे हमारे पिता यदि भविष्यद्वक्ता तुझे कोई भारी काम करने की आज्ञा देता, तो क्या तू उसे न करता? फिर जब वह कहता है, कि स्नान करके शुद्ध हो जा, तो कितना अधिक इसे मानना चाहिये। १४ तब उस ने परमेश्वर के भक्त के वचन के अनुसार यरदन को जाकर उस में सात बार डुबकी मारी, और उसका शरीर छोटे लड़के का सा हो गया; और वह शुद्ध हो गया।।

१५ तब वह अपने सब दल बल समेत परमेश्वर के भक्त के यहां लौट आया, और उसके सम्मुख खड़ा होकर कहने लगा सुन, अब मैं ने जान लिया है, कि समस्त पृथ्वी में इस्राएल को छोड़ और कहीं परमेश्वर नहीं है! इसलिये अब अपने दास की भेंट ग्रहण कर। १६ एलीशा ने कहा, यहोवा जिसके सम्मुख मैं उपस्थित रहता हूं उसके जीवन की शपथ मैं कुछ भेंट न लूंगा, और जब उस ने उसको बहुत विवश किया कि भेंट को ग्रहण करे, तब भी वह इनकार ही करता रहा। १७ तब नामान ने कहा, अच्छा, तो तेरे दास को दो खच्चर मिट्टी मिले, क्योंकि आगे को तेरा दास यहोवा को छोड़ और किसी ईश्वर को होमबलि वा मेलबलि न चढ़ाएगा। १८ एक बात तो यहोवा तेरे दास के लिये क्षमा करे, कि जब मेरा स्वामी रिम्मोन के भवन में दण्डवत करने को जाए, और वह मेरे हाथ का सहारा ले, और यों मुझे भी रिम्मोन के भवन में दण्डवत करनी पड़े, तब यहोवा तेरे दास का यह काम क्षमा करे कि मैं रिम्मोन के भवन में दण्डवत करूं। १९ उस ने उस से कहा, कुशल से बिदा हो। २० वह उसके यहां से थोड़ी दूर चला गया था, कि परमेश्वर के भक्त एलीशा का सेवक गेहजी सोचने लगा, कि मेरे स्वामी ने तो उस अरामी नामान को ऐसा ही छोड़ दिया है कि जो वह ले आया था उसको उस ने न लिया, परन्तु यहोवा के जीवन की शपथ मैं उसके पीछे दौड़कर उस से कुछ न कुछ ले लूंगा। २१ तब गेहजी

नामान के पीछे दौड़ा, और नामान किसी को अपने पीछे दौड़ता हुआ देखकर, उस से मिलने को रथ से उतर पड़ा, और पूछा, सब कुशल क्षेम तो है? २२ उस ने कहा, हां, सब कुशल है; परन्तु मेरे स्वामी ने मुझे यह कहने को भेजा है, कि एप्रैम के पहाड़ी देश से भविष्यद्वक्ताओं के चेलों में से दो जवान मेरे यहां अभी आए हैं, इसलिये उनके लिये एक किक्कार चान्दी और दो जोड़े वस्त्र दे। २३ नामान ने कहा, दो किक्कार लेने को प्रसन्न हो, तब उस ने उस से बहुत बिनती करके दो किक्कार चान्दी अलग थैलियों में बान्धकर, दो जोड़े वस्त्र समेत अपने दो सेवकों पर लाद दिया, और वे उन्हें उसके आगे आगे ले चले। २४ जब वह टीले के पास पहुंचा, तब उस ने उन वस्तुओं को उन से लेकर घर में रख दिया, और उन मनुष्यों को बिदा किया, और वे चले गए। २५ और वह भीतर जाकर, अपने स्वामी के साम्हने खड़ा हुआ। एलीशा ने उस से पूछा, हे गेहजी तू कहां से आता है? उस ने कहा, तेरा दास तो कहीं नहीं गया। २६ उस ने उस से कहा, जब वह पुरुष इधर मुंह फेरकर तुझ से मिलने को अपने रथ पर से उतरा, तब वह पूरा हाल मुझे मालूम था*; क्या यह समय चान्दी वा वस्त्र वा जलपाई वा दाख की बारियां, भेड़-बकरियां, गाय-बैल और दास-दासी लेने का है? २७ इस कारण से नामान का कोढ़ तुझे और तेरे वंश को सदा लगा रहेगा। तब वह हिम सा श्वेत कोढ़ी होकर उसके साम्हने से चला गया॥

* मूल में—क्या मेरा मन न गया?

(एलीशा का एक आश्चर्य कर्म)

६ और भविष्यद्वक्ताओं के चेलों में से किसी ने एलीशा से कहा, यह स्थान जिस में हम तेरे साम्हने रहते हैं, वह हमारे लिये सकेत है। २ इसलिये हम यरदन तक जाएं, और वहां से एक एक बल्ली लेकर, यहां अपने रहने के लिये एक स्थान बना लें; उस ने कहा, अच्छा जाओ। ३ तब किसी ने कहा, अपने दासों के संग चलने को प्रसन्न हो, उस ने कहा, चलता हूं। ४ तो वह उनके संग चला और वे यरदन के तीर पहुंचकर लकड़ी काटने लगे। ५ परन्तु जब एक जन बल्ली काट रहा था, तो कुल्हाड़ी बेंट से निकलकर जल में गिर गई; सो वह चिल्लाकर कहने लगा, हाय! मेरे प्रभु, वह तो मंगनी की थी। ६ परमेश्वर के भक्त ने पूछा, वह कहां गिरी? जब उस ने स्थान दिखाया, तब उस ने एक लकड़ी काटकर वहां डाल दी, और वह लोहा पानी पर तैरने लगा। ७ उस ने कहा, उसे उठा ले, तब उस ने हाथ बढ़ाकर उसे ले लिया॥

(एलीशा का अरामी दल से बचना)

८ और अराम का राजा इस्राएल से युद्ध कर रहा था, और सम्मति करके अपने कर्मचारियों से कहा, कि अमुक स्थान पर मेरी छावनी होगी। ९ तब परमेश्वर के भक्त ने इस्राएल के राजा के पास कहला भेजा, कि चौकसी कर और अमुक स्थान से होकर न जाना क्योंकि वहां अरामी चढ़ाई करनेवाले हैं। १० तब इस्राएल के राजा ने उस स्थान को, जिसकी चर्चा करके परमेश्वर के भक्त ने उसे चिताया था, भेजकर, अपनी रक्षा की; और इस प्रकार एक दो बार नहीं वरन बहुत बार हुआ। ११ इस कारण अराम के राजा का मन बहुत घबरा गया;

सो उस ने अपने कर्मचारियों को बुलाकर उन से पूछा, क्या तुम मुझे न बताओगे कि हम लोगों में से कौन इस्राएल के राजा की ओर का है? उसके एक कर्मचारी ने कहा, हे मेरे प्रभु! हे राजा! ऐसा नहीं, १२ एलीशा जो इस्राएल में भविष्यद्वक्ता है, वह इस्राएल के राजा को वे बातें भी बताया करता है, जो तू शयन की कोठरी में बोलता है। १३ राजा ने कहा, जाकर देखो कि वह कहां है, तब मैं भेजकर उसे पकड़वा मंगाऊंगा। और उसको यह समाचार मिला कि वह दोतान में है। १४ तब उस ने वहां घोड़ों और रथों समेत एक भारी दल भेजा, और उन्हों ने रात को आकर नगर को घेर लिया। १५ भोर को परमेश्वर के भक्त का टहलुआ उठा और निकलकर क्या देखता है कि घोड़ों और रथों समेत एक दल नगर को घेरे हुए पड़ा है। और उसके सेवक ने उस से कहा, हाय! मेरे स्वामी, हम क्या करें? १६ उस ने कहा, मत डर; क्योंकि जो हमारी ओर हैं, वह उन से अधिक हैं, जो उनकी ओर हैं। १७ तब एलीशा ने यह प्रार्थना की, हे यहोवा, इसकी आंखें खोल दे कि यह देख सके। तब यहोवा ने सेवक की आंखें खोल दीं, और जब वह देख सका, तब क्या देखा, कि एलीशा के चारों ओर का पहाड़ अग्निमय घोड़ों और रथों से भरा हुआ है। १८ जब अरामी उसके पास आए, तब एलीशा ने यहोवा से प्रार्थना की कि इस दल को अन्धा कर डाल। एलीशा के इस वचन के अनुसार उस ने उन्हें अन्धा कर दिया। १९ तब एलीशा ने उन से कहा, यह तो मार्ग नहीं है, और न यह नगर है, मेरे पीछे हो लो; मैं तुम्हें उस मनुष्य के पास जिसे तुम ढूंढ़ रहे हो पहुंचाऊंगा। तब उस ने उन्हें शोमरोन को पहुंचा दिया। २० जब वे शोमरोन में आ गए, तब एलीशा ने कहा, हे यहोवा, इन लोगों की आंखें खोल कि देख सकें। तब यहोवा ने उनकी आंखें खोलीं, और जब वे देखने लगे तब क्या देखा कि हम शोमरोन के मध्य में हैं। २१ उनको देखकर इस्राएल के राजा ने एलीशा से कहा, हे मेरे पिता, क्या मैं इनको मार लूं? मैं उनको मार लूं? २२ उस ने उत्तर दिया, मत मार। क्या तू उनको मार दिया करता है, जिनको तू तलवार और धनुष से बन्धुआ बना लेता है? तू उनको अन्न जल दे, कि खा पीकर अपने स्वामी के पास चले जाएं। २३ तब उस ने उनके लिये बड़ी जेवनार की, और जब वे खा पी चुके, तब उस ने उन्हें बिदा किया, और वे अपने स्वामी के पास चले गए। इसके बाद अराम के दल इस्राएल के देश में फिर न आए॥

(शोमरोन में बड़ा अकाल और उसका दूर होना)

२४ परन्तु इसके बाद अराम के राजा बेन्हदद ने अपनी समस्त सेना इकट्ठी करके, शोमरोन पर चढ़ाई कर दी और उसको घेर लिया। २५ तब शोमरोन में बड़ा अकाल पड़ा और वह ऐसा घिरा रहा, कि अन्त में एक गदहे का सिर चान्दी के अस्सी टुकड़ों में और कब * की चौथाई भर कबूतर की बीट पांच टुकड़े चान्दी तक बिकने लगी। २६ और इस्राएल का राजा शहरपनाह पर टहल रहा था, कि एक स्त्री ने पुकार के उस से कहा, हे प्रभु, हे राजा, बचा। २७ उस ने कहा, यदि यहोवा तुझे न बचाए, तो मैं कहां से तुझे बचाऊं? क्या खलिहान में से, वा दाखरस के कुण्ड में से? २८ फिर राजा ने उस से पूछा, तुझे

* कब—नाप, पैमाना।

क्या हुआ? उस ने उत्तर दिया, इस स्त्री ने मुझ से कहा था, मुझे अपना बेटा दे, कि हम आज उसे खा लें, फिर कल मैं अपना बेटा दूंगी, और हम उसे भी खाएंगी। २६ तब मेरे बेटे को पकाकर हम ने खा लिया, फिर दूसरे दिन जब मैं ने इस से कहा कि अपना बेटा दे कि हम उसे खा लें, तब इस ने अपने बेटे को छिपा रखा। ३० उस स्त्री की ये बातें सुनते ही, राजा ने अपने वस्त्र फाड़े (वह तो शहरपनाह पर टहल रहा था), जब लोगों ने देखा, तब उनको यह देख पड़ा कि वह भीतर अपनी देह पर टाट पहिने है। ३१ तब वह बोल उठा, यदि मैं शापात के पुत्र एलीशा का सिर आज उसके धड़ पर रहने दूं, तो परमेश्वर मेरे साथ ऐसा ही वरन इस से भी अधिक करे॥

३२ एलीशा अपने घर में बैठा हुआ था, और पुरनिये भी उसके संग बैठे थे। सो जब राजा ने अपने पास से एक जन भेजा, तब उस दूत के पहुंचने से पहिले उस ने पुरनियों से कहा, देखो, इस खूनी के बेटे ने किसी को मेरा सिर काटने को भेजा है; इसलिये जब वह दूत आए, तब किवाड़ बन्द करके रोके रहना। क्या उसके स्वामी के पांव की आहट उसके पीछे नहीं सुन पड़ती? ३३ वह उन से यों बातें कर ही रहा था कि दूत उसके पास आ पहुंचा। और राजा कहने लगा, यह विपत्ति यहोवा की ओर से है, अब मैं आगे को यहोवा की बाट क्यों जोहता रहूं?

७ तब एलीशा ने कहा, यहोवा का वचन सुनो, यहोवा यों कहता है, कि कल इसी समय शोमरोन के फाटक में सआ भर मैदा एक शेकेल में और दो सआ जव भी एक शेकेल में बिकेगा। २ तब उस सरदार ने जिसके हाथ पर राजा तकिया करता था, परमेश्वर के भक्त को उत्तर देकर कहा, सुन, चाहे यहोवा आकाश के झरोखे खोले, तौभी क्या ऐसी बात हो सकेगी? उस ने कहा, सुन, तू यह अपनी आंखों से तो देखेगा, परन्तु उस अन्न में से कुछ खाने न पाएगा॥

३ और चार कोढ़ी फाटक के बाहर थे; वे आपस में कहने लगे, हम क्यों यहां बैठे बैठे मर जाएं? ४ यदि हम कहें, कि नगर में जाएं, तो वहां मर जाएंगे; क्योंकि वहां मंहगी पड़ी है, और जो हम यहीं बैठे रहें, तौभी मर ही जाएंगे। तो आओ हम अराम की सेना में पकड़े जाएं; यदि वे हम को जिलाए रखें तो हम जीवित रहेंगे, और यदि वे हम को मार डालें, तौभी हम को मरना ही है। ५ तब वे सांझ को अराम की छावनी में जाने को चले, और अराम की छावनी की छोर पर पहुंचकर क्या देखा, कि वहां कोई नहीं है। ६ क्योंकि प्रभु ने अराम की सेना को रथों और घोड़ों की और भारी सेना की सी आहट सुनाई थी, और वे आपस में कहने लगे थे कि, सुनो, इस्राएल के राजा ने हित्ती और मिस्री राजाओं को वेतन पर बुलवाया है कि हम पर चढ़ाई करें। ७ इसलिये वे सांझ को उठकर ऐसे भाग गए, कि अपने डेरे, घोड़े, गदहे, और छावनी जैसी की तैसी छोड़-छाड़ अपना अपना प्राण लेकर भाग गए। ८ तो जब वे कोढ़ी छावनी की छोर के डेरों के पास पहुंचे, तब एक डेरे में घुसकर खाया पिया, और उस में से चान्दी, सोना और वस्त्र ले जाकर छिपा रखा; फिर लौटकर दूसरे डेरे में घुस गए और उस में से भी ले जाकर छिपा रखा॥

९ तब वे आपस में कहने लगे, जो हम कर रहे हैं वह अच्छा काम नहीं है, यह

आनन्द के समाचार का दिन है, परन्तु हम किसी को नहीं बताते। जो हम पह फटने तक ठहरे रहें तो हम को दण्ड मिलेगा; सो अब आओ हम राजा के घराने के पास जाकर यह बात बतला दें। १० तब वे चले और नगर के चौकीदारों को बुलाकर बताया, कि हम जो अराम की छावनी में गए, तो क्या देखा, कि वहां कोई नहीं है, और मनुष्य की कुछ आहट नहीं है, केवल बन्धे हुए घोड़े और गदहे हैं, और डेरे जैसे के तैसे हैं। ११ तब चौकीदारों ने पुकार के राजभवन के भीतर समाचार दिया। १२ और राजा रात ही को उठा, और अपने कर्मचारियों से कहा, मैं तुम्हें बताता हूं कि अरामियों ने हम से क्या किया है? वे जानते हैं, कि हम लोग भूखे हैं इस कारण वे छावनी में से मैदान में छिपने को यह कहकर गए हैं, कि जब वे नगर से निकलेंगे, तब हम उनको जीवित ही पकड़कर नगर में घुसने पाएंगे। १३ परन्तु राजा के किसी कर्मचारी ने उत्तर देकर कहा, कि जो घोड़े नगर में बच रहे हैं उन में से लोग पांच घोड़े लें, और उनको भेजकर हम हाल जान लें। (वे तो इस्राएल की सब भीड़ के समान हैं जो नगर में रह गए हैं वरन इस्राएल की जो भीड़ मर मिट गई है वे उसी के समान हैं।) १४ सो उन्हों ने दो रथ और उनके घोड़े लिये, और राजा ने उनको अराम की सेना के पीछे भेजा; और कहा, जाओ, देखो। १५ तब वे यरदन तक उनके पीछे चले गए, और क्या देखा, कि पूरा मार्ग वस्त्रों और पात्रों से भरा पड़ा है, जिन्हें अरामियों ने उतावली के मारे फेंक दिया था; तब दूत लौट आए, और राजा से यह कह सुनाया॥

१६ तब लोगों ने निकलकर अराम के डेरों को लूट लिया; और यहोवा के वचन के अनुसार एक सआ मैदा एक शेकेल में, और दो सआ जव एक शेकेल में बिकने लगा। १७ और राजा ने उस सरदार को जिसके हाथ पर वह तकिया करता था फाटक का अधिकारी ठहराया; तब वह फाटक में लोगों के पावों के नीचे दबकर मर गया। यह परमेश्वर के भक्त के उस वचन के अनुसार हुआ जो उस ने राजा से उसके यहां आने के समय कहा था। १८ परमेश्वर के भक्त ने जैसा राजा से यह कहा था, कि कल इसी समय शोमरोन के फाटक में दो सआ जव एक शेकेल में, और एक सआ मैदा एक शेकेल में बिकेगा, वैसा ही हुआ। १९ और उस सरदार ने परमेश्वर के भक्त को, उत्तर देकर कहा था, कि सुन चाहे यहोवा आकाश में झरोखे खोले तौभी क्या ऐसी बात हो सकेगी? और उस ने कहा था, सुन, तू यह अपनी आंखों से तो देखेगा, परन्तु उस अन्न में से खाने न पाएगा। २० सो उसके साथ ठीक वैसा ही हुआ, अतएव वह फाटक मे लोगों के पांवों के नीचे दबकर मर गया॥

(एलीशा के आश्चर्य कर्मों की कीर्ति)

८ जिस स्त्री के बेटे को एलीशा ने जिलाया था, उस से उस ने कहा था कि अपने घराने समेत यहां से जाकर जहां कहीं तू रह सके वहां रह; क्योंकि यहोवा की इच्छा है कि अकाल पड़े *, और वह इस देश में सात वर्ष तक बना रहेगा। २ परमेश्वर के भक्त के इस वचन के अनुसार वह स्त्री अपने घराने समेत पलिश्तियों के देश में जाकर सात वर्ष रही। ३ सात वर्ष के बीतने पर वह पलिश्तियों के देश से लौट आई, और अपने घर और भूमि के लिये दोहाई देने को राजा के पास गई। ४ राजा

* मूल में—यहोवा ने अकाल बुलाया है।

परमेश्वर के भक्त के सेवक गेहजी से बातें कर रहा था, और उस ने कहा कि जो बड़े बड़े काम एलीशा ने किये हैं उन्हें मुझ से वर्णन कर। ५ जब वह राजा से यह वर्णन कर ही रहा था कि एलीशा ने एक मुर्दे को जिलाया, तब जिस स्त्री के बेटे को उस ने जिलाया था वही आकर अपने घर और भूमि के लिये दोहाई देने लगी। तब गेहजी ने कहा, हे मेरे प्रभु! हे राजा! यह वही स्त्री है और यही उसका बेटा है जिसे एलीशा ने जिलाया था। ६ जब राजा ने स्त्री से पूछा, तब उस ने उस से सब कह दिया। तब राजा ने एक हाकिम को यह कहकर उसके साथ कर दिया कि जो कुछ इसका था वरन जब से इस ने देश को छोड़ दिया तब से इसके खेत की जितनी आमदनी अब तक हुई हो सब इसे फेर दे॥

(हजाएल का अराम की गद्दी छीन लेना)

७ और एलीशा दमिश्क को गया। और जब अराम के राजा बेन्हदद को जो रोगी था यह समाचार मिला, कि परमेश्वर का भक्त यहां भी आया है, ८ तब उस ने हजाएल से कहा, भेंट लेकर परमेश्वर के भक्त से मिलने को जा, और उसके द्वारा यहोवा से यह पूछ, कि क्या बेन्हदद जो रोगी है वह बचेगा कि नहीं? ९ तब हजाएल भेंट के लिये दमिश्क की सब उत्तम उत्तम वस्तुओं से चालीस ऊंट लदवाकर, उस से मिलने को चला, और उसके सम्मुख खड़ा होकर कहने लगा, तेरे पुत्र अराम के राजा बेन्हदद ने मुझे तुझ से यह पूछने को भेजा है, कि क्या मैं जो रोगी हूं तो बचूंगा कि नहीं? १० एलीशा ने उस से कहा, जाकर कह, तू निश्चय बच सकता, तौभी यहोवा ने मुझ पर प्रगट किया है, कि तू निःसन्देह मर जाएगा। ११ और वह उसकी ओर टकटकी बान्ध कर देखता रहा, यहां तक कि वह लज्जित हुआ। और परमेश्वर का भक्त रोने लगा। १२ तब हजाएल ने पूछा, मेरा प्रभु क्यों रोता है? उस ने उत्तर दिया, इसलिये कि मुझे मालूम है कि तू इस्राएलियों पर क्या क्या उपद्रव करेगा; उनके गढ़वाले नगरों को तू फूंक देगा; उनके जवानों को तू तलवार से घात करेगा, उनके बालबच्चों को तू पटक देगा, और उनकी गर्भवती स्त्रियों को तू चीर डालेगा। १३ हजाएल ने कहा, तेरा दास जो कुत्ते सरीखा है, वह क्या है कि ऐसा बड़ा काम करे? एलीशा ने कहा, यहोवा ने मुझ पर यह प्रगट किया है कि तू अराम का राजा हो जाएगा। १४ तब वह एलीशा से बिदा होकर अपने स्वामी के पास गया, और उस ने उस से पूछा, एलीशा ने तुझ से क्या कहा? उस ने उत्तर दिया, उस ने मुझ से कहा कि बेन्हदद निःसन्देह बचेगा। १५ दूसरे दिन उस ने रजाई को लेकर जल से भिगो दिया, और उसको उसके मुंह पर ऐसा ओढ़ा दिया कि वह मर गया। तब हजाएल उसके स्थान पर राज्य करने लगा॥

(इस्राएली योराम का राज्य)

१६ इस्राएल के राजा अहाब के पुत्र योराम के पांचवें वर्ष में, जब यहूदा का राजा यहोशापात जीवित था, तब यहोशापात का पुत्र यहोराम यहूदा पर राज्य करने लगा। १७ जब वह राजा हुआ, तब बत्तीस वर्ष का था, और आठ वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। १८ वह इस्राएल के राजाओं की सी चाल चला, जैसे अहाब का घराना चलता था, क्योंकि उसकी स्त्री अहाब की बेटी थी; और वह उस काम को करता था

जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है। १९ तौभी यहोवा ने यहूदा को नाश करना न चाहा, यह उसके दास दाऊद के कारण हुआ, क्योंकि उस ने उसको वचन दिया था, कि तेरे वंश के निमित्त मैं सदा तेरे लिये एक दीपक जलता हुआ रखूंगा ।।

२० उसके दिनों में एदोम ने यहूदा की अधीनता छोड़कर अपना एक राजा बना लिया। २१ तब योराम अपने सब रथ साथ लिये हुए साईर को गया, और रात को उठकर उन एदोमियों को जो उसे घेरे हुए थे, और रथों के प्रधानों को भी मारा; और लोग अपने अपने डेरे को भाग गए। २२ यों एदोम यहूदा के वश से छूट गया, और आज तक वैसा ही है। उस समय लिब्ना ने भी यहूदा की अधीनता छोड़ दी। २३ योराम के और सब काम और जो कुछ उस ने किया, वह क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? २४ निदान योराम अपने पुरखाओं के संग सो गया और उनके बीच दाऊदपुर में उसे मिट्टी दी गई; और उसका पुत्र अहज्जाह उसके स्थान पर राज्य करने लगा ।।

(यहूदी अहज्याह का राज्य)

२५ अहाब के पुत्र इस्राएल के राजा योराम के बारहवें वर्ष में यहूदा के राजा यहोराम का पुत्र अहज्याह राज्य करने लगा। २६ जब अहज्याह राजा बना, तब बाईस वर्ष का था, और यरूशलेम में एक ही वर्ष राज्य किया। और उसकी माता का नाम अतल्याह था, जो इस्राएल के राजा ओम्री की पोती थी। २७ वह अहाब के घराने की सी चाल चला, और अहाब के घराने की नाईं वह काम करता था, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, क्योंकि वह अहाब के घराने का दामाद था। २८ और वह अहाब के पुत्र योराम के संग गिलाद के रामोत में अराम के राजा हजाएल से लड़ने को गया, और अरामियों ने योराम को घायल किया। २९ सो राजा योराम इसलिये लौट गया, कि यिज्रैल में उन घावों का इलाज कराए, जो उसको अरामियों के हाथ से उस समय लगे, जब वह हजाएल के साथ लड़ रहा था। और अहाब का पुत्र योराम तो यिज्रैल में रोगी रहा, इस कारण यहूदा के राजा यहोराम का पुत्र अहज्याह उसको देखने गया ।।

(येहू का अभिषेक और राज्य)

९ तब एलीशा भविष्यद्वक्ता ने भविष्यद्वक्ताओं के चेलों में से एक को बुलाकर उस से कहा, कमर बान्ध, और हाथ में तेल की यह कुप्पी लेकर गिलाद के रामोत को जा। २ और वहां पहुंचकर येहू को जो यहोशापात का पुत्र और निमशी का पोता है, ढूंढ़ लेना; तब भीतर जा, उसको खड़ा कराकर उसके भाइयों से अलग एक भीतरी कोठरी में ले जाना। ३ तब तेल की यह कुप्पी लेकर तेल को उसके सिर पर यह कह कर डालना, यहोवा यों कहता है, कि मैं इस्राएल का राजा होने के लिये तेरा अभिषेक कर देता हूं। तब द्वार खोलकर भागना, विलम्ब न करना ।।

४ तब वह जवान भविष्यद्वक्ता गिलाद के रामोत को गया। ५ वहां पहुंचकर उस ने क्या देखा, कि सेनापति बैठे हुए हैं; तब उस ने कहा, हे सेनापति, मुझे तुझ से कुछ कहना है। येहु ने पूछा, हम सभों में किस से? उस ने कहा हे सेनापति, तुझी से! ६ तब वह उठकर घर में गया; और उस ने यह कहकर उसके सिर पर तेल डाला

कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, मैं अपनी प्रजा इस्राएल पर राजा होने के लिये तेरा अभिषेक कर देता हूं। ७ तो तू अपने स्वामी अहाब के घराने को मार डालना, जिस से मुझे अपने दास भविष्यद्वक्ताओं के वरन अपने सब दासों के खून का जो ईज़ेबेल ने बहाया, पलटा मिले। ८ क्योंकि अहाब का समस्त घराना नाश हो जाएगा, और मैं अहाब के वंश के हर एक लड़के को और इस्राएल में के क्या बन्धुए, क्या स्वाधीन, हर एक को नाश कर डालूंगा। ९ और मैं अहाब का घराना नबात के पुत्र यारोबाम का सा, और अहिय्याह के पुत्र बाशा का सा कर दूंगा। १० और ईज़ेबेल को यिज्रैल की भूमि में कुत्ते खाएंगे, और उसको मिट्टी देनेवाला कोई न होगा। तब वह द्वार खोलकर भाग गया॥

११ तब येहू अपने स्वामी के कर्मचारियों के पास निकल आया, और एक ने उस से पूछा, क्या कुशल है? वह बावला क्यों तेरे पास आया था? उस ने उन से कहा, तुम को मालूम होगा कि वह कौन है और उस से क्या बातचीत हुई। १२ उन्हों ने कहा झूठ है, हमें बता दे। उस ने कहा, उस ने मुझ से कहा तो बहुत, परन्तु मतलब यह है कि यहोवा यों कहता है कि मैं इस्राएल का राजा होने के लिये तेरा अभिषेक कर देता हूं। १३ तब उन्हों ने झट अपना अपना वस्त्र उतार कर उसके नीचे सीढ़ी ही पर बिछाया, और नरसिंगे फूंककर कहने लगे, येहू राजा है॥

१४ यों येहू जो निमशी का पोता और यहोशापात का पुत्र था, उस ने योराम से राजद्रोह की गोष्ठी की। (योराम तो सब इस्राएल समेत अराम के राजा हज़ाएल के कारण गिलाद के रामोत की रक्षा कर रहा था; १५ परन्तु राजा योराम आप अपने घाव का जो अराम के राजा हज़ाएल से युद्ध करने के समय उसको अरामियों से लगे थे, उनका इलाज कराने के लिये यिज्रैल को लौट गया था।) तब येहू ने कहा, यदि तुम्हारा ऐसा मन हो, तो इस नगर में से कोई निकल कर यिज्रैल में सुनाने को न जाने पाए। १६ तब येहू रथ पर चढ़कर, यिज्रैल को चला जहां योराम पड़ा हुआ था; और यहूदा का राजा अहज्याह योराम के देखने को वहां आया था। १७ यिज्रैल के गुम्मट पर, जो पहरुआ खड़ा था, उस ने येहू के संग आते हुए दल को देखकर कहा, मुझे एक दल दीखता है; योराम ने कहा, एक सवार को बुलाकर उन लोगों से मिलने को भेज और वह उन से पूछे, क्या कुशल है? १८ तब एक सवार उस से मिलने को गया, और उस से कहा, राजा पूछता है, क्या कुशल है? येहू ने कहा, कुशल से तेरा क्या काम? हटकर मेरे पीछे चल। तब पहरुए ने कहा, वह दूत उनके पास पहुंचा तो था, परन्तु लौटकर नहीं आया। १९ तब उसने दूसरा सवार भेजा, और उस ने उनके पास पहुंचकर कहा, राजा पूछता है, क्या कुशल है? येहू ने कहा, कुशल से तेरा क्या काम? हटकर मेरे पीछे चल। २० तब पहरुए ने कहा, वह भी उनके पास पहुंचा तो था, परन्तु लौटकर नहीं आया। हांकना निमशी के पोते येहू का सा है; वह तो बौड़हे की नाई हांकता है॥

२१ योराम ने कहा, मेरा रथ जुतवा। जब उसका रथ जुत गया, तब इस्राएल का राजा योराम और यहूदा का राजा अहज्याह, दोनों अपने अपने रथ पर चढ़कर निकल गए, और येहू से मिलने को बाहर जाकर यिज्रैल नाबोत की भूमि में उस से भेंट की।

२२ येहू को देखते ही योराम ने पूछा, हे येहू क्या कुशल है ? येहू ने उत्तर दिया, जब तक तेरी माता ईज़ेबेल छिनालपन और टोना करती रहे, तब तक कुशल कहां ? २३ तब योराम रास* फेर के, और अहज्याह से यह कहकर कि हे अहज्याह विश्वासघात है, भाग चला। २४ तब येहू ने धनुष को कान तक खींचकर† योराम के पखौड़ों के बीच ऐसा तीर मारा, कि वह उसका हृदय फोड़कर निकल गया, और वह अपने रथ में झुककर गिर पड़ा। २५ तब येहू ने बिदकर नाम अपने एक सरदार से कहा, उसे उठाकर यिज्रैली नाबोत की भूमि में फेंक दे; स्मरण तो कर, कि जब मैं और तू, हम दोनो एक संग सवार होकर उसके पिता अहाब के पीछे पीछे चल रहे थे तब यहोवा ने उस से यह भारी वचन कहवाया था, कि यहोवा की यह वाणी है, २६ कि नाबोत और उसके पुत्रों का जो खून हुआ, उसे मैं ने देखा है, और यहोवा की यह वाणी है, कि मैं उसी भूमि में तुझे बदला दूंगा। तो अब यहोवा के उस वचन के अनुसार इसे उठाकर उसी भूमि में फेंक दे।।

२७ यह देखकर यहूदा का राजा अहज्याह बारी के भवन के मार्ग से भाग चला। और येहू ने उसका पीछा करके कहा, उसे भी रथ ही पर मारो; तो वह भी यिबलाम के पास की गूर की चढ़ाई पर मारा गया, और मगिद्दो तक भागकर मर गया। २८ तब उसके कर्मचारियों ने उसे रथ पर यरूशलेम को पहुंचाकर दाऊदपुर में उसके पुरखाओं के बीच मिट्टी दी।।

२९ अहज्याह तो अहाब के पुत्र योराम के ग्यारहवें वर्ष में यहूदा पर राज्य करने लगा था।।

३० जब येहू यिज्रैल को आया, तब ईज़ेबेल यह सुन अपनी आंखों में सुर्मा लगा, अपना सिर संवारकर, खिड़की में से झांकने लगी। ३१ जब येहू फाटक में होकर आ रहा था तब उस ने कहा, हे अपने स्वामी के घात करने वाले जिम्री, क्या कुशल है ? ३२ तब उस ने खिड़की की ओर मुंह उठाकर पूछा, मेरी ओर कौन है ? कौन ? इस पर दो तीन खोजों ने उसकी ओर झांका। ३३ तब उस ने कहा, उसे नीचे गिरा दो। सो उन्हों ने उसको नीचे गिरा दिया, और उसके लोहू के कुछ छींटे भीत पर और कुछ घोड़ों पर पड़े, और उन्हों ने उसको पांव से लताड़ दिया। ३४ तब वह भीतर जाकर खाने पीने लगा; और कहा, जाओ उस स्रापित स्त्री को देख लो, और उसे मिट्टी दो; वह तो राजा की बेटी है। ३५ जब वे उसे मिट्टी देने गए, तब उसकी खोपड़ी पांवों और हथेलियों को छोड़कर उसका और कुछ न पाया। ३६ सो उन्हों ने लौटकर उस से कह दिया; तब उस ने कहा, यह यहोवा का वह वचन है, जो उस ने अपने दास तिशबी एलिय्याह से कहलवाया था, कि ईज़ेबेल का मांस यिज्रैल की भूमि में कुत्तों से खाया जाएगा। ३७ और ईज़ेबेल की लोथ यिज्रैल की भूमि पर खाद की नाईं पड़ी रहेगी, यहां तक कि कोई न कहेगा, यह ईज़ेबेल है।।

१० अहाब के तो सत्तर बेटे, पोते, शोमरोन में रहते थे। सो येहू ने शोमरोन में उन पुरनियों के पास, और जो यिज्रैल के हाकिम थे, और जो अहाब के

* मूल में—अपने हाथ।
† मूल में—अपना हाथ धनुष से भर के।

लड़केबालों के पालनेवाले थे, उनके पास पत्र लिखकर भेजे, २ कि तुम्हारे स्वामी के बेटे, पोते तो तुम्हारे पास रहते हैं, और तुम्हारे रथ, और घोड़े भी हैं, और तुम्हारे एक गढ़वाला नगर, और हथियार भी हैं; ३ तो इस पत्र के हाथ लगते ही, अपने स्वामी के बेटों में से जो सब से अच्छा और योग्य हो, उसको छांटकर, उसके पिता की गद्दी पर बैठाओ, और अपने स्वामी के घराने के लिये लड़ो। ४ परन्तु वे निपट डर गए, और कहने लगे, उसके साम्हने दो राजा भी ठहर न सके, फिर हम कहां ठहर सकेंगे? ५ तब जो राजघराने के काम पर था, और जो नगर के ऊपर था, उन्हों ने और पुरनियों और लड़केबालों के पालनेवालों ने येहू के पास यों कहला भेजा, कि हम तेरे दास हैं, जो कुछ तू हम से कहे, उसे हम करेंगे; हम किसी को राजा न बनाएंगे, जो तुझे भाए वही कर। ६ तब उस ने दूसरा पत्र लिखकर उनके पास भेजा, कि यदि तुम मेरी ओर के हो, और मेरी मानो, तो अपने स्वामी के बेटों-पोतों के सिर कटवाकर कल इसी समय तक मेरे पास यिज्रैल में हाजिर होना। राजपुत्र तो जो सत्तर मनुष्य थे, वह उस नगर के रईसों के पास पलते थे। ७ यह पत्र उनके हाथ लगते ही, उन्हों ने उन सत्तरों राजपुत्रों को पकड़कर मार डाला, और उनके सिर टोकरियों में रखकर यिज्रैल को उसके पास भेज दिए। ८ और एक दूत ने उसके पास जाकर बता दिया, कि राजकुमारों के सिर आ गए हैं। तब उस ने कहा, उन्हें फाटक में दो ढेर करके बिहान तक रखो। ९ बिहान को उस ने बाहर जा खड़े होकर सब लोगों से कहा, तुम तो निर्दोष हो, मैं ने अपने स्वामी से राजद्रोह की गोष्ठी करके उसे घात किया, परन्तु इन सभों को किस ने मार डाला? १० अब जान लो कि जो वचन यहोवा ने अपने दास एलिय्याह के द्वारा कहा था, उसे उस ने पूरा किया है; जो वचन यहोवा ने अहाब के घराने के विषय कहा, उस में से एक भी बात बिना पूरी हुए न रहेगी *। ११ तब अहाब के घराने के जितने लोग यिज्रैल में रह गए, उन सभों को और उसके जितने प्रधान पुरुष और मित्र और याजक थे, उन सभों को येहू ने मार डाला, यहां तक कि उस ने किसी को जीवित न छोड़ा॥

१२ तब वह वहां से चलकर शोमरोन को गया। और मार्ग में चरवाहों के ऊन कतरने के स्थान पर पहुंचा ही था, १३ कि यहूदा के राजा अहज्याह के भाई येहू से मिले और जब उस ने पूछा, तुम कौन हो? तब उन्हों ने उत्तर दिया, हम अहज्याह के भाई हैं, और राजपुत्रों और राजमाता के बेटों का कुशलक्षेम पूछने को जाते हैं। १४ तब उस ने कहा, इन्हें जीवित पकड़ो। सो उन्हों ने उनको जो बयालीस पुरुष थे, जीवित पकड़ा, और ऊन कतरने के स्थान की बावली पर मार डाला, उस ने उन में से किसी को न छोड़ा॥

१५ जब वह वहां से चला, तब रेकाब का पुत्र यहोनादाब साम्हने से आता हुआ उसको मिला। उसका कुशल उस ने पूछकर कहा, मेरा मन तो तेरी ओर निष्कपट है सो क्या तेरा मन भी वैसा ही है? यहोनादाब ने कहा, हां, ऐसा ही है। फिर उस ने कहा, ऐसा हो, तो अपना हाथ मुझे दे। उस ने अपना हाथ उसे दिया, और वह यह कहकर उसे अपने पास रथ पर चढ़ाने लगा, कि मेरे संग चल। १६ और देख, कि मुझे यहोवा के निमित्त कैसी जलन रहती है। तब वह

* मूल में—भूमि पर न गिरेगी।

उसके रथ पर चढ़ा दिया गया। १७ शोमरोन को पहुंचकर उस ने यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उस ने एलिय्याह से कहा था, अहाब के जितने शोमरोन में बचे रहे, उन सभों को मार के विनाश किया ।।

१८ तब येहू ने सब लोगों को इकट्ठा करके कहा, अहाब ने तो बाल की थोड़ी ही उपासना की थी, अब येहू उसकी उपासना बढ़के करेगा। १९ इसलिये अब बाल के सब नबियों, सब उपासकों और सब याजकों को मेरे पास बुला लाओ, उन में से कोई भी न रह जाए; क्योंकि बाल के लिये मेरा एक बड़ा यज्ञ होनेवाला है; जो कोई न आए वह जीवित न बचेगा। येहू ने यह काम कपट करके बाल के सब उपासकों को नाश करने के लिये किया। २० तब येहू ने कहा, बाल की एक पवित्र महासभा का प्रचार करो। और लोगों ने प्रचार किया। २१ और येहू ने सारे इस्राएल में दूत भेजे; तब बाल के सब उपासक आए, यहां तक कि ऐसा कोई न रह गया जो न आया हो। और वे बाल के भवन में इतने आए, कि वह एक सिरे से दूसरे सिरे तक भर गया। २२ तब उस ने उस मनुष्य से जो वस्त्र के घर का अधिकारी था, कहा, बाल के सब उपासकों के लिये वस्त्र निकाल ले आ; सो वह उनके लिये वस्त्र निकाल ले आया। २३ तब येहू रेकाब के पुत्र यहोनादाब को संग लेकर बाल के भवन में गया, और बाल के उपासकों से कहा, ढूंढ़कर देखो, कि यहां तुम्हारे संग यहोवा का कोई उपासक तो नहीं है, केवल बाल ही के उपासक हैं। २४ तब वे मेलबलि और होमबलि चढ़ाने को भीतर गए ।।

येहू ने तो अस्सी पुरुष बाहर ठहरा कर उन से कहा था, यदि उन मनुष्यों में से जिन्हें मैं तुम्हारे हाथ कर दूं, कोई भी बचने पाए, तो जो उसे जाने देगा उसका प्राण, उसके प्राण की सन्ती जाएगा। २५ फिर जब होमबलि चढ़ चुका, तब येहू ने पहरुओं और सरदारों से कहा, भीतर जाकर उन्हें मार डालो; कोई निकलने न पाए। तब उन्हों ने उन्हें तलवार से मारा और पहरुए और सरदार उनको बाहर फेंककर बाल के भवन के नगर को गए। २६ और उन्हों ने बाल के भवन में की लाठें निकालकर फूंक दीं। २७ और बाल की लाठ को उन्हों ने तोड़ डाला; और बाल के भवन को ढाकर पायखाना बना दिया; और वह आज तक ऐसा ही है ।।

२८ यों येहू ने बाल को इस्राएल में से नाश करके दूर किया। २९ तौभी नबात के पुत्र यारोबाम, जिस ने इस्राएल से पाप कराया था, उसके पापों के अनुसार करने, अर्थात् बेतेल और दान में के सोने के बछड़ों की पूजा, उस से येहू अलग न हुआ। ३० और यहोवा ने येहू से कहा, इसलिये कि तू ने वह किया, जो मेरी दृष्टि में ठीक है, और अहाब के घराने से मेरी इच्छा के अनुसार बर्ताव किया है, तेरे परपोते के पुत्र तक तेरी सन्तान इस्राएल की गद्दी पर विराजती रहेगी। ३१ परन्तु येहू ने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की व्यवस्था पर पूर्ण मन से चलने की चौकसी न की, वरन यारोबाम जिस ने इस्राएल से पाप कराया था, उसके पापों के अनुसार करने से वह अलग न हुआ ।।

३२ उन दिनों यहोवा इस्राएल को घटाने लगा, इसलिये हजाएल ने इस्राएल के उन सारे देशों में उनको मारा : ३३ यरदन से पूरब की ओर गिलाद का सारा देश, और गादी और रूबेनी और मनश्शेई का देश अर्थात् अरोएर से लेकर जो अर्नोन की तराई

के पास है, गिलाद और बाशान तक। ३४ येहू के और सब काम और जो कुछ उस ने किया, और उसकी पूर्ण वीरता, यह सब क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? ३५ निदान येहू अपने पुरखाओं के संग सो गया, और शोमरोन में उसको मिट्टी दी गई, और उसका पुत्र यहोआहाज उसके स्थान पर राजा बन गया। ३६ येहू के शोमरोन में इस्राएल पर राज्य करने का समय तो अट्ठाईस वर्ष का था॥

(योआश का घात से बचकर राजा हो जाना)

११ जब अहज्याह की माता अतल्याह ने देखा, कि मेरा पुत्र मर गया, तब उस ने पूरे राजवंश को नाश कर डाला। २ परन्तु यहोशेबा जो राजा योराम की बेटी, और अहज्याह की बहिन थी, उस ने अहज्याह के पुत्र योआश को घात होनेवाले राजकुमारों के बीच में से चुराकर धाई समेत बिछौने रखने की कोठरी में छिपा दिया। और उन्हों ने उसे अतल्याह से ऐसा छिपा रखा, कि वह मारा न गया। ३ और वह उसके पास यहोवा के भवन में छः वर्ष छिपा रहा, और अतल्याह देश पर राज्य करती रही॥

४ सातवें वर्ष में यहोयादा ने जल्लादों और पहरुओं के शतपतियों को बुला भेजा, और उनको यहोवा के भवन में अपने पास ले आया; और उन से वाचा बान्धी और यहोवा के भवन में उनको शपथ खिलाकर, उनको राजपुत्र दिखाया। ५ और उस ने उन्हें आज्ञा दी, कि एक काम करो: अर्थात् तुम में से एक तिहाई लोग जो विश्रामदिन को आनेवाले हों, वह राजभवन के पहरे की चौकसी करें। ६ और एक तिहाई लोग सूर नाम फाटक में ठहरे रहें, और एक तिहाई लोग पहरुओं के पीछे के फाटक में रहें; यों तुम भवन की चौकसी करके लोगों को रोके रहना। ७ और तुम्हारे दो दल अर्थात् जितने विश्राम दिन को बाहर जानेवाले हों वह राजा के आसपास होकर यहोवा के भवन की चौकसी करें। ८ और तुम अपने अपने हाथ में हथियार लिये हुए राजा के चारों ओर रहना, और जो कोई पांतियों के भीतर घुसना चाहे वह मार डाला जाए, और तुम राजा के आते-जाते समय उसके संग रहना॥

९ यहोयादा याजक की इन सब आज्ञाओं के अनुसार शतपतियों ने किया। वे विश्रामदिन को आनेवाले और जानेवाले दोनों दलों के अपने अपने जनों को संग लेकर यहोयादा याजक के पास गए। १० तब याजक ने शतपतियों को राजा दाऊद के बर्छे, और ढालें जो यहोवा के भवन में थीं दे दीं। ११ इसलिये वे पहरुए अपने अपने हाथ में हथियार लिए हुए भवन के दक्खिनी कोने से लेकर उत्तरी कोने तक वेदी और भवन के पास राजा के चारों ओर उसकी आड़ करके खड़े हुए। १२ तब उस ने राजकुमार को बाहर लाकर उसके सिर पर मुकुट, और साक्षीपत्र धर दिया; तब लोगों ने उसका अभिषेक करके उसको राजा बनाया; फिर ताली बजा बजाकर बोल उठे, राजा जीवित रहे!

१३ जब अतल्याह को पहरुओं और लोगों का हलचल सुन पड़ा, तब वह उनके पास यहोवा के भवन में गई। १४ और उस ने क्या देखा कि राजा रीति के अनुसार खम्भे के पास खड़ा है, और राजा के पास प्रधान और तुरही बजानेवाले खड़े हैं। और

सब लोग ग्रानन्द करते ग्रौर तुरहियां बजा रहे हैं। तब ग्रतल्याह ग्रपने वस्त्र फाड़कर राजद्रोह—राजद्रोह यों पुकारने लगी। १५ तब यहोयादा याजक ने दल के ग्रधिकारी शतपतियों को ग्राज्ञा दी कि उसे ग्रपनी पांतियों के बीच से निकाल ले जाग्रो; ग्रौर जो कोई उसके पीछे चले उसे तलवार से मार डालो। क्योंकि याजक ने कहा, कि वह यहोवा के भवन में न मार डाली जाए। १६ इसलिये उन्हों ने दोनों ग्रोर से उसको जगह दी, ग्रौर वह उस मार्ग के बीच से चली गई, जिस से घोड़े राजभवन में जाया करते थे; ग्रौर वहां वह मार डाली गई।।

१७ तब यहोयादा ने यहोवा के, ग्रौर राजा-प्रजा के बीच यहोवा की प्रजा होने की वाचा बन्धाई, ग्रौर उस ने राजा ग्रौर प्रजा के मध्य भी वाचा बन्धाई। १८ तब सब लोगों ने बाल के भवन को जाकर ढा दिया, ग्रौर उसकी वेदियां ग्रौर मूरतें भली भांति तोड़ दीं; ग्रौर मतान नाम बाल के याजक को वेदियों के साम्हने ही घात किया। ग्रौर याजक ने यहोवा के भवन पर ग्रधिकारी ठहरा दिए। १९ तब वह शतपतियों, जल्लादों ग्रौर पहरुग्रों ग्रौर सब लोगों को साथ लेकर राजा को यहोवा के भवन से नीचे ले गया, ग्रौर पहरुग्रों के फाटक के मार्ग से राजभवन को पहुंचा दिया। ग्रौर राजा राजगद्दी पर विराजमान हुग्रा। २० तब सब लोग ग्रानन्दित हुए, ग्रौर नगर में शान्ति हुई। ग्रतल्याह तो राजभवन के पास तलवार से मार डाली गई थी।।

(योग्राश का राज्य)

१२ जब योग्राश राजा हुग्रा, उस समय वह सात वर्ष का था। येहू के सातवें वर्ष में योग्राश राज्य करने लगा, ग्रौर यरूशलेम में चालीस वर्ष तक राज्य करता रहा। उसकी माता का नाम सिब्या था जो बेर्शेबा की थी। २ ग्रौर जब तक यहोयादा याजक योग्राश को शिक्षा देता रहा, तब तक वह वही काम करता रहा जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है। ३ तौभी ऊंचे स्थान गिराए न गए; प्रजा के लोग तब भी ऊंचे स्थान पर बलि चढ़ाते ग्रौर धूप जलाते रहे।।

४ ग्रौर योग्राश ने याजकों से कहा, पवित्र की हुई वस्तुग्रों का जितना रुपया यहोवा के भवन में पहुंचाया जाए, ग्रर्थात् गिने हुए लोगों का रुपया ग्रौर जितने रुपये के जो कोई योग्य ठहराया जाए, ग्रौर जितना रुपया जिसकी इच्छा यहोवा के भवन में ले ग्राने की हो, ५ इन सब को याजक लोग ग्रपनी जान पहचान के लोगों से लिया करें ग्रौर भवन में जो कुछ टूटा फूटा हो उसको सुधार दें। ६ तौभी याजकों ने भवन में जो टूटा फूटा था, उसे योग्राश राजा के तेईसवें वर्ष तक नहीं सुधारा था। ७ इसलिये राजा योग्राश ने यहोयादा याजक, ग्रौर ग्रौर याजकों को बुलवाकर पूछा, भवन में जो कुछ टूटा फूटा है, उसे तुम क्यों नहीं सुधारते? ग्रब से ग्रपनी जान पहचान के लोगों से ग्रौर रुपया न लेना, ग्रौर जो तुम्हें मिले, उसे भवन के सुधारने के लिये दे देना। ८ तब याजकों ने मान लिया कि न तो हम प्रजा से ग्रौर रुपया लें ग्रौर न भवन को सुधारें।।

९ तब यहोयादा याजक ने एक सन्दूक ले, उसके ढकने में छेद करके उसको यहोवा के भवन में ग्रानेवालों के दाहिने हाथ पर वेदी के पास धर दिया; ग्रौर द्वार की रखवाली करनेवाले याजक उस में वह सब रुपया डालने लगे जो यहोवा के भवन में लाया

जाता था। १० जब उन्हों ने देखा, कि सन्दूक में बहुत रुपया है, तब राजा के प्रधान और महायाजक ने आकर उसे थैलियों में बान्ध दिया, और यहोवा के भवन में पाए हुए रुपये को गिन लिया। ११ तब उन्हों ने उस तौले हुए रुपये को उन काम करानेवालों के हाथ में दिया, जो यहोवा के भवन में अधिकारी थे; और इन्हों ने उसे यहोवा के भवन के बनानेवाले बढ़इयों, राजों, और संगतराशों को दिये। १२ और लकड़ी और गढ़े हुए पत्थर मोल लेने में, वरन जो कुछ भवन के टूटे फूटे की मरम्मत में खर्च होता था, उस में लगाया। १३ परन्तु जो रुपया यहोवा के भवन में आता था, उस से चान्दी के तसले, चिमटे, कटोरे, तुरहियां आदि सोने वा चान्दी के किसी प्रकार के पात्र न बने। १४ परन्तु वह काम करनेवाले को दिया गया, और उन्हों ने उसे लेकर यहोवा के भवन की मरम्मत की। १५ और जिनके हाथ में काम करनेवालों को देने के लिये रुपया दिया जाता था, उन से कुछ हिसाब न लिया जाता था, क्योंकि वे सच्चाई से काम करते थे। १६ जो रुपया दोषबलियों और पापबलियों के लिये दिया जाता था, वह तो यहोवा के भवन में न लगाया गया, वह याजकों को मिलता था॥

१७ तब अराम के राजा हजाएल ने गत नगर पर चढ़ाई की, और उस से लड़ाई करके उसे ले लिया। तब उस ने यरूशलेम पर भी चढ़ाई करने को अपना मुंह किया। १८ तब यहूदा के राजा योआश ने उन सब पवित्र वस्तुओं को जिन्हें उसके पुरखा यहोशापात, यहोराम और अहज्याह नाम यहूदा के राजाओं ने पवित्र किया था, और अपनी पवित्र की हुई वस्तुओं को भी और जितना सोना यहोवा के भवन के भण्डारों में और राजभवन में मिला, उस सब को लेकर अराम के राजा हजाएल के पास भेज दिया; और वह यरूशलेम के पास से चला गया॥

१९ योआश के और सब काम जो उस ने किए, वह क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? २० योआश के कर्मचारियों ने राजद्रोह की गोष्ठी करके, उसको मिल्लो के भवन में जो सिल्ला की उतराई पर था, मार डाला। २१ अर्थात् शिमात का पुत्र योजाकार और शोमेर का पुत्र यहोजाबाद, जो उसके कर्मचारी थे, उन्हों ने उसे ऐसा मारा, कि वह मर गया। तब उसे उसके पुरखाओं के बीच दाऊदपुर में मिट्टी दी, और उसका पुत्र अमस्याह उसके स्थान पर राज्य करने लगा॥

(यहोआहाज का राज्य)

१३ अहज्याह के पुत्र यहूदा के राजा योआश के तेईसवें वर्ष में येहू का पुत्र यहोआहाज शोमरोन में इस्राएल पर राज्य करने लगा, और सत्रह वर्ष तक राज्य करता रहा। २ और उस ने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था अर्थात् नबात के पुत्र यारोबाम जिस ने इस्राएल से पाप कराया था, उसके पापों के अनुसार वह करता रहा, और उनको छोड़ न दिया। ३ इसलिये यहोवा का क्रोध इस्राएलियों के विरुद्ध भड़क उठा, और उस ने उनको अराम के राजा हजाएल, और उसके पुत्र बेन्हदद के अधीन कर दिया। ४ तब यहोआहाज यहोवा के साम्हने गिड़गिड़ाया और यहोवा ने उसकी सुन ली; क्योंकि उस ने इस्राएल पर अन्धेर देखा कि अराम का राजा उन पर कैसा अन्धेर करता था। ५ इसलिये यहोवा ने इस्राएल को एक छुड़ानेवाला दिया और वे अराम के वश से छूट गए; और इस्राएली

अगले दिनों की नाईं फिर अपने अपने डेरे में रहने लगे। ६ तौभी वे ऐसे पापों से न फिरे, जैसे यारोबाम के घराने ने किया, और जिनके अनुसार उस ने इस्राएल से पाप कराए थे : परन्तु उन में चलते रहे, और शोमरोन में अशेरा भी खड़ी रही। ७ अराम के राजा ने तो यहोआहाज की सेना में से केवल पचास सवार, दस रथ, और दस हजार प्यादे छोड़ दिए थे; क्योंकि उस ने उनको नाश किया, और रौंद रौंदकर के धूलि में मिला दिया था *। ८ यहोआहाज के और सब काम जो उस ने किए, और उसकी वीरता, यह सब क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? ९ निदान यहोआहाज अपने पुरखाओं के संग सो गया और शोमरोन में उसे मिट्टी दी गई; और उसका पुत्र योआश उसके स्थान पर राज्य करने लगा ।।

(योआश का राज्य और एलीशा की मृत्यु)

१० यहूदा के राजा योआश के राज्य के सैंतीसवें वर्ष में यहोआहाज का पुत्र यहोआश शोमरोन में इस्राएल पर राज्य करने लगा, और सोलह वर्ष तक राज्य करता रहा। ११ और उस ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, अर्थात् नबात का पुत्र यारोबाम जिस ने इस्राएल से पाप कराया था, उसके पापों के अनुसार वह करता रहा, और उन से अलग न हुआ। १२ योआश के और सब काम जो उस ने किए, और जिस वीरता से वह यहूदा के राजा अमस्याह से लड़ा, यह सब क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? १३ निदान योआश अपने पुरखाओं के संग सो गया और यारोबाम उसकी गद्दी पर विराजमान हुआ; और योआश को शोमरोन में इस्राएल के राजाओं के बीच मिट्टी दी गई ।।

१४ और एलीशा को वह रोग लग गया जिस से वह मरने पर था, तब इस्राएल का राजा योआश उसके पास गया, और उसके ऊपर रोकर कहने लगा, हाय मेरे पिता! हाय मेरे पिता! हाय इस्राएल के रथ और सवारो! एलीशा ने उस से कहा, धनुष और तीर ले आ। १५ वह उसके पास धनुष और तीर ले आया। १६ तब उस ने इस्राएल के राजा से कहा, धनुष पर अपना हाथ लगा। जब उस ने अपना हाथ लगाया, तब एलीशा ने अपने हाथ राजा के हाथों पर धर दिए। १७ तब उस ने कहा, पूर्व की खिड़की खोल। जब उस ने उसे खोल दिया, तब एलीशा ने कहा, तीर छोड़ दे; उस ने तीर छोड़ा। और एलीशा ने कहा, यह तीर यहोवा की ओर से छुटकारे अर्थात् अराम से छुटकारे का चिह्न है, इसलिये तू अपेक में अराम को यहां तक मार लेगा कि उनका अन्त कर डालेगा। १८ फिर उस ने कहा तीरों को ले; और जब उस ने उन्हें लिया, तब उस ने इस्राएल के राजा से कहा, भूमि पर मार; तब वह तीन बार मार कर ठहर गया। १९ और परमेश्वर के जन ने उस पर क्रोधित होकर कहा, तुझे तो पांच छ: बार मारना चाहिये था, ऐसा करने से तो तू अराम को यहां तक मारता कि उनका अन्त कर डालता, परन्तु अब तू उन्हें तीन ही बार मारेगा ।।

२० तब एलीशा मर गया, और उसे मिट्टी दी गई। एक वर्ष के बाद मोआब के दल देश में आए। २१ लोग किसी मनुष्य को मिट्टी दे रहे थे, कि एक दल उन्हें देख

* मूल में—रौंदने के लिये धूलि के समान कर दिया था।

पड़ा तब उन्हों ने उस लोथ को एलीशा की कबर में डाल दिया, और एलीशा की हड्डियों के छूते ही वह जी उठा, और अपने पावों के बल खड़ा हो गया ।।

२२ यहोआहाज के जीवन भर अराम का राजा हजाएल इस्राएल पर अन्धेर ही करता रहा। २३ परन्तु यहोवा ने उन पर अनुग्रह किया, और उन पर दया करके अपनी उस वाचा के कारण जो उस ने इब्राहीम, इसहाक और याकूब से बान्धी थी, उन पर कृपा दृष्टि की, और न तो उन्हें नाश किया, और न अपने साम्हने से निकाल दिया ।।

२४ तब अराम का राजा हजाएल मर गया, और उसका पुत्र बेन्हदद उसके स्थान पर राजा बन गया। २५ और यहोआहाज के पुत्र यहोआश ने हजाएल के पुत्र बेन्हदद के हाथ से वे नगर फिर ले लिए, जिन्हें उस ने युद्ध करके उसके पिता यहोआहाज के हाथ से छीन लिया था। योआश ने उसको तीन बार जीतकर इस्राएल के नगर फिर ले लिए ।।

(अमस्याह का राज्य)

१४ इस्राएल के राजा यहोआहाज के पुत्र योआश के दूसरे वर्ष में यहूदा के राजा योआश का पुत्र अमस्याह राजा हुआ। २ जब वह राज्य करने लगा। तब वह पचीस वर्ष का था, और यरूशलेम में उनतीस वर्ष राज्य करता रहा। और उसकी माता का नाम यहोअद्दीन था, जो यरूशलेम की थी। ३ उस ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था तौभी अपने मूल पुरुष दाऊद की नाईं न किया; उस ने ठीक अपने पिता योआश के से काम किए। ४ उसके दिनों में ऊंचे स्थान गिराए न गए; लोग तब भी उन पर बलि चढ़ाते, और धूप जलाते रहे। ५ जब राज्य उसके हाथ में स्थिर हो गया, तब उस ने अपने उन कर्मचारियों को मार डाला, जिन्हों ने उसके पिता राजा को मार डाला था। ६ परन्तु उन खूनियों के लड़केबालों को उस ने न मार डाला, क्योंकि यहोवा की यह आज्ञा मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखी है, कि पुत्र के कारण पिता न मार डाला जाए, और पिता के कारण पुत्र न मार डाला जाए: जिस ने पाप किया हो, वही उस पाप के कारण मार डाला जाए। ७ उसी अमस्याह ने लोन की तराई में दस हजार एदोमी पुरुष मार डाले, और सेला नगर से युद्ध करके उसे ले लिया, और उसका नाम योक्तेल * रखा, और वह नाम आज तक चलता है ।।

८ तब अमस्याह ने इस्राएल के राजा योआश के पास जो येहू का पोता और यहोआहाज का पुत्र था दूतों से कहला भेजा, कि आ हम एक दूसरे का साम्हना करें। ९ इस्राएल के राजा योआश ने यहूदा के राजा अमस्याह के पास यों कहला भेजा, कि लबानोन पर की एक झड़बेरी ने लबानोन के एक देवदारु के पास कहला भेजा, कि अपनी बेटी मेरे बेटे को ब्याह दे; इतने में लबानोन में का एक बनपशु पास से चला गया और उस झड़बेरी को रौंद डाला। १० तू ने एदोमियों को जीता तो है इसलिये तू फूल उठा है †। उसी पर बड़ाई मारता

* अर्थात् ईश्वर का दबाया।
† मूल में—तेरे मन ने तुझे उठाया है।

हुआ घर में रह जा; तू अपनी हानि के लिये यहां क्यों हाथ उठाता है, जिस से तू क्या वरन यहूदा भी नीचा खाएगा?

११ परन्तु अमस्याह ने न माना। तब इस्राएल के राजा योआश ने चढ़ाई की, और उस ने और यहूदा के राजा अमस्याह ने यहूदा देश के बेतशेमेश में एक दूसरे का साम्हना किया। १२ और यहूदा इस्राएल से हार गया, और एक एक अपने अपने डेरे को भागा। १३ तब इस्राएल के राजा योआश ने यहूदा के राजा अमस्याह को जो अहज्याह का पोता, और योआश का पुत्र था, बेतशेमेश में पकड़ लिया, और यरूशलेम को गया, और यरूशलेम की शहरपनाह में से एप्रैमी फाटक से कोनेवाले फाटक तक चार सौ हाथ गिरा दिए। १४ और जितना सोना, चान्दी और जितने पात्र यहोवा के भवन में और राजभवन के भण्डारों में मिले, उन सब को और बन्धक लोगों को भी लेकर वह शोमरोन को लौट गया।।

१५ योआश के और काम जो उस ने किए, और उसकी वीरता और उस ने किस रीति यहूदा के राजा अमस्याह से युद्ध किया, यह सब क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? १६ निदान योआश अपने पुरखाओं के संग सो गया और उसे इस्राएल के राजाओं के बीच शोमरोन में मिट्टी दी गई; और उसका पुत्र यारोबाम उसके स्थान पर राज्य करने लगा।।

१७ यहोआहाज के पुत्र इस्राएल के राजा यहोआश के मरने के बाद योआश का पुत्र यहूदा का राजा अमस्याह पन्द्रह वर्ष जीवित रहा। १८ अमस्याह के और काम क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? १९ जब यरूशलेम में उसके विरुद्ध राजद्रोह की गोष्ठी की गई, तब वह लाकीश को भाग गया। सो उन्हों ने लाकीश तक उसका पीछा करके उसको वहां मार डाला। २० तब वह घोड़ों पर रखकर यरूशलेम में पहुंचाया गया, और वहां उसके पुरखाओं के बीच उसको दाऊदपुर में मिट्टी दी गई। २१ तब सारी यहूदी प्रजा ने अजर्याह को लेकर, जो सोलह वर्ष का था, उसके पिता अमस्याह के स्थान पर राजा नियुक्त कर दिया। २२ जब राजा अमस्याह अपने पुरखाओं के संग सो गया, उसके बाद अजर्याह ने एलत को दृढ़ करके यहूदा के वश में फिर कर लिया।।

(दूसरे यारोबाम का राज्य)

२३ यहूदा के राजा योआश के पुत्र अमस्याह के राज्य के पन्द्रहवें वर्ष में इस्राएल के राजा योआश का पुत्र यारोबाम शोमरोन में राज्य करने लगा, और एकतालीस वर्ष राज्य करता रहा। २४ उस ने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था; अर्थात् नबात के पुत्र यारोबाम जिस ने इस्राएल से पाप कराया था, उसके पापों के अनुसार वह करता रहा, और उन से वह अलग न हुआ। २५ उस ने इस्राएल का सिवाना हमात की घाटी से ले अराबा के ताल तक ज्यों का त्यों कर दिया, जैसा कि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने अमित्तै के पुत्र अपने दास गथेपेरवासी योना भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था। २६ क्योंकि यहोवा ने इस्राएल का दु:ख देखा कि बहुत ही कठिन * है, वरन क्या बन्धुआ क्या स्वाधीन

* मूल में—कड़वा।

कोई भी बचा न रहा, और न इस्राएल के लिये कोई सहायक था। २७ यहोवा ने नहीं कहा था, कि मैं इस्राएल का नाम धरती पर * से मिटा डालूंगा। सो उस ने योआश के पुत्र यारोबाम के द्वारा उनको छुटकारा दिया॥

२८ यारोबाम के और सब काम जो उस ने किए, और कैसे पराक्रम के साथ उस ने युद्ध किया, और दमिश्क और हमात को जो पहले यहूदा के राज्य में थे इस्राएल के वश में फिर मिला लिया, यह सब क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? २९ निदान यारोबाम अपने पुरखाओं के संग जो इस्राएल के राजा थे सो गया, और उसका पुत्र जकर्याह उसके स्थान पर राज्य करने लगा॥

(अजर्याह का राज्य)

१५ इस्राएल के राजा यारोबाम के सताईसवें वर्ष में यहूदा के राजा अमस्याह का पुत्र अजर्याह राजा हुआ। २ जब वह राज्य करने लगा, तब सोलह वर्ष का था, और यरूशलेम में बावन वर्ष राज्य करता रहा। उसकी माता का नाम यकोल्याह था, जो यरूशलेम की थी। ३ जैसे उसका पिता अमस्याह किया करता था जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था, वैसे ही वह भी करता था। ४ तौभी ऊंचे स्थान गिराए न गए; प्रजा के लोग उस समय भी उन पर बलि चढ़ाते, और धूप जलाते रहे। ५ और यहोवा ने उस राजा को ऐसा मारा, कि वह मरने के दिन तक कोढ़ी रहा, और अलग एक घर में रहता था। और योताम नाम राजपुत्र उसके घराने के काम पर अधिकारी होकर देश के लोगों का न्याय करता था। ६ अजर्याह के और सब काम जो उस ने किए, वह क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? ७ निदान अजर्याह अपने पुरखाओं के संग सो गया और उसको दाऊदपुर में उसके पुरखाओं के बीच मिट्टी दी गई, और उसका पुत्र योताम उसके स्थान पर राज्य करने लगा॥

(जकर्याह का राज्य)

८ यहूदा के राजा अजर्याह के अड़तीसवें वर्ष में यारोबाम का पुत्र जकर्याह इस्राएल पर शोमरोन में राज्य करने लगा, और छः महीने राज्य किया। ९ उस ने अपने पुरखाओं की नाईं वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, अर्थात् नबात के पुत्र यारोबाम जिस ने इस्राएल से पाप कराया था, उसके पापों के अनुसार वह करता रहा, और उन से वह अलग न हुआ। १० और याबेश के पुत्र शल्लूम ने उस से राजद्रोह की गोष्ठी करके उसको प्रजा के साम्हने मारा, और उसका घात करके उसके स्थान पर राजा हुआ। ११ जकर्याह के और काम इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं। १२ यों यहोवा का वह वचन पूरा हुआ, जो उस ने येहू से कहा था, कि तेरे परपोते के पुत्र तक तेरी सन्तान इस्राएल की गद्दी पर बैठती जाएगी। और वैसा ही हुआ॥

(शल्लूम का राज्य)

१३ यहूदा के राजा उज्जियाह के उनतालीसवें वर्ष में याबेश का पुत्र शल्लूम

* मूल में—आकाश के तले।

राज्य करने लगा, और महीने भर शोमरोन में राज्य करता रहा। १४ क्योंकि गादी के पुत्र मनहेम ने, तिर्सा से शोमरोन को जाकर याबेश के पुत्र शल्लूम को वहीं मारा, और उसे घात करके उसके स्थान पर राजा हुआ। १५ शल्लूम के और काम और उस ने राजद्रोह की जो गोष्ठी की, यह सब इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखा है। १६ तब मनहेम ने तिर्सा से जाकर, सब निवासियों और आस पास के देश समेत तिप्सह को इस कारण मार लिया, कि तिप्सहियों ने उसके लिये फाटक न खोले थे, इस कारण उस ने उन्हें मार लिया, और उस में जितनी गर्भवती स्त्रियां थीं, उन सभों को चीर डाला॥

(मनहेम का राज्य)

१७ यहूदा के राजा अजर्याह के उनतालीसवें वर्ष में गादी का पुत्र मनहेम इस्राएल पर राज्य करने लगा, और दस वर्ष शोमरोन में राज्य करता रहा। १८ उस ने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, अर्थात् नबात के पुत्र यारोबाम जिस ने इस्राएल से पाप कराया था, उसके पापों के अनुसार वह करता रहा, और उन से वह जीवन भर अलग न हुआ। १९ अश्शूर के राजा पूल ने देश पर चढ़ाई की, और मनहेम ने उसको हजार किक्कार चान्दी इस इच्छा से दी, कि वह उसका सहायक होकर राज्य को उसके हाथ में स्थिर रखे। २० यह चान्दी अश्शूर के राजा को देने के लिये मनहेम ने बड़े बड़े धनवान इस्राएलियों से ले ली, एक एक पुरुष को पचास पचास शेकेल चान्दी देनी पड़ी; तब अश्शूर का राजा देश को छोड़कर लौट गया। २१ मनहेम के और काम जो उस ने किए, वे सब क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? २२ निदान मनहेम अपने पुरखाओं के संग सो गया और उसका पुत्र पकह्याह उसके स्थान पर राज्य करने लगा॥

(पकह्याह और पेकह का राज्य)

२३ यहूदा के राजा अजर्याह के पचासवें वर्ष में मनहेम का पुत्र पकह्याह शोमरोन में इस्राएल पर राज्य करने लगा, और दो वर्ष तक राज्य करता रहा। २४ उस ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, अर्थात नबात के पुत्र यारोबाम जिस ने इस्राएल से पाप कराया था, उसके पापों के अनुसार वह करता रहा, और उन से वह अलग न हुआ। २५ उसके सरदार रमल्याह के पुत्र पेकह ने उस से राजद्रोह की गोष्ठी करके, शोमरोन के राजभवन के गुम्मट में उसको और उसके संग अर्गोब और अर्ये को मारा; और पेकह के संग पचास गिलादी पुरुष थे, और वह उसका घात करके उसके स्थान पर राजा बन गया। २६ पकह्याह के और सब काम जो उस ने किए, वह इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं॥

(पेकह का राज्य)

२७ यहूदा के राजा अजर्याह के बावनवें वर्ष में रमल्याह का पुत्र पेकह शोमरोन में इस्राएल पर राज्य करने लगा, और बीस वर्ष तक राज्य करता रहा। २८ उस ने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, अर्थात् नबात के पुत्र यारोबाम, जिस ने इस्राएल से पाप

कराया था, उसके पापों के अनुसार वह करता रहा, और उन से वह अलग न हुआ ॥

२९ इस्राएल के राजा पेकह के दिनों में अश्शूर के राजा तिग्लत्पिलेसेर ने आकर इय्योन, अबेल्बेत्माका, यानोह, केदेश और हासोर नाम नगरों को और गिलाद और गालील, वरन नप्ताली के पूरे देश को भी ले लिया, और उनके लोगों को बन्धुआ करके अश्शूर को ले गया। ३० उजिय्याह के पुत्र योताम के बीसवें वर्ष में एला के पुत्र होशे ने रमल्याह के पुत्र पेकह से राजद्रोह की गोष्ठी करके उसे मारा, और उसे घात करके उसके स्थान पर राजा बन गया। ३१ पेकह के और सब काम जो उस ने किए वह इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं ॥

(योताम का राज्य)

३२ रमल्याह के पुत्र इस्राएल के राजा पेकह के दूसरे वर्ष में यहूदा के राजा उजिय्याह का पुत्र योताम राजा हुआ। ३३ जब वह राज्य करने लगा, तब पचीस वर्ष का था, और यरूशलेम में सोलह वर्ष तक राज्य करता रहा। और उसकी माता का नाम यरूशा था जो सादोक की बेटी थी। ३४ उस ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था, अर्थात् जैसा उसके पिता उजिय्याह ने किया था, ठीक वैसा ही उस ने भी किया। ३५ तौभी ऊंचे स्थान गिराए न गए, प्रजा के लोग उन पर उस समय भी बलि चढ़ाते और धूप जलाते रहे। यहोवा के भवन के ऊंचे फाटक को इसी ने बनाया था। ३६ योताम के और सब काम जो उस ने किए, वे क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? ३७ उन दिनों में यहोवा अराम के राजा रसीन को, और रमल्याह के पुत्र पेकह को, यहूदा के विरुद्ध भेजने लगा। ३८ निदान योताम अपने पुरखाओं के संग सो गया और अपने मूलपुरुष दाऊद के नगर में अपने पुरखाओं के बीच उसको मिट्टी दी गई, और उसका पुत्र आहाज उसके स्थान पर राज्य करने लगा ॥

(आहाज का राज्य)

१६ रमल्याह के पुत्र पेकह के सत्रहवें वर्ष में यहूदा के राजा योताम का पुत्र आहाज राज्य करने लगा। २ जब आहाज राज्य करने लगा, तब वह बीस वर्ष का था, और सोलह वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। और उस ने अपने मूलपुरुष दाऊद का सा काम नहीं किया, जो उसके परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में ठीक था। ३ परन्तु वह इस्राएल के राजाओं की सी चाल चला, वरन उन जातियों के घिनौने कामों के अनुसार, जिन्हें यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने से देश से निकाल दिया था, उस ने अपने बेटे को भी आग में होम कर दिया। ४ और ऊंचे स्थानों पर, और पहाड़ियों पर, और सब हरे वृक्षों के तले, वह बलि चढ़ाया और धूप जलाया करता था ॥

५ तब अराम के राजा रसीन, और रमल्याह के पुत्र इस्राएल के राजा पेकह ने लड़ने के लिये यरूशलेम पर चढ़ाई की, और उन्हों ने आहाज को घेर लिया, परन्तु युद्ध करके उन से

कुछ बन न पड़ा। ६ उस समय अराम के राजा रसीन ने, एलत को अराम के वश में करके, यहूदियों को वहां से निकाल दिया; तब अरामी लोग एलत को गए, और आज के दिन तक वहां रहते हैं। ७ और आहाज ने दूत भेजकर अश्शूर के राजा तिग्लत्पिलेसेर के पास कहला भेजा कि मुझे अपना दास, वरन बेटा जानकर चढ़ाई कर, और मुझे अराम के राजा और इस्राएल के राजा के हाथ से बचा जो मेरे विरुद्ध उठे हैं। ८ और आहाज ने यहोवा के भवन में और राजभवन के भण्डारों में जितना सोना-चान्दी मिला उसे अश्शूर के राजा के पास भेंट करके भेज दिया। ९ उसकी मानकर अश्शूर के राजा ने दमिश्क पर चढ़ाई की, और उसे लेकर उसके लोगों को बन्धुआ करके, कीर को ले गया, और रसीन को मार डाला॥

१० तब राजा आहाज अश्शूर के राजा तिग्लत्पिलेसेर से भेंट करने के लिये दमिश्क को गया, और वहां की वेदी देखकर उसकी सब बनावट के अनुसार उसका नकशा ऊरिय्याह याजक के पास नमूना करके भेज दिया। ११ और ठीक इसी नमूने के अनुसार जिसे राजा आहाज ने दमिश्क से भेजा था, ऊरिय्याह याजक ने राजा आहाज के दमिश्क से आने तक एक वेदी बना दी। १२ जब राजा दमिश्क से आया तब उस ने उस वेदी को देखा, और उसके निकट जाकर उस पर बलि चढ़ाए। १३ उसी वेदी पर उस ने अपना होमबलि और अन्नबलि जलाया, और अर्घ दिया और मेलबलियों का लोहू छिड़क दिया। १४ और पीतल की जो वेदी यहोवा के साम्हने रहती थी उसको उस ने भवन के साम्हने से अर्थात् अपनी वेदी और यहोवा के भवन के बीच से हटाकर, उस वेदी की उत्तर ओर रख दिया। १५ तब राजा आहाज ने ऊरिय्याह याजक को यह आज्ञा दी, कि भोर के होमबलि और सांझ के अन्नबलि, राजा के होमबलि और उसके अन्नबलि, और सब साधारण लोगों के होमबलि और अर्घ बड़ी वेदी पर चढ़ाया कर, और होमबलियों और मेलबलियों का सब लोहू उस पर छिड़क; और पीतल की वेदी के विषय में विचार करूंगा। १६ राजा आहाज की इस आज्ञा के अनुसार ऊरिय्याह याजक ने किया। १७ फिर राजा आहाज ने कुर्सियों की पटरियों को काट डाला, और हौदियों को उन पर से उतार दिया, और बड़े हौद को उन पीतल के बैलों पर से जो उसके तले थे उतारकर, पत्थरों के फर्श पर धर दिया। १८ और विश्राम के दिन के लिये जो छाया हुआ स्थान भवन में बना था, और राजा के बाहर के प्रवेश करने का फाटक, उनको उस ने अश्शूर के राजा के कारण यहोवा के भवन से अलग * कर दिया। १९ आहाज के और काम जो उस ने किए, वे क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? २० निदान आहाज अपने पुरखाओं के संग सो गया और उसे उसके पुरखाओं के बीच दाऊदपुर में मिट्टी दी गई, और उसका पुत्र हिजकिय्याह उसके स्थान पर राज्य करने लगा॥

* मूल में—घुमा दिया।

(होशे का राज्य और इस्राएली राज्य का टूट जाना)

१७ यहूदा के राजा आहाज के बारहवें वर्ष में एला का पुत्र होशे शोमरोन में, इस्राएल पर राज्य करने लगा, और नौ वर्ष तक राज्य करता रहा। २ उस ने वही किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, परन्तु इस्राएल के उन राजाओं के बराबर नहीं जो उस से पहिले थे। ३ उस पर अश्शूर के राजा शल्मनेसेर ने चढ़ाई की, और होशे उसके अधीन होकर, उसको भेंट देने लगा। ४ परन्तु अश्शूर के राजा ने होशे को राजद्रोह की गोष्ठी करनेवाला जान लिया, क्योंकि उस ने "सो" नाम मिस्र के राजा के पास दूत भेजे, और अश्शूर के राजा के पास सालियाना भेंट भेजनी छोड़ दी; इस कारण अश्शूर के राजा ने उसको बन्द किया, और बेड़ी डालकर बन्दीगृह में डाल दिया। ५ तब अश्शूर के राजा ने पूरे देश पर चढ़ाई की, और शोमरोन को जाकर तीन वर्ष तक उसे घेरे रहा। ६ होशे के नौवें वर्ष में अश्शूर के राजा ने शोमरोन को ले लिया, और इस्राएल को अश्शूर में ले जाकर, हलह में और गोजान की नदी हाबोर के पास और मादियों के नगरों में बसाया॥

७ इसका यह कारण है, कि यद्यपि इस्राएलियों का परमेश्वर यहोवा उनको मिस्र के राजा फ़िरौन के हाथ से छुड़ाकर मिस्र देश से निकाल लाया था, तौभी उन्हों ने उसके विरुद्ध पाप किया, और पराये देवताओं का भय माना। ८ और जिन जातियों को यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने से देश से निकाला था, उनकी रीति पर, और अपने राजाओं की चलाई हुई रीतियों पर चलते थे। ९ और इस्राएलियों ने कपट करके अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध अनुचित काम किए, अर्थात् पहरुओं के गुम्मट से लेकर गढ़वाले नगर तक अपनी सारी बस्तियों में ऊंचे स्थान बना लिए; १० और सब ऊंची पहाड़ियों पर, और सब हरे वृक्षों के तले लाठें और अशेरा खड़े कर लिए। ११ और ऐसे ऊंचे स्थानों में उन जातियों की नाईं जिनको यहोवा ने उनके साम्हने से निकाल दिया था, धूप जलाया, और यहोवा को क्रोध दिलाने के योग्य बुरे काम किए। १२ और मूरतों की उपासना की, जिसके विषय यहोवा ने उन से कहा था कि तुम यह काम न करना। १३ तौभी यहोवा ने सब भविष्यद्वक्ताओं और सब दर्शियों के द्वारा इस्राएल और यहूदा को यह कह कर चिताया था, कि अपनी बुरी चाल छोड़कर उस सारी व्यवस्था के अनुसार जो मैं ने तुम्हारे पुरखाओं को दी थी, और अपने दास भविष्यद्वक्ताओं के हाथ तुम्हारे पास पहुंचाई है, मेरी आज्ञाओं और विधियों को माना करो। १४ परन्तु उन्हों ने न माना, वरन अपने उन पुरखाओं की नाईं, जिन्हों ने अपने परमेश्वर यहोवा का विश्वास न किया था, वे भी हठीले * बन गए। १५ और वे उसकी विधियां, और अपने पुरखाओं के साथ उसकी वाचा, और जो चितौनियां उस ने उन्हें दी थीं, उनको तुच्छ जानकर, निकम्मी बातों के पीछे हो लिए; जिस से वे आप निकम्मे हो गए, और अपने चारों ओर

* मूल में—कड़ी गर्दनवाले।

की उन जातियों के पीछे भी हो लिए जिनके विषय यहोवा ने उन्हें आज्ञा दी थी कि उनके से काम न करना। १६ वरन उन्हों ने अपने परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाओं को त्याग दिया, और दो बछड़ों की मूरतें ढालकर बनाईं, और अशेरा भी बनाई; और आकाश के सारे गणों को दण्डवत की, और बाल की उपासना की। १७ और अपने बेटे-बेटियों को आग में होम करके चढ़ाया; और भावी कहनेवालों से पूछने, और टोना करने लगे; और जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था जिस से वह क्रोधित भी होता है, उसके करने को अपनी इच्छा से बिक गए*। १८ इस कारण यहोवा इस्राएल से अति क्रोधित हुआ, और उन्हें अपने साम्हने से दूर कर दिया; यहूदा का गोत्र छोड़ और कोई बचा न रहा॥

१९ यहूदा ने भी अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाएं न मानीं, वरन जो विधियां इस्राएल ने चलाई थीं, उन पर चलने लगे। २० तब यहोवा ने इस्राएल की सारी सन्तान को छोड़ कर, उनको दु:ख दिया, और लूटनेवालों के हाथ कर दिया, और अन्त में उन्हें अपने साम्हने से निकाल दिया॥

२१ उस ने इस्राएल को तो दाऊद के घराने के हाथ से छीन लिया, और उन्हों ने नबात के पुत्र यारोबाम को अपना राजा बनाया; और यारोबाम ने इस्राएल को यहोवा के पीछे चलने से दूर खींचकर उन से बड़ा पाप कराया। २२ सो जैसे पाप यारोबाम ने किए थे, वैसे ही पाप इस्राएली भी करते रहे, और उन से अलग न हुए। २३ अन्त में यहोवा ने इस्राएल को अपने साम्हने से दूर कर दिया, जैसे कि उस ने अपने सब दास भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा था। इस प्रकार इस्राएल अपने देश से निकालकर अश्शूर को पहुंचाया गया, जहां वह आज के दिन तक रहता है॥

(इस्राएल के देश में अन्य जातिवालों का बसाया जाना)

२४ और अश्शूर के राजा ने बाबेल, कूता, अव्वा, हमात और सपर्वैम नगरों से लोगों को लाकर, इस्राएलियों के स्थान पर शोमरोन के नगरों में बसाया; सो वे शोमरोन के अधिकारी होकर उसके नगरों में रहने लगे। २५ जब वे वहां पहिले पहिल रहने लगे, तब यहोवा का भय न मानते थे, इस कारण यहोवा ने उनके बीच सिंह भेजे, जो उनको मार डालने लगे। २६ इस कारण उन्हों ने अश्शूर के राजा के पास कहला भेजा कि जो जातियां तू ने उनके देशों से निकालकर शोमरोन के नगरों में बसा दी हैं, वे उस देश के देवता की रीति नहीं जानतीं, इस से उस ने उसके मध्य सिंह भेजे हैं जो उनको इसलिये मार डालते हैं कि वे उस देश के देवता की रीति नहीं जानते। २७ तब अश्शूर के राजा ने आज्ञा दी, कि जिन याजकों को तुम उस देश से ले आए, उन में से एक को वहां पहुंचा दो; और वह वहां जाकर रहे, और वह उनको उस देश के देवता की रीति सिखाए। २८ तब जो याजक शोमरोन से निकाले गए थे, उन में से एक जाकर बेतेल में रहने लगा, और

* मूल में—उन्हों ने अपने को बेच डाला।

उनको सिखाने लगा कि यहोवा का भय किस रीति से मानना चाहिये ।।

२९ तौभी एक एक जाति के लोगों ने अपने अपने निज देवता बनाकर, अपने अपने बसाए हुए नगर में उन ऊंचे स्थानों के भवनों में रखा जो शोमरोनियों ने बसाए थे। ३० बाबेल के मनुष्यों ने तो सुक्कोतबनोत को, कूत के मनुष्यों ने नेर्गल को, हमात के मनुष्यों ने अशीमा को, ३१ और अव्वियों ने निभज, और तर्त्ताक को स्थापित किया; और सपवमी लोग अपने बेटों को अद्रम्मेलेक और अनम्मेलेक नाम सपवैंम के देवताओं के लिये होम करके चढ़ाने लगे। ३२ यों वे यहोवा का भय मानते तो थे, परन्तु सब प्रकार के लोगों में से ऊंचे स्थानों के याजक भी ठहरा देते थे, जो ऊंचे स्थानों के भवनों में उनके लिये बलि करते थे। ३३ वे यहोवा का भय मानते तो थे, परन्तु उन जातियों की रीति पर, जिनके बीच से वे निकाले गए थे, अपने अपने देवताओं की भी उपासना करते रहे। ३४ आज के दिन तक वे अपनी पहिली रीतियों पर चलते हैं, वे यहोवा का भय नहीं मानते ।।

३५ न तो अपनी विधियों और नियमों पर और न उस व्यवस्था और आज्ञा के अनुसार चलते हैं, जो यहोवा ने याकूब की सन्तान को दी थी, जिसका नाम उस ने इस्राएल रखा था। उन से यहोवा ने वाचा बान्धकर उन्हें यह आज्ञा दी थी, कि तुम पराये देवताओं का भय न मानना और न उन्हें दण्डवत करना और न उनकी उपासना करना और न उनको बलि चढ़ाना। ३६ परन्तु यहोवा जो तुम को बड़े बल और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा मिस्र देश से निकाल ले आया, तुम उसी का भय मानना, उसी को दण्डवत करना और उसी को बलि चढ़ाना। ३७ और उस ने जो जो विधियां और नियम और जो व्यवस्था और आज्ञाएं तुम्हारे लिये लिखीं, उन्हें तुम सदा चौकसी से मानते रहो; और पराये देवताओं का भय न मानना। ३८ और जो वाचा मैं ने तुम्हारे साथ बान्धी है, उसे न भूलना और पराये देवताओं का भय न मानना। ३९ केवल अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना, वही तुम को तुम्हारे सब शत्रुओं के हाथ से बचाएगा। ४० तौभी उन्हों ने न माना, परन्तु वे अपनी पहिली रीति के अनुसार करते रहे ।।

४१ अतएव वे जातियां यहोवा का भय मानती तो थीं, परन्तु अपनी खुदी हुई मूरतों की उपासना भी करती रहीं, और जैसे वे * करते थे वैसे ही उनके बेटे पोते भी आज के दिन तक करते हैं ।।

(हिजकिय्याह के राज्य का आरम्भ)

१८ एला के पुत्र इस्राएल के राजा होशे के तीसरे वर्ष में यहूदा के राजा आहाज का पुत्र हिजकिय्याह राजा हुआ। २ जब वह राज्य करने लगा तब पचास वर्ष का था, और उनतीस वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। और उसकी माता का नाम अबी था, जो जकर्याह की बेटी थी। ३ जैसे उसके मूलपुरुष दाऊद ने किया था जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है वैसा ही उस ने भी किया। ४ उस ने ऊंचे स्थान गिरा दिए, लाठों को तोड़ दिया, अशेरा को काट डाला। और पीतल का जो सांप मूसा

---

* मूल में—उनके पुरखा।

ने बनाया था, उसको उस ने इस कारण चूर चूर कर दिया, कि उन दिनों तक इस्राएली उसके लिये धूप जलाते थे; और उस ने उसका नाम नहुशतान* रखा। ५ वह इस्राएल के परमेश्वर यहोवा पर भरोसा रखता था, और उसके बाद यहूदा के सब राजाओं में कोई उसके बराबर न हुआ, और न उस से पहिले भी ऐसा कोई हुआ था। ६ और वह यहोवा से लिपटा रहा और उसके पीछे चलना न छोड़ा; और जो आज्ञाएं यहोवा ने मूसा को दी थीं, उनका वह पालन करता रहा। ७ इसलिये यहोवा उसके संग रहा; और जहां कहीं वह जाता था, वहां उसका काम सफल होता था। और उस ने अश्शूर के राजा से बलवा करके, उसकी अधीनता छोड़ दी। ८ उस ने पलिश्तियों को गाज़ा और उसके सिवानों तक, पहरुओं के गुम्मट और गढ़वाले नगर तक मारा॥

९ राजा हिजकिय्याह के चौथे वर्ष में जो एला के पुत्र इस्राएल के राजा होशे का सातवां वर्ष था, अश्शूर के राजा शल्मनेसेर ने शोमरोन पर चढ़ाई करके उसे घेर लिया। १० और तीन वर्ष के बीतने पर उन्हों ने उसको ले लिया। इस प्रकार हिजकिय्याह के छठवें वर्ष में जो इस्राएल के राजा होशे का नौवां वर्ष था, शोमरोन ले लिया गया। ११ तब अश्शूर का राजा इस्राएल को बन्धुआ करके अश्शूर में ले गया, और हलह में और गोजान की नदी हाबोर के पास और मादियों के नगरों में उसे बसा दिया। १२ इसका कारण यह था, कि उन्हों ने अपने परमेश्वर यहोवा की बात न मानी, वरन उसकी वाचा को तोड़ा, और जितनी आज्ञाएं यहोवा के दास मूसा ने दी थीं, उनको टाल दिया और न उनको सुना और न उनके अनुसार किया॥

(सन्हेरीब की चढ़ाई और उसकी सेना का विनाश)

१३ हिजकिय्याह राजा के चौदहवें वर्ष में अश्शूर के राजा सन्हेरीब ने यहूदा के सब गढ़वाले नगरों पर चढ़ाई करके उनको ले लिया। १४ तब यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने अश्शूर के राजा के पास लाकीश को कहला भेजा, कि मुझ से अपराध हुआ, मेरे पास से लौट जा; और जो भार तू मुझ पर डालेगा उसको मैं उठाऊंगा। तो अश्शूर के राजा ने यहूदा के राजा हिजकिय्याह के लिये तीन सौ किक्कार चान्दी और तीस किक्कार सोना ठहरा दिया। १५ तब जितनी चान्दी यहोवा के भवन और राजभवन के भण्डारों में मिली, उस सब को हिजकिय्याह ने उसे दे दिया। १६ उस समय हिजकिय्याह ने यहोवा के मन्दिर के किवाड़ों से और उन खम्भों से भी जिन पर यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने सोना मढ़ा था, सोने को छीलकर अश्शूर के राजा को दे दिया। १७ तौभी अश्शूर के राजा ने तर्त्तान, रबसारीस और रबशाके को बड़ी सेना देकर, लाकीश से यरूशलेम के पास हिजकिय्याह राजा के विरुद्ध भेज दिया। सो वे यरूशलेम को गए और वहां पहुंचकर ऊपर के पोखरे की नाली के पास धोबियों के खेत की सड़क पर जाकर खड़े हुए। १८ और जब उन्हों ने राजा को पुकारा, तब हिलकिय्याह का

* अर्थात् पीतल का टुकड़ा।

पुत्र एल्याकीम जो राजघराने के काम पर था, और शेब्ना जो मन्त्री था और आसाप का पुत्र योआह जो इतिहास का लिखनेवाला था, ये तीनों उनके पास बाहर निकल गए ॥

१६ रबशाके ने उन से कहा, हिजकिय्याह से कहो, कि महाराजाधिराज अर्थात् अश्शूर का राजा यों कहता है, कि तू किस पर भरोसा करता है? २० तू जो कहता है, कि मेरे यहां युद्ध के लिये युक्ति और पराक्रम है *, सो तो केवल बात ही बात है। तू किस पर भरोसा रखता है कि तू ने मुझ से बलवा किया है? २१ सुन, तू तो उस कुचले हुए नरकट अर्थात् मिस्र पर भरोसा रखता है, उस पर यदि कोई टेक लगाए, तो वह उसके हाथ में चुभकर छेदेगा। मिस्र का राजा फ़िरौन अपने सब भरोसा रखनेवालों के लिये ऐसा ही है। २२ फिर यदि तुम मुझ से कहो, कि हमारा भरोसा अपने परमेश्वर यहोवा पर है, तो क्या यह वही नहीं है जिसके ऊंचे स्थानों और वेदियों को हिजकिय्याह ने दूर करके यहूदा और यरूशलेम से कहा, कि तुम इसी वेदी के साम्हने जो यरूशलेम में है दण्डवत करना? २३ तो अब मेरे स्वामी अश्शूर के राजा के पास कुछ बन्धक रख, तब मैं तुझे दो हजार घोड़े दूंगा, क्या तू उन पर सवार चढ़ा सकेगा कि नहीं? २४ फिर तू मेरे स्वामी के छोटे से छोटे कर्मचारी का भी कहा न मान कर क्यों रथों और सवारों के लिये मिस्र पर भरोसा रखता है?

* मूल में—कर्मचारियों में से एक गवर्नर का भी मुंह फेर के।

२५ क्या मैं ने यहोवा के बिना कहे, इस स्थान को उजाड़ने के लिये चढ़ाई की है? यहोवा ने मुझ से कहा है, कि उस देश पर चढ़ाई करके उसे उजाड़ दे ॥

२६ तब हिलकिय्याह के पुत्र एल्याकीम और शेब्ना योआह ने रबशाके से कहा, अपने दासों से अरामी भाषा में बातें कर, क्योंकि हम उसे समझते हैं; और हम से यहूदी भाषा में शहरपनाह पर बैठे हुए लोगों के सुनते बातें न कर। २७ रबशाके ने उन से कहा, क्या मेरे स्वामी ने मुझे तुम्हारे स्वामी ही के, वा तुम्हारे ही पास ये बातें कहने को भेजा है? क्या उस ने मुझे उन लोगों के पास नहीं भेजा, जो शहरपनाह पर बैठे हैं, ताकि तुम्हारे संग उनको भी अपनी विष्ठा खाना और अपना मूत्र पीना पड़े?

२८ तब रबशाके ने खड़े हो, यहूदी भाषा में ऊंचे शब्द से कहा, महाराजाधिराज अर्थात् अश्शूर के राजा की बात सुनो। २९ राजा यों कहता है, कि हिजकिय्याह तुम को भुलाने न पाए, क्योंकि वह तुम्हें मेरे हाथ से बचा न सकेगा। ३० और वह तुम से यह कहकर यहोवा पर भरोसा कराने न पाए, कि यहोवा निश्चय हम को बचाएगा और यह नगर अश्शूर के राजा के वश में न पड़ेगा। ३१ हिजकिय्याह की मत सुनो। अश्शूर का राजा कहता है कि भेंट भेजकर मुझे प्रसन्न करो * और मेरे पास निकल आओ, और प्रत्येक अपनी अपनी दाखलता और अंजीर के वृक्ष के फल खाता और अपने अपने कुण्ड का पानी पीता रहे। ३२ तब

* मूल में—मेरे साथ आशीर्वाद करो।

में आकर तुम को ऐसे देश में ले जाऊंगा, जो तुम्हारे देश के समान अनाज और नये दाखमधु का देश, रोटी और दाख-बारियों का देश, जलपाइयों और मधु का देश है, वहां तुम मरोगे नहीं, जीवित रहोगे; तो जब हिजकिय्याह यह कहकर तुम को बहकाए, कि यहोवा हम को बचाएगा, तब उसकी न सुनना। ३३ क्या और जातियों के देवताओं ने अपने अपने देश को अश्शूर के राजा के हाथ से कभी बचाया है? ३४ हमात और अर्पाद के देवता कहां रहे? सपर्वैम, हेना और इव्वा के देवता कहां रहे? क्या उन्हों ने शोमरोन को मेरे हाथ से बचाया है? ३५ देश देश के सब देवताओं में से ऐसा कौन है, जिस ने अपने देश को मेरे हाथ से बचाया हो? फिर क्या यहोवा यरूशलेम को मेरे हाथ से बचाएगा॥

३६ परन्तु सब लोग चुप रहे और उसके उत्तर में एक बात भी न कही, क्योंकि राजा की ऐसी आज्ञा थी, कि उसको उत्तर न देना। ३७ तब हिलकिय्याह का पुत्र एल्याकीम जो राजघराने के काम पर था, और शेब्ना जो मन्त्री था, और आसाप का पुत्र योआह जो इतिहास का लिखनेवाला था, अपने वस्त्र फाड़े हुए, हिजकिय्याह के पास जाकर रबशाके की बातें कह सुनाईं॥

१९ जब हिजकिय्याह राजा ने यह सुना, तब वह अपने वस्त्र फाड़, टाट ओढ़कर यहोवा के भवन में गया। २ और उस ने एल्याकीम को जो राजघराने के काम पर था, और शेब्ना मन्त्री को, और याजकों के पुरनियों को, जो सब टाट ओढ़े हुए थे, आमोस के पुत्र यशायाह भविष्यद्वक्ता के पास भेज दिया। ३ उन्हों ने उस से कहा, हिजकिय्याह यों कहता है, आज का दिन संकट, और उलहने, और निन्दा का दिन है; बच्चे जन्मने पर हुए पर जच्चा को जन्म देने का बल न रहा। ४ कदाचित तेरा परमेश्वर यहोवा रबशाके की सब बातें सुने, जिसे उसके स्वामी अश्शूर के राजा ने जीवते परमेश्वर की निन्दा करने को भेजा है, और जो बातें तेरे परमेश्वर यहोवा ने सुनी हैं उन्हें डपटे; इसलिये तू इन बचे हुओं के लिये जो रह गए हैं प्रार्थना कर*। ५ जब हिजकिय्याह राजा के कर्मचारी यशायाह के पास आए, ६ तब यशायाह ने उन से कहा, अपने स्वामी से कहो, यहोवा यों कहता है, कि जो वचन तू ने सुने हैं, जिनके द्वारा अश्शूर के राजा के जनों ने मेरी निन्दा की है, उनके कारण मत डर। ७ सुन, मैं उसके मन में प्रेरणा करूंगा, कि वह कुछ समाचार सुनकर अपने देश को लौट जाए, और मैं उसको उसी के देश में तलवार से मरवा डालूंगा॥

८ तब रबशाके ने लौटकर अश्शूर के राजा को लिब्ना नगर से युद्ध करते पाया, क्योंकि उस ने सुना था कि वह लाकीश के पास से उठ गया है। ९ और जब उस ने कूश के राजा तिर्हाका के विषय यह सुना, कि वह मुझ से लड़ने को निकला है, तब उस ने हिजकिय्याह के पास दूतों को यह कह कर भेजा, १० तुम यहूदा के राजा हिजकिय्याह से यों कहना: तेरा परमेश्वर जिसका तू भरोसा करता है, यह कहकर तुझे धोखा न देने पाए,

* मूल में—प्रार्थना उठा।

कि यरूशलेम अश्शूर के राजा के वश में न पड़ेगा। ११ देख, तू ने तो सुना है अश्शूर के राजाओं ने सब देशों से कैसा व्यवहार किया है उन्हें सत्यानाश कर दिया है। फिर क्या तू बचेगा? १२ गोजान और हारान और रेसेप और तलस्सार में रहनेवाले एदेनी, जिन जातियों को मेरे पुरखाओं ने नाश किया, क्या उन में से किसी जाति के देवताओं ने उसको बचा लिया? १३ हमात का राजा, और अर्पाद का राजा, और सपर्वैम नगर का राजा, और हेना और इव्वा के राजा ये सब कहां रहे? इस पत्री को हिजकिय्याह ने दूतों के हाथ से लेकर पढ़ा। १४ तब यहोवा के भवन में जाकर उसको यहोवा के साम्हने फैला दिया। १५ और यहोवा से यह प्रार्थना की, कि हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा! हे करूबों पर विराजनेवाले! पृथ्वी के सब राज्यों के ऊपर केवल तू ही परमेश्वर है। आकाश और पृथ्वी को तू ही ने बनाया है। १६ हे यहोवा! कान लगाकर सुन, हे यहोवा आंख खोलकर देख, और सन्हेरीब के वचनों को सुन ले, जो उस ने जीवते परमेश्वर की निन्दा करने को कहला भेजे हैं। १७ हे यहोवा, सच तो है, कि अश्शूर के राजाओं ने जातियों को और उनके देशों को उजाड़ा है। १८ और उनके देवताओं को आग में झोंका है, क्योंकि वे ईश्वर न थे; वे मनुष्यों के बनाए हुए काठ और पत्थर ही के थे; इस कारण वे उनको नाश कर सके। १९ इसलिये अब हे हमारे परमेश्वर यहोवा तू हमें उसके हाथ से बचा, कि पृथ्वी के राज्य राज्य के लोग जान लें कि केवल तू ही यहोवा है॥

२० तब आमोस के पुत्र यशायाह ने हिजकिय्याह के पास यह कहला भेजा, कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि जो प्रार्थना तू ने अश्शूर के राजा सन्हेरीब के विषय मुझ से की, उसे मैं ने सुना है। २१ उसके विषय में यहोवा ने यह वचन कहा है, कि सिय्योन की कुमारी कन्या तुझे तुच्छ जानती और तुझे ठट्ठों में उड़ाती है, यरूशलेम की पुत्री, तुझ पर सिर हिलाती है। २२ तू ने जो नामधराई और निन्दा की है, वह किसकी की है? और तू ने जो बड़ा बोल बोला और घमण्ड किया* है वह किसके विरुद्ध किया है? इस्राएल के पवित्र के विरुद्ध तू ने किया है! २३ अपने दूतों के द्वारा तू ने प्रभु की निन्दा करके कहा है, कि बहुत से रथ लेकर मैं पर्वतों की चोटियों पर, वरन लबानोन के बीच तक चढ़ आया हूं, और मैं उसके ऊंचे ऊंचे देवदारुओं और अच्छे अच्छे सनोवरों को काट डालूंगा; और उस में जो सब से ऊंचा टिकने का स्थान होगा उस में और उसके वन की फलदाई बारियों में प्रवेश करूंगा। २४ मैं ने तो खुदवाकर परदेश का पानी पिया; और मिस्र की नहरों में पांव धरते ही उन्हें सुखा डालूंगा। २५ क्या तू ने नहीं सुना, कि प्राचीनकाल से मैं ने यही ठहराया? और अगले दिनों से इसकी तैयारी की थी, उन्हें अब मैं ने पूरा भी किया है, कि तू गढ़वाले नगरों को खण्डहर ही खण्डहर कर दे, २६ इसी कारण उनके रहनेवालों का बल घट गया; वे विस्मित और लज्जित हुए; वे मैदान के छोटे छोटे पेड़ों और

* मूल में—अपनी आंखें ऊपर की ओर उठाईं।

हरी घास और छत पर की घास, और ऐसे अनाज के समान् हो गए, जो बढ़ने से पहिले सूख जाता है। २७ मैं तो तेरा बैठा रहना, और कूच करना, और लौट आना जानता हूं, और यह भी कि तू मुझ पर अपना क्रोध भड़काता है। २८ इस कारण कि तू मुझ पर अपना क्रोध भड़काता और तेरे अभिमान की बातें मेरे कानों में पड़ी हैं, मैं तेरी नाक में अपनी नकेल डालकर और तेरे मुंह में अपना लगाम लगाकर, जिस मार्ग से तू आया है, उसी से तुझे लौटा दूंगा ॥

२९ और तेरे लिये यह चिन्ह होगा, कि इस वर्ष तो तुम उसे खाओगे जो आप से आप उगे, और दूसरे वर्ष उसे जो उत्पन्न हो वह खाओगे; और तीसरे वर्ष बीज बोने और उसे लवने पाओगे, और दाख की बारियां लगाने और उनका फल खाने पाओगे। ३० और यहूदा के घराने के बचे हुए लोग फिर जड़ पकड़ेंगे, * और फलेंगे भी। ३१ क्योंकि यरूशलेम में से बचे हुए और सिय्योन पर्वत के भागे हुए लोग निकलेंगे। यहोवा यह काम अपनी जलन के कारण करेगा ॥

३२ इसलिये यहोवा अश्शूर के राजा के विषय में यों कहता है कि वह इस नगर में प्रवेश करने, वरन इस पर एक तीर भी मारने न पाएगा, और न वह ढाल लेकर इसके साम्हने आने, वा इसके विरुद्ध दमदमा बनाने पाएगा। ३३ जिस मार्ग से वह आया, उसी से वह लौट भी जाएगा, और इस नगर में प्रवेश न करने पाएगा, यहोवा की यही वाणी है। ३४ और मैं अपने निमित्त और अपने दास दाऊद के निमित्त इस नगर की रक्षा करके इसे बचाऊंगा ॥

३५ उसी रात में क्या हुआ, कि यहोवा के दूत ने निकलकर अश्शूरियों की छावनी में एक लाख पचासी हजार पुरुषों को मारा, और भोर को जब लोग सबेरे उठे, तब देखा, कि लोथ ही लोथ पड़ी है। ३६ तब अश्शूर का राजा सन्हेरीब चल दिया, और लौटकर नीनवे में रहने लगा। ३७ वहां वह अपने देवता निस्रोक के मन्दिर में दण्डवत कर रहा था, कि अद्रेम्मेलेक और सरेसेर ने उसको तलवार से मारा, और अरारात देश में भाग गए। और उसी का पुत्र एसर्हद्दोन उसके स्थान पर राज्य करने लगा ॥

(हिजकिय्याह का मृत्यु से बचना)

२० उन दिनों में हिजकिय्याह ऐसा रोगी हुआ कि मरने पर था, और आमोस के पुत्र यशायाह भविष्यद्वक्ता ने उसके पास जाकर कहा, यहोवा यों कहता है, कि अपने घराने के विषय जो आज्ञा देनी हो वह दे; क्योंकि तू नहीं बचेगा, मर जाएगा। २ तब उस ने भीत की ओर मुंह फेर, यहोवा से प्रार्थना करके कहा, हे यहोवा! ३ मैं बिन्ती करता हूं, स्मरण कर, कि मैं सच्चाई और खरे मन से अपने को तेरे सम्मुख जानकर * चलता आया हूं; और जो तुझे अच्छा लगता है वही मैं करता आया हूं। तब हिजकिय्याह बिलक बिलक कर रोया। ४ और ऐसा हुआ कि यशायाह नगर के बीच तक जाने भी न पाया था कि यहोवा का यह वचन उसके पास पहुंचा, ५ कि

* मूल में—नीचे की ओर जड़।

* मूल में—मेरे साम्हने।

लौटकर मेरी प्रजा के प्रधान हिजकिय्याह से कह, कि तेरे मूलपुरुष दाऊद का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी और तेरे आंसू देखे हैं; देख, मैं तुझे चंगा करता हूं; परसों तू यहोवा के भवन में जा सकेगा। ६ और मैं तेरी आयु पन्द्रह वर्ष और बढ़ा दूंगा। और अश्शूर के राजा के हाथ से तुझे और इस नगर को बचाऊंगा, और मैं अपने निमित्त और अपने दास दाऊद के निमित्त इस नगर की रक्षा करूंगा। ७ तब यशायाह ने कहा, अंजीरों की एक टिकिया लो। जब उन्हों ने उसे लेकर फोड़े पर बान्धा, तब वह चंगा हो गया॥

८ हिजकिय्याह ने यशायाह से पूछा, यहोवा जो मुझे चंगा करेगा और मैं परसों यहोवा के भवन को जा सकूंगा, इसका क्या चिन्ह होगा? ९ यशायाह ने कहा, यहोवा जो अपने कहे हुए वचन को पूरा करेगा, इस बात का यहोवा की ओर से तेरे लिये यह चिन्ह होगा, कि धूपघड़ी की छाया दस अंश आगे बढ़ जाएगी, वा दस अंश घट जाएगी। १० हिजकिय्याह ने कहा, छाया का दस अंश आगे बढ़ना तो हलकी बात है, इसलिए ऐसा हो कि छाया दस अंश पीछे लौट जाए। ११ तब यशायाह भविष्यद्वक्ता ने यहोवा को पुकारा, और आहाज की धूपघड़ी की छाया, जो दस अंश ढल चुकी थी, यहोवा ने उसको पीछे की ओर लौटा दिया॥

(हिजकिय्याह का गर्व और उसका दण्ड)

१२ उस समय बलदान का पुत्र बरोदकबलदान जो बाबेल का राजा था, उस ने हिजकिय्याह के रोगी होने की चर्चा सुनकर, उसके पास पत्री और भेंट भेजी। १३ उनके लानेवालों की मानकर हिजकिय्याह ने उनको अपने अनमोल पदार्थों का सब भण्डार, और चान्दी और सोना और सुगन्ध द्रव्य और उत्तम तेल और अपने हथियारों का पूरा घर और अपने भण्डारों में जो जो वस्तुएं थीं, वे सब दिखाईं; हिजकिय्याह के भवन और राज्य भर में कोई ऐसी वस्तु न रही, जो उस ने उन्हें न दिखाई हो। १४ तब यशायाह भविष्यद्वक्ता ने हिजकिय्याह राजा के पास जाकर पूछा, वे मनुष्य क्या कह गए? और कहां से तेरे पास आए थे? हिजकिय्याह ने कहा, वे तो दूर देश से अर्थात् बाबेल से आए थे। १५ फिर उस ने पूछा, तेरे भवन में उन्हों ने क्या क्या देखा है? हिजकिय्याह ने कहा, जो कुछ मेरे भवन में है, वह सब उन्हों ने देखा। मेरे भण्डारों में कोई ऐसी वस्तु नहीं, जो मैं ने उन्हें न दिखाई हो। १६ यशायाह ने हिजकिय्याह से कहा, यहोवा का वचन सुन ले। १७ ऐसे दिन आनेवाले हैं, जिन में जो कुछ तेरे भवन में है, और जो कुछ तेरे पुरखाओं का रखा हुआ आज के दिन तक भण्डारों में है वह सब बाबेल को उठ जाएगा; यहोवा यह कहता है, कि कोई वस्तु न बचेगी। १८ और जो पुत्र तेरे वंश में उत्पन्न हों, उन में से भी कितनों को वे बन्धुआई में ले जाएंगे; और वे खोजे बनकर बाबेल के राजभवन में रहेंगे। १९ हिजकिय्याह ने यशायाह से कहा, यहोवा का वचन जो तू ने कहा है, वह भला ही है, फिर उस ने कहा, क्या मेरे दिनों में शांति और सच्चाई बनी न

रहेंगी ? २० हिजकिय्याह के और सब काम और उसकी सारी वीरता और किस रीति उस ने एक पोखरा और नाली खुदवाकर नगर में पानी पहुंचा दिया, यह सब क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है ? २१ निदान हिजकिय्याह अपने पुरखाओं के संग सो गया और उसका पुत्र मनश्शे उसके स्थान पर राज्य करने लगा ।।

(मनश्शे का राज्य)

२१ जब मनश्शे राज्य करने लगा, तब वह बारह वर्ष का था, और यरूशलेम में पचपन वर्ष तक राज्य करता रहा; और उसकी माता का नाम हेप्सीबा था। २ उस ने उन जातियों के घिनौने कामों के अनुसार, जिनको यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने देश से निकाल दिया था, वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था। ३ उस ने उन ऊंचे स्थानों को जिनको उसके पिता हिजकिय्याह ने नाश किया था, फिर बनाया, और इस्राएल के राजा अहाब की नाईं बाल के लिये वेदियां और एक अशेरा बनवाई, और आकाश के कुल गण को दण्डवत और उनकी उपासना करता रहा। ४ और उस ने यहोवा के उस भवन में वेदियां बनाईं जिसके विषय यहोवा ने कहा था, कि यरूशलेम में मैं अपना नाम रखूंगा। ५ वरन यहोवा के भवन के दोनों आंगनों में भी उस ने आकाश के कुल गण के लिये वेदियां बनाईं। ६ फिर उस ने अपने बेटे को आग में होम करके चढ़ाया; और शुभ-अशुभ मुहूर्त्तों को मानता, और टोना करता, और ओझों और भूत सिद्धिवालों से व्यवहार करता था; वरन उस ने ऐसे बहुत से काम किए जो यहोवा की दृष्टि में बुरे हैं, और जिन से वह क्रोधित होता है। ७ और अशेरा की जो मूरत उस ने खुदवाई, उसको उस ने उस भवन में स्थापित किया, जिसके विषय यहोवा ने दाऊद और उसके पुत्र सुलैमान से कहा था, कि इस भवन में और यरूशलेम में, जिसको मैं ने इस्राएल के सब गोत्रों में से चुन लिया है, मैं सदैव अपना नाम रखूंगा। ८ और यदि वे मेरी सब आज्ञाओं के और मेरे दास मूसा की दी हुई पूरी व्यवस्था के अनुसार करने की चौकसी करें, तो मैं ऐसा न करूंगा कि जो देश मैं ने इस्राएल के पुरखाओं को दिया था, उस से वे फिर निकलकर मारे मारे फिरें। ९ परन्तु उन्हों ने न माना, वरन मनश्शे ने उनको यहां तक भटका दिया कि उन्हों ने उन जातियों से भी बढ़कर बुराई की जिन्हें यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने से विनाश किया था ।।

१० इसलिये यहोवा ने अपने दास भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा, ११ कि यहूदा के राजा मनश्शे ने जो ये घृणित काम किए, और जितनी बुराइयां एमोरियों ने जो उस से पहिले थे की थीं, उन से भी अधिक बुराइयां कीं; और यहूदियों से अपनी बनाई हुई मूरतों की पूजा करवा के उन्हें पाप में फंसाया है। १२ इस कारण इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि सुनो, मैं यरूशलेम और यहूदा पर ऐसी विपत्ति डालना चाहता हूं कि जो कोई उसका समाचार सुनेगा वह बड़े सन्नाटे में आ जाएगा *। १३ और जो

* मूल में—उसके दोनों कान सनसना जाएंगे।

मापने की डोरी मैं ने शोमरोन पर डाली है और जो साहुल मैं ने अहाब के घराने पर लटकाया है वही यरूशलेम पर डालूंगा। और मैं यरूशलेम को ऐसा पोछूंगा जैसे कोई थाली को पोंछता है और उसे पोंछकर उलट देता है। १४ और मैं अपने निज भाग के बचे हुओं को त्यागकर शत्रुओं के हाथ कर दूंगा और वे अपने सब शत्रुओं के लिए लूट और धन बन जाएंगे। १५ इसका कारण यह है, कि जब से उनके पुरखा मिस्र से निकले तब से आज के दिन तक वे वह काम करके जो मेरी दृष्टि में बुरा है, मुझे रिस दिलाते आ रहे हैं॥

१६ मनश्शे ने तो न केवल वह काम कराके यहूदियों से पाप कराया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, वरन निर्दोषों का खून बहुत बहाया, यहां तक कि उस ने यरूशलेम को एक सिरे से दूसरे सिरे तक खून से भर दिया। १७ मनश्शे के और सब काम जो उस ने किए, और जो पाप उस ने किए, वह सब क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? १८ निदान मनश्शे अपने पुरखाओं के संग सो गया और उसे उसके भवन की बारी में जो उज्जर की बारी कहलाती थी मिट्टी दी गई; और उसका पुत्र आमोन उसके स्थान पर राजा हुआ॥

(आमोन का राज्य)

१९ जब आमोन राज्य करने लगा, तब वह बाईस वर्ष का था, और यरूशलेम में दो वर्ष तक राज्य करता रहा; और उसकी माता का नाम मशुल्लेमेत था जो योत्बावासी हारूस की बेटी थी। २० और उस ने अपने पिता मनश्शे की नाईं वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है। २१ और वह अपने पिता के समान पूरी चाल चला, और जिन मूरतों की उपासना उसका पिता करता था, उनकी वह भी उपासना करता, और उन्हें दण्डवत करता था। २२ और उस ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को त्याग दिया, और यहोवा के मार्ग पर न चला। २३ और आमोन के कर्मचारियों ने द्रोह की गोष्ठी करके राजा को उसी के भवन में मार डाला। २४ तब साधारण लोगों ने उन सभों को मार डाला, जिन्हों ने राजा आमोन से द्रोह की गोष्ठी की थी, और लोगों ने उसके पुत्र योशिय्याह को उसके स्थान पर राजा किया। २५ आमोन के और काम जो उस ने किए, वह क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं। २६ उसे भी उज्जर की बारी में उसकी निज कबर में मिट्टी दी गई; और उसका पुत्र योशिय्याह उसके स्थान पर राज्य करने लगा॥

(योशिय्याह के राज्य में व्यवस्था की पुस्तक का मिलना)

२२ जब योशिय्याह राज्य करने लगा, तब वह आठ वर्ष का था, और यरूशलेम में एकतीस वर्ष तक राज्य करता रहा। और उसकी माता का नाम यदीदा था जो बोस्कतवासी अदाया की बेटी थी। २ उस ने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है और जिस मार्ग पर उसका मूलपुरुष दाऊद चला ठीक उसी पर वह भी चला, और उस से न तो दाहिनी ओर और न बाईं ओर मुड़ा॥

३ अपने राज्य के अठारहवें वर्ष में राजा योशिय्याह ने असल्याह के पुत्र शापान मंत्री को जो मशुल्लाम का पोता था, यहोवा के भवन में यह कहकर भेजा, कि हिलकिय्याह महायाजक के पास जाकर कह, ४ कि जो चान्दी यहोवा के भवन में लाई गई है, और द्वारपालों ने प्रजा से इकट्ठी की है, ५ उसको जोड़कर, उन काम करानेवालों को सौंप दे, जो यहोवा के भवन के काम पर मुखिये हैं; फिर वे उसको यहोवा के भवन में काम करनेवाले कारीगरों को दें, इसलिये कि उस में जो कुछ टूटा फूटा हो उसकी वे मरम्मत करें। ६ अर्थात् बढ़इयों, राजों और संगतराशों को दें, और भवन की मरम्मत के लिये लकड़ी और गढ़े हुए पत्थर मोल लेने में लगाएं। ७ परन्तु जिनके हाथ में वह चान्दी सौंपी गई, उन से हिसाब न लिया गया, क्योंकि वे सच्चाई से काम करते थे। ८ और हिलकिय्याह महायाजक ने शापान मंत्री से कहा, मुझे यहोवा के भवन में व्यवस्था की पुस्तक मिली है; तब हिलकिय्याह ने शापान को वह पुस्तक दी, और वह उसे पढ़ने लगा। ९ तब शापान मंत्री ने राजा के पास लौटकर यह सन्देश दिया, कि जो चान्दी भवन में मिली, उसे तेरे कर्मचारियों ने थैलियों में डाल कर, उनको सौंप दिया जो यहोवा के भवन में काम करानेवाले हैं। १० फिर शापान मंत्री ने राजा को यह भी बता दिया, कि हिलकिय्याह याजक ने उसे एक पुस्तक दी है। तब शापान उसे राजा को पढ़कर सुनाने लगा॥

११ व्यवस्था की उस पुस्तक की बातें सुनकर राजा ने अपने वस्त्र फाड़े। १२ फिर उस ने हिलकिय्याह याजक, शापान के पुत्र अहीकाम, मीकायाह के पुत्र अकबोर, शापान मंत्री और असाया नाम अपने एक कर्मचारी को आज्ञा दी, १३ कि यह पुस्तक जो मिली है, उसकी बातों के विषय तुम जाकर मेरी और प्रजा की और सब यहूदियों की ओर से यहोवा से पूछो, क्योंकि यहोवा की बड़ी ही जलजलाहट हम पर इस कारण भड़की है, कि हमारे पुरखाओं ने इस पुस्तक की बातें न मानीं कि कुछ हमारे लिये लिखा है, उसके अनुसार करते॥

१४ हिलकिय्याह याजक और अहीकाम, अकबोर, शापान और असाया ने हुल्दा नबिया के पास जाकर उस से बातें कीं, वह उस शल्लूम की पत्नी थी जो तिकवा का पुत्र और हर्हस का पोता और वस्त्रों का रखवाला था, (और वह स्त्री यरूशलेम के नये टोले में रहती थी)। १५ उस ने उन से कहा, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि जिस पुरुष ने तुम को मेरे पास भेजा, उस से यह कहो, १६ यहोवा यों कहता है, कि सुन, जिस पुस्तक को यहूदा के राजा ने पढ़ा है, उसकी सब बातों के अनुसार मैं इस स्थान और इसके निवासियों पर विपत्ति डाला चाहता हूं। १७ उन लोगों ने मुझे त्याग कर पराये देवताओं के लिये धूप जलाया और अपनी बनाई हुई सब वस्तुओं के द्वारा मुझे क्रोध दिलाया है, इस कारण मेरी जलजलाहट इस स्थान पर भड़केगी और फिर शांत न होगी। १८ परन्तु यहूदा का राजा जिस ने तुम्हें यहोवा से पूछने को भेजा है उस से तुम यों कहो, कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है।

१९ इसलिये कि तू वे बातें सुनकर दीन हुआ, और मेरी वे बातें सुनकर कि इस स्थान और इसके निवासियों को देखकर लोग चकित होंगे, और शाप दिया करेंगे, तू ने यहोवा के साम्हने अपना सिर नवाया, और अपने वस्त्र फाड़कर मेरे साम्हने रोया है, इस कारण मैं ने तेरी सुनी है, यहोवा की यही वाणी है। २० इसलिये देख, मैं ऐसा करूंगा, कि तू अपने पुरखाओं के संग मिल जाएगा, और तू शांति से अपनी कबर को पहुंचाया जाएगा, और जो विपत्ति मैं इस स्थान पर डाला चाहता हूं, उस में से तुझे अपनी आंखों से कुछ भी देखना न पड़ेगा। तब उन्हों ने लौटकर राजा को यही सन्देश दिया ॥

(योशिय्याह का मूर्त्तिपूजा को बन्द करना)

२३ राजा ने यहूदा और यरूशलेम के सब पुरनियों को अपने पास इकट्ठा बुलवाया। २ और राजा, यहूदा के सब लोगों और यरूशलेम के सब निवासियों और याजकों और नबियों वरन छोटे बड़े सारी प्रजा के लोगों को संग लेकर यहोवा के भवन में गया। तब उस ने जो वाचा की पुस्तक यहोवा के भवन में मिली थी, उसकी सब बातें उनको पढ़कर सुनाई। ३ तब राजा ने खम्भे के पास खड़ा होकर यहोवा से इस आशय की वाचा बान्धी, कि मैं यहोवा के पीछे पीछे चलूंगा, और अपने सारे मन और सारे प्राण से उसकी आज्ञाएं, चितौनियां और विधियों का नित पालन किया करूंगा? और इस वाचा की बातों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं पूरी करूंगा। और सब प्रजा वाचा में सम्भागी* हुई। ४ तब राजा ने हिलकिय्याह महायाजक और उसके नीचे के याजकों और द्वारपालों को आज्ञा दी, कि जितने पात्र बाल और अशेरा और आकाश के सब गण के लिये बने हैं, उन सभों को यहोवा के मन्दिर में से निकाल ले आओ। तब उस ने उनको यरूशलेम के बाहर किद्रोन के खेतों में फूंककर उनकी राख बेतेल को पहुंचा दी। ५ और जिन पुजारियों को यहूदा के राजाओं ने यहूदा के नगरों के ऊंचे स्थानों में और यरूशलेम के आस पास के स्थानों में धूप जलाने के लिये ठहराया था, उनको और जो बाल और सूर्य-चन्द्रमा, राशिचक्र और आकाश के कुल गण को धूप जलाते थे, उनको भी राजा ने दूर कर दिया। ६ और वह अशेरा को यहोवा के भवन में से निकालकर यरूशलेम के बाहर किद्रोन नाले में लिवा ले गया और वहीं उसको फूंक दिया, और पीसकर बुकनी कर दिया। तब वह बुकनी साधारण लोगों की कबरों पर फेंक दी। ७ फिर पुरुषगामियों के घर जो यहोवा के भवन में थे, जहां स्त्रियां अशेरा के लिये पर्दे बुना करती थीं, उनको उस ने ढा दिया। ८ और उस ने यहूदा के सब नगरों से याजकों को बुलवाकर गेबा से बेर्शेबा तक के उन ऊंचे स्थानों को, जहां उन याजकों ने धूप जलाया था, अशुद्ध कर दिया; और फाटकों के ऊंचे स्थान अर्थात् जो स्थान नगर के यहोशू नाम हाकिम के फाटक पर थे, और नगर के फाटक के भीतर जानेवाले की बाईं ओर थे, उनको

* मूल में—खड़ी।

उस ने ढा दिया। ६ तौभी ऊंचे स्थानों के याजक यरूशलेम में यहोवा की वेदी के पास न आए, वे अखमीरी रोटी अपने भाइयों के साथ खाते थे। १० फिर उस ने तोपेत को जो हिन्नोमवंशियों की तराई में था, अशुद्ध कर दिया, ताकि कोई अपने बेटे वा बेटी को मोलेक के लिये आग में होम करके न चढ़ाए। ११ और जो घोड़े यहूदा के राजाओं ने सूर्य को अर्पण करके, यहोवा के भवन के द्वार पर नतन्मेलेक नाम खोजे की बाहर की कोठरी में रखे थे, उनको उस ने दूर किया, और सूर्य के रथों को आग में फूंक दिया। १२ और आहाज की अटारी की छत पर जो वेदियां यहूदा के राजाओं की बनाई हुई थीं, और जो वेदिया मनश्शे ने यहोवा के भवन के दोनों आंगनों में बनाई थीं, उनको राजा ने ढाकर पीस डाला और उनकी बुकनी किद्रोन नाले में फेंक दी। १३ और जो ऊंचे स्थान इस्राएल के राजा सुलैमान ने यरूशलेम की पूर्व ओर और विकारी नाम पहाड़ी की दक्खिन अलंग, अश्तोरेत नाम सीदोनियों की घिनौनी देवी, और कमोश नाम मोआबियों के घिनौने देवता, और मिल्कोम नाम अम्मोनियों के घिनौने देवता के लिये बनवाए थे, उनको राजा ने अशुद्ध कर दिया। १४ और उस ने लाठों को तोड़ दिया और अशेरों को काट डाला, और उनके स्थान मनुष्यों की हड्डियों से भर दिए। १५ फिर बेतेल में जो वेदी थी, और जो ऊंचा स्थान नबात के पुत्र यारोबाम ने बनाया था, जिस ने इस्राएल से पाप कराया था, उस वेदी और उस ऊंचे स्थान को उस ने ढा दिया, और ऊंचे स्थान को फूंककर बुकनी कर दिया और अशेरा को फूंक दिया। १६ और योशिय्याह ने फिर कर वहां के पहाड़ की कबरों को देखा, और लोगों को भेजकर उन कबरों से हड्डियां निकलवा दीं और वेदी पर जलवाकर उसको अशुद्ध किया। यह यहोवा के उस वचन के अनुसार हुआ, जो परमेश्वर के उस भक्त ने पुकारकर कहा था जिस ने इन्हीं बातों की चर्चा की थी। १७ तब उस ने पूछा, जो खम्भा मुझे दिखाई पड़ता है, वह क्या है? तब नगर के लोगों ने उस से कहा, वह परमेश्वर के उस भक्त जन की कबर है, जिस ने यहूदा से आकर इसी काम की चर्चा पुकारकर की जो तू ने बेतेल की वेदी से किया है। १८ तब उस ने कहा, उसको छोड़ दो; उसकी हड्डियों को कोई न हटाए। तब उन्हों ने उसकी हड्डियां उस नबी की हड्डियों के संग जो शोमरोन से आया था, रहने दीं। १९ फिर ऊंचे स्थान के जितने भवन शोमरोन के नगरों में थे, जिनको इस्राएल के राजाओं ने बनाकर यहोवा को रिस दिलाई थी, उन सभों को योशिय्याह ने गिरा दिया; और जैसा जैसा उस ने बेतेल में किया था, वैसा वैसा उन से भी किया। २० और उन ऊंचे स्थानों के जितने याजक वहां थे उन सभों को उस ने उन्हीं वेदियों पर बलि किया और उन पर मनुष्यों की हड्डियां जलाकर यरूशलेम को लौट गया॥

(योशिय्याह का उत्तर चरित्र)

२१ और राजा ने सारी प्रजा के लोगों को आज्ञा दी, कि इस वाचा की पुस्तक में जो कुछ लिखा है, उसके अनुसार अपने परमेश्वर यहोवा के लिये फसह का पर्ब

मानो। २२ निश्चय ऐसा फसह न तो न्यायियों के दिनों में माना गया था जो इस्राएल का न्याय करते थे, और न इस्राएल वा यहूदा के राजाओं के दिनों में माना गया था। २३ राजा योशिय्याह के अठारहवें वर्ष में यहोवा के लिये यरूशलेम में यह फसह माना गया।।

२४ फिर ओझे, भूतसिद्धिवाले, गृह-देवता, मूरतें और जितनी घिनौनी वस्तुएं यहूदा देश और यरूशलेम में जहां कहीं दिखाई पड़ीं, उन सभों को योशिय्याह ने इस मनसा से नाश किया, कि व्यवस्था की जो बातें उस पुस्तक में लिखी थी जो हिलकिय्याह याजक को यहोवा के भवन में मिली थी, उनको वह पूरी करे। २५ और उसके तुल्य न तो उस से पहिले कोई ऐसा राजा हुआ और न उसके बाद ऐसा कोई राजा उठा, जो मूसा की पूरी व्यवस्था के अनुसार अपने पूर्ण मन और पूर्ण प्राण और पूर्ण शक्ति से यहोवा की ओर फिरा हो।।

२६ तौभी यहोवा का भड़का हुआ बड़ा कोप शान्त न हुआ, जो इस कारण से यहूदा पर भड़का था, कि मनश्शे ने यहोवा को क्रोध पर क्रोध दिलाया था। २७ और यहोवा ने कहा था जैसे मैं ने इस्राएल को अपने साम्हने से दूर किया, वैसे ही यहूदा को भी दूर करूंगा; और इस यरूशलेम नगर से जिसे मैं ने चुना और इस भवन से जिसके विषय मैं ने कहा, कि यह मेरे नाम का निवास होगा, मैं हाथ उठाऊंगा।।

२८ योशिय्याह के और सब काम जो उस ने किए, वह क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? २९ उसके दिनों में फ़िरौन-नको नाम मिस्र का राजा अश्शूर के राजा के विरुद्ध परात महानद तक गया तो योशिय्याह राजा भी उसका साम्हना करने को गया, और उस ने उसको देखते ही मगिद्दो में मार डाला। ३० तब उसके कर्मचारियों ने उसकी लोथ एक रथ पर रख मगिद्दो से ले जाकर यरूशलेम को पहुंचाई और उसकी निज कबर में रख दी। तब साधारण लोगों ने योशिय्याह के पुत्र यहोआहाज को लेकर उसका अभिषेक करके, उसके पिता के स्थान पर राजा नियुक्त किया।।

(यहोआहाज का राज्य)

३१ जब यहोआहाज राज्य करने लगा, तब वह तेईस वर्ष का था, और तीन महीने तक यरूशलेम में राज्य करता रहा; और उसकी माता का नाम हमूतल था, जो लिब्नावासी यिर्मयाह की बेटी थी। ३२ उस ने ठीक अपने पुरखाओं की नाईं वही किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है। ३३ उसको फ़िरौन-नको ने हमात देश के रिबला नगर में बान्ध रखा, ताकि वह यरूशलेम में राज्य न करने पाए, फिर उस ने देश पर सौ किक्कार चान्दी और किक्कार भर सोना जुरमाना किया। ३४ तब फ़िरौन-नको ने योशिय्याह के पुत्र एल्याकीम को उसके पिता योशिय्याह के स्थान पर राजा नियुक्त किया, और उसका नाम बदलकर यहोयाकीम रखा; और यहोआहाज को ले गया। सो यहोआहाज मिस्र में जाकर वहीं मर गया। ३५ यहोयाकीम ने फ़िरौन को वह चान्दी और सोना तो दिया परन्तु देश पर इसलिये कर लगाया कि फ़िरौन

की आज्ञा के अनुसार उसे दे सके, अर्थात् देश के सब लोगों से जितना जिस पर लगान लगा, उतनी चान्दी और सोना उस से फ़िरौन-नको को देने के लिये ले लिया ।।

(यहोयाकीम का राज्य)

३६ जब यहोयाकीम राज्य करने लगा, तब वह पचीस वर्ष का था, और ग्यारह वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा; और उसकी माता का नाम जबीदा था जो रूमावासी अदायाह की बेटी थी। ३७ उस ने ठीक अपने पुरखाओं की नाईं वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है ।।

२४ उसके दिनों में बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने चढ़ाई की और यहोयाकीम तीन वर्ष तक उसके अधीन रहा; तब उस ने फिर कर उस से बलवा किया। २ तब यहोवा ने उसके विरुद्ध और यहूदा को नाश करने के लिये कसदियों, अरामियों, मोआबियों और अम्मोनियों के दल भेजे, यह यहोवा के उस वचन के अनुसार हुआ, जो उस ने अपने दास भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा था। ३ निःसन्देह यह यहूदा पर यहोवा की आज्ञा से हुआ, ताकि वह उनको अपने साम्हने से दूर करे। यह मनश्शे के सब पापों के कारण हुआ। ४ और निर्दोषों के उस खून के कारण जो उस ने किया था; क्योंकि उस ने यरूशलेम को निर्दोषों के खून से भर दिया था, जिसको यहोवा ने क्षमा करना न चाहा। ५ यहोयाकीम के और सब काम जो उस ने किए, वह क्या यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? ६ निदान यहोयाकीम अपने पुरखाओं के संग सो गया और उसका पुत्र यहोयाकीन उसके स्थान पर राजा हुआ। ७ और मिस्र का राजा अपने देश से बाहर फिर कभी न आया, क्योंकि बाबेल के राजा ने मिस्र के नाले से लेकर परात महानद तक जितना देश मिस्र के राजा का था, सब को अपने वश में कर लिया था ।।

(यहोयाकीन का राज्य)

८ जब यहोयाकीन राज्य करने लगा, तब वह अठारह वर्ष का था, और तीन महीने तक यरूशलेम में राज्य करता रहा; और उसकी माता का नाम नहुश्ता था, जो यरूशलेम के एलनातान की बेटी थी। ९ उस ने ठीक अपने पिता की नाईं वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है। १० उसके दिनों में बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के कर्मचारियों ने यरूशलेम पर चढ़ाई करके नगर को घेर लिया। ११ और जब बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के कर्मचारी नगर को घेरे हुए थे, तब वह आप वहां आ गया। १२ और यहूदा का राजा यहोयाकीन अपनी माता और कर्मचारियों, हाकिमों और खोजों को संग लेकर बाबेल के राजा के पास गया, और बाबेल के राजा ने अपने राज्य के आठवें वर्ष में उनको पकड़ लिया। १३ तब उस ने यहोवा के भवन में और राजभवन में रखा हुआ पूरा धन वहां से निकाल लिया और सोने के जो पात्र इस्राएल के राजा सुलैमान ने बनाकर यहोवा के मन्दिर में रखे थे, उन सभों को उस ने टुकड़े टुकड़े कर डाला, जैसा कि यहोवा

ने कहा था। १४ फिर वह पूरे यरूशलेम को अर्थात् सब हाकिमों और सब धनवानों को जो मिलकर दस हजार थे, और सब कारीगरों और लोहारों को बन्धुआ करके ले गया, यहां तक कि साधारण लोगों में से कंगालों को छोड़ और कोई न रह गया। १५ और वह यहोयाकीन को बाबेल में ले गया और उसकी माता और स्त्रियों और खोजों को और देश के बड़े लोगों को वह बन्धुआ करके यरूशलेम से बाबेल को ले गया। १६ और सब धनवान जो सात हजार थे, और कारीगर और लोहार जो मिलकर एक हजार थे, और वे सब वीर और युद्ध के योग्य थे, उन्हें बाबेल का राजा बन्धुआ करके बाबेल को ले गया। १७ और बाबेल के राजा ने उसके स्थान पर उसके चाचा मत्तन्याह को राजा नियुक्त किया और उसका नाम बदलकर सिदकिय्याह रखा॥

(सिदकिय्याह का राज्य)

१८ जब सिदकिय्याह राज्य करने लगा, तब वह इक्कीस वर्ष का था, और यरूशलेम में ग्यारह वर्ष तक राज्य करता रहा; और उसकी माता का नाम हमूतल था, जो लिब्नावासी यिर्मयाह की बेटी थी। १९ उस ने ठीक यहोयाकीम की लीक पर चलकर वही किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है। २० क्योंकि यहोवा के कोप के कारण यरूशलेम और यहूदा की ऐसी दशा हुई, कि अन्त में उस ने उनको अपने साम्हने से दूर किया॥

२५ और सिदकिय्याह ने बाबेल के राजा से बलवा किया। उसके राज्य के नौवें वर्ष के दसवें महीने के दसवें दिन को बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने अपनी पूरी सेना लेकर यरूशलेम पर चढ़ाई की, और उसके पास छावनी करके उसके चारों ओर कोट बनाए। २ और नगर सिदकिय्याह राजा के ग्यारहवें वर्ष तक घिरा हुआ रहा। ३ चौथे महीने के नौवें दिन से नगर में महंगी यहां तक बढ़ गई, कि देश के लोगों के लिये कुछ खाने को न रहा। ४ तब नगर की शहरपनाह में दरार की गई, और दोनों भीतों के बीच जो फाटक राजा की बारी के निकट था उस मार्ग से सब योद्धा रात ही रात निकल भागे। कसदी तो नगर को घेरे हुए थे, परन्तु राजा ने अराबा का मार्ग लिया। ५ तब कसदियों की सेना ने राजा का पीछा किया, और उसको यरीहो के पास के अराबा में जा लिया, और उसकी पूरी सेना उसके पास से तितर बितर हो गई। ६ तब वे राजा को पकड़कर रिबला में बाबेल के राजा के पास ले गए, और उसे दण्ड की आज्ञा दी गई। ७ और उन्हों ने सिदकिय्याह के पुत्रों को उसके साम्हने घात किया और सिदकिय्याह की आंखें फोड़ डालीं और उसे पीतल की बेड़ियों से जकड़कर बाबेल को ले गए॥

(यरूशलेम का विनाश)

८ बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के उन्नीसवें वर्ष के पांचवें महीने के सातवें दिन को जल्लादों का प्रधान नबूजरदान जो बाबेल के राजा का एक कर्मचारी था, यरूशलेम में आया। ९ और उस ने यहोवा के भवन और राजभवन और यरूशलेम के सब घरों को अर्थात् हर एक बड़े घर को आग लगाकर फूंक

दिया। १० और यरूशलेम के चारों ओर की सब शहरपनाह को कसदियों की पूरी सेना ने जो जल्लादों के प्रधान के संग थी, ढा दिया। ११ और जो लोग नगर में रह गए थे, और जो लोग बाबेल के राजा के पास भाग गए थे, और साधारण लोग जो रह गए थे, इन सभों को जल्लादों का प्रधान नबूजरदान बन्धुआ करके ले गया। १२ परन्तु जल्लादों के प्रधान ने देश के कंगालों में से कितनों को दाख की बारियों की सेवा और काश्तकारी करने को छोड़ दिया। १३ और यहोवा के भवन में जो पीतल के खम्भे थे और कुर्सियां और पीतल का हौद जो यहोवा के भवन में था, इनको कसदी तोड़कर उनका पीतल बाबेल को ले गए। १४ और हण्डियों, फावड़ियों, चिमटों, धूपदानों और पीतल के सब पात्रों को जिन से सेवा टहल होती थी, वे ले गए। १५ और करछे और कटोरियां जो सोने की थी, और जो कुछ चान्दी का था, वह सब सोना, चान्दी, जल्लादों का प्रधान ले गया। १६ दोनों खम्भे, एक हौद और जो कुर्सियां सुलैमान ने यहोवा के भवन के लिये बनाए थे, इन सब वस्तुओं का पीतल तौल से बाहर था। १७ एक एक खम्भे की ऊंचाई अठारह अठारह हाथ की थी और एक एक खम्भे के ऊपर तीन तीन हाथ ऊंची पीतल की एक एक कंगनी थी, और एक एक कंगनी पर चारों ओर जो जाली और अनार बने थे, वे सब पीतल के थे।।

१८ और जल्लादों के प्रधान ने सरायाह महायाजक और उसके नीचे के याजक सपन्याह और तीनों द्वारपालों को पकड़ लिया। १९ और नगर में से उस ने एक हाकिम को पकड़ा जो योद्धाओं के ऊपर था, और जो पुरुष राजा के सम्मुख रहा करते थे, उन में से पांच जन जो नगर में मिले, और सेनापति का मुन्शी जो लोगों को सेना में भरती किया करता था; और लोगों में से साठ पुरुष जो नगर में मिले। २० इनको जल्लादों का प्रधान नबूजरदान पकड़कर रिबला के राजा के पास ले गया। २१ तब बाबेल के राजा ने उन्हें हमात देश के रिबला में ऐसा मारा कि वे मर गए। यों यहूदी बन्धुआ बनके अपने देश से निकाल दिए गए।।

(गदल्याह की हत्या)

२२ और जो लोग यहूदा देश में रह गए, जिनको बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने छोड़ दिया, उन पर उस ने अहीकाम के पुत्र गदल्याह को जो शापान का पोता था अधिकारी ठहराया। २३ जब दलों के सब प्रधानों ने अर्थात् नतन्याह के पुत्र इश्माएल कारेह के पुत्र योहानान, नतोपाई, तन्हूमेत के पुत्र सरायाह और किसी माकाई के पुत्र याजन्याह ने और उनके जनों ने यह सुना, कि बाबेल के राजा ने गदल्याह को अधिकारी ठहराया है, तब वे अपने अपने जनों समेत मिस्पा में गदल्याह के पास आए। २४ और गदल्याह ने उन से और उनके जनों से शपथ खाकर कहा, कसदियों के सिपाहियों से न डरो, देश में रहते हुए बाबेल के राजा के अधीन रहो, तब तुम्हारा भला होगा। २५ परन्तु सातवें महीने में नतन्याह का पुत्र इश्माएल, जो एलीशामा का पोता और राजवंश का था, उस ने दस जन

संग ले गदल्याह के पास जाकर उसे ऐसा मारा कि वह मर गया, और जो यहूदी और कसदी उसके संग मिस्पा में रहते थे, उनको भी मार डाला। २६ तब क्या छोटे क्या बड़े सारी प्रजा के लोग और दलों के प्रधान कसदियों के डर के मारे उठकर मिस्र में जाकर रहने लगे ॥

(यहोयाकीन का बढ़ाया जाना)

२७ फिर यहूदा के राजा यहोयाकीन की बन्धुआई के तैंतीसवें वर्ष में अर्थात् जिस वर्ष में बाबेल का राजा एवीलमरोदक राजगद्दी पर विराजमान हुआ उसी के बारहवें महीने के सत्ताईसवें दिन को उस ने यहूदा के राजा यहोयाकीन को बन्दीगृह से निकालकर बड़ा पद दिया। २८ और उस से मधुर मधुर वचन कहकर जो राजा उसके संग बाबेल में बन्धुए थे उनके सिंहासनों से उसके सिंहासन को अधिक ऊंचा किया, २९ और उसके बन्दीगृह के वस्त्र बदल दिए और उस ने जीवन भर नित्य राजा के सम्मुख भोजन किया। ३० और प्रतिदिन के खर्च के लिये राजा के यहां से नित्य का खर्च ठहराया गया जो उसके जीवन भर लगातार उसे मिलता रहा ॥

इतिहास नामक पुस्तक—पहिला भाग

(आदम आदि की वंशावलियां)

१ आदम शेत, एनोश: २ केनान, महललेल, येरेद; ३ हनोक, मतूशेलह, लेमेक: ४ नूह, शेम, हाम और येपेन ॥

५ येपेत के पुत्र: गोमेर, मागोग, मादै, यावान, तूबल, मेशेक और तीरास हैं। ६ और गोमेर के पुत्र: अशकनज, दीपत और तोगर्मा हैं। ७ और यावान के पुत्र: एलीशा, तर्शीश, और कित्ती और रोदानी लोग हैं ॥

८ हाम के पुत्र: कूश, मिस्र, पूत और कनान हैं। ९ और कूश के पुत्र: सबा, हवीला, सबाता, रामा और सब्तका हैं; और रामा के पुत्र: शबा और ददान हैं। १० और कूश से निम्रोद उत्पन्न हुआ; पृथ्वी पर पहिला वीर वही हुआ। ११ और मिस्र से लूदी, अनामी, लहाबी, नप्तूही। १२ पत्रूसी, कसलूही (वहां से पलिश्ती निकले) और कप्तोरी उत्पन्न हुए। १३ कनान से उसका जेठा सीदोन और हित्त। १४ और यबूसी, एमोरी, गिर्गाशी। १५ हिव्वी, अर्की, सीनी। १६ अर्वदी, समारी और हमाती उत्पन्न हुए ॥

१७ शेम के पुत्र: एलाम, अश्शूर अर्पक्षद, लूद, अराम, ऊस, हूल, गेतेर और मेशेक हैं। १८ और अर्पक्षद से शेलह और शेलह से एबेर उत्पन्न हुआ। १९ और एबेर के दो पुत्र उत्पन्न हुए:

एक का नाम पेलेग इस कारण रखा गया कि उसके दिनों में पृथ्वी बांटी गई; और उसके भाई का नाम योक्तान था। २० और योक्तान से अल्मोदाद, शुलेप, हसर्मावेत, येरह। २१ हदोराम, ऊजाल, दिक्ला। २२ एबाल, अबीमाएल, शबा, २३ ओपीर, हवीला और योबाब उत्पन्न हुए; ये ही सब योक्तान के पुत्र हैं॥

२४ शेम, अर्पक्षद, शेलह। २५ एबेर, पेलेग, रू। २६ सरूग, नाहोर, तेरह। २७ अब्राम, वही इब्राहीम भी कहलाता है। २८ इब्राहीम के पुत्र इसहाक और इश्माएल हैं॥

२९ इनकी वंशावलियां ये हैं। इश्माएल का जेठा नबायोत, फिर केदार, अदबेल, मिबसाम। ३० मिश्मा, दूमा, मस्सा, हदद, तेमा। ३१ यतूर, नापीश, केदमा। ये इश्माएल के पुत्र हुए। ३२ फिर कतूरा जो इब्राहीम की रखेली थी, उसके ये पुत्र उत्पन्न हुए, अर्थात् उस से जिम्रान, योक्षान, मदान, मिद्यान, यिशबाक और शूह उत्पन्न हुए। योक्षान के पुत्र: शबा और ददान। ३३ और मिद्यान के पुत्र: एपा, एपेर, हनोक, अबीदा और एल्दा, ये सब कतूरा के पुत्र हैं॥

३४ इब्राहीम से इसहाक उत्पन्न हुआ। इसहाक के पुत्र: एसाव और इस्राएल। ३५ एसाव के पुत्र: एलीपज, रूएल, यूश, यालाम और कोरह हैं। ३६ एलीपज के ये पुत्र हैं: तेमान, ओमार, सपी, गाताम, कनज, तिम्ना और अमालेक। ३७ रूएल के पुत्र: नहत, जेरह, शम्मा और मिज्जा॥

३८ फिर सेईर के पुत्र: लोतान, शोबाल, सिबोन, अना, दीशोन, एसेर और दीशान हैं। ३९ और लोतान के पुत्र: होरी और होमाम, और लोतान की बहिन तिम्ना थी। ४० शोबाल के पुत्र: अल्यान, मानहत, एबाल, शपी और ओनाम। ४१ और सिबोन के पुत्र: अय्या, और अना। अना का पुत्र: दीशोन। और दीशोन के पुत्र: हम्रान, एशबान, यित्रान और करान। ४२ एसेर के पुत्र: बिल्हान, जावान और याकान। और दीशान के पुत्र: ऊस और अरान हैं॥

४३ जब किसी राजा ने इस्राएलियों पर राज्य न किया था, तब एदोम के देश में ये राजा हुए: अर्थात् बोर का पुत्र बेला और उसकी राजधानी का नाम दिन्हाबा था। ४४ बेला के मरने पर, बोस्राई जेरह का पुत्र योबाब, उसके स्थान पर राजा हुआ। ४५ और योबाब के मरने पर, तेमानियों के देश का हूशाम उसके स्थान पर राजा हुआ। ४६ फिर हूशाम के मरने पर, बदद का पुत्र हदद, उसके स्थान पर राजा हुआ: यह वही है, जिस ने मिद्यानियों को मोआब के देश में मार लिया; और उसकी राजधानी का नाम अवीत था। ४७ और हदद के मरने पर, मस्रेकाई सम्ला उसके स्थान पर राजा हुआ। ४८ फिर सम्ला के मरने पर शाऊल, जो महानद के तट पर के रहोबोत नगर का था, वह उसके स्थान पर राजा हुआ। ४९ और शाऊल के मरने पर अकबोर का पुत्र बाल्हानान उसके स्थान पर राजा हुआ। ५० और बल्हानान के मरने पर, हदद उसके स्थान पर राजा हुआ; और उसकी राजधानी का नाम पाई था। और उसकी पत्नी का नाम महेतबेल था जो मेज़ाहाब की नातिनी और मत्रेद की बेटी थी। और हदद मर गया॥

५१ फिर एदोम के अधिपति ये थे: अर्थात् अधिपति तिम्ना, अधिपति अल्या, अधिपति यतेत, अधिपति ओहोलीबामा, ५२ अधिपति एला, अधिपति पीनोन, अधिपति कनज, ५३ अधिपति तेमान्, अधिपति मिबसार, अधिपति मग्दीएल, अधिपति ईराम। ५४ एदोम के ये अधिपति हुए ।।

२ इस्राएल के ये पुत्र हुए; रूबेन, शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार, जबूलून, दान। २ यूसुफ, बिन्यामीन, नप्ताली, गाद और आशेर ।।

(यहूदा की वंशावली)

३ यहूदा के ये पुत्र हुए: एर, ओनान और शेला, उसके ये तीनों पुत्र, बतशू नाम एक कनानी स्त्री से उत्पन्न हुए। और यहूदा का जेठा एर, यहोवा की दृष्टि में बुरा था, इस कारण उस ने उसको मार डाला। ४ यहूदा की बहू तामार से पेरेस और जेरह उत्पन्न हुए। यहूदा के सब पुत्र पांच हुए ।।

५ पेरेस के पुत्र: हेस्रोन और हामूल। ६ और जेरेह के पुत्र: जिम्री, एतान, हेमान, कलकोल और दारा सब मिलकर पांच। ७ फिर कर्मी का पुत्र: आकार जो अर्पण की हुई वस्तु के विषय में विश्वासघात करके इस्राएलियों का कष्ट देनेवाला हुआ। ८ और एतान का पुत्र: अजर्याह ।।

९ हेस्रोन के जो पुत्र उत्पन्न हुए: यरह्मेल, राम और कलूबै। १० और राम से अम्मीनादाब और अम्मीनादाब से नहशोन उत्पन्न हुआ जो यहूदियों का प्रधान बना। ११ और नहशोन से सल्मा और सल्मा से बोअज, १२ और बोअज से ओबेद और ओबेद से यिशै उत्पन्न हुआ। १३ और यिशै से उसका जेठा एलीआब और दूसरा अबीनादाब तीसरा शिमा। १४ चौथा नतनेल और पांचवां रद्दै। छठा ओसेम और सातवां दाऊद उत्पन्न हुआ। १५ इनकी बहिनें सरूयाह और अबीगैल थीं। १६ और सरूयाह के पुत्र अबीशै, योआब और असाहेल ये तीन थे। १७ और अबीगैल से अमासा उत्पन्न हुआ, और अमासा का पिता इश्माएली येतेर था ।।

१८ हेस्रोन के पुत्र कालेब के अजूबा नाम एक स्त्री से, और यरीओत से, बेटे उत्पन्न हुए; और इसके पुत्र ये हुए* अर्थात् येशेर, शोबाब और अर्दोन। १९ जब अजूबा मर गई, तब कालेब ने एप्रात को ब्याह लिया; और जिससे हूर उत्पन्न हुआ। २० और हूर से ऊरी और ऊरी से बसलेल उत्पन्न हुआ ।।

२१ इसके बाद हेस्रोन गिलाद के पिता माकीर की बेटी के पास गया, जिसे उस ने तब ब्याह लिया, जब वह साठ वर्ष का था; और उस से सगूब उत्पन्न हुआ। २२ और सगूब से याईर जन्मा, जिसके गिलाद देश में तेईस नगर थे। २३ और गशूर और अराम ने याईर की बस्तियों को और गांवों समेत कनत को, उन से ले लिया; ये सब नगर मिलकर साठ थे। ये सब गिलाद के पिता माकीर के पुत्र हुए। २४ और जब हेस्रोन कालेबेप्राता में मर गया, तब उसकी अबिय्याह नाम स्त्री से अशहूर उत्पन्न हुआ जो तको का पिता हुआ ।।

* वा कालेब से अजूबा नाम अपनी स्त्री के द्वारा यरीओत उत्पन्न हुआ और यरीओत के ये पुत्र हुए।

२५ और हेस्रोन के जेठे यरह्मेल के ये पुत्र हुए: अर्थात् राम जो उसका जेठा था; और बूना, ओरेन, ओसेम और अहिय्याह। २६ और यरह्मेल की एक और पत्नी थी, जिसका नाम अतारा था; वह ओनाम की माता थी। २७ और यरह्मेल के जेठे राम के ये पुत्र हुए, अर्थात् मास, यामीन और एकेर। २८ और ओनाम के पुत्र शम्मै और यादा हुए। और शम्मै के पुत्र नादाब और अबीशूर हुए। २९ और अबीशूर की पत्नी का नाम अबीहैल था, और उस से अहबान और मोलीद उत्पन्न हुए। ३० और नादाब के पुत्र सेलेद और अप्पैम हुए; सेलेद तो निःसन्तान मर गया। और अप्पैम का पुत्र यिशी। ३१ और यिशी का पुत्र शेशान और शेशान का पुत्र: अहलै। ३२ फिर शम्मै के भाई यादा के पुत्र: येतेर और योनातान हुए; येतेर तो निःसन्तान मर गया। ३३ योनातान के पुत्र पेलेत और जाजा; यरह्मेल के पुत्र ये हुए। ३४ शेशान के तो बेटा न हुआ, केवल बेटियां हुईं। शेशान के पास यर्हा नाम एक मिस्री दास था। ३५ और शेशान ने उसको अपनी बेटी ब्याह दी, और उस से अत्तै उत्पन्न हुआ। ३६ और अत्तै से नातान, नातान से जाबाद। ३७ जाबाद से एपलाल, एपलाल से ओबेद। ३८ ओबेद से येहू, येहू से अजर्याह। ३९ अजर्याह से हेलैस, हेलैस से एलासा। ४० एलासा से सिस्मै, सिस्मै से शल्लूम। ४१ शल्लूम से यकम्याह और यकम्याह से एलीशामा उत्पन्न हुए॥

४२ फिर यरह्मेल के भाई कालेब के ये पुत्र हुए: अर्थात् उसका जेठा मेशा जो जीप का पिता हुआ। और मारेशा का पुत्र हेब्रोन भी उसी के वंश में हुआ। ४३ और हेब्रोन के पुत्र कोरह, तप्पूह, रेकेम और शेमा। ४४ और शेमा से योर्काम का पिता रहम और रेकेम से शम्मै उत्पन्न हुआ था। ४५ और शम्मै का पुत्र माओन हुआ; और माओन बेतसूर का पिता हुआ। ४६ फिर एपा जो कालेब की रखेली थी, उस से हारान, मोसा और गाजेज़ उत्पन्न हुए; और हारान से गाजेज उत्पन्न हुआ। ४७ फिर याहदै के पुत्र रेगेम, योताम, गेशान, पेलेत, एपा और शाप। ४८ और माका जो कालेब की रखेली थी, उस से शेबेर और तिर्हाना उत्पन्न हुए। ४९ फिर उस से मदमन्ना का पिता शाप और मकबेना और गिबा का पिता शवा उत्पन्न हुए। और कालब की बेटी अकसा थी। कालेब के पुत्र ये हुए॥

५० एप्राता के जेठे हूर का पुत्र किर्यत्यारीम का पिता शोबाल। ५१ बेतलेहेम का पिता सल्मा और बेतगादेर का पिता हारेप। ५२ और किर्यत्यारीम के पिता शोबाल के वंश में हारोए आधे मनुहोतवासी, ५३ और किर्यत्यारीम के कुल अर्थात् यित्री, पूती, शूमाती और मिश्राई और इन से सोराई और एश्ताओली निकले। ५४ फिर सल्मा के वंश म बेतलेहेम और नतोपाई, अत्रोत-बेत्योआब और आधे मानहती, सोरी। ५५ और याबेस में रहनेवाले लेखकों के कुल अर्थात् तिराती, शिमाती और सूकाती हुए। ये रेकाब के घराने के मूलपुरुष हम्मत के वंशवाले केनी हैं॥

३ दाऊद के पुत्र जो हेब्रोन में उस से उत्पन्न हुए वे ये हैं: जेठा अम्नोन

जो यिज्रेली अहीनोअम से, दूसरा दानिय्येल जो कर्मेली अबीगैल से उत्पन्न हुआ। २ तीसरा अबशालोम जो गशूर के राजा तल्मै की बेटी माका का पुत्र था, चौथा अदोनिय्याह जो हग्गीत का पुत्र था। ३ पांचवां शपत्याह जो अबीतल से, और छठवां यित्राम जो उसकी स्त्री एग्ला से उत्पन्न हुआ। ४ दाऊद से हेब्रोन में छः पुत्र उत्पन्न हुए, और वहां उस ने साढ़े सात वर्ष राज्य किया; और यरूशलेम में तैंतीस वर्ष राज्य किया। ५ और यरूशलेम में उसके ये पुत्र उत्पन्न हुए अर्थात् शिमा, शोबाब, नातान और सुलैमान, ये चारों अम्मीएल की बेटी बतशू से उत्पन्न हुए। ६ और यिभार, एलीशामा एलीपेलेत। ७ नेगाह, नेपेग, यापी। ८ एलीशामा, एल्यादा और एलीपेलेत ये नौ पुत्र थे, ये सब दाऊद के पुत्र थे। ९ और इनको छोड़ रखेलियों के भी पुत्र थे, और इनकी बहिन तामार थी। १० फिर सुलैमान का पुत्र रहबाम उत्पन्न हुआ; रहबाम का अबिय्याह, अबिय्याह का आसा, आसा का यहोशापात। ११ यहोशापात का योराम, योराम का अहज्याह, अहज्याह का योआश। १२ योआश का अमस्याह, अमस्याह का अजर्याह, अजर्याह का योताम। १३ योताम का आहाज, आहाज का हिजकिय्याह, हिजकिय्याह का मनश्शे। १४ मनश्शे का आमोन, और आमोन का योशिय्याह पुत्र हुआ। १५ और योशिय्याह के पुत्र उसका जेठा योहानान, दूसरा यहोयाकीम; तीसरा सिदकिय्याह, चौथा शल्लूम। १६ और यहोयाकीम का पुत्र यकोन्याह, इसका पुत्र सिदकिय्याह। १७ और यकोन्याह का पुत्र अस्सीर, उसका पुत्र शालतीएल। १८ और मल्कीराम, पदायाह, शेनस्सर, यकम्याह, होशामा और नदब्याह। १९ और पदायाह के पुत्र जरुब्बाबेल और शिमी हुए; और जरुब्बाबेल के पुत्र मशुल्लाम और हनन्याह, जिनकी बहिन शलोमीत थी। २० और हशूबा, ओहेल, बेरेक्याह, हसद्याह और यूशमेसेद, पांच। २१ और हनन्याह के पुत्र पलत्याह और यशायाह। और रपायाह के पुत्र अर्नान के पुत्र ओबद्याह के पुत्र और शकन्याह के पुत्र। २२ और तकन्याह का पुत्र शमायाह। और शमायाह के पुत्र हत्तूश और यिगाल, बारीह, नार्याह और शपात, छः। २३ और नार्याह के पुत्र एल्योएनै, हिजकिय्याह और अज्रीकाम, तीन। २४ और एल्योएनै के पुत्र होदब्याह, एल्याशीब, पलायाह, अक्कूब, योहानान, दलायाह और अनानी, सात॥

४ यहूदा के पुत्र: पेरेस, हेस्रोन, कर्मी, हूर और शोबाल। २ और शोबाल के पुत्र: रायाह से यहत और यहत से अहूमै और लहद उत्पन्न हुए, ये सोराई कुल हैं। ३ और एताम के पिता के ये पुत्र हुए: अर्थात् यिज्रेल, यिश्मा और यिद्बाश, जिनकी बहिन का नाम हस्सलेलपोनी था। ४ और गदोर का पिता पनूएल, और हूशा का पिता एजेर। ये एप्राता के जेठे हूर के सन्तान हैं, जो बेतलेहेम का पिता हुआ। ५ और तको के पिता अशहूर के हेला और नारा नाम दो स्त्रियां थीं। ६ और नारा से अहुज्जाम, हेपेर, तेमनी और हाहशतारी उत्पन्न हुए, नारा के ये ही पुत्र हुए। ७ और हेला के पुत्र, सेरेत, यिसहर

और एल्नान। ८ फिर कोस से आनूब और सोबेबा उत्पन्न हुए और उसके वंश में हारून के पुत्र अहर्हेल के कुल भी उत्पन्न हुए। ९ और याबेस अपने भाइयों से अधिक प्रतिष्ठित हुआ, और उसकी माता ने यह कहकर उसका नाम याबेस* रखा, कि मैं ने इसे पीड़ित होकर उत्पन्न किया। १० और याबेस ने इस्राएल के परमेश्वर को यह कहकर पुकारा, कि भला होता, कि तू मुझे सचमुच आशीष देता, और मेरा देश बढ़ाता, और तेरा हाथ मेरे साथ रहता, और तू मुझे बुराई † से ऐसा बचा रखता कि मैं उस से पीड़ित न होता! और जो कुछ उस ने मांगा, वह परमेश्वर ने उसे दिया। ११ फिर शूहा के भाई कलूब से एशतोन का पिता महीर उत्पन्न हुआ। १२ और एशतोन के वंश में रामा का घराना, और पासेह और ईर्नाहाश का पिता तहिन्ना उत्पन्न हुए, रेका के लोग ये ही हैं। १३ और कनज के पुत्र, ओत्नीएल और सरायाह, और ओत्नीएल का पुत्र हतत। १४ मोनोतै से ओप्रा और सरायाह से योआब जो गेहराशीम का पिता हुआ; वे कारीगर थे। १५ और यपुन्ने के पुत्र कालेब के पुत्र एला और नाम, और एला के पुत्र कनज। १६ और यहल्लेल के पुत्र, जीप, जीपा, तीरया और असरेल। १७ और एज्रा के पुत्र येतेर, मेरेद, एपेर और यालोन, और उसकी स्त्री से मिर्याम, शम्मै और एशतमो का पिता यिशबह उत्पन्न हुए। १८ और उसकी यहूदिन स्त्री से गदोर का पिता येरेद, सोको के पिता हेबेर और जानोह के पिता यकूतीएल उत्पन्न हुए, ये फ़िरौन की बेटी बित्या के पुत्र थे जिसे मेरेद ने ब्याह लिया था। १९ और होदिय्याह की स्त्री जो नहम की बहिन थी, उसके पुत्र कीला का पिता एक गेरेमी और एशतमो का पिता एक माकाई। २० और शीमोन के पुत्र अम्नोन, रिन्ना, बेन्हानान और तोलोन और यिशी के पुत्र जोहेत और बेनजोहेत। २१ यहूदा के पुत्र शेला के पुत्र लेका का पिता एर, मारेशा का पिता लादा और अशबे के घराने के कुल जिस में सन के कपड़े का काम होता था। २२ और योकीम और कोजेबा के मनुष्य और योआश और साराप जो मोआब में प्रभुता करते थे और याशूब, लेहेम इनका वृत्तान्त प्राचीन है। २३ ये कुम्हार थे, और नताईम और गदेरा में रहते थे जहां वे राजा का कामकाज करते हुए उसके पास रहते थे॥

(शिमोन की वंशावली)

२४ शिमोन के पुत्र नमूएल, यामीन, यारीब, जेरह और शाऊल। २५ और शाऊल का पुत्र शल्लूम, शल्लूम का पुत्र मिबसाम और मिबसाम का मिश्मा हुआ। २६ और मिश्मा का पुत्र हम्मूएल, उसका पुत्र जक्कूर, और उसका पुत्र शिमी। २७ शिमी के सोलह बेटे और छः बेटियां हुई परन्तु उसके भाइयों के बहुत बेटे न हुए; और उनका सारा कुल यहूदियों के बराबर न बढ़ा। २८ वे बेर्शेबा, मोलादा, हसर्शूआल। २९ बिल्हा, एसेम, तोलाद। ३० बतूएल, होर्मा, सिक्लग, ३१ बेत-मर्काबोत, हसर्सूसीम, बेतबिरी और शारैम में बस गए; दाऊद के राज्य के समय तक उनके ये ही नगर रहे।

* अर्थात् पीड़ा।
† वा विपत्ति।

३२ और उनके गांव एताम, ऐन, रिम्मोन, तोकेन और आशान नाम पांच नगर। ३३ और बाल तक जितने गांव इन नगरों के आसपास थे, उनके बसने के स्थान ये ही थे, और यह उनकी वंशावली है ॥

३४ फिर मशोबाव और यम्लेक और अमस्याह का पुत्र योशा। ३५ और योएल और योशिब्याह का पुत्र येहू, जो सरायाह का पोता, और असीएल का परपोता था। ३६ और एल्योएनै और याकोबा, यशोहायाह और असायाह और अदीएल और यसीमीएल और बनायाह। ३७ और शिपी का पुत्र ज़ीज़ा जो अल्लोन का पुत्र, यह यदायाह का पुत्र, यह शिम्री का पुत्र, यह शमायाह का पुत्र था। ३८ ये जिनके नाम लिखे हुए हैं, अपने अपने कुल में प्रधान थे; और उनके पितरों के घराने बहुत बढ़ गए। ३९ ये अपनी भेड़-बकरियों के लिये चराई ढूंढ़ने को गदोर की घाटी की तराई की पूर्व ओर तक गए। ४० और उनको उत्तम से उत्तम चराई मिली, और देश लम्बा-चौड़ा, चैन और शांति का था; क्योंकि वहां के पहिले रहनेवाले हाम के वंश के थे। ४१ और जिनके नाम ऊपर लिखे हैं, उन्हों ने यहूदा के राजा हिजकिय्याह के दिनों में वहां आकर जो मूनी वहां मिले, उनको डेरों समेत मारकर ऐसा सत्यानाश कर डाला कि आज तक उनका पता नहीं है, और वे उनके स्थान में रहने लगे, क्योंकि वहां उनकी भेड़-बकरियों के लिये चराई थी। ४२ और उन में से अर्थात् शिमोनियों में से पांच सौ पुरुष अपने ऊपर पलत्याह, नार्याह, रपायाह और उज्जीएल नाम यिशी के पुत्रों को अपने प्रधान ठहराया; ४३ तब वे सेईद पहाड़ को गए, और जो अमेलेकी बचकर रह गए थे उनको मारा, और आज के दिन तक वहां रहते हैं ॥

(रूबेन और गाद की वंशावलियां और मनश्शे के आधे गोत्र की वंशावली)

५ इस्राएल का जेठा तो रूबेन था, परन्तु उस ने जो अपने पिता के बिछौने को अशुद्ध किया, इस कारण जेठे का अधिकार इस्राएल के पुत्र यूसुफ के पुत्रों को दिया गया। वंशावली जेठे के अधिकार के अनुसार नहीं ठहरी। २ क्योंकि यहूदा अपने भाइयों पर प्रबल हो गया, और प्रधान उसके वंश से हुआ परन्तु जेठे का अधिकार यूसुफ का था। ३ इस्राएल के जेठे पुत्र रूबेन के पुत्र ये हुए, अर्थात् हनोक, पल्लू, हेस्रोन और कर्मी। ४ और योएल के पुत्र शमायाह, शमायाह का गोग, गोग का शिमी। ५ शिमी का मीका, मीका का रायाह, रायाह का बाल। ६ और बाल का पुत्र बेरा, इसको अश्शूर का राजा तिलगतपिलनेसेर बन्धुआई में ले गया; और वह रूबेनियों का प्रधान था। ७ और उसके भाइयों की वंशावली के लिखते समय वे अपने अपने कुल के अनुसार ये ठहरे, अर्थात् मुख्य तो यीएल, फिर जकर्याह। ८ और अजाज का पुत्र बेला जो शेमा का पोता और योएल का परपोता था, वह अरोएर में और नबो और बाल्मोन तक रहता था। ९ और पूर्व ओर वह उस जंगल के सिवाने तक रहा जो परात महानद तक पहुंचाता है, क्योंकि उनके पशु गिलाद देश में बढ़ गए थे। १० और शाऊल के दिनों में उन्हों ने हग्रियों से युद्ध किया, और हग्री उनके हाथ से मारे गए; तब वे गिलाद

की सारी पूरबी अलंग में अपने डेरों में रहने लगे ।।

११ गादी उनके साम्हने सल्का तक बाशान देश में रहते थे । १२ अर्थात् मुख्य तो योएल और दूसरा शापाम फिर यानै और शापात, ये बाशान में रहते थे । १३ और उनके भाई अपने अपने पितरों के घरानों के अनुसार मीकाएल, मशुल्लाम, शेबा, योरै, याकान, जी और एबेर, सात थे । १४ ये अबीहैल के पुत्र थे, जो हूरी का पुत्र था, यह योराह का पुत्र, यह गिलाद का पुत्र, यह मिकाएल का पुत्र, यह यशीशै का पुत्र, यह यहदो का पुत्र, यह बूज का पुत्र था । १५ इनके पितरों के घरानों का मुख्य पुरुष अब्दीएल का पुत्र, और गूनी का पोता अही था । १६ ये लोग बाशान में, गिलाद और उसके गांवों में, और शारोन की सब चराइयों में उसकी परली ओर तक रहते थे । १७ इन सभों की वंशावली यहूदा के राजा योनातन के दिनों और इस्राएल के राजा यारोबाम के दिनों में लिखी गई ।।

१८ रूबेनियों, गादियों और मनश्शे के आधे गोत्र के योद्धा जो ढाल बान्धने, तलवार चलाने, और धनुष के तीर छोड़ने के योग्य और युद्ध करना सीखे हुए थे, वे चौवालीस हजार सात सौ साठ थे, जो युद्ध में जाने के योग्य थे । १९ इन्हों ने हग्रियों और यतूर नापीश और नोदाब से युद्ध किया था । २० उनके विरुद्ध इनको सहायता मिली, और हग्री उन सब समेत जो उनके साथ थे उनके हाथ में कर दिए गए, क्योंकि युद्ध में इन्हों ने परमेश्वर की दोहाई दी थी और उस ने उनकी बिनती इस कारण सुनी, कि इन्हों ने उस पर भरोसा रखा था । २१ और इन्हों ने उनके पशु हर लिए, अर्थात् ऊंट तो पचास हजार, भेड़-बकरी अढ़ाई लाख, गदहे दो हजार, और मनुष्य एक लाख बन्धुए करके ले गए । २२ और बहुत से मरे पड़े थे क्योंकि वह लड़ाई परमेश्वर की ओर से हुई । और ये उनके स्थान में बन्धुआई के समय तक बसे रहे ।।

२३ फिर मनश्शे के आधे गोत्र की सन्तान उस देश में बसे, और वे बाशान से ले बाल्हेर्मोन, और सनीर और हेर्मोन पर्वत तक फैल गए । २४ और उनके पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष ये थे, अर्थात् एपेर, यिशी, एलीएल, अज्रीएल, यिर्मयाह, होदव्याह और यहदीएल, ये बड़े वीर और नामी और अपने पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष थे ।।

२५ और उन्हों ने अपने पितरों के परमेश्वर से विश्वासघात किया, और उस देश के लोग जिनको परमेश्वर ने उनके साम्हने से विनाश किया था, उनके देवताओं के पीछे व्यभिचारिन की नाईं हो लिए । २६ इसलिये इस्राएल के परमेश्वर ने अश्शूर के राजा पूल और अश्शूर के राजा तिलगत्पिलनेसेर का मन उभारा, और इन्हों ने उन्हें अर्थात् रूबेनियों, गादियों और मनश्शे के आधे गोत्र के लोगों को बन्धुआ करके हलह, हाबोर और हारा और गोजान नदी के पास पहुंचा दिया; और वे आज के दिन तक वहीं रहते हैं ।।

(लेवी की वंशावली और लेवियों के वासस्थान)

६ लेवी के पुत्र गेर्शोन, कहात और मरारी । २ और कहात के पुत्र, अम्राम, यिसहार, हेब्रोन और उज्जीएल ।

३ और अम्राम की सन्तान हारून, मूसा और मरियम. और हारून के पुत्र, नादाब, अबीहू, एलीआज़र और ईतामार। ४ एलीआज़र से पीनहास, पीनहास से अबीशू। ५ अबीशू से बुक्की, बुक्की से उज्जी। ६ उज्जी से जरह्याह, जरह्याह से मरायोत। ७ मरायोत से अमर्याह, अमर्याह से अहीतूब। ८ अहीतूब से सादोक, सादोक से अहीमास। ९ अहीमास से अजर्याह, अजर्याह से योहानान। १० और योहानान से अजर्याह, उत्पन्न हुआ (जो सुलैमान के यरूशलेम में बनाए हुए भवन में याजक का काम करता था)। ११ फिर अजर्याह से अमर्याह, अमर्याह से यहीतूब। १२ यहीतूब से सादोक, सादोक से शल्लूम। १३ शल्लूम से हिलकिय्याह, हिलकिय्याह से अजर्याह। १४ अजर्याह से सरायाह, और सरायाह से यहोसादाक उत्पन्न हुआ। १५ और जब यहोवा, यहूदा और यरूशलेम को नबूकदनेस्सर के द्वारा बन्धुआ करके ले गया, तब यहोसादाक भी बन्धुआ होकर गया॥

१६ लेवी के पुत्र गेर्शोम, कहात और मरारी। १७ और गेर्शोम के पुत्रों के नाम ये थे, अर्थात् लिब्नी और शिमी। १८ और कहात के पुत्र अम्राम, यिसहार, हेब्रोन और उज्जीएल। १९ और मरारी के पुत्र महली और मूशी और अपने अपने पितरों के घरानों के अनुसार लेवियों के कुल ये हुए। २० अर्थात्, गेर्शोन का पुत्र लिब्नी हुआ, लिब्नी का यहत, यहत का जिम्मा। २१ जिम्मा का योआह, योआह का इद्दो, इद्दो का जेरह, और जेरह का पुत्र यातरै हुआ। २२ फिर कहात का पुत्र अम्मीनादाब हुआ, अम्मीनादाब का कोरह, कोरह का अस्सीर। २३ अस्सीर का एल्काना, एल्काना का एब्यासाप, एब्यासाप का अस्सीर। २४ अस्सीर का तहत, तहत का ऊरीएल, ऊरीएल का उज्जियाह और उज्जियाह का पुत्र शाऊल हुआ। २५ फिर एल्काना के पुत्र अमासै और अहीमोत। २६ एल्काना का पुत्र सोपै, सोपै का नहत। २७ नहत का एलीआब, एलीआब का यरोहाम, और यरोहाम का पुत्र एल्काना हुआ। २८ और शमूएल के पुत्र, उसका जेठा योएल * और दूसरा अबिय्याह हुआ। २९ फिर मरारी का पुत्र महली, महली का लिब्नी, लिब्नी का शिमी, शिमी का उज्जा। ३० उज्जा का शिमा, शिमा का हग्गिय्याह और हग्गिय्याह का पुत्र असायाह हुआ॥

३१ फिर जिनको दाऊद ने सन्दूक के ठिकाना पाने के बाद यहोवा के भवन में गाने के अधिकारी ठहरा दिया वे ये हैं। ३२ जब तक सुलैमान यरूशलेम में यहोवा के भवन को बनवा न चुका, तब तक वे मिलापवाले तम्बू के निवास के साम्हने गाने के द्वारा सेवा करते थे; और इस सेवा में नियम के अनुसार उपस्थित हुआ करते थे। ३३ जो अपने अपने पुत्रों समेत उपस्थित हुआ करते थे वे ये हैं, अर्थात् कहातियों में से हेमान गवैया जो योएल का पुत्र था, और योएल शमूएल का। ३४ शमूएल एल्काना का, एल्काना यरोहाम का, यरोहाम एलीएल का, एलीएल तोह का। ३५ तोह सूप का, सूप एल्काना का, एल्काना महत

* अरामी में योएल। फिर देखो पद ३३।

का, महत अमासै का। ३६ अमासै एल्काना का, एल्काना योएल का, योएल अजर्याह् का, अजर्याह सपन्याह का। ३७ सपन्याह तहत का, तहत अस्सीर का, अस्सीर एब्यासाप का, एब्यासाप कोरह का। ३८ कोरह यिसहार का, यिसहार कहात का, कहात लेवी का और लेवी इस्राएल का पुत्र था। ३९ और उसका भाई असाप जो उसके दाहिने खड़ा हुआ करता था वह बेरेक्याह का पुत्र था, और बेरेक्याह शिमा का। ४० शिमा मीकाएल का, मीकाएल बासेयाह का, बासेयाह मल्किय्याह का। ४१ मल्किय्याह एत्नी का, एत्नी जेरह का, जेरह अदायाह का। ४२ अदायाह एतान का, एतान जिम्मा का, जिम्मा शिमी का। ४३ शिमी यहत का, यहत गेर्शोम का, गेर्शोम लेवी का पुत्र था। ४४ और बाईं ओर उनके भाई मरारी खड़े होते थे, अर्थात् एताव जो कीशी का पुत्र था, और कीशी अब्दी का, अब्दी मल्लूक का। ४५ मल्लूक हशब्याह का, हशब्याह अमस्याह का, अमस्याह हिलकिय्याह का। ४६ हिलकिय्याह अमसी का, अमसी बानी का, बानी शेमेर का। ४७ शेमेर महली का, महली मूशी का, मूशी मरारी का, और मरारी लेवी का पुत्र था। ४८ और इनके भाई जो लेवीय थे वह परमेश्वर के भवन के निवास की सब प्रकार की सेवा के लिये अर्पण किए * हुए थे॥

४९ परन्तु हारून और उसके पुत्र होमबलि की वेदी, और धूप की वेदी दोनों पर बलिदान चढ़ाते, और परम पवित्रस्थान का सब काम करते, और इस्राएलियों के लिये प्रायश्चित करते थे, जैसे कि परमेश्वर के दास मूसा ने आज्ञाएं दी थीं। ५० और हारून के वंश में ये हुए, अर्थात् उसका पुत्र एलीआज़र हुआ, और एलीआज़र का पीनहास, पीनहास का अबीशू। ५१ अबीशू का बुक्की, बुक्की का उज्जी, उज्जी का जरह्याह। ५२ जरह्याह का मरायोत, मरायोत का अमर्याह, अमर्याह का अहीतूब। ५३ अहीतूब का सादोक और सादोक का अहीमास पुत्र हुआ॥

५४ और उनके भागों में उनकी छावनियों के अनुसार उनकी बस्तियां ये हैं, अर्थात् कहात के कुलों में से पहिली चिट्ठी जो हारून की सन्तान के नाम पर निकली। ५५ अर्थात् चारों ओर की चराइयों समेत यहूदा देश का हेब्रोन उन्हें मिला। ५६ परन्तु उस नगर के खेत और गांव यपुन्ने के पुत्र कालेब को दिए गए। ५७ और हारून की सन्तान को शरणनगर हेब्रोन, और चराइयों समेत लिब्ना, ५८ और यत्तीर और अपनी अपनी चराइयों समेत एशतमो। हीलेन, दबीर। ५९ आशान और बेतशेमेश। ६० और बिन्यामीन के गोत्र में से अपनी अपनी चराइयों समेत गेबा, अल्लेमेत और अनातोत दिए गए। उनके घरानों के सब नगर तेरह थे॥

६१ और शेष कहातियों के गोत्र के कुल, अर्थात् मनश्शे के आधे गोत्र में से चिट्ठी डालकर दस नगर दिए गए। ६२ और गेर्शोमियों के कुलों के अनुसार उन्हें इस्साकार, आशेर और नप्ताली के गोत्र, और बाशान में रहनेवाले मनश्शे के गोत्र में से तेरह नगर मिले। ६३ मरारियों

* मूल में—दिए।

के कुलों के अनुसार उन्हें रूबेन, गाद और जबूलून के गोत्रों में से चिट्ठी डालकर बारह नगर दिए गए। ६४ और इस्राएलियों ने लेवियों को ये नगर चराइयों समेत दिए। ६५ और उन्हों ने यहूदियों, शिमोनियों और बिन्यामीनियों के गोत्रों में से वे नगर दिए, जिनके नाम ऊपर दिए गए हैं ।।

६६ और कहातियों के कई कुलों को उनके भाग के नगर एप्रैम के गोत्र में से मिले। ६७ सो उनको अपनी अपनी चराइयों समेत एप्रैम के पहाड़ी देश का शकेम जो शरणनगर था, फिर गेजेर। ६८ योकमाम, बेथोरोन। ६९ अय्यालोन और गत्रिम्मोन। ७० और मनश्शे के आधे गोत्र में से अपनी अपनी चराइयों समेत आनेर और बिलाम शेष कहातियों के कुल को मिले। ७१ फिर गेर्शोमियों को मनश्शे के आधे गोत्र के कुल में से तो अपनी अपनी चराइयों समेत बाशान का गोलान और अशतारोत। ७२ और इस्साकार के गोत्र में से अपनी अपनी चराइयों समेत केदेश, दाबरात, ७३ रामोत और आनेम, ७४ और आशेर के गोत्र में से अपनी अपनी चराइयों समेत माशाल, अब्दोन। ७५ हूकोक और रहोब। ७६ और नप्ताली के गोत्र में से अपनी अपनी चराइयों समेत गालील का केदेश हम्मोन और किर्यातैम मिले। ७७ फिर शेष लेवियों अर्थात् मरारियों को जबूलून के गोत्र में से तो अपनी अपनी चराइयों समेत रिम्मोन और ताबोर। ७८ और यरीहो के पास की यरदन नदी की पूर्व और रूबेन के गोत्र में से तो अपनी अपनी चराइयों समेत जंगल का बेसेर, यहसा। ७९ कदेमोत और मेपात। ८० और गाद के गोत्र में से अपनी अपनी चराइयों समेत गिलाद का रामोत महनैम, ८१ हेशबोन और याजेर दिए गए ।।

(इस्साकार, बिन्यामीन, नप्ताली, मनश्शे, एप्रैम और आशेर की वंशावलियां)

७ इस्साकार के पुत्र तोला, पूआ, याशूब और शिम्रोन, चार थे। २ और तोला के पुत्र उज्जी, रपायाह, यरीएल, यहमै, यिबसाम और शमूएल, ये अपने अपने पितरों के घरानों अर्थात् तोला की सन्तान के मुख्य पुरुष और बड़े वीर थे, और दाऊद के दिनों में उनके वंश की गिनती बाईस हजार छः सौ थी। ३ और उज्जी का पुत्र यिज्रह्याह, और यिज्रह्याह के पुत्र मीकाएल, ओबद्याह, योएल और यिश्शिय्याह पांच थे; ये सब मुख्य पुरुष थे। ४ और उनके साथ उनकी वंशावलियों और पितरों के घरानों के अनुसार सेना के दलों के छत्तीस हजार योद्धा थे; क्योंकि उनके बहुत स्त्रियां और पुत्र थे। ५ और उनके भाई जो इस्साकार के सब कुलों में से थे, वे सत्तासी हजार बड़े वीर थे, जो अपनी अपनी वंशावली के अनुसार गिने गए ।।

६ बिन्यामीन के पुत्र: बेला, बेकेर और यदीएल ये तीन थे। ७ बेला के पुत्र: एसबोन, उज्जी, उज्जीएल, यरीमोत और ईरी ये पांच थे। ये अपने अपने पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष और बड़े वीर थे, और अपनी अपनी वंशावली के अनुसार उनकी गिनती बाईस हजार चौंतीस थी। ८ और बेकेर के पुत्र: जमीरा, योआश, एलीएजेर, एल्योएनै, ओम्री, यरेमोत, अबिय्याह, अनातोत और आलेमेत

ये सब बेकेर के पुत्र थे। ९ ये जो अपने अपने पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष और बड़े वीर थे, इनके वंश की गिनती अपनी अपनी वंशावली के अनुसार बीस हजार दो सौ थी। १० और यदीएल का पुत्र बिल्हान, और बिल्हान के पुत्र, यूश, बिन्यामीन, एहूद, कनाना, जेतान, तर्शीश और अहीशहर थे। ११ ये सब जो यदीएल की सन्तान और अपने अपने पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष और बड़े वीर थे, इनके वंश से सेना में युद्ध करने के योग्य सत्रह हजार दो सौ पुरुष थे। १२ और ईर के पुत्र शुप्पीम और हुप्पीम और अहेर के पुत्र हूशी थे॥

१३ नप्ताली के पुत्र, एहसीएल, गूनी, येसेर और शल्लूम थे, ये बिल्हा के पोते थे॥

१४ मनश्शे के पुत्र, अस्रीएल जो उसकी अरामी रखेली स्त्री से उत्पन्न हुआ था; और उस अरामी स्त्री ने गिलाद के पिता माकीर को भी जन्म दिया। १५ और माकीर (जिसकी बहिन का नाम माका था) उस ने हुप्पीम और शुप्पीम के लिये स्त्रियां ब्याह ली, और दूसरे का नाम सलोफाद था, और सलोफाद के बेटियां हुईं। १६ फिर माकीर की स्त्री माका के एक पुत्र उत्पन्न हुआ और उसका नाम पेरेश रखा; और उसके भाई का नाम शेरेश था; और इसके पुत्र ऊलाम और राकेम थे। १७ और ऊलाम का पुत्र बदान। ये गिलाद की सन्तान थे जो माकीर का पुत्र और मनश्शे का पोता था। १८ फिर उसकी बहिन हम्मोलेकेत ने ईशहोद, अबीएजेर और महला को जन्म दिया। १९ और शमीदा के पुत्र अह्यान, शेकेम, लिखी और अनीआम थे।

२० और एप्रैम के पुत्र शूतेलह और शूतेलह का बेरेद, बेरेद का तहत, तहत का एलादा, एलादा का तहत। २१ तहत का जाबाद और जाबाद का पुत्र शूतेलह हुआ, और येजेर और एलाद भी जिन्हें गत के मनुष्यों ने जो उस देश में उत्पन्न हुए थे इसलिये घात किया, कि वे उनके पशु हर लेने को उतर आए थे। २२ सो उनका पिता एप्रैम उनके लिये बहुत दिन शोक करता रहा, और उसके भाई उसे शांति देने को आए। २३ और वह अपनी पत्नी के पास गया, और उस ने गर्भवती होकर एक पुत्र को जन्म दिया और एप्रैम ने उसका नाम इस कारण बरीआ * रखा, कि उसके घराने में विपत्ति पड़ी थी। (२४ और उसकी पुत्री शेरा थी, जिस ने निचले और ऊपरवाले दोनों बेथोरान नाम नगरों को और उज्जेनशेरा को दृढ़ कराया।) २५ और उसका पुत्र रेपा था, और रेशेप भी और उसका पुत्र तेलह, तेलह का तहन, तहन का लादान, २६ लादान का अम्मीहूद, अम्मीहूद का एलीशामा। २७ एलीशामा का नून, और नून का पुत्र यहोशू था। २८ और उनकी निज भूमि और बस्तियां गांवों समेत बेतेल और पूर्व की ओर नारान और पश्चिम की ओर गांवों समेत गेजेर, फिर गांवों समेत शकेम, और गांवों समेत अज्जा थी। २९ और मनश्शेइयों के सिवाने के पास अपने अपने गांवों समेत बेतशान, तानाक, मगिद्दो और दोर। इन में इस्राएल के पुत्र यूसुफ की सन्तान के लोग रहते थे॥

३० आशेर के पुत्र, यिम्ना, यिश्वा, यिश्वी और बरीआ, और उनकी बहिन

* अर्थात् विपत्ति।

सेरह हुई। ३१ और बरीआ के पुत्र, हेबेर और मल्कीएल और यह बिर्जोत का पिता हुआ। ३२ और हेबेर ने यपलेत, शोमेर, होताम और उनकी बहिन शूआ को जन्म दिया। ३३ और यपलेत के पुत्र पासक बिम्हाल और अश्वात। यपलेत के ये ही पुत्र थे। ३४ और शेमेर के पुत्र, अही, रोहगा, यहुब्बा और अराम थे। ३५ और उसके भाई हेलेम के पुत्र सोपह यिम्ना, शेलेश और आमाल थे। ३६ और सोपह के पुत्र, सूह, हर्नेपेर, शूआल, बेरी, इम्रा। ३७ बेसेर, होद, शम्मा, शिलसा, यित्रान और बेरा थे। ३८ और येतेर के पुत्र, यपुन्ने, पिस्पा और अरा। ३९ और उल्ला के पुत्र, आरह, हन्नीएल और रिस्या। ४० ये सब आशेर के वंश में हुए, और अपने अपने पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष और बड़े से बड़े वीर थे और प्रधानों में मुख्य थे। और ये जो अपनी अपनी वंशावली के अनुसार सेना में युद्ध करने के लिये गिने गए, इनकी गिनती छब्बीस हजार थी॥

(बिन्यामीन की वंशावली)

८ बिन्यामीन से उसका जेठा बेला, दूसरा अशबेल, तीसरा अहह, २ चौथा नोहा और पांचवां रापा उत्पन्न हुआ। ३ और बेला के पुत्र, अद्दार, गेरा, अबीहूद। ४ अबीशू, नामान, अहोह, ५ गेरा, शपूपान और हूराम थे। ६ और एहूद के पुत्र ये हुए (गेबा के निवासियों के पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष ये थे, जिन्हें बन्धुआई में मानहत को ले गए थे)। ७ और नामान, अहिय्याह और गेरा (इन्हें भी बन्धुआ करके मानहत को ले गए थे), और उस ने उज्जा और अहिलूद को जन्म दिया। ८ और शहरैम से हशीम और बारा नाम अपनी स्त्रियों को छोड़ देने के बाद मोआब देश में लड़के उत्पन्न हुए। ९ और उसकी अपनी स्त्री होदेश से योआब, सिब्या, मेशा, मल्काम, यूस, सोक्या, १० और मिर्मा उत्पन्न हुए उसके ये पुत्र अपने अपने पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष थे। ११ और हूशीम से अबीतूब और एल्पाल का जन्म हुआ। १२ एल्पाल के पुत्र एबेर, मिशाम और शेमेर, इसी ने ओनो और गावों समेत लोद को बसाया। १३ फिर बरीआ और शेमा जो अय्यालोन के निवासियों के पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष थे, और जिन्हों ने गत के निवासियों को भगा दिया। १४ और अह्यो, शाशक, यरमोत। १५ जबद्याह, अराद, एदेर। १६ मीकाएल, यिस्पा, योहा, जो बरीआ के पुत्र थे। १७ जबद्याह, मशुल्लाम, हिजकी, हेबेर। १८ यिशमरै, यिजलीआ, योबाब, जो एल्पाल के पुत्र थे। १९ और याकीम, जिक्री, जब्दी। २० एलीएनै, सिल्लतै, एलीएल। २१ अदायाह, बरायाह और शिम्रात जो शिमी के पुत्र थे। २२ और यिशपान, एबेर, एलीएल। २३ अब्दोन, जिक्री, हानान। २४ हनन्याह, एलाम, अन्तोतिय्याह। २५ यिपदयाह और पनूएल जो शाशक के पुत्र थे। २६ और शमशरै, शहर्याह, अतल्याह। २७ योरेश्याह, एलिय्याह और जिक्री जो यरोहाम के पुत्र थे। २८ ये अपनी अपनी पीढ़ी में अपने अपने पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष और प्रधान थे, ये यरूशलेम में रहते थे॥

२९ और गिबोन में गिबोन का पिता रहता था, जिसकी पत्नी का नाम माका था। ३० और उसका जेठा पुत्र अब्दोन था, फिर शूर, कीश, बाल, नादाब। ३१ गदोर, अह्यो और जेकेर हुए। ३२ और मिकोत से शिमा उत्पन्न हुआ। और ये भी अपने भाइयों के साम्हने यरूशलेम में रहते थे, अपने भाइयों ही के साथ। ३३ और नेर से कीश उत्पन्न हुआ, कीश से शाऊल, और शाऊल से योनातान, मलकीश, अबीनादाब, और एशबाल उत्पन्न हुआ। ३४ और योनातन का पुत्र मरीब्बाल हुआ, और मरीब्बाल से मीका उत्पन्न हुआ। ३५ और मीका के पुत्र पीतोन, मेलेक, तारे और आहाज। ३६ और आहाज से यहोअद्दा उत्पन्न हुआ। और यहोअद्दा से आलेमेत, अजमावेत और जिम्री; और जिम्री से मोसा। ३७ मोसा से बिना उत्पन्न हुआ। और इसका पुत्र रापा हुआ, रापा का एलासा और एलासा का पुत्र आसेल हुआ। ३८ और आसेल के छः पुत्र हुए जिनके ये नाम थे, अर्थात् अज्रीकाम, बोकरू, यिश्माएल, शार्याह, ओबद्याह, और हानान। ये ही सब आसेल के पुत्र थे। ३९ और उसके भाई एशेक के ये पुत्र हुए, अर्थात् उसका जेठा ऊलाम, दूसरा यूश, तीसरा एलीपेलेत। ४० और ऊलाम के पुत्र शूरवीर और धनुर्धारी हुए, और उनके बहुत बेटे-पोते अर्थात् डेढ़ सौ हुए। ये ही सब बिन्यामीन के वंश के थे ॥

(यरूशलेम में रहनेवालों का प्रबन्ध)

९ इस प्रकार सब इस्राएली अपनी अपनी वंशावली के अनुसार, जो इस्राएल के राजाओं के वृत्तान्त की पुस्तक में लिखी हैं, गिने गए। और यहूदी अपने विश्वासघात के कारण बन्धुआई में बाबुल को पहुंचाए गए। २ जो लोग अपनी अपनी निज भूमि अर्थात् अपने नगरों में रहते थे, वह इस्राएली, याजक, लेवीय और नतीन थे। ३ और यरूशलेम में कुछ यहूदी, कुछ बिन्यामीन, और कुछ एप्रैमी, और मनश्शेई, रहते थे : ४ अर्थात् यहूदा के पुत्र पेरेस के वंश में से अम्मीहूद का पुत्र ऊतै, जो ओम्री का पुत्र, और इम्री का पोता, और बानी का परपोता था। ५ और शीलोइयों में से उसका जेठा पुत्र असायाह और उसके पुत्र। ६ और जेरह के वंश में से यूएल, और इनके भाई, ये छः सौ नब्बे हुए। ७ फिर बिन्यामीन के वंश में से सल्लू जो मशुल्लाम का पुत्र, होदव्याह का पोता, और हस्सनूआ का परपोता था। ८ और यिब्नियाह जो यरोहाम का पुत्र था, और एला जो उज्जी का पुत्र, और मिक्री का पोता था, और मशुल्लाम जो शपत्याह का पुत्र, रूएल का पोता, और यिब्नियाह का परपोता था; ९ और इनके भाई जो अपनी अपनी वंशावली के अनुसार मिलकर नौ सौ छप्पन। ये सब पुरुष अपने अपने पितरों के घरानों के अनुसार पितरों के घरानों में मुख्य थे ॥

१० और याजकों में से यदायाह, यहोयारीब और याकीन, ११ और अजर्याह जो परमेश्वर के भवन का प्रधान और हिलकिय्याह का पुत्र था, यह मशुल्लाम का पुत्र, यह सादोक का पुत्र, यह मरायोत का पुत्र, यह अहीतूब का पुत्र था। १२ और अदायाह जो यरोहाम का पुत्र था, यह पशहूर का पुत्र, यह मल्कियाह का पुत्र, यह मासै का पुत्र, यह अदोएल

का पुत्र, यह जेरा का पुत्र, यह मशुल्लाम का पुत्र, यह मशिल्लीत का पुत्र, यह इम्मेर का पुत्र था। १३ और इनके भाई थे, जो अपने अपने पितरों के घरानों में सत्रह सौ साठ मुख्य पुरुष थे, वे परमेश्वर के भवन की सेवा के काम में बहुत निपुण पुरुष थे॥

१४ फिर लेवियों में से मरारी के वंश में से शमायाह जो हश्शूब का पुत्र, अज्रीकाम का पोता, और हशव्याह का परपोता था। १५ और बकबक्कर, हेरेश और गालाल और आसाप के वंश में से मत्तन्याह जो मीका का पुत्र, और जिक्री का पोता था। १६ और ओबद्याह जो शमायाह का पुत्र, गालाल का पोता और यदूतून का परपोता था, और बेरेक्याह जो आसा का पुत्र, और एल्काना का पोता था, जो नतोपाइयों के गांवों में रहता था॥

१७ और द्वारपालों में से अपने अपने भाइयों सहित शल्लूम, अक्कूब, तल्मोन और अहीमान, इन में से मुख्य तो शल्लूम था। १८ और वह अब तक पूर्व ओर राजा के फाटक के पास द्वारपाली करता था। लेवियों की छावनी के द्वारपाल ये ही थे। १९ और शल्लूम जो कोरे का पुत्र, एब्यासाप का पोता, और कोरह का परपोता था, और उसके भाई जो उसके मूलपुरुष के घराने के अर्थात् कोरही थे, वह इस काम के अधिकारी थे, कि वे तम्बू के द्वारपाल हों। उनके पुरखा तो यहोवा की छावनी के अधिकारी, और पैठाव के रखवाले थे। २० और अगले समय में एलीआज़र का पुत्र पीनहास जिसके संग यहोवा रहता था वह उनका प्रधान था। २१ मेशेलेम्याह का पुत्र जकर्याह मिलापवाले तम्बू का द्वारपाल था। २२ ये सब जो द्वारपाल होने को चुने गए, वह दो सौ बारह थे। ये जिनके पुरखाओं को दाऊद और शमूएल दर्शी ने विश्वासयोग्य जानकर ठहराया था, वह अपने अपने गांव में अपनी अपनी वंशावली के अनुसार गिने गए। २३ सो वे और उनकी सन्तान यहोवा के भवन अर्थात् तम्बू के भवन के फाटकों का अधिकार बारी बारी रखते थे। २४ द्वारपाल पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्खिन, चारों दिशा की ओर चौकी देते थे। २५ और उनके भाई जो गांवों में रहते थे, उनको सात सात दिन के बाद बारी बारी से उनके संग रहने के लिये आना पड़ता था। २६ क्योंकि चारों प्रधान द्वारपाल जो लेवीय थे, वे विश्वासयोग्य जानकर परमेश्वर के भवन की कोठरियों और भण्डारों के अधिकारी ठहराए गए थे। २७ और वे परमेश्वर के भवन के आस-पास इसलिये रात बिताते थे, कि उसकी रक्षा उन्हें सौंपी गई थी, और भोर-भोर को उसे खोलना उन्हीं का काम था॥

२८ और उन में से कुछ उपासना के पात्रों के अधिकारी थे, क्योंकि ये गिनकर भीतर पहुंचाए, और गिनकर बाहर निकाले भी जाते थे। २९ और उन में से कुछ सामान के, और पवित्रस्थान के पात्रों के, और मैदे, दाखमधु, तेल, लोबान और सुगन्धद्रव्यों के अधिकारी ठहराए गए थे। ३० और याजकों के पुत्रों में से कुछ सुगन्धद्रव्यों में गंधी का काम करते थे। ३१ और मतित्याह नाम एक लेवीय जो कोरही शल्लूम का जेठा था उसे विश्वास-योग्य जानकर तवों पर बनाई हुई वस्तुओं का अधिकारी नियुक्त किया था। ३२ और उसके भाइयों अर्थात् कहातियों में से कुछ तो भेंटवाली रोटी के अधिकारी

थे, कि हर एक विश्रामदिन को उसे तैयार किया करें ॥

३३ और ये गवैये थे जो लेवीय पितरों के घरानों में मुख्य थे, और कोठरियों में रहते, और और काम से छूटे थे; क्योंकि वे रात-दिन अपने काम में लगे रहते थे। ३४ ये ही अपनी अपनी पीढ़ी में लेवियों के पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष थे, ये यरूशलेम में रहते थे ॥

३५ और गिबोन में गिबोन का पिता यीएल रहता था, जिसकी पत्नी का नाम माका था। ३६ उसका जेठा पुत्र अब्दोन हुआ, फिर सूर, कीश, बाल, नेर नादाब। ३७ गदोर, अह्यो, जकर्याह् और मिल्कोत। ३८ और मिल्कोत से शिमाम उत्पन्न हुआ और ये भी अपने भाइयों के साम्हने अपने भाइयों के संग यरूशलेम में रहते थे। ३९ और नेर से कीश, कीश से शाऊल, और शाऊल से योनातान, मल्कीश, अबीनादाब और एशबाल उत्पन्न हुए। ४० और योनातान का पुत्र मरीब्बाल हुआ, और मरीब्बाल से मीका उत्पन्न हुआ। ४१ और मीका के पुत्र पीतोन, मेलेक, तह्रे * और अहाज थे। ४२ और अहाज से यारा और यारा से आलेमेत, अजमावेत और जिम्री, और जिम्री से मोसा। ४३ और मोसा से बिना उत्पन्न हुआ और बिना का पुत्र रपायाह् हुआ, रपायाह् का एलासा, और एलासा का पुत्र आसेल हुआ। ४४ और आसेल के छः पुत्र हुए जिनके ये नाम थे, अर्थात् अज्रीकाम, बोकरू, यिश्माएल, शार्याह, ओबद्याह् और हनान. आसेल के ये ही पुत्र हुए ॥

* देखो ८:३५।

(शाऊल की मृत्यु और दाऊद के राज्य का आरम्भ)

१० पलिश्ती इस्राएलियों से लड़े; और इस्राएली पलिश्तियों के साम्हने से भागे, और गिलबो नाम पहाड़ पर मारे गए। २ और पलिश्ती शाऊल और उसके पुत्रों के पीछे लगे रहे, और पलिश्तियों ने शाऊल के पुत्र योनातान, अबीनादाब और मल्कीशू को मार डाला। ३ और शाऊल के साथ घमासान युद्ध होता रहा और धनुर्धारियों ने उसे जा लिया, और वह उनके कारण व्याकुल हो गया। ४ तब शाऊल ने अपने हथियार ढोनेवाले से कहा, अपनी तलवार खींचकर मुझे भोंक दे, कहीं ऐसा न हो कि वे खतनारहित लोग आकर मेरी ठट्ठा करें, परन्तु उसके हथियार ढोनेवाले ने भयभीत होकर ऐसा करने से इनकार किया, तब शाऊल अपनी तलवार खड़ी करके उस पर गिर पड़ा। ५ यह देखकर कि शाऊल मर गया है उसका हथियार ढोनेवाला भी अपनी तलवार पर आप गिरकर मर गया। ६ यों शाऊल और उसके तीनों पुत्र, और उसके घराने के सब लोग एक संग मर गए। ७ यह देखकर कि वे भाग गए, और शाऊल और उसके पुत्र मर गए, उस तराई में रहनेवाले सब इस्राएली मनुष्य अपने अपने नगर को छोड़कर भाग गए; और पलिश्ती आकर उन में रहने लगे ॥

८ दूसरे दिन जब पलिश्ती मारे हुओं के माल को लूटने आए, तब उनको शाऊल और उसके पुत्र गिलबो पहाड़ पर पड़े हुए मिले। ९ तब उन्होंने उसके वस्त्रों को उतार उसका सिर और

हथियार ले लिया और पलिश्तियों के देश के सब स्थानों में दूतों को इसलिये भेजा कि उनके देवताओं और साधारण लोगों में यह शुभ समाचार देते जाएं। १० तब उन्हों ने उसके हथियार अपने देवालय में रखे, और उसकी खोपड़ी को दागोन के मन्दिर में लटका दिया। ११ जब गिलाद के याबेश के सब लोगों ने सुना कि पलिश्तियों ने शाऊल से क्या क्या किया है। १२ तब सब शूरवीर चले और शाऊल और उसके पुत्रों की लोथें उठाकर याबेश में ले आए, और उनकी हड्डियों को याबेश में एक बांज वृक्ष के तले गाड़ दिया और सात दिन तक अनशन किया॥

१३ यों शाऊल उस विश्वासघात के कारण मर गया, जो उस ने यहोवा से किया था, क्योंकि उस ने यहोवा का वचन टाल दिया था, फिर उस ने भूतसिद्धि करनेवाली से पूछकर सम्मति ली थी। १४ उस ने यहोवा से न पूछा था, इसलिये यहोवा ने उसे मारकर राज्य को यिशै के पुत्र दाऊद को दे दिया॥

११ तब सब इस्राएली दाऊद के पास हेब्रोन में इकट्ठे होकर कहने लगे, सुन, हम लोग और तू एक ही हड्डी और मांस हैं। २ अगले दिनों में जब शाऊल राजा था, तब भी इस्राएलियों का अगुआ तू ही था, और तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझ से कहा, कि मेरी प्रजा इस्राएल का चरवाहा, और मेरी प्रजा इस्राएल का प्रधान, तू ही होगा। ३ इसलिये सब इस्राएली पुरनिये हेब्रोन में राजा के पास आए, और दाऊद ने उनके साथ हेब्रोन में यहोवा के साम्हने वाचा बान्धी; और उन्हों ने यहोवा के वचन के अनुसार, जो उस ने शमूएल से कहा था, इस्राएल का राजा होने के लिये दाऊद का अभिषेक किया॥

४ तब सब इस्राएलियों समेत दाऊद यरूशलेम गया, जो यबूस भी कहलाता था, और वहां यबूसी नाम उस देश के निवासी रहते थे। ५ तब यबूस के निवासियों ने दाऊद से कहा, तू यहां आने नहीं पाएगा। तौभी दाऊद ने सिय्योन नाम गढ़ को ले लिया, वही दाऊदपुर भी कहलाता है। ६ और दाऊद ने कहा, जो कोई यबूसियों को सब से पहिले मारेगा, वह मुख्य सेनापति होगा, तब सरूयाह का पुत्र योआब सब से पहिले चढ़ गया, और सेनापति बन गया। ७ और दाऊद उस गढ़ में रहने लगा, इसलिये उसका नाम दाऊदपुर पड़ा। ८ और उस ने नगर के चारों ओर, अर्थात् मिल्लो से लेकर चारों ओर शहरपनाह बनवाई, और योआब ने शेष नगर के खण्डहरों को फिर बसाया*। ९ और दाऊद की प्रतिष्ठा अधिक बढ़ती गई और सेनाओं का यहोवा उसके संग था॥

(दाऊद के शूरवीर)

१० यहोवा ने इस्राएल के विषय जो वचन कहा था, उसके अनुसार दाऊद के जिन शूरवीरों ने सब इस्राएलियों समेत उसके राज्य में उसके पक्ष में होकर, उसे राजा बनाने को ज़ोर दिया, उन में से मुख्य पुरुष ये हैं। ११ दाऊद के शूरवीरों की नामावली† यह है, अर्थात् किसी हक्मोनी का पुत्र याशोबाम जो

* मूल में— बाकी नगर जिलाना था।
† मूल में—गिनती।

तीसों में मुख्य था, उस ने तीन सौ पुरुषों पर भाला चला कर, उन्हें एक ही समय में मार डाला। १२ उसके बाद अहोही दोदो का पुत्र एलीआज़र जो तीनों महान वीरों में से एक था। १३ वह पसदम्मीम में जहां जव का एक खेत था, दाऊद के संग रहा जब पलिश्ती वहां युद्ध करने को इकट्ठे हुए थे, और लोग पलिश्तियों के साम्हने से भाग गए। १४ तब उन्हों ने उस खेत के बीच में खड़े होकर उसकी रक्षा की, और पलिश्तियों को मारा, और यहोवा ने उनका बड़ा उद्धार किया॥

१५ और तीसों मुख्य पुरुषों में से तीन दाऊद के पास चट्टान को, अर्थात् अदुल्लाम नाम गुफ़ा में गए, और पलिश्तियों की छावनी रपाईम नाम तराई में पड़ी हुई थी। १६ उस समय दाऊद गढ़ में था, और उस समय पलिश्तियों की एक चौकी बेतलेहेम में थी। १७ तब दाऊद ने बड़ी अभिलाषा के साथ कहा, कौन मुझे बेतलेहेम के फाटक के पास के कुएं का पानी पिलाएगा। १८ तब वे तीनों जन पलिश्तियों की छावनी में टूट पड़े और बेतलेहेम के फाटक के कुएं से पानी भरकर दाऊद के पास ले आए; परन्तु दाऊद ने पीने से इनकार किया और यहोवा के साम्हने अर्घ करके उण्डेला। १९ और उस ने कहा, मेरा परमेश्वर मुझ से ऐसा करना दूर रखे; क्या मैं इन मनुष्यों का लोहू पीऊं जिन्हों ने अपने प्राणों पर खेला है? ये तो अपने प्राण पर खेलकर उसे ले आए हैं। इसलिये उस ने वह पानी पीने से इनकार किया। इन तीन वीरों ने ये ही काम किए॥

२० और अबीशै जो योआब का भाई था, वह तीनों में मुख्य था। और उस ने अपना भाला चलाकर तीन सौ को मार डाला और तीनों में नामी हो गया। २१ दूसरी श्रेणी के तीनों में वह अधिक प्रतिष्ठित था, और उनका प्रधान हो गया, परन्तु मुख्य तीनों के पद को न पहुंचा॥

२२ यहोयादा का पुत्र बनायाह था, जो कबजेल के एक वीर का पुत्र था, जिस ने बड़े बड़े काम किए थे, उस ने सिंह समान दो मोआबियों को मार डाला, और हिमऋतु* में उस ने एक गड़हे में उतर के एक सिंह को मार डाला। २३ फिर उस ने एक डीलवाले अर्थात् पांच हाथ लम्बे मिस्री पुरुष को मार डाला, वह मिस्री हाथ में जुलाहों का ढेका सा एक भाला लिए हुए था, परन्तु बनायाह एक लाठी ही लिए हुए उसके पास गया, और मिस्री के हाथ से भाले को छीनकर उसी के भाले से उसे घात किया। २४ ऐसे ऐसे काम करके यहोयादा का पुत्र बनायाह उन तीनों वीरों में नामी हो गया। २५ वह तो तीसों से अधिक प्रतिष्ठित था, परन्तु मुख्य तीनों के पद को न पहुंचा। उसको दाऊद ने अपनी निज सभा में सभासद किया॥

२६ फिर दलों के वीर ये थे, अर्थात् योआब का भाई असाहेल, बेतलेहेमी दोदो का पुत्र एल्हानान। २७ हरोरी शम्मोत, पलोनी हेलेस। २८ तकोई इक्केश का पुत्र ईरा, अनातोती अबीएजेर। २९ सिब्बके होसाती, अहोही ईलै। ३० महरै नतोपाई, एक और नतोपाई

* हिमऋतु वा बर्फीला मौसम।

बाना का पुत्र हेलेद। ३१ बिन्यामीनियों के गिबा नगरवासी रीबै का पुत्र इतै, पिरातोनी बनायाह। ३२ गाशके नालों के पास रहनेवाला हूरै, अराबावासी अबीएल। ३३ बहूरीमी अजमावेत, शल्बोनी एल्यहबा। ३४ गीजोई हाशेम के पुत्र, फिर हरारी शागे का पुत्र योनातान। ३५ हरारी सकार का पुत्र अहीआम, ऊर का पुत्र एलीपाल। ३६ मकेराई हेपेर, पलोनी अहिय्याह। ३७ कर्मेली हेस्रो, एज्बै का पुत्र नारै। ३८ नातान का भाई योएल, हग्री का पुत्र मिभार। ३९ अम्मोनी सेलेक, बेरोती नहरै जो सरूयाह के पुत्र योआब का हथियार ढोनेवाला था। ४० येतेरी ईरा और गारेब। ४१ हित्ती ऊरिय्याह, अहलै का पुत्र जाबाद। ४२ तीस पुरुषों समेत रूबेनी शीजा का पुत्र अदीना जो रूबेनियों का मुखिया था। ४३ माका का पुत्र हानान, मेतेनी योशापात। ४४ अशतारोती उज्जिय्याह, अरोएरी होताम के पुत्र शामा और यीएल। ४५ शिम्री का पुत्र यदीएल और उसका भाई तीसी, योहा। ४६ महवीमी एलीएल, एलनाम के पुत्र यरीबै और योशव्याह, ४७ मोआबी यित्मा, एलीएल, ओबेद और मसोबाई यासीएल॥

(दाऊद के अनुचर)

१२ जब दाऊद सिकलग में कीश के पुत्र शाऊल के डर के मारे छिपा* रहता था, तब ये उसके पास वहां आए, और ये उन वीरों में से थे जो युद्ध में उसके सहायक थे। २ ये धनुर्धारी थे, जो दाहिने-बायें, दोनों हाथों से गोफन के पत्थर और धनुष के तीर चला सकते थे; और ये शाऊल के भाइयों में से बिन्यामीनी थे। ३ मुख्य तो अहीएजेर और दूसरा योआश था जो गिबावासी शमाआ का पुत्र था; फिर अजमावेत के पुत्र यजीएल और पेलेत, फिर बराका और अनातोती येहू। ४ और गिबोनी यिशमायाह जो तीसों में से एक वीर और उनके ऊपर भी था; फिर यिर्मयाह, यहजीएल, योहानान, गदेरावासी योजाबाद। ५ एलूजै, यरीमोत, बाल्याह, शमर्याह, हारूपी शपत्याह। ६ एल्काना, यिशिय्याह, अजरेल, योएजेर, याशोबाम, जो सब कोरहवंशी थे। ७ और गदोरवासी यरोहाम के पुत्र योएला और जबद्याह॥

८ फिर जब दाऊद जंगल के गढ़ में रहता था, तब ये गादी जो शूरवीर थे, और युद्ध विद्या सीखे हुए और ढाल और भाला काम में लानेवाले थे, और उनके मुंह सिंह के से और वे पहाड़ी मृग के समान वेग से दौड़नेवाले थे, ये और गादियों से अलग होकर उसके पास आए। ९ अर्थात् मुख्य तो एजेर, दूसरा ओबद्याह, तीसरा एलीआब। १० चौथा मिश्मन्ना, पांचवां यिर्मयाह। ११ छठा अत्तै, सातवां एलीएल। १२ आठवां योहानान, नौवां एलजाबाद। १३ दसवां यिर्मयाह और ग्यारहवां मकबन्नै था। १४ ये गादी मुख्य योद्धा थे, उन में से जो सब से छोटा था वह तो एक सौ के ऊपर, और जो सब से बड़ा था, वह हजार के ऊपर था। १५ ये ही वे हैं, जो पहिले महीने में जब यरदन नदी सब कड़ाड़ों के ऊपर ऊपर बहती थी, तब उसके पार उतरे; और पूर्व और

* मूल में—बन्द।

पश्चिम दोनों ओर के सब तराई के रहनेवालों को भगा दिया ॥

१६ और कई एक बिन्यामीनी और यहूदी भी दाऊद के पास गढ़ में आए। १७ उन से मिलने को दाऊद निकला और उन से कहा, यदि तुम मेरे पास मित्रभाव से मेरी सहायता करने को आए हो, तब तो मेरा मन तुम से लगा रहेगा; परन्तु जो तुम मुझे धोखा देकर मेरे शत्रुओं के हाथ पकडवाने आए हो, तो हमारे पितरों का परमेश्वर इस पर दृष्टि करके डांटे, क्योंकि मेरे हाथ से कोई उपद्रव नहीं हुआ। १८ तब आत्मा अमासै में समाया, जो तीसों वीरों मे मुख्य था, और उस ने कहा, हे दाऊद! हम तेरे हैं; हे यिशै के पुत्र! हम तेरी ओर के हैं, तेरा कुशल ही कुशल हो और तेरे सहायकों का कुशल हो, क्योंकि तेरा परमेश्वर तेरी सहायता किया करता है। इसलिये दाऊद ने उनको रख लिया, और अपने दल के मुखिये ठहरा दिए ॥

१९ फिर कुछ मनश्शेई भी उस समय दाऊद के पास भाग गए, जब वह पलिश्तियों के साथ होकर शाऊल से लड़ने को गया, परन्तु उसकी कुछ सहायता न की, क्योकि पलिश्तियों के सरदारों ने सम्मति लेने पर यह कहकर उसे विदा किया, कि वह हमारे सिर कटवाकर अपने स्वामी शाऊल से फिर मिल जाएगा। २० जब वह सिक्लग को जा रहा था, तब ये मनश्शेई उसके पास भाग गए; अर्थात् अदना, योजाबाद, यदीएल, मीकाएल, योजाबाद, एलीहू और सिल्लतै जो मनश्शे के हजारों के मुखिये थे। २१ इन्हों ने लुटेरों के दल के विरुद्ध दाऊद की सहायता की, क्योंकि ये सब शूरवीर थे, और सेना के प्रधान भी बन गए। २२ वरन प्रतिदिन लोग दाऊद की सहायता करने को उसके पास आते रहे, यहां तक कि परमेश्वर की सेना के समान एक बड़ी सेना बन गई ॥

२३ फिर लोग लड़ने के लिये हथियार बान्धे हुए हेब्रोन में दाऊद के पास इसलिये आए कि यहोवा के वचन के अनुसार शाऊल का राज्य उसके हाथ में कर दें: उनके मुखियों की गिनती यह है। २४ यहूदा के ढाल और भाला लिए हुए छः हजार आठ सौ हथियारबन्ध लड़ने को आए। २५ शिमोनी सात हजार एक सौ तैयार शूरवीर लड़ने को आए। २६ लेवीय चार हजार छः सौ आए। २७ और हारून के घराने का प्रधान यहोयादा था और उसके साथ तीन हजार सात सौ आए। २८ और सादोक नाम एक जवान वीर भी आया, और उसके पिता के घराने के बाईस प्रधान आए। २९ और शाऊल के भाई बिन्यामीनियों में से तीन हजार आए, क्योंकि उस समय तक आधे बिन्यामीनियों से अधिक शाऊल के घराने का पक्ष करते रहे। ३० फिर एप्रैमियों में से बड़े वीर और अपने अपने पितरों के घरानों मे नामी पुरुष बीस हजार आठ सौ आए। ३१ और मनश्शे के आधे गोत्र में से दाऊद को राजा बनाने के लिये अठारह हजार आए, जिनके नाम बताए गए थे। ३२ और इस्साकारियों में से जो समय को पहचानते थे, कि इस्राएल को क्या करना उचित है, उनके प्रधान दो सौ थे: और उनके सब भाई उनकी आज्ञा में रहते थे। ३३ फिर जबूलून में से युद्ध के सब प्रकार के हथियार लिए हुए लड़ने को पांति बान्धनेवाले योद्धा

पचास हजार आए, वे पांति बान्धनेवाले थे: और चंचल न थे*। ३४ फिर नप्ताली में सें प्रधान तो एक हजार, और उनके संग ढाल और भाला लिए सैंतीस हजार आए। ३५ और दानियों में से लड़ने के लिये पांति बान्धनेवाले अठाईस हजार छः सौ आए। ३६ और आशेर में से लड़ने को पांति बान्धनेवाले चालीस हजार योद्धा आए। ३७ और यरदन पार रहनेवाले रूबेनी, गादी और मनश्शे के आधे गोत्रियों में से युद्ध के सब प्रकार के हथियार लिए हुए एक लाख बीस हजार आए। ३८ ये सब युद्ध के लिये पांति बान्धनेवाले दाऊद को सारे इस्राएल का राजा बनाने के लिये हेब्रोन में सच्चे मन से आए, और और सब इस्राएली भी दाऊद को राजा बनाने के लिये सहमत थे। ३९ और वे वहां तीन दिन दाऊद के संग खाते पीते रहे, क्योंकि उनके भाइयों ने उनके लिये तैयारी की थी। ४० और जो उनके निकट वरन इस्साकार, जबूलून और नप्ताली तक रहते थे, वे भी गदहों, ऊंटों, खच्चरों और बैलों पर मैदा, अंजीरों और किशमिश की टिकियां, दाखमधु और तेल आदि भोजनवस्तु लादकर लाए, और बैल और भेड़-बकरियां बहुतायत से लाए; क्योंकि इस्राएल में आनन्द मनाया जारहा था॥

(पवित्र सन्दूक के यरूशलेम में पहुंचाए जाने का वर्णन)

१३ और दाऊद ने सहस्त्रपतियों, शतपतियों और सब प्रधानों से सम्मति ली। २ तब दाऊद ने इस्राएल की सारी मण्डली से कहा, यदि यह तुम को अच्छा लगे और हमारे परमेश्वर की इच्छा हो, तो इस्राएल के सब देशों में जो हमारे भाई रह गए हैं और उनके साथ जो याजक और लेवीय अपने अपने चराईवाले नगरों में रहते हैं, उनके पास भी यह कहला भेजें कि हमारे पास इकट्ठे हो जाओ। ३ और हम अपने परमेश्वर के सन्दूक को अपने यहां ले आएं; क्योंकि शाऊल के दिनों में हम उसके समीप नहीं जाते थे। ४ और समस्त मण्डली ने कहा, हम ऐसा ही करेंगे, क्योंकि यह बात उन सब लोगों की दृष्टि में उचित मालूम हुई॥

५ तब दाऊद ने मिस्र के शीहोर से ले हमात की घाटी तक के सब इस्राएलियों को इसलिये इकट्ठा किया, कि परमेश्वर के सन्दूक को किर्यत्यारीम से ले आए। ६ तब दाऊद सब इस्राएलियों को संग लेकर बाला को गया, जो किर्यत्यारीम भी कहलाता और यहूदा के भाग में था, कि परमेश्वर यहोवा का सन्दूक वहां से ले आए; वह तो करूबों पर विराजनेवाला है, और उसका नाम भी यही लिया जाता है। ७ तब उन्हों ने परमेश्वर का सन्दूक एक नई गाड़ी पर चढ़ाकर, अबीनादाब के घर से निकाला, और उज्जा और अह्यो उस गाड़ी को हांकने लगे। ८ और दाऊद और सारे इस्राएली परमेश्वर के साम्हने तन मन से गीत गाते और वीणा, सारंगी, डफ, झांझ और तुरहियां बजाते थे॥

९ जब वे कीदोन के खलिहान तक आए, तब उज्जा ने अपना हाथ सन्दूक थामने को बढ़ाया, क्योंकि बैलों ने ठोकर खाई थी। १० तब यहोवा का कोप

* मूल में—मन और मन के बिना।

उज्जा पर भड़क उठा; और उस ने उस को मारा क्योंकि उस ने सन्दूक पर हाथ लगाया था; वह वहीं परमेश्वर के साम्हने मर गया। ११ तब दाऊद अप्रसन्न हुआ, इसलिये कि यहोवा उज्जा पर टूट पड़ा था; और उस ने उस स्थान का नाम पेरेसुज्जा * रखा, यह नाम आज तक बना है। १२ और उस दिन दाऊद परमेश्वर से डरकर कहने लगा, मैं परमेश्वर के सन्दूक को अपने यहां कैसे ले आऊं? १३ तब दाऊद ने सन्दूक को अपने यहां दाऊदपुर में न लाया, परन्तु ओबेदेदोम नाम गती के यहां ले गया। १४ और परमेश्वर का सन्दूक ओबेदेदोम के यहां उसके घराने के पास तीन महीने तक रहा, और यहोवा ने ओबेदेदोम के घराने पर और जो कुछ उसका था उस पर भी आशीष दी॥

१४ और सोर के राजा हीराम ने दाऊद के पास दूत भेजे, और उसका भवन बनाने को देवदारु की लकड़ी और राज और बढ़ई भेजे। २ और दाऊद को निश्चय हो गया कि यहोवा ने मुझे इस्राएल का राजा करके स्थिर किया, क्योंकि उसकी प्रजा इस्राएल के निमित्त उसका राज्य अत्यन्त बढ़ गया था॥

३ और यरूशलेम में दाऊद ने और स्त्रियां ब्याह लीं, और उन से और बेटे-बेटियां उत्पन्न हुईं। ४ उसके जो सन्तान यरूशलेम में उत्पन्न हुए, उनके नाम ये हैं: अर्थात् शम्मू, शोबाब, नातान, सुलैमान; ५ यिभार, एलीशू, एल्पेलेत; ६ नोगह, नेपेग, यापी, एलीशामा, ७ बेल्यादा और एलीपेलेत॥

८ जब पलिश्तियों ने सुना कि पूरे इस्राएल का राजा होने के लिये दाऊद का अभिषेक हुआ, तब सब पलिश्तियों ने दाऊद की खोज में चढ़ाई की; यह सुनकर दाऊद उनका साम्हना करने को निकल गया। ९ और पलिश्ती आए और रपाईम नाम तराई में धावा मारा। १० तब दाऊद ने परमेश्वर से पूछा, क्या मैं पलिश्तियों पर चढ़ाई करूं? और क्या तू उन्हें मेरे हाथ में कर देगा? यहोवा ने उस से कहा, चढ़ाई कर, क्योंकि मैं उन्हें तेरे हाथ में कर दूंगा। ११ इसलिये जब वे बालपरासीम को आए, तब दाऊद ने उन को वहीं मार लिया; तब दाऊद ने कहा, परमेश्वर मेरे द्वारा मेरे शत्रुओं पर जल की धारा की नाईं टूट पड़ा है। इस कारण उस स्थान का नाम बाल्परासीम * रखा गया। १२ वहां वे अपने देवताओं को छोड़ गए, और दाऊद की आज्ञा से वे आग लगाकर फूंक दिए गए॥

१३ फिर दूसरी बार पलिश्तियों ने उसी तराई में धावा मारा। १४ तब दाऊद ने परमेश्वर से फिर पूछा, और परमेश्वर ने उस से कहा, उनका पीछा मत कर; उन से मुड़कर तूत के वृक्षों के साम्हने से उन पर छापा मार। १५ और जब तूत के वृक्षों की फुनगियों में से सेना के चलने की सी आहट तुझे सुन पड़े, तब यह जानकर युद्ध करने को निकल जाना कि परमेश्वर पलिश्तियों की सेना को मारने के लिये तेरे आगे जा रहा है। १६ परमेश्वर की इस आज्ञा के अनुसार दाऊद ने किया, और इस्राएलियों

* अर्थात् उज्जा पर टूट पड़ना।

* अर्थात् टूट पड़ने का स्थान।

ने पलिश्तियों की सेना को गिबोन से लेकर गेजेर तक मार लिया। १७ तब दाऊद की कीर्त्ति सब देशों में फैल गई, और यहोवा ने सब जातियों के मन में उसका भय भर दिया ॥

१५ तब दाऊद ने दाऊदपुर में भवन बनवाए, और परमेश्वर के सन्दूक के लिये एक स्थान तैयार करके एक तम्बू खड़ा किया। २ तब दाऊद ने कहा, लेवियों को छोड़ और किसी को परमेश्वर का सन्दूक उठाना नहीं चाहिये, क्योंकि यहोवा ने उनको इसी लिये चुना है कि वे परमेश्वर का सन्दूक उठाएं और उसकी सेवा टहल सदा किया करें। ३ तब दाऊद ने सब इस्राएलियों को यरूशलेम में इसलिये इकट्ठा किया कि यहोवा का सन्दूक उस स्थान पर पहुंचाएं, जिसे उस ने उसके लिये तैयार किया था। ४ इसलिये दाऊद ने हारून के सन्तानों और लेवियों को इकट्ठा किया: ५ अर्थात् कहातियों में से ऊरीएल नाम प्रधान को और उसके एक सौ बीस भाइयों को; ६ मरारियों में से असायाह नाम प्रधान को और उसके दो सौ बीस भाइयों को; ७ गेर्शोमियों में से योएल नाम प्रधान को और उसके एक सौ तीस भाइयों को; ८ एलीसापानियों में से शमायाह नाम प्रधान को और उसके दो सौ भाइयों को; ९ हेब्रोनियों में से एलीएल नाम प्रधान को और उसके अस्सी भाइयों को; १० और उज्जीएलियों में से अम्मीनादाब नाम प्रधान को और उसके एक सौ बारह भाइयों को। ११ तब दाऊद ने सादोक और एब्यातार नाम याजकों को, और ऊरीएल, असायाह, योएल, शमायाह, एलीएल और अम्मीनादाब नाम लेवियों को बुलवाकर उन से कहा, १२ तुम तो लेवीय पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष हो; इसलिये अपने भाइयों समेत अपने अपने को पवित्र करो, कि तुम इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का सन्दूक उस स्थान पर पहुंचा सको जिसको मैं ने उसके लिये तैयार किया है। १३ क्योंकि पहिली बार तुम ने उसको न उठाया इस कारण हमारा परमेश्वर यहोवा हम पर टूट पड़ा, क्योंकि हम उसकी खोज में नियम के अनुसार न लगे थे। १४ तब याजकों और लेवियों ने अपने अपने को पवित्र किया, कि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का सन्दूक ले जा सकें। १५ तब उस आज्ञा के अनुसार जो मूसा ने यहोवा का वचन सुनकर दी थी, लेवियों ने सन्दूक को डंडों के बल अपने कंधों पर उठा लिया ॥

१६ और दाऊद ने प्रधान लेवियों को आज्ञा दी, कि अपने भाई गवैयों को बाजे अर्थात् सारंगी, वीणा और झांझ देकर बजाने और आनन्द के साथ ऊंचे स्वर से गाने के लिये नियुक्त करें। १७ तब लेवियों ने योएल के पुत्र हेमान को, और उसके भाइयों में से बेरेक्याह के पुत्र आसाप को, और अपने भाई मरारियों में से कूशायाह के पुत्र एतान को ठहराया। १८ और उनके साथ उन्हों ने दूसरे पद के अपने भाइयों को अर्थात् जकर्याह, बेन, याजीएल, शमीरामोत, यहीएल, उन्नी, एलीआब, बनायाह, मासेयाह, मत्तित्याह, एलीपलेह, मिकनेयाह, और ओबेदेदोम और पीएल को जो द्वारपाल थे ठहराया। १९ यों हेमान, आसाप और एतान नाम के

गवैये तो पीतल की झांझ वजा बजाकर राग चलाने को; २० और जकर्याह, अजीएल, शमीरामोत, यहीएल, उन्नी, एलीआब, मासेयाह, और बनायाह, अलामोत, नाम राग में सारंगी बजाने को; २१ और मत्तित्याह, एलीपलेह, मिकनेयाह ओबेदेदोम, यीएल और अजज्याह वीणा खर्ज में छेड़ने को ठहराए गए। २२ और राग उठाने का अधिकारी कनन्याह नाम लेवियों का प्रधान था, वह राग उठाने के विषय शिक्षा देता था, क्योंकि वह निपुण था। २३ और बेरेक्याह और एलकाना सन्दूक के द्वारपाल थे। २४ और शबन्याह, योशापात, नतनेल, अमासै, जकर्याह, बनायाह और एलीएजेर नाम याजक परमेश्वर के सन्दूक के आगे आगे तुरहियां बजाते हुए चले, और ओबेदेदोम और यहिय्याह उसके द्वारपाल थे ॥

२५ और दाऊद और इस्राएलियों के पुरनिये और सहस्रपति सब मिलकर यहोवा की वाचा का सन्दूक ओबेदेदोम के घर से आनन्द के साथ ले आने के लिए गए। २६ जब परमेश्वर ने लेवियों की सहायता की जो यहोवा की वाचा का सन्दूक उठानेवाले थे, तब उन्हों ने सात बैल और सात मेढ़े बलि किए। २७ दाऊद, और यहोवा की वाचा का सन्दूक उठानेवाले सब लेवीय और गानेवाले और गानेवालों के साथ राग उठानेवाले का प्रधान कनन्याह, ये सब तो सन के कपड़े के बागे पहिने थे, और दाऊद सन के कपड़े का एपोद पहिने था। २८ इस प्रकार सब इस्राएली यहोवा की वाचा के सन्दूक को जयजयकार करते, और नरसिंगे, तुरहियां और झांझ बजाते और सारंगियां और वीणा बजाते हुए ले चले। २९ जब यहोवा की वाचा का सन्दूक दाऊदपुर में पहुंचा तब शाऊल की बेटी मीकल ने खिड़की में से झांककर दाऊद राजा को कूदते और खेलते हुए देखा, और उसे मन ही मन तुच्छ जाना ॥

१६ तब परमेश्वर का सन्दूक ले आकर उस तम्बू में रखा गया जो दाऊद ने उसके लिये खड़ा कराया था; और परमेश्वर के साम्हने होमबलि और मेलबलि चढ़ाए गए। २ जब दाऊद होमबलि और मेलबलि चढ़ा चुका, तब उस ने यहोवा के नाम से प्रजा को आशीर्वाद दिया। ३ और उस ने क्या पुरुष, क्या स्त्री, सब इस्राएलियों को एक एक रोटी और एक एक टुकड़ा मांस और किशमिश की एक एक टिकिया बंटवा दी ॥

४ तब उस ने कई लेवियों को इसलिये ठहरा दिया, कि यहोवा के सन्दूक के साम्हने सेवा टहल किया करें, और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की चर्चा और उसका धन्यवाद और स्तुति किया करें। ५ उनका मुखिया तो आसाप था, और उसके नीचे जकर्याह था फिर यीएल, शमीरामोत, यहीएल, मत्तित्याह, एलीआब बनायाह, ओबेदेदोम और यीएल थे ये तो सारंगियां और वीणाएं लिये हुए थे, और आसाप झांझ पर राग बजाता था। ६ और बनायाह और यहजीएल नाम याजक परमेश्वर की वाचा के सन्दूक के साम्हने नित्य तुरहियां बजाने के लिए नियुक्त किए गए ॥

७ तब उसी दिन दाऊद ने यहोवा का धन्यवाद करने का काम आसाप और उसके भाइयों को सौंप दिया।

८ यहोवा का धन्यवाद करो, उस से प्रार्थना करो;
देश देश में उसके कामों का प्रचार करो।
९ उसका गीत गाओ, उसका भजन करो,
उसके सब आश्चर्य-कर्मों का ध्यान करो।
१० उसके पवित्र नाम पर घमंड करो,
यहोवा के खोजियों का हृदय आनन्दित हो।
११ यहोवा और उसकी सामर्थ की खोज करो;
उसके दर्शन के लिए लगातार खोज करो।
१२ उसके किए हुए आश्चर्यकर्म,
उसके चमत्कार और न्यायवचन स्मरण करो।
१३ हे उसके दास इस्राएल के वंश,
हे याकूब की सन्तान तुम जो उसके चुने हुए हो!
१४ वही हमारा परमेश्वर यहोवा है,
उसके न्याय के काम पृथ्वी भर में होते हैं।
१५ उसकी वाचा को सदा स्मरण रखो,
यह वही वचन है जो उस ने हजार पीढ़ियों के लिये ठहरा* दिया।
१६ वह वाचा उस ने इब्राहीम के साथ बान्धी,
और उसी के विषय उस ने इसहाक से शपथ खाई,

* मूल में—जिसकी आज्ञा उस ने हजार पीढ़ियों के लिये दी।

१७ और उसी को उस ने याकूब के लिये विधि करके और इस्राएल के लिये सदा की वाचा बान्धकर यह कहकर दृढ़ किया, कि
१८ मैं कनान देश तुझी को दूंगा,
वह बांट में तुम्हारा निज भाग होगा।
१९ उस समय तो तुम गिनती में थोड़े थे,
वरन बहुत ही थोड़े और उस देश में परदेशी थे।
२० और वे एक जाति से दूसरी जाति में,
और एक राज्य से दूसरे में फिरते तो रहे,
२१ परन्तु उस ने किसी मनुष्य को उन पर अन्धेर करने न दिया
और वह राजाओं को उनके निमित्त यह धमकी देता था, कि
२२ मेरे अभिषिक्तों को मत छुओ,
और न मेरे नबियों की हानि करो।
२३ हे समस्त पृथ्वी के लोगो यहोवा का गीत गाओ।
प्रतिदिन उसके किए हुए उद्धार का शुभ समाचार सुनाते रहो।
२४ अन्यजातियों में उसकी महिमा का,
और देश देश के लोगों में उसके आश्चर्य-कर्मों का वर्णन करो।
२५ क्योंकि यहोवा महान और स्तुति के अति योग्य है,
वह तो सब देवताओं से अधिक भययोग्य है।
२६ क्योंकि देश देश के सब देवता मूर्तियां ही हैं;

परन्तु यहोवा ही ने स्वर्ग को
बनाया है।
२७ उसके चारों ओर विभव और
ऐश्वर्य है;
उसके स्थान में सामर्थ और
आनन्द है।
२८ हे देश देश के कुलो यहोवा का
गुणानुवाद करो,
२९ यहोवा की महिमा और सामर्थ
को मानो।
यहोवा के नाम की महिमा ऐसी
मानो जो उसके नाम के योग्य है।
भेंट लेकर उसके सम्मुख आओ,
पवित्रता से शोभायमान होकर
यहोवा को दण्डवत करो॥
३० हे सारी पृथ्वी के लोगो उसके
साम्हने थरथराओ! जगत
ऐसा स्थिर है, कि वह टलने
का नहीं।
३१ आकाश आनन्द करे और पृथ्वी
मगन हो, और जाति जाति में
लोग कहें, कि यहोवा राजा
३२ हुआ है। समुद्र और उस
में की सब वस्तुएं गरज
उठें, मैदान और जो कुछ उस
में है सो प्रफुल्लित हों।
३३ उसी समय वन के वृक्ष यहोवा के
साम्हने जयजयकार करें,
क्योंकि वह पृथ्वी का न्याय करने
को आनेवाला है।
३४ यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि
वह भला है;
उसकी करुणा सदा की है।
३५ और यह कहो, कि हे हमारे
उद्धार करनेवाले परमेश्वर
हमारा उद्धार कर,
और हम को इकट्ठा करके अन्य-
जातियों से छुड़ा,
कि हम तेरे पवित्र नाम का
धन्यवाद करें,
और तेरी स्तुति करते हुए तेरे
विषय बड़ाई करें।
३६ अनादिकाल से अनन्तकाल तक
इस्राएल का परमेश्वर यहोवा
धन्य है।
तब सब प्रजा ने आमीन कहा:
और यहोवा की स्तुति की॥

३७ तब उस ने वहां अर्थात् यहोवा की वाचा के सन्दूक के साम्हने आसाप और उसके भाइयों को छोड़ दिया, कि प्रतिदिन के प्रयोजन के अनुसार वे सन्दूक के साम्हने नित्य सेवा टहल किया करें। ३८ और अड़सठ भाइयों समेत ओबेदेदोम को, और द्वारपालों के लिये यदूतून के पुत्र ओबेदेदोम और होसा को छोड़ दिया। ३९ फिर उस ने सादोक याजक और उसके भाई याजकों को यहोवा के निवास के साम्हने, जो गिबोन के ऊंचे स्थान में था, ठहरा दिया, ४० कि वे नित्य सवेरे और सांझ को होमबलि की वेदी पर यहोवा को होमबलि चढ़ाया करें, और उन सब के अनुसार किया करें, जो यहोवा की व्यवस्था में लिखा है, जिसे उस ने इस्राएल को दिया था। ४१ और उनके संग उस ने हेमान और यदूतून और दूसरों को भी जो नाम लेकर चुने गए थे ठहरा दिया, कि यहोवा की सदा की करुणा के कारण उसका धन्यवाद करें। ४२ और उनके संग उस ने हेमान और यदूतून को बजानेवालों के लिये तुरहियां और झांझें और परमेश्वर के गीत गाने के लिये बाजे दिए, और यदूतून के बेटों

को फाटक की रखवाली करने को ठहरा दिया। ४३ निदान प्रजा के सब लोग अपने अपने घर चले गए, और दाऊद अपने घराने को आशीर्वाद देने लौट गया ।।

(दाऊद का मन्दिर बनाने की इच्छा करना और यहोवा का दाऊद के वंश में सनातन राज्य स्थिर करने का वचन देना)

१७ जब दाऊद अपने भवन में रहने लगा, तब दाऊद ने नातान नबी से कहा, देख, मैं तो देवदारु के बने हुए घर में रहता हूं, परन्तु यहोवा की वाचा का सन्दूक तम्बू में रहता है। २ नातान ने दाऊद से कहा, जो कुछ तेरे मन में हो उसे कर, क्योंकि परमेश्वर तेरे संग है ।।

३ उसी दिन रात को परमेश्वर का यह वचन नातान के पास पहुंचा, जाकर मेरे दास दाऊद से कह, ४ यहोवा यों कहता है, कि मेरे निवास के लिये तू घर बनवाने न पाएगा। ५ क्योंकि जिस दिन से मैं इस्राएलियों को मिस्र से ले आया, आज के दिन तक मैं कभी घर में नहीं रहा; परन्तु एक तम्बू से दूसरे तम्बू को और एक निवास से दूसरे निवास को आया जाया करता हूं। ६ जहां जहां मैं ने सब इस्राएलियों के बीच आना जाना किया, क्या मैं ने इस्राएल के न्यायियों में से जिनको मैं ने अपनी प्रजा की चरवाही करने को ठहराया था, किसी से ऐसी बात कभी कही, कि तुम लोगों ने मेरे लिये देवदारु का घर क्यों नहीं बनवाया? ७ सो अब तू मेरे दास दाऊद से ऐसा कह, कि सेनाओं का यहोवा यों कहता है, कि मैं ने तो तुझ को भेड़शाला से और भेड़-बकरियों के पीछे पीछे फिरने से इस मनसा से बुला लिया, कि तू मेरी प्रजा इस्राएल का प्रधान हो जाए; ८ और जहां कहीं तू आया और गया, वहां मैं तेरे संग रहा, और तेरे सब शत्रुओं को तेरे साम्हने से नष्ट किया है। अब मैं तेरे नाम को पृथ्वी के बड़े बड़े लोगों के नामों के समान बड़ा कर दूंगा। ९ और मैं अपनी प्रजा इस्राएल के लिये एक स्थान ठहराऊंगा, और उसको स्थिर करूंगा कि वह अपने ही स्थान में बसी रहे और कभी चलायमान न हो; और कुटिल लोग उनको नाश न करने पाएंगे, जैसे कि पहिले दिनों में करते थे; १० उस समय भी जब मैं अपनी प्रजा इस्राएल के ऊपर न्यायी ठहराता था; सो मैं तेरे सब शत्रुओं को दबा दूंगा। फिर मैं तुझे यह भी बताता हूं, कि यहोवा तेरा घर बनाये रखेगा। ११ जब तेरी आयु पूरी हो जायेगी और तुझे अपने पितरों के संग जाना पड़ेगा, तब मैं तेरे बाद तेरे वंश को जो तेरे पुत्रों में से होगा, खड़ा करके उसके राज्य को स्थिर करूंगा। १२ मेरे लिये एक घर वही बनाएगा, और मैं उसकी राजगद्दी को सदैव स्थिर रखूंगा। १३ मैं उसका पिता ठहरूंगा और वह मेरा पुत्र ठहरेगा; और जैसे मैं ने अपनी करुणा उस पर से जो तुझ से पहिले था हटाई, वैसे मैं उस पर से न हटाऊंगा, १४ वरन मैं उसको अपने घर और अपने राज्य में सदैव स्थिर रखूंगा और उसकी राजगद्दी सदैव अटल रहेगी। १५ इन सब बातों और इस दर्शन के अनुसार नातान ने दाऊद को समझा दिया।।

१६ तब दाऊद राजा भीतर जाकर यहोवा के सम्मुख बैठा, और कहने लगा, हे यहोवा परमेश्वर! मैं क्या हूं? और मेरा घराना क्या है? कि तू ने मुझे यहां तक पहुंचाया है? १७ और हे परमेश्वर! यह तेरी दृष्टि में छोटी सी बात हुई, क्योंकि तू ने अपने दास के घराने के विषय भविष्य के बहुत दिनों तक की चर्चा की है, और हे यहोवा परमेश्वर! तू ने मुझे ऊंचे पद का मनुष्य सा * जाना है। १८ जो महिमा तेरे दास पर दिखाई गई है, उसके विषय दाऊद तुझ से और क्या कह सकता है? तू तो अपने दास को जानता है। १९ हे यहोवा! तू ने अपने दास के निमित्त और अपने मन के अनुसार यह बड़ा काम किया है, कि तेरा दास उसको जान ले। २० हे यहोवा! जो कुछ हम ने अपने कानों से सुना है, उसके अनुसार तेरे तुल्य कोई नहीं, और न तुझे छोड़ और कोई परमेश्वर है। २१ फिर तेरी प्रजा इस्राएल के भी तुल्य कौन है? वह तो पृथ्वी भर में एक ही जाति है, उसे परमेश्वर ने जाकर अपनी निज प्रजा करने को छुड़ाया, इसलिये कि तू बड़े और डरावने काम करके अपना नाम करे, और अपनी प्रजा के साम्हने से जो तू ने मिस्र से छुड़ा ली थी, जाति जाति के लोगों को निकाल दे। २२ क्योंकि तू ने अपनी प्रजा इस्राएल को अपनी सदा की प्रजा होने के लिये ठहराया, और हे यहोवा! तू आप उसका परमेश्वर ठहरा। २३ इसलिये, अब हे यहोवा, तू ने जो वचन अपने दास के और उसके घराने के विषय दिया है, वह सदैव अटल रहे, और अपने वचन के अनुसार ही कर। २४ और तेरा नाम सदैव अटल रहे, और यह कहकर तेरी बड़ाई सदा की जाए, कि सेनाओं का यहोवा इस्राएल का परमेश्वर है, वरन वह इस्राएल ही के लिये परमेश्वर है, और तेरा दास दाऊद का घराना तेरे साम्हने स्थिर रहे। २५ क्योंकि हे मेरे परमेश्वर, तू ने यह कहकर अपने दास पर प्रगट किया है कि मैं तेरा घर बनाए रखूंगा, इस कारण तेरे दास को तेरे सम्मुख प्रार्थना करने का हियाव हुआ है। २६ और अब हे यहोवा तू ही परमेश्वर है, और तू ने अपने दास को यह भलाई करने का वचन दिया है। २७ और अब तू ने प्रसन्न होकर, अपने दास के घराने पर ऐसी आशीष दी है, कि वह तेरे सम्मुख सदैव बना रहे, क्योंकि हे यहोवा, तू आशीष दे चुका है, इसलिये वह सदैव आशीषित बना रहे॥

(दाऊद के विजयों का संक्षेप वर्णन)

१८ इसके बाद दाऊद ने पलिश्तियों को जीतकर अपने अधीन कर लिया, और गांवों समेत गत नगर को पलिश्तियों के हाथ से छीन लिया। २ फिर उस ने मोआबियों को भी जीत लिया, और मोआबी दाऊद के अधीन होकर भेंट लाने लगे। ३ फिर जब सोबा का राजा हदरेजेर परात महानद के पास अपना राज्य * स्थिर करने को जा रहा था, तब दाऊद ने उसको हमात के पास जीत लिया। ४ और दाऊद ने उससे एक हजार रथ, सात हजार सवार,

* वा ऊपर से आनेहारे आदम।

* मूल में—हाथ।

ग्रौर बीस हज़ार पियादे हर लिए, ग्रौर दाऊद ने सब रथवाले घोड़ों के सुम की नस कटवाई, परन्तु एक सौ रथवाले घोड़े बचा रखे। ५ ग्रौर जब दमिश्क के ग्ररामी, सोबा के राजा हदरेजेर की सहायता करने को ग्राए, तब दाऊद ने ग्ररामियों में से बाईस हज़ार पुरुष मारे। ६ तब दाऊद ने दमिश्क के ग्रराम में सिपाहियों की चौकियां बैठाईं; सो ग्ररामी दाऊद के ग्रधीन होकर भेंट ले ग्राने लगे। ग्रौर जहां जहां दाऊद जाता, वहां वहां यहोवा उसको जय दिलाता था। ७ ग्रौर हदरेजेर के कर्मचारियों के पास सोने की जो ढालें थीं, उन्हें दाऊद लेकर यरूशलेम को ग्राया। ८ ग्रौर हदरेजेर के तिभत ग्रौर कून नाम नगरों से दाऊद बहुत सा पीतल ले ग्राया; ग्रौर उसी से सुलेमान ने पीतल के हौद ग्रौर खम्भों ग्रौर पीतल के पात्रों को बनवाया।।

९ जब हमात के राजा तोऊ ने सुना, कि दाऊद ने सोबा के राजा हदरेजेर की समस्त सेना को जीत लिया है, १० तब उस ने हदोराम नाम ग्रपने पुत्र को दाऊद राजा के पास उसका कुशल क्षेम पूछने ग्रौर उसे बधाई देने को भेजा, इसलिये कि उस ने हदरेजेर से लड़कर उसे जीत लिया था; (क्योंकि हदरेजेर तोऊ से लडा करता था)। ग्रौर हदोराम सोने चांदी ग्रौर पीतल के सब प्रकार के पात्र लिये हुए ग्राया। ११ इनको दाऊद राजा ने यहोवा के लिये पवित्र करके रखा, ग्रौर वैसा ही उस सोने-चांदी से भी किया जिसे सब जातियों से, ग्रर्थात् एदोमियों, मोग्राबियों, ग्रम्मोनियों, पलिश्तियों, ग्रौर ग्रमालेकियों से प्राप्त किया था।।

१२ फिर सरूयाह के पुत्र ग्रबीशै ने लोन की तराई में ग्रठारह हज़ार एदोमियों को मार लिया। १३ तब उस ने एदोम में सिपाहियों की चौकियां बैठाईं; ग्रौर सब एदोमी दाऊद के ग्रधीन हो गए। ग्रौर दाऊद जहां जहां जाता था वहां वहां यहोवा उसको जय दिलाता था।।

(दाऊद के कर्मचारियों की नामावली)

१४ दाऊद तो सारे इस्राएल पर राज्य करता था, ग्रौर वह ग्रपनी सब प्रजा के साथ न्याय ग्रौर धर्म के काम करता था। १५ ग्रौर प्रधान सेनापति सरूयाह का पुत्र योग्राब था; इतिहास का लिखनेवाला ग्रहीलूद का पुत्र यहोशापात था। १६ प्रधान याजक, ग्रहीतूब का पुत्र सादोक ग्रौर एब्यातार का पुत्र ग्रबीमेलेक थे; मंत्री शवशा था। १७ करेतियों ग्रौर पलेतियों का प्रधान यहोयादा का पुत्र बनायाह था, ग्रौर दाऊद के पुत्र राजा के पास मुखिये होकर रहते थे।।

(ग्रम्मोनियों पर विजय)

१९ इसके बाद ग्रम्मोनियों का राजा नाहाश मर गया, ग्रौर उसका पुत्र उसके स्थान पर राजा हुग्रा। २ तब दाऊद ने यह सोचा, कि हानून के पिता नाहाश ने जो मुझ पर प्रीति दिखाई थी, इसलिये मैं भी उस पर प्रीति दिखाऊंगा। तब दाऊद ने उसके पिता के विषय शांति देने के लिये दूत भेजे। ग्रौर दाऊद के कर्मचारी ग्रम्मोनियों के देश में हानून के पास उसे शांति देने को ग्राए। ३ परन्तु ग्रम्मोनियों के हाकिम हानून से कहने लगे, दाऊद ने जो तेरे पास शांति देनेवाले भेजे है, वह क्या तेरी समझ में तेरे पिता का ग्रादर करने

की मनसा से भेजे हैं? क्या उसके कर्मचारी इसी मनसा से तेरे पास नहीं आए, कि ढूंढ़-ढांढ़ करें और नष्ट करें, और देश का भेद लें? ४ तब हानून ने दाऊद के कर्मचारियों को पकड़ा, और उनके बाल मुड़वाए, और आधे वस्त्र अर्थात् नितम्ब तक कटवाकर उनको जाने दिया। ५ तब कितनों ने जाकर दाऊद को बता दिया, कि उन पुरुषों के साथ कैसा बर्ताव किया गया, सो उस ने लोगों को उन से मिलने के लिये भेजा क्योंकि वे पुरुष बहुत लजाते थे। और राजा ने कहा, जब तक तुम्हारी दाढ़ियां बढ़ न जाएं, तब तक यरीहो में ठहरे रहो, और बाद को लौट आना।

६ जब अम्मोनियों ने देखा, कि हम दाऊद को घिनौने लगते हैं, तब हानून और अम्मोनियों ने एक हजार किक्कार चांदी, अरम्नहरैम और अरम्माका और सोबा को भेजी, कि रथ और सवार किराये पर बुलाएं। ७ सो उन्हों ने बत्तीस हजार रथ, और माका के राजा और उसकी सेना को किराये पर बुलाया, और इन्हों ने आकर मेदबा के साम्हने, अपने डेरे खड़े किए। और अम्मोनी अपने अपने नगर में से इकट्ठे होकर लड़ने को आए। ८ यह सुनकर दाऊद ने योआब और शूरवीरों की पूरी सेना को भेजा। ९ तब अम्मोनी निकले और नगर के फाटक के पास पांति बान्धी, और जो राजा आए थे, वे उन से अलग मैदान में थे। १० यह देखकर कि आगे पीछे दोनों ओर हमारे विरुद्ध पांति बन्धी हैं, योआब ने सब बड़े बड़े इस्राएली वीरों में से कितनों को छांटकर अरामियों के साम्हने उनकी पांति बन्धाई; ११ और शेष लोगों को अपने भाई अबीशै के हाथ सौंप दिया, और उन्हों ने अम्मोनियों के साम्हने पांति बान्धी। १२ और उस ने कहा, यदि अरामी मुझ पर प्रबल होने लगें, तो तू मेरी सहायता करना; और यदि अम्मोनी तुझ पर प्रबल होने लगें, तो मैं तेरी सहायता करूंगा। १३ तू हियाव बान्ध और हम सब अपने लोगों और अपने परमेश्वर के नगरों के निमित्त पुरुषार्थ करें; और यहोवा जैसा उसको अच्छा लगे, वैसा ही करेगा। १४ तब योआब और जो लोग उसके साथ थे, अरामियों से युद्ध करने को उनके साम्हने गए, और वे उसके साम्हने से भागे। १५ यह देखकर कि अरामी भाग गए हैं, अम्मोनी भी उसके भाई अबीशै के साम्हने से भागकर नगर के भीतर घुसे। तब योआब यरूशलेम को लौट आया॥

१६ फिर यह देखकर कि वे इस्राएलियों से हार गए हैं अरामियों ने दूत भेजकर महानद के पार के अरामियों को बुलवाया, और हदरेजेर के सेनापति शोपक को अपना प्रधान बनाया। १७ इसका समाचार पाकर दाऊद ने सब इस्राएलियों को इकट्ठा किया, और यरदन पार होकर उन पर चढ़ाई की और उनके विरुद्ध पांति बन्धाई, तब वे उस से लड़ने लगे। १८ परन्तु अरामी इस्राएलियों से भागे, और दाऊद ने उन में से सात हजार रथियों और चालीस हजार प्यादों को मार डाला, और शोपक सेनापति को भी मार डाला। १९ यह देखकर कि वे इस्राएलियों से हार गए हैं, हदरेजेर के कर्मचारियों ने दाऊद से संधि की और उसके अधीन हो गए; और अरामियों

ने अम्मोनियों की सहायता फिर करनी न चाही ॥

२० फिर नये वर्ष के आरम्भ में जब राजा लोग युद्ध करने को निकला करते हैं, तब योआब ने भारी सेना संग ले जाकर अम्मोनियों का देश उजाड़ दिया और आकर रब्बा को घेर लिया; परन्तु दाऊद यरूशलेम में रह गया; और योआब ने रब्बा को जीतकर ढा दिया। २ तब दाऊद ने उनके राजा का मुकुट उसके सिर से उतारकर क्या देखा, कि उसका तौल किक्कार भर सोने का है, और उस में मणि भी जड़े थे; और वह दाऊद के सिर पर रखा गया। फिर उस ने उस नगर से बहुत सामान लूट में पाया। ३ और उस ने उसके रहनेवालों को निकालकर आरों और लोहे के हेंगों और कुल्हाड़ियों से कटवाया; और अम्मोनियों के सब नगरों के साथ भी दाउद ने वैसा ही किया। तब दाऊद सब लोगों समेत यरूशलेम को लौट गया ॥

४ इसके बाद गेजेर में पलिश्तियों के साथ युद्ध हुआ; उस समय हूशाई सिब्बकै ने सिप्पै को, जो रापा की सन्तान था, मार डाला; और वे दब गए। ५ और पलिश्तियों के साथ फिर युद्ध हुआ; उस में याईर के पुत्र एल्हानान ने गती गोल्यत के भाई लहमी को मार डाला, जिसके बर्छे की छड़, जुलाहे की डोंगी के समान थी। ६ फिर गत में भी युद्ध हुआ, और वहां एक बड़े डील का पुरुष था, जो रापा की सन्तान था, और उसके एक एक हाथ पांव में छः छः उंगलियां अर्थात् सब मिलाकर चौबीस उंगलियां थीं। ७ जब उस ने इस्राएलियों को ललकारा, तब दाऊद के भाई शिमा के पुत्र योनातान ने उसको मारा। ८ ये ही गत में रापा से उत्पन्न हुए थे, और वे दाऊद और उसके सेवकों के हाथ से मार डाले गए ॥

(दाऊद का अपनी प्रजा की गिनती लेना और इस पाप के दंड और पापमोचन के द्वारा मन्दिर का स्थान ठहराया जाना)

२१ और शैतान ने इस्राएल के विरुद्ध उठकर, दाऊद को उसकाया कि इस्राएलियों की गिनती ले। २ तब दाऊद ने योआब और प्रजा के हाकिमों से कहा, तुम जाकर बेर्शेबा से ले दान तक के इस्राएल की गिनती लेकर मुझे बताओ, कि मैं जान लूं कि वे कितने हैं। ३ योआब ने कहा, यहोवा की प्रजा के कितने ही क्यों न हों, वह उनको सौ गुना बढ़ा दे; परन्तु हे मेरे प्रभु! हे राजा! क्या वे सब राजा के अधीन नहीं हैं? मेरा प्रभु ऐसी बात क्यों चाहता है? वह इस्राएल पर दोष लगने का कारण क्यों बने? ४ तौभी राजा की आज्ञा योआब पर प्रबल हुई। तब योआब विदा होकर सारे इस्राएल में घूमकर यरूशलेम को लौट आया। ५ तब योआब ने प्रजा की गिनती का जोड़, दाऊद को सुनाया और सब तलवारिये पुरुष इस्राएल के तो ग्यारह लाख, और यहूदा के चार लाख सत्तर हजार ठहरे। ६ परन्तु इन में योआब ने लेवी और बिन्यामीन को न गिना, क्योंकि वह राजा की आज्ञा से घृणा करता था ॥

७ और यह बात परमेश्वर को बुरी लगी, इसलिये उस ने इस्राएल को मारा। ८ और दाऊद ने परमेश्वर से कहा, यह

काम जो मैं ने किया, वह महापाप है। परन्तु अब अपने दास का अधर्म दूर कर; मुझ से तो बड़ी मूर्खता हुई है। ९ तब यहोवा ने दाऊद के दर्शी गाद से कहा, १० जाकर दाऊद से कह, कि यहोवा यों कहता है, कि मैं तुझ को तीन विपत्तियां दिखाता हूं, उन में से एक को चुन ले, कि मैं उसे तुझ पर डालूं। ११ तब गाद ने दाऊद के पास जाकर उस से कहा, यहोवा यों कहता है, कि जिसको तू चाहे उसे चुन ले : १२ या तो तीन वर्ष का काल पड़े; वा तीन महीने तक तेरे विरोधी तुझे नाश करते रहें, और तेरे शत्रुओं की तलवार तुझ पर चलती रहे; वा तीन दिन तक यहोवा की तलवार चले, अर्थात् मरी देश में फैले और यहोवा का दूत इस्राएली देश में चारों ओर विनाश करता रहे। अब सोच, कि मैं अपने भेजनेवाले को क्या उत्तर दूं। १३ दाऊद ने गाद से कहा, मैं बड़े संकट में पड़ा हूं; मैं यहोवा के हाथ में पड़ूं, क्योंकि उसकी दया बहुत बड़ी है; परन्तु मनुष्य के हाथ में मुझे पड़ना न पड़े।।

१४ तब यहोवा ने इस्राएल में मरी फैलाई, और इस्राएल में सत्तर हजार पुरुष मर मिटे। १५ फिर परमेश्वर ने एक दूत यरूशलेम को भी उसे नाश करने को भेजा; और वह नाश करने ही पर था, कि यहोवा दुःख देने से खेदित हुआ, और नाश करनेवाले दूत से कहा, बस कर; अब अपना हाथ खींच ले। और यहोवा का दूत यबूसी ओर्नान के खलिहान के पास खड़ा था। १६ और दाऊद ने आंखें उठाकर देखा, कि यहोवा का दूत हाथ में खींची हुई और यरूशलेम के ऊपर बढ़ाई हुई एक तलवार लिये हुए आकाश के बीच खड़ा है, तब दाऊद और पुरनिये टाट पहिने हुए मुंह के बल गिरे। १७ तब दाऊद ने परमेश्वर से कहा, जिस ने प्रजा की गिनती लेने की आज्ञा दी थी, वह क्या मैं नहीं हूं? हां, जिस ने पाप किया और बहुत बुराई की है, वह तो मैं ही हूं। परन्तु इन भेड़-बकरियों ने क्या किया है? इसलिये हे मेरे परमेश्वर यहोवा! तेरा हाथ मेरे पिता के घराने के विरुद्ध हो, परन्तु तेरी प्रजा के विरुद्ध न हो, कि वे मारे जाएं।।

१८ तब यहोवा के दूत ने गाद को दाऊद से यह कहने की आज्ञा दी, कि दाऊद चढ़कर यबूसी ओर्नान के खलिहान में यहोवा की एक वेदी बनाए। १९ गाद के इस वचन के अनुसार जो उस ने यहोवा के नाम से कहा था, दाऊद चढ़ गया। २० तब ओर्नान ने पीछे फिर के दूत को देखा, और उसके चारों बेटे जो उसके संग थे छिप गए, ओर्नान तो गेहूं दांवता था। २१ जब दाऊद ओर्नान के पास आया, तब ओर्नान ने दृष्टि करके दाऊद को देखा और खलिहान से बाहर जाकर भूमि तक झुककर दाऊद को दण्डवत किया। २२ तब दाऊद ने ओर्नान से कहा, इस खलिहान का स्थान मुझे दे दे, कि मैं इस पर यहोवा की एक वेदी बनाऊं, उसका पूरा दाम लेकर उसे मुझ को दे, कि यह विपत्ति प्रजा पर से दूर की जाए। २३ ओर्नान ने दाऊद से कहा, इसे ले ले, और मेरे प्रभु राजा को जो कुछ भाए वह वही करे; सुन, मैं तुझे होमबलि के लिये बैल और ईंधन के लिये दांवने के हथियार और अन्नबलि के लिये गेहूं, यह सब मैं देता हूं।

२४ राजा दाऊद ने ओर्नान से कहा, सो नहीं, मैं अवश्य इसका पूरा दाम ही देकर इसे मोल लूंगा; जो तेरा है, उसे मैं यहोवा के लिये नहीं लूंगा, और न सेंतमेंत का होमबलि चढ़ाऊंगा। २५ तब दाऊद ने उस स्थान के लिये ओर्नान को छः सौ शेकेल सोना तौलकर दिया। २६ तब दाऊद ने वहां यहोवा की एक वेदी बनाई और होमबलि और मेलबलि चढ़ाकर यहोवा से प्रार्थना की, और उस ने होमवलि की वेदी पर स्वर्ग से आग गिराकर उसकी सुन ली। २७ तब यहोवा ने दूत को आज्ञा दी; और उस ने अपनी तलवार फिर म्यान में कर ली ॥

२८ यह देखकर कि यहोवा ने यबूसी ओर्नान के खलिहान में मेरी सुन ली है, दाऊद ने उसी समय वहां बलिदान किया। २९ यहोवा का निवास जो मूसा ने जंगल में बनाया था, और होमबलि की वेदी, ये दोनों उस समय गिबोन के ऊंचे स्थान पर थे। ३० परन्तु दाऊद परमेश्वर के पास उसके साम्हने न जा सका, क्योंकि वह यहोवा के दूत की तलवार से डर गया था ॥

२२ तब दाऊद कहने लगा, यहोवा परमेश्वर का भवन यही है, और इस्राएल के लिये होमबलि की वेदी यही है ॥

(मन्दिर के बनाने की तैयारी और उस में की भांति भांति की उपासना और उपासकों का प्रबन्ध)

२ तव दाऊद ने इस्राएल के देश में जो परदेशी थे उनको इकट्ठा करने की आज्ञा दी, और परमेश्वर का भवन बनाने को पत्थर गढ़ने के लिये राज ठहरा दिए। ३ फिर दाऊद ने फाटकों के किवाड़ों की कीलों और जोड़ों के लिये बहुत सा लोहा, और तौल से बाहर बहुत पीतल, ४ और गिनती से बाहर देवदार के पेड़ इकट्ठे किए; क्योंकि सीदोन और सोर के लोग दाऊद के पास बहुत से देवदार के पेड़ लाए थे। ५ और दाऊद ने कहा, मेरा पुत्र सुलैमान सुकुमार और लड़का है, और जो भवन यहोवा के लिये बनाना है, उसे अत्यन्त तेजोमय और सब देशों में प्रसिद्ध और शोभायमान होना चाहिये; इसलिये मैं उसके लिये तैयारी करूंगा। सो दाऊद ने मरने से पहिले बहुत तैयारी की ॥

६ फिर उस ने अपने पुत्र सुलैमान को बुलाकर इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिये भवन बनाने की आज्ञा दी। ७ दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान से कहा, मेरी मनसा तो थी, कि अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनाऊं। ८ परन्तु यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, कि तू ने लोहू बहुत बहाया और बड़े बड़े युद्ध किए हैं, सो तू मेरे नाम का भवन न बनाने पाएगा, क्योंकि तू ने भूमि पर मेरी दृष्टि में बहुत लोहू बहाया है। ९ देख, तुझ से एक पुत्र उत्पन्न होगा, जो शान्त पुरुष होगा; और मैं उसको चारों ओर के शत्रुओं से शान्ति दूंगा; उसका नाम तो सुलैमान * होगा, और उसके दिनों में मैं इस्राएल को शान्ति और चैन दूंगा। १० वही मेरे नाम का भवन बनाएगा। और वही मेरा पुत्र ठहरेगा और मैं उसका पिता ठहरूंगा, और उसकी राजगद्दी को मैं

* अर्थात् शान्तिवाला।

इस्राएल के ऊपर सदा के लिये स्थिर रखूंगा। ११ अब हे मेरे पुत्र, यहोवा तेरे संग रहे, और तू कृतार्थ होकर उस वचन के अनुसार जो तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरे विषय कहा है, उसका भवन बनाना। १२ अब यहोवा तुझे बुद्धि और समझ दे और इस्राएल का अधिकारी ठहरा दे, और तू अपने परमेश्वर यहोवा की व्यवस्था को मानता रहे। १३ तू तब ही कृतार्थ होगा जब उन विधियों और नियमों पर चलने की चौकसी करेगा, जिनकी आज्ञा यहोवा ने इस्राएल के लिये मूसा को दी थी। हियाव बान्ध और दृढ़ हो। मत डर; और तेरा मन कच्चा न हो। १४ सुन, मैं ने अपने क्लेश के समय यहोवा के भवन के लिये एक लाख किक्कार सोना, और दस लाख किक्कार चान्दी, और पीतल और लोहा इतना इकट्ठा किया है, कि बहुतायत के कारण तौल से बाहर है; और लकड़ी और पत्थर मैं ने इकट्ठे किए हैं, और तू उनको बढ़ा सकेगा। १५ और तेरे पास बहुत कारीगर हैं, अर्थात् पत्थर और लकड़ी के काटने और गढ़नेवाले वरन सब भांति के काम के लिये सब प्रकार के प्रवीण पुरुष हैं। १६ सोना, चान्दी, पीतल और लोहे की तो कुछ गिनती नहीं है, सो तू उस काम में लग जा! यहोवा तेरे संग नित रहे। १७ फिर दाऊद ने इस्राएल के सब हाकिमों को अपने पुत्र सुलैमान की सहायता करने की आज्ञा यह कहकर दी, १८ कि क्या तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे संग नहीं है? क्या उस ने तुम्हें चारों ओर से विश्राम नहीं दिया? उस ने तो देश के निवासियों को मेरे वश में कर दिया है; और देश यहोवा और उसकी प्रजा के साम्हने दबा हुआ है। १९ अब तन मन से* अपने परमेश्वर यहोवा के पास जाया करो, और जी लगाकर यहोवा परमेश्वर का पवित्रस्थान बनाना, कि तुम यहोवा की वाचा का सन्दूक और परमेश्वर के पवित्र पात्र उस भवन में लाओ जो यहोवा के नाम का बननेवाला है॥

२३

दाऊद तो बूढ़ा वरन बहुत बूढ़ा हो गया था, इसलिये उस ने अपने पुत्र सुलैमान को इस्राएल पर राजा नियुक्त कर दिया॥

२ तब उस ने इस्राएल के सब हाकिमों और याजकों और लेवियों को इकट्ठा किया। ३ और जितने लेवीय तीस वर्ष के और उस से अधिक अवस्था के थे, वे गिने गए, और एक एक पुरुष के गिनने से उनकी गिनती अड़तीस हजार हुई। ४ इन में से चौबीस हजार तो यहोवा के भवन का काम चलाने के लिये नियुक्त हुए, और छः हजार सरदार और न्यायी। ५ और चार हजार द्वारपाल नियुक्त हुए, और चार हजार उन बाजों से यहोवा की स्तुति करने के लिये ठहराए गए जो दाऊद† ने स्तुति करने के लिये बनाए थे। ६ फिर दाऊद ने उनको गेर्शोन, कहात और मरारी नाम लेवी के पुत्रों के अनुसार दलों में अलग अलग कर दिया॥

७ गेर्शोनियों में से तो लादान और शिमी थे। ८ और लादान के पुत्र:

---

* मूल में—अपना मन और अपना जीव लेकर।

† मूल में—मैं।

सरदार यहीएल, फिर जेताम और योएल ये तीन थे। ९ और शिमी के पुत्र: शलोमीत, हजीएल और हारान ये तीन थे। लादान के कुल के पूर्वजों के घरानों के मुख्य पुरुष ये ही थे। १० फिर शिमी के पुत्र: यहत, जीना, यूश, और बरीआ के पुत्र शिमी यही चार थे। ११ यहत मुख्य था, और जीजा दूसरा; यूश और बरीआ के बहुत बेटे न हुए, इस कारण वे सब मिलकर पितरों का एक ही घराना ठहरे ॥

१२ कहात के पुत्र: अम्राम, यिसहार, हेब्रोन और उज्जीएल चार। अम्राम के पुत्र: हारून और मूसा। १३ हारून तो इसलिये अलग किया गया, कि वह और उसके सन्तान सदा परमपवित्र वस्तुओं को पवित्र ठहराएं, और सदा यहोवा के सम्मुख धूप जलाया करें और उसकी सेवा टहल करें, और उसके नाम से आशीर्वाद दिया करें। १४ परन्तु परमेश्वर के भक्त मूसा के पुत्रों के नाम लेवी के गोत्र के बीच गिने गए। १५ मूसा के पुत्र, गेर्शोम और एलीएजेर। १६ और गेर्शोम का पुत्र शबूएल मुख्य था। १७ और एलीएजेर के पुत्र: रहब्याह मुख्य; और एलीएजेर के और कोई पुत्र न हुआ, परन्तु रहब्याह के बहुत से बेटे हुए। १८ यिसहार के पुत्रों में से शलोमीत मुख्य ठहरा। १९ हेब्रोन के पुत्र: यरीय्याह मुख्य, दूसरा अमर्याह, तीसरा यहजीएल, और चौथा यकमाम था। २० उज्जीएल के पुत्रों में से मुख्य तो मीका और दूसरा यिश्शिय्याह था ॥

२१ मरारी के पुत्र: महली और मूशी। महली के पुत्र: एलीआजर और कीश थे। २२ एलीआजर पुत्रहीन मर गया, उसके केवल बेटियां हुईं; सो कीश के पुत्रों ने जो उनके भाई थे उन्हें ब्याह लिया। २३ मूशी के पुत्र: महली, एदेर और यरेमोत यह तीन थे। २४ लेवीय पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष ये ही थे, ये नाम ले लेकर, एक एक पुरुष करके गिने गए. और बीस वर्ष की वा उस से अधिक अवस्था के थे और यहोवा के भवन में सेवा टहल करते थे। २५ क्योंकि दाऊद ने कहा, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने अपनी प्रजा को विश्राम दिया है, और वह तो यरूशलेम में सदा के लिये बस गया है। २६ और लेवियों को निवास और उस की उपासना का सामान फिर उठाना न पड़ेगा। २७ क्योंकि दाऊद की पिछली आज्ञाओं के अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्था के लेवीय गिने गए। २८ क्योंकि उनका काम तो हारून की सन्तान की सेवा टहल करना था, अर्थात् यह कि वे आंगनों और कोठरियों में, और सब पवित्र वस्तुओं के शुद्ध करने में और परमेश्वर के भवन की उपासना के सब कामों में सेवा टहल करें। २९ और भेंट की रोटी का, अन्नबलियों के मैदे का, और अखमीरी पपड़ियों का, और तवे पर बनाए हुए और सने हुए का, और मापने और तौलने के सब प्रकार का काम करें। ३० और प्रति भोर और प्रति सांझ को यहोवा का धन्यवाद और उसकी स्तुति करने के लिये खड़े रहा करें। ३१ और विश्राम-दिनों और नये चान्द के दिनों, और नियत पर्व्वों में गिनती के नियम के अनुसार नित्य यहोवा के सब होमबलियों को

चढ़ाएं। ३२ और यहोवा के भवन की उपासना के विषय मिलापवाले तम्बू और पवित्रस्थान की रक्षा करें, और अपने भाई हारूनियों के सौंपे हुए काम को चौकसी से करें ।।

२४ फिर हारून की सन्तान के दल ये थे। हारून के पुत्र तो नादाब, अबीहू, एलीआज़र और ईतामार थे। २ परन्तु नादाब और अबीहू अपने पिता के साम्हने पुत्रहीन मर गए, इस लिये याजक का काम एलीआज़र और ईतामार करते थे। ३ और दाऊद ने एलीआज़र के वंश के सादोक और ईतामार के वंश के अहीमेलेक की सहायता से उनको अपनी अपनी सेवा के अनुसार दल दल करके बांट दिया। ४ और एलीआज़र के वंश के मुख्य पुरुष, ईतामार के वंश के मुख्य पुरुषों से अधिक थे, और वे यों बांटे गए अर्थात् एलीआज़र के वंश के पितरों के घरानों के सोलह, और ईतामार के वंश के पितरों के घरानों के आठ मुख्य पुरुष थे। ५ तब वे चिट्ठी डालकर बराबर बराबर बांटे गए, क्योंकि एलीआज़र और ईतामार दोनों के वंशों में पवित्रस्थान के हाकिम और परमेश्वर के हाकिम नियुक्त हुए थे। ६ और नतनेल के पुत्र शमायाह ने जो लेवीय था, उनके नाम राजा और हाकिमों और सादोक याजक, और एब्यातार के पुत्र अहीमेलेक और याजकों और लेवियों के पितरों के घरानों के मुख्य पुरुषों के साम्हने लिखे; अर्थात् पितरों का एक घराना तो एलीआज़र के वंश में से और एक ईतामार के वंश में से लिया गया ।।

७ पहिली चिट्ठी तो यहोयारीब के, और दूसरी यदायाह, ८ तीसरी हारीम के, चौथी सोरीम के, ९ पांचवीं मल्किय्याह के, छठवीं मिय्यामीन के, १० सातवीं हक्कोस के, आठवीं अबिय्याह के, ११ नौवीं येशू के, दसवीं शकन्याह के, १२ ग्यारहवीं एल्याशीब के, बारहवीं याकीम के, १३ तेरहवीं हुप्पा के, चौदहवीं येसेबाब के, १४ पन्द्रहवीं बिल्गा के, सोलहवीं इम्मेर के, १५ सतरहवीं हेजीर के, अठारहवीं हप्पित्सेस के, १६ उन्नीसवीं पतह्याह के, बीसवीं यहेजकेल के, १७ इक्कीसवीं याकीन के, बाईसवीं गामूल के, १८ तेईसवीं दलायाह के, और चौबीसवीं माज्याह के नाम पर निकलीं। १९ उनकी सेवकाई के लिये उनका यही नियम ठहराया गया कि वे अपने उस नियम के अनुसार जो इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार उनके मूलपुरुष हारून ने चलाया था, यहोवा के भवन में जाया करें ।।

२० बचे हुए लेवियों में से अम्राम के वंश में से शूबाएल, शूबाएल के वंश में से येहदयाह। २१ बचा रहब्याह, सो रहब्याह, के वंश में से यिश्शिय्याह मुख्य था। २२ इसहारियों में से शलोमोत और शलोमोत के वंश में से यहत। २३ और हेब्रोन के वंश में से मुख्य तो यरिय्याह, दूसरा अमर्याह, तीसरा यहजीएल, और चौथा यकमाम। २४ उज्जीएल के वंश में से मीका और मीका के वंश में से शामीर। २५ मीका का भाई यिश्शिय्याह, यिश्शिय्याह के वंश में से जकर्याह। २६ मरारी के पुत्र महली और मूशी और याजिय्याह का पुत्र बिनो था। २७ मरारी के पुत्र :

याजिय्याह से बिनो और शोहम, जक्कूर और इब्री थे। २८ महली से, एलीआजर जिसके कोई पुत्र न था। २९ कीश से कीश के वंश में यरह्मेल। ३० और मूशी के पुत्र, महली, एदेर और यरीमोत। अपने अपने पितरों के घरानों के अनुसार ये ही लेवीय सन्तान के थे। ३१ इन्हों ने भी अपने भाई हारून की सन्तानों की नाईं दाऊद राजा और सादोक और अहीमेलेक और याजकों और लेवियों के पितरों के घरानों के मुख्य पुरुषों के साम्हने चिट्ठियां डालीं, अर्थात् मुख्य पुरुष के पितरों का घराना उसके छोटे भाई के पितरों के घराने के बराबर ठहरा॥

२५ फिर दाऊद और सेनापतियों ने आसाप, हेमान और यदूतून के कितने पुत्रों को सेवकाई के लिये अलग किया कि वे वीणा, सारंगी और झांझ बजा बजाकर नबूवत करें। और इस सेवकाई के काम करनेवाले मनुष्यों की गिनती यह थी : २ अर्थात् आसाप के पुत्रों में से तो जक्कूर, योसेप, नतन्याह और अशरेला, आसाप के ये पुत्र आसाप ही की आज्ञा में थे, जो राजा की आज्ञा के अनुसार नबूवत करता था। ३ फिर यदूतून के पुत्रों में से गदल्याह, सरी यशायाह, हसब्याह, मत्तित्याह, ये ही छः अपने पिता यदूतून की आज्ञा में होकर जो यहोवा का धन्यवाद और स्तुति कर करके नबूवत करता था, वीणा बजाते थे। ४ और हेमान के पुत्रों में से, मुक्किय्याह, मत्तन्याह, लज्जीएल, शबूएल, यरीमोत, हनन्याह, हनानी, एलीआता, गिद्दलती, रोममतीएजेर, योशबकाशा, मल्लोती, होतीर और महजीओत। ५ परमेश्वर की प्रतिज्ञानुकूल जो उसका नाम बढ़ाने की थी, ये सब हेमान के पुत्र थे जो राजा का दर्शी था; क्योंकि परमेश्वर ने हेमान को चौदह बेटे और तीन बेटियां दीं थीं। ६ ये सब यहोवा के भवन में गाने के लिये अपने अपने पिता के अधीन रहकर, परमेश्वर के भवन, की सेवकाई में झांझ, सारंगी और वीणा बजाते थे। और आसाप, यदूतून और हेमान राजा के अधीन रहते थे। ७ इन सभों की गिनती भाइयों समेत जो यहोवा के गीत सीखे हुए और सब प्रकार से निपुण थे, दो सौ अठासी थी। ८ और उन्हों ने क्या बड़ा, क्या छोटा, क्या गुरू, क्या चेला, अपनी अपनी बारी के लिये चिट्ठी डाली। ९ और पहिली चिट्ठी आसाप के बेटों में से योसेप के नाम पर निकली, दूसरी गदल्याह के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। १० तीसरी जक्कूर के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। ११ चौथी यिस्री के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। १२ पांचवीं नतन्याह के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। १३ छठीं बुक्किय्याह के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। १४ सातवीं यसरेला के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। १५ आठवीं यशायाह के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। १६ नौवीं मत्तन्याह के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई समेत बारह थे। १७ दसवीं शिमी के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस

समेत बारह थे। १८ ग्यारहवीं अजरेल के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। १९ बारहवीं हशब्याह के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। २० तेरहवीं शूबाएल के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। २१ चौदहवीं मत्तिय्याह के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। २२ पन्द्रहवीं यरेमोत के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। २३ सोलहवीं हनन्याह के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। २४ सत्रहवीं योशबकाशा के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। २५ अठारहवीं हनानी के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। २६ उन्नीसवीं मल्लोती के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। २७ बीसवीं इलिय्याता के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। २८ इक्कीसवीं होतीर के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। २९ बाईसवीं गिद्दलती के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। ३० तेईसवीं महजीओत के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। ३१ और चौबीसवीं चिट्ठी रोममतीएजेर के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे॥

२६ फिर द्वारपालों के दल ये थे: कोरहियों में से तो मशेलेम्याह, जो कोरे का पुत्र और आसाप के सन्तानों में से था। २ और मशेलेम्याह के पुत्र हुए, अर्थात् उसका जेठा जकर्याह दूसरा यदीएल, तीसरा जबद्याह, ३ चौथा यतीएल, पांचवां एलाम, छठवां यहोहानान और सातवां एल्यहोएनै। ४ फिर ओबेदेदोम के भी पुत्र हुए, उसका जेठा शमायाह, दूसरा यहोजाबाद, तीसरा योआह, चौथा साकार, पांचवां नतनेल, ५ छठवां अम्मीएल, सातवां इस्साकार और आठवां पुल्लतै, क्योंकि परमेश्वर ने उसे आशीष दी थी। ६ और उसके पुत्र शमायाह के भी पुत्र उत्पन्न हुए, जो शूरवीर होने के कारण अपने पिता के घराने पर प्रभुता करते थे। ७ शमायाह के पुत्र ये थे, अर्थात् ओती, रपाएल, ओबेद, एलजाबाद और उनके भाई एलीहू और समक्याह बलवान पुरुष थे। ८ ये सब ओबेदेदोम की सन्तान में से थे, वे और उनके पुत्र और भाई इस सेवकाई के लिये बलवान और शक्तिमान थे; ये ओबेदेदोमी बासठ थे। ९ और मशेलेम्याह के पुत्र और भाई अठारह थे, जो बलवान थे। १० फिर मरारी के वंश में से होसा के भी पुत्र थे, अर्थात् मुख्य तो शिम्री (जिसको जेठा न होने पर भी उसके पिता ने मुख्य ठहराया), ११ दूसरा हिल्किय्याह, तीसरा तबल्याह और चौथा जकर्याह था; होसा के सब पुत्र और भाई मिलकर तेरह थे॥

१२ द्वारपालों के दल इन मुख्य पुरुषों के थे, ये अपने भाइयों के बराबर ही यहोवा के भवन में सेवा टहल करते थे। १३ इन्हों ने क्या छोटे, क्या बड़े, अपने अपने पितरों के घरानों के अनुसार एक एक फाटक के लिये चिट्ठी डाली। १४ पूर्व की ओर की चिट्ठी शेलेम्याह के

नाम पर निकली। तब उन्हों ने उसके पुत्र जकर्याह के नाम की चिट्ठी डाली (वह बुद्धिमान मंत्री था) और चिट्ठी उत्तर की ओर के लिये निकली। १५ दक्खिन की ओर के लिये ओबेदेदोम के नाम पर चिट्ठी निकली, और उसके बेटों के नाम पर खजाने की कोठरी के लिये। १६ फिर शुप्पीम और होसा के नामों की चिट्ठी पश्चिम की ओर के लिये निकली, कि वे शल्लेकेत नाम फाटक के पास चढ़ाई की सड़क पर आम्हने साम्हने चौकीदारी किया करें। १७ पूर्व ओर तो छः लेवीय थे, उत्तर की ओर प्रतिदिन चार, दक्खिन की ओर प्रतिदिन चार, और खजाने की कोठरी के पास दो दो ठहरे। १८ पश्चिम ओर के पर्बार नाम स्थान पर ऊंची सड़क के पास तो चार और पर्बार के पास दो रहे। १९ ये द्वारपालों के दल थे, जिन में से कितने तो कोरह के थे और कितने मरारी के वंश के थे॥

२० फिर लेवियों में से अहिय्याह परमेश्वर के भवन और पवित्र की हुई वस्तुओं, दोनों के भण्डारों का अधिकारी नियुक्त हुआ। २१ ये लादान की सन्तान के थे, अर्थात् गेर्शेनियों की सन्तान जो लादान के कुल के थे, अर्थात् लादान और गेर्शोनी के पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष थे, अर्थात् यहोएली॥

२२ यहोएली के पुत्र ये थे, अर्थात् जेताम और उसका भाई योएल जो यहोवा के भवन के खजाने के अधिकारी थे। २३ अम्रामियों, यिसहारियों, हेब्रोनियों और उज्जीएलियों में से। २४ और शबूएल जो मूसा के पुत्र गेर्शोम के वंश का था, वह खजानों का मुख्य अधिकारी था। २५ और उसके भाइयों का वृत्तान्त यह है: एलीआजर के कुल में उसका पुत्र रहब्याह, रहब्याह का पुत्र यशायाह, यशायाह का पुत्र योराम, योराम का पुत्र जिक्री, और जिक्री का पुत्र शलोमोत था। २६ यही शलोमोत अपने भाइयों समेत उन सब पवित्र की हुई वस्तुओं के भण्डारों का अधिकारी था, जो राजा दाऊद और पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुषों और सहस्रपतियों और शतपतियों और मुख्य सेनापतियों ने पवित्र की थीं। २७ जो लूट लड़ाइयों में मिलती थी, उस में से उन्हों ने यहोवा का भवन दृढ़ करने के लिये कुछ पवित्र किया। २८ वरन जितना शमूएल दर्शी, कीश के पुत्र शाऊल, नेर के पुत्र अब्नेर, और सरूयाह के पुत्र योआब ने पवित्र किया था, और जो कुछ जिस किसी ने पवित्र कर रखा था, वह सब शलोमोत और उसके भाइयों के अधिकार में था॥

२९ यिसहारियों में से कनन्याह और उसके पुत्र, इस्राएल के देश का काम अर्थात् सरदार और न्यायी का काम करने के लिये नियुक्त हुए। ३० और हेब्रोनियों में से हशब्याह और उसके भाई जो सत्रह सौ बलवान पुरुष थे, वे यहोवा के सब काम और राजा की सेवा के विषय यरदन की पश्चिम ओर रहनेवाले इस्राएलियों के अधिकारी ठहरे। ३१ हेब्रोनियों में से यरिय्याह मुख्य था, अर्थात् हेब्रोनियों की पीढ़ी पीढ़ी के पितरों के घरानों के अनुसार दाऊद के राज्य के चालीसवें वर्ष में वे ढूंढ़े गए, और उन में से कई शूरवीर गिलाद के याजेर में मिले। ३२ और उसके भाई जो वीर थे, पितरों के घरानों के दो हजार सात सौ मुख्य पुरुष थे, इनको दाऊद

राजा ने परमेश्वर के सब विषयों और राजा के विषय में रूबेनियों, गादियों और मनश्शे के आधे गोत्र का अधिकारी ठहराया ॥

(देश का प्रबन्ध)

२७ इस्राएलियों की गिनती, अर्थात् पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुषों और सहस्रपतियों और शतपतियों और उनके सरदारों की गिनती जो वर्ष भर के महीने महीने उपस्थित होने और छुट्टी पानेवाले दलों के सब विषयों में राजा की सेवा टहल करते थे, एक एक दल में चौबीस हजार थे। २ पहिले महीने के लिये पहिले दल का अधिकारी जब्दीएल का पुत्र याशोबाम नियुक्त हुआ; और उसके दल में चौबीस हजार थे। ३ वह पेरेस के वंश का था और पहिले महीने में सब सेनापतियों का अधिकारी था। ४ और दूसरे महीने के दल का अधिकारी दोदै नाम एक अहोही था, और उसके दल का प्रधान मिक्लोत था, और उसके दल में चौबीस हजार थे। ५ तीसरे महीने के लिये तीसरा सेनापति यहोयादा याजक का पुत्र बनायाह था और उसके दल में चौबीस हजार थे। ६ यह वही बनायाह है, जो तीसों शूरों में वीर, और तीसों में श्रेष्ठ भी था; और उसके दल में उसका पुत्र अम्मीजाबाद था। ७ चौथे महीने के लिये चौथा सेनापति योआब का भाई असाहेल था, और उसके बाद उसका पुत्र जबद्याह था और उसके दल में चौबीस हजार थे। ८ पांचवें महीने के लिये पांचवां सेनापति यिज्राही शम्हूत था और उसके दल में चौबीस हजार थे। ९ छठवें महीने के लिये छठवां सेनापति तकोई इक्केश का पुत्र ईरा था और उसके दल में चौबीस हजार थे। १० सातवें महीने के लिये सातवां सेनापति एप्रैम के वंश का हेलेस पलोनी था और उसके दल में चौबीस हजार थे। ११ आठवें महीने के लिये आठवां सेनापति जेरह के वंश में से हूशाई सिब्बकै था और उसके दल में चौबीस हजार थे। १२ नौवें महीने के लिये नौवां सेनापति बिन्यामीनी अबीएजेर अनातोतवासी था और उसके दल में चौबीस हजार थे। १३ दसवें महीने के लिये दसवां सेनापति जेरही महरै नतोपावासी था और उसके दल में चौबीस हजार थे। १४ ग्यारहवें महीने के लिये ग्यारहवां सेनापति एप्रैम के वंश का बनायाह पिरातोनवासी था और उसके दल में चौबीस हजार थे। १५ बारहवें महीने के लिये बारहवां सेनापति ओत्नीएल के वंश का हेल्दै नतोपावासी था और उसके दल में चौबीस हजार थे ॥

१६ फिर इस्राएली गोत्रों के ये अधिकारी थे: अर्थात् रूबेनियों का प्रधान जिक्री का पुत्र एलीआज़र; शिमोनियों से माका का पुत्र शपत्याह। १७ लेवी से कमूएल का पुत्र हशब्याह; हारून की सन्तान का सादोक। १८ यहूदा का एलीहू नाम दाऊद का एक भाई, इस्साकार से मीकाएल का पुत्र ओम्री। १९ जबूलून से ओबद्याह का पुत्र यिशमायाह, नप्ताली से अज्रीएल का पुत्र यरीमोत। २० एप्रैम से अजज्याह का पुत्र होशे, मनश्शे से आधे गोत्र का, फ़दायाह का पुत्र योएल। २१ गिलाद में आधे गोत्र मनश्शे से जकर्याह का पुत्र इद्दो, बिन्यामीन से अब्नेर

का पुत्र यासीएल, २२ और दान से यारोहाम का पुत्र अजरेल, ठहरा। ये ही इस्राएल के गोत्रों के हाकिम थे। २३ परन्तु दाऊद ने उनकी गिनती बीस वर्ष की अवस्था के नीचे न की, क्योंकि यहोवा ने इस्राएल की गिनती आकाश के तारों के बराबर बढ़ाने के लिये कहा था। २४ सरूयाह का पुत्र योआब गिनती लेने लगा, पर निपटा न सका क्योंकि ईश्वर का क्रोध इस्राएल पर भड़का, और यह गिनती राजा दाऊद के इतिहास में नहीं लिखी गई ॥

२५ फिर अदीएल का पुत्र अजमावेत राज भण्डारों का अधिकारी था, और देहात और नगरों और गांवों और गढ़ों के भण्डारों का अधिकारी उज्जिय्याह का पुत्र यहोनातान था। २६ और जो भूमि को जोतकर बोकर खेती करते थे, उनका अधिकारी कलूब का पुत्र एज्री था। २७ और दाख की बारियों का अधिकारी रामाई शिमी और दाख की बारियों की उपज जो दाखमधु के भण्डारों में रखने के लिये थी, उसका अधिकारी शापामी जब्दी था। २८ और नीचे के देश के जलपाई और गूलर के वृक्षों का अधिकारी गदेरी बाल्हानान था और तेल के भण्डारों का अधिकारी योआश था। २९ और शारोन में चरनेवाले गाय-बैलों का अधिकारी शारोनी शित्रै था और तराइयों के गाय-बैलों का अधिकारी अदलै का पुत्र शापात था। ३० और ऊंटों का अधिकारी इश्माएली ओबील और गदहियों का अधिकारी मेरोनोतवासी येहदयाह। ३१ और भेड़-बकरियों का अधिकारी हग्री याजीज था। ये ही सब राजा दाऊद के धन सम्पत्ति के अधिकारी थे ॥

३२ और दाऊद का भतीजा* योनातान एक समझदार मंत्री और शास्त्री था, और किसी हक्मोनी का पुत्र यहीएल राजपुत्रों के संग रहा करता था। ३३ और अहीतोपेल राजा का मंत्री था, और एरेकी हूशै राजा का मित्र था। ३४ और अहीतोपेल के बाद बनायाह का पुत्र यहोयादा और एब्यातार मंत्री ठहराए गए। और राजा का प्रधान सेनापति योआब था ॥

(दाऊद की अन्तिम सभा और उसकी मृत्यु)

२८ और दाऊद ने इस्राएल के सब हाकिमों को अर्थात् गोत्रों के हाकिमों और राजा की सेवा टहल करनेवाले दलों के हाकिमों को और सहस्रपतियों और शतपतियों और राजा और उसके पुत्रों के पशु आदि सब धन सम्पत्ति के अधिकारियों, सरदारों और वीरों और सब शूरवीरों को यरूशलेम में बुलवाया। २ तब दाऊद राजा खड़ा होकर कहने लगा, हे मेरे भाइयो! और हे मेरी प्रजा के लोगो! मेरी सुनो, मेरी मनसा तो थी कि यहोवा की वाचा के सन्दूक के लिये और हम लोगों के परमेश्वर के चरणों की पीढ़ी के लिये विश्राम का एक भवन बनाऊं, और मैं ने उसके बनाने की तैयारी की थी। ३ परन्तु परमेश्वर ने मुझ से कहा, तू मेरे नाम का भवन बनाने न पाएगा, क्योंकि तू युद्ध करनेवाला है और तू ने लोहू बहाया है। ४ तौभी इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने मेरे पिता के सारे घराने में से मुझी को चुन लिया, कि इस्राएल का

* वा चचा।

राजा सदा बना रहूं: अर्थात् उस ने यहूदा को प्रधान होने के लिये और यहूदा के घराने में से मेरे पिता के घराने को चुन लिया और मेरे पिता के पुत्रों में से वह मुझी को सारे इस्राएल का राजा बनाने के लिये प्रसन्न हुआ। ५ और मेरे सब पुत्रों में से (यहोवा ने तो मुझे बहुत पुत्र दिए हैं) उस ने मेरे पुत्र सुलैमान को चुन लिया है, कि वह इस्राएल के ऊपर यहोवा के राज्य की गद्दी पर विराजे। ६ और उस ने मुझ से कहा, कि तेरा पुत्र सुलैमान ही मेरे भवन और आंगनों को बनाएगा, क्योंकि मैं ने उसको चुन लिया है कि मेरा पुत्र ठहरे, और मैं उसका पिता ठहरूंगा। ७ और यदि वह मेरी आज्ञाओं और नियमों के मानने में आज कल की नाईं दृढ़ रहे, तो मैं उसका राज्य सदा स्थिर रखूंगा। ८ इसलिये अब इस्राएल के देखते अर्थात् यहोवा की मण्डली के देखते, और अपने परमेश्वर के साम्हने, अपने परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाओं को मानो और उन पर ध्यान करते रहो; ताकि तुम इस अच्छे देश के अधिकारी बने रहो, और इसे अपने बाद अपने वंश का सदा का भाग होने के लिये छोड़ जाओ।।

९ और हे मेरे पुत्र सुलैमान! तू अपने पिता के परमेश्वर का ज्ञान रख, और खरे मन और प्रसन्न जीव से उसकी सेवा करता रह; क्योंकि यहोवा मन को जांचता और विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है उसे समझता है। यदि तू उसकी खोज में रहे, तो वह तुझ को मिलेगा; परन्तु यदि तू उसको त्याग दे तो वह सदा के लिये तुझ को छोड़ देगा। १० अब चौकस रह, यहोवा ने तुझे एक ऐसा भवन बनाने को चुन लिया है, जो पवित्रस्थान ठहरेगा, हियाव बान्धकर इस काम में लग जा।।

११ तब दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान को मन्दिर के ओसारे, कोठरियों, भण्डारों अटारियों, भीतरी कोठरियों, और प्रायश्चित्त के ढकने के स्थान का नमूना, १२ और यहोवा के भवन के आंगनों और चारों ओर की कोठरियों, और परमेश्वर के भवन के भण्डारों और पवित्र की हुई वस्तुओं के भण्डारों के, जो जो नमूने ईश्वर के आत्मा की प्रेरणा से* उसको मिले थे, वे सब दे दिए। १३ फिर याजकों और लेवियों के दलों, और यहोवा के भवन की सेवा के सब कामों, और यहोवा के भवन की सेवा के सब सामान, १४ अर्थात् सब प्रकार की सेवा के लिये सोने के पात्रों के निमित्त सोना तौलकर, और सब प्रकार की सेवा के लिये चान्दी के पात्रों के निमित्त चान्दी तौलकर, १५ और सोने की दीवटों के लिये, और उनके दीपकों के लिये प्रति एक एक दीवट, और उसके दीपकों का सोना तौलकर और चान्दी के दीवटों के लिये एक एक दीवट, और उसके दीपक की चान्दी, प्रति एक एक दीवट के काम के अनुसार तौलकर, १६ और भेंट की रोटी की मेजों के लिये एक एक मेज का सोना तौलकर, और चान्दी की मेजों के लिये चान्दी, १७ और चोखे सोने के कांटों, कटोरों और प्यालों और सोने की कटोरियों के लिये एक एक कटोरी का सोना तौलकर, और चान्दी की कटोरियों के लिये एक एक कटोरी की

* वा अपनी आत्मा में।

चान्दी तौलकर, १८ और धूप की वेदी के लिये तपाया हुआ सोना तौलकर, और रथ अर्थात् यहोवा की वाचा का सन्दूक ढांकनेवाले और पंख फैलाए हुए करूबों के नमूने के लिये सोना दे दिया। १९ मैं ने यहोवा की शक्ति से जो मुझ को मिली, यह सब कुछ बूझकर लिख दिया है॥

२० फिर दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान से कहा, हियाव बान्ध और दृढ़ होकर इस काम में लग जा। मत डर, और तेरा मन कच्चा न हो, क्योंकि यहोवा परमेश्वर जो मेरा परमेश्वर है, वह तेरे संग है; और जब तक यहोवा के भवन में जितना काम करना हो वह न हो चुके, तब तक वह न तो तुझे धोखा देगा और न तुझे त्यागेगा। २१ और देख परमेश्वर के भवन के सब काम के लिये याजकों और लेवियों के दल ठहराए गए हैं, और सब प्रकार की सेवा के लिये सब प्रकार के काम प्रसन्नता से करनेवाले बुद्धिमान पुरुष भी तेरा साथ देंगे; और हाकिम और सारी प्रजा के लोग भी जो कुछ तू कहेगा वही करेंगे॥

२९ फिर राजा दाऊद ने सारी सभा से कहा, मेरा पुत्र सुलैमान सुकुमार लड़का है, और केवल उसी को परमेश्वर ने चुना है; काम तो भारी है, क्योंकि यह भवन मनुष्य के लिये नहीं, यहोवा परमेश्वर के लिये बनेगा। २ मैं ने तो अपनी शक्ति भर, अपने परमेश्वर के भवन के निमित्त सोने की वस्तुओं के लिये सोना, चान्दी की वस्तुओं के लिये चान्दी, पीतल की वस्तुओं के लिये पीतल, लोहे की वस्तुओं के लिये लोहा, और लकड़ी की वस्तुओं के लिये लकड़ी, और सुलैमानी पत्थर, और जड़ने के योग्य मणि, और पच्ची के काम के लिये रङ्ग रङ्ग के नग, और सब भांति के मणि और बहुत सा संगमर्मर इकट्ठा किया है। ३ फिर मेरा मन अपने परमेश्वर के भवन में लगा है, इस कारण जो कुछ मैं ने पवित्र भवन के लिये इकट्ठा किया है, उस सब से अधिक मैं अपना निज धन भी जो सोना चान्दी के रूप में मेरे पास है, अपने परमेश्वर के भवन के लिये दे देता हूं। ४ अर्थात् तीन हजार किक्कार ओपीर का सोना, और सात हजार किक्कार तपाई हुई चान्दी, जिस से कोठरियों की भीतें मढ़ी जाएं। ५ और सोने की वस्तुओं के लिये सोना, और चान्दी की वस्तुओं के लिये चान्दी, और कारीगरों से बनानेवाले सब प्रकार के काम के लिये मैं उसे देता हूं। और कौन अपनी इच्छा से यहोवा के लिये अपने को अर्पण * कर देता है?

६ तब पितरों के घरानों के प्रधानों और इस्राएल के गोत्रों के हाकिमों और सहस्रपतियों और शतपतियों और राजा के काम के अधिकारियों ने अपनी अपनी इच्छा से, ७ परमेश्वर के भवन के काम के लिये पांच हजार किक्कार और दस हजार दर्कनोन सोना, दस हजार किक्कार चान्दी, अठारह हजार किक्कार पीतल, और एक लाख किक्कार लोहा दे दिया। ८ और जिनके पास मणि थे, उन्हों ने उन्हें यहोवा के भवन के खज़ाने के लिये गेर्शोनी यहीएल के हाथ में दे दिया। ९ तब प्रजा के लोग आनन्दित हुए, क्योंकि हाकिमों ने प्रसन्न होकर खरे मन

* मूल में—अपना हाथ भरता है।

और अपनी अपनी इच्छा से यहोवा के लिये भेंट दी थी; और दाऊद राजा बहुत ही आनन्दित हुआ ॥

१० तब दाऊद ने सारी सभा के सम्मुख यहोवा का धन्यवाद किया, और दाऊद ने कहा, हे यहोवा! हे हमारे मूल पुरुष इस्राएल के परमेश्वर! अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू धन्य है। ११ हे यहोवा! महिमा, पराक्रम, शोभा, सामर्थ्य और विभव, तेरा ही है; क्योंकि आकाश और पृथ्वी में जो कुछ है, वह तेरा ही है; हे यहोवा! राज्य तेरा है, और तू सभों के ऊपर मुख्य और महान ठहरा है। १२ धन और महिमा तेरी ओर से मिलती हैं, और तू सभों के ऊपर प्रभुता करता है। सामर्थ्य और पराक्रम तेरे ही हाथ में हैं, और सब लोगों को बढ़ाना और बल देना तेरे हाथ में है। १३ इसलिये अब हे हमारे परमेश्वर! हम तेरा धन्यवाद और तेरे महिमायुक्त नाम की स्तुति करते हैं ॥

१४ मैं क्या हूं? और मेरी प्रजा क्या है? कि हम को इस रीति से अपनी इच्छा से तुझे भेंट देने की शक्ति मिले? तुझी से तो सब कुछ मिलता है, और हम ने तेरे हाथ से पाकर तुझे दिया है। १५ तेरी दृष्टि में हम तो अपने सब पुरखाओ की नाईं पराए और परदेशी हैं; पृथ्वी पर हमारे दिन छाया की नाईं बीते जाते हैं, और हमारा कुछ ठिकाना नहीं। १६ हे हमारे परमेश्वर यहोवा! वह जो बड़ा संचय हम ने तेरे पवित्र नाम का एक भवन बनाने के लिये किया है, वह तेरे ही हाथ से हमें मिला था, और सब तेरा ही है। १७ और हे मेरे परमेश्वर! मैं जानता हूं कि तू मन को जांचता है और सिधाई से प्रसन्न रहता है; मैं ने तो यह सब कुछ मन की सिधाई और अपनी इच्छा से दिया है; और अब मैं ने आनन्द से देखा है, कि तेरी प्रजा के लोग जो यहां उपस्थित हैं, वह अपनी इच्छा से तेरे लिये भेंट देते हैं। १८ हे यहोवा! हे हमारे पुरखा इब्राहीम, इसहाक और इस्राएल के परमेश्वर! अपनी प्रजा के मन के विचारों में यह बात बनाए रख और उनके मन अपनी ओर लगाए रख। १९ और मेरे पुत्र सुलैमान का मन ऐसा खरा कर दे कि वह तेरी आज्ञाओं, चितौनियों और विधियों को मानता रहे और यह सब कुछ करे, और उस भवन को बनाए, जिसकी तैयारी मैं ने की है ॥

२० तब दाऊद ने सारी सभा से कहा, तुम अपने परमेश्वर यहोवा का धन्यवाद करो। तब सभा के सब लोगों ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा का धन्यवाद किया, और अपना अपना सिर झुकाकर यहोवा को और राजा को दण्डवत किया। २१ और दूसरे दिन उन्हों ने यहोवा के लिये बलिदान किए, अर्थात् अर्घों समेत एक हजार बैल, एक हजार मेढ़े और एक हजार भेड़ के बच्चे होमबलि करके चढ़ाए, और सब इस्राएल के लिये बहुत से मेलबलि चढ़ाए। उसी दिन यहोवा के साम्हने उन्हों ने बड़े आनन्द से खाया और पिया ॥

२२ फिर उन्हों ने दाऊद के पुत्र सुलैमान को दूसरी बार राजा ठहराकर यहोवा की ओर से प्रधान होने के लिये उसका और याजक होने के लिये सादोक का अभिषेक किया। २३ तब सुलैमान अपने पिता दाऊद के स्थान पर राजा होकर

यहोवा के सिंहासन पर विराजने लगा और भाग्यवान हुआ, और इस्राएल उसके अधीन हुआ। २४ और सब हाकिमों और शूरवीरों और राजा दाऊद के सब पुत्रों ने सुलैमान राजा की अधीनता अंगीकार की। २५ और यहोवा ने सुलैमान को सब इस्राएल के देखते बहुत बढ़ाया, और उसे ऐसा राजकीय ऐश्वर्य दिया, जैसा उस से पहिले इस्राएल के किसी राजा का न हुआ था ।।

२६ इस प्रकार यिशै के पुत्र दाऊद ने सारे इस्राएल के ऊपर राज्य किया। २७ और उसके इस्राएल पर राज्य करने का समय चालीस वर्ष का था; उस ने सात वर्ष तो हेब्रोन में और तैंतीस वर्ष यरूशलेम में राज्य किया। २८ और वह पूरे बूढ़ापे की अवस्था में दीर्घायु होकर और धन और विभव, मनमाना भोगकर * मर गया; और उसका पुत्र सुलैमान उसके स्थान पर राजा हुआ। २९ आदि से अन्त तक राजा दाऊद के सब कामों का वृत्तान्त, ३० और उसके सब राज्य और पराक्रम का, और उस पर और इस्राएल पर, वरन देश देश के सब राज्यों पर जो कुछ बीता, इसका भी वृत्तान्त शमूएल दर्शी और नातान नबी और गाद दर्शी की पुस्तकों में † लिखा हुआ है ।।

* मूल में—दिनों धन, और विभव से तृप्त।
† मूल में—के वचनों में।

इतिहास नामक पुस्तक—दूसरा भाग

(सुलैमान के राज्य का आरम्भ)

१ दाऊद का पुत्र सुलैमान राज्य में स्थिर हो गया, और उसका परमेश्वर यहोवा उसके संग रहा और उसको बहुत ही बढ़ाया ।।

२ और सुलैमान ने सारे इस्राएल से, अर्थात् सहस्रपतियों, शतपतियों, न्यायियों और इस्राएल के सब रईसों से जो पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुष थे, बातें कीं। ३ और सुलैमान पूरी मण्डली समेत गिबोन के ऊंचे स्थान पर गया, क्योंकि परमेश्वर का मिलापवाला तम्बू, जिसे यहोवा के दास मूसा ने जंगल में बनाया था, वह वहीं पर था। ४ परन्तु परमेश्वर के सन्दूक को दाऊद किर्यत्यारीम से उस स्थान पर ले आया था जिसे उस ने उसके लिये तैयार किया था, उस ने तो उसके लिये यरूशलेम में एक तम्बू खड़ा कराया था। ५ और पीतल की जो वेदी ऊरी के पुत्र बसलेल ने, जो हूर का पोता था, बनाई थी, वह गिबोन में * यहोवा के निवास के साम्हने थी। इसलिये सुलैमान मण्डली समेत उसके पास गया। ६ और सुलैमान ने वहीं उस पीतल की वेदी के पास जाकर, जो

* मूल में—वहां।

यहोवा के साम्हने मिलापवाले तम्बू के पास थी, उस पर एक हजार होमबलि चढ़ाए ।।

७ उसी दिन रात को परमेश्वर ने सुलैमान को दर्शन देकर उस से कहा, जो कुछ तू चाहे कि मैं तुझे दूं, वह मांग । ८ सुलैमान ने परमेश्वर से कहा, तू मेरे पिता दाऊद पर बड़ी करुणा करता रहा और मुझ को उसके स्थान पर राजा बनाया है । ९ अब हे यहोवा परमेश्वर ! जो वचन तू ने मेरे पिता दाऊद को दिया था, वह पूरा हो; तू ने तो मुझे ऐसी प्रजा का राजा बनाया है जो भूमि की धूलि के किनकों के समान बहुत है । १० अब मुझे ऐसी बुद्धि और ज्ञान दे, कि मैं इस प्रजा के साम्हने अन्दर-बाहर आना-जाना कर सकूं, क्योंकि कौन ऐसा है कि तेरी इतनी बड़ी प्रजा का न्याय कर सके ? ११ परमेश्वर ने सुलैमान से कहा, तेरी जो ऐसी ही मनसा हुई, अर्थात् तू ने न तो धन सम्पत्ति मांगी है, न ऐश्वर्य और न अपने बैरियों का प्राण और न अपनी दीर्घायु मांगी, केवल बुद्धि और ज्ञान का वर मांगा है, जिस से तू मेरी प्रजा का जिसके ऊपर मैं ने तुझे राजा नियुक्त किया है, न्याय कर सके, १२ इस कारण बुद्धि और ज्ञान तुझे दिया जाता है । और मैं तुझे इतना धन सम्पत्ति और ऐश्वर्य दूंगा, जितना न तो तुझ से पहिले किसी राजा को, मिला और न तेरे बाद किसी राजा को मिलेगा । १३ तब सुलैमान गिबोन के ऊंचे स्थान से, अर्थात् मिलापवाले तम्बू के साम्हने से यरूशलेम को आया और वहां इस्राएल पर राज्य करने लगा ।।

१४ फिर सुलैमान ने रथ और सवार इकट्ठे कर लिये; और उसके चौदह सौ रथ और बारह हजार सवार थे, और उनको उस ने रथों के नगरों में, और यरूशलेम में राजा के पास ठहरा रखा । १५ और राजा ने ऐसा किया, कि यरूशलेम में सोने-चान्दी का मूल्य बहुतायत के कारण पत्थरों का सा, और देवदारों का मूल्य नीचे के देश के गूलरों का सा बना दिया । १६ और जो घोड़े सुलैमान रखता था, वे मिस्र से आते थे, और राजा के व्यापारी उन्हें झुण्ड के झुण्ड ठहराए हुए दाम पर लिया करते थे । १७ एक रथ तो छः सौ शेकेल चान्दी पर, और एक घोड़ा डेढ़ सौ शेकेल पर मिस्र से आता था; और इसी दाम पर वे हित्तियों के सब राजाओं और अराम के राजाओं के लिये उन्हीं के द्वारा लाया करते थे ।।

(मन्दिर का बनाना)

२ और सुलैमान ने यहोवा के नाम का एक भवन और अपना राजभवन बनाने का विचार किया । २ इसलिये सुलैमान ने सत्तर हजार बोझिये और अस्सी हजार पहाड़ से पत्थर काटनेवाले और वृक्ष काटनेवाले, और इन पर तीन हजार छः सौ मुखिये गिनती करके ठहराए । ३ तब सुलैमान ने सोर के राजा हूराम के पास कहला भेजा, कि जैसा तू ने मेरे पिता दाऊद से बर्त्ताव किया, अर्थात् उसके रहने का भवन बनाने को देवदार भेजे थे, वैसा ही अब मुझ से भी बर्त्ताव कर । ४ देख, मैं अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनाने पर हूं, कि उसे उसके लिये पवित्र

करूं और उसके सम्मुख सुगन्धित धूप जलाऊं, और नित्य भेंट की रोटी उस में रखी जाए; और प्रतिदिन सबेरे और सांझ को, और विश्राम और नये चांद के दिनों में और हमारे परमेश्वर यहोवा के सब नियत पर्ब्बों में होमबलि चढ़ाया जाए। इस्राएल के लिये ऐसी ही सदा की विधि है। ५ और जो भवन मैं बनाने पर हूं, वह महान होगा; क्योंकि हमारा परमेश्वर सब देवताओं में महान है। ६ परन्तु किस की इतनी शक्ति है, कि उसके लिये भवन बनाए, वह तो स्वर्ग में वरन सब से ऊंचे स्वर्ग में भी नहीं समाता? मैं क्या हूं कि उसके साम्हने धूप जलाने को छोड़ और किसी मनसा से उसका भवन बनाऊं? ७ सो अब तू मेरे पास एक ऐसा मनुष्य भेज दे, जो सोने, चान्दी, पीतल, लोहे और बैंजनी, लाल और नीले कपड़े की कारीगरी में निपुण हो और नक्काशी भी जानता हो, कि वह मेरे पिता दाऊद के ठहराए हुए निपुण मनुष्यों के साथ होकर जो मेरे पास यहूदा और यरूशलेम में रहते हैं, काम करे। ८ फिर लबानोन से मेरे पास देवदार, सनोवर और चंदन की लकड़ी भेजना, क्योंकि मैं जानता हूं कि तेरे दास लबानोन में वृक्ष काटना जानते हैं, और तेरे दासों के संग मेरे दास भी रहकर, ९ मेरे लिये बहुत सी लकड़ी तैयार करेंगे, क्योंकि जो भवन मैं बनाना चाहता हूं, वह बड़ा और अचम्भे के योग्य होगा। १० और तेरे दास जो लकड़ी काटेंगे, उनको मैं बीस हजार कोर कूटा हुआ गेहूं, बीस हजार कोर जव, बीस हजार बत दाखमधु और बीस हजार बत तेल दूंगा॥

११ तब सोर के राजा हूराम ने चिट्ठी लिखकर सुलैमान के पास भेजी, कि यहोवा अपनी प्रजा से प्रेम रखता है, इस से उस ने तुझे उनका राजा कर दिया। १२ फिर हूराम ने यह भी लिखा * कि धन्य है इस्राएल का परमेश्वर यहोवा, जो आकाश और पृथ्वी का सृजनहार है, और उस ने दाऊद राजा को एक बुद्धिमान, चतुर और समझदार पुत्र दिया है, ताकि वह यहोवा का एक भवन और अपना राजभवन भी बनाए। १३ इसलिये अब मैं एक बुद्धिमान और समझदार पुरुष को, अर्थात् हूराम-अबी को भेजता हूं, १४ जो एक दानी स्त्री का बेटा है, और उसका पिता सोर का था। और वह सोने, चान्दी, पीतल लोहे, पत्थर, लकड़ी, बैंजनी और नीले और लाल और सूक्ष्म सन के कपड़े का काम, और सब प्रकार की नक्काशी को जानता और सब भांति की कारीगरी बना सकता है: सो तेरे चतुर मनुष्यों के संग, और मेरे प्रभु तेरे पिता दाऊद के चतुर मनुष्यों के संग, उसको भी काम मिले। १५ और मेरे प्रभु ने जो गेहूं, जव, तेल और दाखमधु भेजने की चर्चा की है, उसे अपने दासों के पास भिजवा दे। १६ और हम लोग जितनी लकड़ी का तुझे प्रयोजन हो उतनी लबानोन पर से काटेंगे, और बेड़े बनवाकर समुद्र के मार्ग से जापा को पहुंचाएंगे, और तू उसे यरूशलेम को ले जाना॥

१७ तब सुलैमान ने इस्राएली देश के सब परदेशियों की गिनती ली, यह उस गिनती के बाद हुई जो उसके पिता दाऊद ने ली थी; और वे डेढ़ लाख तीन हजार

* मूल में—कहा।

छः सौ पुरुष निकले। १८ उन में से उस ने सत्तर हजार बोझिये, अस्सी हजार पहाड़ पर पत्थर काटनेवाले और वृक्ष काटनेवाले और तीन हजार छः सौ उन लोगों से काम करानेवाले मुखिये नियुक्त किए॥

३ तब सुलैमान ने यरूशलेम में मोरिय्याह् नाम पहाड़ पर उसी स्थान में यहोवा का भवन बनाना आरम्भ किया, जिसे उसके पिता दाऊद ने दर्शन पाकर यबूसी ओर्नान के खलिहान में तैयार किया था: २ उस ने अपने राज्य के चौथे वर्ष के दूसरे महीने के, दूसरे दिन को बनाना आरम्भ किया। ३ परमेश्वर का जो भवन सुलैमान ने बनाया, उसका यह ढब है, अर्थात् उसकी लम्बाई तो प्राचीन काल की नाप के अनुसार साठ हाथ, और उसकी चौड़ाई बीस हाथ की थी। ४ और भवन के साम्हने के ओसारे की लम्बाई तो भवन की चौड़ाई के बराबर बीस हाथ की; और उसकी ऊंचाई एक सौ बीस हाथ की थी। सुलैमान ने उसको भीतर चोखे सोने से मढ़वाया। ५ और भवन के बड़े भाग की छत उस ने सनोवर की लकड़ी से पटवाई, और उसको अच्छे सोने से मढ़वाया, और उस पर खजूर के वृक्ष की और सांकलों की नक्काशी कराई। ६ फिर शोभा देने के लिये उस ने भवन में मणि जड़वाए। और यह सोना पर्वैम का था। ७ और उस ने भवन को, अर्थात् उसकी कड़ियों, डेवढ़ियों, भीतों और किवाड़ों को सोने से मढ़वाया, और भीतों पर करूब खुदवाए॥

८ फिर उस ने भवन के परमपवित्र स्थान को बनाया; उसकी लम्बाई तो भवन की चौड़ाई के बराबर बीस हाथ की थी, और उसकी चौड़ाई बीस हाथ की थी; और उस ने उसे छः सौ किक्कार चोखे सोने से मढ़वाया। ९ और सोने की कीलों का तौल पचास शेकेल था। और उस ने अटारियों को भी सोने से मढ़वाया॥

१० फिर भवन के परमपवित्र स्थान में उसने नक्काशी के काम के दो करूब बनवाए और वे सोने से मढ़वाए गए। ११ करूबों के पंख तो सब मिलकर बीस हाथ लम्बे थे, अर्थात् एक करूब का एक पंख पांच हाथ का और भवन की भीत तक पहुंचा हुआ था; और उसका दूसरा पंख पांच हाथ का था और दूसरे करूब के पंख से मिला हुआ था। १२ और दूसरे करूब का भी एक पंख पांच हाथ का और भवन की दूसरी भीत तक पहुंचा था, और दूसरा पंख पांच हाथ का और पहिले करूब के पंख से सटा हुआ था। १३ इन करूबों के पंख बीस हाथ फैले हुए थे; और वे अपने अपने पांवों के बल खड़े थे, और अपना अपना मुख भीतर की ओर किए हुए थे। १४ फिर उस ने बीचवाले पर्दे को नीले, बैंजनी और लाल रंग के सन के कपड़े का बनवाया, और उस पर करूब कढ़वाए॥

१५ और भवन के साम्हने उस ने पैंतीस पैंतीस हाथ ऊंचे दो खम्भे बनवाए, और जो कंगनी एक एक के ऊपर थी वह पांच पांच हाथ की थी। १६ फिर उस ने भीतरी कोठरी में सांकलें बनवाकर खम्भों के ऊपर लगाईं, और एक सौ अनार भी बनाकर सांकलों पर लटकाए।

१७ उस ने इन खम्भों को मन्दिर के साम्हने, एक तो उसकी दाहिनी ओर और दूसरा बाईं ओर खड़ा कराया; और दाहिने खम्भे का नाम याकीन और बायें खम्भे का नाम बोअज़ रखा ॥

४ फिर उस ने पीतल की एक वेदी बनाई, उसकी लम्बाई और चौड़ाई बीस बीस हाथ की और ऊंचाई दस हाथ की थी। २ फिर उस ने एक ढाला हुआ हौद बनवाया; जो छोर से छोर तक दस हाथ तक चौड़ा था, उसका आकार गोल था, और उसकी ऊंचाई पांच हाथ की थी, और उसके चारों ओर का घेर तीस हाथ के नाप का था। ३ और उसके तले, उसके चारों ओर, एक एक हाथ में दस दस बैलों की प्रतिमाएं बनी थीं; जो हौद को घेरे थीं; जब वह ढाला गया, तब ये बैल भी दो पांति करके ढाले गए। ४ और वह बारह बने हुए बैलों पर धरा गया, जिन में से तीन उत्तर, तीन पश्चिम, तीन दक्खिन और तीन पूर्व की ओर मुंह किए हुए थे; और इनके ऊपर हौद धरा था, और उन सभों के पिछले अंग भीतरी भाग में पड़ते थे। ५ और हौद की मोटाई चौवा भर की थी, और उसका मोहड़ा कटोरे के मोहड़े की नाईं, सोसन के फूलों के काम से बना था, और उस में तीन हजार बत भरकर समाता था। ६ फिर उस ने धोने के लिये दस हौदी बनवाकर, पांच दाहिनी और पांच बाईं ओर रख दीं। उन में होमबलि की वस्तुएं धोई जाती थीं, परन्तु याजकों के धोने के लिये बड़ा हौद था ॥

७ फिर उस ने सोने की दस दीवट विधि के अनुसार बनवाईं, और पांच दाहिनी ओर और पांच बाईं ओर मन्दिर में रखवा दीं। ८ फिर उस ने दस मेज बनवाकर पांच दाहिनी ओर और पांच बाईं ओर मन्दिर में रखवा दीं। और उस ने सोने के एक सौ कटोरे बनवाए। ९ फिर उस ने याजकों के आंगन और बड़े आंगन को बनवाया, और इस आंगन में फाटक* बनवाकर उनके किवाड़ों पर पीतल मढ़वाया। १० और उस ने हौद को भवन की दाहिनी ओर अर्थात् पूर्व और दक्खिन के कोने की ओर रखवा दिया ॥

११ और हूराम ने हण्डों, फावड़ियों, और कटोरों को बनाया। और हूराम ने राजा सुलैमान के लिये परमेश्वर के भवन में जो काम करना था उसे निपटा दिया: १२ अर्थात् दो खम्भे और गोलों समेत वे कंगनियां जो खम्भों के सिरों पर थीं, और खम्भों के सिरों पर के गोलों को ढांपने के लिए जालियों की दो दो पांति; १३ और दोनों जालियों के लिये चार सौ अनार और जो गोले खम्भों के सिरों पर थे, उनको ढांपनेवाली एक एक जाली के लिये अनारों की दो दो पांति बनाईं। १४ फिर उस ने कुर्सियां और कुर्सियों पर की हौदियां, १५ और उनके नीचे के बारह बैल बनाए। १६ फिर हूराम-अबी ने हण्डों, फावड़ियों, कांटों और इनके सब सामान को यहोवा के भवन के लिये राजा सुलैमान की आज्ञा से झलकाए हुए पीतल के बनवाए। १७ राजा ने उसको यरदन

* मूल में—किवाड़।

की तराई में अर्थात् सुक्कोत और सरेदा के बीच की चिकनी मिट्टीवाली भूमि में ढलवाया। १८ सुलैमान ने ये सब पात्र बहुत बनवाए, यहां तक कि पीतल के तौल का हिसाब न था।।

१९ और सुलैमान ने परमेश्वर के भवन के सब पात्र, सोने की वेदी, और वे मेज जिन पर भेंट की रोटी रखी जाती थीं, २० और दीपकों समेत चोखे सोने की दीवटें, जो विधि के अनुसार भीतरी कोठरी के साम्हने जला करतीं थीं। २१ और सोने वरन निरे सोने के फूल, दीपक और चिमटे; २२ और चोखे सोने की कैंचियां, कटोरे, धूपदान और करछे बनवाए। फिर भवन के द्वार और परम पवित्र स्थान के भीतरी किवाड़ और भवन अर्थात् मन्दिर के किवाड़ सोने के बने।।

५ इस प्रकार सुलैमान ने यहोवा के भवन के लिये जो जो काम बनवाया वह सब निपट गया। तब सुलैमान ने अपने पिता दाऊद के पवित्र किए हुए सोने, चान्दी और सब पात्रों को भीतर पहुंचाकर परमेश्वर के भवन के भण्डारों में रखवा दिया।।

(मन्दिर की प्रतिष्ठा)

२ तब सुलैमान ने इस्राएल के पुरनियों को और गोत्रों के सब मुख्य पुरुष, जो इस्राएलियों के पितरों के घरानों के प्रधान थे, उनको भी यरूशलेम में इस मनसा से इकट्ठा किया, कि वे यहोवा की वाचा का सन्दूक दाऊदपुर से अर्थात् सिय्योन से ऊपर लिवा ले आएं। ३ सब इस्राएली पुरुष सातवें महीने के पर्व के समय राजा के पास इकट्ठे हुए। ४ जब इस्राएल के सब पुरनिये आए, तब लेवियों ने सन्दूक को उठा लिया। ५ और लेवीय याजक सन्दूक और मिलाप का तम्बू और जितने पवित्र पात्र उस तम्बू में थे उन सभों को ऊपर ले गए। ६ और राजा सुलैमान और सब इस्राएली मण्डली के लोग जो उसके पास इकट्ठे हुए थे, उन्हों ने सन्दूक के साम्हने इतनी भेड़ और बैल बलि किए, जिनकी गिनती और हिसाब बहुतायत के कारण न हो सकती थी। ७ तब याजकों ने यहोवा की वाचा का सन्दूक उसके स्थान में, अर्थात् भवन की भीतरी कोठरी में जो परमपवित्र स्थान है, पहुंचाकर, करूबों के पंखों के तले रख दिया। ८ सन्दूक के स्थान के ऊपर करूब तो पंख फैलाए हुए थे, जिससे वे ऊपर से सन्दूक और उसके डण्डों को ढांपे थे। ९ डण्डे तो इतने लम्बे थे, कि उनके सिरे सन्दूक से निकले हुए भीतरी कोठरी के साम्हने देख पड़ते थे, परन्तु बाहर से वे दिखाई न पड़ते थे। वे आज के दिन तक वहीं हैं। १० सन्दूक में पत्थर की उन दो पटियाओं को छोड़ कुछ न था, जिन्हें मूसा ने होरेब में उसके भीतर उस समय रखा, जब यहोवा ने इस्राएलियों के मिस्र से निकलने के बाद उनके साथ वाचा बान्धी थी। ११ जब याजक पवित्रस्थान से निकले (जितने याजक उपस्थित थे, उन सभों ने तो अपने अपने को पवित्र किया था, और अलग अलग दलों में होकर सेवा न करते थे; १२ और जितने लेवीय गवैये थे, वे सब के सब अर्थात् पुत्रों और भाइयों समेत आसाप, हेमान और यदूतून सन के वस्त्र पहिने झांझ, सारंगियां और वीणाएं लिये हुए, बेदी के पूर्व अलंग में खड़े थे, और उनके साथ एक सौ बीस

याजक तुरहियां बजा रहे थे।) १३ तो जब तुरहियां बजानेवाले और गानेवाले एक स्वर से यहोवा की स्तुति और धन्यवाद करने लगे, और तुरहियां, झांझ आदि बाजे बजाते हुए यहोवा की यह स्तुति ऊंचे शब्द से करने लगे, कि वह भला है और उसकी करुणा सदा की है, तब यहोवा के भवन में बादल छा गया, १४ और बादल के कारण याजक लोग सेवा-टहल करने को खड़े न रह सके, क्योंकि यहोवा का तेज परमेश्वर के भवन में भर गया था ॥

६ तब सुलैमान कहने लगा, यहोवा ने कहा था, कि मैं घोर अंधकार में वास किए रहूंगा। २ परन्तु मैं ने तेरे लिये एक वासस्थान वरन ऐसा दृढ़ स्थान बनाया है, जिस में तू युग युग रहे। ३ और राजा ने इस्राएल की पूरी सभा की ओर मुंह फेरकर उसको आशीर्वाद दिया, और इस्राएल की पूरी सभा खड़ी रही। ४ और उस ने कहा, धन्य है इस्राएल का परमेश्वर यहोवा, जिस ने अपने मुंह से मेरे पिता दाऊद को यह वचन दिया था, और अपने हाथों से इसे पूरा किया है, ५ कि जिस दिन से मैं अपनी प्रजा को मिस्र देश से निकाल लाया, तब से मैं ने न तो इस्राएल के किसी गोत्र का कोई नगर चुना जिस में मेरे नाम के निवास के लिये भवन बनाया जाए, और न कोई मनुष्य चुना कि वह मेरी प्रजा इस्राएल पर प्रधान हो। ६ परन्तु मैं ने यरूशलेम को इसलिये चुना है, कि मेरा नाम वहां हो, और दाऊद को चुन लिया है कि वह मेरी प्रजा इस्राएल पर प्रधान हो। ७ मेरे पिता दाऊद की यह मनसा थी कि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनवाए। ८ परन्तु यहोवा ने मेरे पिता दाऊद से कहा, तेरी जो मनसा है कि यहोवा के नाम का एक भवन बनाए, ऐसी मनसा करके तू ने भला तो किया; ९ तौभी तू उस भवन को बनाने न पाएगा: तेरा जो निज पुत्र होगा, वही मेरे नाम का भवन बनाएगा। १० यह वचन जो यहोवा ने कहा था, उसे उस ने पूरा भी किया है; और मैं अपने पिता दाऊद के स्थान पर उठकर यहोवा के वचन के अनुसार इस्राएल की गद्दी पर विराजमान हूं, और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के नाम के इस भवन को बनाया है। ११ और इस में मैं ने उस सन्दूक को रख दिया है, जिस में यहोवा की वह वाचा है, जो उस ने इस्राएलियों से बान्धी थी ॥

१२ तब वह इस्राएल की सारी सभा के देखते यहोवा की वेदी के साम्हने खड़ा हुआ और अपने हाथ फैलाए। १३ सुलैमान ने पांच हाथ लम्बी, पांच हाथ चौड़ी और तीन हाथ ऊंची पीतल की एक चौकी बनाकर आंगन के बीच रखवाई थी; उसी पर खड़े होकर उस ने सारे इस्राएल की सभा के सामने घुटने टेककर स्वर्ग की ओर हाथ फैलाए हुए कहा, १४ हे यहोवा, हे इस्राएल के परमेश्वर, तेरे समान न तो स्वर्ग में और न पृथ्वी पर कोई ईश्वर है: तेरे जो दास अपने सारे मन से अपने को तेरे सम्मुख जानकर* चलते हैं, उनके लिये तू अपनी वाचा पूरी करता और करुणा करता रहता

* मूल में—तेरे साम्हने।

है। १५ तू ने जो वचन मेरे पिता दाऊद को दिया था, उसका तू ने पालन किया है; जैसा तू ने अपने मुंह से कहा था, वैसा ही अपने हाथ से उसको हमारी आंखों के साम्हने * पूरा भी किया है। १६ इसलिये अब हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा इस वचन को भी पूरा कर, जो तू ने अपने दास मेरे पिता दाऊद को दिया था, कि तेरे कुल में मेरे साम्हने इस्राएल की गद्दी पर विराजनेवाले सदा बने रहेंगे, यह हो कि जैसे तू अपने को मेरे सम्मुख जानकर चलता रहा, वैसे ही तेरे वंश के लोग अपनी चाल चलन में ऐसी चौकसी करें, कि मेरी व्यवस्था पर चलें। १७ अब हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा जो वचन तू ने अपने दास दाऊद को दिया था, वह सच्चा किया जाए।।

१८ परन्तु क्या परमेश्वर सचमुच मनुष्यों के संग पृथ्वी पर वास करेगा? स्वर्ग में वरन सब से ऊंचे स्वर्ग में भी तू नहीं समाता, फिर मेरे बनाए हुए इस भवन में तू क्योंकर समाएगा? १९ तौभी हे मेरे परमेश्वर यहोवा, अपने दास की प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट की ओर ध्यान दे और मेरी पुकार और यह प्रार्थना सुन, जो मैं तेरे साम्हने कर रहा हूं। २० वह यह है कि तेरी आंखें इस भवन की ओर, अर्थात् इसी स्थान की ओर जिसके विषय में तू ने कहा है कि मैं उस में अपना नाम रखूंगा, रात दिन खुली रहें, और जो प्रार्थना तेरा दास इस स्थान की ओर करे, उसे तू सुन ले। २१ और अपने दास, और अपनी प्रजा इस्राएल की प्रार्थना जिसको वे इस स्थान की ओर मुंह किए हुए गिड़गिड़ाकर करें, उसे सुन लेना; स्वर्ग में से जो तेरा निवासस्थान है, सुन लेना; और सुनकर क्षमा करना।।

२२ जब कोई किसी दूसरे का अपराध करे और उसको शपथ खिलाई जाए, और वह आकर इस भवन में तेरी वेदी के साम्हने शपथ खाए, २३ तब तू स्वर्ग में से सुनना और मानना, और अपने दासों का न्याय करके दुष्ट को बदला देना, और उसकी चाल उसी के सिर लौटा देना, और निर्दोष को निर्दोष ठहराकर, उसके धर्म के अनुसार उसको फल देना।।

२४ फिर यदि तेरी प्रजा इस्राएल तेरे विरुद्ध पाप करने के कारण अपने शत्रुओं से हार जाए, और तेरी ओर फिरकर तेरा नाम मानें, और इस भवन में तुझ से प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट करें, २५ तो तू स्वर्ग में से सुनना; और अपनी प्रजा इस्राएल का पाप क्षमा करना, और उन्हें इस देश में लौटा ले आना जिसे तू ने उनको और उनके पुरखाओं को दिया है।।

२६ जब वे तेरे विरुद्ध पाप करें, और इस कारण आकाश इतना बन्द हो जाए कि वर्षा न हो, ऐसे समय यदि वे इस स्थान की ओर प्रार्थना करके तेरे नाम को मानें, और तू जो उन्हें दुःख देता है, इस कारण वे अपने पाप से फिरें, २७ तो तू स्वर्ग में से सुनना, और अपने दासों और अपनी प्रजा इस्राएल के पाप को क्षमा करना; तू जो उनको वह भला मार्ग दिखाता है जिस पर उन्हें चलना चाहिये, इसलिये अपने इस देश पर जिसे तू ने अपनी प्रजा का भाग करके दिया है, पानी बरसा देना।।

* मूल में—आज के दिन की नाईं।

२८ जब इस देश में काल वा मरी वा झुलस हो वा गेरुई वा टिड्डियां वा कीड़े लगें, वा उनके शत्रु उनके देश के फाटकों में उन्हें घेर रखें, वा कोई विपत्ति वा रोग हो; २९ तब यदि कोई मनुष्य वा तेरी सारी प्रजा इस्राएल जो अपना अपना दुःख और अपना अपना खेद जान कर और गिड़गिड़ाहट के साथ प्रार्थना करके अपने हाथ इस भवन की ओर फैलाए; ३० तो तू अपने स्वर्गीय निवासस्थान से सुनकर क्षमा करना, और एक एक के मन की जानकर उसकी चाल के अनुसार उसे फल देना; (तू ही तो आदमियों के मन का जाननेवाला है); ३१ कि वे जितने दिन इस देश में रहें, जिसे तू ने उनके पुरखाओं को दिया था, उतने दिन तक तेरा भय मानते हुए तेरे मार्गों पर चलते रहें ।।

३२ फिर परदेशी भी जो तेरी प्रजा इस्राएल का न हो, जब वह तेरे बड़े नाम और बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के कारण दूर देश से आए, और आकर इस भवन की ओर मुंह किए हुए प्रार्थना करे, ३३ तब तू अपने स्वर्गीय निवासस्थान में से सुने, और जिस बात के लिये ऐसा परदेशी तुझे पुकारे, उसके अनुसार करना; जिस से पृथ्वी के सब देशों के लोग तेरा नाम जानकर, तेरी प्रजा इस्राएल की नाईं तेरा भय मानें; और निश्चय करें, कि यह भवन जो मैं ने बनाया है, वह तेरा ही कहलाता है ।।

३४ जब तेरी प्रजा के लोग जहां कहीं तू उन्हें भेजे वहा अपने शत्रुओं से लड़ाई करने को निकल जाएं, और इस नगर की ओर जिसे तू ने चुना है, और इस भवन की ओर जिसे मैं ने तेरे नाम का बनाया है, मुंह किए हुए तुझ से प्रार्थना करें, ३५ तब तू स्वर्ग में से उनकी प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट सुनना, और उनका न्याय करना ।।

३६ निष्पाप तो कोई मनुष्य नहीं है, यदि वे भी तेरे विरुद्ध पाप करें और तू उन पर कोप करके उन्हें शत्रुओं के हाथ कर दे, और वे उन्हें बन्धुआ करके किसी देश को, चाहे वह दूर हो, चाहे निकट, ले जाएं, ३७ तो यदि वे बन्धुआई के देश में सोच विचार करें, और फिरकर अपनी बन्धुआई करनेवालों के देश में तुझ से गिड़गिड़ाकर कहें, कि हम ने पाप किया, और कुटिलता और दुष्टता की है; ३८ सो यदि वे अपनी बन्धुआई के देश में जहां वे उन्हें बन्धुआ करके ले गए हों अपने पूरे मन और सारे जीव से तेरी ओर फिरें, और अपने इस देश की ओर जो तू ने उनके पुरखाओं को दिया था, और इस नगर की ओर जिसे तू ने चुना है, और इस भवन की ओर जिसे मैं ने तेरे नाम का बनाया है, मुंह किए हुए तुझ से प्रार्थना करें, ३९ तो तू अपने स्वर्गीय निवासस्थान में से उनकी प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट सुनना, और उनका न्याय करना और जो पाप तेरी प्रजा के लोग तेरे विरुद्ध करें, उन्हें क्षमा करना । ४० और हे मेरे परमेश्वर ! जो प्रार्थना इस स्थान में की जाए उसकी ओर अपनी आंखें खोले रह और अपने कान लगाए रख ।।

४१ अब हे यहोवा परमेश्वर, उठकर अपने सामर्थ्य के सन्दूक समेत अपने विश्रामस्थान में आ, हे यहोवा परमेश्वर तेरे याजक उद्धाररूपी वस्त्र पहिने रहें,

और तेरे भक्त लोग भलाई के कारण आनन्द करते रहें। ४२ हे यहोवा परमेश्वर, अपने अभिषिक्त की प्रार्थना को अनसुनी न कर*, तू अपने दास दाऊद पर की गई करुणा के काम स्मरण रख ॥

७ जब सुलैमान यह प्रार्थना कर चुका, तब स्वर्ग से आग ने गिरकर होमबलियों तथा और बलियों को भस्म किया, और यहोवा का तेज भवन में भर गया। २ और याजक यहोवा के भवन में प्रवेश न कर सके, क्योंकि यहोवा का तेज यहोवा के भवन में भर गया था। ३ और जब आग गिरी और यहोवा का तेज भवन पर छा गया, तब सब इस्राएली देखते रहे, और फर्श पर झुककर अपना अपना मुंह भूमि की ओर किए हुए दण्डवत किया, और यों कहकर यहोवा का धन्यवाद किया कि, वह भला है, उसकी करुणा सदा की है। ४ तब सब प्रजा समेत राजा ने यहोवा को बलि चढ़ाई। ५ और राजा सुलैमान ने बाईस हजार बैल और एक लाख बीस हजार भेड़-बकरियां चढ़ाईं। यों पूरी प्रजा समेत राजा ने यहोवा के भवन की प्रतिष्ठा की। ६ और याजक अपना अपना कार्य करने को खड़े रहे, और लेवीय भी यहोवा के गीत के गाने के लिये बाजे लिये हुए खड़े थे, जिन्हें दाऊद राजा ने यहोवा की सदा की करुणा के कारण उसका धन्यवाद करने को बनाकर उनके द्वारा स्तुति कराई थी; और इनके साम्हने याजक लोग तुरहियां बजाते रहे; और सब इस्राएली खड़े रहे ॥

७ फिर सुलैमान ने यहोवा के भवन के साम्हने आंगन के बीच एक स्थान पवित्र करके होमबलि और मेलबलियों की चर्बी वहीं चढ़ाई, क्योंकि सुलैमान की बनाई हुई पीतल की वेदी होमबलि और अन्नबलि और चर्बी के लिये छोटी थी ॥

८ उसी समय सुलैमान ने और उसके संग हमात की घाटी से लेकर मिस्र के नाले तक के सारे इस्राएल की एक बहुत बड़ी सभा ने सात दिन तक पर्व को माना। ९ और आठवें दिन को उन्हों ने महासभा की, उन्हों ने वेदी की प्रतिष्ठा सात दिन की; और पर्वों को भी सात दिन माना। १० निदान सातवें महीने के तेइसवें दिन को उस ने प्रजा के लोगों को विदा किया, कि वे अपने अपने डेरे को जाएं, और वे उस भलाई के कारण जो यहोवा ने दाऊद और सुलैमान और अपनी प्रजा इस्राएल पर की थी आनन्दित थे ॥

११ यों सुलैमान यहोवा के भवन और राजभवन को बना चुका, और यहोवा के भवन में और अपने भवन में जो कुछ उस ने बनाना चाहा, उस में उसका मनोरथ पूरा हुआ। १२ तब यहोवा ने रात में उसको दर्शन देकर उस से कहा, मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी और इस स्थान को यज्ञ के भवन के लिये अपनाया है। १३ यदि मैं आकाश को ऐसा बन्द करूं, कि वर्षा न हो, वा टिड्डियों को देश उजाड़ने की आज्ञा दूं, वा अपनी प्रजा में मरी फैलाऊं, १४ तब यदि मेरी प्रजा के लोग जो मेरे कहलाते हैं, दीन होकर प्रार्थना

* मूल में—अपने अभिषिक्त का मुख न फेर दे।

करें और मेरे दर्शन के खोजी होकर अपनी बुरी चाल से फिरें, तो मैं स्वर्ग में से सुनकर उनका पाप क्षमा करूंगा और उनके देश को ज्यों का त्यों कर दूंगा। १५ अब से जो प्रार्थना इस स्थान में की जाएगी, उस पर मेरी आंखें खुली और मेरे कान लगे रहेंगे। १६ और अब मैं ने इस भवन को अपनाया और पवित्र किया है कि मेरा नाम सदा के लिये इस में बना रहे; मेरी आंखें और मेरा मन दोनों नित्य यहीं लगे रहेंगे। १७ और यदि तू अपने पिता दाऊद की नाईं अपने को मेरे सम्मुख जानकर* चलता रहे और मेरी सब आज्ञाओं के अनुसार किया करे, और मेरी विधियों और नियमों को मानता रहे, १८ तो मैं तेरी राजगद्दी को स्थिर रखूंगा; जैसे कि मैं ने तेरे पिता दाऊद के साथ वाचा बान्धी थी, कि तेरे कुल में इस्राएल पर प्रभुता करनेवाला सदा बना रहेगा। १९ परन्तु यदि तुम लोग फिरो, और मेरी विधियों और आज्ञाओं को जो मैं ने तुम को दी हैं त्यागो, और जाकर पराये देवताओं की उपासना करो और उन्हें दण्डवत करो, २० तो मैं उनको अपने देश में से जो मैं ने उनको दिया है, जड़ से उखाडूंगा; और इस भवन को जो मैं ने अपने नाम के लिये पवित्र किया है, अपनी दृष्टि से दूर करूंगा; और ऐसा करूंगा कि देश देश के लोगों के बीच उसकी उपमा और नामधराई चलेगी। २१ और यह भवन जो इतना विशाल है, उसके पास से आने जानेवाले चकित होकर पूछेंगे कि यहोवा ने इस देश और इस भवन से ऐसा क्यों किया है। २२ तब लोग कहेंगे, कि उन लोगों ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को जो उनको मिस्र देश से निकाल लाया था, त्यागकर पराये देवताओं को ग्रहण किया, और उन्हें दण्डवत की और उनकी उपासना की, इस कारण उस ने यह सब विपत्ति उन पर डाली है॥

* मूल में—मेरे साम्हने।

(सुलैमान का चरित्र)

८ सुलैमान को यहोवा के भवन और अपने भवन के बनाने में बीस वर्ष लगे। २ तब जो नगर हूराम ने सुलैमान को दिए थे, उन्हें सुलैमान ने दृढ़ करके उन में इस्राएलियों को बसाया॥

३ तब सुलैमान सोबा के हमात को जाकर, उस पर जयवन्त हुआ। ४ और उस ने तदमोर को जो जंगल में है, और हमात के सब भण्डार नगरों को दृढ़ किया। ५ फिर उस ने ऊपरवाले और नीचेवाले दोनों बेथोरोन को शहरपनाह और फाटकों और बेड़ों से दृढ़ किया। ६ और उस ने बालात को और सुलैमान के जितने भण्डार नगर थे और उसके रथों और सवारों के जितने नगर थे उनको, और जो कुछ सुलैमान ने यरूशलेम, लबानोन और अपने राज्य के सब देश में बनाना चाहा, उन सब को बनाया। ७ हित्तियों, एमोरियों, परिज्जियों, हिव्वियों और यबूसियों के बचे हुए लोग जो इस्राएल के न थे, ८ उनके वंश जो उनके बाद देश में रह गए, और जिनका इस्राएलियों ने अन्त न किया था, उन में से तो कितनों को सुलैमान ने बेगार में रखा और आज तक उनकी वही दशा है। ९ परन्तु इस्राएलियों में से सुलैमान

ने अपने काम के लिये किसी को दास न बनाया, वे तो योद्धा और उसके हाकिम, उसके सरदार और उसके रथों और सवारों के प्रधान हुए। १० और सुलैमान के सरदारों के प्रधान जो प्रजा के लोगों पर प्रभुता करनेवाले थे, वे अढ़ाई सौ थे॥

११ फिर सुलैमान फ़िरौन की बेटी को दाऊदपुर में से उस भवन में ले आया जो उस ने उसके लिये बनाया था, क्योंकि उस ने कहा, कि जिस जिस स्थान में यहोवा का सन्दूक आया है, वे पवित्र हैं, इसलिये मेरी रानी इस्राएल के राजा दाऊद के भवन में न रहने पाएगी॥

१२ तब सुलैमान ने यहोवा की उस वेदी पर जो उस ने ओसारे के आगे बनाई थी, यहोवा को होमबलि चढ़ाई। १३ वह मूसा की आज्ञा के और दिन दिन के प्रयोजन के अनुसार, अर्थात् विश्राम और नये चांद और प्रति वर्ष तीन बार ठहराए हुए पर्वों अर्थात् अखमीरी रोटी के पर्व्व, और अठवारों के पर्व्व, और झोपड़ियों के पर्व्व में बलि चढ़ाया करता था। १४ और उस ने अपने पिता दाऊद के नियम के अनुसार याजकों की सेवकाई के लिये उनके दल ठहराए, और लेवियों को उनके कामों पर ठहराया, कि हर एक दिन के प्रयोजन के अनुसार वे यहोवा की स्तुति और याजकों के साम्हने सेवा-टहल किया करें, और एक एक फाटक के पास द्वारपालों को दल दल करके ठहरा दिया; क्योंकि परमेश्वर के भक्त दाऊद ने ऐसी आज्ञा दी थी। १५ और राजा ने भण्डारों या किसी और बात में याजकों और लेवियों के लिये जो जो आज्ञा दी थी, उनको न टाला।

१६ और सुलैमान का सब काम जो उस ने यहोवा के भवन की नेव डालने से लेकर उसके पूरा करने तक किया वह ठीक हुआ। निदान यहोवा का भवन पूरा हुआ॥

१७ तब सुलैमान एस्योनगेबेर और एलोत को गया, जो एदोम के देश में समुद्र के तीर पर हैं। १८ और हूराम ने उसके पास अपने जहाजियों के द्वारा जहाज और समुद्र के जानकार मल्लाह भेज दिए, और उन्हों ने सुलैमान के जहाजियों के संग ओपीर को जाकर वहां से साढ़े चार सौ किक्कार सोना राजा सुलैमान को ला दिया॥

(शीबा की रानी का सुलैमान का दर्शन करना)

९ जब शीबा की रानी ने सुलैमान की कीर्त्ति सुनी, तब वह कठिन कठिन प्रश्नों से उसकी परीक्षा करने के लिये यरूशलेम को चली। वह बहुत भारी दल और मसालों और बहुत सोने और मणि से लदे ऊंट साथ लिये हुए आई, और सुलैमान के पास पहुंचकर उससे अपने मन की सब बातों के विषय बातें कीं। २ सुलैमान ने उसके सब प्रश्नों का उत्तर दिया, कोई बात सुलैमान की बुद्धि से ऐसी बाहर न रही* कि वह उसे न बता सके। ३ जब शीबा की रानी ने सुलैमान की बुद्धिमानी और उसका बनाया हुआ भवन और उसकी मेज पर का भोजन देखा, ४ और उसके कर्मचारी किस रीति बैठते और उसके टहलुए किस रीति खड़े रहते और कैसे

* मूल में—कोई बात सुलैमान से न छिपी।

कैसे कपड़े पहिने रहते हैं, और उसके पिलानेवाले कैसे हैं, और वे कैसे कपड़े पहिने हैं, और वह कैसी चढ़ाई है जिस से वह यहोवा के भवन को जाया करता है, जब उस ने यह सब देखा, तब वह चकित हो गई ।।

५ तब उस ने राजा से कहा, मैं ने तेरे कामों और बुद्धिमानी की जो कीर्त्ति अपने देश में सुनी वह सच ही है। ६ परन्तु जब तक मैं ने आप ही आकर अपनी आंखों से यह न देखा, तब तक मैं ने उनकी प्रतीति न की; परन्तु तेरी बुद्धि की आधी बड़ाई भी मुझे न बताई गई थी; तू उस कीर्त्ति से बढ़कर है जो मैं ने सुनी थी। ७ धन्य हैं तेरे जन, धन्य हैं तेरे ये सेवक, जो नित्य तेरे सम्मुख उपस्थित रहकर तेरी बुद्धि की बातें सुनते हैं। ८ धन्य है तेरा परमेश्वर यहोवा, जो तुझ से ऐसा प्रसन्न हुआ, कि तुझे अपनी राजगद्दी पर इसलिये विराजमान किया कि तू अपने परमेश्वर यहोवा की ओर से राज्य करे; तेरा परमेश्वर जो इस्राएल से प्रेम करके उन्हें सदा के लिये स्थिर करना चाहता था, इसी कारण उस ने तुझे न्याय और धर्म करने को उनका राजा बना दिया। ९ और उस ने राजा को एक सौ बीस किक्कार सोना, बहुत सा सुगन्धद्रव्य, और मणि दिए; जैसे सुगन्धद्रव्य शीबा की रानी ने राजा सुलैमान को दिए, वैसे देखने में नहीं आए। १० फिर हूराम और सुलैमान दोनों के जहाजी जो ओपीर से सोना लाते थे, वे चन्दन की लकड़ी और मणि भी लाते थे। ११ और राजा ने चन्दन की लकड़ी से यहोवा के भवन और राजभवन के लिये चबूतरे और गवैयों के लिये वीणाएं और सारंगियां बनवाईं; ऐसी वस्तुएं उस से पहिले यहूदा देश में न देख पड़ी थीं। १२ और शीबा की रानी ने जो कुछ चाहा वही राजा सुलैमान ने उसको उसकी इच्छा के अनुसार दिया; यह उस से अधिक था, जो वह राजा के पास ले आई थी। तब वह अपने जनों समेत अपने देश को लौट गई ।।

(सुलैमान का माहात्म्य और मृत्यु)

१३ जो सोना प्रति वर्ष सुलैमान के पास पहुंचा करता था, उसका तौल छः सौ छियासठ किक्कार था। १४ यह उस से अधिक था जो सौदागर और व्यापारी लाते थे; और अरब देश के सब राजा और देश के अधिपति भी सुलैमान के पास सोना चान्दी लाते थे। १५ और राजा सुलैमान ने सोना गढ़ाकर दो सौ बड़ी बड़ी ढालें बनवाईं; एक एक ढाल में छः छः सौ शेकेल गढ़ा हुआ सोना लगा। १६ फिर उस ने सोना गढ़ाकर तीन सौ छोटी ढालें और भी बनवाईं; एक एक छोटी ढाल में तीन सौ शेकेल सोना लगा, और राजा ने उनको लबानोनी बन नामक भवन में रखा दिया। १७ और राजा ने हाथी-दांत का एक बड़ा सिंहासन बनाया और चोखे सोने से मढ़ाया। १८ उस सिंहासन में छः सीढ़ियां और सोने का एक पावदान था; ये सब सिंहासन से जुड़े थे, और बैठने के स्थान की दोनों अलंग टेक लगी थी और दोनों टेकों के पास एक एक सिंह खड़ा हुआ बना था। १९ और छहों सीढ़ियों की दोनों अलंग में एक एक सिंह खड़ा हुआ बना था, वे सब बारह हुए। किसी राज्य में ऐसा कभी न बना। २० और राजा सुलैमान के पीने के सब

पात्र सोने के थे, और लबानोनी बन नामक भवन के सब पात्र भी चोखे सोने के थे; सुलैमान के दिनों में चान्दी का कुछ हिसाब न था। २१ क्योंकि हूराम के जहाजियों के संग राजा के तर्शीश को जानेवाले जहाज थे, और तीन तीन वर्ष के बाद वे तर्शीश के जहाज सोना, चान्दी, हाथीदांत, बन्दर और मोर ले आते थे॥

२२ यों राजा सुलैमान धन और बुद्धि में पृथ्वी के सब राजाओं से बढ़कर हो गया। २३ और पृथ्वी के सब राजा सुलैमान की उस बुद्धि की बातें सुनने को जो परमेश्वर ने उसके मन में उपजाई थीं उसका दर्शन करना चाहते थे। २४ और वे प्रति वर्ष अपनी अपनी भेंट अर्थात् चान्दी और सोने के पात्र, वस्त्र-शस्त्र, सुगन्धद्रव्य, घोड़े और खच्चर ले आते थे। २५ और अपने घोड़ों और रथों के लिये सुलैमान के चार हजार थान और बारह हजार सवार भी थे, जिनको उस ने रथों के नगरों में और यरूशलेम में राजा के पास ठहरा रखा। २६ और वह महानद से ले पलिश्तियों के देश और मिस्र के सिवाने तक के सब राजाओं पर प्रभुता करता था। २७ और राजा ने ऐसा किया, कि बहुतायत के कारण यरूशलेम में चान्दी का मूल्य पत्थरों का और देवदार का मूल्य नीचे के देश के गूलरों का सा हो गया। २८ और लोग मिस्र से और और सब देशों से सुलैमान के लिये घोड़े लाते थे॥

२९ आदि से अन्त तक सुलैमान के और सब काम क्या नातान नबी की पुस्तक* में, और शीलोवासी अहिय्याह की नबूवत की पुस्तक में, और नबात के पुत्र यारोबाम के विषय इद्दो दर्शी के दर्शन की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? ३० सुलैमान ने यरूशलेम में सारे इस्राएल पर चालीस वर्ष तक राज्य किया। ३१ और सुलैमान अपने पुरखाओं के संग सो गया और उसको उसके पिता दाऊद के नगर में मिट्टी दी गई; और उसका पुत्र रहूबियाम उसके स्थान पर राजा हुआ॥

(इस्राएल के राज्य का दो भाग हो जाना)

१० रहूबियाम शकेम को गया, क्योंकि सारे इस्राएली उसको राजा बनाने के लिये वहीं गए थे। २ और नबात के पुत्र यारोबाम ने यह सुना (वह तो मिस्र में रहता था, जहां वह सुलैमान राजा के डर के मारे भाग गया था), और यारोबाम मिस्र से लौट आया। ३ तब उन्हों ने उसको बुलवा भेजा; सो यारोबाम और सब इस्राएली आकर रहूबियाम से कहने लगे, ४ तेरे पिता ने तो हम लोगों पर भारी जूआ डाल रखा था, इसलिये अब तू अपने पिता की कठिन सेवा को और उस भारी जूए को जिसे उस ने हम पर डाल रखा है कुछ हलका कर, तब हम तेरे अधीन रहेंगे। ५ उस ने उन से कहा, तीन दिन के उपरान्त मेरे पास फिर आना, सो वे चले गए॥

६ तब राजा रहूबियाम ने उन बूढ़ों से जो उसके पिता सुलैमान के जीवन भर उसके साम्हने उपस्थित रहा करते थे, यह कहकर सम्मति ली, कि इस प्रजा को कैसा उत्तर देना उचित है, इस में तुम क्या सम्मति देते हो? ७ उन्हों ने उसको यह उत्तर दिया, कि यदि तू

* मूल में—के वचनों।

इस प्रजा के लोगों से अच्छा बर्त्ताव करके उन्हें प्रसन्न करे और उन से मधुर बातें कहे, तो वे सदा तेरे अधीन बने रहेंगे। ८ परन्तु उस ने उस सम्मति को जो बूढ़ों ने उसको दी थी छोड़ दिया और उन जवानों से सम्मति ली, जो उसके संग बड़े हुए थे और उसके सम्मुख उपस्थित रहा करते थे। ९ उन में उस ने पूछा, मैं प्रजा के लोगों को कैसा उत्तर दूं, इस में तुम क्या सम्मति देते हो? उन्हों ने तो मुझ से कहा है, कि जो जूआ तेरे पिता ने हम पर डाल रखा है, उसे तू हलका कर। १० जवानों ने जो उस के संग बड़े हुए थे उसको यह उत्तर दिया, कि उन लोगों ने तुझ से कहा है, कि तेरे पिता ने हमारा जूआ भारी किया था, परन्तु उसे हमारे लिये हलका कर; तू उन से यों कहना, कि मेरी छिंगुलिया मेरे पिता की कटि से भी मोटी ठहरेगी। ११ मेरे पिता ने तुम पर जो भारी जूआ रखा था, उसे मैं और भी भारी करूंगा; मेरा पिता तो तुम को कोड़ों से ताड़ना देता था, परन्तु मैं बिच्छुओं से दूंगा॥

१२ तीसरे दिन जैसे राजा ने ठहराया था, कि तीसरे दिन मेरे पास फिर आना, वैसे ही यारोबाम और सारी प्रजा रहूबियाम के पास उपस्थित हुई। १३ तब राजा ने उस से कड़ी बातें कीं, और रहूबियाम राजा ने बूढ़ों की दी हुई सम्मति छोड़कर १४ जवानों की सम्मति के अनुसार उन से कहा, मेरे पिता ने तो तुम्हारा जूआ भारी कर दिया, परन्तु मैं उसे और भी कठिन कर दूंगा; मेरे पिता ने तो तुम को कोड़ों से ताड़ना दी, परन्तु मैं बिच्छुओं से ताड़ना दूंगा। १५ इस प्रकार राजा ने प्रजा की बिनती न मानी; इसका कारण यह है, कि जो वचन यहोवा ने शीलोवासी अहिय्याह के द्वारा नबात के पुत्र यारोबाम से कहा था, उसको पूरा करने के लिये परमेश्वर ने ऐसा ही ठहराया था॥

१६ जब सब इस्राएलियों ने देखा कि राजा हमारी नहीं सुनता, तब वे बोले* कि दाऊद के साथ हमारा क्या अंश? हमारा तो यिशै के पुत्र में कोई भाग नहीं है। हे इस्राएलियो, अपने अपने डेरे को चले जाओ। अब हे दाऊद, अपने ही घराने की चिन्ता कर। १७ तब सब इस्राएली अपने डेरे को चले गए। केवल जितने इस्राएली यहूदा के नगरों में बसे हुए थे, उन्हीं पर रहूबियाम राज्य करता रहा। १८ तब राजा रहूबियाम ने हदोराम को जो सब बेगारों पर अधिकारी था भेज दिया, और इस्राएलियों ने उसको पत्थरवाह किया और वह मर गया। तब रहूबियाम फुर्ती से अपने रथ पर चढ़कर, यरूशलेम को भाग गया। १९ यों इस्राएल दाऊद के घराने से फिर गया और आज तक फिरा हुआ है॥

(रहूबियाम का राज्य)

११ जब रहूबियाम यरूशलेम को आया, तब उस ने यहूदा और बिन्यामीन के घराने को जो मिलकर एक लाख अस्सी हजार अच्छे योद्धा थे इकट्ठा किया, कि इस्राएल के साथ युद्ध करें जिस से राज्य रहूबियाम के वश में फिर आ जाए। २ तब यहोवा का यह वचन परमेश्वर के भक्त शमायाह के पास पहुंचा, ३ कि यहूदा के राजा सुलैमान

* मूल में—राजा को उत्तर दिया।

के पुत्र रहूबियाम से और यहूदा और बिन्यामीन के सब इस्राएलियों से कह, ४ यहोवा यों कहता है, कि अपने भाइयों पर चढ़ाई करके युद्ध न करो। तुम अपने अपने घर लौट जाओ, क्योंकि यह बात मेरी ही ओर से हुई है। यहोवा के ये वचन मानकर, वे यारोबाम पर बिना चढ़ाई किए लौट गए ।।

५ सो रहूबियाम यरूशलेम में रहने लगा, और यहूदा में बचाव के लिये ये नगर दृढ़ किए, ६ अर्थात् बेतलेहेम, एताम, तकोआ। ७ बेत्सूर, सोको, अदुल्लाम। ८ गत, मारेशा, जीप। ९ अदोरैम, लाकीश, अजेका। १० सोरा, अय्यालोन और हेब्रोन जो यहूदा और बिन्यामीन में हैं, दृढ़ किया। ११ और उस ने दृढ़ नगरों को और भी दृढ़ करके उन में प्रधान ठहराए, और भोजन वस्तु और तेल और दाखमधु के भण्डार रखवा दिए। १२ फिर एक एक नगर में उस ने ढालें और भाले रखवाकर उनको अत्यन्त दृढ़ कर दिया। यहूदा और बिन्यामीन तो उसके थे ।।

१३ और सारे इस्राएल के याजक और लेवीय भी अपने सब देश से उठकर उसके पास गए। १४ यों लेवीय अपनी चराइयों और निज भूमि छोड़कर, यहूदा और यरूशलेम में आए, क्योंकि यारोबाम और उसके पुत्रों ने उनको निकाल दिया था कि वे यहोवा के लिये याजक का काम न करें। १५ और उस ने ऊंचे स्थानों और बकरों और अपने बनाए हुए बछड़ों के लिये, अपनी ओर से याजक ठहरा लिए। १६ और लेवियों के बाद इस्राएल के सब गोत्रों में से जितने मन लगाकर इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के खोजी थे वे अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को बलि चढ़ाने के लिये यरूशलेम को आए। १७ और उन्हों ने यहूदा का राज्य स्थिर किया और सुलैमान के पुत्र रहूबियाम को तीन वर्ष तक दृढ़ कराया, क्योंकि तीन वर्ष तक वे दाऊद और सुलैमान की लीक पर चलते रहे ।।

१८ और रहूबियाम ने एक स्त्री को ब्याह लिया, अर्थात् महलत को जिसका पिता दाऊद का पुत्र यरीमोत और माता यिशै के पुत्र एलीआब की बेटी अबीहैल थी। १९ और उस से यूश, शमर्याह और जाहम नाम पुत्र उत्पन्न हुए। २० और उसके बाद उस ने अबशलोम की बेटी माका को ब्याह लिया, और उस से अबिय्याह, अत्ते, जीजा और शलोमीत उत्पन्न हुए। २१ रहूबियाम ने अठारह रानियां ब्याह लीं और साठ रखेलियां रखीं, और उसके अठाईस बेटे और साठ बेटियां उत्पन्न हुईं। अबशलोम की नतिनी माका से वह अपनी सब रानियों और रखेलियों से अधिक प्रेम रखता था; २२ सो रहूबियाम ने माका के बेटे अबिय्याह को मुख्य और सब भाइयों मे प्रधान इस मनसा से ठहरा दिया, कि उसे राजा बनाएं। २३ और वह समझ बूझकर काम करता था, और उस ने अपने सब पुत्रों को अलग अलग करके यहूदा और बिन्यामीन के सब देशों के सब गढ़वाले नगरों में ठहरा दिया; और उन्हें भोजन वस्तु बहुतायत से दी, और उनके लिये बहुत सी स्त्रियां ढूंढ़ी ।।

१२ परन्तु जब रहूबियाम का राज्य दृढ़ हो गया, और वह आप स्थिर हो गया, तब उस ने और उसके

साथ सारे इस्राएल ने यहोवा की व्यवस्था को त्याग दिया। २ उन्हों ने जो यहोवा से विश्वासघात किया, इस कारण राजा रहूबियाम के पांचवें वर्ष में मिस्र के राजा शीशक ने, ३ बारह सौ रथ और साठ हजार सवार लिये हुए यरूशलेम पर चढ़ाई की, और जो लोग उसके संग मिस्र से आए, अर्थात् लूबी, सुक्किय्यी, कूशी, ये अनगिनत थे। ४ और उस ने यहूदा के गढ़वाले नगरों को ले लिया, और यरूशलेम तक आया। ५ तब शमायाह नबी रहूबियाम और यहूदा के हाकिमों के पास जो शीशक के डर के मारे यरूशलेम में इकट्ठे हुए थे, आकर कहने लगा, यहोवा यों कहता है, कि तुम ने मुझ को छोड़ दिया है, इसलिये मैं ने तुम को छोड़कर शीशक के हाथ में कर दिया है। ६ तब इस्राएल के हाकिम और राजा दीन हो गए, और कहा, यहोवा धर्मी है। ७ जब यहोवा ने देखा कि वे दीन हुए हैं, तब यहोवा का यह वचन शमायाह के पास पहुंचा कि वे दीन हो गए हैं, मैं उनको नष्ट न करूंगा; मैं उनका कुछ बचाव करूंगा, और मेरी जलजलाहट शीशक के द्वारा यरूशलेम पर न भड़केगी। ८ तौभी वे उसके अधीन तो रहेंगे, ताकि वे मेरी और देश देश के राज्यों की भी सेवा जान लें॥

९ तब मिस्र का राजा शीशक यरूशलेम पर चढ़ाई करके यहोवा के भवन की अनमोल वस्तुएं और राजभवन की अनमोल वस्तुएं उठा ले गया। वह सब कुछ उठा ले गया, और सोने की जो फरियां सुलैमान ने बनाई थीं, उनको भी वह ले गया। १० तब राजा रहूबियाम ने उनके बदले पीतल की ढालें बनवाईं और उन्हें पहरुओं के प्रधानों के हाथ सौंप दिया, जो राजभवन के द्वार की रखवाली करते थे। ११ और जब जब राजा यहोवा के भवन में जाता, तब तब पहरुए आकर उन्हें उठा ले चलते, और फिर पहरुओं की कोठरी में लौटाकर रख देते थे। १२ जब रहूबियाम दीन हुआ, तब यहोवा का क्रोध उस पर से उतर गया, और उस ने उसका पूरा विनाश न किया; और यहूदा में अच्छे गुण भी थे॥

१३ सो राजा रहूबियाम यरूशलेम में दृढ़ होकर राज्य करता रहा। जब रहूबियाम राज्य करने लगा, तब एकतालीस वर्ष की आयु का था, और यरूशलेम में अर्थात् उस नगर में, जिसे यहोवा ने अपना नाम बनाए रखने के लिये इस्राएल के सारे गोत्र में से चुन लिया था, सत्रह वर्ष तक राज्य करता रहा। उसकी माता का नाम नामा था, जो अम्मोनी स्त्री थी। १४ उस ने वह कर्म किया जो बुरा है, अर्थात् उस ने अपने मन को यहोवा की खोज में न लगाया। १५ आदि से अन्त तक रहूबियाम के काम क्या शमायाह नबी और इद्दो दर्शी की पुस्तकों * में वंशावलियों की रीति पर नहीं लिखे हैं? रहूबियाम और यारोबाम के बीच तो लड़ाई सदा होती रही। १६ और रहूबियाम अपने पुरखाओं के संग सो गया और दाऊदपुर में उसको मिट्टी दी गई। और उसका पुत्र अबिय्याह उसके स्थान पर राज्य करने लगा॥

(अबिय्याह का राज्य)

१३ यारोबाम के अठारहवें वर्ष में अबिय्याह यहूदा पर राज्य करने लगा। २ वह तीन वर्ष तक

---

* मूल में—वचनों।

यरूशलेम में राज्य करता रहा, और उसकी माता का नाम मीकायांह् था; जो गिबा-वासी ऊरीएल की बेटी थी। और अबिय्याह् और यारोबाम के बीच में लड़ाई हुई ।।

३ अबिय्याह् ने तो बड़े योद्धाओं का दल, अर्थात् चार लाख छंटे हुए पुरुष लेकर लड़ने के लिये पांति बन्धाई, और यारोबाम ने आठ लाख छंटे हुए पुरुष जो बड़े शूरवीर थे, लेकर उसके विरुद्ध पांति बन्धाई। ४ तब अबिय्याह् समारैम नाम पहाड़ पर, जो एप्रैम के पहाड़ी देश में है, खड़ा होकर कहने लगा, हे यारोबाम, हे सब इस्राएलियो, मेरी सुनो। ५ क्या तुम को न जानना चाहिए, कि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने लोनवाली * वाचा बान्धकर दाऊद को और उसके वंश को इस्राएल का राज्य सदा के लिये दे दिया है। ६ तौभी नबात का पुत्र यारोबाम जो दाऊद के पुत्र सुलैमान का कर्मचारी था, वह अपने स्वामी के विरुद्ध उठा है। ७ और उसके पास हलके और ओछे मनुष्य इकट्ठा हो गए हैं और जब सुलैमान का पुत्र रहूबियाम लड़का और अल्हड़ मन का था और उनका साम्हना न कर सकता था, तब वे उसके विरुद्ध सामर्थी हो गए। ८ और अब तुम सोचते हो कि हम यहोवा के राज्य का साम्हना करेंगे, जो दाऊद की सन्तान के हाथ में है, क्योंकि तुम सब मिलकर बड़ा समाज बन गए हो और तुम्हारे पास वे सोने के बछड़े भी हैं जिन्हें यारोबाम ने तुम्हारे देवता होने के लिये बनवाया। ९ क्या तुम ने यहोवा के याजकों को, अर्थात् हारून की सन्तान और लेवियों को निकालकर देश देश के लोगों की नाईं याजक नियुक्त नहीं कर लिए? जो कोई एक बछड़ा और सात मेढ़े अपना संस्कार कराने को ले आता, तो उनका याजक हो जाता है जो ईश्वर नहीं है। १० परन्तु हम लोगों का परमेश्वर यहोवा है और हम ने उसको नहीं त्यागा, और हमारे पास यहोवा की सेवा टहल करनेवाले याजक हारून की सन्तान और अपने अपने काम में लगे हुए लेवीय हैं। ११ और वे नित्य सवेरे और सांझ को यहोवा के लिये होमबलि और सुगन्ध-द्रव्य का धूप जलाते हैं, और शुद्ध मेज पर भेंट की रोटी सजाते और सोने की दीवट और उसके दीपक सांझ-सांझ को जलाते हैं; हम तो अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को मानते रहते हैं, परन्तु तुम ने उसको त्याग दिया है। १२ और देखो, हमारे संग हमारा प्रधान परमेश्वर है, और उसके याजक तुम्हारे विरुद्ध सांस बान्धकर फूंकने को तुरहियां लिये हुए भी हमारे साथ हैं। हे इस्राएलियो अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा से मन लड़ो, क्योंकि तुम कृतार्थ न होगे ।।

१३ परन्तु यारोबाम ने घातकों को उनके पीछे भेज दिया, वे तो यहूदा के साम्हने थे, और घातक उनके पीछे थे। १४ और जब यहूदियों ने पीछे को मुंह फेरा, तो देखा कि हमारे आगे और पीछे दोनों ओर से लड़ाई होनेवाली है; तब उन्हों ने यहोवा की दोहाई दी, और याजक तुरहियों को फूंकने लगे। १५ तब यहूदी पुरुषों ने जय जयकार किया, और जब यहूदी पुरुषों ने जय जयकार किया, तब परमेश्वर ने अबिय्याह् और यहूदा

* अर्थात् अक्षय।

के साम्हने, यारोबाम और सारे इस्राएलियों को मारा। १६ और इस्राएली यहूदा के साम्हने से भागे, और परमेश्वर ने उन्हें उनके हाथ में कर दिया। १७ और अबिय्याह और उसकी प्रजा ने उन्हें बड़ी मार से मारा, यहां तक कि इस्राएल में से पांच लाख छंटे हुए पुरुष मारे गए। १८ उस समय तो इस्राएली दब गए, और यहूदी इस कारण प्रबल हुए कि उन्हों ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा पर भरोसा रखा था। १९ तब अबिय्याह ने यारोबाम का पीछा करके उस से बेतेल, यशाना और एप्रोन नगरों और उनके गांवों को ले लिया। २० और अबिय्याह के जीवन भर यारोबाम फिर सामर्थी न हुआ; निदान यहोवा ने उसको ऐसा मारा कि वह मर गया। २१ परन्तु अबिय्याह और भी सामर्थी हो गया और चौदह स्त्रियां ब्याह लीं जिन से बाइस बेटे और सोलह बेटियां उत्पन्न हुईं। २२ और अबिय्याह के काम और उसकी चाल चलन, और उसके वचन, इद्दो नबी की कथा में लिखे हैं ।।

(आसा का राज्य)

१४ निदान अबिय्याह अपने पुरखाओं के संग सो गया, और उसको दाऊदपुर में मिट्टी दी गई; और उसका पुत्र आसा उसके स्थान पर राज्य करने लगा। इसके दिनों में दस वर्ष तक देश में चैन रहा। २ और आसा ने वही किया जो उसके परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में अच्छा और ठीक था। ३ उस ने तो पराई वेदियों को और ऊंचे स्थानों को दूर किया, और लाठों को तुड़वा डाला, और अशेरा नाम मूरतों को तोड़ डाला। ४ और यहूदियों को आज्ञा दी कि अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा की खोज करें और व्यवस्था और आज्ञा को मानें। ५ और उस ने ऊंचे स्थानों और सूर्य की प्रतिमाओं को यहूदा के सब नगरों में से दूर किया, और उसके साम्हने राज्य में चैन रहा। ६ और उस ने यहूदा में गढ़वाले नगर बसाए, क्योंकि देश में चैन रहा। और उन बरसों में उसे किसी से लड़ाई न करनी पड़ी क्योंकि यहोवा ने उसे विश्राम दिया था। ७ उस ने यहूदियों से कहा, आओ हम इन नगरों को बसाएं और उनके चारों ओर शहरपनाह, गढ़ और फाटकों के पल्ले और बेड़े बनाएं; देश अब तक हमारे साम्हने पड़ा है, क्योंकि हम ने, अपने परमेश्वर यहोवा की खोज की है हमने उसकी खोज की और उस ने हमको चारों ओर से विश्राम दिया है। तब उन्हों ने उन नगरों को बसाया और कृतार्थ हुए। ८ फिर आसा के पास ढाल और बर्छी रखनेवालों की एक सेना थी, अर्थात् यहूदा में से तो तीन लाख पुरुष और बिन्यामीन में से फरी रखनेवाले और धनुर्धारी दो लाख अस्सी हजार ये सब शूरवीर थे ।।

९ और उनके विरुद्ध दस लाख पुरुषों की सेना और तीन सौ रथ लिये हुए जेरह नाम एक कूशी निकला और मारेशा तक आ गया। १० तब आसा उसका साम्हना करने को चला और मारेशा के निकट सापता नाम तराई में युद्ध की पांति बान्धी गई। ११ तब आसा ने अपने परमेश्वर यहोवा की यों दोहाई दी, कि हे यहोवा ! जैसे तू सामर्थी की सहायता कर सकता है, वैसे ही शक्तिहीन की

भी; हे हमारे परमेश्वर यहोवा! हमारी सहायता कर, क्योंकि हमारा भरोसा तुझी पर है और तेरे नाम का भरोसा करके हम इस भीड़ के विरुद्ध आए हैं। हे यहोवा, तू हमारा परमेश्वर है; मनुष्य तुझ पर प्रबल न होने पाएगा। १२ तब यहोवा ने कूशियों को आसा और यहूदियों के साम्हने मारा और कूशी भाग गए। १३ और आसा और उसके संग के लोगों ने उनका पीछा गरार तक किया, और इतने कूशी मारे गए, कि वे फिर सिर न उठा सके क्योंकि वे यहोवा और उसकी सेना से हार गए, और यहूदी बहुत सा लूट ले गए। १४ और उन्हों ने ग़रार के आस पास के सब नगरों को मार लिया, क्योंकि यहोवा का भय उनके रहनेवालों के मन में समा गया और उन्हों ने उन नगरों को लूट लिया, क्योंकि उन में बहुत सा धन था। १५ फिर पशु-शालाओं को जीतकर बहुत सी भेड़-बकरियां और ऊंट लूटकर यरूशलेम को लौटे।।

१५ तब परमेश्वर का आत्मा ओदेद के पुत्र अजर्याह में समा गया, २ और वह आसा से भेंट करने निकला, और उस से कहा, हे आसा, और हे सारे यहूदा और बिन्यामीन मेरी सुनो, जब तक तुम यहोवा के संग रहोगे तब तक वह तुम्हारे संग रहेगा; और यदि तुम उसकी खोज में लगे रहो, तब तो वह तुम से मिला करेगा, परन्तु यदि तुम उसको त्याग दोगे तो वह भी तुम को त्याग देगा। ३ बहुत दिन इस्राएल बिना सत्य परमेश्वर के और बिना सिखानेवाले याजक के और बिना व्यवस्था के रहा। ४ परन्तु जब जब वे संकट में पड़कर इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की ओर फिरे और उसको ढूंढ़ा, तब तब वह उनको मिला। ५ उस समय न तो जानेवाले को कुछ शांति होती थी, और न आनेवाले को, वरन सारे देश के सब निवासियों में बड़ा ही कोलाहल होता था। ६ और जाति से जाति और नगर से नगर चूर किए जाते थे, क्योंकि परमेश्वर नाना प्रकार का कष्ट देकर उन्हें घबरा देता था। ७ परन्तु तुम लोग हियाव बान्धो और तुम्हारे हाथ ढीले न पड़ें, क्योंकि तुम्हारे काम का बदला मिलेगा।।

८ जब आसा ने ये वचन और ओदेद नबी की नबूवत सुनी, तब उस ने हियाव बान्धकर यहूदा और बिन्यामीन के सारे देश में से, और उन नगरों में से भी जो उस ने एप्रैम के पहाड़ी देश में ले लिये थे, सब घिनौनी वस्तुएं दूर कीं, और यहोवा की जो वेदी यहोवा के ओसारे के साम्हने थी, उसको नये सिरे से बनाया। ९ और उस ने सारे यहूदा और बिन्यामीन को, और एप्रैम, मनश्शे और शिमोन में से जो लोग उसके संग रहते थे, उनको इकट्ठा किया, क्योंकि वे यह देखकर कि उसका परमेश्वर यहोवा उसके संग रहता है, इस्राएल में से उसके पास बहुत से चले आए थे। १० आसा के राज्य के पन्द्रहवें वर्ष के तीसरे महीने में वे यरूशलेम में इकट्ठे हुए। ११ और उसी समय उन्हों ने उस लूट में से जो वे ले आए थे, सात सौ बैल और सात हजार भेड़-बकरियां, यहोवा को बलि करके चढ़ाईं। १२ और उन्हों ने वाचा बान्धी कि हम अपने पूरे मन और सारे जीव से अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा की खोज करेंगे। १३ और क्या बड़ा, क्या छोटा,

क्या स्त्री, क्या पुरुष, जो कोई इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की खोज न करे, वह मार डाला जाएगा। १४ और उन्हों ने जय जयकार के साथ तुरहियां और नरसिंगे बजाते हुए ऊंचे शब्द से यहोवा की शपथ खाई। १५ और यह शपथ खाकर सब यहूदी आनन्दित हुए, क्योंकि उन्हों ने अपने सारे मन से शपथ खाई और बड़ी अभिलाषा से उसको ढूंढ़ा और वह उनको मिला, और यहोवा ने चारों ओर से उन्हें विश्राम दिया ॥

१६ वरन आसा राजा की माता माका जिस ने अशेरा के पास रखने के लिए एक घिनौनी मूरत बनाई, उसको उस ने राजमाता के पद से उतार दिया, और आसा ने उसकी मूरत काटकर पीस डाली और किद्रोन नाले में फूंक दी। १७ ऊंचे स्थान तो इस्राएलियों में से न ढाए गए, तौभी आसा का मन जीवन भर निष्कपट रहा। १८ और उस ने जो सोना चान्दी, और पात्र उसके पिता ने अर्पण किए थे, और जो उस ने आप अर्पण किए थे, उनको परमेश्वर के भवन में पहुंचा दिया। १९ और राजा आसा के राज्य के पैंतीसवें वर्ष तक फिर लड़ाई न हुई ॥

१६ आसा के राज्य के छत्तीसवें वर्ष में इस्राएल के राजा बाशा ने यहूदा पर चढ़ाई की और रामा को इसलिये दृढ़ किया, कि यहूदा के राजा आसा के पास कोई आने जाने न पाए। २ तब आसा ने यहोवा के भवन और राजभवन के भण्डारों में से चान्दी-सोना निकाल दमिश्कवासी अराम के राजा बेन्हदद के पास दूत भेजकर यह कहा, ३ कि जैसे मेरे-तेरे पिता के बीच वैसे ही मेरे-तेरे बीच भी वाचा बन्धे; देख मैं तेरे पास चान्दी-सोना भेजता हूं, इसलिये आ, इस्राएल के राजा बाशा के साथ की अपनी वाचा को तोड़ दे, ताकि वह मुझ से दूर हो। ४ बेन्हदद ने राजा आसा की यह बात मानकर, अपने दलों के प्रधानों से इस्राएली नगरों पर चढ़ाई करवाकर इय्योन, दान, आबेल्मैम और नप्ताली के सब भण्डारवाले नगरों को जीत लिया। ५ यह सुनकर बाशा ने रामा को दृढ़ करना छोड़ दिया, और अपना वह काम बन्द करा दिया। ६ तब राजा आसा ने पूरे यहूदा देश को साथ लिया और रामा के पत्थरों और लकड़ी को, जिन से बाशा काम करता था, उठा ले गया, और उन से उस ने गेबा, और मिस्पा को दृढ़ किया ॥

७ उस समय हनानी दर्शी यहूदा के राजा आसा के पास जाकर कहने लगा, तू ने जो अपने परमेश्वर यहोवा पर भरोसा नहीं रखा वरन अराम के राजा ही पर भरोसा रखा है, इस कारण अराम के राजा की सेना तेरे हाथ से बच गई है। ८ क्या कूशियों और लूबियों की सेना बड़ी न थी, और क्या उस में बहुत ही रथ, और सवार न थे? तौभी तू ने यहोवा पर भरोसा रखा था, इस कारण उस ने उनको तेरे हाथ में कर दिया। ९ देख, यहोवा की दृष्टि सारी पृथ्वी पर इसलिये फिरती रहती है कि जिनका मन उसकी ओर निष्कपट रहता है, उनकी सहायता में वह अपना सामर्थ दिखाए। तू ने यह काम मूर्खता से किया है, इसलिये अब से तू लड़ाइयों में फंसा रहेगा। १० तब आसा दर्शी पर क्रोधित हुआ और उसे काठ में ठोंकवा दिया, क्योंकि वह

उसकी ऐसी बात के कारण उस पर क्रोधित था। और उसी समय से आसा प्रजा के कुछ लोगों को पीसने भी लगा।।

११ आदि से लेकर अन्त तक आसा के काम यहूदा और इस्राएल के राजाओं के वृत्तान्त * में लिखे हैं। १२ अपने राज्य के उनतीसवें वर्ष में आसा को पांव का रोग हुआ, और वह रोग अत्यन्त बढ़ गया, तौभी उस ने रोगी होकर यहोवा की नहीं वैद्यों ही की शरण ली। १३ निदान आसा अपने राज्य के एकतालीसवें वर्ष में मरके अपने पुरखाओं के साथ सो गया। १४ तब उसको उसी की कब्र में जो उस ने दाऊदपुर में खुदवा ली थी, मिट्टी दी गई; और वह सुगन्धद्रव्यों और गंधी के काम के भांति भांति के मसालों से भरे हुए एक बिछौने पर लिटा दिया गया, और बहुत सा सुगन्धद्रव्य उसके लिये जलाया गया।।

(यहोशापात का राज्य)

१७ और उसका पुत्र यहोशापात उसके स्थान पर राज्य करने लगा, और इस्राएल के विरुद्ध अपना बल बढ़ाया। २ और उस ने यहूदा के सब गढ़वाले नगरों में सिपाहियों के दल ठहरा दिए, और यहूदा के देश में और एप्रैम के उन नगरों में भी जो उसके पिता आसा ने ले लिये थे, सिपाहियों की चौकियां बैठा दीं। ३ और यहोवा यहोशापात के संग रहा, क्योंकि वह अपने मूलपुरुष दाऊद की प्राचीन चाल सी चाल चला और बाल देवताओं की खोज में न लगा। ४ वरन वह अपने पिता के परमेश्वर की खोज में लगा रहता था और उसी की आज्ञाओं पर चलता था, और इस्राएल के से काम नहीं करता था। ५ इस कारण यहोवा ने राज्य को उसके हाथ में दृढ़ किया, और सारे यहूदी उसके पास भेंट लाया करते थे, और उसके पास बहुत धन और उसका विभव बढ़ गया। ६ और यहोवा के मार्गों पर चलते चलते उसका मन मगन हो गया; फिर उस ने यहूदा से ऊंचे स्थान और अशेरा नाम मूरतें दूर कर दीं।।

७ और उस ने अपने राज्य के तीसरे वर्ष में बेन्हैल, ओबद्याह, जकर्याह, नतनेल और मीकायाह नामक अपने हाकिमों को यहूदा के नगरों में शिक्षा देने को भेज दिया। ८ और उनके साथ शमायाह, नतन्याह, जबद्याह, असाहेल, शमीरामोत, यहोनातान, अदोनिय्याह, तोबिय्याह और तोबदोनिय्याह नाम लेवीय और उनके संग एलीशामा और यहोराम नामक याजक थे। ९ सो उन्हों ने यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक अपने साथ लिये हुए यहूदा में शिक्षा दी, वरन वे यहूदा के सब नगरों में प्रजा को सिखाते हुए घूमे।।

१० और यहूदा के आस पास के देशों के राज्य राज्य में यहोवा का ऐसा डर समा गया, कि उन्हों ने यहोशापात से युद्ध न किया। ११ वरन कितने पलिश्ती यहोशापात के पास भेंट और कर समझकर चान्दी लाए; और अरबी लोग भी सात हजार सात सौ मेढ़े और सात हजार सात सौ बकरे ले आए। १२ और यहोशापात बहुत ही बढ़ता गया और उस ने यहूदा में किले और भण्डार के नगर तैयार किए। १३ और यहूदा के नगरों में उसका बहुत काम होता था, और यरूशलेम में उसके योद्धा अर्थात्

* मूल में—पुस्तक।

शूरवीर रहते थे। १४ और इनके पितरों के घरानों के अनुसार इनकी यह गिनती थी, अर्थात् यहूदी सहस्रपति तो ये थे, प्रधान अदना जिसके साथ तीन लाख शूरवीर थे, १५ और उसके बाद प्रधान यहोहानान जिसके साथ दो लाख अस्सी हजार पुरुष थे। १६ और इसके बाद जिक्री का पुत्र अमस्याह, जिस ने अपने को अपनी ही इच्छा से यहोवा को अर्पण किया था, उसके साथ दो लाख शूरवीर थे। १७ फिर बिन्यामीन में से एल्यादा नामक एक शूरवीर जिसके साथ ढाल रखनेवाले दो लाख धनुर्धारी थे। १८ और उसके नीचे यहोजाबाद जिसके साथ युद्ध के हथियार बान्धे हुए एक लाख अस्सी हजार पुरुष थे। १९ वे ये हैं, जो राजा की सेवा में लवलीन थे। और ये उन से अलग थे जिन्हें राजा ने सारे यहूदा के गढ़वाले नगरों में ठहरा दिया ॥

१८ यहोशापात बड़ा धनवान और ऐश्वर्य्यवान हो गया; और उस ने अहाब के साथ समधियाना किया। २ कुछ वर्ष के बाद वह शोमरोन में अहाब के पास गया, तब अहाब ने उसके और उसके संगियों के लिये बहुत सी भेड़-बकरियां और गाय-बैल काटकर, उसे गिलाद के रामोत पर चढ़ाई करने को उसकाया। ३ और इस्राएल के राजा अहाब ने यहूदा के राजा यहोशापात से कहा, क्या तू मेरे साथ गिलाद के रामोत पर चढ़ाई करेगा? उस ने उसे उत्तर दिया, जैसा तू वैसा मैं भी हूं, और जैसी तेरी प्रजा, वैसी मेरी भी प्रजा है। हम लोग युद्ध में तेरा साथ देंगे ॥

४ फिर यहोशापात ने इस्राएल के राजा से कहा, आज यहोवा की आज्ञा ले। ५ तब इस्राएल के राजा ने नबियों को जो चार सौ पुरुष थे, इकट्ठा करके उन से पूछा, क्या हम गिलाद के रामोत पर युद्ध करने को चढ़ाई करें, अथवा मैं रुका रहूं? उन्हों ने उत्तर दिया चढ़ाई कर, क्योंकि परमेश्वर उसको राजा के हाथ कर देगा। ६ परन्तु यहोशापात ने पूछा, क्या यहां यहोवा का और भी कोई नबी नहीं है जिस से हम पूछ लें? ७ इस्राएल के राजा ने यहोशापात से कहा, हां, एक पुरुष और है, जिसके द्वारा हम यहोवा से पूछ सकते हैं; परन्तु मैं उस से घृणा करता हूं; क्योंकि वह मेरे विषय कभी कल्याण की नहीं, सदा हानि ही की नबूवत करता है। वह यिम्ला का पुत्र मीकायाह है। यहोशापात ने कहा, राजा ऐसा न कहे। ८ तब इस्राएल के राजा ने एक हाकिम को बुलवाकर कहा, यिम्ला के पुत्र मीकायाह को फुर्ती से ले आ। ९ इस्राएल का राजा और यहूदा का राजा यहोशापात अपने अपने राजवस्त्र पहिने हुए, अपने अपने सिंहासन पर बैठे हुए थे; वे शोमरोन के फाटक में एक खुले स्थान में बैठे थे और सब नबी उनके साम्हने नबूवत कर रहे थे। १० तब कनाना के पुत्र सिदकिय्याह ने लोहे के सींग बनवाकर कहा, यहोवा यों कहता है, कि इन से तू अरामियों को मारते मारते नाश कर डालेगा। ११ और सब नबियों ने इसी आशय की नबूवत करके कहा, कि गिलाद के रामोत पर चढ़ाई कर और तू कृतार्थ होवे; क्योंकि यहोवा उसे राजा के हाथ कर देगा ॥

१२ और जो दूत मीकायाह को बुलाने गया था, उस ने उस से कहा, सुन, नबी लोग एक ही मुंह से राजा के विषय शुभ वचन कहते हैं; सो तेरी बात उनकी सी हो, तू भी शुभ वचन कहना। १३ मीकायाह ने कहा, यहोवा के जीवन की सौंह, जो कुछ मेरा परमेश्वर कहे वही मैं भी कहूंगा। १४ जब वह राजा के पास आया, तब राजा ने उस से पूछा, हे मीकायाह, क्या हम गिलाद के रामोत पर युद्ध करने को चढ़ाई करें अथवा मैं रुका रहूं? उस ने कहा, हां, तुम लोग चढ़ाई करो, और कृतार्थ होओ; और वे तुम्हारे हाथ में कर दिए जाएंगे। १५ राजा ने उस से कहा, मुझे कितनी बार तुझे शपथ धराकर चिताना होगा, कि तू यहोवा का स्मरण करके मुझ से सच ही कह। १६ मीकायाह ने कहा, मुझे सारा इस्राएल बिना चरवाहे की भेंड़-बकरियों की नाईं पहाड़ों पर तितर-बितर दिखाई पड़ा, और यहोवा का वचन आया कि वे तो अनाथ हैं, इसलिये हर एक अपने अपने घर कुशल क्षेम से लौट जाएं। १७ तब इस्राएल के राजा ने यहोशापात से कहा, क्या मैं ने तुझ से न कहा था, कि वह मेरे विषय कल्याण की नहीं, हानि ही की नबूवत करेगा? १८ मीकायाह ने कहा, इस कारण तुम लोग यहोवा का यह वचन सुनो: मुझे सिंहासन पर विराजमान यहोवा और उसके दाहिने बाएं खड़ी हुई स्वर्ग की सारी सेना दिखाई पड़ी। १९ तब यहोवा ने पूछा, इस्राएल के राजा अहाब को कौन ऐसा बहकाएगा, कि वह गिलाद के रामोत पर चढ़ाई करके खेत आए, तब किसी ने कुछ और किसी ने कुछ कहा। २० निदान एक आत्मा पास आकर यहोवा के सम्मुख खड़ी हुई, और कहने लगी, मैं उसको बहकाऊंगी। २१ यहोवा ने पूछा, किस उपाय से? उस ने कहा, मैं जाकर उसके सब नबियों में पैठ के उन से झूठ बुलवाऊंगी *। यहोवा ने कहा, तेरा उसको बहकाना सफल होगा, जाकर ऐसा ही कर। २२ इसलिये सुन अब यहोवा ने तेरे इन नबियों के मुंह में एक झूठ बोलने-वाली आत्मा पैठाई है, और यहोवा ने तेरे विषय हानि की बात कही है॥

२३ तब कनाना के पुत्र सिदकिय्याह ने निकट जा, मीकायाह के गाल पर थप्पड़ मारकर पूछा, यहोवा का आत्मा मुझे छोड़कर तुझ से बातें करने को किधर गया। २४ उस ने कहा, जिस दिन तू छिपने के लिये कोठरी से कोठरी में भागेगा, तब जान लेगा। २५ इस पर इस्राएल के राजा ने कहा, कि मीकायाह को नगर के हाकिम आमोन और राजकुमार योआश के पास लौटाकर, २६ उन से कहो, राजा यों कहता है, कि इसको बन्दीगृह में डालो, और जब तक मैं कुशल से न आऊं, तब तक इसे दुःख की रोटी और पानी दिया करो। २७ तब मीकायाह ने कहा, यदि तू कभी कुशल से लौटे, तो जान, कि यहोवा ने मेरे द्वारा नहीं कहा। फिर उस ने कहा, हे लोगो, तुम सब के सब सुन लो॥

२८ तब इस्राएल के राजा और यहूदा के राजा यहोशापात दोनों ने गिलाद के रामोत पर चढ़ाई की। २९ और इस्राएल के राजा ने यहोशापात से कहा, मैं तो भेष बदलकर युद्ध में जाऊंगा, परन्तु तू

* मूल में—झूठी आत्मा हूंगी।

अपने ही वस्त्र पहिने रह। इस्राएल के राजा ने भेष बदला और वे दोनों युद्ध में गए। ३० अराम के राजा ने तो अपने रथों के प्रधानों को आज्ञा दी थी, कि न तो छोटे से लड़ो और न बड़े से, केवल इस्राएल के राजा से लड़ो। ३१ सो जब रथों के प्रधानों ने यहोशापात को देखा, तब कहा इस्राएल का राजा वही है, और वे उसी से लड़ने को मुड़े। इस पर यहोशापात चिल्ला उठा, तब यहोवा ने उसकी सहायता की। और परमेश्वर ने उनको उसके पास से फिर जाने की प्रेरणा की। ३२ सो यह देखकर कि वह इस्राएल का राजा नहीं है, रथों के प्रधान उसका पीछा छोड़ के लौट गए। ३३ तब किसी ने अटकल से एक तीर चलाया, और वह इस्राएल के राजा के झिलम और निचले वस्त्र के बीच छेदकर लगा; तब उस ने अपने सारथी से कहा, मैं घायल हुआ, इसलिये लगाम * फेरके मुझे सेना में से बाहर ले चल। ३४ और उस दिन युद्ध बढ़ता गया और इस्राएल का राजा अपने रथ में अरामियों के सम्मुख सांझ तक खड़ा रहा, परन्तु सूर्य अस्त होते-होते वह मर गया ।।

१९ और यहूदा का राजा यहोशापात यरूशलेम को अपने भवन में कुशल से लौट गया। २ तब हनानी नाम दर्शी का पुत्र येहू यहोशापात राजा से भेंट करने को निकला और उस से कहने लगा, क्या दुष्टों की सहायता करनी और यहोवा के बैरियों से प्रेम रखना चाहिये ? इस काम के कारण यहोवा की ओर से तुझ पर क्रोध भड़का है। ३ तौभी तुझ में कुछ अच्छी बातें पाई जाती हैं। तू ने तो देश में से अशेरों को नाश किया और अपने मन को परमेश्वर की खोज में लगाया है ।।

४ यहोशापात यरूशलेम में रहता था, और उस ने बेर्शेबा से लेकर एप्रैम के पहाड़ी देश तक अपनी प्रजा में फिर दौरा करके, उनको उनके पितरों के परमेश्वर यहोवा की ओर फेर दिया। ५ फिर उस ने यहूदा के एक एक गढ़वाले नगर में न्यायी ठहराया। ६ और उस ने न्यायियों से कहा, सोचो कि क्या करते हो, क्योंकि तुम जो न्याय करोगे, वह मनुष्य के लिये नहीं, यहोवा के लिये करोगे; और वह न्याय करते समय तुम्हारे साथ रहेगा। ७ अब यहोवा का भय तुम में बना रहे; चौकसी से काम करना, क्योंकि हमारे परमेश्वर यहोवा में कुछ कुटिलता नहीं है, और न वह किसी का पक्ष करता और न घूस लेता है ।।

८ और यरूशलेम में भी यहोशापात ने लेवियों और याजकों और इस्राएल के पितरों के घरानों के कुछ मुख्य पुरुषों को यहोवा की ओर से न्याय करने और मुकद्दमों को जांचने के लिये ठहराया। ९ और वे यरूशलेम को लौटे। और उस ने उनको आज्ञा दी, कि यहोवा का भय मानकर, सच्चाई और निष्कपट मन से ऐसा करना। १० तुम्हारे भाई जो अपने अपने नगर में रहते हैं, उन में से जिसका कोई मुकद्दमा तुम्हारे साम्हने आए, चाहे वह खून का हो, चाहे व्यवस्था, अथवा किसी आज्ञा या विधि वा नियम के विषय हो, उनको चिता देना, कि यहोवा के विषय दोषी न होओ। ऐसा

* मूल में—अपना हाथ।

न हो कि तुम पर और तुम्हारे भाइयों पर उसका क्रोध भड़के। ऐसा करो तो तुम दोषी न ठहरोगे। ११ और देखो, यहोवा के विषय के सब मुकद्दमों में तो अमर्याह महायाजक और राजा के विषय के सब मुकद्दमों में यहूदा के घराने का प्रधान इश्माएल का पुत्र जबद्याह तुम्हारे ऊपर अधिकारी है; और लेवीय तुम्हारे साम्हने सरदारों का काम करेंगे। इसलिये हियाव बान्धकर काम करो और भले मनुष्य के साथ यहोवा रहेगा॥

२० इसके बाद मोआबियों और अम्मोनियों ने और उनके साथ कई मूनियों* ने युद्ध करने के लिये यहोशापात पर चढ़ाई की। २ तब लोगों ने आकर यहोशापात को बता दिया, कि ताल के पार से एदोम† देश की ओर से एक बड़ी भीड़ तुझ पर चढ़ाई कर रही है; और देख, वह हसासोन्तामार तक जो एनगदी भी कहलाता है, पहुंच गई है। ३ तब यहोशापात डर गया और यहोवा की खोज में लग गया, और पूरे यहूदा में उपवास का प्रचार करवाया। ४ सो यहूदी यहोवा से सहायता मांगने के लिये इकट्ठे हुए, वरन वे यहूदा के सब नगरों से यहोवा से भेंट करने को आए॥

५ तब यहोशापात यहोवा के भवन में नये आंगन के साम्हने यहूदियों और यरूशलेमियों की मण्डली में खड़ा होकर ६ यह कहने लगा, कि हे हमारे पितरों के परमेश्वर यहोवा! क्या तू स्वर्ग में परमेश्वर नहीं है? और क्या तू जाति जाति के सब राज्यों के ऊपर प्रभुता नहीं करता? और क्या तेरे हाथ में ऐसा बल और पराक्रम नहीं है कि तेरा साम्हना कोई नहीं कर सकता? ७ हे हमारे परमेश्वर! क्या तू ने इस देश के निवासियों को अपनी प्रजा इस्राएल के साम्हने से निकालकर इन्हें अपने मित्र इब्राहीम के वंश को सदा के लिये नहीं दे दिया? ८ वे इस में बस गए और इस में तेरे नाम का एक पवित्रस्थान बनाकर कहा, ९ कि यदि तलवार या मरी अथवा अकाल वा और कोई विपत्ति हम पर पड़े, तौभी हम इसी भवन के साम्हने और तेरे साम्हने (तेरा नाम तो इस भवन में बसा है) खड़े होकर, अपने क्लेश के कारण तेरी दोहाई देंगे और तू सुनकर बचाएगा। १० और अब अम्मोनी और मोआबी और सेईर के पहाड़ी देश के लोग जिन पर तू ने इस्राएल को मिस्र देश से आते समय चढ़ाई करने न दिया, और वे उनकी ओर से मुड़ गए और उनको विनाश न किया, ११ देख, वे ही लोग तेरे दिए हुए अधिकार के इस देश में से जिसका अधिकार तू ने हमें दिया है, हम को निकालकर कैसा बदला हमें दे रहे हैं। १२ हे हमारे परमेश्वर, क्या तू उनका न्याय न करेगा? यह जो बड़ी भीड़ हम पर चढ़ाई कर रही है, उसके साम्हने हमारा तो बस नहीं चलता और हमें कुछ सूझता नहीं कि क्या करना चाहिये? परन्तु हमारी आंखें तेरी ओर लगी हैं॥

१३ और सब यहूदी अपने अपने बालबच्चों, स्त्रियों और पुत्रों समेत यहोवा के सम्मुख खड़े रहे। १४ तब आसाप के वंश में से यहजीएल नाम एक लेवीय

* मूल में—अम्मोनियों।
† मूल में—अराम।

जो जकर्याह का पुत्र और बनायाह का पोता और मत्तन्याह के पुत्र यीएल का परपोता था, उस में मण्डली के बीच यहोवा का आत्मा समाया। १५ और वह कहने लगा, हे सब यहूदियो, हे यरूशलेम के रहनेवालो, हे राजा यहोशापात, तुम सब ध्यान दो; यहोवा तुम से यों कहता है, तुम इस बड़ी भीड़ से मत डरो और तुम्हारा मन कच्चा न हो; क्योंकि युद्ध तुम्हारा नहीं, परमेश्वर का है। १६ कल उनका साम्हना करने को जाना। देखो वे सीस की चढ़ाई पर चढ़े आते हैं और यरूएल नाम जंगल के साम्हने नाले के सिरे पर तुम्हें मिलेंगे। १७ इस लड़ाई में तुम्हें लड़ना न होगा; हे यहूदा, और हे यरूशलेम, ठहरे रहना, और खड़े रहकर यहोवा की ओर मे अपना बचाव देखना। मत डरो, और तुम्हारा मन कच्चा न हो; कल उनका साम्हना करने को चलना और यहोवा तुम्हारे साथ रहेगा ॥

१८ तब यहोशापात भूमि की ओर मुंह करके झुका और सब यहूदियों और यरूशलेम के निवासियों ने यहोवा के साम्हने गिरके यहोवा को दण्डवत किया। १९ और कहातियों और कोरहियों में से कुछ लेवीय खड़े होकर इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की स्तुति अत्यन्त ऊंचे स्वर से करने लगे ॥

२० बिहान को वे सबेरे उठकर तको के जंगल की ओर निकल गए; और चलते समय यहोशापात ने खड़े होकर कहा, हे यहूदियो, हे यरूशलेम के निवासियो, मेरी सुनो, अपने परमेश्वर यहोवा पर विश्वास रखो, तब तुम स्थिर रहोगे; उसके नबियों की प्रतीत करो, तब तुम कृतार्थ हो जाओगे ॥

२१ तब उस ने प्रजा के साथ सम्मति करके कितनों को ठहराया, जो कि पवित्रता से शोभायमान होकर हथियारबन्दों के आगे आगे चलते हुए यहोवा के गीत गाएं, और यह कहते हुए उसकी स्तुति करें, कि यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि उसकी करुणा सदा की है ॥

२२ जिस समय वे गाकर स्तुति करने लगे, उसी समय यहोवा ने अम्मोनियों, मोआबियों और सेईर के पहाड़ी देश के लोगों पर जो यहूदा के विरुद्ध आ रहे थे, घातकों को बैठा दिया और वे मारे गए। २३ क्योंकि अम्मोनियों और मोआबियों ने सेईर के पहाड़ी देश के निवासियों को डराने और सत्यानाश करने के लिये उन पर चढ़ाई की, और जब वे सेईर के पहाड़ी देश के निवासियों का अन्त कर चुके, तब उन सभों ने एक दूसरे के नाश करने में हाथ लगाया ॥

२४ सो जब यहूदियों ने जंगल की चौकी पर पहुंचकर उस भीड़ की ओर दृष्टि की, तब क्या देखा कि वे भूमि पर पड़ी हुई लोथ हैं; और कोई नहीं बचा। २५ तब यहोशापात और उसकी प्रजा लूट लेने को गए और लोथों के बीच बहुत सी सम्पत्ति और मनभावने गहने मिले; उन्हों ने इतने गहने उतार लिये कि उनको न ले जा सके, वरन लूट इतनी मिली, कि बटोरते बटोरते तीन दिन बीत गए। २६ चौथे दिन वे बराका* नाम तराई में इकट्ठे हुए और वहां यहोवा का धन्यवाद किया; इस

* अर्थात् धन्यवाद वा आशिष।

कारण उस स्थान का नाम बराका की तराई पड़ा, जो आज तक है। २७ तब वे, अर्थात् यहूदा और यरूशलेम नगर के सब पुरुष और उनके आगे आगे यहोशापात, आनन्द के साथ यरूशलेम लौटे क्योंकि यहोवा ने उन्हें शत्रुओं पर आनन्दित किया था। २८ सो वे सारंगियां, वीणाएं और तुरहियां बजाते हुए यरूशलेम में यहोवा के भवन को आए। २९ और जब देश देश के सब राज्यों के लोगों ने सुना कि इस्राएल के शत्रुओं से यहोवा लड़ा, तब उनके मन में परमेश्वर का डर समा गया। ३० और यहोशापात के राज्य को चैन मिला, क्योंकि उसके परमेश्वर ने उसको चारों ओर से विश्राम दिया ॥

३१ यों यहोशापात ने यहूदा पर राज्य किया। जब वह राज्य करने लगा तब वह पैंतीस वर्ष का था, और पच्चीस वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। और उसकी माता का नाम अजूबा था, जो शिल्ही की बेटी थी। ३२ और वह अपने पिता आसा की लीक पर चला और उस से न मुड़ा, अर्थात् जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है वही वह करता रहा। ३३ तौभी ऊंचे स्थान ढाए न गए, वरन अब तक प्रजा के लोगों ने अपना मन अपने पितरों के परमेश्वर की ओर न लगाया था। ३४ और आदि से अन्त तक यहोशापात के और काम, हनानी के पुत्र येहू के विषय उस वृत्तान्त में लिखे हैं, जो इस्राएल के राजाओं के वृत्तान्त में पाया जाता है ॥

३५ इसके बाद यहूदा के राजा यहोशापात ने इस्राएल का राजा अहज्याह से जो बड़ी दुष्टता करता था, मेल किया। ३६ अर्थात् उस ने उसके साथ इसलिये मेल किया कि तर्शीश जाने को जहाज बनवाए, और उन्हों ने ऐसे जहाज एस्योनगेबेर में बनवाए। ३७ तब दोदावाह के पुत्र मारेशावासी एलीआजर ने यहोशापात के विरुद्ध यह नबूवत कही, कि तू ने जो अहज्याह से मेल किया, इस कारण यहोवा तेरी बनवाई हुई वस्तुओं को तोड़ डालेगा। सो जहाज टूट गए और तर्शीश को न जा सके ॥

(यहोराम का राज्य)

२१ निदान यहोशापात अपने पुरखाओं के संग सो गया, और उसको उसके पुरखाओं के बीच दाऊदपुर में मिट्टी दी गई; और उसका पुत्र यहोराम उसके स्थान पर राज्य करने लगा। २ इसके भाई जो यहोशापात के पुत्र थे, ये थे, अर्थात् अजर्याह, यहीएल, जकर्याह, अजर्याह, मीकाएल और शपत्याह; ये सब इस्राएल के राजा यहोशापात के पुत्र थे। ३ और उनके पिता ने उन्हें चान्दी सोना और अनमोल वस्तुएं और बड़े बड़े दान और यहूदा में गढ़वाले नगर दिए थे, परन्तु यहोराम को उस ने राज्य दे दिया, क्योंकि वह जेठा था। ४ जब यहोराम अपने पिता के राज्य पर नियुक्त हुआ और बलवन्त भी हो गया, तब उसने अपने सब भाइयों को और इस्राएल के कुछ हाकिमों को भी तलवार से घात किया। ५ जब यहोराम राजा हुआ, तब वह बत्तीस वर्ष का था, और वह आठ वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। ६ वह इस्राएल के राजाओं की सी चाल चला, जैसे अहाब का घराना चलता था, क्योंकि उसकी

पत्नी अहाब की बेटी थी। और वह उस काम को करता था, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है। ७ तौभी यहोवा ने दाऊद के घराने को नाश करना न चाहा, यह उस वाचा के कारण था, जो उसने दाऊद से बान्धी थी। और उस वचन के अनुसार था, जो उस ने उसको दिया था, कि मैं ऐसा करूंगा कि तेरा और तेरे वंश का दीपक कभी न बुझेगा ॥

८ उसके दिनों में एदोम ने यहूदा की अधीनता छोड़कर अपने ऊपर एक राजा बना लिया। ९ सो यहोराम अपने हाकिमों और अपने सब रथों को साथ लेकर उधर गया, और रथों के प्रधानों को मारा। १० यों एदोम यहूदा के वश से छूट गया और आज तक वैसा ही है। उसी समय लिब्ना ने भी उसकी अधीनता छोड़ दी, यह इस कारण हुआ, कि उस ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को त्याग दिया था ॥

११ और उस ने यहूदा के पहाड़ों पर ऊंचे स्थान बनाए और यरूशलेम के निवासियों से व्यभिचार कराया, और यहूदा को बहका दिया। १२ तब एलिय्याह नबी का एक पत्र उसके पास आया, कि तेरे मूलपुरुष दाऊद का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि तू जो न तो अपने पिता यहोशापात की लीक पर चला है और न यहूदा के राजा आसा की लीक पर, १३ वरन इस्राएल के राजाओं की लीक पर चला है, और अहाब के घराने की नाईं यहूदियों और यरूशलेम के निवासियों से व्यभिचार कराया है और अपने पिता के घराने में से अपने भाइयों को जो तुझ से अच्छे थे, घात किया है, १४ इस कारण यहोवा तेरी प्रजा, पुत्रों, स्त्रियों और सारी सम्पत्ति को बड़ी मार से मारेगा। १५ और तू अंतड़ियों के रोग से बहुत पीड़ित हो जाएगा, यहां तक कि उस रोग के कारण तेरी अंतड़ियां प्रतिदिन निकलती जाएंगी ॥

१६ और यहोवा ने पलिश्तियों को, और कूशियों के पास रहनेवाले अरबियों को, यहोराम के विरुद्ध उभारा। १७ और वे यहूदा पर चढ़ाई करके उस पर टूट पड़े, और राजभवन में जितनी सम्पत्ति मिली, उस सब को और राजा के पुत्रों और स्त्रियों को भी ले गए, यहां तक कि उसके लहुरे बेटे यहोआहाज को छोड़, उसके पास कोई भी पुत्र न रहा ॥

१८ इन सब के बाद यहोवा ने उसे अंतड़ियों के असाध्यरोग से पीड़ित कर दिया। १९ और कुछ समय के बाद अर्थात् दो वर्ष के अन्त में उस रोग के कारण उसकी अंतड़ियां निकल पड़ीं, और वह अत्यन्त पीड़ित होकर मर गया। और उसकी प्रजा ने जैसे उसके पुरखाओं के लिये सुगन्धद्रव्य जलाया था, वैसा उसके लिये कुछ न जलाया। २० वह जब राज्य करने लगा, तब बत्तीस वर्ष का था, और यरूशलेम में आठ वर्ष तक राज्य करता रहा; और सब को अप्रिय होकर जाता रहा। और उसको दाऊदपुर में मिट्टी दी गई, परन्तु राजाओं के कब्रिस्तान में नहीं ॥

(यहूदा में अहज्याह का राज्य)

२२ तब यरूशलेम के निवासियों ने उसके लहुरे पुत्र अहज्याह को उसके स्थान पर राजा बनाया; क्योंकि जो दल अरबियों के संग छावनी में आया था, उस ने उसके सब बड़े बेटों

को घात किया था सो यहूदा के राजा यहोराम का पुत्र अहज्याह राजा हुआ। २ जब अहज्याह राजा हुआ, तब वह बयालीस * वर्ष का था, और यरूशलेम में एक ही वर्ष राज्य किया, और उसकी माता का नाम अतल्याह था, जो ओम्री की पोती थी। ३ वह अहाब के घराने की सी चाल चला, क्योंकि उसकी माता उसे दुष्टता करने की सम्मति देती थी। ४ और वह अहाब के घराने की नाईं वह काम करता था जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, क्योंकि उसके पिता की मृत्यु के बाद वे उसको ऐसी सम्मति देते थे, जिस से उसका विनाश हुआ। ५ और वह उनकी सम्मति के अनुसार चलता था, और इस्राएल के राजा अहाब के पुत्र यहोराम के संग गिलाद के रामोत में अराम के राजा हजाएल से लड़ने को गया और अरामियों ने यहोराम को घायल किया। ६ सो राजा यहोराम इसलिये लौट गया कि यिज्रेल में उन घावों का इलाज कराए जो उसको अरामियों के हाथ से उस समय लगे थे जब वह हजाएल के साथ लड़ रहा था। और अहाब का पुत्र यहोराम जो यिज्रेल में रोगी था, इस कारण से यहूदा के राजा यहोराम का पुत्र अहज्याह † उसको देखने गया॥

७ और अहज्याह का विनाश यहोवा की ओर से हुआ, क्योंकि वह यहोराम के पास गया था। और जब वह वहां पहुंचा, तब यहोराम के संग निमशी के पुत्र येहू का साम्हना करने को निकल गया, जिसका अभिषेक यहोवा ने इसलिये कराया था कि वह अहाब के घराने को नाश करे। ८ और जब येहू अहाब के घराने को दण्ड दे रहा था, तब उसको यहूदा के हाकिम और अहज्याह के भतीजे जो अहज्याह के टहलुए थे, मिले, और उस ने उनको घात किया। ९ तब उस ने अहज्याह को ढूंढ़ा। वह शोमरोन में छिपा था, सो लोगों ने उसको पकड़ लिया और येहू के पास पहुंचाकर उसको मार डाला। तब यह कहकर उसको मिट्टी दी, कि यह यहोशापात का पोता है, जो अपने पूरे मन से यहोवा की खोज करता था। और अहज्याह के घराने में राज्य करने के योग्य कोई न रहा॥

(योआश का राज्य)

१० जब अहज्याह की माता अतल्याह ने देखा कि मेरा पुत्र मर गया, तब उस ने उठकर यहूदा के घराने के सारे राजवंश को नाश किया। ११ परन्तु यहोशावत जो राजा की बेटी थी, उस ने अहज्याह के पुत्र योआश को घात होनेवाले राजकुमारों के बीच से चुराकर धाई समेत बिछौने रखने की कोठरी में छिपा दिया। इस प्रकार राजा यहोराम की बेटी यहोशावत जो यहोयादा याजक की स्त्री और अहज्याह की बहिन थी, उस ने योआश को अतल्याह से ऐसा छिपा रखा कि वह उसे मार डालने न पाई। १२ और वह उसके पास परमेश्वर के भवन में छः वर्ष छिपा रहा, इतने दिनों तक अतल्याह देश पर राज्य करती रही॥

२३ सातवें वर्ष में यहोयादा ने हियाव बान्धकर यरोहाम के पुत्र अजर्याह, यहोहानान के पुत्र इश्माएल,

* २ राजा ८:२६ में बाईस।
† मूल में—अजर्याह।

ओबेद के पुत्र अजर्याह्, अदायाह् के पुत्र मासेयाह और जिक्री के पुत्र एलीशापात, इन शतपतियों से वाचा बान्धी। २ तब वे यहूदा में घूमकर यहूदा के सब नगरों में से लेवियों को और इस्राएल के पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुषों को इकट्ठा करके यरूशलेम को ले आए। ३ और उस सारी मण्डली ने परमेश्वर के भवन में राजा के साथ वाचा बान्धी, और यहोयादा ने उन से कहा, सुनो, यह राजकुमार राज्य करेगा जैसे कि यहोवा ने दाऊद के वंश के विषय कहा है। ४ तो तुम एक काम करो, अर्थात् तुम याजकों और लेवियों की एक तिहाई लोग जो विश्रामदिन को आनेवाले हो, वे द्वारपाली करें, ५ और एक तिहाई लोग राजभवन में रहें और एक तिहाई लोग नेव के फाटक के पास रहें; और सब लोग यहोवा के भवन के आंगनों में रहें। ६ परन्तु याजकों और सेवा टहल करनेवाले लेवियों को छोड़ और कोई यहोवा के भवन के भीतर न आने पाए; वे तो भीतर आएं, क्योंकि वे पवित्र हैं परन्तु सब लोग यहोवा के भवन की चौकसी करें। ७ और लेवीय लोग अपने अपने हाथ में हथियार लिये हुए राजा के चारों ओर रहें और जो कोई भवन के भीतर घुसे, वह मार डाला जाए। और तुम राजा के आते जाते उसके साथ रहना॥

८ यहोयादा याजक की इन सब आज्ञाओं के अनुसार लेवियों और सब यहूदियों ने किया। उन्हों ने विश्रामदिन को आनेवाले और विश्रामदिन को जाने-वाले दोनों दलों के, अपने अपने जनों को अपने साथ कर लिया, क्योंकि यहोयादा याजक ने किसी दल के लेवियों को विदा न किया था। ९ तब यहोयादा याजक ने शतपतियों को राजा दाऊद के बर्छे और भाले और ढालें जो परमेश्वर के भवन में थीं, दे दीं। १० फिर उस ने उन सब लोगों को अपने अपने हाथ में हथियार लिये हुए भवन के दक्खिनी कोने से लेकर, उत्तरी कोने तक वेदी और भवन के पास राजा के चारों ओर उसकी आड़ करके खड़ा कर दिया। ११ तब उन्हों ने राजकुमार को बाहर ला, उसके सिर पर मुकुट रखा और साक्षीपत्र देकर उसे राजा बनाया; और यहोयादा और उसके पुत्रों ने उसका अभिषेक किया, और लोग बोल उठे, राजा जीवित रहे॥

१२ जब अतल्याह् को उन लोगों का हल्ला, जो दौड़ते और राजा को सराहते थे सुन पड़ा, तब वह लोगों के पास यहोवा के भवन में गई। १३ और उस ने क्या देखा, कि राजा द्वार के निकट खम्भे के पास खड़ा है और राजा के पास प्रधान और तुरही बजानेवाले खड़े हैं, और सब लोग आनन्द कर रहे हैं और तुरहियां बजा रहे हैं और गाने बजानेवाले बाजे बजाते और स्तुति करते हैं। तब अतल्याह् अपने वस्त्र फाड़कर पुकारने लगी, राजद्रोह, राजद्रोह! १४ तब यहोयादा याजक ने दल के अधिकारी शतपतियों को बाहर लाकर उन से कहा, कि उसे अपनी पांतियों के बीच मे निकाल ले जाओ; और जो कोई उसके पीछे चले, वह तलवार से मार डाला जाए। याजक ने कहा, कि उसे यहोवा के भवन में न मार डालो। १५ तब उन्हों ने दोनों ओर से उसको जगह दी, और वह राजभवन के घोड़ाफाटक

के द्वार तक गई, और वहां उन्हों ने उसको मार डाला ।।

१६ तब यहोयादा ने अपने और सारी प्रजा के और राजा के बीच यहोवा की प्रजा होने की वाचा बन्धाई। १७ तब सब लोगों ने बाल के भवन को जाकर ढा दिया; और उसकी वेदियों और मूरतों को टुकड़े टुकड़े किया, और मत्तान नाम बाल के याजक को वेदियों के साम्हने ही घात किया। १८ तब यहोयादा ने यहोवा के भवन की सेवा के लिये उन लेवीय याजकों को ठहरा दिया, जिन्हें दाऊद ने यहोवा के भवन पर दल दल करके इसलिये ठहराया था, कि जैसे मूसा की व्यवस्था में लिखा है, वैसे ही वे यहोवा को होमबलि चढ़ाया करें, और दाऊद की चलाई हुई विधि * के अनुसार आनन्द करें और गाएं। १९ और उस ने यहोवा के भवन के फाटकों पर द्वारपालों को इसलिये खड़ा किया, कि जो किसी रीति से अशुद्ध हो, वह भीतर जाने न पाए। २० और वह शतपतियों और रईसों और प्रजा पर प्रभुता करनेवालों और देश के सब लोगों को साथ करके राजा को यहोवा के भवन से नीचे ले गया और ऊंचे फाटक से होकर राजभवन में आया, और राजा को राजगद्दी पर बैठाया। २१ तब सब लोग आनन्दित हुए और नगर में शान्ति हुई। अतल्याह तो तलवार से मार ही डाली गई थी ।।

२४ जब योआश राजा हुआ, तब वह सात वर्ष का था, और यरूशलेम में चालीस वर्ष तक राज्य करता रहा; उसकी माता का नाम सिब्या था, जो बेर्शेबा की थी। २ और जब तक यहोयादा याजक जीवित रहा, तब तक योआश वह काम करता रहा जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है। ३ और यहोयादा ने उसके दो ब्याह कराए और उस से बेटे-बेटियां उत्पन्न हुईं ।।

४ इसके बाद योआश के मन में यहोवा के भवन की मरम्मत करने की मनसा उपजी। ५ तब उस ने याजकों और लेवियों को इकट्ठा करके कहा, प्रति वर्ष यहूदा के नगरों में जा जाकर सब इस्राएलियों से रुपये लिया करो जिस से तुम्हारे परमेश्वर के भवन की मरम्मत हो; देखो इस काम में फुर्ती करो। तौभी लेवियों ने कुछ फुर्ती न की। ६ तब राजा ने यहोयादा महायाजक को बुलवा कर पूछा, क्या कारण है कि तू ने लेवियों को दृढ़ आज्ञा नहीं दी कि वे यहूदा और यरूशलेम से उस चन्दे के रुपए ले आएं जिसका नियम यहोवा के दास मूसा और इस्राएल की मण्डली ने साक्षीपत्र के तम्बू के निमित्त चलाया था। ७ उस दुष्ट स्त्री अतल्याह के बेटों ने तो परमेश्वर के भवन को तोड़ दिया और यहोवा के भवन की सब पवित्र की हुई वस्तुएं बाल देवताओं को दे दी थीं ।।

८ और राजा ने एक सन्दूक बनाने की आज्ञा दी और वह यहोवा के भवन के फाटक के पास बाहर रखा गया। ९ तब यहूदा और यरूशलेम में यह प्रचार किया गया कि जिस चन्दे का नियम परमेश्वर के दास मूसा ने जंगल में इस्राएल में चलाया था, उसके रुपए यहोवा के निमित्त ले आओ। १० तो सब हाकिम और प्रजा के सब लोग आनन्दित हो रुपए लाकर जब तक चन्दा पूरा न हुआ

* मूल में—दाऊद के हाथों।

तब तक सन्दूक में डालते गए। ११ और जब जब वह सन्दूक लेवियों के हाथ से राजा के प्रधानों के पास पहुंचाया जाता और यह जान पड़ता था कि उस में रुपए बहुत हैं, तब तब राजा के प्रधान और महायाजक का नाइब आकर सन्दूक को खाली करते और तब उसे फिर उसके स्थान पर रख देते थे। उन्हों ने प्रतिदिन ऐसा किया और बहुत रुपए इकट्ठा किए। १२ तब राजा और यहोयादा ने वह रुपए यहोवा के भवन में काम करनेवालों को दे दिए, और उन्हों ने राजों और बढ़इयों को यहोवा के भवन के सुधारने के लिये, और लोहारों और ठठेरों को यहोवा के भवन की मरम्मत करने के लिये मजदूरी पर रखा। १३ और कारीगर काम करते गए और काम पूरा होता गया * और उन्हों ने परमेश्वर का भवन जैसा का तैसा बनाकर दृढ़ कर दिया। १४ जब उन्हों ने वह काम निपटा दिया, तब वे शेष रुपए राजा और यहोयादा के पास ले गए, और उन से यहोवा के भवन के लिये पात्र बनाए गए, अर्थात् सेवा टहल करने और होमबलि चढ़ाने के पात्र और धूपदान आदि सोने चान्दी के पात्र। और जब तक यहोयादा जीवित रहा, तब तक यहोवा के भवन में होमबलि नित्य चढ़ाए जाते थे।।

१५ परन्तु यहोयादा बूढ़ा हो गया और दीर्घायु होकर मर गया। जब वह मर गया तब एक सौ तीस वर्ष का था। १६ और दाऊदपुर में राजाओं के बीच उसको मिट्टी दी गई, क्योंकि उस ने इस्राएल में और परमेश्वर के और उसके भवन के विषय में भला किया था।।

१७ यहोयादा के मरने के बाद यहूदा के हाकिमों ने राजा के पास जाकर उसे दण्डवत की, और राजा ने उनकी मानी। १८ तब वे अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा का भवन छोड़कर अशेरों और मूरतों की उपासना करने लगे। सो उनके ऐसे दोषी होने के कारण परमेश्वर का क्रोध यहूदा और यरूशलेम पर भड़का। १९ तौभी उस ने उनके पास नबी भेजे कि उनको यहोवा के पास फेर लाएं; और इन्हों ने उन्हें चिता दिया, परन्तु उन्हों ने कान न लगाया।।

२० और परमेश्वर का आत्मा यहोयादा याजक के पुत्र जकर्याह में समा गया, और वह ऊंचे स्थान पर खड़ा होकर लोगों से कहने लगा, परमेश्वर यों कहता है, कि तुम यहोवा की आज्ञाओं को क्यों टालते हो? ऐसा करके तुम भाग्यवान नहीं हो सकते, देखो, तुम ने तो यहोवा को त्याग दिया है, इस कारण उस ने भी तुम को त्याग दिया। २१ तब लोगों ने उस से द्रोह की गोष्ठी करके, राजा की आज्ञा से यहोवा के भवन के आंगन में उसको पत्थरवाह किया। २२ यों राजा योआश ने वह प्रीति भूलकर जो यहोयादा ने उस से की थी, उसके पुत्र को घात किया। और मरते समय उस ने कहा यहोवा इस पर दृष्टि करके इसका लेखा ले।।

२३ नये वर्ष के लगते अरामियों की सेना ने उस पर चढ़ाई की, और यहूदा और यरूशलेम आकर प्रजा में से सब हाकिमों को नाश किया और उनका सब धन लूटकर दमिश्क के राजा के पास भेजा। २४ अरामियों की सेना थोड़े

* मूल में—कान पर पटी चढ़ी।

ही पुरुषों की तो आई, परन्तु यहोवा ने एक बहुत बड़ी सेना उनके हाथ कर दी, क्योंकि उन्हों ने अपने पितरों के परमेश्वर को त्याग दिया था। और योआश को भी उन्हों ने दण्ड दिया ॥

२५ और जब वे उसे बहुत ही रोगी छोड़ गए, तब उसके कर्मचारियों ने यहोयादा याजक के पुत्रों के खून के कारण उस से द्रोह की गोष्ठी करके, उसे उसके बिछौने पर ही ऐसा मारा, कि वह मर गया; और उन्हों ने उसको दाऊदपुर में मिट्टी दी, परन्तु राजाओं के क़ब्रिस्तान में नहीं। २६ जिन्हों ने उस से राजद्रोह की गोष्ठी की, वे ये थे, अर्थात् अम्मोनिन, शिमात का पुत्र जाबाद और शिम्रित, मोआबिन का पुत्र यहोजाबाद। २७ उसके बेटों के विषय और उसके विरुद्ध, जो बड़े दण्ड की नबूवत हुई, उसके और परमेश्वर के भवन के बनने के विषय ये सब बातें राजाओं के वृत्तान्त की पुस्तक में लिखी हैं। और उसका पुत्र अमस्याह उसके स्थान पर राजा हुआ ॥

(अमस्याह का राज्य)

२५ जब अमस्याह राज्य करने लगा तब वह पचीस वर्ष का था, और यरूशलेम में उनतीस वर्ष तक राज्य करता रहा; और उसकी माता का नाम यहोअद्दान था, जो यरूशलेम की थी। २ उस ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है, परन्तु खरे मन से न किया। ३ जब राज्य उसके हाथ में स्थिर हो गया, तब उस ने अपने उन कर्मचारियों को मार डाला जिन्हों ने उसके पिता राजा को मार डाला था। ४ परन्तु उस ने उनके लड़केबालों को न मारा क्योंकि उस ने यहोवा की उस आज्ञा के अनुसार किया, जो मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखी है, कि पुत्र के कारण पिता न मार डाला जाए, और न पिता के कारण पुत्र मार डाला जाए, जिस ने पाप किया हो वही उस पाप के कारण मार डाला जाए ॥

५ और अमस्याह ने यहूदा को वरन सारे यहूदियों और बिन्यामीनियों को इकट्ठा करके उनको, पितरों के घरानों के अनुसार सहस्रपतियों और शतपतियों के अधिकार में ठहराया; और उन में से जितनों की अवस्था बीस वर्ष की अथवा उस से अधिक थी, उनकी गिनती करके तीन लाख भाला चलानेवाले और ढाल उठानेवाले बड़े बड़े योद्धा पाए। ६ फिर उस ने एक लाख इस्राएली शूरवीरों को भी एक सौ किक्कार चान्दी देकर बुलवा रखा। ७ परन्तु परमेश्वर के एक जन ने उसके पास आकर कहा, हे राजा इस्राएल की सेना तेरे साथ जाने न पाए; क्योंकि यहोवा इस्राएल अर्थात् एप्रैम की कुल सन्तान के संग नहीं रहता। ८ यदि तू जाकर पुरुषार्थ करे; और युद्ध के लिये हियाव बान्धे, तौभी परमेश्वर तुझे शत्रुओं के साम्हने गिराएगा, क्योंकि सहायता करने और गिरा देने दोनों में परमेश्वर सामर्थी है। ९ अमस्याह ने परमेश्वर के भक्त से पूछा, फिर जो सौ किक्कार चान्दी मैं इस्राएली दल को दे चुका हूं, उसके विषय क्या करूं? परमेश्वर के भक्त ने उत्तर दिया, यहोवा तुझे इस से भी बहुत अधिक दे सकता है। १० तब अमस्याह ने उन्हें अर्थात् उस दल को जो एप्रैम की ओर से उसके पास आया था, अलग कर दिया, कि वे

अपने स्थान को लौट जाएं। तब उनका क्रोध यहूदियों पर बहुत भड़क उठा, और वे अत्यन्त क्रोधित होकर अपने स्थान को लौट गए। ११ परन्तु अमस्याह हियाव बान्धकर अपने लोगों को ले चला, और लोन की तराई में जाकर, दस हजार सेईरियों को मार डाला। १२ और यहूदियों ने दस हजार को बन्धुआ करके चट्टान की चोटी पर ले गये, और चट्टान की चोटी पर से गिरा दिया, सो वे सब चूर चूर हो गए। १३ परन्तु उस दल के पुरुष जिसे अमस्याह ने लौटा दिया कि वे उसके साथ युद्ध करने को न जाएं, शोमरोन से बेथोरोन तक यहूदा के सब नगरों पर टूट पड़े, और उनके तीन हजार निवासी मार डाले और बहुत लूट ले ली।।

१४ जब अमस्याह एदोमियों का संहार करके लौट आया, तब उस ने सेईरियों के देवताओं को ले आकर अपने देवता करके खड़ा किया, और उन्हीं के साम्हने दण्डवत करने, और उन्हीं के लिये धूप जलाने लगा। १५ तब यहोवा का क्रोध अमस्याह पर भड़क उठा और उस ने उसके पास एक नबी भेजा जिस ने उस से कहा, जो देवता अपने लोगों को तेरे हाथ से बचा न सके, उनकी खोज में तू क्यों लगा है? १६ वह उस से कह ही रहा था कि उस ने उस से पूछा, क्या हम ने तुझे राजमन्त्री ठहरा दिया है? चुप रह! क्या तू मार खाना चाहता है? तब वह नबी यह कहकर चुप हो गया, कि मुझे मालूम है कि परमेश्वर ने तुझे नाश करने को ठाना है, क्योंकि तू ने ऐसा किया है और मेरी सम्मति नहीं मानी।।

१७ तब यहूदा के राजा अमस्याह ने सम्मति लेकर, इस्राएल के राजा योआश के पास, जो येहू का पोता और यहोआहाज का पुत्र था, यों कहला भेजा, कि आ हम एक दूसरे का साम्हना करें। १८ इस्राएल के राजा योआश ने यहूदा के राजा अमस्याह के पास यों कहला भेजा, कि लबानोन पर की एक झड़बेरी ने लबानोन के एक देवदार के पास कहला भेजा, कि अपनी बेटी मेरे बेटे को ब्याह दे; इतने में लबानोन का कोई वन पशु पास से चला गया और उस झड़बेरी को रौंद डाला। १९ तू कहता है, कि मैं ने एदोमियों को जीत लिया है; इस कारण तू फूल उठा और बड़ाई मारता है! अपने घर में रह जा; तू अपनी हानि के लिये यहां क्यों हाथ डालता है, इस मे तू क्या, वरन यहूदा भी नीचा खाएगा।।

२० परन्तु अमस्याह ने न माना। यह तो परमेश्वर की ओर से हुआ, कि वह उन्हें उनके शत्रुओं के हाथ कर दे, क्योंकि वे एदोम के देवताओं की खोज में लग गए थे। २१ तब इस्राएल के राजा योआश ने चढ़ाई की और उस ने और यहूदा के राजा अमस्याह ने यहूदा देश के बेतशेमेश में एक दूसरे का साम्हना किया। २२ और यहूदा इस्राएल से हार गया, और हर एक अपने अपने डेरे को भागा। २३ तब इस्राएल के राजा योआश ने यहूदा के राजा अमस्याह को, जो यहोआहाज का पोता और योआश का पुत्र था, बेतशेमेश में पकड़ा और यरूशलेम को ले गया और यरूशलेम की शहरपनाह में से एप्रैमी फाटक से कोनेवाले फाटक तक चार सौ हाथ गिरा दिए। २४ और जितना सोना चान्दी और जितने पात्र परमेश्वर के भवन में ओबेदेदोम के पास

मिले, और राजभवन में जितना खजाना था, उस सब को और बन्धक लोगों को भी लेकर वह शोमरोन को लौट गया ॥

२५ यहोआहाज के पुत्र इस्राएल के राजा योआश के मरने के बाद योआश का पुत्र यहूदा का राजा अमस्याह पन्द्रह वर्ष तक जीवित रहा। २६ आदि से अन्त तक अमस्याह के और काम, क्या यहूदा और इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? २७ जिस समय अमस्याह यहोवा के पीछे चलना छोड़कर फिर गया था उस समय से यरूशलेम में उसके विरुद्ध द्रोह की गोष्ठी होने लगी, और वह लाकीश को भाग गया। सो दूतों ने लाकीश तक उसका पीछा कर के, उसको वहीं मार डाला। २८ तब वह घोड़ों पर रखकर पहुंचाया गया और उसे उसके पुरखाओं के बीच यहूदा के नगर में मिट्टी दी गई ॥

(उज्जियाह का राज्य)

२६ तब सब यहूदी प्रजा ने उज्जियाह को लेकर जो सोलह वर्ष का था, उसके पिता अमस्याह के स्थान पर राजा बनाया। २ जब राजा अमस्याह अपने पुरखाओं के संग सो गया तब उज्जियाह ने एलोत नगर को दृढ़ कर के यहूदा में फिर मिला लिया। ३ जब उज्जियाह राज्य करने लगा, तब वह सोलह वर्ष का था। और यरूशलेम में बावन वर्ष तक राज्य करता रहा, और उसकी माता का नाम यकोल्याह था, जो यरूशलेम की थी। ४ जैसे उसका पिता अमस्याह, किया करता था वैसा ही उसने भी किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था। ५ और जकर्याह के दिनों में जो परमेश्वर के दर्शन के विषय समझ रखता था,* वह परमेश्वर की खोज में लगा रहता था; और जब तक वह यहोवा की खोज में लगा रहा, तब तक परमेश्वर उसको भाग्यवान किए रहा ॥

६ तब उस ने जाकर पलिश्तियों से युद्ध किया, और गत, यब्ने और अशदोद की शहरपनाहें गिरा दीं, और अशदोद के आस-पास और पलिश्तियों के बीच में नगर बसाए। ७ और परमेश्वर ने पलिश्तियों और गूर्बालवासी, अरबियों और मूनियों के विरुद्ध उसकी सहायता की। ८ और अम्मोनी उज्जियाह को भेंट देने लगे, वरन उसकी कीर्त्ति मिस्र के सिवाने तक भी फैल गई, क्योंकि वह अत्यन्त सामर्थी हो गया था। ९ फिर उज्जियाह ने यरूशलेम में कोने के फाटक और तराई के फाटक और शहरपनाह के मोड़ पर गुम्मट बनवाकर दृढ़ किए। १० और उसके बहुत जानवर थे इसलिये उस ने जंगल में और नीचे के देश और चौरस देश में गुम्मट बनवाए और बहुत से हौद खुदवाए, और पहाड़ों पर और कर्मेल में उसके किसान और दाख की बारियों के माली थे, क्योंकि वह खेती किसानी करनेवाला था। ११ फिर उज्जियाह के योद्धाओं की एक सेना थी जिनकी गिनती यीएल मुंशी और मासेयाह सरदार, हनन्याह नामक राजा के एक हाकिम की आज्ञा से करते थे, और उसके अनुसार वह दल बान्धकर लड़ने को जाती थी। १२ पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुष जो शूरवीर थे, उनकी पूरी गिनती दो हजार छः सौ थी। १३ और उनके अधिकार में तीन लाख साढ़े सात हजार की एक बड़ी सेना थी, जो शत्रुओं

* या जो परमेश्वर का भय मानने की शिक्षा देता था।

के विरुद्ध राजा की सहायता करने को बड़े बल से युद्ध करनेवाले थे। १४ इनके लिये अर्थात् पूरी सेना के लिये उज्जिय्याह ने ढालें, भाले, टोप, झिलम, धनुष और गोफन के पत्थर तैयार किए। १५ फिर उस ने यरूशलेम में गुम्मटों और कंगूरों पर रखने को चतुर पुरुषों के निकाले हुए यन्त्र भी बनवाए जिनके द्वारा तीर और बड़े बड़े पत्थर फेंके जाते थे। और उसकी कीर्त्ति दूर दूर तक फैल गई, क्योंकि उसे अद्भुत सहायता यहां तक मिली कि वह सामर्थी हो गया।।

१६ परन्तु जब वह सामर्थी हो गया, तब उसका मन फूल उठा; और उस ने बिगड़कर अपने परमेश्वर यहोवा का विश्वासघात किया, अर्थात् वह धूप की वेदी पर धूप जलाने को यहोवा के मन्दिर में घुस गया। १७ और अजर्याह याजक उसके बाद भीतर गया, और उसके संग यहोवा के अस्सी याजक भी जो वीर थे गए। १८ और उन्हों ने उज्जिय्याह राजा का साम्हना करके उस से कहा, हे उज्जिय्याह यहोवा के लिये धूप जलाना तेरा काम नहीं, हारून की सन्तान अर्थात् उन याजकों ही का काम है, जो धूप जलाने को पवित्र किए गए हैं। तू पवित्रस्थान से निकल जा; तू ने विश्वासघात किया है, यहोवा परमेश्वर की ओर से यह तेरी महिमा का कारण न होगा। १९ तब उज्जिय्याह धूप जलाने को धूपदान हाथ में लिये हुए झुंझला उठा। और वह याजकों पर झुंझला रहा था, कि याजकों के देखते देखते यहोवा के भवन में धूप की वेदी के पास ही उसके माथे पर कोढ़ प्रगट हुआ। २० और अजर्याह महायाजक और सब याजकों ने उस पर दृष्टि की, और क्या देखा कि उसके माथे पर कोढ़ निकला है! तब उन्हों ने उसको वहां से झटपट निकाल दिया, वरन यह जानकर कि यहोवा ने मुझे कोढ़ी कर दिया है, उस ने आप बाहर जाने को उतावली की। २१ और उज्जिय्याह राजा मरने के दिन तक कोढ़ी रहा, और कोढ़ के कारण अलग एक घर में रहता था, वह तो यहोवा के भवन में जाने न पाता था*। और उसका पुत्र योताम राजघराने के काम पर नियुक्त किया गया और वह लोगों का न्याय भी करता था।।

२२ आदि से अन्त तक उज्जिय्याह के और कामों का वर्णन तो आमोस के पुत्र यशायाह नबी ने लिखा है। २३ निदान उज्जिय्याह अपने पुरखाओं के संग सो गया, और उसको उसके पुरखाओं के निकट राजाओं के मिट्टी देने के खेत में मिट्टी दी गई क्योंकि उन्हों ने कहा, कि वह कोढ़ी है। और उसका पुत्र योताम उसके स्थान पर राज्य करने लगा।।

(योताम का राज्य)

२७ जब योताम राज्य करने लगा तब वह पचीस वर्ष का था, और यरूशलेम में सोलह वर्ष तक राज्य करता रहा। और उसकी माता का नाम यरूशा था, जो सादोक की बेटी थी। २ उस ने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है, अर्थात् जैसा उसके पिता उज्जिय्याह ने किया था, ठीक वैसा ही उस ने भी किया: तौभी वह यहोवा के मन्दिर में न घुसा। और प्रजा के लोग तब भी बिगड़ी चाल चलते थे। ३ उसी ने यहोवा के भवन के ऊपरवाले फाटक को बनाया, और ओपेल की शहरपनाह पर बहुत कुछ बनवाया। ४ फिर उस ने यहूदा के पहाड़ी देश में कई नगर दृढ़ किए, और जंगलों मे गढ़ और गुम्मट बनाए। ५ और वह अम्मोनियों के राजा से युद्ध

* मूल में—भवन से कटा था।

करके उन पर प्रबल हो गया। उसी वर्ष अम्मोनियों ने उसको सौ किक्कार चांदी, और दस दस हजार कोर गेहूं और जव दिया। और फिर दूसरे और तीसरे वर्ष में भी उन्हों ने उसे उतना ही दिया। ६ यों योताम सामर्थी हो गया, क्योंकि वह अपने आप को अपने परमेश्वर यहोवा के सम्मुख जानकर सीधी चाल चलता था। ७ योताम के और काम और उसके सब युद्ध और उसकी चाल चलन, इन सब बातों का वर्णन इस्राएल और यहूदा के राजाओं के इतिहास में लिखा है। ८ जब वह राजा हुआ, तब पचीसे वर्ष का था; और वह यरूशलेम में सोलह वर्ष तक राज्य करता रहा। ९ निदान योताम अपने पुरखाओं के संग सो गया और उसे दाऊदपुर में मिट्टी दी गई। और उसका पुत्र आहाज उसके स्थान पर राज्य करने लगा॥

(आहाज का राज्य)

२८ जब आहाज राज्य करने लगा तब वह बीस वर्ष का था, और सोलह वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। और अपने मूलपुरुष दाऊद के समान काम नहीं किया, जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था, २ परन्तु वह इस्राएल के राजाओं की सी चाल चला, और बाल देवताओं की मूर्तियां ढलवाकर बनाईं; ३ और हिन्नोम के बेटे की तराई में धूप जलाया, और उन जातियों के घिनौने कामों के अनुसार जिन्हें यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने से देश से निकाल दिया था, अपने लड़केवालों को आग में होम कर दिया। ४ और ऊंचे स्थानों पर, और पहाड़ियों पर, और सब हरे वृक्षों के तले वह बलि चढ़ाया और धूप जलाया करता था॥

५ इसलिये उसके परमेश्वर यहोवा ने उसको अरामियों के राजा के हाथ कर दिया, और वे उसको जीतकर, उसके बहुत से लोगों को बन्धुआ बनाके दमिश्क को ले गए। और वह इस्राएल के राजा के वश में कर दिया गया, जिस ने उसे बड़ी मार से मारा। ६ और रमल्याह के पुत्र पेकह ने, यहूदा में एक ही दिन में एक लाख बीस हजार लोगों को जो सब के सब वीर थे, घात किया, क्योंकि उन्हों ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को त्याग दिया था। ७ और जिक्री नामक एक एप्रैमी वीर ने मासेयाह नामक एक राजपुत्र को, और राजभवन के प्रधान अज्रीकाम को, और एलकाना को, जो राजा का मंत्री था, मार डाला॥

८ और इस्राएली अपने भाइयों में से स्त्रियों, बेटों और बेटियों को मिलाकर दो लाख लोगों को बन्धुआ बनाके, और उनकी बहुत लूट भी छीनकर शोमरोन की ओर ले चले। ९ परन्तु वहां ओदेद नामक यहोवा का एक नबी था; वह शोमरोन को आनेवाली सेना से मिलकर उन से कहने लगा, सुनो, तुम्हारे पितरों के परमेश्वर यहोवा ने यहूदियों पर झुंझलाकर उनको तुम्हारे हाथ कर दिया है, और तुम ने उनको ऐसा क्रोध करके घात किया जिसकी चिल्लाहट स्वर्ग को पहुंच गई है। १० और अब तुम ने ठाना है कि यहूदियों और यरूशलेमियों को अपने दास-दासी बनाकर दबाए रखो। क्या तुम भी अपने परमेश्वर यहोवा के यहां दोषी नहीं हो? ११ इसलिये अब मेरी सुनो और इन बन्धुओं को जिन्हें तुम अपने भाइयों में से बन्धुआ बनाके ले आए हो, लौटा दो, यहोवा का क्रोध तो तुम पर भड़का है। १२ तब एप्रैमियों के कितने मुख्य पुरुष अर्थात् योहानान का पुत्र अजर्याह, मशिल्लेमोत का

पुत्र बेरेक्याह, शल्लूम का पुत्र यहिजकिय्याह, और हद्लै का पुत्र अमासा, लड़ाई से आनेवालों का साम्हना करके, उन से कहने लगे। १३ तुम इन बन्धुओं को यहां मत लाओ; क्योंकि तुम ने वह बात ठानी है जिसके कारण हम यहोवा के यहां दोषी हो जाएंगे, और उस से हमारा पाप और दोष बढ़ जाएगा, हमारा दोष तो बड़ा है और इस्राएल पर बहुत क्रोध भड़का है। १४ तब उन हथियार बन्धों ने बन्धुओं और लूट को हाकिमों और सारी सभा के साम्हने छोड़ दिया। १५ तब जिन पुरुषों के नाम ऊपर लिखे हैं, उन्हों ने उठकर बन्धुओं को ले लिया, और लूट में से सब नंगे लोगों को कपड़े, और जूतियां पहिनाईं; और खाना खिलाया, और पानी पिलाया, और तेल मला; और तब निर्बल लोगों को गदहों पर चढ़ाकर, यरीहो को जो खजूर का नगर कहलाता है, उनके भाइयों के पास पहुंचा दिया। तब वे शोमरोन को लौट आए।।

१६ उस समय राजा आहाज ने अश्शूर के राजाओं के पास दूत भेजकर सहायता मांगी। १७ क्योंकि एदोमियों ने यहूदा में आकर उसको मारा, और बन्धुओं को ले गए थे। १८ और पलिश्तियों ने नीचे के देश और यहूदा के दक्खिन देश के नगरों पर चढ़ाई करके, बेतशेमेश, अय्यालोन और गदेरोत को, और अपने अपने गांवों समेत सोको, तिम्ना, और गिमजो को ले लिया; और उन में रहने लगे थे। १९ यों यहोवा ने इस्राएल के राजा आहाज के कारण यहूदा को दबा दिया, क्योंकि वह निरंकुश होकर चला, और यहोवा से बड़ा विश्वासघात किया। २० तब अश्शूर का राजा तिलगतपिलनेसेर उसके विरुद्ध आया, और उसको कष्ट दिया; दृढ़ नहीं किया। २१ आहाज ने तो यहोवा के भवन और राजभवन और हाकिमों के घरों में से धन निकालकर * अश्शूर के राजा को दिया, परन्तु इससे उसकी कुछ सहायता न हुई।।

२२ और क्लेश के समय राजा आहाज ने यहोवा से और भी विश्वासघात किया। २३ और उस ने दमिश्क के देवताओं के लिये जिन्हों ने उसको मारा था, बलि चढ़ाया; क्योंकि उस ने यह सोचा, कि आरामी राजाओं के देवताओं ने उनकी सहायता की, तो मैं उनके लिये बलि चढ़ाऊंगा कि वे मेरी सहायता करें। परन्तु वे उसके और सारे इस्राएल के पतन का कारण हुए। २४ फिर आहाज ने परमेश्वर के भवन के पात्र बटोरकर तुड़वा डाले, और यहोवा के भवन के द्वारों को बन्द कर दिया; और यरूशलेम के सब कोनों में वेदियां बनाईं। २५ और यहूदा के एक एक नगर में उस ने पराये देवताओं को धूप जलाने के लिये ऊंचे स्थान बनाए, और अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को रिस दिलाई। २६ और उसके और कामों, और आदि से अन्त तक उसकी पूरी चाल चलन का वर्णन यहूदा और इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखा है। २७ निदान आहाज अपने पुरखाओं के संग सो गया और उसको यरूशलेम नगर में मिट्टी दी गई, परन्तु वह इस्राएल के राजाओं के कब्रिस्तान में पहुंचाया न गया। और उसका पुत्र हिजकिय्याह उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

(हिजकिय्याह के सुधार के काम)

२९ जब हिजकिय्याह राज्य करने लगा तब वह पचीस वर्ष का था,

---

* मूल में—बांटकर।

और उनतीस वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। और उसकी माता का नाम अबिय्याह था, जो जकर्याह की बेटी थी। २ जैसे उसके मूलपुरुष दाऊद ने किया था अर्थात् जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था वैसा ही उस ने भी किया ।।

३ अपने राज्य के पहिले वर्ष के पहिले महीने में उस ने यहोवा के भवन के द्वार खुलवा दिए, और उनकी मरम्मत भी कराई। ४ तब उस ने याजकों और लेवियों को ले आकर पूर्व के चौक में इकट्ठा किया। ५ और उन से कहने लगा, हे लेवियो मेरी सुनो! अब अपने अपने को पवित्र करो, और अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा के भवन को पवित्र करो, और पवित्रस्थान में से मैल निकालो। ६ देखो हमारे पुरखाओं ने विश्वासघात करके वह कर्म किया था, जो हमारे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में बुरा है और उसको तज करके यहोवा के निवास से मुंह फेरकर उसको पीठ दिखाई थी। ७ फिर उन्हों ने ओसारे के द्वार बन्द किए, और दीपकों को बुझा दिया था; और पवित्र स्थान में इस्राएल के परमेश्वर के लिये न तो धूप जलाया और न होमबलि चढ़ाया था। ८ इसलिये यहोवा का क्रोध यहूदा और यरूशलेम पर भड़का है, और उस ने ऐसा किया, कि वे मारे मारे फिरें और चकित होने और ताली बजाने का कारण हो जाएं, जैसे कि तुम अपनी आंखों से देख रहे हो। ९ देखो, इस कारण हमारे बाप तलवार से मारे गए, और हमारे बेटे-बेटियां और स्त्रियां बन्धुआई में चली गई हैं। १० अब मेरे मन ने यह निर्णय किया है कि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा से वाचा बान्धूं, इसलिये कि उसका भड़का हुआ क्रोध हम पर से दूर हो जाए। ११ हे मेरे बेटो, ढिलाई न करो देखो, यहोवा ने अपने सम्मुख खड़े रहने, और अपनी सेवा टहल करने, और अपने टहलुए और धूप जलानेवाले का काम करने के लिये तुम्हीं को चुन लिया है ।।

१२ तब लेवीय उठ खड़े हुए, अर्थात् कहातियों में से अमासै का पुत्र महत, और अजर्याह का पुत्र योएल, और मरारियों में से अब्दी का पुत्र कीश, और यहल्लेलेल का पुत्र अजर्याह, और गेर्शोनियों में से जिम्मा का पुत्र योआह, और योआह का पुत्र एदेन। १३ और एलीसापान की सन्तान में से शिम्री, और यूएल और आसाप की सन्तान में से जकर्याह और मत्तन्याह। १४ और हेमान की सन्तान में से यहूएल और शिमी, और यदूतून की सन्तान में से शमायाह और उज्जीएल। १५ इन्हों ने अपने भाइयों को इकट्ठा किया और अपने अपने को पवित्र करके राजा की उस आज्ञा के अनुसार जो उस ने यहोवा से वचन पाकर दी थी, यहोवा के भवन के शुद्ध करने के लिये भीतर गए। १६ तब याजक यहोवा के भवन के भीतरी भाग को शुद्ध करने के लिये उस में जाकर यहोवा के मन्दिर में जितनी अशुद्ध वस्तुएं मिलीं उन सब को निकालकर यहोवा के भवन के आंगन में ले गए, और लेवियों ने उन्हें उठाकर बाहर किद्रोन के नाले में पहुंचा दिया। १७ पहिले महीने के पहिले दिन को उन्हों ने पवित्र करने का काम आरम्भ किया, और उसी महीने के आठवें दिन को वे यहोवा के ओसारे तक आ गए। इस प्रकार उन्हों ने यहोवा के भवन को आठ दिन में पवित्र किया, और पहिले महीने के सोलहवें दिन को उन्हों ने उस काम को पूरा किया। १८ तब उन्हों ने राजा हिजकिय्याह के पास भीतर जाकर कहा, हम यहोवा के पूरे भवन को और पात्रों समेत होमबलि की वेदी

और भेंट की रोटी की मेज को भी शुद्ध कर चुके। १९ और जितने पात्र राजा आहाज ने अपने राज्य में विश्वासघात करके फेंक दिए थे, उनको भी हम ने ठीक करके पवित्र किया है; और वे यहोवा की वेदी के साम्हने रखे हुए हैं ।।

२० तब राजा हिजकिय्याह सबेरे उठकर नगर के हाकिमों को इकट्ठा करके, यहोवा के भवन को गया। २१ तब वे राज्य और पवित्रस्थान और यहूदा के निमित्त सात बछड़े, सात मेढ़े, सात भेड़ के बच्चे, और पापबलि के लिये सात बकरे ले आए, और उस ने हारून की सन्तान के लेवियों को आज्ञा दी कि इन सब को यहोवा की वेदी पर चढ़ाएं। २२ तब उन्हों ने बछड़े बलि किए, और याजकों ने उनका लोहू लेकर वेदी पर छिड़क दिया; तब उन्हों ने मेढ़े बलि किए, और उनका लोहू भी वेदी पर छिड़क दिया। और भेड़ के बच्चे बलि किए, और उनका भी लोहू वेदी पर छिड़क दिया। २३ तब वे पापबलि के बकरों को राजा और मण्डली के समीप ले आए और उन पर अपने अपने हाथ रखे। २४ तब याजकों ने उनको बलि करके, उनका लोहू वेदी पर छिड़क कर पापबलि किया, जिस से सारे इस्राएल के लिये प्रायश्चित्त किया जाए। क्योंकि राजा ने सारे इस्राएल के लिये होमबलि और पापबलि किए जाने की आज्ञा दी थी ।।

२५ फिर उस ने दाऊद और राजा के दर्शी गाद, और नातान नबी की आज्ञा के अनुसार जो यहोवा की ओर से उसके नबियों के द्वारा आई थी, झांझ, सारंगियां और वीणाएं लिए हुए लेवियों को यहोवा के भवन में खड़ा किया। २६ तब लेवीय दाऊद के चलाए बाजे लिए हुए, और याजक तुरहियां लिए हुए खड़े हुए। २७ तब हिजकिय्याह ने वेदी पर होमबलि चढ़ाने की आज्ञा दी, और जब होमबलि चढ़ने लगी, तब यहोवा का गीत आरम्भ हुआ, और तुरहियां और इस्राएल के राजा दाऊद के बाजे बजने लगे। २८ और मण्डली के सब लोग दण्डवत करते और गानेवाले गाते और तुरही फूंकनेवाले फूंकते रहे; यह सब तब तक होता रहा, जब तक होमबलि चढ़ न चुकी। २९ और जब बलि चढ़ चुकी, तब राजा और जितने उसके संग वहां थे, उन सभों ने सिर झुकाकर दण्डवत किया। ३० और राजा हिजकिय्याह और हाकिमों ने लेवियों को आज्ञा दी, कि दाऊद और आसाप दर्शी के भजन * गाकर यहोवा की स्तुति करें। और उन्हों ने आनन्द के साथ स्तुति की और सिर नवाकर दण्डवत किया ।।

३१ तब हिजकिय्याह कहने लगा, अब तुम ने यहोवा के निमित्त अपना अर्पण किया है; इसलिये समीप आकर यहोवा के भवन में मेलबलि और धन्यवादबलि पहुंचाओ। तब मण्डली के लोगों ने मेलबलि और धन्यवादबलि पहुंचा दिए, और जितने अपनी इच्छा से देना चाहते थे उन्हों ने भी होमबलि पहुंचाए। ३२ जो होमबलि पशु मण्डली के लोग ले आए, उनकी गिनती यह थी; सत्तर बैल, एक सौ मेढ़े, और दो सौ भेड़ के बच्चे; ये सब यहोवा के निमित्त होमबलि के काम में आए। ३३ और पवित्र किए हुए पशु, छः सौ बैल और तीन हजार भेड़-बकरियां थीं। ३४ परन्तु याजक ऐसे थोड़े थे, कि वे सब होमबलि पशुओं की खालें न उतार सके, तब उनके भाई लेवीय उस समय तक उनकी सहायता करते रहे जब तक वह काम निपट न

---

* मूल में—वचन।

गया, और याजकों ने अपने को पवित्र न किया; क्योंकि लेवीय अपने को पवित्र करने के लिये पवित्र याजकों से अधिक सीधे मन के थे। ३५ और फिर होमबलि पशु बहुत थे, और मेलबलि पशुओं की चर्बी भी बहुत थी, और एक एक होमबलि के साथ अर्घ भी देना पड़ा। यों यहोवा के भवन में की उपासना ठीक की गई। ३६ तब हिजकिय्याह और सारी प्रजा के लोग उस काम के कारण आनन्दित हुए, जो यहोवा ने अपनी प्रजा के लिये तैयार किया था; क्योंकि वह काम एकाएक हो गया था॥

(हिजकिय्याह का माना हुआ फसह)

३० फिर हिजकिय्याह ने सारे इस्राएल और यहूदा में कहला भेजा, और एप्रैम और मनश्शे के पास इस आशय के पत्र लिख भेजे, कि तुम यरूशलेम को यहोवा के भवन में इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिये फसह मनाने को आओ। २ राजा और उसके हाकिमों और यरूशलेम की मण्डली ने सम्मति की थी कि फसह को दूसरे महीने में मनाएं। ३ वे उसे उस समय इस कारण न मना सकते थे, क्योंकि थोड़े ही याजकों ने अपने अपने को पवित्र किया था, और प्रजा के लोग यरूशलेम में इकट्ठे न हुए थे। ४ और यह बात राजा और सारी मण्डली को अच्छी लगी। ५ तब उन्हों ने यह ठहरा दिया, कि बेर्शेबा से लेकर दान के सारे इस्राएलियों में यह प्रचार किया जाय, कि यरूशलेम में इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिये फसह मनाने को चले आओ; ६ क्योंकि उन्हों ने इतनी बड़ी संख्या में उसको इस प्रकार न मनाया था जैसा कि लिखा है। इसलिये हरकारे राजा और उसके हाकिमों से चिट्ठियां लेकर राजा की आज्ञा के अनुसार सारे इस्राएल और यहूदा में घूमे, और यह कहते गए, कि हे इस्राएलियो! इब्राहीम, इसहाक और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो, कि वह अश्शूर के राजाओं के हाथ से बचे हुए तुम लोगों की ओर फिरे। ७ और अपने पुरखाओं और भाइयों के समान मत बनो, जिन्हों ने अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा से विश्वासघात किया था, और उस ने उन्हें चकित होने का कारण कर दिया, जैसा कि तुम स्वयं देख रहे हो। ८ अब अपने पुरखाओं की नाईं हठ न करो, वरन यहोवा के अधीन होकर उसके उस पवित्रस्थान में आओ जिसे उस ने सदा के लिये पवित्र किया है, और अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करो, कि उसका भड़का हुआ क्रोध तुम पर से दूर हो जाए। ९ यदि तुम यहोवा की ओर फिरोगे तो जो तुम्हारे भाइयों और लड़केवालों को बन्धुआ बनाके ले गए हैं, वे उन पर दया करेंगे, और वे इस देश में लौट सकेंगे क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अनुग्रहकारी और दयालु है, और यदि तुम उसकी ओर फिरोगे तो वह अपना मुंह तुम से न मोड़ेगा॥

१० इस प्रकार हरकारे एप्रैम और मनश्शे के देशों में नगर नगर होते हुए जबूलून तक गए; परन्तु उन्हों ने उनकी हंसी की, और उन्हें ठट्ठों में उड़ाया। ११ तौभी आशेर, मनश्शे और जबूलून में से कुछ लोग दीन होकर यरूशलेम को आए। १२ और यहूदा में भी परमेश्वर की ऐसी शक्ति * हुई, कि वे एक मन होकर, जो आज्ञा राजा और हाकिमों ने यहोवा के वचन के अनुसार दी थी, उसे मानने को तैयार हुए॥

* मूल में—हाथ।

१३ इस प्रकार अधिक लोग यरूशलेम में इसलिये इकट्ठे हुए, कि दूसरे महीने में अखमीरी रोटी का पर्व्व मानें। और बहुत बड़ी सभा इकट्ठी हो गई। १४ और उन्हों ने उठकर, यरूशलेम की वेदियों और धूप जलाने के सब स्थानों को उठाकर किद्रोन नाले में फेंक दिया। १५ तब दूसरे महीने के चौदहवें दिन को उन्हों ने फसह के पशु बलि किए तब याजक और लेवीय लज्जित हुए और अपने को पवित्र करके होमबलियों को यहोवा के भवन में ले आए। १६ और वे अपने नियम के अनुसार, अर्थात् परमेश्वर के जन मूसा की व्यवस्था के अनुसार, अपने अपने स्थान पर खड़े हुए, और याजकों ने रक्त को, लेवियों के हाथ से लेकर छिड़क दिया। १७ क्योंकि सभा में बहुते ऐसे थे जिन्हों ने अपने को पवित्र न किया था; इसलिये सब अशुद्ध लोगों के फसह के पशुओं को बलि करने का अधिकार लेवियों को दिया गया, कि उनको यहोवा के लिये पवित्र करें। १८ बहुत से लोगों ने अर्थात् एप्रैम, मनश्शे, इस्साकार और जबूलून में से बहुतों ने अपने को शुद्ध नहीं किया था, तौभी वे फसह के पशु का मांस लिखी हुई विधि के विरुद्ध खाते थे। क्योंकि हिजकिय्याह ने उनके लिये यह प्रार्थना की थी, कि यहोवा जो भला है, वह उन सभों के पाप ढांप दे; १९ जो परमेश्वर की अर्थात् अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा की खोज में मन लगाए हुए हैं, चाहे वे पवित्रस्थान की विधि के अनुसार शुद्ध न भी हों। २० और यहोवा ने हिजकिय्याह की यह प्रार्थना सुनकर लोगों को चंगा किया। २१ और जो इस्राएली यरूशलेम में उपस्थित थे, वे सात दिन तक अखमीरी रोटी का पर्व्व बड़े आनन्द से मनाते रहे; और प्रतिदिन लेवीय और याजक ऊंचे शब्द के बाजे यहोवा के लिये बजाकर यहोवा की स्तुति करते रहे। २२ और जितने लेवीय यहोवा का भजन बुद्धिमानी के साथ करते थे, उनको हिजकिय्याह ने शान्ति के वचन कहे। इस प्रकार वे मेलबलि चढ़ाकर और अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा के सम्मुख पापांगीकार करते रहे और उस नियत पर्व्व के सातों दिन तक खाते रहे॥

२३ तब सारी सभा ने सम्मति की कि हम और सात दिन पर्व मानेंगे; सो उन्हों ने और सात दिन आनन्द से पर्व्व मनाया। २४ क्योंकि यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने सभा को एक हजार बछड़े और सात हजार भेड़-बकरियां दे दीं, और हाकिमों ने सभा को एक हजार बछड़े और दस हजार भेड़-बकरियां दीं*, और बहुत से याजकों ने अपने को पवित्र किया। २५ तब याजकों और लेवियों समेत यहूदा की सारी सभा, और इस्राएल से आए हुओं की सभा, और इस्राएल के देश से आए हुए, और यहूदा में रहनेवाले परदेशी, इन सभों ने आनन्द किया। २६ सो यरूशलेम में बड़ा आनन्द हुआ, क्योंकि दाऊद के पुत्र इस्राएल के राजा सुलैमान के दिनों से ऐसी बात यरूशलेम में न हुई थी। २७ अन्त में लेवीय याजकों ने खड़े होकर प्रजा को आशीर्वाद दिया, और उनकी सुनी गई, और उनकी प्रार्थना उसके पवित्र धाम तक अर्थात् स्वर्ग तक पहुंची॥

(हिजकिय्याह का किया हुआ उपासना का प्रबन्ध)

३१ जब यह सब हो चुका, तब जितने इस्राएली उपस्थित थे, उन सभों ने यहूदा के नगरों में जाकर, सारे यहूदा और बिन्यामीन और एप्रैम और मनश्शे में

* मूल में—उठाई।

की लाठों को तोड़ दिया, अशेरों को काट डाला, और ऊंचे स्थानों और वेदियों को गिरा दिया; और उन्हों ने उन सब का अन्त कर दिया। तब सब इस्राएली अपने अपने नगर को लौटकर, अपनी अपनी निज भूमि में पहुंचे ।।

२ और हिजकिय्याह ने याजकों के दलों को और लेवियों को वरन याजकों और लेवियों दोनों को, प्रति दल के अनुसार और एक एक मनुष्य को उसकी सेवकाई के अनुसार इसलिये ठहरा दिया, कि वे यहोवा की छावनी के द्वारों के भीतर होमबलि, मेलबलि, सेवा टहल, धन्यवाद और स्तुति किया करें। ३ फिर उस ने अपनी सम्पत्ति में से राजभाग को होमबलियों के लिये ठहरा दिया; अर्थात् सबेरे और सांझ की होमबलि और विश्राम और नये चांद के दिनों और नियत समयों की होमबलि के लिये जैसा कि यहोवा की व्यवस्था में लिखा है। ४ और उस ने यरूशलेम में रहनेवालों को याजकों और लेवियों को उनका भाग देने की आज्ञा दी, ताकि वे यहोवा की व्यवस्था के काम मन लगाकर कर सकें *। ५ यह आज्ञा सुनते ही † इस्राएली अन्न, नया दाखमधु, टटका तेल, मधु आदि खेती की सब भांति की पहिली उपज बहुतायत से देने, और सब वस्तुओं का दशमांश अधिक मात्रा में लाने लगे। ६ और जो इस्राएली और यहूदी, यहूदा के नगरों में रहते थे, वे भी बैलों और भेड़-बकरियों का दशमांश, और उन पवित्र वस्तुओं का दशमांश, जो उनके परमेश्वर यहोवा के निमित्त पवित्र की गई थीं, लाकर ढेर ढेर करके रखने लगे। ७ इस प्रकार ढेर का लगाना उन्हों ने तीसरे महीने में आरम्भ किया और सातवें महीने में पूरा किया। ८ जब हिजकिय्याह और हाकिमों ने आकर उन ढेरों को देखा, तब यहोवा को और उसकी प्रजा इस्राएल को धन्य धन्य कहा। ९ तब हिजकिय्याह ने याजकों और लेवियों से उन ढेरों के विषय पूछा। १० और अजर्याह महायाजक ने जो सादोक के घराने का था, उस से कहा, जब से लोग यहोवा के भवन में उठाई हुई भेंटें लाने लगे हैं, तब से हम लोग पेट भर खाने को पाते हैं, वरन बहुत बचा भी करता है; क्योंकि यहोवा ने अपनी प्रजा को आशीष दी है, और जो शेष रह गया है, उसी का यह बड़ा ढेर है ।।

११ तब हिजकिय्याह ने यहोवा के भवन में कोठरियां तैयार करने की आज्ञा दी, और वे तैयार की गईं। १२ तब लोगों ने उठाई हुई भेंटें, दशमांश और पवित्र की हुई वस्तुएं, सच्चाई से पहुंचाईं और उनके मुख्य अधिकारी तो कोनन्याह नाम एक लेवीय और दूसरा उसका भाई शिमी नायब था। १३ और कोनन्याह और उसके भाई शिमी के नीचे, हिजकिय्याह राजा और परमेश्वर के भवन के प्रधान अजर्याह दोनों की आज्ञा से यहीएल, अजज्याह, नहत, असाहेल, यरीमोत, योजाबाद, एलीएल, यिस्मक्याह, महत और बनायाह अधिकारी थे। १४ और परमेश्वर के लिये स्वेच्छाबलियों का अधिकारी यिम्ना लेवीय का पुत्र कोरे था, जो पूर्व फाटक का द्वारपाल था, कि वह यहोवा की उठाई हुई भेंटें, और परमपवित्र वस्तुएं बांटा करे। १५ और उसके अधिकार में एदेन, मिन्यामीन, येशू, शमायाह, अमर्याह और शकन्याह याजकों के नगरों में रहते थे, कि वे क्या बड़े, क्या छोटे, अपने भाइयों को उनके दलों के अनुसार सच्चाई से दिया करें, १६ और उनके अलावा

* मूल में—व्यवस्था में बल पकड़ें।
† मूल में—यह आज्ञा फूटते ही।

उनको भी दें, जो पुरुषों की वंशावली के अनुसार गिने जाकर तीन वर्ष की अवस्था के वा उस से अधिक आयु के थे, और अपने अपने दल के अनुसार अपनी अपनी सेवकाई निबाहने को दिन दिन के काम के अनुसार यहोवा के भवन में जाया करते थे। १७ और उन याजकों को भी दें, जिनकी वंशावली उनके पितरों के घरानों के अनुसार की गई, और उन लेवियों को भी जो बीस वर्ष की अवस्था से ले आगे को अपने अपने दल के अनुसार, अपने अपने काम निबाहते थे। १८ और सारी सभा में उनके बालबच्चों, स्त्रियों, बेटों और बेटियों को भी दें, जिनकी वंशावली थी, क्योंकि वे सच्चाई से अपने को पवित्र करते थे। १९ फिर हारून की सन्तान के याजकों को भी जो अपने अपने नगरों के चराईवाले मैदान में रहते थे, देने के लिये वे पुरुष नियुक्त किए गए थे जिनके नाम ऊपर लिखे हुए थे कि वे याजकों के सब पुरुषों और उन सब लेवियों को भी उनका भाग दिया करें जिनकी वंशावली थी ।।

२० और सारे यहूदा में भी हिजकिय्याह ने ऐसा ही प्रबन्ध किया, और जो कुछ उसके परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में भला और ठीक और सच्चाई का था, उसे वह करता था। २१ और जो जो काम उस ने परमेश्वर के भवन की उपासना और व्यवस्था और आज्ञा के विषय अपने परमेश्वर की खोज में किया, वह उस ने अपना सारा मन लगाकर किया और उस में कृतार्थ भी हुआ ।।

(सन्हेरीब की सेना की चढ़ाई और विनाश)

३२ इन बातों और ऐसे प्रबन्ध के बाद अश्शूर का राजा सन्हेरीब ने आकर यहूदा में प्रवेश कर और गढ़वाले नगरों के विरुद्ध डेरे डालकर उनको अपने लाभ के लिये लेना चाहा। २ यह देखकर कि सन्हेरीब निकट आया है और यरूशलेम से लड़ने की मनसा * करता है, ३ हिजकिय्याह ने अपने हाकिमों और वीरों के साथ यह सम्मति की, कि नगर के बाहर के सोतों को पटवा दें; और उन्हों ने उसकी सहायता की। ४ इस पर बहुत से लोग इकट्ठे हुए, और यह कहकर, कि अश्शूर के राजा क्यों यहां आएं, और आकर बहुत पानी पाएं, उन्होंने सब सोतों को पाट दिया और उस नदी को सुखा दिया जो देश के मध्य होकर बहती थी। ५ फिर हिजकिय्याह ने हियाव बान्धकर शहरपनाह जहां कहीं टूटी थी, वहां वहां उसको बनवाया, और उसे गुम्मटों के बराबर ऊंचा किया और बाहर एक और शहरपनाह बनवाई, और दाऊदपुर में मिल्लो को दृढ़ किया। और बहुत से तीर और ढालें भी बनवाईं। ६ तब उस ने प्रजा के ऊपर सेनापति नियुक्त किए और उनको नगर के फाटक के चौक में इकट्ठा किया, और यह कहकर उनको धीरज दिया, ७ कि हियाव बान्धो और दृढ़ हो तुम न तो अश्शूर के राजा से डरो और न उसके संग की सारी भीड़ से, और न तुम्हारा मन कच्चा हो; क्योंकि जो हमारे साथ है, वह उसके संगियों से बड़ा है। ८ अर्थात् उसका सहारा तो मनुष्य ही है †; परन्तु हमारे साथ, हमारी सहायता और हमारी ओर से युद्ध करने को हमारा परमेश्वर यहोवा है। इसलिये प्रजा के लोग यहूदा के राजा हिजकिय्याह की बातों पर भरोसा किए रहे ।।

* **मूल में**—का मुख।
† **मूल में**—उसके संग मांस की बाह।

९ इसके बाद अश्शूर का राजा सन्हेरीब जो सारी सेना * समेत लाकीश के साम्हने पड़ा था, उस ने अपने कर्मचारियों को यरूशलेम में यहूदा के राजा हिजकिय्याह और उन सब यहूदियों से जो यरूशलेम में थे यों कहने के लिये भेजा, १० कि अश्शूर का राजा सन्हेरीब कहता है, कि तुम्हें किस का भरोसा है जिसमें कि तुम घेरे हुए यरूशलेम में बैठे हो? ११ क्या हिजकिय्याह तुम से यह कहकर कि हमारा परमेश्वर यहोवा हम को अश्शूर के राजा के पंजे से बचाएगा तुम्हें नहीं भरमाता है कि तुम को भूखों प्यासों मारे? १२ क्या उसी हिजकिय्याह ने उसके ऊंचे स्थान और वेदियां दूर करके यहूदा और यरूशलेम को आज्ञा नहीं दी, कि तुम एक ही वेदी के साम्हने दण्डवत करना और उसी पर धूप जलाना? १३ क्या तुम को मालूम नहीं, कि मैं ने और मेरे पुरखाओं ने देश देश के सब लोगों से क्या क्या किया है? क्या उन देशों की जातियों के देवता किसी भी उपाय से अपने देश को मेरे हाथ से बचा सके? १४ जितनी जातियों का मेरे पुरखाओं ने सत्यानाश किया है उनके सब देवताओं में से ऐसा कौन था जो अपनी प्रजा को मेरे हाथ से बचा सका हो? फिर तुम्हारा देवता तुम को मेरे हाथ से कैसे बचा सकेगा? १५ अब हिजकिय्याह तुम को इस रीति भुलाने अथवा बहकाने न पाए, और तुम उसकी प्रतीति न करो, क्योंकि किसी जाति या राज्य का कोई देवता अपनी प्रजा को न तो मेरे हाथ से और न मेरे पुरखाओं के हाथ से बचा सका। यह निश्चय है कि तुम्हारा देवता तुम को मेरे हाथ से नहीं बचा सकेगा॥

१६ इस से भी अधिक उसके कर्मचारियों ने यहोवा परमेश्वर की, और उसके दास हिजकिय्याह की निन्दा की। १७ फिर उस ने ऐसा एक पत्र भेजा, जिस में इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की निन्दा की ये बातें लिखी थीं, कि जैसे देश देश की जातियों के देवताओं ने अपनी अपनी प्रजा को मेरे हाथ से नहीं बचाया वैसे ही हिजकिय्याह का देवता भी अपनी प्रजा को मेरे हाथ से नहीं बचा सकेगा। १८ और उन्हों ने ऊंचे शब्द से उन यरूशलेमियों को जो शहरपनाह पर बैठे थे, यहूदी बोली में पुकारा, कि उनको डराकर घबराहट में डाल दें जिस से नगर को ले लें। १९ और उन्हों ने यरूशलेम के परमेश्वर की ऐसी चर्चा की, कि मानो पृथ्वी के देश देश के लोगों के देवताओं के बराबर हो, जो मनुष्यों के बनाए हुए हैं॥

२० तब इन घटनाओं के कारण राजा हिजकिय्याह और आमोस के पुत्र यशायाह नबी दोनों ने प्रार्थना की और स्वर्ग की ओर दोहाई दी। २१ तब यहोवा ने एक दूत भेज दिया, जिस ने अश्शूर के राजा की छावनी में सब शूरवीरों, प्रधानों और सेनापतियों को नाश किया। और वह लज्जित होकर, अपने देश को लौट गया। और जब वह अपने देवता के भवन में था, तब उसके निज पुत्रों ने वहीं उसे तलवार से मार डाला। २२ यों यहोवा ने हिजकिय्याह और यरूशलेम के निवासियों को अश्शूर के राजा सन्हेरीब और अपने सब शत्रुओं के हाथ से बचाया, और चारों ओर उनकी अगुवाई की। २३ और बहुत लोग यरूशलेम को यहोवा के लिये भेंट और

* मूल में—राज्य।

यहूदा के राजा हिजकिय्याह के लिये अनमोल वस्तुएं ले आने लगे, और उस समय से वह सब जातियों की दृष्टि में महान ठहरा ।।

(हिजकिय्याह का उत्तम चरित्र)

२४ उन दिनों हिजकिय्याह ऐसा रोगी हुआ, कि वह मरा चाहता था, तब उस ने यहोवा से प्रार्थना की; और उस ने उस से बातें करके उसके लिये एक चमत्कार दिखाया। २५ परन्तु हिजकिय्याह ने उस उपकार का बदला न दिया, क्योंकि उसका मन फूल उठा था। इस कारण उसका कोप उस पर और यहूदा और यरूशलेम पर भड़का। २६ तब हिजकिय्याह यरूशलेम के निवासियों समेत अपने मन के फूलने के कारण दीन हो गया, इसलिये यहोवा का क्रोध उन पर हिजकिय्याह के दिनों में न भड़का ।।

२७ और हिजकिय्याह को बहुत ही धन और विभव मिला; और उस ने चान्दी, सोने, मणियों, सुगन्धद्रव्य, ढालों और सब प्रकार के मनभावने पात्रों के लिये भण्डार बनवाए। २८ फिर उस ने अन्न, नया दाखमधु, और टटका तेल के लिये भण्डार, और सब भांति के पशुओं के लिये थान, और भेड़-बकरियों के लिये भेड़शालाएं बनवाईं। २९ और उस ने नगर बसाए, और बहुत ही भेड़-बकरियों और गाय-बैलों की सम्पत्ति इकट्ठा कर ली, क्योंकि परमेश्वर ने उसे बहुत ही धन दिया था। ३० उसी हिजकिय्याह ने गीहोन नाम नदी के ऊपर के सोते को पाटकर उस नदी को नीचे की ओर दाऊदपुर की पच्छिम अलंग को सीधा पहुंचाया, और हिजकिय्याह अपने सब कामों में कृतार्थ होता था। ३१ तौभी जब बाबेल के हाकिमों ने उसके पास उसके देश में किए हुए चमत्कार के विषय पूछने को दूत भेजे, तब परमेश्वर ने उसको इसलिये छोड़ दिया, कि उसको परख कर उसके मन का सारा भेद जान ले ।।

३२ हिजकिय्याह के और काम, और उसके भक्ति के काम आमोस के पुत्र यशायाह नबी के दर्शन नाम पुस्तक में, और यहूदा और इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं। ३३ अन्त में हिजकिय्याह अपने पुरखाओं के संग सो गया और उसको दाऊद की सन्तान के कब्रिस्तान की चढ़ाई पर मिट्टी दी गई, और सब यहूदियों और यरूशलेम के निवासियों ने उसकी मृत्यु पर उसका आदरमान किया। और उसका पुत्र मनश्शे उसके स्थान पर राज्य करने लगा ।।

(मनश्शे का राज्य)

३३ जब मनश्शे राज्य करने लगा, तब वह बारह वर्ष का था, और यरूशलेम में पचपन वर्ष तक राज्य करता रहा। २ उस ने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, अर्थात् उन जातियों के घिनौने कामों के अनुसार जिनको यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने से देश से निकाल दिया था। ३ उस ने उन ऊंचे स्थानों को जिन्हें उसके पिता हिजकिय्याह ने तोड़ दिया था, फिर बनाया, और बाल नाम देवताओं के लिये वेदियां और अशेरा नाम मूरतें बनाईं, और आकाश के सारे गण को दण्डवत करता, और उनकी उपासना करता रहा। ४ और उस ने यहोवा के उस भवन में वेदियां बनाईं जिसके विषय यहोवा ने कहा था कि यरूशलेम में मेरा नाम सदा बना

रहेगा। ५ वरन यहोवा के भवन के दोनों आंगनों में भी उस ने आकाश के सारे गण के लिये वेदियां बनाईं। ६ फिर उस ने हिन्नोम के बेटे की तराई में अपने लड़केबालों को होम करके चढ़ाया, और शुभ-अशुभ मुहूर्तों को मानता, और टोना और तंत्र-मंत्र करता, और ओझों और भूतसिद्धिवालों से व्यवहार करता था। वरन उस ने ऐसे बहुत से काम किए, जो यहोवा की दृष्टि में बुरे हैं और जिन से वह अप्रसन्न होता है। ७ और उस ने अपनी खुदवाई हुई मूर्त्ति परमेश्वर के उस भवन में स्थापन की जिसके विषय परमेश्वर ने दाऊद और उसके पुत्र सुलैमान से कहा था, कि इस भवन में, और यरूशलेम में, जिसको मैं ने इस्राएल के सब गोत्रों में से चुन लिया है मैं अपना नाम सर्वदा रखूंगा, ८ और मैं ऐसा न करूंगा कि जो देश मैं ने तुम्हारे पुरखाओं को दिया था, उस में से इस्राएल फिर मारा मारा फिरे; इतना अवश्य हो कि वे मेरी सब आज्ञाओं को अर्थात् मूसा की दी हुई सारी व्यवस्था और विधियों और नियमों को पालन करने की चौकसी करें। ९ और मनश्शे ने यहूदा और यरूशलेम के निवासियों को यहां तक भटका दिया कि उन्हों ने उन जातियों से भी बढ़कर बुराई की, जिन्हें यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने से विनाश किया था।।

१० और यहोवा ने मनश्शे और उसकी प्रजा से बातें कीं, परन्तु उन्हों ने कुछ ध्यान नहीं दिया। ११ तब यहोवा ने उन पर अश्शूर के सेनापतियों से चढ़ाई कराई, और ये मनश्शे को नकेल डालकर, और पीतल की बेड़ियां जकड़कर, उसे बाबेल को ले गए। १२ तब संकट में पड़कर वह अपने परमेश्वर यहोवा को मानने लगा, और अपने पूर्वजों के परमेश्वर के साम्हने बहुत दीन हुआ, और उस से प्रार्थना की। १३ तब उस ने प्रसन्न होकर उसकी बिनती सुनी, और उसको यरूशलेम में पहुंचाकर उसका राज्य लौटा दिया। तब मनश्शे को निश्चय हो गया कि यहोवा ही परमेश्वर है।।

१४ इसके बाद उस ने दाऊदपुर से बाहर गीहोन के पश्चिम की ओर नाले में मच्छली फाटक तक एक शहरपनाह बनवाई, फिर ओपेल को घेरकर बहुत ऊंचा कर दिया; और यहूदा के सब गढ़वाले नगरों में सेनापति ठहरा दिए। १५ फिर उस ने पराये देवताओं को और यहोवा के भवन में की मूर्त्ति को, और जितनी वेदियां उस ने यहोवा के भवन के पर्वत पर, और यरूशलेम में बनवाई थीं, उन सब को दूर करके नगर से बाहर फेंकवा दिया। १६ तब उस ने यहोवा की वेदी की मरम्मत की, और उस पर मेलबलि और धन्यवादबलि चढ़ाने लगा, और यहूदियों को इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की उपासना करने की आज्ञा दी। १७ तौभी प्रजा के लोग ऊंचे स्थानों पर बलिदान करते रहे, परन्तु केवल अपने परमेश्वर यहोवा के लिये।।

१८ मनश्शे के और काम, और उस ने जो प्रार्थना अपने परमेश्वर से की, और उन दर्शियों के वचन, जो इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के नाम से उस से बातें करते थे, यह सब इस्राएल के राजाओं के इतिहास में लिखा हुआ है। १९ और उसकी प्रार्थना और वह कैसे सुनी गई, और उसका सारा पाप और विश्वासघात और उस ने दीन होने से पहिले कहां कहां ऊंचे स्थान बनवाए, और अशेरा नाम और खुदी हुई मूर्त्तियां खड़ी कराईं, यह सब होशे के वचनों में लिखा है। २० निदान मनश्शे अपने पुरखाओं के संग सो गया और उसे उसी के घर में मिट्टी दी

गई; और उसका पुत्र ग्रामोन उसके स्थान पर राज्य करने लगा ।।

(ग्रामोन का राज्य)

२१ जब ग्रामोन राज्य करने लगा, तव वह बाईस वर्ष का था, और यरूशलेम में दो वर्ष तक राज्य करता रहा। २२ और उस ने अपने पिता मनश्शे की नाई वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है। और जितनी मूर्त्तियां उसके पिता मनश्शे ने खोदकर बनवाई थीं, वह भी उन सभों के साम्हने बलिदान करता और उन सभों की उपासना भी करता था। २३ और जैसे उसका पिता मनश्शे यहोवा के साम्हने दीन हुआ, वैसे वह दीन न हुआ, वरन ग्रामोन अधिक दोषी होता गया। २४ और उसके कर्मचारियों ने द्रोह की गोष्ठी करके, उसको उसी के भवन में मार डाला। २५ तब साधारण लोगों ने उन सभों को मार डाला, जिन्हों ने राजा ग्रामोन से द्रोह की गोष्ठी की थी; और लोगों ने उसके पुत्र योशिय्याह को उसके स्थान पर राजा बनाया ।।

(योशिय्याह का किया हुआ सुधार और व्यवस्था की पुस्तक का मिलना)

३४ जब योशिय्याह राज्य करने लगा तव वह ग्राठ वर्ष का था, और यरूशलेम में इकतीस वर्ष तक राज्य करता रहा। २ उस ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है, और जिन मार्गों पर उसका मूलपुरुष दाऊद चलता रहा, उन्हीं पर वह भी चला करता था और उस से न तो दाहिनी ओर मुड़ा, और न बाईं ओर। ३ वह लड़का ही था, अर्थात् उसको गद्दी पर बैठे ग्राठ वर्ष पूरे भी न हुए थे कि अपने मूलपुरुष दाऊद के परमेश्वर की खोज करने लगा, और बारहवें वर्ष में वह ऊंचे स्थानों और अशेरा नाम मूरतों को और खुदी और ढली हुई मूरतों को दूर करके, यहूदा और यरूशलेम को शुद्ध करने लगा। ४ और बालदेवताओं की वेदियां उसके साम्हने तोड़ डाली गईं, और सूर्य की प्रतिमायें जो उनके ऊपर ऊंचे पर थी, उस ने काट डालीं, और अशेरा नाम, और खुदी और ढली हुई मूरतों को उस ने तोड़कर पीस डाला, और उनकी बुकनी उन लोगों की कबरों पर छितरा दी, जो उनको बलि चढ़ाते थे। ५ और पुजारियों की हड्डियां उस ने उन्हीं की वेदियों पर जलाईं। यों उस ने यहूदा और यरूशलेम को शुद्ध किया। ६ फिर मनश्शे, एप्रैम और शिमोन के वरन नप्ताली तक के नगरों के खण्डहरों में, उस ने वेदियों को तोड़ डाला, ७ और अशेरा नाम और खुदी हुई मूरतों को पीसकर बुकनी कर डाला, और इस्राएल के सारे देश की सूर्य की सब प्रतिमाओं को काटकर यरूशलेम को लौट गया ।।

८ फिर अपने राज्य के अठारहवें वर्ष में जब वह देश और भवन दोनों को शुद्ध कर चुका, तब उस ने असल्याह के पुत्र शापान और नगर के हाकिम मासेयाह और योआहाज के पुत्र इतिहास के लेखक योआह को अपने परमेश्वर यहोवा के भवन की मरम्मत कराने के लिये भेज दिया। ९ सो उन्हों ने हिल्किय्याह महायाजक के पास जाकर जो रुपया परमेश्वर के भवन में लाया गया था, अर्थात् जो लेवीय दरबानों ने मनश्शियों, एप्रैमियों और सब बचे हुए इस्राएलियों से और सब यहूदियों और बिन्यामीनियों से और यरूशलेम के निवासियों के हाथ से लेकर इकट्ठा किया था, उसको सौंप दिया। १० अर्थात् उन्हों ने उसे उन काम करनेवालों के हाथ सौंप दिया जो यहोवा के भवन

के काम पर मुखिये थे, और यहोवा के भवन के उन काम करनेवालों ने उसे भवन में जो कुछ टूटा फूटा था, उसकी मरम्मत करने में लगाया। ११ अर्थात् उन्हों ने उसे बढ़इयों और राजों को दिया कि वे गढ़े हुए पत्थर और जोड़ों के लिये लकड़ी मोल लें, और उन घरों को पाटें जो यहूदा के राजाओं ने नाश कर दिए थे। १२ और वे मनुष्य सच्चाई से काम करते थे, और उनके अधिकारी मरारीय, यहत और ओबद्याह, लेवीय और कहाती, जकर्याह और मशुल्लाम काम चलानेवाले और गाने-बजाने का भेद सब जाननेवाले लेवीय भी थे। १३ फिर वे बोझियों के अधिकारी थे और भांति भांति की सेवकाई और काम चलानेवाले थे, और कुछ लेवीय मुंशी सरदार और दरबान थे।।

१४ जब वे उस रुपये को जो यहोवा के भवन में पहुंचाया गया था, निकाल रहे थे, तब हिल्किय्याह याजक को मूसा के द्वारा दी हुई यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक मिली। १५ तब हिल्किय्याह ने शापान मंत्री से कहा, मुझे यहोवा के भवन में व्यवस्था की पुस्तक मिली है; तब हिल्किय्याह ने शापान को वह पुस्तक दी। १६ तब शापान उस पुस्तक को राजा के पास ले गया, और यह सन्देश दिया, कि जो जो काम तेरे कर्मचारियों को सौंपा गया था उसे वे कर रहे हैं। १७ और जो रुपया यहोवा के भवन में मिला, उसको उन्हों ने उण्डेलकर मुखियों और कारीगरों के हाथों में सौंप दिया है। १८ फिर शापान मंत्री ने राजा को यह भी बता दिया कि हिल्किय्याह याजक ने मुझे एक पुस्तक दी है तब शापान ने उस में से राजा को पढ़कर सुनाया।।

१९ व्यवस्था की वे बातें सुनकर राजा ने अपने वस्त्र फाड़े। २० फिर राजा ने हिल्किय्याह शापान के पुत्र अहीकाम, मीका के पुत्र अब्दोन, शापान मंत्री और असायाह नाम अपने कर्मचारी को आज्ञा दी, २१ कि तुम जाकर मेरी ओर से और इस्राएल और यहूदा में रहनेवालों की ओर से इस पाई हुई पुस्तक के वचनों के विषय यहोवा से पूछो; क्योंकि यहोवा की बड़ी ही जलजलाहट हम पर इसलिये भड़की है कि हमारे पुरखाओं ने यहोवा का वचन नहीं माना, और इस पुस्तक में लिखी हुई सब आज्ञाओं का पालन नहीं किया।।

२२ तब हिल्किय्याह ने राजा के और और दूतों समेत हुल्दा नबिया के पास जाकर उस से उसी बात के अनुसार बातें की, वह तो उस शल्लूम की स्त्री थी जो तोखत का पुत्र और हस्रा का पोता और वस्त्रालय का रखवाला था : और वह स्त्री यरूशलेम के नये टोले में रहती थी। २३ उस ने उन से कहा, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि जिस पुरुष ने तुम को मेरे पास भेजा, उस से यह कहो, २४ कि यहोवा यों कहता है, कि सुन, मैं इस स्थान और इस के निवासियों पर विपत्ति डालकर यहूदा के राजा के साम्हने जो पुस्तक पढ़ी गई, उस में जितने शाप लिखे हैं उन सभों को पूरा करूंगा। २५ उन लोगों ने मुझे त्यागकर पराये देवताओं के लिये धूप जलाया है और अपनी बनाई हुई सब वस्तुओं के द्वारा मुझे रिस दिलाई है, इस कारण मेरी जलजलाहट इस स्थान पर भड़क उठी है, और शान्त न होगी। २६ परन्तु यहूदा का राजा जिस ने तुम्हें यहोवा के पूछने को भेज दिया है उस से तुम यों कहो, कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, २७ कि इसलिये कि तू वे बातें सुनकर दीन हुआ, और परमेश्वर के साम्हने अपना सिर नवाया, और उसकी

बातें सुनकर जो उस ने इस स्थान और इस के निवासियों के विरुद्ध कहीं, तू ने मेरे साम्हने अपना सिर नवाया, और वस्त्र फाड़कर मेरे साम्हने रोया है, इस कारण मैं ने तेरी सुनी है; यहोवा की यही वाणी है। २८ सुन, मैं तुझे तेरे पुरखाओं के संग ऐसा मिलाऊंगा कि तू शांति से अपनी क़ब्र को पहुंचाया जायगा; और जो विपत्ति मैं इस स्थान पर, और इसके निवासियों पर डालना चाहता हूं, उस में से तुझे अपनी आंखों से कुछ भी देखना न पड़ेगा। तब उन लोगों ने लौटकर राजा को यही सन्देश दिया॥

२९ तब राजा ने यहूदा और यरूशलेम के सब पुरनियों को इकट्ठे होने को बुलवा भेजा। ३० और राजा यहूदा के सब लोगों और यरूशलेम के सब निवासियों और याजकों और लेवियों वरन छोटे बड़े सारी प्रजा के लोगों को संग लेकर यहोवा के भवन को गया; तब उस ने जो वाचा की पुस्तक यहोवा के भवन में मिली थी उस में की सारी बातें उनको पढ़कर सुनाईं। ३१ तब राजा ने अपने स्थान पर खड़ा होकर, यहोवा से इस आशय की वाचा बान्धी कि मैं यहोवा के पीछे पीछे चलूंगा, और अपने पूर्ण मन और पूर्ण जीव से उसकी आज्ञाएं, चितौनियों और विधियों का पालन करूंगा, और इन वाचा की बातों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं, पूरी करूंगा। ३२ और उस ने उन सभों से जो यरूशलेम में और बिन्यामीन में थे वैसी ही वाचा बन्धाई। और यरूशलेम के निवासी, परमेश्वर जो उनके पितरों का परमेश्वर था, उसकी वाचा के अनुसार करने लगे। ३३ और योशिय्याह ने इस्राएलियों के सब देशों में से सब घिनौनी वस्तुओं को दूर करके जितने इस्राएल में मिले, उन सभों से उपासना कराई; अर्थात् उनके परमेश्वर यहोवा की उपासना कराई। और उसके जीवन भर उन्हों ने अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा के पीछे चलना न छोड़ा॥

(योशिय्याह का किया हुआ फसह)

३५ और योशिय्याह ने यरूशलेम में यहोवा के लिये फसह पर्व माना और पहिले महीने के चौदहवें दिन को फसह का पशु बलि किया गया। २ और उस ने याजकों को अपने अपने काम में ठहराया, और यहोवा के भवन में की सेवा करने को उनका हियाव बन्धाया। ३ फिर लेवीय जो सब इस्राएलियों को सिखाते और यहोवा के लिये पवित्र ठहरे थे, उन से उस ने कहा, तुम पवित्र सन्दूक को उस भवन में रखो जो दाऊद के पुत्र इस्राएल के राजा सुलैमान ने बनवाया था; अब तुम को कन्धों पर बोझ उठाना न होगा। अब अपने परमेश्वर यहोवा की और उसकी प्रजा इस्राएल की सेवा करो। ४ और इस्राएल के राजा दाऊद और उसके पुत्र सुलैमान दोनों की लिखी हुई विधियों के अनुसार, अपने अपने पितरों के अनुसार, अपने अपने दल में तैयार रहो। ५ और तुम्हारे भाई लोगों के पितरों के घरानों के भागों के अनुसार पवित्रस्थान में खड़े रहो, अर्थात् उनके एक भाग के लिये लेवियों के एक एक पितर के घराने का एक भाग हो। ६ और फसह के पशुओं को बलि करो, और अपने अपने को पवित्र करके अपने भाइयों के लिये तैयारी करो, कि वे यहोवा के उस वचन के अनुसार कर सकें, जो उस ने मूसा के द्वारा कहा था॥

७ फिर योशिय्याह ने सब लोगों को जो वहां उपस्थित थे, तीस हजार भेड़ों और बकरियों के बच्चे और तीन हजार बैल दिए थे; ये सब फसह के बलिदानों के लिये राजा की सम्पत्ति में से दिए गए थे। ८ और उसके हाकिमों ने प्रजा के लोगों, याजकों और लेवियों को स्वेच्छा-बलियों के लिये पशु दिए। और हिल्किय्या, जकर्याह और यहीएल नाम परमेश्वर के भवन के प्रधानों ने याजकों को दो हजार छः सौ भेड़-बकरियां और तीन सौ बैल फसह के बलिदानों के लिए दिए। ९ और कोनन्याह ने और शमायाह और नतनेल जो उसके भाई थे, और हसब्याह, यीएल और योजाबाद नामक लेवियों के प्रधानों ने लेवियों को पांच हजार भेड़-बकरियां, और पांच सौ बैल फसह के बलिदानों के लिये दिए॥

१० इस प्रकार उपासना की तैयारी हो गई, और राजा की आज्ञा के अनुसार याजक अपने अपने स्थान पर, और लेवीय अपने अपने दल में खड़े हुए। ११ तब फसह के पशु बलि किए गए, और याजक बलि करने-वालों के हाथ से लोहू को लेकर छिड़क देते और लेवीय उनकी खाल उतारते गए। १२ तब उन्हों ने होमबलि के पशु इसलिये अलग किए कि उन्हें लोगों के पितरों के घरानों के भागों के अनुसार दें, कि वे उन्हें यहोवा के लिये चढ़वा दें जैसा कि मूसा की पुस्तक में लिखा है; और बैलों को भी उन्हों ने वैसा ही किया। १३ तब उन्हों ने फसह के पशुओं का मांस विधि के अनुसार आग में भूंजा, और पवित्र वस्तुएं, हंडियों और हंडों और थालियों में सिझा कर फुर्ती से लोगों को पहुंचा दिया। १४ तब उन्हों ने अपने लिये और याजकों के लिये तैयारी की, क्योंकि हारून की सन्तान के याजक होमबलि के पशु और चरबी रात तक चढ़ाते रहे, इस कारण लेवियों ने अपने लिये और हारून की सन्तान के याजकों के लिये तैयारी की। १५ और आसाप के वंश के गवैये, दाऊद, आसाप, हेमान और राजा के दर्शी यदूतून की आज्ञा के अनुसार अपने अपने स्थान पर रहे, और द्वारपाल एक एक फाटक पर रहे। उन्हें अपना अपना काम छोड़ना न पड़ा, क्योंकि उनके भाई लेवियों ने उनके लिये तैयारी की॥

१६ यों उसी दिन राजा योशिय्याह की आज्ञा के अनुसार फसह मनाने और यहोवा की वेदी पर होमबलि चढ़ाने के लिये यहोवा की सारी उपासना की तैयारी की गई। १७ जो इस्राएली वहां उपस्थित थे उन्हों ने फसह को उसी समय और अखमीरी रोटी के पर्व को सात दिन तक माना। १८ इस फसह के बराबर शमूएल नबी के दिनों से इस्राएल में कोई फसह मनाया न गया था, और न इस्राएल के किसी राजा ने ऐसा मनाया, जैसा योशिय्याह और याजकों, लेवियों और जितने यहूदी और इस्राएली उपस्थित थे, उन्हों ने और यरूशलेम के निवासियों ने मनाया। १९ यह फसह योशिय्याह के राज्य के अठारहवें वर्ष में मनाया गया॥

(योशिय्याह की मृत्यु)

२० इसके बाद जब योशिय्याह भवन को तैयार कर चुका, तब मिस्र के राजा नको ने परात के पास के कर्कमीश नगर से लड़ने को चढ़ाई की और योशिय्याह उसका साम्हना करने को गया। २१ परन्तु उस ने उसके पास दूतों से

कहला भेजा, कि हे यहूदा के राजा मेरा तुझ से क्या काम! आज मैं तुझ पर नहीं उसी कुल पर चढ़ाई कर रहा हूं, जिसके साथ में युद्ध करता हूं; फिर परमेश्वर ने मुझ से फुर्ती करने को कहा है। इसलिये परमेश्वर जो मेरे संग है, उससे अलग रह, कहीं ऐसा न हो कि वह तुझे नाश करे। २२ परन्तु योशिय्याह ने उस से मुंह न मोड़ा, वरन उस से लड़ने के लिये भेष बदला, और नको के उन वचनों को न माना जो उस ने परमेश्वर की ओर से कहे थे, और मगिद्दो की तराई में उस से युद्ध करने को गया। २३ तब धनुर्धारियों ने राजा योशिय्याह की ओर तीर छोड़े; और राजा ने अपने सेवकों से कहा, मैं तो बहुत घायल हुआ, इसलिये मुझे यहां से ले जाओ। २४ तब उसके सेवकों ने उसको रथ पर से उतार कर उसके दूसरे रथ पर चढ़ाया, और यरूशलेम ले गये। और वह मर गया और उसके पुरखाओं के कब्रिस्तान में उसको मिट्टी दी गई। और यहूदियों और यरूशलेमियों ने योशिय्याह के लिये विलाप किया। २५ और यिर्मयाह ने योशिय्याह के लिये विलाप का गीत बनाया और सब गानेवाले और गानेवालियां अपने विलाप के गीतों में योशिय्याह की चर्चा आज तक करती हैं। और इनका गाना इस्राएल में एक विधि के तुल्य ठहराया गया और ये बातें विलापगीतों में लिखी हुई हैं। २६ योशिय्याह के और काम और भक्ति के जो काम उस ने उसी के अनुसार किए जो यहोवा की व्यवस्था में लिखा हुआ है। २७ और आदि से अन्त तक उसके सब काम इस्राएल और यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हुए हैं॥

(यहोआहाज, यहोयाकीम, यहोयाकीन और सिदकिय्याह का राज्य)

३६ तब देश के लोगों ने योशिय्याह के पुत्र यहोआहाज को लेकर उसके पिता के स्थान पर यरूशलेम में राजा बनाया। २ जब यहोआहाज राज्य करने लगा, तब वह तेईस वर्ष का था, और तीन महीने तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। ३ तब मिस्र के राजा ने उसको यरूशलेम में राजगद्दी से उतार दिया, और देश पर सौ किक्कार चान्दी और किक्कार भर सोना जुरमाने में दण्ड लगाया। ४ तब मिस्र के राजा ने उसके भाई एल्याकीम को यहूदा और यरूशलेम का राजा बनाया और उसका नाम बदलकर यहोयाकीम रखा। और नको उसके भाई यहोआहाज को मिस्र में ले गया॥

५ जब यहोयाकीम राज्य करने लगा, तब वह पचीस वर्ष का था, और ग्यारह वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। और उस ने वह काम किया, जो उसके परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में बुरा है। ६ उस पर बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने चढ़ाई की, और बाबेल ले जाने के लिये उसको बेड़ियां पहना दीं। ७ फिर नबूकदनेस्सर ने यहोवा के भवन के कुछ पात्र बाबेल ले जाकर, अपने मन्दिर में जो बाबेल में था, रख दिए। ८ यहोयाकीम के और काम और उस ने जो जो घिनौने काम किए, और उस में जो जो बुराइयां पाई गईं, वह इस्राएल और यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखी हैं। और उसका पुत्र यहोयाकीन उसके स्थान पर राज्य करने लगा॥

९ जब यहोयाकीन राज्य करने लगा, तब वह आठ वर्ष का था, और तीन

महीने और दस दिन तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। और उस ने वह किया, जो परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में बुरा है। १० नये वर्ष के लगते ही नबूकदनेस्सर ने लोगों को भेजकर, उसे और यहोवा के भवन के मनभावने पात्रों को बाबेल में मंगवा लिया, और उसके भाई सिदकिय्याह को यहूदा और यरूशलेम पर राजा नियुक्त किया ।।

११ जब सिदकिय्याह राज्य करने लगा, तब वह इक्कीस वर्ष का था, और यरूशलेम में ग्यारह वर्ष तक राज्य करता रहा। १२ और उस ने वही किया, जो उसके परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में बुरा है। यद्यपि यिर्मयाह नबी यहोवा की ओर से बातें कहता था, तौभी वह उसके साम्हने दीन न हुआ। १३ फिर नबूकदनेस्सर जिस ने उसे परमेश्वर की शपथ खिलाई थी, उस से उस ने बलवा किया, और उस ने हठ किया * और अपना मन कठोर किया, कि वह इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की ओर न फिरे ।।

(यहूदियों की बन्धुवाई)

१४ वरन सब प्रधान याजकों ने और लोगों ने भी अन्य जातियों के से घिनौने काम करके बहुत बड़ा विश्वासघात किया, और यहोवा के भवन को जो उस ने यरूशलेम में पवित्र किया था, अशुद्ध कर डाला ।।

१५ और उनके पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा ने बड़ा यत्न करके † अपने दूतों से उनके पास कहला भेजा, क्योंकि वह अपनी प्रजा और अपने धाम पर तरस खाता था; १६ परन्तु वे परमेश्वर के दूतों को ठट्ठों में उड़ाते, उसके वचनों को तुच्छ जानते, और उसके नबियों की हंसी करते थे। निदान यहोवा अपनी प्रजा पर ऐसा झुंझला उठा, कि बचने का कोई उपाय न रहा ।।

१७ तब उस ने उन पर कसदियों के राजा से चढ़ाई करवाई, और इस ने उनके जवानों को उनके पवित्र भवन ही में तलवार से मार डाला। और क्या जवान, क्या कुंवारी, क्या बूढ़े, क्या पक्के बालवाले, किसी पर भी कोमलता न की; यहोवा ने सभों को उसके हाथ में कर दिया। १८ और क्या छोटे, क्या बड़े, परमेश्वर के भवन के सब पात्र और यहोवा के भवन, और राजा, और उसके हाकिमों के खजाने, इन सभों को वह बाबेल में ले गया। १९ और कसदियों ने परमेश्वर का भवन फूंक दिया, और यरूशलेम की शहरपनाह को तोड़ डाला, और आग लगा कर उसके सब भवनों को जलाया, और उस में का सारा बहुमूल्य सामान नष्ट कर दिया। २० और जो तलवार से बच गए, उन्हें वह बाबेल को ले गया, और फारस के राज्य के प्रबल होने तक वे उसके और उसके बेटों-पोतों के आधीन रहे। २१ यह सब इसलिये हुआ कि यहोवा का जो वचन यिर्मयाह के मुंह से निकला था, वह पूरा हो, कि देश अपने विश्राम कालों में सुख भोगता रहे। इसलिये जब तक वह सूना पड़ा रहा तब तक अर्थात् सत्तर वर्ष के पूरे होने तक उसको विश्राम मिला ।।

(यहूदियों का फिर से भाग्यवान होना)

२२ फारस के राजा कुस्रू के पहिले वर्ष में यहोवा ने उसके मन को उभारा

* मूल में—अपनी गर्दन कठोर की।
† मूल में—तड़के उठ उठकर।

कि जो वचन यिर्मयाह के मुंह से निकला था, वह पूरा हो। इसलिये उस ने अपने समस्त राज्य में यह प्रचार करवाया, और इस आशय की चिट्ठियां लिखवाईं, २३ कि फारस का राजा कुस्रू कहता है, कि स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा ने पृथ्वी भर का राज्य मुझे दिया है, और उसी ने मुझे आज्ञा दी है कि यरूशलेम जो यहूदा में है उस में मेरा एक भवन बनवा; इसलिये हे उसकी प्रजा के सब लोगो, तुम में से जो कोई चाहे कि उसका परमेश्वर यहोवा उसके साथ रहे, तो वह वहां रवाना हो जाए * ॥

* मूल में—चढ़े।

एज्रा नामक पुस्तक

(बन्धुए यहूदियों का यरूशलेम को लौट जाना)

१ फारस के राजा कुस्रू के पहिले वर्ष में यहोवा ने फारस के राजा कुस्रू का मन उभारा कि यहोवा का जो वचन यिर्मयाह के मुंह से निकला था वह पूरा हो जाए, इसलिये उस ने अपने समस्त राज्य में यह प्रचार करवाया और लिखवा भी दिया :

२ कि फारस का राजा कुस्रू यों कहता है : कि स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा ने पृथ्वी भर का राज्य मुझे दिया है, और उस ने मुझे आज्ञा दी, कि यहूदा के यरूशलेम में मेरा एक भवन बनवा। ३ उसकी समस्त प्रजा के लोगों में से तुम्हारे मध्य जो कोई हो, उसका परमेश्वर उसके साथ रहे, और वह यहूदा के यरूशलेम को जाकर इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का भवन बनाए—जो यरूशलेम में है वही परमेश्वर है। ४ और जो कोई किसी स्थान में रह गया हो, जहां वह रहता हो, उस स्थान के मनुष्य चान्दी, सोना, धन और पशु देकर उसकी सहायता करें और इस से अधिक परमेश्वर के यरूशलेम के भवन के लिये अपनी अपनी इच्छा से भी भेंट चढ़ाएं ॥

५ तब यहूदा और बिन्यामीन के जितने पितरों के घरानों के मुख्य पुरुषों और याजकों और लेवियों का मन परमेश्वर ने उभारा था कि जाकर यरूशलेम में यहोवा के भवन को बनाएं, वे सब उठ खड़े हुए; ६ और उनके आसपास सब रहनेवालों ने चान्दी के पात्र, सोना, धन, पशु और अनमोल वस्तुएं देकर, उनकी सहायता की; यह उन सब से अधिक था, जो लोगों ने अपनी अपनी इच्छा से दिया। ७ फिर यहोवा के भवन के जो पात्र नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम से निकालकर अपने देवता के भवन में रखे थे, ८ उनको कुस्रू राजा ने, मिथ्रदात खजांची से निकलवा कर, यहूदियों के शेशबस्सर नाम प्रधान को गिनकर सौंप दिया। ६ उनकी

गिनती यह थी, अर्थात् सोने के तीस और चान्दी के एक हजार परात और उनतीस छुरी, १० सोने के तीस और मध्यम प्रकार के चान्दी के चार सौ दस कटोरे तथा और प्रकार के पात्र एक हजार। ११ सोने चान्दी के पात्र सब मिलकर पांच हजार चार सौ थे। इन सभों को शेशबस्सर उस समय ले आया जब बन्धुए बाबेल से यरूशलेम को आए॥

(लौटे हुए यहूदियों का वर्णन)

२ जिनको बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर बाबेल को बन्धुआ करके ले गया था, उन में से प्रान्त के जो लोग बन्धुआई से छूटकर यरूशलेम और यहूदा को अपने अपने नगर में लौटे वे ये हैं। २ ये जरूब्बाबेल, येशू, नहेम्याह, सरायाह, रेलायाह, मौर्दकै, बिलशान, मिस्पार, बिगवै, रहूम और बाना के साथ आए। इस्राएली प्रजा के मनुष्यों की गिनती यह है, अर्थात् ३ परोश की सन्तान दो हजार एक सौ बहत्तर, ४ शपत्याह की सन्तान तीन सौ बहत्तर, ५ आरह की सन्तान सात सौ पछहत्तर, ६ पहत्मोआब की सन्तान येशू और योआब की सन्तान में से दो हजार आठ सौ बारह, ७ एलाम की सन्तान बारह सौ चौवन, ८ जत्तू की सन्तान नौ सौ पैंतालीस, ९ जक्कै की सन्तान सात सौ साठ, १० बानी की सन्तान छः सौ बयालीस, ११ बेबै की सन्तान छः सौ तेईस, १२ अजगाद की सन्तान बारह सौ बाईस, १३ अदोनीकाम की सन्तान छः सौ छियासठ, १४ बिगवै की सन्तान दो हजार छप्पन, १५ आदीन की सन्तान चार सौ चौवन, १६ हिजकिय्याह की सन्तान आतेर की सन्तान में से अट्ठानवे, १७ बेसै की सन्तान तीन सौ तेईस, १८ योरा के लोग एक सौ बारह, १९ हाशूम के लोग दो सौ तेईस, २० गिब्बार के लोग पंचानवे, २१ बेतलेहेम के लोग एक सौ तेईस, २२ नतोपा के मनुष्य छप्पन, २३ अनातोत के मनुष्य एक सौ अट्ठाईस, २४ अज्मावेत के लोग बयालीस, २५ किर्यतारीम कपीरा और बेरोत के लोग सात सौ तैंतालीस, २६ रामा और गेबा के लोग छः सौ इक्कीस, २७ मिकमास के मनुष्य एक सौ बाईस, २८ बेतेल और ऐ के मनुष्य दो सौ तेईस, २९ नबो के लोग बावन, ३० मग्बीस की सन्तान एक सौ छप्पन, ३१ दूसरे एलाम की सन्तान बारह सौ चौवन, ३२ हारीम की सन्तान तीन सौ बीस, ३३ लोद, हादीद और ओनो के लोग सात सौ पचीस, ३४ यरीहो के लोग तीन सौ पैंतालीस, ३५ सना के लोग तीन हजार छः सौ तीस॥

३६ फिर याजकों अर्थात् येशू के घराने में से यदायाह की सन्तान नौ सौ तिहत्तर, ३७ इम्मेर की सन्तान एक हजार बावन, ३८ पशहूर की सन्तान बारह सौ सैंतालीस, ३९ हारीम की सन्तान एक हजार सतरह।

४० फिर लेवीय, अर्थात् येशू की सन्तान और कदमिएल की सन्तान होदव्याह की सन्तान में से चौहत्तर। ४१ फिर गवैयों में से आसाप की सन्तान एक सौ अट्ठाईस। ४२ फिर दरबानों की सन्तान, शल्लूम की सन्तान, आतेर की सन्तान, तल्मोन की सन्तान, अक्कूब की सन्तान, हतीता की सन्तान, और शोबै की सन्तान, ये सब मिलकर एक सौ उनतालीस हुए। ४३ फिर नतीन की सन्तान, सीहा की सन्तान, हसूपा की सन्तान, तब्बाओत की

सन्तान। ४४ केरोस की सन्तान, सीअहा की सन्तान, पादोन की सन्तान, ४५ लबाना की सन्तान, हगबा की सन्तान, अक्कूब की सन्तान, ४६ हागाब की सन्तान, शमलै की सन्तान, हानान की सन्तान, ४७ गिद्दल की सन्तान, गहर की सन्तान, रायाह की सन्तान, ४८ रसीन की सन्तान, नकोदा की सन्तान, गज्जाम की सन्तान, ४९ उज्जा की सन्तान, पासेह की सन्तान, बेसै की सन्तान, ५० अस्ना की सन्तान, मूनीम की सन्तान, नपीसीम की सन्तान, ५१ बकबूक की सन्तान, हकूपा की सन्तान, हर्हूर की सन्तान, ५२ बसलूत की सन्तान, महीदा की सन्तान, हर्शा की सन्तान, ५३ बर्कोस की सन्तान, सीसरा की सन्तान, तेमह की सन्तान, ५४ नसीह की सन्तान, और हतीपा की सन्तान ॥

५५ फिर सुलैमान के दासों की सन्तान, सोतै की सन्तान, हस्सोपेरेत की सन्तान, परूदा की सन्तान, ५६ याला की सन्तान, दर्कोन की सन्तान, गिद्देल की सन्तान, ५७ शपत्याह की सन्तान, हत्तील की सन्तान, पोकेरेतसबायीम की सन्तान, और आमी की सन्तान। ५८ सब नतीन और सुलैमान के दासों की सन्तान, तीन सौ बानवे थे ॥

५९ फिर जो तेल्मेलह, तेलहर्शा, करूब, अद्दान और इम्मेर से आए, परन्तु वे अपने अपने पितरों के घराने और वंशावली * न बता सके कि वे इस्राएल के हैं, वे ये हैं : ६० अर्थात् दलायाह की सन्तान, तोबिय्याह की सन्तान और नकोदा की सन्तान, जो मिलकर छः सौ बावन थे। ६१ और याजकों की सन्तान में से हबायाह की सन्तान, हक्कोस की सन्तान और बर्जिल्लै की सन्तान, जिस ने गिलादी बर्जिल्ले की एक बेटी को ब्याह लिया और उसी का नाम रख लिया था। ६२ इन सभों ने अपनी अपनी वंशावली का पत्र औरों की वंशावली की पोथियों में ढूंढ़ा, परन्तु वे न मिले, इसलिये वे अशुद्ध ठहराकर याजकपद से निकाले गए। ६३ और अधिपति * ने उन से कहा, कि जब तक ऊरीम और तुम्मीम धारण करनेवाला कोई याजक न हो, तब तक कोई परमपवित्र वस्तु खाने न पाए ॥

६४ समस्त मण्डली मिलकर बयालीस हजार तीन सौ साठ की थी। ६५ इनको छोड़ इनके सात हजार तीन सौ सैंतीस दास-दासियां और दो सौ गानेवाले और गानेवालियां थीं। ६६ उनके घोड़े सात सौ छत्तीस, खच्चर दो सौ पैंतालीस, ऊंट चार सौ पैंतीस, ६७ और गदहे छः हजार सात सौ बीस थे। ६८ और पितरों के घरानों के कुछ मुख्य मुख्य पुरुषों ने जब यहोवा के भवन को जो यरूशलेम में है, आए, तब परमेश्वर के भवन को उसी के स्थान पर खड़ा करने के लिये अपनी अपनी इच्छा से कुछ दिया। ६९ उन्हों ने अपनी अपनी पूंजी के अनुसार इकसठ हजार दर्कमोन सोना और पांच हजार माने चान्दी और याजकों के योग्य एक सौ अंगरखे अपनी अपनी इच्छा से उस काम के खजाने में दे दिए। ७० तब याजक और लेवीय और लोगों में से कुछ और गवैये और द्वारपाल और नतीन लोग अपने नगर में और सब

* मूल में—वंश।

* मूल में—तिर्शाता।

इस्राएली अपने अपने नगर में फिर बस गए ।।

(वेदी का बनाया जाना)

३ जब सातवां महीना आया, और इस्राएली अपने अपने नगर में बस गए, तो लोग यरूशलेम में एक मन होकर इकट्ठे हुए। २ तब योसादाक के पुत्र येशू ने अपने भाई याजकों समेत और शालतीएल के पुत्र जरूब्बाबेल ने अपने भाइयों समेत कमर बान्धकर इस्राएल के परमेश्वर की वेदी को बनाया कि उस पर होमबलि चढ़ाएं, जैसे कि परमेश्वर के भक्त मूसा की व्यवस्था में लिखा है। ३ तब उन्हों ने वेदी को उसके स्थान पर खड़ा किया क्योंकि उन्हें उस ओर के देशों के लोगों का भय रहा, और वे उस पर यहोवा के लिये होमबलि अर्थात् प्रतिदिन सबेरे और सांझ के होमबलि चढ़ाने लगे। ४ और उन्हों ने झोपड़ियों के पर्व को माना, जैसे कि लिखा है, और प्रतिदिन के होमबलि एक एक दिन की गिनती और नियम के अनुसार चढ़ाए। ५ और उसके बाद नित्य होमबलि और नये नये चान्द और यहोवा के पवित्र किए हुए सब नियत पर्वों के बलि और अपनी अपनी इच्छा से यहोवा के लिये सब स्वेच्छाबलि हर एक के लिये बलि चढ़ाए। ६ सातवें महीने के पहिले दिन से वे यहोवा को होमबलि चढ़ाने लगे। परन्तु यहोवा के मन्दिर की नेव तब तक न डाली गई थी। ७ तब उन्हों ने पत्थर गढ़नेवालों और कारीगरों को रुपया, और सीदोनी और सोरी लोगों को खाने-पीने की वस्तुएं और तेल दिया, कि वे फारस के राजा कुस्रू के पत्र के अनुसार देवदार की लकड़ी लबानोन से जापा के पास के समुद्र में पहुंचाएं।।

(मन्दिर की नेव का डाला जाना)

८ उनके परमेश्वर के भवन में, जो यरूशलेम में है, आने के दूसरे वर्ष के दूसरे महीने में, शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल ने और योसादाक के पुत्र येशू ने और उनके और भाइयों ने जो याजक और लेवीय थे, और जितने बन्धुआई से यरूशलेम में आए थे उन्हों ने भी काम को आरम्भ किया। और बीस वर्ष अथवा उससे अधिक अवस्था के लेवियों को यहोवा के भवन का काम चलाने के लिये नियुक्त किया। ९ तो येशू और उसके बेटे और भाई और कदमीएल और उसके बेटे, जो यहूदा की सन्तान थे, और हेनादाद की सन्तान और उनके बेटे परमेश्वर के भवन में कारीगरों का काम चलाने को खड़े हुए ।।

१० और जब राजों ने यहोवा के मन्दिर की नेव डाली तब अपने वस्त्र पहिने हुए, और तुरहियां लिये हुए याजक, और झांझ लिये हुए आसाप के वंश के लेवीय इसलिये नियुक्त किए गए कि इस्राएलियों के राजा दाऊद की चलाई हुई रीति * के अनुसार यहोवा की स्तुति करें। ११ सो वे यह गा गाकर यहोवा की स्तुति और धन्यवाद करने लगे, कि वह भला है, और उसकी करुणा इस्राएल पर सदैव बनी है। और जब वे यहोवा की स्तुति करने लगे तब सब लोगों ने यह जानकर कि यहोवा के भवन की नेव अब पड़ रही है, ऊंचे शब्द से जय जयकार किया। १२ परन्तु बहुतेरे याजक और

* मूल में—दाऊद के हाथ।

लेवीय और पूर्वजों के घरानों के मुख्य पुरुष, अर्थात् वे बूढ़े जिन्हों ने पहिला भवन देखा था, जब इस भवन की नेव उनकी आंखों के साम्हने पड़ी तब फूट फूटकर रोने लगे, और बहुतेरे आनन्द के मारे ऊंचे शब्द से जय जयकार कर रहे थे। १३ इसलिये लोग, आनन्द के जय जयकार का शब्द, लोगों के रोने के शब्द से अलग पहिचान न सके, क्योंकि लोग ऊंचे शब्द से जय जयकार कर रहे थे, और वह शब्द दूर तक सुनाई देता था।

(यहूदियों के शत्रुओं से मन्दिर के बनने का रोका जाना)

४ जब यहूदा और बिन्यामीन के शत्रुओं ने यह सुना कि बन्धुआई से छूटे हुए लोग इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिये मन्दिर बना रहे हैं, २ तब वे जरुब्बाबेल और पूर्वजों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुषों के पास आकर उन से कहने लगे, हमें भी अपने संग बनाने दो; क्योंकि तुम्हारी नाईं हम भी तुम्हारे परमेश्वर की खोज में लगे हुए हैं, और अश्शूर का राजा एसर्हद्दोन जिस ने हमें यहां पहुंचाया, उसके दिनों से हम उसी को बलि चढ़ाते भी हैं। ३ जरुब्बाबेल, येशू और इस्राएल के पितरों के घरानों के मुख्य पुरुषों ने उन से कहा, हमारे परमेश्वर के लिये भवन बनाने में तुम को हम से कुछ काम नहीं; हम ही लोग एक संग मिलकर फारस के राजा कुस्रू की आज्ञा के अनुसार इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिये उसे बनाएंगे ॥

४ तब उस देश के लोग यहूदियों के हाथ ढीला करने और उन्हें डराकर मन्दिर बनाने में रुकावट डालने लगे। ५ और फारस के राजा कुस्रू के जीवन भर वरन फारस के राजा दारा के राज्य के समय तक उनके मनोरथ को निष्फल करने के लिये वकीलों को रुपया देते रहे ॥

६ क्षयर्ष के राज्य के पहिले दिनों में उन्हों ने यहूदा और यरूशलेम के निवासियों का दोषपत्र उसे लिख भेजा ॥

७ फिर अर्तक्षत्र के दिनों में बिशलाम, मिथदात और ताबेल ने और उसके सहचरियों ने फारस के राजा अर्तक्षत्र को चिट्ठी लिखी, और चिट्ठी अरामी अक्षरों और अरामी भाषा में लिखी गई। ८ अर्थात् रहूम राजमंत्री और शिलशै मंत्री ने यरूशलेम के विरुद्ध राजा अर्तक्षत्र को इस आशय की चिट्ठी लिखी। ९ उस समय रहूम राजमंत्री और शिमशै मंत्री और उनके और सहचरियों ने, अर्थात् दीनी, अपर्सतकी, तर्पली, अफ़ारसी, एरेकी, बाबेली, शूशनी, देहवी, एलामी, १० आदि जातियों ने जिन्हें महान और प्रधान ओस्नप्पर ने पार ले आकर शोमरोन नगर में और महानद के इस पार के शेष देश में बसाया था, एक चिट्ठी लिखी। ११ जो चिट्ठी उन्हों ने अर्तक्षत्र राजा को लिखी, उसकी यह नकल है—तेरे दास जो महानद के पार के मनुष्य हैं, इत्यादि। १२ राजा को यह विदित हो, कि जो यहूदी तेरे पास से चले आए, वे हमारे पास यरूशलेम को पहुंचे हैं। वे उस दंगैत और घिनौने नगर को बसा रहे हैं; वरन उसकी शहरपनाह को खड़ा कर चुके हैं और उसकी नेव को जोड़ चुके हैं। १३ अब राजा को विदित हो कि यदि वह नगर बस गया और उसकी शहरपनाह बन चुकी, तब तो वे लोग कर, चुंगी और राहदारी फिर न देंगे, और अन्त

में राजाओं की हानि होगी। १४ हम लोग तो राजमन्दिर का नमक खाते हैं और उचित नहीं कि राजा का अनादर हमारे देखते हो, इस कारण हम यह चिट्ठी भेजकर राजा को चिता देते हैं। १५ तेरे पुरखाओं के इतिहास की पुस्तक में खोज की जाए; तब इतिहास की पुस्तक में तू यह पाकर जान लेगा कि वह नगर बलवा करनेवाला और राजाओं और प्रान्तों की हानि करनेवाला है, और प्राचीन काल से उस में बलवा मचता आया है। और इसी कारण वह नगर नष्ट भी किया गया था। १६ हम राजा को निश्चय करा देते हैं कि यदि वह नगर बसाया जाए और उसकी शहरपनाह बन चुके, तब इसके कारण महानद के इस पार तेरा कोई भाग न रह जाएगा॥

१७ तब राजा ने रहूम राजमंत्री और शिमशै मंत्री और शोमरोन और महानद के इस पार रहनेवाले उनके और सहचरियों के पास यह उत्तर भेजा, कुशल, इत्यादि। १८ जो चिट्ठी तुम लोगों ने हमारे पास भेजी वह मेरे साम्हने पढ़ कर साफ साफ सुनाई गई। १९ और मेरी आज्ञा से खोज किये जाने पर जान पड़ा है, कि वह नगर प्राचीनकाल से राजाओं के विरुद्ध सिर उठाता आया है और उसमें दंगा और बलवा होता आया है। २० यरूशलेम के सामर्थी राजा भी हुए जो महानद के पार से समस्त देश पर राज्य करते थे, और कर, चुंगी और राहदारी उनको दी जाती थी। २१ इसलिये अब इस आज्ञा का प्रचार कर कि वे मनुष्य रोके जाएं और जब तक मेरी ओर से आज्ञा न मिले, तब तक वह नगर बनाया न जाए। २२ और चौकस रहो, कि इस बात में ढीले न होना; राजाओं की हानि करनेवाली वह बुराई क्यों बढ़ने पाए?

२३ जब राजा अर्तक्षत्र की यह चिट्ठी रहूम और शिमशै मंत्री और उनके सहचरियों को पढ़कर सुनाई गई, तब वे उतावली करके यरूशलेम को यहूदियों के पास गए और भुजबल और बरियाई से उनको रोक दिया। २४ तब परमेश्वर के भवन का काम जो यरूशलेम में है, रुक गया; और फारस के राजा दारा के राज्य के दूसरे वर्ष तक रुका रहा॥

(मन्दिर के बनाने का कार्य राजा की आज्ञा से निपटाया जाना)

५ तब हाग्गै नामक नबी और इद्दो का पोता जकर्याह यहूदा और यरूशलेम के यहूदियों से नबूवत करने लगे, उन्हों ने इस्राएल के परमेश्वर के नाम से उन से नबूवत की। २ तब शालतीएल का पुत्र जरुब्बाबेल और योसादाक का पुत्र येशू, कमर बान्धकर परमेश्वर के भवन को जो यरूशलेम में है बनाने लगे; और परमेश्वर के वे नबी उनका साथ देते रहे॥

३ उसी समय महानद के इस पार का तत्तनै नाम अधिपति और शतर्बोजनै अपने सहचरियों समेत उनके पास जाकर यों पूछने लगे, कि इस भवन के बनाने और इस शहरपनाह के खड़े करने की किस ने तुम को आज्ञा दी है? ४ तब हम लोगों से यह कहा, कि इस भवन के बनानेवालों के क्या क्या नाम हैं? ५ परन्तु यहूदियों के पुरनियों के परमेश्वर की दृष्टि उन पर रही, इसलिये जब तक इस बात की चर्चा दारा से न की गई और इसके विषय चिट्ठी के द्वारा उत्तर न मिला, तब तक उन्हों ने इनको न रोका॥

६ जो चिट्ठी महानद के इस पार के अधिपति तत्तनै और शतर्बोजनै और महानद के इस पार के उनके सहचरी अपार्सकियों ने राजा दारा के पास भेजी उसकी नकल यह है; ७ उन्हों ने उसको एक चिट्ठी लिखी, जिस में यह लिखा था: कि राजा दारा का कुशल क्षेम सब प्रकार से हो। ८ राजा को विदित हो, कि हम लोग यहूदा नाम प्रान्त में महान परमेश्वर के भवन के पास गए थे, वह बड़े बड़े पत्थरों से बन रहा है, और उसकी भीतों में कड़ियां जुड़ रही हैं; और यह काम उन लोगों से फुर्ती के साथ हो रहा है, और सुफल भी होता जाता है। ९ इसलिये हम ने उन पुरनियों से यों पूछा, कि यह भवन बनवाने, और यह शहरपनाह खड़ी करने की आज्ञा किस ने तुम्हें दी? १० और हम ने उनके नाम भी पूछे, कि हम उनके मुख्य पुरुषों के नाम लिखकर तुझ को जता सकें। ११ और उन्हों ने हमें यों उत्तर दिया, कि हम तो आकाश और पृथ्वी के परमेश्वर के दास हैं, और जिस भवन को बहुत वर्ष हुए इस्राएलियों के एक बड़े राजा ने बनाकर तैयार किया था, उसी को हम बना रहे हैं। १२ जब हमारे पुरखाओं ने स्वर्ग के परमेश्वर को रिस दिलाई थी, तब उस ने उन्हें बाबेल के कसदी राजा नबूकदनेस्सर के हाथ में कर दिया था, और उस ने इस भवन को नाश किया और लोगों को बन्धुआ करके बाबेल को ले गया। १३ परन्तु बाबेल के राजा कुस्रू के पहिले वर्ष में उसी कुस्रू राजा ने परमेश्वर के इस भवन के बनाने की आज्ञा दी। १४ और परमेश्वर के भवन के जो सोने और चान्दी के पात्र नबूकदनेस्सर यरूशलेम के मन्दिर में से निकलवाकर बाबेल के मन्दिर में ले गया था, उनको राजा कुस्रू ने बाबेल के मन्दिर में से निकलवाकर शेशबस्सर नामक एक पुरुष को जिसे उस ने अधिपति ठहरा दिया था, सौंप दिया। १५ और उस ने उससे कहा, ये पात्र ले जाकर यरूशलेम के मन्दिर में रख, और परमेश्वर का वह भवन अपने स्थान पर बनाया जाए। १६ तब उसी शेशबस्सर ने आकर परमेश्वर के भवन की जो यरूशलेम में है नेव डाली; और तब से अब तक यह बन रहा है, परन्तु अब तक नहीं बन पाया। १७ अब यदि राजा को अच्छा लगे तो बाबेल के राजभण्डार में इस बात की खोज की जाए, कि राजा कुस्रू ने सचमुच परमेश्वर के भवन के जो यरूशलेम में है बनवाने की आज्ञा दी थी, या नहीं। तब राजा इस विषय में अपनी इच्छा हम को बताए।।

६ तब राजा दारा की आज्ञा से बाबेल के पुस्तकालय में जहां खजाना भी रहता था, खोज की गई। २ और मादे नाम प्रान्त के अहमता नगर के राजगढ़ में एक पुस्तक मिली, जिस में यह वृत्तान्त लिखा था: ३ कि राजा कुस्रू के पहिले वर्ष में उसी कुस्रू राजा ने यह आज्ञा दी, कि परमेश्वर के भवन के विषय जो यरूशलेम में है, अर्थात् वह भवन जिस में बलिदान किए जाते थे, वह बनाया जाए और उसकी नेव दृढ़ता से डाली जाए, उसकी ऊंचाई और चौड़ाई साठ साठ हाथ की हों; ४ उस में तीन रद्दे भारी भारी पत्थरों के हों, और

एक परत नई लकड़ी का हो; और इनकी लागत राजभवन में से दी जाए। ५ और परमेश्वर के भवन के जो सोने और चान्दी के पात्र नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम के मन्दिर में से निकलवाकर बाबेल को पहुचा दिए थे वह लौटाकर यरूशलेम के मन्दिर में अपने अपने स्थान पर पहुंचाए जाएं, और तू उन्हें परमेश्वर के भवन में रख देना ।।

६ अब हे महानद के पार के अधिपति तत्तनै ! हे शतबोजनै ! तुम अपने सहचरी महानद के पार के अपार्सकियों समेत वहां से अलग रहो; ७ परमेश्वर के उस भवन के काम को रहने दो; यहूदियों का अधिपति और यहूदियों के पुरनिये परमेश्वर के उस भवन को उसी के स्थान पर बनाएं। ८ वरन मैं आज्ञा देता हूं कि तुम्हें यहूदियों के उन पुरनियों से ऐसा बर्ताव करना होगा, कि परमेश्वर का वह भवन बनाया जाए; अर्थात् राजा के धन में से. महानद के पार के कर में से, उन पुरुषों को फुर्ती के साथ खर्चा दिया जाए; ऐसा न हो कि उनको रुकना पड़े। ९ और क्या बछड़े ! क्या मेढ़े ! क्या मेम्ने ! स्वर्ग के परमेश्वर के होमबलियों के लिये जिस जिस वस्तु का उन्हें प्रयोजन हो, और जितना गेहूं, नमक, दाखमधु और तेल यरूशलेम के याजक कहें, वह सब उन्हें बिना भूल चूक प्रतिदिन दिया जाए, १० इसलिये कि वे स्वर्ग के परमेश्वर को सुखदायक सुगन्धवाले बलि चढ़ाकर, राजा और राजकुमारों के दीर्घायु के लिये प्रार्थना किया करें। ११ फिर मैं ने आज्ञा दी है, कि जो कोई यह आज्ञा टाले, उसके घर में से कड़ी निकाली जाए, और उस पर वह स्वयं चढ़ाकर जकड़ा जाए, और उसका घर इस अपराध के कारण घूरा बनाया जाए। १२ और परमेश्वर जिस ने वहां अपने नाम का निवास ठहराया है, वह क्या राजा क्या प्रजा, उन सभों को जो यह आज्ञा टालने और परमेश्वर के भवन को जो यरूशलेम में है नाश करने के लिये हाथ बढ़ाएं, नष्ट करें। मुझ दारा ने यह आज्ञा दी है फुर्ती से ऐसा ही करना ।।

१३ तब महानद के इस पार के अधिपति तत्तनै और शतर्बोजनै और उनके सहचरियों ने दारा राजा के चिट्ठी भेजने के कारण, उसी के अनुसार फुर्ती से काम किया। १४ तब यहूदी पुरनिये, हाग्गै नबी और इद्दो के पोते जकर्याह के नबूवत करने से मन्दिर को बनाते रहे, और कृतार्थ भी हुए। और इस्राएल के परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार और फारस के राजा कुस्रू, दारा और अर्तक्षत्र की आज्ञाओं के अनुसार बनाते बनाते उसे पूरा कर लिया। १५ इस प्रकार वह भवन राजा दारा के राज्य के छठवें वर्ष में अदार महीने के तीसरे दिन को बनकर समाप्त हुआ ।।

१६ इस्राएली, अर्थात् याजक लेवीय और और जितने बन्धुआई से आए थे उन्हों ने परमेश्वर के उस भवन की प्रतिष्ठा उत्सव के साथ की। १७ और उस भवन की प्रतिष्ठा में उन्हों ने एक सौ बैल और दो सौ मेढ़े और चार सौ मेम्ने और फिर सब इस्राएल के निमित्त पापबलि करके इस्राएल के गोत्रों की गिनती के अनुसार बारह बकरे चढ़ाए। १८ तब जैसे मूसा की पुस्तक में लिखा है, वैसे ही उन्हों ने परमेश्वर की आराधना के लिये जो यरूशलेम में है, बारी बारी से

याजकों और दल दल के लेवियों को नियुक्त कर दिया ॥

१६ फिर पहिले महीने के चौदहवें दिन को बन्धुआई से आए हुए लोगों ने फसह माना। २० क्योंकि याजकों और लेवियों ने एक मन होकर, अपने अपने को शुद्ध किया था; इसलिये वे सब के सब शुद्ध थे। और उन्हों ने बन्धुआई से आए हुए सब लोगों और अपने भाई याजकों के लिये और अपने अपने लिये फसह के पशु बलि किए। २१ तब बन्धुआई से लौटे हुए इस्राएली और जितने और देश की अन्य जातियों की अशुद्धता से इसलिये अलग हो गए थे कि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की खोज करें, उन सभों ने भोजन किया। २२ और अखमीरी रोटी का पर्व सात दिन तक आनन्द के साथ मनाते रहे; क्योंकि यहोवा ने उन्हें आनन्दित किया था, और अश्शूर के राजा का मन उनकी ओर ऐसा फेर दिया कि वह परमेश्वर अर्थात् इस्राएल के परमेश्वर के भवन के काम में उनकी सहायता करे ॥

(एज्रा का राजा की ओर से यरूशलेम को भेजा जाना)

७ इन बातों के बाद अर्थात् फारस के राजा अर्तक्षत्र के दिनों में, एज्रा बाबेल से यरूशलेम को गया। वह सरायाह का पुत्र था। और सरायाह अजर्याह का पुत्र था, अजर्याह हिल्किय्याह का, २ हिल्किय्याह शल्लूम का, शल्लूम सादोक का, सादोक अहीतूब का, अहीतूब अमर्याह का, अमर्याह अजर्याह का, ३ अजर्याह मरायोत का, ४ मरायोत जरह्याह का, जरह्याह उज्जी का, उज्जी बुक्की का, ५ बुक्की अबीशू का, अबीशू पीनहास का, पीनहास एलीआजर का और एलीआजर हारून महायाजक का पुत्र था। ६ यही एज्रा मूसा की व्यवस्था के विषय जिसे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने दी थी, निपुण शास्त्री था। और उसके परमेश्वर यहोवा की कृपादृष्टि * जो उस पर रही, इसके कारण राजा ने उसका मुंह मांगा वर दे दिया ॥

७ और कितने इस्राएली, और याजक लेवीय, गवैये, और द्वारपाल और नतीन के कुछ लोग अर्तक्षत्र राजा के सातवें वर्ष में यरूशलेम को ले गए। ८ और वह राजा के सातवें वर्ष के पांचवें महीने में यरूशलेम को पहुंचा। ९ पहिले महीने के पहिले दिन को वह बाबेल से चल दिया, और उसके परमेश्वर की कृपादृष्टि † उस पर रही, इस कारण पांचवें महीने के पहिले दिन वह यरूशलेम को पहुंचा। १० क्योंकि एज्रा ने यहोवा की व्यवस्था का अर्थ बूझ लेने, और उसके अनुसार चलने, और इस्राएल में विधि और नियम सिखाने के लिये अपना मन लगाया था ॥

११ जो चिट्ठी राजा अर्तक्षत्र ने एज्रा याजक और शास्त्री को दी थी जो यहोवा की आज्ञाओं के वचनों का, और उसकी इस्राएलियों में चलाई हुई विधियों का शास्त्री था, उसकी नकल यह है: १२ अर्थात्, एज्रा याजक जो स्वर्ग के परमेश्वर की व्यवस्था का पूर्ण शास्त्री है, उसको अर्तक्षत्र महाराजाधिराज की ओर से, इत्यादि। १३ मैं यह आज्ञा देता हूं, कि मेरे राज्य में जितने इस्राएली और उनके याजक और लेवीय अपनी

* मूल में—हाथ।
† मूल में—भला हाथ।

इच्छा से यरूशलेम जाना चाहें, वे तेरे साथ जाने पाएं। १४ तू तो राजा और उसके सातों मंत्रियों की ओर से इसलिये भेजा जाता है, कि अपने परमेश्वर की व्यवस्था के विषय जो तेरे पास है, यहूदा और यरूशलेम की दशा बूझ ले, १५ और जो चान्दी-सोना, राजा और उसके मंत्रियों ने इस्राएल के परमेश्वर को जिसका निवास यरूशलेम में है, अपनी इच्छा से दिया है, १६ और जितना चान्दी-सोना कुल बाबेल प्रान्त में तुझे मिलेगा, और जो कुछ लोग और याजक अपनी इच्छा से अपने परमेश्वर के भवन के लिये जो यरूशलेम में हैं देंगे, उसको ले जाए। १७ इस कारण तू उस रुपये से फुर्ती के साथ बैल, मेढ़े और मेम्ने उनके योग्य अन्नबलि और अर्घ की वस्तुओं समेत मोल लेना और उस वेदी पर चढ़ाना, जो तुम्हारे परमेश्वर के यरूशलेमवाले भवन में है। १८ और जो चान्दी-सोना बचा रहे, उस से जो कुछ तुझे और तेरे भाइयों को उचित जान पड़े, वही अपने परमेश्वर की इच्छा के अनुसार करना। १९ और तेरे परमेश्वर के भवन की उपासना के लिये जो पात्र तुझे सौंपे जाते हैं, उन्हें यरूशलेम के परमेश्वर के साम्हने दे देना। २० और इन से अधिक जो कुछ तुझे अपने परमेश्वर के भवन के लिये आवश्यक जानकर देना पड़े, वह राज-खजाने में से दे देना।।

२१ मैं अर्तक्षत्र राजा यह आज्ञा देता हूं, कि तुम महानद के पार के सब खजांचियों से जो कुछ एज्रा याजक, जो स्वर्ग के परमेश्वर की व्यवस्था का शास्त्री है, तुम लोगों से चाहे, वह फुर्ती के साथ किया जाए। २२ अर्थात् सौ किक्कार तक चान्दी, सौ कोर तक गेहूं, सौ बत तक दाखमधु, सौ बत तक तेल और नमक जितना चाहिये उतना दिया जाए। २३ जो जो आज्ञा स्वर्ग के परमेश्वर की ओर से मिले, ठीक उसी के अनुसार स्वर्ग के परमेश्वर के भवन के लिये किया जाय, राजा और राजकुमारों के राज्य पर परमेश्वर का क्रोध क्यों भड़कने पाए। २४ फिर हम तुम को चिता देते हैं, कि परमेश्वर के उस भवन के किसी याजक, लेवीय, गवैये, द्वारपाल, नतीन या और किसी सेवक से कर, चुंगी, अथवा राहदारी लेने की आज्ञा नहीं है।।

२५ फिर हे एज्रा! तेरे परमेश्वर से मिली हुई बुद्धि के अनुसार जो तुझ में है, न्यायियों और विचार करनेवालों को नियुक्त कर जो महानद के पार रहनेवाले उन सब लोगों में जो तेरे परमेश्वर की व्यवस्था जानते हों न्याय किया करें; और जो जो उन्हें न जानते हों, उनको तुम सिखाया करो। २६ और जो कोई तेरे परमेश्वर की व्यवस्था और राजा की व्यवस्था न माने, उसको फुर्ती से दण्ड दिया जाए, चाहे प्राणदण्ड, चाहे देश-निकाला, चाहे माल जप्त किया जाना, चाहे कैद करना।।

२७ धन्य है हमारे पितरों का परमेश्वर यहोवा, जिस ने ऐसी मनसा राजा के मन में उत्पन्न की है, कि यहोवा के यरूशलेम के भवन को संवारे, २८ और मुझ पर राजा और उसके मंत्रियों और राजा के सब बड़े बड़े हाकिमों को दयालु किया। मेरे परमेश्वर यहोवा की कृपादृष्टि * जो मुझ पर हुई, इसके अनुसार मैं ने हियाव

* मूल में—हाथ।

बान्धा, और इस्राएल में से मुख्य पुरुषों को इकट्ठा किया, कि वे मेरे संग चलें ।।

(एज्रा का सहचरियों समेत यरूशलेम को पहुंचना)

८ उनके पूर्वजों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुष ये हैं, और जो लोग राजा अर्तक्षत्र के राज्य में बाबेल से मेरे संग यरूशलेम को गए उनकी वंशावली यह है: २ अर्थात् पीनहास के वंश में से गेर्शोम, ईतामार के वंश में से दानिय्येल, दाऊद के वंश में से हत्तूस। ३ शकन्याह के वंश के परोश के गोत्र में से जकर्याह, जिसके संग डेढ़ सौ पुरुषों की वंशावली हुई। ४ पहत्मोआब के वंश में से जरह्याह का पुत्र एल्यहोएनै, जिसके संग दो सौ पुरुष थे। ५ शकन्याह के वंश में से यहजीएल का पुत्र, जिसके संग तीन सौ पुरुष थे। ६ आदीन के वंश में से योनातान का पुत्र एबेद, जिसके संग पचास पुरुष थे। ७ एलाम के वंश में से अतल्याह का पुत्र यशायाह, जिसके संग सत्तर पुरुष थे। ८ शपत्याह के वंश में से मीकाएल का पुत्र जबद्याह, जिसके संग अस्सी पुरुष थे। ९ योआब के वंश में से यहीएल का पुत्र ओबद्याह, जिसके संग दो सौ अठारह पुरुष थे। १० शलोमित के वंश में से योसिय्याह का पुत्र, जिसके संग एक सौ साठ पुरुष थे। ११ बेबै के वंश में से बेबै का पुत्र जकर्याह, जिसके संग अट्ठाईस पुरुष थे। १२ अजगाद के वंश में से हक्कातान का पुत्र योहानान, जिसके संग एक सौ दस पुरुष थे। १३ अदोनीकाम के वंश में से जो पीछे गए उनके ये नाम हैं: अर्थात् एलीपेलेत, यीएल, और समायाह, और उनके संग साठ पुरुष थे। १४ और बिग्वै के वंश में से ऊतै और जब्बूद थे, और उनके संग सत्तर पुरुष थे ।।

१५ इनको मैं ने उस नदी के पास जो अहवा की ओर बहती है इकट्ठा कर लिया, और वहां हम लोग तीन दिन डेरे डाले रहे, और मैं ने वहां लोगों और याजकों को देख लिया परन्तु किसी लेवीय को न पाया। १६ मैं ने एलीएजेर, अरीएल, शमायाह, एलनातान, यारीब, एलनातान, नातान, जकर्याह और मशुल्लाम को जो मुख्य पुरुष थे, और योयारीब और एलनातान को जो बुद्धिमान थे। १७ बुलवाकर, इद्दो के पास जो कासिप्या नाम स्थान का प्रधान था, भेज दिया; और उनको समझा दिया, कि कासिप्या स्थान में इद्दो और उसके भाई नतीन लोगों से क्या क्या कहना, कि वे हमारे पास हमारे परमेश्वर के भवन के लिये सेवा टहल करनेवालों को ले आएं। १८ और हमारे परमेश्वर की कृपादृष्टि* जो हम पर हुई इसके अनुसार वे हमारे पास ईश्शेकेल† को जो इस्राएल के परपोता और लेवी के पोता महली के वंश में से था, और शेरेब्याह को, और उसके पुत्रों और भाइयों को, अर्थात् अठारह जनों को; १९ और हशब्याह को, और उसके संग मरारी के वंश में से यशायाह को, और उसके पुत्रों और भाईयों को, अर्थात् बीस जनों को; २० और नतीन लोगों में से जिन्हें दाऊद और हाकिमों ने लेवियों की सेवा करने को ठहराया था दो सौ बीस नतिनों को ले आए। इन सभों के नाम लिखे हुए थे ।।

---

* मूल में—भला हाथ।

† वा एक बुद्धिमान पुरुष।

२१ तब मैं ने वहां अर्थात् अहवा नदी के तीर पर उपवास का प्रचार इस आशय से किया, कि हम परमेश्वर के साम्हने दीन हों; और उस से अपने और अपने बालबच्चों और अपनी समस्त सम्पत्ति के लिये सरल यात्रा मांगें। २२ क्योंकि मैं मार्ग के शत्रुओं से बचने के लिये सिपाहियों का दल और सवार राजा से मांगने से लजाता था, क्योंकि हम राजा से यह कह चुके थे कि हमारा परमेश्वर अपने सब खोजियों पर, भलाई के लिये कृपादृष्टि* रखता है और जो उसे त्याग देते हैं, उसका बल और कोप उनके विरुद्ध है। २३ इसी विषय पर हम ने उपवास करके अपने परमेश्वर से प्रार्थना की, और उस ने हमारी सुनी ।।

२४ तब मैं ने मुख्य याजकों में से बारह पुरुषों को, अर्थात् शेरेब्याह, हशब्याह और इनके दस भाइयों को अलग करके, जो चान्दी, सोना और पात्र, २५ राजा और उसके मंत्रियों और उसके हाकिमों और जितने इस्राएली उपस्थित थे उन्हों ने हमारे परमेश्वर के भवन के लिये भेंट दिए थे, उन्हें तौलकर उनको दिया। २६ अर्थात् मैं ने उनके हाथ में साढ़े छः सौ किक्कार चान्दी, सौ किक्कार चान्दी के पात्र, २७ सौ किक्कार सोना, हजार दर्कमोन के सोने के बीस कटोरे, और सोने सरीखे अनमोल चोखे चमकनेवाले पीतल के दो पात्र तौलकर दे दिये। २८ और मैं ने उन से कहा, तुम तो यहोवा के लिये पवित्र हो, और ये पात्र भी पवित्र हैं; और यह चान्दी और सोना भेंट का है, जो तुम्हारे पितरों के परमेश्वर यहोवा के लिये प्रसन्नता से दी गई। २९ इसलिये जागते रहो, और जब तक तुम इन्हें यरूशलेम में प्रधान याजकों और लेवियों और इस्राएल के पितरों के घरानों के प्रधानों के साम्हने यहोवा के भवन की कोठरियों में तौलकर न दो, तब तक इनकी रक्षा करते रहो। ३० तब याजकों और लेवियों ने चान्दी, सोने और पात्रों को तौलकर ले लिया कि उन्हें यरूशलेम को हमारे परमेश्वर के भवन में पहुंचाएं ।।

३१ पहिले महीने के बारहवें दिन को हम ने अहवा नदी से कूच करके यरूशलेम का मार्ग लिया, और हमारे परमेश्वर की कृपादृष्टि* हम पर रही; और उस ने हम को शत्रुओं और मार्ग पर घात लगानेवालों के हाथ से बचाया। ३२ निदान हम यरूशलेम को पहुंचे और वहां तीन दिन रहे। ३३ फिर चौथे दिन वह चान्दी-सोना और पात्र हमारे परमेश्वर के भवन में ऊरीयाह के पुत्र मरेमोत याजक के हाथ में तौलकर दिए गए। और उसके संग पीनहास का पुत्र एलीआज़र था, और उनके साथ येशू का पुत्र योजाबाद लेवीय और बिन्नूई का पुत्र नोअद्याह लेवीय थे। ३४ वे सब वस्तुएं गिनी और तौली गईं, और उनका तौल उसी समय लिखा गया ।।

३५ जो बन्धुआई से आए थे, उन्हों ने इस्राएल के परमेश्वर के लिये होमबलि चढ़ाए; अर्थात् समस्त इस्राएल के निमित्त बारह बछड़े, छियानवे मेढ़े और सतहत्तर मेम्ने और पापबलि के लिये बारह बकरे; यह सब यहोवा के लिये होमबलि था।

* मूल में—हाथ।

* मूल में—हाथ।

३६ तब उन्हों ने राजा की आज्ञाएं महानद के इस पार के अधिकारियों और अधिपतियों को दीं; और उन्हों ने इस्राएली लोगों और परमेश्वर के भवन के काम में सहायता की ॥

(यहूदा के पाप के कारण एज्रा की प्रार्थना)

६ जब ये काम हो चुके, तब हाकिम मेरे पास आकर कहने लगे, न तो इस्राएली लोग, न याजक, न लेवीय इस ओर के देशों के लोगों से अलग हुए; वरन उनके से, अर्थात् कनानियों, हित्तियों, परिज्जियों, यबूसियों, अम्मोनियों, मोआबियों, मिस्रियों और एमोरियों के से घिनौने काम करते हैं। २ क्योंकि उन्हों ने उनकी बेटियों में से अपने और अपने बेटों के लिये स्त्रियां कर ली हैं; और पवित्र वंश इस ओर के देशों के लोगों में मिल गया है। वरन हाकिम और सरदार इस विश्वासघात में मुख्य हुए हैं। ३ यह बात सुनकर मैं ने अपने वस्त्र और बागे को फाड़ा, और अपने सिर और दाढ़ी के बाल नोचे, और विस्मित होकर बैठा रहा। ४ तब जितने लोग इस्राएल के परमेश्वर के वचन सुनकर बन्धुआई से आए हुए लोगों के विश्वासघात के कारण थरथराते थे, सब मेरे पास इकट्ठे हुए, और मैं सांझ की भेंट के समय तक विस्मित होकर बैठा रहा। ५ परन्तु सांझ की भेंट के समय मैं वस्त्र और बागा फाड़े हुए उपवास की दशा में उठा, फिर घुटनों के बल झुका, और अपने हाथ अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फैलाकर कहा, ६ हे मेरे परमेश्वर! मुझे तेरी ओर अपना मुंह उठाते लाज आती है, और हे मेरे परमेश्वर! मेरा मुंह काला है; क्योंकि हम लोगों के अधर्म के काम हमारे सिर पर बढ़ गए हैं, और हमारा दोष बढ़ते बढ़ते आकाश तक पहुंचा है। ७ अपने पुरखाओं के दिनों से लेकर आज के दिन तक हम बड़े दोषी हैं, और अपने अधर्म के कामों के कारण हम अपने राजाओं और याजकों समेत देश देश के राजाओं के हाथ में किए गए कि तलवार, बन्धुआई, लूटे जाने, और मुंह काला हो जाने की विपत्तियों में पड़ें जैसे कि आज हमारी दशा है। ८ और अब थोड़े दिन से हमारे परमेश्वर यहोवा का अनुग्रह हम पर हुआ है, कि हम में से कोई कोई बच निकले, और हम को उसके पवित्र स्थान में एक खूंटी मिले, और हमारा परमेश्वर हमारी आंखों में ज्योति आने दे, और दासत्व में हम को कुछ विश्रान्ति मिले। ९ हम दास तो हैं ही, परन्तु हमारे दासत्व में हमारे परमेश्वर ने हम को नहीं छोड़ दिया, वरन फारस के राजाओं को हम पर ऐसे कृपालु किया, कि हम नया जीवन पाकर अपने परमेश्वर के भवन को उठाने, और इसके खंडहरों को सुधारने पाए, और हमें यहूदा और यरूशलेम में आड़ मिली ॥

१० और अब हे हमारे परमेश्वर इसके बाद हम क्या कहें, यही कि हम ने तेरी उन आज्ञाओं को तोड़ दिया है, ११ जो तू ने यह कहकर अपने दास नबियों के द्वारा दीं, कि जिस देश के अधिकारी होने को तुम जाने पर हो, वह तो देश देश के लोगों की अशुद्धता के कारण और उनके घिनौने कामों के कारण अशुद्ध देश है, उन्हों ने उसे एक सिवाने से दूसरे सिवाने तक अपनी अशुद्धता

से भर दिया है। १२ इसलिये अब तू न तो अपनी बेटियां उनके बेटों को ब्याह देना और न उनकी बेटियों से अपने बेटों का ब्याह करना, और न कभी उनका कुशल क्षेम चाहना, इसलिये कि तुम बलवान बनो और उस देश के अच्छे अच्छे पदार्थ खाने पाओ, और उसे ऐसा छोड़ जाओ, कि वह तुम्हारे वंश के अधिकार में सदैव बना रहे। १३ और उस सब के बाद जो हमारे बुरे कामों और बड़े दोष के कारण हम पर बीता है, जब कि हे हमारे परमेश्वर तू ने हमारे अधर्म के बराबर हमें दण्ड नहीं दिया, वरन हम में से कितनों को बचा रखा है, १४ तो क्या हम तेरी आज्ञाओं को फिर से उल्लंघन करके इन घिनौने काम करनेवाले लोगों से समधियाना का सम्बन्ध करें? क्या तू हम पर यहां तक कोप न करेगा जिस से हम मिट जाएं और न तो कोई बचे और न कोई रह जाए? १५ हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा! तू तो धर्मी है, हम बचकर मुक्त हुए हैं जैसे कि आज वर्तमान है। देख, हम तेरे साम्हने दोषी हैं, इस कारण कोई तेरे साम्हने खड़ा नहीं रह सकता॥

(यहूदियों का अन्यजाति स्त्रियों को दूर करना)

१० जब एज्रा परमेश्वर के भवन के साम्हने पड़ा, रोता हुआ प्रार्थना और पाप का अंगीकार कर रहा था, तब इस्राएल में से पुरुषों, स्त्रियों और लड़केबालों की एक बहुत बड़ी मण्डली उसके पास इकट्ठी हुई; और लोग बिलक बिलक कर रो रहे थे। २ तब यहीएल का पुत्र शकन्याह जो एलाम के वंश में का था, एज्रा से कहने लगा, हम लोगों ने इस देश के लोगों में से अन्यजाति स्त्रियां ब्याह कर अपने परमेश्वर का विश्वासघात तो किया है, परन्तु इस दशा में भी इस्राएल के लिये आशा है। ३ अब हम अपने परमेश्वर से यह वाचा बान्धें, कि हम अपने प्रभु की सम्मति और अपने परमेश्वर की आज्ञा सुनकर थरथरानेवालों की सम्मति के अनुसार ऐसी सब स्त्रियों को और उनके लड़केबालों को दूर करें; और व्यवस्था के अनुसार काम किया जाए। ४ तू उठ, क्योंकि यह काम तेरा ही है, और हम तेरे साथ हैं; इसलिये हियाव बान्धकर इस काम में लग जा। ५ तब एज्रा उठा, और याजकों, लेवियों और सब इस्राएलियों के प्रधानों को यह शपथ खिलाई कि हम इसी वचन के अनुसार करेंगे; और उन्हों ने वैसी ही शपथ खाई॥

६ तब एज्रा परमेश्वर के भवन के साम्हने से उठा, और एल्याशीब के पुत्र योहानाम की कोठरी में गया, और वहां पहुंचकर न तो रोटी खाई, न पानी पिया, क्योंकि वह बन्धुआई में से निकल आए हुओं के विश्वासघात के कारण शोक करता रहा। ७ तब उन्हों ने यहूदा और यरूशलेम में रहनेवाले बन्धुआई में से आए हुए सब लोगों में यह प्रचार कराया, कि तुम यरूशलेम में इकट्ठे हो; ८ और जो कोई हाकिमों और पुरनियों की सम्मति न मानेगा और तीन दिन के भीतर न आए तो उसकी समस्त धन-सम्पत्ति नष्ट की जाएगी और वह आप बन्धुआई से आए हुओं की सभा से अलग किया जाएगा॥

९ तब यहूदा और बिन्यामीन के सब मनुष्य तीन दिन के भीतर यरूशलेम में इकट्ठे हुए; यह नौवें महीने के बीसवें दिन में हुआ; और सब लोग परमेश्वर के भवन के चौक में उस विषय के कारण और झड़ी के मारे कांपते हुए बैठे रहे। १० तब एज्रा याजक खड़ा होकर उन से कहने लगा, तुम लोगों ने विश्वासघात करके अन्यजाति-स्त्रियां ब्याह लीं, और इस से इस्राएल का दोष बढ़ गया है। ११ सो अब अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा के साम्हने अपना पाप मान लो, और उसकी इच्छा पूरी करो, और इस देश के लोगों से और अन्यजाति-स्त्रियों से न्यारे हो जाओ। १२ तब पूरी मण्डली के लोगों ने ऊंचे शब्द से कहा, जैसा तू ने कहा है, वैसा ही हमें करना उचित है। १३ परन्तु लोग बहुत हैं, और झड़ी का समय है, और हम बाहर खड़े नहीं रह सकते, और यह दो एक दिन का काम नहीं है, क्योंकि हम ने इस बात में बड़ा अपराध किया है। १४ समस्त मण्डली की ओर से हमारे हाकिम नियुक्त किए जाएं; और जब तक हमारे परमेश्वर का भड़का हुआ कोप हम से दूर न हो, और यह काम निपट न जाए, तब तक हमारे नगरों के जितने निवासियों ने अन्यजाति-स्त्रियां ब्याह ली हों, वे नियत समयों पर आया करें, और उनके संग एक नगर के पुरनिये और न्यायी आएं। १५ इसके विरुद्ध केवल असाहेल के पुत्र योनातान और तिकवा के पुत्र यहजयाह खड़े हुए, और मशुल्लाम और शब्बतै लेवियों ने उनकी सहायता की॥

१६ परन्तु बन्धुआई से आए हुए लोगों ने वैसा ही किया। तब एज्रा याजक और पितरों के घरानों के कितने मुख्य पुरुष अपने अपने पितरों के घराने के अनुसार अपने सब नाम लिखाकर अलग किए गए, और दसवें महीने के पहिले दिन को इस बात की तहक़ीक़ात के लिये बैठे। १७ और पहिले महीने के पहिले दिन तक उन्हों ने उन सब पुरुषों की बात निपटा दी, जिन्हों ने अन्यजाति-स्त्रियों को ब्याह लिया था॥

१८ और याजकों की सन्तान में से; ये जन पाए गए जिन्हों ने अन्यजाति-स्त्रियों को ब्याह लिया था, अर्थात् येशू के पुत्र, योसादाक के पुत्र, और उसके भाई मासेयाह, एलीआज़र, यारीब और गदल्याह। १९ इन्हों ने हाथ मारकर वचन दिया, कि हम अपनी स्त्रियों को निकाल दगे, और उन्हों ने दोषी ठहरकर, अपने अपने दोष के कारण एक एक मेढ़ा बलि किया। २० और इम्मेर की सन्तान में से; हनानी और जबद्याह, २१ और हारीम की सन्तान में से; मासेयाह, एलीयाह, शमायाह, यहीएल और उज्जियाह। २२ और पशहूर की सन्तान में से; एल्योएनै, मासेयाह, इश्माएल, नतनेल, योजाबाद और एलासा॥

२३ फिर लेवियों में से; योजाबाद, शिमी, केलायाह जो कलीता कहलाता है, पतह्याह, यहूदा और एलीआज़र। २४ और गवैयों में से; एल्याशीब और द्वारपालों में से शल्लूम, तेलेम और ऊरी॥

२५ और इस्राएल में से; परोश की सन्तान में से; रम्याह, यिज्जियाह, मल्कियाह, मिय्यामीन, एलीआज़र, मल्कियाह और बनायाह। २६ और एलाम की सन्तान में से; मत्तन्याह, जकर्याह, यहीएल अब्दी, यरेमोत और एलियाह। २७ और

जत्तू की सन्तान में से; एल्योएनै, एल्याशीब, मत्तन्याह, यरेमोत, जाबाद और अज़ीज़ा। २८ और बेबै की सन्तान में से; यहोहानान, हनन्याह, जब्बै और अतलै। २९ और बानी की सन्तान में से; मशुल्लाम, मल्लूक, अदायाह, याशूब, शाल और यरामोत। ३० और पहतमोआब की सन्तान में से; अदना, कलाल, बनायाह, मासेयाह, मत्तन्याह, बसलेल, बिन्नूई और मनश्शे। ३१ और हारीम की सन्तान में से; एलीआज़र, यिश्शियाह, मल्कियाह, शमायाह, शिमोन; ३२ बिन्यामीन, मल्लूक और शमर्याह। ३३ और हाशूम की सन्तान में से; मत्तनै, मत्तत्ता, जाबाद, एलीपेलेत, यरेमै, मनश्शे और शिमी। ३४ और बानी की सन्तान में से; मादै, अम्राम, ऊएल; ३५ बनायाह, बेदयाह, कलूही; ३६ वन्याह, मरेमोत, एल्याशीब; ३७ मत्तन्याह, मत्तनै, यासू; ३८ बानी, बिन्नूई, शिमी; ३९ शेलेम्याह, नातान, अदायाह; ४० मन्कदबै, शाशै, शारै; ४१ अजरेल, शेलेमाह, शेमर्याह; ४२ शल्लूम, अमर्याह और योसेफ। ४३ और नबो की सन्तान में से; यीएल, मत्तित्याह, जाबाद, जबीना, इद्दो, योएल और बनायाह। ४४ इन सभों ने अन्य-जाति-स्त्रियां ब्याह ली थीं, और कितनों की स्त्रियों से लड़के भी उत्पन्न हुए थे॥

नहेमायाह

(नहेमायाह का राजा से आज्ञा पाकर यरूशलेम को जाना)

१ हकल्याह के पुत्र नहेमायाह के वचन। बीसवें वर्ष के किसलेव नाम महीने में, जब मैं शूशन नाम राजगढ़ में रहता था, २ तब हनानी नाम मेरा एक भाई और यहूदा से आए हुए कई एक पुरुष आए; तब मैं ने उन से उन बचे हुए यहूदियों के विषय जो बन्धुआई से छूट गए थे, और यरूशलेम के विषय में पूछा। ३ उन्हों ने मुझ से कहा, जो बचे हुए लोग बन्धुआई से छूटकर उस प्रान्त में रहते हैं, वे बड़ी दुर्दशा में पड़े हैं, और उनकी निन्दा होती है; क्योंकि यरूशलेम की शहरपनाह टूटी हुई, और उसके फाटक जले हुए हैं॥

४ ये बातें सुनते ही मैं बैठकर रोने लगा और कितने दिन तक विलाप करता; और स्वर्ग के परमेश्वर के सम्मुख उपवास करता और यह कहकर प्रार्थना करता रहा। ५ हे स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा, हे महान और भययोग्य ईश्वर! तू जो अपने प्रेम रखनेवाले और आज्ञा माननेवाले के विषय अपनी वाचा पालता और उन पर करुणा करता है; ६ तू कान लगाए और आंखें खोले रह, कि जो प्रार्थना मैं तेरा दास इस समय तेरे दास इस्राएलियों के लिये दिन रात करता रहता हूं, उसे

तू सुन ले। मैं इस्राएलियों के पापों को जो हम लोगों ने तेरे विरुद्ध किए हैं, मान लेता हूं। मैं और मेरे पिता के घराने दोनों ने पाप किया है। ७ हम ने तेरे साम्हने बहुत बुराई की है, और जो आज्ञाएं, विधियां और नियम तू ने अपने दास मूसा को दिए थे, उनको हम ने नहीं माना। ८ उस वचन की सुधि ले, जो तू ने अपने दास मूसा से कहा था, कि यदि तुम लोग विश्वासघात करो, तो मैं तुम को देश देश के लोगों में तितर बितर करूंगा। ९ परन्तु यदि तुम मेरी ओर फिरो, और मेरी आज्ञाएं मानो, और उन पर चलो, तो चाहे तुम में से निकाले हुए लोग आकाश की छोर में भी हों, तौभी मैं उनको वहां से इकट्ठा करके उस स्थान में पहुंचाऊंगा, जिसे मैं ने अपने नाम के निवास के लिये चुन लिया है। १० अब वे तेरे दास और तेरी प्रजा के लोग हैं जिनको तू ने अपनी बड़ी सामर्थ और बलवन्त हाथ के द्वारा छुड़ा लिया है। ११ हे प्रभु बिनती यह है, कि तू अपने दास की प्रार्थना पर, और अपने उन दासों की प्रार्थना पर, जो तेरे नाम का भय मानना चाहते हैं, कान लगा, और आज अपने दास का काम सुफल कर, और उस पुरुष को उस पर दयालु कर। (मैं तो राजा का पियाऊ था।।)

२ अर्तक्षत्र राजा के बीसवें वर्ष के नीसान नाम महीने में, जब उसके साम्हने दाखमधु था, तब मैं ने दाखमधु उठाकर राजा को दिया। इस से पहिले मैं उसके साम्हने कभी उदास न हुआ था। २ तब राजा ने मुझ से पूछा, तू तो रोगी नहीं है, फिर तेरा मुंह क्यों उतरा है? यह तो मन ही की उदासी होगी। ३ तब मैं अत्यन्त डर गया। और राजा से कहा, राजा सदा जीवित रहे! जब वह नगर जिस में मेरे पुरखाओं की कबरें हैं, उजाड़ पड़ा है और उसके फाटक जले हुए हैं, तो मेरा मुंह क्यों न उतरे? ४ राजा ने मुझ से पूछा, फिर तू क्या मांगता है? तब मैं ने स्वर्ग के परमेश्वर से प्रार्थना करके, राजा से कहा; ५ यदि राजा को भाए, और तू अपने दास से प्रसन्न हो, तो मुझे यहूदा और मेरे पुरखाओं की कबरों के नगर को भेज, ताकि मैं उसे बनाऊं। ६ तब राजा ने जिसके पास रानी भी बैठी थी, मुझ से पूछा, तू कितने दिन तक यात्रा में रहेगा? और कब लौटेगा? सो राजा मुझे भेजने को प्रसन्न हुआ; और मैं ने उसके लिये एक समय नियुक्त किया। ७ फिर मैं ने राजा से कहा, यदि राजा को भाए, तो महानद के पार के अधिपतियों के लिये इस आशय की चिट्ठियां मुझे दी जाएं कि जब तक मैं यहूदा को न पहुंचूं, तब तक वे मुझे अपने अपने देश में से होकर जाने दें। ८ और सरकारी जंगल के रखवाले आसाप के लिये भी इस आशय की चिट्ठी मुझे दी जाए ताकि वह मुझे भवन से लगे हुए राजगढ़ की कड़ियों के लिये, और शहरपनाह के, और उस घर के लिये, जिस में मैं जाकर रहूंगा, लकड़ी दे। मेरे परमेश्वर की कृपादृष्टि * मुझ पर थी, इसलिये राजा ने यह बिनती ग्रहण किया।।

९ तब मैं ने महानद के पार के अधिपतियों के पास जाकर उन्हें राजा की चिट्ठियां दीं। राजा ने मेरे संग सेनापति और सवार भी भेजे थे। १० यह सुनकर

* मूल में—भला हाथ।

कि एक मनुष्य इस्राएलियों के कल्याण का उपाय करने को आया है, होरोनी सम्बल्लत और तोबियाह नाम कर्मचारी जो अम्मोनी था, उन दोनों को बहुत बुरा लगा ॥

११ जब मैं यरूशलेम पहुंच गया, तब वहां तीन दिन रहा। १२ तब मैं थोड़े पुरुषों को लेकर रात को उठा; मैं ने किसी को नहीं बताया कि मेरे परमेश्वर ने यरूशलेम के हित के लिये मेरे मन में क्या उपजाया था। और अपनी सवारी के पशु को छोड़ कोई पशु मेरे संग न था। १३ मैं रात को तराई के फाटक में होकर निकला और अजगर के सोते की ओर, और कूड़ाफाटक के पास गया, और यरूशलेम की टूटी पड़ी हुई शहरपनाह और जले फाटकों को देखा। १४ तब मैं आगे बढ़कर सोते के फाटक और राजा के कुण्ड के पास गया; परन्तु मेरी सवारी के पशु के लिये आगे जाने को स्थान न था। १५ तब मैं रात ही रात नाले से होकर शहरपनाह को देखता हुआ चढ़ गया; फिर घूमकर तराई के फाटक से भीतर आया, और इस प्रकार लौट आया। १६ और हाकिम न जानते थे कि मैं कहां गया और क्या करता था; वरन मैं ने तब तक न तो यहूदियों को कुछ बताया था और न याजकों और न रईसों और न हाकिमों और न दूसरे काम करनेवालों को ॥

१७ तब मैं ने उन से कहा, तुम तो आप देखते हो कि हम कैसी दुर्दशा में हैं, कि यरूशलेम उजाड़ पड़ा है और उसके फाटक जले हुए हैं। तो आओ, हम यरूशलेम की शहरपनाह को बनाएं, कि भविष्य में हमारी नामधराई न रहे। १८ फिर मैं ने उनको बतलाया, कि मेरे परमेश्वर की कृपादृष्टि मुझ पर कैसी हुई और राजा ने मुझ से क्या क्या बातें कही थीं। तब उन्हों ने कहा, आओ हम कमर बान्धकर बनाने लगें। और उन्हों ने इस भले काम को करने के लिये हियाव बान्ध लिया। १९ यह सुनकर होरोनी सम्बल्लत और तोबियाह नाम कर्मचारी जो अम्मोनी था, और गेशेम नाम एक अरबी, हमें ठट्ठों में उड़ाने लगे; और हमें तुच्छ जानकर कहने लगे, यह तुम क्या काम करते हो। २० क्या तुम राजा के विरुद्ध बलवा करोगे? तब मैं ने उनको उत्तर देकर उन से कहा, स्वर्ग का परमेश्वर हमारा काम सुफल करेगा, इसलिये हम उसके दास कमर बान्धकर बनाएंगे; परन्तु यरूशलेम में तुम्हारा न तो कोई भाग, न हक्क, न स्मारक है ॥

(यरूशलेम की शहरपनाह का फिर बनाया जाना)

३ तब एल्याशीब महायाजक ने अपने भाई याजकों समेत कमर बान्धकर भेड़फाटक को बनाया। उन्हों ने उसकी प्रतिष्ठा की, और उसके पल्लों को भी लगाया; और हम्मेआ नाम गुम्मट तक वरन हननेल के गुम्मट के पास तक उन्हों ने शहरपनाह की प्रतिष्ठा की। २ उस से आगे यरीहो के मनुष्यों ने बनाया। और इन से आगे इम्री के पुत्र जक्कूर ने बनाया ॥

३ फिर मछलीफाटक को हस्सना के बेटों ने बनाया; उन्हों ने उसकी कड़ियां लगाईं, और उसके पल्ले, ताले और बेंड़े लगाए। ४ और उन से आगे मरेमोत ने जो हक्कोस का पोता और ऊरियाह का पुत्र था, मरम्मत की। और इन से आगे मशुल्लाम ने जो मशेजबेल का पोता,

ग्रौर बरेक्याह का पुत्र था, मरम्मत की। ग्रौर इस से ग्रागे बाना के पुत्र सादोक ने मरम्मत की। ५ ग्रौर इन से ग्रागे तकोइयों ने मरम्मत की; परन्तु उनके रईसों ने ग्रपने प्रभु की सेवा का जूग्रा ग्रपनी गर्दन पर न लिया।।

६ फिर पुराने फाटक की मरम्मत पासेह के पुत्र योयादा ग्रौर बसोदयाह के पुत्र मशुल्लाम ने की; उन्हों ने उसकी कड़ियां लगाईं, ग्रौर उसके पल्ले, ताले ग्रौर बेंड़े लगाए। ७ ग्रौर उन से ग्रागे गिबोनी मलत्याह ग्रौर मेरोनोती यादोन ने ग्रौर गिबोन ग्रौर मिस्पा के मनुष्यों ने महानद के पार के ग्रधिपति के सिंहासन की ग्रोर से मरम्मत की। ८ उन से ग्रागे हर्हयाह के पुत्र उजीएल ने ग्रौर ग्रौर सुनारों ने मरम्मत की। ग्रौर इस से ग्रागे हनन्याह ने, जो गन्धियों के समाज का था *, मरम्मत की; ग्रौर उन्हों ने चौड़ी शहरपनाह तक यरूशलेम को दृढ़ किया। ९ ग्रौर उन से ग्रागे हूर के पुत्र रपायाह ने, जो यरूशलेम के ग्राधे जिले का हाकिम था, मरम्मत की। १० ग्रौर उन से ग्रागे हरुमप के पुत्र यदायाह ने ग्रपने ही घर के साम्हने मरम्मत की; ग्रौर इस से ग्रागे हशब्नयाह के पुत्र हत्तूश ने मरम्मत की। ११ हारीम के पुत्र मल्कियाह ग्रौर पहत्मोग्राब के पुत्र हश्शूब ने एक ग्रौर भाग की, ग्रौर भट्ठों के गुम्मट की मरम्मत की। १२ इस से ग्रागे यरूशलेम के ग्राधे जिले के हाकिम हल्लोहेश के पुत्र शल्लूम ने ग्रपनी बेटियों समेत मरम्मत की।।

१३ तराई के फाटक की मरम्मत हानून ग्रौर जानोह के निवासियों ने की; उन्हों ने उसको बनाया, ग्रौर उसके ताले, बेंड़े ग्रौर पल्ले लगाए, ग्रौर हजार हाथ की शहरपनाह को भी ग्रर्थात् कूड़ाफाटक तक बनाया।।

१४ ग्रौर कूड़ाफाटक की मरम्मत रेकाब के पुत्र मल्कियाह ने की, जो बेथक्केरेम के जिले का हाकिम था; उसी ने उसको बनाया, ग्रौर उसके ताले, बेंड़े ग्रौर पल्ले लगाए।।

१५ ग्रौर सोताफाटक की मरम्मत कोल्होजे के पुत्र शल्लूम ने की, जो मिस्पा के जिले का हाकिम था; उसी ने उसको बनाया ग्रौर पाटा, ग्रौर उसके ताले, बेंड़े ग्रौर पल्ले लगाए; ग्रौर उसी ने राजा की बारी के पास के शेलह नाम कुण्ड की शहरपनाह को भी दाऊदपुर से उतरनेवाली सीढ़ी तक बनाया। १६ उसके बाद ग्रजबूक के पुत्र नहेमायाह ने जो बेतसूर के ग्राधे जिले का हाकिम था, दाऊद के कब्रिस्तान के साम्हने तक ग्रौर बनाए हुए पोखरे तक, वरन वीरों के घर तक भी मरम्मत की। १७ इसके बाद बानी के पुत्र रहूम ने कितने लेवियों समेत मरम्मत की। इस से ग्रागे कीला के ग्राधे जिले के हाकिम हशब्याह ने ग्रपने जिले की ग्रोर से मरम्मत की। १८ उसके बाद उनके भाइयों समेत कीला के ग्राधे जिले के हाकिम हेनादाद के पुत्र बव्वै ने मरम्मत की। १९ उस से ग्रागे एक ग्रौर भाग की मरम्मत जो शहरपनाह के मोड़ के पास शस्त्रों के घर की चढ़ाई के साम्हने है, येशु के पुत्र एज़ेर ने की, जो मिस्पा का हाकिम था। २० फिर एक ग्रौर भाग की ग्रर्थात् उसी मोड़ से ले एल्याशीब महायाजक के घर के द्वार तक की मरम्मत जब्बै के पुत्र बारूक ने तन

* मूल में—जो गन्धियों का बेटा था।

मन से की। २१ इसके बाद एक और भाग की अर्थात् एल्याशीब के घर के द्वार से ले उसी घर के सिरे तक की मरम्मत, मरेमोत ने की, जो हक्कोस का पोता और ऊरियाह का पुत्र था। २२ उसके बाद उन याजकों ने मरम्मत की जो तराई के मनुष्य थे। २३ उनके बाद बिन्यामीन और हश्शूब ने अपने घर के साम्हने मरम्मत की; और इनके पीछे अजर्याह ने जो मासेयाह का पुत्र और अनन्याह का पोता था अपने घर के पास मरम्मत की। २४ तब एक और भाग की, अर्थात् अजर्याह के घर से लेकर शहरपनाह के मोड़ तक वरन उसके कोने तक की मरम्मत हेनादाद के पुत्र बिन्नूई ने की। २५ फिर उसी मोड़ के साम्हने जो ऊंचा गुम्मट राजभवन से बाहर निकला हुआ बन्दीगृह के आंगन के पास है, उसके साम्हने ऊजै के पुत्र पालाल ने मरम्मत की। इसके बाद परोश के पुत्र पदायाह ने मरम्मत की। २६ नतीन लोग तो ओपेल में पूरब की ओर जलफाटक के साम्हने तक और बाहर निकले हुए गुम्मट तक रहते थे। २७ पदायाह के बाद तकोइयों ने एक और भाग की मरम्मत की, जो बाहर निकले हुए बड़े गुम्मट के साम्हने और ओबेल की शहरपनाह तक है॥

२८ फिर घोड़ाफाटक के ऊपर याजकों ने अपने अपने घर के साम्हने मरम्मत की। २९ इनके बाद इम्मेर के पुत्र सादोक ने अपने घर के साम्हने मरम्मत की; और तब पूरबी फाटक के रखवाले शकन्याह के पुत्र समयाह ने मरम्मत की। ३० इसके बाद शेलेम्याह के पुत्र हनन्याह और सालाप के छठवें पुत्र हानून ने एक और भाग की मरम्मत की। तब बेरेक्याह के पुत्र मशुल्लाम ने अपनी कोठरी के साम्हने मरम्मत की। ३१ उसके बाद मल्कियाह ने जो सुनार था * नतिनों और व्यापारियों के स्थान तक ठहराए हुए स्थान के फाटक † के साम्हने और कोने के कोठे तक मरम्मत की। ३२ और कोनेवाले कोठे से लेकर भेड़फाटक तक सुनारों और व्यापारियों ने मरम्मत की॥

(यहूदियों के शत्रुओं का विरोध करना)

४ जब सम्बल्लत ने सुना कि यहूदी लोग शहरपनाह को बना रहे हैं, तब उस ने बुरा माना, और बहुत रिसियाकर यहूदियों को ठट्ठों में उड़ाने लगा। २ वह अपने भाइयों के और शोमरोन की सेना के साम्हने यों कहने लगा, वे निर्बल यहूदी क्या किया चाहते हैं? क्या वे वह काम अपने बल से करेंगे ‡? क्या वे अपना [illegible]र दृढ़ करेंगे? क्या वे यज्ञ करेंगे? क्या वे आज ही सब काम निपटा डालेंगे? क्या वे मिट्टी के ढेरों में के जले हुए पत्थरों को फिर नये सिरे से बनाएंगे §? ३ उसके पास तो अम्मोनी तोबियाह था, और वह कहने लगा, जो कुछ वे बना रहे हैं, यदि कोई गीदड़ भी उस पर चढ़े, तो वह उनकी बनाई हुई पत्थर की शहरपनाह को तोड़ देगा। ४ हे हमारे परमेश्वर सुन ले, कि हमारा अपमान हो रहा है; और उनका किया हुआ अपमान उन्हीं के सिर पर लौटा दे, और उन्हें बन्धुआई के देश में लुटवा दे। ५ और उनका अधर्म

---

* मूल में—जो सुनारों का बेटा था।
† वा हम्मिफ़कद नाम फाटक।
‡ मूल में—अपने लिये छोड़ेंगे।
§ मूल में—जिलाएंगे।

तू न ढांप, और न उनका पाप तेरे सम्मुख से मिटाया जाए *; क्योंकि उन्हों ने तुझे शहरपनाह बनानेवालों के साम्हने क्रोध दिलाया है ।।

६ और हम लोगों ने शहरपनाह को बनाया; और सारी शहरपनाह आधी ऊंचाई तक जुड़ गई। क्योंकि लोगों का मन उस काम में नित लगा रहा ।।

७ जब सम्बल्लत और तोबियाह और अरबियों, अम्मोनियों और अशदोदियों ने सुना, कि यरूशलेम की शहरपनाह की मरम्मत होती जाती है †, और उस में के नाके बन्द होने लगे हैं, तब उन्हों ने बहुत ही बुरा माना; ८ और सभों ने एक मन से गोष्ठी की, कि जाकर यरूशलेम से लड़ें, और उस में गड़बड़ी डालें। ९ परन्तु हम लोगों ने अपने परमेश्वर से प्रार्थना की, और उनके डर के मारे उनके विरुद्ध दिन रात के पहरुए ठहरा दिए ।।

१० और यहूदी कहने लगे, ढोनेवालों का बल घट गया, और मिट्टी बहुत पड़ी है, इसलिये शहरपनाह हम से नहीं बन सकती। ११ और हमारे शत्रु कहने लगे, कि जब तक हम उनके बीच में न पहुंचे, और उन्हें घात करके वह काम बन्द न करें, तब तक उनको न कुछ मालूम होगा, और न कुछ दिखाई पड़ेगा। १२ फिर जो यहूदी उनके आस पास रहते थे, उन्हों ने सब स्थानों से दस बार आ आकर, हम लोगों से कहा, तुम को हमारे पास लौट आना चाहिये। १३ इस कारण मैं ने लोगों को तलवारें, बर्छियां और धनुष देकर शहरपनाह के पीछे सब से नीचे के खुले स्थानों में घराने घराने के अनुसार बैठा दिया। १४ तब मैं देखकर उठा, और रईसों और हाकिमों और और सब लोगों से कहा, उन से मत डरो; प्रभु जो महान और भययोग्य है, उसी को स्मरण करके, अपने भाइयों, बेटों, बेटियों, स्त्रियों और घरों के लिये युद्ध करना ।।

१५ जब हमारे शत्रुओं ने सुना, कि यह बात हम को मालूम हो गई है और परमेश्वर ने उनकी युक्ति निष्फल की है, तब हम सब के सब शहरपनाह के पास अपने अपने काम पर लौट गए। १६ और उस दिन से मेरे आधे सेवक तो उस काम में लगे रहे और आधे बर्छियों, तलवारों, धनुषों और झिलमों को धारण किए रहते थे; और यहूदा के सारे घराने के पीछे हाकिम रहा करते थे। १७ शहरपनाह के बनानेवाले और बोझ के ढोनेवाले दोनों भार उठाते थे, अर्थात् एक हाथ से काम करते थे और दूसरे हाथ से हथियार पकड़े रहते थे। १८ और राज अपनी अपनी जांघ पर तलवार लटकाए हुए बनाते थे। और नरसिंगे का फूकनेवाला मेरे पास रहता था। १९ इसलिये मैं ने रईसों, हाकिमों और सब लोगों से कहा, काम तो बड़ा और फैला हुआ है, और हम लोग शहरपनाह पर अलग अलग एक दूसरे से दूर रहते हैं। २० इसलिये जिधर से नरसिंगा तुम्हें सुनाई दे, उधर ही हमारे पास इकट्ठे हो जाना। हमारा परमेश्वर हमारी ओर से लड़ेगा ।।

२१ यों हम काम में लगे रहे, और उन में आधे, पौ फटने से तारों के निकलने तक बर्छियां लिये रहते थे। २२ फिर उसी समय मैं ने लोगों से यह भी कहा, कि एक एक मनुष्य अपने दास समेत यरूशलेम के भीतर रात बिताया करे,

* मूल में—तेरे साम्हने से न मिटे।
† मूल में—शहरपनाह पर पट्टी चढ़ी।

कि वे रात को तो हमारी रखवाली करें, और दिन को काम में लगे रहें। २३ और न तो मैं अपने कपड़े उतारता था, और न मेरे भाई, न मेरे सेवक, न वे पहरुए जो मेरे अनुचर थे, अपने कपड़े उतारते थे; सब कोई पानी के पास हथियार लिये हुए जागते थे ।।

(यहूदियों में अन्धेर पाया जाना)

५ तब लोग और उनकी स्त्रियों की ओर से उनके भाई यहूदियों के विरुद्ध बड़ी चिल्लाहट मची। २ कितने तो कहते थे, हम अपने बेटे-बेटियों समेत बहुत प्राणी हैं, इसलिये हमें अन्न मिलना चाहिये कि उसे खाकर जीवित रहें। ३ और कितने कहते थे, कि हम अपने अपने खेतों, दाख की बारियों और घरों को मंहगी के कारण बन्धक रखते हैं, कि हमें अन्न मिले। ४ फिर कितने यह कहते थे, कि हम ने राजा के कर के लिये अपने अपने खेतों और दाख की बारियों पर रुपया उधार लिया। ५ परन्तु हमारा और हमारे भाइयों का शरीर और हमारे और उनके लड़केबाले एक ही समान हैं, तौभी हम अपने बेटे-बेटियों को दास बनाते हैं; वरन हमारी कोई कोई बेटी दासी भी हो चुकी हैं; और हमारा कुछ वस नहीं चलता, क्योंकि हमारे खेत और दाख की बारियां औरों के हाथ पड़ी हैं ।।

६ यह चिल्लाहट और ये बातें सुनकर मैं बहुत क्रोधित हुआ। ७ तब अपने मन में सोच विचार करके मैं ने रईसों और हाकिमों को घुड़ककर कहा, तुम अपने अपने भाई से ब्याज लेते हो। तब मैं ने उनके विरुद्ध एक बड़ी सभा की। ८ और मैं ने उन से कहा, हम लोगों ने तो अपनी शक्ति भर अपने यहूदी भाइयों को जो अन्यजातियों के हाथ बिक गए थे, दाम देकर छुड़ाया है, फिर क्या तुम अपने भाइयों को बेचोगे? क्या वे हमारे हाथ बिकेंगे? तब वे चुप रहे और कुछ न कह सके। ९ फिर मैं कहता गया, जो काम तुम करते हो वह अच्छा नहीं है; क्या तुम को इस कारण हमारे परमेश्वर का भय मानकर चलना न चाहिये कि हमारे शत्रु जो अन्यजाति हैं, वे हमारी नामधराई न करें? १० मैं भी और मेरे भाई और सेवक उनको रुपया और अनाज उधार देते हैं, परन्तु हम इसका ब्याज छोड़ दें। ११ आज ही उनको उनके खेत, और दाख, और जलपाई की बारियां, और घर फेर दो; और जो रुपया, अन्न, नया दाखमधु, और टटका तेल तुम उन से ले लेते हो, उसका सौवां भाग फेर दो? १२ उन्हों ने कहा, हम उन्हें फेर देंगे, और उन से कुछ न लेंगे; जैसा तू कहता है, वैसा ही हम करेंगे। तब मैं ने याजकों को बुलाकर उन लोगों को यह शपथ खिलाई, कि वे इसी वचन के अनुसार करेंगे। १३ फिर मैं ने अपने कपड़े की छोर झाड़कर कहा, इसी रीति से जो कोई इस वचन को पूरा न करे, उसको परमेश्वर झाड़कर, उसका घर और कमाई उस से छुड़ाए, और इसी रीति से वह झाड़ा जाए, और छूछा हो जाए। तब सारी सभा ने कहा, आमेन! और यहोवा की स्तुति की। और लोगों ने इस वचन के अनुसार काम किया ।।

१४ फिर जब से मैं यहूदा देश में उनका अधिपति ठहराया गया, अर्थात् राजा अर्तक्षत्र के बीसवें वर्ष से ले उसके बत्तीसवें वर्ष तक, अर्थात् बारह वर्ष तक

में और मेरे भाई अधिपति के हक़ का भोजन खाते रहे। १५ परन्तु पहिले अधिपति जो मुझ से आगे थे, वह प्रजा पर भार डालते थे, और उन से रोटी, और दाखमधु, और इस से अधिक * चालीस शेकेल चान्दी लेते थे, वरन उनके सेवक भी प्रजा के ऊपर अधिकार जताते थे; परन्तु मैं ऐसा नहीं करता था, क्योंकि मैं यहोवा का भय मानता था। १६ फिर मैं शहरपनाह के काम में लिपटा रहा, और हम लोगों ने कुछ भूमि मोल न ली; और मेरे सब सेवक काम करने के लिये वहां इकट्ठे रहते थे। १७ फिर मेरी मेज पर खानेवाले एक सौ पचास यहूदी और हाकिम और वे भी थे, जो चारों ओर की अन्यजातियों में से हमारे पास आए थे। १८ और जो प्रतिदिन के लिये तैयार किया जाता था वह एक बैल, छः अच्छी अच्छी भेड़ें व बकरियां थीं, और मेरे लिये चिड़ियें भी तैयार की जाती थीं; दस दस दिन के बाद भांति भांति का बहुत दाखमधु भी तैयार किया जाता था; परन्तु तौभी मैं ने अधिपति के हक़ का भोज नहीं लिया, १९ क्योंकि काम का भार प्रजा पर भारी था। हे मेरे परमेश्वर! जो कुछ मैं ने इस प्रजा के लिये किया है, उसे तू मेरे हित के लिये स्मरण रख ॥

(शत्रुओं के विरोध करने पर भी शहरपनाह का बन चुकना)

६ जब सम्बल्लत, तोबियाह और अरबी गेशेम और हमारे और शत्रुओं को यह समाचार मिला, कि मैं शहरपनाह को बनवा चुका; और यद्यपि उस समय तक भी मैं फाटकों में पल्ले न लगा चुका था, तौभी शहरपनाह में कोई दरार न रह गया था। २ तब सम्बल्लत और गेशेम ने मेरे पास यों कहला भेजा, कि आ, हम ओनो के मैदान के किसी गांव में एक दूसरे से भेंट करें। परन्तु वे मेरी हानि करने की इच्छा करते थे। ३ परन्तु मैं ने उनके पास दूतों से कहला भेजा, कि मैं तो भारी काम में लगा हूं, वहां नहीं जा सकता; मेरे इसे छोड़कर तुम्हारे पास जाने से वह काम क्यों बन्द रहे? ४ फिर उन्हों ने चार बार मेरे पास वैसी ही बात कहला भेजी, और मैं ने उनको वैसा ही उत्तर दिया। ५ तब पांचवी बार सम्बल्लत ने अपने सेवक को खुली हुई चिट्ठी देकर मेरे पास भेजा, ६ जिस में यों लिखा था, कि जाति जाति के लोगों में यह कहा जाता है, और गेशेम भी यही बात कहता है, कि तुम्हारी और यहूदियों की मनसा बलवा करने की है, और इस कारण तू उस शहरपनाह को बनवाता है; और तू इन बातों के अनुसार उनका राजा बनना चाहता है। ७ और तू ने यरूशलेम में नबी ठहराए हैं, जो यह कहकर तेरे विषय प्रचार करें, कि यहूदियों में एक राजा है। अब ऐसा ही समाचार राजा को दिया जाएगा। इसलिये अब आ, हम एक साथ सम्मति करें। ८ तब मैं ने उसके पास कहला भेजा कि जैसा तू कहता है, वैसा तो कुछ भी नहीं हुआ, तू ये बातें अपने मन से गढ़ता है। ९ वे सब लोग यह सोचकर हमें डराना चाहते थे, कि उनके हाथ ढीले पड़ें, और काम बन्द हो जाए। परन्तु अब हे परमेश्वर तू मुझे हियाव दे ॥

१० और मैं शमायाह के घर में गया, जो दलायाह का पुत्र और महेतबेल का

* मूल में—पीछे।

पीता था, वह तो बन्द घर में था; उस ने कहा, आ, हम परमेश्वर के भवन अर्थात् मन्दिर के भीतर आपस में भेंट करें, और मन्दिर के द्वार बन्द करें; क्योंकि वे लोग तुझे घात करने आएंगे, रात ही को वे तुझे घात करने आएंगे। ११ परन्तु मैं ने कहा, क्या मुझ ऐसा मनुष्य भागे? और मुझ ऐसा कौन है जो अपना प्राण बचाने को मन्दिर में घुसे *? मैं नहीं जाने का। १२ फिर मैं ने जान लिया कि वह परमेश्वर का भेजा नहीं है परन्तु उस ने हर बात ईश्वर का वचन कहकर † मेरी हानि के लिये कही, क्योंकि तोबियाह और सम्बल्लत ने उसे रुपया दे रखा था। १३ उन्हों ने उसे इस कारण रुपया दे रखा था कि मैं डर जाऊं, और वैसा ही काम करके पापी ठहरूं, और उनको अपवाद लगाने का अवसर मिले और वे मेरी नामधराई कर सकें। १४ हे मेरे परमेश्वर! तोबियाह, सम्बल्लत, और नोअद्याह, नबिया और और जितने नबी मुझे डराना चाहते थे, उन सब के ऐसे ऐसे कामों की सुधि रख॥

१५ एलूल महीने के पचीसवें दिन को अर्थात् बावन दिन के भीतर शहरपनाह बन चुकी। १६ जब हमारे सब शत्रुओं ने यह सुना, तब हमारे चारों ओर रहनेवाले सब अन्यजाति डर गए, और बहुत लज्जित हुए; क्योंकि उन्हों ने जान लिया कि यह काम हमारे परमेश्वर की ओर से हुआ। १७ उन दिनों में भी यहूदी रईसों और तोबियाह के बीच चिट्ठी बहुत आया जाया करती थी। १८ क्योंकि वह आरह के पुत्र शकन्याह का दामाद था, और उसके पुत्र यहोहानान ने बेरेक्याह के पुत्र मशुल्लाम की बेटी को ब्याह लिया था; इस कारण बहुत से यहूदी उसका पक्ष करने की शपथ खाए हुए थे। १९ और वे मेरे सुनते उसके भले कामों की चर्चा किया करते, और मेरी बातें भी उसको सुनाया करते थे। और तोबियाह मुझे डराने के लिये चिट्ठियां भेजा करता था॥

(यरूशलेम का बनाया जाना)

७ जब शहरपनाह बन गई, और मैं ने उसके फाटक खड़े किए, और द्वारपाल, और गवैये, और लेवीय लोग ठहराये गए, २ तब मैं ने अपने भाई हनानी और राजगढ़ के हाकिम हनन्याह को यरूशलेम का अधिकारी ठहराया, क्योंकि यह सच्चा पुरुष और बहुतेरों से अधिक परमेश्वर का भय माननेवाला था। ३ और मैं ने उन से कहा, जब तक घाम कड़ा न हो, तब तक यरूशलेम के फाटक न खोले जाएं और जब पहरुए पहरा देते रहें, तब ही फाटक बन्द किए जाएं और बेड़े लगाए जाएं। फिर यरूशलेम के निवासियों में से तू रखवाले ठहरा जो अपना अपना पहरा अपने अपने घर के साम्हने दिया करें। ४ नगर तो लम्बा चौड़ा था, परन्तु उस में लोग थोड़े थे, और घर नहीं बने थे॥

५ तब मेरे परमेश्वर ने मेरे मन में यह उपजाया कि रईसों, हाकिमों और प्रजा के लोगों को इसलिये इकट्ठे करूं, कि वे अपनी अपनी वंशावली के अनुसार गिने जाएं। और मुझे पहिले पहिल यरूशलेम को आए हुओं का वंशावलीपत्र मिला, और उस में मैं ने यों लिखा हुआ पाया: ६ जिनको बाबेल का राजा,

* वा जो मन्दिर में घुसकर जीता रहे।
† मूल में—नबूवत।

नबूकदनेस्सर बन्धुआ करके ले गया था, उन में से प्रान्त के जो लोग बन्धुआई से छूटकर, यरूशलेम और यहूदा के अपने अपने नगर को आए। ७ वे जरुब्बाबेल, येशू, नहेमायाह, अजर्याह, राम्याह, नहमानी, मोर्दकै, बिलशान, मिस्पेरेत, बिग्वै, नहूम और बाना के संग आए॥

८ इस्राएली प्रजा के लोगों की गिनती यह है: अर्थात् परोश की सन्तान दो हजार एक सौ बहत्तर, ९ सपत्याह की सन्तान तीन सौ बहत्तर, आरह की सन्तान छः सौ बावन। १० पहत्मोआब की सन्तान याने येशू और योआब की सन्तान, ११ दो हजार आठ सौ अठारह। १२ एलाम की सन्तान बारह सौ चौवन, १३ जत्तू की सन्तान आठ सौ पैंतालीस। १४ जक्कै की सन्तान सात सौ साठ। १५ बिन्नूई की सन्तान छः सौ अड़तालीस। १६ बेबै की सन्तान छः सौ अट्ठाईस। १७ अजगाद की सन्तान दो हजार तीन सौ बाईस। १८ अदोनीकाम की सन्तान छः सौ सड़सठ। १९ बिग्वै की सन्तान दो हजार सड़सठ। २० आदीन की सन्तान छः सौ पचपन। २१ हिचकिय्याह की सन्तान आतेर के वंश में से अट्ठानवे। २२ हाशम की सन्तान तीन सौ अट्ठाईस। २३ बेसै की सन्तान तीन सौ चौबीस। २४ हारीप की सन्तान एक सौ बारह। २५ गिबोन के लोग पचानवे। २६ बेतलेहेम और नतोपा के मनुष्य एक सौ अट्ठासी। २७ अनातोत के मनुष्य एक सौ अट्ठाईस। २८ बेतजमावत के मनुष्य बयालीस। २९ किर्यत्यारीम, कपीर, और बेरोत के मनुष्य सात सौ तेंतालीस। ३० रामा और गेबा के मनुष्य छः सौ इक्कीस। ३१ मिकपास के मनुष्य एक सौ बाईस। ३२ बेतेल और ऐ के मनुष्य एक सौ तेईस। ३३ दूसरे नबो के मनुष्य बावन। ३४ दूसरे एलाम की सन्तान बारह सौ चौवन। ३५ हारीम की सन्तान तीन सौ बीस। ३६ यरीहो के लोग तीन सौ पैंतालीस। ३७ लोद हादीद और ओनों के लोग सात सौ इक्कीस। ३८ सना के लोग तीन हजार नौ सौ तीस॥

३९ फिर याजक अर्थात् येशू के घराने में से यदायाह की सन्तान नौ सौ तिहत्तर। ४० इम्मेर की सन्तान एक हजार बावन। ४१ पशहूर की सन्तान बारह सौ सैंतालीस। ४२ हारीम की सन्तान एक हजार सत्रह॥

४३ फिर लेवीय ये थे: अर्थात् होदवा के वंश में से कदमीएल की सन्तान येशू की सन्तान चौहत्तर। ४४ फिर गवैये ये थे: अर्थात् आसाप की सन्तान एक सौ अड़तालीस। ४५ फिर द्वारपाल ये थे: अर्थात् शल्लूम की सन्तान, आतेर की सन्तान, तल्मोन की सन्तान, अक्कूब की सन्तान, हतीता की सन्तान, और शोबै की सन्तान, जो सब मिलकर एक सौ अड़तीस हुए॥

४६ फिर नतीन अर्थात् सीहा की सन्तान, हसूपा की सन्तान, तब्बाओत की सन्तान, ४७ केरोस की सन्तान, सीआ की सन्तान, पादोन की सन्तान, ४८ लबाना की सन्तान, हगाबा की सन्तान, शल्मै की सन्तान। ४९ हानान की सन्तान, गिद्देल की सन्तान, गहर की सन्तान, ५० राया की सन्तान, रसीन की सन्तान, नकोदा की सन्तान, ५१ गज्जाम की सन्तान, उज्जा की सन्तान, पासेह की सन्तान, ५२ बेसै की सन्तान, मूनीम की सन्तान, नपूशस की सन्तान, ५३ बकबूक

की सन्तान, हकूपा की सन्तान, हर्हूर की सन्तान, ५४ बसलीत की सन्तान, महीदा की सन्तान, हर्शा की सन्तान, ५५ बर्कोस की सन्तान, सीसरा की सन्तान, तेमेह की सन्तान, ५६ नमीह की सन्तान, और हतीपा की सन्तान ।।

५७ फिर सुलैमान के दासों की सन्तान, अर्थात् सोतै की सन्तान, सोपेरेत की सन्तान, परीदा की सन्तान, ५८ याला की सन्तान, दर्कोन की सन्तान, गिद्देल की सन्तान, ५९ शपत्याह की सन्तान, हत्तील की सन्तान, पोकेरेत सबायीम की सन्तान, और आमोन की सन्तान। ६० नतीन और सुलैमान के दासों की सन्तान मिलकर तीन सौ बानवे थे ।।

६१ और ये वे हैं, जो तेलमेलह, तेलहर्शा, करूब, अद्दोन, और इम्मेर से यरूशलेम को गए, परन्तु अपने अपने पितरों के घराने और वंशावली न बता सके, कि इस्राएल के हैं, वा नहीं: ६२ अर्थात् दलायाह की सन्तान, तोबिय्याह की सन्तान, और दकोदा की सन्तान, जो सब मिलकर छः सौ बयालीस थे। ६३ और याजकों में से होबायाह की सन्तान, हक्कोस की सन्तान, और बर्जिल्लै की सन्तान, जिस ने गिलादी बर्जिल्लै की बेटियों में से एक को ब्याह लिया. और उन्हीं का नाम रख लिया था। ६४ इन्हों ने अपना अपना वंशावलीपत्र और और वंशावलीपत्रों में ढूंढ़ा, परन्तु न पाया, इसलिये वे अशुद्ध ठहरकर याजकपद से निकाले गए। ६५ और अधिपति * ने उन से कहा, कि जब तक ऊरीम और तुम्मीम धारण करनेवाला कोई याजक न उठे, तब तक तुम कोई परमपवित्र वस्तु खाने न पाओगे ।।

६६ पूरी मण्डली के लोग मिलकर बयालीस हजार तीन सौ साठ ठहरे। ६७ इनको छोड़ उनके सात हजार तीन सौ सैंतीस दास-दासियां, और दो सौ पैंतालीस गानेवाले और गानेवालियां थीं। ६८ उनके घोड़े सात सौ छत्तीस, खच्चर दो सौ पैंतालीस, ६९ ऊंट चार सौ पैंतीस और गदहे छः हजार सात सौ बीस थे ।।

७० और पितरों के घरानों के कई एक मुख्य पुरुषों ने काम के लिये दिया। अधिपति * ने तो चन्दे में हजार दर्कमोन सोना, पचास कटोरे और पांच सौ तीस याजकों के अंगरखे दिए। ७१ और पितरों के घरानों के कई मुख्य मुख्य पुरुषों ने उस काम के चन्दे में बीस हजार दर्कमोन सोना और दो हजार दो सौ माने चान्दी दी। ७२ और शेष प्रजा ने जो दिया, वह बीस हजार दर्कमोन सोना, दो हजार माने चान्दी और सड़सठ याजकों के अंगरखे हुए। ७३ इस प्रकार याजक, लेवीय, द्वारपाल, गवैये, प्रजा के कुछ लोग और नतीन और सब इस्राएली अपने अपने नगर में बस गए ।।

(यहूदियों को व्यवस्था का सुनाया जाना।)

८ जब सातवां महीना निकट आया, उस समय सब इस्राएली अपने अपने नगर में थे। तब उन सब लोगों ने एक मन होकर, जलफाटक के साम्हने के चौक में इकट्ठे होकर, एज्रा शास्त्री से कहा, कि मूसा की जो व्यवस्था यहोवा ने इस्राएल को दी थी, उसकी पुस्तक ले

* मूल में—तिर्शाता।

* मूल में—तिर्शाता।

आ। २ तब एज्रा याजक सातवें महीने के पहिले दिन को क्या स्त्री, क्या पुरुष, जितने सुनकर समझ सकते थे, उन सभों के साम्हने व्यवस्था को ले आया। ३ और वह उसकी बातें भोर से दो पहर तक उस चौक के साम्हने जो जलफाटक के साम्हने था, क्या स्त्री, क्या पुरुष और सब समझने वालों को पढ़कर सुनाता रहा; और लोग व्यवस्था की पुस्तक पर कान लगाए रहे। ४ एज्रा शास्त्री काठ के एक मचान पर जो इसी काम के लिये बना था, खड़ा हो गया; और उसकी दाहिनी अलंग मत्तित्याह, शेमा, अनायाह, ऊरिय्याह, हिल्किय्याह और मासेयाह; और बाईं अलंग, पदायाह, मीशाएल, मल्किय्याह, हाशूम, हश्बद्दाना, जकर्याह और मशुल्लाम खड़े हुए। ५ तब एज्रा ने जो सब लोगों से ऊंचे पर था, सभों के देखते उस पुस्तक को खोल दिया; और जब उस ने उसको खोला, तब सब लोग उठ खड़े हुए। ६ तब एज्रा ने महान परमेश्वर यहोवा को धन्य कहा; और सब लोगों ने अपने अपने हाथ उठाकर आमेन, आमेन, कहा; और सिर झुकाकर अपना अपना माथा भूमि पर टेक कर यहोवा को दण्डवत किया। ७ और येशू, बानी, शेरेब्याह, यामीन, अक्कूब, शब्बतै, होदिय्याह, मासेयाह, कलीता, अजर्याह, योजाबाद, हानान और पलायाह नाम लेवीय, लोगों को व्यवस्था समझाते गए, और लोग अपने अपने स्थान पर खड़े रहे। ८ और उन्हों ने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक से पढ़कर अर्थ समझा दिया; और लोगों ने पाठ को समझ लिया॥

९ तब नहेमायाह जो अधिपति था, और एज्रा जो याजक और शास्त्री था, और जो लेवीय लोगों को समझा रहे थे, उन्हों ने सब लोगों से कहा, आज का दिन तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिये पवित्र है; इसलिये विलाप न करो और न रोओ। क्योंकि सब लोग व्यवस्था के वचन सुनकर रोते रहे। १० फिर उस ने उन से कहा, कि जाकर चिकना चिकना भोजन करो और मीठा मीठा रस पियो, और जिनके लिये कुछ तैयार नहीं हुआ उनके पास बैना भेजो; क्योंकि आज का दिन हमारे प्रभु के लिये पवित्र है; और उदास मत रहो, क्योंकि यहोवा का आनन्द तुम्हारा दृढ़ गढ़ है। ११ यों लेवियों ने सब लोगों को यह कहकर चुप करा दिया, कि चुप रहो क्योंकि आज का दिन पवित्र है; और उदास मत रहो। १२ तब सब लोग खाने, पीने, बैना भेजने और बड़ा आनन्द मनाने को चले गए, क्योंकि जो वचन उनको समझाए गए थे, उन्हें वे समझ गए थे॥

१३ और दूसरे दिन को भी समस्त प्रजा के पितरों के घराने के मुख्य मुख्य पुरुष और याजक और लेवीय लोग, एज्रा शास्त्री के पास व्यवस्था के वचन ध्यान से सुनने के लिये इकट्ठे हुए। १४ और उन्हें व्यवस्था में यह लिखा हुआ मिला, कि यहोवा ने मूसा से यह आज्ञा दिलाई थी, कि इस्राएली सातवें महीने के पर्व के समय झोपड़ियों में रहा करें, १५ और अपने सब नगरों और यरूशलेम में यह सुनाया और प्रचार किया जाए, कि पहाड़ पर जाकर जलपाई, तैलवृक्ष, मेंहदी, खजूर और घने घने वृक्षों की डालियां ले आकर झोपड़ियां बनाओ, जैसे कि लिखा है। १६ सो सब लोग बाहर जाकर डालियां ले आए, और अपने अपने घर की छत पर, और अपने आंगनों में,

और परमेश्वर के भवन के आंगनों में, और जलफाटक के चौक में, और एप्रैम के फाटक के चौक में, झोंपड़ियां बना लीं। १७ वरन सब मण्डली के लोग जितने बन्धुआई से छूटकर लौट आए थे, झोंपड़ियां बनाकर उन में टिके। नून के पुत्र यहोशू के दिनों से लेकर उस दिन तक इस्राएलियों ने ऐसा नहीं किया था। और उस समय बहुत बड़ा आनन्द हुआ। १८ फिर पहिले दिन से पिछले दिन तक एज्रा ने प्रतिदिन परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में से पढ़ पढ़कर सुनाया। यों वे सात दिन तक पर्व को मानते रहे, और आठवें दिन नियम के अनुसार महासभा हुई॥

(पाप का अंगीकार)

९ फिर उसी महीने के चौबीसवें दिन को इस्राएली उपवास का टाट पहिने और सिर पर धूल डाले हुए, इकट्ठे हो गए। २ तब इस्राएल के वंश के लोग सब अन्यजाति लोगों से अलग हो गए, और खड़े होकर, अपने अपने पापों और अपने पुरखाओं के अधर्म के कामों को मान लिया। ३ तब उन्हों ने अपने अपने स्थान पर खड़े होकर दिन के एक पहर तक अपने परमेश्वर यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक पढ़ते, और एक और पहर अपने पापों को मानते, और अपने परमेश्वर यहोवा को दण्डवत करते रहे। ४ और येशू, बानी, कदमीएल, शबन्याह, बुन्नी, शेरेब्याह, बानी और कनानी ने लेवियों की सीढ़ी पर खड़े होकर ऊंचे स्वर से अपने परमेश्वर यहोवा की दोहाई दी। ५ फिर येशू, कदमीएल, बानी, हशब्नयाह, शेरेब्याह, होदिय्याह, शबन्याह, और पतह्याह नाम लेवियों ने कहा, खड़े हो; अपने परमेश्वर यहोवा को अनादिकाल से अनन्तकाल तक धन्य कहो। तेरा महिमायुक्त नाम धन्य कहा जाए, जो सब धन्यवाद और स्तुति से परे है। ६ तू ही अकेला यहोवा है; स्वर्ग वरन सब से ऊंचे स्वर्ग और उसके सब गण, और पृथ्वी और जो कुछ उस में है, और समुद्र और जो कुछ उस में है, सभों को तू ही ने बनाया, और सभों की रक्षा तू ही करता है; और स्वर्ग की समस्त सेना तुझी को दण्डवत करती हैं। ७ हे यहोवा! तू वही परमेश्वर है, जो अब्राहाम को चुनकर कसदियों के ऊर नगर में से निकाल लाया, और उसका नाम इब्राहीम रखा; ८ और उसके मन को अपने साथ सच्चा पाकर, उस से वाचा बान्धी, कि मैं तेरे वंश को कनानियों, हित्तियों, एमोरियों, परिज्जियों, यबूसियों, और गिर्गाशियों का देश दूंगा; और तू ने अपना वह वचन पूरा भी किया, क्योंकि तू धर्मी है। ९ फिर तू ने मिस्र में हमारे पुरखाओं के दुःख पर दृष्टि की; और लाल समुद्र के तट पर उनकी दोहाई सुनी। १० और फ़िरौन और उसके सब कर्मचारी वरन उसके देश के सब लोगों को दण्ड देने के लिये चिन्ह और चमत्कार दिखाए; क्योंकि तू जानता था कि वे उन से अभिमान करते हैं; और तू ने अपना ऐसा बड़ा नाम किया, जैसा आज तक वर्तमान है। ११ और तू ने उनके आगे समुद्र को ऐसा दो भाग किया, कि वे समुद्र के बीच स्थल ही स्थल चलकर पार हो गए; और जो उनके पीछे पड़े थे, उनको तू ने गहिरे स्थानों में ऐसा डाल दिया, जैसा पत्थर महाजलराशि में डाला जाए। १२ फिर तू ने दिन को बादल के खम्भे में होकर और रात को आग के खम्भे में

होकर उनकी अगुआई की, कि जिस मार्ग पर उन्हें चलना था, उस में उनको उजियाला मिले। १३ फिर तू ने सीनै पर्वत पर उतरकर आकाश में से उनके साथ बातें की, और उनको सीधे नियम, सच्ची व्यवस्था, और अच्छी विधियां, और आज्ञाएं दीं। १४ और उन्हें अपने पवित्र विश्राम-दिन का ज्ञान दिया, और अपने दास मूसा के द्वारा आज्ञाएं और विधियां और व्यवस्था दीं। १५ और उनकी भूख मिटाने को आकाश से उन्हें भोजन दिया और उनकी प्यास बुझाने को चट्टान में से उनके लिये पानी निकाला, और उन्हें आज्ञा दी कि जिस देश को तुम्हें देने की मैं ने शपथ खाई है* उसके अधिकारी होने को तुम उस में जाओ। १६ परन्तु उन्हों ने और हमारे पुरखाओं ने अभिमान किया, और हठीले बने और तेरी आज्ञाएं न मानी; १७ और आज्ञा मानने से इनकार किया, और जो आश्चर्यकर्म तू ने उनके बीच किए थे, उनका स्मरण न किया, वरन हठ करके यहां तक बलवा करनेवाले बने, कि एक प्रधान ठहराया, कि अपने दासत्व की दशा में लौटे। परन्तु तू क्षमा करनेवाला अनुग्रहकारी और दयालु, विलम्ब से कोप करनेवाला, और अति-करुणामय ईश्वर है, तू ने उनको न त्यागा। १८ वरन जब उन्हों ने बछड़ा ढालकर कहा, कि तुम्हारा परमेश्वर जो तुम्हें मिस्र देश से छुड़ा लाया है, वह यही है, और तेरा बहुत तिरस्कार किया, १९ तब भी तू जो अति दयालु है, उनको जंगल में न त्यागा; न तो दिन को अगुआई करनेवाला बादल का खम्भा उन पर से हटा, और न रात को उजियाला देनेवाला और उनका मार्ग दिखानेवाला आग का खम्भा। २० वरन तू ने उन्हें समझाने के लिये अपने आत्मा को जो भला है दिया, और अपना मान उन्हें खिलाना न छोड़ा, और उनकी प्यास बुझाने को पानी देता रहा। २१ चालीस वर्ष तक तू जंगल में उनका ऐसा पालन पोषण करता रहा, कि उनको कुछ घटी न हुई; न तो उनके वस्त्र पुराने हुए और न उनके पांव में सूजन हुई। २२ फिर तू ने राज्य राज्य और देश देश के लोगों को उनके वश में कर दिया, और दिशा दिशा में उनको बांट दिया; यों वे हेशबोन के राजा सीहोन और बाशान के राजा ओग दोनों के देशों के अधिकारी हो गए। २३ फिर तू ने उनकी सन्तान को आकाश के तारों के समान बढ़ाकर उन्हें उस देश में पहुंचा दिया, जिसके विषय तू ने उनके पूर्वजों से कहा था; कि वे उस में जाकर उसके अधिकारी हो जाएंगे। २४ सो यह सन्तान जाकर उसकी अधिकारिन हो गई, और तू ने उनके द्वारा देश के निवासी कनानियों को दबाया, और राजाओं और देश के लोगों समेत उनको, उनके हाथ में कर दिया, कि वे उन से जो चाहें सो करें। २५ और उन्हों ने गढ़वाले नगर और उपजाऊ भूमि ले ली, और सब भांति की अच्छी वस्तुओं से भरे हुए घरों के, और खुदे हुए हौदों के, और दाख और जलपाई बारियों के, और खाने के फलवाले बहुत से वृक्षों के अधिकारी हो गए; वे उसे खा खाकर तृप्त हुए, और हृष्ट-पुष्ट हो गए, और तेरी बड़ी भलाई के कारण सुख भोगते रहे॥

* मूल में—हाथ उठाया है।

२६ परन्तु वे तुझ से फिरकर बलवा करनेवाले बन गए और तेरी व्यवस्था को त्याग दिया, और तेरे जो नबी तेरी ओर उन्हें फेरने के लिये उनको चिताते रहे उनको उन्हों ने घात किया, और तेरा बहुत तिरस्कार किया। २७ इस कारण तू ने उनको उनके शत्रुओं के हाथ में कर दिया, और उन्हों ने उनको संकट में डाल दिया; तौभी जब जब वे संकट में पड़कर तेरी दोहाई देते रहे तब तब तू स्वर्ग से उनकी सुनता रहा; और तू जो अतिदयालु है, इसलिये उनके छुड़ानेवाले को भेजता रहा जो उनको शत्रुओं के हाथ से छुड़ाते थे। २८ परन्तु जब जब उनको चैन मिला, तब तब वे फिर तेरे साम्हने बुराई करते थे, इस कारण तू उनको शत्रुओं के हाथ में कर देता था, और वे उन पर प्रभुता करते थे; तौभी जब वे फिरकर तेरी दोहाई देते, तब तू स्वर्ग से उनकी सुनता और तू जो दयालु है, इसलिये बार बार उनको छुड़ाता, २९ और उनको चिताता था कि उनको फिर अपनी व्यवस्था के अधीन कर दे। परन्तु वे अभिमान करते रहे और तेरी आज्ञाएं नहीं मानते थे, और तेरे नियम, जिनको यदि मनुष्य माने, तो उनके कारण जीवित रहे, उनके विरुद्ध पाप करते, और हठ करके अपना कन्धा हटाते और न सुनते थे। ३० तू तो बहुत वर्ष तक उनकी सहता रहा, और अपने आत्मा से नबियों के द्वारा उन्हें चिताता रहा, परन्तु वे कान नहीं लगाते थे, इसलिये तू ने उन्हें देश देश के लोगों के हाथ में कर दिया। ३१ तौभी तू ने जो अतिदयालु है, उनका अन्त नहीं कर डाला और न उनको त्याग दिया, क्योंकि तू अनुग्रहकारी और दयालु ईश्वर है॥

३२ अब तो हे हमारे परमेश्वर! हे महान पराक्रमी और भययोग्य ईश्वर! जो अपनी वाचा पालता और करुणा करता रहा है, जो बड़ा कष्ट, अश्शूर के राजाओं के दिनों से ले आज के दिन तक हमें और हमारे राजाओं, हाकिमों, याजकों, नबियों, पुरखाओं, वरन तेरी समस्त प्रजा को भोगना पड़ा है, वह तेरी दृष्टि में थोड़ा न ठहरे। ३३ तौभी जो कुछ हम पर बीता है उसके विषय तू तो धर्मी है; तू ने तो सच्चाई से काम किया है, परन्तु हम ने दुष्टता की है। ३४ और हमारे राजाओं और हाकिमों, याजकों और पुरखाओं ने, न तो तेरी व्यवस्था को माना है और न तेरी आज्ञाओं और चितौनियों की ओर ध्यान दिया है जिन से तू ने उनको चिताया था। ३५ उन्हों ने अपने राज्य में, और उस बड़े कल्याण के समय जो तू ने उन्हें दिया था, और इस लम्बे चौड़े और उपजाऊ देश में तेरी सेवा नहीं की; और न अपने बुरे कामों से पश्चाताप किया। ३६ देख, हम आज कल दास हैं; जो देश तू ने हमारे पितरों को दिया था कि उसकी उत्तम उपज खाएं, इसी में हम दास हैं। ३७ इसकी उपज से उन राजाओं को जिन्हें तू ने हमारे पापों के कारण हमारे ऊपर ठहराया है, बहुत धन मिलता है; और वे हमारे शरीरों और हमारे पशुओं पर अपनी अपनी इच्छा के अनुसार प्रभुता जताते हैं, इसलिये हम बड़े संकट में पड़े हैं॥

३८ इस सब के कारण, हम सच्चाई के साथ वाचा बान्धते, और लिख भी देते हैं, और हमारे हाकिम, लेवीय और याजक उस पर छाप लगाते हैं॥

(व्यवस्था के अनुसार चलने की वाचा का बान्धा जाना)

१० जिन्हों ने छाप लगाई वे ये हैं, अर्थात् हकल्याह का पुत्र नहेमायाह जो अधिपति * था, और सिदकिय्याह; २ सरायाह, अजर्याह, यिर्मयाह; ३ पशहूर, अमर्याह, मल्किय्याह; ४ हत्तूश, शबन्याह, मल्लूक; ५ हारीम, मरेयोत, ओबद्याह; ६ दानिय्येल, गिन्नतोन, बारूक; ७ मशुल्लाम, अबिय्याह, मिय्यामीन; ८ माज्याह, बिलगै और शमायाह; ये ही तो याजक थे। ९ और लेवी ये थे: आजन्याह का पुत्र येशू, हेनादाद की सन्तान में से बिन्नूई और कदमीएल; १० और उनके भाई शबन्याह, होदिय्याह, कलीता, पलायाह, हानान; ११ मीका, रहोब, हशब्याह; १२ जक्कूर, शेरेब्याह, शबन्याह। १३ होदिय्याह, बानी और बनीन; १४ फिर प्रजा के प्रधान ये थे: परोश, पहत्मोआब, एलाम, जत्तू, बानी; १५ बुन्नी, अजगाद, बेबै; १६ अदोनिय्याह, बिग्वै, आदीन; १७ आतेर, हिजकिय्याह, अज्जूर; १८ होदिय्याह, हाशूम, बेसै; १९ हारीफ, अनातोत, नोबै; २० मग्पीआश, मशुल्लाम, हेजीर; २१ मशेजबेल, सादोक, यद्दू; २२ पलत्याह, हानान, अनायाह; २३ होशे, हनन्याह, हश्शूब; २४ हल्लोहेश, पिल्हा, शोबेक; २५ रहूम, हशब्ना, माशेयाह; २६ अहिय्याह, हानान, आनान; २७ मल्लूक, हारीम और बाना॥

२८ शेष लोग अर्थात् याजक, लेवीय, द्वारपाल, गवैये और नतीन लोग, निदान जितने परमेश्वर की व्यवस्था मानने के लिये देश देश के लोगों से अलग हुए थे, उन सभों ने अपनी स्त्रियों और उन बेटे-बेटियों समेत जो समझनेवाले थे, २९ अपने भाई रईसों से मिलकर शपथ खाई *, कि हम परमेश्वर की उस व्यवस्था पर चलेंगे जो उसके दास मूसा के द्वारा दी गई है, और अपने प्रभु यहोवा की सब आज्ञाएं, नियम और विधियां मानने में चौकसी करेंगे। ३० और हम न तो अपनी बेटियां इस देश के लोगों को ब्याह देंगे, और न अपने बेटों के लिये उनकी बेटियां ब्याह लेंगे। ३१ और जब इस देश के लोग विश्रामदिन को अन्न वा और बिकाऊ वस्तुएं बेचने को ले आयेंगे तब हम उन से न तो विश्रामदिन को न किसी पवित्र दिन को कुछ लेंगे; और सातवें वर्ष में भूमि पड़ी रहने देंगे, और अपने अपने ऋण की वसूली छोड़ देंगे॥

३२ फिर हम लोगों ने ऐसा नियम बान्ध लिया जिस से हम को अपने परमेश्वर के भवन की उपासना के लिये एक एक तिहाई शेकेल देना पड़ेगा: ३३ अर्थात् भेंट की रोटी और नित्य अन्नबलि और नित्य होमबलि के लिये, और विश्रामदिनों और नये चान्द और नियत पर्ब्बों के बलिदानों और और पवित्र भेंटों और इस्राएल के प्रायश्चित्त के निमित्त पापबलियों के लिये, निदान अपने परमेश्वर के भवन के सारे काम के लिये। ३४ फिर क्या याजक, क्या लेवीय, क्या साधारण लोग, हम सभों ने इस बात के ठहराने के लिये चिट्ठियां डालीं, कि अपने पितरों के

* मूल में—तिर्शाता।

* मूल में—स्राप और किरिया में प्रवेश किया।

घरानों के अनुसार प्रति वर्ष में ठहराए हुए समयों पर लकड़ी की भेंट व्यवस्था में लिखी हुई बात के अनुसार हम अपने परमेश्वर यहोवा की वेदी पर जलाने के लिये अपने परमेश्वर के भवन में लाया करेंगे। ३५ और अपनी अपनी भूमि की पहिली उपज और सब भांति के वृक्षों के पहिले फल प्रति वर्ष यहोवा के भवन में ले आएंगे। ३६ और व्यवस्था में लिखी हुई बात के अनुसार, अपने अपने पहिलौठे बेटों और पशुओं, अर्थात् पहिलौठे बछड़ों और मेम्नों को अपने परमेश्वर के भवन में उन याजकों के पास लाया करेंगे, जो हमारे परमेश्वर के भवन में सेवा टहल करते हैं। ३७ और अपना पहिला गूंधा हुआ आटा, और उठाई हुई भेंटे, और सब प्रकार के वृक्षों के फल, और नया दाखमधु, और टटका तेल, अपने परमेश्वर के भवन की कोठरियों में याजकों के पास, और अपनी अपनी भूमि की उपज का दशमांश लेवियों के पास लाया करेंगे; क्योंकि वे लेवीय हैं, जो हमारी खेती के सब नगरों में दशमांश लेते हैं। ३८ और जब जब लेवीय दशमांश लें, तब तब उनके संग हारून की सन्तान का कोई याजक रहा करे; और लेवीय दशमांशों का दशमांश हमारे परमेश्वर के भवन की कोठरियों में अर्थात् भण्डार में पहुंचाया करेंगे। ३९ क्योंकि जिन कोठरियों में पवित्र स्थान के पात्र और सेवा टहल करनेवाले याजक और द्वारपाल और गवैये रहते हैं, उन में इस्राएली और लेवीय, अनाज, नये दाखमधु, और टटके तेल की उठाई हुई भेंटे पहुंचाएंगे। निदान हम अपने परमेश्वर के भवन को न छोड़ेंगे॥

(यहूदी कहां कहां बस गए)

११ प्रजा के हाकिम तो यरूशलेम में रहते थे, और शेष लोगों ने यह ठहराने के लिये चिट्ठियां डालीं, कि दस में से एक मनुष्य यरूशलेम में, जो पवित्र नगर है, बस जाएं; और नौ मनुष्य और और नगरों में बसें। २ और जिन्हों ने अपनी ही इच्छा से यरूशलेम में वास करना चाहा उन सभों को लोगों ने आशिर्वाद दिया॥

३ उस प्रान्त के मुख्य मुख्य पुरुष जो यरूशलेम में रहते थे, वे ये हैं; (परन्तु यहूदा के नगरों में एक एक मनुष्य अपनी निज भूमि में रहता था; अर्थात् इस्राएली, याजक, लेवीय, नतीन और सुलैमान के दासों के सन्तान)। ४ यरूशलेम में तो कुछ यहूदी और बिन्यामीनी रहते थे। यहूदियों में से तो येरेस के वंश का अतायाह जो उज्जिय्याह का पुत्र था, यह जकर्याह का पुत्र, यह अमर्याह का पुत्र, यह शपत्याह का पुत्र, यह महललेल का पुत्र था। ५ और मासेयाह जो बारूक का पुत्र था, यह कोलहोजे का पुत्र, यह हजायाह का पुत्र, यह अदायाह का पुत्र, यह योयारीब का पुत्र, यह जकर्याह का पुत्र और यह शीलोई का पुत्र था। ६ पेरेस के वंश के जो यरूशलेम में रहते थे, वह सब मिलाकर चार सौ अड़सठ शूरवीर थे॥

७ और बिन्यामीनियों में से सल्लू जो मशुल्लाम का पुत्र था, यह योएद का पुत्र, यह पदायाह का पुत्र, यह कोलायाह का पुत्र, यह मासेयाह का पुत्र, यह इतीएह का पुत्र, यह यशायाह का पुत्र था। ८ और उसके बाद गब्बै सल्लै जिनके साथ नौ सौ अट्ठाईस पुरुष थे। ९ इनका रखवाल जिक्री का पुत्र योएल था, और

हस्सनूआ का पुत्र यहूदा नगर के प्रधान का नायब था ।।

१० फिर याजकों में से योयारीब का पुत्र यदायाह और याकीन। ११ और सरायाह जो परमेश्वर के भवन का प्रधान और हिल्किय्याह का पुत्र था, यह मशुल्लाम का पुत्र, यह सादोक का पुत्र, यह मरायोत का पुत्र, यह अहीतूब का पुत्र था। १२ और इनके आठ सौ बाईस भाई जो उस भवन का काम करते थे; और अदायाह, जो यरोहाम का पुत्र था, यह पलल्याह का पुत्र, यह अम्सी का पुत्र, यह जकर्याह का पुत्र, यह पशहूर का पुत्र, यह मल्किय्याह का पुत्र था। १३ और इसके दो सौ बयालीस भाई जो पितरों के घरानों के प्रधान थे; और अमशै जो अजरेल का पुत्र था, यह अहजै का पुत्र, यह मशिल्लेमोत का पुत्र, यह इम्मेर का पुत्र था। १४ और इनके एक सौ अट्ठाईस शूरवीर भाई थे और इनका रखवाल हग्गदोलीम का पुत्र जब्दीएल था ।।

१५ फिर लेवियों में से शमायाह जो हश्शूब का पुत्र था, यह अज्रीकाम का पुत्र, यह हशब्याह का पुत्र, यह बुन्नी का पुत्र था। १६ और शब्बत और योजाबाद मुख्य लेवियों में से परमेश्वर के भवन के बाहरी काम पर ठहरे थे। १७ और मत्तन्याह जो मीका का पुत्र और जब्दी का पोता, और आसाप का परपोता था; वह प्रार्थना में धन्यवाद करनेवालों का मुखिया था, और बकबुक्याह अपने भाइयों में दूसरा पद रखता था; और अब्दा जो शम्मू का पुत्र, और गालाल का पोता, और यदूतून का परपोता था। १८ जो लेवीय पवित्र नगर में रहते थे, वह सब मिलाकर दो सौ चौरासी थे ।।

१९ और अक्कूब और तल्मोन नाम द्वारपाल और उनके भाई जो फाटकों के रखवाले थे, एक सौ बहत्तर थे। २० और शेष इस्राएली याजक और लेवीय, यहूदा के सब नगरों में अपने अपने भाग पर रहते थे। २१ और नतीन लोग ओपेल में रहते; और नतिनों के ऊपर सीहा, और गिश्पा ठहराए गए थे ।।

२२ और जो लेवीय यरूशलेम में रहकर परमेश्वर के भवन के काम में लगे रहते थे, उनका मुखिया आसाप के वंश के गवैयों में का उज्जी था, जो बानी का पुत्र था, यह हशब्याह का पुत्र, यह मत्तन्याह का पुत्र और यह हशब्याह का पुत्र था। २३ क्योंकि उनके विषय राजा की आज्ञा थी, और गवैयों के प्रतिदिन के प्रयोजन के अनुसार ठीक प्रबन्ध था। २४ और प्रजा के सब काम के लिये मशेजबेल का पुत्र पतह्याह जो यहूदा के पुत्र जेरह के वंश में था, वह राजा के पास रहता था ।।

२५ बच गए गांव और उनके खेत, सो कुछ यहूदी किर्यतर्बा, और उनके गांव में, कुछ दीबोन, और उसके गांवों में, कुछ यकब्सेल और उसके गांवों में रहते थे। २६ फिर येशू, मोलादा, बेत्पेलेत; २७ हसर्शूआल, और बेर्शेबा और और उसके गांवों में; २८ और सिकलग और मकोना और उनके गांवों में; २९ एन्रिम्मोन, सोरा, यर्मूत, ३० जानोह और अदुल्लाम और उनके गांवों में, लाकीश, और उसके खेतों में अजेका, और उसके गांवों में वे बेर्शेबा से ले हिन्नोम की तराई तक डेरे डाले हुए रहते थे। ३१ और बिन्यामीनी गेबा से लेकर मिकमश, अय्या और बेतेल और उसके गांवों में; ३२ अनातोत, नोब, अनन्याह, ३३ हासोर,

रामा, गित्तैम, ३४ हादीद, सबोईम, नबल्लत, ३५ लोद, ओनो और कारीगरों की तराई तक रहते थे। ३६ और कितने लेवियों के दल यहूदा और बिन्यामीन के प्रान्तों में बस गए ॥

(याजकों और लेवियों का ब्योरा)

१२ जो याजक और लेवीय शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल और येशू के संग यरूशलेम को गए* थे, वे ये थे: अर्थात् सरायाह, यिर्मयाह, एज्रा, २ अमर्याह, मल्लूक, हत्तूश, ३ शकन्याह, रहूम, मरेमोत, ४ इद्दो, गिन्नतोई, अबिय्याह, ५ मीय्यामीन, माद्याह, बिलगा, ६ शमायाह, योआरीब, यदायाह, ७ सल्लू, आमोक, हिल्किय्याह और यदायाह। येशू के दिनों में याजकों और उनके भाइयों के मुख्य मुख्य पुरुष, ये ही थे ॥

८ फिर ये लेवीय गए: अर्थात् येशू, बिन्नूई, कदमीएल, शेरेब्याह, यहूदा और वह मत्तन्याह जो अपने भाइयों समेत धन्यवाद के काम पर ठहराया गया था। ९ और उनके भाई बकबुक्याह और उन्नो उनके साम्हने अपनी अपनी सेवकाई में लगे रहते थे ॥

१० और येशू से योयाकीम उत्पन्न हुआ और योयाकीम से एल्याशीब और एल्याशीब से योयादा, ११ और योयादा से योनातान और योनातान से यद्दू उत्पन्न हुआ। १२ और योयाकीम के दिनों में ये याजक अपने अपने पितरों के घराने के मुख्य पुरुष थे, अर्थात् सरायाह का तो मरायाह; यिर्मयाह का हनन्याह। १३ एज्रा का मशुल्लाम; अमर्याह का यहोहानान। १४ मल्लूकी का योनातान; शबन्याह का योसेप। १५ हारीम का अदना; मरायोत का हेलकै। १६ इद्दो का जकर्याह; गिन्नतोन का मशुल्लाम। १७ अबिय्याह का जिक्री; मिन्यामीन के मोअद्याह का पिलतै। १८ बिलगा का शम्मू; शमायाह का यहोनातान। १९ योयारीब का मत्तनै; यदायाह का उज्जी। २० सल्लै का कल्लै; आमोक का एबेर। २१ हिल्किय्याह का हशब्याह; और यदायाह का नतनेल ॥

२२ एल्याशीब, योयादा, योहानान और यद्दू के दिनों में लेवीय पितरों के घरानों के मुख्य पुरुषों के नाम लिखे जाते थे, और दारा फ़ारसी के राज्य में याजकों के भी नाम लिखे जाते थे। २३ जो लेवीय पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष थे, उनके नाम एल्याशीब के पुत्र योहानान के दिनों तक इतिहास की पुस्तक में लिखे जाते थे। २४ और लेवियों के मुख्य पुरुष ये थे: अर्थात् हसब्याह, शेरेब्याह और कदमीएल का पुत्र येशू; और उनके साम्हने उनके भाई परमेश्वर के भक्त दाऊद की आज्ञा के अनुसार आम्हने-साम्हने स्तुति और धन्यवाद करने पर नियुक्त थे। २५ मत्तन्याह, बकबुक्याह, ओबद्याह, मशुल्लाम, तल्मोन और अक्कूब फाटकों के पास के भण्डारों का पहरा देनेवाले द्वारपाल थे। २६ योयाकीम के दिनों में जो योसादाक का पोता और येशू का पुत्र था, और नहेमायाह अधिपति और एज्रा याजक और शास्त्री के दिनों में ये ही थे ॥

(यरूशलेम की शहरपनाह की प्रतिष्ठा)

२७ और यरूशलेम की शहरपनाह की प्रतिष्ठा के समय लेवीय अपने सब स्थानों

* मूल में—चढ़ गए।

में ढूंढ़े गए, कि यरूशलेम को पहुंचाए जाएं, जिस से आनन्द और धन्यवाद करके और झांझ, सारंगी और वीणा बजाकर, और गाकर उसकी प्रतिष्ठा करें। २८ तो गवैयों के सन्तान यरूशलेम के चारों ओर के देश से और नतोपातियों के गांवों से, २९ और बेतगिलगाल से, और गेबा और अज्मावेत के खेतों से इकट्ठे हुए; क्योंकि गवैयों ने यरूशलेम के आस-पास गांव बसा लिये थे। ३० तब याजकों और लेवियों ने अपने अपने को शुद्ध किया; और उन्हों ने प्रजा को, और फाटकों और शहरपनाह को भी शुद्ध किया ।।

३१ तब मैं ने यहूदी हाकिमों को शहरपनाह पर चढ़ाकर दो बड़े दल ठहराए, जो धन्यवाद करते हुए धूमधाम के साथ चलते थे। इनमें से एक दल तो दक्खिन ओर, अर्थात् कूड़ाफाटक की ओर शहरपनाह के ऊपर ऊपर से चला; ३२ और उसके पीछे पीछे ये चले, अर्थात् होशायाह और यहूदा के आधे हाकिम, ३३ और अजर्याह, एज्रा, मशुल्लाम, ३४ यहूदा, बिन्यामीन, शमायाह, और यिर्मयाह, ३५ और याजकों के कितने पुत्र तुरहियां लिये हुए : अर्थात् जकर्याह जो योहानान का पुत्र था, यह शमायाह का पुत्र, यह मत्तन्याह का पुत्र, यह मीकायाह का पुत्र, यह जक्कूर का पुत्र, यह आसाप का पुत्र था। ३६ और उसके भाई शमायाह, अजरेल, मिललै, गिललै, माऐ, नतनेल, यहूदा और हनानी परमेश्वर के भक्त दाऊद के बाजे लिये हुए थे; और उनके आगे आगे एज्रा शास्त्री चला। ३७ ये सोताफाटक से हो सीधे दाऊदपुर की सीढ़ी पर चढ़, शहरपनाह की ऊंचाई पर से चलकर, दाऊद के भवन के ऊपर से होकर, पूरब की ओर जलफाटक तक पहुंचे ।।

३८ और धन्यवाद करने और धूमधाम से चलनेवालों का दूसरा दल, और उनके पीछे पीछे मैं, और आधे लोग उन से मिलने को शहरपनाह के ऊपर ऊपर से भट्ठों के गुम्मट के पास से चौड़ी शहरपनाह तक। ३९ और एप्रैम के फाटक और पुराने फाटक, और मछलीफाटक, और हननेल के गुम्मट, और हम्मेआ नाम गुम्मट के पास से होकर भेड़ फाटक तक चले, और पहरुओं के फाटक के पास खड़े हो गए। ४० तब धन्यवाद करनेवालों के दोनों दल और मैं और मेरे साथ आधे हाकिम परमेश्वर के भवन में खड़े हो गए। ४१ और एल्याकीम, मासेयाह, मिन्यामीन, मीकायाह, एल्योएनै, जकर्याह और हनन्याह नाम याजक तुरहियां लिये हुए थे। ४२ और मासेयाह, शमायाह, एलीआजर, उज्जी, यहोहानान, मल्किय्याह, एलाम, और एजेर (खड़े हुए थे) और गवैये जिनका मुखिया यिज्रह्याह था, वह ऊंचे स्वर से गाते बजाते रहे। ४३ उसी दिन लोगों ने बड़े बड़े मेलबलि चढ़ाए, और आनन्द किया; क्योंकि परमेश्वर ने उनको बहुत ही आनन्दित किया था; स्त्रियों ने और बालबच्चों ने भी आनन्द किया। और यरूशलेम के आनन्द की ध्वनि दूर दूर तक फैल गई ।।

(उपासना आदि का प्रबन्ध)

४४ उसी दिन खज़ानों के, उठाई हुई भेंटों के, पहिली पहिली उपज के, और दशमांशों की कोठरियों के अधिकारी ठहराए गए, कि उन में नगर नगर के खेतों के अनुसार उन वस्तुओं को जमा

करें, जो व्यवस्था के अनुसार याजकों और लेवियों के भाग में की थीं; क्योंकि यहूदी उपस्थित याजकों और लेवियों के कारण आनन्दित थे। ४५ इसलिये वे अपने परमेश्वर के काम और शुद्धता के विषय चौकसी करते रहे; और गवैये और द्वारपाल भी दाऊद और उसके पुत्र सुलैमान की आज्ञा के अनुसार वैसा ही करते रहे। ४६ प्राचीनकाल, अर्थात् दाऊद और आसाप के दिनों में तो गवैयों के प्रधान थे, और परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद के गीत गाए जाते थे। ४७ और जरुब्बाबेल और नहेमायाह के दिनों में सारे इस्राएली, गवैयों और द्वारपालों के प्रतिदिन का भाग देते रहे; और वे लेवियों के अंश पवित्र करके देते थे; और लेवीय हारून की सन्तान के अंश पवित्र करके देते थे॥

(कुरीतियों का सुधारा जाना)

१३ उसी दिन मूसा की पुस्तक लोगों को पढ़कर सुनाई गई; और उस में यह लिखा हुआ मिला, कि कोई अम्मोनी वा मोआबी परमेश्वर की सभा में कभी न आने पाए; २ क्योंकि उन्हों ने अन्न जल लेकर इस्राएलियों से भेंट नहीं की, वरन बिलाम को उन्हें शाप देने के लिये दक्षिणा देकर बुलवाया था—तौभी हमारे परमेश्वर ने उस शाप को आशीष से बदल दिया। ३ यह व्यवस्था सुनकर, उन्हों ने इस्राएल में से मिली जुली भीड़ को अलग अलग कर दिया॥

४ इस से पहिले एल्याशीब याजक जो हमारे परमेश्वर के भवन की कोठरियों का अधिकारी और तोबिय्याह का सम्बन्धी था। ५ उस ने तोबिय्याह के लिये एक बड़ी कोठरी तैयार की थी जिस में पहिले अन्नबलि का सामान और लोबान और पात्र और अनाज, नये दाखमधु और टटके तेल के दशमांश, जिन्हें लेवियों, गवैयों और द्वारपालों को देने की आज्ञा थी, रखी हुई थी; और याजकों के लिये उठाई हुई भेंट भी रखी जाती थीं। ६ परन्तु मैं इस समय यरूशलेम में नहीं था, क्योंकि बाबेल के राजा अर्तक्षत्र के बत्तीसवें वर्ष में मैं राजा के पास चला गया। फिर कितने दिनों के बाद राजा से छुट्टी मांगी, ७ और मैं यरूशलेम को आया, तब मैं ने जान लिया, कि एल्याशीब ने तोबिय्याह के लिये परमेश्वर के भवन के आंगनों में एक कोठरी तैयार कर, क्या ही बुराई की है। ८ इसे मैं ने बहुत बुरा माना, और तोबिय्याह का सारा घरेलू सामान उस कोठरी में से फेंक दिया। ९ तब मेरी आज्ञा से वे कोठरियां शुद्ध की गईं, और मैं ने परमेश्वर के भवन के पात्र और अन्नबलि का सामान और लोबान उन में फिर से रखवा दिया॥

१० फिर मुझे मालूम हुआ कि लेवियों का भाग उन्हें नहीं दिया गया है; और इस कारण काम करनेवाले लेवीय और गवैये अपने अपने खेत को भाग गए हैं। ११ तब मैं ने हाकिमों को डांटकर कहा, परमेश्वर का भवन क्यों त्यागा गया है? फिर मैं ने उनको इकट्ठा करके, एक एक को उसके स्थान पर नियुक्त किया। १२ तब से सब यहूदी अनाज, नये दाखमधु और टटके तेल के दशमांश भण्डारों में लाने लगे। १३ और मैं ने भण्डारों के अधिकारी शेलेम्याह याजक और सादोक मुंशी को, और लेवियों में से पदायाह को, और उनके नीचे हानान को, जो मत्तन्याह

का पोता और जक्कूर का पुत्र था, नियुक्त किया; वे तो विश्वासयोग्य गिने जाते थे, और अपने भाइयों के मध्य बांटना उनका काम था। १४ हे मेरे परमेश्वर! मेरा यह काम मेरे हित के लिये स्मरण रख, और जो जो सुकर्म मैं ने अपने परमेश्वर के भवन और उस में की आराधना के विषय किए हैं उन्हें मिटा न डाल।।

१५ उन्हीं दिनों में मैं ने यहूदा में कितनों को देखा जो विश्रामदिन को हौदों में दाख रौंदते, और पूलियों को ले आते, और गदहों पर लादते थे; वैसे ही वे दाखमधु, दाख, अंजीर और भांति भांति के बोझ विश्रामदिन को यरूशलेम में लाते थे; तब जिस दिन वे भोजनवस्तु बेचते थे, उसी दिन मैं ने उनको चिता दिया। १६ फिर उस में सोरी लोग रहकर मछली और भांति भांति का सौदा ले आकर, यहूदियों के हाथ यरूशलेम में विश्रामदिन को बेचा करते थे। १७ तब मैं ने यहूदा के रईसों को डांटकर कहा, तुम लोग यह क्या बुराई करते हो, जो विश्रामदिन को अपवित्र करते हो? १८ क्या तुम्हारे पुरखा ऐसा नहीं करते थे? और क्या हमारे परमेश्वर ने यह सब विपत्ति हम पर और इस नगर पर न डाली? तौभी तुम विश्रामदिन को अपवित्र करने से इस्राएल पर परमेश्वर का क्रोध और भी भड़काते जाते हो।।

१९ सो जब विश्रामवार के पहिले दिन को यरूशलेम के फाटकों के आस-पास अन्धेरा होने लगा, तब मैं ने आज्ञा दी, कि उनके पल्ले बन्द किए जाएं, और यह भी आज्ञा दी, कि वे विश्रामवार के पूरे होने तक खोले न जाएं। तब मैं ने अपने कितने सेवकों को फाटकों का अधिकारी ठहरा दिया, कि विश्रामवार को कोई बोझ भीतर आने न पाए। २० इसलिये व्योपारी और भांति भांति के सौदे के बेचनेवाले यरूशलेम के बाहर दो एक बेर टिके। २१ तब मैं ने उनको चिताकर कहा, तुम लोग शहरपनाह के साम्हने क्यों टिकते हो? यदि तुम फिर ऐसा करोगे तो मैं तुम पर हाथ बढ़ाऊंगा। इसलिये उस समय से वे फिर विश्रामवार को नहीं आए। २२ तब मैं ने लेवियों को आज्ञा दी, कि अपने अपने को शुद्ध करके फाटकों की रखवाली करने के लिये आया करो, ताकि विश्रामदिन पवित्र माना जाए। हे मेरे परमेश्वर! मेरे हित के लिये यह भी स्मरण रख और अपनी बड़ी करुणा के अनुसार मुझ पर तरस खा।।

२३ फिर उन्हीं दिनों में मुझ को ऐसे यहूदी दिखाई पड़े, जिन्हों ने अशदोदी, अम्मोनी और मोआबी स्त्रियां ब्याह ली थीं। २४ और उनके लड़केबालों की आधी बोली अशदोदी थी, और वे यहूदी बोली न बोल सकते थे, दोनों जाति की बोली बोलते थे। २५ तब मैं ने उनको डांटा और कोसा, और उन में से कितनों को पिटवा दिया और उनके बाल नुचवाए; और उनको परमेश्वर की यह शपथ खिलाई, कि हम अपनी बेटियां उनके बेटों के साथ ब्याह में न देंगे और न अपने लिये वा अपने बेटों के लिये उनकी बेटियां ब्याह में लेंगे। २६ क्या इस्राएल का राजा सुलैमान इसी प्रकार के पाप में न फंसा था? बहुतेरी जातियों में उसके तुल्य कोई राजा नहीं हुआ, और वह अपने परमेश्वर का प्रिय भी था, और परमेश्वर ने उसे सारे इस्राएल के ऊपर राजा नियुक्त

किया; परन्तु उसको भी अन्यजाति स्त्रियों ने पाप में फंसाया। २७ तो क्या हम तुम्हारी सुनकर, ऐसी बड़ी बुराई करें कि अन्यजाति की स्त्रियां ब्याह कर अपने परमेश्वर के विरुद्ध पाप करें?

२८ और एल्याशीब महायाजक के पुत्र योयादा का एक पुत्र, होरोनी सम्बल्लत का दामाद था, इसलिये मैं ने उसको अपने पास से भगा दिया। २९ हे मेरे परमेश्वर उनकी हानि के लिये याजकपद और याजकों और लेवियों की वाचा का तोड़ा जाना स्मरण रख॥

३० इस प्रकार मैं ने उनको सब अन्यजातियों से शुद्ध किया, और एक एक याजक और लेवीय की बारी और काम ठहरा दिया। ३१ फिर मैं ने लकड़ी की भेंट ले आने के विशेष समय ठहरा दिए, और पहिली पहिली उपज के देने का प्रबन्ध भी किया। हे मेरे परमेश्वर! मेरे हित के लिये मुझे स्मरण कर॥

एस्तेर

(क्षयर्ष की जेवनार के समय वशती का पटरानी के पद से उतारा जाना)

१ क्षयर्ष नाम राजा के दिनों में ये बातें हुईं: यह वही क्षयर्ष है, जो एक सौ सताईस प्रान्तों पर, अर्थात् हिन्दुस्तान से लेकर कूश देश तक राज्य करता था। २ उन्हीं दिनों में जब क्षयर्ष राजा अपनी उस राजगद्दी पर विराजमान था जो शूशन नाम राजगढ़ में थी। ३ वहां उस ने अपने राज्य के तीसरे वर्ष में अपने सब हाकिमों और कर्मचारियों की जेवनार की। फ़ारस और मादै के सेनापति और प्रान्त-प्रान्त के प्रधान और हाकिम उसके सम्मुख आ गए। ४ और वह उन्हें बहुत दिन वरन एक सौ अस्सी दिन तक अपने राजविभव का धन और अपने माहात्म्य के अनमोल पदार्थ दिखाता रहा। ५ इतने दिनों के बीतने पर राजा ने क्या छोटे क्या बड़े उन सभों की भी जो शूशन नाम राजगढ़ में इकट्ठे हुए थे, राजभवन की बारी के आंगन में सात दिन तक जेवनार की। ६ वहां के पर्दे श्वेत और नीले सूत के थे, और सन और बैंजनी रंग की डोरियों से चान्दी के छल्लों में, संगमर्मर के खम्भों से लगे हुए थे; और वहां की चौकियां सोने-चान्दी की थीं; और लाल और श्वेत और पीले और काले संगमर्मर के बने हुए फ़र्श पर धरी हुई थीं। ७ उस जेवनार में राजा के योग्य दाखमधु भिन्न भिन्न रूप के सोने के पात्रों में डालकर राजा की उदारता से बहुतायत के साथ पिलाया जाता था। ८ पीना तो नियम के अनुसार होता था, किसी को बरबस नहीं पिलाया जाता था; क्योंकि राजा ने तो अपने भवन के सब भण्डारियों को आज्ञा दी थी, कि जो पाहुन जैसा चाहे उसके साथ

वैसा ही बर्ताव करना। ९ रानी वशती ने भी राजा क्षयर्ष के भवन में स्त्रियों की जेवनार की ।।

१० सातवें दिन, जब राजा का मन दाखमधु में मग्न था, तब उस ने महूमान, बिजता, हर्बोना, बिगता, अबगता, जेतेर और कर्कस नाम सातों खोजों को जो क्षयर्ष राजा के सम्मुख सेवा टहल किया करते थे, आज्ञा दी, ११ कि रानी वशती को राजमुकुट धारण किए हुए राजा के सम्मुख ले आओ; जिस से कि देश देश के लोगों और हाकिमों पर उसकी सुन्दरता प्रगट हो जाए; क्योंकि वह देखने में सुन्दर थी। १२ खोजों के द्वारा राजा की यह आज्ञा पाकर रानी वशती ने आने से इनकार किया। इस पर राजा बड़े क्रोध से जलने लगा ।।

१३ तब राजा ने समय समय का भेद जाननेवाले पण्डितों से पूछा (राजा तो नीति और न्याय के सब ज्ञानियों से ऐसा ही किया करता था। १४ और उसके पास कर्शना, शेतार, अदमाता, तर्शीश, मेरेस, मर्सना, और ममूकान नाम फ़ारस, और मादै के सातों खोजे थे, जो राजा का दर्शन करते, और राज्य में मुख्य मुख्य पदों पर नियुक्त किए गए थे।) १५ राजा ने पूछा कि रानी वशती ने राजा क्षयर्ष की खोजों द्वारा दिलाई हुई आज्ञा का उलंघन किया, तो नीति के अनुसार उसके साथ क्या किया जाए? १६ तब ममूकान ने राजा और हाकिमों की उपस्थिति में उत्तर दिया, रानी वशती ने जो अनुचित काम किया है, वह न केवल राजा से परन्तु सब हाकिमों से और उन सब देशों के लोगों से भी जो राजा क्षयर्ष के सब प्रान्तों में रहते हैं। १७ क्योंकि रानी के इस काम की चर्चा सब स्त्रियों में होगी और जब यह कहा जाएगा, कि राजा क्षयर्ष ने रानी वशती को अपने साम्हने ले आने की आज्ञा दी परन्तु वह न आई, तब वे भी अपने अपने पति को तुच्छ जानने लगेंगी। १८ और आज के दिन फ़ारसी और मादी हाकिमों की स्त्रियां जिन्हों ने रानी की यह बात सुनी है तो वे भी राजा के सब हाकिमों से ऐसा ही कहने लगेंगी; इस प्रकार बहुत ही घृणा और क्रोध उत्पन्न होगा। १९ यदि राजा को स्वीकार हो, तो यह आज्ञा निकाले, और फ़ारसियों और मादियों के कानून में लिखी भी जाए, जिस से कभी बदल न सके, कि रानी वशती राजा क्षयर्ष के सम्मुख फिर कभी आने न पाए, और राजा पटरानी का पद किसी दूसरी को दे दे जो उस से अच्छी हो। २० और जब राजा की यह आज्ञा उसके सारे राज्य में सुनाई जाएगी, तब सब पत्नियां छोटे, बड़े, अपने अपने पति का आदरमान करती रहेंगी। २१ यह बात राजा और हाकिमों को पसन्द आई और राजा ने ममूकान की सम्मति मान ली और अपने राज्य में, २२ अर्थात् प्रत्येक प्रान्त के अक्षरों में और प्रत्येक जाति की भाषा में चिट्ठियां भेजीं, कि सब पुरुष अपने अपने घर में अधिकार चलाएं, और अपनी जाति की भाषा बोला करें ।।

(एस्तेर का पटरानी बन जाना)

२ इन बातों के बाद जब राजा क्षयर्ष की जलजलाहट ठंडी हो गई, तब उस ने रानी वशती की, और जो काम उस ने किया था, और जो उसके विषय में आज्ञा निकली थी उसकी भी सुधि ली। २ तब राजा के सेवक जो उसके

टहलुए थे, कहने लगे, राजा के लिये सुन्दर तथा युवती कुंवारियां ढूंढ़ी जाएं। ३ और राजा ने अपने राज्य के सब प्रान्तों में लोगों को इसलिये नियुक्त किया कि वे सब सुन्दर युवती कुंवारियों को शूशन गढ़ के रनवास में इकट्ठा करें और स्त्रियों के रखवाले हेगे को जो राजा का खोजा था सौंप दें; और शुद्ध करने के योग्य वस्तुएं उन्हें दी जाएं। ४ तब उन में से जो कुंवारी राजा की दृष्टि में उत्तम ठहरे, वह रानी वशती के स्थान पर पटरानी बनाई जाए। यह बात राजा को पसन्द आई और उस ने ऐसा ही किया॥

५ शूशन गढ़ में मोर्दकै नाम एक यहूदी रहता था, जो कीश नाम के एक बिन्यामीनी का परपोता, शिमी का पोता, और याईर का पुत्र था। ६ वह उन बन्धुओं के साथ यरूशलेम से बन्धुआई में गया था, जिन्हें बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर, यहूदा के राजा यकोन्याह के संग बन्धुआ करके ले गया था। ७ उस ने हदस्सा नाम अपनी चचेरी बहिन को, जो एस्तेर भी कहलाती थी, पाला-पोसा था; क्योंकि उसके माता-पिता कोई न थे, और वह लड़की सुन्दर और रूपवती थी, और जब उसके माता-पिता मर गए, तब मोर्दकै ने उसको अपनी बेटी करके पाला। ८ जब राजा की आज्ञा और नियम सुनाए गए, और बहुत सी युवती स्त्रियां, शूशन गढ़ में हेगे के अधिकार में इकट्ठी की गईं, तब एस्तेर भी राजभवन में स्त्रियों के रखवाले हेगे के अधिकार में सौंपी गई। ९ और वह युवती स्त्री उसकी दृष्टि में अच्छी लगी; और वह उस से प्रसन्न हुआ, तब उस ने बिना विलम्ब उसे राजभवन में से शुद्ध करने की वस्तुएं, और उसका भोजन, और उसके लिये चुनी हुई सात सहेलियां भी दीं, और उसको और उसकी सहेलियों को रनवास में सब से अच्छा रहने का स्थान दिया। १० एस्तेर ने न अपनी जाति बताई थी, न अपना कुल; क्योंकि मोर्दकै ने उसको आज्ञा दी थी, कि उसे न बताना। ११ मोर्दकै तो प्रतिदिन रनवास के आंगन के साम्हने टहलता था ताकि जाने की एस्तेर कैसी है और उसके साथ क्या होगा? १२ जब एक एक कन्या की बारी हुई, कि वह क्षयर्ष राजा के पास जाए, (और यह उस समय हुआ जब उसके साथ स्त्रियों के लिये ठहराए हुए नियम के अनुसार बारह माह तक व्यवहार किया गया था; अर्थात् उनके शुद्ध करने के दिन इस रीति से बीत गए, कि छः माह तक गन्धरस का तेल लगाया जाता था, और छः माह तक सुगन्धद्रव्य, और स्त्रियों के शुद्ध करने का और और सामान लगाया जाता था)। १३ इस प्रकार से वह कन्या जब राजा के पास जाती थी, तब जो कुछ वह चाहती कि रनवास से राजभवन में ले जाए, वह उसको दिया जाता था। १४ सांझ को तो वह जाती थी और बिहान को वह लौटकर रनवास के दूसरे घर में जाकर रखेलियों के रखवाले राजा के खोजे शाशगज के अधिकार में हो जाती थी, और राजा के पास फिर नहीं जाती थी। और यदि राजा उस से प्रसन्न हो जाता था, तब वह नाम लेकर बुलाई जाती थी॥

१५ जब मोर्दकै के चाचा अबीहैल की बेटी एस्तेर, जिसको मोर्दकै ने बेटी मानकर रखा था, उसकी बारी आई कि राजा के पास जाए, तब जो कुछ स्त्रियों के रखवाले

राजा के खोजे हेगे ने उसके लिये ठहराया था, उस से अधिक उस ने और कुछ न मांगा। और जितनों ने एस्तेर को देखा, वे सब उस से प्रसन्न हुए। १६ यों एस्तेर राजभवन में राजा क्षयर्ष के पास उसके राज्य के सातवें वर्ष के तेबेत नाम दसवें महीने में पहुंचाई गई। १७ और राजा ने एस्तेर को और सब स्त्रियों से अधिक प्यार किया, और और सब कुंवारियों से अधिक उसके अनुग्रह और कृपा की दृष्टि उसी पर हुई, इस कारण उस ने उसके सिर पर राजमुकुट रखा और उसको वशती के स्थान पर रानी बनाया। १८ तब राजा ने अपने सब हाकिमों और कर्मचारियों की बड़ी जेवनार करके, उसे एस्तेर की जेवनार कहा; और प्रान्तों में छुट्टी दिलाई, और अपनी उदारता के योग्य इनाम भी बांटे॥

१९ जब कुंवारियां दूसरी बार इकट्ठी की गईं, तब मोर्दकै राजभवन के फाटक में बैठा था। २० और एस्तेर ने अपनी जाति और कुल का पता नहीं दिया था, क्योंकि मोर्दकै ने उसको ऐसी आज्ञा दी थी कि न बताए; और एस्तेर मोर्दकै की बात ऐसी मानती थी जैसे कि उसके यहां अपने पालन पोषण के समय मानती थी। २१ उन्हीं दिनों में जब मोर्दकै राजा के राजभवन के फाटक में बैठा करता था, तब राजा के खोजे जो द्वारपाल भी थे, उन में से बिकतान और तेरेश नाम दो जनों ने राजा क्षयर्ष से रूठकर उस पर हाथ चलाने की युक्ति की। २२ यह बात मोर्दकै को मालूम हुई, और उस ने एस्तेर रानी को यह बात बताई, और एस्तेर ने मोर्दकै का नाम लेकर राजा को चितौनी दी। २३ तब जांच पड़ताल होने पर यह बात सच निकली और वे दोनों वृक्ष पर लटका दिए गए, और यह वृत्तान्त राजा के साम्हने इतिहास की पुस्तक में लिख लिया गया॥

(हामान के द्रोह के कारण यहूदियों को सत्यानाश करने की आज्ञा का दिया जाना)

३ इन बातों के बाद राजा क्षयर्ष ने अगागी हम्मदाता के पुत्र हामान को उच्च पद दिया, और उसको महत्व देकर उसके लिये उसके साथी हाकिमों के सिंहासनों से ऊंचा सिंहासन ठहराया। २ और राजा के सब कर्मचारी जो राजभवन के फाटक में रहा करते थे, वे हामान के साम्हने झुककर दण्डवत किया करते थे क्योंकि राजा ने उसके विषय ऐसी ही आज्ञा दी थी; परन्तु मोर्दकै न तो झुकता था और न उसको दण्डवत करता था। ३ तब राजा के कर्मचारी जो राजभवन के फाटक में रहा करते थे, उन्हों ने मोर्दकै से पूछा, ४ तू राजा की आज्ञा क्यों उलंघन करता है? जब वे उस से प्रतिदिन ऐसा ही कहते रहे, और उस ने उनकी एक न मानी, तब उन्हों ने यह देखने की इच्छा से कि मोर्दकै की यह बात चलेगी कि नहीं, हामान को बता दिया; उस ने तो उनको बता दिया था कि मैं यहूदी हूं। ५ जब हामान ने देखा, कि मोर्दकै नहीं झुकता, और न मुझ को दण्डवत करता है, तब हामान बहुत ही क्रोधित हुआ। ६ उस ने केवल मोर्दकै पर हाथ चलाना अपनी मर्यादा के नीचे जाना। क्योंकि उन्हों ने हामान को यह बता दिया था, कि मोर्दकै किस जाति का है, इसलिये हामान ने क्षयर्ष के साम्राज्य में रहनेवाले सारे यहूदियों को भी मोर्दकै

की जाति जानकर, विनाश कर डालने की युक्ति निकाली ।।

७ राजा क्षयर्ष के बारहवें वर्ष के नीसान नाम पहिले महीने में, हामान ने अदार नाम बारहवें महीने तक के एक एक दिन और एक एक महीने के लिये "पूर" अर्थात् चिट्ठी अपने साम्हने डलवाई । ८ और हामान ने राजा क्षयर्ष से कहा, तेरे राज्य के सब प्रान्तों में रहनेवाले देश देश के लोगों के मध्य में तितर बितर और छिटकी हुई एक जाति है, जिसके नियम और सब लोगों के नियमों से भिन्न हैं; और वे राजा के कानून पर नहीं चलते, इसलिये उन्हें रहने देना राजा को लाभदायक नहीं है । ९ यदि राजा को स्वीकार हो तो उन्हें नष्ट करने की आज्ञा लिखी जाए, और मैं राज के भण्डारियों के हाथ में राजभण्डार में पहुंचाने के लिये, दस हजार किक्कार चान्दी दूंगा । १० तब राजा ने अपनी अंगूठी अपने हाथ से उतारकर अगागी हम्मदाता के पुत्र हामान को, जो यहूदियों का बैरी था दे दी । ११ और राजा ने हामान से कहा, वह चान्दी तुझे दी गई है, और वे लोग भी, ताकि तू उन से जैसा तेरा जी चाहे वैसा ही व्यवहार करे ।।

१२ यों उसी पहिले महीने के तेरहवें दिन को राजा के लेखक बुलाए गए, और हामान की आज्ञा के अनुसार राजा के सब अधिपतियों, और सब प्रान्तों के प्रधानों, और देश देश के लोगों के हाकिमों के लिये चिट्ठियां, एक एक प्रान्त के अक्षरों में, और एक एक देश के लोगों की भाषा में राजा क्षयर्ष के नाम से लिखी गईं; और उन में राजा की अंगूठी की छाप लगाई गई । १३ और राज्य के सब प्रान्तों में इस आशय की चिट्ठियां हर डाकियों के द्वारा भेजी गई कि एक ही दिन में, अर्थात् अदार नाम बारहवें महीने के तेरहवें दिन को, क्या जवान, क्या बूढ़ा, क्या स्त्री, क्या बालक, सब यहूदी विध्वंसघात और नाश किए जाएं; और उनकी धन सम्पत्ति लूट ली जाए । १४ उस आज्ञा के लेख की नकलें सब प्रान्तों में खुली हुई भेजी गईं कि सब देशों के लोग उस दिन के लिये तैयार हो जाएं । १५ यह आज्ञा शूशन गढ़ में दी गई, और डाकिए राजा की आज्ञा से तुरन्त निकल गए । और राजा और हामान तो जेवनार में बैठ गए; परन्तु शूशन नगर में घबराहट फैल गई ।।

(मोर्दकै एस्तेर को बिनती करने के लिये उसकाता है)

४ जब मोर्दकै ने जान लिया कि क्या क्या किया गया है तब मोर्दकै वस्त्र फाड़, टाट पहिन, राख डालकर, नगर के मध्य जाकर ऊंचे और दुखभरे शब्द से चिल्लाने लगा; २ और वह राजभवन के फाटक के साम्हने पहुंचा, परन्तु टाट पहिने हुए राजभवन के फाटक के भीतर तो किसी के जाने की आज्ञा न थी । ३ और एक एक प्रान्त में, जहां जहां राजा की आज्ञा और नियम पहुंचा, वहां वहां यहूदी बड़ा विलाप करने और उपवास करने और रोने पीटने लगे; वरन बहुतेरे टाट पहिने और राख डाले हुए पड़े रहे ।।

४ और एस्तेर रानी की सहेलियों और खोजों ने जाकर उसको बता दिया, तब रानी शोक से भर गई*; और मोर्दकै के

* मूल में—पीड़ा से ऐंठ गई ।

पास वस्त्र भेजकर यह कहलाया कि टाट उतारकर इन्हें पहिन ले, परन्तु उस ने उन्हें न लिया। ५ तब एस्तेर ने राजा के खोजों में से हताक को जिसे राजा ने उसके पास रहने को ठहराया था, बुलवाकर आज्ञा दी, कि मोर्दकै के पास जाकर मालूम कर ले, कि क्या बात है और इसका क्या कारण है। ६ तब हताक नगर के उस चौक में, जो राजभवन के फाटक के साम्हने था, मोर्दकै के पास निकल गया। ७ मोर्दकै ने उसको सब कुछ बता दिया कि मेरे ऊपर क्या क्या बीता है, और हामान ने यहूदियों के नाश करने की अनुमति पाने के लिये राजभण्डार में कितनी चान्दी भर देने का वचन दिया है, यह भी ठीक ठीक बतला दिया। ८ फिर यहूदियों को विनाश करने की जो आज्ञा शूशन में दी गई थी, उसकी एक नकल भी उस ने हताक के हाथ में, एस्तेर को दिखाने के लिये दी, और उसे सब हाल बताने, और यह आज्ञा देने को कहा, कि भीतर राजा के पास जाकर अपने लोगों के लिये गिड़गिड़ाकर बिनती करे। ९ तब हताक ने एस्तेर के पास जाकर मोर्दकै की बातें कह सुनाईं। १० तब एस्तेर ने हताक को मोर्दकै से यह कहने की आज्ञा दी, ११ कि राजा के सब कर्मचारियों, वरन राजा के प्रान्तों के सब लोगों को भी मालूम है, कि क्या पुरुष क्या स्त्री कोई क्यों न हो, जो आज्ञा बिना पाए भीतरी आंगन में राजा के पास जाएगा उसके मार डालने ही की आज्ञा है; केवल जिसकी ओर राजा सोने का राजदण्ड बढ़ाए वही बचता है। परन्तु मैं अब तीस दिन से राजा के पास नहीं बुलाई गई हूं। १२ एस्तेर की ये बातें मोर्दकै को सुनाई गईं। १३ तब मोर्दकै ने एस्तेर के पास यह कहला भेजा, कि तू मन ही मन यह विचार न कर, कि मैं ही राजभवन में रहने के कारण और सब यहूदियों में से बची रहूंगी। १४ क्योंकि जो तू इस समय चुपचाप रहे, तो और किसी न किसी उपाय से यहूदियों का छुटकारा और उद्धार हो जाएगा, परन्तु तू अपने पिता के घराने समेत नाश होगी। फिर क्या जाने तुझे ऐसे ही कठिन समय के लिये राजपद मिल गया हो? १५ तब एस्तेर ने मोर्दकै के पास यह कहला भेजा, १६ कि तू जाकर शूशन के सब यहूदियों को इकट्ठा कर, और तुम सब मिलकर मेरे निमित्त उपवास करो, तीन दिन रात न तो कुछ खाओ, और न कुछ पीओ। और मैं भी अपनी सहेलियों सहित उसी रीति उपवास करूंगी। और ऐसी ही दशा में मैं नियम के विरुद्ध राजा के पास भीतर जाऊंगी; और यदि नाश हो गई तो हो गई। १७ तब मोर्दकै चला गया और एस्तेर की आज्ञा के अनुसार ही उस ने किया॥

५ तीसरे दिन एस्तेर अपने राजकीय वस्त्र पहिनकर राजभवन के भीतरी आंगन में जाकर, राजभवन के साम्हने खड़ी हो गई। राजा तो राजभवन में राजगद्दी पर भवन के द्वार के साम्हने विराजमान था; २ और जब राजा ने एस्तेर रानी को आंगन में खड़ी हुई देखा, तब उस से प्रसन्न होकर सोने का राजदण्ड जो उसके हाथ में था उसकी ओर बढ़ाया। तब एस्तेर ने निकट जाकर राजदण्ड की नोक छुई। ३ तब राजा ने उस से पूछा, हे एस्तेर रानी, तुझे क्या चाहिये? और

तू क्या मांगती है? मांग और तुझे आधा राज्य तक दिया जाएगा। ४ एस्तेर ने कहा, यदि राजा को स्वीकार हो, तो आज हामान को साथ लेकर उस जेवनार में आए, जो मैं ने राजा के लिये तैयार की है। ५ तब राजा ने आज्ञा दी कि हामान को तुरन्त ले आओ, कि एस्तेर का निमंत्रण ग्रहण किया जाए। सो राजा और हामान एस्तेर की तैयार की हुई जेवनार में आए। ६ जेवनार के समय जब दाखमधु पिया जाता था, तब राजा ने एस्तेर से कहा, तेरा क्या निवेदन है? वह पूरा किया जाएगा। और तू क्या मांगती है? मांग, और आधा राज्य तक तुझे दिया जाएगा। ७ एस्तेर ने उत्तर दिया, मेरा निवेदन और जो मैं मांगती हूं वह यह है, ८ कि यदि राजा मुझ पर प्रसन्न है और मेरा निवेदन सुनना और जो वरदान मैं मांगूं वही देना राजा को स्वीकार हो, तो राजा और हामान कल उस जेवनार में आएं जिसे मैं उनके लिये करूंगी, और कल मैं राजा के इस वचन के अनुसार करूंगी॥

९ उस दिन हामान आनन्दित और मन में प्रसन्न होकर बाहर गया। परन्तु जब उस ने मोर्दकै को राजभवन के फाटक में देखा, कि वह उसके साम्हने न तो खड़ा हुआ, और न हटा, तब वह मोर्दकै के विरुद्ध क्रोध से भर गया। १० तौभी वह अपने को रोककर अपने घर गया; और अपने मित्रों और अपनी स्त्री जेरेश को बुलवा भेजा। ११ तब हामान ने, उन से अपने धन का विभव, और अपने लड़के-बालों की बढ़ती और राजा ने उसको कैसे कैसे बढ़ाया, और और सब हाकिमों और अपने और सब कर्मचारियों से ऊंचा पद दिया था, इन सब का वर्णन किया। १२ हामान ने यह भी कहा, कि एस्तेर रानी ने भी मुझे छोड़ और किसी को राजा के संग, अपनी की हुई जेवनार में आने न दिया; और कल के लिये भी राजा के संग उस ने मुझी को नेवता दिया है। १३ तौभी जब जब मुझे वह यहूदी मोर्दकै राजभवन के फाटक में बैठा हुआ दिखाई पड़ता है, तब तब यह सब मेरी दृष्टि में व्यर्थ है*। १४ उसकी पत्नी जेरेश और उसके सब मित्रों ने उस से कहा, पचास हाथ ऊंचा फांसी का एक खम्भा, बनाया जाए, और बिहान को राजा से कहना, कि उस पर मोर्दकै लटका दिया जाए; तब राजा के संग आनन्द से जेवनार में जाना। इस बात से प्रसन्न होकर हामान ने वैसा ही फांसी का एक खम्भा बनवाया॥

६ उस रात राजा को नींद नहीं आई, इसलिये उसकी आज्ञा से इतिहास की पुस्तक लाई गई, और पढ़कर राजा को सुनाई गई। २ और यह लिखा हुआ मिला, कि जब राजा क्षयर्ष के हाकिम जो द्वारपाल भी थे, उन में से बिगताना और तेरेश नाम दो जनों ने उस पर हाथ चलाने की युक्ति की थी उसे मोर्दकै ने प्रगट किया था। ३ तब राजा ने पूछा, इसके बदले मोर्दकै की क्या प्रतिष्ठा और बड़ाई की गई? राजा के जो सेवक उसकी सेवा टहल कर रहे थे, उन्हों ने उसको उत्तर दिया, उसके लिये कुछ भी नहीं किया गया। ४ राजा ने पूछा, आंगन में कौन है? उसी समय तो हामान राजा के भवन से बाहरी आंगन में इस मनसा से

* मूल में—यह सब मेरे बराबर नहीं।

आया था, कि जो खम्भा उस ने मोर्दकै के लिये तैयार कराया था, उस पर उसको लटका देने की चर्चा राजा से करे। ५ तब राजा के सेवकों ने उस से कहा, आंगन में तो हामान खड़ा है। राजा ने कहा, उसे भीतर बुलवा लाओ। ६ जब हामान भीतर आया, तब राजा ने उस से पूछा, जिस मनुष्य की प्रतिष्ठा राजा करना चाहता हो तो उसके लिये क्या करना उचित होगा? हामान ने यह सोचकर, कि मुझ से अधिक राजा किस की प्रतिष्ठा करना चाहता होगा? ७ राजा को उत्तर दिया, जिस मनुष्य की प्रतिष्ठा राजा करना चाहे, ८ तो उसके लिये राजकीय वस्त्र लाया जाए, जो राजा पहिनता है, और एक घोड़ा भी, जिस पर राजा सवार होता है, और उसके सिर पर जो राजकीय मुकुट धरा जाता है वह भी लाया जाए। ९ फिर वह वस्त्र, और वह घोड़ा राजा के किसी बड़े हाकिम को सौंपा जाए, और जिसकी प्रतिष्ठा राजा करना चाहता हो, उसको वह वस्त्र पहिनाया जाए, और उस घोड़े पर सवार करके, नगर के चौक में उसे फिराया जाए; और उसके आगे आगे यह प्रचार किया जाए, कि जिसकी प्रतिष्ठा राजा करना चाहता है, उसके साथ ऐसा ही किया जाएगा। १० राजा ने हामान से कहा, फुर्ती करके अपने कहने के अनुसार उस वस्त्र और उस घोड़े को लेकर, उस यहूदी मोर्दकै से जो राजभवन के फाटक में बैठा करता है, वैसा ही कर। जैसा तू ने कहा है उस में कुछ भी कमी होने न पाए। ११ तब हामान ने उस वस्त्र, और उस घोड़े को लेकर, मोर्दकै को पहिनाया, और उसे घोड़े पर चढ़ाकर, नगर के चौक में इस प्रकार पुकारता हुआ घुमाया कि जिसकी प्रतिष्ठा राजा करना चाहता है उसके साथ ऐसा ही किया जाएगा॥

१२ तब मोर्दकै तो राजभवन के फाटक में लौट गया परन्तु हामान शोक करता हुआ और सिर ढांपे हुए झट अपने घर को गया। १३ और हामान ने अपनी पत्नी जेरेश और अपने सब मित्रों से सब कुछ जो उस पर बीता था वर्णन किया। १४ तब उसके बुद्धिमान मित्रों और उसकी पत्नी जेरेश ने उस से कहा, मोर्दकै जिसे तू नीचा दिखाना चाहता है, यदि वह यहूदियों के वंश में का है, तो तू उस पर प्रबल न होने पाएगा उस से पूरी रीति नीचा ही खाएगा। १५ वे उस से बातें कर ही रहे थे, कि राजा के खोजे आकर, हामान को एस्तेर की की हुई जेवनार में फुर्ती से लिवा ले गए॥

७ सो राजा और हामान एस्तेर रानी की जेवनार में आ गए। २ और राजा ने दूसरे दिन दाखमधु पीते-पीते एस्तेर से फिर पूछा, हे एस्तेर रानी! तेरा क्या निवेदन है? वह पूरा किया जाएगा। और तू क्या मांगती है? मांग, और आधा राज्य तक तुझे दिया जाएगा। ३ एस्तेर रानी ने उत्तर दिया, हे राजा! यदि तू मुझ पर प्रसन्न है, और राजा को यह स्वीकार हो, तो मेरे निवेदन से मुझे, और मेरे मांगने से मेरे लोगों को प्राणदान मिले। ४ क्योंकि मैं और मेरी जाति के लोग बेच डाले गए हैं, और हम सब विध्वंस-घात और नाश किए जानेवाले हैं। यदि हम केवल दास-दासी हो जाने के लिये बेच डाले जाते, तो मैं चुप रहती; चाहे उस दशा में भी वह विरोधी राजा की

हानि भर न सकता। ५ तब राजा क्षयर्ष ने एस्तेर रानी से पूछा, वह कौन है? और कहां है जिस ने ऐसा करने की मनसा की है? ६ एस्तेर ने उत्तर दिया है कि वह विरोधी और शत्रु यही दुष्ट हामान है! तब हामान राजा-रानी के साम्हने भयभीत हो गया। ७ राजा तो जलजलाहट में आ, मधु पीने से उठकर, राजभवन की बारी में निकल गया; और हामान यह देखकर कि राजा ने मेरी हानि ठानी होगी, एस्तेर रानी से प्राणदान मांगने को खड़ा हुआ। ८ जब राजा राजभवन की बारी से दाखमधु पीने के स्थान में लौट आया तब क्या देखा, कि हामान उसी चौकी पर जिस पर एस्तेर बैठी है पड़ा है; और राजा ने कहा, क्या यह घर ही में मेरे साम्हने ही रानी से बरबस करना चाहता है? राजा के मुंह से यह वचन निकला ही था, कि सेवकों ने हामान का मुंह ढांप दिया। ९ तब राजा के साम्हने उपस्थित रहनेवाले खोजों में से हर्बोना नाम एक ने राजा से कहा, हामान के यहां पचास हाथ ऊंचा फांसी का एक खम्भा खड़ा है, जो उस ने मोर्दकै के लिये बनवाया है, जिस ने राजा के हित की बात कही थी। राजा ने कहा, उसको उसी पर लटका दो। १० तब हामान उसी खम्भे पर जो उस ने मोर्दकै के लिये तैयार कराया था, लटका दिया गया। इस पर राजा की जलजलाहट ठंडी हो गई॥

(यहूदियों का अपने शत्रुओं के घात करने की अनुमति मिलना)

८ उसी दिन राजा क्षयर्ष ने यहूदियों के विरोधी हामान का घरबार एस्तेर रानी को दे दिया। और मोर्दकै राजा के साम्हने आया, क्योंकि एस्तेर ने राजा को बताया था, कि उस से उसका क्या नाता था। २ तब राजा ने अपनी वह अंगूठी जो उस ने हामान से ले ली थी, उतार कर, मोर्दकै को दे दी। और एस्तेर ने मोर्दकै को हामान के घरबार पर अधिकारी नियुक्त कर दिया॥

३ फिर एस्तेर दूसरी बार राजा से बोली; और उसके पांव पर गिर, आंसू बहा बहाकर उस से गिड़गिड़ाकर बिन्ती की, कि अगागी हामान की बुराई और यहूदियों की हानि की उसकी युक्ति निष्फल की जाए। ४ तब राजा ने एस्तेर की ओर सोने का राजदण्ड बढ़ाया। ५ तब एस्तेर उठकर राजा के साम्हने खड़ी हुई; और कहने लगी कि यदि राजा को स्वीकार हो और वह मुझ से प्रसन्न है और यह बात उसको ठीक जान पड़े, और मैं भी उसको अच्छी लगती हूं, तो जो चिट्ठियां हम्मदाता अगागी के पुत्र हामान ने राजा के सब प्रान्तों के यहूदियों को नाश करने की युक्ति करके लिखाई थीं, उनको पलटने के लिये लिखा जाए। ६ क्योंकि मैं अपने जाति के लोगों पर पड़नेवाली उस विपत्ति को किस रीति से देख सकूंगी? और मैं अपने भाइयों के विनाश को क्योंकर देख सकूंगी? ७ तब राजा क्षयर्ष ने एस्तेर रानी से और मोर्दकै यहूदी से कहा, मैं हामान का घरबार तो एस्तेर को दे चुका हूं, और वह फांसी के खम्भे पर लटका दिया गया है, इसलिये कि उस ने यहूदियों पर हाथ बढ़ाया था। ८ सो तुम अपनी समझ के अनुसार राजा के नाम से यहूदियों के नाम पर लिखो, और राजा की अंगूठी की छाप भी लगाओ; क्योंकि जो चिट्ठी राजा के नाम से लिखी जाए, और उस पर

उसकी अंगूठी की छाप लगाई जाए, उसको कोई भी पलट नहीं सकता ।।

९ सो उसी समय अर्थात् सीवान नाम तीसरे महीने के तेईसवें दिन को राजा के लेखक बुलवाए गए और जिस जिस बात की आज्ञा मोर्दकै ने उन्हें दी थी उसे यहूदियों और अधिपतियों और हिन्दुस्तान से लेकर कूश तक, जो एक सौ सत्ताईस प्रान्त हैं, उन सभों के अधिपतियों और हाकिमों को एक एक प्रान्त के अक्षरों में और एक एक देश के लोगों की भाषा में, और यहूदियों को उनके अक्षरों और भाषा में लिखी गईं। १० मोर्दकै ने राजा क्षयर्ष के नाम से चिट्ठियां लिखाकर, और उन पर राजा की अंगूठी की छाप लगा-कर, वेग चलनेवाले सरकारी घोड़ों, खच्चरों और सांड़नियों की डाक लगाकर, हरकारों के हाथ भेज दीं। ११ इन चिट्ठियों में सब नगरों के यहूदियों को राजा की ओर से अनुमति दी गई, कि वे इकट्ठे हों और अपना अपना प्राण बचाने के लिये तैयार होकर, जिस जाति वा प्रान्त से लोग अन्याय करके उनको वा उनकी स्त्रियों और बालबच्चों को दुःख देना चाहें, उनको विध्वंसघात और नाश करें, और उनकी धन सम्पत्ति लूट लें। १२ और यह राजा क्षयर्ष के सब प्रान्तों में एक ही दिन में किया जाए, अर्थात् अदार नाम बारहवें महीने के तेरहवें दिन को। १३ इस आज्ञा के लेख की नकलें, समस्त प्रान्तों में सब देशों के लोगों के पास खुली हुई भेजी गई; ताकि यहूदी उस दिन अपने शत्रुओं से पलटा लेने को तैयार रहें। १४ सो हरकारे वेग चलनेवाले सरकारी घोड़ों पर सवार होकर, राजा की आज्ञा से फुर्ती करके जल्दी चले गए, और यह आज्ञा शूशन राजगढ़ में दी गई थी ।।

१५ तब मोर्दकै नीले और श्वेत रंग के राजकीय वस्त्र पहिने और सिर पर सोने का बड़ा मुकुट धरे हुए और सूक्ष्म सन और बैंजनी रंग का बागा पहिने हुए, राजा के सम्मुख से निकला, और शूशन नगर के लोग आनन्द के मारे ललकार उठे ।।

१६ और यहूदियों को आनन्द और हर्ष हुआ और उनकी बड़ी प्रतिष्ठा हुई। १७ और जिस जिस प्रान्त, और जिस जिस नगर में, जहां कहीं राजा की आज्ञा और नियम पहुंचे, वहां वहां यहूदियों को आनन्द और हर्ष हुआ, और उन्हों ने जेवनार करके उस दिन को खुशी का दिन माना। और उस देश के लोगों में से बहुत लोग यहूदी बन गए, क्योंकि उनके मन में यहूदियों का डर समा गया था ।।

(पूरीम नाम पर्ब्ब का ठहराया जाना)

९ अदार नाम बारहवें महीने के तेरहवें दिन को, जिस दिन राजा की आज्ञा और नियम पूरे होने को थे, और यहूदियों के शत्रु उन पर प्रबल होने की आशा रखते थे, परन्तु इसके उलटे यहूदी अपने बैरियों पर प्रबल हुए, उस दिन, २ यहूदी लोग राजा क्षयर्ष के सब प्रान्तो में अपने अपने नगर में इकट्ठे हुए, कि जो उनकी हानि करने का यत्न करे, उन पर हाथ चलाएं। और कोई उनका साम्हना न कर सका, क्योंकि उनका भय देश देश के सब लोगों के मन में समा गया था। ३ वरन प्रान्तों के सब हाकिमों और अधिपतियों और प्रधानों और राजा के कर्मचारियों ने यहूदियों की सहायता की,

क्योंकि उनके मन में मोर्दकै का भय समा गया था। ४ मोर्दकै तो राजा के यहां बहुत प्रतिष्ठित था, और उसकी कीर्त्ति सब प्रान्तों में फैल गई; वरन उस पुरुष मोर्दकै की महिमा बढ़ती चली गई। ५ और यहूदियों ने अपने सब शत्रुओं को तलवार से मारकर और घात करके नाश कर डाला, और अपने बैरियों से अपनी इच्छा के अनुसार बर्ताव किया। ६ और शूशन राजगढ़ में यहूदियों ने पांच सौ मनुष्यों को घात करके नाश किया। ७ और उन्हों ने पर्शन्दाता, दल्पोन, अस्पाता, ८ पोराता, अदल्या, अरीदाता, ९ पर्मशता, अरीसै, अरीदै और वैजाता, १० अर्थात् हम्मदाता के पुत्र यहूदियों के विरोधी हामान के दसों पुत्रों को भी घात किया; परन्तु उनके धन को न लूटा।।

११ उसी दिन शूशन राजगढ़ में घात किए हुओं की गिनती राजा को सुनाई गई। १२ तब राजा ने एस्तेर रानी से कहा, यहूदियों ने शूशन राजगढ़ ही में पांच सौ मनुष्य और हामान के दसों पुत्रों को भी घात करके नाश किया है; फिर राज्य के और और प्रान्तों में उन्हों ने न जाने क्या क्या किया होगा! अब इस से अधिक तेरा निवेदन क्या है? वह भी पूरा किया जाएगा। और तू क्या मांगती है? वह भी तुझे दिया जाएगा। १३ एस्तेर ने कहा, यदि राजा को स्वीकार हो तो शूशन के यहूदियों को आज की नाईं कल भी करने की आज्ञा दी जाए, और हामान के दसों पुत्र फांसी के खम्भों पर लटकाए जाएं। १४ राजा ने कहा, ऐसा किया जाए; यह आज्ञा शूशन में दी गई, और हामान के दसों पुत्र लटकाए गए। १५ और शूशन के यहूदियों ने अदार महीने के चौदहवें दिन को भी इकट्ठे होकर शूशन में तीन सौ पुरुषों को घात किया, परन्तु धन को न लूटा।।

१६ राज्य के और और प्रान्तों के यहूदी इकट्ठे होकर अपना अपना प्राण बचाने के लिये खड़े हुए, और अपने बैरियों में से पचहत्तर हजार मनुष्यों को घात करके अपने शत्रुओं से विश्राम पाया; परन्तु धन को न लूटा। १७ यह अदार महीने के तेरहवें दिन को किया गया, और चौदहवें दिन को उन्हों ने विश्राम करके जेवनार की और आनन्द का दिन ठहराया। १८ परन्तु शूशन के यहूदी अदार महीने के तेरहवें दिन को, और उसी महीने के चौदहवें दिन को इकट्ठे हुए, और उसी महीने के पन्द्रहवें दिन को उन्हों ने विश्राम करके जेवनार का और आनन्द का दिन ठहराया। १९ इस कारण देहाती यहूदी जो बिना शहरपनाह की बस्तियों में रहते हैं, वे अदार महीने के चौदहवें दिन को आनन्द और जेवनार और खुशी और आपस में बैना भेजने का दिन नियुक्त करके मानते हैं।।

२० इन बातों का वृत्तान्त लिखकर, मोर्दकै ने राजा क्षयर्ष के सब प्रान्तों में, क्या निकट क्या दूर रहनेवाले सारे यहूदियों के पास चिट्ठियां भेजीं, २१ और यह आज्ञा दी, कि अदार महीने के चौदहवें और उसी महीने के पन्द्रहवें दिन को प्रति वर्ष माना करें। २२ जिन में यहूदियों ने अपने शत्रुओं से विश्राम पाया, और यह महीना जिस में शोक आनन्द से, और विलाप खुशी से बदला गया; (माना करें) और उनको जेवनार और आनन्द और एक दूसरे के पास बैना भेजने और कंगालों को दान देने के दिन मानें।।

२३ और यहूदियों ने जैसा आरम्भ किया था, और जैसा मोर्दकै ने उन्हें लिखा, वैसा ही करने का निश्चय कर लिया। २४ क्योंकि हम्मदाता अगागी का पुत्र हामान जो सब यहूदियों का विरोधी था, उस ने यहूदियों के नाश करने की युक्ति की, और उन्हें मिटा डालने और नाश करने के लिये पूर अर्थात् चिट्ठी डाली थी। २५ परन्तु जब राजा ने यह जान लिया, तब उस ने आज्ञा दी और लिखवाई कि जो दुष्ट युक्ति हामान ने यहूदियों के विरुद्ध की थी वह उसी के सिर पर पलट आए, तब वह और उसके पुत्र फांसी के खम्भों पर लटकाए गए। २६ इस कारण उन दिनों का नाम पूर शब्द से पूरीम रखा गया। इस चिट्ठी की सब बातों के कारण, और जो कुछ उन्हों ने इस विषय में देखा और जो कुछ उन पर बीता था, उसके कारण भी २७ यहूदियों ने अपने अपने लिये और अपनी सन्तान के लिये, और उन सभों के लिये भी जो उन में मिल गए थे यह अटल प्रण किया, कि उस लेख के अनुसार प्रति वर्ष उसके ठहराए हुए समय में वे ये दो दिन मानें। २८ और पीढ़ी पीढ़ी, कुल कुल, प्रान्त प्रान्त, नगर नगर में ये दिन स्मरण किए और माने जाएंगे। और पूरीम नाम के दिन यहूदियों में कभी न मिटेंगे और उनका स्मरण उनके वंश से जाता न रहेगा।।

२९ फिर अबीहैल की बेटी एस्तेर रानी, और मोर्दकै यहूदी ने, पूरीम के विषय यह दूसरी चिट्ठी बड़े अधिकार के साथ लिखी। ३० इसकी नक़लें मोर्दकै ने क्षयर्ष के राज्य के, एक सौ सत्ताईसों प्रान्तों के सब यहूदियों के पास शान्ति देनेवाली और सच्ची बातों के साथ इस आशय से भेजीं, ३१ कि पूरीम के उन दिनों के विशेष ठहराए हुए समयों में मोर्दकै यहूदी और एस्तेर रानी की आज्ञा के अनुसार, और जो यहूदियों ने अपने और अपनी सन्तान के लिये ठान लिया था, उसके अनुसार भी उपवास और विलाप किए जाएं। ३२ और पूरीम के विषय का यह नियम एस्तेर की आज्ञा से भी स्थिर किया गया, और उनकी चर्चा पुस्तक में लिखी गई।।

(मोर्दकै का माहात्म्य)

१० और राजा क्षयर्ष ने देश और समुद्र के टापू दोनों पर कर लगाया। २ और उसके माहात्म्य और पराक्रम के कामों, और मोर्दकै की उस बड़ाई का पूरा ब्योरा, जो राजा ने उसकी की थी, क्या वह मादै और फ़ारस के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? ३ निदान यहूदी मोर्दकै, क्षयर्ष राजा ही के नीचे था, और यहूदियों की दृष्टि में बड़ा था, और उसके सब भाई उस से प्रसन्न थे, क्योंकि वह अपने लोगों की भलाई की खोज में रहा करता था और अपने सब लोगों से शान्ति की बातें कहा करता था।।

अय्यूब

(अय्यूब का भारी परीक्षा में पड़ना)

१ ऊज़ देश में अय्यूब नाम एक पुरुष था; वह खरा और सीधा था और परमेश्वर का भय मानता और बुराई से परे रहता था। २ उसके सात बेटे और तीन बेटियां उत्पन्न हुईं। ३ फिर उसके सात हजार भेड़-बकरियां, तीन हजार ऊंट, पांच सौ जोड़ी बैल, और पांच सौ गदहियां, और बहुत ही दास-दासियां थीं; वरन उसके इतनी सम्पत्ति थी, कि पूरबियों में वह सब से बड़ा था। ४ उसके बेटे अपने अपने दिन पर एक दूसरे के घर में खाने-पीने को जाया करते थे; और अपनी तीनों बहिनों को अपने संग खाने-पीने के लिये बुलवा भेजते थे। ५ और जब जब जेवनार के दिन पूरे हो जाते, तब तब अय्यूब उन्हें बुलवाकर पवित्र करता, और बड़ी भोर उठकर उनकी गिनती के अनुसार होमबलि चढ़ाता था; क्योंकि अय्यूब सोचता था, कि कदाचित् मेरे लड़कों ने पाप करके परमेश्वर को छोड़ दिया हो। इसी रीति अय्यूब सदैव किया करता था।।

६ एक दिन यहोवा परमेश्वर के पुत्र उसके साम्हने उपस्थित हुए, और उनके बीच शैतान भी आगा। ७ यहोवा ने शैतान से पूछा, तू कहां से आता है? शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, कि पृथ्वी पर इधर-उधर घूमते-फिरते और डोलते-डालते आया हूं। ८ यहोवा ने शैतान से पूछा, क्या तू ने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है? क्योंकि उसके तुल्य खरा और सीधा और मेरा भय माननेवाला और बुराई से दूर रहनेवाला मनुष्य और कोई नहीं है। ९ शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, क्या अय्यूब परमेश्वर का भय* बिना लाभ के मानता है? १० क्या तू ने उसकी, और उसके घर की, और जो कुछ उसका है उसके चारों ओर बाड़ा नहीं बान्धा? तू ने तो उसके काम पर आशीष दी है, ११ और उसकी सम्पत्ति देश भर में फैल गई है। परन्तु अब अपना हाथ बढ़ाकर जो कुछ उसका है, उसे छू; तब वह तेरे मुंह पर तेरी निन्दा करेगा। १२ यहोवा ने शैतान से कहा, सुन, जो कुछ उसका है, वह सब तेरे हाथ में है; केवल उसके शरीर पर हाथ न लगाना। तब शैतान यहोवा के साम्हने से चला गया।।

१३ एक दिन अय्यूब के बेटे-बेटियां बड़े भाई के घर में खाते और दाखमधु पी रहे थे; १४ तब एक दूत अय्यूब के पास आकर कहने लगा, हम तो बैलों से हल जोत रहे थे, १५ और गदहियां उनके पास चर रही थीं, कि शबा के लोग धावा करके उनको ले गए, और तलवार से तेरे सेवकों को मार डाला; और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने को आया हूं। १६ वह अभी यह कह ही रहा था कि दूसरा भी आकर कहने लगा, कि परमेश्वर की आग आकाश से गिरी और

---

* मूल में—तेरे मुख के साम्हने।

उस से भेड़-बकरियां और सेवक जलकर भस्म हो गए; और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने को आया हूं। १७ वह अभी यह कह ही रहा था, कि एक और भी आकर कहने लगा, कि कसदी लोग तीन गोल बान्धकर ऊंटों पर धावा करके उन्हें ले गए, और तलवार से तेरे सेवकों को मार डाला; और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने को आया हूं। १८ वह अभी यह कह ही रहा था, कि एक और भी आकर कहने लगा, तेरे बेटे-बेटियां बड़े भाई के घर में खाते और दाखमधु पीते थे, १९ कि जंगल की ओर से बड़ी प्रचण्ड वायु चली, और घर के चारों कोनों को ऐसा झोंका मारा, कि वह जवानों पर गिर पड़ा और वे मर गए; और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने को आया हूं॥

२० तब अय्यूब उठा, और बागा फाड़, सिर मुंड़ाकर भूमि पर गिरा और दण्डवत् करके कहा, २१ मैं अपनी मां के पेट से नंगा निकला और वहीं नंगा लौट जाऊंगा; यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने लिया; यहोवा का नाम धन्य है॥

२२ इन सब बातों में भी अय्यूब ने न तो पाप किया, और न परमेश्वर पर मूर्खता से दोष लगाया॥

२ फिर एक और दिन यहोवा परमेश्वर के पुत्र उसके साम्हने उपस्थित हुए, और उनके बीच शैतान भी उसके साम्हने उपस्थित हुआ। २ यहोवा ने शैतान से पूछा, तू कहां से आता है? शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, कि इधर-उधर घूमते-फिरते और डोलते-डालते आया हूं। ३ यहोवा ने शैतान से पूछा, क्या तू ने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है कि पृथ्वी पर उसके तुल्य खरा और सीधा और मेरा भय माननेवाला और बुराई से दूर रहनेवाला मनुष्य और कोई नहीं है? और यद्यपि तू ने मुझे उसको बिना कारण सत्यानाश करने को उभारा, तौभी वह अब तक अपनी खराई पर बना है। ४ शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, खाल के बदले खाल, परन्तु प्राण के बदले मनुष्य अपना सब कुछ दे देता है। ५ सो केवल अपना हाथ बढ़ाकर उसकी हड्डियां और मांस छू, तब वह तेरे मुंह पर तेरी निन्दा करेगा। ६ यहोवा ने शैतान से कहा, सुन, वह तेरे हाथ में है, केवल उसका प्राण छोड़ देना॥

७ तब शैतान यहोवा के साम्हने से निकला, और अय्यूब को पांव के तलवे से ले सिर की चोटी तक बड़े बड़े फोड़ों से पीड़ित किया। ८ तब अय्यूब खुजलाने के लिये एक ठीकरा लेकर राख पर बैठ गया। ९ तब उसकी स्त्री उस से कहने लगी, क्या तू अब भी अपनी खराई पर बना है? परमेश्वर की निन्दा कर, और चाहे मर जाए तो मर जा॥

१० उस ने उस से कहा, तू एक मूढ़ स्त्री की सी बातें करती है, क्या हम जो परमेश्वर के हाथ से सुख लेते हैं, दुःख न लें? इन सब बातों में भी अय्यूब ने अपने मुंह से कोई पाप नहीं किया॥

११ जब तेमानी एलीपज, और शूही बिलदद, और नामाती सोपर, अय्यूब के इन तीन मित्रों ने इस सब विपत्ति का समाचार पाया जो उस पर पड़ी थीं, तब वे आपस में यह ठानकर कि हम अय्यूब के पास जाकर उसके संग विलाप करेंगे, और उसको शान्ति देंगे, अपने अपने यहां

से उसके पास चले। १२ जब उन्हों ने दूर से आंख उठाकर अय्यूब को देखा और उसे न चीन्ह सके, तब चिल्लाकर रो उठे; और अपना अपना बागा फाड़ा, और आकाश की ओर धूलि उड़ाकर अपने अपने सिर पर डाली। १३ तब वे सात दिन और सात रात उसके संग भूमि पर बैठे रहे, परन्तु उसका दुःख बहुत ही बड़ा जान कर किसी ने उस से एक भी बात न कही॥

(अय्यूब का अपने जन्मदिन को धिक्कारना)

३ इसके बाद अय्यूब मुंह खोलकर अपने जन्मदिन को धिक्कारने २ और कहने लगा,

३ वह दिन जल जाए जिस में मैं उत्पन्न हुआ,
और वह रात भी जिस में कहा गया, कि बेटे का गर्भ रहा।
४ वह दिन अन्धियारा हो जाए!
ऊपर से ईश्वर उसकी सुधि न ले,
और न उस में प्रकाश होए।
५ अन्धियारा और मृत्यु की छाया उस पर रहे*।
बादल उस पर छाए रहें;
और दिन को अन्धेरा कर देनेवाली चीजें उसे डराएं॥
६ घोर अन्धकार उस रात को पकड़े;
वर्ष के दिनों के बीच वह आनन्द न करने पाए,
और न महीनों में उसकी गिनती की जाए।
७ सुनो, वह रात बांझ हो जाए;
उस में गाने का शब्द न सुन पड़े।
८ जो लोग किसी दिन को धिक्कारते हैं,
और लिब्यातान को छेड़ने में निपुण हैं, उसे धिक्कारें।
९ उसकी संध्या के तारे प्रकाश न दें;
वह उजियाले की बाट जोहे पर वह उसे न मिले,
वह भोर की पलकों को भी देखने न पाए;
१० क्योंकि उस ने मेरी माता की कोख को बन्द न किया* और कष्ट को मेरी दृष्टि से न छिपाया॥
११ मैं गर्भ ही में क्यों न मर गया?
पेट से निकलते ही मेरा प्राण क्यों न छूटा?
१२ मैं घुटनों पर क्यों लिया गया?
मैं छातियों को क्यों पीने पाया?
१३ ऐसा न होता तो मैं चुपचाप पड़ा रहता, मैं सोता रहता और विश्राम करता,
१४ और मैं पृथ्वी के उन राजाओं और मन्त्रियों के साथ होता
जिन्हों ने अपने लिये सुनसान स्थान बनवा लिए,
१५ वा मैं उन राजकुमारों के साथ होता जिनके पास सोना था जिन्हों ने अपने घरों को चान्दी से भर लिया था;
१६ वा मैं असमय गिरे हुए गर्भ की नाईं हुआ होता,
वा ऐसे बच्चों के समान होता जिन्हों ने उजियाले को कभी देखा ही न हो।
१७ उस दशा में दुष्ट लोग फिर दुःख नहीं देते,

* मूल में—उसका दाम देकर उसे अपना ले।

* मूल में—उस ने मेरी कोख के किवाड़ बन्द न किए न मेरी आंखों से कष्ट छिपाया।

और थके मांदे विश्राम पाते हैं।
१८ उस में बन्धुए एक संग सुख से रहते हैं;
और परिश्रम करानेवाले का शब्द नहीं सुनते।
१९ उस में छोटे बड़े सब रहते हैं, और दास अपने स्वामी से स्वतन्त्र रहता है॥
२० दुःखियों को उजियाला,
और उदास मनवालों को जीवन क्यों दिया जाता है?
२१ वे मृत्यु की बाट जोहते हैं पर वह आती नहीं;
और गड़े हुए धन से अधिक उसकी खोज करते हैं*;
२२ वे क़ब्र को पहुंचकर आनन्दित और अत्यन्त मगन होते हैं॥
२३ उजियाला उस पुरुष को क्यों मिलता है जिसका मार्ग छिपा है,
जिसके चारों ओर ईश्वर ने घेरा बान्ध दिया है?
२४ मुझे तो रोटी खाने की सन्ती लम्बी लम्बी सांसें आती हैं,
और मेरा विलाप धारा की नाईं बहता रहता† है।
२५ क्योंकि जिस डरावनी बात से मैं डरता हूं, वही मुझ पर आ पड़ती है,
और जिस बात से मैं भय खाता हूं वही मुझ पर आ जाती है।
२६ मुझे न तो कल, न शान्ति, न विश्राम मिलता है; परन्तु दुःख ही आता है॥

* मूल में—उसके लिये खोदते हैं।
† मूल में—मेरे गर्जन जल की नाईं उंडेले जाते हैं।

(एलीपज का वचन)

४ तब तेमानी एलीपज ने कहा,
२ यदि कोई तुझ से कुछ कहने लगे, तो क्या तुझे बुरा लगेगा?
परन्तु बोले बिना कौन रह सकता है?
३ सुन, तू ने बहुतों को शिक्षा दी है,
और निर्बल लोगों* को बलवन्त किया है।
४ गिरते हुओं को तू ने अपनी बातों से सम्भाल लिया,
और लड़खड़ाते हुए लोगों† को तू ने बलवन्त किया।
५ परन्तु अब विपत्ति तो तुझी पर आ पड़ी, और तू निराश हुआ जाता है;
उस ने तुझे छुआ और तू घबरा उठा।
६ क्या परमेश्वर का भय ही तेरा आसरा नहीं?
और क्या तेरी चालचलन जो खरी है तेरी आशा नहीं?
७ क्या तुझे मालूम है कि कोई निर्दोष भी कभी नाश हुआ है? या कहीं सज्जन भी काट डाले गए?
८ मेरे देखने में तो जो पाप को जोतते और दुःख बोते हैं, वही उसको काटते हैं।
९ वे तो ईश्वर की श्वास से नाश होते, और उसके क्रोध के झोंके से भस्म होते हैं।
१० सिंह का गरजना और मनुष्य हिंसक सिंह का दहाड़ना बन्द हो जाता है।
और जवान सिंहों के दांत तोड़े जाते हैं॥

* मूल में—निर्बल हाथ।
† मूल में—टिकते घुटने।

११ शिकार न पाकर बूढ़ा सिंह मर
जाता है,
और सिंहनी के बच्चे तितर बितर
हो जाते हैं ।।
१२ एक बात चुपके से मेरे पास पहुंचाई
गई,
और उसकी कुछ भनक मेरे कान
में पड़ी ।
१३ रात के स्वप्नों की चिन्ताओं के बीच
जब मनुष्य गहरी निद्रा में रहते हैं,
१४ मुझे ऐसी थरथराहट और कंपकंपी
लगी कि मेरी सब हड्डियां तक हिल
उठीं ।
१५ तब एक आत्मा* मेरे साम्हने से
होकर चली;
और मेरी देह के रोएं खड़े हो
गए ।
१६ वह चुपचाप ठहर गई और मैं उसकी
आकृति को पहिचान न सका ।
परन्तु मेरी आंखों के साम्हने कोई
रूप था;
पहिले सन्नाटा छाया रहा, फिर मुझे
एक शब्द सुन पड़ा,
१७ क्या नाशमान मनुष्य ईश्वर से अधिक
न्यायी होगा? क्या मनुष्य अपने
सृजनहार से अधिक पवित्र हो
सकता है?
१८ देख, वह अपने सेवकों पर भरोसा
नहीं रखता,
और अपने स्वर्गदूतों को मूर्ख ठहराता
है;
१९ फिर जो मिट्टी के घरों में रहते हैं,
और जिनकी नेव मिट्टी में डाली
गई है,
और जो पतंगे की नाईं पिस जाते
हैं, उनकी क्या गणना ।
२० वे भोर से सांझ तक नाश किए
जाते हैं,
वे सदा के लिये मिट जाते हैं,
और कोई उनका विचार भी नहीं
करता ।
२१ क्या उनके डेरे की डोरी उनके अन्दर
ही अन्दर नहीं कट जाती? वे बिना
बुद्धि के ही मर जाते हैं!

५ पुकार कर देख; क्या कोई है जो
तुझे उत्तर देगा?
और पवित्रों में से तू किस की ओर
फिरेगा?
२ क्योंकि मूढ़ तो खेद करते करते नाश
हो जाता है,
और भोला जलते जलते मर मिटता
है ।
३ मैं ने मूढ़ को जड़ पकड़ते देखा है;
परन्तु अचानक मैं ने उसके वासस्थान
को धिक्कारा ।
४ उसके लड़केबाले उद्धार से दूर हैं,
और वे फाटक में पीसे जाते हैं,
और कोई नहीं है जो उन्हें छुड़ाए ।।
५ उसके खेत की उपज भूखे लोग खा
लेते हैं,
वरन कटीली बाड़ में से भी निकाल
लेते हैं;
और प्यासा उनके धन के लिये फन्दा
लगाता है ।
६ क्योंकि विपत्ति धूल से उत्पन्न नहीं
होती, और न कष्ट भूमि में से
उगता है;
७ परन्तु जैसे चिंगारियां ऊपर ही ऊपर
को उड़ जाती हैं,

* वा वायु ।

वैसे ही मनुष्य कष्ट ही भोगने के लिये
उत्पन्न हुआ है ।।

८ परन्तु मैं तो ईश्वर ही को खोजता
रहूंगा और अपना मुक़द्दमा परमेश्वर
पर छोड़ दूंगा ।

९ वह तो ऐसे बड़े काम करता है
जिनकी थाह नहीं लगती,
और इतने आश्चर्यकर्म करता है, जो
गिने नहीं जाते ।

१० वही पृथ्वी के ऊपर वर्षा करता,
और खेतों पर जल बरसाता है ।

११ इसी रीति वह नम्र लोगों को ऊंचे
स्थान पर बिठाता है,
और शोक का पहिरावा पहिने हुए
लोग ऊंचे पर पहुंचकर बचते हैं ।

१२ वह तो धूर्त्त लोगों की कल्पनाएं
व्यर्थ कर देता है,
और उनके हाथों से कुछ भी बन
नहीं पड़ता ।

१३ वह बुद्धिमानों को उनकी धूर्त्तता ही
में फंसाता है;
और कुटिल लोगों की युक्ति दूर
की जाती है ।

१४ उन पर दिन को अन्धेरा छा जाता
है, और दिन दुपहरी में वे रात की
नाईं टटोलते फिरते हैं ।

१५ परन्तु वह दरिद्रों को उनके वचनरूपी
तलवार से * और बलवानों के हाथ
से बचाता है ।

१६ इसलिये कंगालों को आशा होती है,
और कुटिल मनुष्यों का मुंह बन्द
हो जाता है ।।

१७ देख, क्या ही धन्य वह मनुष्य, जिसको
ईश्वर ताड़ना देता है;
इसलिये तू सर्वशक्तिमान की ताड़ना
को तुच्छ मत जान ।

१८ क्योंकि वही घायल करता, और वही
पट्टी भी बान्धता है;
वही मारता है, और वही अपने
हाथों से चंगा भी करता है ।

१९ वह तुझे छः विपत्तियों से छुड़ाएगा;
वरन सात से भी तेरी कुछ हानि
न होने पाएगी ।

२० अकाल में वह तुझे मृत्यु से, और
युद्ध में तलवार की धार से बचा
लेगा ।।

२१ तू वचनरूपी कोड़े से बचा रहेगा *
और जब विनाश आए, तब भी
तुझे भय न होगा ।

२२ तू उजाड़ और अकाल के दिनों में
हँसमुख रहेगा,
और तुझे बनैले जन्तुओं से डर न
लगेगा ।

२३ वरन मैदान के पत्थर भी तुझ से
वाचा बान्धे रहेंगे,
और वनपशु तुझ से मेल रखेंगे ।

२४ और तुझे निश्चय होगा, कि तेरा
डेरा कुशल से है,
और जब तू अपने निवास में देखे
तब कोई वस्तु खोई न होगी ।

२५ तुझे यह भी निश्चित होगा, कि मेरे
बहुत वंश होंगे ।
और मेरे सन्तान पृथ्वी की घास के
तुल्य बहुत होंगे ।

२६ जैसे पूलियों का ढेर समय पर खलिहान
में रखा जाता है,
वैसे ही तू पूरी अवस्था का होकर
क़ब्र को पहुंचेगा ।

* मूल में—तलवार से उनके मुंह से।

* मूल में—छिपाया जायगा।

२७ देख, हम ने खोज खोजकर ऐसा ही पाया है;
इसे तू सुन, और अपने लाभ के लिये ध्यान में रख ।।

६ (अय्यूब का उत्तर)

फिर अय्यूब ने कहा,
२ भला होता कि मेरा खेद तौला जाता, और मेरी सारी विपत्ति तुला में धरी जाती !
३ क्योंकि वह समुद्र की बालू से भी भारी ठहरती;
इसी कारण मेरी बातें उतावली से हुई हैं ।
४ क्योंकि सर्वशक्तिमान के तीर मेरे अन्दर चुभे हैं;
और उनका विष मेरी आत्मा में पैठ गया है *;
ईश्वर की भयंकर बात मेरे विरुद्ध पांति बान्धे हैं ।
५ जब बनैले गदहे को घास मिलती, तब क्या वह रेंकता है ?
और बैल चारा पाकर क्या डकारता है ?
६ जो फीका है वह क्या बिना नमक खाया जाता है ?
क्या अण्डे की सफेदी में भी कुछ स्वाद होता है ?
जिन वस्तुओं को मैं छूना भी नहीं चाहता वही मानो मेरे लिये घिनौना आहार ठहरी हैं ।।
८ भला होता कि मुझे मुंह मांगा वर मिलता और जिस बात की मैं आशा करता हूं वह ईश्वर मुझे दे देता !

* मूल में—मेरी आत्मा को पी लेता है।

९ कि ईश्वर प्रसन्न होकर मुझे कुचल डालता, और हाथ बढ़ाकर मुझे काट डालता !
१० यही मेरी शान्ति का कारण; वरन भारी पीड़ा में * भी मैं इस कारण से उछल पड़ता;
क्योंकि मैं ने उस पवित्र के वचनों का कभी इनकार नहीं किया ।
११ मुझ में बल ही क्या है कि मैं आशा रखूं ? और मेरा अन्त ही क्या होगा, कि मैं धीरज धरूं ?
१२ क्या मेरी दृढ़ता पत्थरों की सी है ?
क्या मेरा शरीर पीतल का है ?
१३ क्या मैं निराधार नहीं हूं ?
क्या काम करने की शक्ति मुझ से दूर नहीं हो गई ?
१४ जो पड़ोसी पर कृपा नहीं करता वह सर्वशक्तिमान का भय मानना छोड़ देता है ।
१५ मेरे भाई नाले के समान विश्वासघाती हो गए हैं,
वरन उन नालों के समान जिनकी धार सूख जाती है;
१६ और वे बरफ के कारण काले से हो जाते हैं,
और उन में हिम छिपा रहता है ।
१७ परन्तु जब गरमी होने लगती तब उनकी धाराएं लोप हो जाती हैं,
और जब कड़ी धूप पड़ती है तब वे अपनी जगह से उड़ जाते हैं †,
१८ वे घूमते घूमते सूख जातीं, और सुनसान स्थान में बहकर नाश होती हैं ।

* मूल में—बिना छोड़ने की पीड़ा में।
† मूल में—उनके मार्ग की डगर घूमती है।

१९ तेमा के बनजारे देखते रहे और
शबा के काफिलेवालों ने उनका
रास्ता देखा।
२० वे लज्जित हुए क्योंकि उन्हों ने
भरोसा रखा था और वहां पहुंचकर
उनके मुंह सूख गए।
२१ उसी प्रकार अब तुम भी कुछ न
रहे; मेरी विपत्ति देखकर तुम डर
गए हो।
२२ क्या मैं ने तुम से कहा था, कि मुझे
कुछ दो? वा अपनी सम्पत्ति में से
मेरे लिये घूस दो?
२३ वा मुझे सतानेवाले के हाथ से
बचाओ? वा उपद्रव करनेवालों के
वश से छुड़ा लो?
२४ मुझे शिक्षा दो और मैं चुप रहूंगा;
और मुझे समझाओ, कि मैं ने किस
बात में चूक की है।।
२५ सच्चाई के वचनों में कितना प्रभाव
होता है, परन्तु तुम्हारे विवाद से
क्या लाभ होता है?
२६ क्या तुम बातें पकडने * की कल्पना
करते हो?
निराश जन की बातें तो वायु की
सी हैं।।
२७ तुम अनाथों पर चिट्ठी डालते, और
अपने मित्र को बेचकर लाभ उठाने-
वाले हो।।
२८ इसलिये अब कृपा करके मुझे देखो;
निश्चय मैं तुम्हारे साम्हने कदापि
झूठ न बोलूंगा।।
२९ फिर कुछ अन्याय न होने पाए; फिर
इस मुक़द्दमे में मेरा धर्म ज्यों का
त्यों बना है, मैं सत्य पर हूं।

* मूल में—डांटने।

३० क्या मेरे वचनों में * कुछ कुटिलता
है?
क्या मैं † दुष्टता नहीं पहचान
सकता?

७ क्या मनुष्य को पृथ्वी पर कठिन
सेवा करनी नहीं पड़ती?
क्या उसके दिन मजदूर के से नहीं
होते?
२ जैसा कोई दास छाया की अभिलाषा
करे, वा मजदूर अपनी मजदूरी की
आशा रखे;
३ वैसा ही मैं अनर्थ के महीनों का
स्वामी बनाया गया हूं, और मेरे
लिये क्लेश से भरी रातें ठहराई
गई हैं।।
४ जब मैं लेट जाता, तब कहता हूं,
मैं कब उठूंगा? और रात कब
बीतेगी?
और पौ फटने तक छटपटाते छटपटाते
उकता जाता हूं।।
५ मेरी देह कीड़ों और मिट्टी के ढेलों
से ढकी हुई है;
मेरा चमड़ा सिमट जाता, और फिर
गल जाता है।
६ मेरे दिन जुलाहे की धड़की से अधिक
फुर्ती से चलनेवाले हैं और निराशा
में बीते जाते हैं।।
७ याद कर कि मेरा जीवन वायु ही है;
और मैं अपनी आंखों से कल्याण
फिर न देखूंगा।।
८ जो मुझे अब देखता है उसे मैं फिर
दिखाई न दूंगा;

* मूल में—मेरी जीभ पर।
† मूल में—मेरा तालू।

तेरी आंखें मेरी ओर होंगी परन्तु
मैं न मिलूंगा ।।
९ जैसे बादल छटकर लोप हो जाता है,
वैसे ही अधोलोक में उतरनेवाला
फिर वहां से नहीं लौट सकता;
१० वह अपने घर को फिर लौट न
आएगा, और न अपने स्थान में फिर
मिलेगा * ।।
११ इसलिये मैं अपना मुंह बन्द न रखूंगा;
अपने मन का खेद खोलकर कहूंगा;
और अपने जीव की कड़ुवाहट के
कारण कुड़कुड़ाता रहूंगा ।।
१२ क्या मैं समुद्र हूं, वा मगरमच्छ हूं,
कि तू मुझ पर पहरा बैठाता है ?
१३ जब जब मैं सोचता हूं कि मुझे खाट
पर शान्ति मिलेगी,
और बिछौने पर मेरा खेद कुछ
हलका होगा;
१४ तब तब तू मुझे स्वप्नों से घबरा
देता,
और दर्शनों से भयभीत कर देता है;
१५ यहां तक कि मेरा जी फांसी को,
और जीवन से मृत्यु को अधिक
चाहता है ।।
१६ मुझे अपने जीवन से घृणा आती
है; मैं सर्वदा जीवित रहना नहीं
चाहता ।
मेरा जीवनकाल सांस सा है, इसलिये
मुझे छोड़ दे ।।
१७ मनुष्य क्या है, कि तू उसे महत्व दे,
और अपना मन उस पर लगाए,
१८ और प्रति भोर को उसकी सुधि ले,
और प्रति क्षण उसे जांचता रहे ?

* मूल में—उसका स्थान उसे फिर न चीन्हेगा।

१९ तू कब तक मेरी ओर आंख लगाए
रहेगा, और इतनी देर के लिये भी
मुझे न छोड़ेगा कि मैं अपना थूक
निगल लूं ?
२० हे मनुष्यों के ताकनेवाले, मैं ने पाप
तो किया होगा, तो मैं ने तेरा
क्या बिगाड़ा ?
तू ने क्यों मुझ को अपना निशाना
बना लिया है,
यहां तक कि मैं अपने ऊपर आपही
बोझ हुआ हूं ?
२१ और तू क्यों मेरा अपराध क्षमा नहीं
करता ?
और मेरा अधर्म क्यों दूर नहीं करता ?
अब तो मैं मिट्टी में सो जाऊंगा,
और तू मुझे यत्न से ढूंढ़ेगा पर मेरा
पता नहीं मिलेगा ।

(बिलदद का वचन)

८ तब शूही बिलदद ने कहा,
२ तू कब तक ऐसी ऐसी बातें करता
रहेगा? और तेरे मुंह की बातें
कब तक प्रचण्ड वायु सी रहेगी ?
३ क्या ईश्वर अन्याय करता है ?
और क्या सर्वशक्तिमान धर्म को
उलटा करता है ?
४ यदि तेरे लड़केबालों ने उसके विरुद्ध
पाप किया है,
तो उस ने उनको उनके अपराध का
फल भुगताया है * ।।
५ तौभी यदि तू आप ईश्वर को यत्न
से ढूंढ़ता,
और सर्वशक्तिमान से गिड़गिड़ाकर
बिनती करता,

* मूल में—उनके अपराध के हाथ में भेजा है।

६ और यदि तू निर्मल और धर्मी रहता,
तो निश्चय वह तेरे लिये जागता;
और तेरी धार्मिकता का निवास फिर ज्यों का त्यों कर देता ।।
७ चाहे तेरा भाग पहिले छोटा ही रहा हो परन्तु अन्त में तेरी बहुत बढ़ती होती ।।
८ अगली पीढ़ी के लोगों से तो पूछ,
और जो कुछ उनके पुरखाओं ने जांच पड़ताल की है उस पर ध्यान दे ।।
९ क्योंकि हम तो कल ही के हैं, और कुछ नहीं जानते;
और पृथ्वी पर हमारे दिन छाया की नाईं बीतते जाते हैं ।।
१० क्या वे लोग तुझ से शिक्षा की बातें न कहेंगे ?
क्या वे अपने मन से बात न निकालेंगे ?
११ क्या कछार की घास पानी बिना बढ़ सकती है ?
क्या सरकण्डा कीच बिना बढ़ता है ?
१२ चाहे वह हरी हो, और काटी भी न गई हो,
तौभी वह और सब भांति की घास से पहिले ही सूख जाती है ।।
१३ ईश्वर के सब बिसरानेवालों की गति ऐसी ही होती है
और भक्तिहीन की आशा टूट जाती है ।।
१४ उसकी आशा का मूल कट जाता है;
और जिसका वह भरोसा करता है, वह मकड़ी का जाला ठहराता है ।।
१५ चाहे वह अपने घर पर टेक लगाए परन्तु वह न ठहरेगा;
वह उसे दृढ़ता से थांभेगा परन्तु वह स्थिर न रहेगा ।।
१६ वह घाम पाकर हरा भरा हो जाता है,
और उसकी डालियां बगीचे में चारों ओर फैलती हैं ।।
१७ उसकी जड़ कंकरों के ढेर में लिपटी हुई रहती है,
और वह पत्थर के स्थान को देख लेता है ।।
१८ परन्तु जब वह अपने स्थान पर से नाश किया जाए,
तब वह स्थान उस से यह कहकर मुंह मोड़ लेगा कि मैं ने उसे कभी देखा ही नहीं ।
१९ देख, उसकी आनन्द भरी चाल यही है;
फिर उसी मिट्टी में से दूसरे उगेंगे ।।
२० देख, ईश्वर न तो खरे मनुष्य को निकम्मा जानकर छोड़ देता है,
और न बुराई करनेवालों को संभालता * है ।।
२१ वह तो तुझे हंसमुख करेगा;
और तुझ से † जयजयकार कराएगा ।।
२२ तेरे बैरी लज्जा का वस्त्र पहिनेंगे,
और दुष्टों का डेरा कहीं रहने न पाएगा ।।

(अय्यूब बिलदद को उत्तर देता)

९ तब अय्यूब ने कहा,
२ मैं निश्चय जानता हूं, कि बात ऐसी ही है;
परन्तु मनुष्य ईश्वर की दृष्टि में क्योंकर धर्मी ठहर सकता है ?
३ चाहे वह उस से मुक़द्दमा लड़ना भी चाहे
तौभी मनुष्य हजार बातों में से एक का भी उत्तर न दे सकेगा ।।

* मूल में—का हाथ थाम्भता है।
† मूल में—तेरे होठों से।

४ वह बुद्धिमान और अति सामर्थी है :
उसके विरोध में हठ करके कौन
कभी प्रबल हुआ है ?
५ वह तो पर्वतों को अचानक हटा देता
है और उन्हें पता भी नहीं लगता,
वह क्रोध में आकर उन्हें उलट पुलट
कर देता है।
६ वह पृथ्वी को हिलाकर उसके स्थान
से अलग करता है,
और उसके खम्भे कांपने लगते
हैं॥
७ उसकी आज्ञा बिना सूर्य उदय होता
ही नहीं;
और वह तारों पर मुहर लगाता है;
८ वह आकाशमण्डल को अकेला ही
फैलाता है,
और समुद्र की ऊंची ऊंची लहरों पर
चलता है;
९ वह सप्तर्षि, मृगशिरा और कचपचिया
और दक्खिन के नक्षत्रों * का बनाने-
वाला है॥
१० वह तो ऐसे बड़े कर्म करता है,
जिनकी थाह नहीं लगती;
और इतने आश्चर्यकर्म करता है,
जो गिने नहीं जा सकते।
११ देखो, वह मेरे साम्हने से होकर तो
चलता है परन्तु मुझको नहीं
दिखाई पड़ता;
और आगे को बढ़ जाता है, परन्तु
मुझे सूझ ही नहीं पड़ता है।
१२ देखो, जब वह छीनने लगे, तब उसको
कौन रोकेगा ?
कौन उस से कह सकता है कि तू यह
क्या करता है ?

* मूल में—कोठरियों

१३ ईश्वर अपना क्रोध ठंडा नहीं करता।
अभिमानी * के सहायकों को उसके
पांव तले झुकना पड़ता है॥
१४ फिर मैं क्या हूं, जो उसे उत्तर दूं,
और बातें छांट छांटकर उस से
विवाद करूं ?
१५ चाहे मैं निर्दोष भी होता परन्तु उसको
उत्तर न दे सकता;
मैं अपने मुद्दई से गिड़गिड़ाकर बिनती
करता॥
१६ चाहे मेरे पुकारने से वह उत्तर भी
देता,
तौभी मैं इस बात की प्रतीति न
करता, कि वह मेरी बात सुनता
है॥
१७ वह तो आंधी चलाकर मुझे तोड़
डालता है,
और बिना कारण मेरे चोट पर चोट
लगाता है॥
१८ वह मुझे सांस भी लेने नहीं देता है,
और मुझे कड़वाहट से भरता है॥
१९ जो सामर्थ्य की चर्चा हो, तो देखो,
वह बलवान है :
और यदि न्याय की चर्चा हो, तो
वह कहेगा मुझ से कौन मुक़द्दमा
लड़ेगा † ?
२० चाहे मैं निर्दोष ही क्यों न हूं, परन्तु
अपने ही मुंह से दोषी ठहरूंगा;
खरा होने पर भी वह मुझे कुटिल
ठहराएगा॥
२१ मैं खरा तो हूं, परन्तु अपना भेद
नहीं जानता;
अपने जीवन से मुझे घृणा आती है॥

* मूल में—रहब।
† मूल में—मेरे लिये कौन समय ठहराएगा।

२२ बात तो एक ही है, इस से मैं यह कहता हूं
कि ईश्वर खरे और दुष्ट दोनों को नाश करता है ।।
२३ जब लोग विपत्ति * से अचानक मरने लगते हैं तब वह निर्दोष लोगों के जांचे जाने पर हंसता है ।।
२४ देश दुष्टों के हाथ में दिया गया है।
वह उसके न्यायियों की आंखों को मून्द देता है †;
इसका करनेवाला वही न हो तो कौन है ?
२५ मेरे दिन हरकारे से भी अधिक वेग से चले जाते हैं;
वे भागे जाते हैं और उनको कल्याण कुछ भी दिखाई नहीं देता ।।
२६ वे वेग चाल से नावों की नाईं चले जाते हैं,
वा अहेर पर झपटते हुए उक़ाब की नाईं ।।
२७ जो मैं कहूं, कि विलाप करना भूल जाऊंगा,
और उदासी ‡ छोड़कर अपना मन प्रफुल्लित कर लूंगा,
२८ तब मैं अपने सब दुखों से डरता हूं।
मैं तो जानता हूं, कि तू मुझे निर्दोष न ठहराएगा ।।
२९ मैं तो दोषी ठहरूंगा;
फिर व्यर्थ क्यों परिश्रम करूं ?
३० चाहे मैं हिम के जल में स्नान करूं,
और अपने हाथ खार से निर्मल करूं,
३१ तौभी तू मुझे गड़हे में डाल ही देगा,
और मेरे वस्त्र भी मुझ से घिनाएंगे ।।

* मूल में—कोड़े।
† मूल में—के मुंह ढांपता है।
‡ मूल में—मुंह।

३२ क्योंकि वह मेरे तुल्य मनुष्य नहीं है कि मैं उस से वादविवाद कर सकूं,
और हम दोनों एक दूसरे से मुक़द्दमा लड़ सकें ।।
३३ हम दोनों के बीच कोई बिचवई नहीं है,
जो हम दोनों पर अपना हाथ रखे ।।
३४ वह अपना सोंटा मुझ पर से दूर करे
और उसकी भय देनेवाली बात मुझे न घबराए।
३५ तब मैं उस से निडर होकर कुछ कह सकूंगा,
क्योंकि मैं अपनी दृष्टि में ऐसा नहीं हूं ।।

१० मेरा प्राण जीवित रहने से उकताता है;
मैं स्वतंत्रता पूर्वक कुड़कुड़ाऊंगा *;
और मैं अपने मन की कड़वाहट के मारे बातें करूंगा।
२ मैं ईश्वर से कहूंगा, मुझे दोषी न ठहरा;
मुझे बता दे, कि तू किस कारण मुझ से मुक़द्दमा लड़ता है ?
३ क्या तुझे अन्धेर करना,
और दुष्टों की युक्ति को सुफल करके †
अपने हाथों के बनाए हुए ‡ को निकम्मा जानना भला लगता है ?
४ क्या तेरी देहधारियों की सी आंखें हैं ?

* मूल में—अपनी कुड़कुड़ाहट अपने ऊपर छोड़ूंगा।
† मूल में—युक्ति पर चमक के।
‡ मूल में—हाथों के परिश्रम।

और क्या तेरा देखना मनुष्य का सा है ?
५ क्या तेरे दिन मनुष्य के दिन के समान हैं,
वा तेरे वर्ष पुरुष के समयों के तुल्य हैं,
६ कि तू मेरा अधर्म ढूंढ़ता,
और मेरा पाप पूछता है ?
७ तुझे तो मालूम ही है, कि मैं दुष्ट नहीं हूं,
और तेरे हाथ से कोई छुड़ानेवाला नहीं !
८ तू ने अपने हाथों से मुझे ठीक रचा है और जोड़कर बनाया है;
तौभी मुझे नाश किए डालता है ।।
९ स्मरण कर, कि तू ने मुझ को गून्धी हुई मिट्टी की नाईं बनाया,
क्या तू मुझे फिर धूल में मिलाएगा ?
१० क्या तू ने मुझे दूध की नाईं उंडेलकर,
और दही के समान जमाकर नहीं बनाया ?
११ फिर तू ने मुझ पर चमड़ा और मांस चढ़ाया
और हड्डियां और नसें गूंथकर मुझे बनाया है ।
१२ तू ने मुझे जीवन दिया, और मुझ पर करुणा की है;
और तेरी चौकसी से मेरे प्राण की रक्षा हुई है ।।
१३ तौभी तू ने ऐसी बातों को अपने मन में छिपा रखा;
मैं तो जान गया, कि तू ने ऐसा ही करने को ठाना था ।।
१४ जो मैं पाप करूं, तो तू उसका लेखा लेगा;
और अधर्म करने पर मुझे निर्दोष न ठहराएगा ।।
१५ जो मैं दुष्टता करूं तो मुझ पर हाय !
और जो मैं धर्मी बनूं तौभी मैं सिर न उठाऊंगा,
क्योंकि मैं अपमान से भरा हुआ हूं
और अपने दुःख पर ध्यान रखता हूं ।।
१६ और चाहे सिर उठाऊं तौभी तू सिंह की नाईं मेरा अहेर करता है,
और फिर मेरे विरुद्ध आश्चर्यकर्म करता है ।।
१७ तू मेरे साम्हने अपने नये नये साक्षी ले आता है,
और मुझ पर अपना क्रोध बढ़ाता है;
और मुझ पर सेना पर सेना चढ़ाई करती है ।।
१८ तू ने मुझे गर्भ से क्यों निकाला ?
नहीं तो मैं वहीं प्राण छोड़ता,
और कोई मुझे देखने भी न पाता ।
१९ मेरा होना न होने के समान होता,
और पेट ही से क़ब्र को पहुंचाया जाता ।
२० क्या मेरे दिन थोड़े नहीं ? मुझे छोड़ दे,
और मेरी ओर से मुंह फेर ले, कि मेरा मन थोड़ा शान्त हो जाए
२१ इस से पहिले कि मैं वहां जाऊं, जहां से फिर न लौटूंगा, अर्थात् अन्धियारे
और घोर अन्धकार के देश में, जहां अन्धकार ही अन्धकार है;
२२ और मृत्यु के अन्धकार का देश जिस में सब कुछ गड़बड़ है;
और जहां प्रकाश भी ऐसा है जैसा अन्धकार ।।

(सोपर का वचन)

११ तब नामाती सोपर ने कहा:
२ बहुत सी बातें जो कही गईं हैं, क्या उनका उत्तर देना न चाहिये ?
क्या बकवादी मनुष्य धर्मी ठहराया जाए ?
३ क्या तेरे बड़े बोल के कारण लोग चुप रहें ?
और जब तू ठट्ठा करता है, तो क्या कोई तुझे लज्जित न करे ?
४ तू तो यह कहता है कि मेरा सिद्धान्त शुद्ध है
और मैं ईश्वर की * दृष्टि में पवित्र हूं ।।
५ परन्तु भला हो, कि ईश्वर स्वयं बातें करें,
और तेरे विरुद्ध मुंह खोले,
६ और तुझ पर बुद्धि की गुप्त बातें प्रगट करे,
कि उनका मर्म तेरी बुद्धि से बढ़कर † है ।
इसलिये जान ले, कि ईश्वर तेरे अधर्म में से बहुत कुछ भूल जाता है ।
७ क्या तू ईश्वर का गूढ़ भेद पा सकता है ?
और क्या तू सर्वशक्तिमान का मर्म पूरी रीति से जांच सकता है ?
८ वह आकाश सा ऊंचा है; तू क्या कर सकता है ?
वह अधोलोक से गहिरा है, तू कहां समझ सकता है ?
९ उसकी माप पृथ्वी से भी लम्बी है
और समुद्र से चौड़ी है ।।

* मूल में—तेरी।
† मूल में—दुगना।

१० जब ईश्वर बीच से गुजरकर बन्द कर दे
और अदालत (कचहरी) में बुलाए,
तो कौन उसको रोक सकता है ।।
११ क्योंकि वह पाखण्डी मनुष्यों का भेद जानता है,
और अनर्थ काम को बिना सोच विचार किए भी जान लेता है ।।
१२ परन्तु मनुष्य छूछा और निर्बुद्धि होता है;
क्योंकि मनुष्य जन्म ही से जंगली गदहे के बच्चे के समान होता है ।।
१३ यदि तू अपना मन शुद्ध करे,
और ईश्वर की ओर अपने हाथ फैलाए,
१४ और जो कोई अनर्थ काम तुझ से होता हो उसे दूर करे,
और अपने डेरों में कोई कुटिलता न रहने दे,
१५ तब तो तू निश्चय अपना मुंह निष्कलंक दिखा * सकेगा;
और तू स्थिर होकर कभी न डरेगा ।।
१६ तब तू अपना दुःख भूल जाएगा, तू उसे उस पानी के समान स्मरण करेगा जो बह गया हो ।
१७ और तेरा जीवन दोपहर से भी अधिक प्रकाशमान होगा;
और चाहे अन्धेरा भी हो तौभी वह भोर सा हो जाएगा ।।
१८ और तुझे आशा होगी, इस कारण तू निर्भय रहेगा;
और अपने चारों ओर देख देखकर तू निर्भय विश्राम कर सकेगा ।।

* मूल में—बिना कलंक उठा।

१९ और जब तू लेटेगा, तब कोई तुझे डराएगा नहीं;
और बहुतेरे तुझे प्रसन्न करने का यत्न करेंगे ।।
२० परन्तु दुष्ट लोगों की आंखें रह जाएंगी,
और उन्हें कोई शरण स्थान न मिलेगा
और उनकी आशा यही होगी कि प्राण निकल जाए ।।

(अय्यूब सोपर को उत्तर देता है)

१२ तब अय्यूब ने कहा;
२ निःसन्देह मनुष्य तो तुम ही हो*
और जब तुम मरोगे तब बुद्धि भी जाती रहेगी ।।
३ परन्तु तुम्हारी नाईं मुझ में भी समझ है,
मैं तुम लोगों से कुछ नीचा नहीं हूं
कौन ऐसा है जो ऐसी बातें न जानता हो?
४ मैं ईश्वर से प्रार्थना करता था, और वह मेरी सुन लिया करता था;
परन्तु अब मेरे पड़ोसी मुझ पर हंसते हैं,
जो धर्मी और खरा मनुष्य है, वह हंसी का कारण हो गया है ।
५ दुःखी लोग तो सुखियों की समझ में तुच्छ जाने जाते हैं;
और जिनके पांव फिसला चाहते हैं उनका अपमान अवश्य ही होता है ।।
६ डाकुओं के डेरे कुशल क्षेम से रहते हैं,
और जो ईश्वर को क्रोध दिलाते हैं, वह बहुत ही निडर रहते हैं;

* मूल में—देश के लोग हों।

और उनके हाथ में ईश्वर बहुत देता है ।।
७ पशुओं से तो पूछ और वे तुझे दिखाएंगे;
और आकाश के पक्षियों से, और वे तुझे बता देंगे ।।
८ पृथ्वी पर ध्यान दे, तब उस से तुझे शिक्षा मिलेगी;
और समुद्र की मछलियां भी तुझ से वर्णन करेंगी ।।
९ कौन इन बातों को नहीं जानता,
कि यहोवा ही ने अपने हाथ से इस संसार को बनाया है ।।
१० उसके हाथ में एक एक जीवधारी का प्राण, और
एक एक देहधारी मनुष्य की आत्मा भी रहती है ।।
११ जैसे जीभ* से भोजन चखा जाता है,
क्या वैसे ही कान से वचन नहीं परखे जाते?
१२ बूढ़ों में बुद्धि पाई जाती है,
और दिनी लोगों में समझ होती तो है ।।
१३ ईश्वर में पूरी बुद्धि और पराक्रम पाए जाते हैं;
युक्ति और समझ उसी में हैं ।।
१४ देखो, जिसको वह ढा दे, वह फिर बनाया नहीं जाता; जिस मनुष्य को वह बन्द करे, वह फिर खोला नहीं जाता ।
१५ देखो, जब वह वर्षा को रोक रखता है तो जल सूख जाता है;
फिर जब वह जल छोड़ देता है तब पृथ्वी उलट जाती है ।।

* मूल में—तालू।

१६ उस में सामर्थ्य और खरी बुद्धि पाई जाती है;
धोखा देनेवाला और धोखा खानेवाला दोनों उसी के हैं ।।
१७ वह मंत्रियों को लूटकर बन्धुआई में ले जाता,
और न्यायियों को मूर्ख बना देता है ।।
१८ वह राजाओं का अधिकार तोड़ देता है;
और उनकी कमर पर बन्धन बन्धवाता है ।।
१९ वह याजकों को लूटकर बन्धुआई में ले जाता और सामर्थियों को उलट देता है ।।
२० वह विश्वासयोग्य पुरुषों से बोलने की शक्ति और पुरनियों से विवेक की शक्ति * हर लेता है ।।
२१ वह हाकिमों को अपने अपमान से लादता,
और बलवानों के हाथ ढीले कर देता है † ।।
२२ वह अन्धियारे की गहरी बातें प्रगट करता,
और मृत्यु की छाया को भी प्रकाश में ले आता है ।।
२३ वह जातियों को बढ़ाता, और उनको नाश करता है;
वह उनको फैलाता, और बन्धुआई में ले जाता है ।।
२४ वह पृथ्वी के मुख्य लोगों की बुद्धि उड़ा देता,
और उनको निर्जन स्थानों में जहां रास्ता नहीं है, भटकाता है ।।
२५ वे बिन उजियाले के अन्धेरे में टटोलते फिरते हैं;
और वह उन्हें ऐसा बना देता है कि वे मतवाले की नाईं डगमगाते हुए चलते हैं ।।

१३ सुनो, मैं यह सब कुछ अपनी आंख से देख चुका,
और अपने कान से सुन चुका, और समझ भी चुका हूं ।।
२ जो कुछ तुम जानते हो वह मैं भी जानता हूं;
मैं तुम लोगों से कुछ कम नही हूं ।।
३ मैं तो सर्वशक्तिमान से बातें करूंगा,
और मेरी अभिलाषा ईश्वर से वाद-विवाद करने की है ।।
४ परन्तु तुम लोग झूठी बात के गढ़नेवाले हो;
तुम सबके सब निकम्मे वैद्य हो ।।
५ भला होता, कि तुम बिलकुल चुप रहते,
और इस से तुम बुद्धिमान ठहरते ।।
६ मेरा विवाद सुनो,
और मेरी बहस की बातों पर कान लगाओ ।।
७ क्या तुम ईश्वर के निमित्त टेढ़ी बातें कहोगे,
और उसके पक्ष में कपट से बोलोगे ?
८ क्या तुम उसका पक्षपात करोगे ?
और ईश्वर के लिये मुक़द्दमा चलाओगे ।।
९ क्या यह भला होगा, कि वह तुम को जांचे ?
क्या जैसा कोई मनुष्य को धोखा दे, वैसा ही तुम क्या उसको भी धोखा दोगे ?

---

* मूल में—होंठ।
† मूल में—फेंटा ढीला करता है।

१० जो तुम छिपकर पक्षपात करो,
तो वह निश्चय तुम को डांटेगा ।।
११ क्या तुम उसके माहात्म्य से भय न खाओगे ?
क्या उसका डर तुम्हारे मन में न समाएगा ?
१२ तुम्हारे स्मरणयोग्य नीतिवचन राख के समान हैं;
तुम्हारे कोट मिट्टी ही के ठहरे हैं :
१३ मुझ से बात करना छोड़ो, कि मैं भी कुछ कहने पाऊं;
फिर मुझ पर जो चाहे वह आ पड़े ।।
१४ मैं क्यों अपना मांस अपने दांतों से चबाऊं ?
और क्यों अपना प्राण हथेली पर रखूं ?
१५ वह मुझे घात करेगा, मुझे कुछ आशा नहीं;
तौभी मैं अपनी चाल चलन का पक्ष लूंगा ।
१६ और यह भी मेरे बचाव का कारण होगा, कि
भक्तिहीन जन उसके साम्हने नहीं जा सकता ।।
१७ चित्त लगाकर मेरी बात सुनो,
और मेरी बिनती तुम्हारे कान में पड़े ।।
१८ देखो, मैं ने अपने बहस की पूरी तैयारी की है;
मुझे निश्चय है कि मैं निर्दोष ठहरूंगा ।
१९ कौन है जो मुझ से मुक़द्दमा लड़ सकेगा ?
ऐसा कोई पाया जाए, तो मैं चुप होकर प्राण छोड़ूंगा ।।
२० दो ही काम मुझ से न कर,
तब मैं तुझ से नहीं छिपूंगा :
२१ अपनी ताड़ना मुझ से दूर कर ले,
और अपने भय से मुझे भयभीत न कर ।
२२ तब तेरे बुलाने पर मैं बोलूंगा;
नहीं तो मैं प्रश्न करूंगा, और तू मुझे उत्तर दे ।।
२३ मुझ से कितने अधर्म के काम और पाप हुए हैं ?
मेरे अपराध और पाप मुझे जता दे ।।
२४ तू किस कारण अपना मुंह फेर लेता * है,
और मुझे अपना शत्रु गिनता है ?
२५ क्या तू उड़ते हुए पत्ते को भी कंपाएगा ?
और सूखे डंठल के पीछे पड़ेगा ?
२६ तू मेरे लिये कठिन दुःखों † की आज्ञा देता है,
और मेरी जवानी के अधर्म का फल मुझे भुगता देता है ‡ ।
२७ और मेरे पांवों को काठ में ठोंकता,
और मेरी सारी चाल चलन देखता रहता है;
और मेरे पांवों की चारों ओर सीमा बान्ध लेता है ।।
२८ और मैं सड़ी गली वस्तु के तुल्य हूं जो नाश हो जाती है, और कीड़ा खाए कपड़े के तुल्य हूं ।।

१४

मनुष्य जो स्त्री से उत्पन्न होता है, वह थोड़े दिनों का और दुख से भरा रहता है ।।

---

* मूल में—छिपाता ।
† मूल में—कड़वी बातों ।
‡ मूल में—अधर्म के कर्मों का भागी मुझे करता है ।

२ वह फूल की नाईं खिलता, फिर तोड़ा जाता है;
वह छाया की रीति पर ढल * जाता, और कहीं ठहरता नहीं ।।
३ फिर क्या तू ऐसे पर दृष्टि लगाता है ?
क्या तू मुझे अपने साथ कचहरी में घसीटता है ?
४ अशुद्ध वस्तु से शुद्ध वस्तु को कौन निकाल सकता है ? कोई नहीं ।
५ मनुष्य के दिन नियुक्त किए गए हैं, और उसके महीनों की गिनती तेरे पास लिखी है,
और तू ने उसके लिये ऐसा सिवाना बान्धा है
जिसे वह पार नहीं कर सकता,
६ इस कारण उस से अपना मुंह फेर ले, कि वह आराम करे,
जब तक कि वह मजदूर की नाईं अपना दिन पूरा न कर ले ।।
७ वृक्ष की तो आशा रहती है,
कि चाहे वह काट डाला भी जाए, तौभी फिर पनपेगा
और उस से नर्म नर्म डालियां निकलती ही रहेंगी ।।
८ चाहे उसकी जड़ भूमि में पुरानी भी हो जाए,
और उसका ठूंठ मिट्टी में सूख भी जाए,
९ तौभी वर्षा † की गन्ध पाकर वह फिर पनपेगा,
और पौधे की नाईं उस से शाखाएं फूटेंगी ।।

* मूल में—भाग।
† मूल में—जल।

१० परन्तु पुरुष मर जाता, और पड़ा रहता है;
जब उसका प्राण छूट गया, तब वह कहां रहा ?
११ जैसे नील नदी * का जल घट जाता है,
और जैसे महानद का जल सूखते सूखते सूख जाता है,
१२ वैसे ही मनुष्य लेट जाता और फिर नहीं उठता;
जब तक आकाश बना रहेगा तब तक वह न जागेगा,
और न उसकी नींद टूटेगी ।।
१३ भला होता कि तू मुझे अधोलोक में छिपा लेता,
और जब तक तेरा कोप ठंढा न हो जाए तब तक मुझे छिपाए रखता,
और मेरे लिये समय नियुक्त करके फिर मेरी सुधि लेता ।।
१४ यदि मनुष्य मर जाए तो क्या वह फिर जीवित होगा ?
जब तक मेरा छुटकारा न होता †
तब तक मैं अपनी कठिन सेवा के सारे दिन आशा लगाए रहता ।।
१५ तू मुझे बुलाता, और मैं बोलता;
तुझे अपने हाथ के बनाए हुए काम की अभिलाषा होती ।।
१६ परन्तु अब तू मेरे पग पग को गिनता है,
क्या तू मेरे पाप की ताक में लगा नहीं रहता ?
१७ मेरे अपराध छाप लगी हुई थैली में हैं,

* मूल में—जैसे समुद्र।
† मूल में—मेरा बदला न आता।

और तू ने मेरे अधर्म को सी रखा है॥
१८ और निश्चय पहाड़ भी गिरते गिरते नाश हो जाता है,
और चट्टान अपने स्थान से हट जाती है;
१९ और पत्थर जल से घिस जाते हैं,
और भूमि की धूलि उसकी बाढ़ से बहाई जाती है;
उसी प्रकार तू मनुष्य की आशा को मिटा देता है॥
२० तू सदा उस पर प्रबल होता, और वह जाता रहता है;
तू उसका चिहरा बिगाड़कर उसे निकाल देता है॥
२१ उसके पुत्रों की बड़ाई होती है, और यह उसे नहीं सूझता;
और उनकी घटी होती है, परन्तु वह उनका हाल नहीं जानता॥
२२ केवल अपने ही कारण उसकी देह को दुःख होता है;
और अपने ही कारण उसका प्राण अन्दर ही अन्दर शोकित रहता है॥

१५

(एलीपज का वचन)

तब तेमानी एलीपज ने कहा,
क्या बुद्धिमान को उचित है कि
२ अज्ञानता * के साथ उत्तर दे,
वा अपने अन्तःकरण को पूर्वी पवन से भरे?
३ क्या वह निष्फल वचनों से,
वा व्यर्थ बातों से वादविवाद करे?
४ वरन तू भय मानना छोड़ देता,
और ईश्वर का ध्यान करना औरों से छुड़ाता है॥
५ तू अपने मुंह से अपना अधर्म प्रगट करता है,
और धूर्त्त लोगों के बोलने की रीति पर बोलता है *।
६ मैं तो नहीं परन्तु तेरा मुंह ही तुझे दोषी ठहराता है;
और तेरे ही वचन तेरे विरुद्ध साक्षी देते हैं।
७ क्या पहिला मनुष्य तू ही उत्पन्न हुआ?
क्या तेरी उत्पत्ति पहाड़ों से भी पहिले हुई?
८ क्या तू ईश्वर की सभा में बैठा सुनता था?
क्या बुद्धि का ठीका तू ही ने ले रखा है?
९ तू ऐसा क्या जानता है जिसे हम नहीं जानते?
तुझ में ऐसी कौन सी समझ है जो हम में नहीं?
१० हम लोगों में तो पक्के बालवाले और अति पुरनिये मनुष्य हैं,
जो तेरे पिता से भी बहुत आयु के हैं॥
११ ईश्वर की शान्तिदायक बातें,
और जो वचन तेरे लिये कोमल हैं, क्या ये तेरी दृष्टि में तुच्छ हैं?
१२ तेरा मन क्यों तुझे खींच ले जाता है?
और तू आंख से क्यों सैन करता है?
१३ तू भी अपनी आत्मा ईश्वर के विरुद्ध करता है,
और अपने मुंह से व्यर्थ बातें निकलने देता है॥

---

* मूल में—वायु।

मूल में—धूर्तों की जीभ चुनता है।

१४ मनुष्य है क्या कि वह निष्कलंक हो ?
और जो स्त्री से उत्पन्न हुआ वह
है क्या कि निर्दोष हो सके ?
१५ देख, वह अपने पवित्रों पर भी विश्वास
नहीं करता,
और स्वर्ग * भी उसकी दृष्टि में
निर्मल नहीं है ।।
१६ फिर मनुष्य अधिक घिनौना और
मलीन है जो कुटिलता को पानी
की नाईं पीता है ।।
१७ मैं तुझे समझा दूंगा, इसलिये मेरी
सुन ले,
जो मैं ने देखा है, उसी का वर्णन
मैं करता हूं ।।
१८ (वे ही बातें जो बुद्धिमानों ने अपने
पुरखाओं से सुनकर
बिना छिपाए बताया है ।।
१९ केवल उन्हीं को देश दिया गया था,
और उनके मध्य में कोई विदेशी आता
जाता नहीं था ।।)
२० दुष्ट जन जीवन भर पीड़ा से तड़पता
है, और
बलात्कारी के वर्षों की गिनती
ठहराई हुई है ।।
२१ उसके कान में डरावना शब्द गूंजता
रहता है,
कुशल के समय भी नाशक उस पर
आ पड़ता है ।।
२२ उसे अन्धियारे में से फिर निकलने
की कुछ आशा नहीं होती,
और तलवार उसकी घात में रहती है ।।
२३ वह रोटी के लिये मारा मारा फिरता
है, कि कहां मिलेगी ।
उसे निश्चय रहता है, कि अन्धकार
का दिन मेरे पास ही है ।।

* वा आकाश ।

२४ संकट और दुर्घटना से उसको डर
लगता रहता है,
ऐसे राजा की नाईं जो युद्ध के लिये
तैयार हो, वे उस पर प्रबल होते
हैं ।।
२५ उस ने तो ईश्वर के विरुद्ध हाथ
बढ़ाया है,
और सर्वशक्तिमान के विरुद्ध वह ताल
ठोंकता है,
२६ और सिर उठाकर * और अपनी
मोटी मोटी ढालें दिखाता हुआ †,
घमण्ड से
उस पर धावा करता है;
२७ इसलिये कि उसके मुंह पर चिकनाई
छा गई है,
और उसकी कमर में चर्बी जमी है ।।
२८ और वह उजाड़े हुए नगरों में बस
गया है,
और जो घर रहने योग्य नहीं,
और खण्डहर होने को छोड़े गए हैं,
उन में बस गया है ।।
२९ वह धनी न रहेगा, और न उसकी
सम्पत्ति बनी रहेगी,
और ऐसे लोगों के खेत की उपज
भूमि की ओर न झुकने पाएगी ।।
३० वह अन्धियारे से कभी न निकलेगा,
और उसकी डालियां आग की लपट
से झुलस जाएंगी,
और ईश्वर के मुंह की श्वास से
वह उड़ जाएगा ।।
३१ वह अपने को धोखा देकर व्यर्थ बातों
का भरोसा न करे,
क्योंकि उसका बदला धोखा ही
होगा ।।

* मूल में—गर्दन है ।
† मूल में—अपनी ढालों की मोटी पीठों ।

३२ वह उसके नियत दिन से पहिले पूरा
हो जाएगा;
उसकी डालियां हरी न रहेंगी ।।
३३ दाख की नाईं उसके कच्चे फल झड़
जाएंगे,
और उसके फूल जलपाई के वृक्ष के
से गिरेंगे ।।
३४ क्योंकि भक्तिहीन के परिवार से
कुछ बन न पड़ेगा *,
और जो घूस लेते हैं, उनके तम्बू
आग से जल जाएंगे ।।
३५ उनके उपद्रव का पेट रहता, और
अनर्थ उत्पन्न होता है :
और वे अपने अन्तःकरण में छल
की बातें गढ़ते हैं ।।

(अय्यूब का वचन)

१६ तब अय्यूब ने कहा,
२ ऐसी बहुत सी बातें मैं सुन चुका हूं,
तुम सब के सब निकम्मे शान्तिदाता
हो ।।
क्या व्यर्थ बातों का अन्त कभी होगा ?
३ तू कौन सी बात से झिड़ककर उत्तर
देता ।।
४ जो तुम्हारी दशा मेरी सी होती,
तो मैं भी तुम्हारी सी बातें कर
सकता;
मैं भी तुम्हारे विरुद्ध बातें जोड़ सकता,
और तुम्हारे विरुद्ध सिर हिला
सकता ।।
५ वरन मैं अपने वचनों से तुम को
हियाव दिलाता, और
बातों † से शान्ति देकर तुम्हारा
शोक घटा देता ।।

* मूल में—परिवार बांझ होगा।
† मूल में—होंठों।

६ चाहे मैं बोलूं तौभी मेरा शोक न
घटेगा, चाहे मैं
चुप रहूं, तौभी मेरा दुःख कुछ कम
न होगा * ।।
७ परन्तु अब उस ने मुझे उकता दिया
है;
उस ने मेरे सारे परिवार को उजाड़
डाला है ।।
८ और उस ने जो मेरे शरीर को सुखा
डाला है, वह मेरे विरुद्ध साक्षी
ठहरा है,
और मेरा दुबलापन मेरे विरुद्ध खड़ा
होकर मेरे साम्हने साक्षी देता है ।।
९ उस ने क्रोध में आकर मुझ को फाड़ा
और मेरे पीछे पड़ा है;
वह मेरे विरुद्ध दांत पीसता;
और मेरा बैरी मुझ को आंखें दिखाता
है ।।
१० अब लोग मुझ पर मुंह पसारते हैं,
और मेरी नामधराई करके मेरे गाल
पर थपेड़ा मारते,
और मेरे विरुद्ध भीड़ लगाते हैं ।।
११ ईश्वर ने मुझे कुटिलों के वश में
कर दिया,
और दुष्ट लोगों के हाथ में फेंक
दिया है ।।
१२ मैं सुख से रहता था, और उस ने
मुझे चूर चूर कर डाला;
उस ने मेरी गर्दन पकड़कर मुझे
टुकड़े टुकड़े कर दिया,
फिर उस ने मुझे अपना निशाना
बनाकर खड़ा किया है ।।
१३ उसके तीर मेरे चारों ओर उड़ रहे
हैं,

* मूल में—मुझ से क्या किया जाएगा।

वह निर्दय होकर मेरे गुर्दों को बेधता है,
और मेरा पित्त भूमि पर बहाता है ।।
१४ वह शूर की नाईं मुझ पर धावा करके मुझे चोट पर चोट पहुंचाकर घायल करता है ।।
१५ मैं ने अपनी खाल पर टाट को सी लिया है, और
अपना सींग मिट्टी में मैला कर दिया है ।।
१६ रोते रोते मेरा मुंह सूज गया है,
और मेरी आंखों पर घोर अन्धकार छा गया है;
१७ तौभी मुझ से कोई उपद्रव नहीं हुआ है,
और मेरी प्रार्थना पवित्र है ।।
१८ हे पृथ्वी, तू मेरे लोहू को न ढांपना,
और मेरी दोहाई कहीं न रुके ।।
१९ अब भी स्वर्ग में मेरा साक्षी है,
और मेरा गवाह ऊपर है ।।
२० मेरे मित्र मुझ से घृणा करते हैं,
परन्तु मैं ईश्वर के साम्हने आंसू बहाता हूं,
२१ कि कोई ईश्वर के विरुद्ध सज्जन का, और आदमी
का मुक़द्दमा उसके पड़ोसी के विरुद्ध लड़े ।
२२ क्योंकि थोड़े ही वर्षों के बीतने पर मैं उस मार्ग
से चला जाऊंगा, जिस से मैं फिर वापिस न लौटूंगा ।।

१७ मेरा प्राण नाश हुआ चाहता है, मेरे दिन पूरे हो चुके * हैं;
मेरे लिये कब्र तैयार है ।।
२ निश्चय जो मेरे संग हैं वह ठट्ठा करनेवाले हैं,
और उनका झगड़ा रगड़ा मुझे लगातार दिखाई देता है ।।
३ ज़मानत दे, अपने और मेरे बीच में तू ही ज़ामिन हो;
कौन है जो मेरे हाथ पर हाथ मारे ?
४ तू ने इनका मन समझने से रोका है,
इस कारण तू इनको प्रबल न करेगा ।।
५ जो अपने मित्रों को चुगली खाकर लुटा देता,
उसके लड़कों की आंखें रह जाएंगी ।।
६ उस ने ऐसा किया कि सब लोग मेरी उपमा देते हैं;
और लोग मेरे मुंह पर थूकते हैं ।
७ खेद के मारे मेरी आंखों में धुंधलापन छा गया है,
और मेरे सब अंग छाया की नाईं हो गए हैं ।।
८ इसे देखकर सीधे लोग चकित होते हैं,
और जो निर्दोष हैं, वह भक्तिहीन के विरुद्ध उभरते हैं ।।
९ तौभी धर्मी लोग अपना मार्ग पकड़े रहेंगे,
और शुद्ध काम करनेवाले * सामर्थ्य पर सामर्थ्य पाते जाएंगे ।।
१० तुम सब के सब मेरे पास आओ तो आओ,
परन्तु मुझे तुम लोगों में एक भी बुद्धिमान न मिलेगा ।।
११ मेरे दिन तो बीत चुके, और मेरी मनसाएं मिट गईं,
और जो मेरे मन में था, वह नाश हुआ है ।।

* मूल में—बुझ गए।

* मूल में—शुद्ध हाथवाला।

१२ वे रात को दिन ठहराते;
वे कहते हैं, अन्धियारे के निकट
उजियाला है ।।
१३ यदि मेरी आशा यह हो कि अधोलोक
मेरा धाम होगा,
यदि मैं ने अन्धियारे में अपना बिछौना
बिछा लिया है,
१४ यदि मैं ने सड़ाहट से कहा कि तू
मेरा पिता है,
और कीड़े से, कि तू मेरी मां, और
मेरी बहिन है,
१५ तो मेरी आशा कहां रही ?
और मेरी आशा किस के देखने में
आएगी ?
१६ वह तो अधोलोक में * उतर जाएगी,
और उस
समेत मुझे भी मिट्टी में विश्राम
मिलेगा ।।

(शूही बिल्दद का वचन)

१८ तब शूही बिल्दद ने कहा,
२ तुम कब तक फन्दे लगा लगाकर
वचन पकड़ते रहोगे ?
चित्त लगाओ, तब हम बोलेंगे ।।
३ हम लोग तुम्हारी दृष्टि में क्यों पशु
के तुल्य समझे जाते,
और अशुद्ध ठहरे हैं ।।
४ हे अपने को क्रोध में फाड़नेवाले
क्या तेरे निमित्त पृथ्वी उजड़ जाएगी,
और चट्टान अपने स्थान से हट
जाएगी?
५ तौभी दुष्टों का दीपक बुझ जाएगा,
और उसकी आग की लौ न चमकेगी ।।
६ उसके डेरे में का उजियाला अन्धेरा
हो जाएगा,
और उसके ऊपर का दिया बुझ
जाएगा ।।
७ उसके बड़े बड़े फाल छोटे हो जाएंगे,
और वह अपनी ही युक्ति के द्वारा
गिरेगा ।।
८ वह अपना ही पांव जाल में फंसाएगा,
वह फन्दों पर चलता है ।।
९ उसकी एड़ी फन्दे में फंस जाएगी,
और वह जाल में पकड़ा जाएगा ।।
१० फन्दे की रस्सियां उसके लिये भूमि में,
और जाल रास्ते में छिपा दिया
गया है ।
११ चारों ओर से डरावनी वस्तुएं उसे
डराएंगी
और उसके पीछे पड़कर उसको
भगाएंगी ।
१२ उसका बल दुःख से घट जाएगा,
और विपत्ति उसके पास ही तैयार
रहेगी ।।
१३ वह उसके अंग को खा जाएगी,
वरन काल का पहिलौठा उसके अंगों
को * खा लेगा ।।
१४ अपने जिस डेरे का भरोसा वह करता
है, उस से वह छीन लिया जाएगा;
और वह भयंकरता के राजा के पास
पहुंचाया जाएगा ।।
१५ जो उसके यहां का नहीं है वह उसके
डेरे में बास करेगा,
और उसके घर पर गन्धक छितराई
जाएगी ।।
१६ उसकी जड़ तो सूख जाएगी,
और डालियां कट जाएंगी ।।
१७ पृथ्वी पर से उसका स्मरण मिट
जाएगा,

* मूल में—अधोलोक के बेंडों में।

* मूल में—उसके चमड़े के बेंडों को।

और बाज़ार * में उसका नाम कभी
न सुन पड़ेगा ।।
१८ वह उजियाले से अन्धियारे में ढकेल
दिया जाएगा,
और जगत में से भी भगाया
जाएगा ।।
१९ उसके कुटुम्बियों में उसके कोई पुत्र-
पौत्र न रहेगा,
और जहां वह रहता था, वहां कोई
बचा न रहेगा ।।
२० उसका दिन देखकर पूरबी लोग चकित
होंगे,
और पश्चिम के निवासियों के रोएं
खड़े हो जाएंगे ।।
२१ निःसन्देह कुटिल लोगों के निवास
ऐसे हो जाते हैं,
और जिसको ईश्वर का ज्ञान नहीं
रहता उसका स्थान ऐसा ही हो
जाता है ।।

(अय्यूब का वचन)

१९ तब अय्यूब ने कहा,
२ तुम कब तक मेरे प्राण को दुःख
देते रहोगे;
और बातों से मुझे चूर चूर करोगे ?
३ इन दसों बार तुम लोग मेरी निन्दा
ही करते रहे,
तुम्हें लज्जा नहीं आती, कि तुम
मेरे साथ कठोरता का बरताव
करते हो ?
४ मान लिया कि मुझ से भूल हुई,
तौभी वह भूल तो मेरे ही सिर पर
रहेगी ।।
५ यदि तुम सचमुच मेरे विरुद्ध अपनी
बड़ाई करते हो

* अथवा जंगल।

और प्रमाण देकर मेरी निन्दा करते
हो,
६ तो यह जान लो कि ईश्वर ने मुझे
गिरा दिया है,
और मुझे अपने जाल में फंसा लिया
है ।।
७ देखो, मैं उपद्रव ! उपद्रव ! यों
चिल्लाता रहता हूं, परन्तु कोई
नहीं सुनता;
मैं सहायता के लिये दोहाई देता
रहता हूं, परन्तु कोई न्याय नहीं
करता ।।
८ उस ने मेरे मार्ग को ऐसा रूंधा है
कि मैं आगे चल नहीं सकता,
और मेरी डगरें अन्धेरी कर दी
हैं ।।
९ मेरा विभव उस ने हर लिया है,
और मेरे सिर पर से मुकुट उतार
दिया है ।।
१० उस ने चारों ओर से मुझे तोड़
दिया, बस मैं जाता रहा,
और मेरा आसरा उस ने वृक्ष की
नाईं उखाड़ डाला है ।।
११ उस ने मुझ पर अपना क्रोध भड़काया
है
और अपने शत्रुओं में मुझे गिनता
है ।।
१२ उसके दल इकट्ठे होकर मेरे विरुद्ध
मोर्चा बान्धते हैं,
और मेरे डेरे के चारों ओर छावनी
डालते हैं ।।
१३ उस ने मेरे भाइयों को मुझ से दूर
किया है,
और जो मेरी जान पहचान के थे,
वे बिलकुल अनजान हो गए
हैं ।।

१४ मेरे कुटुंबी मुझे छोड़ गए हैं,
और जो मुझे जानते थे वह मुझे भूल गए हैं ।।
१५ जो मेरे घर मे रहा करते थे, वे, वरन मेरी दासियां भी मुझे अनजाना गिनने लगीं हैं;
उनकी दृष्टि में मैं परदेशी हो गया हूं।।
१६ जब मैं अपने दास को बुलाता हूं, तब वह नहीं बोलता;
मुझे उस से गिड़गिड़ाना पड़ता है ।।
१७ मेरी सांस मेरी स्त्री को
और मेरी गन्ध मेरे भाइयों * की दृष्टि में घिनौनी लगती है ।।
१८ लड़के भी मुझे तुच्छ जानते हैं;
और जब मैं उठने लगता, तब वे मेरे विरुद्ध बोलते हैं ।।
१९ मेरे सब परम मित्र † मुझ से द्वेष रखते हैं,
और जिन से मैं ने प्रेम किया सो पलटकर मेरे विरोधी हो गए हैं ।
२० मेरी खाल और मांस मेरी हड्डियों से सट गए हैं,
और मैं बाल बाल बच गया हूं ।।
२१ हे मेरे मित्रो! मुझ पर दया करो, दया,
क्योंकि ईश्वर ने मुझे मारा है ।।
२२ तुम ईश्वर की नाईं क्यों मेरे पीछे पड़े हो ?
और मेरे मांस से क्यों तृप्त नहीं हुए ?
२३ भला होता, कि मेरी बातें लिखी जातीं;
भला होता, कि वे पुस्तक में लिखी जातीं,
२४ और लोहे की टांकी और शीशे से वे सदा के लिये चट्टान पर खोदी जातीं ।।
२५ मुझे तो निश्चय है कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है,
और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा ।।
२६ और अपनी खाल के इस प्रकार नाश हो जाने के बाद भी,
मैं शरीर में होकर ईश्वर का दर्शन पाऊंगा ।।
२७ उसका दर्शन मैं आप अपनी आंखों से अपने लिये करूंगा, और न कोई दूसरा ।
यद्यपि मेरा हृदय अन्दर ही अन्दर चूर चूर भी हो जाए,
तौभी मुझ में तो धर्म * का मूल पाया जाता है !
२८ और तुम जो कहते हो हम इसको क्योंकर सताएं !
२९ तो तुम तलवार से डरो,
क्योंकि जलजलाहट से तलवार का दण्ड मिलता है,
जिस से तुम जान लो कि न्याय होता है ।।

(सोपर का वचन)

२० तब नामाती सोपर ने कहा,
२ मेरा जी चाहता है कि उत्तर दूं,
और इसलिये बोलने में फुर्ती करता हूं ।।
३ मैं ने ऐसी चितौनी सुनी जिस से मेरी निन्दा हुई,
और मेरी आत्मा अपनी समझ के अनुसार मुझे उत्तर देती है ।।

* मूल में—मेरे गर्भ के लड़कों ।
† मूल में—भेद के मनुष्य ।

* मूल में—बात ।

४ क्या तू यह नियम नहीं जानता जो प्राचीन और उस समय का है,
जब मनुष्य पृथ्वी पर बसाया गया,
५ कि दुष्टों का ताली बजाना जल्दी बन्द हो जाता
और भक्तिहीनों का आनन्द पल भर का होता है ?
६ चाहे ऐसे मनुष्य का माहात्म्य आकाश तक पहुंच जाए,
और उसका सिर बादलों तक पहुंचे,
७ तौभी वह अपनी विष्ठा की नाईं सदा के लिये नाश हो जाएगा;
और जो उसको देखते थे वे पूछेंगे कि वह कहां रहा ?
८ वह स्वप्न की नाईं लोप हो जाएगा और किसी को फिर न मिलेगा;
रात में देखे हुए रूप की नाईं वह रहने न पाएगा ।।
९ जिस ने उसको देखा हो फिर उसे न देखेगा,
और अपने स्थान पर उसका कुछ पता न रहेगा * ।।
१० उसके लड़केबाले कंगालों से भी बिनती करेंगे,
और वह अपना छीना हुआ माल फेर देगा ।।
११ उसकी हड्डियों में जवानी का बल भरा हुआ है
परन्तु वह उसी के साथ मिट्टी में मिल † जाएगा ।।
१२ चाहे बुराई उसको मीठी लगे,
और वह उसे अपनी जीभ के नीचे छिपा रखे,

* मूल में—उसका स्थान उसे फिर न ताकेगा।
† मूल में—लेट।

१३ और वह उसे बचा रखे और न छोड़े,
वरन उसे अपने तालू के बीच दबा रखे,
१४ तौभी उसका भोजन उसके पेट में पलटेगा,
वह उसके अन्दर नाग का सा विष बन जाएगा ।।
१५ उस ने जो धन निगल लिया है उसे वह फिर उगल देगा;
ईश्वर उसे उसके पेट में से निकाल देगा ।।
१६ वह नागों का विष चूस लेगा,
वह करैत के डसने से मर जाएगा ।।
१७ वह नदियों अर्थात् मधु और दही की नदियों को देखने न पाएगा ।।
१८ जिसके लिये उस ने परिश्रम किया, उसको उसे लौटा देना पड़ेगा,
और वह उसे निगलने न पाएगा;
उसकी मोल ली हुई वस्तुओं से जितना आनन्द होना चाहिये, उतना तो उसे न मिलेगा ।।
१९ क्योंकि उस ने कंगालों को पीसकर छोड़ दिया,
उस ने घर को छीन लिया, उसको वह बढ़ाने * न पाएगा ।।
२० लालसा † के मारे उसको कभी शान्ति नहीं मिलती ‡ थी,
इसलिये वह अपनी कोई मनभावनी वस्तु बचा न सकेगा ।।
२१ कोई वस्तु उसका कौर बिना हुए न बचती थी;

* मूल में—बनाने।
† मूल में—पेट।
‡ मूल में—जान पड़ती।

इसलिये उसका कुशल बना न रहेगा ।।
२२ पूरी सम्पत्ति रहते भी वह सकेती में पड़ेगा;
तब सब दुःखियों के हाथ उस पर उठेंगे ।।
२३ ऐसा होगा, कि उसका पेट भरने के लिये ईश्वर अपना क्रोध उस पर भड़काएगा,
और रोटी खाने के समय * वह उस पर पड़ेगा † ।।
२४ वह लोहे के हथियार से भागेगा,
और पीतल के धनुष से मारा जाएगा ।।
२५ वह उस तीर को खींचकर अपने पेट से निकालेगा,
उसकी चमकीली नोंक ‡ उसके पित्ते से होकर निकलेगी,
भय उस में समाएगा ।।
२६ उसके गड़े हुए धन पर घोर अन्धकार छा जाएगा §
वह ऐसी आग से भस्म होगा, जो मनुष्य की फूंकी हुई न हो;
और उसी से उसके डेरे में जो बचा हो वह भी भस्म हो जाएगा ।।
२७ आकाश उसका अधर्म प्रगट करेगा,
और पृथ्वी उसके विरुद्ध खड़ी होगी ।।
२८ उसके घर की बढ़ती जाती रहेगी,
वह उसके क्रोध के दिन बह जाएगी ।।
२९ परमेश्वर की ओर से दुष्ट मनुष्य का अंश,
और उसके लिये ईश्वर का ठहराया हुआ भाग यही है ।।

(अय्यूब का वचन)

२१ तब अय्यूब ने कहा,
२ चित्त लगाकर मेरी बात सुनो;
और तुम्हारी शान्ति यही ठहरे ।।
३ मेरी कुछ तो सहो, कि मैं भी बातें करूं;
और जब मैं बातें कर चुकूं, तब पीछे ठट्ठा करना ।।
४ क्या मैं किसी मनुष्य की दोहाई देता हूं ?
फिर मैं अधीर क्यों न होऊं ?
५ मेरी ओर चित्त लगाकर चकित हो,
और अपनी अपनी उंगली * दांत तले दबाओ ।।
६ जब मैं स्मरण करता तब मैं घबरा जाता हूं,
और मेरी देह में कंपकंपी लगती है ।।
७ क्या कारण है कि दुष्ट लोग जीवित रहते हैं,
बरन बूढ़े भी हो जाते, और उनका धन बढ़ता जाता है ?
८ उनकी सन्तान उनके संग,
और उनके बालबच्चे उनकी आंखों के साम्हने बने रहते हैं ।।
९ उनके घर में भयरहित कुशल रहता है,
और ईश्वर की छड़ी उन पर नहीं पड़ती ।।
१० उनका सांड़ गाभिन करता और चूकता नहीं,

* वा उनको रोटी ठहरा कर। वा उसके मांस में।
† मूल में—उस पर बरसाएगा।
‡ मूल में—बिजली।
§ मूल में—उसके छिपे हुओं के लिये सब अन्धकार छिपा है।

* मूल में—हाथ मुंह पर रक्खोगे।

उनकी गायें बियाती हैं और बच्चा कभी नहीं गिरातीं ।।
११ वे अपने लड़कों को झुण्ड के झुण्ड बाहर जाने देते हैं,
और उनके बच्चे नाचते हैं ।।
१२ वे डफ और वीणा बजाते हुए गाते,
और बांसुरी के शब्द से
आनन्दित होते हैं ।।
१३ वे अपने दिन सुख से बिताते, और पल भर ही में
अधोलोक में उतर जाते हैं ।।
१४ तौभी वे ईश्वर से कहते थे, कि हम से दूर हो !
तेरी गति जानने की हम को इच्छा नहीं रहती ।।
१५ सर्वशक्तिमान क्या है, कि हम उसकी सेवा करें ?
और जो हम उस से बिनती भी करें तो हमें क्या लाभ होगा ?
१६ देखो, उनका कुशल उनके हाथ में नहीं रहता,
दुष्ट लोगों का विचार मुझ से दूर रहे ।।
१७ कितनी बार दुष्टों का दीपक बुझ जाता है,
और उन पर विपत्ति आ पड़ती है;
और ईश्वर क्रोध करके उनके बांट में शोक देता है,
१८ और वे वायु से उड़ाए हुए भूसे की,
और बवण्डर से उड़ाई हुई भूसी की नाईं होते हैं ।।
१९ ईश्वर उसके अधर्म का दण्ड उसके लड़केवालों के लिये रख छोड़ता है,
वह उसका बदला उसी को दे, ताकि वह जान ले ।।
२० दुष्ट अपना नाश अपनी ही आंखों से देखे, और
सर्वशक्तिमान की जलजलाहट में से आप पी ले ।।
२१ क्योंकि जब उसके महीनों की गिनती कट चुकी,
तो अपने बादवाले घराने से उसका क्या काम रहा ।।
२२ क्या ईश्वर को कोई ज्ञान सिखाएगा ?
वह तो ऊंचे पद पर रहनेवालों का भी न्याय करता है ।।
२३ कोई तो अपने पूरे बल में
बड़े चैन और सुख से रहता हुआ मर जाता है ।।
२४ उसकी दोहनियां दूध से
और उसकी हड्डियां गूदे से भरी रहती हैं ।।
२५ और कोई अपने जीव में कुढ़ * कुढ़कर
बिना सुख भोगे मर जाता है ।।
२६ वे दोनों बराबर मिट्टी में मिल † जाते हैं,
और कीड़े उन्हें ढांक लेते हैं ।।
२७ देखो, मैं तुम्हारी कल्पनाएं जानता हूं,
और उन युक्तियों को भी, जो तुम मेरे विषय में अन्याय से करते हो ।।
२८ तुम कहते तो हो कि रईस का घर कहां रहा ?
दुष्टों के निवास के डेरे कहां रहे ?
२९ परन्तु क्या तुम ने बटोहियों से कभी नहीं पूछा ?
क्या तुम उनके इस विषय के प्रमाणों से अनजान हो,

---

* मूल में—कड़वाहट।
† मूल में—लेट ।

३० कि विपत्ति के दिन के लिये दुर्जन रखा जाता है;
और महाप्रलय के समय के लिये ऐसे लोग बचाए जाते * हैं ?
३१ उसकी चाल उसके मुंह पर कौन कहेगा ?
और उस ने जो किया है, उसका पलटा कौन देगा ?
३२ तौभी वह क़ब्र को पहुंचाया जाता है,
और लोग उस क़ब्र की रखवाली करते रहते हैं † ।।
३३ नाले के ढेले उसको सुखदायक लगते हैं;
और जैसे पूर्वकाल के लोग अनगिनित जा चुके,
वैसे ही सब मनुष्य उसके बाद भी चले जाएंगे ।।
३४ तुम्हारे उत्तरों में तो झूठ ही पाया जाता है,
इसलिये तुम क्यों मुझे व्यर्थ शान्ति देते हो ?

(एलीपज का वचन)

२२

तब तेमानी एलीपज ने कहा,
२ क्या पुरुष से ईश्वर को लाभ पहुंच सकता है ?
जो बुद्धिमान है, वह अपने ही लाभ का कारण होता है ।।
३ क्या तेरे धर्मी होने से सर्वशक्तिमान सुख पा सकता है ?
तेरी चाल की खराई से क्या उसे कुछ लाभ हो सकता है ?
४ वह तो तुझे डांटता है, और तुझ से मुक़द्दमा लड़ता है,
तो क्या इस दशा में तेरी भक्ति हो सकती है ?
५ क्या तेरी बुराई बहुत नहीं ?
तेरे अधर्म के कामों का कुछ अन्त नहीं ।।
६ तू ने तो अपने भाई का बन्धक अकारण रख लिया है,
और नंगे के वस्त्र उतार लिये हैं ।।
७ थके हुए को तू ने पानी न पिलाया,
और भूखे को रोटी देने से इनकार किया ।।
८ जो बलवान था उसी को भूमि मिली,
और जिस पुरुष की प्रतिष्ठा हुई थी, वही उस में बस गया ।।
९ तू ने विधवाओं को छूछे हाथ लौटा दिया ।
और अनाथों की बाहें तोड़ डाली गईं ।।
१० इस कारण तेरे चारों ओर फन्दे लगे हैं,
और अचानक डर के मारे तू घबरा रहा है ।।
११ क्या तू अन्धियारे को नहीं देखता,
और उस बाढ़ को जिस में तू डूब रहा है ?
१२ क्या ईश्वर स्वर्ग के ऊंचे स्थान में नहीं है ?
ऊंचे से ऊंचे तारों को देख कि वे कितने ऊंचे हैं ।।
१३ फिर तू कहता है कि ईश्वर क्या जानता है ?
क्या वह घोर अन्धकार की आड़ में होकर न्याय करेगा ?
१४ काली घटाओं से वह ऐसा छिपा रहता है कि वह कुछ नहीं देख सकता,

* मूल में—पहुंचाए जाते हैं।
† वा और कबर पर पहरा देता रहता है।

वह तो आकाशमण्डल ही के ऊपर
चलता फिरता है ।।
१५ क्या तू उस पुराने रास्ते को पकड़े
रहेगा,
जिस पर वे अनर्थ करनेवाले चलते
हैं ?
१६ वे अपने समय से पहले उठा लिए
गए
और उनके घर की नेव नदी बहा
ले गई ।।
१७ उन्हों ने ईश्वर से कहा था, हम से
दूर हो जा;
और यह कि सर्वशक्तिमान हमारा *
क्या कर सकता है ?
१८ तौभी उस ने उनके घर अच्छे अच्छे
पदार्थों से भर दिए—
परन्तु दुष्ट लोगों का विचार मुझ से
दूर रहे ।।
१९ धर्मी लोग देखकर आनन्दित होते हैं;
और निर्दोष लोग उनकी हंसी
करते हैं, कि
२० जो हमारे विरुद्ध उठे थे, निःसन्देह
मिट गए
और उनका बड़ा धन आग का कौर
हो गया है ।।
२१ उस से मेलमिलाप कर तब तुझे
शान्ति मिलेगी;
और इस से तेरी भलाई होगी ।।
२२ उसके मुंह से शिक्षा सुन ले,
और उसके वचन अपने मन में रख ।।
२३ यदि तू सर्वशक्तिमान की ओर फिरके
समीप जाए,
और अपने डेरे से कुटिल काम दूर
करे, तो तू बन जाएगा ।।

* मूल में—उनका।

२४ तू अपनी अनमोल वस्तुओं को* धूलि
पर, वरन
ओपीर का कुन्दन भी नालों के पत्थरों
में डाल दे,
२५ तब सर्वशक्तिमान आप तेरी अनमोल
वस्तु †
और तेरे लिये चमकीली चान्दी
होगा ।।
२६ तब तू सर्वशक्तिमान से सुख पाएगा,
और ईश्वर की ओर अपना मुंह
बेखटके उठा सकेगा ।।
२७ और तू उस से प्रार्थना करेगा,
और वह तेरी सुनेगा;
और तू अपनी मन्नतों को पूरी करेगा ।।
२८ जो बात तू ठाने वह तुझ से बन भी
पड़ेगी,
और तेरे मार्गों पर प्रकाश रहेगा ।।
२९ चाहे दुर्भाग्य हो ‡ तौभी तू कहेगा
कि सुभाग्य होगा §,
क्योंकि वह नम्र मनुष्य को बचाता
है ।।
३० वरन जो निर्दोष न हो उसको भी
वह बचाता है;
तेरे शुद्ध कामों ‖ के कारण तू छुड़ाया
जाएगा ।।

२३

(अय्यूब का वचन)

तब अय्यूब ने कहा,
२ मेरी कुड़कुड़ाहट अब भी नहीं रुक
सकती ¶,

* मूल में—खान से निकला हुआ सोना चांदी।
† मूल में—तेरा धातु।
‡ मूल में—वे नीचे होएं।
§ मूल में—ऊंचाई।
‖ मूल में—हाथों।
¶ मूल में—ढिठाई है।

मेरी मार* मेरे कराहने से भारी
है ।।
३ भला होता, कि मैं जानता कि वह
कहां मिल सकता है,
तब मैं उसके विराजने के स्थान तक
जा सकता !
४ मैं उसके साम्हने अपना मुक़द्दमा पेश
करता,
और बहुत से † प्रमाण देता ।।
५ मैं जान लेता कि वह मुझ से उत्तर
में क्या कह सकता है,
और जो कुछ वह मुझ से कहता वह
मैं समझ लेता ।।
६ क्या वह अपना बड़ा बल दिखाकर
मुझ से मुक़द्दमा लड़ता ?
नहीं, वह मुझ पर ध्यान देता ।।
७ सज्जन उस से विवाद कर सकते,
और इस रीति मैं अपने न्यायी के
हाथ से सदा के लिये छूट जाता ।।
८ देखो, मैं आगे जाता हूं परन्तु वह
नहीं मिलता;
मैं पीछे हटता हूं, परन्तु वह दिखाई
नहीं पड़ता;
९ जब वह बाईं ओर काम करता है
तब वह मुझे दिखाई नहीं देता;
वह तो दहिनी ओर ऐसा छिप जाता
है, कि मुझे वह दिखाई ही नहीं
पड़ता ।।
१० परन्तु वह जानता है, कि मैं कैसी
चाल चला हूं;
और जब वह मुझे ता लेगा तब मैं
सोने के समान निकलूंगा ।।
११ मेरे पैर उसके मार्गों में स्थिर
रहे;

* मूल में—हाथ।
† मूल में—मुंह भर के।

और मैं उसी का मार्ग बिना मुड़े
थामे रहा ।।
१२ उसकी * आज्ञा का पालन करने से
मैं न हटा,
और मैं ने उसके † वचन अपनी
इच्छा ‡ से कहीं अधिक काम के
जानकर सुरक्षित रखे ।।
१३ परन्तु वह एक ही बात पर अड़ा
रहता है, और कौन उसको उस से
फिरा सकता है ?
जो कुछ उसका जी चाहता है वही
वह करता है ।।
१४ जो कुछ मेरे लिये उस ने ठाना है,
उसी को वह पूरा करता है;
और उसके मन में ऐसी ऐसी बहुत
सी बातें हैं ।।
१५ इस कारण मैं उसके सम्मुख घबरा
जाता हूं;
जब मैं सोचता हूं तब उस से थरथरा
उठता हूं ।।
१६ क्योंकि मेरा मन ईश्वर ही ने कच्चा
कर दिया,
और सर्वशक्तिमान ही ने मुझ को
असमंजस में डाल दिया है ।।
१७ इसलिये कि मैं इस अन्धियारे से पहिले
काट डाला न गया, और उस ने
घोर अन्धकार को मेरे साम्हने से
न छिपाया ।

२४ सर्वशक्तिमान ने समय क्यों
नहीं ठहराया,
और जो लोग उसका ज्ञान रखते हैं
वे उसके दिन क्यों देखने नहीं पाते ?

* मूल में—उसके होठों की।
† मूल में—उसके मुंह को।
‡ मूल में—विधि।

२ कुछ लोग भूमि की सीमा को बढ़ाते,
और भेड़ बकरियां छीनकर चराते हैं ॥
३ वे अनाथों का गदहा हांक ले जाते,
और विधवा का बैल बन्धक कर रखते हैं ॥
४ वे दरिद्र लोगों को मार्ग से हटा देते,
और देश के दीनों को इकट्ठे छिपना पड़ता है ॥
५ देखो, वे जंगली गदहों की नाईं
अपने काम को और कुछ भोजन यत्न से * ढूंढ़ने को निकल जाते हैं;
उनके लड़केबालों का भोजन उनको जंगल से मिलता है ॥
६ उनको खेत में चारा काटना,
और दुष्टों की बची बचाई दाख बटोरना पड़ता है ॥
७ रात को उन्हें बिना वस्त्र नंगे पड़े रहना
और जाड़े के समय बिना ओढ़े पड़े रहना पड़ता है ॥
८ वे पहाड़ों पर की झड़ियों से भीगे रहते,
और शरण न पाकर चट्टान से लिपट जाते हैं ॥
९ कुछ लोग अनाथ बालक को मा की छाती पर से छीन लेते हैं,
और दीन लोगों से बन्धक लेते हैं।
१० जिस से वे बिना वस्त्र नंगे फिरते हैं;
और भूख के मारे, पूलियां ढोते हैं ॥
११ वे उनकी भीतों के भीतर तेल पेरते
और उनके कुण्डों में दाख रौंदते हुए भी प्यासे रहते हैं ॥

* मूल में—तड़के उठकर।

१२ वे बड़े नगर में कराहते हैं,
और घायल किए हुओं का जी दोहाई देता है;
परन्तु ईश्वर मूर्खता का हिसाब नहीं लेता ॥
१३ फिर कुछ लोग उजियाले से बैर रखते,
वे उसके मार्गों को नहीं पहचानते,
और न उसके मार्गों में बने रहते हैं ॥
१४ खूनी, पह फटते ही उठकर
दीन दरिद्र मनुष्य को घात करता,
और रात को चोर बन जाता है ॥
१५ व्यभिचारी यह सोचकर कि कोई मुझ को देखने न पाए,
दिन डूबने की राह देखता रहता है,
और वह अपना मुंह छिपाए भी रखता है ॥
१६ वे अन्धियारे के समय घरों में सेंध मारते और दिन को छिपे रहते हैं;
वे उजियाले को जानते भी नहीं ॥
१७ इसलिये उन सभों को भोर का प्रकाश घोर * अन्धकार सा जान पड़ता है,
क्योंकि घोर अन्धकार का भय वे जानते हैं ॥
१८ वे जल के ऊपर हलकी वस्तु के सरीखे हैं,
उनके भाग को पृथ्वी के रहनेवाले कोसते हैं,
और वे अपनी दाख की बारियों में लौटने नहीं पाते ॥

* मृत्यु की छाया।

१९ जैसे सूखे और घाम से हिम का
जल सूख * जाता है
वैसे ही पापी लोग अधोलोक में सूख
जाते हैं ।।
२० माता † भी उसको भूल जाती, और
कीड़े उसे चूसते हैं,
भविष्य में उसका स्मरण न रहेगा;
इस रीति टेढ़ा काम करनेवाला वृक्ष
की नाईं कट जाता है ।।
२१ वह बांझ स्त्री को जो कभी नहीं
जनी लूटता,
और विधवा से भलाई करना नहीं
चाहता है ।।
२२ बलात्कारियों को भी ईश्वर अपनी
शक्ति से खींच लेता है,
जो जीवित रहने की आशा नहीं
रखता, वह भी फिर उठ बैठता है ।।
२३ उन्हें ऐसे बेखटके कर देता है, कि
वे सम्भले रहते हैं;
और उसकी कृपादृष्टि उनकी चाल
पर लगी रहती है ।।
२४ वे बढ़ते हैं, तब थोड़ी बेर में जाते
रहते हैं,
वे दबाए जाते और सभों की नाईं
रख लिये जाते हैं,
और अनाज की बाल की नाईं काटे
जाते हैं ।।
२५ क्या यह सब सच नहीं! कौन मुझे
झुठलाएगा ?
कौन मेरी बातें निकम्मी ठहराएगा ?

२५

(शूही बिल्दद का वचन)

तब शूही बिल्दद ने कहा,
२ प्रभुता करना और डराना यह
उसी का काम है;
वह अपने ऊंचे ऊंचे स्थानों में शान्ति
रखता है ।।
३ क्या उसकी सेनाओं की गिनती हो
सकती ? और
कौन है जिस पर उसका प्रकाश नहीं
पड़ता ?
४ फिर मनुष्य ईश्वर की दृष्टि में
धर्मी क्योंकर ठहर सकता है ?
और जो स्त्री से उत्पन्न हुआ है
वह क्योंकर निर्मल हो सकता है ?
५ देख, उसकी दृष्टि में चन्द्रमा भी
अन्धेरा ठहरता,
और तारे भी निर्मल नहीं ठहरते ।।
६ फिर मनुष्य की क्या गिनती जो
कीड़ा है, और
आदमी कहां रहा जो केंचुआ है !

२६

(अय्यूब का वचन)

तब अय्यूब ने कहा,
२ निर्बल जन की तू ने क्या ही बड़ी
सहायता की,
और जिसकी बांह में सामर्थ्य नहीं,
उसको तू ने कैसे सम्भाला है ?
३ निर्बुद्धि मनुष्य को तू ने क्या ही
अच्छी सम्मति दी,
और अपनी खरी बुद्धि कैसी भली
भांति प्रगट की है ?
४ तू ने किसके हित के लिये बातें कही ?
और किसके मन की बातें तेरे मुंह
से निकलीं * ?
५ बहुत दिन के मरे हुए लोग भी
जलनिधि और उसके निवासियों के
तले तड़पते हैं ।।
६ अधोलोक उसके साम्हने उघड़ा रहता
है,

* मूल में—छीना।
† मूल में—गर्भ।

* मूल में—किसकी सांस तुझ से निकली।

और विनाश का स्थान ढंप नहीं सकता ॥
७ वह उत्तर दिशा को निराधार फैलाए रहता है,
और बिना टेक * पृथ्वी को लटकाए रखता है ॥
८ वह जल को अपनी काली घटाओं में बान्ध रखता,
और बादल उसके बोझ से नहीं फटता ॥
९ वह अपने सिंहासन के साम्हने बादल फैलाकर
उसको छिपाए रखता है ॥
१० उंजियाले और अन्धियारे के बीच जहां सिवाना बंधा है,
वहां तक उस ने जलनिधि का सिवाना ठहरा रखा है ॥
११ उसकी घुड़की से
आकाश के खम्भे थरथराकर चकित होते हैं ॥
१२ वह अपने बल से समुद्र को उछालता,
और अपनी बुद्धि से घमण्ड को छेद देता है ॥
१३ उसकी आत्मा से आकाशमण्डल स्वच्छ हो जाता है,
वह अपने हाथ से वेग भागनेवाले नाग को मार देता है ॥
१४ देखो, ये तो उसकी गति के किनारे ही हैं;
और उसकी आहट फुसफुसाहट ही सी तो सुन पड़ती है,
फिर उसके पराक्रम के गरजने का भेद कौन समझ सकता है ?

* मूल में—नास्ति के ऊपर।

२७ अय्यूब ने और भी अपनी गूढ़ बात उठाई और कहा,
२ मैं ईश्वर के जीवन की शपथ खाता हूं जिस ने मेरा न्याय बिगाड़ दिया,
अर्थात् उस सर्वशक्तिमान के जीवन की जिस ने मेरा प्राण कड़ुआ कर दिया ॥
३ क्योंकि अब तक मेरी सांस बराबर आती है,
और ईश्वर का आत्मा * मेरे नथुनों में बना है ॥
४ मैं यह कहता हूं कि मेरे मुंह से कोई कुटिल बात न निकलेगी,
और न मैं † कपट की बातें बोलूंगा ॥
५ ईश्वर न करे कि मैं तुम लोगों को सच्चा ठहराऊं,
जब तक मेरा प्राण न छूटे तब तक मैं अपनी खराई से न हटूंगा ‡ ॥
६ मैं अपना धर्म पकड़े हुए हूं और उसको हाथ से जाने न दूंगा;
क्योंकि मेरा मन जीवन भर मुझे दोषी नहीं ठहराएगा ॥
७ मेरा शत्रु दुष्टों के समान,
और जो मेरे विरुद्ध उठता है वह कुटिलों के तुल्य ठहरे ॥
८ जब ईश्वर भक्तिहीन मनुष्य का प्राण ले ले,
तब यद्यपि उस ने धन भी प्राप्त किया हो, तौभी उसकी क्या आशा रहेगी ?
९ जब वह संकट में पड़े,
तब क्या ईश्वर उसकी दोहाई सुनेगा ?

* वा ईश्वर का दिया हुआ प्राण।
† मूल में—मेरी जीभ।
‡ मूल में—हटाऊंगा।

१० क्या वह सर्वशक्तिमान में सुख पा सकेगा, और
हर समय ईश्वर को पुकार सकेगा ?
११ मैं तुम्हें ईश्वर के काम * के विषय शिक्षा दूंगा,
और सर्वशक्तिमान की बात † मैं न छिपाऊंगा ।।
१२ देखो, तुम लोग सब के सब उसे स्वयं देख चुके हो,
फिर तुम व्यर्थ विचार क्यों पकड़े रहते हो ?
१३ दुष्ट मनुष्य का भाग ईश्वर की ओर से यह है,
और बलात्कारियों का अंश जो वे सर्वशक्तिमान के हाथ से पाते हैं, वह यह है, कि
१४ चाहे उसके लड़केबाले गिनती में बढ़ भी जाएं,
तौभी तलवार ही के लिये बढ़ेंगे,
और उसकी सन्तान पेट भर रोटी न खाने पाएगी ।।
१५ उसके जो लोग बच जाएं वे मरकर क़ब्र को पहुंचेंगे;
और उसके यहां की विधवाएं न रोएंगी ।।
१६ चाहे वह रुपया धूलि के समान बटोर रखे
और वस्त्र मिट्टी के किनकों के तुल्य अनगिनित तैयार कराए,
१७ वह उन्हें तैयार कराए तो सही परन्तु धर्मी उन्हें पहिन लेगा,
और उसका रुपया निर्दोष लोग आपस में बांटेंगे ।।

* मूल में—ईश्वर के हाथ।
† मूल में—जो सर्वशक्तिमान के संग है।

१८ उस ने अपना घर कीड़े का सा बनाया,
और खेत के रखवाले की झोपड़ी की नाईं बनाया ।।
१९ वह धनी होकर लेट जाए परन्तु वह गाड़ा न जाएगा;
आंख खोलते ही वह जाता रहेगा ।।
२० भय की धाराएं उसे बहा ले जाएंगी *,
रात को बवण्डर उसको उड़ा ले जाएगा ।।
२१ पुरवाई उसे ऐसा उड़ा ले जाएगी, और वह जाता रहेगा
और उसको उसके स्थान से उड़ा ले जाएगी ।।
२२ क्योंकि ईश्वर उस पर विपत्तियां बिना तरस खाए डाल देगा,
उसके हाथ से वह भाग जाने चाहेगा ।।
लोग उस पर ताली बजाएंगे,
२३ और उस पर ऐसी सुसकारियां भरेंगे कि वह अपने स्थान पर न रह सकेगा ।।

२८

चांदी की खानि तो होती है,
और सोने के लिये भी स्थान होता है जहां लोग ताते हैं ।।
२ लोहा मिट्टी में से निकाला जाता
और पत्थर पिघलाकर पीतल बनाया जाता है ।।
३ मनुष्य अन्धियारे को दूर कर, दूर दूर तक खोद खोद कर,
अन्धियारे और घोर अन्धकार में पत्थर ढूंढ़ते हैं ।।

* मूल में—जा लेगी।

४ जहां लोग रहते हैं वहां से दूर वे खानि खोदते हैं
वहां पृथ्वी पर चलनेवालों के भूले बिसरे * हुए वे
मनुष्यों से दूर लटके हुए झूलते रहते हैं ।।
५ यह भूमि जो है, इस से रोटी तो मिलती है, परन्तु
उसके नीचे के स्थान मानो आग से उलट दिए जाते हैं ।।
६ उसके पत्थर नीलमणि का स्थान हैं,
और उसी में सोने की धूलि भी है ।।
७ उसका मार्ग कोई मांसाहारी पक्षी नहीं जानता,
और किसी गिद्ध की दृष्टि उस पर नहीं पड़ी ।।
८ उस पर अभिमानी पशुओं ने पांव नहीं धरा,
और न उस से होकर कोई सिंह कभी गया है ।।
९ वह चकमक के पत्थर पर हाथ लगाता,
और पहाड़ों को जड़ ही से उलट देता है ।।
१० वह चट्टान खोदकर नालियां बनाता,
और उसकी आंखों को हर एक अनमोल वस्तु दिखाई पड़ती है ।।
११ वह नदियों को ऐसा रोक देता है, कि उन से एक बूंद भी पानी नहीं टपकता †
और जो कुछ छिपा है उसे वह उजियाले में निकालता है ।।

* मूल में—पांव से।
† मूल में—आंसू बहाने से।

१२ परन्तु बुद्धि कहां मिल सकती है ?
और समझ का स्थान कहां है ?
१३ उसका मोल मनुष्य को मालूम नहीं,
जीवनलोक में वह कहीं नहीं मिलती !
१४ अथाह सागर कहता है, वह मुझ में नहीं है,
और समुद्र भी कहता है, वह मेरे पास नहीं है ।।
१५ चोखे सोने से वह मोल लिया नहीं जाता ।
और न उसके दाम के लिये चान्दी तौली जाती है ।।
१६ न तो उसके साथ ओपीर के कुन्दन की बराबरी हो सकती है;
और न अनमोल सुलैमानी पत्थर वा नीलमणि की ।।
१७ न सोना, न कांच उसके बराबर ठहर सकता है,
कुन्दन के गहने के बदले भी वह नहीं मिलती ।।
१८ मूंगे और स्फटिकमणि की उसके आगे क्या चर्चा !
बुद्धि का मोल माणिक से भी अधिक है ।।
१९ कूश देश के पद्मराग उसके तुल्य नहीं ठहर सकते;
और न उस से चोखे कुन्दन की बराबरी हो सकती है ।।
२० फिर बुद्धि कहां मिल सकती है ?
और समझ का स्थान कहां ?
२१ वह सब प्राणियों की आंखों से छिपी है,
और आकाश के पक्षियों के देखने में नहीं आती ।।
२२ विनाश और मृत्यु कहती हैं,
कि हमने उसकी चर्चा सुनी है ।।

२३ परन्तु परमेश्वर उसका मार्ग समझता है,
और उसका स्थान उसको मालूम है ।।
२४ वह तो पृथ्वी की छोर तक ताकता रहता है,
और सारे आकाशमण्डल के तले देखता भालता है ।।
२५ जब उस ने वायु का तौल ठहराया,
और जल को नपुए में नापा,
२६ और मेंह के लिये विधि
और गर्जन और बिजली के लिये मार्ग ठहराया,
२७ तब उस ने बुद्धि को देखकर उसका बखान भी किया,
और उसको सिद्ध करके उसका पूरा भेद बूझ लिया ।।
२८ तब उस ने मनुष्य से कहा,
देख, प्रभु का भय मानना यही बुद्धि है :
और बुराई से दूर रहना यही समझ है ।।

(अय्यूब का वचन)

२९ अय्यूब ने और भी अपनी गूढ़ बात उठाई और कहा,
२ भला होता, कि मेरी दशा बीते हुए महीनों की सी होती,
जिन दिनों में ईश्वर मेरी रक्षा करता था,
३ जब उसके दीपक का प्रकाश मेरे सिर पर रहता था,
और उस से उजियाला पाकर मैं अन्धेरे में चलता था ।।
४ वे तो मेरी जवानी* के दिन थे,
जब ईश्वर की मित्रता मेरे डेरे पर प्रगट होती थी ।।
५ उस समय तक तो सर्वशक्तिमान मेरे संग रहता था,
और मेरे लड़केबाले मेरे चारों ओर रहते थे ।।
६ तब मैं अपने पगों को मलाई से धोता था और
मेरे पास की चट्टानों से तेल की धाराएं बहा करती थीं ।।
७ जब जब मैं नगर के फाटक की ओर चलकर खुले स्थान में
अपने बैठने का स्थान तैयार करता था,
८ तब तब जवान मुझे देखकर छिप जाते,
और पुरनिये उठकर खड़े हो जाते थे ।।
९ हाकिम लोग भी बोलने से रुक जाते,
और हाथ से मुंह मूंदे रहते थे ।।
१० प्रधान लोग चुप रहते थे*
और उनकी जीभ तालू से सट जाती थी ।।
११ क्योंकि जब कोई† मेरा समाचार सुनता, तब वह मुझे धन्य कहता था,
और जब कोई मुझे देखता, तब मेरे विषय साक्षी देता था;
१२ क्योंकि मैं दोहाई देनेवाले दीन जन को,
और असहाय अनाथ को भी छुड़ाता था ।।

* मूल में—फल पकने के समय।

* मूल में—प्रधानों की वाणी छिप जाती थी।

† मूल में—काम।

१३ जो नाश होने पर था मुझे आशीर्वाद देता था,
और मेरे कारण विधवा आनन्द के मारे गाती थी ।।
१४ मैं धर्म को पहिने रहा, और वह मुझे ढांके रहा;
मेरा न्याय का काम मेरे लिये बागे और सुन्दर पगड़ी का काम देता था ।।
१५ मैं अन्धों के लिये आंखें,
और लंगड़ों के लिये पांव ठहरता था ।।
१६ दरिद्र लोगों का मैं पिता ठहरता था,
और जो मेरी पहिचान का न था उसके मुक़द्दमे का हाल मैं पूछताछ करके जान लेता था ।।
१७ मैं कुटिल मनुष्यों की डाढ़ें तोड़ डालता, और
उनका शिकार उनके मुंह से छीनकर बचा लेता था ।।
१८ तब मैं सोचता था, कि मेरे दिन बालू के किनकों के समान अनगिनत होंगे,
और अपने ही बसेरे में मेरा प्राण छूटेगा ।।
१९ मेरी जड़ जल की ओर फैली,*
और मेरी डाली पर ओस रात भर पड़ी,
२० मेरी महिमा ज्यों की त्यों† बनी रहेगी,
और मेरा धनुष मेरे हाथ में सदा नया होता जाएगा ।।
२१ लोग मेरी ही ओर कान लगाकर ठहरे रहते थे
और मेरी सम्मति सुनकर चुप रहते थे ।।
२२ जब मैं बोल चुकता था, तब वे और कुछ न बोलते थे,
मेरी बातें उन पर मेंह की नाईं बरसा करती थीं ।।
२३ जैसे लोग बरसात की वैसे ही मेरी भी बाट देखते थे;
और जैसे बरसात के अन्त की वर्षा के लिये वैसे ही वे मुंह पसारे रहते* थे ।।
२४ जब उनको कुछ आशा न रहती थी तब मैं हंसकर उनको प्रसन्न करता था;
और कोई मेरे मुंह को बिगाड़ न सकता था ।।
२५ मैं उनका मार्ग चुन लेता, और उन में मुख्य ठहरकर बैठा करता था,
और जैसा सेना में राजा वा विलाप करनेवालों के बीच शान्तिदाता,
वैसा ही मैं रहता था ।।

* मूल में—खुली।
† मूल में—टटकी।

३० परन्तु अब जिनकी अवस्था मुझ से कम है, वे मेरी हंसी करते हैं,
वे जिनके पिताओं को मैं अपनी भेड़ बकरियों के कुत्तों के काम के योग्य भी न जानता था† ।।
२ उनके भुजबल से मुझे क्या लाभ हो सकता था ?
उनका पौरुष तो जाता रहा ।।
३ वे दरिद्रता और काल के मारे दुबले पड़े हुए हैं,

* मूल में—मुंह खोलते।
† मूल में—कुत्तों के साथ ठहरना नकारता था।

वे अन्धेरे और सुनसान स्थानों में
सूखी धूल फांकते हैं ।।
४ वे झाड़ी के आसपास का लोनिया साग तोड़ लेते,
और झाऊ की जड़ें खाते हैं ।।
५ वे मनुष्यों के बीच में से निकाले जाते हैं,
उनके पीछे ऐसी पुकार होती है, जैसी चोर के पीछे ।।
६ डरावने नालों में, भूमि के बिलों में,
और चट्टानों में, उन्हें रहना पड़ता है ।।
७ वे झाड़ियों के बीच रेंकते,
और बिच्छू पौधों के नीचे इकट्ठे पड़े रहते हैं ।।
८ वे मूढ़ों और नीच लोगों * के वंश हैं
जो मार मार के इस देश से निकाले गए थे ।।
९ ऐसे ही लोग अब मुझ पर लगते गीत गाते,
और मुझ पर ताना मारते हैं ।।
१० वे मुझ से घिन खाकर दूर रहते,
वा मेरे मुंह पर थूकने से भी नहीं डरते † ।।
११ ईश्वर ने जो मेरी रस्सी खोलकर मुझे दुःख दिया है,
इसलिये वे मेरे साम्हने मुंह में लगाम नहीं रखते ।।
१२ मेरी दहिनी अलंग पर बजारू लोग उठ खड़े होते हैं, वे मेरे पांव सरका देते हैं,
और मेरे नाश के लिये अपने उपाय ‡ बान्धते हैं ।।

* मूल में—नामरहितों।
† मूल में—मुंह से थूक नहीं रख छोड़ते।
‡ मूल में—अपने रास्ते।

१३ जिनके कोई सहायक नहीं,
वे भी मेरे रास्तों को बिगाड़ते,
और मेरी विपत्ति को बढ़ाते हैं * ।।
१४ मानो बड़े नाके से घुसकर वे आ पड़ते हैं,
और उजाड़ के बीच में होकर मुझ पर धावा करते हैं ।।
१५ मुझ में घबराहट छा गई है †,
और मेरा रईसपन मानो वायु से उड़ाया गया है,
और मेरा कुशल बादल की नाईं जाता रहा ।।
१६ और अब मैं शोकसागर में डूबा जाता हूं ‡;
दुःख के दिनों ने मुझे जकड़ लिया है § ।।
१७ रात को मेरी हड्डियां मेरे अन्दर छिद जाती हैं ||
और मेरी नसों में चैन नहीं पड़ती ¶ ।।
१८ मेरी बीमारी की बहुतायत से मेरे वस्त्र का रूप बदल गया है;
वह मेरे कुर्त्ते के गले की नाईं मुझ से लिपटी हुई है ।।
१९ उस ने मुझ को कीचड़ में फेंक दिया है,
और मैं मिट्टी और राख के तुल्य हो गया हूं ।।

* मूल में—विपत्ति की सहायता करते हैं।
† मूल में—मुझ पर घबराहट घुमाई गई।
‡ मूल में—मेरा जीव मेरे ऊपर उण्डेला जाता है।
§ मूल में—दुःख के दिनों ने मुझे पकड़ा है।
|| मूल में—मुझ पर से छिदती हैं।
¶ मूल में—मेरी नसें नहीं सोतीं।

२० मैं तेरी दोहाई देता हूं, परन्तु तू नहीं सुनता;
मैं खड़ा होता हूं परन्तु तू मेरी ओर घूरने लगता है ।।
२१ तू बदलकर मुझ पर कठोर हो गया है;
और अपने बली हाथ से मुझे सताता है ।।
२२ तू मुझे वायु पर सवार करके उड़ाता है,
और आंधी के पानी में मुझे गला देता है ।।
२३ हां, मुझे निश्चय है, कि तू मुझे मृत्यु के वश में कर देगा,
और उस घर में पहुंचाएगा,
जो सब जीवित प्राणियों के लिये ठहराया गया है ।
२४ तौभी क्या कोई गिरते समय हाथ न बढ़ाएगा?
और क्या कोई विपत्ति के समय* दोहाई न देगा?
२५ क्या मैं उसके लिये रोता नहीं था, जिसके दुर्दिन आते थे?
और क्या दरिद्र जन के कारण मैं प्राण में दुखित न होता था?
२६ जब मैं कुशल का मार्ग जोहता था, तब विपत्ति आ पड़ी;
और जब मैं उजियाले का आसरा लगाए था, तब अन्धकार छा गया ।।
२७ मेरी अन्तड़ियां निरन्तर उबलती रहती हैं† और आराम नहीं पातीं;
मेरे दुःख के दिन आ गए हैं ।।

* मूल में—होते इस कारण ।
† मूल में—खौलती है और चुप नहीं होती ।

२८ मैं शोक का पहिरावा पहिने हुए मानो बिना सूर्य की गर्मी के काला हो गया हूं ।
और सभा में खड़ा होकर सहायता के लिये दोहाई देता हूं ।।
२९ मैं गीदड़ों का भाई,
और शुतुर्मुर्गों का संगी हो गया हूं ।।
३० मेरा चमड़ा काला होकर मुझ पर से गिरता जाता है,
और तप के मारे मेरी हड्डियां जल गई हैं ।।
३१ इस कारण मेरी वीणा से विलाप और मेरी बांसुरी से रोने की ध्वनि निकलती है ।।

३१ मैं ने अपनी आंखों के विषय वाचा बान्धी है,
फिर मैं किसी कुंवारी पर क्योंकर आंखें लगाऊं?
२ क्योंकि ईश्वर स्वर्ग से कौन सा अंश और सर्वशक्तिमान ऊपर से कौन सी सम्पत्ति बांटता है?
३ क्या वह कुटिल मनुष्यों के लिये विपत्ति
और अनर्थ काम करनेवालों के लिये सत्यानाश का कारण नहीं है?
४ क्या वह मेरी गति नहीं देखता और क्या वह मेरे पग पग नहीं गिनता?
५ यदि मैं व्यर्थ चाल चालता हूं,
वा कपट करने के लिये मेरे पैर दौड़े हों*;
६ (तो मैं धर्म के तराजू में तौला जाऊं, ताकि ईश्वर मेरी खराई को जान ले) ।।

* मूल में—मेरा पांव दौड़ा हो ।

७ यदि मेरे पग मार्ग से बहक गए हों,
और मेरा मन मेरी आंखों की देखी चाल चला हो,
वा मेरे हाथों को कुछ कलंक लगा हो;
८ तो मैं बीज बोऊं, परन्तु दूसरा खाए;
वरन मेरे खेत की उपज उखाड़ डाली जाए ।।
९ यदि मेरा हृदय किसी स्त्री पर मोहित हो गया है,
और मैं अपने पड़ोसी के द्वार पर घात में बैठा हूं;
१० तो मेरी स्त्री दूसरे के लिये पीसे,
और पराए पुरुष उसको भ्रष्ट करें ।।
११ क्योंकि वह तो महापाप होता;
और न्यायियों से दण्ड पाने के योग्य अधर्म का काम होता;
१२ क्योंकि वह ऐसी आग है जो जलाकर भस्म कर देती है,
और वह मेरी सारी उपज को जड़ से नाश कर देती है ।
१३ जब मेरे दास वा दासी ने मुझ से झगड़ा किया,
तब यदि मैं ने उनका हक मार दिया हो;
१४ तो जब ईश्वर उठ खड़ा होगा, तब मैं क्या करूंगा?
और जब वह आएगा तब मैं क्या उत्तर दूंगा?
१५ क्या वह उसका बनानेवाला नहीं जिस ने मुझे गर्भ में बनाया?
क्या एक ही ने हम दोनों की सूरत गर्भ में न रची थी?
१६ यदि मैं ने कंगालों की इच्छा पूरी न की हो,
वा मेरे कारण विधवा की आंखें कभी रह गई हों,
१७ वा मैं ने अपना टुकड़ा अकेला खाया हो,
और उस में से अनाथ न खाने पाए हों,
१८ (परन्तु वह मेरे लड़कपन ही से मेरे साथ इस प्रकार पला जिस प्रकार पिता के साथ,
और मैं जन्म ही से विधवा को पालता आया हूं);
१९ यदि मैं ने किसी को वस्त्रहीन मरते हुए देखा,
वा किसी दरिद्र को जिसके पास ओढ़ने को न था
२० और उसको अपनी भेड़ों की ऊन के कपड़े न दिए हों,
और उस ने गर्म होकर मुझे आशीर्वाद न दिया हो *;
२१ वा यदि मैं ने फाटक में अपने सहायक देखकर
अनाथों के मारने को अपना हाथ उठाया हो,
२२ तो मेरी बांह पखौड़े से उखड़कर गिर पड़े,
और मेरी भुजा की हड्डी टूट जाए † ।।
२३ क्योंकि ईश्वर के प्रताप के कारण मैं ऐसा नहीं कर सकता था,
क्योंकि उसकी ओर की विपत्ति के कारण मैं भयभीत होकर थरथराता था ।।
२४ यदि मैं ने सोने का भरोसा किया होता,
वा कुन्दन को अपना आसरा कहा होता,

* मूल में—उसकी कमर ने मुझे आशीर्वाद न दिया हो ।
† मूल में—मेरी भुजा नरट से टूट जाए ।

२५ वा अपने बहुत से धन
वा अपनी बड़ी कमाई के कारण
आनन्द किया होता,
२६ वा सूर्य को चमकते
वा चन्द्रमा को महाशोभा से चलते
हुए देखकर
२७ मैं मन ही मन मोहित हो गया
होता,
और अपने मुंह से अपना हाथ चूम
लिया होता *;
२८ तो यह भी न्यायियों से दण्ड पाने
के योग्य अधर्म का काम होता;
क्योंकि ऐसा करके मैं ने सर्वश्रेष्ठ
ईश्वर का इनकार किया होता ।।
२९ यदि मैं अपने बैरी के नाश से आनन्दित
होता,
वा जब उस पर विपत्ति पड़ी तब
उस पर हंसा होता;
३० (परन्तु मैं ने न तो उसको शाप देते
हुए, और न उसके प्राणदण्ड की
प्रार्थना करते हुए अपने मुंह † से
पाप किया है);
३१ यदि मेरे डेरे के रहनेवालों ने यह न
कहा होता,
कि ऐसा कोई कहां मिलेगा, जो इसके
यहां का मांस खाकर तृप्त न हुआ
हो ?
३२ (परदेशी को सड़क पर टिकना न
पड़ता था; मैं बटोही ‡ के लिये
अपना द्वार खुला रखता था);
३३ यदि मैं ने आदम की नाईं अपना
अपराध छिपाकर
अपने अधर्म को ढांप लिया हो,

* मूल में—मेरा हाथ मेरे मुंह को चूमता।
† मूल में—तालू।
‡ मूल में—बांट।

३४ इस कारण कि मैं बड़ी भीड़ से
भय खाता था,
वा कुलीनों * से तुच्छ किए जाने से
डर गया
यहां तक कि मैं द्वार से बाहर न
निकला—
३५ भला होता कि मेरा कोई सुननेवाला
होता !
(सर्वशक्तिमान अभी मेरा न्याय
चुकाए ! देखो मेरा दस्तखत यही
है)।।
भला होता कि जो शिकायतनामा
मेरे मुद्दई ने लिखा है वह मेरे
पास होता !
३६ निश्चय मैं उसको अपने कन्धे पर
उठाए फिरता;
और सुन्दर पगड़ी जानकर अपने
सिर में बान्धे रहता ।।
३७ मैं उसको अपने पग पग का हिसाब
देता;
मैं उसके निकट प्रधान की नाईं
निडर जाता ।।
३८ यदि मेरी भूमि मेरे विरुद्ध दोहाई
देती हो, और
उसकी रेघारियां मिलकर रोती हों;
३९ यदि मैं ने अपनी भूमि की उपज
बिना मजूरी † दिए खाई,
वा उसके मालिक का प्राण लिया हो;
४० तो गेहूं के बदले झड़बेड़ी,
और जव के बदले जंगली घास
उगें !
अय्यूब के वचन पूरे हुए हैं ।।

* मूल में—अपनी गोद में।
† मूल में—कुली।
‡ मूल में—रुपये।

(एलीहू का वचन)

३२ तब उन तीनों पुरुषों ने यह देखकर कि अय्यूब अपनी दृष्टि में निर्दोष है उसको उत्तर देना छोड़ दिया। २ और बूजी बारकेल का पुत्र एलीहू जो राम के कुल का था, उसका क्रोध भड़क उठा। अय्यूब पर उसका क्रोध इसलिये भड़क उठा, कि उस ने परमेश्वर को नहीं, अपने ही को निर्दोष ठहराया। ३ फिर अय्यूब के तीनों मित्रों के विरुद्ध भी उसका क्रोध इस कारण भड़का, कि वे अय्यूब को उत्तर न दे सके, तौभी उसको दोषी ठहराया। ४ एलीहू तो अपने को उन से छोटा जानकर अय्यूब की बातों के अन्त की बाट जोहता रहा। ५ परन्तु जब एलीहू ने देखा कि ये तीनों पुरुष कुछ उत्तर नहीं देते, तब उसका क्रोध भड़क उठा॥

६ तब बूजी बारकेल का पुत्र एलीहू कहने लगा, कि
मैं तो जवान हूं, और तुम बहुत बूढ़े हो;
इस कारण मैं रुका रहा, और अपना विचार तुम को बताने से डरता था॥
७ मैं सोचता था, कि जो आयु में बड़े हैं वे ही बात करें,
और जो बहुत वर्ष के हैं, वे ही बुद्धि सिखाएं॥
८ परन्तु मनुष्य में आत्मा तो है ही,
और सर्वशक्तिमान अपनी दी हुई सांस से उन्हें समझने की शक्ति देता है॥
९ जो बुद्धिमान हैं वे बड़े बड़े लोग ही नहीं और न्याय के समझनेवाले बूढ़े ही नहीं होते॥
१० इसलिये मैं कहता हूं, कि मेरी भी सुनो *;
मैं भी अपना विचार बताऊंगा॥
११ मैं तो तुम्हारी बातें सुनने को ठहरा रहा,
मैं तुम्हारे प्रमाण सुनने के लिये ठहरा रहा;
जब कि तुम कहने के लिये शब्द ढूंढ़ते रहे॥
१२ मैं चित्त लगाकर तुम्हारी सुनता रहा।
परन्तु किसी ने अय्यूब के पक्ष का खण्डन नहीं किया,
और न उसकी बातों का उत्तर दिया॥
१३ तुम लोग मत समझो कि हम को ऐसी बुद्धि मिली है,
कि उसका खण्डन मनुष्य नहीं ईश्वर ही कर सकता है॥
१४ जो बातें उस ने कहीं वह मेरे विरुद्ध तो नहीं कहीं,
और न मैं तुम्हारी सी बातों से उसको उत्तर दूंगा॥
१५ वे विस्मित हुए, और फिर कुछ उत्तर नहीं दिया;
उन्हों ने बातें करना छोड़ दिया †॥
१६ इसलिये कि वे कुछ नहीं बोलते और चुपचाप खड़े हैं,
क्या इस कारण मैं ठहरा रहूं?
१७ परन्तु अब मैं भी कुछ कहूंगा ‡,
मैं भी अपना विचार प्रगट करूंगा॥

---

* मूल में—सुन।
† मूल में—बातों ने उन से कूच किया।
‡ मूल में—अपना अंश उत्तर दूंगा।

१८ क्योंकि मेरे मन में बातें भरी हैं,
और मेरी आत्मा मुझे उभार रही है ॥
१९ मेरा मन उस दाखमधु के समान है, जो खोला न गया हो;
वह नई कुप्पियों की नाईं फटा चाहता है ॥
२० शान्ति पाने के लिये मैं बोलूंगा;
मैं मुंह खोलकर उत्तर दूंगा ॥
२१ न मैं किसी आदमी का पक्ष करूंगा,
और न मैं किसी मनुष्य को चापलूसी की पदवी दूंगा ॥
क्योंकि मुझे तो चापलूसी करना आता ही नहीं
नहीं तो मेरा सिरजनहार क्षण भर में मुझे उठा लेता ॥

३३ तौभी हे अय्यूब! मेरी बातें सुन ले, और मेरे सब वचनों पर कान लगा ॥
२ मैं ने तो अपना मुंह खोला है,
और मेरी जीभ मुंह में चुलबुला रही है * ॥
३ मेरी बातें मेरे मन की सिधाई प्रगट करेंगी;
जो ज्ञान मैं रखता हूं उसे खराई के साथ कहूंगा † ॥
४ मुझे ईश्वर की आत्मा ने बनाया है,
और सर्वशक्तिमान की सांस से मुझे जीवन मिलता है ॥
५ यदि तू मुझे उत्तर दे सके, तो दे;
मेरे साम्हने अपनी बातें क्रम से रचकर खड़ा हो जा ॥
६ देख मैं ईश्वर के सन्मुख तेरे तुल्य हूं;
मैं भी मिट्टी का बना हुआ हूं ॥
७ सुन, तुझे मेरे डर के मारे घबराना न पड़ेगा, और
न तू मेरे बोझ से दबेगा ॥
८ निःसन्देह तेरी ऐसी बात मेरे कानों में पड़ी है
और मैं ने तेरे वचन सुने हैं, कि
९ मैं तो पवित्र और निरपराध और निष्कलंक हूं; और मुझ में अधर्म नहीं है ॥
१० देख, वह मुझ से झगड़ने के दांव ढूंढ़ता है, और मुझे अपना शत्रु समझता है;
११ वह मेरे दोनों पांवों को काठ में ठोंक देता है,
और मेरी सारी चाल की देखभाल करता है ॥
१२ देख, मैं तुझे उत्तर देता हूं, इस बात में तू सच्चा नहीं है।
क्योंकि ईश्वर मनुष्य से बड़ा है ॥
१३ तू उस से क्यों झगड़ता है?
क्योंकि वह अपनी किसी बात का लेखा नहीं देता ॥
१४ क्योंकि ईश्वर तो एक क्या वरन दो बार बोलता है,
परन्तु लोग उस पर चित्त नहीं लगाते ॥
१५ स्वप्न में, वा रात को दिए हुए दर्शन में,
जब मनुष्य घोर निद्रा में पड़े रहते हैं,
वा बिछौने पर सोते समय,

* मूल में—बोली है।
† मूल में—मेरे होंट कहेंगे।

१६ तब वह मनुष्यों के कान खोलता है,
और उनकी शिक्षा पर मुहर लगाता है,
१७ जिस से वह मनुष्य को उसके संकल्प से रोके
और गर्व को मनुष्य में से दूर करे * ।।
१८ वह उसके प्राण को गढ़हे से बचाता है,
और उसके जीवन को खड्ग की मार से बचाता है ।
१९ उसे ताड़ना भी होती है, कि
वह अपने बिछौने पर पड़ा पड़ा तड़पता है,
और उसकी हड्डी हड्डी में लगातार झगड़ा होता है
२० यहां तक कि उसका प्राण रोटी से,
और उसका मन स्वादिष्ट भोजन से घृणा करने लगता है ।।
२१ उसका मांस ऐसा सूख जाता है कि दिखाई नहीं देता;
और उसकी हड्डियां जो पहिले दिखाई नहीं देती थीं निकल आती हैं † ।।
२२ निदान वह कबर के निकट पहुंचता है,
और उसका जीवन नाश करनवालों के वश में हो जाता है ।।
२३ यदि उसके लिये कोई बिचवई स्वर्गदूत मिले, जो
हजार में से एक ही हो, जो भावी कहे ।
और जो मनुष्य को बताए कि उसके लिये क्या ठीक है ।

* मूल में—और पुरुष से गर्व छिपाए।
† मूल में—वा उसके अंग सूखते सूखते मानो अनदेखे हो जाते हैं।

२४ तो वह उस पर अनुग्रह करके कहता है,
कि उसे गढ़हे में जाने से बचा ले,
मुझे छुड़ौती मिली है ।।
२५ तब उस मनुष्य की देह बालक की देह से अधिक स्वस्थ और कोमल हो जाएगी;
उसकी जवानी के दिन फिर लौट आएंगे ।।
२६ वह ईश्वर से बिनती करेगा, और वह उस से प्रसन्न होगा,
वह आनन्द से ईश्वर का दर्शन करेगा,
और ईश्वर मनुष्य को ज्यों का त्यों धर्मी कर देगा ।।
२७ वह मनुष्यों के साम्हने गाने और कहने लगता है, कि
मैं ने पाप किया, और सच्चाई को उलट पुलट कर दिया,
परन्तु उसका बदला मुझे दिया नहीं गया ।।
२८ उस ने मेरे प्राण क़ब्र में पड़ने से बचाया है,
मेरा जीवन * उजियाले को देखेगा ।।
२९ देख, ऐसे ऐसे सब काम
ईश्वर पुरुष के साथ दो बार क्या वरन तीन बार भी करता है,
३० जिस से उसको क़ब्र से बचाए †,
और वह जीवनलोक के उजियाले का प्रकाश पाए ।।
३१ हे अय्यूब ! कान लगाकर मेरी सुन;
चुप रह, मैं और बोलूंगा ।।
३२ यदि तुझे बात कहनी हो, तो मुझे उत्तर दे;

* मूल में—मेरा जीवन।
† मूल में—फेर लाए।

बोल, क्योंकि मैं तुझे निर्दोष ठहराना
चाहता हूं ।।
३३ यदि नहीं, तो तू मेरी सुन;
चुप रह, मैं तुझे बुद्धि की बात
सिखाऊंगा ।।

(एलीहू का वचन)

३४ फिर एलीहू यों कहता गया;
२ हे बुद्धिमानो ! मेरी बातें सुनो,
और हे ज्ञानियो ! मेरी बातों पर
कान लगाओ;
३ क्योंकि जैसे जीभ से * चखा जाता
है,
वैसे ही वचन कान से परखे जाते
हैं ।।
४ जो कुछ ठीक है, हम अपने लिये
चुन लें; जो भला है, हम आपस में
समझ बूझ लें ।।
५ क्योंकि अय्यूब ने कहा है, कि मैं
निर्दोष हूं,
और ईश्वर ने मेरा हक़ मार दिया
है ।।
६ यद्यपि मैं सच्चाई पर हूं, तौभी झूठा
ठहरता हूं,
मैं निरपराध हूं, परन्तु मेरा घाव †
असाध्य है ।।
७ अय्यूब के तुल्य कौन शूरवीर है,
जो ईश्वर की निन्दा पानी की नाईं
पीता है,
८ जो अनर्थ करनेवालों का साथ देता,
और दुष्ट मनुष्यों की संगति रखता
है ?
९ उस ने तो कहा है, कि मनुष्य को
इस से कुछ लाभ नहीं
कि वह आनन्द से परमेश्वर की
संगति रखे ।।
१० इसलिये हे समझवालो ! मेरी
सुनो, यह सम्भव नहीं कि ईश्वर
दुष्टता का काम करे,
और सर्वशक्तिमान बुराई करे ।।
११ वह मनुष्य की करनी का फल देता
है,
और प्रत्येक को अपनी अपनी चाल
का फल भुगताता है ।।
१२ निःसन्देह ईश्वर दुष्टता नहीं करता
और न सर्वशक्तिमान अन्याय करता
है ।।
१३ किस ने पृथ्वी को उसके हाथ में
सौंप दिया ?
वा किस ने सारे जगत का प्रबन्ध
किया ?
१४ यदि वह मनुष्य से अपना मन हटाये
और अपना आत्मा और श्वास अपने
ही में समेट ले,
१५ तो सब देहधारी एक संग नाश हो
जाएंगे,
और मनुष्य फिर मिट्टी में मिल
जाएगा ।।
१६ इसलिये इसको सुनकर समझ रख,
और मेरी इन बातों पर कान लगा ।।
१७ जो न्याय का बैरी हो, क्या वह
शासन करे ?
जो पूर्ण धर्मी है, क्या तू उसे दुष्ट
ठहराएगा ?
१८ वह राजा से कहता है कि तू नीच है;
और प्रधानों से, कि तुम दुष्ट हो ।।
१९ ईश्वर तो हाकिमों का पक्ष नहीं करता
और धनी और कंगाल दोनों को
अपने बनाए हुए जानकर
उन में कुछ भेद नहीं करता ।।

* मूल में—तालू से।
† मूल में—तेरी।

२० आधी रात को पल भर में वे मर जाते हैं,
और प्रजा के लोग हिलाए जाते और जाते रहते हैं;
और प्रतापी लोग बिना हाथ लगाए उठा लिए जाते हैं ॥

२१ क्योंकि ईश्वर की आंखें मनुष्य की चालचलन पर लगी रहती हैं,
और वह उसकी सारी चाल को देखता रहता है ॥

२२ ऐसा अन्धियारा वा घोर अन्धकार कहीं नहीं है
जिस में अनर्थ करनेवाले छिप सकें ॥

२३ क्योंकि उस ने मनुष्य का कुछ समय नहीं ठहराया
ताकि वह ईश्वर के सम्मुख अदालत में जाए ॥

२४ वह बड़े बड़े बलवानों को बिना पूछपाछ के चूर चूर करता है,
और उनके स्थान पर औरों को खड़ा कर देता है ॥

२५ इसलिये कि वह उनके कामों को भली भाँति जानता है,
वह उन्हें रात में ऐसा उलट देता है कि वे चूर चूर हो जाते हैं ॥

२६ वह उन्हें दुष्ट जानकर
सभों के देखते मारता है,

२७ क्योंकि उन्हों ने उसके पीछे चलना छोड़ दिया है,
और उसके किसी मार्ग पर चित्त न लगाया,

२८ यहां तक कि उनके कारण कंगालों की दोहाई उस तक पहुंची
और उस ने दीन लोगों की दोहाई सुनी ॥

२९ जब वह चैन देता तो उसे कौन दोषी ठहरा सकता है ?
और जब वह मुंह फेर ले, तब कौन उसका दर्शन पा सकता है ?
जाति भर के साथ और अकेले मनुष्य, दोनों के साथ उसका बराबर व्यवहार है

३० ताकि भक्तिहीन राज्य करता न रहे,
और प्रजा फन्दे में फंसाई न जाए ॥

३१ क्या किसी ने कभी ईश्वर से कहा, कि मैं ने दण्ड सहा, अब मैं भविष्य में बुराई न करूंगा,

३२ जो कुछ मुझे नहीं सूझ पड़ता, वह तू मुझे सिखा दे;
और यदि मैं ने टेढ़ा काम किया हो, तो भविष्य में वैसा न करूंगा ?

३३ क्या वह तेरे ही मन के अनुसार बदला पाए
क्योंकि तू उस से अप्रसन्न है ?
क्योंकि तुझे निर्णय करना है, न कि मुझे;
इस कारण जो कुछ तुझे समझ पड़ता है, वह कह दे ॥

३४ सब ज्ञानी पुरुष
वरन जितने बुद्धिमान मेरी सुनते हैं वे मुझ से कहेंगे, कि

३५ अय्यूब ज्ञान की बातें नहीं कहता,
और न उसके वचन समझ के साथ होते हैं ॥

३६ भला होता, कि अय्यूब अन्त तक परीक्षा में रहता,
क्योंकि उस ने अनर्थियों के से उत्तर दिए हैं ॥

३७ और वह अपने पाप में विरोध बढ़ाता है;
और हमारे बीच ताली बजाता है,

और ईश्वर के विरुद्ध बहुत सी बातें
बनाता है ।।

(एलीहू की वाणी)

३५ फिर एलीहू इस प्रकार और भी कहता गया,

२ कि क्या तू इसे अपना हक़ समझता है?
क्या तू दावा करता है कि तेरा धर्म ईश्वर के धर्म से अधिक है?
३ जो तू कहता है कि मुझे इस से क्या लाभ?
और मुझे पापी होने में और न होने में कौन सा अधिक अन्तर है?
४ मैं तुझे
और तेरे साथियों को भी एक संग उत्तर देता हूं ।।
५ आकाश की ओर दृष्टि करके देख;
और आकाशमण्डल को ताक, जो तुझ से ऊंचा है ।।
६ यदि तू ने पाप किया है तो ईश्वर का क्या बिगड़ता है?
यदि तेरे अपराध बहुत ही बढ़ जाएं तौभी तू उसके साथ क्या करता है?
७ यदि तू धर्मी है तो उसको क्या दे देता है;
वा उसे तेरे हाथ से क्या मिल जाता है?
८ तेरी दुष्टता का फल तुझ ऐसे ही पुरुष के लिये है,
और तेरे धर्म का फल भी मनुष्य मात्र के लिये है ।।
९ बहुत अन्धेर होने के कारण वे चिल्लाते हैं;
और बलवान के बाहुबल के कारण वे दोहाई देते हैं ।।
१० तौभी कोई यह नहीं कहता, कि मेरा सृजनेवाला ईश्वर कहां है,
जो रात में भी गीत गवाता है,
११ और हमें पृथ्वी के पशुओं से अधिक शिक्षा देता,
और आकाश के पक्षियों से अधिक बुद्धि देता है?
१२ वे दोहाई देते हैं परन्तु कोई उत्तर नहीं देता,
यह बुरे लोगों के घमण्ड के कारण होता है ।।
१३ निश्चय ईश्वर व्यर्थ बातें कभी नहीं सुनता,
और न सर्वशक्तिमान उन पर चित्त लगाता है ।।
१४ तो तू क्यों कहता है, कि वह मुझे दर्शन नहीं देता,
कि यह मुक़द्दमा उसके साम्हने है,
और तू उसकी बाट जोहता हुआ ठहरा है?
१५ परन्तु अभी तो उस ने क्रोध करके दण्ड नहीं दिया है,
और अभिमान पर चित्त बहुत नहीं लगाया;
१६ इस कारण अय्यूब व्यर्थ मुंह खोलकर अज्ञानता की बातें बहुत बनाता है ।।

३६ फिर एलीहू ने यह भी कहा,

२ कुछ ठहरा रह, और मैं तुझ को समझाऊंगा,
क्योंकि ईश्वर के पक्ष में मुझे कुछ और भी कहना है ।।
३ मैं अपने ज्ञान की बात दूर से ले आऊंगा,

और अपने सिरजनहार को धर्मी
ठहराऊंगा ।।
४ निश्चय मेरी बातें झूठी न होंगी,
वह जो तेरे संग है वह पूरा ज्ञानी है ।।
५ देख, ईश्वर सामर्थी है, और किसी
को तुच्छ नहीं जानता;
वह समझने की शक्ति में समर्थ है ।।
६ वह दुष्टों को जिलाए नहीं रखता,
और दीनों को उनका हक़ देता है ।।
७ वह धर्मियों से अपनी आंखें नहीं
फेरता,
वरन उनको राजाओं के संग सदा
के लिये सिंहासन पर बैठाता है,
और वे ऊंचे पद को प्राप्त करते हैं ।।
८ और चाहे वे बेड़ियों में जकड़े जाएं
और दुःख की रस्सियों से बान्धे जाएं,
९ तौभी ईश्वर उन पर उनके काम,
और उनका यह अपराध प्रगट
करता है, कि उन्हों ने गर्व किया है।।
१० वह उनके कान शिक्षा सुनने के लिये
खोलता है,
और आज्ञा देता है कि वे बुराई से
परे रहें ।।
११ यदि वे सुनकर उसकी सेवा करें,
तो वे अपने दिन कल्याण से,
और अपने वर्ष सुख से पूरे करते हैं ।।
१२ परन्तु यदि वे न सुनें, तो वे खड्ग
से नाश हो जाते हैं,
और अज्ञानता में मरते हैं ।।
१३ परन्तु वे जो मन ही मन भक्तिहीन
होकर क्रोध बढ़ाते,
और जब वह उनको बान्धता है, तब
भी दोहाई नहीं देते,
१४ वे जवानी में मर जाते हैं
और उनका जीवन लुच्चों के बीच
में नाश होता है ।।
१५ वह दुखियों को उनके दुःख से छुड़ाता
है,
और उपद्रव में उनका कान खोलता
है ।।
१६ परन्तु वह तुझ को भी क्लेश के
मुंह में से निकालकर
ऐसे चौड़े स्थान में जहां सकेती नहीं है,
पहुंचा देता है,
और चिकना चिकना भोजन तेरी
मेज़ पर परोसता * है ।।
१७ परन्तु तू ने दुष्टों का सा निर्णय
किया है †
इसलिये निर्णय और न्याय तुझ से
लिपटे रहते है ।।
१८ देख, तू जलजलाहट से उभर के ठट्ठा
मत कर, और
न प्रायश्चित्त को अधिक बड़ा जानकर
मार्ग से मुड़ ।।
१९ क्या तेरा रोना वा तेरा बल तुझे
दुःख से छुटकारा देगा ?
२० उस रात की अभिलाषा न कर,
जिस में देश देश के लोग अपने अपने
स्थान से मिटाए जाते हैं ।
२१ चौकस रह, अनर्थ काम की ओर
मत फिर,
तू ने तो दुःख ‡ से अधिक इसी को
चुन लिया है ।।
२२ देख, ईश्वर अपने सामर्थ्य से बड़े बड़
काम करता है,
उसके समान शिक्षक कौन है ?
२३ किस ने उसके चलने का मार्ग ठहराया
है ?

* मूल में—और तेरी मेज़ की उतराई चिकनाई से भरी ।
† मूल में—दुष्ट के निर्णय से भर गया ।
‡ वा दीनता ।

और कौन उस से कह सकता है,
कि तू ने अनुचित काम किया है ?
२४ उसके कामों की महिमा और प्रशंसा करने को स्मरण रख,
जिसकी प्रशंसा का गीत मनुष्य गाते चले आए हैं ।।
२५ सब मनुष्य उसको ध्यान से देखते आए हैं,
और मनुष्य उसे दूर दूर से देखता है ।।
२६ देख, ईश्वर महान और हमारे ज्ञान से कहीं परे है,
और उसके वर्ष की गिनती अनन्त है ।।
२७ क्योंकि वह तो जल की बूंदें ऊपर को खींच लेता है
वे कुहरे से मेंह होकर टपकती हैं,
२८ वे ऊंचे ऊंचे बादल उंडेलते हैं
और मनुष्यों के ऊपर बहुतायत से बरसाते हैं ।।
२९ फिर क्या कोई बादलों का फैलना
और उसके मण्डल में का गरजना समझ सकता है ?
३० देख, वह अपने उजियाले को चहुँओर फैलाता है,
और समुद्र की थाह को * ढांपता है।।
३१ क्योंकि वह देश देश के लोगों का न्याय इन्हीं से करता है,
और भोजनवस्तुएं बहुतायत से देता है ।।
३२ वह बिजली को अपने हाथ में लेकर †
उसे आज्ञा देता है कि दुश्मन पर गिरे ‡ ।।

* मूल में—जड़ को।
† मूल में—दोनों हाथ उजियाले से ढांपकर।
‡ मूल में—निशाना मारनेहारे की नाईं।

३३ इसकी कडक उसी का समाचार देती है
पशु भी प्रगट करते हैं कि अन्धड़ चढ़ा आता है ।।

३७ फिर इस बात पर भी मेरा हृदय कांपता है,
और अपने स्थान से उछल पड़ता है ।।
२ उसके बोलने का शब्द तो सुनो,
और उस शब्द को जो उसके मुंह से निकलता है सुनो ।।
३ वह उसको सारे आकाश के तले,
और अपनी बिजली * को पृथ्वी की छोर तक भेजता है ।।
४ उसके पीछे गरजने का शब्द होता है;
वह अपने प्रतापी शब्द से गरजता है,
और जब उसका शब्द सुनाई देता है तब बिजली लगातार चमकने लगती है † ।।
५ ईश्वर गरजकर अपना शब्द अद्भुत रीति से सुनाता है,
और बड़े बड़े काम करता है जिनको हम नहीं समझते ।।
६ वह तो हिम से कहता है, पृथ्वी पर गिर,
और इसी प्रकार मेंह को भी और मूसलाधार वर्षा को भी
ऐसी ही आज्ञा देता है ।।
७ वह सब मनुष्यों के हाथ पर मुहर ‡ कर देता है,
जिस से उसके बनाए हुए सब मनुष्य उसको पहचानें ।।

* मूल में—अपने उजियाले।
† मूल में—तब उन्हें नहीं रोकता।
‡ मूल में—हाथ।

८ तब वनपशु गुफाओं में घुस जाते,
और अपनी अपनी मांदों में रहते हैं ॥
९ दक्खिन दिशा से * बवण्डर
और उतरहिया से † जाड़ा आता है ॥
१० ईश्वर की श्वास की फूंक से बरफ पड़ता है,
तब जलाशयों का पाट जम जाता है ॥
११ फिर वह घटाओं को भाफ़ से लादता,
और अपनी बिजली से भरे हुए उजियाले का बादल दूर तक फैलाता है ॥
१२ वे उसकी बुद्धि की युक्ति से इधर उधर फिराए जाते हैं,
इसलिये कि जो आज्ञा वह उनको दे,
उसी को वे बसाई हुई पृथ्वी के ऊपर पूरी करें ॥
१३ चाहे ताड़ना देने के लिये, चाहे अपनी पृथ्वी की भलाई के लिये
वा मनुष्यों पर करुणा करने के लिये वह उसे भेजे ॥
१४ हे अय्यूब ! इस पर कान लगा और सुन ले;
चुपचाप खड़ा रह, और ईश्वर के आश्चर्यकर्मों का विचार कर ॥
१५ क्या तू जानता है, कि ईश्वर क्योंकर अपने बादलों को आज्ञा देता,
और अपने बादल की बिजली को चमकाता है ? ॥
१६ क्या तू घटाओं का तौलना,
वा सर्वज्ञानी के आश्चर्यकर्म जानता है ?
१७ जब पृथ्वी पर दक्खिनी हवा ही के कारण से सन्नाटा रहता है ‡,
तब तेरे वस्त्र क्यों गर्म हो जाते हैं ?
१८ फिर क्या तू उसके साथ आकाशमण्डल को तान सकता है,
जो ढाले हुए दर्पण के तुल्य दृढ़ है ?
१९ तू हमें यह सिखा कि उस से क्या कहना चाहिये ?
क्योंकि हम अन्धियारे के कारण अपना व्याख्यान ठीक नहीं रच सकते ॥
२० क्या उसको बताया जाए कि मैं बोलना चाहता हूं ?
क्या कोई अपना सत्यानाश चाहता है ?
२१ अभी तो आकाशमण्डल में का बड़ा प्रकाश देखा नहीं जाता
जब वायु चलकर उसको शुद्ध करती है ॥
२२ उत्तर दिशा से सुनहली ज्योति आती है
ईश्वर भययोग्य तेज से आभूषित है ॥
२३ सर्वशक्तिमान जो अति सामर्थी है,
और जिसका भेद हम पा नहीं सकते,
वह न्याय और पूर्ण धर्म को छोड़ अत्याचार * नहीं कर सकता ॥
२४ इसी कारण सज्जन उसका भय मानते हैं,
और जो अपनी दृष्टि में बुद्धिमान हैं,
उन पर वह दृष्टि नहीं करता ॥

(यहोवा और अय्यूब का वार्तालाप)

३८ तब यहोवा ने अय्यूब को आंधी में से यूं उत्तर दिया,
२ यह कौन है जो अज्ञानता की बातें कहकर

---

* मूल में—कोठरी से।
† मूल में—बिखेरनेहारों से।
‡ मूल में—जब पृथ्वी दक्खिन ही से चुपचाप होती है।

* मूल में—दबाने।

युक्ति को बिगाड़ना चाहता है * ?
३ पुरुष की नाईं अपनी कमर बान्ध ले,
क्योंकि मैं तुझ से प्रश्न करता हूं,
और तू मुझे उत्तर दे ।।
४ जब मैं ने पृथ्वी की नेव डाली, तब
तू कहां था ?
यदि तू समझदार हो तो उत्तर दे ।।
५ उसकी नाप किस ने ठहराई, क्या तू
जानता है
उस पर किस ने सूत खींचा ?
६ उसकी नेव कौन सी वस्तु पर रखी
गई †,
वा किस ने उसके कोने का पत्थर
बिठाया,
७ जब कि भोर के तारे एक संग आनन्द
से गाते थे
और परमेश्वर के सब पुत्र जयजयकार
करते थे ?
८ फिर जब समुद्र ऐसा फूट निकला
मानो वह गर्भ से फूट निकला,
तब किस ने द्वार मूंदकर उसको
रोक दिया;
९ जब कि मैं ने उसको बादल पहिनाया
और घोर अन्धकार में लपेट दिया,
१० और उसके लिये सिवाना बान्धा ‡,
और यह कहकर बेंड़े और किवाड़े
लगा दिए, कि
११ यहीं तक आ, और आगे न बढ़,
और तेरी उमंडनेवाली लहरें यहीं
थम जाएं ?
१२ क्या तू ने जीवन भर में कभी भोर
को आज्ञा दी,
और पौ को उसका स्थान जताया है,

* मूल में—अन्धेरा कर देता है।
† मूल में—बैठाई गई।
‡ मूल में—तोड़ा।

१३ ताकि वह पृथ्वी की छोरों को वश
में करे,
और दुष्ट लोग उस में से झाड़ दिए
जाएं ?
१४ वह ऐसा बदलता है जैसा मोहर के
नीचे चिकनी मिट्टी बदलती है,
और सब वस्तुएं मानो वस्त्र पहिने
हुए दिखाई देती हैं * ।।
१५ दुष्टों से उनका उजियाला † रोक
लिया जाता है,
और उनकी बढ़ाई हुई बांह तोड़ी
जाती है ।।
१६ क्या तू कभी समुद्र के सोतों तक
पहुंचा है,
वा गहिरे सागर की थाह में कभी
चला फिरा है ?
१७ क्या मृत्यु के फाटक तुझ पर प्रगट
हुए,
क्या तू घोर अन्धकार के फाटकों
को कभी देखने पाया है ?
१८ क्या तू ने पृथ्वी की चौड़ाई को पूरी
रीति से समझ लिया है ?
यदि तू यह सब जानता है, तो
बतला दे ।।
१९ उजियाले के निवास का मार्ग कहां है,
और अन्धियारे का स्थान कहां है ?
२० क्या तू उसे उसके सिवाने तक हटा
सकता है,
और उसके घर की डगर पहिचान
सकता है ?
२१ निःसन्देह तू यह सब कुछ जानता
होगा !
क्योंकि तू तो उस समय उत्पन्न
हुआ था,

* मूल में—खड़ी हो जाती हैं।
† अर्थात् अन्धियारा।

और तू बहुत आयु का है ।।
२२ फिर क्या तू कभी हिम के भण्डार में पैठा,
वा कभी ओलों के भण्डार को तू ने देखा है,
२३ जिसको मैं ने संकट के समय
और युद्ध और लड़ाई के दिन के लिये रख छोड़ा है ?
२४ किस मार्ग से उजियाला फैलाया जाता है,
और पुरवाई पृथ्वी पर बहाई* जाती है ?
२५ महावृष्टि के लिये किस ने नाला काटा,
और कड़कनेवाली बिजली के लिये मार्ग बनाया है,
२६ कि निर्जन देश में
और जंगल में जहां कोई मनुष्य नहीं रहता मेंह बरसाकर,
२७ उजाड़ ही उजाड़ देश को सींचे,
और हरी घास उगाए ?
२८ क्या मेंह का कोई पिता है,
और ओस की बूंदें किस ने उत्पन्न की ?
२९ किस के गर्भ से बर्फ निकला है,
और आकाश से गिरे हुए पाले को कौन उत्पन्न करता है ?
३० जल पत्थर के समान जम † जाता है,
और गहिरे पानी के ऊपर जमावट होती है ।।
३१ क्या तू कचपचिया का गुच्छा गूंथ सकता
वा मृगशिरा के बन्धन खोल सकता है ?

* मूल में—छितराई ।
† मूल में—छिप ।

३२ क्या तू राशियों को ठीक ठीक समय पर उदय कर सकता *,
वा सप्तर्षि को साथियों समेत लिए चल सकता है ?
३३ क्या तू आकाशमण्डल की विधियां जानता
और पृथ्वी पर उनका अधिकार ठहरा सकता है ?
३४ क्या तू बादलों तक अपनी वाणी पहुंचा सकता है †
ताकि बहुत जल बरस कर तुझे छिपा ले ?
३५ क्या तू बिजली को आज्ञा दे सकता है ‡, कि वह जाए,
और तुझ से कहे, मैं उपस्थित हूं ?
३६ किस ने अन्तःकरण में § बुद्धि उपजाई,
और मन में ‖ समझने की शक्ति किस ने दी है ?
३७ कौन बुद्धि से बादलों को गिन सकता है ?
और कौन आकाश के कुप्पों को ¶ उण्डेल सकता है,
३८ जब धूलि जम जाती है,
और ढेले एक दूसरे से सट जाते हैं ?
३९ क्या तू सिंहनी के लिये अहेर पकड़ सकता, और
जवान सिंहों का पेट भर सकता है,
४० जब वे मांद में बैठे हों

* मूल में—निकाल सकता ।
† मूल में—उठाए ।
‡ मूल में—भेज सकता है ।
§ मूल में—गुर्दों में ।
‖ वा कुक्कट में ।
¶ अर्थात् बादलों को ।

और आड़ में घात लगाए दबक कर बैठे हों ?
४१ फिर जब कौवे के बच्चे ईश्वर की दोहाई देते हुए
निराहार उड़ते फिरते हैं,
तब उनको आहार कौन देता है ?

३९ क्या तू जानता है कि पहाड़ पर की जंगली बकरियां कब बच्चे देती हैं ? वा जब हरिणियां बियाती हैं, तब क्या तू देखता रहता है ?
२ क्या तू उनके महीने गिन सकता है,
क्या तू उनके बियाने का समय जानता है
३ जब वे बैठकर अपने बच्चों को जनतीं,
वे अपनी पीड़ों से छूट जाती हैं ?
४ उनके बच्चे हृष्टपुष्ट होकर मैदान में बढ़ जाते हैं;
वे निकल जाते और फिर नहीं लौटते ।।
५ किस ने बनैले गदहे को स्वाधीन करके छोड़ दिया है ?
किस ने उसके बन्धन खोले हैं ?
६ उसका घर मैं ने निर्जल देश को,
और उसका निवास लोनिया भूमि को ठहराया है ।।
७ वह नगर के कोलाहल पर हंसता,
और हांकनेवाले की हांक सुनता भी नहीं ।।
८ पहाड़ों पर जो कुछ मिलता है उसे वह चरता
वह सब भांति की हरियाली ढूंढ़ता फिरता है ।।
९ क्या जंगली सांढ़ तेरा काम करने को प्रसन्न होगा ?
क्या वह तेरी चरनी के पास रहेगा ?
१० क्या तू जंगली सांढ़ को रस्से से बान्धकर रेघारियों में चला सकता है ?
क्या वह नालों में तेरे पीछे पीछे हेंगा फेरेगा ?
११ क्या तू उसके बड़े बल के कारण उस पर भरोसा करेगा ?
वा जो परिश्रम का काम तेरा हो, क्या तू उसे उस पर छोड़ेगा ?
१२ क्या तू उसका विश्वास करेगा, कि वह तेरा अनाज घर ले आए,
और तेरे खलिहान का अन्न इकट्ठा करे ?
१३ फिर शुतुरमुर्गी अपने पंखों को आनन्द से फुलाती है,
परन्तु क्या ये पंख और पर स्नेह को प्रगट करते हैं ?
१४ क्योंकि वह तो अपने अण्डे भूमि पर छोड़ देती
और धूलि में उन्हें गर्म करती है;
१५ और इसकी सुधि नहीं रखती, कि वे पांव से कुचले जाएंगे,
वा कोई वनपशु उनको कुचल डालेगा ।।
१६ वह अपने बच्चों से ऐसी कठोरता करती है कि मानो उसके नहीं हैं;
यद्यपि उसका कष्ट अकारथ होता है, तौभी वह निश्चिन्त रहती है;
१७ क्योंकि ईश्वर ने उसको बुद्धिरहित बनाया *,
और उसे समझने की शक्ति नहीं दी ।।
१८ जिस समय वह सीधी होकर अपने पंख फैलाती है,

* मूल में—उस से बुद्धि भुलाई ।

तब घोड़े और उसके सवार दोनों को
कुछ नहीं समझती है ।।
१९ क्या तू ने घोड़े को उसका बल
दिया है ?
क्या तू ने उसकी गर्दन में फहराती
हुई अयाल जमाई है ?
२० क्या उसको टिड्डी की सी उछलने
की शक्ति तू देता है ?
उसके फुंक्कारने का शब्द डरावना
होता है ।।
२१ वह तराई में टाप मारता है और
अपने बल से हर्षित रहता है,
वह हथियारबन्दों का साम्हना करने
को निकल पड़ता है ।।
२२ वह डर की बात पर हंसता, और
नहीं घबराता;
और तलवार से पीछे नहीं हटता ।।
२३ तर्कश और चमकता हुआ सांग और
भाला उस पर खड़खड़ाता है ।।
२४ वह रिस और क्रोध के मारे भूमि
को निगलता है;
जब नरसिंगे का शब्द सुनाई देता
है तब वह रुकता नहीं ।।
२५ जब जब नरसिंगा बजता तब तब
वह हिन हिन करता है,
और लड़ाई और अफसरों की
ललकार और जय-जयकार को दूर
से सूंघ लेता है ।।
२६ क्या तेरे समझाने से बाज़ उड़ता
है,
और दक्खिन की ओर उड़ने को
अपने पंख फैलाता है ?
२७ क्या उकाब तेरी आज्ञा से ऊपर चढ़
जाता है,
और ऊंचे स्थान पर अपना घोंसला
बनाता है ?
२८ वह चट्टान पर रहता
और चट्टान की चोटी और दृढ़स्थान
पर बसेरा करता है ।।
२९ वह अपनी आंखों से दूर तक देखता
है,
वहां से वह अपने अहेर को ताक
लेता है ।।
३० उसके बच्चे भी लोहू चूसते हैं;
और जहां घात किए हुए लोग होते
वहां वह भी होता है ।।

४० फिर यहोवा ने अय्यूब से यह
भी कहा :
२ क्या जो बकवास करता है वह
सर्वशक्तिमान से झगड़ा करे ?
जो ईश्वर से विवाद करता है वह
इसका उत्तर दे ।।
३ तब अय्यूब ने यहोवा को उत्तर
दिया :
४ देख, मैं तो तुच्छ हूं, मैं तुझे क्या
उत्तर दूं ?
मैं अपनी अंगुली दांत तले दबाता
हूं* ।।
५ एक बार तो मैं कह चुका, परन्तु
और कुछ न कहूंगा : हां दो बार
भी मैं कह चुका, परन्तु अब कुछ
और आगे न बढ़ूंगा ।।
६ तब यहोवा ने अय्यूब को आंधी में
से यह उत्तर दिया :
७ पुरुष की नाईं अपनी कमर बान्ध ले,
मैं तुझ से प्रश्न करता हूं, और तू
मुझे बता ।।
८ क्या तू मेरा न्याय भी व्यर्थ
ठहराएगा ?

* मूल में—अपना हाथ अपने मुंह पर रखूंगा ।

क्या तू आप निर्दोष ठहरने की मनसा
से मुझ को दोषी ठहराएगा ?
९ क्या तेरा बाहुबल ईश्वर के तुल्य है ?
क्या तू उसके समान शब्द से गरज
सकता है ?
१० अब अपने को महिमा और प्रताप
से संवार
और ऐश्वर्य्य और तेज के वस्त्र पहिन
ले ।।
११ अपने अति क्रोध की बाढ़ को बहा दे,
और एक एक घमण्डी को देखते ही
उसे नीचा कर ।।
१२ हर एक घमण्डी को देखकर झुका
दे, और
दुष्ट लोगों को जहां खड़े हों वहां
से गिरा दे ।।
१३ उनको एक संग मिट्टी में मिला * दे,
और उस गुप्त स्थान † में उनके
मुंह बान्ध दे ।।
१४ तब मैं भी तेरे विषय में मान लूंगा,
कि तेरा ही दहिना हाथ तेरा उद्धार
कर सकता है ।।
१५ उस जलगज को देख, जिसको मैं ने
तेरे साथ बनाया है,
वह बैल की नाईं घास खाता है ।।
१६ देख उसकी कटि में बल है,
और उसके पेट के पट्ठों में उसकी
सामर्थ्य रहती है ।।
१७ वह अपनी पूंछ को देवदार की नाईं
हिलाता है;
उसकी जांघों की नसें एक दूसरे से
मिली हुई हैं ।
१८ उसकी हड्डियां मानो पीतल की
नलियां हैं,

* मूल में—छिपा।
† मूल में—गुप्त।

उसकी पसुलियां मानो लोहे के बेंड़े
हैं ।।
१९ वह ईश्वर का मुख्य कार्य * है;
जो उसका सिरजनहार हो उसके
निकट तलवार लेकर आए !
२० निश्चय पहाड़ों पर उसका चारा
मिलता है,
जहां और सब वनपशु कलोल करते
हैं ।।
२१ वह छतनार वृक्षों के तले
नरकटों की आड़ में और कीच पर
लेटा करता है ।।
२२ छतनार वृक्ष उस पर छाया करते हैं,
वह नाले के बेंत के वृक्षों से घिरा
रहता है ।।
२३ चाहे नदी की बाढ़ भी हो तौभी वह
न घबराएगा,
चाहे यरदन भी बढ़कर उसके मुंह
तक आए परन्तु वह निर्भय रहेगा ।।
२४ जब वह चौकस हो तब † क्या कोई
उसको पकड़ सकेगा,
वा फन्दे लगाकर उसको नाथ सकेगा ?

४१ फिर क्या तू लिब्यातान अथवा
मगर को बंसी के द्वारा खींच
सकता है,
वा डोरी से उसकी जीभ दबा सकता
है ?
२ क्या तू उसकी नाक में नकेल लगा
सकता
वा उसका जबड़ा कील से बेध
सकता है ?
३ क्या वह तुझ से बहुत गिड़गिड़ाहट
करेगा,

* मूल में—मार्गों का पहिला है।
† मूल में—उसकी आंखों में।

वा तुझ से मीठी बातें बोलेगा ?
४ क्या वह तुझ से वाचा बान्धेगा
कि वह सदा तेरा दास रहे ?
५ क्या तू उस से ऐसे खेलेगा जैसे चिड़िया से, वा
अपनी लड़कियों का जी बहलाने को उसे बान्ध रखेगा ?
६ क्या मछुओं के दल उसे बिकाऊ माल समझेंगे ?
क्या वह उसे व्योपारियों में बांट देंगे ?
७ क्या तू उसका चमड़ा भाले से,
वा उसका सिर मछुवे के तिरशूलों से भर सकता है ?
८ तू उस पर अपना हाथ ही धरे,
तो लड़ाई को कभी न भूलेगा *, और
भविष्य में कभी ऐसा न करेगा ।।
९ देख, उसे पकड़ने की आशा निष्फल रहती है;
उसके देखने ही से मन कच्चा पड़ जाता है ।।
१० कोई ऐसा साहसी † नहीं, जो उसको भड़काए;
फिर ऐसा कौन है जो मेरे साम्हने ठहर सके ?
११ किस ने मुझे पहिले दिया है, जिसका बदला मुझे देना पड़े !
देख, जो कुछ सारी धरती पर ‡ है सो मेरा है ।।
१२ मैं उसके अंगों के विषय,
और उसके बड़े बल और उसकी बनावट की शोभा के विषय चुप न रहूंगा ।।

* मूल में—तू स्मरण रख ।
† मूल में—क्रूर ।
‡ मूल में—सारे आकाश के तले ।

१३ उसके ऊपर के पहिरावे को कौन उतार सकता है ?
उसके दांतों की दोनों पांतियों * के अर्थात् जबड़ों के बीच कौन आएगा ?
१४ उसके मुख के दोनों किवाड़ कौन खोल सकता है ?
उसके दांत चारों ओर से डरावने हैं ।।
१५ उसके छिलकों † की रेखाएं घमण्ड का कारण हैं;
वे मानो कड़ी छाप से बन्द किए हुए हैं ।।
१६ वे एक दूसरे से ऐसे जुड़े हुए हैं,
कि उन में कुछ वायु भी नहीं पैठ सकती ।।
१७ वे आपस में मिले हुए
और ऐसे सटे हुए हैं, कि अलग अलग नहीं हो सकते ।।
१८ फिर उसके छींकने से उजियाला चमक उठता है,
और उसकी आंखें भोर की पलकों के समान हैं ।।
१९ उसके मुंह से जलते हुए पलीते निकलते हैं,
और आग की चिनगारियां छूटती हैं ।।
२० उसके नथुनों से ऐसा धुआं निकलता है,
जैसा खौलती हुई हांड़ी और जलते हुए नरकटों से ।।
२१ उसकी सांस से कोयले सुलगते,
और उसके मुंह से आग की लौ निकलती है ।।

* मूल में—दुहरे बाग ।
† मूल में—उसके ढालों के नाले ।

२२ उसकी गर्दन में सामर्थ्य बनी रहती है,
और उसके साम्हने डर नाचता रहता है * ।।
२३ उसके मांस पर मांस चढ़ा हुआ है,
और ऐसा आपस में सटा हुआ है जो हिल नहीं सकता ।।
२४ उसका हृदय पत्थर सा दृढ़ है,
वरन चक्की के निचले पाट के समान दृढ़ है ।।
२५ जब वह उठने लगता है, तब सामर्थी भी डर जाते हैं,
और डर के मारे उनकी सुध बुध लोप हो जाती है ।।
२६ यदि कोई उस पर तलवार चलाए, तो उस से कुछ न बन पड़ेगा †;
और न भाले और न बर्छी और न तीर से ।।
२७ वह लोहे को पुआल सा,
और पीतल को सड़ी लकड़ी सा जानता है ।।
२८ वह तीर ‡ से भगाया नहीं जाता,
गोफन के पत्थर उसके लिये भूसे से ठहरते हैं ।।
२९ लाठियां भी भूसे के समान गिनी जाती हैं;
वह बर्छी के चलने पर हंसता है ।।
३० उसके निचले भाग पैने ठीकरे के समान हैं,
कीच पर मानो वह हेंगा फेरता है ।।
३१ वह गहिरे जल को हंडे की नाईं मथता है :
उसके कारण नील नदी * मरहम की हांडी के समान होती है ।।
३२ वह अपने पीछे चमकीली लीक छोड़ता जाता है ।
गहिरा जल मानो श्वेत दिखाई देने लगता है ।
३३ धरती पर उसके तुल्य और कोई नहीं है,
जो ऐसा निर्भय बनाया गया है ।।
३४ जो कुछ ऊंचा है, उसे वह ताकता ही रहता है,
वह सब घमण्डियों के ऊपर राजा है ।।

* मूल में—नाचती है।
† मूल में—खड़ा न होगी।
‡ मूल में—धनु के पुत्र।

(अय्यूब का वचन)

४२ तब अय्यूब ने यहोवा को उत्तर दिया;
२ मैं जानता हूं कि तू सब कुछ कर सकता है,
और तेरी युक्तियों में से कोई रुक नहीं सकती ।
३ तू कौन है जो ज्ञानरहित होकर युक्ति पर परदा डालता है † ?
परन्तु मैं ने तो जो नहीं समझता था वही कहा,
अर्थात् जो बातें मेरे लिये अधिक कठिन और मेरी समझ से बाहर थीं जिनको मैं जानता भी नहीं था ।।
४ मैं निवेदन करता हूं सुन, मैं कुछ कहूंगा,
मैं तुझ से प्रश्न करता हूं, तू मुझे बता दे ।
५ मैं ने कानों से तेरा समाचार सुना था,

* मूल में—समुद्र।
† मूल में—अन्धेरा कर देता है।

परन्तु अब मेरी आंखें तुझे देखती हैं;
६ इसलिये मुझे अपने ऊपर घृणा आती है,
और मैं धूलि और राख में पश्चात्ताप करता हूं ।।

(अय्यूब का घोर परीक्षा से छूटना)

७ और ऐसा हुआ कि जब यहोवा ये बातें अय्यूब से कह चुका, तब उस ने तेमानी एलीपज से कहा, मेरा क्रोध तेरे और तेरे दोनों मित्रों पर भड़का है, क्योंकि जैसी ठीक बात मेरे दास अय्यूब ने मेरे विषय कही है, वैसी तुम लोगों ने नहीं कही। ८ इसलिये अब तुम सात बैल और सात मेढ़े छांटकर मेरे दास अय्यूब के पास जाकर अपने निमित्त होमबलि चढ़ाओ, तब मेरा दास अय्यूब तुम्हारे लिये प्रार्थना करेगा, क्योंकि उसी की मैं ग्रहण करूंगा; और नहीं, तो मैं तुम से तुम्हारी मूढ़ता के योग्य बर्ताव करूंगा, क्योंकि तुम लोगों ने मेरे विषय मेरे दास अय्यूब की सी ठीक बात नहीं कही। ९ यह सुन तेमानी एलीपज, शूही बिल्दद और नामाती सोपर ने जाकर यहोवा की आज्ञा के अनुसार किया, और यहोवा ने अय्यूब की प्रार्थना ग्रहण की ।।

१० जब अय्यूब ने अपने मित्रों के लिये प्रार्थना की, तब यहोवा ने उसका सारा दुःख दूर किया *, और जितना अय्यूब का पहिले था, उसका दुगना यहोवा ने उसे दे दिया। ११ तब उसके सब भाई, और सब बहिनें, और जितने पहिले उसको जानते पहिचानते थे, उन सभों ने आकर उसके यहां उसके संग भोजन किया; और जितनी विपत्ति यहोवा ने उस पर डाली थी, उस सब के विषय उन्हों ने विलाप किया, और उसे शान्ति दी; और उसे एक एक सिक्का और सोने की एक एक बाली दी। १२ और यहोवा ने अय्यूब के पिछले दिनों में उसको अगले दिनों से अधिक आशीष दी; और उसके चौदह हजार भेंड़ बकरियां, छः हजार ऊंट, हजार जोड़ी बैल, और हजार गदहियां हो गईं। १३ और उसके सात बेटे और तीन बेटियां भी उत्पन्न हुईं। १४ इन में से उस ने जेठी बेटी का नाम तो यमीमा, दूसरी का कसीआ और तीसरी का केरेन्हप्पूक रखा। १५ और उस सारे देश में ऐसी स्त्रियां कहीं न थीं, जो अय्यूब की बेटियों के समान सुन्दर हों; और उनके पिता ने उनको उनके भाइयों के संग ही सम्पत्ति दी। १६ इसके बाद अय्यूब एक सौ चालीस वर्ष जीवित रहा, और चार पीढ़ी तक अपना वंश * देखने पाया। १७ निदान अय्यूब वृद्धावस्था में दीर्घायु † होकर मर गया।

* मूल में—उसको बन्धुआई से लौटा दिया।

* मूल में—बेटे पोते।

† मूल में—पुरनिया और दिनों से तृप्त।

भजन संहिता

पहिला भाग

१ क्या ही धन्य है वह पुरुष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता,
और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता;
और न ठट्ठा करनेवालों की मण्डली में बैठता है !
२ परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता;
और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है।
३ वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है।
और अपनी ऋतु में फलता है,
और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं।
इसलिये जो कुछ वह पुरुष करे वह सफल होता है ॥
४ दुष्ट लोग ऐसे नहीं होते,
वे उस भूसी के समान होते हैं, जो पवन से उड़ाई जाती है।
५ इस कारण दुष्ट लोग अदालत में स्थिर न रह सकेंगे,
और न पापी धर्मियों की मण्डली में ठहरेंगे;
६ क्योंकि यहोवा धर्मियों का मार्ग जानता है,
परन्तु दुष्टों का मार्ग नाश हो जाएगा ॥

२ जाति जाति के लोग क्यों हुल्लड़ मचाते हैं,
और देश देश के लोग व्यर्थ बातें क्यों सोच रहे हैं ?
२ यहोवा के और उसके अभिषिक्त के विरुद्ध पृथ्वी के राजा मिलकर,
और हाकिम आपस में सम्मति करके कहते हैं, कि
३ आओ, हम उनके बन्धन तोड़ डालें,
और उनकी रस्सियों को अपने ऊपर से उतार फेंके ॥
४ वह जो स्वर्ग में विराजमान है, हंसेगा;
प्रभु उनको ठट्ठों में उड़ाएगा।
५ तब वह उन से क्रोध करके बातें करेगा,
और क्रोध में कहकर उन्हें घबरा देगा, कि
६ मैं तो अपने ठहराए हुए राजा को अपने पवित्र पर्वत सिय्योन की राजगद्दी पर बैठा चुका हूं।
७ मैं उस वचन का प्रचार करूंगा :
जो यहोवा ने मुझ से कहा, तू मेरा पुत्र है,
आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ।
८ मुझ से मांग, और मैं जाति जाति के लोगों को तेरी सम्पति होने के लिये,

और दूर दूर के देशों को तेरी निज भूमि बनने के लिये दे दूंगा।
९ तू उन्हें लोहे के डण्डे से टुकड़े टुकड़े करेगा,
तू कुम्हार के बर्तन की नाईं उन्हें चकना चूर कर डालेगा॥
१० इसलिये अब, हे राजाओ, बुद्धिमान बनो;
हे पृथ्वी के न्यायियो, यह उपदेश ग्रहण करो।
११ डरते हुए यहोवा की उपासना करो,
और कांपते हुए मगन हो।
१२ पुत्र को चूमो ऐसा न हो कि वह क्रोध करे,
और तुम मार्ग ही में नाश हो जाओ;
क्योंकि क्षण भर में उसका क्रोध भड़कने को है॥
धन्य हैं वे जिनका भरोसा उस पर है॥

(दाऊद का भजन। जब वह अपने पुत्र अबशालोम के साम्हने से भागा जाता था)

३ हे यहोवा मेरे सतानेवाले कितने बढ़ गए हैं!
वे जो मेरे विरुद्ध उठते हैं बहुत हैं।
२ बहुत से मेरे प्राण के विषय में कहते हैं,
कि उसका बचाव परमेश्वर की ओर से नहीं हो सकता*। (सेला)
३ परन्तु हे यहोवा, तू तो मेरे चारों ओर मेरी ढाल है,
तू मेरी महिमा और मेरे मस्तक का ऊंचा करनेवाला है।
४ मैं ऊंचे शब्द से यहोवा को पुकारता हूं,
और वह अपने पवित्र पर्वत पर से मुझे उत्तर देता है। (सेला)
५ मैं लेटकर सो गया;
फिर जाग उठा, क्योंकि यहोवा मुझे सम्हालता है।
६ मैं उन दस हजार मनुष्यों से नहीं डरता,
जो मेरे विरुद्ध चारों ओर पांति बान्धे खड़े हैं॥
७ उठ, हे यहोवा! हे मेरे परमेश्वर मुझे बचा ले!
क्योंकि तू ने मेरे सब शत्रुओं के जबड़ों पर मारा है
और तू ने दुष्टों के दांत तोड़ डाले हैं॥
८ उद्धार यहोवा ही की ओर से होता है;
हे यहोवा तेरी आशीष तेरी प्रजा पर हो॥ (सेला)

(प्रधान बजानेवाले के लिये। तारवाले बाजों के साथ। दाऊद का भजन)

४ हे मेरे धर्ममय परमेश्वर, जब मैं पुकारूं तब तू मुझे उत्तर दे;
जब मैं सकेती में पड़ा तब तू ने मुझे विस्तार दिया।
मुझ पर अनुग्रह कर और मेरी प्रार्थना सुन ले॥
२ हे मनुष्यों के पुत्रो, कब तक मेरी महिमा के बदले अनादर होता रहेगा?
तुम कब तक व्यर्थ बातों से प्रीति रखोगे और झूठी युक्ति की खोज में रहोगे? (सेला)
३ यह जान रखो कि यहोवा ने भक्त को अपने लिये अलग कर रखा है;

* मूल में—परमेश्वर में नहीं।

जब मैं यहोवा को पुकारूंगा तब वह सुन लेगा ।।
४ कांपते रहो और पाप मत करो;
अपने अपने बिछौने पर मन ही मन सोचो और चुपचाप रहो। (सेला)
५ धर्म के बलिदान चढ़ाओ,
और यहोवा पर भरोसा रखो ।।
६ बहुत से हैं जो कहते हैं, कि कौन हम को कुछ भलाई दिखाएगा ?
हे यहोवा तू अपने मुख का प्रकाश हम पर चमका !
७ तू ने मेरे मन में उस से कहीं अधिक आनन्द भर दिया है, जो उनको अन्न और दाखमधु की बढ़ती से होता था।
८ मैं शान्ति से लेट जाऊंगा और सो जाऊंगा;
क्योंकि, हे यहोवा, केवल तू ही मुझ को एकान्त में निश्चिन्त रहने देता है ।।

(प्रधान बजानेवालों के लिये। बांसुलियों के साथ, दाऊद का भजन)

५ हे यहोवा, मेरे वचनों पर कान लगा;
मेरे ध्यान करने की ओर मन लगा।
२ हे मेरे राजा, हे मेरे परमेश्वर, मेरी दोहाई पर ध्यान दे,
क्योंकि मैं तुझी से प्रार्थना करता हूं।
३ हे यहोवा, भोर को मेरी वाणी तुझे सुनाई देगी,
मैं भोर को प्रार्थना करके तेरी बाट जोहूंगा।
४ क्योंकि तू ऐसा ईश्वर नहीं जो दुष्टता से प्रसन्न हो;
बुराई तेरे साथ नहीं रह सकती।
५ घमंडी तेरे सम्मुख खड़े होने न पाएंगे;
तुझे सब अनर्थकारियों से घृणा है।
६ तू उनको जो झूठ बोलते हैं नाश करेगा;
यहोवा तो हत्यारे और छली मनुष्य से घृणा करता है।
७ परन्तु मैं तो तेरी अपार करुणा के कारण तेरे भवन में आऊंगा,
मैं तेरा भय मानकर तेरे पवित्र मन्दिर की ओर दण्डवत् करूंगा।
८ हे यहोवा, मेरे शत्रुओं के कारण अपने धर्म के मार्ग में मेरी अगुआई कर;
मेरे आगे आगे अपने सीधे मार्ग को दिखा।
९ क्योंकि उनके मुंह में कोई सच्चाई नहीं;
उनके मन में निरी दुष्टता है।
उनका गला खुली हुई क़ब्र है,
वे अपनी जीभ से चिकनी चुपड़ी बातें करते हैं।
१० हे परमेश्वर तू उनको दोषी ठहरा;
वे अपनी ही युक्तियों से आप ही गिर जाएं;
उनको उनके अपराधों की अधिकाई के कारण निकाल बाहर कर,
क्योंकि उन्हों ने तुझ से बलवा किया है ।।
११ परन्तु जितने तुझ पर भरोसा रखते हैं वे सब आनन्द करें,
वे सर्वदा ऊंचे स्वर से गाते रहें;
क्योंकि तू उनकी रक्षा करता है,
और जो तेरे नाम के प्रेमी हैं तुझ में प्रफुल्लित हों।

१२ क्योंकि तू धर्मी को आशीष देगा;
हे यहोवा, तू उसको अपने अनुग्रहरूपी ढाल से घेरे रहेगा ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये। तारवाले बाजों के साथ। खर्ज में, दाऊद का भजन)

६ हे यहोवा, तू मुझे अपने क्रोध में न डांट,
और न झुंझलाहट में मुझे ताड़ना दे ।
२ हे यहोवा, मुझ पर अनुग्रह कर, क्योंकि मैं कुम्हला गया हूं;
हे यहोवा, मुझे चंगा कर, क्योंकि मेरी हड्डियों में बेचैनी है ।
३ मेरा प्राण भी बहुत खेदित है ।
और तू, हे यहोवा, कब तक ?
४ लौट आ, हे यहोवा, और मेरे प्राण बचा
अपनी करुणा के निमित्त मेरा उद्धार कर ।
५ क्योंकि मृत्यु के बाद तेरा स्मरण नहीं होता;
अधोलोक में कौन तेरा धन्यवाद करेगा ?
६ मैं कराहते कराहते थक गया;
मैं अपनी खाट आंसुओं से भिगोता हूं;
प्रति रात मेरा बिछौना भीगता है ।
७ मेरी आंखें शोक से बैठी जाती हैं,
और मेरे सब सतानेवालों के कारण वे धुन्धला गई हैं ।।
८ हे सब अनर्थकारियो मेरे पास से दूर हो;
क्योंकि यहोवा ने मेरे रोने का शब्द सुन लिया है ।
९ यहोवा ने मेरा गिड़गिड़ाना सुना है;
यहोवा मेरी प्रार्थना को ग्रहण भी करेगा ।
१० मेरे सब शत्रु लज्जित होंगे और बहुत ही घबराएंगे;
वे लौट जाएंगे, और एकाएक लज्जित होंगे ।।

(दाऊद का शिग्गायोन नाम भजन जो उस ने बिन्यामीनी कूश की बातों के कारण यहोवा के सामने गाया)

७ हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मेरा भरोसा तुझ पर है;
सब पीछा करनेवालों से मुझे बचा और छुटकारा दे,
२ ऐसा न हो कि वे मुझ को सिंह की नाईं फाड़कर टुकड़े टुकड़े कर डालें;
और कोई मेरा छुड़ानेवाला न हो ।।
३ हे मेरे परमेश्वर यहोवा, यदि मैं ने यह किया हो,
यदि मेरे हाथों से कुटिल काम हुआ हो,
४ यदि मैं ने अपने मेल रखनेवालों से भलाई के बदले बुराई की हो,
(वरन मैं ने उसको जो अकारण मेरा बैरी था बचाया है)
५ तो शत्रु मेरे प्राण का पीछा करके मुझे आ पकड़े,
वरन मेरे प्राण को भूमि पर रौंदे,
और मेरी महिमा को मिट्टी में मिला दे ।। (सेला)
६ हे यहोवा क्रोध करके उठ;
मेरे क्रोधभरे सतानेवाले के विरुद्ध तू खड़ा हो जा;
मेरे लिये जाग! तू ने न्याय की आज्ञा तो दे दी है ।

७ देश देश के लोगों की मण्डली तेरे चारों ओर हो;
और तू उनके ऊपर से होकर ऊंचे स्थानों पर लौट जा।
८ यहोवा समाज समाज का न्याय करता है;
यहोवा मेरे धर्म और खराई के अनुसार मेरा न्याय चुका दे।।
९ भला हो कि दुष्टों की बुराई का अन्त हो जाए, परन्तु धर्म को तू स्थिर कर;
क्योंकि धर्मी परमेश्वर मन और मर्म का ज्ञाता है।
१० मेरी ढाल परमेश्वर के हाथ में है,
वह सीधे मनवालों को बचाता है।।
११ परमेश्वर धर्मी और न्यायी है,
वरन ऐसा ईश्वर है जो प्रति दिन क्रोध करता है।।
१२ यदि मनुष्य न फिरे तो वह अपनी तलवार पर सान चढ़ाएगा;
वह अपना धनुष चढ़ाकर तीर सन्धान चुका है।
१३ और उस मनुष्य के लिये उस ने मृत्यु के हथियार तैयार कर लिए हैं:
वह अपने तीरों को अग्निबाण बनाता है।
१४ देख, दुष्ट को अनर्थ काम की पीड़ाएं हो रही हैं,
उसको उत्पात का गर्भ है, और उस से झूठ उत्पन्न हुआ।
उस ने गड़हा खोदकर उसे गहिरा किया,
१५ और जो खाई उस ने बनाई थी उस में वह आप ही गिरा।
१६ उसका उत्पात पलट कर उसी के सिर पर पड़ेगा;
और उसका उपद्रव उसी के माथे पर पड़ेगा।।
१७ मैं यहोवा के धर्म के अनुसार उसका धन्यवाद करूंगा,
और परमप्रधान यहोवा के नाम का भजन गाऊंगा।।

(प्रधान बजानेवालों के लिये। गित्तीत की राग पर दाऊद का भजन)

८ हे यहोवा हमारे प्रभु, तेरा नाम सारी पृथ्वी पर क्या ही प्रतापमय है!
तू ने अपना विभव स्वर्ग पर दिखाया है।
२ तू ने अपने बैरियों के कारण बच्चों और दूध पिउवों के द्वारा * सामर्थ्य की नेव डाली है,
ताकि तू शत्रु और पलटा लेनेवालों को रोक रखे।
३ जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों † का कार्य है,
और चंद्रमा और तारागण को जो तू ने नियुक्त किए हैं, देखता हूं;
४ तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे,
और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले?
५ क्योंकि तू ने उसको परमेश्वर ‡ से थोड़ा ही कम बनाया है,
और महिमा और प्रताप का मुकुट उसके सिर पर रखा है।

---

* मूल में—मुंह से।
† मूल में—अंगुलियों।
‡ वा स्वर्गदूतों से।

६ तू ने उसे अपने हाथों के कार्यों पर
प्रभुता दी है;
तू ने उसके पांव तले सब कुछ कर
दिया है।
७ सब भेड़-बकरी और गाय-बैल
और जितने वनपशु हैं,
८ आकाश के पक्षी और समुद्र की
मछलियां,
और जितने जीव-जन्तु समुद्रों में
चलते फिरते हैं।
९ हे यहोवा, हे हमारे प्रभु,
तेरा नाम सारी पृथ्वी पर क्या ही
प्रतापमय है।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये मुतलब्बैयन
की राग पर दाऊद का भजन)

९ हे यहोवा परमेश्वर मैं अपने
पूर्ण मन से तेरा धन्यवाद
करूंगा;
मैं तेरे सब आश्चर्य कर्मों का वर्णन
करूंगा।
२ मैं तेरे कारण आनन्दित और प्रफु-
ल्लित होऊंगा,
हे परमप्रधान, मैं तेरे नाम का भजन
गाऊंगा।।
३ जब मेरे शत्रु पीछे हटते हैं,
तो वे तेरे साम्हने से ठोकर खाकर
नाश होते हैं।
४ क्योंकि तू ने मेरा न्याय और मुक़द्दमा
चुकाया है;
तू ने सिंहासन पर विराजमान होकर
धर्म से न्याय किया।
५ तू ने अन्यजातियों को झिड़का और
दुष्ट को नाश किया है;
तू ने उनका नाम अनन्तकाल के
लिये मिटा दिया है।
६ शत्रु जो हैं, वह मर गए, वे अनन्तकाल
के लिये उजड़ गए हैं;
और जिन नगरों को तू ने ढा दिया,
उनका नाम वा निशान भी मिट
गया है।।
७ परन्तु यहोवा सदैव सिंहासन पर
विराजमान है,
उस ने अपना सिंहासन न्याय के
लिये सिद्ध किया है;
८ और वह आप ही जगत का न्याय
धर्म से करेगा,
वह देश देश के लोगों का मुक़द्दमा
खराई से निपटाएगा।।
९ यहोवा पिसे हुओं के लिये ऊंचा गढ़
ठहरेगा,
वह संकट के समय के लिये भी
ऊंचा गढ़ ठहरेगा।
१० और तेरे नाम के जाननेवाले तुझ
पर भरोसा रखेंगे,
क्योंकि हे यहोवा तू ने अपने खोजियों
को त्याग नहीं दिया।।
११ यहोवा जो सिय्योन में विराजमान
है, उसका भजन गाओ!
जाति जाति के लोगों के बीच में
उसके महाकर्मों का प्रचार
करो!
१२ क्योंकि खून का पलटा लेनेवाला
उनको स्मरण करता है;
वह दीन लोगों की दोहाई को नहीं
भूलता।।
१३ हे यहोवा, मुझ पर अनुग्रह कर।
तू जो मुझे मृत्यु के फाटकों के पास
से उठाता है,
मेरे दुःख को देख जो मेरे बैरी मुझे
दे रहे हैं,

१४ ताकि मैं सिय्योन * के फाटकों के पास तेरे सब गुणों का वर्णन करूं,
और तेरे किए हुए उद्धार से मगन होऊं ।।
१५ अन्य जातिवालों ने जो गड़हा खोदा था, उसी में वे आप गिर पड़े;
जो जाल उन्हों ने लगाया था, उस में उन्हीं का पांव फंस गया ।
१६ यहोवा ने अपने को प्रगट किया, उस ने न्याय किया है;
दुष्ट अपने किए हुए कामों में फंस जाता है ।।

(हिग्गायोन, सेला)

१७ दुष्ट अधोलोक में लौट जाएंगे,
तथा वे सब जातियां भी जो परमेश्वर को भूल जाती हैं ।
१८ क्योंकि दरिद्र लोग अनन्तकाल तक बिसरे हुए न रहेंगे,
और न तो नम्र लोगों की आशा सर्वदा के लिये नाश होगी ।
१९ उठ, हे परमेश्वर, मनुष्य प्रबल न होने पाए !
जातियों का न्याय तेरे सम्मुख किया जाए ।
२० हे परमेश्वर, उनको भय दिला !
जातियां अपने को मनुष्यमात्र ही जानें । (सेला)

१० हे यहोवा तू क्यों दूर खड़ा रहता है ?
संकट के समय में क्यों छिपा रहता है ?
२ दुष्टों के अहंकार के कारण दीन मनुष्य खदेड़े जाते हैं;
वे अपनी ही निकाली हुई युक्तियों में फंस जाएं ।।
३ क्योंकि दुष्ट अपनी अभिलाषा पर घमण्ड करता है,
और लोभी परमेश्वर को त्याग देता है और उसका तिरस्कार करता है ।।
४ दुष्ट अपने अभिमान के कारण कहता है कि वह लेखा नहीं लेने का;
उसका पूरा विचार यही है कि कोई परमेश्वर है ही नहीं ।।
५ वह अपने मार्ग पर दृढ़ता से बना रहता है;
तेरे न्याय के विचार ऐसे ऊंचे पर होते हैं, कि उसकी दृष्टि वहां तक नहीं पहुंचती;
जितने उसके विरोधी हैं उन पर वह फुंकारता है ।
६ वह अपने मन में कहता है कि मैं कभी टलने का नहीं :
मैं पीढ़ी से पीढ़ी तक दुःख से बचा रहूंगा ।।
७ उसका मुंह शाप और छल और अन्धेर से भरा है;
उत्पात और अनर्थ की बातें उसके मुंह में हैं ।
८ वह गांवों के घातों में बैठा करता है,
और गुप्त स्थानों में निर्दोष को घात करता है,
उसकी आंखें लाचार की घात में लगी रहती हैं ।
९ जैसा सिंह अपनी झाड़ी में वैसा ही वह भी छिपकर घात में बैठा करता है;
वह दीन को पकड़ने के लिये घात लगाए रहता है,

* मूल में—सिय्योन की पुत्री ।

वह दीन को अपने जाल में फंसाकर घसीट लाता है, तब उसे पकड़ लेता है।

१० वह झुक जाता है और वह दबक कर बैठता है;
और लाचार लोग उसके महाबली हाथों से पटके जाते हैं।

११ वह अपने मन में सोचता है, कि ईश्वर भूल गया,
वह अपना मुंह छिपाता * है; वह कभी नहीं देखेगा॥

१२ उठ, हे यहोवा; हे ईश्वर, अपना हाथ बढ़ा; और दीनों को न भूल।

१३ परमेश्वर को दुष्ट क्यों तुच्छ जानता है, और अपने मन में कहता है कि तू लेखा न लेगा?

१४ तू ने देख लिया है, क्योंकि तू उत्पात और कलपाने पर दृष्टि रखता है, ताकि उसका पलटा अपने हाथ में रखे †;
लाचार अपने को तेरे हाथ में सौंपता है;
अनाथों का तू ही सहायक रहा है।

१५ दुष्ट की भुजा को तोड़ डाल;
और दुर्जन की दुष्टता को ढूंढ़ ढूंढ़ कर निकाल जब तक कि सब उसमें से दूर न हो जाए।

१६ यहोवा अनन्तकाल के लिये महाराज है;
उसके देश में से अन्यजाति लोग नाश हो गए हैं॥

१७ हे यहोवा, तू ने नम्र लोगों की अभिलाषा सुनी है;
तू उनका मन तैयार करेगा, तू कान लगाकर सुनेगा

१८ कि अनाथ और पिसे हुए का न्याय करे,
ताकि मनुष्य जो मिट्टी से बना है फिर भय दिखाने न पाए॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये। दाऊद का भजन)

११ मेरा भरोसा परमेश्वर पर है; तुम क्योंकर मेरे प्राण से कहते हो
कि पक्षी की नाईं अपने पहाड़ पर उड़ जा?

२ क्योंकि देखो, दुष्ट अपना धनुष चढ़ाते हैं,
और अपना तीर धनुष की डोरी पर रखते हैं,
कि सीधे मनवालों पर अन्धियारे में तीर चलाएं।

३ यदि नेवें ढा दी जाएं
तो धर्मी क्या कर सकता है?

४ परमेश्वर अपने पवित्र भवन में है;
परमेश्वर का सिंहासन स्वर्ग में है;
उसकी आंखें मनुष्य की सन्तान को नित देखती रहती हैं और उसकी पलकें उनको जांचती हैं।

५ यहोवा धर्मी को परखता है,
परन्तु वह उन से जो दुष्ट हैं और उपद्रव से प्रीति रखते हैं अपनी आत्मा में घृणा करता है।

६ वह दुष्टों पर फन्दे बरसाएगा;
आग और गन्धक और प्रचण्ड लूह उनके कटोरों में बांट दी जाएंगी।

---

* मूल में—छिपाया।
† मूल में—उसे अपने हाथ में रखे।

७ क्योंकि यहोवा धर्मी है, वह धर्म के ही कामों से प्रसन्न रहता है;
धर्मीजन उसका दर्शन पाएंगे ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये खर्ज की राग में दाऊद का भजन)

१२ हे परमेश्वर बचा ले, क्योंकि एक भी भक्त नहीं रहा;
मनुष्यों में से विश्वासयोग्य लोग मर मिटे हैं।
२ उन में से प्रत्येक अपने पड़ोसी से झूठी बातें कहता है;
वे चापलूसी के ओठों से दो रंगी बातें करते हैं ।।
३ प्रभु सब चापलूस ओठों को
और उस जीभ को जिस से बड़ा बोल निकलता है काट डालेगा।
४ वे कहते हैं कि हम अपनी जीभ ही से * जीतेंगे,
हमारे ओंठ हमारे ही वश में हैं;
हमारा प्रभु कौन है ?
५ दीन लोगों के लुट जाने, और दरिद्रों के कराहने के कारण,
परमेश्वर कहता है, अब मैं उठूंगा,
जिस पर वे फुंकारते हैं उसे मैं चैन विश्राम दूंगा †।
६ परमेश्वर का वचन पवित्र है,
उस चान्दी के समान जो भट्ठी में मिट्टी पर ताई गई,
और सात बार निर्मल की गई हो ।।
७ तू ही हे परमेश्वर उनकी रक्षा करेगा,
उनको इस काल के लोगों से सर्वदा के लिये बचाए रखेगा।
८ जब मनुष्यों में नीचपन का आदर होता है,
तब दुष्ट लोग चारों ओर अकड़ते फिरते हैं ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन)

१३ हे परमेश्वर तू कब तक ? क्या सदैव मुझे भूला रहेगा ?
तू कब तक अपना मुखड़ा मुझ से छिपाए रहेगा ?
२ मैं कब तक अपने मन ही मन में युक्तियां करता रहूं,
और दिन भर अपने हृदय में दुखित रहा करूं,
कब तक मेरा शत्रु मुझ पर प्रबल रहेगा ?
३ हे मेरे परमेश्वर यहोवा मेरी ओर ध्यान दे और मुझे उत्तर दे,
मेरी आंखों में ज्योति आने दे, नहीं तो मुझे मृत्यु की नींद आ जाएगी;
४ ऐसा न हो कि मेरा शत्रु कहे, कि मैं उस पर प्रबल हो गया;
और ऐसा न हो कि जब मैं डगमगाने लगूं तो मेरे शत्रु मगन हों ।।
५ परन्तु मैं ने तो तेरी करुणा पर भरोसा रखा है;
मेरा हृदय तेरे उद्धार से मगन होगा।
६ मैं परमेश्वर के नाम का भजन गाऊंगा,
क्योंकि उस ने मेरी भलाई की है ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन)

१४ मूर्ख ने अपने मन में कहा है, कोई परमेश्वर है ही नहीं।
वे बिगड़ गए, उन्हों ने घिनौने काम किए हैं, कोई सुकर्मी नहीं।

---

* मूल में—अपनी जीभ के द्वारा।
† या जिस पर लोग फुफकार मारते हैं उसको मैं अभय दान दूंगा।

२ परमेश्वर ने स्वर्ग में से मनुष्यों पर दृष्टि की है,
कि देखे कि कोई बुद्धिमान,
कोई परमेश्वर का खोजी है या नहीं।
३ वे सब के सब भटक गए, वे सब भ्रष्ट हो गए;
कोई सुकर्मी नहीं, एक भी नहीं।
४ क्या किसी अनर्थकारी को कुछ भी ज्ञान नहीं रहता,
जो मेरे लोगों को ऐसे खा जाते हैं जैसे रोटी,
और परमेश्वर का नाम नहीं लेते ?
५ वहां उन पर भय छा गया,
क्योंकि परमेश्वर धर्मी लोगों के बीच में निरन्तर रहता है।
६ तुम तो दीन की युक्ति की हंसी उड़ाते हो
इसलिये कि यहोवा उसका शरणस्थान है।
७ भला हो कि इस्राएल का उद्धार सिय्योन से प्रगट होता !
जब यहोवा अपनी प्रजा को दासत्व से लौटा ले आएगा,
तब याकूब मगन और इस्राएल आनन्दित होगा।।

(दाऊद का भजन)

१५ हे परमेश्वर तेरे तम्बू में कौन रहेगा ?
तेरे पवित्र पर्वत पर कौन बसने पाएगा ?
२ वह जो खराई से चलता और धर्म के काम करता है,
और हृदय से सच बोलता है;
३ जो अपनी जीभ से निन्दा नहीं करता,
और न अपने मित्र की बुराई करता,
और न अपने पड़ोसी की निन्दा सुनता है;
४ वह जिसकी दृष्टि में निकम्मा मनुष्य तुच्छ है,
और जो यहोवा के डरवैयों का आदर करता है,
जो शपथ खाकर बदलता नहीं चाहे हानि उठाना पड़े;
५ जो अपना रुपया ब्याज पर नहीं देता,
और निर्दोष की हानि करने के लिये घूस नहीं लेता है।
जो कोई ऐसी चाल चलता है वह कभी न डगमगाएगा।।

(दाऊद का मिक्ताम)

१६ हे ईश्वर मेरी रक्षा कर, क्योंकि मैं तेरा ही शरणागत हूं।
मैं ने परमेश्वर से कहा है, कि तू ही मेरा प्रभु है;
तेरे सिवाए मेरी भलाई कहीं नहीं।
२ पृथ्वी पर जो पवित्र लोग हैं,
वे ही आदर के योग्य हैं, और उन्हीं से मैं प्रसन्न रहता हूं।
३ जो पराए देवता के पीछे भागते हैं उनका दुःख बढ़ जाएगा;
मैं उनके लोहूवाले तपावन नहीं तपाऊंगा
और उनका नाम अपने ओठों से नहीं लूंगा *।।
४ यहोवा मेरा भाग और मेरे कटोरे का हिस्सा है;
मेरे बांट को तू स्थिर रखता है।
५ मेरे लिये माप की डोरी मनभावने स्थान में पड़ी,

* मूल में—अपने होठों पर नहीं लेने का।

ग्रौर मेरा भाग मनभावना है ।।
७ मैं यहोवा को धन्य कहता हूं, क्योंकि
उस ने मुझे सम्मति दी है;
वरन मेरा मन भी रात में मुझे
शिक्षा देता है ।
८ मैं ने यहोवा को निरन्तर ग्रपने
सम्मुख रखा है * :
इसलिये कि वह मेरे दहिने हाथ
रहता है मैं कभी न डगमगाऊंगा ।।
९ इस कारण मेरा हृदय ग्रानन्दित
ग्रौर मेरी ग्रात्मा † मगन हुई;
मेरा शरीर भी चैन से रहेगा ।
१० क्योंकि तू मेरे प्राण को ग्रधोलोक
में न छोड़ेगा,
न ग्रपने पवित्र भक्त को सड़ने
देगा ।।
११ तू मुझे जीवन का रास्ता दिखाएगा;
तेरे निकट ग्रानन्द की भरपूरी है,
तेरे दहिने हाथ में सुख सर्वदा बना
रहता है ।।

(दाऊद की प्रार्थना)

१७ हे यहोवा परमेश्वर सच्चाई
के वचन सुन, मेरी पुकार
की ग्रोर ध्यान दे !
मेरी प्रार्थना की ग्रोर जो निष्कपट
मुंह से निकलती है कान लगा !
२ मेरे मुक़द्दमे का निर्णय तेरे सम्मुख
हो !
तेरी ग्रांखें न्याय पर लगी रहें !
३ तू ने मेरे हृदय को जांचा है; तू ने
रात को मेरी देखभाल की,
तू ने मुझे परखा परन्तु कुछ भी
खोटापन नहीं पाया;

* मूल में—रखता।
† मूल में—महिमा।

मैं ने ठान लिया है कि मेरे मुंह से
ग्रपराध की बात नहीं निकलेगी ।
४ मानवी कामों में—मैं तेरे मुंह के
वचन के द्वारा
क्रूरों की सी चाल से ग्रपने को
बचाए रहा ।
५ मेरे पांव तेरे पथों में स्थिर रहे,
फिसले नहीं ।।
६ हे ईश्वर, मैं ने तुझ से प्रार्थना की
है, क्योंकि तू मुझे उत्तर देगा ।
ग्रपना कान मेरी ग्रोर लगाकर मेरी
बिनती सुन ले ।
७ तू जो ग्रपने दहिने हाथ के द्वारा ग्रपने
शरणागतों को उनके विरोधियों से
बचाता है,
ग्रपनी ग्रद्भुत करुणा दिखा ।
८ ग्रपनी ग्रांखों की पुतली की नाईं
सुरक्षित रख;
ग्रपने पंखों के तले मुझे छिपा रख,
९ उन दुष्टों से जो मुझ पर ग्रत्याचार
करते हैं,
मेरे प्राण के शत्रुग्रों से जो मुझे
घेरे हुए हैं ।।
१० उन्हों ने ग्रपने हृदयो को कठोर
किया है;
उनके मुंह से घमंड की बातें निकलती
हैं ।
११ उन्हों ने पग पग पर हमको घेरा है;
वे हमको भूमि पर पटक देने के
लिये घात लगाए हुए हैं ।
१२ वह उस सिंह की नाईं है जो ग्रपने
शिकार की लालसा करता है,
ग्रौर जवान सिंह की नाईं घात लगाने
के स्थानों में बैठा रहता है ।।
१३ उठ, हे यहोवा !
उसका सामना कर ग्रौर उसे पटक दे !

अपनी तलवार के बल से मेरे प्राण को दुष्ट से बचा ले।

१४ अपना हाथ बढ़ाकर हे यहोवा, मुझे मनुष्यों से बचा,
अर्थात् संसारी मनुष्यों से जिनका भाग इसी जीवन में है,
और जिनका पेट तू अपने भण्डार से भरता है।
वे बालबच्चों से सन्तुष्ट हैं;
और शेष सम्पत्ति अपने बच्चों के लिये छोड़ जाते हैं॥

१५ परन्तु मैं तो धर्मी होकर तेरे मुख का दर्शन करूंगा
जब मैं जागूंगा तब तेरे स्वरूप से सन्तुष्ट हूंगा॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये। यहोवा के दास दाऊद का गीत, जिसके वचन उस ने यहोवा के लिये उस समय गाये जब यहोवा ने उसको उसके सारे शत्रुओं के हाथ से, और शाऊल के हाथ से बचाया था, उस ने कहा:)

१८ हे परमेश्वर, हे मेरे बल, मैं तुझ से प्रेम करता हूं।

२ यहोवा मेरी चट्टान, और मेरा गढ़ और मेरा छुड़ानेवाला है;
मेरा ईश्वर, मेरी चट्टान है, जिसका मैं शरणागत हूं,
वह मेरी ढाल और मेरी मुक्ति का सींग, और मेरा ऊंचा गढ़ है।

३ मैं यहोवा को जो स्तुति के योग्य है पुकारूंगा;
इस प्रकार मैं अपने शत्रुओं से बचाया जाऊंगा॥

४ मृत्यु की रस्सियों से मैं चारों ओर घिर गया हूं,
और अधर्म की बाढ़ ने मुझ को भयभीत कर दिया;

५ पाताल की रस्सियां मेरे चारों ओर थीं,
और मृत्यु के फन्दे मुझ पर आए थे।

६ अपने संकट में मैं ने यहोवा परमेश्वर को पुकारा;
मैं ने अपने परमेश्वर की दोहाई दी।
और उस ने अपने मन्दिर में से मेरी बातें सुनी।
और मेरी दोहाई उसके पास पहुंचकर उसके कानों में पड़ी॥

७ तब पृथ्वी हिल गई, और कांप उठी
और पहाड़ों की नेवें कंपित होकर हिल गईं क्योंकि वह अति क्रोधित हुआ था।

८ उसके नथनों से धूआं निकला,
और उसके मुंह से आग निकलकर भस्म करने लगी;
जिस से कोएले दहक उठे।

९ और वह स्वर्ग को नीचे झुकाकर उतर आया;
और उसके पांवों तले घोर अन्धकार था।

१० और वह करूब पर सवार होकर उड़ा,
वरन पवन के पंखों पर सवारी करके वेग से उड़ा।

११ उस ने अन्धियारे को अपने छिपने का स्थान और अपने चारों ओर मेघों के* अन्धकार और आकाश की काली घटाओं का मण्डप बनाया।

---

* मूल में—जलों का।

१२ उसकी उपस्थिति की झलक से उसकी काली घटाएं फट गईं;
ओले और अंगारे।
१३ तब यहोवा आकाश में गरजा,
और परमप्रधान ने अपनी वाणी सुनाई,
ओले और अंगारे॥
१४ उस ने अपने तीर चला चलाकर उनको तितर बितर किया;
वरन बिजलियां गिरा गिराकर उनको परास्त किया।
१५ तब जल के नाले देख पड़े,
और जगत की नेवें प्रगट हुईं,
यह तो हे यहोवा तेरी डांट से,
और तेरे नथनों की सांस की झोंक से हुआ॥
१६ उस ने ऊपर से हाथ बढ़ाकर मुझे थाम लिया,
और गहिरे जल में से खींच लिया।
१७ उस ने मेरे बलवन्त शत्रु से,
और उन से जो मुझ से घृणा करते थे मुझे छुड़ाया; क्योंकि वे अधिक सामर्थी थे।
१८ मेरी विपत्ति के दिन वे मुझ पर आ पड़े।
परन्तु यहोवा मेरा आश्रय था।
१९ और उस ने मुझे निकालकर चौड़े स्थान में पहुंचाया,
उस ने मुझ को छुड़ाया, क्योंकि वह मुझ से प्रसन्न था।
२० यहोवा ने मुझ से मेरे धर्म के अनुसार व्यवहार किया;
और मेरे हाथों की शुद्धता के अनुसार उस ने मुझे बदला दिया।
२१ क्योंकि मैं यहोवा के मार्गों पर चलता रहा,
और दुष्टता के कारण अपने परमेश्वर से दूर न हुआ।
२२ क्योंकि उसके सारे निर्णय मेरे सम्मुख बने रहे
और मैं ने उसकी विधियों को न त्यागा।
२३ और मैं उसके सम्मुख सिद्ध बना रहा,
और अधर्म से* अपने को बचाए रहा।
२४ यहोवा ने मुझे मेरे धर्म के अनुसार बदला दिया,
और मेरे हाथों की उस शुद्धता के अनुसार जिसे वह देखता था॥
२५ दयावन्त के साथ तू अपने को दयावन्त दिखाता;
और खरे पुरुष के साथ तू अपने को खरा दिखाता है।
२६ शुद्ध के साथ तू अपने को शुद्ध दिखाता,
और टेढ़े के साथ तू तिर्छा बनता है।
२७ क्योंकि तू दीन लोगों को तो बचाता है;
परन्तु घमण्ड भरी आंखों को नीची करता है।
२८ हां, तू ही मेरे दीपक को जलाता है;
मेरा परमेश्वर यहोवा मेरे अन्धियारे को उजियाला कर देता है।
२९ क्योंकि तेरी सहायता से मैं सेना पर धावा करता हूं;
और अपने परमेश्वर की सहायता से शहरपनाह को लांघ जाता हूं।
३० ईश्वर का मार्ग सच्चाई;
यहोवा का वचन ताया हुआ है;

* मूल में—अपने अधर्म से।

वह अपने सब शरणागतों की ढाल है ॥

३१ यहोवा को छोड़ क्या कोई ईश्वर है ?
हमारे परमेश्वर को छोड़ क्या और कोई चट्टान है ?

३२ यह वही ईश्वर है, जो सामर्थ से मेरा कटिबन्ध बान्धता है,
और मेरे मार्ग को सिद्ध करता है।

३३ वही मेरे पैरों को हरिणियों के पैरों के समान बनाता है,
और मुझे मेरे ऊंचे स्थानों पर खड़ा करता है।

३४ वह मेरे हाथों को युद्ध करना सिखाता है,
इसलिये मेरी बाहों से पीतल का धनुष झुक जाता है।

३५ तू ने मुझ को अपने बचाव की ढाल दी है,
तू अपने दहिने हाथ से मुझे सम्भाले हुए है,
और तेरी नम्रता ने महत्व दिया है।

३६ तू ने मेरे पैरों के लिये स्थान चौड़ा कर दिया,
और मेरे पैर नहीं फिसले।

३७ मैं अपने शत्रुओं का पीछा करके उन्हें पकड़ लूंगा;
और जब तक उनका अन्त न करूं तब तक न लौटूंगा।

३८ मैं उन्हें ऐसा बेधूंगा कि वे उठ न सकेंगे;
वे मेरे पांवों के नीचे गिर पड़ेंगे।

३९ क्योंकि तू ने युद्ध के लिये मेरी कमर में शक्ति का पटुका बान्धा है;
और मेरे विरोधियों को मेरे सम्मुख नीचा कर दिया।

४० तू ने मेरे शत्रुओं की पीठ मेरी ओर फेर दी,
ताकि मैं उनको काट डालूं जो मुझ से द्वेष रखते हैं।

४१ उन्हों ने दोहाई तो दी परन्तु उन्हें कोई भी बचानेवाला न मिला,
उन्हों ने यहोवा की भी दोहाई दी, परन्तु उस ने भी उनको उत्तर न दिया।

४२ तब मैं ने उनको कूट कूटकर पवन से उड़ाई हुई धूलि के समान कर दिया;
मैं ने उनको गली कूचों की कीचड़ के समान निकाल फेंका ॥

४३ तू ने मुझे प्रजा के झगड़ों से भी छुड़ाया;
तू ने मुझे अन्यजातियों का प्रधान बनाया है;
जिन लोगों को मैं जानता भी न था वे मेरे अधीन हो गये।

४४ मेरा नाम सुनते ही वे मेरी आज्ञा का पालन करेंगे;
परदेशी मेरे वश में हो जाएंगे *।

४५ परदेशी मुर्झा जाएंगे,
और अपने किलों में से थरथराते हुए निकलेंगे ॥

४६ यहोवा परमेश्वर जीवित है; मेरी चट्टान धन्य है,
और मेरे मुक्तिदाता परमेश्वर की बड़ाई हो।

४७ धन्य है मेरा पलटा लेनेवाला ईश्वर!
जिस ने देश देश के लोगों को मेरे वश में कर दिया है;

* मूल में—परदेशी के लड़के मुझ से झूठ बोलेंगे।

४८ और मुझे मेरे शत्रुओं से छुड़ाया है;
तू मुझ को मेरे विरोधियों से ऊंचा करता,
और उपद्रवी पुरुष से बचाता है ॥
४९ इस कारण मैं जाति जाति के साम्हने तेरा धन्यवाद करूंगा,
और तेरे नाम का भजन गाऊंगा।
५० वह अपने ठहराए हुए राजा का बड़ा उद्धार करता है,
वह अपने अभिषिक्त दाऊद पर और उसके वंश पर युगानुयुग करुणा करता रहेगा ॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन)

१९ आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है;
और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है।
२ दिन से दिन बातें करता है,
और रात को रात ज्ञान सिखाती है।
३ न तो कोई बोली है और न कोई भाषा जहां
उनका शब्द सुनाई नहीं देता है।
४ उनका स्वर सारी पृथ्वी पर गूंज गया है,
और उनके वचन जगत की छोर तक पहुंच गए हैं।
उन में उस ने सूर्य्य के लिये एक मण्डप खड़ा किया है,
५ जो दुल्हे के समान अपने महल से निकलता है।
वह शूरवीर की नाईं अपनी दौड़ दौड़ने को हर्षित होता है।
६ वह आकाश की एक छोर से निकलता है,
और वह उसकी दूसरी छोर तक चक्कर मारता है;
और उसकी गर्मी सबको पहुंचती है ॥
७ यहोवा की व्यवस्था खरी है, वह प्राण को बहाल कर देती है;
यहोवा के नियम विश्वासयोग्य हैं, साधारण लोगों को बुद्धिमान बना देते हैं;
८ यहोवा के उपदेश सिद्ध हैं, हृदय को आनन्दित कर देते हैं;
यहोवा की आज्ञा निर्मल है, वह आंखों में ज्योति ले आती है;
९ यहोवा का भय पवित्र है, वह अनन्तकाल तक स्थिर रहता है;
यहोवा के नियम सत्य और पूरी रीति से धर्ममय हैं।
१० वे तो सोने से और बहुत कुन्दन से भी बढ़कर मनोहर हैं;
वे मधु से और टपकनेवाले छत्ते से भी बढ़कर मधुर हैं।
११ और उन्हीं से तेरा दास चिताया जाता है;
उनके पालन करने से बड़ा ही प्रतिफल मिलता है।
१२ अपनी भूलचूक को कौन समझ सकता है?
मेरे गुप्त पापों से तू मुझे पवित्र कर।
१३ तू अपने दास को ढिठाई * के पापों से भी बचाए रख;
वह मुझ पर प्रभुता करने न पाए!
तब मैं सिद्ध हो जाऊंगा,
और बड़े अपराधों से बचा रहूंगा ॥

* वा ढीठों।

१४ मेरे मुंह के वचन और मेरे हृदय का ध्यान तेरे सम्मुख ग्रहण योग्य हों,
हे यहोवा परमेश्वर, मेरी चट्टान और मेरे उद्धार करनेवाले !

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन)

२० संकट के दिन यहोवा तेरी सुन ले !
याकूब के परमेश्वर का नाम तुझे ऊंचे स्थान पर नियुक्त करे !
२ वह पवित्रस्थान से तेरी सहायता करे, और सिय्योन से तुझे सम्भाल ले !
३ वह तेरे सब अन्नबलियों को स्मरण करे,
और तेरे होमबलि को ग्रहण करे *। (सेला)
४ वह तेरे मन की इच्छा पूरी करे, और तेरी सारी युक्ति को सुफल करे !
५ तब हम तेरे उद्धार के कारण ऊंचे स्वर से हर्षित होकर गाएंगे,
और अपने परमेश्वर के नाम से झण्डे खड़े करेंगे।
यहोवा तुझे मुंह मांगा वरदान दे !
६ अब मैं जान गया कि यहोवा अपने अभिषिक्त का उद्धार करता है;
वह अपने दहिने हाथ के उद्धार करनेवाले पराक्रम से अपने पवित्र स्वर्ग पर से सुनकर उसे उत्तर देगा।
७ किसी को रथों का, और किसी को घोड़ों का भरोसा है,
परन्तु हम तो अपने परमेश्वर यहोवा ही का नाम लेंगे।
८ वे तो झुक गए और गिर पड़े :
परन्तु हम उठे और सीधे खड़े हैं ।।
९ हे यहोवा, बचा ले;
जिस दिन हम पुकारें तो महाराजा हमें उत्तर दे ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन)

२१ हे यहोवा तेरी सामर्थ्य से राजा आनन्दित होगा;
और तेरे किए हुए उद्धार से वह अति मगन होगा।
२ तू ने उसके मनोरथ को पूरा किया है,
और उसके मुंह की बिनती को तू ने अस्वीकार नहीं किया। (सेला)
३ क्योंकि तू उत्तम आशीषें देता हुआ उस से मिलता है
और तू उसके सिर पर कुन्दन का मुकुट पहिनाता है।
४ उस ने तुझ से जीवन मांगा, और तू ने जीवनदान दिया;
तू ने उसको युगानयुग का जीवन दिया है।
५ तेरे उद्धार के कारण उसकी महिमा अधिक है;
तू उसको विभव और ऐश्वर्य से आभूषित कर देता है।
६ क्योंकि तू ने उसको सर्वदा के लिये आशीषित किया है;
तू अपने सम्मुख उसको हर्ष और आनन्द से भर देता है।
७ क्योंकि राजा का भरोसा यहोवा के ऊपर है;
और परमप्रधान की करुणा से वह कभी नहीं टलने का ।।
८ तेरा हाथ तेरे सब शत्रुओं को ढूंढ़ निकालेगा,

* मूल में—चिकनाई जानकर ग्रहण करे।

तेरा दहिना हाथ तेरे सब बैरियों
का पता लगा लेगा ।
९ तू अपने मुख के सम्मुख उन्हें जलते
हुए भट्ठे की नाईं जलाएगा * ।
यहोवा अपने क्रोध में उन्हें निगल
जाएगा,
और आग उनको भस्म कर डालेगी ।
१० तू उनके फलों को पृथ्वी पर से,
और उनके वंश को मनुष्यों में से
नष्ट करेगा ।
११ क्योंकि उन्हों ने तेरी हानि ठानी है,
उन्हों ने ऐसी युक्ति निकाली है
जिसे वे पूरी न कर सकेंगे ।
१२ क्योंकि तू अपना धनुष उनके विरुद्ध
चढ़ाएगा,
और वे पीठ दिखाकर भागेंगे ।।
१३ हे यहोवा, अपनी सामर्थ्य में महान्
हो !
और हम गा गाकर तेरे पराक्रम का
भजन सुनाएंगे ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये
अय्येलेतश्शहर † में दाऊद का
भजन)

२२ हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर,
तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया ?
तू मेरी पुकार से और मेरी सहायता
करने से क्यों दूर रहता है ? मेरा
उद्धार कहां ‡ है ?
२ हे मेरे परमेश्वर, मैं दिन को पुकारता
हूं परन्तु तू उत्तर नहीं देता;
और रात को भी मैं चुप नहीं रहता ।

* मूल में—रक्खेगा ।
† अर्थात् भोरवाली हरिणी ।
‡ मूल में—मेरे गोहराने का वचन मेरे
उद्धार से दूर है ।

३ परन्तु हे तू जो इस्राएल की स्तुति
के सिंहासन पर विराजमान है,
तू तो पवित्र है ।
४ हमारे पुरखा तुझी पर भरोसा रखते
थे;
वे भरोसा रखते थे, और तू उन्हें
छुड़ाता था ।
५ उन्हों ने तेरी दोहाई दी और तू ने
उनको छुड़ाया
वे तुझी पर भरोसा रखते थे और
कभी लज्जित न हुए ।।
६ परन्तु मैं तो कीड़ा हूं, मनुष्य नहीं;
मनुष्यों में मेरी नामधराई है, और
लोगों में मेरा अपमान होता है ।
७ वह सब जो मुझे देखते हैं मेरा
ठट्ठा करते हैं,
और ओंठ बिचकाते और यह कहते
हुए सिर हिलाते हैं,
८ कि अपने को यहोवा के वश में कर
दे वही उसको छुड़ाए,
वह उसको उबारे क्योंकि वह उस से
प्रसन्न है ।
९ परन्तु तू ही ने मुझे गर्भ से निकाला;
जब मैं दूधपिउवा बच्चा था, तब
ही से तू ने मुझे भरोसा रखना
सिखलाया * ।
१० मैं जन्मते ही तुझी पर छोड़ दिया
गया,
माता के गर्भ ही से तू मेरा ईश्वर है ।
११ मुझ से दूर न हो क्योंकि संकट
निकट है,
और कोई सहायक नहीं ।
१२ बहुत से सांढ़ों ने मुझे घेर लिया
है,

* मूल में—भरोसा दिया ।

बाशान के बलवन्त सांढ़ मेरे चारों
ओर मुझे घेरे हुए हैं।
१३ वह फाड़ने और गरजनेवाले सिंह की नाईं
मुझ पर अपना मुंह पसारे हुए हैं॥
१४ मैं जल की नाईं बह गया,
और मेरी सब हड्डियों के जोड़ उखड़ गए:
मेरा हृदय मोम हो गया,
वह मेरी देह के भीतर पिघल गया।
१५ मेरा बल टूट गया, मैं ठीकरा हो गया;
और मेरी जीभ मेरे तालू से चिपक गई;
और तू मुझे मारकर मिट्टी में मिला देता है।
१६ क्योंकि कुत्तों ने मुझे घेर लिया है;
कुकर्मियों की मण्डली मेरी चारों ओर मुझे घेरे हुए हैं;
वह मेरे हाथ और मेरे पैर छेदते हैं।
१७ मैं अपनी सब हड्डियां गिन सकता हूं;
वे मुझे देखते और निहारते हैं;
१८ वे मेरे वस्त्र आपस में बांटते हैं,
और मेरे पहिरावे पर चिट्ठी डालते हैं॥
१९ परन्तु हे यहोवा तू दूर न रह!
हे मेरे सहायक, मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर!
२० मेरे प्राण को तलवार से बचा,
मेरे प्राण को * कुत्ते के पंजे से बचा ले!
२१ मुझे सिंह के मुंह से बचा,
हां, जंगली सांढ़ों के सींगों में से तू ने मुझे बचा लिया है॥
२२ मैं अपने भाइयों के साम्हने तेरे नाम का प्रचार करूंगा;
सभा के बीच में तेरी प्रशंसा करूंगा।
२३ हे यहोवा के डरवैयो उसकी स्तुति करो!
हे याकूब के वंश, तुम सब उसकी महिमा करो!
और हे इस्राएल के वंश, तुम उसका भय मानो!
२४ क्योंकि उस ने दु:खी को तुच्छ नहीं जाना और न उस से घृणा करता है,
और न उस से अपना मुख छिपाता है;
पर जब उस ने उसकी दोहाई दी,
तब उसकी सुन ली॥
२५ बड़ी सभा में मेरा स्तुति करना तेरी ही ओर से होता है;
मैं अपने प्रण को उस से भय रखनेवालों के साम्हने पूरा करूंगा
२६ नम्र लोग भोजन करके तृप्त होंगे;
जो यहोवा के खोजी हैं, वे उसकी स्तुति करेंगे।
तुम्हारे प्राण सर्वदा जीवित रहें!
२७ पृथ्वी के सब दूर दूर देशों के लोग उसको स्मरण करेंगे और उसकी ओर फिरेंगे;
और जाति जाति के सब कुल तेरे साम्हने दण्डवत् करेंगे।
२८ क्योंकि राज्य यहोवा ही का है,
और सब जातियों पर वही प्रभुता करता है॥
२९ पृथ्वी के सब हृष्टपुष्ट लोग भोजन करके दण्डवत् करेंगे;
वह सब जितने मिट्टी में मिल जाते हैं
और अपना अपना प्राण नहीं बचा

* मूल में—मेरी एकली को।

सकते, वे सब उसी के साम्हने घुटने टेकेंगे ।

३० एक वंश उसकी सेवा करेगा;
दूसरी पीढ़ी से प्रभु का वर्णन किया जाएगा ।

३१ वह आएंगे और उसके धर्म के कामों को एक वंश पर जो उत्पन्न होगा यह कहकर प्रगट करेंगे कि उस ने ऐसे ऐसे अद्भुत काम किए ।।

(दाऊद का भजन)

२३ यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी ।

२ वह मुझे हरी हरी चराइयों में बैठाता है;
वह मुझे सुखदाई जल के झरने के पास ले चलता है;

३ वह मेरे जी में जी ले आता है ।
धर्म के मार्गों में वह अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई करता है ।

४ चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलूं,
तौभी हानि से न डरूंगा; क्योंकि तू मेरे साथ रहता है;
तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है ।।

५ तू मेरे सतानेवालों के साम्हने मेरे लिये मेज़ बिछाता है;
तू ने मेरे सिर पर तेल मला है,
मेरा कटोरा उमण्ड रहा है ।

६ निश्चय भलाई और करुणा जीवन भर मेरे साथ साथ बनी रहेंगी;
और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूंगा ।।

(दाऊद का भजन)

२४ पृथ्वी और जो कुछ उस में है यहोवा ही का है;
जगत और उस में निवास करनेवाले भी ।

२ क्योंकि उसी ने उसकी नीव समुद्रों के ऊपर दृढ़ करके रखी,
और महानदों के ऊपर स्थिर किया है ।।

३ यहोवा के पर्वत पर कौन चढ़ सकता है ?
और उसके पवित्रस्थान में कौन खड़ा हो सकता है ?

४ जिसके काम* निर्दोष और हृदय शुद्ध है,
जिस ने अपने मन को व्यर्थ बात की ओर नहीं लगाया,
और न कपट से शपथ खाई है ।

५ वह यहोवा की ओर से आशीष पाएगा,
और अपने उद्धार करनेवाले परमेश्वर की ओर से धर्मी ठहरेगा ।

६ ऐसे ही लोग उसके खोजी हैं,
वे तेरे दर्शन के खोजी याकूबवंशी हैं ।। (सेला)

७ हे फाटको, अपने सिर ऊंचे करो† !
हे सनातन के द्वारो, ऊंचे हो जाओ‡ !
क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा ।

८ वह प्रतापी राजा कौन है ?
परमेश्वर जो सामर्थी और पराक्रमी है,
परमेश्वर जो युद्ध में पराक्रमी है !

९ हे फाटको, अपने सिर ऊंचे करो†

* मूल में—के हाथ ।
† मूल में—अपने सिर उठाओ ।
‡ मूल में—अपने को उठाओ ।

हे सनातन के द्वारो तुम भी खुल
जाओ * !
क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा !
१० वह प्रतापी राजा कौन है ?
सेनाओं का यहोवा, वही प्रतापी
राजा है ।। (सेला)

(दाऊद का भजन)

२५ हे यहोवा मैं अपने मन को
तेरी ओर उठाता हूं ।
२ हे मेरे परमेश्वर, मैं ने तुझी पर
भरोसा रखा है,
मुझे लज्जित होने न दे;
मेरे शत्रु मुझ पर जयजयकार करने
न पाएं ।
३ वरन जितने तेरी बाट जोहते हैं उन
में से कोई लज्जित न होगा;
परन्तु जो अकारण विश्वासघाती हैं
वे ही लज्जित होंगे ।।
४ हे यहोवा अपने मार्ग मुझ को
दिखला;
अपना पथ मुझे बता दे ।
५ मुझे अपने सत्य पर चला और
शिक्षा दे,
क्योंकि तू मेरा उद्धार करनेवाला
परमेश्वर है;
मैं दिन भर तेरी ही बाट जोहता
रहता हूं ।
६ हे यहोवा अपनी दया और करुणा
के कामों को स्मरण कर;
क्योंकि वे तो अनन्तकाल से होते
आए हैं ।
७ हे यहोवा अपनी भलाई के कारण
मेरी जवानी के पापों और मेरे
अपराधों को स्मरण न कर;

* मूल में—अपने को उठाओ ।

अपनी करुणा ही के अनुसार तू
मुझे स्मरण कर ।।
८ यहोवा भला और सीधा है;
इसलिये वह पापियों को अपना मार्ग
दिखलाएगा ।
९ वह नम्र लोगों को न्याय की शिक्षा
देगा,
हां वह नम्र लोगों को अपना मार्ग
दिखलाएगा ।
१० जो यहोवा की वाचा और चितौनियों
को मानते हैं,
उनके लिये उसके सब मार्ग करुणा
और सच्चाई हैं ।।
११ हे यहोवा अपने नाम के निमित्त
मेरे अधर्म को जो बहुत हैं क्षमा
कर ।।
१२ वह कौन है जो यहोवा का भय
मानता है ?
यहोवा उसको उसी मार्ग पर जिस
से वह प्रसन्न होता है चलाएगा ।
१३ वह कुशल से टिका रहेगा,
और उसका वंश पृथ्वी का अधिकारी
होगा ।
१४ यहोवा के भेद को वही जानते हैं
जो उस से डरते हैं,
और वह अपनी वाचा उन पर प्रगट
करेगा ।
१५ मेरी आंखें सदैव यहोवा पर टकटकी
लगाए रहती हैं,
क्योंकि वही मेरे पांवों को जाल में
से छुड़ाएगा ।।
१६ हे यहोवा मेरी ओर फिरकर मुझ पर
अनुग्रह कर;
क्योंकि मैं अकेला और दीन हूं ।
१७ मेरे हृदय का क्लेश बढ़ गया है,
तू मुझ को मेरे दुःखों से छुड़ा ले ।

१८ तू मेरे दुःख और कष्ट पर दृष्टि कर,
और मेरे सब पापों को क्षमा कर ॥
१९ मेरे शत्रुओं को देख कि वे कैसे बढ़ गए हैं,
और मुझ से बड़ा बैर रखते हैं।
२० मेरे प्राण की रक्षा कर, और मुझे छुड़ा;
मुझे लज्जित न होने दे, क्योंकि मैं तेरा शरणागत हूं।
२१ खराई और सीधाई मुझे सुरक्षित रखे,
क्योंकि मुझे तेरीही आशा है ॥
२२ हे परमेश्वर इस्राएल को
उसके सारे संकटों से छुड़ा ले ॥

(दाऊद का भजन)

२६ हे यहोवा, मेरा न्याय कर,
क्योंकि मैं खराई से चलता रहा हूं,
और मेरा भरोसा यहोवा पर अटल बना है।
२ हे यहोवा, मुझ को जांच और परख;
मेरे मन और हृदय को परखं।
३ क्योंकि तेरी करुणा तो मेरी आंखों के साम्हने है,
और मैं तेरे सत्य मार्ग पर चलता रहा हूं ॥
४ मैं निकम्मी चाल चलनेवालों के संग नहीं बैठा,
और न मैं कपटियों के साथ कहीं जाऊंगा;
५ मैं कुकर्मियों की संगति से घृणा रखता हूं,
और दुष्टों के संग न बैठूंगा ॥
६ मैं अपने हाथों को निर्दोषता के जल से धोऊंगा,
तब हे यहोवा मैं तेरी वेदी की प्रदक्षिणा करूंगा,
७ ताकि तेरा धन्यवाद ऊंचे शब्द से करूं,
और तेरे सब आश्चर्यकर्मों का वर्णन करूं ॥
८ हे यहोवा, मैं तेरे धाम से
तेरी महिमा के निवासस्थान से प्रीति रखता हूं।
९ मेरे प्राण को पापियों के साथ,
और मेरे जीवन को हत्यारों के साथ न मिला।
१० वे तो ओछापन करने में लगे रहते हैं,
और उनका दाहिना हाथ घूस से भरा रहता है ॥
११ परन्तु मैं तो खराई से चलता रहूंगा।
तू मुझे छुड़ा ले, और मुझ पर अनुग्रह कर।
१२ मेरे पांव चौरस स्थान में स्थिर है;
सभाओं में मैं यहोवा को धन्य कहा करूंगा ॥

(दाऊद का भजन)

२७ यहोवा परमेश्वर मेरी ज्योति और मेरा उद्धार है; मैं किस से डरूं?
यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ ठहरा है, मैं किस का भय खाऊं?
२ जब कुकर्मियों ने जो मुझे सताते और मुझी से बैर रखते थे,
मुझे खा डालने के लिये मुझ पर चढ़ाई की, तब वे ही ठोकर खाकर गिर पड़े ॥
३ चाहे सेना भी मेरे विरुद्ध छावनी डाले,

तौभी मैं न डरूंगा;
चाहे मेरे विरुद्ध लड़ाई ठन जाए,
उस दशा में भी मैं हियाव बान्धे
निश्चिंत रहूंगा ।।
४ एक वर मैं ने यहोवा से मांगा है,
उसी के यत्न में लगा रहूंगा;
कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में
रहने पाऊं,
जिस से यहोवा की मनोहरता पर
दृष्टि लगाए रहूं,
और उसके मन्दिर में ध्यान किया
करूं ।।
५ क्योंकि वह तो मुझे विपत्ति के दिन
में अपने मण्डप में छिपा
रखेगा;
अपने तम्बू के गुप्तस्थान में वह
मुझे छिपा लेगा,
और चट्टान पर चढ़ाएगा ।
६ अब मेरा सिर मेरे चारों ओर के
शत्रुओं से ऊंचा होगा;
और मैं यहोवा के तम्बू में जयजयकार
के साथ बलिदान चढ़ाऊंगा;
और उसका भजन गाऊंगा ।।
७ हे यहोवा, मेरा शब्द सुन, मैं पुकारता
हूं,
तू मुझ पर अनुग्रह कर और मुझे
उत्तर दे ।
८ तू ने कहा है, कि मेरे दर्शन के खोजी
हो । इसलिये मेरा मन तुझ से
कहता है, कि
हे यहोवा, तेरे दर्शन का मैं खोजी
रहूंगा ।
९ अपना मुख मुझ से न छिपा ।।
अपने दास को क्रोध करके न
हटा,
तू मेरा सहायक बना है ।
हे मेरे उद्धार करनेवाले परमेश्वर
मुझे त्याग न दे, और मुझे छोड़
न दे !
१० मेरे माता-पिता ने तो मुझे छोड़
दिया है,
परन्तु यहोवा मुझे सम्भाल लेगा ।।
११ हे यहोवा, अपने मार्ग में मेरी अगुवाई
कर,
और मेरे द्रोहियों के कारण
मुझ को चौरस रास्ते पर ले चल ।
१२ मुझ को मेरे सतानेवालों की इच्छा
पर न छोड़,
क्योंकि झूठे साक्षी जो उपद्रव करने
की धुन में हैं मेरे विरुद्ध उठे हैं ।।
१३ यदि मुझे विश्वास न होता * कि
जीवितों की पृथ्वी पर यहोवा की
भलाई को देखूंगा, तो मैं मूर्च्छित
हो जाता ।
१४ यहोवा की बाट जोहता रह;
हियाव बान्ध और तेरा हृदय दृढ़
रहे;
हां, यहोवा ही की बाट जोहता रह !

(दाऊद का भजन)

२८ हे यहोवा, मैं तुझी को पुकारूंगा;
हे मेरी चट्टान, मेरी सुनी-
अनसुनी न कर,
ऐसा न हो कि तेरे चुप रहने से
मैं क़ब्र में पड़े हुओं के समान हो
जाऊं जो पाताल में चले जाते हैं ।
२ जब मैं तेरी दोहाई दूं,
और तेरे पवित्रस्थान की भीतरी
कोठरी की ओर अपने हाथ उठाऊं,
तब मेरी गिड़गिड़ाहट की बात सुन
ले ।

* मूल में—यदि मैं विश्वास न करता ।

३ उन दुष्टों और अनर्थकारियों के संग
मुझे न घसीट;
जो अपने पड़ोसियों से बातें तो मेल
की बोलते हैं
परन्तु हृदय में बुराई रखते हैं।
४ उनके कामों के और उनकी करनी
की बुराई के अनुसार उन से बर्ताव
कर,
उनके हाथों के काम के अनुसार
उन्हें बदला दे;
उनके कामों का पलटा उन्हें
दे।
५ वे यहोवा के कामों पर
और उसके हाथ के कामों पर ध्यान
नहीं करते,
इसलिये वह उन्हें पछाड़ेगा और फिर
न उठाएगा।।
६ यहोवा धन्य है;
क्योंकि उस ने मेरी गिड़गिड़ाहट को
सुना है।
७ यहोवा मेरा बल और मेरी ढाल
है; उस पर भरोसा रखने से
मेरे मन को सहायता मिली
है;
इसलिये मेरा हृदय प्रफुल्लित है;
और मैं गीत गाकर उसका धन्यवाद
करूंगा।।
८ यहोवा उनका बल है,
वह अपने अभिषिक्त के लिये उद्धार
का दृढ़ गढ़ है।
९ हे यहोवा अपनी प्रजा का उद्धार
कर, और अपने निज भाग के लोगों
को आशीष दे;
और उनकी चरवाही कर और सदैव
उन्हें सम्भाले रह।।

(दाऊद का भजन)

२९ हे परमेश्वर के पुत्रो * यहोवा
का, हां यहोवा ही का गुणानु-
वाद करो,
यहोवा की महिमा और सामर्थ को
सराहो।
२ यहोवा के नाम की महिमा करो;
पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा
को दण्डवत् करो।।
३ यहोवा की वाणी मेघों † के ऊपर
सुन पड़ती है;
प्रतापी ईश्वर गरजता है,
यहोवा घने मेघों ‡ के ऊपर रहता है।
४ यहोवा की वाणी शक्तिशाली है,
यहोवा की वाणी प्रतापमय है।
५ यहोवा की वाणी देवदारों को तोड़
डालती है;
यहोवा लबानोन के देवदारों को भी
तोड़ डालता है।
६ वह उन्हें बछड़े की नाईं और लबानोन
और शिर्योन को जंगली बछड़े के
समान उछालता है।।
७ यहोवा की वाणी आग की लपटों
को चीरती § है।
८ यहोवा की वाणी वन को हिला
देती है,
यहोवा कादेश के वन को भी कंपाता
है।।
९ यहोवा की वाणी से हरिणियों का
गर्भपात हो जाता है।
और अरण्य में पतझड़ होती है;

---

* वा ईश्वर के पुत्रो।
† मूल में—जल।
‡ मूल में—बहुत जल।
§ मूल में—आग के लौवों को चीरती है।

और उसके मन्दिर में सब कोई महिमा
ही महिमा बोलता रहता है ॥
१० जलप्रलय के समय यहोवा विराजमान
था;
और यहोवा सर्वदा के लिये राजा
होकर विराजमान रहता है ।
११ यहोवा अपनी प्रजा को बल देगा;
यहोवा अपनी प्रजा को शान्ति की
आशीष देगा ॥

(भवन की प्रतिष्ठा के लिये
दाऊद का भजन)

३० हे यहोवा मैं तुझे सराहूंगा,
क्योंकि तू ने मुझे खींचकर
निकाला है,
और मेरे शत्रुओं को मुझ पर आनन्द
करने नहीं दिया ।
२ हे मेरे परमेश्वर यहोवा,
मैं ने तेरी दोहाई दी और तू ने मुझे
चंगा किया है ।
३ हे यहोवा, तू ने मेरा प्राण अधोलोक
में से निकाला है,
तू ने मुझ को जीवित रखा और
क़ब्र में पड़ने से बचाया है ॥
४ हे यहोवा के भक्तो, उसका भजन
गाओ,
और जिस पवित्र नाम से उसका
स्मरण होता है, उसका धन्यवाद
करो ।
५ क्योंकि उसका क्रोध, तो क्षण भर का
होता है,
परन्तु उसकी प्रसन्नता जीवन भर
की होती है ।
कदाचित् रात को रोना पड़े,
परन्तु सबेरे आनन्द पहुंचेगा ॥
६ मैं ने तो अपने चैन के समय कहा था,
कि मैं कभी नहीं टलने का ।
७ हे यहोवा अपनी प्रसन्नता से तू ने
मेरे पहाड़ को दृढ़ और स्थिर
किया था;
जब तू ने अपना मुख फेर लिया * तब
मैं घबरा गया ॥
८ हे यहोवा मैं ने तुझी को पुकारा;
और यहोवा से गिड़गिड़ाकर यह
बिनती की, कि
९ जब मैं क़ब्र में चला जाऊंगा तब मेरे
लोहू से क्या लाभ होगा?
क्या मिट्टी तेरा धन्यवाद कर सकती
है? क्या वह तेरी सच्चाई का
प्रचार कर सकती है?
१० हे यहोवा, सुन, मुझ पर अनुग्रह कर;
हे यहोवा, तू मेरा सहायक हो ॥
११ तू ने मेरे लिये विलाप को नृत्य में
बदल डाला;
तू ने मेरा टाट उतरवाकर मेरी
कमर में आनन्द का पटुका बान्धा
है,
१२ ताकि मेरी आत्मा † तेरा भजन गाती
रहे और कभी चुप न हो ।
हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मैं सर्वदा
तेरा धन्यवाद करता रहूंगा ॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद
का भजन)

३१ हे यहोवा मेरा भरोसा तुझ पर
है;
मुझे कभी लज्जित होना न पड़े;
तू अपने धर्मी होने के कारण मुझे
छुड़ा ले !
२ अपना कान मेरी ओर लगाकर तुरन्त
मुझे छुड़ा ले !

---

* मूल में—छिपाया।
† मूल में—महिमा।

३ क्योंकि तू मेरे लिये चट्टान और मेरा गढ़ है;
इसलिये अपने नाम के निमित्त मेरी अगुआई कर, और मुझे आगे ले चल।
४ जो जाल उन्हों ने मेरे लिये बिछाया है उस से तू मुझ को छुड़ा ले,
क्योंकि तू ही मेरा दृढ़ गढ़ है।
५ मैं अपनी आत्मा को तेरे ही हाथ में सौंप देता हूं;
हे यहोवा, हे सत्यवादी ईश्वर, तू ने मुझे मोल लेकर मुक्त किया है॥
६ जो व्यर्थ वस्तुओं पर मन लगाते हैं, उन से मैं घृणा करता हूं;
परन्तु मेरा भरोसा यहोवा ही पर है।
७ मैं तेरी करुणा से मगन और आनन्दित हूं,
क्योंकि तू ने मेरे दुःख पर दृष्टि की है,
मेरे कष्ट के समय तू ने मेरी सुधि ली है,
८ और तू ने मुझे शत्रु के हाथ में पड़ने नहीं दिया;
तू ने मेरे पांवों को चौड़े स्थान में खड़ा किया है॥
९ हे यहोवा, मुझ पर अनुग्रह कर क्योंकि मैं संकट में हूं;
मेरी आंखें वरन मेरा प्राण और शरीर सब शोक के मारे घुले जाते हैं।
१० मेरा जीवन शोक के मारे और मेरी अवस्था कराहते कराहते घट चली है;
मेरा बल मेरे अधर्म के कारण जाता रहा, और मेरी हड्डियां घुल गईं॥
११ अपने सब विरोधियों के कारण मेरे पड़ोसियों में मेरी नामधराई हुई है,
अपने जानपहिचानवालों के लिये डर का कारण हूं;
जो मुझ को सड़क पर देखते हैं वह मुझ से दूर भाग जाते हैं।
१२ मैं मृतक की नाईं लोगों के मन से बिसर गया;
मैं टूटे बासन के समान हो गया हूं।
१३ मैं ने बहुतों के मुंह से अपना अपवाद सुना,
चारों ओर भय ही भय है!
जब उन्हों ने मेरे विरुद्ध आपस में सम्मति की
तब मेरे प्राण लेने की युक्ति की॥
१४ परन्तु हे यहोवा मैं ने तो तुझी पर भरोसा रखा है,
मैं ने कहा, तू मेरा परमेश्वर है।
१५ मेरे दिन * तेरे हाथ में हैं;
तू मुझे मेरे शत्रुओं और मेरे सतानेवालों के हाथ से छुड़ा।
१६ अपने दास पर अपने मुंह का प्रकाश चमका;
अपनी करुणा से मेरा उद्धार कर॥
१७ हे यहोवा, मुझे लज्जित न होने दे क्योंकि मैं ने तुझ को पुकारा है;
दुष्ट लज्जित हों और वे पाताल में चुपचाप पड़े रहें।
१८ जो अहंकार और अपमान से धर्मी की निन्दा करते हैं,
उनके झूठ बोलनेवाले मुंह बन्द किए जाएं॥

---

* मूल में—समय।

१९ आहा, तेरी भलाई क्या ही बड़ी है जो तू ने अपने डरवैयों के लिये रख छोड़ी है,
और अपने शरणागतों के लिये मनुष्यों के साम्हने प्रगट भी की है !
२० तू उन्हें दर्शन देने के गुप्तस्थान में मनुष्यों की बुरी गोष्ठी से गुप्त रखेगा;
तू उनको अपने मण्डप में झगड़े-रगड़े से छिपा रखेगा ।।
२१ यहोवा धन्य है,
क्योंकि उस ने मुझे गढ़वाले नगर में रखकर मुझ पर अद्भुत करुणा की है ।
२२ मैं ने तो घबराकर कहा था कि मैं यहोवा की दृष्टि से दूर हो गया ।
तौभी जब मैं ने तेरी दोहाई दी, तब तू ने मेरी गिड़गिड़ाहट को सुन लिया ।।
२३ हे यहोवा के सब भक्तो उस से प्रेम रखो !
यहोवा सच्चे लोगों की तो रक्षा करता है,
परन्तु जो अहंकार करता है, उसको वह भली भांति बदला देता है ।
२४ हे यहोवा पर आशा रखनेवालो
हियाव बान्धो और तुम्हारे हृदय दृढ़ रहें !

(दाऊद का भजन । मस्कील)

३२

क्या ही धन्य है वह जिसका अपराध क्षमा किया गया, और जिसका पाप ढांपा गया हो ।
२ क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिसके अधर्म का यहोवा लेखा न ले,
और जिसकी आत्मा में कपट न हो ।।
३ जब मैं चुप रहा
तब दिन भर कहरते कहरते मेरी हड्डियां पिघल गईं ।
४ क्योंकि रात दिन मैं तेरे हाथ के नीचे दबा रहा;
और मेरी तरावट धूप काल की सी झुर्राहट बनती गई ।। (सेला)
५ जब मैं ने अपना पाप तुझ पर प्रगट किया और अपना अधर्म न छिपाया,
और कहा, मैं यहोवा के साम्हने अपने अपराधों को मान लूंगा;
तब तू ने मेरे अधर्म और पाप को क्षमा कर दिया ।। (सेला)
६ इस कारण हर एक भक्त तुझ से ऐसे समय में प्रार्थना करे जब कि तू मिल सकता है ।
निश्चय जब जल की बड़ी बाढ़ आए तौभी उस भक्त के पास न पहुंचेगी ।
७ तू मेरे छिपने का स्थान है; तू संकट से मेरी रक्षा करेगा;
तू मुझे चारों ओर से छुटकारे के गीतों से घेर लेगा ।। (सेला)
८ मैं तुझे बुद्धि दूंगा, और जिस मार्ग में तुझे चलना होगा उस में तेरी अगुवाई करूंगा;
मैं तुझ पर कृपादृष्टि * रखूंगा और सम्मति दिया करूंगा ।
९ तुम घोड़े और खच्चर के समान न बनो जो समझ नहीं रखते,
उनकी उमंग लगाम और बाग से रोकनी पड़ती है,
नहीं तो वे तेरे वश में नहीं आने के ।।

* मूल में—आंख लगाकर।

१० दुष्ट को तो बहुत पीड़ा होगी;
परन्तु जो यहोवा पर भरोसा रखता है वह करुणा से घिरा रहेगा।
११ हे धर्मियो यहोवा के कारण आनन्दित और मगन हो,
और हे सब सीधे मनवालो आनन्द से जयजयकार करो!

३३ हे धर्मियो यहोवा के कारण जयजयकार करो!
क्योंकि धर्मी लोगों को स्तुति करनी सोहती है।
२ वीणा बजा बजाकर यहोवा का धन्यवाद करो,
दस तारवाली सारंगी बजा बजाकर उसका भजन गाओ।
३ उसके लिये नया गीत गाओ,
जयजयकार के साथ भली भांति बजाओ॥
४ क्योंकि यहोवा का वचन सीधा है;
और उसका सब काम सच्चाई से होता है।
५ वह धर्म और न्याय से प्रीति रखता है;
यहोवा की करुणा से पृथ्वी भरपूर है॥
६ आकाशमण्डल यहोवा के वचन से,
और उसके सारे गण उसके मुंह की श्वास से बने।
७ वह समुद्र का जल ढेर की नाईं इकट्ठा करता;
वह गहिरे सागर को अपने भण्डार में रखता है॥
८ सारी पृथ्वी के लोग यहोवा से डरें,
जगत के सब निवासी उसका भय मानें!
९ क्योंकि जब उस ने कहा, तब हो गया;
जब उस ने आज्ञा दी, तब वास्तव में वैसा ही हो गया॥
१० यहोवा अन्यजातियों की युक्ति को व्यर्थ कर देता है;
वह देश देश के लोगों की कल्पनाओं को निष्फल करता है।
११ यहोवा की युक्ति सर्वदा स्थिर रहेगी,
उसके मन की कल्पनाएं पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहेंगी।
१२ क्या ही धन्य है वह जाति जिसका परमेश्वर यहोवा है,
और वह समाज जिसे उस ने अपना निज भाग होने के लिये चुन लिया हो!
१३ यहोवा स्वर्ग से दृष्टि करता है,
वह सब मनुष्यों को निहारता है;
१४ अपने निवास के स्थान से
वह पृथ्वी के सब रहनेवालों को देखता है,
१५ वही जो उन सभों के हृदयों को गढ़ता,
और उनके सब कामों का विचार करता है।
१६ कोई ऐसा राजा नहीं, जो सेना की बहुतायत के कारण बच सके;
वीर अपनी बड़ी शक्ति के कारण छूट नहीं जाता।
१७ बच निकलने के लिये घोड़ा व्यर्थ है,
वह अपने बड़े बल के द्वारा किसी को नहीं बचा सकता है॥
१८ देखो, यहोवा की दृष्टि उसके डरवैयों पर
और उन पर जो उसकी करुणा की आशा रखते हैं बनी रहती है,

१९ कि वह उनके प्राण को मृत्यु से बचाए,
और अकाल के समय उनको जीवित रखे ॥
२० हम यहोवा का आसरा देखते आए हैं;
वह हमारा सहायक और हमारी ढाल ठहरा है।
२१ हमारा हृदय उसके कारण आनन्दित होगा,
क्योंकि हम ने उसके पवित्र नाम का भरोसा रखा है।
२२ हे यहोवा जैसी तुझ पर हमारी आशा है,
वैसी ही तेरी करुणा भी हम पर हो ॥

(दाऊद का भजन जब वह अबीमेलेक के साम्हने बौरहा बना, और अबीमेलेक ने उसे निकाल दिया, और वह चला गया)

३४

मैं हर समय यहोवा का धन्य कहा करूंगा;
उसकी स्तुति निरन्तर मेरे मुख से होती रहेगी।
२ मैं यहोवा पर घमण्ड करूंगा;
नम्र लोग यह सुनकर आनन्दित होंगे।
३ मेरे साथ यहोवा की बड़ाई करो,
और आओ हम मिलकर उसके नाम की स्तुति करें!
४ मैं यहोवा के पास गया, तब उस ने मेरी सुन ली,
और मुझे पूरी रीति से निर्भय किया।
५ जिन्हों ने उसकी ओर दृष्टि की, उन्हों ने ज्योति पाई;
और उनका मुंह कभी काला न होने पाया।
६ इस दीन जन ने पुकारा तब यहोवा ने सुन लिया,
और उसको उसके सब कष्टों से छुड़ा लिया ॥
७ यहोवा के डरवैयों के चारों ओर उसका दूत छावनी किए हुए उनको बचाता है।
८ परखकर* देखो कि यहोवा कैसा भला है!
क्या ही धन्य है वह पुरुष जो उसकी शरण लेता है।
९ हे यहोवा के पवित्र लोगो, उसका भय मानो,
क्योंकि उसके डरवैयों को किसी बात की घटी नहीं होती!
१० जवान सिंहों को तो घटी होती और वे भूखे भी रह जाते हैं;
परन्तु यहोवा के खोजियों को किसी भली वस्तु की घटी न होवेगी ॥
११ हे लड़को, आओ, मेरी सुनो,
मैं तुम को यहोवा का भय मानना सिखाऊंगा।
१२ वह कौन मनुष्य है जो जीवन की इच्छा रखता,
और दीर्घायु चाहता है ताकि भलाई देखे?
१३ अपनी जीभ को बुराई से रोक रख,
और अपने मुंह की चौकसी कर कि उस से छल की बात न निकले।
१४ बुराई को छोड़ और भलाई कर;
मेल को ढूंढ़ और उसी का पीछा कर ॥

---

* मूल में—चखकर।

१५ यहोवा की आंखें धर्मियों पर लगी रहती हैं,
और उसके कान भी उनकी दोहाई की ओर लगे रहते हैं।
१६ यहोवा बुराई करनेवालों के विमुख रहता है,
ताकि उनका स्मरण पृथ्वी पर से मिटा डाले।
१७ धर्मी दोहाई देते हैं और यहोवा सुनता है,
और उनको सब विपत्तियों से छुड़ाता है।
१८ यहोवा टूटे मनवालों के समीप रहता है,
और पिसे हुओं का उद्धार करता है॥
१९ धर्मी पर बहुत सी विपत्तियां पड़ती तो हैं,
परन्तु यहोवा उसको उन सब से मुक्त करता है।
२० वह उसकी हड्डी हड्डी की रक्षा करता है;
और उन में से एक भी टूटने नहीं पाती।
२१ दुष्ट अपनी बुराई के द्वारा मारा जाएगा;
और धर्मी के बैरी दोषी ठहरेंगे।
२२ यहोवा अपने दासों का प्राण मोल लेकर बचा लेता है;
और जितने उसके शरणागत हैं उन में से कोई भी दोषी न ठहरेगा॥

(दाऊद का भजन)

३५ हे यहोवा जो मेरे साथ मुक़द्दमा लड़ते हैं,
उनके साथ तू भी मुक़द्दमा लड़;
जो मुझ से युद्ध करते हैं, उन से तू युद्ध कर।
२ ढाल और भाला लेकर मेरी सहायता करने को खड़ा हो।
३ बर्छी को खींच और मेरा पीछा करनेवालों के साम्हने आकर उनको रोक;
और मुझ से कह, कि मैं तेरा उद्धार हूं॥
४ जो मेरे प्राण के ग्राहक हैं वे लज्जित और निरादर हों!
जो मेरी हानि की कल्पना करते हैं, वह पीछे हटाए जाएं और उनका मुंह काला हो!
५ वे वायु से उड़ जानेवाली भूसी के समान हों,
और यहोवा का दूत उन्हें हांकता जाए!
६ उनका मार्ग अन्धियारा और फिसलाहा हो,
और यहोवा का दूत उनको खदेड़ता जाए॥
७ क्योंकि अकारण उन्हों ने मेरे लिये अपना जाल गड़हे में बिछाया;
अकारण ही उन्हों ने मेरा प्राण लेने के लिये गड़हा खोदा है।
८ अचानक उन पर विपत्ति आ पड़े!
और जो जाल उन्हों ने बिछाया है उसी में वे आप ही फंसें; और उसी विपत्ति में वे आप ही पड़ें!
९ परन्तु मैं यहोवा के कारण अपने मन में मगन होऊंगा,
मैं उसके किए हुए उद्धार से हर्षित होऊंगा।
१० मेरी हड्डी हड्डी कहेंगी, हे यहोवा तेरे तुल्य कौन है,
जो दीन को बड़े बड़े बलवन्तों से बचाता है, और लुटेरों से दीन

दरिद्र लोगों की रक्षा करता है ?

११ झूठे साक्षी खड़े होते हैं;
और जो बात मैं नहीं जानता, वही मुझ से पूछते हैं।

१२ वे मुझ से भलाई के बदले बुराई करते हैं; यहां तक कि मेरा प्राण ऊब जाता है।

१३ जब वे रोगी थे तब तो मैं टाट पहिने रहा,
और उपवास कर करके दुःख उठाता रहा;
और मेरी प्रार्थना का फल मेरी गोद में लौट आया।

१४ मैं ऐसा भाव रखता था कि मानो वे मेरे संगी वा भाई हैं;
जैसा कोई माता के लिये विलाप करता हो,
वैसा ही मैं ने शोक का पहिरावा पहिने हुए सिर झुकाकर शोक किया ॥

१५ परन्तु जब मैं लंगड़ाने लगा तब वे लोग आनन्दित होकर इकट्ठे हुए,
नीच लोग और जिन्हें मैं जानता भी न था वे मेरे विरुद्ध इकट्ठे हुए;
वे मुझे लगातार फाड़ते रहे;

१६ उन पाखण्डी भांड़ों की नाईं जो पेट के लिये उपहास करते हैं,
वे भी मुझ पर दांत पीसते हैं ॥

१७ हे प्रभु तू कब तक देखता रहेगा ?
इस विपत्ति से, जिस में उन्हों ने मुझे डाला है मुझ को छुड़ा !
जवान सिंहों से मेरे प्राण * को बचा ले !

१८ मैं बड़ी सभा में तेरा धन्यवाद करूंगा;
बहुतेरे लोगों के बीच में तेरी स्तुति करूंगा ॥

१९ मेरे झूठ बोलनेवाले शत्रु मेरे विरुद्ध आनन्द न करने पाएं,
जो अकारण मेरे बैरी हैं, वे आपस में नैन से सैन न करने पाएं।

२० क्योंकि वे मेल की बातें नहीं बोलते,
परन्तु देश में जो चुपचाप रहते हैं, उनके विरुद्ध छल की कल्पनाएं करते हैं।

२१ और उन्हों ने मेरे विरुद्ध मुंह पसारके कहा;
आहा, आहा, हम ने अपनी आंखों से देखा है !

२२ हे यहोवा, तू ने तो देखा है; चुप न रह !
हे प्रभु, मुझ से दूर न रह !

२३ उठ, मेरे न्याय के लिये जाग,
हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे प्रभु, मेरा मुक़द्दमा निपटाने के लिये आ !

२४ हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तू अपने धर्म के अनुसार मेरा न्याय चुका;
और उन्हें मेरे विरुद्ध आनन्द करने न दे !

२५ वे मन में न कहने पाएं, कि आहा !
हमारी तो इच्छा पूरी हुई !
वह यह न कहें कि हम उसे निगल गए हैं ॥

२६ जो मेरी हानि से आनन्दित होते हैं उनके मुंह लज्जा के मारे एक साथ काले हों !
जो मेरे विरुद्ध बड़ाई मारते हैं वह लज्जा और अनादर से ढंप जाएं !

२७ जो मेरे धर्म से प्रसन्न रहते हैं, वह जयजयकार और आनन्द करें,

---

* मूल में—मेरी एकली।

और निरन्तर कहते रहें, यहोवा की बड़ाई हो, जो अपने दास के कुशल से प्रसन्न होता है !
२८ तब मेरे मुंह से तेरे धर्म की चर्चा होगी,
और दिन भर तेरी स्तुति निकलेगी ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये यहोवा के दास दाऊद का भजन)

३६ दुष्ट जन का अपराध मेरे हृदय के भीतर यह कहता है
कि परमेश्वर का भय उसकी दृष्टि * में नहीं है ।
२ वह अपने अधर्म के प्रगट होने और घृणित ठहरने के विषय
अपने मन में चिकनी चुपड़ी बातें विचारता है ।
३ उसकी बातें अनर्थ और छल की हैं;
उस ने बुद्धि और भलाई के काम करने से हाथ उठाया है ।
४ वह अपने बिछौने पर पड़े पड़े अनर्थ की कल्पना करता है;
वह अपने कुमार्ग पर दृढ़ता से बना रहता है;
बुराई से वह हाथ नहीं उठाता ।।
५ हे यहोवा तेरी करुणा स्वर्ग में है,
तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक पहुंची है ।
६ तेरा धर्म ऊंचे पर्वतों के समान है,
तेरे नियम अथाह सागर ठहरे हैं;
हे यहोवा तू मनुष्य और पशु दोनों की रक्षा करता है ।।
७ हे परमेश्वर तेरी करुणा कैसी अनमोल है !
मनुष्य तेरे पंखों के तले शरण लेते हैं ।

* मूल में—उसकी आंखों के साम्हने।

८ वे तेरे भवन के चिकने भोजन से तृप्त होंगे,
और तू अपनी सुख की नदी में से उन्हें पिलाएगा ।
९ क्योंकि जीवन का सोता तेरे ही पास है;
तेरे प्रकाश के द्वारा हम प्रकाश पाएंगे ।।
१० अपने जाननेवालों पर करुणा करता रह,
और अपने धर्म के काम सीधे मनवालों में करता रह !
११ अहंकारी मुझ पर लात उठाने न पाए,
और न दुष्ट अपने हाथ के बल से मुझे भगाने पाए ।
१२ वहां अनर्थकारी गिर पड़े हैं;
वे ढकेल दिए गए, और फिर उठ न सकेंगे ।।

(दाऊद का भजन)

३७ कुकर्मियों के कारण मत कुढ़, कुटिल काम करनेवालों के विषय डाह न कर !
२ क्योंकि वे घास की नाईं झट कट जाएंगे,
और हरी घास की नाईं मुर्झा जाएंगे ।
३ यहोवा पर भरोसा रख, और भला कर;
देश में बसा रह, और सच्चाई में मन लगाए रह ।
४ यहोवा को अपने सुख का मूल जान,
और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा ।।
५ अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़;

और उस पर भरोसा रख, वही पूरा करेगा।
६ और वह तेरा धर्म ज्योति की नाईं,
और तेरा न्याय दोपहर के उजियाले की नाईं प्रगट करेगा॥
७ यहोवा के साम्हने चुपचाप रह, और धीरज से उसका आसा रख;
उस मनुष्य के कारण न कुढ़, जिसके काम सुफल होते हैं,
और वह बुरी युक्तियों को निकालता है!
८ क्रोध से परे रह, और जलजलाहट को छोड़ दे!
मत कुढ़, उस से बुराई ही निकलेगी।
९ क्योंकि कुकर्मी लोग काट डाले जाएंगे;
और जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वही पृथ्वी के अधिकारी होंगे॥
१० थोड़े दिन के बीतने पर दुष्ट रहेगा ही नहीं;
और तू उसके स्थान को भली भांति देखने पर भी उसको न पाएगा।
११ परन्तु नम्र लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे,
और बड़ी शान्ति के कारण आनन्द मनाएंगे॥
१२ दुष्ट धर्मी के विरुद्ध बुरी युक्ति निकालता है,
और उस पर दांत पीसता है;
१३ परन्तु प्रभु उस पर हंसेगा,
क्योंकि वह देखता है कि उसका दिन आनेवाला है॥
१४ दुष्ट लोग तलवार खींचे और धनुष चढ़ाए हुए हैं,
ताकि दीन दरिद्र को गिरा दें,
और सीधी चाल चलनेवालों को वध करें।
१५ उनकी तलवारों से उन्हीं के हृदय छिदेंगे,
और उनके धनुष तोड़े जाएंगे॥
१६ धर्मी का थोड़ा सा माल
दुष्टों के बहुत से धन से उत्तम है।
१७ क्योंकि दुष्टों की भुजाएं तो तोड़ी जाएंगी;
परन्तु यहोवा धर्मियों को सम्भालता है॥
१८ यहोवा खरे लोगों की आयु की सुधि रखता है,
और उनका भाग सदैव बना रहेगा।
१९ विपत्ति के समय उनकी आशा न टूटेगी और न वे लज्जित होंगे,
और अकाल के दिनों में वे तृप्त रहेंगे॥
२० दुष्ट लोग नाश हो जाएंगे;
और यहोवा के शत्रु खेत की सुथरी घास की नाईं नाश होंगे,
वे धूएं की नाईं बिलाय जाएंगे॥
२१ दुष्ट ऋण लेता है, और भरता नहीं,
परन्तु धर्मी अनुग्रह करके दान देता है;
२२ क्योंकि जो उस से आशीष पाते हैं वे तो पृथ्वी के अधिकारी होंगे,
परन्तु जो उस से शापित होते हैं, वे नाश हो जाएंगे॥
२३ मनुष्य की गति यहोवा की ओर से दृढ़ होती है,
और उसके चलन से वह प्रसन्न रहता है;
२४ चाहे वह गिरे तौभी पड़ा न रह जाएगा,
क्योंकि यहोवा उसका हाथ थांभे रहता है॥

२५ मैं लड़कपन से लेकर बुढ़ापे तक देखता आया हूं;
परन्तु न तो कभी धर्मी को त्यागा हुआ,
और न उसके वंश को टुकड़े मांगते देखा है।
२६ वह तो दिन भर अनुग्रह कर करके ऋण देता है,
और उसके वंश पर आशीष फलती रहती है॥
२७ बुराई को छोड़ और भलाई कर;
और तू सर्वदा बना रहेगा।
२८ क्योंकि यहोवा न्याय से प्रीति रखता;
और अपने भक्तों को न तजेगा।
उनकी तो रक्षा सदा होती है,
परन्तु दुष्टों का वंश काट डाला जाएगा।
२९ धर्मी लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे,
और उस में सदा बसे रहेंगे॥
३० धर्मी अपने मुंह से बुद्धि की बातें करता,
और न्याय का वचन कहता है।
३१ उसके परमेश्वर की व्यवस्था उसके हृदय में बनी रहती है,
उसके पैर नहीं फिसलते॥
३२ दुष्ट धर्मी की ताक में रहता है।
और उसके मार डालने का यत्न करता है।
३३ यहोवा उसको उसके हाथ में न छोड़ेगा,
और जब उसका बिचार किया जाए,
तब वह उसे दोषी न ठहराएगा॥
३४ यहोवा की बाट जोहता रह, और उसके मार्ग पर बना रह,
और वह तुझे बढ़ाकर पृथ्वी का अधिकारी कर देगा;
जब दुष्ट काट डाले जाएंगे, तब तू देखेगा॥
३५ मैं ने दुष्ट को बड़ा पराक्रमी और ऐसा फैलता हुआ देखा,
जैसा कोई हरा पेड़ अपने निज भूमि में फैलता है।
३६ परन्तु जब कोई उधर से गया तो देखा कि वह वहां है ही नहीं;
और मैं ने भी उसे ढूंढ़ा, परन्तु कहीं न पाया॥
३७ खरे मनुष्य पर दृष्टि कर और धर्मी को देख,
क्योंकि मेल से रहनेवाले पुरुष का अन्तफल अच्छा है।
३८ परन्तु अपराधी एक साथ सत्यानाश किए जाएंगे;
दुष्टों का अन्तफल सर्वनाश है॥
३९ धर्मियों की मुक्ति यहोवा की ओर से होती है;
संकट के समय वह उनका दृढ़ गढ़ है।
४० और यहोवा उनकी सहायता करके उनको बचाता है;
वह उनको दुष्टों से छुड़ाकर उनका उद्धार करता है,
इसलिये कि उन्हों ने उस में अपनी शरण ली है॥

(यादगार के लिये दाऊद का भजन)

३८ हे यहोवा क्रोध में आकर मुझे झिड़क न दे,
और न जलजलाहट में आकर मेरी ताड़ना कर!
२ क्योंकि तेरे तीर मुझ में लगे हैं,
और मैं तेरे हाथ के नीचे दबा हूं।

३ तेरे क्रोध के कारण मेरे शरीर में कुछ भी आरोग्यता नहीं;
और मेरे पाप के कारण मेरी हड्डियों में कुछ भी चैन नहीं।
४ क्योंकि मेरे अधर्म के कामों में मेरा सिर डूब गया,
और वे भारी बोझ की नाईं मेरे सहने से बाहर हो गए हैं॥
५ मेरी मूढ़ता के कारण से
मेरे कोड़े खाने के घाव बसाते हैं और सड़ गए हैं।
६ मैं बहुत दुखी हूं और झुक गया हूं;
दिन भर मैं शोक का पहिरावा पहिने हुए चलता फिरता हूं।
७ क्योंकि मेरी कमर में जलन है,
और मेरे शरीर में आरोग्यता नहीं।
८ मैं निर्बल और बहुत ही चूर हो गया हूं;
मैं अपने मन की घबराहट से कराहता हूं॥
९ हे प्रभु मेरी सारी अभिलाषा तेरे सम्मुख है,
और मेरा कराहना तुझ से छिपा नहीं।
१० मेरा हृदय धड़कता है, मेरा बल घटता जाता है;
और मेरी आंखों की ज्योति भी मुझ से जाती रही।
११ मेरे मित्र और मेरे संगी मेरी विपत्ति में अलग हो गए,
और मेरे कुटुम्बी भी दूर जा खड़े हुए॥
१२ मेरे प्राण के ग्राहक मेरे लिये जाल बिछाते हैं,
और मेरी हानि के यत्न करनेवाले दुष्टता की बातें बोलते,
और दिन भर छल की युक्ति सोचते हैं।
१३ परन्तु मैं बहिरे की नाईं सुनता ही नहीं,
और मैं गूंगे के समान मुंह नहीं खोलता।
१४ वरन मैं ऐसे मनुष्य के तुल्य हूं जो कुछ नहीं सुनता,
और जिसके मुंह से विवाद की कोई बात नहीं निकलती॥
१५ परन्तु हे यहोवा, मैं ने तुझ ही पर अपनी आशा लगाई है;
हे प्रभु, मेरे परमेश्वर, तू ही उत्तर देगा।
१६ क्योंकि मैं ने कहा, ऐसा न हो कि वे मुझ पर आनन्द करें;
जो, जब मेरा पांव फिसल जाता है, तब मुझ पर अपनी बड़ाई मारते हैं॥
१७ क्योंकि मैं तो अब गिरने ही पर हूं;
और मेरा शोक निरन्तर मेरे साम्हने है।
१८ इसलिये कि मैं तो अपने अधर्म को प्रगट करूंगा,
और अपने पाप के कारण खेदित रहूंगा।
१९ परन्तु मेरे शत्रु फुर्तीले और सामर्थी हैं,
और मेरे विरोधी बैरी बहुत हो गए हैं।
२० जो भलाई के बदले में बुराई करते हैं,
वह भी मेरे भलाई के पीछे चलने के कारण मुझ से विरोध करते हैं॥
२१ हे यहोवा, मुझे छोड़ न दे!
हे मेरे परमेश्वर, मुझ से दूर न हो!

२२ हे यहोवा, हे मेरे उद्धारकर्त्ता,
मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर !

(यदूतून प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन)

३९ मैं ने कहा, मैं अपनी चालचलन में चौकसी करूंगा,
ताकि मेरी जीभ से पाप न हो;
जब तक दुष्ट मेरे साम्हने है,
तब तक मैं लगाम लगाए अपना मुंह बन्द किए रहूंगा।
२ मैं मौन धारण कर गूंगा बन गया,
और भलाई की ओर से भी चुप्पी साधे रहा;
और मेरी पीड़ा बढ़ गई,
३ मेरा हृदय अन्दर ही अन्दर जल रहा था।
सोचते सोचते आग भड़क उठी;
तब मैं अपनी जीभ से बोल उठा :
४ हे यहोवा ऐसा कर कि मेरा अन्त मुझे मालूम हो जाए,
और यह भी कि मेरी आयु के दिन कितने हैं;
जिस से मैं जान लूं कि मैं कैसा अनित्य हूं !
५ देख, तू ने मेरी आयु बालिश्त भर की रखी है,
और मेरी अवस्था तेरी दृष्टि में कुछ है ही नहीं।
सचमुच सब मनुष्य कैसे ही स्थिर क्यों न हों तौभी व्यर्थ ठहरे हैं। (सेला)
६ सचमुच मनुष्य छाया सा चलता फिरता है;
सचमुच वे व्यर्थ घबराते हैं;
वह धन का संचय तो करता है परन्तु नहीं जानता कि उसे कौन लेगा !
७ और अब हे प्रभु, मैं किस बात की बाट जोहूं ?
मेरी आशा तो तेरी ओर लगी है।
८ मुझे मेरे सब अपराधों के बन्धन से छुड़ा ले।
मूढ़ मेरी निन्दा न करने पाए।
९ मैं गूंगा बन गया और मुंह न खोला;
क्योंकि यह काम तू ही ने किया है।
१० तू ने जो विपत्ति मुझ पर डाली है उसे मुझ से दूर कर दे,
क्योंकि मैं तो तेरे हाथ की मार से भस्म हुआ जाता हूं।
११ जब तू मनुष्य को अधर्म के कारण दपट दपटकर ताड़ना देता है;
तब तू उसकी सुन्दरता को पतिंगे की नाईं नाश करता है;
सचमुच सब मनुष्य वृथाभिमान करते हैं।। (सेला)
१२ हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन, और मेरी दोहाई पर कान लगा;
मेरा रोना सुनकर शांत न रह !
क्योंकि मैं तेरे संग एक परदेशी यात्री की नाईं रहता हूं,
और अपने सब पुरखाओं के समान परदेशी हूं।
१३ आह ! इस से पहिले कि मैं यहां से चला जाऊं और न रह जाऊं,
मुझे बचा ले जिस से मैं प्रदीप्त जीवन प्राप्त करूं !

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन)

४० मैं धीरज से यहोवा की बाट जोहता रहा;
और उस ने मेरी ओर झुककर मेरी दोहाई सुनी।

२ उस ने मुझे सत्यानाश के गड़हे और दलदल की कीच में से उबारा,
और मुझ को चट्टान पर खड़ा करके मेरे पैरों को दृढ़ किया है।
३ और उस ने मुझे एक नया गीत सिखाया जो हमारे परमेश्वर की स्तुति का है।
बहुतेरे यह देखकर डरेंगे,
और यहोवा पर भरोसा रखेंगे ॥
४ क्या ही धन्य है वह पुरुष, जो यहोवा पर भरोसा करता है,
और अभिमानियों और मिथ्या की ओर मुड़नेवालों की ओर मुह न फेरता हो।
५ हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तू ने बहुत से काम किए हैं!
जो आश्चर्यकर्म और कल्पनाएं तू हमारे लिये करता है वह बहुत सी हैं;
तेरे तुल्य कोई नहीं!
मैं तो चाहता हूं कि खोलकर उनकी चर्चा करूं,
परन्तु उनकी गिनती नहीं हो सकती ॥
६ मेलबलि और अन्नबलि से तू प्रसन्न नहीं होता
तू ने मेरे कान खोदकर खोले हैं।
होमबलि और पापबलि तू ने नहीं चाहा।
७ तब मैं ने कहा, देख, मैं आया हूं;
क्योंकि पुस्तक में मेरे विषय ऐसा ही लिखा हुआ है।
८ हे मेरे परमेश्वर मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूं;
और तेरी व्यवस्था मेरे अन्तःकरण में बसी है ॥
९ मैं ने बड़ी सभा में धर्म के शुभ समाचार का प्रचार किया है;
देख, मैं ने अपना मुंह बन्द नहीं किया,
हे यहोवा, तू इसे जानता है।
१० मैं ने तेरा धर्म मन ही में नहीं रखा;
मैं ने तेरी सच्चाई और तेरे किए हुए उद्धार की चर्चा की है;
मैं ने तेरी करुणा और सत्यता बड़ी सभा से गुप्त नहीं रखी ॥
११ हे यहोवा, तू भी अपनी बड़ी दया मुझ पर से न हटा ले,
तेरी करुणा और सत्यता से निरन्तर मेरी रक्षा होती रहे!
१२ क्योंकि मैं अनगिनत बुराइयों से घिरा हुआ हूं;
मेरे अधर्म के कामों ने मुझे आ पकड़ा और मैं दृष्टि नहीं उठा सकता;
वे गिनती में मेरे सिर के बालों से भी अधिक हैं; इसलिये मेरा हृदय टूट गया ॥
१३ हे यहोवा, कृपा करके मुझे छुड़ा ले!
हे यहोवा, मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर!
१४ जो मेरे प्राण की खोज में हैं,
वे सब लज्जित हों; और उनके मुह काले हों और वे पीछे हटाए और निरादर किए जाएं
जो मेरी हानि से प्रसन्न होते हैं।
१५ जो मुझ से आहा, आहा, कहते हैं,
वे अपनी लज्जा के मारे विस्मित हों ॥
१६ परन्तु जितने तुझे ढूंढ़ते हैं, वे सब तेरे कारण हर्षित और आनन्दित हों;

जो तेरा किया हुआ उद्धार चाहते हैं, वे निरन्तर कहते रहें,
यहोवा की बड़ाई हो !
१७ मैं तो दीन और दरिद्र हूं,
तौभी प्रभु मेरी चिन्ता करता है।
तू मेरा सहायक और छुड़ानेवाला है;
हे मेरे परमेश्वर विलम्ब न कर ॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन)

४१ क्या ही धन्य है वह, जो कंगाल की सुधि रखता है !
विपत्ति के दिन यहोवा उसको बचाएगा।
२ यहोवा उसकी रक्षा करके उसको जीवित रखेगा, और वह पृथ्वी पर भाग्यवान होगा।
तू उसको शत्रुओं की इच्छा पर न छोड़।
३ जब वह व्याधि के मारे सेज पर पड़ा हो, तब यहोवा उसे सम्भालेगा;
तू रोग में उसके पूरे बिछौने को उलटकर ठीक करेगा ॥
४ मैं ने कहा, हे यहोवा, मुझ पर अनुग्रह कर;
मुझ को चंगा कर, क्योंकि मैं ने तो तेरे विरुद्ध पाप किया है !
५ मेरे शत्रु यह कहकर मेरी बुराई करते हैं:
वह कब मरेगा, और उसका नाम कब मिटेगा ?
६ और जब वह मुझ से मिलने को आता है, तब वह व्यर्थ बातें बकता है,
जब कि उसका मन अपने अन्दर अधर्म की बातें संचय करता है;
और बाहर जाकर उनकी चर्चा करता है।
७ मेरे सब बैरी मिलकर मेरे विरुद्ध कानाफूसी करते हैं;
वे मेरे ही विरुद्ध होकर मेरी हानि की कल्पना करते हैं ॥
८ वे कहते हैं कि इसे तो कोई बुरा रोग लग गया है;
अब जो यह पड़ा है, तो फिर कभी उठने का नहीं !
९ मेरा परम मित्र जिस पर मैं भरोसा रखता था, जो मेरी रोटी खाता था,
उस ने भी मेरे विरुद्ध लात उठाई है।
१० परन्तु हे यहोवा, तू मुझ पर अनुग्रह करके मुझ को उठा ले,
कि मैं उनको बदला दूं !
११ मेरा शत्रु जो मुझ पर जयवन्त नहीं हो पाता,
इस से मैं ने जान लिया है कि तू मुझ से प्रसन्न है।
१२ और मुझे तो तू खराई में सम्भालता, और सर्वदा के लिये अपने सम्मुख स्थिर करता है ॥
१३ इस्राएल का परमेश्वर यहोवा
आदि से अनन्तकाल तक धन्य है
आमीन, फिर आमीन ॥

दूसरा भाग

(प्रधान बजानेवाले के लिये कोरह-वंशियों का मश्कील)

४२ जैसे हरिणी नदी के जल के लिये हांफती है,
वैसे ही, हे परमेश्वर, मैं तेरे लिये हांफता हूं।
२ जीवते ईश्वर परमेश्वर का मैं प्यासा हूं,
मैं कब जाकर परमेश्वर को अपना मुंह दिखाऊंगा?
३ मेरे आंसू दिन और रात मेरा आहार हुए हैं;
और लोग दिन भर मुझ से कहते रहते हैं, तेरा परमेश्वर कहां है?
४ मैं भीड़ के संग जाया करता था,
मैं जयजयकार और धन्यवाद के साथ उत्सव करनेवाली भीड़ के बीच में परमेश्वर के भवन को धीरे धीरे जाया करता था;
यह स्मरण करके मेरा प्राण* शोकित हो जाता है।
५ हे मेरे प्राण, तू क्यों गिरा जाता है?
और तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है?
परमेश्वर पर आशा लगाए रह;
क्योंकि मैं उसके दर्शन से उद्धार पाकर
फिर उसका धन्यवाद करूंगा॥
६ हे मेरे परमेश्वर; मेरा प्राण मेरे भीतर गिरा जाता है,
इसलिये मैं यर्दन के पास के देश से और हर्मोन के पहाड़ों और मिसगार की पहाड़ी के ऊपर से तुझे स्मरण करता हूं।
७ तेरी जलधाराओं का शब्द सुनकर जल, जल को पुकारता है;
तेरी सारी तरंगों और लहरों में मैं डूब गया हूं।
८ तौभी दिन को यहोवा अपनी शक्ति और करुणा प्रगट करेगा;
और रात को भी मैं उसका गीत गाऊंगा,
और अपने जीवनदाता ईश्वर से प्रार्थना करूंगा॥
९ मैं ईश्वर से जो मेरी चट्टान है कहूंगा, तू मुझे क्यों भूल गया?
मैं शत्रु के अन्धेर के मारे क्यों शोक का पहिरावा पहिने हुए चलता फिरता हूं?
१० मेरे सतानेवाले जो मेरी निन्दा करते हैं मानो उस से मेरी हड्डियां चूर चूर होती हैं, मानो कटार से छिदी जाती हैं,
क्योंकि वे दिन भर मुझ से कहते रहते हैं, तेरा परमेश्वर कहां है?
११ हे मेरे प्राण तू क्या गिरा जाता है?
तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है?
परमेश्वर पर भरोसा रख; क्योंकि वह मेरे मुख की चमक* और मेरा परमेश्वर है, मैं फिर उसका धन्यवाद करूंगा॥

---

* मूल में—मैं अपना जीव अपने ऊपर उण्डेलता हूं।

* मूल में—का उद्धार।

४३ हे परमेश्वर, मेरा न्याय चुका और विधर्मी जाति से मेरा मुक़द्दमा लड़; मुझ को छली और कुटिल पुरुष से बचा।
२ क्योंकि हे परमेश्वर, तू ही मेरी शरण है, तू ने क्यों मुझे त्याग दिया है?
मैं शत्रु के अन्धेर के मारे शोक का पहिरावा पहिने हुए क्यों फिरता रहूं?
३ अपने प्रकाश और अपनी सच्चाई को भेज; वे मेरी अगुवाई करें,
वे ही मुझ को तेरे पवित्र पर्वत पर और तेरे निवास स्थान में पहुंचाएं!
४ तब मैं परमेश्वर की वेदी के पास जाऊंगा,
उस ईश्वर के पास जो मेरे अति आनन्द का कुंड है;
और हे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, मैं वीणा बजा बजाकर तेरा धन्यवाद करूंगा॥
५ हे मेरे प्राण तू क्यों गिरा जाता है? तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है?
परमेश्वर पर भरोसा रख, क्योंकि वह मेरे मुख की चमक और मेरा परमेश्वर है;
मैं फिर उसका धन्यवाद करूंगा॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये कोरह-वंशियों का मश्कील)

४४ हे परमेश्वर हम ने अपने कानों से सुना, हमारे बापदादों ने हम से वर्णन किया है,
कि तू ने उनके दिनों में और प्राचीनकाल में क्या क्या काम किए हैं।
२ तू ने अपने हाथ से जातियों को निकाल दिया, और इनको बसाया;
तू ने देश देश के लोगों को दु:ख दिया, और इनको चारों ओर फैला दिया;
३ क्योंकि वे न तो अपनी तलवार के बल से इस देश के अधिकारी हुए, और न अपने बाहुबल से;
परन्तु तेरे दहिने हाथ और तेरी भुजा और तेरे प्रसन्न मुख के कारण जयवन्त हुए;
क्योंकि तू उनको चाहता था॥
४ हे परमेश्वर, तू ही हमारा महाराजा है,
तू याकूब के उद्धार की आज्ञा देता है।
५ तेरे सहारे से हम अपने द्रोहियों को ढकेलकर गिरा देंगे;
तेरे नाम के प्रताप से हम अपने विरोधियों को रौंदेंगे।
६ क्योंकि मैं अपने धनुष पर भरोसा न रखूंगा,
और न अपनी तलवार के बल से बचूंगा।
७ परन्तु तू ही ने हम को द्रोहियों से बचाया है,
और हमारे बैरियों को निराश और लज्जित किया है।
८ हम परमेश्वर की बड़ाई दिन भर करते रहते हैं,
और सदैव तेरे नाम का धन्यवाद करते रहेंगे॥ (सेला)
९ तौभी तू ने अब हम को त्याग दिया और हमारा अनादर किया है,
और हमारे दलों के साथ आगे नहीं जाता।
१० तू हम को शत्रु के साम्हने से हटा देता है,

और हमारे बैरी मनमाने लूट मार
करते हैं।

११ तू ने हमें कसाई की भेड़ों के समान
कर दिया है,
और हम को अन्य जातियों में तितर-
बितर किया है।

१२ तू अपनी प्रजा को सेंतमेंत बेच
डालता है,
परन्तु उनके मोल से तू धनी नहीं
होता ॥

१३ तू हमारे पड़ोसियों से हमारी नाम-
धराई कराता है,
और हमारे चारों ओर के रहनेवाले
हम से हंसी ठट्ठा करते हैं।

१४ तू हम को अन्यजातियों के बीच में
उपमा ठहराता है,
और देश देश के लोग हमारे कारण
सिर हिलाते हैं।
दिन भर हमें तिरस्कार सहना पड़ता
है,

१५ और कलंक लगाने और निन्दा करने-
वाले के बोल से,

१६ और शत्रु और बदला लेनेवालों के
कारण,
बुरा-भला कहनेवालों और निन्दा
करनेवालों के कारण ॥

१७ यह सब कुछ हम पर बीता तौभी
हम तुझे नहीं भूले,
न तेरी वाचा के विषय विश्वासघात
किया है।

१८ हमारे मन न बहके,
न हमारे पैर तेरी बाट से मुड़े;

१९ तौभी तू ने हमें गीदड़ों के स्थान में
पीस डाला,
और हम को घोर अन्धकार में छिपा
दिया है ॥

२० यदि हम अपने परमेश्वर का नाम
भूल जाते,
वा किसी पराए देवता की ओर अपने
हाथ फैलाते,

२१ तो क्या परमेश्वर इसका विचार न
करता ?
क्योंकि वह तो मन की गुप्त बातों
को जानता है।

२२ परन्तु हम दिन भर तेरे निमित्त मार
डाले जाते हैं,
और उन भेड़ों के समान समझे जाते हैं
जो वध होने पर हैं ॥

२३ हे प्रभु, जाग ! तू क्यों सोता है ?
उठ ! हम को सदा के लिये त्याग
न दे !

२४ तू क्यों अपना मुंह छिपा लेता है ?
और हमारा दुःख और सताया जाना
भूल जाता है ?

२५ हमारा प्राण मिट्टी से लग गया;
हमारा पेट भूमि से सट गया है।

२६ हमारी सहायता के लिये उठ खड़ा
हो !
और अपनी करुणा के निमित्त हम
को छुड़ा ले ॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये। शोशन्नीम में कोरहवंशियों का मश्कील। प्रेम प्रीति का गीत)

४५

मेरा हृदय एक सुन्दर विषय
की उमंग से उमण्ड रहा है,
जो बात मैं ने राजा के विषय रची
है उसको सुनाता हूं;
मेरी जीभ निपुण लेखक की लेखनी
बनी है ॥

२ तू मनुष्य की सन्तानों में परम सुन्दर
है;

तेरे ओठों में अनुग्रह भरा हुआ है;
इसलिये परमेश्वर ने तुझे सदा के लिये आशीष दी है।

३ हे वीर, तू अपनी तलवार को जो तेरा विभव और प्रताप है अपनी कटि पर बान्ध!

४ सत्यता, नम्रता और धर्म के निमित्त अपने ऐश्वर्य और प्रताप पर सफलता से सवार हो;
तेरा दहिना हाथ तुझे भयानक काम सिखलाए!

५ तेरे तीर तो तेज़ हैं,
तेरे साम्हने देश देश के लोग गिरेंगे;
राजा के शत्रुओं के हृदय उन से छिदेंगे॥

६ हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन * सदा सर्वदा बना रहेगा;
तेरा राजदण्ड न्याय का है।

७ तू ने धर्म से प्रीति और दुष्टता से बैर रखा है।
इस कारण परमेश्वर ने हां तेरे परमेश्वर ने
तुझ को तेरे साथियों से अधिक हर्ष के तेल से अभिषेक किया है।

८ तेरे सारे वस्त्र, गन्धरस, अगर, और तेज से सुगन्धित हैं,
तू हाथीदांत के मन्दिरों में तारवाले बाजों के कारण आनन्दित हुआ है।

९ तेरी प्रतिष्ठित स्त्रियों में राजकुमारियां भी हैं;
तेरी दहिनी ओर पटरानी, ओपीर के कुन्दन से विभूषित खड़ी है॥

१० हे राजकुमारी सुन, और कान लगाकर ध्यान दे;
अपने लोगों और अपने पिता के घर को भूल जा;

११ और राजा तेरे रूप की चाह करेगा।
क्योंकि वह तो तेरा प्रभु है, तू उसे दण्डवत् कर।

१२ सोर की राजकुमारी भी भेंट करने के लिये उपस्थित होगी,
प्रजा के धनवान लोग तुझे प्रसन्न करने का यत्न करेंगे॥

१३ राजकुमारी महल में अति शोभायमान है,
उसके वस्त्र में सुनहले बूटे कढ़े हुए हैं;

१४ वह बूटेदार वस्त्र पहिने हुए राजा के पास पहुंचाई जाएगी।
जो कुमारियां उसकी सहेलियां हैं,
वे उसके पीछे पीछे चलती हुई तेरे पास पहुंचाई जाएंगी।

१५ वे आनन्दित और मगन होकर पहुंचाई जाएंगी,
और वे राजा के महल में प्रवेश करेंगी॥

१६ तेरे पितरों के स्थान पर तेरे पुत्र होंगे;
जिनको तू सारी पृथ्वी पर हाकिम ठहराएगा।

१७ मैं ऐसा करूंगा, कि तेरी नाम की चर्चा पीढ़ी से पीढ़ी तक होती रहेगी;
इस कारण देश देश के लोग सदा सर्वदा तेरा धन्यवाद करते रहेंगे॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये, कोरह-वंशियों का, अलामोत की राग पर एक गीत)

४६ परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है,
संकट में अति सहज से मिलनेवाला सहायक।

---

* वा तेरा सिंहासन परमेश्वर का है।

२ इस कारण हम को कोई भय नहीं चाहे पृथ्वी उलट जाए,
और पहाड़ समुद्र के बीच में डाल दिए जाएं;
३ चाहे समुद्र गरजे और फेन उठाए,
और पहाड़ उसकी बाढ़ से कांप उठे ।। (सेला)
४ एक नदी है जिसकी नहरों से परमेश्वर के नगर में
अर्थात् परमप्रधान के पवित्र निवास भवन में आनन्द होता है ।
५ परमेश्वर उस नगर के बीच में है, वह कभी टलने का नहीं;
पौ फटते ही परमेश्वर उसकी सहायता करता है ।
६ जाति जाति के लोग झल्ला उठे, राज्य राज्य के लोग डगमगाने लगे;
वह बोल उठा, और पृथ्वी पिघल गई ।
७ सेनाओं का यहोवा हमारे संग है;
याकूब का परमेश्वर हमारा ऊंचा गढ़ है ।। (सेला)
८ आओ, यहोवा के महाकर्म देखो,
कि उस ने पृथ्वी पर कैसा कैसा उजाड़ किया है ।
९ वह पृथ्वी की छोर तक लड़ाइयों को मिटाता है;
वह धनुष को तोड़ता, और भाले को दो टुकड़े कर डालता है,
और रथों को आग में झोंक देता है !
१० चुप हो जाओ, और जान लो, कि मैं ही परमेश्वर हूं ।
मैं जातियों में महान् हूं,
मैं पृथ्वी भर में महान् हूं !
११ सेनाओं का यहोवा हमारे संग है;
याकूब का परमेश्वर हमारा ऊंचा गढ़ है ।। (सेला)

(प्रधान बजानेवाले के लिये कोरह-वंशियों का भजन)

४७ हे देश देश के सब लोगो, तालियां बजाओ !
ऊंचे शब्द से परमेश्वर के लिये जयजयकार करो !
२ क्योंकि यहोवा परमप्रधान और भय-योग्य है,
वह सारी पृथ्वी के ऊपर महाराजा है ।
३ वह देश के लोगों को हमारे सम्मुख नीचा करता,
और अन्यजातियों को हमारे पांवों के नीचे कर देता है ।
४ वह हमारे लिये उत्तम भाग चुन लेगा,
जो उसके प्रिय याकूब के घमण्ड का कारण है ।। (सेला)
५ परमेश्वर जयजयकार सहित,
यहोवा नरसिंगे के शब्द के साथ ऊपर गया है ।
६ परमेश्वर का भजन गाओ, भजन गाओ !
हमारे महाराजा का भजन गाओ, भजन गाओ !
७ क्योंकि परमेश्वर सारी पृथ्वी का महाराजा है;
समझ बूझकर बुद्धि से भजन गाओ
८ परमेश्वर जाति जाति पर राज्य करता है;
परमेश्वर अपने पवित्र सिंहासन पर विराजमान है ।

६ राज्य राज्य के रईस इब्राहीम के परमेश्वर की प्रजा होने के लिये इकट्ठे हुए हैं।
क्योंकि पृथ्वी की ढालें परमेश्वर के वश में हैं,
वह तो शिरोमणि है !

(गीत। भजन। कोरहवंशियों का)

४८ हमारे परमेश्वर के नगर में, और अपने पवित्र पर्वत पर
यहोवा महान् और अति स्तुति के योग्य है !
२ सिय्योन पर्वत ऊंचाई में सुन्दर और सारी पृथ्वी के हर्ष का कारण है,
राजाधिराज का नगर उत्तरीय सिरे पर है।
३ उसके महलों में परमेश्वर ऊंचा गढ़ माना गया है ।।
४ क्योंकि देखो, राजा लोग इकट्ठे हुए,
वे एक संग आगे बढ़ गए।
५ उन्हों ने आप ही देखा और देखते ही विस्मित हुए,
वे घबराकर भाग गए।
६ वहां कपकपी ने उनको आ पकड़ा,
और जच्चा की सी पीड़ाएं उन्हें होने लगीं।
७ तू पूर्वी वायु से
तर्शीश के जहाज़ों को तोड़ डालता है।
८ सेनाओं के यहोवा के नगर में,
अपने परमेश्वर के नगर में, जैसा हम ने सुना था, वैसा देखा भी है;
परमेश्वर उसको सदा दृढ़ और स्थिर रखेगा ।। (सेला)
९ हे परमेश्वर हम ने तेरे मन्दिर के भीतर
तेरी करुणा पर ध्यान किया है।
१० हे परमेश्वर तेरे नाम के योग्य
तेरी स्तुति पृथ्वी की छोर तक होती है।
तेरा दहिना हाथ धर्म से भरा है;
११ तेरे न्याय के कामों के कारण
सिय्योन पर्वत आनन्द करे,
और यहूदा के नगर की पुत्रियां* मगन हों !
१२ सिय्योन के चारों ओर चलो, और उसकी परिक्रमा करो,
उसके गुम्मटों को गिन लो,
१३ उसकी शहरपनाह पर दृष्टि लगाओ,
उसके महलों को ध्यान से देखो;
जिस से कि तुम आनेवाली पीढ़ी के लोगों से इस बात का वर्णन कर सको।
१४ क्योंकि यह परमेश्वर सदा सर्वदा हमारा परमेश्वर है,
वह मृत्यु तक हमारी अगुवाई करेगा ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये कोरह-वंशियों का भजन)

४९ हे देश देश के सब लोगो, यह सुनो !
हे संसार के सब निवासियो, कान लगाओ !
२ क्या ऊंच, क्या नीच
क्या धनी, क्या दरिद्र, कान लगाओ !
३ मेरे मुंह से बुद्धि की बातें निकलेंगी;
और मेरे हृदय की बातें समझ की होंगी।
४ मैं नीतिवचन की ओर अपना कान लगाऊंगा,

* मूल में—बेटियां।

मैं वीणा बजाते हुए अपनी गुप्त
बात प्रकाशित करूंगा ।।
५ विपत्ति के दिनों में जब मैं अपने अड़ंगा
मारनेवालों की बुराइयों से घिरूं,
तब मैं क्यों डरूं ?
६ जो अपनी सम्पत्ति पर भरोसा रखते,
और अपने धन की बहुतायत पर
फूलते हैं,
७ उन में से कोई अपने भाई को किसी
भांति छुड़ा नहीं सकता है;
और न परमेश्वर को उसकी सन्ती
प्रायश्चित्त में कुछ दे सकता है,
८ (क्योंकि उनके प्राण की छुड़ौती
भारी है
वह अन्त तक कभी न चुका सकेंगे) ।
९ कोई ऐसा नहीं जो सदैव जीवित रहे,
और क़ब्र को न देखे ।।
१० क्योंकि देखने में आता है, कि बुद्धिमान
भी मरते हैं,
और मूर्ख और पशु सरीखे मनुष्य भी
दोनों नाश होते हैं,
और अपनी सम्पत्ति औरों के लिये
छोड़ जाते हैं ।
११ वे मन ही मन यह सोचते हैं, कि
उनका घर सदा स्थिर रहेगा,
और उनके निवास पीढ़ी से पीढ़ी तक
बने रहेंगे;
इसलिये वे अपनी अपनी भूमि का
नाम अपने अपने नाम पर रखते हैं ।
१२ परन्तु मनुष्य प्रतिष्ठा पाकर भी
स्थिर नहीं रहता,
वह पशुओं के समान होता है, जो मर
मिटते हैं ।।
१३ उनकी यह चाल उनकी मूर्खता है,
तौभी उनके बाद लोग उनकी बातों
से प्रसन्न होते हैं । (सेला)
१४ वे अधोलोक की मानो भेड़-बकरियां
ठहराए गए हैं;
मृत्यु उनका गड़ेरिया ठहरी;
और बिहान को सीधे लोग उन पर
प्रभुता करेंगे;
और उनका सुन्दर रूप अधोलोक
का कौर हो जाएगा और उनका
कोई आधार न रहेगा ।
१५ परन्तु परमेश्वर मेरे प्राण को अधो-
लोक के वश से छुड़ा लेगा,
क्योंकि वही मुझे ग्रहण कर
अपनाएगा ।। (सेला)
१६ जब कोई धनी हो जाए और उसके
घर का विभव बढ़ जाए,
तब तू भय न खाना ।
१७ क्योंकि वह मर कर कुछ भी साथ
न ले जाएगा;
न उसका विभव उसके साथ क़ब्र में
जाएगा ।
१८ चाहे वह जीते जी अपने आप को
धन्य कहता रहे,
(जब तू अपनी भलाई करता है, तब
वे लोग तेरी प्रशंसा करते हैं)
१९ तौभी वह अपने पुरखाओं के समाज
में मिलाया जाएगा,
जो कभी उजियाला न देखेंगे ।
२० मनुष्य चाहे प्रतिष्ठित भी हों परन्तु
यदि वे समझ नहीं रखते, तो
वे पशुओं के समान हैं जो मर
मिटते हैं ।।

(आसाप का भजन)

५० ईश्वर परमेश्वर यहोवा ने
कहा है,
और उदयाचल से लेकर अस्ताचल
तक पृथ्वी के लोगों को बुलाया है ।

२ सिय्योन से, जो परम सुन्दर है,
परमेश्वर ने अपना तेज दिखाया है।
३ हमारा परमेश्वर आएगा और चुपचाप न रहेगा,
आग उसके आगे आगे भस्म करती जाएगी;
और उसके चारों ओर बड़ी आंधी चलेगी।
४ वह अपनी प्रजा का न्याय करने के लिये
ऊपर के आकाश को और पृथ्वी को भी पुकारेगा :
५ मेरे भक्तों को मेरे पास इकट्ठा करो,
जिन्हों ने बलिदान चढ़ाकर मुझ से वाचा बान्धी है!
६ और स्वर्ग उसके धर्मी होने का प्रचार करेगा
क्योंकि परमेश्वर तो आप ही न्यायी है।। (सेला)
७ हे मेरी प्रजा, सुन, मैं बोलता हूं,
और हे इस्राएल, मैं तेरे विषय साक्षी देता हूं।
परमेश्वर तेरा परमेश्वर मैं ही हूं।
८ मैं तुझ पर तेरे मेलबलियों के विषय दोष नहीं लगाता,
तेरे होमबलि तो नित्य मेरे लिये चढ़ते हैं।
९ मैं न तो तेरे घर से बैल
न तेरे पशुशालों से बकरे ले लूंगा।
१० क्योंकि वन के सारे जीवजन्तु
और हजारों पहाड़ों के जानवर मेरे ही हैं।
११ पहाड़ों के सब पक्षियों को मैं जानता हूं,
और मैदान पर चलने फिरनेवाले जानवर मेरे ही हैं।।
१२ यदि मैं भूखा होता तो तुझ से न कहता;
क्योंकि जगत् और जो कुछ उस में है वह मेरा है।
१३ क्या मैं बैल का मांस खाऊं,
वा बकरों का लोहू पीऊं?
१४ परमेश्वर को धन्यवाद ही का बलिदान चढ़ा,
और परमप्रधान के लिये अपनी मन्नतें पूरी कर;
१५ और संकट के दिन मुझे पुकार;
मैं तुझे छुड़ाऊंगा, और तू मेरी महिमा करने पाएगा।।
१६ परन्तु दुष्ट से परमेश्वर कहता है :
तुझे मेरी विधियों का वर्णन करने से क्या काम?
तू मेरी वाचा की चर्चा क्यों करता है?
१७ तू तो शिक्षा से बैर करता,
और मेरे वचनों को तुच्छ जानता है।
१८ जब तू ने चोर को देखा, तब उसकी संगति से प्रसन्न हुआ;
और परस्त्रीगामियों के साथ भागी हुआ।।
१९ तू ने अपना मुंह बुराई करने के लिये खोला,
और तेरी जीभ छल की बातें गढ़ती है।
२० तू बैठा हुआ अपने भाई के विरुद्ध बोलता;
और अपने सगे भाई की चुगली खाता है।
२१ यह काम तू ने किया, और मैं चुप रहा;

इसलिये तू ने समझ लिया कि परमेश्वर बिलकुल मेरे समान है।
परन्तु मैं तुझे समझाऊंगा, और तेरी आंखों के साम्हने सब कुछ अलग अलग दिखाऊंगा॥
२२ हे ईश्वर को भूलनेवालो यह बात भली भांति समझ लो,
कहीं ऐसा न हो कि मैं तुम्हें फाड़ डालूं, और कोई छुड़ानेवाला न हो!
२३ धन्यवाद के बलिदान का चढ़ानेवाला मेरी महिमा करता है;
और जो अपना चरित्र उत्तम रखता है
उसको मैं परमेश्वर का किया हुआ उद्धार दिखाऊंगा!

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन जब नातान नबी उसके पास इसलिये आया कि वह बतसेबा के पास गया था)

५१ हे परमेश्वर, अपनी करुणा के अनुसार मुझ पर अनुग्रह कर;
अपनी बड़ी दया के अनुसार मेरे अपराधों को मिटा दे।
२ मुझे भली भांति धोकर मेरा अधर्म दूर कर,
और मेरा पाप छुड़ाकर मुझे शुद्ध कर!
३ मैं तो अपने अपराधों को जानता हूं,
और मेरा पाप निरन्तर मेरी दृष्टि में रहता है।
४ मैं ने केवल तेरे ही विरुद्ध पाप किया,
और जो तेरी दृष्टि में बुरा है, वही किया है,
ताकि तू बोलने में धर्मी
और न्याय करने में निष्कलंक ठहरे।
५ देख, मैं अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ,
और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा॥
६ देख, तू हृदय की सच्चाई से प्रसन्न होता है;
और मेरे मन* ही में ज्ञान सिखाएगा।
७ जूफा से मुझे शुद्ध कर, तो मैं पवित्र हो जाऊंगा;
मुझे धो, और मैं हिम से भी अधिक श्वेत बनूंगा।
८ मुझे हर्ष और आनन्द की बातें सुना,
जिस से जो हड्डियां तू ने तोड़ डाली हैं वे मगन हो जाएं।
९ अपना मुख मेरे पापों की ओर से फेर ले,
और मेरे सारे अधर्म के कामों को मिटा डाल॥
१० हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर,
और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर।
११ मुझे अपने साम्हने से निकाल न दे,
और अपने पवित्र आत्मा को मुझ से अलग न कर।
१२ अपने किए हुए उद्धार का हर्ष मुझे फिर से दे,
और उदार आत्मा देकर मुझे सम्भाल॥
१३ तब मैं अपराधियों को तेरा मार्ग सिखाऊंगा,
और पापी तेरी ओर फिरेंगे।

१४ हे परमेश्वर, हे मेरे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर, मुझे हत्या के अपराध से छुड़ा ले,
तब मैं तेरे धर्म का जयजयकार करने पाऊंगा ।।
१५ हे प्रभु, मेरा मुंह खोल दे
तब मैं तेरा गुणानुवाद कर सकूंगा।
१६ क्योंकि तू मेलबलि में प्रसन्न नहीं होता, नहीं तो मैं देता;
होमबलि से भी तू प्रसन्न नहीं होता।
१७ टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है;
हे परमेश्वर, तू टूटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता ।।
१८ प्रसन्न होकर सिय्योन की भलाई कर,
यरूशलेम की शहरपनाह को तू बना,
१९ तब तू धर्म के बलिदानों से अर्थात् सर्वांग पशुओं के होमबलि से प्रसन्न होगा;
तब लोग तेरी वेदी पर बैल चढ़ाएंगे ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये, मश्कील पर दाऊद का भजन जब दोएग एदोमी ने शाऊल को बताया कि दाऊद अहीमेलेक के घर गया है)

५२ हे वीर, तू बुराई करने पर क्यों घमण्ड करता है?
ईश्वर की करुणा तो अनन्त है।
२ तेरी जीभ केवल दुष्टता गढ़ती है;
सान धरे हुए अस्तुरे की नाईं वह छल का काम करती है।
३ तू भलाई से बढ़कर बुराई में,
और अधर्म की बात से बढ़कर झूठ से प्रीति रखता है। (सेला)
४ हे छली जीभ
तू सब विनाश करनेवाली बातों से प्रसन्न रहती है ।।
५ निश्चय ईश्वर तुझे सदा के लिये नाश कर देगा;
वह तुझे पकडकर तेरे डेरे से निकाल देगा;
और जीवतों के लोक से तुझे उखाड़ डालेगा। (सेला)
६ तब धर्मी लोग इस घटना को देखकर डर जाएंगे,
और यह कहकर उस पर हंसेंगे, कि
७ देखो, यह वही पुरुष है जिस ने परमेश्वर को अपनी शरण नहीं माना,
परन्तु अपने धन की बहुतायत पर भरोसा रखता था,
और अपने को दुष्टता में दृढ़ करता रहा!
८ परन्तु मैं तो परमेश्वर के भवन में हरे जलपाई के वृक्ष के समान हूं।
मैं ने परमेश्वर की करुणा पर सदा सर्वदा के लिये भरोसा रखा है।
९ मैं तेरा धन्यवाद सर्वदा करता रहूंगा,
क्योंकि तू ही ने यह काम किया है।
मैं तेरे ही नाम की बाट जोहता रहूंगा,
क्योंकि यह तेरे पवित्र भक्तों के साम्हने उत्तम है ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये महलत की राग पर दाऊद का मश्कील)

५३ मूढ़ ने अपने मन में कहा है, कि कोई परमेश्वर है ही नहीं।
वे बिगड़ गए, उन्हों ने कुटिलता के घिनौने काम किए हैं;
कोई सुकर्मी नहीं ।।
२ परमेश्वर ने स्वर्ग पर से मनुष्यों के ऊपर दृष्टि की

ताकि देखे कि कोई बुद्धि से चलने-
वाला
वा परमेश्वर को पूछनेवाला है कि
नहीं ।।
३ वे सब के सब हट गए; सब एक साथ
बिगड़ गए;
कोई सुकर्मी नहीं, एक भी नहीं ।।
क्या उन सब अनर्थकारियों को कुछ
भी ज्ञान नहीं
४ जो मेरे लोगों को ऐसे खाते हैं जैसे
रोटी
और परमेश्वर का नाम नहीं लेते ?
५ वहां उन पर भय छा गया जहां भय
का कोई कारण न था ।
क्योंकि यहोवा ने उनकी हड्डियों को,
जो तेरे विरुद्ध छावनी डाले पड़े
थे, तितर बितर कर दिया;
तू ने तो उन्हें लज्जित कर दिया
इसलिये कि परमेश्वर ने उनको
निकम्मा ठहराया है ।।
६ भला होता कि इस्राएल का पूरा
उद्धार सिय्योन से निकलता !
जब परमेश्वर अपनी प्रजा को बन्धुआई
से लौटा ले आएगा
तब याकूब मगन और इस्राएल
आनन्दित होगा ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये, दाऊद का मश्कील तारवाले बाजों के साथ, जब जीपियों ने आकर शाऊल से कहा क्या दाऊद हमारे बीच में छिपा नहीं रहता?)

५४ हे परमेश्वर अपने नाम के द्वारा
मेरा उद्धार कर,
और अपने पराक्रम से मेरा न्याय कर।
२ हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुन
ले;
मेरे मुंह के वचनों की ओर कान
लगा ।।
३ क्योंकि परदेशी मेरे विरुद्ध उठे हैं,
और बलात्कारी मेरे प्राण के ग्राहक
हुए हैं;
उन्हों ने परमेश्वर को अपने सम्मुख
नहीं जाना ।। (सेला)
४ देखो, परमेश्वर मेरा सहायक है;
प्रभु मेरे प्राण के सम्भालनेवालों के
संग है ।
५ वह मेरे द्रोहियों की बुराई को उन्हीं
पर लौटा देगा;
हे परमेश्वर, अपनी सच्चाई के कारण
उन्हें विनाश कर ।।
६ मैं तुझे स्वेच्छाबलि चढ़ाऊंगा;
हे यहोवा, मैं तेरे नाम का धन्यवाद
करूंगा, क्योंकि यह उत्तम है ।
७ क्योंकि तू ने मुझे सब दुखों से छुड़ाया
है,
और मैं अपने शत्रुओं पर दृष्टि करके
सन्तुष्ट हुआ हूं ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये, तारवाले बाजों के साथ दाऊद का मश्कील)

५५ हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना की
ओर कान लगा;
और मेरी गिड़गिड़ाहट से मुंह न
मोड़ * !
२ मेरी ओर ध्यान देकर, मुझे उत्तर दे;
मैं चिन्ता के मारे छटपटाता हूं और
व्याकुल रहता हूं ।
३ क्योंकि शत्रु कोलाहल और दुष्ट
उपद्रव कर रहे हैं;
वे मुझ पर दोषारोपण करते हैं,
और क्रोध में आकर मुझे सताते हैं ।।

* मूल में—छिप न जा।

४ मेरा मन भीतर ही भीतर संकट में है,
और मृत्यु का भय मुझ में समा गया है।
५ भय और कंपकपी ने मुझे पकड़ लिया है,
और भय के कारण मेरे रोंए रोंए खड़े हो गए हैं।
६ और मैं ने कहा, भला होता कि मेरे कबूतर के से पंख होते तो मैं उड जाता और विश्राम पाता!
७ देखो, फिर तो मैं उड़ते उड़ते दूर निकल जाता और जंगल में बसेरा लेता, (सेला)
८ मैं प्रचण्ड बयार और आन्धी के झोंके से बचकर किसी शरण स्थान में भाग जाता॥
९ हे प्रभु, उनको सत्यानाश कर, और उनकी भाषा में गड़बड़ी डाल दे;
क्योंकि मैं ने नगर में उपद्रव और झगड़ा देखा है।
१० रात दिन वे उसकी शहरपनाह पर चढ़कर चारों ओर घूमते हैं;
और उसके भीतर दुष्टता और उत्पात होता है।
११ उसके भीतर दुष्टता ने बसेरा डाला है;
और अन्धेर, अत्याचार और छल उसके चौक से दूर नहीं होते॥
१२ जो मेरी नामधराई करता है वह शत्रु नहीं था,
नही तो मैं उसको सह लेता;
जो मेरे विरुद्ध बड़ाई मारता है वह मेरा बैरी नहीं है,
नहीं तो मैं उस से छिप जाता।
१३ परन्तु वह तो तू ही था जो मेरी बराबरी का मनुष्य
मेरा परममित्र और मेरी जान पहचान का था।
१४ हम दोनों आपस में कैसी मीठी मीठी बातें करते थे;
हम भीड़ के साथ परमेश्वर के भवन को जाते थे।
१५ उनको मृत्यु अचानक आ दबाए;
वे जीवित ही अधोलोक में उतर जाएं;
क्योंकि उनके घर और मन दोनों में बुराइयां और उत्पात भरा है॥
१६ परन्तु मैं तो परमेश्वर को पुकारूंगा;
और यहोवा मुझे बचा लेगा।
१७ सांझ को, भोर को, दोपहर को, तीनों पहर में दोहाई दूंगा और कराहता रहूंगा।
और वह मेरा शब्द सुन लेगा।
१८ जो लड़ाई मेरे विरुद्ध मची थी उस से उस ने मुझे कुशल के साथ बचा लिया है।
उन्हों ने तो बहुतों को संग लेकर मेरा साम्हना किया था।
१९ ईश्वर जो आदि से विराजमान है यह सुनकर उनको उत्तर देगा। (सेला)
ये वे हैं जिन में कोई परिवर्तन नहीं,
और उन में परमेश्वर का भय है ही नहीं॥
२० उस ने अपने मेल रखनेवालों पर भी हाथ छोड़ा है,
उस ने अपनी वाचा को तोड़ दिया है।
२१ उसके मुंह की बातें तो मक्खन सी चिकनी थीं
परन्तु उसके मन में लड़ाई की बातें थीं;
उसके वचन तेल से अधिक नरम तो थे
परन्तु नंगी तलवारें थीं॥

२२ अपना बोझ यहोवा पर डाल दे वह तुझे सम्भालेगा;
वह धर्मी को कभी टलने न देगा ।।
२३ परन्तु हे परमेश्वर, तू उन लोगों को विनाश के गड़हे में गिरा देगा;
हत्यारे और छली मनुष्य अपनी आधी आयु तक भी जीवित न रहेंगे ।
परन्तु मैं तुझ पर भरोसा रखे रहूंगा ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये। योनतेलेयद्दोकीम * में दाऊद का मिक्ताम। जब पलिश्तियों ने उसको गत नगर में पकड़ा था)

५६ हे परमेश्वर, मुझ पर अनुग्रह कर, क्योंकि मनुष्य मुझे निगलना चाहते हैं;
वे दिन भर लड़कर मुझे सताते हैं ।
२ मेरे द्रोही दिन भर मुझे निगलना चाहते हैं,
क्योंकि जो लोग अभिमान करके मुझ से लड़ते हैं वे बहुत हैं ।
३ जिस समय मुझे डर लगेगा,
मैं तुझ पर भरोसा रखूंगा ।
४ परमेश्वर की सहायता से मैं उसके वचन की प्रशंसा करूंगा,
परमेश्वर पर मैं ने भरोसा रखा है,
मैं नहीं डरूंगा ।
कोई प्राणी मेरा क्या कर सकता है ?
५ वे दिन भर मेरे वचनों को, उलटा अर्थ लगा लगाकर मरोड़ते रहते हैं;
उनकी सारी कल्पनाएं मेरी ही बुराई करने की होती हैं ।

* अर्थात् दूर देशवालों की मौनी कबूतरी।

६ वे सब मिलकर इकट्ठे होते हैं और छिपकर बैठते हैं;
वे मेरे कदमों को देखते भालते हैं
मानो वे मेरे प्राणों की घात में ताक लगाए बैठे हों ।
७ क्या वे बुराई करके भी बच जाएंगे ?
हे परमेश्वर, अपने क्रोध से देश देश के लोगों को गिरा दे !
८ तू मेरे मारे मारे फिरने का हिसाब रखता है;
तू मेरे आंसुओं को अपनी कुप्पी में रख ले !
क्या उनकी चर्चा तेरी पुस्तक में नहीं है ?
९ तब जिस समय मैं पुकारूंगा, उसी समय मेरे शत्रु उलटे फिरेंगे ।
यह मैं जानता हूं, कि परमेश्वर मेरी ओर है ।
१० परमेश्वर की सहायता से मैं उसके वचन की प्रशंसा करूंगा,
यहोवा की सहायता से मैं उसके वचन की प्रशंसा करूंगा ।
११ मैं ने परमेश्वर पर भरोसा रखा है,
मैं न डरूंगा ।
मनुष्य मेरा क्या कर सकता है ?
१२ हे परमेश्वर, तेरी मन्नतों का भार मुझ पर बना है;
मैं तुझ को धन्यवाद बलि चढ़ाऊंगा ।
१३ क्योंकि तू ने मुझ को मृत्यु से बचाया है;
तू ने मेरे पैरों को भी फिसलने से न बचाया,
ताकि मैं ईश्वर के साम्हने जीवतों के उजियाले में चलूं फिरूं ? ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये अल-तशहेत * में दाऊद का मिक्ताम, जब वह शाऊल से भागकर गुफा में छिप गया था)

५७ हे परमेश्वर, मुझ पर अनुग्रह कर, मुझ पर अनुग्रह कर,
क्योंकि मैं तेरा शरणागत हूं;
और जब तक ये आपत्तियां निकल न जाएं,
तब तक मैं तेरे पंखों के तले शरण लिए रहूंगा।
२ मैं परम प्रधान परमेश्वर को पुकारूंगा,
ईश्वर को जो मेरे लिये सब कुछ सिद्ध करता है।
३ ईश्वर स्वर्ग से भेजकर मुझे बचा लेगा,
जब मेरा निगलनेवाला निन्दा कर रहा हो। (सेला)
परमेश्वर अपनी करुणा और सच्चाई प्रगट करेगा॥
४ मेरा प्राण सिंहों के बीच में है,
मुझे जलते हुओं के बीच में लेटना पड़ता है, अर्थात्
ऐसे मनुष्यों के बीच में जिन के दांत बर्छी और तीर हैं,
और जिनकी जीभ तेज तलवार है॥
५ हे परमेश्वर तू स्वर्ग के ऊपर अति महान और तेजोमय है,
तेरी महिमा सारी पृथ्वी के ऊपर फैल जाए!
६ उन्हों ने मेरे पैरों के लिये जाल लगाया है;
मेरा प्राण ढला जाता है।
उन्हों ने मेरे आगे गड़हा खोदा,
परन्तु आप ही उस में गिर पड़े॥ (सेला)
७ हे परमेश्वर, मेरा मन स्थिर है, मेरा मन स्थिर है;
मैं गाऊंगा वरन भजन कीर्तन करूंगा।
८ हे मेरी आत्मा * जाग जा! हे सारंगी और वीणा जाग जाओ!
मैं भी पौ फटते ही जाग उठूंगा।
९ हे प्रभु, मैं देश के लोगों के बीच तेरा धन्यवाद करूंगा;
मैं राज्य राज्य के लोगों के बीच में तेरा भजन गाऊंगा।
१० क्योंकि तेरी करुणा स्वर्ग तक बड़ी है,
और तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक पहुंचती है॥
११ हे परमेश्वर, तू स्वर्ग के ऊपर अति महान है!
तेरी महिमा सारी पृथ्वी के ऊपर फैल जाए!

(प्रधान बजानेवाले के लिये अल-तशहेत † में दाऊद का मिक्ताम)

५८ हे मनुष्यो, क्या तुम सचमुच धर्म की बात बोलते हो?
और हे मनुष्यवंशियो क्या तुम सीधाई से न्याय करते हो?
२ नहीं, तुम मन ही मन में कुटिल काम करते हो;
तुम देश भर में उपद्रव करते जाते हो ‡॥

* अर्थात् नाश न कर।

* मूल में—हे मेरी महिमा।
† अर्थात् नाश न कर।
‡ मूल में—तुम अपने हाथों का उपद्रव देश में तौल देते हो।

३ दुष्ट लोग जन्मते ही पराए हो जाते हैं,
वे पेट से निकलते ही झूठ बोलते हुए भटक जाते हैं।
४ उन में सर्प का सा विष है;
वे उस नाग के समान हैं, जो सुनना नहीं चाहता;
५ और सपेरा कैसी ही निपुणता से क्यों न मंत्र पढ़े,
तौभी उसकी नहीं सुनता ।।
६ हे परमेश्वर, उनके मुंह में से दांतों को तोड़ दे;
हे यहोवा उन जवान सिंहों की दाढ़ों को उखाड़ डाल !
७ वे घुलकर बहते हुए पानी के समान हो जाएं;
जब वे अपने तीर चढ़ाएं, तब तीर मानो दो टुकड़े हो जाएं।
८ वे घोंघे के समान हो जाएं जो घुलकर नाश हो जाता है,
और स्त्री के गिरे हुए गर्भ के समान हो जिस ने सूरज को देखा ही नहीं।
९ उस से पहिले कि तुम्हारी हांडियों में कांटों की आंच लगे,
हरे व जले, दोनों को वह बवंडर से उड़ा ले जाएगा ।।
१० धर्मी ऐसा पलटा देखकर आनन्दित होगा;
वह अपने पांव दुष्ट के लोहू में धोएगा ।।
११ तब मनुष्य कहने लगेंगे, निश्चय धर्मी के लिये फल है;
निश्चय परमेश्वर है, जो पृथ्वी पर न्याय करता है ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये अल-तशहेत* दाऊद का मिक्ताम, जब शाऊल के भेजे हुए लोगों ने घर का पहरा दिया कि उसको मार डालें)

५९ हे मेरे परमेश्वर, मुझ को शत्रुओं से बचा,
मुझे ऊंचे स्थान पर रखकर मेरे विरोधियों से बचा,
२ मुझ को बुराई करनेवालों के हाथ से बचा,
और हत्यारों से मेरा उद्धार कर ।।
३ क्योंकि देख, वे मेरी घात में लगे हैं;
हे यहोवा, मेरा कोई दोष वा पाप नहीं है, तौभी बलवन्त लोग मेरे विरुद्ध इकट्ठे होते हैं।
४ वह मुझ निर्दोष पर दौड़े दौड़कर लड़ने को तैयार हो जाते हैं ।।
मुझ से मिलने के लिये जाग उठ, और यह देख !
५ हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, हे इस्राएल के परमेश्वर सब अन्य-जातिवालों को दण्ड देने के लिये जाग;
किसी विश्वासघाती अत्याचारी पर अनुग्रह न कर ।। (सेला)
६ वे लोग सांझ को लौटकर कुत्ते की नाईं गुर्राते हैं,
और नगर के चारों ओर घूमते हैं।
देख वे डकारते हैं,
७ उनके मुंह के भीतर तलवारें हैं,
क्योंकि वे कहते हैं, कौन सुनता है ?
८ परन्तु हे यहोवा, तू उन पर हंसेगा;
तू सब अन्य जातियों को ठट्ठों में उड़ाएगा।

* अर्थात् नाश न कर।

९ हे मेरे बल, मुझे तेरी ही आस होगी;
क्योंकि परमेश्वर मेरा ऊंचा गढ़ है ।।
१० परमेश्वर करुणा करता हुआ मुझ से मिलेगा;
परमेश्वर मेरे द्राहियों के विषय मेरी इच्छा पूरी कर देगा * ।।
११ उन्हें घात न कर, न हो कि मेरी प्रजा भूल जाए;
हे प्रभु, हे हमारी ढाल !
अपनी शक्ति के उन्हें तितर बितर कर, उन्हें दबा दे ।
१२ वह अपने मुंह के पाप, और ओठों के वचन,
और शाप देने, और झूठ बोलने के कारण,
अभिमान में फंसे हुए पकड़े जाएं ।
१३ जलजलाहट में आकर उनका अन्त कर, उनका अन्त कर दे ताकि वे नष्ट हो जाएं
तब लोग जानेंगे कि परमेश्वर याकूब पर,
वरन पृथ्वी की छोर तक प्रभुता करता है ।। (सेला)
१४ वे सांझ को लौटकर कुत्ते की नाईं गुर्राएं,
और नगर के चारों ओर घूमें ।
१५ वे टुकड़े के लिये मारे मारे फिरें,
और तृप्त न होने पर रात भर वहीं ठहरे रहें ।।
१६ परन्तु मैं तेरी सामर्थ्य का यश गाऊंगा,
और भोर को तेरी करुणा का जय-जयकार करूंगा ।
क्योंकि तू मेरा ऊंचा गढ़ है,
और संकट के समय मेरा शरणस्थान ठहरा है ।
१७ हे मेरे बल, मैं तेरा भजन गाऊंगा,
क्योंकि हे परमेश्वर, तू मेरा ऊंचा गढ़ और मेरा करुणामय परमेश्वर है ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये। दाऊद का मिक्ताम शूशनेदूत * में। शिक्षादायक। जब वह अरम्नहरैम और अरमसोबा से लड़ता था, और योआब ने लौटकर लोन की तराई में एदूमियों में से बारह हजार पुरुष मार लिये)

६० हे परमेश्वर तू ने हम को त्याग दिया,
और हम को तोड़ डाला है;
तू क्रोधित हुआ; फिर हम को ज्यों का त्यों कर दे ।
२ तू ने भूमि को कंपाया और फाड़ डाला है;
उसके दरारों को भर दे †, क्योंकि वह डगमगा रही है ।
३ तू ने अपनी प्रजा को कठिन दुःख भुगताया;
तू ने हमें लड़खड़ा देनेवाला दाखमधु पिलाया है ।।
४ तू ने अपने डरवैयों को झण्डा दिया है,
कि वह सच्चाई के कारण फहराया जाए । (सेला)
५ तू अपने दहिने हाथ से बचा, और हमारी सुन ले
कि तेरे प्रिय छुड़ाए जाएं ।।
६ परमेश्वर पवित्रता के साथ बोला है,
मैं प्रफुल्लित हूंगा;

* मूल में—मेरे द्रोहियों को मुझे दिखाएगा।

* अर्थात् साक्षी के सोसन।
† मूल में—चंगा कर।

मैं शकेम को बांट लूंगा, और सुक्कोत
की तराई को नपवाऊंगा।
७ गिलाद मेरा है; मनश्शे भी मेरा
है;
और एप्रैम मेरे सिर का टोप,
यहूदा मेरा राजदण्ड है।
८ मोआब मेरे धोने का पात्र है;
मैं एदोम पर अपना जूता फेंकूंगा;
हे पलिश्तीन मेरे ही कारण जय-
जयकार कर॥
९ मुझे गढ़वाले नगर में कौन
पहुंचाएगा?
एदोम तक मेरी अगुवाई किस ने
की है?
१० हे परमेश्वर, क्या तू ने हम को त्याग
नहीं दिया?
हे परमेश्वर, तू हमारी सेना के साथ
नहीं जाता।
११ द्रोही के विरुद्ध हमारी सहायता कर,
क्योंकि मनुष्य का किया हुआ छुटकारा
व्यर्थ होता है।
१२ परमेश्वर की सहायता से हम वीरता
दिखाएंगे,
क्योंकि हमारे द्रोहियों को वही
रौंदेगा॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये तारवाले
बाजे के साथ दाऊद का भजन)

६१ हे परमेश्वर, मेरा चिल्लाना
सुन,
मेरी प्रार्थना की ओर ध्यान दे।
२ मूर्छा खाते समय मैं पृथ्वी की छोर से
भी तुझे पुकारूंगा,
जो चट्टान मेरे लिये ऊंची है, उस पर
मुझ को ले चल;
३ क्योंकि तू मेरा शरणस्थान है,
और शत्रु से बचने के लिये ऊंचा
गढ़ है॥
४ मैं तेरे तम्बू में युगानुयुग बना
रहूंगा।
मैं तेरे पंखों की ओट में शरण लिए
रहूंगा। (सेला)
५ क्योंकि हे परमेश्वर, तू ने मेरी मन्नतें
सुनीं,
जो तेरे नाम के डरवैये हैं, उनका सा
भाग तू ने मुझे दिया है॥
६ तू राजा की आयु को बहुत बढ़ाएगा;
उसके वर्ष पीढ़ी पीढ़ी के बराबर
होंगे।
७ वह परमेश्वर के सम्मुख सदा बना
रहेगा;
तू अपनी करुणा और सच्चाई को
उसकी रक्षा के लिये ठहरा रख।
८ और मैं सर्वदा तेरे नाम का भजन
गा गाकर
अपनी मन्नतें हर दिन पूरी किया
करूंगा॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का
भजन। यदूतून की राग पर)

६२ सचमुच मैं चुपचाप होकर
परमेश्वर की ओर मन लगाए
हूं;
मेरा उद्धार उसी से होता है।
२ सचमुच वही, मेरी चट्टान और मेरा
उद्धार है,
वह मेरा गढ़ है; मैं बहुत न डिगूंगा॥
३ तुम कब तक एक पुरुष पर धावा
करते रहोगे,
कि सब मिलकर उसका घात करो?
वह तो झुकी हुई भीत वा गिरते
हुए बाड़े के समान है।

४ सचमुच वे उसको, उसके ऊंचे पद से गिराने की सम्मति करते हैं;
वे झूठ से प्रसन्न रहते हैं।
मुंह से तो वे आशीर्वाद देते पर मन में कोसते हैं।। (सेला)
५ हे मेरे मन, परमेश्वर के साम्हने चुपचाप रह,
क्योंकि मेरी आशा उसी से है।
६ सचमुच वही मेरी चट्टान, और मेरा उद्धार है,
वह मेरा गढ़ है; इसलिये मैं न डिगूंगा।
७ मेरा उद्धार और मेरी महिमा का आधार परमेश्वर है;
मेरी दृढ़ चट्टान, और मेरा शरणस्थान परमेश्वर है।।
८ हे लोगो, हर समय उस पर भरोसा रखो;
उस से * अपने अपने मन की बातें खोलकर कहो †;
परमेश्वर हमारा शरणस्थान है। (सेला)
९ सचमुच नीच लोग तो अस्थाई, और बड़े लोग मिथ्या ही हैं;
तौल में वे हलके निकलते हैं;
वे सब के सब सांस से भी हलके हैं।
१० अन्धेर करने पर भरोसा मत रखो,
और लूट पाट करने पर मत फूलो;
चाहे धन सम्पत्ति बढ़े, तौभी उस पर मन न लगाना।।
११ परमेश्वर ने एक बार कहा है;
और दो बार मैं ने यह सुना है:
कि सामर्थ्य परमेश्वर का है।
१२ और हे प्रभु, करुणा भी तेरी है।
क्योंकि तू एक एक जन को उसके काम के अनुसार फल देता है।।

* मूल में—उसके साम्हने।
† मूल में—उण्डेल दो।

(दाऊद का भजन। जब वह यहूदा के जंगल में था)

६३ हे परमेश्वर, तू मेरा ईश्वर है, मैं तुझे यत्न से ढूंढूंगा;
सूखी और निर्जल ऊसर * भूमि पर,
मेरा मन तेरा प्यासा है, मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है।
२ इस प्रकार से मैं ने पवित्रस्थान में तुझ पर दृष्टि की,
कि तेरी सामर्थ्य और महिमा को देखूं।
३ क्योंकि तेरी करुणा जीवन से भी उत्तम है,
मैं तेरी प्रशंसा करूंगा।
४ इसी प्रकार मैं जीवन भर तुझे धन्य कहता रहूंगा;
और तेरा नाम लेकर अपने हाथ उठाऊंगा।।
५ मेरा जीव मानो चर्बी और चिकने भोजन से तृप्त होगा,
और मैं जयजयकार करके तेरी स्तुति करूंगा।
६ जब मैं बिछौने पर पड़ा तेरा स्मरण करूंगा,
तब रात के एक एक पहर में तुझ पर ध्यान करूंगा;
७ क्योंकि तू मेरा सहायक बना है,
इसलिये मैं तेरे पंखों की छाया में जयजयकार करूंगा।
८ मेरा मन तेरे पीछे पीछे लगा चलता है;

* मूल में—थकी।

और मुझे तो तू अपने दहिने हाथ से थाम रखता है ।।
९ परन्तु जो मेरे प्राण के खोजी है,
वे पृथ्वी के नीचे स्थानों में जा पड़ेंगे;
१० वे तलवार से मारे जाएंगे,
और गीदड़ों का आहार हो जाएंगे ।
११ परन्तु राजा परमेश्वर के कारण आनन्दित होगा;
जो कोई ईश्वर की शपथ खाए, वह बड़ाई करने पाएगा;
परन्तु झूठ बोलनेवालों का मुंह बन्द किया जाएगा ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन)

६४ हे परमेश्वर, जब मैं तेरी दोहाई दूं, तब मेरी सुन;
शत्रु के उपजाए हुए भय के समय मेरे प्राण की रक्षा कर ।
२ कुकर्मियों की गोष्ठी से,
और अनर्थकारियों के हुल्लड़ से मेरी आड़ हो ।
३ उन्हों ने अपनी जीभ को तलवार की नाई तेज़ किया है,
और अपने कड़वे वचनों के तीरों को चढ़ाया है;
४ ताकि छिपकर खरे मनुष्य को मारें;
वे निडर होकर उसको अचानक मारते भी हैं ।
५ वे बुरे काम करने को हियाव बान्धते हैं;
वे फन्दे लगाने के विषय बातचीत करते हैं,
और कहते हैं, कि हम को कौन देखेगा ?
६ वे कुटिलता की युक्ति निकालते हैं;
और कहते हैं, कि हम ने पक्की युक्ति खोजकर निकाली है ।
क्योंकि मनुष्य का मन और हृदय अथाह हैं !
७ परन्तु परमेश्वर उन पर तीर चलाएगा;
वे अचानक घायल हो जाएंगे ।
८ वे अपने ही वचनों के कारण ठोकर खाकर गिर पड़ेंगे;
जितने उन पर दृष्टि करेंगे वे सब अपने अपने सिर हिलाएंगे ।
९ तब सारे लोग डर जाएंगे;
और परमेश्वर के कामों का बखान करेंगे,
और उसके कार्यक्रम को भली भांति समझेंगे ।।
१० धर्मी तो यहोवा के कारण आनन्दित होकर उसका शरणागत होगा,
और सब सीधे मनवाले बड़ाई करेंगे ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन, गीत)

६५ हे परमेश्वर, सिय्योन में स्तुति तेरी बाट जोहती है;
और तेरे लिये मन्नतें पूरी की जाएंगी ।
२ हे प्रार्थना के सुननेवाले !
सब प्राणी तेरे ही पास आएंगे ।
३ अधर्म के काम मुझ पर प्रबल हुए हैं;
हमारे अपराधों को तू ढांप देगा ।
४ क्या ही धन्य है वह; जिसको तू चुनकर अपने समीप आने देता है,
कि वह तेरे आंगनों में बास करे !
हम तेरे भवन के, अर्थात् तेरे पवित्र मन्दिर के
उत्तम उत्तम पदार्थों से तृप्त होंगे ।।

५ हे हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर,
हे पृथ्वी के सब दूर दूर देशों के
और दूर के समुद्र पर के रहनेवालों के आधार,
तू धर्म से किए हुए भयानक कामों के द्वारा हमारा मुंह मांगा वर देगा;
६ तू जो पराक्रम का फेंटा कसे हुए,
अपनी सामर्थ्य से पर्वतों को स्थिर करता है;
७ तू जो समुद्र का महाशब्द, उसकी तरंगों का महाशब्द,
और देश देश के लोगों का कोलाहल शान्त करता है;
८ इसलिये दूर दूर देशों के रहनेवाले तेरे चिन्ह देखकर डर गए हैं;
तू उदयाचल और अस्ताचल दोनों से जयजयकार कराता है ॥
९ तू भूमि की सुधि लेकर उसको सींचता है,
तू उसको बहुत फलदायक करता है;
परमेश्वर की नहर जल से भरी रहती है;
तू पृथ्वी को तैयार करके मनुष्यों के लिये अन्न को तैयार करता है।
१० तू रेघारियों को भली भांति सींचता है,
और उनके बीच की मिट्टी को बैठाता है,
तू भूमि को मेंह से नरम करता है,
और उसकी उपज पर आशीष देता है।
११ अपनी भलाई से भरे हुए वर्ष पर
तू ने मानो मुकुट धर दिया है;
तेरे मार्गों में उत्तम उत्तम पदार्थ पाए जाते हैं *।
१२ वे जंगल की चराइयों में पाए जाते हैं;
और पहाड़ियां हर्ष का फेंटा बान्धे हुए हैं ॥
१३ चराइयां भेड़-बकरियों से भरी हुई हैं,
और तराइयां अन्न से ढंपी हुई हैं,
वे जयजयकार करतीं और गाती भी हैं ॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये गीत, भजन)

६६ हे सारी पृथ्वी के लोगो, परमेश्वर के लिये जयजयकार करो;
२ उसके नाम की महिमा का भजन गाओ;
उसकी स्तुति करते हुए, उसकी महिमा करो।
३ परमेश्वर से कहो, कि तेरे काम क्या ही भयानक हैं!
तेरी महासामर्थ्य के कारण तेरे शत्रु तेरी चापलूसी करेंगे।
४ सारी पृथ्वी के लोग तुझे दण्डवत् करेंगे,
और तेरा भजन गाएंगे;
वे तेरे नाम का भजन गाएंगे ॥ (सेला)
५ आओ परमेश्वर के कामों को देखो;
वह अपने कार्यों के कारण मनुष्यों को भययोग्य देख पड़ता है।
६ उस ने समुद्र को सूखी भूमि कर डाला;

* मूल में—चिकनाई टपकती है।

वे महानद में से पांव पांव पार
उतरे।
वहां हम उसके कारण आनन्दित हुए,
७ जो अपने पराक्रम से सर्वदा प्रभुता
करता है,
और अपनी आंखों से जाति जाति को
ताकता है।
हठीले अपने सिर न उठाएं।।
(सेला)
८ हे देश देश के लोगो, हमारे परमेश्वर
को धन्य कहो,
और उसकी स्तुति में राग उठाओ,
९ जो हम को जीवित रखता है;
और हमारे पांव को टलने नहीं देता।
१० क्योंकि हे परमेश्वर तू ने हम को
जांचा;
तू ने हमें चान्दी की नाईं ताया था।
११ तू ने हम को जाल में फंसाया;
और हमारी कटि पर भारी बोझ
बान्धा था;
१२ तू ने घुड़चढ़ों को हमारे सिरों के
ऊपर से चलाया,
हम आग और जल से होकर गए;
परन्तु तू ने हम को उबार के सुख से
भर दिया है।।
१३ मैं होमबलि लेकर तेरे भवन में
आऊंगा;
मैं उन मन्नतों को तेरे लिये पूरी
करूंगा,
१४ जो मैं ने मुंह * खोलकर मानीं,
और संकट के समय कही थीं।
१५ मैं तुझे मोटे पशुओं की होमबलि,
मेढ़ों की चर्बी की धूप समेत चढ़ाऊंगा;
मैं बकरों समेत बैल चढ़ाऊंगा।।
(सेला)

* मूल में—होंठ।

१६ हे परमेश्वर के सब डरवैयो आकर
सुनो,
मैं बताऊंगा कि उस ने मेरे लिये
क्या क्या किया है।
१७ मैं ने उसको पुकारा,
और उसी का गुणानुवाद मुझ से
हुआ।
१८ यदि मैं मन में अनर्थ बात सोचता,
तो प्रभु मेरी न सुनता।
१९ परन्तु परमेश्वर ने तो सुना
है;
उस ने मेरी प्रार्थना की ओर ध्यान
दिया है।।
२० धन्य है परमेश्वर,
जिस ने न तो मेरी प्रार्थना अनसुनी
की, और
न मुझ से अपनी करुणा दूर कर
दी है!

(प्रधान बजानेवाले के लिये तारवाले
बाजों के साथ भजन, गीत)

६७

परमेश्वर हम पर अनुग्रह करे,
और हम को आशीष दे;
वह हम पर अपने मुख का प्रकाश
चमकाए *। (सेला)
२ जिस से तेरी गति पृथ्वी पर,
और तेरा किया हुआ उद्धार सारी
जातियों में जाना जाए।
३ हे परमेश्वर, देश देश के लोग तेरा
धन्यवाद करें;
देश देश के सब लोग तेरा धन्यवाद
करें।।
४ राज्य राज्य के लोग आनन्द करें,
और जयजयकार करें,

* मूल में—हमारे साथ अपना मुख
चमकाए।

क्योंकि तू देश देश के लोगों का न्याय धर्म से करेगा,
और पृथ्वी के राज्य राज्य के लोगों की अगुवाई करेगा ।। (सेला)
५ हे परमेश्वर, देश देश के लोग तेरा धन्यवाद करें;
देश देश के सब लोग तेरा धन्यवाद करें ।।
६ भूमि ने अपनी उपज दी है,
परमेश्वर जो हमारा परमेश्वर है, उस ने हमें आशीष दी है।
७ परमेश्वर हम को आशीष देगा;
और पृथ्वी के दूर दूर देशों के सब लोग उसका भय मानेंगे ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन)

६८ परमेश्वर उठे, उसके शत्रु तितर बितर हों;
और उसके बैरी उसके साम्हने से भाग जाएं !
२ जैसे धुआं उड़ जाता है, वैसे ही तू उनको उड़ा दे;
जैसे मोम आग की आंच से पिघल जाता है,
वैसे ही दुष्ट लोग परमेश्वर की उपस्थिति से नाश हों।
३ परन्तु धर्मी आनन्दित हों; वे परमेश्वर के साम्हने प्रफुल्लित हों;
वे आनन्द में मगन हों !
४ परमेश्वर का गीत गाओ, उसके नाम का भजन गाओ;
जो निर्जल देशों में सवार होकर चलता है, उसके लिये सड़क बनाओ;
उसका नाम याह है, इसलिये तुम उसके साम्हने प्रफुल्लित हो !
५ परमेश्वर अपने पवित्र धाम में,
अनाथों का पिता और विधवाओं का न्यायी है।
६ परमेश्वर अनाथों का घर बसाता है;
और बन्धुओं को छुड़ाकर भाग्यवान् करता है;
परन्तु हठीलों को सूखी भूमि पर रहना पड़ता है ।।
७ हे परमेश्वर, जब तू अपनी प्रजा के आगे आगे चलता था,
जब तू निर्जल भूमि में सेना समेत चला, (सेला)
८ तब पृथ्वी कांप उठी,
और आकाश भी परमेश्वर के साम्हने टपकने लगा,
उधर सीनै पर्वत परमेश्वर, हां इस्राएल के परमेश्वर के साम्हने कांप उठा।
९ हे परमेश्वर, तू ने बहुत से वरदान बरसाए *;
तेरा निज भाग तो बहुत सूखा था, परन्तु तू ने उसको हरा भरा † किया है;
१० तेरा झुण्ड उस में बसने लगा;
हे परमेश्वर तू ने अपनी भलाई से दीन जन के लिये तैयारी की है।
११ प्रभु आज्ञा देता है,
तब शुभ समाचार सुनानेवालियों की बड़ी सेना हो जाती है।
१२ अपनी अपनी सेना समेत राजा भागे चले जाते हैं,
और गृहस्थिन लूट को बांट लेती है।

* मूल में—स्वेच्छादानों की वृष्टि हिलाई।
† मूल में—स्थिर।

१३ क्या तुम भेड़शालों के बीच लेट जाओगे ?
और ऐसी कबूतरी के समान होगे जिसके पंख चान्दी से
और जिसके पर पीले सोने से मढ़े हुए हों ?
१४ जब सर्वशक्तिमान ने उस में राजाओं को तितर बितर किया,
तब मानो सल्मोन पर्वत पर हिम पड़ा ।।
१५ बाशान का पहाड़ परमेश्वर का पहाड़ है;
बाशान का पहाड़ बहुत शिखरवाला पहाड़ है ।
१६ परन्तु हे शिखरवाले पहाड़ो, तुम क्यों उस पर्वत को घूरते हो,
जिसे परमेश्वर ने अपने वास के लिये चाहा है,
और जहां यहोवा सदा वास किए रहेगा ?
१७ परमेश्वर के रथ बीस हजार, वरन हजारों हजार हैं;
प्रभु उनके बीच में है,
जैसे वह सीनै पवित्रस्थान में है ।
१८ तू ऊंचे पर चढ़ा, तू लोगों को बन्धुआई में ले गया;
तू ने मनुष्यों से, वरन हठीले मनुष्यों से भी भेंटें लीं,
जिस से याह परमेश्वर उन में वास करे ।।
१९ धन्य है प्रभु, जो प्रति दिन हमारा बोझ उठाता है;
वही हमारा उद्धारकर्त्ता ईश्वर है । (सेला)
२० वही हमारे लिये बचानेवाला ईश्वर ठहरा;
यहोवा प्रभु मृत्यु से भी बचाता है* ।।
२१ निश्चय परमेश्वर अपने शत्रुओं के सिर पर,
और जो अधर्म के मार्ग पर चलता रहता है,
उसके बाल भरे चोंडे पर मार मार के उसे चूर करेगा ।
२२ प्रभु ने कहा है, कि मैं उन्हें बाशान से निकाल लाऊंगा, मैं उनको गहिरे सागर के तल से भी फेर ले आऊंगा,
२३ कि तू अपने पांव को लोहू में डुबोए, और तेरे शत्रु तेरे कुत्तों का भाग ठहरें ।।
२४ हे परमेश्वर तेरी गति देखी गई,
मेरे ईश्वर, मेरे राजा की गति पवित्र-स्थान में दिखाई दी है;
२५ गानेवाले आगे आगे और तारवाले बाजों के बजानेवाले पीछे पीछे गए,
चारों ओर कुमारियां डफ बजाती थीं ।
२६ सभाओं में परमेश्वर का,
हे इस्राएल के सोते से निकले हुए लोगो, प्रभु का धन्यवाद करो ।
२७ वहां उनका अध्यक्ष छोटा बिन्यामीन है,
वहां यहूदा के हाकिम अपने अनुचरों समेत हैं,
वहां जबूलून और नप्ताली के भी हाकिम हैं ।।
२८ तेरे परमेश्वर ने आज्ञा दी, कि तुझे सामर्थ्य मिले;
हे परमेश्वर जो कुछ तू ने हमारे लिये किया है, उसे दृढ़ कर ।

---

* मूल में—यहोवा प्रभु के पास मृत्यु से निकास है ।

२९ तेरे मन्दिर के कारण जो यरूशलेम में हैं,
राजा तेरे लिये भेंट ले आएंगे।
३० नरकटों में रहनेवाले बनैले पशुओं को,
सांड़ों के झुण्ड को और देश देश के बछड़ों को झिड़क दे।
वे चान्दी के टुकड़े लिए हुए प्रणाम करेंगे;
जो लोग युद्ध से प्रसन्न रहते हैं, उनको उस ने तितर बितर किया है।
३१ मिस्र से रईस आएंगें;
कूशी अपने हाथों को परमेश्वर की ओर फुर्ती से फैलाएंगे॥
३२ हे पृथ्वी पर के राज्य राज्य के लोगो परमेश्वर का गीत गाओ;
प्रभु का भजन गाओ, (सेला)
३३ जो सब से ऊंचे सनातन स्वर्ग में सवार होकर चलता है;
देखो वह अपनी वाणी सुनाता है, वह गम्भीर वाणी शक्तिशाली है।
३४ परमेश्वर की सामर्थ्य की स्तुति करो,
उसका प्रताप इस्राएल पर छाया हुआ है,
और उसकी सामर्थ्य आकाशमण्डल में है।
३५ हे परमेश्वर, तू अपने पवित्रस्थानों में भययोग्य है,
इस्राएल का ईश्वर ही अपनी प्रजा को सामर्थ्य और शक्ति का देनेवाला है।
परमेश्वर धन्य है॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये शोशन्नीम * में दाऊद का गीत)

६९ हे परमेश्वर, मेरा उद्धार कर,
मैं जल में डूबा जाता हूं।
२ मैं बड़े दलदल में धसा जाता हूं,
और मेरे पैर कहीं नहीं रुकते;
मैं गहिरे जल में आ गया, और धारा में डूबा जाता हूं।
३ मैं पुकारते पुकारते थक गया, मेरा गला सूख गया है;
अपने परमेश्वर की बाट जोहते जोहते, मेरी आंखें रह गई हैं॥
४ जो अकारण मेरे बैरी हैं, वे गिनती में मेरे सिर के बालों से अधिक हैं;
मेरे विनाश करनेवाले जो व्यर्थ मेरे शत्रु हैं, वे सामर्थी हैं,
इसलिये जो मैं ने लूटा नहीं वह भी मुझ को देना पड़ा।
५ हे परमेश्वर, तू तो मेरी मूढ़ता को जानता है,
और मेरे दोष तुझ से छिपे नहीं हैं॥
६ हे प्रभु, हे सेनाओं के यहोवा, जो तेरी बाट जोहते हैं, उनकी आशा मेरे कारण न टूटे;
हे इस्राएल के परमेश्वर, जो तुझे ढूंढ़ते हैं, उनका मुंह मेरे कारण काला न हो।
७ तेरे ही कारण मेरी निन्दा हुई है,
और मेरा मुंह लज्जा से ढंपा है।
८ मैं अपने भाइयों के साम्हने अजनबी हुआ,
और अपने सगे भाइयों की दृष्टि में परदेशी ठहरा हूं॥

---
* अर्थात् पुष्प विशेष।

९ क्योंकि मैं तेरे भवन के निमित्त जलते जलते भस्म हुआ,
और जो निन्दा वे तेरी करते हैं, वही निन्दा मुझ को सहनी पड़ी है।
१० जब मैं रोकर और उपवास करके दुःख उठाता था,
तब उस से भी मेरी नामधराई ही हुई।
११ और जब मैं टाट का वस्त्र पहिने था, तब मेरा दृष्टान्त उन में चलता था।
१२ फाटक के पास बैठनेवाले मेरे विषय बातचीत करते हैं,
और मदिरा पीनेवाले मुझ पर लगता हुआ गीत गाते हैं ।।
१३ परन्तु हे यहोवा, मेरी प्रार्थना तो तेरी प्रसन्नता के समय में हो रही है;
हे परमेश्वर अपनी करुणा की बहुतायत से,
और बचाने की अपनी सच्ची प्रतिज्ञा के अनुसार * मेरी सुन ले।
१४ मुझ को दलदल में से उबार, कि मैं धंस न जाऊं;
मैं अपने बैरियों से, और गहिरे जल में से बच जाऊं।
१५ मैं धारा में डूब न जाऊं,
और न मैं गहिरे जल में डूब मरूं,
और न पाताल का मुंह मेरे ऊपर बन्द हो ।।
१६ हे यहोवा, मेरी सुन ले, क्योंकि तेरी करुणा उत्तम है;
अपनी दया की बहुतायत के अनुसार मेरी ओर ध्यान दे।
१७ अपने दास से अपना मुंह न मोड़;
क्योंकि मैं संकट में हूं, फुर्ती से मेरी सुन ले।
१८ मेरे निकट आकर मुझे छुड़ा ले,
मेरे शत्रुओं से मुझ को छुटकारा दे ।।
१९ मेरी नामधराई और लज्जा और अनादर को तू जानता है:
मेरे सब द्रोही तेरे साम्हने हैं।
२० मेरा हृदय नामधराई के कारण फट गया, और मैं बहुत उदास हूं।
मैं ने किसी तरस खानेवाले की आशा तो की, परन्तु किसी को न पाया,
और शान्ति देनेवाले को ढूंढ़ता तो रहा, परन्तु कोई न मिला।
२१ और लोगों ने मेरे खाने के लिये इन्द्रायन दिया,
और मेरी प्यास बुझाने के लिये मुझे सिरका पिलाया ।।
२२ उनका भोजन * उनके लिये फन्दा हो जाए;
और उनके सुख के समय जाल बन जाए।
२३ उनकी आंखों पर अन्धेरा छा जाए, ताकि वे देख न सकें;
और तू उनकी कटि को निरन्तर कंपाता रह।
२४ उनके ऊपर अपना रोष भड़का,
और तेरे क्रोध की आंच उनको लगे।
२५ उनकी छावनी उजड़ जाए,
उनके डेरों में कोई न रहे।
२६ क्योंकि जिसको तू ने मारा, वे उसके पीछे पड़े हैं,
और जिनको तू ने घायल किया, वे उनकी पीड़ा की चर्चा करते हैं।

* मूल में—अपने उद्धार की सच्चाई से।

* मूल में—उनकी मेज़।

२७ उनके अधर्म पर अधर्म बढ़ा;
और वे तेरे धर्म को प्राप्त न करें।
२८ उनका नाम जीवन की पुस्तक में से काटा जाए,
और धर्मियों के संग लिखा न जाए ।।
२९ परन्तु मैं तो दुःखी और पीड़ित हूं,
इसलिये हे परमेश्वर तू मेरा उद्धार करके मुझे ऊंचे स्थान पर बैठा।
३० मैं गीत गाकर तेरे नाम की स्तुति करूंगा,
और धन्यवाद करता हुआ तेरी बड़ाई करूंगा।
३१ यह यहोवा को बैल से अधिक,
वरन सींग और खुरवाले बैल से भी अधिक भाएगा।
३२ नम्र लोग इसे देखकर आनन्दित होंगे,
हे परमेश्वर के खोजियो तुम्हारा मन हरा हो जाए।
३३ क्योंकि यहोवा दरिद्रों की ओर कान लगाता,
और अपने लोगों को जो बन्धुए हैं तुच्छ नहीं जानता ।।
३४ स्वर्ग और पृथ्वी उसकी स्तुति करें,
और समुद्र अपने सब जीव जन्तुओं समेत उसकी स्तुति करे।
३५ क्योंकि परमेश्वर सिय्योन का उद्धार करेगा, और यहूदा के नगरों को फिर बसाएगा;
और लोग फिर वहां बसकर उसके अधिकारी हो जाएंगे।
३६ उसके दासों का वंश उसको अपने भाग में पाएगा,
और उसके नाम के प्रेमी उस में बास करेंगे ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का स्मरण कराने के लिये)

७० हे परमेश्वर मुझे छुड़ाने के लिये, हे यहोवा मेरी सहायता करने के लिये फुर्ती कर!
२ जो मेरे प्राण के खोजी हैं,
उनकी आशा टूटे, और मुंह काला हो जाए!
जो मेरी हानि से प्रसन्न होते हैं,
वे पीछे हटाए और निरादर किए जाएं।
३ जो कहते हैं आहा, आहा,
वे अपनी लज्जा के मारे उलटे फेरे जाएं ।।
४ जितने तुझे ढूंढ़ते हैं, वे सब तेरे कारण हर्षित और आनन्दित हों!
और जो तेरा उद्धार चाहते हैं, वे निरन्तर कहते रहें, कि परमेश्वर की बड़ाई हो।
५ मैं तो दीन और दरिद्र हूं;
हे परमेश्वर मेरे लिये फुर्ती कर!
तू मेरा सहायक और छुड़ानेवाला है;
हे यहोवा विलम्ब न कर!

७१ हे यहोवा मैं तेरा शरणागत हूं;
मेरी आशा कभी टूटने न पाए!
२ तू तो धर्मी है, मुझे छुड़ा और मेरा उद्धार कर;
मेरी ओर कान लगा, और मेरा उद्धार कर!
३ मेरे लिये सनातन काल की चट्टान का धाम बन, जिस में मैं नित्य जा सकूं;
तू ने मेरे उद्धार की आज्ञा तो दी है,

क्योंकि तू मेरी चट्टान और मेरा गढ़ ठहरा है ॥
४ हे मेरे परमेश्वर दुष्ट के,
और कुटिल और क्रूर मनुष्य के हाथ से मेरी रक्षा कर।
५ क्योंकि हे प्रभु यहोवा, मैं तेरी ही बाट जोहता आया हूं,
बचपन से मेरा आधार तू है।
६ मैं गर्भ से निकलते ही, तुझ से सम्भाला गया;
मुझे मां की कोख से तू ही ने निकाला;
इसलिये मैं नित्य तेरी स्तुति करता रहूंगा ॥
७ मैं बहुतों के लिये चमत्कार बना हूं;
परन्तु तू मेरा दृढ़ शरणस्थान है।
८ मेरे मुंह से तेरे गुणानुवाद,
और दिन भर तेरी शोभा का वर्णन बहुत हुआ करे।
९ बुढ़ापे के समय मेरा त्याग न कर;
जब मेरा बल घटे तब मुझ को छोड़ न दे।
१० क्योंकि मेरे शत्रु मेरे विषय बातें करते हैं,
और जो मेरे प्राण की ताक में हैं,
वे आपस में यह सम्मति करते हैं, कि
११ परमेश्वर ने उसको छोड़ दिया है;
उसका पीछा करके उसे पकड़ लो,
क्योंकि उसका कोई छुड़ानेवाला नहीं ॥
१२ हे परमेश्वर, मुझ से दूर न रह;
हे मेरे परमेश्वर, मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर!
१३ जो मेरे प्राण के विरोधी हैं, उनकी आशा टूटे और उनका अन्त हो जाए;
जो मेरी हानि के अभिलाषी हैं, वे नामधराई और अनादर में गड़ जाएं।
१४ मैं तो निरन्तर आशा लगाए रहूंगा,
और तेरी स्तुति अधिक अधिक करता जाऊंगा।
१५ मैं अपने मुंह से तेरे धर्म का,
और तेरे किए हुए उद्धार का वर्णन दिन भर करता रहूंगा,
परन्तु उनका पूरा ब्योरा जाना भी नही जाता।
१६ मैं प्रभु यहोवा के पराक्रम के कामों का वर्णन करता हुआ आऊंगा,
मैं केवल तेरे ही धर्म की चर्चा किया करूंगा ॥
१७ हे परमेश्वर, तू तो मुझ को बचपन ही से सिखाता आया है,
और अब तक मैं तेरे आश्चर्य कर्मों का प्रचार करता आया हूं।
१८ इसलिये हे परमेश्वर जब मैं बूढ़ा हो जाऊं,
और मेरे बाल पक जाएं, तब भी तू मुझे न छोड़,
जब तक मैं आनेवाली पीढ़ी के लोगों को तेरा बाहुबल और सब उत्पन्न होनेवालों को तेरा पराक्रम सुनाऊं।
१९ और हे परमेश्वर, तेरा धर्म अति महान है ॥
तू जिस ने महाकार्य किए हैं,
हे परमेश्वर तेरे तुल्य कौन है?
२० तू ने तो हम को बहुत से कठिन कष्ट दिखाए हैं
परन्तु अब तू फिर से हम को जिलाएगा;
और पृथ्वी के गहिरे गड़हे में से उबार लेगा।

२१ तू मेरी बड़ाई को बढ़ाएगा,
और फिरकर मुझे शान्ति देगा ।।
२२ हे मेरे परमेश्वर,
मैं भी तेरी सच्चाई का धन्यवाद सारंगी बजाकर गाऊंगा;
हे इस्राएल के पवित्र मैं वीणा बजाकर तेरा भजन गाऊंगा ।
२३ जब मैं तेरा भजन गाऊंगा, तब अपने मुंह से
और अपने प्राण से भी जो तू ने बचा लिया है, जयजयकार करूंगा ।
२४ और मैं तेरे धर्म की चर्चा दिन भर करता रहूंगा;
क्योंकि जो मेरी हानि के अभिलाषी थे, उनकी आशा टूट गई और मुंह काले हो गए हैं ।।

(सुलैमान का गीत)

७२ हे परमेश्वर, राजा को अपना नियम बता,
राजपुत्र को अपना धर्म सिखला !
२ वह तेरी प्रजा का न्याय धर्म से,
और तेरे दीन लोगों का न्याय ठीक ठीक चुकाएगा ।
३ पहाड़ों और पहाड़ियों से प्रजा के लिये,
धर्म के द्वारा शान्ति मिला करेगी ।
४ वह प्रजा के दीन लोगों का न्याय करेगा,
और दरिद्र लोगों को बचाएगा;
और अन्धेर करनेवालों को चूर करेगा ।।
५ जब तक सूर्य और चन्द्रमा बने रहेंगे
तब तक लोग पीढ़ी-पीढ़ी तेरा भय मानते रहेंगे ।
६ वह घास की खूंटी पर बरसनेवाले मेंह,
और भूमि सींचनेवाली झड़ियों के समान होगा ।
७ उसके दिनों में धर्मी फूले फलेंगे,
और जब तक चन्द्रमा बना रहेगा,
तब तक शान्ति बहुत रहेगी ।।
८ वह समुद्र से समुद्र तक
और महानद से पृथ्वी की छोर तक प्रभुता करेगा ।
९ उसके साम्हने जंगल के रहनेवाले घुटने टेकेंगे,
और उसके शत्रु मिट्टी चाटेंगे ।
१० तर्शीश और द्वीप द्वीप के राजा भेंट ले आएंगे,
शेबा और सबा दोनों के राजा द्रव्य पहुंचाएंगे ।
११ सब राजा उसको दण्डवत् करेंगे,
जाति जाति के लोग उसके अधीन हो जाएंगे ।।
१२ क्योंकि वह दोहाई देनेवाले दरिद्र का,
और दुःखी और असहाय मनुष्य का उद्धार करेगा ।
१३ वह कंगाल और दरिद्र पर तरस खाएगा,
और दरिद्रों के प्राणों को बचाएगा ।
१४ वह उनके प्राणों को अन्धेर और उपद्रव से छुड़ा लेगा;
और उनका लोहू उसकी दृष्टि में अनमोल ठहरेगा ।।
१५ वह तो जीवित रहेगा और शेबा के सोने में से उसको दिया जाएगा ।
लोग उसके लिये नित्य प्रार्थना करेंगे;
और दिन भर उसको धन्य कहते रहेंगे ।

१६ देश में पहाड़ों की चोटियों पर बहुत
सा अन्न होगा;
जिसकी बालें लबानोन के देवदारुओं
की नाईं झूमेंगी;
और नगर के लोग घास की नाईं
लहलहाएंगे।
१७ उसका नाम सदा सर्वदा बना रहेगा;
जब तक सूर्य बना रहेगा, तब तक
उसका नाम नित्य नया होता
रहेगा,
और लोग अपने को उसके कारण
धन्य गिनेंगे,
सारी जातियां उसको भाग्यवान
कहेंगी॥
१८ धन्य है, यहोवा परमेश्वर जो इस्राएल
का परमेश्वर है;
आश्चर्य कर्म केवल वही करता है।
१९ उसका महिमायुक्त नाम सर्वदा धन्य
रहेगा;
और सारी पृथ्वी उसकी महिमा से
परिपूर्ण होगी।
आमीन फिर आमीन॥

२० यिशै के पुत्र दाऊद की प्रार्थनाएं समाप्त हुईं।

तीसरा भाग

(आसाप का भजन)

७३ सचमुच इस्राएल के लिये
अर्थात् शुद्ध मनवालों के
लिये
परमेश्वर भला है।
२ मेरे डग तो उखड़ना चाहते थे,
मेरे डग फिसलने ही पर थे।
३ क्योंकि जब मैं दुष्टों का कुशल
देखता था,
तब उन घमण्डियों के विषय डाह
करता था॥
४ क्योंकि उनकी मृत्यु में वेदनाएं नहीं
होतीं,
परन्तु उनका बल अटूट रहता है।
५ उनको दूसरे मनुष्यों की नाईं कष्ट
नहीं होता;
और और मनुष्यों के समान उन पर
विपत्ति नहीं पड़ती।
६ इस कारण अहंकार उनके गले का
हार बना है;
उनका ओढ़ना उपद्रव है।
७ उनकी आंखें चर्बी से झलकती हैं,
उनके मन की भावनाएं उमण्डती हैं।
८ वे ठट्ठा मारते हैं, और दुष्टता से
अन्धेर की बात बोलते हैं;
वे डींग मारते हैं *।
९ वे मानो स्वर्ग में बैठे हुए बोलते हैं *,
और वे पृथ्वी में बोलते फिरते हैं †॥
१० तौभी उसकी प्रजा इधर लौट
आएगी,
और उनको भरे हुए प्याले का जल
मिलेगा।
११ फिर वे कहते हैं, ईश्वर कैसे जानता
है?
क्या परमप्रधान को कुछ ज्ञान है?
१२ देखो, ये तो दुष्ट लोग हैं;
तौभी सदा सुभागी रहकर, धन
सम्पत्ति बटोरते रहते हैं।

* मूल में—वे ऊंचे पर से बोलते हैं।
† मूल में—उनकी जीभ पृथ्वी में चलती।

१३ निश्चय, मैं ने अपने हृदय को व्यर्थ शुद्ध किया
और अपने हाथों को निर्दोषता में धोया है;
१४ क्योंकि मैं दिन भर मार खाता आया हूं
और प्रति भोर को मेरी ताड़ना होती आई है ।।
१५ यदि मैं ने कहा होता कि मैं ऐसा ही कहूंगा,
तो देख मैं तेरे लड़कों की सन्तान के साथ क्रूरता का व्यवहार करता,
१६ जब मैं सोचने लगा कि इसे मैं कैसे समझूं,
तो यह मेरी दृष्टि में अति कठिन समस्या थी,
१७ जब तक कि मैं ने ईश्वर के पवित्र-स्थान में जाकर
उन लोगों के परिणाम को न सोचा ।
१८ निश्चय तू उन्हें फिसलनेवाले स्थानों में रखता है;
और गिराकर सत्यानाश कर देता है ।
१९ अहा, वे क्षण भर में कैसे उजड़ गए हैं !
वे मिट गए, वे घबराते घबराते नाश हो गए हैं ।
२० जैसे जागनेहारा स्वप्न को तुच्छ जानता है,
वैसे ही हे प्रभु जब तू उठेगा, तब उनको छाया सा समझकर तुच्छ जानेगा ।।
२१ मेरा मन तो चिड़चिड़ा हो गया,
मेरा अन्तःकरण छिद गया था,
२२ मैं तो पशु सरीखा था, और समझता न था,
मैं तेरे संग रहकर भी, पशु बन गया था ।
२३ तौभी मैं निरन्तर तेरे संग ही था;
तू ने मेरे दहिने हाथ को पकड़ रखा ।
२४ तू सम्मति देता हुआ, मेरी अगुवाई करेगा,
और तब मेरी महिमा करके मुझ को अपने पास रखेगा ।
२५ स्वर्ग में मेरा और कौन है ?
तेरे संग रहते हुए मैं पृथ्वी पर और कुछ नहीं चाहता ।
२६ मेरे हृदय और मन दोनों तो हार गए हैं,
परन्तु परमेश्वर सर्वदा के लिये मेरा भाग और मेरे हृदय की चट्टान बना है ।।
२७ जो तुझ से दूर रहते हैं वे तो नाश होंगे;
जो कोई तेरे विरुद्ध व्यभिचार करता है, उसको तू विनाश करता है ।
२८ परन्तु परमेश्वर के समीप रहना, यही मेरे लिये भला है;
मैं ने प्रभु यहोवा को अपना शरणस्थान माना है,
जिस से मैं तेरे सब कामों का वर्णन करूं ।।

(आसाप का मस्कील)

७४ हे परमेश्वर, तू ने हमें क्यों सदा के लिये छोड़ दिया है ?
तेरी कोपाग्नि का धुआं तेरी चराई की भेड़ों के विरुद्ध क्यों उठ रहा है ?
२ अपनी मण्डली को जिसे तू ने प्राचीनकाल में मोल लिया था,
और अपने निज भाग का गोत्र होने के लिये छुड़ा लिया था,

और इस सिय्योन पर्वत को भी, जिस पर तू ने वास किया था, स्मरण कर !

३ अपने डग सनातन की खंडहर की ओर बढ़ा;
अर्थात् उन सब बुराइयों की ओर जो शत्रु ने पवित्रस्थान में किए हैं ।।

४ तेरे द्रोही तेरे सभास्थान के बीच गरजते रहे हैं;
उन्हों ने अपनी ही ध्वजाओं को चिन्ह ठहराया है ।
वे उन मनुष्यों के समान थे

५ जो घने वन के पेड़ों पर कुल्हाड़े चलाते हैं ।

६ और अब वे उस भवन की नक्काशी को,
कुल्हाड़ियों और हथौड़ों से बिलकुल तोड़े डालते हैं ।

७ उन्हों ने तेरे पवित्रस्थान को आग में झोंक दिया है,
और तेरे नाम के निवास को गिराकर अशुद्ध कर डाला है ।

८ उन्हों ने मन में कहा है कि हम इनको एकदम दबा दें;
उन्हों ने इस देश में ईश्वर के सब सभास्थानों को फूंक दिया है ।।

९ हम को हमारे निशान नहीं देख पड़ते;
अब कोई नबी नहीं रहा,
न हमारे बीच कोई जानता है कि कब तक यह दशा रहेगी ।

१० हे परमेश्वर द्रोही कब तक नामधराई करता रहेगा ?
क्या शत्रु, तेरे नाम की निन्दा सदा करता रहेगा ?

११ तू अपना दहिना हाथ क्यों रोके रहता है ?
उसे अपने पांजर से निकाल कर उनका अन्त कर दे ।।

१२ परमेश्वर तो प्राचीनकाल से मेरा राजा है,
वह पृथ्वी पर उद्धार के काम करता आया है ।

१३ तू ने तो अपनी शक्ति से समुद्र को दो भाग कर दिया;
तू ने तो जल में मगरमच्छों के सिरों को फोड़ दिया ।

१४ तू ने तो लिव्यातानों के सिर टुकड़े टुकड़े करके जंगली जन्तुओं को खिला दिए ।

१५ तू ने तो सोता खोलकर जल की धारा बहाई,
तू ने तो बारहमासी नदियों को सुखा डाला ।

१६ दिन तेरा है रात भी तेरी है;
सूर्य और चन्द्रमा को तू ने स्थिर किया है ।

१७ तू ने तो पृथ्वी के सब सिवानों को ठहराया;
धूपकाल और जाड़ा दोनों तू ने ठहराए हैं ।।

१८ हे यहोवा स्मरण कर, कि शत्रु ने नामधराई की है,
और मूढ़ लोगों ने तेरे नाम की निन्दा की है ।

१९ अपनी पिण्डुकी के प्राण को वनपशु के वश में न कर;
अपने दीन जनों को सदा के लिये न भूल ।।

२० अपनी वाचा की सुधि ले;

क्योंकि देश के अन्धेरे स्थान अत्याचार
के घरों से भरपूर हैं।
२१ पिसे हुए जन को निरादर होकर
लौटना न पड़े;
दीन और दरिद्र लोग तेरे नाम की
स्तुति करने पाएं॥
२२ हे परमेश्वर उठ, अपना मुकद्दमा
आप ही लड़;
तेरी जो नामधराई मूढ़ से दिन भर
होती रहती है, उसे स्मरण कर।
२३ अपने द्रोहियों का बड़ा बोल न भूल,
तेरे विरोधियों का कोलाहल तो
निरन्तर उठता रहता है॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये, अल-तशहेत* आसाप का भजन। गीत)

७५ हे परमेश्वर हम तेरा धन्यवाद
करते,
हम तेरा नाम धन्यवाद करते हैं;
क्योंकि तेरा नाम प्रगट † हुआ है,
तेरे आश्चर्यकर्मों का वर्णन हो रहा
है॥
२ जब ठीक समय आएगा
तब मैं आप ही ठीक ठीक न्याय
करूंगा।
३ पृथ्वी अपने सब रहनेवालों समेत
गल रही है,
मैं ने उसके खम्भों को स्थिर कर
दिया है। (सेला)
४ मैं ने घमंडियों से कहा, घमंड
मत करो,
और दुष्टों से, कि सींग ऊंचा मत
करो;
५ अपना सींग बहुत ऊंचा मत करो,
न सिर उठाकर * ढिठाई की बात
बोलो॥
६ क्योंकि बढ़ती न तो पूरब से न
पच्छिम से,
और न जंगल की ओर से आती
है;
७ परन्तु परमेश्वर ही न्यायी है,
वह एक को घटाता और दूसरे को
बढ़ाता है।
८ यहोवा के हाथ में एक कटोरा है,
जिस में का दाखमधु झागवाला है;
उस में मसाला मिला है, और वह
उस में से उंडेलता है,
निश्चय उसकी तलछट तक पृथ्वी
के सब दुष्ट लोग पी जाएंगे † ॥
९ परन्तु मैं तो सदा प्रचार करता
रहूंगा,
मैं याकूब के परमेश्वर का भजन
गाऊंगा।
१० दुष्टों के सब सींगों को मैं काट
डालूंगा,
परन्तु धर्मी के सींग ऊंचे किए
जाएंगे॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये, तारवाले बाजों के साथ, आसाप का भजन, गीत)

७६ परमेश्वर यहूदा में जाना गया
है,
उसका नाम इस्राएल में महान हुआ
है।
२ और उसका मण्डप शालेम में,
और उसका धाम सिय्योन में है।
३ वहां उस ने चमचमाते तीरों को,

* अर्थात् नाश न कर।
† मूल में—निकट।

* मूल में—गर्दन से।
† मूल में—निचोड़ निचोड़कर पीएंगे।

और ढाल और तलवार को तोड़कर,
निदान लड़ाई ही को तोड़ डाला है ।। (सेला)

४ हे परमेश्वर तू तो ज्योतिमय है:
तू अहेर से भरे हुए पहाड़ों से अधिक उत्तम और महान है।

५ दृढ़ मनवाले लुट गए, और भारी नींद में पड़े हैं;

६ और शूरवीरों में से किसी का हाथ न चला *।
हे याकूब के परमेश्वर, तेरी घुड़की से, रथों समेत घोड़े भारी नींद में पड़े हैं ।।

७ केवल तू ही भययोग्य है;
और जब तू क्रोध करने लगे, तब तेरे साम्हने कौन खड़ा रह सकेगा?

८ तू ने स्वर्ग से निर्णय सुनाया है;
पृथ्वी उस समय सुनकर डर गई, और चुप रही,

९ जब परमेश्वर न्याय करने को,
और पृथ्वी के सब नम्र लोगों का उद्धार करने को उठा ।। (सेला)

१० निश्चय मनुष्य की जलजलाहट तेरी स्तुति का कारण हो जाएगी,
और जो जलजलाहट रह जाए, उसको तू रोकेगा।

११ अपने परमेश्वर यहोवा की मन्नत मानो, और पूरी भी करो;
वह जो भय के योग्य है, उसके आस पास के सब उसके लिये भेंट ले आएं।

१२ वह तो प्रधानों का अभिमान † मिटा देगा;
वह पृथ्वी के राजाओं को भययोग्य जान पड़ता है ।।

* मूल में—मिला।
† मूल में—आत्मा।

(प्रधान बजानेवाले के लिये यदूतून की राग पर आसाप का भजन)

७७

मैं परमेश्वर की दोहाई चिल्ला चिल्लाकर दूंगा,
मैं परमेश्वर की दोहाई दूंगा, और वह मेरी ओर कान लगाएगा।

२ संकट के दिन मैं प्रभु की खोज में लगा रहा;
रात को मेरा हाथ फैला रहा, और ढीला न हुआ,
मुझ में शान्ति आई ही नहीं।

३ मैं परमेश्वर का स्मरण कर करके कहरता हूं;
मैं चिन्ता करते करते मूर्छित हो चला हूं। (सेला)

४ तू मुझे झपकी लगने नहीं देता;
मैं ऐसा घबराया हूं कि मेरे मुंह से बात नहीं निकलती ।।

५ मैं ने प्राचीनकाल के दिनों को,
और युग युग के वर्षों को सोचा है।

६ मैं रात के समय अपने गीत को स्मरण करता;
और मन में ध्यान करता हूं,
और मन में भली भांति विचार करता हूं:

७ क्या प्रभु युग युग के लिये छोड़ देगा;
और फिर कभी प्रसन्न न होगा?

८ क्या उसकी करुणा सदा के लिये जाती रही?
क्या उसका वचन पीढ़ी पीढ़ी के लिये निष्फल हो गया है?

९ क्या ईश्वर अनुग्रह करना भूल गया?
क्या उस ने क्रोध करके अपनी सब दया को रोक रखा है? (सेला)

१० मैं ने कहा, यह तो मेरी दुर्बलता ही है,
परन्तु मैं परमप्रधान के दहिने हाथ के वर्षों को विचारता हूं ॥
११ मैं याह के बड़े कामों की चर्चा करूंगा;
निश्चय मैं तेरे प्राचीनकालवाले अद्भुत कामों को स्मरण करूंगा।
१२ मैं तेरे सब कामों पर ध्यान करूंगा,
और तेरे बड़े कामों को सोचूंगा।
१३ हे परमेश्वर तेरी गति पवित्रता की है।
कौन सा देवता परमेश्वर के तुल्य बड़ा है?
१४ अद्भुत काम करनेवाला ईश्वर तू ही है,
तू ने देश देश के लोगों पर अपनी शक्ति प्रगट की है।
१५ तू ने अपने भुजबल से अपनी प्रजा,
याकूब और यूसुफ के वंश को छुड़ा लिया है ॥ (सेला)
१६ हे परमेश्वर समुद्र ने तुझे देखा,
समुद्र तुझे देखकर डर गया,
गहिरा सागर भी कांप उठा।
१७ मेघों से बड़ी वर्षा हुई;
आकाश से शब्द हुआ;
फिर तेरे तीर इधर उधर चले।
१८ बवण्डर में तेरे गरजने का शब्द सुन पड़ा था;
जगत बिजली से प्रकाशित हुआ;
पृथ्वी कांपी और हिल गई।
१९ तेरा मार्ग समुद्र में है,
और तेरा रास्ता गहिरे जल में हुआ;
और तेरे पांवों के चिन्ह मालूम नहीं होते।
२० तू ने मूसा और हारून के द्वारा,
अपनी प्रजा की अगुवाई भेड़ों की सी की ॥

(आसाप का मश्कील)

७८ हे मेरे लोगो, मेरी शिक्षा सुनो;
मेरे वचनों की ओर कान लगाओ!
२ मैं अपना मुंह नीतिवचन कहने के लिये खोलूंगा;
मैं प्राचीनकाल की गुप्त बातें कहूंगा,
३ जिन बातों को हम ने सुना, और जान लिया,
और हमारे बाप दादों ने हम से वर्णन किया है।
४ उन्हें हम उनकी सन्तान से गुप्त न रखेंगे,
परन्तु होनहार पीढ़ी के लोगों से,
यहोवा का गुणानुवाद और उसकी सामर्थ्य और आश्चर्यकर्मों का वर्णन करेंगे ॥
५ उस ने तो याकूब में एक चितौनी ठहराई,
और इस्राएल में एक व्यवस्था चलाई,
जिसके विषय उस ने हमारे पितरों को आज्ञा दी,
कि तुम इन्हें अपने अपने लड़केबालों को बताना;
६ कि आनेवाली पीढ़ी के लोग, अर्थात जो लड़केबाले उत्पन्न होनेवाले हैं, वे इन्हें जानें;
और अपने अपने लड़केबालों से इनका बखान करने में उद्यत हों,
जिस से वे परमेश्वर का आसरा रखें,
७ और ईश्वर के बड़े कामों को भूल न जाएं,
परन्तु उसकी आज्ञाओं का पालन करते रहें;
८ और अपने पितरों के समान न हों,

क्योंकि उस पीढ़ी के लोग तो हठीले
और झगड़ालू थे,
और उन्हों ने अपना मन स्थिर न
किया था,
और न उनकी आत्मा ईश्वर की
ओर सच्ची रही ।।
९ एप्रैमियों ने तो शस्त्रधारी और
धनुर्धारी होने पर भी,
युद्ध के समय पीठ दिखा दी ।
१० उन्हों ने परमेश्वर की वाचा पूरी
नहीं की,
और उसकी व्यवस्था पर चलने से
इनकार किया ।
११ उन्हों ने उसके बड़े कामों को और
जो आश्चर्यकर्म उस ने उनके
साम्हने किए थे,
उनको भुला दिया ।
१२ उस ने तो उनके बापदादों के सम्मुख
मिस्र देश के सोअन के मैदान में
अद्भुत कर्म किए थे ।
१३ उस ने समुद्र को दो भाग करके
उन्हें पार कर दिया,
और जल को ढेर की नाईं खड़ा कर
दिया ।
१४ और उस ने दिन को तो बादल के
खम्भे से
और रात भर अग्नि के प्रकाश के
द्वारा उनकी अगुवाई की ।
१५ वह जंगल में चट्टानें फाड़कर,
उनको मानो गहिरे जलाशयों से
मनमाने पिलाता था ।
१६ उस ने चट्टान से भी धाराएं निकालीं
और नदियों का सा जल बहाया ।।
१७ तौभी वे फिर उसके विरुद्ध अधिक
पाप करते गए,
और निर्जल देश में परमप्रधान के
विरुद्ध उठते रहे ।
१८ और अपनी चाह के अनुसार * भोजन
मांगकर
मन ही मन ईश्वर की परीक्षा की ।
१९ वे परमेश्वर के विरुद्ध बोले,
और कहने लगे, क्या ईश्वर जंगल
में मेज लगा सकता है ?
२० उस ने चट्टान पर मारके जल बहा
तो दिया,
और धाराएं उमण्ड चलीं,
परन्तु क्या वह रोटी भी दे सकता है ?
क्या वह अपनी प्रजा के लिये मांस
भी तैयार कर सकता ?
२१ यहोवा सुनकर क्रोध से भर गया,
तब याकूब के बीच आग लगी,
और इस्राएल के विरुद्ध क्रोध भड़का;
२२ इसलिये कि उन्हों ने परमेश्वर पर
विश्वास नहीं रखा था,
न उसकी उद्धार करने की शक्ति पर
भरोसा किया ।
२३ तौभी उस ने आकाश को आज्ञा दी,
और स्वर्ग के द्वारों को खोला;
२४ और उनके लिये खाने को मान
बरसाया,
और उन्हें स्वर्ग का अन्न दिया ।
२५ उनको शूरवीरों की सी रोटी मिली;
उस ने उनको मनमाना भोजन दिया ।
२६ उस ने आकाश में पुरवाई को चलाया,
और अपनी शक्ति से दक्खिनी बहाई;
२७ और उनके लिये मांस धूलि की
नाईं बहुत बरसाया,
और समुद्र के बालू के समान
अनगिनित पक्षी भेजे;

---

* मूल में—जीव।

२८ और उनकी छावनी के बीच में,
उनके निवासों के चारों ओर गिराए।
२९ और वे खाकर अति तृप्त हुए,
और उस ने उनकी कामना पूरी की।
३० उनकी कामना बनी ही रही *,
उनका भोजन उनके मुंह ही में था,
३१ कि परमेश्वर का क्रोध उन पर भड़का,
और उस ने उनके हृष्टपुष्टों को घात किया,
और इस्राएल के जवानों को गिरा दिया॥
३२ इतने पर भी वे और अधिक पाप करते गए;
और परमेश्वर के आश्चर्यकर्मों की प्रतीत न की।
३३ तब उस ने उनके दिनों को व्यर्थ श्रम में,
और उनके वर्षों को घबराहट में कटवाया।
३४ जब जब वह उन्हें घात करने लगता,
तब तब वे उसको पूछते थे;
और फिरकर ईश्वर को यत्न से खोजते थे।
३५ और उनको स्मरण होता था कि परमेश्वर हमारी चट्टान है,
और परमप्रधान ईश्वर हमारा छुड़ानेवाला है।
३६ तौभी उन्हों ने उस से चापलूसी की;
वे उस से झूठ बोले।
३७ क्योंकि उनका हृदय उसकी ओर दृढ़ न था;
न वे उसकी वाचा के विषय सच्चे थे।

* मूल में—वे अपनी तृष्णा से विराने न हुए थे।

३८ परन्तु वह जो दयालु है, वह अधर्म को ढांपता, और नाश नहीं करता;
वह बारबार अपने क्रोध को ठण्डा करता है,
और अपनी जलजलाहट को पूरी रीति से भड़कने नहीं देता।
३९ उसको स्मरण हुआ कि ये नाशमान * हैं,
ये वायु के समान हैं जो चली जाती और लौट नहीं आती।
४० उन्हों ने कितनी ही बार जंगल में उस से बलवा किया,
और निर्जल देश में उसको उदास किया!
४१ वे बारबार ईश्वर की परीक्षा करते थे,
और इस्राएल के पवित्र को खेदित करते थे।
४२ उन्हों ने न तो उसका भुजबल स्मरण किया,
न वह दिन जब उस ने उनको द्रोही के वश से छुड़ाया था;
४३ कि उस ने क्योंकर अपने चिन्ह मिस्र में,
और अपने चमत्कार सोअन के मैदान में किए थे।
४४ उस ने तो मिस्रियों † की नहरों को लोहू बना डाला,
और वे अपनी नदियों का जल पी न सके।
४५ उस ने उनके बीच में डांस भेजे जिन्हों ने उन्हें काट खाया,
और मेंढक भी भेजे, जिन्हों ने उनका बिगाड़ किया।

* मूल में—मांस।
† मूल में—उन।

४६ उस ने उनकी भूमि की उपज कीड़ों को,
और उनकी खेतीबारी टिड्डियों को खिला दी थी।
४७ उस ने उनकी दाखलताओं को ओलों से,
और उनके गूलर के पेड़ों को बड़े बड़े पत्थर बरसाकर नाश किया।
४८ उस ने उनके पशुओं को ओलों से,
और उनके ढोरों को बिजलियों से मिटा दिया।
४९ उस ने उनके ऊपर अपना प्रचण्ड क्रोध और रोष भड़काया,
और उन्हें संकट में डाला,
और दुखदाई दूतों का दल भेजा।
५० उस ने अपने क्रोध का मार्ग खोला *,
और उनके प्राणों को मृत्यु से न बचाया,
परन्तु उनको मरी के वश में कर दिया।
५१ उस ने मिस्र के सब पहिलौठों को मारा,
जो हाम के डेरों में पौरुष के पहिले फल थे;
५२ परन्तु अपनी प्रजा को भेड़-बकरियों की नाईं प्रस्थान कराया,
और जंगल में उनकी अगुवाई पशुओं के झुण्ड की सी की।
५३ तब वे उसके चलाने से बेखटके चले,
और उनको कुछ भय न हुआ,
परन्तु उनके शत्रु समुद्र में डूब गए।
५४ और उस ने उनको अपने पवित्र देश के सिवाने तक,
इसी पहाड़ी देश में पहुंचाया, जो उस ने अपने दहिने हाथ से प्राप्त किया था।
५५ उस ने उनके साम्हने से अन्यजातियों को भगा दिया;
और उनकी भूमि को डोरी से माप मापकर बांट दिया;
और इस्राएल के गोत्रों को उनके डेरों में बसाया॥
५६ तौभी उन्हों ने परमप्रधान परमेश्वर की परीक्षा की और उस से बलवा किया,
और उसकी चितौनियों को न माना,
५७ और मुड़कर अपने पुरखाओं की नाईं विश्वासघात किया;
उन्हों ने निकम्मे * धनुष की नाईं धोखा दिया †।
५८ क्योंकि उन्हों ने ऊंचे स्थान बनाकर उसको रिस दिलाई,
और खुदी हुई मूर्तियों के द्वारा उस में जलन उपजाई।
५९ परमेश्वर सुनकर रोष से भर गया,
और उस ने इस्राएल को बिलकुल तज दिया।
६० उस ने शीलो के निवास,
अर्थात् उस तम्बू को जो उस ने मनुष्यों के बीच खड़ा किया था, त्याग दिया,
६१ और अपनी सामर्थ को बन्धुआई में जाने दिया,
और अपनी शोभा को द्रोही के वश में कर दिया।

* मूल में—सम्भर किया।

* मूल में—धोखा देनेवाले।
† मूल में—मुड़ गए।

६२ उस ने अपनी प्रजा को तलवार से मरवा दिया,
और अपने निज भाग के लोगों पर रोष से भर गया।
६३ उन के जवान आग से भस्म हुए,
और उनकी कुमारियों के विवाह के गीत न गाए गए।
६४ उनके याजक तलवार से मारे गए,
और उनकी विधवाएं रोने न पाईं॥
६५ तब प्रभु मानो नींद से चौंक उठा,
और ऐसे वीर के समान उठा जो दाखमधु पीकर ललकारता हो।
६६ और उस ने अपने द्रोहियों को मारकर पीछे हटा दिया;
और उनकी सदा की नामधराई कराई॥
६७ फिर उस ने यूसुफ के तम्बू को तज दिया;
और एप्रैम के गोत्र को न चुना;
६८ परन्तु यहूदा ही के गोत्र को,
और अपने प्रिय सिय्योन पर्वत को चुन लिया।
६९ उस ने अपने पवित्रस्थान को बहुत ऊंचा बना दिया,
और पृथ्वी के समान स्थिर बनाया, जिसकी नेव उस ने सदा के लिये डाली है।
७० फिर उस ने अपने दास दाऊद को चुनकर
भेड़शालाओं में से ले लिया;
७१ वह उसको बच्चेवाली भेड़ों के पीछे पीछे फिरने से ले आया
कि वह उसकी प्रजा याकूब की
अर्थात् उसके निज भाग इस्राएल की चरवाही करे।
७२ तब उस ने खरे मन से उनकी चरवाही की,
और अपने हाथ की कुशलता से उनकी अगुवाई की॥

(आसाप का भजन)

७९ हे परमेश्वर अन्यजातियां तेरे निज भाग में घुस आईं;
उन्हों ने तेरे पवित्र मन्दिर को अशुद्ध किया;
और यरूशलेम को खंडहर कर दिया है।
२ उन्हों ने तेरे दासों की लोथों को आकाश के पक्षियों का आहार कर दिया,
और तेरे भक्तों का मांस वनपशुओं को खिला दिया है।
३ उन्हों ने उनका लोहू यरूशलेम के चारों ओर जल की नाईं बहाया,
और उनको मिट्टी देनेवाला कोई न था।
४ पड़ोसियों के बीच हमारी नामधराई हुई;
चारों ओर के रहनेवाले हम पर हंसते, और ठट्ठा करते हैं॥
५ हे यहोवा, तू कब तक लगातार क्रोध करता रहेगा?
तुझ में आग की सी जलन कब तक भड़कती रहेगी?
६ जो जातियां तुझ को नहीं जानतीं,
और जिन राज्यों के लोग तुझ से प्रार्थना नहीं करते,
उन्हीं पर अपनी सब जलजलाहट भड़का *!
७ क्योंकि उन्हों ने याकूब को निगल लिया,

* मूल में—अपनी जलजलाहट उंडेल।

और उसके वासस्थान को उजाड़
दिया है ।।
८ हमारी हानि के लिये हमारे पुरखाओं
के अधर्म के कामों को स्मरण न
कर;
तेरी दया हम पर शीघ्र हो,
क्योंकि हम बड़ी दुर्दशा में पड़े हैं ।
९ हे हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर, अपने
नाम की महिमा के निमित्त हमारी
सहायता कर;
और अपने नाम के निमित्त हम को
छुड़ाकर हमारे पापों को ढांप दे ।
१० अन्यजातियां क्यों कहने पाएं कि
उनका परमेश्वर कहां रहा ?
अन्यजातियों के बीच तेरे दासों के
खून का पलटा लेना हमारे देखते
उन्हें मालूम हो जाए ।।
११ बन्धुओं का कराहना तेरे कान तक
पहुंचे;
घात होनेवालों को अपने भुजबल के
द्वारा बचा ।
१२ और हे प्रभु, हमारे पड़ोसियों ने
जो तेरी निन्दा की है,
उसका सातगुणा बदला उनको दे !
१३ तब हम जो तेरी प्रजा और तेरी
चराई की भेड़ें हैं,
तेरा धन्यवाद सदा करते रहेंगे;
और पीढ़ी से पीढ़ी तक तेरा गुणानु-
वाद करते रहेंगे ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये शोशन्नी-
एदूत* में आसाप का भजन)

८० हे इस्राएल के चरवाहे,
तू जो यूसुफ की अगुवाई भेड़ों
की सी करता है, कान लगा !
तू जो करूबों पर विराजमान है,
अपना तेज दिखा !
२ एप्रैम, बिन्यामीन, और मनश्शे के
साम्हने अपना पराक्रम दिखाकर,
हमारा उद्धार करने को आ !
३ हे परमेश्वर, हम को ज्यों के त्यों
कर दे;
और अपने मुख का प्रकाश चमका,
तब हमारा उद्धार हो जाएगा !
४ हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा,
तू कब तक अपनी प्रजा की प्रार्थना
पर क्रोधित रहेगा* ?
५ तू ने आंसुओं को उनका आहार कर
दिया,
और मटके भर भरके उन्हें आंसू
पिलाए हैं ।
६ तू हमें हमारे पड़ोसियों के झगड़ने का
कारण कर देता है,
और हमारे शत्रु मनमाने ठट्ठा करते
हैं ।।
७ हे सेनाओं के परमेश्वर, हम को ज्यों
के त्यों कर दे;
और अपने मुख का प्रकाश हम पर
चमका, तब हमारा उद्धार हो
जाएगा ।।
८ तू मिस्र से एक दाखलता ले आया;
और अन्यजातियों को निकालकर
उसे लगा दिया ।
९ तू ने उसके लिये स्थान तैयार किया है;
और उस ने जड़ पकड़ी और फैलकर
देश को भर दिया ।
१० उसकी छाया पहाड़ों पर फैल गई,
और उसकी डालियां ईश्वर के देवदारों
के समान हुई;

* अर्थात् सोसन साक्षी ।

* मूल में—धुआं उठाता रहेगा ।

११ उसकी शाखाएं समुद्र तक बढ़ गईं,
और उसके अंकुर महानद तक फैल गए।
१२ फिर तू ने उसके बाड़ों को क्यों गिरा दिया,
कि सब बटोही उसके फलों को तोड़ते हैं ?
१३ वनसूअर उसको नाश किए डालता है,
और मैदान के सब पशु उसे चर जाते हैं ।।
१४ हे सेनाओं के परमेश्वर, फिर आ !
स्वर्ग से ध्यान देकर देख, और इस दाखलता की सुधि ले,
१५ ये पौधा तू ने अपने दहिने हाथ से लगाया,
और जो लता की शाखा * तू ने अपने लिये दृढ़ की है।
१६ वह जल गई, वह कट गई है;
तेरी घुड़की से वे नाश होते हैं।
१७ तेरे दहिने हाथ के सम्भाले हुए पुरुष पर तेरा हाथ रखा रहे,
उस आदमी पर, जिसे तू ने अपने लिये दृढ़ किया है।
१८ तब हम लोग तुझ से न मुड़ेंगे:
तू हम को जिला, और हम तुझ से प्रार्थना कर सकेंगे।
१९ हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, हम को ज्यों का त्यों कर दे !
और अपने मुख का प्रकाश हम पर चमका, तब हमारा उद्धार हो जाएगा !

* मूल में—बेटा।

(प्रधान बजानेवाले के लिये गित्तीथ में आसाप का भजन)

८१ परमेश्वर जो हमारा बल है, उसका गीत आनन्द से गाओ;
याकूब के परमेश्वर का जयजयकार करो !
२ भजन उठाओ, डफ और मधुर बजनेवाली वीणा
और सारंगी को ले आओ।
३ नये चांद के दिन,
और पूर्णमासी को हमारे पर्व के दिन नरसिंगा फूंको।
४ क्योंकि यह इस्राएल के लिये विधि,
और याकूब के परमेश्वर का ठहराया हुआ नियम है।
५ इसको उस ने यूसुफ में चितौनी की रीति पर उस समय चलाया,
जब वह मिस्र देश के विरुद्ध चला ।।
वहां मैं ने एक अनजानी भाषा सुनी;
६ मैं ने उनके कन्धों पर से बोझ को उतार दिया;
उनका टोकरी ढोना छूट गया।
७ तू ने संकट में पड़कर पुकारा, तब मैं ने तुझे छुड़ाया;
बादल गरजने के गुप्त स्थान में से मैं ने तेरी सुनी,
और मरीबा नाम सोते के पास तेरी परीक्षा की। (सेला)
८ हे मेरी प्रजा, सुन, मैं तुझे चिता देता हूं !
हे इस्राएल भला हो कि तू मेरी सुने !
९ तेरे बीच में पराया ईश्वर न हो;
और न तू किसी पराए देवता को दण्डवत् करना।

१० तेरा परमेश्वर यहोवा मैं हूं,
जो तुझे मिस्र देश से निकाल लाया है।
तू अपना मुंह पसार, मैं उसे भर दूंगा ॥
११ परन्तु मेरी प्रजा ने मेरी न सुनी;
इस्राएल ने मुझ को न चाहा।
१२ इसलिये मैं ने उसको उसके मन के हठ पर छोड़ दिया,
कि वह अपनी ही युक्तियों के अनुसार चले।
१३ यदि मेरी प्रजा मेरी सुने,
यदि इस्राएल मेरे मार्गों पर चले,
१४ तो मैं क्षण भर में उनके शत्रुओं को दबाऊं,
और अपना हाथ उनके द्रोहियों के विरुद्ध चलाऊं।
१५ यहोवा के बैरी तो उस * के वश में हो जाते,
और वे सदाकाल बने रहते हैं।
१६ और वह उनको उत्तम से उत्तम गेहूं खिलाता,
और मैं चट्टान में के मधु से उनको तृप्त करूं ॥

(आसाप का भजन)

८२ परमेश्वर की सभा में परमेश्वर ही खड़ा है;
वह ईश्वरों के बीच में न्याय करता है।
२ तुम लोग कब तक टेढ़ा न्याय करते
और दुष्टों का पक्ष लेते रहोगे? (सेला)
३ कंगाल और अनाथों का न्याय चुकाओ,
दीन-दरिद्र का विचार धर्म से करो।

* मूल में—उस।

४ कंगाल और निर्धन को बचा लो;
दुष्टों के हाथ से उन्हें छुड़ाओ ॥
५ वे न तो कुछ समझते और न कुछ बूझते हैं,
परन्तु अन्धेरे में चलते फिरते रहते हैं;
पृथ्वी की पूरी नीव हिल जाती है ॥
६ मैं ने कहा था कि तुम ईश्वर हो,
और सब के सब परमप्रधान के पुत्र हो;
७ तौभी तुम मनुष्यों की नाईं मरोगे,
और किसी प्रधान के समान गिर जाओगे ॥
८ हे परमेश्वर उठ, पृथ्वी का न्याय कर;
क्योंकि तू ही सब जातियों को अपने भाग में लेगा!

(गीत। आसाप का भजन)

८३ हे परमेश्वर मौन न रह;
हे ईश्वर चुप न रह, और न शान्त रह!
२ क्योंकि देख तेरे शत्रु धूम मचा रहे हैं;
और तेरे बैरियों ने सिर उठाया है।
३ वे चतुराई से तेरी प्रजा की हानि की सम्मति करते,
और तेरे रक्षित * लोगों के विरुद्ध युक्तियां निकालते हैं।
४ उन्हों ने कहा, आओ, हम उनको ऐसा नाश करें कि राज्य † भी मिट जाए;
और इस्राएल का नाम आगे को स्मरण न रहे।

* मूल में—छिपाए।
† मूल में—जाति।

५ उन्हों ने एक मन होकर युक्ति निकाली है,
और तेरे ही विरुद्ध वाचा बान्धी है ।
६ ये तो एदोम के तम्बूवाले
और इश्माएली, मोआबी और हग्री,
७ गबाली, अम्मोनी, अमालेकी,
और सोर समेत पलिश्ती हैं ।
८ इनके संग अश्शूरी भी मिल गए हैं;
उन से भी लोतवंशियों को सहारा मिला है । (सेला)
९ इन से ऐसा कर जैसा मिद्यानियों से,
और कीशोन नाले में सीसरा और याबीन से किया था,
जो एन्दोर में नाश हुए,
१० और भूमि के लिये खाद बन गए ।
११ इनके रईसों को ओरेब और जाएब सरीखे,
और इनके सब प्रधानों को जेबह और सल्मुन्ना के समान कर दे,
१२ जिन्हों ने कहा था,
कि हम परमेश्वर की चराइयों के अधिकारी आप ही हो जाएं ।।
१३ हे मेरे परमेश्वर इनको बवन्डर की धूलि,
वा पवन से उड़ाए हुए भूसे के समान कर दे ।
१४ उस आग की नाईं जो वन को भस्म करती है,
और उस लौ की नाईं जो पहाड़ों को जला देती है,
१५ तू इन्हें अपनी आंधी से भगा दे,
और अपने बवन्डर से घबरा दे !
१६ इनके मुंह को अति लज्जित कर,
कि हे यहोवा ये तेरे नाम को ढूंढ़ें ।
१७ ये सदा के लिये लज्जित और घबराए रहें
इनके मुंह काले हों, और इनका नाश हो जाए,
१८ जिस से यह जानें कि केवल तू जिसका नाम यहोवा है,
सारी पृथ्वी के ऊपर परमप्रधान है ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये गित्तीथ में कोरहवंशियों का भजन)

८४ हे सेनाओं के यहोवा, तेरे निवास क्या ही प्रिय हैं !
२ मेरा प्राण यहोवा के आंगनों की अभिलाषा करते करते मूर्छित हो चला;
मेरा तन मन दोनों जीवते ईश्वर को पुकार रहे ।।
३ हे सेनाओं के यहोवा, हे मेरे राजा, और मेरे परमेश्वर, तेरी वेदियों में
गौरैया ने अपना बसेरा
और शूपाबेनी ने घोंसला बना लिया है
जिस में वह अपने बच्चे रखे ।
४ क्या ही धन्य हैं वे, जो तेरे भवन में रहते हैं;
वे तेरी स्तुति निरन्तर करते रहेंगे ।। (सेला)
५ क्या ही धन्य है, वह मनुष्य जो तुझ से शक्ति पाता * है,
और वे जिनको सिय्योन की सड़क की सुधि रहती है ।
६ वे रोने की तराई में जाते हुए उसको सोतों का स्थान बनाते हैं;
फिर बरसात की अगली वृष्टि उसमें आशीष ही आशीष उपजाती है ।
७ वे बल पर बल पाते जाते हैं;

* मूल में—जिसकी शक्ति तुझ में है ।

उन में से हर एक जन सिय्योन
में परमेश्वर को अपना मुंह
दिखाएगा ॥
८ हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, मेरी
प्रार्थना सुन,
हे याकूब के परमेश्वर, कान लगा !
(सेला)
९ हे परमेश्वर, हे हमारी ढाल, दृष्टि
कर;
और अपने अभिषिक्त का मुख देख !
१० क्योंकि तेरे आंगनों में का एक दिन
और कहीं के हजार दिन से उत्तम है।
दुष्टों के डेरों में वास करने से
अपने परमेश्वर के भवन की डेवढ़ी
पर खड़ा रहना ही मुझे अधिक
भावता है।
११ क्योंकि यहोवा परमेश्वर सूर्य और
ढाल है;
यहोवा अनुग्रह करेगा, और महिमा
देगा;
और जो लोग खरी चाल चलते हैं,
उन से वह कोई अच्छा पदार्थ रख
न छोड़ेगा।
१२ हे सेनाओं के यहोवा,
क्या ही धन्य वह मनुष्य है, जो तुझ
पर भरोसा रखता है !

(प्रधान बजानेवाले के लिये कोरह-
वंशियों का भजन)

८५ हे यहोवा तू अपने देश पर
प्रसन्न हुआ,
याकूब को बन्धुआई से लौटा ले आया
है।
२ तू ने अपनी प्रजा के अधर्म को क्षमा
किया है;
और उसके सब पापों को ढांप दिया
है। (सेला)
३ तू ने अपने रोष को शान्त किया है;
और अपने भड़के हुए कोप को दूर
किया है ॥
४ हे हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर हम को
फेर,
और अपना क्रोध हम पर से दूर कर !
५ क्या तू हम पर सदा कोपित रहेगा ?
क्या तू पीढ़ी से पीढ़ी तक कोप
करता रहेगा ?
६ क्या तू हम को फिर न जिलाएगा,
कि तेरी प्रजा तुझ में आनन्द करे ?
७ हे यहोवा अपनी करुणा हमें दिखा,
और तू हमारा उद्धार कर* ॥
८ मैं कान लगाए रहूंगा, कि ईश्वर
यहोवा क्या कहता है,
वह तो अपनी प्रजा से जो उसके
भक्त हैं, शान्ति की बातें कहेगा;
परन्तु वे फिरके मूर्खता न करने
लगें।
९ निश्चय उसके डरवैयों के उद्धार का
समय निकट है,
तब हमारे देश में महिमा का निवास
होगा ॥
१० करुणा और सच्चाई आपस में मिल
गई हैं;
धर्म और मेल ने आपस में चुम्बन
किया है।
११ पृथ्वी में से सच्चाई उगती
और स्वर्ग से धर्म झुकता है।
१२ फिर यहोवा उत्तम पदार्थ देगा,
और हमारी भूमि अपनी उपज देगी।
१३ धर्म उसके आगे आगे चलेगा,
और उसके पांवों के चिन्हों को हमारे
लिये मार्ग बनाएगा ॥

* मूल में—अपना उद्धार हमें दे।

(दाऊद की प्रार्थना)

८६ हे यहोवा कान लगाकर मेरी सुन ले,
क्योंकि मैं दीन और दरिद्र हूं।
२ मेरे प्राण की रक्षा कर, क्योंकि मैं भक्त * हूं;
तू मेरा परमेश्वर है, इसलिये अपने दास का,
जिसका भरोसा तुझ पर है, उद्धार कर।
३ हे प्रभु मुझ पर अनुग्रह कर,
क्योंकि मैं तुझी को लगातार पुकारता रहता हूं।
४ अपने दास के मन को आनन्दित कर,
क्योंकि हे प्रभु, मैं अपना मन तेरी ही ओर लगाता हूं।
५ क्योंकि हे प्रभु, तू भला और क्षमा करनेवाला है,
और जितने तुझे पुकारते हैं उन सभों के लिये तू अति करुणामय है।
६ हे यहोवा मेरी प्रार्थना की ओर कान लगा,
और मेरे गिड़गिड़ाने को ध्यान से सुन।
७ संकट के दिन मैं तुझ को पुकारूंगा,
क्योंकि तू मेरी सुन लेगा॥
८ हे प्रभु देवताओं में से कोई भी तेरे तुल्य नहीं,
और न किसी के काम तेरे कामों के बराबर हैं।
९ हे प्रभु जितनी जातियों को तू ने बनाया है, सब आकर तेरे साम्हने दण्डवत् करेंगी,
और तेरे नाम की महिमा करेंगी।
१० क्योंकि तू महान् और आश्चर्यकर्म करनेवाला है,
केवल तू ही परमेश्वर है।
११ हे यहोवा अपना मार्ग मुझे दिखा,
तब मैं तेरे सत्य मार्ग पर चलूंगा,
मुझ को एक चित्त कर कि मैं तेरे नाम का भय मानूं।
१२ हे प्रभु हे मेरे परमेश्वर मैं अपने सम्पूर्ण मन से तेरा धन्यवाद करूंगा,
और तेरे नाम की महिमा सदा करता रहूंगा।
१३ क्योंकि तेरी करुणा मेरे ऊपर बड़ी है;
और तू ने मुझ को अधोलोक की तह में जाने से बचा लिया है॥
१४ हे परमेश्वर अभिमानी लोग तो मेरे विरुद्ध उठे हैं,
और बलात्कारियों का समाज मेरे प्राण का खोजी हुआ है,
और वे तेरा कुछ विचार नहीं रखते।
१५ परन्तु प्रभु तू दयालु और अनुग्रहकारी ईश्वर है,
तू विलम्ब से कोप करनेवाला और अति करुणामय है।
१६ मेरी ओर फिरकर मुझ पर अनुग्रह कर;
अपने दास को तू शक्ति दे,
और अपनी दासी के पुत्र का उद्धार कर॥
१७ मुझे भलाई का कोई लक्षण दिखा,
जिसे देखकर मेरे बैरी निराश हों,
क्योंकि हे यहोवा तू ने आप मेरी सहायता की और मुझे शान्ति दी है॥

* अर्थात् पवित्र वा जिस को तू चाहता है।

(कोरहवंशियों का भजन। गीत)

८७ उसकी नेव पवित्र पर्वतों में है;
२ और यहोवा सिय्योन के फाटकों को याकूब के सारे निवासों से बढ़कर प्रीति रखता है।
३ हे परमेश्वर के नगर, तेरे विषय महिमा की बातें कही गई हैं *। (सेला)
४ मैं अपने जान-पहचानवालों से रहब और बाबेल की भी चर्चा करूंगा; पलिश्त, सोर और कूश को देखो, यह वहां उत्पन्न हुआ था।
५ और सिय्योन के विषय में यह कहा जाएगा, कि अमुक अमुक मनुष्य उस में उत्पन्न हुआ था; और परमप्रधान आप ही उसको स्थिर रखेगा।
६ यहोवा जब देश देश के लोगों के नाम लिखकर गिन लेगा, तब यह कहेगा, कि यह वहां उत्पन्न हुआ था।। (सेला)
७ गवैये और नृतक दोनों कहेंगे कि हमारे सब सोते तुझी में पाए जाते हैं।।

(गीत कोरहवंशियों का भजन। प्रधान बजानेवाले के लिये महलतलग्नोत में। एज्रावंशी हेमान का मश्कील)

८८ हे मेरे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर यहोवा, मैं दिन को और रात को तेरे आगे चिल्लाता आया हूं।
२ मेरी प्रार्थना तुझ तक पहुंचे, मेरे चिल्लाने की ओर कान लगा!
३ क्योंकि मेरा प्राण क्लेश में भरा हुआ है, और मेरा प्राण अधोलोक के निकट पहुंचा है।
४ मैं कबर में पड़नेवालों में गिना गया हूं; मैं बलहीन पुरुष के समान हो गया हूं।
५ मैं मुर्दों के बीच छोड़ा गया * हूं, और जो घात होकर कबर में पड़े हैं, जिनको तू फिर स्मरण नहीं करता और वे तेरी सहायता रहित हैं †, उनके समान मैं हो गया हूं।
६ तू ने मुझे गड़हे के तल ही में, अन्धेरे और गहिरे स्थान में रखा है।
७ तेरी जलजलाहट मुझी पर बनी हुई है, और तू ने अपने सब तरंगों से मुझे दु:ख दिया है। (सेला)
८ तू ने मेरे पहिचानवालों को मुझ से दूर किया है; और मुझ को उनकी दृष्टि में घिनौना किया है। मैं बन्दी हूं और निकल नहीं सकता,
९ दु:ख भोगते भोगते मेरी आंखें धुन्धला गईं। हे यहोवा मैं लगातार तुझे पुकारता और अपने हाथ तेरी ओर फैलाता आया हूं।
१० क्या तू मुर्दों के लिये अद्भुत काम करेगा? क्या मरे लोग उठकर तेरा धन्यवाद करेंगे? (सेला)
११ क्या कबर में तेरी करुणा का, और विनाश की दशा में तेरी सच्चाई का वर्णन किया जाएगा?

* वा तेरी मंगनी महिमा के साथ हुई।

* मूल में—स्वाधीन।
† मूल में—तेरे हाथ से कटे हुए।

१२ क्या तेरे अद्भुत काम अन्धकार में,
वा तेरा धर्म विश्वासघात की दशा *
में जाना जाएगा ?
१३ परन्तु हे यहोवा, मैं ने तेरी दोहाई
दी है;
और भोर को मेरी प्रार्थना तुझ
तक पहुंचेगी।
१४ हे यहोवा, तू मुझ को क्यों छोड़ता
है ?
तू अपना मुख मुझ से क्यों छिपाए
रहता है ?
१५ मैं बचपन ही से दुःखी वरन अधमुआ
हूं,
तुझ से भय खाते मैं अति व्याकुल
हो गया हूं
१६ तेरा क्रोध मुझ पर पड़ा है;
उस भय से मैं मिट गया हूं।
१७ वह दिन भर जल की नाईं मुझे घेरे
रहता है;
वह मेरे चारों ओर दिखाई देता
है।
१८ तू ने मित्र और भाईबन्धु दोनों को
मुझ से दूर किया है;
और मेरे जान-पहिचानवालों को
अन्धकार में डाल दिया है ॥

(एतान एज्राहवंशी का मश्कील)

८९ मैं यहोवा की सारी करुणा
के विषय सदा गाता रहूंगा;
मैं तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक
जताता रहूंगा।
२ क्योंकि मैं ने कहा है, तेरी करुणा
सदा बनी रहेगी,
तू स्वर्ग में अपनी सच्चाई को स्थिर
रखेगा।

* मूल में—देश।

३ मैं ने अपने चुने हुए से वाचा बान्धी
है,
मैं ने अपने दास दाऊद से शपथ
खाई है,
४ कि मैं तेरे वंश को सदा स्थिर
रखूंगा;
और तेरी राजगद्दी को पीढ़ी से पीढ़ी
तक बनाए रखूंगा। (सेला)
५ हे यहोवा, स्वर्ग में तेरे अद्भुत काम
की,
और पवित्रों की सभा में तेरी सच्चाई
की प्रशंसा होगी।
६ क्योंकि आकाशमण्डल में यहोवा के
तुल्य कौन ठहरेगा ?
बलवन्तों * के पुत्रों में से कौन है
जिसके साथ यहोवा की उपमा दी
जाएगी ?
७ ईश्वर पवित्रों की गोष्ठी में अत्यन्त
प्रतिष्ठा के योग्य,
और अपने चारों ओर सब रहनेवालों
से अधिक भययोग्य है।
८ हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा,
हे याह, तेरे तुल्य कौन सामर्थी है ?
तेरी सच्चाई तो तेरे चारों ओर है !
९ समुद्र के गर्व को तू ही तोड़ता है;
जब उसके तरंग उठते हैं, तब तू
उनको शान्त कर देता है।
१० तू ने रहब को घात किए हुए के समान
कुचल डाला,
और अपने शत्रुओं को अपने बाहुबल
से तितर बितर किया है।
११ आकाश तेरा है, पृथ्वी भी तेरी है;
जगत और जो कुछ उस में है, उसे
तू ही ने स्थिर किया है।

* वा ईश्वरों।

१२ उत्तर और दक्खिन को तू ही ने सिरजा;
ताबोर और हेर्मोन तेरे नाम का जयजयकार करते हैं।
१३ तेरी भुजा बलवन्त है;
तेरा हाथ शक्तिमान और तेरा दहिना हाथ प्रबल है।
१४ तेरे सिंहासन का मूल, धर्म और न्याय है;
करुणा और सच्चाई तेरे आगे आगे चलती है।
१५ क्या ही धन्य है वह समाज जो आनन्द के ललकार को पहिचानता है;
हे यहोवा वे लोग तेरे मुख के प्रकाश में चलते हैं,
१६ वे तेरे नाम के हेतु दिन भर मगन रहते हैं,
और तेरे धर्म के कारण महान हो जाते हैं।
१७ क्योंकि तू उनके बल की शोभा है,
और अपनी प्रसन्नता से हमारे सींग को ऊंचा करेगा।
१८ क्योंकि हमारी ढाल यहोवा की ओर से है,
हमारा राजा इस्राएल के पवित्र की ओर से है।।
१९ एक समय तू ने अपने भक्त को दर्शन देकर बातें कीं,
और कहा, में ने सहायता करने का भार एक वीर पर रखा है,-
और प्रजा में से एक को चुनकर बढ़ाया है।
२० मैं ने अपने दास दाऊद को लेकर,
अपने पवित्र तेल से उसका अभिषेक किया है।
२१ मेरा हाथ उसके साथ बना रहेगा,
और मेरी भुजा उसे दृढ़ रखेगी।
२२ शत्रु उसको तंग करने न पाएगा,
और न कुटिल जन उसको दुःख देने पाएगा।
२३ मैं उसके द्रोहियों को उसके साम्हने से नाश करूंगा,
और उसके बैरियों पर विपत्ति डालूंगा।
२४ परन्तु मेरी सच्चाई और करुणा उस पर बनी रहेंगी,
और मेरे नाम के द्वारा उसका सींग ऊंचा हो जाएगा।
२५ मैं समुद्र को उसके हाथ के नीचे
और महानदों को उसके दहिने हाथ के नीचे कर दूंगा।
२६ वह मुझे पुकारके कहेगा, कि तू मेरा पिता है,
मेरा ईश्वर और मेरे बचने की चट्टान है।
२७ फिर मैं उसको अपना पहिलौठा,
और पृथ्वी के राजाओं पर प्रधान ठहराऊंगा।
२८ मैं अपनी करुणा उस पर सदा बनाए रहूंगा,
और मेरी वाचा उसके लिये अटल रहेगी।
२९ मैं उसके वंश को सदा बनाए रखूंगा,
और उसकी राजगद्दी स्वर्ग के समान सर्वदा बनी रहेगी।
३० यदि उसके वंश के लोग मेरी व्यवस्था को छोड़ें
और मेरे नियमों के अनुसार न चलें,
३१ यदि वे मेरी विधियों का उल्लंघन करें,
और मेरी आज्ञाओं को न मानें,

३२ तो मैं उनके अपराध का दण्ड सोंटे से,
और उनके अधर्म का दण्ड कोड़ों से दूंगा।
३३ परन्तु मैं अपनी करुणा उस पर से न हटाऊंगा,
और न सच्चाई त्यागकर झूठा ठहरूंगा।
३४ मैं अपनी वाचा न तोड़ूंगा,
और जो मेरे मुंह से निकल चुका है, उसे न बदलूंगा।
३५ एक बार मैं अपनी पवित्रता की शपथ खा चुका हूं;
मैं दाऊद को कभी धोखा न दूंगा।
३६ उसका वंश सर्वदा रहेगा,
और उसकी राजगद्दी सूर्य की नाईं मेरे सम्मुख ठहरी रहेगी।
३७ वह चन्द्रमा की नाईं,
और आकाशमण्डल के विश्वासयोग्य साक्षी की नाईं सदा बना रहेगा॥ (सेला)
३८ तौभी तू ने अपने अभिषिक्त को छोड़ा और उसे तज दिया,
और उस पर अति क्रोध किया है।
३९ तू अपने दास के साथ की वाचा से घिनाया,
और उसके मुकुट को भूमि पर गिराकर अशुद्ध किया है।
४० तू ने उसके सब बाडों को तोड़ डाला है,
और उसके गढ़ों को उजाड़ दिया है।
४१ सब बटोही उसको लूट लेते हैं,
और उसके पड़ोसियों से उसकी नामधराई होती है।
४२ तू ने उसके द्रोहियों को प्रबल* किया;
और उसके सब शत्रुओं को आनन्दित किया है।
४३ फिर तू उसकी तलवार की धार को मोड़ देता है,
और युद्ध में उसके पांव जमने नहीं देता।
४४ तू ने उसका तेज हर लिया † है,
और उसके सिंहासन को भूमि पर पटक दिया है।
४५ तू ने उसकी जवानी को घटाया,
और उसको लज्जा से ढांप दिया है॥ (सेला)
४६ हे यहोवा तू कब तक लगातार मुंह फेरे ‡ रहेगा,
तेरी जलजलाहट कब तक आग की नाईं भड़की रहेगी॥
४७ मेरा स्मरण कर, कि मैं कैसा अनित्य हूं,
तू ने सब मनुष्यों को क्यों व्यर्थ सिरजा है?
४८ कौन पुरुष सदा अमर रहेगा §?
क्या कोई अपने प्राण को अधोलोक से बचा सकता है? (सेला)
४९ हे प्रभु तेरी प्राचीनकाल की करुणा कहां रही,
जिसके विषय में तू ने अपनी सच्चाई की शपथ दाऊद से खाई थी?
५० हे प्रभु अपने दासों की नामधराई की सुधि कर;

---

* मूल में—द्रोहियों का दहिना हाथ ऊंचा।
† मूल में—बन्द किया।
‡ मूल में—अपने को छिपाए।
§ मूल में—जीता रहेगा मृत्यु न देखेगा।

मैं तो सब सामर्थी जातियों का बोझ
लिए * रहता हूं।
५१ तेरे उन शत्रुओं ने तो हे यहोवा,
तेरे अभिषिक्त के पीछे पड़कर
उसकी * नामधराई की है ।।
५२ यहोवा सर्वदा धन्य रहेगा !
आमीन फिर आमीन ।।

* मूल में—अपनी गोद में लिए।

* मूल में—तेरे अभिषिक्त के पदचिन्हों की।

चौथा भाग

(परमेश्वर के अनुग्रह की प्रार्थना)

९० हे प्रभु, तू पीढ़ी से पीढ़ी तक
हमारे लिये धाम बना है।
२ इस से पहिले कि पहाड़ उत्पन्न हुए,
वा तू ने पृथ्वी और जगत की रचना
की,
वरन अनादिकाल से अनन्तकाल तक
तू ही ईश्वर है ।।
३ तू मनुष्य को लौटाकर चूर करता है,
और कहता है, कि हे आदमियो,
लौट आओ !
४ क्योंकि हजार वर्ष तेरी दृष्टि में ऐसे
हैं
जैसा कल का दिन जो बीत गया,
वा रात का एक पहर ।।
५ तू मनुष्यों को धारा में बहा देता है;
वे स्वप्न से ठहरते हैं,
वे भोर को बढ़नेवाली घास के समान
होते हैं।
६ वह भोर को फूलती और बढ़ती है,
और सांझ तक कटकर मुर्झा जाती
है ।।
७ क्योंकि हम तेरे क्रोध से नाश हुए हैं;
और तेरी जलजलाहट से घबरा गए
हैं।
८ तू ने हमारे अधर्म के कामों को
अपने सम्मुख,
और हमारे छिपे हुए पापों को अपने
मुख की ज्योति में रखा है ।।
९ क्योंकि हमारे सब दिन तेरे क्रोध में
बीत जाते हैं,
हम अपने वर्ष शब्द की नाईं बिताते
हैं।
१० हमारी आयु के वर्ष सत्तर तो होते
हैं,
और चाहे बल के कारण अस्सी वर्ष
भी हो जाएं,
तौभी उनका घमण्ड केवल कष्ट
और शोक ही शोक है;
क्योंकि वह जल्दी कट * जाती है,
और हम जाते रहते हैं ।।
११ तेरे क्रोध की शक्ति को
और तेरे भय के योग्य तेरे रोष को
कौन समझता है ?
१२ हम को अपने दिन गिनने की समझ दे
कि हम बुद्धिमान हो जाएं † ।।
१३ हे यहोवा लौट आ ! कब तक ?
और अपने दासों पर तरस खा !
१४ भोर को हमें अपनी करुणा से तृप्त
कर,
कि हम जीवन भर जयजयकार और
आनन्द करते रहें।

* मूल में—उठ।
† मूल में—बुद्धिवाला मन ले आए।

१५ जितने दिन तू हमें दुःख देता आया,
और जितने वर्ष हम क्लेश भोगते आए हैं
उतने ही वर्ष हम को आनन्द दे।
१६ तेरा काम तेरे दासों को,
और तेरा प्रताप उनकी सन्तान पर प्रगट हो।
१७ और हमारे परमेश्वर यहोवा की मनोहरता हम पर प्रगट हो,
तू हमारे हाथों का काम हमारे लिये दृढ़ कर,
हमारे हाथों के काम को दृढ़ कर॥

९१ जो परमप्रधान के छाए हुए स्थान में बैठा रहे,
वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा।
२ मैं यहोवा के विषय कहूंगा, कि वह मेरा शरणस्थान और गढ़ है;
वह मेरा परमेश्वर है, मैं उस पर भरोसा रखूंगा।
३ वह तो तुझे बहेलिये के जाल से,
और महामारी से बचाएगा;
४ वह तुझे अपने पंखों की आड़ में ले लेगा,
और तू उसके परों के नीचे शरण पाएगा;
उसकी सच्चाई तेरे लिये ढाल और झिलम ठहरेगी।
५ तू न रात के भय से डरेगा,
और न उस तीर से जो दिन को उड़ता है,
६ न उस मरी से जो अन्धेरे में फैलती है,
और न उस महारोग से जो दिन-दुपहरी में उजाड़ता है॥
७ तेरे निकट हजार,
और तेरी दहिनी ओर दस हजार गिरेंगे;
परन्तु वह तेरे पास न आएगा।
८ परन्तु तू अपनी आंखों से दृष्टि करेगा
और दुष्टों के अन्त को देखेगा॥
९ हे यहोवा, तू मेरा शरणस्थान ठहरा है।
तू ने जो परमप्रधान को अपना धाम मान लिया है,
१० इसलिये कोई विपत्ति तुझ पर न पड़ेगी,
न कोई दुःख तेरे डेरे के निकट आएगा॥
११ क्योंकि वह अपने दूतों को तेरे निमित्त आज्ञा देगा,
कि जहां कहीं तू जाए* वे तेरी रक्षा करें।
१२ वे तुझ को हाथों हाथ उठा लेंगे,
ऐसा न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे।
१३ तू सिंह और नाग को कुचलेगा,
तू जवान सिंह और अजगर को लताड़ेगा॥
१४ उस ने जो मुझ से स्नेह किया है, इसलिये मैं उसको छुड़ाऊंगा;
मैं उसको ऊंचे स्थान पर रखूंगा, क्योंकि उस ने मेरे नाम को जान लिया है।
१५ जब वह मुझ को पुकारे, तब मैं उसकी सुनूंगा;
संकट में मैं उसके संग रहूंगा,
मैं उसको बचाकर उसकी महिमा बढ़ाऊंगा।

* मूल में—तेरे सब मार्गों में।

१६ मैं उसको दीर्घायु से तृप्त करूंगा,
और अपने किए हुए उद्धार का दर्शन दिखाऊंगा ।।

(भजन । विश्राम के दिन के लिये गीत)

९२ यहोवा का धन्यवाद करना भला है,
हे परमप्रधान, तेरे नाम का भजन गाना;
२ प्रातःकाल को तेरी करुणा,
और प्रति रात तेरी सच्चाई का प्रचार करना,
३ दस तारवाले बाजे और सारंगी पर,
और वीणा पर गम्भीर स्वर से गाना भला है ।
४ क्योंकि, हे यहोवा, तू ने मुझ को अपने काम से आनन्दित किया है;
और मैं तेरे हाथों के कामों के कारण जयजयकार करूंगा ।।
५ हे यहोवा, तेरे काम क्या ही बड़े हैं!
तेरी कल्पनाएं बहुत गम्भीर हैं!
६ पशु समान मनुष्य इसको नहीं समझता;
और मूर्ख इसका विचार नहीं करता :
७ कि दुष्ट जो घास की नाईं फूलते-फलते हैं,
और सब अनर्थकारी जो प्रफुल्लित होते हैं,
यह इसलिये होता है, कि वे सर्वदा के लिये नाश हो जाएं,
८ परन्तु हे यहोवा, तू सदा विराजमान रहेगा ।
९ क्योंकि हे यहोवा, तेरे शत्रु, हां तेरे शत्रु नाश होंगे;
सब अनर्थकारी तितर बितर होंगे ।।
१० परन्तु मेरा सींग तू ने जंगली सांढ़ का सा ऊंचा किया है;
मैं टटके तेल से चुपड़ा गया हूं ।
११ और मैं अपने द्रोहियों पर दृष्टि करके,
और उन कुकर्मियों का हाल जो मेरे विरुद्ध उठे थे, सुनकर सन्तुष्ट हुआ हूं ।।
१२ धर्मी लोग खजूर की नाईं फूले फलेंगे,
और लबानोन के देवदार की नाईं बढ़ते रहेंगे ।
१३ वे यहोवा के भवन में रोपे जाकर,
हमारे परमेश्वर के आंगनों में फूले फलेंगे ।
१४ वे पुराने होने पर भी फलते रहेंगे,
और रस भरे और लहलहाते रहेंगे,
१५ जिस से यह प्रगट हो, कि यहोवा सीधा है;
वह मेरी चट्टान है, और उस में कुटिलता कुछ भी नहीं ।।

९३ यहोवा राजा है, उस ने माहात्म्य का पहिरावा पहिना है;
यहोवा पहिरावा पहिने हुए, और सामर्थ्य का फेटा बान्धे है ।
इस कारण जगत स्थिर है, वह नहीं टलने का ।
२ हे यहोवा, तेरी राजगद्दी अनादिकाल से स्थिर है,
तू सर्वदा से है ।।
३ हे यहोवा, महानदों का कोलाहल हो रहा है,
महानदों का बड़ा शब्द हो रहा है,
महानद गरजते हैं ।

४ महासागर के शब्द से,
और समुद्र की महातरंगों से,
विराजमान यहोवा अधिक महान है ।।
५ तेरी चितौनियां अति विश्वासयोग्य हैं;
हे यहोवा तेरे भवन को युग युग पवित्रता ही शोभा देती है ।।

९४ हे यहोवा, हे पलटा लेनेवाले ईश्वर,
हे पलटा लेनेवाले ईश्वर, अपना तेज दिखा !
२ हे पृथ्वी के न्यायी उठ;
और घमण्डियों को बदला दे !
३ हे यहोवा, दुष्ट लोग कब तक,
दुष्ट लोग कब तक डींग मारते रहेंगे ?
४ वे बकते और ढिठाई की बातें बोलते हैं,
सब अनर्थकारी बड़ाई मारते हैं।
५ हे यहोवा, वे तेरी प्रजा को पीस डालते हैं,
वे तेरे निज भाग को दुःख देते हैं।
६ वे विधवा और परदेशी का घात करते,
और बपमूओं को मार डालते हैं;
७ और कहते हैं, कि याह न देखेगा,
याकूब का परमेश्वर विचार न करेगा ।।
८ तुम जो प्रजा में पशु सरीखे हो, विचार करो;
और हे मूर्खो तुम कब बुद्धिमान हो जाओगे ?
९ जिस ने कान दिया, क्या वह आप नहीं सुनता ?
जिस ने आंख रची, क्या वह आप नहीं देखता ?
१० जो जाति जाति को ताड़ना देता, और मनुष्य को ज्ञान सिखाता है,
क्या वह न समझाएगा ?
११ यहोवा मनुष्य की कल्पनाओं को तो जानता है कि वे मिथ्या हैं ।।
१२ हे याह, क्या ही धन्य है वह पुरुष जिसको तू ताड़ना देता है,
और अपनी व्यवस्था सिखाता है,
१३ क्योंकि तू उसको विपत्ति के दिनों में उस समय तक चैन देता रहता है,
जब तक दुष्टों के लिये गड़हा नहीं खोदा जाता।
१४ क्योंकि यहोवा अपनी प्रजा को न तजेगा,
वह अपने निज भाग को न छोड़ेगा;
१५ परन्तु न्याय फिर धर्म के अनुसार किया जाएगा,
और सारे सीधे मनवाले उसके पीछे पीछे हो लेंगे ।।
१६ कुकर्मियों के विरुद्ध मेरी ओर कौन खड़ा होगा ?
मेरी ओर से अनर्थकारियों का कौन साम्हना करेगा ?
१७ यदि यहोवा मेरा सहायक न होता,
तो क्षण भर में मुझे चुपचाप होकर रहना पड़ता।
१८ जब मैं ने कहा, कि मेरा पांव फिसलने लगा है,
तब हे यहोवा, तेरी करुणा ने मुझे थाम लिया।
१९ जब मेरे मन में बहुत सी चिन्ताएं होती हैं,
तब हे यहोवा, तेरी दी हुई शान्ति से मुझ को सुख होता है।
२० क्या तेरे और दुष्टों के सिंहासन के बीच सन्धि होगी,

जो कानून की आड़ में उत्पात मचाते
हैं ?
२१ वे धर्मी का प्राण लेने को दल बान्धते
हैं,
और निर्दोष को प्राणदण्ड देते हैं।
२२ परन्तु यहोवा मेरा गढ़,
और मेरा परमेश्वर मेरी शरण की
चट्टान ठहरा है।
२३ और उस ने उनका अनर्थ काम उन्हीं
पर लौटाया है,
और वह उन्हें उन्हीं की बुराई के
द्वारा सत्यानाश करेगा;
हमारा परमेश्वर यहोवा उनको सत्या-
नाश करेगा ।।

९५ आओ हम यहोवा के लिये
ऊंचे स्वर से गाएं,
अपने उद्धार की चट्टान का जयजयकार
करें !
२ हम धन्यवाद करते हुए उसके सम्मुख
आएं,
और भजन गाते हुए उसका जयजय-
कार करें !
३ क्योंकि यहोवा महान ईश्वर है,
और सब देवताओं के ऊपर महान
राजा है।
४ पृथ्वी के गहिरे स्थान उसी के हाथ
में हैं;
और पहाड़ों की चोटियां भी उसी
की हैं।
५ समुद्र उसका है, और उसी ने उसको
बनाया,
और स्थल भी उसी के हाथ का रचा
है ।।
६ आओ हम झुककर दण्डवत्
करें,
और अपने कर्त्ता यहोवा के साम्हने
घुटने टेकें !
७ क्योंकि वही हमारा परमेश्वर है,
और हम उसकी चराई की प्रजा,
और उसके हाथ की भेड़ें हैं ।।
भला होता, कि आज तुम उसकी
बात सुनते !
८ अपना अपना हृदय ऐसा कठोर मत
करो, जैसा मरीबा में,
वा मस्सा के दिन जंगल में हुआ
था,
९ जब तुम्हारे पुरखाओं ने मुझे परखा,
उन्हों ने मुझ को जांचा और मेरे
काम को भी देखा।
१० चालीस वर्ष तक मैं उस पीढ़ी के
लोगों से रूठा रहा,
और मैं ने कहा, ये तो भरमनेवाले
मन के हैं,
और इन्हों ने मेरे मार्गों को नहीं
पहिचाना।
११ इस कारण मैं ने क्रोध में आकर शपथ
खाई कि
ये मेरे विश्रामस्थान में कभी प्रवेश न
करने पाएंगे ।।

९६ यहोवा के लिये एक नया
गीत गाओ,
हे सारी पृथ्वी के लोगो यहोवा के
लिये गाओ !
२ यहोवा के लिये गाओ, उसके नाम को
धन्य कहो;
दिन दिन उसके किए हुए उद्धार का
शुभसमाचार सुनाते रहो।
३ अन्य जातियों में उसकी महिमा का,
और देश देश के लोगों में उसके
आश्चर्यकर्मों का वर्णन करो।

४ क्योंकि यहोवा महान और अति स्तुति
के योग्य है;
वह तो सब देवताओं से अधिक
भययोग्य है।
५ क्योंकि देश देश के सब देवता तो
मूरतें ही हैं;
परन्तु यहोवा ही ने स्वर्ग को बनाया
है।
६ उसके चारों ओर विभव और ऐश्वर्य
है;
उसके पवित्रस्थान में सामर्थ्य और
शोभा है ॥
७ हे देश देश के कुलो, यहोवा का
गुणानुवाद करो,
यहोवा की महिमा और सामर्थ्य को
मानो!
८ यहोवा के नाम की ऐसी महिमा करो
जो उसके योग्य है;
भेंट लेकर उसके आंगनों में आओ!
९ पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा
को दण्डवत् करो;
हे सारी पृथ्वी के लोगो उसके साम्हने
कांपते रहो!
१० जाति जाति में कहो, यहोवा राजा
हुआ है!
और जगत ऐसा स्थिर है, कि वह
टलने का नहीं;
वह देश देश के लोगों का न्याय
सीधाई से करेगा ॥
११ आकाश आनन्द करे, और पृथ्वी
मगन हो;
समुद्र और उस में की सब वस्तुएं गरज
उठें;
१२ मैदान और जो कुछ उस में है, वह
प्रफुल्लित हो;
उसी समय वन के सारे वृक्ष जय-
जयकार करेंगे।
१३ यह यहोवा के साम्हने हो, क्योंकि
वह आनेवाला है।
वह पृथ्वी का न्याय करने को आने-
वाला है,
वह धर्म से जगत का,
और सच्चाई से देश देश के लोगों का
न्याय करेगा ॥

९७ यहोवा राजा हुआ है, पृथ्वी
मगन हो;
और द्वीप जो बहुतेरे हैं, वह भी
आनन्द करें!
२ बादल और अन्धकार उसके चारों
ओर हैं;
उसके सिंहासन का मूल धर्म और
न्याय हैं।
३ उसके आगे आगे आग चलती हुई
उसके द्रोहियों को चारों ओर भस्म
करती है।
४ उसकी बिजलियों से जगत प्रकाशित
हुआ,
पृथ्वी देखकर थरथरा गई है।
५ पहाड़ यहोवा के साम्हने,
मोम की नाईं पिघल गए, अर्थात्
सारी पृथ्वी के परमेश्वर के
साम्हने ॥
६ आकाश ने उसके धर्म की साक्षी
दी;
और देश देश के सब लोगों ने उसकी
महिमा देखी है।
७ जितने खुदी हुई मूर्तियों की उपासना
करते
और मूरतों पर फूलते हैं, वे लज्जित
हों;

हे सब देवताओ तुम उसी को दण्डवत् करो।

८ सिय्योन सुनकर आनंन्दित हुई,
और यहूदा की बेटियां मगन हुईं;
हे यहोवा, यह तेरे नियमों के कारण हुआ।

९ क्योंकि हे यहोवा, तू सारी पृथ्वी के ऊपर परमप्रधान है;
तू सारे देवताओं से अधिक महान ठहरा है॥

१० हे यहोवा के प्रेमियो, बुराई से घृणा करो;
वह अपने भक्तों के प्राणों की रक्षा करता,
और उन्हें दुष्टों के हाथ से बचाता है।

११ धर्मी के लिये ज्योति,
और सीधे मनवालों के लिये आनन्द बोया गया है।

१२ हे धर्मियो यहोवा के कारण आनन्दित हो;
और जिस पवित्र नाम से उसका स्मरण होता है, उसका धन्यवाद करो!

(भजन)

९८ यहोवा के लिये एक नया गीत गाओ,
क्योंकि उस ने आश्चर्यकर्म किए हैं!
उसके दहिने हाथ और पवित्र भुजा ने उसके लिये उद्धार किया है!

२ यहोवा ने अपना किया हुआ उद्धार प्रकाशित किया,
उस ने अन्यजातियों की दृष्टि में अपना धर्म प्रगट किया है।

३ उस ने इस्राएल के घराने पर की अपनी करुणा और सच्चाई की सुधि ली,
और पृथ्वी के सब दूर दूर देशों ने हमारे परमेश्वर का किया हुआ उद्धार देखा है॥

४ हे सारी पृथ्वी के लोगो यहोवा का जयजयकार करो;
उत्साहपूर्वक जयजयकार करो, और भजन गाओ!

५ वीणा बजाकर यहोवा का भजन गाओ,
वीणा बजाकर भजन का स्वर सुनाओ।

६ तुरहियां और नरसिंगे फूंक फूंककर यहोवा राजा का जयजयकार करो॥

७ समुद्र और उस में की सब वस्तुएं गरज उठें;
जगत और उसके निवासी महाशब्द करें!

८ नदियां तालियां बजाएं;
पहाड़ मिलकर जयजयकार करें।

९ यह यहोवा के साम्हने हो, क्योंकि वह पृथ्वी का न्याय करने को आनेवाला है।
वह धर्म से जगत का,
और सीधाई से देश देश के लोगों का न्याय करेगा॥

९९ यहोवा राजा हुआ है; देश देश के लोग कांप उठें!
वह करूबों पर विराजमान है; पृथ्वी डोल उठे!

२ यहोवा सिय्योन में महान है;
और वह देश देश के लोगों के ऊपर प्रधान है।

३ वे तेरे महान और भययोग्य नाम
का धन्यवाद करें !
वह तो पवित्र है !
४ राजा की सामर्थ्य न्याय से मेल
रखती है,
तू ही ने सीधाई को स्थापित किया;
न्याय और धर्म को याकूब में तू ही
ने चालू किया है।
५ हमारे परमेश्वर यहोवा को सराहो;
और उसके चरणों की चौकी के
साम्हने दण्डवत् करो !
वह पवित्र है !
६ उसके याजकों में मूसा और हारून,
और उसके प्रार्थना करनेवालों में से
शमूएल
यहोवा को पुकारते थे, और वह
उनकी सुन लेता था।
७ वह बादल के खम्भे में होकर उन से
बातें करता था;
और वे उसकी चितौनियों और उसकी
दी हुई विधियों पर चलते थे ।।
८ हे हमारे परमेश्वर यहोवा तू उनकी
सुन लेता था;
तू उनके कामों का पलटा तो लेता था
तौभी उनके लिये क्षमा करनेवाला
ईश्वर था।
९ हमारे परमेश्वर यहोवा को सराहो,
और उसके पवित्र पर्वत पर दण्डवत्
करो;
क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा पवित्र
है !

(धन्यवाद का भजन)

१०० हे सारी पृथ्वी के लोगो यहोवा
का जयजयकार करो !
२ आनन्द से यहोवा की आराधना करो !
जयजयकार के साथ उसके सम्मुख
आओ !
३ निश्चय जानो, कि यहोवा ही परमेश्वर
है !
उसी ने हम को बनाया, और हम
उसी के हैं*;
हम उसकी प्रजा, और उसकी चराई
की भेड़ें हैं ।।
४ उसके फाटकों से धन्यवाद,
और उसके आंगनों में स्तुति करते
हुए प्रवेश करो,
उसका धन्यवाद करो, और उसके
नाम को धन्य कहो !
५ क्योंकि यहोवा भला है, उसकी करुणा
सदा के लिये,
और उसकी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी
तक बनी रहती है ।।

१०१ मैं करुणा और न्याय के विषय
गाऊंगा;
हे यहोवा, मैं तेरा ही भजन गाऊंगा।
२ मैं बुद्धिमानी से खरे मार्ग में
चलूंगा।
तू मेरे पास कब आएगा !
मैं अपने घर में मन की खराई के
साथ अपनी चाल चलूंगा;
३ मैं किसी ओछे काम पर चित्त न
लगाऊंगा ।।
मैं कुमार्ग पर चलनेवालों के काम से
घिन रखता हूं;
ऐसे काम में मैं न लगूंगा।
४ टेढ़ा स्वभाव मुझ से दूर रहेगा;
मैं बुराई को जानूंगा भी नहीं ।।
५ जो छिपकर अपने पड़ोसी की चुगली
खाए, उसको मैं सत्यानाश करूंगा:

* वा, न कि हम अपने को।

जिसकी आंखें चढ़ी हों और जिसका मन घमण्डी है, उसकी मैं न सहूंगा ॥

६ मेरी आंखें देश के विश्वासयोग्य लोगों पर लगी रहेंगी कि वे मेरे संग रहें;
जो खरे मार्ग पर चलता है वही मेरा टहलुआ होगा ॥

७ जो छल करता है वह मेरे घर के भीतर न रहने पाएगा;
जो झूठ बोलता है वह मेरे साम्हने बना न रहेगा ॥

८ भोर ही भोर को मैं देश के सब दुष्टों को सत्यानाश किया करूंगा,
इसलिये कि यहोवा के नगर के सब अनर्थकारियों को नाश करूं ॥

दीन जन की उस समय की प्रार्थना जब वह दुःख का मारा अपने शोक की बातें यहोवा के साम्हने खोलकर कहता हो*)

१०२ हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन;
मेरी दोहाई तुझ तक पहुंचे !

२ मेरे संकट के दिन अपना मुख मुझ से न छिपा ले;
अपना कान मेरी ओर लगा;
जिस समय मैं पुकारूं, उसी समय फुर्ती से मेरी सुन ले !

३ क्योंकि मेरे दिन धुएं की नाईं † उड़े जाते हैं,
और मेरी हड्डियां लुकटी के समान जल गई हैं।

४ मेरा मन झुलसी हुई घास की नाईं सूख गया है;
और मैं अपनी रोटी खाना भूल जाता हूं।

५ कहरते कहरते
मेरा चमड़ा हड्डियों में सट गया है।

६ मैं जंगल के धनेश के समान हो गया हूं,
मैं उजड़े स्थानों के उल्लू के समान बन गया हूं।

७ मैं पड़ा पड़ा जागता रहता हूं और गौरे के समान हो गया हूं
जो छत के ऊपर अकेला बैठता है।

८ मेरे शत्रु लगातार मेरी नामधराई करते हैं,
जो मेरे विरोध की धुन में बावले हो रहे हैं, वे मेरा नाम लेकर शपथ खाते हैं।

९ क्योंकि मैं ने रोटी की नाईं राख खाई और आंसू मिलाकर पानी पीता हूं।

१० यह तेरे क्रोध और कोप के कारण हुआ है,
क्योंकि तू ने मुझे उठाया, और फिर फेंक दिया है।

११ मेरी आयु ढलती हुई छाया के समान है;
और मैं आप घास की नाईं सूख चला हूं ॥

१२ परन्तु हे यहोवा, तू सदैव विराजमान रहेगा;
और जिस नाम से तेरा स्मरण होता है, वह पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहेगा।

१३ तू उठकर सिय्योन पर दया करेगा;
क्योंकि उस पर अनुग्रह करने का ठहराया हुआ समय आ पहुंचा है।

---

* मूल में—उण्डेलता हो।
† मूल में—धुएं में।

१४ क्योंकि तेरे दास उसके पत्थरों को चाहते हैं,
और उसकी धूलि पर तरस खाते हैं।
१५ इसलिये अन्यजातियां यहोवा के नाम का भय मानेंगी,
और पृथ्वी के सब राजा तेरे प्रताप से डरेंगे।
१६ क्योंकि यहोवा ने सिय्योन को फिर बसाया है,
और वह अपनी महिमा के साथ दिखाई देता है;
१७ वह लाचार की प्रार्थना की ओर मुंह करता है,
और उनकी प्रार्थना को तुच्छ नहीं जानता॥
१८ यह बात आनेवाली पीढ़ी के लिये लिखी जाएगी,
और एक जाति जो सिरजी जाएगी वही याह की स्तुति करेगी।
१९ क्योंकि यहोवा ने अपने ऊंचे और पवित्र स्थान से दृष्टि करके
स्वर्ग से पृथ्वी की ओर देखा है,
२० ताकि बन्धुओं का कराहना सुने,
और घात होनेवालों के बन्धन खोले;
२१ और सिय्योन में यहोवा के नाम का वर्णन किया जाए,
और यरूशलेम में उसकी स्तुति की जाए;
२२ यह उस समय होगा जब देश देश,
और राज्य राज्य के लोग
यहोवा की उपासना करने को इकट्ठे होंगे॥
२३ उस ने मुझे जीवन यात्रा में दुःख देकर,
मेरे बल और आयु को घटाया।
२४ मैं ने कहा, हे मेरे ईश्वर, मुझे आधी आयु में न उठा ले,
तेरे वर्ष पीढ़ी से पीढ़ी तक बने रहेंगे!
२५ आदि में तू ने पृथ्वी की नेव डाली,
और आकाश तेरे हाथों का बनाया हुआ है।
२६ वह तो नाश होगा, परन्तु तू बना रहेगा;
और वह सब कपड़े के समान पुराना हो जाएगा।
तू उसको वस्त्र की नाईं बदलेगा,
और वह तो बदल जाएगा;
२७ परन्तु तू वही है,
और तेरे वर्षों का अन्त नहीं होने का।
२८ तेरे दासों की सन्तान बनी रहेगी;
और उनका वंश तेरे साम्हने स्थिर रहेगा॥

(दाऊद का भजन)

१०३ हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह;
और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे!
२ हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह,
और उसके किसी उपकार को न भूलना।
३ वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता,
और तेरे सब रोगों को चंगा करता है,
४ वही तो तेरे प्राण को नाश होने से बचा लेता है,
और तेरे सिर पर करुणा और दया का मुकुट बान्धता है,
५ वही तो तेरी लालसा को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है,

जिस से तेरी जवानी उकाब की नाईं
नई हो जाती है ।।
६ यहोवा सब पिसे हुओं के लिये
धर्म और न्याय के काम करता है ।
७ उस ने मूसा को अपनी गति,
और इस्राएलियों पर अपने काम प्रगट
किए ।
८ यहोवा दयालु और अनुग्रहकारी,
विलम्ब से कोप करनेवाला और अति
करुणामय है ।
९ वह सर्वदा वादविवाद करता न रहेगा,
न उसका क्रोध सदा के लिये भड़का
रहेगा ।
१० उस ने हमारे पापों के अनुसार हम से
व्यवहार नहीं किया,
और न हमारे अधर्म के कामों के
अनुसार हम को बदला दिया है ।
११ जैसे आकाश पृथ्वी के ऊपर ऊंचा है,
वैसे ही उसकी करुणा उसके डरवैयों
के ऊपर प्रबल है ।
१२ उदयाचल अस्ताचल से जितनी दूर
है,
उस ने हमारे अपराधों को हम से
उतनी ही दूर कर दिया है ।
१३ जैसे पिता अपने बालकों पर दया
करता है,
वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर
दया करता है ।
१४ क्योंकि वह हमारी सृष्टि जानता है;
और उसको स्मरण रहता है कि
मनुष्य मिट्टी ही हैं * ।।
१५ मनुष्य की आयु घास के समान होती
है,
वह मैदान के फूल की नाईं फूलता है,

* मूल में—हम धूल ही हैं ।

१६ जो पवन लगते ही ठहर नहीं सकता,
और न वह अपने स्थान में फिर
मिलता है * ।
१७ परन्तु यहोवा की करुणा उसके डरवैयों
पर युग युग,
और उसका धर्म उनके नाती-पोतों
पर भी प्रगट होता रहता है,
१८ अर्थात् उन पर जो उसकी वाचा का
पालन करते
और उसके उपदेशों को स्मरण करके
उन पर चलते हैं ।।
१९ यहोवा ने तो अपना सिंहासन स्वर्ग
में स्थिर किया है,
और उसका राज्य पूरी सृष्टि पर है ।
२० हे यहोवा के दूतो, तुम जो बड़े वीर
हो,
और उसके वचन के मानने से उसको
पूरा करते हो
उसको धन्य कहो !
२१ हे यहोवा की सारी सेनाओ, हे उसके
टहलुओ,
तुम जो उसकी इच्छा पूरी करते हो,
उसको धन्य कहो !
२२ हे यहोवा की सारी सृष्टि,
उसके राज्य के सब स्थानो में उसको
धन्य कहो ।
हे मेरे मन, तू यहोवा को धन्य कह !

१०४

हे मेरे मन, तू यहोवा को धन्य
कह !
हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तू अत्यन्त
महान है !
तू विभव और ऐश्वर्य का वस्त्र
पहिने हुए है,

* मूल में—न उसका स्थान उसे फिर
चीन्हेगा ।

२ जो उजियाले को चादर की नाईं ओढ़े रहता है,
और आकाश को तम्बू के समान ताने रहता है,
३ जो अपनी अटारियों की कड़ियां जल में धरता है,
और मेघों को अपना रथ बनाता है,
और पवन के पंखों पर चलता है,
४ जो पवनों को अपने दूत,
और धधकती आग को अपने टहलुए बनाता है ।।
५ तू ने पृथ्वी को उसकी नीव पर स्थिर किया है,
ताकि वह कभी न डगमगाए ।
६ तू ने उसको गहिरे सागर से ढांप दिया है जैसे वस्त्र से;
जल पहाड़ों के ऊपर ठहर गया ।
७ तेरी घुड़की से वह भाग गया;
तेरे गरजने का शब्द सुनते ही, वह उतावली करके बह गया ।
८ वह पहाड़ों पर चढ़ गया, और तराइयों के मार्ग से उस स्थान में उतर गया
जिसे तू ने उसके लिये तैयार किया था ।
९ तू ने एक सिवाना ठहराया जिसको वह नहीं लांघ सकता है,
और न फिरकर स्थल को ढांप सकता है ।।
१० तू नालों में सोतों को बहाता है;
वे पहाड़ों के बीच से बहते हैं,
११ उन से मैदान के सब जीव-जन्तु जल पीते हैं;
जंगली गदहे भी अपनी प्यास बुझा लेते हैं ।
१२ उनके पास आकाश के पक्षी बसेरा करते, और डालियों के बीच में से बोलते हैं ।
१३ तू अपनी अटारियों में से पहाड़ों को सींचता है
तेरे कामों के फल से पृथ्वी तृप्त रहती है ।।
१४ तू पशुओं के लिये घास,
और मनुष्यों के काम के लिये अन्नादि उपजाता है,
और इस रीति भूमि से वह भोजन-वस्तुएं उत्पन्न करता है,
१५ और दाखमधु जिस से मनुष्य का मन आनन्दित होता है,
और तेल जिस से उसका मुख चमकता है,
और अन्न जिस से वह सम्भल जाता है ।
१६ यहोवा के वृक्ष तृप्त रहते हैं,
अर्थात् लबानोन के देवदार जो उसी के लगाए हुए हैं ।
१७ उन में चिड़ियां अपने घोंसले बनाती हैं;
लगलग का बसेरा सनौवर के वृक्षों में होता है ।
१८ ऊंचे पहाड़ जंगली बकरों के लिये हैं;
और चट्टानें शापानों के शरणस्थान हैं ।
१९ उस ने नियत समयों के लिये चन्द्रमा को बनाया है;
सूर्य अपने अस्त होने का समय जानता है ।
२० तू अन्धकार करता है,
तब रात हो जाती है;
जिस में वन के सब जीव-जन्तु घूमते फिरते हैं ।

२१ जवान सिंह अहेर के लिये गरजते हैं,
और ईश्वर से अपना आहार मांगते हैं।
२२ सूर्य उदय होते ही वे चले जाते हैं
और अपनी मांदों में जा बैठते हैं।
२३ तब मनुष्य अपने काम के लिये
और सन्ध्या तक परिश्रम करने के लिये निकलता है ॥
२४ हे यहोवा तेरे काम अनगिनित हैं!
इन सब वस्तुओं को तू ने बुद्धि से बनाया है;
पृथ्वी तेरी सम्पत्ति से परिपूर्ण है।
२५ इसी प्रकार समुद्र बड़ा और बहुत ही चौड़ा है,
और उस में अनगिनित जलचरी * जीव-जन्तु, क्या छोटे, क्या बड़े भरे पड़े हैं।
२६ उस में जहाज भी आते जाते हैं,
और लिब्यातान भी जिसे तू ने वहां खेलने के लिये बनाया है ॥
२७ इन सब को तेरा ही आसरा है,
कि तू उनका आहार समय पर दिया करे।
२८ तू उन्हें देता है, वे चुन लेते हैं;
तू अपनी मुट्ठी खोलता है और वे उत्तम पदार्थों से तृप्त होते हैं।
२९ तू मुख फेर लेता † है, और वे घबरा जाते हैं;
तू उनकी सांस ले लेता है, और उनके प्राण छूट जाते हैं
और मिट्टी में फिर मिल जाते हैं।
३० फिर तू अपनी ओर से सांस भेजता है, और वे सिरजे जाते हैं;
और तू धरती को नया कर देता है ॥
३१ यहोवा की महिमा सदा काल बनी रहे,
यहोवा अपने कामों से आनन्दित होवे!
३२ उसकी दृष्टि ही से पृथ्वी कांप उठती है, और
उसके छूते ही पहाड़ों से धुआं निकलता है।
३३ मैं जीवन भर यहोवा का गीत गाता रहूंगा;
जब तक मैं बना रहूंगा तब तक अपने परमेश्वर का भजन गाता रहूंगा।
३४ मेरा ध्यान करना, उसको प्रिय लगे, क्योंकि
मैं तो यहोवा के कारण आनन्दित रहूंगा।
३५ पापी लोग पृथ्वी पर से मिट जाएं,
और दुष्ट लोग आगे को न रहें!
हे मेरे मन यहोवा को धन्य कह!
याह की स्तुति करो * !

* मूल में—रेंगनेवाले।
† मूल में—छिपाता।

१०५

यहोवा का धन्यवाद करो, उस से प्रार्थना करो,
देश देश के लोगों में उसके कामों का प्रचार करो!
२ उसके लिये गीत गाओ, उसके लिये भजन गाओ,
उसके सब आश्चर्यकर्मों पर ध्यान करो!
३ उसके पवित्र नाम की बड़ाई करो;
यहोवा के खोजियों का हृदय आनन्दित हो!

* मूल में—हल्लिलूयाह।

४ यहोवा और उसकी सामर्थ को खोजो,
उसके दर्शन के लगातार खोजी बने रहो !
५ उसके किए हुए आश्चर्यकर्म स्मरण करो,
उसके चमत्कार और निर्णय स्मरण करो !
६ हे उसके दास इब्राहीम के वंश,
हे याकूब की सन्तान, तुम तो उसके चुने हुए हो !
७ वही हमारा परमेश्वर यहोवा है;
पृथ्वी भर में उसके निर्णय होते हैं।
८ वह अपनी वाचा को सदा स्मरण रखता आया है,
यह वही वचन है जो उस ने हजार पीढ़ियों के लिये ठहराया है;
९ वही वाचा जो उस ने इब्राहीम के साथ बान्धी,
और उसके विषय में उस ने इसहाक से शपथ खाई,
१० और उसी को उस ने याकूब के लिये विधि करके,
और इस्राएल के लिये यह कहकर सदा की वाचा करके दृढ़ किया,
११ कि मैं कनान देश को तुझी को दूंगा,
वह बांट में तुम्हारा निज भाग होगा ।।
१२ उस समय तो वे गिनती में थोड़े थे,
वरन बहुत ही थोड़े, और उस देश में परदेशी थे।
१३ वे एक जाति से दूसरी जाति में,
और एक राज्य से दूसरे राज्य में फिरते रहे;
१४ परन्तु उस ने किसी मनुष्य को उन पर अन्धेर करने न दिया;
और वह राजाओं को उनके निमित्त यह धमकी देता था,
१५ कि मेरे अभिषिक्तों को मत छुओ,
और न मेरे नबियों की हानि करो !
१६ फिर उस ने उस देश में अकाल भेजा,
और अन्न के सब आधार को दूर कर दिया *।
१७ उस ने यूसुफ नाम एक पुरुष को उन से पहिले भेजा था,
जो दास होने के लिये बेचा गया था।
१८ लोगों ने उसके पैरों में बेड़ियां डालकर उसे दुःख दिया;
वह लोहे की सांकलों से जकड़ा गया †;
१९ जब तक कि उसकी बात पूरी न हुई
तब तक यहोवा का वचन उसे कसौटी पर कसता रहा।
२० तब राजा ने दूत भेजकर उसे निकलवा लिया,
और देश देश के लोगों के स्वामी ने उसके बन्धन खुलवाए;
२१ उस ने उसको अपने भवन का प्रधान
और अपनी पूरी सम्पत्ति का अधिकारी ठहराया,
२२ कि वह उसके हाकिमों को अपनी इच्छा के अनुसार कैद करे
और पुरनियों को ज्ञान सिखाए ।।
२३ फिर इस्राएल मिस्र में आया;
और याकूब हाम के देश में परदेशी रहा।
२४ तब उस ने अपनी प्रजा को गिनती में बहुत बढ़ाया,
और उसके द्रोहियों से अधिक बलवन्त किया।

* मूल में—सारी छड़ी को तोड़ दिया।
† मूल में—उसका जीव लोहू में समाया।

२५ उस ने मिस्रियों के मन को ऐसा फेर दिया, कि वे उसकी प्रजा से बैर रखने,
और उसके दासों से छल करने लगे ।।
२६ उस ने अपने दास मूसा को,
और अपने चुने हुए हारून को भेजा ।
२७ उन्हों ने उनके बीच उसकी ओर से भांति भांति के चिन्ह,
और हाम के देश में चमत्कार दिखाए ।
२८ उस ने अन्धकार कर दिया, और अन्धियारा हो गया;
और उन्हों ने उसकी बातों को न टाला ।
२९ उस ने मिस्रियों के जल को लोहू कर डाला, और मछलियों को मार डाला ।
३० मेंढक उनकी भूमि में बरन उनके राजा की कोठरियों में भी भर गए ।
३१ उस ने आज्ञा दी, तब डांस आ गए,
और उनके सारे देश में कुटकियां आ गईं ।
३२ उस ने उनके लिये जलवृष्टि की सन्ती ओले,
और उनके देश में धधकती आग बरसाई ।
३३ और उस ने उनकी दाखलताओं और अंजीर के वृक्षों को
बरन उनके देश के सब पेड़ों को तोड़ डाला ।
३४ उस ने आज्ञा दी तब अनगिनत टिड्डियां,
और कीड़े आए,
३५ और उन्हों ने उनके देश के सब अन्नादि को खा डाला;
और उनकी भूमि के सब फलों को चट कर गए ।
३६ उस ने उनके देश के सब पहिलौठों को,
उनके पौरुष के सब पहिले फल को नाश किया ।।
३७ तब वह अपने गोत्रियों को सोना चांदी दिलाकर निकाल लाया,
और उन में से कोई निर्बल न था ।
३८ उनके जाने से मिस्री आनन्दित हुए,
क्योंकि उनका डर उन में समा गया था ।
३९ उस ने छाया के लिये बादल फैलाया,
और रात को प्रकाश देने के लिये आग प्रगट की ।
४० उन्हों ने मांगा तब उस ने बटेरें पहुंचाई,
और उनको स्वर्गीय भोजन से तृप्त किया ।
४१ उस ने चट्टान फाड़ी तब पानी बह निकला;
और निर्जल भूमि पर नदी बहने लगी ।
४२ क्योंकि उस ने अपने पवित्र वचन
और अपने दास इब्राहीम को स्मरण किया ।।
४३ वह अपनी प्रजा को हर्षित करके
और अपने चुने हुओं से जयजयकार कराके निकाल लाया ।
४४ और उनको अन्यजातियों के देश दिए;
और वे और लोगों के श्रम के फल के अधिकारी किए गए,
४५ कि वे उसकी विधियों को मानें,
और उसकी व्यवस्था को पूरी करें ।
याह की स्तुति करो * !

* मूल में—हल्लिलूयाह ।

१०६ याह की स्तुति करो * !
यहोवा का धन्यवाद करो,
क्योंकि वह भला है;
और उसकी करुणा सदा की है !
२ यहोवा के पराक्रम के कामों का वर्णन कौन कर सकता है,
या उसका पूरा गुणानुवाद कौन सुना सकता ?
३ क्या ही धन्य हैं वे जो न्याय पर चलते,
और हर समय धर्म के काम करते हैं !
४ हे यहोवा, अपनी प्रजा पर की प्रसन्नता के अनुसार मुझे स्मरण कर,
मेरे उद्धार के लिये † मेरी सुधि ले,
५ कि मैं तेरे चुने हुओं का कल्याण देखूं,
और तेरी प्रजा के आनन्द में आनन्दित हो जाऊं;
और तेरे निज भाग के संग बड़ाई करने पाऊं ।।
६ हम ने तो अपने पुरखाओं की नाईं ‡ पाप किया है;
हम ने कुटिलता की, हम ने दुष्टता की है ।
७ मिस्र में हमारे पुरखाओं ने तेरे आश्चर्यकर्मों पर मन नहीं लगाया,
न तेरी अपार करुणा को स्मरण रखा;
उन्हों ने समुद्र के तीर पर, अर्थात् लाल समुद्र के तीर पर बलवा किया ।
८ तौभी उस ने अपने नाम के निमित्त उनका उद्धार किया,
जिस से वह अपने पराक्रम को प्रगट करे ।
९ तब उस ने लाल समुद्र को घुड़का और वह सूख गया;
और वह उन्हें गहिरे जल के बीच से मानो जंगल में से निकाल ले गया ।
१० उस ने उन्हें बैरी के हाथ से उबारा,
और शत्रु के हाथ से छुड़ा लिया ।
११ और उनके द्रोही जल में डूब गए;
उन में से एक भी न बचा ।
१२ तब उन्हों ने उसके वचनों का विश्वास किया;
और उसकी स्तुति गाने लगे ।।
१३ परन्तु वे झट उसके कामों को भूल गए;
और उसकी युक्ति के लिये न ठहरे ।
१४ उन्हों ने जंगल में अति लालसा की,
और निर्जल स्थान में ईश्वर की परीक्षा की ।
१५ तब उस ने उन्हें मुंह मांगा वर तो दिया,
परन्तु उनके प्राण को सुखा दिया ।।
१६ उन्हों ने छावनी में मूसा के,
और यहोवा के पवित्र जन हारून के विषय में डाह की,
१७ भूमि फट कर दातान को निगल गई,
और अबीराम के झुण्ड को ग्रस लिया *
१८ और उनके झुण्ड में आग भड़क उठी;
और दुष्ट लोग लौ से भस्म हो गए ।।
१९ उन्हों ने होरब में बछड़ा बनाया,
और ढली हुई मूर्ति को दण्डवत् की ।
२० यों उन्हों ने अपनी महिमा अर्थात् ईश्वर को

---

* मूल में—हल्लिलूयाह।
† मूल में—अपना उद्धार लिए हुए।
‡ मूल में—पितरों के साथ।

* मूल में—छिपा लिया।

घास खानेवाले बैल की प्रतिमा से बदल डाला।
२१ वे अपने उद्धारकर्त्ता ईश्वर को भूल गए,
जिस ने मिस्र में बड़े बड़े काम किए थे।
२२ उस ने तो हाम के देश में आश्चर्यकर्म और लाल समुद्र के तीर पर भयंकर काम किए थे।
२३ इसलिये उस ने कहा, कि मैं इन्हें सत्यानाश कर डालता
यदि मेरा चुना हुआ मूसा जोखिम के स्थान में* उनके लिये खड़ा न होता
ताकि मेरी जलजलाहट को ठण्डा करे†
कहीं ऐसा न हो कि मैं उन्हें नाश कर डालूं॥
२४ उन्हों ने मनभावने देश को निकम्मा जाना,
और उसके वचन की प्रतीति न की।
२५ वे अपने तम्बुओं में कुड़कुड़ाए,
और यहोवा का कहा न माना।
२६ तब उस ने उनके विषय में शपथ खाई‡
कि मैं इनको जंगल में नाश करूंगा,
२७ और इनके वंश को अन्यजातियों के सम्मुख गिरा दूंगा,
और देश देश में तितर बितर करूंगा॥
२८ वे पोरवाले बाल देवता को पूजने लगे
और मुर्दों को चढ़ाए हुए पशुओं का मांस खाने लगे।

* मूल में—मूसा भीत के नाके में।
† मूल में—फेर दे।
‡ मूल में—हाथ उठाया।

२९ यों उन्हों ने अपने कामों से उसको क्रोध दिलाया,
और मरी उन में फूट पड़ी।
३० तब पीनहास ने उठकर न्यायदण्ड दिया,
जिस से मरी थम गई।
३१ और यह उसके लेखे पीढ़ी से पीढ़ी तक सर्वदा के लिये धर्म गिना गया॥
३२ उन्हों ने मरीबा के सोते के पास भी यहोवा का क्रोध भड़काया,
और उनके कारण मूसा की हानि हुई;
३३ क्योंकि उन्हों ने उसकी आत्मा से बलवा किया,
तब मूसा* बिन सोचे बोल उठा॥
३४ जिन लोगों के विषय यहोवा ने उन्हें आज्ञा दी थी,
उनको उन्हों ने सत्यानाश न किया,
३५ वरन उन्हीं जातियों से हिलमिल गए
और उनके व्यवहारों को सीख लिया;
३६ और उनकी मूर्त्तियों की पूजा करने लगे,
और वे उनके लिये फन्दा बन गईं।
३७ वरन उन्हों ने अपने बेटे-बेटियों को पिशाचों के लिये बलिदान किया;
३८ और अपने निर्दोष बेटे-बेटियों का लोहू बहाया
जिन्हें उन्हों ने कनान की मूर्त्तियों पर बलि किया,
इसलिये देश खून से अपवित्र हो गया।
३९ और वे आप अपने कामों के द्वारा अशुद्ध हो गए,
और अपने कार्यों के द्वारा व्यभिचारी भी बन गए॥

* मूल में—वह।

४० तब यहोवा का क्रोध अपनी प्रजा पर भड़का,
और उसको अपने निज भाग से घृणा आई;
४१ तब उस ने उनको अन्यजातियों के वश में कर दिया,
और उनके बैरियों ने उन पर प्रभुता की।
४२ उनके शत्रुओं ने उन पर अन्धेर किया,
और वे उनके हाथ तले दब गए।
४३ बारम्बार उस ने उन्हें छुड़ाया,
परन्तु वे उसके विरुद्ध युक्ति करते गए,
और अपने अधर्म के कारण दबते गए।
४४ तौभी जब जब उनका चिल्लाना उसके कान में पड़ा,
तब तब उस ने उनके संकट पर दृष्टि की!
४५ और उनके हित अपनी वाचा को स्मरण करके
अपनी अपार करुणा के अनुसार तरस खाया,
४६ और जो उन्हें बन्धुए करके ले गए थे उन सब से उन पर दया कराई॥
४७ हे हमारे परमेश्वर यहोवा, हमारा उद्धार कर,
और हमें अन्यजातियों में से इकट्ठा कर ले,
कि हम तेरे पवित्र नाम का धन्यवाद करें,
और तेरी स्तुति करते हुए तेरे विषय में बड़ाई करें॥
४८ इस्राएल का परमेश्वर यहोवा
अनादिकाल से अनन्तकाल तक धन्य है!
और सारी प्रजा कहे आमीन!
याह की स्तुति करो*॥

* मूल में—हल्लिलूयाह।

पांचवां भाग

१०७ यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है;
और उसकी करुणा सदा की है!
२ यहोवा के छुड़ाए हुए ऐसा ही कहें,
जिन्हें उस ने द्रोही के हाथ से दाम देकर छुड़ा लिया है,
३ और उन्हें देश देश से
पूरब-पश्चिम, उत्तर और दक्खिन से* इकट्ठा किया है॥
४ वे जंगल में मरुभूमि के मार्ग पर भटकते फिरे,
और कोई बसा हुआ नगर न पाया;
५ भूख और प्यास के मारे,
वे विकल हो गए।
६ तब उन्हों ने संकट में यहोवा की दोहाई दी,
और उस ने उनको सकेती से छुड़ाया;
७ और उनको ठीक मार्ग पर चलाया,
ताकि वे बसने के लिये किसी नगर को जा पहुंचे।
८ लोग यहोवा की करुणा के कारण,
और उन आश्चर्यकर्मों के कारण,

* मूल में—समुद्र से।

जो वह मनुष्यों के लिये करता है,
उसका धन्यवाद करें !

९ क्योंकि वह अभिलाषी जीव को सन्तुष्ट करता है,
और भूखे को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है ।।

१० जो अन्धियारे और मृत्यु की छाया में बैठे,
और दुःख में पड़े और बेड़ियों से जकड़े हुए थे,

११ इसलिये कि वे ईश्वर के वचनों के विरुद्ध चले,
और परमप्रधान की सम्मति को तुच्छ जाना ।

१२ तब उस ने उनको कष्ट के द्वारा दबाया;
वे ठोकर खाकर गिर पड़े, और उनको कोई सहायक न मिला ।

१३ तब उन्हों ने संकट में यहोवा की दोहाई दी,
और उस ने सकेती से उनका उद्धार किया;

१४ उस ने उनको अन्धियारे और मृत्यु की छाया में से निकाल लिया;
और उनके बन्धनों को तोड़ डाला ।

१५ लोग यहोवा की करुणा के कारण,
और उन आश्चर्यकर्मों के कारण जो वह मनुष्यों के लिये करता है,
उसका धन्यवाद करें !

१६ क्योंकि उस ने पीतल के फाटकों को तोड़ा,
और लोहे के बेण्डों को टुकड़े टुकड़े किया ।।

१७ मूढ़ अपनी कुचाल,
और अधर्म के कामों के कारण अति दुःखित होते हैं ।

१८ उनका जी सब भांति के भोजन से मिचलाता है,
और वे मृत्यु के फाटक तक पहुंचते हैं ।

१९ तब वे संकट में यहोवा की दोहाई देते हैं,
और वह सकेती से उनका उद्धार करता है;

२० वह अपने वचन के द्वारा* उनको चंगा करता
और जिस गड़हे में वे पड़े हैं, उस से निकालता है ।

२१ लोग यहोवा की करुणा के कारण,
और उन आश्चर्यकर्मों के कारण जो वह मनुष्यों के लिये करता है,
उसका धन्यवाद करें !

२२ और वे धन्यवादबलि चढ़ाएं,
और जयजयकार करते हुए, उसके कामों का वर्णन करें ।।

२३ जो लोग जहाजों में समुद्र पर चलते हैं,
और महासागर पर होकर व्योपार करते हैं;

२४ वे यहोवा के कामों को,
और उन आश्चर्यकर्मों को जो वह गहिरे समुद्र में करता है, देखते हैं ।

२५ क्योंकि वह आज्ञा देता है, तब प्रचण्ड बयार उठकर तरंगों को उठाती है ।

२६ वे आकाश तक चढ़ जाते, फिर गहराई में उतर आते हैं;
और क्लेश के मारे उनके जी में जी नहीं रहता;

* मूल में—अपना वचन भेजकर ।

२७ वे चक्कर खाते, और मतवाले की नाईं लड़खड़ाते हैं, और उनकी सारी बुद्धि मारी * जाती है।

२८ तब वे संकट में यहोवा की दोहाई देते हैं,
और वह उनको सकेती से निकालता है।

२९ वह आंधी को थाम देता है
और तरंगें बैठ जाती हैं।

३० तब वे उनके बैठने से आनन्दित होते हैं,
और वह उनको मन चाहे बन्दर स्थान में पहुंचा देता है।

३१ लोग यहोवा की करुणा के कारण,
और उन आश्चर्यकर्मों के कारण जो वह मनुष्यों के लिये करता है, उसका धन्यवाद करें।

३२ और सभा में उसको सराहें,
और पुरनियों के बैठक में उसकी स्तुति करें॥

३३ वह नदियों को जंगल बना डालता है,
और जल के सोतों को सूखी भूमि कर देता है।

३४ वह फलवन्त भूमि को नोनी करता है,
यह वहां के रहनेवालों की दुष्टता के कारण होता है।

३५ वह जंगल को जल का ताल,
और निर्जल देश को जल के सोते कर देता है।

३६ और वहां वह भूखों को बसाता है,
कि वे बसने के लिये नगर तैयार करें;

३७ और खेती करें, और दाख की बारियां लगाएं,
और भांति भांति के फल उपजा लें।

* मूल में—निगली।

३८ और वह उनको ऐसी आशीष देता है कि वे बहुत बढ़ जाते हैं,
और उनके पशुओं को भी वह घटने नहीं देता॥

३९ फिर अन्धेर, विपत्ति और शोक के कारण,
वे घटते और दब जाते हैं।

४० और वह हाकिमों को अपमान से लादकर मार्ग रहित जंगल में भटकाता है;

४१ वह दरिद्रों को दुःख से छुड़ाकर ऊंचे पर रखता है,
और उनको भेड़ों के झुंड सा परिवार देता है।

४२ सीधे लोग देखकर आनन्दित होते हैं;
और सब कुटिल लोग अपने मुंह बन्द करते हैं।

४३ जो कोई बुद्धिमान हो, वह इन बातों पर ध्यान करेगा;
और यहोवा की करुणा के कामों पर ध्यान करेगा॥

(गीत। दाऊद का भजन)

१०८ हे परमेश्वर, मेरा हृदय स्थिर है;
मैं गाऊंगा, मैं अपनी आत्मा * से भी भजन गाऊंगा।

२ हे सारंगी और वीणा जागो!
मैं आप पौ फटते जाग उठूंगा!

३ हे यहोवा, मैं देश देश के लोगों के मध्य में तेरा धन्यवाद करूंगा,
और राज्य राज्य के लोगों के मध्य में तेरा भजन गाऊंगा।

४ क्योंकि तेरी करुणा आकाश से भी ऊंची है,

* मूल में—महिमा।

और तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक है ॥
५ हे परमेश्वर, तू स्वर्ग के ऊपर हो ! और तेरी महिमा सारी पृथ्वी के ऊपर हो !
६ इसलिये कि तेरे प्रिय छुड़ाए जाएं, तू अपने दहिने हाथ से बचा ले और हमारी बिनती सुन ले !
७ परमेश्वर ने अपनी पवित्रता में होकर कहा है,
में प्रफुल्लित होकर शेकेम को बांट लूंगा,
और सुक्कोत की तराई को नपवाऊंगा ।
८ गिलाद मेरा है, मनश्शे भी मेरा है;
और एप्रैम मेरे सिर का टोप है;
यहूदा मेरा राजदण्ड है ।
९ मोआब मेरे धोने का पात्र है,
मैं एदोम पर अपना जूता फेंकूंगा,
पलिश्त पर मैं जयजयकार करूंगा ॥
१० मुझे गढ़वाले नगर में कौन पहुंचाएगा ?
एदोम तक मेरी अगुवाई किस ने की है ?
११ हे परमेश्वर, क्या तू ने हम को नहीं त्याग दिया,
और हे परमेश्वर, तू हमारी सेना के साथ पयान नहीं करता ।
१२ द्रोहियों के विरुद्ध हमारी सहायता कर,
क्योंकि मनुष्य का किया हुआ छुटकारा व्यर्थ है !
१३ परमेश्वर की सहायता से हम वीरता दिखाएंगे;
हमारे द्रोहियों को वही रौंदेगा ॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन)

१०९ हे परमेश्वर तू जिसकी मैं स्तुति करता हूं, चुप न रह !
२ क्योंकि दुष्ट और कपटी मनुष्यों ने मेरे विरुद्ध मुंह खोला है,
वे मेरे विषय में झूठ बोलते हैं ।
३ और उन्हों ने बैर के वचनों से मुझे चारों ओर घेर लिया है,
और व्यर्थ मुझ से लड़ते हैं ।
४ मेरे प्रेम के बदले में वे मुझ से विरोध करते हैं,
परन्तु मैं तो प्रार्थना में लवलीन रहता हूं ।
५ उन्हों ने भलाई के पलटे में मुझ से बुराई की
और मेरे प्रेम के बदले मुझ से बैर किया है ॥
६ तू उसको किसी दुष्ट के अधिकार में रख,
और कोई विरोधी उसकी दहिनी ओर खड़ा रहे ।
७ जब उसका न्याय किया जाए, तब वह दोषी निकले,
और उसकी प्रार्थना पाप गिनी जाए !
८ उसके दिन थोड़े हों,
और उसके पद को दूसरा ले !
९ उसके लड़केबाले अनाथ हो जाएं,
और उसकी स्त्री विधवा हो जाए !
१० और उसके लड़के मारे मारे फिरें,
और भीख मांगा करें;
उनको अपने उजड़े हुए घर से दूर जाकर टुकड़े मांगना पड़े !
११ महाजन फन्दा लगाकर, उसका सर्वस्व ले ले;

और परदेशी उसकी कमाई को लूट लें !
१२ कोई न हो जो उस पर करुणा करता रहे,
और उसके अनाथ बालकों पर कोई अनुग्रह न करे !
१३ उसका वंश नाश हो जाए,
दूसरी पीढ़ी में उसका नाम मिट जाए !
१४ उसके पितरों का अधर्म यहोवा को स्मरण रहे,
और उसकी माता का पाप न मिटे !
१५ वह निरन्तर यहोवा के सम्मुख रहे,
कि वह उनका नाम पृथ्वी पर से मिटा डाले !
१६ क्योंकि वह दुष्ट, कृपा करना भूल गया
वरन दीन और दरिद्र को सताता था
और मार डालने की इच्छा से खेदित मनवालों के पीछे पड़ा रहता था ।।
१७ वह शाप देने में प्रीति रखता था,
और शाप उस पर आ पड़ा;
वह आशीर्वाद देने से प्रसन्न न होता था, सो आशीर्वाद उस से दूर रहा ।
१८ वह शाप देना वस्त्र की नाईं पहिनता था,
और वह उसके पेट में जल की नाईं,
और उसकी हड्डियों में तेल की नाईं समा गया ।
१९ वह उसके लिये ओढ़ने का काम दे,
और फेंटे की नाईं उसकी कटि में नित्य कसा रहे ।।
२० यहोवा की ओर से मेरे विरोधियों को,
और मेरे विरुद्ध बुरा कहनेवालों को यही बदला मिले !
२१ परन्तु मुझ से हे यहोवा प्रभु, तू अपने नाम के निमित्त बर्ताव कर;
तेरी करुणा तो बड़ी * है, सो तू मुझे छुटकारा दे !
२२ क्योंकि मैं दीन और दरिद्र हूं,
और मेरा हृदय घायल हुआ है ।
२३ मैं ढलती हुई छाया की नाईं जाता रहा हूं;
मैं टिड्डी के समान उड़ा दिया गया हूं ।
२४ उपवास करते करते मेरे घुटने निर्बल हो गए;
और मुझ में चर्बी न रहने से मैं सूख गया हूं ।
२५ मेरी तो उन लोगों से नामधराई होती है;
जब वे मुझे देखते, तब सिर हिलाते हैं ।।
२६ हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मेरी सहायता कर !
अपनी करुणा के अनुसार मेरा उद्धार कर !
२७ जिस से वे जानें कि यह तेरा काम है,
और हे यहोवा, तू ही ने यह किया है !
२८ वे कोसते तो रहें, परन्तु तू आशीष दे !
वे तो उठते ही लज्जित हों, परन्तु तेरा दास आनन्दित हो !
२९ मेरे विरोधियों को अनादररूपी वस्त्र पहिनाया जाए,
और वे अपनी लज्जा को कम्बल की नाईं ओढ़ें !
३० मैं यहोवा का बहुत धन्यवाद करूंगा,
और बहुत लोगों के बीच में उसकी स्तुति करूंगा ।

---

* मूल में—भली ।

३१ क्योंकि वह दरिद्र की दहिनी ओर खड़ा रहेगा,
कि उसको घात करनेवाले न्यायियों से बचाए ।।

(दाऊद का भजन)

११० मेरे प्रभु से यहोवा की वाणी यह है, कि तू मेरे दहिने हाथ बैठ,
जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूं ।।
२ तेरे पराक्रम का राजदण्ड यहोवा सिय्योन से बढ़ाएगा ।
तू अपने शत्रुओं के बीच में शासन कर ।
३ तेरी प्रजा के लोग तेरे पराक्रम के दिन स्वेच्छाबलि बनते हैं;
तेरे जवान लोग पवित्रता से शोभायमान,
और भोर के गर्भ से जन्मी हुई ओस के समान तेरे पास हैं ।
४ यहोवा ने शपथ खाई और न पछताएगा,
कि तू मेल्कीसेदेक की रीति पर सर्वदा का याजक है ।।
५ प्रभु तेरी दहिनी ओर होकर
अपने क्रोध के दिन राजाओं को चूर कर देगा ।
६ वह जाति जाति में न्याय चुकाएगा,
रणभूमि लोथों से भर जाएगी;
वह लम्बे चौड़े देश के प्रधान को चूर चूर कर देगा ।
७ वह मार्ग में चलता हुआ नदी का जल पीएगा
इस कारण वह सिर को ऊंचा करेगा ।।

१११ याह की स्तुति करो * ।
मैं सीधे लोगों की गोष्ठी में
और मण्डली में भी सम्पूर्ण मन से यहोवा का धन्यवाद करूंगा ।
२ यहोवा के काम बड़े हैं,
जितने उन से प्रसन्न रहते हैं, वे उन पर ध्यान लगाते हैं ।
३ उसके काम विभवमय और ऐश्वर्य्यमय होते हैं,
और उसका धर्म सदा तक बना रहेगा ।
४ उस ने अपने आश्चर्यकर्मों का स्मरण कराया है;
यहोवा अनुग्रहकारी और दयावन्त है ।
५ उस ने अपने डरवैयों को आहार दिया है;
वह अपनी वाचा को सदा तक स्मरण रखेगा ।
६ उस ने अपनी प्रजा को अन्यजातियों का भाग देने के लिये,
अपने कामों का प्रताप दिखाया है ।
७ सच्चाई और न्याय उसके हाथों के काम हैं;
उसके सब उपदेश विश्वासयोग्य हैं,
८ वे सदा सर्वदा अटल रहेंगे,
वे सच्चाई और सिधाई से किए हुए हैं ।
९ उस ने अपनी प्रजा का उद्धार किया है;
उस ने अपनी वाचा को सदा के लिये ठहराया है ।
उसका नाम पवित्र और भययोग्य है ।
१० बुद्धि का मूल यहोवा का भय है;

* मूल में—हल्लिलूयाह ।

जितने उसकी आज्ञाओं को मानते हैं,
उनकी बुद्धि अच्छी होती है।
उसकी स्तुति सदा बनी रहेगी॥

११२ याह की स्तुति करो *।
क्या ही धन्य है वह पुरुष जो यहोवा का भय मानता है,
और उसकी आज्ञाओं से अति प्रसन्न रहता है!
२ उसका वंश पृथ्वी पर पराक्रमी होगा;
सीधे लोगों की सन्तान आशीष पाएगी।
३ उसके घर में धन सम्पत्ति रहती है;
और उसका धर्म सदा बना रहेगा।
४ सीधे लोगों के लिये अन्धकार के बीच में ज्योति उदय होती है;
वह अनुग्रहकारी, दयावन्त और धर्मी होता है।
५ जो पुरुष अनुग्रह करता और उधार देता है, उसका कल्याण होता है,
वह न्याय में अपने मुक़द्दमें को जीतेगा।
६ वह तो सदा तक अटल रहेगा;
धर्मी का स्मरण सदा तक बना रहेगा।
७ वह बुरे समाचार से नहीं डरता;
उसका हृदय यहोवा पर भरोसा रखने से स्थिर रहता है।
८ उसका हृदय सम्भला हुआ है, इसलिये वह न डरेगा,
वरन अपने द्रोहियों पर दृष्टि करके सन्तुष्ट होगा।
९ उस ने उदारता से दरिद्रों को दान दिया,
उसका धर्म सदा बना रहेगा;
और उसका सींग महिमा के साथ ऊंचा किया जाएगा।
१० दुष्ट इसे देखकर कुढ़ेगा;
वह दांत पीस-पीसकर गल जाएगा;
दुष्टों की लालसा पूरी न होगी *॥

११३ याह की स्तुति करो †!
हे यहोवा के दासो स्तुति करो,
यहोवा के नाम की स्तुति करो!
२ यहोवा का नाम
अब से लेकर सर्वदा तक धन्य कहा जाय!
३ उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक,
यहोवा का नाम स्तुति के योग्य है।
४ यहोवा सारी जातियों के ऊपर महान है,
और उसकी महिमा आकाश से भी ऊंची है॥
५ हमारे परमेश्वर यहोवा के तुल्य कौन है?
वह तो ऊंचे पर विराजमान है,
६ और आकाश और पृथ्वी पर भी,
दृष्टि करने के लिये झुकता है।
७ वह कंगाल को मिट्टी पर से,
और दरिद्र को घूरे पर से उठाकर ऊंचा करता है,
८ कि उसको प्रधानों के संग,
अर्थात् अपनी प्रजा के प्रधानों के संग बैठाए।
९ वह बांझ को घर में लड़कों की आनन्द करनेवाली माता बनाता है।
याह की स्तुति करो †!

* मूल में—हल्लिलूयाह।

* मूल में—नाश होगी।
† मूल में—हल्लिलूयाह।

११४ जब इस्राएल ने मिस्र से,
अर्थात् याकूब के घराने ने
अन्य भाषावालों के बीच में कूच
किया,
२ तब यहूदा यहोवा * का पवित्रस्थान
और इस्राएल उसके राज्य के लोग
हो गए ।।
३ समुद्र देखकर भागा,
यर्दन नदी उलटी बही ।
४ पहाड़ मेंढ़ों की नाईं उछलने लगे,
और पहाड़ियां भेड़-बकरियों के बच्चों
की नाईं उछलने लगीं ।।
५ हे समुद्र, तुझे क्या हुआ, कि तू
भागा ?
और हे यर्दन तुझे क्या हुआ, कि तू
उलटी बही ?
६ हे पहाड़ो तुम्हें क्या हुआ, कि तुम
भेड़ों की नाईं,
और हे पहाड़ियो तुम्हें क्या हुआ, कि
तुम भेड़-बकरियों के बच्चों की
नाईं उछलीं ?
७ हे पृथ्वी प्रभु के साम्हने,
हां याकूब के परमेश्वर के साम्हने
थरथरा ।
८ वह चट्टान को जल का ताल,
चकमक के पत्थर को जल का सोता
बना डालता है ।।

११५ हे यहोवा, हमारी नहीं,
हमारी नहीं, वरन अपने
ही नाम की महिमा,
अपनी करुणा और सच्चाई के निमित्त
कर ।
२ जाति जाति के लोग क्यों कहने पाएं,
कि उनका परमेश्वर कहां रहा ?

* मूल में—उस ।

३ हमारा परमेश्वर तो स्वर्ग में है;
उस ने जो चाहा वही किया है ।
४ उन लोगों की मूरतें सोने चान्दी ही
की तो हैं,
वे मनुष्यों के हाथ की बनाई हुई हैं ।
५ उनके मुंह तो रहता है परन्तु वे बोल
नहीं सकतीं;
उनके आंखें तो रहती हैं परन्तु वे
देख नहीं सकतीं ।
६ उनके कान तो रहते हैं, परन्तु वे सुन
नहीं सकतीं;
उनके नाक तो रहती है, परन्तु वे
सूंघ नहीं सकतीं ।
७ उनके हाथ तो रहते हैं, परन्तु वे स्पर्श
नहीं कर सकतीं;
उनके पांव तो रहते हैं, परन्तु वे चल
नहीं सकतीं;
और अपने कण्ठ से कुछ भी शब्द
नहीं निकाल सकतीं ।
८ जैसी वे हैं वैसे ही उनके बनानेवाले
हैं;
और उन पर सब भरोसा रखनेवाले
भी वैसे ही हो जाएंगे ।।
९ हे इस्राएल यहोवा पर भरोसा रख !
तेरा * सहायक और ढाल वही है ।
१० हे हारून के घराने यहोवा पर भरोसा
रख !
तेरा * सहायक और ढाल वही है ।
११ हे यहोवा के डरवैयो, यहोवा पर
भरोसा रखो !
तुम्हारा * सहायक और ढाल वही
है ।।
१२ यहोवा ने हम को स्मरण किया है;
वह आशीष देगा;

* मूल में—उनका ।

वह इस्राएल के घराने को आशीष देगा;
वह हारून के घराने को आशीष देगा।
१३ क्या छोटे क्या बड़े
जितने यहोवा के डरवैये हैं, वह उन्हें आशीष देगा॥
१४ यहोवा तुम को और तुम्हारे लड़कों को भी अधिक बढ़ाता जाए!
१५ यहोवा जो आकाश और पृथ्वी का कर्त्ता है,
उसकी ओर से तुम आशीष पाए हो॥
१६ स्वर्ग तो यहोवा का है,
परन्तु पृथ्वी उस ने मनुष्यों को दी है।
१७ मृतक जितने चुपचाप पड़े हैं,
वे तो याह की स्तुति नहीं कर सकते,
१८ परन्तु हम लोग याह को
अब से लेकर सर्वदा तक धन्य कहते रहेंगे।
याह की स्तुति करो *!

११६ मैं प्रेम रखता हूं, इसलिये कि यहोवा ने
मेरे गिड़गिड़ाने को सुना है।
२ उस ने जो मेरी ओर कान लगाया है,
इसलिये मैं जीवन भर उसको पुकारा करूंगा।
३ मृत्यु की रस्सियां मेरे चारों ओर थीं;
मैं अधोलोक की सकेती में पड़ा था;
मुझे संकट और शोक भोगना पड़ा।
४ तब मैं ने यहोवा से प्रार्थना की,
कि हे यहोवा बिनती सुनकर मेरे प्राण को बचा ले!
५ यहोवा अनुग्रहकारी और धर्मी है;
और हमारा परमेश्वर दया करनेवाला है।
६ यहोवा भोलों की रक्षा करता है;
जब मैं बलहीन हो गया था, उस ने मेरा उद्धार किया।
७ हे मेरे प्राण तू अपने विश्रामस्थान में लौट आ;
क्योंकि यहोवा ने तेरा उपकार किया है॥
८ तू ने तो मेरे प्राण को मृत्यु से,
मेरी आंख को आंसू बहाने से,
और मेरे पांव को ठोकर खाने से बचाया है।
९ मैं जीवित रहते हुए,
अपने को यहोवा के साम्हने जानकर *
नित चलता रहूंगा।
१० मैं ने जो ऐसा कहा है, इसे विश्वास की कसौटी पर कस कर कहा है, कि
मैं तो बहुत ही दुःखित हुआ;
११ मैं ने उतावली से कहा,
कि सब मनुष्य झूठे हैं॥
१२ यहोवा ने मेरे जितने उपकार किए हैं,
उनका बदला मैं उसको क्या दूं?
१३ मैं उद्धार का कटोरा उठाकर,
यहोवा से प्रार्थना करूंगा,
१४ मैं यहोवा के लिये अपनी मन्नतें सभों की दृष्टि में
प्रगट रूप में उसकी सारी प्रजा के साम्हने पूरी करूंगा।
१५ यहोवा के भक्तों की मृत्यु,
उसकी दृष्टि में अनमोल है।
१६ हे यहोवा, सुन, मैं तो तेरा दास हूं;

* मूल में—हल्लिलूयाह।

* मूल में—यहोवा के साम्हने।

मैं तेरा दास, और तेरी दासी का
पुत्र हूं।
तू ने मेरे बन्धन खोल दिए हैं।
१७ मैं तुझ को धन्यवादबलि चढ़ाऊंगा,
और यहोवा से प्रार्थना करूंगा।
१८ मैं यहोवा के लिये अपनी मन्नतें,
प्रगट में उसकी सारी प्रजा के साम्हने
१६ यहोवा के भवन के आंगनों में,
हे यरूशलेम, तेरे भीतर पूरी करूंगा।
याह की स्तुति करो*!

११७

हे जाति जाति के सब लोगो,
यहोवा की स्तुति करो!
हे राज्य राज्य के सब लोगो, उसकी
प्रशंसा करो!
२ क्योंकि उसकी करुणा हमारे ऊपर
प्रबल हुई है;
और यहोवा की सच्चाई सदा की है।
याह की स्तुति करो*!

११८

यहोवा का धन्यवाद करो,
क्योंकि वह भला है;
और उसकी करुणा सदा की है!
२ इस्राएल कहे,
उसकी करुणा सदा की है।
३ हारून का घराना कहे,
उसकी करुणा सदा की है।
४ यहोवा के डरवैये कहें,
उसकी करुणा सदा की है॥
५ मैं ने सकेती में परमेश्वर को पुकारा,
परमेश्वर ने मेरी सुनकर, मुझे चौड़े
स्थान में पहुंचाया।
६ यहोवा मेरी ओर है, मैं न डरूंगा।
मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?
७ यहोवा मेरी ओर मेरे सहायकों में
है;
मैं अपने बैरियों पर दृष्टि कर सन्तुष्ट
हूंगा।
८ यहोवा की शरण लेनी,
मनुष्य पर भरोसा रखने से उत्तम
है।
६ यहोवा की शरण लेनी,
प्रधानों पर भी भरोसा रखने से
उत्तम है॥
१० सब जातियों ने मुझ को घेर लिया
है;
परन्तु यहोवा के नाम से मैं निश्चय
उन्हें नाश कर डालूंगा!
११ उन्हों ने मुझ को घेर लिया है,
निःसन्देह घेर लिया है;
परन्तु यहोवा के नाम से मैं निश्चय
उन्हें नाश कर डालूंगा!
१२ उन्हों ने मुझे मधुमक्खियों की नाईं
घेर लिया है,
परन्तु कांटों की आग की नाईं वे
बुझ गए;
यहोवा के नाम से मैं निश्चय उन्हें
नाश कर डालूंगा!
१३ तू ने मुझे बड़ा धक्का दिया तो था,
कि मैं गिर पड़ूं
परन्तु यहोवा ने मेरी सहायता की।
१४ परमेश्वर मेरा बल और भजन का
विषय है;
वह मेरा उद्धार ठहरा है॥
१५ धर्मियों के तम्बुओं में जयजयकार
और उद्धार की ध्वनि हो रही है,
यहोवा के दहिने हाथ से पराक्रम का
काम होता है,
१६ यहोवा का दहिना हाथ महान हुआ
है,
यहोवा के दहिने हाथ से पराक्रम का
काम होता है!

* मूल में—हल्लिलूयाह।

१७ मैं न मरूंगा वरन जीवित रहूंगा,
और परमेश्वर के कामों का वर्णन
करता रहूंगा।
१८ परमेश्वर ने मेरी बड़ी ताड़ना तो
की है,
परन्तु मुझे मृत्यु के वश में नहीं
किया ॥
१९ मेरे लिये धर्म के द्वार खोलो,
मैं उन से प्रवेश करके याह का
धन्यवाद करूंगा ॥
२० यहोवा का द्वार यही है,
इस से धर्मी प्रवेश करने पाएंगे ॥
२१ हे यहोवा मैं तेरा धन्यवाद करूंगा,
क्योंकि तू ने मेरी सुन ली है,
और मेरा उद्धार ठहर गया है।
२२ राजमिस्त्रियों ने जिस पत्थर को
निकम्मा ठहराया था
वही कोने का सिरा हो गया है।
२३ यह तो यहोवा की ओर से हुआ है,
यह हमारी दृष्टि में अद्भुत है।
२४ आज वह दिन है जो यहोवा ने
बनाया है;
हम इस में मगन और आनन्दित
हों।
२५ हे यहोवा, बिनती सुन, उद्धार कर !
हे यहोवा, बिनती सुन, सफलता दे !
२६ धन्य है वह जो यहोवा के नाम से
आता है !
हम ने तुम को यहोवा के घर से
आशीर्वाद दिया है।
२७ यहोवा ईश्वर है, और उस ने हम को
प्रकाश दिया है।
यज्ञपशु को वेदी के सींगों से रस्सियों
से बान्धो !
२८ हे यहोवा, तू मेरा ईश्वर है, मैं तेरा
धन्यवाद करूंगा;
तू मेरा परमेश्वर है, मैं तुझ को
सराहूंगा ॥
२९ यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि
वह भला है;
और उसकी करुणा सदा बनी रहेगी !

(आलेफ)

११९ क्या ही धन्य हैं वे जो चाल
के खरे हैं,
और यहोवा की व्यवस्था पर चलते
हैं !
२ क्या ही धन्य हैं वे जो उसकी चितौ-
नियों को मानते हैं,
और पूर्ण मन से उसके पास आते हैं !
३ फिर वे कुटिलता का काम नहीं करते,
वे उसके मार्गों में चलते हैं।
४ तू ने अपने उपदेश इसलिये दिए हैं,
कि वे यत्न से माने जाएं।
५ भला होता कि
तेरी विधियों के मानने के लिये मेरी
चालचलन दृढ़ हो जाए !
६ तब मैं तेरी सब आज्ञाओं की ओर
चित्त लगाए रहूंगा,
और मेरी आशा न टूटेगी।
७ जब मैं तेरे धर्ममय नियमों को
सीखूंगा,
तब तेरा धन्यवाद सीधे मन से
करूंगा।
८ मैं तेरी विधियों को मानूंगा :
मुझे पूरी रीति से न तज !

(बेथ)

९ जवान अपनी चाल को किस उपाय
से शुद्ध रखे ?
तेरे वचन के अनुसार सावधान रहने
से।

१० मैं पूरे मन से तेरी खोज में लगा हूं;
मुझे तेरी आज्ञाओं की बाट से भटकने न दे!
११ मैं ने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है,
कि तेरे विरुद्ध पाप न करूं।
१२ हे यहोवा, तू धन्य है;
मुझे अपनी विधियां सिखा!
१३ तेरे सब कहे हुए* नियमों का वर्णन,
मैं ने अपने मुंह से किया है।
१४ मैं तेरी चितौनियों के मार्ग से,
मानो सब प्रकार के धन से हर्षित हुआ हूं।
१५ मैं तेरे उपदेशों पर ध्यान करूंगा,
और तेरे मार्गों की ओर दृष्टि रखूंगा।
१६ मैं तेरी विधियों से सुख पाऊंगा;
और तेरे वचन को न भूलूंगा॥

(गिमेल)

१७ अपने दास का उपकार कर, कि मैं जीवित रहूं,
और तेरे वचन पर चलता रहूं।
१८ मेरी आंखें खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्भुत बातें देख सकूं।
१९ मैं तो पृथ्वी पर परदेशी हूं;
अपनी आज्ञाओं को मुझ से छिपाए न रख!
२० मेरा मन तेरे नियमों की अभिलाषा के कारण हर समय खेदित रहता है।
२१ तू ने अभिमानियों को, जो शापित हैं, घुड़का है,
वे तेरी आज्ञाओं की बाट से भटके हुए हैं।

* मूल में—तेरे मुख के।

२२ मेरी नामधराई और अपमान दूर कर,
क्योंकि मैं तेरी चितौनियों को पकड़े हूं।
२३ हाकिम भी बैठे हुए आपस में मेरे विरुद्ध बातें करते थे,
परन्तु तेरा दास तेरी विधियों पर ध्यान करता रहा।
२४ तेरी चितौनियां मेरा सुखमूल
और मेरे मन्त्री हैं॥

(दाल्थ)

२५ मैं* धूल में पड़ा हूं;
तू अपने वचन के अनुसार मुझ को जिला!
२६ मैं ने अपनी चालचलन का तुझ से वर्णन किया है और तू ने मेरी बात मान ली है;
तू मुझ को अपनी विधियां सिखा!
२७ अपने उपदेशों का मार्ग मुझे बता,
तब मैं तेरे आश्चर्यकर्मों पर ध्यान करूंगा।
२८ मेरा जीव उदासी के मारे गल चला है;
तू अपने वचन के अनुसार मुझे सम्भाल!
२९ मुझ को झूठ के मार्ग से दूर कर;
और करुणा करके अपनी व्यवस्था मुझे दे।
३० मैं ने सच्चाई का मार्ग चुन लिया है,
तेरे नियमों की ओर मैं चित्त लगाए रहता हूं।
३१ मैं तेरी चितौनियों में लवलीन हूं,
हे यहोवा, मेरी आशा न तोड़!

* मूल में—मेरा जीव।

३२ जब तू मेरा हियाव बढ़ाएगा,
तब मैं तेरी आज्ञाओं के मार्ग में दौड़ूंगा ।।

(हे)

३३ हे यहोवा, मुझे अपनी विधियों का मार्ग दिखा दे;
तब मैं उसे अन्त तक पकड़े रहूंगा ।
३४ मुझे समझ दे, तब मैं तेरी व्यवस्था को पकड़े रहूंगा
और पूर्ण मन से उस पर चलूंगा ।
३५ अपनी आज्ञाओं के पथ में मुझ को चला,
क्योंकि मैं उसी से प्रसन्न हूं ।
३६ मेरे मन को लोभ की ओर नहीं,
अपनी चितौनियों ही की ओर फेर दे ।
३७ मेरी आंखों को व्यर्थ वस्तुओं की ओर से फेर दे;
तू अपने मार्ग में मुझे जिला ।
३८ तेरा वचन जो तेरे भय माननेवालों के लिये है,
उसको अपने दास के निमित्त भी पूरा कर ।
३९ जिस नामधराई से मैं डरता हूं, उसे दूर कर;
क्योंकि तेरे नियम उत्तम हैं ।
४० देख, मैं तेरे उपदेशों का अभिलाषी हूं;
अपने धर्म के कारण मुझ को जिला ।।

(वाव)

४१ हे यहोवा, तेरी करुणा और तेरा किया हुआ उद्धार,
तेरे वचन के अनुसार, मुझ को भी मिले;
४२ तब मैं अपनी नामधराई करनेवालों को कुछ उत्तर दे सकूंगा,
क्योंकि मेरा भरोसा, तेरे वचन पर है ।
४३ मुझे अपने सत्य वचन कहने से न रोक *
क्योंकि मेरी आशा तेरे नियमों पर है ।
४४ तब मैं तेरी व्यवस्था पर लगातार,
सदा सर्वदा चलता रहूंगा;
४५ और मैं चौड़े स्थान में चला फिरा करूंगा,
क्योंकि मैं ने तेरे उपदेशों की सुधि रखी है ।
४६ और मैं तेरी चितौनियों की चर्चा राजाओं के साम्हने भी करूंगा,
और संकोच न करूंगा;
४७ क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं के कारण सुखी हूं,
और मैं उन में प्रीति रखता हूं ।
४८ मैं तेरी आज्ञाओं की ओर जिन में मैं प्रीति रखता हूं, हाथ फैलाऊंगा,
और तेरी विधियों पर ध्यान करूंगा ।।

(ज़ैन)

४९ जो वचन तू ने अपने दास को दिया है, उसे स्मरण कर,
क्योंकि तू ने मुझे आशा दी है ।
५० मेरे दुःख में मुझे शान्ति उसी से हुई है,
क्योंकि तेरे वचन के द्वारा मैं ने जीवन पाया है ।
५१ अभिमानियों ने मुझे अत्यन्त ठट्ठे में उड़ाया है,
तौभी मैं तेरी व्यवस्था से नहीं हटा ।

---

* मूल में—मेरे मुंह में से बिल्कुल न छीन ।

५२ हे यहोवा, मैं ने तेरे प्राचीन नियमों को स्मरण करके
शान्ति पाई है।
५३ जो दुष्ट तेरी व्यवस्था को छोड़े हुए हैं,
उनके कारण मैं सन्ताप से जलता हूं।
५४ जहां मैं परदेशी होकर रहता हूं, वहां तेरी विधियां,
मेरे गीत गाने का विषय बनी हैं।
५५ हे यहोवा, मैं ने रात को तेरा नाम स्मरण किया,
और तेरी व्यवस्था पर चला हूं।
५६ यह मुझ से इस कारण हुआ,
कि मैं तेरे उपदेशों को पकड़े हुए था॥

(खेथ)

५७ यहोवा मेरा भाग है;
मैं ने तेरे वचनों के अनुसार चलने का निश्चय किया है।
५८ मैं ने पूरे मन से तुझे मनाया है;
इसलिये अपने वचन के अनुसार मुझ पर अनुग्रह कर।
५९ मैं ने अपनी चालचलन को सोचा,
और तेरी चितौनियों का मार्ग लिया।
६० मैं ने तेरी आज्ञाओं के मानने में
विलम्ब नहीं, फुर्ती की है।
६१ मैं दुष्टों की रस्सियों से बन्ध गया हूं,
तौभी मैं तेरी व्यवस्था को नहीं भूला।
६२ तेरे धर्ममय नियमों के कारण
मैं आधी रात को तेरा धन्यवाद करने को उठूंगा।
६३ जितने तेरा भय मानते और तेरे उपदेशों पर चलते हैं,
उनका मैं संगी हूं।
६४ हे यहोवा, तेरी करुणा पृथ्वी में भरी हुई है;
तू मुझे अपनी विधियां सिखा!

(टेथ)

६५ हे यहोवा, तू ने अपने वचन के अनुसार
अपने दास के संग भलाई की है।
६६ मुझे भली विवेक-शक्ति और ज्ञान दे,
क्योंकि मैं ने तेरी आज्ञाओं का विश्वास किया है।
६७ उस से पहले कि मैं दुःखित हुआ, मैं भटकता था;
परन्तु अब मैं तेरे वचन को मानता हूं।
६८ तू भला है, और भला करता भी है;
मुझे अपनी विधियां सिखा।
६९ अभिमानियों ने तो मेरे विरुद्ध झूठ बात गढ़ी है,
परन्तु मैं तेरे उपदेशों को पूरे मन से पकड़े रहूंगा।
७० उनका मन मोटा * हो गया है,
परन्तु मैं तेरी व्यवस्था के कारण सुखी हूं।
७१ मुझे जो दुःख हुआ वह मेरे लिये भला ही हुआ है,
जिस से मैं तेरी विधियों को सीख सकूं।
७२ तेरी दी हुई व्यवस्था मेरे लिये
हजारों रुपयों और मुहरों से भी उत्तम है॥

(योध)

७३ तेरे हाथों से मैं बनाया और रचा गया हूं;
मुझे समझ दे कि मैं तेरी आज्ञाओं को सीखूं।
७४ तेरे डरवैये मुझे देखकर आनन्दित होंगे,
क्योंकि मैं ने तेरे वचन पर आशा लगाई है।

* मूल में—चर्बी के समान मोटा।

७५ हे यहोवा, मैं जान गया कि तेरे नियम धर्ममय हैं,
और तू ने अपने सच्चाई के अनुसार मुझे दुःख दिया है।
७६ मुझे अपनी करुणा से शान्ति दे,
क्योंकि तू ने अपने दास को ऐसा ही वचन दिया है।
७७ तेरी दया मुझ पर हो, तब मैं जीवित रहूंगा;
क्योंकि मैं तेरी व्यवस्था से सुखी हूं।
७८ अभिमानियों की आशा टूटे, क्योंकि उन्हों ने मुझे झूठ के द्वारा गिरा दिया है;
परन्तु मैं तेरे उपदेशों पर ध्यान करूंगा।
७९ जो तेरा भय मानते हैं, वह मेरी ओर फिरें,
तब वे तेरी चितौनियों को समझ लेंगे।
८० मेरा मन तेरी विधियों के मानने में सिद्ध हो,
ऐसा न हो कि मुझे लज्जित होना पड़े॥

(काफ)

८१ मेरा प्राण तेरे उद्धार के लिये बेचैन है;
परन्तु मुझे तेरे वचन पर आशा रहती है।
८२ मेरी आंखें तेरे वचन के पूरे होने की बाट जोहते जोहते रह गई हैं;
और मैं कहता हूं कि तू मुझे कब शान्ति देगा?
८३ क्योंकि मैं धूएं में की कुप्पी के समान हो गया हूं,
तौभी तेरी विधियों को नहीं भूला।
८४ तेरे दास के कितने दिन रह गए हैं?
तू मेरे पीछे पड़े हुओं को दण्ड कब देगा?
८५ अभिमानी जो तेरी व्यवस्था के अनुसार नहीं चलते,
उन्हों ने मेरे लिये गड़हे खोदे हैं।
८६ तेरी सब आज्ञाएं विश्वासयोग्य हैं;
वे लोग झूठ बोलते हुए मेरे पीछे पड़े हैं; तू मेरी सहायता कर!
८७ वे मुझ को पृथ्वी पर से मिटा डालने ही पर थे,
परन्तु मैं ने तेरे उपदेशों को नहीं छोड़ा।
८८ अपनी करुणा के अनुसार मुझ को जिला,
तब मैं तेरी दी हुई * चितौनी को मानूंगा॥

(लामेद)

८९ हे यहोवा, तेरा वचन,
आकाश में सदा तक स्थिर रहता है।
९० तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है;
तू ने पृथ्वी को स्थिर किया, इसलिये वह बनी है।
९१ वे आज के दिन तक तेरे नियमों के अनुसार ठहरे हैं;
क्योंकि सारी सृष्टि तेरे अधीन है।
९२ यदि मैं तेरी व्यवस्था से सुखी न होता,
तो मैं दुःख के समय नाश हो जाता।
९३ मैं तेरे उपदेशों को कभी न भूलूंगा;
क्योंकि उन्हीं के द्वारा तू ने मुझे जिलाया है।

---

* मूल में—तेरे मुख की।

९४ मैं तेरा ही हूं, तू मेरा उद्धार कर;
क्योंकि मैं तेरे उपदेशों की सुधि रखता हूं।
९५ दुष्ट मेरा नाश करने के लिये मेरी घात में लगे हैं;
परन्तु मैं तेरी चितौनियों पर ध्यान करता हूं।
९६ जितनी बातें पूरी जान पड़ती हैं, उन सब को तो मैं ने अधूरी पाया है *,
परन्तु तेरी आज्ञा का विस्तार बड़ा है॥

(मीम)

९७ अहा! मैं तेरी व्यवस्था में कैसी प्रीति रखता हूं!
दिन भर मेरा ध्यान उसी पर लगा रहता है।
९८ तू अपनी आज्ञाओं के द्वारा मुझे अपने शत्रुओं से अधिक बुद्धिमान करता है,
क्योंकि वे सदा मेरे मन में रहती हैं।
९९ मैं अपने सब शिक्षकों से भी अधिक समझ रखता हूं,
क्योंकि मेरा ध्यान तेरी चितौनियों पर लगा है।
१०० मैं पुरनियों से भी समझदार हूं,
क्योंकि मैं तेरे उपदेशों को पकड़े हुए हूं।
१०१ मैं ने अपने पांवों को हर एक बुरे रास्ते से रोक रखा है,
जिस से मैं तेरे वचन के अनुसार चलूं।

* मूल में—सारी पूर्णता का मैं ने अंत देखा है।

१०२ मैं तेरे नियमों से नहीं हटा,
क्योंकि तू ही ने मुझे शिक्षा दी है।
१०३ तेरे वचन मुझ को * कैसे मीठे लगते हैं,
वे मेरे मुंह में मधु से भी मीठे हैं!
१०४ तेरे उपदेशों के कारण मैं समझदार हो जाता हूं,
इसलिये मैं सब मिथ्या मार्गों से बैर रखता हूं॥

(नून)

१०५ तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक,
और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है।
१०६ मैं ने शपथ खाई, और ठाना भी है,
कि मैं तेरे धर्ममय नियमों के अनुसार चलूंगा।
१०७ मैं अत्यन्त दुःख में पड़ा हूं;
हे यहोवा, अपने वचन के अनुसार मुझे जिला।
१०८ हे यहोवा, मेरे वचनों को स्वेच्छाबलि जानकर ग्रहण कर,
और अपने नियमों को मुझे सिखा।
१०९ मेरा प्राण निरन्तर मेरी हथेली पर रहता है,
तौभी मैं तेरी व्यवस्था को भूल नहीं गया।
११० दुष्टों ने मेरे लिये फन्दा लगाया है,
परन्तु मैं तेरे उपदेशों के मार्ग से नहीं भटका।
१११ मैं ने तेरी चितौनियों को सदा के लिये अपना निज भाग कर लिया है,
क्योंकि वे मेरे हृदय के हर्ष का कारण हैं।

* मूल में—मेरे तालू को।

११२ मैं ने अपने मन को इस बात पर लगाया है,
कि अन्त तक तेरी विधियों पर सदा चलता रहूं ।।

(सामेख)

११३ मैं दुचित्तों से तो बैर रखता हूं,
परन्तु तेरी व्यवस्था से प्रीति रखता हूं ।
११४ तू मेरी आड़ और ढाल है;
मेरी आशा तेरे वचन पर है ।
११५ हे कुकर्मियो, मुझ से दूर हो जाओ,
कि मैं अपने परमेश्वर की आज्ञाओं को पकड़े रहूं !
११६ हे यहोवा, अपने वचन के अनुसार मुझे सम्भाल, कि मैं जीवित रहूं,
और मेरी आशा को न तोड़ !
११७ मुझे थांभ रख, तब मैं बचा रहूंगा,
और निरन्तर तेरी विधियों की ओर चित्त लगाए रहूंगा !
११८ जितने तेरी विधियों के मार्ग से भटक जाते हैं, उन सब को तू तुच्छ जानता है,
क्योंकि उनकी चतुराई झूठ है ।
११९ तू ने पृथ्वी के सब दुष्टों को धातु के मैल के समान दूर किया है;
इस कारण मैं तेरी चितौनियों में प्रीति रखता हूं ।
१२० तेरे भय से मेरा शरीर कांप उठता है,
और मैं तेरे नियमों से डरता हूं ।।

(ऐन)

१२१ मैं ने तो न्याय और धर्म का काम किया है;
तू मुझे अन्धेर करनेवालों के हाथ में न छोड़ ।
१२२ अपने दास की भलाई के लिये जामिन हो, ताकि
अभिमानी मुझ पर अन्धेर न करने पाएं ।
१२३ मेरी आंखें तुझ से उद्धार पाने,
और तेरे धर्ममय वचन के पूरे होने की बाट जोहते जोहते रह गई हैं ।
१२४ अपने दास के संग अपनी करुणा के अनुसार वर्ताव कर,
और अपनी विधियां मुझे सिखा ।
१२५ मैं तेरा दास हूं, तू मुझे समझ दे
कि मैं तेरी चितौनियों को समझूं ।
१२६ वह समय आया है, कि यहोवा काम करे,
क्योंकि लोगों ने तेरी व्यवस्था को तोड़ दिया है ।
१२७ इस कारण मैं तेरी आज्ञाओं को सोने से वरन कुन्दन से भी अधिक प्रिय मानता हूं ।
१२८ इसी कारण मैं तेरे सब उपदेशों को सब विषयों में ठीक जानता हूं;
और सब मिथ्या मार्गों से बैर रखता हूं ।।

(पे)

१२९ तेरी चितौनियां अनूप हैं,
इस कारण मैं उन्हें अपने जी से पकड़े हुए हूं ।
१३० तेरी बातों के खुलने से प्रकाश होता है;
उस से भोले लोग समझ प्राप्त करते हैं ।
१३१ मैं मुंह खोलकर हांफने लगा,
क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं का प्यासा था ।

१३२ जैसी तेरी रीति अपने नाम की प्रीति रखनेवालों से है,
वैसे ही मेरी ओर भी फिरकर मुझ पर अनुग्रह कर।
१३३ मेरे पैरों को अपने वचन के मार्ग पर स्थिर कर,
और किसी अनर्थ बात को मुझ पर प्रभुता न करने दे।
१३४ मुझे मनुष्यों के अन्धेर से छुड़ा ले,
तब मैं तेरे उपदेशों को मानूंगा।
१३५ अपने दास पर अपने मुख का प्रकाश चमका दे,
और अपनी विधियां मुझे सिखा।
१३६ मेरी आंखों से जल की धारा बहती रहती है,
क्योंकि लोग तेरी व्यवस्था को नहीं मानते॥

(सांदे)

१३७ हे यहोवा तू धर्मी है,
और तेरे नियम सीधे हैं।
१३८ तू ने अपनी चितौनियों को
धर्म और पूरी सत्यता से कहा है।
१३९ मैं तेरी धुन में भस्म हो रहा हूं,
क्योंकि मेरे सतानेवाले तेरे वचनों को भूल गए हैं।
१४० तेरा वचन पूरी रीति से ताया हुआ है,
इसलिये तेरा दास उस में प्रीति रखता है।
१४१ मैं छोटा और तुच्छ हूं,
तौभी मैं तेरे उपदेशों को नहीं भूलता।
१४२ तेरा धर्म सदा का धर्म है,
और तेरी व्यवस्था सत्य है।
१४३ मैं संकट और सकेती में फंसा हूं,
परन्तु मैं तेरी आज्ञाओं से सुखी हूं।
१४४ तेरी चितौनियां सदा धर्ममय हैं;
तू मुझ को समझ दे कि मैं जीवित रहूं॥

(क़ाफ़)

१४५ मैं ने सारे मन से प्रार्थना की है,
हे यहोवा मेरी सुन लेना!
मैं तेरी विधियों को पकड़े रहूंगा।
१४६ मैं ने तुझ से प्रार्थना की है, तू मेरा उद्धार कर,
और मैं तेरी चितौनियों को माना करूंगा।
१४७ मैं ने पौ फटने से पहिले दोहाई दी;
मेरी आशा तेरे वचनों पर थी।
१४८ मेरी आंखें रात के एक एक पहर से पहिले खुल गईं,
कि मैं तेरे वचन पर ध्यान करूं।
१४९ अपनी करुणा के अनुसार मेरी सुन ले;
हे यहोवा, अपनी रीति के अनुसार मुझे जीवित कर।
१५० जो दुष्टता में धुन लगाते हैं, वे निकट आ गए हैं;
वे तेरी व्यवस्था से दूर हैं।
१५१ हे यहोवा, तू निकट है,
और तेरी सब आज्ञाएं सत्य हैं।
१५२ बहुत काल से मैं तेरी चितौनियों को जानता हूं,
कि तू ने उनकी नेव सदा के लिये डाली है॥

(रेश)

१५३ मेरे दुःख को देखकर मुझे छुड़ा ले,
क्योंकि मैं तेरी व्यवस्था को भूल नहीं गया।

१५४ मेरा मुक़द्दमा लड़, और मुझे छुड़ा ले;
अपने वचन के अनुसार मुझ को जिला।
१५५ दुष्टों को उद्धार मिलना कठिन है *,
क्योंकि वे तेरी विधियों की सुधि नहीं रखते।
१५६ हे यहोवा, तेरी दया तो बड़ी है;
इसलिये अपने नियमों के अनुसार मुझे जिला।
१५७ मेरा पीछा करनेवाले और मेरे सतानेवाले बहुत हैं,
परन्तु मैं तेरी चितौनियों से नहीं हटता।
१५८ मैं विश्वासघातियों को देखकर उदास हुआ,
क्योंकि वे तेरे वचन को नहीं मानते।
१५९ देख, मैं तेरे नियमों से कैसी प्रीति रखता हूं!
हे यहोवा, अपनी करुणा के अनुसार मुझ को जिला।
१६० तेरा सारा वचन † सत्य ही है;
और तेरा एक एक धर्ममय नियम सदा काल तक अटल है॥

(शीन)

१६१ हाकिम व्यर्थ मेरे पीछे पड़े हैं,
परन्तु मेरा हृदय तेरे वचनों का भय मानता है।
१६२ जैसे कोई बड़ी लूट पाकर हर्षित होता है,
वैसे ही मैं तेरे वचन के कारण हर्षित हूं।

* मूल में—उद्धार दुष्टों से दूर है।
† मूल में—तेरे वचन का जोड़।

१६३ झूठ से तो मैं बैर और घृणा रखता हूं,
परन्तु तेरी व्यवस्था से प्रीति रखता हूं।
१६४ तेरे धर्ममय नियमों के कारण मैं प्रतिदिन सात बार तेरी स्तुति करता हूं।
१६५ तेरी व्यवस्था से प्रीति रखनेवालों को बड़ी शान्ति होती है;
और उनको कुछ ठोकर नहीं लगती।
१६६ हे यहोवा, मैं तुझ से उद्धार पाने की आशा रखता हूं;
और तेरी आज्ञाओं पर चलता आया हूं।
१६७ मैं तेरी चितौनियों को जी से मानता हूं,
और उन से बहुत प्रीति रखता आया हूं।
१६८ मैं तेरे उपदेशों और चितौनियों को मानता आया हूं,
क्योंकि मेरी सारी चालचलन तेरे सम्मुख प्रगट है॥

(ताव)

१६९ हे यहोवा, मेरी दोहाई तुझ तक पहुंचे;
तू अपने वचन के अनुसार मुझे समझ दे!
१७० मेरा गिड़गिड़ाना तुझ तक पहुंचे;
तू अपने वचन के अनुसार मुझे छुड़ा ले।
१७१ मेरे मुंह से स्तुति निकला करे *,
क्योंकि तू मुझे अपनी विधियां सिखाता है।

* मूल में—मेरे होंठ स्तुति बहाएं।

१७२ मैं तेरे वचन का गीत गाऊंगा,
क्योंकि तेरी सब आज्ञाएं धर्ममय हैं।
१७३ तेरा हाथ मेरी सहायता करने को तैयार रहता है,
क्योंकि मैं ने तेरे उपदेशों को अपनाया है।
१७४ हे यहोवा, मैं तुझ से उद्धार पाने की अभिलाषा करता हूं,
मैं तेरी व्यवस्था से सुखी हूं।
१७५ मुझे जिला, और मैं तेरी स्तुति करूंगा,
तेरे नियमों से मेरी सहायता हो।
१७६ मैं खोई हुई भेड़ की नाईं भटका हूं; तू अपने दास को ढूंढ़ ले,
क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं को भूल नहीं गया॥

(यात्रा का गीत)

१२० संकट के समय मैं ने यहोवा को पुकारा,
और उस ने मेरी सुन ली।
२ हे यहोवा, झूठ बोलनेवाले मुंह से और छली जीभ से मेरी रक्षा कर॥
३ हे छली जीभ,
तुझ को क्या मिले? और तेरे साथ और क्या अधिक किया जाए?
४ वीर के नोकीले तीर
और झाऊ के अंगारे!
५ हाय, हाय, क्योंकि मुझे मेशेक में परदेशी होकर रहना पड़ा
और केदार के तम्बुओं में बसना पड़ा है!
६ बहुत काल से मुझ को
मेल के बैरियों के साथ बसना पड़ा है।
७ मैं तो मेल चाहता हूं;
परन्तु मेरे बोलते ही, वे लड़ना चाहते हैं!

(यात्रा का गीत)

१२१ मैं अपनी आंखें पर्वतों की ओर लगाऊंगा*।
मुझे सहायता कहां से मिलेगी?
२ मुझे सहायता यहोवा की ओर से मिलती है,
जो आकाश और पृथ्वी का कर्त्ता है॥
३ वह तेरे पांव को टलने न देगा,
तेरा रक्षक कभी न ऊंघेगा।
४ सुन, इस्राएल का रक्षक,
न ऊंघेगा और न सोएगा॥
५ यहोवा तेरा रक्षक है;
यहोवा तेरी दहिनी ओर तेरी आड़ है।
६ न तो दिन को धूप से,
और न रात को चांदनी से तेरी कुछ हानि होगी॥
७ यहोवा सारी विपत्ति से तेरी रक्षा करेगा;
वह तेरे प्राण की रक्षा करेगा।
८ यहोवा तेरे आने जाने में
तेरी रक्षा अब से लेकर सदा तक करता रहेगा॥

(यात्रा का गीत। दाऊद का)

१२२ जब लोगों ने मुझ से कहा, कि हम यहोवा के भवन को चलें,
तब मैं आनन्दित हुआ।
२ हे यरूशलेम, तेरे फाटकों के भीतर,
हम खड़े हो गए हैं!

* मूल में—उठाऊंगा।

३ हे यरूशलेम, तू ऐसे नगर के समान बना है,
जिसके घर एक दूसरे से मिले हुए हैं।
४ वहां याह के गोत्र गोत्र के लोग
यहोवा के नाम का धन्यवाद करने को जाते हैं;
यह इस्राएल के लिये साक्षी है।
५ वहां तो न्याय के सिंहासन,
दाऊद के घराने के लिये धरे हुए हैं॥
६ यरूशलेम की शान्ति का वरदान मांगो,
तेरे प्रेमी कुशल से रहें!
७ तेरी शहरपनाह के भीतर शान्ति,
और तेरे महलों में कुशल होवे!
८ अपने भाइयों और संगियों के निमित्त,
मैं कहूंगा कि तुझ में शान्ति होवे!
९ अपने परमेश्वर यहोवा के भवन के निमित्त,
मैं तेरी भलाई का यत्न करूंगा॥

(यात्रा का गीत)

१२३

हे स्वर्ग में विराजमान
मैं अपनी आंखें तेरी ओर लगाता* हूं!
२ देख, जैसे दासों की आंखें अपने स्वामियों के हाथ की ओर,
और जैसे दासियों की आंखें अपनी स्वामिनी के हाथ की ओर लगी रहती हैं,
वैसे ही हमारी आंखें हमारे परमेश्वर यहोवा की ओर उस समय तक लगी रहेंगी,
जब तक वह हम पर अनुग्रह न करे॥
३ हम पर अनुग्रह कर, हे यहोवा, हम पर अनुग्रह कर,
क्योंकि हम अपमान से बहुत ही भर गए हैं।
४ हमारा जीव सुखी लोगों के ठट्ठों से,
और अहंकारियों के अपमान से
बहुत ही भर गया है॥

(यात्रा का गीत। दाऊद का)

१२४

इस्राएल यह कहे,
कि यदि हमारी ओर यहोवा न होता,
२ यदि यहोवा उस समय हमारी ओर न होता
जब मनुष्यों ने हम पर चढ़ाई की,
३ तो वे हम को उसी समय जीवित निगल जाते,
जब उनका क्रोध हम पर भड़का था,
४ हम उसी समय जल में डूब जाते
और धारा में बह जाते*;
५ उमड़ते† जल में हम उसी समय ही बह जाते॥
६ धन्य है यहोवा,
जिस ने हम को उनके दांतों तले जाने न दिया!
७ हमारा जीव पक्षी की नाईं चिड़ीमार के जाल से छूट गया;
जाल फट गया, हम बच निकले!
८ यहोवा जो आकाश और पृथ्वी का कर्त्ता है,
हमारी सहायता उसी के नाम से होती है।

(यात्रा का गीत)

१२५

जो यहोवा पर भरोसा रखते हैं,
वे सिय्योन पर्वत के समान हैं,

---

* मूल में—उठाता।

* मूल में—नदी हमारे प्राण के ऊपर से जाती।
† मूल में—अभिमानी।

जो टलता नहीं, वरन सदा बना रहता है।

२ जिस प्रकार यरूशलेम के चारों ओर पहाड़ हैं,
उसी प्रकार यहोवा अपनी प्रजा के चारों ओर अब से लेकर सर्वदा तक बना रहेगा।

३ क्योंकि दुष्टों का राजदण्ड धर्मियों के भाग पर बना न रहेगा,
ऐसा न हो कि धर्मी अपने हाथ कुटिल काम की ओर बढ़ाएं॥

४ हे यहोवा, भलों का,
और सीधे मनवालों का भला कर!

५ परन्तु जो मुड़कर टेढ़े मार्गों में चलते हैं,
उनको यहोवा अनर्थकारियों के संग निकाल देगा!
इस्राएल को शान्ति मिले!

(यात्रा का गीत)

१२६ जब यहोवा सिय्योन से लौटनेवालों को लौटा ले आया,
तब हम स्वप्न देखनेवाले से हो गए।

२ तब हम आनन्द से हंसने
और जयजयकार करने लगे *;
तब जाति जाति के बीच में कहा जाता था,
कि यहोवा ने, इनके साथ बड़े बड़े काम किए हैं।

३ यहोवा ने हमारे साथ बड़े बड़े काम किए हैं;
और इस से हम आनन्दित हैं॥

४ हे यहोवा, दक्खिन देश के नालों की नाईं,

* मूल में—हमारा मुंह हंसी से और हमारी जीभ ऊंचे स्वर के गीत से भर गई।

हमारे बन्धुओं * को लौटा ले आ!

५ जो आंसू बहाते हुए बोते हैं,
वे जयजयकार करते हुए लवने पाएंगे।

६ चाहे बोनेवाला बीज लेकर रोता हुआ चला जाए,
परन्तु वह फिर पूलियां लिए जयजयकार करता हुआ निश्चय लौट आएगा॥

(यात्रा का गीत। सुलैमान का)

१२७ यदि घर को यहोवा न बनाए,
तो उसके बनानेवालों का परिश्रम व्यर्थ होगा।
यदि नगर की रक्षा यहोवा न करे,
तो रखवाले का जागना व्यर्थ ही होगा।

२ तुम जो सबेरे उठते और देर करके विश्राम करते
और दुःख भरी रोटी खाते हो, यह सब तुम्हारे लिये व्यर्थ ही है;
क्योंकि वह अपने प्रियों को योंही नींद दान करता है॥

३ देखो, लड़के यहोवा के दिए हुए भाग हैं,
गर्भ का फल उसकी ओर से प्रतिफल है।

४ जैसे वीर के हाथ में तीर,
वैसे ही जवानी के लड़के होते हैं।

५ क्या ही धन्य है वह पुरुष जिस ने अपने तर्कश को उन से भर लिया हो!
वह फाटक के पास शत्रुओं से बातें करते संकोच न करेगा॥

* मूल में—हमारी बंधुआई।

(यात्रा का गीत)

१२८

क्या ही धन्य है हर एक जो यहोवा का भय मानता है,
और उसके मार्गों पर चलता है!
२ तू अपनी कमाई को निश्चय खाने पाएगा;
तू धन्य होगा, और तेरा भला ही होगा॥
३ तेरे घर के भीतर तेरी स्त्री फलवन्त दाखलता-सी होगी;
तेरी मेज़ के चारों ओर तेरे बालक जलपाई के पौधे से होंगे।
४ सुन, जो पुरुष यहोवा का भय मानता हो,
वह ऐसी ही आशीष पाएगा॥
५ यहोवा तुझे सिय्योन से आशीष देवे,
और तू जीवन भर यरूशलेम का कुशल देखता रहे!
६ वरन तू अपने नाती-पोतों को भी देखने पाए!
इस्राएल को शान्ति मिले!

(यात्रा का गीत)

१२९

इस्राएल अब यह कहे,
कि मेरे बचपन से लोग मुझे बार बार क्लेश देते आए हैं,
२ मेरे बचपन से वे मुझ को बार बार क्लेश देते तो आए हैं,
परन्तु मुझ पर प्रबल नहीं हुए।
३ हलवाहों ने मेरी पीठ के ऊपर हल चलाया,
और लम्बी लम्बी रेखाएं कीं।
४ यहोवा धर्मी है;
उस ने दुष्टों के फन्दों को काट डाला है।
५ जितने सिय्योन से बैर रखते हैं,
उन सभों की आशा टूटे, और उनको पीछे हटना पड़े!
६ वे छत पर की घास के समान हों,
जो बढ़ने से पहिले सूख जाती है;
७ जिस से कोई लवैया अपनी मुट्ठी नहीं भरता,
न पूलियों का कोई बान्धनेवाला अपनी अंकवार भर पाता है,
८ और न आने जानेवाले यह कहते हैं,
कि यहोवा की आशीष तुम पर होवे!
हम तुम को यहोवा के नाम से आशीर्वाद देते हैं!

(यात्रा का गीत)

१३०

हे यहोवा, मैं ने गहिरे स्थानों में से तुझ को पुकारा है!
२ हे प्रभु, मेरी सुन!
तेरे कान मेरे गिड़गिड़ाने की ओर ध्यान से लगे रहें!
३ हे याह, यदि तू अधर्म के कामों का लेखा ले,
तो हे प्रभु कौन खड़ा रह सकेगा?
४ परन्तु तू क्षमा करनेवाला है*,
जिस से तेरा भय माना जाए॥
५ मैं यहोवा की बाट जोहता हूं, मैं जी से उसकी बाट जोहता हूं,
और मेरी आशा उसके वचन पर है;
६ पहरुए जितना भोर को चाहते हैं, हां, पहरुए जितना भोर को चाहते हैं,
उस से भी अधिक मैं यहोवा को अपने प्राणों से चाहता हूं॥
७ इस्राएल यहोवा पर आशा लगाए रहे!

---

* मूल में—तेरे पास क्षमा है।

क्योंकि यहोवा करुणा करनेवाला
और पूरा छुटकारा देनेवाला है *।
८ इस्राएल को उसके सारे अधर्म के
कामों से
वही छुटकारा देगा ।।

(यात्रा का गीत । दाऊद का)

१३१

हे यहोवा, न तो मेरा मन
गर्व से और न मेरी दृष्टि
घमण्ड से भरी है;
और जो बातें बड़ी और मेरे लिये
अधिक कठिन हैं,
उन से मैं काम नहीं रखता।
२ निश्चय मैं ने अपने मन को † शान्त
और चुप कर दिया है,
जैसा दूध छुड़ाया हुआ लड़का अपनी
मां की गोद में ‡ रहता है,
वैसे ही दूध छुड़ाए हुए लड़के के समान
मेरा मन भी रहता है § ।।
३ हे इस्राएल, अब से लेकर सदा सर्वदा
यहोवा ही पर आशा लगाए रह!

(यात्रा का गीत)

१३२

हे यहोवा, दाऊद के लिये
उसकी सारी दुर्दशा को
स्मरण कर;
२ उस ने यहोवा से शपथ खाई,
और याकूब के सर्वशक्तिमान की
मन्नत मानी है,
३ कि निश्चय मैं उस समय तक अपने
घर में ‖ प्रवेश न करूंगा, और
न अपने पलंग पर चढ़ूंगा;
४ न अपनी आंखों में नींद, और
न अपनी पलकों में झपकी आने
दूंगा,
५ जब तक मैं यहोवा के लिये एक
स्थान,
अर्थात् याकूब के सर्वशक्तिमान के
लिये निवास स्थान न पाऊं ।।
६ देखो, हम ने एप्राता में इसकी चर्चा
सुनी है,
हम ने इसको बन के खेतों में पाया
है।
७ आओ, हम उसके निवास में प्रवेश
करें,
हम उसके चरणों की चौकी के आगे
दण्डवत् करें!
८ हे यहोवा, उठकर अपने विश्राम-
स्थान में
अपनी सामर्थ्य के सन्दूक समेत आ।
९ तेरे याजक धर्म के वस्त्र पहिने रहें,
और तेरे भक्त लोग जयजयकार करें।
१० अपने दास दाऊद के लिये,
अपने अभिषिक्त की प्रार्थना की
अनसुनी न कर * ।।
११ यहोवा ने दाऊद से सच्ची शपथ
खाई है
और वह उस से न मुकरेगा :
कि मैं तेरी गद्दी पर तेरे एक निज
पुत्र को बैठाऊंगा।
१२ यदि तेरे वंश के लोग मेरी वाचा का
पालन करें
और जो चितौनी मैं उन्हें सिखाऊंगा,
उस पर चलें,
तो उनके वंश के लोग भी तेरी गद्दी
पर युग युग बैठते चले जाएंगे।

---

* मूल में—यहोवा के पास करुणा और उसी के पास बहुत छुटकारा है।
† मूल में—जीव को।
‡ मूल में—मां पर।
§ मूल में—मेरे ऊपर रहता।
‖ मूल में—अपने घर के डेरे में।

* मूल में—अभिषिक्त का मुख न फेर दे।

१३ क्योंकि यहोवा ने सिय्योन को अपनाया है,
और उसे अपने निवास के लिये चाहा है ।।
१४ यह तो युग युग के लिये मेरा विश्राम-स्थान है;
यहीं मैं रहूंगा, क्योंकि मैं ने इसको चाहा है ।
१५ मैं इस में की भोजनवस्तुओं पर अति आशीष दूंगा;
और इसके दरिद्रों को रोटी से तृप्त करूंगा ।
१६ इसके याजकों को मैं उद्धार का वस्त्र पहिनाऊंगा,
और इसके भक्त लोग ऊंचे स्वर से जयजयकार करेंगे ।
१७ वहां मैं दाऊद के एक सींग उगाऊंगा;
मैं ने अपने अभिषिक्त के लिये एक दीपक तैयार कर रखा है ।
१८ मैं उसके शत्रुओं को तो लज्जा का वस्त्र पहिनाऊंगा,
परन्तु उसी के सिर पर उसका मुकुट शोभायमान रहेगा ।।

(यात्रा का गीत । दाऊद का)

१३३

देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है
कि भाई लोग आपस में मिले रहें !
२ यह तो उस उत्तम तेल के समान है,
जो हारून के सिर पर डाला गया था,
और उसकी दाढ़ी पर बहकर,
उसके वस्त्र की छोर तक पहुंच गया ।
३ वा हेर्मोन् की उस ओस के समान है,
जो सिय्योन के पहाड़ों पर गिरती है !
यहोवा ने तो वहीं
सदा के जीवन की आशीष ठहराई है ।।

(यात्रा का गीत)

१३४

हे यहोवा के सब सेवको, सुनो,
तुम जो रात रात को यहोवा के भवन में खड़े रहते हो,
यहोवा को धन्य कहो !
२ अपने हाथ पवित्रस्थान में उठाकर,
यहोवा को धन्य कहो ।
३ यहोवा जो आकाश और पृथ्वी का कर्त्ता है,
वह सिय्योन में से तुझे आशीष देवे ।।

१३५

याह की स्तुति करो *,
यहोवा के नाम की स्तुति करो,
हे यहोवा के सेवको तुम स्तुति करो,
२ तुम जो यहोवा के भवन में,
अर्थात् हमारे परमेश्वर के भवन के आंगनों में खड़े रहते हो !
३ याह की स्तुति करो *, क्योंकि यहोवा भला है;
उसके नाम का भजन गाओ, क्योंकि यह मनभाऊ है !
४ याह ने तो याकूब को अपने लिये चुना है,
अर्थात् इस्राएल को अपना निज धन होने के लिये चुन लिया है ।।
५ मैं तो जानता हूं कि हमारा प्रभु यहोवा सब देवताओं से महान है ।
६ जो कुछ यहोवा ने चाहा
उसे उस ने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और सब गहिरे स्थानों में किया है ।
७ वह पृथ्वी की छोर से कुहरे उठाता है,
और वर्षा के लिये बिजली बनाता है,

---

* मूल में—हल्लिलूयाह ।

और पवन को अपने भण्डार में से
निकालता है ॥
८ उस ने मिस्र में क्या मनुष्य क्या पशु,
सब के पहिलौठों को मार डाला !
९ हे मिस्र, उस ने तेरे बीच में
फिरौन और उसके सब कर्मचारियों
के बीच चिन्ह और चमत्कार
किए * ।
१० उस ने बहुत सी जातियां नाश कीं,
और सामर्थी राजाओं को,
११ अर्थात् एमोरियों के राजा सीहोन को,
और बाशान के राजा ओग को,
और कनान के सब राजाओं को घात
किया ;
१२ और उनके देश को बांटकर,
अपनी प्रजा इस्राएल के भाग होने के
लिये दे दिया ॥
१३ हे यहोवा, तेरा नाम सदा स्थिर है,
हे यहोवा जिस नाम से तेरा स्मरण
होता है, वह पीढ़ी-पीढ़ी बना रहेगा ।
१४ यहोवा तो अपनी प्रजा का न्याय
चुकाएगा,
और अपने दासों की दुर्दशा देखकर
तरस खाएगा ॥
१५ अन्यजातियों की मूरतें सोना-चान्दी
ही हैं,
वे मनुष्यों की बनाई हुई हैं ।
१६ उनके मुंह तो रहता है, परन्तु वे बोल
नहीं सकतीं,
उनके आंखें तो रहती हैं, परन्तु वे
देख नहीं सकतीं,
१७ उनके कान तो रहते हैं, परन्तु वे सुन
नहीं सकतीं,
न उनके कुछ भी सांस चलती है ।

* मूल में—भेजे ।

१८ जैसी वे हैं वैसे ही उनके बनानेवाले
भी हैं ;
और उन पर सब भरोसा रखनेवाले
भी वैसे ही हो जाएंगे !
१९ हे इस्राएल के घराने यहोवा को धन्य
कह !
हे हारून के घराने यहोवा को धन्य
कह !
२० हे लेवी के घराने यहोवा को धन्य
कह !
हे यहोवा के डरवैयो यहोवा को धन्य
कहो !
२१ यहोवा जो यरूशलेम में वास करता
है,
उसे सिय्योन में धन्य कहा जावे !
याह की स्तुति करो * !

१३६

यहोवा का धन्यवाद करो,
क्योंकि वह भला है,
और उसकी करुणा सदा की है ।
२ जो ईश्वरों का परमेश्वर है, उसका
धन्यवाद करो,
उसकी करुणा सदा की है ।
३ जो प्रभुओं का प्रभु है, उसका धन्य-
वाद करो,
उसकी करुणा सदा की है ॥
४ उसको छोड़कर कोई बड़े बड़े आश्चर्य-
कर्म नहीं करता,
उसकी करुणा सदा की है ।
५ उस ने अपनी बुद्धि से आकाश
बनाया,
उसकी करुणा सदा की है ।
६ उस ने पृथ्वी को जल के ऊपर
फैलाया है,
उसकी करुणा सदा की है ।

* मूल में—हल्लिलूयाह ।

७ उस ने बड़ी बड़ी ज्योतियां बनाईं,
उसकी करुणा सदा की है।
८ दिन पर प्रभुता करने के लिये सूर्य को बनाया,
उसकी करुणा सदा की है।
९ और रात पर प्रभुता करने के लिये चन्द्रमा और तारागण को बनाया,
उसकी करुणा सदा की है।
१० उस ने मिस्रियों के पहिलौठों को मारा,
उसकी करुणा सदा की है।
११ और उनके बीच से इस्राएलियों को निकाला,
उसकी करुणा सदा की है।
१२ बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से निकाल लाया,
उसकी करुणा सदा की है।
१३ उस ने लाल समुद्र को खण्ड खण्ड कर दिया,
उसकी करुणा सदा की है।
१४ और इस्राएल को उसके बीच से पार कर दिया,
उसकी करुणा सदा की है।
१५ और फ़िरौन को सेना समेत लाल समुद्र में डाल दिया,
उसकी करुणा सदा की है।
१६ वह अपनी प्रजा को जंगल में ले चला,
उसकी करुणा सदा की है।
१७ उस ने बड़े बड़े राजा मारे,
उसकी करुणा सदा की है।
१८ उस ने प्रतापी राजाओं को भी मारा,
उसकी करुणा सदा की है,
१९ एमोरियों के राजा सीहोन को,
उसकी करुणा सदा की है;
२० और बाशान के राजा ओग को घात किया,
उसकी करुणा सदा की है।
२१ और उनके देश को भाग होने के लिये,
उसकी करुणा सदा की है;
२२ अपने दास इस्राएलियों के भाग होने के लिये दे दिया,
उसकी करुणा सदा की है।।
२३ उस ने हमारी दुर्दशा में हमारी सुधि ली,
उसकी करुणा सदा की है;
२४ और हम को द्रोहियों से छुड़ाया है,
उसकी करुणा सदा की है।
२५ वह सब प्राणियों को आहार देता है,
उसकी करुणा सदा की है।।
२६ स्वर्ग के परमेश्वर का धन्यवाद करो,
उसकी करुणा सदा की है।।

१३७ बाबुल की नहरों के किनारे हम लोग बैठ गए,
और सिय्योन को स्मरण करके रो पड़े।
२ उसके बीच के मजनू वृक्षों पर
हम ने अपनी वीणाओं को टांग दिया;
३ क्योंकि जो हम को बन्धुए करके ले गए थे, उन्होंने वहां हम से गीत * गवाना चाहा,
और हमारे रुलानेवालों ने हम से आनन्द चाहकर कहा,
सिय्योन के गीतों में से हमारे लिये कोई गीत गाओ!
४ हम यहोवा के गीत को,
पराए देश में क्योंकर गाएं?
५ हे यरूशलेम, यदि मैं तुझे भूल जाऊं,
तो मेरा दहिना हाथ भूठा हो जाए † !

---

* मूल में—गीत के वचन।
† मूल में—भूल जाए।

६ यदि मैं तुझे स्मरण न रखूं,
यदि मैं यरूशलेम को,
अपने सब आनन्द से श्रेष्ठ न जानूं,
तो मेरी जीभ तालू से चिपट जाए !
७ हे यहोवा, यरूशलेम के दिन को एदोमियों के विरुद्ध स्मरण कर,
कि वे क्योंकर कहते थे, ढाओ !
उसको नेव से ढा दो !
८ हे बाबुल * तू जो उजड़नेवाली है,
क्या ही धन्य वह होगा, जो तुझ से ऐसा ही बर्ताव करेगा
जैसा तू ने हम से किया है !
९ क्या ही धन्य वह होगा, जो तेरे बच्चों को पकड़कर,
चट्टान पर पटक देगा !

(दाऊद का भजन)

१३८ मैं पूरे मन से तेरा धन्यवाद करूंगा;
देवताओं के साम्हने भी मैं तेरा भजन गाऊंगा।
२ मैं तेरे पवित्र मन्दिर की ओर दण्डवत् करूंगा,
और तेरी करुणा और सच्चाई के कारण तेरे नाम का धन्यवाद करूंगा;
क्योंकि तू ने अपने वचन को अपने बड़े नाम से अधिक महत्व दिया है।
३ जिस दिन मैं ने पुकारा, उसी दिन तू ने मेरी सुन ली, और मुझ में बल देकर हियाव बन्धाया ।।
४ हे यहोवा, पृथ्वी के सब राजा तेरा धन्यवाद करेंगे, क्योंकि उन्होंने तेरे वचन सुने हैं;
५ और वे यहोवा की गति के विषय में गाएंगे,
क्योंकि यहोवा की महिमा बड़ी है।
६ यद्यपि यहोवा महान है, तौभी वह नम्र मनुष्य की ओर दृष्टि करता है;
परन्तु अहंकारी को दूर ही से पहिचानता है ।।
७ चाहे मैं संकट के बीच में रहूं * तौभी तू मुझे जिलाएगा,
तू मेरे क्रोधित शत्रुओं के विरुद्ध हाथ बढ़ाएगा,
और अपने दहिने हाथ से मेरा उद्धार करेगा।
८ यहोवा मेरे लिये सब कुछ पूरा करेगा;
हे यहोवा, तेरी करुणा सदा की है।
तू अपने हाथों के कार्यों को त्याग न दे ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन)

१३९ हे यहोवा, तू ने मुझे जांचकर जान लिया है ।।
२ तू मेरा उठना बैठना जानता है;
और मेरे विचारों को दूर ही से समझ लेता है।
३ मेरे चलने और लेटने की तू भलीभांति छानबीन करता है,
और मेरी पूरी चालचलन का भेद जानता है।
४ हे यहोवा, मेरे मुंह में ऐसी कोई बात नहीं
जिसे तू पूरी रीति से न जानता हो।

* मूल में—हे बाबुल की बेटी।

* मूल में—चलूं।

५ तू ने मुझे आगे पीछे घेर रखा है,
और अपना हाथ मुझ पर रखे रहता है।
६ यह ज्ञान मेरे लिये बहुत कठिन है;
यह गम्भीर * और मेरी समझ से बाहर है॥
७ मैं तेरे आत्मा से भागकर किधर जाऊं?
वा तेरे साम्हने से किधर भागूं?
८ यदि मैं आकाश पर चढ़ूं, तो तू वहां है!
यदि मैं अपना बिछौना अधोलोक में बिछाऊं तो वहां भी तू है!
९ यदि मैं भोर की किरणों पर चढ़कर †
समुद्र के पार जा बसूं ‡,
१० तो वहां भी तू अपने हाथ से मेरी अगुवाई करेगा,
और अपने दहिने हाथ से मुझे पकड़े रहेगा।
११ यदि मैं कहूं कि अन्धकार में तो मैं छिप जाऊंगा,
और मेरे चारों ओर का उजियाला रात का अन्धेरा हो जाएगा,
१२ तौभी अन्धकार तुझ से न छिपाएगा,
रात तो दिन के तुल्य प्रकाश देगी;
क्योंकि तेरे लिये अन्धियारा और उजियाला दोनों एक समान हैं॥
१३ मेरे मन का स्वामी तो तू है;
तू ने मुझे माता के गर्भ में रचा।
१४ मैं तेरा धन्यवाद करूंगा, इसलिये कि मैं भयानक और अद्भुत रीति से रचा गया हूं।
तेरे काम तो आश्चर्य के हैं,
और मैं इसे भली भांति जानता हूं।
१५ जब मैं गुप्त में बनाया जाता,
और पृथ्वी के नीचे स्थानों में रचा जाता था,
तब मेरी हड्डियां तुझ से छिपी न थीं।
१६ तेरी आंखों ने मेरे बेडौल तत्व को देखा;
और मेरे सब अंग जो दिन दिन बनते जाते थे
वे रचे जाने से पहिले
तेरी पुस्तक में लिखे हुए थे।
१७ और मेरे लिये तो हे ईश्वर, तेरे विचार क्या ही बहुमूल्य हैं!
उनकी संख्या का जोड़ कैसा बड़ा है!
१८ यदि मैं उनको गिनता तो वे बालू के किनकों से भी अधिक ठहरते।
जब मैं जाग उठता हूं, तब भी तेरे संग रहता हूं॥
१९ हे ईश्वर निश्चय तू दुष्ट को घात करेगा!
हे हत्यारो, मुझ से दूर हो जाओ!
२० क्योंकि वे तेरी चर्चा चतुराई से करते हैं;
तेरे द्रोही तेरा नाम झूठी बात पर लेते हैं।
२१ हे यहोवा, क्या मैं तेरे बैरियों से बैर न रखूं,
और तेरे विरोधियों से रूठ न जाऊं?
२२ हां, मैं उन से पूर्ण बैर रखता हूं;
मैं उनको अपना शत्रु समझता हूं।
२३ हे ईश्वर, मुझे जांचकर जान ले!
मुझे परखकर मेरी चिन्ताओं को जान ले!

---

* मूल में—ऊंचे पर।
† मूल में—के पंख उठाकर।
‡ मूल में—पिछले भाग में बसूं।

२४ और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल है कि नहीं,
और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई कर!

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन)

१४० हे यहोवा, मुझ को बुरे मनुष्य से बचा ले;
उपद्रवी पुरुष से मेरी रक्षा कर,
२ क्योंकि उन्हों ने मन में बुरी कल्पनाएं की हैं;
वे लगातार लड़ाइयां मचाते हैं।
३ उनका बोलना सांप का काटना सा है*,
उनके मुंह में† नाग का सा विष रहता है।। (सेला)
४ हे यहोवा, मुझे दुष्ट के हाथों से बचा ले;
उपद्रवी पुरुष से मेरी रक्षा कर,
क्योंकि उन्हों ने मेरे पैरों के उखाड़ने की युक्ति की है।
५ घमण्डियों ने मेरे लिये फन्दा और पासे लगाए,
और पथ के किनारे जाल बिछाया है;
उन्हों ने मेरे लिये फन्दे लगा रखे हैं।। सेला।
६ हे यहोवा, मैं ने तुझ से कहा है कि तू मेरा ईश्वर है;
हे यहोवा, मेरे गिड़गिड़ाने की ओर कान लगा!
७ हे यहोवा प्रभु, हे मेरे सामर्थी उद्धार-कर्त्ता‡,
तू ने युद्ध के दिन मेरे सिर की रक्षा की है।
८ हे यहोवा दुष्ट की इच्छा को पूरी न होने दे,
उसकी बुरी युक्ति को सफल न कर,
नहीं तो वह घमण्ड करेगा।। सेला
९ मेरे घेरनेवालों के सिर पर
उन्हीं का विचारा हुआ उत्पात* पड़े!
१० उन पर अंगारे डाले जाएं!
वे आग में गिरा दिए जाएं!
और ऐसे गड़हों में गिरें, कि वे फिर उठ न सकें!
११ बकवादी पृथ्वी पर स्थिर नहीं होने का;
उपद्रवी पुरुष को गिराने के लिये बुराई उसका पीछा करेगी।।
१२ हे यहोवा, मुझे निश्चय है कि तू दीन जन का
और दरिद्रों का न्याय चुकाएगा।
१३ निःसन्देह धर्मी तेरे नाम का धन्यवाद करने पाएंगे;
सीधे लोग तेरे सम्मुख वास करेंगे।।

(दाऊद का भजन)

१४१ हे यहोवा, मैं ने तुझे पुकारा है; मेरे लिये फुर्ती कर!
जब मैं तुझ को पुकारूं, तब मेरी ओर कान लगा!
२ मेरी प्रार्थना तेरे साम्हने सुगन्ध धूप,
और मेरा हाथ फैलाना, संध्याकाल का अन्नबलि ठहरे!
३ हे यहोवा, मेरे मुख पर पहरा बैठा,
मेरे होंठों के द्वार की रखवाली कर!

* मूल में—उन्हों ने सांपों की नाईं अपनी जीभ को तेज़ किया है।
† मूल में—होठों के नीचे।
‡ मूल में—हे मेरे उद्धार के बल।

* मूल में—उन्हीं के होठों का उत्पात।

४ मेरा मन किसी बुरी बात की ओर
फिरने न दे;
मैं अनर्थकारी पुरुषों के संग,
दुष्ट कामों में न लगूं,
और मैं उनके स्वादिष्ट भोजनवस्तुओं
में से कुछ न खाऊं!
५ धर्मी मुझ को मारे तो यह कृपा
मानी जाएगी,
और वह मुझे ताड़ना दे, तो यह मेरे
सिर पर का तेल ठहरेगा;
मेरा सिर उस से इन्कार न करेगा।
लोगों के बुरे काम करने पर भी मैं
प्रार्थना में लवलीन रहूंगा।
६ जब उनके न्यायी चट्टान के पास
गिराए गए,
तब उन्हों ने मेरे वचन सुन लिए;
क्योंकि वे मधुर हैं।
७ जैसे भूमि में हल चलने से ढेले फूटते हैं,
वैसे ही हमारी हड्डियां अधोलोक के
मुंह पर छितराई हुई हैं॥
८ परन्तु हे यहोवा प्रभु, मेरी आंखें तेरी
ही ओर लगी हैं; मैं तेरा शरणागत
हूं; तू मेरे प्राण जाने न दे!
९ मुझे उस फन्दे से, जो उन्हों ने मेरे
लिये लगाया है,
और अनर्थकारियों के जाल से मेरी
रक्षा कर!
१० दुष्ट लोग अपने जालों में आप ही फंसें,
और मैं बच निकलूं॥

(दाऊद का मश्कील, जब वह गुफा में था। प्रार्थना)

१४२ मैं यहोवा की दोहाई देता,
मैं यहोवा से गिड़गिड़ाता हूं,
२ मैं अपने शोक की बातें उस से
खोलकर कहता *,
में अपना संकट उसके आगे प्रगट
करता हूं।
३ जब मेरी आत्मा मेरे भीतर से व्याकुल
हो रही थी, तब तू मेरी दशा * को
जानता था!
जिस रास्ते से मैं जानेवाला था, उसी
में उन्हों ने मेरे लिये फन्दा लगाया।
४ मैं ने दहिनी ओर देखा, परन्तु कोई
मुझे नहीं देखता है।
मेरे लिये शरण कहीं नहीं रही, न
मुझ को कोई पूछता है॥
५ हे यहोवा, मैं ने तेरी दोहाई दी है;
मैं ने कहा, तू मेरा शरणस्थान है,
मेरे जीते जी तू मेरा भाग है।
६ मेरी चिल्लाहट को ध्यान देकर सुन,
क्योंकि मेरी बड़ी दुर्दशा हो गई है!
जो मेरे पीछे पड़े हैं, उन से मुझे बचा
ले; क्योंकि वे मुझ से अधिक
सामर्थी हैं।
७ मुझ को बन्दीगृह से निकाल कि मैं
तेरे नाम का धन्यवाद करूं!
धर्मी लोग मेरे चारों ओर आएंगे;
क्योंकि तू मेरा उपकार करेगा॥

(दाऊद का भजन)

१४३ हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन;
मेरे गिड़गिड़ाने की ओर
कान लगा!
तू जो सच्चा और धर्मी है, सो †
मेरी सुन ले,
२ और अपने दास से मुक़द्दमा न चला!
क्योंकि कोई प्राणी तेरी दृष्टि में
निर्दोष नहीं ठहर सकता॥

* मूल में—उसके साम्हने उण्डेलूंगा।

* मूल में—मेरा पथ।
† मूल में—अपनी सच्चाई और धार्मिकता से।

३ शत्रु तो मेरे प्राण का गाहक हुआ है;
उस ने मुझे चूर करके मिट्टी में मिलाया है,
और मुझे बहुत दिन के मरे हुओं के समान अन्धेरे स्थान में डाल दिया है।
४ मेरी आत्मा भीतर से व्याकुल हो रही है
मेरा मन विकल है॥
५ मुझे प्राचीनकाल के दिन स्मरण आते हैं,
मैं तेरे सब अद्भुत कामों पर ध्यान करता हूं,
और तेरे काम को सोचता हूं।
६ मैं तेरी ओर अपने हाथ फैलाए हुए हूं;
सूखी भूमि की नाईं मैं तेरा प्यासा हूं॥
(सेला)
७ हे यहोवा, फुर्ती करके मेरी सुन ले;
क्योंकि मेरे प्राण निकलने ही पर हैं*!
मुझ से अपना मुंह न छिपा,
ऐसा न हो कि मैं कबर में पड़े हुओं के समान हो जाऊं।
८ अपनी करुणा की बात मुझे शीघ्र सुना,
क्योंकि मैं ने तुझी पर भरोसा रखा है।
जिस मार्ग से मुझे चलना है, वह मुझ को बता दे,
क्योंकि मैं अपना मन तेरी ही ओर लगाता† हूं॥

* मूल में—मेरी आत्मा मिट गई।
† मूल में—उठाता।

९ हे यहोवा, मुझे शत्रुओं से बचा ले;
मैं तेरी ही आड़ में आ छिपा हूं!
१० मुझ को यह सिखा, कि मैं तेरी इच्छा क्योंकर पूरी करूं, क्योंकि मेरा परमेश्वर तू ही है!
तेरा भला आत्मा मुझ को धर्म के मार्ग में ले चले!
११ हे यहोवा, मुझे अपने नाम के निमित्त जिला!
तू जो धर्मी है*, मुझ को संकट से छुड़ा ले!
१२ और करुणा करके मेरे शत्रुओं को सत्यानाश कर,
और मेरे सब सतानेवालों का नाश कर डाल,
क्योंकि मैं तेरा दास हूं॥

(दाऊद का भजन)

१४४

धन्य है यहोवा, जो मेरी चट्टान है,
वह मेरे हाथों को लड़ने,
और† युद्ध करने के लिये तैयार करता है।
२ वह मेरे लिये करुणानिधान और गढ़,
ऊंचा स्थान और छुड़ानेवाला है,
वह मेरी ढाल और शरणस्थान है,
जो मेरी प्रजा को मेरे वश में कर देता है॥
३ हे यहोवा, मनुष्य क्या है कि तू उसकी सुधि लेता है,
या, आदमी क्या है, कि तू उसकी कुछ चिन्ता करता है?
४ मनुष्य तो सांस के समान है;

* मूल में—अपनी धार्मिकता से।
† मूल में—अंगुलियों से।

उसके दिन ढलती हुई छाया के समान हैं ।।
५ हे यहोवा, अपने स्वर्ग को नीचा करके उतर आ !
पहाड़ों को छू, तब उन से धूंआं उठेगा !
६ बिजली कड़काकर उनको तितर बितर कर दे,
अपने तीर चलाकर उनको घबरा दे !
७ अपने हाथ ऊपर से बढ़ाकर
मुझे महासागर से उबार,
अर्थात् परदेशियों के वश से छुड़ा ।
८ उनके मुंह से तो व्यर्थ बातें निकलती हैं,
और उनके दहिने हाथ से धोखे के काम होते हैं * ।।
९ हे परमेश्वर, मैं तेरी स्तुति का नया गीत गाऊंगा;
मैं दस तारवाली सारंगी बजाकर तेरा भजन गाऊंगा ।
१० तू राजाओं का उद्धार करता है,
और अपने दास दाऊद को तलवार की मार से बचाता है ।
११ तू मुझ को उबार और परदेशियों के वश से छुड़ा ले, जिन के मुंह से व्यर्थ बातें निकलती हैं,
और जिनका दहिना हाथ झूठ का दहिना हाथ है ।।
१२ जब हमारे बेटे जवानी के समय पौधों की नाईं बढ़े हुए हों,
और हमारी बेटियां उन कोनेवाले पत्थरों के समान हों, जो मन्दिर के पत्थरों की नाईं बनाए जाएं;
१३ जब हमारे खत्ते भरे रहें, और उन में भांति भांति का अन्न धरा जाए,
और हमारी भेड़-बकरियां हमारे मैदानों में हजारों हजार बच्चे जनें;
१४ जब हमारे बैल खूब लदे हुए हों;
जब हमें न विघ्न हो और न हमारा कहीं जाना हो,
और न हमारे चौकों में रोना-पीटना हो,
१५ तो इस दशा में जो राज्य हो वह क्या ही धन्य होगा ! जिस राज्य का परमेश्वर यहोवा है, वह क्या ही धन्य है !

(स्तुति । दाऊद का भजन)

१४५ हे मेरे परमेश्वर, हे राजा, मैं तुझे सराहूंगा,
और तेरे नाम को सदा सर्वदा धन्य कहता रहूंगा ।
२ प्रति दिन मैं तुझ को धन्य कहा करूंगा,
और तेरे नाम की स्तुति सदा सर्वदा करता रहूंगा ।
३ यहोवा महान और अति स्तुति के योग्य है,
और उसकी बड़ाई अगम है ।।
४ तेरे कामों की प्रशंसा और तेरे पराक्रम के कामों का वर्णन,
पीढ़ी पीढ़ी होता चला जाएगा ।
५ मैं तेरे ऐश्वर्य की महिमा के प्रताप पर
और तेरे भांति भांति के आश्चर्यकर्मों पर ध्यान करूंगा ।
६ लोग तेरे भयानक कामों की शक्ति की चर्चा करेंगे,

---

* मूल में—उनका दहिना हाथ झूठ का दहिना हाथ है ।

और मैं तेरे बड़े बड़े कामों का वर्णन करूंगा।
७ लोग तेरी बड़ी भलाई का स्मरण करके उसकी चर्चा करेंगे,
और तेरे धर्म का जयजयकार करेंगे॥
८ यहोवा अनुग्रहकारी और दयालु,
विलम्ब से क्रोध करनेवाला और अति करुणामय है।
९ यहोवा सभों के लिये भला है,
और उसकी दया उसकी सारी सृष्टि पर है॥
१० हे यहोवा, तेरी सारी सृष्टि तेरा धन्यवाद करेगी,
और तेरे भक्त लोग तुझे धन्य कहा करेंगे!
११ वे तेरे राज्य की महिमा की चर्चा करेंगे,
और तेरे पराक्रम के विषय में बातें करेंगे;
१२ कि वे आदमियों पर तेरे पराक्रम के काम
और तेरे राज्य के प्रताप की महिमा प्रगट करें।
१३ तेरा राज्य युग युग का
और तेरी प्रभुता सब पीढ़ियों तक बनी रहेगी॥
१४ यहोवा सब गिरते हुओं को संभालता है,
और सब झुके हुओं को सीधा खड़ा करता है।
१५ सभों की आंखें तेरी ओर लगी रहती हैं,
और तू उनको आहार समय पर देता है।
१६ तू अपनी मुट्ठी खोलकर,
सब प्राणियों को आहार से तृप्त करता है।
१७ यहोवा अपनी सब गति में धर्मी
और अपने सब कामों में करुणामय है।
१८ जितने यहोवा को पुकारते हैं, अर्थात् जितने उसको सच्चाई से पुकारते हैं,
उन सभों के वह निकट रहता है।
१९ वह अपने डरवैयों की इच्छा पूरी करता है,
और उनकी दोहाई सुनकर उनका उद्धार करता है।
२० यहोवा अपने सब प्रेमियों की तो रक्षा करता,
परन्तु सब दुष्टों को सत्यानाश करता है॥
२१ मैं यहोवा की स्तुति करूंगा,
और सारे प्राणी उसके पवित्र नाम को सदा सर्वदा धन्य कहते रहें॥

१४६

याह की स्तुति करो*!
हे मेरे मन यहोवा की स्तुति कर!
२ मैं जीवन भर यहोवा की स्तुति करता रहूंगा;
जब तक मैं बना रहूंगा, तब तक मैं अपने परमेश्वर का भजन गाता रहूंगा॥
३ तुम प्रधानों पर भरोसा न रखना,
न किसी आदमी पर, क्योंकि उस में उद्धार करने की भी शक्ति नहीं।
४ उसका भी प्राण निकलेगा, वह भी मिट्टी में मिल जाएगा;

* मूल में—हल्लिलूयाह।

उसी दिन उसकी सब कल्पनाएं नाश
हो जाएंगी ॥
५ क्या ही धन्य वह है, जिसका सहायक
याकूब का ईश्वर है,
और जिसका भरोसा अपने परमेश्वर
यहोवा पर है।
६ वह आकाश और पृथ्वी और समुद्र
और उन में जो कुछ है, सब का
कर्त्ता है;
और वह अपना वचन सदा के लिये
पूरा करता रहेगा।
७ वह पिसे हुओं का न्याय चुकाता है;
और भूखों को रोटी देता है ॥
यहोवा बन्धुओं को छुड़ाता है;
८ यहोवा अन्धों को आंखें देता है।
यहोवा झुके हुओं को सीधा खड़ा
करता है;
यहोवा धर्मियों से प्रेम रखता है।
९ यहोवा परदेशियों की रक्षा करता
है;
और अनाथों और विधवा को तो
सम्भालता है;
परन्तु दुष्टों के मार्ग को टेढ़ा मेढ़ा
करता है ॥
१० हे सिय्योन, यहोवा सदा के लिये,
तेरा परमेश्वर पीढ़ी पीढ़ी राज्य करता
रहेगा।
याह की स्तुति करो*!

१४७

याह की स्तुति करो*!
क्योंकि अपने परमेश्वर का
भजन गाना अच्छा है; क्योंकि
वह मनभावना है, उसकी स्तुति करनी
मनभावनी है।
२ यहोवा यरूशलेम को बसा रहा है;
वह निकाले हुए इस्राएलियों को इकट्ठा
कर रहा है।
३ वह खेदित मनवालों को चंगा करता
है,
और उनके शोक पर मरहम-पट्टी
बान्धता है।
४ वह तारों को गिनता,
और उन में से एक एक का नाम
रखता है।
५ हमारा प्रभु महान और अति सामर्थी
है;
उसकी बुद्धि अपरम्पार है।
६ यहोवा नम्र लोगों को सम्भालता है,
और दुष्टों को भूमि पर गिरा देता
है ॥
७ धन्यवाद करते हुए यहोवा का गीत
गाओ;
वीणा बजाते हुए हमारे परमेश्वर का
भजन गाओ।
८ वह आकाश को मेघों से छा देता है,
और पृथ्वी के लिये मेंह की तैयारी
करता है,
और पहाड़ों पर घास उगाता है।
९ वह पशुओं को और कौवे के बच्चों को
जो पुकारते हैं,
आहार देता है।
१० न तो वह घोड़े के बल को चाहता है,
और न पुरुष के पैरों से प्रसन्न होता है;
११ यहोवा अपने डरवैयों ही से प्रसन्न
होता है,
अर्थात् उन से जो उसकी करुणा की
आशा लगाए रहते हैं ॥
१२ हे यरूशलेम, यहोवा की प्रशंसा कर!
हे सिय्योन, अपने परमेश्वर की स्तुति
कर!

* मूल में—हल्लिलूयाह।

१३ क्योंकि उस ने तेरे फाटकों के खम्भों को दृढ़ किया है;
और तेरे लड़के बालों को * आशीष दी है।
१४ वह तेरे सिवानों में शान्ति देता है,
और तुझ को उत्तम से उत्तम गेहूं से तृप्त करता है।
१५ वह पृथ्वी पर अपनी आज्ञा का प्रचार करता है,
उसका वचन अति वेग से दौड़ता है।
१६ वह ऊन के समान हिम को गिराता है,
और राख की नाई पाला बिखेरता है।
१७ वह बर्फ के टुकड़े गिराता है,
उसकी की हुई ठण्ड को कौन सह सकता है?
१८ वह आज्ञा देकर उन्हें गलाता है;
वह वायु बहाता है, तब जल बहने लगता है।
१९ वह याकूब को अपना वचन, और इस्राएल को अपनी विधियां और नियम बताता है।
२० किसी और जाति से उस ने ऐसा बर्ताव नहीं किया;
और उसके नियमों को औरों ने नहीं जाना।।
याह की स्तुति करो † !

१४८

याह की स्तुति करो † !
यहोवा की स्तुति स्वर्ग में से करो,
उसकी स्तुति ऊंचे स्थानों में करो!
२ हे उसके सब दूतो, उसकी स्तुति करो:
हे उसकी सब सेना उसकी स्तुति कर!
३ हे सूर्य और चन्द्रमा उसकी स्तुति करो,
हे सब ज्योतिमय तारागण उसकी स्तुति करो!
४ हे सब से ऊंचे आकाश,
और हे आकाश के ऊपरवाले जल, तुम दोनों उसकी स्तुति करो!
५ वे यहोवा के नाम की स्तुति करें,
क्योंकि उसी ने आज्ञा दी और ये सिरजे गए।
६ और उस ने उनको सदा सर्वदा के लिये स्थिर किया है;
और ऐसी विधि ठहराई है, जो टलने की नहीं।।
७ पृथ्वी में से यहोवा की स्तुति करो,
हे मगरमच्छो और गहिरे सागर,
८ हे अग्नि और ओलो, हे हिम और कुहरे,
हे उसका वचन माननेवाली प्रचण्ड बयार!
९ हे पहाड़ो और सब टीलो,
हे फलदाई वृक्षो और सब देवदारो!
१० हे वन-पशुओ और सब घरेलू पशुओ,
हे रेंगनेवाले जन्तुओ और हे पक्षियो!
११ हे पृथ्वी के राजाओ, और राज्य राज्य के सब लोगो,
हे हाकिमो और पृथ्वी के सब न्यायियो!
१२ हे जवानो और कुमारियो,
हे पुरनियो और बालको!
१३ यहोवा के नाम की स्तुति करो *,
क्योंकि केवल उसी का नाम महान है;
उसका ऐश्वर्य पृथ्वी और आकाश के ऊपर है।
१४ और उस ने अपनी प्रजा के लिये एक सींग ऊंचा किया है;

* मूल में—तेरे भीतर तेरे लड़कों को।
† मूल में—हल्लिलूयाह।

* मूल में—हल्लिलूयाह।

यह उसके सब भक्तों के लिये
अर्थात् इस्राएलियों के * लिये और उसके समीप रहनेवाली प्रजा के लिये स्तुति करने का विषय है।
याह की स्तुति करो † !

१४९ याह की स्तुति करो † !
यहोवा के लिये नया गीत गाओ,
भक्तों की सभा में उसकी स्तुति गाओ !
२ इस्राएल अपने कर्त्ता के कारण आनन्दित हो,
सिय्योन के निवासी अपने राजा के कारण मगन हों !
३ वे नाचते हुए उसके नाम की स्तुति करें,
और डफ और वीणा बजाते हुए उसका भजन गाएं !
४ क्योंकि यहोवा अपनी प्रजा से प्रसन्न रहता है;
वह नम्र लोगों का उद्धार करके उन्हें शोभायमान करेगा।
५ भक्त लोग महिमा के कारण प्रफुल्लित हों;
और अपने बिछौनों पर भी पड़े पड़े जयजयकार करें।
६ उनके कण्ठ से ईश्वर की प्रशंसा हो,
और उनके हाथों में दोधारी तलवारें रहें,
७ कि वे अन्यजातियों से पलटा ले सकें,
और राज्य राज्य के लोगों को ताड़ना दें,

* मूल में—करें।
† मूल में—हल्लिलूयाह।

८ और उनके राजाओं को सांकलों से,
और उनके प्रतिष्ठित पुरुषों को लोहे की बेड़ियों से जकड़ रखें,
६ और उनको ठहराया हुआ * दण्ड दें!
उसके सब भक्तों की ऐसी ही प्रतिष्ठा होगी।
याह की स्तुति करो † !

१५० याह की स्तुति करो † !
ईश्वर के पवित्रस्थान में उसकी स्तुति करो;
उसकी सामर्थ्य से भरे हुए आकाशमण्डल में उसी की स्तुति करो !
२ उसके पराक्रम के कामों के कारण उसकी स्तुति करो;
उसकी अत्यन्त बड़ाई के अनुसार उसकी स्तुति करो !
३ नरसिंगा फूंकते हुए उसकी स्तुति करो;
सारंगी और वीणा बजाते हुए उसकी स्तुति करो !
४ डफ बजाते और नाचते हुए उसकी स्तुति करो;
तारवाले बाजे और बांसुली बजाते हुए उसकी स्तुति करो !
५ ऊंचे शब्दवाली झांझ बजाते हुए उसकी स्तुति करो;
आनन्द के महाशब्दवाली झांझ बजाते हुए उसकी स्तुति करो !
६ जितने प्राणी हैं
सब के सब याह की स्तुति करें !
याह की स्तुति करो † !

* मूल में—लिखा हुआ।
† मूल में—हल्लिलूयाह।

नीतिवचन

१ दाऊद के पुत्र इस्राएल के राजा सुलैमान के नीतिवचन :
२ इनके द्वारा पढ़नेवाला बुद्धि और शिक्षा प्राप्त करे,
और समझ की बातें समझे,
३ और काम करने में प्रवीणता,
और धर्म, न्याय और सीधाई की शिक्षा पाए;
४ कि भोलों को चतुराई,
और जवान को ज्ञान और विवेक मिले;
५ कि बुद्धिमान सुनकर अपनी विद्या बढ़ाए,
और समझदार बुद्धि का उपदेश पाए,
६ जिस से वे नीतिवचन और दृष्टान्त को,
और बुद्धिमानों के वचन और उनके रहस्यों को समझें ।।
७ यहोवा का भय मानना बुद्धि का मूल है;
बुद्धि और शिक्षा को मूढ़ ही लोग तुच्छ जानते हैं ।।
८ हे मेरे पुत्र, अपने पिता की शिक्षा पर कान लगा,
और अपनी माता की शिक्षा को न तज;
९ क्योंकि वे मानो तेरे सिर के लिये शोभायमान मुकुट,
और तेरे गले के लिये कन्ठ माला होगी ।
१० हे मेरे पुत्र, यदि पापी लोग तुझे फुसलाएं,
तो उनकी बात न मानना ।
११ यदि वे कहें, हमारे संग चल, कि
हम हत्या करने के लिये घात लगाएं,
हम निर्दोषों की ताक * में रहें;
१२ हम अधोलोक की नाईं उनको जीवता,
कबर में पड़े हुओं के समान समूचा निगल जाएं;
१३ हम को सब प्रकार के अनमोल पदार्थ मिलेंगे,
हम अपने घरों को लूट से भर लेंगे;
१४ तू हमारा साझी हो जा,
हम सभों का एक ही बटुआ हो,
१५ तो, हे मेरे पुत्र तू उनके संग मार्ग में न चलना,
वरन उनकी डगर में पांव भी न धरना;
१६ क्योंकि वे बुराई ही करने को दौड़ते हैं,
और हत्या करने को फुर्ती करते हैं ।
१७ क्योंकि पक्षी के देखते हुए
जाल फैलाना व्यर्थ होता है;
१८ और ये लोग तो अपनी ही हत्या करने के लिये घात लगाते हैं,
और अपने ही प्राणों की घात की ताक में रहते हैं ।
१९ सब लालचियों की चाल ऐसी ही होती है;

* मूल में—अकारण छुपा लगाना ।

उनका प्राण लालच ही के कारण
नाश हो जाता है ।।

२० बुद्धि * सड़क में ऊंचे स्वर से बोलती है;
और चौकों में प्रचार करती है;

२१ वह बाज़ारों की भीड़ में पुकारती है;
वह फाटकों के बीच में
और नगर के भीतर भी ये बातें बोलती है :

२२ हे भोले लोगो, तुम कब तक भोलेपन से प्रीति रखोगे?
और हे ठट्ठा करनेवालो, तुम कब तक ठट्ठा करने से प्रसन्न रहोगे?
और हे मूर्खो, तुम कब तक ज्ञान से बैर रखोगे?

२३ तुम मेरी डांट सुनकर मन फिराओ;
सुनो, मैं अपनी आत्मा तुम्हारे लिये उण्डेल दूंगी;
मैं तुम को अपने वचन बताऊंगी।

२४ मैं ने तो पुकारा परन्तु तुम ने इनकार किया,
और मैं ने हाथ फैलाया, परन्तु किसी ने ध्यान न दिया,

२५ वरन तुम ने मेरी सारी सम्मति को अनसुनी किया,
और मेरी ताड़ना का मूल्य न जाना;

२६ इसलिये मैं भी तुम्हारी विपत्ति के समय हंसूंगी;
और जब तुम पर भय आ पड़ेगा,

२७ वरन आँधी की नाईं तुम पर भय आ पड़ेगा,
और विपत्ति बवण्डर के समान आ पड़ेगी,
और तुम संकट और सकेती में फंसोगे,
तब मैं ठट्ठा करूंगी।

२८ उस समय वे मुझे पुकारेंगे, और मैं न सुनूंगी;
वे मुझे यत्न से तो ढूंढेंगे, परन्तु न पाएंगे।

२९ क्योंकि उन्हों ने ज्ञान से बैर किया,
और यहोवा का भय मानना उनको न भाया।

३० उन्हों ने मेरी सम्मति न चाही,
वरन मेरी सब ताड़नाओं को तुच्छ जाना।

३१ इसलिये वे अपनी करनी का फल आप भोगेंगे,
और अपनी युक्तियों के फल से अघा जाएंगे।

३२ क्योंकि भोले लोगों का भटक जाना, उनके घात किए जाने का कारण होगा,
और निश्चिन्त रहने के कारण मूढ़ लोग नाश होंगे;

३३ परन्तु जो मेरी सुनेगा, वह निडर बसा रहेगा, और बेखटके सुख से रहेगा ।।

२ हे मेरे पुत्र, यदि तू मेरे वचन ग्रहण करे,
और मेरी आज्ञाओं को अपने हृदय में रख छोड़े,

२ और बुद्धि की बात ध्यान से सुने,
और समझ की बात मन लगाकर सोचे;

३ और प्रवीणता और समझ के लिये अति यत्न से पुकारे,

४ और उसको चान्दी की नाईं ढूंढ़े,

* मूल में—बुद्धियां।

और गुप्त धन के समान उसकी खोज में लगा रहे;
५ तो तू यहोवा के भय को समझेगा, और परमेश्वर का ज्ञान तुझे प्राप्त होगा।
६ क्योंकि बुद्धि यहोवा ही देता है; ज्ञान और समझ की बातें उसी के मुंह से निकलती हैं।
७ वह सीधे लोगों के लिये खरी बुद्धि रख छोड़ता है; जो खराई से चलते हैं, उनके लिये वह ढाल ठहरता है।
८ वह न्याय के पथों की देख भाल करता, और अपने भक्तों के मार्ग की रक्षा करता है।
९ तब तू धर्म और न्याय, और सीधाई को, निदान सब भली-भली चाल समझ सकेगा;
१० क्योंकि बुद्धि तो तेरे हृदय में प्रवेश करेगी, और ज्ञान तुझे मनभाऊ लगेगा;
११ विवेक तुझे सुरक्षित रखेगा; और समझ तेरी रक्षक होगी;
१२ ताकि तुझे बुराई के मार्ग से, और उलट फेर की बातों के कहनेवालों से बचाए,
१३ जो सीधाई के मार्ग को छोड़ देते हैं, ताकि अन्धेरे मार्ग में चलें;
१४ जो बुराई करने से आनन्दित होते हैं, और दुष्ट जन की उलट फेर की बातों में मगन रहते हैं;
१५ जिनकी चालचलन टेढ़ी मेढ़ी और जिनके मार्ग बिगड़े हुए हैं।।
१६ तब तू पराई स्त्री से भी बचेगा, जो चिकनी चुपड़ी बातें बोलती है,
१७ और अपनी जवानी के साथी को छोड़ देती, और जो अपने परमेश्वर की वाचा को भूल जाती है।
१८ उसका घर मृत्यु की ढलान पर है, और उसकी डगरें मरे हुओं के बीच पहुंचाती हैं;
१९ जो उसके पास जाते हैं, उन में से कोई भी लौटकर नहीं आता; और न वे जीवन का मार्ग पाते हैं।।
२० तू भले मनुष्यों के मार्ग में चल, और धर्मियों की बाट को पकड़े रह।
२१ क्योंकि धर्मी लोग देश में बसे रहेंगे, और खरे लोग ही उस में बने रहेंगे।
२२ दुष्ट लोग देश में से नाश होंगे, और विश्वासघाती उस में से उखाड़े जाएंगे।।

३ हे मेरे पुत्र, मेरी शिक्षा को न भूलना; अपने हृदय में मेरी आज्ञाओं को रखे रहना;
२ क्योंकि ऐसा करने से तेरी आयु* बढ़ेगी, और तू अधिक कुशल से रहेगा।
३ कृपा और सच्चाई तुझ से अलग न होने पाएं; वरन उनको अपने गले का हार बनाना, और अपनी हृदयरूपी पटिया पर लिखना।
४ और तू परमेश्वर और मनुष्य दोनों का अनुग्रह पाएगा, तू अति बुद्धिमान होगा।।

* मूल में—दिनों की लंबाई और जीवन के बरस।

५ तू अपनी समझ का सहारा न लेना,
वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना।
६ उसी को स्मरण करके सब काम करना,
तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा।
७ अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न होना;
यहोवा का भय मानना, और बुराई से अलग रहना।
८ ऐसा करने से तेरा शरीर* भला चंगा,
और तेरी हड्डियां पुष्ट रहेंगी॥
९ अपनी संपत्ति के द्वारा,
और अपनी भूमि की सारी पहिली उपज दे देकर यहोवा की प्रतिष्ठा करना;
१० इस प्रकार तेरे खत्ते भरे और पूरे रहेंगे,
और तेरे रसकुण्डों से नया दाखमधु उमण्डता रहेगा॥
११ हे मेरे पुत्र, यहोवा की शिक्षा से मुंह न मोड़ना,
और जब वह तुझे डांटे, तब तू बुरा न मानना,
१२ क्योंकि यहोवा जिस से प्रेम रखता है उसको डांटता है,
जैसे कि बाप उस बेटे को जिसे वह अधिक चाहता है॥
१३ क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो बुद्धि पाए,
और वह मनुष्य जो समझ प्राप्त करे,
१४ क्योंकि बुद्धि की प्राप्ति चान्दी की प्राप्ति से बड़ी,
और उसका लाभ चोखे सोने के लाभ से भी उत्तम है।
१५ वह मूंगे से अधिक अनमोल है,
और जितनी वस्तुओं की तू लालसा करता है, उन में से कोई भी उसके तुल्य न ठहरेगी।
१६ उसके दहिने हाथ में दीर्घायु,
और उसके बाएँ हाथ में धन और महिमा हैं।
१७ उसके मार्ग मनभाऊ हैं,
और उसके सब मार्ग कुशल के हैं।
१८ जो बुद्धि को ग्रहण कर लेते हैं, उनके लिये वह जीवन का वृक्ष बनती है;
और जो उसको पकड़े रहते हैं, वह धन्य हैं॥
१९ यहोवा ने पृथ्वी की नेव बुद्धि ही से डाली;
और स्वर्ग को समझ ही के द्वारा स्थिर किया।
२० उसी के ज्ञान के द्वारा गहिरे सागर फूट निकले,
और आकाशमण्डल से ओस टपकती है॥
२१ हे मेरे पुत्र, ये बातें तेरी दृष्टि की ओट न होने पाएं;
खरी बुद्धि और विवेक की रक्षा कर,
२२ तब इन से तुझे जीवन मिलेगा,
और ये तेरे गले का हार बनेंगे।
२३ और तू अपने मार्ग पर निडर चलेगा,
और तेरे पांव में ठेस न लगेगी।
२४ जब तू लेटेगा, तब भय न खाएगा,
जब तू लेटेगा, तब सुख की नींद आएगी।
२५ अचानक आनेवाले भय से न डरना,
और जब दुष्टों पर विपत्ति आ पड़े, तब न घबराना;

* मूल में—तेरी नाभि।

२६ क्योंकि यहोवा तुझे सहारा दिया करेगा,
और तेरे पांव को फन्दे में फंसने न देगा।
२७ जिनका भला करना चाहिये, यदि तुझ में शक्ति रहे, तो उनका भला करने से न रुकना॥
२८ यदि तेरे पास देने को कुछ हो,
तो अपने पड़ोसी से न कहना कि जा कल फिर आना, कल मैं तुझे दूंगा।
२९ जब तेरा पड़ोसी तेरे पास बेखटके रहता है,
तब उसके विरुद्ध बुरी युक्ति न बान्धना।
३० जिस मनुष्य ने तुझ से बुरा व्यवहार न किया हो,
उस से अकारण मुक़द्दमा खड़ा न करना।
३१ उपद्रवी पुरुष के विषय में डाह न करना,
न उसकी सी चाल चलना;
३२ क्योंकि यहोवा कुटिल से घृणा करता है,
परन्तु वह अपना भेद सीधे लोगों पर खोलता है*॥
३३ दुष्ट के घर पर यहोवा का शाप
और धर्मियों के वासस्थान पर उसकी आशीष होती है।
३४ ठट्ठा करनेवालों से वह निश्चय ठट्ठा करता है
और दीनों पर अनुग्रह करता है।
३५ बुद्धिमान महिमा को पाएंगे
और मूर्खों की बढ़ती अपमान ही की होगी॥

४ हे मेरे पुत्रो, पिता की शिक्षा सुनो,
और समझ प्राप्त करने में मन लगाओ।
२ क्योंकि मैं ने तुम को उत्तम शिक्षा दी है;
मेरी शिक्षा को न छोड़ो।
३ देखो, मैं भी अपने पिता का पुत्र था,
और माता का अकेला दुलारा था,
४ और मेरा पिता मुझे यह कहकर सिखाता था, कि
तेरा मन मेरे वचन पर लगा रहे;
तू मेरी आज्ञाओं का पालन कर, तब जीवित रहेगा।
५ बुद्धि को प्राप्त कर, समझ को भी प्राप्त कर;
उनको भूल न जाना, न मेरी बातों को छोड़ना।
६ बुद्धि को न छोड़, वह तेरी रक्षा करेगी;
उस से प्रीति रख, वह तेरा पहरा देगी।
७ बुद्धि श्रेष्ठ है इसलिये उसकी प्राप्ति के लिये यत्न कर;
जो कुछ तू प्राप्त करे उसे प्राप्त तो कर परन्तु समझ की प्राप्ति का यत्न घटने न पाए।
८ उसकी बड़ाई कर, वह तुझ को बढ़ाएगी;
जब तू उस से लिपट जाए, तब वह तेरी महिमा करेगी।
९ वह तेरे सिर पर शोभायमान भूषण बान्धेगी;
और तुझे सुन्दर मुकुट देगी॥
१० हे मेरे पुत्र, मेरी बातें सुनकर ग्रहण कर,
तब तू बहुत वर्ष तक जीवित रहेगा।

* मूल में—उसका भेद सीधे लोगों के पास है।

११ मैं ने तुझे बुद्धि का मार्ग बताया है;
और सीधाई के पथ पर चलाया है।
१२ चलने में तुझे रोक टोक न होगी,
और चाहे तू दौड़े, तौभी ठोकर न खाएगा।
१३ शिक्षा को पकड़े रह, उसे छोड़ न दे;
उसकी रक्षा कर, क्योंकि वही तेरा जीवन है।
१४ दुष्टों की बाट में पांव न धरना,
और न बुरे लोगों के मार्ग पर चलना।
१५ उसे छोड़ दे, उसके पास से भी न चल,
उसके निकट से मुड़कर आगे बढ़ जा।
१६ क्योंकि दुष्ट लोग यदि बुराई न करें, तो उनको नींद नहीं आती;
और जब तक वे किसी को ठोकर न खिलाएं, तब तक उन्हें नींद नहीं मिलती।
१७ वे तो दुष्टता से कमाई हुई रोटी खाते,
और उपद्रव के द्वारा पाया हुआ दाखमधु पीते हैं।
१८ परन्तु धर्मियों की चाल उस चमकती हुई ज्योति के समान है,
जिसका प्रकाश दोपहर तक अधिक अधिक बढ़ता रहता है।
१९ दुष्टों का मार्ग घोर अन्धकारमय है;
वे नहीं जानते कि वे किस से ठोकर खाते हैं॥
२० हे मेरे पुत्र मेरे वचन ध्यान धरके सुन,
और अपना कान मेरी बातों पर लगा।
२१ इनको अपनी आंखों की ओट न होने दे;
वरन अपने मन में धारण कर।
२२ क्योंकि जिनको वे प्राप्त होती हैं, वे उनके जीवित रहने का,
और उनके सारे शरीर के चंगे रहने का कारण होती हैं।
२३ सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर;
क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।
२४ टेढ़ी बात अपने मुंह से मत बोल,
और चालबाज़ी की बातें कहना तुझ से दूर रहे।
२५ तेरी आंखें साम्हने ही की ओर लगी रहें,
और तेरी पलकें आगे की ओर खुली रहें।
२६ अपने पांव धरने के लिये मार्ग को समथर कर,
और तेरे सब मार्ग ठीक रहें।
२७ न तो दहिनी ओर मुड़ना, और न बाईं ओर;
अपने पांव को बुराई के मार्ग पर चलने से हटा ले॥

५ हे मेरे पुत्र, मेरी बुद्धि की बातों पर ध्यान दे,
मेरी समझ की ओर कान लगा;
२ जिस से तेरा विवेक सुरक्षित बना रहे,
और तू ज्ञान के वचनों को थामे रहे।
३ क्योंकि पराई स्त्री के ओठों से मधु टपकता है,
और उसकी बातें तेल से भी अधिक चिकनी होती हैं;
४ परन्तु इसका परिणाम नागदौना सा कड़वा
और दोधारी तलवार सा पैना होता है।

५ उसके पांव मृत्यु की ओर बढ़ते हैं;
और उसके पग अधोलोक तक पहुंचते हैं ।।
६ इसलिये उसे जीवन का समथर पथ नहीं मिल पाता;
उसके चालचलन में चंचलता है, परन्तु उसे वह आप नहीं जानती ।।
७ इसलिये अब हे मेरे पुत्रो, मेरी सुनो,
और मेरी बातों से मुंह न मोड़ो।
८ ऐसी स्त्री से दूर ही रह,
और उसकी डेवढ़ी के पास भी न जाना;
९ कहीं ऐसा न हो कि तू अपना यश औरों के हाथ,
और अपना जीवन क्रूर जन के वश में कर दे;
१० या पराए तेरी कमाई से अपना पेट भरें,
और परदेशी मनुष्य तेरे परिश्रम का फल अपने घर में रखें;
११ और तू अपने अन्तिम समय में
जब कि तेरा शरीर क्षीण हो जाए
तब यह कहकर हाय मारने लगे, कि
१२ मैं ने शिक्षा से कैसा बैर किया,
और डांटनेवाले का कैसा तिरस्कार किया!
१३ मैं ने अपने गुरुओं की बातें न मानी
और अपने सिखानेवालों की ओर ध्यान न लगाया।
१४ मैं सभा और मण्डली के बीच में प्रायः सब बुराइयों में जा पड़ा ।।
१५ तू अपने ही कुण्ड से पानी,
और अपने ही कूएं के सोते का जल पिया करना।
१६ क्या तेरे सोतों का पानी सड़क में,
और तेरे जल की धारा चौकों में बह जाने पाए?
१७ यह केवल तेरे ही लिये रहे,
और तेरे संग औरों के लिये न हो।
१८ तेरा सोता धन्य रहे;
और अपनी जवानी की पत्नी के साथ आनन्दित रह,
१९ प्रिय हरिणी वा सुन्दर सांभरनी के समान उसके स्तन सर्वदा तुझे संतुष्ट रखे,
और उसी का प्रेम नित्य तुझे आकर्षित करता रहे।
२० हे मेरे पुत्र, तू अपरिचित स्त्री पर क्यों मोहित हो,
और पराई को क्यों छाती से लगाए?
२१ क्योंकि मनुष्य के मार्ग यहोवा की दृष्टि से छिपे नहीं हैं,
और वह उसके सब मार्गों पर ध्यान करता है।
२२ दुष्ट अपने ही अधर्म के कर्मों से फंसेगा,
और अपने ही पाप के बन्धनों में बन्धा रहेगा।
२३ वह शिक्षा प्राप्त किए बिना मर जाएगा,
और अपनी ही मूर्खता के कारण भटकता रहेगा ।।

६ हे मेरे पुत्र, यदि तू अपने पड़ोसी का उत्तरदायी हुआ हो,
अथवा परदेशी के लिये हाथ पर हाथ मार कर उत्तरदायी हुआ हो,
२ तो तू अपने ही मुंह के बचनों से फंसा,
और अपने ही मुंह की बातों से पकड़ा गया।
३ इसलिये हे मेरे पुत्र, एक काम कर, अर्थात्

तू जो अपने पड़ोसी के हाथ में पड़ चुका है,
तो जा, उसको साष्टांग प्रणाम करके मना ले।
४ तू न तो अपनी आंखों में नींद,
और न अपनी पलकों में झपकी आने दे;
५ और अपने आप को हरिणी के समान शिकारी के हाथ से,
और चिड़िया के समान चिड़िमार के हाथ से छुड़ा॥
६ हे आलसी, च्यूंटियों के पास जा;
उनके काम पर ध्यान दे, और बुद्धिमान हो।
७ उनके न तो कोई न्यायी होता है,
न प्रधान, और न प्रभुता करनेवाला,
८ तौभी वे अपना आहार धूपकाल में संचय करती हैं,
और कटनी के समय अपनी भोजनवस्तु बटोरती हैं।
९ हे आलसी, तू कब तक सोता रहेगा ?
तेरी नींद कब टूटेगी ?
१० कुछ और सो लेना,
थोड़ी सी नींद, एक और झपकी,
थोड़ा और छाती पर हाथ रखे लेटे रहना,
११ तब तेरा कंगालपन बटमार की नाईं
और तेरी घटी हथियारबन्द के समान आ पड़ेगी॥
१२ ओछे और अनर्थकारी को देखो,
वह टेढ़ी टेढ़ी बातें बकता फिरता है,
१३ वह नैन से सैन और पांव से इशारा,
और अपनी अंगुलियों से संकेत करता है,
१४ उसके मन में उलट फेर की बातें रहतीं,
वह लगातार बुराई गढ़ता है
और झगड़ा रगड़ा उत्पन्न करता है।
१५ इस कारण उस पर विपत्ति अचानक आ पड़ेगी;
वह पल भर में ऐसा नाश हो जाएगा,
कि बचने का कोई उपाय न रहेगा॥
१६ छः वस्तुओं से यहोवा बैर रखता है,
वरन सात हैं जिन से उसको घृणा है :
१७ अर्थात् घमण्ड से चढ़ी हुई * आंखें,
झूठ बोलनेवाली जीभ,
और निर्दोष का लोहू बहानेवाले हाथ,
१८ अनर्थ कल्पना गढ़नेवाला मन,
बुराई करने को वेग दौड़नेवाले पांव,
१९ झूठ बोलनेवाला साक्षी
और भाइयों के बीच में झगड़ा उत्पन्न करनेवाला मनुष्य।
२० हे मेरे पुत्र, मेरी आज्ञा को मान,
और अपनी माता की शिक्षा को न तज।
२१ इन को अपने हृदय में सदा गांठ बान्धे रख;
और अपने गले का हार बना ले।
२२ वह तेरे चलने में तेरी अगुवाई,
और सोते समय तेरी रक्षा,
और जागते समय तुझ से बातें करेगी।
२३ आज्ञा तो दीपक है और शिक्षा ज्योति,
और सिखानेवाले की डांट जीवन का मार्ग है,
२४ ताकि तुझ को बुरी स्त्री से बचाए
और पराई स्त्री की चिकनी चुपड़ी बातों से बचाए।
२५ उसकी सुन्दरता देखकर अपने मन में
उसकी अभिलाषा न कर;

* मूल में—ऊंची।

वह तुझे अपने कटाक्ष * से फंसाने न पाए;

२६ क्योंकि वेश्यागमन के कारण मनुष्य टुकड़ों का भिखारी हो जाता है,

परन्तु व्यभिचारिणी अनमोल जीवन का अहेर कर लेती है।

२७ क्या हो सकता है कि कोई अपनी छाती पर आग रख ले;

और उसके कपड़े न जलें?

२८ क्या हो सकता है कि कोई अंगारे पर चले,

और उसके पांव न झुलसें?

२९ जो पराई स्त्री के पास जाता है, उसकी दशा ऐसी है;

वरन जो कोई उसको छूएगा वह दण्ड से न बचेगा।

३० जो चोर भूख के मारे अपना पेट भरने के लिये चोरी करे,

उसको तो लोग तुच्छ नहीं जानते;

३१ तौभी यदि वह पकड़ा जाए, तो उसको सातगुणा भर देना पड़ेगा;

वरन अपने घर का सारा धन देना पड़ेगा।

३२ परन्तु जो परस्त्रीगमन करता है वह निरा निर्बुद्ध है;

जो अपने प्राणों को नाश करना चाहता है, वही ऐसा करता है।

३३ उसको घायल और अपमानित होना पड़ेगा,

और उसकी नामधराई कभी न मिटेगी।

३४ क्योंकि जलन से पुरुष बहुत ही क्रोधित हो जाता है,

और पलटा लेने के दिन वह कुछ कोमलता नहीं दिखाता।

३५ वह घूस पर दृष्टि न करेगा,

और चाहे तू उसको बहुत कुछ दे, तौभी वह न मानेगा॥

७ हे मेरे पुत्र, मेरी बातों को माना कर,

और मेरी आज्ञाओं को अपने मन में रख छोड़।

२ मेरी आज्ञाओं को मान, इस से तू जीवित रहेगा,

और मेरी शिक्षा को अपनी आंख की पुतली जान;

३ उनको अपनी उंगलियों में बान्ध,

और अपने हृदय की पटिया पर लिख ले।

४ बुद्धि से कह कि, तू मेरी बहिन है,

और समझ को अपनी साथिन बना;

५ तब तू पराई स्त्री से बचेगा,

जो चिकनी चुपड़ी बातें बोलती है॥

६ मैं ने एक दिन अपने घर की खिड़की से, अर्थात्

अपने झरोखे से झांका,

७ तब मैं ने भोले लोगों में से

एक निर्बुद्धि जवान को देखा;

८ वह उस स्त्री के घर के कोने के पास की सड़क पर चला जाता था,

और उस ने उसके घर का मार्ग लिया।

९ उस समय दिन ढल गया, और संध्या-काल आ गया था,

वरन रात का घोर अन्धकार छा गया था॥

* मूल में—पलकों।

१० और उस से एक स्त्री मिली,
जिस का भेष वेश्या का सा था, और
वह बड़ी धूर्त थी।
११ वह शान्तिरहित और चंचल थी,
और अपने घर में न ठहरती थी;
१२ कभी वह सड़क में, कभी चौक में
पाई जाती थी,
और एक एक कोने पर वह बाट
जोहती थी।
१३ तब उस ने उस जवान को पकड़कर
चूमा,
और निर्लज्जता की चेष्टा करके उस
से कहा,
१४ मुझे मेलबलि चढ़ाने थे,
और मैं ने अपनी मन्नतें आज ही पूरी
की हैं;
१५ इसी कारण मैं तुझ से भेंट करने को
निकली,
मैं तेरे दर्शन की खोजी थी, सो अभी
पाया है।
१६ मैं ने अपने पलंग के बिछौने पर
मिस्र के बेलबूटेवाले कपड़े बिछाए हैं;
१७ मैं ने अपने बिछौने पर
गन्धरस, अगर और दालचीनी छिड़की
है।
१८ इसलिये अब चल हम प्रेम से भोर
तक जी बहलाते रहें;
हम परस्पर की प्रीति से आनन्दित
रहें।
१९ क्योंकि मेरा पति घर में नहीं है;
वह दूर देश को चला गया है;
२० वह चान्दी की थैली ले गया है;
और पूर्णमासी को लौट आएगा।।
२१ ऐसी ही बातें कह कहकर, उस ने
उसको अपनी प्रबल माया में फंसा
लिया;
और अपनी चिकनी चुपड़ी बातों से
उसको अपने वश में कर लिया।
२२ वह तुरन्त उसके पीछे हो लिया,
जैसे बैल कसाई-खाने को,
वा जैसे बेड़ी पहिने हुए कोई मूढ़
ताड़ना पाने को जाता है।
२३ अन्त में उस जवान का कलेजा तीर
से बेधा जाएगा;
वह उस चिड़िया के समान है जो फन्दे
की ओर वेग से उड़े
और न जानती हो कि उस में मेरे
प्राण जाएंगे।।
२४ अब हे मेरे पुत्रो, मेरी सुनो,
और मेरी बातों पर मन लगाओ।
२५ तेरा मन ऐसी स्त्री के मार्ग की ओर
न फिरे,
और उसकी डगरों में भूल कर न
जाना;
२६ क्योंकि बहुत लोग उस से मारे पड़े हैं;
उसके घात किए हुओं की एक बड़ी
संख्या होगी।
२७ उसका घर अधोलोक का मार्ग है,
वह मृत्यु के घर में पहुंचाता है।।

८ क्या बुद्धि नहीं पुकारती है,
क्या समझ ऊंचे शब्द से नहीं
बोलती है?
२ वह तो ऊंचे स्थानों पर मार्ग की एक
ओर
और तिर्मुहानियों में खड़ी होती है;
३ फाटकों के पास नगर के पैठाव में,
और द्वारों ही में वह ऊंचे स्वर से
कहती है,
४ हे मनुष्यो, मैं तुम को पुकारती हूं,
और मेरी बात सब आदमियों के
लिये है।

५ हे भोलो, चतुराई सीखो;
और हे मूर्खों, अपने मन में समझ लो।
६ सुनो, क्योंकि मैं उत्तम बातें कहूंगी,
और जब मुंह खोलूंगी, तब उस से सीधी बातें निकलेंगी;
७ क्योंकि मुझ से सच्चाई की बातों का वर्णन होगा;
दुष्टता की बातों से मुझ को घृणा आती है॥
८ मेरे मुंह की सब बातें धर्म की होती हैं,
उन में से कोई टेढ़ी वा उलट फेर की बात नहीं निकलती है।
९ समझवाले के लिये वे सब सहज,
और ज्ञान के प्राप्त करनेवालों के लिये अति सीधी हैं।
१० चान्दी नहीं, मेरी शिक्षा ही को लो,
और उत्तम कुन्दन से बढ़कर ज्ञान को ग्रहण करो।
११ क्योंकि बुद्धि, मूंगे से भी अच्छी है,
और सारी मनभावनी वस्तुओं में कोई भी उसके तुल्य नहीं है।
१२ मैं जो बुद्धि हूं, सो चतुराई में बास करती हूं,
और ज्ञान और विवेक को प्राप्त करती हूं।
१३ यहोवा का भय मानना बुराई से बैर रखना है।
घमण्ड, अहंकार और बुरी चाल से,
और उलट फेर की बात से भी मैं बैर रखती हूं।
१४ उत्तम युक्ति, और खरी बुद्धि मेरी ही है,
मैं तो समझ हूं, और पराक्रम भी मेरा है।
१५ मेरे ही द्वारा राजा राज्य करते हैं,
और अधिकारी धर्म से विचार करते हैं;
१६ मेरे ही द्वारा राजा हाकिम और रईस,
और पृथ्वी के सब न्यायी शासन करते हैं।
१७ जो मुझ से प्रेम रखते हैं, उन से मैं भी प्रेम रखती हूं,
और जो मुझ को यत्न से तड़के उठकर खोजते हैं, वे मुझे पाते हैं।
१८ धन और प्रतिष्ठा मेरे पास हैं,
वरन ठहरनेवाला धन और धर्म भी हैं।
१९ मेरा फल चोखे सोने से, वरन कुन्दन से भी उत्तम है,
और मेरी उपज उत्तम चान्दी से अच्छी है।
२० मैं धर्म की बाट में,
और न्याय की डगरों के बीच में चलती हूं,
२१ जिस से मैं अपने प्रेमियों को परमार्थ के भागी करूं, और उनके भण्डारों को भर दूं॥
२२ यहोवा ने मुझे काम करने के आरम्भ में,
वरन अपने प्राचीनकाल के कामों से भी पहिले उत्पन्न किया।
२३ मैं सदा से वरन आदि ही से
पृथ्वी की सृष्टि के पहिले ही से ठहराई गई हूं।
२४ जब न तो गहिरा सागर था,
और न जल के सोते थे तब ही से मैं उत्पन्न हुई।
२५ जब पहाड़ वा पहाड़ियां स्थिर न की गई थीं,

२६ जब यहोवा ने न तो पृथ्वी और न मैदान,
न जगत की धूलि के परमाणु बनाए थे,
इन से पहिले मैं उत्पन्न हुई।
२७ जब उस ने आकाश को स्थिर किया, तब मैं वहां थी,
जब उस ने गहिरे सागर के ऊपर आकाशमण्डल ठहराया,
२८ जब उस ने आकाशमण्डल को ऊपर से स्थिर किया,
और गहिरे सागर के सोते फूटने लगे,
२९ जब उस ने समुद्र का सिवाना ठहराया,
कि जल उसकी आज्ञा का उल्लंघन न कर सके,
और जब वह पृथ्वी की नेव की डोरी लगाता था,
३० तब मैं कारीगर सी उसके पास थी;
और प्रति दिन मैं उसकी प्रसन्नता थी,
और हर समय उसके साम्हने आनन्दित रहती थी।
३१ मैं उसकी बसाई हुई पृथ्वी से प्रसन्न थी
और मेरा सुख मनुष्यों की संगति से होता था।।
३२ इसलिये अब हे मेरे पुत्रो, मेरी सुनो;
क्या ही धन्य हैं वे जो मेरे मार्ग को पकड़े रहते हैं।
३३ शिक्षा को सुनो, और बुद्धिमान हो जाओ,
उसके विषय में अनसुनी न करो।
३४ क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो मेरी सुनता,
वरन मेरी डेवढ़ी पर प्रति दिन खड़ा रहता,
और मेरे द्वारों के खंभों के पास दृष्टि लगाए रहता है।
३५ क्योंकि जो मुझे पाता है, वह जीवन को पाता है,
और यहोवा उस से प्रसन्न होता है।
३६ परन्तु जो मेरा अपराध करता * है, वह अपने ही पर उपद्रव करता है;
जितने मुझ से बैर रखते वे मृत्यु से प्रीति रखते हैं।।

९ बुद्धि ने † अपना घर बनाया,
और उसके सातों खंभे गढ़े हुए हैं।
२ उस ने अपने पशु बध करके, अपने दाखमधु में मसाला मिलाया है,
और अपनी मेज़ लगाई है।
३ उस ने अपनी सहेलियां, सब को बुलाने के लिये भेजी हैं; वह नगर के ऊंचे स्थानों की चोटी पर पुकारती है,
४ जो कोई भोला है वह मुड़कर यहीं आए!
और जो निर्बुद्धि है, उस से वह कहती है,
५ आओ, मेरी रोटी खाओ,
और मेरे मसाला मिलाए हुए दाखमधु को पीओ।
६ भोलों का संग छोड़ो, और जीवित रहो,
समझ के मार्ग में सीधे चलो।।
७ जो ठट्ठा करनेवाले को शिक्षा देता है, सो अपमानित होता है, और जो दुष्ट जन को डांटता है वह कलंकित होता है।।

* वा जिस की मुझ से भूल के कारण भेंट नहीं होती।
† मूल में—बुद्धियों ने।

८ ठट्ठा करनेवाले को न डांट ऐसा न
हो कि वह तुझ से बैर रखे,
बुद्धिमान को डांट, वह तो तुझ से
प्रेम रखेगा।
९ बुद्धिमान को शिक्षा दे, वह अधिक
बुद्धिमान होगा;
धर्मी को चिता दे, वह अपनी विद्या
बढ़ाएगा।
१० यहोवा का भय मानना बुद्धि का
आरम्भ है,
और परमपवित्र ईश्वर को जानना
ही समझ है।
११ मेरे द्वारा तो तेरी आयु बढ़ेगी,
और तेरे जीवन के वर्ष अधिक होंगे।
१२ यदि तू बुद्धिमान हो, तो बुद्धि का
फल तू ही भोगेगा;
और यदि तू ठट्ठा करे, तो दण्ड केवल
तू ही भोगेगा।।
१३ मूर्खतारूपी स्त्री हौरा मचानेवाली
है;
वह तो भोली है, और कुछ नहीं
जानती।
१४ वह अपने घर के द्वार में,
और नगर के ऊंचे स्थानों में मचिया
पर बैठी हुई
१५ जो बटोही अपना अपना मार्ग पकड़े
हुए सीधे चले जाते हैं,
उनको यह कह कहकर पुकारती है,
१६ जो कोई भोला है, वह मुड़कर यहीं
आए :
जो निर्बुद्धि है, उस से वह कहती है,
१७ चोरी का पानी मीठा होता है,
और लुके छिपे की रोटी अच्छी लगती
है।
१८ और वह नहीं जानता है, कि वहां मरे
हुए पड़े हैं,
और उस स्त्री के नेवतहारी अधोलोक
के निचले स्थानों में पहुंचे हैं।।

१० सुलैमान के नीतिवचन।।
बुद्धिमान पुत्र से पिता आनन्दित
होता है,
परन्तु मूर्ख पुत्र के कारण माता उदास
रहती है।
२ दुष्टों के रखे हुए धन से लाभ नहीं
होता,
परन्तु धर्म के कारण मृत्यु से बचाव
होता है।
३ धर्मी को यहोवा भूखों मरने नहीं देता,
परन्तु दुष्टों की अभिलाषा वह पूरी
होने नहीं देता।
४ जो काम में ढिलाई करता है, वह
निर्धन हो जाता है,
परन्तु कामकाजू लोग अपने हाथों के
द्वारा धनी होते हैं।
५ जो बेटा धूपकाल में बटोरता है वह
बुद्धि से काम करनेवाला है,
परन्तु जो बेटा कटनी के समय भारी
नींद में पड़ा रहता है, वह लज्जा
का कारण होता है।
६ धर्मी * पर बहुत से आशीर्वाद होते
हैं,
परन्तु उपद्रव दुष्टों का मुंह छा
लेता है।
७ धर्मी को स्मरण करके लोग आशीर्वाद
देते हैं,
परन्तु दुष्टों का नाम मिट जाता है।
८ जो बुद्धिमान है, वह आज्ञाओं को
स्वीकार करता है,
परन्तु जो बकवादी और मूढ़ है, वह
पछाड़ खाता है।

* मूल में—धर्मी के सिर।

९ जो खराई से चलता है वह निडर चलता है,
परन्तु जो टेढ़ी चाल चलता है उसकी चाल प्रगट हो जाती है।
१० जो नैन से सैन करता है उस से औरों को दुख मिलता है,
और जो बकवादी और मूढ़ है, वह पछाड़ खाता है।
११ धर्मी का मुंह तो जीवन का सोता है,
परन्तु उपद्रव दुष्टों का मुंह छा लेता है।
१२ बैर से तो झगड़े उत्पन्न होते हैं,
परन्तु प्रेम से सब अपराध ढंप जाते हैं।
१३ समझवालों के बचनों में बुद्धि पाई जाती है,
परन्तु निर्बुद्धि की पीठ के लिये कोड़ा है।
१४ बुद्धिमान लोग ज्ञान को रख छोड़ते हैं,
परन्तु मूढ़ के बोलने से विनाश निकट आता है।
१५ धनी का धन उसका दृढ़ नगर है,
परन्तु कंगाल लोग निर्धन होने के कारण विनाश होते हैं।
१६ धर्मी का परिश्रम जीवन के लिये होता है,
परन्तु दुष्ट के लाभ से पाप होता है।
१७ जो शिक्षा पर चलता वह जीवन के मार्ग पर है,
परन्तु जो डांट से मुंह मोड़ता, वह भटकता है।
१८ जो बैर को छिपा रखता है, वह झूठ बोलता है,
और जो अपवाद फैलाता है, वह मूर्ख है।
१९ जहां बहुत बातें होती हैं, वहां अपराध भी होता है,
परन्तु जो अपने मुंह को बन्द रखता वह बुद्धि से काम करता है।
२० धर्मी के वचन तो उत्तम चान्दी हैं;
परन्तु दुष्टों का मन बहुत हलका होता है।
२१ धर्मी के वचनों से बहुतों का पालन-पोषण होता है,
परन्तु मूढ़ लोग निर्बुद्धि होने के कारण मर जाते हैं।
२२ धन यहोवा की आशीष ही से मिलता है,
और वह उसके साथ दुःख नहीं मिलाता।
२३ मूर्ख को तो महापाप करना हंसी की बात जान पड़ती है,
परन्तु समझवाले पुरुष में बुद्धि रहती है।
२४ दुष्ट जन जिस विपत्ति से डरता है, वह उस पर आ पड़ती है,
परन्तु धर्मियों की लालसा पूरी होती है।
२५ बवण्डर निकल जाते ही दुष्ट जन लोप हो जाता है,
परन्तु धर्मी सदा लों स्थिर है।
२६ जैसे दांत को सिरका, और आंख को धूआं,
वैसे आलसी उनको लगता है जो उसको कहीं भेजते हैं।
२७ यहोवा के भय मानने से आयु बढ़ती है,
परन्तु दुष्टों का जीवन थोड़े ही दिनों का होता है।
२८ धर्मियों को आशा रखने में आनन्द मिलता है,

परन्तु दुष्टों की आशा टूट जाती है।
२९ यहोवा खरे मनुष्य का गढ़ ठहरता है,
परन्तु अनर्थकारियों का विनाश होता है।
३० धर्मी सदा अटल रहेगा,
परन्तु दुष्ट पृथ्वी पर बसने न पाएंगे।
३१ धर्मी के मुंह से बुद्धि टपकती है,
पर उलट फेर की बात कहनेवाले की जीभ काटी जायेगी।
३२ धर्मी ग्रहणयोग्य बात समझ कर बोलता है,
परन्तु दुष्टों के मुंह से उलट फेर की बातें निकलती हैं॥

११ छल के तराजू से यहोवा को घृणा आती है,
परन्तु वह पूरे बटखरे से प्रसन्न होता है।
२ जब अभिमान होता, तब अपमान भी होता है,
परन्तु नम्र लोगों में बुद्धि होती है।
३ सीधे लोग अपनी खराई से अगुवाई पाते हैं,
परन्तु विश्वासघाती अपने कपट से विनाश होते हैं।
४ कोप के दिन धन से तो कुछ लाभ नहीं होता,
परन्तु धर्म मृत्यु से भी बचाता है।
५ खरे मनुष्य का मार्ग धर्म के कारण सीधा होता है,
परन्तु दुष्ट अपनी दुष्टता के कारण गिर जाता है।
६ सीधे लोगों का बचाव उनके धर्म के कारण होता है,
परन्तु विश्वासघाती लोग अपनी ही दुष्टता में फंसते हैं।
७ जब दुष्ट मरता, तब उसकी आशा टूट जाती है,
और अधर्मी की आशा व्यर्थ होती है।
८ धर्मी विपत्ति से छूट जाता है,
परन्तु दुष्ट उसी विपत्ति में पड़ जाता है*।
९ भक्तिहीन जन अपने पड़ोसी को अपने मुंह की बात से बिगाड़ता है,
परन्तु धर्मी लोग ज्ञान के द्वारा बचते हैं।
१० जब धर्मियों का कल्याण होता है, तब नगर के लोग प्रसन्न होते हैं,
परन्तु जब दुष्ट नाश होते, तब जय-जयकार होता है।
११ सीधे लोगों के आशीर्वाद से नगर की बढ़ती होती है,
परन्तु दुष्टों के मुंह की बात से वह ढाया जाता है।
१२ जो अपने पड़ोसी को तुच्छ जानता है, वह निर्बुद्धि है,
परन्तु समझदार पुरुष चुपचाप रहता है।
१३ जो लुतराई करता फिरता वह भेद प्रगट करता है,
परन्तु विश्वासयोग्य मनुष्य बात को छिपा रखता है।
१४ जहां बुद्धि की युक्ति नहीं, वहां प्रजा विपत्ति में पड़ती है;
परन्तु सम्मति देनेवालों की बहुतायत के कारण बचाव होता है।
१५ जो परदेशी का उत्तरदायी होता है, वह बड़ा दुःख उठाता है,
परन्तु जो उत्तरदायित्व से घृणा करता, वह निडर रहता है।

* मूल में—दुष्ट उसके स्थान पर आता है।

१६ अनुग्रह करनेवाली स्त्री प्रतिष्ठा नहीं खोती है,
और बलात्कारी लोग धन को नहीं खोते।
१७ कृपालु मनुष्य अपना ही भला करता है,
परन्तु जो क्रूर है, वह अपनी ही देह को दुःख देता है।
१८ दुष्ट मिथ्या कमाई कमाता है,
परन्तु जो धर्म का बीज बोता, उसको निश्चय फल मिलता है।
१९ जो धर्म में दृढ़ रहता, वह जीवन पाता है,
परन्तु जो बुराई का पीछा करता, वह मृत्यु का कौर हो जाता है।
२० जो मन के ठेढ़े हैं, उन से यहोवा को घृणा आती है,
परन्तु वह खरी चालवालों से प्रसन्न रहता है।
२१ मैं दृढ़ता * के साथ कहता हूं, बुरा मनुष्य निर्दोष न ठहरेगा,
परन्तु धर्मी का वंश बचाया जाएगा।
२२ जो सुन्दर स्त्री विवेक नहीं रखती,
वह थूथुन में सोने की नत्थ पहिने हुए सूअर के समान है।
२३ धर्मियों की लालसा तो केवल भलाई की होती है;
परन्तु दुष्टों की आशा का फल क्रोध ही होता है।
२४ ऐसे हैं, जो छितरा देते हैं, तौभी उनकी बढ़ती ही होती है;
और ऐसे भी हैं जो यथार्थ से कम देते हैं, और इस से उनकी घटती ही होती है।

* मूल में—हाथ पर हाथ।

२५ उदार प्राणी हृष्ट पुष्ट हो जाता है,
और जो औरों की खेती सींचता है, उसकी भी सींची जाएगी।
२६ जो अपना अनाज रख छोड़ता है, उसको लोग शाप देते हैं,
परन्तु जो उसे बेच देता है, उसको आशीर्वाद दिया जाता है।
२७ जो यत्न से भलाई करता है वह औरों की प्रसन्नता खोजता है,
परन्तु जो दूसरे की बुराई का खोजी होता है, उसी पर बुराई आ पड़ती है।
२८ जो अपने धन पर भरोसा रखता है वह गिर जाता है,
परन्तु धर्मी लोग नये पत्ते की नाईं लहलहाते हैं।
२९ जो अपने घराने को दुःख देता, उसका भाग वायु ही होगा,
और मूढ़ बुद्धिमान का दास हो जाता है।
३० धर्मी का प्रतिफल जीवन का वृक्ष होता है,
और बुद्धिमान मनुष्य लोगों के मन को मोह लेता है।
३१ देख, धर्मी को पृथ्वी पर फल मिलेगा,
तो निश्चय है कि दुष्ट और पापी को भी मिलेगा।।

१२

जो शिक्षा पाने में प्रीति रखता है वह ज्ञान में प्रीति रखता है,
परन्तु जो डांट से बैर रखता, वह पशु सरीखा है।
२ भले मनुष्य से तो यहोवा प्रसन्न होता है,
परन्तु बुरी युक्ति करनेवाले को वह दोषी ठहराता है।

३ कोई मनुष्य दुष्टता के कारण स्थिर नहीं होता,
परन्तु धर्मियों की जड़ उखड़ने की नहीं।
४ भली स्त्री अपने पति का मुकुट है,
परन्तु जो लज्जा के काम करती वह मानो उसकी हड्डियों के सड़ने का कारण होती है।
५ धर्मियों की कल्पनाएं न्याय ही की होती हैं,
परन्तु दुष्टों की युक्तियां छल की हैं।
६ दुष्टों की बातचीत हत्या करने के लिये घात लगाने के विषय में होती है,
परन्तु सीधे लोग अपने मुंह की बात के द्वारा छुड़ानेवाले होते हैं।
७ जब दुष्ट लोग उलटे जाते हैं तब वे रहते ही नहीं,
परन्तु धर्मियों का घर स्थिर रहता है।
८ मनुष्य की बुद्धि के अनुसार उसकी प्रशंसा होती है,
परन्तु कुटिल तुच्छ जाना जाता है।
९ जो रोटी की आस लगाए रहता है, और बड़ाई मारता है,
उस से दास रखनेवाला तुच्छ मनुष्य भी उत्तम है।
१० धर्मी अपने पशु के भी प्राण की सुधि रखता है,
परन्तु दुष्टों की दया भी निर्दयता है।
११ जो अपनी भूमि को जोतता, वह पेट भर खाता है,
परन्तु जो निकम्मों की संगति करता, वह निर्बुद्धि ठहरता है।
१२ दुष्ट जन बुरे लोगों के जाल की अभिलाषा करते हैं,
परन्तु धर्मियों की जड़ हरी भरी रहती है।
१३ बुरा मनुष्य अपने दुर्वचनों के कारण फन्दे में फंसता है,
परन्तु धर्मी संकट से निकास पाता है।
१४ सज्जन अपने वचनों के फल के द्वारा भलाई से तृप्त होता है,
और जैसी जिसकी करनी वैसी उसकी भरनी * होती है।
१५ मूढ़ को अपनी ही चाल सीधी जान पड़ती है,
परन्तु जो सम्मति मानता, वह बुद्धिमान है।
१६ मूढ़ की रिस उसी दिन प्रगट हो जाती है,
परन्तु चतुर अपमान को छिपा रखता है।
१७ जो सच बोलता है, वह धर्म प्रगट करता है,
परन्तु जो झूठी साक्षी देता, वह छल प्रगट करता है।
१८ ऐसे लोग हैं जिनका बिना सोच-विचार का बोलना तलवार की नाईं चुभता है,
परन्तु बुद्धिमान के बोलने से लोग चंगे होते हैं।
१९ सच्चाई † सदा बनी रहेगी,
परन्तु झूठ ‡ पल ही भर का होता है।
२० बुरी युक्ति करनेवालों के मन में छल रहता है,
परन्तु मेल की युक्ति करनेवालों को आनन्द होता है।

* मूल में—मनुष्य के हाथों का फल उसको लौट आता है।
† मूल में—सच्चाई
‡ मूल में—झूठी जीभ।

२१ धर्मी को हानि नहीं होती है,
परन्तु दुष्ट लोग सारी विपत्ति में डूब जाते हैं*।
२२ झूठों से यहोवा को घृणा आती है,
परन्तु जो विश्वास से काम करते हैं, उन से वह प्रसन्न होता है।
२३ चतुर मनुष्य ज्ञान को प्रगट नहीं करता है,
परन्तु मूढ़ अपने मन की मूढ़ता ऊंचे शब्द से प्रचार करता है।
२४ कामकाजी लोग प्रभुता करते हैं,
परन्तु आलसी बेगारी में पकड़े जाते हैं।
२५ उदास मन दब जाता है,
परन्तु भली बात से वह आनन्दित होता है।
२६ धर्मी अपने पड़ोसी की अगुवाई करता है,
परन्तु दुष्ट लोग अपनी ही चाल के कारण भटक जाते हैं।
२७ आलसी अहेर का पीछा नहीं करता,
परन्तु कामकाजी को अनमोल वस्तु मिलती है।
२८ धर्म की बाट में जीवन मिलता है,
और उसके पथ में मृत्यु का पता भी नहीं॥

१३ बुद्धिमान पुत्र पिता की शिक्षा सुनता है,
परन्तु ठट्ठा करनेवाला घुड़की को भी नहीं सुनता।
२ सज्जन अपनी बातों के कारण उत्तम वस्तु खाने पाता है,
परन्तु विश्वासघाती लोगों का पेट† उपद्रव से भरता है।
३ जो अपने मुंह की चौकसी करता है, वह अपने प्राण की रक्षा करता है,
परन्तु जो गाल बजाता उसका विनाश हो जाता है।
४ आलसी का प्राण लालसा तो करता है, और उसको कुछ नहीं मिलता,
परन्तु कामकाजी हृष्ट पुष्ट हो जाते हैं।
५ धर्मी झूठे वचन से बैर रखता है,
परन्तु दुष्ट लज्जा का कारण और लज्जित हो जाता है।
६ धर्म खरी चाल चलनेवाले की रक्षा करता है,
परन्तु पापी अपनी दुष्टता के कारण उलट जाता है।
७ कोई तो धन बटोरता, परन्तु उसके पास कुछ नहीं रहता,
और कोई धन उड़ा देता, तौभी उसके पास बहुत रहता है।
८ प्राण की छुड़ौती मनुष्य का धन है,
परन्तु निर्धन घुड़की को सुनता भी नहीं।
९ धर्मियों की ज्योति आनन्द के साथ रहती है,
परन्तु दुष्टों का दिया बुझ जाता है।
१० झगड़े रगड़े केवल अहंकार ही से होते हैं,
परन्तु जो लोग सम्मति मानते हैं, उनके पास बुद्धि रहती है।
११ निर्धन के* पास माल नहीं रहता,
परन्तु जो अपने परिश्रम से बटोरता, उसकी बढ़ती होती है।
१२ जब आशा पूरी होने में विलम्ब होता है, तो मन शिथिल होता है,

* मूल में—विपत्ति से भर जाते हैं।
† मूल में—प्राण।

* मूल में—अपने को निर्धन करता।

परन्तु जब लालसा पूरी होती है, तब जीवन का वृक्ष लगता है।
१३ जो वचन को तुच्छ जानता, वह नाश हो जाता है,
परन्तु आज्ञा के डरवैये को अच्छा फल मिलता है।
१४ बुद्धिमान की शिक्षा जीवन का सोता है,
और उसके द्वारा लोग मृत्यु के फन्दों से बच सकते हैं।
१५ सुबुद्धि के कारण अनुग्रह होता है,
परन्तु विश्वासघातियों का मार्ग कड़ा होता है।
१६ सब चतुर तो ज्ञान से काम करते हैं,
परन्तु मूर्ख अपनी मूढ़ता फैलाता है।
१७ दुष्ट दूत बुराई में फंसता है,
परन्तु विश्वासयोग्य दूत से कुशलक्षेम होता है।
१८ जो शिक्षा को सुनी-अनसुनी करता वह निर्धन होता और अपमान पाता है,
परन्तु जो डांट को मानता, उसकी महिमा होती है।
१९ लालसा का पूरा होना तो प्राण को मीठा लगता है,
परन्तु बुराई से हटना, मूर्खों के प्राण को बुरा लगता है।
२० बुद्धिमानों की संगति कर, तब तू भी बुद्धिमान हो जाएगा,
परन्तु मूर्खों का साथी नाश हो जाएगा।
२१ बुराई पापियों के पीछे पड़ती है,
परन्तु धर्मियों को अच्छा फल मिलता है।
२२ भला मनुष्य अपने नाती-पोतों के लिये भाग छोड़ जाता है,
परन्तु पापी की सम्पत्ति धर्मी के लिये रखी जाती है।
२३ निर्बल लोगों को खेती बारी से बहुत भोजनवस्तु मिलती है,
परन्तु ऐसे लोग भी हैं जो अन्याय के कारण मिट जाते हैं।
२४ जो बेटे पर छड़ी नहीं चलाता वह उसका बैरी है,
परन्तु जो उस से प्रेम रखता, वह यत्न से उसको शिक्षा देता है।
२५ धर्मी पेट भर खाने पाता है,
परन्तु दुष्ट भूखे ही रहते हैं॥

१४

हर बुद्धिमान स्त्री अपने घर को बनाती है,
पर मूढ़ स्त्री उसको अपने ही हाथों से ढा देती है।
२ जो सीधाई से चलता वह यहोवा का भय माननेवाला है,
परन्तु जो टेढ़ी चाल चलता वह उसको तुच्छ जाननेवाला ठहरता है।
३ मूढ़ के मुंह में गर्व का अंकुर है,
परन्तु बुद्धिमान लोग अपने वचनों के द्वारा रक्षा पाते हैं।
४ जहां बैल नहीं, वहां गौशाला निर्मल तो रहती है,
परन्तु बैल के बल से अनाज की बढ़ती होती है।
५ सच्चा साक्षी झूठ नहीं बोलता,
परन्तु झूठा साक्षी झूठी बातें उड़ाता है।
६ ठट्ठा करनेवाला बुद्धि को ढूंढ़ता, परन्तु नहीं पाता,
परन्तु समझवाले को ज्ञान सहज से मिलता है।

७ मूर्ख से अलग हो जा,
तू उस से ज्ञान की बात न पाएगा *।
८ चतुर की बुद्धि अपनी चाल का जानना है,
परन्तु मूर्खों की मूढ़ता छल करना है।
९ मूढ़ लोग दोषी होने को ठट्ठा जानते हैं,
परन्तु सीधे लोगों के बीच अनुग्रह होता है।
१० मन अपना ही दुःख जानता है,
और परदेशी उसके आनन्द में हाथ नहीं डाल सकता।
११ दुष्टों का घर विनाश हो जाता है,
परन्तु सीधे लोगों के तम्बू में आबादी होती है।
१२ ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक देख पड़ता है,
परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।
१३ हंसी के समय भी मन उदास होता है,
और आनन्द के अन्त में शोक होता है।
१४ जिसका मन ईश्वर की ओर से हट जाता है,
वह अपनी चालचलन का फल भोगता है,
परन्तु भला मनुष्य आप ही आप सन्तुष्ट होता है।
१५ भोला तो हर एक बात को सच मानता है,
परन्तु चतुर मनुष्य समझ बूझकर चलता है।
१६ बुद्धिमान डरकर बुराई से हटता है,
परन्तु मूर्ख ढीठ होकर निडर रहता है।
१७ जो झट क्रोध करे, वह मूढ़ता का काम भी करेगा,
और जो बुरी युक्तियां निकालता है, उस से लोग बैर रखते हैं।
१८ भोलों का भाग मूढ़ता ही होता है,
परन्तु चतुरों को ज्ञानरूपी मुकुट बान्धा जाता है।
१९ बुरे लोग भलों के सम्मुख,
और दुष्ट लोग धर्मी के फाटक पर दण्डवत् करते हैं।
२० निर्धन का पड़ोसी भी उस से घृणा करता है,
परन्तु धनी के बहुतेरे प्रेमी होते हैं।
२१ जो अपने पड़ोसी को तुच्छ जानता, वह पाप करता है,
परन्तु जो दीन लोगों पर अनुग्रह करता, वह धन्य होता है।
२२ जो बुरी युक्ति निकालते हैं, क्या वे भ्रम में नहीं पड़ते?
परन्तु भली युक्ति निकालनेवालों से करुणा और सच्चाई का व्यवहार किया जाता है।
२३ परिश्रम से सदा लाभ होता है,
परन्तु बकवाद करने से केवल घटी होती है।
२४ बुद्धिमानों का धन उनका मुकुट ठहरता है,
परन्तु मूर्खों की मूढ़ता निरी मूढ़ता है।
२५ सच्चा साक्षी बहुतों के प्राण बचाता है,
परन्तु जो झूठी बातें उड़ाया करता है उस से धोखा ही होता है।
२६ यहोवा के भय मानने से दृढ़ भरोसा होता है,
और उसके पुत्रों को शरणस्थान मिलता है।

* मूल में—न जानेगा।

२७ यहोवा का भय मानना, जीवन का सोता है,
और उसके द्वारा लोग मृत्यु के फन्दों से बच जाते हैं।
२८ राजा की महिमा प्रजा की बहुतायत से होती है,
परन्तु जहां प्रजा नहीं, वहां हाकिम नाश हो जाता है।
२९ जो विलम्ब से क्रोध करनेवाला है वह बड़ा समझवाला है,
परन्तु जो अधीर है, वह मूढ़ता की बढ़ती करता है।
३० शान्त मन, तन का जीवन है,
परन्तु मन के जलने से हड्डियां भी जल * जाती हैं।
३१ जो कंगाल पर अंधेर करता, वह उसके कर्त्ता की निन्दा करता है,
परन्तु जो दरिद्र पर अनुग्रह करता, वह उसकी महिमा करता है।
३२ दुष्ट मनुष्य बुराई करता हुआ नाश हो जाता है,
परन्तु धर्मी को मृत्यु के समय भी शरण मिलती है।
३३ समझवाले के मन में बुद्धि वास किए रहती है,
परन्तु मूर्खों के अन्तःकाल में जो कुछ है वह प्रगट हो जाता है।
३४ जाति की बढ़ती धर्म ही से होती है,
परन्तु पाप से देश के लोगों † का अपमान होता है।
३५ जो कर्मचारी बुद्धि से काम करता है उस पर राजा प्रसन्न होता है,
परन्तु जो लज्जा के काम करता, उस पर वह रोष करता है॥

* मूल में—सड़।
† मूल में—समुदाय समुदाय के लोगों।

१५ कोमल उत्तर सुनने से जलजलाहट ठण्डी होती है,
परन्तु कटुवचन से क्रोध धधक उठता है।
२ बुद्धिमान ज्ञान का ठीक बखान करते हैं,
परन्तु मूर्खों के मुंह से मूढ़ता उबल आती है।
३ यहोवा की आंखें सब स्थानों में लगी रहती हैं,
वह बुरे भले दोनों को देखती रहती हैं।
४ शान्ति देनेवाली बात जीवन-वृक्ष है,
परन्तु उलट फेर की बात से आत्मा दुःखित होती है।
५ मूढ़ अपने पिता की शिक्षा का तिरस्कार करता है,
परन्तु जो डांट को मानता, वह चतुर हो जाता है।
६ धर्मी के घर में बहुत धन रहता है,
परन्तु दुष्ट के उपार्जन में दुःख रहता है।
७ बुद्धिमान लोग बातें करने से ज्ञान को फैलाते हैं,
परन्तु मूर्खों का मन ठीक नहीं रहता।
८ दुष्ट लोगों के बलिदान से यहोवा घृणा करता है,
परन्तु वह सीधे लोगों की प्रार्थना से प्रसन्न होता है।
९ दुष्ट के चालचलन से यहोवा को घृणा आती है,
परन्तु जो धर्म का पीछा करता उस से वह प्रेम रखता है।
१० जो मार्ग को छोड़ देता, उसको बड़ी ताड़ना मिलती है,

और जो डांट से बैर रखता, वह
अवश्य मर जाता है।
११ जब कि अधोलोक और विनाशलोक
यहोवा के साम्हने खुले रहते हैं,
तो निश्चय मनुष्यों के मन भी।
१२ ठट्ठा करनेवाला डांटे जाने से प्रसन्न
नहीं होता,
और न वह बुद्धिमानों के पास जाता
है।
१३ मन आनन्दित होने से मुख पर भी
प्रसन्नता छा जाती है,
परन्तु मन के दुःख से आत्मा निराश
होती है।
१४ समझनेवाले का मन ज्ञान की खोज
में रहता है,
परन्तु मूर्ख लोग मूढ़ता से पेट भरते
हैं।
१५ दुखिया के सब दिन दुःख भरे रहते हैं,
परन्तु जिसका मन प्रसन्न रहता है,
वह मानो नित्य भोज में जाता है।
१६ घबराहट के साथ बहुत रखे हुए
धन से,
यहोवा के भय के साथ थोड़ा ही धन
उत्तम है,
१७ प्रेम वाले घर में सागपात का भोजन,
बैर वाले घर में पले हुए बैल का
मांस खाने से उत्तम है।
१८ क्रोधी पुरुष झगड़ा मचाता है,
परन्तु जो विलम्ब से क्रोध करनेवाला
है, वह मुक़द्दमों को दबा देता है।
१९ आलसी का मार्ग कांटों से रुन्धा हुआ
होता है,
परन्तु सीधे लोगों का मार्ग राजमार्ग
ठहरता है।
२० बुद्धिमान पुत्र से पिता आनन्दित होता
है,
परन्तु मूर्ख अपनी माता को तुच्छ
जानता है।
२१ निर्बुद्धि को मूढ़ता से आनन्द होता है,
परन्तु समझवाला मनुष्य सीधी चाल
चलता है।
२२ बिना सम्मति की कल्पनाएं निष्फल
हुआ करती हैं,
परन्तु बहुत से मंत्रियों की सम्मति से
बात ठहरती है।
२३ सज्जन उत्तर देने से आनन्दित होता है,
और अवसर पर कहा हुआ वचन क्या
ही भला होता है!
२४ बुद्धिमान के लिये जीवन का मार्ग
ऊपर की ओर जाता है,
इस रीति से वह अधोलोक में पड़ने से
बच जाता है।
२५ यहोवा अहंकारियों के घर को ढा
देता है,
परन्तु विधवा के सिवाने को अटल
रखता है।
२६ बुरी कल्पनाएं यहोवा को घिनौनी
लगती हैं,
परन्तु शुद्ध जन के वचन मनभावने हैं।
२७ लालची अपने घराने को दुःख देता है,
परन्तु घूस से घृणा करनेवाला जीवित
रहता है।
२८ धर्मी मन में सोचता है कि क्या
उत्तर दूं,
परन्तु दुष्टों के मुंह से बुरी बातें उबल
आती हैं।
२९ यहोवा दुष्टों से दूर रहता है,
परन्तु धर्मियों की प्रार्थना सुनता है।
३० आंखों की चमक से मन को आनन्द
होता है,
और अच्छे समाचार से हड्डियां पुष्ट
होती हैं।

३१ जो जीवनदायी डांट कान लगाकर सुनता है,
वह बुद्धिमानों के संग ठिकाना पाता है।
३२ जो शिक्षा को सुनी-अनसुनी करता, वह अपने प्राण को तुच्छ जानता है,
परन्तु जो डांट को सुनता, वह बुद्धि प्राप्त करता है।
३३ यहोवा के भय मानने से शिक्षा प्राप्त होती है,
और महिमा से पहिले नम्रता होती है॥

१६ मन की युक्ति मनुष्य के वश में रहती है,
परन्तु मुंह से कहना यहोवा की ओर से होता है।
२ मनुष्य का सारा चालचलन अपनी दृष्टि में पवित्र ठहरता है,
परन्तु यहोवा मन को तौलता है।
३ अपने कामों को यहोवा पर डाल दे,
इस से तेरी कल्पनाएं सिद्ध होंगी।
४ यहोवा ने सब वस्तुएं विशेष उद्देश्य के लिये बनाई हैं, वरन दुष्ट को भी विपत्ति भोगने के लिये बनाया है।
५ सब मन के घमण्डियों से यहोवा घृणा करता है;
मैं दृढ़ता से कहता हूं*, ऐसे लोग निर्दोष न ठहरेंगे।
६ अधर्म का प्रायश्चित्त कृपा, और सच्चाई से होता है,
और यहोवा के भय मानने के द्वारा मनुष्य बुराई करने से बच जाते हैं।
७ जब किसी का चालचलन यहोवा को भावता है,
तब वह उसके शत्रुओं का भी उस से मेल कराता है।
८ अन्याय के बड़े लाभ से,
न्याय से थोड़ा ही प्राप्त करना उत्तम है।
९ मनुष्य मन में अपने मार्ग पर विचार करता है,
परन्तु यहोवा ही उसके पैरों को स्थिर करता है।
१० राजा के मुंह से दैवीवाणी निकलती है,
न्याय करने में उस से चूक नहीं होती।
११ सच्चा तराजू और पलड़े यहोवा की ओर से होते हैं,
थैली में जितने बटखरे हैं, सब उसी के बनवाए हुए हैं।
१२ दुष्टता करना राजाओं के लिये घृणित काम है,
क्योंकि उनकी गद्दी धर्म ही से स्थिर रहती है।
१३ धर्म की बात बोलनेवालों से राजा प्रसन्न होता है,
और जो सीधी बातें बोलता है, उस से वह प्रेम रखता है।
१४ राजा का क्रोध मृत्यु के दूत के समान है,
परन्तु बुद्धिमान मनुष्य उसको ठण्डा करता है।
१५ राजा के मुख की चमक में जीवन रहता है,
और उसकी प्रसन्नता बरसात के अन्त की घटा के समान होती है।
१६ बुद्धि की प्राप्ति चोखे सोने से क्या ही उत्तम है!

* मूल में—हाथ पर हाथ।

और समझ की प्राप्ति चान्दी से अति योग्य है।
१७ बुराई से हटना सीधे लोगों के लिये राजमार्ग है,
जो अपने चालचलन की चौकसी करता, वह अपने प्राण की भी रक्षा करता है।
१८ विनाश से पहिले गर्व,
और ठोकर खाने से पहिले घमण्ड होता है।
१९ घमण्डियों के संग लूट बांट लेने से, दीन लोगों के संग नम्र भाव से रहना उत्तम है।
२० जो वचन पर मन लगाता, वह कल्याण पाता है,
और जो यहोवा पर भरोसा रखता, वह धन्य होता है।
२१ जिसके हृदय में बुद्धि है, वह समझ-वाला कहलाता है,
और मधुर वाणी के द्वारा ज्ञान बढ़ता है।
२२ जिसके बुद्धि है, उसके लिये वह जीवन का सोता है,
परन्तु मूढ़ों को शिक्षा देना मूढ़ता ही होती है।
२३ बुद्धिमान का मन उसके मुंह पर भी बुद्धिमानी प्रगट करता * है,
और उसके वचन में विद्या रहती है।
२४ मनभावने वचन मधुभरे छत्ते की नाईं प्राणों को मीठे लगते,
और हड्डियों को हरी-भरी करते हैं।

* मूल में—उसके मुंह को बुद्धिमान करता है।

२५ ऐसा भी मार्ग है, जो मनुष्य को सीधा देख पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।
२६ परिश्रमी की लालसा उसके लिये परिश्रम करती है,
उसकी भूख * तो उसको उभारती रहती है।
२७ अधर्मी मनुष्य बुराई की युक्ति निकालता है,
और उसके वचनों से आग लग जाती है।
२८ टेढ़ा मनुष्य बहुत झगड़े को उठाता है,
और कानाफूसी करनेवाला परम मित्रों में भी फूट करा देता है।
२९ उपद्रवी मनुष्य अपने पड़ोसी को फुसलाकर
कुमार्ग पर चलाता है।
३० आंख मूंदनेवाला छल की कल्पनाएं करता है,
और ओंठ दबानेवाला बुराई करता है।
३१ पक्के बाल शोभायमान मुकुट ठहरते हैं;
वे धर्म के मार्ग पर चलने से प्राप्त होते हैं।
३२ विलम्ब से क्रोध करना वीरता से,
और अपने मन को वश में रखना, नगर के जीत लेने से उत्तम है।
३३ चिट्ठी डाली जाती तो है,
परन्तु उसका निकलना यहोवा ही की ओर से होता है॥

१७ चैन के साथ सूखा टुकड़ा, उस घर की अपेक्षा उत्तम है
जो मेलबलि-पशुओं से भरा हो, परन्तु उस में झगड़े रगड़े हों।

* मूल में—उसका मुंह।

२ बुद्धि से चलनेवाला दास अपने स्वामी
के उस पुत्र पर जो लज्जा का
कारण होता है प्रभुता करेगा,
और उस पुत्र के भाइयों के बीच
भागी होगा।
३ चान्दी के लिये कुठाली, और सोने के
लिये भट्ठी होती है,
परन्तु मनों को यहोवा जांचता है।
४ कुकर्मी अनर्थ बात को ध्यान देकर
सुनता है,
और झूठा मनुष्य दुष्टता की बात की
ओर कान लगाता है।
५ जो निर्धन को ठट्ठों में उड़ाता है, वह
उसके कर्त्ता की निन्दा करता है;
और जो किसी की विपत्ति पर हंसता,
वह निर्दोष नहीं ठहरेगा।
६ बूढ़ों की शोभा उनके नाती पोते हैं;
और बाल-बच्चों की शोभा उनके
माता-पिता हैं।
७ मूढ़ को उत्तम बात फबती नहीं,
और अधिक करके प्रधान को झूठी
बात नहीं फबती।
८ देनेवाले के हाथ में घूस मोह लेनेवाले
मणि का काम देता है;
जिधर ऐसा पुरुष फिरता, उधर ही
उसका काम सुफल होता है।
९ जो दूसरे के अपराध को ढांप देता,
वह प्रेम का खोजी ठहरता है,
परन्तु जो बात की चर्चा बार बार
करता है; वह परम मित्रों में भी
फूट करा देता है।
१० एक घुड़की समझनेवाले के मन में
जितनी गड़ जाती है,
उतना सौ बार मार खाना मूर्ख के
मन में नहीं गड़ता।
११ बुरा मनुष्य दंगे ही का यत्न करता है,
इसलिये उसके पास क्रूर दूत भेजा
जाएगा।
१२ बच्चा-छीनी-हुई-रीछनी से मिलना तो
भला है,
परन्तु मूढ़ता में डूबे हुए मूर्ख से
मिलना भला नहीं।
१३ जो कोई भलाई के बदले में बुराई करे,
उसके घर से बुराई दूर न होगी।
१४ झगड़े का आरम्भ बान्ध के छेद के
समान है,
झगड़ा बढ़ने से पहिले उसको छोड़
देना उचित है।
१५ जो दोषी को निर्दोष, और जो निर्दोष
को दोषी ठहराता है,
उन दोनों से यहोवा घृणा करता
है।
१६ बुद्धि मोल लेने के लिये मूर्ख अपने
हाथ में दाम क्यों लिए है ?
वह उसे चाहता ही नहीं !
१७ मित्र सब समयों में प्रेम रखता है,
और विपत्ति के दिन भाई बन जाता
है।
१८ निर्बुद्धि मनुष्य हाथ पर हाथ मारता
है,
और अपने पड़ोसी के सामने उत्तर-
दायी होता है।
१९ जो झगड़े-रगड़े में प्रीति रखता, वह
अपराध करने में भी प्रीति रखता
है,
और जो अपने फाटक को बड़ा करता
वह अपने विनाश के लिये यत्न
करता है।
२० जो मन का टेढ़ा है, उसका कल्याण
नहीं होता,
और उलट-फेर की बात करनेवाला
विपत्ति में पड़ता है।

२१ जो मूर्ख को जन्माता है वह उस से दु:ख ही पाता है;
और मूढ़ के पिता को आनन्द नहीं होता।
२२ मन का आनन्द अच्छी औषधि है,
परन्तु मन के टूटने से हड्डियां सूख जाती हैं।
२३ दुष्ट जन न्याय बिगाड़ने के लिये,
अपनी गांठ से * घूस निकालता है।
२४ बुद्धि समझनेवाले के साम्हने ही रहती है,
परन्तु मूर्ख की आंखें पृथ्वी के दूर दूर देशों में लगी रहती हैं।
२५ मूर्ख पुत्र से पिता उदास होता है,
और जननी को शोक होता है।
२६ फिर धर्मी से दण्ड लेना,
और प्रधानों को सिधाई के कारण पिटवाना, दोनों काम अच्छे नहीं हैं।
२७ जो संभलकर बोलता है, वही ज्ञानी ठहरता है;
और जिसकी आत्मा शान्त रहती है, सोई समझवाला पुरुष ठहरता है।
२८ मूढ़ भी जब चुप रहता है, तब बुद्धिमान गिना जाता है; और जो अपना मुंह बन्द रखता वह समझवाला गिना जाता है॥

१८

जो औरों से अलग हो जाता है,
वह अपनी ही इच्छा पूरी करने के लिये ऐसा करता है,
२ और सब प्रकार की खरी बुद्धि से बैर † करता है।
मूर्ख का मन समझ की बातों में नहीं लगता,
वह केवल अपने मन की बात प्रगट करना चाहता है।
३ जहां दुष्ट आता, वहां अपमान भी आता है;
और निन्दित काम के साथ नामधराई होती है।
४ मनुष्य के मुंह के वचन गहिरा जल,
वा उमण्डनेवाली नदी वा बुद्धि के सोते हैं।
५ दुष्ट का पक्ष करना,
और धर्मी का हक़ मारना, अच्छा नहीं है।
६ बात बढ़ाने से मूर्ख मुक़द्दमा खड़ा करता है,
और अपने को मार खाने के योग्य दिखाता है *।
७ मूर्ख का विनाश उसकी बातों से होता है,
और उसके वचन उसके प्राण के लिये फन्दे होते हैं।
८ कानाफूसी करनेवाले के वचन स्वादिष्ट भोजन की नाईं लगते हैं;
वे पेट में पच जाते हैं।
९ जो काम में आलस करता है,
वह खोनेवाले का भाई ठहरता है।
१० यहोवा का नाम दृढ़ कोट है;
धर्मी उस में भागकर सब दुर्घटनाओं से बचता है।
११ धनी का धन उसकी दृष्टि में गढ़वाला नगर,
और ऊंचे पर बनी हुई शहरपनाह है।

* मूल में—गोद।
† मूल में—लड़ाई।

* मूल में—उसका मुंह मार को बुलाता है।

१२ नाश होने से पहिले मनुष्य के मन में घमण्ड,
और महिमा पाने से पहिले नम्रता होती है।
१३ जो बिना बात सुने उत्तर देता है,
वह मूढ़ ठहरता, और उसका अनादर होता है।
१४ रोग में मनुष्य अपनी आत्मा से सम्भलता है;
परन्तु जब आत्मा हार जाती है तब इसे कौन सह सकता है?
१५ समझवाले का मन ज्ञान प्राप्त करता है;
और बुद्धिमान ज्ञान की बात की खोज में रहते हैं।
१६ भेंट मनुष्य के लिये मार्ग खोल देती है,
और उसे बड़े लोगों के साम्हने पहुंचाती है।
१७ मुक़द्दमे में जो पहिले बोलता, वही धर्मी जान पड़ता है,
परन्तु पीछे दूसरा पक्षवाला * आकर उसे खोज लेता है।
१८ चिट्ठी डालने से झगड़े बन्द होते हैं,
और बलवन्तों की लड़ाई का अन्त होता है।
१९ चिढ़े हुए भाई को मनाना दृढ़ नगर के ले लेने से कठिन होता है,
और झगड़े राजभवन के बेण्डों के समान हैं।
२० मनुष्य का पेट मुंह की बातों के फल से भरता है;
और बोलने से जो कुछ प्राप्त होता है उस से वह तृप्त होता है।
२१ जीभ के वश में मृत्यु और जीवन दोनों होते हैं,
और जो उसे काम में लाना जानता है वह उसका फल भोगेगा।
२२ जिस ने स्त्री ब्याह ली, उस ने उत्तम पदार्थ पाया,
और यहोवा का अनुग्रह उस पर हुआ है।
२३ निर्धन गिड़गिड़ाकर बोलता है,
परन्तु धनी कड़ा उत्तर देता है।
२४ मित्रों के बढ़ाने से तो नाश होता है,
परन्तु ऐसा मित्र होता है, जो भाई से भी अधिक मिला रहता है।

१९ जो निर्धन खराई से चलता है,
वह उस मूर्ख से उत्तम है जो टेढ़ी बातें बोलता है।
२ मनुष्य का ज्ञानरहित रहना अच्छा नहीं,
और जो उतावली से दौड़ता है वह चूक जाता है।
३ मूढ़ता के कारण मनुष्य का मार्ग टेढ़ा होता है,
और वह मन ही मन यहोवा से चिढ़ने लगता है।
४ धनी के तो बहुत मित्र हो जाते हैं,
परन्तु कंगाल के मित्र उस से अलग हो जाते हैं।
५ झूठा साक्षी निर्दोष नहीं ठहरता,
और जो झूठ बोला करता है, वह न बचेगा।
६ उदार मनुष्य को बहुत से लोग मना लेते हैं,
और दानी पुरुष का मित्र सब कोई बनता है।
७ जब निर्धन के सब भाई उस से बैर रखते हैं,

* मूल में—उसका बन्धु।

तो निश्चय है कि उसके मित्र उस से
 दूर हो जाएं।
वह बातें करते हुए उनका पीछा
 करता है, परन्तु उनको नहीं
 पाता।
८ जो बुद्धि प्राप्त करता, वह अपने प्राण
 का प्रेमी ठहरता है;
और जो समझ को धरे रहता है
 उसका कल्याण होता है।
९ झूठा साक्षी निर्दोष नहीं ठहरता,
और जो झूठ बोला करता है, वह
 नाश होता है।
१० जब सुख से रहना मूर्ख को नहीं
 फबता,
तो हाकिमों पर दास का प्रभुता करना
 कैसे फबे!
११ जो मनुष्य बुद्धि से चलता है वह
 विलम्ब से क्रोध करता है,
और अपराध को भुलाना उसको
 सोहता है।
१२ राजा का क्रोध सिंह की गरजन के
 समान है,
परन्तु उसकी प्रसन्नता घास पर की
 ओस के तुल्य होती है।
१३ मूर्ख पुत्र पिता के लिये विपत्ति ठहरता
 है,
और पत्नी के झगड़े-रगड़े सदा टपकने
 के समान हैं।
१४ घर और धन पुरखाओं के भाग में,
परन्तु बुद्धिमती पत्नी यहोवा ही से
 मिलती है।
१५ आलस से भारी नींद आ जाती है,
और जो प्राणी ढिलाई से काम करता,
 वह भूखा ही रहता है।
१६ जो आज्ञा को मानता, वह अपने
 प्राण की रक्षा करता है,
परन्तु जो अपने चालचलन के विषय
 में निश्चिन्त रहता है, वह मर
 जाता है।
१७ जो कंगाल पर अनुग्रह करता है, वह
 यहोवा को उधार देता है,
और वह अपने इस काम का प्रतिफल
 पाएगा।
१८ जबतक आशा है तो अपने पुत्र की
 ताड़ना कर,
जान बूझकर उसको मार न डाल।
१९ जो बड़ा क्रोधी है, उसे दण्ड उठाने
 दे;
क्योंकि यदि तू उसे बचाए, तो
 बारम्बार बचाना पड़ेगा।
२० सम्मति को सुन ले, और शिक्षा को
 ग्रहण कर,
कि तू अन्तकाल में बुद्धिमान ठहरे।
२१ मनुष्य के मन में बहुत सी कल्पनाएं
 होती हैं,
परन्तु जो युक्ति यहोवा करता है,
 वही स्थिर रहती है।
२२ मनुष्य कृपा करने के अनुसार चाहने
 योग्य होता है,
और निर्धन जन झूठ बोलनेवाले से
 उत्तम है।
२३ यहोवा का भय मानने से जीवन
 बढ़ता है;
और उसका भय माननेवाला ठिकाना
 पाकर सुखी रहता है;
उस पर विपत्ति नहीं पड़ने की।
२४ आलसी अपना हाथ थाली में डालता
 है,
परन्तु अपने मुंह तक कौर नहीं
 उठाता।
२५ ठट्ठा करनेवाले को मार, इस से
 भोला मनुष्य समझदार हो जाएगा;

और समझवाले को डांट, तब वह
अधिक ज्ञान पाएगा।
२६ जो पुत्र अपने बाप को उजाड़ता,
और अपनी मां को भगा देता है,
वह अपमान और लज्जा का कारण
होगा।
२७ हे मेरे पुत्र, यदि तू भटकना चाहता है,
तो शिक्षा का सुनना छोड़ दे।
२८ अधम साक्षी न्याय को ठट्ठों में
उड़ाता है,
और दुष्ट लोग अनर्थ काम निगल
लेते हैं।
२९ ठट्ठा करनेवालों के लिये दण्ड ठहराया
जाता है,
और मूर्खों की पीठ के लिये कोड़े हैं।

२० दाखमधु ठट्ठा करनेवाला और
मदिरा हल्ला मचानेवाली है;
जो कोई उसके कारण चूक करता
है, वह बुद्धिमान नहीं।
२ राजा का भय दिखाना, सिंह का
गरजना है;
जो उस पर रोष करता, वह अपने
प्राण का अपराधी होता है।
३ मुक़द्दमे से हाथ उठाना, पुरुष की
महिमा ठहरती है;
परन्तु सब मूढ़ झगड़ने को तैयार
होते हैं।
४ आलसी मनुष्य शीत के कारण हल
नहीं जोतता;
इसलिये कटनी के समय वह भीख
मांगता, और कुछ नहीं पाता।
५ मनुष्य के मन की युक्ति अथाह तो
है,
तौभी समझवाला मनुष्य उसको
निकाल लेता है।
६ बहुत से मनुष्य अपनी कृपा का प्रचार
करते हैं;
परन्तु सच्चा पुरुष कौन पा सकता
है?
७ धर्मी जो खराई से चलता रहता है,
उसके पीछे उसके लड़केबाले धन्य
होते हैं।
८ राजा जो न्याय के सिंहासन पर बैठा
करता है,
वह अपनी दृष्टि ही से सब बुराई को
उड़ा देता है।
९ कौन कह सकता है कि मैं ने अपने
हृदय को पवित्र किया;
अथवा मैं पाप से शुद्ध हुआ हूं?
१० घटती-बढ़ती बटखरे और घटते-
बढ़ते नपुए*
इन दोनों से यहोवा घृणा करता है।
११ लड़का भी अपने कामों से पहिचाना
जाता है,
कि उसका काम पवित्र और सीधा
है, वा नहीं।
१२ सुनने के लिये कान और देखने के
लिये जो आंखें हैं,
उन दोनों को यहोवा ने बनाया है।
१३ नींद से प्रीति न रख, नहीं तो दरिद्र
हो जाएगा;
आंखें खोल तब तू रोटी से तृप्त होगा।
१४ मोल लेने के समय ग्राहक तुच्छ
तुच्छ कहता है;
परन्तु चले जाने पर बड़ाई करता
है।
१५ सोना और बहुत से मूंगे तो हैं;
परन्तु ज्ञान की बातें अनमोल मणि
ठहरी हैं।

* मूल में—एपा।

१६ जो अनजाने* का उत्तरदायी हुआ उसका कपड़ा,
और जो पराए का उत्तरदायी हुआ उस से बंधक की वस्तु ले रख।
१७ चोरी-छिपे की रोटी मनुष्य को मीठी तो लगती है,
परन्तु पीछे उसका मुंह कंकड़ से भर जाता है।
१८ सब कल्पनाएं सम्मति ही से स्थिर होती हैं;
और युक्ति के साथ युद्ध करना चाहिये।
१९ जो लुतराई करता फिरता है वह भेद प्रगट करता है;
इसलिये बकवादी से मेल जोल न रखना।
२० जो अपने माता-पिता को कोसता,
उसका दिया बुझ जाता, और घोर अन्धकार हो जाता है।
२१ जो भाग पहिले उतावली से मिलता है,
अन्त में उस पर आशीष नहीं होती।
२२ मत कह, कि मैं बुराई का पलटा लूंगा;
वरन यहोवा की बाट जोहता रह, वह तुझ को छुड़ाएगा।
२३ घटती बढ़ती बटखरों से यहोवा घृणा करता है,
और छल का तराजू अच्छा नहीं।
२४ मनुष्य का मार्ग यहोवा की ओर से ठहराया जाता है;
आदमी क्योंकर अपना चलना समझ सके?

* मूल में—पराये।

२५ जो मनुष्य बिना विचारे किसी वस्तु को पवित्र ठहराए*,
और जो मन्नत मानकर पूछपाछ करने लगे, वह फन्दे में फंसेगा।
२६ बुद्धिमान राजा दुष्टों को फटकता है,
और उन पर दावने का पहिया चलवाता है।
२७ मनुष्य की आत्मा यहोवा का दीपक है;
वह मन की सब बातों की खोज करता है।
२८ राजा की रक्षा कृपा और सच्चाई के कारण होती है,
और कृपा करने से उसकी गद्दी संभलती है।
२९ जवानों का गौरव उनका बल है,
परन्तु बूढ़ों की शोभा उनके पक्के बाल हैं।
३० चोट लगने से जो घाव होते हैं, वह बुराई दूर करते हैं;
और मार खाने से हृदय निर्मल हो जाता है॥

२१ राजा का मन नालियों के जल की नाईं यहोवा के हाथ में रहता है,
जिधर वह चाहता उधर उसको फेर देता है।
२ मनुष्य का सारा चालचलन अपनी दृष्टि में तो ठीक होता है,
परन्तु यहोवा मन को जांचता है।
३ धर्म और न्याय करना,
यहोवा को बलिदान से अधिक अच्छा लगता है।

* मूल में—कहे कि पवित्र वस्तु।

४ चढ़ी आंखें, घमण्डी मन,
और दुष्टों की खेती, तीनों पापमय हैं।
५ कामकाजी की कल्पनाओं से केवल लाभ होता है,
परन्तु उतावली करनेवाले को केवल घटती होती है।
६ जो धन झूठ के द्वारा प्राप्त हो,
वह वायु से उड़ जानेवाला कुहरा है,
उसके ढूंढ़नेवाले मृत्यु ही को ढूंढ़ते हैं।
७ जो उपद्रव दुष्ट लोग करते हैं, उस से उन्हीं का नाश होता है,
क्योंकि वे न्याय का काम करने से इनकार करते हैं।
८ पाप से लदे हुए मनुष्य का मार्ग बहुत ही टेढ़ा होता है,
परन्तु जो पवित्र है, उसका कर्म सीधा होता है।
९ लम्बे-चौड़े घर में झगड़ालू पत्नी के संग रहने से
छत के कोने पर रहना उत्तम है।
१० दुष्ट जन बुराई की लालसा जी से करता है,
वह अपने पड़ोसी पर अनुग्रह की दृष्टि नहीं करता।
११ जब ठट्ठा करनेवाले को दण्ड दिया जाता है, तब भोला बुद्धिमान हो जाता है;
और जब बुद्धिमान को उपदेश दिया जाता है, तब वह ज्ञान प्राप्त करता है।
१२ धर्मी जन दुष्टों के घराने पर बुद्धिमानी से विचार करता है; ईश्वर दुष्टों को बुराइयों में उलट देता है।
१३ जो कंगाल की दोहाई पर कान न दे,
वह आप पुकारेगा और उसकी सुनी न जाएगी।
१४ गुप्त में दी हुई भेंट से क्रोध ठण्डा होता है,
और चुपके से दी हुई घूस से बड़ी जलजलाहट भी थमती है।
१५ न्याय का काम करना धर्मी को तो आनन्द,
परन्तु अनर्थकारियों को विनाश ही का कारण जान पड़ता है।
१६ जो मनुष्य बुद्धि के मार्ग से भटक जाए,
उसका ठिकाना मरे हुओं के बीच में होगा।
१७ जो रागरंग * से प्रीति रखता है, वह कंगाल होता है;
और जो दाखमधु पीने और तेल लगाने से प्रीति रखता है, वह धनी नहीं होता।
१८ दुष्ट जन धर्मी की छुड़ौती ठहरता है,
और विश्वासघाती सीधे लोगों की सन्ती दण्ड भोगते हैं।
१९ झगड़ालू और चिढ़नेवाली पत्नी के संग रहने से जंगल में रहना उत्तम है।
२० बुद्धिमान के घर में उत्तम धन और तेल पाए जाते हैं,
परन्तु मूर्ख उनको उड़ा डालता है।
२१ जो धर्म और कृपा का पीछा पकड़ता है,
वह जीवन, धर्म और महिमा भी पाता है।

* मूल में—आनन्द।

२२ बुद्धिमान शूरवीरों के नगर पर चढ़कर,
उनके बल को जिस पर वे भरोसा करते हैं, नाश करता है।
२३ जो अपने मुंह को वश में रखता है,
वह अपने प्राण को विपत्तियों से बचाता है।
२४ जो अभिमान से रोष में आकर काम करता है,
उसका नाम अभिमानी, और अहंकारी ठट्ठा करनेवाला पड़ता है।
२५ आलसी अपनी लालसा ही में मर जाता है,
क्योंकि उसके हाथ काम करने से इन्कार करते हैं।
२६ कोई ऐसा है, जो दिन भर लालसा ही किया करता है,
परन्तु धर्मी लगातार दान करता रहता है।
२७ दुष्टों का बलिदान घृणित लगता है;
विशेष करके जब वह महापाप के निमित्त चढ़ाता है।
२८ झूठा साक्षी नाश होता है,
जिस ने जो सुना है, वही कहता हुआ स्थिर रहेगा।
२९ दुष्ट मनुष्य कठोर मुख का होता है,
और जो सीधा है, वह अपनी चाल सीधी करता है।
३० यहोवा के विरुद्ध न तो कुछ बुद्धि,
और न कुछ समझ,
न कोई युक्ति चलती है।
३१ युद्ध के दिन के लिये घोड़ा तैयार तो होता है,
परन्तु जय यहोवा ही से मिलती है॥

२२

बड़े धन से अच्छा नाम अधिक चाहने योग्य है,
और सोने चान्दी से औरों की प्रसन्नता उत्तम है।
२ धनी और निर्धन दोनों एक दूसरे से मिलते हैं;
यहोवा उन दोनों का कर्त्ता है।
३ चतुर मनुष्य विपत्ति को आते देखकर छिप जाता है;
परन्तु भोले लोग आगे बढ़कर दण्ड भोगते हैं।
४ नम्रता और यहोवा के भय मानने का फल
धन, महिमा और जीवन होता है।
५ टेढ़े मनुष्य के मार्ग में कांटे और फन्दे रहते हैं;
परन्तु जो अपने प्राणों की रक्षा करता, वह उन से दूर रहता है।
६ लड़के को शिक्षा उसी मार्ग की दे जिस में उसको चलना चाहिये,
और वह बुढ़ापे में भी उस से न हटेगा।
७ धनी, निर्धन लोगों पर प्रभुता करता है,
और उधार लेनेवाला उधार देनेवाले का दास होता है।
८ जो कुटिलता का बीज बोता है, वह अनर्थ ही काटेगा,
और उसके रोष का सोंटा टूटेगा।
९ दया करनेवाले पर आशीष फलती है,
क्योंकि वह कंगाल को अपनी रोटी में से देता है।
१० ठट्ठा करनेवाले को निकाल दे, तब झगड़ा मिट जाएगा,
और वाद-विवाद और अपमान दोनों टूट जाएंगे।

११ जो मन की शुद्धता से प्रीति रखता है,
और जिसके वचन मनोहर होते हैं,
राजा उसका मित्र होता है।
१२ यहोवा ज्ञानी पर दृष्टि करके, उसकी रक्षा करता है,
परन्तु विश्वासघाती की बातें उलट देता है।
१३ आलसी कहता है, बाहर तो सिंह होगा!
मैं चौक के बीच घात किया जाऊंगा!
१४ पराई स्त्रियों का मुंह गहिरा गड़हा है;
जिस से यहोवा क्रोधित होता, सोई उस में गिरता है।
१५ लड़के के मन में मूढ़ता बन्धी रहती है,
परन्तु छड़ी की ताड़ना के द्वारा वह उस से दूर की जाती है।
१६ जो अपने लाभ के निमित्त कंगाल पर अन्धेर करता है,
और जो धनी को भेंट देता, वे दोनों केवल हानि ही उठाते हैं॥
१७ कान लगाकर बुद्धिमानों के वचन सुन,
और मेरी ज्ञान की बातों की ओर मन लगा;
१८ यदि तू उसको अपने मन में रखे,
और वे सब तेरे मुंह से निकला भी करें, तो यह मनभावनी बात होगी।
१९ मैं आज इसलिये ये बातें तुझ को जता देता हूं,
कि तेरा भरोसा यहोवा पर हो।
२० मैं बहुत दिनों से तेरे हित के उपदेश और ज्ञान की बातें लिखता आया हूं,
२१ कि मैं तुझे सत्य वचनों का निश्चय करा दूं,
जिस से जो तुझे काम में लगाएं, उनको सच्चा उत्तर दे सके॥
२२ कंगाल पर इस कारण अन्धेर न करना कि वह कंगाल है,
और न दीन जन को कचहरी* में पीसना;
२३ क्योंकि यहोवा उनका मुक़द्दमा लड़ेगा,
और जो लोग उनका धन हर लेते हैं, उनका प्राण भी वह हर लेगा।
२४ क्रोधी मनुष्य का मित्र न होना,
और झट क्रोध करनेवाले के संग न चलना,
२५ कहीं ऐसा न हो कि तू उसकी चाल सीखे,
और तेरा प्राण फन्दे में फंस जाए।
२६ जो लोग हाथ पर हाथ मारते,
और ऋणियों के उत्तरदायी होते हैं,
उन में तू न होना।
२७ यदि भर देने के लिये तेरे पास कुछ न हो,
तो वह क्यों तेरे नीचे से खाट खींच ले जाए?
२८ जो सिवाना तेरे पुरखाओं ने बान्धा हो,
उस पुराने सिवाने को न बढ़ाना।
२९ यदि तू ऐसा पुरुष देखे जो कामकाज में निपुण हो,
तो वह राजाओं के सम्मुख खड़ा होगा; छोटे लोगों के सम्मुख नहीं॥

२३

जब तू किसी हाकिम के संग भोजन करने को बैठे,
तब इस बात को मन लगाकर सोचना कि मेरे साम्हने कौन है?
२ और यदि तू खाऊ हो,
तो थोड़ा खाकर भूखा उठ जाना।

* मूल में—फाटक।

३ उसकी स्वादिष्ट भोजनवस्तुओं की लालसा न करना,
क्योंकि वह धोखे का भोजन है।
४ धनी होने के लिये परिश्रम न करना;
अपनी समझ का भरोसा छोड़ना।
५ क्या तू अपनी दृष्टि उस वस्तु पर लगाएगा, जो है ही नहीं?
वह उकाब पक्षी की नाईं पंख लगाकर,
निःसन्देह आकाश की ओर उड़ जाता है।
६ जो डाह से देखता है, उसकी रोटी न खाना,
और न उसकी स्वादिष्ट भोजनवस्तुओं की लालसा करना;
७ क्योंकि जैसा वह अपने मन में विचार करता है, वैसा वह आप है।
वह तुझ से कहता तो है, खा पी,
परन्तु उसका मन तुझ से लगा नहीं।
८ जो कौर तू ने खाया हो, उसे उगलना पड़ेगा,
और तू अपनी मीठी बातों का फल खोएगा।
९ मूर्ख के साम्हने न बोलना,
नहीं तो वह तेरे बुद्धि के वचनों को तुच्छ जानेगा।
१० पुराने सिवानों को न बढ़ाना,
और न अनाथों के खेत में घुसना;
११ क्योंकि उनका छुड़ानेवाला सामर्थी है;
उनका मुक़द्दमा तेरे संग वही लड़ेगा।
१२ अपना हृदय शिक्षा की ओर,
और अपने कान ज्ञान की बातों की ओर लगाना।
१३ लड़के की ताड़ना न छोड़ना;
क्योंकि यदि तू उसको छड़ी से मारे,
तो वह न मरेगा।
१४ तू उसको छड़ी से मारकर
उसका प्राण अधोलोक से बचाएगा।
१५ हे मेरे पुत्र, यदि तू * बुद्धिमान हो,
तो विशेष करके मेरा ही मन आनन्दित होगा।
१६ और जब तू सीधी बातें बोले,
तब मेरा मन प्रसन्न होगा।
१७ तू पापियों के विषय मन में डाह न करना,
दिन भर यहोवा का भय मानते रहना।
१८ क्योंकि अन्त में फल होगा,
और तेरी आशा न टूटेगी॥
१९ हे मेरे पुत्र, तू सुनकर बुद्धिमान हो,
और अपना मन सुमार्ग में सीधा चला।
२० दाखमधु के पीनेवालों में न होना,
न मांस के अधिक खानेवालों की संगति करना;
२१ क्योंकि पियक्कड़ और खाऊ अपना भाग खोते हैं,
और पीनकवाले को चिथड़े पहिनने पड़ते हैं॥
२२ अपने जन्मानेवाले की सुनना,
और जब तेरी माता बुढ़िया हो जाए,
तब भी उसे तुच्छ न जानना।
२३ सच्चाई को मोल लेना, बेचना नहीं;
और बुद्धि और शिक्षा और समझ को भी मोल लेना।
२४ धर्मी का पिता बहुत मगन होता है;
और बुद्धिमान का जन्मानेवाला उसके कारण आनन्दित होता है।
२५ तेरे कारण माता-पिता आनन्दित,
और तेरी जननी मगन होए॥

* मूल में—तेरा मन।

२६ हे मेरे पुत्र, अपना मन मेरी ओर लगा,
और तेरी दृष्टि मेरे चालचलन पर लगी रहे।
२७ वेश्या गहिरा गड़हा ठहरती है;
और पराई स्त्री सकेत कुएं के समान है।
२८ वह डाकू की नाईं घात लगाती है,
और बहुत से मनुष्यों को विश्वासघाती कर देती है॥
२९ कौन कहता है, हाय? कौन कहता है, हाय हाय? कौन झगड़े रगड़े में फंसता है?
कौन बक बक करता है? किसके अकारण घाव होते हैं?
किसकी आंखें लाल हो जाती हैं?
३० उनकी जो दाखमधु देर तक पीते हैं,
और जो मसाला मिला हुआ दाखमधु ढूंढ़ने को जाते हैं।
३१ जब दाखमधु लाल दिखाई देता है,
और कटोरे में उसका सुन्दर रंग होता है,
और जब वह धार के साथ उण्डेला जाता है, तब उसको न देखना।
३२ क्योंकि अन्त में वह सर्प की नाईं डसता है,
और करैत के समान काटता है।
३३ तू विचित्र वस्तुएं देखेगा,
और उल्टी-सीधी बातें बकता रहेगा।
३४ और तू समुद्र के बीच लेटनेवाले
वा मस्तूल के सिरे पर सोनेवाले के समान रहेगा।
३५ तू कहेगा कि मैं ने मार तो खाई, परन्तु दुःखित न हुआ;
मैं पिट तो गया, परन्तु मुझे कुछ सुधि न थी।
मैं होश में कब आऊं? मैं तो फिर मदिरा ढूंढूंगा॥

२४ बुरे लोगों के विषय में डाह न करना,
और न उनकी संगति की चाह रखना;
२ क्योंकि वे उपद्रव सोचते रहते हैं,
और उनके मुंह से दुष्टता की बात निकलती है।
३ घर बुद्धि से बनता है,
और समझ के द्वारा स्थिर होता है।
४ ज्ञान के द्वारा कोठरियां
सब प्रकार की बहुमूल्य और मनभाऊ वस्तुओं से भर जाती हैं।
५ बुद्धिमान पुरुष बलवान् भी होता है,
और ज्ञानी जन अधिक शक्तिमान् होता है।
६ इसलिये जब तू युद्ध करे, तब युक्ति के साथ करना,
विजय बहुत से मन्त्रियों के द्वारा प्राप्त होती है।
७ बुद्धि इतने ऊंचे पर है कि मूढ़ उसे पा नहीं सकता;
वह सभा * में अपना मुंह खोल नहीं सकता॥
८ जो सोच विचार के बुराई करता है,
उसको लोग दुष्ट कहते हैं।
९ मूर्खता का विचार भी पाप है,
और ठट्ठा करनेवाले से मनुष्य घृणा करते हैं॥
१० यदि तू विपत्ति के समय साहस छोड़ दे,
तो तेरी शक्ति बहुत कम है।

* मूल में—फाटक।

११ जो मार डाले जाने के लिये घसीटे
जाते हैं उनको छुड़ा;
और जो घात किए जाने को हैं
उन्हें मत पकड़ा।
१२ यदि तू कहे, कि देख मैं इसको
जानता न था,
तो क्या मन का जांचनेवाला इसे
नहीं समझता ?
और क्या तेरे प्राणों का रक्षक इसे
नहीं जानता ?
और क्या वह हर एक मनुष्य के
काम का फल उसे न देगा ?
१३ हे मेरे पुत्र तू मधु खा, क्योंकि वह
अच्छा है,
और मधु का छत्ता भी, क्योंकि वह
तेरे मुंह में मीठा लगेगा।
१४ इसी रीति बुद्धि भी तुझे वैसी ही
मीठी लगेगी;
यदि तू उसे पा जाए तो अन्त में
उसका फल भी मिलेगा,
और तेरी आशा न टूटेगी।।
१५ हे दुष्ट, तू धर्मी के निवास को नाश
करने के लिये घात को न बैठ;
और उसके विश्रामस्थान को मत
उजाड़;
१६ क्योंकि धर्मी चाहे सात बार गिरे
तौभी उठ खड़ा होता है;
परन्तु दुष्ट लोग विपत्ति में गिरकर
पड़े ही रहते हैं।।
१७ जब तेरा शत्रु गिर जाए तब तू
आनन्दित न हो,
और जब वह ठोकर खाए, तब तेरा
मन मगन न हो।
१८ कहीं ऐसा न हो कि यहोवा यह
देखकर अप्रसन्न हो
और अपना क्रोध उस पर से हटा ले।।
१९ कुकर्मियों के कारण मत कुढ़,
दुष्ट लोगों के कारण डाह न कर;
२० क्योंकि बुरे मनुष्य को अन्त में कुछ
फल न मिलेगा,
दुष्टों का दिया बुझा दिया जाएगा।।
२१ हे मेरे पुत्र, यहोवा और राजा दोनों
का भय मानना;
और बलवा करनेवालों के साथ न
मिलना;
२२ क्योंकि उन पर विपत्ति अचानक आ
पड़ेगी,
और दोनों की ओर से आनेवाली
आपत्ति को कौन जानता है ?
२३ बुद्धिमानों के वचन यह भी हैं।।
न्याय में पक्षपात करना, किसी रीति
भी अच्छा नहीं।
२४ जो दुष्ट से कहता है कि तू निर्दोष है,
उसको तो हर समाज के लोग शाप
देते और जाति जाति के लोग धमकी
देते हैं;
२५ परन्तु जो लोग दुष्ट को डांटते हैं
उनका भला होता है,
और उत्तम से उत्तम आशीर्वाद उन
पर आता है।
२६ जो सीधा उत्तर देता है,
वह होठों को चूमता है।।
२७ अपना बाहर का कामकाज ठीक
करना,
और खेत में उसे तैयार कर लेना;
उसके बाद अपना घर बनाना।।
२८ व्यर्थ अपने पड़ोसी के विरुद्ध साक्षी
न देना,
और न उसको फुसलाना।
२९ मत कह, कि जैसा उस ने मेरे साथ
किया वैसा ही मैं भी उसके साथ
करूंगा;

और उसको उसके काम के अनुसार
पलटा दूंगा ।।

३० मैं आलसी के खेत के पास से
और निर्बुद्धि मनुष्य की दाख की
बारी के पास होकर जाता था,

३१ तो क्या देखा, कि वहां सब कहीं
कटीले पेड़ भर गए हैं;
और वह बिच्छू पेड़ों से ढंप गई है,
और उसके पत्थर का बाड़ा गिर
गया है।

३२ तब मैं ने देखा और उस पर ध्यानपूर्वक
विचार किया;
हां मैं ने देखकर शिक्षा प्राप्त की।

३३ छोटी सी नींद,
एक और झपकी,
थोड़ी देर हाथ पर हाथ रख के*
और लेटे रहना,

३४ तब तेरा कंगालपन डाकू की नाईं,
और तेरी घटी हथियारबन्द के समान
आ पड़ेगी ।।

२५ सुलैमान के नीतिवचन ये भी हैं;
जिन्हें यहूदा के राजा हिजकिय्याह
के जनों ने नकल की थी ।।

२ परमेश्वर की महिमा, गुप्त रखने में
है
परन्तु राजाओं की महिमा गुप्त बात
के पता लगाने से होती है।

३ स्वर्ग की ऊंचाई और पृथ्वी की
गहराई
और राजाओं का मन, इन तीनों का
अन्त नहीं मिलता।

४ चान्दी में से मैल दूर करने पर
सुनार के लिये एक पात्र हो जाता
है।

* मूल में—दोनों हाथ मिलाए।

५ राजा के साम्हने से दुष्ट को निकाल
देने पर
उसकी गद्दी धर्म के कारण स्थिर
होगी।

६ राजा के साम्हने अपनी बड़ाई न
करना
और बड़े लोगों के स्थान में खड़ा न
होना;

७ क्योंकि जिस प्रधान का तू ने दर्शन
किया हो
उसके साम्हने तेरा अपमान न हो,
वरन तुझ से यह कहा जाए, आगे
बढ़कर विराज* ।।

८ झगड़ा करने में जल्दी न करना
नहीं तो अन्त में जब तेरा पड़ोसी
तेरा मुंह काला करे
तब तू क्या कर सकेगा?

९ अपने पड़ोसी के साथ वादविवाद
एकान्त में करना,
और पराये का भेद न खोलना;

१० ऐसा न हो कि सुननेवाला तेरी भी
निन्दा करे,
और तेरा अपवाद बना रहे ।।

११ जैसे चान्दी की टोकरियों में सोनहले
सेब हों
वैसा ही ठीक समय पर कहा हुआ
वचन होता है।

१२ जैसे सोने का नत्थ और कुन्दन का
जेवर अच्छा लगता है,
वैसे ही माननेवाले के कान में
बुद्धिमान की डांट भी अच्छी लगती
है।

१३ जैसे कटनी के समय बर्फ की ठण्ड
से,

* मूल में—इधर चढ़ आ।

वैसे ही विश्वासयोग्य दूत से भी,
भेजनेवालों का जी ठण्डा होता है।
१४ जैसे बादल और पवन बिना वृष्टि निर्लाभ होते हैं,
वैसे ही झूठ-मूठ दान देनेवाले का बड़ाई मारना होता है।।
१५ धीरज धरने से न्यायी मनाया जाता है,
और कोमल वचन हड्डी को भी तोड़ डालता है।
१६ क्या तू ने मधु पाया? तो जितना तेरे लिये ठीक हो* उतना ही खाना,
ऐसा न हो कि अधिक खाकर † उसे उगल दे।
१७ अपने पड़ोसी के घर में बारम्बार जाने से अपने पांव को रोक ‡,
ऐसा न हो कि वह खिन्न होकर घृणा करने लगे।
१८ जो किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी देता है,
वह मानो हथौड़ा और तलवार और पैना तीर है।
१९ विपत्ति के समय विश्वासघाती का भरोसा
टूटे हुए दात वा उखड़े पांव के समान है।
२० जैसा जाड़े के दिनों में किसी का वस्त्र उतारना वा सज्जी पर सिरका डालना होता है,
वैसा ही उदास मनवाले के साम्हने गीत गाना होता है।
२१ यदि तेरा बैरी भूखा हो तो उसको रोटी खिलाना;
और यदि वह प्यासा हो तो उसे पानी पिलाना;
२२ क्योंकि इस रीति तू उसके सिर पर अंगारे डालेगा,
और यहोवा तुझे इसका फल देगा।
२३ जैसे उत्तरीय वायु वर्षा को लाती है,
वैसे ही चुगली करने* से मुख पर क्रोध छा जाता है।
२४ लम्बे चौड़े घर में झगड़ालू पत्नी के संग रहने से
छत के कोने पर रहना उत्तम है।
२५ जैसा थके मान्दे के प्राणों के लिये ठण्डा पानी होता है,
वैसा ही दूर देश से आया हुआ शुभ समाचार भी होता है।
२६ जो धर्मी दुष्ट के कहने में आता है,
वह गंदले सोते और बिगड़े हुए कुण्ड के समान है।
२७ बहुत मधु खाना अच्छा नहीं,
परन्तु कठिन बातों की पूछपाछ महिमा का कारण होता है।
२८ जिसकी आत्मा वश में नहीं
वह ऐसे नगर के समान है जिसकी शहरपनाह नाका करके तोड़ दी गई हो।।

२६ जैसा धूपकाल में हिम का, और कटनी के समय जल का पड़ना,
वैसा ही मूर्ख की महिमा भी ठीक नहीं होती।
२ जैसे गौरिया घूमते-घूमते और सूपाबेनी उड़ते-उड़ते नहीं बैठती,

* मूल में—जितनी चाहिये।
† मूल में—अघाकर।
‡ मूल में—घर से अपना पांव बहुमूल्य करना।

* मूल में—छिपी जीभ।

वैसे ही व्यर्थ शाप नहीं पड़ता।
३ घोड़े के लिये कोड़ा, गदहे के लिये बाग,
और मूर्खों की पीठ के लिये छड़ी है।
४ मूर्ख को उसकी मूर्खता के अनुसार उत्तर न देना
ऐसा न हो कि तू भी उसके तुल्य ठहरे।
५ मूर्ख को उसकी मूढ़ता के अनुसार उत्तर देना,
ऐसा न हो कि वह अपने लेखे बुद्धिमान ठहरे।
६ जो मूर्ख के हाथ से संदेशा भेजता है,
वह मानो अपने पांव में कुल्हाड़ा मारता और विष * पीता है।
७ जैसे लंगड़े के पांव लड़खड़ाते हैं,
वैसे ही मूर्खों के मुंह में नीतिवचन होता है।
८ जैसे पत्थरों के ढेर में मणियों की थैली,
वैसे ही मूर्ख को महिमा देनी होती है।
९ जैसे मतवाले के हाथ में कांटा गड़ता है,
वैसे ही मूर्खों का कहा हुआ नीतिवचन भी दुःखदाई होता है।
१० जैसा कोई तीरन्दाज़ जो अकारण सब को मारता हो,
वैसा ही मूर्खों वा बटोहियों का मज़दूरी में लगानेवाला भी होता है।
११ जैसे कुत्ता अपनी छांट को चाटता † है,
वैसे ही मूर्ख अपनी मूर्खता को दुहराता है।
१२ यदि तू ऐसा मनुष्य देखे जो अपनी दृष्टि में बुद्धिमान बनता हो,
तो उस से अधिक आशा मूर्ख ही से है।
१३ आलसी कहता है, कि मार्ग में सिंह है,
चौक में सिंह है!
१४ जैसे किवाड़ अपनी चूल पर घूमता है,
वैसे ही आलसी अपनी खाट पर करवटें लेता है।
१५ आलसी अपना हाथ थाली में तो डालता है,
परन्तु आलस्य के कारण कौर मुंह तक नहीं उठाता।
१६ आलसी अपने को ठीक उत्तर देनेवाले सात मनुष्यों से भी अधिक बुद्धिमान समझता है।
१७ जो मार्ग पर चलते हुए पराये झगड़े में विघ्न डालता है,
सो वह उसके समान है, जो कुत्ते को कानों से पकड़ता है।
१८ जैसा एक पागल जो जलती लकड़ियां और मृत्यु के तीर फेंकता है,
१९ वैसा ही वह भी होता है जो अपने पड़ोसी को धोखा देकर
कहता है, कि मैं तो ठट्ठा कर रहा था।
२० जैसे लकड़ी न होने से आग बुझती है,
उसी प्रकार जहां कानाफूसी करनेवाला नहीं वहां झगड़ा मिट जाता है।
२१ जैसा अंगारों में कोयला और आग में लकड़ी होती है,
वैसा ही झगड़े के बढ़ाने के लिये झगड़ालू होता है।

---

* मूल में—उपद्रव।
† मूल में—छांट की ओर फिरता।

२२ कानाफूसी करनेवाले के वचन,
स्वादिष्ट भोजन के समान भीतर उतर जाते हैं।
२३ जैसा कोई चान्दी का पानी चढ़ाया हुआ मिट्टी का बर्तन हो,
वैसा ही बुरे मनवाले के प्रेम भरे वचन * होते हैं।
२४ जो बैरी बात से तो अपने को भोला बनाता है,
परन्तु अपने भीतर छल रखता है,
२५ उसकी मीठी-मीठी बात प्रतीति न करना,
क्योंकि उसके मन में सात घिनौनी वस्तुएं रहती हैं;
२६ चाहे उसका बैर छल के कारण छिप भी जाए,
तौभी उसकी बुराई सभा के बीच प्रगट हो जाएगी।
२७ जो गड़हा खोदे, वही उसी में गिरेगा,
और जो पत्थर लुढ़काए, वह उलट-कर उसी पर लुढ़क आएगा।
२८ जिस ने किसी को झूठी बातों से घायल किया हो वह उस से बैर रखता है,
और चिकनी चुपड़ी बात बोलनेवाला विनाश का कारण होता है॥

२७ कल के दिन के विषय में मत फूल,
क्योंकि तू नहीं जानता कि दिन भर में क्या होगा।
२ तेरी प्रशंसा और लोग करें तो करें, परन्तु तू आप न करना;
दूसरा तुझे सराहे तो सराहे, परन्तु तू अपनी सराहना न करना।

* मूल में—जले हुए होंठ।

३ पत्थर तो भारी है और बालू में बोझ है,
परन्तु मूढ़ का क्रोध उन दोनों से भी भारी है।
४ क्रोध तो क्रूर, और प्रकोप धारा के समान होता है,
परन्तु जब कोई जल उठता है, तब कौन ठहर सकता है?
५ खुली हुई डांट
गुप्त प्रेम से उत्तम है।
६ जो घाव मित्र के हाथ से लगें वह विश्वास योग्य हैं
परन्तु बैरी अधिक चुम्बन करता है।
७ सन्तुष्ट होने पर मधु का छत्ता भी फीका लगता है *,
परन्तु भूखे को सब कड़वी वस्तुएं भी मीठी जान पड़ती हैं।
८ स्थान छोड़कर घूमनेवाला मनुष्य उस चिड़िया के समान है,
जो घोंसला छोड़कर उड़ती फिरती है।
९ जैसे तेल और सुगन्ध से,
वैसे ही मित्र के हृदय की मनोहर सम्मति से मन आनन्दित होता है।
१० जो तेरा और तेरे पिता का भी मित्र हो उसे न छोड़ना;
और अपनी विपत्ति के दिन अपने भाई के घर न जाना।
प्रेम करनेवाला पड़ोसी, दूर रहनेवाले भाई से कहीं उत्तम है।
११ हे मेरे पुत्र, बुद्धिमान होकर मेरा मन आनन्दित कर,
तब मैं अपने निन्दा करनेवाले को उत्तर दे सकूंगा।

* मूल में—तृप्त जीव छत्ता रौंदता है।

१२ बुद्धिमान मनुष्य विपत्ति को आती देखकर छिप जाता है;
परन्तु भोले लोग आगे बढ़े चले जाते और हानि उठाते हैं।
१३ जो पराए का उत्तरदायी हो उसका कपड़ा,
और जो अनजान का उत्तरदायी हो उस से बन्धक की वस्तु ले ले।
१४ जो भोर को उठकर अपने पड़ोसी को ऊंचे शब्द से आशीर्वाद देता है,
उसके लिये यह शाप गिना जाता है।
१५ झड़ी के दिन पानी का लगातार टपकना,
और झगड़ालू पत्नी दोनों एक से हैं;
१६ जो उसको रोक रखे, वह वायु को भी रोक रखेगा
और दहिने हाथ से वह तेल पकड़ेगा।
१७ जैसे लोहा लोहे को चमका देता है,
वैसे ही मनुष्य का मुख अपने मित्र की संगति से चमकदार हो जाता है।
१८ जो अंजीर के पेड़ की रक्षा करता है वह उसका फल खाता है,
इसी रीति से जो अपने स्वामी की सेवा करता उसकी महिमा होती है।
१९ जैसे जल में मुख की परछाईं मुख से मिलती है,
वैसे ही एक मनुष्य का मन दूसरे मनुष्य के मन से मिलता है।
२० जैसे अधोलोक और विनाशलोक,
वैसे ही मनुष्य की आंखें भी तृप्त नहीं होतीं।
२१ जैसे चान्दी के लिये कुठाई और सोने के लिये भट्ठी है,
वैसे ही मनुष्य के लिये उसकी प्रशंसा है।
२२ चाहे तू मूर्ख को अनाज के बीच ओखली में डालकर मूसल से कूटे,
तौभी उसकी मूर्खता नहीं जाने की।
२३ अपनी भेड़-बकरियों की दशा भली-भांति मन लगाकर जान ले,
और अपने सब पशुओं के झुण्डों की देखभाल उचित रीति से कर;
२४ क्योंकि सम्पत्ति सदा नहीं ठहरती;
और क्या राजमुकुट पीढ़ी-पीढ़ी चला जाता है?
२५ कटी हुई घास उठ गई, नई घास दिखाई देती है,
पहाड़ों की हरियाली काटकर इकट्ठी की गई है;
२६ भेड़ों के बच्चे तेरे वस्त्र के लिये हैं,
और बकरों के द्वारा खेत का मूल्य दिया जाएगा;
२७ और बकरियों का इतना दूध होगा कि तू अपने घराने समेत पेट भरके पिया करेगा,
और तेरी लौण्डियों का भी जीवन-निर्वाह होता रहेगा॥

२८

दुष्ट लोग जब कोई पीछा नहीं करता तब भी भागते हैं,
परन्तु धर्मी लोग जवान सिंहों के समान निडर रहते हैं।
२ देश में पाप होने के कारण उसके हाकिम बदलते जाते हैं;
परन्तु समझदार और ज्ञानी मनुष्य के द्वारा सुप्रबन्ध बहुत दिन के लिये बना रहेगा।
३ जो निर्धन पुरुष कंगालों पर अन्धेर करता है,

वह ऐसी भारी वर्षा के समान है
जो कुछ भोजनवस्तु नहीं छोड़ती।
४ जो लोग व्यवस्था को छोड़ देते हैं,
वे दुष्ट की प्रशंसा करते हैं,
परन्तु व्यवस्था पर चलनेवाले उन
से लड़ते हैं।
५ बुरे लोग न्याय को नहीं समझ सकते,
परन्तु यहोवा को ढूढ़नेवाले सब कुछ
समझते हैं।
६ टेढ़ी चाल चलनेवाले धनी मनुष्य से
खराई से चलनेवाला निर्धन पुरुष
ही उत्तम है।
७ जो व्यवस्था का पालन करता वह
समझदार सुपूत होता है,
परन्तु उड़ाऊ का संगी अपने पिता
का मुंह काला करता है।
८ जो अपना धन ब्याज आदि बढ़ती
से बढ़ाता है,
वह उसके लिये बटोरता है जो
कंगालों पर अनुग्रह करता है।
९ जो अपना कान व्यवस्था सुनने से
फेर लेता है,
उसकी प्रार्थना घृणित ठहरती है।
१० जो सीधे लोगों को भटकाकर कुमार्ग
में ले जाता है
वह अपने खोदे हुए गड़हे में आप ही
गिरता है;
परन्तु खरे लोग कल्याण के भागी
होते हैं।
११ धनी पुरुष अपनी दृष्टि में बुद्धिमान
होता है,
परन्तु समझदार कंगाल उसका मर्म
बूझ लेता है।
१२ जब धर्मी लोग जयवन्त होते हैं,
तब बड़ी शोभा होती है;
परन्तु जब दुष्ट लोग प्रबल होते हैं,
तब मनुष्य अपने आप को छिपाता
है *।
१३ जो अपने अपराध छिपा रखता है,
उसका कार्य सुफल नहीं होता,
परन्तु जो उनको मान लेता और
छोड़ भी देता है, उस पर दया
की जायेगी।
१४ जो मनुष्य निरन्तर प्रभु का भय
मानता रहता है वह धन्य है;
परन्तु जो अपना मन कठोर कर लेता
है वह विपत्ति में पड़ता है।
१५ कंगाल प्रजा पर प्रभुता करनेवाला
दुष्ट
गरजनेवाले सिंह और घूमनेवाले रीछ
के समान है।
१६ जो प्रधान मन्दबुद्धि का होता है,
वही बहुत अन्धेर करता है;
और जो लालच का बैरी होता है
वह दीर्घायु होता है।
१७ जो किसी प्राणी की हत्या का अपराधी
हो,
वह भागकर गड़हे में गिरेगा; कोई
उसको न रोकेगा।
१८ जो सीधाई से चलता है वह बचाया
जाता है,
परन्तु जो टेढ़ी चाल चलता है वह
अचानक गिर पड़ता है।
१९ जो अपनी भूमि को जोता-बोया
करता है, उसका तो पेट भरता है,
परन्तु जो निकम्मे लोगों की संगति
करता है वह कंगालपन से घिरा
रहता है †।
२० सच्चे मनुष्य पर बहुत आशीर्वाद
होते रहते हैं,

* मूल में—मनुष्य ढूंढ़े जाते।
† मूल में—अघाता।

परन्तु जो धनी होने में उतावली करता
है, वह निर्दोष नहीं ठहरता ।
२१ पक्षपात करना अच्छा नहीं;
और यह भी अच्छा नहीं कि पुरुष
एक टुकड़े रोटी के लिये अपराध
करे ।
२२ लोभी जन धन प्राप्त करने में
उतावली करता है,
और नहीं जानता कि वह घटी में
पड़ेगा ।
२३ जो किसी मनुष्य को डांटता है वह
अन्त में
चापलूसी करनेवाले से अधिक प्यारा
हो जाता है ।
२४ जो अपने मां-बाप को लूटकर कहता
है कि कुछ अपराध नहीं,
वह नाश करनेवाले का संगी ठहरता
है ।
२५ लालची मनुष्य झगड़ा मचाता है,
और जो यहोवा पर भरोसा रखता
है वह हृष्टपुष्ट हो जाता है ।
२६ जो अपने ऊपर भरोसा रखता है,
वह मूर्ख है;
और जो बुद्धि से चलता है, वह
बचता है ।
२७ जो निर्धन को दान देता है उसे
घटी नहीं होती,
परन्तु जो उस से दृष्टि फेर लेता
है वह शाप पर शाप पाता * है ।
२८ जब दुष्ट लोग प्रबल † होते हैं तब
तो मनुष्य ढूंढ़े नहीं मिलते,
परन्तु जब वे नाश हो जाते हैं, तब
धर्मी उन्नति करते हैं ।।

---

* मूल में—छिपाता ।
† मूल में—खड़े ।

२९ जो बार बार डांटे जाने पर
भी हठ करता है,
वह अचानक नाश हो जाएगा और
उसका कोई भी उपाय काम न
आएगा ।
२ जब धर्मी लोग शिरोमणि होते हैं,
तब प्रजा आनन्दित होती है;
परन्तु जब दुष्ट प्रभुता करता है
तब प्रजा हाय मारती है ।
३ जो पुरुष बुद्धि से प्रीति रखता है,
अपने पिता को आनन्दित करता
है,
परन्तु वेश्याओं की संगति करनेवाला
धन को उड़ा देता है ।
४ राजा न्याय से देश को स्थिर करता
है,
परन्तु जो बहुत घूस लेता है उसको
उलट देता है ।
५ जो पुरुष किसी से चिकनी चुपड़ी
बातें करता है,
वह उसके पैरों के लिये जाल लगाता
है ।
६ बुरे मनुष्य का अपराध फन्दा होता
है,
परन्तु धर्मी आनन्दित होकर जय-
जयकार करता है ।
७ धर्मी पुरुष कंगालों के मुकद्दमे में मन
लगाता है;
परन्तु दुष्ट जन उसे जानने की समझ
नहीं रखता ।
८ ठट्ठा करनेवाले लोग नगर को फूंक
देते हैं,
परन्तु बुद्धिमान लोग क्रोध को ठण्डा
करते हैं ।
९ जब बुद्धिमान मूढ़ के साथ वादविवाद
करता है,

तब वह मूढ़ क्रोधित होता और ठट्ठा करता है, और वहां शान्ति नहीं रहती।

१० हत्यारे लोग खरे पुरुष से बैर रखते हैं,
और सीधे लोगों के प्राण की खोज करते हैं॥

११ मूर्ख अपने सारे मन की बात खोल देता है,
परन्तु बुद्धिमान अपने मन को रोकता, और शान्त कर देता है।

१२ जब हाकिम झूठी बात की ओर कान लगाता है,
तब उसके सब सेवक दुष्ट हो जाते हैं।

१३ निर्धन और अन्धेर करनेवाला पुरुष एक समान हैं;
और यहोवा दोनों की आंखों में ज्योति देता है।

१४ जो राजा कंगालों का न्याय सच्चाई से चुकाता है,
उसकी गद्दी सदैव स्थिर रहती है।

१५ छड़ी और डांट से बुद्धि प्राप्त होती है,
परन्तु जो लड़का योंही छोड़ा जाता है वह अपनी माता की लज्जा का कारण होता है।

१६ दुष्टों के बढ़ने से अपराध भी बढ़ता है;
परन्तु अन्त में धर्मी लोग उनका गिरना देख लेते हैं।

१७ अपने बेटे की ताड़ना कर, तब उस से तुझे चैन मिलेगा;
और तेरा मन सुखी हो जाएगा।

१८ जहां दर्शन की बात नहीं होती, वहां लोग निरंकुश हो जाते हैं,
और जो व्यवस्था को मानता है, वह धन्य होता है।

१९ दास बातों ही के द्वारा सुधारा नहीं जाता,
क्योंकि वह समझकर भी नहीं मानता।

२० क्या तू बातें करने में उतावली करनेवाले मनुष्य को देखता है?
उस से अधिक तो मूर्ख ही से आशा है।

२१ जो अपने दास को उसके लड़कपन से सुकुमारपन में पालता है,
वह दास अन्त में उसका बेटा बन बैठता है।

२२ क्रोध करनेवाला मनुष्य झगड़ा मचाता है
और अत्यन्त क्रोध करनेवाला अपराधी भी होता है।

२३ मनुष्य गर्व के कारण नीचा खाता है,
परन्तु नम्र आत्मावाला महिमा का अधिकारी होता है।

२४ जो चोर की संगति करता है वह अपने प्राण का बैरी होता है;
शपथ खाने पर भी वह बात को प्रगट नहीं करता।

२५ मनुष्य का भय खाना फन्दा हो जाता * है,
परन्तु जो यहोवा पर भरोसा रखता है वह ऊंचे स्थान पर चढ़ाया जाता है।

२६ हाकिम से भेंट करना बहुत लोग चाहते हैं,
परन्तु मनुष्य का न्याय यहोवा ही करता है।

---

* मूल में—देता।

२७ धर्मी लोग कुटिल मनुष्य से घृणा करते हैं,
और दुष्ट जन भी सीधी चाल चलनेवाले से घृणा करता है ॥

३० याके के पुत्र आगूर के प्रभावशाली वचन ॥
उस पुरुष ने ईतीएल और उक्काल से यह कहा,
२ निश्चय मैं पशु सरीखा हूं, वरन मनुष्य कहलाने के योग्य भी नहीं;
और मनुष्य की समझ मुझ में नहीं है।
३ न मैं ने बुद्धि प्राप्त की है,
और न परमपवित्र का ज्ञान मुझे मिला है।
४ कौन स्वर्ग में चढ़कर फिर उतर आया?
किस ने वायु को अपनी मुट्ठी में बटोर रखा है?
किस ने महासागर को अपने वस्त्र में बान्ध लिया है?
किस ने पृथ्वी के सिवानों को ठहराया है?
उसका नाम क्या है? और उसके पुत्र का नाम क्या है? यदि तू जानता हो तो बता!
५ ईश्वर का एक एक वचन ताया हुआ है;
वह अपने शरणागतों की ढाल ठहरा है।
६ उसके वचनों में कुछ मत बढ़ा,
ऐसा न हो कि वह तुझे डांटे और तू झूठा ठहरे ॥
७ मैं ने तुझ से दो वर मांगे हैं,
इसलिये मेरे मरने से पहिले उन्हें मुझे देने से मुंह न मोड़:
८ अर्थात् व्यर्थ और झूठी बात मुझ से दूर रख;
मुझे न तो निर्धन कर और न धनी बना;
प्रति दिन की * रोटी मुझे खिलाया कर।
९ ऐसा न हो, कि जब मेरा पेट भर जाए, तब मैं इन्कार करके कहूं कि यहोवा कौन है?
वा अपना भाग खोकर चोरी करूं,
और अपने परमेश्वर का नाम अनुचित रीति से लूं ॥
१० किसी दास की, उसके स्वामी से चुगली न करना,
ऐसा न हो कि वह तुझे शाप दे,
और तू दोषी ठहराया जाए ॥
११ ऐसे लोग हैं, जो अपने पिता को शाप देते
और अपनी माता को धन्य नहीं कहते।
१२ ऐसे लोग हैं जो अपनी दृष्टि में शुद्ध हैं,
तौभी उनका मैल धोया नहीं गया।
१३ एक पीढ़ी के लोग ऐसे हैं—उनकी दृष्टि क्या ही घमण्ड से भरी रहती है,
और उनकी आंखें कैसी चढ़ी हुई रहती हैं!
१४ एक पीढ़ी के लोग ऐसे हैं, जिनके दांत तलवार और उनकी दाढ़ें छुरियां हैं,
जिन से वे दीन लोगों को पृथ्वी पर से, और दरिद्रों को मनुष्यों में से मिटा डालें ॥

* मूल में—मेरे भाग की।

१५ जैसे जोंक की दो बेटियां होती हैं,
जो कहती हैं दे, दे,
वैसे ही तीन वस्तुएं हैं, जो तृप्त नहीं होतीं;
वरन चार हैं, जो कभी नहीं कहतीं, बस।
१६ अधोलोक और बांझ की कोख,
भूमि जो जल पी पीकर तृप्त नहीं होती,
और आग जो कभी नहीं कहती, बस॥
१७ जिस आंख से कोई अपने पिता पर अनादर की दृष्टि करे,
और अपमान के साथ अपनी माता की आज्ञा न माने,
उस आंख को तराई के कौवे खोद खोदकर निकालेंगे,
और उकाब के बच्चे खा डालेंगे॥
१८ तीन बातें मेरे लिये अधिक कठिन हैं,
वरन चार हैं, जो मेरी समझ से परे हैं:
१९ आकाश में उकाब पक्षी का मार्ग,
चट्टान पर सर्प की चाल,
समुद्र में जहाज की चाल,
और कन्या के संग पुरुष की चाल॥
२० व्यभिचारिणी की चाल भी वैसी ही है;
वह भोजन करके मुंह पोंछती,
और कहती है, मैं ने कोई अनर्थ काम नहीं किया॥
२१ तीन बातों के कारण पृथ्वी कांपती है;
वरन चार हैं, जो उस से सही नहीं जातीं:
२२ दास का राजा हो जाना,
मूढ़ का पेट भरना,
२३ घिनौनी स्त्री का ब्याहा जाना,
और दासी का अपनी स्वामिन की वारिस होना॥
२४ पृथ्वी पर चार छोटे जन्तु हैं,
जो अत्यन्त बुद्धिमान हैं:
२५ च्यूटियां निर्बल जाति तो हैं,
परन्तु धूपकाल में अपनी भोजनवस्तु बटोरती हैं;
२६ शापान बली जाति नहीं,
तौभी उनकी मान्दें पहाड़ों पर होती हैं;
२७ टिड्डियों के राजा तो नहीं होता,
तौभी वे सब की सब दल बान्ध बान्धकर पयान करती हैं;
२८ और छिपकली हाथ से पकड़ी तो जाती है,
तौभी राजभवनों में रहती है॥
२९ तीन सुन्दर चलनेवाले प्राणी हैं;
वरन चार हैं, जिन की चाल सुन्दर है:
३० सिंह जो सब पशुओं में पराक्रमी है,
और किसी के डर से नहीं हटता;
३१ शिकारी कुत्ता और बकरा,
और अपनी सेना समेत राजा॥
३२ यदि तू ने अपनी बड़ाई करने की मूढ़ता की,
वा कोई बुरी युक्ति बान्धी हो,
तो अपने मुंह पर हाथ धर।
३३ क्योंकि जैसे दूध के मथने से मक्खन,
और नाक के मरोड़ने से लोहू निकलता है,
वैसे ही क्रोध के भड़काने से झगड़ा उत्पन्न होता है॥

३१ लमूएल राजा के प्रभावशाली वचन,
जो उसकी माता ने उसे सिखाए॥

२ हे मेरे पुत्र, हे मेरे निज पुत्र !
हे मेरी मन्नतों के पुत्र !
३ अपना बल स्त्रियों को न देना,
न अपना जीवन उनके वश कर देना
जो राजाओं का पौरुष खो देती हैं।
४ हे लमूएल, राजाओं का दाखमधु पीना उनको शोभा नहीं देता,
और मदिरा चाहना, रईसों को नहीं फबता;
५ ऐसा न हो कि वे पीकर व्यवस्था को भूल जाएं
और किसी दु:खी के हक़ को मारें।
६ मदिरा उसको पिलाओ जो मरने पर है,
और दाखमधु उदास मनवालों को ही देना;
७ जिस से वे पीकर अपनी दरिद्रता को भूल जाएं
और अपने कठिन श्रम फिर स्मरण न करें।
८ गूंगे के लिये अपना मुंह खोल,
और सब अनाथों का न्याय उचित रीति से किया कर।
९ अपना मुंह खोल और धर्म से न्याय कर,
और दीन दरिद्रों का न्याय कर ।।
१० भली पत्नी कौन पा सकता है ?
क्योंकि उसका मूल्य मूंगों से भी बहुत अधिक है।
उसके पति के मन में उसके प्रति विश्वास है,
११ और उसे लाभ की घटी नहीं होती।
१२ वह अपने जीवन के सारे दिनों में उस से बुरा नहीं, वरन भला ही व्यवहार करती है।
१३ वह ऊन और सन ढूंढ़ ढूंढ़कर,
अपने हाथों से प्रसन्नता के साथ काम करती है।
१४ वह व्योपार के जहाजों की नाईं,
अपनी भोजनवस्तुएं दूर से मंगवाती है।
१५ वह रात ही को उठ बैठती है,
और अपने घराने को भोजन खिलाती है
और अपनी लौण्डियों को अलग अलग काम देती है।
१६ वह किसी खेत के विषय में सोच विचार करती है और उसे मोल ले लेती है;
और अपने परिश्रम के फल से दाख की बारी लगाती है।
१७ वह अपनी कटि को बल के फेंटे से कसती है,
और अपनी बाहों को दृढ़ बनाती है।
१८ वह परख लेती है कि मेरा व्योपार लाभदायक है।
रात को उसका दिया नहीं बुझता।
१९ वह अटेरन में हाथ लगाती है,
और चरखा पकड़ती है।
२० वह दीन के लिये मुट्ठी खोलती है,
और दरिद्र के संभालने को हाथ बढ़ाती है।
२१ वह अपने घराने के लिये हिम से नहीं डरती,
क्योंकि उसके घर के सब लोग लाल कपड़े पहिनते हैं।
२२ वह तकिये बना लेती है;
उसके वस्त्र सूक्ष्म सन और बैंजनी रंग के होते हैं।

२३ जब उसका पति सभा * में देश के पुरनियों के संग बैठता है,
तब उसका सन्मान होता है।
२४ वह सन के वस्त्र बनाकर बेचती है;
और व्योपारी को कमरबन्द देती है।
२५ वह बल और प्रताप का पहिरावा पहिने रहती है,
और आनेवाले काल के विषय पर हंसती है।
२६ वह बुद्धि की बात बोलती है,
और उसके वचन कृपा की शिक्षा के अनुसार होते हैं।
२७ वह अपने घराने के चालचलन को ध्यान से देखती है,
और अपनी रोटी बिना परिश्रम नहीं खाती।

* मूल में—फाटकों।

२८ उसके पुत्र उठ उठकर उसको धन्य कहते हैं;
उसका पति भी उठकर उसकी ऐसी प्रशंसा करता है :
२९ बहुत सी स्त्रियों ने अच्छे अच्छे काम तो किए हैं परन्तु तू उन सभों में श्रेष्ठ है।
३० शोभा तो झूठी और सुन्दरता व्यर्थ * है,
परन्तु जो स्त्री यहोवा का भय मानती है, उसकी प्रशंसा की जाएगी।
३१ उसके हाथों के परिश्रम का फल उसे दो,
और उसके कार्यों से सभा में उसकी प्रशंसा होगी † ॥

* मूल में—सांस।
† मूल में—उसके काम फाटकों में उसकी स्तुति करें।

सभोपदेशक

१ यरूशलेम के राजा, दाऊद के पुत्र और उपदेशक के वचन। २ उपदेशक का यह वचन है, कि व्यर्थ ही व्यर्थ, व्यर्थ ही व्यर्थ! सब कुछ व्यर्थ है। ३ उस सब परिश्रम से जिसे मनुष्य धरती पर * करता है, उसको क्या लाभ प्राप्त होता है? ४ एक पीढ़ी जाती है, और दूसरी पीढ़ी आती है, परन्तु पृथ्वी सर्वदा बनी रहती है। ५ सूर्य उदय होकर अस्त भी होता है, और अपने उदय की दिशा को वेग से चला जाता है। ६ वायु दक्खिन की ओर बहती है, और उत्तर की ओर घूमती जाती है; वह घूमती और बहती रहती है, और अपने चक्करों में लौट आती है। ७ सब नदियां

* मूल में—सूरज के नीचे।

समुद्र में जा मिलती हैं, तौभी समुद्र भर नहीं जाता; जिस स्थान से नदियां निकलती हैं, उधर ही को वे फिर जाती हैं। ८ सब बातें परिश्रम से भरी हैं; मनुष्य इसका वर्णन नहीं कर सकता; न तो आंखें देखने से तृप्त होती हैं, और न कान सुनने से भरते हैं। ९ जो कुछ हुआ था, वही फिर होगा, और जो कुछ बन चुका है वही फिर बनाया जाएगा; और सूर्य के नीचे कोई बात नई नहीं है। १० क्या ऐसी कोई बात है जिसके विषय में लोग कह सकें कि देख यह नई है? यह तो प्राचीन युगों में वर्तमान थी। ११ प्राचीन बातों का कुछ स्मरण नहीं रहा, और होनेवाली बातों का भी स्मरण उनके बाद होनेवालों को न रहेगा ॥

१२ मैं उपदेशक यरूशलेम में इस्राएल का राजा था। १३ और मैं ने अपना मन लगाया कि जो कुछ सूर्य के नीचे किया जाता है, उसका भेद बुद्धि से सोच सोचकर मालूम करूं; यह बड़े दुःख का काम है जो परमेश्वर ने मनुष्यों के लिये ठहराया है कि वे उस में लगें। १४ मैं ने उन सब कामों को देखा जो सूर्य के नीचे किए जाते हैं; देखो वे सब व्यर्थ और मानो वायु को पकड़ना है। १५ जो टेढ़ा है, वह सीधा नहीं हो सकता, और जितनी वस्तुओं में घटी है, वे गिनी नहीं जातीं ॥

१६ मैं ने मन में कहा, देख, जितने यरूशलेम में मुझ से पहिले थे, उन सभों से मैं ने बहुत अधिक बुद्धि प्राप्त की है; और मुझ को बहुत बुद्धि और ज्ञान मिल गया है। १७ और मैं ने अपना मन लगाया कि बुद्धि का भेद लूं और बावलेपन और मूर्खता को भी जान लूं। मुझे जान पड़ा कि यह भी वायु को पकड़ना है ॥

१८ क्योंकि बहुत बुद्धि के साथ बहुत
खेद भी होता है,
और जो अपना ज्ञान बढ़ाता है वह
अपना दुःख भी बढ़ाता है ॥

२ मैं ने अपने मन से कहा, चल, मैं तुझ को आनन्द के द्वारा जांचूंगा; इसलिये आनन्दित और मगन हो। परन्तु, देखो, यह भी व्यर्थ है। २ मैं ने हँसी के विषय में कहा, यह तो बावलापन है, और आनन्द के विषय में, उस से क्या प्राप्त होता है? ३ मैं ने मन में सोचा कि किस प्रकार से मेरी बुद्धि बनी रहे और मैं अपने प्राण को दाखमधु पीने से क्योंकर बहलाऊं और क्योंकर मूर्खता को थामे रहूं, जब तक मालूम न करूं कि वह अच्छा काम कौन सा है जिसे मनुष्य अपने जीवन भर करता रहे। ४ मैं ने बड़े बड़े काम किए; मैं ने अपने लिये घर बनवा लिए और अपने लिये दाख की बारियां लगवाईं; ५ मैं ने अपने लिये बारियां और बाग लगवा लिए, और उन में भांति भांति के फलदाई वृक्ष लगाए। ६ मैं ने अपने लिये कुण्ड खुदवा लिए कि उन से वह वन सींचा जाए जिस में पौधे लगाए जाते थे। ७ मैं ने दास और दासियां मोल लीं, और मेरे घर में दास भी उत्पन्न हुए; और जितने मुझ से पहिले यरूशलेम में थे उन से कहीं अधिक गाय-बैल और भेड़-बकरियों का मैं स्वामी था। ८ मैं ने चान्दी और सोना और राजाओं और प्रान्तों के बहुमूल्य पदार्थों का भी संग्रह किया; मैं ने अपने लिये गवैयों और गानेवालियों को रखा, और बहुत सी कामिनियां भी, जिन से मनुष्य सुख पाते हैं, अपनी कर लीं ॥

९ इस प्रकार मैं अपने से पहिले के सब यरूशलेमवासियों से अधिक महान और धनाढ्य हो गया; तौभी मेरी बुद्धि ठिकाने रही। १० और जितनी वस्तुओं के देखने की मैं ने लालसा की, उन सभों को देखने से मैं न रुका; मैं ने अपना मन किसी प्रकार का आनन्द भोगने से न रोका क्योंकि मेरा मन मेरे सब परिश्रम के कारण आनन्दित हुआ; और मेरे सब परिश्रम से मुझे यही भाग मिला। ११ तब मैं ने फिर से अपने हाथों के सब कामों को, और अपने सब परिश्रम को देखा, तो क्या देखा कि सब कुछ व्यर्थ और वायु को पकड़ना है, और संसार में * कोई लाभ नहीं ।।

१२ फिर मैं ने अपने मन को फेरा कि बुद्धि और बावलेपन और मूर्खता के कार्यों को देखूं; क्योंकि जो मनुष्य राजा के पीछे आएगा, वह क्या करेगा? केवल वही जो होता चला आया है। १३ तब मैं ने देखा कि उजियाला अंधियारे से जितना उत्तम है, उतना बुद्धि भी मूर्खता से उत्तम है। १४ जो बुद्धिमान है, उसके सिर में आंखें रहती हैं, परन्तु मूर्ख अंधियारे में चलता है; तौभी मैं ने जान लिया कि दोनों की दशा एक सी होती है। १५ तब मैं ने मन में कहा, जैसी मूर्ख की दशा होगी, वैसी ही मेरी भी होगी; फिर मैं क्यों अधिक बुद्धिमान हुआ? और मैं ने मन में कहा, यह भी व्यर्थ ही है। १६ क्योंकि न तो बुद्धिमान का और न मूर्ख का स्मरण सर्वदा बना रहेगा, परन्तु भविष्य में सब कुछ बिसर जाएगा। १७ बुद्धिमान क्योंकर मूर्ख के समान मरता है! इसलिये मैं ने अपने जीवन से घृणा की, क्योंकि जो काम संसार में किया जाता है मुझे बुरा मालूम हुआ; क्योंकि सब कुछ व्यर्थ और वायु को पकड़ना है ।।

१८ मैं ने अपने सारे परिश्रम के प्रतिफल से जिसे मैं ने धरती पर किया था घृणा की, क्योंकि अवश्य है कि मैं उसका फल उस मनुष्य के लिये छोड़ जाऊं जो मेरे बाद आएगा। १९ यह कौन जानता है कि वह मनुष्य बुद्धिमान होगा वा मूर्ख? तौभी धरती पर जितना परिश्रम मैं ने किया, और उसके लिये बुद्धि प्रयोग की उस सब का वही अधिकारी होगा। यह भी व्यर्थ ही है। २० तब मैं अपने मन में उस सारे परिश्रम के विषय जो मैं ने धरती पर * किया था निराश हुआ, २१ क्योंकि ऐसा मनुष्य भी है, जिसका कार्य परिश्रम और बुद्धि और ज्ञान से होता है और सफल भी होता है, तौभी उसको ऐसे मनुष्य के लिये छोड़ जाना पड़ता है, जिस ने उस में कुछ भी परिश्रम न किया हो। यह भी व्यर्थ और बहुत ही बुरा है। २२ मनुष्य जो धरती पर * मन लगा लगाकर परिश्रम करता है उस से उसको क्या लाभ होता है? २३ उसके सब दिन तो दु:खों से भरे रहते हैं, और उसका काम खेद के साथ होता है; रात को भी उसका मन चैन नहीं पाता। यह भी व्यर्थ ही है ।।

२४ मनुष्य के लिये खाने-पीने और परिश्रम करते हुए अपने जीव को सुखी रखने के सिवाय और कुछ भी अच्छा नहीं। मैं ने देखा कि यह भी परमेश्वर की ओर से मिलता है; २५ क्योंकि खाने-पीने

* मूल में—सूरज के नीचे।

* मूल में—सूरज के नीचे।

और सुख भोगने में मुझ से अधिक समर्थ कौन है? २६ जो मनुष्य परमेश्वर की दृष्टि में अच्छा है, उसको वह बुद्धि और ज्ञान और आनन्द देता है; परन्तु पापी को वह दुःखभरा काम ही देता है कि वह उसको देने के लिये संचय करके ढेर लगाए जो परमेश्वर की दृष्टि में अच्छा हो। यह भी व्यर्थ और वायु को पकड़ना है॥

३ हर एक बात का एक अवसर और प्रत्येक काम का, जो आकाश के नीचे * होता है, एक समय है। २ जन्म का समय, और मरन का भी समय; बोने का समय, और बोए हुए को उखाड़ने का भी समय है; ३ घात करने का समय, और चगा करने का भी समय; ढा देने का समय, और बनाने का भी समय है; ४ रोने का समय, और हंसने का भी समय; छाती पीटने का समय, और नाचने का भी समय है; ५ पत्थर फेंकने का समय, और पत्थर बटोरने का भी समय; गले लगाने का समय, और गले लगाने से रुकने का भी समय है; ६ ढूंढ़ने का समय, और खो देने का भी समय; बचा रखने का समय, और फेंक देने का भी समय है; ७ फाड़ने का समय, और सीने का भी समय; चुप रहने का समय, और बोलने का भी समय है; ८ प्रेम करने का समय, और बैर करने का भी समय; लड़ाई का समय, और मेल का भी समय है। ९ काम करनेवाले को अपने परिश्रम से क्या लाभ होता है?

१० मैं ने उस दुःखभरे काम को देखा है जो परमेश्वर ने मनुष्यों के लिये ठहराया है कि वे उस में लगे रहें। ११ उस ने सब कुछ ऐसा बनाया कि अपने अपने समय पर वे सुन्दर होते हैं; फिर उस ने मनुष्यों के मन में अनादि-अनन्त काल का ज्ञान उत्पन्न किया है, तौभी जो काम परमेश्वर ने किया है, वह आदि से अन्त तक मनुष्य बूझ नहीं सकता। १२ मैं ने जान लिया है कि मनुष्यों के लिये आनन्द करने और जीवन भर भलाई करने के सिवाय, और कुछ भी अच्छा नहीं; १३ और यह भी परमेश्वर का दान है कि मनुष्य खाए-पीए और अपने सब परिश्रम में सुखी रहे। १४ मैं जानता हूं कि जो कुछ परमेश्वर करता है वह सदा स्थिर रहेगा; न तो उस में कुछ बढ़ाया जा सकता है और न कुछ घटाया जा सकता है; परमेश्वर ऐसा इसलिये करता है कि लोग उसका भय मानें। १५ जो कुछ हुआ वह इस से पहिले भी हो चुका; जो होनेवाला है, वह हो भी चुका है; और परमेश्वर बीती * हुई बात को फिर पूछता है॥

१६ फिर मैं ने संसार में † क्या देखा कि न्याय के स्थान में दुष्टता होती है, और धर्म के स्थान में भी दुष्टता होती है। १७ मैं ने मन में कहा, परमेश्वर धर्मी और दुष्ट दोनों का न्याय करेगा, क्योंकि उसके यहां एक एक विषय और एक एक काम का समय है। १८ मैं ने मन में कहा कि यह इसलिये होता है कि परमेश्वर मनुष्यों को जांचे और कि वे देख सकें कि वे पशु-समान हैं। १९ क्योंकि जैसी मनुष्यों की वैसी ही पशुओं की भी

* मूल में—सूरज के नीचे।

* मूल में—हांक दी।
† मूल में—सूरज के नीचे।

दशा होती है; दोनों की वही दशा होती है, जैसे एक मरता वैसे ही दूसरा भी मरता है। सभों की स्वांस एक सी है, और मनुष्य पशु से कुछ बढ़कर नहीं; सब कुछ व्यर्थ ही है। २० सब एक स्थान में जाते हैं; सब मिट्टी से बने हैं, और सब मिट्टी में फिर मिल जाते हैं। २१ क्या मनुष्यों का प्राण ऊपर की ओर चढ़ता है और पशुओं का प्राण नीचे की ओर जाकर मिट्टी में मिल जाता है? यह कौन जानता है? २२ सो मैं ने यह देखा कि इस से अधिक कुछ अच्छा नहीं कि मनुष्य अपने कामों में आनन्दित रहे, क्योंकि उसका भाग यही है; कौन उसके पीछे होनेवाली बातों को देखने के लिये उसको लौटा लाएगा?

४ तब मैं ने वह सब अन्धेर देखा जो संसार में* होता है। और क्या देखा, कि अन्धेर सहनेवालों के आंसू बह रहे हैं, और उनको कोई शान्ति देनेवाला नहीं! अन्धेर करनेवालों के हाथ में शक्ति थी, परन्तु उनको कोई शान्ति देनेवाला नहीं था। २ इसलिये मैं ने मरे हुओं को जो मर चुके हैं, उन जीवतों से जो अब तक जीवित हैं अधिक सराहा; ३ वरन उन दोनों से अधिक सुभागी वह है जो अब तक हुआ ही नहीं, न ये बुरे काम देखे जो संसार में* होते हैं॥

४ तब मैं ने सब परिश्रम के काम और सब सफल कामों को देखा जो लोग अपने पड़ोसी से जलन के कारण करते हैं। यह भी व्यर्थ और मन का कुढ़ना है॥

* मूल में—सूरज के नीचे।

५ मूर्ख छाती पर हाथ रखे रहता*, और अपना मांस खाता है॥

६ चैन के साथ एक मुट्ठी उन दो मुट्ठियों से अच्छा है, जिनके साथ परिश्रम और मन का कुढ़ना हो॥

७ फिर मैं ने धरती पर† यह भी व्यर्थ बात देखी। ८ कोई अकेला रहता और उसका कोई नहीं है; न उसके बेटा है, न भाई है, तौभी उसके परिश्रम का अन्त नहीं होता; न उसकी आंखें धन से सन्तुष्ट होती हैं, और न वह कहता है, मैं किस के लिये परिश्रम करता और अपने जीवन को सुखरहित रखता हूं? यह भी व्यर्थ और निरा दुःखभरा काम है॥

९ एक से दो अच्छे हैं, क्योंकि उनके परिश्रम का अच्छा फल मिलता है। १० क्योंकि यदि उन में से एक गिरे, तो दूसरा उसको उठाएगा; परन्तु हाय उस पर जो अकेला होकर गिरे और उसका कोई उठानेवाला न हो। ११ फिर यदि दो जन एक संग सोएं तो वे गर्म रहेंगे, परन्तु कोई अकेला क्योंकर गर्म हो सकता है? १२ यदि कोई अकेले पर प्रबल हो तो हो, परन्तु दो उसका साम्हना कर सकेंगे। जो डोरी तीन तागे से बटी हो वह जल्दी नहीं टूटती॥

१३ बुद्धिमान लड़का दरिद्र होने पर भी ऐसे बूढ़े और मूर्ख राजा से अधिक उत्तम है जो फिर सम्मति ग्रहण न करे, १४ चाहे वह उसके राज्य में धनहीन उत्पन्न हुआ या बन्दीगृह से निकलकर राजा हुआ हो। १५ मैं ने सब जीवतों को जो धरती पर† चलते फिरते हैं देखा

* मूल में—दोनों हाथ मिलाना।
† मूल में—सूरज के नीचे।

कि वे उस दूसरे लड़के के संग हो लिये हैं जो उनका स्थान लेने के लिये खड़ा हुआ। १६ वे सब लोग अनगिनित थे जिन पर वह प्रधान हुआ था। तौभी भविष्य में होनेवाले लोग उसके कारण आनन्दित न होंगे। निःसन्देह यह भी व्यर्थ और मन का कुढ़ना है ॥

५ जब तू परमेश्वर के भवन में जाए, तब सावधानी से चलना *; सुनने के लिये समीप जाना मूर्खों के बलिदान चढ़ाने से अच्छा है; क्योंकि वे नहीं जानते कि बुरा करते हैं। २ बातें करने में उतावली न करना, और न अपने मन से कोई बात उतावली से परमेश्वर के साम्हने निकालना, क्योंकि परमेश्वर स्वर्ग में है और तू पृथ्वी पर है; इसलिये तेरे वचन थोड़े ही हों ॥

३ क्योंकि जैसे कार्य की अधिकता के कारण स्वप्न देखा जाता है, वैसे ही बहुत सी बातों का बोलनेवाला मूर्ख ठहरता है ॥

४ जब तू परमेश्वर के लिये मन्नत माने, तब उसके पूरा करने में विलम्ब न करना; क्योंकि वह मूर्खों से प्रसन्न नहीं होता। जो मन्नत तू ने मानी हो उसे पूरी करना। ५ मन्नत मानकर पूरी न करने से मन्नत का न मानना ही अच्छा है। ६ कोई वचन कहकर अपने को पाप में न फंसाना, और न ईश्वर के दूत के साम्हने कहना कि यह भूल से हुआ; परमेश्वर क्यों तेरा बोल सुनकर अप्रसन्न हो, और तेरे हाथ के कार्यों को नष्ट करे ?

७ क्योंकि स्वप्नों की अधिकता से व्यर्थ बातों की बहुतायत होती है: परन्तु तू परमेश्वर का भय मानना ॥

८ यदि तू किसी प्रान्त में निर्धनों पर अन्धेर और न्याय और धर्म को बिगड़ता देखे, तो इस से चकित न होना; क्योंकि एक अधिकारी से बड़ा दूसरा रहता है जिसे इन बातों की सुधि रहती है, और उन से भी और अधिक बड़े रहते हैं। ९ भूमि की उपज सब के लिये है, वरन खेती से राजा का भी काम निकलता है ॥

१० जो रुपये से प्रीति रखता है वह रुपये से तृप्त न होगा; और न जो बहुत धन से प्रीति रखता है, लाभ से: यह भी व्यर्थ है ॥

११ जब सम्पत्ति बढ़ती है, तो उसके खानेवाले भी बढ़ते हैं, तब उसके स्वामी को इसे छोड़ और क्या लाभ होता है कि उस सम्पत्ति को अपनी आंखों से देखे ?

१२ परिश्रम करनेवाला चाहे थोड़ा खाए, या बहुत, तौभी उसकी नींद सुखदाई होती है; परन्तु धनी के धन के बढ़ने के कारण उसको नींद नहीं आती ॥

१३ मैं ने धरती पर * एक बड़ी बुरी बला देखी है; अर्थात् वह धन जिसे उसके मालिक ने अपनी ही हानि के लिये रखा हो, १४ और वह किसी बुरे काम में उड़ जाता है; और उसके घर में बेटा उत्पन्न होता है परन्तु उसके हाथ में कुछ नहीं रहता। १५ जैसा वह मां के पेट से निकला वैसा ही लौट जाएगा; नंगा ही, जैसा आया था, और अपने परिश्रम के बदले कुछ भी न पाएगा जिसे वह अपने हाथ में ले जा सके। १६ यह भी एक बड़ी बला है कि जैसा वह आया, ठीक वैसा ही वह जाएगा; उसे उस व्यर्थ परिश्रम से और क्या लाभ है ?

* मूल में—अपने पैर की रक्षा करना।

* मूल में—सूरज के नीचे।

१७ केवल इसके कि उस ने जीवन भर बेचैनी से भोजन किया, और बहुत ही दु:खित और रोगी रहा और क्रोध भी करता रहा?

१८ सुन, जो भली बात मैं ने देखी है, वरन जो उचित है, वह यह कि मनुष्य खाए और पीए और अपने परिश्रम से जो वह धरती पर करता है, अपनी सारी आयु भर जो परमेश्वर ने उसे दी है, सुखी रहे; क्योंकि उसका भाग यही है। १९ वरन हर एक मनुष्य जिसे परमेश्वर ने धन सम्पत्ति दी हो, और उन से आनन्द भोगने और उस में से अपना भाग लेने और परिश्रम करते हुए आनन्द करने की शक्ति भी दी हो यह परमेश्वर का वरदान है। २० इस जीवन के दिन उसे बहुत स्मरण न रहेंगे, क्योंकि परमेश्वर उसकी सुन सुनकर उसके मन को आनन्दमय रखता है॥

६ एक बुराई जो मैं ने धरती पर * देखी है, वह मनुष्यों को बहुत भारी लगती है: २ किसी मनुष्य को परमेश्वर धन सम्पत्ति और प्रतिष्ठा यहां तक देता है कि जो कुछ उसका मन चाहता है उसे उसकी कुछ भी घटी नहीं होती, तौभी परमेश्वर उसको उस में से खाने नहीं देता, कोई दूसरा ही उसे खाता है; यह व्यर्थ और भयानक दु:ख है। ३ यदि किसी पुरुष के सौ पुत्र हों, और वह बहुत वर्ष जीवित रहे और उसकी आयु बढ़ जाए, परन्तु न उसका प्राण प्रसन्न रहे और न उसकी अन्तिम क्रिया की जाए, तो मैं कहता हूं कि ऐसे मनुष्य से अधूरे समय का जन्मा हुआ बच्चा उत्तम है।

* मूल में—सूरज के नीचे।

४ क्योंकि वह व्यर्थ ही आया और अन्धेरे में चला गया, और उसका नाम भी अन्धेरे में छिप गया; ५ और न सूर्य को देखा, न किसी चीज़ को जानने पाया; तौभी इसको उस मनुष्य से अधिक चैन मिला। ६ हां चाहे वह दो हजार वर्ष जीवित रहे, और कुछ सुख भोगने न पाए, तो उसे क्या? क्या सब के सब एक ही स्थान में नहीं जाते?

७ मनुष्य का सारा परिश्रम उसके पेट के लिये होता है तौभी उसका मन नहीं भरता। ८ जो बुद्धिमान है वह मूर्ख से किस बात में बढ़कर है? और कंगाल जो यह जानता है कि इस जीवन में किस प्रकार से चलना चाहिये, वह भी उस से किस बात में बढ़कर है? ९ आंखों से देख लेना मन की चंचलता से उत्तम है; यह भी व्यर्थ और मन का कुढ़ना है॥

१० जो कुछ हुआ है उसका नाम युग के आरम्भ से रखा गया है, और यह प्रगट है कि वह आदमी * है, कि वह उस से जो उस से अधिक शक्तिमान है झगड़ा नहीं कर सकता है। ११ बहुत सी ऐसी बातें हैं जिनके कारण जीवन और भी व्यर्थ होता है तो फिर मनुष्य को क्या लाभ? १२ क्योंकि मनुष्य के क्षणिक व्यर्थ जीवन में जो वह परछाईं की नाईं बिताता है कौन जानता है कि उसके लिये अच्छा क्या है? क्योंकि मनुष्य को कौन बता सकता है कि उसके बाद दुनियां में क्या होगा?

७ अच्छा नाम अनमोल इत्र से और मृत्यु का दिन जन्म के दिन से उत्तम है। २ जेवनार के घर जाने से शोक

* अर्थात् मिट्टी का बना हुआ।

ही के घर जाना उत्तम है; क्योंकि सब मनुष्यों का अन्त यही है, और जो जीवित है वह मन लगाकर इस पर सोचेगा। ३ हंसी से खेद उत्तम है, क्योंकि मुंह पर के शोक से मन सुधरता है। ४ बुद्धिमानों का मन शोक करनेवालों के घर की ओर लगा रहता है परन्तु मूर्खों का मन आनन्द करनेवालों के घर लगा रहता है। ५ मूर्खों के गीत सुनने से बुद्धिमान की घुड़की सुनना उत्तम है। ६ क्योंकि मूर्ख की हंसी हांडी के नीचे जलते हुए कांटों की चरचराहट के समान होती है; यह भी व्यर्थ है। ७ निश्चय अन्धेर से बुद्धिमान बावला हो जाता है; और घूस से बुद्धि नाश होती है। ८ किसी काम के आरम्भ से उसका अन्त उत्तम है; और धीरजवन्त पुरुष गर्वी से उत्तम है। ९ अपने मन में उतावली से क्रोधित न हो, क्योंकि क्रोध मूर्खों ही के हृदय में रहता है। १० यह न कहना, बीते दिन इन से क्यों उत्तम थे? क्योंकि यह तू बुद्धिमानी से नहीं पूछता। ११ बुद्धि बपौती के साथ अच्छी होती है, वरन जीवित * रहनेवालों के लिये लाभकारी है। १२ क्योंकि बुद्धि की आड़ रुपये की आड़ का काम देता है; परन्तु ज्ञान की श्रेष्ठता यह है कि बुद्धि से उसके रखनेवालों के प्राण की रक्षा होती है। १३ परमेश्वर के काम पर दृष्टि कर; जिस वस्तु को उस ने टेढ़ा किया हो उसे कौन सीधा कर सकता है?

१४ सुख के दिन सुख मान, और दुःख के दिन सोच; क्योंकि परमेश्वर ने दोनों को एक ही संग रखा है, जिस से मनुष्य अपने बाद होनेवाली किसी बात को न बूझ सके॥

१५ अपने व्यर्थ जीवन में मैं ने यह सब कुछ देखा है; कोई धर्मी अपने धर्म का काम करते हुए नाश हो जाता है, और दुष्ट बुराई करते हुए दीर्घायु होता है। १६ अपने को बहुत धर्मी न बना, और न अपने को अधिक बुद्धिमान बना; तू क्यों अपने ही नाश का कारण हो? १७ अत्यन्त दुष्ट भी न बन, और न मूर्ख हो; तू क्यों अपने समय से पहले मरे? १८ यह अच्छा है कि तू इस बात को पकड़े रहे; और उस बात पर से भी हाथ न उठाए; क्योंकि जो परमेश्वर का भय मानता है वह इन सब कठिनाइयों से पार हो जाएगा॥

१९ बुद्धि ही से नगर के दस हाकिमों की अपेक्षा बुद्धिमान को अधिक सामर्थ प्राप्त होती है। २० निःसन्देह पृथ्वी पर कोई ऐसा धर्मी मनुष्य नहीं जो भलाई ही करे और जिस से पाप न हुआ हो॥

२१ जितनी बात कही जाएं सब पर कान न लगाना, ऐसा न हो कि तू सुने कि तेरा दास तुझी को शाप देता है; २२ क्योंकि तू आप जानता है कि तू ने भी बहुत बेर औरों को शाप दिया है॥

२३ यह सब मैं ने बुद्धि से जांच लिया है; मैं ने कहा, मैं बुद्धिमान हो जाऊंगा; परन्तु यह मुझ से दूर रहा। २४ वह जो दूर और अत्यन्त गहिरा है, उसका भेद कौन पा सकता है? २५ मैं ने अपना मन लगाया कि बुद्धि के विषय में जान लूं; कि खोज निकालूं और उसका भेद जानूं, और कि दुष्टता की मूर्खता और मूर्खता जो निरा बावलापन है जानूं।

* मूल में—सूर्य के देखनेहारों।

२६ और मैं ने मृत्यु से भी अधिक दुःखदाई एक वस्तु पाई, अर्थात् वह स्त्री जिसका मन फन्दा और जाल है और जिसके हाथ हथकड़ियां हैं; (जिस पुरुष से परमेश्वर प्रसन्न है वही उस से बचेगा, परन्तु पापी उसका शिकार होगा)। २७ देख, उपदेशक कहता है, मैं ने ज्ञान के लिये अलग अलग बातें मिलाकर जांचीं, और यह बात निकाली, २८ जिसे मेरा मन अब तक ढूंढ़ रहा है, परन्तु नहीं पाया। हजार में से मैं ने एक पुरुष को पाया, परन्तु उन में एक भी स्त्री नहीं पाई। २९ देखो, मैं ने केवल यह बात पाई है, कि परमेश्वर ने मनुष्य को सीधा बनाया, परन्तु उन्हों ने बहुत सी युक्तियां निकाली हैं॥

८ बुद्धिमान के तुल्य कौन है? और किसी बात का अर्थ कौन लगा सकता है? मनुष्य की बुद्धि के कारण उसका मुख चमकता, और उसके मुख की कठोरता दूर हो जाती है।

२ मैं तुझे सम्मति देता हूं कि परमेश्वर की शपथ के कारण राजा की आज्ञा मान। ३ राजा के साम्हने से उतावली के साथ न लौटना और न बुरी बात पर हठ करना, क्योंकि वह जो कुछ चाहता है करता है। ४ क्योंकि राजा के वचन में तो सामर्थ्य रहती है, और कौन उस से कह सकता है कि तू क्या करता है? ५ जो आज्ञा को मानता है, वह जोखिम से बचेगा, और बुद्धिमान का मन समय और न्याय का भेद जानता है। ६ क्योंकि हर एक विषय का समय और नियम होता है, यद्यपि मनुष्य का दुःख उसके लिये * बहुत भारी होता है। ७ वह नहीं जानता कि क्या होनेवाला है, और कब होगा? यह उसको कौन बता सकता है? ८ ऐसा कोई मनुष्य नहीं जिसका वश प्राण पर चले कि वह उसे निकलते समय रोक ले, और न कोई मृत्यु के दिन पर अधिकारी होता है; और न उसे लड़ाई से छुट्टी मिल सकती है, और न दुष्ट लोग अपनी दुष्टता के कारण बच सकते हैं। ९ जितने काम धरती पर * किए जाते हैं उन सब को ध्यानपूर्वक देखने में यह सब कुछ मैं ने देखा, और यह भी देखा कि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य पर अधिकारी होकर अपने ऊपर हानि लाता है॥

१० तब मैं ने दुष्टों को गाड़े जाते देखा; अर्थात् उनकी तो क़ब्र बनी, परन्तु जिन्हों ने ठीक काम किया था वे पवित्रस्थान से निकल गए और उनका स्मरण भी नगर में न रहा; यह भी व्यर्थ ही है। ११ बुरे काम के दण्ड की आज्ञा फुर्ती से नहीं दी जाती; इस कारण मनुष्यों का मन बुरा काम करने की इच्छा से भरा रहता है। १२ चाहे पापी सौ बार पाप करे और अपने दिन भी बढ़ाए, तौभी मुझे निश्चय है कि जो परमेश्वर से डरते हैं और अपने तईं उसको सम्मुख जानकर भय से चलते हैं, उनका भला ही होगा; १३ परन्तु दुष्ट का भला नहीं होने का, और न उसकी जीवनरूपी छाया लम्बी होने पाएगी, क्योंकि वह परमेश्वर का भय नहीं मानता॥

१४ एक व्यर्थ बात पृथ्वी पर होती है, अर्थात् ऐसे धर्मी हैं जिनकी वह दशा होती है जो दुष्टों की होनी चाहिये, और ऐसे दुष्ट हैं जिनकी वह दशा होती है

---

* मूल में—ऊपर।

* मूल में—सूरज के नीचे।

जो धर्मियों की होनी चाहिये। मैं ने कहा कि यह भी व्यर्थ ही है। १५ तब मैं ने आनन्द को सराहा, क्योंकि सूर्य के नीचे मनुष्य के लिये खाने-पीने और आनन्द करने को छोड़ और कुछ भी अच्छा नहीं, क्योंकि यही उसके जीवन भर जो परमेश्वर उसके लिये धरती पर * ठहराए, उसके परिश्रम में उसके संग बना रहेगा॥

१६ जब मैं ने बुद्धि प्राप्त करने और सब काम देखने के लिये जो पृथ्वी पर किए जाते हैं अपना मन लगाया, कि कैसे मनुष्य रात-दिन जागते रहते हैं; १७ तब मैं ने परमेश्वर का सारा काम देखा जो सूर्य के नीचे किया जाता है, उसकी थाह मनुष्य नहीं पा सकता। चाहे मनुष्य उसकी खोज में कितना भी परिश्रम करे, तौभी उसको न जान पाएगा; और यद्यपि बुद्धिमान कहे भी कि मैं उसे समझूंगा, तौभी वह उसे न पा सकेगा॥

९ यह सब कुछ मैं ने मन लगाकर विचारा कि इन सब बातों का भेद पाऊं, कि किस प्रकार धर्मी और बुद्धिमान लोग और उनके काम परमेश्वर के हाथ में हैं; मनुष्य के आगे सब प्रकार की बातें हैं परन्तु वह नहीं जानता कि वह प्रेम है व बैर। २ सब बातें सभों को एक समान होती हैं, धर्मी हो या दुष्ट, भले, शुद्ध या अशुद्ध, यज्ञ करने और न करनेवाले, सभों की दशा एक ही सी होती है। जैसी भले मनुष्य की दशा, वैसी ही पापी की दशा; जैसी शपथ खानेवाले की दशा, वैसी ही उसकी जो शपथ खाने से डरता है। ३ जो कुछ सूर्य के नीचे किया जाता है उस में यह एक दोष है कि सब लोगों की एक सी दशा होती है; और मनुष्यों के मनों में बुराई भरी हुई है, और जब तक वे जीवित रहते हैं उनके मन में बावलापन रहता है, और उसके बाद वे मरे हुओं में जा मिलते हैं। ४ उसको परन्तु जो सब जीवितों में है, उसे आशा है, क्योंकि जीवता कुत्ता मरे हुए सिंह से बढ़कर है। ५ क्योंकि जीवते तो इतना जानते हैं कि वे मरेंगे, परन्तु मरे हुए कुछ भी नहीं जानते, और न उनको कुछ और बदला मिल सकता है, क्योंकि उनका स्मरण मिट गया है। ६ उनका प्रेम और उनका बैर और उनकी डाह नाश हो चुकी, और अब जो कुछ सूर्य के नीचे किया जाता है उस में सदा के लिये उनका और कोई भाग न होगा॥

७ अपने मार्ग पर चला जा, अपनी रोटी आनन्द से खाया कर, और मन में सुख मानकर अपना दाखमधु पिया कर; क्योंकि परमेश्वर तेरे कामों से प्रसन्न हो चुका है॥

८ तेरे वस्त्र सदा उजले रहें, और तेरे सिर पर तेल की घटी न हो॥

९ अपने व्यर्थ जीवन के सारे दिन जो उस ने सूर्य के नीचे तेरे लिये ठहराए हैं अपनी प्यारी पत्नी के संग में बिताना, क्योंकि तेरे जीवन और तेरे परिश्रम में जो तू सूर्य के नीचे करता है तेरा यही भाग है। १० जो काम तुझे * मिले उसे अपनी शक्ति भर करना, क्योंकि अधोलोक में जहां तू जानेवाला है, न काम न युक्ति न ज्ञान और न बुद्धि है॥

* मूल में—सूरज के नीचे।

* मूल में—तेरे हाथ को करने के लिये।

११ फिर मैं ने धरती पर * देखा कि न तो दौड़ में वेग दौड़नेवाले और न युद्ध में शूरवीर जीतने; न बुद्धिमान लोग रोटी पाते न समझवाले धन, और न प्रवीणों पर अनुग्रह होता है; वे सब समय और संयोग के वश में है। १२ क्योंकि मनुष्य अपना समय नहीं जानता। जैसे मछलियां दुखदाई जाल में बझतीं और चिड़ियें फन्दे में फंसती हैं, वैसे ही मनुष्य दुखदाई समय में जो उन पर अचानक आ पड़ता है, फंस जाते हैं॥

१३ मैं ने सूर्य के नीचे इस प्रकार की बुद्धि की बात भी देखी है, जो मुझे बड़ी जान पड़ी। १४ एक छोटा सा नगर था, जिस में थोड़े ही लोग थे; और किसी बड़े राजा ने उस पर चढ़ाई करके उसे घेर लिया, और उसके विरुद्ध बड़े बड़े धुस बनवाए। १५ परन्तु उस में एक दरिद्र बुद्धिमान पुरुष पाया गया, और उस ने उस नगर को अपनी बुद्धि के द्वारा बचाया। तौभी किसी ने उस दरिद्र पुरुष का स्मरण न रखा। १६ तब मैं ने कहा, यद्यपि दरिद्र की बुद्धि तुच्छ समझी जाती है और उसका वचन कोई नहीं सुनता तौभी पराक्रम से बुद्धि उत्तम है॥

१७ बुद्धिमानों के वचन जो धीमे धीमे कहे जाते हैं वे मूर्खों के बीच प्रभुता करनेवाले के चिल्ला चिल्लाकर कहने से अधिक सुने जाते हैं। १८ लड़ाई के हथियारों से बुद्धि उत्तम है, परन्तु एक पापी बहुत भलाई नाश करता है॥

१० मरी हुई मक्खियों के कारण गन्धी का तेल सड़ने और बसाने लगता है; और थोड़ी सी मूर्खता बुद्धि और प्रतिष्ठा को घटा देती है। २ बुद्धिमान का मन उचित बात की ओर रहता है परन्तु मूर्ख का मन उसके विपरीत रहता है। ३ वरन जब मूर्ख मार्ग पर चलता है, तब उसकी समझ काम नहीं देती, और वह सब से कहता है, मैं मूर्ख हूं॥

४ यदि हाकिम का क्रोध तुझ पर भड़के, तो अपना स्थान न छोड़ना, क्योंकि धीरज धरने से बड़े बड़े पाप रुकते हैं॥

५ एक बुराई है जो मैं ने सूर्य के नीचे देखी, वह हाकिम की भूल से होती है: ६ अर्थात् मूर्ख बड़ी प्रतिष्ठा के स्थानों में ठहराए जाते हैं, और धनवान लोग नीचे बैठते हैं। ७ मैं ने दासों को घोड़ों पर चढ़े, और रईसों को दासों की नाईं भूमि पर चलते हुए देखा है॥

८ जो गड़हा खोदे वह उस में गिरेगा और जो बाड़ा तोड़े उसको सर्प डसेगा। ९ जो पत्थर फोड़े, वह उन से घायल होगा, और जो लकड़ी काटे, उसे उसी से डर होगा। १० यदि कुल्हाड़ा थोथा हो और मनुष्य उसकी धार को पैनी न करे, तो अधिक बल लगाना पड़ेगा; परन्तु सफल होने के लिये बुद्धि से लाभ होता है। ११ यदि मंत्र से पहिले सर्प डसे, तो मंत्र पढ़नेवाले को कुछ भी लाभ नहीं॥

१२ बुद्धिमान के वचनों के कारण अनुग्रह होता है, परन्तु मूर्ख अपने वचनों के द्वारा नाश होते हैं। १३ उसकी बात का आरम्भ मूर्खता का, और उनका अन्त दुखदाई बावलापन होता है। १४ मूर्ख बहुत बातें बढ़ाकर बोलता है, तौभी कोई मनुष्य नहीं जानता कि क्या होगा, और कौन बता सकता है कि उसके बाद क्या होनेवाला है? १५ मूर्ख को

* मूल में—सूरज के नीचे।

परिश्रम से थकावट ही होती है, यहां तक कि वह नहीं जानता कि नगर को कैसे जाए ।।

१६ हे देश, तुझ पर हाय जब तेरा राजा लड़का है और तेरे हाकिम प्रातःकाल भोज करते हैं ! १७ हे देश, तू धन्य है जब तेरा राजा कुलीन है; और तेरे हाकिम समय पर भोज करते हैं, और वह भी मतवाले होने को नहीं, वरन बल बढ़ाने के लिये ! १८ आलस्य के कारण छत की कड़ियां दब जाती हैं, और हाथों की सुस्ती से घर चूता है। १९ भोज हंसी खुशी के लिये किया जाता है, और दाखमधु से जीवन को आनन्द मिलता है; और रुपयों से सब कुछ प्राप्त होता है। २० राजा को मन में भी शाप न देना, न धनवान को अपने शयन की कोठरी में शाप देना; क्योंकि कोई आकाश का पक्षी तेरी वाणी को ले जाएगा, और कोई उड़ानेवाला जन्तु उस बात को प्रगट कर देगा ।।

११ अपनी रोटी जल के ऊपर डाल दे, क्योंकि बहुत दिन के बाद तू उसे फिर पाएगा। २ सात वरन आठ जनों को भी भाग दे, क्योंकि तू नहीं जानता कि पृथ्वी पर क्या विपत्ति आ पड़ेगी। ३ यदि बादल जल भरे हैं, तब उसको भूमि पर उण्डेल देते हैं; और वृक्ष चाहे दक्खिन की ओर गिरे या उत्तर की ओर, तौभी जिस स्थान पर वृक्ष गिरेगा, वहीं पड़ा रहेगा। ४ जो वायु को ताकता रहेगा वह बीज बोने न पाएगा; और जो बादलों को देखता रहेगा वह लवने न पाएगा। ५ जैसे तू वायु के चलने का मार्ग नहीं जानता और किस रीति से गर्भवती के पेट में हड्डियां बढ़ती हैं, वैसे ही तू परमेश्वर का काम नहीं जानता जो सब कुछ करता है ।।

६ भोर को अपना बीज बो, और सांझ को भी अपना हाथ न रोक; क्योंकि तू नहीं जानता कि कौन सुफल होगा, यह या वह, वा दोनों के दोनों अच्छे निकलेंगे ।।

७ उजियाला मनभावना होता है, और धूप के देखने से आंखों को सुख होता है ।। ८ यदि मनुष्य बहुत वर्ष जीवित रहे, तो उन सभों में आनन्दित रहे; परन्तु यह स्मरण रखे कि अन्धियारे के दिन भी बहुत होंगे। जो कुछ होता है वह व्यर्थ है ।।

९ हे जवान, अपनी जवानी में आनन्द कर, और अपनी जवानी के दिनों में मगन रह; अपनी मनमानी कर और अपनी आंखों की दृष्टि के अनुसार चल। परन्तु यह जान रख कि इन सब बातों के विषय परमेश्वर तेरा न्याय करेगा ।।

१० अपने मन से खेद और अपनी देह से दुःख दूर कर, क्योंकि लड़कपन और जवानी दोनों व्यर्थ हैं।

१२ १ अपनी जवानी के दिनों में अपने सृजनहार को स्मरण रख, इस से पहिले कि विपत्ति के दिन और वे वर्ष आएं, जिन में तू कहे कि मेरा मन इन में नहीं लगता। २ इस से पहिले कि सूर्य और प्रकाश और चन्द्रमा और तारागण अंधेरे हो जाएं, और वर्षा होने के बाद बादल फिर घिर आएं; ३ उस समय घर के पहरुये कांपेंगे, और बलवन्त झुक जायेंगे, और पिसनहारियां थोड़ी रहने के कारण काम छोड़ देंगी, और झरोखों में से देखनेवालियां अन्धी हो जाएंगी, ४ और सड़क की ओर के किवाड़ बन्द होंगे, और चक्की पीसने

* मूल में—सुरज से नीचे।

का शब्द धीमा होगा, और तड़के चिड़िया बोलते ही एक उठ जाएगा*, और सब गानेवालियों का शब्द धीमा हो जाएगा†। ५ फिर जो ऊंचा हो उस से भय खाया जाएगा, और मार्ग में डरावनी वस्तुए मानी जाएंगी; और बादाम का पेड़ फूलेगा, और टिड्डी भी भारी लगेगी, और भूख बढ़ानेवाला फल फिर काम न देगा; क्योंकि मनुष्य अपने सदा के घर को जायेगा, और रोने पीटनेवाले सड़क-सड़क फिरेंगे। ६ उस समय चान्दी का तार दो टुकड़े हो जाएगा और सोने का कटोरा टूटेगा, और सोते के पास घड़ा फूटेगा, और कुण्ड के पास रहट टूट जाएगा, ७ तब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी, और आत्मा परमेश्वर के पास जिस ने उसे दिया लौट जाएगी। ८ उपदेशक कहता है, सब व्यर्थ ही व्यर्थ; सब कुछ व्यर्थ है ॥

९ उपदेशक जो बुद्धिमान था, वह प्रजा को ज्ञान भी सिखाता रहा, और ध्यान लगाकर और पूछपाछ करके बहुत से नीतिवचन क्रम से रखता था। १० उपदेशक ने मनभावने शब्द खोजे और सीधाई से ये सच्ची बातें लिख दीं ॥

११ बुद्धिमानों के वचन पैनों के समान होते हैं, और सभाओं के प्रधानों के वचन गाड़ी हुई कीलों के समान हैं, क्योंकि एक ही चरवाहे की ओर से मिलते हैं। १२ हे मेरे पुत्र, इन्हीं से चौकसी सीख। बहुत पुस्तकों की रचना का अन्त नहीं होता, और बहुत पढ़ना देह को थका देता है ॥

१३ सब कुछ सुना गया; अन्त की बात यह है कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यही है। १४ क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरी, न्याय करेगा ॥

* मूल में—नींद से उठ जायेगा।
† मूल में—गाने बजाने की सब बेटियां नीची की जाएंगी।

श्रेष्ठगीत

१ श्रेष्ठगीत जो सुलैमान का है ॥
२ वह अपने मुह के चुम्बनों से मुझे चूमे!
क्योंकि तेरा प्रेम दाखमधु से उत्तम है,
३ तेरे भांति भांति के इत्रों का सुगन्ध उत्तम है,
तेरा नाम उंडेले हुए इत्र के तुल्य है;
इसीलिये कुमारियां तुझ से प्रेम रखती हैं।
४ मुझे खींच ले; हम तेरे पीछे दौड़ेंगे।
राजा मुझे अपने महल में ले आया है।

हम तुझ में मगन और आनन्दित होंगे;
हम दाखमधु से अधिक तेरे प्रेम की चर्चा करेंगे;
वे ठीक ही तुझ से प्रेम रखती हैं ।।

५ हे यरूशलेम की पुत्रियो,
मैं काली तो हूं परन्तु सुन्दर हूं,
केदार के तम्बुओं के
और सुलैमान के पर्दों के तुल्य हूं ।

६ मुझे इसलिये न घूर कि मैं सांवली हूं,
क्योंकि मैं धूप से झुलस गई* ।
मेरी माता के पुत्र मुझ से अप्रसन्न थे,
उन्हों ने मुझ को दाख की बारियों की रखवालिन बनाया;
परन्तु मैं ने अपनी निज दाख की बारी की रखवाली नहीं की !

७ हे मेरे प्राणप्रिय मुझे बता,
तू अपनी भेड़-बकरियां कहां चराता है, दोपहर को तू उन्हें कहां बैठाता है;
मैं क्यों तेरे संगियों की भेड़-बकरियों के पास
घूंघट काढ़े हुए भटकती फिरूं ?

८ हे स्त्रियों में सुन्दरी, यदि तू यह न जानती हो
तो भेड़-बकरियों के खुरों के चिन्हों पर चल,
और चरवाहों के तम्बुओं के पास
अपनी बकरियों के बच्चों को चरा ।।

९ हे मेरी प्रिय मैं ने तेरी तुलना
फिरौन के रथों में जुती हुई घोडी से की है ।

१० तेरे गाल केशों की लटों के बीच क्या ही सुन्दर हैं, और
तेरा कण्ठ हीरों की लड़ों के बीच ।

११ हम तेरे लिये चान्दी के फूलदार सोने के आभूषण बनाएंगे ।।

१२ जब राजा अपनी मेज़ के पास बैठा था
मेरी जटामासी की सुगन्ध फैल रही थी ।

१३ मेरा प्रेमी मेरे लिये लोबान की थैली के समान है
जो मेरी छातियों के बीच में पड़ी रहती है ।।

१४ मेरा प्रेमी मेरे लिये मेंहदी के फूलों के गुच्छे के समान है,
जो एनगदी की दाख की बारियों में होता है ।।

१५ तू सुन्दरी है, हे मेरी प्रिय, तू सुन्दरी है;
तेरी आंखें कबूतरी की सी हैं ।

१६ हे मेरी प्रिय तू सुन्दर और मनभावनी है ।
और हमारा बिछौना भी हरा है;

१७ हमारे घर के बरगे देवदार हैं
और हमारी छत की कड़ियां सनौवर हैं ।।

२ मैं शारोन देश का गुलाब
और तराइयों में का सोसन फूल हूं ।।

२ जैसे सोसन फूल कटीले पेडों के बीच
वैसे ही मेरी प्रिय युवतियों के बीच में है ।।

३ जैसे सेब का वृक्ष जगल के वृक्षों के बीच में,

---

* मूल में—सूर्य ने मुझे जलाया ।

वैसे ही मेरा प्रेमी जवानों के बीच में है।
मैं उसकी छाया में हर्षित होकर बैठ गई,
और उसका फल मुझे खाने में मीठा लगा।
४ वह मुझे भोज के घर में ले आया,
और उसका जो झण्डा मेरे ऊपर फहराता था वह प्रेम था।
५ मुझे सूखी दाखों से संभालो, सेब खिलाकर बल दो;
क्योंकि मैं प्रेम में रोगी हूं।
६ काश, उसका बायां हाथ मेरे सिर के नीचे होता,
और अपने दहिने हाथ से वह मेरा आलिंगन करता!
७ हे यरूशलेम की पुत्रियो, मैं तुम से चिकारियों और मैदान की हरिणियों की शपथ धराकर कहती हूं,
कि जब तक प्रेम आप से न उठे,
तब तक उसको न उसकाओ न जगाओ॥
८ मेरे प्रेमी का शब्द सुन पड़ता है!
देखो, वह पहाड़ों पर कूदता और पहाड़ियों को फान्दता हुआ आता है।
९ मेरा प्रेमी चिकारे वा जवान हरिण के समान है।
देखो, वह हमारी भीत के पीछे खड़ा है,
और खिड़कियों की ओर ताक रहा है,
और झंझरी में से देख रहा है।
१० मेरा प्रेमी मुझ से कह रहा है,
हे मेरी प्रिय, हे मेरी सुन्दरी, उठकर चली आ;
११ क्योंकि देख, जाड़ा जाता रहा,
वर्षा भी हो चुकी और जाती रही है।
१२ पृथ्वी पर फूल दिखाई देते हैं,
चिड़ियों के गाने का समय आ पहुंचा है,
और हमारे देश में पिन्डुक का शब्द सुनाई देता है।
१३ अंजीर पकने लगे हैं,
और दाखलताएं फूल रही हैं;
वे सुगन्ध दे रही हैं।
हे मेरी प्रिय, हे मेरी सुन्दरी, उठकर चली आ।
१४ हे मेरी कबूतरी, पहाड़ की दरारों में
और टीलों के कुञ्ज में
तेरा मुख मुझे देखने दे,
तेरा बोल मुझे सुनने दे,
क्योंकि तेरा बोल मीठा, और तेरा मुख अति सुन्दर है।
१५ जो छोटी लोमड़ियां* दाख की बारियों को बिगाड़ती हैं, उन्हें पकड़ ले,
क्योंकि हमारी दाख की बारियों में फूल लगे हैं॥
१६ मेरा प्रेमी मेरा है और मैं उसकी हूं,
वह अपनी भेड़-बकरियां सोसन फूलों के बीच में चराता है।
१७ जब तक दिन ठण्डा न हो और छाया लम्बी होते होते मिट न जाए,
तब तक हे मेरे प्रेमी उस चिकारे वा जवान हरिण के समान बन
जो बेतेर† के पहाड़ों पर फिरता है॥

३ रात के समय में अपने पलंग पर
अपने प्राणप्रिय को ढूंढ़ती रही;
मैं उसे ढूंढ़ती तो रही, परन्तु उसे न पाया;
मैं ने कहा, मैं अब उठकर नगर में,

---
* मूल में—लोमड़ियां, छोटी लोमड़ियां।
† अर्थात् अलगाई।

२ और सड़कों और चौकों में घूमकर
अपने प्राणप्रिय को ढूंढूंगी।
मैं उसे ढूंढ़ती तो रही, परन्तु उसे
न पाया।
३ जो पहरुए नगर में घूमते थे, वे
मुझे मिले,
मैं ने उन से पूछा, क्या तुम ने मेरे
प्राणप्रिय को देखा है ?
४ मुझ को उनके पास से आगे बढ़े
थोड़े ही देर हुई थी
कि मेरा प्राणप्रिय मुझे मिल गया।
मैं ने उसको पकड़ लिया, और उसको
जाने न दिया
जब तक उसे अपनी माता के घर,
अर्थात् अपनी जननी की कोठरी में
न ले आई।।
५ हे यरूशलेम की पुत्रियो, मैं तुम से
चिकारियों और मैदान की हरिणियों
की शपथ धराकर कहती हूं,
कि जब तक प्रेम आप से न उठे,
तब तक उसको न उसकाओ और
न जगाओ।।
६ यह क्या है जो धूए के खम्भे के
समान,
गन्धरस और लोबान से सुगन्धित,
और व्योपारी की सब भांति की
बुकनी लगाए हुए
जंगल से निकला आता है ?
७ देखो, यह सुलैमान की पालकी है !
उसके चारों ओर इस्राएल के शूरवीरों
में के साठ वीर चल रहे हैं।।
८ वे सब के सब तलवार बान्धनेवाले
और युद्ध विद्या में निपुण हैं।
प्रत्येक पुरुष रात के डर से
जांघ पर तलवार लटकाए रहता
है।
९ सुलैमान राजा ने अपने लिये लबानोन
के काठ की एक बड़ी पालकी
बनवा ली।
१० उस ने उसके खम्भे चान्दी के,
उसका सिरहाना सोने का, और गद्दी
अर्गवानी रंग की बनवाई है;
और उसके बीच का स्थान
यरूशलेम की पुत्रियों की ओर से
बड़े प्रेम से जड़ा गया है।
११ हे सिय्योन की पुत्रियो निकलकर
सुलैमान राजा पर दृष्टि डालो,
देखो, वह वही मुकुट पहिने हुए है
जिसे उसकी माता ने उसके विवाह
के दिन
और उसके मन के आनन्द के दिन,
उसके सिर पर रखा था।।

४ हे मेरी प्रिय तू सुन्दर है, तू सुन्दर
है !
तेरी आंखें तेरी लटों के बीच में
कबूतरों की सी दिखाई देती हैं।
तेरे बाल उन बकरियों के झुण्ड के
समान हैं
जो गिलाद पहाड़ के ढाल पर लेटी
हुई हों।
२ तेरे दान्त उन ऊन कतरी हुई भेड़ों
के झुण्ड के समान हैं,
जो नहाकर ऊपर आई हों, उन में हर
एक के दो दो जुड़वा बच्चे होते हैं।
और उन में से किसी का साथी
नहीं मरा।
३ तेरे होंठ लाल रंग की डोरी के समान
हैं,
और तेरा मुंह मनोहर है,
तेरे कपोल तेरी लटों के नीचे
अनार की फांक से देख पड़ते हैं।

४ तेरा गला दाऊद के गुम्मट के समान
है, जो अस्त्र-शस्त्र के लिये बना हो,
और जिस पर हजार ढालें टंगी हुई
हों,
वे सब ढालें शूरवीरों की हैं।
५ तेरी दोनों छातियां मृग के दो जुड़वे
बच्चों के तुल्य हैं,
जो सोसन फूलों के बीच में चरते हों।
६ जब तक दिन ठण्डा न हो, और
छाया लम्बी होते होते मिट न
जाए,
तब तक मैं शीघ्रता से गन्धरस के
पहाड़
और लोबान की पहाड़ी पर चला
जाऊंगा।
७ हे मेरी प्रिय तू सर्वाङ्ग सुन्दरी है;
तुझ में कोई दोष नहीं।
८ हे मेरी दुल्हिन, तू मेरे संग लबानोन
से,
मेरे संग लबानोन से चली आ।
तू अमाना की चोटी पर से,
शनीर और हेर्मोन की चोटी पर से,
सिंहों की गुफाओं से,
चितों के पहाड़ों पर से दृष्टि कर।
९ हे मेरी बहिन, हे मेरी दुल्हिन, तू ने
मेरा मन मोह लिया है,
तू ने अपनी आंखों की एक ही
चितवन से,
और अपने गले के एक ही हीरे से
मेरा हृदय मोह लिया है,
१० हे मेरी बहिन, हे मेरी दुल्हिन, तेरा
प्रेम क्या ही मनोहर है!
तेरा प्रेम दाखमधु से क्या ही उत्तम
है,
और तेरे इत्रों का सुगन्ध सब प्रकार
के मसालों के सुगन्ध से!
११ हे मेरी दुल्हिन, तेरे होंठों से मधु
टपकता है;
तेरी जीभ के नीचे मधु और दूध
रहता है;
तेरे वस्त्रों का सुगन्ध लबानोन का
सा है।
१२ मेरी बहिन, मेरी दुल्हिन, किवाड़
लगाई हुई बारी के समान,
किवाड़ बन्द किया हुआ सोता, और
छाप लगाया हुआ झरना है।
१३ तेरे अंकुर उत्तम फलवाली अनार
की बारी के तुल्य हैं,
जिस में मेंहदी और सुम्बुल,
१४ जटामासी और केसर,
लोबान के सब भांति के पेड़, मुश्क
और दालचीनी,
गन्धरस, अगर, आदि सब मुख्य
मुख्य सुगन्धद्रव्य होते हैं।
१५ तू बारियों का सोता है,
फूटते हुए जल का कुआं,
और लबानोन से बहती हुई धाराएं
हैं॥
१६ हे उत्तर वायु जाग, और हे दक्खिनी
वायु चली आ!
मेरी बारी पर बह, जिस से उसका
सुगन्ध फैले।
मेरा प्रेमी अपनी बारी में आये,
और उसके उत्तम उत्तम फल खाए॥

५ हे मेरी बहिन, हे मेरी दुल्हिन,
मैं अपनी बारी में आया हूं,
मैं ने अपना गन्धरस और बलसान
चुन लिया;
मैं ने मधु समेत छत्ता खा लिया,
मैं ने दूध और दाखमधु पी
लिया॥

हे मित्रो, तुम भी खाओ,
हे प्यारो, पियो, मनमाना पियो !

२ मैं सोती थी, परन्तु मेरा मन जागता था।
सुन ! मेरा प्रेमी खटखटाता है, और कहता है,
हे मेरी बहिन, हे मेरी प्रिय, हे मेरी कबूतरी, हे मेरी निर्मल, मेरे लिये द्वार खोल;
क्योंकि मेरा सिर ओस से भरा है,
और मेरी लटें रात में गिरी हुई बून्दों से भीगी है।

३ मैं अपना वस्त्र उतार चुकी थी मै उसे फिर कैसे पहिनूं ?
मैं तो अपने पांव धो चुकी थी अब उनको कैसे मैला करूं ?

४ मेरे प्रेमी ने अपना हाथ किवाड़ के छेद से भीतर डाल दिया,
तब मेरा हृदय उसके लिये उभर उठा।

५ मैं अपने प्रेमी के लिये द्वार खोलने को उठी,
और मेरे हाथों से गन्धरस टपका,
और मेरी अंगुलियों पर से टपकता हुआ गन्धरस
बेण्डे की मूठों पर पड़ा।

६ मैं ने अपने प्रेमी के लिये द्वार तो खोला,
परन्तु मेरा प्रेमी मुड़कर चला गया था।
जब वह बोल रहा था, तब मेरा प्राण घबरा गया था।
मैं ने उसको ढूंढ़ा, परन्तु न पाया;
मैं ने उसको पुकारा, परन्तु उस ने कुछ उत्तर न दिया।

७ पहरेवाले जो नगर में घूमते थे, मुझे मिले,
उन्हों ने मुझे मारा और घायल किया;
शहरपनाह के पहरुओं ने मेरी चद्दर मुझ से छीन ली।

८ हे यरूशलेम की पुत्रियो, मैं तुम को शपथ धराकर कहती हूं, यदि मेरा प्रेमी तुमको मिल जाए,
तो उस से कह देना कि मैं प्रेम में रोगी हूं॥

९ हे स्त्रियों में परम सुन्दरी
तेरा प्रेमी और प्रेमियों से किस बात में उत्तम है ?
तू क्यों हम को ऐसी शपथ धराती है ?

१० मेरा प्रेमी गोरा और लाल सा है,
वह दस हजार में उत्तम है।

११ उसका सिर चोखा कुन्दन है;
उसकी लटकती हुई लटें कौवों की नाईं काली हैं।

१२ उसकी आंखें उन कबूतरों के समान हैं जो दूध में नहाकर नदी के किनारे
अपने झुण्ड में एक कतार से बैठे हुए हों।

१३ उसके गाल फूलों की फुलवारी और बलसान की उभरी हुई क्यारियां हैं।
उसके होंठ सोसन फूल हैं जिन से पिघला हुआ गन्धरस टपकता है॥

१४ उसके हाथ फीरोजा जड़े हुए सोने के किवाड़ हैं।
उसका शरीर नीलम के फूलों से जड़े हुए हाथीदांत का काम है।

१५ उसके पांव कुन्दन पर बैठाये हुए संगमर्मर के खम्भे हैं।

वह देखने में लबानोन और सुन्दरता
में देवदार के वृक्षों के समान
मनोहर है।

१६ उसकी वाणी * अति मधुर है, हां
वह परम सुन्दर है।
हे यरूशलेम की पुत्रियो,
यही मेरा प्रेमी और यही मेरा मित्र
है॥

६ हे स्त्रियों में परम सुन्दरी,
तेरा प्रेमी कहां गया?
तेरा प्रेमी कहां चला गया
कि हम तेरे संग उसको ढूंढ़ने निकलें?

२ मेरा प्रेमी अपनी बारी में अर्थात्
बलसान की क्यारियों की ओर गया
है,
कि बारी में अपनी भेड़-बकरियां
चराए और सोसन फूल बटोरे।

३ मैं अपने प्रेमी की हूं और मेरा प्रेमी
मेरा है,
वह अपनी भेड़-बकरियां सोसन फूलों
के बीच चराता है॥

४ हे मेरी प्रिय, तू तिर्सा की नाईं
सुन्दरी है
तू यरूशलेम के समान रूपवान है,
और पताका फहराती हुई सेना के
तुल्य भयंकर है॥

५ अपनी आंखें मेरी ओर से फेर ले,
क्योंकि मैं उन से घबराता हूं;
तेरे बाल ऐसी बकरियों के झुण्ड
के समान हैं,
जो गिलाद की ढलान पर लेटी हुई
देख पड़ती हों।

६ तेरे दांत ऐसी भेड़ों के झुण्ड के
समान हैं
जिन्हें स्नान कराया गया हो,
उन में प्रत्येक दो दो जुड़वां बच्चे
देती हैं,
जिन में से किसी का साथी नहीं मरा।

७ तेरे कपोल तेरी लटों के नीचे
अनार की फांक से देख पड़ते हैं।

८ वहां साठ रानियां और अस्सी
रखेलियां,
और असंख्य कुमारियां भी हैं।

९ परन्तु मेरी कबूतरी, मेरी निर्मल,
अद्वैत है,
अपनी माता की एकलौती,
अपनी जननी की दुलारी है।
पुत्रियों ने उसे देखा और धन्य कहा;
रानियों और रखेलियों ने देखकर
उसकी प्रशंसा की।

१० यह कौन है जिसकी शोभा भोर के
तुल्य है,
जो सुन्दरता में चन्द्रमा,
और निर्मलता में सूर्य,
और पताका फहराती हुई सेना के
तुल्य भयंकर दिखाई पड़ती है?

११ मैं अखरोट की बारी में उतर गई,
कि तराई के फूल देखूं,
और देखूं कि दाखलता में कलियें
लगीं,
और अनारों के फूल खिले कि नहीं।

१२ मुझे पता भी न था कि मेरी कल्पना
ने
मुझे अपने राजकुमार के रथ पर
चढ़ा दिया॥

१३ लौट आ, लौट आ, हे शूलेम्मिन *,
लौट आ, लौट आ, कि हम तुझ
पर दृष्टि करें॥

---

* मूल में—तालू।

* अर्थात् शान्तिवाली।

क्या तुम शूलेम्मिन * को इस प्रकार देखोगे जैसा महनैम के नृत्य को देखते हैं ?

७ हे कुलीन की पुत्री, तेरे पांव जूतियों में क्या ही सुन्दर हैं !
तेरी जांघों की गोलाई ऐसे गहनों के समान है,
जिसको किसी निपुण कारीगर ने रचा हो ।
२ तेरी नाभि गोल कटोरा है,
जो मसाला मिले हुए दाखमधु से पूर्ण हो ।
तेरा पेट गेहूं के ढेर के समान है जिसके चहुँओर सोसन फूल हों ।
३ तेरी दोनों छातियां
मृगनी के दो जुड़वे बच्चों के समान हैं ।
४ तेरा गला हाथीदांत का गुम्मट है ।
तेरी आंखें हेशबोन के उन कुन्डों के समान हैं,
जो बत्रब्बीम के फाटक के पास हैं ।
तेरी नाक लबानोन के गुम्मट के तुल्य है,
जिसका मुख दमिश्क की ओर है ।
५ तेरा सिर तुझ पर कर्मेल के समान शोभायमान है,
और तेरे सर के लटें अर्गवानी रङ्ग के वस्त्र के तुल्य हैं;
राजा उन लटाओं में बंधुआ हो गया है ।।
६ हे प्रिय † और मनभावनी कुमारी,
तू कैसी सुन्दरी और कैसी मनोहर है !
७ तेरा डील डौल खजूर के समान शानदार है
और तेरी छातियां अंगूर के गुच्छों के समान हैं ।।
८ मैं ने कहा, मैं इस खजूर पर चढ़कर उसकी डालियों को पकड़ूंगा ।
तेरी छातियां अंगूर के गुच्छे हों,
और तेरी श्वास का सुगन्ध सेबों के समान हो,
९ और तेरे चुम्बन * उत्तम दाखमधु के समान हैं
जो सरलता से
ओठों पर से धीरे धीरे बह जाती है † ।।
१० मैं अपने प्रेमी की हूं ।
और उसकी लालसा मेरी ओर नित बनी रहती है ।
११ हे मेरे प्रेमी, आ, हम खेतों में निकल जाएं,
और गांवों में रहें;
१२ फिर सबेरे उठकर दाख की बारियों में चलें,
और देखें कि दाखलता में कलियें लगी हैं कि नहीं, कि दाख के फूल खिले हैं या नहीं,
और अनार फूले हैं वा नहीं ।
वहां मैं तुझ को अपना प्रेम दिखाऊंगी ‡ ।
१३ दोदाफलों § से सुगन्ध आ रही है,
और हमारे द्वारों पर सब भांति के उत्तम फल हैं, नये और पुराने भी,
जो, हे मेरे प्रेमी, मैं ने तेरे लिये इकट्ठे कर रखे हैं ।।

---

* अर्थात् शान्तिवाली ।
† मूल में—हे प्रेम ।

* मूल में—तालू । † मूल में—चले ।
‡ मूल में—दूंगी । § जहरीला पौधा ।

८ भला होता कि तू मेरे भाई के समान होता, जिस ने मेरी माता की छातियों से दूध पिया !
तब मैं तुझे बाहर पाकर तेरा चुम्बन लेती,
और कोई मेरी निन्दा न करता ।
२ मैं तुझ को अपनी माता के घर ले चलती,
और वह मुझ को सिखाती,
और मैं तुझे मसाला मिला हुआ दाखमधु,
और अपने अनारों का रस पिलाती ।
३ काश, उसका बायां हाथ मेरे सिर के नीचे होता,
और अपने दहिने हाथ से वह मेरा आलिंगन करता !
४ हे यरूशलेम की पुत्रियो, मैं तुम को शपथ धराती हूं,
कि तुम मेरे प्रेमी को न जगाना
जब तक वह स्वयं न उठना चाहे ।।
५ यह कौन है जो अपने प्रेमी पर टेक लगाये हुए
जंगल से चली आती है ?
सेब के पेड़ के नीचे मैं ने तुझे जगाया ।
वहां तेरी माता ने तुझे जन्म दिया
वहां तेरी माता को पीड़ाएं उठीं ।।
६ मुझे नगीने की नाईं अपने हृदय पर लगा रख,
और तावीज़ की नाईं अपनी बांह पर रख;
क्योंकि प्रेम मृत्यु के तुल्य सामर्थी है,
और ईर्षा क़ब्र के समान निर्दयी है ।
उसकी ज्वाला अग्नि की दमक है
वरन परमेश्वर ही की ज्वाला है ।
७ पानी की बाढ़ से भी प्रेम नहीं बुझ सकता,
और न महानदों से डूब सकता है ।
यदि कोई अपने घर की सारी सम्पत्ति प्रेम की सन्ती दे दे
तौभी वह अत्यन्त तुच्छ ठहरेगी ।।
८ हमारी एक छोटी बहिन है,
जिसकी छातियां अभी नहीं उभरीं ।
जिस दिन हमारी बहिन के ब्याह की बात लगे,
उस दिन हम उसके लिये क्या करें ?
९ यदि वह शहरपनाह हो
तो हम उस पर चान्दी का कंगूरा बनाएंगे;
और यदि वह फाटक का किवाड़ हो,
तो हम उस पर देवदारु की लकड़ी के पटरे लगाएंगे ।।
१० मैं शहरपनाह थी और मेरी छातियां उसके गुम्मट;
तब मैं अपने प्रेमी की दृष्टि में शान्ति लानेवाले के नाईं थी ।।
११ बाल्हामोन में सुलैमान की एक दाख की बारी थी;
उस ने वह दाख की बारी रखवालों को सौंप दी;
हर एक रखवाले को उसके फलों के लिये
चान्दी के हजार हजार टुकड़े देने थे ।
१२ मेरी निज दाख की बारी मेरे ही लिये है;
हे सुलैमान, हजार तुझी को
और फल के रखवालों को दो सौ मिलें ।।

१३ तू जो बारियों में रहती है,
मेरे मित्र तेरा बोल सुनना चाहते हैं;
उसे मुझे भी सुनने दे ।।

१४ हे मेरे प्रेमी, शीघ्रता कर,
और सुगन्धद्रव्यों के पहाड़ों पर
चिकारे वा जवान हरिण के नाईं बन जा ।।

यशायाह भविष्यवक्ता की पुस्तक

१ आमोस के पुत्र यशायाह का दर्शन, जिसको उस ने यहूदा और यरूशलेम के विषय में उज्जिय्याह, योताम, आहाज, और हिजकिय्याह नाम यहूदा के राजाओं के दिनों में पाया ।।

२ हे स्वर्ग सुन, और हे पृथ्वी कान लगा; क्योंकि यहोवा कहता है: मैं ने बालबच्चों का पालन पोषण किया, और उनको बढ़ाया भी, परन्तु उन्हों ने मुझ से बलवा किया । ३ बैल तो अपने मालिक को और गदहा अपने स्वामी की चरनी को पहिचानता है, परन्तु इस्राएल मुझे नहीं जानता, मेरी प्रजा विचार नहीं करती ।।

४ हाय, यह जाति पाप से कैसी भरी है! यह समाज अधर्म से कैसा लदा हुआ है! इस वंश के लोग कैसे कुकर्मी हैं, ये लड़केवाले कैसे बिगड़े हुए हैं! उन्हों ने यहोवा को छोड़ दिया, उन्हों ने इस्राएल के पवित्र को तुच्छ जाना है! वे पराए बनकर दूर हो गए हैं ।।

५ तुम बलवा कर करके क्यों अधिक मार खाना चाहते हो? तुम्हारा सिर घावों से भर गया, और तुम्हारा हृदय दुःख से भरा है । ६ नख से सिर तक कहीं भी कुछ आरोग्यता नहीं, केवल चोट और कोड़े की मार के चिन्ह और सड़े हुए घाव हैं जो न दबाये गए, न बान्धे गए, न तेल लगाकर नरमाये गए हैं ।।

७ तुम्हारा देश उजड़ा पड़ा है, तुम्हारे नगर भस्म हो गए हैं; तुम्हारे खेतों को परदेशी लोग तुम्हारे देखते ही निगल रहे हैं; वह परदेशियों से नाश किए हुए देश के समान उजाड़ है । ८ और सिय्योन की बेटी दाख की बारी में की झोपड़ी की नाईं छोड़ दी गई है, वा ककड़ी के खेत में की छपरिया या घिरे हुए नगर के समान अकेली खड़ी है ।।

९ यदि सेनाओं का यहोवा हमारे थोड़े से लोगों को न बचा रखता, तो हम सदोम के समान हो जाते, और अमोरा के समान ठहरते ।।

१० हे सदोम के न्याइयो, यहोवा का वचन सुनो! हे अमोरा की प्रजा, हमारे परमेश्वर की शिक्षा पर कान लगा! ११ यहोवा यह कहता है, तुम्हारे बहुत से मेलबलि मेरे किस काम के हैं? मैं

तो मेढ़ों के होमबलियों से और पाले हुए पशुओं की चर्बी से अघा गया हूं; १२ मैं बछड़ों वा भेड़ के बच्चों वा बकरों के लोहू से प्रसन्न नहीं होता ।।

तुम जब अपने मुंह मुझे दिखाने के लिये आते हो, तब यह कौन चाहता है कि तुम मेरे आंगनों को पांव से रौंदो? १३ व्यर्थ अन्नबलि फिर मत लाओ; धूप से मुझे घृणा है। नये चांद और विश्रामदिन का मानना, और सभाओं का प्रचार करना, यह मुझे बुरा लगता है। महासभा के साथ ही साथ अनर्थ काम करना मुझ से सहा नहीं जाता। १४ तुम्हारे नये चांदों और नियत पर्वों के मानने से मैं जी से बैर रखता हूं; वे सब मुझे बोझ जान पड़ते हैं, मैं उनको सहते सहते उकता गया हूं। १५ जब तुम मेरी ओर हाथ फैलाओ, तब मैं तुम से मुख फेर* लूंगा; तुम कितनी ही प्रार्थना क्यों न करो, तौभी मैं तुम्हारी न सुनूंगा; क्योंकि तुम्हारे हाथ खून से भरे हैं। १६ अपने को धोकर पवित्र करो; मेरी आंखों के साम्हने से अपने बुरे कामों को दूर करो; भविष्य में बुराई करना छोड़ दो, १७ भलाई करना सीखो; यत्न से न्याय करो†, उपद्रवी को सुधारो; अनाथ का न्याय चुकाओ, विधवा का मुक़द्दमा लड़ो ।।

१८ यहोवा कहता है, आओ, हम आपस में वादविवाद करें: तुम्हारे पाप चाहे लाल रङ्ग के हों, तौभी वे हिम की नाईं उजले हो जाएंगे; और चाहे अर्गवानी रङ्ग के हों, तौभी वे ऊन के समान श्वेत हो जाएंगे। १९ यदि तुम आज्ञाकारी होकर मेरी मानो, २० तो इस देश के उत्तम उत्तम पदार्थ खाओगे; और यदि तुम न मानो और बलवा करो, तो तलवार से मारे जाओगे; यहोवा का यही वचन है ।।

* मूल में—छिपा।
† मूल में—न्याय पूछो।

२१ जो नगरी सती थी सो क्योंकर व्यभिचारिन हो गई! वह न्याय से भरी थी और उस में धर्म पाया जाता था, परन्तु अब उस में हत्यारे ही पाए जाते हैं। तेरी चान्दी धातु का मैल हो गई, २२ तेरे दाखमधु में पानी मिल गया है। २३ तेरे हाकिम हठीले और चोरों से मिले हैं। वे सब के सब घूस खानेवाले और भेंट के लालची हैं। वे अनाथ का न्याय नहीं करते, और न विधवा का मुक़द्दमा अपने पास आने देते हैं ।।

२४ इस कारण प्रभु सेनाओं के यहोवा, इस्राएल के शक्तिमान की यह वाणी है: सुनो, मैं अपने शत्रुओं को दूर करके शान्ति पाऊंगा, और अपने बैरियों से पलटा लूंगा। २५ और मैं तुम पर हाथ बढ़ाकर तुम्हारा धातु का मैल पूरी रीति से* भस्म करूंगा, और तुम्हारा रांग पूरी रीति से दूर करूंगा। २६ और मैं तुम में पहिले की नाईं न्यायी और आदि काल के समान मन्त्री फिर नियुक्त करूंगा। उसके बाद तू धर्मपुरी और सती नगरी कहलाएगी ।।

२७ सिय्योन न्याय के द्वारा, और जो उस में फिरेंगे वे धर्म के द्वारा छुड़ा लिए जाएंगे। २८ परन्तु बलवाइयों और पापियों का एक संग नाश होगा, और जिन्हों ने यहोवा को त्यागा है, उनका अन्त हो जाएगा। २९ क्योंकि जिन बांज-वृक्षों से तुम प्रीति रखते थे, उन से वे

* मूल में—मानो खार डालकर।

लज्जित होंगे, और जिन बारियों से तुम प्रसन्न रहते थे, उनके कारण तुम्हारे मुंह काले होंगे। ३० क्योंकि तुम पत्ते मुर्झाए हुए बांजवृक्ष के, और बिना जल की बारी के समान हो जाओगे। ३१ और बलवान तो सन और उसका काम चिंगारी बनेगा, और दोनों एक साथ जलेंगे, और कोई बुझानेवाला न होगा ॥

२ आमोस के पुत्र यशायाह का वचन, जो उस ने यहूदा और यरूशलेम के विषय दर्शन में पाया ॥

२ अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा, और सब पहाड़ियों से अधिक ऊंचा किया जाएगा; और हर जाति के लोग धारा की नाईं उसकी ओर चलेंगे। ३ और बहुत देशों के लोग आएंगे, और आपस में कहेंगे: आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर, याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएं; तब वह हमको अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे। क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से, और उसका वचन यरूशलेम से निकलेगा। ४ वह जाति जाति का न्याय करेगा, और देश देश के लोगों के झगड़ों को मिटाएगा; और वे अपनी तलवारें पीटकर हल के फाल और अपने भालों को हंसिया बनाएंगे; तब एक जाति दूसरी जाति के विरुद्ध फिर तलवार न चलाएगी, न लोग भविष्य में युद्ध की विद्या सीखेंगे ॥

५ हे याकूब के घराने, आ, हम यहोवा के प्रकाश में चलें ॥

६ तू ने अपनी प्रजा याकूब के घराने को त्याग दिया है, क्योंकि वे पूर्बियों के व्यवहार पर तन मन से चलते * और पलिश्तियों की नाईं टोना करते हैं, और परदेशियों के साथ हाथ मिलाते हैं। ७ उनका देश चान्दी और सोने से भरपूर है, और उनके रखे हुए धन की सीमा नहीं; उनका देश घोड़ों से भरपूर है, और उनके रथ अनगिनित हैं। ८ उनका देश मूरतों से भरा है; वे अपने हाथों की बनाई हुई वस्तुओं को जिन्हें उन्हों ने अपनी उंगलियों से संवारा है, दण्डवत् करते हैं। ९ इस से मनुष्य झुकते, और बड़े मनुष्य प्रणाम करते हैं, इस कारण उनको क्षमा न कर! १० यहोवा के भय के कारण और उसके प्रताप के मारे चट्टान में घुस जा, और मिट्टी में छिप जा। ११ क्योंकि आदमियों की घमण्ड-भरी आंखें नीची की जाएंगी और मनुष्यों का घमण्ड दूर किया जाएगा; और उस दिन केवल यहोवा ही ऊंचे पर विराजमान रहेगा ॥

१२ क्योंकि सेनाओं के यहोवा का दिन सब घमण्डियों और ऊंची गर्दनवालों पर और उन्नति से फूलनेवालों पर आएगा; और वे झुकाए जाएंगे; १३ और लबानोन के सब देवदारों पर जो ऊंचे और बड़े हैं; १४ बासान के सब बांजवृक्षों पर; और सब ऊंचे पहाड़ों और सब ऊंची पहाड़ियों पर; १५ सब ऊंचे गुम्मटों और सब दृढ़ शहरपनाहों पर; १६ तर्शीश के सब जहाज़ों और सब सुन्दर चित्रकारी पर वह दिन आता है। १७ और मनुष्य का गर्व मिटाया जाएगा, और मनुष्यों का घमण्ड नीचा किया जाएगा; और उस दिन केवल यहोवा

* मूल में—पूरब से भर गए।

ही ऊंचे पर विराजमान रहेगा। १८ और मूरतें सब की सब नष्ट हो जाएंगी। १९ और जब यहोवा पृथ्वी के कम्पित करने के लिये उठेगा, तब उसके भय के कारण और उसके प्रताप के मारे लोग चट्टानों की गुफ़ाओं और भूमि के बिलों में जा घुसेंगे॥

२० उस दिन लोग अपनी चान्दी-सोने की मूरतों को जिन्हें उन्हों ने दण्डवत् करने के लिये बनाया था, छछून्दरों और चमगीदड़ों के आगे फेंकेंगे, २१ और जब यहोवा पृथ्वी को कम्पित करने के लिये उठेगा तब वे उसके भय के कारण और उसके प्रताप के मारे चट्टानों की दरारों और पहाड़ियों के छेदों में घुसेंगे। २२ सो तुम मनुष्य से परे रहो जिसकी श्वासा उसके नथनों में है, क्योंकि उसका मूल्य है ही क्या?

३ सुनो, प्रभु सेनाओं का यहोवा यरूशलेम और यहूदा का सब प्रकार का सहारा और सिरहाना * अर्थात् अन्न का सारा आधार, और जल का सारा आधार दूर कर देगा; २ और वीर और योद्धा को, न्यायी और नबी को, भावी वक्ता और वृद्ध को, पचास सिपाहियों के सरदार और प्रतिष्ठित पुरुष को, ३ मन्त्री और चतुर कारीगर को, और निपुण टोन्हे को भी दूर कर देगा। ४ और मैं लड़कों को उनके हाकिम कर दूंगा, और बच्चे उन पर प्रभुता करेंगे। ५ और प्रजा के लोग आपस में एक दूसरे पर, और हर एक अपने पड़ोसी पर अंधेर करेंगे; और जवान वृद्ध जनों से और नीच जन माननीय लोगों से असभ्यता का व्यवहार करेंगे॥

* मूल में—लाठा और लाठी।

६ उस समय जब कोई पुरुष अपने पिता के घर में अपने भाई को पकड़कर कहेगा कि तेरे पास तो वस्त्र हैं, आ हमारा न्यायी हो जा और इस उजड़े देश को अपने वश में कर ले; ७ तब वह शपथ खाकर कहेगा, मैं चंगा करनेहारा न हूंगा; क्योंकि मेरे घर में न तो रोटी है और न कपड़े; इसलिये तुम मुझे प्रजा का न्यायी नहीं नियुक्त कर सकोगे। ८ यरूशलेम तो डगमगाया और यहूदा गिर गया है; क्योंकि उनके वचन और उनके काम यहोवा के विरुद्ध हैं, जो उसकी तेजोमय आंखों के साम्हने बलवा करनेवाले ठहरे हैं॥

९ उनका चिहरा भी उनके विरुद्ध साक्षी देता है; वे सदोमियों की नाईं अपने पाप को आप ही बखानते और नहीं छिपाते हैं। उन * पर हाय! क्योंकि उन्हों ने अपनी हानि आप ही की है। १० धर्मियों से कहो कि उनका भला होगा, क्योंकि वे अपने कामों का फल प्राप्त करेंगे। ११ दुष्ट पर हाय! उसका बुरा होगा, क्योंकि उसके कामों का फल उसको मिलेगा। १२ मेरी प्रजा पर बच्चे अंधेर करते और स्त्रियां उन पर प्रभुता करती हैं। हे मेरी प्रजा, तेरे अगुवे तुझे भटकाते हैं, और तेरे चलने का मार्ग भुला देते हैं † ॥

१३ यहोवा देश देश के लोगों से मुक़द्दमा लड़ने और उनका न्याय करने के लिये खड़ा है। १४ यहोवा अपनी प्रजा के वृद्ध और हाकिमों के साथ यह विवाद करता है, तुम ही ने बारी की दाख खा डाली है, और दीन लोगों का

* मूल में—उनके प्राण।
† मूल में—निगल लेते हैं।

वन लूटकर तुम ने अपने घरों में रखा है। १५ सेनाओं के प्रभु यहोवा की यह वाणी है, तुम क्यों मेरी प्रजा को दलते, और दीन लोगों को * पीस डालते हो !

१६ यहोवा ने यह भी कहा है, क्योंकि सिय्योन की स्त्रियां घमण्ड करतीं और सिर ऊंचे किये आंखें मटकातीं और घुंघुरुओं को छमछमाती हुई ठुमुक ठुमुक चलती हैं, १७ इसलिये प्रभु यहोवा उनके सिर को गंजा करेगा, और उनके तन को उघरवाएगा ।।

१८ उस समय प्रभु घुंघुरुओं, जालियों, १९ चंद्रहारों, झुमकों, कड़ों, घूंघटों, २० पगड़ियों, पैकरियों, पटुकों, सुगन्ध-पात्रों, गण्डों, २१ अंगूठियों, नत्थों, २२ सुन्दर वस्त्रों, कुर्त्तियों, चद्दरों, बटुओं, २३ दर्पणों, मलमल के वस्त्रों, बुन्दियों, दुपट्टों इन सभों की शोभा को दूर करेगा। २४ और सुगन्ध की सन्ती सड़ाहट, सुन्दर कर्धनी की सन्ती बन्धन की रस्सी, गुंथे हुए बालों की सन्ती गंजापन, सुन्दर पटुके की सन्ती टाट की पेटी, और सुन्दरता की सन्ती दाग होंगे। २५ तेरे पुरुष तलवार से, और शूरवीर युद्ध में मारे जाएंगे। २६ और उसके फाटकों में सांस भरना और विलाप करना होगा †; और वह भूमि पर अकेली बैठी रहेगी ‡।

४ उस समय सात स्त्रियां एक पुरुष को पकड़कर कहेंगी कि रोटी तो हम अपनी ही खाएंगी, और वस्त्र अपने ही पहिनेंगी, केवल हम तेरी कहलाएं; हमारी नामधराई दूर कर ।।

२ उसी समय इस्राएल के बचे हुओं के लिये यहोवा का पल्लव, भूषण और महिमा ठहरेगा, और भूमि की उपज, बड़ाई और शोभा ठहरेगी। ३ और जो कोई सिय्योन में बचा रहे, और यरूशलेम में रहे, अर्थात् यरूशलेम में जितनों के नाम जीवनपत्र में * लिखे हों, वे पवित्र कहलाएंगे। ४ यह तब होगा, जब प्रभु न्याय करनेवाली और भस्म करनेवाली आत्मा के द्वारा सिय्योन की स्त्रियों के मल को धो चुकेगा और यरूशलेम के खून को दूर कर चुकेगा। ५ तब यहोवा सिय्योन पर्वत के एक एक घर के ऊपर, और उसके सभास्थानों के ऊपर, दिन को तो धूएं का बादल, और रात को धधकती आग का प्रकाश सिरजेगा, और समस्त विभव के ऊपर एक मण्डप छाया रहेगा। ६ वह दिन को घाम से बचाने के लिये और आंधी-पानी और झड़ी में एक शरण और आड़ होगा ।।

५ अब मैं अपने प्रिय के लिये और उसकी दाख की बारी के विषय में गीत गाऊंगा: एक अति उपजाऊ टीले पर † मेरे प्रिय की एक दाख की बारी थी। २ उस ने उसकी मिट्टी खोदी और उसके पत्थर बीनकर उस में उत्तम जाति की एक दाखलता लगाई; उसके बीच में उस ने एक गुम्मट बनाया, और दाखरस के लिये एक कुण्ड भी खोदा; तब उस ने दाख की आशा की, परन्तु उस में निकम्मी दाखें ही लगीं ।।

३ अब हे यरूशलेम के निवासियो और हे यहूदा के मनुष्यो, मेरे और मेरी दाख

---

* मूल में—दीन लोगों के मुंह को।

† मूल में—उसके फाटक ठण्डी सांस भरेंगे और विलाप करेंगे।

‡ मूल में—वह शून्य होकर भूमि पर बैठेगी।

* मूल में—जीवन के लिये।

† मूल में—एक तेल के बेटे सींग पर।

की बारी के बीच न्याय करो। ४ मेरी दाख की बारी के लिये और क्या करना रह गया जो मैं ने उसके लिये न किया हो? फिर क्या कारण है कि जब मैं ने दाख की आशा की तब उस में निकम्मी दाखें लगीं?

५ अब मैं तुम को जताता हूं कि अपनी दाख की बारी से क्या करूंगा। मैं उसके कांटेवाले बाड़े को उखाड़ दूंगा कि वह चट की जाए, और उसकी भीत को ढा दूंगा कि वह रौंदी जाए। ६ मैं उसे उजाड़ दूंगा; वह न तो फिर छांटी और न खोदी जाएगी और उस में भांति भांति के कटीले पेड़ उगेंगे; मैं मेघों को भी आज्ञा दूंगा कि उस पर जल न बरसाएं॥

७ क्योंकि सेनाओं के यहोवा की दाख की बारी इस्राएल का घराना, और उसका मनभाऊ पौधा यहूदा के लोग हैं; और उस ने उन में न्याय की आशा की परन्तु अन्याय देख पड़ा; उस ने धर्म की आशा की, परन्तु उसे चिल्लाहट ही सुन पड़ी!

८ हाय उन पर जो घर से घर, और खेत से खेत यहां तक मिलाते जाते हैं कि कुछ स्थान नहीं बचता, कि तुम देश के बीच अकेले रह जाओ। ९ सेनाओं के यहोवा ने मेरे सुनते कहा है: निश्चय बहुत से घर सुनसान हो जाएंगे, और बड़े बड़े और सुन्दर घर निर्जन हो जाएंगे। १० क्योंकि दस बीघे की दाख की बारी से एक ही बत दाखमधु मिलेगा, और होमेर भर के बीज से एक ही एपा अन्न उत्पन्न होगा॥

११ हाय उन पर जो बड़े तड़के उठकर मदिरा पीने लगते हैं और बड़ी रात तक दाखमधु पीते रहते हैं जब तक उनको गर्मी न चढ़ जाए! १२ उनकी जेवनारों में वीणा, सारंगी, डफ, बांसली और दाखमधु, ये सब पाये जाते हैं; परन्तु वे यहोवा के कार्य की ओर दृष्टि नहीं करते, और उसके हाथों के काम को नहीं देखते॥

१३ इसलिये अज्ञानता के कारण मेरी प्रजा बंधुआई में जाती है, उसके प्रतिष्ठित पुरुष भूखों मरते और साधारण लोग प्यास से व्याकुल होते हैं। १४ इसलिये अधोलोक ने अत्यन्त लालसा करके अपना मुंह बेपरिमाण पसारा है, और उनका विभव और भीड़-भाड़ और आनन्द करनेवाले सब के सब उसके मुंह में जा पड़ते हैं। १५ साधारण मनुष्य दबाए जाते और बड़े मनुष्य नीचे किए जाते हैं, और अभिमानियों की आंखें नीची की जाती हैं। १६ परन्तु सेनाओं का यहोवा न्याय करने के कारण महान ठहरता, और पवित्र परमेश्वर धर्मी होने के कारण पवित्र ठहरता है! १७ तब भेड़ों के बच्चे मानो अपने खेत में चरेंगे, परन्तु हृष्टपुष्टों के उजड़े स्थान परदेशियों को चराई के लिये मिलेंगे॥

१८ हाय उन पर जो अधर्म को अनर्थ की रस्सियों से और पाप को मानो गाड़ी के रस्से से खींच ले आते हैं, १९ जो कहते हैं, वह फुर्ती करे और अपने काम को शीघ्र करे कि हम उसको देखें; और इस्राएल के पवित्र की युक्ति प्रगट हो, वह निकट आए कि हम उसको समझें!

२० हाय उन पर जो बुरे को भला और भले को बुरा कहते, जो अंधियारे को उजियाला और उजियाले को अंधियारा ठहराते, और कड़वे को मीठा और मीठे को कड़वा करके मानते हैं!

२१ हाय उन पर जो अपनी दृष्टि में ज्ञानी और अपने लेखे बुद्धिमान हैं!

२२ हाय उन पर जो दाखमधु पीने में वीर और मदिरा को तेज़ बनाने में बहादुर हैं, २३ जो घूस लेकर दुष्टों को निर्दोष, और निर्दोषों को दोषी ठहराते हैं!

२४ इस कारण जैसे अग्नि की लौ से खूंटी भस्म होती है और सूखी घास जलकर बैठ जाती है, वैसे ही उनकी जड़ सड़ जाएगी और उनके फूल धूल होकर उड़ जाएंगे; क्योंकि उन्हों ने सेनाओं के यहोवा की व्यवस्था को निकम्मी जाना, और इस्राएल के पवित्र के वचन को तुच्छ जाना है। २५ इस कारण यहोवा का क्रोध अपनी प्रजा पर भड़का है, और उस ने उनके विरुद्ध हाथ बढ़ाकर उनको मारा है, और पहाड़ कांप उठे; और लोगों की लोथें सड़कों के बीच कूड़ा सी पड़ी हैं। इतने पर भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ और उसका हाथ अब तक बढ़ा हुआ है॥

२६ वह दूर दूर की जातियों के लिये झण्डा खड़ा करेगा, और सीटी बजाकर उनको पृथ्वी की छोर से बुलाएगा; देखो, वे फुर्ती करके वेग से आएंगे! २७ उन में कोई थका नहीं न कोई ठोकर खाता है; कोई ऊंघने वा सोनेवाला नहीं, किसी का फेंटा नहीं खुला, और किसी के जूतों का बन्धन नहीं टूटा; २८ उनके तीर चोखे और धनुष चढ़ाए हुए हैं, उनके घोड़ों के खुर वज्र के से और रथों के पहिये बवण्डर सरीखे हैं। २९ वे सिंह वा जवान सिंह की नाईं गरजते हैं; वे गुर्राकर अहेर को पकड़ लेते और उसको ले भागते हैं, और कोई उसे उन से नहीं छुड़ा सकता। ३० उस समय वे उन पर समुद्र के गर्जन की नाईं गर्जेंगे और यदि कोई देश की ओर देखे, तो उसे अन्धकार और संकट देख पड़ेगा और ज्योति मेघों से छिप जाएगी॥

६ जिस वर्ष उज्जिय्याह राजा मरा, मैं ने प्रभु को बहुत ही ऊंचे सिंहासन पर विराजमान देखा; और उसके वस्त्र के घेर से मन्दिर भर गया। २ उस से ऊंचे पर साराप दिखाई दिए: उनके छः छः पंख थे; दो पंखों से वे अपने मुंह को ढांपे थे और दो से अपने पांवों को, और दो से उड़ रहे थे। ३ और वे एक दूसरे से पुकार पुकारकर कह रहे थे: सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है; सारी पृथ्वी उसके तेज से भरपूर है। ४ और पुकारनेवाले के शब्द से डेवढ़ियों की नेवें डोल उठीं, और भवन धूएं से भर गया। ५ तब मैं ने कहा, हाय! हाय! मैं नाश हुआ; क्योंकि मैं अशुद्ध होंठवाला मनुष्य हूं, और अशुद्ध होंठवाले मनुष्यों के बीच में रहता हूं; क्योंकि मैं ने सेनाओं के यहोवा महाराजाधिराज को अपनी आंखों से देखा है!

६ तब एक साराप हाथ में अंगारा लिए हुए, जिसे उस ने चिमटे से वेदी पर से उठा लिया था, मेरे पास उड़ कर आया। ७ और उस ने उस से मेरे मुंह को छूकर कहा, देख, इस ने तेरे होंठों को छू लिया है, इसलिये तेरा अधर्म दूर हो गया और तेरे पाप क्षमा हो गए। ८ तब मैं ने प्रभु का यह वचन सुना, मैं किस को भेजूं, और हमारी ओर से कौन जाएगा? तब मैं ने कहा, मैं यहां हूं! मुझे भेज।

९ उस ने कहा, जा, और इन लोगों से कह, सुनते ही रहो, परन्तु न समझो; देखते ही रहो, परन्तु न बूझो। १० तू इन लोगों के मन को मोटे और उनके कानों को भारी कर, और उनकी आंखों को बन्द कर; ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें, और कानों से सुनें, और मन से बूझें, और मन फिरावें और चंगे हो जाएं। ११ तब मैं ने पूछा, हे प्रभु कब तक ? उस ने कहा, जब तक नगर न उजड़ें और उन में कोई रह न जाए, और घरों में कोई मनुष्य न रह जाए, और देश उजाड़ और सुनसान हो जाए, १२ और यहोवा मनुष्यों को उस में से दूर कर दे, और देश के बहुत से स्थान निर्जन हो जाएं। १३ चाहे उसके निवासियों* का दसवां अंश भी रह जाए, तौभी वह नाश किया जाएगा†, परन्तु जैसे छोटे वा बड़े बांजवृक्ष को काट डालने पर भी उसका ठूंठ बना रहता है, वैसे ही पवित्र वंश उसका ठूंठ ठहरेगा॥

७ यहूदा का राजा आहाज़ जो योताम का पुत्र और उज्जिय्याह का पोता था, उसके दिनों में आराम के राजा रसीन और इस्राएल के राजा रमल्याह के पुत्र पेकह ने यरूशलेम से लड़ने के लिये चढ़ाई की, परन्तु युद्ध करके उन से कुछ बन न पड़ा। २ जब दाऊद के घराने को यह समाचार मिला कि अरामियों ने एप्रैमियों से सन्धि की है, तब उसका और प्रजा का भी मन ऐसा कांप उठा जैसे वन के वृक्ष वायु चलने से कांप जाते हैं। ३ तब यहोवा ने यशायाह से कहा, अपने पुत्र शार्याशूब* को लेकर धोबियों के खेत की सड़क से ऊपरली पोखरे की नाली के सिरे पर आहाज़ से भेंट करने के लिये जा, ४ और उस से कह, सावधान और शान्त हो; और उन दोनों धूंआं निकलती लुकटियों से† अर्थात् रसीन और अरामियों के भड़के हुए कोप से, और रमल्याह के पुत्र से मत डर, और न तेरा मन कच्चा हो। ५ क्योंकि अरामियों और रमल्याह के पुत्र समेत एप्रैमियों ने यह कहकर तेरे विरुद्ध बुरी युक्ति ठानी है कि आओ, ६ हम यहूदा पर चढ़ाई करके उसको घबरा दें, और उसको अपने वश में लाकर‡ ताबेल के पुत्र को राजा नियुक्त कर दें। ७ इसलिये प्रभु यहोवा ने यह कहा है कि यह युक्ति न तो सफल होगी और न पूरी। ८ क्योंकि आराम का सिर दमिश्क, और दमिश्क का सिर रसीन है। फिर एप्रैम का सिर शोमरोन और शोमरोन का सिर रमल्याह का पुत्र है। ९ पैंसठ वर्ष के भीतर एप्रैम का बल इतना टूट जाएगा कि वह जाति बनी न रहेगी। यदि तुम लोग इस बात की प्रतीति न करो; तो निश्चय तुम स्थिर न रहोगे॥

१० फिर यहोवा ने आहाज़ से कहा, ११ अपने परमेश्वर यहोवा से कोई चिन्ह मांग; चाहे वह गहिरे स्थान का हो, वा ऊपर आसमान का हो। १२ आहाज़ ने कहा, मैं नहीं मांगने का, और मैं यहोवा की परीक्षा नहीं करूंगा। १३ तब उस ने कहा, हे दाऊद के घराने सुनो! क्या तुम मनुष्यों को उकता देना छोटी बात

* मूल में—उस में।
† मूल में—फिर खा डाला जाएगा।

* अर्थात् बचा हुआ भाग फिरेगा।
† मूल में—लुकटियों के पुच्छों से।
‡ मूल में—अपने निमित्त फाड़कर।

समझकर अब मेरे परमेश्वर को भी उकता दोगे? १४ इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिन्ह देगा। सुनो, एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानूएल * रखेगी। १५ और जब † तक वह बुरे को त्यागना और भले को ग्रहण करना न जाने तब तक वह मक्खन और मधु खाएगा। १६ क्योंकि उस से पहिले कि वह लड़का बुरे को त्यागना और भले को ग्रहण करना जाने, वह देश जिसके दोनों राजाओं से तू घबरा रहा है निर्जन हो जाएगा। १७ यहोवा तुझ पर, तेरी प्रजा पर और तेरे पिता के घराने पर ऐसे दिनों को ले आएगा कि जब से एप्रैम यहूदा से अलग हो गया, तब से वैसे दिन कभी नहीं आए—अर्थात् अश्शूर के राजा के दिन॥

१८ उस समय यहोवा उन मक्खियों को जो मिस्र की नदियों के सिरों पर रहती हैं, और उन मधुमक्खियों को जो अश्शूर देश में रहती हैं, सीटी बजाकर बुलाएगा। १९ और वे सब की सब आकर इस देश के पहाड़ी नालों में, और चट्टानों की दरारों में, और सब भटकटैयों और सब चराइयों पर बैठ जाएंगी॥

२० उसी समय प्रभु महानद के पारवाले अश्शूर के राजारूपी भाड़े के छुरे से सिर और पांवों के रोंएं मूंड़ेगा, उस से दाढ़ी भी पूरी मुंड़ जाएगी॥

२१ उस समय ऐसा होगा कि मनुष्य केवल एक कलोर और दो भेड़ों को पालेगा; २२ और वे इतना दूध देंगी कि वह मक्खन खाया करेगा; क्योंकि जितने इस देश में रह जाएंगे वह सब मक्खन और मधु खाया करेंगे॥

२३ उस समय जिन जिन स्थानों में हजार टुकड़े चान्दी की हजार दाखलताएं हैं, उन सब स्थानों में कटीले ही कटीले पेड़ होंगे। २४ तीर और धनुष लेकर लोग वहां जाया करेंगे, क्योंकि सारे देश में कटीले पेड़ हो जाएंगे; और जितने पहाड़ कुदाल से खोदे जाते हैं, उन सभों पर कटीले पेड़ों के डर के मारे कोई न जाएगा, वे गाये बैलों के चरने के, और भेड़-बकरियों के रौंदने के लिये होंगे॥

८ फिर यहोवा ने मुझ से कहा, एक बड़ी पटिया लेकर उस पर साधारण अक्षरों से * यह लिख: महेर्शालाल्हाशबज † के लिये। २ और मैं विश्वासयोग्य पुरुषों को अर्थात् ऊरिय्याह याजक और जेबेरेक्याह के पुत्र जकर्याह को इस बात की साक्षी करूंगा। ३ और मैं अपनी पत्नी ‡ के पास गया, और वह गर्भवती हुई और उसके पुत्र उत्पन्न हुआ। तब यहोवा ने मुझ से कहा, उसका नाम महेर्शालाल्हाशबज † रख; ४ क्योंकि इस से पहिले कि वह लड़का बापू और माँ पुकारना जाने, दमिश्क और शोमरोन दोनों की धन-सम्पत्ति लूटकर अश्शूर का राजा अपने देश को भेजेगा॥

५ यहोवा ने फिर मुझ से दूसरी बार कहा, ६ इसलिये कि लोग शीलोह के धीरे धीरे बहनेवाले सोते को निकम्मा

* अर्थात् ईश्वर हमारे संग है।
† वा इसलिये कि।

* मूल में—मनुष्य के कलम से।
† अर्थात् लूट शीघ्र आती, छिन जाना फुर्ती करता है।
‡ मूल में—नबियैन।

जानते हैं, और रसीन और रमल्याह के पुत्र के संग एका करके आनन्द करते हैं, ७ इस कारण सुन, प्रभु उन पर उस प्रबल और गहिरे महानद को, अर्थात् अश्शूर के राजा को उसके सारे प्रताप के साथ चढ़ा लाएगा; और वह उनके सब नालों को भर देगा, और सारे कड़ाड़ों से छलककर बहेगा; ८ और वह यहूदा पर भी चढ़ आएगा, और बढ़ते बढ़ते उस पर चढ़ेगा और गले तक पहुंचेगा; और हे इम्मानुएल, तेरा समस्त देश उसके पंखों के फैलने से ढंप जाएगा ।।

९ हे लोगो, हल्ला करो तो करो, परन्तु तुम्हारा सत्यानाश हो जाएगा। हे पृथ्वी के दूर दूर देश के सब लोगो कान लगाकर सुनो, अपनी अपनी कमर कसो तो कसो, परन्तु तुम्हारे टुकड़े टुकड़े किए जाएंगे; अपनी कमर कसो तो कसो, परन्तु तुम्हारा सत्यानाश हो जाएगा। १० तुम युक्ति करो तो करो, परन्तु वह निष्फल हो जाएगी, तुम कुछ भी कहो, परन्तु तुम्हारा कहा हुआ ठहरेगा नहीं, क्योंकि परमेश्वर हमारे संग है ।।

११ क्योंकि यहोवा दृढ़ता के साथ मुझ से बोला और इन लोगों की सी चाल चलने को मुझे मना किया, १२ और कहा, जिस बात को यह लोग राजद्रोह कहें, उसको तुम राजद्रोह न कहना, और जिस बात से वे डरते हैं उस से तुम न डरना और न भय खाना। १३ सेनाओं के यहोवा ही को पवित्र जानना; उसी का डर मानना, और उसी का भय रखना। १४ और वह शरणस्थान होगा, परन्तु इस्राएल के दोनों घरानों के लिये ठोकर का पत्थर और ठेस की चट्टान, और यरूशलेम के निवासियों के लिये फन्दा और जाल होगा। १५ और बहुत से लोग ठोकर खाएंगे; वे गिरेंगे और चकनाचूर होंगे; वे फन्दे में फसेंगे और पकड़े जाएंगे ।।

१६ चितौनी का पत्र बन्द कर दो, मेरे चेलों के बीच शिक्षा पर छाप लगा दो। १७ मैं उस यहोवा की बाट जोहता रहूंगा जो अपने मुख को याकूब के घराने से छिपाये है, और मैं उसी पर आशा लगाए रहूंगा। १८ देख, मैं और जो लड़के यहोवा ने मुझे सौंपे हैं, उसी सेनाओं के यहोवा की ओर से जो सिय्योन पर्वत पर निवास किए रहता है इस्राएलियों के लिये चिन्ह और चमत्कार हैं। १९ जब लोग तुम से कहें कि ओझाओं और टोन्हों के पास जाकर पूछो जो गुनगुनाते और फुसफुसाते हैं, तब तुम यह कहना कि क्या प्रजा को अपने परमेश्वर ही के पास जाकर न पूछना चाहिये? क्या जीवतों के लिये मुर्दों से पूछना चाहिये? २० व्यवस्था और चितौनी ही की चर्चा किया करो! यदि वे लोग इन वचनों के अनुसार न बोलें तो निश्चय उनके लिये पौ न फटेगी। २१ वे इस देश में क्लेशित और भूखे फिरते रहेंगे; और जब वे भूखे होंगे, तब वे क्रोध में आकर अपने राजा और अपने परमेश्वर को शाप देंगे, और अपना मुख ऊपर आकाश की ओर उठाएंगे; २२ तब वे पृथ्वी की ओर दृष्टि करेंगे परन्तु उन्हें सकेती और अन्धियारा अर्थात् संकट भरा अन्धकार ही देख पड़ेगा; और वे घोर अन्धकार में ढकेल दिए जाएंगे ।।

९ तौभी संकट-भरा अन्धकार जाता रहेगा। पहिले तो उस ने जबूलून और नप्ताली के देशों का अपमान किया, परन्तु अन्तिम दिनों में ताल की ओर

यरदन के पार की ग्रन्यजातियों के गालील को महिमा देगा ॥

२ जो लोग ग्रन्धियारे में चल रहे थे उन्हों ने बड़ा उजियाला देखा; ग्रौर जो लोग घोर ग्रन्धकार से भरे हुए मृत्यु के देश में रहते थे, उन पर ज्योति चमकी। ३ तू ने जाति को बढ़ाया, तू ने उसको बहुत ग्रानन्द दिया; वे तेरे साम्हने कटनी के समय का सा ग्रानन्द करते हैं, ग्रौर ऐसे मगन हैं जैसे लोग लूट बांटने के समय मगन रहते हैं। ४ क्योंकि तू ने उसकी गर्दन पर के भारी जूए ग्रौर उसके बहंगे के बांस, उस पर ग्रंधेर करनेवाले की लाठी, इन सभों को ऐसा तोड़ दिया है जैसे मिद्यानियों के दिन में किया था। ५ क्योंकि युद्ध में लड़नेवाले सिपाहियों के जूते ग्रौर लोहू में लथड़े हुए कपड़े सब ग्राग का कौर हो जाएंगे। ६ क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुग्रा, हमें एक पुत्र दिया गया है; ग्रौर प्रभुता उसके कांधे पर होगी, ग्रौर उसका नाम ग्रद्भुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर, ग्रनन्तकाल का पिता, ग्रौर शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा। ७ उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, ग्रौर उसकी शान्ति का ग्रन्त न होगा*, इसलिये वह उसको दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से लेकर सर्वदा के लिये न्याय ग्रौर धर्म के द्वारा स्थिर किए ग्रौर संभाले रहेगा। सेनाग्रों के यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा ॥

८ प्रभु ने याकूब के पास एक संदेश भेजा है, ग्रौर वह इस्राएल पर प्रगट हुग्रा है; ९ ग्रौर सारी प्रजा को, एप्रैमियों ग्रौर शोमरोनवासियों को मालूम हो जाएगा जो गर्व ग्रौर कठोरता से बोलते हैं: ईंटें तो गिर गई हैं, १० परन्तु हम गढ़े हुए पत्थरों से घर बनाएंगे; गूलर के वृक्ष तो कट गए हैं, परन्तु हम उनकी सन्ती देवदारों से काम लेंगे। ११ इस कारण यहोवा उन पर रसीन के बैरियों को प्रबल करेगा, १२ ग्रौर उनके शत्रुग्रों को ग्रर्थात् पहिले ग्राराम को ग्रौर तब पलिश्तियों को उभारेगा, ग्रौर वे मुंह खोलकर इस्राएलियों को निगल लेंगे। इतने पर भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुग्रा ग्रौर उसका हाथ ग्रब तक बढ़ा हुग्रा है ॥

१३ तौभी ये लोग ग्रपने मारनेवाले की ग्रोर नहीं फिरे ग्रौर न सेनाग्रों के यहोवा की खोज करते हैं। १४ इस कारण यहोवा इस्राएल में से सिर ग्रौर पूंछ को, खजूर की डालियों ग्रौर सरकंडे को, एक ही दिन में काट डालेगा। १५ पुरनिया ग्रौर प्रतिष्ठित पुरुष तो सिर हैं, ग्रौर झूठी बातें सिखानेवाला नबी पूंछ है; १६ क्योंकि जो इन लोगों की ग्रगुवाई करते हैं वे इनको भटका देते हैं, ग्रौर जिनकी ग्रगुवाई होती है वे नाश हो जाते हैं। १७ इस कारण प्रभु न तो इनके जवानों से प्रसन्न होगा, ग्रौर न इनके ग्रनाथ बालकों ग्रौर विधवाग्रों पर दया करेगा; क्योंकि हर एक भक्तिहीन ग्रौर कुकर्मी है, ग्रौर हर एक के मुख से मूर्खता की बातें निकलती हैं। इतने पर भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुग्रा ग्रौर उसका हाथ ग्रब तक बढ़ा हुग्रा है ॥

१८ क्योंकि दुष्टता ग्राग की नाईं धधकती है, वह ऊंटकटारों ग्रौर कांटों को भस्म करती है, वरन वह घने वन की

* मूल में—प्रभुता की बढ़ती ग्रौर शान्ति का ग्रन्त नहीं।

झाड़ियों में आग लगाती है और वह धुआं में चकरा चकराकर ऊपर की ओर उठती है। १९ सेनाओं के यहोवा के रोष के मारे यह देश जलाया गया है, और ये लोग आग की ईंधन के समान हैं; वे आपस में एक दूसरे से दया का व्यवहार नहीं करते। २० वे दहिनी ओर से भोजनवस्तु छीनकर भी भूखे रहते, और बायें ओर से खाकर भी तृप्त नहीं होते; उन में से प्रत्येक मनुष्य अपनी अपनी बांहों का मांस खाता है, २१ मनश्शे एप्रैम को और एप्रैम मनश्शे को खाता है, और वे दोनों मिलकर यहूदा के विरुद्ध हैं। इतने पर भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ, और उसका हाथ अब तक बढ़ा हुआ है।।

१० हाय उन पर जो दुष्टता से न्याय करते, और उन पर जो उत्पात करने की आज्ञा लिख देते हैं, २ कि वे कंगालों का न्याय बिगाड़ें और मेरी प्रजा के दीन लोगों का हक़ मारें, कि वे विधवाओं को लूटें और अनाथों का माल अपना लें! ३ तुम दण्ड के दिन और उस आपत्ति के दिन जो दूर से आएगी क्या करोगे? तुम सहायता के लिये किसके पास भाग कर जाओगे? ४ और तुम अपने विभव को कहां रख छोड़ोगे? वे केवल बंधुओं के पैरों के पास* गिर पड़ेंगे और मरे हुओं के नीचे दबे पड़े रहेंगे। इतने पर भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ और उसका हाथ अब तक बढ़ा हुआ है।।

५ अश्शूर पर हाय, जो मेरे क्रोध का लठ और मेरे हाथ में का सोंटा है! वह मेरा क्रोध है। ६ मैं उसको एक भक्तिहीन जाति के विरुद्ध भेजूंगा, और जिन लोगों पर मेरा रोष भड़का है उनके विरुद्ध उसको आज्ञा दूंगा कि छीन छान करे और लूट ले, और उनको सड़कों की कीच के समान लताड़े। ७ परन्तु उसकी ऐसी मनसा न होगी, न उसके मन में ऐसा विचार है; क्योंकि उसके मन में यही है कि मैं बहुत सी जातियों का नाश और अन्त कर डालूं। ८ क्योंकि वह कहता है, क्या मेरे सब हाकिम राजा के तुल्य नहीं? ९ क्या कलनो कर्कमीश के समान नहीं है? क्या हमात अर्पद के और शोमरोन दमिश्क के समान नहीं? १० जिस प्रकार मेरा हाथ मूरतों से भरे हुए उन राज्यों पर पहुंचा जिनकी मूरतें यरूशलेम और शोमरोन की मूरतों से बढ़कर थीं, और जिस प्रकार मैं ने शोमरोन और उसकी मूरतों से किया, ११ क्या उसी प्रकार मैं यरूशलेम से और उसकी मूरतों से भी न करूं?

१२ इस कारण जब प्रभु सिय्योन पर्वत पर और यरूशलेम में अपना सब काम कर चुकेगा, तब मैं अश्शूर के राजा के गर्व की बातों का, और उसकी घमण्ड भरी आंखों का पलटा दूंगा। १३ उस ने कहा है, अपने ही बाहुबल और बुद्धि से मैं ने यह काम किया है, क्योंकि मैं चतुर हूं; मैं ने देश देश के सिवानों को हटा दिया, और उनके रखे हुए धन को लूट लिया; मैं ने वीर की नाईं गद्दी पर विराजनेहारों को उतार दिया है। १४ देश देश के लोगों की धनसम्पत्ति, चिड़ियों के घोंसलों की नाईं, मेरे हाथ आई है, और जैसे कोई छोड़े हुए अण्डों को बटोर ले वैसे ही मैं ने सारी पृथ्वी को बटोर लिया है; और कोई पंख फड़फड़ाने वा चोंच खोलने वा चीं चीं करनेवाला न था।।

* मूल में—बंधुओं के नीचे।

१५ क्या कुल्हाड़ा उसके विरुद्ध जो उस से काटता हो डींग मारे, वा आरी उसके विरुद्ध जो उसे खींचता हो बड़ाई करे? क्या सोंटा अपने चलानेवाले को चलाए वा छड़ी उसे उठाए जो काठ नहीं है! १६ इस कारण प्रभु अर्थात् सेनाओं का प्रभु उस राजा के हृष्टपुष्ट योद्धाओं को दुबला कर देगा, और उसके ऐश्वर्य के नीचे आग की सी जलन होगी। १७ इस्राएल की ज्योति तो आग ठहरेगी, और इस्राएल का पवित्र ज्वाला ठहरेगा; और वह उसके झाड़ झंखार को एक ही दिन में भस्म करेगा। १८ और जैसे रोगी के क्षीण हो जाने पर उसकी दशा होती है वैसी ही वह उसके वन और फलदाई बारी की शोभा पूरी रीति से* नाश करेगा। १९ उस वन के वृक्ष इतने थोड़े रह जाएंगे कि लड़का भी उनको गिन कर लिख लेगा॥

२० उस समय इस्राएल के बचे हुए लोग और याकूब के घराने के भागे हुए, अपने मारनेवाले पर फिर कभी भरोसा न रखेंगे, परन्तु यहोवा जो इस्राएल का पवित्र है, उसी पर वे सच्चाई से भरोसा रखेंगे। २१ याकूब में से बचे हुए लोग पराक्रमी परमेश्वर की ओर फिरेंगे। २२ क्योंकि हे इस्राएल, चाहे तेरे लोग समुद्र की बालू के किनकों के समान भी बहुत हों, तौभी निश्चय है कि उन में से केवल बचे लोग ही लौटेंगे। सत्यानाश तो पूरे न्याय के साथ† ठाना गया है। २३ क्योंकि प्रभु सेनाओं के यहोवा ने सारे देश का सत्यानाश कर देना ठाना है॥

२४ इसलिये प्रभु सेनाओं का यहोवा यों कहता है, हे सिय्योन में रहनेवाली मेरी प्रजा, अश्शूर से मत डर; चाहे वह सोंटे से तुझे मारे और मिस्र की नाईं तेरे ऊपर छड़ी उठाएं। २५ क्योंकि अब थोड़ी ही देर है कि मेरी जलन और क्रोध उनका सत्यानाश करके शान्त होगा*। २६ और सेनाओं का यहोवा उसके विरुद्ध कोड़ा उठाकर उसको ऐसा मारेगा जैसा उस ने ओरेब नाम चट्टान पर मिद्यानियों को मारा था; और जैसा उस ने मिस्रियों के विरुद्ध समुद्र पर लाठी बढ़ाई, वैसा ही उसकी ओर भी बढ़ाएगा। २७ उस समय ऐसा होगा कि उसका बोझ तेरे कंधे पर से और उसका जूआ तेरी गर्दन पर से उठा लिया जाएगा, और अभिषेक के कारण वह जूआ तोड़ डाला जाएगा॥

२८ वह अय्यात् में आया है, और मिग्रोन में से होकर आगे बढ़ गया है; मिकमाश में उस ने अपना सामान रखा है। २९ वे घाटी से पार हो गए, उन्हों ने गेबा में रात काटी; रामा थरथरा उठा है, शाऊल का गिबा भाग निकला है। ३० हे गल्लीम की बेटी चिल्ला! हे लैशा के लोगो कान लगाओ! हाय बेचारा अनातोत! ३१ मदमेना मारा मारा फिरता है, गेबीम के निवासी भागने के लिये अपना अपना सामान इकट्ठा कर रहे हैं। ३२ आज ही के दिन वह नोब में टिकेगा; तब वह सिय्योन† पहाड़ पर, और यरूशलेम की पहाड़ी पर हाथ उठाकर धमकाएगा॥

* मूल में—जीव से सांस तक।
† मूल में—धर्म से उमण्डता।

* मूल में—करने से चुकेगा।
† मूल में—सिय्योन की बेटी।

३३ देखो, प्रभु सेनाओं का यहोवा पेड़ों को भयानक रूप से छांट डालेगा; ऊंचे ऊंचे वृक्ष काटे जाएंगे, और जो ऊंचे हैं सो नीचे किए जाएंगे। ३४ वह घने वन को लोहे से काट डालेगा, और लबानोन एक प्रतापी के हाथ से नाश किया जाएगा ।।

११ तब यिशै के ठूंठ में से एक डाली फूट निकलेगी और उसकी जड़ में से एक शाखा निकलकर फलवन्त होगी। २ और यहोवा की आत्मा, बुद्धि और समझ की आत्मा, युक्ति और पराक्रम की आत्मा, और ज्ञान और यहोवा के भय की आत्मा उस पर ठहरी रहेगी। ३ और उसको यहोवा का भय सुगन्ध सा भाएगा ।।

वह मुंह देखा न्याय न करेगा और न अपने कानों के सुनने के अनुसार निर्णय करेगा; ४ परन्तु वह कंगालों का न्याय धर्म से, और पृथ्वी के नम्र लोगों का निर्णय खराई से करेगा; और वह पृथ्वी को अपने वचन के सोंटे से मारेगा, और अपने फूंक के झोंके से दुष्ट को मिटा डालेगा। ५ उसकी कटि का फेंटा धर्म और उसकी कमर का फेंटा सच्चाई होगी ।।

६ तब भेड़िया भेड़ के बच्चे के संग रहा करेगा, और चीता बकरी के बच्चे के साथ बैठा करेगा, और बछड़ा और जवान सिंह और पाला पोसा हुआ बैल तीनों इकट्ठे रहेंगे, और एक छोटा लड़का उनकी अगुवाई करेगा। ७ गाय और रीछनी मिलकर चरेंगी, और उनके बच्चे इकट्ठे बैठेंगे; और सिंह बैल की नाईं भूसा खाया करेगा। ८ दूधपिउवा बच्चा करैत के बिल पर खेलेगा, और दूध छुड़ाया हुआ लड़का नाग के बिल में हाथ डालेगा। ९ मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई दुःख देगा और न हानि करेगा; क्योंकि पृथ्वी यहोवा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसा जल समुद्र में भरा रहता है * ।।

१० उस समय यिशै की जड़ देश देश के लोगों के लिये एक झण्डा होगी; सब राज्यों के लोग उसे ढूंढ़ेंगे, और उसका विश्रामस्थान तेजोमय होगा ।।

११ उस समय प्रभु अपना हाथ दूसरी बार बढ़ाकर बचे हुओं को, जो उसकी प्रजा के रह गए हैं, अश्शूर से, मिस्र से, पत्रोस से, कूश से, एलाम से, शिनार से, हमात से, और समुद्र के द्वीपों से मोल लेकर छुड़ाएगा। १२ वह अन्यजातियों के लिये झण्डा खड़ा करके इस्राएल के सब निकाले हुओं को, और यहूदा के सब बिखरे हुओं को पृथ्वी की चारों दिशाओं से इकट्ठा करेगा। १३ एप्रैम फिर डाह न करेगा और यहूदा के तंग करनेवाले काट डाले जाएंगे; न तो एप्रैम यहूदा से डाह करेगा और न यहूदा एप्रैम को तंग करेगा। १४ परन्तु वे पश्चिम की ओर पलिश्तियों के कंधे पर झपट्टा मारेंगे, और मिलकर पूर्वियों को लूटेंगे। वे एदोम और मोआब पर हाथ बढ़ाएंगे, और अम्मोनी उनके अधीन हो जाएंगे। १५ और यहोवा मिस्र के समुद्र की खाड़ी को सुखा डालेगा, और महानद पर अपना हाथ बढ़ाकर प्रचण्ड लू से ऐसा सुखाएगा कि वह सात धार हो जाएगा, और लोग जूता पहिने हुए भी पार हो जाएंगे। और उसकी प्रजा के बचे हुओं के लिये अश्शूर से एक ऐसा राज-मार्ग होगा जैसा

* मूल में—जैसा जल समुद्र को ढांपता है।

मिस्र देश से चले आने के समय इस्राएल के लिये हुआ था ।।

१२ उस दिन तू कहेगा, हे यहोवा, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, क्योंकि यद्यपि तू मुझ पर क्रोधित हुआ था, परन्तु अब तेरा क्रोध शान्त हुआ *, और तू ने मुझे शान्ति दी है ।।

२ परमेश्वर मेरा उद्धार है, मैं भरोसा रखूंगा और न थरथराऊंगा; क्योंकि प्रभु यहोवा मेरा बल और मेरे भजन का विषय है, और वह मेरा उद्धारकर्त्ता हो गया है ।।

३ तुम आनन्दपूर्वक उद्धार के सोतों से जल भरोगे। ४ और उस दिन तुम कहोगे, यहोवा की स्तुति करो, उस से प्रार्थना करो; सब जातियों में उसके बड़े कामों का प्रचार करो, और कहो कि उसका नाम महान है ।।

५ यहोवा का भजन गाओ, क्योंकि उस ने प्रतापमय काम किए हैं; इसे सारी पृथ्वी पर प्रगट करो। ६ हे सिय्योन में बसनेवाली तू जयजयकार कर और ऊंचे स्वर से गा, क्योंकि इस्राएल का पवित्र तुझ में महान है ।।

१३ बाबुल के विषय की भारी भविष्यवाणी जिसको आमोस के पुत्र यशायाह ने दर्शन में पाया। २ मुंडे पहाड़ पर एक झंडा खड़ा करो, हाथ से सैन करो और उन से ऊंचे स्वर से पुकारो कि वे सरदारों के फाटकों में प्रवेश करें। ३ मैं ने स्वयं अपने पवित्र किए हुओं को आज्ञा दी है, मैं ने अपने क्रोध के लिये अपने वीरों को बुलाया है जो मेरे प्रताप के कारण प्रसन्न हैं ।।

४ पहाड़ों पर एक बड़ी भीड़ का सा कोलाहल हो रहा है, मानो एक बड़ी फ़ौज की हलचल हो। राज्य राज्य की इकट्ठी की हुई जातियां हलचल मचा रही हैं। सेनाओं का यहोवा युद्ध के लिये अपनी सेना इकट्ठी कर रहा है। ५ वे दूर देश से, आकाश की छोर से आए हैं, हाँ, यहोवा अपने क्रोध के हथियारों समेत सारे देश को नाश करने के लिये आया है ।।

६ हाय-हाय करो, क्योंकि यहोवा का दिन समीप है; वह सर्वशक्तिमान् की ओर से मानो सत्यानाश करने के लिये आता है। ७ इस कारण सब के हाथ ढीले पड़ेंगे, और हर एक मनुष्य का हृदय पिघल जाएगा *, ८ और वे घबरा जाएंगे। उनको पीड़ा और शोक होगा; उनको जच्चा की सी पीड़ाएं उठेंगी। वे चकित होकर एक दूसरे को ताकेंगे; उनके मुंह जल जायेंगे † ।।

९ देखो, यहोवा का वह दिन रोष और क्रोध और निर्दयता के साथ आता है कि वह पृथ्वी को उजाड़ डाले और पापियों को उस में से नाश करे। १० क्योंकि आकाश के तारागण और बड़े बड़े नक्षत्र अपना प्रकाश न देंगे, और सूर्य उदय होते होते अन्धेरा हो जाएगा, और चन्द्रमा अपना प्रकाश न देगा। ११ मैं जगत के लोगों को उनकी बुराई के कारण, और दुष्टों को उनके अधर्म का दण्ड दूंगा; मैं अभिमानियों के अभिमान को नाश करूंगा, और उपद्रव करनेवालों के घमण्ड को तोड़ूंगा।

* मूल में—फिर गया।

* मूल में—मनुष्य का सारा हृदय गल जाएगा।

† मूल में—उनके लौवाले मुंह होंगे।

१२ मैं मनुष्य को कुन्दन से, और आदमी को ओपीर के सोने से भी अधिक महंगा करूंगा। १३ इसलिये मैं आकाश को कंपाऊंगा, और पृथ्वी अपने स्थान से टल जाएगी; यह सेनाओं के यहोवा के रोष के कारण और उसके भड़के हुए क्रोध के दिन होगा। १४ और वे खदेड़े हुए हरिण, वा बिन चरवाहे की भेड़ों की नाईं अपने अपने लोगों की ओर फिरेंगे, और अपने अपने देश को भाग जाएंगे। १५ जो कोई मिले सो बेधा जाएगा, और जो कोई पकड़ा जाए, वह तलवार से मार डाला जाएगा। १६ उनके बाल-बच्चे उनके साम्हने पटक दिए जाएंगे; और उनके घर लूटे जाएंगे, और उनकी स्त्रियां भ्रष्ट की जाएंगी।।

१७ देखो, मैं उनके विरुद्ध मादी लोगों को उभारूंगा जो न तो चान्दी का कुछ विचार करेंगे और न सोने का लालच करेंगे। १८ वे तीरों से जवानों को मारेंगे, और बच्चों पर कुछ दया न करेंगे, वे लड़कों पर कुछ तरस न खाएंगे। १९ और बाबुल जो सब राज्यों का शिरोमणि है, और जिसकी शोभा पर कसदी लोग फूलते हैं, वह ऐसा हो जाएगा जैसे सदोम और अमोरा, जब परमेश्वर ने उन्हें उलट दिया था। २० वह फिर कभी न बसेगा और युग युग उस में कोई वास न करेगा; अरबी लोग भी उस में डेरा खड़ा न करेंगे, और न चरवाहे उस में अपने पशु बैठाएंगे। २१ वहां जंगली जन्तु बैठेंगे, और उल्लू उनके घरों में भरे रहेंगे; वहां शुतुर्मुर्ग बसेंगे, और छगलमानस वहां नाचेंगे। उस नगर के राज-भवनों में हुंडार, २२ और उसके सुख-विलास के मन्दिरों में गीदड़ बोला करेंगे; उसके नाश होने का समय निकट आ गया है, और उसके दिन अब बहुत नहीं रहे।।

१४ यहोवा याकूब पर दया करेगा, और इस्राएल को फिर अपनाकर, उन्हीं के देश में बसाएगा, और परदेशी उन से मिल जाएंगे और अपने अपने को याकूब के घराने से मिला लेंगे *। २ और देश देश के लोग उनको उन्हीं के स्थान में पहुंचाएंगे, और इस्राएल का घराना यहोवा की भूमि पर उनका अधिकारी होकर उनको दास और दासियां बनाएगा; क्योंकि वे अपने बंधुआई में ले जानेवालों को बंधुआ करेंगे, और जो उन पर अत्याचार करते थे उन पर वे शासन करेंगे।।

३ और जिस दिन यहोवा तुझे तेरे सन्ताप और घबराहट से, और उस कठिन श्रम से जो तुझ से लिया गया विश्राम देगा, ४ उस दिन तू बाबुल के राजा पर ताना मारकर कहेगा कि परिश्रम करानेवाला कैसा नाश हो गया है, सुनहले मन्दिरों से भरी नगरी † कैसी नाश हो गई है! ५ यहोवा ने दुष्टों के सोंटे को और अन्याय से शासन करनेवालों के लठ को तोड़ दिया है, ६ जिस से वे मनुष्यों को लगातार रोष से मारते रहते थे, और जाति जाति पर क्रोध से प्रभुता करते और लगातार उनके पीछे पड़े रहते थे। ७ अब सारी पृथ्वी को विश्राम मिला है, वह चैन से है; लोग ऊंचे स्वर से गा उठे हैं। ८ सनौवर और लबानोन के देवदार भी तुझ पर आनन्द करके

* मूल में—यह कहावत उठाएगी कि।
† मूल में—सोने का ढेर।

कहते हैं, जब से तू गिराया गया तब से कोई हमें काटने को नहीं आया। ९ पाताल के नीचे अधोलोक में तुझ से मिलने के लिये हलचल हो रही है; वह तेरे लिये मुर्दों को अर्थात् पृथ्वी के सब सरदारों को जगाता है, और वह जाति जाति के सब राजाओं को उनके सिंहासन पर से उठा खड़ा करता है। १० वे सब तुझ से कहेंगे, क्या तू भी हमारी नाईं निर्बल हो गया है? क्या तू हमारे समान ही बन गया? ११ तेरा विभव और तेरी सारंगियों का शब्द अधोलोक में उतारा गया है; कीड़े तेरा बिछौना और केंचुए तेरा ओढ़ना हैं॥

१२ हे भोर के चमकनेवाले तारे* तू क्योंकर आकाश से गिर पड़ा है? तू जो जाति जाति को हरा देता था, तू अब कैसे काटकर भूमि पर गिराया गया है? १३ तू मन में कहता तो था कि मैं स्वर्ग पर चढ़ूंगा; मैं अपने सिंहासन को ईश्वर के तारागण से अधिक ऊंचा करूंगा; और उत्तर दिशा की छोर पर सभा के पर्वत पर बिराजूंगा; १४ मैं मेघों से भी ऊंचे ऊंचे स्थानों के ऊपर चढ़ूंगा, मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊंगा। १५ परन्तु तू अधोलोक में उस गड़हे की तह तक उतारा जाएगा। १६ जो तुझे देखेंगे तुझ को ताकते हुए तेरे विषय में सोच सोचकर कहेंगे, क्या यह वही पुरुष है जो पृथ्वी को चैन से रहने न देता था और राज्य राज्य में घबराहट डाल देता था; १७ जो जगत को जंगल बनाता और उसके नगरों को ढा देता था, और अपने बंधुओं को घर जाने नहीं देता था? १८ जाति जाति के सब राजा अपने अपने घर पर महिमा के साथ आराम से पड़े हैं; १९ परन्तु तू निकम्मी शाख की नाईं अपनी कबर में से फेंका गया; तू उन मारे हुओं की लोथों से घिरा है* जो तलवार से बिधकर गड़हे में पत्थरों के बीच में लताड़ी हुई लोथ के समान पड़े हैं। २० तू उनके साथ क़ब्र में न गाड़ा जाएगा, क्योंकि तू ने अपने देश को उजाड़ दिया, और अपनी प्रजा का घात किया है॥

कुकर्मियों के वंश का नाम भी कभी न लिया जाएगा। २१ उनके पूर्वजों के अधर्म के कारण पुत्रों के घात की तैयारी करो, ऐसा न हो कि वे फिर उठकर पृथ्वी के अधिकारी हो जाएं, और जगत में बहुत से नगर बसाएं॥

२२ सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि मैं उनके विरुद्ध उठूंगा, और बाबुल का नाम और निशान मिटा डालूंगा, और बेटों-पोतों को काट डालूंगा †, यहोवा की यही वाणी है। २३ मैं उसको साही की मान्द और जल की झीलें कर दूंगा, और मैं उसे सत्यानाश के झाड़ू से झाड़ डालूंगा, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है॥

२४ सेनाओं के यहोवा ने यह शपथ खाई है, निःसन्देह जैसा मैं ने ठाना है, वैसा ही हो जाएगा, और जैसी मैं ने युक्ति की है, वैसी ही पूरी होगी, २५ कि मैं अश्शूर को अपने ही देश में तोड़ दूंगा, और अपने पहाड़ों पर उसे कुचल डालूंगा; तब उसका जूआ उनकी गर्दनों पर से

---

* मूल में—बेटे।

* मूल में—लोथें पहिने है।

† मूल में—बाबुल का नाम और बस्ती और बेटे-पोते को काट डालूंगा।

और उसका बोझ उनके कंधों पर से उतर जाएगा। २६ यही युक्ति सारी पृथ्वी के लिये ठहराई गई है; और यह वही हाथ है जो सब जातियों पर बढ़ा हुआ है। २७ क्योंकि सेनाओं के यहोवा ने युक्ति की है और कौन उसको टाल सकता है? उसका हाथ बढ़ाया गया है, उसे कौन रोक सकता है?

२८ जिस वर्ष में आहाज़ राजा मर गया उसी वर्ष यह भारी भविष्यद्वाणी हुई:

२९ हे सारे पलिश्तीन तू इसलिये आनन्द न कर, कि तेरे मारनेवाले की लाठी टूट गई, क्योंकि सर्प की जड़ से एक काला नाग उत्पन्न होगा, और उसका फल एक उड़नेवाला और तेज विषवाला अग्निसर्प होगा। ३० तब कंगालों के जेठे खाएंगे और दरिद्र लोग निडर बैठने पाएंगे, परन्तु मैं तेरे वंश को भूख से मार डालूंगा, और तेरे बचे हुए लोग घात किए जाएंगे। ३१ हे फाटक, तू हाय हाय कर; हे नगर, तू चिल्ला; हे पलिश्तीन तू सब का सब पिघल जा! क्योंकि उत्तर से एक धूआं उठेगा और उसकी सेना में से कोई पीछे न रहेगा॥

३२ तब अन्यजातियों के दूतों को क्या उत्तर दिया जाएगा? यह कि यहोवा ने सिय्योन की नेव डाली है, और उसकी प्रजा के दीन लोग उस में शरण लेंगे॥

१५ मोआब के विषय भारी भविष्यद्वाणी। निश्चय मोआब का आर नगर एक ही रात में उजाड़ और नाश हो गया है; निश्चय मोआब का कीर नगर एक ही रात में उजाड़ और नाश हो गया है। २ बैत और दीबोन ऊंचे स्थानों पर रोने के लिये चढ़ गए हैं; नबो और मेदबा के ऊपर मोआब हाय हाय करता है। उन सभों के सिर मुड़े हुए, और सभों की दाढ़ियां मुंढ़ी हुई हैं; ३ सड़कों में लोग टाट पहिने हैं; छतों पर और चौकों में सब कोई आंसू बहाते हुए हाय हाय करते हैं। ४ हेशबोन और एलाले चिल्ला रहे हैं, उनका शब्द यहस तक सुनाई पड़ता है; इस कारण मोआब के हथियारबन्द चिल्ला रहे हैं; उसका जी अति उदास है। ५ मेरा मन मोआब के लिये दोहाई देता है; उसके रईस सोअर और एग्लतशलीशिय्या तक भागे जाते हैं। देखो, लूहीत की चढ़ाई पर वे रोते हुए चढ़ रहे हैं; सुनो, होरोनैम के मार्ग में वे नाश होने की चिल्लाहट मचा रहे हैं। ६ निम्रीम का जल सूख गया; घास कुम्हला गई और हरियाली मुर्झा गई, और नमी कुछ भी नहीं रही। ७ इसलिये जो धन उन्हों ने बचा रखा, और जो कुछ उन्हों ने इकट्ठा किया है, उस सब को वे उस नाले के पार लिये जा रहे हैं जिस में मजनूवृक्ष हैं। ८ इस कारण मोआब के चारों ओर के सिवाने में चिल्लाहट हो रही है, उस में का हाहाकार एगलैम और बेरेलीम में भी सुन पड़ता है। ९ क्योंकि दीमोन का सोता लोहू से भरा हुआ है; तौभी मैं दीमोन पर और दुःख डालूंगा, मैं बचे हुए मोआबियों और उनके देश से भागे हुओं के विरुद्ध सिंह भेजूंगा॥

१६ जंगल की ओर के सेला नगर से सिय्योन * की बेटी के पर्वत पर देश के हाकिम के लिये भेड़ों के बच्चों

* मूल में—सिय्योन की बेटी।

को भेजो। २ मोआब की बेटियां अर्नोन के घाट पर उजाड़े हुए घोंसले के पक्षी और उनके भटके हुए बच्चों के समान हैं। ३ सम्मति करो, न्याय चुकाओ; दोपहर ही में अपनी छाया को रात के समान करो; घर से निकाले हुओं को छिपा रखो, जो मारे मारे फिरते हैं उनको मत पकड़वाओ। ४ मेरे लोग जो निकाले हुए हैं वे तेरे बीच में रहें; नाश करनेवाले से मोआब को बचाओ। पीसनेवाला नहीं रहा, लूट पाट फिर न होगी; क्योंकि देश में से अन्धेर करनेवाले नाश हो गए हैं। ५ तब दया के साथ एक सिंहासन स्थिर किया जाएगा और उस पर दाऊद के तम्बू में सच्चाई के साथ एक विराजमान होगा जो सोच विचार कर सच्चा न्याय करेगा * और धर्म के काम पर तत्पर रहेगा॥

६ हम ने मोआब के गर्व के विषय सुना है कि वह अत्यन्त अभिमानी था; उसके अभिमान और गर्व और रोष के सम्बन्ध में भी सुना है—परन्तु उसका बड़ा बोल व्यर्थ है। ७ क्योंकि मोआब हाय हाय करेगा; सब के सब मोआब के लिये हाहाकार करेंगे। कीरहरासत की दाख की टिकियों के लिये वे अति निराश होकर लम्बी लम्बी सांस लिया करेंगे॥

८ क्योंकि हेशबोन के खेत और सिबमा की दाख लताएं मुर्झा गईं; अन्यजातियों के अधिकारियों ने उनकी उत्तम उत्तम लताओं को काट काटकर गिरा दिया है, वे याजेर तक पहुंचीं और जंगल में भी फैलती गईं; और बढ़ते बढ़ते ताल के पार दूर तक बढ़ गई थीं। ९ मैं याजेर के साथ सिबमा की दाखलताओं के लिये भी रोऊंगा; हे हेशबोन और एलाले, मैं तुम्हें अपने आंसुओं से सींचूंगा; क्योंकि तुम्हारे धूपकाल के फलों के और अनाज की कटनी के समय की ललकार सुनाई पड़ी है। १० और फलदाई बारियों में से आनन्द और मगनता जाती रही; दाख की बारियों में गीत न गाया जाएगा, न हर्ष का शब्द सुनाई देगा; और दाखरस के कुण्डों में कोई दाख न रौंदेगा, क्योंकि मैं उनके हर्ष के शब्द को बन्द करूंगा। ११ इसलिये मेरा मन मोआब के कारण और मेरा हृदय कीरहेरेस के कारण वीणा का सा क्रन्दन करता है॥

१२ और जब मोआब ऊंचे स्थान पर मुंह दिखाते दिखाते थक जाए, और प्रार्थना करने को अपने पवित्र स्थान में आए, तो उसे कुछ लाभ न होगा। १३ यही वह बात है जो यहोवा ने इस से पहिले मोआब के विषय में कही थी। १४ परन्तु अब यहोवा ने यों कहा है कि मजदूरों के वर्षों के समान तीन वर्ष के भीतर मोआब का विभव और उसकी भीड़-भाड़ सब तुच्छ ठहरेगी; और थोड़े जो बचेंगे उनका कोई बल न होगा॥

१७ दमिश्क के विषय भारी भविष्यवाणी। देखो, दमिश्क नगर न रहेगा, वह खंडहर ही खंडहर हो जाएगा। २ अरोएर के नगर निर्जन हो जाएंगे, वे पशुओं के झुण्डों की चराई बनेंगे; पशु उन में बैठेंगे और उनका कोई भगानेवाला न होगा। ३ एप्रैम के गढ़वाले नगर, और दमिश्क का राज्य और बचे हुए अरामी, तीनों भविष्य में

* मूल में—जो न्याय करेगा और न्याय ढूंढेगा।

न रहेंगे; और जो दशा इस्राएलियों के विभव की हुई वही उनकी होगी; सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है ।।

४ और उस समय याकूब का विभव घट जाएगा, और उसकी मोटी देह दुबली हो जाएगी। ५ और ऐसा होगा जैसा लवनेवाला अनाज काटकर बालों को अपनी अंकवार में समेटे वा रपाईम नाम तराई में कोई सिला बीनता हो। ६ तौभी जैसे जलपाई वृक्ष के झाड़ते समय कुछ फल रह जाते हैं, अर्थात् फुनगी पर दो-तीन फल, और फलवन्त डालियों में कहीं कहीं चार-पांच फल रह जाते हैं, वैसे ही उन में सिला बिनाई होगी, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है ।।

७ उस समय मनुष्य अपने कर्त्ता की ओर दृष्टि करेगा, और उसकी आंखें इस्राएल के पवित्र की ओर लगी रहेंगी; ८ वह अपनी बनाई हुई वेदियों की ओर दृष्टि न करेगा, और न अपनी बनाई हुई अशेरा नाम मूरतों वा सूर्य की प्रतिमाओं की ओर देखेगा। ९ उस समय उनके गढ़वाले नगर घने वन, और उनके निर्जन स्थान पहाड़ों की चोटियों के समान होंगे जो इस्राएलियों के डर के मारे छोड़ दिए गए थे, और वे उजाड़ पड़े रहेंगे ।।

१० क्योंकि तू अपने उद्धारकर्त्ता परमेश्वर को भूल गया और अपनी दृढ़ चट्टान का स्मरण नहीं रखा; इस कारण चाहे तू मनभावने पौधे लगाये और विदेशी कलम जमाये, ११ चाहे रोपने के दिन तू उनके चारों ओर बाड़ा बान्धे, और बिहान ही को उन में फूल खिलने लगें, तौभी सन्ताप और असाध्य दुःख के दिन उसका फल नाश हो जायेगा ।।

१२ हाय, हाय! देश देश के बहुत से लोगों का कैसा नाद हो रहा है, वे समुद्र की लहरों की नाईं गरजते हैं! राज्य राज्य के लोगों का कैसा गर्जन हो रहा है, वे प्रचण्ड धारा के समान नाद करते हैं! १३ राज्य राज्य के लोग बाढ़ के बहुत से जल की नाईं नाद करते हैं, परन्तु वह उनको घुड़केगा, और वे दूर भाग जाएंगे, और ऐसे उड़ाए जाएंगे जैसे पहाड़ों पर की भूसी वायु से, और धूलि बवण्डर मे घुमाकर उड़ाई जाती है। १४ सांझ को, देखो, घबराहट है! और भोर से पहिले, वे लोप हो गये हैं! हमारे नाश करनेवालों का भाग और हमारे लूटनेवाले की यही दशा होगी ।।

१८ हाय, पंखों की फड़फड़ाहट से भरे हुए देश, तू जो कूश की नदियों के परे है; २ और समुद्र पर दूतों को नरकट की नावों में बैठाकर जल के मार्ग से यह कहके भेजता है, हे फुर्तीले दूतो, उस जाति के पास जाओ जिसके लोग बलिष्ट और सुन्दर हैं, जो आदि से अब तक डरावने हैं, जो मापने और रौंदनेवाला भी हैं, और जिनका देश नदियों से विभाजित किया हुआ है ।।

३ हे जगत के सब रहनेवालो, और पृथ्वी के सब निवासियो, जब झंडा पहाड़ों पर खड़ा किया जाए, उसे देखो! जब नरसिंगा फूंका जाए, तब सुनो! ४ क्योंकि यहोवा ने मुझ से यों कहा है, धूप की तेज़ गर्मी वा कटनी के समय के ओसवाले बादल की नाईं मैं शान्त होकर निहारूंगा। ५ क्योंकि दाख तोड़ने के समय से पहिले जब फूल फूल चुकें, और दाख के गुच्छे पकने लगें, तब वह टहनियों को हंसुओं

से काट डालेगा, और फैली हुई डालियों को तोड़ तोड़कर अलग फेंक देगा। ६ वे पहाड़ों के मांसाहारी पक्षियों और वन-पशुओं के लिये इकट्ठे पड़े रहेंगे। और मांसाहारी पक्षी तो उनको नोचते नोचते * धूपकाल बिताएंगे, और सब भांति के † वनपशु उनको खाते खाते * जाड़ा काटेंगे ।।

७ उस समय जिस जाति के लोग बलिष्ट और सुन्दर हैं, और जो आदि ही से डरावने होते आए हैं, और मापने और रौंदनेवाले हैं, और जिनका देश नदियों से विभाजित किया हुआ है, उस जाति से सेनाओं के यहोवा के नाम के स्थान सिय्योन पर्वत पर सेनाओं के यहोवा के पास भेंट पहुंचाई जाएगी ।।

१९ मिस्र के विषय में भारी भविष्यवाणी। देखो, यहोवा शीघ्र उड़नेवाले बादल पर सवार होकर मिस्र में आ रहा है; २ और मिस्र की मूरतें उसके आने से थरथरा उठेंगी, और मिस्रियों का हृदय पानी-पानी हो जाएगा। और मैं मिस्रियों को एक दूसरे के विरुद्ध उभारूंगा, और वे आपस में लड़ेंगे, प्रत्येक अपने भाई से और हर एक अपने पड़ोसी से लड़ेगा, नगर नगर में और राज्य राज्य में युद्ध छिड़ेगा; ३ और मिस्रियों की बुद्धि मारी जाएगी ‡ और मैं उनकी युक्तियों को व्यर्थ कर दूंगा; और वे अपनी मूरतों के पास और ओझों और फुसफुसानेवाले टोनहों § के पास जा जाकर उन से पूछेंगे; ४ परन्तु मैं मिस्रियों को एक कठोर स्वामी के हाथ में कर दूंगा; और एक क्रूर राजा उन पर प्रभुता करेगा, प्रभु, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है ।।

५ और समुद्र का जल सूख जाएगा, और महानदी सूख कर खाली हो जाएगी; ६ और नाले बसाने लगेंगे, और मिस्र * की नहरें भी सूख जाएंगी, और नरकट और हूगले कुम्हला जाएंगे। ७ नील नदी के तीर पर के कछार की घास, और जो कुछ नील नदी के पास बोया जाएगा वह सूखकर नष्ट हो जाएगा †, और उसका पता तक न लगेगा। ८ सब मछुवे जितने नील नदी में बंसी डालते हैं विलाप करेंगे और लम्बी लम्बी सांसें लेंगे, और जो जल के ऊपर जाल फेंकते हैं वे निर्बल हो जाएंगे ‡। ९ फिर जो लोग धुने हुए सन से काम करते हैं और जो सूत से बुनते हैं उनकी आशा टूट जाएगी। १० मिस्र के रईस तो निराश § और उसके सब मजदूर उदास हो जाएंगे ।।

११ निश्चय सोअन के सब हाकिम मूर्ख हैं; और फिरौन के बुद्धिमान मन्त्रियों की युक्ति पशु की सी ठहरी। फिर तुम फिरौन से कैसे कह सकते हो कि मैं बुद्धिमानों का पुत्र और प्राचीन राजाओं की सन्तान हूं? १२ अब तेरे बुद्धिमान कहां हैं? सेनाओं के यहोवा ने मिस्र के विषय जो युक्ति की है, उसको यदि वे जानते हों तो तुझे बताएं। १३ सोअन के हाकिम मूढ़ बन गए हैं, नोप के हाकिमों ने धोखा खाया है; और जिन पर मिस्र के

---

* मूल में—उन पर।
† मूल में—और भूमि के सब।
‡ मूल में—मिस्र की आत्मा उसके भीतर छूछी होगी।
§ मूल में—और फुसफुसानेहारों और ओझों और टोनहों।

* मूल में—मासोर।
† मूल में—सूखकर भगाया जाएगा।
‡ मूल में—सो कुम्हलाएंगे।
§ मूल में—उसके खम्भे तो टूट पड़ेंगे।

गोत्रों के प्रधान लोगों* का भरोसा था उन्हों ने मिस्र को भरमा दिया है। १४ यहोवा ने उस में भ्रमता उत्पन्न की है; उन्हों ने मिस्र को उसके सारे कामों में वमन करते हुए मतवाले की नाईं डगमगा दिया है। १५ और मिस्र के लिये कोई ऐसा काम न रहेगा जो सिर वा पूंछ से अथवा प्रधान वा साधारण से हो सके॥

१६ उस समय मिस्री, स्त्रियों के समान हो जाएंगे, और सेनाओं का यहोवा जो अपना हाथ उन पर बढ़ाएगा उसके डर के मारे वे थरथराएंगे और कांप उठेंगे। १७ और यहूदा का देश मिस्र के लिये यहां तक भय का कारण होगा कि जो कोई उसकी चर्चा सुनेगा वह थरथरा उठेगा; सेनाओं के यहोवा की उस युक्ति का यही फल होगा जो वह मिस्र के विरुद्ध करता है॥

१८ उस समय मिस्र देश में पांच नगर होंगे जिनके लोग कनान की भाषा बोलेंगे और यहोवा की शपथ खायेंगे। उन में से एक का नाम नाशनगर† रखा जाएगा॥

१९ उस समय मिस्र देश के बीच में यहोवा के लिये एक वेदी होगी, और उसके सिवाने के पास यहोवा के लिये एक खंभा खड़ा होगा। २० वह मिस्र देश में सेनाओं के यहोवा के लिये चिन्ह और साक्षी ठहरेगा; और जब वे अंधेर करनेवाले के कारण यहोवा की दोहाई देंगे, तब वह उनके पास एक उद्धारकर्त्ता और रक्षक भेजेगा, और उन्हें मुक्त करेगा। २१ तब यहोवा अपने आप को मिस्रियों पर प्रगट करेगा; और मिस्री उस समय यहोवा को पहिचानेंगे और मेलबलि और अन्नबलि चढ़ाकर उसकी उपासना करेंगे, और यहोवा के लिये मन्नत मानकर पूरी भी करेंगे। २२ और यहोवा मिस्रियों को मारेगा, वह मारेगा और चंगा भी करेगा, और वे यहोवा की ओर फिरेंगे, और वह उनकी बिनती सुनकर उनको चंगा करेगा॥

२३ उस समय मिस्र से अश्शूर जाने का एक राजमार्ग होगा, और अश्शूरी मिस्र में आएंगे, और मिस्री लोग अश्शूर को जाएंगे, और मिस्री अश्शूरियों के संग मिलकर आराधना करेंगे॥

२४ उस समय इस्राएल, मिस्र और अश्शूर तीनों मिलकर पृथ्वी के लिये आशीष का कारण होंगे। २५ क्योंकि सेनाओं का यहोवा उन तीनों को यह कहकर आशीष देगा, धन्य हो मेरी प्रजा मिस्र, और मेरा रचा हुआ अश्शूर, और मेरा निज भाग इस्राएल॥

२० जिस वर्ष में अश्शूर के राजा सर्गोन की आज्ञा से तर्तान ने अशदोद आकर उस से युद्ध किया और उसको ले भी लिया, २ उसी वर्ष यहोवा ने आमोस के पुत्र यशायाह से कहा, जाकर अपनी कमर का टाट खोल और अपनी जूतियां उतार; सो उस ने वैसा ही किया, और वह नंगा और नंगे पांव घूमता फिरता था। ३ और यहोवा ने कहा, जिस प्रकार मेरा दास यशायाह तीन वर्ष से उघाड़ा और नंगे पांव चलता आया है, कि मिस्र और कूश के लिये चिन्ह और चमत्कार हो, ४ उसी प्रकार अश्शूर का राजा मिस्री और कूश के

* मूल में—गोत्रों के कोने।
† अर्थात् ढह जानेवाला नगर।

लोगों को बंधुआ करके देश-निकाल करेगा, क्या लड़के क्या बूढ़े सभों को बंधुए करके उघाड़े और नंगे पांव और नितम्ब खुले ले जाएगा, जिस से मिस्र लज्जित हो। ५ तब वे कूश के कारण जिस पर उनकी आशा थी, और मिस्र के हेतु जिस पर वे फूलते थे व्याकुल और लज्जित हो जाएंगे। ६ और समुद्र के इस पार के बसनेवाले उस समय यह कहेंगे, देखो, जिन पर हम आशा रखते थे और जिनके पास हम अश्शूर के राजा से बचने के लिये भागने को थे उनकी ऐसी दशा हो गई है! तो फिर हम लोग कैसे बचेंगे?

२१ समुद्र के पास के जंगल के विषय भारी वचन। जैसे दक्खिनी प्रचण्ड बवण्डर चला आता है, वह जंगल से अर्थात् डरावने देश से निकट आ रहा है। २ कष्ट की बातों का मुझे दर्शन दिखाया गया है; विश्वासघाती विश्वासघात करता है, और नाशक नाश करता है। हे एलाम, चढ़ाई कर, हे मादै, घेर ले; उसका सब कराहना मैं बन्द करता हूं। ३ इस कारण मेरी कटि में कठिन पीड़ा है; मुझ को मानो जच्चा पीड़ें हो रही हैं; मैं ऐसे संकट में पड़ गया हूं कि कुछ सुनाई नहीं देता, मैं ऐसा घबरा गया हूं कि कुछ दिखाई नहीं देता। ४ मेरा हृदय धड़कता है, मैं अत्यन्त भयभीत हूं; जिस सांझ की मैं बाट जोहता था उसे उस ने मेरी थरथराहट का कारण कर दिया है। ५ भोजन* की तैयारी हो रही है, पहरुए बैठाए जा रहे हैं, खाना-पीना हो रहा है। हे हाकिमो, उठो, ढाल में तेल मलो! ६ क्योंकि प्रभु ने मुझ से यों कहा है, जाकर एक पहरुआ खड़ा कर दे, और वह जो कुछ देखे उसे बताए। ७ जब वह सवार देखे जो दो-दो करके आते हों, और गदहों और ऊंटों के सवार, तब बहुत ही ध्यान देकर सुने। ८ और उस ने सिंह के से शब्द से पुकारा, हे प्रभु मैं दिन भर खड़ा पहरा देता रहा और मैं ने पूरी रातें पहरे पर काटा। ९ और क्या देखता हूं कि मनुष्यों का दल और दो-दो करके सवार चले आ रहे हैं! और वह बोल उठा, गिर पड़ा, बाबुल गिर पड़ा; और उसके देवताओं के सब खुदी हुई मूरतें भूमि पर चकनाचूर कर डाली गई हैं। १० हे मेरे दाएं हुए, और मेरे खलिहान के अन्न, जो बातें मैं ने इस्राएल के परमेश्वर सेनाओं के यहोवा से सुनी है, उनको मैं ने तुम्हें जता दिया है॥

११ दूमा के विषय भारी वचन। सेईर में से कोई मुझे पुकार रहा है, हे पहरुए, रात का क्या समाचार है? हे पहरुए, रात की क्या खबर है? १२ पहरुए ने कहा, भोर होती है और रात भी। यदि तुम पूछना चाहते हो तो पूछो; फिर लौटकर आना॥

१३ अरब के विरुद्ध भारी वचन। हे ददानी बटोहियो, तुम को अरब के जंगल में रात बितानी पड़ेगी। १४ वे प्यासे के पास जल लाए, तेमा देश के रहनेवाले रोटी लेकर भागनेवाले से मिलने को लिये निकले आ रहे हैं। १५ क्योंकि वे तलवारों के साम्हने से वरन नंगी तलवार से और ताने हुए धनुष से और घोर युद्ध से भागे हैं। १६ क्योंकि प्रभु ने मुझ से यों कहा है, मजदूर के वर्षों

* मूल में—मेज।

के अनुसार एक वर्ष में केदार का सारा विभव मिटाया जाएगा; १७ और केदार के धनुर्धारी शूरवीरों में से थोड़े ही रह जाएंगे; क्योंकि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने ऐसा कहा है ।।

२२ दर्शन की तराई के विषय भारी वचन। तुम्हें क्या हुआ कि तुम सब के सब छतों पर चढ़ गए हो, २ हे कोलाहल और ऊधम से भरी प्रसन्न नगरी? तुझ में जो मारे गए हैं वे न तो तलवार से और न लड़ाई में मारे गए हैं। ३ तेरे सब न्यायी एक संग भाग गए और धनुर्धारियों से बान्धे गए हैं। और तेरे जितने शेष पाए गए वे एक संग बान्धे गए, वे दूर भागे थे। ४ इस कारण मैं ने कहा, मेरी ओर से मुंह फेर लो कि मैं बिलक बिलककर रोऊं; मेरे नगर* के सत्यानाश होने के शोक में मुझे शान्ति देने का यत्न मत करो ।।

५ क्योंकि सेनाओं के प्रभु यहोवा का ठहराया हुआ दिन होगा, जब दर्शन की तराई में कोलाहल और रौंदा जाना और बेचैनी होगी; शहरपनाह में सुरंग लगाई जाएगी और दोहाई का शब्द पहाड़ों तक पहुंचेगा। ६ और एलाम पैदलों के दल और सवारों समेत तर्कश बान्धे हुए हैं, और कीर ढाल खोले हुए हैं। ७ तेरी उत्तम उत्तम तराइयां रथों से भरी हुई होंगी और सवार फाटक के साम्हने पांति बान्धेंगे। उस ने यहूदा का घूंघट खोल दिया है ।।

८ उस दिन तू ने वन नाम भवन के अस्त्र-शस्त्र का स्मरण किया, ९ और तू ने दाऊदपुर की शहरपनाह की दरारों को देखा कि वे बहुत हैं, और तू ने निचले पोखरे के जल को इकट्ठा किया १० और यरूशलेम के घरों को गिनकर शहरपनाह के दृढ़ करने के लिये घरों को ढा दिया। ११ तू ने दोनों भीतों के बीच पुराने पोखरे के जल के लिये एक कुंड खोदा। परन्तु तू ने उसके कर्त्ता को स्मरण नहीं किया, जिस ने प्राचीनकाल से उसको ठहरा रखा* था, और न उसकी ओर तू ने दृष्टि की ।।

१२ उस समय सेनाओं के प्रभु यहोवा ने रोने-पीटने, सिर मुड़ाने और टाट पहिनने के लिये कहा था; १३ परन्तु क्या देखो कि हर्ष और आनन्द मनाया जा रहा है, गाय-बैल का घात और भेड़-बकरी का बध किया जा रहा है, मांस खाया और दाखमधु पीया जा रहा है। और कहते हैं, आओ खाएं-पीएं, क्योंकि कल तो हमें मरना है। १४ सेनाओं के यहोवा ने मेरे कान में कहा और अपने मन की बात प्रगट की, निश्चय तुम लोगों के इस अधर्म का कुछ भी प्रायश्चित्त तुम्हारी मृत्यु तक न हो सकेगा, सेनाओं के प्रभु यहोवा का यही कहना है ।।

१५ सेनाओं का प्रभु यहोवा यों कहता है, शेबना नाम उस भण्डारी के पास जो राजघराने के काम पर नियुक्त है जाकर कह, यहां तू क्या करता है? १६ और यहां तेरा कौन है कि तू ने अपनी कबर यहां खुदवाई है? तू अपनी कबर ऊंचे स्थान में खुदवाता और अपने रहने का स्थान चट्टान में खुदवाता है? १७ देख, यहोवा तुझ को बड़ी शक्ति से

* मूल में—बेटी।

* मूल में—इसे रचा।

पकड़कर बहुत दूर फेंक देगा। १८ वह तुझे मरोड़कर गेन्द की नाईं लम्बे चौड़े देश में फेंक देगा; हे अपने स्वामी के घराने को लज्जित करनेवाले वहां तू मरेगा और तेरे विभव के रथ वहीं रह जाएंगे। १९ मैं तुझ को तेरे स्थान पर से ढकेल दूंगा, और तू अपने पद से उतार दिया जायेगा। २० उस समय मैं हिल्कियाह के पुत्र अपने दास एल्याकीम को बुलाकर, उसे तेरा अंगरखा पहनाऊंगा, २१ और उसकी कमर में तेरी पेटी कसकर बान्धूंगा, और तेरी प्रभुता उसके हाथ में दूंगा। और वह यरूशलेम के रहनेवालों और यहूदा के घराने का पिता ठहरेगा। २२ और मैं दाऊद के घराने की कुंजी उसके कंधे पर रखूंगा, और वह खोलेगा और कोई बन्द न कर सकेगा; वह बन्द करेगा और कोई खोल न सकेगा। २३ और मैं उसको दृढ़ स्थान में खूंटी की नाईं गाड़ूंगा, और वह अपने पिता के घराने के लिये विभव का कारण * होगा। २४ और उसके पिता से घराने का सारा विभव, वंश और सन्तान, सब छोटे-छोटे पात्र, क्या कटोरे क्या सुराहियां, सब उस पर टांगी जाएंगी। २५ सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि उस समय वह खूंटी जो दृढ़ स्थान में गाड़ी गई थी, वह ढीली हो जाएगी, और काटकर गिराई जाएगी; और उस पर का बोझ गिर जाएगा, क्योंकि यहोवा ने यह कहा है॥

२३ सोर के विषय भारी वचन। हे तर्शीश के जहाज़ो हाय, हाय, करो; क्योंकि वह उजड़ गया; वहां न तो कोई घर और न कोई शरण का

* मूल में—महिमायुक्त सिंहासन।

स्थान है! यह बात उनको कित्तियों के देश में से प्रगट की गई है। २ हे समुद्र के तीर के रहनेवालो, जिनको समुद्र के पार जानेवाले सीदोनी ब्योपारियों ने धन से भर दिया है, चुप रहो! ३ शीहोर * का अन्न, और नील नदी के पास की उपज महासागर के मार्ग से उसको मिलती थी, क्योंकि वह और जातियों के लिये ब्योपार का स्थान था। ४ हे सीदोन, लज्जित हो, क्योंकि समुद्र ने अर्थात् समुद्र के दृढ़ स्थान ने यह कहा है, मैं ने न तो कभी जन्माने की पीड़ा जानी और न बालक को जन्म दिया, और न बेटों को पाला और न बेटियों को पोसा है। ५ जब सोर का समाचार मिस्र में पहुंचे, तब वे सुनकर संकट में पड़ेंगे। ६ हे समुद्र के तीर के रहनेवालो हाय, हाय, करो! पार होकर तर्शीश को जाओ। ७ क्या यह तुम्हारी प्रसन्नता से भरी हुई नगरी है जो प्राचीनकाल से बसी थी, जिसके पांव उसे बसने को दूर ले जाते थे? ८ सोर जो राजाओं को गद्दी पर बैठाती थी †, जिसके ब्योपारी हाकिम थे, और जिसके महाजन पृथ्वी भर में प्रतिष्ठित थे, उसके विरुद्ध किस ने ऐसी युक्ति की है? ९ सेनाओं के यहोवा ही ने ऐसी युक्ति की है कि समस्त गौरव के घमण्ड को तुच्छ कर दे और पृथ्वी के प्रतिष्ठितों का अपमान करवाए। १० हे तर्शीश के निवासियो ‡ नील नदी की नाईं अपने देश में फैल जाओ; अब कुछ बन्धन § नहीं रहा। ११ उस ने अपना हाथ

* अर्थात् मिस्र का उत्तरवाला भाग।
† मूल में—मुकुट। रखनेहारी सोर।
‡ मूल में—तर्शीश की बेटी।
§ मूल में—फेंटा।

समुद्र पर बढ़ाकर राज्यों को हिला दिया है; यहोवा ने कनान के दृढ़ किलों के नाश करने की आज्ञा दी है। १२ और उस ने कहा है, हे सीदोन, हे भ्रष्ट की हुई कुमारी, तू फिर प्रसन्न होने की नहीं; उठ, पार होकर कित्तियों के पास जा, परन्तु वहां भी तुझे चैन न मिलेगा।।

१३ कसदियों के देश को देखो, वह जाति अब न रही; अश्शूर ने उस देश को जंगली जन्तुओं का स्थान बनाया। उन्हों ने अपने गुम्मट उठाए और राजभवनों को ढा दिया, और उसको खण्डहर कर दिया। १४ हे तर्शीश के जहाजो, हाय, हाय, करो, क्योंकि तुम्हारा दृढ़स्थान उजड़ गया है। १५ उस समय एक राजा के दिनों के अनुसार सत्तर वर्ष तक सोर बिसरा हुआ रहेगा। सत्तर वर्ष के बीतने पर सोर वेश्या की नाईं गीत गाने लगेगा। १६ हे बिसरी हुई वेश्या, वीणा लेकर नगर में घूम, भली भांति बजा, बहुत गीत गा, जिस से लोग फिर तुझे याद करें। १७ सत्तर वर्ष के बीतने पर यहोवा सोर की सुधि लेगा, और वह फिर छिनाले की कमाई पर मन लगाकर धरती भर के सब राज्यों के संग छिनाला करेगी। १८ उसके ब्योपार की प्राप्ति, और उसके छिनाले की कमाई, यहोवा के लिये पवित्र की जाएगी; वह न भण्डार में रखी जाएगी न संचय की जाएगी, क्योंकि उसके ब्योपार की प्राप्ति उन्हीं के काम में आएगी जो यहोवा के साम्हने रहा करेंगे, कि उनको भरपूर भोजन और चमकीला वस्त्र मिले।।

२४ सुनो, यहोवा पृथ्वी को निर्जन और सुनसान करने के पर है, वह उसको उलटकर उसके रहनेवालों को तितर बितर करेगा। २ और जैसी यजमान की वैसी याजक की; जैसी दास की वैसा स्वामी की; जैसी दासी की वैसी स्वामिनी की; जैसी लेनेवाले की वैसी बेचनेवाले की; जैसी उधार देनेवाले की वैसी उधार लेनेवाले की; जैसी ब्याज लेनेवाले की वैसी ब्याज देनेवाले की; सभों की एक ही दशा होगी। ३ पृथ्वी शून्य और सत्यानाश हो जाएगी; क्योंकि यहोवा ही ने यह कहा है।।

४ पृथ्वी विलाप करेगी और मुर्झाएगी, जगत कुम्हलाएगा और मुर्झा जाएगा; पृथ्वी के महान लोग भी कुम्हला जाएंगे। ५ पृथ्वी अपने रहनेवालों के कारण * अशुद्ध हो गई है, क्योंकि उन्हों ने व्यवस्था का उल्लंघन किया और विधि को पलट डाला, और सनातन वाचा को तोड़ दिया है। ६ इस कारण पृथ्वी को शाप ग्रसेगा और उस में रहनेवाले दोषी ठहरेंगे; और इसी कारण पृथ्वी के निवासी भस्म होंगे और थोड़े ही मनुष्य रह जाएंगे। ७ नया दाखमधु जाता रहेगा †, दाखलता मुर्झा जाएगी, और जितने मन में आनन्द करते हैं सब लम्बी लम्बी सांस लेंगे। ८ डफ का सुखदाई शब्द बन्द हो जाएगा, प्रसन्न होनेवालों का कोलाहल जाता रहेगा, वीणा का सुखदाई शब्द शान्त हो जाएगा। ९ वे गाकर फिर दाखमधु न पीएंगे; पीनेवाले को मदिरा कड़वी लगेगी। १० गड़बड़ी मचानेवाली नगरी नाश होगी, उसका हर एक घर ऐसा बन्द किया जाएगा कि कोई पैठ न सकेगा। ११ सड़कों में लोग दाखमधु के लिये चिल्लाएंगे; आनन्द

---

* मूल में—नीचे।

† मूल में—विलाप करेगा।

मिट जाएगा * : देश का सारा हर्ष जाता रहेगा। १२ नगर उजाड़ ही उजाड़ रहेगा, और उसके फाटक तोड़कर नाश किए जाएंगे। १३ क्योंकि पृथ्वी पर देश देश के लोगों में ऐसा होगा जैसा कि जलपाइयों के झाड़ने के समय, वा दाख तोड़ने के बाद कोई कोई फल रह जाते हैं॥

१४ वे लोग गला खोलकर जयजयकार करेंगे, और यहोवा के माहात्म्य को देखकर समुद्र से ललकारेंगे। १५ इस कारण पूर्व में यहोवा की महिमा करो, और समुद्र के द्वीपों में इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के नाम का गुणानुवाद करो। १६ पृथ्वी की छोर से हमें ऐसे गीत की ध्वनि सुन पड़ती है, कि धर्मी की महिमा और बड़ाई हो। परन्तु मैं ने कहा, हाय, हाय! मैं नाश हो गया, नाश † ! क्योंकि विश्वासघाती विश्वासघात करते, वे बड़ा ही विश्वासघात करते हैं॥

१७ हे पृथ्वी के रहनेवालो तुम्हारे लिये भय और गड़हा और फन्दा हैं! १८ जो कोई भय के शब्द से भागे वह गड़हे में गिरेगा, और जो कोई गड़हे में से निकले वह फन्दे में फंसेगा। क्योंकि आकाश के झरोखे खुल जाएंगे, और पृथ्वी की नेव डोल उठेगी। पृथ्वी फटकर टुकड़े टुकड़े हो जाएगी, पृथ्वी अत्यन्त कम्पायमान होगी। १९ वह मतवाले की नाईं बहुत डगमगाएगी २० और मचान की नाईं डोलेगी; वह अपने पाप के बोझ से दबकर गिरेगी और फिर न उठेगी॥

२१ उस समय ऐसा होगा कि यहोवा आकाश की सेना को आकाश में और पृथ्वी के राजाओं को पृथ्वी ही पर दण्ड देगा। २२ वे बंधुओं की नाईं गड़हे में इकट्ठे किए जाएंगे और बन्दीगृह में बन्द किए जाएंगे; और बहुत दिनों के बाद उनकी सुधि ली जाएगी। २३ तब चन्द्रमा संकुचित * हो जाएगा और सूर्य लज्जित होगा; क्योंकि सेनाओं का यहोवा सिय्योन पर्वत पर और यरूशलेम में अपनी प्रजा के पुरनियों के साम्हने प्रताप के साथ राज्य करेगा॥

२५ हे यहोवा, तू मेरा परमेश्वर है; मैं तुझे सराहूंगा, मैं तेरे नाम का धन्यवाद करूंगा; क्योंकि तू ने आश्चर्य कर्म किए हैं, तू ने प्राचीनकाल से पूरी सच्चाई के साथ युक्तियां की हैं। २ तू ने नगर को डीह, और उस गढ़वाले नगर को खण्डहर कर डाला है; तू ने परदेशियों की राजपुरी को ऐसा उजाड़ा कि वह नगर नहीं रहा; वह फिर कभी बसाया न जाएगा। ३ इस कारण बलवन्त राज्य के लोग तेरी महिमा करेंगे; भयंकर अन्यजातियों के नगरों में तेरा भय माना जाएगा। ४ क्योंकि तू संकट में दीनों के लिये गढ़, और जब भयानक लोगों का झोंका भीत पर बौछार के समान होता था, तब तू दरिद्रों के लिये उनकी शरण, और तपन में छाया का स्थान हुआ। ५ जैसे निर्जल देश में बादल की छाया से तपन ठण्डी होती है वैसे ही तू परदेशियों का कोलाहल और क्रूर लोगों का जयजयकार बन्द करता † है॥

६ सेनाओं का यहोवा इसी पर्वत पर सब देशों के लोगों के लिये ऐसी

* मूल में—अन्धेरा होगा।
† मूल में—क्षीण हो गया क्षीण।

* मूल में—चन्द्रमा का मुंह काला।
† मूल में—झुका देता।

जेवनार करेगा जिस में भांति भांति का चिकना भोजन और निथरा हुआ दाखमधु होगा; उत्तम से उत्तम चिकना भोजन और बहुत ही निथरा हुआ दाखमधु होगा। ७ और जो पर्दा * सब देशों के लोगों पर पड़ा है, जो घूंघट सब अन्यजातियों पर लटका हुआ है, उसे वह इसी पर्वत पर नाश करेगा। ८ वह मृत्यु को सदा के लिये नाश करेगा, और प्रभु यहोवा सभों के मुख पर से आंसू पोंछ डालेगा, और अपनी प्रजा की नामधराई सारी पृथ्वी पर से दूर करेगा; क्योंकि यहोवा ने ऐसा कहा है ।।

९ और उस समय यह कहा जाएगा, देखो, हमारा परमेश्वर यही है; हम इसी की बाट जोहते आए हैं, कि वह हमारा उद्धार करे। यहोवा यही है; हम उसकी बाट जोहते आए हैं। हम उस से उद्धार पाकर मगन और आनन्दित होंगे ।।

१० क्योंकि इस पर्वत पर यहोवा का हाथ सर्वदा बना रहेगा और मोआब अपने ही स्थान में ऐसा लताड़ा जाएगा जैसा घूरे में पुआल लताड़ा जाता है। ११ और वह उस में अपने हाथ इस प्रकार फैलाएगा, जैसे कोई तैरते हुए फैलाए; परन्तु वह उसके गर्व को तोड़ेगा; और उसकी चतुराई † को निष्फल कर देगा ‡। १२ और उसकी ऊंची ऊंची और दृढ़ शहरपनाहों को वह झुकाएगा और नीचा करेगा, वरन भूमि पर गिराकर मिट्टी में मिला देगा ।।

* मूल में—परदे का जो मुंह।

† मूल में—उसके हाथों की चतुर युक्तियों।

‡ मूल में—नीचा कर देगा।

२६ उस समय यहूदा देश में यह गीत गाया जाएगा, हमारा एक दृढ़ नगर है; उद्धार का काम देने के लिये वह उसकी शहरपनाह और गढ़ को नियुक्त करता है। २ फाटकों को खोलो कि सच्चाई का पालन करनेवाली एक धर्मी जाति प्रवेश करे। ३ जिसका मन तुझ में धीरज धरे हुए हैं, उसकी तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है, क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है। ४ यहोवा पर सदा भरोसा रख, क्योंकि प्रभु यहोवा सनातन चट्टान है। ५ वह ऊंचे पदवाले को झुका देता, जो नगर ऊंचे पर बसा है उसको वह नीचे कर देता। वह उसको भूमि पर गिराकर मिट्टी में मिला देता है। ६ वह पांवों से, वरन दरिद्रों के पैरों से रौंदा जाएगा * ।।

७ धर्मी का मार्ग सच्चाई है; तू जो स्वयं सच्चाई है, तू धर्मी की अगुवाई करता है। ८ हे यहोवा, तेरे न्याय के मार्ग में हम लोग तेरी बाट जोहते आए हैं; तेरे नाम के स्मरण की हमारे प्राणों में लालसा बनी रहती है। ९ रात के समय में जी से तेरी लालसा करता हूं, मेरा सम्पूर्ण मन से यत्न के साथ तुझे ढूंढ़ता है। क्योंकि जब तेरे न्याय के काम पृथ्वी पर प्रगट होते हैं, तब जगत के रहनेवाले धर्म को सीखते हैं। १० दुष्ट पर चाहे दया भी की जाए तौभी वह धर्म को न सीखेगा; धर्मराज्य † में भी वह कुटिलता करेगा, और यहोवा का माहात्म्य उसे सूझ न पड़ेगा ।।

* मूल में—उसको पांव से रौंदेगा, दीन के पांव कंगालों के कदम।

† मूल में—धर्म के देश।

११ हे यहोवा, तेरा हाथ बढ़ा हुआ है, पर वे नहीं देखते। परन्तु वे जानेंगे कि तुझे प्रजा के लिये कैसी जलन है, और लजाएंगे। १२ तेरे बैरी आग से भस्म होंगे। हे यहोवा, तू हमारे लिये शान्ति ठहराएगा, हम ने जो कुछ किया है उसे तू ही ने हमारे लिये किया है। १३ हे हमारे परमेश्वर यहोवा, तेरे सिवाय और स्वामी भी हम पर प्रभुता करते थे, परन्तु तेरी कृपा से हम केवल तेरे ही नाम का गुणानुवाद करेंगे। १४ वे मर गए हैं, फिर कभी जीवित नहीं होंगे; उनको मरे बहुत दिन हुए, वे फिर नहीं उठने के; तू ने उनका विचार करके उनको ऐसा नाश किया कि वे फिर स्मरण में न आएंगे। १५ परन्तु तू ने जाति को बढ़ाया; हे यहोवा, तू ने जाति को बढ़ाया है; तू ने अपनी महिमा दिखाई है और उस देश के सब सिवानों को तू ने बढ़ाया है ॥

१६ हे यहोवा, दुःख में वे तुझे स्मरण करते थे, जब तू उन्हें ताड़ना देता था तब वे दबे स्वर से अपने मन की बात तुझ पर प्रगट करते थे*। १७ जैसे गर्भवती स्त्री जनने के समय ऐंठती और पीड़ों के कारण चिल्ला उठती है, हम लोग भी, हे यहोवा, तेरे साम्हने वैसे ही हो गए हैं। १८ हम भी गर्भवती हुए, हम भी ऐंठे, हम ने मानो वायु ही को जन्म दिया। हम ने देश के लिये कोई उद्धार का काम नहीं किया, और न जगत के रहनेवाले उत्पन्न † हुए। १९ तेरे मरे हुए लोग जीवित होंगे, मुर्दे उठ खड़े होंगे। हे मिट्टी में बसनेवालो, जागकर जयजयकार करो! क्योंकि तेरी ओस ज्योति से उत्पन्न होती है, और पृथ्वी मुर्दों को लौटा देगी ॥

२० हे मेरे लोगो, आओ, अपनी अपनी कोठरी में प्रवेश करके किवाड़ों को बन्द करो; थोड़ी देर तक जब तक क्रोध शान्त न हो* तब तक अपने को छिपा रखो। २१ क्योंकि देखो, यहोवा पृथ्वी के निवासियों को अधर्म का दण्ड देने के लिये अपने स्थान से चला आता है, और पृथ्वी अपना खून प्रगट करेगी और घात किए हुओं को और अधिक न छिपा रखेगी ॥

२७ उस समय यहोवा अपनी कड़ी, बड़ी, और पोढ़ तलवार से लिव्यातान नाम वेग और टेढ़े चलनेवाले सर्प को दण्ड देगा, और जो अजगर समुद्र में रहता है उसको भी घात करेगा ॥

२ उस समय एक सुन्दर दाख की बारी होगी, तुम उसका यश गाना! ३ मैं यहोवा उसकी रक्षा करता हूं; मैं क्षण क्षण उसको सींचता रहूंगा। मैं रात-दिन उसकी रक्षा करता रहूंगा, ऐसा न हो कि कोई उसकी हानि करे। ४ मेरे मन में जलजलाहट नहीं है। यदि कोई भांति भांति के कटीले पेड़ मुझ से लड़ने को खड़े करता, तो मैं उन पर पांव बढ़ाकर उनको पूरी रीति से भस्म कर देता। ५ वा मेरे साथ मेल करने को वे मेरी शरण लें, वे मेरे साथ मेल कर लें ॥

६ भविष्य में याकूब जड़ पकड़ेगा, और इस्राएल फूले-फलेगा, और उसके फलों से जगत भर जाएगा ॥

* मूल में—उण्डेल दी। † [illegible] वा पड़े।

* मूल में—निकल न जाए।

७ क्या उस ने उसे मारा जैसा उस ने उसके मारनेवालों को मारा था? क्या वह घात किया गया जैसे उसके घात किए हुए घात हुए? ८ जब तू ने उसे निकाला, तब सोच-विचार कर उसको दुःख दिया *: उस ने पुरवाई के दिन उसको प्रचण्ड वायु से उड़ा दिया है। ९ इस से याकूब के अधर्म का प्रायश्चित्त किया जाएगा और उसके पाप के दूर होने का प्रतिफल यह होगा कि वे वेदी के सब पत्थरों को चूना बनाने के पत्थरों के समान चकनाचूर करेंगे, और अशेरा और सूर्य की प्रतिमाएं फिर खड़ी न रहेंगी। १० क्योंकि गढ़वाला नगर निर्जन हुआ है, वह छोड़ी हुई बस्ती के समान निर्जन और जंगल हो गया है; वहां बछड़े चरेंगे और वहीं बैठेंगे, और पेड़ों की डालियों की फुनगी को खा लेंगे। ११ जब उसकी शाखाएं सूख जाएं तब तोड़ी जाएंगी; और स्त्रियां आकर उनको तोड़कर जला देंगी। क्योंकि ये लोग निर्बुद्धि हैं; इसलिये उनका कर्त्ता उन पर दया न करेगा, और उनका रचनेवाला उन पर अनुग्रह न करेगा॥

१२ उस समय यहोवा महानद से लेकर मिस्र के नाले तक अपने अन्न को फटकेगा, और हे इस्राएलियो तुम एक एक करके इकट्ठे किए जाओगे। १३ उस समय बड़ा नरसिंगा फूंका जाएगा, और जो अश्शूर देश में नाश हो रहे थे और जो मिस्र देश में बरबस बसाए हुए थे वे यरूशलेम में आकर पवित्र पर्वत पर यहोवा को दण्डवत् करेंगे॥

* मूल में—उसके साथ झगड़ा करता है।

२८ घमण्ड के मुकुट पर हाय! जो एप्रैम के मतवालों का है, और उनकी भड़कीली सुन्दरता पर जो मुर्झानेवाला फूल है, जो अति उपजाऊ तराई के सिरे पर दाखमधु से मतवालों की है। २ देखो, प्रभु के पास एक बलवन्त और सामर्थी है जो ओले की वर्षा वा उजाड़नेवाली आंधी या बाढ़ की प्रचण्ड धार की नाईं है वह उसको कठोरता से भूमि पर गिरा देगा। ३ एप्रैमी मतवालों के घमण्ड का मुकुट पांव से लताड़ा जाएगा; ४ और उनकी भड़कीली सुन्दरता का मुर्झानेवाला फूल जो अति उपजाऊ तराई के सिरे पर है, वह ग्रीष्मकाल से पहिले पके अंजीर के समान होगा, जिसे देखनेवाला देखते ही हाथ में ले और निगल जाए॥

५ उस समय सेनाओं का यहोवा स्वयं अपनी प्रजा के बचे हुओं के लिये सुन्दर और प्रतापी मुकुट ठहरेगा; ६ और जो न्याय करने को बैठते हैं उनके लिये न्याय करनेवाली आत्मा और जो चढ़ाई करते हुए शत्रुओं को * नगर के फाटक से हटा देते हैं, उनके लिये वह बल ठहरेगा॥

७ ये भी दाखमधु के कारण डगमगाते और मदिरा से लड़खड़ाते हैं; याजक और नबी भी मदिरा के कारण डगमगाते हैं, दाखमधु ने उनको भुला दिया है, वे मदिरा के कारण लड़खड़ाते और दर्शन पाते हुए भटक जाते, और न्याय में भूल करते हैं। ८ क्योंकि सब भोजन-आसन वमन और मल से भरे हैं, कोई शुद्ध स्थान नहीं बचा॥

* मूल में—लड़ाई को।

९ वह किसको ज्ञान सिखाएगा, और किसको अपने समाचार का अर्थ समझाएगा? क्या उनको जो दूध छुड़ाए हुए और स्तन से अलगाए हुए हैं? क्योंकि आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा, १० नियम पर नियम, नियम पर नियम, थोड़ा यहां, थोड़ा वहां ।।

११ वह तो इन लोगों से परदेशी होंठों और विदेशी भाषावालों के द्वारा बातें करेगा; १२ जिन से उस ने कहा, विश्राम इसी से मिलेगा; इसी के द्वारा थके हुए को विश्राम दो; परन्तु उन्हों ने सुनना न चाहा। १३ इसलिये यहोवा का वचन उनके पास आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा, नियम पर नियम, नियम पर नियम है, थोड़ा यहां, थोड़ा वहां, जिस से वे ठोकर खाकर चित्त गिरें और घायल हो जाएं, और फंदे में फंसकर पकड़े जाएं ।।

१४ इस कारण हे ठट्ठा करनेवालो, यरूशलेमवासी प्रजा के हाकिमो, यहोवा का वचन सुनो! १५ तुम ने कहा है कि हम ने मृत्यु से वाचा बान्धी और अधोलोक से प्रतिज्ञा कराई है; इस कारण विपत्ति जब बाढ़ की नाईं बढ़ आए तब हमारे पास न आएगी; क्योंकि हम ने झूठ की शरण ली और मिथ्या की आड़ में छिपे हुए हैं। १६ इसलिये प्रभु यहोवा यों कहता है, देखो, मैं ने सिय्योन में नेव का एक पत्थर रखा है, एक परखा हुआ पत्थर, कोने का अनमोल और अति दृढ़ नेव के योग्य पत्थर: और जो कोई विश्वास रखे वह उतावली न करेगा। १७ और मैं न्याय को डोरी और धर्म को साहुल ठहराऊंगा; और तुम्हारा झूठ का शरणस्थान ओलों से बह जाएगा, और तुम्हारे छिपने का स्थान जल से डूब जाएगा। १८ तब जो वाचा तुम ने मृत्यु से बान्धी है वह टूट जाएगी, और जो प्रतिज्ञा तुम ने अधोलोक से कराई वह न ठहरेगी; जब विपत्ति बाढ़ की नाईं बढ़ आए, तब तुम उस में डूब * ही जाओगे। १९ जब जब वह बढ़ आए, तब तब वह तुम को ले जाएगी; वह प्रति दिन वरन रात दिन बढ़ा करेगी; और इस समाचार का सुनना ही व्याकुल होने का कारण होगा। २० क्योंकि बिछौना टांग फैलाने के लिये छोटा, और ओढ़ना ओढ़ने के लिये सकरा है ।।

२१ क्योंकि यहोवा ऐसा उठ खड़ा होगा जैसा वह पराजीम नाम पर्वत पर खड़ा हुआ और जैसा गिबोन की तराई में उस ने क्रोध दिखाया था; वह अब फिर क्रोध दिखाएगा, जिस से वह अपना काम करे, जो अचम्भित काम है, और वह कार्य करे जो अनोखा है। २२ इसलिये अब तुम ठट्ठा मत करो, नहीं तो तुम्हारे बन्धन कसे जाएंगे; क्योंकि मैं ने सेनाओं के प्रभु यहोवा से यह सुना है कि सारे देश का सत्यानाश ठाना गया है ।।

२३ कान लगाकर मेरी सुनो, ध्यान धरकर मेरा वचन सुनो। २४ क्या हल जोतनेवाला बीज बोने के लिये लगातार जोतता रहता है? क्या वह सदा धरती को चीरता और हेंगाता रहता है? २५ क्या वह उसको चौरस करके सौंफ को नहीं छितराता, जीरे को नहीं बखेरता और गेहूं को पांति पांति करके और जव को उसके निज स्थान पर, और कठिये गेहूं को खेत की छोर पर नहीं बोता?

* मूल में—लताड़े।

२६ क्योंकि उसका परमेश्वर उसको ठीक ठीक काम करना सिखलाता और बतलाता है ।।

२७ दांवने की गाड़ी से तो सौंफ दाई नहीं जाती, और गाड़ी का पहिया जीरे के ऊपर नहीं चलाया जाता; परन्तु सौंफ छड़ी से, और जीरा सोंटे से झाड़ा जाता है। २८ रोटी के अन्न पर दायें की जाती है, परन्तु कोई उसको सदा दांवता नहीं रहता; और न गाड़ी के पहिये न घोड़े उस पर चलाता है, वह उसे चूर चूर नहीं करता। २९ यह भी सेनाओं के यहोवा की ओर से नियुक्त हुआ है, वह अद्भुत युक्तिवाला और महाबुद्धिमान है ।।

२९ हाय, अरीएल*, अरीएल, हाय उस नगर पर जिस में दाऊद छावनी किए हुए रहा! वर्ष पर वर्ष जोड़ते जाओ, उत्सव के पर्व अपने अपने समय पर मनाते जाओ। २ तौभी मैं तो अरीएल को सकेती में डालूंगा, वहां रोना पीटना रहेगा, और वह मेरी दृष्टि में सचमुच अरीएल सा ठहरेगा। ३ और मैं चारों ओर तेरे विरुद्ध छावनी करके तुझे कोटों से घेर लूंगा, और तेरे विरुद्ध गढ़ भी बनाऊंगा। ४ तब तू गिराकर भूमि में डाला जाएगा, और धूल पर से बोलेगा, और तेरी बात भूमि से धीमी धीमी सुनाई देगी; तेरा बोल भूमि पर से प्रेत का सा होगा, और तू धूल से गुनगुनाकर बोलेगा ।।

५ तब तेरे परदेशी बैरियों की भीड़ सूक्ष्म धूलि की नाईं, और उन भयानक लोगों की भीड़ भूसे की नाईं उड़ाई जाएगी। ६ और सेनाओं का यहोवा अचानक बादल गरजाता, भूमि को कम्पाता, और महाध्वनि करता, बवण्डर और आंधी चलाता, और नाश करनेवाली अग्नि भड़काता हुआ उसके पास आएगा। ७ और जातियों की सारी भीड़ जो अरीएल से युद्ध करेगी, और जितने लोग उसके और उसके गढ़ के विरुद्ध लड़ेंगे और उसको सकेती में डालेंगे, वे सब रात के देखे हुए स्वप्न के समान ठहरेंगे। ८ और जैसा कोई भूखा स्वप्न में तो देखता है कि वह खा रहा है, परन्तु जागकर देखता है कि उसका पेट भूखा ही है, वा कोई प्यासा स्वप्न में देखे कि वह पी रहा है, परन्तु जागकर देखता है कि उसका गला सूखा जाता* है और वह प्यासा मर रहा है†; वैसी ही उन सब जातियों की भीड़ की दशा होगी जो सिय्योन पर्वत से युद्ध करेंगी ।।

९ ठहर जाओ और चकित होओ, भोगविलास करो और अन्धे हो जाओ! वे मतवाले तो हैं, परन्तु दाखमधु से नहीं, वे डगमगाते तो हैं, परन्तु मदिरा पीने से नहीं! १० यहोवा ने तुम को भारी नींद में डाल दिया‡ है और उस ने तुम्हारी नबीरूपी आंखों को बन्द कर दिया है और तुम्हारे दर्शीरूपी सिरों पर पर्दा डाला है। ११ इसलिये सारे दर्शन तुम्हारे लिये एक लपेटी और मुहर की हुई पुस्तक की बातों के समान हैं, जिसे कोई पढ़े-लिखे मनुष्य को यह कहकर दे,

* अर्थात् ईश्वर का अग्निकुण्ड वा ईश्वर का सिंह।

* मूल में—कि मैं थका।

† मूल में—मेरा जीव लालसा करता है।

‡ मूल में—तुम पर भारी नींद की आत्मा उण्डेली।

इसे पढ़, और वह कहे, मैं नहीं पढ़ सकता क्योंकि इस पर मुहर की हुई है। १२ तब वही पुस्तक अनपढ़े को यह कहकर दी जाए, इसे पढ़, और वह कहे, मैं तो अनपढ़ हूं॥

१३ और प्रभु ने कहा, ये लोग जो मुंह* से मेरा आदर करते हुए समीप आते परन्तु अपना मन मुझ से दूर रखते हैं, और जो केवल मनुष्यों की आज्ञा सुन सुनकर मेरा भय मानते हैं†; १४ इस कारण सुन, मैं इनके साथ अद्भुत काम वरन अति अद्भुत और अचम्भे का काम करूंगा; तब इनके बुद्धिमानों की बुद्धि नष्ट होगी, और इनके प्रवीणों की प्रवीणता जाती रहेगी‡॥

१५ हाय उन पर जो अपनी युक्ति को यहोवा से छिपाने का बड़ा यत्न करते§, और अपने काम अन्धेरे में करके कहते हैं, हम को कौन देखता है? हम को कौन जानता है? १६ तुम्हारी कैसी उलटी समझ है! क्या कुम्हार मिट्टी के तुल्य गिना जाएगा? क्या बनाई हुई वस्तु अपने कर्त्ता के विषय कहे कि उस ने मुझे नहीं बनाया, वा रची हुई वस्तु अपने रचनेवाले के विषय कहे, कि वह कुछ समझ नहीं रखता?

१७ क्या अब थोड़े ही दिनों के बीतने पर लबानोन फिर फलदाई बारी न बन जाएगा, और फलदाई बारी जंगल न गिनी जाएगी? १८ उस समय बहिरे पुस्तक की बातें सुनने लगेंगे, और अन्धे जिन्हें अब कुछ नहीं सूझता, वे देखने लगेंगे*। १९ नम्र लोग यहोवा के कारण फिर आनन्दित होंगे, और दरिद्र मनुष्य इस्राएल के पवित्र के कारण मगन होंगे। २० क्योंकि उपद्रवी फिर न रहेंगे और ठट्ठा करनेवालों का अन्त होगा, और जो अनर्थ करने के लिये जागते रहते हैं, जो मनुष्यों को वचन में फंसाते हैं, २१ और जो सभा† में उलहना देते उनके लिये फंदा लगाते, और धर्म को व्यर्थ बात के द्वारा बिगाड़ देते हैं, वे सब मिट जाएंगे॥

२२ इस कारण इब्राहीम का छुड़ानेवाला यहोवा, याकूब के घराने के विषय यों कहता है, याकूब को फिर लज्जित होना न पड़ेगा, उसका मुख फिर नीचा‡ न होगा। २३ क्योंकि जब उसके सन्तान मेरा काम देखेंगे, जो मैं उनके बीच में करूंगा, तब वे मेरे नाम को पवित्र ठहराएंगे; वे याकूब के पवित्र को पवित्र मानेंगे, और इस्राएल के परमेश्वर का अति भय मानेंगे। २४ उस समय जिनका मन भटका हो वे बुद्धि प्राप्त करेंगे, और जो कुड़कुड़ाते हैं वह शिक्षा ग्रहण करेंगे॥

३० यहोवा की यह वाणी है, हाय उन बलवा करनेवाले लड़कों पर जो युक्ति तो करते परन्तु मेरी ओर से नहीं; वाचा तो बान्धते परन्तु मेरे आत्मा के सिखाये नहीं; और इस प्रकार पाप पर पाप बढ़ाते हैं। २ वे मुझ से बिन पूछे मिस्र को जाते हैं कि फिरौन

* मूल में—मुंह और होंठों।
† मूल में—सो मनुष्यों की सिखाई हुई आज्ञा है।
‡ मूल में—छिप जाएगी।
§ मूल में—नीचे जाते हैं।

* मूल में—अन्धों की आंखें तिमिर और अन्धकार में से देखेंगी।
† मूल में—फाटक।
‡ मूल में—फीका वा पीला।

की रक्षा में रहे और मिस्र की छाया में शरण लें। ३ इसलिये फिरौन का शरण-स्थान तुम्हारी लज्जा का, और मिस्र की छाया में शरण लेना तुम्हारी निन्दा का कारण होगा। ४ उसके हाकिम सोअन में आए तो हैं और उसके दूत अब हानेस में पहुंचे हैं। ५ वे सब एक ऐसी जाति के कारण लज्जित होंगे जिस से उनका कुछ लाभ न होगा, जो सहायता और लाभ के बदले लज्जा और नामधराई का कारण होगी॥

६ दक्खिन देश के पशुओं के विषय भारी वचन। वे अपनी धन सम्पत्ति को जवान गदहों की पीठ पर, और अपने खज़ानों को ऊंटों के कूबड़ों पर लादे हुए, संकट और सकेती के देश में होकर, जहां * सिंह और सिंहनी, नाग और उड़नेवाले तेज़ विषधर सर्प रहते हैं, उन लोगों के पास जा रहे हैं जिन से उनको लाभ न होगा। ७ क्योंकि मिस्र की सहायता व्यर्थ और निकम्मी है, इस कारण मैं ने उसको बैठी रहनेवाली रहब † कहा है॥

८ अब जाकर इसको उनके साम्हने पत्थर पर खोद, और पुस्तक में लिख, कि वह भविष्य के लिये वरन सदा के लिये साक्षी बनी रहे। ९ क्योंकि वे बलवा करनेवाले लोग और झूठ बोलनेवाले लड़के हैं जो यहोवा की शिक्षा को सुनना नहीं चाहते। १० वे दर्शियों से कहते हैं, दर्शी मत बनो; और नबियों से कहते हैं, हमारे लिये ठीक नबूवत मत करो; हम से चिकनी चुपड़ी बातें बोलो, धोखा देनेवाली नबूवत करो। ११ मार्ग से मुड़ो, पथ से हटो, और इस्राएल के पवित्र को हमारे साम्हने से दूर * करो। १२ इस कारण इस्राएल का पवित्र यों कहता है, तुम लोग जो मेरे इस वचन को निकम्मा जानते और अन्धेर और कुटिलता पर भरोसा करके उन्हीं पर टेक लगाते हो; १३ इस कारण यह अधर्म तुम्हारे लिये ऊंची भीत का टूटा हुआ भाग होगा जो फटकर गिरने पर हो, और वह अचानक पल भर में टूटकर गिर पड़ेगा, १४ और कुम्हार के बर्तन की नाईं फूटकर ऐसा चकनाचूर होगा कि उसके टुकड़ों का एक ठीकरा भी न मिलेगा जिस से अंगेठी में से आग ली जाए वा हौद में से जल निकाला जाए॥

१५ प्रभु यहोवा, इस्राएल का पवित्र यों कहता है, लौट आने और शान्त रहने में तुम्हारा उद्धार है; शान्त रहने और भरोसा रखने में तुम्हारी वीरता है। परन्तु तुम ने ऐसा नहीं किया, १६ तुम ने कहा, नहीं, हम तो घोड़ों पर चढ़कर भागेंगे, इसलिये तुम भागोगे; और यह भी कहा कि हम तेज़ सवारी पर चलेंगे, सो तुम्हारा पीछा करनेवाले उस से भी तेज़ होंगे। १७ एक ही की धमकी से एक हजार भागेंगे, और पांच की धमकी से तुम ऐसा भागोगे कि अन्त में तुम पहाड़ की चोटी के डण्डे वा टीले के ऊपर की ध्वजा के समान रह जाओगे जो चिन्ह के लिये गाड़े जाते हैं॥

१८ तौभी यहोवा इसलिये विलम्ब करता है कि तुम पर अनुग्रह करे, और इसलिये ऊंचे उठेगा कि तुम पर दया करे। क्योंकि यहोवा न्यायी परमेश्वर है; क्या ही धन्य हैं वे जो उस पर आशा लगाए रहते हैं॥

---

* मूल में—जिन से।
† अर्थात् अभिमान।

* मूल में—बन्द।

१९ हे सिय्योन के लोगो तुम यरूशलेम में बसे रहो; तुम फिर कभी न रोओगे, वह तुम्हारी दोहाई सुनते ही तुम पर निश्चय अनुग्रह करेगा: वह सुनते ही तुम्हारी मानेगा। २० और चाहे प्रभु तुम्हें विपत्ति की रोटी और दुःख का जल भी दे, तौभी तुम्हारे उपदेशक फिर न छिपें, और तुम अपनी आंखों से अपने उपदेशकों को देखते रहोगे। २१ और जब कभी तुम दहिनी वा बाईं ओर मुड़ने लगो, तब तुम्हारे पीछे से यह वचन तुम्हारे कानों में पड़ेगा, मार्ग यही है, इसी पर चलो। २२ तब तुम वह चान्दी जिस से तुम्हारी खुदी हुई मूर्त्तियां मढ़ी हैं, और वह सोना जिस से तुम्हारी ढली हुई मूर्त्तियां आभूषित हैं, अशुद्ध करोगे। तुम उनको मैले कुचैले वस्त्र की नाईं फेंक दोगे और कहोगे, दूर हो। २३ और वह तुम्हारे लिये जल बरसाएगा कि तुम खेत में बीज बो सको, और भूमि की उपज भी उत्तम और बहुतायत से होगी। उस समय तुम्हारे जानवरों को लम्बी-चौड़ी चराई मिलेगी २४ और बैल और गदहे जो तुम्हारी खेती के काम में आएंगे, वे सूप और डलिया से फटका हुआ स्वादिष्ट चारा खाएंगे। २५ और उस महासंहार के समय जब गुम्मट गिर पड़ेंगे, सब ऊंचे ऊंचे पहाड़ों और पहाड़ियों पर नालियां और सोते पाए जाएंगे। २६ उस समय यहोवा अपनी प्रजा के लोगों का घाव बान्धेगा और उनकी चोट चङ्गा करेगा; तब चन्द्रमा का प्रकाश सूर्य का सा, और सूर्य का प्रकाश सातगुना होगा, अर्थात् अठवारे भर का प्रकाश एक दिन में होगा।।

२७ देखो, यहोवा दूर से चला आता है, उसका प्रकोप भड़क उठा है, और धूएं का बादल उठ रहा है; उसके होंठ क्रोध से भरे हुए और उसकी जीभ भस्म करनेवाली आग के समान है। २८ उसकी सांस ऐसी उमण्डनेवाली नदी के समान है जो गले तक पहुंचती है; वह सब जातियों को नाश के सूप से फटकेगा, और देश देश के लोगों को भटकाने के लिये उनके जभड़ों में लगाम लगाएगा।।

२९ तब तुम पवित्र पर्व की रात का सा गीत गाओगे, और जैसा लोग यहोवा के पर्वत की ओर उस से मिलने को, जो इस्राएल की चट्टान है, बांसुली बजाते हुए जाते हैं, वैसे ही तुम्हारे मन में भी आनन्द होगा। ३० और यहोवा अपनी प्रतापीवाणी सुनाएगा, और अपना क्रोध भड़काता और आग की लौ से भस्म करता हुआ, और प्रचण्ड आन्धी और अति वर्षा और ओलों के साथ अपना भुजबल * दिखाएगा। ३१ अश्शूर यहोवा के शब्द की शक्ति से नाश हो जाएगा, वह उसे सोंटे से मारेगा। ३२ और जब जब यहोवा उसको दण्ड देगा †, तब तब साथ ही डफ और वीणा बजेंगी; और वह हाथ बढ़ाकर उसको लगातार मारता रहेगा। ३३ बहुत काल से तोपेत ‡ तैयार किया गया है, वह राजा ही के लिये ठहराया गया है, वह लम्बा-चौड़ा और गहिरा भी बनाया गया है, वहां की चिता में आग और बहुत सी लकड़ी हैं; यहोवा की सांस जलती हुई गन्धक की धारा की नाईं उसको सुलगाएगी।।

---

* मूल में—अपनी भुजा का उतरना।
† मूल में—उस पर नेवबाला दण्ड रखेगा।
‡ अर्थात् फूंकने का स्थान।

३१ हाय उन पर जो सहायता पाने के लिये मिस्र को जाते हैं और घोड़ों का आसरा करते हैं; जो रथों पर भरोसा रखते क्योंकि वे बहुत हैं, और सवारों पर, क्योंकि वे अति बलवान हैं, पर इस्राएल के पवित्र की ओर दृष्टि नहीं करते और न यहोवा की खोज करते हैं! २ परन्तु वह भी बुद्धिमान है और दुःख देगा, वह अपने वचन न टालेगा, परन्तु उठकर कुकर्मियों के घराने पर और अनर्थकारियों के सहायकों पर भी चढ़ाई करेगा। ३ मिस्री लोग ईश्वर नहीं, मनुष्य ही हैं; और उनके घोड़े आत्मा नहीं, मांस ही हैं। जब यहोवा हाथ बढ़ाएगा, तब सहायता करनेवाले और सहायता चाहनेवाले दोनों ठोकर खाकर गिरेंगे, और वे सब के सब एक संग नष्ट हो जाएंगे ॥

४ फिर यहोवा ने मुझ से यों कहा, जिस प्रकार सिंह वा जवान सिंह जब अपने अहेर पर गुर्राता हो, और चरवाहे इकट्ठे होकर उसके विरुद्ध बड़ी भीड़ लगाएं, तौभी वह उनके बोल से न घबराएगा और न उनके कोलाहल के कारण दबेगा, उसी प्रकार सेनाओं का यहोवा, सिय्योन पर्वत और यरूशलेम की पहाड़ी पर, युद्ध करने को उतरेगा। ५ पंख फैलाई हुई चिड़ियों की नाईं सेनाओं का यहोवा यरूशलेम की रक्षा करेगा; वह उसकी रक्षा करके बचाएगा, और उसको बिन छूए ही * उद्धार करेगा ॥

६ हे इस्राएलियो, जिसके विरुद्ध तुम ने भारी † बलवा किया है, उसी की ओर फिरो। ७ उस समय तुम लोग सोने चान्दी की अपनी अपनी मूर्तियों से जिन्हें तुम * बनाकर पापी हो गए हो घृणा करोगे। ८ तब अश्शूर उस तलवार से गिराया जाएगा जो मनुष्य की नहीं; वह उस तलवार का कौर हो जाएगा जो आदमी की नहीं; और वह तलवार के साम्हने से भागेगा और उसके जवान बेगार में पकड़े जाएंगे। ९ वह भय के मारे अपने सुन्दर भवन से जाता रहेगा, और उसके हाकिम घबराहट के कारण ध्वजा त्याग कर भाग जाएंगे, यहोवा जिस की अग्नि सिय्योन में और जिसका भट्ठा यरूशलेम में है, उसी की यह वाणी है ॥

३२ देखो, एक राजा धर्म से राज्य करेगा, और राजकुमार न्याय से हुकूमत करेंगे। २ हर एक मानो आंधी से छिपने का स्थान, और बौछार से आड़ होगा; या निर्जल देश में जल के झरने, व तप्त भूमि में बड़ी चट्टान की छाया। ३ उस समय देखनेवालों की आंखें धुंधली न होंगी, और सुननेवालों के कान लगे रहेंगे। ४ उतावलों के मन ज्ञान की बातें समझेंगे, और तुतलानेवालों की जीभ फुर्ती से और साफ़ बोलेगी। ५ मूढ़ फिर उदार न कहलाएगा और न कंजूस दानी कहा जाएगा। ६ क्योंकि मूढ़ तो मूढ़ता ही की बातें बोलता और मन में अनर्थ ही गढ़ता रहता है कि वह बिन भक्ति के काम करे और यहोवा के विरुद्ध झूठ कहे, भूखे को भूखा ही रहने दे और प्यासे का जल रोक रखे। ७ छली की चालें बुरी होती हैं, वह दुष्ट युक्तियां निकालता है कि दरिद्र को भी झूठी बातों में लूटे जब कि वे ठीक और नम्रता

* मूल में—और लांघकर।
† मूल में—गहिरा करके।

* मूल में—जिन्हें तुम्हारे हाथ।

से भी बोलते हों। ८ परन्तु उदार मनुष्य उदारता ही की युक्तियां निकालता है, वह उदारता में स्थिर भी रहेगा॥

९ हे सुखी स्त्रियो, उठकर मेरी सुनो; हे निश्चिन्त पुत्रियो, मेरे वचन की ओर कान लगाओ। १० हे निश्चिन्त स्त्रियो, वर्ष भर से कुछ ही अधिक समय में तुम विकल हो जाओगी; क्योंकि तोड़ने को दाखें न होंगी और न किसी भांति के फल हाथ लगेंगे। ११ हे सुखी स्त्रियो, थरथराओ, हे निश्चिन्त स्त्रियो, विकल हो; अपने अपने वस्त्र उतारकर अपनी अपनी कमर में टाट कसो। १२ वे मनभाऊ खेतों और फलवन्त दाखलताओं के लिये छाती पीटेंगी। १३ मेरे लोगों के वरन प्रसन्न नगर के सब हर्ष भरे घरों में भी भांति भांति के कटीले पेड़ उपजेंगे। १४ क्योंकि राजभवन त्यागा जाएगा, कोलाहल से भरा नगर सुनसान हो जाएगा; और पहाड़ी और उन पर के पहरुओं के घर सदा के लिये मांदे और जंगली गदहों का विहारस्थान और घरैलू पशुओं की चराई उस समय तक बने रहेंगे १५ जब तक आत्मा ऊपर से हम पर उण्डेला न जाए, और जंगल फलदायक बारी न बने, और फलदायक बारी फिर वन न गिनी जाए। १६ तब उस जंगल में न्याय बसेगा, और उस फलदायक बारी में धर्म रहेगा। १७ और धर्म का फल शान्ति और उसका परिणाम सदा का चैन और निश्चिन्त रहना होगा। १८ मेरे लोग शान्ति के स्थानों में निश्चिन्त रहेंगे, और विश्राम के स्थानों में सुख से रहेंगे। १९ और वन के विनाश के समय ओले गिरेंगे, और नगर पूरी रीति से चौपट हो जाएगा। २० क्या ही धन्य हो तुम जो सब जलाशयों के पास बीज बोते, और बैलों और गदहों को स्वतन्त्रता से चराते* हो॥

३३ हाय तुझ नाश करनेवाले पर जो नाश नहीं गया था; हाय तुझ विश्वासघाती पर, जिसके साथ विश्वासघात नहीं किया गया! जब तू नाश कर चुके, तब तू नाश किया जाएगा; और जब तू विश्वासघात कर चुके, तब तेरे साथ विश्वासघात किया जाएगा॥

२ हे यहोवा, हम लोगों पर अनुग्रह कर; हम तेरी ही बाट जोहते हैं। भोर को तू उनका भुजबल, संकट के समय हमारा उद्धारकर्त्ता ठहर। ३ हुल्लड़ सुनते ही देश देश के लोग भाग गए, तेरे उठने पर अन्यजातियां तितर-बितर हुईं। ४ और जैसे टिड्डियां चट करती हैं वैसे ही तुम्हारी लूट चट की जाएगी, और जैसे टिड्डियां टूट पड़ती हैं, वैसे ही वे उस पर टूट पड़ेंगे॥

५ यहोवा महान हुआ है, वह ऊंचे पर रहता है; उस ने सिय्योन को न्याय और धर्म से परिपूर्ण किया है; ६ और उद्धार, बुद्धि और ज्ञान की बहुतायत तेरे दिनों का आधार होगी; यहोवा का भय उसका धन होगा॥

७ देख, उनके शूरवीर बाहर चिल्ला रहे हैं; संधि के दूत बिलक बिलककर रो रहे हैं। ८ राजमार्ग सुनसान पड़े हैं, उन पर बटोही अब नहीं चलते। उस ने वाचा को टाल दिया, नगरों को तुच्छ जाना, उस ने मनुष्य को कुछ न समझा। ९ पृथ्वी विलाप करती और मुर्झा गई है; लबानोन कुम्हला गया और

* मूल में—गदहों के पैर भेजते।

उस पर सियाही छा गई है; शारोन मरुभूमि के समान हो गया; बाशान और कर्मेल में पतझड हो रहा है ।।

१० यहोवा कहता है, अब मैं उठूंगा, मैं अपना प्रताप दिखाऊंगा *; अब मैं महान ठहरूंगा। ११ तुम में सूखी घास का गर्भ रहेगा, तुम से भूसी उत्पन्न होगी; तुम्हारी सांस आग है जो तुम्हें भस्म करेगी। १२ देश देश के लोग फूंके हुए चूने के समान हो जाएंगे, और कटे हुए कटीले पेड़ों की नाईं आग में जलाए जाएंगे ।।

१३ हे दूर दूर के लोगो, सुनो कि मैं ने क्या किया है? और तुम भी जो निकट हो, मेरा पराक्रम जान लो। १४ सिय्योन के पापी थरथरा गए हैं: भक्तिहीनों को कंपकंपी लगी है: हम में से कौन प्रचण्ड आग में रह सकता? हम में से कौन उस आग में बना रह सकता है जो कभी नहीं बुझेगी? १५ जो धर्म से चलता और सीधी बातें बोलता; जो अन्धेर के लाभ से घृणा करता, जो घूस नहीं लेता †; जो खून की बात सुनने से कान बन्द करता, और बुराई देखने से आंख मूंद लेता है। वही ऊंचे स्थानों में निवास करेगा। १६ वह चट्टानों के गढ़ों में शरण लिए हुए रहेगा; उसको रोटी मिलेगी और पानी की घटी कभी न होगी ‡ ।।

१७ तू अपनी आंखों से राजा को उसकी शोभा सहित देखेगा; और लम्बे चौड़े देश पर दृष्टि करेगा। १८ तू भय के दिनों को स्मरण करेगा: लेखा लेनेवाला और कर तौल कर लेनेवाला कहां रहा? गुम्मटों का गिननेवाला कहां रहा? १९ जिनकी कठिन भाषा * तू नहीं समझता, और जिनकी लड़बड़ाती जीभ की बात तू नहीं बूझ सकता उन निर्दय लोगों को तू फिर न देखेगा। २० हमारे पर्व के नगर सिय्योन पर दृष्टि कर! तू अपनी आंखों से यरूशलेम को देखेगा, वह विश्राम का स्थान, और ऐसा तम्बू है जो कभी गिराया नहीं जाएगा, जिसका कोई खूटा कभी उखाड़ा न जाएगा, और न कोई रस्सी कभी टूटेगी। २१ वहां महाप्रतापी यहोवा हमारे लिये रहेगा, वह बहुत बड़ी बड़ी नदियों और नहरों का स्थान होगा, जिस में डांड़वाली नाव न चलेगी और न शोभायमान जहाज उस में होकर जाएगा। २२ क्योंकि यहोवा हमारा न्यायी, यहोवा हमारा हाकिम, यहोवा हमारा राजा है; वही हमारा उद्धार करेगा ।।

२३ तेरी रस्सियां ढीली हो गईं, वे मस्तूल की जड़ को दृढ़ न रख सकीं, और न पाल को तान सकीं ।।

तब बड़ी लूट छीनकर बांटी गई, लंगड़े लोग भी लूट के भागी हुए। २४ कोई निवासी न कहेगा कि मैं रोगी हूं; और जो लोग उस में बसेंगे, उनका अधर्म क्षमा किया जाएगा ।।

३४ हे जाति जाति के लोगो, सुनने के लिये निकट आओ, और हे राज्य राज्य के लोगों, ध्यान से सुनो! पृथ्वी भी, और जो कुछ उस में है, जगत और जो कुछ उस में उत्पन्न होता है, सब सुनो। २ यहोवा सब

* मूल में—अपने को ऊंचा करूंगा।

† मूल में—घूस थामने से अपने हाथ झटक देता।

‡ मूल में—उसका पानी अटल है।

* मूल में—गहिरे होंठवाले लोग।

जातियों पर क्रोध कर रहा है, और उनकी सारी सेना पर उसकी जलजलाहट भड़की हुई है, उस ने उनको सत्यानाश होने, और संहार होने को छोड़ दिया है। ३ उनके मारे हुए फेंक दिये जाएंगे, और उनकी लोथों की दुर्गन्ध उठेगी; उनके लोहू से पहाड़ गल जाएंगे। ४ आकाश के मारे गण जाते रहेंगे और आकाश कागज़ की नाईं लपेटा जाएगा। और जैसे दाखलता वा अंजीर के वृक्ष के पत्ते मुर्झाकर गिर जाते हैं, वैसे ही उसके सारे गण धुंधले होकर जाते रहेंगे।।

५ क्योंकि मेरी तलवार आकाश में पीकर तृप्त हुई है; देखो, वह न्याय करने को एदोम पर, और जिन पर मेरा शाप है उन पर पड़ेगी। ६ यहोवा की तलवार लोहू से भर गई है, वह चर्बी से और भेड़ों के बच्चों और बकरों के लोहू से, और मेढ़ों के गुर्दों की चर्बी से तृप्त हुई है। क्योंकि बोस्रा नगर में यहोवा का एक यज्ञ और एदोम देश में बड़ा संहार हुआ है। ७ उनके संग जंगली सांढ़ और बछड़े और बैल बध होंगे, और उनकी भूमि लोहू से भीग जाएगी और वहां की मिट्टी चर्बी से अघा जाएगी।।

८ क्योंकि पलटा लेने को यहोवा का एक दिन और सिय्योन का मुक़द्दमा चुकाने का एक वर्ष नियुक्त है। ९ और एदोम की नदियां राल से और उसकी मिट्टी गन्धक से बदल जाएगी; उसकी भूमि जलती हुई राल बन जाएगी। १० वह रात-दिन न बुझेगी; उसका धूंआं सदैव उठता रहेगा। युग युग वह उजाड़ पड़ा रहेगा; कोई उस में से होकर कभी न चलेगा। ११ उस में धनेशपक्षी और साही पाए जाएंगे और वह उल्लू और कौवे का बसेरा होगा। वह उस पर गड़बड़ की डोरी और सुनसानी का साहूल * तानेगा। १२ वहां न तो रईस होंगे और न ऐसा कोई होगा जो राज्य करने को ठहराया † जाए; उसके सब हाकिमों का अन्त होगा।।

१३ उसके महलों में कटीले पेड़, गढ़ों में विच्छू पौधे और झाड़ उगेंगे। वह गीदड़ों का वासस्थान और शुतुर्मुर्गों का आंगन हो जाएगा। १४ वहां निर्जल देश के जन्तु सियारों के संग मिलकर बसेंगे और रोंआर जन्तु एक दूसरे को बुलाएंगे; वहां लीलीत नाम जन्तु वासस्थान पाकर चैन से रहेगा।।

१५ वहां उड़नेवाली सांपिन का बिल होगा; वे अण्डे देकर उन्हें सेवेंगी और अपनी छाया में बटोर लेंगी; वहां गिद्ध अपनी साथिन के साथ इकट्ठे रहेंगे। १६ यहोवा की पुस्तक से ढूंढ़कर पढ़ो: इन में से एक भी बात बिना पूरा हुए न रहेगी; कोई बिना जोड़ा न रहेगा। क्योंकि मैं ने अपने मुंह से यह आज्ञा दी है और उसी की आत्मा ने उन्हें इकट्ठा किया है। १७ उसी ने उनके लिये चिट्ठी डाली, उसी ने अपने हाथ से डोरी डालकर उस देश को उनके लिये बांट दिया है; वह सर्वदा उनका ही बना रहेगा और वे पीढ़ी से पीढ़ी तक उस में बसे रहेंगे।।

३५ जंगल और निर्जल देश प्रफुल्लित होंगे, मरुभूमि मगन होकर केसर की नाईं फूलेगी; २ वह अत्यन्त प्रफुल्लित होगी और आनन्द के साथ जयजयकार करेगी। उसकी शोभा

* मूल में—पत्थर। † मूल में—बुलाया।

लबानोन की सी होगी और वह कर्मेल और शारोन के तुल्य तेजोमय हो जाएगी। वे यहोवा की शोभा और हमारे परमेश्वर का तेज देखेंगे॥

३ ढीले हाथों को दृढ़ करो और थरथराते हुए घुटनों को स्थिर करो। ४ घबरानेवालों से कहो, हियाव बान्धो, मत डरो! देखो, तुम्हारा परमेश्वर पलटा लेने और प्रतिफल देने को आ रहा है। हां, परमेश्वर आकर तुम्हारा उद्धार करेगा॥

५ तब अन्धों की आंखें खोली जाएंगी और बहिरों के कान भी खोले जाएंगे; ६ तब लंगड़ा हरिण की सी चौकड़िया भरेगा और गूंगे अपनी जीभ से जयजयकार करेंगे। क्योंकि जंगल में जल के सोते फूट निकलेंगे और मरुभूमि में नदियां बहने लगेंगी; ७ मृगतृष्णा ताल बन जाएगी और सूखी भूमि में सोते फूटेंगे; और जिस स्थान में सियार बैठा करते हैं उस में घास और नरकट और सरकण्डे होंगे॥

८ और वहां एक सड़क अर्थात् राजमार्ग होगा, उसका नाम पवित्र मार्ग होगा; कोई अशुद्ध जन उस पर से न चलने पाएगा; वह तो उन्हीं के लिये रहेगा और उस मार्ग पर जो चलेंगे वह चाहे मूर्ख भी हों तौभी कभी न भटकेंगे। ९ वहां सिंह न होगा और कोई हिंसक जन्तु उस पर न चढ़ेगा न वहां पाया जाएगा, परन्तु छुड़ाए हुए उस में नित चलेंगे। १० और यहोवा के छुड़ाए हुए लोग लौटकर जयजयकार करते हुए सिय्योन में आएंगे; और उनके सिर पर सदा का आनन्द होगा; वे हर्ष और आनन्द पाएंगे और शोक और लम्बी सांस का लेना जाता रहेगा॥

३६ हिजकिय्याह राजा के चौदहवें वर्ष में, अश्शूर के राजा सन्हेरीब ने यहूदा के सब गढ़वाले नगरों पर चढ़ाई करके उनको ले लिया। २ और अश्शूर के राजा ने रबशाके को बड़ी सेना देकर लाकीश से यरूशलेम के पास हिजकिय्याह राजा के विरुद्ध भेज दिया। और वह उत्तरी पोखरे की नाली के पास धोबियों के खेत की सड़क पर जाकर खड़ा हुआ। ३ तब हिल्किय्याह का पुत्र एल्याकीम जो राजघराने के काम पर नियुक्त था, और शेब्ना जो मन्त्री था, और आसाप का पुत्र योआह जो इतिहास का लेखक था, ये तीनों उस से मिलने को बाहर निकल गए॥

४ रबशाके ने उन से कहा, हिजकिय्याह से कहो, महाराजाधिराज अश्शूर का राजा यों कहता है कि तू किसका भरोसा किए बैठा है? ५ मेरा कहना है कि क्या मुंह से बातें बनाना ही युद्ध के लिये पराक्रम और युक्ति है? तू किस पर भरोसा रखता है कि तू ने मुझ से बलवा किया है? ६ सुन, तू तो उस कुचले हुए नरकट अर्थात् मिस्र पर भरोसा रखता है; उस पर यदि कोई टेक लगाए तो वह उसके हाथ में चुभकर छेद कर देगा। मिस्र का राजा फिरौन उन सब के साथ ऐसा ही करता है जो उस पर भरोसा रखते हैं। ७ फिर यदि तू मुझ से कहे, हमारा भरोसा अपने परमेश्वर यहोवा पर है, तो क्या वह वही नहीं है जिसके ऊंचे स्थानों और वेदियों को ढा कर हिजकिय्याह ने यहूदा और यरूशलेम के लोगों से कहा कि तुम इस वेदी के साम्हने दण्डवत् किया करो? ८ इसलिये अब मेरे स्वामी अश्शूर के

राजा के साथ वाचा बान्ध तब मैं तुझे दो हजार घोड़े दूंगा यदि तू उन पर सवार चढ़ा सके। ६ फिर तू रथों और सवारों के लिये मिस्र पर भरोसा रखकर मेरे स्वामी के छोटे से छोटे कर्मचारी * को भी कैसे हरा सकेगा? १० क्या मैं ने यहोवा के बिना कहे इस देश को उजाड़ने के लिये चढ़ाई की है? यहोवा ने मुझ से कहा है, उस देश पर चढ़ाई करके उसे उजाड़ दे॥

११ तब एल्याकीम, शेब्ना और योआह ने रबशाके से कहा, अपने दासों से अरामी भाषा में बात कर क्योंकि हम उसे समझते हैं; हम से यहूदी भाषा में शहरपनाह पर बैठे हुए लोगों के सुनते बातें न कर। १२ रबशाके ने कहा, क्या मेरे स्वामी ने मुझे तेरे स्वामी ही के वा तुम्हारे ही पास ये बातें कहने को भेजा है? क्या उस ने मुझे उन लोगों के पास नहीं भेजा जो शहरपनाह पर बैठे हैं जिन्हें तुम्हारे संग अपनी विष्ठा खाना और अपना मूत्र पीना पड़ेगा?

१३ तब रबशाके ने खड़े होकर यहूदी भाषा में ऊंचे शब्द से कहा, महाराजाधिराज अश्शूर के राजा की बातें सुनो! १४ राजा यों कहता है, हिजकिय्याह तुम को धोखा न दे, क्योंकि वह तुम्हें बचा न सकेगा। १५ ऐसा न हो कि हिजकिय्याह तुम से यह कहकर भुलवा दे कि यहोवा निश्चय हम को बचाएगा कि यह नगर अश्शूर के राजा के वश में न पड़ेगा। १६ हिजकिय्याह की मत सुनो; अश्शूर का राजा कहता है, भेंट भेजकर मुझे प्रसन्न करो † और मेरे पास निकल आओ; तब तुम अपनी अपनी दाखलता और अंजीर के वृक्ष के फल खा पाओगे, और अपने अपने कुण्ड का पानी पिया करोगे; १७ जब तक मैं आकर तुम को ऐसे देश में न ले जाऊं जो तुम्हारे देश के समान अनाज और नये दाखमधु का देश और रोटी और दाख की बारियों का देश है। १८ ऐसा न हो कि हिजकिय्याह यह कहकर तुम को बहकाए कि यहोवा हम को बचाएगा। क्या और जातियों के देवताओं ने अपने अपने देश को अश्शूर के राजा के हाथ से बचाया है? १९ हमात और अर्पाद के देवता कहां रहे? सपर्वैम के देवता कहां रहे? क्या उन्हों ने शोमरोन को मेरे हाथ से बचाया? २० देश देश के सब देवताओं में से ऐसा कौन है जिस ने अपने देश को मेरे हाथ से बचाया हो? फिर क्या यहोवा यरूशलेम को मेरे हाथ से बचाएगा?

२१ परन्तु वे चुप रहे और उसके उत्तर में एक बात भी न कही, क्योंकि राजा की ऐसी आज्ञा थी कि उसको उत्तर न देना। २२ तब हिल्किय्याह का पुत्र एल्याकीम जो राजघराने के काम पर नियुक्त था और शेब्ना जो मन्त्री था और आसाप का पुत्र योआह जो इतिहास का लेखक था, इन्हों ने हिजकिय्याह के पास वस्त्र फाड़े हुए जाकर रबशाके की बातें कह सुनाईं॥

३७ जब हिजकिय्याह राजा ने यह सुना, तब वह अपने वस्त्र फाड़ और टाट ओढ़कर यहोवा के भवन में गया। २ और उस ने एल्याकीम को जो राजघराने के काम पर नियुक्त था

* मूल में—कर्मचारियों में से एक अधिपति का भी मुंह फेरके।

† मूल में—मेरे साथ आशीर्वाद करो।

और शेब्ना मन्त्री को और याजकों के पुरनियों को जो सब टाट ओढ़े हुए थे, आमोस के पुत्र यशायाह नबी के पास भेज दिया। ३ उन्हों ने उस से कहा, हिजकिय्याह यों कहता है कि आज का दिन संकट और उलहने और निन्दा का दिन है, बच्चे जन्मने पर हुए पर जच्चा को जनने का बल न रहा। ४ सम्भव है कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने रबशाके की बातें सुनीं जिसे उसके स्वामी अश्शूर के राजा ने जीवते परमेश्वर की निन्दा करने को भेजा है, और जो बातें तेरे परमेश्वर यहोवा ने सुनी हैं उन्हें दपटे; सो तू इन बचे हुओं के लिये जो रह गए हैं, प्रार्थना कर* ।।

५ जब हिजकिय्याह राजा के कर्मचारी यशायाह के पास आए। ६ तब यशायाह ने उन से कहा, अपने स्वामी से कहो, यहोवा यों कहता है कि जो वचन तू ने सुने हैं जिनके द्वारा अश्शूर के राजा के जनों ने मेरी निन्दा की है, उनके कारण मत डर। ७ सुन, मैं उसके मन में प्रेरणा करूंगा जिस से वह कुछ समाचार सुनकर अपने देश को लौट जाए; और मैं उसको उसी के देश में तलवार से मरवा डालूंगा ।।

८ तब रबशाके ने लौटकर अश्शूर के राजा को लिब्ना नगर से युद्ध करते पाया; क्योंकि उस ने सुना था कि वह लाकीश के पास से उठ गया है। ९ उस ने कूश के राजा तिर्हाका के विषय यह सुना कि वह उस से लड़ने को निकला है। तब उस ने हिजकिय्याह के पास दूतों को यह कहकर भेजा १० कि तुम यहूदा के राजा हिजकिय्याह से यों कहना, तेरा परमेश्वर जिस पर तू भरोसा करता है, यह कहकर तुझे धोखा न देने पाए कि यरूशलेम अश्शूर के राजा के वश में न पड़ेगा। ११ देख, तू ने सुना है कि अश्शूर के राजाओं ने सब देशों से कैसा व्यवहार किया कि उन्हें सत्यानाश ही कर दिया। १२ फिर क्या तू बच जाएगा? गोज़ान और हारान और रेसेप में रहनेवाली जिन जातियों को और तलस्सार में रहनेवाले एदेनी लोगों को मेरे पुरखाओं ने नाश किया, क्या उनके देवताओं ने उन्हें बचा लिया? १३ हमात का राजा, अर्पाद का राजा, सपर्वैम नगर का राजा, और हेना और इव्वा के राजा, ये सब कहां गए?

१४ इस पत्री को हिजकिय्याह ने दूतों के हाथ से लेकर पढ़ा; तब उस ने यहोवा के भवन में जाकर उस पत्री को यहोवा के साम्हने फैला दिया। १५ और यहोवा से यह प्रार्थना की, १६ हे सेनाओं के यहोवा, हे करूबों पर विराजमान इस्राएल के परमेश्वर, पृथ्वी के सब राज्यों के ऊपर केवल तू ही परमेश्वर है; आकाश और पृथ्वी को तू ही ने बनाया है। १७ हे यहोवा, कान लगाकर सुन; यहोवा आंख खोलकर देख; और सन्हेरीब के सब वचनों को सुन ले, जिस ने जीवते परमेश्वर की निन्दा करने को लिख भेजा है। १८ हे यहोवा, सच तो है कि अश्शूर के राजाओं ने सब जातियों के देशों को* उजाड़ा है १९ और उनके देवताओं को आग में झोंका है; क्योंकि वे ईश्वर न थे, वे केवल मनुष्यों की

* मूल में—प्रार्थना उठा।

* मूल में—सब देशों और उनकी भूमि को।

कारीगरी, काठ और पत्थर ही थे; इस कारण वे उनको नाश कर सके। २० अब हे हमारे परमेश्वर यहोवा, तू हमें उसके हाथ से बचा जिस से पृथ्वी के राज्य राज्य के लोग जान लें कि केवल तू ही यहोवा है ।।

२१ तब आमोस के पुत्र यशायाह ने हिजकिय्याह के पास यह कहला भेजा, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, तू ने जो अश्शूर के राजा सन्हेरीब के विषय में मुझ से प्रार्थना की है, २२ उसके विषय यहोवा ने यह वचन कहा है, सिय्योन की कुमारी कन्या तुझे तुच्छ जानती है और ठट्ठों में उड़ाती है; यरूशलेम की पुत्री तुझ पर सिर हिलाती है ।।

२३ तू ने किस की नामधराई और निन्दा की है? और तू जो बड़ा बोल बोला और घमण्ड किया है, * वह किस के विरुद्ध किया है? इस्राएल के पवित्र के विरुद्ध! २४ अपने कर्मचारियों के द्वारा तू ने प्रभु की निन्दा करके कहा है कि बहुत से रथ लेकर मैं पर्वतों की चोटियों पर वरन लबानोन के बीच तक चढ़ आया हूं; मैं उसके ऊंचे ऊंचे देवदारों और अच्छे अच्छे सनौबरों को काट डालूंगा और उसके दूर दूर के ऊंचे स्थानों में और उसके वन की फलदाई बारियों में प्रवेश करूंगा। २५ मैं ने खुदवाकर पानी पिया और मिस्र की नहरों में पांव धरते ही उन्हें सुखा दिया। २६ क्या तू ने नहीं सुना कि प्राचीनकाल से मैं ने यही ठाना और पूर्वकाल से इसकी तैयारी की थी? इसलिये अब मैं ने यह पूरा भी किया है कि तू गढ़वाले नगरों को खण्डहर ही खण्डहर कर दे। २७ इसी कारण उनके रहनेवालों का बल घंट गया और वे विस्मित और लज्जित हुए: वे मैदान के छोटे छोटे पेड़ों और हरी घास और छत पर की घास और ऐसे अनाज * के समान हो गए जो बढ़ने से पहिले ही सूख जाता है ।।

२८ मैं तो तेरा बैठना, कूच करना और लौट आना जानता हूं; और यह भी कि तू मुझ पर अपना क्रोध भड़काता है। २९ इस कारण कि तू मुझ पर अपना क्रोध भड़काता और तेरे अभिमान की बातें मेरे कानों में पड़ी हैं, मैं तेरी नाक में नकेल डालकर और तेरे मुंह में अपनी लगाम लगाकर जिस मार्ग से तू आया है उसी मार्ग से तुझे लौटा दूंगा ।।

३० और तेरे लिये यह चिन्ह होगा कि इस वर्ष तो तुम उसे खाओगे जो आप से आप उगे, और दूसरे वर्ष वह जो उस से उत्पन्न हो, और तीसरे वर्ष बीज बोकर उसे लवने पाओगे और दाख की बारियां लगाने और उनका फल खाने पाओगे। ३१ और यहूदा के घराने के बचे हुए लोग फिर जड़ † पकड़ेंगे और फूलें-फलेंगे ‡; ३२ क्योंकि यरूशलेम से बचे हुए और सिय्योन पर्वत से भागे हुए लोग निकलेंगे। सेनाओं का यहोवा अपनी जलन के कारण यह काम करेगा § ।।

३३ इसलिये यहोवा अश्शूर के राजा के विषय यों कहता है कि वह इस नगर

* मूल में—अपनी आंखें ऊपर की ओर उठाईं।

* मूल में—खेत।

† मूल में—नीचे की ओर जड़।

‡ मूल में—ऊपर की ओर फलेंगे।

§ मूल में—सेनाओं के यहोवा की जलन यह करेगी।

में प्रवेश करने, वरन इस पर एक तीर भी मारने न पाएगा; और न वह ढाल लेकर इसके साम्हने आने वा इसके विरुद्ध दमदमा बान्धने पाएगा। ३४ जिस मार्ग से वह आया है उसी से वह लौट भी जाएगा और इस नगर में प्रवेश न करने पाएगा, यहोवा की यही वाणी है। ३५ क्योंकि मैं अपने निमित्त और अपने दास दाऊद के निमित्त, इस नगर की रक्षा करके उसे बचाऊंगा ।।

३६ तब यहोवा के दूत ने निकलकर अश्शूरियों की छावनी में एक लाख पचासी हजार पुरुषों को मारा; और भोर को जब लोग सवेरे उठे तब क्या देखा कि लोथ ही लोथ पड़ी हैं। ३७ तब अश्शूर का राजा सन्हेरीब चल दिया और लौटकर नीनवे में रहने लगा। ३८ वहां वह अपने देवता निस्रोक के मन्दिर में दण्डवत् कर रहा था कि इतने में उसके पुत्र अद्रम्मेलेक और शरेसेर ने उसको तलवार से मारा और अरारात देश में भाग गए। और उसका पुत्र एसर्हद्दोन उसके स्थान पर राज्य करने लगा ।।

३८ उन दिनों में हिजकिय्याह ऐसा रोगी हुआ कि वह मरने पर था। और आमोस के पुत्र यशायाह नबी ने उसके पास जाकर कहा, यहोवा यों कहता है, अपने घराने के विषय जो आज्ञा देनी हो वह दे, क्योंकि तू न बचेगा मर ही जाएगा। २ तब हिजकिय्याह ने भीत की ओर मुंह फेरकर यहोवा से प्रार्थना करके कहा; ३ हे यहोवा, मैं बिनती करता हूं, स्मरण कर कि मैं सच्चाई और खरे मन से अपने को तेरे सम्मुख जानकर * चलता आया हूं और जो तेरी दृष्टि में उचित था वही करता आया हूं। और हिजकिय्याह बिलक बिलककर रोने लगा। ४ तब यहोवा का यह वचन यशायाह के पास पहुंचा, ५ जाकर हिजकिय्याह से कह कि तेरे मूलपुरुष दाऊद का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी और तेरे आंसू देखे हैं; सुन, मैं तेरी आयु पन्द्रह वर्ष और बढ़ा दूंगा। ६ अश्शूर के राजा के हाथ से मैं तेरी और इस नगर की रक्षा करके बचाऊंगा ।।

७ यहोवा अपने इस कहे हुए वचन को पूरा करेगा, ८ और यहोवा की ओर से इस बात का तेरे लिये यह चिन्ह होगा कि धूप की छाया जो आहाज की धूपघड़ी में ढल गई है, मैं दस अंश पीछे की ओर लौटा दूंगा। सो वह छाया जो दस अंश ढल चुकी थी लौट गई ।।

९ यहूदा के राजा हिजकिय्याह का लेख जो उस ने लिखा जब वह रोगी होकर चंगा हो गया था, वह यह है :

१० मैं ने कहा, अपनी आयु के बीच † ही
मैं अधोलोक के फाटकों में प्रवेश करूंगा;
क्योंकि मेरी शेष आयु हर ली गई है।
११ मैं ने कहा, मैं याह को जीवितों की
भूमि में फिर न देखने पाऊंगा;
इस लोक के निवासियों को मैं फिर
न देखूंगा।
१२ मेरा घर ‡ चरवाहे के तम्बू की नाईं
उठा लिया गया है;

---

* मूल में—तेरे साम्हने।
† मूल में—मौन में।
‡ वा मेरी आयु।

मैं ने जोलाहे की नाईं अपने जीवन
को लपेट दिया है; वह मुझे तांत
से काट लेगा;
एक ही दिन में * तू मेरा अन्त कर
डालेगा।
१३ मैं भोर तक अपने मन को शान्त
करता रहा;
वह सिंह की नाईं मेरी सब हड्डियों
को तोड़ता है;
एक ही दिन में तू मेरा अन्त कर
डालता है॥
१४ मैं सूपाबेने वा सारस की नाईं च्यूं
च्यूं करता,
मैं पिण्डुक की नाईं विलाप करता
हूं। मेरी आंखें ऊपर देखते देखते
पत्थरा गई हैं।
हे यहोवा, मुझ पर अन्धेर हो रहा
है; तू मेरा सहारा हो!
१५ मैं क्या कहूं? उसी ने मुझ से
प्रतिज्ञा की और पूरा भी किया
है।
मैं जीवन भर कड़ुआहट के साथ
धीरे धीरे चलता रहूंगा॥
१६ हे प्रभु, इन्हीं बातों से लोग जीवित हैं,
और इन सभों से मेरी आत्मा को
जीवन मिलता है।
तू मुझे चंगा कर और मुझे जीवित
रख!
१७ देख, शान्ति ही के लिये मुझे बड़ी
कड़ुआहट मिली;
परन्तु तू ने स्नेह करके मुझे विनाश
के गड़हे से निकाला है,
क्योंकि मेरे सब पापों को तू ने
अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया है।

* मूल में—दिन से रात लों।

१८ क्योंकि अधोलोक तेरा धन्यवाद नहीं
कर सकता, न मृत्यु तेरी स्तुति
कर सकती है;
जो कबर में पड़ें वे तेरी सच्चाई
की आशा नहीं रख सकते
१९ जीवित*, हां जीवित ही तेरा धन्यवाद
करता है, जैसा मैं आज कर रहा
हूं;
पिता तेरी सच्चाई का समाचार
पुत्रों को देता है॥
२० यहोवा मेरा उद्धार करेगा,
इसलिये हम जीवन भर यहोवा के
भवन में
तारवाले बाजों पर अपने † रचे हुए
गीत गाते रहेंगे॥

२१ यशायाह ने कहा था, अंजीरों की एक टिकिया बनाकर हिजकिय्याह के फोड़े पर बान्धी जाए, तब वह बचेगा। २२ और हिजकिय्याह ने पूछा था कि इसका क्या चिन्ह है कि मैं यहोवा के भवन को फिर जाने पाऊंगा?

३९ उस समय बलदान का पुत्र मरोदक बलदान, जो बाबुल का राजा था, उस ने हिजकिय्याह के रोगी होने और फिर चंगे हो जाने की चर्चा सुनकर उसके पास पत्री और भेंट भेजी। २ इन से हिजकिय्याह ने प्रसन्न होकर अपने अनमोल पदार्थों का भण्डार और चान्दी, सोना, सुगन्ध द्रव्य, उत्तम तेल और अपने हथियारों का सब घर और अपने भण्डारों में जो जो वस्तुएं थीं, वे सब उनको दिखलाईं। हिजकिय्याह के भवन और राज्य भर में कोई ऐसी

* मूल में—जीवता जीवता।
† मूल में—मेरे।

वस्तु नहीं रह गई जो उस ने उन्हें न दिखाई हो। ३ तब यशायाह नबी ने हिजकिय्याह राजा के पास जाकर पूछा, वे मनुष्य क्या कह गए? और वे कहां से तेरे पास आए थे? हिजकिय्याह ने कहा, वे तो दूर देश से अर्थात् बाबुल से मेरे पास आए थे। ४ फिर उस ने पूछा, तेरे भवन में उन्हों ने क्या क्या देखा है? हिजकिय्याह ने कहा, जो कुछ मेरे भवन में है वह सब उन्हों ने देखा है; मेरे भण्डारों में कोई ऐसी वस्तु नहीं जो मैं ने उन्हें न दिखाई हो॥

५ तब यशायाह ने हिजकिय्याह से कहा, सेनाओं के यहोवा का यह वचन सुन ले: ६ ऐसे दिन आनेवाले हैं, जिन में जो कुछ तेरे भवन में है और जो कुछ आज के दिन तक तेरे पुरखाओं का रखा हुआ तेरे भण्डारों में है, वह सब बाबुल को उठ जाएगा; यहोवा यह कहता है कि कोई वस्तु न बचेगी। ७ और जो पुत्र तेरे वंश में उत्पन्न हों, उन में से भी कितनों को वे बंधुआई में ले जाएंगे; और वे खोजे बनकर बाबुल के राजभवन में रहेंगे। ८ हिजकिय्याह ने यशायाह से कहा, यहोवा का वचन जो तू ने कहा है वह भला ही है। फिर उस ने कहा, मेरे दिनों में तो शान्ति और सच्चाई बनी रहेगी॥

४० तुम्हारा परमेश्वर यह कहता है, मेरी प्रजा को शान्ति दो, शान्ति! २ यरूशलेम से शान्ति की बातें कहो; और उस से पुकारकर कहो कि तेरी कठिन सेवा पूरी हुई है, तेरे अधर्म का दण्ड अंगीकार किया गया है: यहोवा के हाथ से तू अपने सब पापों का दूना दण्ड पा चुका है॥

३ किसी की पुकार सुनाई देती है, जंगल में यहोवा का मार्ग सुधारो, हमारे परमेश्वर के लिये अराबा में एक राजमार्ग चौरस करो। ४ हर एक तराई भर दी जाए और हर एक पहाड़ और पहाड़ी गिरा दी जाए; जो टेढ़ा है वह सीधा और जो ऊंचा-नीचा है वह चौरस किया जाए। ५ तब यहोवा का तेज प्रगट होगा और सब प्राणी उसको एक संग देखेंगे; क्योंकि यहोवा ने आप ही ऐसा कहा है॥

६ बोलनेवाले का वचन सुनाई दिया, प्रचार कर! मैं ने कहा, मैं क्या प्रचार करूं? सब प्राणी घास हैं, उनकी शोभा मैदान के फूल के समान है। ७ जब यहोवा की सांस उस पर चलती है, तब घास सूख जाती है, और फूल मुर्झा जाता है; निःसन्देह प्रजा घास है। ८ घास तो सूख जाती, और फूल मुर्झा जाता है; परन्तु हमारे परमेश्वर का वचन सदैव अटल रहेगा॥

९ हे सिय्योन को शुभ समाचार सुनानेवाली, ऊंचे पहाड़ पर चढ़ जा; हे यरूशलेम को शुभ समाचार सुनानेवाली, बहुत ऊंचे शब्द से सुना, ऊंचे शब्द से सुना, मत डर; यहूदा के नगरों से कह, अपने परमेश्वर को देखो! १० देखो, प्रभु यहोवा सामर्थ दिखाता हुआ रहा है, वह अपने भुजबल से प्रभुता करेगा*; देखो, जो मजदूरी देने की है वह उसके पास है और जो बदला देने का है वह उसके हाथ में है। ११ वह चरवाहे की नाईं अपने झुण्ड को चराएगा, वह भेड़ों के बच्चों को अंकवार में लिए

* मूल में—उसकी भुजा उसके लिये प्रभुता करेगी।

रहेगा और दूध पिलानेवालियों को धीरे-धीरे ले चलेगा ।।

१२ किस ने महासागर को चुल्लू से मापा और किस के बित्ते से आकाश का नाप हुआ, किस ने पृथ्वी की मिट्टी को नपवे में भरा और पहाड़ों को तराजू में और पहाड़ियों को कांटे में तौला है? १३ किस ने यहोवा की आत्मा को मार्ग बताया वा उसका मन्त्री होकर उसको ज्ञान सिखाया है? १४ उस ने किस से सम्मति ली और किस ने उसे समझाकर न्याय का पथ बता दिया और ज्ञान सिखाकर बुद्धि का मार्ग जता दिया है? १५ देखो, जातियां तो डोल की एक बून्द वा पलड़ों पर की धूलि के तुल्य ठहरीं; देखो, वह द्वीपों को धूलि के किनकों सरीखे उठाता है। १६ लबानोन भी ईंधन के लिये थोड़ा होगा और उस में के जीव-जन्तु होमबलि के लिये बस न होंगे। १७ सारी जातियां उसके साम्हने कुछ नहीं हैं, वे उसकी दृष्टि में लेश और शून्य से भी घट ठहरीं हैं ।।

१८ तुम ईश्वर को किस के समान बताओगे और उसकी उपमा किस से दोगे? १९ मूरत! कारीगर ढालता है, सोनार उसको सोने से मढ़ता और उसके लिये चान्दी की सांकलें ढालकर बनाता है। २० जो कंगाल इतना अर्पण नहीं कर सकता, वह ऐसा वृक्ष चुन लेता है जो न घुने; तब एक निपुण कारीगर ढूंढ़कर मूरत खुदवाता और उसे ऐसा स्थिर कराता है कि वह हिल न सके ।।

२१ क्या तुम नहीं जानते? क्या तुम ने नहीं सुना? क्या तुम को आरम्भ ही से नहीं बताया गया? क्या तुम ने पृथ्वी की नेव पड़ने के समय ही से विचार नहीं किया? २२ यह वह है जो पृथ्वी के घेरे के ऊपर आकाशमण्डल पर विराजमान है, और पृथ्वी के रहनेवाले टिड्डी के तुल्य हैं; जो आकाश को मलमल की नाईं फैलाता और ऐसा तान देता है जैसा रहने के लिये तम्बू ताना जाता है; २३ जो बड़े बड़े हाकिमों को तुच्छ कर देता है, और पृथ्वी के अधिकारियों को शून्य के समान कर देता है ।।

२४ वे रोपे ही जाते, वे बोए ही जाते, उनके ठूंठ भूमि में जड़ ही पकड़ पाते कि वह उन पर पवन बहाता और वे सूख जाते, और आंधी उन्हें भूसे की नाईं उड़ा ले जाती है ।।

२५ सो तुम मुझे किस के समान बताओगे कि मैं उसके तुल्य ठहरूं? उस पवित्र का यही वचन है। २६ अपनी आंखें ऊपर उठाकर देखो, किस ने इनको सिरजा? वह इन गणों को गिन गिनकर निकालता, उन सब को नाम ले लेकर बुलाता है? वह ऐसा सामर्थी और अत्यन्त बली है कि उन में के कोई बिना आए नहीं रहता ।।

२७ हे याकूब, तू क्यों कहता है, हे इस्राएल तू क्यों बोलता है, मेरा मार्ग यहोवा से छिपा हुआ है, मेरा परमेश्वर मेरे न्याय की कुछ चिन्ता नहीं करता *? २८ क्या तुम नहीं जानते? क्या तुम ने नहीं सुना? यहोवा जो सनातन परमेश्वर और पृथ्वी भर का सिरजनहार है, वह न थकता, न श्रमित होता है, उसकी बुद्धि अगम है। २९ वह थके हुए को बल देता है और शक्तिहीन को बहुत सामर्थ देता है। ३० तरुण तो थकते और

* मूल में—मेरा न्याय मेरे परमेश्वर के पास होकर निकल गया।

श्रमित हो जाते हैं, और जवान ठोकर खाकर गिरते हैं; ३१ परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएंगे, वे उकाबों की नाईं उड़ेंगे *, वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और थकित न होंगे ।।

४१ हे द्वीपो, मेरे साम्हने चुप रहो; देश देश के लोग नया बल प्राप्त करें; वे समीप आकर बोलें; हम आपस में न्याय के लिये एक दूसरे के समीप आएं ।।

२ किस ने पूर्व दिशा से एक को उभारा है, जिसे वह धर्म के साथ अपने पांव के पास बुलाता है? वह जातियों को उसके वश में कर देता और उसको राजाओं पर अधिकारी ठहराता है; उसकी तलवार वह उन्हें धूल के समान, और उसके धनुष से उड़ाए हुए भूसे के समान कर देता है। ३ वह उन्हें खदेड़ता और ऐसे मार्ग से, जिस पर वह कभी न चला था, बिना रोक टोक आगे बढ़ता है। ४ किस ने यह काम किया है और आदि से पीढ़ियों को बुलाता आया है? मैं यहोवा, जो सब से पहिला, और अन्त के समय रहूंगा; मैं वही हूं ।।

५ द्वीप देखकर डरते हैं, पृथ्वी के दूर देश कांप उठे और निकट आ गए हैं। ६ वे एक दूसरे की सहायता करते हैं और उन में से एक अपने भाई से कहता है, हियाव बान्ध! ७ बढ़ई सोनार को और हथौड़े से बराबर करनेवाला निहाई पर मारनेवाले को यह कहकर हियाव बन्धा रहा है, जोड़ तो अच्छी है, सो वह कील ठोंक ठोंककर उसको ऐसा दृढ़ करता है कि वह स्थिर रहे ।।

८ हे मेरे दास इस्राएल, हे मेरे चुने हुए याकूब, हे मेरे प्रेमी इब्राहीम के वंश; ९ तू जिसे मैं ने पृथ्वी के दूर दूर देशों से लिया और पृथ्वी की छोर से बुलाकर यह कहा, तू मेरा दास है, मैं ने तुझे चुना है और तजा नहीं; १० मत डर, क्योंकि मैं तेरे संग हूं, इधर उधर मत ताक, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूं; मैं तुझे दृढ़ करूंगा और तेरी सहायता करूंगा, अपने धर्ममय दहिने हाथ से मैं तुझे सम्हाले रहूंगा ।।

११ देख, जो तुझ से क्रोधित हैं वे सब लज्जित होंगे; जो तुझ से झगड़ते हैं उनके मुंह काले होंगे और वे नाश होकर मिट जाएंगे। १२ जो तुझ से लड़ते हैं उन्हें ढूंढ़ने पर भी तू न पाएगा; जो तुझ से युद्ध करते हैं वे नाश होकर मिट जाएंगे। १३ क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा, तेरा दहिना हाथ पकड़कर कहूंगा, मत डर, मैं तेरी सहायता करूंगा ।।

१४ हे कीड़े सरीखे याकूब, हे इस्राएल के मनुष्यो, मत डरो! यहोवा की यह वाणी है, मैं तेरी सहायता करूंगा; इस्राएल का पवित्र तेरा छुड़ानेवाला है। १५ देख, मैं ने तुझे छूरीवाले दांवने का एक नया और चोखा यन्त्र ठहराया है; तू पहाड़ों को दांय दांयकर सूक्ष्म धूलि कर देगा, और पहाड़ियों को तू भूसे के समान कर देगा। १६ तू उनको फटकेगा, और पवन उन्हें उड़ा ले जाएगी, और आंधी उन्हें तितर-बितर कर देगी। परन्तु तू यहोवा के कारण मगन होगा; और इस्राएल के पवित्र के कारण बड़ाई मारेगा ।।

१७ जब दीन और दरिद्र लोग जल ढूंढ़ने पर भी न पायें और उनका तालू

* मूल में—चढ़ेंगे।

प्यास के मारे सूख जाये; मैं यहोवा उनकी बिनती सुनूंगा, मैं इस्राएल का परमेश्वर उनको त्याग न दूंगा। १८ मैं मुण्डे टीलों से भी नदियां और मैदानों के बीच में सोते बहाऊंगा *; मैं जंगल को ताल और निर्जल देश को सोते ही सोते कर दूंगा। १९ मैं जंगल में देवदार, बबूल, मेंहदी, और जलपाई उगाऊंगा †; मैं अराबा में सनौबर, तिधार वृक्ष, और सीधा सनौबर इकट्ठे लगाऊंगा; २० जिस से लोग देखकर जान लें, और सोचकर पूरी रीति से समझ लें कि यह यहोवा के हाथ का किया हुआ और इस्राएल के पवित्र का सृजा हुआ है॥

२१ यहोवा कहता है, अपना मुक़द्दमा लड़ो; याकूब का राजा कहता है, अपने प्रमाण दो। २२ वे उन्हें देकर हम को बताएं कि भविष्य में क्या होगा? पूर्वकाल की घटनाएं बताओ कि आदि में क्या क्या हुआ, जिस से हम उन्हें सोचकर जान सकें कि भविष्य में उनका क्या फल होगा; वा होनेवाली घटनाएं हम को सुना दो। २३ भविष्य में जो कुछ घटेगा वह बताओ, तब हम मानेंगे कि तुम ईश्वर हो; भला वा बुरा, कुछ तो करो कि हम देखकर एक चकित हो जाएं। २४ देखो, तुम कुछ नहीं हो, तुम से कुछ नहीं बनता; जो कोई तुम्हें चाहता है वह घृणित है॥

२५ मैं ने एक को उत्तर दिशा से उभारा, वह आ भी गया है; वह पूर्व दिशा से है और मेरा नाम लेता है; जैसा कुम्हार गिली मिट्टी को लताड़ता है, वैसा ही वह हाकिमों को कीच के समान लताड़ देगा *। २६ किस ने इस बात को पहिले से बताया था, जिस से हम यह जानते? किस ने पूर्वकाल से यह प्रगट किया जिस से हम कहें कि वह सच्चा है? कोई भी बतानेवाला नहीं, कोई भी सुनानेवाला नहीं, तुम्हारी बातों का कोई भी सुननेवाला नहीं है। २७ मैं ही ने पहिले सिय्योन से कहा, देख, उन्हें देख, और मैं ने यरूशलेम को एक शुभ समाचार देनेवाला भेजा। २८ मैं ने देखने पर भी किसी को न पाया; उन में कोई मन्त्री नहीं जो मेरे पूछने पर कुछ उत्तर दे सके। २९ सुनो, उन सभों के काम अनर्थ हैं; उनके काम तुच्छ हैं, और उनकी ढली हुई मूर्त्तियां वायु और मिथ्या हैं॥

४२ मेरे दास को देखो जिसे मैं संभाले हूं, मेरे चुने हुए को, जिस से मेरा जी प्रसन्न है; मैं ने उस पर अपना आत्मा रखा है, वह अन्यजातियों के लिये न्याय प्रगट करेगा। २ न वह चिल्लाएगा और न ऊंचे शब्द से बोलेगा, न सड़क में अपनी वाणी सुनायेगा। ३ कुचले हुए नरकट को वह न तोड़ेगा और न टिमटिमाती बत्ती को बुझाएगा; वह सच्चाई से न्याय चुकाएगा। ४ वह न थकेगा और न हियाव छोड़ेगा जब तक वह न्याय को पृथ्वी पर स्थिर न करे; और द्वीपों के लोग उसकी व्यवस्था की बाट जोहेंगे॥

५ ईश्वर जो आकाश का सृजने और ताननेवाला है, जो उपज सहित पृथ्वी का फैलानेवाला और उस पर के लोगों को सांस और उस पर के चलनेवालों

---

* मूल में—खोलूंगा। † मूल में—दूंगा।

* मूल में—को आएगा।

को आत्मा देनेवाला यहोवा है, वह यों कहता है: ६ मुझ यहोवा ने तुझ को धर्म से बुला लिया है, मैं तेरा हाथ थाम कर तेरी रक्षा करूंगा; मैं तुझे प्रजा के लिये वाचा और जातियों के लिये प्रकाश ठहराऊंगा; कि तू अन्धों की आंखें खोले, ७ बंधुओं को बन्दीगृह से निकाले और जो अन्धियारे में बठे हैं उनको कालकोठरी से निकाले। ८ मैं यहोवा हूं, मेरा नाम यही है; अपनी महिमा मैं दूसरे को न दूंगा और जो स्तुति मेरे योग्य है वह खुदी हुई मूरतों को न दूंगा। ९ देखो, पहिली बातें तो हो चुकी हैं, अब मैं नई बातें बताता हूं; उनके होने से पहिले मैं तुम को सुनाता हूं ।।

१० हे समुद्र पर चलनेवालो*, हे समुद्र के सब रहनेवालो, हे द्वीपो, तुम सब अपने रहनेवालो समेत यहोवा के लिये नया गीत गाओ और पृथ्वी की छोर से उसकी स्तुति करो। ११ जंगल और उस में की बस्तियां और केदार के बसे हुए गांव जयजयकार करें; सेला के रहनेवाले जयजयकार करें, वे पहाड़ों की चोटियों पर से ऊंचे शब्द से ललकारें। १२ वे यहोवा की महिमा प्रगट करें और द्वीपों में उसका गुणानुवाद करें। १३ यहोवा वीर की नाईं निकलेगा और योद्धा के समान अपनी जलन भड़काएगा, वह ऊंचे शब्द से ललकारेगा और अपने शत्रुओं पर जयवन्त होगा ।।

१४ बहुत काल से तो मैं चुप रहा और मौन साधे अपने को रोकता रहा; परन्तु अब जच्चा की नाईं चिल्लाऊंगा, मैं हांफ हांफकर सांस भरूंगा। १५ पहाड़ों और पहाड़ियों को मैं सुखा डालूंगा और उनकी सब हरियाली झुलसा दूंगा; मैं नदियों को द्वीप कर दूंगा और तालों को सुखा डालूंगा। १६ मैं अन्धों को एक मार्ग से ले चलूंगा जिसे वे नहीं जानते और उनको ऐसे पथों से चलाऊंगा जिन्हें वे नहीं जानते। उनके आगे मैं अन्धियारे को उजियाला करूंगा और टेढ़े मार्गो को सीधा करूंगा। मैं ऐसे ऐसे काम करूंगा और उनको न त्यागूंगा। १७ जो लोग खुदी हुई मूरतों पर भरोसा रखते और ढली हुई मूरतों से कहते हैं कि तुम हमारे ईश्वर हो, उनको पीछे हटना और अत्यन्त लज्जित होना पड़ेगा ।।

१८ हे बहिरो, सुनो; हे अन्धो, आंख खोलो कि तुम देख सको! १९ मेरे दास के सिवाय कौन अन्धा है? और मेरे भेजे हुए दूत के तुल्य कौन बहिरा है? मेरे मित्र के समान कौन अन्धा या यहोवा के दास के तुल्य अन्धा कौन है? २० तू बहुत सी बातों पर दृष्टि करता है परन्तु उन्हें देखता नहीं है; कान तो खुले हैं परन्तु सुनता नहीं है ।।

२१ यहोवा को अपनी धार्मिकता के निमित्त ही यह भाया है कि व्यवस्था की बड़ाई अधिक करे। २२ परन्तु ये लोग लुट गए हैं, ये सब के सब गड़हियों में फंसे हुए और कालकोठरियों में बन्द किए हुए हैं; ये पकड़े गए और कोई इन्हें नहीं छुड़ाता; ये लुट गए और कोई आज्ञा नहीं देता कि फेर दो। २३ तुम में से कौन इस पर कान लगाएगा? कौन ध्यान धरके होनहार के लिये सुनेगा? २४ किस ने याकूब को लुटवाया और इस्राएल को लुटेरों के वश में कर दिया? क्या यहोवा ने यह नहीं किया जिसके विरुद्ध हम ने

* मूल में—उतरनेवालो।

पाप किया, जिसके मार्गों पर उन्हों ने चलना न चाहा और न उसकी व्यवस्था को माना? २५ इस कारण उस पर उस ने अपने क्रोध की आग भड़काई * और युद्ध का बल चलाया; और यद्यपि आग उसके चारों ओर लग गई, तौभी वह न समझा; वह जल भी गया, तौभी न चेता ।।

४३ हे इस्राएल तेरा रचनेवाला, और हे याकूब, तेरा सृजनहार यहोवा अब यों कहता है, मत डर, क्योंकि मैं ने तुझे छुड़ा लिया है; मैं ने तुझे नाम लेकर बुलाया है, तू मेरा ही है। २ जब तू जल में होकर जाए, मैं तेरे संग संग रहूंगा और जब तू नदियों में होकर चले, तब वे तुझे न डुबा सकेंगी; जब तू आग में चले तब तुझे आंच न लगेगी, और उसकी लौ तुझे न जला सकेगी। ३ क्योंकि मैं यहोवा तेरा परमेश्वर हूं, इस्राएल का पवित्र मैं तेरा उद्धारकर्त्ता हूं। तेरी छुड़ौती में मैं मिस्र को और तेरी सन्ती कूश और सबा को देता हूं। ४ मेरी दृष्टि में तू अनमोल और प्रतिष्ठित ठहरा है और मैं तुझ से प्रेम रखता हूं, इस कारण मैं तेरी सन्ती मनुष्यों को और तेरे प्राण के बदले में राज्य राज्य के लोगों को दे दूंगा। ५ मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूं; मैं तेरे वंश को पूर्व से ले आऊंगा, और पच्छिम से भी इकट्ठा करूंगा। ६ मैं उत्तर से कहूंगा, दे दे, और दक्खिन से कि रोक मत रख; मेरे पुत्रों को दूर से और मेरी पुत्रियों को पृथ्वी की छोर से ले आओ; ७ हर एक को जो मेरा कहलाता है, जिसको मैं ने अपनी महिमा के लिये सृजा, जिसको मैं ने रचा और बनाया है ।।

८ आंख रखते हुए अन्धों को और कान रखते हुए बहिरों को निकाल ले आओ! ९ जाति जाति के लोग इकट्ठे किए जाएं और राज्य राज्य के लोग एकत्रित हों। उन में से कौन यह बात बता सकता वा बीती हुई बातें हमें सुना सकता है? वे अपने साक्षी ले आएं जिस से वे सच्चे ठहरें, वे सुन लें और कहें, यह सत्य है। १० यहोवा की वाणी है कि तुम मेरे साक्षी हो और मेरे दास हो, जिन्हें मैं ने इसलिये चुना है कि समझकर मेरी प्रतीति करो और यह जान लो कि मैं वही हूं। मुझ से पहिले कोई ईश्वर न हुआ और न मेरे बाद भी कोई होगा। ११ मैं ही यहोवा हूं और मुझे छोड़ कोई उद्धारकर्त्ता नहीं। १२ मैं ही ने समाचार दिया और उद्धार किया और वर्णन भी किया, जब तुम्हारे बीच में कोई पराया देवता न था; इसलिये तुम ही मेरे साक्षी हो, यहोवा की यह वाणी है। १३ मैं ही ईश्वर हूं और भविष्य में भी मैं ही हूं; मेरे हाथ से कोई छुड़ा न सकेगा; जब मैं काम करना चाहूं तब कौन मुझे रोक * सकेगा ।।

१४ तुम्हारा छुड़ानेवाला और इस्राएल का पवित्र यहोवा यों कहता है, तुम्हारे निमित्त मैं ने बाबुल को भेजा है, और उसके सब रहनेवालों को भगोड़ों की दशा में और कसदियों को भी उन्हीं के जहाज़ों पर चढ़ाकर ले आऊंगा † जिन के विषय वे बड़ा बोल बोलते हैं ‡ ।

* मूल में—उण्डेली।

* मूल में—करे।
† मूल में—भगोड़े करके उतारूंगा।
‡ मूल में—ऊंचे शब्द से बोलते हैं।

१५ मैं यहोवा तुम्हारा पवित्र, इस्राएल का सृजनहार, तुम्हारा राजा हूं। १६ यहोवा जो समुद्र में मार्ग और प्रचण्ड धारा में पथ बनाता है, १७ जो रथों और घोड़ों को और शूरवीरों समेत सेना को निकाल लाता है, (वे तो एक संग वहीं रह गए और फिर नहीं उठ सकते, वे बुझ गए, वे सन की बत्ती की नाईं बुझ गए हैं।) वह यों कहता है, १८ अब बीती हुई घटनाओं का समरण मत करो, न प्राचीनकाल की बातों पर मन लगाओ। १९ देखो, मैं एक नई बात करता हूं; वह अभी प्रगट होगी, क्या तुम उस से अनजान रहोगे? मैं जंगल में एक मार्ग बनाऊंगा और निर्जल देश में नदियां बहाऊंगा। २० गीदड़ और शुतर्मुर्ग आदि जंगली जन्तु मेरी महिमा करेंगे; क्योंकि मैं अपनी चुनी हुई प्रजा के पीने के लिये जंगल में जल और निर्जल देश में नदियां बहाऊंगा। २१ इस प्रजा को मैं ने अपने लिये बनाया है कि वे मेरा गुणानुवाद करें।।

२२ तौभी हे याकूब, तू ने मुझ से प्रार्थना नहीं की; वरन हे इस्राएल तू मुझ से उकता गया है! २३ मेरे लिये होमबलि करने को तू मेम्ने नहीं लाया और न मेलबलि चढ़ाकर मेरी महिमा की है। देख, मैं ने अन्नबलि चढ़ाने की कठिन सेवा तुझ से नहीं कराई, न तुझ से धूप लेकर तुझे थका दिया है। २४ तू मेरे लिये सुगन्धित नरकट रुपए से मोल नहीं लाया और न मेलबलियों की चर्बी से मुझे तृप्त किया। परन्तु तू ने अपने पापों के कारण मुझ पर बोझ लाद दिया है, और अपने अधर्म के कामों से मुझे थका दिया है।।

२५ मैं वही हूं जो अपने नाम के निमित्त तेरे अपराधों को मिटा देता हूं और तेरे पापों को स्मरण न करूंगा। २६ मुझे स्मरण करो, हम आपस में विवाद करें; तू अपनी बात का वर्णन कर जिस से तू निर्दोष ठहरे। २७ तेरा मूलपुरुष पापी हुआ और जो जो मेरे और तुम्हारे बीच बिचवई हुए, वे मुझ से बलवा करते चले आए हैं। २८ इस कारण मैं ने पवित्रस्थान के हाकिमों को अपवित्र ठहराया, मैं ने याकूब को सत्यानाश और इस्राएल को निन्दित होने दिया है।।

४४ परन्तु अब हे मेरे दास याकूब, हे मेरे चुने हुए इस्राएल, सुन ले! २ तेरा कर्त्ता यहोवा, जो तुझे गर्भ ही से बनाता आया और तेरी सहायता करेगा, यों कहता है, हे मेरे दास याकूब, हे मेरे चुने हुए यशूरून *, मत डर! ३ क्योंकि मैं प्यासी भूमि पर जल और सूखी भूमि पर धाराएं बहाऊंगा; मैं तेरे वंश पर अपनी आत्मा और तेरी सन्तान पर अपनी आशीष उण्डेलूंगा। ४ वे उन मजनुओं की नाईं बढ़ेंगे जो धाराओं के पास घास के बीच में होते हैं। ५ कोई कहेगा, मैं यहोवा का हूं, कोई अपना नाम याकूब रखेगा, कोई अपने हाथ पर लिखेगा, मैं यहोवा का हूं, और अपना कुलनाम इस्राएली बताएगा।।

६ यहोवा, जो इस्राएल का राजा है, अर्थात् सेनाओं का यहोवा जो उसका छुड़ानेवाला है, वह यों कहता है, मैं सब से पहिला हूं, और मैं ही अन्त तक रहूंगा; मुझे छोड़ कोई परमेश्वर है ही

* मूल में—सीधा।

नहीं। ७ और जब से मैं ने प्राचीनकाल में मनुष्यों को ठहराया, तब से कौन हुआ जो मेरी नाईं उसको प्रचार करे, वा बताए वा मेरे लिये रचे अथवा होनहार बातें पहिले ही से प्रगट करे? ८ मत डरो और न भयमान हो; क्या मैं ने प्राचीनकाल ही से ये बातें तुम्हें नहीं सुनाईं और तुम पर प्रगट नहीं कीं? तुम मेरे साक्षी हो। क्या मुझे छोड़ कोई और परमेश्वर है? नहीं, मुझे छोड़ कोई चट्टान नहीं; मैं किसी और को नहीं जानता॥

९ जो मूरत खोदकर बनाते हैं, वे सब के सब व्यर्थ हैं * और जिन वस्तुओं में वे आनन्द ढूंढ़ते उन से कुछ लाभ न होगा; उनके साक्षी, न तो आप कुछ देखते और न कुछ जानते हैं, इसलिये उनको लज्जित होना पड़ेगा। १० किस ने देवता वा निष्फल मूरत ढाली है? ११ देख, उसके सब संगियों को तो लज्जित होना पड़ेगा, कारीगर तो मनुष्य ही हैं; वे सब के सब इकट्ठे होकर खड़े हों; वे डर जाएंगे; वे सब के सब लज्जित होंगे। १२ लोहार एक बसूला अंगारों में बनाता और हथौड़ों से गढ़कर तैयार करता है, अपने भुजबल से वह उसको बनाता है; फिर वह भूखा हो जाता है और उसका बल घटता है, वह पानी नहीं पीता और थक जाता है। १३ बढ़ई सूत लगाकर टांकी से रेखा करता है और रन्दनी से काम करता और परकार से रेखा खींचता है, वह उसका आकार और मनुष्य की सी सुन्दरता बनाता है ताकि लोग उसे घर में रखें †। १४ वह देवदार को काटता वा वन के वृक्षों में से जाति जाति के बांजवृक्ष चुनकर सेवता है, वह एक तूस का वृक्ष लगाता है जो वर्षा का जल पाकर बढ़ता है। १५ तब वह मनुष्य के ईंधन के काम में आता है; वह उस में से कुछ सुलगाकर तापता है, वह उसको जलाकर रोटी बनाता है; उसी से वह देवता भी बनाकर उसको दण्डवत् करता है; वह मूरत खुदवाकर उसके साम्हने प्रणाम करता है। १६ उसका एक भाग तो वह आग में जलाता और दूसरे भाग से मांस पकाकर खाता है, वह मांस भूनकर तृप्त होता; फिर तापकर कहता है, अहा, मैं गर्म हो गया, मैं ने आग देखी है! १७ और उसके बचे हुए भाग को लेकर वह एक देवता अर्थात् एक मूरत खोदकर बनाता है; तब वह उसके साम्हने प्रणाम और दण्डवत् करता और उस से प्रार्थना करके कहता है, मुझे बचा ले, क्योंकि तू मेरा देवता है!

वे कुछ नहीं जानते, न कुछ समझ रखते हैं; १८ क्योंकि उनकी आंखें ऐसी मून्दी * गई हैं कि वे देख नहीं सकते; और उनकी बुद्धि ऐसी कि वे बूझ नहीं सकते। १९ कोई इस पर ध्यान नहीं करता, और न किसी को इतना ज्ञान वा समझ रहती है कि कह सके, उसका एक भाग तो मैं ने जला दिया और उसके कोयलों पर रोटी बनाई; और मांस भूनकर खाया है; फिर क्या मैं उसके बचे हुए भाग को घिनौनी वस्तु बनाऊं? क्या मैं काठ † को प्रणाम करूं? २० वह राख खाता है; भरमाई हुई बुद्धि के कारण वह भटकाया गया है और वह न अपने को बचा सकता और न यह कह सकता

* मूल में—सो सब शून्यता हैं।
† मूल में—जिस से घर में रहे।

* मूल में—लेस दी।
† मूल में—पेड़ के ठूंठ को।

है, क्या मेरे दहिने हाथ में मिथ्या नहीं ?

२१ हे याकूब, हे इस्राएल, इन बातों को स्मरण कर, तू मेरा दास है, मैं ने तुझे रचा है; हे इस्राएल, तू मेरा दास है, मैं तुझ को न बिसराऊंगा। २२ मैं ने तेरे अपराधों को काली घटा के समान और तेरे पापों को बादल के समान मिटा दिया है; मेरी ओर फिर लौट आ, क्योंकि मैं ने तुझे छुड़ा लिया है ॥

२३ हे आकाश, ऊंचे स्वर से गा, क्योंकि यहोवा ने यह काम किया है; हे पृथ्वी के गहिरे स्थानो, जयजयकार करो; हे पहाड़ो, हे वन, हे वन के सब वृक्षो, गला खोलकर ऊंचे स्वर से गाओ ! क्योंकि यहोवा ने याकूब को छुड़ा लिया है और इस्राएल में महिमावान होगा ॥

२४ यहोवा, तेरा उद्धारकर्त्ता, जो तुझे गर्भ ही से बनाता आया है, यों कहता है, मैं यहोवा ही सब का बनानेवाला हूं जिस ने अकेले ही आकाश को ताना और पृथ्वी को अपनी ही शक्ति से फैलाया है। २५ मैं झूठे लोगों के कहे हुए चिन्हों को व्यर्थ कर देता और भावी कहनेवालों को बावला कर देता हूं; जो बुद्धिमानों को पीछे हटा देता और उनकी पण्डिताई को मूर्खता बनाता हूं; २६ और अपने दास के वचन को पूरा करता और अपने दूतों की युक्ति को सुफल करता हूं; जो यरूशलेम के विषय कहता है, वह फिर बसाई जाएगी और यहूदा के नगरों के विषय, वे फिर बनाए जाएंगे और मैं उनके खण्डहरों को सुधारूंगा; २७ जो गहिरे जल से कहता है, तू सूख जा, मैं तेरी नदियों को सुखाऊंगा; २८ जो कुस्रू के विषय में कहता है, वह मेरा ठहराया हुआ चरवाहा है और मेरी इच्छा पूरी करेगा; यरूशलेम के विषय कहता है, वह बसाई जाएगी और मन्दिर के विषय कि तेरी नेव डाली जाएगी ॥

४५ यहोवा अपने अभिषिक्त कुस्रू के विषय यों कहता है, मैं ने उस* के दहिने हाथ को इसलिये थाम लिया है कि उसके साम्हने जातियों को दबा दूं और राजाओं की कमर ढीली करूं, उसके साम्हने फाटकों को ऐसा खोल दूं कि वे फाटक बन्द न किए जाएं। २ मैं तेरे आगे आगे चलूंगा और ऊंची ऊंची भूमि को चौरस करूंगा, मैं पीतल के किवाड़ों को तोड़ डालूंगा और लोहे के बेंड़ों को टुकड़े टुकड़े कर दूंगा। ३ मैं तुझ को अन्धकार में छिपा हुआ और गुप्त स्थानों में गड़ा हुआ धन दूंगा, जिस से तू जाने कि मैं इस्राएल का परमेश्वर यहोवा हूं जो तुझे नाम लेकर बुलाता है। ४ अपने दास याकूब और अपने चुने हुए इस्राएल के निमित्त मैं ने नाम लेकर तुझे बुलाया है; यद्यपि तू मुझे नहीं जानता, तौभी मैं ने तुझे पदवी दी है। ५ मैं यहोवा हूं और दूसरा कोई नहीं, मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं; यद्यपि तू मुझे नहीं जानता, तौभी मैं तेरी कमर कसूंगा, ६ जिस से उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक लोग जान लें कि मुझ बिना कोई है ही नहीं; मैं यहोवा हूं और दूसरा कोई नहीं है। ७ मैं उजियाले का बनानेवाला और अन्धियारे का सृजनहार हूं, मैं शान्ति का दाता और विपत्ति को रचता हूं, मैं यहोवा ही इन सभों का कर्त्ता हूं। ८ हे आकाश, ऊपर से धर्म

---

* मूल में—जिस।

बरसा, आकाशमण्डल से धर्म की वर्षा हो *; पृथ्वी खुले कि उद्धार उत्पन्न हो; और धर्म भी उसके संग उगाए; मैं यहोवा ही ने उसे उत्पन्न किया है ।।

९ हाय उस पर जो अपने रचनेवाले से झगड़ता है ! वह तो मिट्टी के ठीकरों में से एक ठीकरा ही है ! क्या मिट्टी कुम्हार से कहेगी, तू यह क्या करता है ? क्या कारीगर का † बनाया हुआ कार्य उसके विषय कहेगा कि उसके हाथ नहीं हैं ? १० हाय उस पर जो अपने पिता से कहे, तू क्या जन्माता है ? और माँ से कहे, तू किस की माता है ‡ ? ११ यहोवा जो इस्राएल का पवित्र और उसका बनानेवाला है, वह यों कहता है, क्या तुम आनेवाली घटनाएं मुझ से पूछोगे ? क्या मेरे पुत्रों और मेरे कामों के विषय मुझे आज्ञा दोगे ? १२ मैं ही ने पृथ्वी को बनाया और उसके ऊपर मनुष्यों को सृजा है; मैं ने अपने ही हाथों से आकाश को ताना और उसके सारे गणों को आज्ञा दी है। १३ मैं ही ने उस पुरुष को धार्मिकता में उभारा है और मैं उसके सब मार्गों को सीधा करूंगा; वह मेरे नगर को फिर बसाएगा और मेरे बंधुओं को बिना दाम या बदला लिए छुड़ा देगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है ।।

१४ यहोवा यों कहता है, मिस्रियों की कमाई और कूशियों के व्योपार का लाभ और सबाई लोग जो डील-डौलवाले हैं, तेरे पास चले आएंगे, और तेरे ही हो जाएंगे, वे तेरे पीछे पीछे चलेंगे; वे सांकलों में बन्धे हुए चले आएंगे और तेरे साम्हने दण्डवत् कर तुझ से बिनती करके कहेंगे, निश्चय परमेश्वर तेरे ही साथ है और दूसरा कोई नहीं; उसके सिवाय कोई और परमेश्वर नहीं ।।

१५ हे इस्राएल के परमेश्वर, हे उद्धारकर्ता ! निश्चय तू ऐसा ईश्वर है जो अपने को गुप्त रखता है । १६ मूर्त्तियों के गढ़नेवाले सब के सब लज्जित और चकित होंगे, वे सब के सब व्याकुल होंगे। १७ परन्तु इस्राएल यहोवा के द्वारा युग युग का उद्धार पाएगा; तुम युग युग वरन अनन्तकाल तक न तो कभी लज्जित और न कभी व्याकुल होगे ।।

१८ क्योंकि यहोवा जो आकाश का सृजनहार है, वही परमेश्वर है; उसी ने पृथ्वी को रचा और बनाया, उसी ने उसको स्थिर भी किया; उस ने उसे सुनसान रहने के लिये नहीं परन्तु बसने के लिये उसे रचा है। वही यों कहता है, मैं यहोवा हूं, मेरे सिवा दूसरा और कोई नहीं है। १९ मैं ने न किसी गुप्त स्थान में, न अन्धकार देश के किसी स्थान में बातें कीं; मैं ने याकूब के वंश से नहीं कहा, मुझे व्यर्थ में ढूंढ़ो *। मैं यहोवा सत्य ही कहता हूं, मैं उचित बातें ही बताता आया हूं ।।

२० हे अन्यजातियों में से बचे हुए लोगो, इकट्ठे होकर आओ, एक संग मिलकर निकट आओ ! वह जो अपनी लकड़ी की खोदी हुई मूरतें लिए फिरते हैं और ऐसे देवता से जिस से उद्धार नहीं हो सकता, प्रार्थना करते हैं, वे अज्ञान हैं। २१ तुम प्रचार करो और उनको लाओ; हां, वे आपस में सम्मति करें, किस ने प्राचीनकाल से यह प्रगट किया ?

* मूल में—धर्म बहे। † मूल में—तेरा। ‡ मूल में—मुझे किस से पीड़ें उठीं।

* मूल में—सुनसान स्थान में ढूंढ़ो।

किस ने प्राचीनकाल में इसकी सूचना पहिले ही से दी? क्या मैं यहोवा ही ने यह नहीं किया? इसलिये मुझे छोड़ कोई और दूसरा परमेश्वर नहीं है, धर्मी और उद्धारकर्त्ता ईश्वर मुझे छोड़ और कोई नहीं है ।।

२२ हे पृथ्वी के दूर दूर के देश के रहनेवालो, तुम मेरी ओर फिरो और उद्धार पाओ! क्योंकि मैं ही ईश्वर हूं और दूसरा कोई और नहीं है। २३ मैं ने अपनी ही शपथ खाई, धर्म के अनुसार मेरे मुख से यह वचन निकला है और वह नहीं * टलेगा, प्रत्येक घुटना मेरे सम्मुख झुकेगा और प्रत्येक के मुख से मेरी ही शपथ खाई जाएगी ।।

२४ लोग मेरे विषय में कहेंगे, केवल यहोवा ही में धर्म और शक्ति है। उसी के पास लोग आएंगे। और जो उस से रूठे रहेंगे, उन्हें लज्जित होना पड़ेगा। २५ इस्राएल के सारे वंश के लोग यहोवा ही के कारण धर्मी ठहरेंगे, और उसकी महिमा करेंगे ।।

४६ बेल देवता झुक गया, नबो देवता नब गया है, उनकी प्रतिमाएं पशुओं वरन घरैलू पशुओं पर लदी हैं; जिन वस्तुओं को तुम उठाए फिरते थे, वे अब भारी बोझ हो गईं और थकित पशुओं पर लदी हैं। २ वे नब गए, वे एक संग झुक गए, वे उस भार को छुड़ा नहीं सके, और आप भी बंधुआई में चले गए हैं ।।

३ हे याकूब के घराने, हे इस्राएल के घराने के सब बचे हुए लोगो, मेरी ओर कान लगाकर सुनो; तुम को मैं तुम्हारी उत्पत्ति ही से उठाए रहा और जन्म ही से लिए फिरता आया हूं। ४ तुम्हारे बुढ़ापे में भी मैं वैसा ही बना रहूंगा और तुम्हारे बाल पकने के समय तक तुम्हें उठाए रहूंगा। मैं ने तुम्हें बनाया और तुम्हें लिए फिरता रहूंगा; ५ मैं तुम्हें उठाए रहूंगा और छुड़ाता भी रहूंगा ।।

तुम किस से मेरी उपमा दोगे और मुझे किस के समान बताओगे, किस से मेरा मिलान करोगे कि हम एक समान ठहरें? ६ जो थैली से सोना उण्डेलते वा कांटे में चान्दी तौलते हैं, जो सुनार को मजदूरी देकर उस से देवता बनवाते हैं, तब वे उसे प्रणाम करते वरन दण्डवत् भी करते हैं! ७ वे उसको कन्धे पर उठाकर लिए फिरते हैं, वे उसे उसके स्थान में रख देते और वह वहीं खड़ा रहता है; वह अपने स्थान से हट नहीं सकता; यदि कोई उसकी दोहाई भी दे, तौभी न वह सुन सकता है और न विपत्ति से उसका उद्धार कर सकता है ।।

८ हे अपराधियो, इस बात को स्मरण करो और ध्यान * दो, इस पर फिर मन लगाओ। ९ प्राचीनकाल की बातें स्मरण करो जो आरम्भ ही से हैं; क्योंकि ईश्वर मैं ही हूं, दूसरा कोई नहीं; मैं ही परमेश्वर हूं और मेरे तुल्य कोई भी नहीं है। १० मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूं जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूं, मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूंगा। ११ मैं पूर्व से एक उकाब पक्षी को अर्थात् दूर देश से अपनी युक्ति के पूरा करनेवाले पुरुष

* मूल में—न लौटेगा।

* या स्थिर रहो।

को बुलाता हूं। मैं ही ने यह बात कही है और उसे पूरी भी करूंगा; मैं ने यह विचार बान्धा है और उसे सुफल भी करूंगा। १२ हे कठोर मनवालो तुम जो धर्म से दूर हो, कान लगाकर मेरी सुनो। १३ मैं अपनी धार्मिकता को समीप ले आने पर हूं * वह दूर नहीं है †, और मेरे उद्धार करने में विलम्ब न होगा; मैं सिय्योन का उद्धार करूंगा और इस्राएल को महिमा दूंगा ‡।।

४७ हे बाबुल की कुमारी बेटी, उतर आ और धूलि पर बैठ; हे कसदियों की बेटी तू बिना सिंहासन भूमि पर बैठ! क्योंकि तू अब फिर कोमल और सुकुमार न कहलाएगी। २ चक्की लेकर आटा पीस, अपना घूंघट हटा और घाघरा समेट ले और उघारी टांगों से नदियों को पार कर। ३ तेरी नग्नता उघाड़ी जाएगी और तेरी लज्जा प्रगट होगी। मैं बदला लूंगा और किसी मनुष्य को ग्रहण न करूंगा §।।

४ हमारा छुटकारा देनेवाले का नाम सेनाओं का यहोवा और इस्राएल का पवित्र है।।

५ हे कसदियों की बेटी, चुपचाप बैठी रह और अन्धियारे में जा; क्योंकि तू अब राज्य राज्य की स्वामिन न कहलाएगी। ६ मैं ने अपनी प्रजा से क्रोधित होकर अपने निज भाग को अपवित्र ठहराया और तेरे वश में कर दिया; तू ने उन पर कुछ दया न की; बूढ़ों पर तू ने अपना अत्यन्त भारी जूआ रख दिया। ७ तू ने कहा, मैं सर्वदा स्वामिन बनी रहूंगी, सो तू ने अपने मन में इन बातों पर विचार न किया और यह भी न सोचा कि उनका क्या फल होगा।।

८ इसलिये सुन, तू जो राग-रंग में उलझी हुई निडर बैठी रहती है और मन में कहती है कि मैं ही हूं, और मुझे छोड़ कोई दूसरा नहीं; मैं विधवा की नाईं न बैठूंगी और न मेरे लड़केबाले मिटेंगे। ९ सुन, ये दोनों दुःख अर्थात् लड़कों का जाता रहना और विधवा हो जाना, अचानक एक ही दिन तुझ पर आ पड़ेंगे। तेरे बहुत से टोनों और तेरे भारी भारी तन्त्र-मन्त्रों के रहते भी ये तुझ पर अपने पूरे बल से आ पड़ेंगे।।

१० तू ने अपनी दुष्टता पर भरोसा रखा, तू ने कहा, मुझे कोई नहीं देखता; तेरी बुद्धि और ज्ञान ने तुझे बहकाया और तू ने अपने मन में कहा, मैं ही हूं और मेरे सिवाय कोई दूसरा नहीं। ११ परन्तु तेरी ऐसी दुर्गती होगी जिसका मन्त्र तू नहीं जानती, और तुझ पर ऐसी विपत्ति पड़ेगी कि तू प्रायश्चित करके उसका निवारण न कर सकेगी; अचानक विनाश तुझ पर आ पड़ेगा जिसका तुझे कुछ भी पता नहीं।।

१२ अपने तन्त्र-मन्त्र और बहुत से टोनहों को, जिनका तू ने बाल्यावस्था ही से अभ्यास किया है उपयोग में ला, सम्भव है तू उन से लाभ उठा सके या उनके बल से स्थिर रह सके। १३ तू तो युक्ति करते करते थक गई है; अब तेरे ज्योतिषी जो नक्षत्रों को ध्यान से देखते और नये नये चान्द को देखकर होनहार बताते हैं, वे खड़े होकर तुझे

* मूल में—निकट ले आने।
† मूल में—दूर।
‡ मूल में—मैं सिय्योन में उद्धार के द्वारा इस्राएल के लिये अपनी शोभा दूंगा।
§ मूल में—मनुष्य से न मिलूंगा।

उन बातों से बचाए जो तुझ पर घटेंगी ।।

१४ देख, वे भूसे के समान होकर आग से भस्म हो जाएंगे; वे अपने प्राणों को ज्वाला से न बचा सकेंगे। वह आग तापने के लिये नहीं, न ऐसी होगी जिसके साम्हने कोई बैठ सके! १५ जिनके लिये तू परिश्रम करती आई है वे सब तेरे लिये वैसे ही होंगे, और जो तेरी युवावस्था से तेरे संग ब्योपार करते आए हैं, उन में से प्रत्येक अपनी अपनी दिशा की ओर चले जाएंगे; तेरा बचानेवाला कोई न रहेगा ।।

४८ हे याकूब के घराने, यह बात सुन, तुम जो इस्राएली कहलाते और यहूदा के सोतों के जल से उत्पन्न हुए हो; जो यहोवा के नाम की शपथ खाते हो और इस्राएल के परमेश्वर की चर्चा तो करते हो, परन्तु सच्चाई और धर्म से नहीं करते। २ क्योंकि वे अपने को पवित्र नगर के बताते हैं, और इस्राएल के परमेश्वर पर जिसका नाम सेनाओं का यहोवा है भरोसा करते हैं ।।

३ होनेवाली बातों को तो मैं ने प्राचीनकाल ही से बताया है, और उनकी चर्चा मेरे मुंह से निकली, मैं ने अचानक उन्हें प्रगट किया और वे बातें सचमुच हुईं। ४ मैं जानता था कि तू हठीला है और तेरी गर्दन लोहे की नस और तेरा माथा पीतल का है। ५ इस कारण मैं ने इन बातों को प्राचीनकाल ही से तुझे बताया उनके होने से पहिले ही मैं ने तुझे बता दिया, ऐसा न हो कि तू यह कह पाए कि यह मेरे देवता का काम है, मेरी खोदी और ढली हुई मूर्त्तियों की आज्ञा से यह हुआ ।।

६ तू ने सुना है, सो अब इन सब बातों पर ध्यान कर; और देखो, क्या तुम उसका प्रचार न करोगे? अब से मैं तुझे नई नई बातें और ऐसी गुप्त बातें सुनाऊंगा जिन्हें तू नहीं जानता। ७ वे अभी अभी सृजी गई हैं, प्राचीनकाल से नहीं; परन्तु आज से पहिले तू ने उन्हें सुना भी न था, ऐसा न हो कि तू कहे कि देख मैं तो इन्हें जानता था। ८ हां निश्चय तू ने उन्हें न तो सुना, न जाना, न इस से पहिले तेरे कान ही खुले थे। क्योंकि मैं जानता था कि तू निश्चय विश्वासघात करेगा, और गर्भ ही से तेरा नाम अपराधी पड़ा है ।।

९ अपने ही नाम के निमित्त मैं क्रोध करने में विलम्ब करता हूं, और अपनी महिमा के निमित्त अपने तईं रोक रखता हूं, ऐसा न हो कि मैं तुझे काट डालूं। १० देख, मैं ने तुझे निर्मल तो किया, परन्तु, चान्दी की नाईं नहीं; मैं ने दुःख की भट्ठी में परखकर तुझे चुन लिया है। ११ अपने निमित्त, हां अपने ही निमित्त मैं ने यह किया है, मेरा नाम क्यों अपवित्र ठहरे? अपनी महिमा मैं दूसरे को नहीं दूंगा ।।

१२ हे याकूब, हे मेरे बुलाए हुए इस्राएल, मेरी ओर कान लगाकर सुन! मैं वही हूं, मैं ही आदि * और मैं ही अन्त हूं †। १३ निश्चय मेरे ही हाथ ने पृथ्वी की नेव डाली, और मेरे ही दहिने हाथ ने आकाश फैलाया; जब मैं उनको बुलाता हूं, वे एक साथ उपस्थित हो जाते हैं

* मूल में—पहिला।
† मूल में—पिछला।

१४ तुम सब के सब इकट्ठे होकर सुनो! उन में से किस ने कभी इन बातों का समाचार दिया? यहोवा उस से प्रेम रखता है: वह बाबुल पर अपनी इच्छा पूरी करेगा, और कसदियों पर उसका हाथ पड़ेगा। १५ मैं ने, हां मैं ही ने कहा और उसको बुलाया है, मैं उसको ले आया हूं, और, उसका काम सुफल होगा। १६ मेरे निकट आकर इस बात को सुनो: आदि से लेकर अब तक मैं ने कोई भी बात गुप्त में नहीं कही; जब से वह हुआ तब से मैं वहां हूं। और अब प्रभु यहोवा ने और उसकी आत्मा ने मुझे भेज दिया है *॥

१७ यहोवा जो तेरा छुड़ानेवाला और इस्राएल का पवित्र है, वह यों कहता है, मैं ही तेरा परमेश्वर यहोवा हूं जो तुझे तेरे लाभ के लिये शिक्षा देता हूं, और जिस मार्ग मे तुझे जाना है उसी मार्ग पर तुझे ले चलता हूं। १८ भला होता कि तू ने मेरी आज्ञाओं को ध्यान से सुना होता! तब तेरी शान्ति नदी के समान और तेरा धर्म समुद्र की लहरों के नाईं होता; १९ तेरा वंश बालू के किनकों के तुल्य होता, और तेरी निज सन्तान उसके कणों के समान होती; उनका नाम मेरे सम्मुख से न कभी काटा और न मिटाया जाता॥

२० बाबुल में से निकल जाओ, कसदियों के बीच में से भाग जाओ; जयजयकार करते हुए इस बात को प्रचार करके सुनाओ, पृथ्वी की छोर तक इसकी चर्चा फैलाओ; कहते जाओ कि यहोवा ने अपने दास याकूब को छुड़ा लिया है! २१ जब वह उन्हें निर्जल देशों में ले गया, तब वे प्यासे न हुए; उस ने उनके लिये चट्टान में से पानी निकाला; उस ने चट्टान को चीरा और जल बह निकला। २२ दुष्टों के लिये कुछ शान्ति नहीं, यहोवा का यही वचन है॥

४९ हे द्वीपो, मेरी ओर कान लगाकर सुनो; हे दूर दूर के राज्यों के लोगो, ध्यान लगाकर मेरी सुनो। यहोवा ने मुझे गर्भ ही में से बुलाया, जब मैं माता के पेट में था, तब ही उस ने मेरा नाम बताया। २ उस ने मेरे मुंह को चोखी तलवार के समान बनाया और अपने हाथ की आड़ में मुझे छिपा रखा; उस ने मुझ को चमकीला तीर बनाकर अपने तर्कश में गुप्त रखा। ३ और मुझ से कहा, तू मेरा दास इस्राएल है, मैं तुझ में अपनी महिमा प्रगट करूंगा। ४ तब मैं ने कहा, मैं ने तो व्यर्थ परिश्रम किया, मैं ने व्यर्थ ही अपना बल खो दिया है; तौभी निश्चय मेरा न्याय यहोवा के पास है और मेरे परिश्रम का फल मेरे परमेश्वर के हाथ में है॥

५ और अब यहोवा जिस ने मुझे जन्म ही से इसलिये रचा कि मैं उसका दास होकर याकूब को उसकी ओर फेर ले आऊं अर्थात् इस्राएल को उसके पास इकट्ठा करूं, क्योंकि यहोवा की दृष्टि में मैं आदरयोग्य हूं और मेरा परमेश्वर मेरा बल है, ६ उसी ने मुझ से यह भी कहा है, यह तो हलकी सी बात है कि तू याकूब के गोत्रों का उद्धार करने और इस्राएल के रक्षित लोगों को लौटा ले आने के लिये मेरा सेवक ठहरे; मैं तुझे अन्यजातियों

* वा प्रभु यहोवा ने मुझे और अपने आत्मा को भेज दिया है।

के लिये ज्योति ठहराऊंगा कि मेरा उद्धार पृथ्वी की एक ओर से दूसरी ओर तक फैल जाए ।।

७ जो मनुष्यों से तुच्छ जाना जाता, जिस से जातियों को घृणा है, और, जो अपराधियों का दास है, इस्राएल का छुड़ानेवाला और उसका पवित्र अर्थात् यहोवा यों कहता है, कि राजा उसे देखकर खड़े हो जाएंगे और हाकिम दण्डवत् करेंगे; यह यहोवा के निमित्त होगा, जो सच्चा और इस्राएल का पवित्र है और जिस ने तुझे चुन लिया है ।।

८ यहोवा यों कहता है, अपनी प्रसन्नता के समय मैं ने तेरी सुन ली, उद्धार करने के दिन मैं ने तेरी सहायता की है; मैं तेरी रक्षा करके तुझे लोगों के लिये एक वाचा ठहराऊंगा, ताकि देश को स्थिर * करे और उजड़े हुए स्थानों को उनके अधिकारियों के हाथ में दे दे; और, बंधुओं से कहे, बन्दीगृह से निकल आओ; ९ और जो अन्धियारे में हैं उन से कहे, अपने आप को दिखलाओ † । वे मार्गों के किनारे किनारे पेट भरने पाएंगे, सब मुण्डे टीलों पर भी उनको चराई मिलेगी । १० वे भूखे और प्यासे न होंगे, न लूह और न घाम उन्हें लगेगा, क्योंकि, वह जो उन पर दया करता है, वही उनका अगुवा होगा, और जल के सोतों के पास उन्हें ले चलेगा । ११ और, मैं अपने सब पहाड़ों को मार्ग बना दूंगा, और मेरे राजमार्ग ऊंचे किए जाएंगे । १२ देखो, ये दूर से आएंगे, और, ये उत्तर और पच्छिम से और सीनियों के देश से आएंगे । १३ हे आकाश, जयजयकार कर, हे पृथ्वी, मगन हो; हे पहाड़ो, गला खोलकर जयजयकार करो! क्योंकि यहोवा ने अपनी प्रजा को शान्ति दी है और अपने दीन लोगों पर दया की है ।।

१४ परन्तु सिय्योन ने कहा, यहोवा ने मुझे त्याग दिया है, मेरा प्रभु मुझे भूल गया है । १५ क्या यह हो सकता है कि कोई माता अपने दूधपिउवे बच्चे को भूल जाए और अपने जन्माए हुए लड़के पर दया न करे? हां, वह तो भूल सकती है, परन्तु मैं तुझे नहीं भूल सकता । १६ देख, मैं ने तेरा चित्र अपनी हथेलियों पर खोदकर बनाया है; तेरी शहरपनाह सदैव मेरी दृष्टि के साम्हने बनी रहती है । १७ तेरे लड़के फुर्ती से आ रहे हैं और खण्डहर बनानेवाले और उजाड़नेवाले तेरे बीच से निकले जा रहे हैं । १८ अपनी आंखें उठाकर चारों ओर देख, वे सब के सब इकट्ठे होकर तेरे पास आ रहे हैं । यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की शपथ, तू निश्चय उन सभों को गहने के समान पहिन लेगी, तू दुल्हिन की नाईं अपने शरीर में उन सब को बान्ध लेगी ।।

१९ तेरे जो स्थान सुनसान और उजड़े हैं, और तेरे जो देश खण्डहर ही खण्डहर हैं, उन * में अब निवासी न समाएंगे, और, तुझे नष्ट करनेवाले दूर हो जाएंगे । २० तेरे पुत्र जो तुझ से ले लिए गए † वे फिर तेरे कान में कहने पाएंगे कि यह स्थान हमारे लिये सकेत है, हमें और स्थान दे कि उस में रहें । २१ तब तू मन में कहेगी, किस ने इनको

* मूल में—बहाल ।
† मूल में—अपने को प्रगट करो ।

* मूल में—तुझ ।
† मूल में—तेरे लड़कों के जाते रहने के बेटे ।

मेरे लिये जन्माया? मैं तो पुत्रहीन और बांझ हो गई थी, दासत्व में और यहां वहां मैं घूमती रही, इनको किस ने पाला? देख, मैं अकेली रह गई थी; फिर ये कहां थे?

२२ प्रभु यहोवा यों कहता है, देख, मैं अपना हाथ जाति जाति के लोगों की ओर उठाऊंगा, और देश देश के लोगों के साम्हने अपना झण्डा खड़ा करूंगा; तब वे तेरे पुत्रों को अपनी गोद में लिए आएंगे, और तेरी पुत्रियों को अपने कन्धे पर चढ़ाकर तेरे पास पहुंचाएंगे। २३ राजा तेरे बच्चों के निज-सेवक और उनकी रानियां दूध पिलाने के लिये तेरी धाइयां होंगी। वे अपनी नाक भूमि पर रगड़कर तुझे दण्डवत् करेंगे और तेरे पांवों की धूलि चाटेंगे। तब तू यह जान लेगी कि मैं ही यहोवा हूं; मेरी बाट जोहनेवाले कभी लज्जित न होंगे॥

२४ क्या वीर के हाथ से शिकार छीना जा सकता है? क्या दुष्ट के बंधुए छुड़ाए जा सकते हैं? २५ तौभी यहोवा यों कहता है, हां, वीर के बंधुए उस से छीन लिए जाएंगे, और बलात्कारी का शिकार उसके हाथ से छुड़ा लिया जाएगा, क्योंकि जो तुझ से लड़ते हैं उन से मैं आप मुक़द्दमा लड़ूंगा, और तेरे लड़केवालों का मैं उद्धार करूंगा। २६ जो तुझ पर अन्धेर करते हैं उनको मैं उन्हीं का मांस खिलाऊंगा, और, वे अपना लोहू पीकर ऐसे मतवाले होंगे जैसे नये दाखमधु से होते हैं। तब सब प्राणी जान लेंगे कि तेरा उद्धारकर्ता यहोवा और तेरा छुड़ानेवाला, याकूब का शक्तिमान मैं ही हूं॥

५० तुम्हारी माता का त्यागपत्र कहां है, जिसे मैं ने उसे त्यागते समय दिया था? या मैं ने किस ब्योपारी के हाथ तुम्हें बेचा? यहोवा यों कहता है, सुनो, तुम अपने ही अधर्म के कामों के कारण बिक गए, और तुम्हारे ही अपराधों के कारण तुम्हारी माता छोड़ दी गई। २ इसका क्या कारण है कि जब मैं आया तब कोई न मिला? और जब मैं ने पुकारा, तब कोई न बोला? क्या मेरा हाथ ऐसा छोटा हो गया है कि छुड़ा नहीं सकता? क्या मुझ में उद्धार करने की शक्ति नहीं? देखो, मैं एक धमकी से समुद्र को सुखा देता हूं, मैं महानदों को रेगिस्तान बना देता हूं; उनकी मछलियां जल बिना मर जातीं और बसाती हैं। ३ मैं आकाश को मानो शोक का काला कपड़ा पहिनाता, और टाट को उनका ओढ़ना बना देता हूं॥

४ प्रभु यहोवा ने मुझे सीखनेवालों की जीभ दी है कि मैं थके हुए को अपने वचन के द्वारा संभालना जानूं। भोर को वह नित मुझे जगाता और मेरा कान खोलता है कि मैं शिष्य के समान सुनूं। ५ प्रभु यहोवा ने मेरा कान खोला है, और मैं ने विरोध न किया, न पीछे हटा। ६ मैं ने मारनेवालों को अपनी पीठ और गलमोछ नोचनेवालों की ओर अपने गाल किए; अपमानित होने और उनके थूकने से मैं ने मुंह न छिपाया॥

७ क्योंकि प्रभु यहोवा मेरी सहायता करता है, इस कारण मैं ने संकोच नहीं किया; वरन अपना माथा चकमक की नाईं कड़ा किया क्योंकि मुझे निश्चय था कि मुझे लज्जित होना न पड़ेगा। ८ जो मुझे धर्मी ठहराता है वह मेरे निकट है। मेरे साथ कौन मुक़द्दमा करेगा? हम

आमने-साम्हने खड़े हों। मेरा विरोधी कौन है? वह मेरे निकट आए। ९ सुनो, प्रभु यहोवा मेरी सहायता करता है; मुझे कौन दोषी ठहरा सकेगा? देखो, वे सब कपड़े के समान पुराने हो जाएंगे; उनको कीड़े खा जाएंगे ॥

१० तुम में से कौन है जो यहोवा का भय मानता और उसके दास की बातें सुनता है, जो अन्धियारे में चलता हो और उसके पास ज्योति न हो? वह यहोवा के नाम का भरोसा रखे, और अपने परमेश्वर पर आशा लगाए रहे। ११ देखो, तुम सब जो आग जलाते और अग्निबाणों को कमर में बान्धते हो! तुम सब अपनी जलाई हुई आग में और अपने जलाए हुए अग्निबाणों के बीच आप ही चलो। तुम्हारी यह दशा मेरी ही ओर से होगी, तुम सन्ताप में पड़े रहोगे ॥

५१ हे धर्म पर चलनेवालो, हे यहोवा के ढूंढ़नेवालो, कान लगाकर मेरी सुनो; जिस चट्टान में से तुम खोदे गए और जिस खानि में से तुम निकाले गए, उस पर ध्यान करो। २ अपने मूलपुरुष इब्राहीम और अपनी माता सारा पर ध्यान करो; जब वह अकेला था, तब ही से मैं ने उसको बुलाया और आशीष दी और बढ़ा दिया। ३ यहोवा ने सिय्योन को शान्ति दी है, उस ने उसके सब खण्डहरों को शान्ति दी है; वह उसके जंगल को अदन के समान और उसके निर्जल देश को यहोवा की वाटिका के समान बनाएगा; उस में हर्ष और आनन्द और धन्यवाद और भजन गाने का शब्द सुनाई पड़ेगा ॥

४ हे मेरी प्रजा के लोगो, मेरी ओर ध्यान धरो; हे मेरे लोगो, कान लगाकर मेरी सुनो; क्योंकि मेरी ओर से व्यवस्था दी जाएगी *, और मैं अपना नियम देश देश के लोगों की ज्योति होने के लिये स्थिर करूंगा। ५ मेरा छुटकारा निकट है; मेरा उद्धार प्रगट हुआ है †; मैं अपने भुजबल से देश देश के लोगों का न्याय करूंगा। द्वीप मेरी बाट जोहेंगे और मेरे भुजबल पर आशा रखेंगे। ६ आकाश की ओर अपनी आंखें उठाओ, और पृथ्वी को निहारो; क्योंकि आकाश धूंएं की नाईं लोप हो जाएगा, पृथ्वी कपड़े के समान पुरानी हो जाएगी, और उसके रहनेवाले यों ही जाते रहेंगे; परन्तु जो उद्धार मैं करूंगा वह सर्वदा ठहरेगा, और मेरे धर्म का अन्त न होगा ॥

७ हे धर्म के जाननेवालो, जिनके मन में मेरी व्यवस्था है, तुम कान लगाकर मेरी सुनो; मनुष्यों की नामधराई से मत डरो, और उनके निन्दा करने से विस्मित न हो। ८ क्योंकि घुन उन्हें कपड़े की नाईं और कीड़ा उन्हें ऊन की नाईं खाएगा; परन्तु मेरा धर्म अनन्तकाल तक, और मेरा उद्धार पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहेगा ॥

९ हे यहोवा की भुजा, जाग! जाग और बल धारण कर; जैसे प्राचीनकाल में और बीते हुए पीढ़ियों में, वैसे ही अब भी जाग। क्या तू वही नहीं है जिस ने रहब को टुकड़े टुकड़े किया और मगरमच्छ को छेदा? १० क्या तू वही नहीं जिस ने समुद्र को अर्थात् गहिरे सागर के जल को सुखा डाला और उसकी गहराई में अपने छुड़ाए हुओं के पार जाने के लिये

* मूल में—निकलेगी।
† मूल में—मेरा उद्धार निकला है।

मार्ग निकाला था? ११ सो यहोवा के छुड़ाए हुए लोग लौटकर जयजयकार करते हुए सिय्योन में आएंगे, और उनके सिरों पर अनन्त आनन्द गूंजता रहेगा*; वे हर्ष और आनन्द प्राप्त करेंगे, और शोक और सिसकियों का अन्त हो जाएगा॥

१२ मैं, मैं ही तेरा शान्तिदाता हूं; तू कौन है जो मरनेवाले मनुष्य से, और घास के समान मुर्झानेवाले † आदमी से डरता है, १३ और आकाश के ताननेवाले और पृथ्वी की नेव डालनेवाले अपने कर्त्ता यहोवा को भूल गया है, और जब द्रोही नाश करने को तैयार होता है तब उसकी जलजलाहट से दिन भर लगातार थरथराता है? परन्तु द्रोही की जलजलाहट कहां रही? १४ बंधुआ शीघ्र ही स्वतन्त्र किया जाएगा; वह गड़हे में न मरेगा और न उसे रोटी की कमी होगी। १५ जो समुद्र को उथल-पुथल करता जिस से उसकी लहरों में गरजन होती है, वह मैं ही तेरा परमेश्वर यहोवा हूं मेरा नाम सेनाओं का यहोवा है। और मैं ने तेरे मुंह में अपने वचन डाले, १६ और तुझे अपने हाथ की आड़ में छिपा रखा है; कि मैं आकाश को तानूं ‡ और पृथ्वी की नेव डालूं, और सिय्योन से कहूं, तुम मेरी प्रजा हो॥

१७ हे यरूशलेम जाग! जाग उठ! खड़ी हो जा, तू ने यहोवा के हाथ से उसकी जलजलाहट के कटोरे में से पिया है, तू ने कटोरे का लड़खड़ा देनेवाला मद पूरा पूरा ही पी लिया है। १८ जितने लड़कों ने उस से जन्म लिया उन में से कोई न रहा जो उसकी अगुवाई करके ले चले; और जितने लड़के उस ने पाले-पोसे उन में से कोई न रहा जो उसके हाथ को थाम ले। १९ ये दो विपत्तियां तुझ पर आ पड़ी हैं, कौन तेरे संग विलाप करेगा? उजाड़ और विनाश और महंगी और तलवार आ पड़ी हैं; कौन तुझे शान्ति देगा? २० तेरे लड़के मूर्च्छित होकर हर एक सड़क के सिरे पर, महाजाल में फंसे हुए हरिण की नाईं पड़े हैं; यहोवा की जलजलाहट और तेरे परमेश्वर की धमकी के कारण वे अचेत पड़े हैं*॥

२१ इस कारण हे दुखियारी सुन, तू मतवाली तो है, परन्तु दाखमधु पीकर नहीं; २२ तेरा प्रभु यहोवा जो अपनी प्रजा का मुक़द्दमा लड़नेवाला तेरा परमेश्वर है, वह यों कहता है, सुन, मैं लड़खड़ा देनेवाले मद के कटोरे को अर्थात् अपनी जलजलाहट के कटोरे को तेरे हाथ से ले लेता हूं; तुझे उस में से फिर कभी पीना न पड़ेगा। २३ और मैं उसे तेरे उन दुःख देनेवालों के हाथ में दूंगा, जिन्हों ने तुझ से कहा, लेट जा, कि हम तुझ पर पांव धरकर आगे चलें †; और तू ने औंधे मुंह गिरकर अपनी पीठ को भूमि और आगे चलनेवालों के लिये सड़क बना दिया ‡॥

५२ हे सिय्योन, जाग, जाग! अपना बल धारण कर; हे पवित्र नगर यरूशलेम, अपने शोभायमान

* मूल में—उसके सिर पर सदा का आनन्द होगा।
† मूल में—सरीखे बननेहारे।
‡ मूल में—आकाश को पौधे की नाईं लगाऊं।

* मूल में—घुड़की से भरे हैं।
† मूल में—कि हम आगे चलें।
‡ मूल में—तू ने आगे चलनेहारे के लिये अपनी पीठ भूमि और सड़क के समान रखी।

वस्त्र पहिन ले; क्योंकि तेरे बीच खतना-रहित और अशुद्ध लोग फिर कभी प्रवेश न करने पाएंगे। २ अपने ऊपर से धूल झाड़ दे, हे यरूशलेम, उठ; हे सिय्योन की बन्दी बेटी अपने गले के बन्धन को खोल दे ।।

३ क्योंकि यहोवा यों कहता है, तुम जो सेंतमेंत बिक गए थे, इसलिये अब बिना रुपया दिए छुड़ाए भी जाओगे। ४ प्रभु यहोवा यों भी कहता है, मेरी प्रजा पहिले तो मिस्र में परदेशी होकर रहने को गई थी, और अश्शूरियों ने भी बिना कारण उन पर अत्याचार किया। ५ इसलिये यहोवा की यह वाणी है कि मैं अब यहां क्या करूं जब कि मेरी प्रजा सेंतमेंत हर ली गई है? यहोवा यह भी कहता है कि जो उन पर प्रभुता करते हैं वे उधम मचा रहे हैं, और, मेरे नाम की निन्दा लगातार दिन भर होती रहती है। ६ इस कारण मेरी प्रजा मेरा नाम जान लेगी; वह उस समय जान लेगी कि जो बातें करता है वह यहोवा ही है; देखो, मैं ही हूं ।।

७ पहाड़ों पर उसके पांव क्या ही सुहावने हैं जो शुभ समाचार लाता है, जो शान्ति की बातें सुनाता है और कल्याण का शुभ समाचार और उद्धार का सन्देश देता है, जो सिय्योन से कहता है, तेरा परमेश्वर राज्य करता है। ८ सुन, तेरे पहरुए पुकार रहे हैं, वे एक साथ जयजयकार कर रहे हैं; क्योंकि वे साक्षात् देख रहे हैं कि यहोवा सिय्योन को लौट रहा है। ९ हे यरूशलेम के खण्डहरों, एक संग उमंग में आकर जयजयकार करो; क्योंकि यहोवा ने अपनी प्रजा को शान्ति दी है, उस ने यरूशलेम को छुड़ा लिया है। १० यहोवा ने सारी जातियों के साम्हने अपनी पवित्र भुजा प्रगट की है; और पृथ्वी के दूर दूर देशों के सब लोग हमारे परमेश्वर का किया हुआ उद्धार निश्चय देख लेंगे ।।

११ दूर हो, दूर, वहां से निकल जाओ, कोई अशुद्ध वस्तु मत छुओ; उसके बीच से निकल जाओ; हे यहोवा के पात्रों के ढोनेवालो, अपने को शुद्ध करो। १२ क्योंकि तुम को उतावली से निकलना नहीं, और न भागते हुए चलना पड़ेगा; क्योंकि यहोवा तुम्हारे आगे आगे अगुवाई करता हुआ चलेगा, और, इस्राएल का परमेश्वर तुम्हारे पीछे भी रक्षा करता चलेगा ।।

१३ देखो, मेरा दास बुद्धि से काम करेगा, वह ऊंचा, महान और अति महान हो जाएगा। १४ जैसे बहुत से लोग उसे * देखकर चकित हुए (क्योंकि उसका रूप यहां तक बिगड़ा हुआ था कि मनुष्य का सा न जान पड़ता था और उसकी सुन्दरता भी आदमियों की सी न रह गई थी), १५ वैसे ही वह बहुत सी जातियों को पवित्र करेगा और उसको देखकर राजा शान्त रहेंगे †; क्योंकि वे ऐसी बात देखेंगे जिसका वर्णन उनके सुनने में भी नहीं आया, और, ऐसी बात उनकी समझ में आएगी जो उन्हों ने अभी तक सुनी भी न थी ।।

५३ जो समाचार हमें दिया गया, उसका किस ने विश्वास किया? और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट हुआ? २ क्योंकि वह उसके साम्हने अंकुर की नाईं, और ऐसी जड़ के समान

---

* मूल में—तुझे।

† मूल में—राजा अपने मुंह बन्द करेंगे।

उगा जो निर्जल भूमि में फूट निकले; उसकी न तो कुछ सुन्दरता थी कि हम उसको देखते, और न उसका रूप ही हमें ऐसा दिखाई पड़ा कि हम उसको चाहते। ३ वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था; वह दुःखी पुरुष था, रोग से उसकी जान पहिचान थी; और लोग उस से मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया, और, हम ने उसका मूल्य न जाना ॥

४ निश्चय उस ने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुःखों को उठा लिया; तौभी हम ने उसे परमेश्वर का मारा-कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। ५ परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं *। ६ हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया ॥

७ वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा और अपना मुंह न खोला; जिस प्रकार भेड़ बध होने के समय वा भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उस ने भी अपना मुंह न खोला। ८ अत्याचार करके और दोष लगाकर वे उसे ले गए; उस समय के लोगों में से किस ने इस पर ध्यान दिया कि वह जीवतों के बीच में से उठा लिया गया? मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार पड़ी। ९ और उसकी क़ब्र भी दुष्टों के संग ठहराई गई, और, मृत्यु के समय वह धनवान का संगी हुआ, यद्यपि * उस ने किसी प्रकार का उपद्रव न किया था और उसके मुंह से कभी छल की बात नहीं निकली थी ॥

१० तौभी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया; जब तू उसका प्राण दोषबलि करे, तब वह अपना वंश देखने पाएगा, वह बहुत दिन जीवित रहेगा; उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी। ११ वह अपने प्राणों का दुःख उठाकर उसे देखेगा और तृप्त होगा; अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा; और उनके अधर्म के कामों का बोझ आप उठा लेगा। १२ इस कारण मैं उसे महान लोगों के संग भाग दूंगा, और, वह सामर्थियों के संग लूट बांट लेगा; क्योंकि उस ने अपना प्राण मृत्यु के लिये उण्डेल दिया, वह अपराधियों के संग गिना गया; तौभी उस ने बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया, और, अपराधियों के लिये बिनती करता है ॥

५४ हे बांझ, तू जो पुत्रहीन है जयजयकार कर; तू जिसे जन्माने की पीड़ें नहीं हुईं, गला खोलकर जयजयकार कर और पुकार! क्योंकि त्यागी हुई के लड़के सुहागिन के लड़कों से अधिक होंगे, यहोवा का यही वचन है। २ अपने तम्बू का स्थान चौड़ा कर, और तेरे डेरे के पट लम्बे किए जाएं; हाथ मत रोक, रस्सियों को लम्बी और खूंटों को दृढ़ कर। ३ क्योंकि तू दहिने-बाएं फैलेगी,

* मूल में—हमारे लिये चंगापन है।

* वा, क्योंकि।

और तेरा वंश जाति-जाति का अधिकारी होगा और उजड़े हुए नगरों को फिर से बसाएगा ।।

४ मत डर, क्योंकि तेरी आशा फिर नहीं टूटेगी; मत घबरा, क्योंकि तू फिर लज्जित न होगी और तुझ पर सियाही न छाएगी; क्योंकि तू अपनी जवानी की लज्जा भूल जाएगी, और, अपने विधवापन की नामधराई को फिर स्मरण न करेगी। ५ क्योंकि तेरा कर्त्ता तेरा पति है, उसका नाम सेनाओं का यहोवा है; और इस्राएल का पवित्र तेरा छुड़ानेवाला है, वह सारी पृथ्वी का भी परमेश्वर कहलाएगा। ६ क्योंकि यहोवा ने तुझे ऐसा बुलाया है, मानो तू छोड़ी हुई और मन की दुखिया और जवानी की त्यागी हुई स्त्री हो, तेरे परमेश्वर का यही वचन है। ७ क्षण भर ही के लिये मैं ने तुझे छोड़ दिया था, परन्तु अब बड़ी दया करके मैं फिर तुझे रख लूंगा। ८ क्रोध के झकोरे में आकर मैं ने पल भर के लिये तुझ से मुंह छिपाया था, परन्तु अब अनन्त करुणा से मैं तुझ पर दया करूंगा, तेरे छुड़ानेवाले यहोवा का यही वचन है। ९ यह मेरी दृष्टि में नूह के समय के जलप्रलय के समान है; क्योंकि जैसे मैं ने शपथ खाई थी कि नूह के समय के जलप्रलय से पृथ्वी फिर न डूबेगी, वैसे ही मैं ने यह भी शपथ खाई है कि फिर कभी तुझ पर क्रोध न करूंगा और न तुझ को धमकी दूंगा। १० चाहे पहाड़ हट जाएं और पहाड़ियां टल जाएं, तौभी मेरी करुणा तुझ पर से कभी न हटेगी, और मेरी शान्तिदायक वाचा न टलेगी, यहोवा, जो तुझ पर दया करता है, उसका यही वचन है ।।

११ हे दुःखियारी, तू जो आंधी की सताई है और जिस को शान्ति नहीं मिली, सुन, मैं तेरे पत्थरों की पच्चीकारी करके बैठाऊंगा, और तेरी नेव नीलमणि से डालूंगा। १२ तेरे कलश मैं माणिकों से, तेरे फाटक लालड़ियों से और तेरे सब सिवानों को मनोहर रत्नों से बनाऊंगा। १३ तेरे सब लड़के यहोवा के सिखलाए हुए होंगे, और उनको बड़ी शान्ति मिलेगी। १४ तू धार्मिकता के द्वारा स्थिर होगी; तू अन्धेर से बचेगी, क्योंकि तुझे डरना न पड़ेगा; और तू भयभीत होने से बचेगी, क्योंकि भय का कारण तेरे पास न आएगा। १५ सुन, लोग भीड़ लगाएंगे, परन्तु मेरी ओर से नहीं; जितने तेरे विरुद्ध भीड़ लगाएंगे वे तेरे कारण गिरेंगे। १६ सुन, एक लोहार कोएले की आग धोंककर इसके लिये हथियार बनाता है, वह मेरा ही सृजा हुआ है। उजाड़ने के लिये भी मेरी ओर से एक नाश करनेवाला सृजा गया है। १७ जितने हथियार तेरी हानि के लिये बनाए जाएं, उन में से कोई सफल न होगा, और, जितने लोग मुद्दई होकर तुझ पर नालिश करें* उन सभों से तू जीत जाएगा। यहोवा के दासों का यही भाग होगा, और वे मेरे ही कारण धर्मी ठहरेंगे, यहोवा की यही वाणी है ।।

५५ अहो सब प्यासे लोगो, पानी के पास आओ; और जिनके पास रुपया न हो, तुम भी आकर मोल लो और खाओ! दाखमधु और दूध बिन रुपए और बिना दाम ही आकर ले लो। २ जो भोजनवस्तु नहीं है, उसके लिये तुम क्यों रुपया लगाते हो, और,

* मूल में—जितनी जीभें तेरे साथ उठें।

जिस से पेट नहीं भरता उसके लिये क्यों परिश्रम करते हो? मेरी ओर मन लगाकर सुनो, तब उत्तम वस्तुएं खाने पाओगे और चिकनी चिकनी वस्तुएं खाकर सन्तुष्ट हो जाओगे। ३ कान लगाओ, और मेरे पास आओ; सुनो, तब तुम जीवित रहोगे *; और मैं तुम्हारे साथ सदा की वाचा बान्धूंगा अर्थात् दाऊद पर की अटल करुणा की वाचा। ४ सुनो, मैं ने उसको राज्य राज्य के लोगों के लिये साक्षी और प्रधान और आज्ञा देनेवाला ठहराया है। ५ सुन, तू ऐसी जाति को जिसे तू नहीं जानता बुलाएगा, और ऐसी जातियां जो तुझे नहीं जानतीं तेरे पास दौड़ी आएंगी, वे तेरे परमेश्वर यहोवा और इस्राएल के पवित्र के निमित्त यह करेंगी, क्योंकि उस ने तुझे शोभायमान किया है ।।

६ जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी खोज में रहो, जब तक वह निकट है तब तक उसे पुकारो; ७ दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच विचार छोड़कर यहोवा ही की ओर फिरे, वह उस पर दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा। ८ क्योंकि यहोवा कहता है, मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं हैं, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है। ९ क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है † ।।

१० जिस प्रकार से वर्षा और हिम आकाश से गिरते हैं और वहां यों ही लौट नहीं जाते, वरन भूमि पर पड़कर * उपज उपजाते हैं जिस से बोनेवाले को बीज और खानेवाले को रोटी मिलती है, ११ उसी प्रकार से मेरा वचन भी होगा जो मेरे मुख से निकलता है; वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु, जो मेरी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिये मैं ने उसको भेजा है उसे वह सुफल करेगा † ।।

१२ क्योंकि तुम आनन्द के साथ निकलोगे, और शान्ति के साथ पहुंचाए जाओगे; तुम्हारे आगे आगे पहाड़ और पहाड़ियां गला खोलकर जयजयकार करेंगी, और मैदान के सब वृक्ष आनन्द के मारे ताली बजाएंगे। १३ तब भटकटैयों की सन्ती सनौवर उगेंगे; और बिच्छू पेड़ों की सन्ती मेंहदी उगेगी: और इस से यहोवा का नाम होगा, जो सदा का चिन्ह होगा और कभी न मिटेगा।

५६ यहोवा यों कहता है, न्याय का पालन करो, और, धर्म के काम करो; क्योंकि मैं शीघ्र तुम्हारा उद्धार करूंगा ‡, और मेरा धर्मी होना प्रगट होगा। २ क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो ऐसा ही करता, और वह आदमी जो इस पर स्थिर रहता है, जो विश्रामदिन को पवित्र मानता और अपवित्र करने से बचा रहता है, और अपने हाथ को सब भांति की बुराई करने से रोकता है। ३ जो परदेशी यहोवा से मिल गए हैं,

---

* मूल में—तुम्हारे प्राण बने रहेंगे।

† मूल में—आकाश पृथ्वी से ऊंचा है वैसे ही मेरी गति तुम्हारी गति से और मेरे सोच विचार तुम्हारे सोच विचारों से ऊंचे हैं।

* मूल में—भूमि को सींचकर।

† मूल में—उस में सुफल होगा।

‡ मूल में—मेरा उद्धार आने को निकट है।

वे न कहें कि यहोवा हमें अपनी प्रजा से निश्चय अलग करेगा; और खोजे भी न कहें कि हम तो सूखे वृक्ष हैं। ४ क्योंकि जो खोजे मेरे विश्रामदिन को मानते और जिस बात से मैं प्रसन्न रहता हूं उसी को अपनाते और मेरी वाचा को पालते हैं, उनके विषय यहोवा यों कहता है ५ कि मैं अपने भवन और अपनी शहरपनाह के भीतर उनको ऐसा नाम दूंगा जो पुत्र-पुत्रियों से कहीं उत्तम होगा; मैं उनका नाम सदा बनाए रखूंगा * और वह कभी न मिटाया जाएगा ।।

६ परदेशी भी जो यहोवा के साथ इस इच्छा से मिले हुए हैं कि उसकी सेवा टहल करें और यहोवा के नाम से प्रीति रखें और उसके दास हो जाएं, जितने विश्रामदिन को अपवित्र करने से बचे रहते और मेरी वाचा को पालते हैं, ७ उनको मैं अपने पवित्र पर्वत पर ले आकर अपने प्रार्थना के भवन में आनन्दित करूंगा; उनके होमबलि और मेलबलि मेरी वेदी पर ग्रहण किए जाएंगे; क्योंकि मेरा भवन सब देशों के लोगों के लिये प्रार्थना का घर कहलाएगा। ८ प्रभु यहोवा, जो निकाले हुए इस्राएलियों को इकट्ठे करनेवाला है, उसकी यह वाणी है कि जो इकट्ठे किए गए हैं उनके साथ मैं औरों को भी इकट्ठे करके मिला दूंगा ।।

९ हे मैदान के सब जन्तुओ, हे वन के सब पशुओ, खाने के लिये आओ। १० उसके पहरुए अन्धे हैं, वे सब के सब अज्ञानी हैं, वे सब के सब गूंगे कुत्ते हैं जो भूंक नहीं सकते; वे स्वप्न देखनेवाले और लेटे रहकर सोते रहना चाहते हैं।

* मूल में—उनको सदा का नाम दूंगा।

११ वे मरभूखे कुत्ते हैं जो कभी तृप्त नहीं होते *। वे चरवाहे हैं जिन में समझ ही नहीं; उन सभों ने अपने अपने लाभ के लिये अपना अपना मार्ग लिया है। १२ वे कहते हैं कि आओ, हम दाखमधु ले आएं, आओ मदिरा पीकर छक जाएं; कल का दिन भी तो आज ही के समान अत्यन्त सुहावना होगा ।।

५७ धर्मी जन नाश होता है, और कोई इस बात की चिन्ता नहीं करता; भक्त मनुष्य उठा लिए जाते हैं, परन्तु कोई नहीं सोचता। धर्मी जन इसलिये उठा लिया गया कि आनेवाली आपत्ति से बच जाए, २ वह शान्ति को पहुंचता है; जो सीधी चाल चलता है वह अपनी खाट पर विश्राम करता है ।।

३ परन्तु तुम, हे जादूगरनी के पुत्रो, हे व्यभिचारी और व्यभिचारिणी की सन्तान, यहां निकट आओ। ४ तुम किस पर हंसी करते हो? तुम किस पर मुंह खोलकर जीभ निकालते हो †? क्या तुम पाखण्डी और झूठे ‡ के वंश नहीं हो, ५ तुम, जो सब हरे वृक्षों के तले देवताओं के कारण कामातुर होते और नालों में और चट्टानों की दरारों के बीच § बालबच्चों को बध करते हो? ६ नालों के चिकने पत्थर ही तेरा भाग और अंश ठहरे ||; तू ने उनके लिये तपावन दिया और अन्नबलि चढ़ाया है। क्या मैं इन बातों

* मूल में—फिर कुत्ते मरभूखे हैं, वे तृप्ति नहीं जानते।

† मूल में—मुंह खोलकर जीभ बढ़ाते हो।

‡ मूल में—तुम अपराध की सन्तान, झूठ का वंश।

§ मूल में—के नीचे।

|| मूल में—वे ही तेरी चिट्ठी।

से शान्त हो जाऊं? ७ एक बड़े ऊंचे पहाड़ पर तू ने अपना बिछौना बिछाया है, वहीं तू बलि चढ़ाने को चढ़ गई। ८ तू ने अपनी चिन्हानी अपने द्वार के किवाड़ और चौखट की आड़ ही में रखी; मुझे छोड़कर तू औरों को अपने तईं दिखाने के लिये चढ़ी, तू ने अपनी खाट चौड़ी की और उन से वाचा बान्ध ली, तू ने उनकी खाट को जहां देखा, पसन्द किया। ९ तू तेल लिए हुए राजा के पास गई और बहुत सुगन्धित तेल अपने काम में लाई; अपने दूत तू ने दूर तक भेजे और अधोलोक तक अपने को नीचा किया। १० तू अपनी यात्रा की लम्बाई के कारण थक गई, तौभी तू ने न कहा कि यह व्यर्थ है; तेरा बल कुछ अधिक हो गया *, इसी कारण तू नहीं थकी॥

११ तू ने किस के डर से झूठ कहा, और किसका भय मानकर ऐसा किया कि मुझ को स्मरण नहीं रखा न मुझ पर ध्यान दिया? क्या मैं बहुत काल से चुप नहीं रहा? इस कारण तू मेरा भय नहीं मानती। १२ मैं आप तेरे धर्म और कर्मों का वर्णन करूंगा, परन्तु, उन से तुझे कुछ लाभ न होगा। १३ जब तू दोहाई दे, तब जिन मूर्त्तियों को तू ने जमा किया है वे ही तुझे छुड़ाएं! वे तो सब की सब वायु से वरन एक ही फूंक से उड़ जाएंगी। परन्तु जो मेरी शरण लेगा वह देश का अधिकारी होगा, और मेरे पवित्र पर्वत का भी अधिकारी होगा॥

१४ और यह कहा जाएगा, पांति बान्ध बान्धकर राजमार्ग बनाओ, मेरी प्रजा के मार्ग में से हर एक ठोकर दूर करो। १५ क्योंकि जो महान और उत्तम और सदैव स्थिर रहता, और जिसका नाम पवित्र है, वह यों कहता है, मैं ऊंचे पर और पवित्र स्थान में निवास करता हूं, और उसके संग भी रहता हूं, जो खेदित और नम्र है, कि, नम्र लोगों के हृदय और खेदित लोगों के मन को हर्षित करूं *। १६ मैं सदा मुक़द्दमा न लड़ता रहूंगा, न सर्वदा क्रोधित रहूंगा; क्योंकि आत्मा मेरे बनाए हुए हैं और जीव मेरे साम्हने मूर्च्छित हो जाते हैं। १७ उसके लोभ के पाप के कारण मैं ने क्रोधित होकर उसको दुःख दिया था, और क्रोध के मारे उस से मुंह छिपाया था; परन्तु वह अपने मनमाने मार्ग में दूर भटकता चला गया था। १८ मैं उसकी चाल देखता आया हूं, तौभी अब उसको चंगा करूंगा; मैं उसे ले चलूंगा और विशेष करके उसके शोक करनेवालों को शान्ति दूंगा। १९ मैं मुंह के फल का सृजनहार हूं; यहोवा ने कहा है, जो दूर और जो निकट हैं, दोनों को पूरी शान्ति मिले; और मैं उसको चंगा करूंगा। २० परन्तु दुष्ट तो लहराते हुए समुद्र के समान है जो स्थिर नहीं रह सकता; और उसका जल मैल और कीच उछालता है। २१ दुष्टों के लिये शान्ति नहीं है, मेरे परमेश्वर का यही वचन है॥

५८

गला खोलकर पुकार, कुछ न रख छोड़, नरसिंगे का सा ऊंचा शब्द कर; मेरी प्रजा को उसका अपराध अर्थात् याकूब के घराने को उसका पाप

* मूल में—तू ने अपने हाथ का जीवन पाया।

* मूल में—नम्रों की आत्मा और चूर मन जिलाने को।

जता दे। २ वे प्रति दिन मेरे पास आते और मेरी गति बूझने की इच्छा ऐसी रखते हैं मानो वे धर्मी लोग हैं जिन्हों ने अपने परमेश्वर के नियमों को नहीं टाला; वे मुझ से धर्म के नियम पूछते और परमेश्वर के निकट आने से प्रसन्न होते हैं। ३ वे कहते हैं, क्या कारण है कि हम ने तो उपवास रखा, परन्तु तू ने इसकी सुधि नहीं ली? हम ने दुःख उठाया, परन्तु तू ने कुछ ध्यान नहीं दिया? सुनो, उपवास के दिन तुम अपनी ही इच्छा पूरी करते हो और अपने सेवकों से कठिन कामों को कराते हो। ४ सुनो, तुम्हारे उपवास का फल यह होता है कि तुम आपस में लड़ते और झगड़ते और दुष्टता से घूंसे मारते हो। जैसा उपवास तुम आजकल रखते हो, उस से तुम्हारी प्रार्थना ऊपर नहीं सुनाई देगी। ५ जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूं अर्थात् जिस में मनुष्य स्वयं को दीन करे, क्या तुम इस प्रकार करते हो? क्या सिर को झाऊ की नाईं झुकाना, अपने नीचे टाट बिछाना, और राख फैलाने ही को तुम उपवास और यहोवा को प्रसन्न करने का दिन कहते हो?

६ जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूं, वह क्या यह नहीं, कि, अन्याय से बनाए हुए दासों, और अन्धेर सहनेवालों का जूआ तोड़कर* उनको छुड़ा लेना, और, सब जूओं को टुकड़े टुकड़े कर देना? ७ क्या वह यह नहीं है कि अपनी रोटी भूखों को बांट देना, अनाथ और मारे-मारे फिरते हुओं को अपने घर ले आना, किसी को नंगा देखकर वस्त्र पहिनाना, और अपने जातिभाइयों से अपने को न छिपाना? ८ तब तेरा प्रकाश पौ फटने की नाईं चमकेगा, और तू शीघ्र चंगा हो जाएगा; तेरा धर्म तेरे आगे आगे चलेगा, यहोवा का तेज तेरे पीछे रक्षा करते चलेगा। ९ तब तू पुकारेगा और यहोवा उत्तर देगा; तू दोहाई देगा और वह कहेगा, मैं यहां हूं*। यदि तू अन्धेर करना† और उंगली मटकाना, और, दुष्ट बातें बोलना छोड़ दे, १० उदारता से भूखे की सहायता करे‡ और दीन दुःखियों को सन्तुष्ट करे, तब अन्धियारे में तेरा प्रकाश चमकेगा, और तेरा घोर अन्धकार दोपहर का सा उजियाला हो जाएगा। ११ और यहोवा तुझे लगातार लिए चलेगा, और काल के समय तुझे तृप्त और तेरी हड्डियों को हरी भरी करेगा; और तू सींची हुई बारी और ऐसे सोते के समान होगा जिसका जल कभी नहीं सूखता। १२ और तेरे वंश के लोग बहुत काल के उजड़े हुए स्थानों को फिर बसाएंगे; तू पीढ़ी पीढ़ी की पड़ी हुई नेव पर घर उठाएगा; तेरा नाम टूटे हुए बाड़े का सुधारक और पथों§ का ठीक करनेवाला पड़ेगा॥

१३ यदि तू विश्रामदिन को अशुद्ध न करे‖ अर्थात् मेरे उस पवित्र दिन में अपनी इच्छा पूरी करने का यत्न न करे, और विश्रामदिन को आनन्द का दिन और यहोवा का पवित्र किया हुआ दिन

* मूल में—कि दुष्टता के बन्धन खोलूंगा और जूए की रस्सियां खोलना।

* मूल में—मुझे देख।

† मूल में—जूआ।

‡ मूल में—और भूखे के लिये अपना जीव खींच निकाले।

§ मूल में—रहने के लिये पथों।

‖ मूल में—यदि विश्राम दिन से अपना पांव मोड़े।

समझकर मानें; यदि तू उसका सन्मान करके उस दिन अपने मार्ग पर न चले, अपनी इच्छा पूरी न करे, और अपनी ही बातें न बोले, १४ तो तू यहोवा के कारण सुखी होगा, और मैं तुझे देश के ऊंचे स्थानों पर चलने दूंगा; मैं तेरे मूलपुरुष याकूब के भाग की उपज में से तुझे खिलाऊंगा, क्योंकि यहोवा ही के मुख से यह वचन निकला है ।।

५६ सुनो, यहोवा का हाथ ऐसा छोटा नहीं हो गया कि उद्धार न कर सके, न वह ऐसा बहिरा* हो गया है कि सुन न सके; २ परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुंह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता। ३ क्योंकि तुम्हारे हाथ हत्या से और तुम्हारी अंगुलियां अधर्म के कर्मों से अपवित्र हो गई हैं; तुम्हारे मुंह से तो झूठ और तुम्हारी जीभ से कुटिल बातें निकलती हैं। ४ कोई धर्म के साथ नालिश नहीं करता, न कोई सच्चाई से मुक़द्दमा लड़ता है; वे मिथ्या पर भरोसा रखते हैं और झूठ बातें बकते हैं; उसको मानो उत्पात का गर्भ रहता, और वे अनर्थ को जन्म देते हैं। ५ वे सांपिन के अण्डे सेते और मकड़ी के जाले बनाते हैं; जो कोई उनके अण्डे खाता वह मर जाता है, और जब कोई एक को फोड़ता तब उस में से सपोला निकलता है†। ६ उनके जाले कपड़े का काम न देंगे, न वे अपने कामों से अपने को ढांप सकेंगे। क्योंकि उनके काम अनर्थ ही के होते हैं, और उनके हाथों से उपद्रव का काम होता है। ७ वे बुराई* करने को दौड़ते हैं, और निर्दोष की हत्या करने को तत्पर रहते हैं; उनकी युक्तियां व्यर्थ हैं, उजाड़ और विनाश ही उनके मार्गों में हैं। ८ शान्ति का मार्ग वे जानते ही नहीं और न उनके व्यवहार में न्याय है; उनके पथ टेढ़े हैं, जो कोई उन पर चले वह शान्ति न पाएगा ।।

९ इस कारण न्याय हम से दूर है, और धर्म हमारे समीप ही नहीं आता; हम उजियाले की बाट तो जोहते हैं, परन्तु, देखो अन्धियारा ही बना रहता है, हम प्रकाश की आशा तो लगाए हैं, परन्तु, घोर अन्धकार ही में चलते हैं। १० हम अन्धों के समान भीत टटोलते हैं, हां, हम बिना आंख के लोगों की नाईं टटोलते हैं; हम दिन-दोपहर रात की नाईं ठोकर खाते हैं, हृष्टपुष्टों के बीच हम मुर्दों के समान हैं। ११ हम सब के सब रीछों की नाईं चिल्लाते हैं और पण्डुकों के समान च्यूं च्यूं करते हैं; हम न्याय की बाट तो जोहते हैं, पर वह कहीं नहीं; और उद्धार की बाट जोहते हैं पर वह हम से दूर ही रहता है। १२ क्योंकि हमारे अपराध तेरे साम्हने बहुत हुए हैं, हमारे पाप हमारे विरुद्ध साक्षी दे रहे हैं; हमारे अपराध हमारे संग हैं और हम अपने अधर्म के काम जानते हैं: १३ हम ने यहोवा का अपराध किया है, हम उस से मुकर गए और अपने परमेश्वर के पीछे चलना छोड़ दिया, हम अन्धेर करने लगे और उलट

* मूल में—उसका कान ऐसा भारी।
† मूल में—और कुचला हुआ सपोला फूटता है।

* मूल में—उनके पांव बुराई।

फेर की बातें कहीं, हम ने झूठी बातें मन में गढ़ीं और कही भी हैं। १४ न्याय तो पीछे हटाया गया और धर्म दूर खड़ा रह गया; सच्चाई बाजार में गिर पड़ी *, और सिधाई प्रवेश नहीं करने पाती। १५ हां, सच्चाई खो गई, और जो बुराई से भागता है सो शिकार हो जाता है।।

यह देखकर यहोवा ने बुरा माना, क्योंकि न्याय जाता रहा, १६ उस ने देखा कि कोई भी पुरुष नहीं, और इस से अचम्भा किया कि कोई बिनती करनेवाला नहीं; तब उस ने अपने ही भुजबल से उद्धार किया †, और अपने धर्मी होने के कारण वह सम्भल गया। १७ उस ने धर्म को झिलम की नाईं पहिन लिया, और उसके सिर पर उद्धार का टोप रखा गया; उस ने पलटा लेने का वस्त्र धारण किया, और जलजलाहट को बागे की नाईं पहिन लिया है। १८ उनके कर्मों के अनुसार वह उनको फल देगा, अपने द्रोहियों पर वह अपना क्रोध भड़काएगा और अपने शत्रुओं को उनकी कमाई देगा; वह द्वीपवासियों को भी उनकी कमाई भर देगा। १९ तब पश्चिम की ओर लोग यहोवा के नाम का, और पूर्व की ओर उसकी महिमा का भय मानेंगे; क्योंकि जब शत्रु महानद की नाईं चढ़ाई करेंगे तब यहोवा का आत्मा उसके विरुद्ध झण्डा खड़ा करेगा।।

२० और याकूब में जो अपराध से मन फिराते हैं उनके लिये सिय्योन में एक छुड़ानेवाला आएगा, यहोवा की यही वाणी है। २१ और यहोवा यह कहता है, जो वाचा मैं ने उन से बान्धी है वह यह है, कि मेरा आत्मा तुझ पर ठहरा है, और अपने वचन जो मैं ने तेरे मुंह में डाले हैं अब से लेकर सर्वदा तक वे तेरे मुंह से, और, तेरे पुत्रों और पोतों के मुंह से भी कभी न हटेंगे।।

६० उठ, प्रकाशमान हो; क्योंकि तेरा प्रकाश आ गया है, और यहोवा का तेज तेरे ऊपर उदय हुआ है। २ देख, पृथ्वी पर तो अन्धियारा और राज्य राज्य के लोगों पर घोर अन्धकार छाया हुआ है; परन्तु तेरे ऊपर यहोवा उदय होगा, और उसका तेज तुझ पर प्रगट होगा। ३ और अन्यजातियां तेरे पास प्रकाश के लिये और राजा तेरे आरोहण के प्रताप की ओर आएंगे।।

४ अपनी आंखें चारों ओर उठाकर देख; वे सब के सब इकट्ठे होकर तेरे पास आ रहे हैं; तेरे पुत्र दूर से आ रहे हैं, और तेरी पुत्रियां हाथों-हाथ पहुंचाई जा रही हैं। ५ तब तू इसे देखेगी और तेरा मुख चमकेगा, तेरा हृदय थरथराएगा और आनन्द से भर जाएगा *; क्योंकि समुद्र का सारा धन और अन्यजातियों की धन-सम्पत्ति तुझ को मिलेगी। ६ तेरे देश † में ऊंटों के झुण्ड और मिद्यान और एपादेशों की साड़नियां इकट्ठी होंगी; शिबा के सब लोग आकर सोना और लोबान भेंट लाएंगे और यहोवा का गुणानुवाद आनन्द से सुनाएंगे। ७ केदार की सब भेड़-बकरियां इकट्ठी होकर तेरी हो

* मूल में—सच्चाई ने चौक में ठोकर खाई।

† मूल में—उसी की भुजा ने उसके लिये उद्धार किया।

* मूल में—और बढ़ेगा।

† मूल में—तुझ में।

जाएंगी, नबायोत के मेढ़े तेरी सेवा टहल के काम में आएंगे; मेरी वेदी पर वे ग्रहण किए जाएंगे और मैं अपने शोभायमान भवन को और भी प्रतापी कर दूंगा ।।

८ ये कौन हैं जो बादल की नाईं और दर्बाओं की ओर उड़ते हुए कबूतरों की नाईं चले आते हैं? ९ निश्चय द्वीप मेरी ही बाट देखेंगे, पहिले तो तर्शीश के जहाज़ आएंगे, कि, तेरे पुत्रों को सोने-चान्दी समेत तेरे परमेश्वर यहोवा अर्थात् इस्राएल के पवित्र के नाम के निमित्त दूर से पहुंचाएं, क्योंकि उस ने तुझे शोभायमान किया है ।।

१० परदेशी लोग तेरी शहरपनाह को उठाएंगे, और उनके राजा तेरी सेवा टहल करेंगे; क्योंकि मैं ने क्रोध में आकर तुझे दुःख दिया था, परन्तु अब तुझ से प्रसन्न होकर तुझ पर दया की है। ११ तेरे फाटक सदैव खुले रहेंगे; दिन और रात वे बन्द न किए जाएंगे .जिस से अन्य-जातियों की धन-सम्पत्ति और उनके राजा बंधुए होकर तेरे पास पहुंचाए जाएं। १२ क्योंकि जो जाति और राज्य के लोग तेरी सेवा न करें वे नष्ट हो जाएंगे; हां ऐसी जातियां पूरी रीति से सत्यानाश हो जाएंगी। १३ लबानोन का विभव अर्थात् सनौबर और देवदार और सीधे सनौबर के पेड़ एक साथ तेरे पास आएंगे कि मेरे पवित्रस्थान को सुशोभित करें; और मैं अपने चरणों के स्थान को महिमा दूंगा। १४ तेरे दुःख देनेवालों की सन्तान तेरे पास सिर झुकाए हुए आएंगे; और जिन्हों ने तेरा तिरस्कार किया सब तेरे पांवों पर* गिरकर दण्डवत् करेंगे; वे तेरा नाम यहोवा का नगर, इस्राएल के पवित्र का सिय्योन रखेंगे ।।

१५ तू जो त्यागी गई और घृणित ठहरी, यहां तक कि कोई तुझ में से होकर नहीं जाता था, इसकी सन्ती मैं तुझे सदा के घमण्ड का और पीढ़ी पीढ़ी के हर्ष का कारण ठहराऊंगा। १६ तू अन्यजातियों का दूध पी लेगी, तू राजाओं की छातियां चूसेगी; और तू जान लेगी कि मैं यहोवा तेरा उद्धारकर्त्ता और तेरा छुड़ानेवाला, याकूब का सर्वशक्तिमान हूं ।।

१७ मैं पीतल की सन्ती सोना, लोहे की सन्ती चान्दी, लकड़ी की सन्ती पीतल और पत्थर की सन्ती लोहा लाऊंगा। मैं तेरे हाकिमों को मेल-मिलाप और तेरे चौधरियों को धार्मिकता ठहराऊंगा। १८ तेरे देश में फिर कभी उपद्रव और तेरे सिवानों के भीतर उत्पात वा अन्धेर की चर्चा न सुनाई पड़ेगी; परन्तु तू अपनी शहरपनाह का नाम उद्धार और अपने फाटकों का नाम यश रखेगी। १९ फिर दिन को सूर्य तेरा उजियाला न होगा, न चान्दनी के लिये चन्द्रमा परन्तु यहोवा तेरे लिये सदा का उजियाला और तेरा परमेश्वर तेरी शोभा ठहरेगा। २० तेरा सूर्य फिर कभी अस्त न होगा और न तेरे चन्द्रमा की ज्योति मलिन होगी*; क्योंकि यहोवा तेरी सदैव की ज्योति होगा और तेरे विलाप के दिन समाप्त हो जाएंगे। २१ और तेरे लोग सब के सब धर्मी होंगे; वे सर्वदा देश के अधिकारी रहेंगे, वे मेरे लगाए हुए पौधे और मेरे हाथों का काम ठहरेंगे, जिस से मेरी महिमा प्रगट हो। २२ छोटे से

* मूल में—तेरे पांवों के तलुए पर।

* मूल में—और तेरा चन्द्रमा न सिमटेगा।

छोटा एक हजार हो जाएगा और सब से दुर्बल एक सामर्थी जाति बन जाएगा। मैं यहोवा हूं; ठीक समय पर यह सब कुछ शीघ्रता से पूरा करूंगा ।।

६१ प्रभु यहोवा का आत्मा मुझ पर है; क्योंकि यहोवा ने सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया और मुझे इसलिये भेजा है कि खेदित मन के लोगों को शान्ति दूं; कि बंधुओं के लिये स्वतन्त्रता का और क़ैदियों के लिये छुटकारे का प्रचार करूं; २ कि यहोवा के प्रसन्न रहने के वर्ष का और हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन का प्रचार करूं; कि सब विलाप करनेवालों को शान्ति दूं ३ और सिय्योन के विलाप करनेवालों के सिर पर की राख दूर करके सुन्दर पगड़ी बान्ध दूं, कि उनका विलाप दूर करके हर्ष का तेल लगाऊं और उनकी उदासी हटाकर यश का ओढ़ना ओढ़ाऊं; जिस से वे धर्म के बांजवृक्ष और यहोवा के लगाए हुए कहलाएं और जिस से उसकी महिमा प्रगट हो। ४ तब वे बहुत काल के उजड़े हुए स्थानों को फिर बसाएंगे, पूर्वकाल से पड़े हुए खण्डहरों में वे फिर घर बनाएंगे; उजड़े हुए नगरों को जो पीढ़ी पीढ़ी में उजड़े हुए हों वे फिर नये सिरे से बसाएंगे ।।

५ परदेशी आ खड़े होंगे और तुम्हारी भेड़-बकरियों को चराएंगे और विदेशी लोग तुम्हारे हरवाहे और दाख की बारी के माली होंगे; ६ पर तुम यहोवा के याजक कहलाओगे, वे तुम को हमारे परमेश्वर के सेवक कहेंगे; और तुम अन्यजातियों की धन-सम्पत्ति को खाओगे, उनके विभव की वस्तुएं पाकर तुम बड़ाई करोगे। ७ तुम्हारी नामधराई की सन्ती दूना भाग मिलेगा, अनादर की सन्ती तुम * अपने भाग के कारण जयजयकार करोगे; तुम * अपने देश में दूने भाग के अधिकारी होगे; और सदा आनन्दित बने रहोगे ।।

८ क्योंकि, मैं यहोवा न्याय से प्रीति रखता हूं, मैं अन्याय और डकैती से घृणा करता हूं; इसलिये मैं उनको उनका प्रतिफल सच्चाई से दूंगा, और, उनके साथ सदा की वाचा बान्धूंगा। ९ उनका वंश अन्यजातियों में और उनकी सन्तान देश देश के लोगों के बीच प्रसिद्ध होगी; जितने उनको देखेंगे, पहिचान लेंगे कि यह वह वंश है जिसको परमेश्वर ने आशीष दी है ।।

१० मैं यहोवा के कारण अति आनन्दित होऊंगा, मेरा प्राण परमेश्वर के कारण मगन रहेगा; क्योंकि उस ने मुझे उद्धार के वस्त्र पहिनाए, और धर्म की चद्दर ऐसे ओढ़ा दी है जैसे दूल्हा फूलों की माला से अपने आपको सजाता और दुल्हिन अपने गहनों से अपना सिंगार करती है। ११ क्योंकि जैसे भूमि अपनी उपज को उगाती, और बारी में जो कुछ बोया जाता है उसको वह उपजाती है, वैसे ही प्रभु यहोवा सब जातियों के साम्हने धार्मिकता और धन्यवाद को बढ़ाएगा ।।

६२ सिय्योन के निमित्त मैं चुप न रहूंगा, और यरूशलेम के निमित्त मैं चैन न लूंगा, जब तक कि उसकी धार्मिकता प्रकाश की नाईं और उसका उद्धार जलते हुए पलीते के समान दिखाई न दे। २ तब अन्यजातियां तेरा धर्म

* मूल में—वे।

और सब राजा तेरी महिमा देखेंगे; और तेरा एक नया नाम रखा जाएगा जो यहोवा के मुख से निकलेगा। ३ तू यहोवा के हाथ में एक शोभायमान मुकुट और अपने परमेश्वर की हथेली में राजमुकुट ठहरेगी। ४ तू फिर त्यागी हुई न कहलाएगी, और तेरी भूमि फिर उजड़ी हुई न कहलाएगी; परन्तु तू हेप्सीबा* और तेरी भूमि ब्यूला† कहलाएगी; क्योंकि यहोवा तुझ से प्रसन्न है, और तेरी भूमि सुहागिन होगी। ५ क्योंकि जिस प्रकार जवान पुरुष एक कुमारी को ब्याह लाता है, वैसे ही तेरे पुत्र तुझे ब्याह लेंगे; और, जैसे दुल्हा अपनी दुल्हिन के कारण हर्षित होता है, वैसे ही तेरा परमेश्वर तेरे कारण हर्षित होगा ॥

६ हे यरूशलेम, मैं ने तेरी शहरपनाह पर पहरुए बैठाए हैं; वे दिन-रात कभी चुप न रहेंगे। हे यहोवा को स्मरण करनेवालो, चुप न रहो, ७ और, जब तक वह यरूशलेम को स्थिर करके उसकी प्रशंसा पृथ्वी पर न फैला दे, तब तक उसे भी चैन न लेने दो। ८ यहोवा ने अपने दहिने हाथ की और अपनी बलवन्त भुजा की शपथ खाई है: निश्चय मैं भविष्य में तेरा अन्न अब फिर तेरे शत्रुओं को खाने के लिये न दूंगा, और परदेशियों के पुत्र तेरा नया दाखमधु जिसके लिये तू ने परिश्रम किया है, नहीं पीने पाएंगे; ९ केवल वे ही, जिन्हों ने उसे खत्ते में रखा हो, उस से खाकर यहोवा की स्तुति करेंगे, और जिन्हों ने दाखमधु भण्डारों में रखा हो, वे ही उसे मेरे पवित्रस्थान के आंगनों में पीने पाएंगे ॥

* अर्थात् जिस से मैं प्रसन्न हूं।
† अर्थात् सुहागिन।

१० जाओ, फाटकों में से निकल जाओ, प्रजा के लिये मार्ग सुधारो; राजमार्ग सुधारकर ऊंचा करो, उस में के पत्थर बीन बीनकर फेंक दो, देश देश के लोगों के लिये झण्डा खड़ा करो। ११ देखो, यहोवा ने पृथ्वी की छोर तक इस आज्ञा का प्रचार किया है: सिय्योन की बेटी से कहो, देख, तेरा उद्धारकर्त्ता आता है; देख, जो मज़दूरी उसको देनी है वह उसके पास है और उसका काम उसके सामने है। १२ और लोग उनको पवित्र प्रजा और यहोवा के छुड़ाए हुए कहेंगे; और तेरा नाम ग्रहण की हुई अर्थात् न-त्यागी हुई नगरी पड़ेगा ॥

६३ यह कौन है जो एदोम देश के बोस्रा नगर से बैंजनी वस्त्र पहिने हुए चला आता है, जो अति बलवान और भड़कीला पहिरावा पहिने हुए झूमता चला आता है?

यह मैं ही हूं, जो धर्म से बोलता और पूरा उद्धार करने की शक्ति रखता हूं*।

२ तेरा पहिरावा क्यों लाल है? और क्या कारण है कि तेरे वस्त्र हौद में दाख रौंदनेवाले के समान हैं?

३ मैं ने तो अकेले ही हौद में दाखें रौंदी हैं, और देश के लोगों में से किसी ने मेरा साथ नहीं दिया; हां, मैं ने अपने क्रोध में आकर उन्हें रौंदा और जलकर उन्हें लताड़ा; उनके लोहू के छींटे मेरे वस्त्रों पर पड़े हैं, इस से मेरा सारा पहिरावा धब्बेदार हो गया है। ४ क्योंकि पलटा लेने का दिन मेरे मन में था, और मेरी छुड़ाई हुई प्रजा का वर्ष आ पहुंचा है। ५ मैं ने खोजा, पर कोई सहायक न

* मूल में—उद्धार करने को बड़ा।

दिखाई पड़ा; मैं ने इस से अचम्भा भी किया कि कोई सम्भालनेवाला नहीं था; तब मैं ने अपने ही भुजबल से उद्धार किया, और मेरी जलजलाहट ही ने मुझे सम्हाला। ६ हां, मैं ने अपने क्रोध में आकर देश देश के लोगों को लताड़ा, अपनी जलजलाहट से मैं ने उन्हें मतवाला कर दिया, और उनके लोहू को भूमि पर बहा दिया।।

७ जितना उपकार यहोवा ने हम लोगों का किया अर्थात् इस्राएल के घराने पर दया और अत्यन्त करुणा करके उस ने हम से जितनी भलाई की, उस सब के अनुसार मैं यहोवा के करुणामय कामों का वर्णन और उसका गुणानुवाद करूंगा। ८ क्योंकि उस ने कहा, निःसन्देह ये मेरी प्रजा के लोग हैं, ऐसे लड़के हैं जो धोखा न देंगे; और वह उनका उद्धारकर्त्ता हो गया। ९ उनके सारे संकट में उस ने भी कष्ट उठाया *, और उसके सम्मुख रहनेवाले दूत ने उनका उद्धार किया; प्रेम और कोमलता से उस ने आप ही उनको छुड़ाया; उस ने उन्हें उठाया और प्राचीनकाल से सदा उन्हें लिए फिरा।।

१० तौभी उन्हों ने बलवा किया और उसके पवित्र आत्मा को खेदित किया; इस कारण वह पलटकर उनका शत्रु हो गया, और स्व उन से लड़ने लगा। ११ तब उसके लोगों को उनके प्राचीन दिन अर्थात् मूसा के दिन स्मरण आए, वे कहने लगे कि जो अपनी भेड़ों को उनके चरवाहे समेत समुद्र में से निकाल लाया वह कहां है? जिस ने उनके बीच अपना पवित्र आत्मा डाला, वह कहां है? १२ जिस ने अपने प्रतापी भुजबल को मूसा के दहिने हाथ के साथ कर दिया *, जिस ने उनके साम्हने जल को दो भाग करके अपना सदा का नाम कर लिया, १३ जो उनको गहिरे समुद्र में से ले चला; जैसा घोड़े को जंगल में वैसे ही उनको भी ठोकर न लगी, वह कहां है? १४ जैसे घरैलू पशु तराई में उतर जाता है, वैसे ही यहोवा के आत्मा ने उनको विश्राम दिया। इसी प्रकार से तू ने अपनी प्रजा की अगुवाई की ताकि अपना नाम महिमायुक्त बनाए।।

१५ स्वर्ग से, जो तेरा पवित्र और महिमापूर्ण वासस्थान है, दृष्टि कर। तेरी जलन और पराक्रम कहां रहे? तेरी दया और करुणा मुझ पर से हट † गई हैं। १६ निश्चय तू हमारा पिता है, यद्यपि इब्राहीम हमें नहीं पहिचानता, और इस्राएल हमें ग्रहण नहीं करता; तौभी, हे यहोवा, तू हमारा पिता और हमारा छुड़ानेवाला है; प्राचीनकाल से यही तेरा नाम है। १७ हे यहोवा, तू क्यों हम को अपने मार्गों से भटका देता, और हमारे मन ऐसे कठोर करता है कि हम तेरा भय नहीं मानते? अपने दास, अपने निज भाग के गोत्रों के निमित्त लौट आ। १८ तेरी पवित्र प्रजा तो थोड़े ही काल तक तेरे पवित्रस्थान की अधिकारी रही; हमारे द्रोहियों ने उसे लताड़ दिया है। १९ हम लोग तो ऐसे हो गए हैं, मानो तू ने हम ‡ पर कभी प्रभुता नहीं की, और उनके समान जो कभी तेरे न कहलाए।।

* या वह संकट देनेवाला न था।

* मूल में—जो अपनी शोभायमान भुजा को मूसा के दहिने हाथ पर चलाता था।

† मूल में—रुक।

‡ मूल में—उन।

६४ भला हो कि तू आकाश को फाड़कर उतर आए और पहाड़ तेरे साम्हने कांप उठे। २ जैसे आग झाड़-झंखाड़ को जला देती वा जल को उबालती है, उसी रीति से तू अपने शत्रुओं पर अपना नाम ऐसा प्रगट कर कि जाति जाति के लोग तेरे प्रताप से कांप उठें! ३ जब तू ने ऐसे भयानक काम किए जो हमारी आशा से भी बढ़कर थे, तब तू उतर आया, पहाड़ तेरे प्रताप से कांप उठे। ४ क्योंकि प्राचीनकाल ही से तुझे छोड़ कोई और ऐसा परमेश्वर न तो कभी देखा * गया और न कान से उसकी चर्चा सुनी गई जो अपनी बाट जोहनेवालों के लिये काम करे। ५ तू तो उन्हीं से मिलता है जो धर्म के काम हर्ष के साथ करते, और तेरे मार्गों पर चलते हुए तुझे स्मरण करते हैं। देख, तू क्रोधित हुआ था, क्योंकि हम ने पाप किया; हमारी यह दशा तो बहुत काल से है, क्या हमारा उद्धार हो सकता है? ६ हम तो सब के सब अशुद्ध मनुष्य के से हैं, और हमारे धर्म के काम सब के सब मैले चिथड़ों के समान हैं। हम सब के सब पत्ते की नाईं मुर्झा जाते हैं, और हमारे अधर्म के कामों ने हमें वायु की नाईं उड़ा दिया है। ७ कोई भी तुझ से प्रार्थना नहीं करता, न कोई तुझ से सहायता लेने के लिये चौकसी करता है कि तुझ से लिपटा रहे †; क्योंकि हमारे अधर्म के कामों के कारण तू ने हम से अपना मुंह छिपा लिया है, और हमें हमारी बुराइयों के वश में छोड़ दिया है॥

* मूल में—आंख से देखा।
† मूल में—छिपा।

८ तौभी, हे यहोवा, तू हमारा पिता है; देख, हम तो मिट्टी हैं, और तू हमारा कुम्हार है; हम सब के सब तेरे हाथ के काम हैं। ९ इसलिये हे यहोवा, अत्यन्त क्रोधित न हो, और अनन्तकाल तक हमारे अधर्म को स्मरण न रख। विचार करके देख, हम तेरी बिनती करते हैं, हम सब तेरी प्रजा हैं। १० देख, तेरे पवित्र नगर जंगल हो गए, सिय्योन सुनसान हो गया है, यरूशलेम उजड़ गया है। ११ हमारा पवित्र और शोभायमान मन्दिर, जिस में हमारे पूर्वज तेरी स्तुति करते थे, आग से जलाया गया, और हमारी मनभावनी वस्तुएं सब नष्ट हो गई हैं। १२ हे यहोवा, क्या इन बातों के होते भी तू अपने को रोके रहेगा? क्या तू हम लोगों को इस अत्यन्त दुर्दशा में रहने देगा?

६५ जो मुझ को पूछते भी न थे वे मेरे खोजी हैं; जो मुझे ढूंढ़ते भी न थे उन्हों ने मुझे पा लिया, और जो जाति मेरी नहीं कहलाई थी, उस से भी मैं कहता हूं, देख, मैं उपस्थित हूं *। २ मैं एक हठीली जाति के लोगों की ओर दिन भर हाथ फैलाए रहा, जो अपनी युक्तियों के अनुसार बुरे मार्गों में चलते हैं। ३ ऐसे लोग, जो मेरे साम्हने ही बारियों में बलि चढ़ा चढ़ाकर और ईंटों पर धूप जला जलाकर, मुझे लगातार क्रोध दिलाते हैं। ४ ये क़ब्र के बीच बैठते और छिपे हुए स्थानों में रात बिताते; जो सूअर का मांस खाते, और घृणित वस्तुओं का रस अपने बर्तनों में रखते; ५ जो कहते हैं, हट जा, मेरे

* मूल में—कि मुझे देख मुझे देख।

निकट मत आ, क्योंकि मैं तुझ से पवित्र हूं। ये मेरी नाक में धूएं व उस आग के समान हैं जो दिन भर जलती रहती है। ६ देखो, यह बात मेरे साम्हने लिखी हुई है : मैं चुप न रहूंगा, मैं निश्चय बदला दूंगा वरन तुम्हारे और तुम्हारे पुरखाओं के भी अधर्म के कामों का बदला तुम्हारी गोद में भर दूंगा। ७ क्योंकि उन्हों ने पहाड़ों पर धूप जलाया और पहाड़ियों पर मेरी निन्दा की है, इसलिये मैं यहोवा कहता हूं, कि, उनके पिछले कामों के बदले को मैं इनकी गोद में तौलकर दूंगा॥

८ यहोवा यों कहता है, जिस भांति दाख के किसी गुच्छे में जब नया दाखमधु भर आता है, तब लोग कहते हैं, उसे नाश मत कर, क्योंकि उस में आशीष है; उसी भांति मैं अपने दासों के निमित्त ऐसा करूंगा कि सभों को नाश न करूंगा। ९ मैं याकूब में से एक वंश, और यहूदा में से अपने पर्वतों का एक वारिस उत्पन्न करूंगा; मेरे चुने हुए उसके वारिस होंगे, और मेरे दास वहां निवास करेंगे। १० मेरी प्रजा जो मुझे ढूंढ़ती है, उसकी भेड़-बकरियां तो शारोन में चरेंगी, और उसके गाय-बैल आकोर नाम तराई में विश्राम करेंगे। ११ परन्तु तुम जो यहोवा को त्याग देते और मेरे पवित्र पर्वत को भूल जाते हो, जो भाग्य देवता के लिये मेज़ पर भोजन की वस्तुएं सजाते और भावी देवी के लिये मसाला मिला हुआ दाखमधु भर देते हो; १२ मैं तुम्हें गिन गिनकर तलवार का कौर बनाऊंगा, और तुम सब घात होने के लिये झुकोगे; क्योंकि, जब मैं ने तुम्हें बुलाया तुम ने उत्तर न दिया, जब मैं बोला, तब तुम ने मेरी न सुनी; वरन जो मुझे बुरा लगता है वही तुम ने नित किया, और जिस से मैं अप्रसन्न होता हूं, उसी को तुम ने अपनाया॥

१३ इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है, देखो, मेरे दास तो खाएंगे, पर तुम भूखे रहोगे; मेरे दास पीएंगे, पर तुम प्यासे रहोगे; मेरे दास आनन्द करेंगे, पर तुम लज्जित होगे; १४ देखो, मेरे दास हर्ष के मारे जयजयकार करेंगे, परन्तु तुम शोक से चिल्लाओगे और खेद के मारे हाय हाय, करोगे। १५ मेरे चुने हुए लोग तुम्हारी उपमा दे देकर शाप देंगे *, और प्रभु यहोवा तुझ को नाश करेगा; परन्तु अपने दासों का दूसरा नाम रखेगा। १६ तब सारे देश में जो कोई अपने को धन्य कहेगा वह सच्चे परमेश्वर † का नाम लेकर अपने को धन्य कहेगा, और जो कोई देश में शपथ खाए वह सच्चे परमेश्वर † के नाम से शपथ खाएगा; क्योंकि पिछला कष्ट दूर हो गया और वह मेरी आंखों से छिप गया है॥

१७ क्योंकि देखो, मैं नया आकाश और नई पृथ्वी उत्पन्न करता हूं; और पहिली बातें स्मरण न रहेंगी और सोच विचार में भी न आएंगी। १८ इसलिये जो मैं उत्पन्न करने पर हूं, उसके कारण तुम हर्षित हो और सदा सर्वदा मगन रहो; क्योंकि देखो, मैं यरूशलेम को मगन और उसकी प्रजा को आनन्दित बनाऊंगा ‡।

* मूल में—तुम अपना नाम मेरे चुने हुओं की किरिया के लिये छोड़ोगे।

† मूल में—आमेन [अर्थात सत्य वचन] के परमेश्वर।

‡ मूल में—सिरजूंगा।

१९ में आप यरूशलेम के कारण मगन, और अपनी प्रजा के हेतु हर्षित हूंगा; उस में फिर रोने वा चिल्लाने का शब्द न सुनाई पड़ेगा। **२०** उस में फिर न तो थोड़े दिन का बच्चा, और न ऐसा बूढ़ा जाता रहेगा जिस ने अपनी आयु पूरी न की हो; क्योंकि जो लड़कपन में मरनेवाला है वह सौ वर्ष का होकर मरेगा, परन्तु पापी सौ वर्ष का होकर श्रापित ठहरेगा। **२१** वे घर बनाकर उन में बसेंगे; वे दाख की बारियां लगाकर उनका फल खाएंगे। **२२** ऐसा नहीं होगा कि वे बनाएं और दूसरा बसे; वा वे लगाएं, और दूसरा खाए; क्योंकि मेरी प्रजा की आयु वृक्षों की सी होगी, और मेरे चुने हुए अपने कामों का पूरा लाभ उठाएंगे। **२३** उनका परिश्रम व्यर्थ न होगा, न उनके बालक घबराहट के लिये उत्पन्न होंगे; क्योंकि वे यहोवा के धन्य लोगों का वंश ठहरेंगे, और उनके बालबच्चे उन से अलग न होंगे। **२४** उनके पुकारने से पहिले ही मैं उनको उत्तर दूंगा, और उनके मांगते ही मैं उनकी सुन लूंगा। **२५** भेड़िया और मेम्ना एक संग चरा करेंगे, और सिंह बैल की नाईं भूसा खाएगा; और सर्प का आहार मिट्टी ही रहेगा। मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई किसी को दुःख देगा और न कोई किसी की हानि करेगा, यहोवा का यही वचन है॥

६६ यहोवा यों कहता है, आकाश मेरा सिंहासन और पृथ्वी मेरे चरणों की चौकी है; तुम मेरे लिये कैसा भवन बनाओगे, और मेरे विश्राम का कौन सा स्थान होगा? **२** यहोवा की यह वाणी है, ये सब वस्तुएं मेरे ही हाथ की बनाई हुई हैं, सो ये सब मेरी ही हैं। परन्तु मैं उसी की ओर दृष्टि करूंगा जो दीन और खेदित मन का हो, और मेरा वचन सुनकर थरथराता हो॥

३ बैल का बलि करनेवाला मनुष्य के मार डालनेवाले के समान है; जो भेड़ का चढ़ानेवाला है वह उसके समान है जो कुत्ते का गला काटता है; जो अन्नबलि चढ़ाता है वह मानो सूअर का लोहू चढ़ानेवाले के समान है; और, जो लोबान जलाता है*, वह उसके समान है जो मूरत को धन्य कहता है। इन सभों ने अपना अपना मार्ग चुन लिया है, और घिनौनी वस्तुओं से उनके मन प्रसन्न होते हैं। **४** इसलिये मैं भी उनके लिये दुःख की बातें निकालूंगा, और जिन बातों से वे डरते हैं उन्हीं को उन पर लाऊंगा; क्योंकि जब मैं ने उन्हें बुलाया, तब कोई न बोला, और जब मैं ने उन से बातें की, तब उन्हों ने मेरी न सुनी; परन्तु जो मेरी दृष्टि में बुरा था वही वे करते रहे, और जिस से मैं अप्रसन्न होता था उसी को उन्हों ने अपनाया॥

तुम जो यहोवा का वचन सुनकर थरथराते हो यहोवा का वचन सुनो: **५** तुम्हारे भाई जो तुम से बैर रखते और मेरे नाम के निमित्त तुम को अलग कर देते हैं उन्हों ने कहा है, यहोवा की महिमा तो बढ़े, जिस से हम तुम्हारा आनन्द देखने पाएं; परन्तु उन्हीं को लज्जित होना पड़ेगा॥

६ सुनो, नगर से कोलाहल की धूम, मन्दिर से एक शब्द, सुनाई देता है!

* मूल में—स्मरण करानेवाला।

वह यहोवा का शब्द है, वह अपने शत्रुओं को उनकी करनी का फल दे रहा है !

७ उसकी पीड़ाएं उठने से पहले ही उस ने जन्मा दिया; उसको पीड़ाएं होने से पहिले ही उस से बेटा जन्मा। ८ ऐसी बात किस ने कभी सुनी? किस ने कभी ऐसी बातें देखीं? क्या देश एक ही दिन में उत्पन्न हो सकता है? क्या एक जाति क्षणमात्र में ही उत्पन्न हो सकती है? क्योंकि सिय्योन की पीड़ाएं उठी ही थीं कि उस से सन्तान उत्पन्न हो गए। ९ यहोवा कहता है, क्या मैं उसे जन्माने के समय तक पहुंचाकर न जन्माऊं? तेरा परमेश्वर कहता है, मैं जो गर्भ देता हूं क्या मैं कोख बन्द करूं?

१० हे यरूशलेम से सब प्रेम रखनेवालो, उसके साथ आनन्द करो और उसके कारण मगन हो; हे उसके विषय सब विलाप करनेवालो उसके साथ हर्षित हो! ११ जिस से तुम उसके शान्तिरूपी स्तन से दूध पी पीकर तृप्त हो; और दूध पीकर उसकी महिमा की बहुतायत से अत्यन्त सुखी हो॥

१२ क्योंकि यहोवा यों कहता है, देखो, मैं उसकी ओर शान्ति को नदी की नाईं, और अन्यजातियों के धन को नदी की बाढ़ समान बहा दूंगा; और तुम उस से पीओगे, तुम उसकी गोद में उठाए जाओगे और उसके घुटनों पर कुदाए जाओगे। १३ जिस प्रकार माता अपने पुत्र को* शान्ति देती है, वैसे ही मैं भी तुम्हें शान्ति दूंगा; तुम को यरूशलेम ही में शान्ति मिलेगी। १४ तुम यह देखोगे और प्रफुल्लित होगे; तुम्हारी हड्डियां घास की नाईं हरी भरी होंगी; और यहोवा का हाथ उसके दासों के लिये प्रगट होगा, और, उसके शत्रुओं के ऊपर उसका क्रोध भड़केगा॥

१५ क्योंकि देखो, यहोवा आग के साथ आएगा, और उसके रथ बवण्डर के समान होंगे, जिस से वह अपने क्रोध को जलजलाहट के साथ और अपनी चितौनी को भस्म करनेवाली आग की लपट से प्रगट करे। १६ क्योंकि यहोवा सब प्राणियों का न्याय आग से और अपनी तलवार से करेगा; और यहोवा के मारे हुए बहुत होंगे॥

१७ जो लोग अपने को इसलिये पवित्र और शुद्ध करते हैं कि बारियों में जाएं और किसी के पीछे खड़े होकर सूअर वा चूहे का मांस और और घृणित वस्तुएं खाते हैं, वे एक ही संग नाश हो जाएंगे, यहोवा की यही वाणी है॥

१८ क्योंकि मैं उनके काम और उनकी कल्पनाएं, दोनों अच्छी रीति से जानता हूं। और वह समय आता है जब मैं सारी जातियों और भिन्न भिन्न भाषा बोलनेवालों को इकट्ठा करूंगा; और वे आकर मेरी महिमा देखेंगे। १९ और मैं उन में एक चिन्ह प्रगट करूंगा; और उनके बचे हुओं को मैं उन अन्यजातियों के पास भेजूंगा जिन्हों ने न तो मेरा समाचार सुना है और न मेरी महिमा देखी है, अर्थात्, तर्शीशियों और धनुर्धारी पूलियों और लूदियों के पास, और तबलियों और यूनानियों और दूर द्वीपवासियों के पास भी भेज दूंगा और वे अन्यजातियों में मेरी महिमा का वर्णन करेंगे। २० और जैसे इस्राएली लोग अन्नबलि को शुद्ध पात्र में धरकर यहोवा के भवन में ले

* मूल में—पुरुष को।

आते हैं, वैसे ही वे तुम्हारे सब भाइयों को घोड़ों, रथों, पालकियों, खच्चरों और सांड़नियों पर चढ़ा चढ़ाकर मेरे पवित्र पर्वत यरूशलेम पर यहोवा की भेंट के लिये ले आएंगे, यहोवा का यही वचन है। २१ और उन में से मैं कितने लोगों को याजक और लेवीय पद के लिये भी चुन लूंगा॥

२२ क्योंकि जिस प्रकार नया आकाश और नई पृथ्वी, जो मैं बनाने पर हूं, मेरे सम्मुख बनी रहेगी, उसी प्रकार तुम्हारा वंश और तुम्हारा नाम भी बना रहेगा; यहोवा की यही वाणी है। २३ फिर ऐसा होगा कि एक नये चांद से दूसरे नये चांद के दिन तक और एक विश्राम दिन से दूसरे विश्राम दिन तक समस्त प्राणी मेरे साम्हने दण्डवत् करने को आया करेंगे; यहोवा का यही वचन है॥

२४ तब वे निकलकर उन लोगों की लोथों पर जिन्हों ने मुझ से बलवा किया दृष्टि डालेंगे; क्योंकि उन में पड़े हुए कीड़े कभी न मरेंगे, उनकी आग कभी न बुझेगी, और सारे मनुष्यों को उन से अत्यन्त घृणा होगी॥

यिर्मयाह नामक पुस्तक

१ हिल्किय्याह का पुत्र यिर्मयाह जो बिन्यामीन देश के अनातोत में रहनेवाले याजकों में से था, उसी के ये वचन हैं। २ यहोवा का वचन उसके पास आमोन के पुत्र यहूदा के राजा योशिय्याह के दिनों में उसके राज्य के तेरहवें वर्ष में पहुंचा। ३ इसके बाद योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के दिनों में, और योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा सिदकिय्याह के राज्य के ग्यारहवें वर्ष के अन्त तक भी प्रगट होता रहा जब तक उसी वर्ष के पांचवें महीने में यरूशलेम के निवासी बंधुआई में न चले गए॥

४ तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, ५ गर्भ में रचने से पहिले ही मैं ने तुझ पर चित्त लगाया, और उत्पन्न होने से पहिले ही मैं ने तुझे अभिषेक किया; मैं ने तुझे जातियों का भविष्यद्वक्ता ठहराया। ६ तब मैं ने कहा, हाय, प्रभु यहोवा! देख, मैं तो बोलना ही नहीं जानता, क्योंकि मैं लड़का ही हूं। ७ परन्तु यहोवा ने मुझ से कहा, मत कह कि मैं लड़का हूं; क्योंकि जिस किसी के पास मैं तुझे भेजूं वहां तू जाएगा, और जो कुछ मैं तुझे आज्ञा दूं वही तू कहेगा। ८ तू उनके मुख को देखकर मत डर, क्योंकि तुझे छुड़ाने के लिये मैं तेरे साथ हूं, यहोवा की यही वाणी है। ९ तब यहोवा ने हाथ बढ़ाकर मेरे मुंह को छुआ; और यहोवा ने मुझ से कहा, देख, मैं ने अपने वचन तेरे मुंह में डाल

दिये हैं। १० सुन, मैं ने आज के दिन तुझे जातियों और राज्यों पर अधिकारी ठहराया है; उन्हें गिराने और ढा देने के लिये, नाश करने और काट डालने के लिये, या उन्हें बनाने और रोपने के लिये ।।

११ और यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, हे यिर्मयाह, तुझे क्या दिखाई पड़ता है? मैं ने कहा, मुझे बादाम की एक टहनी दिखाई पड़ती है। १२ तब यहोवा ने मुझ से कहा, तुझे ठीक दिखाई पड़ता है, क्योंकि मैं अपने वचन को पूरा करने के लिये जागृत हूं ।।

१३ फिर यहोवा का वचन दूसरी बार मेरे पास पहुंचा, और उस ने पूछा, तुझे क्या दिखाई पड़ता है? मैं ने कहा, मुझे उबलता हुआ एक हण्डा दिखाई पड़ता है जिसका मुंह उत्तर दिशा की ओर से है। १४ तब यहोवा ने मुझ से कहा, इस देश के सब रहनेवालों पर उत्तर दिशा से विपत्ति आ पड़ेगी। १५ यहोवा की यह वाणी है, मैं उत्तर दिशा के राज्यों और कुलों को बुलाऊंगा; और वे आकर यरूशलेम के फाटकों में और उसके चारों ओर की शहरपनाह, और यहूदा के और सब नगरों के साम्हने अपना अपना सिंहासन लगाएंगे। १६ और उनकी सारी बुराई के कारण मैं उन पर दण्ड की आज्ञा दूंगा; क्योंकि उन्हों ने मुझे त्यागकर दूसरे देवताओं के लिये धूप जलाया और अपनी बनाई हुई वस्तुओं को दण्डवत् किया है। १७ इसलिये तू अपनी कमर कसकर उठ; और जो कुछ कहने की मैं तुझे आज्ञा दूं वही उन से कह। तू उनके मुख को देखकर न घबराना, ऐसा न हो कि मैं तुझे उनके साम्हने घबरा दूं। १८ क्योंकि सुन, मैं ने आज तुझे इस सारे देश और यहूदा के राजाओं, हाकिमों, और याजकों और साधारण लोगों के विरुद्ध गढ़वाला नगर, और लोहे का खम्भा, और पीतल की शहरपनाह बनाया है। १९ वे तुझ से लड़ेंगे तो सही, परन्तु तुझ पर प्रबल न होंगे, क्योंकि बचाने के लिये मैं तेरे साथ हूं, यहोवा की यही वाणी है ।।

२ यहोवा का वह वचन मेरे पास पहुंचा, २ और यरूशलेम में पुकारकर यह सुना दे, यहोवा यह कहता है, तेरी जवानी का स्नेह और तेरे विवाह के समय का प्रेम मुझे स्मरण आता है कि तू कैसे जंगल में मेरे पीछे पीछे चली जहां भूमि जोती-बोई न गई थी। ३ इस्राएल, यहोवा के लिये पवित्र और उसकी पहली उपज थी। उसे खानेवाले सब दोषी ठहरेंगे और विपत्ति में पड़ेंगे, यहोवा की यही वाणी है ।।

४ हे याकूब के घराने, हे इस्राएल के घराने के कुलों के लोगो, यहोवा का वचन सुनो! ५ यहोवा यों कहता है, तुम्हारे पुरखाओं ने मुझ में कौन ऐसी कुटिलता पाई कि मुझ से दूर हट गए और निकम्मी वस्तुओं के पीछे होकर स्वयं निकम्मे हो गए? ६ उन्हों ने इतना भी न कहा कि जो हमें मिस्र देश से निकाल ले आया वह यहोवा कहां है? जो हमें जंगल में से और रेत और गड़हों से भरे हुए निर्जल और घोर अन्धकार के देश से जिस में होकर कोई नहीं चलता, और जिस में कोई मनुष्य नहीं रहता, हमें निकाल ले आया। ७ और मैं तुम

को इस उपजाऊ देश में ले आया कि उसका फल और उत्तम उपज खाओ; परन्तु मेरे इस देश में आकर तुम ने इसे अशुद्ध किया, और मेरे इस निज भाग को घृणित कर दिया है। ८ याजकों ने भी नहीं पूछा कि यहोवा कहां है; जो व्यवस्था सिखाते थे वे भी मुझ को न जानते थे; चरवाहों ने भी मुझ से बलवा किया; भविष्यद्वक्ताओं ने बाल देवता के नाम से भविष्यद्वाणी की और निष्फल बातों के पीछे चले ॥

९ इस कारण यहोवा यह कहता है, मैं फिर तुम से विवाद, और तुम्हारे बेटे और पोतों से भी प्रश्न करूंगा। १० कित्तियों के द्वीपों में पार जाकर देखो, या केदार में दूत भेजकर भली भांति विचार करो और देखो; देखो, कि ऐसा काम कहीं और भी हुआ है? क्या किसी जाति ने अपने देवताओं को बदल दिया जो परमेश्वर भी नहीं हैं? ११ परन्तु मेरी प्रजा ने अपनी महिमा को निकम्मी वस्तु से बदल दिया है। १२ हे आकाश, चकित हो, बहुत ही थरथरा और सुनसान हो जा *, यहोवा की यह वाणी है। १३ क्योंकि मेरी प्रजा ने दो बुराइयां की हैं: उन्हों ने मुझ बहते जल के सोते को त्याग दिया है, और, उन्हों ने हौद बना लिए, वरन ऐसे हौद जो टूट गए हैं, और जिन में जल नहीं रह सकता ॥

१४ क्या इस्राएल दास है? क्या वह घर में जन्मा हुआ दास है †? फिर वह क्यों शिकार बना? १५ जवान सिंहों ने उसके विरुद्ध गरजकर नाद किया। उन्हों ने उसके देश को उजाड़ दिया; उन्हों ने उसके नगरों को ऐसा उजाड़ दिया कि उन में कोई बसनेवाला ही न रहा। १६ और नोप और तहपन्हेस के निवासी भी तेरे देश की उपज * चट कर गए हैं। १७ क्या यह तेरी ही करनी का फल नहीं, जो तू ने अपने परमेश्वर यहोवा को छोड़ दिया जो तुझे मार्ग में लिए चला? १८ और अब तुझे मिस्र के मार्ग से क्या लाभ है कि तू सीहोर † का जल पीए? अथवा अश्शूर के मार्ग से भी तुझे क्या लाभ कि तू महानद का जल पीए? १९ तेरी बुराई ही तेरी ताड़ना करेगी, और तेरा भटक जाना तुझे उलाहना देगा। जान ले और देख कि अपने परमेश्वर यहोवा को त्यागना, यह बुरी और कड़वी बात है; तुझे मेरा भय ही नहीं रहा, प्रभु सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है ॥

२० क्योंकि बहुत समय पहिले मैं ने तेरा जूआ तोड़ डाला और तेरे बन्धन खोल दिए; परन्तु तू ने कहा, मैं सेवा न करूंगी। और सब ऊंचे-ऊंचे टीलों पर और सब हरे पेड़ों के नीचे तू व्यभिचारिण का सा काम करती रही। २१ मैं ने तो तुझे उत्तम जाति की दाखलता और उत्तम बीज करके लगाया था ‡, फिर तू क्यों मेरे लिये जंगली दाखलता बन गई? २२ चाहे तू अपने को सज्जी से धोए और बहुत सा साबुन भी प्रयोग करे, तौभी तेरे अधर्म का

* मूल में—इस कारण हे आकाश चकित हो, रोमांचित हो, और बहुत सूख जा।

† या क्या इस्राएल दास है? क्या वह घर में उत्पन्न हुआ?

* मूल में—तेरा चोन्डा।

† अर्थात् नील नदी।

‡ मूल में—मैं ने तुझे उत्तम जाति की दाखलता का बिलकुल सच्चा बीज लगाया।

धब्बा मेरे साम्हने बना रहेगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। २३ तू क्योंकर कह सकती है कि मैं अशुद्ध नहीं, मैं बाल देवताओं के पीछे नहीं चली? तराई में की अपनी चाल देख और जान ले कि तू ने क्या किया है? तू वेग से चलनेवाली और इधर उधर फिरनेवाली सांड़नी है, २४ जंगल में पली हुई जंगली गदही जो कामातुर होकर वायु सूंघती फिरती है तब कौन उसे वश में कर सकता है? जितने उसको ढूंढ़ते हैं वे व्यर्थ परिश्रम न करें; क्योंकि वे उसे उसकी ऋतु में* पाएंगे। २५ अपने पांव नंगे और गला सुखाए न रह। परन्तु तू ने कहा, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि मेरा प्रेम दूसरों से लग गया है और मैं उनके पीछे चलती रहूंगी॥

२६ जैसे चोर पकड़े जाने पर लज्जित होता है, वैसे ही इस्राएल का घराना राजाओं, हाकिमों, याजकों और भविष्यद्वक्ताओं समेत लज्जित होगा। २७ वे काठ से कहते हैं, तू मेरा बाप है, और पत्थर से कहते हैं, तू ने मुझे जन्म दिया है। इस प्रकार उन्हों ने मेरी ओर मुंह नहीं पीठ ही फेरी है; परन्तु विपत्ति के समय वे कहते हैं, उठकर हमें बचा! २८ परन्तु जो देवता तू ने बना लिए हैं, वे कहां रहे? यदि वे तेरी विपत्ति के समय तुझे बचा सकते हैं तो अभी उठें; क्योंकि हे यहूदा, तेरे नगरों के बराबर तेरे देवता भी बहुत हैं॥

२६ तुम क्यों मुझ से वादविवाद करते हो? तुम सभों ने मुझ से बलवा किया है, यहोवा की यही वाणी है।

* मूल में—अपने महीने में।

३० मैं ने व्यर्थ ही तुम्हारे बेटों की ताड़ना की, उन्हों ने कुछ भी नहीं माना; तुम ने अपने भविष्यद्वक्ताओं को अपनी ही तलवार से ऐसा काट डाला है जैसा सिंह फाड़ता* है। ३१ हे लोगो, यहोवा के वचन पर ध्यान दो! क्या मैं इस्राएल के लिये जंगल वा घोर अन्धकार का देश बना? तब मेरी प्रजा क्यों कहती है कि हम तो आजाद हो गए हैं सो तेरे पास फिर न आएंगे? ३२ क्या कुमारी अपने सिङ्गार वा दुल्हिन अपनी सजावट भूल सकती है? तौभी मेरी प्रजा ने युगों से मुझे बिसरा दिया है॥

३३ प्रेम लगाने के लिये तू कैसी सुन्दर चाल चलती है! बुरी स्त्रियों को भी तू ने अपनी सी चाल सिखाई है। ३४ तेरे घांघरे में निर्दोष और दरिद्र लोगों के लोहू का चिन्ह पाया जाता है; तू ने उन्हें सेंध लगाते नहीं पकड़ा। परन्तु इन सब के होते हुए भी तू कहती है, मैं निर्दोष हूं; ३५ निश्चय उसका क्रोध मुझ पर से हट जाएगा। देख, तू जो कहती है कि मैं ने पाप नहीं किया, इसलिये मैं तेरा न्याय कराऊंगा। ३६ तू क्यों नया मार्ग पकड़ने के लिये इतनी डांवाडोल फिरती है? जैसे अश्शूरियों से तू लज्जित हुई वैसे ही मिस्रियों से भी होगी। ३७ वहां से भी तू सिर पर हाथ रखे हुए यों ही चली आएगी, क्योंकि जिन पर तू ने भरोसा रखा है उनको यहोवा ने निकम्मा ठहराया है, और उनके कारण तू सफल न होगी॥

* मूल में—तुम्हारी तलवार ने नाशक की नाईं।

३ वे कहते हैं, यदि कोई अपनी पत्नी को त्याग दे, और वह उसके पास से जाकर दूसरे पुरुष की हो जाए, तो वह पहिला क्या उसके पास फिर जाएगा? क्या वह देश अति अशुद्ध न हो जाएगा? यहोवा की यह वाणी है कि तू ने बहुत से प्रेमियों के साथ व्यभिचार किया है, क्या तू अब मेरी ओर फिरेगी? २ मुण्डे टीलों की ओर आंखें उठाकर देख! ऐसा कौन सा स्थान है जहां तू ने कुकर्म न किया हो? मार्गों में तू ऐसी बैठी जैसे एक अरबी जंगल में। तू ने देश को अपने व्यभिचार से अशुद्ध कर दिया है। ३ इसी कारण झड़ियां और बरसात की पिछली वर्षा नहीं होती; तौभी तेरा माथा वेश्या का सा है, तू लज्जित होना ही नहीं * जानती। ४ क्या तू अब मुझे पुकारकर कहेगी, हे मेरे पिता, तू ही मेरी जवानी का साथी है? ५ क्या वह मन में सदा क्रोध रखे रहेगा? क्या वह उसको सदा बनाए रहेगा? तू ने ऐसा कहा तो है, परन्तु तू ने बुरे काम प्रबलता के साथ किए हैं॥

६ फिर योशिय्याह राजा के दिनों में यहोवा ने मुझ से यह भी कहा, क्या तू ने देखा कि भटकनेवाली इस्राएल ने क्या किया है? उस ने सब ऊंचे पहाड़ों पर और सब हरे पेड़ों के तले जा जाकर व्यभिचार किया है। ७ तब मैं ने सोचा, जब ये सब काम वह कर चुके तब मेरी ओर फिरेगी; परन्तु वह न फिरी, और उसकी विश्वासघाती बहिन यहूदा ने यह देखा। ८ फिर मैं ने देखा, जब मैं ने भटकनेवाली इस्राएल को, उसके व्यभिचार करने के कारण त्यागकर उसे त्यागपत्र दे दिया; तौभी उसकी विश्वासघाती बहिन यहूदा न डरी, बरन जाकर वह भी व्यभिचारिण बन गई। ९ उसके निर्लज्ज-व्यभिचारिणी होने के कारण देश भी अशुद्ध हो गया, उस ने पत्थर और काठ के साथ भी व्यभिचार किया। १० इतने पर भी उसकी विश्वासघाती बहिन यहूदा पूर्ण मन से मेरी ओर नहीं फिरी, परन्तु कपट से, यहोवा की यही वाणी है। ११ और यहोवा ने मुझ से कहा, भटकनेवाली इस्राएल, विश्वासघातिन यहूदा से कम दोषी निकली है। १२ तू जाकर उत्तर दिशा में ये बातें प्रचार कर, यहोवा की यह वाणी है, हे भटकनेवाली इस्राएल लौट आ, मैं तुझ पर क्रोध की दृष्टि न करूंगा; क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, मैं करुणामय हूं; मैं सर्वदा क्रोध न रखे रहूंगा। १३ केवल अपना यह अधर्म मान ले कि तू अपने परमेश्वर यहोवा से फिर गई और सब हरे पेड़ों के तले इधर उधर दूसरों के पास गई, और मेरी बातों को नहीं माना, यहोवा की यह वाणी है॥

१४ हे भटकनेवाले लड़को लौट आओ, क्योंकि मैं तुम्हारा स्वामी हूं; यहोवा की यह वाणी है। तुम्हारे प्रत्येक नगर पीछे एक, और प्रत्येक कुल पीछे दो को लेकर मैं सिय्योन में पहुंचा दूंगा। १५ और मैं तुम्हें अपने मन के अनुकूल चरवाहे दूंगा, जो ज्ञान और बुद्धि से तुम्हें चराएंगे। १६ उन दिनों में जब तुम इस देश में बढ़ो, और फूलो-फलो, तब लोग फिर ऐसा न कहेंगे, 'यहोवा की वाचा का सन्दूक'; यहोवा की यह भी वाणी है। उसका विचार भी उनके मन में न आएगा,

* मूल में—लजाने को नकारा।

न लोग उसके न रहने से चिन्ता करेंगे; और न उसकी मरम्मत होगी। १७ उस समय यरूशलेम यहोवा का सिंहासन कहलाएगा, और सब जातियां उसी यरूशलेम में मेरे नाम के निमित्त इकट्ठी हुआ करेंगी, और, वे फिर अपने बुरे मन के हठ पर न चलेंगी। १८ उन दिनों में यहूदा का घराना इस्राएल के घराने के साथ चलेगा और वे दोनों मिलकर उत्तर के देश से इस देश में आएंगे जिसे मैं ने उनके पूर्वजों को निज भाग करके दिया था। १९ मैं ने सोचा था, मैं कैसे तुझे लड़कों में गिनकर वह मनभावना देश दूं जो सब जातियों के देशों का शिरोमणि है। और मैं ने सोचा कि तू मुझे पिता कहेगी, और मुझ से फिर न भटकेगी। २० इस में तो सन्देह नहीं कि जैसे विश्वासघाती स्त्री अपने प्रिय से मन फेर लेती है, वैसे ही हे इस्राएल के घराने, तू मुझ से फिर गया है, यहोवा की यही वाणी है॥

२१ मुण्डे टीलों पर से इस्राएलियों के रोने और गिड़गिड़ाने का शब्द सुनाई दे रहा है, क्योंकि वे टेढ़ी चाल चलते रहे हैं और अपने परमेश्वर यहोवा को भूल गए हैं। २२ हे भटकनेवाले लड़को, लौट आओ, मैं तुम्हारा भटकना सुधार दूंगा। देख, हम तेरे पास आए हैं; क्योंकि तू ही हमारा परमेश्वर यहोवा है। २३ निश्चय पहाड़ों और पहाड़ियों पर का कोलाहल व्यर्थ ही है। इस्राएल का उद्धार निश्चय हमारे परमेश्वर यहोवा ही के द्वारा है। २४ परन्तु हमारी जवानी ही से उस बदनामी की वस्तु ने हमारे पुरखाओं की कमाई अर्थात् उनकी भेड़-बकरी और गाय-बैल और उनके बेटे-बेटियों को निगल लिया है। २५ हम लज्जित होकर लेट जाएं, और हमारा संकोच हमारी ओढ़नी बन जाए; क्योंकि हमारे पुरखा और हम भी युवा अवस्था से लेकर आज के दिन तक अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप करते आए हैं; और हम ने अपने परमेश्वर यहोवा की बातों को नहीं माना है॥

४ यहोवा की यह वाणी है, हे इस्राएल यदि तू लौट आये, तो मेरे पास लौट आ। यदि तू घिनौनी वस्तुओं को मेरे साम्हने से दूर करे, तो तुझे आवारा फिरना न पड़ेगा, २ और यदि तू सच्चाई और न्याय और धर्म से यहोवा के जीवन की शपथ खाए, तो अन्यजातियां उसके कारण अपने आपको धन्य कहेंगी, और उसी पर घमण्ड करेंगी॥

३ क्योंकि यहूदा और यरूशलेम के लोगों से यहोवा ने यों कहा है, अपनी पड़ती भूमि को जोतो, और कटीले झाड़ों में बीज मत बोओ। ४ हे यहूदा के लोगो और यरूशलेम के निवासियो, यहोवा के लिये अपना खतना करो; हां, अपने मन का खतना करो; नहीं तो तुम्हारे बुरे कामों के कारण मेरा क्रोध आग की नाईं भड़केगा, और ऐसा होगा कि कोई उसे बुझा न सकेगा॥

५ यहूदा में प्रचार करो और यरूशलेम में यह सुनाओ; पूरे देश में नरसिंगा फूंको; गला खोलकर ललकारो और कहो, आओ, हम इकट्ठे हों और गढ़वाले नगरों में जाएं! ६ सिय्योन के मार्ग में झण्डा खड़ा करो, अपना सामान बटोरके भागो, खड़े मत रहो, क्योंकि मैं उत्तर की दिशा से विपत्ति और सत्यानाश ले आया चाहता

हूं। ७ एक सिंह अपनी झाड़ी से निकला, जाति जाति का नाश करनेवाला चढ़ाई करके आ रहा है; वह कूच करके अपने स्थान से इसलिये निकला है कि तुम्हारे देश को उजाड़ दे और तुम्हारे नगरों को ऐसा सुनसान कर दे कि उन में कोई बसनेवाला न रहने पाए। ८ इसलिये कमर में टाट बान्धो, विलाप और हाय हाय करो; क्योंकि यहोवा का भड़का हुआ कोप हम पर से टला नहीं है॥

९ उस समय राजा और हाकिमों का कलेजा कांप उठेगा; याजक चकित होंगे और नबी अचम्भित हो जाएंगे, यहोवा की यह वाणी है। १० तब मैं ने कहा, हाय, प्रभु यहोवा, तू ने तो यह कहकर कि तुम को शान्ति मिलेगी निश्चय अपनी इस प्रजा को और यरूशलेम को भी बड़ा धोखा दिया है; क्योंकि तलवार प्राणों को मिटाने पर है॥

११ उस समय तेरी इस प्रजा से और यरूशलेम से भी कहा जाएगा, जंगल के मुण्डे टीलों पर से प्रजा के लोगों की ओर* लू बह रही है, वह ऐसी वायु नहीं जिस से ओसाना वा फरछाना हो, १२ परन्तु मेरी ओर से ऐसे कामों के लिये अधिक प्रचण्ड वायु बहेगी। अब मैं उनको दण्ड की आज्ञा दूंगा। १३ देखो, वह बादलों की नाईं चढ़ाई करके आ रहा है, उसके रथ बवण्डर के समान और उसके घोड़े उकाबों से भी अधिक वेग से चलते हैं। हम पर हाय, हम नाश हुए! १४ हे यरूशलेम, अपना हृदय बुराई से धो, कि, तुम्हारा उद्धार हो जाए। तुम कब तक व्यर्थ कल्पनाएं करते रहोगे*? १५ क्योंकि दान से शब्द सुन पड़ रहा है और एप्रैम के पहाड़ी देश से विपत्ति का समाचार आ रहा है। १६ अन्यजातियों में सुना दो, यरूशलेम को भी इसका समाचार दो, पहरुए दूर देश से आकर यहूदा के नगरों के विरुद्ध ललकार रहे हैं। १७ वे खेत के रखवालों की नाईं उसको चारों ओर से घेर रहे हैं, क्योंकि उस ने मुझ से बलवा किया है, यहोवा की यही वाणी है। १८ यह तेरी चाल और तेरे कामों ही का फल हैं। यह तेरी दुष्टता है और अति दुखदाई है; इस से तेरा हृदय छिद जाता है॥

१९ हाय! हाय†! मेरा हृदय भीतर ही भीतर तड़पता है! और मेरा मन घबराता है! मैं चुप नहीं रह सकता; क्योंकि हे मेरे प्राण, नरसिंगे का शब्द और युद्ध की ललकार तुझ तक पहुंची है। २० नाश पर नाश का समाचार आ रहा है, सारा देश लूट लिया गया है। मेरे डेरे अचानक और मेरे तम्बू एकाएक लूटे गए हैं। २१ और कितने दिन तक मुझे उनका झण्डा देखना और नरसिंगे का शब्द सुनना पड़ेगा? २२ क्योंकि मेरी प्रजा मूढ़ है, वे मुझे नहीं जानते; वे ऐसे मूर्ख लड़के हैं जिन में कुछ भी समझ नहीं। बुराई करने को तो वे बुद्धिमान हैं, परन्तु भलाई करना वे नहीं जानते॥

२३ मैं ने पृथ्वी पर देखा, वह सूनी और सुनसान पड़ी थी; और आकाश को, और उस में कोई ज्योति नहीं थी। २४ मैं ने पहाड़ों को देखा, वे हिल रहे

* मूल में—मेरी प्रजा की बेटी की ओर।

* मूल में—कब तक तुझ में बनी रहेंगी।
† मूल में—मेरी अन्तड़ियां मेरी।

थे, और सब पहाड़ियों को कि वे डोल रही थीं। २५ फिर मैं ने क्या देखा कि कोई मनुष्य भी न था और सब पक्षी भी उड़ गए थे। २६ फिर मैं क्या देखता हूं कि यहोवा के प्रताप और उस भड़के हुए प्रकोप के कारण उपजाऊ देश जंगल, और उसके सारे नगर खण्डहर हो गए थे। २७ क्योंकि यहोवा ने यह बताया कि सारा देश उजाड़ हो जाएगा; तौभी मैं उसका अन्त न कर डालूंगा। २८ इस कारण पृथ्वी विलाप करेगी, और आकाश शोक का काला वस्त्र पहिनेगा; क्योंकि मैं ने ऐसा ही करने को ठाना और कहा भी है; मैं इस से नहीं पछताऊंगा और न अपने प्रण को छोड़ूंगा ।।

२९ नगर के सारे लोग सवारों और धनुर्धारियों का कोलाहल सुनकर भागे जाते हैं; वे झाड़ियों में घुसते और चट्टानों पर चढ़े जाते हैं; सब नगर निर्जन हो गए, और उन में कोई बाकी न रहा। ३० और तू जब उजड़ेगी तब क्या करेगी? चाहे तू लाल रङ्ग के वस्त्र पहिने और सोने के आभूषण धारण करे और अपनी आंखों में अंजन लगाए, परन्तु व्यर्थ ही तू अपना शृंगार करेगी। क्योंकि तेरे मित्र तुझे निकम्मी जानते हैं; वे तेरे प्राणों के खोजी हैं। ३१ क्योंकि मैं ने जच्चा का शब्द, पहिलौठा जनती हुई स्त्री की सी चिल्लाहट सुनी है, यह सिय्योन की बेटी का शब्द है, जो हांफती और हाथ फैलाए हुए यों कहती है, हाय मुझ पर, मैं हत्यारों के हाथ पड़कर मूर्छित हो चली हूं ।।

५ यरूशलेम की सड़कों में इधर उधर दौड़कर देखो! उसके चौकों में ढूंढ़ो यदि कोई ऐसा मिल सके जो न्याय से काम करे और सच्चाई का खोजी हो; तो मैं उसका पाप क्षमा करूंगा। २ यद्यपि उसके निवासी यहोवा के जीवन की शपथ भी खाएं, तौभी निश्चय वे झूठी शपथ खाते हैं। ३ हे यहोवा, क्या तेरी दृष्टि सच्चाई पर नहीं है? तू ने उनको दुःख दिया, परन्तु वे शोकित नहीं हुए; तू ने उनको नाश किया, परन्तु उन्हों ने ताड़ना से भी नहीं माना। उन्हों ने अपना मन चट्टान से भी अधिक कठोर किया है; उन्हों ने पश्चात्ताप करने से इनकार किया है ।।

४ फिर मैं ने सोचा, ये लोग तो कङ्गाल और अबोध ही हैं; क्योंकि ये यहोवा का मार्ग और अपने परमेश्वर का नियम नहीं जानते। ५ इसलिये मैं बड़े लोगों के पास जाकर उनको सुनाऊंगा; क्योंकि वे तो यहोवा का मार्ग और अपने परमेश्वर का नियम जानते हैं। परन्तु उन सभों ने मिलकर जूए को तोड़ दिया है और बन्धनों को खोल डाला है ।।

६ इस कारण वन में से एक सिंह आकर उन्हें मार डालेगा, निर्जल देश का एक भेड़िया उनको नाश करेगा। और एक चीता उनके नगरों के पास घात लगाए रहेगा, और जो कोई उन में से निकले वह फाड़ा जाएगा; क्योंकि उनके अपराध बहुत बढ़ गए हैं और वे मुझ से बहुत ही दूर हट गए हैं ।।

७ मैं क्योंकर तेरा पाप क्षमा करूं? तेरे लड़कों ने * मुझ को छोड़कर उनकी शपथ खाई है जो परमेश्वर नहीं है। जब मैं ने उनका पेट भर दिया, तब उन्हों ने व्यभिचार किया और वेश्याओं के घरों

* मूल में—तेरे लड़के।

में भीड़ की भीड़ जाते थे। ८ वे खिलाए-पिलाए बे-लगाम घोड़ों के समान हो गए, वे अपने अपने पड़ोसी की स्त्री पर हिनहिनाने लगे। ९ क्या मैं ऐसे कामों का उन्हें दण्ड न दूं? यहोवा की यह वाणी है; क्या मैं ऐसी जाति से अपना पलटा न लूं?

१० शहरपनाह पर चढ़के उसका नाश तो करो, तौभी उसका अन्त मत कर डालो; उसकी जड़ रहने दो परन्तु उसकी डालियों को तोड़कर फेंक दो, क्योंकि वे यहोवा की नहीं हैं। ११ यहोवा की यह वाणी है कि इस्राएल और यहूदा के घरानों ने मुझ से बड़ा विश्वासघात किया है। १२ उन्हों ने यहोवा की बातें झुठलाकर कहा, वह ऐसा नहीं है; विपत्ति हम पर न पड़ेगी, न हम तलवार को और न महंगी को देखेंगे। १३ भविष्यद्वक्ता हवा हो जाएंगे; उन में ईश्वर का वचन नहीं है। उनके साथ ऐसा ही किया जाएगा!

१४ इस कारण सेनाओं का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, ये लोग जो ऐसा कहते हैं, इसलिये देख, मैं अपना वचन तेरे मुंह में आग, और इस प्रजा को काठ बनाऊंगा, और वह उनको भस्म करेगी। १५ यहोवा की यह वाणी है, हे इस्राएल के घराने, देख, मैं तुम्हारे विरुद्ध दूर से ऐसी जाति को चढ़ा लाऊंगा जो सामर्थी और प्राचीन है, उसकी भाषा तुम न समझोगे, और न यह जानोगे कि वे लोग क्या कह रहे हैं। १६ उनका तर्कश खुली क़ब्र है और वे सब के सब शूरवीर हैं। १७ तुम्हारे पक्के खेत और भोजनवस्तुएं जो तुम्हारे बेटे-बेटियों के खाने के लिये हैं, उन्हें वे खा जाएंगे। वे तुम्हारी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को खा डालेंगे; वे तुम्हारी दाखों और अंजीरों को खा जाएंगे; और जिन गढ़वाले नगरों पर तुम भरोसा रखते हो उन्हें वे तलवार के बल से नाश कर देंगे॥

१८ तौभी, यहोवा की यह वाणी है, उन दिनों में भी मैं तुम्हारा अन्त न कर डालूंगा। १९ और जब तुम पूछोगे कि हमारे परमेश्वर यहोवा ने हम से ये सब काम किस लिये किए हैं, तब तुम उन से कहना, जिस प्रकार से तुम ने मुझ को त्यागकर अपने देश में दूसरे देवताओं की सेवा की है, उसी प्रकार से तुम को पराये देश में परदेशियों की सेवा करनी पड़ेगी॥

२० याकूब के घराने में यह प्रचार करो, और यहूदा में यह सुनाओ: २१ हे मूर्ख और निर्बुद्धि लोगो, तुम जो आंखें रहते हुए नहीं देखते, जो कान रहते हुए नहीं सुनते, यह सुनो। २२ यहोवा की यह वाणी है, क्या तुम लोग मेरा भय नहीं मानते? क्या तुम मेरे सम्मुख नहीं थरथराते? मैं ने बालू को समुद्र का सिवाना ठहराकर युग युग का ऐसा बान्ध ठहराया कि वह उसे लांघ न सके; और चाहे उसकी लहरें भी उठें, तौभी वे प्रबल न हो सकें, या जब वे गरजें तौभी उसको न लांघ सकें। २३ पर इस प्रजा का हठीला और बलवा करनेवाला मन है; इन्हों ने बलवा किया और दूर हो गए हैं। २४ वे मन में इतना भी नहीं सोचते कि हमारा परमेश्वर यहोवा तो बरसात के आरम्भ और अन्त दोनों समयों का जल समय पर बरसाता है, और कटनी के नियत सप्ताहों को हमारे लिये रखता है, इसलिये हम उसका भय मानें। २५ परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ही के

कारण वे रुक गए, और तुम्हारे पापों ही के कारण तुम्हारी भलाई नहीं होती *। २६ मेरी प्रजा में दुष्ट लोग पाए जाते हैं; जैसे चिड़ीमार ताक में रहते हैं, वैसे ही वे भी घात लगाए रहते हैं। वे फन्दा लगाकर मनुष्यों को अपने वश में कर लेते हैं। २७ जैसा पिंजड़ा चिड़ियों से भरा हो, वैसे ही उनके घर छल से भरे रहते हैं; इसी प्रकार वे बढ़ गए और धनी हो गए हैं। २८ वे मोटे और चिकने हो गए हैं। बुरे कामों में वे सीमा को लांघ गए हैं; वे न्याय, विशेष करके अनाथों का न्याय नहीं चुकाते; इस से उनका काम सफल नहीं होता : वे कंगालों का हक़ भी नहीं दिलाते। २९ इसलिये, यहोवा की यह वाणी है, क्या मैं इन बातों का दण्ड न दूं? क्या मैं ऐसी जाति से पलटा न लूं?

३० देश में ऐसा काम होता है जिस से चकित और रोमांचित होना चाहिये। ३१ भविष्यद्वक्ता झूठमूठ भविष्यद्वाणी करते हैं; और याजक उनके सहारे से प्रभुता करते हैं; मेरी प्रजा को यह भाता भी है, परन्तु अन्त के समय तुम क्या करोगे?

६ हे बिन्यामीनियो, यरूशलेम में से अपना अपना सामान लेकर भागो! तेकोआ में नरसिंगा फूंको, और बेथक्केरेम पर झण्डा ऊंचा करो; क्योंकि उत्तर की दिशा से आनेवाली विपत्ति बड़ी और विनाश लानेवाली है। २ सिय्योन की सुन्दर और सुकुमार बेटी को मैं नाश करने पर हूं। ३ चरवाहे अपनी अपनी भेड़-बकरियां संग लिए हुए उस पर चढ़कर उसके चारों ओर अपने तम्बू खड़े करेंगे, वे अपने अपने पास की घास चरा लेंगे। ४ आओ, उसके विरुद्ध युद्ध की तैयारी करो; उठो, हम दो पहर को चढ़ाई करें! हाय, हाय, दिन ढलता जाता है, और सांझ की परछाईं लम्बी हो चली है! ५ उठो, हम रात ही रात चढ़ाई करें और उसके महलों को ढा दें॥

६ सेनाओं का यहोवा तुम से कहता है, वृक्ष काट काटकर यरूशलेम के विरुद्ध दमदमा बान्धो! यह वही नगर है जो दण्ड के योग्य है; इस में अन्धेर ही अन्धेर भरा हुआ है। ७ जैसा कूएं में से नित्य नया जल निकला करता है, वैसा ही इस नगर में से नित्य नई बुराई निकलती है; इस में उत्पात और उपद्रव का कोलाहल मचा रहता है; चोट और मारपीट मेरे देखने में निरन्तर आती है। ८ हे यरूशलेम, ताड़ना से ही मान ले, नहीं तो तू मेरे मन से भी उतर जाएगी; और, मैं तुझ को उजाड़कर निर्जन कर डालूंगा॥

९ सेनाओं का यहोवा यों कहता है, इस्राएल के सब बचे हुए दाखलता की नाईं ढूंढ़कर तोड़े जाएंगे; दाख के तोड़ने-वाले की नाईं उस लता की डालियों पर फिर अपना हाथ लगा॥

१० मैं किस से बोलूं और किसको चिताकर कहूं कि वे मानें? देख, ये ऊंचा सुनते हैं*, वे ध्यान भी नहीं दे सकते; देख, यहोवा के वचन की वे निन्दा करते और उसे नहीं चाहते हैं। ११ इस कारण यहोवा का कोप मेरे मन में भर गया है; मैं उसे रोकते रोकते

* मूल में—तुम्हारे अधर्मों ने इन्हें मोड़ा और तुम्हारे पापों ने भलाई तुम से रोकी।

* मूल में—उनका कान खतनारहित है।

उकता गया हूं। बाज़ारों में बच्चों पर और जवानों की सभा में भी उसे उंडेल दे; क्योंकि पति अपनी पत्नी के साथ और अधेड़ बूढ़े के साथ पकड़ा जाएगा। १२ उन लोगों के घर और खेत और स्त्रियां सब औरों की हो जाएंगीं; क्योंकि मैं इस देश के रहनेवालों पर हाथ बढ़ाऊंगा, यहोवा की यही वाणी है। १३ क्योंकि उन में छोटे से लेकर बड़े तक सब के सब लालची हैं; और क्या भविष्यद्वक्ता क्या याजक सब के सब छल से काम करते हैं। १४ वे, "शान्ति है, शान्ति," ऐसा कह कहकर मेरी प्रजा * के घाव को ऊपर ही ऊपर चंगा करते हैं, परन्तु शान्ति कुछ भी नहीं। १५ क्या वे कभी अपने घृणित कामों के कारण लज्जित हुए? नहीं, वे कुछ भी लज्जित नहीं हुए; वे लज्जित होना जानते ही नहीं; इस कारण जब और लोग नीचे गिरें, तब वे भी गिरेंगे, और जब मैं उनको दण्ड देने लगूंगा, तब वे ठोकर खाकर गिरेंगे, यहोवा का यही वचन है ॥

१६ यहोवा यों भी कहता है, सड़कों पर खड़े होकर देखो, और पूछो कि प्राचीनकाल का अच्छा मार्ग कौन सा है, उसी में चलो, और तुम अपने अपने मन में चैन पाओगे। पर उन्हों ने कहा, हम उस पर न चलेंगे। १७ मैं ने तुम्हारे लिये पहरुए बैठाकर कहा, नरसिंगे का शब्द ध्यान से सुनना! पर उन्हों ने कहा, हम न सुनेंगे। १८ इसलिये, हे जातियो, सुनो, और हे मण्डली, देख, कि इन लोगों में क्या हो रहा है। १९ हे पृथ्वी, सुन; देख, कि मैं इस जाति पर वह विपत्ति ले आऊंगा जो उनकी कल्पनाओं का फल है, क्योंकि इन्हों ने मेरे वचनों पर ध्यान नहीं लगाया, और मेरी शिक्षा को इन्हों ने निकम्मी जाना है। २० मेरे लिये जो लोबान शबा से, और सुगन्धित नरकट जो दूर देश से आता है, इसका क्या प्रयोजन है? तुम्हारे होमबलियों से मैं प्रसन्न नहीं हूं, और न तुम्हारे मेलबलि मुझे मीठे लगते हैं। २१ इस कारण यहोवा ने यों कहा है, देखो, मैं इस प्रजा के आगे ठोकर खाऊंगा, और बाप और बेटा, पड़ोसी और मित्र, सब के सब ठोकर खाकर नाश होंगे ॥

२२ यहोवा यों कहता है, देखो, उत्तर से वरन पृथ्वी की छोर से एक बड़ी जाति के लोग इस देश के विरोध में उभारे जाएंगे। २३ वे धनुष और बर्छी धारण किए हुए आएंगे, वे क्रूर और निर्दय हैं, और जब वे बोलते हैं तब मानो समुद्र गरजता है; वे घोड़ों पर चढ़े हुए आएंगे, हे सिय्योन *, वे वीर की नाईं सशस्त्र होकर † तुझ पर चढ़ाई करेंगे। २४ इसका समाचार सुनते ही हमारे हाथ ढीले पड़ गए हैं; हम संकट में पड़े हैं; जच्चा की सी पीड़ा हम को उठी है। २५ मैदान में मत निकलो, मार्ग में भी न चलो; क्योंकि वहां शत्रु की तलवार और चारों ओर भय देख पड़ता है। २६ हे मेरी प्रजा ‡ कमर में टाट बान्ध, और राख में लोट; जैसा एकलौते पुत्र के लिये विलाप होता है वैसा ही बड़ा शोकमय विलाप कर; क्योंकि नाश करनेवाला हम पर अचानक आ पड़ेगा ॥

---

* मूल में—मेरी प्रजा की पुत्री।

* मूल में—हे सिय्योन की बेटी।

† मूल में—जैसा युद्ध के लिये पुरुष।

‡ मूल में—प्रजा की पुत्री।

२७ मैं ने इसलिये तुझे अपनी प्रजा के बीच गुम्मट वा गढ़ ठहरा दिया कि तू उनकी चाल परखे और जान ले। २८ वे सब बहुत ही हटी हैं, वे लुतराई करते फिरते हैं, उन सभों की चाल बिगड़ी है, वे निरा ताम्बा और लोहा ही हैं। २९ धौंकनी जल गई, शीशा आग में जल गया; ढालनेवाले ने व्यर्थ ही ढाला है; क्योंकि बुरे लोग नहीं निकाले गए। ३० उनका नाम खोटी चान्दी पड़ेगा, क्योंकि यहोवा ने उनको खोटा पाया है।।

७ जो वचन यहोवा की ओर से यिर्मयाह के पास पहुंचा वह यह है: २ यहोवा के भवन के फाटक में खड़ा हो, और यह वचन प्रचार कर, और कह, हे सब यहूदियो, तुम जो यहोवा को दण्डवत् करने के लिये इन फाटकों से प्रवेश करते हो, यहोवा का वचन सुनो। ३ सेनाओं का यहोवा जो इस्राएल का परमेश्वर है, यों कहता है, अपनी अपनी चाल और काम सुधारो, तब मैं तुम को इस स्थान में बसे रहने दूंगा। ४ तुम लोग यह कहकर झूठी बातों पर भरोसा मत रखो, कि यही यहोवा का मन्दिर है; यही यहोवा का मन्दिर, यहोवा का मन्दिर।।

५ यदि तुम सचमुच अपनी अपनी चाल और काम सुधारो, और सचमुच मनुष्य-मनुष्य के बीच न्याय करो, ६ परदेशी और अनाथ और विधवा पर अन्धेर न करो; इस स्थान में निर्दोष की हत्या न करो, और दूसरे देवताओं के पीछे न चलो जिस से तुम्हारी हानि होती है, ७ तो मैं तुम को इस नगर में, और इस देश में जो मैं ने तुम्हारे पूर्वजों को दिया था, युग युग के लिये रहने दूंगा।।

८ देखो, तुम झूठी बातों पर भरोसा रखते हो जिन से कुछ लाभ नहीं हो सकता। ९ तुम जो चोरी, हत्या और व्यभिचार करते, झूठी शपथ खाते, बाल देवता के लिये धूप जलाते, और दूसरे देवताओं के पीछे जिन्हें तुम पहिले नहीं जानते थे चलते हो, १० तो क्या यह उचित है कि तुम इस भवन में आओ जो मेरा कहलाता है, और मेरे साम्हने खड़े होकर यह कहो कि हम इसलिये छूट गए हैं कि ये सब घृणित काम करें? ११ क्या यह भवन जो मेरा कहलाता है, तुम्हारी दृष्टि में डाकुओं की गुफ़ा हो गया है? मैं ने स्वयं यह देखा है, यहोवा की यह वाणी है। १२ मेरा जो स्थान शीलो में था, जहां मैं ने पहिले अपने नाम का निवास ठहराया था, वहां जाकर देखो कि मैं ने अपनी प्रजा इस्राएल की बुराई के कारण उसकी क्या दशा कर दी है? १३ अब यहोवा की यह वाणी है, कि तुम जो ये सब काम करते आए हो, और यद्यपि मैं तुम से बड़े यत्न से * बातें करता रहा हूं, तौभी तुम ने नहीं सुना, और तुम्हें बुलाता आया परन्तु तुम नहीं बोले, १४ इसलिये यह भवन जो मेरा कहलाता है, जिस पर तुम भरोसा रखते हो, और यह स्थान जो मैं ने तुम को और तुम्हारे पूर्वजों को दिया था, इसकी दशा मैं शीलो की सी कर दूंगा। १५ और जैसा मैं ने तुम्हारे सब भाइयों को अर्थात् सारे एप्रैमियों को अपने साम्हने से दूर कर दिया है, वैसा ही तुम को भी दूर कर दूंगा।।

१६ इस प्रजा के लिये तू प्रार्थना मत कर, न इन लोगों के लिये ऊंचे स्वर से

* मूल में—तड़के उठकर।

पुकार न मुझ से बिनती कर, क्योंकि मैं तेरी नहीं सुनूंगा। १७ क्या तू नहीं देखता कि ये लोग यहूदा के नगरों और यरूशलेम की सड़कों में क्या कर रहे हैं? १८ देख, लड़के बाले तो ईंधन बटोरते, बाप आग सुलगाते और स्त्रियां आटा गूंधती हैं, कि स्वर्ग की रानी के लिये रोटियां चढ़ाए; और मुझे क्रोधित करने के लिये दूसरे देवताओं के लिये तपावन दें। १९ यहोवा की यह वाणी है, क्या वे मुझी को क्रोध दिलाते हैं? क्या वे अपने ही को नहीं जिस से उनके मुंह पर सियाही छाए? २० सो प्रभु यहोवा ने यों कहा है, क्या मनुष्य, क्या पशु, क्या मैदान के वृक्ष, क्या भूमि की उपज, उन सब पर जो इस स्थान में हैं, मेरे कोप की आग भड़कने पर है; वह नित्य जलती रहेगी और कभी न बुझेगी।।

२१ सेनाओं का यहोवा जो इस्राएल का परमेश्वर है, यों कहता है, अपने मेलबलियों के साथ अपने होमबलि भी बढ़ाओ और मांस खाओ। २२ क्योंकि जिस समय में ने तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र देश में से निकाला, उस समय मैं ने उन्हें होमबलि और मेलबलि के विषय कुछ आज्ञा न दी थी। २३ परन्तु मैं ने तो उनको यह आज्ञा दी कि मेरे वचन को मानो, तब मैं तुम्हारा परमेश्वर हूंगा, और तुम मेरी प्रजा ठहरोगे; और जिस मार्ग की मैं तुम्हें आज्ञा दूं उसी में चलो, तब तुम्हारा भला होगा। २४ पर उन्हों ने मेरी न सुनी और न मेरी बातों पर कान लगाया; वे अपनी ही युक्तियों और अपने बुरे मन के हठ पर चलते रहे और पीछे हट गए पर आगे न बढ़े। २५ जिस दिन तुम्हारे पुरखा मिस्र देश से निकले, उस दिन से आज तक मैं तो अपने सारे दासों, भविष्यद्वक्ताओं को, तुम्हारे पास बड़े यत्न से लगातार भेजता रहा; २६ परन्तु उन्हों ने मेरी नहीं सुनी, न अपना कान लगाया; उन्हों ने हठ किया, और अपने पुरखाओं से बढ़कर बुराइयां की हैं।।

२७ तू सब बातें उन से कहेगा पर वे तेरी न सुनेंगे; तू उनको बुलाएगा, पर वे न बोलेंगे। २८ तब तू उन से कह देना, यह वही जाति है जो अपने परमेश्वर यहोवा की नहीं सुनती, और ताड़ना से भी नहीं मानती; सच्चाई नाश हो गई, और उनके मुंह से दूर हो गई है।।

२९ अपने बाल मुंड़ाकर फेंक दे; मुण्डे टीलों पर चढ़कर विलाप का गीत गा, क्योंकि यहोवा ने इस समय के निवासियों पर क्रोध किया और उन्हें * निकम्मा जानकर त्याग दिया है। ३० यहोवा की यह वाणी है, इसका कारण यह है कि यहूदियों ने वह काम किया है, जो मेरी दृष्टि में बुरा है; उन्हों ने उस भवन में जो मेरा कहलाता है, अपनी घृणित वस्तुएं रखकर उसे अशुद्ध कर दिया है। ३१ और उन्हों ने हिन्नोमवंशियों की तराई में तोपेत नाम ऊंचे स्थान बनाकर, अपने बेटे-बेटियों को आग में जलाया है; जिसकी आज्ञा मैं ने कभी नहीं दी और न मेरे मन में वह कभी आया। ३२ यहोवा की यह वाणी है, इसलिये ऐसे दिन आते हैं कि वह तराई फिर न तो तोपेत की और न हिन्नोमवंशियों की कहलाएगी, वरन घात की तराई कहलाएगी; और तोपेत में इतनी क़ब्रें

* मूल में—यहोवा ने अपनी जलजलाहट की पीढ़ी को।

होंगी कि और स्थान न रहेगा। ३३ इसलिये इन लोगों की लोथें आकाश के पक्षियों और पृथ्वी के पशुओं का आहार होंगी, और उनको भगानेवाला कोई न रहेगा। ३४ उस समय में ऐसा करूंगा कि यहूदा के नगरों और यरूशलेम की सड़कों में न तो हर्ष और आनन्द का शब्द सुन पड़ेगा, और न दुल्हे वा दुल्हिन का; क्योंकि देश उजाड़ ही उजाड़ हो जाएगा ।।

८ यहोवा की यह वाणी है, उस समय यहूदा के राजाओं, हाकिमों, याजकों, भविष्यद्वक्ताओं और यरूशलेम के रहनेवालों की हड्डियां क़ब्रों में से निकालकर, २ सूर्य, चन्द्रमा और आकाश के सारे गणों के साम्हने फैलाई जाएंगी; क्योंकि वे उन्हीं से प्रेम रखते, उन्हीं की सेवा करते, उन्हीं के पीछे चलते, और उन्हीं के पास जाया करते और उन्हीं को दण्डवत् करते थे; और न वे इकट्ठी की जाएंगी न क़ब्र में रखी जाएंगी; वे भूमि के ऊपर खाद के समान पड़ी रहेंगी। ३ तब इस बुरे कुल के बचे हुए लोग उन सब स्थानों में जिस में मैं ने उन्हें निकाल दिया है, जीवन से मृत्यु ही को अधिक चाहेंगे, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है ।।

४ तू उन से यह भी कह, यहोवा यों कहता है कि जब मनुष्य गिरते हैं तो क्या फिर नहीं उठते? ५ जब कोई भटक जाता है तो क्या वह लौट नहीं आता? फिर क्या कारण है कि ये यरूशलेमी सदा दूर ही दूर भटकते जाते हैं? ये छल नहीं छोड़ते, और फिर लौटने से इनकार करते हैं। ६ मैं ने ध्यान देकर सुना, परन्तु ये ठीक नहीं बोलते; इन में से किसी ने अपनी बुराई से पछताकर नहीं कहा, हाय! मैं ने यह क्या किया है? जैसा घोड़ा लड़ाई में वेग से दौड़ता है, वैसे ही इन में से हर एक जन अपनी ही दौड़ में दौड़ता है। ७ आकाश में लगलग भी अपने नियत समयों को जानता है, और पण्डुकी, सूपाबेनी, और सारस भी अपने आने का समय रखते हैं; परन्तु मेरी प्रजा यहोवा का नियम नहीं जानती ।।

८ तुम क्योंकर कह सकते हो कि हम बुद्धिमान हैं, और यहोवा की दी हुई व्यवस्था हमारे साथ है? परन्तु उनके शास्त्रियों ने उसका झूठा विवरण लिखकर उसको* झूठ बना दिया है। ९ बुद्धिमान लज्जित हो गए, वे विस्मित हुए और पकड़े गए; देखो, उन्हों ने यहोवा के वचन को निकम्मा जाना है, उन में बुद्धि कहां रही? १० इस कारण मैं उनकी स्त्रियों को दूसरे पुरुषों को और उनके खेत दूसरे अधिकारियों के वश में कर दूंगा, क्योंकि छोटे से लेकर बड़े तक वे सब के सब लालची हैं; क्या भविष्यद्वक्ता क्या याजक, वे सब के छल से काम करते हैं। ११ उन्हों ने, 'शान्ति है, शान्ति' ऐसा कह कहकर मेरी प्रजा† के घाव को ऊपर ही ऊपर चंगा किया, परन्तु शान्ति कुछ भी नहीं है। १२ क्या वे घृणित काम करके लज्जित हुए? नहीं, वे कुछ भी लज्जित नहीं हुए, वे लज्जित होना जानते ही नहीं। इस कारण जब और लोग नीचे गिरें, तब वे भी गिरेंगे; जब उनके दण्ड का समय आएगा, तब वे भी ठोकर खाकर गिरेंगे, यहोवा का यही

---

* मूल में—शास्त्रियों के झूठे क़लम ने उसको।

† मूल में—प्रजा की बेटी।

वचन है। १३ यहोवा की यह भी वाणी है, में उन सभों का अन्त कर दूंगा। न तो उनकी दाखलताओं में दाख पाई जाएंगी, और न अंजीर के वृक्ष में अंजीर वरन उनके पत्ते भी सूख जाएंगे, और जो कुछ मैं ने उन्हें दिया है वह उनके पास से जाता रहेगा॥

१४ हम क्यों चुप-चाप बैठे हैं? आओ, हम चलकर गढ़वाले नगरों में इकट्ठे नाश हो जाएं; क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा हम को नाश करना चाहता है, और हमें विष पीने को दिया है; क्योंकि हम ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है। १५ हम शान्ति की बाट जोहते थे, परन्तु कुछ कल्याण नहीं मिला, और चंगाई की आशा करते थे, परन्तु घबराना ही पड़ा है॥

१६ उनके घोड़ों का फुर्राना दान से सुन पड़ता है, और बलवन्त घोड़ों के हिनहिनाने के शब्द से सारा देश कांप उठा है। उन्हों ने आकर हमारे देश को और जो कुछ उस में है, और हमारे नगर को निवासियों समेत नाश किया है। १७ क्योंकि देखो, मैं तुम्हारे बीच में ऐसे सांप और नाग भेजूंगा जिन पर मंत्र न चलेगा, और वे तुम को डसेंगे, यहोवा की यही वाणी है॥

१८ हाय! हाय! इस शोक की दशा में मुझे शान्ति कहां से मिलेगी? मेरा हृदय भीतर ही भीतर तड़पता है! १९ मुझे अपने लोगों* की चिल्लाहट दूर के देश से सुनाई देती है: क्या यहोवा सिय्योन में नहीं हैं? क्या उसका राजा उस में नहीं? उन्हों ने क्यों मुझ को अपनी खोदी हुई मूरतों और परदेश की व्यर्थ वस्तुओं के द्वारा क्यों क्रोध दिलाया है? २० कटनी का समय बीत गया, फल तोड़ने की ऋतु भी समाप्त हो गई, और हमारा उद्धार नहीं हुआ। २१ अपने लोगों के* दु:ख से मैं भी दु:खित हुआ, मैं शोक का पहिरावा पहिने अति अचम्भे में डूबा हूं॥

२२ क्या गिलाद देश में कुछ बलसान की औषधि नहीं? क्या उस में कोई वैद्य नहीं? यदि है, तो मेरे लोगों† के घाव क्यों चंगे नहीं हुए?

९ भला होता, कि मेरा सिर जल ही जल, और मेरी आंखें आँसुओं का सोता होतीं, कि मैं रात दिन अपने मारे हुए लोगों‡ के लिये रोता रहता। २ भला होता कि मुझे जंगल में बटोहियों का कोई टिकाव मिलता कि मैं अपने लोगों को छोड़कर वहीं चला जाता! क्योंकि वे सब व्यभिचारी हैं, वे विश्वासघातियों का समाज हैं। ३ अपनी अपनी जीभ को वे धनुष की नाईं झूठ बोलने के लिये तैयार करते हैं, और देश में बलवन्त तो हो गए, परन्तु सच्चाई के लिये नहीं; वे बुराई पर बुराई बढ़ाते जाते हैं, और वे मुझ को जानते ही नहीं, यहोवा की यही वाणी है॥

४ अपने अपने संगी से चौकस रहो, अपने भाई पर भी भरोसा न रखो; क्योंकि सब भाई निश्चय अड़ंगा मारेंगे, और हर एक पड़ोसी लुतराई करते फिरेंगे।

* मूल में—अपने लोगों की बेटी।

* मूल में—अपने लोगों की बेटी के।

† मूल में—मेरे लोगों की बेटी के।

‡ मूल में—मेरे लोगों की बेटी के मारे हुओं के।

५ वे एक दूसरे को ठगेंगे और सच नहीं बोलेंगे; उन्हों ने झूठ ही बोलना सीखा है*; और कुटिलता ही में परिश्रम करते हैं। ६ तेरा निवास छल के बीच है; छल ही के कारण वे मेरा ज्ञान नहीं चाहते, यहोवा की यही वाणी है ॥

७ इसलिये सेनाओं का यहोवा यों कहता है, देख, मैं उनको तपाकर परखूंगा, क्योंकि अपनी प्रजा† के कारण मैं उन से और क्या कर सकता हूं? ८ उनकी जीभ काल के तीर के समान बेधनेवाली है, उस से छल की बातें निकलती हैं; वे मुंह से तो एक दूसरे से मेल की बात बोलते हैं पर मन ही मन एक दूसरे की घात में लगे रहते हैं। ९ क्या मैं ऐसी बातों का दण्ड न दूं? यहोवा की यह वाणी है, क्या मैं ऐसी जाति से अपना पलटा न लूं?

१० मैं पहाड़ों के लिये रो उठूंगा और शोक का गीत गाऊंगा, और जंगल की चराइयों के लिये विलाप का गीत गाऊंगा, क्योंकि वे ऐसे जल गए हैं कि कोई उन में से होकर नहीं चलता, और उन में ढोर का शब्द भी नहीं सुनाई पड़ता; पशु-पक्षी सब भाग गए हैं। ११ मैं यरूशलेम को डीह ही डीह करके गीदड़ों का स्थान बनाऊंगा; और यहूदा के नगरों को ऐसा उजाड़ दूंगा कि उन में कोई न बसेगा ॥

१२ जो बुद्धिमान पुरुष हो वह इसका भेद समझ ले, और जिस ने यहोवा के मुख से इसका कारण सुना हो वह बता दे। देश का नाश क्यों हुआ? क्यों वह जंगल की नाईं ऐसा जल गया कि उस में से होकर कोई नहीं चलता? १३ और यहोवा ने कहा, क्योंकि उन्हों ने मेरी व्यवस्था को जो मैं ने उनके आगे रखी थी छोड़ दिया; और न मेरी बात मानी और न उसके अनुसार चले हैं, १४ वरन वे अपने हठ पर बाल नाम देवताओं के पीछे चले, जैसा उनके पुरखाओं ने उनको सिखलाया। १५ इस कारण, सेनाओं का यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर यों कहता है, सुन, मैं अपनी इस प्रजा को कड़वी वस्तु खिलाऊंगा और विष पिलाऊंगा। १६ और मैं उन लोगों को ऐसी जातियों में तितर बितर करूंगा जिन्हें न तो वे न उनके पुरखा जानते थे; और जब तक उनका अन्त न हो जाए तब तक मेरी ओर से तलवार उनके पीछे पड़ेगी ॥

१७ सेनाओं का यहोवा यों कहता है, सोचो, और विलाप करनेवालियों को बुलाओ; बुद्धिमान स्त्रियों को बुलवा भेजो; १८ वे फुर्ती करके हम लोगों के लिये शोक का गीत गाएं कि हमारी आंखों से आंसू बह चलें और हमारी पलकें जल बहाएं। १९ सिय्योन से शोक का यह गीत सुन पड़ता है, हम कैसे नाश हो गए! हम क्यों लज्जा में पड़ गए हैं, क्योंकि हम को अपना देश छोड़ना पड़ा और हमारे घर गिरा दिए गए हैं ॥

२० इसलिये, हे स्त्रियो, यहोवा का यह वचन सुनो, और उसकी यह आज्ञा मानो; तुम अपनी अपनी बेटियों को शोक का गीत, और अपनी अपनी पड़ोसिनों को विलाप का गीत सिखाओ। २१ क्योंकि मृत्यु हमारी खिड़कियों से होकर हमारे महलों में घुस आई है, कि, हमारी सड़कों में बच्चों को और चौकों

---

* मूल में—उन्होंने अपनी जीभ को झूठ बोलना सिखाया है।

† मूल में—प्रजा की बेटी।

में जवानों को मिटा दे। २२ तू कह, यहोवा यों कहता है, मनुष्यों की लोथें ऐसी पड़ी रहेंगी जैसा खाद खेत के ऊपर, और पूलियां काटनेवाले के पीछे पड़ी रहती हैं, और उनका कोई उठानेवाला न होगा॥

२३ यहोवा यों कहता है, बुद्धिमान अपनी बुद्धि पर घमण्ड न करे, न वीर अपनी वीरता पर, न धनी अपने धन पर घमण्ड करे; २४ परन्तु जो घमण्ड करे वह इसी बात पर घमण्ड करे, कि वह मुझे जानता और समझता है, कि मैं ही वह यहोवा हूं, जो पृथ्वी पर करुणा, न्याय और धर्म के काम करता है; क्योंकि मैं इन्हीं बातों से प्रसन्न रहता हूं॥

२५ देखो, यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन आनेवाले हैं कि जिनका खतना हुआ हो, उनको खतनारहितों के समान दण्ड दूंगा, २६ अर्थात् मिस्रियों, यहूदियों, एदोमियों, अम्मोनियों, मोआबियों को, और उन रेगिस्तान के निवासियों के समान जो अपने गाल के बालों को मुंड़ा डालते हैं; क्योंकि ये सब जातियें तो खतनारहित हैं, और इस्राएल का सारा घराना भी मन में खतनारहित है॥

१० यहोवा यों कहता है, हे इस्राएल के घराने जो वचन यहोवा तुम से कहता है उसे सुनो। २ अन्यजातियों की चाल मत सीखो, न उनकी नाईं आकाश के चिन्हों से विस्मित हो, इसलिये कि अन्यजाति लोग उन से विस्मित होते हैं। ३ क्योंकि देशों के लोगों की रीतियां तो निकम्मी हैं। मूरत तो वन में से किसी का काटा हुआ काठ है जिसे कारीगर ने बसूले से बनाया है। ४ लोग उसको सोने-चान्दी से सजाते और हथौड़े से कील ठोंक ठोंककर दृढ़ करते हैं कि वह हिल-डुल न सके। ५ वे खरादकर ताड़ के पेड़ के समान गोल बनाई जाती हैं, पर बोल नहीं सकतीं; उन्हें उठाए फिरना पड़ता है, क्योंकि वे चल नहीं सकतीं। उन से मत डरो, क्योंकि, न तो वे कुछ बुरा कर सकती हैं और न कुछ भला॥

६ हे यहोवा, तेरे समान कोई नहीं है; तू महान है, और तेरा नाम पराक्रम में बड़ा है। ७ हे सब जातियों के राजा, तुझ से कौन न डरेगा? क्योंकि यह तेरे योग्य है; अन्यजातियों के सारे बुद्धिमानों में, और उनके सारे राज्यों में तेरे समान कोई नहीं है। ८ परन्तु वे पशु सरीखे निरे मूर्ख हैं; मूर्त्तियों से क्या शिक्षा? वे तो काठ ही हैं! ९ पत्तर बनाई हुई चान्दी तर्शीश से लाई जाती है, और उफाज़ से सोना। वे कारीगर और सुनार के हाथों की कारीगरी हैं; उनके पहिरावे नीले और बैंजनी रंग के वस्त्र हैं; उन में जो कुछ है वह निपुण कारीगरों की कारीगरी ही है। १० परन्तु यहोवा वास्तव में परमेश्वर है; जीवित परमेश्वर और सदा का राजा वही है। उसके प्रकोप से पृथ्वी कांपती है, और जाति जाति के लोग उसके क्रोध को सह नहीं सकते॥

११ तुम उन से यह कहना, ये देवता जिन्हों ने आकाश और पृथ्वी को नहीं बनाया वे पृथ्वी के ऊपर से और आकाश के नीचे से नष्ट हो जाएंगे॥

१२ उसी ने पृथ्वी को अपनी सामर्थ से बनाया, उस ने जगत को अपनी बुद्धि से स्थिर किया, और आकाश को अपनी प्रवीणता से तान दिया है। १३ जब वह

बोलता है तब आकाश में जल का बड़ा शब्द होता है, और पृथ्वी की छोर से वह कुहरे को उठाता है। वह वर्षा के लिये बिजली चमकाता, और अपने भण्डार में से पवन चलाता है। १४ सब मनुष्य पशु सरीखे ज्ञानरहित हैं; अपनी खोदी हुई मूरतों के कारण सब सुनारों की आशा टूटती है; क्योंकि उनकी ढाली हुई मूरतें झूठी हैं, और उन में सांस ही नहीं है। १५ वे व्यर्थ और ठट्ठे ही के योग्य हैं; जब उनके दण्ड का समय आएगा* तब वे नाश हो जाएंगीं। १६ परन्तु याकूब का निज भाग उनके समान नहीं है, क्योंकि वह तो सब का सृजनहार है, और इस्राएल उसके निज भाग का गोत्र है; सेनाओं का यहोवा उसका नाम है॥

१७ हे घेरे हुए नगर की रहनेवाली, अपनी गठरी भूमि पर से उठा! १८ क्योंकि यहोवा यों कहता है, मैं अब की बेर इस देश के रहनेवालों को मानो गोफ़न में धरके फेंक दूंगा, और उन्हें ऐसे ऐसे संकट में डालूंगा कि उनकी समझ में भी नहीं आएगा॥

१९ मुझ पर हाय! मेरा घाव चंगा होने का नहीं। फिर मैं ने सोचा, यह तो रोग ही है, इसलिये मुझ को इसे सहना चाहिये। २० मेरा तम्बू लूटा गया, और सब रस्सियां टूट गई हैं; मेरे लड़केबाले मेरे पास से चले गए, और नहीं हैं; अब कोई नहीं रहा जो मेरे तम्बू को ताने और मेरी कनातें खड़ी करे। २१ क्योंकि चरवाहे पशु सरीखे हैं, और वे यहोवा को नहीं पुकारते; इसी कारण वे बुद्धि से नहीं चलते, और उनकी सब भेड़ें तितर-बितर हो गई हैं॥

२२ सुन, एक शब्द सुनाई देता है! देख, वह आ रहा है! उत्तर दिशा से बड़ा हुल्लड़ मच रहा है ताकि यहूदा के नगरों को उजाड़कर गीदड़ों का स्थान बना दे॥

२३ हे यहोवा, मैं जान गया हूं, कि मनुष्य का मार्ग उसके वश में नहीं है, मनुष्य चलता तो है, परन्तु उसके डग उसके अधीन नहीं हैं। २४ हे यहोवा, मेरी ताड़ना कर, पर न्याय से; क्रोध में आकर नहीं, कहीं ऐसा न हो कि मैं नाश हो जाऊं*॥

२५ जो जाति तुझे नहीं जानती, और जो तुझ से प्रार्थना नहीं करते, उन्हीं पर अपनी जलजलाहट उण्डेल; क्योंकि उन्हों ने याकूब को निगल लिया, वरन, उसे खाकर अन्त कर दिया है, और उसके निवासस्थान को उजाड़ दिया है॥

११ यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा: २ इस वाचा के वचन सुनो, और यहूदा के पुरुषों और यरूशलेम के रहनेवालों से कहो। ३ उन से कहो, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, स्रापित है वह मनुष्य, जो इस वाचा के वचन न माने ४ जिसे मैं ने तुम्हारे पुरखाओं के साथ लोहे की भट्ठी अर्थात् मिस्र देश में से निकालने के समय, यह कहके बान्धी थी, मेरी सुनो, और जितनी आज्ञाएं मैं तुम्हें देता हूं उन सभों का पालन करो। इस से तुम मेरी प्रजा ठहरोगे, और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूंगा; ५ और जो शपथ मैं ने तुम्हारे

* मूल में—उनके दण्ड होने के समय।

* मूल में—तू मुझे घटाएगा।

पितरों से खाई थी कि जिस देश में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं, उसे मैं तुम को दूंगा, उसे पूरी करूंगा; और देखो, वह पूरी हुई है। यह सुनकर मैं ने कहा, हे यहोवा, ऐसा ही हो * ॥

६ तब यहोवा ने मुझ से कहा, ये सब वचन यहूदा के नगरों और यरूशलेम की सड़कों में प्रचार करके कह, इस वाचा के वचन सुनो और उसके अनुसार चलो। ७ क्योंकि जिस समय से मैं तुम्हारे पुरखाओं को मिस्र देश से छुड़ा ले आया तब से आज के दिन तक उनको दृढ़ता से चिताता आया हूं, मेरी बात सुनो। ८ परन्तु उन्हों ने न सुनी और न मेरी बातों पर कान लगाया, किन्तु अपने अपने बुरे मन के हठ पर चलते रहे। इसलिये मैं ने उनके विषय इस वाचा की सब बातों को पूर्ण किया है जिसके मानने की मैं ने उन्हें आज्ञा दी थी और उन्हों ने न मानी ॥

९ फिर यहोवा ने मुझ से कहा, यहूदियों और यरूशलेम के निवासियों में विद्रोह पाया गया है। १० जैसे इनके पुरखा मेरे वचन सुनने से इनकार करते थे, वैसे ही ये भी उनके अधर्मों का अनुसरण करके दूसरे देवताओं के पीछे चलते और उनकी उपासना करते हैं; इस्राएल और यहूदा के घरानों ने उस वाचा को जो मैं ने उनके पूर्वजों से बान्धी थी, तोड़ दिया है। ११ इसलिये यहोवा यों कहता है, देख, मैं इन पर ऐसी विपत्ति डालने पर हूं जिस से ये बच न सकेंगे; और चाहे ये मेरी दोहाई दें तौभी मैं इनकी न सुनूंगा। १२ उस समय यरूशलेम और यहूदा के नगरों के निवासी उन देवताओं की दोहाई देंगे जिनके लिये वे धूप जलाते हैं, परन्तु वे उनकी विपत्ति के समय उनको कभी न बचा सकेंगे। १३ हे यहूदा, जितने तेरे नगर हैं उतने ही तेरे देवता भी हैं; और यरूशलेम के निवासियों ने हर एक सड़क में उस लज्जापूर्ण बाल की वेदियां बना बनाकर उसके लिये धूप जलाया है। १४ इसलिये तू मेरी इस प्रजा के लिये प्रार्थना न करना, न कोई इन लोगों के लिये ऊंचे स्वर से बिनती करे, क्योंकि जिस समय ये अपनी विपत्ति के मारे मेरी दोहाई देंगे, तब मैं उनकी न सुनूंगा ॥

१५ मेरी प्रिया को मेरे घर में क्या काम है? उस ने तो बहुतों के साथ कुकर्म किया, और तेरी पवित्रता पूरी रीति से जाती रही है *। जब तू बुराई करती है, तब प्रसन्न होती है। १६ यहोवा ने तुझ को हरी, मनोहर, सुन्दर फलवाली जलपाई तो कहा था, परन्तु उस ने बड़े हुल्लड़ के शब्द होते ही उस में आग लगाई गई, और उसकी डालियां तोड़ डाली गईं। १७ सेनाओं का यहोवा, जिस ने तुझे लगाया, उस ने तुझ पर विपत्ति डालने के लिये कहा है †; इसका कारण इस्राएल और यहूदा के घरानों की यह बुराई है कि उन्हों ने मुझे रिस दिलाने के लिये बाल के निमित्त धूप जलाया ॥

१८ यहोवा ने मुझे बताया और यह बात मुझे मालूम हो गई; क्योंकि यहोवा ही ने उनकी युक्तियां मुझ पर प्रगट कीं।

* मूल में—हे यहोवा, आमीन।

* मूल में—पवित्र मांस तुझ पर से चला गया।

† मूल में—उस ने तेरे विषय बुराई कही।

१९ मैं तो बध होनेवाले * भेड़ के बच्चे के समान अनजान था। मैं न जानता था कि वे लोग मेरी हानि की युक्तियां यह कहकर करते हैं, आओ, हम फल † समेत इस वृक्ष को उखाड़ दें, और जीवितों के बीच में से काट डालें, तब इसका नाम तक फिर स्मरण न रहे। २० परन्तु, अब हे सेनाओं के यहोवा, हे धर्मी न्यायी, हे अन्तःकरण की बातों के ज्ञाता, तू उनका पलटा ले और मुझे दिखा, क्योंकि मैं ने अपना मुक़द्दमा तेरे हाथ में छोड़ दिया है ‡। २१ इसलिये यहोवा ने मुझ से कहा, अनातोत के लोग जो तेरे प्राण के खोजी हैं और यह कहते हैं कि तू यहोवा का नाम लेकर भविष्यद्वाणी न कर, नहीं तो हमारे हाथों से मरेगा। २२ इसलिये सेनाओं का यहोवा उनके विषय यों कहता है, मैं उनको दण्ड दूंगा; उनके जवान तलवार से, और उनके लड़के-लड़कियां भूखों मरेंगे; २३ और उन में से कोई भी न बचेगा। मैं अनातोत के लोगों पर यह विपत्ति डालूंगा; उनके दण्ड का दिन § आनेवाला है॥

१२ हे यहोवा, यदि मैं तुझ से मुक़द्दमा लड़ूं, तौभी तू धर्मी है; मुझे अपने साथ इस विषय पर वादविवाद करने दे। दुष्टों की चाल क्यों सफल होती है? क्या कारण है कि विश्वासघाती बहुत सुख से रहते हैं? २ तू उनको बोता और वे जड़ भी पकड़ते; वे बढ़ते और फलते भी हैं; तू उनके मुंह के निकट है परन्तु उनके मनों से दूर है। ३ हे यहोवा तू मुझे जानता है; तू मुझे देखता है, और तू ने मेरे मन की परीक्षा करके देखा कि मैं तेरी ओर किस प्रकार रहता हूं। जैसे भेड़-बकरियां घात होने के लिये झुण्ड में से निकाली जाती हैं, वैसे ही उनको भी निकाल ले और बध के दिन के लिये तैयार * कर। ४ कब तक देश विलाप करता रहेगा, और सारे मैदान की घास सूखी रहेगी? देश के निवासियों की बुराई के कारण पशु-पक्षी सब नाश हो गए हैं, क्योंकि उन लोगों ने कहा, वह हमारे अन्त को न देखेगा॥

५ तू जो प्यादों ही के संग दौड़कर थक गया है तो घोड़ों के संग क्योंकर बराबरी कर सकेगा? और यद्यपि तू शान्ति के इस देश में निडर है, परन्तु यरदन के आसपास के घने जंगल में † तू क्या करेगा? ६ क्योंकि तेरे भाई और तेरे घराने के लोगों ने भी तेरा विश्वासघात किया है; वे तेरे पीछे ललकारते हैं, यदि वे तुझ से मीठी बातें भी कहें, तौभी उनकी प्रतीति न करना॥

७ मैं ने अपना घर छोड़ दिया, अपना निज भाग मैं ने त्याग दिया है; मैं ने अपनी प्राणप्रिया को शत्रुओं के वश में कर दिया है। ८ क्योंकि मेरा निज भाग मेरे देखने में वन के सिंह के समान हो गया और मेरे विरुद्ध गरजा है; इस कारण मैं ने उस से बैर किया है। ९ क्या मेरा निज भाग मेरी दृष्टि में चित्तीवाले शिकारी पक्षी के समान नहीं है? क्या शिकारी पक्षी चारों ओर से उसे घेरे हुए हैं? जाओ सब जंगली पशुओं को

* मूल में—बध के लिये पहुंचाए जानेवाले।
† मूल में—भोजनवस्तु।
‡ मूल में—तुझी को प्रगट किया है।
§ मूल में—बरस।

* मूल में—पवित्र।
† मूल में—यरदन की बाढ़ में।

इकट्ठा करो; उनको लाओ कि खा जाए। १० बहुत से चरवाहों ने मेरी दाख की बारी को बिगाड़ कर दिया, उन्हों ने मेरे भाग को लताड़ा, वरन मेरे मनोहर भाग के खेत को सुनसान जंगल बना दिया है। ११ उन्हों ने उसको उजाड़ दिया; वह उजड़कर मेरे साम्हने विलाप कर रहा है। सारा देश उजड़ गया है, तौभी कोई नहीं सोचता। १२ जंगल के सब मुंडे टीलों पर नाशक चढ़ आए हैं; क्योंकि यहोवा की तलवार देश के एक छोर से लेकर दूसरी छोर तक निगलती जाती है; किसी मनुष्य को शान्ति नहीं मिलती। १३ उन्हों ने गेहूं तो बोया, परन्तु कटीले पेड़ काटे, उन्हों ने कष्ट तो उठाया, परन्तु उस से कुछ लाभ न हुआ। यहोवा के क्रोध के भड़कने के कारण तुम अपने खेतों की उपज के विषय में लज्जित हो॥

१४ मेरे दुष्ट पड़ोसी उस भाग पर हाथ लगाते हैं, जिसका भागी मैं ने अपनी प्रजा इस्राएल को बनाया है। उनके विषय यहोवा यों कहता है कि मैं उनको उनकी भूमि में से उखाड़ डालूंगा, और यहूदा के घराने को भी उनके बीच में से उखाड़ूंगा। १५ उन्हें उखाड़ने के बाद मैं फिर उन पर दया करूंगा, और उन में से हर एक को उसके निज भाग और भूमि में फिर से लगाऊंगा। १६ और यदि वे मेरी प्रजा की चाल सीखकर मेरे ही नाम की सौगन्ध, यहोवा के जीवन की सौगन्ध, खाने लगें, जिस प्रकार से उन्हों ने मेरी प्रजा को बाल की सौगन्ध खाना सिखलाया था, तब मेरी प्रजा के बीच उनका भी वंश बढ़ेगा *। १७ परन्तु यदि वे न मानें, तो मैं उस जाति को ऐसा उखाड़ूंगा कि वह फिर कभी न पनपेगी, यहोवा की यही वाणी है॥

१३ यहोवा ने मुझ से यों कहा, जाकर सनी की एक पेटी मोल ले, उसे कमर में बान्ध और जल में मत भीगने दे। २ तब मैं ने एक पेटी मोल लेकर यहोवा के वचन के अनुसार अपनी कमर में बान्ध ली। ३ तब दूसरी बार यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा कि ४ जो पेटी तू ने मोल लेकर कटि में कस ली है, उसे परात के तीर पर ले जा और वहां उसे कड़ाड़े पर की एक दरार में छिपा दे। ५ यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मैं ने उसको परात के तीर पर ले जाकर छिपा दिया। ६ बहुत दिनों के बाद यहोवा ने मुझ से कहा, उठ, फिर परात के पास जा, और जिस पेटी को मैं ने तुझे वहां छिपाने की आज्ञा दी उसे वहां से ले ले। ७ तब मैं परात के पास गया और खोदकर जिस स्थान में मैं ने पेटी को छिपाया था, वहां से उसको निकाल लिया। और देखो, पेटी बिगड़ गई थी; वह किसी काम की न रही॥

८ तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, यहोवा यों कहता है, ९ इसी प्रकार से मैं यहूदियों का गर्व, और यरूशलेम का बड़ा गर्व नष्ट कर दूंगा। १० इस दुष्ट जाति के लोग जो मेरे वचन सुनने से इनकार करते हैं जो अपने मन के हठ पर चलते, दूसरे देवताओं के पीछे चलकर उनकी उपासना करते और उनको दण्डवत् करते हैं, वे इस पेटी के समान हो जाएंगे जो किसी काम की नहीं रही। ११ यहोवा की यह वाणी है कि जिस

* मूल में—वे बस जाएंगे।

प्रकार से पेटी मनुष्य की कमर में कसी जाती है, उसी प्रकार से मैं ने इस्राएल के सारे घराने और यहूदा के सारे घराने को अपनी कटि में बान्ध लिया था कि वे मेरी प्रजा बनें और मेरे नाम और कीर्ति और शोभा का कारण हों, परन्तु उन्हों ने न माना। १२ इसलिये तू उन से यह वचन कह, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, दाखमधु के सब कुप्पे दाखमधु से भर दिए जाएंगे। तब वे तुझ से कहेंगे, क्या हम नहीं जानते कि दाखमधु के सब कुप्पे दाखमधु से भर दिए जाएंगे? १३ तब तू उन से कहना, यहोवा यों कहता है, देखो, मैं इस देश के सब रहनेवालों को, विशेष करके दाऊदवंश की गद्दी पर विराजमान राजा और याजक और भविष्यद्वक्ता आदि यरूशलेम के सब निवासियों को अपनी कोपरूपी मदिरा पिलाकर अचेत कर दूंगा*। १४ तब मैं उन्हें एक दूसरे से टकरा दूंगा; अर्थात् बाप को बेटे से, और बेटे को बाप से, यहोवा की यह वाणी है। मैं उन पर कोमलता नहीं दिखाऊंगा, न तरस खाऊंगा और न दया करके उनको नष्ट होने से बचाऊंगा॥

१५ देखो, और कान लगाओ, गर्व मत करो, क्योंकि यहोवा ने यों कहा है। १६ अपने परमेश्वर यहोवा की बड़ाई करो, इस से पहिले कि वह अन्धकार लाए और तुम्हारे पांव अन्धेरे पहाड़ों पर ठोकर खाएं, और जब तुम प्रकाश का आसरा देखो, तब वह उसको मृत्यु की छाया से बदल और उसे घोर अन्धकार बना दे। १७ और यदि तुम इसे न सुनो, तो मैं अकेले में तुम्हारे गर्व के कारण रोऊंगा, और मेरी आंखों से आंसुओं की धारा बहती रहेगी, क्योंकि यहोवा की भेड़ें बंधुआ कर ली गई हैं॥

१८ राजा और राजमाता से कह, नीचे बैठ जाओ, क्योंकि तुम्हारे सिरों के शोभायमान मुकुट उतार लिए गए हैं। १९ दक्खिन देश के नगर घेरे गए हैं, कोई उन्हें बचा* न सकेगा; सम्पूर्ण यहूदी जाति बन्दी हो गई है, वह पूरी रीति से बंधुआई में चली गई है॥

२० अपनी आंखें उठाकर उनको देख जो उत्तर दिशा से आ रहे हैं। वह सुन्दर झुण्ड जो तुझे सौंपा गया था कहां है? २१ जब वह तेरे उन मित्रों को तेरे ऊपर प्रधान ठहराएगा जिन्हें तू ने अपनी हानि करने की शिक्षा दी है, तब तू क्या कहेगी? क्या उस समय तुझे जच्चा की सी पीड़ाएं न उठेंगी? २२ और यदि तू अपने मन में सोचे कि ये बातें किस कारण मुझ पर पड़ी हैं, तो तेरे बड़े अधर्म के कारण तेरा आंचल उठाया गया है और तेरी एड़ियां बरियाई से नंगी की गई हैं। २३ क्या हबशी अपना चमड़ा, वा चीता अपने धब्बे बदल सकता है? यदि वे ऐसा कर सकें, तो तू भी, जो बुराई करना सीख गई है, भलाई कर सकेगी। २४ इस कारण मैं उनको ऐसा तितर-बितर करूंगा, जैसा भूसा जंगल के पवन से तितर-बितर किया जाता है। २५ यहोवा की यह वाणी है, तेरा हिस्सा और मुझ से ठहराया हुआ तेरा भाग यही है, क्योंकि तू ने मुझे भूलकर झूठ पर भरोसा रखा है। २६ इसलिये मैं भी तेरा आंचल

* मूल में—निवासियों को मतवालेपन से भरूंगा।

* मूल में—खोल।

तेरे मुंह तक उठाऊंगा, तब तेरी लाज जानी जाएगी। २७ व्यभिचार और चोचला* और छिनालपन आदि तेरे घिनौने काम जो तू ने मैदान और टीलों पर किए हैं, वे सब मैं ने देखे हैं। हे यरूशलेम, तुझ पर हाय! तू अपने आप को कब तक शुद्ध न करेगी? और कितने दिन तक तू बनी रहेगी?

१४ यहोवा का वचन जो यिर्मयाह के पास सूखे वर्ष के विषय में पहुंचा: २ यहूदा विलाप करता और फाटकों में लोग शोक का पहिरावा पहिने हुए भूमि पर उदास बैठे हैं; और यरूशलेम की चिल्लाहट आकाश तक पहुंच गई है†। ३ और उनके बड़े लोग उनके छोटे लोगों को पानी के लिये भेजते हैं; वे गड़हों पर आकर पानी नहीं पाते, इसलिये छूछे बर्तन लिए हुए घर लौट जाते हैं; वे लज्जित और निराश होकर सिर ढांप लेते हैं। ४ देश में पानी न बरसने से भूमि में दरार पड़ गए हैं, इस कारण किसान लोग निराश होकर सिर ढांप लेते हैं। ५ हरिणी भी मैदान में बच्चा जनकर छोड़ जाती है क्योंकि हरी घास नहीं मिलती। ६ जंगली गदहे भी मुंडे टीलों पर खड़े हुए गीदड़ों की नाईं हांफते हैं; उनकी आंखें धुंधला जाती हैं क्योंकि हरियाली कुछ भी नहीं है॥

७ हे यहोवा, हमारे अधर्म के काम हमारे विरुद्ध साक्षी दे रहे हैं, हम तेरा संग छोड़कर बहुत दूर भटक गए हैं, और हम ने तेरे विरुद्ध पाप किया है; तौभी, तू अपने नाम के निमित्त कुछ कर। ८ हे इस्राएल के आधार, संकट के समय उसका बचानेवाला तू ही है, तू क्यों इस देश में परदेशी की नाईं है? तू क्यों उस बटोही के समान है जो रात भर रहने के लिये कहीं टिकता हो? ९ तू क्यों एक विस्मित पुरुष या ऐसे वीर के समान है जो बचा न सके? तौभी हे यहोवा तू हमारे बीच में है, और हम तेरे कहलाते हैं; इसलिये हमको न तज॥

१० यहोवा ने इन लोगों के विषय यों कहा: इनको ऐसा भटकना अच्छा लगता है; ये कुकर्म में चलने से नहीं रुके; इसलिये यहोवा इन से प्रसन्न नहीं है, वह इनका अधर्म स्मरण करेगा और उनके पाप का दण्ड देगा॥

११ फिर यहोवा ने मुझ से कहा, इस प्रजा की भलाई के लिये प्रार्थना मत कर। १२ चाहे वे उपवास भी करें, तौभी मैं इनकी दुहाई न सुनूंगा, और चाहे वे होमबलि और अन्नबलि चढ़ाएं, तौभी मैं उन से प्रसन्न न होऊंगा; मैं तलवार, महंगी और मरी के द्वारा इनका अन्त कर डालूंगा॥

१३ तब मैं ने कहा, हाय, प्रभु यहोवा, देख, भविष्यद्वक्ता इन से कहते हैं कि न तो तुम पर तलवार चलेगी और न महंगी होगी, यहोवा तुम को इस स्थान में सदा की शान्ति* देगा। १४ और यहोवा ने मुझ से कहा, ये भविष्यद्वक्ता मेरा नाम लेकर झूठी भविष्यद्वाणी करते हैं, मैं ने उनको न तो भेजा और न कुछ आज्ञा दी और न उन से कोई भी बात कही। वे तुम लोगों से दर्शन का झूठा

* मूल में—हिनहिनाना।
† मूल में—चिल्लाहट चढ़ गई है।

* मूल में—सच्चाई की शान्ति।

दावा करके अपने ही मन से व्यर्थ और धोखे की भविष्यद्वाणी करते हैं। १५ इस कारण जो भविष्यद्वक्ता मेरे बिना भेजे मेरा नाम लेकर भविष्यद्वाणी करते हैं कि इस देश में न तो तलवार चलेगी और न महंगी होगी, उनके विषय यहोवा यों कहता है, कि, वे भविष्यद्वक्ता आप तलवार और महंगी के द्वारा नाश किए जाएंगे। १६ और जिन लोगों से वे भविष्यद्वाणी कहते हैं, वे महंगी और तलवार के द्वारा मर जाने पर इस प्रकार यरूशलेम की सड़कों में फेंक दिए जाएंगे, कि न तो उनका, न उनकी स्त्रियों का और न उनके बेटे-बेटियों का कोई मिट्टी देनेवाला रहेगा। क्योंकि मैं उनकी बुराई उन्हीं के ऊपर उण्डेलूंगा *॥

१७ तू उन से यह बात कह, मेरी आंखों से दिन रात आंसू लगातार बहते रहें, वे न रुकें क्योंकि मेरे लोगों की कुंवारी बेटी बहुत ही कुचली गई और घायल हुई है। १८ यदि मैं मैदान में जाऊं, तो देखो, तलवार के मारे हुए पड़े हैं! और यदि मैं नगर के भीतर आऊं, तो देखो, भूख से अधमूए पड़े हैं †! क्योंकि भविष्यद्वक्ता और याजक देश में कमाई करते फिरते और समझ नहीं रखते हैं॥

१९ क्या तू ने यहूदा से बिलकुल हाथ उठा लिया? क्या तू सिय्योन से घिन करता है? नहीं, तू ने क्यों हम को ऐसा मारा है कि हम चंगे हो ही नहीं सकते? हम शान्ति की बाट जोहते रहे, तौभी कुछ कल्याण नहीं हुआ; और यद्यपि हम अच्छे हो जाने की आशा करते रहे, तौभी घबराना ही पड़ा है।

* मूल में—उन्हीं पर उण्डेलूंगा।
† मूल में—भूख के रोगी हैं।

२० हे यहोवा, हम अपनी दुष्टता और अपने पुरखाओं के अधर्म को भी मान लेते हैं, क्योंकि हम ने तेरे विरुद्ध पाप किया है। २१ अपने नाम के निमित्त हमें न ठुकरा; अपने तेजोमय सिंहासन का अपमान न कर; जो वाचा तू ने हमारे साथ बान्धी, उसे स्मरण कर और उसे न तोड़। २२ क्या अन्यजातियों की मूरतों में से कोई वर्षा कर सकता है? क्या आकाश झड़ियां लगा सकता है? हे हमारे परमेश्वर यहोवा, क्या तू ही इन सब बातों का करनेवाला नहीं है? हम तेरा ही आसरा देखते रहेंगे, क्योंकि इन सारी वस्तुओं का सृजनहार तू ही है॥

१५ फिर यहोवा ने मुझ से कहा, यदि मूसा और शमूएल भी मेरे साम्हने खड़े होते, तौभी मेरा मन इन लोगों की ओर न फिरता। इनको मेरे साम्हने से निकाल दो कि वे निकल जाएं! २ और यदि वे तुझ से पूछें कि हम कहां निकल जाएं? तो कहना कि यहोवा यों कहता है, जो मरनेवाले हैं, वे मरने को चले जाएं, जो तलवार से मरनेवाले हैं, वे तलवार से मरने को; जो अकाल से मरनेवाले हैं, वे अकाल से मरने को, और जो बंधुए होनेवाले हैं, वे बंधुआई में चले जाएं। ३ मैं उनके विरुद्ध चार प्रकार के विनाश * ठहराऊंगा: मार डालने के लिये तलवार, फाड़ डालने के लिये कुत्ते, नोच डालने के लिये आकाश के पक्षी, और फाड़कर खाने के लिये मैदान के हिंसक जन्तु, यहोवा की यह वाणी है। ४ यह हिजकिय्याह के पुत्र, यहूदा के राजा मनश्शे के उन कामों के कारण

* मूल में—चार कुल।

होगा जो उस ने यरूशलेम में किए हैं, और मैं उन्हें ऐसा करूंगा कि वे पृथ्वी के राज्य राज्य में मारे मारे फिरेंगे ।।

५ हे यरूशलेम, तुझ पर कौन तरस खाएगा, और कौन तेरे लिये शोक करेगा? कौन तेरा कुशल पूछने को तेरी ओर मुड़ेगा? ६ यहोवा की यह वाणी है कि तू मुझ को त्यागकर पीछे हट गई है, इसलिये मैं तुझ पर हाथ बढ़ाकर तेरा नाश करूंगा; क्योंकि, मैं तरस खाते खाते उकता गया हूं। ७ मैं ने उनको देश के फाटकों में सूप से फटक दिया है; उन्हों ने कुमार्ग को नहीं छोड़ा, इस कारण मैं ने अपनी प्रजा को निर्वंश कर दिया, और नाश भी किया है। ८ उनकी विधवाएं मेरे देखने में समुद्र की बालू के किनकों से अधिक हो गई हैं; उनके जवानों की माताओं के विरुद्ध दुपहरी ही को मैं ने लुटेरों को ठहराया है; मैं ने उनको अचानक संकट में डाल दिया और घबरा दिया है। ९ सात लड़कों की माता भी बेहाल हो गई और प्राण भी छोड़ दिया; उसका सूर्य दोपहर ही को अस्त हो गया; उसकी आशा टूट गई और उसका मुंह काला हो गया। और जो रह गए हैं उनको भी मैं शत्रुओं की तलवार से मरवा डालूंगा, यहोवा की यही वाणी है ।।

१० हे मेरी माता, मुझ पर हाय, कि तू ने मुझ ऐसे मनुष्य को उत्पन्न किया जो संसार भर से झगड़ा और वादविवाद करनेवाला ठहरा है! न तो मैं ने ब्याज के लिये रुपये दिए, और न किसी से उधार लिए हैं, तौभी लोग मुझे कोसते हैं। ११ यहोवा ने कहा, निश्चय मैं तेरी भलाई के लिये तुझे दृढ़ करूंगा; विपत्ति और कष्ट के समय में शत्रु से भी तेरी बिनती कराऊंगा। १२ क्या कोई पीतल वा लोहा, उत्तर दिशा का लोहा तोड़ सकता है? १३ तेरे सब पापों के कारण जो सर्वत्र देश में हुए हैं मैं तेरी धन-सम्पत्ति और खजाने, बिना दाम दिए लुट जाने दूंगा। १४ मैं ऐसा करूंगा कि वह शत्रुओं के हाथ ऐसे देश में चला जाएगा जिसे तू नहीं जानती है, क्योंकि मेरे क्रोध की आग भड़क उठी है, और वह तुम को जलाएगी ।।

१५ हे यहोवा, तू तो जानता है; मुझे स्मरण कर और मेरी सुधि लेकर मेरे सतानेवालों से मेरा पलटा ले। तू धीरज के साथ क्रोध करनेवाला है, इसलिये मुझे न उठा ले; तेरे ही निमित्त मेरी नामधराई हुई है। १६ जब तेरे वचन मेरे पास पहुंचे, तब मैं ने उन्हें मानो खा लिया, और तेरे वचन मेरे मन के हर्ष और आनन्द का कारण हुए; क्योंकि, हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, मैं तेरा कहलाता हूं। १७ तेरी छाया मुझ पर हुई; मैं मन बहलानेवालों के बीच बैठकर प्रसन्न नहीं हुआ; तेरे हाथ के दबाव से मैं अकेला बैठा, क्योंकि तू ने मुझे क्रोध से भर दिया था। १८ मेरी पीड़ा क्यों लगातार बनी रहती है? मेरी चोट की क्यों कोई औषधि नहीं है? क्या तू सचमुच मेरे लिये धोखा देनेवाली नदी और सूखनेवाले जल के समान होगा?

१९ यह सुनकर यहोवा ने यों कहा, यदि तू फिरे, तो मैं फिरसे तुझे अपने साम्हने खड़ा करूंगा। यदि तू अनमोल को कहे और निकम्मे को न कहे, तब तू मेरे मुख के समान होगा। वे लोग तेरी ओर फिरेंगे, परन्तु तू उनकी ओर न फिरना।

२० और मैं तुझ को उन लोगों के साम्हने पीतल की दृढ़ शहरपनाह बनाऊंगा; वे तुझ से लड़ेंगे, परन्तु तुझ पर प्रबल न होंगे, क्योंकि मैं तुझे बचाने और तेरा उद्धार करने के लिये तेरे साथ हूं, यहोवा की यह वाणी है। मैं तुझे दुष्ट लोगों के हाथ से बचाऊंगा, २१ और उपद्रवी लोगों के पंजे से छुड़ा लूंगा॥

१६ यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २ इस स्थान में विवाह करके बेटे-बेटियां मत जन्मा। ३ क्योंकि जो बेटे-बेटियां इस स्थान में उत्पन्न हों और जो माताएं उन्हें जनें और जो पिता उन्हें इस देश में जन्माएं, ४ उनके विषय यहोवा यों कहता है, वे बुरी बुरी बीमारियों से मरेंगे। उनके लिये कोई छाती न पीटेगा, न उनको मिट्टी देगा; वे भूमि के ऊपर खाद की नाईं पड़े रहेंगे। वे तलवार और महंगी से मर मिटेंगे, और उनकी लोथें आकाश के पक्षियों और मैदान के पशुओं का आहार होंगी। ५ यहोवा ने कहा, जिस घर में रोना-पीटना हो उस में न जाना, न छाती पीटने के लिये कहीं जाना और न इन लोगों के लिये शोक करना; क्योंकि यहोवा की यह वाणी है कि मैं ने अपनी शान्ति और करुणा और दया इन लोगों पर से उठा ली है। ६ इस कारण इस देश के छोटे-बड़े सब मरेंगे, न तो इनको मिट्टी दी जाएगी, न लोग छाती पीटेंगे, न अपना शरीर चीरेंगे, और न सिर मुंड़ाएंगे। इनके लिये कोई शोक करनेवालों को रोटी न बांटेंगे कि शोक में उन्हें शान्ति दें; ७ और न लोग पिता वा माता के मरने पर किसी को शान्ति के लिये कटोरे में दाखमधु पिलाएंगे। ८ तू जेवनार के घर में इनके साथ खाने-पीने के लिये न जाना। ९ क्योंकि सेनाओं का यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर यों कहता है, देख, तुम लोगों के देखते और तुम्हारे ही दिनों में मैं ऐसा करूंगा कि इस स्थान में न तो हर्ष और न आनन्द का शब्द सुनाई पड़ेगा, न दुल्हे और न दुल्हिन का शब्द। १० और जब तू इन लोगों से ये सब बातें कहे, और वे तुझ से पूछें कि यहोवा ने हमारे ऊपर यह सारी बड़ी विपत्ति डालने के लिये क्यों कहा है? हमारा अधर्म क्या है और हम ने अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध कौन सा पाप किया है? ११ तो तू इन लोगों से कहना, यहोवा की यह वाणी है, क्योंकि तुम्हारे पुरखा मुझे त्यागकर दूसरे देवताओं के पीछे चले, और उनकी उपासना करके उनको दण्डवत् की, और मुझ को त्याग दिया और मेरी व्यवस्था का पालन नहीं किया, १२ और जितनी बुराई तुम्हारे पुरखाओं ने की थी, उस से भी अधिक तुम करते हो, क्योंकि तुम अपने बुरे मन के हठ पर चलते हो और मेरी नहीं सुनते; १३ इस कारण मैं तुम को इस देश से उखाड़कर ऐसे देश में फेंक दूंगा, जिसको न तो तुम जानते हो और न तुम्हारे पुरखा जानते थे; और वहां तुम रात-दिन दूसरे देवताओं की उपासना करते रहोगे, क्योंकि वहां मैं तुम पर कुछ अनुग्रह न करूंगा॥

१४ फिर यहोवा की यह वाणी हुई, देखो, ऐसे दिन आनेवाले हैं जिन में फिर यह न कहा जाएगा कि यहोवा जो इस्राएलियों को मिस्र देश से छुड़ा ले आया उसके जीवन की सौगन्ध, १५ वरन यह कहा जाएगा कि यहोवा जो इस्राएलियों

को उत्तर के देश से और उन सब देशों से जहां उस ने उनको बरबस कर दिया था छुड़ा ले आया, उसके जीवन की सौगन्ध। क्योंकि मैं उनको उनके निज देश में जो मैं ने उनके पूर्वजों को दिया था, लौटा ले आऊंगा ॥

१६ देखो, यहोवा की यह वाणी है कि मैं बहुत से मछुओं को बुलवा भेजूंगा कि वे इन लोगों को पकड़ लें, और, फिर मैं बहुत से बहेलियों को बुलवा भेजूंगा कि वे इनको अहेर करके सब पहाड़ों और पहाड़ियों पर से और चट्टानों की दरारों में से निकालें। १७ क्योंकि उनका पूरा चाल-चलन मेरी आंखों के साम्हने प्रगट है; वह मेरी दृष्टि से छिपा नहीं है, न उनका अधर्म मेरी आंखों से गुप्त है। सो मैं उनके अधर्म और पाप का दूना दण्ड दूंगा, १८ क्योंकि उन्हों ने मेरे देश को अपनी घृणित वस्तुओं की लोथों से अशुद्ध किया, और मेरे निज भाग को अपनी अशुद्धता से भर दिया है ॥

१९ हे यहोवा, हे मेरे बल और दृढ़ गढ़, संकट के समय मेरे शरणस्थान, जाति-जाति के लोग पृथ्वी की चहुंओर से तेरे पास आकर कहेंगे, निश्चय हमारे पुरखा झूठी, व्यर्थ और निष्फल वस्तुओं को अपनाते आए हैं। २० क्या मनुष्य ईश्वरों को बनाए? नहीं, वे ईश्वर नहीं हो सकते!

२१ इस कारण, एक इस बार, मैं इन लोगों को अपना भुजबल और पराक्रम दिखाऊंगा, और वे जानेंगे कि मेरा नाम यहोवा है ॥

१७ यहूदा का पाप लोहे की टांकी और हीरे की नोक से, लिखा हुआ है; वह उनके हृदयरूपी पटिया और उनकी वेदियों के सींगों पर भी खुदा हुआ है। २ उनकी वेदियां और अशेरा नाम देवियां जो हरे पेड़ों के पास और ऊंचे टीलों के ऊपर हैं, वे उनके लड़कों को भी स्मरण रहती हैं। ३ हे मेरे पर्वत, तू जो मैदान में है, तेरी धन-सम्पत्ति और भण्डार में तेरे पाप के कारण लुट जाने दूंगा, और तेरे पूजा के ऊंचे स्थान भी जो तेरे देश में पाए जाते हैं। ४ तू अपने ही दोष के कारण अपने उस भाग का अधिकारी न रहने पाएगा जो मैं ने तुझे दिया है, और मैं ऐसा करूंगा कि तू अनजाने देश में अपने शत्रुओं की सेवा करेगा, क्योंकि तू ने मेरे क्रोध की आग ऐसी भड़काई है जो सर्वदा जलती रहेगी ॥

५ यहोवा यों कहता है, स्रापित है वह पुरुष जो मनुष्य पर भरोसा रखता है, और उसका * सहारा लेता है, जिसका मन यहोवा से भटक जाता है। ६ वह निर्जल देश के अधमूए पेड़ के समान होगा और कभी भलाई न देखेगा। वह निर्जल और निर्जन तथा लोनछाई भूमि पर बसेगा ॥

७ धन्य है वह पुरुष जो यहोवा पर भरोसा रखता है, जिस ने परमेश्वर को अपना आधार माना हो। ८ वह उस वृक्ष के समान होगा जो नदी के तीर पर लगा हो और उसकी जड़ जल के पास फैली हो; जब घाम होगा तब उसको न लगेगा, उसके पत्ते हरे रहेंगे, और सूखे वर्ष में भी उनके विषय में कुछ चिन्ता न होगी, क्योंकि वह तब भी फलता रहेगा ॥

* मूल में—मांस का।

९ मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देनेवाला होता है, उस में असाध्य रोग लगा है; उसका भेद कौन समझ सकता है? १० मैं यहोवा मन की खोजता और हृदय को जांचता हूं ताकि प्रत्येक जन को उसकी चाल-चलन के अनुसार अर्थात् उसके कामों का फल दूं॥

११ जो अन्याय से धन बटोरता है वह उस तीतर के समान होता है जो दूसरी चिड़िया के* दिए हुए अंडों को सेती है, उसकी आधी आयु में ही वह उस धन को छोड़ जाता है, और अन्त में वह मूढ़ ही ठहरता है॥

१२ हमारा पवित्र आराधनालय आदि से ऊंचे स्थान पर रखे हुए एक तेजोमय सिंहासन के समान है। १३ हे यहोवा, हे इस्राएल के आधार, जितने तुझे छोड़ देते हैं वे सब लज्जित होंगे; जो तुझ† से भटक जाते हैं उनके नाम भूमि ही पर लिखे जाएंगे, क्योंकि उन्हों ने बहते जल के सोते यहोवा को त्याग दिया है॥

१४ हे यहोवा मुझे चंगा कर, तब मैं चंगा हो जाऊंगा; मुझे बचा, तब मैं बच जाऊंगा; क्योंकि मैं तेरी ही स्तुति करता हूं‡। १५ सुन, वे मुझ से कहते हैं, यहोवा का वचन कहां रहा? वह अभी पूरा हो जाए! १६ परन्तु तू मेरा हाल जानता है, मैं ने तेरे पीछे चलते हुए उतावली करके चरवाहे का काम नहीं छोड़ा; न मैं ने उस आनेवाली विपत्ति के दिन की लालसा की है; जो कुछ मैं बोला वह तुझ पर प्रगट था। १७ मुझे न घबरा; संकट के दिन तू ही मेरा शरणस्थान है। १८ हे यहोवा, मेरी आशा टूटने न दे, मेरे सतानेवालों ही की आशा टूटे; उन्हीं को विस्मित कर; परन्तु मुझे निराशा से बचा; उन पर विपत्ति डाल और उनको चकनाचूर कर दे!

१९ यहोवा ने मुझ से यों कहा, जाकर सदर फाटक में खड़ा हो जिस से यहूदा के राजा वरन यरूशलेम के सब रहनेवाले भीतर-बाहर आया जाया करते हैं; २० और उन से कह, हे यहूदा के राजाओ और सब यहूदियो, हे यरूशलेम के सब निवासियो, और सब लोगो जो इन फाटकों में से होकर भीतर जाते हो, यहोवा का वचन सुनो। २१ यहोवा यों कहता है, सावधान रहो, विश्राम के दिन कोई बोझ मत उठाओ; और न कोई बोझ यरूशलेम के फाटकों के भीतर ले आओ। २२ विश्राम के दिन अपने अपने घर से भी कोई बोझ बाहर मत लेओ और न किसी रीति का काम काज करो, वरन उस आज्ञा के अनुसार जो मैं ने तुम्हारे पुरखाओं को दी थी, विश्राम के दिन को पवित्र माना करो। २३ परन्तु उन्हों ने न सुना और न कान लगाया, परन्तु इसके विपरीत हठ किया कि न सुनें और ताड़ना से भी न मानें॥

२४ परन्तु यदि तुम सचमुच मेरी सुनो, यहोवा की यह वाणी है, और विश्राम के दिन इस नगर के फाटकों के भीतर कोई बोझ न ले आओ और विश्रामदिन को पवित्र मानो, और उस में किसी रीति का काम काज न करो, २५ तब तो दाऊद की गद्दी पर विराजमान राजा, रथों और घोड़ों पर चढ़े हुए हाकिम और यहूदा के लोग और यरूशलेम के निवासी

* मूल में—अपने। † मूल में—मुझ। ‡ मूल में—तू ही मेरी स्तुति है।

इस नगर के फाटकों से होकर प्रवेश किया करेंगे और यह नगर सर्वदा बसा रहेगा। २६ और लोग होमबलि, मेलबलि अन्नबलि, लोबान और धन्यवादबलि लिए हुए यहूदा के नगरों से और यरूशलेम के आसपास से, बिन्यामीन के देश और नीचे के देश से, पहाड़ी देश और दक्खिन देश से, यहोवा के भवन में आया करेंगे। २७ परन्तु यदि तुम मेरी सुनकर विश्राम के दिन को पवित्र न मानो, और उस दिन यरूशलेम के फाटकों से बोझ लिए हुए प्रवेश करते रहो, तो मैं यरूशलेम के फाटकों में आग लगाऊंगा; और उस से यरूशलेम के महल भी भस्म हो जाएंगे और वह आग फिर न बुझेगी ॥

१८ यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा, उठकर कुम्हार के घर जा, २ और वहां मैं तुझे अपने वचन सुनवाऊंगा। ३ सो मैं कुम्हार के घर गया और क्या देखा कि वह चाक पर कुछ बना रहा है! ४ और जो मिट्टी का बासन वह बना रहा था वह बिगड़ गया, तब उस ने उसी का दूसरा बासन अपनी समझ के अनुसार बना दिया ॥

५ तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, हे इस्राएल के घराने, ६ यहोवा की यह वाणी है कि इस कुम्हार की नाईं तुम्हारे साथ क्या मैं भी काम नहीं कर सकता? देख, जैसा मिट्टी कुम्हार के हाथ में रहती है, वैसा ही हे इस्राएल के घराने, तुम भी मेरे हाथ में हो। ७ जब मैं किसी जाति वा राज्य के विषय कहूं कि उसे उखाड़ूंगा वा ढा दूंगा अथवा नाश करूंगा, ८ तब यदि उस जाति के लोग जिसके विषय मैं ने कह बात कही हो अपनी बुराई से फिरें, तो मैं उस विपत्ति के विषय जो मैं ने उन पर डालने को ठाना हो पछताऊंगा। ९ और जब मैं किसी जाति वा राज्य के विषय कहूं कि मैं उसे बनाऊंगा और रोपूंगा; १० तब यदि वे उस काम को करें जो मेरी दृष्टि में बुरा है और मेरी बात न मानें, तो मैं उस भलाई के विषय जिसे मैं ने उनके लिये करने को कहा हो, पछताऊंगा। ११ इसलिये अब तू यहूदा और यरूशलेम के निवासियों से यह कह, यहोवा यों कहता है, देखो, मैं तुम्हारी हानि की युक्ति और तुम्हारे विरुद्ध प्रबन्ध कर रहा हूं। इसलिये तुम अपने अपने बुरे मार्ग से फिरो और अपना अपना चालचलन और काम सुधारो। १२ परन्तु वे कहते हैं, ऐसा नहीं होने का, हम तो अपनी ही कल्पनाओं के अनुसार चलेंगे और अपने बुरे मन के हठ पर बने रहेंगे ॥

१३ इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है, अन्यजातियों से पूछ कि ऐसी बातें क्या कभी किसी के सुनने में आई हैं? इस्राएल की कुमारी ने जो काम किया है उसके सुनने से रोम रोम खड़े हो जाते हैं। १४ क्या लबानोन का हिम जो चट्टान पर से मैदान में बहता है बन्द हो सकता है? क्या वह ठण्डा जल जो दूर से * बहता है कभी सूख † सकता है? १५ परन्तु मेरी प्रजा मुझे भूल गई है; वे निकम्मी वस्तुओं के लिये धूप जलाते हैं; उन्हों ने अपने प्राचीनकाल के मार्गों में ठोकर खाई है, और पगडण्डियों और बेहड़ ‡

* मूल में—जो परदेश।

† मूल में—उखड़।

‡ मूल में—अनबने।

मार्गों में भटक गए हैं। १६ इस से उनका देश ऐसा उजाड़ हो गया है कि लोग उस पर सदा ताली बजाते रहेंगे; और जो कोई उसके पास से चले वह चकित होगा और सिर हिलाएगा। १७ मैं उनको पुरवाई से उड़ाकर शत्रु के साम्हने से तितर-बितर कर दूंगा। उनकी विपत्ति के दिन मैं उनको मुंह नहीं परन्तु पीठ दिखाऊंगा॥

१८ तब वे कहने लगे, चलो, यिर्मयाह के विरुद्ध युक्ति करें, क्योंकि न याजक से व्यवस्था, न ज्ञानी से सम्मति, न भविष्यद्वक्ता से वचन दूर होंगे। आओ, हम उसकी कोई बात पकड़कर उसको नाश कराएं* और फिर उसकी किसी बात पर ध्यान न दें॥

१९ हे यहोवा, मेरी ओर ध्यान दे, और जो लोग मेरे साथ झगड़ते हैं उनकी बातें सुन। २० क्या भलाई के बदले में बुराई का व्यवहार किया जाए? तू इस बात का स्मरण कर कि मैं उनकी भलाई के लिये तेरे साम्हने प्रार्थना करने को खड़ा हुआ जिस से तेरी जलजलाहट उन पर से उतर जाए, और अब उन्हों ने मेरे प्राण लेने के लिये गड़हा खोदा है। २१ इसलिये उनके लड़केबालों को भूख से मरने दे, वे तलवार से कट मरें†, और उनकी स्त्रियां निर्वंश और विधवा हो जाएं। उनके पुरुष मरी से मरें, और उनके जवान लड़ाई में तलवार से मारे जाएं। २२ जब तू उन पर अचानक शत्रुदल चढ़ाए, तब उनके घरों से चिल्लाहट सुनाई दे! क्योंकि उन्हों ने मेरे लिये गड़हा खोदा और मेरे फंसाने को फन्दे लगाए हैं। २३ हे यहोवा, तू उनकी सब युक्तियां जानता है जो वे मेरी मृत्यु के लिये करते हैं। इस कारण तू उनके इस अधर्म को न ढांप, न उनके पाप को अपने साम्हने से मिटा। वे तेरे देखते ही ठोकर खाकर गिर जाएं, अपने क्रोध में आकर उन से इसी प्रकार का व्यवहार कर॥

* मूल में—उनकी जीभ मारें।

† मूल में—उन्हें तलवार के हाथ में सौंप दे।

१९ यहोवा ने यों कहा, तू जाकर कुम्हार से मिट्टी की बनाई हुई एक सुराही मोल ले, और प्रजा के कुछ पुरनियों में से और याजकों में से भी कुछ प्राचीनों को साथ लेकर, २ हिन्नोमियों की तराई की ओर उस फाटक के निकट चला जा जहां ठीकरे फेंक दिए जाते हैं; और जो वचन मैं कहूं, उसे वहां प्रचार कर। ३ तू यह कहना, हे यहूदा के राजाओ और यरूशलेम के सब निवासियो, यहोवा का वचन सुनो। इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है, इस स्थान पर मैं ऐसी विपत्ति डालने पर हूं कि जो कोई उसका समाचार सुने, उस पर सन्नाटा छा जाएगा*। ४ क्योंकि यहां के लोगों ने मुझे त्याग दिया, और इस स्थान में दूसरे देवताओं के लिये जिनको न तो वे जानते हैं, और न उनके पुरखा वा यहूदा के पुराने राजा जानते थे धूप जलाया है और इसको पराया कर दिया है; और उन्हों ने इस स्थान को निर्दोषों के लोहू से भर दिया, ५ और बाल की पूजा के ऊंचे स्थानों को बनाकर अपने लड़केबालों को बाल के लिये होम कर दिया, यद्यपि मैं ने कभी भी जिसकी आज्ञा नहीं दी, न उसकी चर्चा की और न वह

* मूल में—उनके कान संसनाएंगे।

कभी मेरे मन में आया। ६ इस कारण यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन आते हैं कि यह स्थान फिर तोपेत वा हिन्नोमियों की तराई न कहलाएगा, वरन घात ही की तराई कहलाएगा। ७ और मैं इस स्थान में यहूदा और यरूशलेम की युक्तियों को निष्फल कर दूंगा; और उन्हें उनके प्राणों के शत्रुओं के हाथ की तलवार चलवाकर गिरा दूंगा। उनकी लोथों को मैं आकाश के पक्षियों और भूमि के जीवजन्तुओं का आहार कर दूंगा। ८ और मैं इस नगर को ऐसा उजाड़ दूंगा कि लोग इसे देखकर डरेंगे; जो कोई इसके पास से होकर जाए वह इसकी सब विपत्तियों के कारण चकित होगा और घबराएगा। ९ और घिर जाने और उस सकेती के समय जिस में उनके प्राण के शत्रु उन्हें डाल देंगे, मैं उनके बेटे-बेटियों का मांस उन्हें खिलाऊंगा और एक दूसरे का भी मांस खिलाऊंगा ।।

१० तब तू उस सुराही को उन मनुष्यों के साम्हने तोड़ देना जो तेरे संग जाएंगे, ११ और उन से कहना, सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि जिस प्रकार यह मिट्टी का बासन जो टूट गया कि फिर बनाया न जा सके, इसी प्रकार मैं इस देश के लोगों को और इस नगर को तोड़ डालूंगा। और तोपेत नाम तराई में इतनी क़ब्रें होंगी कि क़ब्र के लिये और स्थान न रहेगा। १२ यहोवा की यह वाणी है कि मैं इस स्थान और इसके रहनेवालों के साथ ऐसा ही काम करूंगा, मैं इस नगर को तोपेत के समान बना दूंगा। १३ और यरूशलेम के घर और यहूदा के राजाओं के भवन, जिनकी छतों पर आकाश की सारी सेना के लिये धूप जलाया गया, और अन्य देवताओं के लिये तपावन दिया गया है, वे सब तोपेत के समान अशुद्ध हो जाएंगे ।।

१४ तब यिर्मयाह तोपेत से लौटकर, जहां यहोवा ने उसे भविष्यद्वाणी करने को भेजा था, यहोवा के भवन के आंगन में खड़ा हुआ, और सब लोगों से कहने लगा; १५ इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है, देखो, सब गांवों समेत इस नगर पर वह सारी विपत्ति डालना चाहता हूं जो मैं ने इस पर लाने को कहा है, क्योंकि उन्हों ने हठ करके मेरे वचन को नहीं माना है ।।

२० जब यिर्मयाह यह भविष्यद्वाणी कर रहा था, तब इम्मेर का पुत्र पशहूर ने जो याजक और यहोवा के भवन का प्रधान रखवाला था, वह सब सुना। २ सो पशहूर ने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता को मारा और उसे उस काठ में डाल दिया जो यहोवा के भवन के ऊपर बिन्यामीन के फाटक के पास है। ३ बिहान को जब पशहूर ने यिर्मयाह को काठ में से निकलवाया, तब यिर्मयाह ने उस से कहा, यहोवा ने तेरा नाम पशहूर नहीं मागोर्मिस्साबीब * रखा है। ४ क्योंकि यहोवा ने यों कहा है, देख, मैं तुझे तेरे लिये और तेरे सब मित्रों के लिये भी भय का कारण ठहराऊंगा। वे अपने शत्रुओं की तलवार से तेरे देखते ही वध किए जाएंगे। और मैं सब यहूदियों को बाबुल के राजा के वश में कर दूंगा; वह उनको बंधुआ करके बाबुल में ले जाएगा, और तलवार से मार डालेगा। ५ फिर मैं इस नगर के सारे धन को और इस में की कमाई और

* अर्थात् चारों ओर भय ही भय।

सब अनमोल वस्तुओं को और यहूदा के राजाओं का जितना रखा हुआ धन है, उस सब को उनके शत्रुओं के वश में कर दूंगा; और वे उसको लूटकर अपना कर लेंगे और बाबुल में ले जाएंगे। ६ और, हे पशहूर, तू उन सब समेत जो तेरे घर में रहते हैं बंधुआई में चला जाएगा; अपने उन मित्रों समेत जिन से तू ने झूठी भविष्यद्वाणी की, तू बाबुल में जाएगा और वहीं मरेगा, और वहीं तुझे और उन्हें भी मिट्टी दी जाएगी ।।

७ हे यहोवा, तू ने मुझे धोखा दिया, और मैं ने धोखा खाया; तू मुझ से बलवन्त है, इस कारण तू मुझ पर प्रबल हो गया। दिन भर मेरी हंसी होती है; सब कोई मुझ से ठट्ठा करते हैं। ८ क्योंकि जब मैं बातें करता हूं, तब मैं जोर से पुकार पुकारकर ललकारता हूं कि उपद्रव और उत्पात हुआ, हां उत्पात! क्योंकि यहोवा का वचन दिन भर मेरे लिये निन्दा और ठट्ठा का कारण होता रहता है। ९ यदि मैं कहूं, मैं उसकी चर्चा न करूंगा न उसके नाम से बोलूंगा, तो मेरे हृदय की ऐसी दशा होगी मानो मेरी हड्डियों में धधकती हुई आग हो, और मैं अपने को रोकते रोकते थक गया पर मुझ से रहा नहीं जाता। १० मैं ने बहुतों के मुंह से अपना अपवाद सुना है। चारों ओर भय ही भय है! मेरी जान पहचान के सब जो मेरे ठोकर खाने की बाट जोहते हैं, वे कहते हैं, उसके दोष बताओ, तब हम उनकी चर्चा फैला देंगे। कदाचित वह धोखा खाए, तो हम उस पर प्रबल होकर, उस से बदला लेंगे। ११ परन्तु यहोवा मेरे साथ है, वह भयंकर वीर के समान है; इस कारण मेरे सतानेवाले प्रबल न होंगे, वे ठोकर खाकर गिरेंगे। वे बुद्धि से काम नहीं करते, इसलिये उन्हें बहुत लज्जित होना पड़ेगा। उनका अपमान सदैव बना रहेगा और कभी भूला न जाएगा। १२ हे सेनाओं के यहोवा, हे धर्मियों के परखनेवाले और हृदय और मन के ज्ञाता, जो बदला तू उन से लेगा, उसे मैं देखूं, क्योंकि मैं ने अपना मुक़द्दमा तेरे ऊपर छोड़ दिया है ।।

१३ यहोवा के लिये गाओ; यहोवा की स्तुति करो! क्योंकि वह दरिद्र जन के प्राण को कुकर्मियों के हाथ से बचाता है ।।

१४ स्रापित हो वह दिन जिस में मैं उत्पन्न हुआ! जिस दिन मेरी माता ने मुझ को जन्म दिया वह धन्य न हो! १५ स्रापित हो वह जन जिस ने मेरे पिता को यह समाचार देकर उसको बहुत आनन्दित किया कि तेरे लड़का उत्पन्न हुआ है। १६ उस जन की दशा उन नगरों की सी हो जिन्हें यहोवा ने बिन दया ढा दिया; उसे सवेरे तो चिल्लाहट और दोपहर को युद्ध की ललकार सुनाई दिया करे, १७ क्योंकि उस ने मुझे गर्भ ही में न मार डाला कि मेरी माता का गर्भाशय ही मेरी क़ब्र होती, और मैं उसी में सदा पड़ा रहता। १८ मैं क्यों उत्पात और शोक भोगने के लिये जन्मा और कि अपने जीवन में परिश्रम और दुःख देखूं, और अपने दिन नामधराई में व्यतीत करूं?

२१ यह वचन यहोवा की ओर से यिर्मयाह के पास उस समय पहुंचा जब सिदकिय्याह राजा ने उसके पास मल्किय्याह के पुत्र पशहूर और

मासेयाह याजक के पुत्र सपन्याह के हाथ से यह कहला भेजा कि, २ हमारे लिये यहोवा से पूछ, क्योंकि बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर हमारे विरुद्ध युद्ध कर रहा है; कदाचित यहोवा हम से अपने सब आश्चर्यकर्मों के अनुसार ऐसा व्यवहार करे कि वह हमारे पास से उठ जाए ।।

३ तब यिर्मयाह ने उन से कहा, तुम सिदकिय्याह से यों कहो, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, ४ देखो, युद्ध के जो हथियार तुम्हारे हाथों में हैं, जिन से तुम बाबुल के राजा और शहरपनाह के बाहर घेरनेवाले कसदियों से लड़ रहे हो, उनको मैं लौटाकर इस नगर के बीच में इकट्ठा करूंगा; ५ और मैं स्वयं हाथ बढ़ाकर और बलवन्त भुजा से, और क्रोध और जलजलाहट और बड़े क्रोध में आकर तुम्हारे विरुद्ध लड़ूंगा । ६ और मैं इस नगर के रहनेवालों को क्या मनुष्य, क्या पशु सब को मार डालूंगा; वे बड़ी मरी से मरेंगे । ७ और उसके बाद, यहोवा की यह वाणी है, हे यहूदा के राजा सिदकिय्याह, मैं तुझे, तेरे कर्मचारियों और लोगों को वरन जो लोग इस नगर में मरी, तलवार और महंगी से बचे रहेंगे, उनको बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर और उनके प्राण के शत्रुओं के वश में कर दूंगा । वह उनको तलवार से मार डालेगा; उन पर न तो वह तरस खाएगा, न कुछ कोमलता दिखाएगा और न कुछ दया करेगा ।।

८ और इस प्रजा के लोगों से कह कि यहोवा यों कहता है, देखो, मैं तुम्हारे साम्हने जीवन का मार्ग और मृत्यु का मार्ग भी बताता हूं । ९ जो कोई इस नगर में रहे वह तलवार, महंगी और मरी से मरेगा; परन्तु जो कोई निकलकर उन कसदियों के पास जो तुम को घेर रहे हैं भाग जाए वह जीवित रहेगा, और उसका प्राण बचेगा । १० क्योंकि यहोवा की यह वाणी है कि मैं ने इस नगर की ओर अपना मुख भलाई के लिये नहीं, वरन बुराई ही के लिये किया है; यह बाबुल के राजा के वश में पड़ जाएगा, और वह इसको फुंकवा देगा ।।

११ और यहूदा के राजकुल के लोगों से कह, यहोवा का वचन सुनो, १२ हे दाऊद के घराने ! यहोवा यों कहता है, भोर को न्याय चुकाओ, और लुटे हुए को अंधेर करनेवाले के हाथ से छुड़ाओ, नहीं तो तुम्हारे बुरे कामों के कारण मेरे क्रोध की आग भड़केगी, और ऐसी जलती रहेगी कि कोई उसे बुझा न सकेगा ।।

१३ हे तराई में रहनेवाली और समथर देश की चट्टान; तुम जो कहते हो कि हम पर कौन चढ़ाई कर सकेगा, और हमारे वासस्थान में कौन प्रवेश कर सकेगा ? यहोवा कहता है कि मैं तुम्हारे विरुद्ध हूं । १४ और यहोवा की वाणी है कि मैं तुम्हें दण्ड देकर तुम्हारे कामों का फल तुम्हें भुगताऊंगा । मैं उसके वन में आग लगाऊंगा, और उसके चारों ओर सब कुछ भस्म हो जाएगा ।।

२२

यहोवा ने यों कहा, यहूदा के राजा के भवन में उतरकर यह वचन कह, २ हे दाऊद की गद्दी पर विराजमान यहूदा के राजा, तू अपने कर्मचारियों और अपनी प्रजा के लोगों समेत जो इन फाटकों से आया करते हैं, यहोवा का वचन सुन । ३ यहोवा यों कहता है, न्याय और धर्म के काम करो; और

लुटे हुए को अन्धेर करनेवाले के हाथ से छुड़ाओ। और परदेशी, अनाथ और विधवा पर अन्धेर व उपद्रव मत करो, न इस स्थान में निर्दोषों का लोहू बहाओ। ४ देखो, यदि तुम ऐसा करोगे, तो इस भवन के फाटकों से होकर दाऊद की गद्दी पर विराजमान राजा रथों और घोड़ों पर चढ़े हुए अपने अपने कर्मचारियों और प्रजा समेत प्रवेश किया करेंगे। ५ परन्तु, यदि तुम इन बातों को न मानो तो, मैं अपनी ही सौगन्ध खाकर कहता हूं, यहोवा की यह वाणी है, कि यह भवन उजाड़ हो जाएगा। ६ क्योंकि यहोवा यहूदा के राजा के इस भवन के विषय में यों कहता है, तू मुझे गिलाद देश सा और लबानोन के शिखर सा दिखाई पड़ता है, परन्तु निश्चय मैं तुझे मरुस्थल व एक निर्जन नगर बनाऊंगा। ७ मैं नाश करनेवालों को हथियार देकर तेरे विरुद्ध भेजूंगा; वे तेरे सुन्दर देवदारों को काटकर आग में झोंक देंगे। ८ और जाति जाति के लोग जब इस नगर के पास से निकलेंगे तब एक दूसरे से पूछेंगे, यहोवा ने इस बड़े नगर की ऐसी दशा क्यों की है? ९ तब लोग कहेंगे, इसका कारण यह है कि उन्हों ने अपने परमेश्वर यहोवा की वाचा को तोड़कर दूसरे देवताओं को दण्डवत् की और उनकी उपासना भी की॥

१० मरे हुओं के लिये मत रोओ, उसके लिये विलाप मत करो। उसी के लिये फूट फूटकर रोओ जो परदेश चला गया है, क्योंकि वह लौटकर अपनी जन्मभूमि को फिर कभी देखने न पाएगा। ११ क्योंकि यहूदा के राजा योशिय्याह का पुत्र शल्लूम, जो अपने पिता योशिय्याह के स्थान पर राजा था और इस स्थान से निकल गया, उसके विषय में यहोवा यों कहता है कि वह फिर यहां लौटकर न आने पाएगा। १२ वह जिस स्थान में बंधुआ होकर गया है उसी में मर जाएगा, और इस देश को फिर कभी देखने न पाएगा॥

१३ उस पर हाय जो अपने घर को अधर्म से और अपनी उपरौठी कोठरियों को अन्याय से बनवाता है; जो अपने पड़ोसी से बेगारी में काम कराता है और उसकी मजदूरी नहीं देता। १४ वह कहता है, मैं अपने लिये लम्बा-चौड़ा घर और हवादार कोठा बना लूंगा, और वह खिड़कियां बनाकर उन्हें देवदार की लकड़ी से पाट लेता है, और सिन्दूर से रंग देता है। १५ तू जो देवदार की लकड़ी का अभिलाषी है, क्या इस रीति से तेरा राज्य स्थिर रहेगा। देख, तेरा पिता न्याय और धर्म के काम करता था, और वह खाता पीता और सुख से भी रहता था! १६ वह इस कारण सुख से रहता था क्योंकि वह दीन और दरिद्र लोगों का न्याय चुकाता था। क्या यही मेरा ज्ञान रखना नहीं है? यहोवा की यह वाणी है। १७ परन्तु तू केवल अपना ही लाभ देखता है, और निर्दोषों की हत्या करने और अन्धेर और उपद्रव करने में अपना मन और दृष्टि लगाता है। १८ इसलिये योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के विषय में यहोवा यह कहता है, कि जैसे लोग इस रीति से कहकर रोते हैं, हाय मेरे भाई, हाय मेरी बहिन! इस प्रकार कोई हाय मेरे प्रभु वा हाय तेरा विभव कहकर उसके लिये विलाप न करेगा। १९ वरन उसको गदहे की

नाईं मिट्टी दी जाएगी, वह घसीटकर यरूशलेम के फाटकों के बाहर फेंक दिया जाएगा ।।

२० लबानोन पर चढ़कर हाय हाय कर, तब बाशान जाकर ऊंचे स्वर से चिल्ला; फिर अबारीम पहाड़ पर जाकर हाय-हाय कर, क्योंकि तेरे सब मित्र नाश हो गए हैं। २१ तेरे सुख के समय मैं ने तुझ को चिताया था, परन्तु तू ने कहा, मैं तेरी न सुनूंगी। युवावस्था ही से तेरी चाल ऐसी है कि तू मेरी बात नहीं सुनती। २२ तेरे सब चरवाहे वायु से उड़ाए जाएंगे, और तेरे मित्र बंधुआई में चले जाएंगे; निश्चय तू उस समय अपनी सारी बुराइयों के कारण लज्जित होगी और तेरा मुंह काला हो जाएगा। २३ हे लबानोन की रहनेवाली, हे देवदार में अपना घोंसला बनानेवाली, जब तुझ को जच्चा की सी पीड़ाएं उठें तब तू व्याकुल हो जाएगी!

२४ यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, चाहे यहोयाकीम का पुत्र यहूदा का राजा कोन्याह, मेरे दहिने हाथ की अंगूठी भी होता, तौभी मैं उसे उतार फेंकता। २५ मैं तुझे तेरे प्राण के खोजियों के हाथ, और जिन से तू डरता है उनके अर्थात् बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर और कसदियों के हाथ में कर दूंगा। २६ मैं तुझे तेरी जननी समेत एक पराए देश में जो तुम्हारी जन्मभूमि नहीं है फेंक दूंगा, और तुम वहीं मर जाओगे। २७ परन्तु जिस देश में वे लौटने की बड़ी लालसा करते हैं, वहां कभी लौटने न पाएंगे ।।

२८ क्या, यह पुरुष कोन्याह तुच्छ और टूटा हुआ बर्तन है? क्या यह निकम्मा बर्तन है? फिर वह वंश समेत अनजाने देश में क्यों निकालकर फेंक दिया जाएगा? २९ हे पृथ्वी, पृथ्वी, हे पृथ्वी, यहोवा का वचन सुन! ३० यहोवा यों कहता है कि इस पुरुष को निर्वंश लिखो, उसका जीवनकाल कुशल से न बीतेगा; और न उसके वंश में से कोई भाग्यवान होकर दाऊद की गद्दी पर विराजमान वा यहूदियों पर प्रभुता करनेवाला होगा ।।

२३ उन चरवाहों पर हाय जो मेरी चराई की भेड़-बकरियों को तितर-बितर करते और नाश करते हैं, यहोवा यह कहता है। २ इसलिये इस्राएल का परमेश्वर यहोवा अपनी प्रजा के चरवाहों से यों कहता है, तुम ने मेरी भेड़-बकरियों की सुधि नहीं ली, वरन उनको तितर-बितर किया और बरबस निकाल दिया है, इस कारण यहोवा की यह वाणी है कि मैं तुम्हारे बुरे कामों का दण्ड दूंगा। ३ तब मेरी भेड़-बकरियां जो बची हैं, उनको मैं उन सब देशों में से जिन में मैं ने उन्हें बरबस भेज दिया है, स्वयं ही उन्हें लौटा लाकर उन्हीं की भेड़शाला में इकट्ठा करूंगा, और वे फिर फूलें-फलेंगी। ४ मैं उनके लिये ऐसे चरवाहे नियुक्त करूंगा जो उन्हें चराएंगे; और तब वे न तो फिर डरेंगी, न विस्मित होंगी और न उन में से कोई खो जाएगी, यहोवा की यह वाणी है ।।

५ यहोवा की यह भी वाणी है, देख ऐसे दिन आते हैं जब मैं दाऊद के कुल में एक धर्मी अंकुर उगाऊंगा, और वह राजा बनकर बुद्धि से राज्य करेगा, और

अपने देश में न्याय और धर्म से प्रभुता करेगा। ६ उसके दिनों में यहूदी लोग बचे रहेंगे, और इस्राएली लोग निडर बसे रहेंगे। और यहोवा उसका नाम "हमारी धार्मिकता" रखेगा ॥

७ सो देख, यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन आएंगे जिन में लोग फिर न कहेंगे, कि "यहोवा जो हम इस्राएलियों को मिस्र देश से छुड़ा ले आया, उसके जीवन की सौगन्ध," ८ परन्तु वे यह कहेंगे, "यहोवा जो इस्राएल के घराने को उत्तर देश से और उन सब देशों से भी जहां उस ने हमें बरबस निकाल दिया, छुड़ा ले आया, उसके जीवन की सौगन्ध।" तब वे अपने ही देश में बसे रहेंगे ॥

९ भविष्यद्वक्ताओं के विषय मेरा हृदय भीतर ही भीतर फटा जाता है, मेरी सब हड्डियां थरथराती हैं; यहोवा ने जो पवित्र वचन कहे हैं, उन्हें सुनकर, मैं ऐसे मनुष्य के समान हो गया हूं जो दाखमधु के नशे में चूर हो गया हो, १० क्योंकि यह देश व्यभिचारियों से भरा है; इस पर ऐसा शाप पड़ा है कि यह विलाप कर रहा है; वन की चराइयां भी सूख गईं। लोग बड़ी दौड़ तो दौड़ते हैं, परन्तु बुराई ही की ओर; और वीरता तो करते हैं, परन्तु अन्याय ही के साथ*। ११ क्योंकि भविष्यद्वक्ता और याजक दोनों भक्तिहीन हो गए हैं; अपने भवन में भी मैं ने उनकी बुराई पाई है, यहोवा की यही वाणी है। १२ इस कारण उनका मार्ग अन्धेरा और फिसलाहा होगा जिस में वे ढकेलकर गिरा दिए जाएंगे; क्योंकि, यहोवा की यह वाणी है कि मैं उनके दण्ड के वर्ष में उन पर विपत्ति डालूंगा। १३ शोमरोन के भविष्यद्वक्ताओं में मैं ने यह मूर्खता देखी थी कि वे बाल के नाम से भविष्यद्वाणी करते और मेरी प्रजा इस्राएल को भटका देते थे। १४ परन्तु यरूशलेम के नबियों में मैं ने ऐसे काम देखे हैं, जिन से रोंगटे खड़े हो जाते हैं, अर्थात् व्यभिचार और पाखण्ड; वे कुकर्मियों को ऐसा हियाव बन्धाते हैं कि वे अपनी अपनी बुराई से पश्चात्ताप भी नहीं करते; सब निवासी मेरी दृष्टि में सदोमियों और अमोरियों के समान हो गए हैं। १५ इस कारण सेनाओं का यहोवा यरूशलेम के भविष्यद्वक्ताओं के विषय में यों कहता है, देख, मैं उनको कड़वी वस्तुएं खिलाऊंगा और विष पिलाऊंगा; क्योंकि उनके कारण सारे देश में भक्तिहीनता फैल गई है ॥

१६ सेनाओं के यहोवा ने तुम से यों कहा है, इन भविष्यद्वक्ताओं की बातों की ओर जो तुम से भविष्यद्वाणी करते हैं कान मत लगाओ, क्योंकि ये तुम को व्यर्थ बातें सिखाते हैं; ये दर्शन का दावा करके यहोवा के मुख की नहीं, अपने ही मन की बातें कहते हैं। १७ जो लोग मेरा तिरस्कार करते हैं उन से ये भविष्यद्वक्ता सदा कहते रहते हैं कि यहोवा कहता है, तुम्हारा कल्याण होगा; और जितने लोग अपने हठ ही पर चलते हैं, उन से ये कहते हैं, तुम पर कोई विपत्ति न पड़ेगी ॥

१८ भला कौन यहोवा की गुप्त सभा में खड़ा होकर उसका वचन सुनने और समझने* पाया है? १९ वा किस ने ध्यान

* मूल में—और उनकी दौड़ बुरी और उनकी वीरता नायक है।

* मूल में—देखने और सुनने।

देकर मेरा वचन सुना है? देखो, यहोवा की जलजलाहट का प्रचण्ड बवण्डर और आंधी चलने लगी है; और उसका झोंका दुष्टों के सिर पर जोर से लगेगा। २० जब तक यहोवा अपना काम और अपनी युक्तियों को पूरी न कर चुके, तब तक उसका क्रोध शान्त न होगा। अन्त के दिनों में तुम इस बात को भली भांति समझ सकोगे ।।

२१ ये भविष्यद्वक्ता बिना मेरे भेजे दौड़ जाते और बिना मेरे कुछ कहे भविष्यद्वाणी करने लगते हैं। २२ यदि ये मेरी शिक्षा में स्थिर रहते, तो मेरी प्रजा के लोगों को मेरे वचन सुनाते; और वे अपनी बुरी चाल और कामों से फिर जाते ।।

२३ यहोवा की यह वाणी है, क्या मैं ऐसा परमेश्वर हूं, जो दूर नहीं, निकट ही रहता हूं? २४ फिर यहोवा की यह वाणी है, क्या कोई ऐसे गुप्त स्थानों में छिप सकता है, कि मैं उसे न देख सकूं? क्या स्वर्ग और पृथ्वी दोनों मुझ से परिपूर्ण नहीं हैं? २५ मैं ने इन भविष्यद्वक्ताओं की बातें भी सुनीं हैं जो मेरे नाम से यह कहकर झूठी भविष्यद्वाणी करते हैं कि मैं ने स्वप्न देखा है, स्वप्न! २६ जो भविष्यद्वक्ता झूठमूठ भविष्यद्वाणी करते और अपने मन ही के छल के भविष्यद्वक्ता हैं, यह बात कब तक उनके मन में समाई रहेगी? २७ जैसे मेरी प्रजा के लोगों के पुरखा मेरा नाम भूलकर बाल का नाम लेने लगे थे, वैसे ही अब ये भविष्यद्वक्ता उन्हें अपने अपने स्वप्न बता बताकर मेरा नाम भुलाना चाहते हैं। २८ यदि किसी भविष्यद्वक्ता ने स्वप्न देखा हो, तो वह उसे बताए, परन्तु जिस किसी ने मेरा वचन सुना हो तो वह मेरा वचन सच्चाई से सुनाए। यहोवा की यह वाणी है, कहां भूसा और कहां गेहूं? २९ यहोवा की यह भी वाणी है कि क्या मेरा वचन आग सा नहीं है? फिर क्या वह ऐसा हथौड़ा नहीं जो पत्थर को फोड़ डाले? ३० यहोवा की यह वाणी है, देखो, जो भविष्यद्वक्ता मेरे वचन औरों से चुरा चुराकर बोलते हैं, मैं उनके विरुद्ध हूं। ३१ फिर यहोवा की यह भी वाणी है कि जो भविष्यद्वक्ता "उसकी यह वाणी है", ऐसी झूठी वाणी कहकर अपनी अपनी जीभ डुलाते हैं, मैं उनके भी विरुद्ध हूं। ३२ यहोवा की यह भी वाणी है कि जो बिना मेरे भेजे वा बिना मेरी आज्ञा पाए स्वप्न देखने का झूठा दावा करके भविष्यद्वाणी करते हैं, और उसका वर्णन करके मेरी प्रजा को झूठे घमण्ड में आकर भरमाते हैं, उनके भी मैं विरुद्ध हूं; और उन से मेरी प्रजा के लोगों का कुछ लाभ न होगा ।।

३३ यदि साधारण लोगों में से कोई जन वा कोई भविष्यद्वक्ता वा याजक तुम से पूछे कि यहोवा ने क्या प्रभावशाली वचन कहा है, तो उस से कहना, क्या प्रभावशाली वचन? यहोवा की यह वाणी है, मैं तुम को त्याग दूंगा। ३४ और जो भविष्यद्वक्ता वा याजक वा साधारण मनुष्य "यहोवा का कहा हुआ भारी वचन" ऐसा कहता रहे, उसको घराने समेत मैं दण्ड दूंगा। ३५ तुम लोग एक दूसरे से और अपने अपने भाई से यों पूछना, यहोवा ने क्या उत्तर दिया? ३६ वा, यहोवा ने क्या कहा है? "यहोवा का कहा हुआ भारी वचन", इस प्रकार तुम भविष्य में न कहना नहीं

तो तुम्हारा ऐसा कहना ही दण्ड का कारण हो जाएगा; क्योंकि हमारा परमेश्वर सेनाओं का यहोवा जो जीवित परमेश्वर है, तुम लोगों ने उसके वचन बिगाड़ दिए हैं। ३७ तू भविष्यद्वक्ता से यों पूछ कि यहोवा ने तुझे क्या उत्तर दिया? ३८ वा, यहोवा ने क्या कहा है? यदि तुम "यहोवा का कहा हुआ प्रभावशाली वचन": इसी प्रकार कहोगे, तो यहोवा का यह वचन सुनो, मैं ने तो तुम्हारे पास कहला भेजा है, भविष्य में ऐसा न कहना कि "यहोवा का कहा हुआ प्रभावशाली वचन।" परन्तु तुम यह कहते ही रहते हो, कि "यहोवा का कहा हुआ प्रभावशाली वचन।" ३९ इस कारण देखो, मैं तुम को बिलकुल भूल जाऊंगा और तुम को और इस नगर को जिसे मैं ने तुम्हारे पुरखाओं को, और तुम को भी दिया है, ४० त्यागकर अपने साम्हने से दूर कर दूंगा। और मैं ऐसा करूंगा कि तुम्हारी नामधराई और अनादर सदा बना रहेगा; और कभी भूला न जाएगा॥

२४ जब बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर, यहोयाकीम के पुत्र यहूदा के राजा यकोन्याह को, और यहूदा के हाकिमों और लोहारों और और कारीगरों को बंधुआ करके यरूशलेम से बाबुल को ले गया, तो उसके बाद यहोवा ने मुझ को अपने मन्दिर के साम्हने रखे हुए अंजीरों के दो टोकरे दिखाए। २ एक टोकरे में तो पहिले से पके अच्छे अच्छे अंजीर थे, और दूसरे टोकरे में बहुत निकम्मे अंजीर थे, वरन वे ऐसे निकम्मे थे कि खाने के योग्य भी न थे। ३ फिर यहोवा ने मुझ से पूछा, हे यिर्मयाह, तुझे क्या देख पड़ता है? मैं ने कहा, अंजीर; जो अंजीर अच्छे हैं सो तो बहुत ही अच्छे हैं, परन्तु जो निकम्मे हैं, सो बहुत ही निकम्मे हैं; वरन ऐसे निकम्मे हैं कि खाने के योग्य भी नहीं हैं॥

४ तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, ५ कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, जैसे अच्छे अंजीरों को, वैसे ही मैं यहूदी बंधुओं को जिन्हें मैं ने इस स्थान से कसदियों के देश में भेज दिया है, देखकर प्रसन्न हूंगा। ६ मैं उन पर कृपादृष्टि रखूंगा और उनको इस देश में लौटा ले आऊंगा, और उन्हें नाश न करूंगा परन्तु बनाऊंगा; उन्हें उखाड़ न डालूंगा, परन्तु लगाए रखूंगा। ७ मैं उनका ऐसा मन कर दूंगा कि वे मुझे जानेंगे कि मैं यहोवा हूं; और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, क्योंकि वे मेरी ओर सारे मन से फिरेंगे॥

८ परन्तु जैसे निकम्मे अंजीर, निकम्मे होने के कारण खाए नहीं जाते, उसी प्रकार से मैं यहूदा के राजा सिदकिय्याह और उसके हाकिमों और बचे हुए यरूशलेमियों को, जो इस देश में वा मिस्र में रह गए हैं, छोड़ दूंगा। ९ इस कारण वे पृथ्वी के राज्य राज्य में मारे मारे फिरते हुए दुःख भोगते रहेंगे; और जितने स्थानों में मैं उन्हें बरबस निकाल दूंगा, उन सभों में वे नामधराई और दृष्टांत और स्राप का विषय होंगे। १० और मैं उन में तलवार चलाऊंगा, और महंगी और मरी फैलाऊंगा, और अन्त में इस देश में से जिसे मैं ने उनके पुरखाओं को और उनको दिया, वे मिट जाएंगे॥

२५ योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के चौथे वर्ष में जो बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के राज्य का पहिला वर्ष था, २ यहोवा का जो वचन यिर्मयाह नबी के पास पहुंचा, और जिसे यिर्मयाह नबी ने सब यहूदियों और यरूशलेम के सब निवासियों से कहा, वह यह है: ३ आमोन के पुत्र यहूदा के राजा योशिय्याह के राज्य के तेरहवें वर्ष से लेकर आज के दिन तक अर्थात् तेईस वर्ष से यहोवा का वचन मेरे पास पहुंचता आया है; और मैं उसे बड़े यत्न के साथ * तुम से कहता आया हूं; परन्तु तुम ने उसे नहीं सुना। ४ और यद्यपि यहोवा तुम्हारे पास अपने सारे दासों अथवा भविष्यद्वक्ताओं को भी यह कहने के लिये बड़े यत्न से भेजता आया है ५ कि अपनी अपनी बुरी चाल और अपने अपने बुरे कामों से फिरो: तब जो देश यहोवा ने प्राचीनकाल में तुम्हारे पितरों को और तुम को भी सदा के लिये दिया है उस पर बसे रहने पाओगे; परन्तु तुम ने न तो सुना और न कान लगाया है। ६ और दूसरे देवताओं के पीछे होकर उनकी उपासना और उनको दण्डवत् मत करो, और न अपनी बनाई हुई वस्तुओं के द्वारा मुझे रिस दिलाओ; तब मैं तुम्हारी कुछ हानि न करूंगा। ७ यह सुनने पर भी तुम ने मेरी नहीं मानी, वरन अपनी बनाई हुई वस्तुओं के द्वारा मुझे रिस दिलाते आए हो जिस से तुम्हारी हानि ही हो सकती है, यहोवा की यही वाणी है॥

८ इसलिये सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि तुम ने जो मेरे वचन नहीं माने, ९ इसलिये सुनो, मैं उत्तर में रहनेवाले सब कुलों को बुलाऊंगा, और अपने दास बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को बुलवा भेजूंगा; और उन सभों को इस देश और इसके निवासियों के विरुद्ध और इसके आस पास की सब जातियों के विरुद्ध भी ले आऊंगा; और इन सब देशों का मैं सत्यानाश करके उन्हें ऐसा उजाड़ दूंगा कि लोग इन्हें देखकर ताली बजाएंगे; वरन ये सदा उजड़े ही रहेंगे, यहोवा की यही वाणी है। १० और मैं ऐसा करूंगा कि इन में न तो हर्ष और न आनन्द का शब्द सुनाई पड़ेगा, और न दुल्हे वा दुल्हिन का, और न चक्की का भी शब्द सुनाई पड़ेगा और न इन में दिया जलेगा। ११ सारी जातियों का यह देश उजाड़ ही उजाड़ होगा, और ये सब जातियां सत्तर वर्ष तक बाबुल के राजा के आधीन रहेंगी। १२ जब सत्तर वर्ष बीत चुकें, तब मैं बाबुल के राजा और उस जाति के लोगों और कसदियों के देश के सब निवासियों को अधर्म का दण्ड दूंगा, यहोवा की यह वाणी है; और उस देश को सदा के लिये उजाड़ दूंगा। १३ मैं उस देश में अपने वे सब वचन पूरे करूंगा जो मैं ने उसके विषय में कहे हैं, और जितने वचन यिर्मयाह ने सारी जातियों के विरुद्ध भविष्यद्वाणी करके पुस्तक में लिखे हैं। १४ क्योंकि बहुत सी जातियों के लोग और बड़े बड़े राजा भी उन से अपनी सेवा कराएंगे; और मैं उनको उनकी करनी का फल भुगताऊंगा॥

१५ इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने मुझ से यों कहा, मेरे हाथ से इस जलजलाहट के दाखमधु का कटोरा लेकर उन सब

* मूल में—तड़के उठकर।

जातियों को पिला दे जिनके पास मैं तुझे भेजता हूं। १६ वे उसे पीकर उस तलवार के कारण जो मैं उनके बीच में चलाऊंगा लड़खड़ाएंगे और बावले हो जाएंगे ।।

१७ सो मैं ने यहोवा के हाथ से वह कटोरा लेकर उन सब जातियों को जिनके पास यहोवा ने मुझे भेजा, पिला दिया। १८ अर्थात् यरूशलेम और यहूदा के नगरों के निवासियों को, और उनके राजाओं और हाकिमों को पिलाया, ताकि उनका देश उजाड़ हो जाए और लोग ताली बजाएं, और उसकी उपमा देकर शाप दिया करें; जैसा आजकल होता है। १९ और मिस्र के राजा फिरौन और उसके कर्मचारियों, हाकिमों, और सारी प्रजा को; २० और सब दोगले मनुष्यों की जातियों को और उस देश के सब राजाओं को; और पलिश्तियों के देश के सब राजाओं को और अश्कलोन अज्जा और एक्रोन के और अशदोद के बचे हुए लोगों को; २१ और एदोनियों, मोआबियों और अम्मोनियों को और सारे राजाओं को; २२ और सीदोन के सब राजाओं को, और समुद्र पार के देशों के राजाओं को; २३ फिर ददानियों, तेमाइयों और बूजियों को और जितने अपने गाल के बालों को मुंड़ा डालते हैं, उन सभों को भी; २४ और अरब के सब राजाओं को और जंगल में रहनेवाले दोगले मनुष्यों के सब राजाओं को; २५ और जिम्री, एलाम और मादै के सब राजाओं को; २६ और क्या निकट क्या दूर के उत्तर दिशा के सब राजाओं को एक संग पिलाया, निदान धरती भर में रहनेवाले जगत के राज्यों के सब लोगों को मैं ने पिलाया। और इन सब के पीछे शेषक* के राजा को भी पीना पड़ेगा ।।

२७ तब तू उन से यह कहना, सेनाओं का यहोवा जो इस्राएल का परमेश्वर है, यों कहता है, पीओ, और मतवाले हो और छांट करो, गिर पड़ो और फिर कभी न उठो, क्योंकि यह उस तलवार के कारण से होगा जो मैं तुम्हारे बीच में चलाऊंगा ।।

२८ और यदि वे तेरे हाथ से यह कटोरा लेकर पीने से इनकार करें तो उन से कहना, सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि तुम को निश्चय पीना पड़ेगा। २९ देखो, जो नगर मेरा कहलाता है, मैं पहिले उसी में विपत्ति डालने लगूंगा, फिर क्या तुम लोग निर्दोष ठहरके बचोगे? तुम निर्दोष ठहरके न बचोगे, क्योंकि मैं पृथ्वी के सब रहनेवालों पर तलवार चलाने पर हूं, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है। ३० इतनी बातें भविष्यद्वाणी की रीति पर उन से कहकर यह भी कहना, यहोवा ऊपर से गरजेगा, और अपने उसी पवित्र धाम में से अपना शब्द सुनाएगा; वह अपनी चराई के स्थान के विरुद्ध जोर से गरजेगा; वह पृथ्वी के सारे निवासियों के विरुद्ध भी दाख लताड़नेवालों की नाईं ललकारेगा। ३१ पृथ्वी की छोर लों भी कोलाहल होगा, क्योंकि सब जातियों से यहोवा का मुक़द्दमा है; वह सब मनुष्यों से वादविवाद करेगा, और दुष्टों को तलवार के वश में कर देगा ।।

३२ सेनाओं का यहोवा यों कहता है, देखो, विपत्ति एक जाति से दूसरी जाति

* अनुमान है कि यह बाबुल का एक नाम है।

में फैलेगी, और बड़ी आंधी पृथ्वी की छोर से उठेगी! ३३ उस समय यहोवा के मारे हुओं की लोथें पृथ्वी की एक छोर से दूसरी छोर तक पड़ी रहेंगी। उनके लिये कोई रोने-पीटनेवाला न रहेगा, और उनकी लोथें न तो बटोरी जाएंगी और न कबरों में रखी जाएंगी; वे भूमि के ऊपर खाद की नाईं पड़ी रहेंगी। ३४ हे चरवाहो, हाय हाय करो और चिल्लाओ, हे बलवन्त मेढ़ो और बकरो, राख में लोटो, क्योंकि तुम्हारे बध होने के दिन आ पहुंचे हैं, और मैं मनभाऊ बरतन की नाईं तुम्हारा सत्यानाश करूंगा। ३५ उस समय न तो चरवाहों के भागने के लिये कोई स्थान रहेगा, और न बलवन्त मेढ़े और बकरे भागने पाएंगे। ३६ चरवाहों की चिल्लाहट और बलवन्त मेढ़ों और बकरों के मिमियाने का शब्द सुनाई पड़ता है! क्योंकि यहोवा उनकी चराई को नाश करेगा, ३७ और यहोवा के क्रोध भड़कने के कारण शान्ति के स्थान नष्ट हो जाएंगे, जिन वासस्थानों में अब शान्ति है, वे नष्ट हो जाएंगे। ३८ युवा सिंह की नाईं वह अपने ठौर को छोड़कर निकलता है, क्योंकि अंधेर करनेहारी तलवार और उसके भड़के हुए कोप के कारण उनका देश उजाड़ हो गया है॥

२६ योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के आरम्भ में, यहोवा की ओर से यह वचन पहुंचा, यहोवा यों कहता है, २ यहोवा के भवन के आंगन में खड़ा होकर, यहूदा के सब नगरों के लोगों के साम्हने जो यहोवा के भवन में दण्डवत् करने को आएं, ये वचन जिनके विषय उन से कहने की आज्ञा मैं तुझे देता हूं कह दे; उन में से कोई वचन मत रख छोड़। ३ सम्भव है कि वे सुनकर अपनी अपनी बुरी चाल से फिरें और मैं उनकी हानि करने से पछताऊं जो उनके बुरे कामों के कारण मैं ने ठाना था। ४ इसलिये तू उन से कह, यहोवा यों कहता है, यदि तुम मेरी सुनकर मेरी व्यवस्था के अनुसार जो मैं ने तुम को सुनवा दी है* न चलो, ५ और न मेरे दास भविष्यद्वक्ताओं के वचनों पर कान लगाओगे, (जिन्हें मैं तुम्हारे पास बड़ा यत्न करके† भेजता आया हूं, परन्तु तुम ने उनकी नहीं सुनी), ६ तो मैं इस भवन को शीलो के समान उजाड़ दूंगा, और इस नगर का ऐसा सत्यानाश कर दूंगा कि पृथ्वी की सारी जातियों के लोग उसकी उपमा दे देकर शाप दिया करेंगे॥

७ जब यिर्मयाह ये वचन यहोवा के भवन में कह रहा था, तब याजक और भविष्यद्वक्ता और सब साधारण लोग सुन रहे थे। ८ और जब यिर्मयाह सब कुछ जिसे सारी प्रजा से कहने की आज्ञा यहोवा ने दी थी कह चुका, तब याजकों और भविष्यद्वक्ताओं और सब साधारण लोगों ने यह कहकर उसको पकड़ लिया, निश्चय तुझे प्राणदण्ड होगा। ९ तू ने क्यों यहोवा के नाम से यह भविष्यद्वाणी की कि यह भवन शीलो के समान उजाड़ हो जाएगा, और यह नगर ऐसा उजड़ेगा कि उस में कोई न रह जाएगा? इतना कहकर सब साधारण लोगों ने यहोवा के भवन में यिर्मयाह के विरुद्ध भीड़ लगाई॥

* मूल में—तुम्हारे साम्हने रखी है।
† मूल में—तड़के उठके।

१० यहूदा के हाकिम ये बातें सुनकर, राजा के भवन से यहोवा के भवन में चढ़ आए और उसके नये फाटक में बैठ गए। ११ तब याजकों और भविष्यद्वक्ताओं ने हाकिमों और सब लोगों से कहा, यह मनुष्य प्राणदण्ड के योग्य है, क्योंकि इस ने इस नगर के विरुद्ध ऐसी भविष्यद्वाणी की है जिसे तुम भी अपने कानों से सुन चुके हो। १२ तब यिर्मयाह ने सब हाकिमों और सब लोगों से कहा, जो वचन तुम ने सुने हैं, उसे यहोवा ही ने मुझे इस भवन और इस नगर के विरुद्ध भविष्यद्वाणी की रीति पर कहने के लिये भेज दिया है। १३ इसलिये अब अपना चालचलन और अपने काम सुधारो, और अपने परमेश्वर यहोवा की बात मानो; तब यहोवा उस विपत्ति के विषय में जिसकी चर्चा उस ने तुम से की है, पछताएगा। १४ देखो, मैं तुम्हारे वश में हूं; जो कुछ तुम्हारी दृष्टि में भला और ठीक हो वही मेरे साथ करो। १५ पर यह निश्चय जानो, कि, यदि तुम मुझे मार डालोगे, तो अपने को और इस नगर को और इसके निवासियों को निर्दोष के हत्यारे बनाओगे; क्योंकि सचमुच यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास ये सब वचन सुनाने के लिये भेजा है।।

१६ तब हाकिमों और सब लोगों ने याजकों और नबियों से कहा, यह मनुष्य प्राणदण्ड के योग्य नहीं है क्योंकि उस ने हमारे परमेश्वर यहोवा के नाम से हम से कहा है। १७ और देश के पुरनियों में से कितनों ने उठकर प्रजा की सारी मण्डली से कहा, १८ यहूदा के राजा हिजकिय्याह के दिनों में मोरसेती मीकायाह भविष्यद्वाणी कहता था, उस ने यहूदा के सारे लोगों से कहा, सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि सिय्योन जोतकर खेत बनाया जाएगा और यरूशलेम खण्डहर हो जाएगा, और भवनवाला पर्वत जंगली स्थान हो जाएगा*। १९ क्या यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने वा किसी यहूदी ने उसको कहीं मरवा डाला? क्या उस राजा ने यहोवा का भय न माना और उस से बिनती न की? और तब यहोवा ने जो विपत्ति उन पर डालने के लिये कहा था, उसके विषय क्या वह न पछताया? ऐसा करके हम अपने प्राणों की बड़ी हानि करेंगे।।

२० फिर शमायाह का पुत्र ऊरिय्याह नाम किर्यत्यारीम का एक पुरुष जो यहोवा के नाम से भविष्यद्वाणी कहता था उस ने भी इस नगर और इस देश के विरुद्ध ठीक ऐसी ही भविष्यद्वाणी की जैसी यिर्मयाह ने अभी की है। २१ और जब यहोयाकीम राजा और उसके सब वीरों और सब हाकिमों ने उसके वचन सुने, तब राजा ने उसे मरवा डालने का यत्न किया; और ऊरिय्याह यह सुनकर डर के मारे मिस्र को भाग गया। २२ तब यहोयाकीम राजा ने मिस्र को लोग भेजे अर्थात् अकबोर के पुत्र एलनातान को कितने और पुरुषों के साथ मिस्र को भेजा। २३ और वे ऊरिय्याह को मिस्र से निकालकर यहोयाकीम राजा के पास ले आए; और उस ने उसे तलवार से मरवाकर उसकी लोथ को साधारण लोगों की कबरों में फिंकवा दिया। २४ परन्तु शापान का पुत्र अहीकाम यिर्मयाह की सहायता करने लगा और वह लोगों के

* मूल में—और भवन का पर्वत, अरण्य के ऊंचे स्थान।

वश में बध होने के लिये नहीं दिया गया ॥

२७ योशिय्याह के पुत्र, यहूदा के राजा यहोयाकीम* के राज्य के आरम्भ में यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा। २ यहोवा ने मुझ से यह कहा, बन्धन और जूए बनवाकर अपनी गर्दन पर रख। ३ तब उन्हें एदोम और मोआब और अम्मोन और सोर और सीदोन के राजाओं के पास, उन दूतों के हाथ भेजना जो यहूदा के राजा सिदकिय्याह के पास यरूशलेम में आए हैं। ४ और उनको उनके स्वामियों के लिये यह कहकर आज्ञा देना, कि, इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है, ५ अपने अपने स्वामी से यों कहो कि पृथ्वी को और पृथ्वी पर के मनुष्यों और पशुओं को अपनी बड़ी शक्ति और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा मैं ने बनाया, और जिस किसी को मैं चाहता हूं उसी को मैं उन्हें दिया करता हूं। ६ अब मैं ने ये सब देश, अपने दास बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को आप ही दे दिए हैं; और मैदान के जीवजन्तुओं को भी मैं ने उसे दिया है कि वे उसके आधीन रहें। ७ ये सब जातियां उसके और उसके बाद उसके बेटे और पोते के आधीन उस समय तक रहेंगी जब तक उसके भी देश का दिन न आए; तब बहुत सी जातियां और बड़े बड़े राजा उस से भी अपनी सेवा करवाएंगे ॥

८ सो जो जाति वा राज्य बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के आधीन न हो और उसका जूआ अपनी गर्दन पर न ले ले, उस जाति को मैं तलवार, महंगी और मरी का दण्ड उस समय तक देता रहूंगा जब तक उसको उसके हाथ के द्वारा मिटा न दूं यहोवा की यही वाणी है। ९ इसलिये तुम लोग अपने भविष्यद्वक्ताओं और भावी कहनेवालों और टोनहों और तान्त्रिकों की ओर चित्त मत लगाओ जो तुम से कहते हैं कि तुम को बाबुल के राजा के आधीन नहीं होना पड़ेगा। १० क्योंकि वे तुम से झूठी भविष्यद्वाणी करते हैं, जिस से तुम अपने अपने देश से दूर हो जाओ और मैं आप तुम को दूर करके नष्ट कर दूं। ११ परन्तु जो जाति बाबुल के राजा का जूआ अपनी गर्दन पर लेकर उसके आधीन रहेगी उसको मैं उसी के देश में रहने दूंगा; और वह उस में खेती करती हुई बसी रहेगी, यहोवा की यही वाणी है ॥

१२ और यहूदा के राजा सिदकिय्याह से भी मैं ने ये बातें कहीं, अपनी प्रजा समेत तू बाबुल के राजा का जूआ अपनी गर्दन पर ले, और उसके और उसकी प्रजा के आधीन रहकर जीवित रह। १३ जब यहोवा ने उस जाति के विषय जो बाबुल के राजा के आधीन न हो, यह कहा है कि वह तलवार, महंगी और मरी से नाश होगी; तो फिर तू क्यों अपनी प्रजा समेत मरना चाहता है? १४ जो भविष्यद्वक्ता तुझ से कहते हैं कि तुझ को बाबुल के राजा के आधीन न होना पड़ेगा, उनकी मत सुन; क्योंकि वे तुझ से झूठी भविष्यद्वाणी करते हैं। १५ यहोवा की यह वाणी है कि मैं ने उन्हें नहीं भेजा, वे मेरे नाम से झूठी भविष्यद्वाणी करते हैं; और इसका फल

* जान पड़ता है कि यहोयाकीम की सन्ती सिदकिय्याह समझना चाहिये।

यही होगा कि मैं तुझ को देश से निकाल दूंगा, और तू उन नबियों समेत जो तुझ से भविष्यद्वाणी करते हैं नष्ट हो जाएगा ॥

१६ तब याजकों और साधारण लोगों से भी मैं ने कहा, यहोवा यों कहता है, तुम्हारे जो भविष्यद्वक्ता तुम से यह भविष्यद्वाणी करते हैं कि यहोवा के भवन के पात्र अब शीघ्र ही बाबुल से लौटा दिए जाएंगे, उनके वचनों की ओर कान मत धरो, क्योंकि वे तुम से झूठी भविष्यद्वाणी करते हैं। १७ उनकी मत सुनो; बाबुल के राजा के आधीन होकर और उसकी सेवा करके जीवित रहो। १८ यह नगर क्यों उजाड़ हो जाए? यदि वे भविष्यद्वक्ता भी हों, और यदि यहोवा का वचन उनके पास हो, तो वे सेनाओं के यहोवा से बिनती करें कि जो पात्र यहोवा के भवन में और यहूदा के राजा के भवन में और यरूशलेम में रह गए हैं, वे बाबुल न जाने पाएं। १९ क्योंकि सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि जो खम्भे और पीतल की नान्द, गंगाल और कुर्सियां और और पात्र इस नगर में रह गए हैं, २० जिन्हें बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर उस समय न ले गया जब वह यहोयाकीम के पुत्र यहूदा के राजा यकोन्याह को और यहूदा और यरूशलेम के सब कुलीनों को बंधुआ करके यरूशलेम से बाबुल को ले गया था, २१ जो पात्र यहोवा के भवन में और यहूदा के राजा के भवन में और यरूशलेम में रह गए हैं, उनके विषय में इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि वे भी बाबुल में पहुंचाए जाएंगे; २२ और जब तक मैं उनकी सुधि न लूं तब तक वहीं रहेंगे, और तब मैं उन्हें लाकर इस स्थान में फिर रख दूंगा, यहोवा की यही वाणी है ॥

२८ फिर उसी वर्ष, अर्थात् यहूदा के राजा सिदकिय्याह के राज्य के चौथे वर्ष के पांचवें महीने में, अज्जूर का पुत्र हनन्याह जो गिबोन का एक भविष्यद्वक्ता था, उस ने मुझ से यहोवा के भवन में, याजकों और सब लोगों के साम्हने कहा, २ इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि मैं ने बाबुल के राजा के जूए को तोड़ डाला है। ३ यहोवा के भवन के जितने पात्र बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर इस स्थान से उठाकर बाबुल ले गया, उन्हें मैं दो वर्ष के भीतर फिर इसी स्थान में ले आऊंगा। ४ और मैं यहूदा के राजा यहोयाकीम का पुत्र यकोन्याह और सब यहूदी बंधुए जो बाबुल को गए हैं, उनको भी इस स्थान में लौटा ले आऊंगा; क्योंकि मैं ने बाबुल के राजा के जूए को तोड़ दिया है, यहोवा की यही वाणी है ॥

५ तब यिर्मयाह नबी ने हनन्याह नबी से, याजकों और उन सब लोगों के साम्हने जो यहोवा के भवन में खड़े हुए थे कहा, ६ आमीन! यहोवा ऐसा ही करे; जो बातें तू ने भविष्यद्वाणी करके कही हैं कि यहोवा के भवन के पात्र और सब बंधुए बाबुल से इस स्थान में फिर आएंगे, उन्हें यहोवा पूरा करे। ७ तौभी मेरा यह वचन सुन, जो मैं तुझे और सब लोगों को कह सुनाता हूं। ८ जो भविष्यद्वक्ता प्राचीनकाल से मेरे और तेरे पहिले होते आए थे, उन्हों ने तो बहुत से देशों और बड़े बड़े राज्यों के विरुद्ध युद्ध और विपत्ति और मरी के विषय भविष्यद्वाणी की

थी। ९ परन्तु जो भविष्यद्वक्ता कुशल के विषय भविष्यद्वाणी करे, तो जब उसका वचन पूरा हो, तब ही उस भविष्यद्वक्ता के विषय यह निश्चय हो जाएगा कि यह सचमुच यहोवा का भेजा हुआ है।।

१० तब हनन्याह भविष्यद्वक्ता ने उस जूए को जो यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता की गर्दन पर था, उतारकर तोड़ दिया। ११ और हनन्याह ने सब लोगों के साम्हने कहा, यहोवा यों कहता है कि इसी प्रकार से मैं पूरे दो वर्ष के भीतर बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के जूए को सब जातियों की गर्दन पर से उतारकर तोड़ दूंगा। तब यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता चला गया।।

१२ जब हनन्याह भविष्यद्वक्ता ने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता की गर्दन पर से जूआ उतारकर तोड़ दिया, उसके बाद यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा: १३ जाकर हनन्याह से यह कह, यहोवा यों कहता है कि तू ने काठ का जूआ तो तोड़ दिया, परन्तु ऐसा करके तू ने उसकी सन्ती लोहे का जूआ बना लिया है। १४ क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि मैं इन सब जातियों की गर्दन पर लोहे का जूआ रखता हूं और वे बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के आधीन रहेंगे, और इनको उसके अधीन होना पडेगा, क्योंकि मैदान के जीवजन्तु भी मैं उसके वश में कर देता हूं। १५ और यिर्मयाह नबी ने हनन्याह नबी से यह भी कहा, हे हनन्याह, देख यहोवा ने तुझे नहीं भेजा, तू ने इन लोगों को झूठी आशा दिलाई है। १६ इसलिये यहोवा तुझ से यों कहता है, कि देख, मैं तुझ को पृथ्वी के ऊपर से उठा दूंगा, इसी वर्ष में तू मरेगा; क्योंकि तू ने यहोवा की ओर से फिरने की बातें कही हैं। १७ इस वचन के अनुसार हनन्याह उसी वर्ष के सातवें महीने में मर गया।।

२९ उसी वर्ष यिर्मयाह नबी ने इस आशय की पत्री, उन पुरनियों और भविष्यद्वक्ताओं और साधारण लोगों के पास भेजीं जो बंधुओं में से बचे थे, जिनको नबूकदनेस्सर यरूशलेम से बाबुल को ले गया था। २ यह पत्री उस समय भेजी गई, जब यकोन्याह राजा और राजमाता, खोजे, यहूदा और यरूशलेम के हाकिम, लोहार और अन्य कारीगर यरूशलेम से चले गए थे। ३ यह पत्री शापान के पुत्र एलासा और हिल्किय्याह के पुत्र गमर्याह के हाथ भेजी गई, जिन्हें यहूदा के राजा सिदकिय्याह ने बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के पास बाबुल को भेजा। ४ उस में लिखा था कि जितने लोगों को मैं ने यरूशलेम से बंधुआ करके बाबुल में पहुंचवा दिया है, उन सभों से इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है: ५ घर बनाकर उन में बस जाओ; बारियां लगाकर उनके फल खाओ। ६ ब्याह करके बेटे-बेटियां जन्माओ; और अपने बेटों के लिये स्त्रियां ब्याह लो और अपनी बेटियां पुरुषों को ब्याह दो, कि वे भी बेटे-बेटियां जन्माएं; और वहां घटो नहीं वरन बढ़ते जाओ। ७ परन्तु जिस नगर में मैं ने तुम को बंधुआ कराके भेज दिया है, उसके कुशल का यत्न किया करो, और उसके हित के लिये यहोवा से प्रार्थना किया करो। क्योंकि उसके कुशल से तुम भी कुशल के साथ रहोगे। ८ क्योंकि

इस्राएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा तुम से यों कहता है कि तुम्हारे जो भविष्यद्वक्ता और भावी कहनेवाले तुम्हारे बीच में हैं, वे तुम को बहकाने न पाएं, और जो स्वप्न वे तुम्हारे निमित्त देखते हैं उनकी ओर कान मत धरो, ९ क्योंकि वे मेरे नाम से तुम को झूठी भविष्यद्वाणी सुनाते हैं; मैं ने उन्हें नहीं भेजा, मुझ यहोवा की यह वाणी है ॥

१० यहोवा यों कहता है कि बाबुल के सत्तर वर्ष पूरे होने पर मैं तुम्हारी सुधि लूंगा, और अपना यह मनभावना वचन कि मैं तुम्हें इस स्थान में लौटा ले आऊंगा, पूरा करूंगा। ११ क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, कि जो कल्पनाएं मैं तुम्हारे विषय करता हूं उन्हें मैं जानता हूं, वे हानि की नहीं, वरन कुशल ही की हैं, और अन्त में तुम्हारी आशा पूरी करूंगा *। १२ तब उस समय तुम मुझ को पुकारोगे और आकर मुझ से प्रार्थना करोगे और मैं तुम्हारी सुनूंगा। १३ तुम मुझे ढूंढ़ोगे और पाओगे भी; क्योंकि तुम अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास आओगे। १४ मैं तुम्हें मिलूंगा, यहोवा की यह वाणी है, और बंधुआई से लौटा ले आऊंगा; और तुम को उन सब जातियों और स्थानों में से जिन में मैं ने तुम को बरबस निकाल दिया है, और तुम्हें इकट्ठा करके इस स्थान में लौटा ले आऊंगा जहां से मैं ने तुम्हें बंधुआ करवाके निकाल दिया था, यहोवा की यही वाणी है ॥

१५ तुम कहते तो हो कि यहोवा ने हमारे लिये बाबुल में भविष्यद्वक्ता प्रगट किए हैं। १६ परन्तु जो राजा दाऊद की गद्दी पर विराजमान है, और जो प्रजा इस नगर में रहती है, अर्थात् तुम्हारे जो भाई तुम्हारे संग बंधुआई में नहीं गए, उन सभों के विषय सेनाओं का यहोवा यह कहता है, १७ सुनो, मैं उनके बीच तलवार चलाऊंगा और महंगी करूंगा, और मरी फैलाऊंगा; और उन्हें ऐसे घिनौने अंजीरों के समान करूंगा जो निकम्मे होने के कारण खाए नहीं जाते। १८ मैं तलवार, महंगी और मरी लिए हुए उनका पीछा करूंगा, और ऐसा करूंगा कि वे पृथ्वी के राज्य राज्य में मारे मारे फिरेंगे, और उन सब जातियों में जिन के बीच में उन्हें बरबस कर दूंगा, उनकी ऐसी दशा करूंगा कि लोग उन्हें देखकर चकित होंगे और ताली बजाएंगे और उनका अपमान करेंगे, और उनकी उपमा देकर शाप दिया करेंगे। १९ क्योंकि जो वचन मैं ने अपने दास भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा उनके पास बड़ा यत्न करके * कहला भेजे हैं, उनको उन्हों ने नहीं सुना, यहोवा की यही वाणी है ॥

२० इसलिये हे सारे बंधुओ, जिन्हें मैं ने यरूशलेम से बाबुल को भेजा है, तुम उसका यह वचन सुनो: २१ कोलायाह का पुत्र अहाब और मासेयाह का पुत्र सिदकिय्याह जो मेरे नाम से तुम को झूठी भविष्यद्वाणी सुनाते हैं, उनके विषय इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि सुनो, मैं उनको बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के हाथ में कर दूंगा, और वह उनको तुम्हारे साम्हने मार डालेगा। २२ और सब यहूदी बंधुए

---

* मूल में—तुम्हें अन्त फल और आशा देने को।

* मूल में—तड़के उठके।

जो बाबुल में रहते हैं, उनकी उपमा देकर यह शाप दिया करेंगे : यहोवा तुझे सिदकिय्याह और अहाब के समान करे, जिन्हें बाबुल के राजा ने आग में भून डाला, २३ क्योंकि उन्हों ने इस्राएलियों में मूढ़ता के काम किए, अर्थात् अपने पड़ोसियों की स्त्रियों के साथ व्यभिचार किया, और बिना मेरी आज्ञा पाए मेरे नाम से झूठे वचन कहे। इसका जाननेवाला और गवाह मैं आप ही हूं, यहोवा की यही वाणी है ॥

२४ और नेहेलामी शमायाह से तू यह कह, कि, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने यों कहा है, २५ इसलिये कि तू ने यरूशलेम के सब रहनेवालों और सब याजकों को और मासेयाह के पुत्र सपन्याह याजक को अपने ही नाम की इस आशय की पत्री भेजी, २६ कि, यहोवा ने यहोयादा याजक के स्थान पर तुझे याजक ठहरा दिया ताकि तू यहोवा के भवन में रखवाल होकर जितने वहां पागलपन करते और भविष्यद्वक्ता बन बैठे हैं उन्हें काठ में ठोंके और उनके गले में लोहे के पट्टे डाले। २७ सो यिर्मयाह अनातोती जो तुम्हारा भविष्यद्वक्ता बन बैठा है, उसको तू ने क्यों नहीं घुड़का? २८ उस ने तो हम लोगों के पास बाबुल में यह कहला भेजा है कि बंधुआई तो बहुत काल तक रहेगी, सो घर बनाकर उन में रहो, और बारियां लगाकर उनके फल खाओ। २९ यह पत्री सपन्याह याजक ने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता को पढ़ सुनाई। ३० तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा कि सब बंधुओं के पास यह कहला भेज, ३१ यहोवा नेहेलामी शमायाह के विषय यों कहता है कि शमायाह ने मेरे बिना भेजे तुम से जो भविष्यद्वाणी की और तुम को झूठ पर भरोसा दिलाया है, ३२ इसलिये यहोवा यों कहता है, कि सुनो, मैं उस नेहेलामी शमायाह और उसके वंश को दण्ड दिया चाहता हूं; उसके घर में से कोई इन प्रजाओं में न रह जाएगा। ३३ और जो भलाई मैं अपनी प्रजा की करनेवाला हूं, उसको वह देखने न पाएगा, क्योंकि उस ने यहोवा से फिर जाने की बातें कही हैं, यहोवा की यही वाणी है ॥

३० यहोवा का जो वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा वह यह है : २ इस्राएल का परमेश्वर यहोवा तुझ से यों कहता है, जो वचन मैं ने तुझ से कहे हैं उन सभों को पुस्तक में लिख ले। ३ क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आते हैं कि मैं अपनी इस्राएली और यहूदी प्रजा को बंधुआई से लौटा लाऊंगा; और जो देश मैं ने उनके पितरों को दिया था उस में उन्हें फेर ले आऊंगा, और वे फिर उसके अधिकारी होंगे, यहोवा का यही वचन है ॥

४ जो वचन यहोवा ने इस्राएलियों और यहूदियों के विषय कहे थे, वे ये हैं : ५ यहोवा यों कहता है : थरथरा देनेवाला शब्द सुनाई दे रहा है, शान्ति नहीं, भय ही का है। ६ पूछो तो भला, और देखो, क्या पुरुष को भी कहीं जनने की पीड़ा उठती है? फिर क्या कारण है कि सब पुरुष जच्चा की नाईं अपनी अपनी कमर अपने हाथों से दबाए हुए देख पड़ते हैं? क्यों सब के मुख फीके रंग के हो गए हैं? ७ हाय, हाय, वह दिन क्या ही भारी होगा! उसके

समान और कोई दिन नहीं; वह याकूब के संकट का समय होगा; परन्तु वह उस से भी छुड़ाया जाएगा। ८ और सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, कि उस दिन मैं उसका रखा हुआ जूआ तुम्हारी गर्दन पर से तोड़ दूंगा, और तुम्हारे बन्धनों को टुकड़े-टुकड़े कर डालूंगा; और परदेशी फिर उन से अपनी सेवा न कराने पाएंगे। ९ परन्तु वे अपने परमेश्वर यहोवा और अपने राजा दाऊद की सेवा करेंगे जिसको मैं उन पर राज्य करने के लिये ठहराऊंगा।।

१० इसलिये हे मेरे दास याकूब, तेरे लिये यहोवा की यह वाणी है, मत डर; हे इस्राएल, विस्मित न हो; क्योंकि मैं दूर देश से तुझे और तेरे वंश को बंधुआई के देश से छुड़ा ले आऊंगा। तब याकूब लौटकर, चैन और सुख से रहेगा, और कोई उसको डराने न पाएगा। ११ क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, तुम्हारा उद्धार करने के लिये मैं तुम्हारे संग हूं; इसलिये मैं उन सब जातियों का अन्त कर डालूंगा, जिन में मैं ने उन्हें तितर-बितर किया है, परन्तु तुम्हारा अन्त न करूंगा। तुम्हारी ताड़ना मैं विचार करके करूंगा, और तुम्हें किसी प्रकार से निर्दोष न ठहराऊंगा।।

१२ यहोवा यों कहता है: तेरे दुःख की कोई औषध नहीं, और तेरी चोट गहिरी और दुखप्रद है। १३ तेरा मुक़द्दमा लड़ने के लिये कोई नहीं, तेरा घाव बान्धने के लिये न पट्टी, न मलहम है। १४ तेरे सब मित्र तुझे भूल गए; वे तुम्हारी सुधि नहीं लेते; क्योंकि तेरे बड़े अधर्म और भारी पापों के कारण, मैं ने शत्रु बनकर तुझे मारा है; मैं ने क्रूर बनकर ताड़ना दी है। १५ तू अपने घाव के मारे क्यों चिल्लाती है? तेरी पीड़ा की कोई औषध नहीं। तेरे बड़े अधर्म और भारी पापों के कारण मैं ने तुझ से ऐसा व्यवहार किया है। १६ परन्तु जितने तुझे अब खाए लेते हैं, वे आप ही खाए जाएंगे, और तेरे द्रोही आप सब के सब बंधुआई में जाएंगे; और तेरे लूटनेवाले आप लुटेंगे और जितने तेरा धन छीनते हैं, उनका धन मैं छिनवाऊंगा। १७ मैं तेरा इलाज करके तेरे घावों को चंगा करूंगा, यहोवा की यह वाणी है; क्योंकि तेरा नाम ठुकराई हुई पड़ा है: वह तो सिय्योन है, उसकी चिन्ता कौन करता है?

१८ यहोवा कहता है: मैं याकूब के तम्बू को बंधुआई से लौटाता हूं और उसके घरों पर दया करूंगा; और नगर अपने ही खण्डहर पर फिर बसेगा, और राजभवन पहिले के अनुसार फिर बन जाएगा। १९ तब उन में से धन्य कहने, और आनन्द करने का शब्द सुनाई पड़ेगा। २० मैं उनका विभव बढ़ाऊंगा, और वे थोड़े न होंगे। उनके लड़केबाले प्राचीन-काल के समान होंगे, और उनकी मण्डली मेरे साम्हने स्थिर रहेगी; और जितने उन पर अन्धेर करते हैं उनको मैं दण्ड दूंगा। २१ उनका महापुरुष उन्हीं में से होगा, और जो उन पर प्रभुता करेगा, वह उन्हीं में से उत्पन्न होगा; मैं उसे अपने निकट बुलाऊंगा, और वह मेरे समीप आ भी जाएगा, क्योंकि कौन है जो अपने आप मेरे समीप आ सकता है? यहोवा की यही वाणी है। २२ उस समय तुम मेरी प्रजा ठहरोगे, और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूंगा।।

२३ देखो, यहोवा की जलजलाहट की आंधी चल रही है! वह अति प्रचण्ड आंधी है; दुष्टों के सिर पर वह ज़ोर से लगेगी। २४ जब तक यहोवा अपना काम न कर चुके और अपनी युक्तियों को पूरी न कर चुके, तब तक उसका भड़का हुआ क्रोध शान्त न होगा*। अन्त के दिनों में तुम इस बात को समझ सकोगे ।।

३१ उन दिनों में मैं सारे इस्राएली कुलों का परमेश्वर ठहरूंगा और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की यही वाणी है। २ यहोवा यों कहता है: जो प्रजा तलवार से बच निकली, उन पर जंगल में अनुग्रह हुआ; मैं इस्राएल को विश्राम देने के लिये तैयार हुआ† ।।

३ यहोवा ने मुझे दूर से दर्शन देकर कहा है। मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूं; इस कारण मैं ने तुझ पर अपनी करुणा बनाए रखी है। ४ हे इस्राएली कुमारी कन्या! मैं तुझे फिर बसाऊंगा; वहां तू फिर सिंगार करके डफ बजाने लगेगी, और आनन्द करनेवालों के बीच में नाचती हुई निकलेगी। ५ तू शोमरोन के पहाड़ों पर अंगूर की बारियां फिर लगाएगी; और जो उन्हें लगाएंगे, वे उनके फल भी खाने पाएंगे‡। ६ क्योंकि ऐसा दिन आएगा, जिस में एप्रैम के पहाड़ी देश के पहरुए पुकारेंगे: उठो, हम अपने परमेश्वर यहोवा के पास सिय्योन को चलें ।।

७ क्योंकि यहोवा यों कहता है: याकूब के कारण आनन्द से जयजयकार करो: जातियों में जो श्रेष्ठ है उसके लिये ऊंचे शब्द से स्तुति करो, और कहो, हे यहोवा, अपनी प्रजा इस्राएल के बचे हुए लोगों का भी उद्धार कर। ८ देखो, मैं उनको उत्तर देश से ले आऊंगा, और पृथ्वी के कोने कोने से इकट्ठे करूंगा; और उनके बीच अन्धे, लंगड़े, गर्भवती, और जच्चा स्त्रियां भी आएंगी; एक बड़ी मण्डली यहां लौट आएगी। ९ वे आंसू बहाते हुए आएंगे और गिड़गिड़ाते हुए मेरे द्वारा पहुंचाए जाएंगे, मैं उन्हें नदियों के किनारे किनारे से और ऐसे चौरस मार्ग से ले आऊंगा, जिस से वे ठोकर न खाने पाएंगे; क्योंकि मैं इस्राएल का पिता हूं, और एप्रैम मेरा जेठा है ।।

१० हे जाति जाति के लोगो, यहोवा का वचन सुनो, और दूर दूर के द्वीपों में भी इसका प्रचार करो; कहो, कि जिस ने इस्राएलियों को तितर-बितर किया था, वही उन्हें इकट्ठे भी करेगा, और उनकी ऐसी रक्षा करेगा जैसी चरवाहा अपने झुण्ड की करता है। ११ क्योंकि यहोवा ने याकूब को छुड़ा लिया, और उस शत्रु के पंजे से जो उस से अधिक बलवन्त है, उसे छुटकारा दिया है। १२ इसलिये वे सिय्योन की चोटी पर आकर जयजयकार करेंगे, और यहोवा से अनाज, नया दाखमधु, टटका तेल, भेड़-बकरियां और गाय-बैलों के बच्चे आदि उत्तम उत्तम दान पाने के लिये तांता बान्धकर* चलेंगे; और उनका प्राण सींची हुई बारी के समान होगा, और वे फिर कभी उदास न होंगे। १३ उस समय उनकी कुमारियां नाचती

* मूल में—न फिरेगा।
† मूल में—चलूंगा।
‡ मूल में—साधारण भी ठहराएंगे।

* मूल में—महानद की नाईं बहेंगे।

हुई हर्ष करेंगी, और जवान और बूढ़े एक संग आनन्द करेंगे। क्योंकि मैं उनके शोक को दूर करके उन्हें आनन्दित करूंगा, मैं उन्हें शान्ति दूंगा, और दुःख के बदले आनन्द दूंगा। १४ मैं याजकों को चिकनी वस्तुओं से अति तृप्त करूंगा, और मेरी प्रजा मेरे उत्तम दानों से सन्तुष्ट होगी, यहोवा की यही वाणी है ।।

१५ यहोवा यह भी कहता है : सुन, रामा नगर में विलाप और बिलक बिलककर रोने का शब्द सुनने में आता है। राहेल अपने लड़कों के लिये रो रही है; और अपने लड़कों के कारण शान्त नहीं होती, क्योंकि वे जाते रहे ।।

१६ यहोवा यों कहता है : रोने-पीटने और आंसू बहाने से रुक जा; क्योंकि तेरे परिश्रम का फल मिलनेवाला है, और वे शत्रुओं के देश से लौट आएंगे। १७ अन्त में तेरी आशा पूरी होगी, यहोवा की यह वाणी है, तेरे वंश के लोग अपने देश में लौट आएंगे। १८ निश्चय मैं ने एप्रैम को ये बातें कहकर विलाप करते सुना है कि तू ने मेरी ताड़ना की, और मेरी ताड़ना ऐसे बछड़े की सी हुई जो निकाला न गया हो; परन्तु अब तू मुझे फेर, तब मैं फिरूंगा, क्योंकि तू मेरा परमेश्वर है। १९ भटक जाने के बाद मैं पछताया; और सिखाए जाने के बाद मैं ने छाती पीटी; पुराने पापों को स्मरण कर मैं लज्जित हुआ और मेरा मुंह काला हो गया। २० क्या एप्रैम मेरा प्रिय पुत्र नहीं है? क्या वह मेरा दुलारा लड़का नहीं है? जब जब मैं उसके विरुद्ध बातें करता हूं, तब तब मुझे उसका स्मरण हो आता है। इसलिये मेरा मन उसके कारण भर आता है; और मैं निश्चय उस पर दया करूंगा, यहोवा की यही वाणी है ।।

२१ हे इस्राएली कुमारी, जिस राजमार्ग से तू गई थी, उसी में खम्भे और झण्डे खड़े कर; और अपने इन नगरों में लौट आने पर मन लगा। २२ हे भटकनेवाली कन्या, तू कब तक इधर उधर फिरती रहेगी? यहोवा की एक नई सृष्टि पृथ्वी पर प्रगट होगी, अर्थात् नारी पुरुष की सहायता करेगी ।।

२३ इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है : जब मैं यहूदी बंधुओं को उनके देश के नगरों में लौटाऊंगा, तब उन में यह आशीर्वाद * फिर दिया जाएगा : हे धर्मभरे वासस्थान, हे पवित्र पर्वत, यहोवा तुझे आशीष दे! २४ और यहूदा और उसके सब नगरों के लोग और किसान और चरवाहे † भी उस में इकट्ठे बसेंगे। २५ क्योंकि मैं ने थके हुए लोगों का प्राण तृप्त किया, और उदास लोगों के प्राण को भर दिया है ।।

२६ इस पर मैं जाग उठा, और देखा, और मेरी नीन्द मुझे मीठी लगी ।।

२७ देख, यहोवा की यह वाणी है, कि ऐसे दिन आनेवाले हैं जिन में मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों के लड़के-बाले और पशु दोनों को बहुत बढ़ाऊंगा ‡। २८ और जिस प्रकार से मैं सोच सोचकर § उनको गिराता और ढाता, नष्ट करता, काट डालता और सत्यानाश ही करता

---

* मूल में—वचन।

† मूल में—घूम घूमकर झुण्ड के चरानेहारे।

‡ मूल में—घरानों में मनुष्य का बीज और पशु का बीज बोऊंगा।

§ मूल में—जाग जागकर।

था, उसी प्रकार से मैं अब सोच सोचकर उनको रोपूंगा और बढ़ाऊंगा, यहोवा की यही वाणी है। २९ उन दिनों में वे फिर न कहेंगे कि पुरखा लोगों ने तो जंगली दाख खाई, परन्तु उनके वंश के दांत खट्टे हो गए हैं। ३० क्योंकि जो कोई जंगली दाख खाए उसी के दांत खट्टे हो जाएंगे, और हर एक मनुष्य अपने ही अधर्म के कारण मारा जाएगा ।।

३१ फिर यहोवा की यह भी वाणी है, सुन, ऐसे दिन आनेवाले हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बान्धूंगा। ३२ वह उस वाचा के समान न होगी जो मैं ने उनके पुरखाओं से उस समय बान्धी थी जब मैं उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया, क्योंकि यद्यपि मैं उनका पति था, तौभी उन्हों ने मेरी वह वाचा तोड़ डाली। ३३ परन्तु जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने से बान्धूंगा, वह यह है: मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊंगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा; और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की यह वाणी है। ३४ और तब उन्हें फिर एक दूसरे से यह न कहना पड़ेगा कि यहोवा को जानो, क्योंकि, यहोवा की यह वाणी है कि छोटे से लेकर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे; क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा ।।

३५ जिस ने दिन को प्रकाश देने के लिये सूर्य को और रात को प्रकाश देने के लिये चन्द्रमा और तारागण के नियम ठहराए हैं, जो समुद्र को उछालता और उसकी लहरों को गरजाता है, और जिसका नाम सेनाओं का यहोवा है, वही यहोवा यों कहता है: ३६ यदि ये नियम मेरे साम्हने से टल जाएं तब ही यह हो सकेगा कि इस्राएल का वंश मेरी दृष्टि में सदा के लिये एक जाति ठहरने की अपेक्षा मिट सकेगा ।।

३७ यहोवा यों भी कहता है, यदि ऊपर से आकाश मापा जाए और नीचे से पृथ्वी की नेव खोद खोदकर पता लगाया जाए, तब ही मैं इस्राएल के सारे वंश को उनके सब पापों के कारण उन से हाथ उठाऊंगा ।।

३८ देख, यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आ रहे हैं जिन में यह नगर हननेल के गुम्मट से लेकर कोने के फाटक तक यहोवा के लिये बनाया जाएगा। ३९ और मापने की रस्सी फिर आगे बढ़कर सीधी गारेब पहाड़ी तक, और वहां से घूमकर गोआ को पहुंचेगी। ४० और लोथों और राख की सब तराई और किद्रोन नाले तक जितने खेत हैं, घोड़ों के पूर्वी फाटक के कोने तक जितनी भूमि है, वह सब यहोवा के लिये पवित्र ठहरेगी। सदा तक वह नगर फिर कभी न तो गिराया जाएगा और न ढाया जाएगा ।।

३२

यहूदा के राजा सिदकिय्याह के राज्य के दसवें वर्ष में जो नबूकदनेस्सर के राज्य का अठारहवां वर्ष था, यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा। २ उस समय बाबुल के राजा की सेना ने यरूशलेम को घेर लिया था और यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता यहूदा के राजा के पहरे के भवन के आंगन में कैदी था। ३ क्योंकि यहूदा के

राजा सिदकिय्याह ने यह कहकर उसे कैद किया था, कि, तू ऐसी भविष्यद्वाणी क्यों करता है कि यहोवा यों कहता है: देखो, मैं यह नगर बाबुल के राजा के वश में कर दूंगा, वह इसको ले लेगा; ४ और यहूदा का राजा सिदकिय्याह कसदियों के हाथ से न बचेगा परन्तु वह बाबुल के राजा के वश में अवश्य ही पड़ेगा, और वह और बाबुल का राजा आपस में आम्हने-साम्हने बातें करेंगे; और अपनी अपनी आंखों से एक दूसरे को देखेंगे। ५ और वह सिदकिय्याह को बाबुल में ले जाएगा, और जब तक मैं उसकी सुधि न लूं, तब तक वह वहीं रहेगा, यहोवा की यह वाणी है। चाहे तुम लोग कसदियों से लड़ो भी, तौभी तुम्हारे लड़ने से कुछ बन न पड़ेगा ।।

६ यिर्मयाह ने कहा, यहोवा का वचन मेरे पास पहुंचा, ७ देख, शल्लम का पुत्र हनमेल जो तेरा चचेरा भाई है, सो तेरे पास यह कहने को आने पर है कि मेरा खेत जो अनातोत में है उसे मोल ले, क्योंकि उसे मोल लेकर छुड़ाने का अधिकार तेरा ही है। ८ सो यहोवा के वचन के अनुसार मेरा चचेरा भाई हनमेल पहरे के आंगन में मेरे पास आकर कहने लगा, मेरा जो खेत बिन्यामीन देश के अनातोत में है उसे मोल ले, क्योंकि उसके स्वामी होने और उसके छुड़ा लेने का अधिकार तेरा ही है; इसलिये तू उसे मोल ले। तब मैं ने जान लिया कि वह यहोवा का वचन था ।।

९ इसलिये मैं ने उस अनातोत के खेत को अपने चचेरे भाई हनमेल से मोल ले लिया, और उसका दाम चान्दी के सत्तरह शेकेल तौलकर दे दिए। १० और मैं ने दस्तावेज़ में दस्तख़त और मुहर हो जाने पर, गवाहों के साम्हने वह चान्दी कांटे में तौलकर उसे दे दी। ११ तब मैं ने मोल लेने की दोनों दस्तावेज़ें जिन में सब शर्तें लिखी हुई थीं, और जिन में से एक पर मुहर थी और दूसरी खुली थी, १२ उन्हें लेकर अपने चचेरे भाई हनमेल के और उन गवाहों के साम्हने जिन्हों ने दस्तावेज़ में दस्तख़त किए थे, और उन सब यहूदियों के साम्हने भी जो पहरे के आंगन में बैठे हुए थे, नेरिय्याह के पुत्र बारूक को जो महसेयाह का पोता था, सौंप दिया। १३ तब मैं ने उनके साम्हने बारूक को यह आज्ञा दी १४ कि इस्राएल के परमेश्वर सेनाओं के यहोवा यों कहता है, इन मोल लेने की दस्तावेज़ों को जिन पर मुहर की हुई है और जो खुली हुई है, इन्हें लेकर मिट्टी के बर्तन में रख, ताकि ये बहुत दिन तक रहें। १५ क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है, इस देश में घर और खेत और दाख की बारियां फिर बेची और मोल ली जाएंगी ।।

१६ जब मैं ने मोल लेने की वह दस्तावेज़ नेरिय्याह के पुत्र बारूक के हाथ में दी, तब मैं ने यहोवा से यह प्रार्थना की, १७ हे प्रभु यहोवा, तू ने बड़े सामर्थ और बढ़ाई हुई भुजा से आकाश और पृथ्वी को बनाया है! तेरे लियें कोई काम कठिन नहीं है। १८ तू हजारों पर करुणा करता रहता परन्तु पूर्वजों के अधर्म का बदला उनके बाद उनके वंश के लोगों को भी देता है, हे महान और पराक्रमी परमेश्वर, जिसका नाम सेनाओं का यहोवा है, १९ तू बड़ी युक्ति करनेवाला और सामर्थ के काम करनेवाला

है; तेरी दृष्टि मनुष्यों के सारे चालचलन पर लगी रहती है, और तू हर एक को उसके चालचलन और कर्म का फल भुगताता है। २० तू ने मिस्र देश में चिन्ह और चमत्कार किए, और आज तक इस्राएलियों वरन सब मनुष्यों के बीच वैसा करता आया है, और इस प्रकार तू ने अपना ऐसा नाम किया है जो आज के दिन तक बना है। २१ तू अपनी प्रजा इस्राएल को मिस्र देश में से चिन्हों और चमत्कारों और सामर्थी हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा, और बड़े भयानक कामों के साथ निकाल लाया। २२ फिर तू ने यह देश उन्हें दिया जिसके देने की शपथ तू ने उनके पूर्वजों से खाई थी; जिसमें दूध और मधु की धाराएं बहती हैं, और वे आकर इसके अधिकारी हुए। २३ तौभी उन्हों ने तेरी नहीं मानी, और न तेरी व्यवस्था पर चले; वरन जो कुछ तू ने उनको करने की आज्ञा दी थी, उस में से उन्हों ने कुछ भी नहीं किया। इस कारण तू ने उन पर यह सब विपत्ति डाली है। २४ अब इन दमदमों को देख, वे लोग इस नगर को ले लेने के लिये आ गए हैं, और यह नगर तलवार, महंगी और मरी के कारण इन चढ़े हुए कसदियों के वश में किया गया है। जो तू ने कहा था वह अब पूरा हुआ है, और तू इसे देखता भी है। २५ तौभी, हे प्रभु यहोवा, तू ने मुझ से कहा है कि गवाह बुलाकर उस खेत को मोल ले, यद्यपि कि यह नगर कसदियों के वश में कर दिया गया है॥

२६ तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा, मैं तो सब प्राणियों का परमेश्वर यहोवा हूं; २७ क्या मेरे लिये कोई भी काम कठिन है? २८ सो यहोवा यों कहता है, देख, मैं यह नगर कसदियों और बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के वश में कर देने पर हूं, और वह इसको ले लेगा। २९ जो कसदी इस नगर से युद्ध कर रहे हैं, वे आकर इस में आग लगाकर फूंक देंगे, और जिन घरों की छतों पर उन्हों ने बाल के लिये धूप जलाकर और दूसरे देवताओं को तपावन देकर मुझे रिस दिलाई है, वे घर जला दिए जाएंगे। ३० क्योंकि इस्राएल और यहूदा, जो काम मुझे बुरा लगता है, वही लड़कपन से करते आए हैं; इस्राएली अपनी बनाई हुई वस्तुओं से मुझ को रिस ही रिस दिलाते आए हैं, यहोवा की यह वाणी है। ३१ यह नगर जब से बसा है तब से आज के दिन तक मेरे क्रोध और जलजलाहट के भड़कने का कारण हुआ है, इसलिये अब मैं इसको अपने साम्हने से इस कारण दूर करूंगा ३२ क्योंकि इस्राएल और यहूदा अपने राजाओं, हाकिमों, याजकों और भविष्यद्वक्ताओं समेत, क्या यहूदा देश के, क्या यरूशलेम के निवासी, सब के सब बुराई पर बुराई करके मुझ को रिस दिलाते आए हैं। ३३ उन्हों ने मेरी ओर मुंह नहीं वरन पीठ ही फेर दी है; यद्यपि मैं उन्हें बड़े यत्न से * सिखाता आया हूं, तौभी उन्हों ने मेरी शिक्षा को नहीं माना। ३४ वरन जो भवन मेरा कहलाता है, उस में भी उन्हों ने अपनी घृणित वस्तुएं स्थापन करके उसे अशुद्ध किया है। ३५ उन्हों ने हिन्नोमियों की तराई में बाल के ऊंचे ऊंचे स्थान बनाकर अपने बेटे-बेटियों को

* मूल में—तड़के उठकर।

मोलक के लिये होम किया, जिसकी आज्ञा मैं ने कभी नहीं दी, और न यह बात कभी मेरे मन में आई कि ऐसा घृणित काम किया जाए और जिस से यहूदी लोग पाप में फंसे ॥

३६ परन्तु अब इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस नगर के विषय में, जिसके लिये तुम लोग कहते हो कि वह तलवार, महंगी और मरी के द्वारा बाबुल के राजा के वश में पड़ा हुआ है यों कहता है: ३७ देखो, मैं उनको उन सब देशों से जिन में मैं ने क्रोध और जलजलाहट में आकर उन्हें बरबस निकाल दिया था, लौटा ले आकर इसी नगर में इकट्ठे करूंगा, और निडर करके बसा दूंगा। ३८ और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा। ३९ मैं उनको एक ही मन और एक ही चाल कर दूंगा कि वे सदा मेरा भय मानते रहें, जिस से उनका और उनके बाद उनके वंश का भी भला हो। ४० मैं उन से यह वाचा बान्धूंगा, कि मैं कभी उनका संग* छोड़कर उनका भला करना न छोड़ूंगा; और अपना भय मैं उनके मन से ऐसा उपजाऊंगा कि वे कभी मुझ से अलग होना न चाहेंगे। ४१ मैं बड़ी प्रसन्नता के साथ उनका भला करता रहूंगा, और सचमुच उन्हें इस देश में अपने सारे मन और प्राण से बसा दूंगा ॥

४२ देख, यहोवा यों कहता है कि जैसे मैं ने अपनी इस प्रजा पर यह सब बड़ी विपत्ति डाल दी, वैसे ही निश्चय इन से वह सब भलाई भी करूंगा जिसके करने का वचन मैं ने दिया है। सो यह

* मूल में—पीछा।

देश जिसके विषय तुम लोग कहते हो ४३ कि यह उजाड़ हो गया है, इस में न तो मनुष्य रह गए हैं और न पशु, यह तो कसदियों के वश में पड़ चुका है, इसी में फिर से खेत मोल लिए जाएंगे, ४४ और बिन्यामीन के देश में, यरूशलेम के आस पास, और यहूदा देश के अर्थात् पहाड़ी देश, नीचे के देश और दक्खिन देश के नगरों में लोग गवाह बुलाकर खेत मोल लेंगे, और दस्तावेज में दस्तखत और मुहर करेंगे; क्योंकि मैं उनके दिनों को लौटा ले आऊंगा; यहोवा की यही वाणी है ॥

३३ जिस समय यिर्मयाह पहरे के आंगन में बन्द था, उस समय यहोवा का वचन दूसरी बार उसके पास पहुंचा, २ यहोवा जो पृथ्वी का रचनेवाला है, जो उसको स्थिर करता है*, उसका नाम यहोवा है; वह यह कहता है, ३ मुझ से प्रार्थना कर और मैं तेरी सुनकर तुझे बड़ी-बड़ी और कठिन† बातें बताऊंगा जिन्हें तू अभी नहीं समझता ॥

४ क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस नगर के घरों और यहूदा के राजाओं के भवनों के विषय में जो इसलिये गिराए जाते हैं कि दमदमों और तलवार के साथ सुभीते से लड़ सकें, यों कहता है, ५ कसदियों से युद्ध करने को वे लोग आते तो हैं, परन्तु मैं क्रोध और जलजलाहट में आकर उनको मरवाऊंगा और उनकी लोथें उसी स्थान में भर दूंगा; क्योंकि उनकी दुष्टता के कारण मैं ने इस नगर से मुख फेर लिया है। ६ देख, मैं इस

* मूल में—गढ़ता।
† मूल में—कोठों से घिरी।

नगर का इलाज करके इसके निवासियों को चंगा करूंगा; और उन पर पूरी शान्ति और सच्चाई प्रगट करूंगा। ७ मैं यहूदा और इस्राएल के बंधुओं को लौटा ले आऊंगा, और उन्हें पहिले की नाईं बसाऊंगा। ८ मैं उनको उनके सारे अधर्म और पाप के काम से शुद्ध करूंगा जो उन्हों ने मेरे विरुद्ध किए हैं; और उन्हों ने जितने अधर्म और अपराध के काम मेरे विरुद्ध किए हैं, उन सब को मैं क्षमा करूंगा। ९ क्योंकि वे वह सब भलाई के काम सुनेंगे जो मैं उनके लिये करूंगा और वे सब कल्याण और शान्ति की चर्चा सुनकर जो मैं उन से करूंगा, डरेंगे और थरथराएंगे; वे पृथ्वी की उन जातियों की दृष्टि में मेरे लिये हर्षानेवाले और स्तुति और शोभा का कारण हो जाएंगे॥

१० यहोवा यों कहता है, यह स्थान जिसके विषय तुम लोग कहते हो कि यह तो उजाड़ हो गया है, इस में न तो मनुष्य रह गया है और न पशु, अर्थात् यहूदा देश के नगर और यरूशलेम की सड़कें जो ऐसी सुनसान पड़ी हैं कि उन में न तो कोई मनुष्य रहता है और न कोई पशु, ११ इन्हीं में हर्ष और आनन्द का शब्द, दुल्हे-दुल्हिन का शब्द, और इस बात के कहनेवालों का शब्द फिर सुनाई पड़ेगा कि सेनाओं के यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि यहोवा भला है, और उसकी करुणा सदा की है! और यहोवा के भवन में धन्यवादबलि लानेवालों का भी शब्द सुनाई देगा; क्योंकि मैं इस देश की दशा पहिले की नाईं ज्यों की त्यों कर दूंगा *, यहोवा का यही वचन है। १२ सेनाओं का यहोवा कहता है: सब गांवों समेत यह स्थान जो ऐसा उजाड़ है कि इस में न तो मनुष्य रह गया है और न पशु, इसी में भेड़-बकरियां बैठानेवाले चरवाहे फिर बसेंगे। १३ पहाड़ी देश में और नीचे के देश में, दक्खिन देश के नगरों में, बिन्यामीन देश में, और यरूशलेम के आस पास, निदान यहूदा देश के सब नगरों में भेड़-बकरियां फिर गिन-गिनकर चराई * जाएंगी, यहोवा का यही वचन है॥

१४ यहोवा की यह भी वाणी है, देख, ऐसे दिन आनेवाले हैं कि कल्याण का जो वचन मैं ने इस्राएल और यहूदा के घरानों के विषय में कहा है, उसे पूरा करूंगा। १५ उन दिनों में और उन समयों में मैं दाऊद के वंश में धर्म की एक डाल उगाऊंगा; और वह इस देश में न्याय और धर्म के काम करेगा। १६ उन दिनों में यहूदा बचा रहेगा और यरूशलेम निडर बसा रहेगा; और उसका नाम यह रखा जाएगा अर्थात् यहोवा हमारी धार्मिकता॥

१७ यहोवा यों कहता है, दाऊद के कुल में इस्राएल के घराने की गद्दी पर विराजनेवाले सदैव बने रहेंगे, १८ और लेवीय याजकों के कुलों में प्रतिदिन मेरे लिये होमबलि चढ़ानेवाले और अन्नबलि जलानेवाले और मेलबलि चढ़ानेवाले सदैव बने रहेंगे॥

१९ फिर यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा, यहोवा यों कहता है, २० मैं ने दिन और रात के विषय में जो वाचा बान्धी है, जब तुम उसको ऐसा

---

* मूल में—क्योंकि मैं देश की बंधुआई को लौटा लाऊंगा।

* मूल में—आगे चलाई।

तोड़ सको कि दिन और रात अपने अपने समय में न हों, २१ तब ही जो वाचा मैं ने अपने दास दाऊद के संग बान्धी है टूट सकेगी, कि तेरे वंश की गद्दी पर विराजनेवाले सदैव बने रहेंगे, और मेरी वाचा मेरी सेवा टहल करनेवाले लेवीय याजकों के संग बन्धी रहेगी। २२ जैसा आकाश की सेना की गिनती और समुद्र की बालू के किनकों का परिमाण नहीं हो सकता है उसी प्रकार मैं अपने दास दाऊद के वंश और अपने सेवक लेवियों को बढ़ाकर अनगिनित कर दूंगा।।

२३ यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा, क्या तू ने नहीं देखा २४ कि ये लोग क्या कहते हैं, कि, जो दो कुल यहोवा ने चुन लिए थे उन दोनों से उस ने अब हाथ उठाया है? यह कहकर कि ये मेरी प्रजा को तुच्छ जानते हैं और कि यह जाति उनकी दृष्टि में गिर गई है। २५ यहोवा यों कहता है, यदि दिन और रात के विषय मेरी वाचा अटल न रहे, और यदि आकाश और पृथ्वी के नियम मेरे ठहराए हुए न रह जाएं, २६ तब ही मैं याकूब के वंश से हाथ उठाऊंगा, और इब्राहीम, इसहाक और याकूब के वंश पर प्रभुता करने के लिये अपने दास दाऊद के वंश में से किसी को फिर न ठहराऊंगा। परन्तु इसके विपरीत मैं उन पर दया करके उनको बंधुआई से लौटा लाऊंगा।।

३४ जब बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर अपनी सारी सेना समेत और पृथ्वी के जितने राज्य उसके वश में थे, उन सभों के लोगों समेत यरूशलेम और उसके सब गांवों से लड़ रहा था, तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा, २ इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, जाकर यहूदा के राजा सिदकिय्याह से कह, यहोवा यों कहता है, कि देख, मैं इस नगर को बाबुल के राजा के वश में कर देने पर हूं, और वह इसे फुंकवा देगा। ३ और तू उसके हाथ से न बचेगा, निश्चय पकड़ा जाएगा और उसके वश में कर दिया जाएगा; और तेरी आंखें बाबुल के राजा को देखेंगी, और तुम आम्हने-साम्हने बातें करोगे; और तू बाबुल को जाएगा। ४ तौभी हे यहूदा के राजा सिदकिय्याह, यहोवा का यह भी वचन सुन जिसे यहोवा तेरे विषय में कहता है, कि तू तलवार से मारा न जाएगा। ५ तू शान्ति के साथ मरेगा। और जैसा तेरे पितरों के लिये अर्थात् जो तुझ से पहिले राजा थे, उनके लिये सुगन्ध द्रव्य जलाया गया, वैसा ही तेरे लिये भी जलाया जाएगा; और लोग यह कहकर, हाय मेरे प्रभु! तेरे लिये छाती पीटेंगे, यहोवा की यही वाणी है।।

६ ये सब वचन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता ने यहूदा के राजा सिदकिय्याह से यरूशलेम में उस समय कहे, ७ जब बाबुल के राजा की सेना यरूशलेम से और यहूदा के जितने नगर बच गए थे, उन से अर्थात् लाकीश और अजेका से लड़ रही थी; क्योंकि यहूदा के जो गढ़वाले नगर थे उन में से केवल वे ही रह गए थे।।

८ यहोवा का वह वचन यिर्मयाह के पास उस समय आया जब सिदकिय्याह राजा ने सारी प्रजा से जो यरूशलेम में थी यह वाचा बन्धाई कि दासों के स्वाधीन होने का प्रचार किया जाए, ९ कि सब लोग अपने अपने दास-दासी को जो इब्री

वा इब्रिन हों स्वाधीन करके जाने दें, और कोई अपने यहूदी भाई से फिर अपनी सेवा न कराए। १० तब सब हाकिमों और सारी प्रजा ने यह प्रण किया कि हम अपने अपने दास-दासियों को स्वतंत्र कर देंगे और फिर उन से अपनी सेवा न कराएंगे; सो उस प्रण के अनुसार उनको स्वतंत्र कर दिया। ११ परन्तु इसके बाद वे फिर गए और जिन दास-दासियों को उन्हों ने स्वतंत्र करके जाने दिया था उनको फिर अपने वश में लाकर दास और दासी बना लिया। १२ तब यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा, १३ इस्राएल का परमेश्वर यहोवा तुम से यों कहता है, जिस समय में तुम्हारे पितरों को दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल ले आया, उस समय में ने आप उन से यह कहकर वाचा बान्धी १४ कि तुम्हारा जो इब्री भाई तुम्हारे हाथ में बेचा जाए उसको तुम सातवें बरस में छोड़ देना; छः बरस तो वह तुम्हारी सेवा करे परन्तु इसके बाद तुम उसको स्वतंत्र करके अपने पास से जाने देना। परन्तु तुम्हारे पितरों ने मेरी न सुनी, न मेरी ओर कान लगाया। १५ तुम अभी फिरे तो थे और अपने अपने भाई को स्वतंत्र कर देने का प्रचार कराके जो काम मेरी दृष्टि में भला है उसे तुम ने किया भी था, और जो भवन मेरा कहलाता है उस में मेरे साम्हने वाचा भी बान्धी थी; १६ पर तुम भटक गए और मेरा नाम इस रीति से अशुद्ध किया कि जिन दास-दासियों को तुम स्वतंत्र करके उनकी इच्छा पर छोड़ चुके थे उन्हें तुम ने फिर अपने वश में कर लिया है, और वे फिर तुम्हारे दास-दासियां बन गए हैं। १७ इस कारण यहोवा यों कहता है कि तुम ने जो मेरी आज्ञा के अनुसार अपने अपने भाई के स्वतंत्र होने का प्रचार नहीं किया, सो यहोवा का यह वचन है, सुनो, मैं तुम्हारे इस प्रकार से स्वतंत्र होने का प्रचार करता हूं कि तुम तलवार, मरी और महंगी में पड़ोगे; और मैं ऐसा करूंगा कि तुम पृथ्वी के राज्य राज्य में मारे मारे फिरोगे। १८ और जो लोग मेरी वाचा का उल्लंघन करते हैं और जो प्रण उन्हों ने मेरे साम्हने और बछड़े को दो भाग करके उसके दोनों भागों के बीच होकर किया परन्तु उसे पूरा न किया, १९ अर्थात् यहूदा देश और यरूशलेम नगर के हाकिम, खोजे, याजक और साधारण लोग जो बछड़े के भागों के बीच होकर गए थे, २० उनको मैं उनके शत्रुओं अर्थात् उनके प्राण के खोजियों के वश में कर दूंगा और उनकी लोथ आकाश के पक्षियों और मैदान के पशुओं का आहार हो जाएंगी। २१ और मैं यहूदा के राजा सिदकिय्याह और उसके हाकिमों को उनके शत्रुओं और उनके प्राण के खोजियों अर्थात् बाबुल के राजा की सेना के वश में कर दूंगा जो तुम्हारे साम्हने से चली गई है। २२ यहोवा का यह वचन है कि देखो, मैं उनको आज्ञा देकर इस नगर के पास लौटा ले आऊंगा और वे लड़कर इसे ले लेंगे और फूंक देंगे; और यहूदा के नगरों को मैं ऐसा उजाड़ दूंगा कि कोई उन में न रहेगा॥

३५ योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य में यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह के

पास पहुंचा : २ रेकाबियों के घराने के पास जाकर उन से बातें कर और उन्हें यहोवा के भवन की एक कोठरी में ले जाकर दाखमधु पिला। ३ तब मैं ने याजन्याह को जो हबस्सिन्याह का पोता और यिर्मयाह का पुत्र था, और उसके भाइयों और सब पुत्रों को, निदान रेकाबियों के सारे घराने को साथ लिया। ४ और मैं उनको परमेश्वर के भवन में, यिग्दल्याह के पुत्र हानान, जो परमेश्वर का एक जन था, उसकी कोठरी में ले आया जो हाकिमों की उस कोठरी के पास थी और शल्लूम के पुत्र डेवढ़ी के रखवाले मासेयाह की कोठरी के ऊपर थी। ५ तब मैं ने रेकाबियों के घराने को दाखमधु से भरे हुए हंडे और कटोरे देकर कहा, दाखमधु पीओ। ६ उन्हों ने कहा, हम दाखमधु न पीएंगे क्योंकि रेकाब के पुत्र योनादाब ने जो हमारा पुरखा था हम को यह आज्ञा दी थी कि तुम कभी दाखमधु न पीना; न तुम, न तुम्हारे पुत्र। ७ न घर बनाना, न बीज बोना, न दाख की बारी लगाना, और न उनके अधिकारी होना; परन्तु जीवन भर तम्बुओं ही में रहना जिस से जिस देश में तुम परदेशी हो, उस में बहुत दिन तक जीते रहो। ८ इसलिये हम रेकाब के पुत्र अपने पुरखा योनादाब की बात मानकर, उसकी सारी आज्ञाओं के अनुसार चलते हैं, न हम और न हमारी स्त्रियां वा पुत्र-पुत्रियां कभी दाखमधु पीती हैं, ९ और न हम घर बनाकर उन में रहते हैं। हम न दाख की बारी, न खेत, और न बीज रखते हैं; १० हम तम्बुओं ही में रहा करते हैं, और अपने पुरखा योनादाब की बात मानकर उसकी सारी आज्ञाओं के अनुसार काम करते हैं। ११ परन्तु जब बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने इस देश पर चढ़ाई की, तब हम ने कहा, चलो, कसदियों और अरामियों के दलों के डर के मारे यरूशलेम में जाएं। इस कारण हम अब यरूशलेम में रहते हैं।।

१२ तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा। १३ इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि जाकर यहूदा देश के लोगों और यरूशलेम नगर के निवासियों से कह, यहोवा की यह वाणी है, क्या तुम शिक्षा मानकर मेरी न सुनोगे? १४ देखो, रेकाब के पुत्र योनादाब ने जो आज्ञा अपने वंश को दी थी कि तुम दाखमधु न पीना सो तो मानी गई है यहां तक कि आज के दिन भी वे लोग कुछ नहीं पीते, वे अपने पुरखा की आज्ञा मानते हैं; पर यद्यपि मैं तुम से बड़े यत्न से कहता आया हूं, तौभी तुम ने मेरी नहीं सुनी। १५ मैं तुम्हारे पास अपने सारे दास नबियों को बड़ा यत्न करके* यह कहने को भेजता आया हूं कि अपनी बुरी चाल से फिरो, और अपने काम सुधारो, और दूसरे देवताओं के पीछे जाकर उनकी उपासना मत करो तब तुम इस देश में जो मैं ने तुम्हारे पितरों को दिया था और तुम को भी दिया है, बसने पाओगे। पर तुम ने मेरी ओर कान नहीं लगाया न मेरी सुनी है। १६ देखो रेकाब के पुत्र योनादाब के वंश ने तो अपने पुरखा की आज्ञा को मान लिया पर तुम ने मेरी नहीं सुनी। १७ इसलिये सेनाओं का परमेश्वर यहोवा, जो इस्राएल

* मूल में—तड़के उठकर।

का परमेश्वर है, यों कहता है कि देखो, यहूदा देश और यरूशलेम नगर के सारे निवासियों पर जितनी विपत्ति डालने की मैं ने चर्चा की है वह उन पर अब डालता हूं; क्योंकि मैं ने उनको सुनाया पर उन्हों ने नहीं सुना, मैं ने उनको बुलाया पर उन्हों ने उत्तर न दिया ।।

१८ और रेकाबियों के घराने से यिर्मयाह ने कहा, इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा तुम से यों कहता है, इसलिये कि तुम ने जो अपने पुरखा योनादाब की आज्ञा मानी, वरन उसकी सब आज्ञाओं को मान लिया और जो कुछ उस ने कहा उसके अनुसार काम किया है, १९ इसलिये इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है, रेकाब के पुत्र योनादाब के वंश में सदा ऐसा जन पाया जाएगा जो मेरे सम्मुख खड़ा रहे ।।

३६ फिर योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के चौथे बरस में यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा, २ एक पुस्तक लेकर जितने वचन मैं ने तुझ से योशिय्याह के दिनों से लेकर अर्थात् जब मैं तुझ से बातें करने लगा उस समय से आज के दिन तक इस्राएल और यहूदा और सब जातियों के विषय में कहे हैं, सब को उस में लिख। ३ क्या जाने यहूदा का घराना उस सारी विपत्ति का समाचार सुनकर जो मैं उन पर डालने की कल्पना कर रहा हूं अपनी बुरी चाल से फिरे और मैं उनके अधर्म और पाप को क्षमा करूं। ४ सो यिर्मयाह ने नेरिय्याह के पुत्र बारूक को बुलाया, और बारूक ने यहोवा के सब वचन जो उस ने यिर्मयाह से कहे थे, उसके मुख से सुनकर पुस्तक में लिख दिए। ५ फिर यिर्मयाह ने बारूक को आज्ञा दी और कहा, मैं तो बन्धा हुआ हूं, मैं यहोवा के भवन में नहीं जा सकता। ६ सो तू उपवास के दिन यहोवा के भवन में जाकर उसके जो वचन तू ने मुझ से सुनकर लिखे हैं, पुस्तक में से लोगों को पढ़कर सुनाना, और जितने यहूदी लोग अपने अपने नगरों से आएंगे, उनको भी पढ़कर सुनाना। ७ क्या जाने वे यहोवा से गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करें और अपनी अपनी बुरी चाल से फिरें; क्योंकि जो क्रोध और जलजलाहट यहोवा ने अपनी इस प्रजा पर भड़काने को कहा है, वह बड़ी है। ८ यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता की इस आज्ञा के अनुसार नेरिय्याह के पुत्र बारूक ने, यहोवा के भवन में उस पुस्तक में से उसके वचन पढ़कर सुनाए ।।

९ और योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के पांचवें बरस के नौवें महीने में यरूशलेम में जितने लोग थे, और यहूदा के नगरों से जितने लोग यरूशलेम में आए थे, उन्हों ने यहोवा के साम्हने उपवास करने का प्रचार किया। १० तब बारूक ने यहोवा के भवन में सब लोगों को शापान के पुत्र गमर्याह जो प्रधान था, उसकी कोठरी में जो ऊपर के आंगन में यहोवा के भवन के नये फाटक के पास थी, यिर्मयाह के सब वचन पुस्तक में से पढ़ सुनाए ।।

११ तब शापान के पुत्र गमर्याह के बेटे मीकायाह ने यहोवा के सारे वचन पुस्तक में से सुने। १२ और वह राजभवन के प्रधान की कोठरी में उतर गया, और क्या देखा कि वहां एलीशामा प्रधान और

शमायाह का पुत्र दलायाह और अबबोर का पुत्र एलनातान और शापान का पुत्र गमर्याह और हनन्याह का पुत्र सिदकिय्याह और सब हाकिम बैठे हुए हैं। १३ और मीकायाह ने जितने वचन उस समय सुने, जब बारूक ने पुस्तक में से लोगों को पढ़ सुनाए थे, वे सब वर्णन किए। १४ उन्हें सुनकर सब हाकिमों ने यहूदी को जो नतन्याह का पुत्र और शेलेम्याह का पोता और कूशी का परपोता था, बारूक के पास यह कहने को भेजा, कि जिस पुस्तक में से तू ने सब लोगों को पढ़ सुनाया है, उसे अपने हाथ में लेता आ। सो नेरिय्याह का पुत्र बारूक वह पुस्तक हाथ में लिए हुए उनके पास आया। १५ तब उन्हों ने उस से कहा, अब बैठ जा और हमें यह पढ़कर सुना। तब बारूक ने उनको पढ़कर सुना दिया। १६ जब वे उन सब वचनों को सुन चुके, तब थरथराते हुए एक दूसरे को देखने लगे; और उन्हों ने बारूक से कहा, हम निश्चय राजा से इन सब वचनों का वर्णन करेंगे। १७ फिर उन्हों ने बारूक से कहा, हम से कह, क्या तू ने ये सब वचन उसके मुख से सुनकर लिखे? १८ बारूक ने उन से कहा, वह ये सब वचन अपने मुख से मुझे सुनाता गया और मैं इन्हें पुस्तक में स्याही से लिखता गया। १९ तब हाकिमों ने बारूक से कहा, जा, तू अपने आपको और यिर्मयाह को छिपा, और कोई न जानने पाए कि तुम कहां हो। २० तब वे पुस्तक को एलीशामा प्रधान की कोठरी में रखकर राजा के पास आंगन में आए; और राजा को वे सब वचन कह सुनाए। २१ तब राजा ने यहूदी को पुस्तक ले आने के लिये भेजा, उस ने उसे एलीशामा प्रधान की कोठरी में से लेकर राजा को और जो हाकिम राजा के आस पास खड़े थे उनको भी पढ़ सुनाया। २२ राजा शीतकाल के भवन में बैठा हुआ था, क्योंकि नौवां महीना था और उसके साम्हने अंगीठी जल रही थी। २३ जब यहूदी तीन चार पृष्ठ पढ़ चुका, तब उस ने उसे चाकू से काटा और जो आग अंगीठी में थी उस में फेंक दिया; सो अंगीठी की आग में पूरी पुस्तक जलकर भस्म हो गई। २४ परन्तु न कोई डरा और न किसी ने अपने कपड़े फाड़े, अर्थात् न तो राजा ने और न उसके कर्मचारियों में से किसी ने ऐसा किया, जिन्हों ने वे सब वचन सुने थे। २५ एलनातान, और दलायाह, और गमर्याह ने तो राजा से बिनती भी की थी कि पुस्तक को न जलाए, परन्तु उस ने उनकी एक न सुनी। २६ और राजा ने राजपुत्र यरहमेल को और अज्रीएल के पुत्र सरायाह को और अब्देल के पुत्र शेलेम्याह को आज्ञा दी कि बारूक लेखक और यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता को पकड़ लें, परन्तु यहोवा ने उनको छिपा रखा॥

२७ जब राजा ने उन वचनों की पुस्तक को जो बारूक ने यिर्मयाह के मुख से सुन सुनकर लिखी थी, जला दिया, तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा कि २८ फिर एक और पुस्तक लेकर उस में यहूदा के राजा यहोयाकीम की जलाई हुई पहिली पुस्तक के सब वचन लिख दे। २९ और यहूदा के राजा यहोयाकीम के विषय में कह कि यहोवा यों कहता है, तू ने उस पुस्तक को यह कहकर जला दिया है कि तू ने उस में यह क्यों लिखा है कि बाबुल का राजा निश्चय आकर इस देश को नाश करेगा,

और उस में न तो मनुष्य को छोड़ेगा और न पशु को। ३० इसलिये यहोवा यहूदा के राजा यहोयाकीम के विषय में यों कहता है, कि उसका कोई दाऊद की गद्दी पर विराजमान न रहेगा; और उसकी लोथ ऐसी फेंक दी जाएगी कि दिन को घाम में और रात को पाले में पड़ी रहेगी। ३१ और मैं उसको और उसके वंश और कर्मचारियों को उनके अधर्म का दण्ड दूंगा; और जितनी विपत्ति मैं ने उन पर और यरूशलेम के निवासियों और यहूदा के सब लोगों पर डालने को कहा है, और जिसको उन्हों ने सच नहीं माना, उन सब को मैं उन पर डालूंगा। ३२ तब यिर्मयाह ने दूसरी पुस्तक लेकर नेरिय्याह के पुत्र बारूक लेखक को दी, और जो पुस्तक यहूदा के राजा यहोयाकीम ने आग में जला दी थी, उस में के सब वचनों को बारूक ने यिर्मयाह के मुख से सुन सुनकर उस में लिख दिए; और उन वचनों में उनके समान और भी बहुत सी बातें बढ़ा दी गईं॥

३७ और यहोयाकीम के पुत्र कोन्याह के स्थान पर योशिय्याह का पुत्र सिदकिय्याह राज्य करने लगा, क्योंकि बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने उसी को यहूदा देश में राजा ठहराया था। २ परन्तु न तो उस ने, न उसके कर्मचारियों ने, और न साधारण लोगों ने यहोवा के वचनों को माना जो उस ने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था॥

३ सिदकिय्याह राजा ने शेलेम्याह के पुत्र यहूकल और मासेयाह के पुत्र सपन्याह याजक को यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के पास यह कहला भेजा, कि, हमारे निमित्त हमारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना कर। ४ उस समय यिर्मयाह बन्दीगृह में न डाला गया था, और लोगों के बीच आया जाया करता था। ५ उस समय फिरौन की सेना चढ़ाई के लिये मिस्र से निकली; तब कसदी जो यरूशलेम को घेरे हुए थे, उसका समाचार सुनकर यरूशलेम के पास से चले गए। ६ तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के पास पहुंचा, ७ इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, यहूदा के जिस राजा ने तुम को प्रार्थना करने के लिये मेरे पास भेजा है, उस से यों कहो, कि देख, फिरौन की जो सेना तुम्हारी सहायता के लिये निकली है वह अपने देश मिस्र में लौट जाएगी। ८ और कसदी फिर वापिस आकर इस नगर से लड़ेंगे; वे इसको ले लेंगे और फूंक देंगे। ९ यहोवा यों कहता है, यह कहकर तुम अपने अपने मन में धोखा न खाओ कि कसदी हमारे पास से निश्चय चले गए हैं; क्योंकि वे नहीं चले गए। १० क्योंकि यदि तुम ने कसदियों की सारी सेना को जो तुम से लड़ती है, ऐसा मार भी लिया होता कि उन में से केवल घायल लोग रह जाते, तौभी वे अपने अपने तम्बू में से उठकर इस नगर को फूंक देते॥

११ जब कसदियों की सेना फिरौन की सेना के डर के मारे यरूशलेम के पास से कूच कर गई, १२ तब यिर्मयाह यरूशलेम से निकलकर बिन्यामीन के देश की ओर इसलिये जा निकला कि वहां से और लोगों के संग अपना अंश ले। १३ जब वह बिन्यामीन के फाटक में पहुंचा, तब यिरिय्याह नामक पहरुओं का एक सरदार वहां था जो शेलेम्याह का

पुत्र और हनन्याह का पोता था, और उस ने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता को यह कहकर पकड़ लिया, तू कसदियों के पास भागा जाता है। १४ तब यिर्मयाह ने कहा, यह झूठ है; मैं कसदियों के पास नहीं भागा जाता हूं। परन्तु यिरिय्याह ने उसकी एक न मानी, सो वह उसे पकड़कर हाकिमों के पास ले गया। १५ तब हाकिमों ने यिर्मयाह से क्रोधित होकर उसे पिटवाया, और योनातान प्रधान के घर में वन्दी बनाकर डलवा दिया; क्योंकि उन्हों ने उसको साधारण बन्दीगृह बना दिया था ॥

१६ यिर्मयाह उस तलघर में जिस में कई एक कोठरियां थीं, रहने लगा। १७ उसके बहुत दिन बीतने पर सिदकिय्याह राजा ने उसको बुलवा भेजा, और अपने भवन में उस से छिपकर यह प्रश्न किया, क्या यहोवा की ओर से कोई वचन पहुंचा है? यिर्मयाह ने कहा, हां, पहुंचा है। वह यह है, कि तू बाबुल के राजा के वश में कर दिया जाएगा। १८ फिर यिर्मयाह ने सिदकिय्याह राजा से कहा, मैं ने तेरा, तेरे कर्मचारियों का, व तेरी प्रजा का क्या अपराध किया है, कि तुम लोगों ने मुझ को बन्दीगृह में डलवाया है? १९ तुम्हारे जो भविष्यद्वक्ता तुम से भविष्यद्वाणी करके कहा करते थे कि बाबुल का राजा तुम पर और इस देश पर चढ़ाई नहीं करेगा, वे अब कहां है? २० अब, हे मेरे प्रभु, हे राजा, मेरी प्रार्थना ग्रहण कर कि मुझे योनातान प्रधान के घर में फिर न भेज, नहीं तो मैं वहां मर जाऊंगा। २१ तब सिदकिय्याह राजा की आज्ञा से यिर्मयाह पहरे के आंगन में रखा गया, और जब तक नगर की सब रोटी न चुक गई, तब तक उसको रोटीवालों की दूकान में से प्रतिदिन एक रोटी दी जाती थी। और यिर्मयाह पहरे के आंगन में रहने लगा ॥

३८ फिर जो वचन यिर्मयाह सब लोगों से कहता था, उनको मत्तान के पुत्र शपत्याह, पशहूर के पुत्र गदल्याह, शेलेम्याह के पुत्र यूकल और मल्किय्याह के पुत्र पशहूर ने सुना, २ कि, यहोवा यों कहता है कि जो कोई इस नगर में रहेगा वह तलवार, महंगी और मरी से मरेगा; परन्तु जो कोई कसदियों के पास निकल भागे वह अपना प्राण बचाकर जीवित रहेगा। ३ यहोवा यों कहता है, यह नगर बाबुल के राजा की सेना के वश में कर दिया जाएगा और वह इसको ले लेगा। ४ इसलिये उन हाकिमों ने राजा से कहा कि उस पुरुष को मरवा डाल, क्योंकि वह जो इस नगर में बचे हुए योद्धाओं और अन्य सब लोगों से ऐसे ऐसे वचन कहता है जिस से उनके हाथ पांव ढीले हो जाते हैं। क्योंकि वह पुरुष इस प्रजा के लोगों की भलाई नहीं वरन बुराई ही चाहता है। ५ सिदकिय्याह राजा ने कहा, सुनो, वह तो तुम्हारे वश में है; क्योंकि ऐसा नहीं हो सकता कि राजा तुम्हारे विरुद्ध कुछ कर सके। ६ तब उन्हों ने यिर्मयाह को लेकर राजपुत्र मल्किय्याह के उस गड़हे में जो पहरे के आंगन में था, रस्सियों से उतारकर डाल दिया। और उस गड़हे में पानी नहीं केवल दलदल था, और यिर्मयाह कीचड़ में धंस गया ॥

७ उस समय राजा बिन्यामीन के फाटक के पास बैठा था सो जब एबेदमेलेक कूशी ने जो राजभवन में एक खोजा था,

सुना, कि उन्हों ने यिर्मयाह को गड़हे में डाल दिया है—८ तब एबेदमेलेक राजभवन से निकलकर राजा से कहने लगा, ९ हे मेरे स्वामी, हे राजा, उन लोगों ने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता से जो कुछ किया है वह बुरा किया है, क्योंकि उन्हों ने उसको गड़हे में डाल दिया है; वहां वह भूख से मर जाएगा क्योंकि नगर में कुछ रोटी नहीं रही है। १० तब राजा ने एबेदमेलेक कूशी को यह आज्ञा दी कि यहां से तीस पुरुष साथ लेकर यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता को मरने से पहिले गड़हे में से निकाल। ११ सो एबेदमेलेक उतने पुरुषों को साथ लेकर राजभवन के भण्डार के तलघर में गया; और वहां से फटे-पुराने कपड़े और चिथड़े लेकर यिर्मयाह के पास उस गड़हे में रस्सियों से उतार दिए। १२ और एबेदमेलेक कूशी ने यिर्मयाह से कहा, ये पुराने कपड़े और चिथड़े अपनी कांखों में रस्सियों के नीचे रख ले। सो यिर्मयाह ने वैसा ही किया। १३ तब उन्हों ने यिर्मयाह को रस्सियों से खींचकर, गड़हे में से निकाला। और यिर्मयाह पहरे के आंगन में रहने लगा॥

१४ सिदकिय्याह राजा ने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता को यहोवा के भवन के तीसरे द्वार में अपने पास बुलवा भेजा। और राजा ने यिर्मयाह से कहा, मैं तुझ से एक बात पूछता हूं; मुझ से कुछ न छिपा। १५ यिर्मयाह ने सिदकिय्याह से कहा, यदि मैं तुझे बताऊं, तो क्या तू मुझे मरवा न डालेगा? और चाहे मैं तुझे सम्मति भी दूं, तौभी तू मेरी न मानेगा। १६ तब सिदकिय्याह राजा ने अकेले में यिर्मयाह से शपथ खाई, यहोवा जिस ने हमारा यह जीव रचा है, उसके जीवन की सौगन्ध न मैं तो तुझे मरवा डालूंगा, और न उन मनुष्यों के वश में कर दूंगा जो तेरे प्राण के खोजी हैं॥

१७ यिर्मयाह ने सिदकिय्याह से कहा, सेनाओं का परमेश्वर यहोवा जो इस्राएल का परमेश्वर है, वह यों कहता है, यदि तू बाबुल के राजा के हाकिमों के पास सचमुच निकल जाए, तब तो तेरा प्राण बचेगा, और यह नगर फूंका न जाएगा, और तू अपने घराने समेत जीवित रहेगा। १८ परन्तु, यदि तू बाबुल के राजा के हाकिमों के पास न निकल जाए, तो यह नगर कसदियों के वश में कर दिया जाएगा, और वे इसे फूंक देंगे, और तू उनके हाथ से बच न सकेगा। १९ सिदकिय्याह ने यिर्मयाह से कहा, जो यहूदी लोग कसदियों के पास भाग गए हैं, मैं उन से डरता हूं, ऐसा न हो कि मैं उनके वश में कर दिया जाऊं और वे मुझ से ठट्ठा करें। २० यिर्मयाह ने कहा, तू उनके वश में न कर दिया जाएगा; जो कुछ मैं तुझ से कहता हूं उसे यहोवा की बात समझकर मान ले तब तेरा भला होगा, और तेरा प्राण बचेगा। २१ और यदि तू निकल जाना स्वीकार न करे तो जो बात यहोवा ने मुझे दर्शन के द्वारा बताई है, वह यह है: २२ देख, यहूदा के राजा के रनवास में जितनी स्त्रियां रह गई हैं, वे बाबुल के राजा के हाकिमों के पास निकाल कर पहुंचाई जाएंगी, और वे तुझ से कहेंगी, तेरे मित्रों ने तुझे बहकाया, और उनकी इच्छा पूरी हो गई; और जब तेरे पांव कीच में धंस गए तो वे पीछे फिर गए हैं॥

२३ तेरी सब स्त्रियां और लड़केवाले कसदियों के पास निकाल कर पहुंचाए

जाएंगे; और तू भी कसदियों के हाथ से न बचेगा, वरन तू पकड़कर बाबुल के राजा के वश में कर दिया जाएगा और इस नगर के फूंके जाने का कारण तू ही होगा ॥

२४ तब सिदकिय्याह ने यिर्मयाह से कहा, इन बातों को कोई न जानने पाए, तो तू मारा न जाएगा। २५ यदि हाकिम लोग यह सुनकर कि मैं ने तुझ से बातचीत की है तेरे पास आकर कहने लगें, हमें बता कि तू ने राजा से क्या कहा, हम से कोई बात न छिपा, और हम तुझे न मरवा डालेंगे; और यह भी बता, कि राजा ने तुझ से क्या कहा, २६ तो तू उन से कहना, कि मैं ने राजा से गिड़गिड़ाकर बिनती की थी कि मुझे योनातान के घर में फिर वापिस न भेज नहीं तो वहां मर जाऊंगा। २७ फिर सब हाकिमों ने यिर्मयाह के पास आकर पूछा, और जैसा राजा ने उसको आज्ञा दी थी, ठीक वैसा ही उस ने उनको उत्तर दिया। सो वे उस से और कुछ न बोले और न वह भेद खुला। २८ इस प्रकार जिस दिन यरूशलेम ले लिया गया उस दिन तक वह पहरे के आंगन ही में रहा ॥

३९ यहूदा के राजा सिदकिय्याह के राज्य के नौवें वर्ष के दसवें महीने में, बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने अपनी सारी सेना समेत यरूशलेम पर चढ़ाई करके उसे घेर लिया। २ और सिदकिय्याह के राज्य के ग्यारहवें वर्ष के चौथे महीने के नौवें दिन को उस नगर की शहरपनाह तोड़ी गई। ३ सो जब यरूशलेम ले लिया गया, तब नेर्गलसरेसेर, और समगर्नबो, और खोजों का प्रधान सर्सकीम, और मगों का प्रधान नेर्गलसरेसेर आदि, बाबुल के राजा के सब हाकिम बीच के फाटक में प्रवेश करके बैठ गए। ४ जब यहूदा के राजा सिदकिय्याह और सब योद्धाओं ने उन्हें देखा तब रात ही रात राजा की बारी के मार्ग से दोनों भीतों के बीच के फाटक से होकर नगर से निकलकर भाग चले और अराबा का मार्ग लिया। ५ परन्तु कसदियों की सेना ने उनको खदेड़कर सिदकिय्याह को यरीहो के अराबा में जा लिया और उनको बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के पास हमात देश के रिबला में ले गए; और उस ने वहां उसके दण्ड की आज्ञा दी। ६ तब बाबुल के राजा ने सिदकिय्याह के पुत्रों को उसकी आंखों के साम्हने रिबला में घात किया; और सब कुलीन यहूदियों को भी घात किया। ७ उस ने सिदकिय्याह की आंखों को फुड़वा डाला और उसको बाबुल ले जाने के लिये बेड़ियों से जकड़वा रखा। ८ कसदियों ने राजभवन और प्रजा के घरों को आग लगाकर फूंक दिया, और यरूशलेम की शहरपनाह को ढा दिया। ९ तब जल्लादों का प्रधान नबूजरदान प्रजा के बचे हुओं को जो नगर में रह गए थे, और जो लोग उसके पास भाग आए थे उनको अर्थात् प्रजा में से जितने रह गए उन सब को बंधुआ करके बाबुल को ले गया। १० परन्तु प्रजा में से जो ऐसे कंगाल थे जिनके पास कुछ न था, उनको जल्लादों का प्रधान नबूजरदान यहूदा देश में छोड़ गया, और जाते समय उनको दाख की बारियां और खेत दे दिए ॥

११ बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने जल्लादों के प्रधान नबूजरदान को यिर्मयाह

के विषय में यह आज्ञा दी, १२ कि उसको लेकर उस पर कृपादृष्टि बनाए रखना और उसकी कुछ हानि न करना; जैसा वह तुझ से कहे वैसा ही उस से व्यवहार करना। १३ सो जल्लादों के प्रधान नबूजरदान और खोजों के प्रधान नबूसजबान और मगों के प्रधान नेर्गलसरेसेर ज्योतिषियों के सरदार, १४ और बाबुल के राजा के सब प्रधानों ने, लोगों को भेजकर यिर्मयाह को पहरे के आंगन में से बुलवा लिया और गदल्याह को जो अहीकाम का पुत्र और शापान का पोता था सौंप दिया कि वह उसे घर पहुंचाए। तब से वह लोगों के साथ रहने लगा ॥

१५ जब यिर्मयाह पहरे के आंगन में कैद था, तब यहोवा का यह वचन उसके पास पहुचा, १६ कि, जाकर एबेदमेलेक कूशी से कह कि इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा तुझ से यों कहता है, देख, मैं अपने वे वचन जो मैं ने इस नगर के विषय में कहे हैं इस प्रकार पूरा करूंगा कि इसका कुशल न होगा, हानि ही होगी, और उस समय उनका पूरा होना तुझे दिखाई पड़ेगा। १७ परन्तु यहोवा की यह वाणी है कि उस समय मे तुझे बचाऊंगा, और जिन मनुष्यों से तू भय खाता है, तू उनके वश में नहीं किया जाएगा। १८ क्योंकि मैं तुझे निश्चय बचाऊंगा, और तू तलवार से न मरेगा, तेरा प्राण बचा रहेगा, यहोवा की यह वाणी है। यह इस कारण होगा, कि तू ने मुझ पर भरोसा रखा है ॥

४० जब जल्लादों के प्रधान नबूजरदान ने यिर्मयाह को रामा में उन सब यरूशलेमी और यहूदी बंधुओं के बीच हथकड़ियों से बन्धा हुआ पाकर जो बाबुल जाने को थे छुड़ा लिया, उसके बाद यहोवा का वचन उसके पास पहुंचा। २ जल्लादों के प्रधान नबूजरदान ने यिर्मयाह को उस समय अपने पास बुला लिया, और कहा, इस स्थान पर यह जो विपत्ति पड़ी है वह तेरे परमेश्वर यहोवा की कही हुई थी। ३ और जैसा यहोवा ने कहा था वैसा ही उस ने पूरा भी किया है। तुम लोगों ने जो यहोवा के विरुद्ध पाप किया और उसकी आज्ञा नहीं मानी, इस कारण तुम्हारी यह दशा हुई है। ४ अब मैं तेरी इन हथकड़ियों को काटे देता हूं, और यदि मेरे संग बाबुल में जाना तुझे अच्छा लगे तो चल, वहां मैं तुझ पर कृपादृष्टि रखूंगा; और यदि मेरे संग बाबुल जाना तुझे न भाए, तो यहीं रह जा। देख, सारा देश तेरे साम्हने पड़ा है, जिधर जाना तुझे अच्छा और ठीक जंचे उधर ही चला जा। ५ वह वहीं था कि नबूजरदान ने फिर उस से कहा, गदल्याह जो अहीकाम का पुत्र और शापान का पोता है, जिसको बाबुल के राजा ने यहूदा के नगरों पर अधिकारी ठहराया है, उसके पास लौट जा और उसके संग लोगों के बीच रह, वा जहां कहीं तुझे जाना ठीक जान पड़े वहीं चला जा। सो जल्लादों के प्रधान ने उसको सीधा और कुछ द्रव्य भी देकर बिदा किया। ६ तब यिर्मयाह अहीकाम के पुत्र गदल्याह के पास मिस्पा को गया, और वहां उन लोगों के बीच जो देश में रह गए थे, रहने लगा ॥

७ योद्धाओं के जो दल दिहात में थे, जब उनके सब प्रधानों ने अपने जनों समेत सुना कि बाबुल के राजा ने अहीकाम के पुत्र गदल्याह को देश का अधिकारी

ठहराया है, और देश के जिन कंगाल लोगों को वह बाबुल को नहीं ले गया, क्या पुरुष, क्या स्त्री, क्या बालबच्चे, उन सभों को उसे सौंप दिया है, ८ तब नतन्याह का पुत्र इश्माएल, कारेह के पुत्र योहानान, योनातान और तन्हूसेत का पुत्र सरायाह, एपै नतोपावासी के पुत्र और किसी माकावासी का पुत्र याजन्याह अपने जनों समेत गदल्याह के पास मिस्पा में आए। ९ और गदल्याह जो अहीकाम का पुत्र और शापान का पोता था, उस ने उन से और उनके जनों से शपथ खाकर कहा, कसदियों के आधीन रहने से मत डरो। इसी देश में रहते हुए बाबुल के राजा के आधीन रहो तब तुम्हारा भला होगा। १० मैं तो इसीलिये मिस्पा में रहता हूं कि जो कसदी लोग हमारे यहां आएं, उनके साम्हने हाज़िर हुआ करूं; परन्तु तुम दाखमधु और धूपकाल के फल और तेल को बटोरके अपने बरतनों में रखो और अपने लिए हुए नगरों में बसे रहो। ११ फिर जब मोआबियों, अम्मोनियों, एदोमियों और अन्य सब जातियों के बीच रहनेवाले सब यहूदियों ने सुना कि बाबुल के राजा ने यहूदियों में से कुछ लोगों को बचा लिया और उन पर गदल्याह को जो अहीकाम का पुत्र और शापान का पोता है अधिकारी नियुक्त किया है, १२ तब सब यहूदी जिन जिन स्थानों में तितर-बितर हो गए थे, वहां से लौटकर यहूदा देश के मिस्पा नगर में गदल्याह के पास आए, और बहुत दाखमधु और धूपकाल के फल बटोरने लगे॥

१३ तब कारेह का पुत्र योहानान और मैदान में रहनेवाले योद्धाओं के सब दलों के प्रधान मिस्पा में गदल्याह के पास आकर कहने लगे, क्या तू जानता है १४ कि अम्मोनियों के राजा बालीस ने नतन्याह के पुत्र इश्माएल को तुझे जान से मारने के लिये भेजा है? परन्तु अहीकाम के पुत्र गदल्याह ने उनकी प्रतीति न की। १५ फिर कारेह के पुत्र योहानान ने गदल्याह से मिस्पा में छिपकर कहा, मुझे जाकर नतन्याह के पुत्र इश्माएल को मार डालने दे और कोई इसे न जानेगा। वह क्यों तुझे मार डाले, और जितने यहूदी लोग तेरे पास इकट्ठे हुए हैं वे क्यों तितर-बितर हो जाएं और बचे हुए यहूदी क्यों नाश हों? १६ अहीकाम के पुत्र गदल्याह ने कारेह के पुत्र योहानान से कहा, ऐसा काम मत कर, तू इश्माएल के विषय में झूठ बोलता है॥

४१ और सातवें महीने में ऐसा हुआ कि इश्माएल जो नतन्याह का पुत्र और एलीशामा का पोता और राजवंश का और राजा के प्रधान पुरुषों में से था, सो दस जन संग लेकर मिस्पा में अहीकाम के पुत्र गदल्याह के पास आया। वहां मिस्पा में उन्हों ने एक संग भोजन किया। २ तब नतन्याह के पुत्र इश्माएल और उसके संग के दस जनों ने उठकर गदल्याह को, जो अहीकाम का पुत्र और शापान का पोता था, और जिसे बाबुल के राजा ने देश का अधिकारी ठहराया था, उसे तलवार से ऐसा मारा कि वह मर गया। ३ और इश्माएल ने गदल्याह के संग जितने यहूदी मिस्पा में थे, और जो कसदी योद्धा वहां मिले, उन सभों को मार डाला॥

४ गदल्याह के मार डालने के दूसरे दिन जब कोई इसे न जानता था, ५ तब

शकेम और शीलो और शोमरोन से अस्सी पुरुष डाढ़ी मुड़ाए, वस्त्र फाड़े, शरीर चीरे हुए और हाथ में अन्नबलि और लोबान लिए हुए, यहोवा के भवन में आने को आते दिखाई दिए। ६ तब नतन्याह का पुत्र इश्माएल उन से मिलने को मिस्पा से निकला, और रोता हुआ चला। जब वह उन से मिला, तब कहा, अहीकाम के पुत्र गदल्याह के पास चलो। ७ जब वे उस नगर में आए तब नतन्याह के पुत्र इश्माएल ने अपने संगी जनों समेत उनको घात करके गड़हे में फेंक दिया। ८ परन्तु उन में से दस मनुष्य इश्माएल से कहने लगे, हम को न मार; क्योंकि हमारे पास मैदान में रखा हुआ गेहूं, जव, तेल और मधु है। सो उस ने उन्हें छोड़ दिया और उनके भाइयों के साथ नहीं मारा॥

९ जिस गड़हे में इश्माएल ने उन लोगों की सब लोथें जिन्हें उस ने मारा था, गदल्याह की लोथ के पास फेंक दी थी, (यह वही गड़हा है जिसे आसा राजा ने इस्राएल के राजा बाशा के डर के मारे खुदवाया था), उसको नतन्याह के पुत्र इश्माएल ने मारे हुओं से भर दिया। १० तब जो लोग मिस्पा में बचे हुए थे, अर्थात् राजकुमारियां और जितने और लोग मिस्पा में रह गए थे जिन्हें जल्लादों के प्रधान नबूजरदान ने अहीकाम के पुत्र गदल्याह को सौंप दिया था, उन सभों को नतन्याह का पुत्र इश्माएल बंधुआ करके अम्मोनियों के पास ले जाने को चला॥

११ जब कारेह के पुत्र योहानान ने और योद्धाओं के दलों के उन सब प्रधानों ने जो उसके संग थे, सुना, कि नतन्याह के पुत्र इश्माएल ने यह सब बुराई की है, १२ तब वे सब जनों को लेकर नतन्याह के पुत्र इश्माएल से लड़ने को निकले और उसको उस बड़े जलाशय के पास पाया जो गिबोन में है। १३ कारेह के पुत्र योहानान को, और दलों के सब प्रधानों को देखकर जो उसके संग थे, इश्माएल के साथ जो लोग थे, वे सब आनन्दित हुए। १४ और जितने लोगों को इश्माएल मिस्पा से बंधुआ करके लिए जाता था, वे पलटकर कारेह के पुत्र योहानान के पास चले आए। १५ परन्तु नतन्याह का पुत्र इश्माएल आठ पुरुष समेत योहानान के हाथ से बचकर अम्मोनियों के पास चला गया। १६ तब प्रजा में से जितने बच गए थे, अर्थात् जिन योद्धाओं, स्त्रियों, बालबच्चों और खोजों को कारेह का पुत्र योहानान, अहीकाम के पुत्र गदल्याह के मिस्पा में मारे जाने के बाद नतन्याह के पुत्र इश्माएल के पास से छुड़ाकर गिबोन से फेर ले आया था, उनको वह अपने सब संगी दलों के प्रधानों समेत लेकर चल दिया। १७ और बेतलेहेम के निकट जो किम्हाम की सराय है, उस में वे इसलिये टिक गए कि मिस्र में जाएं। १८ क्योंकि वे कसदियों से डरते थे; इसका कारण यह था कि अहीकाम का पुत्र गदल्याह जिसे बाबुल के राजा ने देश का अधिकारी ठहराया था, उसे नतन्याह के पुत्र इश्माएल ने मार डाला था॥

४२ तब कारेह का पुत्र योहानान, होशायाह का पुत्र याजन्याह, दलों के सब प्रधान और छोटे से लेकर बड़े तक, सब लोग यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के निकट

आकर कहने लगे, २ हमारी बिनती ग्रहण करके अपने परमेश्वर यहोवा से हम सब बचे हुओं के लिये प्रार्थना कर, क्योंकि तू अपनी आंखों से देख रहा है कि हम जो पहले बहुत थे, अब थोड़े ही बच गए हैं। ३ इसलिये प्रार्थना कर कि तेरा परमेश्वर यहोवा हम को बताए कि हम किस मार्ग से चलें, और कौन सा काम करें? ४ सो यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता ने उन से कहा, मैं ने तुम्हारी सुनी है; देखो, मैं तुम्हारे वचनों के अनुसार तुम्हारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करूंगा और जो उत्तर यहोवा तुम्हारे लिये देगा मैं तुम को बताऊंगा; मैं तुम से कोई बात न छिपाऊंगा। ५ तब उन्हों ने यिर्मयाह से कहा, यदि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे द्वारा हमारे पास कोई वचन पहुंचाए और हम उसके अनुसार न करें, तो यहोवा हमारे बीच में सच्चा और विश्वास-योग्य साक्षी ठहरे। ६ चाहे वह भली बात हो, चाहे बुरी, तौभी हम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा, जिसके पास हम तुझे भेजते हैं, मानेंगे, क्योंकि जब हम अपने परमेश्वर यहोवा की बात मानें तब हमारा भला हो।।

७ दस दिन के बीतने पर यहोवा का वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा। ८ तब उस ने कारेह के पुत्र योहानान को, उसके साथ के दलों के प्रधानों को, और छोटे से लेकर बड़े तक जितने लोग थे, उन सभों को बुलाकर उन से कहा, ९ इस्राएल का परमेश्वर यहोवा, जिसके पास तुम ने मुझ को इसलिये भेजा कि मैं तुम्हारी बिनती उसके आगे कह सुनाऊं, वह यों कहता है, १० यदि तुम इसी देश में रह जाओ, तब तो मैं तुम को नाश नहीं करूंगा वरन बनाए रखूंगा; और तुम्हें न उखाड़ूंगा, वरन रोपे रखूंगा; क्योंकि तुम्हारी जो हानि मैं ने की है उस से मैं पछताता हूं। ११ तुम बाबुल के राजा से डरते हो, सो उस से मत डरो; यहोवा की यह वाणी है, उस से मत डरो, क्योंकि मैं तुम्हारी रक्षा करने और तुम को उसके हाथ से बचाने के लिये तुम्हारे साथ हूं। १२ मैं तुम पर दया करूंगा, कि वह भी तुम पर दया करके तुम को तुम्हारी भूमि पर फिर से बसा देगा। १३ परन्तु यदि तुम यह कहकर कि हम इस देश में न रहेंगे अपने परमेश्वर यहोवा की बात न मानो, और कहो कि हम तो मिस्र देश जाकर वहीं रहेंगे, १४ क्योंकि वहां न हम युद्ध देखेंगे, न नरसिंगे का शब्द सुनेंगे और न हम को भोजन की घटी होगा, तो, हे बचे हुए यहूदियो, यहोवा का यह वचन सुनो: १५ इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है, कि यदि तुम सचमुच मिस्र की ओर जाने का मुंह करो, और वहां रहने के लिये जाओ, १६ तो ऐसा होगा कि जिस तलवार से तुम डरते हो, वही वहां मिस्र देश में तुम को जा लेगी, और जिस महंगी का भय तुम खाते हो, वह मिस्र में तुम्हारा पीछा न छोड़ेगी; और वहीं तुम मरोगे। १७ जितने मनुष्य मिस्र में रहने के लिये उसकी ओर मुंह करें, वे सब तलवार, महंगी और मरी से मरेंगे, और जो विपत्ति मैं उनके बीच डालूंगा, उस से कोई बचा न रहेगा।।

१८ इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है, कि जिस प्रकार से मेरा कोप और जलजलाहट यरूशलेम के निवासियों पर भड़क उठी थी, उसी

प्रकार से यदि तुम मिस्र में जाओ, तो मेरी जलजलाहट तुम्हारे ऊपर ऐसी भड़क उठेगी कि लोग चकित होंगे, और तुम्हारी उपमा देकर शाप दिया करेंगे और तुम्हारी निन्दा किया करेंगे। तुम इस स्थान को फिर न देखने पाओगे। १९ हे बचे हुए यहूदियो, यहोवा ने तुम्हारे विषय में कहा है, मिस्र में मत जाओ। तुम निश्चय जानो कि मैं ने आज तुम को चिताकर यह बात बता दी है। २० क्योंकि जब तुम ने मुझ को यह कहकर अपने परमेश्वर यहोवा के पास भेज दिया कि हमारे निमित्त हमारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना कर और जो कुछ हमारा परमेश्वर यहोवा कहे उसी के अनुसार हम को बता और हम वैसा ही करेंगे, तब तुम जान बूझके अपने ही को धोखा देते थे। २१ देखो, मैं आज तुम को बताए देता हूं, परन्तु, और जो कुछ तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम से कहने के लिये मुझ को भेजा है, उस में से तुम कोई बात नहीं मानते। २२ अब तुम निश्चय जानो, कि जिस स्थान में तुम परदेशी होके रहने की इच्छा करते हो, उस में तुम तलवार, महंगी और मरी से मर जाओगे।।

४३ जब यिर्मयाह उनके परमेश्वर यहोवा के वे सब वचन कह चुका, जिनके कहने के लिये उस ने उसको उन सब लोगों के पास भेजा था, २ तब होशाया के पुत्र अजर्याह और कारेह के पुत्र योहानान और सब अभिमानी पुरुषों ने यिर्मयाह से कहा, तू झूठ बोलता है। हमारे परमेश्वर यहोवा ने तुझे यह कहने के लिये नहीं भेजा कि मिस्र में रहने के लिये मत जाओ; ३ परन्तु नेरिय्याह का पुत्र बारूक तुझ को हमारे विरुद्ध उसकाता है कि हम कसदियों के हाथ में पड़ें और वे हम को मार डालें वा बंधुआ करके बाबुल को ले जाएं। ४ सो कारेह का पुत्र योहानान और दलों के सब प्रधानों और सब लोगों ने यहोवा की यह आज्ञा न मानी कि वे यहूदा के देश में ही रहें। ५ और कारेह का पुत्र योहानान और दलों के और सब प्रधान उन सब यहूदियों को जो अन्यजातियों के बीच तितर-बितर हो गए थे, और उन में से लौटकर यहूदा देश में रहने लगे थे, वे उनको ले गए—६ पुरुष, स्त्री, बालबच्चे, राजकुमारियां, और जितने प्राणियों को जल्लादों के प्रधान नबूजरदान ने गदल्याह को जो अहीकाम का पुत्र और शापान का पोता था, सौंप दिया था, उनको और यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता और नेरिय्याह के पुत्र बारूक को वे ले गए; ७ और यहोवा की आज्ञा न मानकर वे मिस्र देश में तहपन्हेस नगर तक आ गए।।

८ तब यहोवा का यह वचन तहपन्हेस में यिर्मयाह के पास पहुंचा: ९ अपने हाथ से बड़े पत्थर ले, और यहूदी पुरुषों के साम्हने उस ईंट के चबूतरे में जो तहपन्हेस में फिरौन के भवन के द्वार के पास है, चूना फेर के छिपा दे, १० और उन पुरुषों से कह, कि इस्राएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा, यों कहता है, देखो, मैं बाबुल के राजा अपने सेवक नबूकदनेस्सर को बुलवा भेजूंगा, और वह अपना सिंहासन इन पत्थरों के ऊपर जो मैं ने छिपा रखे हैं, रखेगा; और अपना छत्र इनके ऊपर तनवाएगा। ११ वह आके मिस्र देश को मारेगा, तब जो मरनेवाले हों वे मृत्यु के वश में, जो बंधुए होनेवाले हों वे

बंधुआई में, और जो तलवार के लिये हैं वे तलवार के वश में कर दिए जाएंगे। १२ में मिस्र के देवालयों में आग लगाऊंगा; और वह उन्हें फुंकवा देगा और बंधुआई में ले जाएगा; और जैसा कोई चरवाहा अपना वस्त्र ओढ़ता है, वैसा ही वह मिस्र देश को समेट लेगा; और तब बेखटके चला जाएगा। १३ वह मिस्र देश के सूर्यगृह के खम्भों को तुड़वा डालेगा; और मिस्र के देवालयों को आग लगाकर फुंकवा देगा ॥

४४ जितने यहूदी लोग मिस्र देश में मिग्दोल, तहपन्हेस और नोप नगरों और पत्रोस देश में रहते थे, उनके विषय यिर्मयाह के पास यह वचन पहुंचा, २ इस्राएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि जो विपत्ति मैं यरूशलेम और यहूदा के सब नगरों पर डाल चुका हूं, वह सब तुम लोगों ने देखी है। देखो, वे आज के दिन कैसे उजड़े हुए और निर्जन हैं, ३ क्योंकि उनके निवासियों ने वह बुराई की जिस से उन्हों ने मुझे रिस दिलाई थी वे जाकर दूसरे देवताओं के लिये धूप जलाते थे और उनकी उपासना करते थे, जिन्हें न तो तुम और न तुम्हारे पुरखा जानते थे। ४ तौभी मैं अपने सब दास भविष्यद्वक्ताओं को बड़े यत्न से* यह कहने के लिये तुम्हारे पास भेजता रहा कि यह घृणित काम मत करो, जिस से मैं घृणा रखता हूं। ५ पर उन्हों ने मेरी न सुनी और न मेरी ओर कान लगाया कि अपनी बुराई से फिरें और दूसरे देवताओं के लिये धूप न जलाएं। ६ इस कारण मेरी जलजलाहट और कोप की आग यहूदा के नगरों और यरूशलेम की सड़कों पर भड़क* गई; और वे आज के दिन तक उजाड़ और सुनसान पड़े हैं। ७ अब यहोवा, सेनाओं का परमेश्वर, जो इस्राएल का परमेश्वर है, यों कहता है, तुम लोग क्यों अपनी यह बड़ी हानि करते हो, कि क्या पुरुष, क्या स्त्री, क्या बालक, क्या दूधपिउवा बच्चा, तुम सब यहूदा के बीच से नाश किए जाओ, और कोई न रहे? ८ क्योंकि इस मिस्र देश में जहां तुम परदेशी होकर रहने के लिये आए हो, तुम अपने कामों के द्वारा, अर्थात् दूसरे देवताओं के लिये धूप जलाकर मुझे रिस दिलाते हो जिस से तुम नाश हो जाओगे और पृथ्वी भर की सब जातियों के लोग तुम्हारी जाति की नामधराई करेंगे और तुम्हारी उपमा देकर शाप दिया करेंगे। ९ जो जो बुराइयां तुम्हारे पुरखा, यहूदा के राजा और उनकी स्त्रियां, और तुम्हारी स्त्रियां, वरन तुम आप यहूदा देश और यरूशलेम की सड़कों में करते थे, क्या उसे तुम भूल गए हो? १० आज के दिन तक उनका मन चूर नहीं हुआ और न वे डरते हैं; और न मेरी उस व्यवस्था और उन विधियों पर चलते हैं जो मैं ने तुम्हारे पूर्वजों को और तुम को भी सुनवाई हैं। ११ इस कारण इस्राएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा, यों कहता है, देखो, मैं तुम्हारे विरुद्ध होकर तुम्हारी हानि करूंगा, ताकि सब यहूदियों का अन्त कर दूं। १२ और बचे हुए यहूदी जो हठ करके मिस्र देश में आकर रहने लगे हैं,

* मूल में—तड़के उठकर।

* मूल में—उण्डेली।

वे सब मिट जाएंगे*; इस मिस्र देश में छोटे से लेकर बड़े तक वे तलवार और महंगी के द्वारा मरके मिट जाएंगे; और लोग उन्हें कोसेंगे और चकित होंगे; और उनकी उपमा देकर शाप दिया करेंगे और निन्दा भी करेंगे। १३ सो जैसा मैं ने यरूशलेम को तलवार, महंगी और मरी के द्वारा दण्ड दिया है, वैसा ही मिस्र देश में रहनेवालों को भी दण्ड दूंगा, १४ कि जो बचे हुए यहूदी मिस्र देश में परदेशी होकर रहने के लिये आए हैं, यद्यपि वे यहूदा देश में रहने के लिये लौटने की बड़ी अभिलाषा रखते हैं, तौभी उन में से एक भी बचकर वहां लौटने न पाएगा; केवल कुछ ही भागे हुओं को छोड़ कोई भी वहां न लौटने पाएगा ।।

१५ तब मिस्र देश के पत्रोस में रहनेवाले जितने पुरुष जानते थे कि उनकी स्त्रियां दूसरे देवताओं के लिये धूप जलाती हैं, और जितनी स्त्रियां बड़ी मण्डली में पास खड़ी थी, उन सभों ने यिर्मयाह को यह उत्तर दिया, १६ जो वचन तू ने हम को यहोवा के नाम से सुनाया है, उसको हम नहीं सुनने की। १७ जो जो मन्नतें हम मान चुके हैं उन्हें हम निश्चय पूरी करेंगी, हम स्वर्ग की रानी के लिये धूप जलाएंगे और तपावन देंगे, जैसे कि हमारे पुरखा लोग और हम भी अपने राजाओं और और हाकिमों समेत यहूदा के नगरों में और यरूशलेम की सड़कों में करते थे; क्योंकि उस समय हम पेट भरके खाते और भले चंगे रहते और किसी विपत्ति में नहीं पड़ते थे। १८ परन्तु जब से हम ने स्वर्ग की रानी के लिये धूप जलाना और तपावन देना छोड़ दिया, तब से हम को सब वस्तुओं की घटी है; और हम तलवार और महंगी के द्वारा मिट चले हैं। १९ और स्त्रियों ने कहा, जब हम स्वर्ग की रानी के लिये धूप जलातीं और चन्द्राकार रोटियां बनाकर तपावन देती थीं, तब अपने अपने पति के बिन जाने ऐसा नहीं करती थीं ।।

२० तब यिर्मयाह ने, क्या स्त्री, क्या पुरुष, जितने लोगों ने यह उत्तर दिया, उन सब से कहा, २१ तुम्हारे पुरखा और तुम जो अपने राजाओं और हाकिमों और लोगों समेत यहूदा देश के नगरों और यरूशलेम की सड़कों में धूप जलाते थे, क्या वह यहोवा के ध्यान में नहीं आया? २२ क्या उस ने उसको स्मरण न किया? सो जब यहोवा तुम्हारे बुरे और सब घृणित कामों को और अधिक न सह सका, तब तुम्हारा देश उजड़कर निर्जन और सुनसान हो गया, यहां तक कि लोग उसकी उपमा देकर शाप दिया करते हैं, जैसे कि आज होता है। २३ क्योंकि तुम धूप जलाकर यहोवा के विरुद्ध पाप करते और उसकी नहीं सुनते थे, और उसकी व्यवस्था और विधियों और चितौनियों के अनुसार नहीं चले, इस कारण यह विपत्ति तुम पर आ पड़ी है, जैसे कि आज है ।।

२४ फिर यिर्मयाह ने उन सब लोगों से और उन सब स्त्रियों से कहा, हे सारे मिस्र देश में रहनेवाले यहूदियो, यहोवा का वचन सुनो : २५ इस्राएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा, यों कहता है, कि तुम ने और तुम्हारी स्त्रियों ने मन्नतें मानी* और यह कहकर उन्हें पूरी करते

* मूल में—मैं उन्हें लूंगा और वे सब मिट जावेंगे।

* मूल में—अपने अपने मुंह से कहा।

हो कि हम ने स्वर्ग की रानी के लिये धूप जलाने और तपावन देने की जो जो मन्नतें मानी हैं उन्हें हम अवश्य ही पूरी करेंगे; और तुम ने अपने हाथों से ऐसा ही किया। सो अब तुम अपनी अपनी मन्नतों को मानकर पूरी करो! २६ परन्तु हे मिस्र देश में रहनेवाले सारे यहूदियो यहोवा का वचन सुनो: सुनो, मैं ने अपने बड़े नाम की शपथ खाई है कि अब पूरे मिस्र देश में कोई यहूदी मनुष्य मेरा नाम लेकर फिर कभी यह न कहने पाएगा कि "प्रभु यहोवा के जीवन की सौगन्ध"। २७ सुनो, अब मैं उनकी भलाई नहीं, हानि ही की चिन्ता* करूंगा; सो मिस्र देश में रहनेवाले सब यहूदी, तलवार और महंगी के द्वारा मिटकर नाश हो जाएंगे जब तक कि उनका सर्वनाश न हो जाए। २८ और जो तलवार से बचकर और मिस्र देश से लौटकर यहूदा देश में पहुंचेंगे, वे थोड़े ही होंगे; और मिस्र देश में रहने के लिये आए हुए सब यहूदियों में से जो बच पाएंगे, वे जान लेंगे कि किसका वचन पूरा हुआ, मेरा वा उनका। २९ इस बात का मैं यह चिन्ह देता हूं, यहोवा की यह वाणी है, कि मैं तुम्हें इसी स्थान में दण्ड दूंगा, जिस से तुम जान लोगे कि तुम्हारी हानि करने में मेरे वचन निश्चय पूरे होंगे। ३० यहोवा यों कहता है, देखो, जैसा मैं ने यहूदा के राजा सिदकिय्याह को उसके शत्रु अर्थात् उसके प्राण के खोजी बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के हाथ में कर दिया, वैसे ही मैं मिस्र के राजा फिरौन होप्रा को भी उसके शत्रुओं के, अर्थात् उसके प्राण के खोजियों के हाथ में कर दूंगा॥

* मूल में—जागता हुआ।

४५ योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के चौथे वर्ष में, जब नेरिय्याह का पुत्र बारूक यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता से भविष्यद्वाणी के ये वचन सुनकर पुस्तक में लिख चुका था, २ तब उस ने उस से यह वचन कहा, कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा, तुझ से यों कहता है, ३ हे बारूक, तू ने कहा, हाय मुझ पर! क्योंकि यहोवा ने मुझे दुःख पर दुःख दिया है*; मैं कराहते कराहते थक गया और मुझे कुछ चैन नहीं मिलता। ४ तू यों कह, यहोवा यों कहता है, कि देख, इस सारे देश को जिसे मैं ने बनाया था, उसे मैं आप ढा दूंगा, और जिन को मैं ने रोपा था, उन्हें स्वयं उखाड़ फेंकूंगा। ५ इसलिये सुन, क्या तू अपने लिये बड़ाई खोज रहा है? उसे मत खोज; क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, कि मैं सारे मनुष्यों पर विपत्ति डालूंगा; परन्तु जहां कहीं तू जाएगा वहां मैं तेरा प्राण बचाकर तुझे जीवित रखूंगा†॥

४६ अन्यजातियों के विषय यहोवा का जो वचन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के पास पहुंचा, वह यह है॥

२ मिस्र के विषय। मिस्र के राजा फिरौन निको की सेना जो परात महानद के तीर पर कर्कमीश में थी, और जिसे बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के चौथे वर्ष में जीत लिया था, ३ उस सेना के विषय:—ढालें और फरियां

* मेरी पीड़ा पर खेद बढ़ाया है।
† मूल में—तेरे प्राण को लूट समझकर तुझे दूंगा।

तैयार करके लड़ने को निकट चले आओ। ४ घोड़ों को जुतवाओ; और हे सवारो, घोड़ों पर चढ़कर टोप पहिने हुए खड़े हो जाओ; भालों को पैना करो, झिलमों को पहिन लो! ५ मैं क्यों उनको व्याकुल देखता हूं? वे विस्मित होकर पीछे हट गए। उनके शूरवीर गिराए गए और उतावली करके भाग गए; वे पीछे देखते भी नहीं; क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, कि चारों ओर भय ही भय है! ६ न वेग चलनेवाला भागने पाएगा और न वीर बचने पाएगा; क्योंकि उत्तर दिशा में परात महानद के तीर पर वे सब ठोकर खाकर गिर पड़े।।

७ यह कौन है, जो नील नदी की नाईं, जिसका जल महानदों का सा उछलता है, बढ़ा चला आता है? ८ मिस्र नील नदी की नाईं बढ़ता है, उसका जल महानदों का सा उछलता है। वह कहता है, मैं चढ़कर पृथ्वी को भर दूंगा, मैं नगरों को उनके निवासियों समेत नाश कर दूंगा। ९ हे मिस्री सवारो आगे बढ़ो, हे रथियो बहुत ही वेग से चलाओ! हे ढाल पकड़नेवाले कूशी और पूती वीरो, हे धनुर्धारी लूदियो चले आओ। १० क्योंकि वह दिन सेनाओं के यहोवा प्रभु के बदला लेने का दिन होगा जिस में वह अपने द्रोहियों से बदला लेगा। सो तलवार खाकर तृप्त होगी, और उनका लोहू पीकर छक जाएगी। क्योंकि, उत्तर के देश में परात महानद के तीर पर, सेनाओं के यहोवा प्रभु का यज्ञ है। ११ हे मिस्र की कुमारी कन्या, गिलाद को जाकर बलसान औषधि ले; तू व्यर्थ ही बहुत इलाज करती है, तू चंगी नहीं होगी! १२ क्योंकि सब जाति के लोगों ने सुना है कि तू नीच हो गई और पृथ्वी तेरी चिल्लाहट से भर गई है; वीर से वीर ठोकर खाकर गिर पड़े; वे दोनों एक संग गिर गए हैं।।

१३ यहोवा ने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता से यह वचन भी कहा कि बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर क्योंकर आकर मिस्र देश को मार लेगा: १४ मिस्र में वर्णन करो, और मिग्दोल में सुनाओ; हां, और नोप और तहपन्हेस में सुनाकर यह कहो कि खड़े होकर तैयार हो जाओ; क्योंकि तुम्हारे चारों ओर सब कुछ तलवार खा गई है। १५ तेरे बलवन्त जन क्यों बिलाय गए हैं? वे इस कारण खड़े न रह सके क्योंकि यहोवा ने उन्हें ढकेल दिया। १६ उस ने बहुतों को ठोकर खिलाई, वे एक दूसरे पर गिर पड़े; और वे कहने लगे, उठो, चलो, हम अन्धेर करनेवाले की तलवार के डर के मारे अपने अपने लोगों और अपनी अपनी जन्मभूमि में फिर लौट जाएं। १७ वहां वे पुकार के कहते हैं, मिस्र का राजा फिरौन सत्यानाश हुआ; क्योंकि उस ने अपना वहुमूल्य अवसर खो दिया।।

१८ वह राजाधिराज जिसका नाम सेनाओं का यहोवा है, उसकी यह वाणी है कि मेरे जीवन की सौगन्ध, जैसा ताबोर अन्य पहाड़ों में, और जैसा कर्मेल समुद्र के किनारे है, वैसा ही वह आएगा। १९ हे मिस्र की रहनेवाली पुत्री! बंधुआई में जाने का सामान तैयार कर, क्योंकि नोप नगर उजाड़ और ऐसा भस्म हो जाएगा कि उस में कोई भी न रहेगा।।

२० मिस्र बहुत ही सुन्दर बछिया तो है, परन्तु उत्तर दिशा से नाश चला आता है, वह आ ही गया है। २१ उसके जो

सिपाही किराये पर आए हैं वह पोसे हुए बछड़ों के समान हैं; उन्हों ने मुंह मोड़ा, और एक संग भाग गए, वे खड़े नहीं रहे; क्योंकि उनकी विपत्ति का दिन और दण्ड पाने का समय आ गया ॥

२२ उसकी आहट सर्प के भागने की सी होगी; क्योंकि वे वृक्षों के काटनेवालों की सेना और कुल्हाड़ियां लिए हुए उसके विरुद्ध चढ़ आएंगे। २३ यहोवा की यह वाणी है, कि चाहे उसका वन बहुत ही घना हो, परन्तु वे उसको काट डालेंगे, क्योंकि वे टिड्डियों से भी अधिक अनगिनित हैं। २४ मिस्री कन्या लज्जित होगी, वह उत्तर दिशा के लोगों के वश में कर दी जाएगी ॥

२५ इस्राएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा कहता है, देखो, मैं नगरवासी आमोन और फिरौन राजा और मिस्र को उसके सब देवताओं और राजाओं समेत और फिरौन को उन समेत जो उस पर भरोसा रखते हैं दण्ड देने पर हूं। २६ मैं उनको बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर और उसके कर्मचारियों के वश में कर दूंगा जो उनके प्राण के खोजी हैं। उसके बाद वह प्राचीनकाल की नाईं फिर बसाया जाएगा, यहोवा की यह वाणी है ॥

२७ परन्तु हे मेरे दास याकूब, तू मत डर, और हे इस्राएल, विस्मित न हो; क्योंकि मैं तुझे और तेरे वंश को बंधुआई के दूर देश से छुड़ा ले आऊंगा। याकूब लौटकर चैन और सुख से रहेगा, और कोई उसे डराने न पाएगा। २८ हे मेरे दास याकूब, यहोवा की यह वाणी है, कि तू मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूं। और यद्यपि मैं उन सब जातियों का अन्त कर डालूंगा जिन में मैं ने तुझे बरबस निकाल दिया है, तौभी तेरा अन्त न करूंगा। मैं तेरी ताड़ना विचार करके करूंगा, परन्तु तुझे किसी प्रकार से निर्दोष न ठहराऊंगा ॥

४७ फिरौन के ग़ज्जा नगर को जीत लेने से पहिले यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के पास पलिश्तियों के विषय यहोवा का यह वचन पहुंचा: २ यहोवा यों कहता है कि देखो, उत्तर दिशा से उमण्डनेवाली नदी देश को उस सब समेत जो उस में है, और निवासियों समेत नगर को डुबो लेगी। तब मनुष्य चिल्लाएंगे, वरन देश के सब रहनेवाले हाय-हाय करेंगे। ३ शत्रुओं के बलवन्त घोड़ों की टाप, रथों के वेग चलने और उनके पहियों के चलने का कोलाहल सुनकर पिता के हाथ-पांव ऐसे ढीले पड़ जाएंगे, कि वह मुंह मोड़कर अपने लड़कों को भी न देखेगा। ४ क्योंकि सब पलिश्तियों के नाश होने का दिन आता है; और सोर और सिदोन के सब बचे हुए सहायक मिट जाएंगे। क्योंकि यहोवा पलिश्तियों को जो कप्तोर नाम समुद्र तीर के बचे हुए रहनेवाले हैं, उनको भी नाश करने पर है। ५ ग़ज्जा के लोग सिर मुड़ाए हैं, अश्कलोन जो पलिश्तियों के नीचान में अकेला रह गया है, वह भी मिटाया गया है; तू कब तक अपनी देह चीरता रहेगा ?

६ हे यहोवा की तलवार! तू कब तक शान्त न होगी ? तू अपनी मियान में घुस जा, शान्त हो, और थमी रह! ७ तू क्योंकर थम सकती है ? क्योंकि यहोवा ने तुझ को आज्ञा देकर अश्कलोन और समुद्रतीर के विरुद्ध ठहराया है ॥

४८ मोआब के विषय इस्राएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा यों कहता है : नबू पर हाय, क्योंकि वह नाश हो गया! किर्यातैम की आशा टूट गई, वह ले लिया गया है; ऊंचा गढ़ निराश और विस्मित हो गया है। २ मोआब की प्रशंसा जाती रही। हेशबोन में उसकी हानि की कल्पना की गई है : आओ, हम उसको ऐसा नाश करें कि वह राज्य न रह जाए। हे मदमेन, तू भी सुनसान हो जाएगा; तलवार तेरे पीछे पड़ेगी ।।

३ होरोनैम से चिल्लाहट का शब्द सुनो! नाश और बड़े दुःख का शब्द सुनाई देता है! ४ मोआब का सत्यानाश हो रहा है; उसके नन्हे बच्चों की चिल्लाहट सुन पड़ी। ५ क्योंकि लूहीत की चढ़ाई में लोग लगातार रोते हुए चढ़ेंगे; और होरोनैम की उतार में नाश की चिल्लाहट का संकट हुआ* है। ६ भागो! अपना अपना प्राण बचाओ! उस अधमूए पेड़ के समान हो जाओ जो जंगल में होता है! ७ क्योंकि तू जो अपने कामों और सम्पत्ति पर भरोसा रखता है, इस कारण तू भी पकड़ा जाएगा; और कमोश देवता भी अपने याजकों और हाकिमों समेत बंधुआई में जाएगा। ८ यहोवा के वचन के अनुसार नाश करनेवाले तुम्हारे हर एक नगर पर चढ़ाई करेंगे, और कोई नगर न बचेगा; नीचानवाले और पहाड़ पर की चौरस भूमिवाले दोनों नाश किए जाएंगे ।।

९ मोआब के पंख लगा दो ताकि वह उड़कर दूर हो जाए; क्योंकि उसके नगर ऐसे उजाड़ हो जाएंगे कि उन में कोई भी न बसने पाएगा ।।

१० शापित है वह जो यहोवा का काम आलस्य से करता है; और वह भी जो अपनी तलवार लोहू बहाने से रोक रखता है ।।

११ मोआब बचपन ही से सुखी है, उसके नीचे तलछट है, वह एक बरतन से दूसरे बरतन में उण्डेला नहीं गया और न बंधुआई में गया; इसलिये उसका स्वाद उस में स्थिर है, और उसकी गन्ध ज्यों की त्यों बनी रहती है। १२ इस कारण यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आएंगे, कि मैं लोगों को उसके उण्डेलने के लिये भेजूंगा, और वे उसको उण्डेलेंगे, और जिन घड़ों में वह रखा हुआ है, उनको छूछे करके फोड़ डालेंगे। १३ तब जैसे इस्राएल के घराने को बेतेल से लज्जित होना पड़ा, जिस पर वे भरोसा रखते थे, वैसे ही मोआबी लोग कमोश से लज्जित होंगे ।।

१४ तुम कैसे कह सकते हो कि हम वीर और पराक्रमी योद्धा हैं? १५ मोआब तो नाश हुआ, उसके नगर भस्म हो गए और उसके चुने हुए जवान घात होने को उतर गए, राजाधिराज, जिसका नाम सेनाओं का यहोवा है, उसकी यही वाणी है। १६ मोआब की विपत्ति निकट आ गई, और उसके संकट में पड़ने का दिन बहुत ही वेग से आता है। १७ उसके आस पास के सब रहनेवालो, और उसकी कीर्त्ति के सब जाननेवालो, उसके लिये विलाप करो; कहो हाय! वह मजबूत सोंटा और सुन्दर छड़ी कैसे टूट गई है?

* मूल में—[illegible] गया।

१८ हे दीबोन की रहनेवाली* तू अपना विभव छोड़कर प्यासी बैठी रह! क्योंकि मोआब के नाश करनेवाले ने तुझ पर चढ़ाई करके तेरे दृढ़ गढ़ों को नाश किया है। १९ हे अरोएर की रहनेवाली* तू मार्ग में खड़ी होकर ताकती रह! जो भागता है उस से, और जो बच निकलती है उस से पूछ, कि, क्या हुआ है? २० मोआब की आशा टूटेगी, वह विस्मित हो गया; तुम हाय हाय करो और चिल्लाओ; अर्नोन में भी यह बताओ कि मोआब नाश हुआ है॥

२१ चौरस भूमि के देश में होलोन, २२ यहसा, मेपात, दीबोन, नबो, बेतदिबलातैम, २३ और किर्यातैम, बेतगामूल, बेतमोन, २४ और करिय्योत, बोस्रा, और क्या दूर क्या निकट, मोआब देश के सारे नगरों में दण्ड की आज्ञा पूरी हुई है। २५ यहोवा की यह वाणी है, मोआब का सींग कट गया, और भुजा टूट गई है॥

२६ उसको मतवाला करो, क्योंकि उस ने यहोवा के विरुद्ध बड़ाई मारी है; इसलिये मोआब अपनी छांट में लोटेगा, और ठट्ठों में उड़ाया जाएगा। २७ क्या तू ने भी इस्राएल को ठट्ठों में नहीं उड़ाया? क्या वह चोरों के बीच पकड़ा गया था कि जब तू उसकी चर्चा करता तब तू सिर हिलाता था?

२८ हे मोआब के रहनेवालो अपने अपने नगर को छोड़कर ढांग की दरार में बसो! उस पण्डुकी के समान हो जो गुफा के मुंह की एक ओर घोंसला बनाती हो। २९ हम ने मोआब के गर्व के विषय में सुना है कि वह अत्यन्त अभिमानी है; उसका गर्व, अभिमान और अहंकार, और उसका मन फूलना प्रसिद्ध है। ३० यहोवा की यह वाणी है, मैं उसके रोष को भी जानता हूं कि वह व्यर्थ ही है, उसके बड़े बोल से कुछ बन न पड़ा। ३१ इस कारण मैं मोआबियों के लिये हाय-हाय करूंगा; हां मैं सारे मोआबियों के लिये चिल्लाऊंगा; कीर्हेरेस के लोगों के लिये विलाप किया जाएगा। ३२ हे सिबमा की दाखलता, मैं तुम्हारे लिये याजेर से भी अधिक विलाप करूंगा! तेरी डालियां तो ताल के पार बढ़ गईं, वरन याजेर के ताल तक भी पहुंची थीं; पर नाश करनेवाला तेरे धूपकाल के फलों पर, और तोड़ी हुई दाखों पर भी टूट पड़ा है। ३३ फलवाली बारियों से और मोआब के देश से आनन्द और मगन होना उठ गया है; मैं ने ऐसा किया कि दाखरस के कुण्डों में कुछ दाखमधु न रहा; लोग फिर ललकारते हुए दाख न रौंदेंगे; जो ललकार होनेवाली है, वह अब नहीं होगी॥

३४ हेशबोन की चिल्लाहट सुनकर लोग एलाले और यहस तक, और सोआर से होरोनैम और एग्लतशलीशिया तक भी चिल्लाते हुए भागे चले गए हैं। क्योंकि निम्रीम का जल भी सूख गया है। ३५ और यहोवा की यह वाणी है, कि मैं ऊंचे स्थान पर चढ़ावा चढ़ाना, और देवताओं के लिये धूप जलाना, दोनों को मोआब में बन्द कर दूंगा। ३६ इस कारण मेरा मन मोआब और कीर्हेरेस के लोगों के लिये बांसुली सा रो रोकर आलापता है, क्योंकि जो कुछ उन्हों ने कमाकर बचाया है, वह नाश हो गया है।

* मूल में—दीबोन की रहनेहारी बेटी।

३७ क्योंकि सब के सिर मुंड़े गए और सब की दाढ़ियां नोची गईं; सब के हाथ चीरे हुए, और सब की कमरों में टाट बन्धा हुआ है। ३८ मोआब के सब घरों की छतों पर और सब चौकों में रोना पीटना हो रहा है; क्योंकि मैं ने मोआब को तुच्छ बरतन की नाईं तोड डाला है यहोवा की यह वाणी है। ३९ मोआब कैसे विस्मित हो गया! हाय, हाय, करो! क्योंकि उस ने कैसे लज्जित होकर पीठ फेरी है! इस प्रकार मोआब के चारों ओर के सब रहनेवाले उसका ठट्ठा करेंगे और विस्मित ही जाएंगे। ४० क्योंकि यहोवा यों कहता है, देखो, वह उकाब सा उड़ेगा और मोआब के ऊपर अपने पंख फैलाएगा। ४१ करिय्योत ले लिया गया, और गढ़वाले नगर दूसरों के वश में पड़ गए। उस दिन मोआबी वीरों के मन जच्चा स्त्री के से हो जाएंगे; ४२ और मोआब ऐसा तितर-बितर हो जाएगा कि उसका दल टूट जाएगा, क्योंकि उस ने यहोवा के विरुद्ध बड़ाई मारी है। ४३ यहोवा की यह वाणी है कि हे मोआब के रहनेवाले, तेरे लिये भय और गड़हा और फन्दे ठहराए गए हैं। ४४ जो कोई भय से भागे वह गड़हे में गिरेगा, और जो कोई गड़हे में से निकले, वह फन्दे में फंसेगा। क्योंकि मैं मोआब के दण्ड का दिन उस पर ले आऊंगा, यहोवा की यही वाणी है॥

४५ जो भागे हुए हैं वह हेशबोन में शरण लेकर खड़े हो गए हैं; परन्तु हेशबोन से आग और सीहोन के बीच से लौ निकली, जिस से मोआब देश के कोने और बलवैयों के चोण्डे भस्म हो गए हैं। ४६ हे मोआब तुझ पर हाय! कमोश की प्रजा नाश हो गई; क्योंकि तेरे स्त्री-पुरुष दोनों बंधुआई में गए हैं। ४७ तौभी यहोवा की यह वाणी है, कि अन्त के दिनों में मैं मोआब को बंधुआई से लौटा ले आऊंगा। मोआब के दण्ड का वचन यहीं तक हुआ॥

४९ अम्मोनियों के विषय यहोवा यों कहता है, क्या इस्राएल के पुत्र नहीं हैं? क्या उसका कोई वारिस नहीं रहा? फिर मल्काम क्यों गाद के देश का अधिकारी हुआ? और उसकी प्रजा क्यों उसके नगरों में बसने पाई है? २ यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आनेवाले हैं, कि मैं अम्मोनियों के रब्बा नाम नगर के विरुद्ध युद्ध की ललकार सुनवाऊंगा, और वह उजड़कर खण्डहर हो जाएगा, और उसकी बस्तियां * फूंक दी जाएगी; तब जिन लोगों ने इस्राएलियों के देश को अपना लिया है, उनके देश को इस्राएली अपना लेंगे, यहोवा का यही वचन है॥

३ हे हेशबोन हाय-हाय कर; क्योंकि ऐ नगर नाश हो गया। हे रब्बा की बेटियो चिल्लाओ! और कमर में टाट बान्धो, छाती पीटती हुई बाड़ों में इधर उधर दौड़ो! क्योंकि मल्काम अपने याजकों और हाकिमों समेत बंधुआई में जाएगा। ४ हे भटकनेवाली बेटी! तू अपने देश की तराइयों पर, विशेष कर अपने बहुत ही उपजाऊ तराई पर क्यों फूलती है? तू क्यों यह कहकर अपने रखे हुए धन पर भरोसा रखती है, कि मेरे विरुद्ध कौन चढ़ाई कर सकेगा? ५ प्रभु सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, देख, मैं तेरे चारों ओर के सब रहनेवालों की ओर से

* मूल में—बेटियां।

तेरे मन में भय उपजाने पर हूं, और तेरे लोग अपने अपने साम्हने की ओर ढकेल दिए जाएंगे; और जब वे मारे मारे फिरेंगे, तब कोई उन्हें इकट्ठा न करेगा। ६ परन्तु उसके बाद मैं अम्मोनियों को बंधुआई से लौटा लाऊंगा; यहोवा की यही वाणी है ।।

७ एदोम के विषय, सेनाओं का यहोवा यों कहता है, क्या तेमान में अब कुछ बुद्धि नहीं रही? क्या वहां के ज्ञानियों की युक्ति निष्फल हो गई? क्या उनकी बुद्धि जाती रही है? ८ हे ददान के रहनेवालो भागो, लौट जाओ, वहां छिपकर बसो! क्योंकि जब मैं एसाव को दण्ड देने लगूंगा, तब उस पर भारी विपत्ति पड़ेगी। ९ यदि दाख के तोड़नेवाले तेरे पास आते, तो क्या वे कहीं कहीं दाख न छोड़ जाते? और यदि चोर रात को आते तो क्या वे जितना चाहते उतना धन लूटकर न ले जाते? १० क्योंकि मैं ने एसाव को उघारा है, मैं ने उसके छिपने के स्थानों को प्रगट किया है; यहां तक कि वह छिप न सका। उसके वंश और भाई और पड़ोसी सब नाश हो गए हैं और उसका अन्त हो गया। ११ अपने अनाथ बालकों को छोड़ जाओ, मैं उनको जिलाऊंगा; और तुम्हारी विधवाएं मुझ पर भरोसा रखें। १२ क्योंकि यहोवा यों कहता है, देखो, जो इसके योग्य न थे कि कटोरे में से पीएं, उनको तो निश्चय पीना पड़ेगा, फिर क्या तू किसी प्रकार से निर्दोष ठहरकर बच जाएगा? तू निर्दोष ठहरकर न बचेगा, तुझे अवश्य ही पीना पड़ेगा। १३ क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, मैं ने अपनी सौगन्ध खाई है, कि बोस्रा ऐसा उजड़ जाएगा कि लोग चकित होंगे, और उसकी उपमा देकर निन्दा किया करेंगे और शाप दिया करेंगे; और उसके सारे गांव सदा के लिये उजाड़ हो जाएंगे ।।

१४ मैं ने यहोवा की ओर से समाचार सुना है, वरन जाति जाति में यह कहने को एक दूत भी भेजा गया है, इकट्ठे होकर एदोम पर चढ़ाई करो; और उस से लड़ने के लिये उठो। १५ क्योंकि मैं ने तुझे जातियों में छोटा, और मनुष्यों में तुच्छ कर दिया है। १६ हे चट्टान की दरारों में बसे हुए, हे पहाड़ी की चोटी पर किला बनानेवाले*! तेरे भयानक रूप और मन के अभिमान ने तुझे धोखा दिया है। चाहे तू उकाब की नाईं अपना बसेरा ऊंचे स्थान पर बनाए, तौभी मैं वहां से तुझे उतार लाऊंगा, यहोवा की यही वाणी है। १७ एदोम यहां तक उजड़ जाएगा कि जो कोई उसके पास से चले वह चकित होगा, और उसके सारे दुःखों पर ताली बजाएगा। १८ यहोवा का यह वचन है, कि जैसी सदोम और अमोरा और उनके आस पास के नगरों के उलट जाने से उनकी दशा हुई थी, वैसी ही उसकी दशा होगी, वहां न कोई मनुष्य रहेगा, और न कोई आदमी उस में टिकेगा। १९ देखो, वह सिंह की नाईं यरदन के आस पास के घने जंगलों से† सदा की चराई पर चढ़ेगा, और मैं उनको उसके साम्हने से झट भगा दूंगा; तब जिसको मैं चुन लूं, उसको उन पर अधिकारी ठहराऊंगा। मेरे तुल्य कौन है?

---

* मूल में—चोटी को पकड़नेवाली।

† मूल में—यरदन की बढ़ाई से।

और कौन मुझ पर मुक़द्दमा चलाएगा * ? वह चरवाहा कहां है जो मेरा साम्हना कर सकेगा ? २० देखो, यहोवा ने एदोम के विरुद्ध क्या युक्ति की है; और तेमान के रहनेवालों के विरुद्ध कैसी कल्पना की है ? निश्चय वह भेड़-बकरियों के बच्चों को घसीट ले जाएगा; वह चराई को भेड़-बकरियों से निश्चय खाली कर देगा। २१ उनके गिरने के शब्द से पृथ्वी कांप उठेगी; और ऐसी चिल्लाहट मचेगी जो लाल समुद्र तक सुनाई पड़ेगी। २२ देखो, वह उकाब की नाईं निकलकर उड़ आएगा, और बोस्रा पर अपने पंख फैलाएगा, और उस दिन एदोमी शूरवीरों का मन जच्चा स्त्री का सा हो जाएगा ॥

२३ दमिश्क के विषय, हमात और अर्पद की आशा टूटी है, क्योंकि उन्हों ने बुरा समाचार सुना है, वे गल गए हैं; समुद्र पर चिन्ता है, वह शान्त नहीं हो सकता। २४ दमिश्क बलहीन होकर भागने को फिरती है, परन्तु कंपकंपी ने उसे पकड़ा है, जच्चा की सी पीड़ें उसे उठी हैं। २५ हाय, वह नगर, वह प्रशंसा योग्य पुरी, जो मेरे हर्ष का कारण है, वह छोड़ा जाएगा! २६ सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, कि उसके जवान चौकों में गिराए जाएंगे, और सब योद्धाओं का बोलना बन्द हो जाएगा। २७ और मैं दमिश्क की शहरपनाह में आग लगाऊंगा जिस से बेन्हदद के राजभवन भस्म हो जाएंगे ॥

२८ केदार और हासोर के राज्यों के विषय जिन्हें बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने मार लिया। यहोवा यों कहता है, उठकर केदार पर चढ़ाई करो! पूरबियों को नाश करो! २९ वे उनके डेरे और भेड़-बकरियां ले जाएंगे, उनके तम्बू और सब बरतन उठाकर ऊंटों को भी हांक ले जाएंगे, और उन लोगों से पुकारके कहेंगे, चारों ओर भय ही भय है। ३० यहोवा की यह वाणी है, हे हासोर के रहनेवालो भागो! दूर दूर मारे मारे फिरो, कहीं जाकर छिपके बसो। क्योंकि बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने तुम्हारे विरुद्ध युक्ति और कल्पना की है ॥

३१ यहोवा की यह वाणी है, उठकर उस चैन से रहनेवाली जाति के लोगों पर चढ़ाई करो, जो निडर रहते हैं, और बिना किवाड़ और बेण्डे के यों ही बसे हुए हैं। ३२ उनके ऊंट और अनगिनित गाय-बैल और भेड़-बकरियां लूट में जाएंगी, क्योंकि मैं उनके गाल के बाल मुंड़ानेवालों को उड़ाकर सब दिशाओं * में तितर-बितर करूंगा; और चारों ओर से उन पर विपत्ति लाकर डालूंगा, यहोवा की यह वाणी है। ३३ हासोर गीदड़ों का वासस्थान होगा और सदा के लिये उजाड़ हो जाएगा, वहां न कोई मनुष्य रहेगा, और न कोई आदमी उस में टिकेगा ॥

३४ यहूदा के राजा सिदकिय्याह के राज्य के आरम्भ में यहोवा का यह वचन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के पास एलाम के विषय पहुंचा। ३५ सेनाओं का यहोवा यों कहता है, कि मैं एलाम के धनुष को जो उनके पराक्रम का मुख्य कारण है, तोड़ूंगा; ३६ और मैं आकाश के चारों ओर से वायु बहाकर उन्हें चारों दिशाओं * की ओर यहां तक तितर-बितर करूंगा,

* मूल में—कौन मेरे लिये समय ठहराएगा।

* मूल में—वायुओं।

कि ऐसी कोई जाति न रहेगी जिस में एलामी भागते हुए न आएं। ३७ मैं एलाम को उनके शत्रुओं और उनके प्राण के खोजियों के साम्हने विस्मित करूंगा, और उन पर अपना कोप भड़काकर विपत्ति डालूंगा। और यहोवा की यह वाणी है, कि तलवार को उन पर चलवाते चलवाते मैं उनका अन्त कर डालूंगा; ३८ और मैं एलाम में अपना सिंहासन रखकर उनके राजा और हाकिमों को नाश करूंगा, यहोवा की यही वाणी है। ३९ परन्तु यहोवा की यह भी वाणी है, कि अन्त के दिनों में मैं एलाम को बंधुआई से लौटा ले आऊंगा॥

५० बाबुल और कसदियों के देश के विषय में यहोवा ने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा यह वचन कहा: २ जातियों में बताओ, सुनाओ और झण्डा खड़ा करो; सुनाओ, मत छिपाओ कि बाबुल ले लिया गया, बेल का मुंह काला हो गया, मरोदक विस्मित हो गया। बाबुल की प्रतिमाएं लज्जित हुईं और उसकी बेडौल मूरतें विस्मित हो गईं। ३ क्योंकि उत्तर दिशा से एक जाति उस पर चढ़ाई करके उसके देश को यहां तक उजाड़ कर देगी, कि क्या मनुष्य, क्या पशु, उस में कोई भी न रहेगा; सब भाग जाएंगे। ४ यहोवा की यह वाणी है, कि उन दिनों में इस्राएली और यहूदा एक संग आएंगे, वे रोते हुए अपने परमेश्वर यहोवा को ढूंढ़ने के लिये चले आएंगे। ५ वे सिय्योन की ओर मुंह किए हुए उसका मार्ग पूछते और आपस में यह कहते आएंगे, कि आओ हम यहोवा से मेल कर लें, उसके साथ ऐसी वाचा बान्धे जो कभी भूली न जाए, परन्तु सदा स्थिर रहे॥

६ मेरी प्रजा खोई हुई भेडें हैं; उनके चरवाहों ने उनको भटका दिया और पहाड़ों पर भटकाया है; वे पहाड़-पहाड़ और पहाड़ी-पहाड़ी घूमते-घूमते अपने बैठने के स्थान को भूल गई हैं। ७ जितनों ने उन्हें पाया वे उनको खा गए; और उनके सतानेवालों ने कहा, इस में हमारा कुछ दोष नहीं, क्योंकि उन्हों ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है जो धर्म का आधार है, और उनके पूर्वजों का आश्रय था॥

८ बाबुल के बीच में से भागो, कसदियों के देश से जैसे बकरे अपने झुण्ड के अगुवे होते हैं, वैसे ही निकल आओ। ९ क्योंकि देखो, मैं उत्तर के देश से बड़ी जातियों को उभारकर उनकी मण्डली बाबुल पर चढ़ा ले आऊंगा, और वे उसके विरुद्ध पांति बान्धेंगे; और उसी दिशा से वह ले लिया जाएगा। उनके तीर चतुर वीर के से होंगे; उन में से कोई अकारथ न जाएगा। १० और कसदियों का देश ऐसा लुटेगा कि सब लूटनेवालों का पेट भर जाएगा, यहोवा की यह वाणी है॥

११ हे मेरे भाग के लूटनेवालो, तुम जो मेरी प्रजा पर आनन्द करते और हुलसते हो, और घास चरनेवाली बछिया की नाईं उछलते और बलवन्त घोड़ों के समान हिनहिनाते हो, १२ तुम्हारी माता अत्यन्त लज्जित होगी और तुम्हारी जननी का मुंह काला होगा। क्योंकि वह सब जातियों में नीच होगी, वह जंगल और मरु और निर्जल देश हो जाएगी। १३ यहोवा के क्रोध के कारण, वह देश निर्जन रहेगा, वह उजाड़ ही उजाड़ होगा; जो कोई बाबुल के पास से चलेगा

वह चकित होगा, और उसके सब दुःख देखकर ताली बजाएगा। १४ हे सब धनुर्धारियो, बाबुल के चारों ओर उसके विरुद्ध पांति बान्धो; उस पर तीर चलाओ, उन्हें मत रख छोड़ो, क्योंकि उस ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है। १५ चारों ओर से उस पर ललकारो, उस ने हार मानी; उसके कोट गिराए गए, उसकी शहरपनाह ढाई गई। क्योंकि यहोवा उस से अपना बदला लेने पर है; सो तुम भी उस से अपना अपना बदला लो, जैसा उस ने किया है, वैसा ही तुम भी उस से करो। १६ बाबुल में से बोनेवाले और काटनेवाले दोनों को नाश करो, वे दुखदाई तलवार के डर के मारे अपने अपने लोगों की ओर फिरें, और अपने अपने देश को भाग जाएं॥

१७ इस्राएल भगाई हुई भेड़ है, सिंहों ने उसको भगा दिया है। पहिले तो अश्शूर के राजा ने उसको खा डाला, और तब बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने उसकी हड्डियों को तोड़ दिया है। १८ इस कारण इस्राएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा यों कहता है, देखो, जैसे मैं ने अश्शूर के राजा को दण्ड दिया था, वैसे ही अब देश समेत बाबुल के राजा को दण्ड दूंगा। १९ मैं इस्राएल को उसकी चराई में लौटा लाऊंगा, और वह कर्मेल और बाशान में फिर चरेगा, और एप्रैम के पहाड़ों पर और गिलाद में फिर भर पेट खाने पाएगा। २० यहोवा की यह वाणी है, कि उन दिनों में * इस्राएल का अधर्म ढूंढ़ने पर भी नहीं मिलेगा, और यहूदा के पाप खोजने पर भी नहीं मिलेंगे; क्योंकि जिन्हें मैं बचाऊं, उनके पाप भी क्षमा कर दूंगा॥

२१ तू मरातैम * देश और पकोद † नगर के निवासियों पर चढ़ाई कर। मनुष्यों को तो मार डाल, और धन का सत्यानाश कर; यहोवा की यह वाणी है, और जो जो आज्ञा मैं तुझे देता हूं, उन सभों के अनुसार कर। २२ सुनो, उस देश में युद्ध और सत्यानाश का सा शब्द हो रहा है। २३ जो हथौड़ा सारी पृथ्वी के लोगों को चूर चूर करता था, वह कैसा काट डाला गया है! बाबुल सब जातियों के बीच में कैसा उजाड़ हो गया है! २४ हे बाबुल, मैं ने तेरे लिये फन्दा लगाया, और तू अनजाने उस में फँस भी गया; तू ढूंढ़कर पकड़ा गया है, क्योंकि तू यहोवा का विरोध करता था। २५ प्रभु, सेनाओं के यहोवा ने अपने शस्त्रों का घर खोलकर, अपने क्रोध प्रगट करने का सामान निकाला है; क्योंकि सेनाओं के प्रभु यहोवा को कसदियों के देश में एक काम करना है। २६ पृथ्वी की छोर से आओ, और उसकी बखरियों को खोलो; उसको ढेर ही ढेर बना दो; ऐसा सत्यानाश करो कि उस में कुछ भी न बचा रहे। २७ उसके सब बैलों को नाश करो, वे घात होने के स्थान में उतर जाएं। उन पर हाय! क्योंकि उनके दण्ड पाने का दिन आ पहुंचा है॥

२८ सुनो, बाबुल के देश में से भागनेवालों का सा बोल सुनाई पड़ता है जो सिय्योन में यह समाचार देने को दौड़े आते हैं, कि हमारा परमेश्वर यहोवा अपने मन्दिर का बदला ले रहा है॥

* मूल में—उन दिनों और उस समय में।

* अर्थात् अत्यन्त बलवैये।

† अर्थात् दण्डयोग्य।

२६ सब धनुर्धारियों को बाबुल के विरुद्ध इकट्ठे करो, उसके चारों ओर छावनी डालो; कोई जन भागकर निकलने न पाए। उसके काम का बदला उसे देओ, जैसा उस ने किया है, ठीक वैसा ही उसके साथ करो; क्योंकि उस ने यहोवा इस्राएल के पवित्र के विरुद्ध अभिमान किया है। ३० इस कारण उसके जवान चौकों में गिराए जाएंगे, और सब योद्धाओं का बोल बन्द हो जाएगा, यहोवा की यही वाणी है ॥

३१ प्रभु सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, हे अभिमानी, मैं तेरे विरुद्ध हूं; तेरे दण्ड पाने का दिन आ गया है। ३२ अभिमानी ठोकर खाकर गिरेगा और कोई उसे फिर न उठाएगा; और मैं उसके नगरों में आग लगाऊंगा जिस से उसके चारों ओर सब कुछ भस्म हो जाएगा ॥

३३ सेनाओं का यहोवा यों कहता है, इस्राएल और यहूदा दोनों बराबर पिसे हुए हैं; और जितनों ने उनको बंधुआ किया वे उन्हें पकड़े रहते हैं, और जाने नहीं देते। ३४ उनका छुड़ानेवाला सामर्थी है; सेनाओं का यहोवा, यही उसका नाम है। वह उनका मुक़द्दमा भली भांति लड़ेगा कि पृथ्वी को चैन दे परन्तु बाबुल के निवासियों को व्याकुल करे ॥

३५ यहोवा की यह वाणी है, कसदियों और बाबुल के हाकिम, पण्डित आदि सब निवासियों पर तलवार चलेगी! ३६ बड़ा बोल बोलनेवालों पर तलवार चलेगी, और वे मूर्ख बनेंगे! उसके शूरवीरों पर भी तलवार चलेगी, और वे विस्मित हो जाएंगे! ३७ उसके सवारों और रथियों* पर और सब मिले जुले लोगों पर भी तलवार चलेगी, और वे स्त्रियें बन जाएंगे! उसके भण्डारों पर तलवार चलेगी, और वे लुट जाएंगे! ३८ उसके जलाशयों पर सूखा पड़ेगा, और वे सूख जाएंगे! क्योंकि वह खुदी हुई मूरतों से भरा हुआ देश है, और वे अपनी भयानक प्रतिमाओं पर बावले हैं ॥

३६ इसलिये निर्जल देश के जन्तु सियारों के संग मिलकर वहां बसेंगे, और शुतुर्मुर्ग उस में वास करेंगे, और वह फिर सदा तक बसाया न जाएगा, न युग युग उस में कोई वास कर सकेगा। ४० यहोवा की यह वाणी है, कि सदोम और अमोरा और उनके आस पास के नगरों की जैसी दशा उस समय हुई थी जब परमेश्वर ने उनको उलट दिया था, वैसी ही दशा बाबुल की भी होगी, यहां तक कि कोई मनुष्य उस में न रह सकेगा, और न कोई आदमी उस में टिकेगा ॥

४१ सुनो, उत्तर दिशा से एक देश के लोग आते हैं, और पृथ्वी की छोर से एक बड़ी जाति और बहुत से राजा उठकर चढ़ाई करेंगे। ४२ वे धनुष और बर्छी पकड़े हुए हैं; वे क्रूर और निर्दय हैं; वे समुद्र की नाईं गरजेंगे; और घोड़ों पर चढ़े हुए तुझ बाबुल की बेटी के विरुद्ध पांति बान्धे हुए युद्ध करनेवालों की नाईं आएंगे। ४३ उनका समाचार सुनते ही बाबुल के राजा के हाथ पांव ढीले पड़ गए, और उसको जच्चा की सी पीड़ें उठीं ॥

४४ सुनो, वह सिंह की नाईं आएगा जो यरदन† के आस पास के घने जंगल से

* मूल में—घोड़ों और रथों।
† मूल में—यरदन की बड़ाई से।

निकलकर दृढ़ भेड़शाले पर चढ़े, परन्तु मैं उनको उसके साम्हने से झट भगा दूंगा; तब जिसको मैं चुन लूं, उसी को उन पर अधिकारी ठहराऊंगा। देखो, मेरे तुल्य कौन है ? कौन मुझ पर मुक़द्दमा चलाएगा * ? वह चरवाहा कहां है जो मेरा साम्हना कर सकेगा ? ४५ सो सुनो कि यहोवा ने बाबुल के विरुद्ध क्या युक्ति की है और कसदियों के देश के विरुद्ध कौन सी कल्पना की है : निश्चय वह भेड़-बकरियों के बच्चों को घसीट ले जाएगा, निश्चय वह उनकी चराइयों को भेड़-बकरियों से खाली कर देगा। ४६ बाबुल के लूट लिए जाने के शब्द से पृथ्वी कांप उठी है, और उसकी चिल्लाहट जातियों में सुनाई पड़ती है ।।

५१ यहोवा यों कहता है, मैं बाबुल के और लेबकामै † के रहनेवालों के विरुद्ध एक नाश करनेवाली वायु चलाऊंगा; २ और मैं बाबुल के पास ऐसे लोगों को भेजूंगा जो उसको फटक-फटककर उड़ा देंगे, और इस रीति उसके देश को सुनसान करेंगे; और विपत्ति के दिन चारों ओर से उसके विरुद्ध होंगे। ३ धनुर्धारी के विरुद्ध और जो अपना झिलम पहिने हैं धनुर्धारी धनुष चढ़ाए हुए उठे; उसके जवानों से कुछ कोमलता न करना; उसकी सारी सेना को सत्यानाश करो। ४ कसदियों के देश में मरे हुए और उसकी सड़कों में छिदे हुए लोग गिरेंगे। ५ क्योंकि, यद्यपि इस्राएल और यहूदा के देश, इस्राएल के पवित्र के विरुद्ध किए हुए पापों से भरपूर हो गए हैं, तौभी उनके परमेश्वर, सेनाओं के यहोवा ने उनको त्याग नहीं दिया ।।

६ बाबुल में से भागो, अपना अपना प्राण बचाओ ! उसके अधर्म में भागी होकर तुम भी न मिट जाओ; क्योंकि यह यहोवा के बदला लेने का समय है, वह उसको बदला देने पर है। ७ बाबुल यहोवा के हाथ में सोने का कटोरा था, जिस से सारी पृथ्वी के लोग मतवाले होते थे; जाति जाति के लोगों ने उसके दाखमधु में से पिया, इस कारण वे भी बावले हो गए। ८ बाबुल अचानक ले ली गई और नाश की गई है। उसके लिये हाय-हाय करो ! उसके घावों के लिये बलसान औषधि लाओ; सम्भव है वह चंगी हो सके। ९ हम बाबुल का इलाज करते तो थे, परन्तु वह चंगी नहीं हुई। सो आओ, हम उसको तजकर अपने अपने देश को चले जाएं; क्योंकि उस पर किए हुए न्याय का निर्णय आकाश वरन स्वर्ग तक भी पहुंच गया है। १० यहोवा ने हमारे धर्म के काम प्रगट किए हैं; सो आओ, हम सिय्योन में अपने परमेश्वर यहोवा के काम का वर्णन करें ।।

११ तीरों को पैना करो ! ढालें थामे रहो ! क्योंकि यहोवा ने मादी राजाओं के मन को उभारा है, उस ने बाबुल को नाश करने की कल्पना की है, क्योंकि यहोवा अर्थात् उसके मन्दिर का यही बदला है। १२ बाबुल की शहरपनाह के विरुद्ध झण्डा खड़ा करो; बहुत पहरुए बैठाओ; घात लगानेवालों को बैठाओ; क्योंकि यहोवा ने बाबुल के रहनेवालों के विरुद्ध जो कुछ कहा था, वह अब करने

---

* मूल में—कौन मेरे लिए समय ठहराएगा।

† अर्थात् मेरे विरोधियों का हृदय। यह कसदियों के देश का एक नाम जान पड़ता है।

पर है वरन किया भी है। १३ हे बहुत जलाशयों के बीच बसी हुई और बहुत भण्डार रखनेवाली, तेरा अन्त आ गया, तेरे लोभ की सीमा पहुंच गई है। १४ सेनाओं के यहोवा ने अपनी ही शपथ खाई है, कि निश्चय मैं तुझ को टिड्डियों के समान अनगिनित मनुष्यों से भर दूंगा, और वे तेरे विरुद्ध ललकारेंगे ।।

१५ उसी ने पृथ्वी को अपने सामर्थ से बनाया, और जगत को अपनी बुद्धि से स्थिर किया; और आकाश को अपनी प्रवीणता से तान दिया है। १६ जब वह बोलता है तब आकाश में जल का बड़ा शब्द होता है, वह पृथ्वी की छोर से कुहरा उठाता है। वह वर्षा के लिये बिजली बनाता, और अपने भण्डार में से पवन निकाल ले आता है। १७ सब मनुष्य पशु सरीखे ज्ञानरहित हैं; सब सोनारों को अपनी खोदी हुई मूरतों के कारण लज्जित होना पड़ेगा; क्योंकि उनकी ढाली हुई मूरतें धोखा देनेवाली हैं, और उनके कुछ भी सांस नहीं चलती। १८ वे तो व्यर्थ और ठट्ठे ही के योग्य हैं; जब उनके नाश किए जाने का समय आएगा, तब* वे नाश ही होंगी। १९ परन्तु जो याकूब का निज भाग है, वह उनके समान नहीं, वह तो सब का बनानेवाला है, और इस्राएल उसका निज भाग है; उसका नाम सेनाओं का यहोवा है ।।

२० तू मेरा फ़रसा और युद्ध के लिये हथियार ठहराया गया है; तेरे द्वारा मैं जाति जाति को तितर-बितर करूंगा; और तेरे ही द्वारा राज्य राज्य को नाश करूंगा। २१ तेरे ही द्वारा मैं सवार समेत घोड़ों को टुकड़े टुकड़े करूंगा; २२ तेरे ही द्वारा रथी समेत रथ को भी टुकड़े टुकड़े करूंगा; तेरे ही द्वारा मैं स्त्री पुरुष दोनों को टुकड़े टुकड़े करूंगा; तेरे ही द्वारा मैं बूढ़े और लड़के दोनों को टुकड़े टुकड़े करूंगा, और जवान पुरुष और जवान स्त्री दोनों को मैं तेरे ही द्वारा टुकड़े टुकड़े करूंगा; २३ तेरे ही द्वारा मैं भेड़-बकरियों समेत चरवाहे को टुकड़े टुकड़े करूंगा; तेरे ही द्वारा मैं किसान और उसके जोड़े बैलों को भी टुकड़े टुकड़े करूंगा; अधिपतियों और हाकिमों को भी मैं तेरे ही द्वारा टुकड़े टुकड़े करूंगा ।।

२४ मैं बाबुल को और सारे कसदियों को भी उन सब बुराइयों का बदला दूंगा, जो उन्हों ने तुम लोगों के साम्हने सिय्योन में की है; यहोवा की यही वाणी है ।।

२५ हे नाश करनेवाले पहाड़ जिसके द्वारा सारी पृथ्वी नाश हुई है, यहोवा की यह वाणी है कि मैं तेरे विरुद्ध हूं और हाथ बढ़ाकर तुझे ढांगों पर से लुढ़का दूंगा और जला हुआ पहाड़ बनाऊंगा। २६ लोग तुझ से न तो घर के कोने के लिये पत्थर लेंगे, और न नेव के लिये, क्योंकि तू सदा उजाड़ रहेगा, यहोवा की यही वाणी है ।।

२७ देश में झण्डा खड़ा करो, जाति जाति में नरसिंगा फूंको; उसके विरुद्ध जाति जाति को तैयार करो; अरारात, मिन्नी और अश्कनज नाम राज्यों को उसके विरुद्ध बुलाओ, उसके विरुद्ध सेनापति भी ठहराओ; घोड़ों को शिखरवाली टिड्डियों के समान अनगिनित चढ़ा ले आओ। २८ उसके विरुद्ध जातियों को

* मूल में—उनके दण्ड पाने के समय।

तैयार करो; मादी राजाओं को उनके अधिपतियों सब हाकिमों सहित और उस राज्य के सारे देश को तैयार करो। २९ यहोवा ने विचारा है कि वह बाबुल के देश को ऐसा उजाड़ करे कि उस में कोई भी न रहे; इसलिये पृथ्वी कांपती है और दुःखित होती है। ३० बाबुल के शूरवीर गढ़ों में रहकर लड़ने से इनकार करते हैं, उनकी वीरता जाती रही है; और यह देखकर कि उनके वासस्थानों में आग लग गई वे स्त्री बन गए हैं; उसके फाटकों के बेण्डे तोड़े गए हैं। ३१ एक हरकारा दूसरे हरकारे से और एक समाचार देनेवाला दूसरे समाचार देनेवाले से मिलने और बाबुल के राजा को यह समाचार देने के लिये दौड़ेगा कि तेरा नगर चारों ओर से ले लिया गया है; ३२ और घाट शत्रुओं के वश में हो गए हैं*, ताल भी सुखाये† गए, और योद्धा घबरा उठे हैं। ३३ क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा यों कहता है: बाबुल की बेटी दांवते समय के खलिहान के समान है, थोड़े ही दिनों में उसकी कटनी का समय आएगा ॥

३४ बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने मुझ को खा लिया, मुझ को पीस डाला; उस ने मुझे छूछे बर्तन के समान कर दिया, उस ने मगरमच्छ की नाईं मुझ को निगल लिया है; और मुझ को स्वादिष्ट भोजन जानकर अपना पेट मुझ से भर लिया है, उस ने मुझ को बरबस निकाल दिया है। ३५ सिय्योन की रहनेवाली कहेगी, कि जो उपद्रव मुझ पर और मेरे शरीर पर हुआ है, वह बाबुल पर पलट जाए। और यरूशलेम कहेगी कि मुझ में की हुई हत्याओं का दोष कसदियों के देश के रहनेवालों पर लगे। ३६ इसलिये यहोवा कहता है, मैं तेरा मुक़द्दमा लड़ूंगा और तेरा बदला लूंगा। मैं उसके ताल को और उसके सोतों को सुखा दूंगा; ३७ और बाबुल खण्डहर, और गीदड़ों का वासस्थान होगा; और लोग उसे देखकर चकित होंगे और ताली बजाएंगे, और उस में कोई न रहेगा ॥

३८ लोग एक संग ऐसे गरजेंगे और गुर्राएंगे, जैसे युवा सिंह व सिंह के बच्चे आहेर पर करते हैं। ३९ परन्तु जब जब वे उत्तेजित हों, तब मैं जेवनार तैयार करके उन्हें ऐसा मतवाला करूंगा, कि वे हुलसकर सदा की नींद में पड़ेंगे और कभी न जागेंगे, यहोवा की यही वाणी है। ४० मैं उनको, भेड़ों के बच्चों, और मेढ़ों और बकरों की नाईं घात करा दूंगा ॥

४१ शेशक, जिसकी प्रशंसा सारे पृथ्वी पर होती थी कैसे ले लिया गया? वह कैसे पकड़ा गया? बाबुल जातियों के बीच कैसे सुनसान हो गया है? ४२ बाबुल के ऊपर समुद्र चढ़ आया है, वह उसकी बहुत सी लहरों में डूब गया है। ४३ उसके नगर उजड़ गए, उसका देश निर्जन और निर्जल हो गया है, उस में कोई मनुष्य नहीं रहता, और उस से होकर कोई आदमी नहीं चलता। ४४ मैं बाबुल में बेल को दण्ड दूंगा, और उस ने जो कुछ निगल लिया है, वह उसके मुंह से उगलवाऊंगा। जातियों के लोग फिर उसकी ओर तांता बान्धे हुए न चलेंगे; बाबुल की शहरपनाह गिराई जाएगी।

---

* मूल में—घाट पकड़े गए।

† मूल में—नरकटों का स्थान आग से जलाया गया।

४५ हे मेरी प्रजा, उस में से निकल आओ! अपने अपने प्राण को यहोवा के भड़के हुए कोप से बचाओ! ४६ जब उड़ती हुई बात उस देश में सुनी जाए, तब तुम्हारा मन न घबराए; और जो उड़ती हुई चर्चा पृथ्वी पर सुनी जाएगी तुम उस से न डरना: उसके एक वर्ष बाद एक और बात उड़ती हुई आएगी, तब उसके बाद दूसरे वर्ष में एक और बात उड़ती हुई आएगी, और उस देश में उपद्रव होगा, और एक हाकिम दूसरे के विरुद्ध होगा ।।

४७ इसलिये देख, वे दिन आते हैं जब मैं बाबुल की खुदी हुई मूरतों पर दण्ड की आज्ञा करूंगा; उस सारे देश के लोगों का मुंह काला हो जाएगा, और उसके सब मारे हुए लोग उसी में पड़े रहेंगे। ४८ तब स्वर्ग और पृथ्वी के सारे निवासी बाबुल पर जयजयकार करेंगे; क्योंकि उत्तर दिशा से नाश करनेवाले उस पर चढ़ाई करेंगे, यहोवा की यही वाणी है। ४९ जैसे बाबुल ने इस्राएल के लोगों को मारा, वैसे ही सारे देश के लोग उसी में मार डाले जाएंगे ।।

५० हे तलवार से बचे हुओ, भागो, खड़े मत रहो! यहोवा को दूर से स्मरण करो, और यरूशलेम की भी सुधि लो: ५१ हम व्याकुल हैं, क्योंकि हम ने अपनी नामधराई सुनी है; यहोवा के पवित्र भवन में विधर्मी घुस आए हैं, इस कारण हम लज्जित हैं ।।

५२ सो देखो, यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आनेवाले हैं कि मैं उसकी खुदी हुई मूरतों पर दण्ड भेजूंगा, और उसके सारे देश में लोग घायल होकर कराहते रहेंगे। ५३ चाहे बाबुल ऐसा ऊंचा बन जाए कि आकाश से बातें करे और उसके ऊंचे गढ़ और भी दृढ़ किए जाएं, तौभी मैं उसे नाश करने के लिये, लोगों को भेजूंगा, यहोवा की यह वाणी है ।।

५४ बाबुल से चिल्लाहट का शब्द सुनाई पड़ता है! कसदियों के देश से सत्यानाश का बड़ा कोलाहल सुनाई देता है। ५५ क्योंकि यहोवा बाबुल को नाश कर रहा है और उसके बडे कोलाहल को बन्द कर रहा है। इस से उनका कोलाहल महासागर का सा सुनाई देता है। ५६ बाबुल पर भी नाश करनेवाले चढ़ आए हैं, और उसके शूरवीर पकड़े गए हैं और उनके धनुष तोड़ डाले गए; क्योंकि यहोवा बदला देनेवाला परमेश्वर है, वह अवश्य ही बदला लेगा। ५७ मैं उसके हाकिमों, पण्डितों, अधिपतियों, रईसों, और शूरवीरों को ऐसा मतवाला करूंगा कि वे सदा की नींद में पड़ेंगे और फिर न जागेंगे, सेनाओं के यहोवा, जिसका नाम राजाधिराज है, उसकी यही वाणी है ।।

५८ सेनाओं का यहोवा यों भी कहता है, बाबुल की चौड़ी शहरपनाह नेव से ढाई जाएगी, और उसके ऊंचे फाटक आग लगाकर जलाए जाएंगे। और उस में राज्य राज्य के लोगों का परिश्रम व्यर्थ ठहरेगा, और जातियों का परिश्रम आग का कौर हो जाएगा और वे थक जाएंगे ।।

५९ यहूदा के राजा सिदकिय्याह के राज्य के चौथे वर्ष में जब उसके साथ सरायाह भी बाबुल को गया था, जो नेरिय्याह का पुत्र और महसेयाह का पोता और राजभवन का अधिकारी भी था, ६० तब यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता ने उसको ये बातें बताईं अर्थात् वे सब बातें जो बाबुल पर पड़नेवाली विपत्ति के विषय

लिखी हुई हैं, उन्हें यिर्मयाह ने पुस्तक में लिख दिया। ६१ और यिर्मयाह ने सरायाह से कहा, जब तू बाबुल में पहुंचे, तब अवश्य ही * ये सब वचन पढ़ना, ६२ और यह कहना, हे यहोवा तू ने तो इस स्थान के विषय में यह कहा है कि मैं इसे ऐसा मिटा दूंगा कि इस में क्या मनुष्य, क्या पशु, कोई भी न रहेगा, वरन यह सदा उजाड़ पड़ा रहेगा। ६३ और जब तू इस पुस्तक को पढ़ चुके, तब इसे एक पत्थर के संग बान्धकर परात महानद के बीच में फेंक देना, ६४ और यह कहना, यों ही बाबुल डूब जाएगा और मैं उस पर ऐसी विपत्ति डालूंगा कि वह फिर कभी न उठेगा। यों उसका सारा परिश्रम व्यर्थ ही ठहरेगा और वे थके रहेंगे ॥

यहां तक यिर्मयाह के वचन हैं ॥

५२ जब सिदकिय्याह राज्य करने लगा, तब वह इक्कीस वर्ष का था; और यरूशलेम में ग्यारह वर्ष तक राज्य करता रहा। उसकी माता का नाम हमूतल था जो लिब्नावासी यिर्मयाह की बेटी थी। २ और उस ने यहोयाकीम के सब कामों के अनुसार वही किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है। ३ निश्चय यहोवा के कोप के कारण यरूशलेम और यहूदा की ऐसी दशा हुई कि अन्त में उस ने उनको अपने साम्हने से दूर कर दिया ॥

और सिदकिय्याह ने बाबुल के राजा से बलवा किया। ४ और उसके राज्य के नौवें वर्ष के दसवें महीने के दसवें दिन को बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने अपनी सारी सेना लेकर यरूशलेम पर चढ़ाई की, और उस ने उसके पास छावनी करके उसके चारों ओर क़िला बनाया। ५ यों नगर घेरा गया, और सिदकिय्याह राजा के ग्यारहवें वर्ष तक घिरा रहा। ६ चौथे महीने के नौवें दिन से नगर में महंगी यहां तक बढ़ गई, कि लोगों के लिये कुछ रोटी न रही। ७ तब नगर की शहरपनाह में दरार की गई, और दोनों भीतों के बीच जो फाटक राजा की बारी के निकट था, उस से सब योद्धा भागकर रात ही रात नगर से निकल गए, और अराबा का मार्ग लिया। (उस समय कसदी लोग नगर को घेरे हुए थे)। ८ परन्तु उनकी सेना ने राजा का पीछा किया, और उसको यरीहो के पास के अराबा में जा पकड़ा; तब उसकी सारी सेना उसके पास से तितर-बितर हो गई। ९ सो वे राजा को पकड़कर हमात देश के रिबला में बाबुल के राजा के पास ले गए, और वहां उस ने उसके दण्ड की आज्ञा दी। १० बाबुल के राजा ने सिदकिय्याह के पुत्रों को उसके साम्हने घात किया, और यहूदा के सारे हाकिमों को भी रिबला में घात किया। ११ फिर बाबुल के राजा ने सिदकिय्याह की आंखों को फुड़वा डाला, और उसको बेड़ियों से जकड़कर बाबुल तक ले गया, और उसको बन्दीगृह में डाल दिया। सो वह मृत्यु के दिन तक वहीं रहा ॥

१२ फिर उसी वर्ष अर्थात् बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के राज्य के उन्नीसवें वर्ष के पांचवें महीने के दसवें दिन को जल्लादों का प्रधान नबूजरदान जो बाबुल के राजा के सम्मुख खड़ा रहता था यरूशलेम में आया। १३ और उस ने यहोवा के भवन और राजभवन और यरूशलेम के सब बड़े बड़े घरों को आग लगवाकर

* मूल में—तब देख और।

फुंकवा दिया। १४ और कसदियों की सारी सेना ने जो जल्लादों के प्रधान के संग थी, यरूशलेम के चारों ओर की सब शहरपनाह को ढा दिया। १५ और जल्लादों का प्रधान नबूजरदान कंगाल लोगों में से कितनों को, और जो लोग नगर में रह गए थे, और जो लोग बाबुल के राजा के पास भाग गए थे, और जो कारीगर रह गए थे, उन सब को बंधुआ करके ले गया। १६ परन्तु, दिहात के कंगाल लोगों में से कितनों को जल्लादों के प्रधान नबूजरदान ने दाख की बारियों की सेवा और किसानी करने को छोड़ दिया ।।

१७ और यहोवा के भवन में जो पीतल के खम्भे थे, और कुर्सियों और पीतल के हौज जो यहोवा के भवन में थे, उन सभों को कसदी लोग तोड़कर उनका पीतल बाबुल को ले गए। १८ और हांड़ियों, फावड़ियों, कैंचियों, कटोरों, धूपदानों, निदान पीतल के और सब पात्रों को, जिन से लोग सेवा टहल करते थे, वे ले गए। १९ और तसलों, करछों, कटोरियों, हांड़ियों, दीवटों, धूपदानों, और कटोरों में से जो कुछ सोने का था, उनके सोने को, और जो कुछ चान्दी का था उनकी चान्दी को भी जल्लादों का प्रधान ले गया। २० दोनों खम्भे, एक हौज और पीतल के बारहों बैल जो पायों के नीचे थे, इन सब को तो सुलैमान राजा ने यहोवा के भवन के लिये बनवाया था, और इन सब का पीतल तौल से बाहर था। २१ जो खम्भे थे, उन में से एक एक की ऊंचाई अठारह हाथ, और घेरा बारह हाथ, और मोटाई चार अंगुल की थी, और वे खोखले थे। २२ एक एक की कंगनी पीतल की थी, और एक एक कंगनी की ऊंचाई पांच हाथ की थी; और उस पर चारों ओर जो जाली और अनार बने थे वे सब पीतल के थे। २३ कंगनियों के चारों अलंगों पर छियानवे अनार बने थे, और जाली के ऊपर चारों ओर एक सौ अनार थे ।।

२४ और जल्लादों के प्रधान ने सरायाह महायाजक और उसके नीचे के सपन्याह याजक, और तीनों डेवढ़ीदारों को पकड़ लिया; २५ और नगर में से उस ने एक खोजा पकड़ लिया, जो योद्धाओं के ऊपर ठहरा था; और जो पुरुष राजा के सम्मुख रहा करते थे, उन में से सात जन जो नगर में मिले; और सेनापति का मुन्शी जो साधारण लोगों को सेना में भरती करता था; और साधारण लोगों में से साठ पुरुष जो नगर में मिले, २६ इन सब को जल्लादों का प्रधान नबूजरदान रिबला में बाबुल के राजा के पास ले गया। २७ तब बाबुल के राजा ने उन्हें हमात देश के रिबला में ऐसा मारा कि वे मर गए। २८ सो यहूदी अपने देश से बंधुए होकर चले गए ।।

जिन लोगों को नबूकदनेस्सर बंधुआ करके ले गया, सो ये हैं, अर्थात् उसके राज्य के सातवें वर्ष में तीन हजार तेईस यहूदी; २९ फिर अपने राज्य के अठारहवें वर्ष में नबूकदनेस्सर यरूशलेम से आठ सौ बत्तीस प्राणियों को बंधुआ करके ले गया; ३० फिर नबूकदनेस्सर के राज्य के तेईसवें वर्ष में जल्लादों का प्रधान नबूजरदान सात सौ पैंतालीस यहूदी जनों को बंधुए करके ले गया; सब प्राणी मिलकर चार हजार छः सौ हुए ।।

३१ फिर यहूदा के राजा यहोयाकीन की बंधुआई के सैंतीसवें वर्ष में अर्थात्

जिस वर्ष बाबुल का राजा एवीलमरोदक राजगद्दी पर विराजमान हुआ, उसी के बारहवें महीने के पचीसवें दिन को उस ने यहूदा के राजा यहोयाकीन को बन्दीगृह से निकालकर बड़ा पद दिया; ३२ और उस से मधुर मधुर वचन कहकर, जो राजा उसके साथ बाबुल में बंधुए थे, उनके सिंहासनों से उसके सिंहासन को अधिक ऊंचा किया। ३३ और उसके बन्दीगृह के वस्त्र बदल दिए; और वह जीवन भर नित्य राजा के सम्मुख भोजन करता रहा; ३४ और प्रति दिन के खर्च के लिये बाबुल के राजा के यहां से उसको नित्य कुछ मिलने का प्रबन्ध हुआ। यह प्रबन्ध उसकी मृत्यु के दिन तक उसके जीवन भर लगातार बना रहा ॥

विलापगीत

१ जो नगरी लोगों से भरपूर थी
वह अब कैसी अकेली बैठी हुई है !
वह क्यों एक विधवा के समान बन गई ?
वह जो जातियों की दृष्टि में महान और प्रान्तों में रानी थी, अब क्यों कर देनेवाली हो गई है।
२ रात को वह फूट फूटकर रोती है,
उसके आंसू गालों पर ढलकते हैं;
उसके सब यारों में से अब कोई उसे शान्ति नहीं देता;
उसके सब मित्रों ने उस से विश्वासघात किया, और उसके शत्रु बन गए हैं ॥
३ यहूदा दुःख और कठिन दासत्व से बचने के लिये परदेश चली गई;
परन्तु अन्यजातियों में रहती हुई वह चैन नहीं पाती;
उसके सब खदेड़नेवालों ने उसकी सकेती में उसे पकड़ लिया है ॥
४ सिय्योन के मार्ग विलाप कर रहे हैं, क्योंकि नियत पर्वों में कोई नहीं आता है;
उसके सब फाटक सुनसान पड़े हैं,
उसके याजक कराहते हैं;
उसकी कुमारियां शोकित हैं, और वह आप कठिन दुःख भोग रही है ॥
५ उसके द्रोही प्रधान हो गए, उसके शत्रु उन्नति कर रहे हैं,
क्योंकि यहोवा ने उसके बहुत से अपराधों के कारण उसे दुःख दिया है;
उसके बालबच्चों को शत्रु हांक हांक कर बंधुआई में ले गए ॥
६ सिय्योन की पुत्री का सारा प्रताप जाता रहा है।
उसके हाकिम ऐसे हरिणों के समान हो गए हैं जो कुछ चराई नहीं पाते;
वे खदेड़नेवालों के साम्हने से बलहीन होकर भागते हैं ॥

७ यरूशलेम ने, इन दुःख भरे और संकट के दिनों में,
जब उसके लोग द्रोहियों के हाथ में पड़े और उसका कोई सहायक न रहा,
तब अपनी सब मनभावनी वस्तुओं को जो प्राचीनकाल से उसकी थीं, स्मरण किया है।
उसके द्रोहियों ने उसको उजड़ा देखकर ठट्ठों में उड़ाया है॥
८ यरूशलेम ने बड़ा पाप किया, इसलिये वह अशुद्ध स्त्री सी हो गई है;
जितने उसका आदर करते थे वे उसका निरादर करते हैं, क्योंकि उन्हों ने उसकी नंगाई देखी है;
हां, वह कराहती हुई मुंह फेर लेती है॥
९ उसकी अशुद्धता उसके वस्त्र पर है; उस ने अपने अन्त का स्मरण न रखा;
इसलिये वह भयंकर रीति से गिराई गई, और कोई उसे शान्ति नहीं देता है।
हे यहोवा, मेरे दुःख पर दृष्टि कर, क्योंकि शत्रु मेरे विरुद्ध सफल हुआ है!
१० द्रोहियों ने उसकी सब मनभावनी वस्तुओं पर हाथ बढ़ाया है;
हां, अन्यजातियों को, जिनके विषय में तू ने आज्ञा दी थी कि वे तेरी सभा में भागी न होने पाएंगी,
उनको उस ने तेरे पवित्रस्थान में घुसा हुआ देखा है॥
११ उसके सब निवासी कराहते हुए भोजनवस्तु ढूंढ़ रहे हैं;
उन्हों ने अपना प्राण बचाने के लिये अपनी मनभावनी वस्तुएं बेचकर भोजन मोल लिया है।
हे यहोवा, दृष्टि कर, और ध्यान से देख, क्योंकि मैं तुच्छ हो गई हूं॥
१२ हे सब बटोहियो, क्या तुम्हें इस बात की कुछ भी चिन्ता नहीं?
दृष्टि करके देखो, क्या मेरे दुःख से बढ़कर कोई और पीड़ा है जो यहोवा ने अपने क्रोध के दिन मुझ पर डाल दी है?
१३ उस ने ऊपर से मेरी हड्डियों में आग लगाई है, और वे उस से भस्म हो गईं;
उस ने मेरे पैरों के लिये जाल लगाया, और मुझ को उलटा फेर दिया है;
उस ने ऐसा किया कि मैं त्यागी हुई सी और रोग से लगातार निर्बल रहती हूं॥
१४ उस ने जूए की रस्सियों की नाईं मेरे अपराधों को अपने हाथ से कसा है;
उस ने उन्हें बटकर मेरी गर्दन पर चढ़ाया, और मेरा बल घटा दिया है;
जिनका मैं साम्हना भी नहीं कर सकती, उन्हीं के वश में यहोवा ने मुझे कर दिया है॥
१५ यहोवा ने मेरे सब पराक्रमी पुरुषों को तुच्छ जाना;
उस ने नियत पर्व का प्रचार करके लोगों को मेरे विरुद्ध बुलाया कि मेरे जवानों को पीस डालें;
यहूदा की कुमारी कन्या को यहोवा ने मानो कोल्हू में पेरा है॥

१६ इन बातों के कारण मैं रोती हूं;
मेरी आंखों से आंसू की धारा बहती रहती है;
क्योंकि जिस शान्तिदाता के कारण मेरा जी हरा भरा हो जाता था,
वह मुझ से दूर हो गया;
मेरे लड़केबाले अकेले हो गए, क्योंकि शत्रु प्रबल हुआ है ।।
१७ सिय्योन हाथ फैलाए हुए हैं, उसे कोई शान्ति नहीं देता;
यहोवा ने याकूब के विषय में यह आज्ञा दी है कि उसके चारों ओर के निवासी उसके द्रोही हो जाएं;
यरूशलेम उनके बीच अशुद्ध स्त्री के समान हो गई है ।।
१८ यहोवा सच्चाई पर है, क्योंकि मैं ने उसकी आज्ञा का उल्लंघन किया है;
हे सब लोगो, सुनो, और मेरी पीड़ा को देखो!
मेरे कुमार और कुमारियां बंधुआई में चली गई हैं ।।
१९ मैं ने अपने मित्रों को पुकारा परन्तु उन्हों ने भी मुझे धोखा दिया;
जब मेरे याजक और पुरनिये इसलिये भोजनवस्तु ढूंढ़ रहे थे कि खाने से उनका जी हरा हो जाए,
तब नगर ही में उनके प्राण छूट गए ।।
२० हे यहोवा, दृष्टि कर, क्योंकि मैं संकट में हूं, मेरी अन्तड़ियां ऐंठी जाती हैं,
मेरा हृदय उलट गया है, क्योंकि मैं ने बहुत बलवा किया है।
बाहर तो मैं तलवार से निर्वंश होती हूं; और घर में मृत्यु विराज रही है ।।
२१ उन्हों ने सुना है कि मैं कराहती हूं, परन्तु कोई मुझे शान्ति नहीं देता।
मेरे सब शत्रुओं ने मेरी विपत्ति का समाचार सुना है; वे इस से हर्षित हो गए कि तू ही ने यह किया है।
परन्तु जिस दिन की चर्चा तू ने प्रचार करके सुनाई है उसको तू दिखा, तब वे भी मेरे समान हो जाएंगे ।।
२२ उनकी सारी दुष्टता की ओर दृष्टि कर;
और जैसा मेरे सारे अपराधों के कारण तू ने मुझे दण्ड दिया, वैसा ही उनको भी दण्ड दे;
क्योंकि मैं बहुत ही कराहती हूं, और मेरा हृदय रोग से निर्बल हो गया है ।।

२

यहोवा ने सिय्योन की पुत्री को किस प्रकार अपने कोप के बादलों से ढांप दिया है!
उस ने इस्राएल की शोभा को आकाश से धरती पर पटक दिया;
और कोप के दिन अपने पांवों की चौकी को स्मरण नहीं किया ।।
२ यहोवा ने याकूब की सब बस्तियों को निठुरता से नष्ट किया है;
उस ने रोष में आकर यहूदा की पुत्री के दृढ़ गढ़ों को ढाकर मिट्टी में मिला दिया है;
उस ने हाकिमों समेत राज्य को अपवित्र ठहराया है ।।
३ उस ने क्रोध में आकर इस्राएल के सींग को जड़ से * काट डाला है;

* मूल में—सारे सींग को।

उस ने शत्रु के साम्हने उनकी सहायता करने से अपना दहिना हाथ खींच लिया है;
उस ने चारों ओर भस्म करती हुई लौ की नाईं याकूब को जला दिया है ।।

४ उस ने शत्रु बनकर धनुष चढ़ाया, और बैरी बनकर दहिना हाथ बढ़ाए हुए खड़ा है;
और जितने देखने में मनभावने थे, उन सब को उस ने घात किया;
सिय्योन की पुत्री के तम्बू पर उस ने आग की नाईं अपनी जलजलाहट भड़का दी है ।।

५ यहोवा शत्रु बन गया, उस ने इस्राएल को निगल लिया;
उसके सारे भवनों को उस ने मिटा दिया, और उसके दृढ़ गढ़ों को नष्ट कर डाला है;
और यहूदा की पुत्री का रोना-पीटना बहुत बढ़ाया है ।।

६ उस ने अपना मण्डप बारी के मचान की नाईं अचानक गिरा दिया,
अपने मिलापस्थान को उस ने नाश किया है;
यहोवा ने सिय्योन में नियत पर्व और विश्रामदिन दोनों को भुला दिया है,
और अपने भड़के हुए कोप से राजा और याजक दोनों का तिरस्कार किया है ।।

७ यहोवा ने अपनी वेदी मन से उतार दी, और अपना पवित्रस्थान अपमान के साथ तज दिया है;
उसके भवनों की भीतों को उस ने शत्रुओं के वश में कर दिया;
यहोवा के भवन में उन्हों ने ऐसा कोलाहल मचाया कि मानो नियत पर्व का दिन हो ।।

८ यहोवा ने सिय्योन की कुमारी की शहरपनाह तोड़ डालने को ठाना था;
उस ने डोरी डाली और अपना हाथ उसे नाश करने से नहीं खींचा;
उस ने किले और शहरपनाह दोनों से विलाप करवाया, वे दोनों एक साथ गिराए गए हैं ।।

९ उसके फाटक भूमि में धस गए हैं, उनके बेड़ों को उस ने तोडकर नाश किया ।।
उसके राजा और हाकिम अन्यजातियों में रहने के कारण व्यवस्थारहित हो गए हैं,
और उसके भविष्यद्वक्ता यहोवा से दर्शन नहीं पाते हैं ।।

१० सिय्योन की पुत्री के पुरनिये भूमि पर चुपचाप बैठे हैं;
उन्हों ने अपने सिर पर धूल उड़ाई और टाट का फेंटा बान्धा है;
यरूशलेम की कुमारियों ने अपना अपना सिर भूमि तक झुकाया है ।।

११ मेरी आंखें आंसू बहाते बहाते रह गई हैं; मेरी अन्तड़ियां ऐंठी जाती हैं;
मेरे लोगों की पुत्री के विनाश के कारण मेरा कलेजा फट गया है,
क्योंकि बच्चे वरन दूधपिउवे बच्चे भी नगर के चौकों में मूर्च्छित होते हैं ।।

१२ वे अपनी अपनी माता से रोकर कहते हैं, अन्न और दाखमधु कहां हैं?
वे नगर के चौकों में घायल किए हुए मनुष्य की नाईं मूर्च्छित होकर

अपने प्राण अपनी अपनी माता की
गोद में छोड़ते हैं ।।

१३ हे यरूशलेम की पुत्री, मैं तुझ से
क्या कहूं ? मैं तेरी उपमा किस
से दूं ?
हे सिय्योन की कुमारी कन्या, मैं
कौन सी वस्तु तेरे समान ठहराकर
तुझे शान्ति दूं ?
क्योंकि तेरा दुःख समुद्र सा अपार है;
तुझे कौन चंगा कर सकता है ?

१४ तेरे भविष्यद्वक्ताओं ने दर्शन का
दावा करके तुझ से व्यर्थ और मूर्खता
की बातें कही हैं;
उन्हों ने तेरा अधर्म प्रगट नहीं किया,
नहीं तो तेरी बंधुआई न होने पाती;
परन्तु उन्हों ने तुझे व्यर्थ के और
झूठे वचन बताए !
जो तेरे लिये देश से निकाल दिए
जाने का कारण हुए ।।

१५ सब बटोही तुझ पर ताली बजाते हैं;
वे यरूशलेम की पुत्री पर यह कहकर
ताली बजाते और सिर हिलाते हैं,
क्या यह वही नगरी है जिसे परम-
सुन्दरी और सारी पृथ्वी के हर्ष
का कारण कहते थे ?

१६ तेरे सब शत्रुओं ने तुझ पर मुंह
पसारा है,
वे ताली बजाते और दांत पीसते
हैं, वे कहते हैं, हम उसे निगल
गए हैं !
जिस दिन की बाट हम जोहते थे,
वह यही है,
वह हम को मिल गया, हम उसको
देख चुके हैं !

१७ यहोवा ने जो कुछ ठाना था वही किया
भी है,
जो वचन वह प्राचीनकाल से कहता
आया है वही उस ने पूरा भी किया
है;
उस ने निठुरता से तुझे ढा दिया है,
उस ने शत्रुओं को तुझ पर आनन्दित
किया,
और तेरे द्रोहियों के सींग को ऊंचा
किया है ।।

१८ वे प्रभु की ओर तन मन से पुकारते
हैं !
हे सिय्योन की कुमारी (की शहर-
पनाह), अपने आंसू रात दिन नदी
की नाईं बहाती रह !
तनिक भी विश्राम न ले, न तेरी आंख
की पुतली चैन ले !

१९ रात के हर पहर के आरम्भ में
उठकर चिल्लाया कर !
प्रभु के सम्मुख अपने मन की बातों
को धारा की नाईं उण्डेल * !
तेरे बालबच्चे जो हर एक सड़क
के सिरे पर भूख के कारण मूर्च्छित
हो रहे हैं,
उनके प्राण के निमित्त अपने हाथ
उसकी ओर फैला ।।

२० हे यहोवा दृष्टि कर, और ध्यान से
देख कि तू ने यह सब दुःख किस
को दिया है ?
क्या स्त्रियां अपना फल अर्थात् अपनी
गोद † के बच्चों को खा डालें ?
हे प्रभु, क्या याजक और भविष्यद्वक्ता
तेरे पवित्रस्थान में घात किए जाएं ?

२१ सड़कों में लड़के और बूढ़े दोनों भूमि
पर पड़े हैं;

---

* मूल में—अपना हृदय जल की नाईं उण्डेल।

† मूल में—हथेली।

मेरी कुमारियां और जवान लोग तलवार से गिर गए हैं;
तू ने कोप करने के दिन उन्हें घात किया; तू ने निठुरता के साथ उनका बध किया है ।।

२२ तू ने मेरे भय के कारणों को नियत पर्व की भीड़ के समान चारों ओर से बुलाया है;
और यहोवा के कोप के दिन न तो कोई भाग निकला और न कोई बच रहा है;
जिन को मैं ने गोद* में लिया और पाल-पोसकर बढ़ाया था, मेरे शत्रु ने उनका अन्त कर डाला है ।।

३ उसके रोष की छड़ी से दुःख भोगनेवाला पुरुष मैं ही हूं;
२ वह मुझे ले जाकर उजियाले में नहीं, अन्धियारे ही में चलाता है;
३ उसका हाथ दिन भर मेरे ही विरुद्ध उठता† रहता है ।।
४ उस ने मेरा मांस और चमड़ा गला दिया है, और मेरी हड्डियों को तोड़ दिया है;
५ उस ने मुझे रोकने के लिये किला बनाया, और मुझ को कठिन दुःख‡ और श्रम से घेरा है;
६ उस ने मुझे बहुत दिन के मरे हुए लोगों के समान अन्धेरे स्थानों में बसा दिया है ।।
७ मेरे चारों ओर उस ने बाड़ा बान्धा है कि मैं निकल नहीं सकता;

* मूल में—हथेली।
† मूल में—उलटता।
‡ मूल में—विष।

उस ने मुझे भारी सांकल से जकड़ा है*;
८ मैं चिल्ला चिल्लाके दोहाई देता हूं, तौभी वह मेरी प्रार्थना नहीं सुनता;
९ मेरे मार्गों को उस ने गढ़े हुए पत्थरों से रोक रखा है, मेरी डगरों को उस ने टेढ़ी कर दिया है।
१० वह मेरे लिये घात में बैठे हुए रीछ और घात लगाए हुए सिंह के समान है;
११ उस ने मुझे मेरे मार्गों से भुला दिया, और मुझे फाड़ डाला; उस ने मुझ को उजाड़ दिया है।
१२ उस ने धनुष चढ़ाकर मुझे अपने तीर का निशाना बनाया है ।।
१३ उस ने अपनी तीरों से मेरे हृदय को बेध दिया है;
१४ सब लोग मुझ पर हंसते हैं और दिन भर मुझ पर ढालकर गीत गाते हैं,
१५ उस ने मुझे कठिन दुःख से† भर दिया, और नागदौना पिलाकर तृप्त किया है ।।
१६ उस ने मेरे दांतों को कंकरी से तोड़ डाला, और मुझे राख से ढांप दिया है;
१७ और मुझ को मन से उतारकर कुशल से रहित किया है; मैं कल्याण भूल गया हूं;
१८ इसलिये मैं ने कहा, मेरा बल नाश हुआ, और मेरी आशा जो यहोवा पर थी, वह टूट गई है ।।
१९ मेरा दुःख और मारा मारा फिरना, मेरा नागदौने और-और विष का पीना स्मरण कर!

* मूल में—मेरी सांकल भारी की।
† मूल में—कड़वाहटों से।

२० मैं उन्हीं पर सोचता रहता हूं, इस से मेरा प्राण ढला जाता है।
२१ परन्तु मैं यह स्मरण करता हूं, इसीलिये मुझे आशा है:
२२ हम मिट नहीं गए; यह यहोवा की महाकरुणा का फल है, क्योंकि उसकी दया अमर है।
२३ प्रति भोर वह नई होती रहती है; तेरी सच्चाई महान है।
२४ मेरे मन ने कहा, यहोवा मेरा भाग है, इस कारण मैं उस में आशा रखूंगा।।
२५ जो यहोवा की बाट जोहते और * उसके पास जाते हैं, उनके लिये यहोवा भला है।
२६ यहोवा से उद्धार पाने की आशा रखकर चुपचाप रहना भला है।
२७ पुरुष के लिये जवानी में जूआ उठाना भला है।
२८ वह यह जानकर अकेला चुपचाप रहे, कि परमेश्वर ही ने उस पर यह बोझ डाला है;
२९ वह अपना मुंह धूल में रखे †, क्या जाने इस में कुछ आशा हो;
३० वह अपना गाल अपने मारनेवाले की ओर फेरे, और नामधराई सहता रहे।।
३१ क्योंकि प्रभु मन से सर्वदा उतारे नहीं रहता,
३२ चाहे वह दु:ख भी दे, तौभी अपनी करुणा की बहुतायत के कारण वह दया भी करता है;
३३ क्योंकि वह मनुष्यों को अपने मन से न तो दबाता है और न दु:ख देता है।।
३४ पृथ्वी भर के बंधुओं को पांव के तले दलित करना,
३५ किसी पुरुष का हक़ परमप्रधान के साम्हने मारना,
३६ और किसी मनुष्य का मुक़द्दमा बिगाड़ना, इन तीन कामों को यहोवा देख नहीं सकता।।
३७ यदि यहोवा ने आज्ञा न दी हो, तब कौन है कि वचन कहे और वह पूरा हो जाए?
३८ विपत्ति और कल्याण, क्या दोनों परमप्रधान की आज्ञा से नहीं होते?
३९ सो जीवित मनुष्य क्यों कुड़कुड़ाए? और पुरुष अपने पाप के दण्ड को क्यों बुरा माने?
४० हम अपने चालचलन को ध्यान से परखें, और यहोवा की ओर फिरें!
४१ हम स्वर्गवासी परमेश्वर की ओर मन लगाएं और हाथ फैलाएं और कहें:
४२ हम ने तो अपराध और बलवा किया है, और तू ने क्षमा नहीं किया।।
४३ तेरा कोप हम पर है, तू हमारे पीछे पड़ा है, तू ने बिना तरस खाए घात किया है।।
४४ तू ने अपने को मेघ से घेर लिया है कि तुझ तक प्रार्थना न पहुंच सके।
४५ तू ने हम को जाति जाति के लोगों के बीच में कूड़ा-कर्कट सा ठहराया है।
४६ हमारे सब शत्रुओं ने हम पर अपना अपना मुंह फैलाया है;
४७ भय और गड़हा, उजाड़ और विनाश, हम पर आ पड़े हैं;

* मूल में—और जो जीव।
† मूल में—वह अपना मुंह मिट्टी में दे।

४८ मेरी आंखों से मेरी प्रजा की पुत्री के विनाश के कारण जल की धाराएं बह रही हैं ।।
४९ मेरी आंख से लगातार आंसू बहते रहेंगे,
५० जब तक यहोवा स्वर्ग से मेरी ओर न देखे;
५१ अपनी नगरी की सब स्त्रियों का हाल देखने पर मेरा दुःख बढ़ता है * ।।
५२ जो व्यर्थ मेरे शत्रु बने हैं, उन्हों ने निर्दयता से चिड़िया के समान मेरा आहेर किया है;
५३ उन्हों ने मुझे गड़हे में डालकर मेरे जीवन का अन्त करने के लिये मेरे ऊपर पत्थर लुढ़काए हैं;
५४ मेरे सिर पर से जल बह गया, मैं ने कहा, मैं अब नाश हो गया ।।
५५ हे यहोवा, गहिरे गड़हे में से मैं ने तुझ से प्रार्थना की;
५६ तू ने मेरी सुनी कि जो दोहाई देकर मैं चिल्लाता हूं उस से कान न फेर † ले !
५७ जब मैं ने तुझे पुकारा, तब तू ने मुझ से कहा, मत डर !
५८ हे यहोवा, तू ने मेरा मुक़द्दमा लड़कर मेरा प्राण बचा लिया है ।
५९ हे यहोवा, जो अन्याय मुझ पर हुआ है उसे तू ने देखा है; तू मेरा न्याय चुका ।
६० जो बदला उन्हों ने मुझ से लिया, और जो कल्पनाएं मेरे विरुद्ध कीं, उन्हें भी तू ने देखा है ।।

* मूल में—मेरी आंख मेरे मन को दुःख देती है।
† मूल में—छिपा।

६१ हे यहोवा, जो कल्पनाएं और निन्दा वे मेरे विरुद्ध करते हैं, वे भी तू ने सुनी हैं ।
६२ मेरे विरोधियों के वचन *, और जो कुछ भी वे मेरे विरुद्ध लगातार सोचते हैं, उन्हें तू जानता है ।
६३ उनका उठना-बैठना ध्यान से देख; वे मुझ पर लगते हुए गीत गाते हैं ।
६४ हे यहोवा, तू उनके कामों के अनुसार उनको बदला देगा ।
६५ तू उनका मन सुन्न कर देगा; तेरा शाप उन पर होगा ।
६६ हे यहोवा, तू अपने कोप से उनको खदेड़-खदेड़कर धरती पर से † नाश कर देगा ।।

४ सोना कैसे खोटा ‡ हो गया, अत्यन्त खरा सोना कैसे बदल गया है ?
पवित्रस्थान के पत्थर तो हर एक सड़क के सिरे पर फेंक दिए गए हैं ।।
२ सिय्योन के उत्तम पुत्र § जो कुन्दन के तुल्य थे,
वे कुम्हार के बनाए हुए मिट्टी के घड़ों के समान कैसे तुच्छ गिने गए हैं !
३ गीदड़िन भी अपने बच्चों को थन से लगाकर पिलाती है,
परन्तु मेरे लोगों की बेटी वन के शुतुर्मुर्गों के तुल्य निर्दयी हो गई है ।।
४ दूधपीउवे बच्चों की जीभ प्यास के मारे तालू में चिपट गई है;

* मूल में—होंठ।
† मूल में—आकाश के तले से।
‡ मूल में—फीके रंग का।
§ मूल में—बेटे।

बालबच्चे रोटी मांगते हैं, परन्तु
कोई उनको नहीं देता ।।
५ जो स्वादिष्ट भोजन खाते थे, वे
अब सड़कों में व्याकुल फिरते हैं;
जो मखमल के वस्त्रों में पले थे अब
घूरों पर लोटते हैं * ।।
६ मेरे लोगों की बेटी का अधर्म सदोम
के पाप से भी अधिक हो गया
जो किसी के हाथ डाले बिना भी
क्षण भर में उलट गया था ।।
७ उसके कुलीन हिम से निर्मल और
दूध से भी अधिक उज्ज्वल थे;
उनकी देह मूंगों से अधिक लाल,
और उनकी सुन्दरता नीलमणि
की सी थी ।।
८ परन्तु अब उनका रूप अन्धकार से
भी अधिक काला है, वे सड़कों में
चीन्हें नहीं जाते;
उनका चमड़ा हड्डियों में सट गया,
और लकड़ी के समान सूख गया है ।।
९ तलवार के मारे हुए भूख के मारे
हुओं से अधिक अच्छे थे
जिनका प्राण खेत की उपज बिना
भूख के मारे सूखता जाता है ।।
१० दयालु स्त्रियों ने अपने ही हाथों
से अपने बच्चों को पकाया है;
मेरे लोगों के विनाश के समय वे
ही उनका आहार बन गए ।।
११ यहोवा ने अपनी पूरी जलजलाहट
प्रगट की, उस ने अपना कोप बहुत
ही भड़काया †;
और सिय्योन में ऐसी आग लगाई
जिस से उसकी नेव तक भस्म
हो गई है ।।

* मूल में—घूरों को गले लगाते हैं।
† मूल में—उण्डेला।

१२ पृथ्वी का कोई राजा वा जगत का
कोई बासी इसकी कभी प्रतीति
न कर सकता था,
कि द्रोही और शत्रु यरूशलेम के
फाटकों के भीतर घुसने पाएंगे ।।
१३ यह उसके भविष्यद्वक्ताओं के पापों
और उसके याजकों के अधर्म के
कामों के कारण हुआ है;
क्योंकि वे उसके बीच धर्मियों की
हत्या करते आए हैं ।।
१४ वे अब सड़कों में अन्धे सरीखे मारे
मारे फिरते हैं, और मानो लोहू
की छींटों से यहां तक अशुद्ध हैं
कि कोई उनके वस्त्र नहीं छू सकता ।।
१५ लोग उनको पुकारकर कहते हैं, अरे
अशुद्ध लोगो, हट जाओ! हट
जाओ! हम को मत छूओ!
जब वे भागकर मारे मारे फिरने लगे,
तब अन्यजाति लोगों ने कहा,
भविष्य में वे यहां टिकने नहीं
पाएंगे ।।
१६ यहोवा ने अपने कोप से उन्हें तितर-
बितर किया, वह फिर उन पर
दया दृष्टि न करेगा;
न तो याजकों का सन्मान हुआ, और
न पुरनियों पर कुछ अनुग्रह किया
गया ।।
१७ हमारी आंखें व्यर्थ ही सहायता की
बाट जोहते जोहते रह गई हैं,
हम लगातार एक ऐसी जाति की ओर
ताकते रहे जो बचा नहीं सकी ।।
१८ लोग हमारे पीछे ऐसे पड़े कि हम अपने
नगर के चौकों में भी नहीं चल सके;
हमारा अन्त निकट आया; हमारी
आयु पूरी हुई; क्योंकि हमारा
अन्त आ गया था ।।

१६ हमारे खदेड़नेवाले आकाश के उकाबों से भी अधिक वेग से चलते थे;
वे पहाड़ों पर हमारे पीछे पड़ गए और जंगल में हमारे लिये घात लगाकर बैठ गए ।।

२० यहोवा का अभिषिक्त जो हमारा प्राण * था, और जिसके विषय हम ने सोचा था कि अन्यजातियों के बीच हम उसकी शरण में † जीवित रहेंगे,
वह उनके खोदे हुए गड़हों में पकड़ा गया ।।

२१ हे एदोम की पुत्री, तू जो ऊज देश में रहती है, हर्षित और आनन्दित रह;
परन्तु यह कटोरा तुझ तक भी पहुंचेगा, और तू मतवाली होकर अपने आप को नंगा करेगी ।।

२२ हे सिय्योन की पुत्री, तेरे अधर्म का दण्ड समाप्त हुआ, वह फिर तुझे बंधुआई में न ले जाएगा;
परन्तु हे एदोम की पुत्री, तेरे अधर्म का दण्ड वह तुझे देगा, वह तेरे पापों को प्रगट कर देगा ।।

५ हे यहोवा, स्मरण कर कि हम पर क्या क्या बीता है;
हमारी ओर दृष्टि करके हमारी नामधराई को देख!

२ हमारा भाग परदेशियों का हो गया और
हमारे घर परायों के हो गए हैं।

३ हम अनाथ और पिताहीन हो गए;
हमारी माताएं विधवा सी हो गई हैं।

४ हम मोल लेकर पानी पीते हैं,
हम को लकड़ी भी दाम से मिलती है।

५ खदेड़नेवाले हमारी गर्दन पर टूट पड़े हैं;
हम थक गए हैं, हमें विश्राम नहीं मिलता।

६ हम स्वयं मिस्र के अधीन हो गए,
और अश्शूर के भी, ताकि पेट भर सकें।

७ हमारे पुरखाओं ने पाप किया, और मर मिटे हैं;
परन्तु उनके अधर्म के कामों का भार हम को उठाना पड़ा है ।।

८ हमारे ऊपर दास * अधिकार रखते हैं;
उनके हाथ से कोई हमें नहीं छुड़ाता ।।

९ जंगल में की तलवार के कारण
हम अपने प्राण जोखिम में डालकर भोजनवस्तु ले आते हैं।

१० भूख की झुलसाने वाली आग के कारण,
हमारा चमड़ा तंदूर की नाईं काला हो गया है।

११ सिय्योन में स्त्रियां,
और यहूदा के नगरों में कुमारियां भ्रष्ट की गईं हैं।

१२ हाकिम हाथ के बल टांगे गए हैं;
और पुरनियों का कुछ भी आदर नहीं किया गया।

१३ जवानों को चक्की चलानी पड़ती है;
और लड़केवाले लकड़ी का बोझ उठाते हुए लड़खड़ाते हैं।

* मूल में—हमारे नथनों का प्राण।
† मूल में—की छाया में।

* वा गुलाम।

१४ अब फाटक पर पुरनिये नहीं बैठते,
न जवानों का गीत सुनाई पड़ता है।
१५ हमारे मन का हर्ष जाता रहा,
हमारा नाचना विलाप में बदल गया है।
१६ हमारे सिर पर का मुकुट गिर पड़ा है;
हम पर हाय, क्योंकि हम ने पाप किया है!
१७ इस कारण हमारा हृदय निर्बल हो गया है,
इन्हीं बातों से हमारी आंखें धुंधली पड़ गई हैं,
१८ क्योंकि सिय्योन पर्वत उजाड़ पड़ा है;
उस में सियार घूमते हैं॥
१९ परन्तु हे यहोवा, तू तो सदा तक विराजमान रहेगा;
तेरा राज्य पीढ़ी-पीढ़ी बना रहेगा।
२० तू ने क्यों हम को सदा के लिये भुला दिया है,
और क्यों बहुत काल के लिये हमें छोड़ दिया है?
२१ हे यहोवा, हम को अपनी ओर फेर, तब हम फिर सुधर जाएंगे।
प्राचीनकाल की नाईं हमारे दिन बदलकर ज्यों के त्यों कर दे!
२२ क्या तू ने हमें बिल्कुल त्याग दिया है?
क्या तू हम से अत्यन्त क्रोधित है?

यहेजकेल नामक पुस्तक

१ तीसवें वर्ष के चौथे महीने के पांचवें दिन, मैं बंधुओं के बीच कबार नदी के तीर पर था, तब स्वर्ग खुल गया, और मैं ने परमेश्वर के दर्शन पाए। २ यहोयाकीम राजा की बंधुआई के पांचवें वर्ष के चौथे महीने के पांचवें दिन को, कसदियों के देश में कबार नदी के तीर पर, ३ यहोवा का वचन बूजी के पुत्र यहेजकेल याजक के पास पहुंचा; और यहोवा की शक्ति * उस पर वहीं प्रगट हुई॥

४ जब मैं देखने लगा, तो क्या देखता हूं कि उत्तर दिशा से बड़ी घटा, और लहराती हुई आग सहित बड़ी आंधी आ रही है; और घटा के चारों ओर प्रकाश और आग के बीचों-बीच से झलकाया हुआ पीतल सा कुछ दिखाई देता है। ५ फिर उसके बीच से चार जीवधारियों के समान कुछ निकले। और उनका रूप मनुष्य के समान था, ६ परन्तु उन में से हर एक के चार चार मुख और चार चार पंख थे। ७ उनके पांव सीधे थे, और उनके पांवों के तलुए बछड़ों के खुरों

* मूल में—का हाथ।

के से थे; और वे झलकाए हुए पीतल की नाईं चमकते थे। ८ उनकी चारों अलंग पर पंखों के नीचे मनुष्य के से हाथ थे। और उन चारों के मुख और पंख इस प्रकार के थे: ९ उनके पंख एक दूसरे से परस्पर मिले हुए थे; वे अपने अपने साम्हने सीधे ही चलते हुए मुड़ते नहीं थे। १० उनके साम्हने के मुखों का रूप मनुष्य का सा था; और उन चारों के दहिनी ओर के मुख सिंह के से, बाईं ओर के मुख बैल के से थे, और चारों के पीछे के मुख उकाब पक्षी के से थे। ११ उनके चेहरे ऐसे थे। और उनके मुख और पंख ऊपर की ओर अलग अलग थे; हर एक जीवधारी के दो दो पंख थे, जो एक दूसरे के पंखों से मिले हुए थे, और दो दो पंखों से उनका शरीर ढंपा हुआ था। १२ और वे सीधे अपने अपने साम्हने ही चलते थे; जिधर आत्मा जाना चाहता था, वे उधर ही जाते थे, और चलते समय मुड़ते नहीं थे। १३ और जीवधारियों के रूप अंगारों और जलते हुए पलीतों के समान दिखाई देते थे, और वह आग जीवधारियों के बीच इधर उधर चलती फिरती हुई बड़ा प्रकाश देती रही; और उस आग से बिजली निकलती थी। १४ और जीवधारियों का चलना-फिरना बिजली का सा था।।

१५ जब मैं जीवधारियों को देख ही रहा था, तो क्या देखा कि भूमि पर उनके पास चारों मुखों की गिनती के अनुसार, एक एक पहिया था। १६ पहियों का रूप और बनावट फीरोजे की सी थी, और चारों का एक ही रूप था; और उनका रूप और बनावट ऐसी थी जैसे एक पहिये के बीच दूसरा पहिया हो। १७ चलते समय वे अपनी चारों अलंगों की ओर चल सकते थे, और चलने में मुड़ते नहीं थे। १८ और उन चारों पहियों के घेरे बहुत बड़े और डरावने थे, और उनके घेरों में चारों ओर आंखें ही आंखें भरी हुई थीं। १९ और जब जीवधारी चलते थे, तब पहिये भी उनके साथ चलते थे; और जब जीवधारी भूमि पर से उठते थे, तब पहिये भी उठते थे। २० जिधर आत्मा जाना चाहती थी, उधर ही वे जाते, और और पहिये जीवधारियों के साथ उठते थे; क्योंकि उनकी आत्मा पहियों में थी। २१ जब वे चलते थे तब ये भी चलते थे; और जब जब वे खड़े होते थे तब ये भी खड़े होते थे; और जब वे भूमि पर से उठते थे तब पहिये भी उनके साथ उठते थे; क्योंकि जीवधारियों की आत्मा पहियों में थी।।

२२ जीवधारियों के सिरों के ऊपर आकाशमण्डल सा कुछ था जो बर्फ की नाईं भयानक रीति से चमकता था, और वह उनके सिरों के ऊपर फैला हुआ था। २३ और आकाशमण्डल के नीचे, उनके पंख एक दूसरे की ओर सीधे फैले हुए थे; और हर एक जीवधारी के दो दो और पंख थे जिन से उनके शरीर ढंपे हुए थे। २४ और उनके चलते समय उनके पंखों की फड़फड़ाहट की आहट मुझे बहुत से जल, वा सर्वशक्तिमान की वाणी, वा सेना के हलचल की सी सुनाई पड़ती थी; और जब वे खड़े होते थे, तब अपने पंख लटका लेते थे। २५ फिर उनके सिरों के ऊपर जो आकाशमण्डल था, उसके ऊपर से एक शब्द सुनाई पड़ता था; और जब वे खड़े होते थे, तब अपने पंख लटका लेते थे।।

२६ और जो आकाशमण्डल उनके सिरों के ऊपर था, उसके ऊपर मानो कुछ नीलम का बना हुआ सिंहासन था; इस सिंहासन के ऊपर मनुष्य के समान कोई दिखाई देता था। २७ और उसकी मानो कमर से लेकर ऊपर की ओर मुझे झलकाया हुआ पीतल सा दिखाई पड़ा, और उसके भीतर और चारों ओर आग सी दिखाई पड़ती थी; फिर उस मनुष्य की कमर से लेकर नीचे की ओर भी मुझे कुछ आग सी दिखाई पड़ती थी; और उसके चारों ओर प्रकाश था। २८ जैसे वर्षा के दिन बादल में धनुष दिखाई पड़ता है, वैसे ही चारों ओर का प्रकाश दिखाई देता था ।।

यहोवा के तेज का रूप ऐसा ही था। और उसे देखकर, मैं मुंह के बल गिरा, तब मैं ने एक शब्द सुना जैसे कोई बातें करता है ।।

२ और उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, अपने पांवों के बल खड़ा हो, और मैं तुझ से बातें करूंगा। २ जैसे ही उस ने मुझ से यह कहा, त्योंही आत्मा ने मुझ में समाकर मुझे पांवों के बल खड़ा कर दिया; और जो मुझ से बातें करता था मैं ने उसकी सुनी। ३ और उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, मैं तुझे इस्राएलियों के पास अर्थात् बलवा करनेवाली जाति के पास भेजता हूं, जिन्हों ने मेरे विरुद्ध बलवा किया है; उनके पुरखा और वे भी आज के दिन तक मेरा अपराध करते चले आए हैं। ४ इस पीढ़ी के लोग * जिनके पास मैं तुझे भेजता हूं, वे निर्लज्ज और हठीले * हैं; ५ और तू उन से कहना, प्रभु यहोवा यों कहता है, इस से वे, जो बलवा करनेवाले घराने के हैं, चाहे वे सुनें व न सुनें, तौभी वे इतना जान लेंगे कि हमारे बीच एक भविष्यद्वक्ता प्रगट हुआ है। ६ और हे मनुष्य के सन्तान, तू उन से न डरना; चाहे तुझे कांटों, ऊंटकटारों और बिच्छुओं के बीच भी रहना पड़े, तौभी उनके वचनों से न डरना; यद्यपि वे बलवई घराने के हैं, तौभी न तो उनके वचनों से डरना, और न उनके मुंह देखकर तेरा मन कच्चा हो। ७ सो चाहे वे सुनें या न सुनें; तौभी तू मेरे वचन उन से कहना, वे तो बड़े बलवई हैं। ८ परन्तु हे मनुष्य के सन्तान, जो मैं तुझ से कहता हूं, उसे तू सुन ले, उस बलवई घराने के समान तू भी बलवई न बनना; जो मैं तुझे देता हूं, उसे मुंह खोलकर खा ले। ९ तब मैं ने दृष्टि की और क्या देखा, कि मेरी ओर एक हाथ बढ़ा हुआ है और उस में एक पुस्तक † है। १० उसको उस ने मेरे साम्हने खोलकर फैलाया, और वह दोनों ओर लिखी हुई थी; और जो उस में लिखा था, वे विलाप और शोक और दुःखभरे वचन थे।

३ तब उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के सन्तान, जो तुझे मिला है उसे खा ले; अर्थात् इस पुस्तक को खा, तब जाकर इस्राएल के घराने से बातें कर। २ सो मैं ने मुंह खोला और उस ने वह पुस्तक मुझे खिला दी। ३ तब उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, यह पुस्तक जो मैं तुझे देता हूं उसे पचा ले,

* मूल में—फिर लड़के।

* मूल में—कठोर मुखवाले। और बलवन्त हृदयवाले।

† वा लपेटा हुआ तूमार।

और अपनी अन्तड़ियां इस से भर ले। सो मैं ने उसे खा लिया; और मेरे मुंह में वह मधु के तुल्य मीठी लगी ॥

४ फिर उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, तू इस्राएल के घराने के पास जाकर उनको मेरे वचन सुना। ५ क्योंकि तू किसी अनोखी बोली वा कठिन भाषा-वाली जाति के पास नहीं भेजा जाता है, परन्तु इस्राएल ही के घराने के पास भेजा जाता है। ६ अनोखी बोली वा कठिन भाषावाली बहुत सी जातियों के पास जो तेरी बात समझ न सकें, तू नहीं भेजा जाता। निःसन्देह यदि मैं तुझे ऐसों के पास भेजता तो वे तेरी सुनते। ७ परन्तु इस्राएल के घरानेवाले तेरी सुनने से इनकार करेंगे; वे मेरी भी सुनने से इनकार करते हैं; क्योंकि इस्राएल का सारा घराना ढीठ * और कठोर मन का है। ८ देख, मैं तेरे मुख को उनके मुख के साम्हने, और तेरे माथे को उनके माथे के साम्हने, ढीठ कर देता हूं। ९ मैं तेरे माथे को हीरे के तुल्य कड़ा कर देता हूं जो चकमक पत्थर से भी कड़ा होता है; सो तू उन से न डरना, और न उनके मुंह देखकर तेरा मन कच्चा हो; क्योंकि वे बलवई घराने के हैं। १० फिर उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, जितने वचन मैं तुझ से कहूं, वे सब हृदय में रख और कानों से सुन। ११ और उन बंधुओं के पास जाकर, जो तेरे जाति भाई हैं, उन से बातें करना और कहना, कि प्रभु यहोवा यों कहता है; चाहे वे सुनें, व न सुनें ॥

१२ तब आत्मा ने मुझे उठाया, और मैं ने अपने पीछे बड़ी घड़घड़ाहट के साथ एक शब्द सुना, कि यहोवा के भवन से उसका तेज धन्य है। १३ और उसके साथ ही उन जीवधारियों के पंखों का शब्द, जो एक दूसरे से लगते थे, और उनके संग के पहियों का शब्द और एक बड़ी ही घड़घड़ाहट सुन पड़ी। १४ सो आत्मा मुझे उठाकर ले गई, और मैं कठिन दुःख से भरा * हुआ, और मन में जलता हुआ चला गया; और यहोवा की शक्ति मुझ में प्रबल थी †; १५ और मैं उन बंधुओं के पास आया जो कबार नदी के तीर पर तेलाबीब में रहते थे। और वहां मैं सात दिन तक उनके बीच व्याकुल होकर बैठा रहा ॥

१६ सात दिन के व्यतीत होने पर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, १७ हे मनुष्य के सन्तान मैं ने तुझे इस्राएल के घराने के लिये पहरुआ नियुक्त किया है; तू मेरे मुंह की बात सुनकर, उन्हें मेरी ओर से चिताना। १८ जब मैं दुष्ट से कहूं कि तू निश्चय मरेगा, और यदि तू उसको न चिताए, और न दुष्ट से ऐसी बात कहे जिस से कि वह सचेत हो और अपना दुष्ट मार्ग छोड़कर जीवित रहे, तो वह दुष्ट अपने अधर्म में फंसा हुआ मरेगा, परन्तु उसके खून का लेखा मैं तुझी से लूंगा। १९ पर यदि तू दुष्ट को चिताए, और वह अपनी दुष्टता और दुष्ट मार्ग से न फिरे, तो वह तो अपने अधर्म में फंसा हुआ मर जाएगा; परन्तु तू अपने प्राणों को बचाएगा। २० फिर जब धर्मी जन अपने धर्म से फिरकर कुटिल काम करने लगे, और मैं उसके

* मूल में—बलवन्त माथे का।

* मूल में—मैं कड़ुवा।

† मूल में—यहोवा का हाथ मुझ पर प्रबल था।

साम्हने ठोकर रखूं, तो वह मर जाएगा, क्योंकि तू ने जो उसको नहीं चिताया, इसलिये वह अपने पाप में फंसा हुआ मरेगा; और जो धर्म के कर्म उस ने किए हों, उनकी सुधि न ली जाएगी, पर उसके खून का लेखा मैं तुझी से लूंगा। २१ परन्तु यदि तू धर्मी को ऐसा कहकर चिताए, कि वह पाप न करे, और वह पाप से बच जाए, तो वह चितौनी को ग्रहण करने के कारण निश्चय जीवित रहेगा, और तू अपने प्राण को बचाएगा॥

२२ फिर यहोवा की शक्ति* वहीं मुझ पर प्रगट हुई, और उस ने मुझ से कहा, उठकर मैदान में जा; और वहां मैं तुझ से बातें करूंगा। २३ तब मैं उठकर मैदान में गया, और वहां क्या देखा, कि यहोवा का प्रताप जैसा मुझे कबार नदी के तीर पर, वैसा ही यहां भी दिखाई पड़ता है; और मैं मुंह के बल गिर पड़ा। २४ तब आत्मा ने मुझ में समाकर मुझे पांवों के बल खड़ा कर दिया; फिर वह मुझ से कहने लगा, जा अपने घर के भीतर द्वार बन्द करके बैठ रह। २५ और हे मनुष्य के सन्तान, देख; वे लोग तुझे रस्सियों से जकड़कर बान्ध रखेंगे, और तू निकलकर उनके बीच जाने नहीं पाएगा। २६ और मैं तेरी जीभ तेरे तालू से लगाऊंगा; जिस से तू मौन रहकर उनका डांटनेवाला न हो, क्योंकि वे बलवई घराने के हैं। २७ परन्तु जब जब मैं तुझ से बातें करूं, तब तब तेरे मुंह को खोलूंगा, और तू उन से ऐसा कहना, कि प्रभु यहोवा यों कहता है, जो सुनता है वह सुन ले और जो नहीं सुनता वह न सुने, वे तो बलवई घराने के हैं ही॥

४ और हे मनुष्य के सन्तान, तू एक ईंट ले और उसे अपने साम्हने रखकर उस पर एक नगर, अर्थात् यरूशलेम का चित्र खींच; २ तब उसे घेर अर्थात् उसके विरुद्ध किला बना और उसके साम्हने दमदमा बान्ध; और छावनी डाल, और उसके चारों ओर युद्ध के यंत्र लगा। ३ तब तू लोहे की थाली लेकर उसको लोहे की शहरपनाह मानकर अपने और उस नगर के बीच खड़ा कर; तब अपना मुंह उसके साम्हने करके उसे घेरवा, इस रीति से तू उसे घेर रखना। यह इस्राएल के घराने के लिये चिन्ह ठहरेगा॥

४ फिर तू अपने बायें पांजर के बल लेटकर इस्राएल के घराने का अधर्म अपने ऊपर रख; क्योंकि जितने दिन तू उस पांजर के बल लेटा रहेगा, उतने दिन तक उन लोगों के अधर्म का भार सहता रह। ५ मैं ने उनके अधर्म के वर्षों के तुल्य तेरे लिये दिन ठहराए हैं, अर्थात् तीन सौ नब्बे दिन; उतने दिन तक तू इस्राएल के घराने के अधर्म का भार सहता रह। ६ और जब इतने दिन पूरे हो जाएं, तब अपने दहिने पांजर के बल लेटकर यहूदा के घराने के अधर्म का भार सह लेना; मैं ने उसके लिये भी और तेरे लिये एक वर्ष की सन्ती एक दिन अर्थात् चालीस दिन ठहराए हैं। ७ और तू यरूशलेम के घेरने के लिये बांह उघाड़े हुए अपना मुंह उधर करके उसके विरुद्ध भविष्यद्वाणी करना। ८ और देख, मैं तुझे रस्सियों से जकडूंगा, और जब तक उसके घेरने के

* मूल में—का हाथ।

दिन पूरे न हों, तब तक तू करवट न ले सकेगा ।।

९ और तू गेहूं, जव, सेम, मसूर, बाजरा, और कठिया गेहूं लेकर, एक बासन में रखकर उन से रोटी बनाया करना। जितने दिन तू अपने पांजर के बल लेटा रहेगा, उतने अर्थात् तीन सौ नब्बे दिन तक उसे खाया करना। १० और जो भोजन तू खाए, उसे तौल तौलकर खाना, अर्थात् प्रति दिन बीस बीस शेकेल भर खाया करना, और उसे समय समय पर खाना। ११ पानी भी तू मापकर पिया करना, अर्थात् प्रति दिन हीन का छठवां अंश पीना; और उसको समय समय पर पीना। १२ और अपना भोजन जव की रोटियों की नाईं बनाकर खाया करना, और उसको मनुष्य की विष्ठा से उनके देखते बनाया करना। १३ फिर यहोवा ने कहा, इसी प्रकार से इस्राएल उन जातियों के बीच अपनी अपनी रोटी अशुद्धता से खाया करेंगे, जहां मैं उन्हें बरबस पहुंचाऊंगा। १४ तब मैं ने कहा, हाय, यहोवा परमेश्वर देख, मेरा मन कभी अशुद्ध नहीं हुआ, और न मैं ने बचपन से लेकर अब तक अपनी मृत्यु से मरे हुए वा फाड़े हुए पशु का मांस खाया, और न किसी प्रकार का घिनौना मांस मेरे मुंह में कभी गया है। १५ तब उस ने मुझ से कहा, देख, मैं ने तेरे लिये मनुष्य की विष्ठा की सन्ती गोबर ठहराया है, और उसी से तू अपनी रोटी बनाना। १६ फिर उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, देख, मैं यरूशलेम में अन्नरूपी आधार को दूर करूंगा; सो वहां के लोग तौल तौलकर और चिन्ता कर करके रोटी खाया करेंगे; और माप मापकर और विस्मित हो होकर पानी पिया करेंगे। १७ और इस से उन्हें रोटी और पानी की घटी होगी; और वे सब के सब घबराएंगे, और अपने अधर्म में फंसे हुए सूख जाएंगे* ।।

५ और हे मनुष्य के सन्तान, एक पैनी तलवार ले, और उसे नाऊ के छुरे के काम में लाकर अपने सिर और दाढ़ी के बाल मूंड़ डाल; तब तौलने का कांटा लेकर बालों के भाग कर। २ जब नगर के घिरने के दिन पूरे हों, तब नगर के भीतर एक तिहाई आग में डालकर जलाना; और एक तिहाई लेकर चारों ओर तलवार से मारना; और एक तिहाई को पवन में उड़ाना, और मैं तलवार खींचकर उसके पीछे चलाऊंगा। ३ तब इन में से थोड़े से बाल लेकर अपने कपड़े की छोर में बान्धना। ४ फिर इन में से भी थोड़े से लेकर आग के बीच डालना कि वे आग में जल जाएं; तब उसी में से एक लौ भड़ककर इस्राएल के सारे घराने में फैल जाएगी ।।

५ प्रभु यहोवा यों कहता है, यरूशलेम ऐसी ही है; मैं ने उसको अन्यजातियों के बीच में ठहराया, और वह चारों ओर देशों से घिरी है। ६ उस ने मेरे नियमों के विरुद्ध काम करके अन्यजातियों से अधिक दुष्टता की, और मेरी विधियों के विरुद्ध चारों ओर के देशों के लोगों से अधिक बुराई की है; क्योंकि उन्हों ने मेरे नियम तुच्छ जाने, और वे मेरी विधियों पर नहीं चले। ७ इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है, तुम लोग जो अपने चारों ओर की जातियों से अधिक

* मूल में—गल जाएंगे।

हुल्लड़ मचाते, और न मेरी विधियों पर चलते, न मेरे नियमों को मानते और अपने चारों ओर की जातियों के नियमों के अनुसार भी न किया, ८ इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है, देख, मैं स्वयं तेरे विरुद्ध हूं; और अन्यजातियों के देखते में तेरे बीच न्याय के काम करूंगा। ९ और तेरे सब घिनौने कामों के कारण मैं तेरे बीच ऐसा करूंगा, जैसा न अब तक किया है, और न भविष्य में फिर करूंगा। १० सो तेरे बीच लड़केबाले अपने अपने बाप का, और बाप अपने अपने लड़केबालों का मांस खाएंगे; और मैं तुझ को दण्ड दूंगा, ११ और तेरे सब बचे हुओं को चारों ओर तितर-बितर करूंगा। इसलिये प्रभु यहोवा की यह वाणी है, कि मेरे जीवन की सौगन्ध, इसलिये कि तू ने मेरे पवित्र-स्थान को अपनी सारी घिनौनी मूरतों और सारे घिनौने कामों से अशुद्ध किया है, मैं तुझे घटाऊंगा, और तुझ पर दया की दृष्टि न करूंगा, और तुझ पर कुछ भी कोमलता न करूंगा। १२ तेरी एक तिहाई तो मरी से मरेगी, और तेरे बीच भूख से मर मिटेगी; एक तिहाई तेरे आस पास तलवार से मारी जाएगी; और एक तिहाई को मैं चारों ओर तितर-बितर करूंगा और तलवार खींचकर उनके पीछे चलाऊंगा। १३ इस प्रकार से मेरा कोप शान्त होगा, और अपनी जलजलाहट उन पर पूरी रीति से भड़काकर* मैं शान्ति पाऊंगा; और जब मैं अपनी जलजलाहट उन पर पूरी रीति से भड़का चुकूं, तब वे जान लेंगे कि मुझ यहोवा ही ने जलन में आकर यह कहा है। १४ और मैं तुझे तेरे चारों ओर की जातियों के बीच, सब बटोहियों के देखते हुए उजाड़ूंगा, और तेरी नामधराई कराऊंगा। १५ सो जब मैं तुझ को कोप और जल-जलाहट और रिसवाली घुड़कियों के साथ दण्ड दूंगा, तब तेरे चारों ओर की जातियों के साम्हने नामधराई, ठट्ठा, शिक्षा और विस्मय होगा, क्योंकि मुझ यहोवा ने यह कहा है। १६ यह उस समय होगा, जब मैं उन लोगों को नाश करने के लिये तुम पर महंगी के तीखे तीर चलाकर, तुम्हारे बीच महंगी बढ़ाऊंगा, और तुम्हारे अन्नरूपी आधार को दूर करूंगा। १७ और मैं तुम्हारे बीच महंगी और दुष्ट जन्तु भेजूंगा जो तुम्हें निःसन्तान करेंगे; और मरी और खून तुम्हारे बीच चलते रहेंगे; और मैं तुम पर तलवार चलवाऊंगा, मुझ यहोवा ने यह कहा है॥

६ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा। २ हे मनुष्य के सन्तान अपना मुख इस्राएल के पहाड़ों की ओर करके उनके विरुद्ध भविष्यद्वाणी कर, ३ और कह, हे इस्राएल के पहाड़ो, प्रभु यहोवा का वचन सुनो! प्रभु यहोवा पहाड़ों और पहाड़ियों से, और नालों और तराइयों से यों कहता है, देखो, मैं तुम पर तलवार चलवाऊंगा, और तुम्हारे पूजा के ऊंचे स्थानों को नाश करूंगा। ४ तुम्हारी वेदियां उजड़ेंगी और तुम्हारी सूर्य की प्रतिमाएं तोड़ी जाएंगी; और मैं तुम में से मारे हुओं को तुम्हारी मूरतों के आगे फेंक दूंगा। ५ मैं इस्राएलियों की लोथों को उनकी मूरतों के साम्हने रखूंगा, और उनकी* हड्डियों

* जलजलाहट को विश्राम देकर।

* मूल में—तुम्हारी।

को तुम्हारी वेदियों के आस पास छितरा दूंगा। ६ तुम्हारे जितने बसाए हुए नगर हैं, वे सब ऐसे उजड़ जाएंगे, कि तुम्हारे पूजा के ऊंचे स्थान भी उजाड़ हो जाएंगे, तुम्हारी वेदियां उजड़ेंगी और ढाई जाएंगी, तुम्हारी मूरतें जाती रहेंगी और तुम्हारी सूर्य की प्रतिमाएं काटी जाएंगी; और तुम्हारी सारी कारीगरी मिटाई जाएगी। ७ और तुम्हारे बीच मारे हुए गिरेंगे, और तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं॥

८ तौभी मैं कितनों को बचा रखूंगा। सो जब तुम देश देश में तितर-बितर होगे, तब अन्यजातियों के बीच तुम्हारे कुछ लोग तलवार से बच जाएंगे। ९ और वे बचे हुए लोग, उन जातियों के बीच, जिन में वे बंधुए होकर जाएंगे, मुझे स्मरण करेंगे; और यह भी कि हमारा व्यभिचारी हृदय यहोवा से कैसे हट गया है और व्यभिचारिणी की सी हमारी आंखें मूरतों पर कैसी लगी हैं जिस से यहोवा का मन टूटा है। इस रीति से उन बुराइयों के कारण, जो उन्हों ने अपने सारे घिनौने काम करके की हैं, वे अपनी दृष्टि में घिनौने ठहरेंगे। १० तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं, और उनकी सारी हानि करने को मैं ने जो यह कहा है, उसे व्यर्थ नहीं कहा॥

११ प्रभु यहोवा यों कहता है, कि अपना हाथ मारकर और अपना पांव पटककर कह, इस्राएल के घराने के सारे घिनौने कामों पर हाय, हाय, क्योंकि वे तलवार, भूख, और मरी से नाश हो जाएंगे। १२ जो दूर हो वह मरी से मरेगा, और जो निकट हो वह तलवार से मार डाला जाएगा; और जो बचकर नगर में रहते हुए घेरा जाए, वह भूख से मरेगा। इस भांति मैं अपनी जलजलाहट उन पर पूरी रीतिं से उतारूंगा। १३ और जब हर एक ऊंची पहाड़ी और पहाड़ों की हर एक चोटी पर, और हर एक हरे पेड़ के नीचे, और हर एक घने बांजवृक्ष की छाया में, जहां जहां वे अपनी सब मूरतों को सुखदायक सुगन्ध द्रव्य चढ़ाते हैं, वहां उनके मारे हुए लोग अपनी वेदियों के आस पास अपनी मूरतों के बीच में पड़े रहेंगे; तब तुम लोग जान लोगे कि मैं यहोवा हूं। १४ मैं अपना हाथ उनके विरुद्ध बढ़ाकर उस देश को सारे घरों समेत जंगल से ले दिबला की ओर तक उजाड़ ही उजाड़ कर दूंगा। तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं॥

७ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २ हे मनुष्य के सन्तान, प्रभु यहोवा इस्राएल की भूमि के विषय में यों कहता है, कि अन्त हुआ; चारों कोनों समेत देश का अन्त आ गया है। ३ तेरा अन्त भी आ गया, और मैं अपना कोप तुझ पर भड़काकर तेरे चालचलन के अनुसार तुझे दण्ड दूंगा; और तेरे सारे घिनौने कामों का फल तुझे दूंगा। ४ मेरी दयादृष्टि तुझ पर न होगी, और न मैं कोमलता करूंगा; और जब तक तेरे घिनौने पाप तुझ में बने रहेंगे तब तक मैं तेरे चालचलन का फल तुझे दूंगा। तब तू जान लेगा कि मैं यहोवा हूं॥

५ प्रभु यहोवा यों कहता है, विपत्ति है, एक बड़ी विपत्ति है! देखो, वह आती है। ६ अन्त आ गया है, सब का अन्त आया है; वह तेरे विरुद्ध जागा है। देखो, वह आता है। ७ हे देश के निवासी, तेरे लिये चक्र घूम चुका, समय आ गया,

दिन निकट है; पहाड़ों पर आनन्द के शब्द का दिन नहीं, हुल्लड़ ही का होगा। ८ अब थोड़े दिनों में मैं अपनी जलजलाहट तुझ पर भड़काऊंगा *, और तुझ पर पूरा कोप उण्डेलूंगा और तेरे चालचलन के अनुसार तुझे दण्ड दूंगा। और तेरे सारे घिनौने कामों का फल तुझे भुगताऊंगा। ९ मेरी दयादृष्टि तुझ पर न होगी और न मैं तुझ पर कोमलता करूंगा। मैं तेरी चालचलन का फल तुझे भुगताऊंगा, और तेरे घिनौने पाप तुझ में बने रहेंगे। तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा दण्ड देनेवाला हूं॥

१० देखो, उस दिन को देखो, वह आता है! चक्र घूम चुका, छड़ी फूल चुकी, अभिमान फूला है। ११ उपद्रव बढ़ते बढ़ते दुष्टता का दण्ड बन गया; उन में से कोई न बचेगा, और न उनकी भीड़-भाड़, न उनके धन में से कुछ रहेगा; और न उन में से किसी के लिये विलाप सुन पड़ेगा। १२ समय आ गया, दिन निकट आ गया है; न तो मोल लेनेवाला आनन्द करे और न बेचनेवाला शोक करे, क्योंकि उनकी सारी भीड़ पर कोप भड़क उठा है। १३ चाहे वे जीवित रहें, तौभी बेचनेवाला बेची हुई वस्तु के पास कभी लौटने न पाएगा; क्योंकि दर्शन की यह बात देश की सारी भीड़ पर घटेगी; कोई न लौटेगा; कोई भी मनुष्य, जो अधर्म में जीवित रहता है, बल न पकड़ सकेगा॥

१४ उन्हों ने नरसिंगा फूंका और सब कुछ तैयार कर दिया; परन्तु युद्ध में कोई नहीं जाता क्योंकि देश की सारी भीड़ पर मेरा कोप भड़का हुआ है। १५ बाहर तलवार और भीतर महंगी और मरी हैं; जो मैदान में हो वह तलवार से मरेगा, और जो नगर में हो वह भूख और मरी से मारा जाएगा। १६ और उन में से जो बच निकलेंगे वे बचेंगे तो सही परन्तु अपने अपने अधर्म में फंसे रहकर तराइयों में रहनेवाले कबूतरों की नाईं पहाड़ों के ऊपर विलाप करते रहेंगे। १७ सब के हाथ ढीले और सब के घुटने अति निर्बल हो जाएंगे *। १८ और वे कमर में टाट कसेंगे, और उनके रोएं खड़े होंगे; सब के मुंह सूख जाएंगे और सब के सिर मूंड़े जाएंगे। १९ वे अपनी चान्दी सड़कों में फेंक देंगे, और उनका सोना अशुद्ध वस्तु ठहरेगा; यहोवा की जलन के दिन उनका सोना चान्दी उनको बचा न सकेगी, न उस से उनका जी सन्तुष्ट होगा, न उनके पेट भरेंगे। क्योंकि वह उनके अधर्म के ठोकर का कारण हुआ है। २० उनका देश जो शोभायमान और शिरोमणि था, उसके विषय में उन्हों ने गर्व ही गर्व करके उस में अपनी घृणित वस्तुओं की मूरतें, और घृणित वस्तुएं बना रखीं, इस कारण मैं ने उसे उनके लिये अशुद्ध वस्तु ठहराया है। २१ और मैं उसे लूटने के लिये परदेशियों के हाथ, और धन छीनने के लिये पृथ्वी के दुष्ट लोगों के वश में कर दूंगा; और वे उसे अपवित्र कर डालेंगे। २२ मैं उन से मुंह फेर लूंगा, तब वे मेरे रक्षित स्थान को अपवित्र करेंगे; डाकू उस में घुसकर उसे अपवित्र करेंगे॥

* मूल में—उण्डेलूंगा।

* मूल में—जल ही [बनकर बह] जाएंगे।

२३ एक सांकल बना दे, क्योंकि देश अन्याय की हत्या से, और नगर उपद्रव से भरा हुआ है। २४ मैं अन्यजातियों के बुरे से बुरे लोगों को लाऊंगा, जो उनके घरों के स्वामी हो जाएंगे; और मैं सामर्थियों का गर्व तोड़ दूंगा और उनके पवित्रस्थान अपवित्र किए जाएंगे। २५ सत्यानाश होने पर है तब ढूंढ़ने पर भी उन्हें शान्ति न मिलेगी। २६ विपत्ति पर विपत्ति आएगी और उड़ती हुई चर्चा पर चर्चा सुनाई पड़ेगी; और लोग भविष्यद्वक्ता से दर्शन की बात पूछेंगे, परन्तु याजक के पास से व्यवस्था, और पुरनिये के पास से सम्मति देने की शक्ति जाती रहेगी। २७ राजा तो शोक करेगा, और रईस उदासीरूपी वस्त्र पहिनेंगे, और देश के लोगों के हाथ ढीले पड़ेंगे। मैं उनके चलन के अनुसार उन से बर्ताव करूंगा, और उनकी कमाई के समान उनको दण्ड दूंगा; तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं ॥

८ फिर छठवें वर्ष के छठवें महीने के पांचवें दिन को जब मैं अपने घर में बैठा था, और यहूदियों के पुरनिये मेरे साम्हने बैठे थे, तब प्रभु यहोवा की शक्ति * वहीं मुझ पर प्रगट हुई। २ और मैं ने देखा कि आग का सा एक रूप दिखाई देता है; उसकी कमर से नीचे की ओर आग है, और उसकी कमर से ऊपर की ओर झलकाए हुए पीतल की झलक सी कुछ है। ३ उस ने हाथ सा कुछ बढ़ाकर मेरे सिर के बाल पकड़े; तब आत्मा ने मुझे पृथ्वी और आकाश के बीच में उठाकर परमेश्वर के दिखाए हुए दर्शनों में यरूशलेम के मन्दिर के भीतर, आंगन के उस फाटक के पास पहुंचा दिया जिसका मुंह उत्तर की ओर है; और जिस में उस जलन उपजानेवाली प्रतिमा का स्थान था जिसके कारण द्वेष उपजता है। ४ फिर वहां इस्राएल के परमेश्वर का तेज वैसा ही था जैसा मैं ने मैदान में देखा था ॥

५ उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, अपनी आंखें उत्तर की ओर उठाकर देख। सो मैं ने अपनी आंखें उत्तर की ओर उठाकर देखा कि वेदी के फाटक की उत्तर की ओर उसके प्रवेश-स्थान ही में वह डाह उपजानेवाली प्रतिमा है। ६ तब उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू देखता है कि ये लोग क्या कर रहे हैं? इस्राएल का घराना क्या ही बड़े घृणित काम यहां करता है, ताकि मैं अपने पवित्रस्थान से दूर हो जाऊं; परन्तु तू इन से भी अधिक घृणित काम देखेगा ॥

७ तब वह मुझे आंगन के द्वार पर ले गया, और मैं ने देखा, कि भीत में एक छेद है। ८ तब उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, भीत को फोड़; सो मैं ने भीत को फोड़कर क्या देखा कि एक द्वार है। ९ उस ने मुझ से कहा, भीतर जाकर देख कि ये लोग यहां कैसे कैसे और अति घृणित काम कर रहे हैं। १० सो मैं ने भीतर जाकर देखा कि चारों ओर की भीत पर जाति जाति के रेंगनेवाले जन्तुओं और घृणित पशुओं और इस्राएल के घराने की सब मूरतों के चित्र खिंचे हुए हैं। ११ और इस्राएल के घराने के पुरनियों में से सत्तर पुरुष जिन के बीच में शापान का पुत्र याजन्याह भी है, वे उन चित्रों के साम्हने खड़े हैं,

* मूल में—का हाथ।

और हर एक पुरुष अपने हाथ में धूपदान लिए हुए हैं; और धूप के धूएं के बादल की सुगन्ध उठ रही है। १२ तब उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू ने देखा है कि इस्राएल के घराने के पुरनिये अपनी अपनी नक्काशीवाली कोठरियों के भीतर अर्थात् अन्धियारे में क्या कर रहे हैं? वे कहते हैं कि यहोवा हम को नहीं देखता; यहोवा ने देश को त्याग दिया है। १३ फिर उस ने मुझ से कहा, तू इन से और भी अति घृणित काम देखेगा जो वे करते हैं॥

१४ तब वह मुझे यहोवा के भवन के उस फाटक के पास ले गया जो उत्तर की ओर था और वहां स्त्रियां बैठी हुई तम्मूज के लिये रो रही थीं। १५ तब उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू ने यह देखा है? फिर इन से भी बड़े घृणित काम तू देखेगा॥

१६ तब वह मुझे यहोवा के भवन के भीतरी आंगन में ले गया; और वहां यहोवा के भवन के द्वार के पास ओसारे और वेदी के बीच कोई पच्चीस पुरुष अपनी पीठ यहोवा के भवन की ओर और अपने मुख पूर्व की ओर किए हुए थे; और वे पूर्व दिशा की ओर सूर्य को दण्डवत् कर रहे थे। १७ तब उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू ने यह देखा? क्या यहूदा के घराने के लिये घृणित कामों का करना जो वे यहां करते हैं छोटी बात है? उन्हों ने अपने देश को उपद्रव से भर दिया, और फिर यहां आकर मुझे रिस दिलाते हैं। वरन वे डाली को अपनी नाक के आगे लिए रहते हैं। १८ इसलिये मैं भी जलजलाहट के साथ काम करूंगा, न मैं दया करूंगा और न मैं कोमलता करूंगा; और चाहे वे मेरे कानों में ऊंचे शब्द से पुकारें, तौभी मैं उनकी बात न सुनूंगा॥

९ फिर उस ने मेरे कानों में ऊंचे शब्द से पुकारकर कहा, नगर के अधिकारियों को अपने अपने हाथ में नाश करने का हथियार लिए हुए निकट लाओ। २ इस पर छः पुरुष, उत्तर की ओर ऊपरी फाटक के मार्ग से अपने अपने हाथ में घात करने का हथियार लिए हुए आए; और उनके बीच सन का वस्त्र पहिने, कमर में लिखने की दवात बान्धे हुए एक और पुरुष था; और वे सब भवन के भीतर जाकर पीतल की वेदी के पास खड़े हुए॥

३ और इस्राएल के परमेश्वर का तेज करूबों पर से, जिनके ऊपर वह रहा करता था, भवन की डेवढ़ी पर उठ आया था; और उस ने उस सन के वस्त्र पहिने हुए पुरुष को जो कमर में दवात बान्धे हुए था, पुकारा। ४ और यहोवा ने उस से कहा, इस यरूशलेम नगर के भीतर इधर उधर जाकर जितने मनुष्य उन सब घृणित कामों के कारण जो उस में किए जाते हैं, सांसें भरते और दुःख के मारे चिल्लाते हैं, उनके माथों पर चिन्ह कर दे। ५ तब उस ने मेरे सुनते हुए दूसरों से कहा, नगर में उनके पीछे पीछे चलकर मारते जाओ; किसी पर दया न करना और न कोमलता से काम करना। ६ बूढ़े, युवा, कुंवारी, बालबच्चे, स्त्रियां, सब को मारकर नाश करो, परन्तु जिस किसी मनुष्य के माथे पर वह चिन्ह हो, उसके निकट न जाना। और मेरे पवित्रस्थान

ही से आरम्भ करो। और उन्हों ने उन पुरनियों से आरम्भ किया जो भवन के साम्हने थे। ७ फिर उस ने उन से कहा, भवन को अशुद्ध करो, और आंगनों को लोथों से भर दो। चलो, बाहर निकलो। तब वे निकलकर नगर में मारने लगे। ८ जब वे मार रहे थे, और मैं अकेला रह गया, तब मैं मुंह के बल गिरा और चिल्लाकर कहा, हाय प्रभु यहोवा! क्या तू अपनी जलजलाहट यरूशलेम पर भड़काकर * इस्राएल के सब बचे हुओं को भी नाश करेगा?

९ तब उस ने मुझ से कहा, इस्राएल और यहूदा के घरानों का अधर्म अत्यन्त ही अधिक है, यहां तक कि देश हत्या से और नगर अन्याय से भर गया है; क्योंकि वे कहते हैं कि यहोवा ने पृथ्वी † को त्याग दिया और यहोवा कुछ नहीं देखता। १० इसलिये उन पर दया न होगी, न मैं कोमलता करूंगा, वरन उनकी चाल उन्हीं के सिर लौटा दूंगा॥

११ तब मैं ने क्या देखा, कि जो पुरुष सन का वस्त्र पहिने हुए और कमर में, दवात बान्धे था, उस ने यह कहकर समाचार दिया, जैसे तू ने आज्ञा दी, मैं ने वैसे ही किया है॥

१० इसके बाद मैं ने देखा कि करूबों के सिरों के ऊपर जो आकाशमण्डल है, उस में नीलमणि का सिंहासन सा कुछ दिखाई देता है। २ तब यहोवा ने उस सन के वस्त्र पहिने हुए पुरुष से कहा, घूमनेवाले पहियों के बीच करूबों के नीचे जा और अपनी दोनों मुट्ठियों को करूबों के बीच के अंगारों से भरकर नगर पर छितरा दे॥

सो वह मेरे देखते देखते उनके बीच में गया। ३ जब वह पुरुष भीतर गया, तब वे करूब भवन की दक्खिन ओर खड़े थे; और बादल भीतरवाले आंगन में भरा हुआ था। ४ तब यहोवा का तेज करूबों के ऊपर से उठकर भवन की डेवढ़ी पर आ गया; और बादल भवन में भर गया; और वह आंगन यहोवा के तेज के प्रकाश से भर गया। ५ और करूबों के पंखों का शब्द बाहरी आंगन तक सुनाई देता था, वह सर्वशक्तिमान् परमेश्वर के बोलने का सा शब्द था॥

६ जब उस ने सन के वस्त्र पहिने हुए पुरुष को घूमनेवाले पहियों के भीतर करूबों के बीच में से आग लेने की आज्ञा दी, तब वह उनके बीच में जाकर एक पहिये के पास खड़ा हुआ। ७ तब करूबों के बीच से एक करूब ने अपना हाथ बढ़ाकर, उस आग में से जो करूबों के बीच में थी, कुछ उठाकर सन के वस्त्र पहिने हुए पुरुष की मुट्ठी में दे दी; और वह उसे लेकर बाहर चला गया। ८ करूबों के पंखों के नीचे तो मनुष्य का हाथ सा कुछ दिखाई देता था॥

९ तब मैं ने देखा, कि करूबों के पास चार पहिये हैं; अर्थात् एक एक करूब के पास एक एक पहिया है, और पहियों का रूप फीरोज़ा का सा है। १० और उनका ऐसा रूप है, कि चारों एक से दिखाई देते हैं, जैसे एक पहिये के बीच दूसरा पहिया हो। ११ चलने के समय वे अपनी चारों अलंगों के बल से चलते हैं, और चलते समय मुड़ते नहीं, वरन जिधर उनका सिर रहता है वे उधर ही

---

* मूल में—उण्डेलते उण्डेलते।
† वा इस देश।

उसके पीछे चलते हैं और चलते समय वे मुड़ते नहीं। १२ और पीठ हाथ और पंखों समेत करूबों का सारा शरीर और जो पहिये उनके हैं, वे भी सब के सब चारों ओर आंखों से भरे हुए हैं। १३ मेरे सुनते हुए इन पहियों को चक्कर कहा गया, अर्थात् घूमनेवाले पहिये। १४ और एक एक के चार चार मुख थे; एक मुख तो करूब का सा, दूसरा मनुष्य का सा, तीसरा सिंह का सा, और चौथा उकाब पक्षी का सा।।

१५ और करूब भूमि पर से उठ गए। ये वे ही जीवधारी हैं, जो मैं ने कबार नदी के पास देखे थे। १६ और जब जब वे करूब चलते थे तब तब वे पहिये उनके पास पास चलते थे; और जब जब करूब पृथ्वी पर से उठने के लिये अपने पंख उठाते तब तब पहिये उनके पास से नहीं मुड़ते थे। १७ जब वे खड़े होते तब ये भी खड़े होते थे; और जब वे उठते तब ये भी उनके संग उठते थे; क्योंकि जीवधारियों की आत्मा इन में भी रहती थी।।

१८ यहोवा का तेज भवन की डेवढ़ी पर से उठकर करूबों के ऊपर ठहर गया। १९ और करूब अपने पंख उठाकर मेरे देखते देखते पृथ्वी पर से उठकर निकल गए; और पहिये भी उनके संग संग गए, और वे सब यहोवा के भवन के पूर्वी फाटक में खड़े हो गए; और इस्राएल के परमेश्वर का तेज उनके ऊपर ठहरा रहा।।

२० ये वे ही जीवधारी हैं जो मैं ने कबार नदी के पास इस्राएल के परमेश्वर के नीचे देखे थे; और मैं ने जान लिया कि वे भी करूब हैं। २१ हर एक के चार मुख और चार पंख और पंखों के नीचे मनुष्य के से हाथ भी थे। २२ और उनके मुखों का रूप वही है जो मैं ने कबार नदी के तीर पर देखा था। और उनके मुख ही क्या वरन उनकी सारी देह भी वैसी ही थी। वे सीधे अपने अपने साम्हने ही चलते थे।।

११ तब आत्मा ने मुझे उठाकर यहोवा के भवन के पूर्वी फाटक के पास जिसका मुंह पूर्वी दिशा की ओर है, पहुंचा दिया; और वहां मैं ने क्या देखा, कि फाटक ही में पच्चीस पुरुष हैं। और मैं ने उनके बीच अज्जूर के पुत्र याजन्याह को और बनायाह के पुत्र पलत्याह को देखा, जो प्रजा के प्रधान थे। २ तब उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, जो मनुष्य इस नगर में अनर्थ कल्पना और बुरी युक्ति करते हैं वे ये ही हैं। ३ ये कहते हैं, घर बनाने का समय निकट नहीं, यह नगर हंडा और हम उस में का मांस हैं। ४ इसलिये हे मनुष्य के सन्तान, इनके विरुद्ध भविष्यद्वाणी कर, भविष्यद्वाणी।।

५ तब यहोवा का आत्मा मुझ पर उतरा, और मुझ से कहा, ऐसा कह, यहोवा यों कहता है, कि हे इस्राएल के घराने तुम ने ऐसा ही कहा है; जो कुछ तुम्हारे मन में आता है, उसे मैं जानता हूं। ६ तुम ने तो इस नगर में बहुतों को मार डाला वरन उसकी सड़कों को लोथों से भर दिया है। ७ इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है, कि जो मनुष्य तुम ने इस में मार डाले हैं, उनकी लोथें ही इस नगररूपी हंडे में का मांस है; और तुम इसके बीच से निकाले जाओगे। ८ तुम तलवार से डरते हो, और मैं

तुम पर तलवार चलाऊंगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। ९ मैं तुम को इस में से निकालकर परदेशियों के हाथ में कर दूंगा, और तुम को दण्ड दिलाऊंगा। १० तुम तलवार से मरकर गिरोगे, और मैं तुम्हारा मुक़द्दमा इस्राएल के देश के सिवाने पर चुकाऊंगा; तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं। ११ यह नगर तुम्हारे लिये हंडा न बनेगा, और न तुम इस में का मांस होगे; मैं तुम्हारा मुक़द्दमा इस्राएल के देश के सिवाने पर चुकाऊंगा। १२ तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं; तुम तो मेरी विधियों पर नहीं चले, और मेरे नियमों को तुम ने नहीं माना; परन्तु अपने चारों ओर की अन्यजातियों की रीतियों पर चले हो॥

१३ मैं इस प्रकार की भविष्यद्वाणी कर रहा था, कि बनायाह का पुत्र पलत्याह मर गया। तब मैं मुंह के बल गिरकर ऊंचे शब्द से चिल्ला उठा, और कहा, हाय प्रभु यहोवा, क्या तू इस्राएल के बचे हुओं को सत्यानाश कर डालेगा?

१४ तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, १५ हे मनुष्य के सन्तान, यरूशलेम के निवासियों ने तेरे निकट भाइयों से * वरन इस्राएल के सारे घराने से भी कहा है कि तुम यहोवा के पास से दूर हो जाओ; यह देश हमारे ही अधिकार में दिया गया है। १६ परन्तु तू उन से कह, प्रभु यहोवा यों कहता है कि मैं ने तुम को दूर दूर की जातियों में बसाया और देश देश में तितर-बितर कर दिया तो है, तौभी जिन देशों में तुम आए हुए हो, उन में मैं स्वयं तुम्हारे लिये थोड़े दिन तक पवित्रस्थान ठहरूंगा। १७ इसलिये, उन से कह, प्रभु यहोवा यों कहता है, कि मैं तुम को जाति जाति के लोगों के बीच से बटोरूंगा, और जिन देशों में तुम तितर-बितर किए गए हो, उन में से तुम को इकट्ठा करूंगा, और तुम्हें इस्राएल की भूमि दूंगा। १८ और वे वहां पहुंचकर उस देश की सब घृणित मूरतें और सब घृणित काम भी उस में से दूर करेंगे। १९ और मैं उनका हृदय एक कर दूंगा; और उनके भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूंगा, और उनकी देह में से पत्थर का सा हृदय निकालकर उन्हें मांस का हृदय दूंगा, २० जिस से वे मेरी विधियों पर नित चला करें और मेरे नियमों को मानें; और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा। २१ परन्तु वे लोग जो अपनी घृणित मूरतों और घृणित कामों में मन लगाकर चलते रहते हैं, उनको मैं ऐसा करूंगा कि उनकी चाल उन्हीं के सिर पर पड़ेगी, प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

२२ इस पर करूबों ने अपने पंख उठाए, और पहिये उनके संग संग चले; और इस्राएल के परमेश्वर का तेज उनके ऊपर था। २३ तब यहोवा का तेज नगर के बीच में से उठकर उस पर्वत पर ठहर गया जो नगर की पूर्व ओर है। २४ फिर आत्मा ने मुझे उठाया, और परमेश्वर के आत्मा की शक्ति से दर्शन में मुझे कसदियों के देश में बंधुओं के पास पहुंचा दिया। और जो दर्शन मैं ने पाया था वह लोप हो गया *। २५ तब जितनी बातें यहोवा ने मुझे दिखाई थीं, वे मैं ने बंधुओं को बता दीं॥

* मूल में—तेरे भाइयों वा तेरे समीपीजनों से।

* मूल में—मुझ पर से उठ गया।

१२ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २ हे मनुष्य के सन्तान, तू बलवा करनेवाले घराने के बीच में रहता है, जिनके देखने के लिये आंखें तो हैं, परन्तु नहीं देखते; और सुनने के लिये कान तो हैं परन्तु नहीं सुनते; क्योंकि वे बलवा करनेवाले घराने के हैं। ३ इसलिये हे मनुष्य के सन्तान दिन को बंधुआई का सामान तैयार करके उनके देखते हुए उठ जाना, उनके देखते हुए अपना स्थान छोड़कर दूसरे स्थान को जाना। यद्यपि वे बलवा करनेवाले घराने के हैं, तौभी सम्भव है कि वे ध्यान दें। ४ सो तू दिन को उनके देखते हुए बंधुआई के सामान की नाईं अपना सामान निकालना, और तब तू सांझ को बंधुआई में जानेवाले के समान उनके देखते हुए उठ जाना। ५ उनके देखते हुए भीत को फोड़कर उसी से अपना सामान निकालना। ६ उनके देखते हुए उसे अपने कंधे पर उठाकर अन्धेरे में निकालना, और अपना मुंह ढांपे रहना कि भूमि तुझे न देख पड़े; क्योंकि मैं ने तुझे इस्राएल के घराने के लिये एक चिन्ह ठहराया है॥

७ उस आज्ञा के अनुसार मैं ने वैसा ही किया। दिन को मैं ने अपना सामान बंधुआई के सामान की नाईं निकाला, और सांझ को अपने हाथ से भीत को फोड़ा; फिर अन्धेरे में सामान को निकालकर, उनके देखते हुए अपने कंधे पर उठाए हुए चला गया॥

८ बिहान को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, ९ हे मनुष्य के सन्तान, क्या इस्राएल के घराने ने अर्थात् उस बलवा करनेवाले घराने ने तुझ से यह नहीं पूछा, कि यह तू क्या करता है? १० तू उन से कह कि प्रभु यहोवा यों कहता है, यह प्रभावशाली वचन यरूशलेम के प्रधान पुरुष और इस्राएल के सारे घराने के विषय में है जिसके बीच में वे रहते हैं। ११ तू उन से कह, मैं तुम्हारे लिये चिन्ह हूं; जैसा मैं ने किया है, वैसा ही इस्राएली लोगों से भी किया जाएगा; उनको उठकर बंधुआई में जाना पड़ेगा। १२ उनके बीच में जो प्रधान है, सो अन्धेरे में अपने कंधे पर बोझ उठाए हुए निकलेगा; वह अपना सामान निकालने के लिये भीत को फोड़ेगा, और अपना मुंह ढांपे रहेगा कि उसको भूमि न देख पड़े। १३ और मैं उस पर अपना जाल फैलाऊंगा, और वह मेरे फंदे में फंसेगा; और मैं उसे कसदियों के देश के बाबुल में पहुंचा दूंगा; यद्यपि वह उस नगर में मर जाएगा, तौभी उसको न देखेगा। १४ और जितने उसके सहायक उसके आस पास होंगे, उनको और उसकी सारी टोलियों को मैं सब दिशाओं में तितर-बितर कर दूंगा; और तलवार खींचकर उनके पीछे चलवाऊंगा। १५ और जब मैं उन्हें जाति जाति में तितर-बितर कर दूंगा, और देश देश में छिन्न भिन्न कर दूंगा, तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं। १६ परन्तु मैं उन में से थोड़े से लोगों को तलवार, भूख और मरी से बचा रखूंगा; और वे अपने घृणित काम उन जातियों में बखान करेंगे जिनके बीच में वे पहुंचेंगे; तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं॥

१७ तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, १८ हे मनुष्य के सन्तान, कांपते हुए अपनी रोटी खाना और थरथराते और चिन्ता करते हुए अपना पानी पीना;

१९ और इस देश के लोगों से यों कहना, कि प्रभु यहोवा यरूशलेम और इस्राएल के देश के निवासियों के विषय में यों कहता है, वे अपनी रोटी चिन्ता के साथ खाएंगे, और अपना पानी विस्मय के साथ पीएंगे; क्योंकि देश अपने सब रहनेवालों के उपद्रव के कारण अपनी सारी भरपूरी से रहित हो जाएगा। २० और बसे हुए नगर उजड़ जाएंगे, और देश भी उजाड़ हो जाएगा; तब तुम लोग जान लोगे कि मैं यहोवा हूं॥

२१ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २२ हे मनुष्य के सन्तान यह क्या कहावत है जो तुम लोग इस्राएल के देश में कहा करते हो, कि दिन अधिक हो गए हैं, और दर्शन की कोई बात पूरी नहीं हुई*? २३ इसलिये उन से कह, प्रभु यहोवा यों कहता है, मैं इस कहावत को बन्द करूंगा; और यह कहावत इस्राएल पर फिर न चलेगी। और तू उन से कह कि वह दिन निकट आ गया है, और दर्शन की सब बातें पूरी होने पर हैं। २४ क्योंकि इस्राएल के घराने में न तो और अधिक झूठे दर्शन की कोई बात और न कोई चिकनी-चुपड़ी बात फिर कही जाएगी। २५ क्योंकि मैं यहोवा हूं; जब मैं बोलूं, तब जो वचन मैं कहूं, वह पूरा हो जाएगा। उस में विलम्ब न होगा, परन्तु, हे बलवा करनेवाले घराने तुम्हारे ही दिनों में मैं वचन कहूंगा, और वह पूरा हो जाएगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

२६ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २७ हे मनुष्य के सन्तान, देख, इस्राएल के घराने के लोग यह कह रहे हैं कि जो दर्शन वह देखता है, वह बहुत दिन के बाद पूरा होनेवाला है; और कि वह दूर के समय के विषय में भविष्यद्वाणी करता है। २८ इसलिये तू उन से कह, प्रभु यहोवा यों कहता है, मेरे किसी वचन के पूरा होने में फिर विलम्ब न होगा, वरन जो वचन मैं कहूं, सो वह निश्चय पूरा होगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

१३ यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २ हे मनुष्य के सन्तान, इस्राएल के जो भविष्यद्वक्ता अपने ही मन से भविष्यवाणी करते हैं, उनके विरुद्ध भविष्यवाणी करके तू कह, यहोवा का वचन सुनो। ३ प्रभु यहोवा यों कहता है, हाय, उन मूढ़ भविष्यद्वक्ताओं पर जो अपनी ही आत्मा के पीछे भटक जाते हैं, और कुछ दर्शन नहीं पाया! ४ हे इस्राएल, तेरे भविष्यद्वक्ता खण्डहरों में की लोमड़ियों के समान बने हैं। ५ तुम ने नाकों में चढ़कर इस्राएल के घराने के लिये भीत नहीं सुधारी, जिस से वे यहोवा के दिन युद्ध में स्थिर रह सकते। ६ वे लोग जो कहते हैं, यहोवा की यह वाणी है, उन्हों ने भावी का व्यर्थ और झूठा दावा किया है; और तब भी यह आशा दिलाई कि यहोवा यह वचन पूरा करेगा; तौभी यहोवा ने उन्हें नहीं भेजा। ७ क्या तुम्हारा दर्शन झूठा नहीं है, और क्या तुम झूठमूठ भावी नहीं कहते? तुम कहते हो, कि यहोवा की यह वाणी है; परन्तु मैं ने कुछ नहीं कहा है॥

८ इस कारण प्रभु यहोवा तुम से यों कहता है, तुम ने जो व्यर्थ बात कही

* मूल में—सब दर्शन नाश हुए।

और झूठे दर्शन देखे हैं, इसलिये मैं तुम्हारे विरुद्ध हूं, प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

९ जो भविष्यद्वक्ता झूठे दर्शन देखते और झूठमूठ भावी कहते हैं, मेरा हाथ उनके विरुद्ध होगा, और वे मेरी प्रजा की गोष्ठी में भागी न होंगे, न उनके नाम इस्राएल की नामावली में लिखे जाएंगे, और न वे इस्राएल के देश में प्रवेश करने पाएंगे; इस से तुम लोग जान लोगे कि मैं प्रभु यहोवा हूं। १० क्योंकि, हां, क्योंकि उन्हों ने "शान्ति है", ऐसा कहकर मेरी प्रजा को बहकाया है जब कि शान्ति नहीं है; और इसलिये कि जब कोई भीत बनाता है तब वे उसकी कच्ची लेसाई करते हैं। ११ उन कच्ची लेसाई करनेवालों से कह कि वह गिर जाएगी। क्योंकि बड़े ज़ोर की वर्षा होगी, और बड़े बड़े ओले भी गिरेंगे, और प्रचण्ड आंधी उसे गिराएगी। १२ सो जब भीत गिर जाएगी, तब क्या लोग तुम से यह न कहेंगे कि जो लेसाई तुम ने की वह कहां रही? १३ इस कारण प्रभु यहोवा तुम से यों कहता है, मैं जलकर उसको प्रचण्ड आंधी के द्वारा गिराऊंगा; और मेरे कोप से भारी वर्षा होगी, और मेरी जलजलाहट से बड़े बड़े ओले गिरेंगे कि भीत को नाश करें। १४ इस रीति जिस भीत पर तुम ने कच्ची लेसाई की है, उसे मैं ढा दूंगा, वरन मिट्टी में मिलाऊंगा, और उसकी नेव खुल जाएगी; और जब वह गिरेगी, तब तुम भी उसके नीचे दबकर नाश होगे; और तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं। १५ इस रीति मैं भीत और उसकी कच्ची लेसाई करनेवाले दोनों पर अपनी जलजलाहट पूर्ण रीति से भड़काऊंगा; फिर तुम से कहूंगा, न तो भीत रही, और न उसके लेसनेवाले रहे, १६ अर्थात् इस्राएल के वे भविष्यद्वक्ता जो यरूशलेम के विषय में भविष्यद्वाणी करते और उनकी शान्ति का दर्शन बताते थे, परन्तु प्रभु यहोवा की यह वाणी है, कि शान्ति है ही नहीं ॥

१७ फिर हे मनुष्य के सन्तान, तू अपने लोगों की स्त्रियों * से विमुख होकर, जो अपने ही मन से भविष्यद्वाणी करती हैं; उनके विरुद्ध भविष्यद्वाणी करके कह, १८ प्रभु यहोवा यों कहता है, जो स्त्रियां हाथ के सब जोड़ों के लिये तकिया सीतीं और प्राणियों का अहेर करने को सब प्रकार के मनुष्यों की आंख ढांपने के लिये कपड़े बनाती हैं, उन पर हाय! क्या तुम मेरी प्रजा के प्राणों का अहेर करके अपने निज प्राण बचा रखोगी? १९ तुम ने तो मुट्ठी मुट्ठी भर जब और रोटी के टुकड़ों के बदले मुझे मेरी प्रजा की दृष्टि में अपवित्र ठहराकर, और अपनी उन झूठी बातों के द्वारा, जो मेरी प्रजा के लोग तुम से सुनते हैं, जो नाश के योग्य न थे, उनको मार डाला; और जो बचने के योग्य न थे उन प्राणों को बचा रखा है ॥

२० इस कारण प्रभु यहोवा तुम से यों कहता है, देखो, मैं तुम्हारे उन तकियों के विरुद्ध हूं, जिनके द्वारा तुम प्राणों का अहेर करती हो, इसलिये जिन्हें तुम अहेर कर करके उड़ाती हो उनको मैं तुम्हारी बांह पर से छीनकर उनको छुड़ा दूंगा। २१ मैं तुम्हारे सिर के बुर्के को फाड़कर अपनी प्रजा के लोगों को तुम्हारे हाथ

* मूल में—बेटियों।

से छुड़ाऊंगा, और आगे को वे तुम्हारे वश में न रहेंगे कि तुम उनका अहेर कर सको; तब तुम जान लोगी कि मैं यहोवा हूं। २२ तुम ने जो झूठ कहकर धर्मी के मन को उदास किया है, यद्यपि मैं ने उसको उदास करना नहीं चाहा, और तुम ने दुष्ट जन को हियाव बन्धाया है, ताकि वह अपने बुरे मार्ग से न फिरे और जीवित रहे। २३ इस कारण तुम फिर न तो झूठा दर्शन देखोगी, और न भावी कहोगी; क्योंकि मैं अपनी प्रजा को तुम्हारे हाथ से छुड़ाऊंगा। तब तुम जान लोगी कि मैं यहोवा हूं॥

१४ फिर इस्राएल के कितने पुरनिये मेरे पास आकर मेरे साम्हने बैठ गए। २ तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, ३ हे मनुष्य के सन्तान, इन पुरुषों ने तो अपनी मूरतें अपने मन में स्थापित कीं, और अपने अधर्म की ठोकर अपने साम्हने रखी है; फिर क्या वे मुझ से कुछ भी पूछने पाएंगे? ४ सो तू उन से कह, प्रभु यहोवा यों कहता है, कि इस्राएल के घराने में से जो कोई अपनी मूरतें अपने मन में स्थापित करके, और अपने अधर्म की ठोकर अपने साम्हने रखकर भविष्यद्वक्ता के पास आए, उसको, मैं यहोवा, उसकी बहुत सी मूरतों के अनुसार ही उत्तर दूंगा, ५ जिस से इस्राएल का घराना, जो अपनी मूरतों के द्वारा मुझे त्यागकर दूर हो गया है, उन्हें मैं उन्हीं के मन के द्वारा फंसाऊंगा॥

६ सो इस्राएल के घराने से कह, प्रभु यहोवा यों कहता है, फिरो और अपनी मूरतों को पीठ के पीछे करो; और अपने सब घृणित कामों से मुंह मोड़ो। ७ क्योंकि इस्राएल के घराने में से और उसके बीच रहनेवाले परदेशियों में से भी कोई क्यों न हो, जो मेरे पीछे हो लेना छोड़कर अपनी मूरतें अपने मन में स्थापित करे, और अपने अधर्म की ठोकर अपने साम्हने रखे, और तब मुझ से अपनी कोई बात पूछने के लिये भविष्यद्वक्ता के पास आए, तो उसको, मैं यहोवा आप ही उत्तर दूंगा। ८ और मैं उस मनुष्य के विरुद्ध होकर उसको विस्मित करूंगा, और चिन्ह ठहराऊंगा; और उसकी कहावत चलाऊंगा और उसे अपनी प्रजा में से नाश करूंगा; तब तुम लोग जान लोगे कि मैं यहोवा हूं। ९ और यदि भविष्यद्वक्ता ने धोखा खाकर कोई वचन कहा हो, तो जानो कि मुझ यहोवा ने उस भविष्यद्वक्ता को धोखा दिया है; और मैं अपना हाथ उसके विरुद्ध बढ़ाकर उसे अपनी प्रजा इस्राएल में से नाश करूंगा। १० वे सब लोग अपने अपने अधर्म का बोझ उठाएंगे, अर्थात् जैसा भविष्यद्वक्ता से पूछनेवाले का अधर्म ठहरेगा, वैसा ही भविष्यद्वक्ता का भी अधर्म ठहरेगा। ११ ताकि इस्राएल का घराना आगे को मेरे पीछे हो लेना न छोड़े और न अपने भांति भांति के अपराधों के द्वारा आगे को अशुद्ध बने; वरन वे मेरी प्रजा बनें और मैं उनका परमेश्वर ठहरूं, प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

१२ और यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, १३ हे मनुष्य के सन्तान, जब किसी देश के लोग मुझ से विश्वासघात करके पापी हो जाएं, और मैं अपना हाथ उस देश के विरुद्ध बढ़ाकर उसका अन्नरूपी आधार दूर करूं, और उस में अकाल डालकर उस में से मनुष्य और पशु दोनों

को नाश करूं, १४ तब चाहे उस में नूह, दानिय्येल और अय्यूब ये तीनों पुरुष हों, तौभी वे अपने धर्म के द्वारा केवल अपने ही प्राणों को बचा सकेंगे; प्रभु यहोवा की यही वाणी है। १५ यदि मैं किसी देश में दुष्ट जन्तु भेजूं जो उसको निर्जन करके उजाड़ कर डालें, और जन्तुओं के कारण कोई उस में होकर न जाएं, १६ तो चाहे उस में वे तीन पुरुष हों, तौभी प्रभु यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, न वे पुत्रों को और न पुत्रियों को बचा सकेंगे; वे ही अकेले बचेंगे; परन्तु देश उजाड़ हो जाएगा। १७ और यदि मैं उस देश पर तलवार खींचकर कहूं, हे तलवार उस देश में चल; और इस रीति मैं उस में से मनुष्य और पशु नाश करूं, १८ तब चाहे उस में वे तीन पुरुष भी हों, तौभी प्रभु यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, न तो वे पुत्रों को और न पुत्रियों को बचा सकेंगे, वे ही अकेले बचेंगे। १९ यदि मैं उस देश में मरी फैलाऊं और उस पर अपनी जलजलाहट भड़काकर* उसका लोहू ऐसा बहाऊं कि वहां के मनुष्य और पशु दोनों नाश हों, २० तो चाहे नूह, दानिय्येल और अय्यूब भी उस में हों, तौभी, प्रभु यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, वे न पुत्रों को और न पुत्रियों को बचा सकेंगे, अपने धर्म के द्वारा वे केवल अपने ही प्राणों को बचा सकेंगे॥

२१ क्योंकि प्रभु यहोवा यों कहता है, मैं यरूशलेम पर अपने चारों दण्ड पहुंचाऊंगा, अर्थात् तलवार, अकाल, दुष्ट जन्तु और मरी, जिन से मनुष्य और पशु सब उस में से नाश हों। २२ तौभी उस में थोड़े से पुत्र-पुत्रियां बचेंगी जो वहां से निकालकर तुम्हारे पास पहुंचाई जाएंगी, और तुम उनके चालचलन और कामों को देखकर उस विपत्ति के विषय में जो मैं यरूशलेम पर डालूंगा, वरन जितनी विपत्ति मैं उस पर डालूंगा, उस सब के विषय में शान्ति पाओगे। २३ जब तुम उनका चालचलन और काम देखो, तब वे तुम्हारी शान्ति के कारण होंगे; और तुम जान लोगे कि मैं ने यरूशलेम में जो कुछ किया, वह बिना कारण नहीं किया, प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

* मूल में—उण्डेलकर।

१५ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २ हे मनुष्य के सन्तान, सब वृक्षों में अंगूर की लता की क्या श्रेष्ठता है? अंगूर की शाखा जो जंगल के पेड़ों के बीच उत्पन्न होती है, उस में क्या गुण है? ३ क्या कोई वस्तु बनाने के लिये उस में से लकड़ी ली जाती, वा कोई बर्तन टांगने के लिये उस में से खूंटी बन सकती है? ४ वह तो ईन्धन बनाकर आग में झोंकी जाती है; उसके दोनों सिरे आग से जल जाते, और उसके बीच का भाग भस्म हो जाता है, क्या वह किसी भी काम की है? ५ देख, जब वह बनी थी, तब भी वह किसी काम की न थी, फिर जब वह आग का ईन्धन होकर भस्म हो गई है, तब किस काम की हो सकती है? ६ सो प्रभु यहोवा यों कहता है, जैसे जंगल के पेड़ों में से मैं अंगूर की लता को आग का ईन्धन कर देता हूं, वैसे ही मैं यरूशलेम के निवासियों को नाश कर दूंगा। ७ मैं उन से विरुद्ध हूंगा, और वे एक आग में से

निकलकर फिर दूसरी आग का ईन्धन हो जाएंगे; और जब मैं उन से विमुख हूंगा, तब तुम लोग जान लोगे कि मैं यहोवा हूं। ८ और मैं उनका देश उजाड़ दूंगा, क्योंकि उन्हों ने मुझ से विश्वासघात किया है, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।।

१६ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २ हे मनुष्य के सन्तान, यरूशलेम को उसके सब घृणित काम जता दे। ३ और उस से कह, हे यरूशलेम, प्रभु यहोवा तुझ से यों कहता है, तेरा जन्म और तेरी उत्पत्ति कनानियों के देश से हुई; तेरा पिता तो एमोरी और तेरी माता हित्तिन थी। ४ और तेरा जन्म ऐसे हुआ कि जिस दिन तू जन्मी, उस दिन न तेरा नाल काटा गया, न तू शुद्ध होने के लिये धोई गई, न तेरे कुछ लोन मला गया और न तू कुछ कपड़ों में लपेटी गई। ५ किसी की दयादृष्टि तुझ पर नहीं हुई कि इन कामों में से तेरे लिये एक भी काम किया जाता; वरन अपने जन्म के दिन तू घृणित होने के कारण खुले मैदान में फेंक दी गई थी।।

६ और जब मैं तेरे पास से होकर निकला, और तुझे लोहू में लोटते हुए देखा, तब मैं ने तुझ से कहा, हे लोहू में लोटती हुई जीवित रह; हां, तुझ ही से मैं ने कहा, हे लोहू में लोटती हुई, जीवित रह। ७ फिर मैं ने तुझे खेत के बिरुले की नाईं बढ़ाया, और तू बढ़ते बढ़ते बड़ी हो गई और अति सुन्दर हो गई; तेरी छातियां सुडौल हुईं, और तेरे बाल बढ़े; तौभी तू नंगी थी।।

८ मैं ने फिर तेरे पास से होकर जाते हुए तुझे देखा, और अब तू पूरी स्त्री हो गई थी; सो मैं ने तुझे अपना वस्त्र ओढ़ाकर तेरा तन ढांप दिया; और सौगन्ध खाकर तुझ से वाचा बान्धी, और तू मेरी हो गई, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। ९ तब मैं ने तुझे जल से नहलाकर तुझ पर से लोहू धो दिया, और तेरी देह पर तेल मला। १० फिर मैं ने तुझे बूटेदार वस्त्र और सूइसों के चमड़े की जूतियां पहिनाईं; और तेरी कमर में सूक्ष्म सन बान्धा, और तुझे रेशमी कपड़ा ओढ़ाया। ११ तब मैं ने तेरा शृंगार किया, और तेरे हाथों में चूड़ियां और गले में तोड़ा पहिनाया। १२ फिर मैं ने तेरी नाक में नत्थ और तेरे कानों में बालियां पहिनाईं, और तेरे सिर पर शोभायमान मुकुट धरा। १३ तेरे आभूषण सोने चान्दी के और तेरे वस्त्र सूक्ष्म सन, रेशम और बूटेदार कपड़े के बने; फिर तेरा भोजन मैदा, मधु और तेल हुआ; और तू अत्यन्त सुन्दर, वरन रानी होने के योग्य हो गई। १४ और तेरी सुन्दरता की कीर्त्ति अन्यजातियों में फैल गई, क्योंकि उस प्रताप के कारण, जो मैं ने अपनी ओर से तुझे दिया था, तू अत्यन्त सुन्दर थी, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।।

१५ परन्तु तू अपनी सुन्दरता पर भरोसा करके अपनी नामवरी के कारण व्यभिचार करने लगी, और सब यात्रियों के संग बहुत कुकर्म किया, और जो कोई तुझे चाहता था तू उसी से मिलती थी। १६ तू ने अपने वस्त्र लेकर रंग बिरंग के ऊंचे स्थान बना लिए, और उन पर व्यभिचार किया, ऐसे कुकर्म किए जो न कभी हुए और न होंगे। १७ और तू ने अपने सुशोभित गहने लेकर जो मेरे दिए हुए सोने-चान्दी के थे, उन से पुरुषों की मूरतें बना लीं, और उन से भी व्यभिचार

करने लगी; १८ और अपने बूटेदार वस्त्र लेकर उनको पहिनाए, और मेरा तेल और मेरा धूप उनके साम्हने चढ़ाया। १९ और जो भोजन मैं ने तुझे दिया था, अर्थात् जो मैदा, तेल और मधु मैं तुझे खिलाता था, वह सब तू ने उनके साम्हने सुखदायक सुगन्ध करके रखा; प्रभु यहोवा की यही वाणी है कि यों ही हुआ। २० फिर तू ने अपने पुत्र-पुत्रियां लेकर जिन्हें तू ने मेरे लिये जन्म दिया, उन मूरतों को नैवेद्य करके चढ़ाई। क्या तेरा व्यभिचार ऐसी छोटी बात थी; २१ कि तू ने मेरे लड़केबाले उन मूरतों के आगे आग में चढ़ाकर घात किए हैं? २२ और तू ने अपने सब घृणित कामों में और व्यभिचार करते हुए, अपने बचपन के दिनों की कभी सुधि न ली, जब कि तू नंगी अपने लोहू में लोटती थी॥

२३ और तेरी उस सारी बुराई के पीछे क्या हुआ? २४ प्रभु यहोवा की यह वाणी है, हाय, तुझ पर हाय! कि तू ने एक गुम्मट बनवा लिया, और हर एक चौक में एक ऊंचा स्थान बनवा लिया; २५ और एक एक सड़क के सिरे पर भी तू ने अपना ऊंचा स्थान बनवाकर अपनी सुन्दरता घृणित करा दी, और हर एक यात्री को कुकर्म के लिये बुलाकर महाव्यभिचारिणी हो गई। २६ तू ने अपने पड़ोसी मिस्री लोगों से भी, जो मोटे-ताजे हैं, व्यभिचार किया और मुझे क्रोध दिलाने के लिये अपना व्यभिचार बढ़ाती गई। २७ इस कारण मैं ने अपना हाथ तेरे विरुद्ध बढ़ाकर, तेरा प्रति दिन का खाना घटा दिया, और तेरी बैरिन पलिश्ती स्त्रियां जो तेरे महापाप की चाल से लजाती हैं, उनकी इच्छा पर मैं ने तुझे छोड़ दिया है। २८ फिर भी तेरी तृष्णा न बुझी, इसलिये तू ने अश्शूरी लोगों से भी व्यभिचार किया; और उन से व्यभिचार करने पर भी तेरी तृष्णा न बुझी। २९ फिर तू लेन देन के देश में व्यभिचार करते करते कसदियों के देश तक पहुंची, और वहां भी तेरी तृष्णा न बुझी॥

३० प्रभु यहोवा की यह वाणी है, कि तेरा हृदय कैसा चंचल है कि तू ये सब काम करती है, जो निर्लज्ज वेश्या ही के काम हैं? ३१ तू ने हर एक सड़क के सिरे पर जो अपना गुम्मट, और हर चौक में अपना ऊंचा स्थान बनवाया है, क्या इसी में तू वेश्या के समान नहीं ठहरी? क्योंकि तू ऐसी कमाई पर हंसती है। ३२ तू व्यभिचारिणी पत्नी है। तू पराये पुरुषों को अपने पति की सन्ती ग्रहण करती है। ३३ सब वेश्याओं को तो रुपया मिलता है, परन्तु तू ने अपने सब मित्रों को स्वयं रुपए देकर, और उनको लालच दिखाकर बुलाया है कि वे चारों ओर से आकर तुझ से व्यभिचार करें। ३४ इस प्रकार तेरा व्यभिचार और व्यभिचारियों से उलटा है। तेरे पीछे कोई व्यभिचारी नहीं चलता, और तू किसी से दाम लेती नहीं, वरन तू ही देती है; इसी कारण तू उलटी ठहरी॥

३५ इस कारण, हे वेश्या, यहोवा का वचन सुन, ३६ प्रभु यहोवा यों कहता है, कि तू ने जो व्यभिचार में अति निर्लज्ज होकर, अपनी देह अपने मित्रों को दिखाई, और अपनी मूरतों से घृणित काम किए, और अपने लड़केबालों का लोहू बहाकर उन्हें बलि चढ़ाया है, ३७ इस कारण देख, मैं तेरे सब मित्रों

को जो तेरे प्रेमी हैं और जितनों से तू ने प्रीति लगाई, और जितनों से तू ने बैर रखा, उन सभों को चारों ओर से तेरे विरुद्ध इकट्ठा करके उनको तेरी देह नंगी करके दिखाऊंगा, और वे तेरा तन देखेंगे। ३८ तब मैं तुझ को ऐसा दण्ड दूंगा, जैसा व्यभिचारिणियों और लोहू बहानेवाली स्त्रियों को दिया जाता है; और क्रोध और जलन के साथ तेरा लोहू बहाऊंगा। ३९ इस रीति मैं तुझे उनके वश में कर दूंगा; और वे तेरे गुम्मटों को ढा देंगे, और तेरे ऊंचे स्थानों को तोड़ देंगे; वे तेरे वस्त्र बरबस उतारेंगे, और तेरे सुन्दर गहने छीन लेंगे, और तुझे नंगा करके छोड़ देंगे। ४० तब तेरे विरुद्ध एक सभा इकट्ठी करके वे तुझ को पत्थरवाह करेंगे, और अपनी कटारों से वारपार छेदेंगे। ४१ तब वे आग लगाकर तेरे घरों को जला देंगे, और तुझे बहुत सी स्त्रियों के देखते दण्ड देंगे; और मैं तेरा व्यभिचार बन्द करूंगा, और तू फिर छिनाले के लिये दाम न देगी। ४२ और जब मैं तुझ पर पूरी जलजलाहट प्रगट कर चुकूंगा, तब तुझ पर और न जलूंगा वरन शान्त हो जाऊंगा; और फिर न रिसियाऊंगा। ४३ तू ने जो अपने बचपन के दिन स्मरण नहीं रखे, वरन इन सब बातों के द्वारा मुझे चिढ़ाया, इस कारण मैं तेरा चालचलन तेरे सिर पर डालूंगा और तू अपने सब पिछले घृणित कामों से और अधिक महापाप न करेगी, प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

४४ देख, सब कहावत कहनेवाले तेरे विषय यह कहावत कहेंगे, कि जैसी मां वैसी पुत्री। ४५ तेरी मां जो अपने पति और लड़केबालों से घृणा करती थी, तू भी ठीक उसकी पुत्री ठहरी; और तेरी बहिनें जो अपने अपने पति और लड़केबालों से घृणा करती थीं, तू भी ठीक उनकी बहिन निकली। तेरी माता हित्तिन और पिता एमोरी था। ४६ तेरी बड़ी बहिन शोमरोन है, जो अपनी पुत्रियों समेत तेरी बाईं ओर रहती है, और तेरी छोटी बहिन, जो तेरी दहिनी ओर रहती है वह पुत्रियों समेत सदोम है। ४७ तू उनकी सी चाल नहीं चली, और न उनके से घृणित कामों ही से सन्तुष्ट हुई; यह तो बहुत छोटी बात ठहरती, परन्तु तेरा सारा चालचलन उन से भी अधिक बिगड़ गया। ४८ प्रभु यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, तेरी बहिन सदोम ने अपनी पुत्रियों समेत तेरे और तेरी पुत्रियों के समान काम नहीं किए। ४९ देख, तेरी बहिन सदोम का अधर्म यह था, कि वह अपनी पुत्रियों सहित घमण्ड करती, पेट भर भरके खाती, और सुख चैन से रहती थी; और दीन दरिद्र को न संभालती थी। ५० सो वह गर्व करके मेरे साम्हने घृणित काम करने लगी, और यह देखकर मैं ने उन्हें दूर कर दिया। ५१ फिर शोमरोन ने तेरे पापों के आधे भी पाप नहीं किए, तू ने तो उस से बढ़कर घृणित काम किए, और अपने घोर घृणित कामों के द्वारा अपनी बहिनों को जीत लिया *। ५२ सो तू ने जो अपनी बहिनों का न्याय किया, इस कारण लज्जित हो, क्योंकि तू ने उन से बढ़कर घृणित पाप किए हैं; इस कारण वे तुझ से कम दोषी ठहरी हैं। सो तू इस बात से लज्जा

* मूल में—निर्दोष ठहराया।

कर और लजाती रह, क्योंकि तू ने अपनी बहिनों को कम दोषी ठहराया है ॥

५३ जब मैं उनको अर्थात् पुत्रियों सहित सदोम और शोमरोन को बंधुआई से फेर लाऊंगा, तब उनके बीच ही तेरे बंधुओं को भी फेर लाऊंगा, ५४ जिस से तू लजाती रहे, और अपने सब कामों को देखकर लजाए, क्योंकि तू उनकी शान्ति ही का कारण हुई है। ५५ और तेरी बहिनें सदोम और शोमरोन अपनी अपनी पुत्रियों समेत अपनी पहिली दशा को फिर पहुंचेंगी, और तू भी अपनी पुत्रियों सहित अपनी पहिली दशा को फिर पहुंचेगी। ५६ जब तक तेरी बुराई प्रगट न हुई थी, अर्थात् जिस समय तक तू आस पास के लोगों समेत अरामी और पलिश्ती स्त्रियों की जो अब चारों ओर से तुझे तुच्छ जानती हैं, नामधराई करती थी, ५७ उन अपने घमण्ड के दिनों में तो तू अपनी बहिन सदोम का नाम भी न लेती थी। ५८ परन्तु अब तुझ को अपने महापाप और घृणित कामों का भार आप ही उठाना पड़ा है, यहोवा की यही वाणी है ॥

५९ प्रभु यहोवा यह कहता है, मैं तेरे साथ ऐसा ही बर्ताव करूंगा, जैसा तू ने किया है, क्योंकि तू ने तो वाचा तोड़कर शपथ तुच्छ जानी है, ६० तौभी मैं तेरे बचपन के दिनों की अपनी वाचा स्मरण करूंगा, और तेरे साथ सदा की वाचा बान्धूंगा। ६१ और जब तू अपनी बहिनों को अर्थात् अपनी बड़ी और छोटी बहिनों को ग्रहण करे, तब तू अपना चाल-चलन स्मरण करके लज्जित होगी; और मैं उन्हें तेरी पुत्रियां ठहरा दूंगा; परन्तु यह तेरी वाचा के अनुसार न करूंगा। ६२ मैं तेरे साथ अपनी वाचा स्थिर करूंगा, और तब तू जान लेगी कि मैं यहोवा हूं, ६३ जिस से तू स्मरण करके लज्जित हो, और लज्जा के मारे फिर कभी मुंह न खोले। यह उस समय होगा, जब मैं तेरे सब कामों को ढांपूंगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

१७ यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २ हे मनुष्य के सन्तान, इस्राएल के घराने से यह पहेली और दृष्टान्त कह; प्रभु यहोवा यों कहता है, ३ एक लम्बे पंखवाले, परों से भरे और रङ्ग बिरङ्गे बड़े उकाब पक्षी ने लबानोन जाकर एक देवदार की फुनगी नोच ली। ४ तब उस ने उस फुनगी की सब से ऊपर की पतली टहनी को तोड़ लिया, और उसे लेन देन करनेवालों के देश में ले जाकर ब्योपारियों के एक नगर में लगाया। ५ तब उस ने देश का कुछ बीज लेकर एक उपजाऊ खेत में बोया, और उसे बहुत जल भरे स्थान में मजनू की नाईं लगाया। ६ और वह उगकर छोटी फैलनेवाली अंगूर की लता हो गई जिसकी डालियां उसकी ओर झुकीं, और उसकी सोर उसके नीचे फैलीं; इस प्रकार से वह अंगूर की लता होकर कनखा फोड़ने और पत्तों से भरने लगी ॥

७ फिर और एक लम्बे पंखवाला और परों से भरा हुआ बड़ा उकाब पक्षी था; और वह अंगूर की लता उस स्थान से जहां वह लगाई गई थी, उस दूसरे उकाब की ओर अपनी सोर फैलाने और अपनी डालियां झुकाने लगी कि वह उसे सींचा करे। ८ परन्तु वह तो इसलिये अच्छी

भूमि में बहुत जल के पास लगाई गई थी, कि कनखाएं फोड़े, और फले, और उत्तम अंगूर की लता बने। ९ सो तू यह कह, कि प्रभु यहोवा यों पूछता है, क्या वह फूले फलेगी? क्या वह उसको जड़ से न उखाड़ेगा, और उसके फलों को न झाड़ डालेगा कि वह अपनी सब हरी नई पत्तियों समेत सूख जाए? इसे जड़ से उखाड़ने के लिये अधिक बल और बहुत से मनुष्यों की आवश्यकता न होगी। १० चाहे, वह लगी भी रहे, तौभी क्या वह फूले फलेगी? जब पुरवाई उसे लगे, तब क्या वह बिलकुल सूख न जाएगी? वह तो जहां उगी है उसी क्यारी में सूख जाएगी।।

११ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, उस बलवा करनेवाले घराने से कह, १२ क्या तुम इन बातों का अर्थ नहीं समझते? फिर उन से कह, बाबुल के राजा ने यरूशलेम को जाकर उसके राजा और और प्रधानों को लेकर अपने यहां बाबुल में पहुंचाया। १३ तब राजवंश में से एक पुरुष को लेकर उस से वाचा बान्धी, और उसको वश में रहने की शपथ खिलाई, और देश के सामर्थी पुरुषों को ले गया १४ कि वह राज्य निर्बल रहे और सिर न उठा सके, वरन वाचा पालने से स्थिर रहे। १५ तौभी इस ने घोड़े और बड़ी सेना मांगने को अपने दूत मिस्र में भेजकर उस से बलवा किया। क्या वह फूले फलेगा? क्या ऐसे कामों का करनेवाला बचेगा? क्या वह अपनी वाचा तोड़ने पर भी बच जाएगा? १६ प्रभु यहोवा यों कहता है, मेरे जीवन की सौगन्ध, जिस राजा की खिलाई हुई शपथ उस ने तुच्छ जानी, और जिसकी वाचा उस ने तोड़ी, उसके यहां जिस ने उसे राजा बनाया था, अर्थात् बाबुल में ही वह उसके पास ही मर जाएगा। १७ और जब वे बहुत से प्राणियों को नाश करने के लिये दमदमा बान्धें, और गढ़ बनाएं, तब फिरौन अपनी बड़ी सेना और बहुतों की मण्डली रहते भी युद्ध में उसकी सहायता न करेगा। १८ क्योंकि उस ने शपथ को तुच्छ जाना, और वाचा को तोड़ा; देखो, उस ने वचन देने पर भी ऐसे ऐसे काम किए हैं, सो वह बचने न पाएगा। १९ प्रभु यहोवा यों कहता है कि मेरे जीवन की सौगन्ध, उस ने मेरी शपथ तुच्छ जानी, और मेरी वाचा तोड़ी है; यह पाप मैं उसी के सिर पर डालूंगा। २० और मैं अपना जाल उस पर फैलाऊंगा और वह मेरे फन्दे में फंसेगा; और मैं उसको बाबुल में पहुंचाकर उस विश्वासघात का मुक़द्दमा उस से लड़ूंगा, जो उस ने मुझ से किया है। २१ और उसके सब दलों में से जितने भागें वे सब तलवार से मारे जाएंगे, और जो रह जाएं सो चारों दिशाओं में तितर-बितर हो जाएंगे। तब तुम लोग जान लोगे कि मुझ यहोवा ही ने ऐसा कहा है।।

२२ फिर प्रभु यहोवा यों कहता है, मैं भी देवदार की ऊंची फुनगी में से कुछ लेकर लगाऊंगा, और उसकी सब से ऊपरवाली कनखाओं में से एक कोमल कनखा तोड़कर एक अति ऊंचे पर्वत पर लगाऊंगा। २३ अर्थात् इस्राएल के ऊंचे पर्वत पर लगाऊंगा; सो वह डालियां फोड़-कर बलवन्त और उत्तम देवदार बन जाएगा, और उसके नीचे अर्थात् उसकी डालियों की छाया में भांति भांति के सब पक्षी बसेरा करेंगे। २४ तब मैदान के

सब वृक्ष जान लेंगे कि मुझ यहोवा ही ने ऊंचे वृक्ष को नीचा और नीचे वृक्ष को ऊंचा किया, हरे वृक्ष को सुखा दिया, और सूखे वृक्ष को फुलाया फलाया है। मुझ यहोवा ही ने यह कहा और वैसा ही कर भी दिया है ।।

१८ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २ तुम लोग जो इस्राएल के देश के विषय में यह कहावत कहते हो, कि जंगली अंगूर तो पुरखा लोग खाते, परन्तु दांत खट्टे होते हैं लड़केबालों के। इसका क्या अर्थ है? ३ प्रभु यहोवा यों कहता है कि मेरे जीवन की शपथ, तुम को इस्राएल में फिर यह कहावत कहने का अवसर न मिलेगा। ४ देखो, सभों के प्राण तो मेरे हैं; जैसा पिता का प्राण, वैसा ही पुत्र का भी प्राण है; दोनों मेरे ही हैं। इसलिये जो प्राणी पाप करे वही मर जाएगा ।।

५ जो कोई धर्मी हो, और न्याय और धर्म के काम करे, ६ और न तो पहाड़ों पर भोजन किया हो, न इस्राएल के घराने की मूरतों की ओर आंखें उठाई हों; न पराई स्त्री को बिगाड़ा हो, और न ऋतुमती के पास गया हो, ७ और न किसी पर अन्धेर किया हो वरन ऋणी को उसकी बन्धक फेर दी हो, न किसी को लूटा हो, वरन भूखे को अपनी रोटी दी हो और नंगे को कपड़ा ओढ़ाया हो, ८ न ब्याज पर रुपया दिया हो, न रुपए की बढ़ती ली हो, और अपना हाथ कुटिल काम से रोका हो, मनुष्य के बीच सच्चाई से न्याय किया हो, ९ और मेरी विधियों पर चलता और मेरे नियमों को मानता हुआ सच्चाई से काम किया हो, ऐसा मनुष्य धर्मी है, वह निश्चय जीवित रहेगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है ।।

१० परन्तु यदि उसका पुत्र डाकू, हत्यारा, वा ऊपर कहे हुए पापों में से किसी का करनेवाला हो, ११ और ऊपर कहे हुए उचित कामों का करनेवाला न हो, और पहाड़ों पर भोजन किया हो, पराई स्त्री को बिगाड़ा हो, १२ दीन दरिद्र पर अन्धेर किया हो, औरों को लूटा हो, बन्धक न फेर दी हो, मूरतों की ओर आंख उठाई हो, घृणित काम किया हो, १३ ब्याज पर रुपया दिया हो, और बढ़ती ली हो, तो क्या वह जीवित रहेगा? वह जीवित न रहेगा; इसलिये कि उस ने ये सब घिनौने काम किए हैं वह निश्चय मरेगा और उसका खून उसी के सिर पड़ेगा ।।

१४ फिर यदि ऐसे मनुष्य के पुत्र हों और वह अपने पिता के ये सब पाप देखकर भय के मारे उनके समान न करता हो। १५ अर्थात् न तो पहाड़ों पर भोजन किया हो, न इस्राएल के घराने की मूरतों की ओर आंख उठाई हो, न पराई स्त्री को बिगाड़ा हो, १६ न किसी पर अन्धेर किया हो, न कुछ बन्धक लिया हो, न किसी को लूटा हो, वरन अपनी रोटी भूखे को दी हो, नंगे को कपड़ा ओढ़ाया हो, १७ दीन जन की हानि करने से हाथ रोका हो, ब्याज और बढ़ती न ली हो, मेरे नियमों को माना हो, और मेरी विधियों पर चला हो, तो वह अपने पिता के अधर्म के कारण न मरेगा, वरन जीवित ही रहेगा। १८ उसका पिता, जिस ने अन्धेर किया और लूटा, और अपने भाइयों के बीच अनुचित काम किया है, वही अपने अधर्म

के कारण मर जाएगा। १९ तौभी तुम लोग कहते हो, क्यों? क्या पुत्र पिता के अधर्म का भार नहीं उठाता? जब पुत्र ने न्याय और धर्म के काम किए हों, और मेरी सब विधियों का पालनकर उन पर चला हो, तो वह जीवित ही रहेगा। २० जो प्राणी पाप करे वही मरेगा, न तो पुत्र पिता के अधर्म का भार उठाएगा और न पिता पुत्र का; धर्मी को अपने ही धर्म का फल, और दुष्ट को अपनी ही दुष्टता का फल मिलेगा। २१ परन्तु यदि दुष्ट जन अपने सब पापों से फिरकर, मेरी सब विधियों का पालन करे और न्याय और धर्म के काम करे, तो वह न मरेगा; वरन जीवित ही रहेगा। २२ उस ने जितने अपराध किए हों, उन में से किसी का स्मरण उसके विरुद्ध न किया जाएगा; जो धर्म का काम उस ने किया हो, उसके कारण वह जीवित रहेगा। २३ प्रभु यहोवा की यह वाणी है, क्या मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न होता हूं? क्या मैं इस से प्रसन्न नहीं होता कि वह अपने मार्ग से फिरकर जीवित रहे? २४ परन्तु जब धर्मी अपने धर्म से फिरकर टेढ़े काम, वरन दुष्ट के सब घृणित कामों के अनुसार करने लगे, तो क्या वह जीवित रहेगा? जितने धर्म के काम उस ने किए हों, उन में से किसी का स्मरण न किया जाएगा। जो विश्वासघात और पाप उस ने किया हो, उसके कारण वह मर जाएगा॥

२५ तौभी तुम लोग कहते हो, कि प्रभु की गति एकसी नहीं। हे इस्राएल के घराने, देख, क्या मेरी गति एकसी नहीं? क्या तुम्हारी ही गति अनुचित नहीं है? २६ जब धर्मी अपने धर्म से फिरकर, टेढ़े काम करने लगे, तो वह उनके कारण मरेगा, अर्थात् वह अपने टेढ़े काम ही के कारण मर जाएगा। २७ फिर जब दुष्ट अपने दुष्ट कामों से फिरकर, न्याय और धर्म के काम करने लगे, तो वह अपना प्राण बचाएगा। २८ वह जो सोच विचार कर अपने सब अपराधों से फिरा, इस कारण न मरेगा, जीवित ही रहेगा। २९ तौभी इस्राएल का घराना कहता है कि प्रभु की गति एकसी नहीं। हे इस्राएल के घराने, क्या मेरी गति एकसी नहीं? क्या तुम्हारी ही गति अनुचित नहीं?

३० प्रभु यहोवा की यह वाणी है, हे इस्राएल के घराने, मैं तुम में से हर एक मनुष्य का न्याय उसकी चालचलन के अनुसार ही करूंगा। पश्चात्ताप करो और अपने सब अपराधों को छोड़ो, तभी तुम्हारा अधर्म तुम्हारे ठोकर खाने का कारण न होगा। ३१ अपने सब अपराधों को जो तुम ने किए हैं, दूर करो; अपना मन और अपनी आत्मा बदल डालो! हे इस्राएल के घराने, तुम क्यों मरो? ३२ क्योंकि, प्रभु यहोवा की यह वाणी है, जो मरे, उसके मरने से मैं प्रसन्न नहीं होता, इसलिये पश्चात्ताप करो, तभी तुम जीवित रहोगे॥

१९ और इस्राएल के प्रधानों के विषय तू यह विलापगीत सुना, २ तेरी माता एक कैसी सिंहनी थी! वह सिंहों के बीच बैठा करती और अपने बच्चों को जवान सिंहों के बीच पालती पोसती थी। ३ अपने बच्चों में से उस ने एक को पाला और वह जवान सिंह हो गया, और अहेर पकड़ना सीख गया; उस ने

मनुष्यों को भी फाड़ खाया। ४ और जाति जाति के लोगों ने उसकी चर्चा सुनी, और उसे अपने खोदे हुए गड़हे में फंसाया; और उसके नकेल डालकर उसे मिस्र देश में ले गए। ५ जब उसकी मां ने देखा कि वह धीरज धरे रही तौभी उसकी आशा टूट गई, तब अपने एक और बच्चे को लेकर उसे जवान सिंह कर दिया। ६ तब वह जवान सिंह होकर सिंहों के बीच चलने फिरने लगा, और वह भी अहेर पकड़ना सीख गया; और मनुष्यों को भी फाड़ खाया। ७ और उस ने उनके भवनों को बिगाड़ा, और उनके नगरों को उजाड़ा वरन उसके गरजने के डर के मारे देश और जो कुछ उस में था सब उजड़ गया। ८ तब चारों ओर के जाति जाति के लोग अपने अपने प्रान्त से उसके विरुद्ध निकल आए, और उसके लिये जाल लगाया; और वह उनके खोदे हुए गड़हे में फंस गया। ९ तब वे उसके नकेल डालकर और कठघरे में बन्द करके बाबुल के राजा के पास ले गए, और गढ़ में बन्द किया, कि उसका बोल इस्राएल के पहाड़ी देश में फिर सुनाई न दे॥

१० तेरी माता जिस से तू उत्पन्न हुआ *, वह तीर पर लगी हुई दाखलता के समान थी, और गहिरे जल के कारण फलों और शाखाओं से भरी हुई थी। ११ और प्रभुता करनेवालों के राजदण्डों के लिये उस में मोटी मोटी टहनियां थीं; और उसकी ऊंचाई इतनी हुई कि वह बादलों के बीच तक पहुंची; और अपनी बहुत सी डालियों समेत बहुत ही लम्बी दिखाई पड़ी। १२ तौभी वह जलजलाहट के साथ उखाड़कर भूमि पर गिराई गई, और उसके फल पुरवाई हवा के लगने से सूख गए; और उसकी मोटी टहनियां टूटकर सूख गईं; और वे आग से भस्म हो गईं। १३ अब वह जंगल में, वरन निर्जल देश में लगाई गई है। १४ और उसकी शाखाओं की टहनियों में से आग निकली, जिस से उसके फल भस्म हो गए, और प्रभुता करने के योग्य राजदण्ड के लिये उस में अब कोई मोटी टहनी न रही॥

यही विलापगीत है, और यह विलापगीत बना रहेगा॥

२० सातवें वर्ष के पांचवें महीने के दसवें दिन को इस्राएल के कितने पुरनिये यहोवा से प्रश्न करने को आए, और मेरे साम्हने बैठ गए। २ तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, ३ हे मनुष्य के सन्तान, इस्राएली पुरनियों से यह कह, प्रभु यहोवा यों कहता है, क्या तुम मुझ से प्रश्न करने को आए हो? प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की सौगन्ध, तुम मुझ से प्रश्न करने न पाओगे। ४ हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू उनका न्याय न करेगा? क्या तू उनका न्याय न करेगा? उनके पुरखाओं के घिनौने काम उन्हें जता दे, ५ और उन से कह, प्रभु यहोवा यों कहता है, जिस दिन मैं ने इस्राएल को चुन लिया, और याकूब के घराने के वंश से शपथ खाई, और मिस्र देश में अपने को उन पर प्रगट किया, और उन से शपथ खाकर कहा, मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं, ६ उसी दिन मैं ने उन से यह भी शपथ खाई, कि

* मूल में—तेरे लोहू में।

मैं तुम को मिस्र देश से निकालकर एक देश में पहुंचाऊंगा, जिसे मैं ने तुम्हारे लिये चुन लिया है; वह सब देशों का शिरोमणि है, और उस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं। ७ फिर मैं ने उन से कहा, जिन घिनौनी वस्तुओं पर तुम में से हर एक की आंखें लगी हैं, उन्हें फेंक दो; और मिस्र की मूरतों से अपने को अशुद्ध न करो; मैं ही तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। ८ परन्तु वे मुझ से बिगड़ गए और मेरी सुननी न चाही; जिन घिनौनी वस्तुओं पर उनकी आंखें लगी थीं, उनको किसी ने फेंका नहीं, और न मिस्र की मूरतों को छोड़ा ॥

तब मैं ने कहा, मैं यहीं, मिस्र देश के बीच तुम पर अपनी जलजलाहट भड़काऊंगा* और पूरा कोप दिखाऊंगा। ९ तौभी मैं ने अपने नाम के निमित्त ऐसा किया कि जिनके बीच वे थे, और जिनके देखते हुए मैं ने उनको मिस्र देश से निकलने के लिये अपने को उन पर प्रगट किया था उन जातियों के साम्हने वे अपवित्र न ठहरे। १० मैं उनको मिस्र देश से निकालकर जंगल में ले आया। ११ वहां उनको मैं ने अपनी विधियां बताईं और अपने नियम भी बताए कि जो मनुष्य उनको माने, वह उनके कारण जीवित रहेगा। १२ फिर मैं ने उनके लिये अपने विश्रामदिन ठहराए जो मेरे और उनके बीच चिन्ह ठहरें; कि वे जानें कि मैं यहोवा उनका पवित्र करनेवाला हूं। १३ तौभी इस्राएल के घराने ने जंगल में मुझ से बलवा किया; वे मेरी विधियों पर न चले, और मेरे नियमों को तुच्छ जाना, जिन्हें यदि मनुष्य माने तो वह उनके कारण जीवित रहेगा; और उन्हों ने मेरे विश्रामदिनों को अति अपवित्र किया ॥

तब मैं ने कहा, मैं जंगल में इन पर अपनी जलजलाहट भड़काकर* इनका अन्त कर डालूंगा। १४ परन्तु मैं ने अपने नाम के निमित्त ऐसा किया कि वे उन जातियों के साम्हने, जिनके देखते मैं उनको निकाल लाया था, अपवित्र न ठहरे। १५ फिर मैं ने जंगल में उन से शपथ खाई कि जो देश मैं ने उनको दे दिया, और जो सब देशों का शिरोमणि है, जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं, उस में उन्हें न पहुंचाऊंगा, १६ क्योंकि उन्हों ने मेरे नियम तुच्छ जाने और मेरी विधियों पर न चले, और मेरे विश्रामदिन अपवित्र किए थे; इसलिये कि उनका मन उनकी मूरतों की ओर लगा रहा। १७ तौभी मैं ने उन पर कृपा की दृष्टि की, और उन्हें नाश न किया, और न जंगल में पूरी रीति से उनका अन्त कर डाला ॥

१८ फिर मैं ने जंगल में उनकी सन्तान से कहा, अपने पुरखाओं की विधियों पर न चलो, न उनकी रीतियों को मानो और न उनकी मूरतें पूजकर अपने को अशुद्ध करो। १९ मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं, मेरी विधियों पर चलो, और मेरे नियमों के मानने में चौकसी करो, २० और मेरे विश्रामदिनों को पवित्र मानो कि वे मेरे और तुम्हारे बीच चिन्ह ठहरें, और जिस से तुम जानो कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। २१ परन्तु

* मूल में—उण्डेलूंगा।

* मूल में—उण्डेलकर।

उनकी सन्तान ने भी मुझ से बलवा किया; वे मेरी विधियों पर न चले, न मेरे नियमों के मानने में चौकसी की; जिन्हें यदि मनुष्य माने तो वह उनके कारण जीवित रहेगा; मेरे विश्रामदिनों को उन्हों ने अपवित्र किया ।।

तब मैं ने कहा, मैं जंगल में उन पर अपनी जलजलाहट भड़काकर* अपना कोप दिखलाऊंगा। २२ तौभी मैं ने हाथ खींच लिया, और अपने नाम के निमित्त ऐसा किया, कि उन जातियों के साम्हने जिनके देखते हुए मैं उन्हें निकाल लाया था, वे अपवित्र न ठहरे। २३ फिर मैं ने जंगल में उन से शपथ खाई, कि मैं तुम्हें जाति जाति में तितर-बितर करूंगा, और देश देश में छितरा दूंगा, २४ क्योंकि उन्हों ने मेरे नियम न माने, मेरी विधियों को तुच्छ जाना, मेरे विश्रामदिनों को अपवित्र किया, और अपने पुरखाओं की मूरतों की ओर उनकी आंखें लगी रहीं। २५ फिर मैं ने उनके लिये ऐसी ऐसी विधियां ठहराईं जो अच्छी न थीं और ऐसी ऐसी रीतियां जिनके कारण वे जीवित न रह सकें; २६ अर्थात् वे अपने सब पहिलौठों को आग में होम करने लगे; इस रीति मैं ने उन्हें उन्हीं की भेंटों के द्वारा अशुद्ध किया जिस से उन्हें निर्वंश कर डालूं; और तब वे जान लें कि मैं यहोवा हूं ।।

२७ हे मनुष्य के सन्तान, तू इस्राएल के घराने से कह, प्रभु यहोवा यों कहता है, तुम्हारे पुरखाओं ने इस में भी मेरी निन्दा की कि उन्हों ने मेरा विश्वासघात किया। २८ क्योंकि जब मैं ने उनको उस देश में पहुंचाया, जिसके उन्हें देने की शपथ मैं ने उन से खाई थी, तब वे हर एक ऊंचे टीले और हर एक घने वृक्ष पर दृष्टि करके वहीं अपने मेलबलि करने लगे; और वहीं रिस दिलानेवाली अपनी भेंटें चढ़ाने लगे और वहीं अपना सुखदायक सुगन्धद्रव्य जलाने लगे, और वहीं अपने तपावन देने लगे। २९ तब मैं ने उन से पूछा, जिस ऊंचे स्थान को तुम लोग जाते हो, उस से क्या प्रयोजन है? इसी से उसका नाम आज तक बामा* कहलाता है। ३० इसलिये इस्राएल के घराने से कह, प्रभु यहोवा तुम से यह पूछता है, क्या तुम भी अपने पुरखाओं की रीति पर चलकर अशुद्ध होकर, और उनके घिनौने कामों के अनुसार व्यभिचारिणी की नाईं काम करते हो? ३१ आज तक जब जब तुम अपनी भेंटें चढ़ाते और अपने लड़केबालों को होम करके आग में चढ़ाते हो, तब तब तुम अपनी मूरतों के निमित्त अशुद्ध ठहरते हो। हे इस्राएल के घराने, क्या तुम मुझ से पूछने पाओगे? प्रभु यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की शपथ तुम मुझ से पूछने न पाओगे ।।

३२ जो बात तुम्हारे मन में आती है कि हम काठ और पत्थर के उपासक होकर अन्यजातियों और देश देश के कुलों के समान हो जाएंगे, वह किसी भांति पूरी नहीं होने की ।।

३३ प्रभु यहोवा यों कहता है, मेरे जीवन की शपथ मैं निश्चय बली हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से, और भड़काई† हुई जलजलाहट के साथ तुम्हारे ऊपर राज्य करूंगा। ३४ मैं बली हाथ और

* मूल में—उण्डेलकर।

* मूल में—ऊंचा स्थान।

† अर्थात् उण्डेली।

बढ़ाई हुई भुजा से, और भड़काई * हुई जलजलाहट के साथ तुम्हें देश देश के लोगों में से अलग करूंगा, और उन देशों से जिन में तुम तितर-बितर हो गए थे, इकट्ठा करूंगा; ३५ और मैं तुम्हें देश देश के लोगों के जंगल में ले जाकर, वहां आम्हने-साम्हने तुम से मुक़द्दमा लड़ूंगा। ३६ जिस प्रकार मैं तुम्हारे पूर्वजों से मिस्र देशरूपी जंगल में मुक़द्दमा लड़ता था, उसी प्रकार तुम से मुक़द्दमा लड़ूंगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। ३७ मैं तुम्हें लाठी के तले चलाऊंगा, और तुम्हें वाचा के बन्धन में डालूंगा। ३८ मैं तुम में से सब बलवाइयों को निकालकर जो मेरा अपराध करते हैं, तुम्हें शुद्ध करूंगा; और जिस देश में वे टिकते हैं उस में से मैं उन्हें निकाल दूंगा; परन्तु इस्राएल के देश में घुसने न दूंगा। तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं॥

३९ और हे इस्राएल के घराने तुम से तो प्रभु यहोवा यों कहता है कि जाकर अपनी अपनी मूरतों की उपासना करो; और यदि तुम मेरी न सुनोगे, तो आगे को भी यही किया करो; परन्तु मेरे पवित्र नाम को अपनी भेंटों और मूरतों के द्वारा फिर अपवित्र न करना॥

४० क्योंकि प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि इस्राएल का सारा घराना अपने देश में मेरे पवित्र पर्वत पर, इस्राएल के ऊंचे पर्वत पर, सब का सब मेरी उपासना करेगा; वहीं मैं उन से प्रसन्न हूंगा, और वहीं मैं तुम्हारी उठाई हुई भेंटें और चढ़ाई हुई उत्तम उत्तम वस्तुएं, और तुम्हारी सब पवित्र की हुई वस्तुएं तुम से लिया करूंगा। ४१ जब मैं तुम्हें देश देश के लोगों में से अलग करूं और उन देशों से जिन में तुम तितर-बितर हुए हो, इकट्ठा करूं, तब तुम को सुखदायक सुगन्ध जानकर ग्रहण करूंगा, और अन्य जातियों के साम्हने तुम्हारे द्वारा पवित्र ठहराया जाऊंगा। ४२ और जब मैं तुम्हें इस्राएल के देश में पहुंचाऊं, जिसके देने की शपथ मैं ने तुम्हारे पूर्वजों से खाई थी, तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं। ४३ और वहां तुम अपनी चालचलन और अपने सब कामों को जिनके करने से तुम अशुद्ध हुए हो स्मरण करोगे, और अपने सब बुरे कामों के कारण अपनी दृष्टि में घिनौने ठहरोगे। ४४ और हे इस्राएल के घराने, जब मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे बुरे चालचलन और बिगड़े हुए कामों के अनुसार नहीं, परन्तु अपने ही नाम के निमित्त बर्ताव करूं, तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं, प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

४५ और यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, ४६ हे मनुष्य के सन्तान, अपना मुख दक्खिन की ओर कर, दक्खिन की ओर वचन सुना, और दक्खिन देश के वन के विषय में भविष्यद्वाणी कर; ४७ और दक्खिन देश के वन से कह, यहोवा का यह वचन सुन, प्रभु यहोवा यों कहता है, मैं तुझ में आग लगाऊंगा, और तुझ में क्या हरे, क्या सूखे, जितने पेड़ हैं, सब को वह भस्म करेगी; उसकी धधकती ज्वाला न बुझेगी, और उसके कारण दक्खिन से उत्तर तक सब के मुख झुलस जाएंगे। ४८ तब सब प्राणियों को सूझ पड़ेगा कि यह आग यहोवा की लगाई हुई है; और वह कभी न

* अर्थात् उण्डेली।

बुझेगी। ४९ तब मैं ने कहा, हाय परमेश्वर यहोवा! लोग तो मेरे विषय में कहा करते हैं कि क्या वह दृष्टान्त ही का कहनेवाला नहीं है?

२१ यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २ हे मनुष्य के सन्तान, अपना मुख यरूशलेम की ओर कर और पवित्रस्थानों की ओर वचन सुना*; इस्राएल देश के विषय में भविष्यद्वाणी कर और उस से कह, ३ प्रभु यहोवा यों कहता है, देख, मैं तेरे विरुद्ध हूं, और अपनी तलवार मियान में से खींचकर तुझ में से धर्मी और अधर्मी दोनों को नाश करूंगा। ४ इसलिये कि मैं तुझ में से धर्मी और अधर्मी सब को नाश करनेवाला हूं, इस कारण मेरी तलवार मियान से निकलकर दक्खिन से उत्तर तक सब प्राणियों के विरुद्ध चलेगी; ५ तब सब प्राणी जान लेंगे कि यहोवा ने मियान में से अपनी तलवार खींची है; और वह उस में फिर रखी न जाएगी। ६ सो हे मनुष्य के सन्तान, तू आह मार, भारी खेद कर, और टूटी कमर लेकर लोगों के साम्हने आह मार। ७ और जब वे तुझ से पूछें कि तू क्यों आह मारता है, तब कहना, समाचार के कारण। क्योंकि ऐसी बात आनेवाली है कि सब के मन टूट जाएंगे और सब के हाथ ढीले पड़ेंगे, सब की आत्मा बेबस और सब के घुटने निर्बल† हो जाएंगे। देखो, ऐसी ही बात आनेवाली है, और वह अवश्य पूरी होगी, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है॥

* मूल में—फिरकर टपका।
† मूल में—जल की नाईं निर्बल।

८ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, हे मनुष्य के सन्तान, भविष्यद्वाणी करके कह, ९ परमेश्वर यहोवा यों कहता है, देख, सान चढ़ाई हुई तलवार, और झलकाई हुई तलवार! १० वह इसलिये सान चढ़ाई गई कि उस से घात किया जाए, और इसलिये झलकाई गई कि बिजली की नाईं चमके! तो क्या हम हर्षित हो? वह तो यहोवा के* पुत्र का राजदण्ड है और सब पेड़ों को तुच्छ जाननेवाला है। ११ और वह झलकाने को इसलिये दी गई कि हाथ में ली जाए; वह इसलिये सान चढ़ाई और झलकाई गई कि घात करनेवालों के हाथ में दी जाए। १२ हे मनुष्य के सन्तान चिल्ला, और हाय, हाय, कर! क्योंकि वह मेरी प्रजा पर चला चाहती है, वह इस्राएल के सारे प्रधानों पर चला चाहती है; मेरी प्रजा के संग वे भी तलवार के वश में आ गए। इस कारण तू अपनी छाती† पीट। १३ क्योंकि सचमुच उसकी जांच हुई है, और यदि उसे तुच्छ जाननेवाला राजदण्ड भी न रहे, तो क्या? परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है॥

१४ सो हे मनुष्य के सन्तान, भविष्यद्वाणी कर, और हाथ पर हाथ दे मार, और तीन बार तलवार का बल दुगुना किया जाए; वह तो घात करने की तलवार वरन बड़े से बड़े के घात करने की तलवार है, जिस से कोठरियों में भी कोई नहीं बच सकता‡। १५ मैं ने घात करनेवाली तलवार को उनके सब फाटकों

* मूल में—मेरे। † मूल में—जांघ।
‡ मूल में—जो उनकी कोठरियों में पैठती है।

के विरुद्ध इसलिये चलाया है कि लोगों के मन टूट जाएं, और वे बहुत ठोकर खाएं। हाय, हाय! वह तो बिजली के समान बनाई गई, और घात करने को सान चढ़ाई गई है। १६ सिकुड़कर दहिनी ओर जा, फिर तैयार होकर बाईं ओर मुड़, जिधर भी तेरा मुख हो। १७ मैं भी ताली बजाऊंगा और अपनी जलजलाहट को ठंडा करूंगा, मुझ यहोवा ने ऐसा कहा है।।

१८ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, १९ हे मनुष्य के सन्तान, दो मार्ग ठहरा ले कि बाबुल के राजा की तलवार आए; दोनों मार्ग एक ही देश से निकलें। फिर एक चिन्ह कर, अर्थात् नगर के मार्ग के सिर पर एक चिन्ह कर; २० एक मार्ग ठहरा कि तलवार अम्मोनियों के रब्बा नगर पर, और यहूदा देश के गढ़वाले नगर यरूशलेम पर भी चले। २१ क्योंकि बाबुल का राजा तिर्मुहाने अर्थात् दोनों मार्गों के निकलने के स्थान पर भावी बूझने को खड़ा हुआ है, उस ने तीरों को हिला दिया, और गृहदेवताओं से प्रश्न किया, और कलेजे को भी देखा। २२ उसके दहिने हाथ में यरूशलेम का नाम * है कि वह उसकी ओर युद्ध के यन्त्र लगाए, और गला फाड़कर घात करने की आज्ञा दे और ऊंचे शब्द से ललकारे, फाटकों की ओर युद्ध के यन्त्र लगाए और दमदमा बान्धे और कोट बनाए। २३ परन्तु लोग तो उस भावी कहने को मिथ्या समझेंगे; उन्हों ने जो उनकी शपथ खाई है; इस कारण वह उनके अधर्म का स्मरण कराकर उन्हें पकड़ लेगा।।

* मूल में—भावी।

२४ इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है, इसलिये कि तुम्हारा अधर्म जो स्मरण किया गया है, और तुम्हारे अपराध जो खुल गए हैं, क्योंकि तुम्हारे सब कामों में पाप ही पाप दिखाई पड़ा है, और तुम स्मरण में आए हो, इसलिये तुम उन्हीं से पकड़े जाओगे। २५ और हे इस्राएल दुष्ट प्रधान, तेरा दिन आ गया है; अधर्म के अन्त का समय पहुंच गया है। २६ तेरे विषय में परमेश्वर यहोवा यों कहता है, पगड़ी उतार, और मुकुट भी उतार दे; वह ज्यों का त्यों नहीं रहने का; जो नीचा है उसे ऊंचा कर और जो ऊंचा है उसे नीचा कर। २७ मैं इसको उलट दूंगा और उलट पुलट कर दूंगा; हां उलट दूंगा और जब तक उसका अधिकारी न आए तब तक वह उलटा हुआ रहेगा; तब मैं उसे दे दूंगा।।

२८ फिर हे मनुष्य के सन्तान, भविष्यद्वाणी करके कह कि प्रभु यहोवा अम्मोनियों और उनकी की हुई नामधराई के विषय में यों कहता है; तू यों कह, खींची हुई तलवार है, वह तलवार घात के लिये झलकाई हुई है कि नाश करे और बिजली के समान हो—२९ जब तक कि वे तेरे विषय में झूठे दर्शन पाते, और झूठे भावी तुझ को बताते हैं—कि तू उन दुष्ट असाध्य घायलों की गर्दनों पर पड़े जिनका दिन आ गया, और जिनके अधर्म के अन्त का समय आ पहुंचा है। ३० उसको मियान में फिर रख। जिस स्थान में तू सिरजी गई और जिस देश में तेरी उत्पत्ति हुई, उसी में मैं तेरा न्याय करूंगा। ३१ और मैं तुझ पर अपना

क्रोध भड़काऊंगा * और तुझ पर अपनी जलजलाहट की आग फूंक दूंगा; और तुझे पशु सरीखे मनुष्य के हाथ कर दूंगा जो नाश करने में निपुण हैं। ३२ तू आग का कौर होगी; तेरा खून देश में बना रहेगा; तू स्मरण में न रहेगी क्योंकि मुझ यहोवा ही ने ऐसा कहा है ॥

२२ और यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २ हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू उस हत्यारे नगर का न्याय न करेगा? क्या तू उसका न्याय न करेगा? उसको उसके सब घिनौने काम जता दे, ३ और कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता है, हे नगर तू अपने बीच में हत्या करता है जिस से तेरा समय आए, और अपनी ही हानि करने और अशुद्ध होने के लिये मूरतें बनाता है। ४ जो हत्या तू ने की है, उस से तू दोषी ठहरी, और जो मूरतें तू ने बनाई हैं, उनके कारण तू अशुद्ध हो गई है; तू ने अपने अन्त के दिन को समीप कर लिया, और अपने पिछले वर्षों तक पहुंच गई है। इस कारण मैं ने तुझे जाति जाति के लोगों की ओर से नामधराई का, और सब देशों के ठट्ठे का कारण कर दिया है। ५ हे बदनाम, हे हुल्लड़ से भरे हुए नगर, जो निकट और जो दूर हैं, वे सब तुझे ठट्ठों में उड़ाएंगे ॥

६ देख, इस्राएल के प्रधान लोग अपने अपने बल के अनुसार तुझ में हत्या करनेवाले हुए हैं। ७ तुझ में माता-पिता तुच्छ जाने गए हैं; तेरे बीच परदेशी पर अन्धेर किया गया; और अनाथ और विधवा तुझ में पीसी गई हैं। ८ तू ने मेरी पवित्र वस्तुओं को तुच्छ जाना, और मेरे विश्रामदिनों को अपवित्र किया है। ९ तुझ में लुच्चे लोग हत्या करने का तत्पर हुए, और तेरे लोगों ने पहाड़ों पर भोजन किया है; तेरे बीच महापाप किया गया है। १० तुझ में पिता की देह उघारी गई; तुझ में ऋतुमती स्त्री से भी भोग किया गया है। ११ किसी ने तुझ में पड़ोसी की स्त्री के साथ घिनौना काम किया; और किसी ने अपनी बहू को बिगाड़कर महापाप किया है; और किसी ने अपनी बहिन अर्थात् अपने पिता की बेटी को भ्रष्ट किया है। १२ तुझ में हत्या करने के लिये उन्हों ने घूस ली है; तू ने ब्याज और सूद लिया और अपने पड़ोसियों को पीस पीसकर अन्याय से लाभ उठाया; और मुझ को तू ने भुला दिया है, प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

१३ सो देख, जो लाभ तू ने अन्याय से उठाया और अपने बीच हत्या की है, उस से मैं ने हाथ पर हाथ दे मारा है। १४ सो जिन दिनों में तेरा न्याय करूंगा, क्या उन में तेरा हृदय दृढ़ और तेरे हाथ स्थिर रह सकेंगे? मुझ यहोवा ने यह कहा है, और ऐसा ही करूंगा। १५ मैं तेरे लोगों को जाति जाति में तितर-बितर करूंगा, और देश देश में छितरा दूंगा, और तेरी अशुद्धता को तुझ में से नाश करूंगा। १६ और तू जाति जाति के देखते हुए अपनी ही दृष्टि में अपवित्र ठहरेगी; तब तू जान लेगी कि मैं यहोवा हूं ॥

१७ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, १८ हे मनुष्य के सन्तान, इस्राएल का घराना मेरी दृष्टि में धातु का मैल हो गया है; वे सब के सब भट्ठी के बीच

* मूल में—उण्डेलूंगा।

के पीतल और रांगे और लोहे और शीशे के समान बन गए; वे चान्दी के मैल के समान हो गए हैं। १६ इस कारण प्रभु यहोवा उन से यों कहता है, इसलिये कि तुम सब के सब धातु के मैल के समान बन गए हो, सो देखो, मैं तुम को यरूशलेम के भीतर इकट्ठा करने पर हूं। २० जैसे लोग चान्दी, पीतल, लोहा, शीशा, और रांगा इसलिये भट्ठी के भीतर बटोरकर रखते हैं कि उन्हें आग फूंककर पिघलाएं, वैसे ही मैं तुम को अपने कोप और जलजलाहट से इकट्ठा करके वहीं रखकर पिघला दूंगा। २१ मैं तुम को वहां बटोरकर अपने रोष की आग से फूंकूंगा, और तुम उसके बीच पिघलाए जाओगे। २२ जैसे चान्दी भट्ठी के बीच में पिघलाई जाती है, वैसे ही तुम उसके बीच में पिघलाए जाओगे; तब तुम जान लोगे कि जिस ने हम पर अपनी जलजलाहट भड़काई * है, वह यहोवा है ॥

२३ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २४ हे मनुष्य के सन्तान, उस देश से कह, तू ऐसा देश है जो शुद्ध नहीं हुआ, और जलजलाहट के दिन में तुझ पर वर्षा नहीं हुई। २५ तेरे भविष्यद्वक्ताओं ने तुझ में राजद्रोह की गोष्ठी की, उन्हों ने गरजनेवाले सिंह की नाईं अहेर पकड़ा और प्राणियों को खा डाला है; वे रखे हुए अनमोल धन को छीन लेते हैं, और तुझ में बहुत स्त्रियों को विधवा कर दिया है। २६ उसके याजकों ने मेरी व्यवस्था का अर्थ खींच-खांचकर लगाया है, और मेरी पवित्र वस्तुओं को अपवित्र किया है; उन्हों ने पवित्र-अपवित्र का कुछ भेद नहीं माना, और न औरों को शुद्ध-अशुद्ध का भेद सिखाया है, और वे मेरे विश्रामदिनों के विषय में निश्चिन्त रहते हैं *, जिस से मैं उनके बीच अपवित्र ठहरता हूं। २७ उसके प्रधान हुंड़ारों की नाईं अहेर पकड़ते, और अन्याय से लाभ उठाने के लिये हत्या करते हैं और प्राण घात करने को तत्पर रहते हैं। २८ और उसके भविष्यद्वक्ता उनके लिये कच्ची लेसाई करते हैं, उनका दर्शन पाना मिथ्या है; यहोवा के बिना कुछ कहे भी वे यह कहकर झूठी भावी बताते हैं कि "प्रभु यहोवा यों कहता है"। २६ देश के साधारण लोग भी अन्धेर करते और पराया धन छीनते हैं, वे दीन दरिद्र को पीसते और न्याय की चिन्ता छोड़कर परदेशी पर अन्धेर करते हैं। ३० और मैं ने उन में ऐसा मनुष्य ढूंढ़ना चाहा जो बाड़े को सुधारे और देश के निमित्त नाके में मेरे साम्हने ऐसा खड़ा हो कि मुझे उसको नाश न करना पड़े, परन्तु ऐसा कोई न मिला। ३१ इस कारण मैं ने उन पर अपना रोष भड़काया † और अपनी जलजलाहट की आग से उन्हें भस्म कर दिया है; मैं ने उनकी चाल उन्हीं के सिर पर लौटा दी है, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है ॥

२३ यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २ हे मनुष्य के सन्तान, दो स्त्रियां थीं, जो एक ही मां की बेटी थीं। ३ वे अपने बचपन ही में वेश्या का काम मिस्र में करने लगीं; उनकी

* मूल में—उण्डेली।

* मूल में—अपनी आंखें छिपाते हैं।

† मूल में—उण्डेला।

छातियां कुंवारपन में पहिले वहीं मींजी गईं और उनका मरदन भी हुआ। ४ उन लड़कियों में से बड़ी का नाम ओहोला और उसकी बहिन का नाम ओहोलीबा था। वे मेरी हो गईं, और उनके पुत्र पुत्रियां उत्पन्न हुईं। उनके नामों में से ओहोला तो शोमरोन, और ओहोलीबा यरूशलेम है ॥

५ ओहोला जब मेरी थी, तब ही व्यभिचारिणी होकर अपने मित्रों पर मोहित होने लगी जो उसके पड़ोसी अश्शूरी थे। ६ वे तो सब के सब नीले वस्त्र पहिननेवाले मनभावने जवान, अधिपति और प्रधान थे, और घोड़ों पर सवार थे। ७ सो उस ने उन्हीं के साथ व्यभिचार किया जो सब के सब सर्वोत्तम अश्शूरी थे; और जिस किसी पर वह मोहित हुई, उसी की मूरतों से वह अशुद्ध हुई। ८ जो व्यभिचार उस ने मिस्र में सीखा था, उसको भी उस ने न छोड़ा; क्योंकि बचपन में मनुष्यों ने उसके साथ कुकर्म किया, और उसकी छातियां मींजी, और तन-मन से उसके साथ व्यभिचार किया गया था। ९ इस कारण मैं ने उसको उन्हीं अश्शूरी मित्रों के हाथ कर दिया जिन पर वह मोहित हुई थी। १० उन्हों ने उसको नंगी किया; उसके पुत्र-पुत्रियां छीनकर उसको तलवार से घात किया; इस प्रकार उनके हाथ से दण्ड पाकर वह स्त्रियों में प्रसिद्ध हो गई ॥

११ उसकी बहिन ओहोलीबा ने यह देखा, तौभी वह मोहित होकर व्यभिचार करने में अपनी बहिन से भी अधिक बढ गई। १२ वह अपने अश्शूरी पड़ोसियों पर मोहित होती थी, जो सब के सब अति सुन्दर वस्त्र पहिननेवाले और घोड़ों के सवार मनभावने, जवान अधिपति और और प्रकार के प्रधान थे। १३ तब मैं ने देखा कि वह भी अशुद्ध हो गई; उन दोनों बहिनों की एक ही चाल थी। १४ परन्तु ओहोलीबा अधिक व्यभिचार करती गई; सो जब उस ने भीत पर सेंदूर से खींचे हुए ऐसे कसदी पुरुषों के चित्र देखे १५ जो कटि में फेंटे बान्धे हुए, सिर में छोर लटकती हुई रंगीली पगड़ियां पहिने हुए, और सब के सब अपनी कसदी जन्मभूमि अर्थात् बाबुल के लोगों * की रीति पर प्रधानों का रूप धरे हुए थे, १६ तब उनको देखते ही वह उन पर मोहित हुई और उनके पास कसदियों के देश में दूत भेजे। १७ सो बाबुली लोग उसके पास पलंग पर आए, और उसके साथ व्यभिचार करके उसे अशुद्ध किया; और जब वह उन से अशुद्ध हो गई, तब उसका मन उन से फिर गया। १८ तौभी जब वह तन उघाड़ती और व्यभिचार करती गई, तब मेरा मन जैसे उसकी बहिन से फिर गया था, वैसे ही उस से भी फिर गया। १९ इस पर भी वह मिस्र देश के अपने बचपन के दिन स्मरण करके जब वह वेश्या का काम करती थी, और अधिक व्यभिचार करती गई; २० और ऐसे मित्रों पर मोहित हुई, जिनका मांस गदहों का सा, और वीर्य घोड़ों का सा था। २१ तू इस प्रकार से अपने बचपन के उस समय के महापाप का स्मरण कराती है जब मिस्री लोग तेरी छातियां मींजते थे ॥

२२ इस कारण हे ओहोलीबा, परमेश्वर यहोवा तुझ से यों कहता है, देख,

---

* मूल में—बेटों।

में तेरे मित्रों को उभारकर जिन से तेरा मन फिर गया चारों ओर से तेरे विरुद्ध ले आऊंगा। २३ अर्थात् बाबुलियों और सब कसदियों को, और पकोद, शो और कोआ के लोगों को; और उनके साथ सब अश्शूरियों को लाऊंगा जो सब के सब घोड़ों के सवार मनभावने जवान अधिपति, और कई प्रकार के प्रतिनिधि, प्रधान और नामी पुरुष हैं। २४ वे लोग हथियार, रथ, छकड़े और देश देश के लोगों का दल लिए हुए तुझ पर चढ़ाई करेंगे; और ढाल और फरी और टोप धारण किए हुए तेरे विरुद्ध चारों ओर पांति बान्धेंगे; और मैं उन्हीं के हाथ न्याय का काम सौंपूंगा, और वे अपने अपने नियम के अनुसार तेरा न्याय करेंगे। २५ और मैं तुझ पर जलूंगा, जिस से वे जलजलाहट के साथ तुझ से बर्ताव करेंगे। वे तेरी नाक और कान काट लेंगे, और तेरा जो भी बचा रहेगा वह तलवार से मारा जाएगा। वे तेरे पुत्र-पुत्रियों को छीन ले जाएंगे, और तेरा जो भी बचा रहेगा, वह आग से भस्म हो जाएगा। २६ वे तेरे वस्त्र भी उतारकर तेरे सुन्दर-सुन्दर गहने छीन ले जाएंगे। २७ इस रीति से मैं तेरा महापाप और जो वेश्या का काम तू ने मिस्र देश में सीखा था, उसे भी तुझ से छुड़ाऊंगा, यहां तक कि तू फिर अपनी आंख उनकी ओर न लगाएगी और न मिस्र देश को फिर स्मरण करेगी। २८ क्योंकि प्रभु यहोवा तुझ से यों कहता है, देख, मैं तुझे उनके हाथ सौंपूंगा जिन से तू बैर रखती है और जिन से तेरा मन फिर गया है; २९ और वे तुझ से बैर के साथ बर्ताव करेंगे, और तेरी सारी कमाई को उठा लेंगे, और तुझे नंगा करके छोड़ देंगे, और तेरे तन के उघाड़े जाने से तेरा व्यभिचार और महापाप प्रगट हो जाएगा। ३० ये काम तुझ से इस कारण किए जाएंगे क्योंकि तू अन्यजातियों के पीछे व्यभिचारिणी की नाईं हो गई, और उनकी मूरतें पूजकर अशुद्ध हो गई है। ३१ तू अपनी बहिन की लीक पर चली है; इस कारण मैं तेरे हाथ में उसका सा कटोरा दूंगा। ३२ प्रभु यहोवा यों कहता है, अपनी बहिन के कटोरे से तुझे पीना पड़ेगा जो गहिरा और चौड़ा है; तू हंसी और ठट्ठों में उड़ाई जाएगी, क्योंकि उस कटोरे में बहुत कुछ समाता है। ३३ तू मतवालेपन और दुःख से छक जाएगी। तू अपनी बहिन शोमरोन के कटोरे को, अर्थात् विस्मय और उजाड़ को पीकर छक जाएगी। ३४ उस में से तू गार गारकर पीएगी, और उसके ठिकरों को भी चबाएगी और अपनी छातियां घायल करेगी; क्योंकि मैं ही ने ऐसा कहा है, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। ३५ तू ने जो मुझे भुला दिया है और अपना मुंह मुझ से फेर लिया है, इसलिये तू आप ही अपने महापाप और व्यभिचार का भार उठा, परमेश्वर यहोवा का यही वचन है॥

३६ यहोवा ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू ओहोला और ओहोलीबा का न्याय करेगा? तो फिर उनके घिनौने काम उन्हें जता दे। ३७ क्योंकि उन्हों ने व्यभिचार किया है, और उनके हाथों में खून लगा है; उन्हों ने अपनी मूरतों के साथ व्यभिचार किया, और अपने लड़केबाले जो मुझ से उत्पन्न हुए थे, उन मूरतों के आगे भस्म होने के लिये चढ़ाए हैं। ३८ फिर उन्हों ने मुझ से

ऐसा बर्ताव भी किया कि उसी के साथ मेरे पवित्रस्थान को भी अशुद्ध किया और मेरे विश्रामदिनों को अपवित्र किया है। ३९ वे अपने लड़केबाले अपनी मूरतों के साम्हने बलि चढ़ाकर उसी दिन मेरा पवित्रस्थान अपवित्र करने को उस में घुसीं। देख, उन्हों ने इस भांति का काम मेरे भवन के भीतर किया है। ४० और उन्हों ने दूर से पुरुषों को बुलवा भेजा, और वे चले भी आए। उनके लिये तू नहा धो, आंखों में अंजन लगा, गहने पहिनकर; ४१ सुन्दर पलंग पर बैठी रही; और तेरे साम्हने एक मेज़ बिछी हुई थी, जिस पर तू ने मेरा धूप और मेरा तेल रखा था। ४२ तब उसके साथ निश्चिन्त लोगों की भीड़ का कोलाहल सुन पड़ा, और उन साधारण लोगों के पास जंगल से बुलाए हुए पियक्कड़ लोग भी थे; उन्हों ने उन दोनों बहिनों के हाथों में चूड़ियां पहिनाईं, और उनके सिरों पर शोभायमान मुकुट रखे॥

४३ तब जो व्यभिचार करते करते बुढ़िया हो गई थी, उसके विषय में बोल उठा, अब तो वे उसी के साथ व्यभिचार करेंगे। ४४ क्योंकि वे उसके पास ऐसे गए जैसे लोग वेश्या के पास जाते हैं। वैसे ही वे ओहोला और ओहोलीबा नाम महापापिनी स्त्रियों के पास गए। ४५ सो धर्मी लोग व्यभिचारिणियों और हत्यारों के योग्य उसका न्याय करें; क्योंकि वे व्यभिचारिणी हैं, और उनके हाथों में खून लगा है॥

४६ इस कारण परमेश्वर यहोवा यों कहता है, मैं एक भीड़ से उन पर चढ़ाई कराकर उन्हें ऐसा करूंगा कि वे मारी मारी फिरेंगी और लूटी जाएंगी। ४७ और उस भीड़ के लोग उनको पत्थरवाह करके उन्हें अपनी तलवारों से काट डालेंगे; तब वे उनके पुत्र-पुत्रियों को घात करके उनके घर भी आग लगाकर फूंक देंगे। ४८ इस प्रकार मैं महापाप को देश में से दूर करूंगा, और सब स्त्रियां शिक्षा पाकर तुम्हारा सा महापाप करने से बची रहेंगी। ४९ तुम्हारा महापाप तुम्हारे ही सिर पड़ेगा; और तुम निश्चय अपनी मूरतों की पूजा के पापों का भार उठाओगे; और तब तुम जान लोगे कि मैं परमेश्वर यहोवा हूं॥

२४

नवें वर्ष के दसवें महीने के दसवें दिन को, यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २ हे मनुष्य के सन्तान, आज का दिन लिख रख, क्योंकि आज ही के दिन बाबुल के राजा ने यरूशलेम आ घेरा है। ३ और इस बलवई घराने से यह दृष्टान्त कह, प्रभु यहोवा कहता है, हण्डे को आग पर धर दो; उसे धरकर उस में पानी डाल दो; ४ तब उस में जांघ, कन्धा और सब अच्छे अच्छे टुकड़े बटोरकर रखो; और उसे उत्तम उत्तम हड्डियों से भर दो। ५ झुंड में से सब से अच्छे पशु लेकर उन हड्डियों को हण्डे के नीचे ढेर करो; और उनको भली-भांति पकाओ ताकि भीतर ही हड्डियां भी पक जाएं॥

६ इसलिये प्रभु यहोवा यों कहता है, हाय, उस हत्यारी नगरी पर! हाय उस हण्डे पर! जिसका मोर्चा उस में बना है और छूटा नहीं; उस में से टुकड़ा टुकड़ा करके निकाल लो, उस पर चिट्ठी न डाली जाए। ७ क्योंकि उस नगरी में किया हुआ खून उस में है; उस ने

उसे भूमि पर डालकर धूलि से नहीं ढांपा, परन्तु नंगी चट्टान पर रख दिया। ८ इसलिये मैं ने भी उसका खून नंगी चट्टान पर रखा है कि वह ढंप न सके और कि बदला लेने को जलजलाहट भड़के। ९ प्रभु यहोवा यों कहता है, हाय, उस खूनी नगरी पर! मै भी ढेर को बड़ा करूंगा। १० और अधिक लकड़ी डाल, आग को बहुत तेज़ कर, मांस को भली भांति पका और मसाला मिला, और हड्डियां भी जला दो। ११ तब हण्डे को छूछा करके अंगारों पर रख जिस मे वह गर्म हो और उसका पीतल जले और उस में का मैल गले, और उसका मोर्चा नष्ट हो जाए। १२ मैं उसके कारण परिश्रम करते करते थक गया, परन्तु उसका भारी मोर्चा उस से छूटता नहीं, उसका मोर्चा आग के द्वारा भी नहीं छूटता। १३ हे नगरी तेरी अशुद्धता महापाप की है। मैं तो तुझे शुद्ध करना चाहता था, परन्तु तू शुद्ध नहीं हुई, इस कारण जब तक मैं अपनी जलजलाहट तुझ पर शान्त न कर लूं, तब तक तू फिर शुद्ध न की जाएगी। १४ मुझ यहोवा ही ने यह कहा है; और वह हो जाएगा; मैं ऐसा ही करूंगा, मैं तुझे न छोड़ूंगा, न तुझ पर तरस खाऊंगा न पछताऊंगा; तेरे चालचलन और कामों ही के अनुसार तेरा न्याय किया जाएगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है ॥

१५ यहोवा का यह भी वचन मेरे पास पहुंचा, १६ हे मनुष्य के सन्तान, देख, मैं तेरी आंखों की प्रिय को * मारकर तेरे पास से ले लेने पर हूं; परन्तु न तू रोना-पीटना और न आंसू बहाना। १७ लम्बी सांसें ले तो ले, परन्तु वे सुनाई न पड़ें; मरे हुओं के लिये भी विलाप न करना। सिर पर पगड़ी बान्धे और पांवों में जूती पहने रहना; और न तो अपने होंठ को ढांपना न शोक के योग्य रोटी खाना। १८ तब मैं सवेरे लोगों से बोला, और सांझ को मेरी स्त्री मर गई। और बिहान को मैं ने आज्ञा के अनुसार किया ॥

१९ तब लोग मुझ से कहने लगे, क्या तू हमें न बताएगा कि यह जो तू करता है, इसका हम लोगों के लिये क्या अर्थ है? २० मैं ने उनको उत्तर दिया, यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २१ तू इस्राएल के घराने से कह, प्रभु यहोवा यों कहता है, देखो, मैं अपने पवित्र-स्थान को जिसके गढ़ होने पर तुम फूलते हो, और जो तुम्हारी आंखों का चाहा हुआ है, और जिसको तुम्हारा मन चाहता है, उसे मैं अपवित्र करने पर हूं; और अपने जिन बेटे-बेटियों को तुम वहां छोड़ आए हो, वे तलवार से मारे जाएंगे। २२ और जैसा मैं ने किया है वैसा ही तुम लोग करोगे; तुम भी अपने होंठ न ढांपोगे, न शोक के योग्य रोटी खाओगे। २३ तुम सिर पर पगड़ी बान्धे और पांवों में जूती पहिने रहोगे, न तुम रोओगे, न छाती पीटोगे, वरन अपने अधर्म के कामों में फंसे हुए गलते जाओगे और एक दूसरे की ओर कराहते रहोगे। २४ इस रीति यहेजकेल तुम्हारे लिये चिन्ह ठहरेगा; जैसा उस ने किया, ठीक वैसा ही तुम भी करोगे। और जब यह हो जाए, तब तुम जान लोगे कि मैं परमेश्वर यहोवा हूं ॥

२५ और हे मनुष्य के सन्तान, क्या यह सच नहीं, कि जिस दिन मैं उनका

* मूल में—तेरी आंख के चाहे हुए को।

दृढ़ गढ़, उनकी शोभा, और हर्ष का कारण, और उनके बेटे-बेटियां जो उनकी शोभा, उनकी आंखों का आनन्द, और मन की चाह हैं, उनको मैं उन से ले लूंगा, २६ उसी दिन जो भागकर बचेगा, वह तेरे पास आकर तुझे समाचार सुनाएगा। २७ उसी दिन तेरा मुंह खुलेगा, और तू फिर चुप न रहेगा परन्तु उस बचे हुए के साथ बातें करेगा। सो तू इन लोगों के लिये चिन्ह ठहरेगा; और ये जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं ॥

२५ यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २ हे मनुष्य के सन्तान, अम्मोनियों की ओर मुंह करके उनके विषय में भविष्यद्वाणी कर। ३ उन से कह, हे अम्मोनियो, परमेश्वर यहोवा का वचन सुनो, परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि तुम ने जो मेरे पवित्रस्थान के विषय जब वह अपवित्र किया गया, और इस्राएल के देश के विषय जब वह उजड़ गया, और यहूदा के घराने के विषय जब वे बंधुआई में गए, अहा, अहा! कहा। ४ इस कारण देखो, मैं तुझ को पूरबियों के अधिकार में करने पर हूं; और वे तेरे बीच अपनी छावनियां डालेंगे और अपने घर बनाएंगे; वे तेरे फल खाएंगे और तेरा दूध पीएंगे। ५ और मैं रब्बा नगर को ऊंटों के रहने और अम्मोनियों के देश को भेड़-बकरियों के बैठने का स्थान कर दूंगा; तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं। ६ क्योंकि परमेश्वर यहोवा यों कहता है, तुम ने जो इस्राएल के देश के कारण ताली बजाई और नाचे, और अपने सारे मन के अभिमान से आनन्द किया, ७ इस कारण देख, मैं ने अपना हाथ तेरे ऊपर बढ़ाया है; और तुझ को जाति जाति की लूट कर दूंगा, और देश देश के लोगों में से तुझे मिटाऊंगा; और देश देश में से नाश करूंगा। मैं तेरा सत्यानाश कर डालूंगा; तब तू जान लेगा कि मैं यहोवा हूं ॥

८ परमेश्वर यहोवा यों कहता है, मोआब और सेईर जो कहते हैं, देखो, यहूदा का घराना और सब जातियों के समान हो गया है। ९ इस कारण देख, मोआब के देश के किनारे के नगरों को बेत्यशीमोत, बालमोन, और किर्यातैम, जो उस देश के शिरोमणि हैं, मैं उनका मार्ग* खोलकर १० उन्हें पूरबियों के वश में ऐसा कर दूंगा कि वे अम्योनियों पर चढ़ाई करें; और मैं अम्मोनियों को यहां तक उनके अधिकार में कर दूंगा कि जाति जाति के बीच उनका स्मरण फिर न रहेगा। ११ और मैं मोआब को भी दण्ड दूंगा। और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं ॥

१२ परमेश्वर यहोवा यों भी कहता है, एदोम ने जो यहूदा के घराने से पलटा लिया, और उन से बदला लेकर बड़ा दोषी हो गया है, १३ इस कारण परमेश्वर यहोवा यों कहता है, मैं एदोम के देश के विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाकर उस में से मनुष्य और पशु दोनों को मिटाऊंगा; और तेमान से लेकर ददान तक उसको उजाड़ कर दूंगा; और वे तलवार से मारे जाएंगे। १४ और मैं अपनी प्रजा इस्राएल के द्वारा एदोम से अपना बदला लूंगा; और वे उस देश में मेरे कोप और जलजलाहट के अनुसार काम करेंगे। तब

* मूल में—कन्धा।

वे मेरा पलटा लेना जान लेंगे, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है ।।

१५ परमेश्वर यहोवा यों कहता है, क्योंकि पलिश्ती लोगों ने पलटा लिया, वरन अपनी युग युग की शत्रुता के कारण अपने मन के अभिमान से बदला लिया कि नाश करें, १६ इस कारण परमेश्वर यहोवा यों कहता है, देख, मैं पलिश्तियों के विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाने पर हूं, और करेतियों को मिटा डालूंगा; और समुद्रतीर के बचे हुए रहनेवालों को नाश करूंगा। १७ और मैं जलजलाहट के साथ मुक़द्दमा लड़कर, उन से कड़ाई के साथ पलटा लूंगा। और जब मैं उन से बदला ले लूंगा, तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं ।।

२६ ग्यारहवें वर्ष के पहिले महीने के पहिले दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २ हे मनुष्य के सन्तान, सोर ने जो यरूशलेम के विषय में कहा है, अहा, अहा! जो देश देश के लोगों के फाटक के समान थी, वह नाश हो गई! ३ उसके उजड़ जाने से मैं भरपूर हो जाऊंगा। इस कारण परमेश्वर यहोवा कहता है, हे सोर, देख, मैं तेरे विरुद्ध हूं; और ऐसा करूंगा कि बहुत सी जातियां तेरे विरुद्ध ऐसी उठेंगी जैसे समुद्र की लहरें उठती हैं। ४ और वे सोर की शहरपनाह को गिराएंगी, और उसके गुम्मटों को तोड़ डालेंगी; और मैं उस पर से उसकी मिट्टी खुरचकर उसे नंगी चट्टान कर दूंगा। ५ वह समुद्र के बीच का जाल फैलाने ही का स्थान हो जाएगा; क्योंकि परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है; और वह जाति जाति से लुट जाएगा; ६ और उसकी जो बेटियां मैदान में हैं, वे तलवार से मारी जाएंगी। तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं ।।

७ क्योंकि परमेश्वर यहोवा यह कहता है, देख, मैं सोर के विरुद्ध राजाधिराज बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को घोड़ों, रथों, सवारों, बड़ी भीड़, और दल समेत उत्तर दिशा से ले आऊंगा। ८ और तेरी जो बेटियां मैदान में हों, उनको वह तलवार से मारेगा, और तेरे विरुद्ध कोट बनाएगा और दमदमा बान्धेगा; और ढाल उठाएगा। ९ और वह तेरी शहरपनाह के विरुद्ध युद्ध के यन्त्र चलाएगा और तेरे गुम्मटों को फरसों से ढा देगा। १० उसके घोड़े इतने होंगे, कि तू उनकी धूलि से ढंप जाएगा, और जब वह तेरे फाटकों में ऐसे घुसेगा जैसे लोग नाकेवाले नगर में घुसते हैं, तब तेरी शहरपनाह सवारों, छकड़ों, और रथों के शब्द से कांप उठेगी। ११ वह अपने घोड़ों की टापों से तेरी सब सड़कों को रौन्द डालेगा, और तेरे निवासियों को तलवार से मार डालेगा, और तेरे बल के खंभे भूमि पर गिराए जाएंगे। १२ और लोग तेरा धन लूटेंगे और तेरे ब्योपार की वस्तुएं छीन लेंगे; वे तेरी शहरपनाह ढा देंगे और तेरे मनभाऊ घर तोड़ डालेंगे; तेरे पत्थर और काठ, और तेरी धूलि वे जल में फेंक देंगे। १३ और मैं तेरे गीतों का सुरताल बन्द करूंगा, और तेरी वीणाओं की ध्वनि फिर सुनाई न देगी। १४ मैं तुझे नंगी चट्टान कर दूंगा; तू जाल फैलाने ही का स्थान हो जाएगा; और फिर बसाया न जाएगा; क्योंकि मुझ यहोवा ही ने यह कहा है, परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है ।।

१५ परमेश्वर यहोवा सोर से यों कहता है, तेरे गिरने के शब्द से जब घायल लोग कराहेंगे और तुझ में घात ही घात होगा, तब क्या टापू न कांप उठेंगे? १६ तब समुद्रतीर के सब प्रधान लोग अपने अपने सिंहासन पर से उतरेंगे, और अपने बागे और बूटेदार वस्त्र उतारकर थरथराहट के वस्त्र पहिनेंगे और भूमि पर बैठकर क्षण क्षण में कांपेंगे; और तेरे कारण विस्मित रहेंगे। १७ और वे तेरे विषय में विलाप का गीत बनाकर तुझ से कहेंगे, हाय! मल्लाहों की * बसाई हुई हाय! सराही हुई नगरी जो समुद्र के बीच निवासियों समेत सामर्थी रही और सब टिकनेवालों की डरानेवाली नगरी थी, तू कैसी नाश हुई है? १८ तेरे गिरने के दिन टापू कांप उठेंगे, और तेरे जाते रहने के कारण समुद्र से सब टापू घबरा जाएंगे। १९ क्योंकि परमेश्वर यहोवा यों कहता है, जब मैं तुझे निर्जन नगरों के समान उजाड़ करूंगा और तेरे ऊपर महासागर चढ़ाऊंगा, और तू गहिरे जल में डूब जाएगा, २० तब गड़हे में और गिरनेवालों के संग मैं तुझे भी प्राचीन लोगों में उतार दूंगा; और गड़हे में और गिरनेवालों के संग तुझे भी नीचे के लोक में† रखकर प्राचीनकाल के उजड़े हुए स्थानों के समान कर दूंगा; यहां तक कि तू फिर न बसेगा और न जीवन के लोक में कोई स्थान पाएगा। २१ मैं तुझे घबराने का कारण करूंगा, और तू भविष्य में फिर न रहेगा, वरन ढूंढ़ने पर भी तेरा पता न लगेगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है॥

---

* मूल में—समुद्रों से।

† मूल में—निचले स्थानों के देश में।

२७ यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २ हे मनुष्य के सन्तान, सोर के विषय एक विलाप का गीत बनाकर उस से यों कह, ३ हे समुद्र के पैठाव पर रहनेवाली, हे बहुत से द्वीपों के लिये देश देश के लोगों के साथ ब्योपार करनेवाली, परमेश्वर यहोवा यों कहता है, हे सोर तू ने कहा है कि मैं सर्वांग सुन्दर हूं। ४ तेरे सिवाने समुद्र के बीच हैं; तेरे बनानेवाले ने तुझे सर्वांग सुन्दर बनाया। ५ तेरी सब पटरियां सनीर पर्वत के सनौवर की लकड़ी की बनी हैं; तेरे मस्तूल के लिये लबानोन के देवदार लिए गए हैं। ६ तेरे डांड़ बाशान के बांजवृक्षों के बने; तेरे जहाज़ों का पटाव कित्तियों के द्वीपों से लाए हुए सीधे सनौवर की हाथीदांत जड़ी हुई लकड़ी का बना। ७ तेरे जहाज़ों के पाल मिस्र से लाए हुए बूटेदार सन के कपड़े के बने कि तेरे लिये झण्डे का काम दें; तेरी चांदनी एलीशा के द्वीपों से लाए हुए नीले और बैंजनी रंग के कपड़ों की बनी। ८ तेरे खेनेवाले सीदोन और अर्वद के रहनेवाले थे; हे सोर, तेरे ही बीच के बुद्धिमान लोग तेरे मांझी थे। ९ तेरे कारीगर जोड़ाई करनेवाले गबल नगर के पुरनिये और बुद्धिमान लोग थे; तुझ में ब्योपार करने के लिये मल्लाहों समेत समुद्र पर के सब जहाज तुझ में आ गए थे। १० तेरी सेना में फारसी, लूदी, और पूती लोग भरती हुए थे; उन्हों ने तुझ में ढाल, और टोपी टांगी; और उन्हीं के कारण तेरा प्रताप बढ़ा था। ११ तेरी शहरपनाह पर तेरी सेना के साथ अर्वद के लोग चारों ओर थे, और तेरे गुम्मटों में शूरवीर खड़े थे; उन्हों ने अपनी ढालें तेरी चारों ओर

की शहरपनाह पर टांगी थी; तेरी सुन्दरता उनके द्वारा पूरी हुई थी ।।

१२ अपनी सब प्रकार की सम्पत्ति की बहुतायत के कारण तर्शीशी लोग तेरे ब्योपारी थे; उन्हों ने चान्दी, लोहा, रांगा और सीसा देकर तेरा माल मोल लिया। १३ यावान, तूबल, और मेशेक के लोग तेरे माल के बदले दास-दासी और पीतल के पात्र तुझ से ब्योपार करते थे। १४ तोगर्मा के घराने के लोगों ने तेरी सम्पत्ति लेकर घोड़े, सवारी के घोड़े और खच्चर दिए। १५ ददानी तेरे ब्योपारी थे; बहुत से द्वीप तेरे हाट बने थे; वे तेरे पास हाथीदांत की सींग और आबनूस की लकड़ी ब्योपार में लाते थे। १६ तेरी बहुत कारीगरी के कारण आराम तेरा ब्योपारी था; मरकत, बैंजनी रंग का, और बूटेदार वस्त्र, सन, मूंगा, और लालड़ी देकर वे तेरा माल लेते थे। १७ यहूदा और इस्राएल भी तेरे ब्योपारी थे; उन्हों ने मिन्नीत का गेहूं, पन्नग, और मधु, तेल, और बलसान देकर तेरा माल लिया। १८ तुझ में बहुत कारीगरी हुई और सब प्रकार का धन इकट्ठा हुआ, इस से दमिश्क तेरा ब्योपारी हुआ; तेरे पास हेलबोन का दाखमधु और उजला ऊन पहुंचाया गया। १९ वदान और यावान ने तेरे माल के बदले में सूत दिया; और उनके कारण फौलाद, तज और अगर में भी तेरा ब्योपार हुआ। २० सवारी के चार-जामे के लिये ददान तेरा ब्योपारी हुआ। २१ अरब और केदार के सब प्रधान तेरे ब्योपारी ठहरे; उन्हों ने मेम्ने, मेढ़े, और बकरे लाकर तेरे साथ लेन-देन किया। २२ शबा और रामा के ब्योपारी तेरे ब्योपारी ठहरे; उन्हों ने उत्तम उत्तम जाति का सब भांति का मसाला, सर्व भांति के मणि, और सोना देकर तेरा माल लिया। २३ हारान, कन्ने, एदेन, शबा के ब्योपारी, और अश्शूर और कलमद, ये सब तेरे ब्योपारी ठहरे। २४ इन्हों ने उत्तम उत्तम वस्तुएं अर्थात् ओढ़ने के नीले और बूटेदार वस्त्र और डोरियों से बन्धी और देवदार की बनी हुई चित्र विचित्र कपड़ों की पेटियां लाकर तेरे साथ लेन-देन किया। २५ तर्शीश के जहाज़ तेरे ब्योपार के माल के ढोनेवाले हुए ।।

उनके द्वारा तू समुद्र के बीच रहकर बहुत धनवान् और प्रतापी हो गई थी। २६ तेरे खिवैयों ने तुझे गहिरे जल में पहुंचा दिया है, और पुरवाई ने तुझे समुद्र के बीच तोड़ दिया है। २७ जिस दिन तू डूबेगी, उसी दिन तेरा धन-सम्पत्ति, ब्योपार का माल, मल्लाह, मांझी, जुड़ाई का काम करनेवाले, ब्योपारी लोग, और तुझ में जितने सिपाही हैं, और तेरी सारी भीड़-भाड़ समुद्र के बीच गिर जाएगी। २८ तेरे मांझियों की चिल्लाहट के शब्द के मारे तेरे आस पास के स्थान कांप उठेंगे। २९ और सब खेनेवाले और मल्लाह, और समुद्र में जितने मांझी रहते हैं, वे अपने अपने जहाज़ पर से उतरेंगे, ३० और वे भूमि पर खड़े होकर तेरे विषय में ऊंचे शब्द से बिलक बिलक-कर रोएंगे। वे अपने अपने सिर पर धूलि उड़ाकर राख में लोटेंगे; ३१ और तेरे शोक में अपने सिर मुंड़वा देंगे, और कमर में टाट बान्धकर अपने मन के कड़े दुःख * के साथ तेरे विषय में रोएंगे और

* मूल में—मन की कड़वाहट।

छाती पीटेंगे। ३२ वे विलाप करते हुए तेरे विषय में विलाप का यह गीत बनाकर गाएंगे, सोर जो अब समुद्र के बीच चुपचाप पड़ी है, उसके तुल्य कौन नगरी है? ३३ जब तेरा माल समुद्र पर से निकलता था, तब बहुत सी जातियों के लोग तृप्त होते थे; तेरे धन और ब्योपार के माल की बहुतायत से पृथ्वी के राजा धनी होते थे। ३४ जिस समय तू अथाह जल में लहरों से टूटी, उस समय तेरे ब्योपार का माल, और तेरे सब निवासी भी तेरे भीतर रहकर नाश हो गए। ३५ टापुओं के सब रहनेवाले तेरे कारण विस्मित हुए; और उनके सब राजाओं के रोएं खड़े हो गए, और उनके मुंह उदास देख पड़े हैं। ३६ देश देश के ब्योपारी तेरे विरुद्ध हथौड़ी बजा रहे हैं; तू भय का कारण हो गई है और फिर स्थिर न रह सकेगी॥

२८ यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २ हे मनुष्य के सन्तान, सोर के प्रधान से कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि तू ने मन में फूलकर यह कहा है, मैं ईश्वर हूं, मैं समुद्र के बीच परमेश्वर के आसन पर बैठा हूं, परन्तु, यद्यपि तू अपने आपको परमेश्वर सा दिखाता है, तौभी तू ईश्वर नहीं, मनुष्य ही है। ३ तू दानिय्येल से अधिक बुद्धिमान तो है; कोई भेद तुझ से छिपा न होगा; ४ तू ने अपनी बुद्धि और समझ के द्वारा धन प्राप्त किया, और अपने भण्डारों में सोना-चान्दी रखा है; ५ तू ने बड़ी बुद्धि से लेन-देन किया जिस से तेरा धन बढ़ा, और धन के कारण तेरा मन फूल उठा है। ६ इस कारण परमेश्वर यहोवा यों कहता है, तू जो अपना मन परमेश्वर सा दिखाता है, ७ इसलिये देख, मैं तुझ पर ऐसे परदेशियों से चढ़ाई कराऊंगा, जो सब जातियों से अधिक बलात्कारी हैं; वे अपनी तलवारें तेरी बुद्धि की शोभा पर चलाएंगे और तेरी चमक-दमक को बिगाड़ेंगे। ८ वे तुझे कबर में उतारेंगे, और तू समुद्र के बीच के मारे हुओं की रीति पर मर जाएगा। ९ तब, क्या तू अपने घात करनेवाले के साम्हने कहता रहेगा कि तू परमेश्वर है? तू अपने घायल करनेवाले के हाथ में ईश्वर नहीं, मनुष्य ही ठहरेगा। १० तू परदेशियों के हाथ से खतनाहीन लोगों की नाईं मारा जाएगा; क्योंकि मैं ही ने ऐसा कहा है, परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है॥

११ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, १२ हे मनुष्य के सन्तान, सोर के राजा के विषय में विलाप का गीत बनाकर उस से कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता है, तू तो उत्तम से भी उत्तम है*; तू बुद्धि से भरपूर और सर्वांग सुन्दर है। १३ तू परमेश्वर की एदेन नाम बारी में था; तेरे पास आभूषण, माणिक, पद्मराग, हीरा, फीरोजा, सुलैमानी मणि, यशब, नीलमणि, मरकद, और लाल सब भांति के मणि और सोने के पहिरावे थे; तेरे डफ और बांसुलियां तुझी में बनाई गई थीं; जिस दिन तू सिरजा गया था; उस दिन वे भी तैयार की गई थीं। १४ तू छानेवाला अभिषिक्त करूब था, मैं ने तुझे ऐसा ठहराया कि तू परमेश्वर के पवित्र पर्वत पर रहता था; तू आग सरीखे चमकनेवाले मणियों के बीच

* मूल में—तू पूर्णता पर छाप देता है।

चलता फिरता था। १५ जिस दिन से तू सिरजा गया, और जिस दिन तक तुझ में कुटिलता न पाई गई, उस समय तक तू अपनी सारी चालचलन में निर्दोष रहा। १६ परन्तु लेन-देन की बहुतायत के कारण तू उपद्रव से भरकर पापी हो गया; इसी से मैं ने तुझे अपवित्र जानकर परमेश्वर के पर्वत पर से उतारा, और हे छानेवाले करूब मैं ने तुझे आग सरीखे चमकनेवाले मणियों के बीच से नाश किया है। १७ सुन्दरता के कारण तेरा मन फूल उठा था; और विभव के कारण तेरी बुद्धि बिगड़ गई थी। मैं ने तुझे भूमि पर पटक दिया; और राजाओं के साम्हने तुझे रखा कि वे तुझ को देखें। १८ तेरे अधर्म के कामों की बहुतायत से और तेरे लेन-देन की कुटिलता से तेरे पवित्रस्थान अपवित्र हो गए; सो मैं ने तुझ में से ऐसी आग उत्पन्न की जिस से तू भस्म हुआ, और मैं ने तुझे सब देखनेवालों के साम्हने भूमि पर भस्म कर डाला है। १६ देश देश के लोगों में से जितने तुझे जानते हैं सब तेरे कारण विस्मित हुए; तू भय का कारण हुआ है और फिर कभी पाया न जाएगा ।।

२० यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २१ हे मनुष्य के सन्तान, अपना मुख सीदोन की ओर करके उसके विरुद्ध भविष्यद्वाणी कर, २२ और कह, प्रभु यहोवा यों कहता है, हे सीदोन, मैं तेरे विरुद्ध हूं; मैं तेरे बीच अपनी महिमा कराऊंगा। जब मैं उसके बीच दण्ड दूंगा और उस में अपने को पवित्र ठहराऊंगा, तब लोग जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं। २३ मैं उस में मरी फैलाऊंगा, और उसकी सड़कों में लोहू बहाऊंगा; और उसके चारों ओर तलवार चलेगी; तब उसके बीच घायल लोग गिरेंगे, और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं ।।

२४ और इस्राएल के घराने के चारों ओर की जितनी जातियां उनके साथ अभिमान का बर्ताव करती हैं, उन में से कोई उनका चुभनेवाला कांटा वा बेधनेवाला शूल फिर न ठहरेगी; तब वे जान लेंगी कि मैं परमेश्वर यहोवा हूं ।।

२५ परमेश्वर यहोवा यों कहता है, जब मैं इस्राएल के घराने को उन सब लोगों में से इकट्ठा करूंगा, जिनके बीच वे तितर-बितर हुए हैं, और देश देश के लोगों के साम्हने उनके द्वारा पवित्र ठहरूंगा, तब वे उस देश में वास करेंगे जो मैं ने अपने दास याकूब को दिया था। २६ वे उस में निडर बसे रहेंगे; वे घर बनाकर और दाख की बारियां लगाकर निडर रहेंगे; तब मैं उनके चारों ओर के सब लोगों को दण्ड दूंगा जो उन से अभिमान का बर्ताव करते हैं, तब वे जान लेंगे कि उनका परमेश्वर यहोवा ही है ।।

२६ दसवें वर्ष के दसवें महीने के बारहवें दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २ हे मनुष्य के सन्तान, अपना मुख मिस्र के राजा फिरौन की ओर करके उसके और सारे मिस्र के विरुद्ध भविष्यद्वाणी कर; ३ यह कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता है, हे मिस्र के राजा फिरौन, मैं तेरे विरुद्ध हूं, हे बड़े नगर, तू जो अपनी नदियों के बीच पड़ा रहता है, जिस ने कहा है कि मेरी नदी मेरी निज की है, और मैं ही ने उसको अपने लिये बनाया है। ४ मैं

तेरे जबड़ों में आंकड़े डालूंगा, और तेरी नदियों की मछलियों को तेरी खाल में चिपटाऊंगा, और तेरी खाल में चिपटी हुई तेरी नदियों की सब मछलियों समेत तुझ को तेरी नदियों में से निकालूंगा। ५ तब मैं तुझे तेरी नदियों की सारी मछलियों समेत जंगल में निकाल दूंगा, और तू मैदान में पड़ा रहेगा; किसी भी प्रकार से तेरी सुधि न ली जाएगी *। मैं ने तुझे वनपशुओं और आकाश के पक्षियों का आहार कर दिया है ॥

६ तब मिस्र के सारे निवासी जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं। वे तो इस्राएल के घराने के लिये नरकट की टेक ठहरे थे। ७ जब उन्हों ने तुझ पर हाथ का बल दिया तब तू टूट गया और उनके पखौड़े उखड़ ही गए; और जब उन्हों ने तुझ पर टेक लगाई, तब तू टूट गया, और उनकी कम्मर की सारी नसें चढ़ गईं। ८ इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है, देख, मैं तुझ पर तलवार चलवाकर, तेरे मनुष्य और पशु, सभों को नाश करूंगा। ९ तब मिस्र देश उजाड़ ही उजाड़ होगा; और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं ॥

उस ने कहा है कि मेरी नदी मेरी अपनी ही है, और मैं ही ने उसे बनाया। १० इस कारण देख, मैं तेरे और तेरी नदियों के विरुद्ध हूं, और मिस्र देश को मिग्दोल से लेकर सवेने तक वरन कूश देश के सिवाने तक उजाड़ ही उजाड़ कर दूंगा। ११ चालीस वर्ष तक उस में मनुष्य वा पशु का पांव तक न पड़ेगा; और न उस में कोई बसेगा। १२ चालीस वर्ष तक मैं मिस्र देश को उजड़े हुए देशों के बीच उजाड़ कर रखूंगा; और उसके नगर उजड़े हुए नगरों के बीच खण्डहर ही रहेंगे। मैं मिस्रियों को जाति जाति में छिन्न-भिन्न कर दूंगा, और देश देश में तितर-बितर कर दूंगा ॥

१३ परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि चालीस वर्ष के बीतने पर मैं मिस्रियों को उन जातियों के बीच से इकट्ठा करूंगा, जिन में वे तितर-बितर हुए; १४ और मैं मिस्रियों को बंधुआई से छुड़ाकर पत्रास देश में, जो उनकी जन्मभूमि है, फिर पहुंचाऊंगा; और वहां उनका छोटा सा राज्य हो जाएगा। १५ वह सब राज्यों में से छोटा होगा, और फिर अपना सिर और जातियों के ऊपर न उठाएगा; क्योंकि मैं मिस्रियों को ऐसा घटाऊंगा कि वे अन्यजातियों पर फिर प्रभुता न करने पाएंगे। १६ और वह फिर इस्राएल के घराने के भरोसे का कारण न होगा, क्योंकि जब वे फिर उनकी ओर देखने लगें, तब वे उनके अधर्म को स्मरण करेंगे। और तब वे जान लेंगे कि मैं परमेश्वर यहोवा हूं ॥

१७ फिर सत्ताइसवें वर्ष के पहले महीने के पहिले दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, १८ हे मनुष्य के सन्तान, बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने सोर के घेरने में * अपनी सेना से बड़ा परिश्रम कराया; हर एक का सिर चन्दला हो गया, और हर एक के कन्धों का चमड़ा उड़ गया; तौभी उसको सोर से न तो इस बड़े परिश्रम की मज़दूरी कुछ मिली और न उसकी सेना को। १९ इस कारण

* मूल में—तू न तो इकट्ठा किया जाएगा और न बटोरा जाएगा।

* मूल में—सोर के विरुद्ध।

परमेश्वर यहोवा यों कहता है, देख, मैं बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को मिस्र देश दूंगा; और वह उसकी भीड़ को ले जाएगा, और उसकी धन सम्पत्ति को लूटकर अपना कर लेगा; सो यही मजदूरी उसकी सेना को मिलेगी। २० मैं ने उसके परिश्रम के बदले में उसको मिस्र देश इस कारण दिया है कि उन लोगों ने मेरे लिये काम किया था, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है ॥

२१ उसी समय मैं इस्राएल के घराने का एक सींग उगाऊंगा, और उनके बीच तेरा मुंह खोलूंगा। और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं ॥

३० फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २ हे मनुष्य के सन्तान, भविष्यद्वाणी करके कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता है, हाय, हाय करो, हाय उस दिन पर! ३ क्योंकि वह दिन अर्थात् यहोवा का दिन निकट है; वह बादलों का दिन, और जातियों के दण्ड का समय होगा। ४ मिस्र में तलवार चलेगी, और जब मिस्र में लोग मारे जाकर गिरेंगे, तब कूश में भी संकट पड़ेगा, लोग मिस्र को लूट ले जाएंगे, और उसकी नेवें उलट दी जाएंगी। ५ कूश, पूत, लूद और सब दोगले; और कूब लोग, और वाचा बान्धे हुए देश के निवासी, मिस्रियों के संग तलवार से मारे जाएंगे ॥

६ यहोवा यों कहता है, मिस्र के संभालनेवाले भी गिर जाएंगे, और अपनी जिस सामर्थ पर मिस्री फूलते हैं, वह टूटेगी *; मिग्दोल से लेकर सवेने तक उसके निवासी तलवार से मारे जाएंगे, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। ७ और वे उजड़े हुए देशों के बीच उजड़े ठहरेंगे, और उनके नगर खण्डहर किए हुए नगरों में गिने जाएंगे। ८ जब मैं मिस्र में आग लगाऊंगा और उसके सब सहायक नाश होंगे, तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं ॥

९ उस समय मेरे साम्हने से दूत जहाज़ों पर चढ़कर निडर निकलेंगे और कूशियों को डराएंगे; और उन पर ऐसा संकट पड़ेगा जैसा कि मिस्र के दण्ड के समय; क्योंकि देख, वह दिन आता है!

१० परमेश्वर यहोवा यों कहता है, मैं बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के हाथ से मिस्र की भीड़-भाड़ को नाश करा दूंगा। ११ वह अपनी प्रजा समेत, जो सब जातियों में भयानक है, उस देश के नाश करने को पहुंचाया जाएगा; और वे मिस्र के विरुद्ध तलवार खींचकर देश को मरे हुओं से भर देंगे। १२ और मैं नदियों को सुखा डालूंगा, और देश को बुरे लोगों के हाथ कर दूंगा; और मैं परदेशियों के द्वारा देश को, और जो कुछ उस में है, उजाड़ करा दूंगा; मुझ यहोवा ही ने यह कहा है ॥

१३ परमेश्वर यहोवा यों कहता है, मैं नोप में से मूरतों को नाश करूंगा और उस में की मूरतों को रहने न दूंगा; फिर कोई प्रधान मिस्र देश में न उठेगा; और मैं मिस्र देश में भय उपजाऊंगा। १४ मैं पत्रोस को उजाड़ूंगा, और सोअन में आग लगाऊंगा, और नो को दण्ड दूंगा। १५ और सीन जो मिस्र का दृढ़ स्थान है, उस पर मैं अपनी जलजलाहट

* मूल में—उतरेगा।

भड़काऊंगा *, और नो की भीड़-भाड़ का अन्त कर डालूंगा। १६ और मैं मिस्र में आग लगाऊंगा; सीन बहुत थरथराएगा; और नो फाड़ा जाएगा और नोप के विरोधी दिन दहाड़े उठेंगे। १७ आवेन और पीवेसेत के जवान तलवार से गिरेंगे, और ये नगर बंधुआई में चले जाएंगे। १८ जब मैं मिस्रियों के जुओं को तहपन्हेस में तोड़ूंगा, तब उस में दिन को अन्धेरा होगा, और उसकी सामर्थ जिस पर वह फूलता है, वह नाश हो जाएगी; उस पर घटा छा जाएगी और उसकी बेटियां बंधुआई में चली जाएंगी। १९ इस प्रकार मैं मिस्रियों को दण्ड दूंगा। और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं॥

२० फिर ग्यारहवें वर्ष के पहिले महीने के सातवें दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २१ हे मनुष्य के सन्तान, मैं ने मिस्र के राजा फिरौन की भुजा तोड़ दी है; और देख, न तो वह जोड़ी गई, न उस पर लेप लगाकर पट्टी चढ़ाई गई कि वह बान्धने से तलवार पकड़ने के योग्य बन सके। २२ सो प्रभु यहोवा यों कहता है, देख, मैं मिस्र के राजा फिरौन के विरुद्ध हूं, और उसकी अच्छी और टूटी दोनों भुजाओं को तोड़ूंगा; और तलवार को उसके हाथ से गिराऊंगा। २३ मैं मिस्रियों को जाति जाति में तितर-बितर करूंगा, और देश देश में छितराऊंगा। २४ और मैं बाबुल के राजा की भुजाओं को बली करके अपनी तलवार उसके हाथ में दूंगा; परन्तु फिरौन की भुजाओं को तोड़ूंगा, और वह उसके साम्हने ऐसा कराहेगा जैसा मरनहार घायल कराहता है। २५ मैं बाबुल के राजा की भुजाओं को सम्भालूंगा, और फिरौन की भुजाएं ढीली पड़ेंगी, तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूं। जब मैं बाबुल के राजा के हाथ में अपनी तलवार दूंगा, तब वह उसे मिस्र देश पर चलाएगा; २६ और मैं मिस्रियों को जाति जाति में तितर-बितर करूंगा और देश देश में छितरा दूंगा। तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं॥

* मूल में—उण्डेलूंगा।

३१ ग्यारहवें वर्ष के तीसरे महीने के पहिले दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २ हे मनुष्य के सन्तान, मिस्र के राजा फिरौन और उसकी भीड़ से कह, अपनी बड़ाई में तू किस के समान है। ३ देख, अश्शूर तो लबानोन का एक देवदार था जिसकी सुन्दर सुन्दर शाखें, घनी छाया देतीं और बड़ी ऊंची थीं, और उसकी फुनगी बादलों तक पहुंचती थी। ४ जल ने उसे बढ़ाया, उस गहिरे जल के कारण वह ऊंचा हुआ, जिस से नदियां उसके स्थान के चारों ओर बहती थीं, और उसकी नालियां निकलकर मैदान के सारे वृक्षों के पास पहुंचती थीं। ५ इस कारण उसकी ऊंचाई मैदान के सब वृक्षों से अधिक हुई; उसकी टहनियां बहुत हुईं, और उसकी शाखाएं लम्बी हो गईं, क्योंकि जब वे निकलीं, तब उनको बहुत जल मिला। ६ उसकी टहनियों में आकाश के सब प्रकार के पक्षी बसेरा करते थे, और उसकी शाखाओं के नीचे मैदान के सब भांति के जीवजन्तु जन्मते थे; और उसकी छाया में सब बड़ी जातियां रहती थीं। ७ वह अपनी बड़ाई और अपनी डालियों की लम्बाई

के कारण सुन्दर हुआ; क्योंकि उसकी जड़ बहुत जल के निकट थी। ८ परमेश्वर की बारी के देवदार भी उसको न छिपा सकते थे, सनौवर उसकी टहनियों के समान भी न थे, और न अर्मोन वृक्ष उसकी शाखाओं के तुल्य थे; परमेश्वर की बारी का भी कोई वृक्ष सुन्दरता में उसके बराबर न था। ९ मैं ने उसे डालियों की बहुतायत से सुन्दर बनाया था, यहां तक कि एदेन के सब वृक्ष जो परमेश्वर की बारी में थे, उस से डाह करते थे।।

१० इस कारण परमेश्वर यहोवा ने यों कहा है, उसकी * ऊंचाई जो बढ़ गई, और उसकी फुनगी जो बादलों तक पहुंची है, और अपनी ऊंचाई के कारण उसका मन जो फूल उठा है, ११ इसलिये जातियों में जो सामर्थी है, मैं उसी के हाथ उसको कर दूंगा, और वह निश्चय उस से बुरा व्यवहार करेगा। उसकी दुष्टता के कारण मैं ने उसको निकाल दिया है। १२ परदेशी, जो जातियों में भयानक लोग हैं, वे उसको काटकर छोड़ देंगे, उसकी डालियां पहाड़ों पर, और सब तराइयों में गिराई जाएंगी, और उसकी शाखाएं देश के सब नालों में टूटी पड़ी रहेंगी, और जाति जाति के सब लोग उसकी छाया को छोड़कर चले जाएंगे। १३ उस गिरे हुए वृक्ष पर आकाश के सब पक्षी बसेरा करते हैं, और उसकी शाखाओं के ऊपर मैदान के सब जीवजन्तु चढ़ने पाते हैं। १४ यह इसलिये हुआ है कि जल के पास के सब वृक्षों में से कोई अपनी ऊंचाई न बढ़ाए, न अपनी फुनगी को बादलों तक पहुंचाए, और उन में से जितने जल पाकर दृढ़ हो गए हैं वे ऊंचे होने के कारण सिर न उठाएं; क्योंकि वे भी सब के सब कबर में गड़े हुए मनुष्यों के समान मृत्यु के वश करके अधोलोक में डाल दिए जाएंगे।।

१५ परमेश्वर यहोवा यों कहता है, जिस दिन वह अधोलोक में उतर गया, उस दिन मैं ने विलाप कराया और गहिरे समुद्र को ढांप दिया, और नदियों का बहुत जल रुक गया; और उसके कारण मैं ने लबानोन पर उदासी छा दी, और मैदान के सब वृक्ष मूर्छित हुए। १६ जब मैं ने उसको कबर में गड़े हुओं के पास अधोलोक में फेंक दिया, तब उसके गिरने के शब्द से जाति जाति थरथरा गईं, और एदेन के सब वृक्ष अर्थात् लबानोन के उत्तम उत्तम वृक्षों ने, जितने उस से जल पाते हैं, उन सभों ने अधोलोक में शान्ति पाई। १७ वे भी उसके संग तलवार से मारे हुओं के पास अधोलोक में उतर गए; अर्थात् वे जो उसकी भुजा थे, और जाति जाति के बीच उसकी छाया में रहते थे।।

१८ सो महिमा और बड़ाई के विषय में एदेन के वृक्षों में से तू किस के समान है? तू तो एदेन के और वृक्षों के साथ अधोलोक में उतारा जाएगा, और खतनाहीन लोगों के बीच तलवार से मारे हुओं के संग पड़ा रहेगा। फिरौन अपनी सारी भीड़-भाड़ समेत यों ही होगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।।

३२ बारहवें वर्ष के बारहवें महीने के पहिले दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २ हे मनुष्य

* मूल में—तेरी।

के सन्तान, मिस्र के राजा फिरौन के विषय विलाप का गीत बनाकर उसको सुना : जाति जाति में तेरी उपमा जवान सिंह से दी गई थी, परन्तु तू समुद्र के मगर के समान है; तू अपनी नदियों में टूट पड़ा, और उनके जल को पांवों से मथकर गंदला * कर दिया। ३ परमेश्वर यहोवा यों कहता है, मैं बहुत सी जातियों की सभा के द्वारा तुझ पर अपना जाल फैलाऊंगा और वे तुझे मेरे महाजाल में खींच लेंगे। ४ तब मैं तुझे भूमि पर छोड़ूंगा, और मैदान में फेंककर आकाश के सब पक्षियों को तुझ पर बैठाऊंगा; और तेरे मांस से सारी पृथ्वी के जीवजन्तुओं को तृप्त करूंगा। ५ मैं तेरे मांस को पहाड़ों पर रखूंगा, और तराइयों को तेरी ऊंचाई से भर दूंगा। ६ और जिस देश में तू तैरता है, उसको पहाड़ों तक मैं तेरे लोहू से खींचूंगा; और उसके नाले तुझ से भर जाएंगे। ७ जिस समय मैं तुझे मिटाने लगूं, उस समय मैं आकाश को ढांपूंगा और तारों को धुन्धला कर दूंगा; मैं सूर्य को बादल से छिपाऊंगा, और चन्द्रमा अपना प्रकाश न देगा। ८ आकाश में जितनी प्रकाशमान ज्योतियां हैं, उन सब को मैं तेरे कारण धुन्धला कर दूंगा, और तेरे देश में अन्धकार कर दूंगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है ।।

९ जब मैं तेरे विनाश का समाचार जाति जाति में और तेरे अनजाने देशों में फैलाऊंगा, तब बड़े बड़े देशों के लोगों के मन में रिस उपजाऊंगा। १० मैं बहुत सी जातियों को तेरे कारण विस्मित कर दूंगा, और जब मैं उनके राजाओं के साम्हने अपनी तलवार भेजूंगा, तब तेरे कारण उनके रोएं खड़े हो जाएंगे, और तेरे गिरने के दिन वे अपने अपने प्राण के लिये कांपते रहेंगे। ११ क्योंकि परमेश्वर यहोवा यों कहता है, बाबुल के राजा की तलवार तुझ पर चलेगी। १२ मैं तेरी भीड़ को ऐसे शूरवीरों की तलवारों के द्वारा गिराऊंगा जो सब जातियों में भयानक हैं ।।

वे मिस्र के घमण्ड को तोड़ेंगे, और उसकी सारी भीड़ का सत्यानाश होगा। १३ मैं उसके सब पशुओं को उसके बहुतेरे जलाशयों के तीर पर से नाश करूंगा; और भविष्य में वे न तो मनुष्य के पांव से और न पशुओं के खुरों से गंदले किए जाएंगे। १४ तब मैं उनका जल निर्मल कर दूंगा, और उनकी नदियां तेल की नाईं बहेंगी, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। १५ जब मैं मिस्र देश को उजाड़ कर दूंगा और जिस से वह भरपूर है, उस से छूछा कर दूंगा, और जब मैं उसके सब रहनेवालों को मारूंगा, तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं ।।

१६ लोगों के विलाप करने के लिये विलाप का गीत यही है; जाति-जाति की स्त्रियां इसे गाएंगी; मिस्र और उसकी सारी भीड़ के विषय वे यही विलापगीत गाएंगी, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है ।।

१७ फिर बारहवें वर्ष के पहिले महीने के पन्द्रहवें दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, १८ हे मनुष्य के सन्तान, मिस्र की भीड़ के लिये हाय-हाय कर, और उसको प्रतापी जातियों की बेटियों समेत कबर में गड़े हुओं के पास अधोलोक

* मूल में—उनकी नदियों को मैली।

में उतार। १९ तू किस से मनोहर है? तू उतरकर खतनाहीनों के संग पड़ा रह ॥

२० वे तलवार से मरे हुओं के बीच गिरेंगे, उन * के लिये तलवार ही ठहराई गई है; सो मिस्र को उसकी सारी भीड़ समेत घसीट ले जाओ। २१ सामर्थी शूरवीर उस से और उसके सहायकों से अधोलोक में बातें करेंगे; वे खतनाहीन लोग वहां तलवार से मरे पड़े हैं ॥

२२ अपनी सारी सभा समेत अश्शूर भी वहां है, उसकी कबरें उसके चारों ओर हैं; सब के सब तलवार से मारे गए हैं। २३ उसकी कबरें गड़हे के कोनों में बनी हुई हैं, और उसकी कबर के चारों ओर उसकी सभा है; वे सब के सब जो जीवनलोक में भय उपजाते थे, अब तलवार से मरे पड़े हैं ॥

२४ वहां एलाम है, और उसकी कबर की चारों ओर उसकी सारी भीड़ है; वे सब के सब तलवार से मारे गए हैं, वे खतनाहीन अधोलोक में उतर गए हैं; वे जीवनलोक में भय उपजाते थे, परन्तु अब कबर में और गड़े हुओं के संग उनके मुंह पर भी सियाही छाई हुई है। २५ उसकी सारी भीड़ समेत उसे मारे हुओं के बीच सेज मिली, उसकी कबरें उसी के चारों ओर हैं, वे सब के सब खतनाहीन तलवार से मारे गए; उन्हों ने जीवनलोक में भय उपजाया था, परन्तु अब कबर में और गड़े हुओं के संग उनके मुंह पर सियाही छाई हुई है; और वे मरे हुओं के बीच रखे गए हैं ॥

२६ वहां सारी भीड़ समेत मेशेक और तूबल हैं, उनके चारों ओर कबरें हैं; वे सब के सब खतनाहीन तलवार से मारे गए, क्योंकि जीवनलोक में वे भय उपजाते थे। २७ और उन गिरे हुए खतनाहीन शूरवीरों के संग वे पड़े न रहेंगे जो अपने अपने युद्ध के हथियार लिए हुए अधोलोक में उतर गए हैं, वहां उनकी तलवारें उनके सिरों के नीचे रखी हुई हैं, और उनके अधर्म के काम उनकी हड्डियों में व्यापे हैं; क्योंकि जीवनलोक में उन से शूरवीरों को भी भय उपजता था। २८ इसलिये तू भी खतनाहीनों के संग अंग-भंग होकर तलवार से मरे हुओं के संग पड़ा रहेगा ॥

२९ वहां एदोम और उसके राजा और उसके सारे प्रधान हैं, जो पराक्रमी होने पर भी तलवार से मरे हुओं के संग रखे हैं; गड़हे में गड़े हुए खतनाहीन लोगों के संग वे भी पड़े रहेंगे ॥

३० वहां उत्तर दिशा के सारे प्रधान और सारे सीदोनी भी हैं जो मरे हुओं के संग उतर गए; उन्हों ने अपने पराक्रम से भय उपजाया था, परन्तु अब वे लज्जित हुए और तलवार से और मरे हुओं के साथ वे भी खतनाहीन पड़े हुए हैं, और कबर में अन्य गड़े हुओं के संग उनके मुंह पर भी सियाही छाई हुई है ॥

३१ इन्हें देखकर फिरौन भी अपनी सारी भीड़ के विषय में शान्ति पाएगा, हां फिरौन और उसकी सारी सेना जो तलवार से मारी गई है, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। ३२ क्योंकि मैं ने उसके कारण जीवनलोक में भय उपजाया था; इसलिये वह सारी भीड़ समेत तलवार से और मरे हुओं के सहित खतनाहीनों के बीच लिटाया जाएगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है ॥

* मूल में—उस।

३३ यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २ हे मनुष्य के सन्तान, अपने लोगों से कह, जब मैं किसी देश पर तलवार चलाने लगूं, और उस देश के लोग किसी को अपना पहरुआ करके ठहराएं, ३ तब यदि वह यह देखकर कि इस देश पर तलवार चला चाहती है, नरसिंगा फूंककर लोगों को चिता दे, ४ तो जो कोई नरसिंगे का शब्द सुनने पर न चेते और तलवार के चलने से मर जाए, उसका खून उसी के सिर पड़ेगा। ५ उस ने नरसिंगे का शब्द सुना, परन्तु न चेता; सो उसका खून उसी को लगेगा। परन्तु, यदि वह चेत जाता, तो अपना प्राण बचा लेता। ६ परन्तु यदि पहरुआ यह देखने पर कि तलवार चला चाहती है नरसिंगा फूंककर लोगों को न चिताए, और तलवार के चलने से उन में से कोई मर जाए, तो वह तो अपने अधर्म में फंसा हुआ मर जाएगा, परन्तु उसके खून का लेखा मैं पहरुए ही से लूंगा॥

७ इसलिये, हे मनुष्य के सन्तान, मैं ने तुझे इस्राएल के घराने का पहरुआ ठहरा दिया है; तू मेरे मुंह से वचन सुन सुनकर उन्हें मेरी ओर से चिता दे। ८ यदि मैं दुष्ट से कहूं, हे दुष्ट, तू निश्चय मरेगा, तब यदि तू दुष्ट को उसके मार्ग के विषय न चिताए, तो वह दुष्ट अपने अधर्म में फंसा हुआ मरेगा, परन्तु उसके खून का लेखा मैं तुझी से लूंगा। ९ परन्तु यदि तू दुष्ट को उसके मार्ग के विषय चिताए कि वह अपने मार्ग से फिरे और वह अपने मार्ग से न फिरे, तो वह तो अपने अधर्म में फंसा हुआ मरेगा, परन्तु तू अपना प्राण बचा लेगा॥

१० फिर हे मनुष्य के सन्तान, इस्राएल के घराने से यह कह, तुम लोग कहते हो, हमारे अपराधों और पापों का भार हमारे ऊपर लदा हुआ है और हम उसके कारण गलते जाते हैं; हम कैसे जीवित रहें? ११ सो तू ने उन से यह कह, परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न नहीं होता, परन्तु इस से कि दुष्ट अपने मार्ग से फिरकर जीवित रहे; हे इस्राएल के घराने, तुम अपने अपने बुरे मार्ग से फिर जाओ; तुम क्यों मरो? १२ और हे मनुष्य के सन्तान, अपने लोगों से यह कह, जब धर्मी जन अपराध करे तब उसका धर्म उसे बचा न सकेगा; और दुष्ट की दुष्टता भी जो हो, जब वह उस से फिर जाए, तो उसके कारण वह न गिरेगा; और धर्मी जन जब वह पाप करे, तब अपने धर्म के कारण जीवित न रहेगा। १३ यदि मैं धर्मी से कहूं कि तू निश्चय जीवित रहेगा, और वह अपने धर्म पर भरोसा करके कुटिल काम करने लगे, तब उसके धर्म के कामों में से किसी का स्मरण न किया जाएगा; जो कुटिल काम उस ने किए हों वह उन्हीं में फंसा हुआ मरेगा। १४ फिर जब मैं दुष्ट से कहूं, तू निश्चय मरेगा, और वह अपने पाप से फिरकर न्याय और धर्म के काम करने लगे, १५ अर्थात् यदि दुष्ट जन बन्धक फेर दे, अपनी लूटी हुई वस्तुएं भर दे, और बिना कुटिल काम किए जीवनदायक विधियों पर चलने लगे, तो वह न मरेगा; वह निश्चय जीवित रहेगा। १६ जितने पाप उस ने किए हों, उन में से किसी का स्मरण न किया जाएगा; उस ने न्याय

और धर्म के काम किए और वह निश्चय जीवित रहेगा ।।

१७ तौभी तुम्हारे लोग कहते हैं, प्रभु की चाल ठीक नहीं; परन्तु उन्हीं की चाल ठीक नहीं है। १८ जब धर्मी अपने धर्म से फिरकर कुटिल काम करने लगे, तब निश्चय वह उन में फंसा हुआ मर जाएगा। १९ और जब दुष्ट अपनी दुष्टता से फिरकर न्याय और धर्म के काम करने लगे, तब वह उनके कारण जीवित रहेगा। २० तौभी तुम कहते हो कि प्रभु की चाल ठीक नहीं? हे इस्राएल के घराने, मैं हर एक व्यक्ति का न्याय उसकी चाल ही के अनुसार करूंगा ।।

२१ फिर हमारी बंधुआई के ग्यारहवें वर्ष के दसवें महीने के पांचवें दिन को, एक व्यक्ति जो यरूशलेम से भागकर बच गया था, वह मेरे पास आकर कहने लगा, नगर ले लिया गया। २२ उस भागे हुए के आने से पहिले सांझ को यहोवा की शक्ति* मुझ पर हुई थी; और भोर तक अर्थात् उस मनुष्य के आने तक उस ने मेरा मुंह खोल दिया; सो मेरा मुंह खुला ही रहा, और मैं फिर गूंगा न रहा। २३ तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २४ हे मनुष्य के सन्तान, इस्राएल की भूमि के उन खण्डहरों के रहनेवाले यह कहते हैं, इब्राहीम एक ही मनुष्य था, तौभी देश का अधिकारी हुआ; परन्तु हम लोग बहुत से हैं, इसलिये देश निश्चय हमारे ही अधिकार में दिया गया है। २५ इस कारण तू उन से कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता है, तुम लोग तो मांस लोहू समेत खाते और अपनी मूरतों की ओर दृष्टि करते, और हत्या करते हो; फिर क्या तुम उस देश के अधिकारी रहने पाओगे? २६ तुम अपनी अपनी तलवार पर भरोसा करते और घिनौने काम करते, और अपने अपने पड़ोसी की स्त्री को अशुद्ध करते हो: फिर क्या तुम उस देश के अधिकारी रहने पाओगे? २७ तू उन से यह कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता है, मेरे जीवन की सौगन्ध, निःसन्देह जो लोग खण्डहरों में रहते हैं, वे तलवार से गिरेंगे, और जो खुले मैदान में रहता है, उसे मैं जीवजन्तुओं का आहार कर दूंगा, और जो गढ़ों और गुफाओं में रहते हैं, वे मरी से मरेंगे। २८ और मैं उस देश को उजाड़ ही उजाड़ कर दूंगा; और उसके बल का घमण्ड जाता रहेगा; और इस्राएल के पहाड़ ऐसे उजड़ेंगे कि उन पर होकर कोई न चलेगा। २९ सो जब मैं उन लोगों के किए हुए सब घिनौने कामों के कारण उस देश को उजाड़ ही उजाड़ कर दूंगा, तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं ।।

३० और हे मनुष्य के सन्तान, तेरे लोग भीतों के पास और घरों के द्वारों में तेरे विषय में बातें करते और एक दूसरे से कहते हैं, आओ, सुनो, कि यहोवा की ओर से कौन सा वचन निकलता है। ३१ वे प्रजा की नाईं तेरे पास आते और मेरी प्रजा बनकर तेरे साम्हने बैठकर तेरे वचन सुनते हैं, परन्तु वे उन पर चलते नहीं; मुंह से तो वे बहुत प्रेम दिखाते हैं, परन्तु उनका मन लालच ही में लगा रहता है। ३२ और तू उनकी दृष्टि में प्रेम के मधुर गीत गानेवाले और अच्छे

---

* मूल में—हाथ।

बजानेवाले का सा ठहरा है, क्योंकि वे तेरे वचन सुनते तो हैं, परन्तु उन पर चलते नहीं। ३३ सो जब यह बात घटेगी, और वह निश्चय घटेगी! तब वे जान लेंगे कि हमारे बीच एक भविष्यद्वक्ता आया था ।।

३४ यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २ हे मनुष्य के सन्तान, इस्राएल के चरवाहों के विरुद्ध भविष्यद्वाणी करके उन चरवाहों से कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता है, हाय इस्राएल के चरवाहों पर जो अपने अपने पेट भरते हैं! क्या चरवाहों को भेड़-बकरियों का पेट न भरना चाहिए? ३ तुम लोग चर्बी खाते, ऊन पहिनते और मोटे मोटे पशुओं को काटते हो; परन्तु भेड़-बकरियों को तुम नहीं चराते। ४ तुम ने बीमारों को बलवान न किया, न रोगियों को चंगा किया, न घायलों के घावों को बान्धा, न निकाली हुई को फेर लाए, न खोई हुई को खोजा, परन्तु तुम ने बल और ज़बरदस्ती से अधिकार चलाया है। ५ वे चरवाहे के न होने के कारण तितर-बितर हुईं; और सब वनपशुओं का आहार हो गईं। ६ मेरी भेड़-बकरियां तितर-बितर हुई हैं; वे सारे पहाड़ों और ऊंचे ऊंचे टीलों पर भटकती थीं; मेरी भेड़-बकरियां सारी पृथ्वी के ऊपर तितर-बितर हुईं; और न तो कोई उनकी सुधि लेता था, न कोई उनको ढूंढ़ता था ।।

७ इस कारण, हे चरवाहो, यहोवा का वचन सुनो। ८ परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, मेरी भेड़-बकरियां जो लुट गई, और मेरी भेड़-बकरियां जो चरवाहे के न होने के कारण सब वनपशुओं का आहार हो गईं; और इसलिये कि मेरे चरवाहों ने मेरी भेड़-बकरियों की सुधि नहीं ली, और मेरी भेड़-बकरियों का पेट नहीं, अपना ही अपना पेट भरा; ९ इस कारण हे चरवाहो, यहोवा का वचन सुनो, १० परमेश्वर यहोवा यों कहता है, देखो, मैं चरवाहों के विरुद्ध हूं; और मैं उन से अपनी भेड़-बकरियों का लेखा लूंगा, और उनको फिर उन्हें चराने न दूंगा; वे फिर अपना अपना पेट भरने न पाएंगे। मैं अपनी भेड़-बकरियां उनके मुंह से छुड़ाऊंगा कि आगे को वे उनका आहार न हों ।।

११ क्योंकि परमेश्वर यहोवा यों कहता है, देखो, मैं आप ही अपनी भेड़-बकरियों की सुधि लूंगा, और उन्हें ढूंढूंगा। १२ जैसे चरवाहा अपनी भेड़-बकरियों में से भटकी हुई को फिर से अपने झुण्ड में बटोरता है, वैसे ही मैं भी अपनी भेड़-बकरियों को बटोरूंगा; मैं उन्हें उन सब स्थानों से निकाल ले आऊंगा, जहां जहां वे बादल और घोर अन्धकार के दिन तितर-बितर हो गई हों। १३ और मैं उन्हें देश देश के लोगों में से निकालूंगा, और देश देश से इकट्ठा करूंगा, और उन्हीं की निज भूमि में ले आऊंगा; और इस्राएल के पहाड़ों पर और नालों में और उस देश के सब बसे हुए स्थानों में चराऊंगा। १४ मैं उन्हें अच्छी चराई में चराऊंगा, और इस्राएल के ऊंचे ऊंचे पहाड़ों पर उनको चराई मिलेगी; वहां वे अच्छी हरियाली में बैठा करेंगी, और इस्राएल के पहाड़ों पर उत्तम से उत्तम चराई चरेंगी। १५ मैं आप ही अपनी भेड़-बकरियों का चरवाहा हूंगा,

और मैं आप ही उन्हें बैठाऊंगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। १६ मैं खोई हुई को ढूंढूंगा, और निकाली हुई को फेर लाऊंगा, और घायल के घाव बान्धूंगा, और बीमार को बलवान् करूंगा, और जो मोटी और बलवन्त हैं उन्हें मैं नाश करूंगा; मैं उनकी चरवाही न्याय से करूंगा ॥

१७ और हे मेरे झुण्ड, तुम से परमेश्वर यहोवा यों कहता है, देखो, मैं भेड़-भेड़ के बीच और मेढ़ों और बकरों के बीच न्याय करता हूं। १८ क्या तुम्हें यह छोटी बात जान पड़ती है कि तुम अच्छी चराई चर लो और शेष चराई को अपने पांवों से रौंदो; और क्या तुम्हें यह छोटी बात जान पड़ती है कि तुम निर्मल जल पी लो और शेष जल को अपने पांवों से गंदला करो? १९ और क्या मेरी भेड़-बकरियों को तुम्हारे पांवों से रौंदे हुए को चरना, और तुम्हारे पांवों से गंदले किए हुए को पीना पड़ेगा?

२० इस कारण परमेश्वर यहोवा उन से यों कहता है, देखो, मैं आप मोटी और दुबली भेड़-बकरियों के बीच न्याय करूंगा। २१ तुम जो सब बीमारों को पांजर और कन्धे से यहां तक ढकेलते और सींग से यहां तक मारते हो कि वे तितर-बितर हो जाती हैं, २२ इस कारण मैं अपनी भेड़-बकरियों को छुड़ाऊंगा, और वे फिर न लुटेंगी, और मैं भेड़-भेड़ के और बकरी-बकरी के बीच न्याय करूंगा। २३ और मैं उन पर ऐसा एक चरवाहा ठहराऊंगा जो उनकी चरवाही करेगा, वह मेरा दास दाऊद होगा, वही उनको चराएगा, और वही उनका चरवाहा होगा। २४ और मैं, यहोवा, उनका परमेश्वर ठहरूंगा, और मेरा दास दाऊद उनके बीच प्रधान होगा; मुझ यहोवा ही ने यह कहा है ॥

२५ मैं उनके साथ शान्ति की वाचा बान्धूंगा, और दुष्ट जन्तुओं को देश में न रहने दूंगा; सो वे जंगल में निडर रहेंगे, और वन में सोएंगे। २६ और मैं उन्हें और अपनी पहाड़ी के आस पास के स्थानों को आशीष का कारण बना दूंगा; और मेंह को मैं ठीक समय में बरसाया करूंगा; और वे आशीषों की वर्षा होंगी। २७ और मैदान के वृक्ष फलेंगे और भूमि अपनी उपज उपजाएगी, और वे अपने देश में निडर रहेंगे; जब मैं उनके जूए को तोड़कर उन लोगों के हाथ से छुड़ाऊंगा, जो उन से सेवा कराते हैं, तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं। २८ वे फिर जाति-जाति से लूटे न जाएंगे, और न वनपशु उन्हें फाड़ खाएंगे; वे निडर रहेंगे, और उनको कोई न डराएगा। २९ और मैं उनके लिये महान बारियें उपजाऊंगा, और वे देश में फिर भूखों न मरेंगे, और न जाति-जाति के लोग फिर उनकी निन्दा करेंगे। ३० और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर यहोवा, उनके संग हूं, और वे जो इस्राएल का घराना हैं, वे मेरी प्रजा हैं, मुझ परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। ३१ तुम तो मेरी भेड़-बकरियां, मेरी चराई की भेड़-बकरियां हो, तुम तो मनुष्य हो, और मैं तुम्हारा परमेश्वर हूं, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है ॥

३५ यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २ हे मनुष्य के सन्तान, अपना मुंह सेईर पहाड़ की ओर करके उसके विरुद्ध भविष्यद्वाणी कर, ३ और उस से कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता है,

हे सेईर पहाड़, मैं तेरे विरुद्ध हूं; और अपना हाथ तेरे विरुद्ध बढ़ाकर तुझे उजाड़ ही उजाड़ कर दूंगा। ४ मैं तेरे नगरों को खण्डहर कर दूंगा, और तू उजाड़ हो जाएगा; तब तू जान लेगा कि मैं यहोवा हूं। ५ क्योंकि तू इस्राएलियों से युग-युग की शत्रुता रखता था, और उनकी विपत्ति के समय जब उनके अधर्म के दण्ड का समय पहुंचा, तब उन्हें तलवार से मारे जाने को दे दिया *। ६ इसलिये परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, मैं तुझे हत्या किए जाने के लिये तैयार करूंगा और खून तेरा पीछा करेगा; तू तो खून से न घिनाता था, इस कारण खून तेरा पीछा करेगा। ७ इस रीति मैं सेईर पहाड़ को उजाड़ ही उजाड़ कर दूंगा, और जो उस में आता-जाता हो, मैं उसको नाश करूंगा। ८ और मैं उसके पहाड़ों को मारे हुओं से भर दूंगा; तेरे टीलों, तराइयों और सब नालों में तलवार से मारे हुए गिरेंगे। ९ मैं तुझे युग युग के लिये उजाड़ कर दूंगा, और तेरे नगर फिर न बसेंगे। तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं।।

१० क्योंकि तू ने कहा है, कि ये दोनों जातियां और ये दोनों देश मेरे होंगे; और हम ही उनके स्वामी हो जाएंगे, यद्यपि यहोवा वहां था। ११ इस कारण, परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, तेरे कोप के अनुसार, और जो जलजलाहट तू ने उन पर अपने बैर के कारण की है, उसी के अनुसार मैं तुझ से बर्ताव करूंगा, और जब मैं तेरा न्याय करूं, तब तुम में अपने को प्रगट करूंगा। १२ और तू जानेगा, कि मुझ यहोवा ने तेरी सब तिरस्कार की बातें सुनी हैं, जो तू ने इस्राएल के पहाड़ों के विषय में कहीं, कि, वे तो उजड़ गए, वे हम ही को दिए गए हैं कि हम उन्हें खा डालें। १३ तुम ने अपने मुंह से मेरे विरुद्ध बड़ाई मारी, और मेरे विरुद्ध बहुत बातें कही हैं; इसे मैं ने सुना है। १४ परमेश्वर यहोवा यों कहता है, जब पृथ्वी भर में आनन्द होगा, तब मैं तुझे उजाड़ करूंगा। १५ तू इस्राएल के घराने के निज भाग के उजड़ जाने के कारण आनन्दित हुआ, सो मैं भी तुझ से वैसा ही करूंगा; हे सेईर पहाड़, हे एदोम के सारे देश, तू उजाड़ हो जाएगा। तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं।।

३६ फिर हे मनुष्य के सन्तान, तू इस्राएल के पहाड़ों से भविष्यद्वाणी करके कह, हे इस्राएल के पहाड़ो, यहोवा का वचन सुनो। २ परमेश्वर यहोवा यों कहता है, शत्रु ने तो तुम्हारे विषय में कहा है, आहा! प्राचीनकाल के ऊंचे स्थान अब हमारे अधिकार में आ गए। ३ इस कारण भविष्यद्वाणी करके कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता है, लोगों ने जो तुम्हें उजाड़ा और चारों ओर से तुम्हें ऐसा निगल लिया कि तुम बची हुई जातियों का अधिकार हो जाओ, और लुतरे तुम्हारी चर्चा करते और साधारण लोग तुम्हारी निन्दा करते हैं; ४ इस कारण, हे इस्राएल के पहाड़ो, परमेश्वर यहोवा का वचन सुनो, परमेश्वर यहोवा तुम से यों कहता है, अर्थात् पहाड़ों और पहाड़ियों से और नालों और तराइयों से, और उजड़े हुए खण्डहरों और निर्जन

* मूल में—तलवार के हाथों पर सौंप दिया।

नगरों से जो चारों ओर की बची हुई जातियों से लुट गए और उनके हंसने के कारण हो गए हैं; ५ परमेश्वर यहोवा यों कहता है, निश्चय मैं ने अपनी जलन की आग में बची हुई जातियों के और सारे एदोम के विरुद्ध में कहा है कि जिन्हों ने मेरे देश को अपने मन के पूरे आनन्द और अभिमान से अपने अधिकार में किया है कि वह पराया होकर लूटा जाए। ६ इस कारण इस्राएल के देश के विषय में भविष्यद्वाणी करके पहाड़ों, पहाड़ियों, नालों, और तराइयों से कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता है, देखो, तुम ने जातियों की निन्दा सही है, इस कारण मैं अपनी बड़ी जलजलाहट से बोला हूं। ७ परमेश्वर यहोवा यों कहता है, मैं ने यह शपथ खाई है * कि निःसन्देह तुम्हारे चारों ओर जो जातियां हैं, उनको अपनी निन्दा आप ही सहनी पड़ेगी।।

८ परन्तु, हे इस्राएल के पहाड़ो, तुम पर डालियां पनपेंगी और उनके फल मेरी प्रजा इस्राएल के लिये लगेंगे; क्योंकि उसका लौट आना निकट है। ९ और देखो, मैं तुम्हारे पक्ष में हूं, और तुम्हारी ओर कृपादृष्टि करूंगा, और तुम जोते-बोए जाओगे; १० और मैं तुम पर बहुत मनुष्य अर्थात् इस्राएल के सारे घराने को बसाऊंगा; और नगर फिर बसाए और खण्डहर फिर बनाए जाएंगे। ११ और मैं तुम पर मनुष्य और पशु दोनों को बहुत बढ़ाऊंगा; और वे बढ़ेंगे और फूलें-फलेंगे; और मैं तुम को प्राचीनकाल की नाईं बसाऊंगा, और पहिले से अधिक तुम्हारी भलाई करूंगा। तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं। १२ और मैं ऐसा करूंगा कि मनुष्य अर्थात् मेरी प्रजा इस्राएल तुम पर चले-फिरेगी; और वे तुम्हारे स्वामी होंगे, और तुम उनका निज भाग होगे, और वे फिर तुम्हारे कारण निर्वंश न हो जाएंगे। १३ परमेश्वर यहोवा यों कहता है, जो लोग तुम से कहा करते हैं, कि तू मनुष्यों का खानेवाला है, और अपने पर बसी हुई जाति को निर्वंश कर देता है, १४ सो फिर तू मनुष्यों को न खाएगा, और न अपने पर बसी हुई जाति को निर्वंश करेगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। १५ और मैं फिर जाति-जाति के लोगों से तेरी निन्दा न सुनवाऊंगा, और तुझे जाति-जाति की ओर से फिर नाम-धराई न सहनी पड़ेगी, और तुझ पर बसी हुई जाति को तू फिर ठोकर न खिलाएगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।।

१६ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, १७ हे मनुष्य के सन्तान, जब इस्राएल का घराना अपने देश में रहता था, तब अपनी चालचलन और कामों के द्वारा वे उसको अशुद्ध करते थे; उनकी चालचलन मुझे ऋतुमती की अशुद्धता सी जान पड़ती थी। १८ सो जो हत्या उन्हों ने देश में की, और देश को अपनी मूरतों के द्वारा अशुद्ध किया, इसके कारण मैं ने उन पर अपनी जलजलाहट भड़काई *। १९ और मैं ने उन्हें जाति-जाति में तितर-बितर किया, और वे देश देश में छितर गए; उनके चालचलन और कामों के अनुसार मैं ने उनको दण्ड दिया। २० परन्तु जब वे उन जातियों

* मूल में—मैं ने हाथ उठाया है।

* मूल में—उंडेली।

में पहुंचे जिन में वे पहुंचाए गए, तब उन्हों ने मेरे पवित्र नाम को अपवित्र ठहराया, क्योंकि लोग उनके विषय में यह कहने लगे, ये यहोवा की प्रजा हैं, परन्तु उसके देश से निकाले गए हैं। २१ परन्तु मैं ने अपने पवित्र नाम की सुधि * ली, जिसे इस्राएल के घराने ने उन जातियों के बीच अपवित्र ठहराया था, जहां वे गए थे।।

२२ इस कारण तू इस्राएल के घराने से कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता है, हे इस्राएल के घराने, मैं इस को तुम्हारे निमित्त नहीं, परन्तु अपने पवित्र नाम के निमित्त करता हूं जिसे तुम ने उन जातियों में अपवित्र ठहराया जहां तुम गए थे। २३ और मैं अपने बड़े नाम को पवित्र ठहराऊंगा, जो जातियों में अपवित्र ठहराया गया, जिसे तुम ने उनके बीच अपवित्र किया; और जब मैं उनकी दृष्टि में तुम्हारे बीच पवित्र ठहरूंगा, तब वे जातियां जान लेंगी कि मैं यहोवा हूं, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। २४ मैं तुम को जातियों में से ले लूंगा, और देशों में से इकट्ठा करूंगा; और तुम को तुम्हारे निज देश में पहुंचा दूंगा। २५ मैं तुम पर शुद्ध जल छिड़कूंगा, और तुम शुद्ध हो जाओगे; और मैं तुम को तुम्हारी सारी अशुद्धता और मूरतों से शुद्ध करूंगा। २६ मैं तुम को नया मन दूंगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूंगा; और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुम को मांस का हृदय दूंगा। २७ और मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करूंगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मानकर उनके अनुसार करोगे। २८ तुम उस देश में बसोगे जो मैं ने तुम्हारे पितरों को दिया था; और तुम मेरी प्रजा ठहरोगे, और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूंगा। २९ और मैं तुम को तुम्हारी सारी अशुद्धता से छुड़ाऊंगा, और अन्न उपजने की आज्ञा देकर, उसे बढ़ाऊंगा और तुम्हारे बीच अकाल न डालूंगा। ३० मैं वृक्षों के फल और खेत की उपज बढ़ाऊंगा, कि जातियों में अकाल के कारण फिर तुम्हारी नामधराई न होगी। ३१ तब तुम अपने बुरे चालचलन और अपने कामों को जो अच्छे नहीं थे, स्मरण करके अपने अधर्म और घिनौने कामों के कारण अपने आप से घृणा करोगे। ३२ परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, तुम जान लो कि मैं इसको तुम्हारे निमित्त नहीं करता। हे इस्राएल के घराने अपने चालचलन के विषय में लज्जित हो और तुम्हारा मुख काला हो जाए।।

३३ परमेश्वर यहोवा यों कहता है, जब मैं तुम को तुम्हारे सब अधर्म के कामों से शुद्ध करूंगा, तब तुम्हारे नगरों को बसाऊंगा; और तुम्हारे खण्डहर फिर बनाए जाएंगे। ३४ और तुम्हारा देश जो सब आने जानेवालों के साम्हने उजाड़ है, वह उजाड़ होने की सन्ती जोता बोया जाएगा। ३५ और लोग कहा करेंगे, यह देश जो उजाड़ था, सो एदेन की बारी सा हो गया, और जो नगर खण्डहर और उजाड़ हो गए और ढाए गए थे, सो गढ़वाले हुए, और बसाए गए हैं। ३६ तब जो जातियां तुम्हारे आस पास बची रहेंगी, सो जान लेंगी कि मुझ यहोवा ने ढाए हुए को फिर बनाया, और उजाड़ में पेड़

* मूल में—उस पर मैं ने दया की है।

रोपे हैं, मुझ यहोवा ने यह कहा, और ऐसा ही करूंगा ।।

३७ परमेश्वर यहोवा यों कहता है, इस्राएल के घराने में फिर मुझ से बिनती की जाएगी कि मैं उनके लिये यह करूं; अर्थात् मैं उन में मनुष्यों की गिनती भेड़-बकरियों की नाईं बढ़ाऊं। ३८ जैसे पवित्र समयों की भेड़-बकरियां, अर्थात् नियत पर्वों के समय यरूशलेम में की भेड़-बकरियां अनगिनित होती हैं वैसे ही जो नगर अब खण्डहर हैं वे अनगिनित मनुष्यों के झुण्डों से भर जाएंगे। तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं ।।

३७ यहोवा की शक्ति * मुझ पर हुई, और वह मुझ में अपना आत्मा समवाकर बाहर ले गया और मुझे तराई के बीच खड़ा कर दिया; वह तराई हड्डियों से भरी हुई थी। २ तब उस ने मुझे उनके चारों ओर घुमाया, और तराई की तह पर बहुत ही हड्डियां थीं; और वे बहुत सूखी थीं। ३ तब उस ने मुझ से पूछा, हे मनुष्य के सन्तान, क्या ये हड्डियां जी सकती हैं? मैं ने कहा, हे परमेश्वर यहोवा, तू ही जानता है। ४ तब उस ने मुझ से कहा, इन हड्डियों से भविष्यद्वाणी करके कह, हे सूखी हड्डियो, यहोवा का वचन सुनो। ५ परमेश्वर यहोवा तुम † हड्डियों से यों कहता है, देखो, मैं आप तुम में सांस समवाऊंगा, और तुम जी उठोगी। ६ और मैं तुम्हारी नसें उपजाकर मांस चढ़ाऊंगा, और तुम को चमड़े से ढांपूंगा; और तुम में सांस समवाऊंगा और तुम जी जाओगी; और तुम जान लोगी कि मैं यहोवा हूं ।।

७ इस आज्ञा के अनुसार मैं भविष्यद्वाणी करने लगा; और मैं भविष्यद्वाणी कर ही रहा था, कि एक आहट आई, और भुईंडोल हुआ, और वे हड्डियां इकट्ठी होकर हड्डी से हड्डी जुड़ गईं। ८ और मैं देखता रहा, कि उन में नसें उत्पन्न हुईं और मांस चढ़ा, और वे ऊपर चमड़े से ढंप गईं; परन्तु उन में सांस कुछ न थी। ९ तब उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान सांस से भविष्यद्वाणी कर, और सांस से भविष्यद्वाणी करके कह, हे सांस, परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि चारों दिशाओं से आकर इन घात किए हुओं में समा जा कि ये जी उठें। १० उसकी इस आज्ञा के अनुसार मैं ने भविष्यद्वाणी की, तब सांस उन में आ गई, और वे जीकर अपने अपने पांवों के बल खड़े हो गए; और एक बहुत बड़ी सेना हो गई ।।

११ फिर उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, ये हड्डियां इस्राएल के सारे घराने की उपमा हैं। वे कहते हैं, हमारी हड्डियां सूख गईं, और हमारी आशा जाती रही; हम पूरी रीति से कट चुके हैं। १२ इस कारण भविष्यद्वाणी करके उन से कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता है, हे मेरी प्रजा के लोगो, देखो, मैं तुम्हारी कबरें खोलकर तुम को उन से निकालूंगा, और इस्राएल के देश में पहुंचा दूंगा। १३ सो जब मैं तुम्हारी कबरें खोलूं, और तुम को उन से निकालूं, तब हे मेरी प्रजा के लोगो, तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं। १४ और मैं तुम में अपना आत्मा समवाऊंगा, और

* मूल में—यहोवा का हाथ।
† मूल में—इन।

तुम जीग्रोगे, और तुम को तुम्हारे निज देश में बसाऊंगा; तब तुम जान लोगे कि मुझ यहोवा ही ने यह कहा, और किया भी है, यहोवा की यही वाणी है ।।

१५ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, १६ हे मनुष्य के सन्तान, एक लकड़ी लेकर उस पर लिख, यहूदा की और उसके संगी इस्राएलियों की; तब दूसरी लकड़ी लेकर उस पर लिख, यूसुफ की अर्थात् एप्रैम की, और उसके संगी इस्राएलियों की लकड़ी। १७ फिर उन लकड़ियों को एक दूसरी से जोड़कर एक ही कर ले कि वे तेरे हाथ में एक ही लकड़ी बन जाएं। १८ और जब तेरे लोग तुझ से पूछें, क्या तू हमें न बताएगा कि इन से तेरा क्या अभिप्राय है? १९ तब उन से कहना, परमेश्वर यहोवा यों कहता है, देखो, मैं यूसुफ की लकड़ी को जो एप्रैम के हाथ में है, और इस्राएल के जो गोत्र उसके संगी हैं, उनको लेकर यहूदा की लकड़ी से जोड़कर उसके साथ एक ही लकड़ी कर दूंगा; और दोनों मेरे हाथ में एक ही लकड़ी बनेंगी। २० और जिन लकड़ियों पर तू ऐसा लिखेगा, वे उनके साम्हने तेरे हाथ में रहें। २१ और तू उन लोगों से कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता है, देखो, मैं इस्राएलियों को उन जातियों में से लेकर जिन में वे चले गए हैं, चारों और से इकट्ठा करूंगा; और उनके निज देश में पहुंचाऊंगा। २२ और मैं उनको उस देश अर्थात् इस्राएल के पहाड़ों पर एक ही जाति कर दूंगा; और उन सभों का एक ही राजा होगा; और वे फिर दो न रहेंगे और न दो राज्यों में कभी बटेंगे। २३ वे फिर अपनी मूरतों, और घिनौने कामों वा अपने किसी प्रकार के पाप के द्वारा अपने को अशुद्ध न करेंगे; परन्तु मैं उनको उन सब बस्तियों से, जहां वे पाप करते थे, निकालकर शुद्ध करूंगा, और वे मेरी प्रजा होंगे, और मैं उनका परमेश्वर हूंगा ।।

२४ मेरा दास दाऊद उनका राजा होगा; सो उन सभों का एक ही चरवाहा होगा। वे मेरे नियमों पर चलेंगे और मेरी विधियों को मानकर उनके अनुसार चलेंगे। २५ वे उस देश में रहेंगे जिसे मैं ने अपने दास याकूब को दिया था; और जिस में तुम्हारे पुरखा रहते थे, उसी में वे और उनके बेटे-पोते सदा बसे रहेंगे; और मेरा दास दाऊद सदा उनका प्रधान रहेगा। २६ मैं उनके साथ शान्ति की वाचा बान्धूंगा; वह सदा की वाचा ठहरेगी; और मैं उन्हें स्थान देकर गिनती में बढ़ाऊंगा, और उनके बीच अपना पवित्रस्थान सदा बनाए रखूंगा। २७ मेरे निवास का तम्बू उनके ऊपर तना रहेगा; और मैं उनका परमेश्वर हूंगा, और वे मेरी प्रजा होंगे। २८ और जब मेरा पवित्रस्थान उनके बीच सदा के लिये रहेगा, तब सब जातियां जान लेंगी कि मैं यहोवा इस्राएल का पवित्र करनेवाला हूं ।।

३८ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २ हे मनुष्य के सन्तान, अपना मुंह मागोग देश के गोग की ओर करके, जो रोश, मेशेक और तूबल का प्रधान है, उसके विरुद्ध भविष्यद्वाणी कर। ३ और यह कह, हे गोग, हे रोश, मेशेक, और तूबल के प्रधान, परमेश्वर यहोवा यों कहता है, देख, मैं तेरे विरुद्ध हूं। ४ मैं तुझे घुमा

ले आऊंगा, और तेरे जबड़ों में आंकड़े डालकर तुझे निकालूंगा; और तेरी सारी सेना को भी अर्थात् घोड़ों और सवारों को जो सब के सब कवच पहिने हुए एक बड़ी भीड़ हैं, जो फरी और ढाल लिए हुए सब के सब तलवार चलानेवाले होंगे; ५ और उनके संग फारस, कूश और पूत को, जो सब के सब ढाल लिए और टोप लगाए होंगे; ६ और गोमेर और उसके सारे दलों को, और उत्तर दिशा के दूर दूर देशों के तोगर्मा के घराने, और उसके सारे दलों को निकालूंगा; तेरे संग बहुत से देशों के लोग होंगे॥

७ इसलिये तू तैयार हो जा; तू और जितनी भीड़ तेरे पास इकट्ठी हों, तैयार रहना, और तू उनका अगुवा बनना। ८ बहुत दिनों के बीतने पर तेरी सुधि ली जाएगी; और अन्त के वर्षों में तू उस देश में आएगा, जो तलवार के वश से छूटा हुआ होगा, और जिसके निवासी * बहुत सी जातियों में से इकट्ठे होंगे; अर्थात् तू इस्राएल के पहाड़ों पर आएगा जो निरन्तर उजाड़ रहे हैं; परन्तु वे † देश देश के लोगों के वश से छुड़ाए जाकर सब के सब निडर रहेंगे। ९ तू चढ़ाई करेगा, और आंधी की नाईं आएगा, और अपने सारे दलों और बहुत देशों के लोगों समेत मेघ के समान देश पर छा जाएगा॥

१० परमेश्वर यहोवा यों कहता है, उस दिन तेरे मन में ऐसी ऐसी बातें आएंगी कि तू एक बुरी युक्ति भी निकालेगा; ११ और तू कहेगा कि मैं बिन शहरपनाह के गांवों के देश पर चढ़ाई करूंगा; मैं उन लोगों के पास जाऊंगा जो चैन से निडर रहते हैं; जो सब के सब बिना शहरपनाह और बिना बेंड़ों और पल्लों के बसे हुए हैं; १२ ताकि छीनकर तू उन्हें लूटे और अपना हाथ उन खण्डहरों पर बढ़ाए जो फिर बसाए गए, और उन लोगों के विरुद्ध फेरे जो जातियों में से इकट्ठे हुए थे और पृथ्वी की नाभी पर बसे हुए ढोर और और सम्पत्ति रखते हैं। १३ शबा और ददान के लोग और तर्शीश के ब्योपारी अपने देश के सब जवान सिंहों समेत तुझ से कहेंगे, क्या तू लूटने को आता है? क्या तू ने धन छीनने, सोना-चाँदी उठाने, ढोर और और सम्पत्ति ले जाने, और बड़ी लूट अपना लेने को अपनी भीड़ इकट्ठी की है?

१४ इस कारण, हे मनुष्य के सन्तान, भविष्यद्वाणी करके गोग से कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता है, जिस समय मेरी प्रजा इस्राएल निडर बसी रहेगी, क्या तुझे इसका समाचार न मिलेगा? १५ और तू उत्तर दिशा के दूर दूर स्थानों से आएगा; तू और तेरे साथ बहुत सी जातियों के लोग, जो सब के सब घोड़ों पर चढ़े हुए होंगे, अर्थात् एक बड़ी भीड़ और बलवन्त सेना। १६ और जैसे बादल भूमि पर छा जाता है, वैसे ही तू मेरी प्रजा इस्राएल के देश पर ऐसे चढ़ाई करेगा। इसलिये हे गोग, अन्त के दिनों में ऐसा ही होगा, कि मैं तुझ से अपने देश पर इसलिये चढ़ाई कराऊंगा, कि जब मैं जातियों के देखते तेरे द्वारा अपने को पवित्र ठहराऊं, तब वे मुझे पहिचान लेंगे॥

१७ परमेश्वर यहोवा यों कहता है, क्या तू वही नहीं जिसकी चर्चा मैं ने

* मूल में—जो। † मूल में—वह।

प्राचीनकाल में अपने दासों के, अर्थात् इस्राएल के उन भविष्यद्वक्ताओं द्वारा की थी, जो उन दिनों में वर्षों तक यह भविष्यद्वाणी करते गए, कि यहोवा गोग * से इस्राएलियों पर चढ़ाई कराएगा? १८ और जिस दिन इस्राएल के देश पर गोग चढ़ाई करेगा, उसी दिन मेरी जल-जलाहट मेरे मुख से प्रगट होगी, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। १९ और मैं ने जलजलाहट और क्रोध की आग में कहा कि निःसन्देह उस दिन इस्राएल के देश में बड़ा भुईंडोल होगा। २० और मेरे दर्शन से समुद्र की मछलियां और आकाश के पक्षी, मैदान के पशु और भूमि पर जितने जीवजन्तु रेंगते हैं, और भूमि के ऊपर जितने मनुष्य रहते हैं, सब कांप उठेंगे; और पहाड़ गिराए जाएंगे; और चढ़ाइयां नाश होंगी †, और सब भीतें गिरकर मिट्टी में मिल जाएंगी। २१ परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है कि मैं उसके विरुद्ध तलवार चलाने के लिये अपने सब पहाड़ों को पुकारूंगा और हर एक की तलवार उसके भाई के विरुद्ध उठेगी। २२ और मैं मरी और खून के द्वारा उस से मुक़द्दमा लड़ूंगा; और उस पर और उसके दलों पर, और उन बहुत सी जातियों पर जो उसके पास होंगी, मैं बड़ी झड़ी लगाऊंगा, और ओले और आग और गन्धक बरसाऊंगा। २३ इस प्रकार मैं अपने को महान और पवित्र ठहराऊंगा और बहुत सी जातियों के साम्हने अपने को प्रगट करूंगा। तब वे जान लेंगी कि मैं यहोवा हूं॥

* मूल में—तुझे।
† मूल में—गिर जाएंगी।

३९ फिर हे मनुष्य के सन्तान, गोग के विरुद्ध भविष्यद्वाणी करके यह कह, हे गोग, हे रोश, मेशेक और तूबल के प्रधान, परमेश्वर यहोवा यों कहता है, मैं तेरे विरुद्ध हूं। २ मैं तुझे घुमा ले आऊंगा, और उत्तर दिशा के दूर दूर देशों से चढ़ा ले आऊंगा, और इस्राएल के पहाड़ों पर पहुंचाऊंगा। ३ वहां मैं तेरा धनुष तेरे बाएं हाथ से गिराऊंगा, और तेरे तीरों को तेरे दहिने हाथ से गिरा दूंगा। ४ तू अपने सारे दलों और अपने साथ की सारी जातियों समेत इस्राएल के पहाड़ों पर मार डाला जाएगा; मैं तुझे भांति भांति के मांसाहारी पक्षियों और वनपशुओं का आहार कर दूंगा। ५ तू खेत में गिरेगा, क्योंकि मैं ही ने ऐसा कहा है, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। ६ मैं मागोग में और द्वीपों के निडर रहनेवालों के बीच आग लगाऊंगा; और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं॥

७ और मैं अपनी प्रजा इस्राएल के बीच अपना नाम प्रगट करूंगा; और अपना पवित्र नाम फिर अपवित्र न होने दूंगा; तब जाति-जाति के लोग भी जान लेंगे कि मैं यहोवा, इस्राएल का पवित्र हूं। ८ यह घटना हुआ चाहती है और वह हो जाएगी, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। यह वही दिन है जिसकी चर्चा मैं ने की है॥

९ तब इस्राएल के नगरों के रहनेवाले निकलेंगे और हथियारों में आग लगाकर जला देंगे, ढाल, और फरी, धनुष, और तीर, लाठी, बर्छे, सब को वे सात वर्ष तक जलाते रहेंगे। १० और इसके कारण वे मैदान में लकड़ी न बीनेंगे, न जंगल में

काटेंगे, क्योंकि वे हथियारों ही को जलाया करेंगे; वे अपने लूटनेवाले को लूटेंगे, और अपने छीननेवालों से छीनेंगे, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है ।।

११ उस समय में गोग को इस्राएल के देश में कब्रिस्तान दूंगा, वह ताल की पूर्व ओर होगा; वह आने जानेवालों की तराई कहलाएगी, और आने जानेवालों को वहां रुकना पड़ेगा; वहां सब भीड़ समेत गोग को मिट्टी दी जाएगी और उस स्थान का नाम गोग की भीड़ की तराई पड़ेगा। १२ इस्राएल का घराना उनको सात महीने तक मिट्टी देता रहेगा ताकि अपने देश को शुद्ध करे। १३ देश के सब लोग मिलकर उनको मिट्टी देंगे; और जिस समय मेरी महिमा होगी, उस समय उनका भी नाम बड़ा होगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। १४ तब वे मनुष्यों को नियुक्त करेंगे, जो निरन्तर इसी काम में लगे रहेंगे, अर्थात् देश में घूम-घामकर आने जानेवालों के संग होकर देश को शुद्ध करने के लिये उनको जो भूमि के ऊपर पड़े हों, मिट्टी देंगे; और सात महीने के बीतने तक वे ढूंढ़ ढूंढ़कर यह काम करते रहेंगे। १५ और देश में आने जानेवालों में से जब कोई मनुष्य की हड्डी देखे, तब उसके पास एक चिन्ह खड़ा करेगा, यह उस समय तक बना रहेगा जब तक मिट्टी देनेवाले उसे गोग की भीड़ की तराई में गाड़ न दें। १६ वहां के नगर का नाम भी "हमोना है"। यों देश शुद्ध किया जाएगा ।।

१७ फिर हे मनुष्य के सन्तान, परमेश्वर यहोवा यों कहता है, भांति भांति के सब पक्षियों और सब वनपशुओं को आज्ञा दे, इकट्ठे होकर आओ, मेरे इस बड़े यज्ञ में जो मैं तुम्हारे लिये इस्राएल के पहाड़ों पर करता हूं, हर एक दिशा से इकट्ठे हो कि तुम मांस खाओ और लोहू पीओ। १८ तुम शूरवीरों का मांस खाओगे, और पृथ्वी के प्रधानों का लोहू पीओगे और मेढ़ों, मेम्नों, बकरों और बैलों का भी जो सब के सब बाशान के तैयार किए हुए होंगे। १९ और मेरे उस भोज की चर्बी से जो मैं तुम्हारे लिये करता हूं, तुम खाते-खाते अघा जाओगे, और उसका लोहू पीते-पीते छक जाओगे। २० तुम मेरी मेज़ पर घोड़ों, सवारों, शूरवीरों, और सब प्रकार के योद्धाओं से तृप्त होंगे, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है ।।

२१ और मैं जाति-जाति के बीच अपनी महिमा प्रगट करूंगा, और जाति-जाति के सब लोग मेरे न्याय के काम जो मैं करूंगा, और मेरा हाथ जो उन पर पड़ेगा, देख लेंगे। २२ उस दिन से आगे इस्राएल का घराना जान लेगा कि यहोवा हमारा परमेश्वर है। २३ और जाति-जाति के लोग भी जान लेंगे कि इस्राएल का घराना अपने अधर्म के कारण बंधुआई में गया था; क्योंकि उन्हों ने मुझ से ऐसा विश्वासघात किया कि मैं ने अपना मुंह उन से फेर* लिया और उनको उनके बैरियों के वश कर दिया, और वे सब तलवार से मारे गए। २४ मैं ने उनकी अशुद्धता और अपराधों ही के अनुसार उन से बर्ताव करके उन से अपना मुंह फेर* लिया था ।।

२५ इसलिये परमेश्वर यहोवा यों कहता है, अब मैं याकूब को बंधुआई से

* मूल में—छिपा।

फेर लाऊंगा, और इस्राएल के सारे घराने पर दया करूंगा; और अपने पवित्र नाम के लिये मुझे जलन होगी। २६ तब उस सारे विश्वासघात के कारण जो उन्हों ने मेरे विरुद्ध किया वे लज्जित होंगे; और अपने देश में निडर रहेंगे; और कोई उनको न डराएगा। २७ और जब मैं उनको जाति-जाति के बीच से फेर लाऊंगा, और उन शत्रुओं के देशों से इकट्ठा करूंगा, तब बहुत जातियों की दृष्टि में उनके द्वारा पवित्र ठहरूंगा। २८ और तब वे जान लेंगे कि यहोवा हमारा परमेश्वर है, क्योंकि मैं ने उनको जाति-जाति में बंधुआ करके फिर उनके निज देश में इकट्ठा किया है। मैं उन में से किसी को फिर परदेश में * न छोड़ूंगा, २९ और उन से अपना मुंह फिर कभी न फेर † लूंगा, क्योंकि मैं ने इस्राएल के घराने पर अपना आत्मा उण्डेला है, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है ।।

४० हमारी बंधुआई के पच्चीसवें वर्ष अर्थात् यरूशलेम नगर के ले लिए जाने के बाद चौदहवें वर्ष के पहिले महीने के दसवें दिन को, यहोवा की शक्ति ‡ मुझ पर हुई, और उस ने मुझे वहां पहुंचाया। २ अपने दर्शनों में परमेश्वर ने मुझे इस्राएल के देश में पहुंचाया और वहां एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर खड़ा किया, जिस पर दक्खिन ओर मानो किसी नगर का आकार था। ३ जब वह मुझे वहां ले गया, तो मैं ने क्या देखा कि पीतल का रूप धरे हुए और हाथ में सन का फीता और मापने का बांस लिए हुए एक पुरुष फाटक में खड़ा है। ४ उस पुरुष ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, अपनी आंखों से देख, और अपने कानों से सुन; और जो कुछ मैं तुझे दिखाऊंगा उस सब पर ध्यान दे, क्योंकि तू इसलिये यहां पहुंचाया गया है कि मैं तुझे ये बातें दिखाऊं; और जो कुछ तू देखे वह इस्राएल के घराने को बताए ।।

५ और देखो, भवन के बाहर चारों ओर एक भीत थी, और उस पुरुष के हाथ में मापने का बांस था, जिसकी लम्बाई ऐसे छः हाथ की थी जो साधारण हाथों से चौवा भर अधिक है; सो उस ने भीत * की मोटाई मापकर बांस भर की पाई, फिर उसकी ऊंचाई भी मापकर बांस भर की पाई। ६ तब वह उस फाटक के पास आया जिसका मुंह पूर्व की ओर था, और उसकी सीढ़ी पर चढ़कर फाटक की दोनों डेवढ़ियों की चौड़ाई मापकर एक एक बांस भर की पाई। ७ और पहरेवाली कोठरियां बांस भर लम्बी और बांस भर चौड़ी थीं; और दो दो कोठरियों का अन्तर पांच हाथ का था; और फाटक की डेवढ़ी जो फाटक के ओसारे के पास भवन की ओर थी, वह भी बांस भर की थी। ८ तब उस ने फाटक का वह ओसारा जो भवन के साम्हने था, मापकर बांस भर का पाया। ९ और उस ने फाटक का ओसारा मापकर आठ हाथ का पाया, और उसके खम्भे दो दो हाथ के पाए, और फाटक का ओसारा भवन के साम्हने था। १० और पूर्वी फाटक की दोनों ओर तीन तीन पहरेवाली कोठरियां

* मूल में—वहां। † मूल में—छिपा। ‡ मूल में—यहोवा का हाथ।

* मूल में—बनाई हुई वस्तु।

थीं जो सब एक ही माप की थीं, और दोनों ओर के खम्भे भी एक ही माप के थे। ११ फिर उस ने फाटक के द्वार की चौड़ाई मांपकर दस हाथ की पाई; और फाटक की लम्बाई मापकर तेरह हाथ की पाई। १२ और दोनों ओर की पहरेवाली कोठरियों के आगे हाथ भर का स्थान था और दोनों ओर कोठरियां छः छः हाथ की थीं। १३ फिर उस ने फाटक को एक ओर की पहरेवाली कोठरी की छत से लेकर दूसरी ओर की पहरेवाली कोठरी की छत तक मापकर पच्चीस हाथ की दूरी पाई, और द्वार आम्हने-साम्हने थे। १४ फिर उस ने साठ हाथ के खम्भे मापे *, और आंगन, फाटक के आस पास, खम्भों तक था। १५ और फाटक के बाहरी द्वार के आगे से लेकर उसके भीतरी ओसारे के आगे तक पचास हाथ का अन्तर था। १६ और पहरेवाली कोठरियों में, और फाटक के भीतर चारों ओर कोठरियों के बीच के खम्भे के बीच बीच में झिलमिलीदार खिड़कियां थीं, और खम्भों के ओसारे में भी वैसी ही थीं; और फाटक के भीतर के चारों ओर खिड़कियां थीं; और हर एक खम्भे पर खजूर के पेड़ खुदे हुए थे॥

१७ तब वह मुझे बाहरी आंगन में ले गया; और उस आंगन के चारों ओर कोठरियां थीं; और एक फर्श बना हुआ था; जिस पर तीस कोठरियां बनी थीं। १८ और यह फर्श अर्थात् निचला फर्श फाटकों से लगा हुआ था और उनकी लम्बाई के अनुसार था। १९ फिर उस ने निचले फाटक के आगे से लेकर भीतरी आंगन के बाहर के आगे तक मापकर सौ हाथ पाए; वह पूर्व और उत्तर दोनों ओर ऐसा ही था॥

२० तब बाहरी आंगन के उत्तरमुखी फाटक की लम्बाई और चौड़ाई उस ने मापी। २१ और उसकी दोनों ओर तीन तीन पहरेवाली कोठरियां थीं, और इसके भी खम्भों के ओसारे की माप पहिले फाटक के अनुसार थी; इसकी लम्बाई पचास और चौड़ाई पच्चीस हाथ की थी। २२ और इसकी भी खिड़कियों और खम्भों के ओसारे और खजूरों की माप पूर्वमुखी फाटक की सी थी; और इस पर चढ़ने को सात सीढ़ियां थीं; और उनके साम्हने इसका ओसारा था। २३ और भीतरी आंगन की उत्तर और पूर्व ओर दूसरे फाटकों के साम्हने फाटक थे और उस ने फाटकों की दूरी मापकर सौ हाथ की पाई॥

२४ फिर वह मुझे दक्खिन ओर ले गया, और दक्खिन ओर एक फाटक था; और उस ने इसके खम्भे और खम्भों का ओसारा मापकर इनकी वैसी ही माप पाई। २५ और उन खिड़कियों की नाईं इसके और इसके खम्भों के ओसारों के चारों ओर भी खिड़कियां थीं; इसकी भी लम्बाई पचास और चौड़ाई पच्चीस हाथ की थी। २६ और इस में भी चढ़ने के लिये सात सीढ़ियां थीं और उनके साम्हने खम्भों का ओसारा था; और उसके दोनों ओर के खम्भों पर खजूर के पेड़ खुदे हुए थे। २७ और दक्खिन ओर भी भीतरी आंगन का एक फाटक था, और उस ने दक्खिन ओर के दोनों फाटकों की दूरी मापकर सौ हाथ की पाई॥

* मूल में—बनाए।

२८ तब वह दक्खिनी फाटक से होकर मुझे भीतरी आंगन में ले गया, और उस ने दक्खिनी फाटक को मापकर वैसा ही पाया। २९ अर्थात् इसकी भी पहरेवाली कोठरियां, और खम्भे, और खम्भों का ओसारा, सब वैसे ही थे; और इसके और इसके खम्भों के ओसारे के भी चारों ओर भी खिड़कियां थीं; और इसकी लम्बाई पचास और चौड़ाई पच्चीस हाथ की थी। ३० और इसके चारों ओर के खम्भों का ओसारा भी पच्चीस हाथ लम्बा, और पचास हाथ चौड़ा था। ३१ और इसका खम्भों का ओसारा बाहरी आंगन की ओर था, और इसके खम्भों पर भी खजूर के पेड़ खुदे हुए थे, और इस पर चढ़ने को आठ सीढ़ियां थीं॥

३२ फिर वह पुरुष मुझे पूर्व की ओर भीतरी आंगन में ले गया, और उस ओर के फाटक को मापकर वैसा ही पाया। ३३ और इसकी भी पहरेवाली कोठरियां और खम्भे और खम्भों का ओसारा, सब वैसे ही थे; और इसके और इसके खम्भों के ओसारे के चारों ओर भी खिड़कियां थीं; इसकी लम्बाई पचास और चौड़ाई पच्चीस हाथ की थी। ३४ इसका ओसारा भी बाहरी आंगन की ओर था, और उसके दोनों ओर के खम्भों पर खजूर के पेड़ खुदे हुए थे; और इस पर भी चढ़ने को आठ सीढ़ियां थीं॥

३५ फिर उस पुरुष ने मुझे उत्तरी फाटक के पास ले जाकर उसे मापा, और उसकी भी माप वैसी ही पाई। ३६ उसके भी पहरेवाली कोठरियां और खम्भे और उनका ओसारा था; और उसके भी चारों ओर खिड़कियां थीं; उसकी लम्बाई पचास और चौड़ाई पच्चीस हाथ की थी। ३७ उसके खम्भे बाहरी आंगन की ओर थे, और उन पर भी दोनों ओर खजूर के पेड़ खुदे हुए थे; और उस में चढ़ने को आठ सीढ़ियां थीं॥

३८ फिर फाटकों के पास के खम्भों के निकट द्वार समेत कोठरी थी, जहां होमबलि धोया जाता था। ३९ और होमबलि, पापबलि, और दोषबलि के पशुओं के बध करने के लिये फाटक के ओसारे के पास उसके दोनों ओर दो दो मेज़ें थीं। ४० और फाटक की एक बाहरी अलंग पर अर्थात् उत्तरी फाटक के द्वार की चढ़ाई पर दो मेज़ें थीं; और उसकी दूसरी बाहरी अलंग पर भी, जो फाटक के ओसारे के पास थी, दो मेज़ें थीं। ४१ फाटक की दोनों अलंगों पर चार चार मेज़ें थीं, सो सब मिलकर आठ मेज़ें थीं, जो बलिपशु बध करने के लिये थीं। ४२ फिर होमबलि के लिये तराशे हुए पत्थर की चार मेज़ें थीं, जो डेढ़ हाथ लम्बी, डेढ़ हाथ चौड़ी, और हाथ भर ऊंची थीं; उन पर होमबलि और मेलबलि के पशुओं को बध करने के हथियार रखे जाते थे। ४३ भीतर चारों ओर चौवे भर की अंकड़ियां लगी थीं, और मेज़ों पर चढ़ावे का मांस रखा हुआ था। ४४ और भीतरी आंगन की उत्तरी फाटक की अलंग के बाहर गानेवालों की कोठरियां थीं जिनके द्वार दक्खिन ओर थे; और पूर्वी फाटक की अलंग पर एक कोठरी थी, जिसका द्वार उत्तर ओर था। ४५ उस ने मुझ से कहा, यह कोठरी, जिसका द्वार दक्खिन की ओर है, उन याजकों के लिये है जो भवन की चौकसी करते हैं, ४६ और जिस कोठरी का द्वार उत्तर ओर है, वह उन याजकों के लिये है जो

वेदी की चौकसी करते हैं; ये सादोक की सन्तान हैं; और लेवियों में से यहोवा की सेवा टहल करने को केवल ये ही उसके समीप जाते हैं। ४७ फिर उस ने आंगन को मापकर उसे चौकोना अर्थात् सौ हाथ लम्बा और सौ हाथ चौड़ा पाया; और भवन के साम्हने वेदी थी ॥

४८ फिर वह मुझे भवन के ओसारे में ले गया, और ओसारे के दोनों ओर के खम्भों को मापकर पांच पांच हाथ का पाया; और दोनों ओर फाटक की चौड़ाई तीन तीन हाथ की थी। ४९ ओसारे की लम्बाई बीस हाथ और चौड़ाई ग्यारह हाथ की थी; और उस पर चढ़ने को सीढ़ियां थीं; और दोनों ओर के खम्भों के पास लाटें थीं ॥

४१ फिर वह मुझे मन्दिर के पास ले गया, और उसके दोनों ओर के खम्भों को मापकर छः छः हाथ चौड़े पाया; यह तो तम्बू की चौड़ाई थी। २ और द्वार की चौड़ाई दस हाथ की थी, और द्वार की दोनों अलंगें पांच पांच हाथ की थीं; और उस ने मन्दिर की लम्बाई मापकर चालीस हाथ की, और उसकी चौड़ाई बीस हाथ की पाई। ३ तब उस ने भीतर जाकर द्वार के खम्भों को मापा, और दो दो हाथ का पाया; और द्वार छः हाथ का था; और द्वार की चौड़ाई सात हाथ की थी। ४ तब उस ने भीतर के भवन की लम्बाई और चौड़ाई मन्दिर के साम्हने मापकर बीस बीस हाथ की पाई; और उस ने मुझ से कहा, यह तो परमपवित्र स्थान है ॥

५ फिर उस ने भवन की भीत को मापकर छः हाथ की पाया, और भवन के आस पास चार चार हाथ चौड़ी बाहरी कोठरियां थीं। ६ और ये बाहरी कोठरियां तिमहली थीं; और एक एक महल में तीस तीस कोठरियां थीं। भवन के आस पास की भीत इसलिये थी कि बाहरी कोठरियां उसके सहारे में हों; और उसी में कोठरियों की कड़ियां पैठाई हुई थीं और भवन की भीत के सहारे में न थीं। ७ और भवन के आस पास जो कोठरियां बाहर थीं, उन में से जो ऊपर थीं, वे अधिक चौड़ी थीं; अर्थात् भवन के आस पास जो कुछ बना था, वह जैसे जैसे ऊपर की ओर चढ़ता गया, वैसे वैसे चौड़ा होता गया; इस रीति, इस घर की चौड़ाई ऊपर की ओर बढ़ी हुई थी, और लोग नीचले महल के बीच से उपरले महल को चढ़ सकते थे। ८ फिर मैं ने भवन के आस पास ऊंची भूमि देखी, और बाहरी कोठरियों की ऊंचाई जोड़ तक छः हाथ के बांस की थी। ९ बाहरी कोठरियों के लिये जो भीत थी, वह पांच हाथ मोटी थी, और जो स्थान खाली रह गया था, वह भवन की बाहरी कोठरियों का स्थान था। १० बाहरी कोठरियों के बीच बीच भवन के आस पास बीस हाथ का अन्तर था। ११ और बाहरी कोठरियों के द्वार उस स्थान की ओर थे, जो खाली था, अर्थात् एक द्वार उत्तर की ओर और दूसरा दक्खिन की ओर था; और जो स्थान रह गया, उसकी चौड़ाई चारों ओर पांच पांच हाथ की थी ॥

१२ फिर जो भवन मन्दिर के पश्चिमी आंगन के साम्हने था, वह सत्तर हाथ चौडा था; और भवन के आस पास की भीत पांच हाथ मोटी थी, और उसकी लम्बाई नब्बे हाथ की थी ॥

१३ तब उस ने भवन की लम्बाई मापकर सौ हाथ की पाई; और भीतों समेत आंगन की भी लम्बाई मापकर सौ हाथ की पाई। १४ और भवन का पूर्वी साम्हना और उसका आंगन सौ हाथ चौड़ा था ।।

१५ फिर उस ने पीछे के आंगन के साम्हने की भीत की लम्बाई जिसके दोनों ओर छज्जे थे, मापकर सौ हाथ की पाई; और भीतरी भवन और आंगन के ओसारों को भी मापा। १६ तब उस ने डेवढ़ियों और झिलमिलीदार खिड़कियों, और आस पास के तीनों महलों के छज्जों को मापा जो डेवढ़ी के साम्हने थे, और चारों ओर उनकी तख़ताबन्दी हुई थी; और भूमि से खिड़कियों तक और खिड़कियों के आस पास सब कहीं तख़ताबन्दी हुई थी। १७ फिर उस ने द्वार के ऊपर का स्थान भीतरी भवन तक और उसके बाहर भी और आस पास की सारी भीत के भीतर और बाहर भी मापा। १८ और उस में करूब और खजूर के पेड़ ऐसे खुदे हुए थे कि दो दो करूबों के बीच एक एक खजूर का पेड़ था; और करूबों के दो दो मुख थे। १९ इस प्रकार से एक एक खजूर की एक ओर मनुष्य का मुख बनाया हुआ था, और दूसरी ओर जवान सिंह का मुख बनाया हुआ था। इसी रीति सारे भवन के चारों ओर बना था। २० भूमि से लेकर द्वार के ऊपर तक करूब और खजूर के पेड़ खुदे हुए थे, मन्दिर की भीत इसी भांति बनी हुई थी ।।

२१ भवन के द्वारों के खम्भे चौपहल थे, और पवित्रस्थान के साम्हने का रूप मन्दिर का सा था। २२ वेदी काठ की बनी थी, और उसकी ऊंचाई तीन हाथ, और लम्बाई दो हाथ की थी; और उसके कोने और उसका सारा पाट और अलंगें भी काठ की थीं। और उस ने मुझ से कहा, यह तो यहोवा के सम्मुख की मेज़ है। २३ और मन्दिर और पवित्रस्थान के द्वारों के दो दो किवाड़ थे। २४ और हर एक किवाड़ में दो दो मुड़नेवाले पल्ले थे, हर एक किवाड़ के लिये दो दो पल्ले। २५ और जैसे मन्दिर की भीतों में करूब और खजूर के पेड़ खुदे हुए थे, वैसे ही उसके किवाड़ों में भी थे, और ओसारे की बाहरी ओर लकड़ी की मोटी मोटी धरनें थीं। २६ और ओसारे के दोनों ओर झिलमिलीदार खिड़कियां थीं और खजूर के पेड़ खुदे थे; और भवन की बाहरी कोठरियां और मोटी मोटी धरनें भी थीं ।।

४२ फिर वह मुझे बाहरी आंगन में उत्तर की ओर ले गया, और मुझे उन दो कोठरियों के पास लाया जो भवन के आंगन के साम्हने और उसकी उत्तर ओर थीं। २ सौ हाथ की दूरी पर उत्तरी द्वार था, और चौड़ाई पचास हाथ की थी। ३ भीतरी आंगन के बीस हाथ साम्हने और बाहरी आंगन के फ़र्श के साम्हने तीनों महलों में छज्जे थे। ४ और कोठरियों के साम्हने भीतर की ओर जानेवाला दस हाथ चौड़ा एक मार्ग था; और हाथ भर का एक और मार्ग था; और कोठरियों के द्वार उत्तर ओर थे। ५ और उपरली कोठरियां छोटी थीं, अर्थात् छज्जों के कारण वे निचली और बिचली कोठरियों से छोटी थीं। ६ क्योंकि वे तिमहली थीं, और आंगनों के समान उनके

खम्भे न थे; इस कारण उपरली कोठरियां निचली और बिचली कोठरियों से छोटी थीं। ७ और जो भीत कोठरियों के बाहर उनके पास पास थी अर्थात् कोठरियों के साम्हने बाहरी आंगन की ओर थी, उसकी लम्बाई पचास हाथ की थी। ८ क्योंकि बाहरी आंगन की कोठरियां पचास हाथ लम्बी थीं, और मन्दिर के साम्हने की अलंग सौ हाथ की थी। ९ और इन कोठरियों के नीचे पूर्व की ओर मार्ग था, जहां लोग बाहरी आंगन से इन में जाते थे ।।

१० आंगन की भीत की चौड़ाई में पूर्व की ओर अलग स्थान और भवन दोनों के साम्हने कोठरियां थीं। ११ और उनके साम्हने का मार्ग उत्तरी कोठरियों के मार्ग सा था; उनकी लम्बाई-चौड़ाई बराबर थी और निकास और ढंग उनके द्वार के से थे। १२ और दक्खिनी कोठरियों के द्वारों के अनुसार मार्ग के सिरे पर द्वार था, अर्थात् पूर्व की ओर की भीत के साम्हने, जहां से लोग उन में प्रवेश करते थे ।।

१३ फिर उस ने मुझ से कहा, ये उत्तरी और दक्खिनी कोठरियां जो आंगन के साम्हने हैं, वे ही पवित्र कोठरियां हैं, जिन में यहोवा के समीप जानेवाले याजक परमपवित्र वस्तुएं खाया करेंगे; वे परम-पवित्र वस्तुएं, और अन्नबलि, और पापबलि, और दोषबलि, वहीं रखेंगे; क्योंकि वह स्थान पवित्र है। १४ जब जब याजक लोग भीतर जाएंगे, तब तब निकलने के समय वे पवित्रस्थान से बाहरी आंगन में यों ही न निकलेंगे, अर्थात् वे पहिले अपनी सेवा टहल के वस्त्र पवित्रस्थान में रख देंगे; क्योंकि ये कोठरियां पवित्र हैं। तब वे और वस्त्र पहिनकर साधारण लोगों के स्थान में जाएंगे ।।

१५ जब वह भीतरी भवन को माप चुका, तब मुझे पूर्व दिशा के फाटक के मार्ग से बाहर ले जाकर बाहर का स्थान चारों ओर मापने लगा। १६ उस ने पूर्वी अलंग को मापने के बांस से मापकर पांच सौ बांस का पाया। १७ तब उस ने उत्तरी अलंग को मापने के बांस से माप-कर पांच सौ बांस का पाया। १८ तब उस ने दक्खिनी अलंग को मापने के बांस से मापकर पांच सौ बांस का पाया। १९ और पच्छिमी अलंग को मुड़कर उस ने मापने के बांस से मापकर उसे पांच सौ बांस का पाया। २० उस ने उस स्थान की चारों अलंगें मापीं, और उसकी चारों ओर एक भीत थी, वह पांच सौ बांस लम्बी और पांच सौ बांस चौड़ी थी, और इसलिये बनी थी कि पवित्र और सर्वसाधारण को अलग अलग करे ।।

४३ फिर वह मुझ को उस फाटक के पास ले गया जो पूर्वमुखी था। २ तब इस्राएल के परमेश्वर का तेज पूर्व दिशा से आया; और उसकी वाणी बहुत से जल की घरघराहट सी हुई; और उसके तेज से पृथ्वी प्रकाशित हुई। ३ और यह दर्शन उस दर्शन के तुल्य था, जो मैं ने उसे नगर के नाश करने को आते समय देखा था; और उस दर्शन के समान, जो मैं ने कबार नदी के तीर पर देखा था; और मैं मुंह के बल गिर पड़ा। ४ तब यहोवा का तेज उस फाटक से होकर जो पूर्वमुखी था, भवन में आ गया। ५ तब आत्मा ने मुझे उठाकर

भीतरी आंगन में पहुंचाया; और यहोवा का तेज भवन में भरा था ।।

६ तब मैं ने एक जन का शब्द सुना, जो भवन में से मुझ से बोल रहा था, और वह पुरुष मेरे पास खड़ा था। ७ उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, यहोवा की यह वाणी है, यह तो मेरे सिंहासन का स्थान और मेरे पांव रखने की जगह है, जहां मैं इस्राएल के बीच सदा वास किए रहूंगा। और न तो इस्राएल का घराना, और न उसके राजा अपने व्यभिचार से, वा अपने ऊंचे स्थानों में अपने राजाओं की लोथों के द्वारा मेरा पवित्र नाम फिर अशुद्ध ठहराएंगे। ८ वे अपनी डेवढ़ी मेरी डेवढ़ी के पास, और अपने द्वार के खम्भे मेरे द्वार के खम्भों के निकट बनाते थे, और मेरे और उनके बीच केवल भीत ही थी, और उन्हों ने अपने घिनौने कामों से मेरा पवित्र नाम अशुद्ध ठहराया था; इसलिये मैं ने कोप करके उन्हें नाश किया। ९ अब वे अपना व्यभिचार और अपने राजाओं की लोथें मेरे सम्मुख से दूर कर दें, तब मैं उनके बीच सदा वास किए रहूंगा ।।

१० हे मनुष्य के सन्तान, तू इस्राएल के घराने को इस भवन का नमूना दिखा कि वे अपने अधर्म के कामों से लज्जित होकर उस नमूने को मापें। ११ और यदि वे अपने सारे कामों से लज्जित हों, तो उन्हें इस भवन का आकार और स्वरूप, और इसके बाहर भीतर आने जाने के मार्ग, और इसके सब आकार और विधियां, और नियम बतलाना, और उनके साम्हने लिख रखना; जिस से वे इसका सब आकार और इसकी सब विधियां स्मरण करके उनके अनुसार करें। १२ भवन का नियम यह है कि पहाड़ की चोटी के चारों ओर का सम्पूर्ण भाग परमपवित्र है। देख, भवन का नियम यही है ।।

१३ और ऐसे हाथ के माप से जो साधारण हाथ से चौवा भर अधिक हो, वेदी की माप यह है, अर्थात् उसका आधार * एक हाथ का, और उसकी चौड़ाई एक हाथ की, और उसके चारों ओर की छोर पर की पटरी एक चौवे की। और वेदी की ऊंचाई यह है: १४ भूमि पर धरे हुए आधार * से लेकर निचली कुर्सी तक दो हाथ की ऊंचाई रहे, और उसकी चौड़ाई हाथ भर की हो; और छोटी कुर्सी से लेकर बड़ी कुर्सी तक चार हाथ हों और उसकी चौड़ाई हाथ भर की हो; १५ और उपरला भाग चार हाथ ऊंचा हो; और वेदी पर जलाने के स्थान के चार सींग ऊपर की ओर निकले हों। १६ और वेदी पर जलाने का स्थान चौकोर अर्थात् बारह हाथ लम्बा और बारह हाथ चौड़ा हो। १७ और निचली कुर्सी चौदह हाथ लम्बी और चौदह चौड़ी हो, और उसके चारों ओर की पटरी आधे हाथ की हो, और उसका आधार चारों ओर हाथ भर का हो। उसकी सीढ़ी उसकी पूर्व ओर हो ।।

१८ फिर उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, परमेश्वर यहोवा यों कहता है, जिस दिन होमबलि चढ़ाने और लोहू छिडकने के लिये वेदी बनाई जाए, उस दिन की विधियां ये ठहरें : १९ अर्थात् लेवीय याजक लोग, जो सादोक की सन्तान हैं, और मेरी सेवा टहल करने को मेरे समीप रहते हैं, उन्हें

* मूल में—गोद।

तू पापबलि के लिये एक बछड़ा देना, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। २० तब तू उसके लोहू में से कुछ लेकर वेदी के चारों सींगों और कुर्सी के चारों कोनों और चारों ओर की पटरी पर लगाना; इस प्रकार से उसके लिये प्रायश्चित्त करने के द्वारा उसको पवित्र करना। २१ तब पापबलि के बछड़े को लेकर, भवन के पवित्रस्थान के बाहर ठहराए हुए स्थान में जला देना। २२ और दूसरे दिन एक निर्दोष बकरा पापबलि करके चढ़ाना; और जैसे बछड़े के द्वारा वेदी पवित्र की जाए, वैसे ही वह इस बकरे के द्वारा भी पवित्र की जाएगी। २३ जब तू उसे पवित्र कर चुके, तब एक निर्दोष बछड़ा और एक निर्दोष मेढ़ा चढ़ाना। २४ तू उन्हें यहोवा के साम्हने ले आना, और याजक लोग उन पर लोन डालकर उन्हें यहोवा को होमबलि करके चढ़ाएं। २५ सात दिन तक तू प्रति दिन पापबलि के लिये एक बकरा तैयार करना, और निर्दोष बछड़ा और भेड़ों में से निर्दोष मेढ़ा भी तैयार किया जाए। २६ सात दिन तक याजक लोग वेदी के लिये प्रायश्चित्त करके उसे शुद्ध करते रहें; इसी भांति उसका संस्कार हो। २७ और जब वे दिन समाप्त हों, तब आठवें दिन के बाद से याजक लोग तुम्हारे होमबलि और मेलबलि वेदी पर चढ़ाया करें; तब मैं तुम से प्रसन्न हूंगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है॥

४४ फिर वह मुझे पवित्रस्थान के उस बाहरी फाटक के पास लौटा ले गया, जो पूर्वमुखी है; और वह बन्द था। २ तब यहोवा ने मुझ से कहा, यह फाटक बन्द रहे और खोला न जाए; कोई इस से होकर भीतर जाने न पाए; क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस से होकर भीतर आया है; इस कारण यह बन्द रहे। ३ केवल प्रधान ही, प्रधान होने के कारण, मेरे साम्हने भोजन करने को वहां बैठेगा; वह फाटक के ओसारे से होकर भीतर जाए, और इसी से होकर निकले॥

४ फिर वह उत्तरी फाटक के पास होकर मुझे भवन के साम्हने ले गया; तब मैं ने देखा कि यहोवा का भवन यहोवा के तेज से भर गया है; और मैं मुंह के बल गिर पड़ा। ५ तब यहोवा ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, ध्यान देकर अपनी आंखों से देख, और जो कुछ मैं तुझ से अपने भवन की सब विधियों और नियमों के विषय में कहूं, वह सब अपने कानों से सुन; और भवन के पैठाव और पवित्रस्थान के सब निकासों पर ध्यान दे। ६ और उन बलवाइयों अर्थात् इस्राएल के घराने से कहना, परमेश्वर यहोवा यों कहता है, हे इस्राएल के घराने, अपने सब घृणित कामों से अब हाथ उठा। ७ जब तुम मेरा भोजन अर्थात् चर्बी और लोहू चढ़ाते थे, तब तुम बिराने लोगों को जो मन और तन दोनों के खतनाहीन थे, मेरे पवित्रस्थान में आने देते थे कि वे मेरा भवन अपवित्र करें; और उन्हों ने मेरी वाचा को तोड़ दिया जिस से तुम्हारे सब घृणित काम बढ़ गए। ८ और तुम ने मेरी पवित्र वस्तुओं की रक्षा न की, परन्तु तुम ने अपने ही मन से अन्य लोगों को मेरे पवित्रस्थान में मेरी वस्तुओं की रक्षा करनेवाले ठहराया॥

६ इसलिये परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि इस्राएलियों के बीच जितने अन्य लोग हों, जो मन और तन दोनों के खतनाहीन हैं, उन में से कोई मेरे पवित्रस्थान में न आने पाए। १० परन्तु लेवीय लोग जो उस समय मुझ से दूर हो गए थे, जब इस्राएली लोग मुझे छोड़कर अपनी मूरतों के पीछे भटक गए थे, वे अपने अधर्म का भार उठाएंगे। ११ परन्तु वे मेरे पवित्रस्थान में टहलुए होकर भवन के फाटकों का पहरा देनेवाले और भवन के टहलुए रहें; वे होमबलि और मेलबलि के पशु लोगों के लिये बध करें, और उनकी सेवा टहल करने को उनके साम्हने खड़े हुआ करें। १२ क्योंकि इस्राएल के घराने की सेवा टहल वे उनकी मूरतों के साम्हने करते थे, और उनके ठोकर खाने और अधर्म में फंसने का कारण हो गए थे; इस कारण मैं ने उनके विषय में शपथ खाई है कि वे अपने अधर्म का भार उठाएं, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। १३ वे मेरे समीप न आएं, और न मेरे लिये याजक का काम करें; और न मेरी किसी पवित्र वस्तु, वा किसी परमपवित्र वस्तु को छूने पाएं; वे अपनी लज्जा का और जो घृणित काम उन्हों ने किए, उनका भी भार उठाएं। तौभी मैं उन्हें भवन में की सौंपी हुई वस्तुओं का रक्षक ठहराऊंगा; १४ उस में सेवा का जितना काम हो, और जो कुछ उस में करना हो, उसके करनेवाले वे ही हों॥

१५ फिर लेवीय याजक जो सादोक की सन्तान हैं, और जिन्हों ने उस समय मेरे पवित्रस्थान की रक्षा की जब इस्राएली मेरे पास से भटक गए थे, वे मेरी सेवा टहल करने को मेरे समीप आया करें, और मुझे चर्बी और लोहू चढ़ाने को मेरे सम्मुख खड़े हुआ करें, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। १६ वे मेरे पवित्रस्थान में आया करें, और मेरी मेज़ के पास मेरी सेवा टहल करने को आएं और मेरी वस्तुओं की रक्षा करें। १७ और जब वे भीतरी आंगन के फाटकों से होकर जाया करें, तब सन के वस्त्र पहिने हुए जाएं, और जब वे भीतरी आंगन के फाटकों में वा उसके भीतर सेवा टहल करते हों, तब कुछ ऊन के वस्त्र न पहिनें। १८ वे सिर पर सन की सुन्दर टोपियां पहिनें और कमर में सन की जांघिया बान्धें हों; किसी ऐसे कपड़े से वे कमर न बांधें जिस से पसीना होता है। १९ और जब वे बाहरी आंगन में लोगों के पास निकलें, तब जो वस्त्र पहिने हुए वे सेवा टहल करते थे, उन्हें उतारकर और पवित्र कोठरियों में रखकर दूसरे वस्त्र पहिनें, जिस से लोग उनके वस्त्रों के कारण पवित्र न ठहरें। २० और न तो वे सिर मुण्डाएं, और न बाल लम्बे होने दें; वे केवल अपने बाल कटाएं। २१ और भीतरी आंगन में जाने के समय कोई याजक दाखमधु न पीए। २२ वे विधवा वा छोड़ी हुई स्त्री को ब्याह न लें; केवल इस्राएल के घराने के वंश में से कुंवारी वा ऐसी विधवा ब्याह लें जो किसी याजक की स्त्री हुई हो। २३ वे मेरी प्रजा को पवित्र अपवित्र का भेद सिखाया करें, और शुद्ध अशुद्ध का अन्तर बताया करें। २४ और जब कोई मुक़द्दमा हो तब न्याय करने को भी वे ही बैठें*,

* मूल में—खड़े हों।

और मेरे नियमों के अनुसार न्याय करें। मेरे सब नियत पर्वों के विषय भी वे मेरी व्यवस्था और विधियां पालन करें, और मेरे विश्रामदिनों को पवित्र मानें। २५ वे किसी मनुष्य की लोथ के पास न जाएं कि अशुद्ध हो जाएं; केवल माता-पिता, बेटे-बेटी; भाई, और ऐसी बहिन की लोथ के कारण जिसका विवाह न हुआ हो वे अपने को अशुद्ध कर सकते हैं। २६ और जब वे अशुद्ध हो जाएं, तब उनके लिये सात दिन गिने जाएं और तब वे शुद्ध ठहरें, २७ और जिस दिन वे पवित्रस्थान अर्थात् भीतरी आंगन में सेवा टहल करने को फिर प्रवेश करें, उस दिन अपने लिये पापबलि चढ़ाएं, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है॥

२८ और उनका एक ही निज भाग होगा, अर्थात् उनका भाग मैं ही हूं; तुम उन्हें इस्राएल के बीच कुछ ऐसी भूमि न देना जो उनकी निज हो; उनकी निज भूमि मैं ही हूं। २९ वे अन्नबलि, पापबलि और दोषबलि खाया करें; और इस्राएल में जो वस्तु अर्पण की जाए, वह उनको मिला करे। ३० और सब प्रकार की सब से पहिली उपज और सब प्रकार की उठाई हुई वस्तु जो तुम उठाकर चढ़ाओ, याजकों को मिला करे; और नये अन्न का पहिला गूंधा हुआ आटा भी याजक को दिया करना, जिस से तुम लोगों के घर में आशीष हो। ३१ जो कुछ अपने आप मरे वा फाड़ा गया हो, चाहे पक्षी हो या पशु उसका मांस याजक न खाए॥

४५ जब तुम चिट्ठी डालकर देश को बांटो, तब देश में से एक भाग पवित्र जानकर यहोवा को अर्पण करना; उसकी लम्बाई पच्चीस हजार बांस की और चौड़ाई दस हजार बांस की हो; वह भाग अपने चारों ओर के सिवाने तक पवित्र ठहरे। २ उस में से पवित्र-स्थान के लिये पांच सौ बांस लम्बी और पांच सौ बांस चौड़ी चौकोनी भूमि हो, और उसकी चारों ओर पचास पचास हाथ चौड़ी भूमि छूटी पड़ी रहे। ३ उस पवित्र भाग में तुम पच्चीस हजार बांस लम्बी और दस हजार बांस चौड़ी भूमि को मापना, और उसी में पवित्रस्थान बनाना, जो परमपवित्र ठहरे। ४ जो याजक पवित्रस्थान की सेवा टहल करें और यहोवा की सेवा टहल करने को समीप आएं, वह उन्हीं के लिये हो; वहां उनके घरों के लिये स्थान हो और पवित्रस्थान के लिये पवित्र ठहरे। ५ फिर पच्चीस हजार बांस लम्बा, और दस हजार बांस चौड़ा एक भाग, भवन की सेवा टहल करनेवाले लेवियों की बीस कोठरियों के लिये हो॥

६ फिर नगर के लिये, अर्पण किए हुए पवित्र भाग के पास, तुम पांच हजार बांस चौड़ी और पच्चीस हजार बांस लम्बी, विशेष भूमि ठहराना; वह इस्राएल के सारे घराने के लिये हो॥

७ और प्रधान का निज भाग पवि अर्पण किए हुए भाग और नगर की विशेष भूमि की दोनों ओर अर्थात् दोनो की पश्चिम और पूर्व दिशाओं में दोनों भागों के साम्हने हों; और उसकी लम्बाई पश्चिम से लेकर पूर्व तक उन दो भागों में से किसी भी एक के तुल्य हो। ८ इस्राएल के देश में प्रधान की यही निज भूमि हो। और मेरे ठहराए हुए प्रधान मेरी प्रजा पर फिर अन्धेर न करें;

परन्तु इस्राएल के घराने को उसके गोत्रों के अनुसार देश मिले ।।

९ परमेश्वर यहोवा यों कहता है, हे इस्राएल के प्रधानो ! बस करो, उपद्रव और उत्पात को दूर करो, और न्याय और धर्म के काम किया करो; मेरी प्रजा के लोगों को निकाल देना छोड़ दो, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है ।।

१० तुम्हारे पास सच्चा तराजू, सच्चा एपा, और सच्चा बत रहे। ११ एपा और बत दोनों एक ही नाप के हों, अर्थात् दोनों में होमेर का दसवां अंश समाए; दोनों की नाप होमेर के हिसाब से हो। १२ और शेकेल बीस गेरा का हो; और तुम्हारा माना बीस, पच्चीस, या पन्द्रह शेकेल का हो ।।

१३ तुम्हारी उठाई हुई भेंट यह हो, अर्थात् गेहूं के होमेर से एपा का छठवां अंश, और जव के होमेर में से एपा का छठवां अंश देना। १४ और तेल का नियत अंश कोर में से बत का दसवां अंश हो; कोर तो दस बत अर्थात् एक होमेर के तुल्य है, क्योंकि होमेर दस बत का होता है। १५ और इस्राएल की उत्तम उत्तम चराइयों से दो दो सौ भेड़-बकरियों में से एक भेड़ वा बकरी दी जाए। ये सब वस्तुएं अन्नबलि, होमबलि और मेलबलि के लिये दी जाएं जिस से उनके लिये प्रायश्चित्त किया जाए, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। १६ इस्राएल के प्रधान के लिये देश के सब लोग यह भेंट दें। १७ पर्वों, नये चांद के दिनों, विश्रामदिनों और इस्राएल के घराने के सब नियत समयों में होमबलि, अन्नबलि, और अर्घ देना प्रधान ही का काम हो। इस्राएल के घराने के लिये प्रायश्चित्त करने को वह पापबलि, अन्नबलि, होमबलि, और मेलबलि तैयार करे ।।

१८ परमेश्वर यहोवा यों कहता है, पहिले महीने के पहले दिन को तू एक निर्दोष बछड़ा लेकर पवित्रस्थान को पवित्र करना। १९ इस पापबलि के लोहू में से याजक कुछ लेकर भवन के चौखट के खम्भों, और वेदी की कुर्सी के चारों कोनों, और भीतरी आंगन के फाटक के खम्भों पर लगाए। २० फिर महीने के सातवें दिन को सब भूल में पड़े हुओं और भोलों के लिये भी यों ही करना; इसी प्रकार से भवन के लिये प्रायश्चित्त करना ।।

२१ पहिले महीने के चौदहवें दिन को तुम्हारा फसह हुआ करे, वह सात दिन का पर्व हो और उस में अखमीरी रोटी खाई जाए। २२ उस दिन प्रधान अपने और प्रजा के सब लोगों के निमित्त एक बछड़ा पापबलि के लिये तैयार करे। २३ और पर्व के सातों दिन वह यहोवा के लिये होमबलि तैयार करे, अर्थात् हर एक दिन सात सात निर्दोष बछड़े और सात सात निर्दोष मेढ़े और प्रति दिन एक एक बकरा पापबलि के लिये तैयार करे। २४ और हर एक बछड़े और मेढ़े के साथ वह एपा भर अन्नबलि, और एपा पीछे हीन भर तेल तैयार करे। २५ सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन से लेकर सात दिन तक अर्थात् पर्व के दिनों में वह पापबलि, होमबलि, अन्नबलि, और तेल इसी विधि के अनुसार किया करे ।।

४६ परमेश्वर यहोवा यों कहता है, भीतरी आंगन का पूर्वमुखी फाटक काम काज के छओं दिन बन्द रहे, परन्तु

विश्रामदिन को खुला रहे। और नये चांद के दिन भी खुला रहे। २ प्रधान बाहर से फाटक के ओसारे के मार्ग से आकर फाटक के एक खम्भे के पास खड़ा हो जाए, और याजक उसका होमबलि और मेलबलि तैयार करें; और वह फाटक की डेवढ़ी पर दण्डवत् करे; तब वह बाहर जाए, और फाटक सांझ से पहिले बन्द न किया जाए। ३ और लोग विश्राम और नये चांद के दिनों में उस फाटक के द्वार में यहोवा के साम्हने दण्डवत् करें। ४ और विश्रामदिन में जो होमबलि प्रधान यहोवा के लिये चढ़ाए, वह भेड़ के छः निर्दोष बच्चे और एक निर्दोष मेढ़े का हो। ५ और अन्नबलि यह हो, अर्थात् मेढ़े के साथ एपा भर अन्न और भेड़ के बच्चों के साथ यथाशक्ति अन्न और एपा पीछे हीन भर तेल। ६ और नये चांद के दिन वह एक निर्दोष बछड़ा और भेड़ के छः बच्चे और एक मेढ़ा चढ़ाए; ये सब निर्दोष हों। ७ और बछड़े और मेढ़े दोनों के साथ वह एक एक एपा अन्नबलि तैयार करे, और भेड़ के बच्चों के साथ यथाशक्ति अन्न, और एपा पीछे हीन भर तेल। ८ और जब प्रधान भीतर जाए तब वह फाटक के ओसारे से होकर जाए, और उसी मार्ग से निकल जाए।।

९ जब साधारण लोग नियत समयों में यहोवा के साम्हने दण्डवत् करने आएं, तब जो उत्तरी फाटक से होकर दण्डवत् करने को भीतर आए, वह दक्खिनी फाटक से होकर निकले, और जो दक्खिनी फाटक से होकर भीतर आए, वह उत्तरी फाटक से होकर निकले, अर्थात् जो जिस फाटक से भीतर आया हो, वह उसी फाटक से न लौटे, अपने साम्हने ही निकल जाए। १० और जब वे भीतर आएं तब प्रधान उनके बीच होकर आएं, और जब वे निकलें, तब वे एक साथ निकलें।।

११ और पर्वों और अन्य नियत समयों का अन्नबलि बछड़े पीछे एपा भर, और मेढ़े पीछे एपा भर का हो; और भेड़ के बच्चों के साथ यथाशक्ति अन्न और एपा पीछे हीन भर तेल। १२ फिर जब प्रधान होमबलि वा मेलबलि को स्वेच्छाबलि करके यहोवा के लिये तैयार करे, तब पूर्वमुखी फाटक उनके लिये खोला जाए, और वह अपना होमबलि वा मेलबलि वैसे ही तैयार करे जैसे वह विश्रामदिन को करता है; तब वह निकले, और उसके निकलने के पीछे फाटक बन्द किया जाए।।

१३ और प्रति दिन तू वर्ष भर का एक निर्दोष भेड़ का बच्चा यहोवा के होमबलि के लिये तैयार करना, यह प्रति भोर को तैयार किया जाए। १४ और प्रति भोर को उसके साथ एक अन्नबलि तैयार करना, अर्थात् एपा का छठवां अंश और मैदा में मिलाने के लिये हीन भर तेल की तिहाई यहोवा के लिये सदा का अन्नबलि नित्य विधि के अनुसार चढ़ाया जाए। १५ भेड़ का बच्चा, अन्नबलि और तेल, प्रति भोर को नित्य होमबलि करके चढ़ाया जाए।।

१६ परमेश्वर यहोवा यों कहता है, यदि प्रधान अपने किसी पुत्र को कुछ दे, तो वह उसका भाग होकर उसके पोतों को भी मिले; भाग के नियम के अनुसार वह उनका भी निज धन ठहरे। १७ परन्तु यदि वह अपने भाग में से अपने किसी कर्मचारी को कुछ दे, तो छुट्टी के वर्ष तक तो वह उसका बना रहे, परन्तु उसके बाद

प्रधान को लौटा दिया जाए; और उसका निज भाग ही उसके पुत्रों को मिले। १८ और प्रजा का ऐसा कोई भाग प्रधान न ले, जो अन्धेर से उनकी निज भूमि से छीना हो; अपने पुत्रों को वह अपनी ही निज भूमि में से भाग दे; ऐसा न हो कि मेरी प्रजा के लोग अपनी अपनी निज भूमि से तितर-बितर हो जाएं॥

१९ फिर वह मुझे फाटक की एक अलंग में द्वार से होकर याजकों की उत्तरमुखी पवित्र कोठरियों में ले गया; वहां पश्चिम ओर के कोने में एक स्थान था। २० तब उस ने मुझ से कहा, यह वह स्थान है जिस में याजक लोग दोषबलि और पापबलि के मांस को पकाएं और अन्नबलि को पकाएं, ऐसा न हो कि उन्हें बाहरी आंगन में ले जाने से साधारण लोग पवित्र ठहरें॥

२१ तब उस ने मुझे बाहरी आंगन में ले जाकर उस आंगन के चारों कोनों में फिराया, और आंगन के हर एक कोने में एक एक ओट बना था, २२ अर्थात् आंगन के चारों कोनों में चालीस हाथ लम्बे और तीस हाथ चौड़े ओट थे; चारों कोनों के ओटों की एक ही माप थी। २३ और भीतर चारों ओर भीत * थी, और भीतों † के नीचे पकाने के चूल्हे बने हुए थे। २४ तब उस ने मुझ से कहा, पकाने के घर, जहां भवन के टहलुए लोगों के बलिदानों को पकाएं, वे ये ही हैं॥

४७ फिर वह मुझे भवन के द्वार पर लौटा ले गया; और भवन की डेवढ़ी के नीचे से एक सोता निकलकर पूर्व ओर बह रहा था। भवन का द्वार तो पूर्वमुखी था, और सोता भवन के पूर्व और वेदी के दक्खिन, नीचे से निकलता था। २ तब वह मुझे उत्तर के फाटक से होकर बाहर ले गया, और बाहर बाहर से घुमाकर बाहरी अर्थात् पूर्वमुखी फाटक के पास पहुंचा दिया; और दक्खिनी अलंग से जल पसीजकर बह रहा था। ३ जब वह पुरुष हाथ में मापने की डोरी लिए हुए पूर्व ओर निकला, तब उस ने भवन से लेकर, हजार हाथ तक उस सोते को मापा, और मुझे जल में से चलाया, और जल टखनों तक था। ४ उस ने फिर हजार हाथ मापकर मुझे जल में से चलाया, और जल घुटनों तक था, फिर और हजार हाथ मापकर मुझे जल में से चलाया, और जल कमर तक था। ५ तब फिर उस ने एक हजार हाथ मापे, और ऐसी नदी हो गई जिसके पार मैं न जा सका, क्योंकि जल बढ़कर तैरने के योग्य था; अर्थात् ऐसी नदी थी जिसके पार कोई न जा सकता था। ६ तब उस ने मुझ से पूछा, हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू ने यह देखा है?

फिर उस ने मुझे नदी के तीर लौटाकर पहुंचा दिया। ७ लौटकर मैं ने क्या देखा, कि नदी के दोनों तीरों पर बहुत से वृक्ष हैं। ८ तब उस ने मुझ से कहा, यह सोता पूर्वी देश की ओर बह रहा है, और अराबा में उतरकर ताल की ओर बहेगा; और यह भवन से निकला हुआ सीधा ताल में मिल जाएगा; और उसका जल मीठा हो जाएगा। ९ और जहां जहां यह नदी * बहे, वहां वहां सब प्रकार के बहुत अण्डे देनेवाले जीवजन्तु जीएंगे

* मूल में—पांति। † मूल में—पांतियों।

* मूल में—दो नदियां।

और मछलियां भी बहुत हो जाएंगी; क्योंकि इस सोते का जल वहां पहुंचा है, और ताल का जल मीठा हो जाएगा; और जहां कहीं यह नदी पहुंचेगी वहां सब जन्तु जीएंगे। १० ताल के तीर पर मछवे खड़े रहेंगे, और एनगदी से लेकर ऐनेग्लैम तक वे जाल फैलाए जाएंगे, और उन्हें महासागर की सी भांति भांति की अनगिनित मछलियां मिलेंगी। ११ परन्तु ताल के पास जो दलदल और गड़हे हैं, उनका जल मीठा न होगा; वे खारे ही रहेंगे। १२ और नदी के दोनों तीरों पर भांति भांति के खाने योग्य फलदाई वृक्ष उपजेंगे, जिनके पत्ते न मुर्झाएंगे और उनका फलना भी कभी बन्द न होगा, क्योंकि नदी का जल पवित्र स्थान से निकला है। उन में महीने महीने, नये नये फल लगेंगे। उनके फल तो खाने के, और पत्ते औषधि के काम आएंगे॥

१३ परमेश्वर यहोवा यों कहता है, जिस सिवाने के भीतर तुम को यह देश अपने बारहों गोत्रों के अनुसार बांटना पड़ेगा, वह यह है: यूसुफ को दो भाग मिलें। १४ और उसे तुम एक दूसरे के समान निज भाग में पाओगे, क्योंकि मैं ने शपथ खाई * कि उसे तुम्हारे पितरों को दूंगा, सो यह देश तुम्हारा निज भाग ठहरेगा॥

१५ देश का सिवाना यह हो, अर्थात् उत्तर ओर का सिवाना महासागर से लेकर हेतलोन के पास से सदाद की घाटी तक पहुंचे, १६ और उस सिवाने के पास हमात बेरोता, और सिब्रैम जो दमिश्क और हमात के सिवानों के बीच में है, और हसर्हत्तीकोन तक, जो हौरान के सिवाने पर है। १७ और यह सिवाना समुद्र से लेकर दमिश्क के सिवाने के पास के हसरेनोन तक पहुंचे, और उसकी उत्तर ओर हमात हो। उत्तर का सिवाना यही हो। १८ और पूर्वी सिवाना जिसकी एक ओर हौरान दमिश्क; और यरदन की ओर गिलाद और इस्राएल का देश हो; उत्तरी सिवाने से लेकर पूर्वी ताल तक उसे मापना। पूर्वी सिवाना तो यही हो। १९ और दक्खिनी सिवाना तामार से लेकर कादेश के मरीबोत नाम सोते तक अर्थात् मिस्र के नाले तक, और महासागर तक पहुंचे। दक्खिनी सिवाना यही हो। २० और पश्चिमी सिवाना दक्खिनी सिवाने से लेकर हमात की घाटी के साम्हने तक का महासागर हो। पच्छिमी सिवाना यही हो॥

२१ इस प्रकार देश को इस्राएल के गोत्रों के अनुसार आपस में बांट लेना। २२ और इसको आपस में और उन परदेशियों के साथ बांट लेना, जो तुम्हारे बीच रहते हुए बालकों को जन्माएं। वे तुम्हारी दृष्टि में देशी इस्राएलियों की नाईं ठहरें, और तुम्हारे गोत्रों के बीच अपना अपना भाग पाएं। २३ जो परदेशी जिस गोत्र के देश में रहता हो, उसको वहीं भाग देना, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है॥

४८ गोत्रों के भाग * ये हों: उत्तर सिवाने से लगा हुआ हेतलोन के मार्ग के पास से हमात की घाटी तक, और दमिश्क के सिवाने के पास के हसरेनान से उत्तर ओर हमात के पास तक एक भाग दान का हो; और उसके पूर्वी और

* मूल में—मैं ने हाथ उठाया था।

* मूल में—नाम।

पश्चिमी सिवाने भी हों। २ दान के सिवाने से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक आशेर का एक भाग हो। ३ आशेर के सिवाने से लगा हुआ, पूर्व से पश्चिम तक नप्ताली का एक भाग हो। ४ नप्ताली के सिवाने से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक मनश्शे का एक भाग। ५ मनश्शे के सिवाने से लगा हुआ पूर्व से पच्छिम तक एप्रैम का एक भाग हो। ६ एप्रैम के सिवाने से लगा हुआ पूर्व से पच्छिम तक रूबेन का एक भाग हो। ७ और रूबेन के सिवाने से लगा हुआ, पूर्व से पच्छिम तक यहूदा का एक भाग हो॥

८ यहूदा के सिवाने से लगा हुआ पूर्व से पच्छिम तक वह अर्पण किया हुआ भाग हो, जिसे तुम्हें अर्पण करना होगा, वह पच्चीस हजार बांस चौड़ा और पूर्व से पच्छिम तक किसी एक गोत्र के भाग के तुल्य लम्बा हो, और उसके बीच में पवित्रस्थान हो। ९ जो भाग तुम्हें यहोवा को अर्पण करना होगा, उसकी लम्बाई पच्चीस हजार बांस और चौड़ाई दस हजार बांस की हो। १० यह अर्पण किया हुआ पवित्र भाग याजकों को मिले; वह उत्तर ओर पच्चीस हजार बांस लम्बा, पच्छिम ओर दस हजार बांस चौड़ा, पूर्व ओर दस हजार बांस चौड़ा और दक्खिन ओर पच्चीस हजार बांस लम्बा हो; और उसके बीचोबीच यहोवा का पवित्रस्थान हो। ११ यह विशेष पवित्र भाग सादोक की सन्तान के उन याजकों का हो जो मेरी आज्ञाओं को पालते रहे, और इस्राएलियों के भटक जाने के समय लेवियों की नाईं न भटके थे। १२ सो देश के अर्पण किए हुए भाग में से यह उनके लिये अर्पण किया हुआ भाग, अर्थात् परमपवित्र देश ठहरे; और लेवियों के सिवाने से लगा रहे। १३ और याजकों के सिवाने से लगा हुआ लेवियों का भाग हो, वह पच्चीस हजार बांस लम्बा और दस हजार बांस चौड़ा हो। सारी लम्बाई पच्चीस हजार बांस की और चौड़ाई दस हजार बांस की हो। १४ वे उस में से न तो कुछ बेचें, न दूसरी भूमि से बदलें; और न भूमि की पहिली उपज और किसी को दी जाए। क्योंकि वह यहोवा के लिये पवित्र है॥

१५ और चौड़ाई के पच्चीस हजार बांस के साम्हने जो पांच हजार बचा रहेगा, वह नगर और बस्ती और चराई के लिये साधारण भाग हो; और नगर उसके बीच में हो। १६ और नगर की यह माप हो, अर्थात् उत्तर, दक्खिन, पूर्व और पच्छिम ओर साढ़े चार चार हजार हाथ। १७ और नगर के पास उत्तर, दक्खिन, पूर्व, पच्छिम, चराइयां हों जो अढ़ाई अढ़ाई सौ बांस चौड़ी हों। १८ और अर्पण किए हुए पवित्र भाग के पास की लम्बाई में से जो कुछ बचे, अर्थात् पूर्व और पच्छिम दोनों ओर दस दस बांस जो अर्पण किए हुए भाग के पास हो, उसकी उपज नगर में परिश्रम करनेवालों के खाने के लिये हो। १९ और इस्राएल के सारे गोत्रों में से जो नगर में परिश्रम करें, वे उसकी खेती किया करें। २० सारा अर्पण किया हुआ भाग पच्चीस हजार बांस लम्बा और पच्चीस हजार बांस चौड़ा हो; तुम्हें चौकोना पवित्र भाग अर्पण करना होगा जिस में नगर की विशेष भूमि हो॥

२१ और जो भाग रह जाए, वह प्रधान को मिले। पवित्र अर्पण किए हुए

भाग की, और नगर की विशेष भूमि की दोनों ओर अर्थात् उनकी पूर्व और पच्छिम अलंगों के पच्चीस पच्चीस हजार बांस की चौड़ाई के पास, जो और गोत्रों के भागों के पास रहे, वह प्रधान को मिले। और अर्पण किया हुआ पवित्र भाग और भवन का पवित्रस्थान उनके बीच में हो। २२ जो प्रधान का भाग होगा, वह लेवियों के बीच और नगरों की विशेष भूमि हो। प्रधान का भाग यहूदा और बिन्यामीन के सिवाने के बीच में हो ॥

२३ अन्य गोत्रों के भाग इस प्रकार हों: पूर्व से पच्छिम तक बिन्यामीन का एक भाग हो। २४ बिन्यामीन के सिवाने से लगा हुआ पूर्व से पच्छिम तक शिमोन का एक भाग। २५ शिमोन के सिवाने से लगा हुआ पूर्व से पच्छिम तक इस्साकार का एक भाग। २६ इस्साकार के सिवाने से लगा हुआ पूर्व से पच्छिम तक जबूलून का एक भाग। २७ जबूलून के सिवाने से लगा हुआ पूर्व से पच्छिम तक गाद का एक भाग। २८ और गाद के सिवाने के पास दक्खिन ओर का सिवाना तामार से लेकर कादेश के मरीबोत नाम सोते तक, और मिस्र के नाले और महासागर तक पहुंचे। २९ जो देश तुम्हें इस्राएल के गोत्रों को बांटना होगा वह यही है, और उनके भाग भी ये ही हैं, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है ॥

३० नगर के निकास ये हों, अर्थात् उत्तर की अलंग जिसकी लम्बाई साढ़े चार हजार बांस की हो। ३१ उस में तीन फाटक हों, अर्थात् एक रूबेन का फाटक, एक यहूदा का फाटक, और एक लेवी का फाटक हो; क्योंकि नगर के फाटकों के नाम इस्राएल के गोत्रों के नामों पर रखने होंगे। ३२ और पूरब की अलंग साढ़े चार हजार बांस लम्बी हो, और उस में तीन फाटक हों; अर्थात् एक यूसुफ का फाटक, एक बिन्यामीन का फाटक, और एक दान का फाटक हो। ३३ और दक्खिन की अलंग साढ़े चार हजार बांस लम्बी हो, और उस में तीन फाटक हों; अर्थात् एक शिमोन का फाटक, एक इस्साकार का फाटक, और एक जबूलून का फाटक हो। ३४ और पश्चिम की अलंग साढ़े चार हजार बांस लम्बी हो, और उस में तीन फाटक हों; अर्थात् एक गाद का फाटक, एक आशेर का फाटक और नप्ताली का फाटक हो। ३५ नगर की चारों अलंगों का घेरा अठारह हजार बांस का हो, और उस दिन से आगे को नगर का नाम "यहोवा शाम्मा*" रहेगा ॥

---

* अर्थात् यहोवा वहां है।

दानिय्येल नामक पुस्तक

१ यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के तीसरे वर्ष में बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम पर चढ़ाई करके उसको घेर लिया। २ तब परमेश्वर ने यहूदा के राजा यहोयाकीम को परमेश्वर के भवन के कई पात्रों सहित उसके हाथ में कर दिया; और उस ने उन पात्रों को शिनार देश में अपने देवता के मन्दिर में ले जाकर, अपने देवता के भण्डार में रख दिया। ३ तब उस राजा ने अपने खोजों के प्रधान अशपनज को आज्ञा दी कि इस्राएली राजपुत्रों और प्रतिष्ठित पुरुषों में से ऐसे कई जवानों को ला, ४ जो निर्दोष, सुन्दर और सब प्रकार की बुद्धि में प्रवीण, और ज्ञान में निपुण और विद्वान् और राजमन्दिर में हाज़िर रहने के योग्य हों; और उन्हें कसदियों के शास्त्र और भाषा की शिक्षा दे। ५ और राजा ने आज्ञा दी कि उसके भोजन और पीने के दाखमधु में से उन्हें प्रतिदिन खाने-पीने को दिया जाए। इस प्रकार तीन वर्ष तक उनका पालन पोषण होता रहे; तब उसके बाद वे राजा के साम्हने हाज़िर किए जाएं। ६ उन में यहूदा की सन्तान से चुने हुए, दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल, और अजर्याह नाम यहूदी थे। ७ और खोजों के प्रधान ने उनके दूसरे नाम रखे; अर्थात् दानिय्येल का नाम उस ने बेलतशस्सर, हनन्याह का शद्रक, मीशाएल का मेशक, और अजर्याह का नाम अबेदनगो रखा॥

८ परन्तु दानिय्येल ने अपने मन में ठान लिया कि वह राजा का भोजन खाकर, और उसके पीने का दाखमधु पीकर अपवित्र न होए; इसलिये उस ने खोजों के प्रधान से बिनती की कि उसे अपवित्र न होना पड़े। ९ परमेश्वर ने खोजों के प्रधान के मन में दानिय्येल के प्रति कृपा और दया भर दी। १० और खोजों के प्रधान ने दानिय्येल से कहा, मैं अपने स्वामी राजा से डरता हूं, क्योंकि तुम्हारा खाना-पीना उसी ने ठहराया है, कहीं ऐसा न हो कि वह तेरा मुंह तेरे संगी के जवानों से उतरा हुआ और उदास देखे और तुम मेरा सिर राजा के साम्हने जोखिम में डालो। ११ तब दानिय्येल ने उस मुखिये से, जिसको खोजों के प्रधान ने दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल, और अजर्याह के ऊपर देखभाल करने के लिये नियुक्त किया था, कहा, १२ मैं तेरी बिनती करता हूं, अपने दासों को दस दिन तक जांच, हमारे खाने के लिये सागपात और पीने के लिये पानी ही दिया जाए। १३ फिर दस दिन के बाद हमारे मुंह और जो जवान राजा का भोजन खाते हैं उनके मुंह को देख; और जैसा तुझे देख पड़े, उसी के अनुसार अपने दासों से व्यवहार करना। १४ उनकी यह बिनती उस ने मान ली, और दस दिन तक उनको जांचता रहा। १५ दस दिन के बाद

उनके मुंह राजा के भोजन के खानेवाले सब जवानों से अधिक अच्छे और चिकने देख पड़े। १६ तब वह मुखिया उनका भोजन और उनके पीने के लिये ठहराया हुआ दाखमधु दोनों छुड़ाकर, उनको सागपात देने लगा ।।

१७ और परमेश्वर ने उन चारों जवानों को सब शास्त्रों, और सब प्रकार की विद्याओं में बुद्धिमानी और प्रवीणता दी; और दानिय्येल सब प्रकार के दर्शन और स्वप्न के अर्थ का ज्ञानी हो गया। १८ तब जितने दिन के बाद नबूकदनेस्सर राजा ने जवानों को भीतर ले आने की आज्ञा दी थी, उतने दिन के बीतने पर खोजों का प्रधान उन्हें उसके सामने ले गया। १९ और राजा उन से बातचीत करने लगा; और दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल, और अजर्याह के तुल्य उन सब में से कोई न ठहरा; इसलिये वे राजा के सम्मुख हाज़िर रहने लगे। २० और बुद्धि और हर प्रकार की समझ के विषय में जो कुछ राजा उन से पूछता था उस में वे राज्य भर के सब ज्योतिषियों और तन्त्रियों से दसगुणे निपुण ठहरते थे। २१ और दानिय्येल कुस्रू राजा के पहिले वर्ष तक बना रहा ।।

२ अपने राज्य के दूसरे वर्ष में नबूकदनेस्सर ने ऐसा स्वप्न देखा जिस से उसका मन बहुत ही व्याकुल हो गया और उसको नींद न आई। २ तब राजा ने आज्ञा दी, कि ज्योतिषी, तन्त्री, टोनहे और कसदी बुलाए जाएं कि वे राजा को उसका स्वप्न बताएं; सो वे आए और राजा के साम्हने हाज़िर हुए। ३ तब राजा ने उन से कहा, मैं ने एक स्वप्न देखा है, और मेरा मन व्याकुल है कि स्वप्न को कैसे समझूं। ४ कसदियों ने, राजा से अरामी भाषा में कहा, हे राजा, तू चिरंजीव रहे! अपने दासों को स्वप्न बता, और हम उसका फल बताएंगे। ५ राजा ने कसदियों को उत्तर दिया, मैं यह आज्ञा दे चुका हूं कि यदि तुम फल समेत स्वप्न को न बताओगे तो तुम टुकड़े टुकड़े किए जाओगे, और तुम्हारे घर फुंकवा दिए जाएंगे। ६ और यदि तुम फल समेत स्वप्न को बता दो तो मुझ से भांति भांति के दान और भारी प्रतिष्ठा पाओगे। ७ इसलिये तुम मुझे फल समेत स्वप्न को बताओ। उन्हों ने दूसरी बार कहा, हे राजा स्वप्न तेरे दासों को बताया जाए, और हम उसका फल समझा देंगे। ८ राजा ने उत्तर दिया, मैं निश्चय जानता हूं कि तुम यह देखकर, कि राजा के मुंह से आज्ञा निकल चुकी है, समय बढ़ाना चाहते हो। ९ इसलिये यदि तुम मुझे स्वप्न न बताओ तो तुम्हारे लिये एक ही आज्ञा है। क्योंकि तुम ने गोष्ठी की होगी कि जब तक समय न बदले, तब तक हम राजा के साम्हने झूठी और गपशप की बातें कहा करेंगे। इसलिये तुम मुझे स्वप्न को बताओ, तब मैं जानूंगा कि तुम उसका फल भी समझा सकते हो। १० कसदियों ने राजा से कहा, पृथ्वी भर में ऐसा कोई मनुष्य नहीं जो राजा के मन की बात बता सके; और न कोई ऐसा राजा, वा प्रधान, वा हाकिम कभी हुआ है जिस ने किसी ज्योतिषी वा तन्त्री, वा कसदी से ऐसी बात पूछी हो। ११ जो बात राजा पूछता है, वह अनोखी है, और देवताओं को छोड़कर जिनका निवास मनुष्यों के संग नहीं है,

और कोई दूसरा नहीं, जो राजा को यह बता सके ॥

१२ इस पर राजा ने झुंझलाकर, और बहुत ही क्रोधित होकर, बाबुल के सब पण्डितों के नाश करने की आज्ञा दे दी। १३ सो यह आज्ञा निकली, और पण्डित लोगों का घात होने पर था; और लोग दानिय्येल और उसके संगियों को ढूंढ़ रहे थे कि वे भी घात किए जाएं। १४ तब दानिय्येल ने, जल्लादों के प्रधान अर्योक से, जो बाबुल के पण्डितों को घात करने के लिये निकला था, सोच विचारकर और बुद्धिमानी के साथ कहा; १५ और राजा के हाकिम अर्योक से पूछने लगा, यह आज्ञा राजा की ओर से ऐसी उतावली के साथ क्यों निकली? तब अर्योक ने दानिय्येल को इसका भेद बता दिया। १६ और दानिय्येल ने भीतर जाकर राजा से बिनती की, कि उसके लिये कोई समय ठहराया जाए, तो वह महाराज को स्वप्न का फल बता देगा ॥

१७ तब दानिय्येल ने अपने घर जाकर, अपने संगी हनन्याह, मीशाएल, और अजर्याह को यह हाल बताकर कहा, १८ इस भेद के विषय में स्वर्ग के परमेश्वर की दया के लिये यह कहकर प्रार्थना करो, कि बाबुल के और सब पण्डितों के संग, दानिय्येल और उसके संगी भी नाश न किए जाएं। १९ तब वह भेद दानिय्येल को रात के समय दर्शन के द्वारा प्रगट किया गया। सो दानिय्येल ने स्वर्ग के परमेश्वर का यह कहकर धन्यवाद किया, २० परमेश्वर का नाम युगानयुग धन्य है; क्योंकि बुद्धि और पराक्रम उसी के हैं। २१ समयों और ऋतुओं को वही पलटता है; राजाओं का अस्त और उदय भी वही करता है; बुद्धिमानों को बुद्धि और समझवालों को समझ भी वही देता है; २२ वही गूढ़ और गुप्त बातों को प्रगट करता है; वह जानता है कि अन्धियारे में क्या है, और उसके संग सदा प्रकाश बना रहता है। २३ हे मेरे पूर्वजों के परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद और स्तुति करता हूं, क्योंकि तू ने मुझे बुद्धि और शक्ति दी है, और जिस भेद का खुलना हम लोगों ने तुझ से मांगा था, उसे तू ने मुझ पर प्रगट किया है, तू ने हम को राजा की बात बताई है ॥

२४ तब दानिय्येल ने अर्योक के पास, जिसे राजा ने बाबुल के पण्डितों के नाश करने के लिये ठहराया था, भीतर जाकर कहा, बाबुल के पण्डितों का नाश न कर, मुझे राजा के सम्मुख भीतर ले चल, मैं फल बताऊंगा ॥

२५ तब अर्योक ने दानिय्येल को राजा के सम्मुख शीघ्र भीतर ले जाकर उस से कहा, यहूदी बंधुओं में से एक पुरुष मुझ को मिला है, जो राजा को स्वप्न का फल बताएगा। २६ राजा ने दानिय्येल से, जिसका नाम बेलतशस्सर भी था, पूछा, क्या तुझ में इतनी शक्ति है कि जो स्वप्न मैं ने देखा है, उसे फल समेत मुझे बताए? २७ दानिय्येल ने राजा को उत्तर दिया, जो भेद राजा पूछता है, वह न तो पण्डित न तन्त्री, न ज्योतिषी, न दूसरे भावी बतानेवाले राजा को बता सकते हैं, २८ परन्तु भेदों का प्रगटकर्त्ता परमेश्वर स्वर्ग में है; और उसी ने नबूकदनेस्सर राजा को जताया है कि अन्त के दिनों में क्या क्या होनेवाला है। तेरा स्वप्न और

जो कुछ तू ने पलंग पर पड़े हुए देखा, वह यह है: २६ हे राजा, जब तुझ को पलंग पर यह विचार हुआ कि भविष्य में क्या क्या होनेवाला है, तब भेदों को खोलनेवाले ने तुझ को बताया, कि क्या क्या होनेवाला है। ३० मुझ पर यह भेद इस कारण नहीं खोला गया कि मैं और सब प्राणियों से अधिक बुद्धिमान् हूं, परन्तु केवल इसी कारण खोला गया है कि स्वप्न का फल राजा को बताया जाए, और तू अपने मन के विचार समझ सके ॥

३१ हे राजा, जब तू देख रहा था, तब एक बड़ी मूर्त्ति देख पड़ी, और वह मूर्त्ति जो तेरे साम्हने खड़ी थी, सो लम्बी चौड़ी थी; उसकी चमक अनुपम थी, और उसका रूप भयंकर था। ३२ उस मूर्त्ति का सिर तो चोखे सोने का था, उसकी छाती और भुजाएं चान्दी की, उसका पेट और जांघें पीतल की, ३३ उसकी टांगें लोहे की और उसके पांव कुछ तो लोहे के और कुछ मिट्टी के थे। ३४ फिर देखते देखते, तू ने क्या देखा, कि एक पत्थर ने, बिना किसी के खोदे, आप ही आप उखड़कर उस मूर्त्ति के पांवों पर लगकर जो लोहे और मिट्टी के थे, उनको चूर चूर कर डाला। ३५ तब लोहा, मिट्टी, पीतल, चान्दी और सोना भी सब चूर चूर हो गए, और धूपकाल में खलिहानों के भूसे की नाईं हवा से ऐसे उड़ गए कि उनका कहीं पता न रहा; और वह पत्थर जो मूर्त्ति पर लगा था, वह बड़ा पहाड़ बनकर सारी पृथ्वी में फैल गया ॥

३६ स्वप्न तो यों ही हुआ; और अब हम उसका फल राजा को समझा देते हैं। ३७ हे राजा, तू तो महाराजाधिराज है, क्योंकि स्वर्ग के परमेश्वर ने तुझ को राज्य, सामर्थ, शक्ति और महिमा दी है, ३८ और जहां कहीं मनुष्य पाए जाते हैं, वहां उस ने उन सभों को, और मैदान के जीवजन्तु, और आकाश के पक्षी भी तेरे वश में कर दिए हैं; और तुझ को उन सब का अधिकारी ठहराया है। यह सोने का सिर तू ही है। ३६ तेरे बाद एक राज्य और उदय होगा जो तुझ से छोटा होगा; फिर एक और तीसरा पीतल का सा राज्य होगा जिस में सारी पृथ्वी आ जाएगी। ४० और चौथा राज्य लोहे के तुल्य मज़बूत होगा; लोहे से तो सब वस्तुएं चूर चूर हो जाती और पिस जाती हैं; इसलिये जिस भांति लोहे से वे सब कुचली जाती हैं, उसी भांति, उस चौथे राज्य से सब कुछ चूर चूर होकर पिस जाएगा। ४१ और तू ने जो मूर्त्ति के पांवों और उनकी उंगलियों को देखा, जो कुछ कुम्हार की मिट्टी की और कुछ लोहे की थीं, इस से वह चौथा राज्य बटा हुआ होगा; तौभी उस में लोहे का सा कड़ापन रहेगा, जैसे कि तू ने कुम्हार की मिट्टी के संग लोहा भी मिला हुआ देखा था। ४२ और जैसे पांवों की उंगलियां कुछ तो लोहे की और कुछ मिट्टी की थीं, इसका अर्थ यह है, कि वह राज्य कुछ तो दृढ़ और कुछ निर्बल * होगा। ४३ और तू ने जो लोहे को कुम्हार की मिट्टी के संग मिला हुआ देखा, इसका अर्थ यह है, कि उस राज्य के लोग एक दूसरे मनुष्यों से † मिले जुले तो रहेंगे, परन्तु जैसे लोहा मिट्टी के साथ

* मूल में—भुरभुरा।

† मूल में—बिनाशी मनुष्यों के वंश से।

मेल नहीं खाता, वैसे ही वे भी एक न बने रहेंगे। ४४ और उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर, एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्तकाल तक न टूटेगा, और न वह किसी दूसरी जाति के हाथ में किया जाएगा। वरन वह उन सब राज्यों को चूर चूर करेगा, और उनका अन्त कर डालेगा; और वह सदा स्थिर रहेगा; ४५ जैसा तू ने देखा कि एक पत्थर किसी के हाथ के बिन खोदे पहाड़ में से उखड़ा, और उस ने लोहे, पीतल, मिट्टी, चान्दी, और सोने को चूर चूर किया, इसी रीति महान् परमेश्वर ने राजा को जताया है कि इसके बाद क्या क्या होनेवाला है। न स्वप्न में और न उसके फल में कुछ सन्देह है॥

४६ इतना सुनकर नबूकदनेस्सर राजा ने मुंह के बल गिरकर दानिय्येल को दण्डवत् की, और आज्ञा दी कि उसको भेंट चढ़ाओ, और उसके साम्हने सुगन्ध वस्तु जलाओ। ४७ फिर राजा ने दानिय्येल से कहा, सच तो यह है कि तुम लोगों का परमेश्वर, सब ईश्वरों का ईश्वर, राजाओं का राजा और भेदों का खोलनेवाला है, इसीलिये तू यह भेद प्रगट कर पाया। ४८ तब राजा ने दानिय्येल का पद बड़ा किया, और उसको बहुत से बड़े बड़े दान दिए; और यह आज्ञा दी कि वह बाबुल के सारे प्रान्त पर हाकिम और बाबुल के सब पण्डितों पर मुख्य प्रधान बने। ४९ तब दानिय्येल के बिनती करने से राजा ने शद्रक, मेशक, और अबेदनगो को बाबुल के प्रान्त के कार्य के ऊपर नियुक्त कर दिया; परन्तु दानिय्येल आप ही राजा के दरबार में रहा करता था॥

३ नबूकदनेस्सर राजा ने सोने की एक मूरत बनवाई, जिसकी ऊंचाई साठ हाथ, और चौड़ाई छः हाथ की थी। और उस ने उसको बाबुल के प्रान्त के दूरा नाम मैदान में खड़ा कराया। २ तब नबूकदनेस्सर राजा ने अधिपतियों, हाकिमों, गवर्नरों, जजों, खज़ांनचियों, न्यायियों, शास्त्रियों आदि प्रान्त-प्रान्त के सब अधिकारियों को बुलवा भेजा कि वे उस मूरत की प्रतिष्ठा में आएं जो उस ने खड़ी कराई थी। ३ तब अधिपति, हाकिम, गवर्नर, जज, खज़ांनची, न्यायी, शास्त्री आदि प्रान्त-प्रान्त के सब अधिकारी नबूकदनेस्सर राजा की खड़ी कराई हुई मूरत की प्रतिष्ठा के लिये इकट्ठे हुए, और उस मूरत के साम्हने खड़े हुए। ४ तब ढिंढोरिये ने ऊंचे शब्द से पुकारकर कहा, हे देश-देश और जाति-जाति के लोगो, और भिन्न-भिन्न भाषा के बोलनेवालो, तुम को यह आज्ञा सुनाई जाती है कि, ५ जिस समय तुम नरसिंगे, बांसुली, वीणा, सारंगी, सितार, शहनाई आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द सुनो, तुम उसी समय गिरकर नबूकदनेस्सर राजा की खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत् करो। ६ और जो कोई गिरकर दण्डवत् न करेगा वह उसी घड़ी धधकते हुए भट्ठे के बीच में डाल दिया जाएगा। ७ इस कारण उस समय ज्यों ही सब जाति के लोगों को नरसिंगे, बांसुली, वीणा, सारंगी, सितार शहनाई आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द सुन पड़ा, त्यों ही देश-देश और जाति-जाति के लोगों और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवालों ने गिरकर उस सोने की

मूरत को, जो नबूकदनेस्सर राजा ने खड़ी कराई थी, दण्डवत् की ॥

८ उसी समय कई एक कसदी पुरुष राजा के पास गए, और कपट से यहूदियों की चुगली खाई। ९ वे नबूकदनेस्सर राजा से कहने लगे, हे राजा, तू चिरंजीव रहे। १० हे राजा, तू ने तो यह आज्ञा दी है कि जो मनुष्य नरसिंगे, बांसुली, वीणा, सारंगी, सितार, शहनाई आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द सुने, वह गिरकर उस सोने की मूरत को दण्डवत् करे; ११ और जो कोई गिरकर दण्डवत् न करे वह धधकते हुए भट्ठे के बीच में डाल दिया जाए। १२ देख, शद्रक, मेशक, और अबेदनगो नाम कुछ यहूदी पुरुष हैं, जिन्हें तू ने बाबुल के प्रान्त के कार्य के ऊपर नियुक्त किया है। उन पुरुषों ने, हे राजा, तेरी आज्ञा की कुछ चिन्ता नहीं की; वे तेरे देवता की उपासना नहीं करते, और जो सोने की मूरत तू ने खड़ी कराई है, उसको दण्डवत् नहीं करते ॥

१३ तब नबूकदनेस्सर ने रोष और जलजलाहट में आकर आज्ञा दी कि शद्रक, मेशक और अबेदनगो को लाओ। तब वे पुरुष राजा के साम्हने हाज़िर किए गए। १४ नबूकदनेस्सर ने उन से पूछा, हे शद्रक, मेशक और अबेदनगो, तुम लोग जो मेरे देवता की उपासना नहीं करते, और मेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत् नहीं करते, सो क्या तुम जान बूझकर ऐसा करते हो? १५ यदि तुम अभी तैयार हो, कि जब नरसिंगे, बांसुली, वीणा, सारंगी, सितार, शहनाई आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द सुनो, और उसी क्षण गिरकर मेरी बनवाई हुई मूरत को दण्डवत् करो, तो बचोगे; और यदि तुम दण्डवत् न करो तो इसी घड़ी धधकते हुए भट्ठे के बीच में डाले जाओगे; फिर ऐसा कौन देवता है, जो तुम को मेरे हाथ से छुड़ा सके?

१६ शद्रक, मेशक, और अबेदनगो ने राजा से कहा, हे नबूकदनेस्सर, इस विषय में तुझे उत्तर देने का हमें कुछ प्रयोजन नहीं जान पड़ता। १७ हमारा परमेश्वर, जिसकी हम उपासना करते हैं वह हम को उस धधकते हुए भट्ठे की आग से बचाने की शक्ति रखता है; वरन हे राजा, वह हमें तेरे हाथ से भी छुड़ा सकता है। १८ परन्तु, यदि नहीं, तो हे राजा तुझे मालूम हो, कि हम लोग तेरे देवता की उपासना नहीं करेंगे, और न तेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत् करेंगे ॥

१९ तब नबूकदनेस्सर झुंझला उठा, और उसके चेहरे का रंग शद्रक, मेशक और अबेदनगो की ओर बदल गया। और उस ने आज्ञा दी कि भट्ठे को सातगुणा अधिक धधका दो। २० फिर अपनी सेना में के कई एक बलवान् पुरुषों को उस ने आज्ञा दी, कि शद्रक, मेशक और अबेदनगो को बान्धकर उन्हें धधकते हुए भट्ठे में डाल दो। २१ तब वे पुरुष अपने मोज़ों, अंगरखों, बागों और और वस्त्रों सहित बान्धकर, उस धधकते हुए भट्ठे में डाल दिए गए। २२ वह भट्ठा तो राजा की दृढ़ आज्ञा होने के कारण अत्यन्त धधकाया गया था, इस कारण जिन पुरुषों ने शद्रक, मेशक और अबेदनगो को उठाया वे ही आग की आंच से जल मरे। २३ और उसी धधकते हुए भट्ठे के बीच ये तीनों पुरुष, शद्रक, मेशक और अबेदनगो, बन्धे हुए फेंक दिए गए ॥

२४ तब नबूकदनेस्सर राजा अचम्भित हुआ और घबराकर उठ खड़ा हुआ। और अपने मन्त्रियों से पूछने लगा, क्या हम ने उस आग के बीच तीन ही पुरुष बन्धे हुए नहीं डलवाए? उन्हों ने राजा को उत्तर दिया, हां राजा, सच बात तो है। २५ फिर उस ने कहा, अब मैं देखता हूं कि चार पुरुष आग के बीच खुले हुए टहल रहे हैं, और उनको कुछ भी हानि नहीं पहुंची; और चौथे पुरुष का स्वरूप ईश्वर के पुत्र के सदृश्य है॥

२६ फिर नबूकदनेस्सर उस धधकते हुए भट्ठे के द्वार के पास जाकर कहने लगा, हे शद्रक, मेशक और अबेदनगो, हे परमप्रधान परमेश्वर के दासो, निकलकर यहां आओ! यह सुनकर शद्रक, मेशक और अबेदनगो आग के बीच से निकल आए। २७ जब अधिपति, हाकिम, गवर्नर और राजा के मन्त्रियों ने, जो इकट्ठे हुए थे, उन पुरुषों की ओर देखा, तब उनकी देह में आग का कुछ भी प्रभाव नहीं पाया; और उनके सिर का एक बाल भी न झुलसा, न उनके मोजे कुछ बिगड़े, न उन में जलने की कुछ गन्ध पाई गई। २८ नबूकदनेस्सर कहने लगा, धन्य है शद्रक, मेशक, और अबेदनगो का परमेश्वर, जिस ने अपना दूत भेजकर अपने इन दासों को इसलिये बचाया, क्योंकि इन्हों ने राजा की आज्ञा न मानकर, उसी पर भरोसा रखा, और यह सोचकर अपना शरीर भी अर्पण किया, कि हम अपने परमेश्वर को छोड़, किसी देवता की उपासना वा दण्डवत् न करेंगे। २९ इसलिये अब मैं यह आज्ञा देता हूं कि देश-देश और जाति-जाति के लोगों, और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवालों में से जो कोई शद्रक, मेशक और अबेदनगो के परमेश्वर की कुछ निन्दा करेगा, वह टुकड़े टुकड़े किया जाएगा, और उसका घर घूरा बनाया जाएगा; क्योंकि ऐसा कोई और देवता नहीं जो इस रीति से बचा सके। ३० तब राजा ने बाबुल के प्रान्त में शद्रक, मेशक, अबेदनगो का पद और ऊंचा किया॥

४ नबूकदनेस्सर राजा की ओर से देश-देश और जाति-जाति के लोगों, और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवाले जितने सारी पृथ्वी पर रहते हैं, उन सभों को यह वचन मिला, तुम्हारा कुशल क्षेम बढ़े! २ मुझे यह अच्छा लगा, कि परमप्रधान परमेश्वर ने मुझे जो जो चिन्ह और चमत्कार दिखाए हैं, उनको प्रगट करूं। ३ उसके दिखाए हुए चिन्ह क्या ही बड़े, और उसके चमत्कारों में क्या ही बड़ी शक्ति प्रगट होती है! उसका राज्य तो सदा का और उसकी प्रभुता पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है॥

४ मैं नबूकदनेस्सर अपने भवन में चैन से और प्रफुल्लित रहता था। ५ मैं ने ऐसा स्वप्न देखा जिसके कारण मैं डर गया; और पलंग पर पड़े पड़े जो विचार मेरे मन में आए और जो बातें मैं ने देखीं, उनके कारण मैं घबरा गया था। ६ तब मैं ने आज्ञा दी कि बाबुल के सब पण्डित मेरे स्वप्न का फल मुझे बताने के लिये मेरे साम्हने हाजिर किए जाएं। ७ तब ज्योतिषी, तन्त्री, कसदी और होनहार बतानेवाले भीतर आए, और मैं ने उनको अपना स्वप्न बताया, परन्तु वे उसका फल न बता सके।

८ निदान दानिय्येल मेरे सम्मुख आया, जिसका नाम मेरे देवता के नाम के कारण बेलतशस्सर रखा गया था, और जिस में पवित्र ईश्वरों की आत्मा रहती है; और मैं ने उसको अपना स्वप्न यह कहकर बता दिया, ९ कि, हे बेलतशस्सर तू तो सब ज्योतिषियों का प्रधान है, मैं जानता हूं कि तुझ में पवित्र ईश्वरों की आत्मा रहती है, और तू किसी भेद के कारण नहीं घबराता; इसलिये जो स्वप्न मैं ने देखा है उसे फल समेत मुझे बताकर समझा दे। १० जो दर्शन मैं ने पलंग पर पाया वह यह है : मैं ने देखा, कि पृथ्वी के बीचोबीच एक वृक्ष लगा है; उसकी ऊंचाई बहुत बड़ी है। ११ वह वृक्ष बड़ा होकर दृढ़ हो गया, और उसकी ऊंचाई स्वर्ग तक पहुंची, और वह सारी पृथ्वी की छोर तक देख पड़ता था। १२ उसके पत्ते सुन्दर, और उस में बहुत फल थे, यहां तक कि उस में सभों के लिये भोजन था। उसके नीचे मैदान के सब पशुओं को छाया मिलती थी, और उसकी डालियों में आकाश की सब चिड़ियां बसेरा करती थीं, और सब प्राणी उस से आहार पाते थे।।

१३ मैं ने पलंग पर दर्शन पाते समय क्या देखा, कि एक पवित्र पहरुआ स्वर्ग से उतर आया। १४ उस ने ऊंचे शब्द से पुकारकर यह कहा, वृक्ष को काट डालो, उसकी डालियों को छांट दो, उसके पत्ते झाड़ दो और उसके फल छितरा डालो; पशु उसके नीचे से हट जाएं, और चिड़ियें उसकी डालियों पर से उड़ जाएं। १५ तौभी उसके ठूंठ को जड़ समेत भूमि में छोड़ो, और उसको लोहे और पीतल के बन्धन से बान्धकर मैदान की हरी घास के बीच रहने दो। वह आकाश की ओस से भीगा करे और भूमि की घास खाने में मैदान के पशुओं के संग भागी हो। १६ उसका मन बदले और मनुष्य का न रहे, परन्तु पशु का सा बन जाए; और उस पर सात काल बीतें। १७ यह आज्ञा पहरुओं के निर्णय से, और यह बात पवित्र लोगों के वचन से निकली, कि जो जीवित हैं वे जान लें कि परमप्रधान परमेश्वर मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है, और उसको जिसे चाहे उसे दे देता है, और वह छोटे से छोटे मनुष्य को भी उस पर नियुक्त कर देता है। १८ मुझ नबूकदनेस्सर राजा ने यही स्वप्न देखा। सो हे बेलतशस्सर, तू इसका फल बता, क्योंकि मेरे राज्य में और कोई पण्डित इसका फल मुझे समझा नहीं सकता, परन्तु तुझ में तो पवित्र ईश्वरों की आत्मा रहती है, इस कारण तू उसे समझा सकता है।।

१९ तब दानिय्येल जिसका नाम बेलतशस्सर भी था, घड़ी भर घबराता रहा, और सोचते सोचते व्याकुल हो गया। तब राजा कहने लगा, हे बेलतशस्सर इस स्वप्न से, वा इसके फल से तू व्याकुल मत हो। बेलतशस्सर ने कहा, हे मेरे प्रभु, यह स्वप्न तेरे बैरियों पर, और इसका अर्थ तेरे द्रोहियों पर फले! २० जिस वृक्ष को तू ने देखा, जो बड़ा और दृढ़ हो गया, और जिसकी ऊंचाई स्वर्ग तक पहुंची और जो पृथ्वी के सिरे तक दिखाई देता था; २१ जिसके पत्ते सुन्दर और फल बहुत थे, और जिस में सभों के लिये भोजन था; जिसके नीचे मैदान के सब पशु रहते थे, और जिसकी डालियों में आकाश की चिड़ियां बसेरा

करती थीं, २२ हे राजा, वह तू ही है। तू महान और सामर्थी हो गया, तेरी महिमा बढ़ी और स्वर्ग तक पहुंच गई, और तेरी प्रभुता पृथ्वी की छोर तक फैली है। २३ और हे राजा, तू ने जो एक पवित्र पहरुए को स्वर्ग से उतरते और यह कहते देखा कि वृक्ष को काट डालो और उसका नाश करो, तौभी उसके ठूंठ को जड़ समेत भूमि में छोड़ो, और उसको लोहे और पीतल के बन्धन से बान्धकर मैदान की हरी घास के बीच में रहने दो; वह आकाश की ओस से भीगा करे, और उसको मैदान के पशुओं के संग ही भाग मिले; और जब तक सात युग उस पर बीत न चुकें, तब तक उसकी ऐसी ही दशा रहे। २४ हे राजा, इसका फल जो परमप्रधान ने ठाना है कि राजा पर घटे, वह यह है, २५ कि तू मनुष्यों के बीच से निकाला जाएगा, और मैदान के पशुओं के संग रहेगा; तू बैलों की नाईं घास चरेगा और आकाश की ओस से भींगा करेगा; और सात युग तुझ पर बीतेंगे, जब तक कि तू न जान ले कि मनुष्यों के राज्य में परमप्रधान ही प्रभुता करता है, और जिसे चाहे वह उसे दे देता है। २६ और उस वृक्ष के ठूंठ को जड़ समेत छोड़ने की आज्ञा जो हुई है, इसका अर्थ यह है कि तेरा राज्य तेरे लिये बना रहेगा; और जब तू जान लेगा कि जगत का प्रभु स्वर्ग ही में है*, तब तू फिर से राज्य करने पाएगा। २७ इस कारण, हे राजा, मेरी यह सम्मति स्वीकार कर, कि यदि तू पाप छोड़कर धर्म करने लगे, और अधर्म छोड़कर दीन-हीनों पर दया करने लगे, तो सम्भव है कि ऐसा करने से तेरा चैन बना रहे॥

२८ यह सब कुछ नबूकदनेस्सर राजा पर घट गया। २९ बारह महीने के बीतने पर जब वह बाबुल के राजभवन की छत पर टहल रहा था, तब वह कहने लगा, ३० क्या यह बड़ा बाबुल नहीं है, जिसे मैं ही ने अपने बल और सामर्थ से राजनिवास होने को और अपने प्रताप की बड़ाई के लिये बसाया है? ३१ यह वचन राजा के मुंह से निकलने भी न पाया था कि आकाशवाणी हुई, हे राजा नबूकदनेस्सर तेरे विषय में यह आज्ञा निकलती है कि राज्य तेरे हाथ से निकल गया, ३२ और तू मनुष्यों के बीच से निकाला जाएगा, और मैदान के पशुओं के संग रहेगा; और बैलों की नाईं घास चरेगा; और सात काल तुझ पर बीतेंगे, जब तक कि तू न जान ले कि परमप्रधान, मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है और जिसे चाहे वह उसे दे देता है। ३३ उसी घड़ी यह वचन नबूकदनेस्सर के विषय में पूरा हुआ। वह मनुष्यों में से निकाला गया, और बैलों की नाईं घास चरने लगा, और उसकी देह आकाश की ओस से भीगती थी, यहां तक कि उसके बाल उक़ाब पक्षियों के परों से और उसके नाख़ून चिड़ियों के चंगुलों के समान बढ़ गए॥

३४ उन दिनों के बीतने पर, मुझ नबूकदनेस्सर ने अपनी आंखें स्वर्ग की ओर उठाईं, और मेरी बुद्धि फिर ज्यों की त्यों हो गई; तब मैं ने परमप्रधान को धन्य कहा, और जो सदा जीवित है उसकी स्तुति और महिमा यह कहकर करने लगा: उसकी प्रभुता सदा की है,

* मूल में—कि स्वर्ग प्रभुता करता है।

और उसका राज्य पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहनेवाला है। ३५ पृथ्वी के सब रहनेवाले उसके साम्हने तुच्छ गिने जाते हैं, और वह स्वर्ग की सेना और पृथ्वी के रहनेवालों के बीच अपनी ही इच्छा के अनुसार काम करता है; और कोई उसको रोककर * उस से नहीं कह सकता है, तू ने यह क्या किया है?

३६ उसी समय, मेरी बुद्धि फिर ज्यों की त्यों हो गई; और मेरे राज्य की महिमा के लिये मेरा प्रताप और मुकुट मुझ पर फिर आ गया। और मेरे मन्त्री और प्रधान लोग मुझ से भेंट करने के लिये आने लगे, और मैं अपने राज्य में स्थिर हो गया; और मेरी और अधिक प्रशंसा होने लगी। ३७ अब मैं नबूकदनेस्सर स्वर्ग के राजा को सराहता हूं, और उसकी स्तुति और महिमा करता हूं क्योंकि उसके सब काम सच्चे, और उसके सब व्यवहार न्याय के हैं; और जो लोग घमण्ड से चलते हैं, उन्हें वह नीचा कर सकता है॥

५ बेलशस्सर नाम राजा ने अपने हजार प्रधानों के लिये बड़ी जेवनार की, और उन हजार लोगों के साम्हने दाखमधु पिया॥

२ दाखमधु पीते पीते बेलशस्सर ने आज्ञा दी, कि सोने-चान्दी के जो पात्र मेरे पिता नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम के मन्दिर में से निकाले थे, उन्हें ले आओ कि राजा अपने प्रधानों, और रानियों और रखेलियों समेत उन में से पीए। ३ तब जो सोने के पात्र यरूशलेम में परमेश्वर के भवन के मन्दिर में से निकाले गए थे, वे लाए गए; और राजा अपने प्रधानों, और रानियों, और रखेलियों समेत उन में से पीने लगा॥

४ वे दाखमधु पी पीकर सोने, चान्दी, पीतल, लोहे, काठ और पत्थर के देवताओं की स्तुति कर ही रहे थे, ५ कि उसी घड़ी मनुष्य के हाथ की सी कई उंगलियां निकलकर दीवट के साम्हने राजमन्दिर की भीत के चूने पर कुछ लिखने लगीं; और हाथ का जो भाग लिख रहा था, वह राजा को दिखाई पड़ा। ६ उसे देखकर राजा भयभीत हो गया, और वह अपने सोच में घबरा गया, और उसकी कटि के जोड़ ढीले हो गए, और कांपते कांपते उसके घुटने एक दूसरे से लगने लगे। ७ तब राजा ने ऊंचे शब्द से पुकारकर तन्त्रियों, कसदियों और और होनहार बतानेवालों को हाज़िर करवाने की आज्ञा दी। जब बाबुल के पण्डित पास आए, तब राजा उन से कहने लगा, जो कोई वह लिखा हुआ पढ़कर उसका अर्थ मुझे समझाए उसे बैंजनी रंग का वस्त्र, और उसके गले में सोने की कण्ठमाला पहिनाई जाएगी; और मेरे राज्य में तीसरा वही प्रभुता करेगा। ८ तब राजा के सब पण्डित लोग भीतर आए, परन्तु उस लिखे हुए को न पढ़ सके और न राजा को उसका अर्थ समझा सके। ९ इस पर बेलशस्सर राजा निपट घबरा गया और भयातुर हो गया; और उसके प्रधान भी बहुत व्याकुल हुए॥

१० राजा और प्रधानों के वचनों को सुनकर, रानी जेवनार के घर में आई और कहने लगी, हे राजा, तू युगयुग जीवित रहे, अपने मन में न घबरा और न उदास हो। ११ तेरे राज्य में दानिय्येल

* मूल में—उसका हाथ मार के।

एक पुरुष है जिसका नाम तेरे पिता ने बेलतशस्सर रखा था, उस में पवित्र ईश्वरों की आत्मा रहती है, और उस राजा के दिनों में उस में प्रकाश, प्रवीणता और ईश्वरों के तुल्य बुद्धि पाई गई। और हे राजा, तेरा पिता जो राजा था, उस ने उसको सब ज्योतिषियों, तन्त्रियों, कसदियों और और होनहार बतानेवालों का प्रधान ठहराया था, १२ क्योंकि उस में उत्तम आत्मा, ज्ञान और प्रवीणता, और स्वप्नों का फल बताने और पहेलियां खोलने, और सन्देह दूर करने की शक्ति पाई गई। इसलिये अब दानिय्येल बुलाया जाए, और वह इसका अर्थ बताएगा ॥

१३ तब दानिय्येल राजा के साम्हने भीतर बुलाया गया। राजा दानिय्येल से पूछने लगा, क्या तू वही दानिय्येल है जो मेरे पिता नबूकदनेस्सर राजा के यहूदा देश से लाए हुए यहूदी बंधुओं में से है? १४ मैं ने तेरे विषय में सुना है कि ईश्वर की आत्मा तुझ में रहती है; और प्रकाश, प्रवीणता और उत्तम बुद्धि तुझ में पाई जाती है। १५ देख, अभी पण्डित और तन्त्री लोग मेरे साम्हने इसलिये लाए गए थे कि यह लिखा हुआ पढ़ें और उसका अर्थ मुझे बताएं, परन्तु वे उस बात का अर्थ न समझा सके। १६ परन्तु मैं ने तेरे विषय में सुना है कि दानिय्येल भेद खोल सकता और सन्देह दूर कर सकता है। इसलिये अब यदि तू उस लिखे हुए को पढ़ सके और उसका अर्थ भी मुझे समझा सके, तो तुझे बैंजनी रंग का वस्त्र, और तेरे गले में सोने की कण्ठमाला पहिनाई जाएगी, और राज्य में तीसरा तू ही प्रभुता करेगा ॥

१७ दानिय्येल ने राजा से कहा, अपने दान अपने ही पास रख; और जो बदला तू देना चाहता है, वह दूसरे को दे; वह लिखी हुई बात मैं राजा को पढ़ सुनाऊंगा, और उसका अर्थ भी तुझे समझाऊंगा। १८ हे राजा, परमप्रधान परमेश्वर ने तेरे पिता नबूकदनेस्सर को राज्य, बड़ाई, प्रतिष्ठा और प्रताप दिया था; १९ और उस बड़ाई के कारण जो उस ने उसको दी थी, देश-देश और जाति-जाति के सब लोग, और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवाले उसके साम्हने कांपते और थरथराते थे; जिसे वह चाहता उसे वह घात करता था, और जिसको वह चाहता उसे वह जीवित रखता था; जिसे वह चाहता उसे वह ऊंचा पद देता था, और जिसको वह चाहता उसे वह गिरा देता था। २० परन्तु, जब उसका मन फूल उठा, और उसकी आत्मा कठोर हो गई, यहां तक कि वह अभिमान करने लगा, तब वह अपने राजसिंहासन पर से उतारा गया, और उसकी प्रतिष्ठा भंग की गई; २१ वह मनुष्यों में से निकाला गया, और उसका मन पशुओं का सा, और उसका निवास जंगली गदहों के बीच हो गया; वह बैलों की नाईं घास चरता, और उसका शरीर आकाश की ओस से भीगा करता था, जब तक कि उस ने जान न लिया कि परमप्रधान परमेश्वर मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है और जिसे चाहता उसी को उस पर अधिकारी ठहराता है। २२ तौभी, हे बेलशस्सर, तू जो उसका पुत्र है, और यह सब कुछ जानता था, तौभी तेरा मन नम्र न हुआ। २३ वरन तू ने स्वर्ग के प्रभु के विरुद्ध सिर उठाकर उसके भवन के पात्र मंगवाकर अपने

साम्हने धरवा लिए, और अपने प्रधानों और रानियों और रखेलियों समेत तू ने उन में दाखमधु पिया; और चान्दी-सोने, पीतल, लोहे, काठ और पत्थर के देवता, जो न देखते न सुनते, न कुछ जानते हैं, उनकी तो स्तुति की, परन्तु परमेश्वर, जिसके हाथ में तेरा प्राण है, और जिसके वश में तेरा सब चलना फिरना है, उसका सन्मान तू ने नहीं किया ।।

२४ तब ही यह हाथ का एक भाग उसी की ओर से प्रगट किया गया है और वे शब्द लिखे गए हैं। २५ और जो शब्द लिखे गए वे ये हैं, मने *, मने, तकेल †, और ऊपर्सीन ‡। २६ इस वाक्य का अर्थ यह है, मने, अर्थात् परमेश्वर ने तेरे राज्य के दिन गिनकर उसका अन्त कर दिया है। २७ तकेल, तू मानो तराजू में तौला गया और हलका पाया गया है। २८ परेस §, अर्थात् तेरा राज्य बांटकर मादियों और फ़ारसियों को दिया गया है ।।

२९ तब बेलशस्सर ने आज्ञा दी, और दानिय्येल को बैंजनी रंग का वस्त्र और उसके गले में सोने की कण्ठमाला पहिनाई गई; और ढिंढोरिये ने उसके विषय में पुकारा, कि राज्य में तीसरा दानिय्येल ही प्रभुता करेगा ।।

३० उसी रात कसदियों का राजा बेलशस्सर मार डाला गया। ३१ और दारा मादी जो कोई बासठ वर्ष का था राजगद्दी पर विराजमान हुआ ।।

* अर्थात् गिना। † अर्थात् तौला।
‡ अर्थात् और बांटते हैं।
§ अर्थात् बांट दिया।

६ दारा को यह अच्छा लगा कि अपने राज्य के ऊपर एक सौ बीस ऐसे अधिपति ठहराए, जो पूरे राज्य में अधिकार रखें। २ और उनके ऊपर उस ने तीन अध्यक्ष, जिन में से दानिय्येल एक था, इसलिये ठहराए, कि वे उन अधिपतियों से लेखा लिया करें, और इस रीति राजा की कुछ हानि न होने पाए। ३ जब यह देखा गया कि दानिय्येल में उत्तम आत्मा रहती है, तब उसको उन अध्यक्षों और अधिपतियों से अधिक प्रतिष्ठा मिली; वरन राजा यह भी सोचता था कि उसको सारे राज्य के ऊपर ठहराए। ४ तब अध्यक्ष और अधिपति राजकार्य के विषय में दानिय्येल के विरुद्ध दोष ढूंढ़ने लगे; परन्तु वह विश्वासयोग्य था, और उसके काम में कोई भूल वा दोष न निकला, और वे ऐसा कोई अपराध वा दोष न पा सके। ५ तब वे लोग कहने लगे, हम उस दानिय्येल के परमेश्वर की व्यवस्था को छोड़, और किसी विषय में उसके विरुद्ध कोई दोष न पा सकेंगे ।।

६ तब वे अध्यक्ष और अधिपति राजा के पास उतावली से आए, और उस से कहा, हे राजा दारा, तू युगयुग जीवित रहे। ७ राज्य के सारे अध्यक्षों ने, और हाकिमों, अधिपतियों, न्यायियों, और गवर्नरों ने भी आपस में सम्मति की है, कि राजा ऐसी आज्ञा दे और ऐसी कड़ी आज्ञा निकाले, कि तीस दिन तक जो कोई, हे राजा, तुझे छोड़ किसी और मनुष्य वा देवता से बिनती करे, वह सिंहों की मान्द में डाल दिया जाए। ८ इसलिये अब हे राजा, ऐसी आज्ञा दे, और इस पत्र पर हस्ताक्षर कर, जिस से यह बात मादियों और फ़ारसियों की अटल व्यवस्था

के अनुसार अदल-बदल न हो सके। ९ तब दारा राजा ने उस आज्ञापत्र पर हस्ताक्षर कर दिया॥

१० जब दानिय्येल को मालूम हुआ कि उस पत्र पर हस्ताक्षर किया गया है, तब वह अपने घर में गया जिसकी उपरौठी कोठरी की खिड़कियां यरूशलेम के साम्हने खुली रहती थीं, और अपनी रीति के अनुसार जैसा वह दिन में तीन बार अपने परमेश्वर के साम्हने घुटने टेककर प्रार्थना और धन्यवाद करता था, वैसा ही तब भी करता रहा। ११ तब उन पुरुषों ने उतावली से आकर दानिय्येल को अपने परमेश्वर के साम्हने बिनती करते और गिड़गिड़ाते हुए पाया। १२ सो वे राजा के पास जाकर, उसकी राजआज्ञा के विषय में उस से कहने लगे, हे राजा, क्या तू ने ऐसे आज्ञापत्र पर हस्ताक्षर नहीं किया कि तीस दिन तक जो कोई तुझे छोड़, किसी मनुष्य वा देवता से बिनती करेगा, वह सिंहों की मान्द में डाल दिया जाएगा? राजा ने उत्तर दिया, हां, मादियों और फ़ारसियों की अटल व्यवस्था के अनुसार यह बात स्थिर है। १३ तब उन्हों ने राजा से कहा, यहूदी बंधुओं में से जो दानिय्येल है, उस ने, हे राजा, न तो तेरी ओर कुछ ध्यान दिया, और न तेरे हस्ताक्षर किए हुए आज्ञापत्र की ओर; वह दिन में तीन बार बिनती किया करता है॥

१४ यह वचन सुनकर, राजा बहुत उदास हुआ, और दानिय्येल के बचाने के उपाय सोचने लगा; और सूर्य के अस्त होने तक उसके बचाने का यत्न करता रहा। १५ तब वे पुरुष राजा के पास उतावली से आकर कहने लगे, हे राजा, यह जान रख, कि मादियों और फ़ारसियों में यह व्यवस्था है कि जो जो मनाही वा आज्ञा राजा ठहराए, वह नहीं बदल सकती॥

१६ तब राजा ने आज्ञा दी, और दानिय्येल लाकर सिंहों की मान्द में डाल दिया गया। उस समय राजा ने दानिय्येल से कहा, तेरा परमेश्वर जिसकी तू नित्य उपासना करता है, वही तुझे बचाए! १७ तब एक पत्थर लाकर उस गड़हे के मुंह पर रखा गया, और राजा ने उस पर अपनी अंगूठी से, और अपने प्रधानों की अंगूठियों से मुहर लगा दी कि दानिय्येल के विषय में कुछ बदलने न पाए। १८ तब राजा अपने महल में चला गया, और उस रात को बिना भोजन पड़ा रहा; और उसके पास सुख विलास की कोई वस्तु नहीं पहुंचाई गई, और उसे नींद भी नहीं आई॥

१९ भोर को पौ फटते ही राजा उठा, और सिंहों के गड़हे की ओर फुर्ती से चला गया। २० जब राजा गड़हे के निकट आया, तब शोकभरी वाणी से चिल्लाने लगा और दानिय्येल से कहा, हे दानिय्येल, हे जीवते परमेश्वर के दास, क्या तेरा परमेश्वर जिसकी तू नित्य उपासना करता है, तुझे सिंहों से बचा सका है? २१ तब दानिय्येल ने राजा से कहा, हे राजा, तू युगयुग जीवित रहे! २२ मेरे परमेश्वर ने अपना दूत भेजकर सिंहों के मुंह को ऐसा बन्द कर रखा कि उन्हों ने मेरी कुछ भी हानि नहीं की; इसका कारण यह है, कि मैं उसके साम्हने निर्दोष पाया गया; और हे राजा, तेरे सम्मुख भी मैं ने कोई भूल नहीं की। २३ तब राजा ने बहुत आनन्दित होकर, दानिय्येल को गड़हे में से निकालने की आज्ञा दी।

सो दानिय्येल गड़हे में से निकाला गया, और उस पर हानि का कोई चिन्ह न पाया गया, क्योंकि वह अपने परमेश्वर पर विश्वास रखता था। २४ और राजा ने आज्ञा दी कि जिन पुरुषों ने दानिय्येल की चुगली खाई थी, वे अपने अपने लड़केवालों और स्त्रियों समेत लाकर सिंहों के गड़हे में डाल दिए जाएं; और वे गड़हे की पेंदी तक भी न पहुंचे कि सिंहों ने उन पर झपटकर सब हड्डियों समेत उनको चबा डाला॥

२५ तब दारा राजा ने सारी पृथ्वी के रहनेवाले देश-देश और जाति-जाति के सब लोगों, और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवालों के पास यह लिखा, तुम्हारा बहुत कुशल हो। २६ मैं यह आज्ञा देता हूं कि जहां जहां मेरे राज्य का अधिकार है, वहां के लोग दानिय्येल के परमेश्वर के सम्मुख कांपते और थरथराते रहें, क्योंकि जीवता और युगानयुग तक रहनेवाला परमेश्वर वही है; उसका राज्य अविनाशी और उसकी प्रभुता सदा स्थिर रहेगी। २७ जिस ने दानिय्येल को सिंहों से बचाया है, वही बचाने और छुड़ानेवाला है; और स्वर्ग में और पृथ्वी पर चिन्हों और चमत्कारों का प्रगट करनेवाला है। २८ और दानिय्येल, दारा और कुस्रू फारसी, दोनों के राज्य के दिनों में भाग्यवान् रहा॥

७ बाबुल के राजा बेलशस्सर के पहिले वर्ष में, दानिय्येल ने पलंग पर स्वप्न देखा। तब उस ने वह स्वप्न लिखा, और बातों का सारांश भी वर्णन किया। २ दानिय्येल ने यह कहा, मैं ने रात को यह स्वप्न देखा कि महासागर पर चौमुखी आंधी चलने लगी। ३ तब समुद्र में से चार बड़े बड़े जन्तु, जो एक दूसरे से भिन्न थे, निकल आए। ४ पहिला जन्तु सिंह के समान था और उसके पंख उकाब के से थे। और मेरे देखते देखते उसके पंखों के पर नोचे गए और वह भूमि पर से उठाकर, मनुष्य की नाईं पांवों के बल खड़ा किया गया; और उसको मनुष्य का हृदय दिया गया। ५ फिर मैं ने एक और जन्तु देखा जो रीछ के समान था, और एक पांजर के बल उठा हुआ था, और उसके मुंह में दांतों के बीच तीन पसुली थीं; और लोग उस से कह रहे थे, उठकर बहुत मांस खा। ६ इसके बाद मैं ने दृष्टि की और देखा, कि चीते के समान एक और जन्तु है जिसकी पीठ पर पक्षी के से चार पंख हैं; और उस जन्तु के चार सिर थे; और उसको अधिकार दिया गया। ७ फिर इसके बाद मैं ने स्वप्न में दृष्टि की और देखा, कि एक चौथा जन्तु है जो भयंकर और डरावना और बहुत सामर्थी है; और उसके बड़े बड़े लोहे के दांत हैं; वह सब कुछ खा डालता है और चूर चूर करता है, और जो बच जाता है, उसे पैरों से रौंदता है। और वह सब पहिले जन्तुओं से भिन्न है; और उसके दस सींग हैं। ८ मैं उन सींगों को ध्यान से देख रहा था तो क्या देखा कि उनके बीच एक और छोटा सा सींग निकला, और उसके बल से उन पहिले सींगों में से तीन उखाड़े गए; फिर मैं ने देखा कि इस सींग में मनुष्य की सी आंखें, और बड़ा बोल बोलनेवाला मुंह भी है। ९ मैं ने देखते देखते अन्त में क्या देखा, कि सिंहासन रखे गए, और कोई अति प्राचीन विराजमान

हुआ; उसका वस्त्र हिम सा उजला, और सिर के बाल निर्मल ऊन सरीखे थे; उसका सिंहासन अग्निमय और उसके पहिये धधकती हुई आग के से देख पड़ते थे। १० उस प्राचीन के सम्मुख से आग की धारा निकलकर बह रही थी; फिर हजारों हजार लोग उसकी सेवा टहल कर रहे थे, और लाखों लाख लोग उसके साम्हने हाज़िर थे; फिर न्यायी बैठ गए, और पुस्तकें खोली गईं। ११ उस समय उस सींग का बड़ा बोल सुनकर मैं देखता रहा, और देखते देखते अन्त में देखा कि वह जन्तु घात किया गया, और उसका शरीर धधकती हुई आग से भस्म किया गया। १२ और रहे हुए जन्तुओं का अधिकार ले लिया गया, परन्तु उनका प्राण कुछ समय के लिये * बचाया गया। १३ मैं ने रात में स्वप्न में देखा, और देखो, मनुष्य के सन्तान सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था, और वह उस अति प्राचीन के पास पहुंचा, और उसको वे उसके समीप लाए। १४ तब उसको ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य दिया गया, कि देश-देश और जाति-जाति के लोग और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवाले सब उसके अधीन हों; उसकी प्रभुता सदा तक अटल, और उसका राज्य अविनाशी ठहरा।।

१५ और मुझ दानिय्येल का मन विकल हो गया †, और जो कुछ मैं ने देखा था उसके कारण मैं घबरा गया ‡। १६ तब जो लोग पास खड़े थे, उन में से एक के पास जाकर मैं ने उन सारी बातों का भेद पूछा, उस ने यह कहकर मुझे उन बातों का अर्थ बताया, १७ उन चार बड़े बड़े जन्तुओं का अर्थ चार राज्य * हैं, जो पृथ्वी पर उदय होंगे। १८ परन्तु परमप्रधान के पवित्र लोग राज्य को पाएंगे, और युगानयुग उसके अधिकारी बने रहेंगे।।

१९ तब मेरे मन में यह इच्छा हुई कि उस चौथे जन्तु का भेद भी जान लूं जो और तीनों से भिन्न और अति भयंकर था और जिसके दांत लोहे के और नख पीतल के थे; वह सब कुछ खा डालता, और चूर चूर करता, और बचे हुए को पैरों से रौंद डालता था। २० फिर उसके सिर में के दस सींगों का भेद, और जिस नये सींग के निकलने से तीन सींग गिर गए, अर्थात् जिस सींग की आंखें और बड़ा बोल बोलनेवाला मुंह और सब और सींगों से अधिक भयंकर था, उसका भी भेद जानने की मुझे इच्छा हुई। २१ और मैं ने देखा था कि वह सींग पवित्र लोगों के संग लड़ाई करके उन पर उस समय तक प्रबल भी हो गया, २२ जब तक वह अति प्राचीन न आया, और परमप्रधान के पवित्र लोग न्यायी न ठहरे, और उन पवित्र लोगों के राज्याधिकारी होने का समय न आ पहुंचा।।

२३ उस ने कहा, उस चौथे जन्तु का अर्थ, एक चौथा राज्य है, जो पृथ्वी पर होकर और सब राज्यों से भिन्न होगा, और सारी पृथ्वी को नाश करेगा, और दांवकर चूर-चूर करेगा। २४ और उन दस सींगों का अर्थ यह है, कि उस राज्य

* मूल में—समय और काल के लिये।
† मूल में—आत्मा देह के बीच घबरा गई।
‡ मूल में—मेरे सिर के दर्शनों ने मुझे घबरा दिया।

* मूल में—राजा।

में से दस राजा उठेंगे, और उनके बाद उन पहिलों से भिन्न एक और राजा उठेगा, जो तीन राजाओं को गिरा देगा। २५ और वह परमप्रधान के विरुद्ध बातें कहेगा, और परमप्रधान के पवित्र लोगों को पीस डालेगा, और समयों और व्यवस्था के बदल देने की आशा करेगा, वरन साढ़े तीन काल तक वे सब उसके वश में कर दिए जाएंगे। २६ परन्तु, तब न्यायी बैठेंगे *, और उसकी प्रभुता छीनकर मिटाई और नाश की जाएगी; यहां तक कि उसका अन्त ही हो जाएगा। २७ तब राज्य और प्रभुता और धरती पर के राज्य † की महिमा, परमप्रधान ही की प्रजा अर्थात् उसके पवित्र लोगों को दी जाएगी, उसका राज्य सदा का राज्य है, और सब प्रभुता करनेवाले उसके अधीन होंगे और उसकी आज्ञा मानेंगे। २८ इस बात का वर्णन मैं अब कर चुका, परन्तु मुझ दानिय्येल के मन में बड़ी घबराहट बनी रही, और मैं भयभीत हो गया; और इस बात को मैं अपने मन में रखे रहा॥

८ बेलशस्सर राजा के राज्य के तीसरे वर्ष में उस पहिले दर्शन के बाद एक और बात मुझ दानिय्येल को दर्शन के द्वारा दिखाई गई। २ जब मैं एलाम नाम प्रान्त में, शूशन नाम राजगढ़ में रहता था, तब मैं ने दर्शन में देखा कि मैं ऊलै नदी के किनारे पर हूं। ३ फिर मैं ने आंख उठाकर देखा, कि उस नदी के साम्हने दो सींगवाला एक मेढ़ा खड़ा है, उसके दोनों सींग बड़े हैं, परन्तु उन में से एक अधिक बड़ा है, और जो बड़ा है, वह दूसरे के बाद निकला। ४ मैं ने उस मेढ़े को देखा कि वह पश्चिम, उत्तर और दक्खिन की ओर सींग मारता है, और कोई जन्तु उसके साम्हने खड़ा नहीं रह सकता, और न उसके हाथ से कोई किसी को बचा सकता है; और वह अपनी ही इच्छा के अनुसार काम करके बढ़ता जाता था॥

५ मैं सोच ही रहा था, तो फिर क्या देखा कि एक बकरा पश्चिम दिशा से निकलकर सारी पृथ्वी के ऊपर ऐसा फिरा कि चलते समय भूमि पर पांव न छुआया और उस बकरे की आंखों के बीच एक देखने योग्य सींग था। ६ वह उस दो सींगवाले मेढ़े के पास जाकर, जिसको मैं ने नदी के साम्हने खड़ा देखा था, उस पर जलकर अपने पूरे बल से लपका। ७ मैं ने देखा कि वह मेढ़े के निकट आकर उस पर झुंझलाया; और मेढ़े को मारकर उसके दोनों सींगों को तोड़ दिया; और उसका साम्हना करने को मेढ़े का कुछ भी वश न चला; तब बकरे ने उसको भूमि पर गिराकर रौंद डाला; और मेढ़े को उसके हाथ से छुड़ानेवाला कोई न मिला। ८ तब बकरा अत्यन्त बड़ाई मारने लगा, और जब बलवन्त हुआ, तब उसका बड़ा सींग टूट गया, और उसकी सन्ती देखने योग्य चार सींग निकलकर चारों दिशाओं की ओर बढ़ने लगे॥

९ फिर इन में से एक छोटा सा सींग और निकला, जो दक्खिन, पूरब और शिरोमणि देश की ओर बहुत ही बढ़ गया। १० वह स्वर्ग की सेना तक बढ़ गया; और उस में से और तारों में से

---

* मूल में—न्याय बैठेगा।
† मूल में—आकाश भर के नीचे के राज्य।

भी कितनों को भूमि पर गिराकर रौंद डाला। ११ वरन वह उस सेना के प्रधान तक भी बढ़ गया, और उसका नित्य होमबलि बन्द कर दिया गया; और उसका पवित्र वासस्थान गिरा दिया गया। १२ और लोगों के अपराध के कारण नित्य होमबलि के साथ सेना भी उसके हाथ में कर दी गई, और उस सींग ने सच्चाई को मिट्टी में मिला दिया, और वह काम करते करते सफल हो गया। १३ तब मैं ने एक पवित्र जन को बोलते सुना; फिर एक और पवित्र जन ने उस पहिले बोलनेवाले से पूछा, नित्य होमबलि और उजड़वानेवाले अपराध के विषय में जो कुछ दर्शन देखा गया, वह कब तक फलता रहेगा; अर्थात् पवित्रस्थान और सेना दोनों का रौंदा जाना कब तक होता रहेगा? १४ और उस ने मुझ से कहा, जब तक सांझ और सवेरा दो हजार तीन सौ बार न हों, तब तक वह होता रहेगा; तब पवित्रस्थान शुद्ध किया जाएगा॥

१५ यह बात दर्शन में देखकर, मैं, दानिय्येल, इसके समझने का यत्न करने लगा; इतने में पुरुष का रूप धरे हुए कोई मेरे सम्मुख खड़ा हुआ देख पड़ा। १६ तब मुझे ऊलै नदी के बीच से एक मनुष्य का शब्द सुन पड़ा, जो पुकारकर कहता था, हे जिब्राएल, उस जन को उसकी देखी हुई बातें समझा दे। १७ तब जहां मैं खड़ा था, वहां वह मेरे निकट आया; और उसके आते ही मैं घबरा गया, और मुंह के बल गिर पड़ा। तब उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, उन देखी हुई बातों को समझ ले, क्योंकि उनका अर्थ अन्त ही के समय में फलेगा॥

१८ जब वह मुझ से बातें कर रहा था, तब मैं अपना मुंह भूमि की ओर किए हुए भारी नींद में पड़ा था, परन्तु उस ने मुझे छूकर सीधा खड़ा कर दिया। १९ तब उस ने कहा, क्रोध भड़कने के अन्त के दिनों में जो कुछ होगा, वह मैं तुझे जताता हूं; क्योंकि अन्त के ठहराए हुए समय में वह सब पूरा हो जाएगा। २० जो दो सींगवाला मेढ़ा तू ने देखा है, उसका अर्थ मादियों और फ़ारसियों के राज्य * से है। २१ और वह रोंआर बकरा यूनान का राज्य † है; और उसकी आंखों के बीच जो बड़ा सींग निकला, वह पहिला राजा ठहरा। २२ और वह सींग जो टूट गया और उसकी सन्ती जो चार सींग निकले, इसका अर्थ यह है कि उस जाति से चार राज्य उदय होंगे, परन्तु उनका बल उस पहिले का सा न होगा। २३ और उन राज्यों के अन्त समय में जब अपराधी पूरा बल पकड़ेंगे, तब क्रूर दृष्टिवाला और पहेली बूझनेवाला एक राजा उठेगा। २४ उसका सामर्थ्य बड़ा होगा, परन्तु उस पहिले राजा का सा नहीं; और वह अद्भुत रीति से लोगों को नाश करेगा, और सफल होकर काम करता जाएगा, और सामर्थियों और पवित्र लोगों के समुदाय को नाश करेगा॥ २५ उसकी चतुराई के कारण उसका छल सफल होगा, और वह मन में फूलकर निडर रहते हुए बहुत लोगों को नाश करेगा। वह सब हाकिमों के हाकिम के विरुद्ध भी खड़ा होगा; परन्तु अन्त को वह किसी के हाथ से बिना मार खाए टूट जाएगा। २६ सांझ और सवेरे के

* मूल में—के राजा।
† मूल में—का राजा।

विषय में जो कुछ तू ने देखा और सुना है वह सच है; परन्तु जो कुछ तू ने दर्शन में देखा है उसे बन्द रख, क्योंकि वह बहुत दिनों के बाद फलेगा ॥

२७ तब मुझ दानिय्येल का बल जाता रहा, और मैं कुछ दिन तक बीमार पड़ा रहा; तब मैं उठकर राजा का कामकाज फिर करने लगा; परन्तु जो कुछ मैं ने देखा था उस से मैं चकित रहा, क्योंकि उसका कोई समझानेवाला न था ॥

९ मादी क्षयर्ष का पुत्र दारा, जो कसदियों के देश पर राजा ठहराया गया था, २ उसके राज्य के पहिले वर्ष में, मुझ दानिय्येल ने शास्त्र के द्वारा समझ लिया कि यरूशलेम की उजड़ी हुई दशा यहोवा के उस वचन के अनुसार, जो यिर्मयाह नबी के पास पहुंचा था, कुछ वर्षों के बीतने पर अर्थात् सत्तर वर्ष के बाद पूरी हो जाएगी। ३ तब मैं अपना मुख प्रभु परमेश्वर की ओर करके गिड़गिड़ाहट के साथ प्रार्थना करने लगा, और उपवास कर, टाट पहिन, राख में बैठकर वरदान मांगने लगा। ४ मैं ने अपने परमेश्वर यहोवा से इस प्रकार प्रार्थना की और पाप का अंगीकार किया, हे प्रभु, तू महान् और भययोग्य परमेश्वर है, जो अपने प्रेम रखने और आज्ञा माननेवालों के साथ अपनी वाचा को पूरा करता और करुणा करता रहता है, ५ हम लोगों ने तो पाप, कुटिलता, दुष्टता और बलवा किया है, और तेरी आज्ञाओं और नियमों को तोड़ दिया है। ६ और तेरे जो दास नबी लोग, हमारे राजाओं, हाकिमों, पूर्वजों और सब साधारण लोगों से तेरे नाम से बातें करते थे, उनकी हम ने नहीं सुनी। ७ हे प्रभु, तू धर्मी है, परन्तु हम लोगों को आज के दिन लज्जित होना पड़ता है, अर्थात् यरूशलेम के निवासी आदि सब यहूदी, क्या समीप, क्या दूर के सब इस्राएली लोग, जिन्हें तू ने उस विश्वासघात के कारण जो उन्हों ने तेरा किया था, देश देश में बरबस कर दिया है, उन सभों को लज्जित होना पड़ता है। ८ हे यहोवा हम लोगों ने अपने राजाओं, हाकिमों और पूर्वजों समेत तेरे विरुद्ध पाप किया है, इस कारण हम को लज्जित होना पड़ता है। ९ परन्तु, यद्यपि हम अपने परमेश्वर प्रभु से फिर गए, तौभी तू दयासागर और क्षमा की खानि है। १० हम तो अपने परमेश्वर यहोवा की शिक्षा सुनने पर भी उस पर नहीं चले जो उस ने अपने दास नबियों से हमको सुनाई। ११ वरन सब इस्राएलियों ने तेरी व्यवस्था का उल्लंघन किया, और ऐसे हट गए कि तेरी नहीं सुनी। इस कारण जिस शाप की चर्चा * परमेश्वर के दास मूसा की व्यवस्था में लिखी हुई है, वह शाप हम पर घट † गया, क्योंकि हम ने उसके विरुद्ध पाप किया है। १२ सो उस ने हमारे और न्यायियों के विषय जो वचन कहे थे, उन्हें हम पर यह बड़ी विपत्ति डालकर पूरा किया है; यहां तक कि जैसी विपत्ति यरूशलेम पर पड़ी है, वैसी सारी धरती पर ‡ और कहीं नहीं पड़ी। १३ जैसे मूसा की व्यवस्था में लिखा है, वैसे ही यह सारी विपत्ति हम पर आ पड़ी है, तौभी हम अपने परमेश्वर यहोवा को मनाने के लिये न तो अपने अधर्म के

* मूल में—जिस शाप और किरिया।
† मूल में—उण्डेला।
‡ मूल में—सारे आकाश के तले।

कामों से फिरे, और न तेरी सत्य बातों पर ध्यान दिया। १४ इस कारण यहोवा ने सोच विचारकर* हम पर विपत्ति डाली है; क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा जितने काम करता है उन सभों में धर्मी ठहरता है; परन्तु हम ने उसकी नहीं सुनी। १५ और अब, हे हमारे परमेश्वर, हे प्रभु, तू ने अपनी प्रजा को मिस्र देश से, बली हाथ के द्वारा निकाल लाकर अपना ऐसा बड़ा नाम किया, जो आज तक प्रसिद्ध है, परन्तु हम ने पाप किया है और दुष्टता ही की है। १६ हे प्रभु, हमारे पापों और हमारे पुरखाओं के अधर्म के कामों के कारण यरूशलेम की और तेरी प्रजा की, और हमारे आस पास के सब लोगों की ओर से नामधराई हो रही है; तौभी तू अपने सब धर्म के कामों के कारण अपना क्रोध और जलजलाहट अपने नगर यरूशलेम पर से उतार दे, जो तेरे पवित्र पर्वत पर बसा है। १७ हे हमारे परमेश्वर, अपने दास की प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट सुनकर, अपने उजड़े हुए पवित्रस्थान पर अपने मुख का प्रकाश चमका; हे प्रभु, अपने नाम के निमित्त यह कर। १८ हे मेरे परमेश्वर, कान लगाकर सुन, आंख खोलकर हमारी उजड़ी हुई दशा और उस नगर को भी देख जो तेरा कहलाता है; क्योंकि हम जो तेरे साम्हने गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करते हैं, सो अपने धर्म के कामों पर नहीं, वरन तेरी बड़ी दया ही के कामों पर भरोसा रखकर करते हैं। १९ हे प्रभु, सुन ले; हे प्रभु, पाप क्षमा कर; हे प्रभु, ध्यान देकर जो करना है उसे कर, विलम्ब न कर; हे मेरे परमेश्वर, तेरा नगर और तेरी प्रजा तेरी ही कहलाती है; इसलिये अपने नाम के निमित्त ऐसा ही कर॥

२० इस प्रकार मैं प्रार्थना करता, और अपने और अपने इस्राएली जातिभाइयों के पाप का अंगीकार करता हुआ, अपने परमेश्वर यहोवा के सम्मुख उसके पवित्र पर्वत के लिये गिड़गिड़ाकर बिनती करता ही था, २१ तब वह पुरुष जिब्राएल जिसे मैं ने उस समय देखा जब मुझे पहिले-दर्शन हुआ था, उस ने वेग से उड़ने की आज्ञा पाकर, सांझ के अन्नबलि के समय मुझ को छू लिया; और मुझे समझाकर मेरे साथ बातें करने लगा। २२ उस ने मुझ से कहा, हे दानिय्येल, मैं तुझे बुद्धि और प्रवीणता देने को अभी निकल आया हूं। २३ जब तू गिड़गिड़ाकर बिनती करने लगा, तब ही इसकी आज्ञा निकली, इसलिये मैं तुझे बताने आया हूं, क्योंकि तू अति प्रिय ठहरा है; इसलिये उस विषय को समझ ले और दर्शन की बात का अर्थ बूझ ले॥

२४ तेरे लोगों और तेरे पवित्र नगर के लिये सत्तर सप्ताह ठहराए गए हैं कि उनके अन्त तक अपराध का होना बन्द हो, और पापों का अन्त और अधर्म का प्रायश्चित्त किया जाए, और युगयुग की धार्मिकता प्रगट होए*; और दर्शन की बात पर और भविष्यद्वाणी पर छाप दी जाए, और परमपवित्र का अभिषेक किया जाए। २५ सो यह जान और समझ ले, कि यरूशलेम के फिर बसाने की आज्ञा के निकलने से लेकर अभिषिक्त† प्रधान के समय तक सात सप्ताह बीतेंगे।

---

* मूल में—जाग जागकर।

* मूल में—लाया जाए।

† अथवा मसीह।

फिर बासठ सप्ताहों के बीतने पर चौक और खाई समेत वह नगर कष्ट के समय में फिर बसाया जाएगा। २६ और उन बासठ सप्ताहों के बीतने पर अभिषिक्त * पुरुष काटा जाएगा : और उसके हाथ कुछ न लगेगा; और आनेवाले प्रधान की प्रजा नगर और पवित्रस्थान को नाश तो करेगी। परन्तु उस प्रधान का अन्त ऐसा होगा जैसा बाढ़ से होता है; तौभी उसके अन्त तक लड़ाई होती रहेगी; क्योंकि उसका उजड़ जाना निश्चय ठाना गया है। २७ और वह प्रधान एक सप्ताह के लिये बहुतों के संग दृढ़ वाचा बान्धेगा, परन्तु आधे ही सप्ताह के बीतने पर वह मेलबलि और अन्नबलि को बन्द करेगा; और कंगूरे पर उजाड़नेवाली घृणित वस्तुएं दिखाई देंगी और निश्चय से ठनी हुई बात के समाप्त होने तक परमेश्वर का क्रोध उजाड़नेवाले पर पड़ा रहेगा † ॥

१० फारस देश के राजा कुस्रू के राज्य के तीसरे वर्ष में दानिय्येल पर, जो बेलतशस्सर भी कहलाता है, एक बात प्रगट की गई। और वह बात सच थी कि बड़ा युद्ध होगा। उस ने इस बात को बूझ लिया, और उसको इस देखी हुई बात की समझ आ गई॥

२ उन दिनों में, दानिय्येल, तीन सप्ताह तक शोक करता रहा। ३ उन तीन सप्ताहों के पूरे होने तक, मैं ने न तो स्वादिष्ट भोजन किया और न मांस वा दाखमधु अपने मुंह में रखा, और न अपनी देह में कुछ भी तेल लगाया। ४ फिर पहले महीने के चौबीसवें दिन को जब मैं हिद्देकेल नाम नदी के तीर पर था, ५ तब मैं ने आंखें उठाकर देखा, कि सन का वस्त्र पहिने हुए, और ऊफाज़ देश के कुन्दन से कमर बान्धे हुए एक पुरुष खड़ा है। ६ उसका शरीर फीरोज़ा के समान, उसका मुख बिजली की नाईं, उसकी आंखें जलते हुए दीपक की सी, उसकी बाहें और पांव चमकाए हुए पीतल के से, और उसके वचनों का शब्द भीड़ों के शब्द का सा था। ७ उसको केवल मुझ दानिय्येल ही ने देखा, और मेरे संगी मनुष्यों को उसका कुछ भी दर्शन न हुआ; परन्तु वे बहुत ही थरथराने लगे, और छिपने के लिये भाग गए। ८ तब मैं अकेला रहकर यह अद्भुत * दर्शन देखता रहा, इस से मेरा बल जाता रहा; मैं भयातुर हो गया, और मुझ में कुछ भी बल न रहा। ९ तौभी मैं ने उस पुरुष के वचनों का शब्द सुना, और जब वह मुझे सुन पड़ा, तब मैं मुंह के बल गिर गया और गहरी नींद में भूमि पर औंधे मुंह पड़ा रहा॥

१० फिर किसी ने अपने हाथ से मेरी देह को छुआ, और मुझे उठाकर घुटनों और हथेलियों के बल थरथराते हुए बैठा दिया। ११ तब उस ने मुझ से कहा, हे दानिय्येल, हे अति प्रिय पुरुष, जो वचन मैं तुझ से कहता हूं उसे समझ ले, और सीधा खड़ा हो, क्योंकि मैं अभी तेरे पास भेजा गया हूं। जब उस ने मुझ से यह वचन कहा, तब मैं खड़ा तो हो गया परन्तु थरथराता रहा। १२ फिर उस ने मुझ से कहा, हे दानिय्येल, मत डर, क्योंकि पहिले ही दिन को जब तू ने

---

* अथवा मसीह।

† मूल में—उण्डेला जाएगा।

* मूल में—बड़ा।

समझने-बूझने के लिये मन लगाया और अपने परमेश्वर के साम्हने अपने को दीन किया, उसी दिन तेरे वचन सुने गए, और मैं तेरे वचनों के कारण आ गया हूं। १३ फारस के राज्य का प्रधान इक्कीस दिन तक मेरा साम्हना किए रहा, परन्तु मीकाएल जो मुख्य प्रधानों में से है, वह मेरी सहायता के लिये आया, इसलिये मैं फारस के राजाओं के पास रहा, १४ और अब मैं तुझे समझाने आया हूं, कि अन्त के दिनों में तेरे लोगों की क्या दशा होगी। क्योंकि जो दर्शन तू ने देखा है वह कुछ दिनों के बाद पूरा होगा॥

१५ जब वह पुरुष मुझ से ऐसी बातें कह चुका, तब मैं ने भूमि की ओर मुह किया और चुपका रह गया। १६ तब मनुष्य के सन्तान के समान किसी ने मेरे ओंठ छूए, और मैं मुंह खोलकर बोलने लगा। और जो मेरे साम्हने खड़ा था, उस से मैं ने कहा, हे मेरे प्रभु, दर्शन की बातों के कारण मुझ को पीड़ा सी उठी, और मुझ में कुछ भी बल नहीं रहा। १७ सो प्रभु का दास, अपने प्रभु के साथ क्योंकर बातें कर सके? क्योंकि मेरी देह में न तो कुछ बल रहा, और न कुछ सांस ही रह गई॥

१८ तब मनुष्य के समान किसी ने मुझे छूकर फिर मेरा हियाव बन्धाया। १९ और उस ने कहा, हे अति प्रिय पुरुष, मत डर, तुझे शान्ति मिले; तू दृढ़ हो और तेरा हियाव बन्धा रहे। जब उस ने यह कहा, तब मैं ने हियाव बान्धकर कहा, हे मेरे प्रभु, अब कह, क्योंकि तू ने मेरा हियाव बन्धाया है। २० तब उस ने कहा, क्या तू जानता है कि मैं किस कारण तेरे पास आया हूं? अब मैं फारस के प्रधान से लड़ने को लौटूंगा; और जब मैं निकलूंगा, तब यूनान का प्रधान आएगा। २१ और जो कुछ सच्ची बातों से भरी हुई पुस्तक में लिखा हुआ है, वह मैं तुझे बताता हूं; उन प्रधानों के विरुद्ध, तुम्हारे प्रधान मीकाएल को छोड़, मेरे संग स्थिर रहनेवाला और कोई भी नहीं है॥

११

और दारा नाम मादी राजा के राज्य के पहिले वर्ष में उसको हियाव दिलाने और बल देने के लिये मैं ही खड़ा हो गया॥

२ और अब मैं तुझ को सच्ची बात बताता हूं। देख, फारस के राज्य में अब तीन और राजा उठेंगे; और चौथा राजा उन सभों से अधिक धनी होगा; और जब वह धन के कारण सामर्थी होगा, तब सब लोगों को यूनान के राज्य के विरुद्ध उभारेगा। ३ उसके बाद एक पराक्रमी राजा उठकर अपना राज्य बहुत बढ़ाएगा, और अपनी इच्छा के अनुसार ही काम किया करेगा। ४ और जब वह बड़ा होगा, तब उसका राज्य टूटेगा और चारों दिशाओं में बटकर अलग अलग हो जाएगा; और न तो उसके राज्य की शक्ति ज्यों की त्यों रहेगी और न उसके वंश को कुछ मिलेगा; क्योंकि उसका राज्य उखड़कर, उनकी अपेक्षा और लोगों को प्राप्त होगा॥

५ तब दक्खिन देश का राजा बल पकड़ेगा; परन्तु उसका एक हाकिम उस से अधिक बल पकड़कर प्रभुता करेगा; यहां तक कि उसकी प्रभुता बड़ी हो जाएगी। ६ कई वर्षों के बीतने पर, ये

दोनों आपस में मिलेंगे, और दक्खिन देश के राजा की बेटी उत्तर देश के राजा के पास शान्ति की वाचा बान्धने को आएगी; परन्तु उसका बाहुबल बना न रहेगा, और न वह राजा और न उसका नाम रहेगा; परन्तु वह स्त्री अपने पहुंचानेवालों और अपने पिता और अपने सम्भालनेवालों समेत अलग कर दी जाएगी ।।

७ फिर उसकी जड़ों में से एक डाल उत्पन्न होकर * उसके स्थान में बढ़ेगी; वह सेना समेत उत्तर के राजा के गढ़ में प्रवेश करेगा, और उन से युद्ध करके प्रबल होगा। ८ तब वह उनके देवताओं की ढली हुई मूरतों, और सोने-चान्दी के मनभाऊ पात्रों को छीनकर मिस्र में ले जाएगा; इसके बाद वह कुछ वर्ष तक उत्तर देश के राजा के विरुद्ध हाथ रोके रहेगा। ९ तब वह राजा दक्खिन देश के राजा के देश में आएगा, परन्तु फिर अपने देश में लौट जाएगा ।।

१० उसके पुत्र झगड़ा मचाकर बहुत से बड़े बड़े दल इकट्ठे करेंगे, और उमण्डने-वाली नदी की नाईं आकर देश के बीच होकर जाएंगे, फिर लौटते हुए उसके गढ़ तक झगड़ा मचाते जाएंगे। ११ तब दक्खिन देश का राजा चिढ़ेगा, और निकलकर उत्तर देश के उस राजा से युद्ध करेगा, और वह राजा लड़ने के लिए बड़ी भीड़ इकट्ठी करेगा, परन्तु वह भीड़ उसके हाथ में कर दी जाएगी। १२ उस भीड़ को जीत करके उसका मन फूल उठेगा, और वह लाखों लोगों को गिराएगा, परन्तु वह प्रबल न होगा। १३ क्योंकि उत्तर देश का राजा लौटकर पहिली से भी बड़ी भीड़ इकट्ठी करेगा; और कई दिनों वरन वर्षों के बीतने पर वह निश्चय बड़ी सेना और सम्पत्ति लिए हुए आएगा ।।

१४ उन दिनों में बहुत से लोग दक्खिन देश के राजा के विरुद्ध उठेंगे; वरन तेरे लोगों में से भी बलात्कारी लोग उठ खड़े होंगे, जिस से इस दर्शन की बात पूरी हो जाएगी; परन्तु वे ठोकर खाकर गिरेंगे। १५ तब उत्तर देश का राजा आकर किला बान्धेगा और दृढ़ नगर ले लेगा। और दक्खिन देश के न तो प्रधान * खड़े रहेंगे और न बड़े वीर; क्योंकि किसी के खड़े रहने का बल न रहेगा। १६ तब जो भी उनके विरुद्ध आएगा, वह अपनी इच्छा पूरी करेगा, और वह हाथ में सत्यानाश लिए हुए शिरोमणि देश में भी खड़ा होगा और उसका साम्हना करनेवाला कोई न रहेगा। १७ तब वह अपने राज्य के पूर्ण बल समेत, कई सीधे लोगों को संग लिए हुए आने लगेगा, और अपनी इच्छा के अनुसार काम किया करेगा। और वह उसको एक स्त्री † इसलिये देगा कि उसका राज्य बिगाड़ा जाए; परन्तु वह स्थिर न रहेगी, न उस राजा की होगी। १८ तब वह द्वीपों की ओर मुंह करके बहुतों को ले लेगा; परन्तु एक सेनापति उसके अहंकार को मिटाएगा ‡; वरन उसके अहंकार के अनुकूल उसे बदला देगा। १९ तब वह अपने देश के गढ़ों की ओर मुंह फेरेगा, और वह ठोकर खाकर गिरेगा, और कहीं उसका पता न रहेगा।

---

* मूल में—उस की शाख में से।

* मूल में—बांहें।

† मूल में—स्त्रियों की बेटी।

‡ मूल में—बन्द करेगा।

२० तब उसके स्थान में कोई ऐसा उठेगा, जो शिरोमणि राज्य में अन्धेर करनेवाले को घुमाएगा; परन्तु थोड़े दिन बीतने पर वह क्रोध वा युद्ध किए बिना ही नाश हो जाएगा। २१ उसके स्थान में एक तुच्छ मनुष्य उठेगा, जिसकी राजप्रतिष्ठा पहिले तो न होगी, तौभी वह चैन के समय आकर चिकनी-चुपड़ी बातों के द्वारा राज्य को प्राप्त करेगा। २२ तब उसकी भुजारूपी बाढ़ से लोग, वरन वाचा का प्रधान भी उसके साम्हने से बहकर नाश होंगे। २३ क्योंकि वह उसके संग वाचा बान्धने पर भी छल करेगा, और थोड़े ही लोगों को संग लिए हुए चढ़कर प्रबल होगा। २४ चैन के समय वह प्रान्त के उत्तम से उत्तम स्थानों पर चढ़ाई करेगा; और जो काम न उसके पुरखा और न उसके पुरखाओं के पुरखा करते थे, उसे वह करेगा; और लूटी हुई धन-सम्पत्ति उन में बहुत बांटा करेगा। वह कुछ काल तक दृढ़ नगरों के लेने की कल्पना करता रहेगा। २५ तब वह दक्खिन देश के राजा के विरुद्ध बड़ी सेना लिए हुए अपने बल और हियाव को बढ़ाएगा, और दक्खिन देश का राजा अत्यन्त बड़ी और सामर्थी सेना लिए हुए युद्ध तो करेगा, परन्तु ठहर न सकेगा, क्योंकि लोग उसके विरुद्ध कल्पना करेंगे। २६ उसके भोजन के खानेवाले भी उसको हरवाएंगे; और यद्यपि उसकी सेना बाढ़ की नाईं चढ़ेगी, तौभी उसके बहुत से लोग मर मिटेंगे। २७ तब उन दोनों राजाओं के मन बुराई करने में लगेंगे, यहां तक कि वे एक ही मेज़ पर बैठे हुए आपस में झूठ बोलेंगे, परन्तु इस से कुछ बन न पड़ेगा; क्योंकि इन सब बातों का अन्त नियत ही समय में होनेवाला है। २८ तब उत्तर देश का राजा बड़ी लूट लिए हुए अपने देश को लौटेगा, और उसका मन पवित्र वाचा के विरुद्ध उभरेगा, और वह अपनी इच्छा पूरी करके अपने देश को लौट जाएगा॥

२९ नियत समय पर वह फिर दक्खिन देश की ओर जाएगा, परन्तु उस पिछली बार के समान इस बार उसका वश न चलेगा। ३० क्योंकि कित्तियों के जहाज़ उसके विरुद्ध आएंगे, और वह उदास होकर लौटेगा, और पवित्र वाचा पर चिढ़कर अपनी इच्छा पूरी करेगा। वह लौटकर पवित्र वाचा के तोड़नेवालों की सुधि लेगा। ३१ तब उसके सहायक * खड़े होकर, दृढ़ पवित्र स्थान को अपवित्र करेंगे, और नित्य होमबलि को बन्द करेंगे। और वे उस घृणित वस्तु को खड़ा करेंगे जो उजाड़ करा देती है। ३२ और जो लोग दुष्ट होकर उस वाचा को तोड़ेंगे, उनको वह चिकनी-चुपड़ी बातें कह कहकर भक्तिहीन कर देगा; परन्तु जो लोग अपने परमेश्वर का ज्ञान रखेंगे, वे हियाव बान्धकर बड़े काम करेंगे। ३३ और लोगों के सिखानेवाले बुद्धिमान जन बहुतों को समझाएंगे, तौभी वे बहुत दिन तक तलवार से छिदकर और आग में जलकर, और बंधुए होकर और लुटकर, बड़े दुःख में पड़े रहेंगे। ३४ जब वे दुःख में पड़ेंगे तब थोड़ा बहुत सम्भलेंगे, परन्तु बहुत से लोग चिकनी-चुपड़ी बातें कह कहकर उन से मिल जाएंगे; ३५ और सिखानेवालों में से कितने गिरेंगे, और इसलिये गिरने पाएंगे कि जांचे जाएं,

* मूल में—बांहें।

और निर्मल और उजले किए जाएं। यह दशा अन्त के समय तक बनी रहेगी, क्योंकि इन सब बातों का अन्त नियत समय में होनेवाला है ।।

३६ तब वह राजा अपनी इच्छा के अनुसार काम करेगा, और अपने आप को सारे देवताओं से ऊंचा और बड़ा ठहराएगा; वरन सब देवताओं के परमेश्वर के विरुद्ध भी अनोखी बातें कहेगा। और जब तक परमेश्वर का क्रोध न हो जाए तब तक उस राजा का कार्य सफल होता रहेगा; क्योंकि जो कुछ निश्चय करके ठना हुआ है वह अवश्य ही पूरा होनेवाला है। ३७ वह अपने पुरखाओं के देवताओं की चिन्ता न करेगा, न स्त्रियों की प्रीति की कुछ चिन्ता करेगा और न किसी देवता की; क्योंकि वह अपने आप ही को सभों के ऊपर बड़ा ठहराएगा। ३८ वह अपने राजपद पर स्थिर रहकर दृढ़ गढ़ों ही के देवता का सम्मान करेगा, एक ऐसे देवता का जिसे उसके पुरखा भी न जानते थे, वह सोना, चान्दी, मणि और मनभावनी वस्तुएं चढ़ाकर उसका सम्मान करेगा। ३९ उस बिराने देवता के सहारे से वह अति दृढ़ गढ़ों से लड़ेगा, और जो कोई उसको माने उसे वह बड़ी प्रतिष्ठा देगा। ऐसे लोगों को वह बहुतों के ऊपर प्रभुता देगा, और अपने लाभ के लिए अपने देश की भूमि को बांट देगा ।।

४० अन्त के समय दक्खिन देश का राजा उसको सींग मारने लगेगा; परन्तु उत्तर देश का राजा उस पर बवण्डर की नाईं बहुत से रथ-सवार और जहाज़ लेकर चढ़ाई करेगा; इस रीति से वह बहुत से देशों में फैल जाएगा, और उन में से निकल जाएगा। ४१ वह शिरोमणि देश में भी आएगा। और बहुत से देश उजड़ जाएंगे, परन्तु एदोमी, मोआबी और मुख्य मुख्य अम्मोनी आदि जातियों के देश उसके हाथ से बच जाएंगे। ४२ वह कई देशों पर हाथ बढ़ाएगा और मिस्र देश भी न बचेगा। ४३ वह मिस्र के सोने चान्दी के ख़ज़ानों और सब मनभावनी वस्तुओं का स्वामी हो जाएगा; और लूबी और कूशी लोग भी उसके पीछे हो लेंगे। ४४ उसी समय वह पूरब और उत्तर दिशाओं से समाचार सुनकर घबराएगा, और बड़े क्रोध में आकर बहुतों को सत्यानाश करने के लिए निकलेगा। ४५ और वह दोनों समुद्रों के बीच पवित्र शिरोमणि पर्वत के पास अपना राजकीय तम्बू खड़ा कराएगा; इतना करने पर भी उसका अन्त आ जाएगा, और कोई उसका सहायक न रहेगा ।।

१२ उसी समय मीकाएल नाम बड़ा प्रधान, जो तेरे जाति-भाइयों का पक्ष करने को खड़ा रहता है, वह उठेगा। तब ऐसे संकट का समय होगा, जैसा किसी जाति के उत्पन्न होने के समय से लेकर अब तक कभी न हुआ होगा; परन्तु उस समय तेरे लोगों में से जितनों के नाम परमेश्वर की पुस्तक में लिखे हुए हैं, वे बच निकलेंगे। २ और जो भूमि के नीचे * सोए रहेंगे उन में से बहुत से लोग जाग उठेंगे, कितने तो सदा के जीवन के लिये, और कितने अपनी नामधराई और सदा तक अत्यन्त घिनौने ठहरने के लिये। ३ तब सिखानेवालों की चमक आकाशमण्डल की सी होगी, और जो बहुतों को धर्मी बनाते हैं, वे

* मूल में—धूलि की भूमि में।

सर्वदा तारों की नाईं प्रकाशमान रहेंगे। ४ परन्तु हे दानिय्येल, तू इस पुस्तक पर मुहर करके इन वचनों को अन्त समय तक के लिए बन्द रख। और बहुत लोग पूछ-पाछ और ढूंढ़-ढांढ़ करेंगे, और इस से ज्ञान बढ़ भी जाएगा॥

५ यह सब सुन, मुझ दानिय्येल ने दृष्टि करके क्या देखा कि और दो पुरुष खड़े हैं, एक तो नदी के इस तीर पर, और दूसरा नदी के उस तीर पर है। ६ तब जो पुरुष सन का वस्त्र पहिने हुए नदी के जल के ऊपर था, उस से उन पुरुषों में से एक ने पूछा, इन आश्चर्य कर्मों का अन्त कब तक होगा? ७ तब जो पुरुष सन का वस्त्र पहिने हुए नदी के जल के ऊपर था, उस ने मेरे सुनते दहिना और बांया अपने दोनों हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर, सदा जीवित रहनेवाले की शपथ खाकर कहा, यह दशा साढ़े तीन काल तक ही रहेगी; और जब पवित्र प्रजा की शक्ति टूटते टूटते समाप्त हो जाएगी, तब ये सब बातें पूरी होंगी। ८ यह बात मैं सुनता तो था परन्तु कुछ न समझा। तब मैं ने कहा, हे मेरे प्रभु, इन बातों का अन्तफल क्या होगा? ९ उस ने कहा, हे दानिय्येल चला जा; क्योंकि ये बातें अन्तसमय के लिये बन्द हैं और इन पर मुहर दी हुई है। १० बहुत लोग तो अपने अपने को निर्मल और उजले करेंगे, और स्वच्छ हो जाएंगे; परन्तु दुष्ट लोग दुष्टता ही करते रहेंगे; और दुष्टों में से कोई ये बातें न समझेगा; परन्तु जो बुद्धिमान हैं वे ही समझेंगे। ११ और जब से नित्य होमबलि उठाई जाएगी, और वह घिनौनी वस्तु जो उजाड़ करा देती है, स्थापित की जाएगी, तब से बारह सौ नब्बे दिन बीतेंगे। १२ क्या ही धन्य है वह, जो धीरज धरकर तेरह सौ पैंतीस दिन के अन्त तक भी पहुंचे। १३ अब तू जाकर अन्त तक ठहरा रह; और तू विश्राम करता रहेगा; और उन दिनों के अन्त में तू अपने निज भाग पर खड़ा होगा॥

होशे

१ यहूदा के राजा उज्जियाह, योताम, आहाज, और हिजकिय्याह के दिनों में और इस्राएल के राजा योआश के पुत्र यारोबाम के दिनों में, यहोवा का वचन बेरी के पुत्र होशे के पास पहुंचा॥

२ जब यहोवा ने होशे के द्वारा पहिले पहिल बातें कीं, तब उस ने होशे से यह कहा, जाकर एक वेश्या को अपनी पत्नी बना ले, और उसके कुकर्म के लड़केबालों को अपने लड़केबाले कर ले, क्योंकि यह देश यहोवा के पीछे चलना छोड़कर वेश्या का सा बहुत काम करता है। ३ सो उस ने जाकर दिबलैम की बेटी गोमेर को अपनी पत्नी कर लिया, और वह उस से

गर्भवती हुई और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। ४ तब यहोवा ने उस से कहा, उसका नाम यिज्रेल * रख; क्योंकि थोड़े ही काल में मैं येहू के घराने को यिज्रेल की हत्या का दण्ड दूंगा, और मैं इस्राएल के घराने के राज्य का अन्त कर दूंगा। ५ और उस समय में यिज्रेल की तराई में इस्राएल के धनुष को तोड़ डालूंगा॥

६ और वह स्त्री फिर गर्भवती हुई और उसके एक बेटी उत्पन्न हुई। तब यहोवा ने होशे से कहा, उसका नाम लोरुहामा † रख; क्योंकि मैं इस्राएल के घराने पर फिर कभी दया करके उनका अपराध किसी प्रकार से क्षमा न करूंगा। ७ परन्तु यहूदा के घराने पर मैं दया करूंगा, और उनका उद्धार करूंगा; उनका उद्धार मैं धनुष वा तलवार वा युद्ध वा घोड़ों वा सवारों के द्वारा नहीं, परन्तु उनके परमेश्वर यहोवा के द्वारा करूंगा॥

८ जब उस स्त्री ने लोरुहामा का दूध छुड़ाया, तब वह गर्भवती हुई और उस से एक पुत्र उत्पन्न हुआ। ९ तब यहोवा ने कहा, इसका नाम लोअम्मी ‡ रख; क्योंकि तुम लोग मेरी प्रजा नहीं हो, और न मैं तुम्हारा परमेश्वर रहूंगा॥

१० तौभी इस्राएलियों की गिनती समुद्र की बालू की सी हो जाएगी, जिनका मापना-गिनना अनहोना है; और जिस स्थान में उन से यह कहा जाता था कि तुम मेरी प्रजा नहीं हो, उसी स्थान में वे जीवित परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे। ११ तब यहूदी और इस्राएली दोनों इकट्ठे हो अपना एक प्रधान ठहराकर देश से चले आएंगे; क्योंकि यिज्रेल का दिन प्रसिद्ध * होगा॥

* अर्थात् ईश्वर बोएगा वा तितर-बितर करेगा। यिज्रेल एक नगर का भी नाम है।

† अर्थात् जिस पर दया नहीं हुई।

‡ अर्थात् मेरी प्रजा नहीं।

२ इसलिये तुम लोग अपने भाइयों से अम्मी † और अपनी बहिनों से रुहामा ‡ कहो॥

२ अपनी माता से विवाद करो, विवाद—क्योंकि वह मेरी स्त्री नहीं, और न मैं उसका पति हूं। वह अपने मुंह पर से अपने छिनालपन को और अपनी छातियों के बीच से व्यभिचारों को अलग करे; ३ नहीं तो मैं उसके वस्त्र उतारकर उसको जन्म के दिन के समान नंगी कर दूंगा, और उसको मरुस्थल के समान और मरुभूमि सरीखी बनाऊंगा, और उसे प्यास से मार डालूंगा। ४ उसके लड़केबालों पर भी मैं कुछ दया न करूंगा, क्योंकि वे कुकर्म के लड़के हैं। ५ उनकी माता ने छिनाला किया है; जिसके गर्भ में वे पड़े, उस ने लज्जा के योग्य काम किया है। उस ने कहा, मेरे यार जो मुझे रोटी-पानी, ऊन, सन, तेल और मद्य देते हैं, मैं उन्हीं के पीछे चलूंगी। ६ इसलिए देखो, मैं उसके मार्ग को कांटों से घेरूंगा, और ऐसा बाड़ा खड़ा करूंगा कि वह राह न पा सकेगी। ७ वह अपने यारों के पीछे चलने से भी उन्हें न पाएगी; और उन्हें ढूंढ़ने से भी न पाएगी। तब वह कहेगी, मैं अपने पहिले पति के पास फिर जाऊंगी, क्योंकि मेरी पहिली दशा इस समय की दशा से अच्छी थी। ८ वह यह नहीं जानती थी, कि अन्न, नया दाखमधु और तेल मैं ही उसे देता था,

* मूल में—बड़ा। † अर्थात् मेरी प्रजा।

‡ अर्थात् जिस पर दया हुई है।

और उसके लिए वह चान्दी सोना जिसको वे बाल देवता के काम में ले आते हैं, मैं ही बढ़ाता था। ६ इस कारण मैं अन्न की ऋतु में अपने अन्न को, और नये दाखमधु के होने के समय में अपने नये दाखमधु को हर लूंगा; और अपना ऊन और सन भी जिन से वह अपना तन ढांपती है, मैं छीन लूंगा। १० अब मैं उसके यारों के साम्हने उसके तन को उघाड़ूंगा, और मेरे हाथ से कोई उसे छुड़ा न सकेगा। ११ और मैं उसके पर्व, नये चांद और विश्रामदिन आदि सब नियत समयों के उत्सवों का अन्त कर दूंगा। १२ और मैं उसकी दाखलताओं और अंजीर के वृक्षों को, जिनके विषय वह कहती है कि यह मेरे छिनाले की प्राप्ति है जिसे मेरे यारों ने मुझे दी है, उन्हें ऐसा उजाड़ूंगा कि वे जंगल से हो जाएंगे, और बन-पशु उन्हें चर डालेंगे। १३ और वे दिन जिन में वह बाल देवताओं के लिये धूप जलाती, और नत्थ और हार पहिने अपने यारों के पीछे जाती और मुझको भूले रहती थी, उन दिनों का दण्ड मैं उसे दूंगा, यहोवा की यही वाणी है ॥

१४ इसलिये देखो, मैं उसे मोहित करके जंगल में ले जाऊंगा, और वहां उस से शान्ति की बातें कहूंगा। १५ और वहीं * मैं उसको दाख की बारियां दूंगा, और आकोर † की तराई को आशा का द्वार कर दूंगा और वहां वह मुझ से ऐसी बातें कहेगी जैसी अपनी जवानी के दिनों में अर्थात् मिस्र देश से चले आने के समय कहती थी। १६ और यहोवा की यह वाणी है कि उस समय तू मुझे ईशी ‡ कहेगी और फिर बाली न कहेगी। १७ क्योंकि भविष्य में मैं उसे बाल देवताओं के नाम न लेने दूंगा; और न उनके नाम फिर स्मरण में रहेंगे। १८ और उस समय मैं उनके लिये बन-पशुओं और आकाश के पक्षियों और भूमि पर के रेंगनेवाले जन्तुओं के साथ वाचा बान्धूंगा, और धनुष और तलवार तोड़कर युद्ध को उनके देश से दूर कर दूंगा; और ऐसा करूंगा कि वे लोग निडर सोया करेंगे। १९ और मैं सदा के लिये तुझे अपनी स्त्री करने की प्रतिज्ञा करूंगा, और यह प्रतिज्ञा धर्म, और न्याय, और करुणा, और दया के साथ करूंगा। २० और यह सच्चाई के साथ की जाएगी, और तू यहोवा को जान लेगी ॥

२१ और यहोवा की यह वाणी है कि उस समय मैं आकाश की सुनकर उसको उत्तर दूंगा, और वह पृथ्वी की सुनकर उसे उत्तर देगा; २२ और पृथ्वी अन्न, नये दाखमधु, और ताज़े तेल की सुनकर उनको उत्तर देगी, और वे यिज्रेल को उत्तर देंगे। २३ और मैं अपने लिये उसे देश में बोऊंगा, और लोरुहामा पर दया करूंगा, और लोअम्मी से कहूंगा, तू मेरी प्रजा है, और वह कहेगा, "हे मेरे परमेश्वर" ॥

३ फिर यहोवा ने मुझ से कहा, अब जाकर एक ऐसी स्त्री से प्रीति कर, जो व्यभिचारिणी होने पर भी अपने प्रिय की प्यारी हो; क्योंकि उसी भांति यद्यपि इस्राएली पराए देवताओं की ओर फिरे, और दाख की टिकियों से प्रीति रखते हैं, तौभी यहोवा उन से प्रीति रखता है ॥

* मूल में—वहीं से। † अर्थात् कष्ट। ‡ अर्थात् मेरे पति।

२ तब मैं ने एक स्त्री को चान्दी के पन्द्रह टुकड़े और डेढ़ होमेर जव देकर मोल लिया। ३ और मैं ने उस से कहा, तू बहुत दिन तक मेरे लिये बैठी रहना; और न तो छिनाला करना, और न किसी पुरुष की स्त्री हो जाना; और मैं भी तेरे लिये ऐसा ही रहूंगा। ४ क्योंकि इस्राएली बहुत दिन तक बिना राजा, बिना हाकिम, बिना यज्ञ, बिना लाठ, और बिना एपोद वा गृहदेवताओं के बैठे रहेंगे। ५ उसके बाद वे अपने परमेश्वर यहोवा और अपने राजा दाऊद को फिर ढूंढ़ने लगेंगे, और अन्त के दिनों में यहोवा के पास, और उसकी उत्तम वस्तुओं के लिये थरथराते हुए आएंगे॥

४ हे इस्राएलियो, यहोवा का वचन सुनो; इस देश के निवासियों के साथ यहोवा का मुक़द्दमा है। इस देश में न तो कुछ सच्चाई है, न कुछ करुणा और न कुछ परमेश्वर का ज्ञान ही है। २ यहां शाप देने, झूठ बोलने, वध करने, चुराने, और व्यभिचार करने को छोड़ कुछ नहीं होता; वे व्यवस्था की सीमा को लांघकर कुकर्म करते हैं और खून ही खून होता रहता है*। ३ इस कारण यह देश विलाप करेगा, और मैदान के जीव-जन्तुओं, और आकाश के पक्षियों समेत उसके सब निवासी कुम्हला जाएंगे; और समुद्र की मछलियां भी नाश हो जाएंगी॥

४ देखो, कोई वाद-विवाद न करे, न कोई उलहना दे, क्योंकि तेरे लोग तो याजकों से वाद-विवाद करनेवालों के समान हैं। ५ तू दिनदुपहरी ठोकर खाएगा, और रात को भविष्यद्वक्ता भी तेरे साथ ठोकर खाएगा; और मैं तेरी माता को नाश करूंगा। ६ मेरे ज्ञान के न होने से मेरी प्रजा नाश हो गई; तू ने मेरे ज्ञान को तुच्छ जाना है, इसलिये मैं तुझे अपना याजक रहने के अयोग्य ठहराऊंगा। और इसलिये कि तू ने अपने परमेश्वर की व्यवस्था को तज दिया है, मैं भी तेरे लड़केबालों को छोड़ दूंगा॥

७ जैसे वे बढ़ते गए, वैसे ही वे मेरे विरुद्ध पाप करते गए; मैं उनके विभव के बदले उनका अनादर करूंगा। ८ वे मेरी प्रजा के पापबलियों को खाते हैं, और प्रजा के पापी होने की लालसा करते हैं। ९ इसलिये जो प्रजा की दशा होगी, वही याजक की भी होगी; मैं उनके चालचलन का दण्ड दूंगा, और उनके कामों के अनुकूल उन्हें बदला दूंगा। १० वे खाएंगे तो सही, परन्तु तृप्त न होंगे, और वेश्यागमन तो करेंगे, परन्तु न बढ़ेंगे; क्योंकि उन्हों ने यहोवा की ओर मन लगाना छोड़ दिया है॥

११ वेश्यागमन और दाखमधु और ताज़ा दाखमधु, ये तीनों बुद्धि* को भ्रष्ट करते हैं। १२ मेरी प्रजा के लोग काठ के पुतले से प्रश्न करते हैं, और उनकी छड़ी उनको भविष्य बताती है। क्योंकि छिनाला करानेवाली आत्मा ने उन्हें बहकाया है, और वे अपने परमेश्वर की अधीनता छोड़कर छिनाला करते हैं। १३ बांज, चिनार और छोटे बांज वृक्षों की छाया अच्छी होती है, इसलिये वे उनके नीचे और पहाड़ों की चोटियों पर यज्ञ करते, और टीलों पर धूप जलाते हैं॥

* मूल में—लोहू को पहुँचाता है।

* मूल में—हृदय।

इस कारण तुम्हारी बेटियां छिनाल और तुम्हारी बहुएं व्यभिचारिणी हो गई हैं। १४ जब तुम्हारी बेटियां छिनाला और तुम्हारी बहुएं व्यभिचार करें, तब मैं उनको दण्ड न दूंगा; क्योंकि मनुष्य आप ही वेश्याओं के साथ एकान्त में जाते, और देवदासियों के साथी होकर यज्ञ करते हैं; और जो लोग समझ नहीं रखते, वे नाश हो जाएंगे ।।

१५ हे इस्राएल, यद्यपि तू छिनाला करता है, तौभी यहूदा दोषी न बने। गिलगाल को न आओ; और न बेतावेन को चढ़ जाओ; और यहोवा के जीवन की सौगन्ध कहकर शपथ न खाओ। १६ क्योंकि इस्राएल ने हठीली कलोर की नाईं हठ किया है, क्या अब यहोवा उन्हें भेड़ के बच्चे की नाईं लम्बे चौड़े मैदान में चराएगा ?

१७ एप्रैम मूरतों का संगी हो गया है; इसलिये उसको रहने दे। १८ वे जब दाखमधु पी चुकते हैं तब वेश्यागमन करने में लग जाते हैं; उनके प्रधान लोग निरादर होने से अधिक प्रीति रखते हैं। १९ आंधी उनको अपने पंखों में बान्धकर उड़ा ले जाएगी, और उनके बलिदानों के कारण उनकी आशा टूट जाएगी ।।

५ हे याजको, यह बात सुनो! हे इस्राएल के सारे घराने, ध्यान देकर सुनो! हे राजा के घराने, तुम भी कान लगाओ! क्योंकि तुम पर न्याय किया जाएगा; क्योंकि तुम मिसपा में फन्दा, और ताबोर पर लगाया हुआ जाल बन गए हो। २ उन बिगड़े हुओं ने घोर हत्या की है*, इसलिये मैं उन सभों को ताड़ना दूंगा ।।

---

* मूल में—हत्या में गहिराई की।

३ मैं एप्रैम का भेद जानता हूं, और इस्राएल की दशा मुझ से छिपी नहीं है; हे एप्रैम, तू ने छिनाला किया, और इस्राएल अशुद्ध हुआ है। ४ उनके काम उन्हें अपने परमेश्वर की ओर फिरने नहीं देते, क्योंकि छिनाला करनेवाली आत्मा उन में रहती है; और वे यहोवा को नहीं जानते हैं ।।

५ इस्राएल का गर्व उसी के विरुद्ध साक्षी देता है, और इस्राएल और एप्रैम अपने अधर्म के कारण ठोकर खाएंगे, और यहूदा भी उनके संग ठोकर खाएगा। ६ वे अपनी भेड़-बकरियां और गाय-बैल लेकर यहोवा को ढूंढ़ने चलेंगे, परन्तु वह उनको न मिलेगा; क्योंकि वह उन से दूर हो गया है। ७ वे व्यभिचार के लड़के जने हैं; इस से उन्हों ने यहोवा का विश्वासघात किया है। इस कारण अब चांद उनका और उनके भागों के नाश का कारण होगा ।।

८ गिबा में नरसिंगा, और रामा में तुरही फूंको। बेतावेन में ललकार कर कहो; हे बिन्यामीन, अपने पीछे देख! ९ न्याय के दिन में एप्रैम उजाड़ हो जाएगा; जिस बात का होना निश्चय है, मैं ने उसी का सन्देश इस्राएल के सब गोत्रों को दिया है। १० यहूदा के हाकिम उनके समान हुए हैं जो सिवाना बढ़ा लेते हैं; मैं उन पर अपनी जलजलाहट जल की नाईं उण्डेलूंगा। ११ एप्रैम पर अन्धेर किया गया है, वह मुक़द्दमा हार गया है; क्योंकि वह जी लगाकर उस आज्ञा पर चला। १२ इसलिये मैं एप्रैम के लिये कीड़े के समान और यहूदा के घराने के लिये सड़ाहट के समान हूंगा ।।

१३ जब एप्रैम ने अपना रोग, और यहूदा ने अपना घाव देखा, तब एप्रैम

अश्शूर के पास गया, और यारेब * राजा को कहला भेजा। परन्तु न वह तुम्हें चंगा कर सकता और न तुम्हारा घाव अच्छा कर सकता है। १४ क्योंकि मैं एप्रैम के लिये सिंह, और यहूदा के घराने के लिये जवान सिंह बनूंगा। मैं आप ही उन्हें फाड़कर ले जाऊंगा; जब मैं उठा ले जाऊंगा, तब मेरे पंजे से कोई न छुड़ा सकेगा॥

१५ जब तक वे अपने को अपराधी मानकर मेरे दर्शन के खोजी न होंगे तब तक मैं अपने स्थान को लौटूंगा, और जब वे संकट में पड़ेंगे, तब जी लगाकर मुझे ढूंढ़ने लगेंगे॥

६ चलो, हम यहोवा की ओर फिरें; क्योंकि उसी ने फाड़ा, और वही चंगा भी करेगा; उसी ने मारा, और वही हमारे घावों पर पट्टी बान्धेगा। २ दो दिन के बाद वह हम को जिलाएगा; और तीसरे दिन वह हमको उठाकर खड़ा करेगा; तब हम उसके सम्मुख जीवित रहेंगे। ३ आओ, हम ज्ञान ढूंढ़ें, वरन यहोवा का ज्ञान प्राप्त करने के लिये यत्न भी करें †; क्योंकि यहोवा का प्रगट होना भोर का सा निश्चित है; वह वर्षा की नाईं हमारे ऊपर आएगा, वरन बरसात के अन्त की वर्षा के समान जिस से भूमि सिंचती है॥

४ हे एप्रैम, मैं तुझ से क्या करूं? हे यहूदा, मैं तुझ से क्या करूं? तुम्हारा स्नेह तो भोर के मेघ के समान, और सवेरे उड़ जानेवाली ओस के समान है। ५ इस कारण मैं ने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा मानो उन पर कुल्हाड़ी चलाकर उन्हें काट डाला, और अपने वचनों से उनको घात किया, और मेरा न्याय प्रकाश के समान चमकता है *। ६ क्योंकि मैं बलिदान से नहीं, स्थिर प्रेम ही से प्रसन्न होता हूं, और होमबलियों से अधिक यह चाहता हूं कि लोग परमेश्वर का ज्ञान रखें॥

७ परन्तु उन लोगों ने आदम की नाईं वाचा को तोड़ दिया; उन्हों ने वहां मुझ से विश्वासघात किया है। ८ गिलाद नाम गढ़ी तो अनर्थकारियों से भरी है, वह खून से भरी हुई है। ९ जैसे डाकुओं के दल किसी की घात में बैठते हैं, वैसे ही याजकों का दल शकेम के मार्ग में बध करता है, वरन उन्हों ने महापाप भी किया है। १० इस्राएल के घराने में मैं ने रोंए खड़े होने का कारण देखा है; उस में एप्रैम का छिनाला और इस्राएल की अशुद्धता पाई जाती है॥

११ और हे यहूदा, जब मैं अपनी प्रजा को बंधुआई से लौटा ले आऊंगा, उस समय के लिये तेरे निमित्त भी बदला ठहराया हुआ है॥

७ जब मैं इस्राएल को चंगा करता हूं तब एप्रैम का अधर्म और शोमरोन की बुराइयां प्रगट हो जाती हैं; वे छल से काम करते हैं, चोर भीतर घुसता, और डाकुओं का दल बाहर छीन लेता है। २ तौभी वे नहीं सोचते कि यहोवा हमारी सारी बुराई को स्मरण रखता है। इसलिये अब वे अपने कामों के जाल में फसेंगे, क्योंकि उनके कार्य मेरी दृष्टि में बने हैं। ३ वे राजा को बुराई करने से,

* अर्थात् झगड़नेवाले।
† मूल में—पीछा भी करें।

* मूल में—निकलनेवाले हैं।

और हाकिमों को झूठ बोलने से आनन्दित करते हैं। ४ वे सब के सब व्यभिचारी हैं; वे उस तन्दूर के समान हैं जिसको पकानेवाला गर्म करता है, पर जब तक आटा गूंधा नहीं जाता और खमीर से फूल नहीं चुकता, तब तक वह आग को नहीं उसकाता। ५ हमारे राजा के जन्म दिन में हाकिम दाखमधु पीकर चूर हुए; उस ने ठट्ठा करनेवालों से अपना हाथ मिलाया। ६ जब तक वे घात लगाए रहते हैं, तब तक वे अपना मन तन्दूर की नाईं तैयार किए रहते हैं; उनका पकानेवाला रात भर सोता रहता है; वह भोर को तन्दूर की धधकती लौ के समान लाल हो जाता है। ७ वे सब के सब तन्दूर की नाईं धधकते, और अपने न्यायियों को भस्म करते हैं। उनके सब राजा मारे गए हैं; और उन में से कोई मेरी दोहाई नहीं देता है॥

८ एप्रैम देश देश के लोगों से मिला-जुला रहता है; एप्रैम ऐसी चपाती ठहरा है जो उलटी न गई हो। ९ परदेशियों ने उसका बल तोड़ डाला *, परन्तु वह इसे नहीं जानता; उसके सिर में कहीं कहीं पके बाल हैं, परन्तु वह इसे भी नहीं जानता। १० इस्राएल का गर्व उसी के विरुद्ध साक्षी देता है; इन सब बातों के रहते हुए भी वे अपने परमेश्वर यहोवा की ओर नहीं फिरे, और न उसको ढूंढ़ा है॥

११ एप्रैम एक भोली पण्डुकी के समान हो गया है जिस के कुछ बुद्धि नहीं; वे मिस्रियों की दोहाई देते, और अश्शूर को चले जाते हैं। १२ जब वे जाएं, तब उनके ऊपर मैं अपना जाल फैलाऊंगा; मैं उन्हें ऐसा खींच लूंगा जैसे आकाश के पक्षी खींचे जाते हैं; मैं उनको ऐसी ताड़ना दूंगा, जैसी उनकी मण्डली सुन चुकी है। १३ उन पर हाय, क्योंकि वे मेरे पास से भटक गए! उनका सत्यानाश होए, क्योंकि उन्हों ने मुझ से बलवा किया है! मैं तो उन्हें छुड़ाता रहा, परन्तु वे मुझ से झूठ बोलते आए हैं॥

१४ वे मन से मेरी दोहाई नहीं देते, परन्तु अपने बिछौने पर पड़े हुए हाय, हाय, करते हैं; वे अन्न और नये दाखमधु पाने के लिये भीड़ लगाते, और मुझ से बलवा करते हैं। १५ मैं उनको शिक्षा देता रहा और उनकी भुजाओं को बलवन्त करता आया हूं, तौभी वे मेरे विरुद्ध बुरी कल्पना करते हैं। १६ वे फिरते तो हैं, परन्तु परमप्रधान की ओर नहीं; वे धोखा देनेवाले धनुष के समान हैं; इसलिये उनके हाकिम अपनी क्रोधभरी बातों के कारण तलवार से मारे जाएंगे। मिस्र देश में उनके ठट्ठों में उड़ाए जाने का यही कारण होगा॥

८ अपने मुंह में नरसिंगा लगा। वह उकाब की नाईं यहोवा के घर पर झपटेगा, क्योंकि मेरे घर के लोगों ने मेरी वाचा तोड़ी, और मेरी व्यवस्था का उल्लंघन किया है। २ वे मुझ से पुकारकर कहेंगे, हे हमारे परमेश्वर, हम इस्राएली लोग तुझे जानते हैं। ३ परन्तु इस्राएल ने भलाई को मन से उतार दिया है; शत्रु उसके पीछे पड़ेगा॥

४ वे राजाओं को ठहराते रहे, परन्तु मेरी इच्छा से नहीं। वे हाकिमों को भी ठहराते रहे, परन्तु मेरे अनजाने

* मूल में—खा लिया।

में। उन्हों ने अपना सोना-चान्दी लेकर मूरतें बना लीं जिस से वे ही नाश हो जाएं। ५ हे शोमरोन, उस ने तेरे बछड़े को मन से उतार दिया है, मेरा क्रोध उन पर भड़का है। वे निर्दोष होने में कब तक विलम्ब करेंगे? ६ यह इस्राएल से हुआ है॥

एक कारीगर ने उसे बनाया; वह परमेश्वर नहीं है। इस कारण शोमरोन का वह बछड़ा टुकड़े टुकड़े हो जाएगा॥

७ वे वायु बोते हैं, और वे बवण्डर लवेंगे। उनके लिये कुछ खेत रहेगा नहीं, न उनकी उपज से कुछ आटा होगा; और यदि हो भी तो परदेशी उसको खा डालेंगे। ८ इस्राएल निगला गया; अब वे अन्यजातियों में ऐसे निकम्मे ठहरे जैसे तुच्छ बरतन ठहरता है। ९ क्योंकि वे अश्शूर को ऐसे चले गए, जैसा जंगली गदहा झुण्ड से बिछुड़ के रहता है; एप्रैम ने यारों को मज़दूरी पर रखा है। १० यद्यपि वे अन्यजातियों में से मज़दूर बनाकर रखें, तौभी मैं उनको इकट्ठा करूंगा। और वे हाकिमों और राजा के बोझ के कारण घटने लगेंगे॥

११ एप्रैम ने पाप करने को बहुत सी वेदियां बनाई हैं, वे ही वेदियां उसके पापी ठहरने का कारण भी ठहरीं। १२ मैं तो उनके लिये अपनी व्यवस्था की लाखों बातें लिखता आया हूं, परन्तु वे उन्हें पराया समझते हैं। १३ वे मेरे लिये बलिदान तो करते हैं, और पशु बलि भी करते हैं, परन्तु उसका फल मांस ही है; वे आप ही उसे खाते हैं; परन्तु यहोवा उन से प्रसन्न नहीं होता। अब वह उनके अधर्म की सुधि लेकर उनके पाप का दण्ड देगा; वे मिस्र में लौट जाएंगे। १४ क्योंकि इस्राएल ने अपने कर्त्ता को बिसरा कर महल बनाए, और यहूदा ने बहुत से गढ़वाले नगरों को बसाया है; परन्तु मैं उनके नगरों में आग लगाऊंगा, और उस से उनके गढ़ भस्म हो जाएंगे॥

९ हे इस्राएल, तू देश देश के लोगों की नाईं आनन्द में मगन मत हो! क्योंकि तू अपने परमेश्वर को छोड़कर वेश्या बनी। तू ने अन्न के हर एक खलिहान पर छिनाले की कमाई आनन्द से ली है। २ वे न तो खलिहान के अन्न से तृप्त होंगे, और न कुण्ड के दाखमधु से; और नये दाखमधु के घटने से वे धोखा खाएंगे। ३ वे यहोवा के देश में रहने न पाएंगे; परन्तु एप्रैम मिस्र में लौट जाएगा, और वे अश्शूर में अशुद्ध वस्तुएं खाएंगे॥

४ वे यहोवा के लिये दाखमधु का अर्घ न देंगे, और न उनके बलिदान उसको भाएंगे। उनकी रोटी शोक करनेवालों का सा भोजन ठहरेगी; जितने उसे खाएंगे सब अशुद्ध हो जाएंगे; क्योंकि उनकी भोजनवस्तु उनकी भूख बुझाने ही के लिये होगी; वह यहोवा के भवन में न आ सकेगी॥

५ नियत समय के पर्व और यहोवा के उत्सव के दिन तुम क्या करोगे? ६ देखो, वे सत्यानाश होने के डर के मारे चले गए; परन्तु वहां मर जाएंगे और मिस्री उनकी लोथें इकट्ठी करेंगे; और मोप के निवासी उनको मिट्टी देंगे। उनकी मनभावनी चान्दी की वस्तुएं बिच्छू पेड़ों के बीच में * पड़ेंगी, और उनके तम्बुओं में झड़बेरी उगेगी॥

---

* मूल में—के अधिकार में।

७ दण्ड के दिन आए हैं; बदला लेने के दिन आए हैं; और इस्राएल यह जान लेगा। उनके बहुत से अधर्म और बड़े द्वेष के कारण भविष्यद्वक्ता तो मूर्ख, और जिस पुरुष पर आत्मा उतरता है, वह बावला ठहरेगा॥

८ एप्रैम मेरे परमेश्वर की ओर से पहरुआ है; भविष्यद्वक्ता सब मार्गों में बहेलिये का फन्दा है, और वह अपने परमेश्वर के घर में बैरी हुआ है। ९ वे गिबा के दिनों की भांति अत्यन्त बिगड़े * हैं; सो वह उनके अधर्म की सुधि लेकर उनके पाप का दण्ड देगा॥

१० मैं ने इस्राएल को ऐसा पाया जैसे कोई जंगल में दाख पाए; और तुम्हारे पुरखाओं पर ऐसे दृष्टि की जैसे अंजीर के पहिले फलों पर दृष्टि की जाती है। परन्तु उन्हों ने पोर के बाल के पास जाकर अपने तईं को लज्जा का कारण होने के लिये अर्पण कर दिया, और जिस पर मोहित हो गए थे, वे उसी के समान घिनौने हो गए। ११ एप्रैम का विभव पक्षी की नाईं उड़ जाएगा; न तो किसी का जन्म होगा, न किसी को गर्भ रहेगा, और न कोई स्त्री गर्भवती होगी! १२ चाहे वे अपने लड़केबालों का पालन-पोषण कर बड़े भी करें, तौभी मैं उन्हें यहां तक निर्वंश करूंगा कि कोई भी न बचेगा। जब मैं उन से दूर हो जाऊंगा, तब उन पर हाय! १३ जैसा मैं ने सोर को देखा, वैसा एप्रैम को भी मनभाऊ स्थान में बसा हुआ देखा; तौभी उसे अपने लड़केबालों को घातक के साम्हने ले जाना पड़ेगा। १४ हे यहोवा, उनको दण्ड दे! तू क्या देगा? यह, कि उनकी स्त्रियों के गर्भ गिर जाएं, और स्तन सूखे रहें॥

१५ उनकी सारी बुराई गिल्गाल में है; वहीं मैं ने उन से घृणा की। उनके बुरे कामों के कारण मैं उनको अपने घर से निकाल दूंगा। और उन से फिर प्रीति न रखूंगा, क्योंकि उनके सब हाकिम बलवा करनेवाले हैं॥

१६ एप्रैम मारा हुआ है, उनकी जड़ सूख गई, उन में फल न लगेगा। और चाहे उनकी स्त्रियां बच्चे भी जनें तौभी मैं उनके जन्मे हुए दुलारों को मार डालूंगा॥

१७ मेरा परमेश्वर उनको निकम्मा ठहराएगा, क्योंकि उन्हों ने उसकी नहीं सुनी। वे अन्यजातियों के बीच मारे मारे फिरेंगे॥

१० इस्राएल एक लहलहाती हुई दाखलता सी है, जिस में बहुत से फल भी लगे, परन्तु ज्यों ज्यों उसके फल बढ़े, त्यों त्यों उस ने अधिक वेदियां बनाईं; जैसे जैसे उसकी भूमि सुधरी, वैसे ही वे सुन्दर लाटें बनाते गये। २ उनका मन बटा हुआ है; अब वे दोषी ठहरेंगे। वह उनकी वेदियों को तोड़ डालेगा, और उनकी लाटों को टुकड़े टुकड़े करेगा। ३ अब वे कहेंगे, हमारे कोई राजा नहीं है, क्योंकि हम ने यहोवा का भय नहीं माना; सो राजा हमारा क्या कर सकता है? ४ वे बातें बनाते और झूठी शपथ खाकर वाचा बान्धते हैं; इस कारण खेत की रेघारियों में धतूरे की नाईं दण्ड फूले फलेगा। ५ सामरिया के निवासी बेतावेन के बछड़े * के लिये डरते रहेंगे,

* मूल में—गहिराई करके बिगड़े।

* मूल में—बछियों के कारण।

और उसके लोग उसके लिये विलाप करेंगे; और उसके पुजारी जो उसके कारण मगन होते थे उसके प्रताप के लिये इस कारण विलाप करेंगे क्योंकि वह उन में से उठ गया है। ६ वह यारेब * राजा की भेंट ठहरने के लिये अश्शूर देश में पहुंचाया जाएगा। एप्रैम लज्जित होगा, और इस्राएल भी अपनी युक्ति से लजाएगा॥

७ सामरिया अपने राजा समेत जल के बुलबुले की नाईं मिट जाएगा। ८ और आवेन के ऊंचे स्थान जो इस्राएल का पाप हैं, वे नाश होंगे। उनकी वेदियों पर झड़बेरी, पेड़ और ऊंटकटारे उगेंगे; और उस समय लोग पहाड़ों से कहने लगेंगे, हम को छिपा लो, और टीलों से कि हम पर गिर पड़ो॥

६ हे इस्राएल, तू गिबा के दिनों से पाप करता आया है; वे उसी में बने रहें; क्या वे गिबा में कुटिल मनुष्यों के संग लड़ाई में न फंसें? १० जब मेरी इच्छा होगी तब मैं उन्हें ताड़ना दूंगा, और देश देश के लोग उनके विरुद्ध इकट्ठे हो जाएंगे; क्योंकि वे अपने दोनों अधर्मों में फंसे हुए हैं॥

११ एप्रैम सीखी हुई बछिया है, जो अन्न दांवने से प्रसन्न होती है, परन्तु मैं ने उसकी सुन्दर गर्दन पर जुआ रखा है; मैं एप्रैम पर सवार चढ़ाऊंगा; यहूदा हल, और याकूब हेंगा खींचेगा। १२ अपने लिये धर्म का बीज बोओ, तब करुणा के अनुसार खेत काटने पाओगे; अपनी पड़ती भूमि को जोतो; देखो, अभी यहोवा के पीछे हो लेने का समय है, कि वह आए और तुम्हारे ऊपर उद्धार बरसाए॥

* अर्थात् झगड़नेवाले।

१३ तुम ने दुष्टता के लिये हल जोता और अन्याय का खेत काटा है; और तुम ने धोखे का फल खाया है। और यह इसलिये हुआ क्योंकि तुम ने अपने कुव्यवहार पर, और अपने बहुत से वीरों पर भरोसा रखा था। १४ इस कारण तुम्हारे लोगों में हुल्लड़ उठेगा, और तुम्हारे सब गढ़ ऐसे नाश किए जाएंगे जैसा बेतर्बेल नगर युद्ध के समय शल्मन के द्वारा नाश किया गया; उस समय माताएं अपने बच्चों समेत पटक दी गई थीं। १५ तुम्हारी अत्यन्त बुराई के कारण बेतेल से भी इसी प्रकार का व्यवहार किया जायेगा। भोर होते ही इस्राएल का राजा पूरी रीति से मिट जाएगा॥

११ जब इस्राएल बालक था, तब मैं ने उस से प्रेम किया, और अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया। २ परन्तु जितना वे उनको बुलाते थे, उतना ही वे भागे जाते थे; वे बाल देवताओं के लिये बलिदान करते, और खुदी हुई मूरतों के लिये धूप जलाते गए॥

३ मैं ही एप्रैम को पांव-पांव चलाता था, और उनको गोद में लिए फिरता था; परन्तु वे न जानते थे कि उनका चंगा करनेवाला मैं हूं। ४ मैं उनको मनुष्य जानकर प्रेम की डोरी से खींचता था, और जैसा कोई बैल के गले की जोत खोलकर उसके साम्हने आहार रख दे, वैसा ही मैं ने उन से किया॥

५ वह मिस्र देश में लौटने न पाएगा; अश्शूर ही उसका राजा होगा, क्योंकि उस ने मेरी ओर फिरने से इनकार कर दिया है। ६ तलवार उनके नगरों में चलेगी, और उनके बेंड़ों को पूरा नाश

करेगी; और यह उनकी युक्तियों के कारण होगा। ७ मेरी प्रजा मुझ से फिर जाने में लगी रहती है; यद्यपि वे उनको परमप्रधान की ओर बुलाते हैं, तौभी उन में से कोई भी मेरी महिमा नहीं करता ।।

८ हे एप्रैम, मैं तुझे क्योंकर छोड़ दूं? हे इस्राएल, मैं क्योंकर तुझे शत्रु के वश में कर दूं? मैं क्योंकर तुझे अदमा की नाईं छोड़ दूं, और सबोयीम के समान कर दूं? मेरा हृदय तो उलट पुलट हो गया, मेरा मन स्नेह के मारे पिघल गया है*। ९ मैं अपने क्रोध को भड़कने न दूंगा, और न मैं फिर एप्रैम को नाश करूंगा; क्योंकि मैं मनुष्य नहीं परमेश्वर हूं, मैं तेरे बीच में रहनेवाला पवित्र हूं; मैं क्रोध करके न आऊंगा ।।

१० वे यहोवा के पीछे पीछे चलेंगे; वह तो सिंह की नाईं गरजेगा; और तेरे लड़के पश्चिम दिशा से थरथराते हुए आएंगे। ११ वे मिस्र से चिड़ियों की नाईं और अश्शूर के देश से पण्डुकी की भांति थरथराते हुए आएंगे; और मैं उनको उन्हीं के घरों में बसा दूंगा, यहोवा की यही वाणी है ।।

१२ एप्रैम ने मिथ्या से, और इस्राएल के घराने ने छल से मुझे घेर रखा है; और यहूदा अब तक पवित्र और विश्वास-योग्य परमेश्वर की ओर चंचल बना रहता है ।।

१२ एप्रैम पानी पीटता और पुरवाई का पीछा करता रहता है; वह लगातार झूठ और उत्पात को बढ़ाता रहता है; वे अश्शूर के साथ वाचा बान्धते और मिस्र में तेल भेजते हैं ।।

२ यहूदा के साथ भी यहोवा का मुक़द्दमा है, और वह याकूब को उसके चालचलन के अनुसार दण्ड देगा; उसके कामों के अनुसार वह उसको बदला देगा। ३ अपनी माता की कोख ही में उस ने अपने भाई को अड़ंगा मारा, और बड़ा होकर वह परमेश्वर के साथ लड़ा। ४ वह दूत से लड़ा, और जीत भी गया, वह रोया और उस से गिड़गिड़ाकर बिनती की। बेतेल में वह उसको मिला, और वहीं उस ने हम से बातें कीं। ५ यहोवा, सेनाओं का परमेश्वर, जिसका स्मरण यहोवा नाम से होता है। ६ इसलिये तू अपने परमेश्वर की ओर फिर; कृपा और न्याय के काम करता रह, और अपने परमेश्वर की बाट निरन्तर जोहता रह ।।

७ वह ब्योपारी है, और उसके हाथ में छल का तराजू है; अन्धेर करना ही उसको भाता है। ८ एप्रैम कहता है, मैं धनी हो गया, मैं ने सम्पत्ति प्राप्त की है; मेरे किसी काम में ऐसा अधर्म नहीं पाया गया जिस से पाप लगे। ९ मैं यहोवा, मिस्र देश ही से तेरा परमेश्वर हूं; मैं फिर तुझे तम्बुओं में ऐसा बसाऊंगा जैसा नियत पर्व के दिनों में हुआ करता है ।।

१० मैं ने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कीं, और बार बार दर्शन देता रहा; और भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा दृष्टान्त कहता आया हूं। ११ क्या गिलाद कुकर्मी नहीं? वे पूरे छली हो गए हैं। गिल्गाल में बैल बलि किए जाते हैं, वरन उनकी वेदियां उन ढेरों के समान हैं जो खेत की रेघारियों के पास हों। १२ याकूब अराम के मैदान में भाग गया था; वहां इस्राएल ने एक

* मूल में—मेरे पछतावे एक संग उबले हैं।

पत्नी के लिये सेवा की, और पत्नी के लिये वह चरवाही करता था। १३ एक भविष्यद्वक्ता के द्वारा यहोवा इस्राएल को मिस्र से निकाल ले आया, और भविष्यद्वक्ता ही के द्वारा उसकी रक्षा हुई। १४ एप्रैम ने अत्यन्त रिस दिलाई है; इसलिये उसका किया हुआ खून उसी के ऊपर बना रहेगा, और उस ने अपने परमेश्वर के नाम में जो बट्टा लगाया है, वह उसी को लौटाया जाएगा ॥

१३ जब एप्रैम बोलता था, तब लोग कांपते थे; और वह इस्राएल में बड़ा था; परन्तु जब वह बाल के कारण दोषी हो गया, तब वह मर गया। २ और अब वे लोग पाप पर पाप बढ़ाते जाते हैं, और अपनी बुद्धि से चान्दी ढालकर ऐसी मूरतें बनाई हैं जो कारीगरों ही से बनीं। उन्हीं के विषय लोग कहते हैं, जो नरमेध करें, वे बछड़ों को चूमें! ३ इस कारण वे भोर के मेघ, तड़के सूख जानेवाली ओस, खलिहान पर से आंधी के मारे उड़नेवाली भूसी, या चिमनी से निकलते हुए धूएं के समान होंगे ॥

४ मिस्र देश ही से मैं यहोवा, तेरा परमेश्वर हूं; तू मुझे छोड़ किसी को परमेश्वर करके न जानना; क्योंकि मेरे सिवा कोई तेरा उद्धारकर्त्ता नहीं है। ५ मैं ने उस समय तुझ पर मन लगाया जब तू जंगल में वरन अत्यन्त सूखे देश में था। ६ परन्तु जब इस्राएली चराए जाते थे और वे तृप्त हो गए, तब तृप्त होने पर उनका मन घमण्ड से भर गया; इस कारण वे मुझ को भूल गए। ७ सो मैं उनके लिये सिंह सा बना हूं; मैं चीते की नाईं उनके मार्ग में घात लगाए रहूंगा। ८ मैं बच्चे छीनी हुई रीछनी के समान बनकर उनको मिलूंगा, और उनके हृदय की झिल्ली को फाड़ूंगा, और सिंह की नाईं उनको वहीं खा डालूंगा, जैसे बन-पशु उनको फाड़ डाले ॥

९ हे इस्राएल, तेरे विनाश का कारण यह है, कि तू मेरा अर्थात् अपने सहायक का विरोधी है। १० अब तेरा राजा कहां रहा कि तेरे सब नगरों में वह तुझे बचाए? और तेरे न्यायी कहां रहे, जिनके विषय में तू ने कहा था कि मेरे लिये राजा और हाकिम ठहरा दे? ११ मैं ने क्रोध में आकर तेरे लिये राजा बनाये, और फिर जलजलाहट में आकर उनको हटा भी दिया। १२ एप्रैम का अधर्म गठा हुआ है, उसका पाप संचय किया हुआ है। १३ उसको जच्चा की सी पीड़ाएं उठेंगी, परन्तु वह निर्बुद्धि लड़का है जो जन्म के समय* ठीक से नहीं आता ॥

१४ मैं उसको अधोलोक के वश से छुड़ा लूंगा और मृत्यु से उसको छुटकारा दूंगा। हे मृत्यु, तेरी मारने की शक्ति† कहां रही? हे अधोलोक, तेरी नाश करने की शक्ति कहां रही? मैं फिर कभी नहीं पछताऊंगा ॥

१५ चाहे वह अपने भाइयों से अधिक फूले-फले, तौभी पुरवाई उस पर चलेगी, और यहोवा की ओर से मरुस्थल से आएगी, और उसका कुण्ड सूखेगा; और उसका सोता निर्जल हो जाएगा। उसकी रखी हुई सब मनभावनी वस्तुएं वह लूट ले जाएगा। १६ सामरिया दोषी

---

* मूल में—लड़कों के टूट पड़ने के स्थान में।

† मूल में—तेरी मरियां।

ठहरेगा, क्योंकि उस ने अपने परमेश्वर से बलवा किया है; वे तलवार से मारे जाएंगे, उनके बच्चे पटके जाएंगे, और उनकी गर्भवती स्त्रियां चीर डाली जाएंगी ॥

१४ हे इस्राएल, अपने परमेश्वर यहोवा के पास लौट आ, क्योंकि तू ने अपने अधर्म के कारण ठोकर खाई है। २ बातें सीखकर * और यहोवा की ओर फिरकर, उस से कह, सब अधर्म दूर कर; अनुग्रह से हम को ग्रहण कर; तब हम धन्यवाद रूपी बलि चढ़ाएंगे †। ३ अश्शूर हमारा उद्धार न करेगा, हम घोड़ों पर सवार न होंगे; और न हम फिर अपनी बनाई हुई वस्तुओं से कहेंगे, तुम हमारे ईश्वर हो; क्योंकि अनाथ पर तू ही दया करता है ॥

४ मैं उनकी भटक जाने की आदत को दूर करूंगा; मैं सेंतमेंत उन से प्रेम करूंगा, क्योंकि मेरा क्रोध उन पर से उतर गया है। ५ मैं इस्राएल के लिये ओस के समान हूंगा; वह सोसन की नाईं फूले-फलेगा, और लबानोन की नाईं जड़ फैलाएगा। ६ उसकी जड़ से पौधे फूटकर निकलेंगे; उसकी शोभा जलपाई की सी, और उसकी सुगन्ध लबानोन की सी होगी। ७ जो उसकी छाया में बैठेंगे, वे अन्न की नाईं बढ़ेंगे, वे दाखलता की नाईं फूले-फलेंगे; और उसकी कीर्त्ति लबानोन के दाखमधु की सी होगी ॥

८ एप्रैम कहेगा, मूरतों से अब मेरा और क्या काम? मैं उसकी सुनकर उस पर दृष्टि बनाए रखूंगा। मैं हरे सनौवर सा हूं; मुझी से तू फल पाया करेगा ॥

९ जो बुद्धिमान हो, वही इन बातों को समझेगा; जो प्रवीण हो, वही इन्हें बूझ सकेगा; क्योंकि यहोवा के मार्ग सीधे हैं, और धर्मी उन में चलते रहेंगे, परन्तु अपराधी उन में ठोकर खाकर गिरेंगे ॥

* मूल में—अपने साथ बातें लो।
† मूल में—हम बैल अपने होंठ फेर देंगे।

योएल

१ यहोवा का वचन जो पतूएल के पुत्र योएल के पास पहुंचा, वह यह है: २ हे पुरनियो, सुनो, हे देश के सब रहनेवालो, कान लगाकर सुनो! क्या ऐसी बात तुम्हारे दिनों में, वा तुम्हारे पुरखाओं के दिनों में कभी हुई है? ३ अपने लड़केबालों से इसका वर्णन करो, और वे अपने लड़केबालों से, और फिर उनके लड़केबाले आनेवाली पीढ़ी के लोगों से ॥

४ जो कुछ गाजाम नाम टिड्डी से बचा; उसे अर्बे नाम टिड्डी ने खा लिया। और जो कुछ अर्बे नाम टिड्डी से बचा, उसे येलेक नाम टिड्डी ने खा लिया, और

जो कुछ येलेक नाम टिड्डी से बचा, उसे हासील नाम टिड्डी ने खा लिया है। ५ हे मतवालो, जाग उठो, और रोओ; और हे सब दाखमधु पीनेवालो, नये दाखमधु के कारण हाय, हाय, करो; क्योंकि वह तुम को अब न मिलेगा * ॥

६ देखो, मेरे देश पर एक जाति ने चढ़ाई की है, वह सामर्थी है, और उसके लोग अनगिनित हैं; उसके दांत सिंह के से, और डाढ़ें सिंहनी की सी हैं। ७ उस ने मेरी दाखलता को उजाड़ दिया, और मेरे अंजीर के वृक्ष को तोड़ डाला है; उस ने उसकी सब छाल छीलकर उसे गिरा दिया है, और उसकी डालियां छिलने से सफेद हो गई हैं ॥

८ जैसे युवती अपने पति के लिये कटि में टाट बान्धे हुए विलाप करती है, वैसे ही तुम भी विलाप करो। ९ यहोवा के भवन में न तो अन्नबलि और न अर्घ आता है। उसके टहलुए जो याजक हैं, वे विलाप कर रहे हैं। १० खेती मारी गई, भूमि विलाप करती है; क्योंकि अन्न नाश हो गया, नया दाखमधु सूख गया, तेल भी सूख गया है ॥

११ हे किसानो, लज्जित हो, हे दाख की बारी के मालियो, गेहूं और जव के लिये हाय, हाय, करो; क्योंकि खेती मारी गई है। १२ दाखलता सूख गई, और अंजीर का वृक्ष कुम्हला गया है। अनार, ताड़, सेव, वरन मैदान के सब वृक्ष सूख गए हैं; और मनुष्यों का हर्ष जाता रहा है † ॥

१३ हे याजको, कटि में टाट बान्धकर छाती पीट-पीट के रोओ! हे वेदी के टहलुओ, हाय, हाय, करो। हे मेरे परमेश्वर के टहलुओ, आओ, टाट ओढ़े हुए रात बिताओ! क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर के भवन में अन्नबलि और अर्घ अब नहीं आते ॥

१४ उपवास का दिन ठहराओ *, महासभा का प्रचार करो। पुरनियों को, वरन देश के सब रहनेवालों को भी अपने परमेश्वर यहोवा के भवन में इकट्ठे करके उसकी दोहाई दो ॥

१५ उस दिन के कारण हाय! क्योंकि यहोवा का दिन निकट है। वह सर्वशक्तिमान की ओर से सत्यानाश का दिन होकर आएगा। १६ क्या भोजनवस्तुएं हमारे देखते नाश नहीं हुईं? क्या हमारे परमेश्वर के भवन का आनन्द और मगन जाता नहीं रहा?

१७ बीज ढेलों के नीचे झुलस गए, भण्डार सूने पड़े हैं; खत्ते गिर पड़े हैं, क्योंकि खेती मारी गई। १८ पशु कैसे कराहते हैं? झुण्ड के झुण्ड गाय-बैल विकल हैं, क्योंकि उनके लिये चराई नहीं रही; और झुण्ड के झुण्ड भेड़-बकरियां पाप का फल भोग रही हैं ॥

१९ हे यहोवा, मैं तेरी दोहाई देता हूं, क्योंकि जंगल की चराइयां आग का कौर हो गईं, और मैदान के सब वृक्ष ज्वाला से जल गए। २० वन-पशु भी तेरे लिये हांफते हैं, क्योंकि जल के सोते सूख गए, और जंगल की चराइयां आग का कौर हो गईं ॥

२ सिय्योन में नरसिंगा फूंको; मेरे पवित्र पर्वत पर सांस बान्धकर फूंको! देश के सब रहनेवाले कांप उठें, क्योंकि

* मूल में—वह तुम्हारे मुंह से कट गया।
† मूल में—लजा गया है।

* मूल में—उपवास पवित्र करो।

यहोवा का दिन आता है, वरन वह निकट ही है। २ वह अन्धकार और तिमिर का दिन है, वह बदली का दिन है और अन्धियारे का सा फैलता है। जैसे भोर का प्रकाश पहाड़ों पर फैलता है, वैसे ही एक बड़ी और सामर्थी जाति आएगी; प्राचीनकाल में वैसी कभी न हुई, और न उसके बाद भी फिर किसी पीढ़ी में * होगी।।

३ उसके आगे आगे तो आग भस्म करती जाएगी, और उसके पीछे पीछे लौ जलाती जाएगी। उसके आगे की भूमि तो एदेन की बारी के समान होगी, परन्तु उसके पीछे की भूमि उजाड़ मरुस्थल बन जाएगी, और उस से कुछ न बचेगा।।

४ उनका रूप घोड़ों का सा है, और वे सवारी के घोड़ों की नाईं दौड़ते हैं। ५ उनके कूदने का शब्द ऐसा होता है जैसा पहाड़ों की चोटियों पर रथों के चलने का, वा खूंटी भस्म करती हुई लौ का, या जैसे पांति बान्धे हुए बली योद्धाओं † का शब्द होता है।।

६ उनके सामने जाति जाति के लोग पीड़ित होते हैं, सब के मुख मलीन होते हैं। ७ वे शूरवीरों की नाईं दौड़ते, और योद्धाओं की भांति शहरपनाह पर चढ़ते हैं। वे अपने अपने मार्ग पर चलते हैं, और कोई अपनी पांति से अलग न चलेगा। ८ वे एक दूसरे को धक्का नहीं लगाते, वे अपनी अपनी राह पर चलते हैं; शस्त्रों का साम्हना करने से भी उनकी पांति नहीं टूटती। ९ वे नगर में इधर-उधर दौड़ते, और शहरपनाह पर चढ़ते हैं; वे घरों में ऐसे घुसते हैं जैसे चोर खिड़कियों से घुसते हैं।।

१० उनके आगे पृथ्वी कांप उठती है, और आकाश थरथराता है। सूर्य और चन्द्रमा काले हो जाते हैं, और तारे नहीं झलकते *। ११ यहोवा अपने उस दल के आगे अपना शब्द सुनाता है, क्योंकि उसकी सेना बहुत ही बड़ी है; जो अपना वचन पूरा करनेवाला है, वह सामर्थी है। क्योंकि यहोवा का दिन बड़ा और अति भयानक है; उसको कौन सह सकेगा?

१२ तौभी यहोवा की यह वाणी है, अभी भी सुनो, उपवास के साथ रोते-पीटते अपने पूरे मन से फिरकर मेरे पास आओ। १३ अपने वस्त्र नहीं, अपने मन ही को फाड़कर अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो; क्योंकि वह अनुग्रहकारी, दयालु, विलम्ब से क्रोध करनेवाला, करुणानिधान और दुःख देकर पछतानेहारा है। १४ क्या जाने वह फिरकर पछताए और ऐसी आशीष दे जिस से तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का अन्नबलि और अर्घ दिया जाए।।

१५ सिय्योन में नरसिंगा फूंको, उपवास का दिन ठहराओ †, महासभा का प्रचार करो; १६ लोगों को इकट्ठा करो। सभा को पवित्र करो; पुरनियों को बुला लो; बच्चों और दूधपीउवों को भी इकट्ठा करो। दुल्हा अपनी कोठरी से, और दुल्हिन भी अपने कमरे से निकल आएं।।

१७ याजक जो यहोवा के टहलुए हैं, वे आंगन और वेदी के बीच में रो रोकर कहें, हे यहोवा अपनी प्रजा पर तरस

* मूल में—पीढ़ी पीढ़ी के बरसों तक।
† मूल में—बली लोगों।

* मूल में—तारे अपनी झलक समेटेंगे।
† मूल में—उपवास पवित्र करो।

खा; और अपने निज भाग की नामधराई न होने दे; न अन्यजातियां उसकी उपमा देने पाएं। जाति जाति के लोग आपस में क्यों कहने पाएं, कि उनका परमेश्वर कहां रहा ?

१८ तब यहोवा को अपने देश के विषय में जलन हुई, और उस ने अपनी प्रजा पर तरस खाया। १९ यहोवा ने अपनी प्रजा के लोगों को उत्तर दिया, सुनो, मैं अन्न और नया दाखमधु और ताज़ा तेल तुम्हें देने पर हूं, और तुम उन्हें पाकर तृप्त होगे; और मैं भविष्य में अन्यजातियों से तुम्हारी नामधराई न होने दूंगा ।।

२० मैं उत्तर की ओर से आई हुई सेना को तुम्हारे पास से दूर करूंगा, और उसे एक निर्जल और उजाड़ देश में निकाल दूंगा; उसका आगा तो पूरब के ताल की ओर और उसका पीछा पश्चिम के समुद्र की ओर होगा; उस से दुर्गन्ध उठेगी, और उसकी सड़ी गन्ध फैलेगी, क्योंकि उस ने बहुत बुरे काम किए हैं ।।

२१ हे देश, तू मत डर; तू मगन हो और आनन्द कर, क्योंकि यहोवा ने बड़े बड़े काम किए हैं! २२ हे मैदान के पशुओ, मत डरो, क्योंकि जंगल में चराई उगेगी, और वृक्ष फलने लगेंगे; अंजीर का वृक्ष और दाखलता अपना अपना बल दिखाने लगेंगी ।।

२३ हे सिय्योनियो*, तुम अपने परमेश्वर यहोवा के कारण मगन हो, और आनन्द करो; क्योंकि तुम्हारे लिये वह वर्षा, अर्थात् बरसात की पहिली वर्षा बहुतायत से† देगा; और पहिले के समान अगली और पिछली वर्षा को भी बरसाएगा ।।

२४ तब खलिहान अन्न से भर जाएंगे, और रसकुण्ड नये दाखमधु और ताज़े तेल से उमड़ेंगे। २५ और जिन वर्षों की उपज अर्बे नाम टिड्डियों, और येलेक, और हासील ने, और गाजाम नाम टिड्डियों ने, अर्थात् मेरे बड़े दल ने जिसको मैं ने तुम्हारे बीच भेजा, खा ली थी, मैं उसकी हानि तुम को भर दूंगा ।।

२६ तुम पेट भरकर खाओगे, और तृप्त होगे, और अपने परमेश्वर यहोवा के नाम की स्तुति करोगे, जिस ने तुम्हारे लिये आश्चर्य के काम किए हैं। और मेरी प्रजा की आशा फिर कभी न टूटेगी। २७ तब तुम जानोगे कि मैं इस्राएल के बीच में हूं, और मैं, यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर हूं और कोई दूसरा नहीं है। और मेरी प्रजा की आशा फिर कभी न टूटेगी ।।

२८ उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूंगा; तुम्हारे बेटे-बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगीं, और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे। २९ तुम्हारे दास और दासियों पर भी मैं उन दिनों में अपना आत्मा उण्डेलूंगा ।।

३० और मैं आकाश में और पृथ्वी पर चमत्कार, अर्थात् लोहू और आग और धूएं के खम्भे दिखाऊंगा। ३१ यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहिले सूर्य अन्धियारा होगा और चन्द्रमा रक्त सा हो जाएगा। ३२ उस समय जो कोई यहोवा से प्रार्थना करेगा, वह छुटकारा पाएगा; और यहोवा के वचन

* मूल में—सिय्योन के लड़को।
† मूल में—धर्म के लिये।

के अनुसार सिय्योन पर्वत पर, और यरूशलेम में जिन बचे हुओं को यहोवा बुलाएगा, वे उद्धार पाएंगे ॥

३ क्योंकि सुनो, जिन दिनों में और जिस समय में यहूदा और यरूशलेम-वासियों को बंधुआई से लौटा ले आऊंगा, २ उस समय मैं सब जातियों को इकट्ठी करके यहोशापात की तराई में ले जाऊंगा, और वहां उनके साथ अपनी प्रजा अर्थात् अपने निज भाग इस्राएल के विषय में जिसे उन्हों ने अन्यजातियों में तितर-बितर करके मेरे देश को बांट लिया है, उन से मुक़द्दमा लड़ूंगा। ३ उन्हों ने तो मेरी प्रजा पर चिट्ठी डाली, और एक लड़का वेश्या के बदले में दे दिया, और एक लड़की बेचकर दाखमधु पीया है ॥

४ हे सोर, और सीदोन और पलिश्तीन के सब प्रदेशो, तुम को मुझ से क्या काम? क्या तुम मुझ को बदला दोगे? यदि तुम मुझे बदला भी दो, तो मैं शीघ्र ही तुम्हारा दिया हुआ बदला, तुम्हारे ही सिर पर डाल दूंगा। ५ क्योंकि तुम ने मेरी चान्दी-सोना ले लिया, और मेरी अच्छी और मनभावनी वस्तुएं अपने मन्दिरों में ले जाकर रखी हैं; ६ और यहूदियों और यरूशलेमियों को यूनानियों के हाथ इसलिये बेच डाला है कि वे अपने देश से दूर किए जाएं। ७ इसलिये सुनो, मैं उनको उस स्थान से, जहां के जानेवालों के हाथ तुम ने उनको बेच दिया, बुलाने* पर हूं, और तुम्हारा दिया हुआ बदला, तुम्हारे ही सिर पर डाल दूंगा। ८ मैं तुम्हारे बेटे-बेटियों को यहूदियों के हाथ बिकवा दूंगा, और वे उनको शबाइयों के हाथ बेच देंगे जो दूर देश के रहनेवाले हैं; क्योंकि यहोवा ने यह कहा है ॥

९ जाति जाति में यह प्रचार करो, युद्ध की तैयारी करो*, अपने शूरवीरों को उभारो। सब योद्धा निकट आकर लड़ने को चढ़ें। १० अपने अपने हल की फाल को पीटकर तलवार, और अपनी अपनी हंसिया को पीटकर बर्छी बनाओ; जो बलहीन हो वह भी कहे, मैं वीर हूं ॥

११ हे चारों ओर के जाति जाति के लोगो, फुर्ती करके आओ और इकट्ठे हो जाओ। हे यहोवा, तू भी अपने शूरवीरों को वहां ले जा। १२ जाति जाति के लोग उभरकर चढ़ जाएं और यहोशापात की तराई में जाएं, क्योंकि वहां मैं चारों ओर की सारी जातियों का न्याय करने को बैठूंगा ॥

१३ हंसुआ लगाओ, क्योंकि खेत पक गया है। आओ, दाख रौंदो, क्योंकि हौज़ भर गया है। रसकुण्ड उमण्डने लगे क्योंकि उनकी बुराई बहुत बड़ी है ॥

१४ निबटारे की तराई में भीड़ की भीड़ है! क्योंकि निबटारे की तराई में यहोवा का दिन निकट है। १५ सूर्य और चन्द्रमा अपना अपना प्रकाश न देंगे, और न तारे चमकेंगे ॥

१६ और यहोवा सिय्योन से गरजेगा, और यरूशलेम से बड़ा शब्द सुनाएगा; और आकाश और पृथ्वी थरथराएंगे। परन्तु यहोवा अपनी प्रजा के लिये शरण-स्थान और इस्राएलियों के लिये गढ़ ठहरेगा ॥

१७ इस प्रकार तुम जानोगे कि यहोवा जो अपने पवित्र पर्वत सिय्योन पर वास

* मूल में—जगाऊंगा।

* मूल में—युद्ध पवित्र करो।

किए रहता है, वही हमारा परमेश्वर है। और यरूशलेम पवित्र ठहरेगा, और परदेशी उस में होकर फिर न जाने पाएंगे ।।

१८ और उस समय पहाड़ों से नया दाखमधु टपकने लगेगा, और टीलों से दूध बहने लगेगा, और यहूदा देश के सब नाले जल से भर जाएंगे; और यहोवा के भवन में से एक सोता फूट निकलेगा, जिस से शित्तीम का नाम नाला सींचा जाएगा ।।

१९ यहूदियों पर उपद्रव करने के कारण, मिस्र उजाड़ और एदोम उजड़ा हुआ मरुस्थल हो जाएगा, क्योंकि उन्हों ने उनके देश में निर्दोष की हत्या की थी। २० परन्तु यहूदा सर्वदा और यरूशलेम पीढ़ी पीढ़ी तक बना रहेगा। २१ क्योंकि उनका खून, जो अब तक मैं ने पवित्र नहीं ठहराया था, उसे अब पवित्र ठहराऊंगा, क्योंकि यहोवा सिय्योन में वास किए रहता है ।।

आमोस

१ आमोस तकोई जो भेड़-बकरियों के चरानेवालों में से था, उसके ये वचन हैं जो उस ने यहूदा के राजा उज्जिय्याह के, और योआश के पुत्र इस्राएल के राजा यारोबाम के दिनों में, भुईंडोल से दो वर्ष पहिले, इस्राएल के विषय में दर्शन देखकर कहे ।।

२ यहोवा सिय्योन से गरजेगा, और यरूशलेम से अपना शब्द सुनाएगा; तब चरवाहों की चराइयां विलाप करेंगी, और कर्म्मेल की चोटी झुलस जाएगी ।।

३ यहोवा यों कहता है, दमिश्क के तीन क्या, वरन चार अपराधों के कारण मैं उसका दण्ड न छोड़ूंगा*; क्योंकि उन्हों ने गिलाद को लोहे के दांवनेवाले यन्त्रों से रौंद डाला है। ४ इसलिये मैं हजाएल के राजभवन में आग लगाऊंगा, और उस से बेन्हदद के राजभवन भी भस्म हो जाएंगे। ५ मैं दमिश्क के बेण्डों को तोड़ डालूंगा, और आवेन नाम तराई के रहनेवालों को और एदेन के घर में रहनेवाले राजदण्डधारी को नाश करूंगा; और अराम के लोग बंधुए होकर कीर को जाएंगे, यहोवा का यही वचन है ।।

६ यहोवा यों कहता है, अज्जा के तीन क्या, वरन चार अपराधों के कारण मैं उसका दण्ड न छोड़ूंगा*; क्योंकि वे सब लोगों को बंधुआ करके ले गए कि उन्हें एदोम के वश में कर दें। ७ इसलिये मैं अज्जा की शहरपनाह में आग लगाऊंगा, और उस से उसके भवन भस्म हो जाएंगे। ८ मैं अशदोद के रहनेवालों को और

* मूल में—मैं उसको न फेरूंगा।

* मूल में—मैं उसको न करूंगा।

अस्कलोन के राजदण्डधारी को भी नाश करूंगा; मैं अपना हाथ एक्रोन के विरुद्ध चलाऊंगा, और शेष पलिश्ती लोग नाश होंगे, परमेश्वर यहोवा का यही वचन है ॥

९ यहोवा यों कहता है, सोर के तीन क्या, वरन चार अपराधों के कारण मैं उसका दण्ड न छोड़ूंगा; क्योंकि उन्हों ने सब लोगों को बंधुआ करके एदोम के वश में कर दिया और भाई की सी वाचा का स्मरण न किया। १० इसलिये मैं सोर की शहरपनाह पर आग लगाऊंगा, और उस से उसके भवन भी भस्म हो जाएंगे ॥

११ यहोवा यों कहता है, एदोम के तीन क्या, वरन चार अपराधों के कारण मैं उसका दण्ड न छोड़ूंगा*; क्योंकि उस ने अपने भाई को तलवार लिए हुए खदेड़ा और कुछ भी दया न की†, परन्तु क्रोध से उनको लगातार फाड़ता ही रहा, और अपने रोष को अनन्त काल के लिये बनाए रहा। १२ इसलिये मैं तेमान में आग लगाऊंगा, और उस से बोस्रा के भवन भस्म हो जाएंगे ॥

१३ यहोवा यों कहता है, अम्मोन के तीन क्या, वरन चार अपराधों के कारण मैं उसका दण्ड न छोड़ूंगा‡, क्योंकि उन्हों ने अपने सिवाने को बढ़ा लेने के लिये गिलाद की गर्भिणी स्त्रियों का पेट चीर डाला। १४ इसलिये मैं रब्बा की शहरपनाह में आग लगाऊंगा, और उस से उसके भवन भी भस्म हो जाएंगे। उस युद्ध के दिन में ललकार होगी, वह आंधी वरन बवण्डर का दिन होगा; और उनका राजा अपने हाकिमों समेत बंधुआई में जाएगा, यहोवा का यही वचन है ॥

२ यहोवा यों कहता है, मोआब के तीन क्या, वरन चार अपराधों के कारण, मैं उसका दण्ड न छोड़ूंगा*; क्योंकि उस ने एदोम के राजा की हड्डियों को जलाकर चूना कर दिया। २ इसलिये मैं मोआब में आग लगाऊंगा, और उस मे करिय्योत के भवन भस्म हो जाएंगे; और मोआब हुल्लड़ और ललकार, और नरसिंगे के शब्द होते-होते मर जाएगा। ३ मैं उसके बीच में से न्यायी को नाश करूंगा, और साथ ही साथ उसके सब हाकिमों को भी घात करूंगा, यहोवा का यही वचन है ॥

४ यहोवा यों कहता है, यहूदा के तीन क्या, वरन चार अपराधों के कारण, मैं उसका दण्ड न छोड़ूंगा; क्योंकि उन्हों ने यहोवा की व्यवस्था को तुच्छ जाना, और मेरी विधियों को नहीं माना; और अपने झूठे देवताओं के कारण जिनके पीछे उनके पुरखा चलते थे, वे भी भटक गए हैं। ५ इसलिये मैं यहूदा में आग लगाऊंगा, और उस से यरूशलेम के भवन भस्म हो जाएंगे ॥

६ यहोवा यों कहता है, इस्राएल के तीन क्या, वरन चार अपराधों के कारण, मैं उसका दण्ड न छोड़ूंगा*; क्योंकि उन्हों ने निर्दोष को रुपये के लिये और दरिद्र को एक जोड़ी जूतियों के लिये बेच डाला है। ७ वे कंगालों के सिर पर की धूलि का भी लालच करते, और नम्र लोगों को मार्ग मे हटा देते हैं; और बाप-बेटा दोनों एक ही कुमारी के पास

* मूल में—मैं उसको न करूंगा।
† मूल में—अपनी दया को बिगाड़ा।
‡ मूल में—मैं उसको न फेरूंगा।

* मूल में—मैं उसको न फेरूंगा।

जाते हैं, जिस से मेरे पवित्र नाम को अपवित्र ठहराएं। ८ वे हर एक वेदी के पास बन्धक के वस्त्रों पर सोते हैं, और दण्ड के रुपये से मोल लिया हुआ दाखमधु अपने देवता के घर में पी लेते हैं॥

९ मैं ने उनके साम्हने से एमोरियों को नाश किया था, जिनकी लम्बाई देवदारों की सी, और जिनका बल बांज वृक्षों का सा था; तौभी मैं ने ऊपर से उसके फल, और नीचे से उसकी जड़ नाश की। १० और मैं तुम को मिस्र देश से निकाल लाया, और जंगल में चालीस वर्ष तक लिए फिरता रहा, कि तुम एमोरियों के देश के अधिकारी हो जाओ। ११ और मैं ने तुम्हारे पुत्रों में से नबी होने के लिये और तुम्हारे कुछ जवानों में से नाज़ीर होने के लिये ठहराया। हे इस्राएलियो, क्या यह सब सच नहीं है? यहोवा की यह वाणी है। १२ परन्तु तुम ने नाज़ीरों को दाखमधु पिलाया, और नबियों को आज्ञा दी कि भविष्यद्वाणी न करें॥

१३ देखो, मैं तुम को ऐसा दबाऊंगा, जैसी पूलों से भरी हुई गाड़ी नीचे को दबाई जाती है*। १४ इसलिये वेग दौड़नेवाले को भाग जाने का स्थान न मिलेगा, और सामर्थी का सामर्थ कुछ काम न देगा; और न पराक्रमी अपना प्राण बचा सकेगा; १५ धनुर्धारी खड़ा न रह सकेगा, और फुर्ती से दौड़नेवाला न बचेगा; सवार भी अपना प्राण न बचा सकेगा; १६ और शूरवीरों में जो अधिक धीर हो, वह भी उस दिन नंगा होकर भाग जाएगा, यहोवा की यही वाणी है॥

* वा तुम्हारे नीचे ऐसा दबा हूं जैसे गाड़ी जो पूलों से भरी हो दबी रहती है।

३ हे इस्राएलियो, यह वचन सुनो जो यहोवा ने तुम्हारे विषय में अर्थात् उस सारे कुल के विषय में कहा है जिसे मैं मिस्र देश से लाया हूं: २ पृथ्वी के सारे कुलों में से मैं ने केवल तुम्हीं पर मन लगाया है, इस कारण मैं तुम्हारे सारे अधर्म के कामों का दण्ड दूंगा॥

३ यदि दो मनुष्य परस्पर सहमत न हों, तो क्या वे एक संग चल सकेंगे? ४ क्या सिंह बिना अहेर पाए वन में गरजेंगे? क्या जवान सिंह बिना कुछ पकड़े अपनी मांद में से गुर्राएगा? ५ क्या चिड़िया बिना फन्दा लगाए फंसेगी? क्या बिना कुछ फंसे फ़न्दा भूमि पर से उचकेगा? ६ क्या किसी नगर में नरसिंगा फूंकने पर लोग न थरथराएंगे? क्या यहोवा के बिना भेजे किसी नगर में कोई विपत्ति पड़ेगी? ७ इसी प्रकार से प्रभु यहोवा अपने दास भविष्यद्वक्ताओं पर अपना मर्म बिना प्रगट किए कुछ भी न करेगा। ८ सिंह गरजा; कौन न डरेगा? परमेश्वर यहोवा बोला; कौन भविष्यद्वाणी न करेगा?

९ अशदोद के भवन और मिस्र देश के राजभवन पर प्रचार करके कहो, सामरिया के पहाड़ों पर इकट्ठे होकर देखो कि उस में क्या ही बड़ा कोलाहल और उसके बीच क्या ही अन्धेर के काम हो रहे हैं! १० यहोवा की यह वाणी है, कि जो लोग अपने भवनों में उपद्रव और डकैती का धन बटोर रखते हैं, वे सीधाई से काम करना जानते ही नहीं। ११ इस कारण परमेश्वर यहोवा यों कहता है, देश का घेरनेवाला एक शत्रु होगा, और वह तेरा बल तोड़ेगा, और तेरे भवन लूटे जाएंगे॥

१२ यहोवा यों कहता है, जिस भांति चरवाहा सिंह के मुंह से दो टांगें वा कान का एक टुकड़ा छुड़ाता है, वैसे ही इस्राएली लोग, जो सामरिया में बिछौने के एक कोने वा रेशमी गद्दी पर बैठा करते हैं, वे भी छुड़ाए जाएंगे ।।

१३ सेनाओं के परमेश्वर, प्रभु यहोवा की यह वाणी है, देखो, और याकूब के घराने से यह बात चिताकर कहो, १४ जिस समय मैं इस्राएल को उसके अपराधों का दण्ड दूंगा, उसी समय मैं बेतेल की वेदियों को भी दण्ड दूंगा, और वेदी के सींग टूटकर भूमि पर गिर पड़ेंगे। १५ और मैं जाड़े के भवन को और धूपकाल के भवन, दोनों को गिराऊंगा; और हाथीदांत के बने भवन भी नाश होंगे, और बड़े बड़े घर नाश हो जाएंगे, यहोवा की यही वाणी है ।।

४ हे बाशान की गायो, यह वचन सुनो, तुम जो सामरिया पर्वत पर हो, जो कंगालों पर अन्धेर करतीं, और दरिद्रों को कुचल डालती हो, और अपने अपने पति से कहती हो कि ला, दे हम पीएं ! २ परमेश्वर यहोवा अपनी पवित्रता की शपथ खाकर कहता है, देखो, तुम पर ऐसे दिन आनेवाले हैं, कि तुम कटियाओं से, और तुम्हारी सन्तान मछली की बन्सियों से खींच लिए जाएंगे। ३ और तुम बाड़े के नाकों से होकर सीधी निकल जाओगी और हर्मोन में डाली जाओगी, यहोवा की यही वाणी है ।।

४ बेतेल में आकर अपराध करो, और गिल्गाल में आकर बहुत से अपराध करो; अपने चढ़ावे भोर को, और अपने दशमांश हर तीसरे दिन ले आया करो; ५ धन्यवादबलि खमीर मिलाकर चढ़ाओ, और अपने स्वेच्छाबलियों की चर्चा चलाकर उनका प्रचार करो; क्योंकि हे इस्राएलियो, ऐसा करना तुमको भावता है, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है ।।

६ मैं ने तो तुम्हारे सब नगरों में दांत की सफाई करा दी, और तुम्हारे सब स्थानों में रोटी की घटी की है, तौभी तुम मेरी ओर फिरकर न आए, यहोवा की यही वाणी है ।।

७ और जब कटनी के तीन महीने रह गए, तब मैं ने तुम्हारे लिये वर्षा न की; मैं ने एक नगर में जल बरसाकर दूसरे में न बरसाया; एक खेत में जल बरसा, और दूसरा खेत जिस में न बरसा, वह सूख गया। ८ इसलिये दो तीन नगरों के लोग पानी पीने को मारे मारे फिरते हुए एक ही नगर में आए, परन्तु तृप्त न हुए; तौभी तुम मेरी ओर न फिरे, यहोवा की यही वाणी है ।।

९ मैं ने तुमको लूह और गेरुई से मारा है; और जब तुम्हारी वाटिकाएं और दाख की बारियां, और अंजीर और जलपाई के वृक्ष बहुत हो गए, तब टिड्डियां उन्हें खा गईं; तौभी तुम मेरी ओर फिरकर न आए, यहोवा की यही वाणी है ।।

१० मैं ने तुम्हारे बीच में मिस्र देश की सी मरी फैलाई; मैं ने तुम्हारे घोड़ों को छिनवा कर तुम्हारे जवानों को तलवार से घात करा दिया; और तुम्हारी छावनी की दुर्गन्ध तुम्हारे पास पहुंचाई; तौभी तुम मेरी ओर फिरकर न आए, यहोवा की यही वाणी है ।।

११ मैं ने तुम में से कई एक को ऐसा उलट दिया, जैसे परमेश्वर ने सदोम और अमोरा को उलट दिया था, और तुम आग से निकाली हुई लुकटी के समान ठहरे;

तौभी तुम मेरी ओर फिरकर न आए, यहोवा की यही वाणी है ।।

१२ इस कारण, हे इस्राएल, मैं तुझ से ऐसा ही करूंगा, और इसलिये कि मैं तुझ में यह काम करने पर हूं, हे इस्राएल, अपने परमेश्वर के साम्हने आने के लिये तैयार हो जा ।।

१३ देख, पहाड़ों का बनानेवाला और पवन का सिरजनेवाला, और मनुष्य को उसके मन का विचार बतानेवाला और भोर को अन्धकार करनेवाला, और जो पृथ्वी के ऊँचे स्थानों पर चलनेवाला है, उसी का नाम सेनाओं का परमेश्वर यहोवा है ।।

५ हे इस्राएल के घराने, इस विलाप के गीत के वचन सुन जो मैं तुम्हारे विषय में कहता हूं : २ इस्राएल की कुमारी कन्या गिर गई, और फिर उठ न सकेगी; वह अपनी ही भूमि पर पटक दी गई है, और उसका उठानेवाला कोई नहीं ।।

३ क्योंकि परमेश्वर यहोवा यों कहता है, जिस नगर से हजार निकलते थे, उस में इस्राएल के घराने के सौ ही बचे रहेंगे, और जिस से सौ निकलते थे, उस में दस बचे रहेंगे ।।

४ यहोवा, इस्राएल के घराने से यों कहता है, मेरी खोज में लगो, तब जीवित रहोगे। ५ बेतेल की खोज में न लगो, न गिल्गाल में प्रवेश करो, और न बेर्शेबा को जाओ; क्योंकि गिल्गाल निश्चय बंधुआई में जाएगा, और बेतेल सूना पड़ेगा ।।

६ यहोवा की खोज करो, तब जीवित रहोगे, नहीं तो वह यूसुफ के घराने पर आग की नाईं भड़केगा, और वह उसे भस्म करेगी, और बेतेल में कोई उसका बुझानेवाला न होगा। ७ हे न्याय के बिगाड़नेवालो * और धर्म को मिट्टी में मिलानेवालो !

८ जो कचपचिया और मृगशिरा का बनानेवाला है, जो घोर अन्धकार को भोर का प्रकाश बनाता है, जो दिन को अन्धकार करके रात बना देता है, और समुद्र का जल स्थल के ऊपर बहा देता है, उसका नाम यहोवा है। ९ वह तुरन्त ही बलवन्त को विनाश कर देता, और गढ़ का भी सत्यानाश करता है ।।

१० जो सभा में † उलाहना देता है उस से वे बैर रखते हैं, और खरी बात बोलनेवाले से घृणा करते हैं। ११ तुम जो कंगालों को लताड़ा करते, और भेंट कहकर उन से अन्न हर लेते हो, इसलिये जो घर तुम ने गढ़े हुए पत्थरों के बनाए हैं, उन में रहने न पाओगे; और जो मनभावनी दाख की बारियां तुम ने लगाई हैं, उनका दाखमधु न पीने पाओगे। १२ क्योंकि मैं जानता हूं कि तुम्हारे पाप भारी हैं। तुम धर्मी को सताते और घूस लेते, और फाटक में दरिद्रों का न्याय बिगाड़ते हो। १३ इस कारण जो बुद्धिमान् हो, वह ऐसे समय चुपका रहे, क्योंकि समय बुरा है ।।

१४ हे लोगो, बुराई को नहीं, भलाई को ढूंढ़ो, ताकि तुम जीवित रहो; और तुम्हारा यह कहना सच ठहरे कि सेनाओं का परमेश्वर यहोवा तुम्हारे संग है। १५ बुराई से बैर और भलाई से प्रीति रखो, और फाटक में न्याय को स्थिर करो; क्या जाने सेनाओं का परमेश्वर यहोवा यूसुफ के बचे हुओं पर अनुग्रह करे ।।

---

* मूल में—न्याय को नागदौना बनाने।
† मूल में—फाटक।

१६ इस कारण सेनाओं का परमेश्वर, प्रभु यहोवा यों कहता है, सब चौकों में रोना-पीटना होगा; और सब सड़कों में लोग हाय, हाय, करेंगे! वे किसानों को शोक करने के लिये, और जो लोग विलाप करने में निपुण हैं, उन्हें रोने-पीटने को बुलाएंगे। १७ और सब दाख की बारियों में रोना-पीटना होगा, क्योंकि यहोवा यों कहता है, मैं तुम्हारे बीच में से होकर जाऊंगा।।

१८ हाय तुम पर, जो यहोवा के दिन की अभिलाषा करते हो! यहोवा के दिन से तुम्हारा क्या लाभ होगा? वह तो उजियाले का नहीं, अन्धियारे का दिन होगा। १९ जैसा कोई सिंह से भागे और उसे भालू मिले; वा घर में आकर भीत पर हाथ टेके और सांप उसको डसे। २० क्या यह सच नहीं है कि यहोवा का दिन उजियाले का नहीं, वरन अन्धियारे ही का होगा? हां, ऐसे घोर अन्धकार का जिस में कुछ भी चमक न हो।।

२१ मैं तुम्हारे पर्वों से बैर रखता, और उन्हें निकम्मा जानता हूं, और तुम्हारी महासभाओं से मैं प्रसन्न नहीं*। २२ चाहे तुम मेरे लिये होमबलि और अन्नबलि चढ़ाओ, तौभी मैं प्रसन्न न हूंगा, और तुम्हारे पाले हुए पशुओं के मेलबलियों की ओर न ताकूंगा। २३ अपने गीतों का कोलाहल मुझ से दूर करो; तुम्हारी सारंगियों का सुर मैं न सुनूंगा। २४ परन्तु न्याय को नदी की नाईं, और धर्म महानद की नाईं बहने दो।।

२५ हे इस्राएल के घराने, तुम जंगल में चालीस वर्ष तक पशुबलि और अन्नबलि क्या मुझी को चढ़ाते रहे? २६ नहीं, तुम तो अपने राजा का तम्बू, और अपनी मूरतों की चरणपीठ, और अपने देवता का तारा लिए फिरते रहे। २७ इस कारण मैं तुम को दमिश्क के उस पार बंधुआई में कर दूंगा, सेनाओं के परमेश्वर यहोवा का यही वचन है।।

६ हाय उन पर जो सिय्योन में सुख से रहते, और उन पर जो सामरिया के पर्वत पर निश्चिन्त रहते हैं, वे जो श्रेष्ठ जाति में प्रसिद्ध हैं, जिन के पास इस्राएल का घराना आता है! २ कलने नगर को जाकर देखो, और वहां से हमात नाम बड़े नगर को जाओ; फिर पलिश्तियों के गत नगर को जाओ। क्या वे इन राज्यों से उत्तम हैं? क्या उनका देश तुम्हारे देश से कुछ बड़ा है? ३ तुम बुरे दिन को दूर कर देते, और उपद्रव की गद्दी को निकट ले आते हो।।

४ तुम हाथी दांत के पलंगों पर लेटते, और अपने अपने बिछौने पर पांव फैलाए सोते हो, और भेड़-बकरियों में से मेम्ने और गौशालाओं में से बछड़े खाते हो। ५ तुम सारंगी के साथ गीत गाते, और दाऊद की नाईं भांति भांति के बाजे बुद्धि से निकालते हो; ६ और कटोरों में से दाखमधु पीते, और उत्तम उत्तम तेल लगाते हो, परन्तु यूसुफ पर आनेवाली विपत्ति का हाल सुनकर शोकित नहीं होते! ७ इस कारण वे अब बंधुआई में पहिले जाएंगे, और जो पांव फैलाए सोते थे, उनकी धूम जाती रहेगी।।

८ सेनाओं के परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, (परमेश्वर यहोवा ने अपनी ही शपथ खाकर कहा है): जिस पर याकूब घमण्ड करता है, उस से मैं घृणा, और

* मूल में—मैं न सूंघूंगा।

उसके राजभवनों से बैर रखता हूं; और मैं इस नगर को उस सब समेत जो उस में है, शत्रु के वश में कर दूंगा ॥

९ और यदि किसी घर में दस पुरुष बचे रहें, तौभी वे मर जाएंगे। १० और जब किसी का चचा, जो उसका जलानेवाला हो, उसकी हड्डियों को घर के निकालने के लिये उठाएगा, और जो घर के कोने में हो उस से कहेगा, क्या तेरे पास कोई और है? तब वह कहेगा, कोई नहीं; तब वह कहेगा, चुप रह! हमें यहोवा का नाम नहीं लेना चाहिए ॥

११ क्योंकि यहोवा की आज्ञा से बड़े घर में छेद, और छोटे घर में दरार होगी। १२ क्या घोड़े चट्टान पर दौड़ें? क्या कोई ऐसे स्थान में बैलों से जोतें जहां तुम लोगों ने न्याय को विष से, और धर्म के फल को कड़वे फल से बदल डाला है? १३ तुम ऐसी वस्तु के कारण आनन्द करते हो जो व्यर्थ है; और कहते हो, क्या हम अपने ही यत्न से सामर्थी नहीं हो गए? १४ इस कारण सेनाओं के परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, हे इस्राएल के घराने, देख, मैं तुम्हारे विरुद्ध एक ऐसी जाति खड़ी करूंगा, जो हमात की घाटी से लेकर अराबा की नदी तक तुमको संकट में डालेगी ॥

७ परमेश्वर यहोवा ने मुझे यह दिखाया, और मैं क्या देखता हूं कि उस ने पिछली घास के उगने के आरम्भ में टिड्डियां उत्पन्न कीं; और वह राजा की कटनी के बाद की पिछली घास थी। २ जब वे घास खा चुकीं, तब मैं ने कहा, हे परमेश्वर यहोवा, क्षमा कर! नहीं तो याकूब कैसे स्थिर रह सकेगा? वह कितना निर्बल * है! ३ इसके विषय में यहोवा पछताया, और उस ने कहा, ऐसी बात अब न होगी ॥

४ परमेश्वर यहोवा ने मुझे यह दिखाया: और क्या देखता हूं कि परमेश्वर यहोवा ने आग के द्वारा मुक़द्दमा लड़ने को पुकारा, और उस आग से महासागर सूख गया, और देश भी भस्म हुआ चाहता था। ५ तब मैं ने कहा, हे परमेश्वर यहोवा, थम जा! नहीं तो याकूब कैसे स्थिर रह सकेगा? वह कैसा निर्बल * है। ६ इसके विषय में भी यहोवा पछताया; और परमेश्वर यहोवा ने कहा, ऐसी बात फिर न होगी ॥

७ उस ने मुझे यह भी दिखाया: मैं ने देखा कि प्रभु साहुल लगाकर बनाई हुई किसी भीत पर खड़ा है, और उसके हाथ में साहुल है। ८ और यहोवा ने मुझ से कहा, हे आमोस, तुझे क्या देख पड़ता है? मैं ने कहा, एक साहुल। तब परमेश्वर ने कहा, देख, मैं अपनी प्रजा इस्राएल के बीच में साहुल लगाऊंगा। ९ मैं अब उनको न छोड़ूंगा। इसहाक के ऊंचे स्थान उजाड़, और इस्राएल के पवित्रस्थान सुनसान हो जाएंगे, और मैं यारोबाम के घराने पर तलवार खींचे हुए चढ़ाई करूंगा ॥

१० तब बेतेल के याजक अमस्याह ने इस्राएल के राजा यारोबाम के पास कहला भेजा, कि, आमोस ने इस्राएल के घराने के बीच में तुझ से राजद्रोह की गोष्ठी की है; उसके सारे वचनों को देश नहीं सह सकता। ११ क्योंकि आमोस यों कहता है, कि, यारोबाम तलवार से मारा जाएगा, और

* मूल में—छोटा।

इस्राएल अपनी भूमि पर से निश्चय बंधुआई में जाएगा ॥

१२ और अमस्याह ने आमोस से कहा, हे दर्शी, यहां से निकलकर यहूदा देश में भाग जा, और वहीं रोटी खाया कर, और वहीं भविष्यद्वाणी किया कर; १३ परन्तु बेतेल में फिर कभी भविष्यद्वाणी न करना, क्योंकि यह राजा का पवित्रस्थान और राज-नगर है। १४ आमोस ने उत्तर देकर अमस्याह से कहा, मैं न तो भविष्यद्वक्ता था, और न भविष्यद्वक्ता का बेटा; मैं तो गाय-बैल का चरवाहा, और गूलर के वृक्षों का छांटनेहारा था, १५ और यहोवा ने मुझे भेड़-बकरियों के पीछे पीछे फिरने से बुलाकर कहा, जा, मेरी प्रजा इस्राएल से भविष्यद्वाणी कर। १६ इसलिये अब तू यहोवा का वचन सुन, तू कहता है कि इस्राएल के विरुद्ध भविष्यद्वाणी मत कर; और इसहाक के घराने के विरुद्ध बार बार वचन मत सुना*। १७ इस कारण यहोवा यों कहता है, तेरी स्त्री नगर में वेश्या हो जाएगी, और तेरे बेटे-बेटियां तलवार से मारी जाएंगीं, और तेरी भूमि डोरी डालकर बांट ली जाएगी; और तू आप अशुद्ध देश में मरेगा, और इस्राएल अपनी भूमि पर से निश्चय बंधुआई में जाएगा ॥

८ परमेश्वर यहोवा ने मुझ को यों दिखाया : कि, धूपकाल के फलों से भरी हुई एक टोकरी है। २ और उस ने कहा, हे आमोस, तुझे क्या देख पड़ता है? मैं ने कहा, धूपकाल के फलों से भरी एक टोकरी। तब यहोवा ने मुझ से कहा, मेरी प्रजा इस्राएल का अन्त आ गया है; मैं अब उसको और न छोड़ूंगा। ३ परमेश्वर यहोवा की वाणी है, कि उस दिन राज-मन्दिर के गीत हाहाकार* में बदल जाएंगे, और लोथों का बड़ा ढेर लगेगा; और सब स्थानों में वे चुपचाप फेंक दी जाएंगी ॥

४ यह सुनो, तुम जो दरिद्रों को निगलना और देश के नम्र लोगों को नाश करना चाहते हो, ५ जो कहते हो नया चांद कब बीतेगा कि हम अन्न बेच सकें? और विश्रामदिन कब बीतेगा, कि हम अन्न के खत्ते खोलकर एपा को छोटा और शेकेल को भारी कर दें, और छल से दण्डी मारें, ६ कि हम कंगालों को रुपया देकर, और दरिद्रों को एक जोड़ी जूतियां देकर मोल लें, और निकम्मा अन्न बेचें?

७ यहोवा, जिस पर याकूब को घमण्ड करना उचित है, वही अपनी शपथ खाकर कहता है, मैं तुम्हारे किसी काम को कभी न भूलूंगा। ८ क्या इस कारण भूमि न कांपेगी? और क्या उन पर के सब रहनेवाले विलाप न करेंगे? यह देश सब का सब मिस्र की नील नदी के समान होगा, जो बढ़ती है, फिर लहरें मारती, और घट जाती है ॥

९ परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, उस समय मैं सूर्य को दोपहर के समय अस्त करूंगा, और इस देश को दिन दुपहरी अन्धियारा कर दूंगा। १० मैं तुम्हारे पर्वों के उत्सव को दूर करके विलाप कराऊंगा, और तुम्हारे सब गीतों को दूर करके विलाप के गीत गवाऊंगा; मैं तुम सब की कटि में टाट बंधाऊंगा, और तुम सब के सिरों को मुंड़ाऊंगा; और ऐसा विलाप कराऊंगा

* मूल में—हाहाकार करेंगे।

* मूल में—हाहाकार करेंगे।

जैसा एकलौते के लिये होता है, और उसका अन्त कठिन दुःख के दिन का सा होगा * ॥

११ परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, देखो, ऐसे दिन आते हैं, जब मैं इस देश में महंगी करूंगा; उस में न तो अन्न की भूख और न पानी की प्यास होगी, परन्तु यहोवा के वचनों के सुनने ही की भूख प्यास होगी। १२ और लोग यहोवा के वचन की खोज में समुद्र से समुद्र तक और उत्तर से पूरब तक मारे मारे फिरेंगे, परन्तु उसको न पाएंगे ॥

१३ उस समय सुन्दर कुमारियां और जवान पुरुष दोनों प्यास के मारे मूर्छा खाएंगे। १४ जो लोग सामरिया के पाप-मूल देवता की शपथ खाते हैं, और जो कहते हैं कि दान के † देवता के जीवन की शपथ, और बेर्शेबा के पन्थ की शपथ, वे सब गिर पड़ेंगे, और फिर न उठेंगे ॥

९ मैं ने प्रभु को वेदी के ऊपर खड़ा देखा, और उस ने कहा, खम्भे की कंगनियों पर मार जिस से डेवढ़ियां हिलें, और उनको सब लोगों के सिर पर गिराकर टुकड़े टुकड़े कर; और जो नाश होने से बचें, उन्हें मैं तलवार से घात करूंगा; उन में से एक भी न भाग निकलेगा, और जो अपने को बचाए, वह बचने न पाएगा ॥

२ क्योंकि चाहे वे खोदकर अधोलोक में उतर जाएं, तो वहां से मैं हाथ बढ़ाकर उन्हें लाऊंगा; चाहे वे आकाश पर चढ़ जाएं, तो वहां से मैं उन्हें उतार लाऊंगा। ३ चाहे वे कर्म्मेल में छिप जाएं, परन्तु वहां भी मैं उन्हें ढूंढ़-ढूंढ़कर पकड़ लूंगा, और चाहे वे समुद्र की थाह में मेरी दृष्टि से ओट हों, वहां भी मैं सर्प को उन्हें डसने की आज्ञा दूंगा। ४ और चाहे शत्रु उन्हें हांककर बंधुआई में ले जाएं, वहां भी मैं आज्ञा देकर तलवार से उन्हें घात कराऊंगा; और मैं उन पर भलाई करने के लिये नहीं, बुराई ही करने के लिये दृष्टि करूंगा ॥

५ सेनाओं के परमेश्वर यहोवा के स्पर्श करने से पृथ्वी पिघलती है, और उसके सारे रहनेवाले विलाप करते हैं; और वह सब की सब मिस्र की नदी के समान हो जाती है, जो बढ़ती है फिर लहरें मारती, और घट जाती है। ६ जो आकाश में अपनी कोठरियां बनाता, और अपने आकाशमण्डल की नेव पृथ्वी पर डालता, और समुद्र का जल धरती पर बहा देता है, उसी का नाम यहोवा है ॥

७ हे इस्राएलियो, यहोवा की यह वाणी है, क्या तुम मेरे लेखे कूशियों के समान नहीं हो? क्या मैं इस्राएल को मिस्र देश से और पलिश्तियों को कप्तोर से नहीं निकाल लाया? और अरामियों को कीर से नहीं लाया? ८ देखो, परमेश्वर यहोवा की दृष्टि इस पाप-मय राज्य पर लगी है, और मैं इसको धरती पर से नाश करूंगा; तौभी मैं पूरी रीति से याकूब के घराने को नाश न करूंगा, यहोवा की यही वाणी है। ९ मेरी आज्ञा से इस्राएल का घराना सब जातियों में ऐसा चाला जाएगा जैसा अन्न चलनी में चाला जाता है, परन्तु उसका एक भी पुष्ट दाना भूमि पर न गिरेगा। १० मेरी प्रजा में के सब पापी जो कहते हैं कि वह विपत्ति हम पर न पड़ेगी, और न हमें घेरेगी, वे सब तलवार से मारे जाएंगे ॥

११ उस समय मैं दाऊद की गिरी हुई झोंपड़ी को खड़ा करूंगा, और उसके बाड़े के नाकों को सुधारूंगा, और उसके

* मूल में—कड़ुवा दिन।
† मूल में—हे दान तेरे।

खण्डहरों को फिर बनाऊंगा, और जैसा वह प्राचीनकाल में था, उसको वैसा ही बना दूंगा; १२ जिस से वे बचे हुए एदोमियों को वरन सब अन्यजातियों को जो मेरी कहलाती हैं, अपने अधिकार में लें, यहोवा जो यह काम पूरा करता है, उसकी यही वाणी है ।।

१३ यहोवा की यह भी वाणी है, देखो, ऐसे दिन आते हैं, कि हल जोतनेवाला लवनेवाले को और दाख रौंदनेवाला बीज बोनेवाले को जा लेगा; और पहाड़ों से नया दाखमधु टपकने लगेगा, और सब पहाड़ियों से बह निकलेगा। १४ मैं अपनी प्रजा इस्राएल के बंधुओं को फेर ले आऊंगा, और वे उजड़े हुए नगरों को सुधारकर उन में बसेंगे; वे दाख की बारियां लगाकर दाखमधु पीएंगे, और बगीचे लगाकर उनके फल खाएंगे। १५ मैं उन्हें, उन्हीं की भूमि में बोऊंगा, और वे अपनी भूमि में से जो मैं ने उन्हें दी है, फिर कभी उखाड़े न जाएंगे, तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का यही वचन है ।।

ओबद्याह

१ ओबद्याह का दर्शन ।।

हम लोगों ने यहोवा की ओर से समाचार सुना है, और एक दूत अन्यजातियों में यह कहने को भेजा गया है : २ उठो! हम उस से लड़ने को उठें! मैं तुझे जातियों में छोटा कर दूंगा, तू बहुत तुच्छ गिना जाएगा। ३ हे पहाड़ों की दरारों में बसनेवाले, हे ऊंचे स्थान में रहनेवाले, तेरे अभिमान ने तुझे धोखा दिया है; तू मन में कहता है, ४ कौन मुझे भूमि पर उतार देगा? परन्तु चाहे तू उकाब की नाईं ऊंचा उड़ता हो, वरन तारागण के बीच अपना घोंसला बनाए हो, तौभी मैं तुझे वहां से नीचे गिराऊंगा, यहोवा की यही वाणी है ।। ५ यदि चोर-डाकू रात को तेरे पास आते, (हाय, तू कैसे मिटा दिया गया है!) तो क्या वे चुराए हुए धन से तृप्त होकर चले न जाते? और यदि दाख के तोड़नेवाले तेरे पास आते, तो क्या वे कहीं कहीं दाख न छोड़ जाते? ६ परन्तु एसाव का धन कैसे खोजकर लूटा गया है, उसका गुप्त धन कैसे पता लगा लगाकर निकाला गया है! ७ जितनों ने तुझ से वाचा बान्धी थी, उन सभों ने तुझे सिवाने तक ढकेल दिया है; जो लोग तुझ से मेल रखते थे, वे तुझ को धोका देकर तुझ पर प्रबल हुए हैं; और जो तेरी रोटी खाते हैं, वे तेरे लिये फन्दा लगाते हैं—उस में कुछ समझ नहीं है। ८ यहोवा की यह वाणी है, क्या मैं उस समय एदोम में से बुद्धिमानों को, और एसाव के पहाड़ में से चतुराई को नाश न करूंगा? ९ और हे तेमान, तेरे शूरवीरों का मन कच्चा हो जाएगा, और यों एसाव के पहाड़ पर का हर एक पुरुष घात होकर नाश हो

जाएगा। १० हे एसाव, उस उपद्रव के कारण जो तू ने अपने भाई याकूब पर किया, तू लज्जा से ढंपेगा; और सदा के लिये नाश हो जाएगा। ११ जिस दिन परदेशी लोग उसकी धन सम्पत्ति छीनकर ले गए, और बिराने लोगों ने उसके फाटकों से घुसकर यरूशलेम पर चिट्ठी डाली, उस दिन तू भी उन में से एक था। १२ परन्तु तुझे उचित न था कि तू अपने भाई के दिन में, अर्थात् उसकी विपत्ति के दिन में उसकी ओर देखता रहता, और यहूदियों के नाश होने के दिन उनके ऊपर आनन्द करता, और उनके संकट के दिन बड़ा बोल बोलता। १३ तुझे उचित न था कि मेरी प्रजा की विपत्ति के दिन तू उसके फाटक से घुसता, और उसकी विपत्ति के दिन उसकी दुर्दशा को देखता रहता, और उसकी विपत्ति के दिन उसकी धन सम्पत्ति पर हाथ लगाता। १४ तुझे उचित न था कि तिरमुहाने पर उसके भागनेवालों को मार डालने के लिये खड़ा होता, और संकट के दिन उसके बचे हुओं को पकड़ाता॥

१५ क्योंकि सारी अन्यजातियों पर यहोवा के दिन का आना निकट है। जैसा तू ने किया है, वैसा ही तुझ से भी किया जाएगा, तेरा व्यवहार लौटकर तेरे ही सिर पर पड़ेगा। १६ जिस प्रकार तू ने मेरे पवित्र पर्वत पर पिया, उसी प्रकार से सारी अन्यजातियां लगातार पीती रहेंगी, वरन वे सुड़क-सुड़ककर पीएंगीं, और ऐसी हो जाएंगीं जैसी कभी हुई ही नहीं। १७ परन्तु उस समय सिय्योन पर्वत पर बचे हुए लोग रहेंगे, और वह पवित्रस्थान ठहरेगा; और याकूब का घराना अपने निज भागों का अधिकारी होगा। १८ तब याकूब का घराना आग, और यूसुफ का घराना लौ, और एसाव का घराना खूंटी बनेगा; और वे उन में आग लगाकर उनको भस्म करेंगे, और एसाव के घराने का कोई न बचेगा; क्योंकि यहोवा ही ने ऐसा कहा है॥

१९ दक्खिन देश के लोग एसाव के पहाड़ के अधिकारी हो जाएंगे, और नीचे के देश के लोग पलिश्तियों के अधिकारी होंगे; और यहूदी, एप्रैम और सामरिया के दिहात को अपने भाग में कर लेंगे, और बिन्यामीन गिलाद का अधिकारी होगा। २० इस्राएलियों के उस दल में से जो लोग बंधुआई में जाकर कनानियों के बीच सारपत तक रहते हैं, और यरूशलेमियों में से जो लोग बंधुआई में जाकर सपाराद में रहते हैं, वे सब दक्खिन देश के नगरों के अधिकारी हो जाएंगे। २१ और उद्धार करनेवाले एसाव के पहाड़ का न्याय करने के लिये सिय्योम पर्वत पर चढ़ आएंगे, और राज्य यहोवा ही का हो जाएगा॥

योना

१ यहोवा का यह वचन अमित्तै के पुत्र योना के पास पहुंचा, २ उठकर उस बड़े नगर नीनवे को जा, और उसके विरुद्ध प्रचार कर; क्योंकि उसकी बुराई मेरी दृष्टि में बढ़ गई है *। ३ परन्तु योना यहोवा के सम्मुख से तर्शीश को भाग जाने के लिये उठा, और यापो नगर को जाकर तर्शीश जानेवाला एक जहाज़ पाया; और भाड़ा देकर उस पर चढ़ † गया कि उनके साथ होकर यहोवा के सम्मुख से तर्शीश को चला जाए ।।

४ तब यहोवा ने समुद्र में एक प्रचण्ड आंधी चलाई, और समुद्र में बड़ी आंधी उठी, यहां तक कि जहाज़ टूटने पर था। ५ तब मल्लाह लोग डरकर अपने अपने देवता की दोहाई देने लगे; और जहाज में जो ब्योपार की सामग्री थी उसे समुद्र में फेंकने लगे कि जहाज़ हल्का हो जाए। परन्तु योना जहाज के निचले भाग में उतरकर सो गया था, और गहरी नींद में पड़ा हुआ था। ६ तब मांझी उसके निकट आकर कहने लगा, तू भारी नींद में पड़ा हुआ क्या करता है? उठ, अपने देवता की दोहाई दे! सम्भव है कि परमेश्वर हमारी चिन्ता करे, और हमारा नाश न हो ।।

७ तब उन्हों ने आपस में कहा, आओ, हम चिट्ठी डालकर जान लें कि यह विपत्ति हम पर किस के कारण पड़ी है। तब उन्हों ने चिट्ठी डाली, और चिट्ठी योना के नाम पर निकली। ८ तब उन्हों ने उस से कहा, हमें बता कि किस के कारण यह विपत्ति हम पर पड़ी है? तेरा उद्यम क्या है? और तू कहां से आया है? तू किस देश और किस जाति का है? ९ उस ने उन से कहा, मैं इब्री हूं; और स्वर्ग का परमेश्वर यहोवा जिस ने जल स्थल दोनों को बनाया है, उसी का भय मानता हूं। १० तब वे निपट डर गए, और उस से कहने लगे, तू ने यह क्या किया है? वे जान गए थे कि वह यहोवा के सम्मुख से भाग आया है; क्योंकि उस ने आप ही उनको बता दिया था ।।

११ तब उन्हों ने उस से पूछा, हम तेरे साथ क्या करें जिस से समुद्र शान्त हो जाए? उस समय समुद्र की लहरें बढ़ती ही जाती थीं। १२ उस ने उन से कहा, मुझे उठाकर समुद्र में फेंक दो; तब समुद्र शान्त पड़ जाएगा; क्योंकि मैं जानता हूं, कि यह भारी आंधी तुम्हारे ऊपर मेरे ही कारण आई है। १३ तौभी वे बड़े यत्न से खेते रहे कि उसको किनारे पर लगाएं, परन्तु पहुंच न सके, क्योंकि समुद्र की लहरें उनके विरुद्ध बढ़ती ही जाती थीं। १४ तब उन्हों ने यहोवा को पुकारकर कहा, हे यहोवा हम बिनती करते हैं, कि इस पुरुष के प्राण की सन्ती हमारा नाश न हो, और न हमें निर्दोष की हत्या का दोषी ठहरा; क्योंकि हे यहोवा, जो कुछ तेरी इच्छा थी वही तू ने किया है। १५ तब उन्हों ने योना को उठाकर समुद्र में फेंक दिया; और समुद्र की भयानक लहरें थम गईं। १६ तब उन मनुष्यों ने

* मूल में—चढ़ आई है।
† मूल में—उस में उतरा।

यहोवा का बहुत ही भय माना, और उसको भेंट चढ़ाई और मन्नतें मानीं ॥

१७ यहोवा ने एक बड़ा सा मगरमच्छ ठहराया था कि योना को निगल ले; और योना उस मगरमच्छ के पेट में तीन दिन और तीन रात पड़ा रहा ॥

२ तब योना ने उसके पेट में से अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करके कहा,

२ मैं ने संकट में पड़े हुए यहोवा की दोहाई दी,
और उस ने मेरी सुन ली है;
अधोलोक के उदर में से मैं चिल्ला उठा,
और तू ने मेरी सुन ली।

३ तू ने मुझे गहिरे सागर में समुद्र की थाह तक डाल दिया;
और मैं धाराओं के बीच में पड़ा था,
तेरी भड़काई हुई सब तरंग और लहरें मेरे ऊपर से बह गईं।

४ तब मैं ने कहा, मैं तेरे साम्हने से निकाल दिया गया हूं;
तौभी तेरे पवित्र मन्दिर की ओर फिर ताकूंगा।

५ मैं जल से यहां तक घिरा हुआ था कि मेरे प्राण निकले जाते थे;
गहिरा सागर मेरे चारों ओर था,
और मेरे सिर में सिवार लिपटा हुआ था।

६ मैं पहाड़ों की जड़ तक पहुंच गया था;
मैं सदा के लिये भूमि में बन्द हो गया था;
तौभी हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तू ने मेरे प्राणों को गड़हे में से उठाया है।

७ जब मैं मूर्छा खाने लगा, तब मैं ने यहोवा को स्मरण किया;
और मेरी प्रार्थना तेरे पास वरन तेरे पवित्र मन्दिर में पहुंच गई।

८ जो लोग धोखे की व्यर्थ वस्तुओं पर मन लगाते हैं,
वे अपने करुणानिधान को छोड़ देते हैं।

९ परन्तु मैं ऊंचे शब्द से धन्यवाद करके तुझे बलिदान चढ़ाऊंगा;
जो मन्नत मैं ने मानी, उसको पूरी करूंगा।
उद्धार यहोवा ही से होता है!

१० और यहोवा ने मगरमच्छ को आज्ञा दी,
और उस ने योना को स्थल पर उगल दिया ॥

३ तब यहोवा का यह वचन दूसरी बार योना के पास पहुंचा, २ उठकर उस बड़े नगर नीनवे को जा, और जो बात मैं तुझ से कहूंगा, उसका उस में प्रचार कर। ३ तब योना यहोवा के वचन के अनुसार नीनवे को गया। नीनवे एक बहुत बड़ा नगर था, वह तीन दिन की यात्रा का था। ४ और योना ने नगर में प्रवेश करके एक दिन की यात्रा पूरी की, और यह प्रचार करता गया, अब से चालीस दिन के बीतने पर नीनवे उलट दिया जाएगा। ५ तब नीनवे के मनुष्यों ने परमेश्वर के वचन की प्रतीति की; और उपवास का प्रचार किया गया और बड़े से लेकर छोटे तक सभों ने टाट ओढ़ा ॥

६ तब यह समाचार नीनवे के राजा के कान में पहुंचा; और उस ने सिंहासन पर से उठ, अपना राजकीय ओढ़ना उतारकर

टाट ओढ़ लिया, और राख पर बैठ गया। ७ और राजा ने प्रधानों से सम्मति लेकर नीनवे में इस आज्ञा का ढिंढोरा पिटवाया, कि क्या मनुष्य, क्या गाय-बैल, क्या भेड़-बकरी, या और पशु, कोई कुछ भी न खाएं; वे न खाएं और न पानी पीवें। ८ और मनुष्य और पशु दोनों टाट ओढ़ें, और वे परमेश्वर की दोहाई चिल्ला-चिल्ला कर दें; और अपने कुमार्ग से फिरें; और उस उपद्रव से, जो वे करते हैं, पश्चात्ताप करें। ९ सम्भव है, परमेश्वर दया करे और अपनी इच्छा बदल दे, और उसका भड़का हुआ कोप शान्त हो जाए और हम नाश होने से बच जाएं॥

१० जब परमेश्वर ने उनके कामों को देखा, कि वे कुमार्ग से फिर रहे हैं, तब परमेश्वर ने अपनी इच्छा बदल दी, और उनकी जो हानि करने की ठानी थी, उसको न किया॥

४ यह बात योना को बहुत ही बुरी लगी, और उसका क्रोध भड़का। २ और उस ने यहोवा से यह कहकर प्रार्थना की, हे यहोवा जब मैं अपने देश में था, तब क्या मैं यही बात न कहता था? इसी कारण मैं ने तेरी आज्ञा सुनते ही तर्शीश को भाग जाने के लिये फुर्ती की; क्योंकि मैं जानता था कि तू अनुग्रहकारी और दयालु परमेश्वर है, और विलम्ब से कोप करनेवाला करुणानिधान है, और दुःख देने से प्रसन्न नहीं होता। ३ सो अब हे यहोवा, मेरा प्राण ले ले; क्योंकि मेरे लिये जीवित रहने से मरना ही भला है। ४ यहोवा ने कहा, तेरा जो क्रोध भड़का है, क्या वह उचित है? ५ इस पर योना उस नगर से निकलकर, उसकी पूरब ओर बैठ गया; और वहां एक छप्पर बनाकर उसकी छाया में बैठा हुआ यह देखने लगा कि नगर को क्या होगा?

६ तब यहोवा परमेश्वर ने एक रेंड़ का पेड़ उगाकर ऐसा बढ़ाया कि योना के सिर पर छाया हो, जिस से उसका दुःख दूर हो। योना उस रेंड़ के पेड़ के कारण बहुत ही आनन्दित हुआ। ७ बिहान को जब पौ फटने लगी, तब परमेश्वर ने एक कीड़े को भेजा, जिस ने रेंड़ का पेड़ ऐसा काटा कि वह सूख गया। ८ जब सूर्य उगा, तब परमेश्वर ने पुरवाई बहाकर लू चलाई, और घाम योना के सिर पर ऐसा लगा कि वह मूर्च्छा खाने लगा; और उस ने यह कहकर मृत्यु मांगी, मेरे लिये जीवित रहने से मरना ही अच्छा है। ९ परमेश्वर ने योना से कहा, तेरा क्रोध, जो रेंड़ के पेड़ के कारण भड़का है, क्या वह उचित है? उस ने कहा, हां, मेरा जो क्रोध भड़का है वह अच्छा ही है, वरन क्रोध के मारे मरना भी अच्छा होता। १० तब यहोवा ने कहा, जिस रेंड़ के पेड़ के लिये तू ने कुछ परिश्रम नहीं किया, न उसको बढ़ाया, जो एक ही रात में हुआ, और एक ही रात में नाश भी हुआ; उस पर तू ने तरस खाई है। ११ फिर यह बड़ा नगर नीनवे, जिस में एक लाख बीस हजार से अधिक मनुष्य हैं जो अपने दहिने बाएं हाथों का भेद नहीं पहिचानते, और बहुत घरैलू पशु भी उस में रहते हैं, तो क्या मैं उस पर तरस न खाऊं?

मीका

१ यहोवा का वचन, जो यहूदा के राजा योताम, आहाज और हिजकिय्याह के दिनों में मीका मोरेशेती को पहुंचा, जिस को उस ने शोमरोन और यरूशलेम के विषय में पाया ॥

२ हे जाति-जाति के सब लोगो, सुनो ! हे पृथ्वी तू उस सब समेत जो तुझ में हैं, ध्यान दे ! और प्रभु यहोवा तुम्हारे विरुद्ध, वरन परमेश्वर अपने पवित्र मन्दिर में से तुम पर साक्षी दे। ३ क्योंकि देख, यहोवा अपने पवित्रस्थान से बाहर निकल रहा है, और वह उतरकर पृथ्वी के ऊंचे स्थानों पर चलेगा। ४ और पहाड़ उसके नीचे गल जाएंगे, और तराई ऐसे फटेंगी, जैसे मोम आग की आंच से, और पानी जो घाट से नीचे बहता है। ५ यह सब याकूब के अपराध, और इस्राएल के घराने के पाप के कारण से होता है। याकूब का अपराध क्या है? क्या सामरिया नहीं? और यहूदा के ऊंचे स्थान क्या हैं? क्या यरूशलेम नहीं? ६ इस कारण मैं सामरिया को मैदान के खेत का ढेर कर दूंगा, और दाख का बगीचा बनाऊंगा; और मैं उसके पत्थरों को खड्ड में लुढ़का दूंगा, और उसकी नेव उखाड़ दूंगा। ७ उसकी सब खुदी हुई मूरतें टुकड़े टुकड़े की जाएंगी, और जो कुछ उस ने छिनाला करके कमाया है वह आग से भस्म किया जाएगा, और उसकी सब प्रतिमाओं को मैं चकनाचूर करूंगा; क्योंकि छिनाले ही की कमाई से उस ने उनको संचय किया है, और वह फिर छिनाले की सी कमाई हो जाएगी ॥

८ इस कारण मैं छाती पीटकर हाय, हाय, करूंगा; मैं लुटा हुआ सा और नंगा चला फिरा करूंगा; मैं गीदड़ों की नाईं चिल्लाऊंगा, और शुतुर्मुर्गों की नाईं रोऊंगा। ९ क्योंकि उसका घाव असाध्य है; और विपत्ति यहूदा पर भी आ पड़ी, वरन वह मेरे जातिभाइयों पर पड़कर यरूशलेम के फाटक तक पहुंच गई है ॥

१० गात नगर में इसकी चर्चा मत करो, और मत रोओ; बेतआप्रा * में धूलि में लोटपोट करो। ११ हे शापीर की रहनेवाली नंगी होकर निर्लज चली जा; सानान † की रहनेवाली नहीं निकल सकती; बेतेसेल के रोने पीटने के कारण उसका शरणस्थान तुम से ले लिया जाएगा। १२ क्योंकि मारोत की रहनेवाली तो कुशल की बाट जोहते-जोहते तड़प गई है, क्योंकि यहोवा की ओर से यरूशलेम के फाटक तक विपत्ति आ पहुंची है। १३ हे लाकीश की रहनेवाली अपने रथों में वेग चलनेवाले घोड़े जोत; तुझी से सिय्योन की प्रजा के ‡ पाप का आरम्भ हुआ, क्योंकि इस्राएल के अपराध तुझी में पाए गए। १४ इस कारण तू गात के मोरेशेत को दान देकर दूर कर देगा; अकजीब § के घर

---

* अर्थात् धूलि के घर।
† अर्थात् निकलना।
‡ मूल में—सिय्योन की बेटी का।
§ अर्थात् धोखे।

से इस्राएल के राजा धोखा ही खाएंगे। **१५** हे मारेशा की रहनेवाली मैं फिर तुझ पर एक अधिकारी ठहराऊंगा, और इस्राएल के प्रतिष्ठित लोगों को* अदुल्लाम में आना पड़ेगा। १६ अपने दुलारे लड़कों के लिये अपना केश कटवाकर सिर मुंड़ा, वरन अपना पूरा सिर गिद्ध के समान गंजा कर दे, क्योंकि वे बंधुए होकर तेरे पास से चले गए हैं।।

२ हाय उन पर, जो बिछौनों पर पड़े हुए बुराइयों की कल्पना करते और दुष्ट कर्म की इच्छा करते हैं, और बलवन्त होने के कारण भोर को दिन निकलते ही वे उसको पूरा करते हैं। २ वे खेतों का लालच करके उन्हें छीन लेते हैं, और घरों का लालच करके उन्हें भी ले लेते हैं; और उसके घराने समेत पुरुष पर, और उसके निज भाग समेत किसी पुरुष पर अन्धेर और अत्याचार करते हैं। ३ इस कारण, यहोवा यों कहता है, मैं इस कुल पर ऐसी विपत्ति डालने पर हूं, जिस के नीचे से तुम अपनी गर्दन हटा न सकोगे, न अपने सिर ऊंचे किए हुए चल सकोगे; क्योंकि वह विपत्ति का समय होगा। ४ उस समय यह अत्यन्त शोक का गीत दृष्टान्त की रीति पर गाया जाएगा: हम तो सर्वनाश हो गए; वह मेरे लोगों के भाग को बिगाड़ता है; हाय, वह उसे मुझ से कितनी दूर कर देता है! वह हमारे खेत बलवा करनेवाले को दे देता है। ५ इस कारण तेरा ऐसा कोई न होगा, जो यहोवा की मण्डली में चिट्ठी डालकर नापने की डोरी डाले।।

६ बकवासी कहा करते हैं, कि बकवास न करो। इन बातों के लिये न कहा करो; ऐसे लोगों में से अपमान न मिटेगा। ७ हे याकूब के घराने, क्या यह कहा जाए कि यहोवा का आत्मा अधीर हो गया है*? क्या ये काम उसी के किए हुए हैं? क्या मेरे वचनों से उसका भला नहीं होता जो सीधाई से चलता है? ८ परन्तु कल की बात है कि मेरी प्रजा शत्रु बनकर मेरे विरुद्ध उठी है; तुम शान्त और भोले-भाले राहियों के तन पर से चादर छीन लेते हो जो लड़ाई का विचार न करके निधड़क चले जाते हैं। ९ मेरी प्रजा की स्त्रियों को तुम उनके सुखधामों से निकाल देते हो; और उनके नन्हें बच्चों से तुम मेरी दी हुई उत्तम वस्तुएं† सर्वदा के लिये छीन लेते हो। १० उठो, चले जाओ! क्योंकि यह तुम्हारा विश्रामस्थान नहीं है; इसका कारण वह अशुद्धता है जो कठिन दुःख के साथ तुम्हारा नाश करेगी। ११ यदि कोई झूठी आत्मा में चलता हुआ झूठी और व्यर्थ बातें कहे और कहे कि मैं तुम्हें नित्य दाखमधु और मदिरा के लिये प्रचार सुनाता रहूंगा, तो वही इन लोगों का भविष्यद्वक्ता ठहरेगा।।

१२ हे याकूब, मैं निश्चय तुम सभों को इकट्ठा करूंगा; मैं इस्राएल के बचे हुओं को निश्चय इकट्ठा करूंगा; और बोस्रा की भेड़-बकरियों की नाईं एक संग रखूंगा। उस झुण्ड की नाईं जो अच्छी चराई में हो, वे मनुष्यों की बहुतायत के मारे कोलाहल मचाएंगे। १३ उनके आगे आगे बाड़े का तोड़नेवाला गया है, इसलिये वे भी उसे तोड़ रहे हैं, और फाटक से होकर निकले जा रहे हैं; उनका राजा उनके आगे आगे

* मूल में—इस्राएल की महिमा को।

* वा हे याकूब का घराना कहानेवाले, क्या यहोवा का आत्मा अधीर हो गया है?

† मूल में—मेरा प्रताप।

गया अर्थात् यहोवा उनका सरदार और अगुवा है ॥

३ और मैं ने कहा, हे याकूब के प्रधानो, हे इस्राएल के घराने के न्याइयो, सुनो! क्या न्याय का भेद जानना तुम्हारा काम नहीं? २ तुम तो भलाई से बैर, और बुराई से प्रीति रखते हो, मानो, तुम, लोगों पर से उनकी खाल, और उनकी हड्डियों पर से उनका मांस उधेड़ लेते हो; ३ वरन तुम मेरे लोगों का मांस खा भी लेते, और उनकी खाल उधेड़ते हो; तुम उनकी हड्डियों को हांडी में पकाने के लिये तोड़ डालते और उनका मांस हंडे में पकाने के लिये टुकड़े टुकड़े करते हो। ४ वे उस समय यहोवा की दोहाई देंगे, परन्तु वह उनकी न सुनेगा, वरन उस समय वह उनके बुरे कामों के कारण उन से मुंह फेर लेगा ॥

५ यहोवा का यह वचन है कि जो भविष्यद्वक्ता मेरी प्रजा को भटका देते हैं, और जब उन्हें खाने को मिलता है तब शान्ति, शान्ति, पुकारते हैं, और यदि कोई उनके मुंह में कुछ न दे, तो उसके विरुद्ध युद्ध करने को तैयार हो जाते हैं*। ६ इस कारण तुम पर ऐसी रात आएगी, कि तुम को दर्शन न मिलेगा, और तुम ऐसे अन्धकार में पड़ोगे कि भावी न कह सकोगे। भविष्यद्वक्ताओं के लिये सूर्य अस्त होगा, और दिन रहते उन पर अन्धियारा† छा जाएगा। ७ दर्शी लज्जित होंगे, और भावी कहनेवालों के मुंह काले होंगे; और वे सब के सब अपने ओठों को इसलिये ढांपेंगे कि परमेश्वर की ओर से उत्तर नहीं मिलता। ८ परन्तु मैं तो यहोवा की आत्मा से शक्ति, न्याय और पराक्रम पाकर परिपूर्ण हूं कि मैं याकूब को उसका अपराध और इस्राएल को उसका पाप जता सकूं ॥

९ हे याकूब के घराने के प्रधानो, हे इस्राएल के घराने के न्यायियो, हे न्याय से घृणा करनेवालो और सब सीधी बातों को टेढ़ी-मेढ़ी करनेवालो, यह बात सुनो। १० तुम सिय्योन को हत्या करके और यरूशलेम को कुटिलता करके दृढ़ करते हो। ११ उसके प्रधान घूस ले लेकर विचार करते, और याजक दाम ले लेकर व्यवस्था देते हैं, और भविष्यद्वक्ता रुपये के लिये भावी कहते हैं; तौभी वे यह कहकर यहोवा पर भरोसा रखते हैं, यहोवा हमारे बीच में है, इसलिये कोई विपत्ति हम पर न आएगी। १२ इसलिये तुम्हारे कारण सिय्योन जोतकर खेत बनाया जाएगा, और यरूशलेम डीह ही डीह हो जाएगा, और जिस पर्वत पर भवन बना है, वह वन के ऊंचे स्थान सा हो जाएगा ॥

४ अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा, और सब पहाड़ियों से अधिक ऊंचा किया जाएगा; और हर जाति के लोग धारा की नाईं उसकी ओर चलेंगे। २ और बहुत जातियों के लोग जाएंगे, और आपस में कहेंगे, आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर, याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएं; तब वह हम को अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे। क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से, और उसका वचन यरूशलेम से निकलेगा। ३ वह बहुत देशों के लोगों का न्याय करेगा, और दूर दूर तक की सामर्थी

* मूल में—युद्ध पवित्र करते हो।
† मूल में—काला।

जातियों के झगड़ों को मिटाएगा; सो वे अपनी तलवारें पीटकर हल के फाल, और अपने भालों से हंसिया बनाएंगे; तब एक जाति दूसरी जाति के विरुद्ध तलवार फिर न चलाएगी; ४ और लोग आगे को युद्ध-विद्या न सीखेंगे। परन्तु वे अपनी अपनी दाखलता और अंजीर के वृक्ष तले बैठा करेंगे, और कोई उनको न डराएगा; सेनाओं के यहोवा ने यही वचन दिया है ।।

५ सब राज्यों के लोग तो अपने अपने देवता का नाम लेकर चलते हैं, परन्तु हम लोग अपने परमेश्वर यहोवा का नाम लेकर सदा सर्वदा चलते रहेंगे ।।

६ यहोवा की यह वाणी है, उस समय में प्रजा के लंगड़ों* को, और बरबस निकाले हुओं † को, और जिन को मैं ने दुःख दिया है उन सब को इकट्ठे करूंगा। ७ और लगड़ों * को मैं बचा रखूंगा, और दूर किए हुओं ‡ को एक सामर्थी जाति कर दूंगा; और यहोवा उन पर सिय्योन पर्वत के ऊपर से सदा राज्य करता रहेगा ।।

८ और हे एदेर के गुम्मट, हे सिय्योन § की पहाड़ी, पहिली प्रभुता अर्थात् यरूशलेम ‖ का राज्य तुझे मिलेगा ।।

९ अब तू क्यों चिल्लाती है? क्या तुझ में कोई राजा नहीं रहा? क्या तेरा युक्ति करनेवाला नाश हो गया, जिस से जच्चा स्त्री की नाईं तुझे पीड़ा उठती है? १० हे सिय्योन की बेटी, जच्चा स्त्री की नाईं पीड़ा उठाकर उत्पन्न कर; क्योंकि अब तू गढ़ी में से निकलकर मैदान में बसेगी, वरन बाबुल तक जाएगी; वहीं तू छुड़ाई जाएगी, अर्थात् वहीं यहोवा तुझे तेरे शत्रुओं के वश में से छुड़ा लेगा ।।

११ और अब बहुत सी जातियां तेरे विरुद्ध इकट्ठी होकर तेरे विषय में कहेंगी, सिय्योन अपवित्र की जाए, और हम अपनी आंखों से उसको निहारें। १२ परन्तु वे यहोवा की कल्पनाएं नहीं जानते, न उसकी युक्ति समझते हैं, कि वह उन्हें ऐसा बटोर लेगा जैसे खलिहान में पूले बटोरे जाते हैं। १३ हे सिय्योन *, उठ और दांव कर, मैं तेरे सींगों को लोहे के, और तेरे खुरों को पीतल के बना दूंगा; और तू बहुत सी जातियों को चूरचूर करेगी, और उनकी कमाई यहोवा को और उनकी धन-सम्पत्ति पृथ्वी के प्रभु के लिये अर्पण करेगी ।।

५ अब हे बहुत दलों की स्वामिनी †, दल बान्ध-बान्धकर इकट्ठी हो, क्योंकि उस ने हम लोगों को घेर लिया है; वे इस्राएल के न्यायी के गाल पर सोंटा मारेंगे ।।

२ हे बेतलेहेम एप्राता, यदि तू ऐसा छोटा है कि यहूदा के हजारों में गिना नहीं जाता, ‡ तौभी तुझ में से मेरे लिये एक पुरुष निकलेगा, जो इस्राएलियों में प्रभुता करनेवाला होगा; और उसका निकलना प्राचीनकाल से, वरन अनादि काल से होता आया है। ३ इस कारण वह उनको उस समय तक त्यागे रहेगा, जब तक जच्चा उत्पन्न न करे;

* मूल में—लंगड़ानेवाली।
† मूल में—निकाली हुई।
‡ मूल में—की हुई।
§ मूल में—सिय्योन की बेटी।
‖ मूल में—यरूशलेम की बेटी।

* मूल में—सिय्योन की बेटी।
† मूल में—बेटी।
‡ मूल में—तू यहूदा के हजारों में से छोटा है।

तब इस्राएलियों के पास उसके बचे हुए भाई लौटकर उन से मिल जाएंगे। ४ और वह खड़ा होकर यहोवा की दी हुई शक्ति से, और अपने परमेश्वर यहोवा के नाम के प्रताप से, उनकी चरवाही करेगा। और वे सुरक्षित रहेंगे, क्योंकि अब वह पृथ्वी की छोर तक महान् ठहरेगा ।।

५ और वह शान्ति का मूल होगा, जब अश्शूरी हमारे देश पर चढ़ाई करें, और हमारे राजभवनों * में पांव धरें, तब हम उनके विरुद्ध सात चरवाहे वरन आठ प्रधान मनुष्य खड़े करेंगे। ६ और वे अश्शूर के देश को वरन पेंठाव के स्थानों तक निम्रोद के देश को तलवार चलाकर मार लेंगे; और जब अश्शूरी लोग हमारे देश में आएं, और उसके सिवाने के भीतर पांव धरें, तब वही पुरुष हम को उन से बचाएगा। ७ और याकूब के बचे हुए लोग बहुत राज्यों के बीच ऐसा काम देंगे, जैसा यहोवा की ओर से पड़नेवाली ओस, और घास पर की वर्षा, जो किसी के लिये नहीं ठहरती और मनुष्यों की बाट नहीं जोहती। ८ और याकूब के बचे हुए लोग जातियों में और देश देश के लोगों के बीच ऐसे होंगे जैसे बनपशुओं में सिंह, वा भेड़-बकरियों के झुण्डों में जवान सिंह होता है, क्योंकि जब वह उनके बीच में से जाए, तो लताड़ता और फाड़ता जाएगा, और कोई बचा न सकेगा। ९ तेरा हाथ तेरे द्रोहियों पर पड़े, और तेरे सब शत्रु नाश हो जाएं ।।

१० यहोवा की यह वाणी है, उस समय मैं तेरे घोड़ों को तेरे बीच में से नाश करूंगा; और तेरे रथों का विनाश करूंगा। ११ और मैं तेरे देश के नगरों को भी नाश करूंगा, और तेरे किलों को ढा दूंगा। १२ और मैं तेरे तन्त्र-मन्त्र नाश करूंगा, और तुझ में टोनहे आगे को न रहेंगे। १३ और मैं तेरी खुदी हुई मूरतें, और तेरी लाठें, तेरे बीच में से नाश करूंगा; और तू आगे को अपने हाथ की बनाई हुई वस्तुओं को दण्डवत् न करेगा। १४ और मैं तेरी अशेरा नाम मूरतों को तेरी भूमि में से उखाड़ डालूंगा, और तेरे नगरों का विनाश करूंगा। १५ और मैं अन्यजातियों से जो मेरा कहा नहीं मानतीं, क्रोध और जल-जलाहट के साथ पलटा लूंगा ।।

६ जो बात यहोवा कहता है, उसे सुनो: उठकर, पहाड़ों के साम्हने वादविवाद कर, और टीले भी तेरी सुनने पाएं। २ हे पहाड़ो, और हे पृथ्वी की अटल नेव, यहोवा का वादविवाद सुनो, क्योंकि यहोवा का अपनी प्रजा के साथ मुक़द्दमा है, और वह इस्राएल से वादविवाद करता है ।।

३ हे मेरी प्रजा, मैं ने तेरा क्या किया, और क्या करके मैं ने तुझे उकता दिया है? ४ मेरे विरुद्ध साक्षी दे! मैं तो तुझे मिस्र देश से निकाल ले आया, और दासत्व के घर में से तुझे छुड़ा लाया; और तेरी अगुवाई करने को मूसा, हारून और मरियम को भेज दिया। ५ हे मेरी प्रजा, स्मरण कर, कि मोआब के राजा बालाक ने तेरे विरुद्ध कौन सी युक्ति की? और बोर के पुत्र बिलाम ने उसको क्या सम्मति दी? और शित्तीम से गिलगाल तक की बातों का स्मरण कर, जिस से तू यहोवा के धर्म के काम समझ सके ।।

* मूल में—फाटकों।

६ मैं क्या लेकर यहोवा के सम्मुख आऊं, और ऊपर रहनेवाले परमेश्वर के साम्हने झुकूं? क्या मैं होमबलि के लिये एक एक वर्ष के बछड़े लेकर उसके सम्मुख आऊं? ७ क्या यहोवा हजारों मेढ़ों से, वा तेल की लाखों नदियों से प्रसन्न होगा? क्या मैं अपने अपराध के प्रायश्चित्त में अपने पहिलौठे को वा अपने पाप के बदले में अपने जन्माए हुए किसी को दूं? ८ हे मनुष्य, वह तुझे बता चुका है कि अच्छा क्या है; और यहोवा तुझ से इसे छोड़ और क्या चाहता है, कि तू न्याय से काम करे, और कृपा से प्रीति रखे, और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले?

९ यहोवा इस नगर को पुकार रहा है, और सम्पूर्ण ज्ञान, तेरे नाम का भय मानना है: राजदण्ड की, और जो उसे देनेवाला है उसकी बात सुनो! १० क्या अब तक दुष्ट के घर में दुष्टता से पाया हुआ धन और छोटा एपा घृणित नहीं है? ११ क्या मैं कपट का तराजू और घटबढ़ के बटखरों की थैली लेकर पवित्र ठहर सकता हूं? १२ यहां के धनवान् लोग उपद्रव का काम देखा करते हैं; और यहां के सब रहनेवाले झूठ बोलते हैं और उनके मुंह से छल की बातें निकलती हैं*। १३ इस कारण मैं तुझे मारते मारते बहुत ही घायल करता हूं, और तेरे पापों के कारण तुझ को उजाड़ डालता हूं। १४ तू खाएगा, परन्तु तृप्त न होगा, तेरा पेट जलता ही रहेगा; और तू अपनी सम्पत्ति लेकर चलेगा, परन्तु न बचा सकेगा, और जो कुछ तू बचा भी ले, उसको मैं तलवार चलाकर लुटवा दूंगा। १५ तू बोएगा, परन्तु लवेगा नहीं; तू जलपाई का तेल निकालेगा, परन्तु लगाने न पाएगा; और दाख रौंदेगा, परन्तु दाखमधु पीने न पाएगा। १६ क्योंकि वे ओम्री की विधियों पर, और अहाब के घराने के सब कामों पर चलते हैं; और तुम उनकी युक्तियों के अनुसार चलते हो; इसलिये मैं तुझे उजाड़ दूंगा, और इस नगर के रहनेवालों पर ताली बजवाऊंगा, और तुम मेरी प्रजा की नामधराई सहोगे॥

७ हाय मुझ पर! क्योंकि मैं उस जन के समान हो गया हूं जो धूपकाल के फल तोड़ने पर, वा रही हुई दाख बीनने के समय के अन्त में आ जाए, मुझे तो पक्की अंजीरों की लालसा थी, परन्तु खाने के लिये कोई गुच्छा नहीं रहा। २ भक्त लोग पृथ्वी पर से नाश हो गए हैं, और मनुष्यों में एक भी सीधा जन नहीं रहा; वे सब के सब हत्या के लिये घात लगाते, और जाल लगाकर अपने अपने भाई का अहेर करते हैं। ३ वे अपने दोनों हाथों से मन लगाकर बुराई करते हैं; हाकिम घूस मांगता, और न्यायी घूस लेने को तैयार रहता है, और रईस अपने मन की दुष्टता वर्णन करता है; इसी प्रकार से वे सब मिलकर जालसाजी करते हैं। ४ उन में से जो सब से उत्तम है, वह कटीली झाड़ी के समान दुःखदाई है, जो सब से सीधा है, वह कांटेवाले बाड़े से भी बुरा है। तेरे पहरुओं का कहा हुआ दिन, अर्थात् तेरे दण्ड का दिन आ गया है। अब वे शीघ्र चौंधिया जाएंगे। ५ मित्र पर विश्वास मत करो, परममित्र पर भी भरोसा मत रखो; वरन अपनी अर्द्धांगिन* से भी संभलकर बोलना। ६ क्योंकि पुत्र पिता का अपमान करता, और बेटी माता

* मूल में—उसके मुंह में उनकी जीभ धोखा देनेवाली है।

* मूल में—अपनी गोद में सोनेवाली।

के, और पतोहू सास के विरुद्ध उठती है; मनुष्य के शत्रु उसके घर ही के लोग होते हैं। ७ परन्तु मैं यहोवा की ओर ताकता रहूंगा, मैं अपने उद्धारकर्त्ता परमेश्वर की बाट जोहता रहूंगा; मेरा परमेश्वर मेरी सुनेगा।।

८ हे मेरी बैरिन, मुझ पर आनन्द मत कर; क्योंकि ज्योंही मैं गिरूंगा त्योंही उठूंगा; और ज्योंही मैं अन्धकार में पड़ूंगा त्योंही यहोवा मेरे लिये ज्योति का काम देगा। ९ मैं ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है, इस कारण मैं उस समय तक उसके क्रोध को सहता रहूंगा जब तक कि वह मेरा मुक़द्दमा लड़कर मेरा न्याय न चुकाएगा। उस समय वह मुझे उजियाले में निकाल ले आएगा, और मैं उसका धर्म देखूंगा। १० तब मेरी बैरिन जो मुझ से यह कहती है कि तेरा परमेश्वर यहोवा कहां रहा, वह भी उसे देखेगी और लज्जा से मुंह ढांपेगी। मैं अपनी आंखों से उसे देखूंगा; तब वह सड़कों की कीच की नाईं लताड़ी जाएगी।।

११ तेरे बाड़ों के बान्धने के दिन उसकी सीमा बढ़ाई जाएगी। १२ उस दिन अश्शूर से, और मिस्र के नगरों से, और मिस्र और महानद के बीच के, और समुद्र-समुद्र और पहाड़-पहाड़ के बीच के देशों से लोग तेरे पास आएंगे। १३ तौभी यह देश अपने रहनेवालों के कामों के कारण उजाड़ ही रहेगा।।

१४ तू लाठी लिये हुए अपनी प्रजा की चरवाही कर, अर्थात् अपने निज भाग की भेड़-बकरियों की, जो कर्म्मेल * के वन में अलग बैठती हैं; वे पूर्वकाल की नाईं बाशान और गिलाद में चरा करें।।

१५ जैसे कि मिस्र देश से तेरे निकल आने के दिनों में, वैसी ही अब मैं उसको अद्भुत काम दिखाऊंगा। १६ अन्यजातियां देखकर अपने सारे पराक्रम के विषय में लजाएंगी; वे अपने मुंह को हाथ से छिपाएंगी, और उनके कान बहिरे हो जाएंगे। १७ वे सर्प की नाईं मिट्टी चाटेंगी, और भूमि पर रेंगनेवाले जन्तुओं की भांति अपने बिलों में से कांपती हुई निकलेंगी; वे हमारे परमेश्वर यहोवा के पास थरथराती हुई आएंगी, और वे तुझ से डरेंगी।।

१८ तेरे समान ऐसा परमेश्वर कहां है जो अधर्म को क्षमा करे और अपने निज भाग के बचे हुओं के अपराध को ढांप दे? वह अपने क्रोध को सदा बनाए नहीं रहता, क्योंकि वह करुणा से प्रीति रखता है। १९ वह फिर हम पर दया करेगा, और हमारे अधर्म के कामों को लताड़ डालेगा। तू उनके सब पापों को गहिरे समुद्र में डाल देगा। २० तू याकूब के विषय में वह सच्चाई, और इब्राहीम के विषय में वह करुणा पूरी करेगा, जिस की शपथ तू प्राचीनकाल के दिनों से लेकर अब तक हमारे पितरों से खाता आया है।।

* मूल में—कर्म्मेल के बीच।

नहूम

१ नीनवे के विषय में भारी वचन। एल्कोशी नहूम के दर्शन की पुस्तक ।।

२ यहोवा जल उठनेवाला और बदला लेनेवाला ईश्वर है; यहोवा बदला लेनेवाला और जलजलाहट करनेवाला है; यहोवा अपने द्रोहियों से बदला लेता है, और अपने शत्रुओं का पाप नहीं भूलता *। ३ यहोवा विलम्ब से क्रोध करनेवाला और बड़ा शक्तिमान है; वह दोषी को किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा ।।

यहोवा बवंडर और आंधी में होकर चलता है, और बादल उसके पांवों की धूलि हैं। ४ उसके घुड़कने से महानद सूख जाते हैं, और समुद्र भी निर्जल हो जाता है; बाशान और कर्म्मेल कुम्हलाते और लबानोन की हरियाली जाती रहती है। ५ उसके स्पर्श से पहाड़ कांप उठते हैं और पहाड़ियां गल जाती हैं; उसके प्रताप से पृथ्वी वरन सारा संसार अपने सब रहनेवालों समेत थरथरा उठता है ।।

६ उसके क्रोध का साम्हना कौन कर सकता है? और जब उसका क्रोध भड़कता है, तब कौन ठहर सकता है? उसकी जलजलाहट आग की नाईं भड़क जाती है, और चट्टानें उसकी शक्ति से फट फटकर गिरती हैं। ७ यहोवा भला है; संकट के दिन में वह दृढ़ गढ़ ठहरता है, और अपने शरणागतों की सुधी रखता है। ८ परन्तु वह उमड़ती हुई धारा से उसके स्थान का अन्त कर देगा, और अपने शत्रुओं को खदेड़कर अन्धकार में भगा देगा। ९ तुम यहोवा के विरुद्ध क्या कल्पना कर रहे हो? वह तुम्हारा अन्त कर देगा; विपत्ति दूसरी बार पड़ने न पाएगी। १० क्योंकि चाहे वे कांटों से उलझे हुए हों, और मदिरा के नशे में चूर भी हों *, तौभी वे सूखी खूंटी की नाईं भस्म किए जाएंगे। ११ तुझ में से एक निकला है, जो यहोवा के विरुद्ध कल्पना करता और नीचता की युक्ति बान्धता है ।।

१२ यहोवा यों कहता है, चाहे वे सब प्रकार से सामर्थी हों, और बहुत भी हों, तौभी पूरी रीति से काटे जाएंगे और शून्य हो जाएंगे। मैं ने तुझे दुःख दिया है, परन्तु फिर न दूंगा। १३ क्योंकि अब मैं उसका जूआ तेरी गर्दन पर से उतारकर तोड़ डालूंगा, और तेरा बन्धन फाड़ डालूंगा ।।

१४ यहोवा ने तेरे विषय में यह आज्ञा दी है कि आगे को तेरा वंश न चले; मैं तेरे देवालयों में से ढली और गढ़ी हुई मूरतों को काट डालूंगा, मैं तेरे लिये कबर खोदूंगा, क्योंकि तू नीच है ।।

१५ देखो, पहाड़ों पर शुभसमाचार का सुनानेवाला और शान्ति का प्रचार करनेवाला आ रहा है! अब हे यहूदा, अपने पर्व मान, और अपनी मन्नतें पूरी कर, क्योंकि वह ओछा फिर कभी तेरे बीच में होकर न चलेगा, वह पूरी रीति से नाश हुआ है ।।

---

* मूल में—अपने शत्रुओं के लिये रख छोड़ता है।

* मूल में—अपने पीने में खूब मस्त हों।

२ सत्यानाश करनेवाला तेरे विरुद्ध चढ़ आया है। गढ़ को दृढ़ कर; मार्ग देखता हुआ चौकस रह; अपनी कमर कस; अपना बल बढ़ा दे॥

२ यहोवा याकूब की बड़ाई इस्राएल की बड़ाई के समान ज्यों की त्यों कर रहा है, क्योंकि उजाड़नेवालों ने उनको उजाड़ दिया है और दाखलता की डालियों को नाश किया है॥

३ उसके शूरवीरों की ढालें लाल रंग से रंगी गईं, और उसके योद्धा लाल रंग के वस्त्र पहिने हुए हैं। तैयारी के दिन रथों का लोहा आग की नाईं चमकता है, और भाले* हिलाए जाते हैं। ४ रथ सड़कों में बहुत वेग से हांके जाते और चौकों में इधर उधर चलाए जाते हैं; वे पलीतों के समान दिखाई देते हैं, और उनका वेग बिजली का सा है। ५ वह अपने शूरवीरों को स्मरण करता है; वे चलते चलते ठोकर खाते हैं, वे शहरपनाह की ओर फुर्ती से जाते हैं, और काठ का गुम्मट तैयार किया जाता है। ६ नहरों के द्वार खुल जाते हैं, और राजभवन गलकर बैठा जाता है। ७ हुसेब नंगी करके बंधुआई में ले ली जाएगी, और उसकी दासियां छाती पीटती हुई पिण्डुकों की नाईं विलाप करेंगी। ८ नीनवे जब से बनी है, तब से तालाब के समान है, तौभी वे भागे जाते हैं, और "खड़े हो; खड़े हो", ऐसा पुकारे जाने पर भी कोई मुंह नहीं फेरता। ९ चांदी को लूटो, सोने को लूटो, उसके रखे हुए धन की बहुतायत, और विभव की सब प्रकार की मनभावनी सामग्री का कुछ परिमाण नहीं॥

* मूल में—सनोवर।

१० वह खाली, छूछी और सूनी हो गई है! मन कच्चा हो गया, और पांव कांपते हैं; और उन सभों की कटियों में बड़ी पीड़ा उठी, और सभों के मुख का रंग उड़ गया है! ११ सिंहों की वह मांद, और जवान सिंह के आखेट का वह स्थान कहां रहा जिस में सिंह और सिंहनी अपने बच्चों समेत बेखटके फिरते थे? १२ सिंह तो अपने डांवरुओं के लिये बहुत आहेर को फाड़ता था, और अपनी सिंहनियों के लिये आहेर का गला घोंट घोंटकर ले जाता था, और अपनी गुफाओं और मांदों को आहेर से भर लेता था॥

१३ सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, मैं तेरे विरुद्ध हूं, और उसके रथों को भस्म करके धुएं में उड़ा दूंगा, और उसके जवान सिंह सरीखे वीर तलवार से मारे जाएंगे; मैं तेरे आहेर को पृथ्वी पर से नाश करूंगा, और तेरे दूतों का बोल फिर सुना न जाएगा॥

३ हाय उस हत्यारी नगरी पर, वह तो छल और लूट के धन से भरी हुई है; लूट कम नहीं होती है। २ कोड़ों की फटकार और पहियों की घड़घड़ाहट हो रही है; घोड़े कूदते-फांदते और रथ उछलते चलते हैं। ३ सवार चढ़ाई करते, तलवारें और भाले बिजली की नाईं चमकते हैं, मारे हुओं की बहुतायत और लोथों का बड़ा ढेर है; मुर्दों की कुछ गिनती नहीं, लोग मुर्दों से ठोकर खा खाकर चलते हैं! ४ यह सब उस अति सुन्दर वेश्या, और निपुण टोनहिन के छिनाले की बहुतायत के कारण हुआ, जो छिनाले के द्वारा जाति-जाति के लोगों को, और टोने के द्वारा कुल-कुल के लोगों को बेच डालती है॥

५ सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, में तेरे विरुद्ध हूं, और तेरे वस्त्र को उठाकर, तुझे जाति-जाति के साम्हने नंगी और राज्य-राज्य के साम्हने नीचा दिखाऊंगा। ६ में तुझ पर घिनौनी वस्तुएं फेंककर तुझे तुच्छ कर दूंगा, और सब से तेरी हंसी कराऊंगा। ७ और जितने तुझे देखेंगे, सब तेरे पास से भागकर कहेंगे, नीनवे नाश हो गई; कौन उसके कारण विलाप करे? हम उसके लिये शान्ति देनेवाला कहां से ढूंढ़कर ले आएं? ८ क्या तू अमोन नगरी से बढ़कर है, जो नहरों के बीच बसी थी, और उसके चारों ओर जल था, और महानद उसके लिये किला और शहरपनाह का काम देता था? ९ कूश और मिस्री उसको अनगिनित बल देते थे, पूत और लूबी तेरे सहायक थे॥

१० तौभी लोग उसको बंधुआई में ले गए, और उसके नन्हें बच्चे सड़कों के सिरे पर पटक दिए गए; और उसके प्रतिष्ठित पुरुषों के लिये उन्हों ने चिट्ठी डाली, और उसके सब रईस बेड़ियों से जकड़े गए। ११ तू भी मतवाली होगी, तू घबरा* जाएगी; तू भी शत्रु के डर के मारे शरण का स्थान ढूंढ़ेगी। १२ तेरे सब गढ़ ऐसे अंजीर के वृक्षों के समान होंगे जिन में पहिले पक्के अंजीर लगे हों, यदि वे हिलाए जाएं तो फल खानेवाले के मुंह में गिरेंगे। १३ देख, तेरे लोग जो तेरे बीच में हैं, वे स्त्रियां बन गये हैं। तेरे देश में प्रवेश करने के मार्ग तेरे शत्रुओं के लिये बिलकुल खुले पड़े हैं; और रुकावट की छड़ें आग के कौर हो गई हैं॥

१४ घिर जाने के दिनों के लिये पानी भर ले, और गढ़ों को अधिक दृढ़ कर; कीचड़ में आकर गारा लताड़, और भट्ठे को सजा! १५ वहां तू आग में भस्म होगी, और तलवार से तू नाश हो जाएगी। वह येलेक नाम टिड्डी की नाईं तुझे निगल जाएगी॥

यद्यपि तू अर्बे नाम टिड्डी के समान अनगिनिती भी हो जाए! १६ तेरे ब्योपारी आकाश के तारागण से भी अधिक अनगिनित हुए। टिड्डी चट करके उड़ जाती है। १७ तेरे मुकुटधारी लोग टिड्डियों के समान, और तेरे सेनापति टिड्डियों के दलों सरीखे ठहरेंगे जो जाड़े के दिन में बाड़ों पर टिकते हैं, परन्तु जब सूर्य दिखाई देता है तब भाग जाते हैं; और कोई नहीं जानता कि वे कहां गए॥

१८ हे अश्शूर के राजा, तेरे ठहराए हुए चरवाहे ऊंघते हैं; तेरे शूरवीर भारी नींद में पड़ गए हैं। तेरी प्रजा पहाड़ों पर तितर-बितर हो गई है, और कोई उनको फिर इकट्ठे नहीं करता। १९ तेरा घाव न भर सकेगा, तेरा रोग असाध्य है। जितने तेरा समाचार सुनेंगे, वे तेरे ऊपर ताली बजाएंगे। क्योंकि ऐसा कौन है जिस पर तेरी लगातार दुष्टता का प्रभाव न पड़ा हो?

* मूल में—खिप।

हबक्कूक

१ भारी वचन जिसको हबक्कूक नबी ने दर्शन में पाया ।।

२ हे यहोवा मैं कब तक तेरी दोहाई देता रहूंगा, और तू न सुनेगा? मैं कब तक तेरे सम्मुख "उपद्रव", "उपद्रव", चिल्लाता रहूंगा? क्या तू उद्धार नहीं करेगा? ३ तू मुझे अनर्थ काम क्यों दिखाता है? और क्या कारण है कि तू उत्पात को देखता ही रहता है? मेरे साम्हने लूट-पाट और उपद्रव होते रहते हैं; और झगड़ा हुआ करता है और वादविवाद बढ़ता जाता है। ४ इसलिये व्यवस्था ढीली हो गई और न्याय कभी नहीं प्रगट होता। दुष्ट लोग धर्मी को घेर लेते हैं; सो न्याय का खून हो रहा है ।।

५ अन्यजातियों की ओर चित्त लगाकर देखो, और बहुत ही चकित हो। क्योंकि मैं तुम्हारे ही दिनों में ऐसा काम करने पर हूं कि जब वह तुम को बताया जाए तो तुम उसकी प्रतीति न करोगे। ६ देखो, मैं कसदियों को उभारने पर हूं, वे क्रूर और उतावली करनेवाली जाति हैं, जो पराए वासस्थानों के अधिकारी होने के लिये पृथ्वी भर में फैल गए हैं। ७ वे भयानक और डरावने हैं, वे आप ही अपने न्याय की बड़ाई और प्रशंसा का कारण हैं। ८ उनके घोड़े चीतों से भी अधिक वेग चलनेवाले हैं, और सांझ को आहेर करनेवाले हुंडारों से भी अधिक क्रूर हैं; उनके सवार दूर दूर कूदते-फांदते आते हैं। हां, वे दूर से चले आते हैं; और आहेर पर झपटनेवाले उक़ाब की नाईं झपट्टा मारते हैं। ९ वे सब के सब उपद्रव करने के लिये आते हैं; साम्हने की ओर मुख किए हुए वे सीधे बढ़े चले जाते हैं, और बंधुओं को बालू के किनकों के समान बटोरते हैं। १० राजाओं को वे ठट्ठों में उड़ाते और हाकिमों का उपहास करते हैं; वे सब दृढ़ गढ़ों को तुच्छ जानते हैं, क्योंकि वे दमदमा बान्धकर* उनको जीत लेते हैं। ११ तब वे वायु की नाईं चलते और मर्यादा छोड़कर दोषी ठहरते हैं, क्योंकि उनका बल ही उनका देवता है ।।

१२ हे मेरे प्रभु यहोवा, हे मेरे पवित्र परमेश्वर, क्या तू अनादि काल से नहीं है? इस कारण हम लोग नहीं मरने के। हे यहोवा, तू ने उनको न्याय करने के लिये ठहराया है; हे चट्टान, तू ने उलाहना देने के लिये उनको बैठाया है। १३ तेरी आंखें ऐसी शुद्ध हैं कि तू बुराई को देख ही नहीं सकता, और उत्पात को देखकर चुप नहीं रह सकता; फिर तू विश्वासघातियों को क्यों देखता रहता, और जब दुष्ट निर्दोष को निगल जाता है, तब तू क्यों चुप रहता है? १४ तू क्यों मनुष्यों को समुद्र की मछलियों के समान और उन रेंगनेवाले जन्तुओं के समान बनाता है जिन पर कोई शासन करनेवाला नहीं है। १५ वह उन सब मनुष्यों को बन्सी से पकड़कर उठा लेता और जाल में घसीटता और महाजाल

---

* मूल में—धूलि का ढेर लगाकर।

में फंसा लेता है; इस कारण वह आनन्दित और मगन है। १६ इसीलिये वह अपने जाल के साम्हने बलि चढ़ाता और अपने महाजाल के आगे धूप जलाता है; क्योंकि इन्हीं के द्वारा उसका भाग पुष्ट होता, और उसका भोजन चिकना होता है। १७ परन्तु क्या वह जाल को खाली करने और जाति जाति के लोगों को लगातार निर्दयता से घात करने से हाथ न रोकेगा?

२ मैं अपने पहरे पर खड़ा रहूंगा, और गुम्मट पर चढ़कर ठहरा रहूंगा, और ताकता रहूंगा कि मुझ से वह क्या कहेगा? और मैं अपने दिए हुए उलाहने के विषय क्या उत्तर दूं? २ यहोवा ने मुझ से कहा, दर्शन की बातें लिख दे; वरन पटियाओं पर साफ़ साफ़ लिख दे कि दौड़ते हुए भी वे सहज से पढ़ी जाएं*। ३ क्योंकि इस दर्शन की बात नियत समय में पूरी होनेवाली है, वरन इसके पूरे होने का समय वेग से आता † है; इस में धोखा न होगा। चाहे इस में विलम्ब भी हो, तौभी उसकी बाट जोहते रहना; क्योंकि वह निश्चय पूरी होगी ‡ और उस में देर न होगी। ४ देख, उसका मन फूला हुआ है, उसका मन सीधा नहीं है; परन्तु धर्मी अपने विश्वास के द्वारा जीवित रहेगा। ५ दाखमधु से धोखा होता है; अहंकारी पुरुष घर में नहीं रहता, और उसकी लालसा अधोलोक के समान पूरी नहीं होती, और मृत्यु की नाईं उसका पेट नहीं भरता। वह सब जातियों को अपने पास खींच लेता, और सब देशों के लोगों को अपने पास इकट्ठे कर रखता है॥

६ क्या वे सब उसका दृष्टान्त चलाकर, और उस पर ताना मारकर न कहेंगे कि हाय उस पर जो पराया धन छीन छीनकर धनवान हो जाता है? कब तक? हाय उस पर जो अपना घर बन्धक की वस्तुओं से भर लेता है। ७ जो तुझ से कर्ज लेते हैं, क्या वे लोग अचानक न उठेंगे? और क्या वे न जागेंगे जो तुझ को संकट में डालेंगे? ८ और क्या तू उन से लूटा न जाएगा? तू ने बहुत सी जातियों को लूट लिया है, सो सब बचे हुए लोग तुझे भी लूट लेंगे। इसका कारण मनुष्यों की हत्या है, और वह उपद्रव भी जो तू ने इस देश और राजधानी और इसके सब रहनेवालों पर किया है॥

९ हाय उस पर, जो अपने घर के लिये अन्याय के लाभ का लोभी है ताकि वह अपना घोंसला ऊंचे स्थान में बनाकर विपत्ति से बचे। १० तू ने बहुत सी जातियों को काटकर अपने घर लिये लज्जा की युक्ति बान्धी, और अपने ही प्राण का दोषी ठहरा है। ११ क्योंकि घर की भीत का पत्थर दोहाई देता है, और उसके छत की कड़ी उनके स्वर में स्वर मिलाकर उत्तर देती हैं॥

१२ हाय उस पर जो हत्या करके नगर को बनाता, और कुटिलता करके गढ़ को दृढ़ करता है। १३ देखो, क्या सेनाओं के यहोवा की ओर से यह नहीं होता कि देश-देश के लोग परिश्रम तो करते हैं परन्तु वे आग का कौर होते हैं; और राज्य-राज्य के लोगों का परिश्रम व्यर्थ ही ठहरता है? १४ क्योंकि पृथ्वी यहोवा की महिमा के

* मूल में—जिस से उसका पढ़ानेवाला दौड़े।

† मूल में—वरन वह अन्त की ओर हांफती है।

‡ मूल में—निश्चय आएगी।

ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसे समुद्र जल से भर जाता है * ।।

१५ हाय उस पर, जो अपने पड़ोसी को मदिरा पिलाता, और उस में विष मिलाकर उसको मतवाला कर देता है कि उसको नंगा देखे। १६ तू महिमा की सन्ती अपमान ही से भर गया है। तू भी पी, और अपने को खतनाहीन प्रगट कर! जो कटोरा यहोवा के दहिने हाथ में रहता है, सो घूमकर तेरी ओर भी जाएगा, और तेरा विभव तेरी छांट से अशुद्ध हो जाएगा। १७ क्योंकि लबानोन में तेरा किया हुआ उपद्रव और वहां के पशुओं पर तेरा किया हुआ उत्पात, जिन से वे भयभीत हो गए थे, तुझी पर आ पड़ेंगे। यह मनुष्यों की हत्या और उस उपद्रव के कारण होगा, जो इस देश और राजधानी और इसके सब रहनेवालों पर किया गया है ।।

१८ खुदी हुई मूरत में क्या लाभ देखकर बनानेवाले ने उसे खोदा है? फिर झूठ सिखानेवाली और ढली हुई मूरत में क्या लाभ देखकर ढालनेवाले ने उस पर इतना भरोसा रखा है कि न बोलनेवाली और निकम्मी मूरत बनाए? १९ हाय उस पर जो काठ से कहता है, जाग, वा अबोल पत्थर से, उठ! क्या वह सिखाएगा? देखो, वह सोने चान्दी में मढ़ा हुआ है, परन्तु उस में आत्मा नहीं है ।।

२० परन्तु यहोवा अपने पवित्र मन्दिर में है; समस्त पृथ्वी उसके साम्हने शान्त रहे ।।

३ शिग्योनीत की रीति पर हबक्कूक नबी की प्रार्थना ।।

२ हे यहोवा, मैं तेरी कीर्त्ति सुनकर डर गया।
हे यहोवा, वर्तमान युग में अपने काम को पूरा कर;
इसी युग में तू उसको प्रकट कर;
क्रोध करते हुए भी दया करना स्मरण कर ।।

३ ईश्वर तेमान से आया,
पवित्र ईश्वर परान पर्वत से आ रहा है।
उसका तेज आकाश पर छाया हुआ है,
और पृथ्वी उसकी स्तुति से परिपूर्ण हो गई है ।। (सेला)

४ उसकी ज्योति सूर्य के तुल्य थी,
उसके हाथ से किरणें निकल रही थीं;
और इन में उसका सामर्थ छिपा हुआ था।

५ उसके आगे आगे मरी फैलती गई,
और उसके पांवों से महाज्वर निकलता गया।

६ वह खड़ा होकर पृथ्वी को नाप रहा था;
उस ने देखा और जाति जाति के लाग घबरा गए;
तब सनातन पर्वत चकनाचूर हो गए,
और सनातन की पहाड़ियां झुक गईं।
उसकी गति अनन्त काल से एक सी है।

७ मुझे कूशान के तम्बू में रहनेवाले दुःख से दबे दिखाई पड़े;
और मिद्यान देश के डेरे डगमगा गए।

८ हे यहोवा, क्या तू नदियों पर रिसियाया था?
क्या तेरा क्रोध नदियों पर भड़का था,
अथवा क्या तेरी जलजलाहट समुद्र पर भड़की थी,

* मूल में—जैसे जल समुद्र को ढांपता है।

जब तू अपने घोड़ों पर और उद्धार
करनेवाले विजयी रथों पर चढ़कर
आ रहा था ?
९ तेरा धनुष खोल में से निकल गया,
तेरे दण्ड का वचन शपथ के साथ हुआ
था। (सेला)
तू ने धरती को नदियों से चीर डाला।
१० पहाड़ तुझे देखकर कांप उठे;
आंधी और जलप्रलय निकल गए;
गहिरा सागर बोल उठा और अपने
हाथों अर्थात् लहरों को ऊपर
उठाया।
११ तेरे उड़नेवाले तीरों के चलने की
ज्योति से,
और तेरे चमकीले भाले की झलक के
प्रकाश से
सूर्य और चन्द्रमा अपने अपने स्थान
पर ठहर गए ॥
१२ तू क्रोध में आकर पृथ्वी पर चल
निकला,
तू ने जाति जाति को क्रोध से नाश
किया।
१३ तू अपनी प्रजा के उद्धार के लिये
निकला,
हां, अपने अभिषिक्त के संग होकर
उद्धार के लिये निकला।
तू ने दुष्ट के घर के सिर को घायल
करके
उसे गले से नेव तक नंगा कर
दिया। (सेला)
१४ तू ने उसके योद्धाओं के सिरों को उसी
की बर्छी से छेदा है,
वे मुझ को तितर-बितर करने के लिये
बवंडर की आंधी की नाईं आए,
और दीन लोगों को घात लगाकर
मार डालने की आशा से आनन्दित
थे।
१५ तू अपने घोड़ों पर सवार होकर समुद्र
से
हां, जलप्रलय से पार हो गया ॥
१६ यह सब सुनते ही मेरा कलेजा कांप
उठा,
मेरे ओंठ थरथराने लगे;
मेरी हड्डियां सड़ने लगीं, और मैं खड़े
खड़े कांपने लगा।
मैं शान्ति से उस दिन की बाट जोहता
रहूंगा जब दल बांधकर प्रजा चढ़ाई
करे ॥
१७ क्योंकि चाहे अंजीर के वृक्षों में फूल न
लगें,
और न दाखलताओं में फल लगें,
जलपाई के वृक्ष से केवल धोखा पाया
जाए
और खेतों में अन्न न उपजे,
भेड़शालाओं में भेड़-बकरियां न रहें,
और न थानों में गाय बैल हों,
१८ तौभी मैं यहोवा के कारण आनन्दित
और मगन रहूंगा,
और अपने उद्धारकर्त्ता परमेश्वर के
द्वारा अति प्रसन्न रहूंगा ॥
१९ यहोवा परमेश्वर मेरा बलमूल है,
वह मेरे पांव हरिणों के समान बना
देता है,
वह मुझ को मेरे ऊंचे स्थानों पर
चलाता है ॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये मेरे
तारवाले बाजों के साथ।)

सपन्याह

१ आमोन के पुत्र यहूदा के राजा योशिय्याह के दिनों में, सपन्याह के पास जो हिजकिय्याह के पुत्र अमर्याह का परपोता और गदल्याह का पोता और कूशी का पुत्र था, यहोवा का यह वचन पहुंचा :

२ मैं धरती के ऊपर से सब का अन्त कर दूंगा, यहोवा की यही वाणी है। ३ मैं मनुष्य और पशु दोनों का अन्त कर दूंगा; मैं आकाश के पक्षियों और समुद्र की मछलियों का, और दुष्टों समेत उनकी रखी हुई ठोकरों के कारण का भी अन्त कर दूंगा; मैं मनुष्य जाति को भी धरती पर से नाश कर डालूंगा, यहोवा की यही वाणी है। ४ मैं यहूदा पर और यरूशलेम के सब रहनेवालों पर हाथ उठाऊंगा, और इस स्थान में बाल के बचे हुओं को और याजकों समेत देवताओं के पुजारियों के नाम को नाश कर दूंगा। ५ जो लोग अपने अपने घर की छत पर आकाश के गण को दण्डवत् करते हैं, और जो लोग दण्डवत् करते हुए यहोवा की सेवा करने की शपथ खाते और अपने मोलेक की भी शपथ खाते हैं; ६ और जो यहोवा के पीछे चलने से लौट गए हैं, और जिन्हों ने न तो यहोवा को ढूंढ़ा, और न उसकी खोज में लगे, उनको भी मैं सत्यानाश कर डालूंगा ॥

७ परमेश्वर यहोवा के साम्हने शान्त रहो! क्योंकि यहोवा का दिन निकट है; यहोवा ने यज्ञ सिद्ध किया है, और अपने पाहुनों को पवित्र किया है। ८ और यहोवा के यज्ञ के दिन, मैं हाकिमों और राजकुमारों को और जितने परदेश के वस्त्र पहिना करते हैं, उनको भी दण्ड दूंगा। ९ उस दिन मैं उन सभों को दण्ड दूंगा जो डेवढ़ी को लांघते, और अपने स्वामी के घर को उपद्रव और छल से भर देते हैं ॥

१० यहोवा की यह वाणी है, कि उस दिन मछली फाटक के पास चिल्लाहट का, और नये टोले मिश्नाह में हाहाकार का, और टीलों पर बड़े धमाके का शब्द होगा। ११ हे मक्तेश के रहनेवालो, हाय, हाय, करो! क्योंकि सब व्योपारी मिट गए; जितने चान्दी से लदे थे, उन सब का नाश हो गया है। १२ उस समय मैं दीपक लिए हुए यरूशलेम में ढूंढ़-ढांढ़ करूंगा, और जो लोग दाखमधु के तलछट तथा मैल के समान बैठे हुए मन में कहते हैं कि यहोवा न तो भला करेगा और न बुरा, उनको मैं दण्ड दूंगा। १३ तब उनकी धन सम्पत्ति लूटी जाएगी, और उनके घर उजाड़ होंगे; वे घर तो बनाएंगे, परन्तु उन में रहने न पाएंगे; और वे दाख की बारियां लगाएंगे, परन्तु उन से दाखमधु न पीने पाएंगे ॥

१४ यहोवा का भयानक दिन निकट है, वह बहुत वेग से समीप चला आता है; यहोवा के दिन का शब्द सुन पड़ता है, वहां वीर दुःख के मारे चिल्लाता है। १५ वह रोष का दिन होगा, वह संकट और सकेती का दिन, वह उजाड़ और उधेड़ का दिन, वह अन्धेर और घोर अन्धकार का दिन, वह बादल और काली घटा का दिन होगा। १६ वह गढ़वाले नगरों और ऊंचे गुम्मटों के विरुद्ध नरसिंगा फूंकने और ललकारने का दिन होगा। १७ मैं मनष्यों को संकट

में डालूंगा, और वे अन्धों की नाईं चलेंगे, क्योंकि उन्हों ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है; उनका लोहू धूलि के समान, और उनका मांस विष्ठा की नाईं फेंक * दिया जाएगा। १८ यहोवा के रोष के दिन में, न तो चान्दी से उनका बचाव होगा, और न सोने से; क्योंकि उसके जलन की आग से सारी पृथ्वी † भस्म हो जाएगी; वह पृथ्वी के सारे रहनेवालों को घबराकर उनका अन्त कर डालेगा ।।

२ हे निर्लज्ज जाति के लोगो, इकट्ठे हो! २ इस से पहिले कि दण्ड की आज्ञा पूरी हो और बचाव का दिन भूसी की नाईं निकले, और यहोवा का भड़कता हुआ क्रोध तुम पर आ पड़े, और यहोवा के क्रोध का दिन तुम पर आए, तुम इकट्ठे हो। ३ हे पृथ्वी के सब नम्र लोगो, हे यहोवा के नियम के माननेवालो, उसको ढूंढ़ते रहो; धर्म को ढूंढ़ो, नम्रता को ढूंढ़ो; सम्भव है तुम यहोवा के क्रोध के दिन में शरण पाओ। ४ क्योंकि अज्जा तो निर्जन और अश्कलोन उजाड़ हो जाएगा; अशदोद के निवासी दिनदुपहरी निकाल दिए जाएंगे, और एक्रोन ‡ उखाड़ा जाएगा ।।

५ समुद्रतीर के रहनेवालों पर हाय; करेती जाति पर हाय; हे कनान, हे पलिश्तियों के देश, यहोवा का वचन तेरे विरुद्ध है; और मैं तुझ को ऐसा नाश करूंगा कि तुझ में कोई न बचेगा। ६ और उसी समुद्रतीर पर चरवाहों के घर होंगे और भेड़शालाओं समेत चराई ही चराई होगी। ७ अर्थात् वही समुद्रतीर यहूदा के घराने के बचे हुओं को मिलेगी, वे उस पर चराएंगे; वे अश्कलोन के छोड़े हुए घरों में सांझ को लेटेंगे, क्योंकि उनका परमेश्वर यहोवा उनकी सुधि लेकर उनके बंधुओं को लौटा ले जाएगा ।।

८ मोआब ने जो मेरी प्रजा की नामधराई और अम्मोनियों ने जो उसकी निन्दा करके उसके देश की सीमा पर चढ़ाई की, वह मेरे कानों तक पहुंची है। ९ इस कारण इस्राएल के परमेश्वर, सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की शपथ, निश्चय मोआब सदोम के समान, और अम्मोनी अमोरा की नाईं बिच्छू पेड़ों के स्थान और नमक की खानियां हो जाएंगे, और सदैव उजड़े रहेंगे। मेरी प्रजा के बचे हुए उनको लूटेंगे *, और मेरी जाति के शेष लोग उनको अपने भाग में पाएंगे। १० यह उनके गर्व का पलटा होगा, क्योंकि उन्हों ने सेनाओं के यहोवा की प्रजा की नामधराई की, और उस पर बड़ाई मारी है। ११ यहोवा उनको डरावना दिखाई देगा, वह पृथ्वी भर के देवताओं को भूखों मार डालेगा, और अन्यजातियों के सब द्वीपों के निवासी अपने अपने स्थान से उसको दण्डवत् करेंगे ।।

१२ हे कूशियो, तुम भी मेरी तलवार से मारे जाओगे। १३ वह अपना हाथ उत्तर दिशा की ओर बढ़ाकर अश्शूर को नाश करेगा, और नीनवे को उजाड़ कर जंगल के समान निर्जल कर देगा। १४ उसके बीच में सब जाति के वनपशु झुंड के झुंड बैठेंगे; उसके खम्भों की कंगनियों पर धनेश और साही दोनों रात को बसेरा करेंगे और उसकी खिड़कियों में

* मूल में—उण्डेल। † वा देश।
‡ एक्रोन शब्द का अर्थ उखाड़ है।

* मूल में—अपना लेंगे।

बोला करेंगे; उसकी डेवढ़ियां सूनी पड़ी रहेंगी, और देवदार की लकड़ी उघारी जाएगी। १५ यह वही नगरी है, जो मगन रहती और निडर बैठी रहती थी, और सोचती थी कि मैं ही हूं, और मुझे छोड़ कोई है ही नहीं। परन्तु अब यह उजाड़ और वनपशुओं के बैठने का स्थान बन गया है, यहां तक कि जो कोई इसके पास होकर चले, वह ताली बजाएगा और हाथ हिलाएगा॥

३ हाय बलवा करनेवाली और अशुद्ध और अन्धेर से भरी हुई नगरी! २ उस ने मेरी नहीं सुनी, उस ने ताड़ना से भी नहीं माना, उस ने यहोवा पर भरोसा नहीं रखा, वह अपने परमेश्वर के समीप नहीं आई॥

३ उसके हाकिम गरजनेवाले सिंह ठहरे; उसके न्यायी सांझ को आहेर करनेवाले हुंडार हैं जो बिहान के लिये कुछ नहीं छोड़ते। ४ उसके भविष्यद्वक्ता व्यर्थ बकनेवाले और विश्वासघाती हैं, उसके याजकों ने पवित्रस्थान को अशुद्ध किया और व्यवस्था में खींच-खांच की है। ५ यहोवा जो उसके बीच में है, वह धर्मी है, वह कुटिलता न करेगा; वह अपना न्याय प्रति भोर प्रगट करता है और चूकता नहीं; परन्तु कुटिल जन को लज्जा आती ही नहीं। ६ मैं ने अन्यजातियों को यहां तक नाश किया, कि उनके कोनेवाले गुम्मट उजड़ गए; मैं ने उनकी सड़कों को यहां तक सूनी किया, कि कोई उन पर नहीं चलता; उनके नगर यहां तक नाश हुए कि उन में कोई मनुष्य वरन कोई भी प्राणी * नहीं रहा।

* मूल में—रहनेवाला।

७ मैं ने कहा, अब तू मेरा भय मानेगी, और मेरी ताड़ना अंगीकार करेगी जिस से उसका धाम उस सब के अनुसार जो मैं ने ठहराया था, नाश न हो। परन्तु वे सब प्रकार के बुरे बुरे काम यत्न से * करने लगे॥

८ इस कारण यहोवा की यह वाणी है, कि जब तक मैं नाश करने को न उठूं, तब तक तुम मेरी बाट जोहते रहो। मैं ने यह ठाना है कि जाति-जाति के और राज्य-राज्य के लोगों को मैं इकट्ठा करूं, कि उन पर अपने क्रोध की आग पूरी रीति से भड़काऊं; क्योंकि सारी पृथ्वी मेरी जलन की आग से भस्म हो जाएगी॥

९ और उस समय मैं देश-देश के लोगों से एक नई और शुद्ध भाषा बुलवाऊंगा, कि वे सब के सब यहोवा से प्रार्थना करें, और एक मन † से कन्धे से कन्धा मिलाए हुए उसकी सेवा करें। १० मेरी तितर-बितर की हुई प्रजा ‡ मुझ से बिनती करती हुई मेरी भेंट बनकर आएगी॥

११ उस दिन, तू अपने सब बड़े से बड़े कामों से,जिन्हें करके तू मुझ से फिर गई थी, फिर लज्जित न होगी। उस समय मैं तेरे बीच से सब फूले हुए घमण्डियों को दूर करूंगा, और तू मेरे पवित्र पर्वत पर फिर कभी अभिमान न करेगी। १२ क्योंकि मैं तेरे बीच में दीन और कंगाल लोगों का एक दल बचा रखूंगा, और वे यहोवा के नाम की शरण लेंगे। १३ इस्राएल के बचे हुए लोग न तो कुटिलता करेंगे और न झूठ बोलेंगे, और न उनके मुंह से छल की बातें निकलेंगी §। वे चरेंगे और विश्राम

* मूल में—तड़के उठकर।
† मूल में—एक कन्धे या पीठ में।
‡ मूल में—छिपे हुओं की बेटी।
§ मूल में—मुंह से छली जीभ पाई जाएगी।

करेंगे, और कोई उनको डरानेवाला न होगा ।।

१४ हे सिय्योन *, ऊंचे स्वर से गा; हे इस्राएल, जयजयकार कर! हे यरूशलेम † अपने सम्पूर्ण मन से आनन्द कर, और प्रसन्न हो! १५ यहोवा ने तेरा दण्ड दूर कर दिया और तेरा शत्रु भी दूर किया गया है। इस्राएल का राजा यहोवा तेरे बीच में है, इसलिये तू फिर विपत्ति न भोगेगी। १६ उस समय यरूशलेम से यह कहा जाएगा, हे सिय्योन मत डर, तेरे हाथ ढीले न पड़ने पाएं। १७ तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच में है, वह उद्धार करने में पराक्रमी है; वह तेरे कारण आनन्द से मगन होगा, वह अपने प्रेम के मारे चुपका रहेगा; फिर ऊंचे स्वर से गाता हुआ तेरे कारण मगन होगा ।।

१८ जो लोग नियत पर्वों में सम्मिलित न होने के कारण खेदित रहते हैं, उनको

* मूल में—सिय्योन की बेटी।
† मूल में—यरूशलेम की बेटी।

मैं इकट्ठा करूंगा, क्योंकि वे तेरे हैं; और उसकी नामधराई उनको बोझ जान पड़ती है। १९ उस समय में उन सभों से जो तुझे दुःख देते हैं, उचित बर्ताव करूंगा। और मैं लंगड़ों * को चंगा करूंगा, और बरबस निकाले † हुओं को इकट्ठा करूंगा, और जिनकी लज्जा की चर्चा सारी पृथ्वी पर फैली है, उनकी प्रशंसा और कीर्त्ति सब कहीं फैलाऊंगा ‡। २० उसी समय मैं तुम्हें ले जाऊंगा, और उसी समय में तुम्हें इकट्ठा करूंगा; और जब मैं तुम्हारे साम्हने तुम्हारे बंधुओं को लौटा लाऊंगा, तब पृथ्वी की सारी जातियों के बीच में तुम्हारी कीर्त्ति और प्रशंसा फैला § दूंगा, यहोवा का यही वचन है ।।

* मूल में—लंगड़ानेवाली।
† मूल में—निकाली हुई।
‡ मूल में—उनकी प्रशंसा और कीर्त्ति ठहराऊंगा।
§ मूल में—तुम को कीर्त्ति और प्रशंसा ठहराऊंगा।

हाग्गै

१ दारा राजा के दूसरे वर्ष के छठवें महीने के पहिले दिन, यहोवा का यह वचन, हाग्गै भविष्यद्वक्ता के द्वारा, शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल के पास, जो यहूदा का अधिपति था, और यहोसादाक के पुत्र यहोशू महायाजक के पास पहुंचा: २ सेनाओं का यहोवा यों कहता है, ये लोग कहते हैं कि यहोवा का भवन बनाने का समय नहीं आया है। ३ फिर यहोवा का यह वचन हाग्गै भविष्यद्वक्ता के द्वारा पहुंचा, ४ क्या तुम्हारे लिये अपने छतवाले घरों में रहने का समय है, जब कि यह भवन उजाड़ पड़ा है? ५ इसलिये अब सेनाओं

का यहोवा यों कहता है, अपनी अपनी चाल-चलन पर ध्यान करो। ६ तुम ने बहुत बोया परन्तु थोड़ा काटा; तुम खाते हो, परन्तु पेट नहीं भरता; तुम पीते हो, परन्तु प्यास नहीं बुझती; तुम कपड़े पहिनते हो, परन्तु गरमाते नहीं; और जो मजदूरी कमाता है, वह अपनी मज़दूरी की कमाई को छेदवाली थैली में रखता है।।

७ सेनाओं का यहोवा तुम से यों कहता है, अपने अपने चालचलन पर सोचो। ८ पहाड़ पर चढ़ जाओ और लकड़ी ले आओ और इस भवन को बनाओ; और मैं उसको देखकर प्रसन्न हूंगा, और मेरी महिमा होगी, यहोवा का यही वचन है। ९ तुम ने बहुत उपज की आशा रखी, परन्तु देखो थोड़ी ही है; और जब तुम उसे घर ले आए, तब मैं ने उसको उड़ा दिया। सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, ऐसा क्यों हुआ? क्या इसलिये नहीं, कि मेरा भवन उजाड़ पड़ा है और तुम में से प्रत्येक अपने अपने घर को दौड़ा चला जाता है? १० इस कारण आकाश से ओस गिरना और पृथ्वी से अन्न उपजना दोनों बन्द हैं। ११ और मेरी आज्ञा से पृथ्वी और पहाड़ों पर, और अन्न और नये दाखमधु पर और ताज़े तेल पर, और जो कुछ भूमि से उपजता है उस पर, और मनुष्यों और घरैलू पशुओं पर, और उनके परिश्रम की सारी कमाई पर भी अकाल पड़ा है।।

१२ तब शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल और यहोसादाक के पुत्र यहोशू महायाजक ने सब बचे हुए लोगों समेत अपने परमेश्वर यहोवा की बात मानी; और जो वचन उनके परमेश्वर यहोवा ने उन से कहने के लिये हाग्गै भविष्यद्वक्ता को भेज दिया था, उसे उन्हों ने मान लिया; और लोगों ने यहोवा का भय माना। १३ तब यहोवा के दूत हाग्गै ने यहोवा से आज्ञा पाकर उन लोगों से यह कहा, यहोवा की यह वाणी है, मैं तुम्हारे संग हूं। १४ और यहोवा ने शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल को जो यहूदा का अधिपति था, और यहोसादाक के पुत्र यहोशू महायाजक को, और सब बचे हुए लोगों के मन को उभार कर उत्साह से भर दिया कि—वे आकर अपने परमेश्वर, सेनाओं के यहोवा के भवन को बनाने में लग जाएं। १५ यह दारा राजा के दूसरे वर्ष के छठवें महीने के चौबीसवें दिन हुआ।।

२ फिर सातवें महीने के इक्कीसवें दिन को यहोवा का यह वचन हाग्गै भविष्यद्वक्ता के पास पहुंचा, २ शालतीएल के पुत्र यहूदा के अधिपति जरुब्बाबेल, और यहोसादाक के पुत्र यहोशू महायाजक, और सब बचे हुए लोगों से यह बात कह, ३ तुम में से कौन है, जिस ने इस भवन की पहिली महिमा देखी है? अब तुम इसे कैसी दशा में देखते हो? क्या यह सच नहीं कि यह तुम्हारी दृष्टि में उस पहिले की अपेक्षा कुछ भी अच्छा नहीं है? ४ तौभी, अब यहोवा की यह वाणी है, हे जरुब्बाबेल, हियाव बान्ध; और हे यहोसादाक के पुत्र यहोशू महायाजक, हियाव बान्ध; और यहोवा की यह भी वाणी है कि हे देश के सब लोगो हियाव बान्धकर काम करो, क्योंकि मैं तुम्हारे संग हूं, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है। ५ तुम्हारे मिस्र से निकलने के समय जो वाचा मैं ने तुम से बान्धी थी, उसी वाचा के अनुसार मेरा आत्मा तुम्हारे बीच में बना है; इसलिये तुम मत डरो। ६ क्योंकि सेनाओं का यहोवा

यों कहता है, अब थोड़ी ही देर बाकी है कि मैं आकाश और पृथ्वी और समुद्र और स्थल सब को कम्पित करूंगा। ७ और मैं सारी जातियों को कम्पकपाऊंगा, और सारी जातियों की मनभावनी वस्तुएं आएंगी; और मैं इस भवन को अपनी महिमा के तेज से भर दूंगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। ८ चान्दी तो मेरी है, और सोना भी मेरा ही है, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है। ९ इस भवन की पिछली महिमा इसकी पहिली महिमा से बड़ी होगी, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है, और इस स्थान में मैं शान्ति दूंगा, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है॥

१० दारा के दूसरे वर्ष के नौवें महीने के चौबीसवें दिन को, यहोवा का यह वचन हाग्गै भविष्यद्वक्ता के पास पहुंचा, ११ सेनाओं का यहोवा यों कहता है: याजकों से इस बात की व्यवस्था पूछ, १२ यदि कोई अपने वस्त्र के आंचल में पवित्र मांस बान्धकर, उसी आंचल से रोटी वा पकाए हुए भोजन वा दाखमधु वा तेल वा किसी प्रकार के भोजन को छुए, तो क्या वह भोजन पवित्र ठहरेगा? याजकों ने उत्तर दिया, नहीं। १३ फिर हाग्गै ने पूछा, यदि कोई जन मनुष्य की लोथ के कारण अशुद्ध होकर ऐसी किसी वस्तु को छुए, तो क्या वह अशुद्ध ठहरेगी? याजकों ने उत्तर दिया, हां, अशुद्ध ठहरेगी। १४ फिर हाग्गै ने कहा, यहोवा की यही वाणी है, कि मेरी दृष्टि में यह प्रजा और यह जाति वैसी ही है, और इनके सब काम भी वैसे हैं; और जो कुछ वे वहां चढ़ाते हैं, वह भी अशुद्ध है; १५ अब सोच-विचार करो कि आज से पहिले अर्थात् जब यहोवा के मन्दिर में पत्थर पर पत्थर रखा ही नहीं गया था, १६ उन दिनों में जब कोई अन्न के बीस नपुओं की आशा से जाता, तब दस ही पाता था, और जब कोई दाखरस के कुण्ड के पास इस आशा से जाता कि पचास बर्तन भर निकालें, तब बीस ही निकलते थे। १७ मैं ने तुम्हारी सारी खेती को लू और गेरुई और ओलों से मारा, तौभी तुम मेरी ओर न फिरे, यहोवा की यही वाणी है। १८ अब सोच-विचार करो, कि आज से पहिले अर्थात् जिस दिन यहोवा के मन्दिर की नेव डाली गई, उस दिन से लेकर नौवें महीने के इसी चौबीसवें दिन तक क्या दशा थी? इसका सोच-विचार करो। १९ क्या अब तक बीज खत्ते में है? अब तक दाखलता और अंजीर और अनार और जलपाई के वृक्ष नहीं फले, परन्तु आज के दिन से मैं तुम को आशीष देता रहूंगा॥

२० उसी महीने के चौबीसवें दिन को दूसरी बार यहोवा का यह वचन हाग्गै के पास पहुंचा, यहूदा के अधिपति जरुब्बाबेल से यों कह: २१ मैं आकाश और पृथ्वी दोनों को कम्पाऊंगा, २२ और मैं राज्य-राज्य की गद्दी को उलट दूंगा; मैं अन्य-जातियों के राज्य-राज्य का बल तोड़ूंगा, और रथों को चढ़वैयों समेत उलट दूंगा; और घोड़ों समेत सवार एक दूसरे की तलवार से गिरेंगे। २३ सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, उस दिन, हे शालतीएल के पुत्र मेरे दास जरुब्बाबेल, मैं तुझे लेकर अंगूठी के समान रखूंगा, यहोवा की यही वाणी है; क्योंकि मैं ने तुझी को चुन लिया है, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है॥

जकर्याह

१ दारा के राज्य के दूसरे वर्ष के आठवें महीने में जकर्याह भविष्यद्वक्ता के पास जो बेरेक्याह का पुत्र और इद्दो का पोता था, यहोवा का यह वचन पहुंचा: २ यहोवा तुम लोगों के पुरखाओं से बहुत ही क्रोधित हुआ था। ३ इसलिये तू इन लोगों से कह, सेनाओं का यहोवा यों कहता है: तुम मेरी ओर फिरो, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है, तब मैं तुम्हारी ओर फिरूंगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। ४ अपने पुरखाओं के समान न बनो, उन से तो अगले भविष्यद्वक्ता यह पुकार पुकारकर कहते थे कि सेनाओं का यहोवा यों कहता है, अपने बुरे मार्गों से, और अपने बुरे कामों से फिरो; परन्तु उन्हों ने न तो सुना, और न मेरी ओर ध्यान दिया, यहोवा की यही वाणी है। ५ तुम्हारे पुरखा कहां रहे? और भविष्यद्वक्ता क्या सदा जीवित रहते हैं? ६ परन्तु मेरे वचन और मेरी आज्ञाएं जिन को मैं ने अपने दास नबियों को दिया था, क्या वे तुम्हारे पुरखाओं पर पूरी न हुईं *? तब उन्हों ने मन फिराया और कहा, सेनाओं के यहोवा ने हमारे चालचलन और कामों के अनुसार हम से जैसा व्यवहार करने को कहा था, वैसा ही उस ने हम को बदला दिया है॥

७ दारा के दूसरे वर्ष के शबात नाम ग्यारहवें महीने के चौबीसवें दिन को जकर्याह नबी के पास जो बेरेक्याह का पुत्र और इद्दो का पोता था, यहोवा का वचन यों पहुंचा: ८ मैं ने रात को स्वप्न में क्या देखा कि एक पुरुष लाल घोड़े पर चढ़ा हुआ उन मेंहदियों के बीच खड़ा है जो नीचे स्थान में हैं, और उसके पीछे लाल और सुरंग और श्वेत घोड़े भी खड़े हैं। ९ तब मैं ने कहा, हे मेरे प्रभु ये कौन हैं? तब जो दूत मुझ से बातें करता था, उस ने मुझ से कहा, मैं तुझे बताऊंगा कि ये कौन हैं। १० फिर जो पुरुष मेंहदियों के बीच खड़ा था, उस ने कहा, यह वे हैं जिन को यहोवा ने पृथ्वी पर सैर अर्थात् घूमने के लिये भेजा है। ११ तब उन्हों ने यहोवा के उस दूत से जो मेंहदियों के बीच खड़ा था, कहा, हम ने पृथ्वी पर सैर किया है, और क्या देखा कि सारी पृथ्वी में शान्ति और चैन है। १२ तब यहोवा के दूत ने कहा, हे सेनाओं के यहोवा, तू जो यरूशलेम और यहूदा के नगरों पर सत्तर वर्ष से क्रोधित है, सो तू उन पर कब तक दया न करेगा? १३ और यहोवा ने उत्तर में उस दूत से जो मुझ से बातें करता था, अच्छी अच्छी और शान्ति की बातें कहीं। १४ तब जो दूत मुझ से बातें करता था, उस ने मुझ से कहा, तू पुकारकर कह कि सेनाओं का यहोवा यों कहता है, मुझे यरूशलेम और सिय्योन के लिये बड़ी जलन हुई है। १५ और जो जातियां सुख से रहती हैं, उन से मैं क्रोधित हूं; क्योंकि मैं ने तो थोड़ा सा क्रोध किया

* मूल में—उन्हों ने तुम्हारे पुरखाओं को न जा लिया।

था, परन्तु उन्हों ने विपत्ति को बढ़ा दिया। १६ इस कारण यहोवा यों कहता है, अब मैं दया करके यरूशलेम को लौट आया हूं; मेरा भवन उस में बनेगा, और यरूशलेम पर नापने की डोरी डाली जाएगी, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है। १७ फिर यह भी पुकारकर कह कि सेनाओं का यहोवा यों कहता है, मेरे नगर फिर उत्तम वस्तुओं से भर जाएंगे, और यहोवा फिर सिय्योन को शान्ति देगा; और यरूशलेम को फिर अपना ठहराएगा।।

१८ फिर मैं ने जो आंखें उठाईं, तो क्या देखा कि चार सींग हैं। १९ तब जो दूत मुझ से बातें करता था, उस से मैं ने पूछा, ये क्या हैं? उस ने मुझ से कहा, ये वे ही सींग हैं, जिन्हों ने यहूदा और इस्राएल और यरूलेशम को तितर-बितर किया है। २० फिर यहोवा ने मुझे चार लोहार दिखाए। २१ तब मैं ने पूछा, ये क्या करने को आए हैं? उस ने कहा, ये वे ही सींग हैं, जिन्हों ने यहूदा को ऐसा तितर-बितर किया कि कोई सिर न उठा सका; परन्तु ये लोग उन्हें भगाने के लिये और उन जातियों के सींगों को काट डालने के लिये आए हैं जिन्हों ने यहूदा के देश को तितर-बितर करने के लिये उनके विरुद्ध अपने अपने सींग उठाए थे।।

२ फिर मैं ने आंखें उठाईं तो क्या देखा, कि हाथ में नापने की डोरी लिए हुए एक पुरुष है। २ तब मैं ने उस से पूछा, तू कहां जाता है? उस ने मुझ से कहा, यरूशलेम को नापने को जाता हूं कि देखूं उसकी चौड़ाई कितनी, और लम्बाई कितनी है। ३ तब मैं ने क्या देखा, कि जो दूत मुझ से बातें करता था वह चला गया, और दूसरा दूत उस से मिलने के लिये आकर, ४ उस से कहता है, दौड़कर इस जवान से कह, यरूशलेम मनुष्यों और घरैलू पशुओं की बहुतायत के मारे शहरपनाह के बाहर बाहर भी बसेगी *। ५ और यहोवा की यह वाणी है, कि मैं आप उसके चारों ओर आग की सी शहरपनाह ठहरूंगा, और उसके बीच में तेजोमय होकर दिखाई दूंगा †।।

६ यहोवा की यह वाणी है, देखो, सुनो, उत्तर के देश में से भाग जाओ, क्योंकि मैं ने तुम को आकाश की चारों वायुओं के समान तितर-बितर किया है। ७ हे बाबुलवाली जाति ‡ के संग रहनेवाली, सिय्योन को बचकर निकल भाग! ८ क्योंकि सेनाओं का यहोवा यों कहता है, उस तेज के प्रगट होने के बाद उस ने मुझे उन जातियों के पास भेजा है जो तुम्हें लूटती थीं, क्योंकि जो तुम को छूता है, वह मेरी आंख की पुतली ही को छूता है। ९ देखो, मैं अपना हाथ उन पर उठाऊंगा §, तब वे उन्हीं से लूटे जाएंगे जो उनके दास हुए थे। तब तुम जानोगे कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे भेजा है। १० हे सिय्योन ||, ऊंचे स्वर से गा और आनन्द कर, क्योंकि देख, मैं आकर तेरे बीच में निवास करूंगा, यहोवा की यही वाणी है। ११ उस समय बहुत सी जातियां यहोवा से मिल जाएंगी, और मेरी प्रजा हो जाएंगी; और मैं तेरे बीच में वास

* मूल में—बिना शहरपनाह के गांव होकर बसेगी।

† मूल में—तेज हूंगा।

‡ मूल में—बाबेल की बेटी।

§ मूल में—हिलाऊंगा।

|| मूल में—सिय्योन की बेटी।

करूंगा, १२ और तू जानेगी कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे तेरे पास भेज दिया है। और यहोवा यहूदा को पवित्र देश में अपना भाग कर लेगा, और यरूशलेम को फिर अपना ठहराएगा॥

१३ हे सब प्राणियो! यहोवा के साम्हने चुपके रहो; क्योंकि वह जागकर अपने पवित्र निवासस्थान से निकला है॥

३ फिर उस ने यहोशू महायाजक को यहोवा के दूत के साम्हने खड़ा हुआ मुझे दिखाया, और शैतान उसकी दहिनी ओर उसका विरोध करने को खड़ा था। २ तब यहोवा ने शैतान से कहा, हे शैतान यहोवा तुझ को घुड़के! यहोवा जो यरूशलेम को अपना लेता है, वही तुझे घुड़के! क्या यह आग से निकाली हुई लुकटी सी नहीं है? ३ उस समय यहोशू तो दूत के साम्हने मैला वस्त्र पहिने हुए खड़ा था। ४ तब दूत ने उन से जो साम्हने खड़े थे कहा, इसके ये मैले वस्त्र उतारो। फिर उस ने उस से कहा, देख, मैं ने तेरा अधर्म दूर किया है, और मैं तुझे सुन्दर वस्त्र पहिना देता हूं। ५ तब मैं ने कहा, इसके सिर पर एक शुद्ध पगड़ी रखी जाए। और उन्हों ने उसके सिर पर याजक के योग्य शुद्ध पगड़ी रखी, और उसको वस्त्र पहिनाए; उस समय यहोवा का दूत पास खड़ा रहा॥

६ तब यहोवा के दूत ने यहोशू को चिताकर कहा, ७ सेनाओं का यहोवा तुझ से यों कहता है: यदि तू मेरे मार्गों पर चले, और जो कुछ मैं ने तुझे सौंप दिया है उसकी रक्षा करे, तो तू मेरे भवन का न्यायी और मेरे आंगनों का रक्षक होगा; और मैं तुझ को इनके बीच में आने जाने दूंगा जो पास खड़े हैं। ८ हे यहोशू महायाजक, तू सुन ले, और तेरे भाईबन्धु जो तेरे साम्हने खड़े हैं वे भी सुनें, क्योंकि वे मनुष्य शुभ शकुन हैं: सुनो, मैं अपने दास शाख *को प्रगट करूंगा। ९ उस पत्थर को देख जिसे मैं ने यहोशू के आगे रखा है, उस एक ही पत्थर के ऊपर सात आंखें बनी हैं, सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, देख, मैं उस पत्थर पर खोद देता हूं, और इस देश के अधर्म को एक ही दिन में दूर कर दूंगा। १० उसी दिन तुम अपने अपने भाईबन्धुओं को दाखलता और अंजीर के वृक्ष के नीचे आने के लिये बुलाओगे, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है॥

४ फिर जो दूत मुझ से बातें करता था, उस ने आकर मुझे ऐसा जगाया जैसा कोई नींद से जगाया जाए। २ और उस ने मुझ से पूछा, तुझे क्या देख पड़ता है? मैं ने कहा, एक दीवट है, जो सम्पूर्ण सोने की है, और उसका कटोरा उसकी चोटी पर है, और उस पर उसके सात दीपक हैं; जिन के ऊपर बत्ती के लिये सात सात नालियां हैं। ३ और दीवट के पास जलपाई के दो वृक्ष हैं, एक उस कटोरे की दहिनी ओर, और दूसरा उसकी बाईं ओर। ४ तब मैं ने उस दूत से जो मुझ से बातें करता था, पूछा, हे मेरे प्रभु, ये क्या हैं? ५ जो दूत मुझ से बातें करता था, उस ने मुझ को उत्तर दिया, क्या तू नहीं जानता कि ये क्या हैं? मैं ने कहा, हे मेरे प्रभु मैं नहीं जानता। ६ तब उस ने मुझे उत्तर देकर कहा, जरूब्बाबेल के लिये यहोवा का यह वचन है: न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा

---

* या डाली।

होगा, मुझ सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। ७ हे बड़े पहाड़, तू क्या है? जरुब्बाबेल के साम्हने तू मैदान हो जाएगा; और वह चोटी का पत्थर यह पुकारते हुए आएगा, उस पर अनुग्रह हो, अनुग्रह! ८ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, ९ जरुब्बाबेल ने अपने हाथों से इस भवन की नेव डाली है, और वही अपने हाथों से उसको तैयार भी करेगा। तब तू जानेगा कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। १० क्योंकि किस ने छोटी बातों का दिन तुच्छ जाना है? यहोवा अपनी इन सातों आंखों से सारी पृथ्वी पर दृष्टि करके साहुल को जरुब्बाबेल के हाथ में देखेगा, और आनन्दित होगा। ११ तब मैं ने उस से फिर पूछा, ये दो जलपाई के वृक्ष क्या हैं जो दीवट की दहिनी-बाईं ओर हैं? १२ फिर मैं ने दूसरी बार उस से पूछा, जलपाई की दोनों डालियें क्या हैं जो सोने की दोनों नालियों के द्वारा अपने में से सोनहला तेल उण्डेलती हैं? १३ उस ने मुझ से कहा, क्या तू नहीं जानता कि ये क्या हैं? मैं ने कहा, हे मेरे प्रभु मैं नहीं जानता। १४ तब उस ने कहा, इनका अर्थ ताज़े तेल से भरे हुए वे दो पुरुष हैं * जो सारी पृथ्वी के परमेश्वर के पास हाज़िर रहते हैं॥

५ मैं ने फिर आंखें उठाईं तो क्या देखा, कि एक लिखा हुआ पत्र उड़ रहा है। २ दूत ने मुझ से पूछा, तुझे क्या देख पड़ता है? मैं ने कहा, मुझे एक लिखा हुआ पत्र उड़ता हुआ देख पड़ता है, जिस की लम्बाई बीस हाथ और चौड़ाई दस हाथ की है। ३ तब उस ने मुझ से कहा, यह वह शाप है जो इस सारे देश पर पड़नेवाला है *; क्योंकि जो कोई चोरी करता है, वह उसकी एक ओर लिखे हुए के अनुसार मैल की नाईं निकाल दिया जाएगा; और जो कोई शपथ खाता है, वह उसकी दूसरी ओर लिखे हुए के अनुसार मैल की नाईं निकाल दिया जाएगा। ४ सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है, मैं उसको ऐसा चलाऊंगा † कि वह चोर के घर में और मेरे नाम की झूठी शपथ खानेवाले के घर में घुसकर ठहरेगा, और उसको लकड़ी और पत्थरों समेत नाश कर देगा॥

५ तब जो दूत मुझ से बातें करता था, उस ने बाहर जाकर मुझ से कहा, आंखें उठाकर देख कि वह क्या वस्तु निकली जा रही है? ६ मैं ने पूछा, वह क्या है? उस ने कहा, वह वस्तु जो निकली जा रही है वह एक एपा का नाप है। और उस ने फिर कहा, सारे देश में लोगों का यही रूप है। ७ फिर मैं ने क्या देखा कि किक्कार भर शीशे का एक बटखरा उठाया जा रहा है, और एक स्त्री है जो एपा के बीच में बैठी है। ८ और दूत ने कहा, इसका अर्थ दुष्टता है। और उस ने उस स्त्री को एपा के बीच में दबा दिया, और शीशे के उस बटखरे को लेकर उस से एपा का मुंह ढांप दिया। ९ तब मैं ने आंखें उठाईं, तो क्या देखा कि दो स्त्रियें चली जाती हैं जिन के पंख पवन में फैले हुए हैं, और उनके पंख लगलग के से हैं, और वे एपा को आकाश और पृथ्वी के बीच में उड़ाए लिए जा रही हैं। १० तब मैं ने उस दूत से जो मुझ से बातें करता था, पूछा, कि वे एपा को कहां

* मूल में—टटके तेल के पुत्र।

* मूल में—देश पर निकलता है।

† मूल में—मैं उसको निकालूंगा।

लिए जाती हैं? ११ उस ने कहा, शिनार देश में लिए जाती हैं कि वहां उसके लिये एक भवन बनाएं; और जब वह तैयार किया जाए, तब वह एपा वहां अपने ही पाए पर खड़ा किया जाएगा ॥

६ मैं ने फिर आंखें उठाईं, और क्या देखा कि दो पहाड़ों के बीच से चार रथ चले आते हैं; और वे पहाड़ पीतल के हैं। २ पहिले रथ में लाल घोड़े, और दूसरे रथ में काले, ३ तीसरे रथ में श्वेत और चौथे रथ में चितकबरे और बादामी घोड़े हैं। ४ तब मैं ने उस दूत से जो मुझ से बातें करता था, पूछा, हे मेरे प्रभु, ये क्या हैं? ५ दूत ने मुझ से कहा, ये आकाश के चारों वायु * हैं जो सारी पृथ्वी के प्रभु के पास उपस्थित रहते हैं, परन्तु अब निकल आए हैं। ६ जिस रथ में काले घोड़े हैं, वह उत्तर देश की ओर जाता है, और श्वेत घोड़े उनके पीछे पीछे चले जाते हैं, और चितकबरे घोड़े दक्खिन देश की ओर जाते हैं। ७ और बादामी घोड़ों ने निकलकर चाहा कि जाकर पृथ्वी पर फेरा करें। सो दूत ने कहा, जाकर पृथ्वी पर फेरा करो। तब वे पृथ्वी पर फेरा करने लगे। ८ तब उस ने मुझ से पुकारकर कहा, देख, वे जो उत्तर के देश की ओर जाते हैं, उन्हों ने वहां मेरे प्राण को ठण्डा किया है ॥

९ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा : १० बंधुआई के लोगों में से, हेल्दै, तोबिय्याह और यदायाह से कुछ ले और उसी दिन तू सपन्याह के पुत्र योशियाह के घर में जा जिस में वे बाबुल से आकर उतरे हैं। ११ उनके हाथ से सोना चान्दी ले, और मुकुट बनाकर उन्हें यहोसादाक के पुत्र यहोशू महायाजक के सिर पर रख; १२ और उस से यह कह, सेनाओं का यहोवा यों कहता है, उस पुरुष को देख जिस का नाम शाख * है, वह अपने ही स्थान में उगकर यहोवा के मन्दिर को बनाएगा। १३ वही यहोवा के मन्दिर को बनाएगा, और महिमा पाएगा †, और अपने सिंहासन पर विराजमान होकर प्रभुता करेगा। और उसके सिंहासन के पास एक याजक भी रहेगा, और दोनों के बीच मेल की सम्मति होगी। १४ और वे मुकुट हेलेम, तोबिय्याह, यदायाह, और सपन्याह के पुत्र हेन को मिलें, और वे यहोवा के मन्दिर में स्मरण के लिये बने रहें ॥

१५ फिर दूर दूर के लोग आ आकर यहोवा के मन्दिर बनाने में सहायता करेंगे, और तुम जानोगे कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। और यदि तुम मन लगाकर अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं का पालन करो तो यह बात पूरी होगी ॥

७ फिर दारा राजा के चौथे वर्ष के किसलेव नाम नौवें महीने के चौथे दिन को, यहोवा का वचन जकर्याह के पास पहुंचा। २ बेतेलवासियों ने शरेसेर और रेगेम्मेलेक को इसलिये भेजा था कि यहोवा से बिनती करें, ३ और सेनाओं के यहोवा के भवन के याजकों से और भविष्यद्वक्ताओं से भी यह पूछें, क्या हमें उपवास करके रोना चाहिये जैसे कि कितने वर्षों से हम पांचवें महीने में करते आए हैं? ४ तब सेनाओं के यहोवा का यह वचन मेरे पास

* वा आत्मा।

* या डाली। † मूल में—उठाएगा।

पहुंचा; ५ सब साधारण लोगों से और याजकों से कह, कि जब तुम इन सत्तर वर्षों के बीच पांचवें और सातवें महीनों में उपवास और विलाप करते थे, तब क्या तुम सचमुच मेरे ही लिये उपवास करते थे? ६ और जब तुम खाते-पीते हो, तो क्या तुम अपने ही लिये नहीं खाते, और क्या अपने ही लिये नहीं पीते हो? ७ क्या यह वही वचन नहीं है, जो यहोवा अगले भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा उस समय पुकारकर कहता रहा जब यरूशलेम अपने चारों ओर के नगरों समेत चैन से बसा हुआ था, और दक्खिन देश और नीचे का देश भी बसा हुआ था?

८ फिर यहोवा का यह वचन जकर्याह के पास पहुंचा, सेनाओं के यहोवा ने यों कहा है, ९ खराई से न्याय चुकाना, और एक दूसरे के साथ कृपा और दया से काम करना, १० न तो विधवा पर अन्धेर करना, न अनाथों पर, न परदेशी पर, और न दीन जन पर; और न अपने अपने मन में एक दूसरे की हानि की कल्पना करना। ११ परन्तु उन्हों ने चित्त लगाना न चाहा, और हठ किया, और अपने कानों को मूंद लिया ताकि सुन न सकें। १२ वरन उन्हों ने अपने हृदय को इसलिये वज्र सा बना लिया, कि वे उस व्यवस्था और उन वचनों को न मान सकें जिन्हें सेनाओं के यहोवा ने अपने आत्मा के द्वारा अगले भविष्यद्वक्ताओं से कहला भेजा था। इस कारण सेनाओं के यहोवा की ओर से उन पर बड़ा क्रोध भड़का। १३ और सेनाओं के यहोवा का यह वचन हुआ, कि जैसे मेरे पुकारने पर उन्हों ने नहीं सुना, वैसे ही उनके पुकारने पर मैं भी न सुनूंगा; १४ वरन मैं उन्हें उन सब जातियों के बीच जिन्हें वे नहीं जानते, आंधी के द्वारा तितर-बितर कर दूंगा, और उनका देश उनके पीछे ऐसा उजाड़ पड़ा रहेगा कि उस में किसी का आना जाना न होगा; इसी प्रकार से उन्हों ने मनोहर देश को उजाड़ कर दिया॥

८ फिर सेनाओं के यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, २ सेनाओं का यहोवा यों कहता है: सिय्योन के लिये मुझे बड़ी जलन हुई वरन बहुत ही जलजलाहट मुझ में उत्पन्न हुई है। ३ यहोवा यों कहता है, मैं सिय्योन में लौट आया हूं, और यरूशलेम के बीच में वास किए रहूंगा, और यरूशलेम सच्चाई का नगर कहलाएगा, और सेनाओं के यहोवा का पर्वत, पवित्र पर्वत कहलाएगा। ४ सेनाओं का यहोवा यों कहता है, यरूशलेम के चौकों में फिर बूढ़े और बूढ़ियां बहुत आयु की होने के कारण, अपने अपने हाथ में लाठी लिए हुए बैठा करेंगी। ५ और नगर के चौक खेलनेवाले लड़कों और लड़कियों से भरे रहेंगे। ६ सेनाओं का यहोवा यों कहता है, चाहे उन दिनों में यह बात इन बचे हुओं की दृष्टि में अनोखी ठहरे, परन्तु क्या मेरी दृष्टि में भी यह अनोखी ठहरेगी, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है? ७ सेनाओं का यहोवा यों कहता है, देखो, मैं अपनी प्रजा का उद्धार करके उसे पूरब से और पच्छिम से ले आऊंगा; ८ और मैं उन्हें ले आकर यरूशलेम के बीच में बसाऊंगा; और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, यह तो सच्चाई और धर्म के साथ होगा॥

९ सेनाओं का यहोवा यों कहता है, तुम इन दिनों में ये वचन उन भविष्यद्वक्ताओं के मुख से सुनते हो जो सेनाओं के यहोवा के भवन की नेव डालने के समय अर्थात् मन्दिर के बनने के समय में थे। १० उन दिनों के पहिले, न तो मनुष्य की मजदूरी मिलती थी और न पशु का भाड़ा, वरन सतानेवालों के कारण न तो आनेवाले को चैन मिलता था और न जानेवाले को; क्योंकि मैं सब मनुष्यों से एक दूसरे पर चढ़ाई कराता था। ११ परन्तु अब मैं इस प्रजा के बचे हुओं से ऐसा बर्ताव न करूंगा जैसा कि अगले दिनों में करता था, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है। १२ क्योंकि अब शान्ति के समय की उपज अर्थात् दाखलता फला करेगी, पृथ्वी अपनी उपज उपजाया करेगी, और आकाश से ओस गिरा करेगी; क्योंकि मैं अपनी इस प्रजा के बचे हुओं को इन सब का अधिकारी कर दूंगा। १३ और हे यहूदा के घराने, और इस्राएल के घराने, जिस प्रकार तुम अन्यजातियों के बीच शाप के कारण थे उसी प्रकार मैं तुम्हारा उद्धार करूंगा, और तुम आशीष के कारण होगे। इसलिये तुम मत डरो, और न तुम्हारे हाथ ढीले पड़ने पाएं।।

१४ क्योंकि सेनाओं का यहोवा यों कहता है, जिस प्रकार जब तुम्हारे पुरखा मुझे रिस दिलाते थे, तब मैं ने उनकी हानि करने के लिये ठान लिया था और फिर न पछताया, १५ उसी प्रकार मैं ने इन दिनों में यरूशलेम की और यहूदा के घराने की भलाई करने को ठाना है; इसलिये तुम मत डरो। १६ जो जो काम तुम्हें करना चाहिये, वे ये हैं : एक दूसरे के साथ सत्य बोला करना, अपनी कचहरियों* में सच्चाई का और मेलमिलाप की नीति का न्याय करना, १७ और अपने अपने मन में एक दूसरे की हानि की कल्पना न करना, और झूठी शपथ से प्रीति न रखना, क्योंकि इन सब कामों से मैं घृणा करता हूं, यहोवा की यही वाणी है।।

१८ फिर सेनाओं के यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, १९ सेनाओं का यहोवा यों कहता है : चौथे, पांचवें, सातवें और दसवें महीने में जो जो उपवास के दिन होते हैं, वे यहूदा के घराने के लिये हर्ष और आनन्द और उत्सव के पर्वों के दिन हो जाएंगे; इसलिये अब तुम सच्चाई और मेलमिलाप से प्रीति रखो।।

२० सेनाओं का यहोवा यों कहता है, ऐसा समय आनेवाला है कि देश देश के लोग और बहुत नगरों के रहनेवाले आएंगे। २१ और एक नगर के रहनेवाले दूसरे नगर के रहनेवालों के पास जाकर कहेंगे, यहोवा से बिनती करने और सेनाओं के यहोवा को ढूंढ़ने के लिये चलो; मैं भी चलूंगा। २२ बहुत से देशों के वरन सामर्थी जातियों के लोग यरूशलेम में सेनाओं के यहोवा को ढूंढ़ने और यहोवा से बिनती करने के लिये आएंगे। २३ सेनाओं का यहोवा यों कहता है : उन दिनों में भांति भांति की भाषा बोलनेवाली सब जातियों में से दस मनुष्य, एक यहूदी पुरुष के वस्त्र की छोर को यह कहकर पकड़ लेंगे, कि, हम तुम्हारे संग चलेंगे, क्योंकि हम ने सुना है कि परमेश्वर तुम्हारे साथ है।।

* मूल में—फाटकों।

६ हद्राक देश के विषय में यहोवा का कहा हुआ भारी वचन जो दमिश्क पर भी पड़ेगा *। क्योंकि यहोवा की दृष्टि मनुष्य जाति की, और इस्राएल के सब गोत्रों की ओर लगी है; २ हमात की ओर जो दमिश्क के निकट है, और सोर और सीदोन की ओर, ये तो बहुत ही बुद्धिमान् हैं। ३ सोर ने अपने लिये एक गढ़ बनाया, और धूलि के किनकों की नाईं चान्दी, और सड़कों की कीच के समान चोखा सोना बटोर रखा है। ४ देखो, परमेश्वर उसको औरों के अधिकार में कर देगा, और उसके घमण्ड को तोड़कर समुद्र में डाल देगा; और वह नगर आग का कौर हो जाएगा ॥

५ यह देखकर अश्कलोन डरेगा; अज्जा को दुख होगा, और एक्रोन भी डरेगा, क्योंकि उसकी आशा टूटेगी; और अज्जा में फिर राजा न रहेगा और अश्कलोन फिर बसी न रहेगी। ६ और अश्दोद में अनजाने लोग बसेंगे; इसी प्रकार मैं पलिश्तियों के गर्व को तोड़ूंगा। ७ मैं उसके मुंह में से आहेर का लोहू और घिनौनी वस्तुएं † निकाल दूंगा, तब उन में से जो बचा रहेगा, वह हमारे परमेश्वर का जन ‡ होगा, और यहूदा में अधिपति सा होगा; और एक्रोन के लोग यबूसियों के समान बनेंगे। ८ तब मैं उस सेना के कारण जो पास से होकर जाएगी और फिर लौट आएगी, अपने भवन के आस पास छावनी किए रहूंगा, और कोई सतानेवाला फिर उनके पास से होकर न जाएगा, क्योंकि मैं ये बातें अब भी देखता हूं ॥

९ हे सिय्योन * बहुत ही मगन हो! हे यरूशलेम † जयजयकार कर! क्योंकि तेरा राजा तेरे पास आएगा; वह धर्मी और उद्धार पाया हुआ है, वह दीन है, और गदहे पर वरन गदही के बच्चे पर चढ़ा हुआ आएगा। १० मैं एप्रैम के रथ और यरूशलेम के घोड़े नाश करूंगा; और युद्ध के धनुष तोड़ डाले जाएंगे, और वह अन्यजातियों से शान्ति की बातें कहेगा; वह समुद्र से समुद्र तक और महानद से पृथ्वी के दूर दूर के देशों तक प्रभुता करेगा ॥

११ और तू भी सुन, क्योंकि मेरी वाचा के लोहू के कारण, मैं ने तेरे बन्दियों को बिना जल के गड़हे में से उबार लिया है। १२ हे आशा धरे हुए बन्दियो! गढ़ की ओर फिरो; मैं आज ही बताता हूं कि मैं तुम को बदले में दूना सुख दूंगा। १३ क्योंकि मैं ने धनुष की नाईं यहूदा को चढ़ाकर उस पर तीर की नाईं एप्रैम को लगाया है। मैं सिय्योन के निवासियों को यूनान के निवासियों के विरुद्ध उभारूंगा, और उन्हें वीर की तलवार सा कर दूंगा। १४ तब यहोवा उनके ऊपर दिखाई देगा, और उसका तीर बिजली की नाईं छूटेगा; और परमेश्वर यहोवा नरसिंगा फूंककर दक्खिन देश की सी आंधी में होके चलेगा। १५ सेनाओं का यहोवा ढाल से उन्हें बचाएगा, और वे अपने शत्रुओं का नाश करेंगे, और उनके गोफन के पत्थरों पर पांव धरेंगे; और वे पीकर ऐसा कोलाहल करेंगे जैसा लोग दाखमधु पीकर करते हैं;

* मूल में—दमिश्क उसका विश्रामस्थान।
† मूल में—और उसके दांतों के बीच से उसकी घिनौनी वस्तुएं।
‡ मूल में—सिय्योन की बेटी।

* मूल में—सिय्योन की बेटी।
† मूल में—यरूशलेम की बेटी।

और वे कटोरे की नाईं वा वेदी के कोने की नाईं भरे जाएंगे ।।

१६ उस समय उनका परमेश्वर यहोवा उनको अपनी प्रजारूपी भेड़-बकरियां जानकर उनका उद्धार करेगा; और वे मुकुटमणि ठहरके, उसकी भूमि से बहुत ऊंचे पर चमकते रहेंगे। १७ उसका क्या ही कुशल, और क्या ही शोभा उसकी होगी! उसके जवान लोग अन्न खाकर, और कुमारियां नया दाखमधु पीकर हृष्टपुष्ट हो जाएंगी ।।

१० बरसात के अन्त में यहोवा से वर्षा मांगो, यहोवा से जो बिजली चमकाता है, और वह उनको वर्षा देगा और हर एक के खेत में हरियाली उपजाएगा। २ क्योंकि गृहदेवता अनर्थ बात कहते और भावी कहनेवाले झूठा दर्शन देखते और झूठे स्वप्न सुनाते, और व्यर्थ शान्ति देते हैं। इस कारण लोग भेड़-बकरियों की नाईं भटक गए; और चरवाहे न होने के कारण दुर्दशा में पड़े हैं ।।

३ मेरा क्रोध चरवाहों पर भड़का है, और मैं उन बकरों को दण्ड दूंगा; क्योंकि सेनाओं का यहोवा अपने झुण्ड अर्थात् यहूदा के घराने का हाल देखने को आएगा, और लड़ाई में उनको अपना हृष्टपुष्ट घोड़ा सा बनाएगा। ४ उसी में से कोने का पत्थर, उसी में से खूंटी, उसी में से युद्ध का धनुष, उसी में से सब प्रधान प्रगट होंगे। ५ और वे ऐसे वीरों के समान होंगे जो लड़ाई में अपने बैरियों को सड़कों की कीच की नाईं रौंदते हों; वे लड़ेंगे, क्योंकि यहोवा उनके संग रहेगा, इस कारण वे वीरता से लड़ेंगे और सवारों की आशा टूटेगी ।।

६ मैं यहूदा के घराने को पराक्रमी करूंगा, और यूसुफ के घराने का उद्धार करूंगा। और मुझे उन पर दया आई है, इस कारण मैं उन्हें लौटा लाकर उन्हीं के देश में बसाऊंगा, और वे ऐसे होंगे, मानो मैं ने उनको मन से नहीं उतारा; मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूं, इसलिये उनकी सुन लूंगा। ७ एप्रैमी लोग वीर के समान होंगे, और उनका मन ऐसा आनन्दित होगा जैसे दाखमधु से होता है। यह देखकर उनके लड़केवाले आनन्द करेंगे और उनका मन यहोवा के कारण मगन होगा ।।

८ मैं सीटी बजाकर उनको इकट्ठा करूंगा, क्योंकि मैं उनका छुड़ानेवाला हूं, और वे ऐसे बढ़ेंगे जैसे पहिले बढ़े थे। ९ यद्यपि मैं उन्हें जाति-जाति के लोगों के बीच छितराऊंगा * तौभी वे दूर दूर देशों में मुझे स्मरण करेंगे, और अपने बालकों समेत जीवित लौट आएंगे। १० मैं उन्हें मिस्र देश से लौटा लाऊंगा, और अश्शूर से इकट्ठा करूंगा, और गिलाद और लबानोन के देशों में ले आकर इतना बढ़ाऊंगा कि वहां उनकी समाई न होगी। ११ वह उस कष्टदाई समुद्र में से होकर उसकी लहरें दबाता हुआ जाएगा और नील नदी † का सब गहिरा जल सूख जाएगा। और अश्शूर का घमण्ड तोड़ा जाएगा और मिस्र का राजदण्ड जाता रहेगा। १२ मैं उन्हें यहोवा द्वारा पराक्रमी करूंगा, और वे उसके नाम से चलें फिरेंगे, यहोवा की यही वाणी है ।।

११ हे लबानोन, आग को रास्ता दे ‡ कि वह आकर तेरे देवदारों को भस्म करे! २ हे सनौबरो, हाय, हाय,

* मूल में—बो दूंगा। † मूल में—योर।
‡ मूल में—अपने किवाड़ खोल।

करो ! क्योंकि देवदार गिर गया है और बड़े से बड़े वृक्ष नाश हो गए हैं ! हे बाशान के दांज वृक्षो, हाय, हाय, करो ! क्योंकि अगम्य वन काटा गया है ! ३ चरवाहों के हाहाकार का शब्द हो रहा है, क्योंकि उनका विभव नाश हो गया है ! जवान सिंहों का गरजना सुनाई देता है, क्योंकि यरदन के तीर का घना वन* नाश किया गया है !

४ मेरे परमेश्वर यहोवा ने यह आज्ञा दी: घात होनेवाली भेड़-बकरियों का चरवाहा हो जा। ५ उनके मोल लेनेवाले उन्हें घात करने पर भी अपने को दोषी नहीं जानते, और उनके बेचनेवाले कहते हैं, यहोवा धन्य है, हम धनी हो गए हैं; और उनके चरवाहे उन पर कुछ दया नहीं करते। ६ यहोवा की यह वाणी है, मैं इस देश के रहनेवालों पर फिर दया न करूंगा। देखो, मैं मनुष्यों को एक दूसरे के हाथ में, और उनके राजा के हाथ में पकड़वा दूंगा; और वे इस देश को नाश करेंगे, और मैं उसके रहनेवालों को उनके वश से न छुड़ाऊंगा ॥

७ सो मैं घात होनेवाली भेड़-बकरियों को और विशेष करके उन में से जो दीन थीं उनको चराने लगा। और मैं ने दो लाठियां लीं; एक का नाम मैं ने अनुग्रह रखा, और दूसरी का नाम एकता। इनको लिए हुए मैं उन भेड़-बकरियों को चराने लगा। ८ और मैं ने उनके तीनों चरवाहों को एक महीने में नाश कर दिया। परन्तु मैं उनके कारण अधीर था, और वे मुझ से घृणा करती थीं। ९ तब मैं ने उन से कहा, मैं तुम को न चराऊंगा। तुम में से जो मरे वह मरे, और जो नाश हो वह नाश हो, और जो बची रहें वे एक दूसरे का मांस खाएं। १० और मैं ने अपनी वह लाठी तोड़ डाली, जिसका नाम अनुग्रह था, कि जो वाचा मैं ने सब अन्यजातियों के साथ बान्धी थी उसे तोड़ूं। ११ वह उसी दिन तोड़ी गई, और इस से दीन भेड़-बकरियां जो मुझे ताकती थीं, उन्हों ने जान लिया कि यह यहोवा का वचन है। १२ तब मैं ने उन से कहा, यदि तुम को अच्छा लगे तो मेरी मजदूरी दो, और नहीं तो मत दो। तब उन्हों ने मेरी मजदूरी में चान्दी के तीस टुकड़े तौल दिए। १३ तब यहोवा ने मुझ से कहा, इन्हें कुम्हार के आगे फेंक दे, यह क्या ही भारी दाम है जो उन्हों ने मेरा ठहराया है ? तब मैं ने चान्दी के उन तीस टुकड़ों को लेकर यहोवा के घर में कुम्हार के आगे फेंक दिया। १४ तब मैं ने अपनी दूसरी लाठी जिस का नाम एकता था, इसलिये तोड़ डाली कि मैं उस भाईचारे के नाते को तोड़ डालूं जो यहूदा और इस्राएल के बीच में है ॥

१५ तब यहोवा ने मुझ से कहा, अब तू मूढ़ चरवाहे के हथियार ले ले। १६ क्योंकि मैं इस देश में एक ऐसा चरवाहा ठहराऊंगा, जो खोई हुई को न ढूंढ़ेगा, न तितर-बितर को इकट्ठी करेगा, न घायलों को चंगा करेगा, न जो भली चंगी हैं उनका पालन-पोषण करेगा, वरन मोटियों का मांस खाएगा और उनके खुरों को फाड़ डालेगा। १७ हाय उस निकम्मे चरवाहे पर जो भेड़-बकरियों को छोड़ जाता है ! उसकी बांह और दहिनी आंख दोनों पर तलवार लगेगी, तब उसकी बांह सूख जाएगी और उसकी दहिनी आंख फूट जाएगी ॥

* मूल में—गर्व।

१२ इस्राएल के विषय में यहोवा का कहा हुआ भारी वचन: यहोवा जो आकाश का ताननेवाला, पृथ्वी की नेव डालनेवाला और मनुष्य की आत्मा का रचनेवाला है, उसकी यह वाणी है, २ देखो, मैं यरूशलेम को चारों ओर की सब जातियों के लिये लड़खड़ा देने के मद का कटोरा ठहरा दूंगा; और जब यरूशलेम घेर लिया जाएगा तब यहूदा की दशा भी ऐसी ही होगी। ३ और उस समय पृथ्वी की सारी जातियां यरूशलेम के विरुद्ध इकट्ठी होंगी, तब मैं उसको इतना भारी पत्थर बनाऊंगा, कि जो उसको उठाएंगे वे बहुत ही घायल होंगे। ४ यहोवा की यह वाणी है, उस समय मैं हर एक घोड़े को घबरा दूंगा, और उसके सवार को घायल करूंगा। परन्तु मैं यहूदा के घराने पर कृपादृष्टि रखूंगा, जब मैं अन्यजातियों के सब घोड़ों को अन्धा कर डालूंगा। ५ तब यहूदा के अधिपति सोचेंगे कि यरूशलेम के निवासी अपने परमेश्वर, सेनाओं के यहोवा की सहायता से मेरे सहायक बनेंगे।।

६ उस समय मैं यहूदा के अधिपतियों को ऐसा कर दूंगा, जैसी लकड़ी के ढेर में आग भरी अंगेठी वा पूले में जलती हुई मशाल होती है, अर्थात् वे दहिने बांए चारों ओर के सब लोगों को भस्म कर डालेंगे; और यरूशलेम जहां अब बसी है, वहीं बसी रहेगी, यरूशलेम में।।

७ और यहोवा पहिले यहूदा के तम्बुओं का उद्धार करेगा, कहीं ऐसा न हो कि दाऊद का घराना और यरूशलेम के निवासी अपने अपने विभव के कारण यहूदा के विरुद्ध बड़ाई मारें। ८ उस समय यहोवा यरूशलेम के निवासियों को मानो ढाल से बचा लेगा, और उस समय उन में से जो ठोकर खानेवाला हो वह दाऊद के समान होगा; और दाऊद का घराना परमेश्वर के समान होगा, अर्थात् यहोवा के उस दूत के समान जो उनके आगे आगे चलता था। ९ और उस समय मैं उन सब जातियों को नाश करने का यत्न करूंगा जो यरूशलेम पर चढ़ाई करेंगी।।

१० और मैं दाऊद के घराने और यरूशलेम के निवासियों पर अपना अनुग्रह करनेवाली * और प्रार्थना सिखानेवाली † आत्मा उण्डेलूंगा, तब वे मुझे ताकेंगे अर्थात् जिसे उन्हों ने बेधा है, और उसके लिये ऐसे रोएंगे जैसे एकलौते पुत्र के लिये रोते-पीटते हैं, और ऐसा भारी शोक करेंगे, जैसा पहिलौठे के लिये करते हैं। ११ उस समय यरूशलेम में इतना रोना-पीटना होगा जैसा मगिद्दोन की तराई में हदद्रिम्मोन में हुआ था। १२ सारे देश में विलाप होगा, हर एक परिवार में अलग अलग; अर्थात् दाऊद के घराने का परिवार अलग, और उनकी स्त्रियां अलग; नातान के घराने का परिवार अलग, और उनकी स्त्रियां अलग; १३ लेवी के घराने का परिवार अलग और उनकी स्त्रियां अलग; शिमीयों का परिवार अलग, और उनकी स्त्रियां अलग; १४ और जितने परिवार रह गए हों, हर एक परिवार अलग अलग, और उनकी स्त्रियां भी अलग अलग।।

१३ उसी समय दाऊद के घराने और यरूशलेम के निवासियों के लिये पाप और मलिनता धोने के निमित्त एक बहता हुआ सोता होगा।।

---

* मूल में—का।

† मूल में—ऐसे कहने होंगे।

२ और सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, कि उस समय में इस देश में से मूर्तों के नाम मिटा डालूंगा, और वे फिर स्मरण में न रहेंगी; और मैं भविष्यद्वक्ताओं और अशुद्ध आत्मा को इस देश में से निकाल दूंगा। ३ और यदि कोई फिर भविष्यद्वाणी करे, तो उसके माता-पिता जिन से वह उत्पन्न हुआ, उस से कहेंगे, तू जीवित न बचेगा, क्योंकि तू ने यहोवा के नाम से झूठ कहा है; सो जब वह भविष्यद्वाणी करे, तब उसके माता-पिता जिन से वह उत्पन्न हुआ उसको बेध डालेंगे। ४ उस समय हर एक भविष्यद्वक्ता भविष्यद्वाणी करते हुए अपने अपने दर्शन से लज्जित होंगे, और धोखा देने के लिये कम्बल का वस्त्र न पहिनेंगे, ५ परन्तु वह कहेगा, मैं भविष्यद्वक्ता नहीं, किसान हूं; क्योंकि लड़कपन ही से मैं औरों का दास हूं। ६ तब उस से यह पूछा जाएगा, तेरी छाती में ये घाव कैसे हुए *, तब वह कहेगा, ये वे ही हैं जो मेरे प्रेमियों के घर में मुझे लगे हैं।।

७ सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, हे तलवार, मेरे ठहराए हुए चरवाहे के विरुद्ध अर्थात् जो पुरुष मेरा स्वजाति है, उसके विरुद्ध चल। तू उस चरवाहे को काट, तब भेड़-बकरियां तितर-बितर हो जाएंगी; और बच्चों पर मैं अपने हाथ बढ़ाऊंगा। ८ यहोवा की यह भी वाणी है, कि इस देश के सारे निवासियों की दो तिहाई मार डाली जाएगी, और बची हुई तिहाई उस में बनी रहेगी। ९ उस तिहाई को मैं आग में डालकर ऐसा निर्मल करूंगा, जैसा रूपा निर्मल किया जाता है, और ऐसा जांचूंगा जैसा सोना जांचा जाता है। वे मुझ से प्रार्थना किया करेंगे, और मैं उनकी सुनूंगा। मैं उनके विषय में कहूंगा, ये मेरी प्रजा हैं, और वे मेरे विषय में कहेंगे, यहोवा हमारा परमेश्वर है।।

१४ सुनो, यहोवा का एक ऐसा दिन आनेवाला है जिस में तेरा धन लूटकर तेरे बीच में बांट लिया जाएगा। २ क्योंकि मैं सब जातियों को यरूशलेम से लड़ने के लिये इकट्ठा करूंगा, और वह नगर ले लिया जाएगा। और घर लूटे जाएंगे और स्त्रियां भ्रष्ट की जाएंगी; नगर के आधे लोग बंधुआई में जाएंगे, परन्तु प्रजा के शेष लोग नगर ही में रहने पाएंगे। ३ तब यहोवा निकलकर उन जातियों से ऐसा लड़ेगा जैसा वह संग्राम के दिन में लड़ा था। ४ और उस समय वह जलपाई के पर्वत पर पांव धरेगा, जो पूरब ओर यरूशलेम के साम्हने है; तब जलपाई का पर्वत पूरब से लेकर पच्छिम तक बीचोबीच से फटकर बहुत बड़ा खड्ड हो जाएगा; तब आधा पर्वत उत्तर की ओर और आधा दक्खिन की ओर हट जाएगा। ५ तब तुम मेरे बनाए हुए उस खड्ड से होकर भाग जाओगे, क्योंकि वह खड्ड आसेल तक पहुंचेगा, वरन तुम ऐसे भागोगे जैसे उस भुईंडोल के डर से भागे थे जो यहूदा के राजा उज्जिय्याह के दिनों में हुआ था। तब मेरा परमेश्वर यहोवा आएगा, और सब पवित्र लोग उसके साथ होंगे।।

६ उस समय कुछ उजियाला न रहेगा, क्योंकि ज्योतिगण सिमट जाएंगे। ७ और लगातार एक ही दिन होगा जिसे

* मूल में—तेरे हाथों के बीच ये क्या घाव हैं।

यहोवा ही जानता है, न तो दिन होगा, और न रात होगी, परन्तु सांझ के समय उजियाला होगा ।।

८ उस समय यरूशलेम से बहता हुआ जल फूट निकलेगा उसकी एक शाखा पूरब के ताल और दूसरी पच्छिम के समुद्र की ओर बहेगी, और धूप के दिनों में और जाड़े के दिनों में भी बराबर बहती रहेंगी ।।

९ तब यहोवा सारी पृथ्वी का राजा होगा; और उस समय एक ही यहोवा और उसका नाम भी एक ही माना जाएगा ।।

१० गेबा से लेकर यरूशलेम की दक्खिन ओर के रिम्मोन तक सब भूमि अराबा के समान हो जाएगी। परन्तु वह ऊंची होकर बिन्यामीन के फाटक से लेकर पहिले फाटक के स्थान तक, और कोनेवाले फाटक तक, और हननेल के गुम्मट से लेकर राजा के दाखरसकुण्डों तक अपने स्थान में बसेगी। ११ और लोग उस में बसेंगे क्योंकि फिर सत्यानाश का शाप न होगा; और यरूशलेम बेखटके बसी रहेगी। १२ और जितनी जातियों ने यरूशलेम से युद्ध किया है उन सभों को यहोवा ऐसी मार से मारेगा, कि खड़े खड़े उनका मांस सड़ जाएगा, और उनकी आंखें अपने गोलकों में सड़ जाएंगीं, और उनकी जीभ उनके मुंह में सड़ जाएगी। १३ और उस समय यहोवा की ओर से उन में बड़ी घबराहट पैठेगी, और वे एक दूसरे के हाथ को पकड़ेंगे, और एक दूसरे पर अपने अपने हाथ उठाएंगे। १४ यहूदा भी यरूशलेम में लड़ेगा, और सोना, चान्दी, वस्त्र आदि चारों ओर की सब जातियों की धन सम्पत्ति उस में बटोरी जाएगी। १५ और घोड़े, खच्चर, ऊंट और गदहे वरन जितने पशु उनकी छावनियों में होंगे वे भी ऐसी ही बीमारी से मारे जाएंगे ।।

१६ तब जितने लोग यरूशलेम पर चढ़नेवाली सब जातियों में से बचे रहेंगे, वे प्रति वर्ष राजा को अर्थात् सेनाओं के यहोवा को दण्डवत् करने, और झोंपड़ियों का पर्ब मानने के लिये यरूशलेम को जाया करेंगे। १७ और पृथ्वी के कुलों में से जो लोग यरूशलेम में राजा, अर्थात् सेनाओं के यहोवा को दण्डवत् करने के लिये न जाएंगे, उनके यहां वर्षा न होगी। १८ और यदि मिस्र का कुल वहां न आए, तो क्या उन पर वह मरी न पड़ेगी जिस से यहोवा उन जातियों को मारेगा जो झोंपड़ियों का पर्ब मानने के लिये न जाएंगे? १९ यह मिस्र का और उन सब जातियों का पाप ठहरेगा, जो झोंपड़ियों का पर्ब मानने के लिये न जाएंगे। २० उस समय घोड़ों की घंटियों पर भी यह लिखा रहेगा, यहोवा के लिये पवित्र। और यहोवा के भवन की हंडियां उन कटोरों के तुल्य पवित्र ठहरेंगी, जो वेदी के साम्हने रहते हैं। २१ वरन यरूशलेम में और यहूदा देश में सब हंडियां सेनाओं के यहोवा के लिये पवित्र ठहरेंगी, और सब मेलबलि करनेवाले आ आकर उन हंडियों में मांस सिझाया करेंगे। और तब सेनाओं के यहोवा के भवन में फिर कोई व्योपारी न पाया जाएगा ।।

मलाकी

१ मलाकी के द्वारा इस्राएल के विषय में कहा हुआ यहोवा का भारी वचन ।।

२ यहोवा यह कहता है, मैं ने तुम से प्रेम किया है, परन्तु तुम पूछते हो, तू ने किस बात में हम से प्रेम किया है? यहोवा की यह वाणी है, क्या एसाव याकूब का भाई न था? ३ तौभी मैं ने याकूब से प्रेम किया परन्तु एसाव को अप्रिय जानकर उसके पहाड़ों को उजाड़ डाला, और उसकी बपौती को जंगल के गीदड़ों का कर दिया है। ४ एदोम कहता है, हमारा देश उजड़ गया है, परन्तु हम खण्डहरों को फिरकर बसाएंगे; सेनाओं का यहोवा यों कहता है, यदि वे बनाएं भी, परन्तु मैं ढा दूंगा; उनका नाम दुष्ट जाति पड़ेगा, और वे ऐसे लोग कहलाएंगे जिन पर यहोवा सदैव क्रोधित रहे। ५ तुम्हारी आंखें इसे देखेंगी, और तुम कहोगे, यहोवा का प्रताप इस्राएल के सिवाने की परली ओर भी बढ़ता जाए ।।

६ पुत्र पिता का, और दास स्वामी का आदर करता है। यदि मैं पिता हूं, तो मेरा आदर मानना कहां है? और यदि मैं स्वामी हूं, तो मेरा भय मानना कहां? सेनाओं का यहोवा, तुम याजकों से भी जो मेरे नाम का अपमान करते हो यही बात पूछता है। परन्तु तुम पूछते हो, हम ने किस बात में तेरे नाम का अपमान किया है? तुम मेरी वेदी पर अशुद्ध भोजन चढ़ाते हो। ७ तौभी तुम पूछते हो कि हम किस बात में तुझे अशुद्ध ठहराते हैं? इस बात में भी, कि तुम कहते हो, यहोवा की मेज़ तुच्छ है। ८ जब तुम अन्धे पशु को बलि करने के लिये समीप ले आते हो तो क्या यह बुरा नहीं? और जब तुम लंगड़े वा रोगी पशु को ले आते हो, तो क्या यह बुरा नहीं? अपने हाकिम के पास ऐसी भेंट ले जाओ; क्या वह तुम से प्रसन्न होगा वा तुम पर अनुग्रह करेगा? सेनाओं के यहोवा का यही वचन है ।।

९ और अब मैं तुम से कहता हूं, ईश्वर से प्रार्थना करो कि वह हम लोगों पर अनुग्रह करे। यह तुम्हारे हाथ से हुआ है; तब क्या तुम समझते हो कि परमेश्वर तुम में से किसी का पक्ष करेगा? सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। १० भला होता कि तुम में से कोई मन्दिर के किवाड़ों को बन्द करता कि तुम मेरी वेदी पर व्यर्थ आग जलाने न पाते! सेनाओं के यहोवा का यह वचन है, मैं तुम से कदापि प्रसन्न नहीं हूं, और न तुम्हारे हाथ से भेंट ग्रहण करूंगा। ११ क्योंकि उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक अन्यजातियों में मेरा नाम महान है, और हर कहीं मेरे नाम पर धूप और शुद्ध भेंट चढ़ाई जाती है; क्योंकि अन्य-जातियों में मेरा नाम महान है, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। १२ परन्तु तुम लोग उसको यह कहकर अपवित्र ठहराते हो कि यहोवा की मेज़ अशुद्ध है, और जो भोजनवस्तु उस पर से मिलती है वह भी तुच्छ है। १३ फिर तुम यह भी कहते हो,

कि यह कैसा बड़ा उपद्रव है! सेनाओं के यहोवा का यह वचन है। तुम ने उस भोजनवस्तु के प्रति नाक-भौं सिकोड़ी, और अत्याचार से प्राप्त किए हुए और लंगड़े और रोगी पशु की भेंट ले आते हो! क्या मैं ऐसी भेंट तुम्हारे हाथ से ग्रहण करूं? यहोवा का यही वचन है। १४ जिस छली के झुण्ड में नरपशु हो परन्तु वह मन्नत मानकर परमेश्वर को बर्जा हुआ पशु चढ़ाए, वह शापित है; मैं तो महाराजा हूं, और मेरा नाम अन्यजातियों में भययोग्य है, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है॥

२ और अब हे याजको, यह आज्ञा तुम्हारे लिये है। २ यदि तुम इसे न सुनो, और मन लगाकर मेरे नाम का आदर न करो, तो सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि मैं तुम को शाप दूंगा, और जो वस्तुएं मेरी आशीष से तुम्हें मिली हैं, उन पर मेरा शाप पड़ेगा, वरन तुम जो मन नहीं लगाते हो इस कारण मेरा शाप उन पर पड़ चुका है। ३ देखो, मैं तुम्हारे कारण बीज को झिड़कूंगा *, और तुम्हारे मुंह पर तुम्हारे पर्बों के यज्ञपशुओं का मल फैलाऊंगा, और उसके संग तुम भी उठाकर फेंक दिए जाओगे। ४ तब तुम जानोगे कि मैं ने तुम को यह आज्ञा इसलिये दिलाई है कि लेवी के साथ मेरी बन्धी हुई वाचा बनी रहे; सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। ५ मेरी जो वाचा उसके साथ बन्धी थी वह जीवन और शान्ति की थी, और मैं ने यह इसलिये उसको दिया कि वह भय मानता रहे; और उस ने मेरा भय मान भी लिया और मेरे नाम से अत्यन्त भय खाता था। ६ उसको मेरी सच्ची व्यवस्था कण्ठ थी, और उसके मुंह से कुटिल बात न निकलती थी। वह शान्ति और सीधाई से मेरे संग संग चलता था, और बहुतों को अधर्म से लौटा ले आया था। ७ क्योंकि याजक को चाहिये कि वह अपने ओंठों से ज्ञान की रक्षा करे, और लोग उसके मुंह से व्यवस्था पूछें, क्योंकि वह सेनाओं के यहोवा का दूत है। ८ परन्तु तुम लोग धर्म के मार्ग से ही हट गए; तुम बहुतों के लिये व्यवस्था के विषय में ठोकर का कारण हुए; तुम ने लेवी की वाचा को तोड़ दिया है, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। ९ इसलिये मैं ने भी तुम को सब लोगों के साम्हने तुच्छ और नीचा कर दिया है, क्योंकि तुम मेरे मार्गों पर नहीं चलते, वरन व्यवस्था देने में मुंह देखा विचार करते हो॥

१० क्या हम सभों का एक ही पिता नहीं? क्या एक ही परमेश्वर ने हम को उत्पन्न नहीं किया? हम क्यों एक दूसरे का विश्वासघात करके अपने पूर्वजों की वाचा को तोड़ देते हैं? ११ यहूदा ने विश्वासघात किया है, और इस्राएल में और यरूशलेम में घृणित काम किया गया है; क्योंकि यहूदा ने बिराने देवता की कन्या से विवाह करके यहोवा के पवित्र स्थान को जो उसका प्रिय है, अपवित्र किया है। १२ जो पुरुष ऐसा काम करे, उसके तम्बुओं में से याकूब का परमेश्वर उसके घर के रक्षक और सेनाओं के यहोवा की भेंट चढ़ानेवाले को यहूदा से काट डालेगा!

१३ फिर तुम ने यह दूसरा काम किया है कि तुम ने यहोवा की वेदी को रोनेवालों

* मूल में—मैं तुम्हारे कारण बीज को घुड़कूंगा।

और आहें भरनेवालों के आंसुओं से भिगो दिया है, यहां तक कि वह तुम्हारी भेंट की ओर दृष्टि तक नहीं करता, और न प्रसन्न होकर उसको तुम्हारे हाथ से ग्रहण करता है। तुम पूछते हो, ऐसा क्यों? १४ इसलिये, क्योंकि यहोवा तेरे और तेरी उस जवानी की संगिनी और ब्याही हुई स्त्री के बीच साक्षी हुआ था जिस का तू ने विश्वासघात किया है। १५ क्या उस ने एक ही को नहीं बनाया जब कि और आत्माएं उसके पास थीं*? और एक ही को क्यों बनाया? इसलिये कि वह परमेश्वर के योग्य सन्तान चाहता है। इसलिये तुम अपनी आत्मा के विषय में चौकस रहो, और तुम में से कोई अपनी जवानी की स्त्री से विश्वासघात न करे। १६ क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, कि मैं स्त्री-त्याग से घृणा करता हूं, और उस से भी जो अपने वस्त्र को उपद्रव से ढांपता है। इसलिये तुम अपनी आत्मा के विषय में चौकस रहो और विश्वासघात मत करो, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है॥

१७ तुम लोगों ने अपनी बातों से यहोवा को उकता दिया है। तौभी पूछते हो, कि हम ने किस बात में उसे उकता दिया? इस में, कि तुम कहते हो कि जो कोई बुरा करता है, वह यहोवा की दृष्टि में अच्छा लगता है, और वह ऐसे लोगों से प्रसन्न रहता है, और यह, कि न्यायी परमेश्वर कहां है?

३ देखो, मैं अपने दूत को भेजता हूं, और वह मार्ग को मेरे आगे सुधारेगा, और प्रभु, जिसे तुम ढूंढ़ते हो, वह अचानक अपने मन्दिर में आ जाएगा; हां वाचा का वह दूत, जिसे तुम चाहते हो, सुनो, वह आता है, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। २ परन्तु उसके आने के दिन की कौन सह सकेगा? और जब वह दिखाई दे, तब कौन खड़ा रह सकेगा?

क्योंकि वह सोनार की आग और धोबी के साबुन के समान है। ३ वह रूपे का तानेवाला और शुद्ध करनेवाला बनेगा, और लेवियों को शुद्ध करेगा और उनको सोने रूपे की नाईं निर्मल करेगा, तब वे यहोवा की भेंट धर्म से चढ़ाएंगे। ४ तब यहूदा और यरूशलेम की भेंट यहोवा को ऐसी भाएगी, जैसी पहिले दिनों में और प्राचीनकाल में भावती थी॥

५ तब मैं न्याय करने को तुम्हारे निकट आऊंगा; और टोन्हों, और व्यभिचारियों, और झूठी किरिया खानेवालों के विरुद्ध, और जो मजदूर की मजदूरी को दबाते, और विधवा और अनाथों पर अन्धेर करते, और परदेशी का न्याय बिगाड़ते, और मेरा भय नहीं मानते, उन सभों के विरुद्ध मैं तुरन्त साक्षी दूंगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है॥

६ क्योंकि मैं यहोवा बदलता नहीं; इसी कारण, हे याकूब की सन्तान तुम नाश नहीं हुए। ७ अपने पुरखाओं के दिनों से तुम लोग मेरी विधियों से हटते आए हो, और उनका पालन नहीं करते। तुम मेरी ओर फिरो, तब मैं भी तुम्हारी ओर फिरूंगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है; परन्तु तुम पूछते हो, हम किस बात में फिरें? ८ क्या मनुष्य परमेश्वर को धोखा दे सकता है? देखो, तुम मुझ

* वा क्या एक ही पुरुष ने ऐसा किया जिस में आत्मा का कुछ प्रभाव रह गया था।

को धोखा देते हो, और तौभी पूछते हो कि हम ने किस बात में तुझे लूटा है? दशमांश और उठाने की भेंटों में। ९ तुम पर भारी शाप पड़ा है, क्योंकि तुम मुझे लूटते हो; वरन सारी जाति ऐसा करती है। १० सारे दशमांस भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजनवस्तु रहे; और सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि ऐसा करके मुझे परखो कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिये खोलकर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष की वर्षा करता हूं कि नहीं। ११ मैं तुम्हारे लिये नाश करनेवाले को ऐसा घुड़कूंगा कि वह तुम्हारी भूमि की उपज नाश न करेगा, और तुम्हारी दाखलताओं के फल कच्चे न गिरेंगे, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। १२ तब सारी जातियां तुम को धन्य कहेंगी, क्योंकि तुम्हारा देश * मनोहर देश होगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है॥

१३ यहोवा यह कहता है, तुम ने मेरे विरुद्ध ढिठाई की बातें कही हैं। परन्तु तुम पूछते हो, हम ने तेरे विरुद्ध में क्या कहा है? १४ तुम ने कहा है कि परमेश्वर की सेवा करनी व्यर्थ है। हम ने जो उसके बताए हुए कामों को पूरा किया और सेनाओं के यहोवा के डर के मारे शोक का पहिरावा पहिने हुए चले हैं, इस से क्या लाभ हुआ? १५ अब से हम अभिमानी लोगों को धन्य कहते हैं; क्योंकि दुराचारी तो सफल बन गए हैं, वरन वे परमेश्वर की परीक्षा करने पर भी बच गए हैं॥

* मूल में—तुम।

१६ तब यहोवा का भय माननेवालों ने आपस में बातें कीं, और यहोवा ध्यान धरकर उनकी सुनता था; और जो यहोवा का भय मानते और उसके नाम का सम्मान करते थे, उनके स्मरण के निमित्त उसके साम्हने एक पुस्तक लिखी जाती थी। १७ सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि जो दिन मैं ने ठहराया है, उस दिन वे लोग मेरे वरन मेरे निज भाग ठहरेंगे, और मैं उन से ऐसी कोमलता करूंगा जैसी कोई अपने सेवा करनेवाले पुत्र से करे। १८ तब तुम फिरकर धर्मी और दुष्ट का भेद, अर्थात् जो परमेश्वर की सेवा करता है, और जो उसकी सेवा नहीं करता, उन दोनों का भेद पहिचान सकोगे॥

४ क्योंकि देखो, वह धधकते भट्ठे का सा दिन आता है, जब सब अभिमानी और सब दुराचारी लोग अनाज की खूंटी बन जाएंगे; और उस आनेवाले दिन में वे ऐसे भस्म हो जाएंगे कि उनका पता तक न रहेगा *, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। २ परन्तु तुम्हारे लिये जो मेरे नाम का भय मानते हो, धर्म का सूर्य उदय होगा, और उसकी किरणों के द्वारा तुम चंगे हो जाओगे †; और तुम निकलकर पाले हुए बछड़ों की नाईं कूदोगे और फांदोगे। ३ तब तुम दुष्टों को लताड़ डालोगे, अर्थात् मेरे उस ठहराए हुए दिन में वे तुम्हारे पांवों के नीचे की राख बन जाएंगे, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है॥

* मूल में—उनकी न जड़ न डालियां छोड़ेगा।

† मूल में—उसके पंखों में चंगापन।

४ मेरे दास मूसा की व्यवस्था ग्रर्थात् जो जो विधि ग्रौर नियम मैं ने सारे इस्राएलियों के लिये उसको होरेब में दिए थे, उनको स्मरण रखो ।।

५ देखो, यहोवा के उस बड़े ग्रौर भयानक दिन के ग्राने से पहिले, मैं तुम्हारे पास एलिय्याह नबी को भेजूंगा । ६ ग्रौर वह माता-पिता के मन को उनके पुत्रों की ग्रोर, ग्रौर पुत्रों के मन को उनके माता-पिता की ग्रोर फेरेगा; ऐसा न हो कि मैं ग्राकर पृथ्वी को सत्यानाश करूं ।।

धर्मपुस्तक का

नया नियम

अर्थात्

प्रभु यीशु का

सुसमाचार

मत्ती रचित सुसमाचार

१ इब्राहीम की सन्तान, दाऊद की सन्तान, यीशु मसीह की वंशावली। २ इब्राहीम से इसहाक उत्पन्न हुआ; इसहाक से याकूब उत्पन्न हुआ; और याकूब से यहूदा और उसके भाई उत्पन्न हुए। ३ यहूदा से फिरिस, और यहूदा और तामार से जोरह उत्पन्न हुए; और फिरिस से हिस्रोन उत्पन्न हुआ, और हिस्रोन से एराम उत्पन्न हुआ। ४ और एराम से अम्मीनादाब उत्पन्न हुआ; और अम्मीनादाब से नहशोन और नहशोन से सलमोन उत्पन्न हुआ। ५ और सलमोन और राहब से बोअज उत्पन्न हुआ। और बोअज और रूत से ओबेद उत्पन्न हुआ; और ओबेद से यिशै उत्पन्न हुआ। ६ और यिशै से दाऊद राजा उत्पन्न हुआ॥

७ और दाऊद से सुलैमान उस स्त्री से उत्पन्न हुआ जो पहिले उरिय्याह की पत्नी थी। ८ और सुलैमान से रहबाम उत्पन्न हुआ; और रहबाम से अबिय्याह उत्पन्न हुआ; और अबिय्याह से आसा उत्पन्न हुआ; और आसा से यहोशाफात उत्पन्न हुआ; और यहोशाफात से योराम उत्पन्न हुआ, और योराम से उज्जिय्याह उत्पन्न हुआ। ९ और उज्जिय्याह से योताम उत्पन्न हुआ; और योताम से आहाज उत्पन्न हुआ; और आहाज से हिजकिय्याह उत्पन्न हुआ। १० और हिजकिय्याह से मनश्शिह उत्पन्न हुआ। और मनश्शिह से आमोन उत्पन्न हुआ; और आमोन से योशिय्याह उत्पन्न हुआ। ११ और बन्दी होकर बाबुल जाने के समय में योशिय्याह से यकुन्याह, और उस के भाई उत्पन्न हुए॥

१२ बन्दी होकर बाबुल पहुंचाए जाने के बाद यकुन्याह से शालतिएल उत्पन्न हुआ; और शालतिएल से जरुब्बाबिल उत्पन्न हुआ। १३ और जरुब्बाबिल से अबीहूद उत्पन्न हुआ, और अबीहूद से इल्याकीम उत्पन्न हुआ; और इल्याकीम से अजोर उत्पन्न हुआ। १४ और अजोर से सदोक उत्पन्न हुआ; और सदोक से अखीम उत्पन्न हुआ; और अखीम से इलीहूद उत्पन्न हुआ। १५ और इलीहूद से इलियाजार उत्पन्न हुआ; और इलियाजार से मत्तान उत्पन्न हुआ; और मत्तान से याकूब उत्पन्न हुआ। १६ और याकूब से यूसुफ उत्पन्न हुआ; जो मरियम का पति था जिस से यीशु जो मसीह कहलाता है उत्पन्न हुआ॥

१७ इब्राहीम से दाऊद तक सब चौदह पीढ़ी हुई और दाऊद से बाबुल को बन्दी होकर पहुंचाए जाने तक चौदह पीढ़ी और बन्दी होकर बाबुल को पहुंचाए जाने के समय से लेकर मसीह तक चौदह पीढ़ी हुई॥

१८ अब यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार से हुआ, कि जब उस की माता मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हो गई, तो उन के इकट्ठे होने से पहिले वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई। १९ सो उसके पति यूसुफ ने जो धर्मी था और उसे बदनाम करना नहीं चाहता था, उसे चुपके से त्याग देने की मनसा की।

२० जब वह इन बातों के सोच ही में था तो प्रभु का स्वर्गदूत उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा; हे यूसुफ दाऊद की सन्तान, तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहां ले आने से मत डर; क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। २१ वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना; क्योंकि वह अपने लोगों का उन के पापों से उद्धार करेगा। २२ यह सब कुछ इसलिये हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था; वह पूरा हो। २३ कि, देखो एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा जिस का अर्थ यह है "परमेश्वर हमारे साथ"। २४ सो यूसुफ नींद से जागकर प्रभु के दूत की आज्ञा अनुसार अपनी पत्नी को अपने यहां ले आया। २५ और जब तक वह पुत्र न जनी तब तक वह उसके पास न गया: और उस ने उसका नाम यीशु रखा॥

२ हेरोदेस राजा के दिनों में जब यहूदिया के बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ, तो देखो, पूर्व से कई ज्योतिषी यरूशलेम में आकर पूछने लगे। २ कि यहूदियों का राजा जिस का जन्म हुआ है, कहां है? क्योंकि हम ने पूर्व में उसका तारा देखा है और उस को प्रणाम करने आए हैं। ३ यह सुनकर हेरोदेस राजा और उसके साथ सारा यरूशलेम घबरा गया। ४ और उस ने लोगों के सब महायाजकों और शास्त्रियों को इकट्ठे करके उन से पूछा, कि मसीह का जन्म कहाँ होना चाहिए? ५ उन्हों ने उस से कहा, यहूदिया के बैतलहम में; क्योंकि भविष्यद्वक्ता के द्वारा यों लिखा गया है। ६ कि हे बैतलहम, जो यहूदा के देश में है, तू किसी रीति से यहूदा के अधिकारियों में सब से छोटा नहीं; क्योंकि तुझ में से एक अधिपति निकलेगा, जो मेरी प्रजा इस्राएल की रखवाली करेगा। ७ तब हेरोदेस ने ज्योतिषियों को चुपके से बुलाकर उन से पूछा, कि तारा ठीक किस समय दिखाई दिया था। ८ और उस ने यह कहकर उन्हें बैतलहम भेजा, कि जाकर उस बालक के विषय में ठीक ठीक मालूम करो और जब वह मिल जाए तो मुझे समाचार दो ताकि मैं भी आकर उस को प्रणाम करूं। ९ वे राजा की बात सुनकर चले गए, और देखो, जो तारा उन्हों ने पूर्व में देखा था, वह उन के आगे आगे चला, और जहां बालक था, उस जगह के ऊपर पहुंचकर ठहर गया। १० उस तारे को देखकर वे अति आनन्दित हुए। ११ और उस घर में पहुंचकर उस बालक को उस की माता मरियम के साथ देखा, और मुंह के बल गिरकर उसे प्रणाम किया; और अपना अपना थैला खोलकर उस को सोना, और लोहबान, और गन्धरस की भेंट चढ़ाई। १२ और स्वप्न में यह चितौनी पाकर कि हेरोदेस के पास फिर न जाना, वे दूसरे मार्ग से होकर अपने देश को चले गए॥

१३ उन के चले जाने के बाद देखो, प्रभु के एक दूत ने स्वप्न में यूसुफ को दिखाई देकर कहा, उठ; उस बालक को और उस की माता को लेकर मिस्र देश को भाग जा; और जब तक मैं तुझ से न कहूं, तब तक वहीं रहना; क्योंकि हेरोदेस इस बालक को ढूंढ़ने पर है कि उसे मरवा डाले। १४ वह रात ही को उठकर बालक और उस की माता को लेकर मिस्र को चल दिया। १५ और

हेरोदेस के मरने तक वहीं रहा; इसलिये कि वह वचन जो प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था कि मैं ने अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया पूरा हो। १६ जब हेरोदेस ने यह देखा, कि ज्योतिषियों ने मेरे साथ ठट्ठा किया है, तब वह क्रोध से भर गया; और लोगों को भेजकर ज्योतिषियों से ठीक ठीक पूछे हुए समय के अनुसार बैतलहम और उसके आस पास के सब लड़कों को जो दो वर्ष के, वा उस से छोटे थे, मरवा डाला। १७ तब जो वचन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हुआ, १८ कि रामाह में एक करुण-नाद सुनाई दिया, रोना और बड़ा विलाप, राहेल अपने बालकों के लिये रो रही थी, और शान्त होना न चाहती थी, क्योंकि वे हैं नहीं॥

१६ हेरोदेस के मरने के बाद देखो, प्रभु के दूत ने मिस्र में यूसुफ को स्वप्न में दिखाई देकर कहा। २० कि उठ, बालक और उस की माता को लेकर इस्राएल के देश में चला जा; क्योंकि जो बालक के प्राण लेना चाहते थे, वे मर गए। २१ वह उठा, और बालक और उस की माता को साथ लेकर इस्राएल के देश में आया। २२ परन्तु यह सुनकर कि अरखिलाउस अपने पिता हेरोदेस की जगह यहूदिया पर राज्य कर रहा है, वहां जाने से डरा; और स्वप्न में चितौनी पाकर गलील देश में चला गया। २३ और नासरत नाम नगर में जा बसा; ताकि वह वचन पूरा हो, जो भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा गया था, कि वह नासरी कहलाएगा॥

३ उन दिनों में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला आकर यहूदिया के जंगल में यह प्रचार करने लगा। कि २ मन फिराओ; क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है। ३ यह वही है जिस की चर्चा यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा की गई कि जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हो रहा है, कि प्रभु का मार्ग तैयार करो, उस की सड़कें सीधी करो। ४ यह यूहन्ना ऊंट के रोम का वस्त्र पहिने था, और अपनी कमर में चमड़े का पटुका बान्धे हुए था, और उसका भोजन टिड्डियां और बनमधु था। ५ तब यरूशलेम के और सारे यहूदिया के, और यरदन के आस पास के सारे देश के लोग उसके पास निकल आए। ६ और अपने अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उस से बपतिस्मा लिया। ७ जब उस ने बहुतेरे फरीसियों और सदूकियों को बपतिस्मा के लिये अपने पास आते देखा, तो उन से कहा, कि हे सांप के बच्चों, तुम्हें किस ने जता दिया, कि आनेवाले क्रोध से भागो? ८ सो मन फिराव के योग्य फल लाओ। ९ और अपने अपने मन में यह न सोचो, कि हमारा पिता इब्राहीम है; क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि परमेश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है। १० और अब कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है, इसलिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में झोंका जाता है। ११ मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है; मैं उस की जूती उठाने के योग्य नहीं, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। १२ उसका सूप उस के हाथ में है, और वह अपना खलिहान अच्छी रीति से साफ करेगा, और अपने गेहूं को तो खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी

को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं ॥

१३ उस समय यीशु गलील से यरदन के किनारे पर यूहन्ना के पास उस से बपतिस्मा लेने आया। १४ परन्तु यूहन्ना यह कहकर उसे रोकने लगा, कि मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया है? १५ यीशु ने उस को यह उत्तर दिया, कि अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है, तब उस ने उस की बात मान ली। १६ और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिये आकाश खुल गया; और उस ने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाई उतरते और अपने ऊपर आते देखा। १७ और देखो, यह आकाशवाणी हुई, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं ॥

४ तब उस समय आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि इब्लीस से उस की परीक्षा हो। २ वह चालीस दिन, और चालीस रात, निराहार रहा, अन्त में उसे भूख लगी। ३ तब परखनेवाले ने पास आकर उस से कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह दे, कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं। ४ उस ने उत्तर दिया; कि लिखा है कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा। ५ तब इब्लीस उसे पवित्र नगर में ले गया और मन्दिर के कंगूरे पर खड़ा किया। ६ और उस से कहा यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को नीचे गिरा दे; क्योंकि लिखा है, कि वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा; और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे; कहीं ऐसा न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे। ७ यीशु ने उस से कहा; यह भी लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर। ८ फिर शैतान* उसे एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उसका विभव दिखाकर। ९ उस से कहा, कि यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे, तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूंगा। १० तब यीशु ने उस से कहा; हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर। ११ तब शैतान उसके पास से चला गया; और देखो, स्वर्गदूत आकर उस की सेवा करने लगे ॥

१२ जब उस ने यह सुना कि यूहन्ना पकड़वा दिया गया, तो वह गलील को चला गया। १३ और नासरत को छोड़कर कफरनहूम में जो झील के किनारे जबूलून और नपताली के देश में है जाकर रहने लगा। १४ ताकि जो यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो। १५ कि जबूलून और नपताली के देश, झील के मार्ग से यरदन के पार अन्यजातियों का गलील। १६ जो लोग अन्धकार में बैठे थे उन्हों ने बड़ी ज्योति देखी; और जो मृत्यु के देश और छाया में बैठे थे, उन पर ज्योति चमकी ॥

१७ उस समय से यीशु प्रचार करना और यह कहना आरम्भ किया, कि मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है। १८ उस ने गलील की झील

* अर्थात् इब्लीस।

के किनारे फिरते हुए दो भाइयों अर्थात् शमौन को जो पतरस कहलाता है, और उसके भाई अन्द्रियास को झील में जाल डालते देखा; क्योंकि वे मछवे थे। १९ और उन से कहा, मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को मनुष्यों के पकड़नेवाले बनाऊंगा। २० वे तुरन्त जालों को छोड़-कर उसके पीछे हो लिए। २१ और वहां से आगे बढ़कर, उस ने और दो भाइयों अर्थात् जब्दी के पुत्र याकूब और उसके भाई यूहन्ना को अपने पिता जब्दी के साथ नाव पर अपने जालों को सुधारते देखा; और उन्हें भी बुलाया। २२ वे तुरन्त नाव और अपने पिता को छोड़कर उसके पीछे हो लिए॥

२३ और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा। २४ और सारे सूरिया में उसका यश फैल गया; और लोग सब बीमारों को, जो नाना प्रकार की बीमारियों और दुखों में जकड़े हुए थे, और जिन में दुष्टात्माएं थीं और मिर्गीवालों और झोले के मारे हुओं को उसके पास लाए और उस ने उन्हें चंगा किया। २५ और गलील और दिका-पुलिस और यरूशलेम और यहूदिया से और यरदन के पार से भीड़ की भीड़ उसके पीछे हो ली॥

५ वह इस भीड़ को देखकर, पहाड़ पर चढ़ गया; और जब बैठ गया, तो उसके चेले उसके पास आए। २ और वह अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा, ३ धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। ४ धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शांति पाएंगे। ५ धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे। ६ धन्य हैं वे, जो धर्म के भूखे और पियासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे। ७ धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी। ८ धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे। ९ धन्य हैं वे, जो मेल करवानेवाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे। १० धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। ११ धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें। १२ आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है इसलिये कि उन्हों ने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहिले थे इसी रीति से सताया था॥

१३ तुम पृथ्वी के नमक हो; परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा? फिर वह किसी काम का नहीं, केवल इस के कि बाहर फेंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए। १४ तुम जगत की ज्योति हो; जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता। १५ और लोग दिया जलाकर पैमाने * के नीचे नहीं परन्तु दीवट पर रखते हैं, तब उस से घर के सब लोगों को प्रकाश पहुंचता है। १६ उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने चमके

---

* एक बरतन जिस में डेढ़ मन अनाज नापा जाता था।

कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें ।।

१७ यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूं। १८ लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूं; क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा। १९ इसलिये जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही लोगों को सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा कहलाएगा; परन्तु जो कोई उन का पालन करेगा और उन्हें सिखाएगा, वही स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा। २० क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि यदि तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर न हो, तो तुम स्वर्ग के राज्य में कभी प्रवेश करने न पाओगे ।।

२१ तुम सुन चुके हो, कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था कि हत्या न करना, और जो कोई हत्या करेगा वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा। २२ परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा, वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा: और जो कोई अपने भाई को निकम्मा * कहेगा वह महासभा में दण्ड के योग्य होगा; और जो कोई कहे "अरे मूर्ख" वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा। २३ इसलिये यदि तू अपनी भेंट बेदी पर लाए, और वहां तू स्मरण करे, कि मेरे भाई के मन में मेरी ओर से कुछ विरोध है, तो अपनी भेंट वहीं बेदी के साम्हने छोड़ दे। २४ और जाकर पहिले अपने भाई से मेल मिलाप कर; तब आकर अपनी भेंट चढ़ा। २५ जब तक तू अपने मुद्दई के साथ मार्ग ही में है, उस से झटपट मेल मिलाप कर ले कहीं ऐसा न हो कि मुद्दई तुझे हाकिम को सौंपे, और हाकिम तुझे सिपाही को सौंप दे और तू बन्दीगृह में डाल दिया जाए। २६ मैं तुझ से सच कहता हूं कि जब तक तू कौड़ी कौड़ी भर न दे तब तक वहां से छूटने न पाएगा ।।

२७ तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, कि व्यभिचार न करना। २८ परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका। २९ यदि तेरी दहिनी आंख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर अपने पास से फेंक दे; क्योंकि तेरे लिये यही भला है कि तेरे अङ्गों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए। ३० और यदि तेरा दहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए, तो उस को काटकर अपने पास से फेंक दे, क्योंकि तेरे लिये यही भला है, कि तेरे अङ्गों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए ।।

३१ यह भी कहा गया था, कि जो कोई अपनी पत्नी को त्याग दे तो उसे त्यागपत्र दे। ३२ परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं कि जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार के सिवा किसी और कारण से छोड़ दे, तो वह उस से व्यभिचार करवाता है; और जो कोई उस त्यागी हुई से ब्याह करे, वह व्यभिचार करता है ।।

३३ फिर तुम सुन चुके हो, कि पूर्व-काल के लोगों से कहा गया था कि झूठी

* यू० अर्थात यूनानी भाषा में, राका।

शपथ न खाना, परन्तु प्रभु के लिये अपनी शपथ को पूरी करना। ३४ परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि कभी शपथ न खाना; न तो स्वर्ग की, क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है। ३५ न धरती की, क्योंकि वह उसके पांवों की चौकी है; न यरूशलेम की, क्योंकि वह महाराजा का नगर है। ३६ अपने सिर की भी शपथ न खाना क्योंकि तू एक बाल को भी न उजला, न काला कर सकता है। ३७ परन्तु तुम्हारी बात हां की हां, या नहीं की नहीं हो; क्योंकि जो कुछ इस से अधिक होता है वह बुराई से होता है॥

३८ तुम सुन चुके हो, कि कहा गया था, कि आंख के बदले आंख, और दांत के बदले दांत। ३९ परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि बुरे का सामना न करना; परन्तु जो कोई तेरे दहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उस की ओर दूसरा भी फेर दे। ४० और यदि कोई तुझ पर नालिश करके तेरा कुरता लेना चाहे, तो उसे दोहर भी ले लेने दे। ४१ और जो कोई तुझे कोस भर बेगार में ले जाए तो उसके साथ दो कोस चला जा। ४२ जो कोई तुझ से मांगे, उसे दे; और जो तुझ से उधार लेना चाहे, उस से मुंह न मोड़॥

४३ तुम सुन चुके हो, कि कहा गया था; कि अपने पड़ोसी से प्रेम रखना, और अपने बैरी से बैर। ४४ परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिये प्रार्थना करो। ४५ जिस से तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे क्योंकि वह भलों और बुरों दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मियों और अधर्मियों दोनों पर मेंह बरसाता है। ४६ क्योंकि यदि तुम अपने प्रेम रखनेवालों ही से प्रेम रखो, तो तुम्हारे लिये क्या फल होगा? क्या महसूल लेनेवाले भी ऐसा ही नहीं करते?

४७ और यदि तुम केवल अपने भाइयों ही को नमस्कार करो, तो कौन सा बड़ा काम करते हो? क्या अन्यजाति भी ऐसा नहीं करते? ४८ इसलिये चाहिये कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है॥

६ सावधान रहो! तुम मनुष्यों को दिखाने के लिये अपने धर्म के काम न करो, नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ भी फल न पाओगे॥

२ इसलिये जब तू दान करे, तो अपने आगे तुरही न बजवा, जैसा कपटी, सभाओं और गलियों में करते हैं, ताकि लोग उन की बड़ाई करें, मैं तुम से सच कहता हूं, कि वे अपना फल पा चुके। ३ परन्तु जब तू दान करे, तो जो तेरा दहिना हाथ करता है, उसे तेरा बांया हाथ न जानने पाए। ४ ताकि तेरा दान गुप्त रहे; और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा॥

५ और जब तू प्रार्थना करे, तो कपटियों के समान न हो क्योंकि लोगों को दिखाने के लिये सभाओं में और सड़कों की मोड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करना उन को अच्छा लगता है; मैं तुम से सच कहता हूं, कि वे अपना प्रतिफल पा चुके। ६ परन्तु जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में जा; और द्वार बन्द कर के अपने पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर; और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा। ७ प्रार्थना करते समय अन्यजातियों की नाईं बक बक न

करो; क्योंकि वे समझते हैं कि उनके बहुत बोलने से उन की सुनी जाएगी। ८ सो तुम उन की नाईं न बनो, क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे मांगने से पहिले ही जानता है, कि तुम्हारी क्या क्या आवश्यकता है। ९ सो तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो; "हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए। १० तेरा राज्य आए; तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो। ११ हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे। १२ और जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों * को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों † को क्षमा कर। १३ और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा; क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही है।" आमीन। १४ इसलिये यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। १५ और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा॥

१६ जब तुम उपवास करो, तो कपटियों की नाईं तुम्हारे मुंह पर उदासी न छाई रहे, क्योंकि वे अपना मुंह बनाए रहते हैं, ताकि लोग उन्हें उपवासी जानें; मैं तुम से सच कहता हूं, कि वे अपना प्रतिफल पा चुके। १७ परन्तु जब तू उपवास करे तो अपने सिर पर तेल मल और मुंह धो। १८ ताकि लोग नहीं परन्तु तेरा पिता जो गुप्त में है, तुझे उपवासी जानें; इस दशा में तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा॥

१९ अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो; जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। २० परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा, और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं। २१ क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा। २२ शरीर का दिया आंख है: इसलिये यदि तेरी आंख निर्मल हो, तो तेरा सारा शरीर भी उजियाला होगा। २३ परन्तु यदि तेरी आंख बुरी हो, तो तेरा सारा शरीर भी अन्धियारा होगा; इस कारण वह उजियाला जो तुझ में है यदि अन्धकार हो तो वह अन्धकार कैसा बड़ा होगा! २४ कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, वा एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा; "तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते"। २५ इसलिये मैं तुम से कहता हूं, कि अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे? और क्या पीएंगे? और न अपने शरीर के लिये कि क्या पहिनेंगे? क्या प्राण भोजन से, और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं? २६ आकाश के पक्षियों को देखो! वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न खत्तों में बटोरते हैं; तौभी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन को खिलाता है; क्या तुम उन से अधिक मूल्य नहीं रखते। २७ तुम में कौन है, जो चिन्ता करके अपनी अवस्था में एक घड़ी * भी बढ़ा सकता है? २८ और वस्त्र के लिये क्यों चिन्ता करते हो? जंगली

* यू० क़र्जदार। † यू० क़र्ज।

* यू० हाथ।

सोसनों पर ध्यान करो, कि वे कैसे बढ़ते हैं, वे न तो परिश्रम करते, न कातते हैं। २६ तौभी मैं तुम से कहता हूं, कि सुलैमान भी, अपने सारे विभव में उन में से किसी के समान वस्त्र पहिने हुए न था। ३० इसलिये जब परमेश्‍वर मैदान की घास को, जो आज है, और कल भाड़ में झोंकी जाएगी, ऐसा वस्त्र पहिनाता है, तो हे अल्पविश्‍वासियो, तुम को वह क्योंकर न पहिनाएगा? ३१ इसलिये तुम चिन्ता करके यह न कहना, कि हम क्या खाएंगे, या क्या पीएंगे, या क्या पहिनेंगे? ३२ क्योंकि अन्यजाति इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं, और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है, कि तुम्हें ये सब वस्तुएं चाहिए। ३३ इसलिये पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी। ३४ सो कल के लिये चिन्ता न करो, क्योंकि कल का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा; आज के लिये आज ही का दुख बहुत है॥

७ दोष मत लगाओ, कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए। २ क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा; और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा। ३ तू क्यों अपने भाई की आंख के तिनके को देखता है, और अपनी आंख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता? और जब तेरी ही आंख में लट्ठा है, तो तू अपने भाई से क्योंकर कह सकता है, कि ला मैं तेरी आंख से तिनका निकाल दूं। ५ हे कपटी, पहले अपनी आंख में से लट्ठा निकाल ले, तब तू अपने भाई की आंख का तिनका भली भांति देखकर निकाल सकेगा॥

६ पवित्र वस्तु कुत्तों को न दो, और अपने मोती सूअरों के आगे मत डालो; ऐसा न हो कि वे उन्हें पांवों तले रौंदें और पलटकर तुम को फाड़ डालें॥

७ मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढ़ो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा। ८ क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; और जो ढूंढ़ता है, वह पाता है? और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा। ९ तुम में से ऐसा कौन मनुष्य है, कि यदि उसका पुत्र उस से रोटी मांगे, तो वह उसे पत्थर दे? १० वा मछली मांगे, तो उसे सांप दे? ११ सो जब तुम बुरे होकर, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को अच्छी वस्तुएं क्यों न देगा? १२ इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उन के साथ वैसा ही करो; क्योंकि व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षा यही है॥

१३ सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुतेरे हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। १४ क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं॥

१५ झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो, जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु अन्तर में फाड़नेवाले भेड़िए हैं। १६ उन के फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे क्या झाड़ियों से अंगूर, वा ऊंटकटारों से अंजीर तोड़ते हैं? १७ इसी प्रकार हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल लाता है और निकम्मा पेड़ बुरा फल लाता है।

१८ अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं ला सकता, और न निकम्मा पेड़ अच्छा फल ला सकता है। १९ जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में डाला जाता है। २० सो उन के फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। २१ जो मुझ से, हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। २२ उस दिन बहुतेरे मुझ से कहेंगे; हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हम ने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत अचम्भे के काम नहीं किए? २३ तब मैं उन से खुलकर कह दूंगा कि मैं ने तुम को कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करनेवालो, मेरे पास से चले जाओ। २४ इसलिये जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है वह उस बुद्धिमान मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिस ने अपना घर चटान पर बनाया। २५ और मेंह बरसा और बाढ़ें आईं, और आन्धियां चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं, परन्तु वह नहीं गिरा, क्योंकि उस की नेव चटान पर डाली गई थी। २६ परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस निर्बुद्धि मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिस ने अपना घर बालू पर बनाया। २७ और मेंह बरसा, और बाढ़ें आईं, और आन्धियां चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।।

२८ जब यीशु ये बातें कह चुका, तो ऐसा हुआ कि भीड़ उसके उपदेश से चकित हुई। २९ क्योंकि वह उन के शास्त्रियों के समान नहीं परन्तु अधिकारी की नाईं उन्हें उपदेश देता था।।

८ जब वह उस पहाड़ से उतरा, तो एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली। २ और देखो, एक कोढ़ी ने पास आकर उसे प्रणाम किया और कहा; कि हे प्रभु यदि तू चाहे, तो मुझे शुद्ध कर सकता है। ३ यीशु ने हाथ बढ़ाकर उसे छूआ, और कहा, मैं चाहता हूं, तू शुद्ध हो जा और वह तुरन्त कोढ़ से शुद्ध हो गया। ४ यीशु ने उस से कहा; देख, किसी से न कहना परन्तु जाकर अपने आप को याजक को दिखला और जो चढ़ावा मूसा ने ठहराया है उसे चढ़ा, ताकि उन के लिये गवाही हो।।

५ और जब वह कफरनहूम में आया तो एक सूबेदार ने उसके पास आकर उस से बिनती की। ६ कि हे प्रभु, मेरा सेवक घर में झोले का मारा बहुत दुखी पड़ा है। ७ उस ने उस से कहा; मैं आकर उसे चंगा करूंगा। ८ सूबेदार ने उत्तर दिया; कि हे प्रभु मैं इस योग्य नहीं, कि तू मेरी छत के तले आए, पर केवल मुख से कह दे तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा। ९ क्योंकि मैं भी पराधीन मनुष्य हूं, और सिपाही मेरे हाथ में हैं, और जब एक से कहता हूं, जा, तो वह जाता है; और दूसरे को कि आ, तो वह आता है; और अपने दास से कहता हूं, कि यह कर, तो वह करता है। १० यह सुनकर यीशु ने अचम्भा किया, और जो उसके पीछे आ रहे थे उन से कहा; मैं तुम से सच कहता हूं, कि मैं ने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया। ११ और मैं तुम से कहता हूं, कि बहुतेरे पूर्व और पश्चिम से आकर इब्राहीम और इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे। १२ परन्तु राज्य के सन्तान बाहर अन्धियारे में डाल दिए जाएंगे: वहां रोना और दांतों को पीसना होगा। १३ और यीशु ने सूबेदार

से कहा, जा; जैसा तेरा विश्वास है, वैसा ही तेरे लिये हो: और उसका सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया ॥

१४ और यीशु ने पतरस के घर में आकर उस की सास को ज्वर में पड़ी देखा। १५ उस ने उसका हाथ छूआ और उसका ज्वर उतर गया; और वह उठकर उस की सेवा करने लगी। १६ जब संध्या हुई तब वे उसके पास बहुत से लोगों को लाए जिन में दुष्टात्माएं थीं और उस ने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया, और सब बीमारों को चंगा किया। १७ ताकि जो वचन यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो, कि उस ने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया ॥

१८ यीशु ने अपनी चारों ओर एक बड़ी भीड़ देखकर उस पार जाने की आज्ञा दी। १९ और एक शास्त्री ने पास आकर उस से कहा, हे गुरु, जहां कहीं तू जाएगा, मैं तेरे पीछे पीछे हो लूंगा। २० यीशु ने उस से कहा, लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं; परन्तु मनुष्य के पुत्र के लिये सिर धरने की भी जगह नहीं है। २१ एक और चेले ने उस से कहा, हे प्रभु, मुझे पहिले जाने दे, कि अपने पिता को गाढ़ * दूं। २२ यीशु ने उस से कहा, तू मेरे पीछे हो ले; और मुरदों को अपने मुरदे गाड़ने दे ॥

२३ जब वह नाव पर चढ़ा, तो उसके चेले उसके पीछे हो लिए। २४ और देखो, झील में एक ऐसा बड़ा तूफान उठा कि नाव लहरों से ढंपने लगी; और वह सो रहा था। २५ तब उन्हों ने पास आकर उसे जगाया, और कहा, हे प्रभु, हमें बचा, हम नाश हुए जाते हैं। २६ उस ने उन से कहा; हे अल्पविश्वासियो, क्यों डरते हो? तब उस ने उठकर आन्धी और पानी को डांटा, और सब शान्त हो गया। २७ और लोग अचम्भा करके कहने लगे कि यह कैसा मनुष्य है, कि आन्धी और पानी भी उस की आज्ञा मानते हैं ॥

२८ जब वह उस पार गदरेनियों के देश में पहुंचा, तो दो मनुष्य जिन में दुष्टात्माएं थीं कब्रों से निकलते हुए उसे मिले, जो इतने प्रचण्ड थे, कि कोई उस मार्ग से जा नहीं सकता था। २९ और देखो, उन्हों ने चिल्लाकर कहा; हे परमेश्वर के पुत्र, हमारा तुझ से क्या काम? क्या तू समय से पहिले हमें दुःख देने यहां आया है? ३० उन से कुछ दूर बहुत से सूअरों का एक झुण्ड चर रहा था। ३१ दुष्टात्माओं ने उस से यह कहकर बिनती की, कि यदि तू हमें निकालता है, तो सूअरों के झुण्ड में भेज दे। ३२ उस ने उन से कहा, जाओ, वे निकलकर सूअरों में पैठ गए और देखो, सारा झुण्ड कड़ाड़े पर से झपटकर पानी में जा पड़ा, और डूब मरा। ३३ और चरवाहे भागे, और नगर में जाकर ये सब बातें और जिन में दुष्टात्माएं थीं उन का सारा हाल कह सुनाया। ३४ और देखो, सारे नगर के लोग यीशु से भेंट करने को निकल आए और उसे देखकर बिनती की, कि हमारे सिवानों से बाहर निकल जा ॥

९ फिर वह नाव पर चढ़कर पार गया; और अपने नगर में आया। २ और देखो, कई लोग एक झोले के मारे हुए को खाट पर रखकर उसके पास

* वा, दफ़न कर दूं।

लाए; यीशु ने उन का विश्वास देखकर, उस झोले के मारे हुए से कहा; हे पुत्र, ढाढ़स बान्ध; तेरे पाप क्षमा हुए। ३ और देखो, कई शास्त्रियों ने सोचा, कि यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है। ४ यीशु ने उन के मन की बातें मालूम करके कहा, कि तुम लोग अपने अपने मन में बुरा विचार क्यों कर रहे हो? ५ सहज क्या है, यह कहना, कि तेरे पाप क्षमा हुए; या यह कहना कि उठ और चल फिर। ६ परन्तु इसलिये कि तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है (उस ने झोले के मारे हुए से कहा) उठ: अपनी खाट उठा, और अपने घर चला जा। ७ वह उठकर अपने घर चला गया। ८ लोग यह देखकर डर गए और परमेश्वर की महिमा करने लगे जिस ने मनुष्यों को ऐसा अधिकार दिया है॥

९ वहां से आगे बढ़कर यीशु ने मत्ती नाम एक मनुष्य को महसूल की चौकी पर बैठे देखा, और उस से कहा, मेरे पीछे हो ले। वह उठकर उसके पीछे हो लिया॥

१० और जब वह घर में भोजन करने के लिये बैठा तो बहुतेरे महसूल लेनेवाले और पापी आकर यीशु और उसके चेलों के साथ खाने बैठे। ११ यह देखकर फरीसियों ने उसके चेलों से कहा; तुम्हारा गुरु महसूल लनेवालों और पापियों के साथ क्यों खाता है? १२ उस ने यह सुनकर उन से कहा, वैद्य भले चंगों को नहीं परन्तु बीमारों को अवश्य है। १३ सो तुम जाकर इस का अर्थ सीख लो, कि मैं बलिदान नहीं परन्तु दया चाहता हूं; क्योंकि मैं धर्मियों को नहीं परन्तु पापियों को बुलाने आया हूं॥

१४ तब यूहन्ना के चेलों ने उसके पास आकर कहा; क्या कारण है कि हम और फरीसी इतना उपवास करते हैं, पर तेरे चेले उपवास नहीं करते? १५ यीशु ने उन से कहा; क्या बराती, जब तक दूल्हा उन के साथ है शोक कर सकते हैं? पर वे दिन आएंगे कि दूल्हा उन से अलग किया जाएगा, उस समय वे उपवास करेंगे। १६ कोरे कपड़े का पैवन्द पुराने पहिरावन पर कोई नहीं लगाता, क्योंकि वह पैवन्द पहिरावन से और कुछ खींच लेता है, और वह अधिक फट जाता है। १७ और नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरते हैं; क्योंकि ऐसा करने से मशकें फट जाती हैं, और दाखरस बह जाता है और मशकें नाश हो जाती हैं, परन्तु नया दाखरस नई मशकों में भरते हैं और वह दोनों बची रहती हैं॥

१८ वह उन से ये बातें कह ही रहा था, कि देखो, एक सरदार ने आकर उसे प्रणाम किया और कहा मेरी पुत्री अभी मरी है; परन्तु चलकर अपना हाथ उस पर रख, तो वह जीवित हो जाएगी। १९ यीशु उठकर अपने चेलों समेत उसके पीछे हो लिया। २० और देखो, एक स्त्री ने जिस के बारह वर्ष से लोहू बहता था, उसके पीछे से आकर उसके वस्त्र के आंचल को छू लिया। २१ क्योंकि वह अपने मन में कहती थी कि यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूंगी तो चंगी हो जाऊंगी। २२ यीशु ने फिरकर उसे देखा, और कहा; पुत्री ढाढ़स बान्ध; तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है; सो वह स्त्री उसी घड़ी चंगी हो गई। २३ जब यीशु उस सरदार के घर में पहुंचा और बांसली बजानेवालों और भीड़ को हुल्लड़ मचाते देखा तब कहा। २४ हट

जाओ, लड़की मरी नहीं, पर सोती है; इस पर वे उस की हंसी करने लगे। २५ परन्तु जब भीड़ निकाल दी गई, तो उस ने भीतर जाकर लड़की का हाथ पकड़ा, और वह जी उठी। २६ और इस बात की चर्चा उस सारे देश में फैल गई।।

२७ जब यीशु वहां से आगे बढ़ा, तो दो अन्धे उसके पीछे यह पुकारते हुए चले, कि हे दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर। २८ जब वह घर में पहुंचा, तो वे अन्धे उस के पास आए; और यीशु ने उन से कहा; क्या तुम्हें विश्वास है, कि मैं यह कर सकता हूं? उन्हों ने उस से कहा; हां, प्रभु। २९ तब उस ने उन की आंखें छूकर कहा, तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिये हो। ३० और उन की आंखें खुल गईं और यीशु ने उन्हें चिताकर कहा; सावधान, कोई इस बात को न जाने। ३१ पर उन्हों ने निकलकर सारे देश में उसका यश फैला दिया।।

३२ जब वे बाहर जा रहे थे, तो देखो, लोग एक गूंगे को जिस में दुष्टात्मा थी उसके पास लाए। ३३ और जब दुष्टात्मा निकाल दी गई, तो गूंगा बोलने लगा; और भीड़ ने अचम्भा करके कहा कि इस्राएल में ऐसा कभी नहीं देखा गया। ३४ परन्तु फरीसियों ने कहा, यह तो दुष्टात्माओं के सरदार की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है।।

३५ और यीशु सब नगरों और गांवों में फिरता रहा और उन की सभाओं में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा। ३६ जब उस ने भीड़ को देखा तो उस को लोगों पर तरस आया, क्योंकि वे उन भेड़ों की नाईं जिनका कोई रखवाला * न हो, व्याकुल और भटके हुए से थे। ३७ तब उस ने अपने चेलों से कहा, पक्के खेत तो बहुत हैं पर मजदूर थोड़े हैं। ३८ इसलिये खेत के स्वामी से बिनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिये मजदूर भेज दे।।

१० फिर उस ने अपने बारह चेलों को पास बुलाकर, उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया, कि उन्हें निकालें और सब प्रकार की बीमारियों और सब प्रकार की दुर्बलताओं को दूर करें।।

२ और बारह प्रेरितों के नाम ये हैं: पहिला शमौन, जो पतरस कहलाता है, और उसका भाई अन्द्रियास; जब्दी का पुत्र याकूब, और उसका भाई यूहन्ना; ३ फिलिप्पुस और बर-तुल्मै थोमा और महसूल लेनेवाला मत्ती, हलफै का पुत्र याकूब और तद्दै। ४ शमौन कनानी, और यहूदा इस्करियोती, जिस ने उसे पकड़वा भी दिया।।

५ इन बारहों को यीशु ने यह आज्ञा देकर भेजा कि अन्यजातियों की ओर न जाना, और सामरियों के किसी नगर में प्रवेश न करना। ६ परन्तु इस्राएल के घराने ही की खोई हुई भेड़ों के पास जाना। ७ और चलते चलते प्रचार कर कहो कि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है। ८ बीमारों को चंगा करो: मरे हुओं को जिलाओ : कोढ़ियों को शुद्ध करो: दुष्टात्माओं को निकालो : तुम ने सेंतमेंत पाया है, सेंतमेंत दो। ९ अपने पटुकों में न तो सोना, और न रूपा, और न तांबा रखना। १० मार्ग के लिये न झोली रखो, न दो कुरते, न जूते और न लाठी लो, क्योंकि

* अर्थात् चरवाहा।

मजदूर को उसका भोजन मिलना चाहिए। ११ जिस किसी नगर या गांव में जाओ, तो पता लगाओ कि वहां कौन योग्य है? और जब तक वहां से न निकलो, उसी के यहां रहो। १२ और घर में प्रवेश करते हुए उस को आशीष देना। १३ यदि उस घर के लोग योग्य होंगे तो तुम्हारा कल्याण उन पर पहुंचेगा परन्तु यदि वे योग्य न हों तो तुम्हारा कल्याण तुम्हारे पास लौट आएगा। १४ और जो कोई तुम्हें ग्रहण न करे, और तुम्हारी बातें न सुने, उस घर या उस नगर से निकलते हुए अपने पांवों की धूल झाड़ डालो। १५ मैं तुम से सच कहता हूं, कि न्याय के दिन उस नगर की दशा से सदोम और अमोरा के देश की दशा अधिक सहने योग्य होगी॥

१६ देखो, मैं तुम्हें भेड़ों की नाईं भेड़ियों के बीच में भेजता हूं सो सांपों की नाईं बुद्धिमान और कबूतरों की नाईं भोले बनो। १७ परन्तु लोगों से सावधान रहो, क्योंकि वे तुम्हें महा सभाओं में सौंपेंगे, और अपनी पंचायतों में तुम्हें कोड़े मारेंगे। १८ तुम मेरे लिये हाकिमों और राजाओं के साम्हने उन पर, और अन्यजातियों पर गवाह होने के लिये पहुंचाए जाओगे। १९ जब वे तुम्हें पकड़वाएंगे तो यह चिन्ता न करना, कि हम किस रीति से; या क्या कहेंगे: क्योंकि जो कुछ तुम को कहना होगा, वह उसी घड़ी तुम्हें बता दिया जाएगा। २० क्योंकि बोलनेवाले तुम नहीं हो परन्तु तुम्हारे पिता का आत्मा तुम में बोलता है। २१ भाई, भाई को और पिता पुत्र को, घात के लिये सौंपेंगे, और लड़केवाले माता-पिता के विरोध में उठकर उन्हें मरवा डालेंगे। २२ मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे, पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा उसी का उद्धार होगा। २३ जब वे तुम्हें एक नगर में सताएं, तो दूसरे को भाग जाना। मैं तुम से सच कहता हूं, तुम इस्राएल के सब नगरों में न फिर चुकोगे, कि मनुष्य का पुत्र आ जाएगा॥

२४ चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं; और न दास अपने स्वामी से। २५ चेले का गुरु के, और दास का स्वामी के बराबर होना ही बहुत है; जब उन्हों ने घर के स्वामी को शैतान * कहा तो उसके घरवालों को क्यों न कहेंगे? २६ सो उन से मत डरना, क्योंकि कुछ ढपा नहीं, जो खोला न जाएगा; और न कुछ छिपा है, जो जाना न जाएगा। २७ जो मैं तुम से अन्धियारे में कहता हूं, उसे उजियाले में कहो; और जो कानों कान सुनते हो, उसे कोठों पर से प्रचार करो। २८ जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उन से मत डरना; पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है। २९ क्या पैसे में दो गौरैये नहीं बिकतीं? तौभी तुम्हारे पिता की इच्छा के बिना उन में से एक भी भूमि पर नहीं गिर सकती। ३० तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं। ३१ इसलिये, डरो नहीं; तुम बहुत गौरैयों से बढ़कर हो। ३२ जो कोई मनुष्यों के साम्हने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के साम्हने मान लूंगा। ३३ पर जो कोई मनुष्यों के साम्हने मेरा इन्कार करेगा उस से मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के साम्हने इन्कार करूंगा। ३४ यह न समझो, कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने को आया हूं; मैं मिलाप कराने को नहीं, पर तलवार चलवाने आया हूं।

* यू० इबलीस वा बालजबूल।

३५ मैं तो आया हूं, कि मनुष्य को उसके पिता से, और बेटी को उस की मां से, और बहू को उस की सास से अलग कर दूं। ३६ मनुष्य के बैरी उसके घर ही के लोग होंगे। ३७ जो माता या पिता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं और जो बेटा या बेटी को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं। ३८ और जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं। ३९ जो अपने प्राण बचाता * है, वह उसे खोएगा; और जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है, वह उसे पाएगा। ४० जो तुम्हें ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है। ४१ जो भविष्यद्वक्ता को भविष्यद्वक्ता जानकर ग्रहण करे, वह भविष्यद्वक्ता का बदला पाएगा; और जो धर्मी जानकर धर्मी को ग्रहण करे, वह धर्मी का बदला पाएगा। ४२ जो कोई इन छोटों में से एक को चेला जानकर केवल एक कटोरा ठंडा पानी पिलाए, मैं तुम से सच कहता हूं, वह किसी रीति से अपना प्रतिफल न खोएगा॥

११ जब यीशु अपने बारह चेलों को आज्ञा दे चुका, तो वह उन के नगरों में उपदेश और प्रचार करने को वहां से चला गया॥

२ यूहन्ना ने बन्दीगृह में मसीह के कामों का समाचार सुनकर अपने चेलों को उस से यह पूछने भेजा। ३ कि क्या आनेवाला तू ही है: या हम दूसरे की बाट जोहें? ४ यीशु ने उत्तर दिया, कि जो कुछ तुम सुनते हो और देखते हो, वह सब जाकर यूहन्ना से कह दो। ५ कि अन्धे देखते हैं और लंगड़े चलते फिरते हैं; कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं और बहिरे सुनते हैं, मुर्दे जिलाए जाते हैं; और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है। ६ और धन्य है वह, जो मेरे कारण ठोकर न खाए। ७ जब वे वहां से चल दिए, तो यीशु यूहन्ना के विषय में लोगों से कहने लगा; तुम जंगल में क्या देखने गए थे? क्या हवा से हिलते हुए सरकण्डे को? ८ फिर तुम क्या देखने गये थे? क्या कोमल वस्त्र पहिने हुए मनुष्य को? देखो, जो कोमल वस्त्र पहिनते हैं, वे राजभवनों में रहते हैं। ९ तो फिर क्यों गए थे? क्या किसी भविष्यद्वक्ता को देखने को? हां; मैं तुम से कहता हूं, बरन भविष्यद्वक्ता से भी बड़े को। १० यह वही है, जिस के विषय में लिखा है, कि देख; मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं, जो तेरे आगे तेरा मार्ग तैयार करेगा। ११ मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो स्त्रियों से जन्मे हैं, उन में से यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से कोई बड़ा नहीं हुआ; पर जो स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा है वह उस से बड़ा है। १२ यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के दिनों से अब तक स्वर्ग के राज्य पर जोर होता रहा है, और बलवान उसे छीन लेते हैं। १३ यूहन्ना तक सारे भविष्यद्वक्ता और व्यवस्था भविष्यद्वाणी करते रहे। १४ और चाहो तो मानो, एलिय्याह जो आनेवाला था, वह यही है। १५ जिस के सुनने के कान हों, वह सुन ले। १६ मैं इस समय के लोगों की उपमा किस से दूं? वे उन बालकों के समान हैं, जो बाजारों में बैठे हुए एक दूसरे से पुकारकर कहते हैं। १७ कि हम ने तुम्हारे लिये बांसुली बजाई, और तुम न नाचे; हम ने

* यू० पाता।

विलाप किया, और तुम ने छाती नहीं पीटी। १८ क्योंकि यूहन्ना न खाता आया और न पीता, और वे कहते हैं कि उस में दुष्टात्मा है। १९ मनुष्य का पुत्र खाता-पीता आया, और वे कहते हैं कि देखो, पेटू और पियक्कड़ मनुष्य, महसूल लेनेवालों और पापियों का मित्र; पर ज्ञान अपने कामों से सच्चा ठहराया गया है॥

२० तब वह उन नगरों को उलाहना देने लगा, जिन में उस ने बहुतेरे सामर्थ के काम किए थे; क्योंकि उन्हों ने अपना मन नहीं फिराया था। २१ हाय, खुराजीन; हाय, बैतसैदा; जो सामर्थ के काम तुम में किए गए, यदि वे सूर और सैदा में किए जाते, तो टाट ओढ़कर, और राख में बैठकर, वे कब के मन फिरा लेते। २२ परन्तु मैं तुम से कहता हूं; कि न्याय के दिन तुम्हारी दशा से सूर और सैदा की दशा अधिक सहने योग्य होगी। २३ और हे कफरनहूम, क्या तू स्वर्ग तक ऊंचा किया जाएगा? तू तो अधोलोक तक नीचे जाएगा; जो सामर्थ के काम तुझ में किए गए हैं, यदि सदोम में किए जाते, तो वह आज तक बना रहता। २४ पर मैं तुम से कहता हूं, कि न्याय के दिन तेरी दशा से सदोम के देश की दशा अधिक सहने योग्य होगी॥

२५ उसी समय यीशु ने कहा, हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु; मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, कि तू ने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा, और बालकों पर प्रगट किया है। २६ हां, हे पिता, क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा। २७ मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है, और कोई पुत्र को नहीं जानता, केवल पिता; और कोई पिता को नहीं जानता, केवल पुत्र; और वह जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना चाहे। २८ हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। २९ मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो; और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं: और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। ३० क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है॥

१२ उस समय यीशु सब्त के दिन खेतों में से होकर जा रहा था, और उसके चेलों को भूख लगी, सो वे बालें तोड़ तोड़कर खाने लगे। २ फरीसियों ने यह देखकर उस से कहा, देख, तेरे चेले वह काम कर रहे हैं, जो सब्त के दिन करना उचित नहीं। ३ उस ने उन से कहा; क्या तुम ने नहीं पढ़ा, कि दाऊद ने, जब वह और उसके साथी भूखे हुए तो क्या किया? ४ वह क्योंकर परमेश्वर के घर में गया, और भेंट की रोटियां खाईं, जिन्हें खाना न तो उसे और न उसके साथियों को, पर केवल याजकों को उचित था? ५ या तुम ने व्यवस्था में नहीं पढ़ा, कि याजक सब्त के दिन मन्दिर में सब्त के दिन की विधि को तोड़ने पर भी निर्दोष ठहरते हैं। ६ पर मैं तुम से कहता हूं, कि यहां वह है, ज़ो मन्दिर से भी बड़ा है। ७ यदि तुम इस का अर्थ जानते कि मैं दया से प्रसन्न हूं, बलिदान से नहीं, तो तुम निर्दोष को दोषी न ठहराते। ८ मनुष्य का पुत्र तो सब्त के दिन का भी प्रभु है॥

९ वहां से चलकर वह उन की सभा के घर में आया। १० और देखो, एक मनुष्य था, जिस का हाथ सूखा हुआ था; और

उन्हों ने उस पर दोष लगाने के लिये उस से पूछा, कि क्या सब्त के दिन चंगा करना उचित है? ११ उस ने उन से कहा; तुम में ऐसा कौन है, जिस की एक ही भेड़ हो, और वह सब्त के दिन गड़हे में गिर जाए, तो वह उसे पकड़कर न निकाले? १२ भला, मनुष्य का मूल्य भेड़ से कितना बढ़ कर है; इसलिये सब्त के दिन भलाई करना उचित है: तब उस ने उस मनुष्य से कहा, अपना हाथ बढ़ा। १३ उस ने बढ़ाया, और वह फिर दूसरे हाथ की नाईं अच्छा हो गया। १४ तब फरीसियों ने बाहर जाकर उसके विरोध में सम्मति की, कि उसे किस प्रकार नाश करें? १५ यह जानकर यीशु वहां से चला गया; और बहुत लोग उसके पीछे हो लिए; और उस ने सब को चंगा किया। १६ और उन्हें चिताया, कि मुझे प्रगट न करना। १७ कि जो वचन यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो। १८ कि देखो, यह मेरा सेवक है, जिसे मैं ने चुना है; मेरा प्रिय, जिस से मेरा मन प्रसन्न है: मैं अपना आत्मा उस पर डालूंगा; और वह अन्यजातियों को न्याय का समाचार देगा। १९ वह न झगड़ा करेगा, और न धूम मचाएगा; और न बाजारों में कोई उसका शब्द सुनेगा। २० वह कुचले हुए सरकण्डे को न तोड़ेगा; और धूआं देती हुई बत्ती को न बुझाएगा, जब तक न्याय को प्रबल न कराए। २१ और अन्यजातियां उसके नाम पर आशा रखेंगी॥

२२ तब लोग एक अन्धे-गूंगे को जिस में दुष्टात्मा थी, उसके पास लाए; और उस ने उसे अच्छा किया; और वह गूंगा बोलने और देखने लगा। २३ इस पर सब लोग चकित होकर कहने लगे, यह क्या दाऊद की सन्तान का है? २४ परन्तु फरीसियों ने यह सुनकर कहा, यह तो दुष्टात्माओं के सरदार शैतान * की सहायता के बिना दुष्टात्माओं को नहीं निकालता। २५ उस ने उन के मन की बात जानकर उन से कहा; जिस किसी राज्य में फूट होती है, वह उजड़ जाता है, और कोई नगर या घराना जिस में फूट होती है, बना न रहेगा। २६ और यदि शैतान ही शैतान को निकाले, तो वह अपना ही विरोधी हो गया है; फिर उसका राज्य क्योंकर बना रहेगा? २७ भला, यदि मैं शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो तुम्हारे वंश किस की सहायता से निकालते हैं? इसलिये वे ही तुम्हारा न्याय चुकाएंगे। २८ पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है। २९ या क्योंकर कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल लूट सकता है जब तक कि पहिले उस बलवन्त को न बान्ध ले? और तब वह उसका घर लूट लेगा। ३० जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरोध में है; और जो मेरे साथ नहीं बटोरता, वह बिथराता है। ३१ इसलिये मैं तुम से कहता हूं, कि मनुष्य का सब प्रकार का पाप और निन्दा क्षमा की जाएगी, पर आत्मा की निन्दा क्षमा न की जाएगी। ३२ जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहेगा, उसका यह अपराध क्षमा किया जाएगा, परन्तु जो कोई पवित्र-आत्मा के विरोध में कुछ कहेगा, उसका अपराध न तो इस लोक में और न परलोक में क्षमा

* यू० इब्लीस वा बालजबूल।

किया जाएगा। ३३ यदि पेड़ को अच्छा कहो, तो उसके फल को भी अच्छा कहो; या पेड़ को निकम्मा कहो, तो उसके फल को भी निकम्मा कहो; क्योंकि पेड़ फल ही से पहचाना जाता है। ३४ हे सांप के बच्चो, तुम बुरे होकर क्योंकर अच्छी बातें कह सकते हो? क्योंकि जो मन में भरा है, वही मुंह पर आता है। ३५ भला, मनुष्य मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है; और बुरा मनुष्य बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है। ३६ और मैं तुम से कहता हूं, कि जो जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन हर एक बात का लेखा देंगे। ३७ क्योंकि तू अपनी बातों के कारण निर्दोष और अपनी बातों ही के कारण दोषी ठहराया जाएगा॥

३८ इस पर कितने शास्त्रियों और फरीसियों ने उस से कहा, हे गुरु, हम तुझ से एक चिन्ह देखना चाहते हैं। ३९ उस ने उन्हें उत्तर दिया, कि इस युग के बुरे और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूंढ़ते हैं; परन्तु यूनुस भविष्यद्वक्ता के चिन्ह को छोड़ कोई और चिन्ह उन को न दिया जाएगा। ४० यूनुस तीन रात दिन जल-जन्तु के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन रात दिन पृथ्वी के भीतर रहेगा। ४१ नीनवे के लोग न्याय के दिन इस युग के लोगों के साथ उठकर उन्हें दोषी ठहराएंगे, क्योंकि उन्हों ने यूनुस का प्रचार सुनकर, मन फिराया और देखो, यहां वह है जो यूनुस से भी बड़ा है। ४२ दक्खिन की रानी न्याय के दिन इस युग के लोगों के साथ उठकर उन्हें दोषी ठहराएगी, क्योंकि वह सुलैमान का ज्ञान सुनने के लिये पृथ्वी की छोर से आई, और देखो, यहां वह है जो सुलैमान से भी बड़ा है। ४३ जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाती है, तो सूखी जगहों में विश्राम ढूंढ़ती फिरती है, और पाती नहीं। ४४ तब कहती है, कि मैं अपने उसी घर में जहां से निकली थी, लौट जाऊंगी, और आकर उसे सूना, झाड़ा-बुहारा और सजा-सजाया पाती है। ४५ तब वह जाकर अपने से और बुरी सात आत्माओं को अपने साथ ले आती है, और वे उस में पैठकर वहां बास करती हैं, और उस मनुष्य की पिछली दशा पहिले से भी बुरी हो जाती है; इस युग के बुरे लोगों की दशा भी ऐसी ही होगी॥

४६ जब वह भीड़ से बातें कर ही रहा था, तो देखो, उस की माता और भाई बाहर खड़े थे, और उस से बातें करना चाहते थे। ४७ किसी ने उस से कहा; देख तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हैं, और तुझ से बातें करना चाहते हैं। ४८ यह सुन उस ने कहनेवाले को उत्तर दिया; कौन है मेरी माता? ४९ और कौन हैं मेरे भाई? और अपने चेलों की ओर अपना हाथ बढ़ा कर कहा; देखो; मेरी माता और मेरे भाई ये हैं। ५० क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई और बहिन और माता है॥

१३

उसी दिन यीशु घर से निकलकर झील के किनारे जा बैठा। २ और उसके पास ऐसी बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई कि वह नाव पर चढ़ गया, और सारी भीड़ किनारे पर खड़ी रही। ३ और उस ने उन से दृष्टान्तों में बहुत सी बातें कहीं, कि देखो, एक बोनेवाला बीज बोने निकला। ४ बोते समय कुछ बीज मार्ग के किनारे गिरे और पक्षियों ने आकर उन्हें चुग लिया। ५ कुछ पत्थरीली भूमि पर गिरे, जहां

उन्हें बहुत मिट्टी न मिली और गहरी मिट्टी न मिलने के कारण वे जल्द उग आए। ६ पर सूरज निकलने पर वे जल गए, और जड़ न पकड़ने से सूख गए। ७ कुछ झाड़ियों में गिरे, और झाड़ियों ने बढ़कर उन्हें दबा डाला। ८ पर कुछ अच्छी भूमि पर गिरे, और फल लाए, कोई सौ गुना, कोई साठ गुना, कोई तीस गुना। ९ जिस के कान हों वह सुन ले॥

१० और चेलों ने पास आकर उस से कहा, तू उन से दृष्टान्तों में क्यों बातें करता है? ११ उस ने उत्तर दिया, कि तुम को स्वर्ग के राज्य के भेदों की समझ दी गई है, पर उन को नहीं। १२ क्योंकि जिस के पास है, उसे दिया जाएगा; और उसके पास बहुत हो जाएगा; पर जिस के पास कुछ नहीं है, उस से जो कुछ उसके पास है, वह भी ले लिया जाएगा। १३ मैं उन से दृष्टान्तों में इसलिये बातें करता हूं, कि वे देखते हुए नहीं देखते; और सुनते हुए नहीं सुनते; और नहीं समझते। १४ और उन के विषय में यशायाह की यह भविष्यद्वाणी पूरी होती है, कि तुम कानों से तो सुनोगे, पर समझोगे नहीं; और आंखों से तो देखोगे, पर तुम्हें न सूझेगा। १५ क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है, और वे कानों से ऊंचा सुनते हैं और उन्हों ने अपनी आंखें मूंद ली हैं; कहीं ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें, और कानों से सुनें और मन से समझें, और फिर जाएं, और मैं उन्हें चंगा करूं। १६ पर धन्य हैं तुम्हारी आंखें, कि वे देखती हैं; और तुम्हारे कान, कि वे सुनते हैं। १७ क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, कि बहुत से भविष्यद्वक्ताओं ने और धर्मियों ने चाहा कि जो बातें तुम देखते हो, देखें, पर न देखीं; और जो बातें तुम सुनते हो, सुनें, पर न सुनीं। १८ सो तुम बोनेवाले का दृष्टान्त सुनो। १९ जो कोई राज्य का वचन सुनकर नहीं समझता, उसके मन में जो कुछ बोया गया था, उसे वह दुष्ट आकर छीन ले जाता है; यह वही है, जो मार्ग के किनारे बोया गया था। २० और जो पत्थरीली भूमि पर बोया गया, यह वह है, जो वचन सुनकर तुरन्त आनन्द के साथ मान लेता है। २१ पर अपने में जड़ न रखने के कारण वह थोड़े ही दिन का है, और जब वचन के कारण क्लेश या उपद्रव होता है, तो तुरन्त ठोकर खाता है। २२ जो झाड़ियों में बोया गया, यह वह है, जो वचन को सुनता है, पर इस संसार की चिन्ता और धन का धोखा वचन को दबाता है, और वह फल नहीं लाता। २३ जो अच्छी भूमि में बोया गया, यह वह है, जो वचन को सुनकर समझता है, और फल लाता है, कोई सौ गुना, कोई साठ गुना, कोई तीस गुना।

२४ उस ने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया कि स्वर्ग का राज्य उस मनुष्य के समान है जिस ने अपने खेत में अच्छा बीज बोया। २५ पर जब लोग सो रहे थे तो उसका बैरी आकर गेहूं के बीच जंगली बीज * बोकर चला गया। २६ जब अंकुर निकले और बालें लगीं, तो जंगली दाने भी दिखाई दिए। २७ इस पर गृहस्थ के दासों ने आकर उस से कहा, हे स्वामी, क्या तू ने अपने खेत में अच्छा बीज न बोया था? फिर जंगली दाने के पौधे उस में कहां से आए? २८ उस ने उन से कहा, यह किसी बैरी का काम है। दासों ने उस से कहा, क्या तेरी इच्छा है, कि हम जाकर उन को

---

* यू० जिजयानियुन।

बटोर लें? २९ उस ने कहा, ऐसा नहीं, न हो कि जंगली दाने के पौधे बटोरते हुए उन के साथ गेहूं भी उखाड़ लो। ३० कटनी तक दोनों को एक साथ बढ़ने दो, और कटनी के समय में काटनेवालों से कहूंगा; पहिले जंगली दाने के पौधे बटोरकर जलाने के लिए उन के गट्ठे बान्ध लो, और गेहूं को मेरे खत्ते में इकट्ठा करो॥

३१ उस ने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया; कि स्वर्ग का राज्य राई के एक दाने के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने लेकर अपने खेत में बो दिया। ३२ वह सब बीजों से छोटा तो है पर जब बढ़ जाता है तब सब साग पात से बड़ा होता है; और ऐसा पेड़ हो जाता है, कि आकाश के पक्षी आकर उस की डालियों पर बसेरा करते हैं॥

३३ उस ने एक और दृष्टान्त उन्हें सुनाया; कि स्वर्ग का राज्य खमीर के समान है जिस को किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी आटे में मिला दिया और होते होते वह सब खमीर हो गया॥

३४ ये सब बातें यीशु ने दृष्टान्तों में लोगों से कहीं, और बिना दृष्टान्त वह उन से कुछ न कहता था। ३५ कि जो वचन भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो कि मैं दृष्टान्त कहने को अपना मुंह खोलूंगा: मैं उन बातों को जो जगत की उत्पत्ति से गुप्त रहीं हैं प्रगट करूंगा॥

३६ तब वह भीड़ को छोड़कर घर में आया, और उसके चेलों ने उसके पास आकर कहा, खेत के जंगली दाने का दृष्टान्त हमें समझा दे। ३७ उस ने उन को उत्तर दिया, कि अच्छे बीज का बोनेवाला मनुष्य का पुत्र है। ३८ खेत संसार है, अच्छा बीज राज्य के सन्तान, और जंगली बीज दुष्ट के सन्तान हैं। ३९ जिस बैरी ने उन को बोया वह शैतान * है; कटनी जगत का अन्त है: और काटनेवाले स्वर्गदूत हैं। ४० सो जैसे जंगली दाने बटोरे जाते और जलाए जाते हैं वैसा ही जगत के अन्त में होगा। ४१ मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, और वे उसके राज्य में से सब ठोकर के कारणों को और कुकर्म करनेवालों को इकट्ठा करेंगे। ४२ और उन्हें आग के कुंड में डालेंगे, वहां रोना और दांत पीसना होगा। ४३ उस समय धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य की नाईं चमकेंगे; जिस के कान हों वह सुन ले॥

४४ स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे हुए धन के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने पाकर छिपा दिया, और मारे आनन्द के जाकर और अपना सब कुछ बेचकर उस खेत को मोल लिया॥

४५ फिर स्वर्ग का राज्य एक ब्योपारी के समान है जो अच्छे मोतियों की खोज में था। ४६ जब उसे एक बहुमूल्य मोती मिला तो उस ने जाकर अपना सब कुछ बेच डाला और उसे मोल ले लिया॥

४७ फिर स्वर्ग का राज्य उस बड़े जाल के समान है, जो समुद्र में डाला गया, और हर प्रकार की मछलियों को समेट लाया। ४८ और जब भर गया, तो उस को किनारे पर खींच लाए, और बैठकर अच्छी अच्छी तो बरतनों में इकट्ठा किया और निकम्मी, निकम्मी फेंक दीं। ४९ जगत के अन्त में ऐसा ही होगा: स्वर्गदूत आकर दुष्टों को धर्मियों से अलग करेंगे, और उन्हें आग के कुंड में डालेंगे। ५० वहां रोना और दांत पीसना होगा।

* यू० इब्लीस।

५१ क्या तुम ने ये सब बातें समझीं? ५२ उन्हों ने उस से कहा, हां; उस ने उन से कहा, इसलिये हर एक शास्त्री जो स्वर्ग के राज्य का चेला बना है, उस गृहस्थ के समान है जो अपने भण्डार से नई और पुरानी वस्तुएं निकालता है॥

५३ जब यीशु ये सब दृष्टान्त कह चुका, तो वहां से चला गया। ५४ और अपने देश में आकर उन की सभा में उन्हें ऐसा उपदेश देने लगा; कि वे चकित होकर कहने लगे; कि इस को यह ज्ञान और सामर्थ के काम कहां से मिले? ५५ क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं? और क्या इस की माता का नाम मरियम और इस के भाइयों के नाम याकूब और यूसुफ और शमौन और यहूदा नहीं? ५६ और क्या इस की सब बहिनें हमारे बीच में नहीं रहतीं? फिर इस को यह सब कहां से मिला? ५७ सो उन्हों ने उसके कारण ठोकर खाई, पर यीशु ने उन से कहा, भविष्यद्वक्ता अपने देश और अपने घर को छोड़ और कहीं निरादर नहीं होता। ५८ और उस ने वहां उन के अविश्वास के कारण बहुत सामर्थ के काम नहीं किए॥

१४

उस समय चौथाई देश के राजा हेरोदेस ने यीशु की चर्चा सुनी। २ और अपने सेवकों से कहा, यह यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला है: वह मरे हुओं में से जी उठा है, इसी लिये उस से सामर्थ के काम प्रगट होते हैं। ३ क्योंकि हेरोदेस ने अपने भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास के कारण, यूहन्ना को पकड़कर बान्धा, और जेलखाने में डाल दिया था। ४ क्योंकि यूहन्ना ने उस से कहा था, कि इस को रखना तुझे उचित नहीं है। ५ और वह उसे मार डालना चाहता था, पर लोगों से डरता था, क्योंकि वे उसे भविष्यद्वक्ता जानते थे। ६ पर जब हेरोदेस का जन्म दिन आया, तो हेरोदियास की बेटी ने उत्सव में नाच दिखाकर हेरोदेस को खुश किया। ७ इसलिये उस ने शपथ खाकर वचन दिया, कि जो कुछ तू मांगेगी, मैं तुझे दूंगा। ८ वह अपनी माता की उस्काई हुई बोली, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का सिर थाल में यहीं मुझे मंगवा दे। ९ राजा दुखित हुआ, पर अपनी शपथ के, और साथ बैठनेवालों के कारण, आज्ञा दी, कि दे दिया जाए। १० और जेलखाने में लोगों को भेजकर यूहन्ना का सिर कटवा दिया। ११ और उसका सिर थाल में लाया गया, और लड़की को दिया गया; और वह उस को अपनी मां के पास ले गई। १२ और उसके चेलों ने आकर और उस की लोथ को ले जाकर गाड़ दिया और जाकर यीशु को समाचार दिया॥

१३ जब यीशु ने यह सुना, तो नाव पर चढ़कर वहां से किसी सुनसान जगह एकान्त में चला गया; और लोग यह सुनकर नगर नगर से पैदल उसके पीछे हो लिए। १४ उस ने निकलकर बड़ी भीड़ देखी; और उन पर तरस खाया; और उस ने उन के बीमारों को चंगा किया। १५ जब सांझ हुई, तो उसके चेलों ने उसके पास आकर कहा; यह तो सुनसान जगह है, और देर हो रही है, लोगों को विदा किया जाए कि वे बस्तियों में जाकर अपने लिये भोजन मोल लें। १६ यीशु ने उन से कहा, उन का जाना आवश्यक नहीं! तुम ही इन्हें खाने को दो। १७ उन्हों ने उस से कहा; यहां हमारे पास पांच रोटी और दो मछलियों को छोड़ और कुछ नहीं है। १८ उस ने कहा, उन को यहां मेरे पास ले

आओ। १६ तब उस ने लोगों को घास पर बैठने को कहा, और उन पांच रोटियों और दो मछलियों को लिया; और स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया और रोटियां तोड़ तोड़कर चेलों को दीं, और चेलों ने लोगों को। २० और सब खाकर तृप्त हो गए, और उन्हों ने बचे हुए टुकड़ों से भरी हुई बारह टोकरियां उठाईं। २१ और खानेवाले स्त्रियों और बालकों को छोड़कर पांच हजार पुरुषों के अटकल थे॥

२२ और उस ने तुरन्त अपने चेलों को बरबस नाव पर चढ़ाया, कि वे उस से पहिले पार चले जाएं, जब तक कि वह लोगों को विदा करे। २३ वह लोगों को विदा करके, प्रार्थना करने को अलग पहाड़ पर चढ़ गया; और सांझ को वहां अकेला था। २४ उस समय नाव झील के बीच लहरों से डगमगा रही थी, क्योंकि हवा साम्हने की थी। २५ और वह रात के चौथे पहर झील पर चलते हुए उन के पास आया। २६ चेले उस को झील पर चलते हुए देखकर घबरा गए! और कहने लगे, वह भूत है; और डर के मारे चिल्ला उठे। २७ यीशु ने तुरन्त उन से बातें कीं, और कहा; ढाढ़स बान्धो; मैं हूं; डरो मत। २८ पतरस ने उस को उत्तर दिया, हे प्रभु, यदि तू ही है, तो मुझे अपने पास पानी पर चलकर आने की आज्ञा दे। २६ उस ने कहा, आ: तब पतरस नाव पर से उतरकर यीशु के पास जाने को पानी पर चलने लगा। ३० पर हवा को देखकर डर गया, और जब डूबने लगा, तो चिल्लाकर कहा; हे प्रभु, मुझे बचा। ३१ यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया, और उस से कहा, हे अल्प-विश्वासी, तू ने क्यों सन्देह किया? ३२ जब वे नाव पर चढ़ गए, तो हवा थम गई। ३३ इस पर जो नाव पर थे, उन्हों ने उसे दण्डवत करके कहा, सचमुच तू परमेश्वर का पुत्र है॥

३४ वे पार उतरकर गन्नेसरत देश में पहुंचे। ३५ और वहां के लोगों ने उसे पहचानकर आस पास के सारे देश में कहला भेजा, और सब बीमारों को उसके पास लाए। ३६ और उस से बिनती करने लगे, कि वह उन्हें अपने वस्त्र के आंचल ही को छूने दे: और जितनों ने उसे छूआ, वे चंगे हो गए॥

१५ तब यरूशलेम से कितने फरीसी और शास्त्री यीशु के पास आकर कहने लगे। २ तेरे चेले पुरनियों की रीतों को क्यों टालते हैं, कि बिना हाथ धोए रोटी खाते हैं? उस ने उन को उत्तर दिया, कि तुम भी अपनी रीतों के कारण क्यों परमेश्वर की आज्ञा टालते हो? ४ क्योंकि परमेश्वर ने कहा था, कि अपने पिता और अपनी माता का आदर करना: और जो कोई पिता या माता को बुरा कहे, वह मार डाला जाए। ५ पर तुम कहते हो, कि यदि कोई अपने पिता या माता से कहे, कि जो कुछ तुझे मुझ से लाभ पहुंच सकता था, वह परमेश्वर को भेंट चढ़ाई जा चुकी। ६ तो वह अपने पिता का आदर न करे, सो तुम ने अपनी रीतों के कारण परमेश्वर का वचन टाल दिया। ७ हे कपटियो, यशायाह ने तुम्हारे विषय में यह भविष्यद्वाणी ठीक की। ८ कि ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उन का मन मुझ से दूर रहता है। ६ और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं। १० और उस ने लोगों को अपने पास बुलाकर उन से कहा, सुनो

ओर समझो। ११ जो मुंह में जाता है, वह मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता, पर जो मुंह से निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। १२ तब चेलों ने आकर उस से कहा, क्या तू जानता है कि फरीसियों ने यह वचन सुनकर ठोकर खाई? १३ उस ने उत्तर दिया, हर पौधा जो मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं लगाया, उखाड़ा जाएगा। १४ उन को जाने दो; वे अन्धे मार्ग दिखानेवाले हैं: और अन्धा यदि अन्धे को मार्ग दिखाए, तो दोनों गड़हे में गिर पड़ेंगे। १५ यह सुनकर, पतरस ने उस से कहा, यह दृष्टान्त हमें समझा दे। १६ उस ने कहा, क्या तुम भी अब तक ना समझ हो? १७ क्या नहीं समझते, कि जो कुछ मुंह में जाता, वह पेट में पड़ता है, और सण्डास में निकल जाता है? १८ पर जो कुछ मुंह से निकलता है, वह मन से निकलता है, और वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। १९ क्योंकि कुचिन्ता, हत्या, परस्त्रीगमन, व्यभिचार, चोरी, झूठी गवाही और निन्दा मन ही से निकलती हैं। २० येही हैं जो मनुष्य को अशुद्ध करती हैं, परन्तु हाथ बिना धोए भोजन करना मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता॥

२१ यीशु वहां से निकलकर, सूर और सैदा के देशों की ओर चला गया। २२ और देखो, उस देश से एक कनानी स्त्री निकली, और चिल्लाकर कहने लगी; हे प्रभु दाऊद के सन्तान, मुझ पर दया कर, मेरी बेटी को दुष्टात्मा बहुत सता रहा है। २३ पर उस ने उसे कुछ उत्तर न दिया, और उसके चेलों ने आकर उस से बिनती कर कहा; इसे विदा कर; क्योंकि वह हमारे पीछे चिल्लाती आती है। २४ उस ने उत्तर दिया, कि इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों को छोड़ मैं किसी के पास नहीं भेजा गया। २५ पर वह आई, और उसे प्रणाम करके कहने लगी; हे प्रभु, मेरी सहायता कर। २६ उस ने उत्तर दिया, कि लड़कों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना अच्छा नहीं। २७ उस ने कहा, सत्य है प्रभु; पर कुत्ते भी वह चूरचार खाते हैं, जो उन के स्वामियों की मेज से गिरते हैं। २८ इस पर यीशु ने उस को उत्तर देकर कहा, कि हे स्त्री, तेरा विश्वास बड़ा है: जैसा तू चाहती है, तेरे लिये वैसा ही हो; और उस की बेटी उसी घड़ी से चंगी हो गई॥

२९ यीशु वहां से चलकर, गलील की झील के पास आया, और पहाड़ पर चढ़कर वहां बैठ गया। ३० और भीड़ पर भीड़ लंगड़ों, अन्धों, गूंगों, टुंडों और बहुत औरों को लेकर उसके पास आए; और उन्हें उसके पांवों पर डाल दिया, और उस ने उन्हें चंगा किया। ३१ सो जब लोगों ने देखा, कि गूंगे बोलते और टुण्डे चंगे होते और लंगड़े चलते और अन्धे देखते हैं, तो अचम्भा करके इस्राएल के परमेश्वर की बड़ाई की॥

३२ यीशु ने अपने चेलों को बुलाकर कहा, मुझे इस भीड़ पर तरस आता है; क्योंकि वे तीन दिन से मेरे साथ हैं और उन के पास कुछ खाने को नहीं; और मैं उन्हें भूखा विदा करना नहीं चाहता; कहीं ऐसा न हो कि मार्ग में थककर रह जाएं। ३३ चेलों ने उस से कहा, हमें इस जंगल में कहां से इतनी रोटी मिलेगी कि हम इतनी बड़ी भीड़ को तृप्त करें? ३४ यीशु ने उन से पूछा, तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं? उन्हों ने कहा; सात और थोड़ी सी छोटी मछलियां। ३५ तब उस ने लोगों को भूमि पर बैठने की आज्ञा दी। ३६ और उन सात रोटियों और मछलियों को ले धन्यवाद करके तोड़ा और अपने चेलों को

देता गया; और चेले लोगों को। ३७ सो सब खाकर तृप्त हो गए और बचे हुए टुकड़ों से भरे हुए सात टोकरे उठाए। ३८ और खानेवाले स्त्रियों और बालकों को छोड़ चार हजार पुरुष थे। ३९ तब वह भीड़ों को विदा करके नाव पर चढ़ गया, और मगदन देश के सिवानों में आया॥

१६ और फरीसियों और सदूकियों ने पास आकर उसे परखने के लिये उस से कहा, कि हमें आकाश का कोई चिन्ह दिखा। २ उस ने उन को उत्तर दिया, कि सांझ को तुम कहते हो कि खुला रहेगा क्योंकि आकाश लाल है। ३ और भोर को कहते हो, कि आज आन्धी आएगी क्योंकि आकाश लाल और धुमला है; तुम आकाश का लक्षण देखकर भेद बता सकते हो पर समयों के चिन्हों का भेद नहीं बता सकते? ४ इस युग के बुरे और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूंढ़ते हैं पर यूनुस के चिन्ह को छोड़ कोई और चिन्ह उन्हें न दिया जाएगा, और वह उन्हें छोड़कर चला गया॥

५ और चेले पार जाते समय रोटी लेना भूल गए थे। ६ यीशु ने उन से कहा, देखो; फरीसियों और सदूकियों के खमीर से चौकस रहना। ७ वे आपस में विचार करने लगे, कि हम तो रोटी नहीं लाए। ८ यह जानकर, यीशु ने उन से कहा, हे अल्प-विश्वासियो, तुम आपस में क्यों विचार करते हो कि हमारे पास रोटी नहीं? ९ क्या तुम अब तक नहीं समझे? और उन पांच हजार की पांच रोटी स्मरण नहीं करते, और न यह कि कितनी टोकरियां उठाई थीं? १० और न उन चार हजार की सात रोटी; और न यह कि कितने टोकरे उठाए गए थे? ११ तुम क्यों नहीं समझते कि मैं ने तुम से रोटियों के विषय में नहीं कहा? फरीसियों और सदूकियों के खमीर से चौकस रहना। १२ तब उन की समझ में आया, कि उस ने रोटी के खमीर से नहीं, पर फरीसियों और सदूकियों की शिक्षा से चौकस रहने को कहा था।

१३ यीशु कैसरिया फिलिप्पी के देश में आकर अपने चेलों से पूछने लगा, कि लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं? १४ उन्हों ने कहा, कितने तो यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला कहते हैं और कितने एलिय्याह, और कितने यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक कहते हैं। १५ उस ने उन से कहा; परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो? १६ शमौन पतरस ने उत्तर दिया, कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है। १७ यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि हे शमौन योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है। १८ और मैं भी तुझ से कहता हूं, कि तू पतरस है; और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा : और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। १९ मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा : और जो कुछ तू पृथ्वी पर बान्धेगा, वह स्वर्ग में बन्धेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा। २० तब उस ने चेलों को चिताया, कि किसी से न कहना! कि मैं मसीह हूं।

२१ उस समय से यीशु अपने चेलों को बताने लगा, कि मुझे अवश्य है, कि यरूशलेम को जाऊं, और पुरनियों और महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ से बहुत दुख उठाऊं; और मार डाला जाऊं; और तीसरे दिन जी उठूं। २२ इस पर पतरस उसे अलग

ले जाकर झिड़कने लगा कि हे प्रभु, परमेश्वर न करे; तुझ पर ऐसा कभी न होगा। २३ उस ने फिरकर पतरस से कहा, हे शैतान, मेरे साम्हने से दूर हो : तू मेरे लिये ठोकर का कारण है; क्योंकि तू परमेश्वर की बातें नहीं, पर मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है। २४ तब यीशु ने अपने चेलों से कहा; यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले। २५ क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा। २६ यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा? २७ मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, और उस समय वह हर एक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा। २८ मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो यहां खड़े हैं, उन में से कितने ऐसे हैं; कि जब तक मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आते हुए न देख लेंगे, तब तक मृत्यु का स्वाद कभी न चखेंगे।

१७ छः दिन के बाद यीशु ने पतरस और याकूब और उसके भाई यूहन्ना को साथ लिया, और उन्हें एकान्त में किसी ऊंचे पहाड़ पर ले गया। २ और उन के साम्हने उसका रूपान्तर हुआ और उसका मुंह सूर्य की नाईं चमका और उसका वस्त्र ज्योति की नाईं उजला हो गया। ३ और देखो, मूसा और एलिय्याह उसके साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिए। ४ इस पर पतरस ने यीशु से कहा, हे प्रभु, हमारा यहां रहना अच्छा है; इच्छा हो तो यहां तीन मण्डप बनाऊं; एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये। ५ वह बोल ही रहा था, कि देखो, एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया, और देखो; उस बादल में से यह शब्द निकला, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूं : इस की सुनो। ६ चेले यह सुनकर मुंह के बल गिर गए और अत्यन्त डर गए। ७ यीशु ने पास आकर उन्हें छूआ, और कहा, उठो; डरो मत। ८ तब उन्हों ने अपनी आंखें उठाकर यीशु को छोड़ और किसी को न देखा॥

९ जब वे पहाड़ से उतर रहे थे तब यीशु ने उन्हें यह आज्ञा दी; कि जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से न जी उठे तब तक जो कुछ तुम ने देखा है किसी से न कहना। १० और उसके चेलों ने उस से पूछा, फिर शास्त्री क्यों कहते हैं, कि एलिय्याह का पहले आना अवश्य है? ११ उस ने उत्तर दिया, कि एलिय्याह तो आएगा : और सब कुछ सुधारेगा। १२ परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि एलिय्याह आ चुका; और उन्हों ने उसे नहीं पहचाना; परन्तु जैसा चाहा वैसा ही उसके साथ किया : इसी रीति से मनुष्य का पुत्र भी उन के हाथ से दुख उठाएगा। १३ तब चेलों ने समझा कि उस ने हम से यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के विषय में कहा है॥

१४ जब वे भीड़ के पास पहुंचे, तो एक मनुष्य उसके पास आया, और घुटने टेक-कर कहने लगा। १५ हे प्रभु, मेरे पुत्र पर दया कर; क्योंकि उस को मिर्गी आती है : और वह बहुत दुख उठाता है; और बार बार आग में और बार बार पानी में गिर पड़ता है। १६ और मैं उस को तेरे

चेलों के पास लाया था, पर वे उसे अच्छा नहीं कर सके। १७ यीशु ने उत्तर दिया, कि हे अविश्वासी और हठीले लोगो * मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा? कब तक तुम्हारी सहूंगा? उसे यहां मेरे पास लाओ। १८ तब यीशु ने उसे घुड़का, और दुष्टात्मा उस में से निकला; और लड़का उसी घड़ी अच्छा हो गया। १९ तब चेलों ने एकान्त में यीशु के पास आकर कहा; हम इसे क्यों नहीं निकाल सके? २० उस ने उन से कहा, अपने विश्वास की घटी के कारण: क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर भी हो, तो इस पहाड़ से कह सकोगे, कि यहां से सरककर वहां चला जा, तो वह चला जाएगा; और कोई बात तुम्हारे लिये अन्होनी न होगी।

२१ जब वे गलील में थे, तो यीशु ने उन से कहा; मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा। २२ और वे उसे मार डालेंगे, और वह तीसरे दिन जी उठेगा। २३ इस पर वे बहुत उदास हुए।।

२४ जब वे कफरनहूम में पहुंचे, तो मन्दिर के लिये कर लेनेवालों ने पतरस के पास आकर पूछा, कि क्या तुम्हारा गुरु मन्दिर का कर नहीं देता? उस ने कहा, हां देता तो है। २५ जब वह घर में आया, तो यीशु ने उसके पूछने से पहिले उस से कहा, हे शमौन तू क्या समझता है? पृथ्वी के राजा महसूल या कर किन से लेते हैं? अपने पुत्रों से या परायों से? पतरस ने उन से कहा, परायों से। २६ यीशु ने उस से कहा, तो पुत्र बच गए। २७ तौभी इस लिये कि हम उन्हें ठोकर न खिलाएं, तू झील के किनारे जाकर बंसी डाल, और जो मछली पहिले निकले, उसे ले; तो तुझे उसका मुंह खोलने पर एक सिक्का मिलेगा, उसी को लेकर मेरे और अपने बदले उन्हें दे देना।।

* यू० पीढ़ी।

१८

उसी घड़ी चेले यीशु के पास आकर पूछने लगे, कि स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है? २ इस पर उस ने एक बालक को पास बुलाकर उन के बीच में खड़ा किया। ३ और कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे। ४ जो कोई अपने आप को इस बालक के समान छोटा करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा। ५ और जो कोई मेरे नाम से एक ऐसे बालक को ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है। ६ पर जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं एक को ठोकर खिलाए, उसके लिये भला होता, कि बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता, और वह गहिरे समुद्र में डुबाया जाता। ७ ठोकरों के कारण संसार पर हाय! ठोकरों का लगना अवश्य है; पर हाय उस मनुष्य पर जिस के द्वारा ठोकर लगती है। ८ यदि तेरा हाथ या तेरा पांव तुझे ठोकर खिलाए, तो काटकर फेंक दे; टुण्डा या लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है, कि दो हाथ या दो पांव रहते हुए तू अनन्त आग में डाला जाए। ९ और यदि तेरी आंख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर फेंक दे। काना होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है, कि दो आंख रहते हुए तू नरक की आग * में

* यू० आग के नरक में।

डाला जाए। १० देखो, तुम इन छोटों में से किसी को तुच्छ न जानना; क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि स्वर्ग में उन के दूत मेरे स्वर्गीय पिता का मुंह सदा देखते हैं। १२ तुम क्या समझते हो? यदि किसी मनुष्य की सौ भेड़ें हों, और उन में से एक भटक जाए, तो क्या निन्नानवे को छोड़कर, और पहाड़ों पर जाकर, उस भटकी हुई को न ढूंढ़ेगा? १३ और यदि ऐसा हो कि उसे पाए, तो मैं तुम से सच कहता हूं, कि वह उन निन्नानवे भेड़ों के लिये जो भटकी नहीं थीं इतना आनन्द नहीं करेगा, जितना कि इस भेड़ के लिये करेगा। १४ ऐसा ही तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है यह इच्छा नहीं, कि इन छोटों में से एक भी नाश हो॥

१५ यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे, तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा; यदि वह तेरी सुने तो तू ने अपने भाई को पा लिया। १६ और यदि वह न सुने, तो और एक दो जन को अपने साथ ले जा, कि हर एक बात दो या तीन गवाहों के मुंह से ठहराई जाए। १७ यदि वह उन की भी न माने, तो कलीसिया से कह दे, परन्तु यदि वह कलीसिया की भी न माने, तो तू उसे अन्य-जाति और महसूल लेनेवाले के ऐसा जान। १८ मैं तुम से सच कहता हूं, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बान्धोगे, वह स्वर्ग में बन्धेगा और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा। १९ फिर मैं तुम से कहता हूं, यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिये जिसे वे मांगें, एक मन के हों, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है उन के लिये हो जाएगी। २० क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहा मैं उन के बीच में होता हूं॥

२१ तब पतरस ने पास आकर, उस से कहा, हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूं, क्या सात बार तक? २२ यीशु ने उस से कहा, मैं तुझ से यह नहीं कहता, कि सात बार, बरन सात बार के सत्तर गुने तक। २३ इस-लिये स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है, जिस ने अपने दासों से लेखा लेना चाहा। २४ जब वह लेखा लेने लगा, तो एक जन उसके साम्हने लाया गया जो दस हजार तोड़े धारता था। २५ जब कि चुकाने को उसके पास कुछ न था, तो उसके स्वामी ने कहा, कि यह और इस की पत्नी और लड़केबाले और जो कुछ इस का है सब बेचा जाए, और वह कर्ज चुका दिया जाए। २६ इस पर उस दास ने गिरकर उसे प्रणाम किया, और कहा; हे स्वामी, धीरज धर, मैं सब कुछ भर दूंगा। २७ तब उस दास के स्वामी ने तरस खाकर उसे छोड़ दिया, और उसका धार क्षमा किया। २८ परन्तु जब वह दास बाहर निकला, तो उसके संगी दासों में से एक उस को मिला, जो उसके सौ दीनार * धारता था; उस ने उसे पकड़कर उसका गला घोंटा, और कहा; जो कुछ तू धारता है भर दे। २९ इस पर उसका संगी दास गिरकर, उस से बिनती करने लगा; कि धीरज धर मैं सब भर दूंगा। ३० उस ने न माना, परन्तु जाकर उसे बन्दीगृह में डाल दिया; कि जब तक कर्ज को भर न दे, तब तक वहीं रहे। ३१ उसके संगी दास यह जो हुआ था देखकर बहुत उदास हुए, और जाकर अपने स्वामी को पूरा हाल बता दिया। ३२ तब उसके स्वामी ने उस को

* दीनार लगभग आठ आने के था।

बुलाकर उस से कहा, हे दुष्ट दास, तू ने जो मुझ से बिनती की, तो मैं ने तो तेरा वह पूरा कर्ज क्षमा किया। ३३ सो जैसा मैं ने तुझ पर दया की, वैसे ही क्या तुझे भी अपने संगी दास पर दया करना नहीं चाहिए था? ३४ और उसके स्वामी ने क्रोध में आकर उसे दण्ड देनेवालों के हाथ में सौंप दिया, कि जब तक वह सब कर्जा भर न दे, तब तक उन के हाथ में रहे। ३५ इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुम से भी वैसा ही करेगा।।

१९ जब यीशु ये बातें कह चुका, तो गलील से चला गया; और यहूदिया के देश में यरदन के पार आया। २ और बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली, और उस ने उन्हें वहां चंगा किया।।

३ तब फरीसी उस की परीक्षा करने के लिये पास आकर कहने लगे, क्या हर एक कारण से अपनी पत्नी को त्यागना उचित है? ४ उस ने उत्तर दिया, क्या तुम ने नहीं पढ़ा, कि जिस ने उन्हें बनाया, उस ने आरम्भ से नर और नारी बनाकर कहा। ५ कि इस कारण मनुष्य अपने माता पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे? ६ सो वे अब दो नहीं, परन्तु एक तन हैं: इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे। ७ उन्हों ने उस से कहा, फिर मूसा ने क्यों यह ठहराया, कि त्यागपत्र देकर उसे छोड़ दे? ८ उस ने उन से कहा, मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम्हें अपनी अपनी पत्नी को छोड़ देने की आज्ञा दी, परन्तु आरम्भ से ऐसा नहीं था। ९ और मैं तुम से कहता हूं, कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी कारण से, अपनी पत्नी को त्यागकर, दूसरी से ब्याह करे, वह व्यभिचार करता है: और जो उस छोड़ी हुई से ब्याह करे, वह भी व्यभिचार करता है। १० चेलों ने उस से कहा, यदि पुरुष का स्त्री के साथ ऐसा सम्बन्ध है, तो ब्याह करना अच्छा नहीं। ११ उस ने उन से कहा, सब यह वचन ग्रहण नहीं कर सकते, केवल वे जिन को यह दान दिया गया है। १२ क्योंकि कुछ नपुंसक ऐसे हैं जो माता के गर्भ ही से ऐसे जन्मे; और कुछ नपुंसक ऐसे हैं, जिन्हें मनुष्य ने नपुंसक बनाया: और कुछ नपुंसक ऐसे हैं, जिन्हों ने स्वर्ग के राज्य के लिये अपने आप को नपुंसक बनाया है, जो इस को ग्रहण कर सकता है, वह ग्रहण करे।।

१३ तब लोग बालकों को उसके पास लाए, कि वह उन पर हाथ रखे और प्रार्थना करे; पर चेलों ने उन्हें डांटा। १४ यीशु ने कहा, बालकों को मेरे पास आने दो: और उन्हें मना न करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है। १५ और वह उन पर हाथ रखकर, वहां से चला गया।।

१६ और देखो, एक मनुष्य ने पास आकर उस से कहा, हे गुरु; मैं कौन सा भला काम करूं, कि अनन्त जीवन पाऊं? १७ उस ने उस से कहा, तू मुझ से भलाई के विषय में क्यों पूछता है? भला तो एक ही है; पर यदि तू जीवन में प्रवेश करना चाहता है, तो आज्ञाओं को माना कर। १८ उस ने उस से कहा, कौन सी आज्ञाएं? यीशु ने कहा, यह कि हत्या न करना, व्यभिचार न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना। १९ अपने पिता और अपनी

माता का आदर करना, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना। २० उस जवान ने उस से कहा, इन सब को तो मैं ने माना है अब मुझ में किस बात की घटी है? २१ यीशु ने उस से कहा, यदि तू सिद्ध होना चाहता है; तो जा, अपना माल बेचकर कंगालों को दे; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा; और आकर मेरे पीछे हो ले। २२ परन्तु वह जवान यह बात सुन उदास होकर चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था॥

२३ तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है। २४ फिर तुम से कहता हूं, कि परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है। २५ यह सुनकर, चेलों ने बहुत चकित होकर कहा, फिर किस का उद्धार हो सकता है? २६ यीशु ने उन की ओर देखकर कहा, मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है। २७ इस पर पतरस ने उस से कहा, कि देख, हम तो सब कुछ छोड़ के तेरे पीछे हो लिए हैं: तो हमें क्या मिलेगा? २८ यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि नई उत्पत्ति से जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा, तो तुम भी जो मेरे पीछे हो लिए हो, बारह सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करोगे। २९ और जिस किसी ने घरों या भाइयों या बहिनों या पिता या माता या लड़केबालों या खेतों को मेरे नाम के लिये छोड़ दिया है, उस को सौ गुना मिलेगा: और वह अनन्त जीवन का अधिकारी होगा। ३० परन्तु बहुतेरे जो पहिले हैं, पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, पहिले होंगे॥

२० स्वर्ग का राज्य किसी गृहस्थ के समान है, जो सवेरे निकला, कि अपने दाख की बारी में मजदूरों को लगाए। २ और उस ने मजदूरों से एक दीनार* रोज पर ठहराकर, उन्हें अपने दाख की बारी में भेजा। ३ फिर पहर एक दिन चढ़े, निकलकर, और औरों को बाज़ार में बेकार खड़े देखकर, ४ उन से कहा, तुम भी दाख की बारी में जाओ, और जो कुछ ठीक है, तुम्हें दूंगा; सो वे भी गए। ५ फिर उस ने दूसरे और तीसरे पहर के निकट निकलकर वैसा ही किया। ६ और एक घंटा दिन रहे फिर निकलकर औरों को खड़े पाया, और उन से कहा; तुम क्यों यहां दिन भर बेकार खड़े रहे? उन्हों ने उस से कहा, इसलिये कि किसी ने हमें मजदूरी पर नहीं लगाया। ७ उस ने उन से कहा, तुम भी दाख की बारी में जाओ। ८ सांझ को दाख की बारी के स्वामी ने अपने भण्डारी से कहा, मज़दूरों को बुलाकर पिछलों से लेकर पहिलों तक उन्हें मजदूरी दे दे। ९ सो जब वे आए, जो घंटा भर दिन रहे लगाए गए थे, तो उन्हें एक एक दीनार मिला। १० जो पहिले आए, उन्हों ने यह समझा, कि हमें अधिक मिलेगा; परन्तु उन्हें भी एक ही एक दीनार मिला। ११ जब मिला, तो वे गृहस्थ पर कुड़कुड़ा के कहने लगे। १२ कि इन पिछलों ने एक ही घंटा काम किया, और तू ने उन्हें हमारे बराबर कर दिया, जिन्हों ने दिन भर का भार उठाया और घाम सहा? १३ उस

* एक अठन्नी के लगभग था।

ने उन में से एक को उत्तर दिया, कि हे मित्र, मैं तुझ से कुछ अन्याय नहीं करता; क्या तू ने मुझ से एक दीनार न ठहराया? १४ जो तेरा है, उठा ले, और चला जा; मेरी इच्छा यह है, कि जितना तुझे, उतना ही इस पिछले को भी दूं। १५ क्या उचित नहीं कि मैं अपने माल से जो चाहूं सो करूं? क्या तू मेरे भले होने के कारण बुरी दृष्टि से देखता है? १६ इसी रीति से जो पिछले हैं, वे पहिले होंगे, और जो पहिले हैं, वे पिछले होंगे॥

१७ यीशु यरूशलेम को जाते हुए बारह चेलों को एकान्त में ले गया, और मार्ग में उन से कहने लगा। १८ कि देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं; और मनुष्य का पुत्र महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा, और वे उस को घात के योग्य ठहराएंगे। १९ और उस को अन्यजातियों के हाथ सौंपेंगे, कि वे उसे ठट्ठों में उड़ाएं, और कोड़े मारें, और क्रूस पर चढ़ाएं, और वह तीसरे दिन जिलाया जाएगा॥

२० तब जब्दी के पुत्रों की माता ने, अपने पुत्रों के साथ उसके पास आकर प्रणाम किया, और उस से कुछ मांगने लगी। २१ उस ने उस से कहा, तू क्या चाहती है? वह उस से बोली, यह कह, कि मेरे ये दो पुत्र तेरे राज्य में एक तेरे दहिने और एक तेरे बाएं बैठें। २२ यीशु ने उत्तर दिया, तुम नहीं जानते कि क्या मांगते हो? जो कटोरा मैं पीने पर हूं, क्या तुम पी सकते हो? उन्हों ने उस से कहा, पी सकते हैं। २३ उस ने उन से कहा, तुम मेरा कटोरा तो पीओगे, पर अपने दहिने बाएं किसी को बिठाना मेरा काम नहीं, पर जिन के लिये मेरे पिता की ओर से तैयार किया गया, उन्हीं के लिये है। २४ यह सुनकर, दसों चेले उन दोनों भाइयों पर क्रुद्ध हुए। २५ यीशु ने उन्हें पास बुलाकर कहा, तुम जानते हो, कि अन्य जातियों के हाकिम उन पर प्रभुता करते हैं; और जो बड़े हैं, वे उन पर अधिकार जताते हैं। २६ परन्तु तुम में ऐसा न होगा; परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने। २७ और जो तुम में प्रधान होना चाहे, वह तुम्हारा दास बने। २८ जैसे कि मनुष्य का पुत्र, वह इसलिये नहीं आया कि उस की सेवा टहल किई जाए, परन्तु इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे: और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपने प्राण दे॥

२९ जब वे यरीहो से निकल रहे थे, तो एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली। ३० और देखो, दो अन्धे, जो सड़क के किनारे बैठे थे, यह सुनकर कि यीशु जा रहा है, पुकारकर कहने लगे; कि हे प्रभु, दाऊद के सन्तान, हम पर दया कर। ३१ लोगों ने उन्हें डांटा, कि चुप रहें; पर वे और भी चिल्लाकर बोले, हे प्रभु, दाऊद के सन्तान; हम पर दया कर। ३२ तब यीशु ने खड़े होकर, उन्हें बुलाया, और कहा: ३३ तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करूं? उन्हों ने उस से कहा, हे प्रभु; यह कि हमारी आंखें खुल जाएं। ३४ यीशु ने तरस खाकर उन की आंखें छूईं, और वे तुरन्त देखने लगे; और उसके पीछे हो लिए॥

२१ जब वे यरूशलेम के निकट पहुंचे और जैतून पहाड़ पर बैतफगे के पास आए, तो यीशु ने दो चेलों को यह कहकर भेजा। २ कि अपने साम्हने के गांव में जाओ, वहां पहुंचते ही एक गदही बन्धी हुई, और उसके साथ बच्चा तुम्हें

मिलेगा; उन्हें खोलकर, मेरे पास ले आओ। ३ यदि तुम से कोई कुछ कहे, तो कहो, कि प्रभु को इन का प्रयोजन है: तब वह तुरन्त उन्हें भेज देगा। ४ यह इसलिये हुआ, कि जो वचन भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो; ५ कि सिय्योन की बेटी से कहो, देख, तेरा राजा तेरे पास आता है; वह नम्र है और गदहे पर बैठा है; बरन लादू के बच्चे पर। ६ चेलों ने जाकर, जैसा यीशु ने उन से कहा था, वैसा ही किया। ७ और गदही और बच्चे को लाकर, उन पर अपने कपड़े डाले, और वह उन पर बैठ गया। ८ और बहुतेरे लोगों ने अपने कपड़े मार्ग में बिछाए, और और लोगों ने पेड़ों से डालियां काटकर मार्ग में बिछाईं। ९ और जो भीड़ आगे आगे जाती और पीछे पीछे चली आती थी, पुकार पुकारकर कहती थी, कि दाऊद के सन्तान को होशाना *; धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है, आकाश † में होशाना। १० जब उस ने यरूशलेम में प्रवेश किया, तो सारे नगर में हलचल मच गई; और लोग कहने लगे, यह कौन है? ११ लोगों ने कहा, यह गलील के नासरत का भविष्यद्वक्ता यीशु है॥

१२ यीशु ने परमेश्वर के मन्दिर में जाकर, उन सब को, जो मन्दिर में लेन देन कर रहे थे, निकाल दिया; और सर्राफों के पीढ़े और कबूतरों के बेचनेवालों की चौकियां उलट दीं। १३ और उन से कहा, लिखा है, कि मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा; परन्तु तुम उसे डाकुओं की खोह बनाते हो। १४ और अन्धे और लंगड़े, मन्दिर में उसके पास आए, और उस ने उन्हें चंगा किया। १५ परन्तु जब महायाजकों और शास्त्रियों ने इन अद्भुत कामों को, जो उस ने किए, और लड़कों को मन्दिर में दाऊद के सन्तान को होशाना पुकारते हुए देखा, तो क्रोधित होकर उस से कहने लगे, क्या तू सुनता है कि ये क्या कहते हैं? १६ यीशु ने उन से कहा, हां; क्या तुम ने यह कभी नहीं पढ़ा, कि बालकों और दूध पीते बच्चों के मुंह से तू ने स्तुति सिद्ध कराई? १७ तब वह उन्हें छोड़कर नगर के बाहर बैतनिय्याह को गया, और वहां रात बिताई॥

१८ भोर को जब वह नगर को लौट रहा था, तो उसे भूख लगी। १९ और अंजीर का एक पेड़ सड़क के किनारे देखकर वह उसके पास गया, और पत्तों को छोड़ उस में और कुछ न पाकर उस से कहा, अब से तुझ में फिर कभी फल न लगे; और अंजीर का पेड़ तुरन्त सूख गया। २० यह देखकर चेलों ने अचम्भा किया, और कहा, यह अंजीर का पेड़ क्योंकर तुरन्त सूख गया? २१ यीशु ने उन को उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच कहता हूं; यदि तुम विश्वास रखो, और संदेह न करो; तो न केवल यह करोगे, जो इस अंजीर के पेड़ से किया गया है; परन्तु यदि इस पहाड़ से भी कहोगे, कि उखड़ जा; और समुद्र में जा पड़, तो यह हो जायगा। २२ और जो कुछ तुम प्रार्थना में विश्वास से मांगोगे वह सब तुम को मिलेगा॥

२३ वह मन्दिर में जाकर उपदेश कर रहा था, कि महायाजकों और लोगों के पुरनियों ने उसके पास आकर पूछा, तू ये काम किस के अधिकार से करता है? और तुझे यह अधिकार किस ने दिया है? २४ यीशु ने उन को उत्तर दिया, कि

* भजन संहिता ११८: २५ को देखो।
† य० ऊंचे से ऊंचे स्थान।

में भी तुम से एक बात पूछता हूं; यदि वह मुझे बताओगे, तो मैं भी तुम्हें बताऊंगा; कि ये काम किस अधिकार से करता हूं। २५ यूहन्ना का बपतिस्मा कहां से था? स्वर्ग की ओर से या मनुष्यों की ओर से था? तब वे आपस में विवाद करने लगे, कि यदि हम कहें स्वर्ग की ओर से, तो वह हम से कहेगा, फिर तुम ने उस की प्रतीति क्यों न की? २६ और यदि कहें मनुष्यों की ओर से तो हमें भीड़ का डर है; क्योंकि वे सब यूहन्ना को भविष्यद्वक्ता जानते हैं। २७ सो उन्हों ने यीशु को उत्तर दिया, कि हम नहीं जानते; उस ने भी उन से कहा, तो मैं भी तुम्हें नहीं बताता, कि ये काम किस अधिकार से करता हूं। २८ तुम क्या समझते हो? किसी मनुष्य के दो पुत्र थे; उस ने पहिले के पास जाकर कहा; हे पुत्र, आज दाख की बारी में काम कर। २९ उस ने उत्तर दिया, मैं नहीं जाऊंगा, परन्तु पीछे पछता कर गया। ३० फिर दूसरे के पास जाकर ऐसा ही कहा, उस ने उत्तर दिया, जी हां जाता हूं, परन्तु नहीं गया। ३१ इन दोनों में से किस ने पिता की इच्छा पूरी की? उन्हों ने कहा, पहिले ने: यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि महसूल लेनेवाले और वेश्या तुम से पहिले परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं। ३२ क्योंकि यूहन्ना धर्म के मार्ग से तुम्हारे पास आया, और तुम ने उस की प्रतीति न की: पर महसूल लेनेवालों और वेश्याओं ने उस की प्रतीति की: और तुम यह देखकर पीछे भी न पछताए कि उस की प्रतीति कर लेते॥

३३ एक और दृष्टान्त सुनो: एक गृहस्थ था, जिस ने दाख की बारी लगाई; और उसके चारों ओर बाड़ा बान्धा; और उस में रस का कुंड खोदा; और गुम्मट बनाया; और किसानों को उसका ठीका देकर परदेश चला गया। ३४ जब फल का समय निकट आया, तो उस ने अपने दासों को उसका फल लेने के लिये किसानों के पास भेजा। ३५ पर किसानों ने उसके दासों को पकड़ के, किसी को पीटा, और किसी को मार डाला; और किसी को पत्थरवाह किया। ३६ फिर उस ने और दासों को भेजा, जो पहिलों से अधिक थे; और उन्हों ने उन से भी वैसा ही किया। ३७ अन्त में उस ने अपने पुत्र को उन के पास यह कहकर भेजा, कि वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे। ३८ परन्तु किसानों ने पुत्र को देखकर आपस में कहा, यह तो वारिस है, आओ, उसे मार डालें: और उस की मीरास ले लें। ३९ और उन्हों ने उसे पकड़ा और दाख की बारी से बाहर निकालकर मार डाला। ४० इसलिये जब दाख की बारी का स्वामी आएगा, तो उन किसानों के साथ क्या करेगा? ४१ उन्होंने उस से कहा, वह उन बुरे लोगों को बुरी रीति से नाश करेगा; और दाख की बारी का ठीका और किसानों को देगा, जो समय पर उसे फल दिया करेंगे। ४२ यीशु ने उन से कहा, क्या तुम ने कभी पवित्र शास्त्र में यह नहीं पढ़ा, कि जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने के सिरे का पत्थर हो गया? ४३ यह प्रभु की ओर से हुआ, और हमारे देखने में अद्‌भुत है, इसलिये मैं तुम से कहता हूं, कि परमेश्वर का राज्य तुम से ले लिया जाएगा; और ऐसी जाति को जो उसका फल लाए, दिया जाएगा। ४४ जो इस पत्थर पर गिरेगा, वह चकनाचूर हो जाएगा: और जिस पर वह गिरेगा, उस को पीस डालेगा।

४५ महायाजक और फरीसी उसके दृष्टान्तों को सुनकर समझ गए, कि वह हमारे विषय में कहता है। ४६ और उन्हों ने उसे पकड़ना चाहा, परन्तु लोगों से डर गए क्योंकि वे उसे भविष्यद्वक्ता जानते थे॥

२२ इस पर यीशु फिर उन से दृष्टान्तों में कहने लगा। २ स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है, जिस ने अपने पुत्र का ब्याह किया। ३ और उस ने अपने दासों को भेजा, कि नेवताहारियों को ब्याह के भोज में बुलाएं; परन्तु उन्हों ने आना न चाहा। ४ फिर उस ने और दासों को यह कहकर भेजा, कि नेवताहारियों से कहो, देखो; मैं भोज तैयार कर चुका हूं, और मेरे बैल और पले हुए पशु मारे गए हैं: और सब कुछ तैयार है; ब्याह के भोज में आओ। ५ परन्तु वे बेपरवाई करके चल दिए: कोई अपने खेत को, कोई अपने ब्योपार को। ६ औरों ने जो बच रहे थे उसके दासों को पकड़कर उन का अनादर किया और मार डाला। ७ राजा ने क्रोध किया, और अपनी सेना भेजकर उन हत्यारों को नाश किया, और उन के नगर को फूंक दिया। ८ तब उस ने अपने दासों से कहा, ब्याह का भोज तो तैयार है, परन्तु नेवताहारी योग्य नहीं ठहरे। ९ इसलिये चौराहों में जाओ, और जितने लोग तुम्हें मिलें, सब को ब्याह के भोज में बुला लाओ। १० सो उन दासों ने सड़कों पर जाकर क्या बुरे, क्या भले, जितने मिले, सब को इकट्ठे किया; और ब्याह का घर जेवनहारों से भर गया। ११ जब राजा जेवनहारों के देखने को भीतर आया; तो उस ने वहां एक मनुष्य को देखा, जो ब्याह का वस्त्र नहीं पहिने था। १२ उस ने उस से पूछा, हे मित्र; तू ब्याह का वस्त्र पहिने बिना यहां क्यों आ गया? उसका मुंह बन्द हो गया। १३ तब राजा ने सेवकों से कहा, इस के हाथ पांव बान्धकर उसे बाहर अन्धियारे में डाल दो, वहां रोना, और दांत पीसना होगा। १४ क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत परन्तु चुने हुए थोड़े हैं॥

१५ तब फरीसियों ने जाकर आपस में विचार किया, कि उस को किस प्रकार बातों में फंसाएं। १६ सो उन्हों ने अपने चेलों को हेरोदियों के साथ उसके पास यह कहने को भेजा, कि हे गुरु; हम जानते हैं, कि तू सच्चा है; और परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से सिखाता है; और किसी की परवा नहीं करता, क्योंकि तू मनुष्यों का मुंह देखकर बातें नहीं करता। १७ इसलिये हमें बता तू क्या समझता है? कैसर को कर देना उचित है, कि नहीं। १८ यीशु ने उन की दुष्टता जानकर कहा, हे कपटियो; मुझे क्यों परखते हो? १९ कर का सिक्का मुझे दिखाओ: तब वे उसके पास एक दीनार* ले आए। २० उस ने, उन से पूछा, यह मूर्त्ति और नाम किस का है? २१ उन्हों ने उस से कहा, कैसर का; तब उस ने, उन से कहा; जो कैसर का है, वह कैसर को; और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो। २२ यह सुनकर उन्हों ने अचम्भा किया, और उसे छोड़कर चले गए॥

२३ उसी दिन सदूकी जो कहते हैं कि मरे हुओं का पुनरुत्थान है ही नहीं उसके पास आए, और उस से पूछा। २४ कि हे गुरु; मूसा ने कहा था, कि यदि कोई बिना सन्तान मर जाए, तो उसका भाई

* अठन्नी के लगभग।

उस की पत्नी को ब्याह करके अपने भाई के लिये बंश उत्पन्न करे। २५ अब हमारे यहां सात भाई थे; पहिला ब्याह करके मर गया; और सन्तान न होने के कारण अपनी पत्नी को अपने भाई के लिये छोड़ गया। २६ इसी प्रकार दूसरे और तीसरे ने भी किया, और सातों तक यही हुआ। २७ सब के बाद वह स्त्री भी मर गई। २८ सो जी उठने पर, वह उन सातों में से किस की पत्नी होगी? क्योंकि वह सब की पत्नी हो चुकी थी। २९ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि तुम पवित्र शास्त्र और परमेश्वर की सामर्थ नहीं जानते; इस कारण भूल में पड़ गए हो। ३० क्योंकि जी उठने पर ब्याह शादी न होगी; परन्तु वे स्वर्ग में परमेश्वर के दूतों की नाईं होंगे। ३१ परन्तु मरे हुओं के जी उठने के विषय में क्या तुम ने यह वचन नहीं पढ़ा जो परमेश्वर ने तुम से कहा। ३२ कि मैं इब्राहीम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूं? वह तो मरे हुओं का नहीं, परन्तु जीवतों का परमेश्वर है। ३३ यह सुनकर लोग उसके उपदेश से चकित हुए॥

३४ जब फरीसियों ने सुना, कि उस ने सदूकियों का मुंह बन्द कर दिया; तो वे इकट्ठे हुए। ३५ और उन में से एक व्यवस्थापक ने परखने के लिये, उस से पूछा। ३६ हे गुरु; व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है? ३७ उस ने उस से कहा, तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। ३८ बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। ३९ और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। ४० ये ही दो आज्ञाएं सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार है॥

४१ जब फरीसी इकट्ठे थे, तो यीशु ने उन से पूछा। ४२ कि मसीह के विषय में तुम क्या समझते हो? वह किस का सन्तान है? उन्हों ने उस से कहा, दाऊद का। ४३ उस ने उन से पूछा, तो दाऊद आत्मा में होकर उसे प्रभु क्यों कहता है? ४४ कि प्रभु ने, मेरे प्रभु से कहा; मेरे दहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों के नीचे न कर दूं। ४५ भला, जब दाऊद उसे प्रभु कहता है, तो वह उसका पुत्र क्योंकर ठहरा? ४६ उसके उत्तर में कोई भी एक बात न कह सका; परन्तु उस दिन से किसी को फिर उस से कुछ पूछने का हियाव न हुआ॥

२३ तब यीशु ने भीड़ से और अपने चेलों से कहा। २ शास्त्री और फरीसी मूसा की गद्दी पर बैठे हैं। ३ इसलिये वे तुम से जो कुछ कहें वह करना, और मानना; परन्तु उन के से काम मत करना; क्योंकि वे कहते तो हैं पर करते नहीं। ४ वे एक ऐसे भारी बोझ को जिन को उठाना कठिन है, बान्धकर उन्हें मनुष्यों के कन्धों पर रखते हैं; परन्तु आप उन्हें अपनी उंगली से भी सरकाना नहीं चाहते। ५ वे अपने सब काम लोगों को दिखाने के लिये करते हैं: वे अपने तावीजों को चौड़े करते, और अपने वस्त्रों की कोरें बढ़ाते हैं। ६ जेवनारों में मुख्य मुख्य जगहें, और सभा में मुख्य मुख्य आसन। ७ और बाजारों में नमस्कार और मनुष्य में रब्बी कहलाना उन्हें भाता है। ८ परन्तु, तुम रब्बी न कहलाना; क्योंकि तुम्हारा एक ही गुरु है: और तुम सब भाई हो। ९ और

पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है। १० और स्वामी भी न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही स्वामी है, अर्थात् मसीह। ११ जो तुम में बड़ा हो, वह तुम्हारा सेवक बने। १२ जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा: और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा ॥

१३ हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो तुम पर हाय! तुम मनुष्यों के विरोध में स्वर्ग के राज्य का द्वार बन्द करते हो, न तो आप ही उस में प्रवेश करते हो और न उस में प्रवेश करनेवालों को प्रवेश करने देते हो ॥

१५ हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो तुम पर हाय! तुम एक जन को अपने मत में लाने के लिये सारे जल और थल में फिरते हो, और जब वह मत में आ जाता है, तो उसे अपने से दूना नारकीय बना देते हो ॥

१६ हे अन्धे अगुवो, तुम पर हाय, जो कहते हो कि यदि कोई मन्दिर की शपथ खाए तो कुछ नहीं, परन्तु यदि कोई मन्दिर के सोने की सौगन्ध खाए तो उस से बन्ध जाएगा। १७ हे मूर्खो, और अन्धो, कौन बड़ा है, सोना या वह मन्दिर जिस से सोना पवित्र होता है? १८ फिर कहते हो कि यदि कोई वेदी की शपथ खाए तो कुछ नहीं, परन्तु जो भेंट उस पर है, यदि कोई उस की शपथ खाए तो बन्ध जाएगा। १९ हे अन्धो, कौन बड़ा ह, भेंट या वेदी: जिस से भेंट पवित्र होता है? २० इसलिये जो वेदी की शपथ खाता है, वह उस की, और जो कुछ उस पर है, उस की भी शपथ खाता है। २१ और जो मन्दिर की शपथ खाता है, वह उस की और उस में रहनेवाले की भी शपथ खाता है। २२ और जो स्वर्ग की शपथ खाता है, वह परमेश्वर के सिंहासन की और उस पर बैठनेवाले की भी शपथ खाता है ॥

२३ हे कपटी शास्त्रियो, और फरीसियो, तुम पर हाय; तुम पोदीने और सौंफ और जीरे का दसवां अंश देते हो, परन्तु तुम ने व्यवस्था की गम्भीर बातों को अर्थात् न्याय, और दया, और विश्वास को छोड़ दिया है; चाहिये था कि इन्हें भी करते रहते, और उन्हें भी न छोड़ते। २४ हे अन्धे अगुवो, तुम मच्छड़ को तो छान डालते हो, परन्तु ऊंट को निगल जाते हो ॥

२५ हे कपटी शास्त्रियो, और फरीसियो, तुम पर हाय, तुम कटोरे और थाली को ऊपर ऊपर से तो मांजते हो परन्तु वे भीतर अन्धेर असंयम से भरे हुए हैं। २६ हे अन्धे फरीसी, पहिले कटोरे और थाली को भीतर से मांज कि वे बाहर से भी स्वच्छ हों ॥

२७ हे कपटी शास्त्रियो, और फरीसियो, तुम पर हाय; तुम चूना फिरी हुई कब्रों के समान हो जो ऊपर से तो सुन्दर दिखाई देती हैं, परन्तु भीतर मुर्दों की हड्डियों और सब प्रकार की मलिनता से भरी हैं। २८ इसी रीति से तुम भी ऊपर से मनुष्यों को धर्मी दिखाई देते हो, परन्तु भीतर कपट और अधर्म से भरे हुए हो ॥

२९ हे कपटी शास्त्रियो, और फरीसियो, तुम पर हाय; तुम भविष्यद्वक्ताओं की कब्रें संवारते और धर्मियों की कब्रें बनाते हो। ३० और कहते हो, कि यदि हम अपने बापदादों के दिनों में होते तो भविष्यद्वक्ताओं की हत्या में उन के साझी न होते। ३१ इस से तो तुम

अपने पर आप ही गवाही देते हो, कि तुम भविष्यद्वक्ताओं के घातकों की सन्तान हो। ३२ सो तुम अपने बापदादों के पाप का घड़ा भर दो। ३३ हे सांपो, हे करैतों के बच्चो, तुम नरक के दण्ड से क्योंकर बचोगे? ३४ इसलिये देखो, मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वक्ताओं और बुद्धिमानों और शास्त्रियों को भेजता हूं; और तुम उन में से कितनों को मार डालोगे, और क्रूस पर चढ़ाओगे; और कितनों को अपनी सभाओं में कोड़े मारोगे, और एक नगर से दूसरे नगर में खदेड़ते फिरोगे। ३५ जिस से धर्मी हाबील से लेकर बिरकियाह के पुत्र जकरयाह तक, जिसे तुम ने मन्दिर * और वेदी के बीच में मार डाला था, जितने धर्मियों का लोहू पृथ्वी पर बहाया गया है, वह सब तुम्हारे सिर पर पड़ेगा। ३६ मैं तुम से सच कहता हूं, ये सब बातें इस समय के लोगों पर आ पड़ेंगी॥

३७ हे यरूशलेम, हे यरूशलेम; तू जो भविष्यद्वक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए, उन्हें पत्थरवाह करता है, कितनी ही बार मैं ने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठे करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठे कर लूं, परन्तु तुम ने न चाहा। ३८ देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है। ३९ क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि अब से जब तक तुम न कहोगे, कि धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है, तब तक तुम मुझे फिर कभी न देखोगे॥

२४ जब यीशु मन्दिर से निकलकर जा रहा था, तो उसके चेले उस को मन्दिर की रचना दिखाने के लिये उसके पास आए। २ उस ने उन से कहा, क्या तुम यह सब नहीं देखते? मैं तुम से सच कहता हूं, यहां पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा, जो ढाया न जाएगा॥

३ और जब वह जैतून पहाड़ पर बैठा था, तो चेलों ने अलग उसके पास आकर कहा, हम से कह कि ये बातें कब होंगी? और तेरे आने का, और जगत के अन्त * का क्या चिन्ह होगा? ४ यीशु ने उन को उत्तर दिया, सावधान रहो! कोई तुम्हें न भरमाने पाए। ५ क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे, कि मैं मसीह हूं: और बहुतों को भरमाएंगे। ६ तुम लड़ाइयों और लड़ाइयों की चर्चा सुनोगे; देखो घबरा न जाना क्योंकि इन का होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त न होगा। ७ क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा, और जगह जगह अकाल पड़ेंगे, और भुईंडोल होंगे। ८ ये सब बातें पीड़ाओं का आरम्भ होंगी। ९ तब वे क्लेश दिलाने के लिये तुम्हें पकड़वाएंगे, और तुम्हें मार डालेंगे और मेरे नाम के कारण सब जातियों के लोग तुम से बैर रखेंगे। १० तब बहुतेरे ठोकर खाएंगे, और एक दूसरे को पकड़वाएंगे, और एक दूसरे से बैर रखेंगे। ११ और बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बहुतों को भरमाएंगे। १२ और अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठण्डा हो जाएगा। १३ परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा। १४ और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब

* अर्थात् पवित्रस्थान।

* यू० युग की समाप्ति।

जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा ॥

१५ सो जब तुम उस उजाड़नेवाली घृणित वस्तु को जिस की चर्चा दानिय्येल भविष्यद्वक्ता के द्वारा हुई थी, पवित्र स्थान में खड़ी हुई देखो, (जो पढ़े, वह समझे)। १६ तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएं। १७ जो कोठे पर हो, वह अपने घर में से सामान लेने को न उतरे। १८ और जो खेत में हो, वह अपना कपड़ा लेने को पीछे न लौटे। १९ उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी, उन के लिये हाय, हाय। २० और प्रार्थना किया करो; कि तुम्हें जाड़े में या सब्त के दिन भागना न पड़े। २१ क्योंकि उस समय ऐसा भारी क्लेश होगा, जैसा जगत के आरम्भ से न अब तक हुआ, और न कभी होगा। २२ और यदि वे दिन घटाए न जाते, तो कोई प्राणी न बचता; परन्तु चुने हुओं के कारण वे दिन घटाए जाएंगे। २३ उस समय यदि कोई तुम से कहे, कि देखो, मसीह यहां है! या वहां है तो प्रतीति न करना। २४ क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े चिन्ह, और अद्भुत काम दिखाएंगे, कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें। २५ देखो, मैं ने पहिले से तुम से यह सब कुछ कह दिया है। २६ इसलिये यदि वे तुम से कहें, देखो, वह जङ्गल में है, तो बाहर न निकल जाना; देखो, वह कोठरियों में है, तो प्रतीति न करना। २७ क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती जाती है, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा। २८ जहां लोथ हो, वहीं गिद्ध इकट्ठे होंगे ॥

२९ उन दिनों के क्लेश के बाद तुरन्त सूर्य अन्धियारा हो जाएगा, और चान्द का प्रकाश जाता रहेगा, और तारे आकाश से गिर पड़ेंगे और आकाश की शक्तियां हिलाई जाएंगी। ३० तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई देगा, और तब पृथ्वी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे; और मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे। ३१ और वह तुरही के बड़े शब्द के साथ, अपने दूतों को भेजेगा, और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक, चारों दिशा से उसके चुने हुओं को इकट्ठे करेंगे ॥

३२ अंजीर के पेड़ से यह दृष्टान्त सीखो : जब उस की डाली कोमल हो जाती और पत्ते निकलने लगते हैं, तो तुम जान लेते हो, कि ग्रीष्म काल निकट है। ३३ इसी रीति से जब तुम इन सब बातों को देखो, तो जान लो, कि वह निकट है, बरन द्वार ही पर है। ३४ मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें, तब तक यह पीढ़ी जाती न रहेगी। ३५ आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी। ३६ उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता; न स्वर्ग के दूत, और न पुत्र, परन्तु केवल पिता। ३७ जैसे नूह के दिन थे, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। ३८ क्योंकि जैसे जल-प्रलय से पहिले के दिनों में, जिस दिन तक कि नूह जहाज पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग खाते-पीते थे, और उन में ब्याह शादी होती थी। ३९ और जब तक जल-प्रलय आकर उन सब को बहा न ले गया, तब तक उन को कुछ भी मालूम न पड़ा; वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। ४० उस समय दो जन खेत में होंगे, एक

ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। ४१ दो स्त्रियां चक्की पीसती रहेंगी, एक ले ली जाएगी, और दूसरी छोड़ दी जाएगी। ४२ इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा। ४३ परन्तु यह जान लो कि यदि घर का स्वामी जानता होता कि चोर किस पहर आएगा, तो जागता रहता; और अपने घर में सेंध लगने न देता। ४४ इसलिये तुम भी तैयार रहो, क्योंकि जिस घड़ी के विषय में तुम सोचते भी नहीं हो, उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आ जाएगा। ४५ सो वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान दास कौन है, जिसे स्वामी ने अपने नौकर चाकरों पर सरदार ठहराया, कि समय पर उन्हें भोजन दे? ४६ धन्य है, वह दास, जिसे उसका स्वामी आकर ऐसा ही करते पाए। ४७ मैं तुम से सच कहता हूं; वह उसे अपनी सारी संपत्ति पर सरदार ठहराएगा। ४८ परन्तु यदि वह दुष्ट दास सोचने लगे, कि मेरे स्वामी के आने में देर है। ४९ और अपने साथी दासों को पीटने लगे, और पियक्कड़ों के साथ खाए पीए। ५० तो उस दास का स्वामी ऐसे दिन आएगा, जब वह उस की बाट न जोहता हो। ५१ और ऐसी घड़ी कि वह न जानता हो, और उसे भारी ताड़ना देकर, उसका भाग कपटियों के साथ ठहराएगा: वहां रोना और दांत पीसना होगा॥

२५ तब स्वर्ग का राज्य उन दस कुंवारियों के समान होगा जो अपनी मशालें लेकर दूल्हे से भेंट करने को निकलीं। २ उन में पांच मूर्ख और पांच समझदार थीं। ३ मूर्खों ने अपनी मशालें तो लीं, परन्तु अपने साथ तेल नहीं लिया। ४ परन्तु समझदारों ने अपनी मशालों के साथ अपनी कुप्पियों में तेल भी भर लिया। ५ जब दूल्हे के आने में देर हुई, तो वे सब ऊंघने लगीं, और सो गईं। ६ आधी रात को धूम मची, कि देखो, दूल्हा आ रहा है, उस से भेंट करने के लिये चलो। ७ तब वे सब कुंवारियां उठकर अपनी मशालें ठीक करने लगीं। ८ और मूर्खों ने समझदारों से कहा, अपने तेल में से कुछ हमें भी दो, क्योंकि हमारी मशालें बुझी जाती हैं। ९ परन्तु समझदारों ने उत्तर दिया कि कदाचित हमारे और तुम्हारे लिये पूरा न हो; भला तो यह है, कि तुम बेचनेवालों के पास जाकर अपने लिये मोल ले लो। १० जब वे मोल लेने को जा रही थीं, तो दूल्हा आ पहुंचा, और जो तैयार थीं, वे उसके साथ व्याह के घर में चली गईं और द्वार बन्द किया गया। ११ इसके बाद वे दूसरी कुंवारियां भी आकर कहने लगीं, हे स्वामी, हे स्वामी, हमारे लिये द्वार खोल दे। १२ उस ने उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच कहता हूं, मैं तुम्हें नहीं जानता। १३ इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो, न उस घड़ी को॥

१४ क्योंकि यह उस मनुष्य की सी दशा है जिस ने परदेश को जाते समय अपने दासों को बुलाकर, अपनी सम्पत्ति उन को सौंप दी। १५ उस ने एक को पांच तोड़, दूसरे को दो, और तीसरे को एक; अर्थात् हर एक को उस की सामर्थ के अनुसार दिया, और तब परदेश चला गया। १६ तब जिस को पांच तोड़े मिले थे, उस ने तुरन्त जाकर उन से लेन देन किया, और पांच तोड़े और कमाए। १७ इसी रीति से जिस को दो मिले थे,

उस ने भी दो और कमाए। १८ परन्तु जिस को एक मिला था, उस ने जाकर मिट्टी खोदी, और अपने स्वामी के रुपये छिपा दिए। १९ बहुत दिनों के बाद उन दासों का स्वामी आकर उन से लेखा लेने लगा। २० जिस को पांच तोड़े मिले थे, उस ने पांच तोड़े और लाकर कहा; हे स्वामी, तू ने मुझे पांच तोड़े सौंपे थे, देख, मैं ने पांच तोड़े और कमाए हैं। २१ उसके स्वामी ने उससे कहा, धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा; मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा अपने स्वामी के आनन्द में सम्भागी हो। २२ और जिस को दो तोड़े मिले थे, उस ने भी आकर कहा; हे स्वामी, तू ने मुझे दो तोड़े सौंपे थे, देख, मैं ने दो तोड़े और कमाए। २३ उसके स्वामी ने उस से कहा, धन्य हे अच्छे और विश्वास-योग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा, मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा अपने स्वामी के आनन्द में सम्भागी हो। २४ तब जिस को एक तोड़ा मिला था, उस ने आकर कहा; हे स्वामी, मैं तुझे जानता था, कि तू कठोर मनुष्य है: तू जहां कहीं नहीं बोता वहां काटता है, और जहां नहीं छींटता वहां से बटोरता है। २५ सो मैं डर गया और जाकर तेरा तोड़ा मिट्टी में छिपा दिया; देख, जो तेरा है, वह यह है। २६ उसके स्वामी ने उसे उत्तर दिया, कि हे दुष्ट और आलसी दास; जब यह तू जानता था, कि जहां मैं ने नहीं बोया वहां से काटता हूं; और जहां मैं ने नहीं छींटा वहां से बटोरता हूं। २७ तो तुझे चाहिए था, कि मेरा रुपया सर्राफों को दे देता, तब मैं आकर अपना धन ब्याज समेत ले लेता। २८ इसलिये वह तोड़ा उस से ले लो, और जिस के पास दस तोड़े हैं, उस को दे दो। २९ क्योंकि जिस किसी के पास है, उसे और दिया जाएगा; और उसके पास बहुत हो जाएगा: परन्तु जिस के पास नहीं है, उस से वह भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा। ३० और इस निकम्मे दास को बाहर के अन्धेरे में डाल दो, जहां रोना और दांत पीसना होगा॥

३१ जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा, और सब स्वर्ग दूत उसके साथ आएंगे तो वह अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा। ३२ और सब जातियां उसके साम्हने इकट्ठी की जाएंगी; और जैसा चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है, वैसा ही वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा। ३३ और वह भेड़ों को अपनी दहिनी ओर और बकरियों को बाईं ओर खड़ी करेगा। ३४ तब राजा अपनी दहिनी ओर वालों से कहेगा, हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है। ३५ क्योंकि मैं भूखा था, और तुम ने मुझे खाने को दिया; मैं पियासा था, और तुम ने मुझे पानी पिलाया, मैं परदेशी था, तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया। ३६ मैं नंगा था, तुम ने मुझे कपड़े पहिनाए; मैं बीमार था, तुम ने मेरी सुधि ली, मैं बन्दीगृह में था, तुम मुझ से मिलने आए। ३७ तब धर्मी उस को उत्तर देंगे कि हे प्रभु, हम ने कब तुझे भूखा देखा और खिलाया? या पियासा देखा, और पिलाया? ३८ हम ने कब तुझे परदेशी देखा और अपने घर में ठहराया या नंगा देखा, और कपड़े पहिनाए? ३९ हम ने

कब तुझे बीमार या बन्दीगृह में देखा और तुझ से मिलने आए? ४० तब राजा उन्हें उत्तर देगा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुम ने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया। ४१ तब वह बाईं ओर वालों से कहेगा, हे स्रापित लोगो, मेरे साम्हने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान * और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है। ४२ क्योंकि मैं भूखा था, और तुम ने मुझे खाने को नहीं दिया, मैं पियासा था, और तुम ने मुझे पानी नहीं पिलाया। ४३ मैं परदेशी था, और तुम ने मुझे अपने घर में नहीं ठहराया; मैं नंगा था, और तुम ने मुझे कपड़े नहीं पहिनाए; बीमार और बन्दीगृह में था, और तुम ने मेरी सुधि न ली। ४४ तब वे उत्तर देंगे, कि हे प्रभु, हम ने तुझे कब भूखा, या पियासा, या परदेशी, या नंगा, या बीमार, या बन्दीगृह में देखा, और तेरी सेवा टहल न की? ४५ तब वह उन्हें उत्तर देगा, मैं तुम से सच कहता हूं कि तुम ने जो इन छोटे से छोटों में से किसी एक के साथ नहीं किया, वह मेरे साथ भी नहीं किया। ४६ और यह अनन्त दण्ड भोगेंगे † परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।

२६ जब यीशु ये सब बातें कह चुका, तो अपने चेलों से कहने लगा। २. तुम जानते हो, कि दो दिन के बाद फसह का पर्ब्ब होगा; और मनुष्य का पुत्र क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिये पकड़वाया जाएगा। ३ तब महायाजक और प्रजा के पुरनिए काइफा नाम महायाजक के आंगन में इकट्ठे हुए। ४ और आपस में विचार करने लगे कि यीशु को छल से पकड़कर मार डालें। ५ परन्तु वे कहते थे, कि पर्ब्ब के समय नहीं; कहीं ऐसा न हो कि लोगों में बलवा मच जाए॥

६ जब यीशु बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर में था। ७ तो एक स्त्री संगमरमर के पात्र में बहुमोल इत्र लेकर उसके पास आई, और जब वह भोजन करने बैठा था, तो उसके सिर पर उण्डेल दिया। ८ यह देखकर, उसके चेले रिसियाए और कहने लगे, इस का क्यों सत्यानाश किया गया? ९ यह तो अच्छे दाम पर बिककर कंगालों को बांटा जा सकता था। १० यह जानकर यीशु ने उन से कहा, स्त्री को क्यों सताते हो? उस ने मेरे साथ भलाई की है। ११ कंगाल तुम्हारे साथ सदा रहते हैं, परन्तु मैं तुम्हारे साथ सदैव न रहूंगा। १२ उस ने मेरी देह पर जो यह इत्र उण्डेला है, वह मेरे गाड़े जाने के लिये किया है। १३ मैं तुम से सच कहता हूं, कि सारे जगत में जहां कहीं यह सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहां उसके इस काम का वर्णन भी उसके स्मरण में किया जाएगा॥

१४ तब यहूदा इस्करियोती नाम बारह चेलों में से एक ने महायाजकों के पास जाकर कहा, १५ यदि मैं उसे तुम्हारे हाथ पकड़वा दूं, तो मुझे क्या दोगे? उन्हों ने उसे तीस चान्दी के सिक्के तौलकर दे दिए। १६ और वह उसी समय से उसे पकड़वाने का अवसर ढूंढ़ने लगा॥

१७ अखमीरी रोटी के पर्ब्ब के पहिले दिन, चेले यीशु के पास आकर पूछने लगे; तू कहां चाहता है कि हम तेरे लिये फसह खाने की तैयारी करें? १८ उस ने कहा, नगर में फुलाने के पास जाकर उस से कहो,

* यू० इब्लीस † यू० में जाएंगे।

कि गुरु कहता है, कि मेरा समय निकट है, मैं अपने चेलों के साथ तेरे यहां पर्ब्ब मनाऊंगा। १९ सो चेलों ने यीशु की आज्ञा मानी, और फसह तैयार किया। २० जब सांझ हुई, तो वह बारहों के साथ भोजन करने के लिये बैठा। २१ जब वे खा रहे थे, तो उस ने कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा। २२ इस पर वे बहुत उदास हुए, और हर एक उस से पूछने लगा, हे गुरु, क्या वह मैं हूं? २३ उस ने उत्तर दिया, कि जिस ने मेरे साथ थाली में हाथ डाला है, वही मुझे पकड़वाएगा। २४ मनुष्य का पुत्र तो जैसा उसके विषय में लिखा है, जाता ही है; परन्तु उस मनुष्य के लिये शोक है जिस के द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है: यदि उस मनुष्य का जन्म न होता, तो उसके लिये भला होता। २५ तब उसके पकड़वानेवाले यहूदा ने कहा कि हे रब्बी, क्या वह मैं हूं? २६ उस ने उस से कहा, तू कह चुका: जब वे खा रहे थे, तो यीशु ने रोटी ली, और आशीष मांगकर तोड़ी, और चेलों को देकर कहा, लो, खाओ; यह मेरी देह है। २७ फिर उस ने कटोरा लेकर, धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा, तुम सब इस में से पीओ। २८ क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है। २९ मैं तुम से कहता हूं, कि दाख का यह रस उस दिन तक कभी न पीऊंगा, जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पीऊं॥

३० फिर वे भजन गाकर जैतून पहाड़ पर गए॥

३१ तब यीशु ने उन से कहा; तुम सब आज ही रात को मेरे विषय में ठोकर खाओगे; क्योंकि लिखा है, कि मैं चरवाहे को मारूंगा; और झुण्ड की भेड़ें तित्तर बित्तर हो जाएंगी। ३२ परन्तु मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहले गलील को जाऊंगा। ३३ इस पर पतरस ने उस से कहा, यदि सब तेरे विषय में ठोकर खाएं तो खाएं, परन्तु मैं कभी भी ठोकर न खाऊंगा। ३४ यीशु ने उस से कहा, मैं तुझ से सच कहता हूं, कि आज ही रात को मुर्गे के बांग देने से पहिले, तू तीन बार मुझ से मुकर जाएगा। ३५ पतरस ने उस से कहा, यदि मुझे तेरे साथ मरना भी हो, तौभी मैं तुझ से कभी न मुकरूंगा: और ऐसा ही सब चेलों ने भी कहा॥

३६ तब यीशु अपने चेलों के साथ गतसमनी नाम एक स्थान में आया और अपने चेलों से कहने लगा कि यहीं बैठे रहना, जब तक कि मैं वहां जाकर प्रार्थना करूं। ३७ और वह पतरस और जब्दी के दोनों पुत्रों को साथ ले गया, और उदास और व्याकुल होने लगा। ३८ तब उस ने उन से कहा; मेरा जी बहुत उदास है, यहां तक कि मेरे प्राण निकला चाहते हैं: तुम यहीं ठहरो, और मेरे साथ जागते रहो। ३९ फिर वह थोड़ा और आगे बढ़कर मुंह के बल गिरा, और यह प्रार्थना करने लगा, कि हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरा मुझ से टल जाए; तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो। ४० फिर चेलों के पास आकर उन्हें सोते पाया, और पतरस से कहा; क्या तुम मेरे साथ एक घड़ी भी न जाग सके? ४१ जागते रहो, और प्रार्थना करते रहो, कि तुम परीक्षा में न पड़ो: आत्मा तो तैयार है, परन्तु शरीर

दुर्बल है। ४२ फिर उस ने दूसरी बार जाकर यह प्रार्थना की; कि हे मेरे पिता, यदि यह मेरे पीए बिना नहीं हट सकता तो तेरी इच्छा पूरी हो। ४३ तब उस ने आकर उन्हें फिर सोते पाया, क्योंकि उन की आंखें नींद से भरी थीं। ४४ और उन्हें छोड़कर फिर चला गया, और वही बात फिर कहकर, तीसरी बार प्रार्थना की। ४५ तब उस ने चेलों के पास आकर उन से कहा; अब सोते रहो, और विश्राम करो: देखो, घड़ी आ पहुंची है, और मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया जाता है। ४६ उठो, चलें; देखो, मेरा पकड़वानेवाला निकट आ पहुंचा है॥

४७ वह यह कह ही रहा था, कि देखो, यहूदा जो बारहों में से एक था, आया, और उसके साथ महायाजकों और लोगों के पुरनियों की ओर से बड़ी भीड़, तलवारें और लाठियां लिए हुए आई। ४८ उसके पकड़वानेवाले ने उन्हें यह पता दिया था कि जिस को मैं चूम लूं वही है; उसे पकड़ लेना। ४९ और तुरन्त यीशु के पास आकर कहा; हे रब्बी नमस्कार; और उस को बहुत चूमा। ५० यीशु ने उस से कहा; हे मित्र, जिस काम के लिये तू आया है, उसे कर ले। तब उन्हों ने पास आकर यीशु पर हाथ डाले, और उसे पकड़ लिया। ५१ और देखो, यीशु के साथियों में से एक ने हाथ बढ़ाकर अपनी तलवार खींच ली और महायाजक के दास पर चलाकर उस का कान उड़ा दिया। ५२ तब यीशु ने उस से कहा; अपनी तलवार काठी में रख ले क्योंकि जो तलवार चलाते हैं, वे सब तलवार से नाश किए जाएंगे। ५३ क्या तू नहीं समझता, कि मैं अपने पिता से बिनती कर सकता हूं, और वह स्वर्गदूतों की बारह पलटन से अधिक मेरे पास अभी उपस्थित कर देगा? ५४ परन्तु पवित्र शास्त्र की वे बातें कि ऐसा ही होना अवश्य हैं, क्योंकर पूरी होंगी? ५५ उसी घड़ी यीशु ने भीड़ से कहा; क्या तुम तलवारें और लाठियां लेकर मुझे डाकू के समान पकड़ने के लिये निकले हो? मैं हर दिन मन्दिर में बैठकर उपदेश दिया करता था, और तुम ने मुझे नहीं पकड़ा। ५६ परन्तु यह सब इसलिये हुआ है, कि भविष्यद्वक्ताओं के वचन * पूरे हों: तब सब चेले उसे छोड़कर भाग गए॥

५७ और यीशु के पकड़नेवाले उस को काइफा नाम महायाजक के पास ले गए, जहां शास्त्री और पुरनिए इकट्ठे हुए थे। ५८ और पतरस दूर से उसके पीछे पीछे महायाजक के आंगन तक गया, और भीतर जाकर अन्त देखने को प्यादों के साथ बैठ गया। ५९ महायाजक और सारी महासभा यीशु को मार डालने के लिये उसके विरोध में झूठी गवाही की खोज में थे। ६० परन्तु बहुत से झूठे गवाहों के आने पर भी न पाई। ६१ अन्त में दो जनों ने आकर कहा, कि इस ने कहा है; कि मैं परमेश्वर के मन्दिर को ढा सकता हूं और उसे तीन दिन में बना सकता हूं। ६२ तब महायाजक ने खड़े होकर उस से कहा, क्या तू कोई उत्तर नहीं देता? ये लोग तेरे विरोध में क्या गवाही देते हैं? परन्तु यीशु चुप रहा: महायाजक ने उस से कहा। ६३ मैं, तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ देता हूं, कि यदि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो हम से कह दे। ६४ यीशु ने उस से कहा; तू ने आप ही कह दिया; बरन मैं

---

* यू०, पवित्रशास्त्र

तुम से यह भी कहता हूं, कि अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान* की दहिनी ओर बैठे, और आकाश के बादलों पर आते देखोगे। ६५ तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़कर कहा, इस ने परमेश्वर की निन्दा की है, अब हमें गवाहों का क्या प्रयोजन? ६६ देखो, तुम ने अभी यह निन्दा सुनी है! तुम क्या समझते हो? उन्हों ने उत्तर दिया, यह बध होने के योग्य है। ६७ तब उन्हों ने उस के मुंह पर थूका, और उसे घूंसे मारे, औरों ने थप्पड़ मार के कहा। ६८ हे मसीह, हम से भविष्यद्‌वाणी करके कह: कि किस ने तुझे मारा?

६९ और पतरस बाहर आंगन में बैठा हुआ था; कि एक लौंडी ने उसके पास आकर कहा, तू भी यीशु गलीली के साथ था। ७० उस ने सब के साम्हने यह कहकर इन्कार किया और कहा, मैं नहीं जानता तू क्या कह रही है। ७१ जब वह बाहर डेवढ़ी में चला गया, तो दूसरी ने उसे देखकर उन से जो वहां थे कहा; यह भी तो यीशु नासरी के साथ था। ७२ उस ने शपथ खाकर फिर इन्कार किया कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता। ७३ थोड़ी देर के बाद, जो वहां खड़े थे, उन्हों ने पतरस के पास आकर उस से कहा, सचमुच तू भी उन में से एक है; क्योंकि तेरी बोली तेरा भेद खोल देती है। ७४ तब वह धिक्कार देने और शपथ खाने लगा, कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता; और तुरन्त मुर्ग़ ने बांग दी। ७५ तब पतरस को यीशु की कही हुई बात स्मरण आई कि मुर्ग़ के बांग देने से पहिले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा और वह बाहर जाकर फूट फूट कर रोने लगा॥

* यू० सामर्थ।

२७ जब भोर हुई, तो सब महायाजकों और लोगों के पुरनियों ने यीशु के मार डालने की सम्मति की। २ और उन्हों ने उसे बान्धा और ले जाकर पीलातुस हाकिम के हाथ में सौंप दिया॥

३ जब उसके पकड़वानेवाले यहूदा ने देखा कि वह दोषी ठहराया गया है तो वह पछताया और वे तीस चान्दी के सिक्के महायाजकों और पुरनियों के पास फेर लाया। ४ और कहा, मैं ने निर्दोषी को घात के लिये पकड़वाकर पाप किया है? उन्हों ने कहा, हमें क्या? तू ही जान। ५ तब वह उन सिक्कों को मन्दिर* में फेंककर चला गया, और जाकर अपने आप को फांसी दी। ६ महायाजकों ने उन सिक्कों को लेकर कहा, इन्हें भण्डार में रखना उचित नहीं, क्योंकि यह लोहू का दाम है। ७ सो उन्हों ने सम्मति करके उन सिक्कों से परदेशियों के गाड़ने के लिये कुम्हार का खेत मोल ले लिया। ८ इस कारण वह खेत आज तक लोहू का खेत कहलाता है। ९ तब जो वचन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हुआ; कि उन्हों ने वे तीस सिक्के अर्थात् उस ठहराए हुए मूल्य को (जिसे इस्राएल की सन्तान में से कितनों ने ठहराया था) ले लिए। १० और जैसे प्रभु ने मुझे आज्ञा दी थी वैसे ही उन्हें कुम्हार के खेत के मूल्य में दे दिया॥

११ जब यीशु हाकिम के साम्हने खड़ा था, तो हाकिम ने उस से पूछा; कि क्या तू यहूदियों का राजा है? यीशु ने उस से कहा, तू आप ही कह रहा है। १२ जब

* यू० पवित्रस्थान।

महायाजक और पुरनिए उस पर दोष लगा रहे थे, तो उस ने कुछ उत्तर नहीं दिया। १३ इस पर पीलातुस ने उस से कहा: क्या तू नहीं सुनता, कि ये तेरे विरोध में कितनी गवाहियां दे रहे हैं? १४ परन्तु उस ने उस को एक बात का भी उत्तर नहीं दिया, यहां तक कि हाकिम को बड़ा आश्चर्य हुआ। १५ और हाकिम की यह रीति थी, कि उस पर्ब्ब में लोगों के लिये किसी एक बन्धुए को जिसे वे चाहते थे, छोड़ देता था। १६ उस समय बरअब्बा नाम उन्हीं में का एक नामी बन्धुआ था। १७ सो जब वे इकट्ठे हुए, तो पीलातुस ने उन से कहा; तुम किस को चाहते हो, कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ दूं? बरअब्बा को, या यीशु को जो मसीह कहलाता है? १८ क्योंकि वह जानता था कि उन्हों ने उसे डाह से पकड़वाया है। १९ जब वह न्याय की गद्दी पर बैठा हुआ था तो उस की पत्नी ने उसे कहला भेजा, कि तू उस धर्मी के मामले में हाथ न डालना; क्योंकि मैं ने आज स्वप्न में उसके कारण बहुत दुख उठाया है। २० महायाजकों और पुरनियों ने लोगों को उभारा, कि वे बरअब्बा को मांग लें, और यीशु को नाश कराएं। २१ हाकिम ने उन से पूछा, कि इन दोनों में से किस को चाहते हो, कि तुम्हारे लिये छोड़ दूं? उन्हों ने कहा; बरअब्बा को। २२ पीलातुस ने उन से पूछा; फिर यीशु को जो मसीह कहलाता है, क्या करूं? सब ने उस से कहा, वह क्रूस पर चढ़ाया जाए। २३ हाकिम ने कहा; क्यों उस ने क्या बुराई की है? परन्तु वे और भी चिल्ला, चिल्लाकर कहने लगे, "वह क्रूस पर चढ़ाया जाए"। २४ जब पीलातुस ने देखा, कि कुछ बन नहीं पड़ता परन्तु इस के विपरीत हुल्लड़ होता जाता है, तो उस ने पानी लेकर भीड़ के साम्हने अपने हाथ धोए, और कहा; मैं इस धर्मी के लोहू से निर्दोष हूं; तुम ही जानो। २५ सब लोगों ने उत्तर दिया, कि इस का लोहू हम पर और हमारी सन्तान पर हो। २६ इस पर उस ने बरअब्बा को उन के लिये छोड़ दिया, और यीशु को कोड़े लगवाकर सौंप दिया, कि क्रूस पर चढ़ाया जाए॥

२७ तब हाकिम के सिपाहियों ने यीशु को किले में ले जाकर सारी पलटन उसके चहुं ओर इकट्ठी की। २८ और उसके कपड़े उतारकर उसे किरमिजी बागा पहिनाया। २९ और कांटों का मुकुट गूंथकर उसके सिर पर रखा; और उसके दहिने हाथ में सरकण्डा दिया और उसके आगे घुटने टेककर उसे ठट्ठे में उड़ाने लगे, कि हे यहूदियों के राजा नमस्कार। ३० और उस पर थूका; और वही सरकण्डा लेकर उसके सिर पर मारने लगे। ३१ जब वे उसका ठट्ठा कर चुके, तो वह बागा उस पर से उतारकर फिर उसी के कपड़े उसे पहिनाए, और क्रूस पर चढ़ाने के लिये ले चले॥

३२ बाहर जाते हुए उन्हें शमौन नाम एक कुरेनी मनुष्य मिला, उन्होंने उसे बेगार में पकड़ा कि उसका क्रूस उठा ले चले। ३३ और उस स्थान पर जो गुलगुता नाम की जगह अर्थात् खोपड़ी का स्थान कहलाता है पहुंचकर। ३४ उन्हों ने पित्त मिलाया हुआ दाखरस उसे पीने को दिया, परन्तु उस ने चखकर पीना न चाहा। ३५ तब उन्हों ने उसे क्रूस पर चढ़ाया; और चिट्ठियां डालकर उसके कपड़े बांट लिए। ३६ और वहां बैठकर उसका पहरा देने लगे। ३७ और उसका दोषपत्र, उसके

सिर के ऊपर लगाया, कि "**यह यहूदियों का राजा यीशु है**"। ३८ तब उसके साथ दो डाकू एक दहिने और एक बाएं क्रूसों पर चढ़ाए गए। ३९ और आने जाने वाले सिर हिला हिलाकर उस की निन्दा करते थे। ४० और यह कहते थे, कि हे मन्दिर के ढानेवाले और तीन दिन में बनानेवाले, अपने आप को तो बचा; यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से उतर आ। ४१ इसी रीति से महायाजक भी शास्त्रियों और पुरनियों समेत ठट्ठा कर करके कहते थे, इस ने औरों को बचाया, और अपने को नहीं बचा सकता। ४२ यह तो "इस्राएल का राजा है"। अब क्रूस पर से उतर आए, तो हम उस पर विश्वास करें। ४३ उस ने परमेश्वर पर भरोसा रखा है, यदि वह इस को चाहता है, तो अब इसे छुड़ा ले, क्योंकि इस ने कहा था, कि "मैं परमेश्वर का पुत्र हूं"। ४४ इसी प्रकार डाकू भी जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे उस की निन्दा करते थे॥

४५ दोपहर से लेकर तीसरे पहर तक उस सारे देश में अन्धेरा छाया रहा। ४६ तीसरे पहर के निकट यीशु ने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, एली, एली, लमा शबक्तनी? अर्थात् हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया? ४७ जो वहां खड़े थे, उन में से कितनों ने यह सुनकर कहा, वह तो एलिय्याह को पुकारता है। ४८ उन में से एक तुरन्त दौड़ा, और स्पंज लेकर सिरके में डुबोया, और सरकण्डे पर रखकर उसे चुसाया। ४९ औरों ने कहा, रह जाओ, देखें, एलिय्याह उसे बचाने आता है कि नहीं। ५० तब यीशु ने फिर बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण * छोड़ दिए। ५१ और देखो, मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया: और धरती डोल गई और चटानें तड़क गईं। ५२ और कब्रें खुल गईं; और सोए हुए पवित्र लोगों की बहुत लोथें जी उठीं। ५३ और उसके जी उठने के बाद वे कब्रों में से निकलकर पवित्र नगर में गए, और बहुतों को दिखाई दिए। ५४ तब सूबेदार और जो उसके साथ यीशु का पहरा दे रहे थे, भुईंडोल और जो कुछ हुआ था, देखकर अत्यन्त डर गए, और कहा, सचमुच "यह परमेश्वर का पुत्र था"। ५५ वहां बहुत सी स्त्रियां जो गलील से यीशु की सेवा करती हुई उसके साथ आई थीं, दूर से यह देख रही थीं। ५६ उन में मरियम मगदलीनी और याकूब और योसेस की माता मरियम और जब्दी के पुत्रों की माता थीं॥

५७ जब सांझ हुई तो यूसुफ नाम अरिमतियाह का एक धनी मनुष्य जो आप ही यीशु का चेला था आया: उस ने पीलातुस के पास जाकर यीशु की लोथ मांगी। ५८ इस पर पीलातुस ने दे देने की आज्ञा दी। ५९ यूसुफ ने लोथ को लेकर उसे उज्ज्वल चादर में लपेटा। ६० और उसे अपनी नई कब्र में रखा, जो उस ने चटान में खुदवाई थी, और कब्र के द्वार पर बड़ा पत्थर लुढ़काकर चला गया। ६१ और मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम वहां कब्र के साम्हने बैठी थीं॥

६२ दूसरे दिन जो तैयारी के दिन के बाद का दिन था, महायाजकों और फरीसियों ने पीलातुस के पास इकट्ठे होकर कहा। ६३ हे महाराज, हमें स्मरण है,

---

* यू० आत्मा।

कि उस भरमानेवाले ने अपने जीते जी कहा था, कि मैं तीन दिन के बाद जी उठूंगा। ६४ सो आज्ञा दे कि तीसरे दिन तक कब्र की रखवाली की जाए, ऐसा न हो कि उसके चेले आकर उसे चुरा ले जाएं, और लोगों से कहने लगें, कि वह मरे हुओं में से जी उठा है : तब पिछला धोखा पहिले से भी बुरा होगा। ६५ पीलातुस ने उन से कहा, तुम्हारे पास पहरुए तो हैं जाओ, अपनी समझ के अनुसार रखवाली करो। ६६ सो वे पहरुओं को साथ ले कर गए, और पत्थर पर मुहर लगाकर कब्र की रखवाली की॥

२८ सब्त के दिन के बाद सप्ताह के पहिले दिन पह फटते ही मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने आईं। २ और देखो एक बड़ा भुईंडोल हुआ, क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा, और पास आकर उसने पत्थर को लुढ़का दिया, और उस पर बैठ गया। ३ उसका रूप बिजली का सा और उसका वस्त्र पाले की नाईं उज्ज्वल था। ४ उसके भय से पहरुए कांप उठे, और मृतक समान हो गए। ५ स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, कि तुम मत डरो : मैं जानता हूं कि तुम यीशु को जो क्रूस पर चढ़ाया गया था ढूंढ़ती हो। ६ वह यहां नहीं है, परन्तु अपने वचन के अनुसार जी उठा है; आओ, यह स्थान देखो, जहां प्रभु पड़ा था। ७ और शीघ्र जाकर उसके चेलों से कहो, कि वह मृतकों में से जी उठा है; और देखो वह तुम से पहिले गलील को जाता है, वहां उसका दर्शन पाओगे, देखो, मैं ने तुम से कह दिया। ८ और वे भय और बड़े आनन्द के साथ कब्र से शीघ्र लौटकर उसके चेलों को समाचार देने के लिये दौड़ गईं। ९ और देखो, यीशु उन्हें मिला और कहा; 'सलाम' और उन्हों ने पास आकर और उसके पांव पकड़कर उसको दण्डवत किया। १० तब यीशु ने उन से कहा, मत डरो; मेरे भाइयों से जाकर कहो, कि गलील को चले जाएं वहां मुझे देखेंगे॥

११ वे जा ही रही थीं, कि देखो, पहरुओं में से कितनों ने नगर में आकर पूरा हाल महायाजकों से कह सुनाया। १२ तब उन्हों ने पुरनियों के साथ इकट्ठे होकर सम्मति की, और सिपाहियों को बहुत चान्दी देकर कहा। १३ कि यह कहना, कि रात को जब हम सो रहे थे, तो उसके चेले आकर उसे चुरा ले गए। १४ और यदि यह बात हाकिम के कान तक पहुंचेगी, तो हम उसे समझा लेंगे और तुम्हें जोखिम से बचा लेंगे। १५ सो उन्हों ने रुपए लेकर जैसा सिखाए गए थे, वैसा ही किया; और यह बात आज तक यहूदियों में प्रचलित है॥

१६ और ग्यारह चेले गलील में उस पहाड़ पर गए, जिसे यीशु ने उन्हें बताया था। १७ और उन्हों ने उसके दर्शन पाकर उसे प्रणाम किया, पर किसी किसी को सन्देह हुआ। १८ यीशु ने उन के पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। १९ इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। २० और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ : और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं॥

मरकुस रचित सुसमाचार

१ परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार का आरम्भ। २ जैसे यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक में लिखा है कि देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं, जो तेरे लिये मार्ग सुधारेगा। ३ जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द सुनाई दे रहा है कि प्रभु का मार्ग तैयार करो, और उस की सड़कें सीधी करो। ४ यूहन्ना आया, जो जंगल में बपतिस्मा देता, और पापों की क्षमा के लिये मनफिराव के बपतिस्मा का प्रचार करता था। ५ और सारे यहूदिया देश के, और यरूशलेम के सब रहनेवाले निकलकर उसके पास गए, और अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उस से बपतिस्मा लिया। ६ यूहन्ना ऊंट के रोम का वस्त्र पहिने और अपनी कमर में चमड़े का पटुका बान्धे रहता था और टिड्डियां और बन मधु खाया करता था। ७ और यह प्रचार करता था, कि मेरे बाद वह आने वाला है, जो मुझ से शक्तिमान है; मैं इस योग्य नहीं कि झुककर उसके जूतों का बन्ध खोलूं। ८ मैं ने तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा दिया है पर वह तुम्हें पवित्र आत्मा से * बपतिस्मा देगा।।

९ उन दिनों में यीशु ने गलील के नासरत से आकर, यरदन में यूहन्ना से बपतिस्मा लिया। १० और जब वह पानी से निकलकर ऊपर आया, तो तुरन्त उस ने आकाश को खुलते और आत्मा को कबूतर की नाईं अपने ऊपर उतरते देखा। ११ और यह आकाशवाणी हुई, कि तू मेरा प्रिय पुत्र है, तुझ से मैं प्रसन्न हूं।।

१२ तब आत्मा ने तुरन्त उस को जंगल की ओर भेजा। १३ और जंगल में चालीस दिन तक शैतान ने उस की परीक्षा की; और वह बन पशुओं के साथ रहा; और स्वर्गदूत उस की सेवा करते रहे।।

१४ यूहन्ना के पकड़वाए जाने के बाद यीशु ने गलील में आकर परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया। १५ और कहा, समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो।।

१६ गलील की झील के किनारे किनारे जाते हुए, उस ने शमौन और उसके भाई अन्द्रियास को झील में जाल डालते देखा; क्योंकि वे मछुवे थे। १७ और यीशु ने उन से कहा; मेरे पीछे चले आओ; मैं तुम को मनुष्यों के मछुवे बनाऊंगा। १८ वे तुरन्त जालों को छोड़कर उसके पीछे हो लिए। १९ और कुछ आगे बढ़कर, उस ने जब्दी के पुत्र याकूब, और उसके भाई यूहन्ना को, नाव पर जालों को सुधारते देखा। २० उस ने तुरन्त उन्हें बुलाया; और वे अपने पिता जब्दी को मजदूरों के साथ नाव पर छोड़कर, उसके पीछे चले गए।।

२१ और वे कफरनहूम में आए, और वह तुरन्त सब्त के दिन सभा के घर में जाकर उपदेश करने लगा। २२ और

* यू० में।

लोग उसके उपदेश से चकित हुए; क्योंकि वह उन्हें शास्त्रियों की नाईं नहीं, परन्तु अधिकारी की नाईं उपदेश देता था। २३ और उसी समय, उन की सभा के घर में एक मनुष्य था, जिस में एक अशुद्ध आत्मा थी। २४ उस ने चिल्लाकर कहा, हे यीशु नासरी, हमें तुझ से क्या काम? क्या तू हमें नाश करने आया है? मैं तुझे जानता हूं, तू कौन है? परमेश्वर का पवित्र जन! २५ यीशु ने उसे डांटकर कहा, चुप रह; और उस में से निकल जा। २६ तब अशुद्ध आत्मा उस को मरोड़कर, और बड़े शब्द से चिल्लाकर उस में से निकल गई। २७ इस पर सब लोग आश्चर्य करते हुए आपस में वाद-विवाद करने लगे कि यह क्या बात है? यह तो कोई नया उपदेश है! वह अधिकार के साथ अशुद्ध आत्माओं को भी आज्ञा देता है, और वे उस की आज्ञा मानती हैं। २८ सो उसका नाम तुरन्त गलील के आस पास के सारे देश में हर जगह फैल गया॥

२९ और वह तुरन्त आराधनालय में से निकलकर, याकूब और यूहन्ना के साथ शमौन और अन्द्रियास के घर आया। ३० और शमौन की सास ज्वर से पीड़ित थी, और उन्हों ने तुरन्त उसके विषय में उस से कहा। ३१ तब उस ने पास जाकर उसका हाथ पकड़ के उसे उठाया; और उसका ज्वर उस पर से उतर गया, और वह उन की सेवा-टहल करने लगी॥

३२ सन्ध्या के समय जब सूर्य डूब गया तो लोग सब बीमारों को और उन्हें जिन में दुष्टात्माएं थीं उसके पास लाए। ३३ और सारा नगर द्वार पर इकट्ठा हुआ। ३४ और उस ने बहुतों को जो नाना प्रकार की बीमारियों से दुखी थे, चंगा किया; और बहुत से दुष्टात्माओं को निकाला; और दुष्टात्माओं को बोलने न दिया, क्योंकि वे उसे पहचानती थीं॥

३५ और भोर को दिन निकलने से बहुत पहिले, वह उठकर निकला, और एक जंगली स्थान में गया और वहां प्रार्थना करने लगा। ३६ तब शमौन और उसके साथी उस की खोज में गए। ३७ जब वह मिला, तो उस से कहा; कि सब लोग तुझे ढूंढ़ रहे हैं। ३८ उस ने उन से कहा, आओ; हम और कहीं आस पास की बस्तियों में जाएं, कि मैं वहां भी प्रचार करूं, क्योंकि मैं इसी लिये निकला हूं। ३९ सो वह सारे गलील में उन की सभाओं में जा जाकर प्रचार करता और दुष्टात्माओं को निकालता रहा॥

४० और एक कोढ़ी ने उसके पास आकर, उस से विनती की, और उसके साम्हने घुटने टेककर, उस से कहा; यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है। ४१ उस ने उस पर तरस खाकर हाथ बढ़ाया, और उसे छूकर कहा; मैं चाहता हूं तू शुद्ध हो जा। ४२ और तुरन्त उसका कोढ़ जाता रहा, और वह शुद्ध हो गया। ४३ तब उस ने उसे चिताकर तुरन्त विदा किया। ४४ और उस से कहा, देख, किसी से कुछ मत कहना, परन्तु जाकर अपने आप को याजक को दिखा, और अपने शुद्ध होने के विषय में जो कुछ मूसा ने ठहराया है उसे भेंट चढ़ा, कि उन पर गवाही हो। ४५ परन्तु वह बाहर जाकर इस बात को बहुत प्रचार करने और यहां तक फैलाने लगा, कि यीशु फिर खुल्लमखुल्ला नगर मे न जा सका, परन्तु बाहर जंगली स्थानों में रहा; और चहुंओर से लोग उसके पास आते रहे॥

२ कई दिन के बाद वह फिर कफरनहूम में आया और सुना गया, कि वह घर में है। २ फिर इतने लोग इकट्ठे हुए, कि द्वार के पास भी जगह नहीं मिली; और वह उन्हें वचन सुना रहा था। ३ और लोग एक झोले के मारे हुए को चार मनुष्यों से उठवाकर उसके पास ले आए। ४ परन्तु जब वे भीड़ के कारण उसके निकट न पहुंच सके, तो उन्हों ने उस छत को जिस के नीचे वह था, खोल दिया, और जब उसे उधेड़ चुके, तो उस खाट को जिस पर झोले का मारा हुआ पड़ा था, लटका दिया। ५ यीशु ने, उन का विश्वास देखकर, उस झोले के मारे हुए से कहा; हे पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए। ६ तब कई एक शास्त्री जो वहां बैठे थे, अपने अपने मन में बिचार करने लगे। ७ कि यह मनुष्य क्यों ऐसा कहता है? यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है, परमेश्वर को छोड़ और कौन पाप क्षमा कर सकता है? ८ यीशु ने तुरन्त अपनी आत्मा में जान लिया, कि वे अपने अपने मन में ऐसा बिचार कर रहे हैं, और उन से कहा, तुम अपने अपने मन में यह बिचार क्यों कर रहे हो? ९ सहज क्या है? क्या झोले के मारे से यह कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए, या यह कहना, कि उठ अपनी खाट उठा कर चल फिर? १० परन्तु जिस से तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है (उस ने उस झोले के मारे हुए से कहा)। ११ मैं तुझ से कहता हूं; उठ, अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा। १२ और वह उठा, और तुरन्त खाट उठाकर और सब के साम्हने से निकलकर चला गया, इस पर सब चकित हुए, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, कि हम ने ऐसा कभी नहीं देखा॥

१३ वह फिर निकलकर झील के किनारे गया, और सारी भीड़ उसके पास आई, और वह उन्हें उपदेश देने लगा। १४ जाते हुए उस ने हलफई के पुत्र लेवी को चुङ्गी की चौकी पर बैठे देखा, और उस से कहा; मेरे पीछे हो ले। १५ और वह उठकर, उसके पीछे हो लिया: और वह उसके घर में भोजन करने बैठा, और बहुत से चुङ्गी लेनेवाले और पापी यीशु और उसके चेलों के साथ भोजन करने बैठे; क्योंकि वे बहुत से थे, और उसके पीछे हो लिए थे। १६ और शास्त्रियों और फरीसियों ने यह देखकर, कि वह तो पापियों और चुङ्गी लेनेवालों के साथ भोजन कर रहा है, उसके चेलों से कहा; वह तो चुङ्गी लेनेवालों और पापियों के साथ खाता पीता है!! १७ यीशु ने यह सुनकर, उन से कहा, भले चंगों को वैद्य की आवश्यकता नहीं, परन्तु बीमारों को है: मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को बुलाने आया हूं॥

१८ यूहन्ना के चेले, और फरीसी उपवास करते थे; सो उन्हों ने आकर उस से यह कहा; कि यूहन्ना के चेले और फरीसियों के चेले क्यों उपवास रखते हैं? परन्तु तेरे चेले उपवास नहीं रखते। १९ यीशु ने उन से कहा, जब तक दूल्हा बरातियों के साथ रहता है क्या वे उपवास कर सकते हैं? सो जब तक दूल्हा उन के साथ है, तब तक वे उपवास नहीं कर सकते। २० परन्तु वे दिन आएंगे, कि दूल्हा उन से अलग किया जाएगा; उस समय वे उपवास करेंगे। २१ कोरे कपड़े का पैवन्द पुराने पहिरावन पर कोई नहीं लगाता; नहीं तो वह पैवन्द उस में से कुछ खींच लेगा, अर्थात्

नया, पुराने से, और वह और फट जाएगा। २२ नये दाखरस को पुरानी मशकों में कोई नहीं रखता, नहीं तो दाखरस मश्कों को फाड़ देगा, और दाखरस और मश्कें दोनों नष्ट हो जाएंगी; परन्तु दाख का नया रस नई मश्कों में भरा जाता है॥

२३ और ऐसा हुआ कि वह सब्त के दिन खेतों में से होकर जा रहा था; और उसके चेले चलते हुए बालें तोड़ने लगे। २४ तब फरीसियों ने उस से कहा, देख; ये सब्त के दिन वह काम क्यों करते हैं जो उचित नहीं? २५ उस ने उन से कहा, क्या तुम ने कभी नहीं पढ़ा, कि जब दाऊद को आवश्यकता हुई और जब वह और उसके साथी भूखे हुए, तब उस ने क्या किया था? २६ उस ने क्योंकर अबियातार महायाजक के समय, परमेश्वर के भवन में जाकर, भेंट की रोटियां खाईं, जिसका खाना याजकों को छोड़ और किसी को भी उचित नहीं, और अपने साथियों को भी दीं? २७ और उस ने उन से कहा; सब्त का दिन मनुष्य के लिये बनाया गया है, न कि मनुष्य सब्त के दिन के लिये। २८ इसलिये मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी स्वामी है॥

३ और वह आराधनालय में फिर गया; और वहां एक मनुष्य था, जिस का हाथ सूख गया था। २ और वे उस पर दोष लगाने के लिये उस की घात में लगे हुए थे, कि देखें, वह सब्त के दिन में उसे चंगा करता है कि नहीं। ३ उस ने सूखे हाथवाले मनुष्य से कहा; बीच में खड़ा हो। ४ और उन से कहा; क्या सब्त के दिन भला करना उचित है या बुरा करना, प्राण को बचाना या मारना? पर वे चुप रहे। ५ और उस ने उन के मन की कठोरता से उदास होकर, उन को क्रोध से चारों ओर देखा, और उस मनुष्य से कहा, अपना हाथ बढ़ा उस ने बढ़ाया, और उसका हाथ अच्छा हो गया। ६ तब फरीसी बाहर जाकर तुरन्त हेरोदियों के साथ उसके विरोध में सम्मति करने लगे, कि उसे किस प्रकार नाश करें॥

७ और यीशु अपने चेलों के साथ झील की ओर चला गया: और गलील से एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली। ८ और यहूदिया, और यरूशलेम और इदूमिया से, और यरदन के पार, और सूर और सैदा के आसपास से एक बड़ी भीड़ यह सुनकर, कि वह कैसे अचम्भे के काम करता है, उसके पास आई। ९ और उस ने अपने चेलों से कहा, भीड़ के कारण एक छोटी नाव मेरे लिये तैयार रहे ताकि वे मुझे दबा न सकें। १० क्योंकि उस ने बहुतों को चंगा किया था; इसलिये जितने लोग रोग से ग्रसित थे, उसे छूने के लिये उस पर गिरे पड़ते थे। ११ और अशुद्ध आत्माएं भी, जब उसे देखती थीं, तो उसके आगे गिर पड़ती थीं, और चिल्लाकर कहती थीं कि तू परमेश्वर का पुत्र है। १२ और उस ने उन्हें बहुत चिताया, कि मुझे प्रगट न करना॥

१३ फिर वह पहाड़ पर चढ़ गया, और जिन्हें वह चाहता था उन्हें अपने पास बुलाया; और वे उसके पास चले आए। १४ तब उस ने बारह पुरुषों को नियुक्त किया, कि वे उसके साथ साथ रहें, और वह उन्हें भेजे, कि प्रचार करें। १५ और दुष्टात्माओं के निकालने का अधिकार रखें। १६ और वे ये हैं: शमौन जिस का नाम उस ने पतरस रखा। १७ और जब्दी का पुत्र याकूब, और याकूब का भाई यूहन्ना,

जिनका नाम उस ने बूग्रनरगिस, ग्रर्थात् गर्जन के पुत्र रखा। १८ ग्रौर ग्रन्द्रियास, ग्रौर फिलिप्पुस, ग्रौर बरतुलमै, ग्रौर मत्ती, ग्रौर थोमा, ग्रौर हलफई का पुत्र याकूब, ग्रौर तद्दी, ग्रौर शमौन कनानी। १९ ग्रौर यहूदा इस्करियोती, जिस ने उसे पकड़वा भी दिया॥

२० ग्रौर वह घर में ग्राया : ग्रौर ऐसी भीड़ इकट्ठी हो गई, कि वे रोटी भी न खा सके। २१ जब उसके कुटुम्बियों ने यह सुना, तो उसे पकड़ने के लिये निकले; क्योंकि कहते थे, कि उसका चित्त ठिकाने नहीं है। २२ ग्रौर शास्त्री जो यरूशलेम से ग्राए थे, यह कहते थे, कि उस में शैतान * है, ग्रौर यह भी, कि वह दुष्टात्माग्रों के सरदार की सहायता से दुष्टात्माग्रों को निकालता है। २३ ग्रौर वह उन्हें पास बुलाकर, उन से दृष्टान्तों में कहने लगा; शैतान क्योंकर शैतान को निकाल सकता है? २४ ग्रौर यदि किसी राज्य में फूट पड़े, तो वह राज्य क्योंकर स्थिर रह सकता है? २५ ग्रौर यदि किसी घर में फूट पड़े, तो वह घर क्योंकर स्थिर रह सकेगा? २६ ग्रौर यदि शैतान ग्रपना ही विरोधी होकर ग्रपने में फूट डाले, तो वह क्योंकर बना रह सकता है? उसका तो ग्रन्त ही हो जाता है। २७ किन्तु कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल लूट नहीं सकता, जब तक कि वह पहिले उस बलवन्त को न बान्ध ले; ग्रौर तब उसके घर को लूट लेगा। २८ मैं तुम से सच कहता हूं, कि मनुष्यों की सन्तान के सब पाप ग्रौर निन्दा जो वे करते हैं, क्षमा की जाएगी। २९ परन्तु जो कोई पवित्रात्मा के विरुद्ध निन्दा करे, वह कभी भी क्षमा न किया जाएगा : बरन वह ग्रनन्त पाप का ग्रपराधी ठहरता है। ३० क्योंकि वे यह कहते थे, कि उस में ग्रशुद्ध ग्रात्मा है॥

३१ ग्रौर उस की माता ग्रौर उसके भाई ग्राए, ग्रौर बाहर खड़े होकर उसे बुलवा भेजा। ३२ ग्रौर भीड़ उसके ग्रासपास बैठी थी, ग्रौर उन्हों ने उस से कहा; देख, तेरी माता ग्रौर तेरे भाई बाहर तुझे ढूंढ़ते हैं। ३३ उस ने उन्हें उत्तर दिया, कि मेरी माता ग्रौर मेरे भाई कौन हैं? ३४ ग्रौर उन पर जो उसके ग्रास-पास बैठे थे, दृष्टि करके कहा, देखो, मेरी माता ग्रौर मेरे भाई यह हैं। ३५ क्योंकि जो कोई परमेश्वर की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई, ग्रौर बहिन ग्रौर माता है॥

४ वह फिर झील के किनारे उपदेश देने लगा : ग्रौर ऐसी बड़ी भीड़ उसके पास इकट्ठी हो गई, कि वह झील में एक नाव पर चढ़कर बैठ गया ग्रौर सारी भीड़ भूमि पर झील के किनारे खड़ी रही। २ ग्रौर वह उन्हें दृष्टान्तों में बहुत सी बातें सिखाने लगा, ग्रौर ग्रपने उपदेश में उन से कहा। ३ सुनो : देखो, एक बोनेवाला, बीज बोने के लिये निकला! ४ ग्रौर बोते समय कुछ तो मार्ग के किनारे गिरा ग्रौर पक्षियों ने ग्राकर उसे चुग लिया। ५ ग्रौर कुछ पत्थरीली भूमि पर गिरा जहां उस को बहुत मिट्टी न मिली, ग्रौर गहरी मिट्टी न मिलने के कारण जल्द उग ग्राया। ६ ग्रौर जब सूर्य निकला, तो जल गया, ग्रौर जड़ न पकड़ने के कारण सूख गया। ७ ग्रौर कुछ तो झाड़ियों में गिरा, ग्रौर झाड़ियों ने बढ़कर उसे दबा लिया, ग्रौर वह फल न

* यू० बालजबूल।

लाया। ८ परन्तु कुछ अच्छी भूमि पर गिरा, और वह उगा, और बढ़कर फलवन्त हुआ; और कोई तीस गुणा, कोई साठ गुणा और कोई सौ गुणा फल लाया। ९ और उस ने कहा; जिस के पास सुनने के लिये कान हों वह सुन ले।।

१० जब वह अकेला रह गया, तो उसके साथियों ने उन बारह समेत उस से इन दृष्टान्तों के विषय में पूछा। ११ उस ने उन से कहा, तुम को तो परमेश्वर के राज्य के भेद की समझ * दी गई है, परन्तु बाहर-वालों के लिये सब बातें दृष्टान्तों में होती हैं। १२ इसलिये कि वे देखते हुए देखें और उन्हें सुझाई न पड़े और सुनते हुए सुनें भी और न समझें; ऐसा न हो कि वे फिरें, और क्षमा किए जाएं। १३ फिर उस ने उन से कहा; क्या तुम यह दृष्टान्त नहीं समझते? तो फिर और सब दृष्टान्तों को क्योंकर समझोगे? १४ बोनेवाला वचन बोता है। १५ जो मार्ग के किनारे के हैं जहां वचन बोया जाता है, ये वे हैं, कि जब उन्हों ने सुना, तो शैतान तुरन्त आकर वचन को जो उन में बोया गया था, उठा ले जाता है। १६ और वैसे ही जो पत्थरीली भूमि पर बोए जाते हैं, ये वे हैं, कि जो वचन को सुनकर तुरन्त आनन्द से ग्रहण कर लेते हैं। १७ परन्तु अपने भीतर जड़ न रखने के कारण वे थोड़े ही दिनों के लिये रहते हैं; इस के बाद जब वचन के कारण उन पर क्लेश या उपद्रव होता है, तो वे तुरन्त ठोकर खाते हैं। १८ और जो झाड़ियों में बोए गए ये वे हैं जिन्हों ने वचन सुना। १९ और संसार की चिन्ता, और धन का धोखा, और और वस्तुओं का लोभ उन में समाकर वचन को दबा देता है। और वह निष्फल रह जाता है। २० और जो अच्छी भूमि में बोए गए, ये वे हैं, जो वचन सुनकर ग्रहण करते और फल लाते हैं, कोई तीस गुणा, कोई साठ गुणा, और कोई सौ गुणा।।

२१ और उस ने उन से कहा; क्या दिये को इसलिये लाते हैं कि पैमाने * या खाट के नीचे रखा जाए? क्या इसलिये नहीं, कि दीवट पर रखा जाए? २२ क्योंकि कोई वस्तु छिपी नहीं, परन्तु इसलिये कि प्रगट हो जाए; २३ और न कुछ गुप्त है. पर इसलिये कि प्रगट हो जाए। यदि किसी के सुनने के कान हों, तो सुन ले। २४ फिर उस ने उन से कहा; चौकस रहो, कि क्या सुनते हो? जिस नाप से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा, और तुम को अधिक दिया जाएगा। २५ क्योंकि जिस के पास है, उस को दिया जाएगा; परन्तु जिस के पास नहीं है उस से वह भी जो उसके पास है; ले लिया जाएगा।।

२६ फिर उस ने कहा; परमेश्वर का राज्य ऐसा है, जैसे कोई मनुष्य भूमि पर बीज छींटे। २७ और रात को सोए, और दिन को जागे और वह बीज ऐसे उगे और बढ़े कि वह न जाने। २८ पृथ्वी आप से आप फल लाती है पहिले अंकुर, तब बाल, और तब बालों में तैयार दाना। २९ परन्तु जब दाना पक जाता है, तब वह तुरन्त हंसिया लगाता है, क्योंकि कटनी आ पहुंची है।।

३० फिर उस ने कहा, हम परमेश्वर के राज्य की उपमा किस से दें, और किस

* मूल में, का भेद दिया गया।

* एक बरतन जिस में डेढ़ मन अनाज नापा जाता है।

दृष्टान्त से उसका वर्णन करें? ३१ वह राई के दाने के समान है; कि जब भूमि में बोया जाता है तो भूमि के सब बीजों से छोटा होता है। ३२ परन्तु जब बोया गया, तो उगकर सब साग पात से बड़ा हो जाता है, और उसकी ऐसी बड़ी डालियां निकलती हैं, कि आकाश के पक्षी उसकी छाया में बसेरा कर सकते हैं॥

३३ और वह उन्हें इस प्रकार के बहुत से दृष्टान्त दे देकर उन की समझ के अनुसार वचन सुनाता था। ३४ और बिना दृष्टान्त कहे उन से कुछ भी नहीं कहता था; परन्तु एकान्त में वह अपने निज चेलों को सब बातों का अर्थ बताता था॥

३५ उसी दिन जब सांझ हुई, तो उस ने उन से कहा; आओ, हम पार चलें। ३६ और वे भीड़ को छोड़कर जैसा वह था, वैसा ही उसे नाव पर साथ ले चले; और उसके साथ, और भी नावें थीं। ३७ तब बड़ी आन्धी आई, और लहरें नाव पर यहां तक लगीं, कि वह अब पानी से भरी जाती थी। ३८ और वह आप पिछले भाग में गद्दी पर सो रहा था; तब उन्हों ने उसे जगाकर उस से कहा; हे गुरु, क्या तुझे चिन्ता नहीं, कि हम नाश हुए जाते है? ३९ तब उस ने उठकर आन्धी को डांटा, और पानी से कहा; "शान्त रह, थम जा": और आन्धी थम गई और बड़ा चैन हो गया। ४० और उन से कहा; तुम क्यों डरते हो? क्या तुम्हें अब तक विश्वास नहीं? ४१ और वे बहुत ही डर गए और आपस में बोले; यह कौन है, कि आन्धी और पानी भी उस की आज्ञा मानते हैं?

५ और वे झील के पार गिरासेनियों के देश में पहुंचे। २ और जब वह नाव पर से उतरा तो तुरन्त एक मनुष्य जिस में अशुद्ध आत्मा थी कब्रों से निकलकर उसे मिला। ३ वह कब्रों में रहा करता था। और कोई उसे सांकलों से भी न बान्ध सकता था। ४ क्योंकि वह बार बार बेड़ियों और सांकलों से बान्धा गया था, पर उस ने सांकलों को तोड़ दिया, और बेड़ियों के टुकड़े टुकड़े कर दिए थे, और कोई उसे वश में नहीं कर सकता था। ५ वह लगातार रात-दिन कब्रों और पहाड़ों में चिल्लाता, और अपने को पत्थरों से घायल करता था। ६ वह यीशु को दूर ही से देखकर दौड़ा, और उसे प्रणाम किया। ७ और ऊंचे शब्द से चिल्लाकर कहा; हे यीशु, परमप्रधान परमेश्वर के पुत्र, मुझे तुझ से क्या काम? मैं तुझे परमेश्वर की शपथ देता हूं, कि मुझे पीड़ा न दे। ८ क्योंकि उस ने उस से कहा था, हे अशुद्ध आत्मा, इस मनुष्य में से निकल आ। ९ उस ने उस से पूछा; तेरा क्या नाम है? उस ने उस से कहा; मेरा नाम सेना * है; क्योंकि हम बहुत हैं। १० और उस ने उस से बहुत बिनती की, हमें इस देश से बाहर न भेज। ११ वहां पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था। १२ और उन्हों ने उस से बिनती करके कहा, कि हमें उन सूअरों में भेज दे, कि हम उन के भीतर जाएं। १३ सो उस ने उन्हें आज्ञा दी और अशुद्ध आत्मा निकलकर सूअरों के भीतर पैठ गई और झुण्ड, जो कोई दो हजार का था, कड़ाड़े पर से झपटकर झील में जा पड़ा, और डूब मरा। १४ और उन के चरवाहों ने भागकर नगर और गांवों में समाचार सुनाया।

* यू० लिगियोन अर्थात् ६,००० सिपाहियों की सेना।

१५ और जो हुआ था, लोग उसे देखने आए। और यीशु के पास आकर, वे उस को जिस में दुष्टात्माएं थीं, अर्थात् जिस में सेना समाई थी, कपड़े पहिने और सचेत बैठे देखकर, डर गए। १६ और देखनेवालों ने उसका जिस में दुष्टात्माएं थीं, और सूअरों का पूरा हाल, उन को कह सुनाया। १७ और वे उस से बिनती कर के कहने लगे, कि हमारे सिवानों से चला जा। १८ और जब वह नाव पर चढ़ने लगा, तो वह जिस में पहिले दुष्टात्माएं थीं, उस से बिनती करने लगा, कि मुझे अपने साथ रहने दे। १९ परन्तु उस ने उसे आज्ञा न दी, और उस से कहा, अपने घर जाकर अपने लोगों को बता, कि तुझ पर दया करके प्रभु ने तेरे लिये कैसे बड़े काम किए हैं। २० वह जाकर दिकपुलिस में इस बात का प्रचार करने लगा, कि यीशु ने मेरे लिये कैसे बड़े काम किए; और सब अचम्भा करते थे।।

२१ जब यीशु फिर नाव से पार गया, तो एक बड़ी भीड़ उसके पास इकट्ठी हो गई; और वह झील के किनारे था। २२ और याईर नाम आराधनालय के सरदारों में से एक आया, और उसे देखकर, उसके पांवों पर गिरा। २३ और उस ने यह कहकर बहुत बिनती की, कि मेरी छोटी बेटी मरने पर है: तू आकर उस पर हाथ रख, कि वह चंगी होकर जीवित रहे। २४ तब वह उसके साथ चला; और बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली, यहां तक कि लोग उस पर गिरे पड़ते थे।।

२५ और एक स्त्री, जिस को बारह वर्ष से लोहू बहने का रोग था। २६ और जिस ने बहुत वैद्यों से बड़ा दुख उठाया और अपना सब माल व्यय करने पर भी कुछ लाभ न उठाया था, परन्तु और भी रोगी हो गई थी। २७ यीशु की चर्चा सुनकर, भीड़ में उसके पीछे से आई, और उसके वस्त्र को छू लिया। २८ क्योंकि वह कहती थी, यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूंगी, तो चंगी हो जाऊंगी। २९ और तुरन्त उसका लोहू बहना बन्द हो गया; और उस ने अपनी देह में जान लिया, कि मैं उस बीमारी से अच्छी हो गई। ३० यीशु ने तुरन्त अपने में जान लिया, कि मुझ में से सामर्थ निकली है, और भीड़ में पीछे फिरकर पूछा; मेरा वस्त्र किस ने छूआ? ३१ उसके चेलों ने उस से कहा; तू देखता है, कि भीड़ तुझ पर गिरी पड़ती है, और तू कहता है; कि किस ने मुझे छूआ? ३२ तब उस ने उसे देखने के लिये जिस ने यह काम किया था, चारों ओर दृष्टि की। ३३ तब वह स्त्री यह जानकर, कि मेरी कैसी भलाई हुई है, डरती और कांपती हुई आई, और उसके पांवों पर गिरकर, उस से सब हाल सच सच कह दिया। ३४ उस ने उस से कहा; पुत्री तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है: कुशल से जा, और अपनी इस बीमारी से बची रह।।

३५ वह यह कह ही रहा था, कि आराधनालय के सरदार के घर से लोगों ने आकर कहा, कि तेरी बेटी तो मर गई; अब गुरु को क्यों दुख देता है? ३६ जो बात वे कह रहे थे, उस को यीशु ने अनसुनी करके, आराधनालय के सरदार से कहा; मत डर; केवल विश्वास रख। ३७ और उस ने पतरस और याकूब और याकूब के भाई यूहन्ना को छोड़, और किसी को अपने साथ आने न दिया। ३८ और आराधनालय के सरदार के घर में पहुंचकर, उस ने लोगों को बहुत रोते और चिल्लाते देखा।

३९ तब उस ने भीतर जाकर उस से कहा, तुम क्यों हल्ला मचाते और रोते हो? लड़की मरी नहीं, परन्तु सो रही है। ४० वे उस की हंसी करने लगे, परन्तु उस ने सब को निकालकर लड़की के माता-पिता और अपने साथियों को लेकर, भीतर जहां लड़की पड़ी थी, गया। ४१ और लड़की का हाथ पकड़कर उस से कहा, 'तलीता कूमी'; जिस का अर्थ यह है कि 'हे लड़की, मैं तुझ से कहता हूं, उठ'। ४२ और लड़की तुरन्त उठकर चलने फिरने लगी; क्योंकि वह बारह वर्ष की थी। और इस पर लोग बहुत चकित हो गए। ४३ फिर उस ने उन्हें चिताकर आज्ञा दी कि यह बात कोई जानने न पाए और कहा; कि उसे कुछ खाने को दिया जाए॥

६ वहां से निकलकर वह अपने देश में आया, और उसके चेले उसके पीछे हो लिए। २ सब्त के दिन वह आराधनालय में उपदेश करने लगा; और बहुत लोग सुनकर चकित हुए और कहने लगे, इस को ये बातें कहां से आ गईं? और यह कौन सा ज्ञान है जो उस को दिया गया है? और कैसे सामर्थ के काम इसके हाथों से प्रगट होते हैं? ३ क्या यह वही बढ़ई नहीं, जो मरियम का पुत्र, और याकूब और योसेस और यहूदा और शमौन का भाई है? और क्या उस की बहिनें यहां हमारे बीच में नहीं रहतीं? इसलिये उन्हों ने उसके विषय में ठोकर खाई। ४ यीशु ने उन से कहा, कि भविष्यद्वक्ता अपने देश और अपने कुटुंब और अपने घर को छोड़ और कहीं भी निरादर नहीं होता। ५ और वह वहां कोई सामर्थ का काम न कर सका, केवल थोड़े बीमारों पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया॥

६ और उस ने उन के अविश्वास पर आश्चर्य किया और चारों ओर के गांवों में उपदेश करता फिरा॥

७ और वह बारहों को अपने पास बुलाकर उन्हें दो दो करके भेजने लगा; और उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया। ८ और उस ने उन्हें आज्ञा दी, कि मार्ग के लिये लाठी छोड़ और कुछ न लो; न तो रोटी, न झोली, न पटुके में पैसे। ९ परन्तु जूतियां पहिनो और दो दो कुरते न पहिनो। १० और उस ने उन से कहा; जहां कहीं तुम किसी घर में उतरो तो जब तक वहां से विदा न हो, तब तक उसी में ठहरे रहो। ११ जिस स्थान के लोग तुम्हें ग्रहण न करें, और तुम्हारी न सुनें, वहां से चलते ही अपने तलवों की धूल झाड़ डालो, कि उन पर गवाही हो। १२ और उन्हों ने जाकर प्रचार किया, कि मन फिराओ। १३ और बहुतेरे दुष्टात्माओं को निकाला, और बहुत बीमारों पर तेल मलकर उन्हें चंगा किया॥

१४ और हेरोदेस राजा ने उस की चर्चा सुनी, क्योंकि उसका नाम फैल गया था, और उस ने कहा, कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला मरे हुओं में से जी उठा है, इसी लिये उस से ये सामर्थ के काम प्रगट होते हैं। १५ और औरों ने कहा, यह एलिय्याह है, परन्तु औरों ने कहा, भविष्यद्वक्ता या भविष्यद्वक्ताओं में से किसी एक के समान है। १६ हेरोदेस ने यह सुन कर कहा, जिस यूहन्ना का सिर मैं ने कटवाया था, वही जी उठा है। १७ क्योंकि हेरोदेस ने आप अपने भाई फिलिप्पुस की पत्नी

हेरोदियास के कारण, जिस से उस ने ब्याह किया था, लोगों को भेजकर यूहन्ना को पकड़वाकर बन्दीगृह में डाल दिया था। १८ क्योंकि यूहन्ना ने हेरोदेस से कहा था, कि अपने भाई की पत्नी को रखना तुझे उचित नहीं। १९ इसलिये हेरोदियास उस से बैर रखती थी और यह चाहती थी, कि उसे मरवा डाले, परन्तु ऐसा न हो सका। २० क्योंकि हेरोदेस यूहन्ना को धर्मी और पवित्र पुरुष जानकर उस से डरता था, और उसे बचाए रखता था, और उस की सुनकर बहुत घबराता था, पर आनन्द से सुनता था। २१ और ठीक अवसर पर जब हेरोदेस ने अपने जन्म दिन में अपने प्रधानों और सेनापतियों, और गलील के बड़े लोगों के लिये जेवनार की। २२ और उसी हेरोदियास की बेटी भीतर आई, और नाचकर हेरोदेस को और उसके साथ बैठनेवालों को प्रसन्न किया; तब राजा ने लड़की से कहा, तू जो चाहे मुझ से मांग मैं तुझे दूंगा। २३ और उस से शपथ खाई, कि मैं अपने आधे राज्य तक जो कुछ तू मुझ से मांगेगी मैं तुझे दूंगा। २४ उस ने बाहर जाकर अपनी माता से पूछा, कि मैं क्या मांगूं? वह बोली; यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का सिर। २५ वह तुरन्त राजा के पास भीतर आई, और उस से बिनती की; मैं चाहती हूं, कि तू अभी यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का सिर एक थाल में मुझे मंगवा दे। २६ तब राजा बहुत उदास हुआ, परन्तु अपनी शपथ के कारण और साथ बैठनेवालों के कारण उसे टालना न चाहा। २७ और राजा ने तुरन्त एक सिपाही को आज्ञा देकर भेजा, कि उसका सिर काट लाए। २८ उस ने जेलखाने में जाकर उसका सिर काटा, और एक थाल में रखकर लाया और लड़की को दिया, और लड़की ने अपनी मां को दिया। २९ यह सुनकर उसके चेले आए, और उस की लोथ को उठाकर कब्र में रखा॥

३० प्रेरितों ने यीशु के पास इकट्ठे होकर, जो कुछ उन्हों ने किया, और सिखाया था, सब उस को बता दिया। ३१ उस ने उन से कहा; तुम आप अलग किसी जंगली स्थान में आकर थोड़ा विश्राम करो; क्योंकि बहुत लोग आते जाते थे, और उन्हें खाने का अवसर भी नहीं मिलता था। ३२ इसलिये वे नाव पर चढ़कर, सुनसान जगह में अलग चले गए। ३३ और बहुतों ने उन्हें जाते देखकर पहिचान लिया, और सब नगरों से इकट्ठे होकर वहां पैदल दौड़े और उन से पहिले जा पहुंचे। ३४ उस ने निकलकर बड़ी भीड़ देखी, और उन पर तरस खाया, क्योंकि वे उन भेड़ों के समान थे, जिन का कोई रखवाला न हो; और वह उन्हें बहुत सी बातें सिखाने लगा। ३५ जब दिन बहुत ढल गया, तो उसके चेले उसके पास आकर कहने लगे; यह सुनसान जगह है, और दिन बहुत ढल गया है। ३६ उन्हें विदा कर, कि चारों ओर के गांवों और बस्तियों में जाकर, अपने लिये कुछ खाने को मोल लें। ३७ उस ने उन्हें उत्तर दिया; कि तुम ही उन्हें खाने को दो: उन्हों ने उस से कहा; क्या हम सौ दीनार* की रोटियां मोल लें, और उन्हें खिलाएं? ३८ उस ने उन से कहा; जाकर देखो तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं? उन्हों ने मालूम करके कहा; पांच और दो मछली भी। ३९ तब उस ने उन्हें

* या दीनार आठ आने के लगभग।

आज्ञा दी, कि सब को हरी घास पर पांति-पांति से बैठा दो। ४० वे सौ सौ और पचास पचास करके पांति-पांति बैठ गए। ४१ और उस ने उन पांच रोटियों को और दो मछलियों को लिया, और स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया और रोटियां तोड़ तोड़ कर चेलों को देता गया, कि वे लोगों को परोसें, और वे दो मछलियां भी उन सब में बांट दीं। ४२ और सब खाकर तृप्त हो गए। ४३ और उन्हों ने टुकड़ों से बारह टोकरियां भर कर उठाईं, और कुछ मछलियों से भी। ४४ जिन्हों ने रोटियां खाईं, वे पांच हजार पुरुष थे॥

४५ तब उस ने तुरन्त अपने चेलों को बरबस नाव पर चढ़ाया, कि वे उस से पहिले उस पार बैतसैदा को चले जाएं, जब तक कि वह लोगों को विदा करे। ४६ और उन्हें विदा करके पहाड़ पर प्रार्थना करने को गया। ४७ और जब सांझ हुई, तो नाव झील के बीच में थी, और वह अकेला भूमि पर था। ४८ और जब उस ने देखा, कि वे खेते खेते घबरा गए हैं, क्योंकि हवा उन के विरुद्ध थी, तो रात के चौथे पहर के निकट वह झील पर चलते हुए उन के पास आया; और उन से आगे निकल जाना चाहता था। ४९ परन्तु उन्हों ने उसे झील पर चलते देखकर समझा, कि भूत है, और चिल्ला उठे, क्योंकि सब उसे देखकर घबरा गए थे। ५० पर उस ने तुरन्त उन से बातें कीं और कहा; ढाढ़स बान्धो : मैं हूं; डरो मत। ५१ तब वह उन के पास नाव पर आया, और हवा थम गई : और वे बहुत ही आश्चर्य करने लगे। ५२ क्योंकि वे उन रोटियों के विषय में न समझे थे परन्तु उन के मन कठोर हो गए थे॥

५३ और वे पार उतरकर गन्नेसरत में पहुंचे, और नाव घाट पर लगाई। ५४ और जब वे नाव पर से उतरे, तो लोग तुरन्त उस को पहचान कर। ५५ आसपास के सारे देश में दौड़े, और बीमारों को खाटों पर डालकर, जहां जहां समाचार पाया कि वह है, वहां वहां लिए फिरे। ५६ और जहां कहीं वह गांवों, नगरों, या बस्तियों में जाता था, तो लोग बीमारों को बाजारों में रखकर उस से बिनती करते थे, कि वह उन्हें अपने वस्त्र के आंचल ही को छू लेने दे : और जितने उसे छूते थे, सब चंगे हो जाते थे॥

७ तब फरीसी और कई एक शास्त्री जो यरूशलेम से आए थे, उसके पास इकट्ठे हुए। २ और उन्हों ने उसके कई एक चेलों को अशुद्ध अर्थात् बिना हाथ धोए रोटी खाते देखा। ३ क्योंकि फरीसी और सब यहूदी, पुरनियों की रीति पर चलते हैं और जब तक भली भांति हाथ नहीं धो लेते तब तक नहीं खाते। ४ और बाजार से आकर, जब तक स्नान नहीं कर * लेते, तब तक नहीं खाते; और बहुत सी और बातें हैं, जो उन के पास मानने के लिये पहुंचाई गई हैं, जैसे कटोरों, और लोटों, और तांबे के बरतनों को धोना-मांजना। ५ इसलिये उन फरीसियों और शास्त्रियों ने उस से पूछा, कि तेरे चेले क्यों पुरनियों की रीतों पर नहीं चलते, और बिना हाथ धोए रोटी खाते हैं? ६ उस ने उन से कहा; कि यशायाह ने तुम कपटियों के विषय में बहुत ठीक भविष्यद्वाणी की; जैसा लिखा है; कि ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उन का मन मुझ

* इ० अपने ऊपर पानी न छिड़क लेते।

से दूर रहता है। ७ और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की आज्ञाओं को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं। ८ क्योंकि तुम परमेश्वर की आज्ञा को टालकर मनुष्यों की रीतियों को मानते हो। ९ और उस ने उन से कहा; तुम अपनी रीतियों को मानने के लिये परमेश्वर की आज्ञा कैसी अच्छी तरह टाल देते हो! १० क्योंकि मूसा ने कहा है कि अपने पिता और अपनी माता का आदर कर; और जो कोई पिता वा माता को बुरा कहे, वह अवश्य मार डाला जाए। ११ परन्तु तुम कहते हो कि यदि कोई अपने पिता वा माता से कहे, कि जो कुछ तुझे मुझ से लाभ पहुंच सकता था, वह कुरबान अर्थात् संकल्प हो चुका। १२ तो तुम उस को उसके पिता वा उस की माता की कुछ सेवा करने नहीं देते। १३ इस प्रकार तुम अपनी रीतियों से, जिन्हें तुम ने ठहराया है, परमेश्वर का वचन टाल देते हो; और ऐसे ऐसे बहुत से काम करते हो। १४ और उस ने लोगों को अपने पास बुलाकर उन से कहा, तुम सब मेरी सुनो, और समझो। १५ ऐसी तो कोई वस्तु नहीं जो मनुष्य में बाहर से समाकर अशुद्ध करे; परन्तु जो वस्तुएं मनुष्य के भीतर से निकलती हैं, वे ही उसे अशुद्ध करती हैं। [१६ यदि किसी के सुनने के कान हों तो सुन ले।] १७ जब वह भीड़ के पास से घर में गया, तो उसके चेलों ने इस दृष्टान्त के विषय में उस से पूछा। १८ उस ने उन से कहा; क्या तुम भी ऐसे ना समझ हो? क्या तुम नहीं समझते, कि जो वस्तु बाहर से मनुष्य के भीतर जाती है, वह उसे अशुद्ध नहीं कर सकती? १९ क्योंकि वह उसके मन में नहीं, परन्तु पेट में जाती है, और संडास में निकल जाती है? यह कहकर उस ने सब भोजन वस्तुओं को शुद्ध ठहराया। २० फिर उस ने कहा; जो मनुष्य में से निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। २१ क्योंकि भीतर से अर्थात् मनुष्य के मन से, बुरी बुरी चिन्ता व्यभिचार। २२ चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन, लोभ, दुष्टता, छल, लुचपन, कुदृष्टि, निन्दा, अभिमान, और मूर्खता निकलती हैं। २३ ये सब बुरी बातें भीतर ही से निकलती हैं और मनुष्य को अशुद्ध करती हैं॥

२४ फिर वह वहां से उठकर सूर और सैदा के देशों में आया; और एक घर में गया, और चाहता था, कि कोई न जाने; परन्तु वह छिप न सका। २५ और तुरन्त एक स्त्री जिस की छोटी बेटी में अशुद्ध आत्मा थी, उस की चर्चा सुन कर आई, और उसके पांवों पर गिरी। २६ यह यूनानी और सूरूफिनीकी जाति की थी; और उस ने उस से बिनती की, कि मेरी बेटी में से दुष्टात्मा निकाल दे। २७ उस ने उस से कहा, पहिले लड़कों को तृप्त होने दे, क्योंकि लड़कों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना उचित नहीं है २८ उस ने उस को उत्तर दिया; कि सच है प्रभु; तौभी कुत्ते भी तो मेज के नीचे बालकों की रोटी का चूर चार खा लेते हैं। २९ उस ने उस से कहा; इस बात के कारण चली जा; दुष्टात्मा तेरी बेटी में से निकल गई है। ३० और उस ने अपने घर आकर देखा कि लड़की खाट पर पड़ी है, और दुष्टात्मा निकल गई है॥

३१ फिर वह सूर और सैदा के देशों से निकलकर दिकपुलिस देश से होता हुआ गलील की झील पर पहुंचा। ३२ और

लोगों ने एक बहिरे को जो हकला भी था, उसके पास लाकर उस से बिनती की, कि अपना हाथ उस पर रखे। ३३ तब वह उस को भीड़ से अलग ले गया, और अपनी उंगलियां उसके कानों में डालीं, और थूक कर उस की जीभ को छूआ। ३४ और स्वर्ग की ओर देखकर आह भरी, और उस से कहा; इप्फत्तह, अर्थात् खुल जा। ३५ और उसके कान खुल गए, और उस की जीभ की गांठ भी खुल गई, और वह साफ साफ बोलने लगा। ३६ तब उस ने उन्हें चिताया कि किसी से न क़हना; परन्तु जितना उस ने उन्हें चिताया उतना ही वे और प्रचार करने लगे। ३७ और वे बहुत ही आश्चर्य में होकर कहने लगे, उस ने जो कुछ किया सब अच्छा किया है; वह बहिरों को सुनने की, और गूंगों को बोलने की शक्ति देता है॥

८ उन दिनों में, जब फिर बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई, और उन के पास कुछ खाने को न था, तो उस ने अपने चेलों को पास बुलाकर उन से कहा। २ मुझे इस भीड़ पर तरस आता है, क्योंकि यह तीन दिन से बराबर मेरे साथ हैं, और उन के पास कुछ भी खाने को नहीं। ३ यदि मैं उन्हें भूखा घर भेज दूं, तो मार्ग में थक कर रह जाएंगे; क्योंकि इन में से कोई कोई दूर से आए हैं। ४ उसके चेलों ने उस को उत्तर दिया, कि यहां जंगल में इतनी रोटी कोई कहां से लाए कि ये तृप्त हों? ५ उस ने उन से पूछा; तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं? उन्हों ने कहा, सात। ६ तब उस ने लोगों को भूमि पर बैठने की आज्ञा दी, और वे सात रोटियां लीं, और धन्यवाद करके तोड़ीं, और अपने चेलों को देता गया कि उन के आगे रखें, और उन्हों ने लोगों के आगे परोस दिया ७ उन के पास थोड़ी सी छोटी मछलियां भी थीं; और उसने धन्यवाद करके उन्हें भी लोगों के आगे रखने की आज्ञा दी। ८ सो वे खाकर तृप्त हो गए और शेष टुकड़ों के सात टोकरे भरकर उठाए। ९ और लोग चार हज़ार के लगभग थे; और उस ने उन को विदा किया। १० और वह तुरन्त अपने चेलों के साथ नाव पर चढ़कर दलमनूता देश को चला गया॥

११ फिर फरीसी निकलकर उस से वाद-विवाद करने लगे, और उसे जांचने के लिये उस से कोई स्वर्गीय चिन्ह मांगा। १२ उस ने अपनी आत्मा में आह मार कर कहा, इस समय के लोग क्यों चिन्ह ढूंढ़ते हैं? मैं तुम से सच कहता हूं, कि इस समय के लोगों* को कोई चिन्ह नहीं दिया जाएगा। १३ और वह उन्हें छोड़कर फिर नाव पर चढ़ गया और पार चला गया॥

१४ और वे रोटी लेना भूल गए थे, और नाव में उन के पास एक ही रोटी थी। १५ और उस ने उन्हें चिताया, कि देखो, फरीसियों के खमीर और हेरोदेस के खमीर से चौकस रहो। १६ वे आपस में बिचार करके कहने लगे, कि हमारे पास तो रोटी नहीं है। १७ यह जानकर यीशु ने उन से कहा; तुम क्यों आपस में यह बिचार कर रहे हो कि हमारे पास रोटी नहीं? क्या अब तक नहीं जानते और नहीं समझते? १८ क्या तुम्हारा मन कठोर हो गया है? क्या आंखें रखते हुए भी नहीं देखते, और कान रखते हुए भी नहीं सुनते? और

* यू० पीढ़ी।

तुम्हें स्मरण नहीं। १९ कि जब मैं ने पांच हजार के लिये पांच रोटी तोड़ी थीं तो तुम ने टुकड़ों की कितनी टोकरियां भरकर उठाईं? उन्हों ने उस से कहा, बारह टोकरियाँ। २० और जब चार हजार के लिये सात रोटी थी तो तुम ने टुकड़ों के कितने टोकरे भरकर उठाए थे? उन्हों ने उस से कहा, सात टोकरे। २१ उस ने उन से कहा, क्या तुम अब तक नहीं समझते?

२२ और वे बैतसैदा में आए; और लोग एक अन्धे को उसके पास ले आए और उस से बिनती की, कि उस को छूए। २३ वह उस अन्धे का हाथ पकड़कर उसे गांव के बाहर ले गया, और उस की आंखों में थूककर उस पर हाथ रखे, और उस से पूछा; क्या तू कुछ देखता है? २४ उस ने आंख उठा कर कहा; मैं मनुष्यों को देखता हूं; क्योंकि वे मुझे चलते हुए दिखाई देते हैं, जैसे पेड़। २५ तब उस ने फिर दोबारा उस की आंखों पर हाथ रखे, और उस ने ध्यान से देखा, और चंगा हो गया, और सब कुछ साफ साफ देखने लगा। २६ और उस ने उस से यह कहकर घर भेजा, कि इस गांव के भीतर पांव भी न रखना॥

२७ यीशु और उसके चेले कैसरिया फिलिप्पी के गांवों में चले गए: और मार्ग में उस ने अपने चेलों से पूछा कि लोग मुझे क्या कहते हैं? २८ उन्हों ने उत्तर दिया, कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला; पर कोई कोई; एलिय्याह; और कोई कोई भविष्यद्वक्ताओं में से एक भी कहते हैं। २९ उस ने उन से पूछा; परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो? पतरस ने उस को उत्तर दिया; तू मसीह है। ३० तब उस ने उन्हें चिताकर कहा, कि मेरे विषय मे यह किसी से न कहना। ३१ और वह उन्हें सिखाने लगा, कि मनुष्य के पुत्र के लिये अवश्य है, कि वह बहुत दुख उठाए, और पुरनिए और महायाजक और शास्त्री उसे तुच्छ समझकर मार डालें और वह तीन दिन के बाद जी उठे। ३२ उस ने यह बात उन से साफ साफ कह दी: इस पर पतरस उसे अलग ले जाकर झिड़कने लगा। ३३ परन्तु उस ने फिरकर, और अपने चेलों की ओर देखकर पतरस को झिड़क कर कहा; कि हे शैतान, मेरे साम्हने से दूर हो; क्योंकि तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, परन्तु मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है। ३४ उस ने भीड़ को अपने चेलों समेत पास बुलाकर उन से कहा, जो कोई मेरे पीछे आना चाहे, वह अपने आपे से इन्कार करे और अपना क्रूस उठाकर, मेरे पीछे हो ले। ३५ क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, पर जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा। ३६ यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? ३७ और मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा? ३८ जो कोई इस व्यभिचारी और पापी जाति * के बीच मुझ से और मेरी बातों से लजाएगा, मनुष्य का पुत्र भी जब वह पवित्र दूतों के साथ अपने पिता की महिमा सहित आएगा, तब उस से भी लजाएगा।

९ और उस ने उन से कहा; मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो यहां खड़े हैं, उन में से कोई कोई ऐसे हैं, कि जब तक

* यू० पीढ़ी।

परमेश्वर के राज्य को सामर्थ सहित आया हुआ न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद कदापि न चखेंगे ॥

२ छः दिन के बाद यीशु ने पतरस और याकूब और यूहन्ना को साथ लिया, और एकान्त में किसी ऊंचे पहाड़ पर ले गया; और उन के साम्हने उसका रूप बदल गया। ३ और उसका वस्त्र ऐसा चमकने लगा और यहां तक अति उज्ज्वल हुआ, कि पृथ्वी पर कोई धोबी भी वैसा उज्ज्वल नहीं कर सकता। ४ और उन्हें मूसा के साथ एलिय्याह दिखाई दिया; और वे यीशु के साथ बातें करते थे। ५ इस पर पतरस ने यीशु से कहा; हे रब्बी, हमारा यहां रहना अच्छा है: इसलिये हम तीन मण्डप बनाएं; एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये। ६ क्योंकि वह न जानता था, कि क्या उत्तर दे; इसलिये कि वे बहुत डर गए थे। ७ तब एक बादल ने उन्हें छा लिया, और उस बादल में से यह शब्द निकला, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है; उस की सुनो। ८ तब उन्हों ने एकाएक चारों ओर दृष्टि की, और यीशु को छोड़ अपने साथ और किसी को न देखा ॥

९ पहाड़ से उतरते हुए, उस ने उन्हें आज्ञा दी, कि जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से जी न उठे, तब तक जो कुछ तुम ने देखा है वह किसी से न कहना। १० उन्हों ने इस बात को स्मरण रखा; और आपस में वाद-विवाद करने लगे, कि मरे हुओं में से जी उठने का क्या अर्थ है? ११ और उन्हों ने उस से पूछा, शास्त्री क्यों कहते हैं, कि एलिय्याह का पहिले आना अवश्य है? १२ उस ने उन्हें उत्तर दिया, कि एलिय्याह सचमुच पहिले आकर सब कुछ सुधारेगा, परन्तु मनुष्य के पुत्र के विषय में यह क्यों लिखा है, कि वह बहुत दुख उठाएगा, और तुच्छ गिना जाएगा? १३ परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि एलिय्याह तो आ चुका, और जैसा उसके विषय में लिखा है, उन्हों ने जो कुछ चाहा उसके साथ किया ॥

१४ और जब वह चेलों के पास आया, तो देखा कि उन के चारों ओर बड़ी भीड़ लगी है और शास्त्री उन के साथ विवाद कर रहे हैं। १५ और उसे देखते ही सब बहुत ही आश्चर्य करने लगे, और उस की ओर दौड़कर उसे नमस्कार किया। १६ उस ने उन से पूछा; तुम इन से क्या विवाद कर रहे हो? १७ भीड़ में से एक ने उसे उत्तर दिया, कि हे गुरु, मैं अपने पुत्र को, जिस में गूंगी आत्मा समाई है, तेरे पास लाया था। १८ जहां कहीं वह उसे पकड़ती है, वहीं पटक देती है: और वह मुंह में फेन भर लाता, और दांत पीसता, और सूखता जाता है: और मैं ने तेरे चेलों से कहा था कि वे उसे निकाल दें परन्तु वह निकाल न सके। १९ यह सुनकर उस ने उन से उत्तर देके कहा: कि हे अविश्वासी लोगों, * मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा? और कब तक तुम्हारी सहूंगा? उसे मेरे पास लाओ। २० तब वे उसे उसके पास ले आए: और जब उस ने उसे देखा, तो उस आत्मा ने तुरन्त उसे मरोड़ा; और वह भूमि पर गिरा, और मुंह से फेन बहाते हुए लोटने लगा। २१ उस ने उसके पिता से पूछा; इस की यह दशा कब से है? २२ उस ने कहा, बचपन से: उस ने इसे नाश करने के लिये कभी आग और कभी पानी में गिराया;

* यू० पीढ़ी।

परन्तु यदि तू कुछ कर सके, तो हम पर तरस खाकर हमारा उपकार कर। २३ यीशु ने उस से कहा; यदि तू कर सकता है; यह क्या बात है? विश्वास करनेवाले के लिए सब कुछ हो सकता है। २४ बालक के पिता ने तुरन्त गिड़गिड़ाकर कहा; हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं, मेरे अविश्वास का उपाय कर। २५ जब यीशु ने देखा, कि लोग दौड़कर भीड़ लगा रहे हैं, तो उस ने अशुद्ध आत्मा को यह कहकर डांटा; कि हे गूंगी और बहिरी आत्मा, मैं तुझे आज्ञा देता हूं, उस में से निकल आ, और उस में फिर कभी प्रवेश न कर। २६ तब वह चिल्लाकर, और उसे बहुत मरोड़ कर, निकल आई; और बालक मरा हुआ सा हो गया, यहां तक कि बहुत लोग कहने लगे, कि वह मर गया। २७ परन्तु यीशु ने उसका हाथ पकड़ के उसे उठाया, और वह खड़ा हो गया। २८ जब वह घर में आया, तो उसके चेलों ने एकान्त में उस से पूछा, हम उसे क्यों न निकाल सके? २९ उस ने उन से कहा, कि यह जाति बिना प्रार्थना किसी और उपाय से निकल नहीं सकती॥

३० फिर वे वहां से चले, और गलील में होकर जा रहे थे, और वह नहीं चाहता था, कि कोई जाने। ३१ क्योंकि वह अपने चेलों को उपदेश देता और उन से कहता था, कि मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा, और वे उसे मार डालेंगे, और वह मरने के तीन दिन बाद जी उठेगा। ३२ पर यह बात उन की समझ में नहीं आई, और वे उस से पूछने से डरते थे॥

३३ फिर वे कफरनहूम में आए; और घर में आकर उस ने उन से पूछा कि रास्ते में तुम किस बात पर विवाद करते थे? ३४ वे चुप रहे, क्योंकि मार्ग में उन्हों ने आपस में यह वाद-विवाद किया था, कि हम में से बड़ा कौन है? ३५ तब उस ने बैठकर बारहों को बुलाया, और उन से कहा, यदि कोई बड़ा होना चाहे, तो सब से छोटा और सब का सेवक बने। ३६ और उस ने एक बालक को लेकर उन के बीच में खड़ा किया, और उसे गोद में लेकर उन से कहा। ३७ जो कोई मेरे नाम से ऐसे बालकों में से किसी एक को भी ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो कोई मुझे ग्रहण करता, वह मुझे नहीं, बरन मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है॥

३८ तब यूहन्ना ने उस से कहा, हे गुरु, हम ने एक मनुष्य को तेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालते देखा और हम उसे मना करने लगे, क्योंकि वह हमारे पीछे नहीं हो लेता था। ३९ यीशु ने कहा, उस को मत मना करो; क्योंकि ऐसा कोई नहीं जो मेरे नाम से सामर्थ का काम करे, और जल्दी से मुझे बुरा कह सके। ४० क्योंकि जो हमारे विरोध में नहीं, वह हमारी ओर है। ४१ जो कोई एक कटोरा पानी तुम्हें इसलिये * पिलाए कि तुम मसीह के हो तो मैं तुम से सच कहता हूं कि वह अपना प्रतिफल किसी रीति से न खोएगा। ४२ पर जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं, किसी को ठोकर खिलाए तो उसके लिये भला यह है कि एक बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाए और वह समुद्र में डाल दिया जाए। ४३ यदि तेरा हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल टुण्डा होकर जीवन में प्रवेश करना, तेरे

* यू० इस नाम से।

लिये इस से भला है कि दो हाथ रहते हुए नरक के बीच उस आग में डाला जाए जो कभी बुझने की नहीं। ४५ और यदि तेरा पांव तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल। ४६ लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है, कि दो पांव रहते हुए नरक में डाला जाए। ४७ और यदि तेरी आंख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल डाल, काना होकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है, कि दो आंख रहते हुए तू नरक में डाला जाए। ४८ जहां उन का कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती। ४९ क्योंकि हर एक जन आग से नमकीन किया जाएगा। ५० नमक अच्छा है, पर यदि नमक की नमकीनी जाती रहे, तो उसे किस से स्वादित करोगे? अपने में नमक रखो, और आपस में मेल मिलाप से रहो॥

१० फिर वह वहां से उठकर यहूदिया के सिवानों में और यरदन के पार आया, और भीड़ उसके पास फिर इकट्ठी हो गई, और वह अपनी रीति के अनुसार उन्हें फिर उपदेश देने लगा। २ तब फरीसियों ने उसके पास आकर उस की परीक्षा करने को उस से पूछा, क्या यह उचित है, कि पुरुष अपनी पत्नी को त्यागे? ३ उस ने उन को उत्तर दिया, कि मूसा ने तुम्हें क्या आज्ञा दी है? ४ उन्हों ने कहा, मूसा ने त्याग पत्र लिखने और त्यागने की आज्ञा दी है। ५ यीशु ने उन से कहा, कि तुम्हारे मन की कठोरता के कारण उस ने तुम्हारे लिये यह आज्ञा लिखी। ६ पर सृष्टि के आरम्भ से परमेश्वर ने नर और नारी करके उन को बनाया है। ७ इस कारण मनुष्य अपने माता-पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे। ८ इसलिये वे अब दो नहीं पर एक तन हैं। ९ इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे मनुष्य अलग न करे। १० और घर में चेलों ने इस के विषय में उस से फिर पूछा। ११ उस ने उन से कहा, जो कोई अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी से ब्याह करे तो वह उस पहिली के विरोध में व्यभिचार करता है। १२ और यदि पत्नी अपने पति को छोड़कर दूसरे से ब्याह करे, तो वह व्यभिचार करती है॥

१३ फिर लोग बालकों को उसके पास लाने लगे, कि वह उन पर हाथ रखे, पर चेलों ने उनको डांटा। १४ यीशु ने यह देख क्रुध होकर उन से कहा, बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है। १५ मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक की नाईं ग्रहण न करे, वह उस में कभी प्रवेश करने न पाएगा। १६ और उस ने उन्हें गोद में लिया, और उन पर हाथ रखकर उन्हें आशीष दी॥

१७ और जब वह निकलकर मार्ग में जाता था, तो एक मनुष्य उसके पास दौड़ता हुआ आया, और उसके आगे घुटने टेककर उस से पूछा, हे उत्तम गुरु, अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूं? १८ यीशु ने उस से कहा, तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? कोई उत्तम नहीं, केवल एक अर्थात् परमेश्वर। १९ तू आज्ञाओं को तो जानता है; हत्या न करना, व्यभिचार न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, छल न करना, अपने पिता और अपनी माता का आदर करना।

२० उस ने उस से कहा, हे गुरु, इन सब को मैं लड़कपन से मानता आया हूं। २१ यीशु ने उस पर दृष्टि करके उस से प्रेम किया, और उस से कहा, तुझ में एक बात की घटी है; जा, जो कुछ तेरा है, उसे बेच कर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले। २२ इस बात से उसके चिहरे पर उदासी छा गई, और वह शोक करता हुआ चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था॥

२३ यीशु ने चारों ओर देखकर अपने चेलों से कहा, धनवानों को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है! २४ चेले उस की बातों से अचम्भित हुए, इस पर यीशु ने फिर उन को उत्तर दिया, हे बालको, जो धन पर भरोसा रखते हैं, उन के लिये परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है! २५ परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है! २६ वे बहुत ही चकित होकर आपस में कहने लगे तो फिर किस का उद्धार हो सकता है? २७ यीशु ने उन की ओर देखकर कहा, मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से हो सकता है; क्योंकि परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है। २८ पतरस उस से कहने लगा, कि देख, हम तो सब कुछ छोड़कर तेरे पीछे हो लिए हैं। २९ यीशु ने कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि ऐसा कोई नहीं, जिस ने मेरे और सुसमाचार के लिये घर या भाइयों या बहिनों या माता या पिता या लड़के-बालों या खेतों को छोड़ दिया हो। ३० और अब इस समय सौ गुणा न पाए, घरों और भाइयों और बहिनों और माताओं और लड़के-बालों और खेतों को पर उपद्रव के साथ और परलोक में अनन्त जीवन। ३१ पर बहुतेरे जो पहिले हैं, पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, वे पहिले होंगे॥

३२ और वे यरूशलेम को जाते हुए मार्ग में थे, और यीशु उन के आगे आगे जा रहा था: और वे अचम्भा करने लगे और जो उसके पीछे पीछे चलते थे डरने लगे, तब वह फिर उन बारहों को लेकर उन से वे बातें कहने लगा, जो उस पर आनेवाली थीं। ३३ कि देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं, और मनुष्य का पुत्र महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा, और वे उस को घात के योग्य ठहराएंगे, और अन्य जातियों के हाथ में सौंपेंगे। ३४ और वे उस को ठट्ठों में उड़ाएंगे, और उस पर थूकेंगे, और उसे कोड़े मारेंगे, और उसे घात करेंगे, और तीन दिन के बाद वह जी उठेगा॥

३५ तब जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना ने उसके पास आकर कहा, हे गुरु, हम चाहते हैं, कि जो कुछ हम तुझ से मांगें, वही तू हमारे लिये करे। ३६ उस ने उन से कहा, तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करूं? ३७ उन्हों ने उस से कहा, कि हमें यह दे, कि तेरी महिमा में हम में से एक तेरे दहिने और दूसरा तेरे बाएं बैठे। ३८ यीशु ने उन से कहा, तुम नहीं जानते, कि क्या मांगते हो? जो कटोरा मैं पीने पर हूं, क्या पी सकते हो? और जो बपतिस्मा मैं लेने पर हूं, क्या ले सकते हो? ३९ उन्हों ने उस से कहा, हम से हो सकता है: यीशु ने उन से कहा; जो कटोरा मैं पीने पर हूं, तुम पीओगे; और जो बपतिस्मा मैं लेने पर हूं, उसे लोगे। ४० पर जिन के लिये तैयार किया गया है, उन्हें छोड़ और किसी को अपने दहिने और अपने बाएं

बिठाना मेरा काम नहीं*। ४१ यह सुनकर दसों याकूब और यूहन्ना पर रिसियाने लगे। ४२ और यीशु ने उन को पास बुला कर उन से कहा, तुम जानते हो, कि जो अन्य जातियों के हाकिम समझे जाते हैं, वे उन पर प्रभुता करते हैं; और उन में जो बड़े हैं, उन पर अधिकार जताते हैं। ४३ पर तुम में ऐसा नहीं है, बरन जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने। ४४ और जो कोई तुम में प्रधान होना चाहे, वह सब का दास बने। ४५ क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिये नहीं आया, कि उस की सेवा टहल की जाए, पर इसलिये आया, कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपना प्राण दे॥

४६ और वे यरीहो में आए, और जब वह और उसके चेले, और एक बड़ी भीड़ यरीहो से निकलती थी, तो तिमाई का पुत्र बरतिमाई एक अन्धा भिखारी सड़क के किनारे बैठा था। ४७ वह यह सुनकर कि यीशु नासरी है, पुकार पुकार कर कहने लगा; कि हे दाऊद की सन्तान, यीशु मुझ पर दया कर। ४८ बहुतों ने उसे डांटा कि चुप रहे, पर वह और भी पुकारने लगा, कि हे दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर। ४९ तब यीशु ने ठहरकर कहा, उसे बुलाओ; और लोगों ने उस अन्धे को बुलाकर उस से कहा, ढाढ़स बान्ध, उठ, वह तुझे बुलाता है। ५० वह अपना कपड़ा फेंककर शीघ्र उठा, और यीशु के पास आया। ५१ इस पर यीशु ने उस से कहा; तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं? अन्धे ने उस से कहा, हे रब्बी, यह कि मैं देखने लगूं। ५२ यीशु ने उस से कहा; चला जा, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा कर दिया है: और वह तुरन्त देखने लगा, और मार्ग में उसके पीछे हो लिया॥

११ जब वे यरूशलेम के निकट जैतून पहाड़ पर बैतफगे और बैतनिय्याह के पास आए, तो उस ने अपने चेलों में से दो को यह कहकर भेजा। २ कि अपने साम्हने के गांव में जाओ, और उस में पहुंचते ही एक गदही का बच्चा जिस पर कभी कोई नहीं चढ़ा, बन्धा हुआ तुम्हें मिलेगा, उसे खोल लाओ। ३ यदि तुम से कोई पूछे, यह क्यों करते हो? तो कहना, कि प्रभु को इस का प्रयोजन है; और वह शीघ्र उसे यहां भेज* देगा। ४ उन्हों ने जाकर उस बच्चे को बाहर द्वार के पास चौक में बन्धा हुआ पाया, और खोलने लगे। ५ और उन में से जो वहां खड़े थे, कोई कोई कहने लगे कि यह क्या करते हो, गदही के बच्चे को क्यों खोलते हो? ६ उन्हों ने जैसा यीशु ने कहा था, वैसा ही उन से कह दिया; तब उन्हों ने उन्हें जाने दिया। ७ और उन्हों ने बच्चे को यीशु के पास लाकर उस पर अपने कपड़े डाले और वह उस पर बैठ गया। ८ और बहुतों ने अपने कपड़े मार्ग में बिछाए और औरों ने खेतों में से डालियां काट काट कर फैला दीं। ९ और जो उसके आगे आगे जाते और पीछे पीछे चले आते थे, पुकार पुकार कर कहते जाते थे, कि होशाना; धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है। १० हमारे पिता दाऊद का राज्य जो आ रहा है; धन्य है: आकाश में† होशाना॥

* या पर अपने दहिने बाएं किसी को बिठाना मेरा काम नहीं पर जिन के लिये तैयार किया गया है उन्हीं के लिये है।

* यू० लौटा देगा।

† यू० ऊंचे से ऊंचे स्थान में।

११ और वह यरूशलेम पहुंचकर मन्दिर में आया, और चारों ओर सब वस्तुओं को देखकर बारहों के साथ बैतनिय्याह गया क्योंकि सांझ हो गई थी॥

१२ दूसरे दिन जब वे बैतनिय्याह से निकले तो उस को भूख लगी। १३ और वह दूर से अंजीर का एक हरा पेड़ देखकर निकट गया, कि क्या जाने उस में कुछ पाए: पर पत्तों को छोड़ कुछ न पाया; क्योंकि फल का समय न था। १४ इस पर उस ने उस से कहा अब से कोई तेरा फल कभी न खाए। और उसके चेले सुन रहे थे॥

१५ फिर वे यरूशलेम में आए, और वह मन्दिर में गया; और वहां जो लेन-देन कर रहे थे उन्हें बाहर निकालने लगा, और सर्राफों के पीढे और कबूतर के बेचनेवालों की चौकियां उलट दीं। १६ और मन्दिर में से होकर किसी को बरतन लेकर आने जाने न दिया। १७ और उपदेश करके उन से कहा, क्या यह नहीं लिखा है, कि मेरा घर सब जातियों के लिये प्रार्थना का घर कहलाएगा? पर तुम ने इसे डाकुओं की खोह बना दी है। १८ यह सुनकर महायाजक और शास्त्री उसके नाश करने का अवसर ढूंढ़ने लगे; क्योंकि उस से डरते थे, इसलिये कि सब लोग उसके उपदेश से चकित होते थे॥

१९ और प्रति दिन सांझ होते ही वह नगर से बाहर जाया करता था। २० फिर भोर को जब वे उधर से जाते थे तो उन्हों ने उस अंजीर के पेड़ को जड़ तक सूखा हुआ देखा। २१ पतरस को वह बात स्मरण आई, और उस ने उस से कहा, हे रब्बी, देख, यह अंजीर का पेड़ जिसे तू ने स्राप दिया था सूख गया है। २२ यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि परमेश्वर पर विश्वास रखो। २३ मैं तुम से सच कहता हूं कि जो कोई इस पहाड़ से कहे; कि तू उखड़ जा, और समुद्र में जा पड़, और अपने मन में सन्देह न करे, बरन प्रतीति करे, कि जो कहता हूं वह हो जाएगा, तो उसके लिये वही होगा। २४ इसलिये मैं तुम से कहता हूं, कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके मांगो, तो प्रतीति कर लो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिये हो जाएगा। २५ और जब कभी तुम खड़े हुए प्रार्थना करते हो, तो यदि तुम्हारे मन में किसी की ओर से कुछ विरोध हो, तो क्षमा करो: इसलिये कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा करे॥ २६ [और यदि तुम क्षमा न करो तो तुम्हारा पिता भी जो स्वर्ग में है, तुम्हारा अपराध क्षमा न करेगा।]

२७ वे फिर यरूशलेम में आए, और जब वह मन्दिर में टहल रहा था तो महायाजक और शास्त्री और पुरनिए उसके पास आकर पूछने लगे। २८ कि तू ये काम किस अधिकार से करता है? और यह अधिकार तुझे किस ने दिया है कि तू ये काम करे? २९ यीशु ने उस से कहा: मैं भी तुम से एक बात पूछता हूं; मुझे उत्तर दो: तो मैं तुम्हें बताऊंगा कि ये काम किस अधिकार से करता हूं। ३० यूहन्ना का बपतिस्मा क्या स्वर्ग की ओर से था वा मनुष्यों की ओर से था? मुझे उत्तर दो। ३१ तब वे आपस में विवाद करने लगे कि यदि हम कहें, स्वर्ग की ओर से, तो वह कहेगा; फिर तुम ने उस की प्रतीति क्यों नहीं की? ३२ और यदि हम कहें, मनुष्यों की ओर से तो लोगों का डर है, क्योंकि सब जानते हैं कि यूहन्ना सचमुच भविष्यद्वक्ता है। ३३ सो उन्हों ने यीशु को उत्तर दिया, कि हम नहीं जानते: यीशु ने उन से कहा, मैं भी तुम को नहीं बताता, कि ये काम किस अधिकार से करता हूं॥

१२ फिर वह दृष्टान्त में उन से बातें करने लगा: कि किसी मनुष्य ने दाख की बारी लगाई, और उसके चारों ओर बाड़ा बान्धा, और रस का कुंड खोदा, और गुम्मट बनाया; और किसानों को उसका ठीका देकर परदेश चला गया। २ फिर फल के मौसम में उस ने किसानों के पास एक दास को भेजा कि किसान से दाख की बारी के फलों का भाग ले। ३ पर उन्हों ने उसे पकड़कर पीटा और छूछे हाथ लौटा दिया। ४ फिर उस ने एक और दास को उन के पास भेजा और उन्हों ने उसका सिर फोड़ डाला और उसका अपमान किया। ५ फिर उस ने एक और को भेजा, और उन्हों ने उसे मार डाला: तब उस ने और बहुतों को भेजा: उन में से उन्हों ने कितनों को पीटा, और कितनों को मार डाला। ६ अब एक ही रह गया था, जो उसका प्रिय पुत्र था; अन्त में उस ने उसे भी उन के पास यह सोचकर भेजा कि वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे। ७ पर उन किसानों ने आपस में कहा; यही तो वारिस है; आओ, हम उसे मार डालें, तब मीरास हमारी हो जाएगी। ८ और उन्हों ने उसे पकड़कर मार डाला, और दाख की बारी के बाहर फेंक दिया। ९ इसलिये दाख की बारी का स्वामी क्या करेगा? वह आकर उन किसानों को नाश करेगा, और दाख की बारी औरों को दे देगा। १० क्या तुम ने पवित्र शास्त्र में यह वचन नहीं पढ़ा, कि जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा हो गया? ११ यह प्रभु की ओर से हुआ, और हमारी दृष्टि में अद्भुत है। १२ तब उन्हों ने उसे पकड़ना चाहा; क्योंकि समझ गए थे, कि उस ने हमारे विरोध में यह दृष्टान्त कहा है: पर वे लोगों से डरे; और उसे छोड़ कर चले गए॥

१३ तब उन्हों ने उसे बातों में फंसाने के लिये कई एक फरीसियों और हेरोदियों को उसके पास भेजा। १४ और उन्हों ने आकर उस से कहा; हे गुरु, हम जानते हैं, कि तू सच्चा है, और किसी की परवा नहीं करता; क्योंकि तू मनुष्यों का मुंह देख कर बातें नहीं करता, परन्तु परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से बताता है। १५ तो क्या कैसर को कर देना उचित है, कि नहीं? हम दें, या न दें? उस ने उन का कपट जानकर उन से कहा; मुझे क्यों परखते हो? एक दीनार * मेरे पास लाओ, कि मैं देखूं। १६ वे ले आए, और उस ने उन से कहा; यह मूर्ति और नाम किस का है? उन्हों ने कहा, कैसर का। १७ यीशु ने उन से कहा; जो कैसर का है वह कैसर को, और जो परमेश्वर का है परमेश्वर को दो: तब वे उस पर बहुत अचम्भा करने लगे॥

१८ फिर सदूकियों ने भी, जो कहते हैं कि मरे हुओं का जी उठना है ही नहीं, उसके पास आकर उस से पूछा। १९ कि हे गुरु, मूसा ने हमारे लिये लिखा है, कि यदि किसी का भाई बिना सन्तान मर जाए, और उस की पत्नी रह जाए, तो उसका भाई उस की पत्नी को ब्याह ले और अपने भाई के लिये वंश उत्पन्न करे: सात भाई थे। २० पहिला भाई ब्याह करके बिना सन्तान मर गया। २१ तब दूसरे भाई ने उस स्त्री को ब्याह लिया और बिना सन्तान मर गया; और वैसे ही तीसरे ने भी। २२ और सातों से सन्तान न हुई: सब के पीछे वह स्त्री भी मर गई।

---

* देखो मत्ती १८ : २८।

२३ सो जी उठने पर वह उन में से किस की पत्नी होगी? क्योंकि वह सातों की पत्नी हो चुकी थी। २४ यीशु ने उन से कहा; क्या तुम इस कारण से भूल में नहीं पड़े हो, कि तुम न तो पवित्र शास्त्र ही को जानते हो, और न परमेश्वर की सामर्थ को। २५ क्योंकि जब वे मरे हुओं में से जी उठेंगे, तो उन में ब्याह शादी न होगी; पर स्वर्ग में दूतों की नाईं होंगे। २६ मरे हुओं के जी उठने के विषय में क्या तुम ने मूसा की पुस्तक में झाड़ी की कथा में नहीं पढ़ा, कि परमेश्वर ने उस से कहा, मैं इब्राहीम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूं? २७ परमेश्वर मरे हुओं का नहीं, बरन जीवतों का परमेश्वर है: सो तुम बड़ी भूल में पड़े हो॥

२८ और शास्त्रियों में से एक ने आकर उन्हें विवाद करते सुना, और यह जानकर कि उस ने उन्हें अच्छी रीति से उत्तर दिया; उस से पूछा, सब से मुख्य आज्ञा कौन सी है? २९ यीशु ने उसे उत्तर दिया, सब आज्ञाओं में से यह मुख्य है; हे इस्राएल सुन; प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है। ३० और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना। ३१ और दूसरी यह है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना: इस से बड़ी और कोई आज्ञा नहीं। ३२ शास्त्री ने उस से कहा; हे गुरु, बहुत ठीक! तू ने सच कहा, कि वह एक ही है, और उसे छोड़ और कोई नहीं। ३३ और उस से सारे मन और सारी बुद्धि और सारे प्राण और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना और पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना, सारे होमों और बलिदानों से बढ़कर है। ३४ जब यीशु ने देखा कि उस ने समझ से उत्तर दिया, तो उस से कहा; तू परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं: और किसी को फिर उस से कुछ पूछने का साहस न हुआ॥

३५ फिर यीशु ने मन्दिर में उपदेश करते हुए यह कहा, कि शास्त्री क्योंकर कहते हैं, कि मसीह दाऊद का पुत्र है? ३६ दाऊद ने आपही पवित्र आत्मा में होकर कहा है, कि प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा; मेरे दहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों की पीढ़ी न कर दूं। ३७ दाऊद तो आप ही उसे प्रभु कहता है, फिर वह उसका पुत्र कहां से ठहरा? और भीड़ के लोग उस की आनन्द से सुनते थे॥

३८ उस ने अपने उपदेश में उन से कहा, शास्त्रियों से चौकस रहो, जो लम्बे वस्त्र पहिने हुए फिरना। ३९ और बाजारों में नमस्कार, और आराधनालयों में मुख्य मुख्य आसन और जेवनारों में मुख्य मुख्य स्थान भी चाहते हैं। ४० वे विधवाओं के घरों को खा जाते हैं, और दिखाने के लिये बड़ी देर तक प्रार्थना करते रहते हैं, ये अधिक दण्ड पाएंगे॥

४१ और वह मन्दिर के भण्डार के साम्हने बैठकर देख रहा था, कि लोग मन्दिर के भण्डार में किस प्रकार पैसे डालते हैं और बहुत धनवानों ने बहुत कुछ डाला। ४२ इतने में एक कंगाल विधवा ने आकर दो दमड़ियां, जो एक अधेले के बराबर होती हैं, डालीं। ४३ तब उस ने अपने चेलों को पास बुलाकर उन से कहा; मैं तुम से सच कहता हूं, कि मन्दिर के भण्डार में डालने वालों में से इस कंगाल विधवा ने सब से बढ़कर डाला है।

४४ क्योंकि सब ने अपने धन की बढ़ती में से डाला है, परन्तु इस ने अपनी घटी में से जो कुछ उसका था, अर्थात् अपनी सारी जीविका डाल दी है ॥

१३ जब वह मन्दिर से निकल रहा था, तो उसके चेलों में से एक ने उस से कहा; हे गुरु, देख, कैसे कैसे पत्थर और कैसे कैसे भवन हैं! २ यीशु ने उस से कहा; क्या तुम ये बड़े बड़े भवन देखते हो: यहां पत्थर पर पत्थर भी बचा न रहेगा जो ढाया न जाएगा ॥

३ जब वह जैतून के पहाड़ पर मन्दिर के साम्हने बैठा था, तो पतरस और याकूब और यूहन्ना और अन्द्रियास ने अलग जाकर उस से पूछा। ४ कि हमें बता कि ये बातें कब होंगी? और जब ये सब बातें पूरी होने पर होंगी उस समय का क्या चिन्ह होगा? ५ यीशु उन से कहने लगा; चौकस रहो कि कोई तुम्हें न भरमाए। ६ बहुतेरे मेरे नाम से आकर कहेंगे, कि मैं वही हूं और बहुतों को भरमाएंगे। ७ और जब तुम लड़ाइयां, और लड़ाइयों की चर्चा सुनो; तो न घबराना: क्योंकि इन का होना अवश्य है; परन्तु उस समय अन्त न होगा। ८ क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा, और हर कहीं भुईंडोल होंगे, और अकाल पड़ेंगे; यह तो पीड़ाओं का आरम्भ ही होगा ॥

९ परन्तु तुम अपने विषय में चौकस रहो; क्योंकि लोग तुम्हें महासभाओं में सौंपेंगे और तुम पंचायतों में पीटे जाओगे; और मेरे कारण हाकिमों और राजाओं के आगे खड़े किए जाओगे, ताकि उन के लिये गवाही हो। १० पर अवश्य है कि पहिले सुसमाचार सब जातियों में प्रचार किया जाए। ११ जब वे तुम्हें ले जाकर सौंपेंगे, तो पहिले से चिन्ता न करना, कि हम क्या कहेंगे; पर जो कुछ तुम्हें उसी घड़ी बताया जाए, वही कहना; क्योंकि बोलनेवाले तुम नहीं हो, परन्तु पवित्र आत्मा है। १२ और भाई को भाई, और पिता को पुत्र घात के लिये सौंपेंगे, और लड़केवाले माता-पिता के विरोध में उठकर उन्हें मरवा डालेंगे। १३ और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे; पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा ॥

१४ सो जब तुम उस उजाड़नेवाली घृणित वस्तु को जहां उचित नहीं वहां खड़ी देखो, (पढ़नेवाला समझ ले) तब जो यहूदिया में हों, वे पहाड़ों पर भाग जाएं। १५ जो कोठे पर हो, वह अपने घर से कुछ लेने को नीचे न उतरे और न भीतर जाए। १६ और जो खेत में हो, वह अपना कपड़ा लेने के लिये पीछे न लौटे। १७ उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी, उन के लिये हाय हाय! १८ और प्रार्थना किया करो कि यह जाड़े में न हो। १९ क्योंकि वे दिन ऐसे क्लेश के होंगे, कि सृष्टि के आरम्भ से जो परमेश्वर ने सृजी है अब तक न तो हुए, और न फिर कभी होंगे। २० और यदि प्रभु उन दिनों को न घटाता, तो कोई प्राणी भी न बचता; परन्तु उन चुने हुओं के कारण जिन को उस ने चुना है, उन दिनों को घटाया। २१ उस समय यदि कोई तुम से कहे; देखो, मसीह यहां है, या देखो, वहां है, तो प्रतीति न करना। २२ क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और चिन्ह और अद्भुत काम दिखाएंगे कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें। २३ पर तुम

चौकस रहो : देखो, मैं ने तुम्हें सब बातें पहिले ही से कह दी हैं ॥

२४ उन दिनों में, उस क्लेश के बाद सूरज अन्धेरा हो जाएगा, और चान्द प्रकाश न देगा। २५ और आकाश से तारागण गिरने लगेंगे : और आकाश की शक्तियां हिलाई जाएंगी। २६ तब लोग मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ और महिमा के साथ बादलों में आते देखेंगे। २७ उस समय वह अपने दूतों को भेजकर, पृथ्वी के इस छोर से आकाश की उस छोर तक चारों दिशा से अपने चुने हुए लोगों को इकट्ठे करेगा ॥

२८ अंजीर के पेड़ से यह दृष्टान्त सीखो : जब उस की डाली कोमल हो जाती; और पत्ते निकलने लगते हैं; तो तुम जान लेते हो, कि ग्रीष्मकाल निकट है। २९ इसी रीति से जब तुम इन बातों को होते देखो, तो जान लो, कि वह निकट है, वरन द्वार ही पर है। ३० मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक ये सब बातें न हो लेंगी, तब तक यह लोग * जाते न रहेंगे। ३१ आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी। ३२ उस दिन या उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र; परन्तु केवल पिता। ३३ देखो, जागते और प्रार्थना करते रहो; क्योंकि तुम नहीं जानते कि वह समय कब आएगा। ३४ यह उस मनुष्य की सी दशा है, जो परदेश जाते समय अपना घर छोड़ जाए, और अपने दासों को अधिकार दे : और हर एक को उसका काम जता दे, और द्वारपाल को जागते रहने की आज्ञा दे। ३५ इसलिये जागते रहो; क्योंकि तुम नहीं जानते कि घर का स्वामी कब आएगा, सांझ को या आधी रात को, या मुर्ग़ के बांग देने के समय या भोर को। ३६ ऐसा न हो कि वह अचानक आकर तुम्हें सोते पाए। ३७ और जो मैं तुम से कहता हूं, वही सब से कहता हूं, जागते रहो ॥

* यू० यह पीढ़ी जाती न रहेगी।

१४

दो दिन के बाद फसह और अखमीरी रोटी का पर्ब्ब होनेवाला था : और महायाजक और शास्त्री इस बात की खोज में थे कि उसे क्योंकर छल से पकड़ कर मार डालें। २ परन्तु कहते थे, कि पर्ब्ब के दिन नहीं, कहीं ऐसा न हो कि लोगों में बलवा मचे ॥

३ जब वह बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर भोजन करने बैठा हुआ था तब एक स्त्री संगमरमर के पात्र में जटामांसी का बहुमूल्य शुद्ध इत्र लेकर आई; और पात्र तोड़ कर इत्र को उसके सिर पर उण्डेला। ४ परन्तु कोई कोई अपने मन में रिसिया-कर कहने लगे, इस इत्र को क्यों सत्यानाश किया गया? ५ क्योंकि यह इत्र तो तीन सौ दीनार * से अधिक मूल्य में बेचकर कंगालों को बांटा जा सकता था, और वे उस को झिड़कने लगे। ६ यीशु ने कहा; उसे छोड़ दो; उसे क्यों सताते हो? उस ने तो मेरे साथ भलाई की है। ७ कंगाल तुम्हारे साथ सदा रहते हैं : और तुम जब चाहो तब उन से भलाई कर सकते हो; पर मैं तुम्हारे साथ सदा न रहूंगा। ८ जो कुछ वह कर सकी, उस ने किया; उस ने मेरे गाड़े जाने की तैयारी में पहिले से मेरी देह पर इत्र मला है। ९ मैं तुम से सच कहता हूं, कि सारे जगत में जहां कहीं सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहां उसके

* देखो मत्ती १८ : २८।

इस काम की चर्चा भी उसके स्मरण में की जाएगी ॥

१० तब यहूदा इसकरियोती जो बारह में से एक था, महायाजकों के पास गया, कि उसे उन के हाथ पकड़वा दे। ११ वे यह सुनकर आनन्दित हुए, और उस को रुपये देना स्वीकार किया, और यह अवसर ढूंढ़ने लगा कि उसे किसी प्रकार पकड़वा दे ॥

१२ अखमीरी रोटी के पर्ब्ब के पहिले दिन, जिस में वे फसह का बलिदान करते थे, उसके चेलों ने उस से पूछा, तू कहां चाहता है, कि हम जाकर तेरे लिये फसह खाने की तैयारी करें? १३ उस ने अपने चेलों में से दो को यह कहकर भेजा, कि नगर में जाओ, और एक मनुष्य जल का घड़ा उठाए हुए तुम्हें मिलेगा, उसके पीछे हो लेना। १४ और वह जिस घर में जाए, उस घर के स्वामी से कहना; गुरु कहता है, कि मेरी पाहुनशाला जिस में मैं अपने चेलों के साथ फसह खाऊं कहां है? १५ वह तुम्हें एक सजी सजाई, और तैयार की हुई बड़ी अटारी दिखा देगा, वहां हमारे लिये तैयारी करो। १६ सो चेले निकल-कर नगर में आये और जैसा उस ने उन से कहा था, वैसा ही पाया, और फसह तैयार किया ॥

१७ जब सांझ हुई, तो वह बारहों के साथ आया। १८ और जब वे बैठे भोजन कर रहे थे, तो यीशु ने कहा; मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुम में से एक, जो मेरे साथ भोजन कर रहा है, मुझे पकड़वाएगा। १९ उन पर उदासी छा गई और वे एक एक करके उस से कहने लगे; क्या वह मैं हूं? २० उस ने उन से कहा, वह बारहों में से एक है, जो मेरे साथ थाली में हाथ डालता है। २१ क्योंकि मनुष्य का पुत्र तो, जैसा उसके विषय में लिखा है, जाता ही है; परन्तु उस मनुष्य पर हाय जिस के द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है! यदि उस मनुष्य का जन्म ही न होता, तो उसके लिये भला होता ॥

२२ और जब वे खा ही रहे थे तो उस ने रोटी ली, और आशीष मांगकर तोड़ी, और उन्हें दी, और कहा, लो, यह मेरी देह है। २३ फिर उस ने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, और उन्हें दिया; और उन सब ने उस में से पीया। २४ और उस ने उन से कहा, यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिये बहाया जाता है। २५ मैं तुम से सच कहता हूं, कि दाख का रस उस दिन तक फिर कभी न पीऊंगा, जब तक परमेश्वर के राज्य में नया न पीऊं ॥

२६ फिर वे भजन गाकर बाहर जैतून के पहाड़ पर गए ॥

२७ तब यीशु ने उन से कहा; तुम सब ठोकर खाओगे, क्योंकि लिखा है, कि मैं रखवाले को मारूंगा, और भेड़ तित्तर-बित्तर हो जाएंगी। २८ परन्तु मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहिले गलील को जाऊंगा। २९ पतरस ने उस से कहा; यदि सब ठोकर खाएं तो खाएं, पर मैं ठोकर नहीं खाऊंगा। ३० यीशु ने उस से कहा; मैं तुझ से सच कहता हूं, कि आज ही इसी रात को मुर्गे के दो बार बांग देने से पहिले, तू तीन बार मुझ से मुकर जाएगा। ३१ पर उस ने और भी जोर देकर कहा, यदि मुझे तेरे साथ मरना भी पड़े तौभी तेरा इन्कार कभी न करूंगा: इसी प्रकार और सब ने भी कहा ॥

३२ फिर वे गतसमने नाम एक जगह में आए, और उस ने अपने चेलों से कहा,

यहां बैठे रहो, जब तक मैं प्रार्थना करूं। ३३ और वह पतरस और याकूब और यूहन्ना को अपने साथ ले गया: और बहुत ही अधीर, और व्याकुल होने लगा। ३४ और उन से कहा; मेरा मन बहुत उदास है, यहां तक कि मैं मरने पर हूं: तुम यहां ठहरो, और जागते रहो। ३५ और वह थोड़ा आगे बढ़ा, और भूमि पर गिरकर प्रार्थना करने लगा, कि यदि हो सके तो यह घड़ी मुझ पर से टल जाए। ३६ और कहा, हे अब्बा, हे पिता, तुझ से सब कुछ हो सकता है; इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले: तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, पर जो तू चाहता है वही हो। ३७ फिर वह आया, और उन्हें सोते पाकर पतरस से कहा; हे शमौन तू सो रहा है? क्या तू एक घड़ी भी न जाग सका? ३८ जागते और प्रार्थना करते रहो कि तुम परीक्षा में न पड़ो: आत्मा तो तैयार है, पर शरीर दुर्बल है। ३९ और वह फिर चला गया, और वही बात कहकर प्रार्थना की। ४० और फिर आकर उन्हें सोते पाया, क्योंकि उन की आंखें नींद से भरी थीं; और नहीं जानते थे कि उसे क्या उत्तर दें। ४१ फिर तीसरी बार आकर उन से कहा; अब सोते रहो और विश्राम करो, बस, घड़ी आ पहुंची; देखो मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया जाता है। ४२ उठो, चलें: देखो, मेरा पकड़वानेवाला निकट आ पहुंचा है॥

४३ वह यह कह ही रहा था, कि यहूदा जो बारहों में से था, अपने साथ महायाजकों और शास्त्रियों और पुरनियों की ओर से एक बड़ी भीड़ तलवारें और लाठियां लिए हुए तुरन्त आ पहुंची। ४४ और उसके पकड़वानेवाले ने उन्हें यह पता दिया था, कि जिस को मैं चूमूं वही है, उसे पकड़कर यतन से ले जाना। ४५ और वह आया, और तुरन्त उसके पास जाकर कहा; हे रब्बी और उस को बहुत चूमा। ४६ तब उन्हों ने उस पर हाथ डालकर उसे पकड़ लिया। ४७ उन में से जो पास खड़े थे, एक ने तलवार खींच कर महायाजक के दास पर चलाई, और उसका कान उड़ा दिया। ४८ यीशु ने उन से कहा; क्या तुम डाकू जानकर मेरे पकड़ने के लिये तलवारें और लाठियां लेकर निकले हो? ४९ मैं तो हर दिन मन्दिर में तुम्हारे साथ रहकर उपदेश दिया करता था, और तब तुम ने मुझे न पकड़ा: परन्तु यह इसलिये हुआ है कि पवित्र शास्त्र की बातें पूरी हों। ५० इस पर सब चेले उसे छोड़कर भाग गए॥

५१ और एक जवान अपनी नंगी देह पर चादर ओढ़े हुए उसके पीछे हो लिया; और लोगों ने उसे पकड़ा। ५२ पर वह चादर छोड़कर नंगा भाग गया॥

५३ फिर वे यीशु को महायाजक के पास ले गए; और सब महायाजक और पुरनिए और शास्त्री उसके यहां इकट्ठे हो गए। ५४ पतरस दूर ही दूर से उसके पीछे पीछे महायाजक के आंगन के भीतर तक गया, और प्यादों के साथ बैठ कर आग तापने लगा। ५५ महायाजक और सारी महासभा यीशु के मार डालने के लिये उसके विरोध में गवाही की खोज में थे, पर न मिली। ५६ क्योंकि बहुतेरे उसके विरोध में झूठी गवाही दे रहे थे, पर उन की गवाही एक सी न थी। ५७ तब कितनों ने उठकर उस पर यह झूठी गवाही दी। ५८ कि हम ने इसे यह कहते सुना है कि मैं इस हाथ के बनाए हुए मन्दिर को

ढा दूंगा, और तीन दिन में दूसरा बनाऊंगा, जो हाथ से न बना हो। **५६** इस पर भी उन की गवाही एक सी न निकली। **६०** तब महायाजक ने बीच में खड़े होकर यीशु से पूछा; कि तू कोई उत्तर नहीं देता? ये लोग तेरे विरोध में क्या गवाही देते हैं? **६१** परन्तु वह मौन साधे रहा, और कुछ उत्तर न दिया: महायाजक ने उस से फिर पूछा, क्या तू उस परम धन्य का पुत्र मसीह है? **६२** यीशु ने कहा; हां मैं हूं: और तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान * की दहिनी ओर बैठे, और आकाश के बादलों के साथ आते देखोगे। **६३** तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाडकर कहा; अब हमें गवाहों का और क्या प्रयोजन है? **६४** तुम ने यह निन्दा सुनी: तुम्हारी क्या राय है? उन सब ने कहा, वह वध के योग्य है। **६५** तब कोई तो उस पर थूकने, और कोई उसका मुंह ढांपने और उसे घूंसे मारने, और उस से कहने लगे, कि भविष्यद्वाणी कर: और प्यादों ने उसे लेकर थप्पड़ मारे॥

६६ जब पतरस नीचे आंगन में था, तो महायाजक की लौंडियों में से एक वहां आई। **६७** और पतरस को आग तापते देखकर उस पर टकटकी लगाकर देखा और कहने लगी, तू भी तो उस नासरी यीशु के साथ था। **६८** वह मुकर गया, और कहा, कि मैं तो नहीं जानता और नहीं समझता कि तू क्या कह रही है: फिर वह बाहर डेवढ़ी में गया; और मुर्ग़ ने बांग दी। **६९** वह लौंडी उसे देखकर उन से जो पास खड़े थे, फिर कहने लगी, यह उन में से एक है। **७०** परन्तु वह फिर मुकर गया और थोड़ी देर बाद उन्हों ने जो पास खड़े थे फिर पतरस से कहा; निश्चय तू उन में से एक है; क्योंकि तू गलीली भी है। **७१** तब वह धिक्कार देने और शपथ खाने लगा, कि मैं उस मनुष्य को, जिस की तुम चर्चा करते हो, नहीं जानता। **७२** तब तुरन्त दूसरी बार मुर्ग़ ने बांग दी: पतरस को वह बात जो यीशु ने उस से कही थी स्मरण आई, कि मुर्ग़ के दो बार बांग देने से पहिले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा: वह इस बात को सोचकर रोने लगा॥

१५ और भोर होते ही तुरन्त महायाजकों, पुरनियों, और शास्त्रियों ने बरन सारी महासभा ने सलाह करके यीशु को बन्धवाया, और उसे ले जाकर पीलातुस के हाथ सौंप दिया। **२** और पीलातुस ने उस से पूछा, क्या तू यहूदियों का राजा है? उस ने उस को उत्तर दिया; कि तू आप ही कह रहा है। **३** और महायाजक उस पर बहुत बातों का दोष लगा रहे थे। **४** पीलातुस ने उस से फिर पूछा, क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता, देख ये तुझ पर कितनी बातों का दोष लगाते हैं? **५** यीशु ने फिर कुछ उत्तर नहीं दिया; यहां तक कि पीलातुस को बड़ा आश्चर्य हुआ॥

६ और वह उस पर्ब्ब में किसी एक बन्धुए को जिसे वे चाहते थे, उन के लिये छोड़ दिया करता था। **७** और बरअब्बा नाम का एक मनुष्य उन बलवाइयों के साथ बन्धुआ था, जिन्हों ने बलवे में हत्या की थी। **८** और भीड़ ऊपर जाकर उस से बिनती करने लगी, कि जैसा तू हमारे लिये करता आया है वैसा ही कर। **९** पीलातुस

---

* यू० सामर्थ।

ने उन को यह उत्तर दिया, क्या तुम चाहते हो, कि मैं तुम्हारे लिये यहूदियों के राजा को छोड़ दूं? १० क्योंकि वह जानता था, कि महायाजकों ने उसे डाह से पकड़वाया था। ११ परन्तु महायाजकों ने लोगों को उभारा, कि वह बरअब्बा ही को उन के लिये छोड़ दे। १२ यह सुन पीलातुस ने उन से फिर पूछा; तो जिसे तुम यहूदियों का राजा कहते हो, उस को मैं क्या करूं? वे फिर चिल्लाए, कि उसे क्रूस पर चढ़ा दे। १३ पीलातुस ने उन से कहा; क्यों, इस ने क्या बुराई की है? १४ परन्तु वे और भी चिल्लाए, कि उसे क्रूस पर चढ़ा दे। १५ तब पीलातुस ने भीड़ को प्रसन्न करने की इच्छा से, बरअब्बा को उन के लिये छोड़ दिया, और यीशु को कोड़े लगवाकर सौंप दिया, कि क्रूस पर चढ़ाया जाए। १६ और सिपाही उसे किले के भीतर के आंगन में ले गए जो प्रीटोरियुन कहलाता है, और सारी पलटन को बुला लाए। १७ और उन्हों ने उसे बैंजनी वस्त्र पहिनाया और कांटों का मुकुट गूथकर उसके सिर पर रखा। १८ और यह कहकर उसे नमस्कार करने लगे, कि हे यहूदियों के राजा, नमस्कार! १९ और वे उसके सिर पर सरकण्डे मारते, और उस पर थूकते, और घुटने टेककर उसे प्रणाम करते रहे। २० और जब वे उसका ठट्ठा कर चुके, तो उस पर से बैंजनी वस्त्र उतारकर उसी के कपड़े पहिनाए; और तब उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिये बाहर ले गए॥

२१ और सिकन्दर और रूफुस का पिता, शमौन नाम एक कुरेनी मनुष्य, जो गांव से आ रहा था उधर से निकला; उन्हों ने उसे बेगार में पकड़ा, कि उसका क्रूस उठा ले चले। २२ और वे उसे गुलगुता नाम जगह पर जिस का अर्थ खोपड़ी की जगह है लाए। २३ और उसे मुर्र मिला हुआ दाखरस देने लगे, परन्तु उस ने नहीं लिया। २४ तब उन्हों ने उस को क्रूस पर चढ़ाया, और उसके कपड़ों पर चिट्ठियां डालकर, कि किस को क्या मिले, उन्हें बांट लिया। २५ और पहर दिन चढ़ा था, जब उन्हों ने उस को क्रूस पर चढ़ाया। २६ और उसका दोषपत्र लिखकर उसके ऊपर लगा दिया गया कि **"यहूदियों का राजा"**। २७ और उन्हों ने उसके साथ दो डाकू, एक उस की दहिनी और एक उस की बाईं ओर क्रूस पर चढ़ाए। २८ [तब धर्मशास्त्र का वह वचन कि वह अपराधियों के संग गिना गया, पूरा हुआ।] २९ और मार्ग में जानेवाले सिर हिला हिलाकर और यह कहकर उस की निन्दा करते थे, कि वाह! मन्दिर के ढानेवाले, और तीन दिन में बनानेवाले! क्रूस पर से उतर कर अपने आप को बचा ले। ३० इसी रीति से महायाजक भी, शास्त्रियों समेत, ३१ आपस में ठट्ठे से कहते थे; कि इस ने औरों को बचाया, और अपने को नहीं बचा सकता। ३२ इस्राएल का राजा मसीह अब क्रूस पर से उतर आए कि हम देखकर विश्वास करें: और जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे, वे भी उस की निन्दा करते थे॥

३३ और दोपहर होने पर, सारे देश में अन्धियारा छा गया; और तीसरे पहर तक रहा। ३४ तीसरे पहर यीशु ने बड़े शब्द से पुकार कर कहा, इलोई, इलोई, लमा शबक्तनी? जिस का अर्थ यह है; हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया? ३५ जो पास खड़े थे, उन में से कितनों ने यह सुनकर कहा: देखो,

यह एलिय्याह को पुकारता है। ३६ और एक ने दौड़कर इस्पंज को सिरके में डुबोया, और सरकण्डे पर रखकर उसे चुसाया; और कहा, ठहर जाओ, देखें, कि एलिय्याह उसे उतारने के लिये आता है कि नहीं। ३७ तब यीशु ने बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण छोड़ दिये। ३८ और मन्दिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया। ३९ जो सूबेदार उसके साम्हने खड़ा था, जब उसे यूं चिल्लाकर प्राण छोड़ते हुए देखा, तो उस ने कहा, सचमुच यह मनुष्य, परमेश्वर का पुत्र था। ४० कई स्त्रियां भी दूर से देख रही थीं: उन में मरियम मगदलीनी और छोटे याकूब की और योसेस की माता मरियम और शलोमी थीं। ४१ जब वह गलील में था, तो ये उसके पीछे हो लेती थीं और उस की सेवाटहल किया करती थीं; और और भी बहुत सी स्त्रियां थीं, जो उसके साथ यरूशलेम में आई थीं॥

४२ जब संध्या हो गई, तो इसलिये कि तैयारी का दिन था, जो सब्त * के एक दिन पहिले होता है। ४३ अरिमतिया का रहनेवाला यूसुफ आया, जो प्रतिष्ठित मंत्री और आप भी परमेश्वर के राज्य की बाट जोहता था; वह हियाव करके पीलातुस के पास गया और यीशु की लोथ मांगी। ४४ पीलातुस ने आश्चर्य किया, कि वह इतना शीघ्र मर गया; और सूबेदार को बुलाकर पूछा, कि क्या उस को मरे हुए देर हुई? ४५ सो जब सूबेदार के द्वारा हाल जान लिया, तो लोथ यूसुफ को दिला दी। ४६ तब उस ने एक पतली चादर मोल ली, और लोथ को उतारकर उस चादर में लपेटा, और एक कब्र में जो चट्टान में खोदी गई थी रखा, और कब्र के द्वार पर एक पत्थर लुढ़का दिया। ४७ और मरियम मगदलीनी और योसेस की माता मरियम देख रही थीं, कि वह कहां रखा गया है॥

१६ जब सब्त का दिन बीत गया, तो मरियम मगदलीनी और याकूब की माता मरियम और शलोमी ने सुगन्धित वस्तुएं मोल लीं, कि आकर उस पर मलें। २ और सप्ताह के पहिले दिन बड़ी भोर, जब सूरज निकला ही था, वे कब्र पर आईं। ३ और आपस में कहती थीं, कि हमारे लिये कब्र के द्वार पर से पत्थर कौन लुढ़काएगा? ४ जब उन्हों ने आंख उठाई, तो देखा कि पत्थर लुढ़का हुआ है! क्योंकि वह बहुत ही बड़ा था। ५ और कब्र के भीतर जाकर, उन्हों ने एक जवान को श्वेत वस्त्र पहिने हुए दहिनी ओर बैठे देखा, और बहुत चकित हुईं। ६ उस ने उन से कहा, चकित मत हो, तुम यीशु नासरी को, जो क्रूस पर चढ़ाया गया था, ढूंढ़ती हो: वह जी उठा है; यहां नहीं है; देखो, यही वह स्थान है, जहां उन्हों ने उसे रखा था। ७ परन्तु तुम जाओ, और उसके चेलों और पतरस से कहो, कि वह तुम से पहिले गलील को जाएगा; जैसा उस ने तुम से कहा था, तुम वहीं उसे देखोगे। ८ और वे निकलकर कब्र से भाग गईं; क्योंकि कपकपी और घबराहट उन पर छा गई थीं और उन्हों ने किसी से कुछ न कहा, क्योंकि डरती थीं॥

९ सप्ताह के पहिले दिन भोर होते ही वह जी उठ कर पहिले पहिल मरियम मगदलीनी को जिस में से उस ने सात

---
* सब्त—यहूदियों का विश्रामदिन कहलाता है।

दुष्टात्माएं निकाली थीं, दिखाई दिया। १० उस ने जाकर उसके साथियों को जो शोक में डूबे हुए थे और रो रहे थे, समाचार दिया। ११ और उन्हों ने यह सुनकर कि वह जीवित है, और उस ने उसे देखा है, प्रतीति न की।।

१२ इस के बाद वह दूसरे रूप में उन में से दो को जब वे गांव की ओर जा रहे थे, दिखाई दिया। १३ उन्हों ने भी जाकर औरों को समाचार दिया, परन्तु उन्हों ने उन की भी प्रतीति न की।।

१४ पीछे वह उन ग्यारहों को भी, जब वे भोजन करने बैठे थे दिखाई दिया, और उन के अविश्वास और मन की कठोरता पर उलाहना दिया, क्योंकि जिन्हों ने उसके जी उठने के बाद उसे देखा था, इन्हों ने उन की प्रतीति न की थी। १५ और उस ने उन से कहा, तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। १६ जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा। १७ और विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे। १८ नई नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे, और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएं तौभी उन की कुछ हानि न होगी, वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएंगे।।

१९ निदान प्रभु यीशु उन से बातें करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया, और परमेश्वर की दहिनी ओर बैठ गया। २० और उन्हों ने निकलकर हर जगह प्रचार किया, और प्रभु उन के साथ काम करता रहा, और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ साथ होते थे वचन को, दृढ़ करता रहा। आमीन।।

लूका रचित सुसमाचार

१ इसलिये कि बहुतों ने उन बातों का जो हमारे बीच में बीती हैं इतिहास लिखने में हाथ लगाया है। २ जैसा कि उन्हों ने जो पहिले ही से इन बातों के देखनेवाले और वचन के सेवक थे हम तक पहुंचाया। ३ इसलिये हे श्रीमान् थियुफिलुस मुझे भी यह उचित मालूम हुआ कि उन सब बातों का सम्पूर्ण हाल आरम्भ से ठीक ठीक जांच करके उन्हें तेरे लिये क्रमानुसार लिखूं। ४ कि तू यह जान ले, कि वे बातें जिनकी तू ने शिक्षा पाई है, कैसी अटल हैं।।

५ यहूदियों के राजा हेरोदेस के समय अबिय्याह के दल * में जकरयाह नाम का एक याजक था, और उस की पत्नी हारून के वंश की थी, जिस का नाम इलीशिबा था। ६ और वे दोनों परमेश्वर के साम्हने धर्मी थे: और प्रभु की सारी आज्ञाओं और विधियों पर निर्दोष चलनेवाले थे।

* इतिहास २३ : ६–२३ को देखो।

उन के कोई भी सन्तान न थी, ७ क्योंकि इलीशिबा बांझ थी, और वे दोनों बूढ़े थे॥

८ जब वह अपने दलकी पारी पर परमेश्वर के साम्हने याजक का काम करता था। ९ तो याजकों की रीति के अनुसार उसके नाम पर चिट्ठी निकली, कि प्रभु के मन्दिर में जाकर धूप जलाए। १० और धूप जलाने के समय लोगों की सारी मण्डली बाहर प्रार्थना कर रही थी। ११ कि प्रभु का एक स्वर्गदूत धूप की वेदी की दहिनी ओर खड़ा हुआ उस को दिखाई दिया। १२ और जकरयाह देखकर घबराया और उस पर बड़ा भय छा गया। १३ परन्तु स्वर्गदूत ने उस से कहा, हे जकरयाह, भयभीत न हो क्योंकि तेरी प्रार्थना सुन ली गई है और तेरी पत्नी इलीशिबा से तेरे लिये एक पुत्र उत्पन्न होगा, और तू उसका नाम यूहन्ना रखना। १४ और तुझे आनन्द और हर्ष होगा: और बहुत लोग उसके जन्म के कारण आनन्दित होंगे। १५ क्योंकि वह प्रभु के साम्हने महान होगा; और दाखरस और मदिरा कभी न पिएगा; और अपनी माता के गर्भ ही से पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाएगा। १६ और इस्राएलियों में से बहुतेरों को उन के प्रभु परमेश्वर की ओर फेरेगा। १७ वह एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ में हो कर उसके आगे आगे चलेगा, कि पितरों का मन लड़केबालों की ओर फेर दे; और आज्ञा न माननेवालों को धर्मियों की समझ पर लाए; और प्रभु के लिये एक योग्य प्रजा तैयार करे। १८ जकरयाह ने स्वर्गदूत से पूछा; यह मैं कैसे जानूं? क्योंकि मैं तो बूढ़ा हूं; और मेरी पत्नी भी बूढ़ी हो गई है। १९ स्वर्गदूत ने उस को उत्तर दिया, कि मैं जिब्राईल हूं, जो परमेश्वर के साम्हने खड़ा रहता हूं; और मैं तुझ से बातें करने और तुझे यह सुसमाचार सुनाने को भेजा गया हूं। २० और देख जिस दिन तक ये बातें पूरी न हो लें, उस दिन तक तू मौन रहेगा, और बोल न सकेगा, इसलिये कि तू ने मेरी बातों की जो अपने समय पर पूरी होंगी, प्रतीति न की। २१ और लोग जकरयाह की बाट देखते रहे और अचम्भा करने लगे कि उसे मन्दिर में ऐसी देर क्यों लगी? २२ जब वह बाहर आया, तो उन से बोल न सका: सो वे जान गए, कि उस ने मन्दिर में कोई दर्शन पाया है; और वह उन से संकेत करता रहा, और गूंगा रह गया। २३ जब उस की सेवा के दिन पूरे हुए, तो वह अपने घर चला गया॥

२४ इन दिनों के बाद उस की पत्नी इलीशिबा गर्भवती हुई; और पांच महीने तक अपने आप को यह कह के छिपाए रखा। २५ कि मनुष्यों में मेरा अपमान दूर करने के लिये प्रभु ने इन दिनों में कृपादृष्टि करके मेरे लिये ऐसा किया है॥

२६ छठवें महीने में परमेश्वर की ओर से जिब्राईल स्वर्गदूत गलील के नासरत नगर में एक कुंवारी के पास भेजा गया। २७ जिस की मंगनी यूसुफ नाम दाऊद के घराने के एक पुरुष से हुई थी: उस कुंवारी का नाम मरियम था। २८ और स्वर्गदूत ने उसके पास भीतर आकर कहा; आनन्द और जय* तेरी हो, जिस पर ईश्वर का अनुग्रह हुआ है, प्रभु तेरे साथ है। २९ वह उस वचन से बहुत घबरा गई, और सोचने लगी, कि यह किस प्रकार का अभिवादन

* अर्थात् सलाम तुझ को।

है ? ३० स्वर्गदूत ने उस से कहा, हे मरियम; भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है। ३१ और देख, तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना। ३२ वह महान होगा; और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उस को देगा। ३३ और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का अन्त न होगा। ३४ मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, यह क्योंकर होगा? मैं तो पुरुष को जानती ही नहीं। ३५ स्वर्गदूत ने उस को उत्तर दिया; कि पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी इसलिये वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा। ३६ और देख, और तेरी कुटुम्बिनी इलीशिबा के भी बुढ़ापे में पुत्र होनेवाला है, यह उसका, जो बांझ कहलाती थी छठवां महीना है। ३७ क्योंकि जो वचन परमेश्वर की ओर से होता है वह प्रभावरहित नहीं होता। ३८ मरियम ने कहा, देख, मैं प्रभु की दासी हूं, मुझे तेरे वचन के अनुसार हो: तब स्वर्गदूत उसके पास से चला गया॥

३९ उन दिनों में मरियम उठकर शीघ्र ही पहाड़ी देश में यहूदा के एक नगर को गई। ४० और जकरयाह के घर में जाकर इलीशिबा को नमस्कार किया। ४१ ज्योंही इलीशिबा ने मरियम का नमस्कार सुना, त्योंही बच्चा उसके पेट में उछला, और इलीशिबा पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गई। ४२ और उस ने बडे शब्द से पुकार कर कहा, तू स्त्रियों में धन्य है, और तेरे पेट का फल धन्य है। ४३ और यह अनुग्रह मुझे कहां से हुआ, कि मेरे प्रभु की माता मेरे पास आई? ४४ और देख, ज्योंही तेरे नमस्कार का शब्द मेरे कानों में पड़ा, त्योंही बच्चा मेरे पेट में आनन्द से उछल पड़ा। ४५ और धन्य है, वह जिस ने विश्वास किया कि जो बातें प्रभु की ओर से उस से कही गईं, वे पूरी होंगी। ४६ तब मरियम ने कहा, मेरा प्राण प्रभु की बड़ाई करता है। ४७ और मेरी आत्मा मेरे उद्धार करनेवाले परमेश्वर से आनन्दित हुई। ४८ क्योंकि उस ने अपनी दासी की दीनता पर दृष्टि की है, इसलिये देखो, अब से सब युग युग के लोग मुझे धन्य कहेंगे। ४९ क्योंकि उस शक्तिमान ने मेरे लिये बड़े बड़े काम किए हैं, और उसका नाम पवित्र है। ५० और उस की दया उन पर, जो उस से डरते हैं, पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है। ५१ उस ने अपना भुजबल दिखाया, और जो अपने आप को बड़ा समझते थे उन्हें तित्तर-बित्तर किया। ५२ उस ने बलवानों को सिंहासनों से गिरा दिया; और दीनों को ऊंचा किया। ५३ उस ने भूखों को अच्छी वस्तुओं से तृप्त किया, और धनवानों को छूछे हाथ निकाल दिया। ५४ उस ने अपने सेवक इस्राएल को सम्भाल लिया। ५५ कि अपनी उस दया को स्मरण करे, जो इब्राहीम और उसके वंश पर सदा रहेगी, जैसा उस ने हमारे बाप-दादों से कहा था। ५६ मरियम लगभग तीन महीने उसके साथ रहकर अपने घर लौट गई॥

५७ तब इलीशिबा के जनने का समय पूरा हुआ, और वह पुत्र जनी। ५८ उसके पड़ोसियों और कुटुम्बियों ने यह सुन कर, कि प्रभु ने उस पर बड़ी दया की है, उसके साथ आनन्दित हुए। ५९ और ऐसा हुआ

कि आठवें दिन वे बालक का खतना करने आए और उसका नाम उसके पिता के नाम पर जकरयाह रखने लगे। ६० और उस की माता ने उत्तर दिया कि नहीं; बरन उसका नाम यूहन्ना रखा जाए। ६१ और उन्हों ने उस से कहा, तेरे कुटुम्ब में किसी का यह नाम नहीं! ६२ तब उन्हों ने उसके पिता से संकेत करके पूछा। ६३ कि तू उसका नाम क्या रखना चाहता है? और उस ने लिखने की पट्टी मंगाकर लिख दिया, कि उसका नाम यूहन्ना है: और सभों ने अचम्भा किया। ६४ तब उसका मुंह और जीभ तुरन्त खुल गई; और वह बोलने और परमेश्वर का धन्यवाद करने लगा। ६५ और उसके आस पास के सब रहनेवालों पर भय छा गया; और उन सब बातों की चर्चा यहूदिया के सारे पहाड़ी देश में फैल गई। ६६ और सब सुननेवालों ने अपने अपने मन में विचार करके कहा, यह बालक कैसा होगा क्योंकि प्रभु का हाथ उसके साथ था॥

६७ और उसका पिता जकरयाह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गया, और भविष्यद्वाणी करने लगा। ६८ कि प्रभु इस्राएल का परमेश्वर धन्य हो, कि उस ने अपने लोगों पर दृष्टि की और उन का छुटकारा किया है। ६९ और अपने सेवक दाऊद के घराने में हमारे लिये एक उद्धार का सींग निकाला। ७० [जैसे उस ने अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा जो जगत के आदि से होते आए हैं, कहा था]। ७१ अर्थात् हमारे शत्रुओं से, और हमारे सब बैरियों के हाथ से हमारा उद्धार किया है। ७२ कि हमारे बाप-दादों पर दया करके अपनी पवित्र वाचा का स्मरण करे। ७३ और वह शपथ जो उस ने हमारे पिता इब्राहीम से खाई थी। ७४ कि वह हमें यह देगा, कि हम अपने शत्रुओं के हाथ से छुटकर। ७५ उसके साम्हने पवित्रता और धार्मिकता से जीवन भर निडर रहकर उस की सेवा करते रहें। ७६ और तू हे बालक, परमप्रधान का भविष्यद्वक्ता कहलाएगा, क्योंकि तू प्रभु के मार्ग तैयार करने के लिये उसके आगे आगे चलेगा, ७७ कि उसके लोगों को उद्धार का ज्ञान दे, जो उन के पापों की क्षमा से प्राप्त होता है। ७८ यह हमारे परमेश्वर की उसी बड़ी करुणा से होगा; जिस के कारण ऊपर से हम पर भोर का प्रकाश उदय होगा। ७९ कि अन्धकार और मृत्यु की छाया में बैठनेवालों को ज्योति दे, और हमारे पांवों को कुशल के मार्ग में सीधे चलाए॥

८० और वह बालक बढ़ता और आत्मा में बलवन्त होता गया, और इस्राएल पर प्रगट होने के दिन तक जंगलों में रहा॥

२ उन दिनों में औगूस्तुस कैसर की ओर से आज्ञा निकली, कि सारे जगत के लोगों के नाम लिखे जाएं। २ यह पहिली नाम लिखाई उस समय हुई, जब क्विरिनियुस सूरिया का हाकिम था। ३ और सब लोग नाम लिखवाने के लिये अपने अपने नगर को गए। ४ सो यूसुफ भी इसलिये कि वह दाऊद के घराने और वंश का था, गलील के नासरत नगर से यहूदिया में दाऊद के नगर बैतलहम को गया। ५ कि अपनी मंगेतर मरियम के साथ जो गर्भवती थी नाम लिखवाए। ६ उन के वहां रहते हुए उसके जनने के दिन पूरे हुए। ७ और वह अपना पहिलौठा पुत्र जनी और उसे कपड़े में लपेटकर चरनी

में रखा; क्योंकि उन के लिये सराय में जगह न थी।।

८ और उस देश में कितने गड़ेरिये थे, जो रात को मैदान में रहकर अपने झुण्ड का पहरा देते थे। ९ और प्रभु का एक दूत उन के पास आ खड़ा हुआ; और प्रभु का तेज उन के चारों ओर चमका, और वे बहुत डर गए। १० तब स्वर्गदूत ने उन से कहा, मत डरो; क्योंकि देखो मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं जो सब लोगों के लिये होगा। ११ कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्त्ता जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है। १२ और इस का तुम्हारे लिये यह पता है, कि तुम एक बालक को कपड़े में लिपटा हुआ और चरनी में पड़ा पाओगे। १३ तब एकाएक उस स्वर्ग-दूत के साथ स्वर्गदूतों का दल परमेश्वर की स्तुति करते हुए और यह कहते दिखाई दिया। १४ कि आकाश* में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है शान्ति हो।।

१५ जब स्वर्गदूत उन के पास से स्वर्ग को चले गए, तो गड़ेरियों ने आपस में कहा, आओ, हम बैतलहम जाकर यह बात जो हुई है, और जिसे प्रभु ने हमें बताया है, देखें। १६ और उन्हों ने तुरन्त जाकर मरियम और यूसुफ को और चरनी में उस बालक को पड़ा देखा। १७ इन्हें देखकर उन्हों ने वह बात जो इस बालक के विषय में उन से कही गई थी, प्रगट की। १८ और सब सुननेवालों ने उन बातों से जो गड़ेरियों ने उन से कहीं आश्चर्य किया। १९ परन्तु मरियम ये सब बातें अपने मन में रखकर सोचती रही। २० और गड़ेरिये

* यू० ऊंचे से ऊंचे स्थान में।

जैसा उन से कहा गया था, वैसा ही सब सुनकर और देखकर परमेश्वर की महिमा और स्तुति करते हुए लौट गए।।

२१ जब आठ दिन पूरे हुए, और उसके खतने का समय आया, तो उसका नाम यीशु रखा गया, जो स्वर्गदूत ने उसके पेट में आने से पहिले कहा था।।

२२ और जब मूसा की व्यवस्था के अनुसार उन के शुद्ध होने के दिन पूरे हुए, तो वे उसे यरूशलेम में ले गए, कि प्रभु के साम्हने लाएं। २३ [जैसा कि प्रभु की व्यवस्था में लिखा है कि हर एक पहिलौठा प्रभु के लिये पवित्र ठहरेगा]। २४ और प्रभु की व्यवस्था के वचन के अनुसार पंडुकों का एक जोड़ा, या कबूतर के दो बच्चे ला कर बलिदान करें। २५ और देखो, यरूशलेम में शमौन नाम एक मनुष्य था, और वह मनुष्य धर्मी और भक्त था; और इस्राएल की शान्ति की बाट जोह रहा था, और पवित्र आत्मा उस पर था। २६ और पवित्र आत्मा से उस को चितावनी हुई थी, कि जब तक तू प्रभु के मसीह को देख न लेगा, तब तक मृत्यु को न देखेगा। २७ और वह आत्मा के सिखाने से* मन्दिर में आया; और जब माता-पिता उस बालक यीशु को भीतर लाए, कि उसके लिये व्यवस्था की रीति के अनुसार करें। २८ तो उस ने उसे अपनी गोद में लिया, और परमेश्वर का धन्यवाद करके कहा, २९ हे स्वामी, अब तू अपने दास को अपने वचन के अनुसार शान्ति से विदा करता है। ३० क्योंकि मेरी आंखों ने तेरे उद्धार को देख लिया है। ३१ जिसे तू ने सब देशों के लोगों के साम्हने तैयार किया है। ३२ कि

* यू० में।

वह अन्य जातियों को प्रकाश देने के लिये ज्योति, और तेरे निज लोग इस्राएल की महिमा हो। ३३ और उसका पिता और उस की माता इन बातों से जो उसके विषय में कही जाती थीं, आश्चर्य करते थे। ३४ तब शमौन ने उन को आशीष देकर, उस की माता मरियम से कहा; देख, वह तो इस्राएल में बहुतों के गिरने, और उठने के लिये, और एक ऐसा चिन्ह होने के लिये ठहराया गया है, जिस के विरोध में बातें की जाएंगी—३५ बरन तेरा प्राण भी तलवार से वार पार छिद जाएगा—इस से बहुत हृदयों के विचार प्रगट होंगे। ३६ और अशेर के गोत्र में से हन्नाह नाम फनूएल की बेटी एक भविष्यद्वक्तिन थी: वह बहुत बूढ़ी थी, और ब्याह होने के बाद सात वर्ष अपने पति के साथ रह पाई थी। ३७ वह चौरासी वर्ष से विधवा थी: और मन्दिर को नहीं छोड़ती थी पर उपवास और प्रार्थना कर करके रात-दिन उपासना किया करती थी। ३८ और वह उस घड़ी वहां आकर प्रभु का धन्यवाद करने लगी, और उन सभों से, जो यरूशलेम के छुटकारे की बाट जोहते थे, उसके विषय में बातें करने लगी। ३९ और जब वे प्रभु की व्यवस्था के अनुसार सब कुछ निपटा चुके तो गलील में अपने नगर नासरत को फिर चले गए॥

४० और बालक बढ़ता, और बलवन्त होता, और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया; और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था॥

४१ उसके माता-पिता प्रति वर्ष फसह के पर्ब्ब में यरूशलेम को जाया करते थे। ४२ जब वह बारह वर्ष का हुआ, तो वे पर्ब्ब की रीति के अनुसार यरूशलेम को गए। ४३ और जब वे उन दिनों को पूरा करके लौटने लगे, तो वह लड़का यीशु यरूशलेम में रह गया; और यह उसके माता-पिता नहीं जानते थे। ४४ वे यह समझकर, कि वह और यात्रियों के साथ होगा, एक दिन का पड़ाव निकल गए: और उसे अपने कुटुम्बियों और जान-पहचानों में ढूंढ़ने लगे। ४५ पर जब नहीं मिला, तो ढूंढ़ते-ढूंढ़ते यरूशलेम को फिर लौट गए। ४६ और तीन दिन के बाद उन्हों ने उसे मन्दिर में उपदेशकों के बीच में बैठे, उन की सुनते और उन से प्रश्न करते हुए पाया। ४७ और जितने उस की सुन रहे थे, वे सब उस की समझ और उसके उत्तरों से चकित थे। ४८ तब वे उसे देखकर चकित हुए और उस की माता ने उस से कहा; हे पुत्र, तू ने हम से क्यों ऐसा व्यवहार किया? देख, तेरा पिता और मैं कुढ़ते हुए तुझे ढूंढ़ते थे। ४९ उस ने उन से कहा; तुम मुझे क्यों ढूंढ़ते थे? क्या नहीं जानते थे, कि मुझे अपने पिता के भवन में होना * अवश्य है? ५० परन्तु जो बात उस ने उन से कही, उन्हों ने उसे नहीं समझा। ५१ तब वह उन के साथ गया, और नासरत में आया, और उन के वश में रहा; और उस की माता ने ये सब बातें अपने मन में रखीं॥

५२ और यीशु बुद्धि और डील-डौल में और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया॥

३ तिबिरियुस कैसर के राज्य के पंद्रहवें वर्ष में जब पुन्तियुस पीलातुस यहूदिया का हाकिम था, और गलील में हेरोदेस नाम चौथाई का इतूरैया, और त्रखोनीतिस में, उसका भाई फिलिप्पुस,

* या कामों में लगे रहना।

और अबिलेने में लिसानियास चौथाई के राजा थे। २ और जब हन्ना और कैफा महायाजक थे, उस समय परमेश्वर का वचन जंगल में जकरयाह के पुत्र यूहन्ना के पास पहुंचा। ३ और वह यरदन के आस पास के सारे देश में आकर, पापों की क्षमा के लिये मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार करने लगा। ४ जैसे यशायाह भविष्यद्वक्ता के कहे हुए वचनों की पुस्तक में लिखा है, कि जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हो रहा है कि प्रभु का मार्ग तैयार करो, उस की सड़कें सीधी बनाओ। ५ हर एक घाटी भर दी जाएगी, और हर एक पहाड़ और टीला नीचा किया जाएगा; और जो टेढ़ा है सीधा, और जो ऊंचा नीचा है वह चौरस मार्ग बनेगा। ६ और हर प्राणी परमेश्वर के उद्धार को देखेगा॥

७ जो भीड़ की भीड़ उस से बपतिस्मा लेने को निकल कर आती थी, उन से वह कहता था; हे सांप के बच्चो, तुम्हें किस ने जता दिया, कि आनेवाले क्रोध से भागो। ८ सो मन फिराव के योग्य फल लाओ: और अपने अपने मन में यह न सोचो, कि हमारा पिता इब्राहीम है; क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि परमेश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है। ९ और अब ही कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर धरा है, इसलिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में झोंका जाता है। १० और लोगों ने उस से पूछा, तो हम क्या करें? ११ उस ने उन्हें उत्तर दिया, कि जिस के पास दो कुरते हों, वह उसके साथ जिस के पास नहीं है बांट दे और जिस के पास भोजन हो, वह भी ऐसा ही करे। १२ और महसूल लेने-वाले भी बपतिस्मा लेने आए, और उस से पूछा, कि हे गुरु, हम क्या करें? १३ उस ने उन से कहा, जो तुम्हारे लिये ठहराया गया है, उस से अधिक न लेना। १४ और सिपाहियों ने भी उस से यह पूछा, हम क्या करें? उस ने उन से कहा, किसी पर उपद्रव न करना, और न झूठा दोष लगाना, और अपनी मज़दूरी पर सन्तोष करना॥

१५ जब लोग आस लगाए हुए थे, और सब अपने अपने मन में यूहन्ना के विषय में विचार कर रहे थे, कि क्या यही मसीह तो नहीं है। १६ तो यूहन्ना ने उन सब से उत्तर में कहा: कि मैं तो तुम्हें पानी से* बपतिस्मा देता हूं, परन्तु वह आनेवाला है, जो मुझ से शक्तिमान है; मैं तो इस योग्य भी नहीं, कि उसके जूतों का बन्ध खोल सकूं, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। १७ उसका सूप, उसके हाथ में है; और वह अपना खलिहान अच्छी तरह से साफ करेगा; और गेहूं को अपने खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जो बुझने की नहीं जला देगा॥

१८ सो वह बहुत सी शिक्षा दे देकर लोगों को सुसमाचार सुनाता रहा। १९ परन्तु उस ने चौथाई देश के राजा हेरोदेस को उसके भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास के विषय, और सब कुकर्मों के विषय में जो उस ने किए थे, उलाहना दिया। २० इसलिये हेरोदेस ने उन सब से बढ़कर यह कुकर्म भी किया, कि यूहन्ना को बन्दीगृह में डाल दिया॥

२१ जब सब लोगों ने बपतिस्मा लिया, और यीशु भी बपतिस्मा लेकर प्रार्थना कर रहा था, तो आकाश खुल गया। २२ और

* यू० में।

पवित्र आत्मा शारीरिक रूप में कबूतर की नाईं उस पर उतरा, और यह आकाशवाणी हुई, कि तू मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझ से प्रसन्न हूं॥

२३ जब यीशु आप उपदेश करने लगा, तो लगभग तीस वर्ष की आयु का था और (जैसा समझा जाता था) यूसुफ का पुत्र था; और वह एली का। २४ और वह मत्तात का, और वह लेवी का, और वह मलकी का, और वह यन्ना का, और वह यूसुफ का। २५ और वह मत्तित्याह का, और वह आमोस का, और वह नहूम का, और वह असल्याह का, और वह नोगह का। २६ और वह मात का, और वह मत्तित्याह का, और वह शिमी का, और वह योसेख का, और वह योदाह का। २७ और वह यूहन्ना का, और वह रेसा का, और वह जरुब्बाबिल का, और वह शालतियेल का, और वह नेरी का। २८ और वह मलकी का, और वह अद्दी का, और वह कोसाम का, और वह इलमोदाम का, और वह एर का। २९ और वह येशू का, और वह इलाजार का, और वह योरीम का, और वह मत्तात का, और वह लेवी का। ३० और वह शमौन का, और वह यहूदाह का, और वह यूसुफ का, और वह योनान का, और वह इलयाकीम का। ३१ और वह मलेआह का, और वह मिन्नाह का, और वह मत्तता का, और वह नातान का, और वह दाऊद का। ३२ और वह यिशै का, और वह ओबेद का, और वह बोअज का, और वह सलमोन का, और वह नहशोन का। ३३ और वह अम्मीनादाब का, और वह अरनी का, और वह हिस्रोन का, और वह फिरिस का, और वह यहूदाह का। ३४ और वह याकूब का, और वह इसहाक का, और वह इब्राहीम का. और वह तिरह का, और वह नाहोर का। ३५ और वह सरूग का, और वह रऊ का, और वह फिलिग का, और वह एबिर का, और वह शिलह का। ३६ और वह केनान का, वह अरफक्षद का, और वह शेम का, वह नूह का, वह लिमिक का। ३७ और वह मथूशिलह का, और वह हनोक का, और वह यिरिद का, और वह महललेल का, और वह केनान का। ३८ और वह इनोश का, और वह शेत का, और वह आदम का, और वह परमेश्वर का था॥

४ फिर यीशु पवित्रात्मा से भरा हुआ, यरदन से लौटा; और चालीस दिन तक आत्मा के सिखाने से जंगल में फिरता रहा; और शैतान * उस की परीक्षा करता रहा। २ उन दिनों में उस ने कुछ न खाया और जब वे दिन पूरे हो गए, तो उसे भूख लगी। ३ और शैतान ने उस से कहा; यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो इस पत्थर से कह, कि रोटी बन जाए। ४ यीशु ने उसे उत्तर दिया; कि लिखा है, मनुष्य केवल रोटी से जीवित न रहेगा। ५ तब शैतान उसे ले गया और उस को पल भर में जगत के सारे राज्य दिखाए। ६ और उस से कहा; मैं यह सब अधिकार, और इन का विभव तुझे दूंगा, क्योंकि वह मुझे सौंपा गया है: और जिसे चाहता हूं, उसी को दे देता हूं। ७ इसलिये, यदि तू मुझे प्रणाम करे, तो यह सब तेरा हो जाएगा। ८ यीशु ने उसे उत्तर दिया; लिखा है; कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर; और केवल उसी की उपासना कर। ९ तब उस ने उसे यरूशलेम में ले

* यू० इब्लीस।

जाकर मन्दिर के कंगूरे पर खड़ा किया, और उस से कहा; यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को यहां से नीचे गिरा दे। १० क्योंकि लिखा है, कि वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा, कि वे तेरी रक्षा करें। ११ और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे ऐसा न हो कि तेरे पांव में पत्थर से ठेस लगे। १२ यीशु ने उस को उत्तर दिया; यह भी कहा गया है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न करना। १३ जब शैतान* सब परीक्षा कर चुका, तब कुछ समय के लिये उसके पास से चला गया॥

१४ फिर यीशु आत्मा की सामर्थ से भरा हुआ गलील को लौटा, और उस की चर्चा आस पास के सारे देश में फैल गई। १५ और वह उन की आराधनालयों में उपदेश करता रहा, और सब उस की बड़ाई करते थे॥

१६ और वह नासरत में आया; जहां पाला पोसा गया था; और अपनी रीति के अनुसार सब्त† के दिन आराधनालय में जा कर पढ़ने के लिये खड़ा हुआ। १७ यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक उसे दी गई, और उस ने पुस्तक खोलकर, वह जगह निकाली जहां यह लिखा था। १८ कि प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इस-लिये कि उस ने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिये भेजा है, कि बन्धुओं को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूं और कुचले हुओं को छुड़ाऊं। १९ और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूं। २० तब उस ने पुस्तक बन्द करके सेवक का हाथ में दे दी, और बैठ गया: और आराधनालय के सब लोगों की आंख उस पर लगी थी। २१ तब वह उन से कहने लगा, कि आज ही यह लेख तुम्हारे साम्हने* पूरा हुआ है। २२ और सब ने उसे सराहा, और जो अनुग्रह की बातें उसके मुंह से निकलती थीं, उन से अचम्भा किया; और कहने लगे; क्या यह यूसुफ का पुत्र नहीं? २३ उस ने उस से कहा; तुम मुझ पर यह कहावत अवश्य कहोगे, कि हे वैद्य, अपने आप को अच्छा कर! जो कुछ हम ने सुना है कि कफरनहूम में किया गया है उसे यहां अपने देश में भी कर। २४ और उस ने कहा; मैं तुम से सच कहता हूं, कोई भविष्यद्वक्ता अपने देश में मान-सम्मान नहीं पाता। २५ और मैं तुम से सच कहता हूं, कि एलिय्याह के दिनों में जब साढ़े तीन वर्ष तक आकाश बन्द रहा, यहां तक कि सारे देश में बड़ा अकाल पड़ा, तो इस्राएल में बहुत सी विधवाएं थीं। २६ पर एलिय्याह उन में से किसी के पास नहीं भेजा गया, केवल सैदा के सारफत में एक विधवा के पास। २७ और इलीशा भविष्यद्वक्ता के समय इस्राएल में बहुत से कोढ़ी थे, पर नामान सूरयानी को छोड़ उन में से कोई शुद्ध नहीं किया गया। २८ ये बातें सुनते ही जितने आराधनालय में थे, सब क्रोध से भर गए। २९ और उठकर उसे नगर से बाहर निकाला, और जिस पहाड़ पर उन का नगर बसा हुआ था, उस की चोटी पर ले चले, कि उसे वहां से नीचे गिरा दें। ३० पर वह उन के बीच में से निकलकर चला गया॥

* यू० इब्लीस।
† यू० विश्राम के दिन।

* यू० कानों में।

३१ फिर वह गलील के कफरनहूम नगर में गया, और सब्त * के दिन लोगों को उपदेश दे रहा था। ३२ वे उस के उपदेश से चकित हो गए क्योंकि उसका वचन अधिकार सहित था। ३३ आराधनालय में एक मनुष्य था, जिस में अशुद्ध आत्मा थी। ३४ वह ऊंचे शब्द से चिल्ला उठा, हे यीशु नासरी, हमें तुझ से क्या काम? क्या तू हमें नाश करने आया है? मैं तुझे जानता हूं तू कौन है? तू परमेश्वर का पवित्र जन है। ३५ यीशु ने उसे डांटकर कहा, चुप रह: और उस में से निकल जा: तब दुष्टात्मा उसे बीच में पटककर बिना हानि पहुंचाए उस में से निकल गई। ३६ इस पर सब को अचम्भा हुआ, और वे आपस में बातें करके कहने लगे, यह कैसा वचन है? कि वह अधिकार और सामर्थ के साथ अशुद्ध आत्माओं को आज्ञा देता है, और वे निकल जाती हैं। ३७ सो चारों ओर हर जगह उस की धूम मच गई॥

३८ वह आराधनालय में से उठकर शमौन के घर में गया और शमौन की सास को ज्वर चढ़ा हुआ था, और उन्हों ने उसके लिये उस से बिनती की। ३९ उस ने उसके निकट खड़े होकर ज्वर को डांटा और वह उस पर से उतर गया और वह तुरन्त उठकर उन की सेवा-टहल करने लगी॥

४० सूरज डूबते समय जिन जिन के यहां लोग नाना प्रकार की बीमारियों में पड़े हुए थे, वे सब उन्हें उसके पास ले आए, और उस ने एक एक पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया। ४१ और दुष्टात्मा भी चिल्लाती और यह कहती हुई कि तू परमेश्वर का पुत्र है, बहुतों में से निकल गई पर वह उन्हें डांटता और बोलने नहीं देता था, क्योंकि वे जानते थे, कि यह मसीह है॥

४२ जब दिन हुआ तो वह निकलकर एक जंगली जगह में गया, और भीड़ की भीड़ उसे ढूंढ़ती हुई उसके पास आई, और उसे रोकने लगी, कि हमारे पास से न जा। ४३ परन्तु उस ने उन से कहा; मुझे और और नगरों में भी परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाना अवश्य है, क्योंकि मैं इसी लिये भेजा गया हूं॥

४४ और वह गलील के आराधनालयों में प्रचार करता रहा॥

५ जब भीड़ उस पर गिरी पड़ती थी, और परमेश्वर का वचन सुनती थी, और वह गन्नेसरत की झील के किनारे पर खड़ा था, तो ऐसा हुआ। २ कि उस ने झील के किनारे दो नावें लगी हुई देखीं, और मछुवे उन पर से उतरकर जाल धो रहे थे। ३ उन नावों में से एक पर जो शमौन की थी, चढ़कर, उस ने उस से बिनती की, कि किनारे से थोड़ा हटा ले चले, तब वह बैठकर लोगों को नाव पर से उपदेश देने लगा। ४ जब वह बातें कर चुका, तो शमौन से कहा, गहिरे में ले चल, और मछलियां पकड़ने के लिये अपने जाल डालो। ५ शमौन ने उसको उत्तर दिया, कि हे स्वामी, हम ने सारी रात मिहनत की और कुछ न पकड़ा; तौभी तेरे कहने से जाल डालूंगा। ६ जब उन्हों ने ऐसा किया, तो बहुत मछलियां घेर लाए, और उन के जाल फटने लगे। ७ इस पर उन्हों ने अपने साथियों को जो दूसरी नाव

* यू० विश्राम के दिन।

पर थे, संकेत किया, कि आकर हमारी सहायता करो: और उन्हों ने आकर, दोनों नाव यहां तक भर लीं कि वे डूबने लगीं। ८ यह देखकर शमौन पतरस यीशु के पांवों पर गिरा, और कहा; हे प्रभु, मेरे पास से जा, क्योंकि मैं पापी मनुष्य हूं। ९ क्योंकि इतनी मछलियों के पकड़े जाने से उसे और उसके साथियों को बहुत अचम्भा हुआ। १० और वैसे ही जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना को भी, जो शमौन के सहभागी थे, अचम्भा हुआ: तब यीशु ने शमौन से कहा, मत डर: अब से तू मनुष्यों को जीवता पकड़ा करेगा। ११ और वे नावों को किनारे पर ले आए और सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिए॥

१२ जब वह किसी नगर में था, तो देखो, वहां कोढ़ से भरा हुआ एक मनुष्य था, और वह यीशु को देखकर मुंह के बल गिरा, और विनती की; कि हे प्रभु यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है। १३ उस ने हाथ बढ़ाकर उसे छूआ और कहा मैं चाहता हूं तू शुद्ध हो जा: और उसका कोढ़ तुरन्त जाता रहा। १४ तब उस ने उसे चिताया, कि किसी से न कह, परन्तु जाके अपने आप को याजक को दिखा, और अपने शुद्ध होने के विषय में जो कुछ मूसा ने चढ़ावा ठहराया है उसे चढ़ा; कि उन पर गवाही हो। १५ परन्तु उस की चर्चा और भी फैलती गई, और भीड़ की भीड़ उस की सुनने के लिये और अपनी बीमारियों से चंगे होने के लिये इकट्ठी हुई। १६ परन्तु वह जंगलों में अलग जाकर प्रार्थना किया करता था॥

१७ और एक दिन ऐसा हुआ कि वह उपदेश दे रहा था और फरीसी और व्यवस्थापक वहां बैठे हुए थे, जो गलील और यहूदिया के हर एक गांव से, और यरूशलेम से आए थे; और चंगा करने के लिये प्रभु की सामर्थ उसके साथ थी। १८ और देखो कई लोग एक मनुष्य को जो झोले का मारा हुआ था, खाट पर लाए, और वे उसे भीतर ले जाने और यीशु के साम्हने रखने का उपाय ढूंढ़ रहे थे। १९ और जब भीड़ के कारण उसे भीतर न ले जा सके तो उन्हों ने कोठे पर चढ़ कर और खप्रैल हटाकर, उसे खाट समेत बीच में यीशु के साम्हने उतार दिया। २० उस ने उन का विश्वास देखकर उस से कहा; हे मनुष्य, तेरे पाप क्षमा हुए। २१ तब शास्त्री और फरीसी विवाद करने लगे, कि यह कौन है, जो परमेश्वर की निन्दा करता है? परमेश्वर को छोड़ कौन पापों को क्षमा कर सकता है? २२ यीशु ने उन के मन की बातें जानकर, उन से कहा, कि तुम अपने मनों में क्या विवाद कर रहे हो? २३ सहज क्या है? क्या यह कहना, कि तेरे पाप क्षमा हुए, या यह कहना कि उठ, और चल फिर? २४ परन्तु इसलिये कि तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है (उस ने उस झोले के मारे हुए से कहा), मैं तुझ से कहता हूं, उठ और अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा। २५ वह तुरन्त उन के साम्हने उठा, और जिस पर वह पड़ा था उसे उठाकर, परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ अपने घर चला गया। २६ तब सब चकित हुए और परमेश्वर की बड़ाई करने लगे, और बहुत डरकर कहने लगे, कि आज हम ने अनोखी बातें देखी हैं॥

२७ और इसके बाद वह बाहर गया, और लेवी नाम एक चुङ्गी लेनेवाले को

चुङ्गी की चौकी पर बैठे देखा, और उस से कहा, मेरे पीछे हो ले। २८ तब वह सब कुछ छोड़कर उठा, और उसके पीछे हो लिया। २९ और लेवी ने अपने घर में उसके लिये बड़ी जेवनार की; और चुङ्गी लेनेवालों की और औरों की जो उसके साथ भोजन करने बैठे थे एक बड़ी भीड़ थी। ३० और फरीसी और उन के शास्त्री उस के चेलों से यह कहकर कुड़कुड़ाने लगे, कि तुम चुङ्गी लेनेवालों और पापियों के साथ क्यों खाते-पीते हो? ३१ यीशु ने उन को उत्तर दिया; कि वैद्य भले चंगों के लिये नहीं, परन्तु बीमारों के लिये अवश्य है। ३२ मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को मन फिराने के लिये बुलाने आया हूं। ३३ और उन्हों ने उस से कहा, यूहन्ना के चेले तो बराबर उपवास रखते और प्रार्थना किया करते हैं, और वैसे ही फरीसियों के भी, परन्तु तेरे चेले तो खाते-पीते हैं! ३४ यीशु ने उन से कहा; क्या तुम बरातियों से जब तक दूल्हा उन के साथ रहे, उपवास करवा सकते हो? ३५ परन्तु वे दिन आएंगे, जिन में दूल्हा उन से अलग किया जाएगा, तब वे उन दिनों में उपवास करेंगे। ३६ उस ने एक और दृष्टान्त भी उन से कहा; कि कोई मनुष्य नये पहिरावन में से फाड़कर पुराने पहिरावन में पैवन्द नहीं लगाता, नहीं तो नया फट जाएगा और वह पैवन्द पुराने में मेल भी नहीं खाएगा। ३७ और कोई नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरता, नहीं तो नया दाखरस मशकों को फाड़कर बह जाएगा, और मशकें भी नाश हो जाएंगी। ३८ परन्तु नया दाखरस नई मशकों में भरना चाहिये। ३९ कोई मनुष्य पुराना दाखरस पीकर नया नहीं चाहता क्योंकि वह कहता है, कि पुराना ही अच्छा है॥

६ फिर सब्त* के दिन वह खेतों में से होकर जा रहा था, और उसके चेले बालें तोड़ तोड़कर, और हाथों से मल मल कर खाते जाते थे। २ तब फरीसियों में से कई एक कहने लगे, तुम वह काम क्यों करते हो जो सब्त के दिन करना उचित नहीं? ३ यीशु ने उन को उत्तर दिया; क्या तुम ने यह नहीं पढ़ा, कि दाऊद ने जब वह और उसके साथी भूखे थे तो क्या किया? ४ वह क्योंकर परमेश्वर के घर में गया, और भेंट की रोटियां लेकर खाई, जिन्हें खाना याजकों को छोड़ और किसी को उचित नहीं, और अपने साथियों को भी दी? ५ और उस ने उन से कहा; मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी प्रभु है॥

६ और ऐसा हुआ कि किसी और सब्त के दिन को वह आराधनालय में जाकर उपदेश करने लगा; और वहां एक मनुष्य था, जिस का दहिना हाथ सूखा था। ७ शास्त्री और फरीसी उस पर दोष लगाने का अवसर पाने के लिये उस की ताक में थे, कि देखें कि वह सब्त के दिन चंगा करता है कि नहीं। ८ परन्तु वह उन के विचार जानता था; इसलिये उसने सूखे हाथवाले मनुष्य से कहा; उठ, बीच में खड़ा हो: वह उठ खड़ा हुआ। ९ यीशु ने उन से कहा; मैं तुम से यह पूछता हूं कि सब्त के दिन क्या उचित है, भला करना या बुरा करना; प्राण को बचाना या नाश करना? १० और उस ने चारों ओर उन सभों को देखकर उस मनुष्य

* यू० विश्राम के दिन।

से कहा; अपना हाथ बढ़ा: उस ने ऐसा ही किया, और उसका हाथ फिर चंगा हो गया। ११ परन्तु वे आपे से बाहर होकर आपस में विवाद करने लगे कि हम यीशु के साथ क्या करें?

१२ और उन दिनों में वह पहाड़ पर प्रार्थना करने को निकला, और परमेश्वर से प्रार्थना करने में सारी रात बिताई। १३ जब दिन हुआ, तो उस ने अपने चेलों को बुलाकर उन में से बारह चुन लिए, और उन को प्रेरित कहा। १४ और वे ये हैं शमौन जिस का नाम उस ने पतरस भी रखा; और उसका भाई अन्द्रियास और याकूब और यूहन्ना और फिलिप्पुस और बरतुलमै। १५ और मत्ती और थोमा और हलफई का पुत्र याकूब और शमौन जो जेलोतेस कहलाता है। १६ और याकूब का बेटा यहूदा और यहूदा इस-करियोती, जो उसका पकड़वानेवाला बना। १७ तब वह उन के साथ उतरकर चौरस जगह में खड़ा हुआ, और उसके चेलों की बड़ी भीड़, और सारे यहूदिया और यरूशलेम और सूर और सैदा के समुद्र के किनारे से बहुतेरे लोग, जो उस की सुनने और अपनी बीमारियों से चंगा होने के लिये उसके पास आए थे, वहां थे। १८ और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुए लोग भी अच्छे किए जाते थे। १९ और सब उसे छूना चाहते थे, क्योंकि उस में से सामर्थ निकलकर सब को चंगा करती थी॥

२० तब उस ने अपने चेलों की ओर देखकर कहा; धन्य हो तुम, जो दीन हो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारा है। २१ धन्य हो तुम, जो अब भूखे हो; क्योंकि तृप्त किए जाओगे; धन्य हो तुम, जो अब रोते हो, क्योंकि हंसोगे। २२ धन्य हो तुम, जब मनुष्य के पुत्र के कारण लोग तुम से बैर करेंगे, और तुम्हें निकाल देंगे, और तुम्हारी निन्दा करेंगे, और तुम्हारा नाम बुरा जानकर काट देंगे। २३ उस दिन आनन्दित होकर उछलना, क्योंकि देखो, तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा प्रतिफल है: उन के बाप-दादे भविष्यद्वक्ताओं के साथ भी वैसा ही किया करते थे। २४ परन्तु हाय तुम पर; जो धनवान हो, क्योंकि तुम अपनी शान्ति पा चुके। २५ हाय, तुम पर; जो अब तृप्त हो, क्योंकि भूखे होगे: हाय, तुम पर; जो अब हंसते हो, क्योंकि शोक करोगे और रोओगे। २६ हाय, तुम पर; जब सब मनुष्य तुम्हें भला कहें, क्योंकि उन के बाप-दादे झूठे भविष्यद्वक्ताओं के साथ भी ऐसा ही किया करते थे॥

२७ परन्तु मैं तुम सुननेवालों से कहता हूं, कि अपने शत्रुओं से प्रेम रखो; जो तुम से बैर करें, उन का भला करो। २८ जो तुम्हें स्राप दें, उन को आशीष दो: जो तुम्हारा अपमान करें, उन के लिये प्रार्थना करो। २९ जो तेरे एक गाल पर थप्पड़ मारे उस की ओर दूसरा भी फेर दे; और जो तेरी दोहर छीन ले, उस को कुरता लेने से भी न रोक। ३० जो कोई तुझ से मांगे, उसे दे; और जो तेरी वस्तु छीन ले, उस से न मांग। ३१ और जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें, तुम भी उन के साथ वैसा ही करो। ३२ यदि तुम अपने प्रेम रखनेवालों के साथ प्रेम रखो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि पापी भी अपने प्रेम रखनेवालों के साथ प्रेम रखते हैं। ३३ और यदि तुम अपने भलाई करनेवालों ही के साथ भलाई

करते हो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि पापी भी ऐसा ही करते हैं। ३४ और यदि तुम उन्हें उधार दो, जिन से फिर पाने की आशा रखते हो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि पापी पापियों को उधार देते हैं, कि उतना ही फिर पाएं। ३५ बरन अपने शत्रुओं से प्रेम रखो, और भलाई करो: और फिर पाने की आस न रखकर उधार दो; और तुम्हारे लिये बड़ा फल होगा: और तुम परमप्रधान के सन्तान ठहरोगे, क्योंकि वह उन पर जो धन्यवाद नहीं करते और बुरों पर भी कृपालु है। ३६ जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है, वैसे ही तुम भी दयावन्त बनो। ३७ दोष मत लगाओ; तो तुम पर भी दोष नहीं लगाया जाएगा: दोषी न ठहराओ, तो तुम भी दोषी नहीं ठहराए जाओगे: क्षमा करो, तो तुम्हारी भी क्षमा की जाएगी। ३८ दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा: लोग पूरा नाप दबा दबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा॥

३९ फिर उस ने उन से एक दृष्टान्त कहा; क्या अन्धा, अन्धे को मार्ग बता सकता है? क्या दोनों गड़हे में नहीं गिरेंगे? ४० चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं, परन्तु जो कोई सिद्ध होगा, वह अपने गुरु के समान होगा। ४१ तू अपने भाई की आंख के तिनके को क्यों देखता है, और अपनी ही आंख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता? ४२ और जब तू अपनी ही आंख का लट्ठा नहीं देखता, तो अपने भाई से क्योंकर कह सकता है, हे भाई, ठहर जा तेरी आंख से तिनके को निकाल दूं? हे कपटी, पहिले अपनी आंख से लट्ठा निकाल, तब जो तिनका तेरे भाई की आंख में है, भली भांति देखकर निकाल सकेगा। ४३ कोई अच्छा पेड़ नहीं, जो निकम्मा फल लाए, और न तो कोई निकम्मा पेड़ है, जो अच्छा फल लाए। ४४ हर एक पेड़ अपने फल से पहचाना जाता है; क्योंकि लोग झाड़ियों से अंजीर नहीं तोड़ते, और न झड़बेरी से अंगूर। ४५ भला मनुष्य अपने मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है; और बुरा मनुष्य अपने मन के बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है; क्योंकि जो मन में भरा है वही उसके मुंह पर आता है॥

४६ जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहते हो? ४७ जो कोई मेरे पास आता है, और मेरी बातें सुनकर उन्हें मानता है, मैं तुम्हें बताता हूं कि वह किस के समान है? ४८ वह उस मनुष्य के समान है, जिस ने घर बनाते समय भूमि गहरी खोदकर चट्टान पर नेव डाली, और जब बाढ़ आई तो धारा उस घर पर लगी, परन्तु उसे हिला न सकी; क्योंकि वह पक्का बना था। ४९ परन्तु जो सुनकर नहीं मानता, वह उस मनुष्य के समान है, जिस ने मिट्टी पर बिना नेव का घर बनाया। जब उस पर धारा लगी, तो वह तुरन्त गिर पड़ा, और वह गिरकर सत्यानाश हो गया॥

७ जब वह लोगों को अपनी सारी बातें सुना चुका, तो कफरनहूम में आया। २ और किसी सूबेदार का एक दास जो उसका प्रिय था, बीमारी से मरने पर था। ३ उस ने यीशु की चर्चा सुनकर यहूदियों के कई पुरनियों को उस से यह बिनती करने को उसके पास भेजा,

कि आकर मेरे दास को चंगा कर। ४ वे यीशु के पास आकर उस से बड़ी बिनती करके कहने लगे, कि वह इस योग्य है, कि तू उसके लिये यह करे। ५ क्योंकि वह हमारी जाति से प्रेम रखता है, और उसी ने हमारे आराधनालय को बनाया है। ६ यीशु उन के साथ साथ चला, पर जब वह घर से दूर न था, तो सूबेदार ने उसके पास कई मित्रों के द्वारा कहला भेजा, कि हे प्रभु दुख न उठा, क्योंकि मैं इस योग्य नहीं, कि तू मेरी छत के तले आए। ७ इसी कारण मैं ने अपने आप को इस योग्य भी न समझा, कि तेरे पास आऊं, पर वचन ही कह दे तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा। ८ मैं भी पराधीन मनुष्य हूं; और सिपाही मेरे हाथ में हैं, और जब एक को कहता हूं, जा, तो वह जाता है; और दूसरे से कहता हूं कि आ, तो आता है; और अपने किसी दास को कि यह कर, तो वह उसे करता है। ९ यह सुनकर यीशु ने अचम्भा किया, और उस ने मुंह फेरकर उस भीड़ से जो उसके पीछे आ रही थी कहा, मैं तुम से कहता हूं, कि मैं ने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया। १० और भेजे हुए लोगों ने घर लौटकर, उस दास को चंगा पाया॥

११ थोडे दिन के बाद वह नाईन नाम के एक नगर को गया, और उसके चेले, और बड़ी भीड़ उसके साथ जा रही थी। १२ जब वह नगर के फाटक के पास पहुंचा, तो देखो, लोग एक मुरदे को बाहर लिए जा रहे थे; जो अपनी मां का एकलौता पुत्र था, और वह विधवा थी: और नगर के बहुत से लोग उसके साथ थे। १३ उसे देख कर प्रभु को तरस आया, और उस से कहा; मत रो। १४ तब उस ने पास आकर अर्थी को छूआ; और उठानेवाले ठहर गए तब उस ने कहा; हे जवान, मैं तुझ से कहता हूं, उठ। १५ तब वह मुरदा उठ बैठा, और बोलने लगा: और उस ने उसे उस की मां को सौंप दिया। १६ इस से सब पर भय छा गया; और वे परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे कि हमारे बीच में एक बड़ा भविष्यद्वक्ता उठा है, और परमेश्वर ने अपने लोगों पर कृपा दृष्टि की है। १७ और उसके विषय में यह बात सारे यहूदिया और आस पास के सारे देश में फैल गई॥

१८ और यूहन्ना को उसके चेलों ने इन सब बातों का समाचार दिया। १९ तब यूहन्ना ने अपने चेलों में से दो को बुलाकर प्रभु के पास यह पूछने के लिये भेजा; कि क्या आनेवाला तू ही है, या हम किसी और दूसरे की बाट देखें? २० उन्हों ने उसके पास आकर कहा, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने हमें तेरे पास यह पूछने को भेजा है, कि क्या आनेवाला तू ही है, या हम दूसरे की बाट जोहें? २१ उसी घड़ी उस ने बहुतों को बीमारियों, और पीड़ाओं, और दुष्टात्माओं से छुड़ाया; और बहुत से अन्धों को आंखे दीं। २२ और उस ने उन से कहा; जो कुछ तुम ने देखा और सुना है, जाकर यूहन्ना से कह दो; कि अन्धे देखते हैं, लंगड़े चलते फिरते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं, बहिरे सुनते हैं, मुरदे जिलाए जाते हैं; और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है। २३ और धन्य है वह, जो मेरे कारण ठोकर न खाए॥

२४ जब यूहन्ना के भेजे हुए लोग चल दिए, तो यीशु यूहन्ना के विषय में लोगों से कहने लगा; तुम जंगल में क्या देखने गए

थे ? क्या हवा से हिलते हुए सरकण्डे को ? २५ तो फिर तुम क्या देखने गए थे ? क्या कोमल वस्त्र पहिने हुए मनुष्य को ? देखो, जो भड़कीला वस्त्र पहिनते, और सुख विलास से रहते हैं, वे राजभवनों में रहते हैं। २६ तो फिर क्या देखने गए थे ? क्या किसी भविष्यद्वक्ता को ? हां, मैं तुम से कहता हूं, बरन भविष्यद्वक्ता से भी बड़े को। २७ यह वही है, जिस के विषय में लिखा है, कि देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे आगे भेजता हूं, जो तेरे आगे मार्ग सीधा करेगा। २८ मैं तुम से कहता हूं, कि जो स्त्रियों से जन्मे हैं, उन में से यूहन्ना से बड़ा कोई नहीं : पर जो परमेश्वर के राज्य में छोटे से छोटा है, वह उस से भी बड़ा है। २९ और सब साधारण लोगों ने सुनकर और चुङ्गी लेनेवालों ने भी यूहन्ना का बपतिस्मा लेकर परमेश्वर को सच्चा मान लिया। ३० पर फरीसियों और व्यवस्थापकों ने उस से बपतिस्मा न लेकर परमेश्वर की मनसा को अपने विषय में टाल दिया। ३१ सो मैं इस युग के लोगों की उपमा किस से दूं कि वे किस के समान हैं ? ३२ वे उन बालकों के समान हैं जो बाजार में बैठे हुए एक दूसरे से पुकारकर कहते हैं, हम ने तुम्हारे लिये बांसली बजाई, और तुम न नाचे, हम ने विलाप किया, और तुम न रोए ! ३३ क्योंकि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला न रोटी खाता आया, न दाखरस पीता आया, और तुम कहते हो, उस में दुष्टात्मा है। ३४ मनुष्य का पुत्र खाता-पीता आया है; और तुम कहते हो, देखो, पेटू और पियक्कड़ मनुष्य, चुङ्गी लेनेवालों का और पापियों का मित्र। ३५ पर ज्ञान अपनी सब सन्तानों में सच्चा ठहराया गया है ॥

३६ फिर किसी फरीसी ने उस से बिनती की, कि मेरे साथ भोजन कर; सो वह उस फरीसी के घर में जाकर भोजन करने बैठा। ३७ और देखो, उस नगर की एक पापिनी स्त्री यह जानकर कि वह फरीसी के घर में भोजन करने बैठा है, संगमरमर के पात्र में इत्र लाई। ३८ और उसके पांवों के पास, पीछे खड़ी होकर, रोती हुई, उसके पांवों को आंसुओं से भिगाने और अपने सिर के बालों से पोंछने लगी और उसके पांव बार बार चूमकर उन पर इत्र मला। ३९ यह देखकर, वह फरीसी जिस ने उसे बुलाया था, अपने मन में सोचने लगा, यदि यह भविष्यद्वक्ता होता तो जान जाता, कि यह जो उसे छू रही है, वह कौन और कैसी स्त्री है ? क्योंकि वह तो पापिनी है। ४० यह सुन यीशु ने उसके उत्तर में कहा; कि हे शमौन मुझे तुझ से कुछ कहना है वह बोला, हे गुरु कह। ४१ किसी महाजन के दो देनदार थे, एक पांच सौ, और दूसरा पचास दीनार* धारता था। ४२ जब कि उन के पास पटाने को कुछ न रहा, तो उस ने दोनों को क्षमा कर दिया : सो उन में से कौन उस से अधिक प्रेम रखेगा। ४३ शमौन ने उत्तर दिया, मेरी समझ में वह, जिस का उस ने अधिक छोड़ दिया† : उस ने उस से कहा, तू ने ठीक विचार किया है। ४४ और उस स्त्री की ओर फिरकर उस ने शमौन से कहा; क्या तू इस स्त्री को देखता है ? मैं तेरे घर में आया परन्तु तू ने मेरे पांव धोने के लिये पानी न दिया, पर इस ने मेरे पांव आंसुओं से भिगाए, और अपने

* देखो मत्ती १८ : २८।

† यू० क्षमा किया।

बालों से पोंछा ! ४५ तू ने मुझे चूमा न दिया, पर जब से मैं आया हूं तब से इस ने मेरे पांवों का चूमना न छोड़ा। ४६ तू ने मेरे सिर पर तेल नहीं मला; पर इस ने मेरे पांवों पर इत्र मला है। ४७ इसलिये मैं तुझ से कहता हूं; कि इस के पाप जो बहुत थे, क्षमा हुए, क्योंकि इस ने बहुत प्रेम किया; पर जिस का थोड़ा क्षमा हुआ है, वह थोड़ा प्रेम करता है। ४८ और उस ने स्त्री से कहा, तेरे पाप क्षमा हुए। ४९ तब जो लोग उसके साथ भोजन करने बैठे थे, वे अपने अपने मन में सोचने लगे, यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है? ५० पर उस ने स्त्री से कहा; तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया है, कुशल से चली जा॥

८ इस के बाद वह नगर नगर और गांव गांव प्रचार करता हुआ, और परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाता हुआ, फिरने लगा। २ और वे बारह उसके साथ थे: और कितनी स्त्रियां भी जो दुष्टात्माओं से और बीमारियों से छुड़ाई गई थीं, और वे यह हैं, मरियम जो मगदलीनी कहलाती थी, जिस में से सात दुष्टात्माएं निकली थीं। ३ और हेरोदेस के भण्डारी खोजा की पत्नी योअन्ना और सूसन्नाह और बहुत सी और स्त्रियां: ये तो अपनी सम्पत्ति से उस की सेवा करती थीं॥

४ जब बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई, और नगर नगर के लोग उसके पास चले आते थे, तो उस ने दृष्टान्त में कहा। ५ कि एक बोने वाला बीज बोने निकला: बोते हुए कुछ मार्ग के किनारे गिरा, और रौंदा गया, और आकाश के पक्षियों ने उसे चुग लिया। ६ और कुछ चट्टान पर गिरा, और उपजा, परन्तु तरी न मिलने से सूख गया। ७ कुछ झाड़ियों के बीच में गिरा, और झाड़ियों ने साथ साथ बढ़कर उसे दबा लिया। ८ और कुछ अच्छी भूमि पर गिरा, और उगकर सौ गुणा फल लाया: यह कहकर, उस ने ऊंचे शब्द से कहा; जिस के सुनने के कान हों वह सुन ले॥

९ उसके चेलों ने उस से पूछा, कि यह दृष्टान्त क्या है? उस ने कहा; १० तुम को परमेश्वर के राज्य के भेदों की समझ दी गई है, पर औरों को दृष्टान्तों में सुनाया जाता है, इसलिये कि वे देखते हुए भी न देखें, और सुनते हुए भी न समझें। ११ दृष्टान्त यह है; बीज तो परमेश्वर का वचन है। १२ मार्ग के किनारे के वे हैं, जिन्हों ने सुना; तब शैतान * आकर उन के मन में से वचन उठा ले जाता है, कि कहीं ऐसा न हो कि वे विश्वास करके उद्धार पाएं। १३ चट्टान पर के वे हैं, कि जब सुनते हैं, तो आनन्द से वचन को ग्रहण तो करते हैं, परन्तु जड़ न पकड़ने से वे थोड़ी देर तक विश्वास रखते हैं, और परीक्षा के समय बहक जाते हैं। १४ जो झाड़ियों में गिरा, सो वे हैं, जो सुनते हैं, पर होते होते चिन्ता और धन और जीवन के सुख विलास में फंस जाते हैं, और उन का फल नहीं पकता। १५ पर अच्छी भूमि में के वे हैं, जो वचन सुनकर भले और उत्तम मन में सम्भाले रहते हैं, और धीरज से फल लाते हैं॥

१६ कोई दीया बार के बरतन से नहीं छिपाता, और न खाट के नीचे रखता है, परन्तु दीवट पर रखता है, कि भीतर आनेवाले प्रकाश पाएं। १७ कुछ छिपा नहीं,

* यू० इब्लीस।

जो प्रगट न हो; और न कुछ गुप्त है, जो जाना न जाए, और प्रगट न हो। १८ इसलिये चौकस रहो, कि तुम किस रीति से सुनते हो? क्योंकि जिस के पास है, उसे दिया जाएगा; और जिस के पास नहीं है, उस से वह भी ले लिया जाएगा, जिसे वह अपना समझता है॥

१९ उस की माता और उसके भाई उसके पास आए, पर भीड़ के कारण उस से भेंट न कर सके। २० और उस से कहा गया, कि तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हुए तुझ से मिलना चाहते हैं। २१ उस ने उसके उत्तर में उन से कहा; कि मेरी माता और मेरे भाई ये ही हैं, जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते हैं॥

२२ फिर एक दिन वह और उसके चेले नाव पर चढ़े, और उस ने उन से कहा; कि आओ, झील के पार चलें: सो उन्हों ने नाव खोल दी। २३ पर जब नाव चल रही थी, तो वह सो गया: और झील पर आन्धी आई, और नाव पानी से भरने लगी और वे जोखिम में थे। २४ तब उन्हों ने पास आकर उसे जगाया, और कहा; स्वामी! स्वामी! हम नाश हुए जाते हैं: तब उस ने उठकर आन्धी को और पानी की लहरों को डांटा और वे थम गए, और चैन हो गया। २५ और उस ने उन से कहा; तुम्हारा विश्वास कहां था? पर वे डर गए, और अचम्भित होकर आपस में कहने लगे, यह कौन है? जो आन्धी और पानी को भी आज्ञा देता है, और वे उस की मानते हैं॥

२६ फिर वे गिरासेनियों के देश में पहुंचे, जो उस पार गलील के साम्हने है। २७ जब वह किनारे पर उतरा, तो उस नगर का एक मनुष्य उसे मिला, जिस में दुष्टात्माएं थीं और बहुत दिनों से न कपड़े पहिनता था और न घर में रहता था बरन कब्रों में रहा करता था। २८ वह यीशु को देखकर चिल्लाया, और उसके साम्हने गिरकर ऊंचे शब्द से कहा; हे परम प्रधान परमेश्वर के पुत्र यीशु, मुझे तुझ से क्या काम! मैं तेरी बिनती करता हूं, मुझे पीड़ा न दे। २९ क्योंकि वह उस अशुद्ध आत्मा को उस मनुष्य में से निकलने की आज्ञा दे रहा था, इसलिये कि वह उस पर बार बार प्रबल होती थी; और यद्यपि लोग उसे सांकलों और बेड़ियों से बांधते थे, तौभी वह बन्धनों को तोड़ डालता था, और दुष्टात्मा उसे जंगल में भगाए फिरती थी। ३० यीशु ने उस से पूछा; तेरा क्या नाम है? उस ने कहा, सेना; क्योंकि बहुत दुष्टात्माएं उस में पैठ गई थीं। ३१ और उन्हों ने उस से बिनती की, कि हमें अथाह गड़हे में जाने की आज्ञा न दे। ३२ वहां पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था, सो उन्हों ने उस से बिनती की, कि हमें उन में पैठने दे, सो उस ने उन्हें जाने दिया। ३३ तब दुष्टात्माएं उस मनुष्य से निकलकर सूअरों में गईं और वह झुण्ड कड़ाड़े पर से झपटकर झील में जा गिरा और डूब मरा। ३४ चरवाहे यह जो हुआ था देखकर भागे, और नगर में, और गांवों में जाकर उसका समाचार कहा। ३५ और लोग यह जो हुआ था उसके देखने को निकले, और यीशु के पास आकर जिस मनुष्य से दुष्टात्माएं निकली थीं, उसे यीशु के पांवों के पास कपड़े पहिने और सचेत बैठे हुए पाकर डर गए। ३६ और देखनेवालों ने उन को बताया, कि वह दुष्टात्मा का सताया हुआ मनुष्य किस

प्रकार अच्छा हुआ। ३७ तब गिरासेनियों के आस पास के सब लोगों ने यीशु से बिनती की, कि हमारे यहां से चला जा; क्योंकि उन पर बड़ा भय छा गया था: सो वह नाव पर चढ़कर लौट गया। ३८ जिस मनुष्य से दुष्टात्माएं निकली थीं वह उस से बिनती करने लगा, कि मुझे अपने साथ रहने दे, परन्तु यीशु ने उसे विदा करके कहा। ३९ अपने घर को लौट जा और लोगों से कह दे, कि परमेश्वर ने तेरे लिये कैसे बड़े बड़े काम किए हैं: वह जाकर सारे नगर में प्रचार करने लगा, कि यीशु ने मेरे लिये कैसे बड़े बड़े काम किए॥

४० जब यीशु लौट रहा था, तो लोग उस से आनन्द के साथ मिले; क्योंकि वे सब उस की बाट जोह रहे थे। ४१ और देखो, याईर नाम एक मनुष्य जो आराधनालय का सरदार था, आया, और यीशु के पांवों पर गिर के उस से बिनती करने लगा, कि मेरे घर चल। ४२ क्योंकि उसके बारह वर्ष की एकलौती बेटी थी, और वह मरने पर थी: जब वह जा रहा था, तब लोग उस पर गिरे पड़ते थे॥

४३ और एक स्त्री ने जिस को बारह वर्ष से लोहू बहने का रोग था, और जो अपनी सारी जीविका वैद्यों के पीछे व्यय कर चुकी थी और तौभी किसी के हाथ से चंगी न हो सकी थी। ४४ पीछे से आकर उसके वस्त्र के आंचल को छूआ, और तुरन्त उसका लोहू बहना थम गया। ४५ इस पर यीशु ने कहा, मुझे किस ने छूआ? जब सब मुकरने लगे, तो पतरस और उसके साथियों ने कहा; हे स्वामी, तुझे तो भीड़ दबा रही है और तुझ पर गिरी पड़ती है। ४६ परन्तु यीशु ने कहा; किसी ने मुझे छूआ है क्योंकि मैं ने जान लिया है कि मुझ में से सामर्थ निकली है। ४७ जब स्त्री ने देखा, कि मैं छिप नहीं सकती, तब कांपती हुई आई, और उसके पांवों पर गिरकर सब लोगों के साम्हने बताया, कि मैं ने किस कारण से तुझे छूआ, और क्योंकर तुरन्त चंगी हो गई। ४८ उस ने उस से कहा, बेटी तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है, कुशल से चली जा॥

४९ वह यह कह ही रहा था, कि किसी ने आराधनालय के सरदार के यहां से आकर कहा, तेरी बेटी मर गई: गुरु को दुख न दे। ५० यीशु ने सुनकर उसे उत्तर दिया, मत डर; केवल विश्वास रख; तो वह बच जाएगी। ५१ घर में आकर उस ने पतरस और यूहन्ना और याकूब और लड़की के माता-पिता को छोड़ और किसी को अपने साथ भीतर आने न दिया। ५२ और सब उसके लिये रो पीट रहे थे, परन्तु उस ने कहा; रोओ मत; वह मरी नहीं परन्तु सो रही है। ५३ वे यह जानकर, कि मर गई है, उस की हंसी करने लगे। ५४ परन्तु उस ने उसका हाथ पकड़ा, और पुकारकर कहा, हे लड़की उठ! ५५ तब उसके प्राण फिर आए और वह तुरन्त उठी; फिर उस ने आज्ञा दी, कि उसे कुछ खाने को दिया जाए। ५६ उसके माता-पिता चकित हुए, परन्तु उस ने उन्हें चिताया, कि यह जो हुआ है, किसी से न कहना॥

९ फिर उस ने बारहों को बुलाकर उन्हें सब दुष्टात्माओं और बीमारियों को दूर करने की सामर्थ और अधिकार दिया। २ और उन्हें परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने, और बीमारों को अच्छा करने के लिये भेजा। ३ और उस ने उन से कहा, मार्ग के लिये कुछ न लेना: न तो

लाठी, न झोली, न रोटी, न रुपये और न दो दो कुरते। ४ और जिस किसी घर में तुम उतरो, वहीं रहो; और वहीं से विदा हो। ५ जो कोई तुम्हें ग्रहण न करेगा उस नगर से निकलते हुए अपने पांवों की धूल झाड़ डालो, कि उन पर गवाही हो। ६ सो वे निकलकर गांव गांव सुसमाचार सुनाते, और हर कहीं लोगों को चंगा करते हुए फिरते रहे॥

७ और देश की चौथाई का राजा हेरोदेस यह सब सुनकर घबरा गया, क्योंकि कितनों ने कहा, कि यूहन्ना मरे हुओं में से जी उठा है। ८ और कितनों ने यह, कि एलिय्याह दिखाई दिया है: और औरों ने यह, कि पुराने भविष्यद्वक्ताओं में से कोई जी उठा है। ९ परन्तु हेरोदेस ने कहा, यूहन्ना का तो मैं ने सिर कटवाया अब यह कौन है, जिस के विषय में ऐसी बातें सुनता हूं? और उस ने उसे देखने की इच्छा की॥

१० फिर प्रेरितों ने लौटकर जो कुछ उन्हों ने किया था, उस को बता दिया, और वह उन्हें अलग करके बैतसैदा नाम एक नगर को ले गया। ११ यह जानकर भीड़ उसके पीछे हो ली: और वह आनन्द के साथ उन से मिला, और उन से परमेश्वर के राज्य की बातें करने लगा: और जो चंगे होना चाहते थे, उन्हें चंगा किया। १२ जब दिन ढलने लगा, तो बारहों ने आकर उस से कहा, भीड़ को विदा कर, कि चारों ओर के गांवों और बस्तियों में जाकर टिकें, और भोजन का उपाय करें, क्योंकि हम यहां सुनसान जगह में हैं। १३ उस ने उन से कहा, तुम ही उन्हें खाने को दो: उन्हों ने कहा, हमारे पास पांच रोटियां और दो मछली को छोड़ और कुछ नहीं: परन्तु हां, यदि हम जाकर इन सब लोगों के लिये भोजन मोल लें, तो हो सकता है: वे लोग तो पांच हजार पुरुषों के लगभग थे। १४ तब उस ने अपने चेलों से कहा, उन्हें पचास पचास करके पांति पांति बैठा दो। १५ उन्हों ने ऐसा ही किया, और सब को बैठा दिया। १६ तब उस ने वे पांच रोटियां और दो मछली लीं, और स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया, और तोड़ तोड़कर चेलों को देता गया, कि लोगों को परोसें। १७ सो सब खाकर तृप्त हुए, और बचे हुए टुकड़ों से बारह टोकरी भरकर उठाईं॥

१८ जब वह एकान्त में प्रार्थना कर रहा था, और चेले उसके साथ थे, तो उस ने उन से पूछा, कि लोग मुझे क्या कहते हैं? १९ उन्हों ने उत्तर दिया, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला, और कोई कोई एलिय्याह, और कोई यह कि पुराने भविष्यद्वक्ताओं में से कोई जी उठा है। २० उस ने उन से पूछा, परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो? पतरस ने उत्तर दिया, परमेश्वर का मसीह। २१ तब उस ने उन्हें चिताकर कहा, कि यह किसी से न कहना। २२ और उस ने कहा, मनुष्य के पुत्र के लिये अवश्य है, कि वह बहुत दुख उठाए, और पुरनिए और महायाजक और शास्त्री उसे तुच्छ समझकर मार डालें, और वह तीसरे दिन जी उठे। २३ उस ने सब से कहा, यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आपे से इन्कार करे और प्रति दिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले। २४ क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा वह उसे खोएगा, परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा वही उसे बचाएगा। २५ यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपना प्राण खो दे, या

उस की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? २६ जो कोई मुझ से और मेरी बातों से लजाएगा; मनुष्य का पुत्र भी जब अपनी, और अपने पिता की, और पवित्र स्वर्ग दूतों की, महिमा सहित आएगा, तो उस से लजाएगा। २७ मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो यहां खड़े हैं, उन में से कोई कोई ऐसे हैं कि जब तक परमेश्वर का राज्य न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद न चखेंगे॥

२८ इन बातों के कोई आठ दिन बाद वह पतरस और यूहन्ना और याकूब को साथ लेकर प्रार्थना करने के लिये पहाड़ पर गया। २९ जब वह प्रार्थना कर ही रहा था, तो उसके चेहरे का रूप बदल गया: और उसका वस्त्र श्वेत होकर चमकने लगा। ३० और देखो, मूसा और एलिय्याह, ये दो पुरुष उसके साथ बातें कर रहे थे। ३१ ये महिमा सहित दिखाई दिए; और उसके मरने* की चर्चा कर रहे थे, जो यरूशलेम में होनेवाला था। ३२ पतरस और उसके साथी नींद से भरे थे, और जब अच्छी तरह सचेत हुए, तो उस की महिमा; और उन दो पुरुषों को, जो उसके साथ खड़े थे, देखा। ३३ जब वे उसके पास से जाने लगे, तो पतरस ने यीशु से कहा; हे स्वामी, हमारा यहां रहना भला है: सो हम तीन मण्डप बनाएं, एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये। वह जानता न था, कि क्या कह रहा है। ३४ वह यह कह ही रहा था, कि एक बादल ने आकर उन्हें छा लिया, और जब वे उस बादल से घिरने लगे, तो डर गए। ३५ और उस बादल में से यह शब्द निकला, कि यह मेरा पुत्र और मेरा चुना हुआ है, इस की सुनो। ३६ यह शब्द होते ही यीशु अकेला पाया गया: और वे चुप रहे, और जो कुछ देखा था, उस की कोई बात उन दिनों में किसी से न कही॥

३७ और दूसरे दिन जब वे पहाड़ से उतरे, तो एक बड़ी भीड़ उस से आ मिली। ३८ और देखो, भीड़ में से एक मनुष्य ने चिल्ला कर कहा, हे गुरु, मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि मेरे पुत्र पर कृपादृष्टि कर; क्योंकि वह मेरा एकलौता है। ३९ और देख, एक दुष्टात्मा उसे पकड़ता है, और वह एकाएक चिल्ला उठता है; और वह उसे ऐसा मरोड़ता है, कि वह मुंह में फेन भर लाता है; और उसे कुचलकर कठिनाई से छोड़ता है। ४० और मैं ने तेरे चेलों से बिनती की, कि उसे निकालें; परन्तु वे न निकाल सके। ४१ यीशु ने उत्तर दिया, हे अविश्वासी और हठिले लोगो*, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा, और तुम्हारी सहूंगा? अपने पुत्र को यहां ले आ। ४२ वह आ ही रहा था कि दुष्टात्मा ने उसे पटककर मरोड़ा, परन्तु यीशु ने अशुद्ध आत्मा को डांटा और लड़के को अच्छा करके उसके पिता को सौंप दिया। ४३ तब सब लोग परमेश्वर के महासामर्थ से चकित हुए॥

४४ परन्तु जब सब लोग उन सब कामों से जो वह करता था, अचम्भा कर रहे थे, तो उस ने अपने चेलों से कहा; ये बातें तुम्हारे कानों में पड़ी रहें, क्योंकि मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाने को है। ४५ परन्तु वे इस बात को न

* यू० विदा होने।

* यू० पीढ़ी।

समझते थे, और यह उन से छिपी रही; कि वे उसे जानने न पाएं, और वे इस बात के विषय में उस से पूछने से डरते थे।।

४६ फिर उन में यह विवाद होने लगा, कि हम में से बड़ा कौन है? ४७ पर यीशु ने उन के मन का विचार जान लिया: और एक बालक को लेकर अपने पास खड़ा किया। ४८ और उन से कहा; जो कोई मेरे नाम से इस बालक को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो कोई मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है क्योंकि जो तुम में सब से छोटे से छोटा है, वही बड़ा है।।

४६ तब यूहन्ना ने कहा, हे स्वामी, हम ने एक मनुष्य को तेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालते देखा, और हम ने उसे मना किया, क्योंकि वह हमारे साथ होकर तेरे पीछे नहीं हो लेता। ५० यीशु ने उस से कहा, उसे मना मत करो; क्योंकि जो तुम्हारे विरोध में नहीं, वह तुम्हारी ओर है।।

५१ जब उसके ऊपर उठाए जाने के दिन पूरे होने पर थे, तो उस ने यरूशलेम को जाने का विचार* दृढ़ किया। ५२ और उस ने अपने आगे दूत भेजे: वे सामरियों के एक गांव में गए, कि उसके लिए जगह तैयार करें। ५३ परन्तु उन लोगों ने उसे उतरने न दिया, क्योंकि वह यरूशलेम को जा रहा था। ५४ यह देखकर उसके चेले याकूब और यूहन्ना ने कहा; हे प्रभु; क्या तू चाहता है, कि हम आज्ञा दें, कि आकाश से आग गिरकर उन्हें भस्म कर दे। ५५ परन्तु उस ने फिरकर उन्हें डांटा और कहा, तुम नहीं जानते कि तुम कैसी आत्मा के हो। ५६ क्योंकि मनुष्य का पुत्र लोगों के प्राणों को नाश करने नहीं बरन बचाने के लिए आया है: और वे किसी और गांव में चले गए।।

५७ जब वे मार्ग में चले जाते थे, तो किसी ने उस से कहा, जहां जहां तू जाएगा, मैं तेरे पीछे हो लूंगा। ५८ यीशु ने उस से कहा, लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं, पर मनुष्य के पुत्र को सिर धरने की भी जगह नहीं। ५६ उस ने दूसरे से कहा, मेरे पीछे हो ले; उस ने कहा; हे प्रभु, मुझे पहिले जाने दे कि अपने पिता को गाड़ दूं। ६० उस ने उस से कहा, मरे हुओं को अपने मुरदे गाड़ने दे, पर तू जाकर परमेश्वर के राज्य की कथा सुना। ६१ एक और ने भी कहा; हे प्रभु, मैं तेरे पीछे हो लूंगा; पर पहिले मुझे जाने दे कि अपने घर के लोगों से विदा हो आऊं। ६२ यीशु ने उस से कहा; जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं।।

१० और इन बातों के बाद प्रभु ने सत्तर और मनुष्य नियुक्त किए और जिस जिस नगर और जगह को वह आप जाने पर था, वहां उन्हें दो दो करके अपने आगे भेजा। २ और उस ने उन से कहा; पक्के खेत बहुत हैं; परन्तु मजदूर थोड़े हैं: इसलिये खेत के स्वामी से बिनती करो, कि वह अपने खेत काटने को मजदूर भेज दे। ३ जाओ; देखो मैं तुम्हें भेड़ों की नाईं भेड़ियों के बीच में भेजता हूं। ४ इसलिये न बटुआ, न झोली, न जूते लो; और न मार्ग में किसी को नमस्कार करो। ५ जिस किसी घर में जाओ, पहिले कहो, कि इस घर पर कल्याण हो। ६ यदि वहां

---

* यू० मुंह।

कोई कल्याण के योग्य होगा; तो तुम्हारा कल्याण उस पर ठहरेगा, नहीं तो तुम्हारे पास लौट आएगा। ७ उसी घर में रहो, और जो कुछ उन से मिले, वही खाओ पीओ, क्योंकि मजदूर को अपनी मजदूरी मिलनी चाहिए: घर घर न फिरना। ८ और जिस नगर में जाओ, और वहां के लोग तुम्हें उतारें, तो जो कुछ तुम्हारे साम्हने रखा जाए वही खाओ। ९ वहां के बीमारों को चंगा करो: और उन से कहो, कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुंचा है। १० परन्तु जिस नगर में जाओ, और वहां के लोग तुम्हें ग्रहण न करें, तो उसके बाजारों में जाकर कहो। ११ कि तुम्हारे नगर की धूल भी, जो हमारे पांवों में लगी है, हम तुम्हारे साम्हने झाड़ देते हैं, तौभी यह जान लो, कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुंचा है। १२ मैं तुम से कहता हूं, कि उस दिन उस नगर की दशा से सदोम की दशा सहने योग्य होगी। १३ हाय खुराजीन! हाय बैतसैदा! जो सामर्थ के काम तुम में किए गए, यदि वे सूर और सैदा में किए जाते, तो टाट ओढ़कर और राख में बैठकर वे कब के मन फिराते। १४ परन्तु न्याय के दिन तुम्हारी दशा से सूर और सैदा की दशा सहने योग्य होगी। १५ और हे कफरनहूम, क्या तू स्वर्ग तक ऊंचा किया जाएगा? तू तो अधोलोक तक नीचे जाएगा। १६ जो तुम्हारी सुनता है, वह मेरी सुनता है, और जो तुम्हें तुच्छ जानता है, वह मुझे तुच्छ जानता है; और जो मुझे तुच्छ जानता है, वह मेरे भेजनेवाले को तुच्छ जानता है॥

१७ वे सत्तर आनन्द से फिर आकर कहने लगे, हे प्रभु, तेरे नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में हैं। १८ उस ने उन से कहा; मैं शैतान को बिजली की नाईं स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था। १९ देखो, मैंने तुम्हें सांपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ पर अधिकार दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी। २० तौभी इस से आनन्दित मत हो, कि आत्मा तुम्हारे वश में हैं, परन्तु इस से आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं॥

२१ उसी घड़ी वह पवित्र आत्मा में होकर आनन्द से भर गया, और कहा; हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, कि तू ने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा, और बालकों पर प्रगट किया: हां, हे पिता, क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा। २२ मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंप दिया है और कोई नहीं जानता कि पुत्र कौन है केवल पिता और पिता कौन है यह भी कोई नहीं जानता, केवल पुत्र के और वह जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना चाहे। २३ और चेलों की ओर फिरकर अकेले में कहा, धन्य हैं वे आंखें, जो ये बातें जो तुम देखते हो देखती हैं। २४ क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि बहुत से भविष्यद्वक्ताओं और राजाओं ने चाहा, कि जो बातें तुम देखते हो, देखें; पर न देखीं और जो बातें तुम सुनते हो सुनें, पर न सुनीं॥

२५ और देखो, एक व्यवस्थापक उठा; और यह कहकर, उस की परीक्षा करने लगा: कि हे गुरु, अनन्त जीवन का वारिस होने के लिये मैं क्या करूं? २६ उस ने उस से कहा; कि व्यवस्था में क्या लिखा है? तू कैसे पढ़ता है? २७ उस ने उत्तर दिया, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी

शक्ति और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख; और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। २८ उस ने उस से कहा, तू ने ठीक उत्तर दिया, यही कर: तो तू जीवित रहेगा। २९ परन्तु उस ने अपनी तईं धर्मी ठहराने की इच्छा से यीशु से पूछा, तो मेरा पड़ोसी कौन है? ३० यीशु ने उत्तर दिया; कि एक मनुष्य यरूशलेम से यरीहो को जा रहा था, कि डाकुओं ने घेरकर उसके कपड़े उतार लिए, और मारपीटकर उसे अधमूआ छोड़कर चले गए। ३१ और ऐसा हुआ, कि उसी मार्ग से एक याजक जा रहा था: परन्तु उसे देख के कतराकर चला गया। ३२ इसी रीति से एक लेवी उस जगह पर आया, वह भी उसे देख के कतराकर चला गया। ३३ परन्तु एक सामरी यात्री वहां आ निकला, और उसे देखकर तरस खाया। ३४ और उसके पास आकर और उसके घावों पर तेल और दाखरस ढालकर पट्टियां बान्धी, और अपनी सवारी पर चढ़ाकर सराय में ले गया, और उस की सेवा टहल की। ३५ दूसरे दिन उस ने दो दीनार * निकालकर भटियारे को दिए, और कहा; इस की सेवा टहल करना, और जो कुछ तेरा और लगेगा, वह मैं लौटने पर तुझे भर दूंगा। ३६ अब तेरी समझ में जो डाकुओं में घिर गया था, इन तीनों में से उसका पड़ोसी कौन ठहरा? ३७ उस ने कहा, वही जिस ने उस पर तरस खाया: यीशु ने उस से कहा, जा, तू भी ऐसा ही कर॥

३८ फिर जब वे जा रहे थे, तो वह एक गांव में गया, और मार्था नाम एक स्त्री ने उसे अपने घर में उतारा। ३९ और मरियम नाम उस की एक बहिन थी; वह प्रभु के पांवों के पास बैठकर उसका वचन सुनती थी। ४० पर मार्था सेवा करते करते घबरा गई और उसके पास आकर कहने लगी; हे प्रभु, क्या तुझे कुछ भी सोच नहीं कि मेरी बहिन ने मुझे सेवा करने के लिये अकेली ही छोड़ दिया है? सो उस से कह, कि मेरी सहायता करे। ४१ प्रभु ने उसे उत्तर दिया, मार्था, हे मार्था; तू बहुत बातों के लिये चिन्ता करती और घबराती है। ४२ परन्तु एक बात * अवश्य है, और उस उत्तम भाग को मरियम ने चुन लिया है: जो उस से छीना न जाएगा॥

११ फिर वह किसी जगह प्रार्थना कर रहा था: और जब वह प्रार्थना कर चुका, तो उसके चेलों में से एक ने उस से कहा; हे प्रभु, जैसे यूहन्ना ने अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखलाया वैसे ही हमें भी तू सिखा दे। २ उस ने उन से कहा; जब तुम प्रार्थना करो, तो कहो; हे पिता, तेरा नाम पवित्र माना जाए, तेरा राज्य आए। ३ हमारी दिन भर की रोटी हर दिन हमें दिया कर। ४ और हमारे पापों को क्षमा कर, क्योंकि हम भी अपने हर एक अपराधी को क्षमा करते हैं, और हमें परीक्षा में न ला॥

५ और उस ने उन से कहा, तुम में से कौन है कि उसका एक मित्र हो, और वह आधी रात को उसके पास जाकर उस से कहे, कि हे मित्र; मुझे तीन रोटियां दे †। ६ क्योंकि एक यात्री मित्र मेरे पास आया है, और उसके आगे रखने के लिये मेरे पास कुछ नहीं है। ७ और वह भीतर से

* देखो मत्ती १८ : २८।

* या पर थोड़ी या एक ही वस्तु अवश्य है।
† यू० उधार दे।

उत्तर दे, कि मुझे दुख न दे; अब तो द्वार बन्द हैं, और मेरे बालक मेरे पास बिछौने पर हैं, इसलिये मैं उठकर तुझे दे नहीं सकता ? ८ मैं तुम से कहता हूं, यदि उसका मित्र होने पर भी उसे उठकर न दे, तौभी उसके लज्जा छोड़कर मांगने के कारण उसे जितनी आवश्यकता हो उतनी उठकर देगा। ९ और मैं तुम से कहता हूं; कि मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढ़ो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा। १० क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; और जो ढूंढ़ता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा। ११ तुम में से ऐसा कौन पिता होगा, कि जब उसका पुत्र रोटी मांगे, तो उसे पत्थर दे : या मछली मांगे, तो मछली के बदले उसे सांप दे ? १२ या अण्डा मांगे तो उसे बिच्छू दे ? १३ सो जब तुम बुरे होकर अपने लड़केबालों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा ॥

१४ फिर उस ने एक गूंगी दुष्टात्मा को निकाला : जब दुष्टात्मा निकल गई, तो गूंगा बोलने लगा; और लोगों ने अचम्भा किया। १५ परन्तु उन में से कितनों ने कहा, यह तो शैतान * नाम दुष्टात्माओं के प्रधान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है। १६ औरों ने उस की परीक्षा करने के लिये उस से आकाश का एक चिन्ह मांगा। १७ परन्तु उस ने, उन के मन की बातें जानकर, उन से कहा; जिस जिस राज्य में फूट होती है, वह राज्य उजड़ जाता है : और जिस घर में फूट होती है, वह नाश हो जाता है। १८ और यदि शैतान अपना ही विरोधी हो जाए, तो उसका राज्य क्योंकर बना रहेगा ? क्योंकि तुम मेरे विषय में तो कहते हो, कि यह शैतान की सहायता से दुष्टात्मा निकालता है। १९ भला यदि मैं शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो तुम्हारी सन्तान किस की सहायता से निकालते हैं ? इसलिये वे ही तुम्हारा न्याय चुकाएंगे। २० परन्तु यदि मैं परमेश्वर की सामर्थ * से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा। २१ जब बलवन्त मनुष्य हथियार बान्धे हुए अपने घर की रखवाली करता है, तो उस की संपत्ति बची रहती है। २२ पर जब उस से बढ़कर कोई और बलवन्त चढ़ाई करके उसे जीत लेता है, तो उसके वे हथियार जिन पर उसका भरोसा था, छीन लेता है और उस की संपत्ति लूटकर बांट देता है। २३ जो मेरे साथ नहीं वह मेरे विरोध में है और जो मेरे साथ नहीं बटोरता वह बिथराता है। २४ जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाती है तो सूखी जगहों में विश्राम ढूंढ़ती फिरती है; और जब नहीं पाती तो कहती है; कि मैं अपने उसी घर में जहां से निकली थी लौट जाऊंगी। २५ और आकर उसे झाड़ा-बुहारा और सजा-सजाया पाती है। २६ तब वह जाकर अपने से और बुरी सात आत्माओं को अपने साथ ले आती है, और वे उस में पैठकर बास करती हैं, और उस मनुष्य की पिछली दशा पहिले से भी बुरी हो जाती है ॥

* यू० बालजबूल।

* यू० उंगली।

२७ जब वह ये बातें कह ही रहा था तो भीड़ में से किसी स्त्री ने ऊंचे शब्द से कहा, धन्य वह गर्भ जिस में तू रहा; और वे स्तन, जो तू ने चूसे। २८ उस ने कहा, हां; परन्तु धन्य वे हैं, जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते हैं॥

२९ जब बड़ी भीड़ इकट्ठी होती जाती थी तो वह कहने लगा; कि इस युग के लोग * बुरे हैं; वे चिन्ह ढूंढ़ते हैं; पर यूनुस के चिन्ह को छोड़ कोई और चिन्ह उन्हें न दिया जाएगा। ३० जैसा यूनुस नीनवे के लोगों के लिये चिन्ह ठहरा, वैसा ही मनुष्य का पुत्र भी इस युग के लोगों के लिये ठहरेगा। ३१ दक्खिन की रानी न्याय के दिन इस समय के मनुष्यों के साथ उठकर, उन्हें दोषी ठहराएगी, क्योंकि वह सुलैमान का ज्ञान सुनने को पृथ्वी की छोर से आई, और देखो, यहां वह है जो सुलैमान से भी बड़ा है। ३२ नीनवे के लोग न्याय के दिन इस समय के लोगों के साथ खड़े होकर, उन्हें दोषी ठहराएंगे; क्योंकि उन्हों ने यूनुस का प्रचार सुनकर मन फिराया और देखो, यहां वह है, जो यूनुस से भी बड़ा है॥

३३ कोई मनुष्य दीया बार के तलघरे में, या पैमाने † के नीचे नहीं रखता, परन्तु दीवट पर रखता है कि भीतर आनेवाले उजियाला पाएं। ३४ तेरे शरीर का दीया तेरी आंख है, इसलिये जब तेरी आंख निर्मल है, तो तेरा सारा शरीर भी उजियाला है; परन्तु जब वह बुरी है, तो तेरा शरीर भी अन्धेरा है। ३५ इसलिये चौकस रहना, कि जो उजियाला तुझ में है वह अन्धेरा न हो जाए। ३६ इसलिये यदि तेरा सारा शरीर उजियाला हो, और उसका कोई भाग अन्धेरा न रहे, तो सब का सब ऐसा उजियाला होगा, जैसा उस समय होता है, जब दीया अपनी चमक से तुझे उंजाला देता है॥

३७ जब वह बातें कर रहा था, तो किसी फरीसी ने उस से बिनती की, कि मेरे यहां भोजन कर; और वह भीतर जाकर भोजन करने बैठा। ३८ फरीसी ने यह देखकर अचम्भा किया कि उस ने भोजन करने से पहिले स्नान नहीं किया। ३९ प्रभु ने उस से कहा, हे फरीसियो, तुम कटोरे और थाली को ऊपर ऊपर तो मांजते हो, परन्तु तुम्हारे भीतर अन्धेर और दुष्टता भरी है। ४० हे निर्बुद्धियो, जिस ने बाहर का भाग बनाया, क्या उस ने भीतर का भाग नहीं बनाया? ४१ परन्तु हां, भीतरवाली वस्तुओं को दान कर दो, तो देखो, सब कुछ तुम्हारे लिये शुद्ध हो जाएगा॥

४२ पर हे फरीसियो, तुम पर हाय! तुम पोदीने और सुदाब का, और सब भांति के साग-पात का दसवां अंश देते हो, परन्तु न्याय को और परमेश्वर के प्रेम को टाल देते हो: चाहिए तो था कि इन्हें भी करते रहते और उन्हें भी न छोड़ते। ४३ हे फरीसियो, तुम पर हाय! तुम आराधनालयों में मुख्य मुख्य आसन और बाजारों में नमस्कार चाहते हो। ४४ हाय तुम पर! क्योंकि तुम उन छिपी कब्रों के समान हो, जिन पर लोग चलते हैं, परन्तु नहीं जानते॥

४५ तब एक व्यवस्थापक ने उस को उत्तर दिया, कि हे गुरु, इन बातों के कहने से तू हमारी निन्दा करता है। ४६ उस ने कहा; हे व्यवस्थापको, तुम पर भी हाय! तुम ऐसे बोझ जिन को उठाना कठिन है, मनुष्यों पर लादते हो परन्तु तुम आप उन

---

* यू० पीढ़ी।

† देखो मत्ती ५ : १५।

बोझों को अपनी एक उंगली से भी नहीं छूते। ४७ हाय तुम पर! तुम उन भविष्यद्-वक्ताओं की कब्रें बनाते हो, जिन्हें तुम्हारे ही बाप-दादों ने मार डाला था। ४८ सो तुम गवाह हो, और अपने बाप-दादों के कामों में सम्मत हो; क्योंकि उन्हों ने तो उन्हें मार डाला और तुम उन की कब्रें बनाते हो। ४९ इसलिये परमेश्वर की बुद्धि ने भी कहा है, कि मैं उन के पास भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों को भेजूंगी: और वे उन में से कितनों को मार डालेंगे, और कितनों को सताएंगे। ५० ताकि जितने भविष्यद्वक्ताओं का लोहू जगत की उत्पत्ति से बहाया गया है, सब का लेखा, इस युग के लोगों* से लिया जाए। ५१ हाबील की हत्या से लेकर जकरयाह की हत्या तक जो वेदी और मन्दिर† के बीच में घात किया गया: मैं तुम से सच कहता हूं; उसका लेखा इसी समय के लोगों से लिया जाएगा। ५२ हाय तुम व्यवस्थापकों पर! कि तुम ने ज्ञान की कुंजी ले तो ली, परन्तु तुम ने आपही प्रवेश नहीं किया, और प्रवेश करनेवालों को भी रोक दिया॥

५३ जब वह वहां से निकला, तो शास्त्री और फरीसी बहुत पीछे पड़ गए और छेड़ने लगे, कि वह बहुत सी बातों की चर्चा करे। ५४ और उस की घात में लगे रहे, कि उसके मुंह की कोई बात पकड़ें॥

१२ इतने में जब हजारों की भीड़ लग गई, यहां तक कि एक दूसरे पर गिरे पड़ते थे, तो वह सब से पहिले अपने चेलों से कहने लगा, कि फरीसियों के कपटरूपी खमीर से चौकस रहना। २ कुछ ढपा नहीं, जो खोला न जाएगा; और न कुछ छिपा है, जो जाना न जाएगा। ३ इसलिये जो कुछ तुम ने अन्धेरे में कहा है, वह उजाले में सुना जाएगा: और जो तुम ने कोठरियों में कानों कान कहा है, वह कोठों पर प्रचार किया जाएगा। ४ परन्तु मैं तुम से जो मेरे मित्र हो कहता हूं, कि जो शरीर को घात करते हैं परन्तु उसके पीछे और कुछ नहीं कर सकते, उन से मत डरो। ५ मैं तुम्हें चिताता हूं कि तुम्हें किस से डरना चाहिए, घात करने के बाद जिस को नरक में डालने का अधिकार है, उसी से डरो: बरन मैं तुम से कहता हूं, उसी से डरो। ६ क्या दो पैसे की पांच गौरैयां नहीं बिकतीं? तौभी परमेश्वर उन में से एक को भी नहीं भूलता। ७ बरन तुम्हारे सिर के सब बाल भी गिने हुए हैं, सो डरो नहीं, तुम बहुत गौरैयों से बढ़कर हो। ८ मैं तुम से कहता हूं जो कोई मनुष्यों के साम्हने मुझे मान लेगा उसे मनुष्य का पुत्र भी परमेश्वर के स्वर्गदूतों के साम्हने मान लेगा। ९ परन्तु जो मनुष्यों के साम्हने मुझे इन्कार करे उसका परमेश्वर के स्वर्गदूतों के साम्हने इन्कार किया जाएगा। १० जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहे, उसका वह अपराध क्षमा किया जाएगा, परन्तु जो पवित्र आत्मा की निन्दा करे, उसका अपराध क्षमा न किया जाएगा। ११ जब लोग तुम्हें सभाओं और हाकिमों और अधिकारियों के साम्हने ले जाएं, तो चिन्ता न करना कि हम किस रीति से या क्या उत्तर दें, या क्या कहें। १२ क्योंकि पवित्र आत्मा उसी घड़ी तुम्हें सिखा देगा, कि क्या कहना चाहिए॥

* यू० पीढ़ी।
† यू० पवित्रस्थान।

१३ फिर भीड़ में से एक ने उस से कहा, हे गुरु, मेरे भाई से कह, कि पिता की संपत्ति मुझे बांट दे। १४ उस ने उस से कहा; हे मनुष्य, किस ने मुझे तुम्हारा न्यायी या बांटनेवाला नियुक्त किया है? १५ और उस ने उन से कहा, चौकस रहो, और हर प्रकार के लोभ से अपने आप को बचाए रखो: क्योंकि किसी का जीवन उस की संपत्ति की बहुतायत से नहीं होता। १६ उस ने उन से एक दृष्टान्त कहा, कि किसी धनवान की भूमि में बड़ी उपज हुई। १७ तब वह अपने मन में विचार करने लगा, कि मैं क्या करूं, क्योंकि मेरे यहां जगह नहीं, जहां अपनी उपज इत्यादि रखूं। १८ और उस ने कहा; मैं यह करूंगा: मैं अपनी बखारियां तोड़ कर उन से बड़ी बनाऊंगा; १९ और वहां अपना सब अन्न और संपत्ति रखूंगा: और अपने प्राण से कहूंगा, कि प्राण, तेरे पास बहुत वर्षों के लिये बहुत संपत्ति रखी है; चैन कर, खा, पी, सुख से रह। २० परन्तु परमेश्वर ने उस से कहा; हे मूर्ख, इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा: तब जो कुछ तू ने इकट्ठा किया है, वह किस का होगा? २१ ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिये धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं॥

२२ फिर उस ने अपने चेलों से कहा; इसलिये मैं तुम से कहता हूं, अपने प्राण की चिन्ता न करो, कि हम क्या खाएंगे; न अपने शरीर की कि क्या पहिनेंगे। २३ क्योंकि भोजन से प्राण, और वस्त्र से शरीर बढ़कर है। २४ कौवों पर ध्यान दो; वे न बोते हैं, न काटते; न उन के भण्डार और न खत्ता होता है; तौभी परमेश्वर उन्हें पालता है; तुम्हारा मूल्य पक्षियों से कहीं अधिक है। २५ तुम में से ऐसा कौन है, जो चिन्ता करने से अपनी अवस्था में एक घड़ी * भी बढ़ा सकता है? २६ इसलिये यदि तुम सब से छोटा काम भी नहीं कर सकते, तो और बातों के लिये क्यों चिन्ता करते हो? २७ सोसनों के पेड़ों पर ध्यान करो कि वे कैसे बढ़ते हैं; वे न परिश्रम करते, न कातते हैं; तौभी मैं तुम से कहता हूं, कि सुलैमान भी, अपने सारे विभव में, उन में से किसी एक के समान वस्त्र पहिने हुए न था। २८ इसलिये यदि परमेश्वर मैदान की घास को जो आज है, और कल भाड़ में झोंकी जाएगी, ऐसा पहिनाता है; तो हे अल्प विश्वासियो, वह तुम्हें क्यों न पहिनाएगा? २९ और तुम इस बात की खोज में न रहो, कि क्या खाएंगे और क्या पीएंगे, और न सन्देह करो। ३० क्योंकि संसार की जातियां इन सब वस्तुओं की खोज में रहती हैं: और तुम्हारा पिता जानता है, कि तुम्हें इन वस्तुओं की आवश्यकता है। ३१ परन्तु उसके राज्य की खोज में रहो, तो ये वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी। ३२ हे छोटे झुण्ड, मत डर; क्योंकि तुम्हारे पिता को यह भाया है, कि तुम्हें राज्य दे। ३३ अपनी संपत्ति बेचकर दान कर दो; और अपने लिये ऐसे बटुए बनाओ, जो पुराने नहीं होते, अर्थात् स्वर्ग पर ऐसा धन इकट्ठा करो जो घटता नहीं और जिस के निकट चोर नहीं जाता, और कीड़ा नहीं बिगाड़ता। ३४ क्योंकि जहां तुम्हारा धन है, वहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा॥

३५ तुम्हारी कमरें बन्धी रहें, और तुम्हारे दीये जलते रहें। ३६ और तुम

* यू० हाथ।

उन मनुष्यों के समान बनो, जो अपने स्वामी की बाट देख रहे हों, कि वह ब्याह से कब लौटेगा; कि जब वह आकर द्वार खटखटाए, तो तुरन्त उसके लिये खोल दें। ३७ धन्य हैं वे दास, जिन्हें स्वामी आकर जागते पाए; मैं तुम से सच कहता हूं, कि वह कमर बान्ध कर उन्हें भोजन करने को बैठाएगा, और पास आकर उन की सेवा करेगा। ३८ यदि वह रात के दूसरे पहर या तीसरे पहर में आकर उन्हें जागते पाए, तो वे दास धन्य हैं। ३९ परन्तु तुम यह जान रखो, कि यदि घर का स्वामी जानता, कि चोर किस घड़ी आएगा, तो जागता रहता, और अपने घर में सेंध लगने न देता। ४० तुम भी तैयार रहो; क्योंकि जिस घड़ी तुम सोचते भी नहीं, उस घड़ी मनुष्य का पुत्र आ जावेगा॥

४१ तब पतरस ने कहा, हे प्रभु, क्या यह दृष्टान्त तू हम ही से या सब से कहता है। ४२ प्रभु ने कहा; वह विश्वास-योग्य और बुद्धिमान भण्डारी कौन है, जिस का स्वामी उसे नौकर चाकरों पर सरदार ठहराए कि उन्हें समय पर सीधा दे। ४३ धन्य है वह दास, जिसे उसका स्वामी आकर ऐसा ही करते पाए। ४४ मैं तुम से सच कहता हूं; वह उसे अपनी सब संपत्ति पर सरदार ठहराएगा। ४५ परन्तु यदि वह दास सोचने लगे, कि मेरा स्वामी आने में देर कर रहा है, और दासों और दासियों को मारने-पीटने और खाने-पीने और पियक्कड़ होने लगे। ४६ तो उस दास का स्वामी ऐसे दिन कि वह उस की बाट जोहता न रहे, और ऐसी घड़ी जिसे वह जानता न हो आएगा, और उसे भारी ताड़ना देकर उसका भाग अविश्वासियों के साथ ठहराएगा। ४७ और वह दास जो अपने स्वामी की इच्छा जानता था, और तैयार न रहा और न उस की इच्छा के अनुसार चला बहुत मार खाएगा। ४८ परन्तु जो नहीं जानकर मार खाने के योग्य काम करे वह थोड़ी मार खाएगा, इसलिये जिसे बहुत दिया गया है, उस से बहुत मांगा जाएगा, और जिसे बहुत सौंपा गया है, उस से बहुत मांगेंगे॥

४९ मैं पृथ्वी पर आग लगाने आया हूं; और क्या चाहता हूं केवल यह कि अभी सुलग जाती! ५० मुझे तो एक बपतिस्मा लेना है, और जब तक वह न हो ले तब तक मैं कैसी सकेती में रहूंगा? ५१ क्या तुम समझते हो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने आया हूं? मैं तुम से कहता हूं; नहीं, बरन अलग कराने आया हूं। ५२ क्योंकि अब से एक घर में पांच जन आपस में विरोध रखेंगे, तीन दो से और दो तीन से। ५३ पिता पुत्र से, और पुत्र पिता से विरोध रखेगा; मां बेटी से, और बेटी मां से, सास बहू से, और बहू सास से विरोध रखेगी॥

५४ और उस ने भीड़ से भी कहा, जब बादल को पच्छिम से उठते देखते हो, तो तुरन्त कहते हो, कि वर्षा होगी; और ऐसा ही होता है। ५५ और जब दक्खिना चलती देखते हो तो कहते हो, कि लूह चलेगी, और ऐसा ही होता है। ५६ हे कपटियो, तुम धरती और आकाश के रूप में भेद कर सकते हो, परन्तु इस युग के विषय में क्यों भेद करना नहीं जानते? ५७ और तुम आप ही निर्णय क्यों नहीं कर लेते, कि उचित क्या है? ५८ जब तू अपने मुद्दई के साथ हाकिम के पास जा रहा है, तो मार्ग ही में उस से छूटने का यत्न कर ले ऐसा न हो, कि वह तुझे न्यायी के पास खींच ले जाए, और न्यायी तुझे प्यादे को सौंपे

ग्रौर प्यादा तुझे बन्दीगृह में डाल दे। ५९ में तुम से कहता हूं, कि जब तक तू दमड़ी दमड़ी भर न देगा तब तक वहां से छूटने न पाएगा।।

१३ उस समय कुछ लोग ग्रा पहुंचे, ग्रौर उस से उन गलीलियों की चर्चा करने लगे, जिन का लोहू पीलातुस ने उन ही के बलिदानों के साथ मिलाया था। २ यह सुन उस ने उन से उत्तर में यह कहा, क्या तुम समझते हो, कि ये गलीली, ग्रौर सब गलीलियों से पापी थे कि उन पर ऐसी विपत्ति पड़ी? ३ मैं तुम से कहता हूं, कि नहीं; परन्तु यदि तुम मन न फिराग्रोगे तो तुम सब भी इसी रीति से नाश होगे। ४ या क्या तुम समझते हो, कि वे ग्रठारह जन जिन पर शीलोह का गुम्मट गिरा, ग्रौर वे दब कर मर गए: यरूशलेम के ग्रौर सब रहनेवालों से ग्रधिक ग्रपराधी थे? ५ मैं तुम से कहता हूं, कि नहीं; परन्तु यदि तुम मन न फिराग्रोगे तो तुम भी सब इसी रीति से नाश होगे।।

६ फिर उस ने यह दृष्टान्त भी कहा, कि किसी की ग्रंगूर की बारी में एक ग्रंजीर का पेड़ लगा हुग्रा था: वह उस में फल ढूंढ़ने ग्राया, परन्तु न पाया। ७ तब उस ने बारी के रखवाले से कहा, देख तीन वर्ष से मैं इस ग्रंजीर के पेड़ में फल ढूंढ़ने ग्राता हूं, परन्तु नहीं पाता, इसे काट डाल कि यह भूमि को भी क्यों रोके रहे। ८ उस ने उस को उत्तर दिया, कि हे स्वामी, इसे इस वर्ष तो ग्रौर रहने दे; कि मैं इस के चारों ग्रोर खोदकर खाद डालूं। ९ सो ग्रागे को फले तो भला, नहीं तो उसे काट डालना।।

१० सब्त * के दिन वह एक ग्राराधनालय में उपदेश कर रहा था। ११ ग्रौर देखो, एक स्त्री थी, जिसे ग्रठारह वर्ष से एक दुर्बल करनेवाली दुष्टात्मा लगी थी, ग्रौर वह कुबड़ी हो गई थी, ग्रौर किसी रीति से सीधी नहीं हो सकती थी। १२ यीशु ने उसे देखकर बुलाया, ग्रौर कहा, हे नारी, तू ग्रपनी दुर्बलता से छूट गई। १३ तब उस ने उस पर हाथ रखे, ग्रौर वह तुरन्त सीधी हो गई, ग्रौर परमेश्वर की बड़ाई करने लगी। १४ इसलिये कि यीशु ने सब्त के दिन उसे ग्रच्छा किया था, ग्राराधनालय का सरदार रिसियाकर लोगों से कहने लगा, छः दिन हैं, जिन में काम करना चाहिए, सो उन ही दिनों में ग्राकर चंगे होग्रो; परन्तु सब्त के दिन में नहीं। १५ यह सुन कर प्रभु ने उत्तर देकर कहा; हे कपटियो, क्या सब्त के दिन तुम में से हर एक ग्रपने बैल या गदहे को थान से खोलकर पानी पिलाने नहीं ले जाता? १६ ग्रौर क्या उचित न था, कि यह स्त्री जो इब्राहीम की बेटी है जिसे शैतान ने ग्रठारह वर्ष से बान्ध रखा था, सब्त के दिन इस बन्धन से छुड़ाई जाती? १७ जब उस ने ये बातें कहीं, तो उसके सब विरोधी लज्जित हो गए, ग्रौर सारी भीड़ उन महिमा के कामों से जो वह करता था, ग्रानन्दित हुई।।

१८ फिर उस ने कहा, परमेश्वर का राज्य किस के समान है? ग्रौर मैं उस की उपमा किस से दूं? १९ वह राई के एक दाने के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने लेकर ग्रपनी बारी में बोया: ग्रौर वह बढ़कर पेड़ हो गया; ग्रौर ग्राकाश के

---

* यू० विश्राम के दिन।

पक्षियों ने उस की डालियों पर बसेरा किया। २० उस ने फिर कहा; मैं परमेश्वर के राज्य की उपमा किस से दूं? २१ वह खमीर के समान है, जिस को किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी आटे में मिलाया, और होते होते सब आटा खमीर हो गया॥

२२ वह नगर नगर, और गांव गांव होकर उपदेश करता हुआ यरूशलेम की ओर जा रहा था। २३ और किसी ने उस से पूछा; हे प्रभु, क्या उद्धार पानेवाले थोड़े हैं? २४ उस ने उन से कहा; सकेत द्वार से प्रवेश करने का यत्न करो, क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि बहुतेरे प्रवेश करना चाहेंगे, और न कर सकेंगे। २५ जब घर का स्वामी उठकर द्वार बन्द कर चुका हो, और तुम बाहर खड़े हुए द्वार खटखटाकर कहने लगो, हे प्रभु, हमारे लिये खोल दे, और वह उत्तर दे कि मैं तुम्हें नहीं जानता, तुम कहां के हो? २६ तब तुम कहने लगोगे, कि हम ने तेरे साम्हने खाया-पीया और तू ने हमारे बाजारों में उपदेश किया। २७ परन्तु वह कहेगा, मैं तुम से कहता हूं, मैं नहीं जानता तुम कहां से हो, हे कुकर्म्म करनेवालो, तुम सब मुझ से दूर हो। २८ वहां रोना और दांत पीसना होगा: जब तुम इब्राहीम और इसहाक और याकूब और सब भविष्यद्वक्ताओं को परमेश्वर के राज्य में बैठे, और अपने आप को बाहर निकाले हुए देखोगे। २९ और पूर्व और पच्छिम; उत्तर और दक्खिन से लोग आकर परमेश्वर के राज्य के भोज में भागी होंगे। ३० और देखो, कितने पिछले हैं वे प्रथम होंगे, और कितने जो प्रथम हैं, वे पिछले होंगे॥

३१ उसी घड़ी कितने फरीसियों ने आकर उस से कहा, यहां से निकलकर चला जा; क्योंकि हेरोदेस तुझे मार डालना चाहता है। ३२ उस ने उन से कहा; जाकर उस लोमड़ी से कह दो, कि देख, मैं आज और कल दुष्टात्माओं को निकालता और बीमारों को चंगा करता हूं और तीसरे दिन पूरा करूंगा। ३३ तौभी मुझे आज और कल और परसों चलना अवश्य है, क्योंकि हो नहीं सकता कि कोई भविष्यद्वक्ता यरूशलेम के बाहर मारा जाए। ३४ हे यरूशलेम! हे यरूशलेम! तू जो भविष्यद्-वक्ताओं को मार डालती है, और जो तेरे पास भेजे गए उन्हें पत्थरवाह करती है; कितनी ही बार मैं ने यह चाहा, कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठे करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठे करूं, पर तुम ने यह न चाहा। ३५ देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है, और मैं तुम से कहता हूं; जब तक तुम न कहोगे, कि धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है, तब तक तुम मुझे फिर कभी न देखोगे॥

१४ फिर वह सब्त के दिन फरीसियों के सरदारों में से किसी के घर में रोटी खाने गया: और वे उस की घात में थे। २ और देखो, एक मनुष्य उसके साम्हने था, जिसे जलन्धर का रोग था। ३ इस पर यीशु ने व्यवस्थापकों और फरीसियों से कहा; क्या सब्त के दिन अच्छा करना उचित है, कि नहीं? परन्तु वे चुपचाप रहे। ४ तब उस ने उसे हाथ लगा कर चंगा किया, और जाने दिया। ५ और उन से कहा; कि तुम में से ऐसा कौन है, जिस का गदहा या बैल कुएं में गिर जाए और वह सब्त के दिन उसे तुरन्त बाहर

न निकाल ले? ६ वे इन बातों का कुछ उत्तर न दे सके॥

७ जब उस ने देखा, कि नेवताहारी लोग क्योंकर मुख्य मुख्य जगहें चुन लेते हैं तो एक दृष्टान्त देकर उन से कहा। ८ जब कोई तुझे ब्याह में बुलाए, तो मुख्य जगह में न बैठना, कहीं ऐसा न हो, कि उस ने तुझ से भी किसी बड़े को नेवता दिया हो। ९ और जिस ने तुझे और उसे दोनों को नेवता दिया है; आकर तुझ से कहे, कि इस को जगह दे, और तब तुझे लज्जित होकर सब से नीची जगह में बैठना पड़े। १० पर जब तू बुलाया जाए, तो सब से नीची जगह जा बैठ, कि जब वह, जिस ने तुझे नेवता दिया है आए, तो तुझ से कहे कि हे मित्र, आगे बढ़कर बैठ; तब तेरे साथ बैठनेवालों के साम्हने तेरी बड़ाई होगी। ११ क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा॥

१२ तब उस ने अपने नेवता देनेवाले से भी कहा, जब तू दिन का या रात का भोज करे, तो अपने मित्रों या भाइयों या कुटुम्बियों या धनवान पड़ोसियों को न बुला, कहीं ऐसा न हो, कि वे भी तुझे नेवता दें, और तेरा बदला हो जाए। १३ परन्तु जब तू भोज करे, तो कंगालों, टुण्डों, लंगड़ों और अन्धों को बुला। १४ तब तू धन्य होगा, क्योंकि उन के पास तुझे बदला देने को कुछ नहीं, परन्तु तुझे धर्मियों के जी उठने पर इस का प्रतिफल मिलेगा॥

१५ उसके साथ भोजन करनेवालों में से एक ने ये बातें सुनकर उस से कहा, धन्य है वह, जो परमेश्वर के राज्य में रोटी खाएगा। १६ उस ने उस से कहा; किसी मनुष्य ने बड़ी जेवनार की और बहुतों को बुलाया। १७ जब भोजन तैयार हो गया, तो उस ने अपने दास के हाथ नेवतहारियों को कहला भेजा, कि आओ; अब भोजन तैयार है। १८ पर वे सब के सब क्षमा मांगने लगे, पहिले ने उस से कहा, मैं ने खेत मोल लिया है; और अवश्य है कि उसे देखूं: मैं तुझ से बिनती करता हूं, मुझे क्षमा करा दे। १९ दूसरे ने कहा, मैं ने पांच जोड़े बैल मोल लिए हैं; और उन्हें परखने जाता हूं: मैं तुझ से बिनती करता हूं, मुझे क्षमा करा दे। २० एक और ने कहा; मैं ने ब्याह किया है, इसलिये मैं नहीं आ सकता। २१ उस दास ने आकर अपने स्वामी को ये बातें कह सुनाईं, तब घर के स्वामी ने क्रोध में आकर अपने दास से कहा, नगर के बाजारों और गलियों में तुरन्त जाकर कंगालों, टुण्डों, लंगड़ों और अन्धों को यहां ले आओ। २२ दास ने फिर कहा; हे स्वामी, जैसे तू ने कहा था, वैसे ही किया गया है; और फिर भी जगह है। २३ स्वामी ने दास से कहा, सड़कों पर और बाड़ों की ओर जाकर लोगों को बरबस ले ही आ* ताकि मेरा घर भर जाए। २४ क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि उन नेवते हुओं में से कोई मेरी जेवनार को न चखेगा॥

२५ और जब बड़ी भीड़ उसके साथ जा रही थी, तो उस ने पीछे फिरकर उन से कहा। २६ यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और लड़केबालों और भाइयों और बहिनों वरन अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।

---

* या बिन लाए मत छोड़।

२७ और जो कोई अपना क्रूस न उठाए; और मेरे पीछे न आए; वह भी मेरा चेला नहीं हो सकता। २८ तुम में से कौन है कि गढ़ बनाना चाहता हो, और पहिले बैठकर खर्च न जोड़े, कि पूरा करने की बिसात मेरे पास है कि नहीं? २९ कहीं ऐसा न हो, कि जब नेव डालकर तैयार न कर सके, तो सब देखनेवाले यह कहकर उसे ठट्ठों में उड़ाने लगें। ३० कि यह मनुष्य बनाने तो लगा, पर तैयार न कर सका? ३१ या कौन ऐसा राजा है, कि दूसरे राजा से युद्ध करने जाता हो, और पहिले बैठकर विचार न कर ले कि जो बीस हजार लेकर मुझ पर चढ़ा आता है, क्या मैं दस हजार लेकर उसका साम्हना कर सकता हूं, कि नहीं? ३२ नहीं तो उसके दूर रहते ही, वह दूतों को भेजकर मिलाप करना चाहेगा। ३३ इसी रीति से तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता। ३४ नमक तो अच्छा है, परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह किस वस्तु से स्वादिष्ट किया जाएगा। ३५ वह न तो भूमि के और न खाद के लिये काम में आता है: उसे तो लोग बाहर फेंक देते हैं: जिस के सुनने के कान हों वह सुन ले॥

१५ सब चुङ्गी लेनेवाले और पापी उसके पास आया करते थे ताकि उस की सुनें। २ और फरीसी और शास्त्री कुड़कुड़ाकर कहने लगे, कि यह तो पापियों से मिलता है और उन के साथ खाता भी है॥

३ तब उस ने उन से यह दृष्टान्त कहा। ४ तुम में से कौन है जिस की सौ भेड़ें हों, और उन में से एक खो जाए; तो निन्नानवे को जंगल में छोड़कर, उस खोई हुई को जब तक मिल न जाए खोजता न रहे? ५ और जब मिल जाती है, तब वह बड़े आनन्द से उसे कांधे पर उठा लेता है। ६ और घर में आकर मित्रों और पड़ोसियों को इकट्ठे करके कहता है, मेरे साथ आनन्द करो, क्योंकि मेरी खोई हुई भेड़ मिल गई है। ७ मैं तुम से कहता हूं; कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में भी स्वर्ग में इतना ही आनन्द होगा, जितना कि निन्नानवे ऐसे धर्मियों के विषय नहीं होता, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं॥

८ या कौन ऐसी स्त्री होगी, जिस के पास दस सिक्के * हों, और उन में से एक खो जाए; तो वह दीया बारकर और घर झाड़ बुहारकर जब तक मिल न जाए, जी लगाकर खोजती न रहे? ९ और जब मिल जाता है, तो वह अपने सखियों और पड़ोसिनियों को इकट्ठी करके कहती है, कि मेरे साथ आनन्द करो, क्योंकि मेरा खोया हुआ सिक्का मिल गया है। १० मैं तुम से कहता हूं; कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में परमेश्वर के स्वर्गदूतों के साम्हने आनन्द होता है॥

११ फिर उस ने कहा, किसी मनुष्य के दो पुत्र थे। १२ उन में से छुटके ने पिता से कहा कि हे पिता संपत्ति में से जो भाग मेरा हो, वह मुझे दे दीजिए। उस ने उन को अपनी संपत्ति बांट दी। १३ और बहुत दिन न बीते थे कि छुटका पुत्र सब कुछ इकट्ठा करके एक दूर देश को चला गया और वहां कुकर्म में अपनी संपत्ति उड़ा दी। १४ जब वह सब कुछ खर्च कर चुका, तो

* यू० द्राखमा। उसका मोल लगभग आठ आने के था।

उस देश में बड़ा अकाल पड़ा, और वह कंगाल हो गया। १५ और वह उस देश के निवासियों में से एक के यहां जा पड़ा : उस ने उसे अपने खेतों में सूअर चराने के लिये भेजा। १६ और वह चाहता था, कि उन फलियों से जिन्हें सूअर खाते थे अपना पेट भरे; और उसे कोई कुछ नहीं देता था। १७ जब वह अपने आपे में आया, तब कहने लगा, कि मेरे पिता के कितने ही मजदूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती है, और मैं यहां भूखा मर रहा हूं। १८ मैं अब उठकर अपने पिता के पास जाऊंगा और उस से कहूंगा कि पिता जी मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है। १९ अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं, मुझे अपने एक मजदूर की नाईं रख ले। २० तब वह उठकर, अपने पिता के पास चला : वह अभी दूर ही था, कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले लगाया, और बहुत चूमा। २१ पुत्र ने उस से कहा; पिता जी, मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है; और अब इस योग्य नहीं रहा, कि तेरा पुत्र कहलाऊं। २२ परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा; झट अच्छे से अच्छा वस्त्र निकालकर उसे पहिनाओ, और उसके हाथ में अंगूठी, और पांवों में जूतियां पहिनाओ। २३ और पला हुआ बछड़ा लाकर मारो ताकि हम खाएं और आनन्द मनावें। २४ क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, फिर जी गया है : खो गया था, अब मिल गया है : और वे आनन्द करने लगे। २५ परन्तु उसका जेठा पुत्र खेत में था : और जब वह आते हुए घर के निकट पहुंचा, तो उस ने गाने बजाने और नाचने का शब्द सुना। २६ और उस ने एक दास को बुलाकर पूछा; यह क्या हो रहा है? २७ उस ने उस से कहा, तेरा भाई आया है; और तेरे पिता ने पला हुआ बछड़ा कटवाया है, इसलिये कि उसे भला चंगा पाया है। २८ यह सुनकर वह क्रोध से भर गया, और भीतर जाना न चाहा : परन्तु उसका पिता बाहर आकर उसे मनाने लगा। २९ उस ने पिता को उत्तर दिया, कि देख; मैं इतने वर्ष से तेरी सेवा कर रहा हूं, और कभी भी तेरी आज्ञा नहीं टाली, तौभी तू ने मुझे कभी एक बकरी का बच्चा भी न दिया, कि मैं अपने मित्रों के साथ आनन्द करता। ३० परन्तु जब तेरा यह पुत्र, जिस ने तेरी संपत्ति वेश्याओं में उड़ा दी है, आया, तो उसके लिये तू ने पला हुआ बछड़ा कटवाया। ३१ उस ने उस से कहा; पुत्र, तू सर्वदा मेरे साथ है; और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा ही है। ३२ परन्तु अब आनन्द करना और मगन होना चाहिए क्योंकि यह तेरा भाई मर गया था फिर जी गया है; खो गया था, अब मिल गया है॥

१६ फिर उस ने चेलों से भी कहा; किसी धनवान का एक भण्डारी था, और लोगों ने उसके साम्हने उस पर यह दोष लगाया कि यह तेरी सब संपत्ति उड़ाए देता है। २ सो उस ने उसे बुलाकर कहा, यह क्या है जो मैं तेरे विषय में सुन रहा हूं? अपने भण्डारीपन का लेखा दे; क्योंकि तू आगे को भण्डारी नहीं रह सकता। ३ तब भण्डारी सोचने लगा, कि अब मैं क्या करूं? क्योंकि मेरा स्वामी अब भण्डारी का काम मुझ से छीन ले रहा है : मिट्टी तो मुझ से खोदी नहीं जाती : और भीख मांगने से मुझे लज्जा आती है।

४ मैं समझ गया, कि क्या करूंगा : ताकि जब मैं भण्डारी के काम से छुड़ाया जाऊं तो लोग मुझे अपने घरों में ले लें। ५ और उस ने अपने स्वामी के देनदारों में से एक एक को बुलाकर पहिले से पूछा, कि तुझ पर मेरे स्वामी का क्या आता है? ६ उस ने कहा, सौ मन तेल; तब उस ने उस से कहा, कि अपनी खाता-बही ले और बैठकर तुरन्त पचास लिख दे। ७ फिर दूसरे से पूछा, तुझ पर क्या आता है? उस ने कहा, सौ मन गेहूं; तब उस ने उस से कहा; अपनी खाता-बही लेकर अस्सी लिख दे। ८ स्वामी ने उस अधर्मी भण्डारी को सराहा, कि उस ने चतुराई से काम किया है; क्योंकि इस संसार के लोग अपने समय के लोगों के साथ रीति व्यवहारों में ज्योति के लोगों से अधिक चतुर हैं। ९ और मैं तुम से कहता हूं, कि अधर्म के धन से अपने लिये मित्र बना लो; ताकि जब वह जाता रहे, तो वे तुम्हें अनन्त निवासों में ले लें। १० जो थोड़े से थोड़े में सच्चा * है, वह बहुत में भी सच्चा है: और जो थोड़े से थोड़े में अधर्मी है, वह बहुत में भी अधर्मी है। ११ इसलिये जब तुम अधर्म के धन में सच्चे न ठहरे, तो सच्चा तुम्हें कौन सौंपेगा! १२ और यदि तुम पराये धन में सच्चे न ठहरे, तो जो तुम्हारा है, उसे तुम्हें कौन देगा? १३ कोई दास दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता : क्योंकि वह तो एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा; या एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा : तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते ॥

१४ फरीसी जो लोभी थे, ये सब बातें सुनकर उसे ठट्ठों में उड़ाने लगे। १५ उस ने उन से कहा; तुम तो मनुष्यों के साम्हने अपने आप को धर्मी ठहराते हो: परन्तु परमेश्वर तुम्हारे मन को जानता है, क्योंकि जो वस्तु मनुष्यों की दृष्टि में महान है, वह परमेश्वर के निकट घृणित है। १६ व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता यूहन्ना तक रहे, उस समय से परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाया जा रहा है, और हर कोई उस में प्रबलता से प्रवेश करता है। १७ आकाश और पृथ्वी का टल जाना व्यवस्था के एक बिन्दु के मिट जाने से सहज है। १८ जो कोई अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी से ब्याह करता है, वह व्यभिचार करता है, और जो कोई ऐसी त्यागी हुई स्त्री से ब्याह करता है, वह भी व्यभिचार करता है ॥

१९ एक धनवान मनुष्य था जो बैंजनी कपड़े और मलमल पहिनता और प्रति दिन सुख-विलास और धूम-धाम के साथ रहता था। २० और लाजर नाम का एक कंगाल घावों से भरा हुआ उस की डेवढ़ी पर छोड़ दिया जाता था। २१ और वह चाहता था, कि धनवान की मेज पर की जूठन से अपना पेट भरे; बरन कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे। २२ और ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर इब्राहीम की गोद में पहुंचाया; और वह धनवान भी मरा; और गाड़ा गया। २३ और अधोलोक में उस ने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाईं, और दूर से इब्राहीम की गोद में लाजर को देखा। २४ और उस ने पुकार कर कहा, हे पिता इब्राहीम, मुझ पर दया करके लाजर को भेज दे, ताकि वह अपनी उंगुली का

* यू० विश्वासयोग्य।

सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंढी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं। २५ परन्तु इब्राहीम ने कहा; हे पुत्र स्मरण कर, कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएं ले चुका है, और वैसे ही लाजर बुरी वस्तुएं: परन्तु अब वह यहां शान्ति पा रहा है, और तू तड़प रहा है। २६ और इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी गड़हा ठहराया गया है कि जो यहां से उस पार तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सकें, और न कोई वहां से इस पार हमारे पास आ सके। २७ उस ने कहा; तो हे पिता मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज। २८ क्योंकि मेरे पांच भाई हैं, वह उन के साम्हने इन बातों की गवाही दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की जगह में आएं। २९ इब्राहीम ने उस से कहा, उन के पास तो मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें हैं, वे उन की सुनें। ३० उस ने कहा; नहीं, हे पिता इब्राहीम; पर यदि कोई मरे हुओं में से उन के पास जाए, तो वे मन फिराएंगे। ३१ उस ने उस से कहा, कि जब वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि मरे हुओं में से कोई जी भी उठे तौभी उस की नहीं मानेंगे॥

१७ फिर उस ने अपने चेलों से कहा; हो नहीं सकता कि ठोकरें न लगें, परन्तु हाय, उस मनुष्य पर जिस के कारण वे आती हैं! २ जो इन छोटों में से किसी एक को ठोकर खिलाता है, उसके लिये यह भला होता, कि चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता, और वह समुद्र में डाल दिया जाता। ३ सचेत रहो; यदि तेरा भाई अपराध करे तो उसे समझा, और यदि पछताए तो उसे क्षमा कर। ४ यदि दिन भर में वह सात बार तेरा अपराध करे और सातों बार तेरे पास फिर आकर कहे, कि मैं पछताता हूं, तो उसे क्षमा कर॥

५ तब प्रेरितों ने प्रभु से कहा, हमारा विश्वास बढ़ा। ६ प्रभु ने कहा; कि यदि तुम को राई के दाने के बराबर भी विश्वास होता, तो तुम इस तूत के पेड़ से कहते कि जड़ से उखड़कर समुद्र में लग जा, तो वह तुम्हारी मान लेता। ७ पर तुम में से ऐसा कौन है, जिस का दास हल जोतता, या भेड़ें चराता हो, और जब वह खेत से आए, तो उस से कहे तुरन्त आकर भोजन करने बैठ? ८ और यह न कहे, कि मेरा खाना तैयार कर: और जब तक मैं खाऊं-पीऊं तब तक कमर बान्धकर मेरी सेवा कर; इस के बाद तू भी खा पी लेना। ९ क्या वह उस दास का अहसान मानेगा, कि उस ने वे ही काम किए जिस की आज्ञा दी गई थी? १० इसी रीति से तुम भी, जब उन सब कामों को कर चुको जिस की आज्ञा तुम्हें दी गई थी, तो कहो, हम निकम्मे दास हैं; कि जो हमें करना चाहिए था वही किया है॥

११ और ऐसा हुआ कि वह यरूशलेम को जाते हुए सामरिया और गलील के बीच से होकर जा रहा था। १२ और किसी गांव में प्रवेश करते समय उसे दस कोढ़ी मिले। १३ और उन्हों ने दूर खड़े होकर, ऊंचे शब्द से कहा, हे यीशु, हे स्वामी, हम पर दया कर। १४ उस ने उन्हें देखकर कहा, जाओ; और अपने तईं याजकों को दिखाओ; और जाते ही जाते वे शुद्ध हो गए। १५ तब उन में से एक यह देखकर कि मैं चंगा हो गया हूं, ऊंचे शब्द से

परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ लौटा। १६ और यीशु के पांवों पर मुंह के बल गिरकर, उसका धन्यवाद करने लगा; और वह सामरी था। १७ इस पर यीशु ने कहा, क्या दसों शुद्ध न हुए तो फिर वे नौ कहां हैं? १८ क्या इस परदेशी को छोड़ कोई और न निकला, जो परमेश्वर की बड़ाई करता? १९ तब उस ने उस से कहा; उठकर चला जा; तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है।।

२० जब फरीसियों ने उस से पूछा, कि परमेश्वर का राज्य कब आएगा? तो उस ने उन को उत्तर दिया, कि परमेश्वर का राज्य प्रगट रूप से नहीं आता। २१ और लोग यह न कहेंगे, कि देखो, यहां है, या वहां है, क्योंकि देखो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है।।

२२ और उस ने चेलों से कहा; वे दिन आएंगे, जिन में तुम मनुष्य के पुत्र के दिनों में से एक दिन को देखना चाहोगे, और नहीं देखने पाओगे। २३ लोग तुम से कहेंगे, देखो, वहां है, या देखो यहां है; परन्तु तुम चले न जाना और न उन के पीछे हो लेना। २४ क्योंकि जैसे बिजली आकाश की एक ओर से कौन्धकर आकाश की दूसरी ओर चमकती है, वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी अपने दिन में प्रगट होगा। २५ परन्तु पहिले अवश्य है, कि वह बहुत दुख उठाए, और इस युग के लोग उसे तुच्छ ठहराएं। २६ जैसा नूह के दिनों में हुआ था, वैसा ही मनुष्य के पुत्र के दिनों में भी होगा। २७ जिस दिन तक नूह जहाज पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग खाते-पीते थे, और उन में ब्याह-शादी होती थी; तब जल-प्रलय ने आकर उन सब को नाश किया। २८ और जैसा लूत के दिनों में हुआ था, कि लोग खाते-पीते लेन-देन करते, पेड़ लगाते और घर बनाते थे। २९ परन्तु जिस दिन लूत सदोम से निकला, उस दिन आग और गन्धक आकाश से बरसी और सब को नाश कर दिया। ३० मनुष्य के पुत्र के प्रगट होने के दिन भी ऐसा ही होगा। ३१ उस दिन जो कोठे पर हो; और उसका सामान घर में हो, वह उसे लेने को न उतरे, और वैसे ही जो खेत में हो वह पीछे न लौटे। ३२ लूत की पत्नी को स्मरण रखो। ३३ जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, और जो कोई उसे खोए वह उसे जीवित रखेगा। ३४ मैं तुम से कहता हूं, उस रात दो मनुष्य एक खाट पर होंगे, एक ले लिया जाएगा, और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। ३५ दो स्त्रियां एक साथ चक्की पीसती होंगी, एक ले ली जाएगी, और दूसरी छोड़ दी जाएगी। ३६ [दो जन खेत में होंगे एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ा जाएगा *।] ३७ यह सुन उन्हों ने उस से पूछा, हे प्रभु यह कहां होगा? उस ने उन से कहा, जहां लोथ है, वहां गिद्ध इकट्ठे होंगे।।

१८ फिर उस ने इस के विषय में कि नित्य प्रार्थना करना और हियाव न छोड़ना चाहिए उन से यह दृष्टान्त कहा। २ कि किसी नगर में एक न्यायी रहता था; जो न परमेश्वर से डरता था और न किसी मनुष्य की परवाह करता था। ३ और उसी नगर में एक बिधवा भी रहती थी: जो उसके पास आ आकर कहा करती थी, कि मेरा न्याय चुकाकर

* यह पद सब से पुराने हस्तलेखों में नहीं मिलता।

मुझे मुद्दई से बचा। ४ उस ने कितने समय तक तो न माना परन्तु अन्त में मन में बिचारकर कहा, यद्यपि मैं न परमेश्वर से डरता, और न मनुष्यों की कुछ परवाह करता हूं। ५ तौभी यह बिधवा मुझे सताती रहती है, इसलिये मैं उसका न्याय चुकाऊंगा कहीं ऐसा न हो कि घड़ी घड़ी आकर अन्त को मेरा नाक में दम करे। ६ प्रभु ने कहा, सुनो, कि यह अधर्मी न्यायी क्या कहता है? ७ सो क्या परमेश्वर अपने चुने हुओं का न्याय न चुकाएगा, जो रात-दिन उस की दुहाई देते रहते; और क्या वह उन के विषय में देर करेगा? ८ मैं तुम से कहता हूं; वह तुरन्त उन का न्याय चुकाएगा; तौभी मनुष्य का पुत्र जब आएगा, तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा?

९ और उस ने कितनों से जो अपने ऊपर भरोसा रखते थे, कि हम धर्मी हैं, और औरों को तुच्छ जानते थे, यह दृष्टान्त कहा। १० कि दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने के लिये गए; एक फरीसी था और दूसरा चुङ्गी लेनेवाला। ११ फरीसी खड़ा होकर अपने मन में यों प्रार्थना करने लगा, कि हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, कि मैं और मनुष्यों की नाईं अन्धेर करनेवाला, अन्यायी और व्यभिचारी नहीं, और न इस चुङ्गी लेनेवाले के समान हूं। १२ मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूं; मैं अपनी सब कमाई का दसवां अंश भी देता हूं। १३ परन्तु चुङ्गी लेनेवाले ने दूर खड़े होकर, स्वर्ग की ओर आंखें उठाना भी न चाहा, बरन अपनी छाती पीट-पीटकर कहा; हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर*। १४ मैं तुम से कहता हूं, कि वह दूसरा नहीं; परन्तु यही मनुष्य धर्मी ठहराया जाकर अपने घर गया; क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा॥

१५ फिर लोग अपने बच्चों को भी उसके पास लाने लगे, कि वह उन पर हाथ रखे; और चेलों ने देखकर उन्हें डांटा। १६ यीशु ने बच्चों को पास बुलाकर कहा, बालकों को मेरे पास आने दो, और उन्हें मना न करो: क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है। १७ मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक की नाईं ग्रहण न करेगा वह उस में कभी प्रवेश करने न पाएगा॥

१८ किसी सरदार ने उस से पूछा, हे उत्तम गुरु, अनन्तजीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूं? १९ यीशु ने उस से कहा; तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? कोई उत्तम नहीं, केवल एक, अर्थात् परमेश्वर। २० तू आज्ञाओं को तो जानता है, कि व्यभिचार न करना, हत्या न करना, और चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, अपने पिता और अपनी माता का आदर करना। २१ उस ने कहा, मैं तो इन सब को लड़कपन ही से मानता आया हूं। २२ यह सुन, यीशु ने उस से कहा, तुझ में अब भी एक बात की घटी है, अपना सब कुछ बेचकर कंगालों को बांट दे; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले। २३ वह यह सुनकर बहुत उदास हुआ, क्योंकि वह बड़ा धनी था। २४ यीशु ने उसे देखकर कहा; धनवानों का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है? २५ परमेश्वर के राज्य में

---

* या प्रायश्चित्त के कारण मुझ पापी पर दया कर।

धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है। २६ और सुननेवालों ने कहा, तो फिर किस का उद्धार हो सकता है? २७ उस ने कहा; जो मनुष्य से नहीं हो सकता, वह परमेश्वर से हो सकता है। २८ पतरस ने कहा; देख, हम तो घर बार छोड़कर तेरे पीछे हो लिये हैं। २९ उस ने उन से कहा; मैं तुम से सच कहता हूं, कि ऐसा कोई नहीं जिस ने परमेश्वर के राज्य के लिये घर या पत्नी या भाइयों या माता पिता या लड़के-बालों को छोड़ दिया हो। ३० और इस समय कई गुणा अधिक न पाए; और परलोक में अनन्त जीवन॥

३१ फिर उस ने बारहों को साथ लेकर उन से कहा; देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं, और जितनी बातें मनुष्य के पुत्र के लिये भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा लिखी गई हैं वे सब पूरी होंगी। ३२ क्योंकि वह अन्य जातियों के हाथ में सौंपा जाएगा, और वे उसे ठट्ठों में उड़ाएंगे; और उसका अपमान करेंगे, और उस पर थूकेंगे। ३३ और उसे कोड़े मारेंगे, और घात करेंगे, और वह तीसरे दिन जी उठेगा। ३४ और उन्हों ने इन बातों में से कोई बात न समझी: और यह बात उन से छिपी रही, और जो कहा गया था वह उन की समझ में न आया॥

३५ जब वह यरीहो के निकट पहुंचा, तो एक अन्धा सड़क के किनारे बैठा हुआ भीख मांग रहा था। ३६ और वह भीड़ के चलने की आहट सुनकर पूछने लगा, यह क्या हो रहा है? ३७ उन्हों ने उस को बताया, कि यीशु नासरी जा रहा है। ३८ तब उस ने पुकार के कहा, हे यीशु दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर। ३९ जो आगे जाते थे, वे उसे डांटने लगे, कि चुप रहे: परन्तु वह और भी चिल्लाने लगा, कि हे दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर। ४० तब यीशु ने खड़े होकर आज्ञा दी कि उसे मेरे पास लाओ, और जब वह निकट आया, तो उस ने उस से यह पूछा। ४१ तू क्या चाहता है, कि मैं तेरे लिये करूं? उस ने कहा; हे प्रभु यह कि मैं देखने लगूं। ४२ यीशु ने उस से कहा; देखने लग, तेरे विश्वास ने तुझे अच्छा कर दिया है। ४३ और वह तुरन्त देखने लगा; और परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ उसके पीछे हो लिया, और सब लोगों ने देखकर परमेश्वर की स्तुति की॥

१९ वह यरीहो में प्रवेश करके जा रहा था। २ और देखो, जक्कई नाम एक मनुष्य था जो चुङ्गी लेनेवालों का सरदार और धनी था। ३ वह यीशु को देखना चाहता था कि वह कौन सा है? परन्तु भीड़ के कारण देख न सकता था! क्योंकि वह नाटा था। ४ तब उस को देखने के लिये वह आगे दौड़कर एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया, क्योंकि वह उसी मार्ग से जाने वाला था। ५ जब यीशु उस जगह पहुंचा, तो ऊपर दृष्टि कर के उस से कहा; हे जक्कई झट उतर आ; क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना अवश्य है। ६ वह तुरन्त उतरकर आनन्द से उसे अपने घर को ले गया। ७ यह देखकर सब लोग कुड़कुड़ाकर कहने लगे, वह तो एक पापी मनुष्य के यहां जा उतरा है। ८ जक्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा; हे प्रभु, देख, मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूं, और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो उसे चौगुना फेर देता हूं।

९ तब यीशु ने उस से कहा; आज इस घर में उद्धार आया है, इसलिये कि यह भी इब्राहीम का एक पुत्र है। १० क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उन का उद्धार करने आया है॥

११ जब वे ये बातें सुन रहे थे, तो उस ने एक दृष्टान्त कहा, इसलिये कि वह यरूशलेम के निकट था, और वे समझते थे, कि परमेश्वर का राज्य अभी प्रगट हुआ चाहता है। १२ सो उस ने कहा, एक धनी मनुष्य दूर देश को चला ताकि राजपद पाकर फिर आए। १३ और उस ने अपने दासों में से दस को बुलाकर उन्हें दस मुहरें दीं, और उन से कहा, मेरे लौट आने तक लेन-देन करना। १४ परन्तु उसके नगर के रहनेवाले उस से बैर रखते थे, और उसके पीछे दूतों के द्वारा कहला भेजा, कि हम नहीं चाहते, कि यह हम पर राज्य करे। १५ जब वह राजपद पाकर लौट आया, तो ऐसा हुआ कि उस ने अपने दासों को जिन्हें रोकड़ दी थी, अपने पास बुलवाया ताकि मालूम करे कि उन्हों ने लेन-देन से क्या क्या कमाया। १६ तब पहिले ने आकर कहा, हे स्वामी तेरे मोहर से दस और मोहरें कमाई हैं। १७ उस ने उस से कहा; धन्य हे उत्तम दास, तुझे धन्य है, तू बहुत ही थोड़े में विश्वासी निकला अब दस नगरों पर अधिकार रख। १८ दूसरे ने आकर कहा; हे स्वामी तेरी मोहर से पांच और मोहरें कमाई हैं। १९ उस ने उस से भी कहा, कि तू भी पांच नगरों पर हाकिम हो जा। २० तीसरे ने आकर कहा; हे स्वामी देख, तेरी मोहर यह है, जिसे मैं ने अंगोछे में बान्ध रखी। २१ क्योंकि मैं तुझ से डरता था, इसलिये कि तू कठोर मनुष्य है: जो तू ने नहीं रखा उसे उठा लेता है, और जो तू ने नहीं बोया, उसे काटता है। २२ उस ने उस से कहा; हे दुष्ट दास, मैं तेरे ही मुंह से तुझे दोषी ठहराता हूं: तू मुझे जानता था कि कठोर मनुष्य हूं, जो मैं ने नहीं रखा उसे उठा लेता, और जो मैं ने नहीं बोया, उसे काटता हूं। २३ तो तू ने मेरे रुपये कोठी में क्यों नहीं रख दिए, कि मैं आकर ब्याज समेत ले लेता? २४ और जो लोग निकट खड़े थे, उस ने उन से कहा, वह मोहर उस से ले लो, और जिस के पास दस मोहरें हैं उसे दे दो। २५ (उन्हों ने उस से कहा; हे स्वामी, उसके पास दस मोहरें तो हैं)। २६ मैं तुम से कहता हूं, कि जिस के पास है, उसे दिया जाएगा; और जिस के पास नहीं, उस से वह भी जो उसके पास है ले लिया जाएगा। २७ परन्तु मेरे उन बैरियों को जो नहीं चाहते थे कि मैं उन पर राज्य करूं, उन को यहां लाकर मेरे सामने घात करो॥

२८ ये बातें कहकर वह यरूशलेम की ओर उन के आगे आगे चला॥

२९ और जब वह जैतून नाम पहाड़ पर बैतफगे और बैतनियाह के पास पहुंचा, तो उस ने अपने चेलों में से दो को यह कहके भेजा। ३० कि साम्हने के गांव में जाओ, और उस में पहुंचते ही एक गदही का बच्चा जिस पर कभी कोई सवार नहीं हुआ, बन्धा हुआ तुम्हें मिलेगा, उसे खोलकर लाओ। ३१ और यदि कोई तुम से पूछे, कि क्यों खोलते हो, तो यह कह देना, कि प्रभु को इस का प्रयोजन है। ३२ जो भेजे गए थे, उन्हों ने जाकर जैसा उस ने उन से कहा था, वैसा ही पाया। ३३ जब वे गदहे के बच्चे को खोल रहे थे, तो उसके मालिकों ने उन से पूछा; इस बच्चे को क्यों खोलते हो?

३४ उन्हों ने कहा, प्रभु को इस का प्रयोजन है। ३५ वे उस को यीशु के पास ले आए, और अपने कपड़े उस बच्चे पर डालकर यीशु को उस पर सवार किया। ३६ जब वह जा रहा था, तो वे अपने कपड़े मार्ग में बिछाते जाते थे। ३७ और निकट आते हुए जब वह जैतून पहाड़ की ढलान पर पहुंचा, तो चेलों की सारी मण्डली उन सब सामर्थ के कामों के कारण जो उन्हों ने देखे थे, आनन्दित होकर बड़े शब्द से परमेश्वर की स्तुति करने लगी। ३८ कि धन्य है वह राजा, जो प्रभु के नाम से आता है; स्वर्ग में शान्ति और आकाश * मण्डल में महिमा हो। ३९ तब भीड़ में से कितने फरीसी उस से कहने लगे, हे गुरु अपने चेलों को डांट। ४० उस ने उत्तर दिया, कि तुम में से कहता हूं, यदि ये चुप रहें, तो पत्थर चिल्ला उठेंगे।।

४१ जब वह निकट आया तो नगर को देखकर उस पर रोया। ४२ और कहा, क्या ही भला होता, कि तू; हां, तू ही, इसी दिन में कुशल की बातें जानता, परन्तु अब वे तेरी आंखों से छिप गई हैं। ४३ क्योंकि वे दिन तुझ पर आएंगे, कि तेरे बैरी मोर्चा बान्धकर तुझे घेर लेंगे, और चारों ओर से तुझे दबाएंगे। ४४ और तुझे और तेरे बालकों को जो तुझ में हैं, मिट्टी में मिलाएंगे, और तुझ में पत्थर पर पत्थर भी न छोड़ेंगे; क्योंकि तू ने वह अवसर जब तुझ पर कृपा दृष्टि की गई न पहिचाना।।

४५ तब वह मन्दिर में जाकर बेचनेवालों को बाहर निकालने लगा। ४६ और उन से कहा, लिखा है; कि मेरा घर प्रार्थना का घर होगा: परन्तु तुम ने उसे डाकुओं की खोह बना दिया है।।

४७ और वह प्रति दिन मन्दिर में उपदेश करता था: और महायाजक और शास्त्री और लोगों के रईस उसे नाश करने का अवसर ढूंढ़ते थे। ४८ परन्तु कोई उपाय न निकाल सके; कि यह किस प्रकार करें क्योंकि सब लोग बड़ी चाह से उस की सुनते थे।।

२० एक दिन ऐसा हुआ कि जब वह मन्दिर में लोगों को उपदेश देता और सुसमाचार सुना रहा था, तो महायाजक और शास्त्री, पुरनियों के साथ पास आकर खड़े हुए। २ और कहने लगे, कि हमें बता, तू इन कामों को किस अधिकार से करता है, और वह कौन है, जिस ने तुझे यह अधिकार दिया है? ३ उस ने उन को उत्तर दिया, कि मैं भी तुम से एक बात पूछता हूं; मुझे बताओ। ४ यूहन्ना का बपतिस्मा स्वर्ग की ओर से था या मनुष्यों की ओर से था? ५ तब वे आपस में कहने लगे, कि यदि हम कहें स्वर्ग की ओर से, तो वह कहेगा; फिर तुम ने उस की प्रतीति क्यों न की? ६ और यदि हम कहें, मनुष्यों की ओर से, तो सब लोग हमें पत्थरवाह करेंगे, क्योंकि वे सचमुच जानते हैं, कि यूहन्ना भविष्यद्वक्ता था। ७ सो उन्हों ने उत्तर दिया, हम नहीं जानते, कि वह किस की ओर से था। ८ यीशु ने उन से कहा, तो मैं भी तुम को नहीं बताता, कि मैं ये काम किस अधिकार से करता हूं।।

९ तब वह लोगों से यह दृष्टान्त कहने लगा, कि किसी मनुष्य ने दाख की बारी लगाई, और किसानों को उसका ठेका दे दिया और बहुत दिनों के लिये परदेश चला

* यू० ऊंचे से ऊंचे स्थान।

गया। १० समय पर उस ने किसानों के पास एक दास को भेजा, कि वे दाख की बारी के कुछ फलों का भाग उसे दें, पर किसानों ने उसे पीटकर छूछे हाथ लौटा दिया। ११ फिर उस ने एक और दास को भेजा, और उन्हों ने उसे भी पीटकर और उसका अपमान करके छूछे हाथ लौटा दिया। १२ फिर उस ने तीसरा भेजा, और उन्हों ने उसे भी घायल करके निकाल दिया। १३ तब दाख की बारी के स्वामी ने कहा, मैं क्या करूं? मैं अपने प्रिय पुत्र को भेजूंगा क्या जाने वे उसका आदर करें। १४ जब किसानों ने उसे देखा तो आपस में विचार करने लगे, कि यह तो वारिस है; आओ, हम उसे मार डालें, कि मीरास हमारी हो जाए। १५ और उन्हों ने उसे दाख की बारी से बाहर निकालकर मार डाला: इसलिये दाख की बारी का स्वामी उन के साथ क्या करेगा? १६ वह आकर उन किसानों को नाश करेगा, और दाख की बारी औरों को सौंपेगा: यह सुनकर उन्हों ने कहा, परमेश्वर ऐसा न करे। १७ उस ने उन की ओर देखकर कहा; फिर यह क्या, लिखा है, कि जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा हो गया। १८ जो कोई उस पत्थर पर गिरेगा वह चकनाचूर हो जाएगा, और जिस पर वह गिरेगा, उस को पीस डालेगा॥

१९ उसी घड़ी शास्त्रियों और महायाजकों ने उसे पकड़ना चाहा, क्योंकि समझ गए, कि उस ने हम पर यह दृष्टान्त कहा, परन्तु वे लोगों से डरे। २० और वे उस की ताक में लगे और भेदिए भेजे, कि धर्म का भेष धरकर उस की कोई न कोई बात पकड़ें, कि उसे हाकिम के हाथ और अधिकार में सौंप दें। २१ उन्हों ने उस से यह पूछा, कि हे गुरु, हम जानते हैं कि तू ठीक कहता, और सिखाता भी है, और किसी का पक्षपात नहीं करता; बरन परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से बताता है। २२ क्या हमें कैसर को कर देना उचित है, कि नहीं। २३ उस ने उन की चतुराई को ताड़कर उन से कहा; एक दीनार* मुझे दिखाओ। २४ इस पर किस की मूर्ति और नाम है? उन्हों ने कहा, कैसर का। २५ उस ने उन से कहा; तो जो कैसर का है, वह कैसर को दो और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो। २६ वे लोगों के साम्हने उस बात को पकड़ न सके, बरन उसके उत्तर से अचम्भित होकर चुप रह गए॥

२७ फिर सदूकी जो कहते हैं, कि मरे हुओं का जी उठना है ही नहीं, उन में से कितनों ने उसके पास आकर पूछा। २८ कि हे गुरु, मूसा ने हमारे लिये यह लिखा है, कि यदि किसी का भाई अपनी पत्नी के रहते हुए बिना सन्तान मर जाए, तो उसका भाई उस की पत्नी को ब्याह ले, और अपने भाई के लिये वंश उत्पन्न करे। २९ सो सात भाई थे, पहिला भाई ब्याह करके बिना सन्तान मर गया। ३० फिर दूसरे और तीसरे ने भी उस स्त्री को ब्याह लिया। ३१ इसी रीति से सातों बिना सन्तान मर गए। ३२ सब के पीछे वह स्त्री भी मर गई। ३३ सो जी उठने पर वह उन में से किस की पत्नी होगी, क्योंकि वह सातों की पत्नी हो चुकी थी। ३४ यीशु ने उन से कहा; कि इस युग के सन्तानों में तो ब्याह शादी होती है। ३५ पर जो लोग इस योग्य ठहरेंगे, कि उस युग को और मरे हुओं में से जी उठना † प्राप्त करें, उन

---

* देखो मत्ती १८ : २८।

† या मृतकोत्थान।

में ब्याह शादी न होगी। ३६ वे फिर मरने के भी नहीं; क्योंकि वे स्वर्गदूतों के समान होंगे, और जी उठने के सन्तान होने से परमेश्वर के भी सन्तान होंगे। ३७ परन्तु इस बात को कि मरे हुए जी उठते हैं, मूसा ने भी झाड़ी की कथा में प्रगट की है, कि वह प्रभु को इब्राहीम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर कहता है। ३८ परमेश्वर तो मुरदों का नहीं परन्तु जीवतों का परमेश्वर है: क्योंकि उसके निकट सब जीवित हैं। ३९ तब यह सुनकर शास्त्रियों में से कितनों ने यह कहा, कि हे गुरु, तू ने अच्छा कहा। ४० और उन्हें फिर उस से कुछ और पूछने का हियाव न हुआ॥

४१ फिर उस ने उन से पूछा, मसीह को दाऊद का सन्तान क्योंकर कहते हैं? ४२ दाऊद आप भजनसंहिता की पुस्तक में कहता है, कि प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा। ४३ मेरे दहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों के तले न कर दूं। ४४ दाऊद तो उसे प्रभु कहता है; तो फिर वह उस की सन्तान क्योंकर ठहरा?

४५ जब सब लोग सुन रहे थे, तो उस ने अपने चेलों से कहा। ४६ शास्त्रियों से चौकस रहो, जिन को लम्बे लम्बे वस्त्र पहिने हुए फिरना भाता है, और जिन्हें बाजारों में नमस्कार, और सभाओं में मुख्य आसन और जेवनारों में मुख्य स्थान प्रिय लगते हैं। ४७ वे बिधवाओं के घर खा जाते हैं, और दिखाने के लिये बड़ी देर तक प्रार्थना करते रहते हैं: ये बहुत ही दण्ड पाएंगे॥

२१

फिर उस ने आंख उठाकर धनवानों को अपना अपना दान भण्डार में डालते देखा। २ और उस ने एक कंगाल बिधवा को भी उस में दो दमड़ियां डालते देखा। ३ तब उस ने कहा; मैं तुम से सच कहता हूं कि इस कंगाल बिधवा ने सब से बढ़कर डाला है। ४ क्योंकि उन सब ने अपनी अपनी बढ़ती में से दान में कुछ डाला है, परन्तु इस ने अपनी घटी में से अपनी सारी जीविका डाल दी है॥

५ जब कितने लोग मन्दिर के विषय में कह रहे थे, कि वह कैसे सुन्दर पत्थरों और भेंट की वस्तुओं से संवारा गया है तो उस ने कहा। ६ वे दिन आएंगे, जिन में यह सब जो तुम देखते हो, उन में से यहां किसी पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा, जो ढाया न जाएगा। ७ उन्हों ने उस से पूछा, हे गुरु, यह सब कब होगा? और ये बातें जब पूरी होने पर होंगी, तो उस समय का क्या चिन्ह होगा? ८ उस ने कहा; चौकस रहो, कि भरमाए न जाओ, क्योंकि बहुतेरे मेरे नाम से आकर कहेंगे, कि मैं वही हूं; और यह भी कि समय निकट आ पहुंचा है: तुम उन के पीछे न चले जाना। ९ और जब तुम लड़ाइयों और बलवों की चर्चा सुनो, तो घबरा न जाना; क्योंकि इन का पहिले होना अवश्य है; परन्तु उस समय तुरन्त अन्त न होगा॥

१० तब उस ने उन से कहा, कि जाति पर जाति और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा। ११ और बड़े बड़े भुईंडोल होंगे, और जगह जगह अकाल और मरियां पड़ेंगी, और आकाश से भयंकर बातें और बड़े बड़े चिन्ह प्रगट होंगे। १२ परन्तु इन सब बातों से पहिले वे मेरे नाम के कारण तुम्हें पकड़ेंगे, और सताएंगे, और पंचायतों में सौंपेंगे, और बन्दीगृह में डलवाएंगे, और राजाओं और हाकिमों के साम्हने ले जाएंगे।

१३ पर यह तुम्हारे लिये गवाही देने का अवसर हो जाएगा। १४ इसलिये अपने अपने मन में ठान रखो कि हम पहिले से उत्तर देने की चिन्ता न करेंगे। १५ क्योंकि मैं तुम्हें ऐसा बोल और बुद्धि दूंगा, कि तुम्हारे सब विरोधी साम्हना या खण्डन न कर सकेंगे। १६ और तुम्हारे माता पिता और भाई और कुटुम्ब, और मित्र भी तुम्हें पकड़वाएंगे; यहां तक कि तुम में से कितनों को मरवा डालेंगे। १७ और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे। १८ परन्तु तुम्हारे सिर का एक बाल भी बांका न होगा। १९ अपने धीरज से तुम अपने प्राणों को बचाए रखोगे॥

२० जब तुम यरूशलेम को सेनाओं से घिरा हुआ देखो, तो जान लेना कि उसका उजड़ जाना निकट है। २१ तब जो यहूदिया में हों वह पहाड़ों पर भाग जाएं, और जो यरूशलेम के भीतर हों वे बाहर निकल जाएं; और जो गांवों में हों वे उस में न जाएं। २२ क्योंकि यह पलटा लेने के ऐसे दिन होंगे, जिन में लिखी हुई सब बातें पूरी हो जाएंगी। २३ उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी, उन के लिये हाय, हाय, क्योंकि देश में बड़ा क्लेश और इन लोगों पर बड़ी आपत्ति होगी। २४ वे तलवार के कौर हो जाएंगे, और सब देशों के लोगों में बन्धुए होकर पहुंचाए जाएंगे, और जब तक अन्य जातियों का समय पूरा न हो, तब तक यरूशलेम अन्य जातियों से रौंदा जाएगा। २५ और सूरज और चान्द और तारों में चिन्ह दिखाई देंगे, और पृथ्वी पर, देश देश के लोगों को संकट होगा; क्योंकि वे समुद्र के गरजने और लहरों के कोलाहल से घबरा जाएंगे। २६ और भय के कारण और संसार पर आनेवाली घटनाओं की बाट देखते देखते लोगों के जी में जी न रहेगा क्योंकि आकाश की शक्तियां हिलाई जाएंगी। २७ तब वे मनुष्य के पुत्र को सामर्थ और बड़ी महिमा के साथ बादल पर आते देखेंगे। २८ जब ये बातें होने लगें, तो सीधे होकर अपने सिर ऊपर उठाना; क्योंकि तुम्हारा छुटकारा निकट होगा॥

२९ उस ने उन से एक दृष्टान्त भी कहा, कि अंजीर के पेड़ और सब पेड़ों को देखो। ३० ज्योंहि उन की कोंपलें निकलती हैं, तो तुम देखकर आप ही जान लेते हो, कि ग्रीष्मकाल निकट है। ३१ इसी रीति से जब तुम ये बातें होते देखो, तब जान लो कि परमेश्वर का राज्य निकट है। ३२ मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक ये सब बातें न हो लें, तब तक इस पीढ़ी * का कदापि अन्त न होगा। ३३ आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी॥

३४ इसलिये सावधान रहो, ऐसा न हो कि तुम्हारे मन खुमार और मतवालेपन, और इस जीवन की चिन्ताओं से सुस्त हो जाएं, और वह दिन तुम पर फन्दे की नाईं अचानक आ पड़े। ३५ क्योंकि वह सारी पृथ्वी के सब रहनेवालों पर इसी प्रकार आ पड़ेगा। ३६ इसलिये जागते रहो और हर समय प्रार्थना करते रहो कि तुम इन सब आनेवाली घटनाओं से बचने, और मनुष्य के पुत्र के साम्हने खड़े होने के योग्य बनो॥

३७ और वह दिन को मन्दिर में उपदेश करता था; और रात को बाहर जाकर जैतून नाम पहाड़ पर रहा करता था। ३८ और भोर को तड़के सब लोग उस की

* या यह पीढ़ी जाती न रहेगी।

सुनने के लिये मन्दिर में उसके पास आया करते थे ॥

२२ अखमीरी रोटी का पर्ब्ब जो फसह कहलाता है, निकट था। २ और महायाजक और शास्त्री इस बात की खोज में थे कि उस को क्योंकर मार डालें, पर वे लोगों से डरते थे ॥

३ और शैतान यहूदा में समाया, जो इस्करियोती कहलाता और बारह चेलों में गिना जाता था। ४ उस ने जाकर महायाजकों और पहरुओं के सरदारों के साथ बातचीत की, कि उस को किस प्रकार उन के हाथ पकड़वाए। ५ वे आनन्दित हुए, और उसे रुपये देने का वचन दिया। ६ उस ने मान लिया, और अवसर ढूंढ़ने लगा, कि बिना उपद्रव के उसे उन के हाथ पकड़वा दे ॥

७ तब अखमीरी रोटी के पर्ब्ब का दिन आया, जिस में फसह का मेम्ना बली करना अवश्य था। ८ और यीशु ने पतरस और यूहन्ना को यह कहकर भेजा, कि जाकर हमारे खाने के लिये फसह तैयार करो। ९ उन्हों ने उस से पूछा; तू कहां चाहता है, कि हम तैयार करें? १० उस ने उन से कहा; देखो, नगर में प्रवेश करते ही एक मनुष्य जल का घड़ा उठाए हुए तुम्हें मिलेगा, जिस घर में वह जाए; तुम उसके पीछे चले जाना। ११ और उस घर के स्वामी से कहो, कि गुरु तुझ से कहता है; कि वह पाहुनशाला कहां है जिस में मैं अपने चेलों के साथ फसह खाऊं? १२ वह तुम्हें एक सजी सजाई बड़ी अटारी दिखा देगा; वहां तैयारी करना। १३ उन्हों ने जाकर, जैसा उस ने उन से कहा था, वैसा ही पाया, और फसह तैयार किया ॥

१४ जब घड़ी पहुंची, तो वह प्रेरितों के साथ भोजन करने बैठा। १५ और उस ने उन से कहा; मुझे बड़ी लालसा थी, कि दुख-भोगने से पहिले यह फसह तुम्हारे साथ खाऊं। १६ क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि जब तक वह परमेश्वर के राज्य में पूरा न हो तब तक मैं उसे कभी न खाऊंगा। १७ तब उस ने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, और कहा, इस को लो और आपस में बांट लो। १८ क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि जब तक परमेश्वर का राज्य न आए तब तक मैं दाख रस अब से कभी न पीऊंगा। १९ फिर उस ने रोटी ली, और धन्यवाद करके तोड़ी, और उन को यह कहते हुए दी, कि यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये दी जाती है: मेरे स्मरण के लिये यही किया करो। २० इसी रीति से उस ने बियारी के बाद कटोरा भी यह कहते हुए दिया, कि यह कटोरा मेरे उस लोहू में जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है नई वाचा है। २१ पर देखो, मेरे पकड़वानेवाले का हाथ मेरे साथ मेज पर है। २२ क्योंकि मनुष्य का पुत्र तो जैसा उसके लिये ठहराया गया जाता ही है, पर हाय उस मनुष्य पर, जिस के द्वारा वह पकड़वाया जाता है! २३ तब वे आपस में पूछ पाछ करने लगे, कि हम में से कौन है, जो यह काम करेगा?

२४ उन में यह वाद-विवाद भी हुआ; कि हम में से कौन बड़ा समझा जाता है? २५ उस ने उन से कहा, अन्यजातियों के राजा उन पर प्रभुता करते हैं; और जो उन पर अधिकार रखते हैं, वे उपकारक कहलाते हैं। २६ परन्तु तुम ऐसे न होना; बरन जो तुम में बड़ा है, वह छोटे की नाईं और जो प्रधान है, वह सेवक के नाईं बने। २७ क्योंकि बड़ा कौन है; वह जो भोजन

पर बैठा या वह जो सेवा करता है ? क्या वह नहीं जो भोजन पर बैठा है ? पर मैं तुम्हारे बीच में सेवक के नाईं हूं। २८ परन्तु तुम वह हो, जो मेरी परीक्षाओं में लगातार मेरे साथ रहे। २९ और जैसे मेरे पिता ने मेरे लिये एक राज्य ठहराया है, ३० वैसे ही मैं भी तुम्हारे लिये ठहराता हूं, ताकि तुम मेरे राज्य में मेरी मेज पर खाओ-पिओ; बरन सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करो। ३१ शमौन, हे शमौन, देख, शैतान ने तुम लोगों को मांग लिया है कि गेहूं की नाईं फटके। ३२ परन्तु मैं ने तेरे लिये बिनती की, कि तेरा विश्वास जाता न रहे: और जब तू फिरे, तो अपने भाइयों को स्थिर करना। ३३ उस ने उस से कहा; हे प्रभु, मैं तेरे साथ बन्दीगृह जाने, बरन मरने को भी तैयार हूं। ३४ उस ने कहा; हे पतरस मैं तुझ से कहता हूं, कि आज मुर्ग़ बांग न देगा जब तक तू तीन बार मेरा इन्कार न कर लेगा कि मैं उसे नहीं जानता॥

३५ और उस ने उन से कहा, कि जब मैं ने तुम्हें बटुए, और झोली, और जूते बिना भेजा था, तो क्या तुम को किसी वस्तु की घटी हुई थी ? उन्हों ने कहा; किसी वस्तु की नहीं। ३६ उस ने उन से कहा, परन्तु अब जिस के पास बटुआ हो वह उसे ले, और वैसे ही झोली भी, और जिस के पास तलवार न हो वह अपने कपड़े बेचकर एक मोल ले। ३७ क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि यह जो लिखा है, कि वह अपराधियों के साथ गिना गया, उसका मुझ में पूरा होना अवश्य है; क्योंकि मेरे विषय की बातें पूरी होने पर हैं। ३८ उन्हों ने कहा; हे प्रभु, देख, यहां दो तलवारें हैं: उस ने उन से कहा; बहुत हैं॥

३९ तब वह बाहर निकलकर अपनी रीति के अनुसार जैतून के पहाड़ पर गया, और चेले उसके पीछे हो लिए। ४० उस जगह पहुंचकर उस ने उन से कहा; प्रार्थना करो, कि तुम परीक्षा में न पड़ो। ४१ और वह आप उन से अलग एक ढेला फेंकने के टप्पे भर गया, और घुटने टेककर प्रार्थना करने लगा। ४२ कि हे पिता यदि तू चाहे तो इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले, तौभी मेरी नहीं परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी हो। ४३ तब स्वर्ग से एक दूत उस को दिखाई दिया जो उसे सामर्थ देता था। ४४ और वह अत्यन्त संकट में व्याकुल होकर और भी हृदय वेदना से प्रार्थना करने लगा; और उसका पसीना मानो लोहू की बड़ी बड़ी बून्दों की नाईं भूमि पर गिर रहा था। ४५ तब वह प्रार्थना से उठा और अपने चेलों के पास आकर उन्हें उदासी के मारे सोता पाया; और उन से कहा, क्यों सोते हो ? ४६ उठो, प्रार्थना करो, कि परीक्षा में न पड़ो॥

४७ वह यह कह ही रहा था, कि देखो एक भीड़ आई, और उन बारहों में से एक जिस का नाम यहूदा था उनके आगे आगे आ रहा था, वह यीशु के पास आया, कि उसका चूमा ले। ४८ यीशु ने उस से कहा, हे यहूदा, क्या तू चूमा लेकर मनुष्य के पुत्र को पकड़वाता है ? ४९ उसके साथियों ने जब देखा कि क्या होनेवाला है, तो कहा; हे प्रभु, क्या हम तलवार चलाएं ? ५० और उन में से एक ने महायाजक के दास पर चलाकर उसका दहिना कान उड़ा दिया। ५१ इस पर यीशु ने कहा; अब बस करो *: और उसका कान छूकर उसे

* या यहां तक रहने दो।

अच्छा किया। ५२ तब यीशु ने महायाजकों; और मन्दिर के पहरुओं के सरदारों और पुरनियों से, जो उस पर चढ़ आए थे, कहा; क्या तुम मुझे डाकू जानकर तलवारें और लाठियां लिए हुए निकले हो? ५३ जब मैं मन्दिर में हर दिन तुम्हारे साथ था, तो तुम ने मुझ पर हाथ न डाला; पर यह तुम्हारी घड़ी है, और अन्धकार का अधिकार है॥

५४ फिर वे उसे पकड़कर ले चले, और महायाजक के घर में लाए और पतरस दूर ही दूर उसके पीछे पीछे चलता था। ५५ और जब वे आंगन में आग सुलगाकर इकट्ठे बैठे, तो पतरस भी उन के बीच में बैठ गया। ५६ और एक लौंडी उसे आग के उजियाले में बैठे देखकर और उस की ओर ताककर कहने लगी, यह भी तो उसके साथ था। ५७ परन्तु उस ने यह कहकर इन्कार किया, कि हे नारी, मैं उसे नहीं जानता। ५८ थोड़ी देर बाद किसी और ने उसे देखकर कहा, तू भी तो उन्हीं में से है: पतरस ने कहा: हे मनुष्य मैं नहीं हूं। ५९ कोई घंटे भर के बाद एक और मनुष्य दृढ़ता से कहने लगा, निश्चय यह भी तो उसके साथ था; क्योंकि यह गलीली है। ६० पतरस ने कहा, हे मनुष्य, मैं नहीं जानता कि तू क्या कहता है? वह कह ही रहा था कि तुरन्त मुर्ग़ ने बांग दी। ६१ तब प्रभु ने घूमकर पतरस की ओर देखा, और पतरस को प्रभु की वह बात याद आई जो उस ने कही थी, कि आज मुर्ग़ के बांग देने से पहिले, तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा। ६२ और वह बाहर निकलकर फूट फूट कर रोने लगा॥

६३ जो मनुष्य यीशु को पकड़े हुए थे, वे उसे ठट्ठों में उड़ाकर पीटने लगे। ६४ और उस की आंखें ढांपकर उस से पूछा, कि भविष्यद्वाणी करके बता कि तुझे किसने मारा। ६५ और उन्हों ने बहुत सी और भी निन्दा की बातें उसके विरोध में कहीं॥

६६ जब दिन हुआ तो लोगों के पुरनिए और महायाजक और शास्त्री इकट्ठे हुए, और उसे अपनी महासभा में लाकर पूछा, ६७ यदि तू मसीह है, तो हम से कह दे! उस ने उन से कहा, यदि मैं तुम से कहूं, तो प्रतीति न करोगे। ६८ और यदि पूछूं, तो उत्तर न दोगे। ६९ परन्तु अब से मनुष्य का पुत्र सर्वशक्तिमान परमेश्वर की दहिनी ओर बैठा रहेगा। ७० इस पर सब ने कहा, तो क्या तू परमेश्वर का पुत्र है? उस ने उन से कहा; तुम आप ही कहते हो, क्योंकि मैं हूं। ७१ तब उन्हों ने कहा; अब हमें गवाही का क्या प्रयोजन है; क्योंकि हम ने आप ही उसके मुंह से सुन लिया है॥

२३

तब सारी सभा उठकर उसे पीलातुस के पास ले गई। २ और वे यह कहकर उस पर दोष लगाने लगे, कि हम ने इसे लोगों को बहकाते और कैसर को कर देने से मना करते, और अपने आप को मसीह राजा कहते हुए सुना है। ३ पीलातुस ने उस से पूछा, क्या तू यहूदियों का राजा है? उस ने उसे उत्तर दिया, कि तू आप ही कह रहा है। ४ तब पीलातुस ने महायाजकों और लोगों से कहा, मैं इस मनुष्य में कुछ दोष नहीं पाता। ५ पर वे और भी दृढ़ता से कहने लगे, यह गलील से लेकर यहां तक सारे यहूदिया में उपदेश दे देकर लोगों को उसकाता है। ६ यह सुनकर पीलातुस ने पूछा, क्या यह मनुष्य गलीली

है? ७ और यह जानकर कि वह हेरोदेस की रियासत का है, उसे हेरोदेस के पास भेज दिया, क्योंकि उन दिनों में वह भी यरूशलेम में था॥

८ हेरोदेस यीशु को देखकर बहुत ही प्रसन्न हुआ, क्योंकि वह बहुत दिनों से उस को देखना चाहता था: इसलिये कि उसके विषय में सुना था, और उसका कुछ चिन्ह देखने की आशा रखता था। ९ वह उस से बहुतेरी बातें पूछता रहा, पर उस ने उस को कुछ भी उत्तर न दिया। १० और महायाजक और शास्त्री खड़े हुए तन मन से उस पर दोष लगाते रहे। ११ तब हेरोदेस ने अपने सिपाहियों के साथ उसका अपमान करके ठट्ठों में उड़ाया, और भड़कीला वस्त्र पहिनाकर उसे पीलातुस के पास लौटा दिया। १२ उसी दिन पीलातुस और हेरोदेस मित्र हो गए। इसके पहिले वे एक दूसरे के बैरी थे॥

१३ पीलातुस ने महायाजकों और सरदारों और लोगों को बुलाकर उन से कहा। १४ तुम इस मनुष्य को लोगों का बहकानेवाला ठहराकर मेरे पास लाए हो, और देखो, मैं ने तुम्हारे साम्हने उस की जांच की, पर जिन बातों का तुम उस पर दोष लगाते हो, उन बातों के विषय में मैं ने उस में कुछ भी दोष नहीं पाया है। १५ न हेरोदेस ने, क्योंकि उस ने उसे हमारे पास लौटा दिया है: और देखो, उस से ऐसा कुछ नहीं हुआ कि वह मृत्यु के दण्ड के योग्य ठहराया जाए। १६ इसलिये मैं उसे पिटवाकर छोड़ देता हूं। १८ तब सब मिलकर चिल्ला उठे, कि इस का काम तमाम कर, और हमारे लिये बरअब्बा को छोड़ दे। १९ यही किसी बलवे के कारण जो नगर में हुआ था, और हत्या के कारण बन्दीगृह में डाला गया था। २० पर पीलातुस ने यीशु को छोड़ने की इच्छा से लोगों को फिर समझाया। २१ परन्तु उन्हों ने चिल्लाकर कहा; कि उसे क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर। २२ उस ने तीसरी बार उन से कहा; क्यों उस ने कौन सी बुराई की है? मैं ने उस में मृत्यु के दण्ड के योग्य कोई बात नहीं पाई! इसलिये मैं उसे पिटवाकर छोड़ देता हूं। २३ परन्तु वे चिल्ला-चिल्लाकर पीछे पड़ गए, कि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए, और उन का चिल्लाना प्रबल हुआ। २४ सो पीलातुस ने आज्ञा दी, कि उन की बिनती के अनुसार किया जाए। २५ और उस ने उस मनुष्य को जो बलवे और हत्या के कारण बन्दीगृह में डाला गया था, और जिसे वे मांगते थे, छोड़ दिया; और यीशु को उन की इच्छा के अनुसार सौंप दिया॥

२६ जब वे उसे लिए जाते थे, तो उन्हों ने शमौन नाम एक कुरेनी को जो गांव से आ रहा था, पकड़कर उस पर क्रूस को लाद दिया कि उसे यीशु के पीछे पीछे ले चले॥

२७ और लोगों की बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली: और बहुत सी स्त्रियां भी, जो उसके लिये छाती-पीटती और विलाप करती थीं। २८ यीशु ने उन की ओर फिरकर कहा; हे यरूशलेम की पुत्रियो, मेरे लिये मत रोओ; परन्तु अपने और अपने बालकों के लिये रोओ। २९ क्योंकि देखो, वे दिन आते हैं, जिन में कहेंगे, धन्य हैं वे जो बांझ हैं, और वे गर्भ जो न जने और वे स्तन जिन्हों ने दूध न पिलाया। ३० उस समय वे पहाड़ों से कहने लगेंगे, कि हम पर गिरो, और टीलों से कि हमें ढांप लो। ३१ क्योंकि जब वे हरे पेड़ के

साथ ऐसा करते हैं, तो सूखे के साथ क्या कुछ न किया जाएगा?

३२ वे और दो मनुष्यों को भी जो कुकर्मी थे उसके साथ घात करने को ले चले॥

३३ जब वे उस जगह जिसे खोपड़ी कहते हैं पहुंचे, तो उन्हों ने वहां उसे और उन कुकर्मियों को भी एक को दहिनी और दूसरे को बाईं ओर क्रूसों पर चढ़ाया। ३४ तब यीशु ने कहा; हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं? और उन्हों ने चिट्ठियां डालकर उसके कपड़े बांट लिए। ३५ लोग खड़े खड़े देख रहे थे, और सरदार भी ठट्ठा कर करके कहते थे, कि इस ने औरों को बचाया, यदि यह परमेश्वर का मसीह है, और उसका चुना हुआ है, तो अपने आप को बचा ले। ३६ सिपाही भी पास आकर और सिरका देकर उसका ठट्ठा करके कहते थे। ३७ यदि तू यहूदियों का राजा है, तो अपने आप को बचा। ३८ और उसके ऊपर एक पत्र भी लगा था, कि यह **यहूदियों का राजा है॥**

३९ जो कुकर्मी लटकाए गए थे, उन में से एक ने उस की निन्दा करके कहा; क्या तू मसीह नहीं? तो फिर अपने आप को और हमें बचा। ४० इस पर दूसरे ने उसे डांटकर कहा, क्या तू परमेश्वर से भी नहीं डरता? तू भी तो वही दण्ड पा रहा है। ४१ और हम तो न्यायानुसार दण्ड पा रहे हैं, क्योंकि हम अपने कामों का ठीक फल पा रहे हैं; पर इस ने कोई अनुचित काम नहीं किया। ४२ तब उस ने कहा; हे यीशु, जब तू अपने राज्य में आए, तो मेरी सुधि लेना। ४३ उस ने उस से कहा, मैं तुझ से सच कहता हूं; कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा॥

४४ और लगभग दो पहर से तीसरे पहर तक सारे देश में अन्धियारा छाया रहा। ४५ और सूर्य का उजियाला जाता रहा, और मन्दिर का परदा बीच से फट गया। ४६ और यीशु ने बड़े शब्द से पुकार कर कहा; हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं: और यह कहकर प्राण छोड़ दिए। ४७ सूबेदार ने, जो कुछ हुआ था देखकर, परमेश्वर की बड़ाई की, और कहा; निश्चय यह मनुष्य धर्मी था। ४८ और भीड़ जो यह देखने को इकट्ठी हुई थी, इस घटना को, देखकर छाती-पीटती हुई लौट गई। ४९ और उसके सब जान पहचान, और जो स्त्रियां गलील से उसके साथ आई थीं, दूर खड़ी हुई यह सब देख रही थीं॥

५० और देखो यूसुफ नाम एक मन्त्री जो सज्जन और धर्मी पुरुष था। ५१ और उन के विचार और उन के इस काम से प्रसन्न न था; और वह यहूदियों के नगर अरिमतीया का रहनेवाला और परमेश्वर के राज्य की बाट जोहनेवाला था। ५२ उस ने पीलातुस के पास जाकर यीशु की लोथ मांग ली। ५३ और उसे उतारकर चादर में लपेटा, और एक कब्र में रखा, जो चट्टान में खोदी हुई थी; और उस में कोई कभी न रखा गया था। ५४ वह तैयारी का दिन था, और सब्त का दिन आरम्भ होने पर था। ५५ और उन स्त्रियों ने जो उसके साथ गलील से आई थीं, पीछे पीछे जाकर उस कब्र को देखा, और यह भी कि उस की लोथ किस रीति से रखी गई है। ५६ और लौटकर सुगन्धित वस्तुएं और इत्र तैयार किया:

और सब्त के दिन तो उन्हों ने आज्ञा के अनुसार विश्राम किया॥

२४ परन्तु सप्ताह के पहिले दिन बड़े भोर को वे उन सुगन्धित वस्तुओं को जो उन्हों ने तैयार की थीं, ले कर कब्र पर आईं। २ और उन्हों ने पत्थर को कब्र पर से लुढ़का हुआ पाया। ३ और भीतर जाकर प्रभु यीशु की लोथ न पाई। ४ जब वे इस बात से भौचक्की हो रही थीं तो देखो, दो पुरुष झलकते वस्त्र पहिने हुए उन के पास आ खड़े हुए। ५ जब वे डर गईं, और धरती की ओर मुंह झुकाए रहीं; तो उन्हों ने उन से कहा; तुम जीवते को मरे हुओं में क्यों ढूंढ़ती हो? ६ वह यहां नहीं, परन्तु जी उठा है; स्मरण करो; कि उस ने गलील में रहते हुए तुम से कहा था। ७ कि अवश्य है, कि मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ में पकड़वाया जाए, और क्रूस पर चढ़ाया जाए; और तीसरे दिन जी उठे। ८ तब उस की बातें उन को स्मरण आईं। ९ और कब्र से लौटकर उन्हों ने उन ग्यारहों को, और, और सब को, ये सब बातें कह सुनाईं। १० जिन्हों ने प्रेरितों से ये बातें कहीं, वे मरियम मगदलीनी और योअन्ना और याकूब की माता मरियम और उन के साथ की और स्त्रियां भी थीं। ११ परन्तु उन की बातें उन्हें कहानी सी समझ पड़ीं, और उन्हों ने उन की प्रतीति न की। १२ तब पतरस उठकर कब्र पर दौड़ गया, और झुककर केवल कपड़े पड़े देखे, और जो हुआ था, उस से अचम्भा करता हुआ, अपने घर चला गया॥

१३ देखो, उसी दिन उन में से दो जन इम्माऊस नाम एक गांव को जा रहे थे, जो यरूशलेम से कोई सात मील की दूरी पर था। १४ और वे इन सब बातों पर जो हुई थीं, आपस में बातचीत करते जा रहे थे। १५ और जब वे आपस में बातचीत और पूछपांछ कर रहे थे, तो यीशु आप पास आकर उन के साथ हो लिया। १६ परन्तु उन की आंखें ऐसी बन्द कर दी गई थीं, कि उसे पहिचान न सके। १७ उस ने उन से पूछा; ये क्या बातें हैं, जो तुम चलते चलते आपस में करते हो? वे उदास से खड़े रह गए। १८ यह सुनकर, उनमें से क्लियुपास नाम एक व्यक्ति ने कहा; क्या तू यरूशलेम में अकेला परदेशी है; जो नहीं जानता, कि इन दिनों में उस में क्या क्या हुआ है? १९ उस ने उन से पूछा; कौन सी बातें? उन्हों ने उस से कहा; यीशु नासरी के विषय में जो परमेश्वर और सब लोगों के निकट काम और वचन में सामर्थी भविष्यद्वक्ता था। २० और महायाजकों और हमारे सरदारों ने उसे पकड़वा दिया, कि उस पर मृत्यु की आज्ञा दी जाए; और उसे क्रूस पर चढ़वाया। २१ परन्तु हमें आशा थी, कि यही इस्राएल को छुटकारा देगा, और इन सब बातों के सिवाय इस घटना को हुए तीसरा दिन है। २२ और हम में से कई स्त्रियों ने भी हमें आश्चर्य में डाल दिया है, जो भोर को कब्र पर गई थीं। २३ और जब उस की लोथ न पाई, तो यह कहती हुई आईं, कि हम ने स्वर्गदूतों का दर्शन पाया, जिन्हों ने कहा कि वह जीवित है। २४ तब हमारे साथियों में से कई एक कब्र पर गए, और जैसा स्त्रियों ने कहा था, वैसा ही पाया; परन्तु उस को न देखा। २५ तब उस ने उन से कहा; हे निर्बुद्धियों, और भविष्यद्वक्ताओं की सब बातों पर विश्वास

करने में मन्दमतियो! २६ क्या अवश्य न था, कि मसीह ये दुख उठाकर अपनी महिमा में प्रवेश करे? २७ तब उस ने मूसा से और सब भविष्यद्वक्ताओं से आरम्भ करके सारे पवित्र शास्त्रों में से, अपने विषय में की बातों का अर्थ, उन्हें समझा दिया। २८ इतने में वे उस गांव के पास पहुंचे, जहां वे जा रहे थे, और उसके ढंग से ऐसा जान पड़ा, कि वह आगे बढ़ा चाहता है। २९ परन्तु उन्हों ने यह कहकर उसे रोका, कि हमारे साथ रह; क्योंकि संध्या हो चली है और दिन अब बहुत ढल गया है। तब वह उन के साथ रहने के लिये भीतर गया। ३० जब वह उन के साथ भोजन करने बैठा, तो उस ने रोटी लेकर धन्यवाद किया, और उसे तोड़कर उन को देने लगा। ३१ तब उन की आंखें खुल गईं; और उन्हों ने उसे पहचान लिया, और वह उन की आंखों से छिप गया। ३२ उन्हों ने आपस में कहा; जब वह मार्ग में हम से बातें करता था, और पवित्र शास्त्र का अर्थ हमें समझाता था, तो क्या हमारे मन में उत्तेजना न उत्पन्न हुई? ३३ वे उसी घड़ी उठकर यरूशलेम को लौट गए, और उन ग्यारहों और उन के साथियों को इकट्ठे पाया। ३४ वे कहते थे, प्रभु सचमुच जी उठा है, और शमौन को दिखाई दिया है। ३५ तब उन्हों ने मार्ग की बातें उन्हें बता दीं और यह भी कि उन्हों ने उसे रोटी तोड़ते समय क्योंकर पहचाना॥

३६ वे ये बातें कह ही रहे थे, कि वह आप ही उन के बीच में आ खड़ा हुआ; और उन से कहा, तुम्हें शान्ति मिले। ३७ परन्तु वे घबरा गए, और डर गए, और समझे, कि हम किसी भूत को देखते हैं। ३८ उस ने उन से कहा; क्यों घबराते हो? और तुम्हारे मन में क्यों सन्देह उठते हैं? ३९ मेरे हाथ और मेरे पांव को देखो, कि मैं वही हूं; मुझे छूकर देखो; क्योंकि आत्मा के हड्डी मांस नहीं होता जैसा मुझ में देखते हो। ४० यह कहकर उस ने उन्हें अपने हाथ पांव दिखाए। ४१ जब आनन्द के मारे उन को प्रतीति न हुई, और आश्चर्य करते थे, तो उस ने उन से पूछा; क्या यहां तुम्हारे पास कुछ भोजन है? ४२ उन्हों ने उसे भूनी मछली का टुकड़ा दिया। ४३ उस ने लेकर उन के साम्हने खाया। ४४ फिर उस ने उन से कहा, ये मेरी वे बातें हैं, जो मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए, तुम से कही थीं, कि अवश्य है, कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं और भजनों की पुस्तकों में, मेरे विषय में लिखी हैं, सब पूरी हों। ४५ तब उस ने पवित्र शास्त्र बूझने के लिये उन की समझ खोल दी। ४६ और उन से कहा, यों लिखा है; कि मसीह दुःख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा। ४७ और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव* का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा। ४८ तुम इन सब बातों के गवाह हो। ४९ और देखो, जिस की प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उस को तुम पर उतारूंगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो॥

५० तब वह उन्हें बैतनिय्याह तक बाहर ले गया, और अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीष दी। ५१ और उन्हें आशीष देते हुए वह उन से अलग हो गया और स्वर्ग पर उठा लिया गया। ५२ और वे

* या पश्चात्ताप।

उस को दण्डवत् करके बड़े आनन्द से यरूशलेम को लौट गए। ५३ और लगातार मन्दिर में उपस्थित होकर परमेश्वर की स्तुति किया करते थे॥

यूहन्ना रचित सुसमाचार

१ आदि में वचन * था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। २ यही आदि में परमेश्वर के साथ था। ३ सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई। ४ उस में जीवन था; और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी। ५ और ज्योति अन्धकार में चमकती है; और अन्धकार ने उसे ग्रहण न किया†। ६ एक मनुष्य परमेश्वर की ओर से आ उपस्थित हुआ जिस का नाम यूहन्ना था। ७ यह गवाही देने आया, कि ज्योति की गवाही दे, ताकि सब उसके द्वारा विश्वास लाएं। ८ वह आप तो वह ज्योति न था, परन्तु उस ज्योति की गवाही देने के लिये आया था। ९ सच्ची ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है, जगत में आनेवाली थी। १० वह जगत में था, और जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, और जगत ने उसे नहीं पहिचाना। ११ वह अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया। १२ परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। १३ वे न तो लोहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं। १४ और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उस की ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा। १५ यूहन्ना ने उसके विषय में गवाही दी, और पुकारकर कहा, कि यह वही है, जिस का मैं ने वर्णन किया, कि जो मेरे बाद आ रहा है, वह मुझ से बढ़कर है क्योंकि वह मुझ से पहिले था। १६ क्योंकि उस की परिपूर्णता से हम सब ने प्राप्त किया अर्थात् अनुग्रह पर अनुग्रह। १७ इसलिये कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई; परन्तु अनुग्रह, और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुंची। १८ परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, एकलौता पुत्र * जो पिता की गोद में है, उसी ने उसे प्रगट किया॥

१९ यूहन्ना की गवाही यह है, कि जब यहूदियों ने यरूशलेम से याजकों और लेवीयों को उस से यह पूछने के लिये

* या शब्द।

† या अन्धकार उस पर जयवन्त न हुआ।

* और पढ़ते हैं। परमेश्वर एकलौता।

भेजा, कि तू कौन है? २० तो उस ने यह मान लिया, और इन्कार नहीं किया परन्तु मान लिया कि मैं मसीह नहीं हूं। २१ तब उन्हों ने उस से पूछा, तो फिर कौन है? क्या तू एलिय्याह है? उस ने कहा, मैं नहीं हूं: तो क्या तू वह भविष्यद्वक्ता है? उस ने उत्तर दिया, कि नहीं। २२ तब उन्हों ने उस से पूछा, फिर तू है कौन? ताकि हम अपने भेजनेवालों को उत्तर दें; तू अपने विषय में क्या कहता है? २३ उस ने कहा, मैं जैसा यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कहा है, जङ्गल में एक पुकारनेवाले का शब्द हूं कि तुम प्रभु का मार्ग सीधा करो। २४ ये फरीसियों की ओर से भेजे गए थे। २५ उन्हों ने उस से यह प्रश्न पूछा, कि यदि तू न मसीह है, और न एलिय्याह, और न वह भविष्यद्वक्ता है, तो फिर बपतिस्मा क्यों देता है? २६ यूहन्ना ने उन को उत्तर दिया, कि मैं तो जल से* बपतिस्मा देता हूं; परन्तु तुम्हारे बीच में एक व्यक्ति खड़ा है, जिसे तुम नहीं जानते। २७ अर्थात् मेरे बाद आनेवाला है, जिस की जूती का बन्ध मैं खोलने के योग्य नहीं। २८ ये बातें यरदन के पार बैतनिय्याह में हुई, जहां यूहन्ना बपतिस्मा देता था॥

२९ दूसरे दिन उस ने यीशु को अपनी ओर आते देखकर कहा, देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है। ३० यह वही है, जिस के विषय में मैं ने कहा था, कि एक पुरुष मेरे पीछे आता है, जो मुझ से श्रेष्ठ है, क्योंकि वह मुझ से पहिले था। ३१ और मैं तो उसे पहिचानता न था, परन्तु इसलिये मैं जल से बपतिस्मा देता हुआ आया, कि वह इस्राएल पर प्रगट हो जाए। ३२ और यूहन्ना ने यह गवाही दी, कि मैं ने आत्मा को कबूतर की नाईं आकाश से उतरते देखा है, और वह उस पर ठहर गया। ३३ और मैं तो उसे पहिचानता नहीं था, परन्तु जिस ने मुझे जल से बपतिस्मा देने को भेजा, उसी ने मुझ से कहा, कि जिस पर तू आत्मा को उतरते और ठहरते देखे; वही पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देनेवाला है। ३४ और मैं ने देखा, और गवाही दी है, कि यही परमेश्वर का पुत्र है॥

३५ दूसरे दिन फिर यूहन्ना और उसके चेलों में से दो जन खड़े हुए थे। ३६ और उस ने यीशु पर जो जा रहा था दृष्टि करके कहा, देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है। ३७ तब वे दोनों चेले उस की यह सुनकर यीशु के पीछे हो लिए। ३८ यीशु ने फिरकर और उन को पीछे आते देखकर उन से कहा, तुम किस की खोज में हो? उन्हों ने उस से कहा, हे रब्बी, अर्थात् (हे गुरु) तू कहां रहता है? उस ने उन से कहा, चलो, तो देख लोगे। ३९ तब उन्हों ने आकर उसके रहने का स्थान देखा, और उस दिन उसी के साथ रहे; और यह दसवें घंटे के लगभग था। ४० उन दोनों में से जो यूहन्ना की बात सुनकर यीशु के पीछे हो लिए थे, एक तो शमौन पतरस का भाई अन्द्रियास था। ४१ उस ने पहिले अपने सगे भाई शमौन से मिलकर उस से कहा, कि हम को ख्रिस्तस अर्थात् मसीह मिल गया। ४२ वह उसे यीशु के पास लाया: यीशु ने उस पर दृष्टि करके

* वा में।

कहा, कि तू यूहन्ना का पुत्र शमौन है, तू केफा अर्थात् पतरस कहलाएगा॥

४३ दूसरे दिन यीशु ने गलील को जाना चाहा; और फिलिप्पुस से मिलकर कहा, मेरे पीछे हो ले। ४४ फिलिप्पुस तो अन्द्रियास और पतरस के नगर बैतसैदा का निवासी था। ४५ फिलिप्पुस ने नतनएल से मिलकर उस से कहा, कि जिस का वर्णन मूसा ने व्यवस्था में और भविष्यद्वक्ताओं ने किया है, वह हम को मिल गया; वह यूसुफ का पुत्र, यीशु नासरी है। ४६ नतनएल ने उस से कहा, क्या कोई अच्छी वस्तु भी नासरत से निकल सकती है? फिलिप्पुस ने उस से कहा, चलकर देख ले। ४७ यीशु ने नतनएल को अपनी ओर आते देखकर उसके विषय में कहा, देखो, यह सचमुच इस्राएली है: इस में कपट नहीं। ४८ नतनएल ने उस से कहा, तू मुझे कहां से जानता है? यीशु ने उस को उत्तर दिया; उस से पहले कि फिलिप्पुस ने तुझे बुलाया, जब तू अंजीर के पेड़ के तले था, तब मैं ने तुझे देखा था। ४९ नतनएल ने उस को उत्तर दिया, कि हे रब्बी, तू परमेश्वर का पुत्र है; तू इस्राएल का महाराजा है। ५० यीशु ने उस को उत्तर दिया; मैं ने जो तुझ से कहा, कि मैं ने तुझे अंजीर के पेड़ के तले देखा, क्या तू इसी लिये विश्वास करता है? तू इस से बड़े बड़े काम देखेगा। ५१ फिर उस से कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूं कि तुम स्वर्ग को खुला हुआ, और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को ऊपर जाते और मनुष्य के पुत्र के ऊपर उतरते देखोगे॥

२ फिर तीसरे दिन गलील के काना में किसी का ब्याह था, और यीशु की माता भी वहां थी। २ और यीशु और उसके चेले भी उस ब्याह में नेवते गए थे। ३ जब दाखरस घट गया, तो यीशु की माता ने उस से कहा, कि उन के पास दाखरस नहीं रहा। ४ यीशु ने उस से कहा, हे महिला मुझे तुझ से क्या काम? अभी मेरा समय नहीं आया। ५ उस की माता ने सेवकों से कहा, जो कुछ वह तुम से कहे, वही करना। ६ वहां यहूदियों के शुद्ध करने की रीति के अनुसार पत्थर के छः मटके धरे थे, जिन में दो दो, तीन तीन मन समाता था। ७ यीशु ने उन से कहा, मटकों में पानी भर दो: सो उन्हों ने उन्हें मुंहामुंह भर दिया। ८ तब उस ने उन से कहा, अब निकालकर भोज के प्रधान के पास ले जाओ। ९ वे ले गए, जब भोज के प्रधान ने वह पानी चखा, जो दाखरस बन गया था, और नहीं जानता था, कि वह कहां से आया है, (परन्तु जिन सेवकों ने पानी निकाला था, वे जानते थे) तो भोज के प्रधान ने दूल्हे को बुलाकर, उस से कहा। १० हर एक मनुष्य पहिले अच्छा दाखरस देता है और जब लोग पीकर छक जाते हैं, तब मध्यम देता है; परन्तु तू ने अच्छा दाखरस अब तक रख छोड़ा है। ११ यीशु ने गलील के काना में अपना यह पहिला चिन्ह * दिखाकर अपनी महिमा प्रगट की और उसके चेलों ने उस पर विश्वास किया॥

१२ इस के बाद वह और उस की माता और उसके भाई और उसके चेले कफरनहूम को गए और वहां कुछ दिन रहे॥

* या आश्चर्य्यकर्म।

१३ यहूदियों का फसह का पर्ब्ब निकट था और यीशु यरूशलेम को गया। १४ और उस ने मन्दिर में बैल और भेड़ और कबूतर के बेचनेवालों और सर्राफों को बैठे हुए पाया। १५ और रस्सियों का कोड़ा बनाकर, सब भेड़ों और बैलों को मन्दिर से निकाल दिया, और सर्राफों के पैसे बिथरा दिए, और पीढ़ों को उलट दिया। १६ और कबूतर बेचनेवालों से कहा; इन्हें यहां से ले जाओ: मेरे पिता के भवन को ब्योपार का घर मत बनाओ। १७ तब उसके चेलों को स्मरण आया कि लिखा है, तेरे घर की धुन मुझे खा जाएगी'। १८ इस पर यहूदियों ने उस से कहा, तू जो यह करता है तो हमें कौन सा चिन्ह दिखाता है? १९ यीशु ने उन को उत्तर दिया; कि इस मन्दिर को ढा दो, और मैं उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा। २० यहूदियों ने कहा; इस मन्दिर के बनाने में छियालीस वर्ष लगे हैं, और क्या तू उसे तीन दिन में खड़ा कर देगा? २१ परन्तु उस ने अपनी देह के मन्दिर के विषय में कहा था। २२ सो जब वह मुर्दों में से जी उठा तो उसके चेलों को स्मरण आया, कि उस ने यह कहा था; और उन्हों ने पवित्र शास्त्र और उस वचन की जो यीशु ने कहा था, प्रतीति की॥

२३ जब वह यरूशलेम में फसह के समय पर्ब्ब में था, तो बहुतों ने उन चिन्हों को जो वह दिखाता था देखकर उसके नाम पर विश्वास किया। २४ परन्तु यीशु ने अपने आप को उन के भरोसे पर नहीं छोड़ा, क्योंकि वह सब को जानता था। २५ और उसे प्रयोजन न था, कि मनुष्य के विषय में कोई गवाही दे, क्योंकि वह आप ही जानता था, कि मनुष्य के मन में क्या है?

३ फरीसियों में से नीकुदेमुस नाम एक मनुष्य था, जो यहूदियों का सरदार था। २ उस ने रात को यीशु के पास आकर उस से कहा, हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु हो कर आया है; क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता। ३ यीशु ने उस को उत्तर दिया; कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। ४ नीकुदेमुस ने उस से कहा, मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो क्योंकर जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है? ५ यीशु ने उत्तर दिया, कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। ६ क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है। ७ अचम्भा न कर, कि मैं ने तुझ से कहा; कि तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है। ८ हवा जिधर चाहती है उधर चलती है, और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता, कि वह कहां से आती और किधर को जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है। ९ नीकुदेमुस ने उस को उत्तर दिया; कि ये बातें क्योंकर हो सकती हैं? १० यह सुनकर यीशु ने उस से कहा; तू इस्राएलियों का गुरु हो कर भी क्या इन बातों को नहीं समझता। ११ मैं तुझ से सच सच कहता हूं कि हम जो जानते हैं, वह कहते हैं, और जिसे हम ने देखा है, उस की गवाही देते हैं, और तुम हमारी गवाही ग्रहण नहीं करते। १२ जब मैं ने

तुम से पृथ्वी की बातें कहीं, और तुम प्रतीति नहीं करते, तो यदि मैं तुम से स्वर्ग की बातें कहूं, तो फिर क्योंकर प्रतीति करोगे? १३ और कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वही जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात् मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है। १४ और जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊंचे पर चढ़ाया जाए। १५ ताकि जो कोई विश्वास करे उस में अनन्त जीवन पाए॥

१६ क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। १७ परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा, कि जगत पर दंड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। १८ जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिये कि उस ने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। १९ और दंड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उन के काम बुरे थे। २० क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए। २१ परन्तु जो सच्चाई पर चलता है, वह ज्योति के निकट आता है, ताकि उसके काम प्रगट हों, कि वह परमेश्वर की ओर से किए गए हैं॥

२२ इस के बाद यीशु और उसके चेले यहूदिया देश में आए; और वह वहां उन के साथ रहकर बपतिस्मा देने लगा। २३ और यूहन्ना भी शालेम् के निकट ऐनोन में बपतिस्मा देता था। क्योंकि वहां बहुत जल था और लोग आकर बपतिस्मा लेते थे। २४ क्योंकि यूहन्ना उस समय तक जेलखाने में नहीं डाला गया था। २५ वहां यूहन्ना के चेलों का किसी यहूदी के साथ शुद्धि के विषय में वाद-विवाद हुआ। २६ और उन्हों ने यूहन्ना के पास आकर उस से कहा, हे रब्बी, जो व्यक्ति यरदन के पार तेरे साथ था, और जिस की तू ने गवाही दी है देख, वह बपतिस्मा देता है, और सब उसके पास आते हैं। २७ यूहन्ना ने उत्तर दिया, जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाय तब तक वह कुछ नहीं पा सकता। २८ तुम तो आप ही मेरे गवाह हो, कि मैं ने कहा, मैं मसीह नहीं, परन्तु उसके आगे भेजा गया हूं। २९ जिस की दुलहिन है, वही दूल्हा है: परन्तु दूल्हे का मित्र जो खड़ा हुआ उस की सुनता है, दूल्हे के शब्द से बहुत हर्षित होता है; अब मेरा यह हर्ष पूरा हुआ है। ३० अवश्य है कि वह बढ़े और मैं घटूं॥

३१ जो ऊपर से आता है, वह सर्वोत्तम है, जो पृथ्वी से आता है वह पृथ्वी का है; और पृथ्वी की ही बातें कहता है: जो स्वर्ग से आता है, वह सब के ऊपर है। ३२ जो कुछ उस ने देखा, और सुना है, उसी की गवाही देता है; और कोई उस की गवाई ग्रहण नहीं करता। ३३ जिस ने उस की गवाही ग्रहण कर ली उस ने इस बात पर छाप दे दी कि परमेश्वर सच्चा है। ३४ क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है: क्योंकि

वह आत्मा नाप नापकर नहीं देता। ३५ पिता पुत्र से प्रेम रखता है, और उस ने सब वस्तुएं उसके हाथ में दे दी हैं। ३६ जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है॥

४ फिर जब प्रभु को मालूम हुआ, कि फरीसियों ने सुना है, कि यीशु यूहन्ना से अधिक चेले बनाता, और उन्हें बपतिस्मा देता हैं। २ (यद्यपि यीशु आप नहीं बरन उसके चेले बपतिस्मा देते थे)। ३ तब वह यहूदिया को छोड़कर फिर गलील को चला गया। ४ और उस को सामरिया से होकर जाना अवश्य था। ५ सो वह सूखार नाम सामरिया के एक नगर तक आया, जो उस भूमि के पास है, जिसे याकूब ने अपने पुत्र यूसुफ को दिया था। ६ और याकूब का कूआं भी वहीं था; सो यीशु मार्ग का थका हुआ उस कूएं पर योंही बैठ गया, और यह बात छठे घण्टे के लगभग हुई। ७ इतने में एक सामरी स्त्री जल भरने को आई: यीशु ने उस से कहा, मुझे पानी पिला। ८ क्योंकि उसके चेले तो नगर में भोजन मोल लेने को गए थे। ९ उस सामरी स्त्री ने उस से कहा, तू यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से पानी क्यों मांगता है? (क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रखते)। १० यीशु ने उत्तर दिया, यदि तू परमेश्वर के बरदान को जानती, और यह भी जानती कि वह कौन है जो तुझ से कहता है; मुझे पानी पिला तो तू उस से मांगती, और वह तुझे जीवन का जल देता। ११ स्त्री ने उस से कहा, हे प्रभु, तेरे पास जल भरने को तो कुछ है भी नहीं, और कूआं गहिरा है: तो फिर वह जीवन का जल तेरे पास कहां से आया? १२ क्या तू हमारे पिता याकूब से बड़ा है, जिस ने हमें यह कूआं दिया; और आपही अपने सन्तान, और अपने ढोरों समेत उस में से पीया? १३ यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि जो कोई यह जल पीएगा वह फिर पियासा होगा। १४ परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, वह फिर अनन्तकाल तक पियासा न होगा: बरन जो जल मैं उसे दूंगा, वह उस में एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिये उमड़ता रहेगा। १५ स्त्री ने उस से कहा, हे प्रभु, वह जल मुझे दे ताकि मैं पियासी न होऊं और न जल भरने को इतनी दूर आऊं। १६ यीशु ने उस से कहा, जा, अपने पति को यहां बुला ला। १७ स्त्री ने उत्तर दिया, कि मैं बिना पति की हूं: यीशु ने उस से कहा, तू ठीक कहती है कि मैं बिना पति की हूं। १८ क्योंकि तू पांच पति कर चुकी है, और जिस के पास तू अब है वह भी तेरा पति नहीं; यह तू ने सच कहा है। १९ स्त्री ने उस से कहा, हे प्रभु, मुझे ज्ञात होता है कि तू भविष्यद्वक्ता है। २० हमारे बापदादों ने इसी पहाड़ पर भजन किया: और तुम कहते हो कि वह जगह जहां भजन करना चाहिए यरूशलेम में है। २१ यीशु ने उस से कहा, हे नारी, मेरी बात की प्रतीति कर कि वह समय आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता का भजन करोगे न यरूशलेम में। २२ तुम जिसे नहीं जानते, उसका भजन करते हो; और हम जिसे जानते हैं उसका भजन करते हैं; क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है। २३ परन्तु वह समय आता है, बरन अब भी है जिस में सच्चे भक्त पिता का भजन

आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही भजन करनेवालों को ढूंढता है। २४ परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करनेवाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें। २५ स्त्री ने उस से कहा, मैं जानती हूं कि मसीह जो ख्रीस्तुस कहलाता है, आनेवाला है; जब वह आएगा, तो हमें सब बातें बता देगा। २६ यीशु ने उस से कहा, मैं जो तुझ से बोल रहा हूं, वही हूं॥

२७ इतने में उसके चेले आ गए, और अचम्भा करने लगे, कि वह स्त्री से बातें कर रहा है; तौभी किसी ने न कहा, कि तू क्या चाहता है? या किस लिये उस से बातें करता है। २८ तब स्त्री अपना घड़ा छोड़कर नगर में चली गई, और लोगों से कहने लगी। २९ आओ, एक मनुष्य को देखो, जिस ने सब कुछ जो मैं ने किया मुझे बता दिया: कहीं यही तो मसीह नहीं है? ३० सो वे नगर से निकलकर उसके पास आने लगे। ३१ इतने में उसके चेले यीशु से यह बिनती करने लगे, कि हे रब्बी, कुछ खा ले। ३२ परन्तु उस ने उन से कहा, मेरे पास खाने के लिये ऐसा भोजन है जिसे तुम नहीं जानते। ३३ तब चेलों ने आपस में कहा, क्या कोई उसके लिये कुछ खाने को लाया है? ३४ यीशु ने उन से कहा, मेरा भोजन यह है, कि अपने भेजनेवाले की इच्छा के अनुसार चलूं और उसका काम पूरा करूं। ३५ क्या तुम नहीं कहते, कि कटनी होने में अब भी चार महीने पड़े हैं? देखो, मैं तुम से कहता हूं, अपनी आंखें उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो, कि वे कटनी के लिये पक चुके हैं। ३६ और काटनेवाला मजदूरी पाता, और अनन्त जीवन के लिये फल बटोरता है; ताकि बोनेवाला और काटनेवाला दोनों मिलकर आनन्द करें। ३७ क्योंकि इस पर यह कहावत ठीक बैठती है कि बोनेवाला और है और काटनेवाला और। ३८ मैं ने तुम्हें वह खेत काटने के लिये भेजा, जिस में तुम ने परिश्रम नहीं किया: औरों ने परिश्रम किया और तुम उन के परिश्रम के फल में भागी हुए॥

३९ और उस नगर के बहुत सामरियों ने उस स्त्री के कहने से, जिस ने यह गवाही दी थी, कि उस ने सब कुछ जो मैं ने किया है, मुझे बता दिया, विश्वास किया। ४० तब जब ये सामरी उसके पास आए, तो उस से बिनती करने लगे, कि हमारे यहां रह: सो वह वहां दो दिन तक रहा। ४१ और उसके वचन के कारण और भी बहुतेरों ने विश्वास किया। ४२ और उस स्त्री से कहा, अब हम तेरे कहने ही से विश्वास नहीं करते; क्योंकि हम ने आप ही सुन लिया, और जानते हैं कि यही सचमुच में जगत का उद्धारकर्त्ता है॥

४३ फिर उन दो दिनों के बाद वह वहां से कूच करके गलील को गया। ४४ क्योंकि यीशु ने आप ही साक्षी दी, कि भविष्यद्वक्ता अपने देश में आदर नहीं पाता। ४५ जब वह गलील में आया, तो गलीली आनन्द के साथ उस से मिले; क्योंकि जितने काम उस ने यरूशलेम में पर्ब्ब के समय किए थे, उन्हों ने उन सब को देखा था, क्योंकि वे भी पर्ब्ब में गए थे॥

४६ तब वह फिर गलील के काना में आया, जहां उस ने पानी को दाख रस बनाया था: और राजा का एक कर्मचारी था जिस का पुत्र कफरनहूम में बीमार था। ४७ वह यह सुनकर कि यीशु यहूदिया से गलील में आ गया है, उसके पास गया और उस से

बिनती करने लगा कि चलकर मेरे पुत्र को चंगा कर दे: क्योंकि वह मरने पर था। ४८ यीशु ने उस से कहा, जब तक तुम चिन्ह और अद्भुत काम न देखोगे तब तक कदापि विश्वास न करोगे। ४९ राजा के कर्मचारी ने उस से कहा, हे प्रभु, मेरे बालक की मृत्यु होने से पहिले चल। ५० यीशु ने उस से कहा, जा, तेरा पुत्र जीवित है: उस मनुष्य ने यीशु की कही हुई बात की प्रतीति की, और चला गया। ५१ वह मार्ग में जा रहा था, कि उसके दास उस से आ मिले और कहने लगे कि तेरा लड़का जीवित है। ५२ उस ने उन से पूछा कि किस घड़ी वह अच्छा होने लगा? उन्हों ने उस से कहा, कल सातवें घण्टे में उसका ज्वर उतर गया। ५३ तब पिता जान गया, कि यह उसी घड़ी हुआ जिस घड़ी यीशु ने उस से कहा, तेरा पुत्र जीवित है, और उस ने और उसके सारे घराने ने विश्वास किया। ५४ यह दूसरा आश्चर्यकर्म था, जो यीशु ने यहूदिया से गलील में आकर दिखाया॥

५ इन बातों के पीछे यहूदियों का एक पर्ब्ब हुआ और यीशु यरूशलेम को गया॥

२ यरूशलेम में भेड़-फाटक के पास एक कुण्ड है जो इब्रानी भाषा में बेतहसदा कहलाता है, और उसके पांच ओसारे हैं। ३ इन में बहुत से बीमार, अन्धे, लंगड़े और सूखे अंगवाले (पानी के हिलने की आशा में) पड़े रहते थे। ४ (क्योंकि नियुक्ति समय पर परमेश्वर के स्वर्गदूत कुण्ड में उतरकर पानी को हिलाया करते थे: पानी हिलते ही जो कोई पहिले उतरता वह चंगा हो जाता था चाहे उसकी कोई बीमारी क्यों न हो।) ५ वहां एक मनुष्य था, जो अड़तीस वर्ष से बीमारी में पड़ा था। ६ यीशु ने उसे पड़ा हुआ देखकर और जानकर कि वह बहुत दिनों से इस दशा में पड़ा है, उस से पूछा, क्या तू चंगा होना चाहता है? ७ उस बीमार ने उस को उत्तर दिया, कि हे प्रभु, मेरे पास कोई मनुष्य नहीं, कि जब पानी हिलाया जाए, तो मुझे कुण्ड में उतारे; परन्तु मेरे पहुंचते पहुंचते दूसरा मुझ से पहिले उतर पड़ता है। ८ यीशु ने उस से कहा, उठ, अपनी खाट उठाकर चल फिर। ९ वह मनुष्य तुरन्त चंगा हो गया, और अपनी खाट उठाकर चलने फिरने लगा॥

१० वह सब्त का दिन था। इसलिये यहूदी उस से, जो चंगा हुआ था, कहने लगे, कि आज तो सब्त का दिन है, तुझे खाट उठानी उचित नहीं। ११ उस ने उन्हें उत्तर दिया, कि जिस ने मुझे चंगा किया, उसी ने मुझ से कहा, अपनी खाट उठाकर चल फिर। १२ उन्हों ने उस से पूछा, वह कौन मनुष्य है जिस ने तुझ से कहा, खाट उठाकर चल फिर? १३ परन्तु जो चंगा हो गया था, वह नहीं जानता था वह कौन है; क्योंकि उस जगह में भीड़ होने के कारण यीशु वहां से हट गया था। १४ इन बातों के बाद वह यीशु को मन्दिर में मिला, तब उस ने उस से कहा, देख, तू तो चंगा हो गया है; फिर से पाप मत करना, ऐसा न हो कि इस से कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े। १५ उस मनुष्य ने जाकर यहूदियों से कह दिया, कि जिस ने मुझे चंगा किया, वह यीशु है। १६ इस कारण यहूदी यीशु को सताने लगे, क्योंकि वह ऐसे ऐसे काम सब्त के दिन करता था। १७ इस पर यीशु ने उन से कहा, कि मेरा पिता अब तक काम करता है, और मैं भी काम

करता हूं। १८ इस कारण यहूदी और भी अधिक उसके मार डालने का प्रयत्न करने लगे, कि वह न केवल सब्त के दिन की विधि को तोड़ता, परन्तु परमेश्वर को अपना पिता कह कर, अपने आप को परमेश्वर के तुल्य ठहराता था॥

१९ इस पर यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूं, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है। २० क्योंकि पिता पुत्र से प्रीति रखता है और जो जो काम वह आप करता है, वह सब उसे दिखाता है; और वह इन से भी बड़े काम उसे दिखाएगा, ताकि तुम अचम्भा करो। २१ क्योंकि जैसा पिता मरे हुओं को उठाता और जिलाता है, वैसा ही पुत्र भी जिन्हें चाहता है उन्हें जिलाता है। २२ और पिता किसी का न्याय भी नहीं करता, परन्तु न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है। २३ इसलिये कि सब लोग जैसे पिता का आदर करते हैं वैसे ही पुत्र का भी आदर करें: जो पुत्र का आदर नहीं करता, वह पिता का जिस ने उसे भेजा है, आदर नहीं करता। २४ मैं तुम से सच सच कहता हूं, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती * परन्तु वह मृत्यु के पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है। २५ मैं तुम से सच सच कहता हूं, वह समय आता है, और अब है, जिस में मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे जीएंगे। २६ क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है, उसी रीति से उस ने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखे। २७ बरन उसे न्याय करने का भी अधिकार दिया है, इसलिये कि वह मनुष्य का पुत्र है। २८ इस से अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे। २९ जिन्हों ने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान * के लिये जी उठेंगे और जिन्हों ने बुराई की है वे दंड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे॥

३० मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता; जैसा सुनता हूं, वैसा न्याय करता हूं, और मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजनेवाले की इच्छा चाहता हूं। ३१ यदि मैं आप ही अपनी गवाही दूं; तो मेरी गवाही सच्ची नहीं। ३२ एक और है जो मेरी गवाही देता है, और मैं जानता हूं कि मेरी जो गवाही देता है वह सच्ची है। ३३ तुम ने यूहन्ना से पुछवाया और उस ने सच्चाई की गवाही दी है। ३४ परन्तु मैं अपने विषय में मनुष्य की गवाही नहीं चाहता; तौभी मैं ये बातें इसलिये कहता हूं, कि तुम्हें उद्धार मिले। ३५ वह तो जलता और चमकता हुआ दीपक था; और तुम्हें कुछ देर तक उस की ज्योति में, मगन होना अच्छा लगा। ३६ परन्तु मेरे पास जो गवाही है वह यूहन्ना की गवाही से बड़ी है: क्योंकि जो काम पिता ने मुझे पूरा करने को सौंपा है अर्थात् यही काम जो मैं करता हूं, वे मेरे गवाह हैं, कि पिता ने मुझे भेजा है। ३७ और पिता जिस ने मुझे भेजा है, उसी

* या वह न्याय में नहीं आता।

* या मृतकोत्थान।

ने मेरी गवाही दी है: तुम ने न कभी उसका शब्द सुना, और न उसका रूप देखा है। ३८ और उसके वचन को मन में स्थिर नहीं रखते क्योंकि जिसे उस ने भेजा उस की प्रतीति नहीं करते। ३९ तुम पवित्रशास्त्र में ढूंढ़ते हो *, क्योंकि समझते हो कि उस में अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है, और यह वही है, जो मेरी गवाही देता है। ४० फिर भी तुम जीवन पाने के लिये मेरे पास आना नहीं चाहते। ४१ मैं मनुष्यों से आदर नहीं चाहता। ४२ परन्तु मैं तुम्हें जानता हूं, कि तुम में परमेश्वर का प्रेम नहीं। ४३ मैं अपने पिता के नाम से आया हूं, और तुम मुझे ग्रहण नहीं करते; यदि कोई और अपने ही नाम से आए, तो उसे ग्रहण कर लोगे। ४४ तुम जो एक दूसरे से आदर चाहते हो और वह आदर जो अद्वैत परमेश्वर की ओर से है, नहीं चाहते, किस प्रकार विश्वास कर सकते हो? ४५ यह न समझो, कि मैं पिता के साम्हने तुम पर दोष लगाऊंगा: तुम पर दोष लगानेवाला तो है, अर्थात् मूसा जिस पर तुम ने भरोसा रखा है। ४६ क्योंकि यदि तुम मूसा की प्रतीति करते, तो मेरी भी प्रतीति करते, इसलिये कि उस ने मेरे विषय में लिखा है। ४७ परन्तु यदि तुम उस की लिखी हुई बातों की प्रतीति नहीं करते, तो मेरी बातों की क्योंकर प्रतीति करोगे।।

६ इन बातों के बाद यीशु गलील की झील अर्थात् तिबिरियास की झील के पास गया। २ और एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली क्योंकि जो आश्चर्य कर्म † वह बीमारों पर दिखाता था वे उन को देखते थे। ३ तब यीशु पहाड़ पर चढ़कर अपने चेलों के साथ वहां बैठा। ४ और यहूदियों के फसह का पर्ब्ब निकट था। ५ तब यीशु ने अपनी आंखें उठाकर एक बड़ी भीड़ को अपने पास आते देखा, और फिलिप्पुस से कहा, कि हम इन के भोजन के लिये कहां से रोटी मोल लाएं? ६ परन्तु उस ने यह बात उसे परखने के लिये कही; क्योंकि वह आप जानता था कि मैं क्या करूंगा। ७ फिलिप्पुस ने उस को उत्तर दिया, कि दो सौ दीनार * की रोटी उन के लिये पूरी भी न होंगी कि उन में से हर एक को थोड़ी थोड़ी मिल जाए। ८ उसके चेलों में से शमौन पतरस के भाई अन्द्रियास ने उस से कहा। ९ यहां एक लड़का है जिस के पास जव की पांच रोटी और दो मछलियां हैं परन्तु इतने लोगों के लिये वे क्या हैं। १० यीशु ने कहा, कि लोगों को बैठा दो। उस जगह बहुत घास थी: तब वे लोग जो गिनती में लगभग पांच हजार के थे, बैठ गए: ११ तब यीशु ने रोटियां लीं, और धन्यवाद करके बैठनेवालों को बांट दी: और वैसे ही मछलियों में से जितनी वे चाहते थे बांट दिया। १२ जब वे खाकर तृप्त हो गए तो उस ने अपने चेलों से कहा, कि बचे हुए टुकड़े बटोर लो, कि कुछ फेंका † न जाए। १३ सो उन्हों ने बटोरा, और जव की पांच रोटियों के टुकड़े जो खानेवालों से बच रहे थे उन की बारह टोकरियां भरीं। १४ तब जो आश्चर्य कर्म उस ने कर दिखाया उसे वे लोग देखकर कहने लगे; कि वह भविष्यद्वक्ता जो जगत में आनेवाला था निश्चय यही है।

---

* या ढूंढ़ो। † यू० चिन्ह।

* देखो मत्ती १८ : २८।
† यू० खोया न जाए।

१५ यीशु यह जानकर कि वे मुझे राजा बनाने के लिये आकर पकड़ना चाहते हैं, फिर पहाड़ पर अकेला चला गया॥

१६ फिर जब संध्या हुई, तो उसके चेले झील के किनारे गए। १७ और नाव पर चढ़कर झील के पार कफरनहूम को जाने लगे: उस समय अन्धेरा हो गया था, और यीशु अभी तक उन के पास नहीं आया था। १८ और आन्धी के कारण झील में लहरे उठने लगीं। १९ सो जब वे खेते खेते तीन चार मील के लगभग निकल गए, तो उन्हों ने यीशु को झील पर चलते, और नाव के निकट आते देखा, और डर गए। २० परन्तु उस ने उन से कहा, कि मैं हूं; डरो मत। २१ सो वे उसे नाव पर चढ़ा लेने के लिये तैयार हुए और तुरन्त वह नाव उस स्थान पर जा पहुंची जहां वह जाते थे॥

२२ दूसरे दिन उस भीड़ ने, जो झील के पार खड़ी थी, यह देखा, कि यहां एक को छोड़कर और कोई छोटी नाव न थी, और यीशु अपने चेलों के साथ उस नाव पर न चढ़ा, परन्तु केवल उसके चेले चले गए थे। २३ (तौभी और छोटी नावें तिबिरियास से उस जगह के निकट आईं, जहां उन्हों ने प्रभु के धन्यवाद करने के बाद रोटी खाई थी)। २४ सो जब भीड़ ने देखा, कि यहां न यीशु है, और न उसके चेले, तो वे भी छोटी छोटी नावों पर चढ़ के यीशु को ढूंढ़ते हुए कफरनहूम को पहुंचे। २५ और झील के पार उस से मिलकर कहा, हे रब्बी, तू यहां कब आया? २६ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच सच कहता हूं, तुम मुझे इसलिये नहीं ढूंढ़ते हो कि तुम ने अचम्भित काम देखे, परन्तु इसलिये कि तुम रोटियां खाकर तृप्त हुए। २७ नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिये जो अनन्त जीवन तक ठहरता है, जिसे मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा, क्योंकि पिता, अर्थात् परमेश्वर ने उसी पर छाप कर दी है। २८ उन्हों ने उस से कहा, परमेश्वर के कार्य्य करने के लिये हम क्या करें? २९ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया; परमेश्वर का कार्य्य यह है, कि तुम उस पर, जिसे उस ने भेजा है, विश्वास करो। ३० तब उन्हों ने उस से कहा, फिर तू कौन सा चिन्ह दिखाता है कि हम उसे देखकर तेरी प्रतीति करें, तू कौन सा काम दिखाता है? ३१ हमारे बापदादों ने जंगल में मन्ना* खाया; जैसा लिखा है; कि उस ने उन्हें खाने के लिये स्वर्ग से रोटी दी। ३२ यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूं कि मूसा ने तुम्हें वह रोटी स्वर्ग से न दी, परन्तु मेरा पिता तुम्हें सच्ची रोटी स्वर्ग से देता है। ३३ क्योंकि परमेश्वर की रोटी वही है, जो स्वर्ग से उतरकर जगत को जीवन देती है। ३४ तब उन्हों ने उस से कहा, हे प्रभु, यह रोटी हमें सर्वदा दिया कर। ३५ यीशु ने उन से कहा, जीवन की रोटी मैं हूं: जो मेरे पास आएगा वह कभी भूखा न होगा और जो मुझ पर विश्वास करेगा, वह कभी पियासा न होगा। ३६ परन्तु मैं ने तुम से कहा, कि तुम ने मुझे देख भी लिया है, तौभी विश्वास नहीं करते। ३७ जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा, और जो कोई मेरे पास आएगा, उसे मैं कभी न निकालूंगा। ३८ क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, बरन अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के

* देखो निर्ग० १६ : १५।

लिये स्वर्ग स उतरा हूं। ३९ और मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह है कि जो कुछ उस ने मुझे दिया है, उस में से मैं कुछ न खोऊं परन्तु उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊं। ४० क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यह है, कि जो कोई पुत्र को देखे, और उस पर विश्वास करे, वह अनन्त जीवन पाए; और मैं उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊंगा॥

४१ सो यहूदी उस पर कुड़कुड़ाने लगे, इसलिये कि उस ने कहा था; कि जो रोटी स्वर्ग से उतरी, वह मैं हूं। ४२ और उन्हों ने कहा; क्या यह यूसुफ का पुत्र यीशु नहीं, जिस के माता-पिता को हम जानते हैं? तो वह क्योंकर कहता है कि मैं स्वर्ग से उतरा हूं। ४३ यीशु ने उन को उत्तर दिया, कि आपस में मत कुड़कुड़ाओ। ४४ कोई मेरे पास नहीं आ सकता, जब तक पिता, जिस ने मुझे भेजा है, उसे खींच न ले; और मैं उस को अंतिम दिन फिर जिला उठाऊंगा। ४५ भविष्यद्वक्ताओं के लेखों में यह लिखा है, कि वे सब परमेश्वर की ओर से सिखाए हुए होंगे। जिस किसी ने पिता से सुना और सीखा है, वह मेरे पास आता है। ४६ यह नहीं, कि किसी ने पिता को देखा परन्तु जो परमेश्वर की ओर से है, केवल उसी ने पिता को देखा है। ४७ मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो कोई विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसी का है। ४८ जीवन की रोटी मैं हूं। ४९ तुम्हारे बापदादों ने जंगल में मन्ना खाया और मर गए। ५० यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरती है ताकि मनुष्य उस में से खाए और न मरे। ५१ जीवन की रोटी जो स्वर्ग से उतरी मैं हूं। यदि कोई इस रोटी में से खाए, तो सर्वदा जीवित रहेगा और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिये दूंगा, वह मेरा मांस है॥

५२ इस पर यहूदी यह कहकर आपस में झगड़ने लगे, कि यह मनुष्य क्योंकर हमें अपना मांस खाने को दे सकता है? ५३ यीशु ने उन से कहा; मैं तुम से सच सच कहता हूं जब तक मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ, और उसका लोहू न पीओ, तुम में जीवन नहीं। ५४ जो मेरा मांस खाता, और मेरा लोहू पीता है, अनन्त जीवन उसी का है, और मैं अंतिम दिन फिर उसे जिला उठाऊंगा। ५५ क्योंकि मेरा मांस वास्तव में खाने की वस्तु है और मेरा लोहू वास्तव में पीने की वस्तु है। ५६ जो मेरा मांस खाता और मेरा लोहू पीता है, वह मुझ में स्थिर बना रहता है, और मैं उस में। ५७ जैसा जीवते पिता ने मुझे भेजा और मैं पिता के कारण जीवित हूं वैसा ही वह भी जो मुझे खाएगा मेरे कारण जीवित रहेगा। ५८ जो रोटी स्वर्ग से उतरी यही है, बापदादों के समान नहीं कि खाया, और मर गए: जो कोई यह रोटी खाएगा, वह सर्वदा जीवित रहेगा। ५९ ये बातें उस ने कफरनहूम के एक आराधनालय में उपदेश देते समय कहीं॥

६० इसलिये उसके चेलों में से बहुतों ने यह सुनकर कहा, कि यह बात नागवार* है; इसे कौन सुन सकता है? ६१ यीशु ने अपने मन में यह जान कर कि मेरे चेले आपस में इस बात पर कुड़कुड़ाते हैं, उन से पूछा, क्या इस बात से तुम्हें ठोकर लगती है? ६२ और यदि तुम मनुष्य के पुत्र को जहां वह पहिले था, वहां ऊपर जाते देखोगे, तो क्या होगा? ६३ आत्मा तो जीवन-

* या कठिन।

दायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं: जो बातें मैं ने तुम से कही हैं वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं। ६४ परन्तु तुम में से कितने ऐसे हैं जो विश्वास नहीं करते: क्योंकि यीशु तो पहिले ही से जानता था कि जो विश्वास नहीं करते, वे कौन हैं? और कौन मुझे पकड़वाएगा। ६५ और उस ने कहा, इसी लिये मैं ने तुम से कहा था कि जब तक किसी को पिता की ओर से यह बरदान न दिया जाए तब तक वह मेरे पास नहीं आ सकता॥

६६ इस पर उसके चेलों में से बहुतेरे उल्टे फिर गए और उसके बाद उसके साथ न चले। ६७ तब यीशु ने उन बारहों से कहा, क्या तुम भी चले जाना चाहते हो? ६८ शमौन पतरस ने उस को उत्तर दिया, कि हे प्रभु हम किस के पास जाएं? अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं। ६९ और हम ने विश्वास किया, और जान गए हैं, कि परमेश्वर का पवित्र जन तू ही है। ७० यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, क्या मैं ने तुम बारहों को नहीं चुन लिया? तौभी तुम में से एक व्यक्ति शैतान* है। ७१ यह उस ने शमौन इस्करियोती के पुत्र यहूदाह के विषय में कहा, क्योंकि यही जो उन बारहों में से था, उसे पकड़वाने को था॥

७ इन बातों के बाद यीशु गलील में फिरता रहा, क्योंकि यहूदी उसे मार डालने का यत्न कर रहे थे, इसलिये वह यहूदिया में फिरना न चाहता था। २ और यहूदियों का मण्डपों का पर्ब्ब निकट था। ३ इसलिये उसके भाइयों ने उस से कहा, यहां से कूच करके यहूदिया में चला जा, कि जो काम तू करता है, उन्हें तेरे चेले भी देखें। ४ क्योंकि ऐसा कोई न होगा जो प्रसिद्ध होना चाहे, और छिपकर काम करे: यदि तू यह काम करता है, तो अपने तईं जगत पर प्रगट कर। ५ क्योंकि उसके भाई भी उस पर विश्वास नहीं करते थे। ६ तब यीशु ने उन से कहा, मेरा समय अभी तक नहीं आया; परन्तु तुम्हारे लिये सब समय है। ७ जगत तुम से बैर नहीं कर सकता, परन्तु वह मुझ से बैर करता है, क्योंकि मैं उसके विरोध में यह गवाही देता हूं, कि उसके काम बुरे हैं। ८ तुम पर्ब्ब में जाओ: मैं अभी इस पर्ब्ब में नहीं जाता; क्योंकि अभी तक मेरा समय पूरा नहीं हुआ। ९ वह उन से ये बातें कहकर गलील ही में रह गया॥

१० परन्तु जब उसके भाई पर्ब्ब में चले गए, तो वह आप ही प्रगट में नहीं, परन्तु मानो गुप्त होकर गया। ११ सो यहूदी पर्ब्ब में उसे यह कहकर ढूंढ़ने लगे कि वह कहां है? १२ और लोगों में उसके विषय में चुपके चुपके बहुत सी बातें हुईं: कितने कहते थे; वह भला मनुष्य है: और कितने कहते थे; नहीं, वह लोगों को भरमाता है। १३ तौभी यहूदियों के भय के मारे कोई व्यक्ति उसके विषय में खुलकर नहीं बोलता था॥

१४ और जब पर्ब्ब के आधे दिन बीत गए; तो यीशु मन्दिर में जाकर उपदेश करने लगा। १५ तब यहूदियों ने अचम्भा करके कहा, कि इसे बिन पढ़े विद्या कैसे आ गई? १६ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मेरा उपदेश मेरा नहीं, परन्तु मेरे भेजनेवाले का है। १७ यदि कोई उस की इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा कि वह परमेश्वर की ओर

* यू० इब्लीस।

से है, या मैं अपनी ओर से कहता हूं। १८ जो अपनी ओर से कुछ कहता है, वह अपनी ही बड़ाई चाहता है; परन्तु जो अपने भेजनेवाले की बड़ाई चाहता है वही सच्चा है, और उस में अधर्म नहीं। १९ क्या मूसा ने तुम्हें व्यवस्था नहीं दी? तौभी तुम में से कोई व्यवस्था पर नहीं चलता। तुम क्यों मुझे मार डालना चाहते हो? २० लोगों ने उत्तर दिया; कि तुझ में दुष्टात्मा है; कौन तुझे मार डालना चाहता है? २१ यीशु ने उन को उत्तर दिया, कि मैं ने एक काम किया, और तुम सब अचम्भा करते हो। २२ इसी कारण मूसा ने तुम्हें खतने की आज्ञा दी है (यह नहीं कि वह मूसा की ओर से है परन्तु बाप-दादों से चली आई है), और तुम सब्त के दिन को मनुष्य का खतना करते हो। २३ जब सब्त के दिन मनुष्य का खतना किया जाता है ताकि मूसा की व्यवस्था की आज्ञा टल न जाए, तो तुम मुझ पर क्यों इसलिये क्रोध करते हो, कि मैं ने सब्त के दिन एक मनुष्य को पूरी रीति से चंगा किया। २४ मुंह देखकर न्याय न चुकाओ, परन्तु ठीक ठीक न्याय चुकाओ॥

२५ तब कितने यरूशलेमी कहने लगे; क्या यह वही नहीं, जिस के मार डालने का प्रयत्न किया जा रहा है। २६ परन्तु देखो, वह तो खुल्लमखुल्ला बातें करता है और कोई उस से कुछ नहीं कहता; क्या सम्भव है कि सरदारों ने सच सच जान लिया है; कि यही मसीह है। २७ इस को तो हम जानते हैं, कि यह कहां का है; परन्तु मसीह जब आएगा, तो कोई न जानेगा कि वह कहां का है। २८ तब यीशु ने मन्दिर में उपदेश देते हुए पुकार के कहा, तुम मुझे जानते हो और यह भी जानते हो कि मैं कहां का हूं: मैं तो आप से नहीं आया परन्तु मेरा भेजनेवाला सच्चा है, उस को तुम नहीं जानते। २९ मैं उसे जानता हूं; क्योंकि मैं उस की ओर से हूं और उसी ने मुझे भेजा है। ३० इस पर उन्हों ने उसे पकड़ना चाहा तौभी किसी ने उस पर हाथ न डाला, क्योंकि उसका समय अब तक न आया था। ३१ और भीड़ में से बहुतेरों ने उस पर विश्वास किया, और कहने लगे, कि मसीह जब आएगा, तो क्या इस से अधिक आश्चर्यकर्म दिखाएगा जो इस ने दिखाए? ३२ फरीसियों ने लोगों को उसके विषय में ये बातें चुपके चुपके करते सुना; और महायाजकों और फरीसियों ने उसके पकड़ने को सिपाही भेजे। ३३ इस पर यीशु ने कहा, मैं थोड़ी देर तक और तुम्हारे साथ हूं; तब अपने भेजनेवाले के पास चला जाऊंगा। ३४ तुम मुझे ढूंढ़ोगे, परन्तु नहीं पाओगे और जहां मैं हूं, वहां तुम नहीं आ सकते। ३५ यहूदियों ने आपस में कहा, यह कहां जाएगा, कि हम इसे न पाएंगे: क्या वह उन के पास जाएगा, जो यूनानियों में तित्तर बित्तर होकर रहते हैं, और यूनानियों को भी उपदेश देगा? ३६ यह क्या बात है जो उस ने कही, कि तुम मुझे ढूंढ़ोगे, परन्तु न पाओगे: और जहां मैं हूं, वहां तुम नहीं आ सकते?

३७ फिर पर्ब्ब के अंतिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, यदि कोई पियासा हो तो मेरे पास आकर पीए। ३८ जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है उसके हृदय * में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी। ३९ उस ने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर

* यू० पेट।

विश्वास करनेवाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था; क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुंचा था। ४० तब भीड़ में से किसी किसी ने ये बातें सुन कर कहा, सचमुच यही वह भविष्यद्वक्ता है। ४१ औरों ने कहा; यह मसीह है, परन्तु किसी ने कहा; क्यों? क्या मसीह गलील से आएगा? ४२ क्या पवित्र शास्त्र में यह नहीं आया, कि मसीह दाऊद के वंश से और बैतलहम गांव से आएगा जहां दाऊद रहता था? ४३ सो उसके कारण लोगों में फूट पड़ी। ४४ उन में से कितने उसे पकड़ना चाहते थे, परन्तु किसी ने उस पर हाथ न डाला॥

४५ तब सिपाही महायाजकों और फरीसियों के पास आए, और उन्हों ने उन से कहा, तुम उसे क्यों नहीं लाए? ४६ सिपाहियों ने उत्तर दिया, कि किसी मनुष्य ने कभी ऐसी बातें न कीं। ४७ फरीसियों ने उन को उत्तर दिया, क्या तुम भी भरमाए गए हो? ४८ क्या सरदारों या फरीसियों में से किसी ने भी उस पर विश्वास किया है? ४९ परन्तु ये लोग जो व्यवस्था नहीं जानते, स्रापित हैं। ५० नीकुदेमुस ने, (जो पहिले उसके पास आया था और उन में से एक था), उन से कहा। ५१ क्या हमारी व्यवस्था किसी व्यक्ति को जब तक पहिले उस की सुनकर जान न ले, कि वह क्या करता है; दोषी ठहराती है? ५२ उन्हों ने उसे उत्तर दिया; क्या तू भी गलील का है ढूंढ़ और देख, कि गलील से कोई भविष्यद्वक्ता प्रगट नहीं होने का। ५३ [तब* सब कोई अपने अपने घर को गए॥

८ परन्तु यीशु जैतून के पहाड़ पर गया। २ और भोर को फिर मन्दिर में आया, और सब लोग उसके पास आए; और वह बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा। ३ तब शास्त्री और फरीसी एक स्त्री को लाए, जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी, और उस को बीच में खड़ी करके यीशु से कहा। ४ हे गुरु, यह स्त्री व्यभिचार करते ही पकड़ी गई है। ५ व्यवस्था में मूसा ने हमें आज्ञा दी है कि ऐसी स्त्रियों को पत्थरवाह करें: सो तू इस स्त्री के विषय में क्या कहता है? ६ उन्हों ने उस को परखने के लिये यह बात कही ताकि उस पर दोष लगाने के लिये कोई बात पाएं, परन्तु यीशु झुककर उंगली से भूमि पर लिखने लगा। ७ जब वे उस से पूछते ही रहे, तो उस ने सीधे होकर उन से कहा, कि तुम में जो निष्पाप हो, वही पहिले उसको पत्थर मारे। ८ और फिर झुककर भूमि पर उंगली से लिखने लगा। ९ परन्तु वे यह सुनकर बड़ों से लेकर छोटों तक एक एक करके निकल गए, और यीशु अकेला रह गया, और स्त्री वहीं बीच में खड़ी रह गई। १० यीशु ने सीधे होकर उस से कहा, हे नारी, वे कहां गए? क्या किसी ने तुझ पर दंड की आज्ञा न दी। ११ उस ने कहा, हे प्रभु, किसी ने नहीं: यीशु ने कहा, मैं भी तुझ पर दंड की आज्ञा नहीं देता; जा, और फिर पाप न करना]॥

१२ तब यीशु ने फिर लोगों से कहा, जगत की ज्योति मैं हूं; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा। १३ फरीसियों ने उस से कहा; तू अपनी गवाही आप देता है; तेरी गवाही ठीक नहीं। १४ यीशु ने उन को उत्तर दिया; कि यदि मैं अपनी गवाही

* ७ : ५३ से ८ : ११ तक का वाक्य अक्सर पुराने हस्तलेखों में नहीं मिलता।

आप देता हूं, तौभी मेरी गवाही ठीक है, क्योंकि मैं जानता हूं, कि मैं कहां से आया हूं और कहां को जाता हूं? परन्तु तुम नहीं जानते कि मैं कहां से आता हूं या कहां को जाता हूं। १५ तुम शरीर के अनुसार न्याय करते हो; मैं किसी का न्याय नहीं करता। १६ और यदि मैं न्याय करूं भी, तो मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अकेला नहीं, परन्तु मैं हूं, और पिता है जिस ने मुझे भेजा। १७ और तुम्हारी व्यवस्था में भी लिखा है; कि दो जनों की गवाही मिलकर ठीक होती है। १८ एक तो मैं आप अपनी गवाही देता हूं, और दूसरा पिता मेरी गवाही देता है जिस ने मुझे भेजा। १९ उन्हों ने उस से कहा, तेरा पिता कहां है? यीशु ने उत्तर दिया, कि न तुम मुझे जानते हो, न मेरे पिता को, यदि मुझे जानते, तो मेरे पिता को भी जानते। २० ये बातें उस ने मन्दिर में उपदेश देते हुए भण्डार घर में कहीं, और किसी ने उसे न पकड़ा; क्योंकि उसका समय अब तक नहीं आया था॥

२१ उस ने फिर उन से कहा, मैं जाता हूं और तुम मुझे ढूंढ़ोगे और अपने पाप में मरोगे: जहां मैं जाता हूं, वहां तुम नहीं आ सकते। २२ इस पर यहूदियों ने कहा, क्या वह अपने आप को मार डालेगा, जो कहता है; कि जहां मैं जाता हूं वहां तुम नहीं आ सकते? २३ उस ने उन से कहा, तुम नीचे के हो, मैं ऊपर का हूं; तुम संसार के हो, मैं संसार का नहीं। २४ इसलिये मैं ने तुम से कहा, कि तुम अपने पापों में मरोगे; क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूं, तो अपने पापों में मरोगे। २५ उन्हों ने उस से कहा, तू कौन है? यीशु ने उन से कहा, वही * हूं जो प्रारम्भ से तुम से कहता आया हूं। २६ तुम्हारे विषय में मुझे बहुत कुछ कहना और निर्णय करना है परन्तु मेरा भेजनेवाला सच्चा है; और जो मैं ने उस से सुना है, वही जगत से कहता हूं। २७ वे न समझे कि हम से पिता के विषय में कहता है। २८ तब यीशु ने कहा, कि जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊंचे पर चढ़ाओगे, तो जानोगे कि मैं वही हूं, और अपने आप से कुछ नहीं करता, परन्तु जैसे मेरे पिता ने मुझे सिखाया, वैसे ही ये बातें कहता हूं। २९ और मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उस ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा; क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूं, जिस से वह प्रसन्न होता है। ३० वह ये बातें कह ही रहा था, कि बहुतेरों ने उस पर विश्वास किया॥

३१ तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्हों ने उन की प्रतीति की थी, कहा, यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे। ३२ और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा। ३३ उन्हों ने उस को उत्तर दिया; कि हम तो इब्राहीम के वंश से हैं और कभी किसी के दास नहीं हुए; फिर तू क्योंकर कहता है, कि तुम स्वतंत्र हो जाओगे? ३४ यीशु ने उन को उत्तर दिया; मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास है। ३५ और दास सदा घर में नहीं रहता; पुत्र सदा रहता है। ३६ सो यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे। ३७ मैं जानता हूं कि तुम इब्राहीम के वंश से हो; तौभी मेरा वचन

* या यह क्या बात है कि मैं तुम से बातें करता हूं।

तुम्हारे हृदय * में जगह नहीं पाता, इसलिये तुम मुझे मार डालना चाहते हो। ३८ मैं वही कहता हूं; जो अपने पिता के यहां देखा है; और तुम वही करते रहते हो जो तुमने अपने पिता से सुना है। ३९ उन्हों ने उन को उत्तर दिया, कि हमारा पिता तो इब्राहीम है: यीशु ने उन से कहा; यदि तुम इब्राहीम की सन्तान होते, तो इब्राहीम के समान काम करते। ४० परन्तु अब तुम मुझ ऐसे मनुष्य को मार डालना चाहते हो, जिस ने तुम्हें वह सत्य वचन बताया जो परमेश्वर से सुना, यह तो इब्राहीम ने नहीं किया था। ४१ तुम अपने पिता के समान काम करते हो: उन्हों ने उस से कहा, हम व्यभिचार से नहीं जन्मे; हमारा एक पिता है अर्थात् परमेश्वर। ४२ यीशु ने उन से कहा; यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता, तो तुम मुझ से प्रेम रखते; क्योंकि मैं परमेश्वर में से निकल कर आया हूं; मैं आप से नहीं आया; परन्तु उसी ने मुझे भेजा। ४३ तुम मेरी बात क्यों नहीं समझते? इसलिये कि मेरा वचन सुन नहीं सकते। ४४ तुम अपने पिता शैतान † से हो, और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है, और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उस में है ही नहीं: जब वह झूठ बोलता, तो अपने स्वभाव ही से बोलता है; क्योंकि वह झूठा है, बरन झूठ का पिता है। ४५ परन्तु मैं जो सच बोलता हूं, इसी लिये तुम मेरी प्रतीति नहीं करते। ४६ तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता है? और यदि मैं सच बोलता हूं, तो तुम मेरी प्रतीति क्यों नहीं करते? ४७ जो परमेश्वर से होता है, वह परमेश्वर की बातें सुनता है; और तुम इसलिये नहीं सुनते कि परमेश्वर की ओर से नहीं हो। ४८ यह सुन यहूदियों ने उस से कहा; क्या हम ठीक नहीं कहते, कि तू सामरी है, और तुझ में दुष्टात्मा है? ४९ यीशु ने उत्तर दिया, कि मुझ में दुष्टात्मा नहीं; परन्तु मैं अपने पिता का आदर करता हूं, और तुम मेरा निरादर करते हो। ५० परन्तु मैं अपनी प्रतिष्ठा नहीं चाहता, हां, एक तो है जो चाहता है, और न्याय करता है। ५१ मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि यदि कोई व्यक्ति मेरे वचन पर चलेगा, तो वह अनन्त काल तक मृत्यु को न देखेगा। ५२ यहूदियों ने उस से कहा, कि अब हम ने जान लिया कि तुझ में दुष्टात्मा है: इब्राहीम मर गया, और भविष्यद्वक्ता भी मर गए हैं और तू कहता है, कि यदि कोई मेरे वचन पर चलेगा तो वह अनन्त काल तक मृत्यु का स्वाद न चखेगा। ५३ हमारा पिता इब्राहीम तो मर गया, क्या तू उस से बड़ा है? और भविष्यद्वक्ता भी मर गए, तू अपने आप को क्या ठहराता है। ५४ यीशु ने उत्तर दिया; यदि मैं आप अपनी महिमा करूं, तो मेरी महिमा कुछ नहीं, परन्तु मेरी महिमा करनेवाला मेरा पिता है, जिसे तुम कहते हो, कि वह हमारा परमेश्वर है। ५५ और तुम ने तो उसे नहीं जाना: परन्तु मैं उसे जानता हूं; और यदि कहूं कि मैं उसे नहीं जानता, तो मैं तुम्हारी नाईं झूठा ठहरूंगा: परन्तु मैं उसे जानता, और उसके वचन पर चलता हूं। ५६ तुम्हारा पिता इब्राहीम मेरा दिन देखने की आशा से बहुत मगन था; और उस ने देखा, और आनन्द किया। ५७ यहूदियों ने उस से कहा, अब तक तू पचास वर्ष का नहीं; फिर भी तू ने इब्राहीम

* या बढ़ने पाता।
† यू० इबलीस।

को देखा है? ५८ यीशु ने उन से कहा; मैं तुम से सच सच कहता हूं; कि पहिले इसके कि इब्राहीम उत्पन्न हुआ मैं हूं। ५९ तब उन्हों ने उसे मारने के लिये पत्थर उठाए, परन्तु यीशु छिपकर मन्दिर से निकल गया।।

९ फिर जाते हुए उस ने एक मनुष्य को देखा, जो जन्म का अन्धा था। २ और उसके चेलों ने उस से पूछा, हे रब्बी, किस ने पाप किया था कि यह अन्धा जन्मा, इस मनुष्य ने, या उसके माता-पिता ने? ३ यीशु ने उत्तर दिया, कि न तो इस ने पाप किया था; न इस के माता-पिता ने: परन्तु यह इसलिये हुआ, कि परमेश्वर के काम उस में प्रगट हों। ४ जिस ने मुझे भेजा है; हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है: वह रात आनेवाली है जिस में कोई काम नहीं कर सकता। ५ जब तक मैं जगत में हूं, तब तक जगत की ज्योति हूं। ६ यह कहकर उस ने भूमि पर थूका और उस थूक से मिट्टी सानी, और वह मिट्टी उस अन्धे की आंखों पर लगाकर। ७ उस से कहा; जा शीलोह के कुण्ड में धो ले, (जिस का अर्थ भेजा हुआ है) सो उस ने जाकर धोया, और देखता हुआ लौट आया। ८ तब पड़ोसी और जिन्हों ने पहिले उसे भीख मांगते देखा था, कहने लगे; क्या यह वही नहीं, जो बैठा भीख मांगा करता था? ९ कितनों ने कहा, यह वही है: औरों ने कहा, नहीं; परन्तु उसके समान है: उस ने कहा, मैं वही हूं। १० तब वे उस से पूछने लगे, तेरी आंखें क्योंकर खुल गईं? ११ उस ने उत्तर दिया, कि यीशु नाम एक व्यक्ति ने मिट्टी सानी, और मेरी आंखों पर लगाकर मुझ से कहा, कि शीलोह में जाकर धो ले; सो मैं गया, और धोकर देखने लगा। १२ उन्हों ने उस से पूछा; वह कहां है? उस ने कहा; मैं नहीं जानता।।

१३ लोग उसे जो पहिले अन्धा था फरीसियों के पास ले गए। १४ जिस दिन यीशु ने मिट्टी सानकर उस की आंखें खोली थीं वह सब्त का दिन था। १५ फिर फरीसियों ने भी उस से पूछा; तेरी आंखें किस रीति से खुल गईं? उस ने उन से कहा; उस ने मेरी आंखों पर मिट्टी लगाई, फिर मैं ने धो लिया, और अब देखता हूं। १६ इस पर कई फरीसी कहने लगे; यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं, क्योंकि वह सब्त का दिन नहीं मानता। औरों ने कहा, पापी मनुष्य क्योंकर ऐसे चिन्ह दिखा सकता है? सो उन में फूट पड़ी। १७ उन्हों ने उस अन्धे से फिर कहा, उस ने जो तेरी आंखें खोलीं, तू उसके विषय में क्या कहता है? उस ने कहा, वह भविष्यद्वक्ता है। १८ परन्तु यहूदियों को विश्वास न हुआ कि यह अन्धा था और अब देखता है जब तक उन्हों ने उसके माता-पिता को जिस की आंखें खुल गईं थी, बुलाकर। १९ उन से न पूछा, कि क्या यह तुम्हारा पुत्र है, जिसे तुम कहते हो कि अन्धा जन्मा था? फिर अब वह क्योंकर देखता है? २० उसके माता-पिता ने उत्तर दिया; हम तो जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है, और अन्धा जन्मा था। २१ परन्तु हम यह नहीं जानते हैं कि अब क्योंकर देखता है; और न यह जानते हैं, कि किस ने उस की आंखें खोलीं; वह सयाना है; उसी से पूछ लो; वह अपने विषय में आप कह देगा। २२ ये बातें उसके माता-पिता ने इसलिये कहीं क्योंकि वे यहूदियों से डरते थे; क्योंकि यहूदी एका कर चुके थे, कि यदि कोई कहे कि वह मसीह

है, तो आराधनालय से निकाला जाए। २३ इसी कारण उसके माता-पिता ने कहा, कि वह सयाना है; उसी से पूछ लो। २४ तब उन्हों ने उस मनुष्य को जो अन्धा था दूसरी बार बुलाकर उस से कहा, परमेश्वर की स्तुति कर: हम तो जानते हैं कि वह मनुष्य पापी है। २५ उस ने उत्तर दिया: मैं नहीं जानता कि वह पापी है या नहीं: मैं एक बात जानता हूं कि मैं अन्धा था और अब देखता हूं। २६ उन्हों ने उस से फिर कहा, कि उस ने तेरे साथ क्या किया? और किस तरह तेरी आंखें खोलीं? २७ उस ने उन से कहा; मैं तो तुम से कह चुका, और तुम ने न सुना; अब दूसरी बार क्यों सुनना चाहते हो? क्या तुम भी उसके चेले होना चाहते हो? २८ तब वे उसे बुरा-भला कहकर बोले, तू ही उसका चेला है; हम तो मूसा के चेले हैं। २९ हम जानते हैं कि परमेश्वर ने मूसा से बातें कीं; परन्तु इस मनुष्य को नहीं जानते कि कहां का है। ३० उस ने उन को उत्तर दिया; यह तो अचम्भे की बात है कि तुम नहीं जानते कि कहां का है तौभी उस ने मेरी आंखें खोल दीं। ३१ हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता परन्तु यदि कोई परमेश्वर का भक्त हो, और उस की इच्छा पर चलता है, तो वह उस की सुनता है। ३२ जगत के आरम्भ से यह कभी सुनने में नहीं आया, कि किसी ने भी जन्म के अन्धे की आंखें खोली हों। ३३ यदि यह व्यक्ति परमेश्वर की ओर से न होता, तो कुछ भी नहीं कर सकता। ३४ उन्हों ने उस को उत्तर दिया, कि तू तो बिलकुल पापों में जन्मा है, तू हमें क्या सिखाता है? और उन्हों ने उसे बाहर निकाल दिया॥

३५ यीशु ने सुना, कि उन्हों ने उसे बाहर निकाल दिया है; और जब उस से भेंट हुई तो कहा, कि क्या तू परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है? ३६ उस ने उत्तर दिया, कि हे प्रभु; वह कौन है कि मैं उस पर विश्वास करूं? ३७ यीशु ने उस से कहा, तू ने उसे देखा भी है; और जो तेरे साथ बातें कर रहा है वही है। ३८ उस ने कहा, हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं: और उसे दंडवत किया। ३९ तब यीशु ने कहा, मैं इस जगत में न्याय के लिये आया हूं, ताकि जो नहीं देखते वे देखें, और जो देखते हैं वे अन्धे हो जाएं। ४० जो फरीसी उसके साथ थे, उन्हों ने ये बातें सुन कर उस से कहा, क्या हम भी अन्धे हैं? ४१ यीशु ने उन से कहा, यदि तुम अन्धे होते तो पापी न ठहरते परन्तु अब कहते हो, कि हम देखते हैं, इसलिये तुम्हारा पाप बना रहता है॥

१० मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो कोई द्वार से भेड़शाला में प्रवेश नहीं करता, परन्तु और किसी ओर से चढ़ जाता है, वह चोर और डाकू है। २ परन्तु जो द्वार से भीतर प्रवेश करता है वह भेड़ों का चरवाहा है। ३ उसके लिये द्वारपाल द्वार खोल देता है, और भेड़ें उसका शब्द सुनती हैं, और वह अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर बुलाता है और बाहर ले जाता है। ४ और जब वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल चुकता है, तो उन के आगे आगे चलता है, और भेड़ें उसके पीछे पीछे हो लेती हैं; क्योंकि वे उसका शब्द पहचानती हैं। ५ परन्तु वे पराये के पीछे नहीं जाएंगी, परन्तु उस से भागेंगी, क्योंकि वे परायों का शब्द नहीं पहचानती।

६ यीशु ने उन से यह दृष्टान्त कहा, परन्तु वे न समझे कि ये क्या बातें हैं जो वह हम से कहता है॥

७ तब यीशु ने उन से फिर कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि भेड़ों का द्वार मैं हूं। ८ जितने मुझ से पहिले आए; वे सब चोर और डाकू हैं परन्तु भेड़ों ने उन की न सुनी। ९ द्वार मैं हूं: यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे तो उद्धार पाएगा और भीतर बाहर आया जाया करेगा और चारा पाएगा। १० चोर किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है। मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं। ११ अच्छा चरवाहा मैं हूं; अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है। १२ मजदूर जो न चरवाहा है, और न भेड़ों का मालिक है, भेड़िए को आते हुए देख, भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है, और भेड़िया उन्हें पकड़ता और तित्तर-बित्तर कर देता है। १३ वह इसलिये भाग जाता है कि वह मजदूर है, और उस को भेड़ों की चिन्ता नहीं। १४ अच्छा चरवाहा मैं हूं; जिस तरह पिता मुझे जानता है, और मैं पिता को जानता हूं। १५ इसी तरह मैं अपनी भेड़ों को जानता हूं, और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं, और मैं भेड़ों के लिये अपना प्राण देता हूं। १६ और मेरी और भी भेड़ें हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं: मुझे उन का भी लाना अवश्य है, वे मेरा शब्द सुनेंगी: तब एक ही झुण्ड और एक ही चरवाहा होगा। १७ पिता इसलिये मुझ से प्रेम रखता है, कि मैं अपना प्राण देता हूं, कि उसे फिर ले लूं। १८ कोई उसे मुझ से छीनता नहीं, बरन मैं उसे आप ही देता हूं: मुझे उसके देने का भी अधिकार है, और उसे फिर लेने का भी अधिकार है: यह आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली है॥

१९ इन बातों के कारण यहूदियों में फिर फूट पड़ी। २० उन में से बहुतेरे कहने लगे, कि उस में दुष्टात्मा है, और वह पागल है; उस की क्यों सुनते हो? २१ औरों ने कहा, ये बातें ऐसे मनुष्य की नहीं जिस में दुष्टात्मा हो: क्या दुष्टात्मा अन्धों की आंखें खोल सकती है?

२२ यरूशलेम में स्थापन-पर्व्व हुआ, और जाड़े की ऋतु थी। २३ और यीशु मन्दिर में सुलैमान के ओसारे में टहल रहा था। २४ तब यहूदियों ने उसे आ घेरा और पूछा, तू हमारे मन को कब तक दुबिधा में रखेगा? यदि तू मसीह है, तो हम से साफ कह दे। २५ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मैं ने तुम से कह दिया, और तुम प्रतीति करते ही नहीं, जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूं वे ही मेरे गवाह हैं। २६ परन्तु तुम इसलिये प्रतीति नहीं करते, कि मेरी भेड़ों में से नहीं हो। २७ मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूं, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं। २८ और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूं, और वे कभी नाश न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा। २९ मेरा पिता, जिस ने उन्हें मुझ को दिया है, सब से बड़ा है, और कोई उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता। ३० मैं और पिता एक हैं। ३१ यहूदियों ने उसे पत्थरवाह करने को फिर पत्थर उठाए। ३२ इस पर यीशु ने उन से कहा, कि मैं ने तुम्हें अपने पिता की ओर से बहुत से भले काम दिखाए हैं, उन में से किस काम के लिये तुम मुझे पत्थरवाह करते हो? ३३ यहूदियों ने उस को उत्तर दिया, कि

भले काम के लिये हम तुझे पत्थरवाह नहीं करते, परन्तु परमेश्वर की निन्दा के कारण और इसलिये कि तू मनुष्य होकर अपने आप को परमेश्वर बनाता है। ३४ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, क्या तुम्हारी व्यवस्था में नहीं लिखा है कि मैं ने कहा, तुम ईश्वर हो? ३५ यदि उस ने उन्हें ईश्वर कहा जिन के पास परमेश्वर का वचन पहुंचा (और पवित्र शास्त्र की बात लोप नहीं हो सकती) ३६ तो जिसे पिता ने पवित्र ठहराकर जगत में भेजा है, तुम उस से कहते हो कि तू निन्दा करता है, इसलिये कि मैं ने कहा, मैं परमेश्वर का पुत्र हूं। ३७ यदि मैं अपने पिता के काम नहीं करता, तो मेरी प्रतीति न करो। ३८ परन्तु यदि मैं करता हूं, तो चाहे मेरी प्रतीति न भी करो, परन्तु उन कामों की तो प्रतीति करो, ताकि तुम जानो, और समझो, कि पिता मुझ में है, और मैं पिता में हूं। ३९ तब उन्हों ने फिर उसे पकड़ने का प्रयत्न किया परन्तु वह उन के हाथ से निकल गया॥

४० फिर वह यरदन के पार उस स्थान पर चला गया, जहां यूहन्ना पहिले बपतिस्मा दिया करता था, और वहीं रहा। ४१ और बहुतेरे उसके पास आकर कहते थे, कि यूहन्ना ने तो कोई चिन्ह नहीं दिखाया, परन्तु जो कुछ यूहन्ना ने इस के विषय में कहा था, वह सब सच था। ४२ और वहां बहुतेरों ने उस पर विश्वास किया॥

११ मरियम और उस की बहिन मरथा के गांव बैतनिय्याह का लाजर नाम एक मनुष्य बीमार था। २ यह वही मरियम थी जिस ने प्रभु पर इत्र डालकर उसके पांवों को अपने बालों से पोंछा था, इसी का भाई लाजर बीमार था। ३ सो उस की बहिनों ने उसे कहला भेजा, कि हे प्रभु, देख, जिस से तू प्रीति रखता है, वह बीमार है। ४ यह सुनकर यीशु ने कहा, यह बीमारी मृत्यु की नहीं, परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिये है, कि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो। ५ और यीशु मरथा और उस की बहन और लाजर से प्रेम रखता था। ६ सो जब उस ने सुना, कि वह बीमार है, तो जिस स्थान पर वह था, वहां दो दिन और ठहर गया। ७ फिर इस के बाद उस ने चेलों से कहा, कि आओ, हम फिर यहूदिया को चलें। ८ चेलों ने उस से कहा, हे रब्बी, अभी तो यहूदी तुझे पत्थरवाह करना चाहते थे, और क्या तू फिर भी वहीं जाता है? ९ यीशु ने उत्तर दिया, क्या दिन के बारह घंटे नहीं होते? यदि कोई दिन को चले, तो ठोकर नहीं खाता क्योंकि इस जगत का उजाला देखता है। १० परन्तु यदि कोई रात को चले, तो ठोकर खाता है, क्योंकि उस में प्रकाश नहीं। ११ उस ने ये बातें कहीं, और इस के बाद उन से कहने लगा, कि हमारा मित्र लाजर सो गया है, परन्तु मैं उसे जगाने जाता हूं। १२ तब चेलों ने उस से कहा, हे प्रभु, यदि वह सो गया है, तो बच जायगा। १३ यीशु ने तो उस की मृत्यु के विषय में कहा था: परन्तु वे समझे कि उस ने नींद से सो जाने के विषय में कहा। १४ तब यीशु ने उन से साफ कह दिया, कि लाजर मर गया है। १५ और मैं तुम्हारे कारण आनन्दित हूं कि मैं वहां न था जिस से तुम विश्वास करो, परन्तु अब आओ, हम उसके पास चलें। १६ तब थोमा ने जो दिदुमुस कहलाता है, अपने साथ के चेलों से कहा, आओ, हम भी उसके साथ मरने को चलें॥

१७ सो यीशु को आकर यह मालूम हुआ कि उसे कब्र में रखे चार दिन हो चुके हैं। १८ बैतनिय्याह यरूशलेम के समीप कोई दो मील की दूरी पर था। १९ और बहुत से यहूदी मरथा और मरियम के पास उन के भाई के विषय में शान्ति देने के लिये आए थे। २० सो मरथा यीशु के आने का समाचार सुनकर उस से भेंट करने को गई, परन्तु मरियम घर में बैठी रही। २१ मरथा ने यीशु से कहा, हे प्रभु, यदि तू यहां होता, तो मेरा भाई कदापि न मरता। २२ और अब भी मैं जानती हूं, कि जो कुछ तू परमेश्वर से मांगेगा, परमेश्वर तुझे देगा। २३ यीशु ने उस से कहा, तेरा भाई जी उठेगा। २४ मरथा ने उस से कहा, मैं जानती हूं, कि अन्तिम दिन में पुनरुत्थान * के समय वह जी उठेगा। २५ यीशु ने उस से कहा, पुनरुत्थान † और जीवन मैं ही हूं जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा। २६ और जो कोई जीवता है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा, क्या तू इस बात पर विश्वास करती है? २७ उस ने उस से कहा, हां हे प्रभु, मैं विश्वास कर चुकी हूं, कि परमेश्वर का पुत्र मसीह जो जगत में आनेवाला था, वह तू ही है। २८ यह कहकर वह चली गई, और अपनी बहिन मरियम को चुपके से बुलाकर कहा, गुरु यहीं है, और तुझे बुलाता है। २९ वह सुनते ही तुरन्त उठकर उसके पास आई। ३० (यीशु अभी गांव में नहीं पहुंचा था, परन्तु उसी स्थान में था, जहां मरथा ने उस से भेंट की थी)। ३१ तब जो यहूदी उसके साथ घर में थे, और उसे शान्ति दे रहे थे, यह देखकर कि मरियम तुरन्त उठके बाहर गई है और यह समझकर कि वह कब्र पर रोने को जाती है, उसके पीछे हो लिए। ३२ जब मरियम वहां पहुंची जहां यीशु था, तो उसे देखते ही उसके पांवों पर गिर के कहा, हे प्रभु, यदि तू यहां होता तो मेरा भाई न मरता। ३३ जब यीशु ने उस को और उन यहूदियों को जो उसके साथ आए थे रोते हुए देखा, तो आत्मा में बहुत ही उदास हुआ, और घबरा कर * कहा, तुम ने उसे कहां रखा है? ३४ उन्हों ने उस से कहा, हे प्रभु, चलकर देख ले। ३५ यीशु के आंसू बहने लगे। ३६ तब यहूदी कहने लगे, देखो, वह उस से कैसी प्रीति रखता था। ३७ परन्तु उन में से कितनों ने कहा, क्या यह जिस ने अन्धे की आंखें खोलीं, यह भी न कर सका कि यह मनुष्य न मरता? ३८ यीशु मन में फिर बहुत ही उदास होकर कब्र पर आया, वह एक गुफा थी, और एक पत्थर उस पर धरा था। ३९ यीशु ने कहा; पत्थर को उठाओ : उस मरे हुए की बहिन मरथा उस से कहने लगी, हे प्रभु, उस में से अब तो दुर्गंध आती है क्योंकि उसे मरे चार दिन हो गए। ४० यीशु ने उस से कहा, क्या मैं ने तुझ से न कहा था कि यदि तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी। ४१ तब उन्हों ने उस पत्थर को हटाया, फिर यीशु ने आंखें उठाकर कहा, हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि तू ने मेरी सुन ली है। ४२ और मैं जानता था, कि तू सदा मेरी सुनता है, परन्तु जो भीड़ आस पास खड़ी है, उन के कारण मैं ने यह कहा, जिस से कि वे विश्वास करें, कि तू

* यू० जी उठन में। या मृतकोत्थान में।
† यू० जी उठना।

* यू० अपने आपको बेचैन करके।

ने मुझे भेजा है। ४३ यह कहकर उस ने बड़े शब्द से पुकारा, कि हे लाजर, निकल आ। ४४ जो मर गया था, वह कफन से हाथ पांव बन्धे हुए निकल आया, और उसका मुंह अंगोछे से लिपटा हुआ था: यीशु ने उन से कहा, उसे खोलकर जाने दो॥

४५ तब जो यहूदी मरियम के पास आए थे, और उसका यह काम देखा था, उन में से बहुतों ने उस पर विश्वास किया। ४६ परन्तु उन में से कितनों ने फरीसियों के पास जाकर यीशु के कामों का समाचार दिया॥

४७ इस पर महायाजकों और फरीसियों ने मुख्य सभा * के लोगों को इकट्ठा करके कहा, हम करते क्या हैं? यह मनुष्य तो बहुत चिन्ह दिखाता है। ४८ यदि हम उसे योंही छोड़ दें, तो सब उस पर विश्वास ले आएंगे और रोमी आकर हमारी जगह और जाति दोनों पर अधिकार कर लेंगे। ४९ तब उन में से काइफा नाम एक व्यक्ति ने जो उस वर्ष का महायाजक था, उन से कहा, तुम कुछ नहीं जानते। ५० और न यह सोचते हो, कि तुम्हारे लिये यह भला है, कि हमारे लोगों के लिये एक मनुष्य मरे, और न यह, कि सारी जाति नाश हो। ५१ यह बात उस ने अपनी ओर से न कही, परन्तु उस वर्ष का महायाजक होकर भविष्यद्वाणी की, कि यीशु उस जाति के लिये मरेगा। ५२ और न केवल उस जाति के लिये, बरन इसलिये भी, कि परमेश्वर की तित्तर-बित्तर सन्तानों को एक कर दे। ५३ सो उसी दिन से वे उसके मार डालने की सम्मति करने लगे॥

५४ इसलिये यीशु उस समय से यहूदियों में प्रगट होकर न फिरा; परन्तु वहां से जंगल के निकट के देश में इफ्राईम नाम, एक नगर को चला गया; और अपने चेलों के साथ वहीं रहने लगा। ५५ और यहूदियों का फसह निकट था, और बहुतेरे लोग फसह से पहिले दिहात से यरूशलेम को गए, कि अपने आप को शुद्ध करें। ५६ सो वे यीशु को ढूंढ़ने और मन्दिर में खड़े होकर आपस में कहने लगे, तुम क्या समझते हो? ५७ क्या वह पर्ब्ब में नहीं आएगा? और महायाजकों और फरीसियों ने भी आज्ञा दे रखी थी, कि यदि कोई यह जाने कि यीशु कहां है तो बताए, कि उसे पकड़ लें॥

१२ फिर यीशु फसह से छः दिन पहिले बैतनिय्याह में आया, जहां लाजर था: जिसे यीशु ने मरे हुओं में से जिलाया था। २ वहां उन्हों ने उसके लिये भोजन तैय्यार किया, और मरथा सेवा कर रही थी, और लाजर उन में से एक था, जो उसके साथ भोजन करने के लिये बैठे थे। ३ तब मरियम ने जटामांसी का आध सेर बहुमोल इत्र लेकर यीशु के पांवों पर डाला, और अपने बालों से उसके पांव पोंछे, और इत्र की सुगंध से घर सुगन्धित हो गया। ४ परन्तु उसके चेलों में से यहूदा इस्करियोती नाम एक चेला जो उसे पकड़वाने पर था, कहने लगा। ५ यह इत्र तीन सौ दीनार * में बेचकर कंगालों को क्यों न दिया गया? ६ उस ने यह बात इसलिये न कही, कि उसे कंगालों की चिन्ता थी, परन्तु इसलिये कि वह चोर था और उसके पास उन की थैली रहती थी, और उस में जो कुछ

* अर्थात्। सदर अदालत वा बड़ी कचहरी।

* देखो मत्ती १८ : २८।

डाला जाता था, वह निकाल लेता था। ७ यीशु ने कहा, उसे मेरे गाड़े जाने के दिन के लिये रहने दे। ८ क्योंकि कंगाल तो तुम्हारे साथ सदा रहते हैं, परन्तु मैं तुम्हारे साथ सदा न रहूंगा॥

९ यहूदियों में से साधारण लोग जान गए, कि वह वहां है, और वे न केवल यीशु के कारण आए परन्तु इसलिये भी कि लाजर को देखें, जिसे उस ने मरे हुओं में से जिलाया था। १० तब महायाजकों ने लाजर को भी मार डालने की सम्मति की। ११ क्योंकि उसके कारण बहुत से यहूदी चले गए, और यीशु पर विश्वास किया॥

१२ दूसरे दिन बहुत से लोगों ने जो पर्ब्ब में आए थे, यह सुनकर, कि यीशु यरूशलेम में आता है। १३ खजूर की, डालियां लीं, और उस से भेंट करने को निकले, और पुकारने लगे, कि होशाना, धन्य इस्राएल का राजा, जो प्रभु के नाम से आता है। १४ जब यीशु को एक गदहे का बच्चा मिला, तो उस पर बैठा। १५ जैसा लिखा है, कि हे सिय्योन की बेटी, मत डर, देख, तेरा राजा गदहे के बच्चे पर चढ़ा हुआ चला आता है। १६ उसके चेले, ये बातें पहिले न समझे थे; परन्तु जब यीशु की महिमा प्रगट हुई, तो उन को स्मरण आया, कि ये बातें उसके विषय में लिखी हुई थीं; और लोगों ने उस से इस प्रकार का व्योहार किया था। १७ तब भीड़ के लोगों ने जो उस समय उसके साथ थे यह गवाही दी कि उस ने लाजर को कब्र में से बुलाकर, मरे हुओं में से जिलाया था। १८ इसी कारण लोग उस से भेंट करने को आए थे क्योंकि उन्हों ने सुना था, कि उस ने यह आश्चर्यकर्म दिखाया है। १९ तब फरीसियों ने आपस में कहा, सोचो तो सही कि तुम से कुछ नहीं बन पड़ता: देखो, संसार उसके पीछे हो चला है॥

२० जो लोग उस पर्ब्ब में भजन करने आए थे उन में से कई यूनानी थे। २१ उन्हों ने गलील के बैतसैदा के रहनेवाले फिलिप्पुस के पास आकर उस से बिनती की, कि श्रीमान् हम यीशु से भेंट करना चाहते हैं। २२ फिलिप्पुस ने आकर अन्द्रियास से कहा; तब अन्द्रियास और फिलिप्पुस ने यीशु से कहा। २३ इस पर यीशु ने उन से कहा, वह समय आ गया है, कि मनुष्य के पुत्र की महिमा हो। २४ मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है। २५ जो अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है; और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय जानता है; वह अनन्त जीवन के लिये उस की रक्षा करेगा। २६ यदि कोई मेरी सेवा करे, तो मेरे पीछे हो ले; और जहां मैं हूं, वहां मेरा सेवक भी होगा; यदि कोई मेरी सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेगा। २७ अब मेरा जी व्याकुल हो रहा है। इसलिये अब मैं क्या कहूं? हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा? परन्तु मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुंचा हूं। २८ हे पिता, अपने नाम की महिमा कर: तब यह आकाशवाणी हुई, कि मैं ने उस की महिमा की है, और फिर भी करूंगा। २९ तब जो लोग खड़े हुए सुन रहे थे, उन्हों ने कहा; कि बादल गरजा, औरों ने कहा, कोई स्वर्गदूत उस से बोला। ३० इस पर यीशु ने कहा, यह शब्द मेरे लिये नहीं, परन्तु तुम्हारे लिये आया है। ३१ अब इस जगत का न्याय होता है, अब इस जगत का सरदार

निकाल दिया जाएगा। ३२ और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खीचूंगा। ३३ ऐसा कहकर उस ने यह प्रगट कर दिया, कि वह कैसी मृत्यु से मरेगा। ३४ इस पर लोगों ने उस से कहा, कि हम ने व्यवस्था की यह बात सुनी है, कि मसीह सर्वदा रहेगा, फिर तू क्यों कहता है, कि मनुष्य के पुत्र को ऊंचे पर चढ़ाया जाना अवश्य है? ३५ यह मनुष्य का पुत्र कौन है? यीशु ने उन से कहा, ज्योति अब थोड़ी देर तक तुम्हारे बीच में है, जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है तब तक चले चलो; ऐसा न हो कि अन्धकार तुम्हें आ घेरे; जो अन्धकार में चलता है वह नहीं जानता कि किधर जाता है। ३६ जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है, ज्योति पर विश्वास करो कि तुम ज्योति के सन्तान होओ॥

ये बातें कहकर यीशु चला गया और उन से छिपा रहा। ३७ और उस ने उन के साम्हने इतने चिन्ह दिखाए, तौभी उन्हों ने उस पर विश्वास न किया। ३८ ताकि यशायाह भविष्यद्वक्ता का वचन पूरा हो जो उस ने कहा कि हे प्रभु हमारे समाचार की किस ने प्रतीति की है? और प्रभु का भुजबल किस पर प्रगट हुआ? ३९ इस कारण वे विश्वास न कर सके, क्योंकि यशायाह ने फिर भी कहा। ४० कि उस ने उन की आंखें अन्धी, और उन का मन कठोर किया है; कहीं ऐसा न हो, कि वे आंखों से देखें, और मन से समझें, और फिरें, और मैं उन्हें चंगा करूं। ४१ यशायाह ने ये बातें इसलिये कहीं, कि उस ने उस की महिमा देखी; और उस ने उसके विषय में बातें की। ४२ तौभी सरदारों में से भी बहुतों ने उस पर विश्वास किया, परन्तु फरीसियों के कारण प्रगट में नहीं मानते थे, ऐसा न हो कि आराधनालय में से निकाले जाएं। ४३ क्योंकि मनुष्यों की प्रशंसा उन को परमेश्वर की प्रशंसा से अधिक प्रिय लगती थी॥

४४ यीशु ने पुकारकर कहा, जो मुझ पर विश्वास करता है, वह मुझ पर नहीं, बरन मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है। ४५ और जो मुझे देखता है, वह मेरे भेजनेवाले को देखता है। ४६ मैं जगत में ज्योति होकर आया हूं ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करे, वह अन्धकार में न रहे। ४७ यदि कोई मेरी बातें सुनकर न माने, तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता, क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने के लिये नहीं, परन्तु जगत का उद्धार करने के लिये आया हूं। ४८ जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उस को दोषी ठहरानेवाला तो एक है: अर्थात् जो वचन मैं ने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा। ४९ क्योंकि मैं ने अपनी ओर से बातें नहीं कीं, परन्तु पिता जिस ने मुझे भेजा है उसी ने मुझे आज्ञा दी है, कि क्या क्या कहूं? और क्या क्या बोलूं? ५० और मैं जानता हूं, कि उस की आज्ञा अनन्त जीवन है इसलिये मैं जो बोलता हूं, वह जैसा पिता ने मुझ से कहा है वैसा ही बोलता हूं॥

१३ फसह के पर्ब्ब से पहिले जब यीशु ने जान लिया, कि मेरी वह घड़ी आ पहुंची है कि जगत छोड़कर पिता के पास जाऊं, तो अपने लोगों से, जो जगत में थे, जैसा प्रेम वह रखता था, अन्त तक वैसा ही प्रेम रखता रहा। २ और जब शैतान *

* यू॰ इब्लीस।

शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती के मन में यह डाल चुका था, कि उसे पकड़वाए, तो भोजन के समय। ३ यीशु ने यह जानकर कि पिता ने सब कुछ मेरे हाथ में कर दिया है और मैं परमेश्वर के पास से आया हूं, और परमेश्वर के पास जाता हूं। ४ भोजन पर से उठकर अपने कपड़े उतार दिए, और अंगोछा लेकर अपनी कमर बान्धी। ५ तब बरतन में पानी भरकर चेलों के पांव धोने और जिस अंगोछे से उस की कमर बन्धी थी उसी से पोंछने लगा। ६ जब वह शमौन पतरस के पास आया: तब उस ने उस से कहा, हे प्रभु, ७ क्या तू मेरे पांव धोता है? यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि जो मैं करता हूं, तू अब नहीं जानता, परन्तु इस के बाद समझेगा। ८ पतरस ने उस से कहा, तू मेरे पांव कभी न धोने पाएगा: यह सुनकर यीशु ने उस से कहा, यदि मैं तुझे न धोऊं, तो मेरे साथ तेरा कुछ भी साझा नहीं। ९ शमौन पतरस ने उस से कहा, हे प्रभु, तो मेरे पांव ही नहीं, बरन हाथ और सिर भी धो दे। १० यीशु ने उस से कहा, जो नहा चुका है, उसे पांव के सिवा और कुछ धोने का प्रयोजन नहीं; परन्तु वह बिलकुल शुद्ध है: और तुम शुद्ध हो; परन्तु सब के सब नहीं। ११ वह तो अपने पकड़वानेवाले को जानता था इसी लिये उस ने कहा, तुम सब के सब शुद्ध नहीं॥

१२ जब वह उन के पांव धो चुका, और अपने कपड़े पहिनकर फिर बैठ गया तो उन से कहने लगा, क्या तुम समझे कि मैं ने तुम्हारे साथ क्या किया? १३ तुम मुझे गुरु, और प्रभु, कहते हो, और भला कहते हो, क्योंकि मैं वही हूं। १४ यदि मैं ने प्रभु और गुरु होकर तुम्हारे पांव धोए; तो तुम्हें भी एक दूसरे के पांव धोना चाहिए। १५ क्योंकि मैं ने तुम्हें नमूना दिखा दिया है, कि जैसा मैं ने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही किया करो। १६ मैं तुम से सच सच कहता हूं, दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं; और न भेजा हुआ * अपने भेजनेवाले से। १७ तुम तो ये बातें जानते हो, और यदि उन पर चलो, तो धन्य हो। १८ मैं तुम सब के विषय में नहीं कहता: जिन्हें मैं ने चुन लिया है, उन्हें मैं जानता हूं: परन्तु यह इसलिये है, कि पवित्र शास्त्र का यह वचन पूरा हो, कि जो मेरी रोटी खाता है, उस ने मुझ पर लात उठाई। १९ अब मैं उसके होने से पहिले तुम्हें जताए देता हूं कि जब हो जाए तो तुम विश्वास करो कि मैं वही हूं। २० मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो मेरे भेजे हुए को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है॥

२१ ये बातें कहकर यीशु आत्मा में व्याकुल हुआ और यह गवाही दी, कि मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा। २२ चेले यह संदेह करते हुए, कि वह किस के विषय में कहता है, एक दूसरे की ओर देखने लगे। २३ उसके चेलों में से एक जिस से यीशु प्रेम रखता था, यीशु की छाती की ओर झुका हुआ बैठा † था। २४ तब शमौन पतरस ने उस की ओर सैन करके पूछा, कि बता तो, वह किस के विषय में कहता है? २५ तब उस ने उसी तरह यीशु की छाती की ओर झुक कर पूछा, हे प्रभु, वह कौन है? यीशु ने उत्तर दिया, जिसे मैं यह रोटी

* या प्रेरित। † यू० लेटा।

का टुकड़ा डुबोकर दूंगा, वही है। २६ और उस ने टुकड़ा डुबोकर शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती को दिया। २७ और टुकड़ा लेते ही शैतान उस में समा गया: तब यीशु ने उस से कहा, जो तू करता है, तुरन्त कर। २८ परन्तु बैठनेवालों * में से किसी ने न जाना कि उस ने यह बात उस से किस लिये कही। २९ यहूदा के पास थैली रहती थी, इसलिये किसी किसी ने समझा, कि यीशु उस से कहता है, कि जो कुछ हमें पर्ब्ब के लिये चाहिए वह मोल ले, या यह कि कंगालों को कुछ दे। ३० तब वह टुकड़ा लेकर तुरन्त बाहर चला गया, और रात्रि का समय था॥

३१ जब वह बाहर चला गया तो यीशु ने कहा; अब मनुष्य के पुत्र की महिमा हुई, और परमेश्वर की महिमा उस में हुई। ३२ और परमेश्वर भी अपने में उस की महिमा करेगा, बरन तुरन्त करेगा। ३३ हे बालको, मैं और थोड़ी देर तुम्हारे पास हूं: फिर तुम मुझे ढूंढ़ोगे, और जैसा मैं ने यहूदियों से कहा, कि जहां मैं जाता हूं, वहां तुम नहीं आ सकते वैसा ही मैं अब तुम से भी कहता हूं। ३४ मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, कि एक दूसरे से प्रेम रखो: जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। ३५ यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो॥

३६ शमौन पतरस ने उस से कहा, हे प्रभु, तू कहां जाता है? यीशु ने उत्तर दिया, कि जहां मैं जाता हूं, वहां तू अब मेरे पीछे आ नहीं सकता! परन्तु इस के बाद मेरे पीछे आएगा। ३७ पतरस ने उस से कहा, हे प्रभु अभी मैं तेरे पीछे क्यों नहीं आ सकता? मैं तो तेरे लिये अपना प्राण दूंगा। ३८ यीशु ने उत्तर दिया, क्या तू मेरे लिये अपना प्राण देगा? मैं तुझ से सच सच कहता हूं कि मुर्ग़ बांग न देगा जब तक तू तीन बार मेरा इन्कार न कर लेगा॥

१४ तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो * मुझ पर भी विश्वास रखो। २ मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं। ३ और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो। ४ और जहां मैं जाता हूं तुम वहां का मार्ग जानते हो। ५ थोमा ने उस से कहा, हे प्रभु, हम नहीं जानते कि तू कहां जाता है? तो मार्ग कैसे जानें? ६ यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता। ७ यदि तुम ने मुझे जाना होता, तो मेरे पिता को भी जानते, और अब उसे जानते हो, और उसे देखा भी है। ८ फिलिप्पुस ने उस से कहा, हे प्रभु, पिता को हमें दिखा दे: यही हमारे लिये बहुत है। ९ यीशु ने उस से कहा; हे फिलिप्पुस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूं, और क्या तू मुझे नहीं जानता? जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा है: तू क्यों कहता है कि पिता को हमें दिखा। १० क्या तू प्रतीति नहीं करता, कि मैं पिता में हूं और पिता मुझ में है? ये बातें जो मैं तुम से कहता हूं, अपनी ओर

* यू० लेटनेवालों।

* या रखो।

से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है। ११ मेरी ही प्रतीति करो, कि मैं पिता में हूं; और पिता मुझ में है; नहीं तो कामों ही के कारण मेरी प्रतीति करो। १२ मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, बरन इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं। १३ और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही मैं करूंगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो। १४ यदि तुम मुझ से मेरे नाम से कुछ मांगोगे, तो मैं उसे करूंगा। १५ यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे। १६ और मैं पिता से बिनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे। १७ अर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है: तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा। १८ मैं तुम्हें अनाथ न छोड़ूंगा, मैं तुम्हारे पास आता हूं। १९ और थोड़ी देर रह गई है कि फिर संसार मुझे न देखेगा, परन्तु तुम मुझे देखोगे, इसलिये कि मैं जीवित हूं, तुम भी जीवित रहोगे। २० उस दिन तुम जानोगे, कि मैं अपने पिता में हूं, और तुम मुझ में, और मैं तुम में। २१ जिस के पास मेरी आज्ञा हैं, और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है, और जो मुझ से प्रेम रखता है, उस से मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उस से प्रेम रखूंगा, और अपने आप को उस पर प्रगट करूंगा। २२ उस यहूदा ने जो इस्करियोती न था, उस से कहा, हे प्रभु, क्या हुआ कि तू अपने आप को हम पर प्रगट किया चाहता है, और संसार पर नहीं। २३ यीशु ने उस को उत्तर दिया, यदि कोई मुझ से प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उस से प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएंगे, और उसके साथ बास करेंगे। २४ जो मुझ से प्रेम नहीं रखता, वह मेरे वचन नहीं मानता, और जो वचन तुम सुनते हो, वह मेरा नहीं बरन पिता का है, जिस ने मुझे भेजा॥

२५ ये बातें मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कहीं। २६ परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा। २७ मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन न घबराए और न डरे। २८ तुम ने सुना, कि मैं ने तुम से कहा, कि मैं जाता हूं, और तुम्हारे पास फिर आता हूं: यदि तुम मुझ से प्रेम रखते, तो इस बात से आनन्दित होते, कि मैं पिता के पास जाता हूं क्योंकि पिता मुझ से बड़ा है। २९ और मैं ने अब इस के होने से पहिले तुम से कह दिया है, कि जब वह हो जाए, तो तुम प्रतीति करो। ३० मैं अब से तुम्हारे साथ और बहुत बातें न करूंगा, क्योंकि इस संसार का सरदार आता है, और मुझ में उसका कुछ नहीं। ३१ परन्तु यह इसलिये होता है कि संसार जाने कि मैं पिता से प्रेम रखता हूं, और जिस तरह पिता ने मुझे आज्ञा दी, मैं वैसे ही करता हूं: उठो, यहां से चलें॥

१५ सच्ची दाखलता मैं हूं; और मेरा पिता किसान है। २ जो डाली मुझ में है, और नहीं फलती, उसे वह

काट डालता है, और जो फलती है, उसे वह छांटता है ताकि और फले। ३ तुम तो उस वचन के कारण जो मैं ने तुम से कहा है, शुद्ध हो। ४ तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में: जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते। ५ मैं दाखलता हूं: तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। ६ यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली की नाईं फेंक दिया जाता, और सूख जाता है; और लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती हैं। ७ यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिये हो जाएगा। ८ मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे। ९ जैसा पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैं ने तुम से प्रेम रखा, मेरे प्रेम में बने रहो। १० यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे: जैसा कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं। ११ मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए। १२ मेरी आज्ञा यह है, कि जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे के प्रेम रखो। १३ इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे। १४ जो कुछ मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं, यदि उसे करो, तो तुम मेरे मित्र हो। १५ अब से मैं तुम्हें दास न कहूंगा, क्योंकि दास नहीं जानता, कि उसका स्वामी क्या करता है: परन्तु मैं ने तुम्हें मित्र कहा है, क्योंकि मैं ने जो बातें अपने पिता से सुनीं, वे सब तुम्हें बता दीं। १६ तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है और तुम्हें ठहराया ताकि तुम जाकर फल लाओ; और तुम्हारा फल बना रहे, कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से मांगो, वह तुम्हें दे। १७ इन बातों की आज्ञा मैं तुम्हें इसलिये देता हूं, कि तुम एक दूसरे से प्रेम रखो। १८ यदि संसार तुम से बैर रखता है, तो तुम जानते हो, कि उस ने तुम से पहिले मुझ से भी बैर रखा। १९ यदि तुम संसार के होते, तो संसार अपनों से प्रीति रखता, परन्तु इस कारण कि तुम संसार के नहीं, बरन मैं ने तुम्हें संसार में से चुन लिया है इसी लिये संसार तुम से बैर रखता है। २० जो बात मैं ने तुम से कही थी, कि दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता, उसको याद रखो: यदि उन्हों ने मुझे सताया, तो तुम्हें भी सताएंगे; यदि उन्हों ने मेरी बात मानी, तो तुम्हारी भी मानेंगे। २१ परन्तु यह सब कुछ वे मेरे नाम के कारण तुम्हारे साथ करेंगे क्योंकि वे मेरे भेजनेवाले को नहीं जानते। २२ यदि मैं न आता और उन से बातें न करता, तो वे पापी न ठहरते परन्तु अब उन्हें उन के पाप के लिये कोई बहाना नहीं। २३ जो मुझ से बैर रखता है, वह मेरे पिता से भी बैर रखता है। २४ यदि मैं उन में वे काम न करता, जो और किसी ने नहीं किए तो वे पापी नहीं ठहरते, परन्तु अब तो उन्हों ने मुझे और मेरे पिता दोनों को देखा, और दोनों से बैर किया। २५ और यह इसलिये हुआ, कि वह वचन पूरा हो, जो उन की व्यवस्था में लिखा है, कि उन्हों ने

मुझ से व्यर्थ बैर किया। २६ परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूंगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा। २७ और तुम भी गवाह हो क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो॥

१६ ये बातें मैं ने तुम से इसलिये कहीं कि तुम ठोकर न खाओ। २ वे तुम्हें आराधनालयों में से निकाल देंगे, बरन वह समय आता है, कि जो कोई तुम्हें मार डालेगा वह समझेगा कि मैं परमेश्वर की सेवा करता हूं। ३ और यह वे इसलिये करेंगे कि उन्हों ने न पिता को जाना है और न मुझे जानते हैं। ४ परन्तु ये बातें मैं ने इसलिये तुम से कहीं, कि जब उन का समय आए तो तुम्हें स्मरण आ जाए, कि मैं ने तुम से पहिले ही कह दिया था: और मैं ने आरम्भ में तुम से ये बातें इसलिये नहीं कहीं क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था। ५ अब मैं अपने भेजनेवाले के पास जाता हूं और तुम में से कोई मुझ से नहीं पूछता, कि तू कहां जाता है? ६ परन्तु मैं ने जो ये बातें तुम से कही हैं, इसलिये तुम्हारा मन शोक से भर गया। ७ तौभी मैं तुम से सच कहता हूं, कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊंगा, तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा। ८ और वह आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर * करेगा। ९ पाप के विषय में इसलिये कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते। १० और धार्मिकता के विषय में इसलिये कि मैं पिता के पास जाता हूं, ११ और तुम मुझे फिर न देखोगे: न्याय के विषय में इसलिये कि संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है। १२ मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। १३ परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा। १४ वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा। १५ जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है; इसलिये मैं ने कहा, कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा। १६ थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में मुझे देखोगे। १७ तब उसके कितने चेलों ने आपस में कहा, यह क्या है, जो वह हम से कहता है, कि थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में मुझे देखोगे? और यह इसलिये कि मैं पिता के पास जाता हूं? १८ तब उन्हों ने कहा, यह थोड़ी देर जो वह कहता है, क्या बात है? हम नहीं जानते, कि क्या कहता है। १९ यीशु ने यह जानकर, कि वे मुझ से पूछना चाहते हैं, उन से कहा, क्या तुम आपस में मेरी इस बात के विषय में पूछ पाछ करते हो, कि थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में मुझे देखोगे। २० मैं तुम से सच सच कहता हूं; कि तुम रोओगे और विलाप करोगे, परन्तु संसार आनन्द करेगा: तुम्हें शोक होगा परन्तु तुम्हारा शोक आनन्द बन जाएगा। २१ जब स्त्री जनने लगती है तो उस को शोक होता है, क्योंकि उस की दुःख की घड़ी आ पहुंची, परन्तु जब वह बालक जन्म चुकी तो इस आनन्द से कि

* या कायल।

जगत में एक मनुष्य उत्पन्न हुआ, उस संकट को फिर स्मरण नहीं करती। २२ और तुम्हें भी अब तो शोक है, परन्तु मैं तुम से फिर मिलूंगा * और तुम्हारे मन में आनन्द होगा; और तुम्हारा आनन्द कोई तुम से छीन न लेगा। २३ उस दिन तुम मुझ से कुछ न पूछोगे: मैं तुम से सच सच कहता हूं, यदि पिता से कुछ मांगोगे, तो वह मेरे नाम से तुम्हें देगा। २४ अब तक तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा; मांगो तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए॥

२५ मैं ने ये बातें तुम से दृष्टान्तों में कही हैं, परन्तु वह समय आता है, कि मैं तुम से दृष्टान्तों में और फिर नहीं कहूंगा, परन्तु खोलकर तुम्हें पिता के विषय में बताऊंगा। २६ उस दिन तुम मेरे नाम से मांगोगे, और मैं तुम से यह नहीं कहता, कि मैं तुम्हारे लिये पिता से बिनती करूंगा। २७ क्योंकि पिता तो आप ही तुम से प्रीति रखता है, इसलिये कि तुम ने मुझ से प्रीति रखी है, और यह भी प्रतीति की है, कि मैं पिता की ओर से निकल आया। २८ मैं पिता से निकलकर जगत में आया हूं, फिर जगत को छोड़कर पिता के पास जाता हूं। २९ उसके चेलों ने कहा, देख, अब तो तू खोलकर कहता है, और कोई दृष्टान्त नहीं कहता। ३० अब हम जान गए, कि तू सब कुछ जानता है, और तुझे प्रयोजन नहीं, कि कोई तुझ से पूछे, इस से हम प्रतीति करते हैं, कि तू परमेश्वर से निकला है। ३१ यह सुन यीशु ने उन से कहा, क्या तुम अब प्रतीति करते हो? ३२ देखो, वह घड़ी आती है बरन आ पहुंची कि तुम सब तित्तर बित्तर होकर अपना अपना मार्ग लोगे, और मुझे अकेला छोड़ दोगे, तौभी मैं अकेला नहीं क्योंकि पिता मेरे साथ है। ३३ मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले; संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बांधो, मैं ने संसार को जीत लिया है॥

१७

यीशु ने ये बातें कहीं और अपनी आंखें आकाश की ओर उठाकर कहा, हे पिता, वह घड़ी आ पहुंची, अपने पुत्र की महिमा कर, कि पुत्र भी तेरी महिमा करे। २ क्योंकि तू ने उस को सब प्राणियों पर अधिकार दिया, कि जिन्हें तू ने उस को दिया है, उन सब को वह अनन्त जीवन दे। ३ और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जानें। ४ जो काम तू ने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके मैं ने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है। ५ और अब, हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत के होने से पहिले, मेरी तेरे साथ थी। ६ मैं ने तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रगट किया जिन्हें तू ने जगत में से मुझे दिया: वे तेरे थे और तू ने उन्हें मुझे दिया और उन्हों ने तेरे वचन को मान लिया है। ७ अब वे जान गए हैं, कि जो कुछ तू ने मुझे दिया है, सब तेरी ओर से है। ८ क्योंकि जो बातें तू ने मुझे पहुंचा दीं, मैं ने उन्हें उनको पहुंचा दिया और उन्हों ने उन को ग्रहण किया: और सच सच जान लिया है, कि मैं तेरी ओर से निकला हूं, और प्रतीति कर ली है कि तू ही ने मुझे भेजा। ९ मैं उन के लिये बिनती करता हूं, संसार के लिये बिनती नहीं करता हूं परन्तु उन्हीं के लिये जिन्हें तू ने मुझे दिया

* यू० तुम्हें फिर देखूंगा।

है, क्योंकि वे तेरे हैं। १० और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा है; और जो तेरा है, वह मेरा है; और इन से मेरी महिमा प्रगट हुई है। ११ मैं आगे को जगत में न रहूंगा, परन्तु ये जगत में रहेंगे, और मैं तेरे पास आता हूं; हे पवित्र पिता, अपने उस नाम से जो तू ने मुझे दिया है, उन की रक्षा कर, कि वे हमारी नाईं एक हों। १२ जब मैं उन के साथ था, तो मैं ने तेरे उस नाम से, जो तू ने मुझे दिया है, उन की रक्षा की, मैं ने उन की चौकसी की और विनाश के पुत्र को छोड़ उन में से कोई नाश न हुआ, इसलिये कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो। १३ परन्तु अब मैं तेरे पास आता हूं, और ये बातें जगत में कहता हूं, कि वे मेरा आनन्द अपने में पूरा पाएं। १४ मैं ने तेरा वचन उन्हें पहुंचा दिया है, और संसार ने उन से बैर किया, क्योंकि जैसा मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं। १५ मैं यह बिनती नहीं करता, कि तू उन्हें जगत से उठा ले, परन्तु यह कि तू उन्हें उस दुष्ट * से बचाए रख। १६ जैसे मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं। १७ सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है। १८ जैसे तू ने जगत में मुझे भेजा, वैसे ही मैं ने भी उन्हें जगत में भेजा। १९ और उन के लिये मैं अपने आप को पवित्र करता हूं ताकि वे भी सत्य के द्वारा पवित्र किए जाएं। २० मैं केवल इन्हीं के लिये बिनती नहीं करता, परन्तु उन के लिये भी जो इन के वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों। २१ जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हों, इसलिये कि जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा। २२ और वह महिमा जो तू ने मुझे दी, मैं ने उन्हें दी है कि वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं। २३ मैं उन में और तू मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएं, और जगत जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही उन से प्रेम रखा। २४ हे पिता, मैं चाहता हूं कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है, जहां मैं हूं, वहां वे भी मेरे साथ हों कि वे मेरी उस महिमा को देखें जो तू ने मुझे दी है, क्योंकि तू ने जगत की उत्पत्ति से पहिले मुझ से प्रेम रखा। २५ हे धार्मिक पिता, संसार ने मुझे नहीं जाना, परन्तु मैं ने तुझे जाना और इन्हों ने भी जाना कि तू ही ने मुझे भेजा। २६ और मैं ने तेरा नाम उन को बताया और बताता रहूंगा कि जो प्रेम तुझ को मुझ से था, वह उन में रहे और मैं उन में रहूं॥

१८ यीशु ये बातें कहकर अपने चेलों के साथ किद्रोन के नाले के पार गया, वहां एक बारी थी, जिस में वह और उसके चेले गए। २ और उसका पकड़वानेवाला यहूदा भी वह जगह जानता था, क्योंकि यीशु अपने चेलों के साथ वहां जाया करता था। ३ तब यहूदा पलटन को और महायाजकों और फरीसियों की ओर से प्यादों को लेकर दीपकों और मशालों और हथियारों को लिए हुए वहां आया। ४ तब यीशु उन सब बातों को जो उस पर आनेवाली थीं, जानकर निकला, और उन से कहने लगा, किसे ढूंढ़ते हो? ५ उन्हों ने उस को उत्तर दिया, यीशु नासरी को: यीशु ने उन से कहा, मैं ही हूं: और उसका पकड़वानेवाला यहूदा भी उन के साथ खड़ा

* या बुराई।

था। ६ उसके यह कहने ही, कि मैं हूं, वे पीछे हटकर भूमि पर गिर पड़े। ७ तब उस ने फिर उन से पूछा, तुम किस को ढूंढ़ते हो। ८ वे बोले, यीशु नासरी को। यीशु ने उत्तर दिया, मैं तो तुम से कह चुका हूं कि मैं ही हूं, यदि मुझे ढूंढ़ते हो तो इन्हें जाने दो। ९ यह इसलिये हुआ, कि वह वचन पूरा हो, जो उस ने कहा था कि जिन्हें तू ने मुझे दिया, उन में से मैं ने एक को भी न खोया। १० शमौन पतरस ने तलवार, जो उसके पास थी, खींची और महायाजक के दास पर चलाकर, उसका दहिना कान उड़ा दिया, उस दास का नाम मलखुस था। ११ तब यीशु ने पतरस से कहा, अपनी तलवार काठी में रख: जो कटोरा पिता ने मुझे दिया है क्या मैं उसे न पीऊं?

१२ तब सिपाहियों और उन के सूबेदार और यहूदियों के प्यादों ने यीशु को पकड़कर बान्ध लिया। १३ और पहिले उसे हन्ना के पास ले गए क्योंकि वह उस वर्ष के महायाजक काइफा का ससुर था। १४ यह वही काइफा था, जिस ने यहूदियों को सलाह दी थी कि हमारे लोगों के लिये एक पुरुष का मरना अच्छा है॥

१५ शमौन पतरस और एक और चेला भी यीशु के पीछे हो लिए: यह चेला महायाजक का जाना पहचाना था और यीशु के साथ महायाजक के आंगन में गया। १६ परन्तु पतरस बाहर द्वार पर खड़ा रहा, तब वह दूसरा चेला जो महायाजक का जाना पहचाना था, बाहर निकला, और द्वारपालिन से कहकर, पतरस को भीतर ले आया। १७ उस दासी ने जो द्वारपालिन थी, पतरस से कहा, क्या तू भी इस मनुष्य के चेलों में से है? उस ने कहा, मैं नहीं हूं। १८ दास और प्यादे जाड़े के कारण कोएले धधकाकर खड़े ताप रहे थे और पतरस भी उन के साथ खड़ा ताप रहा था॥

१९ तब महायाजक ने यीशु से उसके चेलों के विषय में और उसके उपदेश के विषय में पूछा। २० यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि मैं ने जगत से खोलकर बातें कीं; मैं ने सभाओं और आराधनालय में जहां सब यहूदी इकट्ठे हुआ करते हैं सदा उपदेश किया और गुप्त में कुछ भी नहीं कहा। २१ तू मुझ से क्यों पूछता है? सुननेवालों से पूछ: कि मैं ने उन से क्या कहा? देख, वे जानते हैं; कि मैं ने क्या क्या कहा? २२ जब उस ने यह कहा, तो प्यादों में से एक ने जो पास खड़ा था, यीशु को थप्पड़ मारकर कहा, क्या तू महायाजक को इस प्रकार उत्तर देता है। २३ यीशु ने उसे उत्तर दिया, यदि मैं ने बुरा कहा, तो उस बुराई पर गवाही दे; परन्तु यदि भला कहा, तो मुझे क्यों मारता है? २४ हन्ना ने उसे बन्धे हुए काइफा महायाजक के पास भेज दिया॥

२५ शमौन पतरस खड़ा हुआ ताप रहा था। तब उन्हों ने उस से कहा; क्या तू भी उसके चेलों में से है? उस ने इन्कार करके कहा, मैं नहीं हूं। २६ महायाजक के दासों में से एक जो उसके कुटुम्ब में से था, जिसका कान पतरस ने काट डाला था, बोला, क्या मैं ने तुझे उसके साथ बारी में न देखा था? २७ पतरस फिर इन्कार कर गया और तुरन्त मुर्ग ने बांग दी॥

२८ और वे यीशु को काइफा के पास से किले को ले गए और भोर का समय था, परन्तु वे आप किले के भीतर न गए ताकि अशुद्ध न हों परन्तु फसह खा सकें। २९ तब पीलातुस उन के पास बाहर निकल आया

और कहा, तुम इस मनुष्य पर किस बात की नालिश करते हो? ३० उन्हों ने उस को उत्तर दिया, कि यदि वह कुकर्मी न होता तो हम उसे तेरे हाथ न सौंपते। ३१ पीलातुस ने उन से कहा, तुम ही इसे ले जाकर अपनी व्यवस्था के अनुसार उसका न्याय करो: यहूदियों ने उस से कहा, हमें अधिकार नहीं कि किसी का प्राण लें। ३२ यह इसलिये हुआ, कि यीशु की वह बात पूरी हो जो उस ने यह पता देते हुए कही थी, कि उसका मरना कैसा होगा॥

३३ तब पीलातुस फिर किले के भीतर गया और यीशु को बुलाकर, उस से पूछा, क्या तू यहूदियों का राजा है? ३४ यीशु ने उत्तर दिया, क्या तू यह बात अपनी ओर से कहता है या औरों ने मेरे विषय में तुझ से कही? ३५ पीलातुस ने उत्तर दिया, क्या मैं यहूदी हूं? तेरी ही जाति और महायाजकों ने तुझे मेरे हाथ सौंपा, तू ने क्या किया है? ३६ यीशु ने उत्तर दिया, कि मेरा राज्य इस जगत का नहीं, यदि मेरा राज्य इस जगत का होता, तो मेरे सेवक लड़ते, कि मैं यहूदियों के हाथ सौंपा न जाता: परन्तु अब मेरा राज्य यहां का नहीं। ३७ पीलातुस ने उस से कहा, तो क्या तू राजा है? यीशु ने उत्तर दिया, कि तू कहता है, क्योंकि मैं राजा हूं; मैं ने इसलिये जन्म लिया, और इसलिये जगत में आया हूं कि सत्य पर गवाही दूं जो कोई सत्य का है, वह मेरा शब्द सुनता है। ३८ पीलातुस ने उस से कहा, सत्य क्या है?

और यह कहकर वह फिर यहूदियों के पास निकल गया और उन से कहा, मैं तो उस में कुछ दोष नहीं पाता। ३९ पर तुम्हारी यह रीति है कि मैं फसह में तुम्हारे लिये एक व्यक्ति को छोड़ दूं सो क्या तुम चाहते हो, कि मैं तुम्हारे लिये यहूदियों के राजा को छोड़ दूं? ४० तब उन्हों ने फिर चिल्लाकर कहा, इसे नहीं परन्तु हमारे लिये बरअब्बा को छोड़ दे; और बरअब्बा डाकू था॥

१९

इस पर पीलातुस ने यीशु को लेकर कोड़े लगवाए। २ और सिपाहियों ने कांटों का मुकुट गूंथकर उसके सिर पर रखा, और उसे बैंजनी वस्त्र पहिनाया। ३ और उसके पास आ आकर कहने लगे, हे यहूदियों के राजा, प्रणाम! और उसे थप्पड़ भी मारे। ४ तब पीलातुस ने फिर बाहर निकलकर लोगों से कहा, देखो, मैं उसे तुम्हारे पास फिर बाहर लाता हूं; ताकि तुम जानो कि मैं कुछ भी दोष नहीं पाता। ५ तब यीशु कांटों का मुकुट और बैंजनी वस्त्र पहिने हुए बाहर निकला और पीलातुस ने उन से कहा, देखो, यह पुरुष। ६ जब महायाजकों और प्यादों ने उसे देखा, तो चिल्लाकर कहा, कि उसे क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर: पीलातुस ने उन से कहा, तुम ही उसे लेकर क्रूस पर चढ़ाओ; क्योंकि मैं उस में दोष नहीं पाता। ७ यहूदियों ने उस को उत्तर दिया, कि हमारी भी व्यवस्था है और उस व्यवस्था के अनुसार वह मारे जाने के योग्य है क्योंकि उस ने अपने आप को परमेश्वर का पुत्र बनाया। ८ जब पीलातुस ने यह बात सुनी तो और भी डर गया। ९ और फिर किले के भीतर गया और यीशु से कहा, तू कहां का है? परन्तु यीशु ने उसे कुछ भी उत्तर न दिया। १० पीलातुस ने उस से कहा, मुझ से क्यों नहीं बोलता? क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने का अधिकार मुझे है और तुझे

क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है। ११ यीशु ने उत्तर दिया, कि यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता; इसलिये जिस ने मुझे तेरे हाथ पकड़वाया है, उसका पाप अधिक है। १२ इस से पीलातुस ने उसे छोड़ देना चाहा, परन्तु यहूदियों ने चिल्ला चिल्लाकर कहा, यदि तू इस को छोड़ देगा तो तेरी भक्ति कैसर की ओर नहीं; जो कोई अपने आप को राजा बनाता है वह कैसर का साम्हना करता है। १३ ये बातें सुनकर पीलातुस यीशु को बाहर लाया और उस जगह एक चबूतरा था जो इब्रानी में गब्बता कहलाता है, और न्याय-आसन पर बैठा। १४ यह फसह की तैयारी का दिन था और छठे घंटे के लगभग था : तब उस ने यहूदियों से कहा, देखो, यही है, तुम्हारा राजा! १५ परन्तु वे चिल्लाए, कि ले जा! ले जा! उसे क्रूस पर चढ़ा : पीलातुस ने उन से कहा, क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊं? महायाजकों ने उत्तर दिया, कि कैसर को छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं। १६ तब उस ने उसे उन के हाथ सौंप दिया ताकि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए॥

१७ तब वे यीशु को ले गए। और वह अपना क्रूस उठाए हुए उस स्थान तक बाहर गया, जो खोपड़ी का स्थान कहलाता है और इब्रानी में गुलगुता। १८ वहां उन्हों ने उसे और उसके साथ और दो मनुष्यों को क्रूस पर चढ़ाया, एक को इधर और एक को उधर, और बीच में यीशु को। १९ और पीलातुस ने एक दोष-पत्र लिखकर क्रूस पर लगा दिया और उस में यह लिखा हुआ था, **यीशु नासरी यहूदियों का राजा।** २० यह दोष-पत्र बहुत यहूदियों ने पढ़ा क्योंकि वह स्थान जहां यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया था नगर के पास था और पत्र इब्रानी और लतीनी और यूनानी में लिखा हुआ था। २१ तब यहूदियों के महायाजकों ने पीलातुस से कहा, यहूदियों का राजा मत लिख परन्तु यह कि "उस ने कहा, मैं यहूदियों का राजा हूं"। २२ पीलातुस ने उत्तर दिया, कि मैं ने जो लिख दिया, वह लिख दिया॥

२३ जब सिपाही यीशु को क्रूस पर चढ़ा चुके, तो उसके कपड़े लेकर चार भाग किए, हर सिपाही के लिये एक भाग और कुरता भी लिया, परन्तु कुरता बिन सीअन ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था : इसलिये उन्हों ने आपस में कहा, हम इस को न फाड़ें, परन्तु इस पर चिट्ठी डालें कि वह किस का होगा। २४ यह इसलिये हुआ, कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो कि उन्हों ने मेरे कपड़े आपस में बांट लिए और मेरे वस्त्र पर चिट्ठी डाली : सो सिपाहियों ने ऐसा ही किया। २५ परन्तु यीशु के क्रूस के पास उस की माता और उस की माता की बहिन मरियम, क्लोपास की पत्नी और मरियम मगदलीनी खड़ी थी। २६ यीशु ने अपनी माता और उस चेले को जिस से वह प्रेम रखता था, पास खड़े देखकर अपनी माता से कहा; हे नारी *, देख, यह तेरा पुत्र है। २७ तब उस चेले से कहा, यह तेरी माता है, और उसी समय से वह चेला, उसे अपने घर ले गया॥

२८ इस के बाद यीशु ने यह जानकर कि अब सब कुछ हो चुका; इसलिये कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो कहा, मैं पियासा हूं। २९ वहां एक सिरके से भरा

* या महिला।

हुआ बर्तन धरा था, सो उन्हों ने सिरके में भिगोए हुए इस्पंज को जूफे पर रखकर उसके मुंह से लगाया। ३० जब यीशु ने वह सिरका लिया, तो कहा, पूरा हुआ और सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए॥

३१ और इसलिये कि वह तैयारी का दिन था, यहूदियों ने पीलातुस से बिनती की कि उन की टांगें तोड़ दी जाएं और वे उतारे जाएं ताकि सब्त के दिन वे क्रूसों पर न रहें, क्योंकि वह सब्त का दिन बड़ा दिन था। ३२ सो सिपाहियों ने आकर पहिले की टांगें तोड़ीं तब दूसरे की भी, जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे। ३३ परन्तु जब यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुका है, तो उस की टांगें न तोड़ीं। ३४ परन्तु सिपाहियों में से एक ने बरछे से उसका पंजर बेधा और उस में से तुरन्त लोहू और पानी निकला। ३५ जिस ने यह देखा, उसी ने गवाही दी है, और उस की गवाही सच्ची है; और वह जानता है, कि सच कहता है कि तुम भी विश्वास करो। ३६ ये बातें इसलिये हुईं कि पवित्र शास्त्र की यह बात पूरी हो कि उस की कोई हड्डी तोड़ी न जाएगी। ३७ फिर एक और स्थान पर यह लिखा है, कि जिसे उन्हों ने बेधा है, उस पर दृष्टि करेंगे॥

३८ इन बातों के बाद अरमतियाह के यूसुफ ने, जो यीशु का चेला था, (परन्तु यहूदियों के डर से इस बात को छिपाए रखता था), पीलातुस से बिनती की, कि मैं यीशु की लोथ को ले जाऊं, और पीलातुस ने उस की बिनती सुनी, और वह आकर उस की लोथ ले गया। ३९ निकुदेमुस भी जो पहिले यीशु के पास रात को गया था पचास सेर के लगभग मिला हुआ गन्धरस और एलवा ले आया। ४० तब उन्हों ने यीशु की लोथ को लिया और यहूदियों के गाड़ने की रीति के अनुसार उसे सुगन्ध द्रव्य के साथ कफन में लपेटा। ४१ उस स्थान पर जहां यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया था, एक बारी थी; और उस बारी में एक नई कब्र थी; जिस में कभी कोई न रखा गया था। ४२ सो यहूदियों की तैयारी के दिन के कारण, उन्हों ने यीशु को उसी में रखा, क्योंकि वह कब्र निकट थी॥

२० सप्ताह के पहिले दिन मरियम मगदलीनी भोर को अंधेरा रहते ही कब्र पर आई, और पत्थर को कब्र से हटा हुआ देखा। २ तब वह दौड़ी और शमौन पतरस और उस दूसरे चेले के पास जिस से यीशु प्रेम रखता था आकर कहा, वे प्रभु को कब्र में से निकाल ले गए हैं; और हम नहीं जानतीं, कि उसे कहां रख दिया है। ३ तब पतरस और वह दूसरा चेला निकलकर कब्र की ओर चले। ४ और दोनों साथ साथ दौड़ रहे थे, परन्तु दूसरा चेला पतरस से आगे बढ़कर कब्र पर पहिले पहुंचा। ५ और झुककर कपड़े पड़े देखे: तौभी वह भीतर न गया। ६ तब शमौन पतरस उसके पीछे पीछे पहुंचा और कब्र के भीतर गया और कपड़े पड़े देखे। ७ और वह अंगोछा जो उसके सिर से बन्धा हुआ था, कपड़ों के साथ पड़ा हुआ नहीं परन्तु अलग एक जगह लपेटा हुआ देखा। ८ तब दूसरा चेला भी जो कब्र पर पहिले पहुंचा था, भीतर गया और देखकर विश्वास किया। ९ वे तो अब तक पवित्र शास्त्र की वह बात न समझते थे, कि उसे मरे हुओं में से जी उठना होगा। १० तब ये चेले अपने घर लौट गए॥

११ परन्तु मरियम रोती हुई कब्र के पास ही बाहर खड़ी रही और रोते रोते कब्र की ओर झुककर, १२ दो स्वर्गदूतों को उज्ज्वल कपड़े पहिने हुए एक को सिरहाने और दूसरे को पैताने बैठे देखा, जहां यीशु की लोथ पड़ी थी। १३ उन्हों ने उस से कहा, हे नारी, तू क्यों रोती है? उस ने उन से कहा, वे मेरे प्रभु को उठा ले गए और मैं नहीं जानती कि उसे कहां रखा है। १४ यह कहकर वह पीछे फिरी और यीशु को खड़े देखा और न पहचाना कि यह यीशु है। १५ यीशु ने उस से कहा, हे नारी, तू क्यों रोती है? किस को ढूंढ़ती है? उस ने माली समझकर उस से कहा, हे महाराज, यदि तू ने उसे उठा लिया है तो मुझ से कह कि उसे कहां रखा है और मैं उसे ले जाऊंगी। १६ यीशु ने उस से कहा, मरियम! उस ने पीछे फिरकर उस से इब्रानी में कहा, रब्बूनी अर्थात् हे गुरु। १७ यीशु ने उस से कहा, मुझे मत छू* क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया, परन्तु मेरे भाइयों के पास जाकर उन से कह दे, कि मैं अपने पिता, और तुम्हारे पिता, और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूं। १८ मरियम मगदलीनी ने जाकर चेलों को बताया, कि मैं ने प्रभु को देखा और उस ने मुझ से ये बातें कहीं॥

१९ उसी दिन जो सप्ताह का पहिला दिन था, सन्ध्या के समय जब वहां के द्वार जहां चेले थे, यहूदियों के डर के मारे बन्द थे, तब यीशु आया और बीच में खड़ा होकर उन से कहा, तुम्हें शान्ति मिले। २० और यह कहकर उस ने अपना हाथ और अपना पंजर उन को दिखाए: तब चेले प्रभु को देखकर आनन्दित हुए। २१ यीशु ने फिर उन से कहा, तुम्हें शान्ति मिले; जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूं। २२ यह कहकर उस ने उन पर फूंका और उन से कहा, पवित्र आत्मा लो। २३ जिन के पाप तुम क्षमा करो वे उन के लिये क्षमा किए गए हैं जिन के तुम रखो, वे रखे गए हैं॥

२४ परन्तु बारहों में से एक व्यक्ति अर्थात् थोमा जो दिदुमुस* कहलाता है, जब यीशु आया तो उन के साथ न था। २५ जब और चेले उस से कहने लगे कि हम ने प्रभु को देखा है: तब उस ने उन से कहा, जब तक मैं उस के हाथों में कीलों के छेद न देख लूं, और किलों के छेदों में अपनी उंगली न डाल लूं और उसके पंजर में अपना हाथ न डाल लूं, तब तक मैं प्रतीति नहीं करूंगा॥

२६ आठ दिन के बाद उस के चेले फिर घर के भीतर थे, और थोमा उन के साथ था, और द्वार बन्द थे, तब यीशु ने आकर और बीच में खड़ा होकर कहा, तुम्हें शान्ति मिले। २७ तब उस ने थोमा से कहा, अपनी उंगली यहां लाकर मेरे हाथों को देख और अपना हाथ लाकर मेरे पंजर में डाल और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो। २८ यह सुन थोमा ने उत्तर दिया, हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर! २९ यीशु ने उस से कहा, तू ने तो मुझे देखकर विश्वास किया है, धन्य वे हैं जिन्हों ने बिना देखे विश्वास किया॥

३० यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों के साम्हने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे

* या मत पकड़े रह।

* या त्वाम या जुड़वां।

नहीं गए। ३१ परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ॥

२१ इन बातों के बाद यीशु ने अपने आप को तिबिरियास झील के किनारे चेलों पर प्रगट किया और इस रीति से प्रगट किया। २ शमौन पतरस और थोमा जो दिदुमुस कहलाता है, और गलील के काना नगर का नतनएल और जब्दी के पुत्र, और उसके चेलों में से दो और जन इकट्ठे थे। ३ शमौन पतरस ने उन से कहा, मैं मछली पकड़ने को जाता हूं: उन्हों ने उस से कहा, हम भी तेरे साथ चलते हैं: सो वे निकलकर नाव पर चढ़े, परन्तु उस रात कुछ न पकड़ा। ४ भोर होते ही यीशु किनारे पर खड़ा हुआ; तौभी चेलों ने न पहचाना कि यह यीशु है। ५ तब यीशु ने उन से कहा, हे बालको, क्या तुम्हारे पास कुछ खाने को है? उन्हों ने उत्तर दिया कि नहीं। ६ उस ने उन से कहा, नाव की दहिनी ओर जाल डालो, तो पाओगे, तब उन्हों ने जाल डाला, और अब मछलियों की बहुतायत के कारण उसे खींच न सके। ७ इसलिये उस चेले ने जिस से यीशु प्रेम रखता था पतरस से कहा, यह तो प्रभु है: शमौन पतरस ने यह सुनकर कि प्रभु है, कमर में अंगरखा कस लिया, क्योंकि वह नंगा था, और झील में कूद पड़ा। ८ परन्तु और चेले डोंगी पर मछलियों से भरा हुआ जाल खींचते हुए आए, क्योंकि वे किनारे से अधिक दूर नहीं, कोई दो सौ हाथ पर थे। ९ जब किनारे पर उतरे, तो उन्हों ने कोएले की आग, और उस पर मछली रखी हुई, और रोटी देखी। १० यीशु ने उन से कहा, जो मछलियां तुम ने अभी पकड़ी हैं, उन में से कुछ लाओ। ११ शमौन पतरस ने डोंगी पर चढ़कर एक सौ तिर्पन बड़ी मछलियों से भरा हुआ जाल किनारे पर खींचा, और इतनी मछलियां होने से भी जाल न फटा। १२ यीशु ने उन से कहा, कि आओ, भोजन करो और चेलों में से किसी को हियाव न हुआ, कि उस से पूछे, कि तू कौन है? क्योंकि वे जानते थे, कि हो न हो यह प्रभु ही है। १३ यीशु आया, और रोटी लेकर उन्हें दी, और वैसे ही मछली भी। १४ यह तीसरी बार है, कि यीशु ने मरे हुओं में से जी उठने के बाद चेलों को दर्शन दिए॥

१५ भोजन करने के बाद यीशु ने शमौन पतरस से कहा, हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू इन से बढ़कर मुझ से प्रेम रखता है? उस ने उस से कहा, हां, प्रभु, तू तो जानता है, कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूं: उस ने उस से कहा, मेरे मेमनों को चरा। १६ उस ने फिर दूसरी बार उस से कहा, हे शमौन यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझ से प्रेम रखता है? उस ने उन से कहा, हां, प्रभु तू जानता है, कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूं: उस ने उस से कहा, मेरी भेड़ों की रखवाली कर। १७ उस ने तीसरी बार उस से कहा, हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझ से प्रीति रखता है? पतरस उदास हुआ, कि उस ने उसे तीसरी बार ऐसा कहा; कि क्या तू मुझ से प्रीति रखता है? और उस से कहा, हे प्रभु, तू तो सब कुछ जानता है: तू यह जानता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूं: यीशु ने उस से कहा, मेरी भेड़ों को चरा। १८ मैं तुझ से सच सच कहता हूं, जब तू जवान था, तो अपनी कमर

बान्धकर जहां चाहता था, वहां फिरता था; परन्तु जब तू बूढ़ा होगा, तो अपने हाथ लम्बे करेगा, और दूसरा तेरी कमर बान्धकर जहां तू न चाहेगा वहां तुझे ले जाएगा। १९ उस ने इन बातों से पता दिया कि पतरस कैसी मृत्यु से परमेश्वर की महिमा करेगा; और यह कहकर, उस से कहा, मेरे पीछे हो ले। २० पतरस ने फिरकर उस चेले को पीछे आते देखा, जिस से यीशु प्रेम रखता था, और जिस ने भोजन के समय उस की छाती की ओर झुककर पूछा, हे प्रभु, तेरा पकड़वानेवाला कौन है? २१ उसे देखकर पतरस ने यीशु से कहा, हे प्रभु, इस का क्या हाल होगा? २२ यीशु न उस से कहा, यदि मैं चाहूं कि वह मेरे आने तक ठहरा रहे, तो तुझे क्या? तू मेरे पीछे हो ले। २३ इसलिये भाइयों में यह बात फैल गई, कि वह चेला न मरेगा; तौभी यीशु ने उस से यह नहीं कहा, कि यह न मरेगा, परन्तु यह कि यदि मैं चाहूं कि यह मेरे आने तक ठहरा रहे, तो तुझे इस से क्या?

२४ यह वही चेला है, जो इन बातों की गवाही देता है और जिस ने इन बातों को लिखा है और हम जानते हैं, कि उस की गवाही सच्ची है॥

२५ और भी बहुत से काम हैं, जो यीशु ने किए; यदि वे एक एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूं, कि पुस्तकें जो लिखी जातीं वे जगत में भी न समातीं॥

प्रेरितों के कामों का वर्णन

१ हे थियुफिलुस, मैं ने पहिली पुस्तिका उन सब बातों के विषय में लिखी, जो यीशु ने आरम्भ में किया और करता और सिखाता रहा। २ उस दिन तक जब वह उन प्रेरितों को जिन्हें उस ने चुना था, पवित्र आत्मा के द्वारा आज्ञा देकर ऊपर उठाया न गया। ३ और उस ने दुःख उठाने के बाद बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आप को उन्हें जीवित दिखाया, और चालीस दिन तक वह उन्हें दिखाई देता रहा: और परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा। ४ और उन से मिलकर उन्हें आज्ञा दी, कि यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो, जिस की चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो। ५ क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्रात्मा से * बपतिस्मा पाओगे॥

६ सो उन्हों ने इकट्ठे होकर उस से पूछा, कि हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्राएल को राज्य फेर देगा? ७ उस ने उन से कहा; उन समयों या कालों को जानना, जिन को पिता ने अपने ही अधिकार में रखा है, तुम्हारा काम नहीं। ८ परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और

* यू० में।

यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे। ६ यह कहकर वह उन के देखते देखते ऊपर उठा लिया गया; और बादल ने उसे उन की आंखों से छिपा लिया। १० और उसके जाते समय जब वे आकाश की ओर ताक रहे थे, तो देखो, दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहिने हुए उन के पास आ खड़े हुए। ११ और कहने लगे; हे गलीली पुरुषो, तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा॥

१२ तब वे जैतून नाम के पहाड़ से जो यरूशलेम के निकट एक सब्त के दिन की दूरी पर है, यरूशलेम को लौटे। १३ और जब वहां पहुंचे तो वे उस अटारी पर गए, जहां पतरस और यूहन्ना और याकूब और अन्द्रियास और फिलिप्पुस और थोमा और बरतुलमाई और मत्ती और हलफई का पुत्र याकूब और शमौन जेलोतेस और याकूब का पुत्र* यहूदा रहते थे। १४ ये सब कई स्त्रियों और यीशु की माता मरियम और उसके भाइयों के साथ एक चित्त होकर प्रार्थना में लगे रहे॥

१५ और उन्हीं दिनों में पतरस भाइयों के बीच में जो एक सौ बीस व्यक्ति के लगभग इकट्ठे थे, खड़ा होकर कहने लगा। १६ हे भाइयो, अवश्य था कि पवित्र शास्त्र का वह लेख पूरा हो, जो पवित्र आत्मा ने दाऊद के मुख से यहूदा के विषय में जो यीशु के पकड़नेवालों का अगुवा था, पहिले से कही थी। १७ क्योंकि वह तो हम में गिना गया, और इस सेवकाई में सहभागी हुआ। १८ (उस ने अधर्म की कमाई से एक खेत मोल लिया; और सिर के बल गिरा, और उसका पेट फट गया, और उस की सब अन्तड़ियां निकल पड़ीं। १९ और इस बात को यरूशलेम के सब रहनेवाले जान गए, यहां तक कि उस खेत का नाम उन की भाषा में हकलदमा अर्थात् लोहू का खेत पड़ गया।) २० क्योंकि भजन संहिता में लिखा है, कि उसका घर उजड़ जाए, और उस में कोई न बसे और उसका पद कोई दूसरा ले ले। २१ इसलिये जितने दिन तक प्रभु यीशु हमारे साथ आता जाता रहा, अर्थात् यूहन्ना के बपतिस्मा से लेकर उसके हमारे पास से उठाए जाने तक, जो लोग बराबर हमारे साथ रहे। २२ उचित है कि उन में से एक व्यक्ति हमारे साथ उसके जी उठने का गवाह हो जाए। २३ तब उन्हों ने दो को खड़ा किया, एक यूसुफ को, जो बर-सबा कहलाता है, जिस का उपनाम यूसतुस है, दूसरा मत्तिय्याह को। २४ और यह कहकर प्रार्थना की; कि हे प्रभु, तू जो सब के मन जानता है, यह प्रगट कर कि इन दोनों में से तू ने किस को चुना है। २५ कि वह इस सेवकाई और प्रेरिताई का पद ले जिसे यहूदा छोड़ कर अपने स्थान को गया। २६ तब उन्हों ने उन के बारे में चिट्ठियां डालीं, और चिट्ठी मत्तिय्याह के नाम पर निकली, सो वह उन ग्यारह प्रेरितों के साथ गिना गया॥

* या भाई।

२ जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। २ और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उस से सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया। ३ और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं; और उन में से हर एक पर आ ठहरीं। ४ और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे ॥

५ और आकाश के नीचे की हर एक जाति में से भक्त यहूदी यरूशलेम में रहते थे। ६ जब वह शब्द हुआ तो भीड़ लग गई और लोग घबरा गए, क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था, कि ये मेरी ही भाषा में बोल रहे हैं। ७ और वे सब चकित और अचम्भित होकर कहने लगे; देखो, ये जो बोल रहे हैं क्या सब गलीली नहीं? ८ तो फिर क्यों हम में से हर एक अपनी अपनी जन्म भूमि की भाषा सुनता है? ९ हम जो पारथी और मेदी और एलामी लोग और मिसुपुतामिया और यहूदिया और कप्पदूकिया और पुन्तुस और आसिया। १० और फ्रूगिया और पमफूलिया और मिसर और लिबूआ देश जो कुरेने के आस पास है, इन सब देशों के रहनेवाले और रोमी प्रवासी, क्या यहूदी क्या यहूदी मत धारण करनेवाले, क्रेती और अरबी भी हैं। ११ परन्तु अपनी अपनी भाषा में उन से परमेश्वर के बड़े बड़े कामों की चर्चा सुनते हैं। १२ और वे सब चकित हुए, और घबराकर एक दूसरे से कहने लगे कि यह क्या हुआ चाहता है? १३ परन्तु औरों ने ठट्ठा करके कहा, कि वे तो नई मदिरा के नशे में हैं ॥

१४ पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और ऊंचे शब्द से कहने लगा, कि हे यहूदियो, और हे यरूशलेम के सब रहनेवालो, यह जान लो और कान लगाकर मेरी बातें सुनो। १५ जैसा तुम समझ रहे हो, ये नशे में नहीं, क्योंकि अभी तो पहर ही दिन चढ़ा है। १६ परन्तु यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई है। १७ कि परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा* और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे। १८ बरन मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उंडेलूंगा,* और वे भविष्यद्वाणी करेंगे। १९ और मैं ऊपर आकाश में अद्भुत काम, और नीचे धरती पर चिन्ह, अर्थात् लोहू, और आग और धूंए का बादल दिखाऊंगा। २० प्रभु के महान और प्रसिद्ध दिन के आने से पहिले सूर्य अंधेरा और चान्द लोहू हो जाएगा। २१ और जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वही उद्धार पाएगा। २२ हे इस्राएलियो, ये बातें सुनो: कि यीशु नासरी एक मनुष्य था जिस का परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखलाए जिसे तुम आप ही जानते

* या बहाऊंगा।

हो। २३ उसी को, जब वह परमेश्वर की ठहराई हुई मनसा और होनहार के ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो तुम ने अधर्मियों के हाथ से उसे क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला। २४ परन्तु उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों* से छुड़ाकर जिलाया: क्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता। २५ क्योंकि दाऊद उसके विषय में कहता है, कि मैं प्रभु को सर्वदा अपने साम्हने देखता रहा क्योंकि वह मेरी दहिनी ओर है, ताकि मैं डिग न जाऊं। २६ इसी कारण मेरा मन आनन्द हुआ, और मेरी जीभ मगन हुई; बरन मेरा शरीर भी आशा में बसा रहेगा। २७ क्योंकि तू मेरे प्राणों को अधोलोक में न छोड़ेगा; और न अपने पवित्र जन को सड़ने ही देगा! २८ तू ने मुझे जीवन का मार्ग बताया है; तू मुझे अपने दर्शन के द्वारा आनन्द से भर देगा। २९ हे भाइयो, मैं उस कुलपति दाऊद के विषय में तुम से साहस के साथ कह सकता हूं कि वह तो मर गया और गाड़ा भी गया और उस की कब्र आज तक हमारे यहां वर्तमान है। ३० सो भविष्यद्वक्ता होकर और यह जानकर कि परमेश्वर ने मुझ से शपथ खाई है, कि मैं तेरे वंश में से एक व्यक्ति को तेरे सिंहासन पर बैठाऊंगा। ३१ उस ने होनहार को पहिले ही से देखकर मसीह के जी उठने के विषय में भविष्यद्वाणी की कि न तो उसका प्राण अधोलोक में छोड़ा गया, और न उस की देह सड़ने पाई। ३२ इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिस के हम सब गवाह हैं। ३३ इस प्रकार परमेश्वर के दहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिस की प्रतिज्ञा की गई थी, उस ने यह उंडेल* दिया है जो तुम देखते और सुनते हो। ३४ क्योंकि दाऊद तो स्वर्ग पर नहीं चढ़ा; परन्तु वह आप कहता है, कि प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा; ३५ मेरे दहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों तले की चौकी न कर दूं। ३६ सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी॥

३७ तब सुननेवालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, कि हे भाइयो, हम क्या करें? ३८ पतरस ने उन से कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। ३९ क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर दूर के लोगों के लिये भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा। ४० उस ने बहुत और बातों से भी गवाही दे देकर समझाया कि अपने आप को इस टेढ़ी जाति† से बचाओ। ४१ सो जिन्हों ने उसका वचन ग्रहण किया उन्हों ने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हजार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए। ४२ और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और

* यू० की पीड़ाओं।

* या बहा।

† यू० पीढ़ी।

संगति रखने में और रोटी तोड़ने* में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे ॥

४३ और सब लोगों पर भय छा गया, और बहुत से अद्भुत काम और चिन्ह प्रेरितों के द्वारा प्रगट होते थे। ४४ और वे सब विश्वास करनेवाले इकट्ठे रहते थे, और उन की सब वस्तुएं साझे की थीं। ४५ और वे अपनी अपनी सम्पत्ति और सामान बेच बेचकर जैसी जिस की आवश्यकता होती थी बांट दिया करते थे। ४६ और वे प्रति दिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और घर घर रोटी तोड़ते* हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे। ४७ और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उन से प्रसन्न थे: और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रति दिन उन में मिला देता था ॥

३ पतरस और यूहन्ना तीसरे पहर प्रार्थना के समय मन्दिर में जा रहे थे। २ और लोग एक जन्म के लंगड़े को ला रहे थे, जिस को वे प्रति दिन मन्दिर के उस द्वार पर जो सुन्दर कहलाता है, बैठा देते थे, कि वह मन्दिर में जाने-वालों से भीख मांगे। ३ जब उस ने पतरस और यूहन्ना को मन्दिर में जाते देखा, तो उन से भीख मांगी। ४ पतरस ने यूहन्ना के साथ उस की ओर ध्यान से देखकर कहा, हमारी ओर देख। ५ सो वह उन से कुछ पाने की आशा रखते हुए उन की ओर ताकने लगा। ६ तब पतरस ने कहा, चान्दी और सोना तो मेरे पास है नहीं; परन्तु जो मेरे पास है, वह तुझे देता हूं: यीशु मसीह नासरी के नाम से चल फिर। ७ और उस ने उसका दहिना हाथ पकड़ के उसे उठाया: और तुरन्त उसके पांवों और टखनों में बल आ गया। ८ और वह उछलकर खड़ा हो गया, और चलने फिरने लगा और चलता; और कूदता, और परमेश्वर की स्तुति करता हुआ उन के साथ मन्दिर में गया। ९ सब लोगों ने उसे चलते फिरते और परमेश्वर की स्तुति करते देखकर। १० उस को पहचान लिया कि यह वही है, जो मन्दिर के सुन्दर फाटक पर बैठ कर भीख मांगा करता था; और उस घटना से जो उसके साथ हुई थी; वे बहुत अचम्भित और चकित हुए ॥

११ जब वह पतरस और यूहन्ना को पकड़े हुए था, तो सब लोग बहुत अचम्भा करते हुए उस ओसारे में जो सुलैमान का कहलाता है, उन के पास दौड़े आए। १२ यह देखकर पतरस ने लोगों से कहा; हे इस्राएलियो, तुम इस मनुष्य पर क्यों अचम्भा करते हो, और हमारी ओर क्यों इस प्रकार देख रहे हो, कि मानो हम ही ने अपनी सामर्थ या भक्ति से इसे चलता-फिरता कर दिया। १३ इब्राहीम और इसहाक और याकूब के परमेश्वर, हमारे बापदादों के परमेश्वर ने अपने सेवक यीशु की महिमा की, जिसे तुम ने पकड़वा दिया, और जब पीलातुस ने उसे छोड़ देने का विचार किया, तब तुम ने उसके साम्हने उसका इन्कार किया। १४ तुम ने उस पवित्र और धर्मी का इन्कार किया, और बिनती की, कि एक हत्यारे को तुम्हारे लिये छोड़ दिया जाए। १५ और तुम ने जीवन के कर्त्ता को मा

* मत्ती २६ : २६, और इस पुस्तक के २० अ० ७ पद को देखो।

डाला, जिसे परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिलाया; और इस बात के हम गवाह हैं। १६ और उसी के नाम ने, उस विश्वास के द्वारा जो उसके नाम पर है, इस मनुष्य को जिसे तुम देखते हो और जानते भी हो सामर्थ दी है; और निश्चय उसी विश्वास ने जो उसके द्वारा है, इस को तुम सब के साम्हने बिलकुल भला चंगा कर दिया है। १७ और अब हे भाइयो, मैं जानता हूं कि यह काम तुम ने अज्ञानता से किया, और वैसा ही तुम्हारे सरदारों ने भी किया। १८ परन्तु जिन बातों को परमेश्वर ने सब भविष्यद्वक्ताओं के मुख से पहिले ही बताया था, कि उसका मसीह दुःख उठाएगा; उन्हें उस ने इस रीति से पूरी किया। १९ इसलिये, मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएं, जिस से प्रभु के सन्मुख से विश्रान्ति के दिन आएं। २० और वह उस मसीह यीशु को भेजे जो तुम्हारे लिये पहिले ही से ठहराया गया है। २१ अवश्य है कि वह स्वर्ग में उस समय तक रहे* जब तक कि वह सब बातों का सुधार न कर ले जिस की चर्चा परमेश्वर ने अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के मुख से की है, जो जगत की उत्पत्ति से होते आए हैं। २२ जैसा कि मूसा ने कहा, प्रभु परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिये मुझ सा एक भविष्यद्वक्ता उठाएगा, जो कुछ वह तुम से कहे, उस की सुनना। २३ परन्तु प्रत्येक मनुष्य जो उस भविष्यद्वक्ता की न सुने, लोगों में से नाश किया जाएगा। २४ और शमुएल से लेकर उसके बाद वालों तक जितने भविष्यद्वक्ताओं ने बात कहीं उन सब ने इन दिनों का सन्देश दिया है। २५ तुम भविष्यद्वक्ताओं की सन्तान और उस वाचा के भागी हो, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बापदादों से बान्धी, जब उस ने इब्राहीम से कहा, कि तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे घराने आशीष पाएंगे। २६ परमेश्वर ने अपने सेवक को उठाकर पहिले तुम्हारे पास भेजा, कि तुम में से हर एक को उस की बुराइयों से फेरकर आशीष दे॥

* यू० स्वर्ग उसे उस समय तक लिए रहे।

४ जब वे लोगों से यह कह रहे थे, तो याजक और मन्दिर के सरदार और सदूकी उन पर चढ़ आए। २ क्योंकि वे बहुत क्रोधित हुए कि वे लोगों को सिखाते थे और यीशु का उदाहरण दे देकर* मरे हुओं के जी उठने† का प्रचार करते थे। ३ और उन्हों ने उन्हें पकड़कर दूसरे दिन तक हवालात में रखा क्योंकि सन्ध्या हो गई थी। ४ परन्तु वचन के सुननेवालों में से बहुतों ने विश्वास किया, और उन की गिनती पांच हजार पुरुषों के लगभग हो गई॥

५ दूसरे दिन ऐसा हुआ कि उन के सरदार और पुरनिये और शास्त्री। ६ और महायाजक हन्ना और कैफा और यूहन्ना और सिकन्दर और जितने महायाजक के घराने के थे, सब यरूशलेम में इकट्ठे हुए। ७ और उन्हें बीच में खड़ा करके पूछने लगे, कि तुम ने यह काम किस सामर्थ से और किस नाम से किया है? ८ तब पतरस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उन से कहा। ९ हे लोगों के सरदारो और पुरनियो, इस दुर्बल

* यू० में।		† या मृतकोत्थान।

मनुष्य के साथ जो भलाई की गई है, यदि आज हम से उसके विषय में पूछ पाछ की जाती है, कि वह क्योंकर अच्छा हुआ। १० तो तुम सब और सारे इस्राएली लोग जान लें कि यीशु मसीह नासरी के नाम से जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, और परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिलाया, यह मनुष्य तुम्हारे साम्हने भला चंगा खड़ा है। ११ यह वही पत्थर है जिसे तुम राजमिस्त्रियों ने तुच्छ जाना और वह कोने के सिरे का पत्थर हो गया। १२ और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें॥

१३ जब उन्हों ने पतरस और यूहन्ना का हियाव देखा, और यह जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो अचम्भा किया; फिर उन को पहचाना, कि ये यीशु के साथ रहे हैं। १४ और उस मनुष्य को जो अच्छा हुआ था, उन के साथ खड़े देखकर, वे विरोध में कुछ न कह सके। १५ परन्तु उन्हें सभा के बाहर जाने की आज्ञा देकर, वे आपस में विचार करने लगे, १६ कि हम इन मनुष्यों के साथ क्या करें? क्योंकि यरूशलेम के सब रहनेवालों पर प्रगट है, कि इन के द्वारा एक प्रसिद्ध चिन्ह दिखाया गया है; और हम उसका इन्कार नहीं कर सकते। १७ परन्तु इसलिये कि यह बात लोगों में और अधिक फैल न जाए, हम उन्हें धमकाएं, कि वे इस नाम से फिर किसी मनुष्य से बातें न करें। १८ तब उन्हें बुलाया और चितौनी देकर यह कहा, कि यीशु के नाम से कुछ भी न बोलना और न सिखलाना। १९ परन्तु पतरस और यूहन्ना ने उन को उत्तर दिया, कि तुम ही न्याय करो, कि क्या यह परमेश्वर के निकट भला है, कि हम परमेश्वर की बात से बढ़कर तुम्हारी बात मानें। २० क्योंकि यह तो हम से हो नहीं सकता, कि जो हम ने देखा और सुना है, वह न कहें। २१ तब उन्हों ने उन को और धमकाकर छोड़ दिया, क्योंकि लोगों के कारण उन्हें दण्ड देने का कोई दांव नहीं मिला, इसलिये कि जो घटना हुई थी उसके कारण सब लोग परमेश्वर की बड़ाई करते थे। २२ क्योंकि वह मनुष्य, जिस पर यह चंगा करने का चिन्ह दिखाया गया था, चालीस वर्ष से अधिक आयु का था॥

२३ वे छूटकर अपने साथियों के पास आए, और जो कुछ महायाजकों और पुरनियों ने उन से कहा था, उनको सुना दिया। २४ यह सुनकर, उन्हों ने एक चित्त होकर ऊंचे शब्द से परमेश्वर से कहा, हे स्वामी, तू वही है जिस ने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उन में है बनाया। २५ तू ने पवित्र आत्मा के द्वारा अपने सेवक हमारे पिता दाऊद के मुख से कहा, कि अन्य जातियों ने हुल्लड़ क्यों मचाया? और देश के लोगों ने क्यों व्यर्थ बातें सोचीं? २६ प्रभु और उसके मसीह के विरोध में पृथ्वी के राजा खड़े हुए, और हाकिम एक साथ इकट्ठे हो गए। २७ क्योंकि सचमुच तेरे सेवक यीशु के विरोध में, जिसे तू ने अभिषेक किया, हेरोदेस और पुन्तियुस पीलातुस भी अन्य जातियों और इस्राएलियों के साथ इस नगर में इकट्ठे हुए। २८ कि जो कुछ

पहिले से तेरी सामर्थ* और मति से ठहरा था वही करें। २९ अब, हे प्रभु, उन की धमकियों को देख; और अपने दासों को यह बरदान दे, कि तेरा वचन बड़े हियाव से सुनाएं। ३० और चंगा करने के लिये तू अपना हाथ बढ़ा; कि चिन्ह और अद्‌भुत काम तेरे पवित्र सेवक यीशु के नाम से किए जाएं। ३१ जब वे प्रार्थना कर चुके, तो वह स्थान जहां वे इकट्ठे थे हिल गया, और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए, और परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाते रहे॥

३२ और विश्वास करनेवालों की मण्डली एक चित्त और एक मन के थे यहां तक कि कोई भी अपनी सम्पत्ति अपनी नहीं कहता था, परन्तु सब कुछ साझे का था। ३३ और प्रेरित बड़ी सामर्थ से प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही देते रहे और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था। ३४ और उन में कोई भी दरिद्र न था; क्योंकि जिन के पास भूमि या घर थे, वे उन को बेच बेचकर, बिकी हुई वस्तुओं का दाम लाते, और उसे प्रेरितों के पांवों पर रखते थे। ३५ और जैसी जिसे आवश्यकता होती थी, उसके अनुसार हर एक को बांट दिया करते थे॥

३६ और यूसुफ नाम, कुप्रुस का एक लेवी था जिसका नाम प्रेरितों ने बर-नबा अर्थात् (शान्ति का पुत्र) रखा था। ३७ उस की कुछ भूमि थी, जिसे उस ने बेचा, और दाम के रुपये लाकर प्रेरितों के पांवों पर रख दिए॥

५ और हनन्याह नाम एक मनुष्य, और उस की पत्नी सफीरा ने कुछ भूमि बेची। २ और उसके दाम में से कुछ रख छोड़ा; और यह बात उस की पत्नी भी जानती थी, और उसका एक भाग लाकर प्रेरितों के पांवों के आगे रख दिया। ३ परन्तु पतरस ने कहा; हे हनन्याह! शैतान ने तेरे मन में यह बात क्यों डाली है कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले, और भूमि के दाम में से कुछ रख छोड़े? ४ जब तक वह तेरे पास रही, क्या तेरी न थी? और जब बिक गई तो क्या तेरे वश में न थी? तू ने यह बात अपने मन में क्यों विचारी? तू मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से झूठ बोला। ५ ये बातें सुनते ही हनन्याह गिर पड़ा, और प्राण छोड़ दिए; और सब सुननेवालों पर बड़ा भय छा गया। ६ फिर जवानों ने उठकर उसकी अर्थी बनाई और बाहर ले जाकर गाड़ दिया॥

७ लगभग तीन घंटे के बाद उस की पत्नी, जो कुछ हुआ था न जानकर, भीतर आई। ८ तब पतरस ने उस से कहा; मुझे बता क्या तुम ने वह भूमि इतने ही में बेची थी? उस ने कहा; हां, इतने ही में। ९ पतरस ने उस से कहा; यह क्या बात है, कि तुम दोनों ने प्रभु के आत्मा की परीक्षा के लिये एका किया? देख, तेरे पति के गाड़नेवाले द्वार ही पर खड़े हैं, और तुझे भी बाहर ले जाएंगे। १० तब वह तुरन्त उसके पांवों पर गिर पड़ी, और प्राण छोड़ दिए: और जवानों ने भीतर आकर उसे मरा पाया, और बाहर ले जाकर उसके पति के पास गाड़ दिया। ११ और सारी कलीसिया पर और इन बातों के सब सुननेवालों पर, बड़ा भय छा गया॥

* यू० तेरा हाथ।

१२ और प्रेरितों के हाथों से बहुत चिन्ह और अद्‌भुत काम लोगों के बीच में दिखाए जाते थे, (और वे सब एक चित्त होकर सुलैमान के ओसारे में इकट्ठे हुआ करते थे। १३ परन्तु औरों में से किसी को यह हियाव न होता था, कि उन में जा मिले; तौभी लोग उन की बड़ाई करते थे। १४ और विश्वास करनेवाले बहुतेरे पुरुष और स्त्रियां प्रभु की कलीसिया में और भी अधिक आकर मिलते रहे।) १५ यहां तक कि लोग बीमारों को सड़कों पर ला लाकर, खाटों और खटोलों पर लिटा देते थे, कि जब पतरस आए, तो उस की छाया ही उन में से किसी पर पड़ जाए। १६ और यरूशलेम के आस पास के नगरों से भी बहुत लोग बीमारों और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुओं को ला लाकर, इकट्ठे होते थे, और सब अच्छे कर दिए जाते थे॥

१७ तब महायाजक और उसके सब साथी जो सदूकियों के पंथ के थे, डाह से भर कर उठे। १८ और प्रेरितों को पकड़कर बन्दीगृह में बन्द कर दिया। १९ परन्तु रात को प्रभु के एक स्वर्गदूत ने बन्दीगृह के द्वार खोलकर उन्हें बाहर लाकर कहा। २० कि जाओ, मन्दिर में खड़े होकर, इस जीवन की सब बातें लोगों को सुनाओ। २१ वे यह सुनकर भोर होते ही मन्दिर में जाकर उपदेश देने लगे: परन्तु महायाजक और उसके साथियों ने आकर महासभा को और इस्राएलियों के सब पुरनियों को इकट्ठे किया, और बन्दीगृह में कहला भेजा कि उन्हें लाएं। २२ परन्तु प्यादों ने वहां पहुंचकर उन्हें बन्दीगृह में न पाया, और लौटकर संदेश दिया। २३ कि हम ने बन्दीगृह को बड़ी चौकसी से बन्द किया हुआ, और पहरेवालों को बाहर द्वारों पर खड़े हुए पाया; परन्तु जब खोला, तो भीतर कोई न मिला। २४ जब मन्दिर के सरदार और महायाजकों ने ये बातें सुनीं, तो उन के विषय में भारी चिन्ता में पड़ गए कि यह क्या हुआ चाहता है? २५ इतने में किसी ने आकर उन्हें बताया, कि देखो, जिन्हें तुम ने बन्दीगृह में बन्द रखा था, वे मनुष्य मन्दिर में खड़े हुए लोगों को उपदेश दे रहे हैं। २६ तब सरदार, प्यादों के साथ जाकर, उन्हें ले आया, परन्तु बरबस नहीं, क्योंकि वे लोगों से डरते थे, कि हमें पत्थरवाह न करें। २७ उन्हों ने उन्हें फिर लाकर महासभा के साम्हने खड़ा कर दिया: और महायाजक ने उन से पूछा। २८ क्या हम ने तुम्हें चिताकर आज्ञा न दी थी, कि तुम इस नाम से उपदेश न करना? तौभी देखो, तुम ने सारे यरूशलेम को अपने उपदेश से भर दिया है और उस व्यक्ति का लोहू हमारी गर्दन पर लाना चाहते हो। २९ तब पतरस और, और प्रेरितों ने उत्तर दिया, कि मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही कर्तव्य कर्म है। ३० हमारे बापदादों के परमेश्वर ने यीशु को जिलाया, जिसे तुम ने क्रूस पर लटकाकर मार डाला था। ३१ उसी को परमेश्वर ने प्रभु और उद्धारक ठहराकर, अपने दहिने हाथ से सर्वोच्च कर दिया, कि वह इस्राएलियों को मन फिराव की शक्ति और पापों की क्षमा प्रदान करे। ३२ और हम इन बातों के गवाह हैं, और पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर

ने उन्हें दिया है, जो उस की आज्ञा मानते हैं ॥

३३ यह सुनकर वे जल गए,* और उन्हें मार डालना चाहा। ३४ परन्तु गमलीएल नाम एक फरीसी ने जो व्यवस्थापक और सब लोगों में माननीय था, न्यायालय में खड़े होकर प्रेरितों को थोड़ी देर के लिये बाहर कर देने की आज्ञा दी। ३५ तब उस ने कहा, हे इस्राएलियो, जो कुछ इन मनुष्यों से किया चाहते हो, सोच समझ के करना। ३६ क्योंकि इन दिनों से पहले थियूदास यह कहता हुआ उठा, कि मैं भी कुछ हूं; और कोई चार सौ मनुष्य उसके साथ हो लिए, परन्तु वह मारा गया; और जितने लोग उसे मानते थे, सब तित्तर बित्तर हुए और मिट गए। ३७ उसके बाद नाम लिखाई के दिनों में यहूदा गलीली उठा, और कुछ लोग अपनी ओर कर लिए: वह भी नाश हो गया, और जितने लोग उसे मानते थे, सब तित्तर बित्तर हो गए। ३८ इसलिये अब मैं तुम से कहता हूं, इन मनुष्यों से दूर ही रहो और उन से कुछ काम न रखो; क्योंकि यदि यह धर्म या काम मनुष्यों की ओर से हो तब तो मिट जाएगा। ३९ परन्तु यदि परमेश्वर की ओर से है, तो तुम उन्हें कदापि मिटा न सकोगे; कहीं ऐसा न हो, कि तुम परमेश्वर से भी लड़नेवाले ठहरो। ४० तब उन्हों ने उस की बात मान ली; और प्रेरितों को बुलाकर पिटवाया; और यह आज्ञा देकर छोड़ दिया, कि यीशु के नाम से फिर बातें न करना। ४१ वे इस बात से आनन्दित होकर महासभा के साम्हने से चले गए, कि हम उसके नाम के लिये निरादर होने के योग्य तो ठहरे। ४२ और प्रति दिन मन्दिर में और घर घर में उपदेश करने, और इस बात का सुसमाचार सुनाने से, कि यीशु ही मसीह है न रुके ॥

६ उन दिनों में जब चेले बहुत होते जाते थे, तो यूनानी भाषा बोलनेवाले इब्रानियों पर कुड़कुड़ाने लगे, कि प्रति दिन की सेवकाई में हमारी विधवाओं की सुधि नहीं ली जाती। २ तब उन बारहों ने चेलों की मण्डली को अपने पास बुलाकर कहा, यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर का वचन छोड़कर खिलाने-पिलाने की सेवा में रहें। ३ इसलिये, हे भाइयो, अपने में से सात सुनाम पुरुषों को जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों, चुन लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें। ४ परन्तु हम तो प्रार्थना में और वचन की सेवा में लगे रहेंगे। ५ यह बात सारी मण्डली को अच्छी लगी, और उन्हों ने स्तिफनुस नाम एक पुरुष को जो विश्वास और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था, और फिलिप्पुस और प्रुखुरुस और नीकानोर और तीमोन और परमिनास और अन्ताकीवाला नीकुलाउस को जो यहूदी मत में आ गया था, चुन लिया। ६ और इन्हें प्रेरितों के साम्हने खड़ा किया और उन्हों ने प्रार्थना करके उन पर हाथ रखे ॥

७ और परमेश्वर का वचन फैलता गया और यरूशलेम में चेलों की गिनती बहुत बढ़ती गई; और याजकों का एक बड़ा समाज इस मत के आधीन हो गया ॥

* यू० फट गए।

८ स्तिफनुस अनुग्रह और सामर्थ से परिपूर्ण होकर लोगों में बड़े बड़े अद्‌भुत काम और चिन्ह दिखाया करता था। ९ तब उस आराधनालय में से जो लिबिरतीनों की कहलाती थी, और कुरेनी और सिकन्दरिया और किलिकिया और एशीया के लोगों में से कई एक उठकर स्तिफनुस से वाद-विवाद करने लगे। १० परन्तु उस ज्ञान और उस आत्मा का जिस से वह बातें करता था, वे साम्हना न कर सके। ११ इस पर उन्हों ने कई लोगों को उभारा जो कहने लगे, कि हम ने इस को मूसा और परमेश्वर के विरोध में निन्दा की बातें कहते सुना है। १२ और लोगों और प्राचीनों और शास्त्रियों को भड़काकर चढ़ आए और उसे पकड़कर महासभा में ले आए। १३ और झूठे गवाह खड़े किए, जिन्हों ने कहा कि यह मनुष्य इस पवित्र स्थान और व्यवस्था के विरोध में बोलना नहीं छोड़ता। १४ क्योंकि हम ने उसे यह कहते सुना है, कि यही यीशु नासरी इस जगह को ढा देगा, और उन रीतों को बदल डालेगा जो मूसा ने हमें सौंपी हैं। १५ तब सब लोगों ने जो सभा में बैठे थे, उस की ओर ताककर उसका मुखड़ा स्वर्गदूत का सा देखा॥

७ तब महायाजक ने कहा, क्या ये बातें यों ही है? २ उस ने कहा; हे भाइयो, और पितरो सुनो, हमारा पिता इब्राहीम हारान में बसने से पहिले जब मिसुपुतामिया में था; तो तेजोमय परमेश्वर ने उसे दर्शन दिया। ३ और उस से कहा कि तू अपने देश और अपने कुटुम्ब से निकलकर उस देश में चला जा, जिसे मैं तुझे दिखाऊंगा। ४ तब वह कसदियों के देश से निकलकर हारान में जा बसा; और उसके पिता की मृत्यु के बाद परमेश्वर ने उसको वहां से इस देश में लाकर बसाया जिस में अब तुम बसते हो। ५ और उसको कुछ मीरास बरन पैर रखने भर की भी उस में जगह न दी, परन्तु प्रतिज्ञा की कि मैं यह देश, तेरे और तेरे बाद तेरे वंश के हाथ कर दूंगा; यद्यपि उस समय उसके कोई पुत्र भी न था। ६ और परमेश्वर ने यों कहा; कि तेरी सन्तान के लोग पराये देश में परदेशी होंगे; और वे उन्हें दास बनाएंगे, और चार सौ वर्ष तक दुख देंगे। ७ फिर परमेश्वर ने कहा; जिस जाति के वे दास होंगे, उस को मैं दण्ड दूंगा; और इस के बाद वे निकलकर इसी जगह मेरी सेवा करेंगे। ८ और उस ने उस से खतने की वाचा बान्धी; और इसी दशा में इसहाक उस से उत्पन्न हुआ; और आठवें दिन उसका खतना किया गया; और इसहाक से याकूब और याकूब से बारह कुलपति उत्पन्न हुए। ९ और कुलपतियों ने यूसुफ से डाह करके उसे मिसर देश जानेवालों के हाथ बेचा; परन्तु परमेश्वर उसके साथ था। १० और उसे उसके सब क्लेशों से छुड़ाकर मिसर के राजा फ़िरौन के आगे अनुग्रह और बुद्धि दी, और उस ने उसे मिसर पर और अपने सारे घर पर हाकिम ठहराया। ११ तब मिसर और कनान के सारे देश में अकाल पड़ा; जिस से भारी क्लेश हुआ, और हमारे बापदादों को अन्न नहीं मिलता था। १२ परन्तु याकूब ने यह सुनकर, कि मिसर में अनाज है, हमारे बापदादों को पहिली बार भेजा। १३ और दूसरी

बार यूसुफ अपने भाइयों पर प्रगट हो गया, और यूसुफ की जाति फिरौन को मालूम हो गई। १४ तब यूसुफ ने अपने पिता याकूब और अपने सारे कुटुम्ब को, जो पछत्तर व्यक्ति थे, बुला भेजा। १५ तब याकूब मिसर में गया; और वहां वह और हमारे बापदादे मर गए। १६ और वे शिकिम में पहुंचाए जाकर उस कब्र में रखे गए, जिसे इब्राहीम ने चान्दी देकर शिकिम में हमोर की सन्तान से मोल लिया था। १७ परन्तु जब उस प्रतिज्ञा के पूरे होने का समय निकट आया, जो परमेश्वर ने इब्राहीम से की थी, तो मिसर में वे लोग बढ़ गए; और बहुत हो गए। १८ जब तक कि मिसर में दूसरा राजा न हुआ जो यूसुफ को नहीं जानता था। १९ उस ने हमारी जाति से चतुराई करके हमारे बापदादों के साथ यहां तक कुव्योहार किया, कि उन्हें अपने बालकों को फेंक देना पड़ा कि वे जीवित न रहें। २० उस समय मूसा उत्पन्न हुआ जो बहुत ही सुन्दर था; और वह तीन महीने तक अपने पिता के घर में पाला गया। २१ परन्तु जब फेंक दिया गया तो फिरौन की बेटी ने उसे उठा लिया, और अपना पुत्र करके पाला। २२ और मूसा को मिसरियों की सारी विद्या पढ़ाई गई, और वह बातों और कामों में सामर्थी था। २३ जब वह चालीस वर्ष का हुआ, तो उसके मन में आया कि मैं अपने इस्राएली भाइयों से भेंट करूं। २४ और उस ने एक व्यक्ति पर अन्याय होते देखकर, उसे बचाया, और मिसरी को मारकर सताए हुए का पलटा लिया। २५ उस ने सोचा, कि मेरे भाई समझेंगे कि परमेश्वर मेरे हाथों से उन का उद्धार करेगा, परन्तु उन्हों ने न समझा। २६ दूसरे दिन जब वे आपस में लड़ रहे थे, तो वह वहां आ निकला*; और यह कहके उन्हें मेल करने के लिये समझाया, कि हे पुरुषो, तुम तो भाई भाई हो, एक दूसरे पर क्यों अन्याय करते हो? २७ परन्तु जो अपने पड़ोसी पर अन्याय कर रहा था, उस ने उसे यह कहकर हटा दिया, कि तुझे किस ने हम पर हाकिम और न्यायी ठहराया है? २८ क्या जिस रीति से तू ने कल मिसरी को मार डाला मुझे भी मार डालना चाहता है? २९ यह बात सुनकर, मूसा भागा; और मिद्यान देश में परदेशी होकर रहने लगा: और वहां उसके दो पुत्र उत्पन्न हुए। ३० जब पूरे चालीस वर्ष बीत गए, तो एक स्वर्ग दूत ने सीनै पहाड़ के जंगल में उसे जलती हुई झाड़ी की ज्वाला में दर्शन दिया। ३१ मूसा ने उस दर्शन को देखकर अचम्भा किया, और जब देखने के लिये पास गया, तो प्रभु का यह शब्द हुआ। ३२ कि मैं तेरे बापदादों, इब्राहीम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर हूं: तब तो मूसा कांप उठा, यहां तक कि उसे देखने का हियाव न रहा। ३३ तब प्रभु ने उस से कहा; अपने पांवों से जूती उतार ले, क्योंकि जिस जगह तू खड़ा है, वह पवित्र भूमि है। ३४ मैं ने सचमुच अपने लोगों की दुर्दशा को जो मिसर में है, देखी है; और उन की आह और उन का रोना सुन लिया है; इसलिये उन्हें छुड़ाने के लिये उतरा हूं। अब आ, मैं तुझे मिसर में

* यू० उन्हें दिखाई दिया।

भेजूंगा। ३५ जिस मूसा को उन्हों ने यह कहकर नकारा था कि तुझे किस ने हम पर हाकिम और न्यायी ठहराया है; उसी को परमेश्वर ने हाकिम और छुड़ानेवाला ठहराकर, उस स्वर्ग दूत के द्वारा जिस ने उसे झाड़ी में दर्शन दिया था, भेजा। ३६ यही व्यक्ति मिसर और लाल समुद्र और जंगल में चालीस वर्ष तक अद्भुत काम और चिन्ह दिखा दिखाकर उन्हें निकाल लाया। ३७ यह वही मूसा है, जिस ने इस्राएलियों से कहा; कि परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिये मुझ सा एक भविष्यद्वक्ता उठाएगा। ३८ यह वही है, जिस ने जंगल में कलीसिया के बीच उस स्वर्गदूत के साथ सीनै पहाड़ पर उस से बातें कीं, और हमारे बापदादों के साथ था: उसी को जीवित वचन मिले, कि हम तक पहुंचाए। ३९ परन्तु हमारे बापदादों ने उस की मानना न चाहा; बरन उसे हटाकर अपने मन मिसर की ओर फेरे। ४० और हारून से कहा; हमारे लिये ऐसे देवता बना, जो हमारे आगे आगे चलें, क्योंकि यह मूसा जो हमें मिसर देश से निकाल लाया, हम नहीं जानते उसे क्या हुआ? ४१ उन दिनों में उन्हों ने एक बछड़ा बनाकर, उस की मूरत के आगे बलि चढ़ाया; और अपने हाथों के कामों में मगन होने लगे। ४२ सो परमेश्वर ने मुंह मोड़कर उन्हें छोड़ दिया, कि आकाशगण पूजें; जैसा भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक में लिखा है; कि हे इस्राएल के घराने, क्या तुम जंगल में चालीस वर्ष तक पशुबलि और अन्नबलि मुझ ही को चढ़ाते रहे? ४३ और तुम मोलेक के तम्बू और रिफान देवता के तारे को लिए फिरते थे; अर्थात् उन आकारों को जिन्हें तुम ने दण्डवत करने के लिये बनाया था: सो मैं तुम्हें बाबुल के परे ले जाकर बसाऊंगा। ४४ साक्षी का तम्बू जंगल में हमारे बापदादों के बीच में था; जैसा उस ने ठहराया, जिस ने मूसा से कहा; कि जो आकर तू ने देखा है, उसके अनुसार इसे बना। ४५ उसी तम्बू को हमारे बापदादे पूर्वकाल से पाकर यहोशू के साथ यहां ले आए; जिस समय कि उन्हों ने उन अन्यजातियों का अधिकार पाया, जिन्हें परमेश्वर ने हमारे बापदादों के साम्हने से निकाल दिया; और वह दाऊद के समय तक रहा। ४६ उस पर परमेश्वर ने अनुग्रह किया, सो उस ने बिनती की, कि मैं याकूब के परमेश्वर के लिये निवास स्थान ठहराऊं। ४७ परन्तु सुलैमान ने उसके लिये घर बनाया। ४८ परन्तु परम प्रधान हाथ के बनाए घरों में नहीं रहता, जैसा कि भविष्यद्वक्ता ने कहा। ४९ कि प्रभु कहता है, स्वर्ग मेरा सिंहासन और पृथ्वी मेरे पांवों तले की पीढ़ी है, मेरे लिये तुम किस प्रकार का घर बनाओगे? और मेरे विश्राम का कौन सा स्थान होगा? ५० क्या ये सब वस्तुएं मेरे हाथ की बनाई नहीं?

हे हठीले, और मन और कान के खतनारहित लोगो, तुम सदा पवित्र आत्मा का साम्हना करते हो। ५१ जैसा तुम्हारे बापदादे करते थे, वैसे ही तुम भी करते हो। ५२ भविष्यद्वक्ताओं में से किस को तुम्हारे बापदादों ने नहीं सताया, और उन्हों ने उस धर्मी के आगमन का पूर्वकाल से सन्देश देनेवालों को मार डाला, और अब तुम भी उसके पकड़वानेवाले

और मार डालनेवाले हुए। ५३ तुम ने स्वर्गदूतों के द्वारा ठहराई हुई व्यवस्था तो पाई, परन्तु उसका पालन नहीं किया ॥

५४ ये बातें सुनकर वे जल गए* और उस पर दांत पीसने लगे। ५५ परन्तु उस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर स्वर्ग की ओर देखा और परमेश्वर की महिमा को और यीशु को परमेश्वर की दहिनी ओर खड़ा देखकर। ५६ कहा; देखो, मैं स्वर्ग को खुला हुआ, और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर की दहिनी ओर खड़ा हुआ देखता हूं। ५७ तब उन्हों ने बड़े शब्द से चिल्लाकर कान बन्द कर लिए, और एक चित्त होकर उस पर झपटे। ५८ और उसे नगर के बाहर निकालकर पत्थरवाह करने लगे, और गवाहों ने अपने कपड़े शाऊल नाम एक जवान के पांवों के पास उतार रखे। ५९ और वे स्तिफनुस को पत्थरवाह करते रहे, और वह यह कहकर प्रार्थना करता रहा; कि हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर। ६० फिर घुटने टेककर ऊंचे शब्द से पुकारा, हे प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा, और यह कहकर सो गया: और शाऊल उसके बध में सहमत था ॥

८ उसी दिन यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव होने लगा और प्रेरितों को छोड़ सब के सब यहूदिया और सामरिया देशों में तित्तर बित्तर हो गए। २ और भक्तों ने स्तिफनुस को कब्र में रखा; और उसके लिये बड़ा विलाप किया। ३ शाऊल कलीसिया को उजाड़ रहा था; और घर घर घुसकर पुरुषों और स्त्रियों को घसीट घसीटकर बन्दीगृह में डालता था ॥

४ जो तित्तर बित्तर हुए थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे। ५ और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा। ६ और जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर और जो चिन्ह वह दिखाता था उन्हें देख देखकर, एक चित्त होकर मन लगाया। ७ क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध आत्माएं बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गईं, और बहुत से झोले के मारे हुए और लंगड़े भी अच्छे किए गए। ८ और उस नगर में बड़ा आनन्द हुआ ॥

९ इस से पहिले उस नगर में शमौन नाम एक मनुष्य था, जो टोना करके सामरिया के लोगों को चकित करता और अपने आप को कोई बड़ा पुरुष बनाता था। १० और सब छोटे से बड़े तक उसे मान कर कहते थे, कि यह मनुष्य परमेश्वर की वह शक्ति है, जो महान कहलाती है। ११ उस ने बहुत दिनों से उन्हें अपने टोने के कामों से चकित कर रखा था, इसी लिये वे उस को बहुत मानते थे। १२ परन्तु जब उन्हों ने फिलिप्पुस की प्रतीति की जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग, क्या पुरुष, क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे। १३ तब शमौन ने आप भी प्रतीति की और बपतिस्मा लेकर फिलिप्पुस के साथ रहने लगा और चिन्ह और बड़े बड़े सामर्थ के काम होते देखकर चकित होता था ॥

१४ जब प्रेरितों ने जो यरूशलेम में थे सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन मान लिया है तो पतरस और

* यू० मन में फट गए।

यूहन्ना को उन के पास भेजा। १५ और उन्हों ने जाकर उन के लिये प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा पाएं। १६ क्योंकि वह अब तक उन में से किसी पर न उतरा था, उन्हों ने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया था। १७ तब उन्हों ने उन पर हाथ रखे और उन्हों ने पवित्र आत्मा पाया। १८ जब शमौन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा दिया जाता है, तो उन के पास रुपये लाकर कहा। १९ कि यह अधिकार मुझे भी दो, कि जिस किसी पर हाथ रखूं, वह पवित्र आत्मा पाए। २० पतरस ने उस से कहा; तेरे रुपये तेरे साथ नाश हों, क्योंकि तू ने परमेश्वर का दान रुपयों से मोल लेने का विचार किया। २१ इस बात में न तेरा हिस्सा है, न बांटा; क्योंकि तेरा मन परमेश्वर के आगे सीधा नहीं। २२ इसलिये अपनी इस बुराई से मन फिराकर प्रभु से प्रार्थना कर, सम्भव है तेरे मन का विचार क्षमा किया जाए। २३ क्योंकि मैं देखता हूं, कि तू पित्त की सी कड़वाहट और अधर्म के बन्धन में पड़ा है। २४ शमौन ने उत्तर दिया, कि तुम मेरे लिये प्रभु से प्रार्थना करो कि जो बातें तुम ने कहीं, उन में से कोई मुझ पर न आ पड़े॥

२५ सो वे गवाही देकर और प्रभु का वचन सुनाकर, यरूशलेम को लौट गए, और सामरियों के बहुत गांवों में सुसमाचार सुनाते गए॥

२६ फिर प्रभु के एक स्वर्गदूत ने फिलिप्पुस से कहा; उठकर दक्खिन की ओर उस मार्ग पर जा, जो यरूशलेम से अज्जाह को जाता है, और जंगल में है। २७ वह उठकर चल दिया, और देखो, कूश देश का एक मनुष्य आ रहा था जो खोजा और कूशियों की रानी कन्दाके का मन्त्री और खजांची था, और भजन करने को यरूशलेम आया था। २८ और वह अपने रथ पर बैठा हुआ था, और यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ता हुआ लौटा जा रहा था। २९ तब आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा, निकट जाकर इस रथ के साथ हो ले। ३० फिलिप्पुस ने उस ओर दौड़कर उसे यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ते हुए सुना, और पूछा, कि तू जो पढ़ रहा है क्या उसे समझता भी है? ३१ उस ने कहा, जब तक कोई मुझे न समझाए तो मैं क्योंकर समझूं? और उस ने फिलिप्पुस से बिनती की, कि चढ़कर मेरे पास बैठ। ३२ पवित्र शास्त्र का जो अध्याय वह पढ़ रहा था, वह यह था; कि वह भेड़ की नाईं बध होने को पहुंचाया गया, और जैसा मेम्ना अपने ऊन कतरनेवालों के साम्हने चुपचाप रहता है, वैसे ही उस ने भी अपना मुंह न खोला। ३३ उस की दीनता में उसका न्याय होने नहीं पाया, और उसके समय के लोगों* का वर्णन कौन करेगा, क्योंकि पृथ्वी से उसका प्राण उठाया जाता है। ३४ इस पर खोजे ने फिलिप्पुस से पूछा; मैं तुझ से बिनती करता हूं, यह बता कि भविष्यद्वक्ता यह किस के विषय में कहता है, अपने या किसी दूसरे के विषय में। ३५ तब फिलिप्पुस ने अपना मुंह खोला, और इसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया। ३६ मार्ग में चलते चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे, तब

* या पीढ़ी।

खोजे ने कहा, देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है। ३७ फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है: उस ने उत्तर दिया मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। ३८ तब उस ने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उस ने उसे बपतिस्मा दिया। ३९ जब वे जल में से निकलकर ऊपर आए, तो प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया, सो खोजे ने उसे फिर न देखा, और वह आनन्द करता हुआ अपने मार्ग चला गया। ४० और फिलिप्पुस अशदोद में आ निकला, और जब तक कैसरिया में न पहुंचा, तब तक नगर नगर सुसमाचार सुनाता गया॥

९ और शाऊल जो अब तक प्रभु के चेलों को धमकाने और घात करने की धुन में था, महायाजक के पास गया। २ और उस से दमिश्क की आराधनालयों के नाम पर इस अभिप्राय की चिट्ठियां मांगी, कि क्या पुरुष, क्या स्त्री, जिन्हें वह इस पंथ पर पाए उन्हें बान्धकर यरूशलेम में ले आए। ३ परन्तु चलते चलते जब वह दमिश्क के निकट पहुंचा, तो एकाएक आकाश से उसके चारों ओर ज्योति चमकी। ४ और वह भूमि पर गिर पड़ा, और यह शब्द सुना, कि हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है? ५ उस ने पूछा; हे प्रभु, तू कौन है? उस ने कहा; मैं यीशु हूं; जिसे तू सताता है। ६ परन्तु अब उठकर नगर में जा, और जो तुझे करना है, वह तुझ से कहा जाएगा। ७ जो मनुष्य उसके साथ थे, वे चुपचाप रह गए; क्योंकि शब्द तो सुनते थे, परन्तु किसी को देखते न थे। ८ तब शाऊल भूमि पर से उठा, परन्तु जब आंखें खोलीं तो उसे कुछ दिखाई न दिया और वे उसका हाथ पकड़के दमिश्क में ले गए। ९ और वह तीन दिन तक न देख सका, और न खाया और न पीया॥

१० दमिश्क में हनन्याह नाम एक चेला था, उस से प्रभु ने दर्शन में कहा, हे हनन्याह! उस ने कहा; हां, प्रभु। ११ तब प्रभु ने उस से कहा, उठकर उस गली में जा जो सीधी कहलाती है, और यहूदा के घर में शाऊल नाम एक तारसी को पूछ ले; क्योंकि देख, वह प्रार्थना कर रहा है। १२ और उस ने हनन्याह नाम एक पुरुष को भीतर आते, और अपने ऊपर हाथ रखते देखा है; ताकि फिर से दृष्टि पाए। १३ हनन्याह ने उत्तर दिया, कि हे प्रभु, मैं ने इस मनुष्य के विषय में बहुतों से सुना है, कि इस ने यरूशलेम में तेरे पवित्र लोगों के साथ बड़ी बड़ी बुराइयां की हैं। १४ और यहां भी इस को महायाजकों की ओर से अधिकार मिला है, कि जो लोग तेरा नाम लेते हैं, उन सब को बान्ध ले। १५ परन्तु प्रभु ने उस से कहा, कि तू चला जा; क्योंकि यह, तो अन्यजातियों और राजाओं, और इस्राएलियों के साम्हने मेरा नाम प्रगट करने के लिये मेरा चुना हुआ पात्र है। १६ और मैं उसे बताऊंगा, कि मेरे नाम के लिये उसे कैसा कैसा दुख उठाना पड़ेगा। १७ तब हनन्याह उठकर उस घर में गया, और उस पर अपना हाथ रखकर कहा, हे भाई शाऊल, प्रभु, अर्थात् यीशु, जो उस रास्ते में, जिस से तू आया तुझे दिखाई दिया था, उसी ने मुझे भेजा

है, कि तू फिर दृष्टि पाए और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए। १८ और तुरन्त उस की आंखों से छिलके से गिरे, और वह देखने लगा और उठकर बपतिस्मा लिया; फिर भोजन करके बल पाया॥

१९ और वह कई दिन उन चेलों के साथ रहा जो दमिश्क में थे। २० और वह तुरन्त आराधनालयों में यीशु का प्रचार करने लगा, कि वह परमेश्वर का पुत्र है। २१ और सब सुननेवाले चकित होकर कहने लगे; क्या यह वही व्यक्ति नहीं है जो यरूशलेम में उन्हें जो इस नाम को लेते थे नाश करता था, और यहां भी इसी लिये आया था, कि उन्हें बान्धकर महायाजकों के पास ले जाए? २२ परन्तु शाऊल और भी सामर्थी होता गया, और इस बात का प्रमाण दे देकर कि मसीह यही है, दमिश्क के रहनेवाले यहूदियों का मुंह बन्द करता रहा॥

२३ जब बहुत दिन बीत गए, तो यहूदियों ने मिलकर उसके मार डालने की युक्ति निकाली। २४ परन्तु उन की युक्ति शाऊल को मालूम हो गई: वे तो उसके मार डालने के लिये रात दिन फाटकों पर लगे रहे थे। २५ परन्तु रात को उसके चेलों ने उसे लेकर टोकरे में बैठाया, और शहरपनाह पर से लटकाकर उतार दिया॥

२६ यरूशलेम में पहुंचकर उस ने चेलों के साथ मिल जाने का उपाय किया: परन्तु सब उस से डरते थे, क्योंकि उन को प्रतीति न होता था, कि वह भी चेला है। २७ परन्तु बरनबा उसे अपने साथ प्रेरितों के पास ले जाकर उन से कहा, कि इस ने किस रीति से मार्ग में प्रभु को देखा, और उस ने इस से बातें कीं; फिर दमिश्क में इस ने कैसे हियाव से यीशु के नाम से प्रचार किया। २८ वह उन के साथ यरूशलेम में आता जाता रहा। २९ और निधड़क होकर प्रभु के नाम से प्रचार करता था: और यूनानी भाषा बोलनेवाले यहूदियों के साथ बातचीत और वाद-विवाद करता था; परन्तु वे उसके मार डालने का यत्न करने लगे। ३० यह जानकर भाई उसे कैसरिया में ले आए, और तरसुस को भेज दिया॥

३१ सो सारे यहूदिया, और गलील, और सामरिया में कलीसिया को चैन मिला, और उसकी उन्नति होती गई; और वह प्रभु के भय और पवित्र आत्मा की शान्ति में चलती और बढ़ती जाती थी॥

३२ और ऐसा हुआ कि पतरस हर जगह फिरता हुआ, उन पवित्र लोगों के पास भी पहुंचा, जो लुद्दा में रहते थे। ३३ वहां उसे ऐनियास नाम झोले का मारा हुआ एक मनुष्य मिला, जो आठ वर्ष से खाट पर पड़ा था। ३४ पतरस ने उस से कहा; हे ऐनियास! यीशु मसीह तुझे चंगा करता है; उठ, अपना, बिछौना बिछा, तब वह तुरन्त उठ खड़ा हुआ। ३५ और लुद्दा और शारोन के सब रहनेवाले उसे देखकर प्रभु की ओर फिरे॥

३६ याफा में तबीता अर्थात् दोरकास* नाम एक विश्वासिनी रहती थी, वह बहुतेरे भले भले काम और दान किया करती थी। ३७ उन्हीं दिनों में वह बीमार होकर मर गई; और उन्हों ने उसे नहलाकर अटारी पर रख दिया। ३८ और इसलिये कि लुद्दा याफा के निकट था, चेलों ने यह सुनकर कि पतरस वहां है दो

* अर्थात् हिरनी।

मनुष्य भेजकर उस से बिनती की कि हमारे पास आने में देर न कर। ३९ तब पतरस उठकर उन के साथ हो लिया, और जब पहुंच गया, तो वे उसे उस अटारी पर ले गए; और सब विधवाएं रोती हुई उसके पास आ खड़ी हुईं: और जो कुरते और कपड़े दोरकास ने उन के साथ रहते हुए बनाए थे, दिखाने लगीं। ४० तब पतरस ने सब को बाहर कर दिया, और घुटने टेककर प्रार्थना की; और लोथ की ओर देखकर कहा; हे तबीता उठ: तब उस ने अपनी आंखें खोल दीं; और पतरस को देखकर उठ बैठी। ४१ उस ने हाथ देकर उसे उठाया, और पवित्र लोगों और विधवाओं को बुलाकर उसे जीवित और जागृत दिखा दिया। ४२ यह बात सारे याफा में फैल गई: और बहुतेरों ने प्रभु पर विश्वास किया। ४३ और पतरस याफा में शमौन नाम किसी चमड़े के धन्धा करनेवाले के यहां बहुत दिन तक रहा॥

१० कैसरिया में कुरनेलियुस नाम एक मनुष्य था, जो इतालियानी नाम पलटन का सूबेदार था। २ वह भक्त था, और अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था, और यहूदी लोगों * को बहुत दान देता, और बराबर परमेश्वर से प्रार्थना करता था। ३ उस ने दिन के तीसरे पहर के निकट दर्शन में स्पष्ट रूप से देखा, कि परमेश्वर का एक स्वर्गदूत मेरे पास भीतर आकर कहता है; कि हे कुरनेलियुस। ४ उस ने उसे ध्यान से देखा; और डरकर कहा; हे प्रभु क्या है? उस ने उस से कहा, तेरी प्रार्थनाएं और तेरे दान स्मरण के लिये परमेश्वर के साम्हने पहुंचे हैं। ५ और अब याफा में मनुष्य भेजकर शमौन को, जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले। ६ वह शमौन चमड़े के धन्धा करनेवाले के यहां पाहुन है, जिस का घर समुद्र के किनारे है। ७ जब वह स्वर्गदूत जिस ने उस से बातें की थीं चला गया, तो उस ने दो सेवक, और जो उसके पास उपस्थित रहा करते थे उन में से एक भक्त सिपाही को बुलाया। ८ और उन्हें सब बातें बताकर याफा को भेजा॥

९ दूसरे दिन, जब वे चलते चलते नगर के पास पहुंचे, तो दो पहर के निकट पतरस कोठे पर प्रार्थना करने चढ़ा। १० और उसे भूख लगी, और कुछ खाना चाहता था; परन्तु जब वे तैयार कर रहे थे, तो वह बेसुध हो गया। ११ और उस ने देखा, कि आकाश खुल गया; और एक पात्र, बड़ी चादर के समान चारों कोनों से लटकता हुआ, पृथ्वी की ओर उतर रहा है। १२ जिस में पृथ्वी के सब प्रकार के चौपाए और रेंगनेवाले जन्तु और आकाश के पक्षी थे। १३ और उसे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया, कि हे पतरस उठ, मार और खा। १४ परन्तु पतरस ने कहा, नहीं प्रभु, कदापि नहीं; क्योंकि मैं ने कभी कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु नहीं खाई है। १५ फिर दूसरी बार उसे शब्द सुनाई दिया, कि जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे तू अशुद्ध मत कह। १६ तीन बार ऐसा ही हुआ; तब तुरन्त वह पात्र आकाश पर उठा लिया गया॥

१७ जब पतरस अपने मन में दुबधा कर रहा था, कि यह दर्शन जो मैं ने

* यू० समाज या प्रजा।

देखा क्या है, तो देखो, वे मनुष्य जिन्हें कुरनेलियुस ने भेजा था, शमौन के घर का पता लगाकर डेवढ़ी पर आ खड़े हुए। १८ और पुकारकर पूछने लगे, क्या शमौन जो पतरस कहलाता है, यहीं पाहुन है? १९ पतरस तो उस दर्शन पर सोच ही रहा था, कि आत्मा ने उस से कहा, देख, तीन मनुष्य तेरी खोज में हैं। २० सो उठकर नीचे जा, और बेखटके उन के साथ हो ले; क्योंकि मैं ही ने उन्हें भेजा है। २१ तब पतरस ने उतरकर उन मनुष्यों से कहा; देखो, जिसकी खोज तुम कर रहे हो, वह मैं ही हूं; तुम्हारे आने का क्या कारण है? २२ उन्हों ने कहा; कुरनेलियुस सूबेदार जो धर्मी और परमेश्वर से डरनेवाला और सारी यहूदी जाति में सुनामी मनुष्य है, उस ने एक पवित्र स्वर्गदूत से यह चितावनी पाई है, कि तुझे अपने घर बुलाकर तुझ से वचन सुने। २३ तब उस ने उन्हें भीतर बुलाकर उन की पहुनाई की॥

और दूसरे दिन, वह उनके साथ गया; और याफा के भाइयों में से कई उसके साथ हो लिए। २४ दूसरे दिन वे कैसरिया में पहुंचे, और कुरनेलियुस अपने कुटुम्बियों और प्रिय मित्रों को इकट्ठे करके उन की बाट जोह रहा था। २५ जब पतरस भीतर आ रहा था, तो कुरनेलियुस ने उस से भेंट की, और पांवों पड़के प्रणाम किया। २६ परन्तु पतरस ने उसे उठाकर कहा, खड़ा हो, मैं भी तो मनुष्य हूं। २७ और उसके साथ बातचीत करता हुआ भीतर गया, और बहुत से लोगों को इकट्ठे देखकर। २८ उन से कहा, तुम जानते हो, कि अन्यजाति की संगति करना या उसके यहां जाना यहूदी के लिये अधर्म है, परन्तु परमेश्वर ने मुझे बताया है, कि किसी मनुष्य को अपवित्र या अशुद्ध न कहूं। २९ इसी लिये मैं जब बुलाया गया; तो बिना कुछ कहे चला आया: अब मैं पूछता हूं कि मुझे किस काम के लिये बुलाया गया है? ३० कुरनेलियुस ने कहा; कि इस घड़ी पूरे चार दिन हुए, कि मैं अपने घर में तीसरे पहर को प्रार्थना कर रहा था; कि देखो, एक पुरुष चमकीला वस्त्र पहिने हुए, मेरे साम्हने आ खड़ा हुआ। ३१ और कहने लगा, हे कुरनेलियुस, तेरी प्रार्थना सुन ली गई, और तेरे दान परमेश्वर के साम्हने स्मरण किए गए हैं। ३२ इसलिये किसी को याफा भेजकर शमौन को जो पतरस कहलाता है, बुला; वह समुद्र के किनारे शमौन चमड़े के धन्धा करनेवाले के घर में पाहुन है। ३३ तब मैं ने तुरन्त तेरे पास लोग भेजे, और तू ने भला किया, जो आ गया: अब हम सब यहां परमेश्वर के साम्हने हैं, ताकि जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा है उसे सुनें। ३४ तब पतरस ने मुंह खोलकर कहा;

३५ अब मुझे निश्चय हुआ, कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता, बरन हर जाति में जो उस से डरता और धर्म के काम करता है, वह उसे भाता है। ३६ जो वचन उस ने इस्राएलियों के पास भेजा, जब कि उस ने यीशु मसीह के द्वारा (जो सब का प्रभु है) शान्ति का सुसमाचार सुनाया। ३७ वह बात तुम जानते हो जो यूहन्ना के बपतिस्मा के प्रचार के बाद गलील से आरम्भ करके सारे यहूदिया में फैल गई। ३८ कि

परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभिषेक किया: वह भलाई करता, और सब को जो शैतान * के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा; क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था। ३६ और हम उन सब कामों के गवाह हैं; जो उस ने यहूदिया के देश और यरूशलेम में भी किए, और उन्हों ने उसे काठ पर लटकाकर मार डाला। ४० उस को परमेश्वर ने तीसरे दिन जिलाया, और प्रगट भी कर दिया है। ४१ सब लोगों को नहीं बरन उन गवाहों को जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से चुन लिया था, अर्थात् हमको जिन्हों ने उसके मरे हुओं में से जी उठने के बाद उसके साथ खाया पीया। ४२ और उस ने हमें आज्ञा दी, कि लोगों में प्रचार करो; और गवाही दो, कि यह वही है; जिसे परमेश्वर ने जीवतों और मरे हुओं का न्यायी ठहराया है। ४३ उस की सब भविष्यद्वक्ता गवाही देते हैं, कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उस को उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी॥

४४ पतरस ये बातें कह ही रहा था, कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुननेवालों पर उतर आया। ४५ और जितने खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए थे, वे सब चकित हुए कि अन्य-जातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उंडेला † गया है। ४६ क्योंकि उन्हों ने उन्हें भांति भांति की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना। ४७ इस पर पतरस ने कहा; क्या कोई जल की रोक कर सकता है, कि ये बपतिस्मा न पाएं, जिन्हों ने हमारी नाईं पवित्र आत्मा पाया है? ४८ और उस ने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए: तब उन्हों ने उस से बिनती की कि कुछ दिन हमारे साथ रह॥

११ और प्रेरितों और भाइयों ने जो यहूदिया में थे सुना, कि अन्यजातियों ने भी परमेश्वर का वचन मान लिया है। २ और जब पतरस यरूशलेम में आया, तो खतना किए हुए लोग उस से वाद-विवाद करने लगे। ३ कि तू ने खतनारहित लोगों के यहां जाकर उन के साथ खाया। ४ तब पतरस ने उन्हें आरम्भ से क्रमानुसार कह सुनाया; ५ कि मैं याफा नगर में प्रार्थना कर रहा था, और बेसुध होकर एक दर्शन देखा, कि एक पात्र, बड़ी चादर के समान चारों कोनों से लटकाया हुआ, आकाश से उतरकर मेरे पास आया। ६ जब मैं ने उस पर ध्यान किया, तो पृथ्वी के चौपाए और बनपशु और रेंगनेवाले जन्तु और आकाश के पक्षी देखे। ७ और यह शब्द भी सुना कि हे पतरस उठ मार और खा। ८ मैं ने कहा, नहीं प्रभु, नहीं, क्योंकि कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु मेरे मुंह में कभी नहीं गई। ९ इस के उत्तर में आकाश से दूसरी बार शब्द हुआ, कि जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे अशुद्ध मत कह। १० तीन बार ऐसा ही हुआ; तब सब कुछ फिर आकाश पर खींच लिया गया। ११ और देखो, तुरन्त तीन मनुष्य जो कैसरिया से मेरे पास भेजे गए थे, उस घर पर जिस में हम थे, आ खड़े हुए। १२ तब आत्मा ने मुझ से

* यू० इब्लीस। † यू० बहाया।

उन के साथ बेखटके हो लेने को कहा, और ये छः भाई भी मेरे साथ हो लिए; और हम उस मनुष्य के घर में गए। १३ और उस ने बताया, कि मैं ने एक स्वर्गदूत को अपने घर में खड़ा देखा, जिस ने मुझ से कहा, कि याफा में मनुष्य भेजकर शमौन को जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले। १४ वह तुम से ऐसी बातें कहेगा, जिन के द्वारा तू और तेरा सारा घराना उद्धार पाएगा। १५ जब मैं बातें करने लगा, तो पवित्र आत्मा उन पर उसी रीति से उतरा, जिस रीति से आरम्भ में हम पर उतरा था। १६ तब मुझे प्रभु का वह वचन स्मरण आया; जो उस ने कहा; कि यूहन्ना ने तो पानी से बपतिस्मा दिया, परन्तु तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे। १७ सो जब कि परमेश्वर ने उन्हें भी वही दान दिया, जो हमें प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से मिला था; तो मैं कौन था जो परमेश्वर को रोक सकता? १८ यह सुनकर, वे चुप रहे, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, तब तो परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन के लिये मन फिराव का दान दिया है॥

१९ सो जो लोग उस क्लेश के मारे जो स्तिफनुस के कारण पड़ा था, तित्तर बित्तर हो गए थे, वे फिरते फिरते फीनीके और कुप्रुस और अन्ताकिया में पहुंचे; परन्तु यहूदियों को छोड़ किसी और को वचन न सुनाते थे। २० परन्तु उन में से कितने कुप्रुसी और कुरेनी थे, जो अन्ताकिया में आकर यूनानियों को भी प्रभु यीशु के सुसमाचार की बातें सुनाने लगे। २१ और प्रभु का हाथ उन पर था, और बहुत लोग विश्वास करके प्रभु की ओर फिरे। २२ तब उन की चर्चा यरूशलेम की कलीसिया के सुनने में आई, और उन्हों ने बरनबास को अन्ताकिया भेजा। २३ वह वहां पहुंचकर, और परमेश्वर के अनुग्रह को देखकर आनन्दित हुआ; और सब को उपदेश दिया कि तन मन लगाकर प्रभु से लिपटे रहो। २४ क्योंकि वह एक भला मनुष्य था; और पवित्र आत्मा और विश्वास से परिपूर्ण था: और और बहुत से लोग प्रभु में आ मिले। २५ तब वह शाऊल को ढूंढ़ने के लिये तरसुस को चला गया। २६ और जब उस से मिला तो उसे अन्ताकिया में लाया, और ऐसा हुआ कि वे एक वर्ष तक कलीसिया के साथ मिलते और बहुत लोगों को उपदेश देते रहे, और चेले सब से पहिले अन्ताकिया ही में मसीही कहलाए॥

२७ उन्हीं दिनों में कई भविष्यद्वक्ता यरूशलेम से अन्ताकिया में आए। २८ उन में से अगबुस नाम एक ने खड़े होकर आत्मा की प्रेरणा से यह बताया, कि सारे जगत में बड़ा अकाल पड़ेगा, और वह अकाल क्लौदियुस के समय में पड़ा। २९ तब चेलों ने ठहराया, कि हर एक अपनी अपनी पूंजी के अनुसार यहूदिया में रहनेवाले भाइयों की सेवा के लिये कुछ भेजे। ३० और उन्हों ने ऐसा ही किया; और बरनबास और शाऊल के हाथ प्राचीनों* के पास कुछ भेज दिया॥

१२ उस समय हेरोदेस राजा ने कलीसिया के कई एक व्यक्तियों को दुख देने के लिये उन पर हाथ डाले। २ उस ने यूहन्ना के भाई याकूब को

* या प्रिसबुतिरों।

तलवार से मरवा डाला। ३ और जब उस ने देखा, कि यहूदी लोग इस से आनन्दित होते हैं, तो उस ने पतरस को भी पकड़ लिया: वे दिन अखमीरी रोटी के दिन थे। ४ और उस ने उसे पकड़ के बन्दीगृह में डाला, और रखवाली के लिये, चार चार सिपाहियों के चार पहरों में रखा: इस मनसा से कि फसह के बाद उसे लोगों के साम्हने लाए। ५ सो बन्दीगृह में पतरस की रखवाली हो रही थी; परन्तु कलीसिया उसके लिये लौ लगाकर परमेश्वर से प्रार्थना कर रही थी। ६ और जब हेरोदेस उसे उन के साम्हने लाने को था, तो उसी रात पतरस दो जंजीरों से बन्धा हुआ, दो सिपाहियों के बीच में सो रहा था: और पहरुए द्वार पर बन्दीगृह की रखवाली कर रहे थे। ७ तो देखो, प्रभु का एक स्वर्गदूत आ खड़ा हुआ: और उस कोठरी में ज्योति चमकी: और उस ने पतरस की पसली पर हाथ मार के उसे जगाया, और कहा; उठ, फुरती कर, और उसके हाथों से जंजीरें खुलकर गिर पड़ीं। ८ तब स्वर्गदूत ने उस से कहा; कमर बान्ध और अपने जूते पहिन ले: उस ने वैसा ही किया, फिर उस ने उस से कहा; अपना वस्त्र पहिनकर मेरे पीछे हो ले। ९ वह निकलकर उसके पीछे हो लिया; परन्तु यह न जानता था, कि जो कुछ स्वर्गदूत कर रहा है, वह सचमुच है, बरन यह समझा, कि मैं दर्शन देख रहा हूं। १० तब वे पहिले और दूसरे पहरे से निकलकर उस लोहे के फाटक पर पहुंचे, जो नगर की ओर है; वह उन के लिये आप से आप खुल गया: और वे निकलकर एक ही गली होकर गए, इतने में स्वर्गदूत उसे छोड़कर चला गया। ११ तब पतरस ने सचेत होकर कहा; अब मैं ने सच जान लिया कि प्रभु ने अपना स्वर्गदूत भेजकर मुझे हेरोदेस के हाथ से छुड़ा लिया, और यहूदियों की सारी आशा तोड़ दी। १२ और यह सोचकर, वह उस यूहन्ना की माता मरियम के घर आया, जो मरकुस कहलाता है; वहां बहुत लोग इकट्ठे होकर प्रार्थना कर रहे थे। १३ जब उस ने फाटक की खिड़की खटखटाई, तो रुदे नाम एक दासी सुनने को आई। १४ और पतरस का शब्द पहचानकर, उस ने आनन्द के मारे फाटक न खोला; परन्तु दौड़कर भीतर गई, और बताया, कि पतरस द्वार पर खड़ा है। १५ उन्हों ने उस से कहा; तू पागल है, परन्तु वह दृढ़ता से बोली, कि ऐसा ही है: तब उन्हों ने कहा, उसका स्वर्गदूत होगा। १६ परन्तु पतरस खटखटाता ही रहा: सो उन्हों ने खिड़की खोली, और उसे देखकर चकित हो गए। १७ तब उस ने उन्हें हाथ से सैन किया, कि चुप रहें; और उन को बताया, कि प्रभु किस रीति से मुझे बन्दीगृह से निकाल लाया है: फिर कहा, कि याकूब और भाइयों को यह बात कह देना; तब निकलकर दूसरी जगह चला गया। १८ भोर को सिपाहियों में बड़ी हलचल होने लगी, कि पतरस क्या हुआ। १९ जब हेरोदेस ने उस की खोज की, और न पाया; तो पहरुओं की जांच करके आज्ञा दी कि वे मार डाले जाएं: और वह यहूदिया को छोड़कर कैसरिया में जा रहा॥

२० और वह सूर और सैदा के लोगों से बहुत अप्रसन्न था; सो वे एक चित्त

होकर उसके पास आए और बलास्तुस को, जो राजा का एक कर्मचारी * था, मनाकर मेल करना चाहा; क्योंकि राजा के देश से उन के देश का पालन पोषण होता था। २१ और ठहराए हुए दिन हेरोदेस राजवस्त्र पहिनकर सिंहासन पर बैठा; और उन को व्याख्यान देने लगा। २२ और लोग पुकार उठे, कि यह तो मनुष्य का नहीं परमेश्वर का शब्द है। २३ उसी क्षण प्रभु के एक स्वर्गदूत ने तुरन्त उसे मारा, क्योंकि उस ने परमेश्वर की महिमा न की और वह कीड़े पड़के मर गया॥

२४ परन्तु परमेश्वर का वचन बढ़ता और फैलता गया॥

२५ जब बरनबास और शाऊल अपनी सेवा पूरी कर चुके, तो यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है साथ लेकर यरूशलेम से लौटे॥

१३ अन्ताकिया की कलीसिया में कितने भविष्यद्वक्ता और उपदेशक थे; अर्थात् बरनबास और शमौन जो नीगर कहलाता है; और लूकियुस कुरेनी, और देश की चौथाई के राजा हेरोदेस का दूधभाई मनाहेम और शाऊल। २ जब वे उपवास सहित प्रभु की उपासना कर रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा; मेरे निमित्त बरनबास और शाऊल को उस काम के लिये अलग करो जिस के लिये मैं ने उन्हें बुलाया है। ३ तब उन्हों ने उपवास और प्रार्थना करके और उन पर हाथ रखकर उन्हें विदा किया॥

४ सो वे पवित्र आत्मा के भेजे हुए सिलूकिया को गए; और वहां से जहाज पर चढ़कर कुप्रुस को चले। ५ और सलमीस में पहुंचकर, परमेश्वर का वचन यहूदियों की आराधनालयों में सुनाया; और यूहन्ना उन का सेवक था। ६ और उस सारे टापू में होते हुए, पाफुस तक पहुंचे: वहां उन्हें बार-यीशु नाम एक यहूदी टोन्हा और झूठा भविष्यद्वक्ता मिला। ७ वह सिरगियुस पौलुस सूबे * के साथ था, जो बुद्धिमान पुरुष था: उस ने बरनबास और शाऊल को अपने पास बुलाकर परमेश्वर का वचन सुनना चाहा। ८ परन्तु इलीमास टोन्हे ने, क्योंकि यही उसके नाम का अर्थ है उन का साम्हना करके, सूबे को विश्वास करने से रोकना चाहा। ९ तब शाऊल ने जिस का नाम पौलुस भी है, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो उस की ओर टकटकी लगाकर कहा। १० हे सारे कपट और सब चतुराई से भरे हुए शैतान † की सन्तान, सकल धर्म के बैरी, क्या तू प्रभु के सीधे मार्गों को टेढ़ा करना न छोड़ेगा? ११ अब देख, प्रभु का हाथ तुझ पर लगा है; और तू कुछ समय तक अन्धा रहेगा और सूर्य को न देखेगा: तब तुरन्त धुन्धलाई और अन्धेरा उस पर छा गया, और वह इधर उधर टटोलने लगा, ताकि कोई उसका हाथ पकड़के ले चले। १२ तब सूबे ने जो हुआ था, देखकर और प्रभु के उपदेश से चकित होकर विश्वास किया॥

१३ पौलुस और उसके साथी पाफुस से जहाज खोलकर पंफूलिया के पिरगा में आए: और यूहन्ना उन्हें छोड़कर यरूशलेम को लौट गया। १४ और पिरगा से

* या कंचुकी।

* यू० प्रतिनिधि। † यू० इबलीस।

आगे बढ़कर वे पिसिदिया के अन्ताकिया में पहुंचे; और सब्त के दिन आराधनालय में जाकर बैठ गए। १५ और व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक से पढ़ने के बाद सभा के सरदारों ने उन के पास कहला भेजा, कि हे भाइयो, यदि लोगों के उपदेश के लिये तुम्हारे मन में कोई बात हो तो कहो। १६ तब पौलुस ने खड़े होकर और हाथ से सैन करके कहा;

हे इस्राएलियो, और परमेश्वर से डरनेवालो, सुनो। १७ इन इस्राएली लोगों के परमेश्वर ने हमारे बापदादों को चुन लिया, और जब ये लोग मिसर देश में परदेशी होकर रहते थे, तो उन की उन्नति की; और बलवन्त भुजा से निकाल लाया। १८ और वह कोई चालीस वर्ष तक जंगल में उन की सहता रहा। १९ और कनान देश में सात जातियों का नाश करके उन का देश कोई साढ़े चार सौ वर्ष में इन की मीरास में कर दिया। २० इस के बाद उस ने सामुएल भविष्यद्वक्ता तक उन में न्यायी ठहराए। २१ उसके बाद उन्हों ने एक राजा मांगा: तब परमेश्वर ने चालीस वर्ष के लिये बिनयामीन के गोत्र में से एक मनुष्य; अर्थात् कीश के पुत्र शाऊल को उन पर राजा ठहराया। २२ फिर उसे अलग करके दाऊद को उन का राजा बनाया; जिस के विषय में उस ने गवाही दी, कि मुझे एक मनुष्य यिशै का पुत्र दाऊद, मेरे मन के अनुसार मिल गया है; वही मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा। २३ इसी के वंश में से परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार इस्राएल के पास एक उद्धारकर्ता, अर्थात् यीशु को भेजा। २४ जिस के आने से पहिले यूहन्ना ने सब इस्राएलियों को मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार किया। २५ और जब यूहन्ना अपना दौर पूरा करने पर था, तो उस ने कहा, तुम मुझे क्या समझते हो? मैं वह नहीं! बरन देखो, मेरे बाद एक आनेवाला है, जिस के पांवों की जूती मैं खोलने के योग्य नहीं। २६ हे भाइयो, तुम जो इब्राहीम की सन्तान हो; और तुम जो परमेश्वर से डरते हो, तुम्हारे पास इस उद्धार का वचन भेजा गया है। २७ क्योंकि यरूशलेम के रहनेवालों और उन के सरदारों ने, न उसे पहचाना, और न भविष्यद्वक्ताओं की बातें समझीं; जो हर सब्त के दिन पढ़ी जाती हैं, इसलिये उसे दोषी ठहराकर उन को पूरा किया। २८ उन्हों ने मार डालने के योग्य कोई दोष उस में न पाया, तौभी पीलातुस से बिनती की, कि वह मार डाला जाए। २९ और जब उन्हों ने उसके विषय में लिखी हुई सब बातें पूरी कीं, तो उसे क्रूस पर से उतारकर कब्र में रखा। ३० परन्तु परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया। ३१ और वह उन्हें जो उसके साथ गलील से यरूशलेम आए थे, बहुत दिनों तक दिखाई देता रहा; लोगों के साम्हने अब वे ही उसके गवाह हैं। ३२ और हम तुम्हें उस प्रतिज्ञा के विषय में, जो बापदादों से की गई थी, यह सुसमाचार सुनाते हैं। ३३ कि परमेश्वर ने यीशु को जिलाकर, वही प्रतिज्ञा हमारी सन्तान के लिये पूरी की, जैसा दूसरे भजन में भी लिखा है, कि तू मेरा पुत्र है; आज मैं ही ने तुझे जन्माया है। ३४ और उसके इस रीति से मरे हुओं में से जिलाने के विषय में भी, कि वह कभी न सड़े, उस ने यों

कहा है; कि मैं दाऊद पर की पवित्र और अचल कृपा तुम पर करूंगा। ३५ इसलिये उस ने एक और भजन में भी कहा है; कि तू अपने पवित्र जन को सड़ने न देगा। ३६ क्योंकि दाऊद तो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार अपने समय में सेवा करके सो गया; और अपने बापदादों में जा मिला; और सड़ भी गया। ३७ परन्तु जिस को परमेश्वर ने जिलाया, वह सड़ने नहीं पाया। ३८ इसलिये, हे भाइयो; तुम जान लो कि इसी के द्वारा पापों की क्षमा का समाचार तुम्हें दिया जाता है। ३९ और जिन बातों से तुम मूसा की व्यवस्था के द्वारा निर्दोष नहीं ठहर सकते थे, उन्हीं सब से हर एक विश्वास करनेवाला उसके द्वारा निर्दोष ठहरता है। ४० इसलिये चौकस रहो, ऐसा न हो, कि जो भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक में आया है, ४१ तुम पर भी आ पड़े, कि हे निन्दा करनेवालो, देखो, और चकित हो, और मिट जाओ; क्योंकि मैं तुम्हारे दिनों में एक काम करता हूं; ऐसा काम, कि यदि कोई तुम से उसकी चर्चा करे, तो तुम कभी प्रतीति न करोगे॥

४२ उन के बाहर निकलते समय लोग उन से बिनती करने लगे, कि अगले सब्त के दिन हमें ये बातें फिर सुनाई जाएं। ४३ और जब सभा उठ गई तो यहूदियों और यहूदी मत में आए हुए भक्तों में से बहुतेरे पौलुस और बरनबास के पीछे हो लिए; और उन्हों ने उन से बातें करके समझाया, कि परमेश्वर के अनुग्रह में बने रहो॥

४४ अगले सब्त के दिन नगर के प्रायः सब लोग परमेश्वर का वचन सुनने को इकट्ठे हो गए। ४५ परन्तु यहूदी भीड़ को देखकर डाह से भर गए, और निन्दा करते हुए पौलुस की बातों के विरोध में बोलने लगे। ४६ तब पौलुस और बरनबास ने निडर होकर कहा, अवश्य था, कि परमेश्वर का वचन पहिले तुम्हें सुनाया जाता: परन्तु जब कि तुम उसे दूर करते हो, और अपने को अनन्त जीवन के योग्य नहीं ठहराते, तो देखो, हम अन्यजातियों की ओर फिरते हैं। ४७ क्योंकि प्रभु ने हमें यह आज्ञा दी है; कि मैं ने तुझे अन्यजातियों के लिये ज्योति ठहराया है; ताकि तू पृथ्वी की छोर तक उद्धार का द्वार हो। ४८ यह सुनकर अन्यजाति आनन्दित हुए, और परमेश्वर के वचन की बड़ाई करने लगे: और जितने अनन्त जीवन के लिये ठहराए गए थे, उन्हों ने विश्वास किया। ४९ तब प्रभु का बचन उस सारे देश में फैलने लगा। ५० परन्तु यहूदियों ने भक्त और कुलीन स्त्रियों को और नगर के बड़े लोगों को उसकाया, और पौलुस और बरनबास पर उपद्रव करवाकर उन्हें अपने सिवानों से निकाल दिया। ५१ तब वे उन के साम्हने अपने पांवों की धूल झाड़कर इकुनियुम को गए। ५२ और चेले आनन्द से और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते रहे॥

१४

इकुनियुम में ऐसा हुआ कि वे यहूदियों की आराधनालय में साथ साथ गए, और ऐसी बातें कीं, कि यहूदियों और यूनानियों दोनों में से बहुतों ने विश्वास किया। २ परन्तु न माननेवाले यहूदियों ने अन्यजातियों के मन भाइयों के विरोध में उसकाए, और बिगाड़ कर

दिए। ३ और वे बहुत दिन तक वहां रहे, और प्रभु के भरोसे पर हियाव से बातें करते थे: और वह उन के हाथों से चिन्ह और अद्‍भुत काम करवाकर अपने अनुग्रह के वचन पर गवाही देता था। ४ परन्तु नगर के लोगों में फूट पड़ गई थी; इस से कितने तो यहूदियों की ओर, और कितने प्रेरितों की ओर हो गए। ५ परन्तु जब अन्यजाति और यहूदी उन का अपमान और उन्हें पत्थरवाह करने के लिये अपने सरदारों समेत उन पर दौड़े। ६ तो वे इस बात को जान गए, और लुकाउनिया के लुस्त्रा और दिरबे नगरों में, और आसपास के देश में भाग गए। ७ और वहां सुसमाचार सुनाने लगे॥

८ लुस्त्रा में एक मनुष्य बैठा था, जो पांवों का निर्बल था: वह जन्म ही से लंगड़ा था, और कभी न चला था। ९ वह पौलुस को बातें करते सुन रहा था और इस ने उस की ओर टकटकी लगाकर देखा कि इस को चंगा हो जाने का विश्वास है। १० और ऊंचे शब्द से कहा, अपने पांवों के बल सीधा खड़ा हो: तब वह उछलकर चलने फिरने लगा। ११ लोगों ने पौलुस का यह काम देखकर लुकाउनिया की भाषा में ऊंचे शब्द से कहा; देवता मनुष्यों के रूप में होकर हमारे पास उतर आए हैं। १२ और उन्हों ने बरनबास को ज्यूस, और पौलुस को हिरमेस कहा, क्योंकि यह बातें करने में मुख्य था। १३ और ज्यूस के उस मन्दिर का पुजारी जो उन के नगर के साम्हने था, बैल और फूलों के हार फाटकों पर लाकर लोगों के साथ बलिदान करना चाहता था। १४ परन्तु बरनबास और पौलुस प्रेरितों ने जब सुना, तो अपने कपड़े फाड़े, और भीड़ में लपक गए, और पुकारकर कहने लगे; हे लोगो तुम क्या करते हो? १५ हम भी तो तुम्हारे समान दुःख-सुख भोगी मनुष्य हैं, और तुम्हें सुसमाचार सुनाते हैं, कि तुम इन व्यर्थ वस्तुओं से अलग होकर जीवते परमेश्वर की ओर फिरो, जिस ने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उन में है बनाया। १६ उस ने बीते समयों में सब जातियों को अपने अपने मार्गों में चलने दिया। १७ तौभी उस ने अपने आप को बे-गवाह न छोड़ा; किन्तु वह भलाई करता रहा, और आकाश से वर्षा और फलवन्त ऋतु देकर, तुम्हारे मन को भोजन और आनन्द से भरता रहा। १८ यह कहकर भी उन्हों ने लोगों को कठिनता से रोका कि उन के लिये बलिदान न करें॥

१९ परन्तु कितने यहूदियों ने अन्ताकिया और इकुनियुम से आकर लोगों को अपनी ओर कर लिया, और पौलुस को पत्थरवाह किया, और मरा समझकर उसे नगर के बाहर घसीट ले गए। २० पर जब चेले उस की चारों ओर आ खड़े हुए, तो वह उठकर नगर में गया और दूसरे दिन बरनबास के साथ दिरबे को चला गया। २१ और वे उस नगर के लोगों को सुसमाचार सुनाकर, और बहुत से चेले बनाकर, लुस्त्रा और इकुनियुम और अन्ताकिया को लौट आए। २२ और चेलों के मन को स्थिर करते रहे और यह उपदेश देते थे, कि विश्वास में बने रहो; और यह कहते थे, कि हमें बड़े क्लेश उठाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा। २३ और उन्हों ने

हर एक कलीसिया में उन के लिये प्राचीन* ठहराए, और उपवास सहित प्रार्थना करके, उन्हें प्रभु के हाथ सौंपा जिस पर उन्हों ने विश्वास किया था। २४ और पिसिदिया से होते हुए वे पंफूलिया में पहुंचे; २५ और पिरगा में वचन सुनाकर अत्तलिया में आए। २६ और वहां से जहाज पर अन्ताकिया में आए, जहां से वे उस काम के लिये जो उन्हों ने पूरा किया था परमेश्वर के अनुग्रह पर सौंपे गए थे। २७ वहां पहुंचकर, उन्हों ने कलीसिया इकट्ठी की और बताया, कि परमेश्वर ने हमारे साथ होकर कैसे बड़े बड़े काम किए! और अन्यजातियों के लिये विश्वास का द्वार खोल दिया। २८ और वे चेलों के साथ बहुत दिन तक रहे॥

१५ फिर कितने लोग यहूदिया से आकर भाइयों को सिखाने लगे कि यदि मूसा की रीति पर तुम्हारा खतना न हो तो तुम उद्धार नहीं पा सकते। २ जब पौलुस और बरनबास का उन से बहुत झगड़ा और वाद-विवाद हुआ तो यह ठहराया गया, कि पौलुस और बरनबास, और हम में से कितने और व्यक्ति इस बात के विषय में यरूशलेम को प्रेरितों और प्राचीनों† के पास जाएं। ३ सो मण्डली ने उन्हें कुछ दूर तक पहुंचाया; और वे फीनीके और सामरिया से होते हुए अन्यजातियों के मन फेरने‡ का समाचार सुनाते गए, और सब भाइयों को बहुत आनन्दित किया। ४ जब यरूशलेम में पहुंचे, तो कलीसिया और प्रेरित और प्राचीन उन से आनन्द के साथ मिले, और उन्हों ने बताया, कि परमेश्वर ने उन के साथ होकर कैसे कैसे काम किए थे। ५ परन्तु फरीसियों के पंथ में से जिन्हों ने विश्वास किया था, उन में से कितनों ने उठकर कहा, कि उन्हें खतना कराना और मूसा की व्यवस्था को मानने की आज्ञा देना चाहिए॥

६ तब प्रेरित और प्राचीन इस बात के विषय में विचार करने के लिये इकट्ठे हुए। ७ तब पतरस ने बहुत वाद-विवाद के बाद खड़े होकर उन से कहा॥

हे भाइयो, तुम जानते हो, कि बहुत दिन हुए, कि परमेश्वर ने तुम में से मुझे चुन लिया, कि मेरे मुंह से अन्यजाति सुसमाचार का वचन सुनकर विश्वास करें। ८ और मन के जांचनेवाले परमेश्वर ने उन को भी हमारी नाईं पवित्र आत्मा देकर उन की गवाही दी। ९ और विश्वास के द्वारा उन के मन शुद्ध करके हम में और उन में कुछ भेद न रखा। १० तो अब तुम क्यों परमेश्वर की परीक्षा करते हो? कि चेलों की गरदन पर ऐसा जूआ रखो, जिसे न हमारे बापदादे उठा सके थे और न हम उठा सकते। ११ हां, हमारा यह तो निश्चय है, कि जिस रीति से वे प्रभु यीशु के अनुग्रह से उद्धार पाएंगे; उसी रीति से हम भी पाएंगे॥

१२ तब सारी सभा चुपचाप होकर बरनबास और पौलुस की सुनने लगी, कि परमेश्वर ने उन के द्वारा अन्यजातियों में कैसे कैसे बड़े चिन्ह, और अद्भुत काम दिखाए। १३ जब वे चुप हुए, तो याकूब कहने लगा, कि॥

१४ हे भाइयो, मेरी सुनो: शमौन ने बताया, कि परमेश्वर ने पहिले पहिल

* या प्रिसबुतिर। † या प्रिसबुतिरों।
‡ अर्थात् दीक्षित होने।

अन्यजातियों पर कैसी कृपादृष्टि की, कि उन में से अपने नाम के लिये एक लोग बना ले। १५ और इस से भविष्यद्वक्ताओं की बातें मिलती हैं, जैसा लिखा है, कि। १६ इस के बाद मैं फिर आकर दाऊद का गिरा हुआ डेरा उठाऊंगा, और उसके खंडहरों को फिर बनाऊंगा, और उसे खड़ा करूंगा। १७ इसलिये कि शेष मनुष्य, अर्थात् सब अन्यजाति जो मेरे नाम के कहलाते हैं, प्रभु को ढूंढ़ें। १८ यह वही प्रभु कहता है जो जगत की उत्पत्ति से इन बातों का समाचार देता आया है। १९ इसलिये मेरा विचार यह है, कि अन्यजातियों में से जो लोग परमेश्वर की ओर फिरते हैं, हम उन्हें दुःख न दें। २० परन्तु उन्हें लिख भेजें, कि वे मूरतों की अशुद्धताओं और व्यभिचार और गला घोंटे हुओं के मांस से और लोहू से परे रहें। २१ क्योंकि पुराने समय से नगर नगर मूसा की व्यवस्था के प्रचार करनेवाले होते चले आए हैं, और वह हर सब्त के दिन आराधनालय में पढ़ी जाती है॥

२२ तब सारी कलीसिया सहित प्रेरितों और प्राचीनों* को अच्छा लगा, कि अपने में से कई मनुष्यों को चुनें, अर्थात् यहूदा, जो बरसब्बा कहलाता है, और सीलास को जो भाइयों में मुखिया थे; और उन्हें पौलुस और बरनबास के साथ अन्ताकिया को भेजें। २३ और उन के हाथ यह लिख भेजा, कि अन्ताकिया और सूरिया और किलिकिया के रहनेवाले भाइयों को जो अन्यजातियों में से हैं, प्रेरितों और प्राचीन† भाइयों का नमस्कार! २४ हम ने सुना है, कि हम में से कितनों ने वहां जाकर, तुम्हें अपनी बातों से घबरा दिया; और तुम्हारे मन उलट दिए हैं परन्तु हम ने उन को आज्ञा नहीं दी थी। २५ इसलिये हम ने एक चित्त होकर ठीक समझा, कि चुने हुए मनुष्यों को अपने प्यारे बरनबास और पौलुस के साथ तुम्हारे पास भेजें। २६ ये तो ऐसे मनुष्य हैं, जिन्हों ने अपने प्राण हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम के लिये जोखिम में डाले हैं। २७ और हम ने यहूदा और सीलास को भेजा है, जो अपने मुंह से भी ये बातें कह देंगे। २८ पवित्र आत्मा को, और हम को ठीक जान पड़ा, कि इन आवश्यक बातों को छोड़; तुम पर और बोझ न डालें; २९ कि तुम मूरतों के बलि किए हुओं से, और लोहू से, और गला घोंटे हुओं के मांस से, और व्यभिचार से, परे रहो। इन से परे रहो; तो तुम्हारा भला होगा। आगे शुभ॥

३० फिर वे विदा होकर अन्ताकिया में पहुंचे, और सभा को इकट्ठी करके वह उन्हें पत्री दे दी। ३१ और वे पढ़कर उस उपदेश की बात से अति आनन्दित हुए। ३२ और यहूदा और सीलास ने जो आप भी भविष्यद्वक्ता थे, बहुत बातों से भाइयों को उपदेश देकर स्थिर किया। ३३ वे कुछ दिन रहकर भाइयों से शान्ति के साथ विदा हुए, कि अपने भेजनेवालों के पास जाएं। ३४ (परन्तु सीलास को वहां रहना अच्छा लगा।) ३५ और पौलुस और बरनबास अन्ताकिया में रह गए: और बहुत और लोगों के साथ प्रभु के वचन का उपदेश करते और सुसमाचार सुनाते रहे॥

* या प्रिसबुतिरों। † या प्रिसबुतिर।

३६ कुछ दिन बाद पौलुस ने बरनबास से कहा; कि जिन जिन नगरों में हम ने प्रभु का वचन सुनाया था, आओ, फिर उन में चलकर अपने भाइयों को देखें, कि कैसे हैं। ३७ तब बरनबास ने यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है, साथ लेने का विचार किया। ३८ परन्तु पौलुस ने उसे जो पंफूलिया में उन से अलग हो गया था, और काम पर उन के साथ न गया, साथ ले जाना अच्छा न समझा। ३९ सो ऐसा टंटा हुआ, कि वे एक दूसरे से अलग हो गए: और बरनबास, मरकुस को लेकर जहाज पर कुप्रुस को चला गया। ४० परन्तु पौलुस ने सीलास को चुन लिया, और भाइयों से परमेश्वर के अनुग्रह पर सौंपा जाकर वहां से चला गया। ४१ और कलीसियाओं को स्थिर करता हुआ, सूरिया और किलिकिया से होते हुए निकला॥

१६ फिर वह दिरबे और लुस्त्रा में भी गया, और देखो, वहां तीमुथियुस नाम एक चेला था, जो किसी विश्वासी यहूदिनी का पुत्र था, परन्तु उसका पिता यूनानी था। २ वह लुस्त्रा और इकुनियुम के भाइयों में सुनाम था। ३ पौलुस ने चाहा, कि यह मेरे साथ चले; और जो यहूदी लोग उन जगहों में थे उन के कारण उसे लेकर उसका खतना किया; क्योंकि वे सब जानते थे, कि उसका पिता यूनानी था। ४ और नगर नगर जाते हुए वे उन विधियों को जो यरूशलेम के प्रेरितों और प्राचीनों ने * ठहराई थीं, मानने के लिये उन्हें पहुंचाते जाते थे। ५ इस प्रकार कलीसिया विश्वास में स्थिर होती गईं और गिनती में प्रति दिन बढ़ती गईं॥

६ और वे फ्रूगिया और गलतिया देशों में से होकर गए, और पवित्र आत्मा ने उन्हें एशिया में वचन सुनाने से मना किया। ७ और उन्हों ने मूसिया के निकट पहुंचकर, बितूनिया में जाना चाहा; परन्तु यीशु के आत्मा ने उन्हें जाने न दिया। ८ सो मूसिया से होकर वे त्रोआस में आए। ९ और पौलुस ने रात को एक दर्शन देखा कि एक मकिदुनी पुरुष खड़ा हुआ, उस से बिनती करके कहता है, कि पार उतरकर मकिदुनिया में आ; और हमारी सहायता कर। १० उसके यह दर्शन देखते ही हम ने तुरन्त मकिदुनिया जाना चाहा, यह समझकर, कि परमेश्वर ने हमें उन्हें सुसमाचार सुनाने के लिये बुलाया है॥

११ सो त्रोआस से जहाज खोलकर हम सीधे सुमात्राके और दूसरे दिन नियापुलिस में आए। १२ वहां से हम फिलिप्पी में पहुंचे, जो मकिदुनिया प्रान्त का मुख्य नगर, और रोमियों की बस्ती है; और हम उस नगर में कुछ दिन तक रहे। १३ सब्त के दिन हम नगर के फाटक के बाहर नदी के किनारे यह समझकर गए, कि वहां प्रार्थना करने का स्थान होगा; और बैठकर उन स्त्रियों से जो इकट्ठी हुई थीं, बातें करने लगे। १४ और लुदिया नाम थुआथीरा नगर की बैंजनी कपड़े बेचनेवाली एक भक्त स्त्री सुनती थी, और प्रभु ने उसका मन खोला, ताकि पौलुस की बातों पर चित्त लगाए। १५ और जब उस ने अपने घराने समेत बपतिस्मा लिया, तो उस ने बिनती की, कि यदि तुम मुझे प्रभु की विश्वासिनी

* या प्रिसबुतिरों।

समझते हो, तो चलकर मेरे घर में रहो; और वह हमें मनाकर ले गई ॥

१६ जब हम प्रार्थना करने की जगह जा रहे थे, तो हमें एक दासी मिली जिस में भावी कहनेवाली आत्मा थी; और भावी कहने से अपने स्वामियों के लिये बहुत कुछ कमा लाती थी। १७ वह पौलुस के और हमारे पीछे आकर चिल्लाने लगी कि ये मनुष्य परम प्रधान परमेश्वर के दास हैं, जो हमें उद्धार के मार्ग की कथा सुनाते हैं। १८ वह बहुत दिन तक ऐसा ही करती रही, परन्तु पौलुस दुःखित हुआ, और मुंह फेरकर उस आत्मा से कहा, मैं तुझे यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देता हूं, कि उस में से निकल जा और वह उसी घड़ी निकल गई ॥

१६ जब उसके स्वामियों ने देखा, कि हमारी कमाई की आशा जाती रही, तो पौलुस और सीलास को पकड़ के चौक में प्रधानों के पास खींच ले गए। २० और उन्हें फौजदारी के हाकिमों के पास ले जाकर कहा; ये लोग जो यहूदी हैं, हमारे नगर में बड़ी हलचल मचा रहे हैं। २१ और ऐसे व्यवहार बता रहे हैं, जिन्हें ग्रहण करना या मानना हम रोमियों के लिये ठीक नहीं। २२ तब भीड़ के लोग उन के विरोध में इकट्ठे होकर चढ़ आए, और हाकिमों ने उन के कपड़े फाड़कर उतार डाले, और उन्हें बेत मारने की आज्ञा दी। २३ और बहुत बेत लगवाकर उन्हें बन्दीगृह में डाला; और दारोगा को आज्ञा दी, कि उन्हें चौकसी से रखे। २४ उस ने ऐसी आज्ञा पाकर उन्हें भीतर की कोठरी में रखा और उन के पांव काठ में ठोंक दिए। २५ आधी रात के लगभग पौलुस और सीलास प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और बन्धुए उन की सुन रहे थे। २६ कि इतने में एकाएक बड़ा भुईंडोल हुआ, यहां तक कि बन्दीगृह की नेव हिल गई, और तुरन्त सब द्वार खुल गए; और सब के बन्धन खुल पड़े। २७ और दारोगा जाग उठा, और बन्दीगृह के द्वार खुले देखकर समझा कि बन्धुए भाग गए, सो उस ने तलवार खींचकर अपने आप को मार डालना चाहा। २८ परन्तु पौलुस ने ऊंचे शब्द से पुकारकर कहा; अपने आप को कुछ हानि न पहुंचा, क्योंकि हम सब यहां हैं। २६ तब वह दीया मंगवाकर भीतर लपक गया, और कांपता हुआ पौलुस और सीलास के आगे गिरा। ३० और उन्हें बाहर लाकर कहा, हे साहिबो, उद्धार पाने के लिये मैं क्या करूं? ३१ उन्हों ने कहा, प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा। ३२ और उन्हों ने उस को, और उसके सारे घर के लोगों को प्रभु का वचन सुनाया। ३३ और रात को उसी घड़ी उस ने उन्हें ले जाकर उन के घाव धोए, और उस ने अपने सब लोगों समेत तुरन्त बपतिस्मा लिया। ३४ और उस ने उन्हें अपने घर में ले जाकर, उन के आगे भोजन रखा और सारे घराने समेत परमेश्वर पर विश्वास करके आनन्द किया ॥

३५ जब दिन हुआ तब हाकिमों ने प्यादों के हाथ कहला भेजा कि उन मनुष्यों को छोड़ दो। ३६ दारोगा ने ये बातें पौलुस से कह सुनाईं, कि हाकिमों ने तुम्हारे छोड़ देने की आज्ञा भेज दी है, सो अब निकलकर कुशल से चले जाओ। ३७ परन्तु पौलुस ने उन से कहा, उन्हों ने हमें जो रोमी मनुष्य हैं, दोषी ठहराए बिना, लोगों के साम्हने मारा, और बन्दीगृह में डाला, और अब

क्या हमें चुपके से निकाल देते हैं? ऐसा नहीं, परन्तु वे आप आकर हमें बाहर ले जाएं। ३८ प्यादों ने ये बातें हाकिमों से कह दीं, और वे यह सुनकर कि रोमी हैं, डर गए। ३९ और आकर उन्हें मनाया, और बाहर ले जाकर बिनती की कि नगर से चले जाएं। ४० वे बन्दीगृह से निकलकर लुदिया के यहां गए, और भाइयों से भेंट करके उन्हें शान्ति दी,* और चले गए॥

१७ फिर वे अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया होकर थिस्सलुनीके में आए, जहां यहूदियों का एक आराधनालय था। २ और पौलुस अपनी रीति के अनुसार उन के पास गया, और तीन सब्त के दिन पवित्र शास्त्रों से उन के साथ विवाद किया। ३ और उन का अर्थ खोल खोलकर समझाता था, कि मसीह को दुख उठाना, और मरे हुओं में से जी उठना, अवश्य था; और यही यीशु जिस की मैं तुम्हें कथा सुनाता हूं, मसीह है। ४ उन में से कितनों ने, और भक्त यूनानियों में से बहुतेरों ने और बहुत सी कुलीन स्त्रियों ने मान लिया, और पौलुस और सीलास के साथ मिल गए। ५ परन्तु यहूदियों ने डाह से भरकर बाजारू लोगों में से कई दुष्ट मनुष्यों को अपने साथ में लिया, और भीड़ लगाकर नगर में हुल्लड़ मचाने लगे, और यासोन के घर पर चढ़ाई करके उन्हें लोगों के साम्हने लाना चाहा। ६ और उन्हें न पाकर, वे यह चिल्लाते हुए यासोन और कितने और भाइयों को नगर के हाकिमों के साम्हने खींच लाए, कि ये लोग जिन्हों ने जगत को उलटा पुलटा कर दिया है, यहां भी आए हैं। ७ और यासोन ने उन्हें अपने यहां उतारा है, और ये सब के सब यह कहते हैं कि यीशु राजा है, और कैसर की आज्ञाओं का विरोध करते हैं। ८ उन्हों ने लोगों को और नगर के हाकिमों को यह सुनाकर घबरा दिया। ९ और उन्हों ने यासोन और बाकी लोगों से मुचलका लेकर उन्हें छोड़ दिया॥

१० भाइयों ने तुरन्त रात ही रात पौलुस और सीलास को बिरीया में भेज दिया: और वे वहां पहुंचकर यहूदियों के आराधनालय में गए। ११ ये लोग तो थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे और उन्हों ने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रति दिन पवित्र शास्त्रों में ढूंढ़ते रहे कि ये बातें योंहीं हैं, कि नहीं। १२ सो उन में से बहुतों ने, और यूनानी कुलीन स्त्रियों में से, और पुरुषों में से बहुतेरों ने विश्वास किया। १३ किन्तु जब थिस्सलुनीके के यहूदी जान गए, कि पौलुस बिरीया में भी परमेश्वर का वचन सुनाता है, तो वहां भी आकर लोगों को उसकाने और हलचल मचाने लगे। १४ तब भाइयों ने तुरन्त पौलुस को विदा किया, कि समुद्र के किनारे चला जाए; परन्तु सीलास और तीमुथियुस वहीं रह गए। १५ पौलुस के पहुंचानेवाले उसे अथेने तक ले गए, और सीलास और तीमुथियुस के लिये यह आज्ञा लेकर विदा हुए, कि मेरे पास बहुत शीघ्र आओ॥

१६ जब पौलुस अथेने में उन की बाट जोह रहा था, तो नगर को मूरतों से भरा हुआ देखकर उसका जी जल गया। १७ सो वह आराधनालय में यहूदियों और भक्तों से और चौक में जो लोग मिलते थे, उन से हर दिन वाद-विवाद किया करता था। १८ तब इपिकूरी और स्तोईकी पण्डितों में से कितने उस से तर्क करने लगे,

* या उपदेश किया।

और कितनों ने कहा, यह बकवादी क्या कहना चाहता है? परन्तु औरों ने कहा; वह अन्य देवताओं का प्रचारक मालूम पड़ता है, क्योंकि वह यीशु का, और पुनरुत्थान * का सुसमाचार सुनाता था। १६ तब वे उसे अपने साथ अरियुपगुस पर ले गए और पूछा, क्या हम जान सकते हैं, कि यह नया मत जो तू सुनाता है, क्या है? २० क्योंकि तू अनोखी बातें हमें सुनाता है, इसलिये हम जानना चाहते हैं कि इन का अर्थ क्या है? २१ (इसलिये कि सब अथेनवी और परदेशी जो वहां रहते थे नई नई बातें कहने और सुनने के सिवाय और किसी काम में समय नहीं बिताते थे)। २२ तब पौलुस ने अरियुपगुस के बीच में खड़ा होकर कहा;

हे अथेने के लोगो मैं देखता हूं, कि तुम हर बात में देवताओं के बड़े माननेवाले हो। २३ क्योंकि मैं फिरते हुए तुम्हारी पूजने की वस्तुओं को देख रहा था, तो एक ऐसी वेदी भी पाई, जिस पर लिखा था, कि "अनजाने ईश्वर के लिये।" सो जिसे तुम बिना जाने पूजते हो, मैं तुम्हें उसका समाचार सुनाता हूं। २४ जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उस की सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता। २५ न किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वह तो आप ही सब को जीवन और स्वास और सब कुछ देता है। २६ उस ने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं; और उन के ठहराए हुए समय, और निवास के सिवानों को इसलिये बान्धा है। २७ कि वे परमेश्वर को ढूंढ़ें, कदाचित उसे टटोलकर पा जाएं तौभी वह हम में से किसी से दूर नहीं! २८ क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं; जैसे तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, कि हम तो उसी के वंश भी हैं। २६ सो परमेश्वर का वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं, कि ईश्वरत्व, सोने या रूपे या पत्थर के समान है, जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पना से गढ़े गए हों। ३० इसलिये परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। ३१ क्योंकि उस ने एक दिन ठहराया है, जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उस ने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है॥

३२ मरे हुओं के पुनरुत्थान की बात सुनकर कितने तो ठट्ठा करने लगे, और कितनों ने कहा, यह बात हम तुझ से फिर कभी सुनेंगे। ३३ इस पर पौलुस उन के बीच में से निकल गया। ३४ परन्तु कई एक मनुष्य उसके साथ मिल गए, और विश्वास किया, जिन में दियुनुसियुस अरियुपगी था, और दमरिस नाम एक स्त्री थी, और उन के साथ और भी कितने लोग थे॥

१८ इस के बाद पौलुस अथेने को छोड़कर कुरिन्थुस में आया। २. और वहां अक्विला नाम एक यहूदी मिला, जिस का जन्म पुन्तुस का था; और अपनी पत्नी प्रिस्किल्ला समेत इतालिया से नया आया था, क्योंकि क्लौदियुस ने

* या मृतकोत्थान; अर्थात् जी उठने।

सब यहूदियों को रोम से निकल जाने की आज्ञा दी थी, सो वह उन के यहां गया। ३ और उसका और उन का एक ही उद्यम था; इसलिये वह उन के साथ रहा, और वे काम करने लगे, और उन का उद्यम तम्बू बनाने का था। ४ और वह हर एक सब्त के दिन आराधनालय में वाद-विवाद करके यहूदियों और यूनानियों को भी समझाता था॥

५ जब सीलास और तीमुथियुस मकिदुनिया से आए, तो पौलुस वचन सुनाने की धुन में लगकर यहूदियों को गवाही देता था कि यीशु ही मसीह है। ६ परन्तु जब वे विरोध और निन्दा करने लगे, तो उस ने अपने कपड़े झाड़कर उन से कहा; तुम्हारा लोहू तुम्हारी ही गर्दन पर रहे: मैं निर्दोष हूं: अब से मैं अन्यजातियों के पास जाऊंगा। ७ और वहां से चलकर वह तितुस युस्तुस नाम परमेश्वर के एक भक्त के घर में आया, जिस का घर आराधनालय से लगा हुआ था। ८ तब आराधनालय के सरदार क्रिसपुस ने अपने सारे घराने समेत प्रभु पर विश्वास किया; और बहुत से कुरिन्थी सुनकर विश्वास लाए और बपतिस्मा लिया। ९ और प्रभु ने रात को दर्शन के द्वारा पौलुस से कहा, मत डर, बरन कहे जा, और चुप मत रह। १० क्योंकि मैं तेरे साथ हूं: और कोई तुझ पर चढ़ाई करके तेरी हानि न करेगा; क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत से लोग हैं। ११ सो वह उन में परमेश्वर का वचन सिखाते हुए डेढ़ वर्ष तक रहा॥

१२ जब गल्लियो अखाया देश का हाकिम * था तो यहूदी लोग एका करके पौलुस पर चढ़ आए, और उसे न्याय आसन के साम्हने लाकर, कहने लगे। १३ कि यह लोगों को समझाता है, कि परमेश्वर की उपासना ऐसी रीति से करें, जो व्यवस्था के विपरीत है। १४ जब पौलुस बोलने पर था, तो गल्लियो ने यहूदियों से कहा; हे यहूदियो, यदि यह कुछ अन्याय या दुष्टता की बात होती तो उचित था कि मैं तुम्हारी सुनता। १५ परन्तु यदि यह वाद-विवाद शब्दों, और नामों, और तुम्हारे यहां की व्यवस्था के विषय में है, तो तुम ही जानो; क्योंकि मैं इन बातों का न्यायी बनना नहीं चाहता। १६ और उस ने उन्हें न्याय आसन के साम्हने से निकलवा दिया। १७ तब सब लोगों ने आराधनालय के सरदार सोस्थिनेस को पकड़ के न्याय आसन के साम्हने मारा: परन्तु गल्लियो ने इन बातों की कुछ भी चिन्ता न की॥

१८ सो पौलुस बहुत दिन तक वहां रहा, फिर भाइयों से विदा होकर किंख्रिया में इसलिये सिर मुण्डाया क्योंकि उस ने मन्नत मानी थी और जहाज पर सूरिया को चल दिया और उसके साथ प्रिस्किल्ला और अक्विला थे। १९ और उस ने इफिसुस में पहुंचकर उन को वहां छोड़ा, और आप ही आराधनालय में जाकर यहूदियों से विवाद करने लगा। २० जब उन्हों ने उस से बिनती की, कि हमारे साथ और कुछ दिन रह, तो उस ने स्वीकार न किया। २१ परन्तु यह कहकर उन से विदा हुआ, कि यदि परमेश्वर चाहे तो मैं तुम्हारे पास फिर आऊंगा। २२ तब इफिसुस से जहाज खोलकर चल दिया, और कैसरिया में उतरकर (यरूशलेम को) गया और कलीसिया को नमस्कार करके अन्ताकिया में आया। २३ फिर कुछ दिन रहकर वहां से चला

* या प्रतिनिधि।

गया, और एक ओर से गलतिया और फ्रूगिया में सब चेलों को स्थिर करता फिरा॥

२४ अपुल्लोस नाम एक यहूदी जिस का जन्म सिकन्दरिया में हुआ था, जो विद्वान पुरुष था और पवित्र शास्त्र को अच्छी तरह से जानता था इफिसुस में आया। २५ उस ने प्रभु के मार्ग की शिक्षा पाई थी, और मन लगाकर यीशु के विषय में ठीक ठीक सुनाता, और सिखाता था, परन्तु वह केवल यूहन्ना के बपतिस्मा की बात जानता था। २६ वह आराधनालय में निडर होकर बोलने लगा, पर प्रिस्किल्ला और अक्विला उस की बातें सुनकर, उसे अपने यहां ले गए, और परमेश्वर का मार्ग उस को और भी ठीक ठीक बताया। २७ और जब उस ने निश्चय किया कि पार उतरकर अखाया को जाए तो भाइयों ने उसे ढाढ़स देकर चेलों को लिखा कि वे उस से अच्छी तरह मिलें, और उस ने पहुंचकर वहां उन लोगों की बड़ी सहायता की जिन्हों ने अनुग्रह के कारण विश्वास किया था। २८ क्योंकि वह पवित्र शास्त्र से प्रमाण दे देकर, कि यीशु ही मसीह है; बड़ी प्रबलता से यहूदियों को सब के साम्हने निरुत्तर करता रहा॥

१९ और जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में था, तो पौलुस ऊपर के सारे देश से होकर इफिसुस में आया, और कई चेलों को देखकर। २ उन से कहा; क्या तुम ने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया? उन्हों ने उस से कहा, हम ने तो पवित्र आत्मा की चर्चा भी नहीं सुनी। ३ उस ने उन से कहा; तो फिर तुम ने किस का बपतिस्मा लिया? उन्हों ने कहा; यूहन्ना का बपतिस्मा। ४ पौलुस ने कहा; यूहन्ना ने यह कहकर मन फिराव का बपतिस्मा दिया, कि जो मेरे बाद आनेवाला है, उस पर अर्थात् यीशु पर विश्वास करना। ५ यह सुनकर उन्हों ने प्रभु यीशु के नाम का बपतिस्मा लिया। ६ और जब पौलुस ने उन पर हाथ रखे, तो उन पर पवित्र आत्मा उतरा, और वे भिन्न-भिन्न भाषा बोलने और भविष्यद्वाणी करने लगे। ७ ये सब लगभग बारह पुरुष थे॥

८ और वह आराधनालय में जाकर तीन महीने तक निडर होकर बोलता रहा, और परमेश्वर के राज्य के विषय में विवाद करता और समझाता रहा। ९ परन्तु जब कितनों ने कठोर होकर उस की नहीं मानी वरन लोगों के साम्हने इस मार्ग को बुरा कहने लगे, तो उस ने उन को छोड़कर चेलों को अलग कर लिया, और प्रति दिन तुरन्नुस की पाठशाला में विवाद किया करता था। १० दो वर्ष तक यही होता रहा, यहां तक कि आसिया के रहनेवाले क्या यहूदी, क्या यूनानी सब ने प्रभु का वचन सुन लिया। ११ और परमेश्वर पौलुस के हाथों से सामर्थ के अनोखे काम दिखाता था। १२ यहां तक कि रूमाल और अंगोछे उस की देह से छुलवाकर बीमारों पर डालते थे, और उन की बीमारियां जाती रहती थीं; और दुष्टात्माएं उन में से निकल जाया करती थीं। १३ परन्तु कितने यहूदी जो झाड़ा फूंकी करते फिरते थे, यह करने लगे, कि जिन में दुष्टात्मा हों उन पर प्रभु यीशु का नाम यह कहकर फूंके कि जिस यीशु का प्रचार पौलुस करता है, मैं तुम्हें उसी की शपथ देता हूं। १४ और स्क्किवा नाम के एक यहूदी महायाजक के सात पुत्र थे, जो ऐसा ही करते थे। १५ पर दुष्टात्मा ने उत्तर दिया, कि यीशु को मैं जानती हूं,

और पौलुस को भी पहचानता हूं: परन्तु तुम कौन हो? १६ और उस मनुष्य ने जिस में दुष्ट आत्मा थी; उन पर लपककर, और उन्हें वश में लाकर, उन पर ऐसा उपद्रव किया, कि वे नंगे और घायल होकर उस घर से निकल भागे। १७ और यह बात इफिसुस के रहनेवाले यहूदी और यूनानी भी सब जान गए, और उन सब पर भय छा गया; और प्रभु यीशु के नाम की बड़ाई हुई। १८ और जिन्हों ने विश्वास किया था, उन में से बहुतेरों ने आकर अपने अपने कामों को मान लिया और प्रगट किया। १९ और जादू करनेवालों में से बहुतों ने अपनी अपनी पोथियां इकट्ठी करके सब के साम्हने जला दीं, और जब उन का दाम जोड़ा गया, तो पचास हजार रुपये की निकलीं। २० यों प्रभु का वचन बल पूर्वक फैलता गया और प्रबल होता गया।।

२१ जब ये बातें हो चुकीं, तो पौलुस ने आत्मा में ठाना कि मकिदुनिया और अखाया से होकर यरूशलेम को जाऊं, और कहा, कि वहां जाने के बाद मुझे रोमा को भी देखना अवश्य है। २२ सो अपनी सेवा करनेवालों में से तीमुथियुस और इरास्तुस को मकिदुनिया में भेजकर आप कुछ दिन आसिया में रह गया।।

२३ उस समय उस पन्थ के विषय में बड़ा हुल्लड़ हुआ। २४ क्योंकि देमेत्रियुस नाम का एक सुनार अरतिमिस के चान्दी के मन्दिर बनवाकर कारीगरों को बहुत काम दिलाया करता था। २५ उस ने उन को, और, और ऐसी वस्तुओं के कारीगरों को इकट्ठे करके कहा; हे मनुष्यो, तुम जानते हो, कि इस काम से हमें कितना धन मिलता है। २६ और तुम देखते और सुनते हो, कि केवल इफिसुस ही में नहीं, बरन प्रायः सारे आसिया में यह कह कहकर इस पौलुस ने बहुत लोगों को समझाया और भरमाया भी है, कि जो हाथ की कारीगरी हैं, वे ईश्वर नहीं। २७ और अब केवल इसी एक बात का ही डर नहीं, कि हमारे इस धन्धे की प्रतिष्ठा जाती रहेगी; बरन यह कि महान देवी अरतिमिस का मन्दिर तुच्छ समझा जाएगा और जिसे सारा आसिया और जगत पूजता है उसका महत्व भी जाता रहेगा। २८ वे यह सुनकर क्रोध से भर गए, और चिल्ला चिल्लाकर कहने लगे, "इफिसियों की अरतिमिस महान है!" २९ और सारे नगर में बड़ा कोलाहल मच गया और लोगों ने गयुस और अरिस्तरखुस माकिदुनियों को जो पौलुस के संगी यात्री थे, पकड़ लिया, और एकचित्त होकर रंगशाला में दौड़ गए। ३० जब पौलुस ने लोगों के पास भीतर जाना चाहा तो चेलों ने उसे जाने न दिया। ३१ आसिया के हाकिमों में से भी उसके कई मित्रों ने उसके पास कहला भेजा, और बिनती की, कि रंगशाला में जाकर जोखिम न उठाना। ३२ सो कोई कुछ चिल्लाया, और कोई कुछ; क्योंकि सभा में बड़ी गड़बड़ी हो रही थी, और बहुत से लोग तो यह जानते भी नहीं थे कि हम किस लिये इकट्ठे हुए हैं। ३३ तब उन्हों ने सिकन्दर को, जिसे यहूदियों ने खड़ा किया था, भीड़ में से आगे बढ़ाया, और सिकन्दर हाथ से सैन करके लोगों के साम्हने उत्तर दिया चाहता था। ३४ परन्तु जब उन्हों ने जान लिया कि वह यहूदी है, तो सब के सब एक शब्द से कोई दो घंटे तक चिल्लाते रहे, कि इफिसियों की अरतिमिस महान है। ३५ तब नगर के मन्त्री ने लोगों को शान्त करके कहा; हे इफिसियो, कौन नहीं जानता, कि इफिसियों का नगर

बड़ी देवी अरतिमिस के मन्दिर, और ज्यूस की ओर से गिरी हुई मूरत का टहलुआ है। ३६ सो जब कि इन बातों का खण्डन ही नहीं हो सकता, तो उचित है, कि तुम चुपके रहो; और बिना सोचे विचारे कुछ न करो। ३७ क्योंकि तुम इन मनुष्यों को लाए हो, जो न मन्दिर के लूटनेवाले हैं, और न हमारी देवी के निन्दक हैं। ३८ यदि देमेत्रियुस और उसके साथी कारीगरों को किसी से विवाद हो तो कचहरी खुली है, और हाकिम * भी हैं; वे एक दूसरे पर नालिश करें। ३९ परन्तु यदि तुम किसी और बात के विषय में कुछ पूछना चाहते हो, तो नियत सभा में फैसला किया जाएगा। ४० क्योंकि आज के बलवे के कारण हम पर दोष लगाए जाने का डर है, इसलिये कि इस का कोई कारण नहीं, सो हम इस भीड़ के इकट्ठा होने का कोई उत्तर न दे सकेंगे। ४१ और यह कह के उस ने सभा को विदा किया॥

२० जब हुल्लड़ थम गया, तो पौलुस ने चेलों को बुलवाकर समझाया, और उन से विदा होकर मकिदुनिया की ओर चल दिया। २ और उस सारे देश में से होकर और उन्हें बहुत समझाकर, वह यूनान में आया। ३ जब तीन महीने रहकर जहाज पर सूरिया की ओर जाने पर था, तो यहूदी उस की घात में लगे, इसलिये उस ने यह सलाह की कि मकिदुनिया होकर लौट जाए। ४ बिरीया के पुर्रुस का पुत्र सोपत्रुस और थिस्सलूनीकियों में से अरिस्तर्खुस और सिकुन्दुस और दिरबे का गयुस, और तीमुथियुस और आसिया का तुखिकुस और त्रुफिमुस आसिया तक उसके साथ हो लिए। ५ वे आगे जाकर त्रोआस में हमारी बाट जोहते रहे। ६ और हम अखमीरी रोटी के दिनों के बाद फिलिप्पी से जहाज पर चढ़कर पांच दिन में त्रोआस में उन के पास पहुंचे, और सात दिन तक वहीं रहे॥

७ सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने * के लिये इकट्ठे हुए, तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उन से बातें कीं, और आधी रात तक बातें करता रहा। ८ जिस अटारी पर हम इकट्ठे थे, उस में बहुत दीये जल रहे थे। ९ और यूतुखुस नाम का एक जवान खिड़की पर बैठा हुआ गहरी नींद से झुक रहा था, और जब पौलुस देर तक बातें करता रहा तो वह नींद के झोके में तीसरी अटारी पर से गिर पड़ा, और मरा हुआ उठाया गया। १० परन्तु पौलुस उतरकर उस से लिपट गया, और गले लगाकर कहा; घबराओ नहीं; क्योंकि उसका प्राण उसी में है। ११ और ऊपर जाकर रोटी तोड़ी और खाकर इतनी देर तक उन से बातें करता रहा, कि पौ फट गई; फिर वह चला गया। १२ और वे उस लड़के को जीवित ले आए, और बहुत शान्ति पाई॥

१३ हम पहले से जहाज पर चढ़कर अस्सुस को इस विचार से आगे गए, कि वहां से हम पौलुस को चढ़ा लें क्योंकि उस ने यह इसलिये ठहराया था, कि आप ही पैदल जानेवाला था। १४ जब वह अस्सुस में हमें मिला तो हम उसे चढ़ाकर मितुलेने में आए। १५ और वहां से जहाज खोलकर हम दूसरे दिन खियुस के साम्हने पहुंचे, और अगले दिन सामुस में लगान किया;

* या प्रतिनिधि।

* देखो २ अध्याय ४२ पद।

फिर दूसरे दिन मीलेतुस में आए। १६ क्योंकि पौलुस ने इफिसुस के पास से होकर जाने की ठानी थी, कि कहीं ऐसा न हो, कि उसे आसिया में देर लगे; क्योंकि वह जल्दी करता था, कि यदि हो सके, तो उसे पिन्तेकुस्त का दिन यरूशलेम में कटे॥

१७ और उस ने मीलेतुस से इफिसुस में कहला भेजा, और कलीसिया के प्राचीनों * को बुलवाया। १८ जब वे उस के पास आए, तो उन से कहा;

तुम जानते हो, कि पहिले ही दिन से जब मैं आसिया में पहुंचा, मैं हर समय तुम्हारे साथ किस प्रकार रहा। १९ अर्थात् बड़ी दीनता से, और आंसू बहा बहाकर, और उन परीक्षाओं में जो यहूदियों के षड़यन्त्र के कारण मुझ पर आ पड़ी; मैं प्रभु की सेवा करता ही रहा। २० और जो जो बातें तुम्हारे लाभ की थीं, उन को बताने और लोगों के साम्हने और घर घर सिखाने से कभी न झिझका। २१ बरन यहूदियों और यूनानियों के साम्हने गवाही देता रहा, कि परमेश्वर की ओर मन फिराना, और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करना चाहिए। २२ और अब देखो, मैं आत्मा में बन्धा हुआ यरूशलेम को जाता हूं, और नहीं जानता, कि वहां मुझ पर क्या क्या बीतेगा? २३ केवल यह कि पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही दे देकर मुझ से कहता है, कि बन्धन और क्लेश तेरे लिये तैयार हैं। २४ परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता: कि उसे प्रिय जानूं, बरन यह कि मैं अपनी दौड़ को, और उस सेवकाई को पूरी करूं, जो मैं ने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिये प्रभु यीशु से पाई है। २५ और अब देखो, मैं जानता हूं, कि तुम सब जिन में मैं परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता फिरा, मेरा मुंह फिर न देखोगे। २६ इसलिये मैं आज के दिन तुम से गवाही देकर कहता हूं, कि मैं सब के लोहू से निर्दोष हूं। २७ क्योंकि मैं परमेश्वर की सारी मनसा को तुम्हें पूरी रीति से बताने से न झिझका। २८ इसलिये अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो; जिस में पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष * ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उस ने अपने लोहू से मोल लिया है। २९ मैं जानता हूं, कि मेरे जाने के बाद फाड़नेवाले भेड़िए तुम में आएंगे, जो झुंड को न छोड़ेंगे। ३० तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी मेढ़ी बातें कहेंगे। ३१ इसलिये जागते रहो; और स्मरण करो; कि मैं ने तीन वर्ष तक रात दिन आंसू बहा बहाकर, हर एक को चितौनी देना न छोड़ा। ३२ और अब मैं तुम्हें परमेश्वर को, और उसके अनुग्रह के वचन को सौंप देता हूं; जो तुम्हारी उन्नति कर सकता है, और सब पवित्रों में साझी करके मीरास दे सकता है। ३३ मैं ने किसी की चान्दी सोने या कपड़े का लालच नहीं किया। ३४ तुम आप ही जानते हो कि इन्हीं हाथों ने मेरी और मेरे साथियों की आवश्यकताएं पूरी कीं। ३५ मैं ने तुम्हें सब कुछ करके दिखाया, कि इस रीति से परिश्रम करते हुए निर्बलों को सम्भालना, और प्रभु यीशु की बातें स्मरण रखना अवश्य है, कि उस ने आप ही कहा है; कि लेने से देना धन्य है॥

* या प्रिसबुतिरों।

* या बिशप।

३६ यह कहकर उस ने घुटने टेके और उन सब के साथ प्रार्थना की। ३७ तब वे सब बहुत रोए और पौलुस के गले में लिपट कर उसे चूमने लगे। ३८ वे विशेष करके इस बात का शोक करते थे, जो उस ने कही थी, कि तुम मेरा मुंह फिर न देखोगे; और उन्हों ने उसे जहाज तक पहुंचाया ॥

२१ जब हम ने उन से अलग होकर जहाज खोला, तो सीधे मार्ग से कोस में आए, और दूसरे दिन रुदुस में, और वहां से पतरा में। २ और एक जहाज फीनीके को जाता हुआ मिला, और उस पर चढ़कर, उसे खोल दिया। ३ जब कुप्रुस दिखाई दिया, तो हम ने उसे बाएं हाथ छोड़ा, और सूरिया को चलकर सूर में उतरे; क्योंकि वहां जहाज का बोझ उतारना था। ४ और चेलों को पाकर हम वहां सात दिन तक रहे: उन्हों ने आत्मा के सिखाए पौलुस से कहा, कि यरूशलेम में पांव न रखना। ५ जब वे दिन पूरे हो गए, तो हम वहां से चल दिए; और सब ने स्त्रियों और बालकों समेत हमें नगर के बाहर तक पहुंचाया और हम ने किनारे पर घुटने टेककर प्रार्थना की। ६ तब एक दूसरे से विदा होकर, हम तो जहाज पर चढ़े, और वे अपने अपने घर लौट गए ॥

७ तब हम सूर से जलयात्रा पूरी करके पतुलिमयिस में पहुंचे, और भाइयों को नमस्कार करके उन के साथ एक दिन रहे। ८ दूसरे दिन हम वहां से चलकर कैसरिया में आए, और फिलिप्पुस सुसमाचार प्रचारक के घर में जो सातों में से एक था, जाकर उसके यहां रहे। ९ उस की चार कुंवारी पुत्रियां थीं; जो भविष्यद्वाणी करती थीं। १० जब हम वहां बहुत दिन रह चुके, तो अगबुस नाम एक भविष्यद्वक्ता यहूदिया से आया। ११ उस ने हमारे पास आकर पौलुस का पटका लिया, और अपने हाथ पांव बान्धकर कहा; पवित्र आत्मा यह कहता है, कि जिस मनुष्य का यह पटका है, उस को यरूशलेम में यहूदी इसी रीति से बान्धेंगे, और अन्यजातियों के हाथ में सौंपेंगे। १२ जब ये बातें सुनीं, तो हम और वहां के लोगों ने उस से बिनती की, कि यरूशलेम को न जाए। १३ परन्तु पौलुस ने उत्तर दिया, कि तुम क्या करते हो, कि रो रोकर मेरा मन तोड़ते हो, मैं तो प्रभु यीशु के नाम के लिये यरूशलेम में न केवल बान्धे जाने ही के लिये बरन मरने के लिये भी तैयार हूं। १४ जब उस ने न माना तो हम यह कहकर चुप हो गए; कि प्रभु की इच्छा पूरी हो ॥

१५ उन दिनों के बाद हम बान्ध छान्धकर यरूशलेम को चल दिए। १६ कैसरिया के भी कितने चेले हमारे साथ हो लिए, और मनासोन नाम कुप्रुस के एक पुराने चेले को साथ ले आए, कि हम उसके यहां टिकें ॥

१७ जब हम यरूशलेम में पहुंचे, तो भाई बड़े आनन्द के साथ हम से मिले। १८ दूसरे दिन पौलुस हमें लेकर याकूब के पास गया, जहां सब प्राचीन * इकट्ठे थे। १९ तब उस ने उन्हें नमस्कार करके, जो जो काम परमेश्वर ने उस की सेवकाई के द्वारा अन्यजातियों में किए थे, एक एक करके सब बताया। २० उन्हों ने यह सुनकर परमेश्वर की महिमा की, फिर उस से कहा; हे भाई, तू देखता है, कि यहूदियों में

* या प्रिसबुतिर।

से कई हज़ार ने विश्वास किया है; और सब व्यवस्था के लिये धुन लगाए हैं। २१ और उन को तेरे विषय में सिखाया गया है, कि तू अन्यजातियों में रहनेवाले यहूदियों को मूसा से फिर जाने को सिखाता है, और कहता है, कि न अपने बच्चों का खतना कराओ और न रीतियों पर चलो: सो क्या किया जाए? २२ लोग अवश्य सुनेंगे, कि तू आया है। २३ इसलिये जो हम तुझ से कहते हैं, वह कर: हमारे यहां चार मनुष्य हैं, जिन्हों ने मन्नत मानी है। २४ उन्हें लेकर उन के साथ अपने आप को शुद्ध कर; और उन के लिये खर्चा दे, कि वे सिर मुड़ाएं: तब सब जान लेंगे, कि जो बातें उन्हें तेरे विषय में सिखाई गईं, उन की कुछ जड़ नहीं है परन्तु तू आप भी व्यवस्था को मानकर उसके अनुसार चलता है। २५ परन्तु उन अन्यजातियों के विषय में जिन्हों ने विश्वास किया है, हम ने यह निर्णय करके लिख भेजा है कि वे मूरतों के साम्हने बलि किए हुए मांस से, और लोहू से, और गला घोंटे हुओं के मांस से, और व्यभिचार से, बचे रहें। २६ तब पौलुस उन मनुष्यों को लेकर, और दूसरे दिन उन के साथ शुद्ध होकर मन्दिर में गया, और बता दिया, कि शुद्ध होने के दिन, अर्थात् उन में से हर एक के लिये चढ़ावा चढ़ाए जाने तक के दिन कब पूरे होंगे॥

२७ जब वे सात दिन पूरे होने पर थे, तो आसिया के यहूदियों ने पौलुस को मन्दिर में देखकर सब लोगों को उसकाया, और यों चिल्लाकर उस को पकड़ लिया। २८ कि हे इस्राएलियो, सहायता करो; यह वही मनुष्य है, जो लोगों के, और व्यवस्था के, और इस स्थान के विरोध में हर जगह सब लोगों को सिखाता है, यहां तक कि यूनानियों को भी मन्दिर में लाकर उस ने इस पवित्र स्थान को अपवित्र किया है। २९ उन्हों ने तो इस से पहिले त्रुफिमुस इफिसी को उसके साथ नगर में देखा था, और समझते थे, कि पौलुस उसे मन्दिर में ले आया है। ३० तब सारे नगर में कोलाहल मच गया, और लोग दौड़कर इकट्ठे हुए, और पौलुस को पकड़कर मन्दिर के बाहर घसीट लाए, और तुरन्त द्वार बन्द किए गए। ३१ जब वे उसे मार डालना चाहते थे, तो पलटन के सरदार को सन्देश पहुंचा कि सारे यरूशलेम में कोलाहल मच रहा है। ३२ तब वह तुरन्त सिपाहियों और सूबेदारों को लेकर उन के पास नीचे दौड़ आया; और उन्हों ने पलटन के सरदार को और सिपाहियों को देख कर पौलुस को मारने पीटने से हाथ उठाया। ३३ तब पलटन के सरदार ने पास आकर उसे पकड़ लिया; और दो जंजीरों से बान्धने की आज्ञा देकर पूछने लगा, यह कौन है, और इस ने क्या किया है? ३४ परन्तु भीड़ में से कोई कुछ और कोई कुछ चिल्लाते रहे और जब हुल्लड़ के मारे ठीक सच्चाई न जान सका, तो उसे गढ़ में ले जाने की आज्ञा दी। ३५ जब वह सीढ़ी पर पहुंचा, तो ऐसा हुआ, कि भीड़ के दबाव के मारे सिपाहियों को उसे उठाकर ले जाना पड़ा। ३६ क्योंकि लोगों की भीड़ यह चिल्लाती हुई उसके पीछे पड़ी, कि उसका अन्त कर दो॥

३७ जब वे पौलुस को गढ़ में ले जाने पर थे, तो उस ने पलटन के सरदार से कहा; क्या मुझे आज्ञा है कि मैं तुझ से कुछ कहूं? उस ने कहा; क्या तू यूनानी जानता है? ३८ क्या तू वह मिसरी नहीं, जो इन दिनों से पहिले बलवाई बनाकर चार हजार कटारबन्द लोगों को जङ्गल में ले गया?

३९ पौलुस ने कहा, मैं तो तरसुस का यहूदी मनुष्य हूं ! किलिकिया के प्रसिद्ध नगर का निवासी हूं : और मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि मुझे लोगों से बातें करने दे। ४० जब उस ने आज्ञा दी, तो पौलुस ने सीढ़ी पर खड़े होकर लोगों को हाथ से सैन किया : जब वे चुप हो गए, तो वह इब्रानी भाषा में बोलने लगा, कि,

२२

हे भाइयो, और पितरो, मेरा प्रत्युत्तर सुनो, जो मैं अब तुम्हारे साम्हने कहता हूं ।।

२ वे यह सुनकर कि वह हम से इब्रानी भाषा में बोलता है, और भी चुप रहे। तब उस ने कहा;

३ मैं तो यहूदी मनुष्य हूं, जो किलिकिया के तरसुस में जन्मा; परन्तु इस नगर में गमलीएल के पांवों के पास बैठकर पढ़ाया गया, और बापदादों की व्यवस्था की ठीक रीति पर सिखाया गया; और परमेश्वर के लिये ऐसी धुन लगाए था, जैसे तुम सब आज लगाए हो। ४ और मैं ने पुरुष और स्त्री दोनों को बान्ध बान्धकर, और बन्दीगृह में डाल डालकर, इस पंथ को यहां तक सताया, कि उन्हें मरवा भी डाला। ५ इस बात के लिये महायाजक और सब पुरनिये गवाह हैं; कि उन में से मैं भाइयों के नाम पर चिट्ठियां लेकर दमिश्क को चला जा रहा था, कि जो वहां हों उन्हें भी दण्ड दिलाने के लिये बान्धकर यरूशलेम में लाऊं। ६ जब मैं चलते चलते दमिश्क के निकट पहुंचा, तो ऐसा हुआ कि दो पहर के लगभग एकाएक एक बड़ी ज्योति आकाश से मेरे चारों ओर चमकी। ७ और मैं भूमि पर गिर पड़ा : और यह शब्द सुना, कि * हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है ? मैं ने उत्तर दिया, कि हे प्रभु, तू कौन है ? ८ उस ने मुझ से कहा; मैं यीशु नासरी हूं, जिसे तू सताता है ? ९ और मेरे साथियों ने ज्योति तो देखी, परन्तु जो मुझ से बोलता था उसका शब्द न सुना। १० तब मैं ने कहा; हे प्रभु मैं क्या करूं ? प्रभु ने मुझ से कहा; उठकर दमिश्क में जा, और जो कुछ तेरे करने के लिये ठहराया गया है वहां तुझ से सब कह दिया जाएगा। ११ जब उस ज्योति के तेज के मारे मुझे कुछ दिखाई न दिया, तो मैं अपने साथियों के हाथ पकड़े हुए दमिश्क में आया। १२ और हनन्याह नाम का व्यवस्था के अनुसार एक भक्त मनुष्य, जो वहां के रहनेवाले सब यहूदियों में सुनाम था, मेरे पास आया। १३ और खड़ा होकर मुझ से कहा; हे भाई शाऊल फिर देखने लग : उसी घड़ी मेरे नेत्र खुल गए और मैं ने उसे देखा। १४ तब उस ने कहा; हमारे बापदादों के परमेश्वर ने तुझे इसलिये ठहराया है, कि तू उस की इच्छा को जाने, और उस धर्मी को देखे, और उसके मुंह से बातें सुने। १५ क्योंकि तू उस की ओर से सब मनुष्यों के साम्हने उन बातों का गवाह होगा, जो तू ने देखी और सुनी हैं। १६ अब क्यों देर करता है ? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल। १७ जब मैं फिर यरूशलेम में आकर मन्दिर में प्रार्थना कर रहा था, तो बेसुध हो गया। १८ और उस को देखा कि मुझ से कहता है; जल्दी करके यरूशलेम से झट निकल जा : क्योंकि वे मेरे विषय में तेरी गवाही न मानेंगे। १९ मैं ने कहा; हे प्रभु वे तो आप जानते हैं, कि मैं तुझ पर विश्वास करनेवालों को बन्दीगृह में डालता और जगह जगह

* यू० जो मुझ से कहता था।

आराधनालय में पिटवाता था। २० और जब तेरे गवाह स्तिफनुस का लोहू बहाया जा रहा था तब मैं भी वहां खड़ा था, और इस बात में सहमत था, और उसके घातकों के कपड़ों की रखवाली करता था। २१ और उस ने मुझ से कहा, चला जा: क्योंकि मैं तुझे अन्यजातियों के पास दूर दूर भेजूंगा॥

२२ वे इस बात तक उस की सुनते रहे; तब ऊंचे शब्द से चिल्लाए, कि ऐसे मनुष्य का अन्त करो; उसका जीवित रहना उचित नहीं। २३ जब वे चिल्लाते और कपड़े फेंकते और आकाश में धूल उड़ाते थे; २४ तो पलटन के सूबेदार ने कहा; कि इसे गढ़ में ले जाओ; और कोड़े मारकर जांचो, कि मैं जानूं कि लोग किस कारण उसके विरोध में ऐसा चिल्ला रहे हैं। २५ जब उन्हों ने उसे तसमों से बान्धा तो पौलुस ने उस सूबेदार से जो पास खड़ा था, कहा, क्या यह उचित है, कि तुम एक रोमी मनुष्य को, और वह भी बिना दोषी ठहराए हुए कोड़े मारो? २६ सूबेदार ने यह सुनकर पलटन के सरदार के पास जाकर कहा; तू यह क्या करता है? यह तो रोमी मनुष्य है। २७ तब पलटन के सरदार ने उसके पास आकर कहा; मुझे बता, क्या तू रोमी है? उस ने कहा, हां। २८ यह सुनकर पलटन के सरदार ने कहा; कि मैं ने रोमी होने का पद बहुत रुपये देकर पाया है पौलुस ने कहा, मैं तो जन्म से रोमी हूं। २९ तब जो लोग उसे जांचने पर थे, वे तुरन्त उसके पास से हट गए; और पलटन का सरदार भी यह जानकर कि यह रोमी है, और मैं ने उसे बान्धा है, डर गया॥

३० दूसरे दिन वह ठीक ठीक जानने की इच्छा से कि यहूदी उस पर क्यों दोष लगाते हैं, उसके बन्धन खोल दिए; और महायाजकों और सारी महासभा को इकट्ठे होने की आज्ञा दी, और पौलुस को नीचे ले जाकर उन के साम्हने खड़ा कर दिया॥

२३ पौलुस ने महासभा की ओर टकटकी लगाकर देखा, और कहा, हे भाइयो, मैं ने आज तक परमेश्वर के लिये बिलकुल सच्चे विवेक* से जीवन बिताया है। २ हनन्याह महायाजक ने, उन को जो उसके पास खड़े थे, उसके मुंह पर थप्पड़ मारने की आज्ञा दी। ३ तब पौलुस ने उस से कहा; हे चूना फिरी हुई भीत, परमेश्वर तुझे मारेगा: तू व्यवस्था के अनुसार मेरा न्याय करने को बैठा है, और फिर क्या व्यवस्था के विरुद्ध मुझे मारने की आज्ञा देता है? ४ जो पास खड़े थे, उन्हों ने कहा, क्या तू परमेश्वर के महायाजक को बुरा कहता है? ५ पौलुस ने कहा; हे भाइयो, मैं नहीं जानता था, कि यह महायाजक है; क्योंकि लिखा है, कि अपने लोगों के प्रधान को बुरा न कह। ६ तब पौलुस ने यह जानकर, कि कितने सदूकी और कितने फरीसी हैं, सभा में पुकारकर कहा, हे भाइयो, मैं फरीसी और फरीसियों के वंश का हूं, मरे हुओं की आशा और पुनरुत्थान† के विषय में मेरा मुकद्दमा हो रहा है। ७ जब उस ने यह बात कही तो फरीसियों और सदूकियों में झगड़ा होने लगा; और सभा में फूट पड़ गई। ८ क्योंकि सदूकी तो यह कहते हैं, कि न पुनरुत्थान है, न स्वर्गदूत और न आत्मा है; परन्तु फरीसी दोनों मानते हैं। ९ तब बड़ा हल्ला मचा और कितने शास्त्री जो फरीसियों के दल के थे, उठकर

---

* अर्थात् मन या कान्शन्स।

† या मृतकोत्थान।

यों कहकर झगड़ने लगे, कि हम इस मनुष्य में कुछ बुराई नहीं पाते; और यदि कोई आत्मा या स्वर्गदूत उस से बोला है तो फिर क्या? १० जब बहुत झगड़ा हुआ, तो पलटन के सरदार ने इस डर से कि वे पौलुस के टुकड़े टुकड़े न कर डालें पलटन को आज्ञा दी, कि उतरकर उस को उन के बीच में से बरबस निकालो, और गढ़ में ले आओ॥

११ उसी रात प्रभु ने उसके पास आ खड़े होकर कहा; हे पौलुस, ढाढ़स बान्ध; क्योंकि जैसी तू ने यरूशलेम में मेरी गवाही दी, वैसी ही तुझे रोम में भी गवाही देनी होगी॥

१२ जब दिन हुआ, तो यहूदियों ने एका किया, और शपथ खाई कि जब तक हम पौलुस को मार न डालें, तब तक खाएं या पीएं तो हम पर धिक्कार। १३ जिन्हों ने आपस में यह शपथ खाई थी, वे चालीस जनों के ऊपर थे। १४ उन्हों ने महायाजकों और पुरनियों के पास आकर कहा, हम ने यह ठाना है; कि जब तक हम पौलुस को मार न डालें, तब तक यदि कुछ चखें भी, तो हम पर धिक्कार पर धिक्कार है। १५ इसलिये अब महासभा समेत पलटन के सरदार को समझाओ, कि उसे तुम्हारे पास ले आए, मानो कि तुम उसके विषय में और भी ठीक जांच करना चाहते हो, और हम उसके पहुंचने से पहिले ही उसे मार डालने के लिये तैयार रहेंगे। १६ और पौलुस के भांजे ने सुना, कि वे उस की घात में हैं, तो गढ़ में जाकर पौलुस को सन्देश दिया। १७ पौलुस ने सूबेदारों में से एक को अपने पास बुलाकर कहा; इस जवान को पलटन के सरदार के पास ले जाओ, यह उस से कुछ कहना चाहता है। १८ सो उस ने उसको पलटन के सरदार के पास ले जाकर कहा; पौलुस बन्धुए ने मुझे बुलाकर बिनती की, कि यह जवान पलटन के सरदार से कुछ कहना चाहता है; उसे उसके पास ले जा। १९ पलटन के सरदार ने उसका हाथ पकड़कर, और अलग ले जाकर पूछा; मुझ से क्या कहना चाहता है? २० उस ने कहा; यहूदियों ने एका किया है, कि तुझ से बिनती करें, कि कल पौलुस को महासभा में लाए, मानो तू और ठीक से उस की जांच करना चाहता है। २१ परन्तु उन की मत मानना, क्योंकि उन में से चालीस के ऊपर मनुष्य उस की घात में हैं, जिन्हों ने यह ठान लिया है, कि जब तक हम पौलुस को मार न डालें, तब तक खाएं, पीएं, तो हम पर धिक्कार; और अभी वे तैयार हैं और तेरे वचन की आस देख रहे हैं। २२ तब पलटन के सरदार ने जवान को यह आज्ञा देकर विदा किया, कि किसी से न कहना कि तू ने मुझ को ये बातें बताई हैं। २३ और दो सूबेदारों को बुलाकर कहा; दो सौ सिपाही, सत्तर सवार, और दो सौ भालैत, पहर रात बीते कैसरिया को जाने के लिये तैयार कर रखो। २४ और पौलुस की सवारी के लिये घोड़े तैयार रखो कि उसे फेलिक्स हाकिम के पास कुशल से पहुंचा दें। २५ उस ने इस प्रकार की चिट्ठी भी लिखी;

२६ महाप्रतापी फेलिक्स हाकिम को क्लौदियुस लूसियास का नमस्कार। २७ इस मनुष्य को यहूदियों ने पकड़कर मार डालना चाहा, परन्तु जब मैं ने जाना, कि रोमी है, तो पलटन लेकर छुड़ा लाया। २८ और मैं जानना चाहता था, कि वे उस पर किस कारण दोष लगाते हैं, इसलिये उसे उन की महासभा में ले गया। २९ तब मैं ने जान लिया, कि वे अपनी व्यवस्था के विवादों के विषय में उस पर दोष लगाते

हैं, परन्तु मार डाले जाने या बान्धे जाने के योग्य उस में कोई दोष नहीं। ३० और जब मुझे बताया गया, कि वे इस मनुष्य की घात में लगे हैं तो मैं ने तुरन्त उस को तेरे पास भेज दिया; और मुद्दइयों को भी आज्ञा दी, कि तेरे साम्हने उस पर नालिश करें॥

३१ सो जैसे सिपाहियों को आज्ञा दी गई थी वैसे ही पौलुस को लेकर रातों-रात अन्तिपत्रिस में लाए। ३२ दूसरे दिन वे सवारों को उसके साथ जाने के लिये छोड़कर आप गढ़ को लौटे। ३३ उन्हों ने कैसरिया में पहुंचकर हाकिम को चिट्ठी दी: और पौलुस को भी उसके साम्हने खड़ा किया। ३४ उस ने पढ़कर पूछा, यह किस देश का है? ३५ और जब जान लिया कि किलकिया का है; तो उस से कहा; जब तेरे मुद्दई भी आएंगे, तो मैं तेरा मुकद्दमा करूंगा: और उस ने उसे हेरोदेस के किले * में, पहरे में रखने की आज्ञा दी॥

२४ पांच दिन के बाद हनन्याह महायाजक कई पुरनियों और तिरतुल्लुस नाम किसी वकील को साथ लेकर आया; उन्हों ने हाकिम के साम्हने पौलुस पर नालिश की। २ जब वह बुलाया गया तो तिरतुल्लुस उस पर दोष लगाकर कहने लगा, कि,

हे महाप्रतापी फेलिक्स, तेरे द्वारा हमें जो बड़ा कुशल होता है; और तेरे प्रबन्ध से इस जाति के लिये कितनी बुराइयां सुधरती जाती हैं। ३ इस को हम हर जगह और हर प्रकार से धन्यवाद के साथ मानते हैं। ४ परन्तु इसलिये कि तुझे और दुख नहीं देना चाहता, मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि कृपा करके हमारी दो एक बातें सुन ले। ५ क्योंकि हम ने इस मनुष्य को उपद्रवी और जगत के सारे यहूदियों में बलवा करानेवाला, और नासरियों के कुपन्थ का मुखिया पाया है। ६ उस ने मन्दिर को अशुद्ध करना चाहा, और हम ने उसे पकड़ा। ८ इन सब बातों को जिन के विषय में हम उस पर दोष लगाते हैं, तू आपही उस को जांच करके जान लेगा। ९ यहूदियों ने भी उसका साथ देकर कहा, ये बातें इसी प्रकार की हैं॥

१० जब हाकिम ने पौलुस को बोलने के लिये सैन किया तो उस ने उत्तर दिया,

मैं यह जानकर कि तू बहुत वर्षों से इस जाति का न्याय करता है, आनन्द से अपना प्रत्युत्तर देता हूं। ११ तू आप जान सकता है, कि जब से मैं यरूशलेम में भजन करने को आया, मुझे बारह दिन से ऊपर नहीं हुए। १२ और उन्हों ने मुझे न मन्दिर में न सभा के घरों में, न नगर में किसी से विवाद करते या भीड़ लगाते पाया। १३ और न तो वे उन बातों को, जिन का वे अब मुझ पर दोष लगाते हैं, तेरे साम्हने सच ठहरा सकते हैं। १४ परन्तु यह मैं तेरे साम्हने मान लेता हूं, कि जिस पन्थ को वे कुपन्थ कहते हैं, उसी की रीति पर मैं अपने बापदादों के परमेश्वर की सेवा करता हूं: और जो बातें व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों में लिखी हैं, उन सब की प्रतीति करता हूं। १५ और परमेश्वर से आशा रखता हूं जो वे आप भी रखते हैं, कि धर्मी और अधर्मी दोनों का जी उठना होगा। १६ इस से मैं आप भी यतन करता हूं, कि परमेश्वर की, और मनुष्यों की ओर मेरा विवेक * सदा निर्दोष

* यू० प्रितोरियुम।

* अर्थात् मन या कान्शन्स।

रहे। १७ बहुत वर्षों के बाद मैं अपने लोगों को दान पहुंचाने, और भेंट चढ़ाने आया था। १८ उन्हों ने मुझे मन्दिर में, शुद्ध दशा में बिना भीड़ के साथ, और बिना दंगा करते हुए इस काम में पाया—हां आसिया के कई यहूदी थे—उन को उचित था, १९ कि यदि मेरे विरोध में उन की कोई बात हो तो यहां तेरे साम्हने आकर मुझ पर दोष लगाते। २० या ये आप ही कहें, कि जब मैं महासभा के साम्हने खड़ा था, तो उन्हों ने मुझ में कौन सा अपराध पाया? २१ इस एक बात को छोड़ जो मैं ने उन के बीच में खड़े होकर पुकारकर कहा था, कि मरे हुओं के जी उठने के विषय में आज मेरा तुम्हारे साम्हने मुकद्दमा हो रहा है॥

२२ फेलिक्स ने जो इस पन्थ की बातें ठीक ठीक जानता था, उन्हें यह कहकर टाल दिया, कि जब पलटन का सरदार लूसियास आएगा, तो तुम्हारी बात का निर्णय करूंगा। २३ और सूबेदार को आज्ञा दी, कि पौलुस को सुख से रखकर रखवाली करना, और उसके मित्रों में से किसी को भी उस की सेवा करने से न रोकना॥

२४ कितने दिनों के बाद फेलिक्स अपनी पत्नी द्रुसिल्ला को, जो यहूदिनी थी, साथ लेकर आया; और पौलुस को बुलवाकर उस विश्वास * के विषय में जो मसीह यीशु पर है, उस से सुना। २५ और जब वह धर्म और संयम और आनेवाले न्याय की चर्चा करता था, तो फेलिक्स ने भयमान होकर उत्तर दिया, कि अभी तो जा: अवसर पाकर मैं तुझे फिर बुलाऊंगा। २६ उसे पौलुस से कुछ रुपये मिलने की भी आस थी; इसलिये और भी बुला बुलाकर उस से बातें किया करता था। २७ परन्तु जब दो वर्ष बीत गए, तो पुरकियुस फेस्तुस फेलिक्स की जगह पर आया, और फेलिक्स यहूदियों को खुश करने की इच्छा से पौलुस को बन्धुआ छोड़ गया॥

२५

फेस्तुस उस प्रान्त में पहुंचकर तीन दिन के बाद कैसरिया से यरूशलेम को गया। २ तब महायाजकों ने, और यहूदियों के बड़े लोगो ने, उसके साम्हने पौलुस की नालिश की। ३ और उस से बिनती करके उसके विरोध में यह बर चाहा, कि वह उसे यरूशलेम में बुलवाए, क्योंकि वे उसे रास्ते ही में मार डालने की घात लगाए हुए थे। ४ फेस्तुस ने उत्तर दिया, कि पौलुस कैसरिया में पहरे में है, और मैं आप जल्द वहां जाऊंगा। ५ फिर कहा, तुम में जो अधिकार रखते हैं, वे साथ चलें, और यदि इस मनुष्य ने कुछ अनुचित काम किया है, तो उस पर दोष लगाएं॥

६ और उन के बीच कोई आठ दस दिन रहकर वह कैसरिया गया: और दूसरे दिन न्याय आसन पर बैठकर पौलुस के लाने की आज्ञा दी। ७ जब वह आया, तो जो यहूदी यरूशलेम से आए थे, उन्हों ने आस पास खड़े होकर उस पर बहुतेरे भारी दोष लगाए, जिन का प्रमाण वे नहीं दे सकते थे। ८ परन्तु पौलुस ने उत्तर दिया, कि मैं ने न तो यहूदियों की व्यवस्था का और न मन्दिर का, और न कैसर का कुछ अपराध किया है। ९ तब फेस्तुस ने यहूदियों को खुश करने की इच्छा से पौलुस को उत्तर दिया, क्या तू चाहता है, कि यरूशलेम को

* या धर्म।

जाए; और वहां मेरे साम्हने तेरा यह मुकद्दमा तय किया जाए? १० पौलुस ने कहा; मैं कैसर के न्याय आसन के साम्हने खड़ा हूं: मेरे मुकद्दमे का यहीं फैसला होना चाहिए: जैसा तू अच्छी तरह जानता है, यहूदियों का मैं ने कुछ अपराध नहीं किया। ११ यदि अपराधी हूं और मार डाले जाने योग्य कोई काम किया है; तो मरने से नहीं मुकरता; परन्तु जिन बातों का ये मुझ पर दोष लगाते हैं, यदि उन में से कोई बात सच न ठहरे, तो कोई मुझे उन के हाथ नहीं सौंप सकता: मैं कैसर की दोहाई देता हूं। १२ तब फेस्तुस ने मन्त्रियों की सभा के साथ बातें करके उत्तर दिया, तू ने कैसर की दोहाई दी है, तू कैसर के पास जाएगा॥

१३ और कुछ दिन बीतने के बाद अग्रिप्पा राजा और बिरनीके ने कैसरिया में आकर फेस्तुस से भेंट की। १४ और उन के बहुत दिन वहां रहने के बाद फेस्तुस ने पौलुस की कथा राजा को बताई; कि एक मनुष्य है, जिसे फेलिक्स बन्धुआ छोड़ गया है। १५ जब मैं यरूशलेम में था, तो महायाजक और यहूदियों के पुरनियों ने उस की नालिश की; और चाहा, कि उस पर दण्ड की आज्ञा दी जाए। १६ परन्तु मैं ने उन को उत्तर दिया, कि रोमियों की यह रीति नहीं, कि किसी मनुष्य को दण्ड के लिये सौंप दें, जब तक मुद्दाअलैह को अपने मुद्दइयों के आमने-सामने खड़े होकर दोष के उत्तर देने का अवसर न मिले। १७ सो जब वे यहां इकट्ठे हुए, तो मैं ने कुछ देर न की, परन्तु दूसरे ही दिन न्याय आसन पर बैठकर, उस मनुष्य को लाने की आज्ञा दी। १८ जब उसके मुद्दई खड़े हुए, तो उन्हों ने ऐसी बुरी बातों का दोष नहीं लगाया, जैसा मैं समझता था। १९ परन्तु अपने मत के, और यीशु नाम किसी मनुष्य के विषय में जो मर गया था, और पौलुस उस को जीवित बताता था, विवाद करते थे। २० और मैं उलझन में था, कि इन बातों का पता कैसे लगाऊं? इसलिये मैं ने उस से पूछा, क्या तू यरूशलेम जाएगा, कि वहां इन बातों का फैसला हो? २१ परन्तु जब पौलुस ने दोहाई दी, कि मेरे मुकद्दमे का फैसला महाराजाधिराज के यहां हो; तो मैं ने आज्ञा दी, कि जब तक उसे कैसर के पास न भेजूं, उस की रखवाली की जाए। २२ तब अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, मैं भी उस मनुष्य की सुनना चाहता हूं: उस ने कहा, तू कल सुन लेगा॥

२३ सो दूसरे दिन, जब अग्रिप्पा और बिरनीके बड़ी धूमधाम से आकर पलटन के सरदारों और नगर के बड़े लोगों के साथ दरबार में पहुंचे, तो फेस्तुस ने आज्ञा दी, कि वे पौलुस को ले आएं। २४ फेस्तुस ने कहा; हे महाराजा अग्रिप्पा, और हे सब मनुष्यो जो यहां हमारे साथ हो, तुम इस मनुष्य को देखते हो, जिस के विषय में सारे यहूदियों ने यरूशलेम में और यहां भी चिल्ला चिल्लाकर मुझ से बिनती की, कि इस का जीवित रहना उचित नहीं। २५ परन्तु मैं ने जान लिया, कि उस ने ऐसा कुछ नहीं किया कि मार डाला जाए; और जब कि उस ने आप ही महाराजाधिराज की दोहाई दी, तो मैं ने उसे भेजने का उपाय निकाला। २६ परन्तु मैं ने उसके विषय में कोई ठीक बात नहीं पाई कि अपने स्वामी के पास लिखूं, इसलिये मैं उसे तुम्हारे साम्हने और विशेष करके हे महाराजा अग्रिप्पा तेरे साम्हने लाया हूं, कि जांचने के बाद मुझे कुछ लिखने को मिले। २७ क्योंकि बन्धुए को भेजना और जो दोष उस पर लगाए गए,

उन्हें न बताना, मुझे व्यर्थ समझ पड़ता है॥

२६ अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा; तुझे अपने विषय में बोलने की आज्ञा है: तब पौलुस हाथ बढ़ाकर उत्तर देने लगा, कि,

२ हे राजा अग्रिप्पा, जितनी बातों का यहूदी मुझ पर दोष लगाते हैं, आज तेरे साम्हने उन का उत्तर देने में मैं अपने को धन्य समझता हूं। ३ विशेष करके इसलिये कि तू यहूदियों के सब व्यवहारों और विवादों को जानता है, सो मैं बिनती करता हूं, धीरज से मेरी सुन ले। ४ जैसा मेरा चाल चलन आरम्भ से अपनी जाति के बीच और यरूशलेम में था, यह सब यहूदी जानते हैं। ५ वे यदि गवाही देना चाहते हैं, तो आरम्भ से मुझे पहिचानते हैं, कि मैं फरीसी होकर अपने धर्म के सब से खरे पन्थ के अनुसार चला। ६ और अब उस प्रतिज्ञा की आशा के कारण जो परमेश्वर ने हमारे बापदादों से की थी, मुझ पर मुकद्दमा चल रहा है। ७ उसी प्रतिज्ञा के पूरे होने की आशा लगाए हुए, हमारे बारहों गोत्र अपने सारे मन से रात दिन परमेश्वर की सेवा करते आए हैं: हे राजा, इसी आशा के विषय में यहूदी मुझ पर दोष लगाते हैं। ८ जब कि परमेश्वर मरे हुओं को जिलाता है, तो तुम्हारे यहां यह बात क्यों विश्वास के योग्य नहीं समझी जाती? ९ मैं ने भी समझा था कि यीशु नासरी के नाम के विरोध में मुझे बहुत कुछ करना चाहिए। १० और मैं ने यरूशलेम में ऐसा ही किया; और महायाजकों से अधिकार पाकर बहुत से पवित्र लोगों को बन्दीगृह में डाला, और जब वे मार डाले जाते थे, तो मैं भी उन के विरोध में अपनी सम्मति देता था। ११ और हर आराधनालय में मैं उन्हें ताड़ना दिला दिलाकर यीशु की निन्दा करवाता था, यहां तक कि क्रोध के मारे ऐसा पागल हो गया, कि बाहर के नगरों में भी जाकर उन्हें सताता था। १२ इसी धुन में जब मैं महायाजकों से अधिकार और परवाना लेकर दमिश्क को जा रहा था। १३ तो हे राजा, मार्ग में दोपहर के समय मैं ने आकाश से सूर्य के तेज से भी बढ़कर एक ज्योति अपने और अपने साथ चलनेवालों के चारों ओर चमकती हुई देखी। १४ और जब हम सब भूमि पर गिर पड़े, तो मैं ने इब्रानी भाषा में, मुझ से यह कहते हुए यह शब्द सुना, कि हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है? पैने पर लात मारना तेरे लिये कठिन है। १५ मैं ने कहा, हे प्रभु तू कौन है? प्रभु ने कहा, मैं यीशु हूं: जिसे तू सताता है। १६ परन्तु तू उठ, अपने पांवों पर खड़ा हो; क्योंकि मैं ने तुझे इसलिये दर्शन दिया है, कि तुझे उन बातों का भी सेवक और गवाह ठहराऊं, जो तू ने देखी हैं, और उन का भी जिन के लिये मैं तुझे दर्शन दूंगा। १७ और मैं तुझे तेरे लोगों से और अन्यजातियों से बचाता रहूंगा, जिन के पास मैं अब तुझे इसलिये भेजता हूं। १८ कि तू उन की आंखें खोले, कि वे अंधकार से ज्योति की ओर, और शैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर फिरें; कि पापों की क्षमा, और उन लोगों के साथ जो मुझ पर विश्वास करने से पवित्र किए गए हैं, मीरास पाएं। १९ सो हे राजा अग्रिप्पा, मैं ने उस स्वर्गीय दर्शन की बात न टाली। २० परन्तु पहिले दमिश्क के, फिर यरूशलेम के रहनेवालों को, तब

यहूदिया के सारे देश में और अन्यजातियों को समझाता रहा, कि मन फिराओ और परमेश्वर की ओर फिर कर मन फिराव के योग्य काम करो। २१ इन बातों के कारण यहूदी मुझे मन्दिर में पकड़के मार डालने का यत्न करते थे। २२ सो परमेश्वर की सहायता से मैं आज तक बना हूं और छोटे बड़े सभी के साम्हने गवाही देता हूं और उन बातों को छोड़ कुछ नहीं कहता, जो भविष्यद्वक्ताओं और मूसा ने भी कहा कि होनेवाली हैं। २३ कि मसीह को दुख उठाना होगा, और वही सब से पहिले मरे हुओं में से जी उठकर, हमारे लोगों में और अन्यजातियों में ज्योति का प्रचार करेगा॥

२४ जब वह इस रीति से उत्तर दे रहा था, तो फेस्तुस ने ऊंचे शब्द से कहा; हे पौलुस, तू पागल है: बहुत विद्या ने तुझे पागल कर दिया है। २५ परन्तु उस ने कहा; हे महाप्रतापी फेस्तुस, मैं पागल नहीं, परन्तु सच्चाई और बुद्धि की बातें कहता हूं। २६ राजा भी जिस के साम्हने मैं निडर होकर बोल रहा हूं, ये बातें जानता है, और मुझे प्रतीति है, कि इन बातों में से कोई उस से छिपी नहीं, क्योंकि यह घटना तो कोने में नहीं हुई। २७ हे राजा अग्रिप्पा, क्या तू भविष्यद्वक्ताओं की प्रतीति करता है? हां, मैं जानता हूं, कि तू प्रतीति करता है। २८ तब अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, तू थोड़े ही समझाने से* मुझे मसीही बनाना चाहता है? २९ पौलुस ने कहा, परमेश्वर से मेरी प्रार्थना यह है कि क्या थोड़े में, क्या बहुत में, केवल तू ही नहीं, परन्तु जितने लोग आज मेरी सुनते हैं, इन बन्धनों को छोड़ वे मेरे समान हो जाएं॥

३० तब राजा और हाकिम और बिरनीके और उन के साथ बैठनेवाले उठ खड़े हुए। ३१ और अलग जाकर आपस में कहने लगे, यह मनुष्य ऐसा तो कुछ नहीं करता, जो मृत्यु या बन्धन के योग्य हो। ३२ अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा; यदि यह मनुष्य कैसर की दोहाई न देता, तो छूट सकता था॥

२७ जब यह ठहराया गया, कि हम जहाज पर इतालिया को जाएं, तो उन्हों ने पौलुस और कितने और बन्धुओं को भी यूलियुस नाम औगुस्तुस की पलटन के एक सूबेदार के हाथ सौंप दिया। २ और अद्रमुत्तियुम के एक जहाज पर जो आसिया के किनारे की जगहों में जाने पर था, चढ़कर हम ने उसे खोल दिया, और अरिस्तर्खुस नाम थिस्सलुनीके का एक मकिदूनी हमारे साथ था। ३ दूसरे दिन हम ने सैदा में लंगर डाला और यूलियुस ने पौलुस पर कृपा करके उसे मित्रों के यहां जाने दिया कि उसका सत्कार किया जाए। ४ वहां से जहाज खोलकर हवा विरुद्ध होने के कारण हम कुप्रुस की आड़ में होकर चले। ५ और किलिकिया और पंफूलिया के निकट के समुद्र में होकर लूसिया के मूरा में उतरे। ६ वहां सूबेदार को सिकन्दरिया का एक जहाज इतालिया जाता हुआ मिला, और उस ने हमें उस पर चढ़ा दिया। ७ और जब हम बहुत दिनों तक धीरे धीरे चलकर कठिनता से कनिदुस के साम्हने पहुंचे, तो इसलिये कि हवा हमें आगे बढ़ने न देती थी, सलमोने के साम्हने से होकर क्रेते की आड़ में चले। ८ और उसके

* यू० थोड़े में।

किनारे किनारे कठिनता से चलकर शुभ-लंगरबारी नाम एक जगह पहुंचे, जहां से लसया नगर निकट था॥

६ जब बहुत दिन बीत गए, और जल-यात्रा में जोखिम इसलिये होती थी कि उपवास के दिन अब बीत चुके थे, तो पौलुस ने उन्हें यह कहकर समझाया। १० कि हे सज्जनो मुझे ऐसा जान पड़ता है, कि इस यात्रा में बिपत्ति और बहुत हानि न केवल माल और जहाज की बरन हमारे प्राणों की भी होनेवाली है। ११ परन्तु सूबेदार ने पौलुस की बातों से मांझी और जहाज के स्वामी की बढ़कर मानी। १२ और वह बन्दर स्थान जाड़ा काटने के लिये अच्छा न था; इसलिये बहुतों का विचार हुआ, कि वहां से जहाज खोलकर यदि किसी रीति से हो सके, तो फीनिक्स में पहुंचकर जाड़ा काटें: यह तो क्रेते का एक बन्दर स्थान है जो दक्खिन-पच्छिम और उत्तर-पच्छिम की ओर खुलता है। १३ जब कुछ कुछ दक्खिनी हवा बहने लगी, तो यह समझकर कि हमारा मतलब पूरा हो गया, लंगर उठाया और किनारा धरे हुए क्रेते के पास से जाने लगे। १४ परन्तु थोड़ी देर में वहां से एक बड़ी आंधी उठी, जो यूरकुलीन कहलाती है। १५ जब यह जहाज पर लगी, तब वह हवा के साम्हने ठहर न सका, सो हम ने उसे बहने दिया, और इसी तरह बहते हुए चले गए। १६ तब कौदा नाम एक छोटे से टापू की आड़ में बहते बहते हम कठिनता से डोंगी को बश में कर सके। १७ मल्लाहों ने उसे उठाकर, अनेक उपाय करके जहाज को नीचे से बान्धा, और सुरतिस के चोर-बालू पर टिक जाने के भय से पाल और सामान उतार कर, बहते हुए चले गए। १८ और जब हम ने आंधी से बहुत हिच-कोले और धक्के खाए, तो दूसरे दिन वे जहाज का माल फेंकने लगे। १९ और तीसरे दिन उन्हों ने अपने हाथों से जहाज का सामान फेंक दिया। २० और जब बहुत दिनों तक न सूर्य न तारे दिखाई दिए, और बड़ी आंधी चल रही थी, तो अन्त में हमारे बचने की सारी आशा जाती रही। २१ जब वे बहुत उपवास कर चुके, तो पौलुस ने उन के बीच में खड़ा होकर कहा; हे लोगो, चाहिए था कि तुम मेरी बात मानकर, क्रेते से न जहाज खोलते और न यह बिपत और हानि उठाते। २२ परन्तु अब मैं तुम्हें समझाता हूं, कि ढाढ़स बान्धो; क्योंकि तुम में से किसी के प्राण की हानि न होगी, केवल जहाज की। २३ क्योंकि परमेश्वर जिस का मैं हूं, और जिस की सेवा करता हूं, उसके स्वर्गदूत ने आज रात मेरे पास आकर कहा। २४ हे पौलुस, मत डर; तुझे कैसर के साम्हने खड़ा होना अवश्य है: और देख, परमेश्वर ने सब को जो तेरे साथ यात्रा करते हैं, तुझे दिया है। २५ इसलिये, हे सज्जनों ढाढ़स बान्धो; क्योंकि मैं परमेश्वर की प्रतीति करता हूं, कि जैसा मुझ से कहा गया है, वैसा ही होगा। २६ परन्तु हमें किसी टापू पर जा टिकना होगा॥

२७ जब चौदहवीं रात हुई, और हम अद्रिया समुद्र में टकराते फिरते थे, तो आधी रात के निकट मल्लाहों ने अटकल से जाना, कि हम किसी देश के निकट पहुंच रहे हैं। २८ और थाह लेकर उन्हों ने बीस पुरसा गहरा पाया और थोड़ा आगे बढ़कर फिर थाह ली, तो पन्द्रह पुरसा पाया। २९ तब पत्थरीली जगहों पर पड़ने के डर से उन्हों ने जहाज की पिछाड़ी चार लंगर डाले, और भोर का होना मनाते

रहे। ३० परन्तु जब मल्लाह जहाज पर से भागना चाहते थे, और गलही से लंगर डालने के बहाने डोंगी समुद्र में उतार दी। ३१ तो पौलुस ने सूबेदार और सिपाहियों से कहा; यदि ये जहाज पर न रहें, तो तुम नहीं बच सकते। ३२ तब सिपाहियों ने रस्से काटकर डोंगी गिरा दी। ३३ जब भोर होने पर था, तो पौलुस ने यह कहके, सब को भोजन करने को समझाया, कि आज चौदह दिन हुए कि तुम आस देखते देखते भूखे रहे, और कुछ भोजन न किया। ३४ इसलिये तुम्हें समझाता हूं, कि कुछ खा लो, जिस से तुम्हारा बचाव हो; क्योंकि तुम में से किसी के सिर का एक बाल भी न गिरेगा। ३५ और यह कहकर उस ने रोटी लेकर सब के साम्हने परमेश्वर का धन्यवाद किया; और तोड़कर खाने लगा। ३६ तब वे सब भी ढाढ़स बान्धकर भोजन करने लगे। ३७ हम सब मिलकर जहाज पर दो सौ छिहत्तर जन थे। ३८ जब वे भोजन करके तृप्त हुए, तो गेहूं को समुद्र में फेंक कर जहाज हलका करने लगे। ३९ जब बिहान हुआ, तो उन्हों ने उस देश को नहीं पहिचाना, परन्तु एक खाड़ी देखी जिस का चौरस किनारा था, और विचार किया, कि यदि हो सके, तो इसी पर जहाज को टिकाएं। ४० तब उन्हों ने लंगरों को खोलकर समुद्र में छोड़ दिया और उसी समय पतवारों के बन्धन खोल दिए, और हवा के साम्हने अगला पाल चढ़ाकर किनारे की ओर चले। ४१ परन्तु दो समुद्र के संगम की जगह पड़कर उन्हों ने जहाज को टिकाया, और गलही तो धक्का खाकर गड़ गई, और टल न सकी; परन्तु पिछाड़ी लहरों के बल से टूटने लगी। ४२ तब सिपाहियों का यह विचार हुआ, कि बन्धुओं को मार डालें; ऐसा न हो, कि कोई पैरके निकल भागे। ४३ परन्तु सूबेदार ने पौलुस को बचाने की इच्छा से उन्हें इस विचार से रोका, और यह कहा, कि जो तैर सकते हैं, पहिले कूदकर किनारे पर निकल जाएं। ४४ और बाकी कोई पटरों पर, और कोई जहाज की और वस्तुओं के सहारे निकल जाए, और इस रीति से सब कोई भूमि पर बच निकले॥

२८ जब हम बच निकले, तो जाना कि यह टापू मिलिते कहलाता है। २ और उन जंगली लोगों ने हम पर अनोखी कृपा की; क्योंकि मेंह के कारण जो बरस रहा था और जाड़े के कारण उन्हों ने आग सुलगाकर हम सब को ठहराया। ३ जब पौलुस ने लकड़ियों का गट्ठा बटोरकर आग पर रखा, तो एक सांप आंच पाकर निकला और उसके हाथ से लिपट गया। ४ जब उन जंगलियों ने सांप को उसके हाथ में लटके हुए देखा, तो आपस में कहा; सचमुच यह मनुष्य हत्यारा है, कि यद्यपि समुद्र से बच गया, तौभी न्याय ने जीवित रहने न दिया। ५ तब उस ने सांप को आग में झटक दिया, और उसे कुछ हानि न पहुंची। ६ परन्तु वे बाट जोहते थे, कि वह सूज जाएगा, या एकाएक गिरके मर जाएगा, परन्तु जब वे बहुत देर तक देखते रहे, और देखा, कि उसका कुछ भी नहीं बिगड़ा, तो और ही विचार कर कहा; यह तो कोई देवता है॥

७ उस जगह के आसपास पुबलियुस नाम उस टापू के प्रधान की भूमि थी: उस ने हमें अपने घर ले जाकर तीन दिन मित्र-भाव से पहुनाई की। ८ पुबलियुस का

पिता ज्वर और आंव लोहू से रोगी पड़ा था: सो पौलुस ने उसके पास घर में जाकर प्रार्थना की, और उस पर हाथ रखकर उसे चंगा किया। ९ जब ऐसा हुआ, तो उस टापू के बाकी बीमार आए, और चंगे किए गए। १० और उन्हों ने हमारा बहुत आदर किया, और जब हम चलने लगे, तो जो कुछ हमें अवश्य था, जहाज पर रख दिया॥

११ तीन महीने के बाद हम सिकन्दरिया के एक जहाज पर चल निकले, जो उस टापू में जाड़े भर रहा था; और जिस का चिन्ह दियुसकूरी था। १२ सुरकूसा में लंगर डाल करके हम तीन दिन टिके रहे। १३ वहां से हम घूमकर रेगियुम में आए: और एक दिन के बाद दक्खिनी हवा चली, तब दूसरे दिन पुतियुली में आए। १४ वहां हम को भाई मिले, और उन के कहने से हम उन के यहां सात दिन तक रहे; और इस रीति से रोम को चले। १५ वहां से भाई हमारा समाचार सुनकर अप्पियुस के चौक और तीन-सराए तक हमारी भेंट करने को निकल आए जिन्हें देखकर पौलुस ने परमेश्वर का धन्यवाद किया, और ढाढ़स बान्धा॥

१६ जब हम रोम में पहुंचे, तो पौलुस को एक सिपाही के साथ जो उस की रखवाली करता था, अकेले रहने की आज्ञा हुई॥

१७ तीन दिन के बाद उस ने यहूदियों के बड़े लोगों को बुलाया, और जब वे इकट्ठे हुए, तो उन से कहा; हे भाइयो, मैं ने अपने लोगों के या बापदादों के व्यवहारों के विरोध में कुछ भी नहीं किया, तौभी बन्धुआ होकर यरूशलेम से रोमियों के हाथ सौंपा गया। १८ उन्हों ने मुझे जांच कर छोड़ देना चाहा, क्योंकि मुझ में मृत्यु के योग्य कोई दोष न था। १९ परन्तु जब यहूदी इस के विरोध में बोलने लगे, तो मुझे कैसर की दोहाई देनी पड़ी: न यह कि मुझे अपने लोगों पर कोई दोष लगाना था। २० इसलिये मैं ने तुम को बुलाया है, कि तुम से मिलूं और बातचीत करूं; क्योंकि इस्राएल की आशा के लिये मैं इस जंजीर से जकड़ा हुआ हूं। २१ उन्हों ने उस से कहा; न हम ने तेरे विषय में यहूदियों से चिट्ठियां पाईं, और न भाइयों में से किसी ने आकर तेरे विषय में कुछ बताया, और न बुरा कहा। २२ परन्तु तेरा विचार क्या है? वही हम तुझ से सुनना चाहते हैं, क्योंकि हम जानते हैं, कि हर जगह इस मत के विरोध में लोग बातें कहते हैं॥

२३ तब उन्हों ने उसके लिये एक दिन ठहराया, और बहुत लोग उसके यहां इकट्ठे हुए, और वह परमेश्वर के राज्य की गवाही देता हुआ, और मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों से यीशु के विषय में समझा समझाकर भोर से सांझ तक वर्णन करता रहा। २४ तब कितनों ने उन बातों को मान लिया, और कितनों ने प्रतीति न की। २५ जब आपस में एक मत न हुए, तो पौलुस के इस एक बात के कहने पर चले गए, कि पवित्र आत्मा ने यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा तुम्हारे बापदादों से अच्छा कहा, कि जाकर इन लोगों से कह। २६ कि सुनते तो रहोगे, परन्तु न समझोगे, और देखते तो रहोगे, परन्तु न बुझोगे। २७ क्योंकि इन लोगों का मन मोटा, और उन के कान भारी हो गए, और उन्हों ने अपनी आंखें बन्द की हैं, ऐसा न हो कि वे कभी आंखों से देखें, और कानों से सुनें, और मन से समझें और फिरें,

और मैं उन्हें चंगा करूं। २८ सो तुम जानो, कि परमेश्वर के इस उद्धार की कथा अन्यजातियों के पास भेजी गई है, और वे सुनेंगे। २९ जब उस ने यह कहा तो यहूदी आपस में बहुत विवाद करने लगे और वहां से चले गए॥

३० और वह पूरे दो वर्ष अपने भाड़े के घर में रहा। ३१ और जो उसके पास आते थे, उन सब से मिलता रहा और बिना रोक टोक बहुत निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाता रहा॥

रोमियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

१ पौलुस की ओर से जो यीशु मसीह का दास है, और प्रेरित होने के लिये बुलाया गया, और परमेश्वर के उस सुसमाचार के लिये अलग किया गया है। २ जिस की उस ने पहिले ही से अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा पवित्र शास्त्र में। ३ अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह के विषय में प्रतिज्ञा की थी, जो शरीर के भाव से तो दाऊद के वंश से उत्पन्न हुआ। ४ और पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है। ५ जिस के द्वारा हमें अनुग्रह और प्रेरिताई मिली; कि उसके नाम के कारण सब जातियों के लोग विश्वास करके उस की मानें। ६ जिन में से तुम भी यीशु मसीह के होने के लिये बुलाए गए हो। ७ उन सब के नाम जो रोम में परमेश्वर के प्यारे हैं और पवित्र होने के लिये बुलाए गए हैं॥

हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे॥

८ पहिले मैं तुम सब के लिये यीशु मसीह के द्वारा अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं, कि तुम्हारे विश्वास की चर्चा सारे जगत में हो रही है। ९ परमेश्वर जिस की सेवा मैं अपनी आत्मा से उसके पुत्र के सुसमाचार के विषय में करता हूं, वही मेरा गवाह है; कि मैं तुम्हें किस प्रकार लगातार स्मरण करता रहता हूं। १० और नित्य अपनी प्रार्थनाओं में बिनती करता हूं, कि किसी रीति से अब भी तुम्हारे पास आने को मेरी यात्रा परमेश्वर की इच्छा से सुफल हो। ११ क्योंकि मैं तुम से मिलने की लालसा करता हूं, कि मैं तुम्हें कोई आत्मिक बरदान दूं जिस से तुम स्थिर हो जाओ। १२ अर्थात् यह, कि मैं तुम्हारे बीच में होकर तुम्हारे साथ उस विश्वास के द्वारा जो मुझ में, और तुम में है, शान्ति पाऊं। १३ और हे भाइयो, मैं नहीं चाहता, कि तुम इस से अनजान रहो, कि मैं ने बार बार तुम्हारे पास आना चाहा, कि जैसा मुझे और अन्यजातियों में फल मिला, वैसा ही तुम में भी मिले, परन्तु अब तक रुका रहा। १४ मैं यूनानियों और अन्यभाषियों का और

बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों का कर्जदार हूं। १५ सो मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो, सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हूं। १६ क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिये, पहिले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिये उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है। १७ क्योंकि उस में परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से, और विश्वास के लिये प्रगट होती है; जैसा लिखा है, कि विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा॥

१८ परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं। १९ इसलिये कि परमेश्वर के विषय का ज्ञान उन के मनों में प्रगट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया है। २० क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उस की सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं। २१ इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्हों ने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहां तक कि उन का निर्बुद्धि मन अन्धेरा हो गया। २२ वे अपने आप को बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए। २३ और अबिनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों, और रेंगनेवाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला॥

२४ इस कारण परमेश्वर ने उन्हें उनकी मन की अभिलाषाओं के अनुसार अशुद्धता के लिये छोड़ दिया, कि वे आपस में अपने शरीरों का अनादर करें। २५ क्योंकि उन्हों ने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना डाला, और सृष्टि की उपासना और सेवा की, न कि उस सृजनहार की जो सदा धन्य है। आमीन॥

२६ इसलिये परमेश्वर ने उन्हें नीच कामनाओं के वश में छोड़ दिया; यहां तक कि उन की स्त्रियों ने भी स्वाभाविक व्यवहार को, उस से जो स्वभाव के विरुद्ध है, बदल डाला। २७ वैसे ही पुरुष भी स्त्रियों के साथ स्वाभाविक व्यवहार छोड़कर आपस में कामातुर होकर जलने लगे, और पुरुषों ने पुरुषों के साथ निर्लज्ज काम करके अपने भ्रम का ठीक फल पाया॥

२८ और जब उन्हों ने परमेश्वर को पहिचानना न चाहा, इसलिये परमेश्वर ने भी उन्हें उन के निकम्मे मन पर छोड़ दिया; कि वे अनुचित काम करें। २९ सो वे सब प्रकार के अधर्म, और दुष्टता, और लोभ, और बैरभाव, से भर गए; और डाह, और हत्या, और झगड़े, और छल, और ईर्षा से भरपूर हो गए, और चुगलखोर। ३० बदनाम करनेवाले, परमेश्वर के देखने में घृणित, औरों का अनादर करनेवाले, अभिमानी, डींगमार, बुरी बुरी बातों के बनानेवाले, माता पिता की आज्ञा न माननेवाले। ३१ निर्बुद्धि, विश्वासघाती, मयारहित और निर्दय हो गए। ३२ वे तो परमेश्वर की यह विधि जानते हैं, कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले मृत्यु के दण्ड के योग्य हैं, तौभी न केवल आप ही ऐसे काम करते हैं, बरन करनेवालों से प्रसन्न भी होते हैं॥

२. सो हे दोष लगानेवाले, तू कोई क्यों न हो; तू निरुत्तर है! क्योंकि जिस बात में तू दूसरे पर दोष लगाता है, उसी बात में अपने आप को भी दोषी ठहराता है, इसलिये कि तू जो दोष लगाता है, आप ही

वही काम करता है। २ और हम जानते हैं, कि ऐसे ऐसे काम करनेवालों पर परमेश्वर की ओर से ठीक ठीक दण्ड की आज्ञा होती है। ३ और हे मनुष्य, तू जो ऐसे ऐसे काम करनेवालों पर दोष लगाता है, और आप वे ही काम करता है; क्या यह समझता है, कि तू परमेश्वर की दण्ड की आज्ञा से बच जाएगा? ४ क्या तू उस की कृपा, और सहनशीलता, और धीरजरूपी धन को तुच्छ जानता है? और क्या यह नहीं समझता, कि परमेश्वर की कृपा तुझे मन फिराव को सिखाती है? ५ पर अपनी कठोरता और हठीले मन के अनुसार उसके क्रोध के दिन के लिये, जिस में परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रगट होगा, अपने निमित्त क्रोध कमा रहा है। ६ वह हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला देगा। ७ जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में हैं, उन्हें वह अनन्त जीवन देगा। ८ पर जो विवादी हैं, और सत्य को नहीं मानते, वरन अधर्म को मानते हैं, उन पर क्रोध और कोप पड़ेगा। ९ और क्लेश और संकट हर एक मनुष्य के प्राण पर जो बुरा करता है आएगा, पहिले यहूदी पर फिर यूनानी पर। १० पर महिमा और आदर और कल्याण हर एक को मिलेगा, जो भला करता है, पहिले यहूदी को फिर यूनानी को। ११ क्योंकि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता। १२ इसलिये कि जिन्हों ने बिना व्यवस्था पाए पाप किया, वे बिना व्यवस्था के नाश भी होंगे, और जिन्हों ने व्यवस्था पाकर पाप किया, उन का दण्ड व्यवस्था के अनुसार होगा। १३ (क्योंकि परमेश्वर के यहां व्यवस्था के सुननेवाले धर्मी नहीं, पर व्यवस्था पर चलनेवाले धर्मी ठहराए जाएंगे। १४ फिर जब अन्यजाति लोग जिन के पास व्यवस्था नहीं, स्वभाव ही से व्यवस्था की बातों पर चलते हैं, तो व्यवस्था उन के पास न होने पर भी वे अपने लिये आप ही व्यवस्था हैं। १५ वे व्यवस्था की बातें अपने अपने हृदयों में लिखी हुई दिखाते हैं और उन के विवेक * भी गवाही देते हैं, और उन की चिन्ताएं परस्पर दोष लगाती, या उन्हें निर्दोष ठहराती हैं।) १६ जिस दिन परमेश्वर मेरे सुसमाचार के अनुसार यीशु मसीह के द्वारा मनुष्यों की गुप्त बातों का न्याय करेगा॥

१७ यदि तू यहूदी कहलाता है, और व्यवस्था पर भरोसा रखता है, और परमेश्वर के विषय में घमण्ड करता है। १८ और उस की इच्छा जानता और व्यवस्था की शिक्षा पाकर उत्तम उत्तम बातों को प्रिय जानता है। १९ और अपने पर भरोसा रखता है, कि मैं अन्धों का अगुवा, और अंधकार में पड़े हुओं की ज्योति। २० और बुद्धिहीनों का सिखानेवाला, और बालकों का उपदेशक हूं, और ज्ञान, और सत्य का नमूना, जो व्यवस्था में है, मुझे मिला है। २१ सो क्या तू जो औरों को सिखाता है, अपने आप को नहीं सिखाता? क्या तू जो चोरी न करने का उपदेश देता है, आप ही चोरी करता है? २२ तू जो कहता है, व्यभिचार न करना, क्या आप ही व्यभिचार करता है? तू जो मूरतों से घृणा करता है, क्या आप ही मन्दिरों को लूटता है। २३ तू जो व्यवस्था के विषय में घमण्ड करता है, क्या व्यवस्था न मानकर, परमेश्वर का अनादर करता है? २४ क्योंकि तुम्हारे कारण

* अर्थात् मन या कान्शन्स।

अन्यजातियों में परमेश्वर के नाम की निन्दा की जाती है जैसा लिखा भी है। २५ यदि तू व्यवस्था पर चले, तो खतने से लाभ तो है, परन्तु यदि तू व्यवस्था को न माने, तो तेरा खतना बिन खतना की दशा ठहरा। २६ सो यदि खतनारहित मनुष्य व्यवस्था की विधियों को माना करे, तो क्या उस की बिन खतना की दशा खतने के बराबर न गिनी जाएगी? २७ और जो मनुष्य जाति के कारण बिन खतना रहा यदि वह व्यवस्था को पूरा करे, तो क्या तुझे जो लेख पाने और खतना किए जाने पर भी व्यवस्था को माना नहीं करता है, दोषी न ठहराएगा? २८ क्योंकि वह यहूदी नहीं, जो प्रगट में यहूदी है; और न वह खतना है, जो प्रगट में है, और देह में है। २९ पर यहूदी वही है, जो मन में है; और खतना वही है, जो हृदय का और आत्मा में है; न कि लेख का: ऐसे की प्रशंसा मनुष्यों की ओर से नहीं, परन्तु परमेश्वर की ओर से होती है॥

३ सो यहूदी की क्या बड़ाई, या खतने का क्या लाभ? २ हर प्रकार से बहुत कुछ। पहिले तो यह कि परमेश्वर के वचन उन को सौंपे गए। ३ यदि कितने विश्वासघाती निकले भी तो क्या हुआ। क्या उन के विश्वासघाती होने से परमेश्वर की सच्चाई व्यर्थ ठहरेगी? ४ कदापि नहीं, बरन परमेश्वर सच्चा और हर एक मनुष्य झूठा ठहरे, जैसा लिखा है, कि जिस से तू अपनी बातों में धर्मी ठहरे और न्याय करते समय तू जय पाए। ५ सो यदि हमारा अधर्म परमेश्वर की धार्मिकता ठहरा देता है, तो हम क्या कहें? क्या यह कि परमेश्वर जो क्रोध करता है अन्यायी है? (यह तो मैं मनुष्य की रीति पर कहता हूं)। ६ कदापि नहीं, नहीं तो परमेश्वर क्योंकर जगत का न्याय करेगा? ७ यदि मेरे झूठ के कारण परमेश्वर की सच्चाई उस की महिमा के लिये अधिक करके प्रगट हुई, तो फिर क्यों पापी की नाईं मैं दण्ड के योग्य ठहराया जाता हूं? ८ और हम क्यों बुराई न करें, कि भलाई निकले? जब हम पर यही दोष लगाया भी जाता है, और कितने कहते हैं, कि इन का यही कहना है: परन्तु ऐसों का दोषी ठहराना ठीक है॥

९ तो फिर क्या हुआ? क्या हम उन से अच्छे हैं? कभी नहीं; क्योंकि हम यहूदियों और यूनानियों दोनों पर यह दोष लगा चुके हैं कि वे सब के सब पाप के वश में हैं। १० जैसा लिखा है, कि कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं। ११ कोई समझदार नहीं; कोई परमेश्वर का खोजनेवाला नहीं। १२ सब भटक गए हैं, सब के सब निकम्मे बन गए, कोई भलाई करनेवाला नहीं, एक भी नहीं। १३ उन का गला खुली हुई कब्र है: उन्हों ने अपनी जीभों से छल किया है: उन के होठों में सांपों का विष है। १४ और उन का मुह श्राप और कड़वाहट से भरा है। १५ उन के पांव लोहू बहाने को फुर्तीले हैं। १६ उन के मार्गों में नाश और क्लेश है। १७ उन्हों ने कुशल का मार्ग नहीं जाना। १८ उन की आंखों के साम्हने परमेश्वर का भय नहीं॥

१९ हम जानते है, कि व्यवस्था जो कुछ कहती है उन्हीं से कहती है, जो व्यवस्था के आधीन हैं: इसलिये कि हर एक मुंह बन्द किया जाए, और सारा संसार परमेश्वर के दण्ड के योग्य ठहरे। २० क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके साम्हने धर्मी नहीं ठहरेगा, इसलिये कि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहिचान होती है। २१ पर अब

बिना व्यवस्था परमेश्वर की वह धार्मिकता प्रगट हुई है, जिस की गवाही व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता देते हैं। २२ अर्थात् परमेश्वर की वह धार्मिकता, जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करनेवालों के लिये है; क्योंकि कुछ भेद नहीं। २३ इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। २४ परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं। २५ उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित्त ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है, कि जो पाप पहिले किए गए, और जिन की परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से आनाकानी की; उन के विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रगट करे। २६ बरन इसी समय उस की धार्मिकता प्रगट हो; कि जिस से वह आप ही धर्मी ठहरे, और जो यीशु पर विश्वास करे, उसका भी धर्मी ठहरानेवाला हो। २७ तो घमण्ड करना कहां रहा? उस की तो जगह ही नहीं: कौन सी व्यवस्था के कारण से? क्या कर्मों की व्यवस्था से? नहीं, बरन विश्वास की व्यवस्था के कारण। २८ इसलिये हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं, कि मनुष्य व्यवस्था के कामों के बिना विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है। २९ क्या परमेश्वर केवल यहूदियों ही का है? क्या अन्यजातियों का नहीं? हां, अन्यजातियों का भी है। ३० क्योंकि एक ही परमेश्वर है, जो खतनावालों को विश्वास से और खतनारहितों को भी विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराएगा। ३१ तो क्या हम व्यवस्था को विश्वास के द्वारा व्यर्थ ठहराते हैं? कदापि नहीं; बरन व्यवस्था को स्थिर करते हैं॥

४ सो हम क्या कहें, कि हमारे शारीरिक पिता इब्राहीम को क्या प्राप्त हुआ? २ क्योंकि यदि इब्राहीम कामों से धर्मी ठहराया जाता, तो उसे घमण्ड करने की जगह होती, परन्तु परमेश्वर के निकट नहीं। ३ पवित्र शास्त्र क्या कहता है? यह कि इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया *, और यह उसके लिये धार्मिकता गिना गया। ४ काम करनेवाले की मजदूरी देना दान नहीं, परन्तु हक्क समझा जाता है। ५ परन्तु जो काम नही करता बरन भक्तिहीन के धर्मी ठहरानेवाले पर विश्वास करता है, उसका विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना जाता है। ६ जिसे परमेश्वर बिना कर्मों के धर्मी ठहराता है, उसे दाऊद भी धन्य कहता है। ७ कि धन्य वे हैं, जिन के अधर्म क्षमा हुए, और जिन के पाप ढांपे गए। ८ धन्य है वह मनुष्य जिसे परमेश्वर पापी न ठहराए। ९ तो यह धन्य कहना, क्या खतनावालों ही के लिये है, या खतनारहितों के लिये भी? हम यह कहते हैं, कि इब्राहीम के लिये उसका विश्वास धार्मिकता गिना गया। १० तो वह क्योंकर गिना गया? खतने की दशा में या बिना खतने की दशा में? खतने की दशा में नहीं परन्तु बिना खतने की दशा में। ११ और उस ने खतने का चिन्ह पाया, कि उस विश्वास की धार्मिकता पर छाप हो जाए, जो उस ने बिना खतने की दशा में रखा था: जिस से वह उन सब का पिता ठहरे, जो बिना खतने की दशा में विश्वास करते हैं, और कि वे भी धर्मी ठहरें। १२ और उन खतना किए हुओं का पिता हो, जो न केवल खतना किए हुए हैं, परन्तु हमारे पिता

---

* यू० की प्रतीति की।

इब्राहीम के उस विश्वास की लीक पर भी चलते हैं, जो उस ने बिन खतने की दशा में किया था। १३ क्योंकि यह प्रतिज्ञा कि वह जगत का वारिस होगा, न इब्राहीम को, न उसके वंश को व्यवस्था के द्वारा दी गई थी, परन्तु विश्वास की धार्मिकता के द्वारा मिली। १४ क्योंकि यदि व्यवस्थावाले वारिस हैं, तो विश्वास व्यर्थ और प्रतिज्ञा निष्फल ठहरी। १५ व्यवस्था तो क्रोध उपजाती है और जहां व्यवस्था नहीं वहां उसका टालना भी नहीं। १६ इसी कारण वह विश्वास के द्वारा मिलती है, कि अनुग्रह की रीति पर हो, कि प्रतिज्ञा सब वंश के लिये दृढ़ हो, न कि केवल उसके लिये जो व्यवस्था-वाला है, बरन उन के लिये भी जो इब्राहीम के समान विश्वासवाले हैं: वही तो हम सब का पिता है। १७ (जैसा लिखा है, कि मैं ने तुझे बहुत सी जातियों का पिता ठहराया है), उस परमेश्वर के साम्हने जिस पर उस ने विश्वास किया और जो मरे हुओं को जिलाता है, और जो बातें हैं ही नहीं, उन का नाम ऐसा लेता है, कि मानो वे हैं। १८ उस ने निराशा में भी आशा रखकर विश्वास किया, इसलिये कि उस वचन के अनुसार कि तेरा वंश ऐसा होगा वह बहुत सी जातियों का पिता हो। १९ और वह जो एक सौ वर्ष का था, अपने मरे हुए से शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई की सी दशा जानकर भी विश्वास में निर्बल न हुआ। २० और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया, पर विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की। २१ और निश्चय जाना, कि जिस बात की उस ने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरी करने को भी सामर्थी है। २२ इस कारण, यह उसके लिये धार्मिकता गिना गया। २३ और यह वचन, कि विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना गया, न केवल उसी के लिये लिखा गया। २४ बरन हमारे लिये भी जिन के लिये विश्वास धार्मिकता गिना जाएगा, अर्थात् हमारे लिये जो उस पर विश्वास करते हैं, जिस ने हमारे प्रभु यीशु को मरे हुओं में से जिलाया। २५ वह हमारे अपराधों के लिये पकड़वाया गया और हमारे धर्मी ठहरने के लिये जिलाया भी गया॥

५ सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें। २ जिस के द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक, जिस में हम बने हैं, हमारी पहुंच भी हुई, और परमेश्वर की महिमा की आशा पर घमण्ड करें। ३ केवल यही नहीं, बरन हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यही जानकर कि क्लेश से धीरज। ४ और धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है। ५ और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है। ६ क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा। ७ किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हियाव करे। ८ परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा। ९ सो जब कि हम, अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे? १० क्योंकि बैरी होने

की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे? ११ और केवल यही नहीं, परन्तु हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जिस के द्वारा हमारा मेल हुआ है, परमेश्वर के विषय में घमण्ड भी करते हैं॥

१२ इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिये कि सब ने पाप किया। १३ क्योंकि व्यवस्था के दिए जाने तक पाप जगत में तो था, परन्तु जहां व्यवस्था नहीं, वहां पाप गिना नहीं जाता। १४ तौभी आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु ने उन लोगों पर भी राज्य किया, जिन्हों ने उस आदम के अपराध की नाईं जो उस आनेवाले का चिन्ह है, पाप न किया। १५ पर जैसा अपराध की दशा है, वैसी अनुग्रह के बरदान की नहीं, क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध से बहुत लोग मरे, तो परमेश्वर का अनुग्रह और उसका जो दान एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के अनुग्रह से हुआ बहुतेरे लोगों पर अवश्य ही अधिकाई से हुआ। १६ और जैसा एक मनुष्य के पाप करने का फल हुआ, वैसा ही दान की दशा नहीं, क्योंकि एक ही के कारण दण्ड की आज्ञा का फैसला हुआ, परन्तु बहुतेरे अपराधों से ऐसा बरदान उत्पन्न हुआ, कि लोग धर्मी ठहरे। १७ क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्मरूपी बरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे। १८ इसलिये जैसा एक अपराध सब मनुष्यों के लिये दण्ड की आज्ञा का कारण हुआ, वैसा ही एक धर्म का काम भी सब मनुष्यों के लिये जीवन के निमित्त धर्मी ठहराए जाने का कारण हुआ। १९ क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे। २० और व्यवस्था बीच में आ गई, कि अपराध बहुत हो, परन्तु जहां पाप बहुत हुआ, वहां अनुग्रह उस से भी कहीं अधिक हुआ। २१ कि जैसा पाप ने मृत्यु फैलाते हुए राज्य किया, वैसा ही हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अनुग्रह भी अनन्त जीवन के लिये धर्मी ठहराते हुए राज्य करे॥

६ सो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहें, कि अनुग्रह बहुत हो? २ कदापि नहीं, हम जब पाप के लिये मर गए तो फिर आगे को उस में क्योंकर जीवन बिताएं? ३ क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया? ४ सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। ५ क्योंकि यदि हम उस की मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे। ६ क्योंकि हम जानते हैं, कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें। ७ क्योंकि जो मर गया, वह पाप से छूटकर धर्मी ठहरा। ८ सो यदि हम

मसीह के साथ मर गए, तो हमारा विश्वास यह है, कि उसके साथ जीएंगे भी। ९ क्योंकि यह जानते हैं, कि मसीह मरे हुओं में से जी उठकर फिर मरने का नहीं, उस पर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं होने की। १० क्योंकि वह जो मर गया तो पाप के लिये एक ही बार मर गया; परन्तु जो जीवित है, तो परमेश्वर के लिये जीवित है। ११ ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिये तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझो॥

१२ इसलिये पाप तुम्हारे मरनहार शरीर में राज्य न करे, कि तुम उस की लालसाओं के आधीन रहो। १३ और न अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिये पाप को सौंपो, पर अपने आप को मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपो, और अपने अंगों को धर्म के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपो। १४ और तुम पर पाप की प्रभुता न होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के आधीन नहीं बरन अनुग्रह के आधीन हो॥

१५ तो क्या हुआ? क्या हम इसलिये पाप करें, कि हम व्यवस्था के आधीन नहीं बरन अनुग्रह के आधीन हैं? कदापि नहीं। १६ क्या तुम नहीं जानते, कि जिस की आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आप को दासों की नाईं सौंप देते हो, उसी के दास हो: और जिस की मानते हो, चाहे पाप के, जिस का अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के, जिस का अन्त धार्मिकता है? १७ परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौभी मन से उस उपदेश के माननेवाले हो गए, जिस के सांचे में ढाले गए थे। १८ और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए। १९ मैं तुम्हारी शारीरिक दुर्बलता के कारण मनुष्यों की रीति पर कहता हूं, जैसे तुम ने अपने अंगों को कुकर्म के लिये अशुद्धता और कुकर्म के दास करके सौंपा था, वैसे ही अब अपने अंगों को पवित्रता के लिये धर्म के दास करके सौंप दो। २० जब तुम पाप के दास थे, तो धर्म की ओर से स्वतंत्र थे। २१ सो जिन बातों से अब तुम लज्जित होते हो, उन से उस समय तुम क्या फल पाते थे? २२ क्योंकि उन का अन्त तो मृत्यु है परन्तु अब पाप से स्वतंत्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुम को फल मिला जिस से पवित्रता प्राप्त होती है, और उसका अन्त अनन्त जीवन है। २३ क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का बरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है॥

७ हे भाइयो, क्या तुम नहीं जानते (मैं व्यवस्था के जाननेवालों से कहता हूं), कि जब तक मनुष्य जीवित रहता है, तब तक उस पर व्यवस्था की प्रभुता रहती है? २ क्योंकि विवाहिता स्त्री व्यवस्था के अनुसार अपने पति के जीते जी उस से बन्धी है, परन्तु यदि पति मर जाए, तो वह पति की व्यवस्था से छूट गई। ३ सो यदि पति के जीते जी वह किसी दूसरे पुरुष की हो जाए, तो व्यभिचारिणी कहलाएगी, परन्तु यदि पति मर जाए, तो वह उस व्यवस्था से छूट गई, यहां तक कि यदि किसी दूसरे पुरुष की हो जाए तौभी व्यभिचारिणी न ठहरेगी। ४ सो हे मेरे भाइयो, तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिये मरे हुए बन गए, कि उस दूसरे के हो जाओ, जो मरे हुओं में से जी उठा: ताकि हम परमेश्वर के लिये फल लाएं। ५ क्योंकि जब हम शारीरिक थे, तो पापों की अभिलाषायें जो व्यवस्था के

द्वारा थी, मृत्यु का फल उत्पन्न करने के लिये हमारे अंगों में काम करती थीं। ६ परन्तु जिस के बन्धन में हम थे उसके लिये मर कर, अब व्यवस्था से ऐसे छूट गए, कि लेख की पुरानी रीति पर नहीं, बरन आत्मा की नई रीति पर सेवा करते हैं॥

७ तो हम क्या कहें? क्या व्यवस्था पाप है? कदापि नहीं! बरन बिना व्यवस्था के मैं पाप को नहीं पहिचानता: व्यवस्था यदि न कहती, कि लालच मत कर तो मैं लालच को न जानता। ८ परन्तु पाप ने अवसर पाकर आज्ञा के द्वारा मुझ में सब प्रकार का लालच उत्पन्न किया, क्योंकि बिना व्यवस्था पाप मुर्दा है। ९ मैं तो व्यवस्था बिना पहिले जीवित था, परन्तु जब आज्ञा आई, तो पाप जी गया, और मैं मर गया। १० और वही आज्ञा जो जीवन के लिये थी, मेरे लिये मृत्यु का कारण ठहरी। ११ क्योंकि पाप ने अवसर पाकर आज्ञा के द्वारा मुझे बहकाया, और उसी के द्वारा मुझे मार भी डाला। १२ इसलिये व्यवस्था पवित्र है, और आज्ञा भी ठीक और अच्छी है। १३ तो क्या वह जो अच्छी थी, मेरे लिये मृत्यु ठहरी? कदापि नहीं! परन्तु पाप उस अच्छी वस्तु के द्वारा मेरे लिये मृत्यु का उत्पन्न करनेवाला हुआ कि उसका पाप होना प्रगट हो, और आज्ञा के द्वारा पाप बहुत ही पापमय ठहरे। १४ क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था तो आत्मिक है, परन्तु मैं शारीरिक और पाप के हाथ बिका हुआ हूं। १५ और जो मैं करता हूं, उस को नहीं जानता, क्योंकि जो मैं चाहता हूं, वह नहीं किया करता, परन्तु जिस से मुझे घृणा आती है, वही करता हूं। १६ और यदि, जो मैं नहीं चाहता वही करता हूं, तो मैं मान लेता हूं, कि व्यवस्था भली है। १७ तो ऐसी दशा में उसका करनेवाला मैं नहीं, बरन पाप है, जो मुझ में बसा हुआ है। १८ क्योंकि मैं जानता हूं, कि मुझ में अर्थात् मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु बास नहीं करती, इच्छा तो मुझ में है, परन्तु भले काम मुझ से बन नहीं पड़ते। १९ क्योंकि जिस अच्छे काम की मैं इच्छा करता हूं, वह तो नहीं करता, परन्तु जिस बुराई की इच्छा नहीं करता, वही किया करता हूं। २० परन्तु यदि मैं वही करता हूं, जिस की इच्छा नहीं करता, तो उसका करनेवाला मैं न रहा, परन्तु पाप जो मुझ में बसा हुआ है। २१ सो मैं यह व्यवस्था पाता हूं, कि जब भलाई करने की इच्छा करता हूं, तो बुराई मेरे पास आती है। २२ क्योंकि मैं भीतरी मनुष्यत्व से तो परमेश्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न रहता हूं। २३ परन्तु मुझे अपने अंगों में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है, जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है, और मुझे पाप की व्यवस्था की बन्धन में डालती है जो मेरे अंगों में है। २४ मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा? २५ मैं अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं: निदान मैं आप बुद्धि से तो परमेश्वर की व्यवस्था का, परन्तु शरीर से पाप की व्यवस्था का सेवन करता हूं॥

८ सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं: क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं बरन आत्मा के अनुसार चलते हैं। २ क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया। ३ क्योंकि जो काम व्यवस्था

शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को परमेश्वर ने किया, अर्थात् अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान होने के लिये भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी। ४ इसलिये कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं बरन आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए। ५ क्योंकि शारीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं। ६ शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है। ७ क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है। ८ और जो शारीरिक दशा में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। ९ परन्तु जब कि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं, परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं। १० और यदि मसीह तुम में है, तो देह पाप के कारण मरी हुई है; परन्तु आत्मा धर्म के कारण जीवित है। ११ और यदि उसी का आत्मा जिस ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया तुम में बसा हुआ है; तो जिस ने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है जिलाएगा ॥

१२ सो हे भाइयो, हम शरीर के कर्जदार नहीं, ताकि शरीर के अनुसार दिन काटें। १३ क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे, तो मरोगे, यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे, तो जीवित रहोगे। १४ इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं। १५ क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली, कि फिर भयभीत हो परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिस से हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं। १६ आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं। १७ और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, बरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, जब कि हम उसके साथ दुख उठाएं कि उसके साथ महिमा भी पाएं ॥

१८ क्योंकि मैं समझता हूं, कि इस समय के दुःख और क्लेश उस महिमा के साम्हने, जो हम पर प्रगट होनेवाली है, कुछ भी नहीं हैं। १९ क्योंकि सृष्टि बड़ी आशाभरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की बाट जोह रही है। २० क्योंकि सृष्टि अपनी इच्छा से नहीं पर आधीन करनेवाले की ओर से व्यर्थता के आधीन इस आशा से की गई। २१ कि सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी। २२ क्योंकि हम जानते हैं, कि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कहरती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है। २३ और केवल वही नहीं पर हम भी जिन के पास आत्मा का पहिला फल है, आप ही अपने में कहरते हैं; और लेपालक होने की, अर्थात् अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं। २४ आशा के द्वारा तो हमारा उद्धार हुआ है परन्तु जिस वस्तु की आशा की जाती है, जब वह देखने में आए, तो फिर आशा कहां रही? क्योंकि जिस वस्तु को कोई देख रहा है, उस की आशा क्या करेगा? २५ परन्तु

जिस वस्तु को हम नहीं देखते, यदि उस की आशा रखते हैं, तो धीरज से उस की बाट जोहते भी हैं॥

२६ इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते, कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए; परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिये बिनती करता है। २७ और मनों का जांचनेवाला जानता है, कि आत्मा की मनसा क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिये परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बिनती करता है। २८ और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं। २९ क्योंकि जिन्हें उस ने पहिले से जान लिया है उन्हें पहिले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे। ३० फिर जिन्हें उस ने पहिले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी, और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया है, और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है॥

३१ सो हम इन बातों के विषय में क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है? ३२ जिस ने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिये दे दिया: वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्योंकर न देगा? ३३ परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा? परमेश्वर वह है जो उनको धर्मी ठहरानेवाला है। ३४ फिर कौन है जो दण्ड की आज्ञा देगा? मसीह वह है जो मर गया बरन मुर्दों में से जी भी उठा, और परमेश्वर की दहिनी ओर है, और हमारे लिये निवेदन भी करता है। ३५ कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नङ्गाई, या जोखिम, या तलवार? ३६ जैसा लिखा है, कि तेरे लिये हम दिन भर घात किए जाते हैं; हम बध होनेवाली भेड़ों की नाईं गिने गए हैं। ३७ परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिस ने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं। ३८ क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई, ३९ न गहिराई और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी॥

९ मैं मसीह में सच कहता हूं, झूठ नहीं बोलता और मेरा विवेक * भी पवित्र आत्मा में गवाही देता है। २ कि मुझे बड़ा शोक है, और मेरा मन सदा दुखता रहता है। ३ क्योंकि मैं यहां तक चाहता था, कि अपने भाइयों के लिये जो शरीर के भाव से मेरे कुटुम्बी हैं, आप ही मसीह से शापित हो जाता। ४ वे इस्राएली हैं; और लेपालकपन का हक्क और महिमा और वाचाएं और व्यवस्था और उपासना और प्रतिज्ञाएं उन्हीं की हैं। ५ पुरखे भी उन्हीं के हैं, और मसीह भी शरीर के भाव से उन्हीं में से हुआ, जो सब के ऊपर परम परमेश्वर युगानुयुग धन्य है। आमीन। ६ परन्तु यह नहीं, कि परमेश्वर का वचन टल गया, इसलिये कि जो इस्राएल के वंश हैं, वे सब इस्राएली नहीं। ७ और न इब्राहीम के वंश होने के कारण सब उस की सन्तान ठहरे, परन्तु

* अर्थात् मन या कानशन्स।

(लिखा है) कि इसहाक ही से तेरा वंश कहलाएगा। ८ अर्थात् शरीर की सन्तान परमेश्वर की सन्तान नहीं, परन्तु प्रतिज्ञा के सन्तान वंश गिने जाते हैं। ९ क्योंकि प्रतिज्ञा का वचन यह है, कि मैं इस समय के अनुसार आऊंगा, और सारा के पुत्र होगा। १० और केवल यही नहीं, परन्तु जब रिबका भी एक से अर्थात् हमारे पिता इसहाक से गर्भवती थी। ११ और अभी तक न तो बालक जन्मे थे, और न उन्हों ने कुछ भला या बुरा किया था कि उस ने कहा, कि जेठा छुटके का दास होगा। १२ इसलिये कि परमेश्वर की मनसा जो उसके चुन लेने के अनुसार है, कर्मों के कारण नहीं, परन्तु बुलानेवाले पर बनी रहे। १३ जैसा लिखा है, कि मैं ने याकूब से प्रेम किया, परन्तु एसौ को अप्रिय जाना॥

१४ सो हम क्या कहें? क्या परमेश्वर के यहां अन्याय है? कदापि नहीं! १५ क्योंकि वह मूसा से कहता है, मैं जिस किसी पर दया करना चाहूं, उस पर दया करूंगा, और जिस किसी पर कृपा करना चाहूं उसी पर कृपा करूंगा। १६ सो यह न तो चाहनेवाले की, न दौड़नेवाले की परन्तु दया करनेवाले परमेश्वर की बात है। १७ क्योंकि पवित्र शास्त्र में फिरौन से कहा गया, कि मैं ने तुझे इसी लिये खड़ा किया है, कि तुझ में अपनी सामर्थ दिखाऊं, और मेरे नाम का प्रचार सारी पृथ्वी पर हो। १८ सो वह जिस पर चाहता है, उस पर दया करता है; और जिसे चाहता है, उसे कठोर कर देता है॥

१९ सो तू मुझ से कहेगा, वह फिर क्यों दोष लगाता है? कौन उस की इच्छा का साम्हना करता है? २० हे मनुष्य, भला तू कौन है, जो परमेश्वर का साम्हना करता है? क्या गढ़ी हुई वस्तु गढ़नेवाले से कह सकती है कि तू ने मुझे ऐसा क्यों बनाया है? २१ क्या कुम्हार को मिट्टी पर अधिकार नहीं, कि एक ही लोंदे में से, एक बरतन आदर के लिये, और दूसरे को अनादर के लिये बनाए? तो इस में कौन सी अचम्भे की बात है? २२ कि परमेश्वर ने अपना क्रोध दिखाने और अपनी सामर्थ प्रगट करने की इच्छा से क्रोध के बरतनों की, जो विनाश के लिये तैयार किए गए थे बड़े धीरज से सही। २३ और दया के बरतनों पर जिन्हें उस ने महिमा के लिये पहिले से तैयार किया, अपने महिमा के धन को प्रगट करने की इच्छा की? २४ अर्थात् हम पर जिन्हें उस ने न केवल यहूदियों में से, बरन अन्यजातियों में से भी बुलाया। २५ जैसा वह होशे की पुस्तक में भी कहता है, कि जो मेरी प्रजा न थी, उन्हें मैं अपनी प्रजा कहूंगा, और जो प्रिया न थी, उसे प्रिया कहूंगा। २६ और ऐसा होगा कि जिस जगह में उन से यह कहा गया था, कि तुम मेरी प्रजा नहीं हो, उसी जगह वे जीवते परमेश्वर की सन्तान कहलाएंगे। २७ और यशायाह इस्राएल के विषय में पुकारकर कहता है, कि चाहे इस्राएल की सन्तानों की गिनती समुद्र के बालू के बराबर हो, तौभी उन में से थोड़े ही बचेंगे। २८ क्योंकि प्रभु अपना वचन पृथ्वी पर पूरा करके, धार्मिकता से शीघ्र उसे सिद्ध करेगा। २९ जैसा यशायाह ने पहिले भी कहा था, कि यदि सेनाओं का प्रभु हमारे लिये कुछ वंश न छोड़ता, तो हम सदोम की नाईं हो जाते, और अमोरा के सरीखे ठहरते॥

३० सो हम क्या कहें? यह कि अन्यजातियों ने जो धार्मिकता की खोज नहीं करते थे, धार्मिकता प्राप्त की अर्थात् उस

धार्मिकता को जो विश्वास से है। ३१ परन्तु इस्राएली; जो धर्म की व्यवस्था की खोज करते हुए उस व्यवस्था तक नहीं पहुंचे। ३२ किस लिये? इसलिये कि वे विश्वास से नहीं, परन्तु मानो कर्मों से उस की खोज करते थे: उन्हों ने उस ठोकर के पत्थर पर ठोकर खाई। ३३ जैसा लिखा है; देखो मैं सिय्योन में एक ठेस लगने का पत्थर, और ठोकर खाने की चटान रखता हूं; और जो उस पर विश्वास करेगा, वह लज्जित न होगा॥

१० हे भाइयो, मेरे मन की अभिलाषा और उन के लिये परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है, कि वे उद्धार पाएं। २ क्योंकि मैं उन की गवाही देता हूं, कि उन को परमेश्वर के लिये धुन रहती है, परन्तु बुद्धिमानी के साथ नहीं। ३ क्योंकि वे परमेश्वर की धार्मिकता से अनजान होकर, और अपनी धार्मिकता स्थापन करने का यत्न करके, परमेश्वर की धार्मिकता के आधीन न हुए। ४ क्योंकि हर एक विश्वास करनेवाले के लिये धार्मिकता के निमित्त मसीह व्यवस्था का अन्त है। ५ क्योंकि मूसा ने यह लिखा है, कि जो मनुष्य उस धार्मिकता पर जो व्यवस्था से है, चलता है, वह इसी कारण जीवित रहेगा। ६ परन्तु जो धार्मिकता विश्वास से है, वह यों कहती है, कि तू अपने मन में यह न कहना कि स्वर्ग पर कौन चढ़ेगा? (अर्थात् मसीह को उतार लाने के लिये!) ७ या गहिराव में कौन उतरेगा? (अर्थात् मसीह को मरे हुओं में से जिलाकर ऊपर लाने के लिये!) ८ परन्तु क्या कहती है? यह, कि वचन तेरे निकट है, तेरे मुंह में और तेरे मन में है; यह वही विश्वास का वचन है, जो हम प्रचार करते हैं। ९ कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। १० क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है। ११ क्योंकि पवित्र शास्त्र यह कहता है, कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह लज्जित न होगा। १२ यहूदियों और यूनानियों में कुछ भेद नहीं, इसलिये कि वह सब का प्रभु है; और अपने सब नाम * लेनेवालों के लिये उदार है। १३ क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा। १४ फिर जिस पर उन्हों ने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम † क्योंकर लें? और जिस की नहीं सुनी उस पर क्योंकर विश्वास करें? १५ और प्रचारक बिना क्योंकर सुनें? और यदि भेजे न जाएं, तो क्योंकर प्रचार करें? जैसा लिखा है, कि उन के पांव क्या ही सोहावने हैं, जो अच्छी बातों का सुसमाचार सुनाते हैं!

१६ परन्तु सब ने उस सुसमाचार पर कान न लगाया: यशायाह कहता है, कि हे प्रभु, किस ने हमारे समाचार की प्रतीति की है? १७ सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है। १८ परन्तु मैं कहता हूं, क्या उन्हों ने नहीं सुना? सुना तो सही क्योंकि लिखा है कि उन के स्वर सारी पृथ्वी पर, और उन के वचन जगत की छोर तक पहुंच गए हैं। १९ फिर मैं कहता हूं। क्या इस्राएली

* प्रार्थना करनेवालों।

† यू० समाचार।

नहीं जानते थे? पहिले तो मूसा कहता है, कि मैं उन के द्वारा जो जाति नहीं, तुम्हारे मन में जलन उपजाऊंगा, मैं एक मूढ़ जाति के द्वारा तुम्हें रिस दिलाऊंगा। २० फिर यशायाह बड़े हियाव के साथ कहता है, कि जो मुझे नहीं ढूंढ़ते थे, उन्हों ने मुझे पा लिया: और जो मुझे पूछते भी न थे, उन पर मैं प्रगट हो गया। २१ परन्तु इस्राएल के विषय में वह यह कहता है कि मैं सारे दिन अपने हाथ एक आज्ञा न माननेवाली और विवाद करनेवाली प्रजा की ओर पसारे रहा॥

११ इसलिये मैं कहता हूं, क्या परमेश्वर ने अपनी प्रजा को त्याग दिया? कदापि नहीं; मैं भी तो इस्राएली हूं: इब्राहीम के वंश और बिन्यामीन के गोत्र में से हूं। २ परमेश्वर ने अपनी उस प्रजा को नहीं त्यागा, जिसे उस ने पहिले ही से जाना: क्या तुम नहीं जानते, कि पवित्र शास्त्र एलियाह की कथा में क्या कहता है; कि वह इस्राएल के विरोध में परमेश्वर से बिनती करता है। ३ कि हे प्रभु, उन्हों ने तेरे भविष्यद्वक्ताओं को घात किया, और तेरी वेदियों को ढा दिया है; और मैं ही अकेला बच रहा हूं, और वे मेरे प्राण के भी खोजी हैं। ४ परन्तु परमेश्वर से उसे क्या उत्तर मिला कि मैं ने अपने लिये सात हजार पुरुषों को रख छोड़ा है जिन्हों ने बाअल के आगे घुटने नहीं टेके हैं। ५ सो इसी रीति से इस समय भी, अनुग्रह से चुने हुए कितने लोग बाकी हैं। ६ यदि यह अनुग्रह से हुआ है, तो फिर कर्मों से नहीं; नहीं तो अनुग्रह फिर अनुग्रह नहीं रहा। ७ सो परिणाम क्या हुआ? यह कि इस्राएली जिस की खोज में हैं, वह उन को नहीं मिला; परन्तु चुने हुओं को मिला, और शेष लोग कठोर किए गए हैं। ८ जैसा लिखा है, कि परमेश्वर ने उन्हें आज के दिन तक भारी नींद में डाल रखा * है और ऐसी आंखें दीं जो न देखें और ऐसे कान जो न सुनें। ९ और दाऊद कहता है; उन का भोजन उन के लिये जाल, और फन्दा, और ठोकर, और दण्ड का कारण हो जाए। १० उन की आंखों पर अन्धेरा छा जाए ताकि न देखें, और तू सदा उन की पीठ को झुकाए रख। ११ सो मैं कहता हूं क्या उन्हों ने इसलिये ठोकर खाई, कि गिर पड़ें? कदापि नहीं: परन्तु उन के गिरने के कारण अन्यजातियों को उद्धार मिला, कि उन्हें जलन † हो। १२ सो यदि उन का गिरना जगत के लिये धन और उन की घटी अन्यजातियों के लिये सम्पत्ति का कारण हुआ, तो उन की भरपूरी से कितना न होगा॥

१३ मैं तुम अन्यजातियों से यह बातें कहता हूं: जब कि मैं अन्यजातियों के लिय प्रेरित हूं, तो मैं अपनी सेवा की बड़ाई करता हूं। १४ ताकि किसी रीति से मैं अपने कुटुम्बियों से जलन † करवाकर उन में से कई एक का उद्धार कराऊं। १५ क्योंकि जब कि उन का त्याग दिया जाना जगत के मिलाप का कारण हुआ, तो क्या उन का ग्रहण किया जाना मरे हुओं में से जी उठने के बराबर न होगा? १६ जब भेंट का पहिला पेड़ा पवित्र ठहरा, तो पूरा गुंधा हुआ आटा भी पवित्र है: और जब जड़ पवित्र ठहरी, तो डालियां भी ऐसी ही हैं। १७ और यदि कई एक डाली तोड़ दी गई,

* यू० भारी नींद का आत्मा दिया।
† या उत्साह, ईर्षा, गैरत।

और तू जंगली जलपाई होकर उन में * साटा गया, और जलपाई की जड़ की चिकनाई का भागी हुआ है। १८ तो डालियों पर घमण्ड न करना: और यदि तू घमण्ड करे, तो जान रख, कि तू जड़ को नहीं, परन्तु जड़ तुझे सम्भालती है। १९ फिर तू कहेगा डालियां इसलिये तोड़ी गईं, कि मैं साटा जाऊं। २० भला, वे तो अविश्वास के कारण तोड़ी गईं, परन्तु तू विश्वास से बना रहता है इसलिये अभिमानी न हो, परन्तु भय कर। २१ क्योंकि जब परमेश्वर ने स्वाभाविक डालियां न छोड़ीं, तो तुझे भी न छोड़ेगा। २२ इसलिये परमेश्वर की कृपा और कड़ाई को देख! जो गिर गए, उन पर कड़ाई, परन्तु तुझ पर कृपा, यदि तू उस में बना रहे, नहीं तो, तू भी काट डाला जाएगा। २३ और वे भी यदि अविश्वास में न रहें, तो साटे जाएंगे क्योंकि परमेश्वर उन्हें फिर साट सकता है। २४ क्योंकि यदि तू उस जलपाई से, जो स्वभाव से जंगली है काटा गया और स्वभाव के विरुद्ध अच्छी जलपाई में साटा गया तो ये जो स्वाभाविक डालियां हैं, अपने ही जलपाई में साटे क्यों न जाएंगे।।

२५ हे भाइयो, कहीं ऐसा न हो, कि तुम अपने आप को बुद्धिमान समझ लो; इसलिये मैं नहीं चाहता कि तुम इस भेद से अनजान रहो, कि जब तक अन्यजातियां पूरी रीति से प्रवेश न कर लें, तब तक इस्राएल का एक भाग ऐसा ही कठोर रहेगा। २६ और इस रीति से सारा इस्राएल उद्धार पाएगा; जैसा लिखा है, कि छुड़ानेवाला सिय्योन से आएगा, और अभक्ति को याकूब से दूर करेगा। २७ और उन के साथ मेरी यही वाचा होगी, जब कि मैं उन के पापों को दूर कर दूंगा। २८ वे सुसमाचार के भाव से तो तुम्हारे बैरी हैं, परन्तु चुन लिए जाने के भाव से बापदादों के प्यारे हैं। २९ क्योंकि परमेश्वर अपने बरदानों से, और बुलाहट से कभी पीछे नहीं हटता। ३० क्योंकि जैसे तुम ने पहिले परमेश्वर की आज्ञा न मानी परन्तु अभी उन के आज्ञा न मानने से तुम पर दया हुई। ३१ वैसे ही उन्हों ने भी अब आज्ञा न मानी कि तुम पर जो दया होती है इस से उन पर भी दया हो। ३२ क्योंकि परमेश्वर ने सब को आज्ञा न मानने के कारण बन्द कर रखा ताकि वह सब पर दया करे।।

३३ आहा! परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान क्या ही गंभीर है! उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम हैं! ३४ प्रभु की बुद्धि को किस ने जाना? या उसका मंत्री कौन हुआ? ३५ या किस ने पहिले उसे कुछ दिया है जिस का बदला उसे दिया जाए। ३६ क्योंकि उस की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिये सब कुछ है: उस की महिमा युगानुयुग होती रहे: आमीन।।

१२

इसलिये हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ: यही तुम्हारी आत्मिक * सेवा है। २ और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की

* या की जगह।

* या मानसिक।

भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो॥

३ क्योंकि मैं उस अनुग्रह के कारण जो मुझ को मिला है, तुम में से हर एक से कहता हूं, कि जैसा समझना चाहिए, उस से बढ़कर कोई भी अपने आप को न समझे पर जैसा परमेश्वर ने हर एक को परिमाण के अनुसार विश्वास दिया है, वैसा ही सुबुद्धि के साथ अपने को समझे। ४ क्योंकि जैसे हमारी एक देह में बहुत से अंग हैं, और सब अंगों का एक ही सा काम नहीं। ५ वैसा ही हम जो बहुत हैं, मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं। ६ और जब कि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न भिन्न बरदान मिले हैं, तो जिस को भविष्यद्वाणी का दान मिला हो, वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करे। ७ यदि सेवा करने का दान मिला हो, तो सेवा में लगा रहे, यदि कोई सिखानेवाला हो, तो सिखाने में लगा रहे। ८ जो उपदेशक हो, वह उपदेश देने में लगा रहे; दान देनेवाला उदारता * से दे, जो अगुआई करे, वह उत्साह से करे, जो दया करे, वह हर्ष से करे। ९ प्रेम निष्कपट हो; बुराई से घृणा करो; भलाई में लगे रहो। १० भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे पर मया रखो; परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो। ११ प्रयत्न करने में आलसी न हो; आत्मिक उन्माद में भरे रहो; प्रभु की सेवा करते रहो। १२ आशा में आनन्दित रहो; क्लेश में स्थिर रहो; प्रार्थना में नित्य लगे रहो। १३ पवित्र लोगों को जो कुछ अवश्य हो, उस में उन की सहायता करो; पहुनाई करने में लगे रहो। १४ अपने सतानेवालों को आशीष दो; आशीष दो स्राप न दो। १५ आनन्द करनेवालों के सात आनन्द करो; और रोनेवालों के साथ रोओ। १६ आपस में एक सा मन रखो; अभिमानी न हो; परन्तु दीनों के साथ संगति रखो; अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो। १७ बुराई के बदले किसी से बुराई न करो; जो बातें सब लोगों के निकट भली हैं, उन की चिन्ता किया करो। १८ जहां तक हो सके, तुम अपने भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो। १९ हे प्रियो अपना पलटा न लेना; परन्तु क्रोध * को अवसर दो, क्योंकि लिखा है, पलटा लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूंगा। २० परन्तु यदि तेरा बैरी भूखा हो, तो उसे खाना खिला; यदि प्यासा हो, तो उसे पानी पिला; क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा। २१ बुराई से न हारो परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो॥

१३ हर एक व्यक्ति प्रधान अधिकारियों के आधीन रहे; क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं, जो परमेश्वर की ओर से न हो; और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं। २ इस से जो कोई अधिकार का विरोध करता है, वह परमेश्वर की विधि का साम्हना करता है, और साम्हना करनेवाले दण्ड पाएंगे। ३ क्योंकि हाकिम अच्छे काम के नहीं, परन्तु बुरे काम के लिये डर का कारण है; सो यदि तू हाकिम से निडर रहना चाहता है, तो अच्छा काम कर और उस की ओर से तेरी सराहना होगी; ४ क्योंकि वह तेरी

* या सिधाई।

* या परमेश्वर का क्रोध।

भलाई के लिये परमेश्वर का सेवक है। परन्तु यदि तू बुराई करे, तो डर; क्योंकि वह तलवार व्यर्थ लिए हुए नहीं और परमेश्वर का सेवक है; कि उसके क्रोध के अनुसार बुरे काम करनेवाले को दण्ड दे। ५ इसलिये आधीन रहना न केवल उस क्रोध से परन्तु डर से अवश्य है, बरन विवेक * भी यही गवाही देता है। ६ इसलिये कर भी दो, क्योंकि वे परमेश्वर के सेवक हैं, और सदा इसी काम में लगे रहते हैं। ७ इसलिये हर एक का हक्क चुकाया करो, जिसे कर चाहिए, उसे कर दो; जिसे महसूल चाहिए, उसे महसूल दो; जिस से डरना चाहिए, उस से डरो; जिस का आदर करना चाहिए उसका आदर करो॥

८ आपस के प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो; क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्था पूरी की है। ९ क्योंकि यह कि व्यभिचार न करना, हत्या न करना; चोरी न करना; लालच न करना; और इन को छोड़ और कोई भी आज्ञा हो तो सब का सारांश इस बात में पाया जाता है, कि अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। १० प्रेम पड़ोसी की कुछ बुराई नहीं करता, इसलिये प्रेम रखना व्यवस्था को पूरा करना है॥

११ और समय को पहिचान कर ऐसा ही करो, इसलिये कि अब तुम्हारे लिये नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुंची है, क्योंकि जिस समय हम ने विश्वास किया था, उस समय के विचार से अब हमारा उद्धार निकट है। १२ रात बहुत बीत गई है, और दिन निकलने पर है; इसलिये हम अन्धकार के कामों को तज कर ज्योति के हथियार बान्ध लें। १३ जैसा दिन को सोहता है, वैसा ही हम सीधी चाल चलें; न कि लीला क्रीड़ा, और पियक्कड़पन, न व्यभिचार, और लुचपन में, और न झगड़े और डाह में। १४ बरन प्रभु यीशु मसीह को पहिन लो, और शरीर के अभिलाषों को पूरा करने का उपाय न करो॥

१४ जो विश्वास में निर्बल है, उसे अपनी संगति में ले लो; परन्तु उस की शंकाओं पर विवाद करने के लिये नहीं। २ क्योंकि एक को विश्वास है, कि सब कुछ खाना उचित है, परन्तु जो विश्वास में निर्बल है, वह साग पात ही खाता है। ३ और खानेवाला न-खानेवाले को तुच्छ न जाने, और न-खानेवाला खानेवाले पर दोष न लगाए; क्योंकि परमेश्वर ने उसे ग्रहण किया है। ४ तू कौन है जो दूसरे के सेवक पर दोष लगाता है? उसका स्थिर रहना या गिर जाना उसके स्वामी ही से सम्बन्ध रखता है, बरन वह स्थिर ही कर दिया जाएगा; क्योंकि प्रभु उसे स्थिर रख सकता है। ५ कोई तो एक दिन को दूसरे से बढ़कर जानता है, और कोई सब दिन एक सा जानता है: हर एक अपने ही मन में निश्चय कर ले। ६ जो किसी दिन को मानता है, वह प्रभु के लिये मानता है: जो खाता है, वह प्रभु के लिये खाता है, क्योंकि वह परमेश्वर का धन्यवाद करता है, और जो नहीं खाता, वह प्रभु के लिये नहीं खाता और परमेश्वर का धन्यवाद करता है। ७ क्योंकि हम में से न तो कोई अपने लिये जीता है और न कोई अपने लिये मरता है। ८ क्योंकि यदि हम जीवित हैं, तो प्रभु के लिये जीवित हैं; और यदि मरते हैं, तो प्रभु के लिये मरते हैं; सो हम जीएं

* अर्थात् मन या कानशन्स।

या मरें, हम प्रभु ही के हैं। ९ क्योंकि मसीह इसी लिये मरा और जी भी उठा कि वह मरे हूओं और जीवतों, दोनों का प्रभु हो। १० तू अपने भाई पर क्यों दोष लगाता है? या तू फिर क्यों अपने भाई को तुच्छ जानता है? हम सब के सब परमेश्वर के न्याय सिंहासन के साम्हने खड़े होंगे। ११ क्योंकि लिखा है, कि प्रभु कहता है, मेरे जीवन की सौगन्ध कि हर एक घुटना मेरे साम्हने टिकेगा, और हर एक जीभ परमेश्वर को अंगीकार करेगा। १२ सो हम में से हर एक परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा॥

१३ सो आगे को हम एक दूसरे पर दोष न लगाएं पर तुम यही ठान लो कि कोई अपने भाई के साम्हने ठेस या ठोकर खाने का कारण न रखे। १४ मैं जानता हूं, और प्रभु यीशु से मुझे निश्चय हुआ है, कि कोई वस्तु अपने आप से अशुद्ध नहीं, परन्तु जो उस को अशुद्ध समझता है, उसके लिये अशुद्ध है। १५ यदि तेरा भाई तेरे भोजन के कारण उदास होता है, तो फिर तू प्रेम की रीति से नहीं चलता: जिस के लिये मसीह मरा उस को तू अपने भोजन के द्वारा नाश न कर। १६ अब तुम्हारी भलाई की निन्दा न होने पाए। १७ क्योंकि परमेश्वर का राज्य खानापीना नहीं; परन्तु धर्म और मिलाप और वह आनन्द है; १८ जो पवित्र आत्मा से * होता है और जो कोई इस रीति से मसीह की सेवा करता है, वह परमेश्वर को भाता है और मनुष्यों में ग्रहणयोग्य ठहरता है। १९ इसलिये हम उन बातों का प्रयत्न करें जिनसे मेल मिलाप और एक दूसरे का सुधार हो। २० भोजन के लिये परमेश्वर का काम न बिगाड़: सब कुछ शुद्ध तो है, परन्तु उस मनुष्य के लिये बुरा है, जिस को उसके भोजन करने से ठोकर लगती है। २१ भला तो यह है, कि तू न मांस खाए और न दाख रस पीए, न और कुछ ऐसा करे, जिस से तेरा भाई ठोकर खाए। २२ तेरा जो विश्वास हो, उसे परमेश्वर के साम्हने अपने ही मन में रख: धन्य है वह, जो उस बात में, जिसे वह ठीक समझता है, अपने आप को दोषी नहीं ठहराता। २३ परन्तु जो सन्देह कर के खाता है, वह दण्ड के योग्य ठहर चुका; क्योंकि वह निश्चय धारणा से नहीं खाता, और जो कुछ विश्वास * से नहीं, वह पाप है॥

१५

निदान हम बलवानों को चाहिए, कि निर्बलों की निर्बलताओं को सहें; न कि अपने आप को प्रसन्न करें। २ हम में से हर एक अपने पड़ोसी को उस की भलाई के लिये सुधारने के निमित्त प्रसन्न करे। ३ क्योंकि मसीह ने अपने आप को प्रसन्न नहीं किया, पर जैसा लिखा है, कि तेरे निन्दकों की निन्दा मुझ पर आ पड़ी। ४ जितनी बातें पहिले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गईं हैं कि हम धीरज और पवित्र शास्त्र की शान्ति के द्वारा आशा रखें। ५ और धीरज, और शान्ति का दाता † परमेश्वर तुम्हें यह वरदान दे, कि मसीह यीशु के अनुसार आपस में एक मन रहो। ६ ताकि तुम एक मन और एक मुंह होकर हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता परमेश्वर की बड़ाई करो। ७ इसलिये, जैसा मसीह ने भी परमेश्वर की महिमा के लिये तुम्हें ग्रहण

* यू० में।

* यू० निश्चय। † यू० स्रोत।

किया है, वैसे ही तुम भी एक दूसरे को ग्रहण करो। ८ मैं कहता हूं, कि जो प्रतिज्ञाएं बापदादों को दी गई थीं, उन्हें दृढ़ करने के लिये मसीह, परमेश्वर की सच्चाई का प्रमाण देने के लिये खतना किए हुए लोगों का सेवक बना। ९ और अन्यजाति भी दया के कारण परमेश्वर की बड़ाई करें; जैसा लिखा है; कि इसलिये मैं जाति जाति में तेरा धन्यवाद करूंगा, और तेरे नाम के भजन गाऊंगा। १० फिर कहा है, हे जाति जाति के सब लोगो, उस की प्रजा के साथ आनन्द करो। ११ और फिर हे जाति जाति के सब लोगो, प्रभु की स्तुति करो; और हे राज्य राज्य के सब लोगो; उसे सराहो। १२ और फिर यशायाह कहता है, कि यिशै की एक जड़ प्रगट होगी, और अन्यजातियों का हाकिम होने के लिये एक उठेगा, उस पर अन्यजातियां आशा रखेंगी। १३ सो परमेश्वर जो आशा का दाता* है तुम्हें विश्वास करने में सब प्रकार के आनन्द और शान्ति से परिपूर्ण करे, कि पवित्र आत्मा की सामर्थ से तुम्हारी आशा बढ़ती जाए।।

१४ हे मेरे भाइयो; मैं आप भी तुम्हारे विषय में निश्चय जानता हूं, कि तुम भी आप ही भलाई से भरे और ईश्वरीय ज्ञान से भरपूर हो और एक दूसरे को चिता सकते हो। १५ तौभी मैं ने कहीं कहीं याद दिलाने के लिये तुम्हें जो बहुत हियाव करके लिखा, यह उस अनुग्रह के कारण हुआ, जो परमेश्वर ने मुझे दिया है। १६ कि मैं अन्यजातियों के लिये मसीह यीशु का सेवक होकर परमेश्वर के सुसमाचार की सेवा याजक की नाईं करूं; जिस से अन्यजातियों का मानो चढ़ाया जाना, पवित्र आत्मा से पवित्र बनकर ग्रहण किया जाए। १७ सो उन बातों के विषय में जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं, मैं मसीह यीशु में बड़ाई कर सकता हूं। १८ क्योंकि उन बातों को छोड़ मुझे और किसी बात के विषय में कहने का हियाव नहीं, जो मसीह ने अन्य-जातियों की अधीनता के लिये वचन, और कर्म। १९ और चिन्हों और अद्भुत कामों की सामर्थ से, और पवित्र आत्मा की सामर्थ से मेरे ही द्वारा किए: यहां तक कि मैं ने यरूशलेम से लेकर चारों ओर इल्लुरिकुम तक मसीह के सुसमाचार का पूरा पूरा प्रचार किया। २० पर मेरे मन की उमंग यह है, कि जहां जहां मसीह का नाम नहीं लिया गया, वहीं सुसमाचार सुनाऊं; ऐसा न हो, कि दूसरे की नेव पर घर बनाऊं। २१ परन्तु जैसा लिखा है, वैसा ही हो, कि जिन्हें उसका सुसमाचार नहीं पहुंचा, वे ही देखेंगे और जिन्हों ने नहीं सुना वे ही समझेंगे।।

२२ इसी लिये मैं तुम्हारे पास आने से बार बार रुका रहा। २३ परन्तु अब मुझे इन देशों में और जगह नहीं रही, और बहुत वर्षों से मुझे तुम्हारे पास आने की लालसा है। २४ इसलिये जब इसपानिया को जाऊंगा तो तुम्हारे पास होता हुआ जाऊंगा क्योंकि मुझे आशा है, कि उस यात्रा में तुम से भेंट करूं, और जब तुम्हारी संगति से मेरा जी कुछ भर जाए, तो तुम मुझे कुछ दूर आगे पहुंचा दो। २५ परन्तु अभी तो पवित्र लोगों की सेवा करने के लिये यरूशलेम को जाता हूं। २६ क्योंकि मकिदुनिया और अखया के लोगों को यह अच्छा लगा, कि यरूशलेम के पवित्र लोगों के कंगालों के लिये कुछ चन्दा करें।

* यू० स्रोत।

२७ अच्छा तो लगा, परन्तु वे उन के कर्जदार भी हैं, क्योंकि यदि अन्यजाति उन की आत्मिक बातों में भागी हुए, तो उन्हें भी उचित है, कि शारीरिक बातों में उन की सेवा करें। २८ सो मैं यह काम पूरा करके और उन को यह चन्दा सौंपकर तुम्हारे पास होता हुआ इसपानिया को जाऊंगा। २९ और मैं जानता हूं, कि जब मैं तुम्हारे पास आऊंगा, तो मसीह की पूरी आशीष के साथ आऊंगा॥

३० और हे भाइयो; मैं यीशु मसीह का जो हमारा प्रभु है और पवित्र आत्मा के प्रेम का स्मरण दिला कर, तुम से बिनती करता हूं, कि मेरे लिये परमेश्वर से प्रार्थना करने में मेरे साथ मिलकर लौलीन रहो। ३१ कि मैं यहूदिया के अविश्वासियों से बचा रहूं, और मेरी वह सेवा जो यरूशलेम के लिये है, पवित्र लोगों को भाए। ३२ और मैं परमेश्वर की इच्छा से तुम्हारे पास आनन्द के साथ आकर तुम्हारे साथ विश्राम पाऊं। ३३ शान्ति का परमेश्वर तुम सब के साथ रहे। आमीन॥

१६ मैं तुम से फीबे की, जो हमारी बहिन और किंख्रिया की कलीसिया की सेविका है, बिनती करता हूं। २ कि तुम जैसा कि पवित्र लोगों को चाहिए, उसे प्रभु में ग्रहण करो; और जिस किसी बात में उस को तुम से प्रयोजन हो, उस की सहायता करो; क्योंकि वह भी बहुतों की बरन मेरी भी उपकारिणी हुई है॥

३ प्रिसका और अक्विला को जो यीशु में मेरे सहकर्मी हैं, नमस्कार। ४ उन्हों ने मेरे प्राण के लिये अपना ही सिर दे रखा था और केवल मैं ही नहीं, बरन अन्यजातियों की सारी कलीसियाएं भी उन का धन्यवाद करती हैं। ५ और उस कलीसिया को भी नमस्कार जो उन के घर में है। मेरे प्रिय इपैनितुस को जो मसीह के लिये आसिया का पहिला फल है, नमस्कार। ६ मरियम को जिस ने तुम्हारे लिये बहुत परिश्रम किया, नमस्कार। ७ अन्द्रुनीकुस और यूनियास को जो मेरे कुटुम्बी हैं, और मेरे साथ कैद हुए थे, और प्रेरितों में नामी हैं, और मुझ से पहिले मसीह में हुए थे, नमस्कार। ८ अम्पलियातुस को, जो प्रभु में मेरा प्रिय है, नमस्कार। ९ उरबानुस को, जो मसीह में हमारा सहकर्मी है, और मेरे प्रिय इस्तखुस को नमस्कार। १० अपिल्लेस को जो मसीह में खरा निकला, नमस्कार। अरिस्तुबुलुस के घराने को नमस्कार। ११ मेरे कुटुम्बी हेरोदियोन को नमस्कार। नरकिस्सुस के घराने के जो लोग प्रभु में हैं, उन को नमस्कार। १२ त्रूफैना और त्रूफोसा को जो प्रभु में परिश्रम करती हैं, नमस्कार। प्रिया पिरसिस को जिस ने प्रभु में बहुत परिश्रम किया, नमस्कार। १३ रूफुस को जो प्रभु में चुना हुआ है, और उस की माता जो मेरी भी है, दोनों को नमस्कार। १४ असुक्रितुस और फिलगोन और हिमस और पत्रुबास और हिमांस और उन के साथ के भाइयों को नमस्कार। १५ फिलुलुगुस और यूलिया और नेर्युस और उस की बहिन, और उलुम्पास और उन के साथ के सब पवित्र लोगों को नमस्कार। १६ आपस में पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो: तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार॥

१७ अब हे भाइयो, मैं तुम से बिनती करता हूं, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुम ने पाई है, फूट पड़ने, और ठोकर

खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो; और उन से दूर रहो। १८ क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते हैं; और चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे सादे मन के लोगों को बहका देते हैं। १९ तुम्हारे आज्ञा मानने की चर्चा सब लोगों में फैल गई है, इसलिये मैं तुम्हारे विषय में आनन्द करता हूं; परन्तु मैं यह चाहता हूं, कि तुम भलाई के लिये बुद्धिमान, परन्तु बुराई के लिये भोले बने रहो। २० शान्ति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पांवों से शीघ्र कुचलवा देगा॥

हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर होता रहे *।

२१ तीमुथियुस मेरे सहकर्मी का, और लूकियुस और यासोन और सोसिपत्रुस मेरे कुटुम्बियों का, तुम को नमस्कार। २२ मुझ पत्री के लिखनेवाले तिरतियुस का प्रभु में तुम को नमस्कार। २३ गयुस का जो मेरी और कलीसिया का पहुनाई करनेवाला है उसका तुम्हें नमस्कार: इरास्तुस जो नगर का भण्डारी है, और भाई क्वारतुस का, तुम को नमस्कार *॥

२५ अब जो तुम को मेरे सुसमाचार अर्थात् यीशु मसीह के विषय के प्रचार के अनुसार स्थिर कर सकता है, उस भेद के प्रकाश के अनुसार जो सनातन से छिपा रहा। २६ परन्तु अब प्रगट होकर सनातन परमेश्वर की आज्ञा से भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों के द्वारा सब जातियों को बताया गया है, कि वे विश्वास से आज्ञा माननेवाले हो जाएं। २७ उसी अद्वैत बुद्धिमान परमेश्वर की यीशु मसीह के द्वारा युगानुयुग महिमा होती रहे। आमीन॥

* यह वाक्य पहिले २४ पद गिना जाता था सब से पुराने हस्तलेखों में इसी जगह लिखा हुआ है।

* देखो २० पद को।

कुरिन्थियों के नाम पौलुस प्रेरित की पहिली पत्री

१ पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित होने के लिये बुलाया गया और भाई सोस्थिनेस की ओर से। २ परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस में है, अर्थात् उन के नाम जो मसीह यीशु में पवित्र किए गए, और पवित्र होने के लिये बुलाए गए हैं; और उन सब के नाम भी जो हर जगह हमारे और अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम की प्रार्थना करते हैं॥

३ हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे॥

४ मैं तुम्हारे विषय में अपने परमेश्वर का धन्यवाद सदा करता हूं, इसलिये कि परमेश्वर का यह अनुग्रह तुम पर मसीह

यीशु में हुआ। ५ कि उस में होकर तुम हर बात में अर्थात् सारे वचन और सारे ज्ञान में धनी किए गए। ६ कि मसीह की गवाही तुम में पक्की निकली। ७ यहां तक कि किसी बरदान में तुम्हें घटी नहीं, और तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रगट होने की बाट जोहते रहते हो। ८ वह तुम्हें अन्त तक दृढ़ भी करेगा, कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के दिन में निर्दोष ठहरो। ९ परमेश्वर सच्चा * है; जिस ने तुम को अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह की संगति में बुलाया है॥

१० हे भाइयो, मैं तुम से यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है उसके नाम के द्वारा बिनती करता हूं, कि तुम सब एक ही बात कहो; और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो। ११ क्योंकि हे मेरे भाइयो, खलोए के घराने के लोगों ने मुझे तुम्हारे विषय में बताया है, कि तुम में झगड़े हो रहे हैं। १२ मेरा कहना यह है, कि तुम में से कोई तो अपने आप को पौलुस का, कोई अपुल्लोस का, कोई कैफा का, कोई मसीह का कहता है। १३ क्या मसीह बट गया? क्या पौलुस तुम्हारे लिये क्रूस पर चढ़ाया गया? या तुम्हें पौलुस के नाम पर बपतिस्मा मिला? १४ मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं, कि क्रिस्पुस और गयुस को छोड़, मैं ने तुम में से किसी को भी बपतिस्मा नहीं दिया। १५ कहीं ऐसा न हो, कि कोई कहे, कि तुम्हें मेरे नाम पर बपतिस्मा मिला। १६ और मैं ने स्तिफनास के घराने को भी बपतिस्मा दिया; इन को छोड़, मैं नहीं जानता कि मैं ने और किसी को बपतिस्मा दिया। १७ क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने को नहीं, बरन सुसमाचार सुनाने को भेजा है, और यह भी शब्दों के ज्ञान के अनुसार नहीं, ऐसा न हो कि मसीह का क्रूस व्यर्थ ठहरे॥

१८ क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है। १९ क्योंकि लिखा है, कि मैं ज्ञानवानों के ज्ञान को नाश करूंगा, और समझदारों की समझ को तुच्छ कर दूंगा। २० कहां रहा ज्ञानवान? कहां रहा शास्त्री? कहां इस संसार का विवादी? क्या परमेश्वर ने संसार के ज्ञान को मूर्खता नहीं ठहराया? २१ क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न जाना तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा, कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करनेवालों को उद्धार दे। २२ यहूदी तो चिन्ह चाहते हैं, और यूनानी ज्ञान की खोज में हैं। २३ परन्तु हम तो उस क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह का प्रचार करते हैं जो यहूदियों के निकट ठोकर का कारण, और अन्यजातियों के निकट मूर्खता है। २४ परन्तु जो बुलाए हुए हैं क्या यहूदी, क्या यूनानी, उन के निकट मसीह परमेश्वर की सामर्थ, और परमेश्वर का ज्ञान है। २५ क्योंकि परमेश्वर की मूर्खता मनुष्यों के ज्ञान से ज्ञानवान है; और परमेश्वर की निर्बलता मनुष्यों के बल से बहुत बलवान है॥

२६ हे भाइयो, अपने बुलाए जाने को तो सोचो, कि न शरीर के अनुसार बहुत ज्ञानवान, और न बहुत सामर्थी, और न बहुत कुलीन बुलाए गए। २७ परन्तु परमेश्वर ने जगत के मूर्खों को चुन लिया

* यू० विश्वासयोग्य।

है, कि ज्ञानवानों को लज्जित करे; और परमेश्वर ने जगत के निर्बलों को चुन लिया है, कि बलवानों को लज्जित करे। २८ और परमेश्वर ने जगत के नीचों और तुच्छों को, बरन जो हैं भी नहीं उन को भी चुन लिया, कि उन्हें जो हैं, व्यर्थ ठहराए। २९ ताकि कोई प्राणी परमेश्वर के साम्हने घमण्ड न करने पाए। ३० परन्तु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिये ज्ञान ठहरा अर्थात् धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा। ३१ ताकि जैसा लिखा है, वैसा ही हो, कि जो घमण्ड करे वह प्रभु में घमण्ड करे॥

२ और हे भाइयो, जब मैं परमेश्वर का भेद सुनाता हुआ तुम्हारे पास आया, तो वचन या ज्ञान की उत्तमता के साथ नहीं आया। २ क्योंकि मैं ने यह ठान लिया था, कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह, वरन क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूं। ३ और मैं निर्बलता और भय के साथ, और बहुत थरथराता हुआ तुम्हारे साथ रहा। ४ और मेरे वचन, और मेरे प्रचार में ज्ञान की लुभानेवाली बातें नहीं; परन्तु आत्मा और सामर्थ का प्रमाण था। ५ इसलिये कि तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, परन्तु परमेश्वर की सामर्थ पर निर्भर हो॥

६ फिर भी सिद्ध लोगों में हम ज्ञान सुनाते हैं: परन्तु इस संसार का और इस संसार के नाश होनेवाले हाकिमों का ज्ञान नहीं। ७ परन्तु हम परमेश्वर का वह गुप्त ज्ञान, भेद की रीति पर बताते हैं, जिसे परमेश्वर ने सनातन से हमारी महिमा के लिये ठहराया। ८ जिसे इस संसार के हाकिमों में से किसी ने नहीं जाना, क्योंकि यदि जानते, तो तेजोमय प्रभु को क्रूस पर न चढ़ाते। ९ परन्तु जैसा लिखा है, कि जो आंख ने नहीं देखी, और कान ने नहीं सुना, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ीं, वे ही हैं, जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिये तैयार की हैं। १० परन्तु परमेश्वर ने उन को अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया; क्योंकि आत्मा सब बातें, बरन परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता है। ११ मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य की बातें जानता है, केवल मनुष्य की आत्मा जो उस में है? वैसी ही परमेश्वर की बातें भी कोई नहीं जानता, केवल परमेश्वर का आत्मा। १२ परन्तु हम ने संसार की आत्मा नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों को जानें, जो परमेश्वर ने हमें दी हैं। १३ जिन को हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु आत्मा की सिखाई हुई बातों में, आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला मिलाकर सुनाते हैं। १४ परन्तु शारीरिक * मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उस की दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उन की जांच आत्मिक रीति से होती है। १५ आत्मिक जन सब कुछ जांचता है, परन्तु वह आप किसी से जांचा नहीं जाता। १६ क्योंकि प्रभु का मन किस ने जाना है, कि उसे सिखलाए? परन्तु हम में मसीह का मन है॥

३ हे भाइयो, मैं तुम से इस रीति से बातें न कर सका, जैसे आत्मिक लोगों से; परन्तु जैसे शारीरिक लोगों से, और

---

* यू० प्राणिक।

उन से जो मसीह में बालक हैं। २ मैं ने तुम्हें दूध-पिलाया, अन्न न खिलाया; क्योंकि तुम उस को न खा सकते थे; बरन अब तक भी नहीं खा सकते हो। ३ क्योंकि अब तक शारीरिक हो, इसलिये कि जब तुम में डाह और झगड़ा है, तो क्या तुम शारीरिक नहीं? और मनुष्य की रीति पर नहीं चलते? ४ इसलिये कि जब एक कहता है, मैं पौलुस का हूं, और दूसरा कि मैं अपुल्लोस का हूं, तो क्या तुम मनुष्य नहीं? ५ अपुल्लोस क्या है? और पौलुस क्या? केवल सेवक, जिन के द्वारा तुम ने विश्वास किया, जैसा हर एक को प्रभु ने दिया। ६ मैं ने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया। ७ इसलिये न तो लगानेवाला कुछ है, और न सींचनेवाला, परन्तु परमेश्वर जो बढ़ानेवाला है। ८ लगानेवाला और सींचनेवाला दोनों एक हैं; परन्तु हर एक व्यक्ति अपने ही परिश्रम के अनुसार अपनी ही मजदूरी पाएगा। ९ क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं; तुम परमेश्वर की खेती और परमेश्वर की रचना हो॥

१० परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार, जो मुझे दिया गया, मैं ने बुद्धिमान राजमिस्त्री की नाईं नेव डाली, और दूसरा उस पर रद्दा रखता है; परन्तु हर एक मनुष्य चौकस रहे, कि वह उस पर कैसा रद्दा रखता है। ११ क्योंकि उस नेव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है: कोई दूसरी नेव नहीं डाल सकता। १२ और यदि कोई इस नेव पर सोना या चान्दी या बहुमोल पत्थर या काठ या घास या फूस का रद्दा रखे। १३ तो हर एक का काम प्रगट हो जाएगा; क्योंकि वह दिन उसे बताएगा; इसलिये कि आग के साथ प्रगट होगा: और वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है? १४ जिस का काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मजदूरी पाएगा। १५ और यदि किसी का काम जल जाएगा, तो वह हानि उठाएगा; पर वह आप बच जाएगा परन्तु जलते जलते॥

१६ क्या तुम नहीं जानते, कि तुम परमेश्वर का मन्दिर * हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में बास करता है? १७ यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नाश करेगा तो परमेश्वर उसे नाश करेगा; क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो॥

१८ कोई अपने आप को धोखा न दे: यदि तुम में से कोई इस संसार में अपने आप को ज्ञानी समझे, तो मूर्ख बने; कि ज्ञानी हो जाए। १९ क्योंकि इस संसार का ज्ञान परमेश्वर के निकट मूर्खता है, जैसा लिखा है; कि वह ज्ञानियों को उन की चतुराई में फंसा देता है। २० और फिर प्रभु ज्ञानियों की चिन्ताओं को जानता है, कि व्यर्थ हैं। २१ इसलिये मनुष्यों पर कोई घमण्ड न करे, क्योंकि सब कुछ तुम्हारा है। २२ क्या पौलुस, क्या अपुल्लोस, क्या कैफा, क्या जगत, क्या जीवन, क्या मरण, क्या वर्तमान, क्या भविष्य, सब कुछ तुम्हारा है, २३ और तुम मसीह के हो, और मसीह परमेश्वर का है॥

४ मनुष्य हमें मसीह के सेवक और परमेश्वर के भेदों के भण्डारी समझे। २ फिर यहां भण्डारी में यह बात देखी जाती है, कि विश्वास योग्य निकले। ३ परन्तु मेरी दृष्टि में यह बहुत छोटी बात है, कि तुम या मनुष्यों का कोई न्यायी मुझे

* यू० पवित्रस्थान।

परखे, बरन मैं आप ही अपने आप को नहीं परखता। ४ क्योंकि मेरा मन मुझे किसी बात में दोषी नहीं ठहराता, परन्तु इस से मैं निर्दोष नहीं ठहरता, क्योंकि मेरा परखनेवाला प्रभु है। ५ सो जब तक प्रभु न आए, समय से पहिले किसी बात का न्याय न करो: वही तो अन्धकार की छिपी बातें ज्योति में दिखाएगा, और मनों की मतियों को प्रगट करेगा, तब परमेश्वर की ओर से हर एक की प्रशंसा होगी॥

६ हे भाइयो, मैं ने इन बातों में तुम्हारे लिये अपनी और अपुल्लोस की चर्चा, दृष्टान्त की रीति पर की है, इसलिये कि तुम हमारे द्वारा यह सीखो, कि लिखे हुए से आगे न बढ़ना, और एक के पक्ष में और दूसरे के विरोध में गर्व न करना। ७ क्योंकि तुझ में और दूसरे में कौन भेद करता है? और तेरे पास क्या है जो तू ने (दूसरे से) नहीं पाया: और जब कि तू ने (दूसरे से) पाया है, तो ऐसा घमण्ड क्यों करता है, कि मानो नहीं पाया? ८ तुम तो तृप्त हो चुके; तुम धनी हो चुके, तुम ने हमारे बिना राज्य किया; परन्तु भला होता कि तुम राज्य करते कि हम भी तुम्हारे साथ राज्य करते। ९ मेरी समझ में परमेश्वर ने हम प्रेरितों को सब के बाद उन लोगों की नाईं ठहराया है, जिन की मृत्यु की आज्ञा हो चुकी हो; क्योंकि हम जगत और स्वर्गदूतों और मनुष्यों के लिये एक तमाशा ठहरे हैं। १० हम मसीह के लिये मूर्ख हैं; परन्तु तुम मसीह में बुद्धिमान हो: हम निर्बल हैं परन्तु तुम बलवान हो: तुम आदर पाते हो, परन्तु हम निरादर होते हैं। ११ हम इस घड़ी तक भूखे-प्यासे और नङ्गे हैं, और घूसे खाते हैं और मारे मारे फिरते हैं; और अपने ही हाथों के काम करके परिश्रम करते हैं। १२ लोग बुरा कहते हैं, हम आशीष देते हैं; वे सताते हैं, हम सहते हैं। १३ वे बदनाम करते हैं, हम बिनती करते हैं: हम आज तक जगत के कूड़े और सब वस्तुओं की खुरचन की नाईं ठहरे हैं॥

१४ मैं तुम्हें लज्जित करने के लिये ये बातें नहीं लिखता, परन्तु अपने प्रिय बालक जानकर उन्हें चिताता हूं। १५ क्योंकि यदि मसीह में तुम्हारे सिखानेवाले दस हजार भी होते, तौभी तुम्हारे पिता बहुत से नहीं, इसलिये कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा मैं तुम्हारा पिता हुआ। १६ सो मैं तुम से बिनती करता हूं, कि मेरी सी चाल चलो। १७ इसलिये मैं ने तीमुथियुस को जो प्रभु में मेरा प्रिय और विश्वासयोग्य पुत्र है, तुम्हारे पास भेजा है, और वह तुम्हें मसीह में मेरा चरित्र स्मरण कराएगा, जैसे कि मैं हर जगह हर एक कलीसिया में उपदेश करता हूं। १८ कितने तो ऐसे फूल गए हैं, मानो मैं तुम्हारे पास आने ही का नहीं। १९ परन्तु प्रभु चाहे तो मैं तुम्हारे पास शीघ्र ही आऊंगा, और उन फूले हुओं की बातों को नहीं, परन्तु उन की सामर्थ को जान लूंगा। २० क्योंकि परमेश्वर का राज्य बातों में नहीं, परन्तु सामर्थ में है। २१ तुम क्या चाहते हो? क्या मैं छड़ी लेकर तुम्हारे पास आऊं या प्रेम और नम्रता की आत्मा के साथ?

५ यहां तक सुनने में आता है, कि तुम में व्यभिचार होता है, बरन ऐसा व्यभिचार जो अन्यजातियों में भी नहीं होता, कि एक मनुष्य अपने पिता की पत्नी को रखता है। २ और तुम शोक तो नहीं करते, जिस से ऐसा काम करनेवाला तुम्हारे बीच में से निकाला जाता, परन्तु घमण्ड

करते हो। ३ मैं तो शरीर के भाव से दूर था, परन्तु आत्मा के भाव से तुम्हारे साथ होकर, मानो उपस्थिति की दशा में ऐसे काम करनेवाले के विषय में यह आज्ञा दे चुका हूं। ४ कि जब तुम, और मेरी आत्मा, हमारे प्रभु यीशु का सामर्थ के साथ इकट्ठे हो, तो ऐसा मनुष्य, हमारे प्रभु यीशु के नाम से। ५ शरीर के विनाश के लिये शैतान को सौंपा जाए, ताकि उस की आत्मा प्रभु यीशु के दिन में उद्धार पाए। ६ तुम्हारा घमण्ड करना अच्छा नहीं: क्या तुम नहीं जानते, कि थोड़ा सा खमीर पूरे गूंधे हुए आटे को खमीर कर देता है। ७ पुराना खमीर निकाल कर, अपने आप को शुद्ध करो: कि नया गूंधा हुआ आटा बन जाओ; ताकि तुम अखमीरी हो, क्योंकि हमारा भी फसह जो मसीह है, बलिदान हुआ है। ८ सो आओ, हम उत्सव में आनन्द मनावें, न तो पुराने खमीर से और न बुराई और दुष्टता के खमीर से, परन्तु सीधाई और सच्चाई की अखमीरी रोटी से॥

९ मैं ने अपनी पत्री में तुम्हें लिखा है, कि व्यभिचारियों की संगति न करना। १० यह नहीं, कि तुम बिलकुल इस जगत के व्यभिचारियों, या लोभियों, या अन्धेर करनेवालों, या मूर्त्तिपूजकों की संगति न करो; क्योंकि इस दशा में तो तुम्हें जगत में से निकल जाना ही पड़ता। ११ मेरा कहना यह है; कि यदि कोई भाई कहलाकर, व्यभिचारी, या लोभी, या मूर्त्तिपूजक, या गाली देनेवाला, या पियक्कड़, या अन्धेर करनेवाला हो, तो उस की संगति मत करना; बरन ऐसे मनुष्य के साथ खाना भी न खाना। १२ क्योंकि मुझे बाहरवालों का न्याय करने से क्या काम? क्या तुम भीतरवालों का न्याय नहीं करते? १३ परन्तु बाहरवालों का न्याय परमेश्वर करता है: इसलिये उस कुकर्मी को अपने बीच में से निकाल दो॥

६ क्या तुम में से किसी को यह हियाव है, कि जब दूसरे के साथ झगड़ा हो, तो फैसले के लिये अधर्मियों के पास जाए; और पवित्र लोगों के पास न जाए? २ क्या तुम नहीं जानते, कि पवित्र लोग जगत का न्याय करेंगे? सो जब तुम्हें जगत का न्याय करना है, तो क्या तुम छोटे से छोटे झगड़ों का भी निर्णय करने के योग्य नहीं? ३ क्या तुम नहीं जानते, कि हम स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे? तो क्या सांसारिक बातों का निर्णय न करें? ४ सो यदि तुम्हें सांसारिक बातों का निर्णय करना हो, तो क्या उन्हीं को बैठाओगे जो कलीसिया में कुछ नहीं समझे जाते हैं? ५ मैं तुम्हें लज्जित करने के लिये यह कहता हूं: क्या सचमुच तुम में एक भी बुद्धिमान नहीं मिलता, जो अपने भाइयों का निर्णय कर सके? ६ बरन भाई भाई में मुकद्दमा होता है, और वह भी अविश्वासियों के साम्हने। ७ परन्तु सचमुच तुम में बड़ा दोष तो यह है, कि आपस में मुकद्दमा करते हो; बरन अन्याय क्यों नहीं सहते? अपनी हानि क्यों नहीं सहते? ८ बरन अन्याय करते और हानि पहुंचाते हो, और वह भी भाइयों को। ९ क्या तुम नहीं जानते, कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे? धोखा न खाओ, न वेश्यागामी, न मूर्त्तिपूजक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरुषगामी। १० न चोर, न लोभी, न पियक्कड़, न गाली देनेवाले, न अन्धेर करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे।

११ और तुम में से कितने ऐसे ही थे, परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए, और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे ॥

१२ सब वस्तुएं मेरे लिये उचित तो हैं, परन्तु सब वस्तुएं लाभ की नहीं, सब वस्तुएं मेरे लिये उचित हैं, परन्तु मैं किसी बात के आधीन न हूंगा। १३ भोजन पेट के लिये, और पेट भोजन के लिये है, परन्तु परमेश्वर इस को और उस को दोनों को नाश करेगा, परन्तु देह व्यभिचार के लिये नहीं, बरन प्रभु के लिये; और प्रभु देह के लिये है। १४ और परमेश्वर ने अपनी सामर्थ से प्रभु को जिलाया, और हमें भी जिलाएगा। १५ क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी देह मसीह के अंग है? सो क्या मैं मसीह के अंग लेकर उन्हें वेश्या के अंग बनाऊं? कदापि नहीं। १६ क्या तुम नहीं जानते, कि जो कोई वेश्या से संगति करता है, वह उसके साथ एक तन हो जाता है क्योंकि वह कहता है, कि वे दोनों एक तन होंगे। १७ और जो प्रभु की संगति में रहता है, वह उसके साथ एक आत्मा हो जाता है। १८ व्यभिचार से बचे रहो: जितने और पाप मनुष्य करता है, वे देह के बाहर हैं, परन्तु व्यभिचार करनेवाला अपनी ही देह के विरुद्ध पाप करता है। १९ क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर * है; जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो? २० क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिये अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो ॥

* यू० पवित्रस्थान।

७ उन बातों के विषय में जो तुम ने लिखीं, यह अच्छा है, कि पुरुष स्त्री को न छूए। २ परन्तु व्यभिचार के डर से हर एक पुरुष की पत्नी, और हर एक स्त्री का पति हो। ३ पति अपनी पत्नी का हक्क पूरा करे; और वैसे ही पत्नी भी अपने पति का। ४ पत्नी को अपनी देह पर अधिकार नहीं पर उसके पति का अधिकार है; वैसे ही पति को भी अपनी देह पर अधिकार नहीं, परन्तु पत्नी को। ५ तुम एक दूसरे से अलग न रहो; परन्तु केवल कुछ समय तक आपस की सम्मति से कि प्रार्थना के लिये अवकाश मिले, और फिर एक साथ रहो, ऐसा न हो, कि तुम्हारे असंयम के कारण शैतान तुम्हें परखे। ६ परन्तु मैं जो यह कहता हूं वह अनुमति है न कि आज्ञा। ७ मैं यह चाहता हूं, कि जैसा मैं हूं, वैसा ही सब मनुष्य हों; परन्तु हर एक को परमेश्वर की ओर से विशेष विशेष वरदान मिले हैं; किसी को किसी प्रकार का, और किसी को किसी और प्रकार का ॥

८ परन्तु मैं अविवाहितों और विधवाओं के विषय में कहता हूं, कि उन के लिये ऐसा ही रहना अच्छा है, जैसा मैं हूं। ९ परन्तु यदि वे संयम न कर सकें, तो विवाह करें; क्योंकि विवाह करना कामातुर रहने से भला है। १० जिन का ब्याह हो गया है, उन को मैं नहीं, बरन प्रभु आज्ञा देता है, कि पत्नी अपने पति से अलग न हो। ११ (और यदि अलग भी हो जाए, तो बिन दूसरा ब्याह किए रहे; या अपने पति से फिर मेल कर ले) और न पति अपनी पत्नी को छोड़े। १२ दूसरों से प्रभु नहीं, परन्तु मैं ही कहता हूं, यदि किसी भाई की पत्नी विश्वास न रखती हो, और उसके साथ रहने से प्रसन्न हो, तो वह उसे न

छोड़े। १३ और जिस स्त्री का पति विश्वास न रखता हो, और उसके साथ रहने से प्रसन्न हो; वह पति को न छोड़े। १४ क्योंकि ऐसा पति जो विश्वास न रखता हो, वह पत्नी के कारण पवित्र ठहरता है, और ऐसी पत्नी जो विश्वास नहीं रखती, पति के कारण पवित्र ठहरती है; नहीं तो तुम्हारे लड़केबाले अशुद्ध होते, परन्तु अब तो पवित्र हैं। १५ परन्तु जो पुरुष विश्वास नहीं रखता, यदि वह अलग हो, तो अलग होने दो, ऐसी दशा में कोई भाई या बहिन बन्धन में नहीं; परन्तु परमेश्वर ने तो हमें मेल मिलाप के लिये बुलाया है। १६ क्योंकि हे स्त्री, तू क्या जानती है, कि तू अपने पति का उद्धार करा ले? और हे पुरुष, तू क्या जानता है कि तू अपनी पत्नी का उद्धार करा ले? १७ पर जैसा प्रभु ने हर एक को बांटा है, और जैसा परमेश्वर ने हर एक को बुलाया है; वैसा ही वह चले: और मैं सब कलीसियाओं में ऐसा ही ठहराता हूं। १८ जो खतना किया हुआ बुलाया गया हो, वह खतनारहित न बने: जो खतनारहित बुलाया गया हो, वह खतना न कराए। १९ न खतना कुछ है, और न खतनारहित परन्तु परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना ही सब कुछ है। २० हर एक जन जिस दशा में बुलाया गया हो, उसी में रहे। २१ यदि तू दास की दशा में बुलाया गया हो तो चिन्ता न कर; परन्तु यदि तू स्वतंत्र हो सके, तो ऐसा ही काम कर। २२ क्योंकि जो दास की दशा में प्रभु में बुलाया गया है, वह प्रभु का स्वतंत्र किया हुआ है: और वैसे ही जो स्वतंत्रता की दशा में बुलाया गया है, वह मसीह का दास है। २३ तुम दाम देकर मोल लिए गए हो, मनुष्यों के दास न बनो। २४ हे भाइयो, जो कोई जिस दशा में बुलाया गया हो, वह उसी में परमेश्वर के साथ रहे॥

२५ कुंवारियों के विषय में प्रभु की कोई आज्ञा मुझे नहीं मिली, परन्तु विश्वास-योग्य होने के लिये जैसी दया प्रभु ने मुझ पर की है, उसी के अनुसार सम्मति देता हूं। २६ सो मेरी समझ में यह अच्छा है, कि आजकल क्लेश के कारण मनुष्य जैसा है, वैसा ही रहे। २७ यदि तेरे पत्नी है, तो उस से अलग होने का यत्न न कर: और यदि तेरे पत्नी नहीं *, तो पत्नी की खोज न कर: २८ परन्तु यदि तू ब्याह भी करे, तो पाप नहीं; और यदि कुंवारी ब्याही जाए तो कोई पाप नहीं; परन्तु ऐसों को शारीरिक दुख होगा, और मैं बचाना चाहता हूं। २९ हे भाइयो, मैं यह कहता हूं, कि समय कम किया गया है, इसलिये चाहिए कि जिन के पत्नी हों, वे ऐसे हों मानो उन के पत्नी नहीं। ३० और रोनेवाले ऐसे हों, मानो रोते नहीं; और आनन्द करनेवाले ऐसे हों, मानो आनन्द नहीं करते; और मोल लेनेवाले ऐसे हों, कि मानो उन के पास कुछ है नहीं। ३१ और इस संसार के बरतनेवाले ऐसे हों, कि संसार ही के न हो लें †; क्योंकि इस संसार की रीति और व्यवहार बदलते जाते हैं। ३२ सो मैं यह चाहता हूं, कि तुम्हें चिन्ता न हो: अविवाहित पुरुष प्रभु की बातों की चिन्ता में रहता है, कि प्रभु को क्योंकर प्रसन्न रखे। ३३ परन्तु विवाहित मनुष्य संसार की बातों की चिन्ता में रहता है, कि अपनी पत्नी को किस रीति से प्रसन्न रखे। ३४ विवाहिता और अविवाहिता में भी भेद है: अविवाहिता प्रभु की चिन्ता में रहती है,

* या यदि तू पत्नी से छूट गया है।
† यू० उसे अधिक न बर्तें।

कि वह देह और आत्मा दोनों में पवित्र हो, परन्तु विवाहिता संसार की चिन्ता में रहती है, कि अपने पति को प्रसन्न रखे। ३५ यह बात तुम्हारे ही लाभ के लिये कहता हूं, न कि तुम्हें फंसाने के लिये, बरन इसलिये कि जैसा सोहता है, वैसा ही किया जाए; कि तुम एक चित्त होकर प्रभु की सेवा में लगे रहो। ३६ और यदि कोई यह समझे, कि मैं अपनी उस कुंवारी का हक्क मार रहा हूं, जिस की जवानी ढल चली है, और प्रयोजन भी होए, तो जैसा चाहे, वैसा करे, इस में पाप नहीं, वह उसका ब्याह होने दे *। ३७ परन्तु जो मन में दृढ़ रहता है, और उस को प्रयोजन न हो, बरन अपनी इच्छा पूरी करने में अधिकार रखता हो, और अपने मन में यह बात ठान ली हो, कि मैं अपनी कुंवारी लड़की को बिन ब्याही रखूंगा, वह अच्छा करता है। ३८ सो जो अपनी कुंवारी का ब्याह कर देता है, वह अच्छा करता है, और जो ब्याह नहीं कर देता, वह और भी अच्छा करता है। ३९ जब तक किसी स्त्री का पति जीवित रहता है, तब तक वह उस से बन्धी हुई है, परन्तु जब उसका पति मर जाए, तो जिस से चाहे विवाह कर सकती है, परन्तु केवल प्रभु में। ४० परन्तु जैसी है यदि वैसी ही रहे, तो मेरे विचार में और भी धन्य है, और मैं समझता हूं, कि परमेश्वर का आत्मा मुझ में भी है॥

८ अब मूरतों के साम्हने बलि की हुई वस्तुओं के विषय में—हम जानते हैं, कि हम सब को ज्ञान है: ज्ञान घमण्ड उत्पन्न करता है, परन्तु प्रेम से उन्नति होती है। २ यदि कोई समझे, कि मैं कुछ जानता हूं, तो जैसा जानना चाहिए वैसा अब तक नहीं जानता। ३ परन्तु यदि कोई परमेश्वर से प्रेम रखता है, तो उसे परमेश्वर पहिचानता है। ४ सो मूरतों के साम्हने बलि की हुई वस्तुओं के खाने के विषय में—हम जानते हैं, कि मूरत जगत में कोई वस्तु नहीं, और एक को छोड़ और कोई परमेश्वर नहीं। ५ यद्यपि आकाश में और पृथ्वी पर बहुत से ईश्वर कहलाते हैं, (जैसा कि बहुत से ईश्वर और बहुत से प्रभु हैं)। ६ तौभी हमारे निकट तो एक ही परमेश्वर है: अर्थात् पिता जिस की ओर से सब वस्तुएं हैं, और हम उसी के लिये हैं, और एक ही प्रभु है, अर्थात् यीशु मसीह जिस के द्वारा सब वस्तुएं हुईं, और हम भी उसी के द्वारा हैं। ७ परन्तु सब को यह ज्ञान नहीं; परन्तु कितने तो अब तक मूरत को कुछ समझने के कारण मूरतों के साम्हने बलि की हुई को कुछ वस्तु समझकर खाते हैं, और उन का विवेक * निर्बल होकर अशुद्ध होता है। ८ भोजन हमें परमेश्वर के निकट नहीं पहुंचाता, यदि हम न खाएं, तो हमारी कुछ हानि नहीं, और यदि खाएं, तो कुछ लाभ नहीं। ९ परन्तु चौकस रहो, ऐसा न हो, कि तुम्हारी यह स्वतंत्रता कहीं निर्बलों के लिये ठोकर का कारण हो जाए। १० क्योंकि यदि कोई तुझ ज्ञानी को मूरत के मन्दिर में भोजन करते देखे, और वह निर्बल जन हो, तो क्या उसके विवेक में मूरत के साम्हने बलि की हुई वस्तु के खाने का हियाव न हो जाएगा। ११ इस रीति से तेरे ज्ञान के कारण वह निर्बल भाई जिस के लिये मसीह मरा नाश हो जाएगा। १२ सो भाइयों का अपराध

* यू० वे ब्याहे जाएं।

* अर्थात् मन या कानशन्स।

करने से और उन के निर्बल विवेक * को चोट देने से तुम मसीह का अपराध करते हो। १३ इस कारण यदि भोजन मेरे भाई को ठोकर खिलाए, तो मैं कभी किसी रीति से मांस न खाऊंगा, न हो कि मैं अपने भाई के ठोकर का कारण बनूं।

९ क्या मैं स्वतंत्र नहीं? क्या मैं प्रेरित नहीं? क्या मैं ने यीशु को जो हमारा प्रभु है, नहीं देखा? क्या तुम प्रभु में मेरे बनाए हुए नहीं? २ यदि मैं औरों के लिये प्रेरित नहीं, तौभी तुम्हारे लिये तो हूं; क्योंकि तुम प्रभु में मेरी प्रेरिताई पर छाप हो। ३ जो मुझे जांचते हैं, उन के लिये यही मेरा उत्तर है। ४ क्या हमें खाने-पीने का अधिकार नहीं? ५ क्या हमें यह अधिकार नहीं, कि किसी मसीही बहिन को ब्याह कर के लिए फिरें, जैसा और प्रेरित और प्रभु के भाई और कैफा करते हैं? ६ या केवल मुझे और बरनबास को अधिकार नहीं कि कमाई करना छोड़ें। ७ कौन कभी अपनी गिरह से खाकर सिपाही का काम करता है: कौन दाख की बारी लगाकर उसका फल नहीं खाता? कौन भेड़ों की रखवाली करके उन का दूध नहीं पीता? ८ क्या मैं ये बातें मनुष्य ही की रीति पर बोलता हूं? ९ क्या व्यवस्था भी यही नहीं कहती? क्योंकि मूसा की व्यवस्था में लिखा है कि दाएं में चलते हुए बैल का मुंह न बान्धना: क्या परमेश्वर बैलों ही की चिन्ता करता है? या विशेष करके हमारे लिये कहता है। १० हां, हमारे लिये ही लिखा गया, क्योंकि उचित है, कि जोतनेवाला आशा से जोते, और दावनेवाला भागी होने की आशा से दावनी करे। ११ सो जब कि हम ने तुम्हारे लिये आत्मिक वस्तुएं बोईं, तो क्या यह कोई बड़ी बात है, कि तुम्हारी शारीरिक वस्तुओं की फसल काटें। १२ जब औरों का तुम पर यह अधिकार है, तो क्या हमारा इस से अधिक न होगा? परन्तु हम यह अधिकार काम में नहीं लाए; परन्तु सब कुछ सहते हैं, कि हमारे द्वारा मसीह के सुसमाचार की कुछ रोक न हो। १३ क्या तुम नहीं जानते कि जो पवित्र वस्तुओं की सेवा करते हैं, वे मन्दिर में से खाते हैं; और जो वेदी की सेवा करते हैं; वे वेदी के साथ भागी होते हैं? १४ इसी रीति से प्रभु ने भी ठहराया, कि जो लोग सुसमाचार सुनाते हैं, उन की जीविका सुसमाचार से हो। १५ परन्तु मैं इन में से कोई भी बात काम में न लाया, और मैं ने तो ये बातें इसलिये नहीं लिखीं, कि मेरे लिये ऐसा किया जाए, क्योंकि इस से तो मेरा मरना ही भला है; कि कोई मेरा घमण्ड व्यर्थ ठहराए। १६ और यदि मैं सुसमाचार सुनाऊं, तो मेरा कुछ घमण्ड नहीं; क्योंकि यह तो मेरे लिये अवश्य है; और यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊं, तो मुझ पर हाय। १७ क्योंकि यदि अपनी इच्छा से यह करता हूं, तो मजदूरी मुझे मिलती है, और यदि अपनी इच्छा से नहीं करता, तौभी भण्डारीपन मुझे सौंपा गया है। १८ सो मेरी कौन सी मजदूरी है? यह कि सुसमाचार सुनाने में मैं मसीह का सुसमाचार सेंत मेंत कर दूं; यहां तक कि सुसमाचार में जो मेरा अधिकार है, उस को मैं पूरी रीति से काम में लाऊं। १९ क्योंकि सब से स्वतंत्र होने पर भी मैं ने अपने आप को सब का दास बना दिया है; कि अधिक लोगों को खींच लाऊं। २० मैं यहूदियों के

* अर्थात् मन या कानशन्स।

लिये यहूदी बना कि यहूदियों को खींच लाऊं, जो लोग व्यवस्था के आधीन हैं उन के लिये मैं व्यवस्था के आधीन न होने पर भी व्यवस्था के आधीन बना, कि उन्हें जो व्यवस्था के आधीन हैं, खींच लाऊं। २१ व्यवस्थाहीनों के लिये मैं (जो परमेश्वर की व्यवस्था से हीन नहीं, परन्तु मसीह की व्यवस्था के आधीन हूं) व्यवस्थाहीन सा बना, कि व्यवस्थाहीनों को खींच लाऊं। २२ मैं निर्बलों के लिये निर्बल सा बना, कि निर्बलों को खींच लाऊं, मैं सब मनुष्यों के लिये सब कुछ बना हूं, कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊं। २३ और मैं सब कुछ सुसमाचार के लिये करता हूं, कि औरों के साथ उसका भागी हो जाऊं। २४ क्या तुम नहीं जानते, कि दौड़ में तो दौड़ते सब ही हैं, परन्तु इनाम एक ही ले जाता है? तुम वैसे ही दौड़ो, कि जीतो। २५ और हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम करता है, वे तो एक मुरझानेवाले मुकुट को पाने के लिये यह सब करते हैं, परन्तु हम तो उस मुकुट के लिये करते हैं, जो मुरझाने का नहीं। २६ इसलिये मैं तो इसी रीति से दौड़ता हूं, परन्तु बेठिकाने नहीं, मैं भी इसी रीति से मुक्कों से लड़ता हूं, परन्तु उस की नाईं नहीं जो हवा पीटता हुआ लड़ता है। २७ परन्तु मैं अपनी देह को मारता कूटता, और वश में लाता हूं; ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके, मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूं॥

१० हे भाइयो, मैं नहीं चाहता, कि तुम इस बात से अज्ञात रहो, कि हमारे सब बापदादे बादल के नीचे थे, और सब के सब समुद्र के बीच से पार हो गए। २ और सब ने बादल में, और समुद्र में, मूसा का बपतिस्मा लिया। ३ और सब ने एक ही आत्मिक भोजन किया। ४ और सब ने एक ही आत्मिक जल पीया, क्योंकि वे उस आत्मिक चटान से पीते थे, जो उन के साथ-साथ चलती थी; और वह चटान मसीह था। ५ परन्तु परमेश्वर उन में के बहुतेरों से प्रसन्न न हुआ, इसलिये वे जङ्गल में ढेर हो गए। ६ ये बातें हमारे लिये दृष्टान्त ठहरीं, कि जैसे उन्हों ने लालच किया, वैसे हम बुरी वस्तुओं का लालच न करें। ७ और न तुम मूरत पूजनेवाले बनो; जैसे कि उन में से कितने बन गए थे, जैसा लिखा है, कि लोग खाने-पीने बैठे, और खेलने-कूदने उठे। ८ और न हम व्यभिचार करें; जैसा उन में से कितनों ने किया: और एक दिन में तेईस हजार मर गये। ९ और न हम प्रभु को परखें; जैसा उन में से कितनों ने किया, और सांपों के द्वारा नाश किए गए। १० और न तुम कुड़कुड़ाओ, जिस रीति से उन में से कितने कुड़कुड़ाए, और नाश करनेवाले के द्वारा नाश किए गए। ११ परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ीं, दृष्टान्त की रीति पर थीं: और वे हमारी चितावनी के लिये जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं लिखी गईं हैं। १२ इसलिये जो समझता है, कि मैं स्थिर हूं, वह चौकस रहे; कि कहीं गिर न पड़े। १३ तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है: और परमेश्वर सच्चा * है: वह तुम्हें सामर्थ से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, बरन परीक्षा के साथ निकास भी करेगा; कि तुम सह सको॥

* यू० विश्वासयोग्य।

१४ इस कारण, हे मेरे प्यारो मूर्त्ति पूजा से बचे रहो। १५ मैं बुद्धिमान जानकर, तुम से कहता हूं: जो मैं कहता हूं, उसे तुम परखो। १६ वह धन्यवाद का कटोरा, जिस पर हम धन्यवाद करते हैं, क्या मसीह के लोहू की सहभागिता नहीं? वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, क्या वह मसीह की देह की सहभागिता नहीं? १७ इसलिये, कि एक ही रोटी है सो हम भी जो बहुत हैं, एक देह हैं: क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी होते हैं। १८ जो शरीर के भाव से इस्राएली हैं, उन को देखो: क्या बलिदानों के खानेवाले वेदी के सहभागी नहीं? १९ फिर मैं क्या कहता हूं? क्या यह कि मूरत का बलिदान कुछ है, या मूरत कुछ है? २० नहीं, बरन यह, कि अन्यजाति जो बलिदान करते हैं, वे परमेश्वर के लिये नहीं, परन्तु दुष्टात्माओं के लिये बलिदान करते हैं: और मैं नहीं चाहता, कि तुम दुष्टात्माओं के सहभागी हो। २१ तुम प्रभु के कटोरे, और दुष्टात्माओं के कटोरे दोनों में से नहीं पी सकते! तुम प्रभु की मेज और दुष्टात्माओं की मेज दोनों के साझी नहीं हो सकते। २२ क्या हम प्रभु को रिस दिलाते हैं? क्या हम उस से शक्तिमान हैं?

२३ सब वस्तुएं मेरे लिये उचित तो हैं, परन्तु सब लाभ की नहीं: सब वस्तुएं मेरे लिये उचित तो हैं, परन्तु सब वस्तुओं से उन्नति नहीं। २४ कोई अपनी ही भलाई को न ढूंढ़े, बरन औरों की। २५ जो कुछ कस्साइयों के यहां बिकता है, वह खाओ और विवेक* के कारण कुछ न पूछो। २६ क्योंकि पृथ्वी और उस की भरपूरी प्रभु की है। २७ और यदि अविश्वासियों में से कोई तुम्हें नेवता दे, और तुम जाना चाहो, तो जो कुछ तुम्हारे साम्हने रखा जाए, वही खाओ: और विवेक के कारण कुछ न पूछो। २८ परन्तु यदि कोई तुम से कहे, यह तो मूरत को बलि की हुई वस्तु है, तो उसी बतानेवाले के कारण, और विवेक के कारण न खाओ। २९ मेरा मतलब, तेरा विवेक नहीं, परन्तु उस दूसरे का। भला, मेरी स्वतंत्रता दूसरे के विचार से क्यों परखी जाए: ३० यदि मैं धन्यवाद करके साझी होता हूं, तो जिस पर मैं धन्यवाद करता हूं, उसके कारण मेरी बदनामी क्यों होती है? ३१ सो तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करो। ३२ तुम न यहूदियों, न यूनानियों, और न परमेश्वर की कलीसिया के लिये ठोकर के कारण बनो। ३३ जैसा मैं भी सब बातों में सब को प्रसन्न रखता हूं, और अपना नहीं, परन्तु बहुतों का लाभ ढूंढ़ता हूं, कि वे उद्धार पाएं॥

११ तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूं॥

२ हे भाइयो, मैं तुम्हें सराहता हूं, कि सब बातों में तुम मुझे स्मरण करते हो: और जो व्यवहार मैं ने तुम्हें सौंप दिए हैं, उन्हें धारण करते हो। ३ सो मैं चाहता हूं, कि तुम यह जान लो, कि हर एक पुरुष का सिर मसीह है: और स्त्री का सिर पुरुष है: और मसीह का सिर परमेश्वर है। ४ जो पुरुष सिर ढांके हुए प्रार्थना या भविष्यद्वाणी करता है, वह अपने सिर का अपमान करता है। ५ परन्तु जो स्त्री उघाड़े सिर प्रार्थना या भविष्यवाणी करती

* अर्थात् मन या कानशन्स।

है, वह अपने सिर का अपमान करती है, क्योंकि वह मुण्डी होने के बराबर है। ६ यदि स्त्री ओढ़नी न ओढ़े, तो बाल भी कटा ले; यदि स्त्री के लिये बाल कटाना या मुण्डाना लज्जा की बात है, तो ओढ़नी ओढ़े। ७ हां पुरुष को अपना सिर ढांकना उचित नहीं, क्योंकि वह परमेश्वर का स्वरूप और महिमा है; परन्तु स्त्री पुरुष की महिमा ! ८ क्योंकि पुरुष स्त्री से नहीं हुआ, परन्तु स्त्री पुरुष से हुई है। ९ और पुरुष स्त्री के लिये नहीं सिरजा गया, परन्तु स्त्री पुरुष के लिये सिरजी गई है। १० इसी लिये स्वर्गदूतों के कारण स्त्री को उचित है, कि अधिकार * अपने सिर पर रखे। ११ तौभी प्रभु में न तो स्त्री बिना पुरुष, और न पुरुष बिना स्त्री के है। १२ क्योंकि जैसे स्त्री पुरुष से है, वैसे ही पुरुष स्त्री के द्वारा है; परन्तु सब वस्तुएं परमेश्वर से हैं। १३ तुम आप ही विचार करो, क्या स्त्री को उघाड़े सिर परमेश्वर से प्रार्थना करना सोहना है ? १४ क्या स्वाभाविक रीति से भी तुम नहीं जानते, कि यदि पुरुष लम्बे बाल रखे, तो उसके लिये अपमान है। १५ परन्तु यदि स्त्री लम्बे बाल रखे; तो उसके लिये शोभा है क्योंकि बाल उस को ओढ़नी के लिये दिए गए हैं। १६ परन्तु यदि कोई विवाद करना चाहे, तो यह जाने कि न हमारी और न परमेश्वर की कलीसियाओं की ऐसी रीति है॥

१७ परन्तु यह आज्ञा देते हुए, मैं तुम्हें नहीं सराहता, इसलिये कि तुम्हारे इकट्ठे होने से भलाई नहीं, परन्तु हानि होती है। १८ क्योंकि पहिले तो मैं यह सुनता हूं, कि जब तुम कलीसिया में इकट्ठे होते हो, तो तुम में फूट होती है और मैं कुछ कुछ प्रतीति भी करता हूं। १९ क्योंकि विधर्म भी तुम में अवश्य होंगे, इसलिये कि जो लोग तुम में खरे निकले हैं, वे प्रगट हो जाएं। २० सो तुम जो एक जगह में इकट्ठे होते हो तो यह प्रभु भोज खाने के लिये नहीं। २१ क्योंकि खाने के समय एक दूसरे से पहिले अपना भोज खा लेता है, सो कोई तो भूखा रहता है, और कोई मतवाला हो जाता है। २२ क्या खाने पीने के लिये तुम्हारे घर नहीं ? या परमेश्वर की कलीसिया को तुच्छ जानते हो, और जिन के पास नहीं है उन्हें लज्जित करते हो ? मैं तुम से क्या कहूं ? क्या इस बात में तुम्हारी प्रशंसा करूं ? मैं प्रशंसा नहीं करता। २३ क्योंकि यह बात मुझे प्रभु से पहुंची, और मैं ने तुम्हें भी पहुंचा दी; कि प्रभु यीशु ने जिस रात वह पकड़वाया गया रोटी ली। २४ और धन्यवाद करके उसे तोड़ी, और कहा; कि यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये है: मेरे स्मरण के लिये यही किया करो। २५ इसी रीति से उस ने बियारी के पीछे कटोरा भी लिया, और कहा; यह कटोरा मेरे लोहू में नई वाचा है: जब कभी पीओ, तो मेरे स्मरण के लिये यही किया करो। २६ क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते, और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो। २७ इसलिये जो कोई अनुचित रीति से प्रभु की रोटी खाए, या उसके कटोरे में से पीए, वह प्रभु की देह और लोहू का अपराधी ठहरेगा। २८ इसलिये मनुष्य अपने आप को जांच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए, और इस कटोरे में से पीए। २९ क्योंकि जो खाते-पीते समय प्रभु की देह को न

* या आधीनता का चिन्ह।

पहिचाने, वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है। ३० इसी कारण तुम में बहुतेरे निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए। ३१ यदि हम अपने आप को जांचते, तो दण्ड न पाते। ३२ परन्तु प्रभु हमें दण्ड देकर हमारी ताड़ना करता है इसलिये कि हम संसार के साथ दोषी न ठहरें। ३३ इसलिये, हे मेरे भाइयो, जब तुम खाने के लिये इकट्ठे होते हो, तो एक दूसरे के लिये ठहरा करो। ३४ यदि कोई भूखा हो, तो अपने घर में खा ले जिस से तुम्हारा इकट्ठा होना दण्ड का कारण न हो: और शेष बातों को मैं आकर ठीक कर दूंगा॥

१२ हे भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम आत्मिक बरदानों के विषय में अज्ञात रहो। २ तुम जानते हो, कि जब तुम अन्यजाति थे, तो गूंगी मूरतों के पीछे जैसे चलाए जाते थे वैसे चलते थे। ३ इसलिये मैं तुम्हें चितौनी देता हूं कि जो कोई परमेश्वर की आत्मा की अगुआई से बोलता है, वह नहीं कहता कि यीशु स्रापित है; और न कोई पवित्र आत्मा के बिना कह सकता है कि यीशु प्रभु है॥

४ बरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है। ५ और सेवा भी कई प्रकार की हैं, परन्तु प्रभु एक ही है। ६ और प्रभावशाली कार्य्य कई प्रकार के हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही है, जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है। ७ किन्तु सब के लाभ पहुंचाने के लिये हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है। ८ क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि की बातें दी जाती हैं; और दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बातें। ९ और किसी को उसी आत्मा से विश्वास; और किसी को उसी एक आत्मा से चंगा करने का बरदान दिया जाता है। १० फिर किसी को सामर्थ के काम करने की शक्ति; और किसी को भविष्यद्वाणी की; और किसी को आत्माओं की परख; और किसी को अनेक प्रकार की भाषा; और किसी को भाषाओं का अर्थ बताना। ११ परन्तु ये सब प्रभावशाली कार्य्य वही एक आत्मा करवाता है, और जिसे जो चाहता है वह बांट देता है॥

१२ क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है, और उसके अंग बहुत से हैं, और उस एक देह के सब अंग, बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह हैं, उसी प्रकार मसीह भी है। १३ क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया। १४ इसलिये कि देह में एक ही अंग नहीं, परन्तु बहुत से हैं। १५ यदि पांव कहे; कि मैं हाथ नहीं, इसलिये देह का नहीं, तो क्या वह इस कारण देह का नहीं? १६ और यदि कान कहे; कि मैं आंख नहीं, इसलिये देह का नहीं, तो क्या वह इस कारण देह का नहीं है। १७ यदि सारी देह आंख ही होती तो सुनना कहां होता? यदि सारी देह कान ही होती, तो सूंघना कहां होता? १८ परन्तु सचमुच परमेश्वर ने अंगों को अपनी इच्छा के अनुसार एक एक करके देह में रखा है। १९ यदि वे सब एक ही अंग होते, तो देह कहां होती? २० परन्तु अब अंग तो बहुत से हैं, परन्तु देह एक ही है। २१ आंख हाथ से नहीं कह सकती, कि मुझे तेरा प्रयोजन नहीं, और न सिर पांवों से कह

सकता है, कि मुझे तुम्हारा प्रयोजन नहीं। २२ परन्तु देह के वे अंग जो औरों से निर्बल देख पड़ते हैं, बहुत ही आवश्यक हैं। २३ और देह के जिन अंगों को हम आदर के योग्य नहीं समझते हैं उन्हीं को हम अधिक आदर देते हैं; और हमारे शोभाहीन अंग और भी बहुत शोभायमान हो जाते हैं। २४ फिर भी हमारे शोभायमान अंगों को इस का प्रयोजन नहीं, परन्तु परमेश्वर ने देह को ऐसा बना दिया है, कि जिस अंग को घटी थी उसी को और भी बहुत आदर हो। २५ ताकि देह में फूट न पड़े, परन्तु अंग एक दूसरे की बराबर चिन्ता करें। २६ इसलिये यदि एक अंग दुःख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दुःख पाते हैं; और यदि एक अंग की बड़ाई होती है, तो उसके साथ सब अंग आनन्द मनाते हैं। २७ इसी प्रकार तुम सब मिलकर, मसीह की देह हो, और अलग अलग उसके अंग हो। २८ और परमेश्वर ने कलीसिया में अलग अलग व्यक्ति नियुक्त किए हैं; प्रथम प्रेरित, दूसरे भविष्यद्वक्ता, तीसरे शिक्षक *, फिर सामर्थ के काम करनेवाले, फिर चंगा करनेवाले, और उपकार करनेवाले, और प्रधान, और नाना प्रकार की भाषा बोलनेवाले। २९ क्या सब प्रेरित हैं? क्या सब भविष्यद्वक्ता हैं? क्या सब उपदेशक हैं? क्या सब सामर्थ के काम करनेवाले हैं? ३० क्या सब को चंगा करने का बरदान मिला है? क्या सब नाना प्रकार की भाषा बोलते हैं? ३१ क्या सब अनुवाद करते हैं? तुम बड़ी से बड़ी बरदानों के धुन में रहो! परन्तु मैं तुम्हें और भी सब से उत्तम मार्ग बताता हूं॥

* या उपदेशक।

१३ यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियां बोलूं, और प्रेम न रखूं, तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल, और झंझनाती हुई झांझ हूं। २ और यदि मैं भविष्यद्वाणी कर सकूं, और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूं, और मुझे यहां तक पूरा विश्वास हो, कि मैं पहाड़ों को हटा दूं, परन्तु प्रेम न रखूं, तो मैं कुछ भी नहीं। ३ और यदि मैं अपनी सम्पूर्ण संपत्ति कंगालों को खिला दूं, या अपनी देह जलाने के लिये दे दूं, और प्रेम न रखूं, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं। ४ प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं। ५ वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। ६ कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। ७ वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है। ८ प्रेम कभी टलता नहीं; भविष्यद्वाणियां हों, तो समाप्त हो जाएंगी; भाषाएं हों, तो जाती रहेंगी; ज्ञान हो, तो मिट जाएगा। ९ क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है, और हमारी भविष्यद्वाणी अधूरी। १० परन्तु जब सर्वसिद्ध आएगा, तो अधूरा मिट जाएगा। ११ जब मैं बालक था, तो मैं बालकों की नाईं बोलता था, बालकों का सा मन था बालकों की सी समझ थी; परन्तु जब सियाना हो गया, तो बालकों की बातें छोड़ दीं। १२ अब हमें दर्पण में धुंधला सा दिखाई देता है; परन्तु उस समय आमने साम्हने देखेंगे, इस समय मेरा ज्ञान अधूरा है; परन्तु उस समय ऐसी पूरी रीति से पहिचानूंगा, जैसा मैं पहिचाना गया हूं।

१३ पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थाई हैं, पर इन में सब से बड़ा प्रेम है॥

१४ प्रेम का अनुकरण करो, और आत्मिक बरदानों की भी धुन में रहो विशेष करके यह, कि भविष्यद्वाणी करो। २ क्योंकि जो अन्य भाषा में बातें करता है; वह मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से बातें करता है; इसलिये कि उस की कोई नहीं समझता; क्योंकि वह भेद की बातें आत्मा में होकर बोलता है। ३ परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह मनुष्यों से उन्नति, और उपदेश, और शान्ति की बातें कहता है। ४ जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह अपनी ही उन्नति करता है; परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह कलीसिया की उन्नति करता है। ५ में चाहता हूं, कि तुम सब अन्य भाषाओं में बातें करो, परन्तु अधिकतर यह चाहता हूं कि भविष्यद्वाणी करो: क्योंकि यदि अन्यान्य भाषा बोलनेवाला कलीसिया की उन्नति के लिये अनुवाद न करे तो भविष्यद्-वाणी करनेवाला उस से बढ़कर है। ६ इस-लिये हे भाइयो, यदि मैं तुम्हारे पास आकर अन्यान्य भाषा में बातें करूं, और प्रकाश, या ज्ञान, या भविष्यद्वाणी, या उपदेश की बातें तुम से न कहूं, तो मुझ से तुम्हें क्या लाभ होगा? ७ इसी प्रकार यदि निर्जीव वस्तुएं भी, जिन से ध्वनि निकलती है जैसे बांसुरी, या बीन, यदि उन के स्वरों में भेद न हो तो जो फूंका या बजाया जाता है, वह क्योंकर पहिचाना जाएगा? ८ और यदि तुरही का शब्द साफ न हो, तो कौन लड़ाई के लिये तैयारी करेगा? ९ ऐसे ही तुम भी यदि जीभ से साफ साफ बातें न कहो, तो जो कुछ कहा जाता है, वह क्योंकर समझा जाएगा? तुम तो हवा से बातें करनेवाले ठहरोगे। १० जगत में कितने ही प्रकार की भाषाएं क्यों न हों, परन्तु उन में से कोई भी बिना अर्थ की न होगी। ११ इसलिये यदि मैं किसी भाषा का अर्थ न समझूं, तो बोलनेवाले की दृष्टि में परदेशी ठहरूंगा; और बोलनेवाला मेरे दृष्टि में परदेशी ठहरेगा। १२ इसलिये तुम भी जब आत्मिक बरदानों की धुन में हो, तो ऐसा प्रयत्न करो, कि तुम्हारे बरदानों की उन्नति से कलीसिया की उन्नति हो। १३ इस कारण जो अन्य भाषा बोले, तो वह प्रार्थना करे, कि उसका अनुवाद भी कर सके। १४ इसलिये यदि मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करूं, तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है, परन्तु मेरी बुद्धि काम नहीं देती। १५ सो क्या करना चाहिए? मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूंगा, और बुद्धि से भी प्रार्थना करूंगा; मैं आत्मा से गाऊंगा, और बुद्धि से भी गाऊंगा। १६ नहीं तो यदि तू आत्मा ही से धन्यवाद करेगा, तो फिर अज्ञानी तेरे धन्यवाद पर आमीन क्योंकर कहेगा? इसलिये कि वह तो नहीं जानता, कि तू क्या कहता है? १७ तू तो भली भांति से धन्यवाद करता है, परन्तु दूसरे की उन्नति नहीं होती। १८ मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं, कि मैं तुम सब से अधिक अन्यान्य भाषा में बोलता हूं। १९ परन्तु कलीसिया में अन्य भाषा में दस हजार बातें कहने से यह मुझे और भी अच्छा जान पड़ता है, कि औरों के सिखाने के लिये बुद्धि से पांच ही बातें कहूं॥

२० हे भाइयो, तुम समझ में बालक न बनो: तौभी बुराई में तो बालक रहो, परन्तु समझ में सियाने बनो। २१ व्यवस्था में लिखा है, कि प्रभु कहता है; मैं अन्य

भाषा बोलनेवालों के द्वारा, और पराए मुख के द्वारा इन लोगों से बातें करूंगा तौभी वे मेरी न सुनेंगे। २२ इसलिये अन्यान्य भाषाएं विश्वासियों के लिये नहीं, परन्तु अविश्वासियों के लिये चिन्ह हैं, और भविष्यद्वाणी अविश्वासियों के लिये नहीं परन्तु विश्वासियों के लिये चिन्ह हैं। २३ सो यदि कलीसिया एक जगह इकट्ठी हो, और सब के सब अन्यान्य भाषा बोलें, और अनपढ़े या अविश्वासी लोग भीतर आ जाएं तो क्या वे तुम्हें पागल न कहेंगे? २४ परन्तु यदि सब भविष्यद्वाणी करने लगें, और कोई अविश्वासी या अनपढ़ा मनुष्य भीतर आ जाए, तो सब उसे दोषी ठहरा देंगे और परख लेंगे। २५ और उसके मन के भेद प्रगट हो जाएंगे, और तब वह मुंह के बल गिरकर परमेश्वर को दण्डवत करेगा, और मान लेगा, कि सचमुच परमेश्वर तुम्हारे बीच में है॥

२६ इसलिये हे भाइयो क्या करना चाहिए? जब तुम इकट्ठे होते हो, तो हर एक के हृदय में भजन, या उपदेश, या अन्य भाषा, या प्रकाश, या अन्य भाषा का अर्थ बताना रहता है: सब कुछ आत्मिक उन्नति के लिये होना चाहिए। २७ यदि अन्य भाषा में बातें करनी हों, तो दो दो, या बहुत हो तो तीन तीन जन बारी बारी बोलें, और एक व्यक्ति अनुवाद करे। २८ परन्तु यदि अनुवाद करनेवाला न हो, तो अन्य भाषा बोलनेवाला कलीसिया में शान्त रहे, और अपने मन से, और परमेश्वर से बातें करे। २९ भविष्यद्वक्ताओं में से दो या तीन बोलें, और शेष लोग उन के वचन को परखें। ३० परन्तु यदि दूसरे पर जो बैठा है, कुछ ईश्वरीय प्रकाश हो, तो पहिला चुप हो जाए। ३१ क्योंकि तुम सब एक एक करके भविष्यद्वाणी कर सकते हो ताकि सब सीखें, और सब शान्ति पाएं। ३२ और भविष्यद्वक्ताओं की आत्मा भविष्यद्वक्ताओं के वश में है। ३३ क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं, परन्तु शान्ति का कर्त्ता है; जैसा पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं में है॥

३४ स्त्रियां कलीसिया की सभा में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बातें करने की आज्ञा नहीं, परन्तु आधीन रहने की आज्ञा है: जैसा व्यवस्था में लिखा भी है। ३५ और यदि वे कुछ सीखना चाहें, तो घर में अपने अपने पति से पूछें, क्योंकि स्त्री का कलीसिया में बातें करना लज्जा की बात है। ३६ क्या परमेश्वर का वचन तुम में से निकला? या केवल तुम ही तक पहुंचा है?

३७ यदि कोई मनुष्य अपने आप को भविष्यद्वक्ता या आत्मिक जन समझे, तो यह जान ले, कि जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूं, वे प्रभु की आज्ञाएं हैं। ३८ परन्तु यदि कोई न जाने, तो न जाने॥

३९ सो हे भाइयो, भविष्यद्वाणी करने की धुन में रहो और अन्य भाषा बोलने से मना न करो। ४० पर सारी बातें सभ्यता और क्रमानुसार की जाएं॥

१५ हे भाइयो, मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूं जो पहिले सुना चुका हूं, जिसे तुम ने अंगीकार भी किया था और जिस में तुम स्थिर भी हो। २ उसी के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है, यदि उस सुसमाचार को जो मैं ने तुम्हें सुनाया था स्मरण रखते हो; नहीं तो तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ हुआ। ३ इसी कारण मैं ने सब से पहिले तुम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी, कि पवित्र शास्त्र के वचन के

अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया। ४ और गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा। ५ और कैफा को तब बारहों को दिखाई दिया। ६ फिर पांच सौ से अधिक भाइयों को एक साथ दिखाई दिया, जिन में से बहुतेरे अब तक वर्तमान हैं पर कितने सो गए। ७ फिर याकूब को दिखाई दिया तब सब प्रेरितों को दिखाई दिया। ८ और सब के बाद मुझ को भी दिखाई दिया, जो मानो अधूरे दिनों का जन्मा हूं। ९ क्योंकि मैं प्रेरितों में सब से छोटा हूं, बरन प्रेरित कहलाने के योग्य भी नहीं, क्योंकि मैं ने परमेश्वर की कलीसिया को सताया था। १० परन्तु मैं जो कुछ भी हूं, परमेश्वर के अनुग्रह से हूं: और उसका अनुग्रह जो मुझ पर हुआ, वह व्यर्थ नहीं हुआ; परन्तु मैं ने उन सब से बढ़कर परिश्रम भी किया: तौभी यह मेरी ओर से नहीं हुआ परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर था। ११ सो चाहे मैं हूं, चाहे वे हों, हम यही प्रचार करते हैं, और इसी पर तुम ने विश्वास भी किया॥

१२ सो जब कि मसीह का यह प्रचार किया जाता है, कि वह मरे हुओं में से जी उठा, तो तुम में से कितने क्योंकर कहते हैं, कि मरे हुओं का पुनरुत्थान * है ही नहीं? १३ यदि मरे हुओं का पुनरुत्थान ही नहीं, तो मसीह भी नहीं जी उठा। १४ और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो हमारा प्रचार करना भी व्यर्थ है; और तुम्हारा विश्वास भी व्यर्थ है। १५ बरन हम परमेश्वर के झूठे गवाह ठहरे; क्योंकि हम ने परमेश्वर के विषय में यह गवाही दी, कि उस ने मसीह को जिला दिया यद्यपि नहीं जिलाया, यदि मरे हुए नहीं जी उठते। १६ और यदि मुर्दे नहीं जी उठते, तो मसीह भी नहीं जी उठा। १७ और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है; और तुम अब तक अपने पापों में फंसे हो। १८ बरन जो मसीह में सो गए हैं, वे भी नाश हुए। १९ यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह से आशा रखते हैं तो हम सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं॥

२० परन्तु सचमुच मसीह मुर्दों में से जी उठा है, और जो सो गए हैं, उन में पहिला फल हुआ। २१ क्योंकि जब मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई; तो मनुष्य ही के द्वारा मरे हुओं का पुनरुत्थान भी आया। २२ और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसा ही मसीह में सब जिलाए जाएंगे। २३ परन्तु हर एक अपनी अपनी बारी से; पहिला फल मसीह; फिर मसीह के आने पर उसके लोग। २४ इस के बाद अन्त होगा; उस समय वह सारी प्रधानता और सारा अधिकार और सामर्थ का अन्त करके राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप देगा। २५ क्योंकि जब तक कि वह अपने बैरियों को अपने पांवों तले न ले आए, तब तक उसका राज्य करना अवश्य है। २६ सब से अन्तिम बैरी जो नाश किया जाएगा वह मृत्यु है। २७ क्योंकि परमेश्वर ने सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया है, परन्तु जब वह कहता है कि सब कुछ उसके आधीन कर दिया गया है तो प्रत्यक्ष है, कि जिस ने सब कुछ उसके आधीन कर दिया, वह आप अलग रहा। २८ और जब सब कुछ उसके आधीन हो जाएगा, तो पुत्र आप भी उसके आधीन हो जाएगा जिस ने

* या मृतकोत्थान।

सब कुछ उसके आधीन कर दिया; ताकि सब में परमेश्वर ही सब कुछ हो ॥

२९ नहीं तो जो लोग मरे हुओं के लिये बपतिस्मा लेते हैं, वे क्या करेंगे? यदि मुर्दे जी उठते ही नहीं, तो फिर क्यों उन के लिये बपतिस्मा लेते हैं? ३० और हम भी क्यों हर घड़ी जोखिम में पड़े रहते हैं? ३१ हे भाइयो, मुझे उस घमण्ड की सोंह जो हमारे मसीह यीशु में मैं तुम्हारे विषय में करता हूं, कि मैं प्रति दिन मरता हूं। ३२ यदि मैं मनुष्य की रीति पर इफिसुस में बन-पशुओं से लड़ा, तो मुझे क्या लाभ हुआ? यदि मुर्दे जिलाए नहीं जाएंगे, तो आओ, खाए-पीए, क्योंकि कल तो मर ही जाएंगे। ३३ धोखा न खाना, बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है। ३४ धर्म के लिये जाग उठो और पाप न करो; क्योंकि कितने ऐसे हैं जो परमेश्वर को नहीं जानते, मैं तुम्हें लज्जित करने के लिये यह कहता हूं ॥

३५ अब कोई यह कहेगा, कि मुर्दे किस रीति से जी उठते हैं, और कैसी देह के साथ आते हैं? ३६ हे निर्बुद्धि, जो कुछ तू बोता है, जब तक वह न मरे जिलाया नहीं जाता। ३७ और जो तू बोता है, यह वह देह नहीं जो उत्पन्न होनेवाली है, परन्तु निरा दाना है, चाहे गेहूं का, चाहे किसी और अनाज का। ३८ परन्तु परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार उस को देह देता है; और हर एक बीज को उस की विशेष देह। ३९ सब शरीर एक सरीखे नहीं, परन्तु मनुष्यों का शरीर और है, पशुओं का शरीर और है; पक्षियों का शरीर और है; मछलियों का शरीर और है। ४० स्वर्गीय देह हैं, और पार्थिव देह भी हैं: परन्तु स्वर्गीय देहों का तेज और है, और पार्थिव का और। ४१ सूर्य का तेज और है, चान्द का तेज और है, और तारागणों का तेज और है, (क्योंकि एक तारे से दूसरे तारे के तेज में अन्तर है)। ४२ मुर्दों का जी उठना भी ऐसा ही है। शरीर नाशमान दशा में बोया जाता है, और अविनाशी रूप में जी उठता है। ४३ वह अनादर के साथ बोया जाता है, और तेज के साथ जी उठता है; निर्बलता के साथ बोया जाता है; और सामर्थ के साथ जी उठता है। ४४ स्वाभाविक देह बोई जाती है, और आत्मिक देह जी उठती है: जब कि स्वाभाविक देह है, तो आत्मिक देह भी है। ४५ ऐसा ही लिखा भी है, कि प्रथम मनुष्य, अर्थात् आदम, जीवित प्राणी बना और अन्तिम आदम, जीवनदायक आत्मा बना। ४६ परन्तु पहिले आत्मिक न था, पर स्वाभाविक था, इस के बाद आत्मिक हुआ। ४७ प्रथम मनुष्य धरती से, अर्थात् मिट्टी का था; दूसरा मनुष्य स्वर्गीय है। ४८ जैसा वह मिट्टी का था, वैसे ही और मिट्टी के हैं; और जैसा वह स्वर्गीय है, वैसे ही और भी स्वर्गीय हैं। ४९ और जैसे हम ने उसका रूप जो मिट्टी का था धारण किया वैसे ही उस स्वर्गीय का रूप भी धारण करेंगे ॥

५० हे भाइयो, मैं यह कहता हूं कि मांस और लोहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते, और न विनाश अविनाशी का अधिकारी हो सकता है। ५१ देखो, मैं तुम से भेद की बात कहता हूं: कि हम सब तो नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे। ५२ और यह क्षण भर में, पलक मारते ही पिछली तुरही फूंकते ही होगा: क्योंकि तुरही फूंकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएंगे, और हम बदल जाएंगे। ५३ क्योंकि अवश्य है,

कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन लें, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले। ५४ और जब यह नाशमान अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तब वह वचन जो लिखा है, पूरा हो जाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया। ५५ हे मृत्यु तेरी जय कहां रही? ५६ हे मृत्यु तेरा डंक कहां रहा? मृत्यु का डंक पाप है; और पाप का बल व्यवस्था है। ५७ परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है। ५८ सो हे मेरे प्रिय भाइयो, दृढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो, कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है॥

१६ अब उस चन्दे के विषय में जो पवित्र लोगों के लिये किया जाता है, जैसी आज्ञा मैं ने गलतिया की कलीसियाओं को दी, वैसा ही तुम भी करो। २ सप्ताह के पहिले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करे, कि मेरे आने पर चन्दा न करना पड़े। ३ और जब मैं आऊंगा, तो जिन्हें तुम चाहोगे उन्हें मैं चिट्ठियां देकर भेज दूंगा, कि तुम्हारा दान यरूशलेम पहुंचा दें। ४ और यदि मेरा भी जाना उचित हुआ, तो वे मेरे साथ जाएंगे। ५ और मैं मकिदुनिया होकर तुम्हारे पास आऊंगा, क्योंकि मुझे मकिदुनिया होकर तो जाना ही है। ६ परन्तु सम्भव है कि तुम्हारे यहां ही ठहर जाऊं और शरद ऋतु तुम्हारे यहां काटूं, तब जिस ओर मेरा जाना हो, उस ओर तुम मुझे पहुंचा दो। ७ क्योंकि मैं अब मार्ग में तुम से भेंट करना नहीं चाहता; परन्तु मुझे आशा है, कि यदि प्रभु चाहे तो कुछ समय तक तुम्हारे साथ रहूंगा। ८ परन्तु मैं पिन्तेकुस्त तक इफिसुस में रहूंगा। ९ क्योंकि मेरे लिये एक बड़ा और उपयोगी द्वार खुला है, और विरोधी बहुत से हैं॥

१० यदि तीमुथियुस आ जाए, तो देखना, कि वह तुम्हारे यहां निडर रहे; क्योंकि वह मेरी नाईं प्रभु का काम करता है। ११ इसलिये कोई उसे तुच्छ न जाने, परन्तु उसे कुशल से इस ओर पहुंचा देना, कि मेरे पास आ जाए; क्योंकि मैं उस की बाट जोह रहा हूं, कि वह भाइयों के साथ आए। १२ और भाई अपुल्लोस से मैं ने बहुत बिनती की है कि तुम्हारे पास भाइयों के साथ जाए; परन्तु उस ने इस समय जाने की कुछ भी इच्छा न की, परन्तु जब अवसर पाएगा, तब आ जाएगा॥

१३ जागते रहो, विश्वास में स्थिर रहो, पुरुषार्थ करो, बलवन्त होओ। १४ जो कुछ करते हो प्रेम से करो॥

१५ हे भाइयो, तुम स्तिफनास के घराने को जानते हो, कि वे अखया के पहिले फल हैं, और पवित्र लोगों की सेवा के लिये तैयार रहते हैं। १६ सो मैं तुम से बिनती करता हूं कि ऐसों के आधीन रहो, बरन हर एक के जो इस काम में परिश्रमी और सहकर्मी है। १७ और मैं स्तिफनास और फूरतूनातुस और अखइकुस के आने से आनन्दित हूं, क्योंकि उन्हों ने तुम्हारी घटी को पूरी की है। १८ और उन्हों ने मेरी और तुम्हारी आत्मा को चैन दिया है इसलिये ऐसों को मानो॥

१९ आसिया की कलीसियाओं की ओर से तुम को नमस्कार: अक्विला और प्रिसका का और उन के घर की कलीसिया का भी

तुम को प्रभु में बहुत बहुत नमस्कार। २० सब भाइयों का तुम को नमस्कार: पवित्र चुम्बन से आपस में नमस्कार करो॥

२१ मुझ पौलुस का अपने हाथ का लिखा हुआ नमस्कार: यदि कोई प्रभु से प्रेम न रखे तो वह स्रापित हो। २२ हमारा प्रभु आनेवाला है। २३ प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर होता रहे। २४ मेरा प्रेम मसीह यीशु में तुम सब से रहे। आमीन॥

कुरिन्थियों के नाम पौलुस प्रेरित की दूसरी पत्री

१ पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है, और भाई तीमुथियुस की ओर से परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस में है; और सारे अखया के सब पवित्र लोगों के नाम॥

२ हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे॥

३ हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर, और पिता का धन्यवाद हो, जो दया का पिता, और सब प्रकार की शान्ति का परमेश्वर है। ४ वह हमारे सब क्लेशों में शान्ति देता है; ताकि हम उस शान्ति के कारण जो परमेश्वर हमें देता है, उन्हें भी शान्ति दे सकें, जो किसी प्रकार के क्लेश में हों। ५ क्योंकि जैसे मसीह के दुख हम को अधिक होते हैं, वैसे ही हमारी शान्ति भी मसीह के द्वारा अधिक होती है। ६ यदि हम क्लेश पाते हैं, तो यह तुम्हारी शान्ति और उद्धार के लिये है और यदि शान्ति पाते हैं, तो यह तुम्हारी शान्ति के लिये है; जिस के प्रभाव से तुम धीरज के साथ उन क्लेशों को सह लेते हो, जिन्हें हम भी सहते हैं। ७ और हमारी आशा तुम्हारे विषय में दृढ़ है; क्योंकि हम जानते हैं, कि तुम जैसे दुखों के वैसे ही शान्ति के भी सहभागी हो। ८ हे भाइयो, हम नहीं चाहते कि तुम हमारे उस क्लेश से अनजान रहो, जो आसिया में हम पर पड़ा, कि ऐसे भारी बोझ से दब गए थे, जो हमारी सामर्थ से बाहर था, यहां तक कि हम जीवन से भी हाथ धो बैठे थे। ९ बरन हम ने अपने मन में समझ लिया था, कि हम पर मृत्यु की आज्ञा हो चुकी है कि हम अपना भरोसा न रखें, बरन परमेश्वर का जो मरे हुओं को जिलाता है। १० उसी ने हमें ऐसी बड़ी मृत्यु से बचाया, और बचाएगा; और उस से हमारी यह आशा है, कि वह आगे को भी बचाता रहेगा। ११ और तुम भी मिलकर प्रार्थना के द्वारा हमारी सहायता करोगे, कि जो बरदान बहुतों के द्वारा

हमें मिला, उसके कारण बहुत लोग हमारी ओर से धन्यवाद करें ॥

१२ क्योंकि हम अपने विवेक * की इस गवाही पर घमण्ड करते हैं, कि जगत में और विशेष करके तुम्हारे बीच हमारा चरित्र परमेश्वर के योग्य ऐसी पवित्रता और सच्चाई सहित था, जो शारीरिक ज्ञान से नहीं, परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह के साथ था। १३ हम तुम्हें और कुछ नहीं लिखते, केवल वह जो तुम पढ़ते या मानते भी हो, और मुझे आशा है, कि अन्त तक भी मानते रहोगे। १४ जैसा तुम में से कितनों ने † मान लिया है, कि हम तुम्हारे घमण्ड का कारण हैं; वैसे तुम भी प्रभु यीशु के दिन हमारे लिये घमण्ड का कारण ठहरोगे ॥

१५ और इस भरोसे से मैं चाहता था कि पहिले तुम्हारे पास आऊं; कि तुम्हें एक और दान मिले। १६ और तुम्हारे पास से होकर मकिदुनिया को जाऊं, और फिर मकिदुनिया से तुम्हारे पास आऊं; और तुम मुझे यहूदिया की ओर कुछ दूर तक पहुंचाओ। १७ इसलिये मैं ने जो यह इच्छा की थी तो क्या मैं ने चंचलता दिखाई? या जो करना चाहता हूं क्या शरीर के अनुसार करना चाहता हूं, कि मैं बात में हां, हां भी करूं; १८ और नहीं नहीं भी करूं? परमेश्वर सच्चा ‡ गवाह है, कि हमारे उस वचन में जो तुम से कहा हां और नहीं दोनों पाई नहीं जातीं। १९ क्योंकि परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह जिस का हमारे द्वारा अर्थात् मेरे और सिलवानुस और तीमुथियुस के द्वारा तुम्हारे बीच में प्रचार हुआ; उस में हां और नहीं दोनों न थीं; परन्तु, उस में हां ही हां हुई। २० क्योंकि परमेश्वर की जितनी प्रतिज्ञाएं हैं, वे सब उसी में हां के साथ हैं: इसलिये उसके द्वारा आमीन भी हुई, कि हमारे द्वारा परमेश्वर की महिमा हो। २१ और जो हमें तुम्हारे साथ मसीह में दृढ़ करता है, और जिस ने हमें अभिषेक किया वही परमेश्वर है। २२ जिस ने हम पर छाप भी कर दी है और बयाने में आत्मा को हमारे मनों में दिया ॥

२३ मैं परमेश्वर को गवाह * करता हूं, कि मैं अब तक कुरिन्थुस में इसलिये नहीं आया, कि मुझे तुम पर तरस आता था। २४ यह नहीं, कि हम विश्वास के विषय में तुम पर प्रभुता जताना चाहते हैं; परन्तु तुम्हारे आनन्द में सहायक हैं क्योंकि तुम विश्वास ही से स्थिर रहते हो।

२ मैं ने अपने मन में यही ठान लिया था कि फिर तुम्हारे पास उदास होकर न आऊं। २ क्योंकि यदि मैं तुम्हें उदास करूं, तो मुझे आनन्द देनेवाला कौन होगा, केवल वही जिस को मैं ने उदास किया? ३ और मैं ने यही बात तुम्हें इसलिये लिखी, कि कहीं ऐसा न हो, कि मेरे आने पर जिन से आनन्द मिलना चाहिए, मैं उन से उदास होऊं; क्योंकि मुझे तुम सब पर इस बात का भरोसा है, कि जो मेरा आनन्द है, वही तुम सब का भी है। ४ बड़े क्लेश, और मन के कष्ट से, मैं ने बहुत से आंसू बहा बहाकर तुम्हें लिखा, इसलिये नहीं, कि तुम उदास हो, परन्तु इसलिये कि तुम

---

* अर्थात मन या कानशन्स।
† या थोड़ा बहुत।
‡ या विश्वासी।

* यू० अपने प्राण पर गवाह।

उस बड़े प्रेम को जान लो, जो मुझे तुम से है॥

५ और यदि किसी ने उदास किया है, तो मुझे ही नहीं बरन (कि उसके साथ बहुत कड़ाई न करूं) कुछ कुछ तुम सब को भी उदास किया है। ६ ऐसे जन के लिये यह दण्ड जो भाइयों में से बहुतों ने दिया, बहुत है। ७ इसलिये इस से यह भला है कि उसका अपराध क्षमा करो; और शान्ति दो, न हो कि ऐसा मनुष्य बहुत उदासी में डूब जाए। ८ इस कारण मैं तुम से बिनती करता हूं, कि उस को अपने प्रेम का प्रमाण दो। ९ क्योंकि मैं ने इसलिये भी लिखा था, कि तुम्हें परख लूं, कि सब बातों के मानने के लिये तैयार हो, कि नहीं। १० जिस का तुम कुछ क्षमा करते हो उसे मैं भी क्षमा करता हूं, क्योंकि मैं ने भी जो कुछ क्षमा किया है, यदि किया हो, तो तुम्हारे कारण मसीह की जगह में होकर * क्षमा किया है। ११ कि शैतान का हम पर दांव न चले, क्योंकि हम उस की युक्तियों से अनजान नहीं॥

१२ और जब मैं मसीह का सुसमाचार सुनाने को त्रोआस में आया, और प्रभु ने मेरे लिये एक द्वार खोल दिया। १३ तो मेरे मन में चैन न मिला, इसलिये कि मैं ने अपने भाई तितुस को नहीं पाया; सो उन से विदा होकर मैं मकिदुनिया को चला गया। १४ परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो मसीह में सदा हम को जय के उत्सव में लिये फिरता है, और अपने ज्ञान का सुगन्ध हमारे द्वारा हर जगह फैलाता है। १५ क्योंकि हम परमेश्वर के निकट उद्धार पानेवालों, और नाश होनेवालों, दोनों के लिये मसीह के सुगन्ध हैं। १६ कितनों के लिये तो मरने के निमित्त मृत्यु की गन्ध, और कितनों के लिये जीवन के निमित्त जीवन की सुगन्ध, और इन बातों के योग्य कौन है? १७ क्योंकि हम उन बहुतों के समान नहीं, जो परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं; परन्तु मन की सच्चाई से, और परमेश्वर की ओर से परमेश्वर को उपस्थित जानकर मसीह में बोलते हैं॥

* या मसीह को हाज़िर जानकर।

३ क्या हम फिर अपनी बड़ाई करने लगे? या हमें कितनों की नाईं सिफारिश की पत्रियां तुम्हारे पास लानी या तुम से लेनी हैं? २ हमारी पत्री तुम ही हो, जो हमारे हृदयों पर लिखी हुई है, और उसे सब मनुष्य पहिचानते और पढ़ते हैं। ३ यह प्रगट है, कि तुम मसीह की पत्री हो, जिस को हम ने सेवकों की नाईं लिखा; और जो सियाही से नहीं, परन्तु जीवते परमेश्वर के आत्मा से पत्थर की पटियों पर नहीं, परन्तु हृदय की मांस रूपी पटियों पर लिखी है। ४ हम मसीह के द्वारा परमेश्वर पर ऐसा ही भरोसा रखते हैं। ५ यह नहीं, कि हम अपने आप से इस योग्य हैं, कि अपनी ओर से किसी बात का विचार कर सकें; पर हमारी योग्यता परमेश्वर की ओर से है। ६ जिस ने हमें नई वाचा के सेवक होने के योग्य भी किया, शब्द * के सेवक नहीं बरन आत्मा के; क्योंकि शब्द मारता है, पर आत्मा जिलाता है। ७ और यदि मृत्यु की वह वाचा जिस के

* यू० अक्षर।

अक्षर पत्थरों पर खोदे गए थे, यहां तक तेजोमय हुई, कि मूसा के मुंह पर के तेज के कारण जो घटता भी जाता था, इस्राएल उसके मुंह पर दृष्टि नहीं कर सकते थे। ८ तो आत्मा की वाचा और भी तेजोमय क्यों न होगी? ९ क्योंकि जब दोषी ठहरानेवाली वाचा तेजोमय थी, तो धर्मी ठहरानेवाली वाचा और भी तेजोमय क्यों न होगी? १० और जो तेजोमय था, वह भी उस तेज के कारण जो उस से बढ़कर तेजोमय था, कुछ तेजोमय न ठहरा। ११ क्योंकि जब वह जो घटता जाता था तेजोमय था, तो वह जो स्थिर रहेगा, और भी तेजोमय क्यों न होगा?

१२ सो ऐसी आशा रखकर हम हियाव के साथ बोलते हैं। १३ और मूसा की नाईं नहीं, जिस ने अपने मुंह पर परदा * डाला था ताकि इस्राएली उस घटनेवाली वस्तु के अन्त को न देखें। १४ परन्तु वे मतिमन्द हो गए, क्योंकि आज तक पुराने नियम के पढ़ते समय उन के हृदयों पर वही परदा पड़ा रहता है; पर वह मसीह में उठ जाता है। १५ और आज तक जब कभी मूसा की पुस्तक पढ़ी जाती है, तो उन के हृदय पर परदा पड़ा रहता है। १६ परन्तु जब कभी उन का हृदय प्रभु की ओर फिरेगा, तब वह परदा उठ जाएगा। १७ प्रभु तो आत्मा है: और जहां कहीं प्रभु का आत्मा है वहां स्वतंत्रता है। १८ परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश कर के बदलते जाते हैं॥

* या ओढ़ना।

४ इसलिये जब हम पर ऐसी दया हुई, कि हमें यह सेवा मिली, तो हम हियाव नहीं छोड़ते। २ परन्तु हम ने लज्जा के गुप्त कामों को त्याग दिया, और न चतुराई से चलते, और न परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं, परन्तु सत्य को प्रगट करके, परमेश्वर के साम्हने हर एक मनुष्य के विवेक * में अपनी भलाई बैठाते हैं। ३ परन्तु यदि हमारे सुसमाचार पर परदा पड़ा है, तो यह नाश होनेवालों ही के लिये पड़ा है। ४ और उन अविश्वासियों के लिये, जिन की बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने अन्धी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके। ५ क्योंकि हम अपने को नहीं, परन्तु मसीह यीशु को प्रचार करते हैं, कि वह प्रभु है; और अपने विषय में यह कहते हैं, कि हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं। ६ इस-लिये कि परमेश्वर ही है, जिस ने कहा, कि अन्धकार में से ज्योति चमके; और वही हमारे हृदयों में चमका, कि परमेश्वर की महिमा की पहिचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो॥

७ परन्तु हमारे पास यह धन मिट्टी के बरतनों में रखा है, कि यह असीम सामर्थ हमारी ओर से नहीं, बरन परमेश्वर ही की ओर से ठहरे। ८ हम चारों ओर से क्लेश तो भोगते हैं, पर संकट में नहीं पड़ते; निरुपाय तो हैं, पर निराश नहीं होते। ९ सताए तो जाते हैं; पर

* अर्थात् मन या कानशन्स।

त्यागे नहीं जाते; गिराए तो जाते हैं, पर नाश नहीं होते। १० हम यीशु की मृत्यु को अपनी देह में हर समय लिए फिरते हैं; कि यीशु का जीवन भी हमारी देह में प्रगट हो। ११ क्योंकि हम जीते जी सर्वदा यीशु के कारण मृत्यु के हाथ में सौंपे जाते हैं कि यीशु का जीवन भी हमारे मरनहार शरीर में प्रगट हो। १२ सो मृत्यु तो हम पर प्रभाव डालती है और जीवन तुम पर। १३ और इसलिये कि हम में वही विश्वास की आत्मा है, (जिस के विषय में लिखा है, कि मैं ने विश्वास किया, इसलिये मैं बोला) सो हम भी विश्वास करते हैं, इसी लिये बोलते हैं। १४ क्योंकि हम जानते हैं, कि जिस ने प्रभु यीशु को जिलाया, वही हमें भी यीशु में भागी जानकर जिलाएगा, और तुम्हारे साथ अपने साम्हने उपस्थित करेगा। १५ क्योंकि सब वस्तुएं तुम्हारे लिये हैं, ताकि अनुग्रह बहुतों के द्वारा अधिक होकर परमेश्वर की महिमा के लिये धन्यवाद भी बढ़ाए॥

१६ इसलिये हम हियाव नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता जाता है, तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है। १७ क्योंकि हमारा पल भर का हलका सा क्लेश हमारे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है। १८ और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं॥

५ क्योंकि हम जानते हैं, कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना हुआ घर नहीं, परन्तु चिरस्थाई है। २ इस में तो हम कहरते, और बड़ी लालसा रखते हैं; कि अपने स्वर्गीय घर को पहिन लें। ३ कि इस के पहिनने से हम नङ्गे न पाए जाएं। ४ और हम इस डेरे में रहते हुए बोझ से दबे कहरते रहते हैं; क्योंकि हम उतारना नहीं, बरन और पहिनना चाहते हैं, ताकि वह जो मरनहार है जीवन में डूब जाए। ५ और जिस ने हमें इसी बात के लिये तैयार किया है वह परमेश्वर है, जिस ने हमें बयाने में आत्मा भी दिया है। ६ सो हम सदा ढाढ़स बान्धे रहते हैं और यह जानते हैं; कि जब तक हम देह में रहते हैं, तब तक प्रभु से अलग हैं। ७ क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं। ८ इसलिये हम ढाढ़स बान्धे रहते हैं, और देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहना और भी उत्तम समझते हैं। ९ इस कारण हमारे मन की उमंग यह है, कि चाहे साथ रहें, चाहे अलग रहें पर हम उसे भाते रहें। १० क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के साम्हने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने अपने भले बुरे कामों का बदला जो उस ने देह के द्वारा किए हों पाए॥

११ सो प्रभु का भय मानकर हम लोगों को समझाते हैं और परमेश्वर पर हमारा हाल प्रगट है; और मेरी आशा यह है, कि तुम्हारे विवेक * पर भी प्रगट हुआ होगा। १२ हम फिर भी अपनी

* अर्थात मन या कानशन्स।

बड़ाई तुम्हारे साम्हने नहीं करते बरन हम अपने विषय में तुम्हें घमण्ड करने का अवसर देते हैं, कि तुम उन्हें उत्तर दे सको, जो मन पर नहीं, बरन दिखावटी बातों पर घमण्ड करते हैं। १३ यदि हम बेसुध हैं, तो परमेश्वर के लिये; और यदि चैतन्य हैं, तो तुम्हारे लिये हैं। १४ क्योंकि मसीह का प्रेम हमें विवश कर देता है; इसलिये कि हम यह समझते हैं, कि जब एक सब के लिये मरा तो सब मर गए। १५ और वह इस निमित्त सब के लिये मरा, कि जो जीवित हैं, वे आगे को अपने लिये न जीएं परन्तु उसके लिये जो उन के लिये मरा और फिर जी उठा। १६ सो अब से हम किसी को शरीर के अनुसार न समझेंगे, और यदि हम ने मसीह को भी शरीर के अनुसार जाना था, तौभी अब से उस को ऐसा नहीं जानेंगे। १७ सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं। १८ और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिस ने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल मिलाप कर लिया, और मेल मिलाप की सेवा हमें सौंप दी है। १९ अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया, और उन के अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया और उस ने मेल मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है॥

२० सो हम मसीह के राजदूत हैं; मानो परमेश्वर हमारे द्वारा समझाता* है: हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं, कि परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लो। २१ जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं॥

६ और हम जो उसके सहकर्मी हैं यह भी समझाते हैं, कि परमेश्वर का अनुग्रह जो तुम पर हुआ, व्यर्थ न रहने दो*। २ क्योंकि वह तो कहता है, कि अपनी प्रसन्नता के समय मैं ने तेरी सुन ली, और उद्धार के दिन मैं ने तेरी सहायता की: देखो, अभी वह प्रसन्नता का समय है; देखो, अभी वह उद्धार का दिन है। ३ हम किसी बात में ठोकर खाने का कोई भी अवसर नहीं देते, कि हमारी सेवा पर कोई दोष न आए। ४ परन्तु हर बात से परमेश्वर के सेवकों की नाईं अपने सद्गुणों को प्रगट करते हैं, बड़े धैर्य से, क्लेशों से, दरिद्रता से, संकटों से। ५ कोड़े खाने से, कैद होने से, हुल्लड़ों से, परिश्रम से, जागते रहने से, उपवास करने से। ६ पवित्रता से, ज्ञान से, धीरज से, कृपालुता से, पवित्र आत्मा से। ७ सच्चे प्रेम से, सत्य के वचन से, परमेश्वर की सामर्थ से; धार्मिकता के हथियारों से जो दहिने, बाएं हैं। ८ आदर और निरादर से, दुरनाम और सुनाम से, यद्यपि भरमानेवालों के ऐसे मालूम होते हैं तौभी सच्चे हैं। ९ अनजानों के सदृश्य हैं; तौभी प्रसिद्ध हैं; मरते हुओं के ऐसे हैं और देखो जीवित हैं; मारखानेवालों के सदृश्य हैं परन्तु प्राण से मारे नहीं जाते। १० शोक करनेवाले के समान हैं, परन्तु सर्वदा आनन्द करते हैं; कंगालों

* या बिनती करता।

* या व्यर्थ होने के लिये न ले लो।

के ऐसे हैं, परन्तु बहुतों को धनवान बना देते हैं; ऐसे हैं जैसे हमारे पास कुछ नहीं तौभी सब कुछ रखते हैं॥

११ हे कुरिन्थियो, हम ने खुलकर तुम से बातें की हैं, हमारा हृदय तुम्हारी ओर खुला हुआ है। १२ तुम्हारे लिये हमारे मन में कुछ सकेती नहीं, पर तुम्हारे ही मनों में सकेती है। १३ पर अपने लड़के-बाले जानकर तुम से कहता हूं, कि तुम भी उसके बदले में अपना हृदय खोल दो॥

१४ अविश्वासियों के साथ असमान जूए में न जुतो, क्योंकि धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल जोल? या ज्योति और अन्धकार की क्या संगति? १५ और मसीह का बलियाल के साथ क्या लगाव? या विश्वासी के साथ अविश्वासी का क्या नाता? १६ और मूरतों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या सम्बन्ध? क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर के मन्दिर हैं; जैसा परमेश्वर ने कहा है कि मैं उन में बसूंगा और उन में चला फिरा करूंगा; और मैं उन का परमेश्वर हूंगा, और वे मेरे लोग होंगे। १७ इसलिये प्रभु कहता है, कि उन के बीच में से निकलो और अलग रहो; और अशुद्ध वस्तु को मत छूओ, तो मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा। १८ और तुम्हारा पिता हूंगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियां होगे: यह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का वचन है॥

७ सो हे प्यारो जब कि ये प्रतिज्ञाएं हमें मिली हैं, तो आओ, हम अपने आप को शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करें, और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करें॥

२ हमें अपने हृदय में जगह दो: हम ने न किसी से अन्याय किया, न किसी को बिगाड़ा, और न किसी को ठगा। ३ मैं तुम्हें दोषी ठहराने के लिये यह नहीं कहता: क्योंकि मैं पहिले ही कह चुका हूं, कि तुम हमारे हृदय में ऐसे बस गए हो कि हम तुम्हारे साथ मरने जीने के लिये तैयार हैं। ४ मैं तुम से बहुत हियाव के साथ बोल रहा हूं, मुझे तुम पर बड़ा घमण्ड है: मैं शान्ति से भर गया हूं; अपने सारे क्लेश में मैं आनन्द से अति भरपूर रहता हूं॥

५ क्योंकि जब हम मकिदुनिया में आए, तब भी हमारे शरीर को चैन नहीं मिला, परन्तु हम चारों ओर से क्लेश पाते थे; बाहर लड़ाइयां थीं, भीतर भयंकर बातें थीं। ६ तौभी दीनों को शान्ति देनेवाले परमेश्वर ने तितुस के आने से हम को शान्ति दी। ७ और न केवल उसके आने से परन्तु उस की उस शान्ति से भी, जो उस को तुम्हारी ओर से मिली थी; और उस ने तुम्हारी लालसा, और तुम्हारे दुख और मेरे लिये तुम्हारी धुन का समाचार हमें सुनाया, जिस से मुझे और भी आनन्द हुआ। ८ क्योंकि यद्यपि मैं ने अपनी पत्री से तुम्हें शोकित किया, परन्तु उस से पछताता नहीं जैसा कि पहिले पछताता था क्योंकि मैं देखता हूं, कि उस पत्री से तुम्हें शोक तो हुआ परन्तु वह थोड़ी देर के लिये था। ९ अब मैं आनन्दित हूं पर इसलिये नहीं कि तुम को शोक पहुंचा बरन इसलिये कि तुम ने उस शोक के कारण मन फिराया, क्योंकि तुम्हारा शोक परमेश्वर की इच्छा के अनुसार था, कि हमारी ओर से तुम्हें किसी बात में हानि न पहुंचे। १० क्योंकि

परमेश्वर-भक्ति का शोक ऐसा पश्चात्ताप उत्पन्न करता है जिस का परिणाम उद्धार है और फिर उस से पछताना नहीं पड़ता: परन्तु संसारी शोक मृत्यु उत्पन्न करता है। ११ सो देखो, इसी बात से कि तुम्हें परमेश्वर-भक्ति का शोक हुआ तुम में कितनी उत्तेजना और प्रत्युत्तर* और रिस, और भय, और लालसा, और धुन और पलटा लेने का विचार उत्पन्न हुआ? तुम ने सब प्रकार से यह सिद्ध कर दिखाया, कि तुम इस बात में निर्दोष हो। १२ फिर मैं ने जो तुम्हारे पास लिखा था, वह न तो उसके कारण लिखा, जिस ने अन्याय किया, और न उसके कारण जिस पर अन्याय किया गया, परन्तु इसलिये कि तुम्हारी उत्तेजना जो हमारे लिये है, वह परमेश्वर के साम्हने तुम पर प्रगट हो जाए। १३ इसलिये हमें शान्ति हुई; और हमारी इस शान्ति के साथ तितुस के आनन्द के कारण और भी आनन्द हुआ क्योंकि उसका जी तुम सब के कारण हरा भरा हो गया है। १४ क्योंकि यदि मैं ने उसके साम्हने तुम्हारे विषय में कुछ घमण्ड दिखाया, तो लज्जित नहीं हुआ, परन्तु जैसे हम ने तुम से सब बातें सच सच कह दी थीं, वैसे ही हमारा घमण्ड दिखाना तितुस के साम्हने भी सच निकला। १५ और जब उस को तुम सब के आज्ञाकारी होने का स्मरण आता है, कि क्योंकर तुम ने डरते और कांपते हुए उस से भेंट की; तो उसका प्रेम तुम्हारी ओर और भी बढ़ता जाता है। १६ मैं आनन्द करता हूं, कि तुम्हारी ओर से मुझे हर बात में ढाढ़स होता है॥

* या बचाव के लिये उत्तर।

८ अब हे भाइयो, हम तुम्हें परमेश्वर के उस अनुग्रह का समाचार देते हैं, जो मकिदुनिया की कलीसियाओं पर हुआ है। २ कि क्लेश की बड़ी परीक्षा में उन के बड़े आनन्द और भारी कंगालपन के बढ़ जाने से उन की उदारता बहुत बढ़ गई। ३ और उन के विषय में मेरी यह गवाही है, कि उन्हों ने अपनी सामर्थ भर बरन सामर्थ से भी बाहर मन से दिया। ४ और इस दान में और पवित्र लोगों की सेवा में भागी होने के अनुग्रह के विषय में हम से बार बार बहुत बिनती की। ५ और जैसी हम ने आशा की थी, वैसी ही नहीं, बरन उन्हों ने प्रभु को, फिर परमेश्वर की इच्छा से हम को भी अपने तईं दे दिया। ६ इसलिये हम ने तितुस को समझाया, कि जैसा उस ने पहिले आरम्भ किया था, वैसा ही तुम्हारे बीच में इस दान के काम को पूरा भी कर ले। ७ सो जैसे हर बात में अर्थात् विश्वास, वचन, ज्ञान और सब प्रकार के यत्न में, और उस प्रेम में, जो हम से रखते हो, बढ़ते जाते हो, वैसे ही इस दान के काम में भी बढ़ते जाओ। ८ मैं आज्ञा की रीति पर तो नहीं, परन्तु औरों के उत्साह से तुम्हारे प्रेम की सच्चाई को परखने के लिये कहता हूं। ९ तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह जानते हो, कि वह धनी होकर भी तुम्हारे लिये कंगाल बन गया ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ। १० और इस बात में मेरा विचार यही है, क्योंकि यह तुम्हारे लिये अच्छा है; जो एक वर्ष से न तो केवल इस काम को करने ही में, परन्तु इस बात के चाहने में भी प्रथम हुए थे। ११ इसलिये

अब यह काम पूरा करो; कि जैसा इच्छा करने में तुम तैयार थे, वैसा ही अपनी अपनी पूंजी के अनुसार पूरा भी करो। १२ क्योंकि यदि मन की तैयारी हो तो दान उसके अनुसार ग्रहण भी होता है जो उसके पास है न कि उसके अनुसार जो उसके पास नहीं। १३ यह नहीं, कि औरों को चैन और तुम को क्लेश मिले। १४ परन्तु बराबरी के विचार से इस समय तुम्हारी बढ़ती उनकी घटी में काम आए, ताकि उन की बढ़ती भी तुम्हारी घटी में काम आए, कि बराबरी हो जाए। १५ जैसा लिखा है, कि जिस ने बहुत बटोरा उसका कुछ अधिक न निकला, और जिस ने थोड़ा बटोरा उसका कुछ कम न निकला॥

१६ और परमेश्वर का धन्यवाद हो, जिस ने तुम्हारे लिये वही उत्साह तितुस के हृदय में डाल दिया है। १७ कि उस ने हमारा समझाना मान लिया बरन बहुत उत्साही होकर वह अपनी इच्छा से तुम्हारे पास गया है। १८ और हम ने उसके साथ उस भाई को भेजा है जिस का नाम सुसमाचार के विषय में सब कलीसिया में फैला हुआ है। १९ और इतना ही नहीं, परन्तु वह कलीसिया से ठहराया भी गया कि इस दान के काम के लिये हमारे साथ जाए और हम यह सेवा इसलिये करते हैं, कि प्रभु की महिमा और हमारे मन की तैयारी प्रगट हो जाए। २० हम इस बात में चौकस रहते हैं, कि इस उदारता के काम के विषय में जिस की सेवा हम करते हैं, कोई हम पर दोष न लगाने पाए। २१ क्योंकि जो बातें केवल प्रभु ही के निकट नहीं, परन्तु मनुष्यों के निकट भी भली हैं हम उन की चिन्ता करते हैं। २२ और हम ने उसके साथ अपने भाई को भेजा है, जिस को हम ने बार बार परख के बहुत बातों में उत्साही पाया है; परन्तु अब तुम पर उस को बड़ा भरोसा है, इस कारण वह और भी अधिक उत्साही है। २३ यदि कोई तितुस के विषय में पूछे, तो वह मेरा साथी, और तुम्हारे लिये मेरा सहकर्मी है, और यदि हमारे भाइयों के विषय में पूछे, तो वे कलीसियाओं के भेजे हुए और मसीह की महिमा हैं। २४ सो अपना प्रेम और हमारा वह घमण्ड जो तुम्हारे विषय में है कलीसियाओं के साम्हने उन्हें सिद्ध करके दिखाओ॥

९ अब उस सेवा के विषय में जो पवित्र लोगों के लिये की जाती है, मुझे तुम को लिखना अवश्य नहीं। २ क्योंकि मैं तुम्हारे मन की तैयारी को जानता हूं, जिस के कारण मैं तुम्हारे विषय में मकिदुनियों के साम्हने घमण्ड दिखाता हूं, कि अखया के लोग एक वर्ष से तैयार हुए हैं, और तुम्हारे उत्साह ने और बहुतों को भी उभारा है। ३ परन्तु मैं ने भाइयों को इसलिये भजा है, कि हम ने जो घमण्ड तुम्हारे विषय में दिखाया, वह इस बात में व्यर्थ न ठहरे; परन्तु जैसा मैं ने कहा; वैसे ही तुम तैयार हो रहो। ४ ऐसा न हो, कि यदि कोई मकिदुनी मेरे साथ आए, और तुम्हें तैयार न पाए, तो क्या जानें, इस भरोसे के कारण हम (यह नहीं कहते कि तुम) लज्जित हों। ५ इसलिये मैं ने भाइयों से यह बिनती करना अवश्य समझा कि वे पहिले से तुम्हारे पास जाएं, और तुम्हारी उदारता का फल जिस के विषय में

पहिले से वचन दिया गया था, तैयार कर रखें, कि यह दबाव* से नहीं परन्तु उदारता के फल की नाईं तैयार हो ॥

६ परन्तु बात तो यह है, कि जो थोड़ा† बोता है वह थोड़ा काटेगा भी; और जो बहुत‡ बोता है, वह बहुत काटेगा। ७ हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे; न कुढ़ कुढ़ के, और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले मे प्रेम रखता है। ८ और परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है जिस से हर बात में और हर समय, सब कुछ, जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे, और हर एक भले काम के लिये तुम्हारे पास बहुत कुछ हो। ६ जैसा लिखा है, उस ने बिथराया उस ने कंगालों को दान दिया, उसका धर्म सदा बना रहेगा। १० सो जो बोनेवाले को बीज, और भोजन के लिये रोटी देता है वह तुम्हें बीज देगा, और उसे फलवन्त करेगा; और तुम्हारे धर्म के फलों को बढ़ाएगा। ११ कि तुम हर बात में सब प्रकार की उदारता के लिये जो हमारे द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करवाती है, धनवान किए जाओ। १२ क्योंकि इस सेवा के पूरा करने से, न केवल पवित्र लोगों की घटियां पूरी होती हैं, परन्तु लोगों की ओर से परमेश्वर का बहुत धन्यवाद होता है। १३ क्योंकि इस सेवा से प्रमाण लेकर परमेश्वर की महिमा प्रगट करते हैं, कि तुम मसीह के सुसमाचार को मान कर उसके आधीन रहते हो, और उन की, और सब की सहायता करने में उदारता प्रगट करते रहते हो। १४ और वे तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हैं; और इसलिये कि तुम पर परमेश्वर का बड़ा ही अनुग्रह है, तुम्हारी लालसा करते रहते हैं। १५ परमेश्वर को उसके उस दान के लिये जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद हो ॥

* यू० लोभ। † या कंजूसी से। ‡ या उदारता से।

१० मैं वही पौलुस जो तुम्हारे साम्हने दीन हूं, परन्तु पीठ पीछे तुम्हारी ओर साहस करता हूं; तुम को मसीह की नम्रता, और कोमलता के कारण समझाता हूं। २ मैं यह बिनती करता हूं, कि तुम्हारे साम्हने मुझे निर्भय होकर* साहस करना न पड़े; जैसा मैं कितनों पर जो हम को शरीर के अनुसार चलनेवाले समझते हैं, वीरता दिखाने का विचार करता हूं। ३ क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलते फिरते हैं, तौभी शरीर के अनुसार नहीं लड़ते। ४ क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा† सामर्थी हैं। ५ सो हम कल्पनाओं को, और हर एक ऊंची बात को, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं। ६ और तैयार रहते हैं कि जब तुम्हारा आज्ञा मानना पूरा हो जाए, तो हर एक प्रकार के आज्ञा न मानने का पलटा लें। ७ तुम इन्हीं बातों को देखते हो, जो आंखों के साम्हने हैं, यदि किसी का अपने पर यह भरोसा हो, कि मैं मसीह का हूं, तो वह यह भी जान ले, कि जैसा वह मसीह का है, वैसे ही हम भी हैं। ८ क्योंकि यदि मैं उस अधिकार के

* यू० भरोसे से। † या लिए।

विषय में और भी घमण्ड दिखाऊं, जो प्रभु ने तुम्हारे बिगाड़ने के लिये नहीं पर बनाने के लिये हमें दिया है, तो लज्जित न हूंगा। ९ यह मैं इसलिये कहता हूं, कि पत्रियों के द्वारा तुम्हें डरानेवाला न ठहरूं। १० क्योंकि कहते हैं, कि उस की पत्रियां तो गम्भीर और प्रभावशाली हैं; परन्तु जब देखते हैं, तो वह देह का निर्बल और वक्तव्य में हल्का जान पड़ता है। ११ सो जो ऐसा कहता है, वह यह समझ रखे, कि जैसे पीठ पीछे पत्रियों में हमारे वचन हैं, वैसे ही तुम्हारे साम्हने हमारे काम भी होंगे। १२ क्योंकि हमें यह हियाव नहीं कि हम अपने आप को उन में से ऐसे कितनों के साथ गिनें, या उन से अपने को मिलाए, जो अपनी प्रशंसा करते हैं, और अपने आप को आपस में नाप तौलकर एक दूसरे से मिलान करके मूर्ख ठहरते हैं। १३ हम तो सीमा से बाहर घमण्ड कदापि न करेंगे, परन्तु उसी सीमा तक जो परमेश्वर ने हमारे लिये ठहरा दी है; और उस में तुम भी आ गए हो और उसी के अनुसार घमण्ड भी करेंगे। १४ क्योंकि हम अपनी सीमा से बाहर अपने आप को बढ़ाना नहीं चाहते, जैसे कि तुम तक न पहुंचने की दशा में होता, बरन मसीह का सुसमाचार सुनाते हुए तुम तक पहुंच चुके हैं। १५ और हम सीमा से बाहर औरों के परिश्रम पर घमण्ड नहीं करते; परन्तु हमें आशा है, कि ज्यों ज्यों तुम्हारा विश्वास बढ़ता जाएगा त्यों त्यों हम अपनी सीमा के अनुसार तुम्हारे कारण और भी बढ़ते जाएंगे। १६ कि हम तुम्हारे सिवानों से आगे बढ़कर सुसमाचार सुनाएं, और यह नहीं, कि हम औरों की सीमा के भीतर बने बनाए कामों पर घमण्ड करें। १७ परन्तु जो घमण्ड करे, वह प्रभु पर घमण्ड करे। १८ क्योंकि जो अपनी बड़ाई करता है, वह नहीं, परन्तु जिस की बड़ाई प्रभु करता है, वही ग्रहण किया जाता है॥

११ यदि तुम मेरी थोड़ी मूर्खता सह लेते तो क्या ही भला होता; हां, मेरी सह भी लेते हो। २ क्योंकि मैं तुम्हारे विषय में ईश्वरीय धुन लगाए रहता हूं, इसलिये कि मैं ने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है, कि तुम्हें पवित्र कुंवारी की नाईं मसीह को सौंप दूं। ३ परन्तु मैं डरता हूं कि जैसे सांप ने अपनी चतुराई से हव्वा को बहकाया, वैसे ही तुम्हारे मन उस सीधाई और पवित्रता से जो मसीह के साथ होनी चाहिए कहीं भ्रष्ट न किए जाएं। ४ यदि कोई तुम्हारे पास आकर, किसी दूसरे यीशु को प्रचार करे, जिस का प्रचार हम ने नहीं किया: या कोई और आत्मा तुम्हें मिले; जो पहिले न मिला था; या और कोई सुसमाचार जिसे तुम ने पहिले न माना था, तो तुम्हारा सहना ठीक होता। ५ मैं तो समझता हूं, कि मैं किसी बात में बड़े से बड़े प्रेरितों से कम नहीं हूं। ६ यदि मैं वक्तव्य में अनाड़ी हूं, तौभी ज्ञान में नहीं; बरन हम ने इस को हर बात में सब पर तुम्हारे लिये प्रगट किया है। ७ क्या इस में मैं ने कुछ पाप किया; कि मैं ने तुम्हें परमेश्वर का सुसमाचार सेंत मेंत सुनाया; और अपने आप को नीचा किया, कि तुम ऊंचे हो जाओ? ८ मैं ने और कलीसियाओं को लूटा अर्थात् मैं ने उन से मजदूरी ली, ताकि तुम्हारी सेवा करूं। ९ और जब तुम्हारे

साथ था, और मुझे घटी हुई, तो मैं ने किसी पर भार नहीं दिया, क्योंकि भाइयों ने, मकिदुनिया से आकर मेरी घटी को पूरी की: और मैं ने हर बात में अपने आप को तुम पर भार होने से रोका, और रोके रहूंगा। १० यदि मसीह की सच्चाई मुझ में है, तो अखया देश में कोई मुझे इस घमण्ड से न रोकेगा। ११ किस लिये? क्या इसलिये कि मैं तुम से प्रेम नहीं रखता? परमेश्वर यह जानता है। १२ परन्तु जो मैं करता हूं, वही करता रहूंगा; कि जो लोग दांव ढूंढ़ते हैं, उन्हें मैं दांव पाने दूं, ताकि जिस बात में वे घमण्ड करते हैं, उस में वे हमारे ही समान ठहरें। १३ क्योंकि ऐसे लोग झूठे प्रेरित, और छल से काम करनेवाले, और मसीह के प्रेरितों का रूप धरनेवाले हैं। १४ और यह कुछ अचम्भे की बात नहीं क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करता है। १५ सो यदि उसके सेवक भी धर्म के सेवकों का सा रूप धरें, तो कुछ बड़ी बात नहीं परन्तु उन का अन्त उन के कामों के अनुसार होगा॥

१६ मैं फिर कहता हूं, कोई मुझे मूर्ख न समझे; नहीं तो मूर्ख ही समझकर मेरी सह लो, ताकि थोड़ा सा मैं भी घमण्ड करूं। १७ इस बेधड़क घमण्ड से बोलने में जो कुछ मैं कहता हूं वह प्रभु की आज्ञा के अनुसार* नहीं पर मानों मूर्खता से ही कहता हूं। १८ जब कि बहुत लोग शरीर के अनुसार घमण्ड करते हैं, तो मैं भी घमण्ड करूंगा। १९ तुम तो समझदार होकर आनन्द से मूर्खों की सह लेते हो। २० क्योंकि जब तुम्हें कोई दास बना लेता है, या खा जाता है, या फंसा लेता है, या अपने आप को बड़ा बनाता है, या तुम्हारे मुंह पर थप्पड़ मारता है, तो तुम सह लेते हो। २१ मेरा कहना अनादर ही की रीति पर है, मानो कि हम निर्बल से थे; परन्तु जिस किसी बात में कोई हियाव करता है (मैं मूर्खता से कहता हूं) तो मैं भी हियाव करता हूं। २२ क्या वे ही इब्रानी हैं? मैं भी हूं: क्या वे ही इस्राएली हैं? मैं भी हूं: क्या वे ही इब्राहीम के वंश हैं? मैं भी हूं: क्या वे ही मसीह के सेवक हैं? २३ (मैं पागल की नाईं कहता हूं) मैं उन से बढ़कर हूं! अधिक परिश्रम करने में; बार बार कैद होने में; कोड़े खाने में; बार बार मृत्यु के जोखिमों में। २४ पांच बार मैं ने यहूदियों के हाथ से उन्तालीस उन्तालीस कोड़े खाए। २५ तीन बार मैं ने बेंतें खाईं; एक बार पत्थरवाह किया गया; तीन बार जहाज जिन पर मैं चढ़ा था, टूट गए; एक रात दिन मैं ने समुद्र में काटा। २६ मैं बार बार यात्राओं में; नदियों के जोखिमों में; डाकुओं के जोखिमों में; अपने जातिवालों से जोखिमों में; अन्यजातियों से जोखिमों में; नगरों में के जोखिमों में; जंगल के जोखिमों में; समुद्र के जोखिमों में; झूठे भाइयों के बीच जोखिमों में। २७ परिश्रम और कष्ट में; बार बार जागते रहने में; भूख-पियास में; बार बार उपवास करने में; जाड़े में; उघाड़े रहने में। २८ और और बातों को छोड़कर जिन का वर्णन मैं नहीं करता सब कलीसियाओं की चिन्ता प्रतिदिन मुझे दबाती है। २९ किस की निर्बलता से मैं निर्बल नहीं होता? किस के ठोकर

* यू० प्रभु की रीति पर।

खाने से मेरा जी नहीं दुखता? ३० यदि घमण्ड करना अवश्य है, तो मैं अपनी निर्बलता की बातों पर करूंगा। ३१ प्रभु यीशु का परमेश्वर और पिता जो सदा धन्य है, जानता है, कि मैं झूठ नहीं बोलता। ३२ दमिश्क में अरितास राजा की ओर से जो हाकिम था, उस ने मेरे पकड़ने को दमिश्कियों के नगर पर पहरा बैठा रखा था। ३३ और मैं टोकरे में खिड़की से होकर भीत पर से उतारा गया, और उसके हाथ से बच निकला॥

१२ यद्यपि घमण्ड करना तो मेरे लिये ठीक नहीं तौभी करना पड़ता है; सो मैं प्रभु के दिए हुए दर्शनों और प्रकाशों की चर्चा करूंगा। २ मैं मसीह में एक मनुष्य को जानता हूं, चौदह वर्ष हुए कि न जाने देहसहित, न जाने देहरहित, परमेश्वर जानता है, ऐसा मनुष्य तीसरे स्वर्ग तक उठा लिया गया। ३ मैं ऐसे मनुष्य को जानता हूं न जाने देहसहित, न जाने देहरहित परमेश्वर ही जानता है। ४ कि स्वर्ग लोक पर उठा लिया गया, और ऐसी बातें सुनीं जो कहने की नहीं; और जिन का मुंह पर लाना मनुष्य को उचित नहीं। ५ ऐसे मनुष्य पर तो मैं घमण्ड करूंगा, परन्तु अपने पर अपनी निर्बलताओं को छोड़, अपने विषय में घमण्ड न करूंगा। ६ क्योंकि यदि मैं घमण्ड करना चाहूं भी तो मूर्ख न हूंगा, क्योंकि सच बोलूंगा; तौभी रुक जाता हूं, ऐसा न हो, कि जैसा कोई मुझे देखता है, या मुझ से सुनता है, मुझे उस से बढ़कर समझे। ७ और इसलिये कि मैं प्रकाशों की बहुतायत से फूल न जाऊं, मेरे शरीर में एक कांटा चुभाया* गया अर्थात् शैतान का एक दूत कि मुझे घूसे मारे ताकि मैं फूल न जाऊं। ८ इस के विषय में मैं ने प्रभु से तीन बार बिनती की, कि मुझ से यह दूर हो जाए। ९ और उस ने मुझ से कहा, मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है; इसलिये मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा, कि मसीह की सामर्थ मुझ पर छाया करती रहे। १० इस कारण मैं मसीह के लिये निर्बलताओं, और निन्दाओं में, और दरिद्रता में और उपद्रवों में, और संकटों में, प्रसन्न हूं; क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूं, तभी बलवन्त होता हूं॥

११ मैं मूर्ख तो बना, परन्तु तुम ही ने मुझ से यह बरबस करवाया: तुम्हें तो मेरी प्रशंसा करनी चाहिए थी, क्योंकि यद्यपि मैं कुछ भी नहीं, तौभी उन बड़े से बड़े प्रेरितों से किसी बात में कम नहीं हूं। १२ प्रेरित के लक्षण भी तुम्हारे बीच सब प्रकार के धीरज सहित चिन्हों, और अद्भुत कामों, और सामर्थ के कामों से दिखाए गए। १३ तुम कौन सी बात में और कलीसियों से कम थे, केवल इस में कि मैं ने तुम पर अपना भार न रखा: मेरा यह अन्याय क्षमा करो॥

१४ देखो, मैं तीसरी बार तुम्हारे पास आने को तैयार हूं, और मैं तुम पर कोई भार न रखूंगा; क्योंकि मैं तुम्हारी सम्पत्ति नहीं, बरन तुम ही को चाहता हूं: क्योंकि लड़के-बालों को माता-पिता के लिये धन बटोरना न चाहिए, पर माता-पिता को लड़के-बालों के लिये।

* यू० दिया।

१५ मैं तुम्हारी आत्माओं के लिये बहुत आनन्द से खर्च करूंगा, बरन आप भी खर्च हो जाऊंगा: क्या जितना बढ़कर मैं तुम से प्रेम रखता हूं, उतना ही घटकर तुम मुझ से प्रेम रखोगे? १६ ऐसा हो सकता है, कि मैं ने तुम पर बोझ नहीं डाला, परन्तु चतुराई से तुम्हें धोखा देकर फंसा लिया। १७ भला, जिन्हें मैं ने तुम्हारे पास भेजा, क्या उन में से किसी के द्वारा मैं ने छल करके तुम से कुछ ले लिया? १८ मैं ने तितुस को समझाकर उसके साथ उस भाई को भेजा, तो क्या तितुस ने छल करके तुम से कुछ लिया? क्या हम एक ही आत्मा के चलाए न चले? क्या एक ही लीक पर न चले?

१९ तुम अभी तक समझ रहे होगे कि हम तुम्हारे सामने प्रत्युत्तर दे रहे हैं, हम तो परमेश्वर को उपस्थित जानकर मसीह में बोलते हैं, और हे प्रियो, सब बातें तुम्हारी उन्नति ही के लिये कहते हैं। २० क्योंकि मुझे डर है, कहीं ऐसा न हो, कि मैं आकर जैसे चाहता हूं, वैसे तुम्हें न पाऊं; और मुझे भी जैसा तुम नहीं चाहते वैसा ही पाओ, कि तुम में झगड़ा, डाह, क्रोध, विरोध, ईर्ष्या, चुगली, अभिमान और बखेड़े हों। २१ और मेरा परमेश्वर कहीं मेरे फिर से तुम्हारे यहां आने पर मुझ पर दबाव डाले और मुझे बहुतों के लिये फिर शोक करना पड़े, जिन्हों ने पहिले पाप किया था, और उस गन्दे काम, और व्यभिचार, और लुचपन से, जो उन्हों ने किया, मन नहीं फिराया॥

१३ अब तीसरी बार तुम्हारे पास आता हूं: दो या तीन गवाहों के मुंह से हर एक बात ठहराई जाएगी। २ जैसे मैं जब दूसरी बार तुम्हारे साथ था, सो * वैसे ही अब दूर रहते हुए उन लोगों से जिन्हों ने पहिले पाप किया, और और सब लोगों से अब पहिले से कहे देता हूं, कि यदि मैं फिर आऊंगा, तो नहीं छोड़ूंगा। ३ तुम तो इस का प्रमाण चाहते हो, कि मसीह मुझ में बोलता है, जो तुम्हारे लिये निर्बल नहीं; परन्तु तुम में सामर्थी है। ४ वह निर्बलता के कारण क्रूस पर चढ़ाया तो गया, तौभी परमेश्वर की सामर्थ से जीवित है, हम भी तो उस में निर्बल हैं; परन्तु परमेश्वर की सामर्थ से जो तुम्हारे लिये है, उसके साथ जीएंगे। ५ अपने आप को परखो, कि विश्वास में हो कि नहीं; अपने आप को जांचो, क्या तुम अपने विषय में यह नहीं जानते, कि यीशु मसीह तुम में है? नहीं तो तुम निकम्मे निकले हो। ६ पर मेरी आशा है, कि तुम जान लोगे, कि हम निकम्मे नहीं। ७ और हम अपने परमेश्वर से यह प्रार्थना करते हैं, कि तुम कोई बुराई न करो; इसलिये नहीं, कि हम खरे देख पड़ें, पर इसलिये कि तुम भलाई करो, चाहे हम निकम्मे ही ठहरें। ८ क्योंकि हम सत्य के विरोध में कुछ नहीं कर सकते, पर सत्य के लिये कर सकते हैं। ९ जब हम निर्बल हैं, और तुम बलवन्त हो, तो हम आनन्दित होते हैं, और यह प्रार्थना भी करते हैं, कि तुम सिद्ध हो जाओ। १० इस कारण मैं तुम्हारे पीठ पीछे ये बातें लिखता हूं, कि उपस्थित होकर मुझे उस अधिकार के अनुसार जिसे प्रभु ने बिगाड़ने के लिये नहीं पर बनाने के लिये मुझे दिया है, कड़ाई से कुछ करना न पड़े॥

११ निदान, हे भाइयो, आनन्दित रहो; सिद्ध बनते जाओ; ढाढ़स रखो; एक ही

* या मानो दूसरी बार उपस्थित होकर।

मन रखो; मेल से रहो, और प्रेम और शान्ति का दाता * परमेश्वर तुम्हारे साथ होगा। १२ एक दूसरे को पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो। १३ सब पवित्र लोग तुम्हें नमस्कार करते हैं। १४ प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता * तुम सब के साथ होती रहे॥

* यू० स्रोत।

* या संगति।

गलतियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

१ पौलुस की, जो न मनुष्यों की ओर से, और न मनुष्य के द्वारा, वरन यीशु मसीह और परमेश्वर पिता के द्वारा, जिस ने उस को मरे हुओं में से जिलाया, प्रेरित है। २ और सारे भाइयों की ओर से, जो मेरे साथ हैं; गलतिया की कलीसियाओं के नाम। ३ परमेश्वर पिता, और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे। ४ उसी ने अपने आप को हमारे पापों के लिये दे दिया, ताकि हमारे परमेश्वर और पिता की इच्छा के अनुसार हमें इस वर्तमान बुरे संसार से छुड़ाए। ५ उस की स्तुति और बड़ाई युगानुयुग होती रहे। आमीन॥

६ मुझे आश्चर्य होता है, कि जिस ने तुम्हें मसीह के अनुग्रह से बुलाया उस से तुम इतनी जल्दी फिर कर और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने लगे। ७ परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है ही नहीं: पर बात यह है, कि कितने ऐसे हैं, जो तुम्हें घबरा देते, और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं। ८ परन्तु यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो स्रापित हो। ९ जैसा हम पहिले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर कहता हूं, कि उस सुसमाचार को छोड़ जिसे तुम ने ग्रहण किया है, यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो स्रापित हो। अब मैं क्या मनुष्यों को मनाता हूं या परमेश्वर को? क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहता हूं? १० यदि मैं अब तक मनुष्यों को ही प्रसन्न करता रहता, तो मसीह का दास न होता॥

११ हे भाइयो, मैं तुम्हें जताए देता हूं, कि जो सुसमाचार मैं ने सुनाया है, वह मनुष्य का सा नहीं। १२ क्योंकि वह मुझे मनुष्य की ओर से नहीं पहुंचा, और न मुझे सिखाया गया, पर यीशु मसीह के प्रकाश से मिला। १३ यहूदी मत में जो पहिले मेरा चाल चलन था, तुम सुन चुके हो; कि मैं परमेश्वर की कलीसिया को बहुत ही सताता और नाश करता था। १४ और अपने बहुत से जातिवालों से जो मेरी अवस्था के थे यहूदी मत में बढ़ता जाता था और अपने बापदादों के व्यवहारों में बहुत ही उत्तेजित था। १५ परन्तु परमेश्वर की, जिस ने मेरी माता के गर्भ

ही से मुझे ठहराया और अपने अनुग्रह से बुला लिया, १६ जब इच्छा हुई, कि मुझ में अपने पुत्र को प्रगट करे कि मैं अन्यजातियों में उसका सुसमाचार सुनाऊं; तो न मैं ने मांस और लोहू से सलाह ली; १७ और न यरूशलेम को उन के पास गया जो मुझ से पहिले प्रेरित थे, पर तुरन्त अरब को चला गया: और फिर वहां से दमिश्क को लौट आया॥

१८ फिर तीन बरस के बाद मैं कैफा से भेंट करने के लिये यरूशलेम को गया, और उसके पास पन्द्रह दिन तक रहा। १९ परन्तु प्रभु के भाई याकूब को छोड़ और प्रेरितों में से किसी से न मिला। २० जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूं, देखो, परमेश्वर को उपस्थित जानकर कहता हूं, कि वे झूठी नहीं। २१ इस के बाद मैं सूरिया और किलिकिया के देशों में आया। २२ परन्तु यहूदिया की कलीसियाओं ने जो मसीह में थीं, मेरा मुंह तो कभी नहीं देखा था। २३ परन्तु यही सुना करती थीं, कि जो हमें पहिले सताता था, वह अब उसी धर्म का सुसमाचार सुनाता है, जिसे पहिले नाश करता था। २४ और मेरे विषय में परमेश्वर की महिमा करती थीं॥

२ चौदह वर्ष के बाद मैं बरनबास के साथ फिर यरूशलेम को गया, और तितुस को भी साथ ले गया। २ और मेरा जाना ईश्वरीय प्रकाश के अनुसार हुआ: और जो सुसमाचार मैं अन्यजातियों में प्रचार करता हूं, उस को मैं ने उन्हें बता दिया; पर एकान्त में उन्हीं को जो बड़े समझे जाते थे, ताकि ऐसा न हो, कि मेरी इस समय की, या अगली दौड़ धूप व्यर्थ ठहरे। ३ परन्तु तितुस भी जो मेरे साथ था और जो यूनानी है; खतना कराने के लिये विवश नहीं किया गया। ४ और यह उन झूठे भाइयों के कारण हुआ, जो चोरी से घुस आए थे, कि उस स्वतंत्रता का जो मसीह यीशु में हमें मिली है, भेद लेकर हमें दास बनाएं। ५ उन के आधीन होना हम ने एक घड़ी भर न माना, इसलिये कि सुसमाचार की सच्चाई तुम में बनी रहे। ६ फिर जो लोग कुछ समझे जाते थे (वे चाहे कैसे ही थे, मुझे इस से कुछ काम नहीं, परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता) उन से जो कुछ भी समझे जाते थे, मुझे कुछ भी नहीं प्राप्त हुआ। ७ परन्तु इसके विपरीत जब उन्हों ने देखा, कि जैसा खतना किए हुए लोगों के लिये सुसमाचार का काम पतरस को सौंपा गया वैसा ही खतनारहितों के लिये मुझे सुसमाचार सुनाना सौंपा गया। ८ (क्योंकि जिस ने पतरस से खतना किए हुओं में प्रेरिताई का कार्य्य बड़े प्रभाव सहित करवाया, उसी ने मुझ से भी अन्यजातियों में प्रभावशाली कार्य्य करवाया)। ९ और जब उन्हों ने उस अनुग्रह को जो मुझे मिला था जान लिया, तो याकूब, और कैफा, और यूहन्ना ने जो कलीसिया के खम्भे समझे जाते थे, मुझ को और बरनबास को दहिना हाथ देकर संग कर लिया, कि हम अन्यजातियों के पास जाएं, और वे खतना किए हुओं के पास। १० केवल यह कहा, कि हम कंगालों की सुधि लें, और इसी काम के करने का मैं आप भी यत्न कर रहा था॥

११ पर जब कैफा अन्ताकिया में आया, तो मैं ने उसके मुंह पर उसका साम्हना किया, क्योंकि वह दोषी ठहरा था। १२ इसलिये कि याकूब की ओर से कितने लोगों के

आने से पहिले वह अन्यजातियों के साथ खाया करता था, परन्तु जब वे आए, तो खतना किए हुए लोगों के डर के मारे उन से हट गया और किनारा करने लगा। १३ और उसके साथ शेष यहूदियों ने भी कपट किया, यहां तक कि बरनबास भी उन के कपट में पड़ गया। १४ पर जब मैं ने देखा, कि वे सुसमाचार की सच्चाई पर सीधी चाल नहीं चलते, तो मैं ने सब के साम्हने कैफा से कहा; कि जब तू यहूदी होकर अन्यजातियों की नाईं चलता है, और यहूदियों की नाईं नहीं तो तू अन्यजातियों को यहूदियों की नाईं चलने को क्यों कहता है? १५ हम तो जन्म के यहूदी हैं, और पापी अन्यजातियों में से नहीं। १६ तौभी यह जानकर कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं, पर केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरता है, हम ने आप भी मसीह यीशु पर विश्वास किया, कि हम व्यवस्था के कामों से नहीं, पर मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरें; इसलिये कि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी धर्मी न ठहरेगा। १७ हम जो मसीह में धर्मी ठहरना चाहते हैं, यदि आप ही पापी निकलें, तो क्या मसीह पाप का सेवक है? कदापि नहीं। १८ क्योंकि जो कुछ मैं ने गिरा दिया, यदि उसी को फिर बनाता हूं, तो अपने आप को अपराधी ठहराता हूं। १९ मैं तो व्यवस्था के द्वारा व्यवस्था के लिये मर गया, कि परमेश्वर के लिये जीऊं। २० मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है: और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिये अपने आप को दे दिया। २१ मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं ठहराता, क्योंकि यदि व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता होती, तो मसीह का मरना व्यर्थ होता॥

३ हे निर्बुद्धि गलतियो, किस ने तुम्हें मोह लिया है? तुम्हारी तो मानो आंखों के साम्हने यीशु मसीह क्रूस पर दिखाया गया! २ मैं तुम से केवल यह जानना चाहता हूं, कि तुम ने आत्मा को, क्या व्यवस्था के कामों से, या विश्वास के समाचार से पाया? ३ क्या तुम ऐसे निर्बुद्धि हो, कि आत्मा की रीति पर आरम्भ करके अब शरीर की रीति पर अन्त करोगे? ४ क्या तुम ने इतना दुख योंही उठाया? परन्तु कदाचित व्यर्थ नहीं। ५ सो जो तुम्हें आत्मा दान करता और तुम में सामर्थ के काम करता है, वह क्या व्यवस्था के कामों से या विश्वास के सुसमाचार से ऐसा करता है? ६ इब्राहीम ने तो परमेश्वर पर विश्वास किया * और यह उसके लिये धार्मिकता गिनी गई। ७ तो यह जान लो, कि जो विश्वास करनेवाले हैं, वे ही इब्राहीम की सन्तान हैं। ८ और पवित्र शास्त्र ने पहिले ही से यह जानकर, कि परमेश्वर अन्यजातियों को विश्वास से धर्मी ठहराएगा, पहिले ही से इब्राहीम को यह सुसमाचार सुना दिया, कि तुझ में सब जातियां आशीष पाएंगी। ९ तो जो विश्वास करनेवाले हैं, वे विश्वासी इब्राहीम के साथ आशीष पाते हैं। १० सो जितने लोग व्यवस्था के कामों पर भरोसा रखते हैं, वे सब स्राप के आधीन हैं, क्योंकि लिखा है, कि जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई सब बातों के करने में स्थिर नहीं

* यू० की प्रतीति की।

रहता, वह स्रापित है। ११ पर यह बात प्रगट है, कि व्यवस्था के द्वारा परमेश्वर के यहां कोई धर्मी नहीं ठहरता क्योंकि धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा। १२ पर व्यवस्था का विश्वास से कुछ सम्बन्ध नहीं; पर जो उन को मानेगा, वह उन के कारण जीवित रहेगा। १३ मसीह ने जो हमारे लिये स्रापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के स्राप से छुड़ाया क्योंकि लिखा है, जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह स्रापित है। १४ यह इसलिये हुआ, कि इब्राहीम की आशीष मसीह यीशु में अन्यजातियों तक पहुंचे, और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें, जिस की प्रतिज्ञा हुई है।।

१५ हे भाइयो, मैं मनुष्य की रीति पर कहता हूं, कि मनुष्य की वाचा भी जो पक्की हो जाती है, तो न कोई उसे टालता है और न उस में कुछ बढ़ाता है। १६ निदान, प्रतिज्ञाएं इब्राहीम को, और उसके वंश को दी गईं: वह यह नहीं कहता, कि वंशों को; जैसे बहुतों के विषय में कहा, पर जैसे एक के विषय में कि तेरे वंश को: और वह मसीह है। १७ पर मैं यह कहता हूं, कि जो वाचा परमेश्वर ने पहिले से पक्की की थी, उस को व्यवस्था चार सौ तीस बरस के बाद आकर नहीं टाल देती, कि प्रतिज्ञा व्यर्थ ठहरे। १८ क्योंकि यदि मीरास व्यवस्था से मिली है, तो फिर प्रतिज्ञा से नहीं, परन्तु परमेश्वर ने इब्राहीम को प्रतिज्ञा के द्वारा दे दी है। १९ तब फिर व्यवस्था क्या रही? वह तो अपराधों के कारण बाद में दी गई, कि उस वंश के आने तक रहे, जिस को प्रतिज्ञा दी गई थी, और वह स्वर्गदूतों के द्वारा एक मध्यस्थ के हाथ ठहराई गई। २० मध्यस्थ तो एक का नहीं होता, परन्तु परमेश्वर एक ही है। २१ तो क्या व्यवस्था परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के विरोध में है? कदापि न हो? क्योंकि यदि ऐसी व्यवस्था दी जाती जो जीवन दे सकती, तो सचमुच धार्मिकता व्यवस्था से होती। २२ परन्तु पवित्र शास्त्र ने सब को पाप के आधीन कर दिया, ताकि वह प्रतिज्ञा जिस का आधार यीशु मसीह पर विश्वास करना है, विश्वास करनेवालों के लिये पूरी हो जाए।।

२३ पर विश्वास के आने से पहिले व्यवस्था की आधीनता में हमारी रखवाली होती थी, और उस विश्वास के आने तक जो प्रगट होनेवाला था, हम उसी के बन्धन में रहे। २४ इसलिये व्यवस्था मसीह तक पहुंचाने को हमारा शिक्षक हुई है, कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें। २५ परन्तु जब विश्वास आ चुका, तो हम अब शिक्षक के आधीन न रहे। २६ क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। २७ और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्हों ने मसीह को पहिन लिया है। २८ अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतंत्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो। २९ और यदि तुम मसीह के हो, तो इब्राहीम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो।।

४ मैं यह कहता हूं, कि वारिस जब तक बालक है, यद्यपि सब वस्तुओं का स्वामी है, तौभी उस में और दास में कुछ भेद नहीं। २ परन्तु पिता के ठहराए हुए समय तक रक्षकों और भण्डारियों के वश में रहता है। ३ वैसे ही हम भी,

जब बालक थे, तो संसार की आदि शिक्षा के वश में होकर दास बने हुए थे। ४ परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के आधीन उत्पन्न हुआ। ५ ताकि व्यवस्था के आधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हम को लेपालक होने का पद मिले। ६ और तुम जो पुत्र हो, इसलिये परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारता है, हमारे हृदय में भेजा है। ७ इसलिये तू अब दास नहीं, परन्तु पुत्र है; और जब पुत्र हुआ, तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ॥

८ भला, तब तो तुम परमेश्वर को न जानकर उनके दास थे जो स्वभाव से परमेश्वर नहीं। ९ पर अब जो तुम ने परमेश्वर को पहचान लिया बरन परमेश्वर ने तुम को पहचाना, तो उन निर्बल और निकम्मी आदि-शिक्षा की बातों की ओर क्यों फिरते हो, जिन के तुम दोबारा दास होना चाहते हो? १० तुम दिनों और महीनों और नियत समयों और वर्षों को मानते हो। ११ मैं तुम्हारे विषय में डरता हूं, कहीं ऐसा न हो, कि जो परिश्रम मैं ने तुम्हारे लिये किया है, व्यर्थ ठहरे॥

१२ हे भाइयो, मैं तुम से बिनती करता हूं, तुम मेरे समान हो जाओ: क्योंकि मैं भी तुम्हारे समान हुआ हूं; तुम ने मेरा कुछ बिगाड़ा नहीं। १३ पर तुम जानते हो, कि पहिले पहिल मैं ने शरीर की निर्बलता के कारण तुम्हें सुसमाचार सुनाया। १४ और तुम ने मेरी शारीरिक दशा को जो तुम्हारी परीक्षा का कारण थी, तुच्छ न जाना; न उस से घृणा की; और परमेश्वर के दूत बरन मसीह के समान मुझे ग्रहण किया। १५ तो वह तुम्हारा आनन्द मनाना कहां गया? मैं तुम्हारा गवाह हूं, कि यदि हो सकता, तो तुम अपनी आंखें भी निकालकर मुझे दे देते। १६ तो क्या तुम से सच बोलने के कारण मैं तुम्हारा बैरी बन गया हूं। १७ वे तुम्हें मित्र बनाना तो चाहते हैं, पर भली मनसा से नहीं; बरन तुम्हें अलग करना चाहते हैं, कि तुम उन्हीं को मित्र बना लो। १८ पर यह भी अच्छा है, कि भली बात में हर समय मित्र बनाने का यत्न किया जाए, न केवल उसी समय, कि जब मैं तुम्हारे साथ रहता हूं। १९ हे मेरे बालको, जब तक तुम में मसीह का रूप न बन जाए, तब तक मैं तुम्हारे लिये फिर जच्चा की सी पीड़ाएं सहता हूं। २० इच्छा तो यह होती है, कि अब तुम्हारे पास आकर और ही प्रकार से बोलूं, क्योंकि तुम्हारे विषय में मुझे सन्देह है॥

२१ तुम जो व्यवस्था के आधीन होना चाहते हो, मुझ से कहो, क्या तुम व्यवस्था की नहीं सुनते? २२ यह लिखा है, कि इब्राहीम के दो पुत्र हुए; एक दासी से, और एक स्वतंत्र स्त्री से। २३ परन्तु जो दासी से हुआ, वह शारीरिक रीति से जन्मा; और जो स्वतंत्र स्त्री से हुआ, वह प्रतिज्ञा के अनुसार जन्मा। २४ इन बातों में दृष्टान्त है, ये स्त्रियां मानो दो वाचाएं हैं, एक तो सीना पहाड़ की जिस से दास ही उत्पन्न होते हैं; और वह हाजिरा है। २५ और हाजिरा मानो अरब का सीना पहाड़ है, और आधुनिक यरूशलेम उसके तुल्य है, क्योंकि वह अपने बालकों समेत दासत्व में है। २६ पर ऊपर की यरूशलेम स्वतंत्र है, और वह

हमारी माता है। २७ क्योंकि लिखा है, कि हे बांझ, तू जो नहीं जनती आनन्द कर, तू जिस को पीड़ाएं नहीं उठतीं गला खोलकर जय जयकार कर, क्योंकि त्यागी हुई की सन्तान सुहागिन की सन्तान से भी अधिक हैं। २८ हे भाइयो, हम इसहाक की नाईं प्रतिज्ञा की सन्तान हैं। २९ और जैसा उस समय शरीर के अनुसार जन्मा हुआ आत्मा के अनुसार जन्मे हुए को सताता था, वैसा ही अब भी होता है। ३० परन्तु पवित्र शास्त्र क्या कहता है? दासी और उसके पुत्र को निकाल दे, क्योंकि दासी का पुत्र स्वतंत्र स्त्री के पुत्र के साथ उत्तराधिकारी नहीं होगा। ३१ इसलिये हे भाइयो, हम दासी के नहीं, परन्तु स्वतंत्र स्त्री की सन्तान हैं।

५ मसीह ने स्वतंत्रता के लिये हमें स्वतंत्र किया है; सो इसी में स्थिर रहो, और दासत्व के जूए में फिर से न जुतो॥

२ देखो, मैं पौलुस तुम से कहता हूं, कि यदि खतना कराओगे, तो मसीह से तुम्हें कुछ लाभ न होगा। ३ फिर भी मैं हर एक खतना करानेवाले को जताए देता हूं, कि उसे सारी व्यवस्था माननी पड़ेगी। ४ तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो। ५ क्योंकि आत्मा के कारण, हम विश्वास से, आशा की हुई धार्मिकता की बाट जोहते हैं। ६ और मसीह यीशु में न खतना, न खतनारहित कुछ काम का है, परन्तु केवल विश्वास का जो प्रेम के द्वारा प्रभाव करता है। ७ तुम तो भली भांति दौड़ रहे थे, अब किस ने तुम्हें रोक दिया, कि सत्य को न मानो। ८ ऐसी सीख तुम्हारे बुलानेवाले की ओर से नहीं। ९ थोड़ा सा खमीर सारे गूंधे हुए आटे को खमीर कर डालता है। १० मैं प्रभु पर तुम्हारे विषय में भरोसा रखता हूं, कि तुम्हारा कोई दूसरा विचार न होगा; परन्तु जो तुम्हें घबरा देता है, वह कोई क्यों न हो दण्ड पाएगा। ११ परन्तु हे भाइयो, यदि मैं अब तक खतना का प्रचार करता हूं, तो क्यों अब तक सताया जाता हूं; फिर तो क्रूस की ठोकर जाती रही। १२ भला होता, कि जो तुम्हें डांवाडोल करते हैं, वे काट डाले जाते!

१३ हे भाइयो, तुम स्वतंत्र होने के लिये बुलाए गए हो परन्तु ऐसा न हो, कि यह स्वतंत्रता शारीरिक कामों के लिये अवसर बने, बरन प्रेम से एक दूसरे के दास बनो। १४ क्योंकि सारी व्यवस्था इस एक ही बात में पूरी हो जाती है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। १५ पर यदि तुम एक दूसरे को दांत से काटते और फाड़ खाते हो, तो चौकस रहो, कि एक दूसरे का सत्यानाश न कर दो॥

१६ पर मैं कहता हूं, आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे। १७ क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में, और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं; इसलिये कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ। १८ और यदि तुम आत्मा के चलाए चलते हो, तो व्यवस्था के आधीन न रहे। १९ शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन। २० मूर्त्ति पूजा, टोना, बैर,

झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म। २१ डाह, मतवालपन, लीलाक्रीड़ा, और इन के ऐसे और और काम हैं, इन के विषय में मैं तुम को पहिले से कह देता हूं जैसा पहिले कह भी चुका हूं, कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे। २२ पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, २३ कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं। २४ और जो मसीह यीशु के हैं, उन्हों ने शरीर को उस की लालसाओं और अभिलाषों समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है॥

२५ यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित है, तो आत्मा के अनुसार चलें भी। २६ हम घमण्डी होकर न एक दूसरे को छेड़ें, और न एक दूसरे से डाह करें॥

६ हे भाइयो, यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा भी जाए, तो तुम जो आत्मिक हो, नम्रता * के साथ ऐसे को संभालो, और अपनी भी चौकसी रखो, कि तुम भी परीक्षा में न पड़ो। २ तुम एक दूसरे के भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरी करो। ३ क्योंकि यदि कोई कुछ न होने पर भी अपने आप को कुछ समझता है, तो अपने आप को धोखा देता है। ४ पर हर एक अपने ही काम को जांच ले, और तब दूसरे के विषय में नहीं परन्तु अपने ही विषय में उसको घमण्ड करने का अवसर होगा। ५ क्योंकि हर एक व्यक्ति अपना ही बोझ उठाएगा॥

६ जो वचन की शिक्षा पाता है, वह सब अच्छी वस्तुओं में सिखानेवाले को भागी करे। ७ धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा। ८ क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा। ९ हम भले काम करने में हियाव न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न हों, तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे। १० इसलिये जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें; विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ॥

११ देखो, मैं ने कैसे बड़े बड़े अक्षरों में तुम को अपने हाथ से लिखा है। १२ जितने लोग शारीरिक दिखाव चाहते हैं वे तुम्हारे खतना करवाने के लिये दबाव देते हैं, केवल इसलिये कि वे मसीह के क्रूस के कारण सताए न जाएं। १३ क्योंकि खतना करानेवाले आप तो, व्यवस्था पर नहीं चलते, पर तुम्हारा खतना कराना इसलिये चाहते हैं, कि तुम्हारी शारीरिक दशा पर घमण्ड करें। १४ पर ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमण्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का जिस के द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं। १५ क्योंकि न खतना, और न खतना-रहित कुछ है, परन्तु नई सृष्टि। १६ और जितने इस नियम पर चलेंगे उन पर, और परमेश्वर के इस्राएल पर, शान्ति और दया होती रहे॥

* यू० नम्रता की आत्मा।

१७ आगे को कोई मुझे दुख न दे, क्योंकि मैं यीशु के दागों को अपनी देह में लिए फिरता हूं॥

१८ हे भाइयो, हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ रहे। आमीन॥

इफिसियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

१ पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित है, उन पवित्र और मसीह यीशु में विश्वासी लोगों के नाम जो इफिसुस में हैं॥

२ हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे॥

३ हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उस ने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष* दी है। ४ जैसा उस ने हमें जगत की उत्पत्ति से पहिले उस में चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। ५ और अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिये पहिले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों, ६ कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उस ने हमें उस प्यारे में सेंत मेंत दिया। ७ हम को उस में उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है। ८ जिसे उस ने सारे ज्ञान और समझ सहित हम पर बहुतायत से किया। ९ कि उस ने अपनी इच्छा का भेद उस सुमति के अनुसार हमें बताया जिसे उस ने अपने आप में ठान लिया था। १० कि समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है, और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे। ११ उसी में जिस में हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहिले से ठहराए जाकर मीरास बने। १२ कि हम जिन्हों ने पहिले से मसीह पर आशा रखी थी, उस की महिमा की स्तुति के कारण हों। १३ और उसी में तुम पर भी जब तुम ने सत्य का वचन सुना, जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है, और जिस पर तुम ने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी। १४ वह उसके मोल लिए हुओं के छुटकारे के लिये हमारी मीरास का बयाना है, कि उस की महिमा की स्तुति हो॥

१५ इस कारण, मैं भी उस विश्वास का समाचार सुनकर जो तुम लोगों में प्रभु यीशु पर है और* सब पवित्र लोगों

* यू॰ आशीष से आशीष।

* या तुम्हारा प्रेम जो सब पवित्र लोगों से है।

पर प्रगट है। १६ तुम्हारे लिये धन्यवाद करना नहीं छोड़ता, और अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण किया करता हूं। १७ कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो महिमा का पिता है, तुम्हें अपनी पहचान मे, ज्ञान और प्रकाश की आत्मा दे। १८ और तुम्हारे मन की आंखें ज्योतिर्मय हों कि तुम जान लो कि उसके बुलाने से कैसी आशा होती है, और पवित्र लोगों में उस की मीरास की महिमा का धन कैसा है। १९ और उस की सामर्थ हमारी ओर जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है, उस की शक्ति के प्रभाव के उस कार्य्य के अनुसार। २० जो उस ने मसीह के विषय में किया, कि उस को मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दहिनी ओर। २१ सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ, और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में, पर आनेवाले लोक में भी लिया जाएगा, बैठाया। २२ और सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया: और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया। २३ यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है॥

२ और उस ने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे। २ जिन में तुम पहिले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य्य करता है। ३ इन में हम भी सब के सब पहिले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, और शरीर, और मन की मनसाएं पूरी करते थे, और और लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे। ४ परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है; अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिस से उस ने हम से प्रेम किया। ५ जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया; (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है)। ६ और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया। ७ कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है, आनेवाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए। ८ क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, बरन परमेश्वर का दान है। ९ और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे। १० क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिये तैयार किया॥

११ इस कारण स्मरण करो, कि तुम जो शारीरिक रीति से अन्यजाति हो, (और जो लोग शरीर में हाथ के किए हुए खतने से खतनावाले कहलाते हैं, वे तुम को खतनारहित कहते हैं)। १२ तुम लोग उस समय मसीह से अलग और इस्राएल की प्रजा के पद से अलग किए हुए, और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे, और आशाहीन और जगत में ईश्वररहित थे। १३ पर अब तो मसीह यीशु में तुम जो पहिले दूर थे, मसीह के लोहू के द्वारा निकट हो गए हो।

१४ क्योंकि वही हमारा मेल है, जिस ने दोनों को एक कर लिया: और अलग करनेवाली दीवार को जो बीच में थी, ढा दिया। १५ और अपने शरीर में बैर अर्थात् वह व्यवस्था जिस की आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया, कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे। १६ और क्रूस पर बैर को नाश करके इस के द्वारा दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिलाए। १७ और उस ने आकर तुम्हें जो दूर थे, और उन्हें जो निकट थे, दोनों को मेल-मिलाप का सुसमाचार सुनाया। १८ क्योंकि उस ही के द्वारा हम दोनों की एक आत्मा में पिता के पास पहुंच होती है। १९ इसलिये तुम अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए। २० और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नेव पर जिस के कोने का पत्थर मसीह यीशु आप ही है, बनाए गए हो। २१ जिस में सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है। २२ जिस में तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवासस्थान होने के लिये एक साथ बनाए जाते हो॥

३ इसी कारण मैं पौलुस जो तुम अन्यजातियों के लिये मसीह यीशु का बन्धुआ हूं—२ यदि तुम ने परमेश्वर के उस अनुग्रह के प्रबन्ध का समाचार सुना हो, जो तुम्हारे लिये मुझे दिया गया। ३ अर्थात् यह, कि वह भेद मुझ पर प्रकाश के द्वारा प्रगट हुआ, जैसा मैं पहिले संक्षेप में लिख चुका हूं। ४ जिस से तुम पढ़कर जान सकते हो, कि मैं मसीह का वह भेद कहां तक समझता हूं। ५ जो और और समयों में मनुष्यों की सन्तानों को ऐसा नहीं बताया गया था, जैसा कि आत्मा के द्वारा अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट किया गया है। ६ अर्थात् यह, कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा अन्यजातीय लोग मीरास में साझी, और एक ही देह के और प्रतिज्ञा के भागी हैं। ७ और मैं परमेश्वर के अनुग्रह के उस दान के अनुसार, जो उसकी सामर्थ के प्रभाव के अनुसार मुझे दिया गया, उस सुसमाचार का सेवक बना। ८ मुझ पर जो सब पवित्र लोगों में से छोटे से भी छोटा हूं, यह अनुग्रह हुआ, कि मैं अन्यजातियों को मसीह के अगम्य धन का सुसमाचार सुनाऊं। ९ और सब पर यह बात प्रकाशित करूं, कि उस भेद का प्रबन्ध क्या है, जो सब के सृजनहार परमेश्वर में आदि से गुप्त था। १० ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानों और अधिकारियों पर, जो स्वर्गीय स्थानों में हैं प्रगट किया जाए। ११ उस सनातन मनसा के अनुसार, जो उस ने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी। १२ जिस में हम को उस पर विश्वास रखने से हियाव और भरोसे से निकट आने का अधिकार है। १३ इसलिये मैं बिनती करता हूं कि जो क्लेश तुम्हारे लिये मुझे हो रहे हैं, उनके कारण हियाव न छोड़ो, क्योंकि उन में तुम्हारी महिमा है॥

१४ मैं इसी कारण उस पिता के साम्हने घुटने टेकता हूं, १५ जिस से स्वर्ग

और पृथ्वी पर, हर एक * घराने का नाम रखा जाता है। १६ कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे, कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवन्त होते जाओ। १७ और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड़ पकड़कर और नेव डाल कर। १८ सब पवित्र लोगों के साथ भली भांति समझने की शक्ति पाओ; कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊंचाई, और गहराई कितनी है। १९ और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है, कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ॥

२० अब जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य्य करता है, २१ कलीसिया में, और मसीह यीशु में, उस की महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन॥

4 सो मैं जो प्रभु में बन्धुआ हूं तुम से बिनती करता हूं, कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो। २ अर्थात् सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो। ३ और मेल के बन्ध में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो। ४ एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है। ५ एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा। ६ और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर, और सब के मध्य में, और सब में है। ७ पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण से अनुग्रह मिला है। ८ इसलिये वह कहता है, कि वह ऊंचे पर चढ़ा, और बन्धुवाई को बान्ध ले गया, और मनुष्यों को दान दिए। ९ (उसके चढ़ने से, और क्या पाया जाता है केवल यह, कि वह पृथ्वी की निचली जगहों में उतरा भी था। १० और जो उतर गया यह वही है जो सारे आकाश से ऊपर चढ़ भी गया, कि सब कुछ परिपूर्ण करे)। ११ और उस ने कितनों को प्रेरित नियुक्त करके, और कितनों को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया। १२ जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं, और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए। १३ जब तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाएं, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएं। १४ ताकि हम आगे को बालक न रहें, जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई से उन के भ्रम की युक्तियों की, और उपदेश की, हर एक बयार से उछाले, और इधर-उधर घुमाए जाते हों। १५ बरन प्रेम में सच्चाई से चलते हुए, सब बातों में उस में जो सिर है, अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएं। १६ जिस से सारी देह हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर, और एक साथ गठकर उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक भाग के परिमाण से उस में होता है, अपने आप को

* या सारे।

बढ़ाती है, कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए ।।

१७ इसलिये मैं यह कहता हूं, और प्रभु में जताए देता हूं कि जैसे अन्यजातीय लोग अपने मन की अनर्थ रीति पर चलते हैं, तुम अब से फिर ऐसे न चलो। १८ क्योंकि उनकी बुद्धि अन्धेरी हो गई है और उस अज्ञानता के कारण जो उन में है और उनके मन की कठोरता के कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग किए हुए हैं। १९ और वे सुन्न होकर, लुचपन में लग गए हैं, कि सब प्रकार के गन्दे काम लालसा से किया करें। २० पर तुम ने मसीह की ऐसी शिक्षा नहीं पाई। २१ बरन तुम ने सचमुच उसी की सुनी, और जैसा यीशु में सत्य है, उसी में सिखाए भी गए। २२ कि तुम अगले चालचलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमानेवाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो। २३ और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ। २४ और नये मनुष्यत्व को पहिन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्मिकता, और पवित्रता में सृजा गया है ।।

२५ इस कारण झूठ बोलना छोड़कर हर एक अपने पड़ोसी से सच बोले, क्योंकि हम आपस में एक दूसरे के अंग हैं। २६ क्रोध तो करो, पर पाप मत करो: सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे। २७ और न शैतान * को अवसर दो। २८ चोरी करनेवाला फिर चोरी न करे; बरन भले काम करने में अपने हाथों से परिश्रम करे; इसलिये कि जिसे प्रयोजन हो, उसे देने को उसके पास कुछ हो। २९ कोई गन्दी बात तुम्हारे मुंह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही जो उन्नति के लिये उत्तम हो, ताकि उस से सुननेवालों पर अनुग्रह हो। ३० और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिस से * तुम पर छुटकारे के दिन के लिये छाप दी गई है। ३१ सब प्रकार की कड़वाहट और प्रकोप और क्रोध, और कलह, और निन्दा सब बैरभाव समेत तुम से दूर की जाए। ३२ और एक दूसरे पर कृपाल, और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो ।।

५ इसलिये प्रिय, बालको की नाईं परमेश्वर के सदृश्य बनो। २ और प्रेम में चलो; जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया; और हमारे लिये अपने आप को सुखदायक सुगन्ध के लिये परमेश्वर के आगे भेंट करके बलिदान कर दिया। ३ और जैसा पवित्र लोगों के योग्य है, वैसा तुम में व्यभिचार, और किसी प्रकार अशुद्ध काम, या लोभ की चर्चा तक न हो। ४ और न निर्लज्जता, न मूढ़ता की बातचीत की, न ठट्ठे की, क्योंकि ये बातें सोहती नहीं, बरन धन्यवाद ही सुना जाए। ५ क्योंकि तुम यह जानते हो, कि किसी व्यभिचारी, या अशुद्ध जन, या लोभी मनुष्य की, जो मूरत पूजनेवाले के बराबर है, मसीह और परमेश्वर के राज्य में मीरास नहीं। ६ कोई तुम्हें व्यर्थ बातों से धोखा न दे; क्योंकि इन ही कामों के कारण परमेश्वर का क्रोध आज्ञा न माननेवालों पर भड़कता है। ७ इसलिये

* यू० इब्लीस।

* यू० में।

तुम उन के सहभागी न हो। ८ क्योंकि तुम तो पहले अन्धकार थे परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, सो ज्योति की सन्तान की नाईं चलो। ९ (क्योंकि ज्योति * का फल सब प्रकार की भलाई, और धार्मिकता, और सत्य है)। १० और यह परखो, कि प्रभु को क्या भाता है? ११ और अन्धकार के निष्फल कामों में सहभागी न हो, वरन उन पर उलाहना दो। १२ क्योंकि उन के गुप्त कामों की चर्चा भी लाज की बात है। १३ पर जितने कामों पर उलाहना दिया जाता है वे सब ज्योति से प्रगट होते हैं, क्योंकि जो सब कुछ को प्रगट करता है, वह ज्योति है। १४ इस कारण वह कहता है, हे सोनेवाले जाग और मुर्दों में से जी उठ; तो मसीह की ज्योति तुझ पर चमकेगी॥

१५ इसलिये ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो; निर्बुद्धियों की नाईं नहीं पर बुद्धिमानों की नाईं चलो। १६ और अवसर को बहुमोल समझो, क्योंकि दिन बुरे हैं। १७ इस कारण निर्बुद्धि न हो, पर ध्यान से समझो, कि प्रभु की इच्छा क्या है? १८ और दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि इस से लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ। १९ और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने अपने मन में प्रभु के साम्हने गाते और कीर्त्तन करते रहो। २० और सदा सब बातों के लिये हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो। २१ और मसीह के भय से एक दूसरे के आधीन रहो॥

* किसी किसी लेख में 'आत्मा' शब्द आया है।

२२ हे पत्नियो, अपने अपने पति के ऐसे आधीन रहो, जैसे प्रभु के। २३ क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्त्ता है। २४ पर जैसे कलीसिया मसीह के आधीन है, वैसे ही पत्नियां भी हर बात में अपने अपने पति के आधीन रहें। २५ हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिये दे दिया। २६ कि उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध कर के पवित्र बनाए। २७ और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिस में न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो, वरन पवित्र और निर्दोष हो। २८ इसी प्रकार उचित है, कि पति अपनी अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखे, जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, वह अपने आप से प्रेम रखता है। २९ क्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं रखा वरन उसका पालन-पोषण करता है, जैसा मसीह भी कलीसिया के साथ करता है। ३० इसलिये कि हम उस की देह के अंग हैं। ३१ इस कारण मनुष्य माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे। ३२ यह भेद तो बड़ा है; पर मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूं। ३३ पर तुम में से हर एक अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम रखे, और पत्नी भी अपने पति का भय माने॥

६ हे बालको, प्रभु में अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो, क्योंकि यह उचित है। २ अपनी माता और पिता

का आदर कर (यह पहिली आज्ञा है, जिस के साथ प्रतिज्ञा भी है)। ३ कि तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे। ४ और हे बच्चेवालो अपने बच्चों को रिस न दिलाओ परन्तु प्रभु की शिक्षा, और चितावनी देते हुए, उन का पालन-पोषण करो ॥

५ हे दासो, जो लोग शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, अपने मन की सीधाई से डरते, और कांपते हुए, जैसे मसीह की, वैसे ही उन की भी आज्ञा मानो। ६ और मनुष्यों को प्रसन्न करनेवालों की नाईं दिखाने के लिये सेवा न करो, पर मसीह के दासों की नाईं मन से परमेश्वर की इच्छा पर चलो। ७ और उस सेवा को मनुष्यों की नहीं, परन्तु प्रभु की जानकर सुइच्छा से करो। ८ क्योंकि तुम जानते हो, कि जो कोई जैसा अच्छा काम करेगा, चाहे दास हो, चाहे स्वतंत्र; प्रभु से वैसा ही पाएगा। ९ और हे स्वामियो, तुम भी धमकियां छोड़कर उन के साथ वैसा ही व्यवहार करो, क्योंकि जानते हो, कि उन का और तुम्हारा दोनों का स्वामी स्वर्ग में है, और वह किसी का पक्ष नहीं करता ॥

१० निदान, प्रभु में और उस की शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो। ११ परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो; कि तुम शैतान * की युक्तियों के साम्हने खड़े रह सको। १२ क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं। १३ इसलिये परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो, कि तुम बुरे दिन में साम्हना कर सको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको। १४ सो सत्य से अपनी कमर कसकर, और धार्मिकता की झिलम पहिन कर। १५ और पांवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहिन कर। १६ और उन सब के साथ विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो जिस से तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको। १७ और उद्धार का टोप, और आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, ले लो। १८ और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और बिनती करते रहो, और इसी लिये जागते रहो, कि सब पवित्र लोगों के लिये लगातार बिनती किया करो। १९ और मेरे लिये भी, कि मुझे बोलने के समय ऐसा प्रबल वचन दिया जाए, कि मैं हियाव से सुसमाचार का भेद बता सकूं जिस के लिये मैं जंजीर से जकड़ा हुआ राजदूत हूं। २० और यह भी कि मैं उस के विषय में जैसा मुझे चाहिए हियाव से बोलूं ॥

२१ और तुखिकुस जो प्रिय भाई और प्रभु में विश्वासयोग्य सेवक है तुम्हें सब बातें बताएगा, कि तुम भी मेरी दशा जानो कि मैं कैसा रहता हूं। २२ उसे मैं ने तुम्हारे पास इसी लिये भेजा है, कि तुम हमारी दशा को जानो, और वह तुम्हारे मनों को शान्ति दे ॥

२३ परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह की ओर से भाइयों को शान्ति और विश्वास सहित प्रेम मिले। २४ जो हमारे प्रभु यीशु मसीह से सच्चा प्रेम रखते हैं, उन सब पर अनुग्रह होता रहे ॥

* यू० इबलीस।

फिलिप्पियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

१ मसीह यीशु के दास पौलुस और तीमुथियुस की ओर से सब पवित्र लोगों के नाम, जो मसीह यीशु में होकर फिलिप्पी में रहते हैं, अध्यक्षों * और सेवकों † समेत। २ हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे॥

३ मैं जब जब तुम्हें स्मरण करता हूं, तब तब अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं। ४ और जब कभी तुम सब के लिये बिनती करता हूं, तो सदा आनन्द के साथ बिनती करता हूं। ५ इसलिये, कि तुम पहिले दिन से लेकर आज तक सुसमाचार के फैलाने में मेरे सहभागी रहे हो। ६ और मुझे इस बात का भरोसा है, कि जिस ने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा। ७ उचित है, कि मैं तुम सब के लिये ऐसा ही विचार करूं क्योंकि तुम मेरे मन में आ बसे हो, और मेरी कैद में और सुसमाचार के लिये उत्तर और प्रमाण देने में तुम सब मेरे साथ अनुग्रह में सहभागी हो। ८ इस में परमेश्वर मेरा गवाह है, कि मैं मसीह यीशु की सी प्रीति करके तुम सब की लालसा करता हूं। ९ और मैं यह प्रार्थना करता हूं, कि तुम्हारा प्रेम, ज्ञान और सब प्रकार के विवेक सहित और भी बढ़ता जाए। १० यहां तक कि तुम उत्तम से उत्तम बातों को प्रिय जानो, और मसीह के दिन तक सच्चे बने रहो; और ठोकर न खाओ। ११ और उस धार्मिकता के फल से जो यीशु मसीह के द्वारा होते हैं, भरपूर होते जाओ जिस से परमेश्वर की महिमा और स्तुति होती रहे॥

१२ हे भाइयो, मैं चाहता हूं, कि तुम यह जान लो, कि मुझ पर जो बीता है, उस से सुसमाचार ही की बढ़ती हुई है। १३ यहां तक कि कैसरी राज्य की सारी पलटन और शेष सब लोगों में यह प्रगट हो गया है कि मैं मसीह के लिये कैद हूं। १४ और प्रभु में जो भाई हैं, उन में से बहुधा मेरे कैद होने के कारण, हियाव बान्ध कर, परमेश्वर का वचन निधड़क सुनाने का और भी हियाव करते हैं। १५ कितने तो डाह और झगड़े के कारण मसीह का प्रचार करते हैं और कितने भली मनसा से। १६ कई एक तो यह जान कर कि मैं सुसमाचार के लिये उत्तर देने को ठहराया गया हूं प्रेम से प्रचार करते हैं। १७ और कई एक तो सीधाई से नहीं पर विरोध से मसीह की कथा सुनाते हैं, यह समझ कर कि मेरी कैद में मेरे लिये क्लेश उत्पन्न करें। १८ सो क्या हुआ? केवल यह, कि हर प्रकार से चाहे बहाने से, चाहे सच्चाई से, मसीह की कथा सुनाई जाती है, और मैं इस से आनन्दित हूं, और आनन्दित रहूंगा भी। १९ क्योंकि मैं जानता हूं, कि तुम्हारी बिनती के द्वारा, और यीशु मसीह की आत्मा के दान के

---

* या बिशपों।

† या डीकनों।

द्वारा, इस का प्रतिफल मेरा उद्धार होगा। २० मैं तो यही हार्दिक लालसा और आशा रखता हूं, कि मैं किसी बात में लज्जित न होऊं, पर जैसे मेरे प्रबल साहस के कारण मसीह की बड़ाई मेरी देह के द्वारा सदा होती रही है, वैसा ही अब भी हो चाहे म जीवित रहूं वा मर जाऊं। २१ क्योंकि मेरे लिये जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है। २२ पर यदि शरीर में जीवित रहना ही मेरे काम के लिये लाभदायक है तो मैं नहीं जानता, कि किस को चुनूं। २३ क्योंकि मैं दोनों के बीच अधर में लटका हूं; जी तो चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जा रहूं, क्योंकि यह बहुत ही अच्छा है। २४ परन्तु शरीर में रहना तुम्हारे कारण और भी आवश्यक है। २५ और इसलिये कि मुझे इस का भरोसा है सो मैं जानता हूं कि मैं जीवित रहूंगा, बरन तुम सब के साथ रहूंगा जिस से तुम विश्वास में दृढ़ होते जाओ और उस में आनन्दित रहो। २६ और जो घमण्ड तुम मेरे विषय में करते हो, वह मेरे फिर तुम्हारे पास आने से मसीह यीशु में अधिक बढ़ जाए। २७ केवल इतना करो कि तुम्हारा चाल-चलन मसीह के सुसमाचार के योग्य हो कि चाहे मैं आकर तुम्हें देखूं, चाहे न भी आऊं, तुम्हारे विषय में यह सुनूं, कि तुम एक ही आत्मा में स्थिर हो, और एक चित्त होकर सुसमाचार के विश्वास के लिये परिश्रम करते रहते हो। २८ और किसी बात में विरोधियों से भय नहीं खाते? यह उन के लिये विनाश का स्पष्ट चिन्ह है, परन्तु तुम्हारे लिये उद्धार का, और यह परमेश्वर की ओर से है। २९ क्योंकि मसीह के कारण तुम पर यह अनुग्रह हुआ, कि न केवल उस पर विश्वास करो पर उसके लिये दुख भी उठाओ। ३० और तुम्हें वैसा ही परिश्रम करना है, जैसा तुम ने मुझे करते देखा है, और अब भी सुनते हो, कि मैं वैसा ही करता हूं॥

२ सो यदि मसीह में कुछ शान्ति, और प्रेम से ढाढ़स और आत्मा की सहभागिता, और कुछ करुणा और दया है। २ तो मेरा यह आनन्द पूरा करो कि एक मन रहो और एक ही प्रेम, एक ही चित्त, और एक ही मनसा रखो। ३ विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करो पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। ४ हर एक अपनी ही हित की नहीं, बरन दूसरों की हित की भी चिन्ता करे। ५ जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। ६ जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। ७ बरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। ८ और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली। ९ इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है। १० कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे हैं; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। ११ और परमेश्वर पिता की महिमा के

लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है ॥

१२ सो हे मेरे प्यारो, जिस प्रकार तुम सदा से आज्ञा मानते आए हो, वैसे ही अब भी न केवल मेरे साथ रहते हुए पर विशेष करके अब मेरे दूर रहने पर भी डरते और कांपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य्य पूरा करते जाओ। १३ क्योंकि परमेश्वर ही है, जिस ने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है। १४ सब काम बिना कुड़कुड़ाए और बिना विवाद के किया करो। १५ ताकि तुम निर्दोष और भोले होकर टेढ़े और हठीले लोगों के बीच परमेश्वर के निष्कलङ्क सन्तान बने रहो, (जिन के बीच में तुम जीवन का वचन लिए हुए जगत में जलते दीपकों की नाईं दिखाई देते हो)। १६ कि मसीह के दिन मुझे घमण्ड करने का कारण हो, कि न मेरा दौड़ना और न मेरा परिश्रम करना व्यर्थ हुआ। १७ और यदि मुझे तुम्हारे विश्वास के बलिदान और सेवा के साथ अपना लोहू भी बहाना पड़े तौभी मैं आनन्दित हूं, और तुम सब के साथ आनन्द करता हूं। १८ वैसे ही तुम भी आनन्दित हो, और मेरे साथ आनन्द करो ॥

१९ मुझे प्रभु यीशु में आशा है, कि मैं तीमुथियुस को तुम्हारे पास तुरन्त भेजूंगा, ताकि तुम्हारी दशा सुनकर मुझे शान्ति मिले। २० क्योंकि मेरे पास ऐसे स्वभाव का कोई नहीं, जो शुद्ध मन से तुम्हारी चिन्ता करे। २१ क्योंकि सब अपने स्वार्थ की खोज में रहते हैं, न कि यीशु मसीह की। २२ पर उसको तो तुम ने परखा और जान भी लिया है, कि जैसा पुत्र पिता के साथ करता है, वैसा ही उस ने सुसमाचार के फैलाने में मेरे साथ परिश्रम किया। २३ सो मुझे आशा है, कि ज्यों ही मुझे जान पड़ेगा कि मेरी क्या दशा होगी, त्यों ही मैं उसे तुरन्त भेज दूंगा। २४ और मुझे प्रभु में भरोसा है, कि मैं आप भी शीघ्र आऊंगा। २५ पर मैं ने इपफ्रुदीतुस को जो मेरा भाई, और सहकर्मी और संगी योद्धा और तुम्हारा दूत, और आवश्यक बातों में मेरी सेवा टहल करनेवाला है, तुम्हारे पास भेजना अवश्य समझा। २६ क्योंकि उसका मन तुम सब में लगा हुआ था, इस कारण वह व्याकुल रहता था क्योंकि तुम ने उस की बीमारी का हाल सुना था। २७ और निश्चय वह बीमार तो हो गया था, यहां तक कि मरने पर था, परन्तु परमेश्वर ने उस पर दया की; और केवल उस ही पर नहीं, पर मुझ पर भी, कि मुझे शोक पर शोक न हो। २८ इसलिये मैं ने उसे भेजने का और भी यत्न किया कि तुम उस से फिर भेंट करके आनन्दित हो जाओ और मेरा भी शोक घट जाए। २९ इसलिये तुम प्रभु में उस से बहुत आनन्द के साथ भेंट करना, और ऐसों का आदर किया करना। ३० क्योंकि वह मसीह के काम के लिये अपने प्राणों पर जोखिम उठाकर मरने के निकट हो गया था, ताकि जो घटी तुम्हारी ओर से मेरी सेवा में हुई, उसे पूरा करे ॥

३ निदान, हे मेरे भाइयो, प्रभु में आनन्दित रहो: वे ही बातें तुम को बार बार लिखने में मुझे तो कुछ कष्ट नहीं होता, और इस में तुम्हारी कुशलता

है। २ कुत्तों से चौकस रहो, उन बुरे काम करनेवालों से चौकस रहो, उन काट कूट करनेवालों से चौकस रहो। ३ क्योंकि खतनावाले तो हम ही हैं जो परमेश्वर के आत्मा की अगुआई से उपासना करते हैं, और मसीह यीशु पर घमण्ड करते हैं, और शरीर पर भरोसा नहीं रखते। ४ पर मैं तो शरीर पर भी भरोसा रख सकता हूं यदि किसी और को शरीर पर भरोसा रखने का विचार हो, तो मैं उस से भी बढ़कर रख सकता हूं। ५ आठवें दिन मेरा खतना हुआ, इस्राएल के वंश, और बिन्यामीन के गोत्र का हूं; इब्रानियों का इब्रानी हूं; व्यवस्था के विषय में यदि कहो तो फरीसी हूं। ६ उत्साह के विषय में यदि कहो तो कलीसिया का सतानेवाला; और व्यवस्था की धार्म्मिकता के विषय में यदि कहो तो निर्दोष था। ७ परन्तु जो जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हीं को मैं ने मसीह के कारण हानि समझ लिया है। ८ बरन मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहिचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूं: जिस के कारण मैं ने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूड़ा समझता हूं, जिस से मैं मसीह को प्राप्त करूं। ९ और उस में पाया जाऊं; न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ, जो व्यवस्था से है, बरन उस धार्मिकता के साथ जो मसीह पर विश्वास करने के कारण है, और परमेश्वर की ओर से विश्वास करने पर मिलती है। १० और मैं उसको और उसके मृत्युञ्जय की सामर्थ को, और उसके साथ दुखों में सहभागी होने के मर्म को जानूं, और उस की मृत्यु की समानता को प्राप्त करूं। ११ ताकि मैं किसी भी रीति से मरे हुओं में से जी उठने के पद तक पहुंचूं। १२ यह मतलब नहीं, कि मैं पा चुका हूं, या सिद्ध हो चुका हूं: पर उस पदार्थ को पकड़ने के लिये दौड़ा चला जाता हूं, जिस के लिये मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था। १३ हे भाइयो, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूं: परन्तु केवल यह एक काम करता हूं, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उन को भूल कर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ। १४ निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इनाम पाऊं, जिस के लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है। १५ सो हम में से जितने सिद्ध हैं, यही विचार रखें, और यदि किसी बात में तुम्हारा और ही विचार हो तो परमेश्वर उसे भी तुम पर प्रगट कर देगा। १६ सो जहां तक हम पहुंचे हैं, उसी के अनुसार चलें॥

१७ हे भाइयो, तुम सब मिलकर मेरी सी चाल चलो, और उन्हें पहिचान रखो, जो इस रीति पर चलते हैं जिस का उदाहरण तुम हम में पाते हो। १८ क्योंकि बहुतेरे ऐसी चाल चलते हैं, जिन की चर्चा मैं ने तुम से बार बार किया है, और अब भी रो रोकर कहता हूं, कि वे अपनी चाल-चलन से मसीह के क्रूस के बैरी हैं। १९ उन का अन्त विनाश है, उन का ईश्वर पेट है, वे अपनी लज्जा की बातों पर घमण्ड करते हैं, और पृथ्वी की वस्तुओं पर मन लगाए रहते हैं। २० पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है; और हम एक उद्धार-कर्त्ता प्रभु यीशु मसीह के वहां से आन की बाट जोह रहे हैं। २१ वह अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिस के द्वारा वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है, हमारी दीन-हीन देह का

रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा ॥

४ इसलिये हे मेरे प्रिय भाइयो, जिन में मेरा जी लगा रहता है जो मेरे आनन्द और मुकुट हो, हे प्रिय भाइयो, प्रभु में इसी प्रकार स्थिर रहो ॥

२ मैं यूओदिया को भी समझाता हूं, और सुन्तुखे को भी, कि वे प्रभु में एक मन रहें। ३ और हे सच्चे सहकर्मी मैं तुझ से भी बिनती करता हूं, कि तू उन स्त्रियों की सहायता कर, क्योंकि उन्हों ने मेरे साथ सुसमाचार फैलाने में, क्लेमेंस और मेरे उन और सहकर्मियों समेत परिश्रम किया, जिन के नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हुए हैं ॥

४ प्रभु में सदा आनन्दित रहो; मैं फिर कहता हूं, आनन्दित रहो। ५ तुम्हारी कोमलता सब मनुष्यों पर प्रगट हो: प्रभु निकट है। ६ किसी भी बात की चिन्ता मत करो: परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं। ७ तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ से बिलकुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी ॥

८ निदान, हे भाइयो, जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरनीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी * हैं, निदान, जो जो सद्गुण और प्रशंसा की बातें हैं उन्हीं पर ध्यान लगाया करो। ९ जो बातें तुम ने मुझ से सीखीं, और ग्रहण कीं, और सुनीं, और मुझ में देखीं, उन्हीं का पालन किया करो, तब परमेश्वर जो शान्ति का सोता है तुम्हारे साथ रहेगा ॥

१० मैं प्रभु में बहुत आनन्दित हूं कि अब इतने दिनों के बाद तुम्हारा विचार मेरे विषय में फिर जागृत हुआ है; निश्चय तुम्हें आरम्भ में भी इस का विचार था, पर तुम्हें अवसर न मिला। ११ यह नहीं कि मैं अपनी घटी के कारण यह कहता हूं; क्योंकि मैं ने यह सीखा है कि जिस दशा में हूं, उसी में सन्तोष करूं। १२ मैं दीन होना भी जानता हूं और बढ़ना भी जानता हूं: हर एक बात और सब दशाओं में मैं ने तृप्त होना, भूखा रहना, और बढ़ना-घटना सीखा है। १३ जो मुझे सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं। १४ तौभी तुम ने भला किया, कि मेरे क्लेश में मेरे सहभागी हुए। १५ और हे फिलिप्पियो, तुम आप भी जानते हो, कि सुसमाचार प्रचार के आरम्भ में जब मैं ने मकिदुनिया से कूच किया तब तुम्हें छोड़ और किसी मण्डली ने लेने देने के विषय में मेरी सहायता नहीं की। १६ इसी प्रकार जब मैं थिस्सलुनीके में था; तब भी तुम ने मेरी घटी पूरी करने के लिये एक बार क्या बरन दो बार कुछ भेजा था। १७ यह नहीं कि मैं दान चाहता हूं परन्तु मैं ऐसा फल चाहता हूं, जो तुम्हारे लाभ के लिये बढ़ता जाए। १८ मेरे पास सब कुछ है, बरन बहुतायत से भी है: जो वस्तुएं तुम ने इपफ्रुदीतुस के हाथ से भेजी थीं उन्हें पाकर मैं तृप्त हो गया हूं, वह तो सुगन्ध और ग्रहण करने के योग्य बलिदान है, जो परमेश्वर को भाता है। १९ और मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार

* या सुख्यात।

जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा। २० हमारे परमेश्वर और पिता की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन ॥

२१ हर एक पवित्र जन को जो यीशु मसीह में है नमस्कार कहो। जो भाई मेरे साथ हैं, तुम्हें नमस्कार कहते हैं। २२ सब पवित्र लोग, विशेष करके जो कैसर के घराने के हैं तुम को नमस्कार कहते हैं ॥

२३ हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ रहे ॥

कुलुस्सियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

१ पौलुस की ओर से, जो परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है, और भाई तीमुथियुस की ओर से। २ मसीह में उन पवित्र और विश्वासी भाइयों के नाम जो कुलुस्से में रहते हैं ॥

हमारे पिता परमेश्वर की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति प्राप्त होती रहे ॥

३ हम तुम्हारे लिये नित प्रार्थना करके अपने प्रभु यीशु मसीह के पिता अर्थात् परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं। ४ क्योंकि हम ने सुना है, कि मसीह यीशु पर तुम्हारा विश्वास है, और सब पवित्र लोगों से प्रेम रखते हो। ५ उस आशा की हुई वस्तु के कारण जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में रखी हुई है, जिस का वर्णन तुम उस सुसमाचार के सत्य वचन में सुन चुके हो। ६ जो तुम्हारे पास पहुंचा है और जैसा जगत में भी फल लाता, और बढ़ता जाता है; अर्थात् जिस दिन से तुम ने उस को सुना, और सच्चाई से परमेश्वर का अनुग्रह पहिचाना है, तुम में भी ऐसा ही करता है। ७ उसी की शिक्षा तुम ने हमारे प्रिय सहकर्मी इपफ्रास से पाई, जो हमारे लिये मसीह का विश्वासयोग्य सेवक है। ८ उसी ने तुम्हारे प्रेम को जो आत्मा में है हम पर प्रगट किया ॥

९ इसी लिये जिस दिन से यह सुना है, हम भी तुम्हारे लिये यह प्रार्थना करने और बिनती करने से नहीं चूकते कि तुम सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहिचान में परिपूर्ण हो जाओ। १० ताकि तुम्हारा चाल-चलन प्रभु के योग्य हो, और वह सब प्रकार से प्रसन्न हो, और तुम में हर प्रकार के भले कामों का फल लगे, और परमेश्वर की पहिचान में बढ़ते जाओ। ११ और उस की महिमा की शक्ति के अनुसार सब प्रकार की सामर्थ से बलवन्त होते जाओ, यहां तक कि आनन्द के साथ हर प्रकार से धीरज और सहनशीलता दिखा सको। १२ और पिता का धन्यवाद करते रहो, जिस ने हमें इस योग्य बनाया कि ज्योति में पवित्र लोगों के साथ मीरास में समभागी हों। १३ उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया। १४ जिस में हमें छुटकारा

अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है। १५ वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है। १६ क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं। १७ और वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं। १८ और वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे। १९ क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है कि उस में सारी परिपूर्णता वास करे। २० और उसके क्रूस पर बहे हुए लोहू के द्वारा मेल मिलाप करके, सब वस्तुओं का उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर ले चाहे वे पृथ्वी पर की हों, चाहे स्वर्ग में की। २१ और उस ने अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा भी मेल कर लिया जो पहिले निकाले हुए थे और बुरे कामों के कारण मन से बैरी थे। २२ ताकि तुम्हें अपने सम्मुख पवित्र और निष्कलक, और निर्दोष बनाकर उपस्थित करे। २३ यदि तुम विश्वास की नेव पर दृढ़ बने रहो, और उस सुसमाचार की आशा को जिसे तुम ने सुना है न छोड़ो, जिस का प्रचार आकाश के नीचे की सारी सृष्टि में किया गया; और जिस का मैं पौलुस सेवक बना ॥

२४ अब म उन दुखा के कारण आनन्द करता हूं, जो तुम्हारे लिये उठाता हू, और मसीह के क्लेशों की घटी उस की देह के लिये, अर्थात् कलीसिया के लिये, अपने शरीर में पूरी किए देता हूं। २५ जिस का मैं परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार सेवक बना, जो तुम्हारे लिये मुझे सौंपा गया, ताकि मैं परमेश्वर के वचन को पूरा पूरा प्रचार करूं। २६ अर्थात् उस भेद को जो समयों और पीढ़ियों से गुप्त रहा, परन्तु अब उसके उन पवित्र लोगों पर प्रगट हुआ है। २७ जिन पर परमेश्वर ने प्रगट करना चाहा, कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है? और वह यह है, कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है। २८ जिस का प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को जता देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें। २९ और इसी के लिये मैं उस की उस शक्ति के अनुसार जो मुझ में सामर्थ के साथ प्रभाव डालती है तन मन लगाकर परिश्रम भी करता हूं।

२ मैं चाहता हूं कि तुम जान लो, कि तुम्हारे और उन के जो लौदीकिया में हैं, और उन सब के लिये जिन्हों ने मेरा शारीरिक मुंह नहीं देखा मैं कैसा परिश्रम करता हूं। २ ताकि उन के मनों में शान्ति हो और वे प्रेम से आपस में गठे रहें, और वे पूरी समझ का सारा धन प्राप्त करें, और परमेश्वर पिता के भेद को अर्थात् मसीह को पहचान लें। ३ जिस में बुद्धि और ज्ञान से सारे भण्डार * छिपे हुए हैं। ४ यह मैं इसलिये कहता हूं, कि कोई मनुष्य तुम्हें लुभानेवाली बातों से धोखा न दे।

* या धन।

५ क्योंकि मैं यदि शरीर के भाव से तुम से दूर हूं, तौभी आत्मिक भाव से तुम्हारे निकट हूं, और तुम्हारे विधि-अनुसार चरित्र और तुम्हारे विश्वास की जो मसीह में है दृढ़ता देखकर प्रसन्न होता हूं ॥

६ सो जैसे तुम ने मसीह यीशु को प्रभु करके ग्रहण कर लिया है, वैसे ही उसी में चलते रहो। ७ और उसी में जड़ पकड़ते और बढ़ते जाओ; और जैसे तुम सिखाए गए वैसे ही विश्वास में दृढ़ होते जाओ, और अत्यन्त धन्यवाद करते रहो ॥

८ चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्व-ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अहेर * न कर ले, जो मनुष्यों के परम्पराई मत और संसार की आदि शिक्षा के अनुसार है, पर मसीह के अनुसार नहीं। ९ क्योंकि उस में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है। १० और तुम उसी में भरपूर हो गए हो जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है। ११ उसी में तुम्हारा ऐसा खतना हुआ है, जो हाथ से नहीं होता, अर्थात् मसीह का खतना, जिस से शारीरिक देह उतार दी जाती है। १२ और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिस ने उस को मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे। १३ और उस ने तुम्हें भी, जो अपने अपराधों, और अपने शरीर की खतनारहित दशा में मुर्दा थे, उसके साथ जिलाया, और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया। १४ और विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर, और हमारे विरोध में था मिटा डाला; और उस को क्रूस पर कीलों से जड़कर साम्हने से हटा दिया है। १५ और उस ने प्रधानताओं और अधिकारों को अपने ऊपर से उतार कर उन का खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के कारण उन पर जय-जय-कार की ध्वनि सुनाई ॥

१६ इसलिये खाने पीने या पर्ब्ब या नए चान्द, या सब्तों के विषय में तुम्हारा कोई फैसला न करे। १७ क्योंकि ये सब आनेवाली बातों की छाया हैं, पर मूल * वस्तुएं मसीह की हैं। १८ कोई मनुष्य दीनता और स्वर्गदूतों की पूजा करके तुम्हें दौड़ के प्रतिफल से वंचित न करे। ऐसा मनुष्य देखी हुई बातों में लगा रहता है और अपनी शारीरिक समझ पर व्यर्थ फूलता है। १९ और उस शिरोमणि को पकड़े नहीं रहता जिस से सारी देह जोड़ों और पट्ठों के द्वारा पालन-पोषण पाकर और एक साथ गठकर, परमेश्वर की ओर से बढ़ती जाती है ॥

२० जब कि तुम मसीह के साथ संसार की आदि शिक्षा की ओर से मर गए हो, तो फिर उन के समान जो संसार में जीवन बिताते हैं मनुष्यों की आज्ञाओं और शिक्षानुसार २१ और ऐसी विधियों के वश में क्यों रहते हो? कि यह न छूना, उसे न चखना, और उसे हाथ न लगाना। २२ (क्योंकि ये सब वस्तु काम में लाते लाते नाश हो जाएंगी)। २३ इन विधियों में अपनी इच्छा के अनुसार गढ़ी हुई भक्ति की रीति, और दीनता, और शारीरिक योगाभ्यास के भाव से ज्ञान का नाम तो है, परन्तु शारीरिक लालसाओं के रोकने में इन से कुछ भी लाभ नहीं होता ॥

* वा लूट न लें।

* यू० देह।

३ सो जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दहिनी ओर बैठा है। २ पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ। ३ क्योंकि तुम तो मर गए, और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। ४ जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किए जाओगे॥

५ इसलिये अपने उन अंगों को मार डालो, जो पृथ्वी पर हैं, अर्थात् व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा और लोभ को जो मूर्त्ति पूजा के बराबर है *। ६ इन ही के कारण परमेश्वर का प्रकोप आज्ञा न माननेवालों पर पड़ता है। ७ और तुम भी, जब इन बुराइयों में जीवन बिताते थे, तो इन्हीं के अनुसार चलते थे। ८ पर अब तुम भी इन सब को अर्थात् क्रोध, रोष, बैरभाव, निन्दा और मुंह से गालियां बकना ये सब बातें छोड़ दो। ९ एक दूसरे से झूठ मत बोलो क्योंकि तुम ने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है। १० और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिये नया बनता जाता है। ११ उस में न तो यूनानी रहा, न यहूदी, न खतना, न खतनारहित, न जङ्गली, न स्कूती, न दास और न स्वतंत्र: केवल मसीह सब कुछ और सब में है॥

१२ इसलिये परमेश्वर के चुने हुओं की नाईं जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी करुणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण करो। १३ और यदि किसी को किसी पर दोष देने का कोई कारण हो, तो एक दूसरे की सह लो, और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो: जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो। १४ और इन सब के ऊपर प्रेम को जो सिद्धता का कटिबन्ध है बान्ध लो। १५ और मसीह की शान्ति जिस के लिये तुम एक देह होकर बुलाए भी गए हो, तुम्हारे हृदय में राज्य करे, और तुम धन्यवादी बने रहो। १६ मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो; और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ, और चिताओ, और अपने अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिये भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ। १७ और वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो॥

१८ हे पत्नियो, जैसा प्रभु में उचित है, वैसा ही अपने अपने पति के आधीन रहो। १९ हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो, और उन से कठोरता न करो। २० हे बालको, सब बातों में अपने अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करो, क्योंकि प्रभु इस से प्रसन्न होता है। २१ हे बच्चेवालो, अपने बालकों को तंग न करो, न हो कि उन का साहस टूट जाए। २२ हे सेवको, जो शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, सब बातों में उन की आज्ञा का पालन करो, मनुष्यों को प्रसन्न करनेवालों की नाईं दिखाने के लिये नहीं, परन्तु मन की सीधाई और

* या मूरतपूजा है।

परमेश्वर के भय से। २३ और जो कुछ तुम करते हो, तन मन से करो, यह समझकर कि मनुष्यों के लिये नहीं परन्तु प्रभु के लिये करते हो। २४ क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हें इस के बदले प्रभु से मीरास मिलेगी: तुम प्रभु मसीह की सेवा करते हो। २५ क्योंकि जो बुरा करता है, वह अपनी बुराई का फल पाएगा; वहां किसी का पक्षपात नहीं।

४ हे स्वामियो, अपने अपने दासों के साथ न्याय और ठीक ठीक व्यवहार करो, यह समझकर कि स्वर्ग में तुम्हारा भी एक स्वामी है॥

२ प्रार्थना में लगे रहो, और धन्यवाद के साथ उस में जागृत रहो। ३ और इस के साथ ही साथ हमारे लिये भी प्रार्थना करते रहो, कि परमेश्वर हमारे लिये वचन सुनाने का ऐसा द्वार खोल दे, कि हम मसीह के उस भेद का वर्णन कर सकें जिस के कारण मैं कैद में हूं। ४ और उसे ऐसा प्रगट करूं, जैसा मुझे करना उचित है। ५ अवसर को बहुमूल्य समझकर बाहरवालों के साथ बुद्धिमानी से बर्ताव करो। ६ तुम्हारा वचन सदा अनुग्रह सहित और सलोना हो, कि तुम्हें हर मनुष्य को उचित रीति से उत्तर देना आ जाए॥

७ प्रिय भाई और विश्वासयोग्य सेवक, तुखिकुस जो प्रभु में मेरा सहकर्मी है, मेरी सब बातें तुम्हें बता देगा। ८ उसे मैं ने इसलिये तुम्हारे पास भेजा है, कि तुम्हें हमारी दशा मालूम हो जाए और वह तुम्हारे हृदयों को शान्ति दे। ९ और उसके साथ उनेसिमुस को भी भेजा है जो विश्वासयोग्य और प्रिय भाई और तुम ही में से है, ये तुम्हें यहां की सारी बातें बता देंगे॥

१० अरिस्तर्खुस जो मेरे साथ कैदी है, और मरकुस जो बरनबा का भाई लगता है (जिस के विषय में तुम ने आज्ञा पाई थी कि यदि वह तुम्हारे पास आए, तो उस से अच्छी तरह व्यवहार करना।) ११ और यीशु जो यूस्तुस कहलाता है, तुम्हें नमस्कार कहते हैं। खतना किए हुए लोगों में से केवल ये ही परमेश्वर के राज्य के लिये मेरे सहकर्मी और मेरी शान्ति का कारण रहे हैं। १२ इपफ्रास जो तुम में से है, और मसीह यीशु का दास है, तुम से नमस्कार कहता है और सदा तुम्हारे लिये प्रार्थनाओं में प्रयत्न करता है, ताकि तुम सिद्ध होकर पूर्ण विश्वास के साथ परमेश्वर की इच्छा पर स्थिर रहो। १३ मैं उसका गवाह हूं, कि वह तुम्हारे लिये और लौदीकिया और हियरापुलिसवालों के लिये बड़ा यत्न करता रहता है। १४ प्रिय वैद्य लूका और देमास का तुम्हें नमस्कार। १५ लौदीकिया के भाइयों को और नुमफास और उन के घर की कलीसिया को नमस्कार कहना। १६ और जब यह पत्र तुम्हारे यहां पढ़ लिया जाए, तो ऐसा करना कि लौदीकिया की कलीसिया में भी पढ़ा जाए, और वह पत्र जो लौदीकिया से आए उसे तुम भी पढ़ना। १७ फिर अर्खिप्पुस से कहना कि जो सेवा प्रभु में तुझे सौंपी गई है, उसे सावधानी के साथ पूरी करना॥

१८ मुझ पौलुस का अपने हाथ से लिखा हुआ नमस्कार। मेरी जंजीरों को स्मरण रखना; तुम पर अनुग्रह होता रहे। आमीन॥

थिस्सलुनीकियों के नाम पौलुस प्रेरित की पहिली पत्री

१ पौलुस और सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के नाम जो परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह में है॥

अनुग्रह और शान्ति तुम्हें मिलती रहे॥

२ हम अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण करते और सदा तुम सब के विषय में परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं। ३ और अपने परमेश्वर और पिता के साम्हने तुम्हारे विश्वास के काम, और प्रेम का परिश्रम, और हमारे प्रभु यीशु मसीह में आशा की धीरता को. लगातार स्मरण करते हैं। ४ और हे भाइयो. परमेश्वर के प्रिय लोगो हम जानते हैं. कि तुम चुने हुए हो। ५ क्योंकि हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास न केवल वचन मात्र ही में बरन सामर्थ और पवित्र आत्मा. और बड़े निश्चय के साथ पहुंचा है; जैसा तुम जानते हो. कि हम तुम्हारे लिये तुम में कैसे बन गए थे। ६ और तुम बड़े क्लेश में पवित्र आत्मा के आनन्द के साथ वचन को मानकर हमारी और प्रभु की सी चाल चलने लगे। ७ यहां तक कि मकिदुनिया और अखया के सब विश्वासियों के लिये तुम आदर्श बने। ८ क्योंकि तुम्हारे यहां से न केवल मकिदुनिया और अखया में प्रभु का वचन सुनाया गया, पर तुम्हारे विश्वास की जो परमेश्वर पर है. हर जगह ऐसी चर्चा फैल गई है. कि हमें कहने की आवश्यकता ही नहीं। ९ क्योंकि वे आप ही हमारे विषय में बताते हैं कि तुम्हारे पास हमारा आना कैसा हुआ; और तुम क्योंकर मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरे ताकि जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो। १० और उसके पुत्र के स्वर्ग पर से आने की बाट जोहते रहो जिसे उस ने मरे हुओं में से जिलाया, अर्थात् यीशु की, जो हमें आनेवाले प्रकोप से बचाता है॥

२ हे भाइयो, तुम आप ही जानते हो कि हमारा तुम्हारे पास आना व्यर्थ न हुआ। २ बरन तुम आप ही जानते हो, कि पहिले पहिल फिलिप्पी में दुख उठाने और उपद्रव सहने पर भी हमारे परमेश्वर ने हमें ऐसा हियाव दिया, कि हम परमेश्वर का सुसमाचार भारी विरोधों के होते हुए भी तुम्हें सुनाएं। ३ क्योंकि हमारा उपदेश न भ्रम से है और न अशुद्धता से, और न छल के साथ है। ४ पर जैसा परमेश्वर ने हमें योग्य ठहराकर सुसमाचार सौंपा, हम वैसा ही वर्णन करते हैं; और इस में मनुष्यों को नहीं, परन्तु परमेश्वर को, जो हमारे मनों को जांचता है, प्रसन्न करते हैं। ५ क्योंकि तुम जानते हो, कि हम न तो कभी लल्लोपत्तो की बातें किया करते थे, और न लोभ के लिये बहाना करते थे, परमेश्वर गवाह है। ६ और यद्यपि हम मसीह के प्रेरित होने के कारण तुम पर

बोझ डाल सकते थे, तौभी हम मनुष्यों से आदर नहीं चाहते थे, और न तुम से, न और किसी से। ७ परन्तु जिस तरह माता अपने बालकों का पालन-पोषण करती है, वैसे ही हम ने भी तुम्हारे बीच में रहकर कोमलता दिखाई है। ८ और वैसे ही हम तुम्हारी लालसा करते हुए, न केवल परमेश्वर का सुसमाचार, पर अपना अपना प्राण भी तुम्हें देने को तैयार थे, इसलिये कि तुम हमारे प्यारे हो गए थे। ९ क्योंकि, हे भाइयो, तुम हमारे परिश्रम और कष्ट को स्मरण रखते हो, कि हम ने इसलिये रात दिन काम धन्धा करते हुए तुम में परमेश्वर का सुसमाचार प्रचार किया, कि तुम में से किसी पर भार न हों। १० तुम आप ही गवाह हो: और परमेश्वर भी, कि तुम्हारे बीच में जो विश्वास रखते हो हम कैसी पवित्रता और धार्मिकता और निर्दोषता से रहे। ११ जैसे तुम जानते हो, कि जैसा पिता अपने बालकों के साथ बर्ताव करता है, वैसे ही हम तुम में से हर एक को भी उपदेश करते, और शान्ति देते, और समझाते थे*। १२ कि तुम्हारा चाल-चलन परमेश्वर के योग्य हो, जो तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाता है॥

१३ इसलिये हम भी परमेश्वर का धन्यवाद निरन्तर करते हैं; कि जब हमारे द्वारा परमेश्वर के सुसमाचार का वचन तुम्हारे पास पहुंचा, तो तुम ने उसे मनुष्यों का नहीं, परन्तु परमेश्वर का वचन समझकर (और सचमुच यह ऐसा ही है) ग्रहण किया: और वह तुम में जो विश्वास रखते हो, प्रभावशाली है। १४ इसलिये कि तुम, हे भाइयो, परमेश्वर की उन कलीसियाओं की सी चाल चलने लगे, जो यहूदिया में मसीह यीशु में हैं, क्योंकि तुम ने भी अपने लोगों से वैसा ही दुख पाया, जैसा उन्हों ने यहूदियों से पाया था। १५ जिन्हों ने प्रभु यीशु को और भविष्यद्वक्ताओं को भी मार डाला और हम को सताया, और परमेश्वर उन से प्रसन्न नहीं; और वे सब मनुष्यों का विरोध करते हैं। १६ और वे अन्यजातियों से उन के उद्धार के लिये बातें करने से हमें रोकते हैं, कि सदा अपने पापों का नपुआ भरते रहें; पर उन पर भयानक प्रकोप आ पहुंचा है॥

१७ हे भाइयो, जब हम थोड़ी देर के लिये मन में नहीं बरन प्रगट में तुम से अलग हो गए थे, तो हम ने बड़ी लालसा के साथ तुम्हारा मुंह देखने के लिये और भी अधिक यत्न किया। १८ इसलिये हम ने (अर्थात् मुझ पौलुस ने) एक बार नहीं, बरन दो बार तुम्हारे पास आना चाहा, परन्तु शैतान हमें रोके रहा। १९ भला हमारी आशा, या आनन्द या बड़ाई का मुकुट क्या है? क्या हमारे प्रभु यीशु के सम्मुख उसके आने के समय तुम ही न होगे? २० हमारी बड़ाई और आनन्द तुम ही हो॥

३ इसलिये जब हम से और न रहा गया, तो हम ने यह ठहराया कि एथेन्स में अकेले रह जाएं। २ और हम ने तीमुथियुस को जो मसीह के सुसमाचार में हमारा भाई, और परमेश्वर का सेवक है, इसलिये भेजा, कि वह तुम्हें स्थिर करे; और तुम्हारे विश्वास के विषय में तुम्हें समझाए। ३ कि कोई इन क्लेशों के

* यू॰ गवाही देते थे।

कारण डगमगा न जाए; क्योंकि तुम आप जानते हो, कि हम इन ही के लिये ठहराए गए हैं। ४ क्योंकि पहिले भी, जब हम तुम्हारे यहां थे, तो तुम से कहा करते थे, कि हमें क्लेश उठाने पड़ेंगे, और ऐसा ही हुआ है, और तुम जानते भी हो। ५ इस कारण जब मुझ से और न रहा गया, तो तुम्हारे विश्वास का हाल जानने के लिये भेजा, कि कहीं ऐसा न हो, कि परीक्षा करनेवाले ने तुम्हारी परीक्षा की हो, और हमारा परिश्रम व्यर्थ हो गया हो। ६ पर अभी तीमुथियुस ने जो तुम्हारे पास से हमारे यहां आकर तुम्हारे विश्वास और प्रेम का सुसमाचार सुनाया और इस बात को भी सुनाया, कि तुम सदा प्रेम के साथ हमें स्मरण करते हो, और हमारे देखने की लालसा रखते हो, जैसा हम भी तुम्हें देखने की। ७ इसलिये हे भाइयो, हम ने अपनी सारी सकेती और क्लेश में तुम्हारे विश्वास से तुम्हारे विषय में शान्ति पाई। ८ क्योंकि अब यदि तुम प्रभु में स्थिर रहो तो हम जीवित हैं। ९ और जैसा आनन्द हमें तुम्हारे कारण अपने परमेश्वर के साम्हने है, उसके बदले तुम्हारे विषय में हम किस रीति से परमेश्वर का धन्यवाद करें? १० हम रात दिन बहुत ही प्रार्थना करते रहते हैं, कि तुम्हारा मुंह देखें, और तुम्हारे विश्वास की घटी पूरी करें॥

११ अब हमारा परमेश्वर और पिता आप ही और हमारा प्रभु यीशु, तुम्हारे यहां आने के लिये हमारी अगुआई करे। १२ और प्रभु ऐसा करे, कि जैसा हम तुम से प्रेम रखते हैं; वैसा ही तुम्हारा प्रेम भी आपस में, और सब मनुष्यों के साथ बढ़े, और उन्नति करता जाए। १३ ताकि वह तुम्हारे मनों को ऐसा स्थिर करे, कि जब हमारा प्रभु यीशु अपने सब पवित्र लोगों के साथ आए, तो वे हमारे परमेश्वर और पिता के साम्हने पवित्रता में निर्दोष ठहरें॥

४ निदान, हे भाइयो, हम तुम से बिनती करते हैं, और तुम्हें प्रभु यीशु में समझाते हैं, कि जैसे तुम ने हम से योग्य चाल चलना, और परमेश्वर को प्रसन्न करना सीखा है, और जैसा तुम चलते भी हो, वैसे ही और भी बढ़ते जाओ। २ क्योंकि तुम जानते हो, कि हम ने प्रभु यीशु की ओर से तुम्हें कौन कौन सी आज्ञा पहुंचाई। ३ क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम पवित्र बनो: अर्थात् व्यभिचार से बचे रहो। ४ और तुम में से हर एक पवित्रता और आदर के साथ अपने पात्र को प्राप्त करना जाने। ५ और यह काम अभिलाषा से नहीं, और न उन जातियों की नाईं, जो परमेश्वर को नहीं जानतीं। ६ कि इस बात में कोई अपने भाई को न ठगे, और न उस पर दांव चलाए, क्योंकि प्रभु इन सब बातों का पलटा लेनेवाला है; जैसा कि हम ने पहिले तुम से कहा, और चिताया भी था। ७ क्योंकि परमेश्वर ने हमें अशुद्ध होने के लिये नहीं, परन्तु पवित्र होने के लिये बुलाया है। ८ इस कारण जो तुच्छ जानता है, वह मनुष्य को नहीं, परन्तु परमेश्वर को तुच्छ जानता है, जो अपना पवित्र आत्मा तुम्हें देता है॥

९ किन्तु भाईचारे की प्रीति के विषय में यह अवश्य नहीं, कि मैं तुम्हारे पास कुछ लिखूं; क्योंकि आपस में प्रेम रखना तुम ने आप ही परमेश्वर से सीखा है।

१० और सारे मकिदुनिया के सब भाइयों के साथ ऐसा करते भी हो, पर हे भाइयो, हम तुम्हें समझाते हैं, कि और भी बढ़ते जाओ। ११ और जैसी हम ने तुम्हें आज्ञा दी, वैसे ही चुपचाप रहने और अपना अपना काम काज करने, और अपने अपने हाथों से कमाने का प्रयत्न करो। १२ कि बाहरवालों के साथ सभ्यता से बर्ताव करो, और तुम्हें किसी वस्तु की घटी न हो॥

१३ हे भाइयो, हम नहीं चाहते, कि तुम उनके विषय में जो सोते हैं, अज्ञान रहो; ऐसा न हो, कि तुम औरों की नाईं शोक करो जिन्हें आशा नहीं। १४ क्योंकि यदि हम प्रतीति करते हैं, कि यीशु मरा, और जी भी उठा, तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा। १५ क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं, कि हम जो जीवित हैं, और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे तो सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे। १६ क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे। १७ तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उन के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। १८ सो इन बातों से एक दूसरे को शान्ति दिया करो॥

५ पर हे भाइयो, इसका प्रयोजन नहीं, कि समयों और कालों के विषय में तुम्हारे पास कुछ लिखा जाए। २ क्योंकि तुम आप ठीक जानते हो कि जैसा रात को चोर आता है, वैसा ही प्रभु का दिन आनेवाला है। ३ जब लोग कहते होंगे, कि कुशल है, और कुछ भय नहीं, तो उन पर एकाएक विनाश आ पड़ेगा, जिस प्रकार गर्भवती पर पीड़ा; और वे किसी रीति से न बचेंगे। ४ पर हे भाइयो, तुम तो अन्धकार में नहीं हो, कि वह दिन तुम पर चोर की नाईं आ पड़े। ५ क्योंकि तुम सब ज्योति की सन्तान, और दिन की सन्तान हो, हम न रात के हैं, न अन्धकार के हैं। ६ इसलिये हम औरों की नाईं सोते न रहें, पर जागते और सावधान रहें। ७ क्योंकि जो सोते हैं, वे रात ही को सोते हैं, और जो मतवाले होते हैं, वे रात ही को मतवाले होते हैं। ८ पर हम जो दिन के हैं, विश्वास और प्रेम की झिलम पहिनकर और उद्धार की आशा का टोप पहिनकर सावधान रहें। ९ क्योंकि परमेश्वर ने हमें क्रोध के लिये नहीं, परन्तु इसलिये ठहराया कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त करें। १० वह हमारे लिये इस कारण मरा, कि हम चाहे जागते हों, चाहे सोते हों: सब मिलकर उसी के साथ जीएं। ११ इस कारण एक दूसरे को शान्ति दो, और एक दूसरे की उन्नति के कारण बनो *, निदान, तुम ऐसा करते भी हो॥

१२ और हे भाइयो, हम तुम से बिनती करते हैं, कि जो तुम में परिश्रम करते हैं, और प्रभु में तुम्हारे अगुवे हैं, और तुम्हें शिक्षा देते हैं, उन्हें मानो। १३ और उन के काम के कारण प्रेम के साथ उन को

* यू० को स्थापन करो।

बहुत ही आदर के योग्य समझो : आपस में मेल-मिलाप से रहो। १४ और हे भाइयो, हम तुम्हें समझाते हैं, कि जो ठीक चाल नहीं चलते, उन को समझाओ, कायरों को ढाढ़स दो, निर्बलों को संभालो, सब की ओर सहनशीलता दिखाओ। १५ सावधान! कोई किसी से बुराई के बदले बुराई न करे; पर सदा भलाई करने पर तत्पर रहो आपस में और सब से भी भलाई ही की चेष्टा करो। १६ सदा आनन्दित रहो। १७ निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो। १८ हर बात में धन्यवाद करो : क्योंकि तुम्हारे लिये मसीह यीशु में परमेश्वर की यही इच्छा है। १९ आत्मा को न बुझाओ। २० भविष्यद्वाणियों को तुच्छ न जानो। २१ सब बातों को परखो : जो अच्छी है उसे पकड़े रहो। २२ सब प्रकार की बुराई से बचे रहो॥

२३ शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे; और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें। २४ तुम्हारा बुलानेवाला सच्चा* है, और वह ऐसा ही करेगा॥

२५ हे भाइयो, हमारे लिये प्रार्थना करो॥

२६ सब भाइयों को पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो। २७ मैं तुम्हें प्रभु की शपथ देता हूं, कि यह पत्री सब भाइयों को पढ़कर सुनाई जाए॥

२८ हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर होता रहे॥

* यू० विश्वासयोग्य।

थिस्सलुनीकियों के नाम पौलुस प्रेरित की दूसरी पत्री

१ पौलुस और सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के नाम, जो हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह में है॥

२ हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे॥

३ हे भाइयो, तुम्हारे विषय में हमें हर समय परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, और यह उचित भी है इसलिये कि तुम्हारा विश्वास बहुत बढ़ता जाता है, और तुम सब का प्रेम आपस में बहुत ही होता जाता है। ४ यहां तक कि हम आप परमेश्वर की कलीसिया में तुम्हारे विषय में घमण्ड करते हैं, कि जितने उपद्रव और क्लेश तुम सहते हो, उन सब में तुम्हारा धीरज और विश्वास प्रगट होता है। ५ यह परमेश्वर के सच्चे न्याय का स्पष्ट प्रमाण है; कि तुम परमेश्वर के राज्य के योग्य ठहरो, जिस के लिये तुम दुख भी

उठाते हो। ६ क्योंकि परमेश्वर के निकट यह न्याय है, कि जो तुम्हें क्लेश देते हैं, उन्हें बदले में क्लेश दे। ७ और तुम्हें जो क्लेश पाते हो, हमारे साथ चैन दे; उस समय जब कि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। ८ और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उन से पलटा लेगा। ९ वे प्रभु के साम्हने से, और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे। १० यह उस दिन होगा, जब वह अपने पवित्र लोगों में महिमा पाने, और सब विश्वास करनेवालों में आश्चर्य का कारण होने को आएगा; क्योंकि तुम ने हमारी गवाही की प्रतीति की। ११ इसी लिये हम सदा तुम्हारे निमित्त प्रार्थना भी करते हैं, कि हमारा परमेश्वर तुम्हें इस बुलाहट के योग्य समझे, और भलाई की हर एक इच्छा, और विश्वास के हर एक काम को सामर्थ सहित पूरा करे। १२ कि हमारे परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह के अनुसार हमारे प्रभु यीशु का नाम तुम में महिमा पाए, और तुम उस में॥

२ हे भाइयो, हम अपने प्रभु यीशु मसीह के आने, और उसके पास अपने इकट्ठे होने के विषय में तुम से बिनती करते हैं। २ कि किसी आत्मा, या वचन, या पत्री के द्वारा जो कि मानो हमारी ओर से हो, यह समझकर कि प्रभु का दिन आ पहुंचा है, तुम्हारा मन अचानक अस्थिर न हो जाए; और न तुम घबराओ। ३ किसी रीति से किसी के धोखे में न आना क्योंकि वह दिन न आएगा, जब तक धर्म का त्याग न हो ले, और वह पाप का पुरुष अर्थात् विनाश का पुत्र प्रगट न हो। ४ जो विरोध करता है, और हर एक से जो परमेश्वर, या पूज्य कहलाता है, अपने आप को बड़ा ठहराता है, यहां तक कि वह परमेश्वर के मन्दिर * में बैठकर अपने आप को परमेश्वर प्रगट करता है। ५ क्या तुम्हें स्मरण नहीं, कि जब मैं तुम्हारे यहां था, तो तुम से ये बातें कहा करता था? ६ और अब तुम उस वस्तु को जानते हो, जो उसे रोक रही है, कि वह अपने ही समय में प्रगट हो। ७ क्योंकि अधर्म का भेद अब भी कार्य्य करता जाता है, पर अभी एक रोकनेवाला है, और जब तक वह दूर न हो जाए, वह रोके रहेगा। ८ तब वह अधर्मी प्रगट होगा, जिसे प्रभु यीशु अपने मुंह की फूंक से मार डालेगा, और अपने आगमन के तेज से भस्म करेगा। ९ उस अधर्मी का आना शैतान के कार्य्य के अनुसार सब प्रकार की झूठी सामर्थ, और चिन्ह, और अद्‌भुत काम के साथ। १० और नाश होनेवालों के लिये अधर्म के सब प्रकार के धोखे के साथ होगा; क्योंकि उन्होंने सत्य के प्रेम को ग्रहण नहीं किया जिस से उन का उद्धार होता। ११ और इसी कारण परमेश्वर उन में एक भटका देनेवाली सामर्थ को भेजेगा ताकि वे झूठ की प्रतीति करें। १२ और जितने लोग सत्य की प्रतीति नहीं करते, बरन अधर्म से प्रसन्न होते हैं, सब दण्ड पाएं॥

१३ पर हे भाइयो, और प्रभु के प्रिय लोगो चाहिये कि हम तुम्हारे विषय में सदा परमेश्वर का धन्यवाद करते रहें, कि

* यू० पवित्रस्थान।

परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया; कि आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर, और सत्य की प्रतीति करके उद्धार पाओ। १४ जिस के लिये उस ने तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया, कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा को प्राप्त करो। १५ इसलिये, हे भाइयो, स्थिर रहो; और जो जो बातें तुम ने क्या वचन, क्या पत्री के द्वारा हम से सीखी हैं, उन्हें थामे रहो।।

१६ हमारा प्रभु यीशु मसीह आप ही, और हमारा पिता परमेश्वर जिस ने हम से प्रेम रखा, और अनुग्रह से अनन्त शान्ति और उत्तम आशा दी है। १७ तुम्हारे मनों में शान्ति दे, और तुम्हें हर एक अच्छे काम, और वचन में दृढ़ करे।।

३ निदान, हे भाइयो, हमारे लिये प्रार्थना किया करो, कि प्रभु का वचन ऐसा शीघ्र फैले, और महिमा पाए, जैसा तुम में हुआ। २ और हम टेढ़े और दुष्ट मनुष्यों से बचे रहें क्योंकि हर एक में विश्वास नहीं।।

३ परन्तु प्रभु सच्चा * है; वह तुम्हें दृढ़ता से स्थिर करेगा: और उस दुष्ट † से सुरक्षित रखेगा। ४ और हमें प्रभु में तुम्हारे ऊपर भरोसा है, कि जो जो आज्ञा हम तुम्हें देते हैं, उन्हें तुम मानते हो, और मानते भी रहोगे। ५ परमेश्वर के प्रेम और मसीह के धीरज की ओर प्रभु तुम्हारे मन की अगुआई करे।।

६ हे भाइयो, हम तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देते हैं; कि हर एक ऐसे भाई से अलग रहो, जो अनुचित चाल चलता, और जो शिक्षा उस ने हम से पाई उसके अनुसार नहीं करता। ७ क्योंकि तुम आप जानते हो, कि किस रीति से हमारी सी चाल चलनी चाहिए; क्योंकि हम तुम्हारे बीच में अनुचित चाल न चले। ८ और किसी की रोटी सेंत में न खाई; पर परिश्रम और कष्ट से रात दिन काम धन्धा करते थे, कि तुम में से किसी पर भार न हो। ९ यह नहीं, कि हमें अधिकार नहीं; पर इसलिये कि अपने आप को तुम्हारे लिये आदर्श ठहराएं, कि तुम हमारी सी चाल चलो। १० और जब हम तुम्हारे यहां थे, तब भी यह आज्ञा तुम्हें देते थे, कि यदि कोई काम करना न चाहे, तो खाने भी न पाए। ११ हम सुनते हैं, कि कितने लोग तुम्हारे बीच में अनुचित चाल चलते हैं; और कुछ काम नहीं करते, पर औरों के काम में हाथ डाला करते हैं। १२ ऐसों को हम प्रभु यीशु मसीह में आज्ञा देते और समझाते हैं, कि चुपचाप काम करके अपनी ही रोटी खाया करें। १३ और तुम, हे भाइयो, भलाई करने में हियाव न छोड़ो। १४ यदि कोई हमारी इस पत्री की बात को न माने, तो उस पर दृष्टि रखो; और उस की संगति न करो, जिस से वह लज्जित हो; १५ तौभी उसे बैरी मत समझो पर भाई जानकर चिताओ।।

१६ अब प्रभु जो शान्ति का सोता है आप ही तुम्हें सदा और हर प्रकार से शान्ति दे: प्रभु तुम सब के साथ रहे।।

१७ मैं पौलुस अपने हाथ से नमस्कार लिखता हूं: हर पत्री में मेरा यही चिन्ह है: मैं इसी प्रकार से लिखता हूं। १८ हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम सब पर होता रहे।।

* यू० विश्वासयोग्य। † या बुराई।

तीमुथियुस के नाम पौलुस प्रेरित की पहिली पत्री

१ पौलुस की ओर से जो हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर, और हमारी आशा-स्थान मसीह यीशु की आज्ञा से मसीह यीशु का प्रेरित है, तीमुथियुस के नाम जो विश्वास में मेरा सच्चा पुत्र है ।।

२ पिता परमेश्वर, और हमारे प्रभु मसीह यीशु से, तुझे अनुग्रह, और दया, और शान्ति मिलती रहे ।।

३ जैसे मैं ने मकिदुनिया को जाते समय तुझे समझाया था, कि इफिसुस में रहकर कितनों को आज्ञा दे कि और प्रकार की शिक्षा न दें। ४ और उन ऐसी कहानियों और अनन्त वंशावलियों पर मन न लगाएं, जिन से विवाद होते हैं; और परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार नहीं, जो विश्वास से सम्बन्ध रखता है; वैसे ही फिर भी कहता हूं। ५ आज्ञा का सारांश यह है, कि शुद्ध मन और अच्छे विवेक *, और कपटरहित विश्वास से प्रेम उत्पन्न हो। ६ इन को छोड़कर कितने लोग फिरकर बकवाद की ओर भटक गए हैं। ७ और व्यवस्थापक तो होना चाहते हैं, पर जो बातें कहते और जिन को दृढ़ता से बोलते हैं, उन को समझते भी नहीं। ८ पर हम जानते हैं, कि यदि कोई व्यवस्था को व्यवस्था की रीति पर काम में लाए, तो वह भली है। ९ यह जानकर कि व्यवस्था धर्मी जन के लिये नहीं, पर अधर्मियों, निरंकुशों, भक्तिहीनों, पापियों, अपवित्रों और अशुद्धों, मां-बाप के घात करनेवालों, हत्यारों। १० व्यभिचारियों, पुरुषगामियों, मनुष्य के बेचनेवालों, झूठों, और झूठी शपथ खानेवालों, और इन को छोड़ खरे उपदेश के सब विरोधियों के लिये ठहराई गई है। ११ यही परमधन्य परमेश्वर की महिमा के उस सुसमाचार के अनुसार है, जो मुझे सौंपा गया है ।।

१२ और मैं, अपने प्रभु मसीह यीशु का, जिस ने मुझे सामर्थ दी है, धन्यवाद करता हूं; कि उस ने मुझे विश्वासयोग्य समझकर अपनी सेवा के लिये ठहराया। १३ मैं तो पहिले निन्दा करनेवाला, और सतानेवाला, और अन्धेर करनेवाला था; तौभी मुझ पर दया हुई, क्योंकि मैं ने अविश्वास की दशा में बिन समझे बूझे, ये काम किए थे। १४ और हमारे प्रभु का अनुग्रह उस विश्वास और प्रेम के साथ जो मसीह यीशु में है, बहुतायत से हुआ। १५ यह बात सच * और हर प्रकार से मानने के योग्य है, कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिये जगत में आया, जिन में सब से बड़ा मैं हूं। १६ पर मुझपर इसलिये दया हुई, कि मुझ सब से बड़े पापी में यीशु मसीह अपनी पूरी सहनशीलता दिखाए, कि जो लोग उस पर अनन्त जीवन के लिये विश्वास करेंगे, उन के लिये मैं एक आदर्श बनूं। १७ अब सनातन राजा अर्थात् अविनाशी अनदेखे

* अर्थात् मन या कानशन्स।

* यू० विश्वासयोग्य।

अद्वैत परमेश्वर का आदर और महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन ॥

१८ हे पुत्र तीमुथियुस, उन भविष्यद्-वाणियों के अनुसार जो पहिले तेरे विषय में की गई थीं, मैं यह आज्ञा सौंपता हूं, कि तू उन के अनुसार अच्छी लड़ाई को लड़ता रहे। १९ और विश्वास और उस अच्छे विवेक * को थामे रहे, जिसे दूर करने के कारण कितनों का विश्वास रूपी जहाज डूब गया। २० उन्हीं में से हुमिनयुस और सिकन्दर हैं जिन्हें मैं ने शैतान को सौंप दिया, कि वे निन्दा करना न सीखें ॥

२ अब मैं सब से पहिले यह उपदेश देता हूं, कि बिनती, और प्रार्थना, और निवेदन, और धन्यवाद, सब मनुष्यों के लिये किए जाएं। २ राजाओं और सब ऊंचे पदवालों के निमित्त इसलिये कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गम्भीरता से जीवन बिताएं। ३ यह हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर को अच्छा लगता, और भाता भी है। ४ वह यह चाहता है, कि सब मनुष्यों का उद्धार हो; और वे सत्य को भली भांति पहचान लें। ५ क्योंकि परमेश्वर एक ही है: और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है। ६ जिस ने अपने आप को सब के छुटकारे के दाम में दे दिया; ताकि उस की गवाही ठीक समयों पर दी जाए। ७ मैं सच कहता हूं, झूठ नहीं बोलता, कि मैं इसी उद्देश्य से प्रचारक और प्रेरित और अन्यजातियों के लिये विश्वास और सत्य का उपदेशक ठहराया गया ॥

* अर्थात् मन या कानशन्स।

८ सो मैं चाहता हूं, कि हर जगह पुरुष बिना क्रोध और विवाद के पवित्र हाथों को उठाकर प्रार्थना किया करें। ९ वैसे ही स्त्रियां भी संकोच और संयम के साथ सुहावने वस्त्रों से अपने आप को संवारे; न कि बाल गूंथने, और सोने, और मोतियों, और बहुमोल कपड़ों से, पर भले कामों से। १० क्योंकि परमेश्वर की भक्ति ग्रहण करनेवाली स्त्रियों को यही उचित भी है। ११ और स्त्री को चुपचाप पूरी आधीनता से सीखना चाहिए। १२ और मैं कहता हूं, कि स्त्री न उपदेश करे, और न पुरुष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे। १३ क्योंकि आदम पहिले, उसके बाद हव्वा बनाई गई। १४ और आदम बहकाया न गया, पर स्त्री बहकाने में आकर अपराधिनी हुई। १५ तौभी बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएगी, यदि वे संयम सहित विश्वास, प्रेम, और पवित्रता में स्थिर रहें ॥

३ यह बात सत्य * है, कि जो अध्यक्ष † होना चाहता है, तो वह भले काम की इच्छा करता है। २ सो चाहिए, कि अध्यक्ष निर्दोष, और एक ही पत्नी का पति, संयमी, सुशील, सभ्य, पहुनाई करनेवाला, और सिखाने में निपुण हो। ३ पियक्कड़ या मारपीट करनेवाला न हो; बरन कोमल हो, और न झगड़ालू, और न लोभी हो। ४ अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो, और लड़केबालों को सारी गम्भीरता से आधीन रखता हो। ५ (जब कोई अपने घर ही का प्रबन्ध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली क्योंकर

* यू० विश्वासयोग्य।　　† या बिशप।

करेगा)। ६ फिर यह कि नया चेला न हो, ऐसा न हो, कि अभिमान करके शैतान * का सा दण्ड पाए। ७ और बाहरवालों में भी उसका सुनाम हो ऐसा न हो कि निन्दित होकर शैतान के फंदे में फंस जाए। ८ वैसे ही सेवकों † को भी गम्भीर होना चाहिए, दो रंगी, पियक्कड़, और नीच कमाई के लोभी न हों। ९ पर विश्वास के भेद को शुद्ध विवेक ‡ से सुरक्षित रखें। १० और ये भी पहिले परखे जाएं, तब यदि निर्दोष निकलें, तो सेवक का काम करें। ११ इसी प्रकार से स्त्रियों को भी गम्भीर होना चाहिए; दोष लगानेवाली न हों, पर सचेत और सब बातों में विश्वासयोग्य हों। १२ सेवक § एक ही पत्नी के पति हों और लड़केबालों और अपने घरों का अच्छा प्रबन्ध करना जानते हों। १३ क्योंकि जो सेवक का काम अच्छी तरह से कर सकते हैं, वे अपने लिये अच्छा पद और उस विश्वास में, जो मसीह यीशु पर है, बड़ा हियाव प्राप्त करते हैं॥

१४ मैं तेरे पास जल्द आने की आशा रखने पर भी ये बातें तुझे इसलिये लिखता हूं। १५ कि यदि मेरे आने में देर हो, तो तू जान ले, कि परमेश्वर का घर, जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है, और जो सत्य का खंभा, और नेव है; उस में कैसा बर्ताव करना चाहिए। १६ और इस में सन्देह नहीं, कि भक्ति का भेद गम्भीर है; अर्थात् वह जो शरीर में प्रगट हुआ, आत्मा में धर्मी ठहरा, स्वर्गदूतों को दिखाई दिया, अन्यजातियों में उसका प्रचार हुआ, जगत में उस पर विश्वास किया गया, और महिमा में ऊपर उठाया गया॥

४ परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है, कि आनेवाले समयों में कितने लोग भरमानेवाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएंगे। २ यह उन झूठे मनुष्यों के कपट के कारण होगा, जिन का विवेक * मानो जलते हुए लोहे से दागा गया है। ३ जो ब्याह करने से रोकेंगे, और भोजन की कुछ वस्तुओं से परे रहने की आज्ञा देंगे; जिन्हें परमेश्वर ने इसलिये सृजा कि विश्वासी, और सत्य के पहिचाननेवाले उन्हें धन्यवाद के साथ खाएं। ४ क्योंकि परमेश्वर की सृजी हुई हर एक वस्तु अच्छी है: और कोई वस्तु अस्वीकार करने के योग्य नहीं; पर यह कि धन्यवाद के साथ खाई जाए। ५ क्योंकि परमेश्वर के वचन और प्रार्थना के द्वारा शुद्ध हो जाती है॥

६ यदि तू भाइयों को इन बातों की सुधि दिलाता रहेगा, तो मसीह यीशु का अच्छा सेवक ठहरेगा: और विश्वास और उस अच्छे उपदेश की बातों से, जो तू मानता आया है, तेरा पालन-पोषण होता रहेगा। ७ पर अशुद्ध और बूढ़ियों की सी कहानियों से अलग रह; और भक्ति के लिये अपना साधन कर। ८ क्योंकि देह की साधना से कम लाभ होता है, पर भक्ति सब बातों के लिये लाभदायक है, क्योंकि इस समय के और आनेवाले जीवन की भी प्रतिज्ञा इसी के लिये है। ९ और यह बात सच † और हर प्रकार से मानने

* यू० इब्लीस। † या डीकनों।
‡ अर्थात् मन या कानशन्स।
§ या डीकन।

* अर्थात् मन या कानशन्स।
† यू० विश्वासयोग्य।

के योग्य है। १० क्योंकि हम परिश्रम और यत्न इसी लिये करते हैं, कि हमारी आशा उस जीवते परमेश्वर पर है; जो सब मनुष्यों का, और निज करके विश्वासियों का उद्धारकर्त्ता है। ११ इन बातों की आज्ञा कर, और सिखाता रह। १२ कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाए; पर वचन, और चाल चलन, और प्रेम, और विश्वास, और पवित्रता में विश्वासियों के लिये आदर्श बन जा। १३ जब तक मैं न आऊं, तब तक पढ़ने, और उपदेश और सिखाने में लौलीन रह। १४ उस बरदान से जो तुझ में है, और भविष्यद्वाणी के द्वारा प्राचीनों * के हाथ रखते समय तुझे मिला था, निश्चिन्त मत रह। १५ उन बातों को सोचता रह और उन्हीं में अपना ध्यान लगाए रह, ताकि तेरी उन्नति सब पर प्रगट हो। अपनी और अपने उपदेश की चौकसी रख। १६ इन बातों पर स्थिर रह, क्योंकि यदि ऐसा करता रहेगा, तो तू अपने, और अपने सुननेवालों के लिये भी उद्धार का कारण होगा॥

५ किसी बूढ़े को न डांट; पर उसे पिता जानकर समझा दे, और जवानों को भाई जानकर; बूढ़ी स्त्रियों को माता जानकर। २ और जवान स्त्रियों को पूरी पवित्रता से बहिन जानकर, समझा दे। ३ उन विधवाओं का जो सचमुच विधवा हैं आदर कर। ४ और यदि किसी विधवा के लड़केबाले या नातीपोते हों, तो वे पहिले अपने ही घराने के साथ भक्ति का बर्ताव करना, और अपने माता-पिता आदि को उन का हक्क देना सीखें, क्योंकि यह परमेश्वर को भाता है। ५ जो सचमुच विधवा है, और उसका कोई नहीं; वह परमेश्वर पर आशा रखती है, और रात दिन बिनती और प्रार्थना में लौलीन रहती है। ६ पर जो भोग-विलास में पड़ गई, वह जीते जी मर गई है। ७ इन बातों की भी आज्ञा दिया कर, ताकि वे निर्दोष रहें। ८ पर यदि कोई अपनों की और निज करके अपने घराने की चिन्ता न करे, तो वह विश्वास से मुकर गया है, और अविश्वासी से भी बुरा बन गया है। ९ उसी विधवा का नाम लिखा जाए, जो साठ वर्ष से कम की न हो, और एक ही पति की पत्नी रही हो। १० और भले काम में सुनाम रही हो, जिस ने बच्चों का पालन-पोषण किया हो; पाहुनों की सेवा की हो, पवित्र लोगों के पांव धोए हो, दुखियों की सहायता की हो, और हर एक भले काम में मन लगाया हो। ११ पर जवान विधवाओं के नाम न लिखना, क्योंकि जब वे मसीह का विरोध करके सुख-विलास में पड़ जाती हैं, तो ब्याह करना चाहती हैं। १२ और दोषी ठहरती हैं, क्योंकि उन्हों ने अपने पहिले विश्वास को छोड़ दिया है। १३ और इस के साथ ही साथ वे घर घर फिरकर आलसी होना सीखती हैं, और केवल आलसी नहीं, पर बकबक करती रहती और औरों के काम में हाथ भी डालती हैं और अनुचित बातें बोलती हैं। १४ इसलिये मैं यह चाहता हूं, कि जवान विधवाएं ब्याह करें; और बच्चे जनें और घरबार संभालें, और किसी विरोधी को बदनाम करने का अवसर न दें। १५ क्योंकि कई एक तो बहककर शैतान के पीछे हो चुकी हैं। १६ यदि

* या प्रिसबुतिरों।

किसी विश्वासिनी के यहां विधवाएं हों, तो वही उन की सहायता करे, कि कलीसिया पर भार न हो ताकि वह उन की सहायता कर सके, जो सचमुच विधवाएं हैं॥

१७ जो प्राचीन * अच्छा प्रबन्ध करते हैं, विशेष करके वे जो वचन सुनाने और सिखाने में परिश्रम करते हैं, दो गुने आदर के योग्य समझे जाएं। १८ क्योंकि पवित्र शास्त्र कहता है, कि दांवनेवाले बैल का मुंह न बान्धना, क्योंकि मजदूर अपनी मजदूरी का हक्कदार है। १९ कोई दोष किसी प्राचीन * पर लगाया जाए तो बिना दो या तीन गवाहों के उस को न सुन। २० पाप करनेवालों को सब के साम्हने समझा दे, ताकि और लोग भी डरें। २१ परमेश्वर, और मसीह यीशु, और चुने हुए स्वर्गदूतों को उपस्थित जानकर मैं तुझे चितौनी देता हूं कि तू मन खोलकर इन बातों को माना कर, और कोई काम पक्षपात से न कर। २२ किसी पर शीघ्र हाथ न रखना और दूसरों के पापों में भागी न होना: अपने आप को पवित्र बनाए रख। २३ भविष्य में केवल जल ही का पीनेवाला न रह, पर अपने पेट के और अपने बार बार बीमार होने के कारण थोड़ा थोड़ा दाखरस भी काम में लाया कर। २४ कितने मनुष्यों के पाप प्रगट हो जाते हैं, और न्याय के लिये पहिले से पहुंच जाते हैं, पर कितनों के पीछे से आते हैं। २५ वैसे ही कितने भले काम भी प्रगट होते हैं, और जो ऐसे नहीं होते, वे भी छिप नहीं सकते॥

६ जितने दास जूए के नीचे हैं, वे अपने अपने स्वामी को बड़े आदर के योग्य जानें, ताकि परमेश्वर के नाम और उपदेश की निन्दा न हो। २ और जिन के स्वामी विश्वासी हैं, इन्हें वे भाई होने के कारण तुच्छ न जानें; बरन उन की और भी सेवा करें, क्योंकि इस से लाभ उठानेवाले विश्वासी और प्रेमी हैं: इन बातों का उपदेश किया कर और समझाता रह॥

३ यदि कोई और ही प्रकार का उपदेश देता है; और खरी बातों को, अर्थात् हमारे प्रभु यीशु मसीह की बातों को और उस उपदेश को नहीं मानता, जो भक्ति के अनुसार है। ४ तो वह अभिमानी हो गया, और कुछ नहीं जानता, बरन उसे विवाद और शब्दों पर तर्क करने का रोग है, जिन से डाह, और झगड़े, और निन्दा की बातें, और बुरे बुरे सन्देह। ५ और उन मनुष्यों में व्यर्थ रगड़े झगड़े उत्पन्न होते हैं, जिन की बुद्धि बिगड़ गई है और वे सत्य से विहीन हो गए हैं, जो समझते हैं कि भक्ति कमाई का द्वार है। ६ पर सन्तोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है। ७ क्योंकि न हम जगत में कुछ लाए हैं और न कुछ ले जा सकते हैं। ८ और यदि हमारे पास खाने और पहिनने को हो, तो इन्हीं पर सन्तोष करना चाहिए। ९ पर जो धनी होना चाहते हैं, वे ऐसी परीक्षा, और फंदे और बहुतेरे व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फंसते हैं, जो मनुष्यों को बिगाड़ देती हैं और विनाश के समुद्र में डूबा देती हैं। १० क्योंकि रुपये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए कितनों ने विश्वास से भटककर अपने आप को नाना प्रकार के दुखों से छलनी बना लिया है॥

* या प्रिसबुतिर।

११ पर हे परमेश्वर के जन, तू इन बातों से भाग; और धर्म, भक्ति, विश्वास, प्रेम, धीरज और नम्रता का पीछा कर। १२ विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़; और उस अनन्त जीवन को धर ले, जिस के लिये तू बुलाया गया, और बहुत गवाहों के साम्हने अच्छा अंगीकार किया था। १३ मैं तुझे परमेश्वर को जो सब को जीवित रखता है, और मसीह यीशु को गवाह करके जिस ने पुन्तियुस पीलातुस के साम्हने अच्छा अंगीकार किया, यह आज्ञा देता हूं, १४ कि तू हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रगट होने तक इस आज्ञा को निष्कलंक और निर्दोष रख। १५ जिसे वह ठीक समयों में दिखाएगा, जो परमधन्य और अद्वैत अधिपति और राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु है। १६ और अमरता केवल उसी की है, और वह अगम्य ज्योति में रहता है, और न उसे किसी मनुष्य ने देखा, और न कभी देख सकता है: उस की प्रतिष्ठा और राज्य युगानुयुग रहेगा। आमीन॥

१७ इस संसार के धनवानों को आज्ञा दे, कि वे अभिमानी न हों और चंचल धन पर आशा न रखें, परन्तु परमेश्वर पर जो हमारे सुख के लिये सब कुछ बहुतायत से देता है। १८ और भलाई करें, और भले कामों में धनी बनें; और उदार और सहायता देने में तत्पर हों। १९ और आगे के लिये एक अच्छी नेव डाल रखें, कि सत्य जीवन को वश में कर लें॥

२० हे तीमुथियुस इस थाती की रखवाली कर और जिस ज्ञान को ज्ञान कहना ही भूल है, उसके अशुद्ध बकवाद और विरोध की बातों से परे रह। २१ कितने इस ज्ञान का अंगीकार करके, विश्वास से भटक गए हैं॥

तुम पर अनुग्रह होता रहे॥

तीमुथियुस के नाम पौलुस प्रेरित की दूसरी पत्री

१ पौलुस की ओर से जो उस जीवन की प्रतिज्ञा के अनुसार जो मसीह यीशु में है, परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है। २ प्रिय पुत्र तीमुथियुस के नाम॥

परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु मसीह यीशु की ओर से तुझे अनुग्रह और दया और शान्ति मिलती रहे॥

३ जिस परमेश्वर की सेवा मैं अपने बापदादों की रीति पर शुद्ध विवेक * से करता हूं, उसका धन्यवाद हो कि अपनी प्रार्थनाओं में तुझे लगातार स्मरण करता हूं। ४ और तेरे आंसुओं की सुधि कर करके रात दिन तुझ से भेंट करने की लालसा रखता हूं कि आनन्द से भर

* अर्थात् मन या कानशन्स।

जाऊं। ५ और मुझे तेरे उस निष्कपट विश्वास की सुधि आती है, जो पहिले तेरी नानी लोइस, और तेरी माता यूनीके में थी, और मुझे निश्चय हुआ है, कि तुझ में भी है। ६ इसी कारण मैं तुझे सुधि दिलाता हूं, कि तू परमेश्वर के उस बरदान को जो मेरे हाथ रखने के द्वारा तुझे मिला है चमका दे। ७ क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ, और प्रेम, और संयम की आत्मा दी है। ८ इसलिये हमारे प्रभु की गवाही से, और मुझ से जो उसका कैदी हूं, लज्जित न हो, पर उस परमेश्वर की सामर्थ के अनुसार सुसमाचार के लिये मेरे साथ दुख उठा। ९ जिस ने हमारा उद्धार किया, और पवित्र बुलाहट से बुलाया, और यह हमारे कामों के अनुसार नहीं; पर अपनी मनसा और उस अनुग्रह के अनुसार है जो मसीह यीशु में सनातन से हम पर हुआ है। १० पर अब हमारे उद्धारकर्त्ता मसीह यीशु के प्रगट होने के द्वारा प्रकाश हुआ, जिस ने मृत्यु का नाश किया, और जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया। ११ जिस के लिये मैं प्रचारक, और प्रेरित, और उपदेशक भी ठहरा। १२ इस कारण मैं इन दुखों को भी उठाता हूं, पर लजाता नहीं, क्योंकि मैं उसे जिस की मैं ने प्रतीति की है, जानता हूं; और मुझे निश्चय है, कि वह मेरी थाती की उस दिन तक रखवाली कर सकता है। १३ जो खरी बातें तू ने मुझ से सुनी हैं उन को उस विश्वास और प्रेम के साथ जो मसीह यीशु में है, अपना आदर्श बनाकर रख। १४ और पवित्र आत्मा के द्वारा जो हम में बसा हुआ है, इस अच्छी थाती की रखवाली कर॥

१५ तू जानता है, कि आसियावाले सब मुझ से फिर गए हैं, जिन में फूगिलुस और हिरमुगिनेस हैं। १६ उनेसिफुरुस के घराने पर प्रभु दया करे, क्योंकि उस ने बहुत बार मेरे जी को ठंडा किया, और मेरी जंजीरों से लज्जित न हुआ। १७ पर जब वह रोमा में आया, तो बड़े यत्न से ढूंढ़कर मुझ से भेंट की। १८ (प्रभु करे, कि उस दिन उस पर प्रभु की दया हो)। और जो जो सेवा उस ने इफिसुस में की है उन्हें भी तू भली भांति जानता है॥

२ इसलिये हे मेरे पुत्र, तू उस अनुग्रह से जो मसीह यीशु में है, बलवन्त हो जा। २ और जो बातें तू ने बहुत गवाहों के साम्हने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों। ३ मसीह यीशु के अच्छे योद्धा की नाईं मेरे साथ दुख उठा। ४ जब कोई योद्धा लड़ाई पर जाता है, तो इसलिये कि अपने भरती करनेवाले को प्रसन्न करे, अपने आप को संसार के कामों में नहीं फंसाता ५ फिर अखाड़े में लड़नेवाला यदि विधि के अनुसार न लड़े तो मुकुट नहीं पाता। ६ जो गृहस्थ परिश्रम करता है, फल का अंश पहिले उसे मिलना चाहिए। ७ जो मैं कहता हूं, उस पर ध्यान दे और प्रभु तुझे सब बातों की समझ देगा। ८ यीशु मसीह को स्मरण रख, जो दाऊद के वंश से हुआ, और मरे हुओं में से जी उठा; और यह मेरे सुसमाचार के अनुसार है। ९ जिस के लिये मैं कुकर्मी की नाईं दुख उठाता हूं, यहां तक कि

कैद भी हूं; परन्तु परमेश्वर का वचन कैद नहीं। १० इस कारण मैं चुने हुए लोगों के लिये सब कुछ सहता हूं, कि वे भी उस उद्धार को जो मसीह यीशु में है अनन्त महिमा के साथ पाएं। ११ यह बात सच * है, कि यदि हम उसके साथ मर गए हैं तो उसके साथ जीएंगे भी। १२ यदि हम धीरज से सहते रहेंगे, तो उसके साथ राज्य भी करेंगे: यदि हम उसका इन्कार करेंगे तो वह भी हमारा इन्कार करेगा। १३ यदि हम अविश्वासी भी हों तौभी वह विश्वासयोग्य बना रहता है, क्योंकि वह आप अपना इन्कार नहीं कर सकता ॥

१४ इन बातों की सुधि उन्हें दिला, और प्रभु के साम्हने चिता दे, कि शब्दों पर तर्क-वितर्क न किया करें, जिन से कुछ लाभ नहीं होता; बरन सुननेवाले बिगड़ जाते हैं। १५ अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो। १६ पर अशुद्ध बकवाद से बचा रह; क्योंकि ऐसे लोग और भी अभक्ति में बढ़ते जाएंगे। १७ और उन का वचन सड़े-घाव की नाईं फैलता जाएगा: हुमिनयुस और फिलेतुस उन्हीं में से हैं। १८ जो यह कहकर कि पुनरुत्थान † हो चुका है सत्य से भटक गए हैं, और कितनो के विश्वास को उलट पुलट कर देते हैं। १९ तौभी परमेश्वर की पक्की नेव बनी रहती है, और उस पर यह छाप लगी है, कि प्रभु अपनों को पहिचानता है; और जो कोई प्रभु का नाम लेता है, वह अधर्म से बचा रहे। २० बड़े घर में न केवल सोने-चान्दी ही के, पर काठ और मिट्टी के बरतन भी होते हैं; कोई कोई आदर, और कोई कोई अनादर के लिये। २१ यदि कोई अपने आप को इन से शुद्ध करेगा, तो वह आदर का बरतन, और पवित्र ठहरेगा; और स्वामी के काम आएगा, और हर भले काम के लिये तैयार होगा। २२ जवानी की अभिलाषाओं से भाग; और जो शुद्ध मन से प्रभु का नाम लेते हैं, उन के साथ धर्म, और विश्वास, और प्रेम, और मेल-मिलाप का पीछा कर। २३ पर मूर्खता, और अविद्या के विवादों से अलग रह; क्योंकि तू जानता है, कि उन से झगड़े होते हैं। २४ और प्रभु के दास को झगड़ालू होना न चाहिए, पर सब के साथ कोमल और शिक्षा में निपुण, और सहनशील हो। २५ और विरोधियों को नम्रता से समझाए, क्या जाने परमेश्वर उन्हें मन फिराव का मन दे, कि वे भी सत्य को पहिचानें। २६ और इस के द्वारा उस की इच्छा पूरी करने के लिये सचेत होकर शैतान * के फंदे से छूट जाए ॥

३ पर यह जान रख, कि अन्तिम दिनों में कठिन समय आएंगे। २ क्योंकि मनुष्य अपस्वार्थी, लोभी, डींगमार, अभिमानी, निन्दक, माता-पिता की आज्ञा टालनेवाले, कृतघ्न, अपवित्र। ३ मयारहित, क्षमारहित, दोष लगानेवाले, असंयमी, कठोर, भलें के बैरी। ४ विश्वासघाती, ढीठ, घमण्डी, और परमेश्वर के नहीं बरन सुखविलास ही के

* यू० विश्वासयोग्य।
† या मृतकोत्थान।

* यू० इब्लीस।

चाहनेवाले होंगे। ५ वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उस की शक्ति को न मानेंगे; ऐसों से परे रहना। ६ इन्हीं में से वे लोग हैं, जो घरों में दबे पांव घुस आते हैं और उन छिछोरी स्त्रियों को वश में कर लेते हैं, जो पापों से दबी और हर प्रकार की अभिलाषाओं के वश में हैं। ७ और सदा सीखती तो रहती हैं पर सत्य की पहिचान तक कभी नहीं पहुंचतीं। ८ और जैसे यन्नेस और यम्ब्रेस ने मूसा का विरोध किया था वैसे ही ये भी सत्य का विरोध करते हैं: ये तो ऐसे मनुष्य हैं, जिन की बुद्धि भ्रष्ट हो गई है और वे विश्वास के विषय में निकम्मे हैं। ९ पर वे इस से आगे नहीं बढ़ सकते, क्योंकि जैसे उन की अज्ञानता सब मनुष्यों पर प्रगट हो गई थी, वैसे ही इन की भी हो जाएगी। १० पर तू ने उपदेश, चाल-चलन, मनसा, विश्वास, सहनशीलता, प्रेम, धीरज, और सताए जाने, और दुख उठाने में मेरा साथ दिया। ११ और ऐसे दुखों में भी जो अन्ताकिया और इकुनियुम और लुस्त्रा में मुझ पर पड़े थे और और दुखों में भी, जो मैं ने उठाए हैं; परन्तु प्रभु ने मुझे उन सब से छुड़ा लिया। १२ पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएंगे। १३ और दुष्ट, और बहकानेवाले धोखा देते हुए, और धोखा खाते हुए, बिगड़ते चले जाएंगे। १४ पर तू इन बातों पर जो तू ने सीखीं हैं और प्रतीति की थी, यह जानकर दृढ़ बना रह; कि तू ने उन्हें किन लोगों से सीखा था? १५ और बालकपन से पवित्र शास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिये बुद्धिमान बना सकता है। १६ हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। १७ ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए॥

४ परमेश्वर और मसीह यीशु को गवाह करके, जो जीवतों और मरे हुओं का न्याय करेगा, उसे और उसके प्रगट होने, और राज्य को सुधि दिलाकर मैं तुझे चिताता हूं। २ कि तू वचन को प्रचार कर; समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता, और शिक्षा के साथ उलाहना दे, और डांट, और समझा। ३ क्योंकि ऐसा समय आएगा, कि लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे पर कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिये बहुतेरे उपदेशक बटोर लेंगे। ४ और अपने कान सत्य से फेरकर कथा-कहानियों पर लगाएंगे। ५ पर तू सब बातों में सावधान रह, दुख उठा, सुसमाचार प्रचार का काम कर और अपनी सेवा को पूरा कर। ६ क्योंकि अब मैं अर्घ की नाईं उंडेला जाता हूं, और मेरे कूच का समय आ पहुंचा है। ७ मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैं ने विश्वास की रखवाली की है। ८ भविष्य में मेरे लिये धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी, और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा और मुझे ही नहीं, बरन उन सब को भी, जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं॥

९ मेरे पास शीघ्र आने का प्रयत्न कर। १० क्योंकि देमास ने इस संसार को प्रिय जानकर मुझे छोड़ दिया है, और थिस्सलुनीके को चला गया है, और क्रेसकेंस गलतिया को और तीतुस दलमतिया को चला गया है। ११ केवल लूका मेरे साथ है: मरकुस को लेकर चला आ; क्योंकि सेवा के लिये वह मेरे बहुत काम का है। १२ तुखिकुस को मैं ने इफिसुस को भेजा है। १३ जो बागा मैं त्रोआस में करपुस के यहां छोड़ आया हूं, जब तू आए, तो उसे और पुस्तकें विशेष करके चर्म्मपत्रों को लेते आना। १४ सिकन्दर ठठेरे ने मुझ से बहुत बुराइयां की हैं प्रभु उसे उसके कामों के अनुसार बदला देगा। १५ तू भी उस से सावधान रह, क्योंकि उस ने हमारी बातों का बहुत ही विरोध किया। १६ मेरे पहिले प्रत्युत्तर करने के समय में किसी ने भी मेरा साथ नहीं दिया, बरन सब ने मुझे छोड़ दिया था: भला हो, कि इस का उनको लेखा देना न पड़े। १७ परन्तु प्रभु मेरा सहायक रहा, और मुझे सामर्थ दी: ताकि मेरे द्वारा पूरा पूरा प्रचार हो, और सब अन्यजाति सुन ले; और मैं तो सिंह के मुंह से छुड़ाया गया। १८ और प्रभु मुझे हर एक बुरे काम से छुड़ाएगा, और अपने स्वर्गीय राज्य में उद्धार करके पहुंचाएगा: उसी की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन॥

१९ प्रिसका और अक्विला को, और उनेसिफुरुस के घराने को नमस्कार। २० इरास्तुस कुरिन्थुस में रह गया, और त्रुफिमुस को मैं ने मीलेतुस में बीमार छोड़ा है। २१ जाड़े से पहिले चले आने का प्रयत्न कर: यूबूलुस, और पूदेंस, और लीनुस और क्लौदिया, और सब भाइयों का तुझे नमस्कार॥

२२ प्रभु तेरी आत्मा के साथ रहे: तुम पर अनुग्रह होता रहे॥

तीतुस के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

१ पौलुस की ओर से जो परमेश्वर का दास और यीशु मसीह का प्रेरित है, परमेश्वर के चुने हुए लोगों के विश्वास, और उस सत्य की पहिचान के अनुसार जो भक्ति के अनुसार है। २ उस अनन्त जीवन की आशा पर, जिस की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने जो झूठ बोल नहीं सकता सनातन से की है। ३ पर ठीक समय पर अपने वचन को उस प्रचार के द्वारा प्रगट किया, जो हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार मुझे सौंपा गया। ४ तीतुस के नाम जो विश्वास की सहभागिता के विचार से मेरा सच्चा पुत्र है: परमेश्वर पिता और हमारे उद्धारकर्त्ता मसीह यीशु से अनुग्रह और शान्ति होती रहे॥

५ मैं इसलिये तुझे क्रेते में छोड़ आया था, कि तू शेष रही हुई बातों को सुधारे,

और मेरी आज्ञा के अनुसार नगर नगर प्राचीनों * को नियुक्त करे। ६ जो निर्दोष और एक ही पत्नी के पति हों, जिन के लड़केबाले विश्वासी हों, और जिन्हें लुचपन और निरंकुशता का दोष नहीं। ७ क्योंकि अध्यक्ष † को परमेश्वर का भण्डारी होने के कारण निर्दोष होना चाहिए; न हठी, न क्रोधी, न पियक्कड़, न मारपीट करनेवाला, और न नीच कमाई का लोभी। ८ पर पहुनाई करनेवाला, भलाई का चाहनेवाला, संयमी, न्यायी, पवित्र और जितेन्द्रिय हो। ९ और विश्वासयोग्य वचन पर जो धर्मोपदेश के अनुसार है, स्थिर रहे; कि खरी शिक्षा से उपदेश दे सके, और विवादियों का मुंह भी बन्द कर सके॥

१० क्योंकि बहुत से लोग निरंकुश, बकवादी और धोखा देनेवाले हैं; विशेष करके खतनावालों में से। ११ इन का मुंह बन्द करना चाहिए: ये लोग नीच कमाई के लिये अनुचित बातें सिखाकर घर के घर बिगाड़ देते हैं। १२ उन्हीं में से एक जन ने जो उन्हीं का भविष्यद्वक्ता है, कहा है, कि क्रेती लोग सदा झूठे, दुष्ट पशु और आलसी पेटू होते हैं। १३ यह गवाही सच है, इसलिये उन्हें कड़ाई से चितौनी दिया कर, कि वे विश्वास में पक्के हो जाएं। १४ और वे यहूदियों की कथा कहानियों और उन मनुष्यों की आज्ञाओं पर मन न लगाएं, जो सत्य से भटक जाते हैं। १५ शुद्ध लोगों के लिये सब वस्तु शुद्ध हैं, पर अशुद्ध और अविश्वासियों के लिये कुछ भी शुद्ध नहीं: बरन उन की बुद्धि और विवेक * दोनों अशुद्ध हैं। १६ वे कहते हैं, कि हम परमेश्वर को जानते हैं: पर अपने कामों से उसका इन्कार करते हैं, क्योंकि वे घृणित और आज्ञा न माननेवाले हैं; और किसी अच्छे काम के योग्य नहीं॥

२ पर तू ऐसी बातें कहा कर, जो खरे उपदेश के योग्य हैं। २ अर्थात् बूढ़े पुरुष, सचेत और गम्भीर और संयमी हों, और उन का विश्वास और प्रेम और धीरज पक्का हो। ३ इसी प्रकार बूढ़ी स्त्रियों का चाल चलन पवित्र लोगों सा हो, दोष लगानेवाली और पियक्कड़ नहीं; पर अच्छी बातें सिखानेवाली हों। ४ ताकि वे जवान स्त्रियों को चितौनी देती रहें, कि अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें। ५ और संयमी, पतिव्रता, घर का कारबार करनेवाली, भली और अपने अपने पति के आधीन रहनेवाली हों, ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न होने पाए। ६ ऐसे ही जवान पुरुषों को भी समझाया कर, कि संयमी हों। ७ सब बातों में अपने आप को भले कामों का नमूना बना: तेरे उपदेश में सफाई, गम्भीरता। ८ और ऐसी खराई पाई जाए, कि कोई उसे बुरा न कह सके; जिस से विरोधी हम पर कोई दोष लगाने की गौं न पाकर लज्जित हों। ९ दासों को समझा, कि अपने अपने स्वामी के आधीन रहें, और सब बातों में उन्हें प्रसन्न रखें, और उलटकर जवाब न दें। १० चोरी चालाकी न करें; पर सब प्रकार से पूरे विश्वासी निकलें, कि वे सब बातों में हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर

* या प्रिसबुतिरों। † या बिशप।

* अर्थात् मन या कानशन्स।

के उपदेश को शोभा दें। ११ क्योंकि परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है। १२ और हमें चिताता है, कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन बिताएं। १३ और उस धन्य आशा की अर्थात् अपने महान परमेश्वर और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रगट होने की बाट जोहते रहें। १४ जिस ने अपने आप को हमारे लिये दे दिया, कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले, और शुद्ध करके अपने लिये एक ऐसी जाति * बना ले जो भले भले कामों में सरगर्म हो॥

१५ पूरे अधिकार के साथ ये बातें कह, और समझा और सिखाता रह: कोई तुझे तुच्छ न जानने पाए॥

३ लोगों को सुधि दिला, कि हाकिमों और अधिकारियों के आधीन रहें, और उन की आज्ञा मानें, और हर एक अच्छे काम के लिये तैयार रहें। २ किसी को बदनाम न करें; झगड़ालू न हों; पर कोमल स्वभाव के हों, और सब मनुष्यों के साथ बड़ी नम्रता के साथ रहें। ३ क्योंकि हम भी पहिले, निर्बुद्धि, और आज्ञा न माननेवाले, और भ्रम में पड़े हुए, और रंग रंग के अभिलाषाओं और सुखविलास के दासत्व में थे, और बैरभाव, और डाह करने में जीवन निर्वाह करते थे, और घृणित थे, और एक दूसरे से बैर रखते थे। ४ पर जब हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर की कृपा, और मनुष्यों पर उसकी प्रीति प्रगट हुई। ५ तो उस ने हमारा उद्धार किया: और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार, नए जन्म के स्नान, और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ। ६ जिसे उस ने हमारे उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर अधिकाई से उंडेला *। ७ जिस से हम उसके अनुग्रह से धर्मी ठहरकर, अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस बनें। ८ यह बात सच † है, और मैं चाहता हूं, कि तू इन बातों के विषय में दृढ़ता से बोले इसलिये कि जिन्हों ने परमेश्वर की प्रतीति की है, वे भले-भले कामों में लगे रहने का ध्यान रखें: ये बातें भली, और मनुष्यों के लाभ की हैं। ९ पर मूर्खता के विवादों, और वंशावलियों, और बैर विरोध, और उन झगड़ों से, जो व्यवस्था के विषय में हों बचा रह; क्योंकि वे निष्फल और व्यर्थ हैं। १० किसी पाखंडी को एक दो बार समझा बुझाकर उस से अलग रह ११ यह जानकर कि ऐसा मनुष्य भटक गया है, और अपने आप को दोषी ठहराकर पाप करता रहता है॥

१२ जब मैं तेरे पास अरतिमास या तुखिकुस को भेजूं, तो मेरे पास नीकुपुलिस आने का यत्न करना: क्योंकि मैं ने वहीं जाड़ा काटने की ठानी है। १३ जेनास व्यवस्थापक और अपुल्लोस को यत्न करके आगे पहुंचा दे, और देख, कि उन्हें किसी वस्तु की घटी न होने पाए। १४ और हमारे लोग भी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये अच्छे कामों

* या लोग।

* या बहाया।
† यू० विश्वासयोग्य।

में लगे रहना सीखें ताकि निष्फल न रहें॥

१५ मेरे सब साथियों का तुझे नमस्कार और जो विश्वास के कारण हम से प्रीति रखते हैं, उन को नमस्कार॥

तुम सब पर अनुग्रह होता रहे॥

फिलेमोन के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

१ पौलुस की ओर से जो मसीह यीशु का कैदी है, और भाई तिमुथियुस की ओर से हमारे प्रिय सहकर्मी फिलेमोन। २ और बहिन अफफिया, और हमारे साथी योद्धा अरखिप्पुस और फिलेमोन के घर की कलीसिया के नाम॥

३ हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह और शान्ति तुम्हें मिलती रहे॥

४ मैं तेरे उस प्रेम और विश्वास की चर्चा सुनकर, जो सब पवित्र लोगों के साथ और प्रभु यीशु पर है। ५ सदा परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं; और अपनी प्रार्थनाओं में भी तुझे स्मरण करता हूं। ६ कि तेरा विश्वास में सहभागी होना तुम्हारी सारी भलाई की पहिचान में मसीह के लिये प्रभावशाली हो। ७ क्योंकि हे भाई, मुझे तेरे प्रेम से बहुत आनन्द और शान्ति मिली, इसलिये कि तेरे द्वारा पवित्र लोगों के मन हरे भरे हो गए हैं॥

८ इसलिये यद्यपि मुझे मसीह में बड़ा हियाव तो है, कि जो बात ठीक है, उस की आज्ञा तुझे दूं। ९ तौभी मुझ बूढ़े पौलुस को जो अब मसीह यीशु के लिये कैदी हूं, यह और भी भला जान पड़ा कि प्रेम से बिनती करूं। १० मैं अपने बच्चे उनेसिमुस के लिये जो मुझ से मेरी कैद में जन्मा है तुझ से बिनती करता हूं। ११ वह तो पहिले तेरे कुछ काम का न था, पर अब तेरे और मेरे दोनों के बड़े काम का है। १२ उसी को अर्थात् जो मेरे हृदय का टुकड़ा है, मैं ने उसे तेरे पास लौटा दिया है। १३ उसे मैं अपने ही पास रखना चाहता था कि तेरी ओर से इस कैद में जो सुसमाचार के कारण है, मेरी सेवा करे। १४ पर मैं ने तेरी इच्छा बिना कुछ भी करना न चाहा कि तेरी यह कृपा दबाव से नहीं पर आनन्द से हो। १५ क्योंकि क्या जानें वह तुझ से कुछ दिन तक के लिये इसी कारण अलग हुआ कि सदैव तेरे निकट रहे। १६ परन्तु अब से दास की नाईं नहीं, बरन दास से भी उत्तम, अर्थात् भाई के समान रहे जो शरीर में भी और विशेष कर प्रभु में भी मेरा प्रिय हो। १७ सो यदि तू मुझे सहभागी समझता है, तो उसे इस प्रकार ग्रहण कर जैसे मुझे। १८ और यदि उस ने तेरी कुछ हानि की है, या उस पर तेरा कुछ आता है, तो मेरे नाम पर लिख ले। १९ मैं पौलुस अपने हाथ से लिखता हूं, कि

मैं आप भर दूंगा; और इस के कहने की कुछ आवश्यकता नहीं, कि मेरा कर्ज जो तुझ पर है वह तू ही है। २० हे भाई यह आनन्द मुझे प्रभु में तेरी ओर से मिले: मसीह में मेरे जी को हरा भरा कर दे। २१ मैं तेरे आज्ञाकारी होने का भरोसा रखकर, तुझे लिखता हूं और यह जानता हूं, कि जो कुछ मैं कहता हूं, तू उस से कहीं बढ़कर करेगा। २२ और यह भी, कि मेरे लिये उतरने की जगह तैयार रख; मुझे आशा है, कि तुम्हारी प्रार्थनाओं के द्वारा मैं तुम्हें दे दिया जाऊंगा॥

२३ इपफ्रास जो मसीह यीशु में मेरे साथ कैदी है। २४ और मरकुस और अरिस्तर्खुस और देमास और लूका जो मेरे सहकर्मी हैं इन का तुझे नमस्कार॥

२५ हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा पर होता रहे। आमीन॥

इब्रानियों के नाम पत्री

१ पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप-दादों से थोड़ा थोड़ा करके और भांति भांति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें करके। २ इन दिनों के अन्त में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं, जिसे उस ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उस ने सारी सृष्टि रची है। ३ वह उस की महिमा का प्रकाश, और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से संभालता है: वह पापों को धोकर ऊंचे स्थानों पर महामहिमन के दहिने जा बैठा। ४ और स्वर्गदूतों से उतना ही उत्तम ठहरा, जितना उस ने उन से बड़े पद का वारिस होकर उत्तम नाम पाया। ५ क्योंकि स्वर्गदूतों में से उस ने कब किसी से कहा, कि तू मेरा पुत्र है; आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ? और फिर यह, कि मैं उसका पिता हूंगा, और वह मेरा पुत्र होगा? ६ और जब पहिलौठे को जगत में फिर लाता है, तो कहता है, कि परमेश्वर के सब स्वर्गदूत उसे दण्डवत करें। ७ और स्वर्गदूतों के विषय में यह कहता है, कि वह अपने दूतों को पवन, और अपने सेवकों को धधकती आग बनाता है। ८ परन्तु पुत्र से कहता है, कि हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन युगानुयुग रहेगा: तेरे राज्य का राजदण्ड न्याय का राजदण्ड है। ९ तू ने धर्म से प्रेम और अधर्म से बैर रखा; इस कारण परमेश्वर तेरे परमेश्वर ने तेरे साथियों से बढ़कर हर्षरूपी तेल से तुझे अभिषेक किया। १० और यह कि, हे प्रभु, आदि में तू ने पृथ्वी की नेव डाली, और स्वर्ग तेरे हाथों की कारीगरी हैं। ११ वे तो नाश हो जाएंगे; परन्तु तू बना रहेगा: और वे सब वस्त्र की नाईं पुराने हो जाएंगे। १२ और तू उन्हें चादर की नाईं लपेटेगा, और वे वस्त्र की नाईं बदल जाएंगे: पर तू वही है और तेरे वर्षों का अन्त न होगा।

१३ और स्वर्गदूतों में से उस ने किस से कब कहा, कि तू मेरे दहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों के नीचे की पीढ़ी न कर दूं? १४ क्या वे सब सेवा टहल करनेवाली आत्माएं नहीं; जो उद्धार पानेवालों के लिये सेवा करने को भेजी जाती हैं?

२ इस कारण चाहिए, कि हम उन बातों पर जो हम ने सुनी हैं, और भी मन लगाएं, ऐसा न हो कि बहकर उन से दूर चले जाएं। २ क्योंकि जो वचन स्वर्गदूतों के द्वारा कहा गया था जब वह स्थिर रहा और हर एक अपराध और आज्ञा न मानने का ठीक ठीक बदला मिला। ३ तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहकर क्योंकर बच सकते हैं? जिस की चर्चा पहिले पहिल प्रभु के द्वारा हुई, और सुननेवालों के द्वारा हमें निश्चय हुआ। ४ और साथ ही परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार चिन्हों, और अद्भुत कामों, और नाना प्रकार के सामर्थ के कामों, और पवित्र आत्मा के बरदानों के बांटने के द्वारा इस की गवाही देता रहा॥

५ उस ने उस आनेवाले जगत को जिस की चर्चा हम कर रहे हैं, स्वर्गदूतों के आधीन न किया। ६ बरन किसी ने कहीं, यह गवाही दी है, कि मनुष्य क्या है, कि तू उस की सुधि लेता है? या मनुष्य का पुत्र क्या है, कि तू उस पर दृष्टि करता है? ७ तू ने उसे स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया; तू ने उस पर महिमा और आदर का मुकुट रखा और उसे अपने हाथों के कामों पर अधिकार दिया। ८ तू ने सब कुछ उसके पांवों के नीचे कर दिया: इसलिये जब कि उस ने सब कुछ उसके आधीन कर दिया, तो उस ने कुछ भी रख न छोड़ा, जो उसके आधीन न हो: पर हम अब तक सब कुछ उसके आधीन नहीं देखते। ९ पर हम यीशु को जो स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया गया था, मृत्यु का दुख उठाने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहिने हुए देखते हैं; ताकि परमेश्वर के अनुग्रह से हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखे। १० क्योंकि जिस के लिये सब कुछ है, और जिस के द्वारा सब कुछ है, उसे यही अच्छा लगा कि जब वह बहुत से पुत्रों को महिमा में पहुंचाए, तो उन के उद्धार के कर्त्ता को दुख उठाने के द्वारा सिद्ध करे। ११ क्योंकि पवित्र करनेवाला और जो पवित्र किए जाते हैं, सब एक ही मूल से हैं: इसी कारण वह उन्हें भाई कहने से नहीं लजाता। १२ पर कहता है, कि मैं तेरा नाम अपने भाइयों को सुनाऊंगा, सभा के बीच में मैं तेरा भजन गाऊंगा। १३ और फिर यह, कि मैं उस पर भरोसा रखूंगा; और फिर यह कि देख, मैं उन लड़कों सहित जिसे परमेश्वर ने मुझे दिए। १४ इसलिये जब कि लड़के मांस और लोहू के भागी हैं, तो वह आप भी उन के समान उन का सहभागी हो गया; ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान * को निकम्मा कर दे। १५ और जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फंसे थे, उन्हें छुड़ा ले। १६ क्योंकि वह तो स्वर्गदूतों को नहीं बरन इब्राहीम

* यू० इब्लीस।

के वंश को संभालता है। १७ इस कारण उस को चाहिए था, कि सब बातों में अपने भाइयों के समान बने; जिस से वह उन बातों में जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं, एक दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक बने ताकि लोगों के पापों के लिये प्रायश्चित करे। १८ क्योंकि जब उस ने परीक्षा की दशा में दुख उठाया, तो वह उन की भी सहायता कर सकता है, जिन की परीक्षा होती है।।

३ सो हे पवित्र भाइयो तुम जो स्वर्गीय बुलाहट में भागी हो, उस प्रेरित और महायाजक यीशु पर जिसे हम अंगीकार करते हैं ध्यान करो। २ जो अपने नियुक्त करनेवाले के लिये विश्वासयोग्य था, जैसा मूसा भी उसके सारे घर में था। ३ क्योंकि वह मूसा से इतना बढ़कर महिमा के योग्य समझा गया है, जितना कि घर का बनानेवाला घर से बढ़कर आदर रखता है। ४ क्योंकि हर एक घर का कोई न कोई बनानेवाला होता है, पर जिस ने सब कुछ बनाया वह परमेश्वर है। ५ मूसा तो उसके सारे घर में सेवक की नाईं विश्वासयोग्य रहा, कि जिन बातों का वर्णन होनेवाला था, उन की गवाही दे। ६ पर मसीह पुत्र की नाईं उसके घर का अधिकारी है, और उसका घर हम हैं, यदि हम साहस पर, और अपनी आशा के घमण्ड पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें। ७ सो जैसा पवित्र आत्मा कहता है, कि यदि आज तुम उसका शब्द सुनो। ८ तो अपने मन को कठोर न करो, जैसा कि क्रोध दिलाने के समय और परीक्षा के दिन जंगल में किया था। ९ जहां तुम्हारे बापदादों ने मुझे जांचकर परखा और चालीस वर्ष तक मेरे काम देखे। १० इस कारण मैं उस समय के लोगों से रूठा रहा, और कहा, कि इन के मन सदा भटकते रहते हैं, और इन्हों ने मेरे मार्गों को नहीं पहिचाना। ११ तब मैं ने क्रोध में आकर शपथ खाई, कि वे मेरे विश्राम में प्रवेश करने न पाएंगे। १२ हे भाइयो, चौकस रहो, कि तुम में ऐसा बुरा और अविश्वासी न मन हो, जो जीवते परमेश्वर से दूर हट जाए। १३ बरन जिस दिन तक आज का दिन कहा जाता है, हर दिन एक दूसरे को समझाते रहो, ऐसा न हो, कि तुम में से कोई जन पाप के छल में आकर कठोर हो जाए। १४ क्योंकि हम मसीह के * भागी हुए हैं, यदि हम अपने प्रथम भरोसे पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें। १५ जैसा कहा जाता है, कि यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने मनों को कठोर न करो, जैसा कि क्रोध दिलाने के समय किया था। १६ भला किन लोगों ने सुनकर क्रोध दिलाया? क्या उन सब ने नहीं, जो मूसा के द्वारा मिसर से निकले थे? १७ और वह चालीस वर्ष तक किन लोगों से रूठा रहा? क्या उन्हीं से नहीं, जिन्हों ने पाप किया, और उन की लोथें जंगल में पड़ी रहीं? १८ और उस ने किन से शपथ खाई, कि तुम मेरे विश्राम में प्रवेश करने न पाओगे: केवल उन से जिन्हों ने आज्ञा न मानी? १९ सो हम देखते हैं, कि वे अविश्वास के कारण प्रवेश न कर सके।।

४ इसलिये जब कि उसके विश्राम में प्रवेश करने की प्रतिज्ञा अब तक

* या सम्मिलित।

है, तो हमें डरना चाहिए; ऐसा न हो, कि तुम में से कोई जन उस से रहित जान पड़े। २ क्योंकि हमें उन्हीं की नाईं सुसमाचार सुनाया गया है, पर सुने हुए वचन से उन्हें कुछ लाभ न हुआ; क्योंकि सुननेवालों के मन में विश्वास के साथ नहीं बैठा। ३ और हम जिन्हों ने विश्वास किया है, उस विश्राम में प्रवेश करते हैं; जैसा उस ने कहा, कि मैं ने अपने क्रोध में शपथ खाई, कि वे मेरे विश्राम में प्रवेश करने न पाएंगे, यद्यपि जगत की उत्पत्ति के समय से उसके काम हो चुके थे। ४ क्योंकि सातवें दिन के विषय में उस ने कहीं यों कहा है, कि परमेश्वर ने सातवें दिन अपने सब कामों को निपटा करके * विश्राम किया। ५ और इस जगह फिर यह कहता है, कि वे मेरे विश्राम में प्रवेश न करने पाएंगे। ६ तो जब यह बात बाकी है कि कितने और हैं जो उस विश्राम में प्रवेश करें, और जिन्हें उसका सुसमाचार पहिले सुनाया गया, उन्हों ने आज्ञा न मानने के कारण उस में प्रवेश न किया। ७ तो फिर वह किसी विशेष दिन को ठहराकर इतने दिन के बाद दाऊद की पुस्तक में उसे आज का दिन कहता है, जैसे पहिले कहा गया, कि यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने मनों को कठोर न करो। ८ और यदि यहोशू उन्हें विश्राम में प्रवेश कर लेता, तो उसके बाद दूसरे दिन की चर्चा न होती। ९ सो जान लो कि परमेश्वर के लोगों के लिये सब्त का विश्राम बाकी है। १० क्योंकि जिस ने उसके विश्राम में प्रवेश किया है, उस ने भी परमेश्वर की नाईं अपने कामों को पूरा करके * विश्राम किया है। ११ सो हम उस विश्राम में प्रवेश करने का प्रयत्न करें, ऐसा न हो, कि कोई जन उन की नाईं आज्ञा न मानकर † गिर पड़े। १२ क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गांठ गांठ, और गूदे गूदे को अलग करके, वार पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है। १३ और सृष्टि की कोई वस्तु उस से छिपी नहीं है बरन जिस से हमें काम है, उस की आंखों के साम्हने सब वस्तुएं खुली और बेपरद हैं॥

१४ सो जब हमारा ऐसा बड़ा महायाजक है, जो स्वर्गों से होकर गया है, अर्थात् परमेश्वर का पुत्र यीशु; तो आओ, हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें। १५ क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके; बरन वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला। १६ इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे॥

५ क्योंकि हर एक महायाजक मनुष्यों में से लिया जाता है, और मनुष्यों ही के लिये उन बातों के विषय में जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं, ठहराया जाता है; कि भेंट और पाप बलि चढ़ाया

* या कामों से।

* या कामों से।
† या अविश्वासी होकर।

करे। २ और वह अज्ञानों, और भूले भटकों के साथ नर्मी से व्यवहार कर सकता है इसलिये कि वह आप भी निर्बलता से घिरा है। ३ और इसी लिये उसे चाहिए, कि जैसे लोगों के लिये, वैसे ही अपने लिये भी पाप-बलि चढ़ाया करे। ४ और यह आदर का पद कोई अपने आप से नहीं लेता, जब तक कि हारून की नाईं परमेश्वर की ओर से ठहराया न जाए। ५ वैसे ही मसीह ने भी महायाजक बनने की बड़ाई अपने आप से नहीं ली, पर उस को उसी ने दी, जिस ने उस से कहा था, कि तू मेरा पुत्र है, आज मैं ही ने तुझे जन्माया है। ६ वह दूसरी जगह में भी कहता है, तू मलिकिसिदक की रीति पर सदा के लिये याजक है। ७ उस ने अपनी देह में रहने के दिनों में ऊंचे शब्द से पुकार पुकारकर, और आंसू बहा बहाकर उस से जो उस को मृत्यु से बचा* सकता था, प्रार्थनाएं और बिनती की और भक्ति के कारण उस की सुनी गई। ८ और पुत्र होने पर भी, उस ने दुख उठा उठाकर आज्ञा माननी सीखी। ९ और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिये सदा काल के उद्धार का कारण हो गया। १० और उसे परमेश्वर की ओर से मलिकिसिदक की रीति पर महायाजक का पद मिला॥

११ इस के विषय में हमें बहुत सी बातें कहनी हैं, जिन का समझाना भी कठिन है; इसलिये कि तुम ऊंचा सुनने लगे हो। १२ समय के विचार से तो तुम्हें गुरु हो जाना चाहिए था, तौभी क्या यह आवश्यक है, कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचनों की आदि शिक्षा फिर से सिखाए? और ऐसे हो गए हो, कि तुम्हें अन्न के बदले अब तक दूध ही चाहिए। १३ क्योंकि दूध पीनेवाले बच्चे को तो धर्म के वचन की पहिचान नहीं होती, क्योंकि वह बालक है। १४ पर अन्न सयानों के लिये है, जिन के ज्ञानेन्द्रिय अभ्यास करते करते, भले बुरे में भेद करने के लिये पक्के हो गए हैं॥

६ इसलिये आओ मसीह की शिक्षा की आरम्भ की बातों को छोड़कर, हम सिद्धता की ओर आगे बढ़ते जाएं, और मरे हुए कामों से मन फिराने, और परमेश्वर पर विश्वास करने। २ और बपतिस्मों और हाथ रखने, और मरे हुओं के जी उठने*, और अन्तिम न्याय की शिक्षारूपी नेव, फिर से न डालें। ३ और यदि परमेश्वर चाहे, तो हम यही करेंगे। ४ क्योंकि जिन्हों ने एक बार ज्योति पाई है, और जो स्वर्गीय बरदान का स्वाद चख चुके हैं और पवित्र आत्मा के भागी हो गए हैं। ५ और परमेश्वर के उत्तम वचन का और आनेवाले युग की सामर्थों का स्वाद चख चुके हैं। ६ यदि वे भटक जाएं; तो उन्हें मन फिराव के लिये फिर नया बनाना अन्होना है; क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र को अपने लिये फिर क्रूस पर चढ़ाते हैं और प्रगट में उस पर कलंक लगाते हैं। ७ क्योंकि जो भूमि वर्षा के पानी को जो उस पर बार बार पड़ता है, पी पीकर जिन लोगों के लिये वह जोती-बोई जाती है, उन के काम का साग-पात उपजाती है, वह

* या उद्धार कर।

* या मृतकोत्थान।

परमेश्वर से आशीष पाती है। ८ पर यदि वह झाड़ी और ऊंटकटारे उगाती है, तो निकम्मी और स्रापित होने पर है, और उसका अन्त जलाया जाना है॥

९ पर हे प्रियो यद्यपि हम ये बातें कहते हैं तौभी तुम्हारे विषय में हम इस से अच्छा और उद्धारवाली बातों का भरोसा करते हैं। १० क्योंकि परमेश्वर अन्यायी नहीं, कि तुम्हारे काम, और उस प्रेम को भूल जाए, जो तुम ने उसके नाम के लिये इस रीति से दिखाया, कि पवित्र लोगों की सेवा की, और कर भी रहे हो। ११ पर हम बहुत चाहते हैं, कि तुम में से हर एक जन अन्त तक पूरी आशा के लिये ऐसा ही प्रयत्न करता रहे। १२ ताकि तुम आलसी न हो जाओ; बरन उन का अनुकरण करो, जो विश्वास और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओं के वारिस होते हैं॥

१३ और परमेश्वर ने इब्राहीम को प्रतिज्ञा देते समय जब कि शपथ खाने के लिये किसी को अपने से बड़ा न पाया, तो अपनी ही शपथ खाकर कहा। १४ कि मैं सचमुच तुझे बहुत आशीष दूंगा, और तेरी सन्तान को बढ़ाता जाऊंगा। १५ और इस रीति से उस ने धीरज धरकर प्रतिज्ञा की हुई बात प्राप्त की। १६ मनुष्य तो अपने से किसी बड़े की शपथ खाया करते हैं और उन के हर एक विवाद का फैसला शपथ से पक्का होता है। १७ इसलिये जब परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के वारिसों पर और भी साफ रीति से प्रगट करना चाहा, कि उसकी मनसा बदल नहीं सकती तो शपथ को बीच में लाया। १८ ताकि दो बे-बदल बातों के द्वारा जिन के विषय में परमेश्वर का झूठा ठहरना अन्होना है, हमारा दृढ़ता से ढाढ़स बन्ध जाए, जो शरण लेने को इसलिये दौड़े हैं, कि उस आशा को जो साम्हने रखी हुई है प्राप्त करें। १९ वह आशा हमारे प्राण के लिये ऐसा लंगर है जो स्थिर और दृढ़ है, और परदे के भीतर तक पहुंचता है। २० जहां यीशु मलिकिसिदक की रीति पर सदा काल का महायाजक बनकर, हमारे लिये अगुआ की रीति पर प्रवेश हुआ है॥

७ यह मलिकिसिदक शालेम का राजा, और परमप्रधान परमेश्वर का याजक, सर्वदा याजक बना रहता है: जब इब्राहीम राजाओं को मारकर लौटा जाता था, तो इसी ने उस से भेंट करके उसे आशीष दी। २ इसी को इब्राहीम ने सब वस्तुओं का दसवां अंश भी दिया: यह पहिले अपने नाम के अर्थ के अनुसार, धर्म का राजा, और फिर शालेम अर्थात् शान्ति का राजा है। ३ जिस का न पिता, न माता, न वंशावली है, जिस के न दिनों का आदि है और न जीवन का अन्त है; परन्तु परमेश्वर के पुत्र के स्वरूप ठहरा॥

४ अब इस पर ध्यान करो कि यह कैसा महान था जिस को कुलपति इब्राहीम ने अच्छे से अच्छे माल की लूट का दसवां अंश दिया। ५ लेवी की सन्तान में से जो याजक का पद पाते हैं, उन्हें आज्ञा मिली है, कि लोगों, अर्थात अपने भाइयों से चाहे, वे इब्राहीम ही की देह से क्यों न जन्मे हों, व्यवस्था के अनुसार दसवां अंश लें। ६ पर इस ने, जो उन की वंशावली में का भी न था इब्राहीम से दसवां अंश लिया और जिसे

प्रतिज्ञाएं मिली थीं उसे आशीष दी। ७ और इस में संदेह नहीं, कि छोटा बड़े से आशीष पाता है। ८ और यहां तो मरनहार मनुष्य दसवां अंश लेते हैं पर वहां वही लेता है, जिस की गवाही दी जाती है, कि वह जीवित है। ९ तो हम यह भी कह सकते हैं, कि लेवी ने भी, जो दसवां अंश लेता है, इब्राहीम के द्वारा दसवां अंश दिया। १० क्योंकि जिस समय मलिकिसिदक ने उसके पिता से भेंट की, उस समय यह अपने पिता की देह में था॥

११ तब यदि लेवीय याजक पद के द्वारा सिद्धि हो सकती है (जिस के सहारे से लोगों को व्यवस्था मिली थी) तो फिर क्या आवश्यकता थी, कि दूसरा याजक मलिकिसिदक की रीति पर खड़ा हो, और हारून की रीति का न कहलाए? १२ क्योंकि जब याजक का पद बदला जाता है, तो व्यवस्था का भी बदलना अवश्य है। १३ क्योंकि जिस के विषय में ये बातें कही जाती हैं कि वह दूसरे गोत्र का है, जिस में से किसी ने वेदी की सेवा नहीं की। १४ तो प्रगट है, कि हमारा प्रभु यहूदा के गोत्र में से उदय हुआ है और इस गोत्र के विषय में मूसा ने याजक पद की कुछ चर्चा नहीं की। १५ और जब मलिकिसिदक के समान एक और ऐसा याजक उत्पन्न होनेवाला था। १६ जो शारीरिक आज्ञा की व्यवस्था के अनुसार नहीं, पर अविनाशी जीवन की सामर्थ के अनुसार नियुक्त हो तो हमारा दावा और भी स्पष्टता से प्रगट हो गया। १७ क्योंकि उसके विषय में यह गवाही दी गई है, कि तू मलिकिसिदक की रीति पर युगानुयुग याजक है। १८ निदान, पहिली आज्ञा निर्बल; और निष्फल होने के कारण लोप हो गई। १९ (इसलिये कि व्यवस्था ने किसी बात की सिद्धि नहीं कि) और उसके स्थान पर एक ऐसी उत्तम आशा रखी गई है जिस के द्वारा हम परमेश्वर के समीप जा सकते हैं। २० और इसलिये कि मसीह की नियुक्ति बिना शपथ नहीं हुई। २१ (क्योंकि वे तो बिना शपथ याजक ठहराए गए पर यह शपथ के साथ उस की ओर से नियुक्त किया गया जिस ने उसके विषय में कहा, कि प्रभु ने शपथ खाई, और वह उस से फिर न पछताएगा, कि तू युगानुयुग याजक है)। २२ सो यीशु एक उत्तम वाचा का जामिन ठहरा। २३ वे तो बहुत से याजक बनते आए, इस का कारण यह था कि मृत्यु उन्हें रहने नहीं देती थी। २४ पर यह युगानुयुग रहता है; इस कारण उसका याजक पद अटल है। २५ इसी लिये जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उन का पूरा पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उन के लिये बिनती करने को सर्वदा जीवित है॥

२६ सो ऐसा ही महायाजक हमारे योग्य था, जो पवित्र, और निष्कपट और निर्मल, और पापियों से अलग, और स्वर्ग से भी ऊंचा किया हुआ हो। २७ और उन महायाजकों की नाईं उसे आवश्यक नहीं कि प्रति दिन पहिले अपने पापों और फिर लोगों के पापों के लिये बलिदान चढ़ाए; क्योंकि उस ने अपने आप को बलिदान चढ़ाकर उसे एक ही बार निपटा दिया। २८ क्योंकि व्यवस्था तो निर्बल मनुष्यों को महायाजक नियुक्त रती है; परन्तु उस शपथ का वचन

जो व्यवस्था के बाद खाई गई, उस पुत्र को नियुक्त करता है जो युगानुयुग के लिये सिद्ध किया गया है ।।

८ अब जो बातें हम कह रहे हैं, उन में से सब से बड़ी बात यह है, कि हमारा ऐसा महायाजक है, जो स्वर्ग पर महामहिमन के सिंहासन के दहिने जा बैठा। २ और पवित्र स्थान और उस सच्चे तम्बू का सेवक हुआ, जिसे किसी मनुष्य ने नहीं, बरन प्रभु ने खड़ा किया था। ३ क्योंकि हर एक महा-याजक भेंट, और बलिदान चढ़ाने के लिये ठहराया जाता है, इस कारण अवश्य है, कि इस के पास भी कुछ चढ़ाने के लिये हो। ४ और यदि वह पृथ्वी पर होता, तो कभी याजक न होता, इसलिये कि व्यवस्था के अनुसार भेंट चढ़ानेवाले तो हैं। ५ जो स्वर्ग में की वस्तुओं के प्रतिरूप और प्रतिबिम्ब की सेवा करते हैं, जैसे जब मूसा तम्बू बनाने पर था, तो उसे यह चितावनी मिली, कि देख, जो नमूना तुझे पहाड़ पर दिखाया गया था, उसके अनुसार सब कुछ बनाना। ६ पर उस को उन की सेवकाई से बढ़कर मिली, क्योंकि वह और भी उत्तम वाचा का मध्यस्थ ठहरा, जो और उत्तम प्रतिज्ञाओं के सहारे बान्धी गई है। ७ क्योंकि यदि वह पहिली वाचा निर्दोष होती, तो दूसरी के लिये अवसर न ढूंढ़ा जाता। ८ पर वह उन पर दोष लगाकर कहता है, कि प्रभु कहता है, देखो, वे दिन आते हैं, कि मैं इस्राएल के घराने के साथ, और यहूदा के घराने के साथ, नई वाचा बान्धूंगा। ९ यह उस वाचा के समान न होगी, जो मैं ने उन के बाप-दादों के साथ उस समय बान्धी थी, जब मैं उन का हाथ पकड़कर उन्हें मिसर देश से निकाल लाया, क्योंकि वे मेरी वाचा पर स्थिर न रहे, और मैं ने उन की सुधि न ली; प्रभु यही कहता है। १० फिर प्रभु कहता है, कि जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने के साथ बान्धूंगा, वह यह है, कि मैं अपनी व्यवस्था को उन के मनों में डालूंगा, और उसे उन के हृदय पर लिखूंगा, और मैं उन का परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरे लोग ठहरेंगे। ११ और हर एक अपने देशवाले को और अपने भाई को यह शिक्षा न देगा, कि तू प्रभु को पहिचान क्योंकि छोटे से बड़े तक सब मुझे जान लेंगे। १२ क्योंकि मैं उन के अधर्म के विषय में दयावन्त हूंगा, और उन के पापों को फिर स्मरण न करूंगा। १३ नई वाचा के स्थापन से उस ने प्रथम वाचा को पुरानी ठहराई, और जो वस्तु पुरानी और जीर्ण हो जाती है उसका मिट जाना अनिवार्य है ।।

९ निदान, उस पहिली वाचा में भी सेवा के नियम थे; और ऐसा पवित्र-स्थान जो इस जगत का था। २ अर्थात् एक तम्बू बनाया गया, पहिले तम्बू में दीवट, और मेज, और भेंट की रोटियां थीं; और वह पवित्र स्थान कहलाता है। ३ और दूसरे परदे के पीछे वह तम्बू था, जो परम पवित्र-स्थान कहलाता है। ४ उस में सोने की धूपदानी, और चारों ओर सोने से मढ़ा हुआ वाचा का संदूक और इस में मन्ना से भरा हुआ सोने का मर्तबान और हारून की छड़ी जिस में फूल फल आ गए थे और वाचा की पटियां थीं। ५ और उसके ऊपर दोनों

तेजोमय करूब थे, जो प्रायश्चित्त के ढकने पर छाया किए हुए थे: इन्हीं का एक एक करके बखान करने का अभी अवसर नहीं है। ६ जब ये वस्तुएं इस रीति से तैयार हो चुकीं, तब पहिले तम्बू में तो याजक हर समय प्रवेश करके सेवा के काम निबाहते हैं। ७ पर दूसरे में केवल महायाजक वर्ष भर में एक ही बार जाता है; और बिना लोहू लिए नहीं जाता; जिसे वह अपने लिये और लोगों की भूल चूक के लिये चढ़ावा चढ़ाता है। ८ इस से पवित्र आत्मा यही दिखाता है, कि जब तक पहिला तम्बू खड़ा है, तब तक पवित्र स्थान का मार्ग प्रगट नहीं हुआ। ९ और यह तम्बू तो वर्तमान समय के लिये एक दृष्टान्त है; जिस में ऐसी भेंट और बलिदान चढ़ाए जाते हैं, जिन से आराधना करनेवालों के विवेक * सिद्ध नहीं हो सकते। १० इसलिये कि वे केवल खाने पीने की वस्तुओं, और भांति भांति के स्नान विधि के आधार पर शारीरिक नियम हैं, जो सुधार के समय तक के लिये नियुक्त किए गए हैं॥

११ परन्तु जब मसीह आनेवाली † अच्छी अच्छी वस्तुओं का महायाजक होकर आया, तो उस ने और भी बड़े और सिद्ध तम्बू से होकर जो हाथ का बनाया हुआ नहीं, अर्थात इस सृष्टि का नहीं। १२ और बकरों और बछड़ों के लोहू के द्वारा नहीं, पर अपने ही लोहू के द्वारा एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया, और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया। १३ क्योंकि जब बकरों और बैलों का लोहू और कलोर की राख अपवित्र लोगों पर छिड़के जाने से शरीर की शुद्धता के लिये पवित्र करती है। १४ तो मसीह का लोहू जिस नें अपने आप को सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के साम्हने निर्दोष चढ़ाया, तुम्हारे विवेक * को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा, ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो। १५ और इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि उस मृत्यु के द्वारा जो पहिली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिये हुई है, बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें। १६ क्योंकि जहां वाचा बान्धी गई † है वहां वाचा बान्धनेवाले ‡ की मृत्यु का समझ लेना भी अवश्य है। १७ क्योंकि ऐसी वाचा मरने पर पक्की होती है, और जब तक वाचा बान्धनेवाला जीवित रहता है, तब तक वाचा काम की नहीं होती। १८ इसी लिये पहिली वाचा भी बिना लोहू के नहीं बान्धी गई। १९ क्योंकि जब मूसा सब लोगों को व्यवस्था की हर एक आज्ञा सुना चुका, तो उस ने बछड़ों और बकरों का लोहू लेकर, पानी और लाल ऊन, और जूफा के साथ, उस पुस्तक पर और सब लोगों पर छिड़क दिया। २० और कहा, कि यह उस वाचा का लोहू है, जिस की आज्ञा परमेश्वर ने तुम्हारे लिये दी है। २१ और इसी रीति से उस ने तम्बू और सेवा के सारे सामान पर लोहू छिड़का। २२ और व्यवस्था के अनुसार प्रायः सब वस्तुएं

* अर्थात् मन या कानशन्स।
† और पढ़ते हैं। आई हुई।

* अर्थात् मन या कानशन्स।
† या वसीयत या विल की हुई।
‡ या वसीयत या विल लिखनेवाले।

लोहू के द्वारा शुद्ध की जाती हैं; और बिना लोहू बहाए क्षमा नहीं होती ॥

२३ इसलिये अवश्य है, कि स्वर्ग में की वस्तुओं के प्रतिरूप इन के द्वारा शुद्ध किए जाएं; पर स्वर्ग में की वस्तुएं आप इन से उत्तम बलिदानों के द्वारा। २४ क्योंकि मसीह ने उस हाथ के बनाए हुए पवित्र स्थान में जो सच्चे पवित्र स्थान का नमूना है, प्रवेश नहीं किया, पर स्वर्ग ही में प्रवेश किया, ताकि हमारे लिये अब परमेश्वर के साम्हने दिखाई दे। २५ यह नहीं कि वह अपने आप को बार बार चढ़ाए, जैसा कि महायाजक प्रति वर्ष दूसरे का लोहू लिए पवित्र स्थान में प्रवेश किया करता है। २६ नहीं तो जगत की उत्पत्ति से लेकर उस को बार बार दुख उठाना पड़ता; पर अब युग के अन्त में वह एक बार प्रगट हुआ है, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे। २७ और जैसे मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है। २८ वैसे ही मसीह भी बहुतों के पापों को उठा लेने के लिये एक बार बलिदान हुआ और जो लोग उस की बाट जोहते हैं, उन के उद्धार के लिये दूसरी बार बिना पाप के दिखाई देगा ॥

१० क्योंकि व्यवस्था जिस में आनेवाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है, पर उन का असली स्वरूप नहीं, इसलिये उन एक ही प्रकार के बलिदानों के द्वारा, जो प्रति वर्ष अचूक चढ़ाए जाते हैं, पास आनेवालों को कदापि सिद्ध नहीं कर सकतीं। २ नहीं तो उन का चढ़ाना बन्द क्यों न हो जाता? इसलिये कि जब सेवा करनेवाले एक ही बार शुद्ध हो जाते, तो फिर उन का विवेक * उन्हें पापी न ठहराता। ३ परन्तु उन के द्वारा प्रति वर्ष पापों का स्मरण हुआ करता है। ४ क्योंकि अनहोना है, कि बैलो और बकरों का लोहू पापों को दूर करे। ५ इसी कारण वह जगत में आते समय कहता है, कि बलिदान और भेंट तू ने न चाही, पर मेरे लिये एक देह तैयार किया। ६ होम-बलियों और पाप-बलियों से तू प्रसन्न नहीं हुआ। ७ तब मैं ने कहा, देख, मैं आ गया हूं, (पवित्र शास्त्र में मेरे विषय में लिखा हुआ है) ताकि हे परमेश्वर तेरी इच्छा पूरी करूं। ८ ऊपर तो वह कहता है, कि न तू ने बलिदान और भेंट और होम-बलियों और पाप-बलियों को चाहा, और न उन से प्रसन्न हुआ; यद्यपि ये बलिदान तो व्यवस्था के अनुसार चढ़ाए जाते हैं। ९ फिर यह भी कहता है, कि देख, मैं आ गया हूं, ताकि तेरी इच्छा पूरी करूं; निदान, वह पहिले को उठा देता है, ताकि दूसरे को नियुक्त करे। १० उसी इच्छा से हम यीशु मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं। ११ और हर एक याजक तो खड़े होकर प्रति दिन सेवा करता है, और एक ही प्रकार के बलिदान को जो पापों को कभी भी दूर नहीं कर सकते; बार बार चढ़ाता है। १२ पर यह व्यक्ति तो पापों के बदले एक ही बलिदान सर्वदा के लिये चढ़ाकर परमेश्वर के दहिने जा बैठा। १३ और उसी समय से इस की बाट जोह रहा

* अर्थात् मन या कानशन्स।

है, कि उसके बैरी उसके पांवों के नीचे की पीढ़ी बनें। १४ क्योंकि उस ने एक ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते हैं, सर्वदा के लिये सिद्ध कर दिया है। १५ और पवित्र आत्मा भी हमें यही गवाही देता है; क्योंकि उस ने पहिले कहा था। १६ कि प्रभु कहता है; कि जो वाचा मैं उन दिनों के बाद उन से बान्धूंगा वह यह है, कि मैं अपनी व्यवस्थाओं को उन के हृदय पर लिखूंगा और मैं उन के विवेक में डालूंगा। १७ (फिर वह यह कहता है, कि) मैं उन के पापों को, और उन के अधर्म के कामों को फिर कभी स्मरण न करूंगा। १८ और जब इन की क्षमा हो गई है, तो फिर पाप का बलिदान नहीं रहा ।।

१९ सो हे भाइयो, जब कि हमें यीशु के लोहू के द्वारा उस नए और जीवते मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है। २० जो उस ने परदे अर्थात् अपने शरीर में से होकर, हमारे लिये अभिषेक किया है, २१ और इसलिये कि हमारा ऐसा महान याजक है, जो परमेश्वर के घर का अधिकारी है। २२ तो आओ; हम सच्चे मन, और पूरे विश्वास के साथ, और विवेक * का दोष दूर करने के लिये हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर परमेश्वर के समीप जाएं। २३ और अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें; क्योंकि जिस ने प्रतिज्ञा किया है, वह सच्चा † है। २४ और प्रेम, और भले कामों में उस्काने के लिये एक दूसरे की चिन्ता किया करें। २५ और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखो, त्यों त्यों और भी अधिक यह किया करो ।।

२६ क्योंकि सच्चाई की पहिचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान बूझकर पाप करते रहें, तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान बाकी नहीं। २७ हां, दण्ड का एक भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगा। २८ जब कि मूसा की व्यवस्था का न माननेवाला दो या तीन जनों की गवाही पर, बिना दया के मार डाला जाता है। २९ तो सोच लो कि वह कितने और भी भारी दण्ड के योग्य ठहरेगा, जिस ने परमेश्वर के पुत्र को पांवों से रौंदा, और वाचा के लोहू को जिस के द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था, अपवित्र जाना है, और अनुग्रह की आत्मा का अपमान किया। ३० क्योंकि हम उसे जानते हैं, जिस ने कहा, कि पलटा लेना मेरा काम है, मैं ही बदला दूंगा : और फिर यह, कि प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा। ३१ जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है ।।

३२ परन्तु उन पहिले दिनों को स्मरण करो, जिन में तुम ज्योति पाकर दुखों के बड़े झमेले में स्थिर रहे। ३३ कुछ तो यों, कि तुम निन्दा, और क्लेश सहते हुए तमाशा बने, और कुछ यों, कि तुम उन के साझी हुए जिन की दुर्दशा की जाती थी। ३४ क्योंकि तुम कैदियों के दुख में भी दुखी हुए, और अपनी संपत्ति भी आनन्द से लुटने दी; यह जानकर, कि तुम्हारे पास एक और

* अर्थात् मन या कानशन्स।
† यू० विश्वासयोग्य।

भी उत्तम और सर्वदा ठहरनेवाली संपत्ति है। ३५ सो अपना हियाव न छोड़ो क्योंकि उसका प्रतिफल बड़ा है। ३६ क्योंकि तुम्हें धीरज धरना अवश्य है, ताकि परमेश्वर की इच्छा को पूरी करके तुम प्रतिज्ञा का फल पाओ। ३७ क्योंकि अब बहुत ही थोड़ा समय रह गया है जब कि आनेवाला आएगा, और देर न करेगा। ३८ और मेरा धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा, और यदि वह पीछे हट जाए तो मेरा मन उस से प्रसन्न न होगा। ३९ पर हम हटनेवाले नहीं, कि नाश हो जाएं पर विश्वास करनेवाले हैं, कि प्राणों को बचाएं ॥

११ अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है। २ क्योंकि इसी के विषय में प्राचीनों की अच्छी गवाही दी गई। ३ विश्वास ही से हम जान जाते हैं, कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। यह नहीं, कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो। ४ विश्वास ही से हाबील ने कैन से उत्तम बलिदान परमेश्वर के लिये चढ़ाया; और उसी के द्वारा उसके धर्मी होने की गवाही भी दी गई: क्योंकि परमेश्वर ने उस की भेंटों के विषय में गवाही दी; और उसी के द्वारा वह मरने पर भी अब तक बातें करता है। ५ विश्वास ही से हनोक उठा लिया गया, कि मृत्यु को न देखे, और उसका पता नहीं मिला; क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया था, और उसके उठाए जाने से पहिले उस की यह गवाही दी गई थी, कि उस ने परमेश्वर को प्रसन्न किया है। ६ और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है। ७ विश्वास ही से नूह ने उन बातों के विषय में जो उस समय दिखाई न पड़ती थीं, चितौनी पाकर भक्ति के साथ अपने घराने के बचाव के लिये जहाज़ बनाया, और उसके द्वारा उस ने संसार को दोषी ठहराया; और उस धर्म का वारिस हुआ, जो विश्वास से होता है। ८ विश्वास ही से इब्राहीम जब बुलाया गया तो आज्ञा मानकर ऐसी जगह निकल गया जिसे मीरास में लेनेवाला था, और यह न जानता था, कि मैं किधर जाता हूं; तौभी निकल गया। ९ विश्वास ही से उस ने प्रतिज्ञा किए हुए देश में जैसे पराए देश में परदेशी रहकर इसहाक और याकूब समेत, जो उसके साथ उसी प्रतिज्ञा के वारिस थे, तम्बुओं में वास किया। १० क्योंकि वह उस स्थिर नेववाले * नगर की बाट जोहता था, जिस का रचनेवाला और बनानेवाला परमेश्वर है। ११ विश्वास से सारा ने आप बूढ़ी होने पर भी गर्भ धारण करने की सामर्थ पाई; क्योंकि उस ने प्रतिज्ञा करनेवाले को सच्चा † जाना था। १२ इस कारण एक ही जन से जो मरा हुआ सा था, आकाश के तारों और समुद्र के तीर के बालू की नाईं, अनगिनित वंश उत्पन्न हुआ ॥

१३ ये सब विश्वास ही की दशा में मरे; और उन्हों ने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं

* या स्थिर रहनेवाले।
† यू॰ विश्वासयोग्य।

नहीं पाईं; पर उन्हें दूर से देखकर आनन्दित हुए और मान लिया, कि हम पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी हैं। १४ जो ऐसी ऐसी बातें कहते हैं, वे प्रगट करते हैं, कि स्वदेश की खोज में हैं। १५ और जिस देश से वे निकल आए थे, यदि उस की सुधि करते तो उन्हें लौट जाने का अवसर था। १६ पर वे एक उत्तम अर्थात् स्वर्गीय देश के अभिलाषी हैं, इसी लिये परमेश्वर उन का परमेश्वर कहलाने में उन से नहीं लजाता, सो उस ने उन के लिये एक नगर तैयार किया है ।।

१७ विश्वास ही से इब्राहीम ने, परखे जाने के समय में, इसहाक को बलिदान चढ़ाया, और जिस ने प्रतिज्ञाओं को सच माना था। १८ और जिस से यह कहा गया था, कि इसहाक से तेरा वंश कहलाएगा; वह अपने एकलौते को चढ़ाने लगा। १९ क्योंकि उस ने विचार किया, कि परमेश्वर सामर्थी है, कि मरे हुओं में से जिलाए, सो उन्हीं में से दृष्टान्त की रीति पर वह उसे फिर मिला। २० विश्वास ही से इसहाक ने याकूब और एसाव को आनेवाली बातों के विषय में आशीष दी। २१ विश्वास ही से याकूब ने मरते समय यूसुफ के दोनों पुत्रों में से एक एक को आशीष दी, और अपनी लाठी के सिरे पर सहारा लेकर दण्डवत किया। २२ विश्वास ही से यूसुफ ने, जब वह मरने पर था, तो इस्राएल की सन्तान के निकल जाने की चर्चा की, और अपनी हड्डियों के विषय में आज्ञा दी। २३ विश्वास ही से मूसा के माता पिता ने उस को, उत्पन्न होने के बाद तीन महीने तक छिपा रखा; क्योंकि उन्हों ने देखा, कि बालक सुन्दर है, और वे राजा की आज्ञा से न डरे। २४ विश्वास ही से मूसा ने सयाना होकर फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इन्कार किया। २५ इसलिये कि उसे पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दुख भोगना और उत्तम लगा। २६ और मसीह के कारण निन्दित होने को मिसर के भण्डार से बड़ा धन समझा: क्योंकि उस की आंखें फल पाने की ओर लगी थीं। २७ विश्वास ही से राजा के क्रोध से न डरकर उस ने मिसर को छोड़ दिया, क्योंकि वह अन-देखे को मानो देखता हुआ दृढ़ रहा। २८ विश्वास ही से उस ने फसह और लोहू छिड़कने की विधि मानी, कि पहिलौठों का नाश करनेवाला इस्राएलियों * पर हाथ न डाले। २९ विश्वास ही से वे लाल समुद्र के पार ऐसे उतर गए, जैसे सूखी भूमि पर से; और जब मिस्रियों ने वैसा ही करना चाहा, तो सब डूब मरे। ३० विश्वास ही से यरीहो की शहरपनाह, जब सात दिन तक उसका चक्कर लगा चुके तो वह गिर पड़ी। ३१ विश्वास ही से राहाब वेश्या आज्ञा न मानने-वालों † के साथ नाश नहीं हुई; इस-लिये कि उस ने भेदियों को कुशल से रखा था। ३२ अब और क्या कहूँ? क्योंकि समय नहीं रहा, कि गिदोन का, और बाराक और समसून का, और यिफतह का, और दाऊद और शामुएल का, और भविष्यद्वक्ताओं का वर्णन करूं। ३३ इन्हों ने विश्वास ही के द्वारा राज्य जीते; धर्म के काम किए; प्रतिज्ञा की

* या उन।
† या अविश्वासियों।

हुई वस्तुएं प्राप्त कीं, सिंहों के मुंह बन्द किए। ३४ आग की ज्वाला को ठंडा किया; तलवार की धार से बच निकले, निर्बलता में बलवन्त हुए; लड़ाई में वीर निकले; विदेशियों की फौजों को मार भगाया। ३५ स्त्रियों ने अपने मरे हुओं को फिर जीवते पाया; कितने तो मार खाते खाते मर गए; और छुटकारा न चाहा; इसलिये कि उत्तम पुनरुत्थान * के भागी हों। ३६ कई एक ठट्ठों में उड़ाए जाने; और कोड़े खाने; बरन बान्धे जाने; और कैद में पड़ने के द्वारा परखे गए। ३७ पत्थरवाह किए गए; आरे से चीरे गए; उन की परीक्षा की गई; तलवार से मारे गए; वे कंगाली में और क्लेश में और दुख भोगते हुए भेड़ों और बकरियों की खालें ओढ़े हुए, इधर उधर मारे मारे फिरे। ३८ और जंगलों, और पहाड़ों, और गुफाओं में, और पृथ्वी की दरारों में भटकते फिरे। ३९ संसार उन के योग्य न था: और विश्वास ही के द्वारा इन सब के विषय में अच्छी गवाही दी गई, तौभी उन्हें प्रतिज्ञा की हुई वस्तु न मिली। ४० क्योंकि परमेश्वर ने हमारे लिये पहिले से एक उत्तम बात ठहराई, कि वे हमारे बिना सिद्धता को न पहुंचें॥

१२ इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु, और उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिस में हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें। २ और विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें; जिस ने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दहिने जा बैठा। ३ इसलिये उस पर ध्यान करो, जिस ने अपने विरोध में पापियों का इतना वाद-विवाद सह लिया, कि तुम निराश होकर हियाव न छोड़ दो। ४ तुम ने पाप से लड़ते हुए उस से ऐसी मुठभेड़ नहीं की, कि तुम्हारा लोहू बहा हो। ५ और तुम उस उपदेश को जो तुम को पुत्रों की नाईं दिया जाता है, भूल गए हो, कि हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हलकी बात न जान, और जब वह तुझे घुड़के तो हियाव न छोड़। ६ क्योंकि प्रभु, जिस से प्रेम करता है, उस की ताड़ना भी करता है; और जिसे पुत्र बना लेता है, उस को कोड़े भी लगाता है। ७ तुम दुख को ताड़ना समझकर सह लो: परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है, वह कौन सा पुत्र है, जिस की ताड़ना पिता नहीं करता? ८ यदि वह ताड़ना जिस के भागी सब होते हैं, तुम्हारी नहीं हुई, तो तुम पुत्र नहीं, पर व्यभिचार की सन्तान ठहरे! ९ फिर जब कि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे, तो क्या आत्माओं के पिता के और भी आधीन न रहें जिस से जीवित रहें। १० वे तो अपनी अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिये ताड़ना करते थे, पर यह तो हमारे लाभ के लिये करता है, कि हम भी उस की पवित्रता के भागी हो जाएं। ११ और वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है, तौभी

* या मृतकोत्थान।

ज़ो उस को सहते सहते पक्के हो गए हैं, पीछे उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है। १२ इसलिये ढीले हाथों और निर्बल घुटनों को सीधे करो। १३ और अपने पांवों के लिये सीधे मार्ग बनाओ, कि लंगड़ा भटक न जाए, * पर भला चंगा हो जाए॥

१४ सब से मेल मिलाप रखने, और उस पवित्रता के खोजी हो जिस के बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा। १५ और ध्यान से देखते रहो, ऐसा न हो, कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह जाए, या कोई कड़वी जड़ फूटकर कष्ट दे, और उसके द्वारा बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएं। १६ ऐसा न हो, कि कोई जन व्यभिचारी, या एसाव की नाईं अधर्मी हो, जिस ने एक बार के भोजन के बदले अपने पहिलौठे होने का पद बेच डाला। १७ तुम जानते तो हो, कि बाद को जब उस ने आशीष पानी चाही, तो अयोग्य गिना गया, और आंसू बहा बहाकर खोजने पर भी मन फिराव का अवसर उसे न मिला॥

१८ तुम तो उस पहाड़ के पास जो छूआ जा सकता था और आग से प्रज्वलित था, और काली घटा, और अन्धेरा, और आन्धी के पास। १९ और तुरही की ध्वनि, और बोलनेवाले के ऐसे शब्द के पास नहीं आए, जिस के सुननेवालों ने बिनती की, कि अब हम से और बातें न की जाएं। २० क्योंकि वे उस आज्ञा को न सह सके, कि यदि कोई पशु भी पहाड़ को छूए, तो पत्थरवाह किया जाए। २१ और वह दर्शन ऐसा डरावना था, कि मूसा ने कहा; मैं बहुत डरता और कांपता हूं। २२ पर तुम सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवते परमेश्वर के नगर स्वर्गीय यरूशलेम के पास। २३ और लाखों स्वर्गदूतों और उन पहिलौठों की साधारण सभा और कलीसिया जिन के नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं; और सब के न्यायी परमेश्वर के पास, और सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं। २४ और नई वाचा के मध्यस्थ यीशु, और छिड़काव के उस लोहू के पास आए हो, जो हाबील के लोहू से उत्तम बातें कहता है। २५ सावधान रहो, और उस कहनेवाले से मुंह न फेरो, क्योंकि वे लोग जब पृथ्वी पर के चितावनी देनेवाले से मुंह मोड़कर न बच सके, तो हम स्वर्ग पर से चितावनी करनेवाले से मुंह मोड़कर क्योंकर बच सकेंगे? २६ उस समय तो उसके शब्द ने पृथ्वी को हिला दिया पर अब उस ने यह प्रतिज्ञा की है, कि एक बार फिर मैं केवल पृथ्वी को नहीं, बरन आकाश को भी हिला दूंगा। २७ और यह वाक्य 'एक बार फिर' इस बात को प्रगट करता है, कि जो वस्तुएं हिलाई जाती हैं, वे सृजी हुई वस्तुएं होने के कारण टल जाएंगी; ताकि जो वस्तुएं हिलाई नहीं जातीं, वे अटल बनी रहें। २८ इस कारण हम इस राज्य को पाकर जो हिलने का नहीं, उस अनुग्रह को हाथ से न जाने दें, जिस के द्वारा हम भक्ति, और भय सहित, परमेश्वर की ऐसी आराधना कर सकते हैं जिस से वह प्रसन्न होता है। २९ क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म करनेवाली आग है॥

* या लंगड़े की हड्डी उखड़ न जाए।

१३ भाईचारे की प्रीति बनी रहे। २ पहुनाई करना न भूलना, क्योंकि इस के द्वारा कितनों ने अनजाने स्वर्गदूतों की पहुनाई की है। ३ कैदियों की ऐसी सुधि लो, कि मानो उन के साथ तुम भी कैद हो; और जिन के साथ बुरा बर्ताव किया जाता है, उन की भी यह समझकर सुधि लिया करो, कि हमारी भी देह है। ४ विवाह सब में आदर की बात समझी जाए, और बिछौना निष्कलंक रहे; क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों, और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा। ५ तुम्हारा स्वभाव लोभरहित हो, और जो तुम्हारे पास है, उसी पर सन्तोष करो; क्योंकि उस ने आप ही कहा है, मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा। ६ इसलिये हम बेधड़क होकर कहते हैं, कि प्रभु, मेरा सहायक है; मैं न डरूंगा; मनुष्य मेरा क्या कर सकता है॥

७ जो तुम्हारे अगुवे थे, और जिन्हों ने तुम्हें परमेश्वर का वचन सुनाया है, उन्हें स्मरण रखो; और ध्यान से उन के चाल-चलन का अन्त देखकर उन के विश्वास का अनुकरण करो। ८ यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एकसा है। ९ नाना प्रकार के और ऊपरी उपदेशों से न भरमाए जाओ, क्योंकि मन का अनुग्रह से दृढ़ रहना भला है, न कि उन खाने की वस्तुओं से जिन से काम रखनेवालों को कुछ लाभ न हुआ। १० हमारी एक ऐसी वेदी है, जिस पर से खाने का अधिकार उन लोगों को नहीं, जो तम्बू की सेवा करते हैं। ११ क्योंकि जिन पशुओं का लोहू महायाजक पाप-बलि के लिये पवित्र स्थान में ले जाता है, उन की देह छावनी के बाहर जलाई जाती हैं। १२ इसी कारण, यीशु ने भी लोगों को अपने ही लोहू के द्वारा पवित्र करने के लिये फाटक के बाहर दुख उठाया। १३ सो आओ, उस की निन्दा अपने ऊपर लिए हुए छावनी के बाहर उसके पास निकल चलें। १४ क्योंकि यहां हमारा कोई स्थिर रहनेवाला नगर नहीं, बरन हम एक आनेवाले नगर की खोज में हैं। १५ इसलिये हम उसके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान, अर्थात् उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिये सर्वदा चढ़ाया करें। १६ पर भलाई करना, और उदारता न भूलो; क्योंकि परमेश्वर ऐसे बलिदानों से प्रसन्न होता है। १७ अपने अगुवों की मानो; और उन के आधीन रहो, क्योंकि वे उन की नाईं तुम्हारे प्राणों के लिये जागते रहते, जिन्हें लेखा देना पड़ेगा, कि वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी सांस ले लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं॥

१८ हमारे लिये प्रार्थना करते रहो, क्योंकि हमें भरोसा है, कि हमारा विवेक * शुद्ध है; और हम सब बातों में अच्छी चाल चलना चाहते हैं। १९ और इस के करने के लिये मैं तुम्हें और भी समझाता हूं, कि मैं शीघ्र तुम्हारे पास फिर आ सकूं॥

२० अब शान्तिदाता परमेश्वर जो हमारे प्रभु यीशु को जो भेड़ों का महान रखवाला है सनातन वाचा के लोहू के गुण से मरे हुओं में से जिलाकर ले आया।

* अर्थात् मन या कानशन्स।

२१ तुम्हें हर एक भली बात में सिद्ध करे, जिस से तुम उस की इच्छा पूरी करो, और जो कुछ उस को भाता है, उसे यीशु मसीह के द्वारा हम में उत्पन्न करे, जिस की बड़ाई युगानुयुग होती रहे। आमीन ।।

२२ हे भाइयो मैं तुम से बिनती करता हूं, कि इन उपदेश की बातों को सह लेओ; क्योंकि मैं ने तुम्हें बहुत संक्षेप में लिखा है। २३ तुम यह जान लो कि तीमुथियुस हमारा भाई छूट गया है और यदि वह शीघ्र आ गया, तो मैं उसके साथ तुम से भेंट करूंगा ।।

२४ अपने सब अगुवों और सब पवित्र लोगों को नमस्कार कहो। इतालियावाले तुम्हें नमस्कार कहते हैं ।।

२५ तुम सब पर अनुग्रह होता रहे। आमीन ।।

याकूब की पत्री

१ परमेश्वर के और प्रभु यीशु मसीह के दास याकूब की ओर से उन बारहों गोत्रों को जो तित्तर बित्तर होकर रहते हैं नमस्कार पहुंचे ।।

२ हे मेरे भाइयो, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, ३ तो इस को पूरे आनन्द की बात समझो, यह जानकर, कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है। ४ पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो, कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ और तुम में किसी बात की घटी न रहे ।।

५ पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से मांगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है; और उस को दी जाएगी। ६ पर विश्वास से मांगे, और कुछ सन्देह न करे; क्योंकि सन्देह करनेवाला समुद्र की लहर के समान है जो हवा से बहती और उछलती है। ७ ऐसा मनुष्य यह न समझे, कि मुझे प्रभु से कुछ मिलेगा। ८ वह व्यक्ति दुचित्ता है, और अपनी सारी बातों में चंचल है ।।

९ दीन भाई अपने ऊंचे पद पर घमण्ड करे। १० और धनवान अपनी नीच दशा पर: क्योंकि वह घास के फूल की नाईं जाता रहेगा। ११ क्योंकि सूर्य उदय होते ही कड़ी धूप पड़ती है और घास को सुखा देती है, और उसका फूल झड़ जाता है, और उस की शोभा जाती रहती है; उसी प्रकार धनवान भी अपने मार्ग पर चलते चलते धूल में मिल जाएगा ।।

१२ धन्य है वह मनुष्य, जो परीक्षा में स्थिर रहता है; क्योंकि वह खरा निकलकर जीवन का वह मुकुट पाएगा, जिस की प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करनेवालों को दी है। १३ जब किसी की परीक्षा हो, तो वह यह न कहे, कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है; क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न वह किसी की परीक्षा आप करता है।

१४ परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर, और फंसकर परीक्षा में पड़ता है। १५ फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है। १६ हे मेरे प्रिय भाइयो, धोखा न खाओ। १७ क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिस में न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है। १८ उस ने अपनी ही इच्छा से हमें सत्य के वचन के द्वारा उत्पन्न किया, ताकि हम उस की सृष्टि की हुई वस्तुओं में से एक प्रकार के प्रथम फल हों॥

१९ हे मेरे प्रिय भाइयो, यह बात तुम जानते हो: इसलिये हर एक मनुष्य सुनने के लिये तत्पर और बोलने में धीरा और क्रोध में धीमा हो। २० क्योंकि मनुष्य का क्रोध परमेश्वर के धर्म का निर्वाह नहीं कर सकता है। २१ इसलिये सारी मलिनता और बैर भाव की बढ़ती को दूर करके, उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो, जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है। २२ परन्तु वचन पर चलनेवाले बनो, और केवल सुननेवाले ही नहीं जो अपने आप को धोखा देते हैं। २३ क्योंकि जो कोई वचन का सुननेवाला हो, और उस पर चलनेवाला न हो, तो वह उस मनुष्य के समान है जो अपना स्वाभाविक मुंह दर्पण में देखता है। २४ इसलिये कि वह अपने आप को देखकर चला जाता, और तुरन्त भूल जाता है कि मैं कैसा था। २५ पर जो व्यक्ति स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है, वह अपने काम में इसलिये आशीष पाएगा कि सुनकर भूलता नहीं, पर वैसा ही काम करता है। २६ यदि कोई अपने आप को भक्त समझे, और अपनी जीभ पर लगाम न दे, पर अपने हृदय को धोखा दे, तो उस की भक्ति व्यर्थ है। २७ हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है, कि अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उन की सुधि लें, और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें॥

२ हे मेरे भाइयो, हमारे महिमायुक्त प्रभु यीशु मसीह का विश्वास तुम में पक्षपात के साथ न हो। २ क्योंकि यदि एक पुरुष सोने के छल्ले और सुन्दर वस्त्र पहिने हुए तुम्हारी सभा में आए और एक कंगाल भी मैले कुचैले कपड़े पहिने हुए आए। ३ और तुम उस सुन्दर वस्त्रवाले का मुंह देखकर कहो कि तू वहां अच्छी जगह बैठ; और उस कंगाल से कहो, कि तू यहां खड़ा रह, या मेरे पांवों की पीढ़ी के पास बैठ। ४ तो क्या तुम ने आपस में भेद भाव न किया और कुविचार से न्याय करनेवाले न ठहरे? ५ हे मेरे प्रिय भाइयो, सुनो; क्या परमेश्वर ने इस जगत के कंगालों को नहीं चुना कि विश्वास में धनी, और उस राज्य के अधिकारी हों, जिस की प्रतिज्ञा उस ने उन से की है जो उस से प्रेम रखते हैं? ६ पर तुम ने उस कंगाल का अपमान किया: क्या धनी लोग तुम पर अत्याचार नहीं करते और क्या वे ही तुम्हें कचहरियों में घसीट घसीट कर नहीं ले जाते? ७ क्या वे उस उत्तम नाम की निन्दा नहीं करते जिस के तुम कहलाए जाते हो? ८ तौभी यदि तुम पवित्र शास्त्र के इस वचन के अनुसार, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख, सचमुच उस राज्य व्यवस्था को

पूरी करते हो, तो अच्छा ही करते हो। ९ पर यदि तुम पक्षपात करते हो, तो पाप करते हो; और व्यवस्था तुम्हें अपराधी ठहराती है। १० क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है परन्तु एक ही बात में चूक जाए तो वह सब बातों में दोषी ठहरा। ११ इसलिये कि जिस ने यह कहा, कि तू व्यभिचार न करना उसी ने यह भी कहा, कि तू हत्या न करना इसलिये यदि तू ने व्यभिचार तो नहीं किया, पर हत्या की तौभी तू व्यवस्था का उलंघन करने वाला ठहरा। १२ तुम उन लोगों की नाईं वचन बोलो, और काम भी करो, जिन का न्याय स्वतंत्रता की व्यवस्था के अनुसार होगा। १३ क्योंकि जिस ने दया नहीं की, उसका न्याय बिना दया के होगा: दया न्याय पर जयवन्त होती * है॥

१४ हे मेरे भाइयो, यदि कोई कहे कि मुझे विश्वास है पर वह कम न करता हो, तो उस से क्या लाभ? क्या ऐसा विश्वास कभी उसका उद्धार कर सकता है? १५ यदि कोई भाई या बहिन नङ्गे उघाड़े हों, और उन्हें प्रति दिन भोजन की घटी हो। १६ और तुम में से कोई उन से कहे, कुशल से जाओ, तुम गरम रहो और तृप्त रहो; पर जो वस्तुएं देह के लिये आवश्यक हैं वह उन्हें न दे, तो क्या लाभ? १७ वैसे ही विश्वास भी, यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है। १८ बरन कोई कह सकता है कि तुझे विश्वास है, और मैं कर्म करता हूं: तू अपना विश्वास मुझे कर्म बिना तो दिखा; और मैं अपना विश्वास अपने कर्मों के द्वारा तुझे दिखाऊंगा। १९ तुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर है: तू अच्छा करता है: दुष्टात्मा भी विश्वास रखते, और थरथराते हैं। २० पर हे निकम्मे मनुष्य क्या तू यह भी नहीं जानता, कि कर्म बिना विश्वास व्यर्थ है? २१ जब हमारे पिता इब्राहीम ने अपने पुत्र इसहाक को वेदी पर चढ़ाया, तो क्या वह कर्मों से धार्मिक न ठहरा था। २२ सो तू ने देख लिया कि विश्वास ने उस के कामों के साथ मिलकर प्रभाव डाला है और कर्मों से विश्वास सिद्ध हुआ। २३ और पवित्र शास्त्र का यह वचन पूरा हुआ, कि इब्राहीम ने परमेश्वर की प्रतीति की, और यह उसके लिये धर्म गिना गया, और वह परमेश्वर का मित्र कहलाया। २४ सो तुम ने देख लिया कि मनुष्य केवल विश्वास से ही नहीं, बरन कर्मों से भी धर्मी ठहरता है। २५ वैसे ही राहाब वेश्या भी जब उस ने दूतों को अपने घर में उतारा, और दूसरे मार्ग से विदा किया, तो क्या कर्मों से धार्मिक न ठहरी? २६ निदान, जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है वैसा ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है॥

३ हे मेरे भाइयो, तुम में से बहुत उपदेशक न बनें, क्योंकि जानते हो, कि हम उपदेशक और भी दोषी ठहरेंगे। २ इसलिये कि हम सब बहुत बार चूक जाते हैं: जो कोई वचन में नहीं चूकता, वही तो सिद्ध मनुष्य है; और सारी देह पर भी लगाम लगा सकता है। ३ जब हम अपने वश में करने के लिये घोड़ों के मुंह में लगाम लगाते हैं, तो हम उन की सारी देह को भी फेर सकते हैं। ४ देखो, जहाज भी, यद्यपि ऐसे बड़े होते हैं, और प्रचण्ड वायु से चलाए जाते हैं, तौभी एक छोटी सी पतवार के द्वारा मांझी की इच्छा के अनुसार घुमाए जाते

---

* यू० घमण्ड।

हैं। ५ वैसे ही जीभ भी एक छोटा सा अंग है और बड़ी बड़ी डींगें मारती है: देखो, थोड़ी सी आग से कितने बड़े बन में आग लग जाती है। ६ जीभ भी एक आग है; जीभ हमारे अंगों में अधर्म का एक लोक है, और सारी देह पर कलंक लगाती है, और भवचक्र में आग लगा देती है और नरक कुण्ड की आग से जलती रहती है। ७ क्योंकि हर प्रकार के बन-पशु, पक्षी, और रेंगनेवाले जन्तु और जलचर तो मनुष्य जाति के वश में हो सकते हैं और हो भी गए हैं। ८ पर जीभ को मनुष्यों में से कोई वश में नहीं कर सकता; वह एक ऐसी बला है जो कभी रुकती ही नहीं; वह प्राण नाशक विष से भरी हुई है। ९ इसी से हम प्रभु और पिता की स्तुति करते हैं; और इसी से मनुष्यों को जो परमेश्वर के स्वरूप में उत्पन्न हुए हैं स्राप देते हैं। १० एक ही मुंह से धन्यवाद और स्राप दोनों निकलते हैं। ११ हे मेरे भाइयो, ऐसा नहीं होना चाहिए। १२ क्या सोते के एक ही मुंह से मीठा और खारा जल दोनों निकलता है? हे मेरे भाइयो, क्या अंजीर के पेड़ में जैतून, या दाख की लता में अंजीर लग सकते हैं? वैसे ही खारे सोते से मीठा पानी नहीं निकल सकता॥

१३ तुम में ज्ञानवान और समझदार कौन है? जो ऐसा हो वह अपने कामों को अच्छे चालचलन से उस नम्रता सहित प्रगट करे जो ज्ञान से उत्पन्न होती है। १४ पर यदि तुम अपने अपने मन में कड़वी डाह और विरोध रखते हो, तो सत्य के विरोध में घमण्ड न करना, और न तो झूठ बोलना। १५ यह ज्ञान वह नहीं, जो ऊपर से उतरता है बरन सांसारिक, और शारीरिक, और शैतानी है। १६ इसलिये कि जहां डाह और विरोध होता है, वहां बखेड़ा और हर प्रकार का दुष्कर्म भी होता है। १७ पर जो ज्ञान ऊपर से आता है वह पहिले तो पवित्र होता है फिर मिलनसार, कोमल और मृदुभाव और दया, और अच्छे फलों से लदा हुआ और पक्षपात और कपट रहित होता है। १८ और मिलाप करानेवालों के लिये धार्मिकता का फल मेल-मिलाप के साथ बोया जाता है॥

४ तुम में लड़ाइयां और झगड़े कहां से आ गए? क्या उन सुख-विलासों से नहीं जो तुम्हारे अंगों में लड़ते-भिड़ते हैं? २ तुम लालसा रखते हो, और तुम्हें मिलता नहीं; तुम हत्या और डाह करते हो, और कुछ प्राप्त नहीं कर सकते; तुम झगड़ते और लड़ते हो; तुम्हें इसलिये नहीं मिलता, कि मांगते नहीं। ३ तुम मांगते हो और पाते नहीं, इसलिये कि बुरी इच्छा से मांगते हो, ताकि अपने भोग-विलास में उड़ा दो। ४ हे व्यभिचारिणियो, क्या तुम नहीं जानतीं, कि संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है? सो जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपने आप को परमेश्वर का बैरी बनाता है। ५ क्या तुम यह समझते हो, कि पवित्र शास्त्र व्यर्थ कहता है? जिस आत्मा को उस ने हमारे भीतर बसाया है, क्या वह ऐसी लालसा करता है, जिस का प्रतिफल डाह हो? ६ वह तो और भी अनुग्रह देता है; इस कारण यह लिखा है, कि परमेश्वर अभिमानियों से विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है। ७ इसलिये परमेश्वर के आधीन हो जाओ; और शैतान * का साम्हना करो, तो वह तुम्हारे पास से

* यू० इब्लीस।

भाग निकलेगा। ८ परमेश्वर के निकट आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा: हे पापियो, अपने हाथ शुद्ध करो; और हे दुचित्ते लोगो अपने हृदय को पवित्र करो। ६ दुखी होओ, और शोक करो, और रोओ: तुम्हारी हंसी शोक से और तुम्हारा आनन्द उदासी से बदल जाए। १० प्रभु के साम्हने दीन बनो, तो वह तुम्हें शिरोमणि बनाएगा॥

११ हे भाइयो, एक दूसरे की बदनामी न करो, जो अपने भाई की बदनामी करता है, या भाई पर दोष लगाता है, वह व्यवस्था की बदनामी करता है, और व्यवस्था पर दोष लगाता है; और यदि तू व्यवस्था पर दोष लगाता है, तो तू व्यवस्था पर चलनेवाला नहीं, पर उस पर हाकिम ठहरा। १२ व्यवस्था देनेवाला और हाकिम तो एक ही है, जिसे बचाने और नाश करने की सामर्थ है; तू कौन है, जो अपने पड़ोसी पर दोष लगाता है?

१३ तुम जो यह कहते हो, कि आज या कल हम किसी और नगर में जाकर वहां एक वर्ष बिताएंगे, और व्योपार करके लाभ उठाएंगे। १४ और यह नहीं जानते कि कल क्या होगा: सुन तो लो, तुम्हारा जीवन है ही क्या? तुम तो मानो भाप समान हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती है, फिर लोप हो जाती है। १५ इस के विपरीत तुम्हें यह कहना चाहिए, कि यदि प्रभु चाहे तो हम जीवित रहेंगे, और यह या वह काम भी करेंगे। १६ पर अब तुम अपनी डींग पर घमण्ड करते हो; ऐसा सब घमण्ड बुरा होता है। १७ इसलिये जो कोई भलाई करना जानता है और नहीं करता, उसके लिये यह पाप है॥

५ हे धनवानो सुन तो लो; तुम अपने आनेवाले क्लेशों पर चिल्लाकर रोओ। २ तुम्हारा धन बिगड़ गया और तुम्हारे वस्त्रों को कीड़े खा गए। ३ तुम्हारे सोने-चान्दी में काई लग गई है; और वह काई तुम पर गवाही देगी, और आग की नाईं तुम्हारा मांस खा जाएगी: तुम ने अन्तिम युग में धन बटोरा है। ४ देखो, जिन मजदूरों ने तुम्हारे खेत काटे, उन की वह मजदूरी जो तुम ने धोखा देकर रख ली है चिल्ला रही है, और लवनेवालों की दोहाई, सेनाओं के प्रभु के कानों तक पहुंच गई है। ५ तुम पृथ्वी पर भोग-विलास में लगे रहे और बड़ा ही सुख भोगा; तुम ने इस बध के दिन के लिये अपने हृदय का पालन-पोषण करके मोटा ताजा किया। ६ तुम ने धर्मी को दोषी ठहराकर मार डाला; वह तुम्हारा साम्हना नहीं करता॥

७ सो हे भाइयो, प्रभु के आगमन तक धीरज धरो, देखो, गृहस्थ पृथ्वी के बहुमूल्य फल की आशा रखता हुआ प्रथम और अन्तिम वर्षा होने तक धीरज धरता है। ८ तुम भी धीरज धरो, और अपने हृदय को दृढ़ करो, क्योंकि प्रभु का शुभागमन निकट है। ९ हे भाइयो, एक दूसरे पर दोष न लगाओ ताकि तुम दोषी न ठहरो, देखो, हाकिम द्वार पर खड़ा है। १० हे भाइयो, जिन भविष्यद्वक्ताओं ने प्रभु के नाम से बातें कीं, उन्हें दुख उठाने और धीरज धरने का एक आदर्श समझो। ११ देखो, हम धीरज धरनेवालों को धन्य कहते हैं: तुम ने ऐयूब के धीरज के विषय में तो सुना ही है, और प्रभु की ओर से जो उसका प्रतिफल हुआ उसे भी जान लिया है, जिस से प्रभु की अत्यन्त करुणा और दया प्रगट होती है॥

१२ पर हे मेरे भाइयो, सब से श्रेष्ठ बात ह है, कि शपथ न खाना; न स्वर्ग की, पृथ्वी की, न किसी और वस्तु की, पर म्हारी बातचीत हां की हां, और नहीं ो नहीं हो, कि तुम दण्ड के योग्य न हरो॥

१३ यदि तुम में कोई दुखी हो तो वह ार्थना करे: यदि आनन्दित हो, तो वह तुति के भजन गाए। १४ यदि तुम में ोई रोगी हो, तो कलीसिया के प्राचीनों * ो बुलाए, और वे प्रभ के नाम से उस पर ल मल कर उसके लिये प्रार्थना करें। १५ और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा ोगी बच जाएगा और प्रभु उस को उठाकर ड़ा करेगा; और यदि उस ने पाप भी किए ों, तो उन की भी क्षमा हो जाएगी। १६ इसलिये तुम आपस में एक दूसरे के साम्हने अपने अपने पापों को मान लो; और एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो, जिस से चंगे हो जाओ; धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है। १७ एलिय्याह भी तो हमारे समान दुख-सुख भोगी मनुष्य था; और उस ने गिड़गिड़ा कर प्रार्थना की; कि मेंह न बरसे; और साढ़े तीन वर्ष तक भूमि पर मेंह नहीं बरसा। १८ फिर उस ने प्रार्थना की, तो आकाश से वर्षा हुई, और भूमि फलवन्त हुई॥

१९ हे मेरे भाइयो, यदि तुम में कोई सत्य के मार्ग से भटक जाए, और कोई उस को फेर लाए। २० तो वह यह जान ले, कि जो कोई किसी भटके हुए पापी को फेर लाएगा, वह एक प्राण को मृत्यु से बचाएगा, और अनेक पापों पर परदा डालेगा॥

* या प्रिसबुतिरों।

पतरस की पहिली पत्री

१ पतरस की ओर से जो यीशु मसीह का प्रेरित है, उन परदेशियों के नाम, जो पुन्तुस, गलतिया, कप्पदुकिया, आसिया और बिथुनिया में तित्तर बित्तर होकर रहते हैं। २ और परमेश्वर पिता के भविष्य ज्ञान के अनुसार, आत्मा के पवित्र करने के द्वारा आज्ञा मानने, और यीशु मसीह के लोहू के छिड़के जाने के लिये चुने गए हैं॥

तुम्हें अत्यन्त अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे॥

३ हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद दो, जिस ने यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा, अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिये नया जन्म दिया। ४ अर्थात् एक अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास के लिये। ५ जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में रखी है, जिन की रक्षा परमेश्वर की सामर्थ से, विश्वास के द्वारा उस उद्धार के लिये, जो आनेवाले समय में प्रगट होनेवाली है, की जाती है। ६ और इस कारण तुम मगन होते हो, यद्यपि अवश्य है कि अब कुछ दिन तक नाना प्रकार की परीक्षाओं के कारण उदास हो। ७ और यह इसलिये

है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग से ताए हुए नाशमान सोने से भी कहीं अधिक बहुमूल्य है, यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा, और महिमा, और आदर का कारण ठहरे। ८ उस से तुम बिन देखे प्रेम रखते हो, और अब तो उस पर बिन देखे भी विश्वास करके ऐसे आनन्दित और मगन होते हो, जो वर्णन से बाहर और महिमा से भरा हुआ है। ९ और अपने विश्वास का प्रतिफल अर्थात् आत्माओं का उद्धार प्राप्त करते हो। १० इसी उद्धार के विषय में उन भविष्यद्वक्ताओं ने बहुत ढूंढ़-ढांढ़ और जांच-पड़ताल की, जिन्हों ने उस अनुग्रह के विषय में जो तुम पर होने को था, भविष्यद्वाणी की थी। ११ उन्हों ने इस बात की खोज की कि मसीह का आत्मा जो उन में था, और पहिले ही से मसीह के दुखों की और उन के बाद होनेवाली महिमा की गवाही देता था, वह कौन से और कैसे समय की ओर संकेत करता था। १२ उन पर यह प्रगट किया गया, कि वे अपनी नहीं बरन तुम्हारी सेवा के लिये ये बातें कहा करते थे, जिन का समाचार अब तुम्हें उन के द्वारा मिला जिन्हों ने पवित्र आत्मा के द्वारा जो स्वर्ग से भेजा गया: तुम्हें सुसमाचार सुनाया, और इन बातों को स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की लालसा रखते हैं॥

१३ इस कारण अपनी अपनी बुद्धि की कमर बान्धकर, और सचेत रहकर उस अनुग्रह की पूरी आशा रखो, जो यीशु मसीह के प्रगट होने के समय तुम्हें मिलनेवाला है। १४ और आज्ञाकारी बालकों की नाईं अपनी अज्ञानता के समय की पुरानी अभिलाषाओं के सदृश न बनो। १५ पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चालचलन में पवित्र बनो। १६ क्योंकि लिखा है, कि पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं। १७ और जब कि तुम, हे पिता, कहकर उस से प्रार्थना करते हो, जो बिना पक्षपात हर एक के काम के अनुसार न्याय करता है, तो अपने परदेशी होने का समय भय से बिताओ। १८ क्योंकि तुम जानते हो, कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो बापदादों से चला आता है उस से तुम्हारा छुटकारा चान्दी सोने अर्थात् नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। १९ पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ। २० उसका ज्ञान तो जगत की उत्पत्ति के पहिले ही से जाना गया था, पर अब इस अन्तिम युग में तुम्हारे लिये प्रगट हुआ। २१ जो उसके द्वारा उस परमेश्वर पर विश्वास करते हो, जिस ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, और महिमा दी; कि तुम्हारा विश्वास और आशा परमेश्वर पर हो। २२ सो जब कि तुम ने भाईचारे की निष्कपट प्रीति के निमित्त सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है, तो तन मन लगाकर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो। २३ क्योंकि तुम ने नाशमान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरनेवाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है। २४ क्योंकि हर एक प्राणी घास की नाईं है, और उस की सारी शोभा घास के फूल की नाईं है: घास सूख जाती है, और फूल झड़ जाता है। २५ परन्तु प्रभु का वचन युगानुयुग स्थिर रहेगा: और यह वही सुसमाचार का वचन है जो तुम्हें सुनाया गया था॥

२ इसलिये सब प्रकार का बैरभाव और छल और कपट और डाह और बदनामी को दूर करके। २ नये जन्मे हुए बच्चों की नाईं निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ। ३ यदि तुम ने प्रभु की कृपा का स्वाद चख लिया है। ४ उसके पास आकर, जिसे मनुष्यों ने तो निकम्मा ठहराया, परन्तु परमेश्वर के निकट चुना हुआ, और बहुमूल्य जीवता पत्थर है। ५ तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाईं आत्मिक घर बनते जाते हो, जिस से याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हैं। ६ इस कारण पवित्र शास्त्र में भी आया है, कि देखो, मैं सिय्योन में कोने के सिरे का चुना हुआ और बहुमूल्य पत्थर धरता हूं: और जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह किसी रीति से लज्जित नहीं होगा। ७ सो तुम्हारे लिये जो विश्वास करते हो, वह तो बहुमूल्य है, पर जो विश्वास नहीं करते उन के लिये * जिस पत्थर को राजमिस्त्रीयों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा हो गया। ८ और ठेस † लगने का पत्थर और ठोकर खाने की चटान हो गया है: क्योंकि वे तो वचन को न मानकर ठोकर खाते हैं और इसी के लिये वे ठहराए भी गए थे। ९ पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिये कि जिस ने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो। १० तुम पहिले तो कुछ भी नहीं थे, पर अब परमेश्वर की प्रजा हो: तुम पर दया नहीं हुई थी पर अब तुम पर दया हुई है॥

११ हे प्रियो मैं तुम से बिनती करता हूं, कि तुम अपने आप को परदेशी और यात्री जानकर उन सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध करती हैं, बचे रहो। १२ अन्यजातियों में तुम्हारा चालचलन भला हो; इसलिये कि जिन जिन बातों में वे तुम्हें कुकर्मी जानकर बदनाम करते हैं, वे तुम्हारे भले कामों को देखकर; उन्हीं के कारण कृपा दृष्टि के दिन परमेश्वर की महिमा करें॥

१३ प्रभु के लिये मनुष्यों के ठहराए हुए हर एक प्रबन्ध के आधीन में रहो, राजा के इसलिये कि वह सब पर प्रधान है। १४ और हाकिमों के, क्योंकि वे कुकर्मियों को दण्ड देने और सुकर्मियों की प्रशंसा के लिये उसके भेजे हुए हैं। १५ क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम भले काम करने से निर्बुद्धि लोगों की अज्ञानता की बातों को बन्द कर दो। १६ और अपने आप को स्वतंत्र जानो पर अपनी इस स्वतंत्रता को बुराई के लिये आड़ न बनाओ, परन्तु अपने आप को परमेश्वर के दास समझकर चलो। १७ सब का आदर करो, भाइयों से प्रेम रखो, परमेश्वर से डरो, राजा का सम्मान करो॥

१८ हे सेवको, हर प्रकार के भय * के साथ अपने स्वामियों के आधीन रहो, न केवल भलों और नम्रों के, पर कुटिलों के भी। १९ क्योंकि यदि कोई परमेश्वर का विचार करके † अन्याय से दुख उठाता हुआ क्लेश सहता है, तो यह सुहावना है।

* भजन संहिता ११८ : २२ को देखो।
† यशायाह ८ : १४ को देखो।

* या आदर।
† यू० के विवेक या कानशन्स से।

२० क्योंकि यदि तुम ने अपराध करके घूसे खाए और धीरज धरा, तो इस में क्या बड़ाई की बात है? पर यदि भला काम करके दुख उठाते हो और धीरज धरते हो, तो यह परमेश्वर को भाता है। २१ और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो। २२ न तो उस ने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। २३ वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था। २४ वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया*, जिस से हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं: उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए। २५ क्योंकि तुम पहिले भटकी हुई भेड़ों की नाईं थे, पर अब अपने प्राणों के रखवाले और अध्यक्ष† के पास फिर आ गए हो॥

३ हे पत्नियो, तुम भी अपने पति के आधीन रहो। २ इसलिये कि यदि इन में से कोई ऐसे हों जो वचन को न मानते हों, तौभी तुम्हारे भय‡ सहित पवित्र चालचलन को देखकर बिना वचन के अपनी अपनी पत्नी के चालचलन के द्वारा खिंच जाएं। ३ और तुम्हारा सिंगार दिखावटी न हो, अर्थात् बाल गूंथने, और सोने के गहने, या भांति भांति के कपड़े पहिनना। ४ बरन तुम्हारा छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व, नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है। ५ और पूर्वकाल में पवित्र स्त्रियां भी, जो परमेश्वर पर आशा रखती थीं, अपने आप को इसी रीति से सवांरती और अपने अपने पति के आधीन रहती थीं। ६ जैसे सारा इब्राहीम की आज्ञा में रहती और उसे स्वामी कहती थी: सो तुम भी यदि भलाई करो, और किसी प्रकार के भय से भयभीत न हो तो उस की बेटियां ठहरोगी॥

७ वैसे ही हे पतियो, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों जीवन के बरदान* के वारिस हैं, जिस से तुम्हारी प्रार्थनाएं रुक न जाएं॥

८ निदान, सब के सब एक मन और कृपामय और भाईचारे की प्रीति रखनेवाले, और करुणामय, और नम्र बनो। ९ बुराई के बदले बुराई मत करो; और न गाली के बदले गाली दो; पर इस के विपरीत आशीष ही दो: क्योंकि तुम आशीष के वारिस होने के लिये बुलाए गए हो। १० क्योंकि जो कोई जीवन की इच्छा रखता है, और अच्छे दिन देखना चाहता है, वह अपनी जीभ को बुराई से, और अपने होंठों को छल की बातें करने से रोके रहे। ११ वह बुराई का साथ छोड़े, और भलाई ही करे; वह मेल मिलाप को ढूंढ़े, और उस के यत्न में रहे। १२ क्योंकि प्रभु की आंखें धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान उन की बिनती की ओर लगे रहते हैं, परन्तु प्रभु बुराई करनेवालों के विमुख रहता है॥

* या उस ने आप क्रूस पर हमारे पापों को अपनी देह पर उठा लिया।
† या बिशप। ‡ या आदर।

* यू० अनुग्रह।

१३ और यदि तुम भलाई करने में उत्तेजित रहो तो तुम्हारी बुराई करनेवाला फिर कौन है? १४ और यदि तुम धर्म के कारण दुख भी उठाओ, तो धन्य हो; पर उन के डराने से मत डरो, और न घबराओ। १५ पर मसीह को प्रभु जानकर अपने अपने मन में पवित्र समझो, और जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, तो उसे उत्तर देने के लिये सर्वदा तैयार रहो, पर नम्रता और भय के साथ। १६ और विवेक * भी शुद्ध रखो, इसलिये कि जिन बातों के विषय में तुम्हारी बदनामी होती है, उन के विषय में वे जो तुम्हारे मसीही अच्छे चालचलन का अपमान करते हैं लज्जित हों। १७ क्योंकि यदि परमेश्वर की यही इच्छा हो, कि तुम भलाई करने के कारण दुख उठाओ, तो यह बुराई करने के कारण दुख उठाने से उत्तम है। १८ इसलिये कि मसीह ने भी, अर्थात् अधर्मियों के लिये धर्मी ने पापों के कारण एक बार दुख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुंचाए: वह शरीर के भाव से तो घात किया गया, पर आत्मा के भाव से जिलाया गया। १९ उसी में उस ने जाकर कैदी आत्माओं को भी प्रचार किया। २० जिन्हों ने उस बीते समय में आज्ञा न माना जब परमेश्वर नूह के दिनों में धीरज धरकर ठहरा रहा, और वह जहाज बन रहा था, जिस में बैठकर थोड़े लोग अर्थात् आठ प्राणी पानी के द्वारा बच गए। २१ और उसी पानी का दृष्टान्त भी, अर्थात् बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है; (उस से शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध

* अर्थात् मन या कानशन्स।

विवेक * से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है)। २२ वह स्वर्ग पर जाकर परमेश्वर के दहिनी ओर बैठ गया; और स्वर्गदूत और अधिकारी और सामर्थी उसके आधीन किए गए हैं॥

४ सो जब कि मसीह ने शरीर में होकर दुख उठाया तो तुम भी उस ही मनसा को धारण करके हथियार बान्ध लो क्योंकि जिस ने शरीर में दुख उठाया, वह पाप से छूट गया। २ ताकि भविष्य म अपना शेष शारीरिक जीवन मनुष्यों की अभिलाषाओं के अनुसार नहीं बरन परमेश्वर की इच्छा के अनुसार व्यतीत करो। ३ क्योंकि अन्यजातियों की इच्छा के अनुसार काम करने, और लुचपन की बुरी अभिलाषाओं, मतवालापन, लीला-क्रीड़ा, पियक्कड़पन, और घृणित मूर्त्तिपूजा में जहां तक हम ने पहिले समय गंवाया, वही बहुत हुआ। ४ इस से वे अचम्भा करते हैं, कि तुम ऐसे भारी लुचपन में उन का साथ नहीं देते, और इसलिये वे बुरा भला कहते हैं। ५ पर वे उस को जो जीवतों और मरे हुओं का न्याय करने को तैयार है, लेखा देंगे। ६ क्योंकि मरे हुओं को भी सुसमाचार इसी लिये सुनाया गया, कि शरीर में तो मनुष्यों के अनुसार उन का न्याय हो, पर आत्मा में वे परमेश्वर के अनुसार जीवित रहें॥

७ सब बातों का अन्त तुरन्त होनेवाला है; इसलिये संयमी होकर प्रार्थना के लिये सचेत रहो। ८ और सब में श्रेष्ठ बात यह है कि एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो; क्योंकि प्रेम अनेक पापों को ढांप देता है। ९ बिना कुड़कुड़ाए एक दूसरे की पहुनाई

* अर्थात् मन या कानशन्स।

करो। १० जिस को जो बरदान मिला है, वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भण्डारियों की नाईं एक दूसरे की सेवा में लगाए। ११ यदि कोई बोले, तो ऐसा बोले, मानो परमेश्वर का वचन है; यदि कोई सेवा करे, तो उस शक्ति से करे जो परमेश्वर देता है; जिस से सब बातों में यीशु मसीह के द्वारा, परमेश्वर की महिमा प्रगट हो: महिमा और समराज्य युगानुयुग उसी की है। आमीन॥

१२ हे प्रियो, जो दुख रूपी अग्नि तुम्हारे परखने के लिये तुम में भड़की है, इस से यह समझकर अचम्भा न करो कि कोई अनोखी बात तुम पर बीत रही है। १३ पर जैसे जैसे मसीह के दुखों में सहभागी होते हो, आनन्द करो, जिस से उसकी महिमा के प्रगट होते समय भी तुम आनन्दित और मगन हो। १४ फिर यदि मसीह के नाम के लिये तुम्हारी निन्दा की जाती है, तो धन्य हो; क्योंकि महिमा का आत्मा, जो परमेश्वर का आत्मा है, तुम पर छाया करता है। १५ तुम में से कोई व्यक्ति हत्यारा या चोर, या कुकर्मी होने, या पराए काम में हाथ डालने के कारण दुख न पाए। १६ पर यदि मसीही होने के कारण दुख पाए, तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिये परमेश्वर की महिमा करे। १७ क्योंकि वह समय आ पहुंचा है, कि पहिले परमेश्वर के लोगों * का न्याय किया जाए, और जब कि न्याय का आरम्भ हम ही से होगा तो उन का क्या अन्त होगा जो परमेश्वर के सुसमाचार को नहीं मानते? १८ और यदि धर्मी व्यक्ति ही कठिनता से उद्धार पाएगा, तो भक्तिहीन और पापी का क्या ठिकाना? १९ इसलिये जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार दुख उठाते हैं, वे भलाई करते हुए, अपने अपने प्राण को विश्वासयोग्य सृजनहार के हाथ में सौंप दें॥

५ तुम में जो प्राचीन * हैं, मैं उन की नाईं प्राचीन और मसीह के दुखों का गवाह और प्रगट होनेवाली महिमा में सहभागी होकर उन्हें यह समझाता हूं। २ कि परमेश्वर के उस झुंड की, जो तुम्हारे बीच में हैं रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच-कमाई के लिये नहीं, पर मन लगा कर। ३ और जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, बरन झुंड के लिये आदर्श बनो। ४ और जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा, तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा, जो मुरझाने का नहीं। ५ हे नवयुवको, तुम भी प्राचीनों † के आधीन रहो, बरन तुम सब के सब एक दूसरे की सेवा के लिये दीनता से कमर बान्धे रहो, क्योंकि परमेश्वर अभिमानियों का साम्हना करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है। ६ इसलिये परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए। ७ और अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उस को तुम्हारा ध्यान है। ८ सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान ‡ गर्जनेवाले सिंह की नाईं इस खोज में रहता है, कि किस को फाड़ खाए। ९ विश्वास में दृढ़ होकर, और यह जानकर उसका साम्हना करो, कि तुम्हारे भाई जो संसार में हैं, ऐसे ही

---

* यू० घर।

* या प्रिसबुतिर।

† या प्रिसबुतिरों।　‡ यू० इबलीस।

दुख भुगत रहे हैं। १० अब परमेश्वर जो सारे अनुग्रह का दाता है, जिस ने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिये बुलाया, तुम्हारे थोड़ी देर तक दुख उठाने के बाद आप ही तुम्हें सिद्ध और स्थिर और बलवन्त करेगा। ११ उसी का साम्राज्य युगानुयुग रहे। आमीन॥

१२ मैं ने सिलवानस के हाथ, जिसे मैं विश्वासयोग्य भाई समझता हूं, संक्षेप में लिखकर तुम्हें समझाया है और यह गवाही दी है कि परमेश्वर का सच्चा अनुग्रह यही है, इसी में स्थिर रहो। १३ जो बाबुल में तुम्हारी नाईं चुने हुए लोग हैं, वह और मेरा पुत्र मरकुस तुम्हें नमस्कार कहते हैं। १४ प्रेम से चुम्बन ले लेकर एक दूसरे को नमस्कार करो॥

तुम सब को जो मसीह में हो शान्ति मिलती रहे॥

पतरस की दूसरी पत्री

१ शमौन पतरस की ओर से जो यीशु मसीह का दास और प्रेरित है, उन लोगों के नाम जिन्हों ने हमारे परमेश्वर और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह की धार्मिकता से हमारा सा बहुमूल्य विश्वास प्राप्त किया है। २ परमेश्वर के और हमारे प्रभु यीशु की पहचान के द्वारा अनुग्रह और शान्ति तुम में बहुतायत से बढ़ती जाए। ३ क्योंकि उसके ईश्वरीय सामर्थ ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिस ने हमें अपनी ही महिमा और सद्गुण के अनुसार बुलाया है। ४ जिन के द्वारा उस ने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं दी हैं: ताकि इन के द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूटकर जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो जाओ। ५ और इसी कारण तुम सब प्रकार का यत्न करके, अपने विश्वास पर सद्गुण, और सद्गुण पर समझ। ६ और समझ पर संयम, और संयम पर धीरज, और धीरज पर भक्ति। ७ और भक्ति पर भाईचारे की प्रीति, और भाईचारे की प्रीति पर प्रेम बढ़ाते जाओ। ८ क्योंकि यदि ये बातें तुम में वर्तमान रहें, और बढ़ती जाएं, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के पहचानने में निकम्मे और निष्फल न होने देंगी। ९ और जिस में ये बातें नहीं, वह अन्धा है, और धुन्धला देखता है, और अपने पूर्वकाली पापों से धुलकर शुद्ध होने को भूल बैठा है। १० इस कारण हे भाइयो, अपने बुलाए जाने, और चुन लिये जाने को सिद्ध करने का भली भांति यत्न करते जाओ, क्योंकि यदि ऐसा करोगे, तो कभी भी ठोकर न खाओगे। ११ बरन इस रीति से तुम हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में बड़े आदर के साथ प्रवेश करने पाओगे॥

१२ इसलिये यद्यपि तुम ये बातें जानते हो, और जो सत्य वचन तुम्हें मिला है,

उस में बने रहते हो, तौभी मैं तुम्हें इन बातों की सुधि दिलाने को सर्वदा तैयार रहूंगा। १३ और मैं यह अपने लिये उचित समझता हूं, कि जब तक मैं इस डेरे में हूं, तब तक तुम्हें सुधि दिला दिलाकर उभारता रहूं। १४ क्योंकि यह जानता हूं, कि मसीह के वचन के अनुसार मेरे डेरे के गिराए जाने का समय शीघ्र आनेवाला है। १५ इसलिये मैं ऐसा यत्न करूंगा, कि मेरे कूच करने के बाद तुम इन सब बातों को सर्वदा स्मरण कर सको। १६ क्योंकि जब हम ने तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ का, और आगमन का समाचार दिया था तो वह चतुराई से गढ़ी हुई कहानियों का अनुकरण नहीं किया था बरन हम ने आप ही उसके प्रताप को देखा था। १७ कि उस ने परमेश्वर पिता से आदर, और महिमा पाई जब उस प्रतापमय महिमा में से यह वाणी आई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूं। १८ और जब हम उसके साथ पवित्र पहाड़ पर थे, तो स्वर्ग से यही वाणी आते सुना। १९ और हमारे पास जो भविष्यद्वक्ताओं का वचन है, वह इस घटना से दृढ़ ठहरा और तुम यह अच्छा करते हो जो यह समझकर उस पर ध्यान करते हो, कि वह एक दीया है, जो अन्धियारे स्थान में उस समय तक प्रकाश देता रहता है जब तक कि पौ न फटे, और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में न चमक उठे। २० पर पहिले यह जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती। २१ क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे॥

२ और जिस प्रकार उन लोगों में झूठे भविष्यद्वक्ता थे उसी प्रकार तुम में भी झूठे उपदेशक होंगे, जो नाश करनेवाले पाखण्ड का उद्घाटन छिप छिपकर करेंगे और उस स्वामी का जिस ने उन्हें मोल लिया है इन्कार करेंगे और अपने आप को शीघ्र विनाश में डाल देंगे। २ और बहुतेरे उन की नाईं लुचपन करेंगे, जिन के कारण सत्य के मार्ग की निन्दा की जाएगी। ३ और वे लोभ के लिये बातें गढ़कर तुम्हें अपने लाभ का कारण बनाएंगे, और जो दण्ड की आज्ञा उन पर पहिले से हो चुकी है, उसके आने में कुछ भी देर नहीं, और उन का विनाश ऊंघता नहीं। ४ क्योंकि जब परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतों को जिन्हों ने पाप किया नहीं छोड़ा, पर नरक में भेजकर अन्धेरे कुण्डों में डाल दिया, ताकि न्याय के दिन तक बन्दी रहें। ५ और प्रथम युग के संसार को भी न छोड़ा, बरन भक्तिहीन संसार पर महा जल-प्रलय भेजकर धर्म के प्रचारक नूह समेत आठ व्यक्तियों को बचा लिया। ६ और सदोम और अमोराह के नगरों को विनाश का ऐसा दण्ड दिया, कि उन्हें भस्म करके राख में मिला दिया ताकि वे आनेवाले भक्तिहीन लोगों की शिक्षा के लिये एक दृष्टान्त बनें। ७ और धर्मी लूत को जो अधर्मियों के अशुद्ध चालचलन से बहुत दुखी था छुटकारा दिया। ८ (क्योंकि वह धर्मी उन के बीच में रहते हुए, और उन के अधर्म के कामों को देख देखकर, और सुन सुनकर, हर दिन अपने सच्चे मन को पीड़ित करता था)। ९ तो प्रभु भक्तों को परीक्षा में से निकाल लेना

और अधर्मियों को न्याय के दिन तक दण्ड की दशा में रखना भी जानता है। १० निज करके उन्हें जो अशुद्ध अभिलाषाओं के पीछे शरीर के अनुसार चलते, और प्रभुता को तुच्छ जानते हैं: वे ढीठ, और हठी हैं, और ऊंचे पदवालों को बुरा भला कहने से नहीं डरते। ११ तौभी स्वर्गदूत जो शक्ति और सामर्थ में उन से बड़े हैं, प्रभु के साम्हने उन्हें बुरा भला कहकर दोष नहीं लगाते। १२ पर ये लोग निर्बुद्धि पशुओं ही के तुल्य हैं, जो पकड़े जाने और नाश होने के लिये उत्पन्न हुए हैं; और जिन बातों को जानते ही नहीं, उन के विषय में औरों को बुरा भला कहते हैं, वे अपनी सड़ाहट में आप ही सड़ जाएंगे। १३ औरों का बुरा करने के बदले उन्हीं का बुरा होगा: उन्हें दिन दोपहर सुख-विलास करना भला लगता है; यह कलंक और दोष हैं: जब वे तुम्हारे साथ खाते-पीते हैं, तो अपनी ओर से प्रेम भोज करके भोग-विलास करते हैं। १४ उन की आंखों में व्यभिचारिणी बसी हुई है, और वे पाप किए बिना रुक नहीं सकते: वे चंचल मनवालों को फुसला लेते हैं; उन के मन को लोभ करने का अभ्यास हो गया है, वे सन्ताप के सन्तान हैं। १५ वे सीधे मार्ग को छोड़कर भटक गए हैं, और बओर के पुत्र बिलाम के मार्ग पर हो लिए हैं; जिस ने अधर्म की मजदूरी को प्रिय जाना। १६ पर उसके अपराध के विषय में उलहना दिया गया, यहा तक कि अबोल गदही ने मनुष्य की बोली से उस भविष्यद्वक्ता को उसके बावलेपन से रोका। १७ ये लोग अन्धे कूंए, और आन्धी के उड़ाए हुए बादल हैं, उन के लिये अनन्त अन्धकार ठहराया गया है। १८ वे व्यर्थ घमण्ड की बातें कर करके लुचपन के कामों के द्वारा, उन लोगों को शारीरिक अभिलाषाओं में फंसा लेते हैं, जो भटके हुओं में से अभी निकल ही रहे हैं। १९ वे उन्हें स्वतंत्र होने की प्रतिज्ञा तो देते हैं, पर आप ही सड़ाहट के दास हैं, क्योंकि जो व्यक्ति जिस से हार गया है, वह उसका दास बन जाता है। २० और जब वे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह की पहचान के द्वारा संसार की नाना प्रकार की अशुद्धता से बच निकले, और फिर उन में फंसकर हार गए, तो उन की पिछली दशा पहिली से भी बुरी हो गई है। २१ क्योंकि धर्म के मार्ग का न जानना ही उन के लिये इस से भला होता, कि उसे जानकर, उस पवित्र आज्ञा से फिर जाते, जो उन्हें सौंपी गई थी। उन पर यह कहावत * ठीक बैठती है, २२ कि कुत्ता अपनी छांट की ओर और धोई हुई सूअरनी कीचड़ में लोटने के लिये फिर चली जाती है॥

३ हे प्रियो, अब मैं तुम्हें यह दूसरी पत्री लिखता हूं, और दोनों में सुधि दिलाकर तुम्हारे शुद्ध मन को उभारता हूं। २ कि तुम उन बातों को, जो पवित्र भविष्यद्वक्ताओं ने पहिले से कही हैं और प्रभु, और उद्धारकर्त्ता की उस आज्ञा को स्मरण करो, जो तुम्हारे प्रेरितों के द्वारा दी गई थी। ३ और यह पहिले जान लो, कि अन्तिम दिनों में हंसी ठट्ठा करनेवाले आएंगे, जो अपनी ही अभिलाषाओं के अनुसार चलेंगे। ४ और कहेंगे, उसके आने की प्रतिज्ञा कहां गई? क्योंकि जब से बाप-दादे सो गए हैं, सब कुछ वैसा ही है, जैसा सृष्टि के आरम्भ से था? ५ वे तो जान बूझकर यह भूल गए, कि परमेश्वर के वचन

* या दृष्टान्त।

के द्वारा से आकाश प्राचीन काल से वर्तमान हैं और पृथ्वी भी जल में से बनी और जल में स्थिर है। ६ इन्हीं के द्वारा उस युग का जगत जल में डूब कर नाश हो गया। ७ पर वर्तमान काल के आकाश और पृथ्वी उसी वचन के द्वारा इसलिये रखे हैं, कि जलाए जाएं; और वह भक्तिहीन मनुष्यों के न्याय और नाश होने के दिन तक ऐसे ही रखे रहेंगे॥

८ हे प्रियो, यह एक बात तुम से छिपी न रहे, कि प्रभु के यहां एक दिन हजार वर्ष के बराबर है, और हजार वर्ष एक दिन के बराबर हैं। ९ प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि कोई नाश हो; बरन यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले। १० परन्तु प्रभु का दिन चोर की नाईं आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएंगे, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे। ११ तो जब कि ये सब वस्तुएं, इस रीति से पिघलनेवाली हैं, तो तुम्हें पवित्र चालचलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए। १२ और परमेश्वर के उस दिन की बाट किस रीति से जोहना चाहिए और उसके जल्द आने के लिये कैसा यत्न करना चाहिए; जिस के कारण आकाश आग से पिघल जाएंगे, और आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर गल जाएंगे। १३ पर उस की प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिन में धार्मिकता बास करेगी॥

१४ इसलिये, हे प्रियो, जब कि तुम इन बातों की आस देखते हो तो यत्न करो कि तुम शान्ति से उसके साम्हने निष्कलंक और निर्दोष ठहरो। १५ और हमारे प्रभु के धीरज को उद्धार समझो, जैसे हमारे प्रिय भाई पौलुस ने भी उस ज्ञान के अनुसार जो उसे मिला, तुम्हें लिखा है। १६ वैसे ही उस ने अपनी सब पत्रियों में भी इन बातों की चर्चा की है जिन में कितनी बातें ऐसी हैं, जिनका समझना कठिन है, और अनपढ़ और चंचल लोग उन के अर्थों को भी पवित्र शास्त्र की और बातों की नाईं खींच तानकर अपने ही नाश का कारण बनाते हैं। १७ इसलिये हे प्रियो तुम लोग पहिले ही से इन बातों को जानकर चौकस रहो, ताकि अधर्मियों के भ्रम में फंसकर अपनी स्थिरता को हाथ से कहीं खो न दो। १८ पर हमारे प्रभु, और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ। १९ उसी की महिमा अब भी हो, और युगानुयुग होती रहे। आमीन॥

यूहन्ना की पहिली पत्री

१ उस जीवन के वचन के विषय में जो आदि से था, जिसे हम ने सुना, और जिसे अपनी आंखों से देखा, वरन जिसे हम ने ध्यान से देखा; और हाथों से छूआ।

२ (यह जीवन प्रगट हुआ, और हम ने उसे देखा, और उस की गवाही देते हैं, और तुम्हें उस अनन्त जीवन का समाचार देते हैं, जो पिता के साथ था, और हम पर प्रगट हुआ) ३ जो कुछ हम ने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं, इसलिये कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो; और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ, और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है। ४ और ये बातें हम इसलिये लिखते हैं, कि हमारा आनन्द पूरा हो जाए॥

५ जो समाचार हम ने उस से सुना, और तुम्हें सुनाते हैं, वह यह है; कि परमेश्वर ज्योति है: और उस में कुछ भी अन्धकार नहीं। ६ यदि हम कहें, कि उसके साथ हमारी सहभागिता है, और फिर अन्धकार में चलें, तो हम झूठे हैं: और सत्य पर नहीं चलते। ७ पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं; और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है। ८ यदि हम कहें, कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं: और हम में सत्य नहीं। ९ यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है। १० यदि कहें कि हम ने पाप नहीं किया, तो उसे झूठा ठहराते हैं, और उसका वचन हम में नहीं है॥

२ हे मेरे बालको, मैं ये बातें तुम्हें इसलिये लिखता हूं, कि तुम पाप न करो; और यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात् धार्मिक यीशु मसीह। २ और वही हमारे पापों का प्रायश्चित्त है: और केवल हमारे ही नहीं, बरन सारे जगत के पापों का भी। ३ यदि हम उस की आज्ञाओं को मानेंगे, तो इस से हम जान लेंगे कि हम उसे जान गए हैं। ४ जो कोई यह कहता है, कि मैं उसे जान गया हूं, और उस की आज्ञाओं को नहीं मानता, वह झूठा है; और उस में सत्य नहीं। ५ पर जो कोई उसके वचन पर चले, उस में सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ है: हमें इसी से मालूम होता है, कि हम उस में हैं। ६ जो कोई यह कहता है, कि मैं उस में बना रहता हूं, उसे चाहिए, कि आप भी वैसा ही चले जैसा वह चलता था॥

७ हे प्रियो, मैं तुम्हें कोई नई आज्ञा नहीं लिखता, पर वही पुरानी आज्ञा जो आरम्भ से तुम्हें मिली है; यह पुरानी आज्ञा वह वचन है, जिसे तुम ने सुना है। ८ फिर मैं तुम्हें नई आज्ञा लिखता हूं; और यह तो उस में और तुम में सच्ची ठहरती है; क्योंकि अन्धकार मिटता जाता है और सत्य की ज्योति अभी चमकने लगी है। ९ जो कोई यह कहता है, कि मैं ज्योति में हूं; और अपने भाई से बैर रखता है, वह अब तक अन्धकार ही में है। १० जो कोई अपने भाई से प्रेम रखता है, वह ज्योति में रहता है, और ठोकर नहीं खा सकता। ११ पर जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह अन्धकार में है, और अन्धकार में चलता है; और नहीं जानता, कि कहां जाता है, क्योंकि अन्धकार ने उस की आंखें अन्धी कर दी हैं॥

१२ हे बालको, मैं तुम्हें इसलिये लिखता हूं, कि उसके नाम से तुम्हारे पाप क्षमा हुए। १३ हे पितरो, मैं तुम्हें इसलिये लिखता हूं, कि जो आदि से है, तुम उसे

जानते हो: हे जवानो, मैं तुम्हें इसलिये लिखता हूं, कि तुम ने उस दुष्ट पर जय पाई है: हे लड़को, मैं ने तुम्हें इसलिये लिखा है, कि तुम पिता को जान गए हो। १४ हे पितरो, मैं ने तुम्हें इसलिये लिखा है, कि जो आदि से है तुम उसे जान गए हो: हे जवानो, मैं ने तुम्हें इसलिये लिखा है, कि तुम बलवन्त हो, और परमेश्वर का वचन तुम में बना रहता है, और तुम ने उस दुष्ट पर जय पाई है। १५ तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो: यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उस में पिता का प्रेम नहीं है। १६ क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है। १७ और संसार और उस की अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा।।

१८ हे लड़को, यह अन्तिम समय है, और जैसा तुम ने सुना है, कि मसीह का विरोधी आनेवाला है, उसके अनुसार अब भी बहुत से मसीह के विरोधी उठे हैं; इस से हम जानते हैं, कि यह अन्तिम समय है। १९ वे निकले तो हम ही में से, पर हम में के थे नहीं; क्योंकि यदि हम में के होते, तो हमारे साथ रहते, पर निकल इसलिये गए कि यह प्रगट हो कि वे सब हम में के नहीं हैं। २० और तुम्हारा तो उस पवित्र से अभिषेक हुआ है, और तुम सब कुछ* जानते हो। २१ मैं ने तुम्हें इसलिये नहीं लिखा, कि तुम सत्य को नहीं जानते, पर इसलिये, कि उसे जानते हो, और इसलिये कि कोई झूठ, सत्य की ओर से नहीं। २२ झूठा कौन है? केवल वह, जो यीशु के मसीह होने से इन्कार करता है; और मसीह का विरोधी वही है, जो पिता का और पुत्र का इन्कार करता है। २३ जो कोई पुत्र का इन्कार करता है उसके पास पिता भी नहीं: जो पुत्र को मान लेता है, उसके पास पिता भी है। २४ जो कुछ तुम ने आरम्भ से सुना है वही तुम में बना रहे: जो तुम ने आरम्भ से सुना है, यदि वह तुम में बना रहे, तो तुम भी पुत्र में, और पिता में बने रहोगे। २५ और जिस की उस ने हम से प्रतिज्ञा की वह अनन्त जीवन है। २६ मैं ने ये बातें तुम्हें उन के विषय में लिखी हैं, जो तुम्हें भरमाते हैं। २७ और तुम्हारा वह अभिषेक, जो उस की ओर से किया गया, तुम में बना रहता है; और तुम्हें इस का प्रयोजन नहीं, कि कोई तुम्हें सिखाए, बरन जैसे वह अभिषेक जो उस की ओर से किया गया तुम्हें सब बातें सिखाता है, और यह सच्चा है, और झूठा नहीं: और जैसा उस ने तुम्हें सिखाया है वैसे ही तुम उस में बने रहते हो। २८ निदान, हे बालको, उस में बने रहो; कि जब वह प्रगट हो, तो हमें हियाव हो, और हम उसके आने पर उसके साम्हने लज्जित न हों। २९ यदि तुम जानते हो, कि वह धार्मिक है, तो यह भी जानते हो, कि जो कोई धर्म का काम करता है, वह उस से जन्मा है।।

३ देखो पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं, और हम हैं भी: इस कारण संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि उस ने उसे

* या तुम सब के सब जानते हो।

भी नहीं जाना। २ हे प्रियो, अभी हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उस को वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। ३ और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है, जैसा वह पवित्र है। ४ जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का विरोध करता है; और पाप तो व्यवस्था का विरोध है। ५ और तुम जानते हो, कि वह इसलिये प्रगट हुआ, कि पापों को हर ले जाए; और उसके स्वभाव में पाप नहीं। ६ जो कोई उस में बना रहता है, वह पाप नहीं करता: जो कोई पाप करता है, उस ने न तो उसे देखा है, और न उस को जाना है। ७ हे बालको, किसी के भरमाने में न आना; जो धर्म के काम करता है, वही उस की नाईं धर्मी है। ८ जो कोई पाप करता है, वह शैतान * की ओर से है, क्योंकि शैतान आरम्भ ही से पाप करता आया है: परमेश्वर का पुत्र इसलिये प्रगट हुआ, कि शैतान के कामों को नाश करे। ९ जो कोई परमेश्वर से जन्मा है वह पाप नहीं करता; क्योंकि उसका बीज उस में बना रहता है: और वह पाप कर ही नहीं सकता, क्योंकि परमेश्वर से जन्मा है। १० इसी से परमेश्वर की सन्तान, और शैतान की सन्तान जाने जाते हैं; जो कोई धर्म के काम नहीं करता, वह परमेश्वर से नहीं, और न वह, जो अपने भाई से प्रेम नहीं रखता। ११ क्योंकि जो समाचार तुम ने आरम्भ से सुना, वह यह है, कि हम एक दूसरे से प्रेम रखें। १२ और कैन के समान न बनें, जो उस दुष्ट से था, और जिस ने अपने भाई को घात किया: और उसे किस कारण घात किया? इस कारण कि उसके काम बुरे थे, और उसके भाई के काम धर्म के थे॥

१३ हे भाइयो, यदि संसार तुम से बैर करता है तो अचम्भा न करना। १४ हम जानते हैं, कि हम मृत्यु से पार होकर जीवन में पहुंचे हैं; क्योंकि हम भाइयों से प्रेम रखते हैं: जो प्रेम नहीं रखता, वह मृत्यु की दशा में रहता है। १५ जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह हत्यारा है; और तुम जानते हो, कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं रहता। १६ हम ने प्रेम इसी से जाना, कि उस ने हमारे लिये अपने प्राण दे दिए; और हमें भी भाइयों के लिये प्राण देना चाहिए। १७ पर जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना न चाहे, तो उस में परमेश्वर का प्रेम क्योंकर बना रह सकता है? १८ हे बालको, हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें। १९ इसी से हम जानेंगे, कि हम सत्य के हैं; और जिस बात में हमारा मन हमें दोष देगा, उसके विषय में हम उसके साम्हने अपने अपने मन को ढाढ़स दे सकेंगे। २० क्योंकि परमेश्वर हमारे मन से बड़ा है; और सब कुछ जानता है। २१ हे प्रियो, यदि हमारा मन हमें दोष न दे, तो हमें परमेश्वर के साम्हने हियाव होता है। २२ और जो कुछ हम मांगते हैं, वह हमें उस से मिलता है; क्योंकि हम उस की आज्ञाओं को मानते हैं; और जो से भाता है वही करते हैं। २३ और

* यू० इब्लीस।

उस की आज्ञा यह है कि हम उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करें और जैसा उस ने हमें आज्ञा दी है उसी के अनुसार आपस में प्रेम रखें। २४ और जो उस की आज्ञाओं को मानता है, वह इस में; और यह उस में बना रहता है: और इसी से, अर्थात् उस आत्मा से जो उस ने हमें दिया है, हम जानते हैं, कि वह हम में बना रहता है॥

४ हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो: बरन आत्माओं को परखो, कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं; क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं। २ परमेश्वर का आत्मा तुम इसी रीति से पहचान सकते हो, कि जो कोई आत्मा मान लेती है, कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया है वह परमेश्वर की ओर से है। ३ और जो कोई आत्मा यीशु को नहीं मानती, वह परमेश्वर की ओर से नहीं; और वही तो मसीह के विरोधी की आत्मा है; जिस की चर्चा तुम सुन चुके हो, कि वह आनेवाला है: और अब भी जगत में है। ४ हे बालको, तुम परमेश्वर के हो: और तुम ने उन पर जय पाई है; क्योंकि जो तुम में है, वह उस से जो संसार में है, बड़ा है। ५ वे संसार के हैं, इस कारण वे संसार की बातें बोलते हैं; और संसार उन की सुनता है। ६ हम परमेश्वर के हैं: जो परमेश्वर को जानता है, वह हमारी सुनता है; जो परमेश्वर को नहीं जानता वह हमारी नहीं सुनता; इसी प्रकार हम सत्य की आत्मा और भ्रम की आत्मा को पहचान लेते हैं॥

७ हे प्रियो, हम आपस में प्रेम रखें; क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है: और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है; और परमेश्वर को जानता है। ८ जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। ९ जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इस से प्रगट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं। १० प्रेम इस में नहीं, कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इस में है, कि उस ने हम से प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिये अपने पुत्र को भेजा। ११ हे प्रियो, जब परमेश्वर ने हम से ऐसा प्रेम किया, तो हम को भी आपस में प्रेम रखना चाहिए। १२ परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा; यदि हम आपस में प्रेम रखें, तो परमेश्वर हम में बना रहता है; और उसका प्रेम हम में सिद्ध हो गया है। १३ इसी से हम जानते हैं, कि हम उस में बने रहते हैं, और वह हम में; क्योंकि उस ने अपने आत्मा में से हमें दिया है। १४ और हम ने देख भी लिया और गवाही देते हैं, कि पिता ने पुत्र को जगत का उद्धारकर्त्ता करके भेजा है। १५ जो कोई यह मान लेता है, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है; परमेश्वर उस में बना रहता है, और वह परमेश्वर में। १६ और जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, उस को हम जान गए, और हमें उस की प्रतीति है; परमेश्वर प्रेम है: और जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है; और परमेश्वर उस में बना रहता है। १७ इसी से प्रेम हम में सिद्ध हुआ, कि हमें न्याय के दिन हियाव हो; क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही संसार में हम भी हैं। १८ प्रेम में भय नहीं होता, बरन सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है, क्योंकि

भय से कष्ट होता है, और जो भय करता है, वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ। १९ हम इसलिये प्रेम करते हैं, कि पहिले उस ने हम से प्रेम किया। २० यदि कोई कहे, कि मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूं; और अपने भाई से बैर रखे; तो वह झूठा है: क्योंकि जो अपने भाई से, जिसे उस ने देखा है, प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्वर से भी जिसे उस ने नहीं देखा, प्रेम नहीं रख सकता। २१ और उस से हमें यह आज्ञा मिली है, कि जो कोई परमेश्वर से प्रेम रखता है, वह अपने भाई से भी प्रेम रखे॥

५ जिसका यह विश्वास है कि यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है और जो कोई उत्पन्न करनेवाले से प्रेम रखता है, वह उस से भी प्रेम रखता है, जो उस से उत्पन्न हुआ है। २ जब हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, और उस की आज्ञाओं को मानते हैं, तो इसी से हम जानते हैं, कि परमेश्वर की सन्तानों से प्रेम रखते हैं। ३ और परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उस की आज्ञाओं को मानें; और उस की आज्ञाएं कठिन नहीं। ४ क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है, और वह विजय जिस से संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है। ५ संसार पर जय पानेवाला कौन है? केवल वह जिस का यह विश्वास है, कि यीशु, परमेश्वर का पुत्र है। ६ यही है वह, जो पानी और लोहू के द्वारा आया था; अर्थात् यीशु मसीह: वह न केवल पानी के द्वारा, बरन पानी और लोहू दोनों के द्वारा * आया था। ७ और जो गवाही देता है, वह आत्मा है; क्योंकि आत्मा सत्य है। ८ और गवाही देनेवाले तीन हैं; आत्मा, और पानी, और लोहू; और तीनों एक ही बात पर सम्मत हैं। ९ जब हम मनुष्यों की गवाही मान लेते हैं, तो परमेश्वर की गवाही तो उस से बढ़कर है; और परमेश्वर की गवाही यह है, कि उस ने अपने पुत्र के विषय में गवाही दी है। १० जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है, वह अपने ही में गवाही रखता है; जिस ने परमेश्वर की प्रतीति नहीं की, उस ने उसे झूठा ठहराया; क्योंकि उस ने उस गवाही पर विश्वास नहीं किया, जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय में दी है। ११ और वह गवाही यह है, कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है: और यह जीवन उसके पुत्र में है। १२ जिस के पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; और जिस के पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन भी नहीं है॥

१३ मैं ने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिये लिखा है; कि तुम जानो, कि अनन्त जीवन तुम्हारा है। १४ और हमें उसके साम्हने जो हियाव होता है, वह यह है; कि यदि हम उस की इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है। १५ और जब हम जानते हैं, कि जो कुछ हम मांगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं, कि जो कुछ हम ने उस से मांगा, वह पाया है। १६ यदि कोई अपने भाई को ऐसा पाप करते देखे, जिस का फल मृत्यु न हो, तो बिनती करे, और परमेश्वर, उसे, उन के लिये, जिन्हों ने ऐसा पाप किया है जिस का फल मृत्यु न हो, जीवन देगा: पाप ऐसा भी होता है, जिस का फल मृत्यु है: इस के

* यू० में।

विषय में मैं बिनती करने के लिये नहीं कहता। १७ सब प्रकार का अधर्म तो पाप है, परन्तु ऐसा पाप भी है, जिस का फल मृत्यु नहीं॥

१८ हम जानते हैं, कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता; पर जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ, उसे वह बचाए रखता है: और वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता। १९ हम जानते हैं, कि हम परमेश्वर से हैं, और सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है। २० और यह भी जानते हैं, कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उस ने हमें समझ दी है, कि हम उस सच्चे को पहचानें, और हम उस में जो सत्य है, अर्थात् उसके पुत्र यीशु मसीह में रहते हैं: सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन यही है। २१ हे बालको, अपने आप को मूरतों से बचाए रखो॥

यूहन्ना की दूसरी पत्री

१ मुझ प्राचीन * की ओर से उस चुनी हुई श्रीमती और उसके लड़केबालों के नाम जिन से मैं उस सच्चाई के कारण सत्य प्रेम रखता हूं, जो हम में स्थिर रहती है, और सर्वदा हमारे साथ अटल रहेगी। २ और केवल मैं ही नहीं, बरन वह सब भी प्रेम रखते हैं, जो सच्चाई को जानते हैं॥

३ परमेश्वर पिता, और पिता के पुत्र यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह, और दया, और शान्ति, सत्य, और प्रेम सहित हमारे साथ रहेंगे॥

४ मैं बहुत आनन्दित हुआ, कि मैं ने तेरे कितने लड़के-बालों को उस आज्ञा के अनुसार, जो हमें पिता की ओर से मिली थी सत्य पर चलते हुए पाया। ५ अब हे श्रीमती, मैं तुझे कोई नई आज्ञा नहीं, पर वही जो आरम्भ से हमारे पास है, लिखता हूं; और तुझ से बिनती करता हूं, कि हम एक दूसरे से प्रेम रखें। ६ और प्रेम यह है, कि हम उस की आज्ञाओं के अनुसार चलें: यह वही आज्ञा है, जो तुम ने आरम्भ से सुनी है और तुम्हें इस पर चलना भी चाहिए। ७ क्योंकि बहुत से ऐसे भरमानेवाले जगत में निकल आए हैं, जो यह नहीं मानते, कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया: भरमानेवाला और मसीह का विरोधी यही है। ८ अपने विषय में चौकस रहो; कि जो परिश्रम हम ने किया है, उस को तुम न बिगाड़ो: बरन उसका पूरा प्रतिफल पाओ। ९ जो कोई आगे बढ़ जाता है, और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं: जो कोई उस की शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी है, और पुत्र भी। १० यदि कोई तुम्हारे पास आए, और यही शिक्षा न दे, उसे न तो घर में आने दो, और न नमस्कार करो। ११ क्योंकि जो कोई ऐसे जन को नमस्कार करता है, वह उस के बुरे कामों में साझी होता है॥

* या प्रिसबुतिर।

१२ मुझे बहुत सी बातें तुम्हें लिखनी हैं, पर कागज और सियाही से लिखना नहीं चाहता; पर आशा है, कि मैं तुम्हारे पास आऊंगा, और सम्मुख होकर बातचीत करूंगा: जिस से तुम्हारा * आनन्द पूरा हो। १३ तेरी चुनी हुई बहिन के लड़के-बाले तुझे नमस्कार करते हैं।।

* या हमारा।

यूहन्ना की तीसरी पत्री

१ मुझ प्राचीन * की ओर से उस प्रिय गयुस के नाम, जिस से मैं सच्चा † प्रेम रखता हूं।।

२ हे प्रिय, मेरी यह प्रार्थना है; कि जैसे तू आत्मिक उन्नति कर रहा है, वैसे ही तू सब बातों में उन्नति करे, और भला चंगा रहे। ३ क्योंकि जब भाइयों ने आकर, तेरे उस सत्य की गवाही दी, जिस पर तू सचमुच चलता है, तो मैं बहुत ही आनन्दित हुआ। ४ मुझे इस से बढ़कर और कोई आनन्द नहीं, कि मैं सुनूं, कि मेरे लड़के-बाले सत्य पर चलते हैं।।

५ हे प्रिय, जो कुछ तू उन भाइयों के साथ करता है, जो परदेशी भी हैं, उसे विश्वासी की नाईं करता है। ६ उन्हों ने मण्डली के साम्हने तेरे प्रेम की गवाही दी थी: यदि तू उन्हें उस प्रकार विदा करेगा जिस प्रकार परमेश्वर के लोगों के लिये उचित है तो अच्छा करेगा। ७ क्योंकि वे उस नाम के लिये निकले हैं, और अन्य-जातियों से कुछ नहीं लेते। ८ इसलिये ऐसों का स्वागत करना चाहिए, जिस से हम भी सत्य के पक्ष में उन के सहकर्मी हों।।

* या प्रिसबुतिर।
† या सत्य में प्रेम।

९ मैं ने मण्डली को कुछ लिखा था; पर दियुत्रिफेस जो उन में बड़ा बनना चाहता है, हमें ग्रहण नहीं करता। १० सो जब मैं आऊंगा, तो उसके कामों की जो वह कर रहा है सुधि दिलाऊंगा, कि वह हमारे विषय में बुरी बुरी बातें बकता है; और इस पर भी सन्तोष न करके आप ही भाइयों को ग्रहण नहीं करता, और उन्हें जो ग्रहण करना चाहते हैं, मना करता है: और मण्डली से निकाल देता है। ११ हे प्रिय, बुराई के नहीं, पर भलाई के अनुयायी हो, जो भलाई करता है, वह परमेश्वर की ओर से है; पर जो बुराई करता है, उस ने परमेश्वर को नहीं देखा। १२ देमेत्रियुस के विषय में सब ने बरन सत्य ने भी आप ही गवाही दी: और हम भी गवाही देते हैं, और तू जानता है, कि हमारी गवाही सच्ची है।।

१३ मुझे तुझ को बहुत कुछ लिखना तो था; पर सियाही और कलम से लिखना नहीं चाहता। १४ पर मुझे आशा है कि तुझ से शीघ्र भेंट करूंगा: तब हम आम्हने

साम्हने बातचीत करेंगे : तुझे शान्ति मिलती रहे। यहां के मित्र तुझे नमस्कार करते हैं : वहां के मित्रों से नाम ले लेकर नमस्कार कह देना ॥

यहूदा की पत्री

१ यहूदा की ओर से जो यीशु मसीह का दास और याकूब का भाई है, उन बुलाए हुओं के नाम जो परमेश्वर पिता में प्रिय और यीशु मसीह के लिये सुरक्षित हैं ॥

२ दया और शान्ति और प्रेम तुम्हें बहुतायत से प्राप्त होता रहे ॥

३ हे प्रियो, जब मैं तुम्हें उस उद्धार के विषय में लिखने में अत्यन्त परिश्रम से प्रयत्न कर रहा था, जिस में हम सब सहभागी हैं; तो मैं ने तुम्हें यह समझाना आवश्यक जाना कि उस विश्वास के लिये पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था। ४ क्योंकि कितने ऐसे मनुष्य चुपके से हम में आ मिले हैं, जिन के इस दण्ड का वर्णन पुराने समय में पहिले ही से लिखा गया था : ये भक्तिहीन हैं, और हमारे परमेश्वर के अनुग्रह को लुचपन में बदल डालते हैं, और हमारे अद्वैत स्वामी और प्रभु यीशु मसीह का इन्कार करते हैं ॥

५ पर यद्यपि तुम सब बात एक बार जान चुके हो, तौभी मैं तुम्हें इस बात की सुधि दिलाना चाहता हूं, कि प्रभु ने एक कुल को मिस्र देश से छुड़ाने के बाद विश्वास न लानेवालों को नाश कर दिया। ६ फिर जो स्वर्गदूतों ने अपने पद को स्थिर न रखा बरन अपने निज निवास को छोड़ दिया, उस ने उन को भी उस भीषण दिन के न्याय के लिये अन्धकार में जो सदा काल के लिये है बन्धनों में रखा है। ७ जिस रीति से सदोम और अमोरा और उन के आस पास के नगर, जो इन की नाईं व्यभिचारी हो गए थे और पराये शरीर के पीछे लग गए थे आग के अनन्त दण्ड में पड़कर दृष्टान्त ठहरे हैं। ८ उसी रीति से ये स्वप्नदर्शी भी अपने अपने शरीर को अशुद्ध करते, और प्रभुता को तुच्छ जानते हैं; और ऊंचे पदवालों को बुरा भला कहते हैं। ९ परन्तु प्रधान स्वर्गदूत मीकाईल ने, जब शैतान* से मूसा की लोथ के विषय में वाद-विवाद करता था, तो उस को बुरा भला कहके दोष लगाने का साहस न किया; पर यह कहा, कि प्रभु तुझे डांटे। १० पर ये लोग जिन बातों को नहीं जानते, उन को बुरा भला कहते हैं; पर जिन बातों को अचेतन पशुओं की नाईं स्वभाव ही से जानते हैं, उन में अपने आप को नाश करते हैं। ११ उन पर हाय!

* यू० इब्लीस।

उसके पांव उत्तम पीतल के समान थे जो मानो भट्टी में तपाए गए हों; और उसका शब्द बहुत जल के शब्द की नाईं था। १६ और वह अपने दहिने हाथ में सात तारे लिए हुए था: और उसके मुख से चोखी दोधारी तलवार निकलती थी; और उसका मुंह ऐसा प्रज्वलित था, जैसा सूर्य कड़ी धूप के समय चमकता है। १७ जब मैं ने उसे देखा, तो उसके पैरों पर मुर्दा सा गिर पड़ा और उस ने मुझ पर अपना दहिना हाथ रखकर यह कहा, कि मत डर; मैं प्रथम और अन्तिम और जीवता हूं। १८ मैं मर गया था, और अब देख; मैं युगानुयुग जीवता हूं; और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां मेरे ही पास हैं। १९ इसलिये जो बातें तू ने देखीं हैं और जो बातें हो रही हैं; और जो इस के बाद होनेवाली हैं, उन सब को लिख ले। २० अर्थात् उन सात तारों का भेद जिन्हें तू ने मेरे दहिने हाथ में देखा था, और उन सात सोने की दीवटों का भेद: वे सात तारे सातों कलीसियाओं के दूत हैं, और वे सात दीवट सात कलीसियाएं हैं॥

२ इफिसुस की कलीसिया के दूत को यह लिख, कि,

जो सातों तारे अपने दहिने हाथ में लिए हुए है, और सोने की सातों दीवटों के बीच में फिरता है, वह यह कहता है कि। २ मैं तेरे काम, और परिश्रम, और तेरा धीरज जानता हूं; और यह भी, कि तू बुरे लोगों को तो देख नहीं सकता; और जो अपने आप को प्रेरित कहते हैं, और हैं नहीं, उन्हें तू ने परखकर झूठा पाया। ३ और तू धीरज धरता है, और मेरे नाम के लिये दुख उठाते उठाते थका नहीं। ४ पर मुझे तेरे विरुद्ध यह कहना है कि तू ने अपना पहिला सा प्रेम छोड़ दिया है। ५ सो चेत कर, कि तू कहां से गिरा है, और मन फिरा और पहिले के समान काम कर; और यदि तू मन न फिराएगा, तो मैं तेरे पास आकर तेरी दीवट को उस स्थान से हटा दूंगा। ६ पर हां तुझ में यह बात तो है, कि तू नीकुलइयों के कामों से घृणा करता है, जिन से मैं भी घृणा करता हूं। ७ जिस के कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है: जो जय पाए, मैं उसे उस जीवन के पेड़ में से जो परमेश्वर के स्वर्गलोक में है, फल खाने को दूंगा॥

८ और स्मुरना की कलीसिया के दूत को यह लिख, कि, जो प्रथम और अन्तिम है; जो मर गया था और अब जीवित हो गया है, वह यह कहता है कि। ९ मैं तेरे क्लेश और दरिद्रता को जानता हूं; (परन्तु तू धनी है); और जो लोग अपने आप को यहूदी कहते हैं और हैं नहीं, पर शैतान की सभा हैं, उन की निन्दा को भी जानता हूं। १० जो दुख तुझ को झेलने होंगे, उन से मत डर: क्योंकि देखो, शैतान* तुम में से कितनों को जेलखाने में डालने पर है ताकि तुम परखे जाओ; और तुम्हें दस दिन तक क्लेश उठाना होगा: प्राण देने तक विश्वासी रह; तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा। ११ जिस के कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं

* यू० इब्लीस।

से क्या कहता है : जो जय पाए, उस को दूसरी मृत्यु से हानि न पहुंचेगी ॥

१२ और पिरगमुन की कलीसिया के दूत को यह लिख, कि,

जिस के पास दोधारी और चोखी तलवार है, वह यह कहता है, कि। १३ मैं यह तो जानता हूं, कि तू वहां रहता है जहां शैतान का सिंहासन है, और मेरे नाम पर स्थिर रहता है; और मुझ पर विश्वास करने से उन दिनों में भी पीछे नहीं हटा जिन में मेरा विश्वासयोग्य साक्षी अन्तिपास, तुम में उस स्थान पर घात किया गया जहां शैतान रहता है। १४ पर मुझे तेरे विरुद्ध कुछ बातें कहनी हैं, क्योंकि तेरे यहां कितने तो ऐसे हैं, जो बिलाम की शिक्षा को मानते हैं, जिस ने बालाक को इस्राएलियों के आगे ठोकर का कारण रखना सिखाया, कि वे मूरतों के बलिदान खाएं, और व्यभिचार करें। १५ वैसे ही तेरे यहां कितने तो ऐसे हैं, जो नीकुलइयों की शिक्षा को मानते हैं। १६ सो मन फिरा, नहीं तो मैं तेरे पास शीघ्र ही आकर, अपने मुख की तलवार से उन के साथ लड़ूंगा। १७ जिस के कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है; जो जय पाए, उस को मैं गुप्त मन्ना में से दूंगा, और उसे एक श्वेत पत्थर भी दूंगा; और उस पत्थर पर एक नाम लिखा हुआ होगा, जिसे उसके पानेवाले के सिवाय और कोई न जानेगा ॥

१८ और थुआतीरा की कलीसिया के दूत को यह लिख, कि,

परमेश्वर का पुत्र जिस की आंखें आग की ज्वाला की नाईं, और जिस के पांव उत्तम पीतल के समान हैं, यह कहता है, कि। १९ मैं तेरे कामों, और प्रेम, और विश्वास, और सेवा, और धीरज को जानता हूं, और यह भी कि तेरे पिछले काम पहिलों से बढ़कर हैं। २० पर मुझे तेरे विरुद्ध यह कहना है, कि तू उस स्त्री इजेबेल को रहने देता है जो अपने आप को भविष्यद्वक्तिन कहती है, और मेरे दासों को व्यभिचार करने, और मूरतों के आगे के बलिदान खाने को सिखलाकर भरमाती है। २१ मैं ने उस को मन फिराने के लिये अवसर दिया, पर वह अपने व्यभिचार से मन फिराना नहीं चाहती। २२ देख, मैं उसे खाट पर डालता हूं; और जो उसके साथ व्यभिचार करते हैं यदि वे भी उसके से कामों से मन न फिराएंगे तो उन्हें बड़े क्लेश में डालूंगा। २३ और मैं उसके बच्चों को मार डालूंगा; और तब सब कलीसियाएं जान लेंगी कि हृदय और मन का परखनेवाला मैं ही हूं: और मैं तुम में से हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला दूंगा। २४ पर तुम थूआतीरा के बाकी लोगों से, जितने इस शिक्षा को नहीं मानते, और उन बातों को जिन्हें शैतान की गहिरी बातें कहते हैं नहीं जानते, यह कहता हूं, कि मैं तुम पर और बोझ न डालूंगा। २५ पर हां, जो तुम्हारे पास है उस को मेरे आने तक थामे रहो। २६ जो जय पाए, और मेरे कामों के अनुसार अन्त तक करता रहे, मैं उसे जाति जाति के लोगों पर अधिकार दूंगा। २७ और वह लोहे का राजदण्ड लिए हुए उन पर राज्य करेगा, जिस प्रकार कुम्हार के

मिट्टी के बरतन चकनाचूर हो जाते हैं: जैसे कि मैं ने भी ऐसा ही अधिकार अपने पिता से पाया है। २८ और मैं उसे भोर का तारा दूंगा। २९ जिस के कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है ॥

३ और सरदीस की कलीसिया के दूत को यह लिख, कि,

जिस के पास परमेश्वर की सात आत्माएं और सात तारे हैं, यह कहता है, कि मैं तेरे कामों को जानता हूं, कि तू जीवता तो कहलाता है, पर, है मरा हुआ। २ जागृत रह, और उन वस्तुओं को जो बाकी रह गई हैं, और जो मिटने को थी, उन्हें दृढ़ कर; क्योंकि मैं ने तेरे किसी काम को अपने परमेश्वर के निकट पूरा नहीं पाया। ३ सो चेत कर, कि तू ने किस रीति से शिक्षा प्राप्त की और सुनी थी, और उस में बना रह, और मन फिरा: और यदि तू जागृत न रहेगा, तो मैं चोर की नाईं आ जाऊंगा और तू कदापि न जान सकेगा, कि मैं किस घड़ी तुझ पर आ पड़ूंगा। ४ पर हां, सरदीस में तेरे यहां कुछ ऐसे लोग हैं, जिन्हों ने अपने अपने वस्त्र अशुद्ध नहीं किए, वे श्वेत वस्त्र पहिने हुए मेरे साथ घूमेंगे क्योंकि वे इस योग्य हैं। ५ जो जय पाए, उसे इसी प्रकार श्वेत वस्त्र पहिनाया जाएगा, और मैं उसका नाम जीवन की पुस्तक में से किसी रीति से न काटूंगा, पर उसका नाम अपने पिता और उसके स्वर्गदूतों के साम्हने मान लूंगा। ६ जिस के कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है ॥

७ और फिलेदिलफिया की कलीसिया के दूत को यह लिख, कि,

जो पवित्र और सत्य है, और जो दाऊद की कुंजी रखता है, जिस के खोले हुए को कोई बन्द नहीं कर सकता और बन्द किए हुए को कोई खोल नहीं सकता, वह यह कहता है, कि। ८ मैं तेरे कामों को जानता हूं, (देख, मैं ने तेरे साम्हने एक द्वार खोल रखा है, जिसे कोई बन्द नहीं कर सकता) कि तेरी सामर्थ थोड़ी सी है, और तू ने मेरे वचन का पालन किया है और मेरे नाम का इन्कार नहीं किया। ९ देख, मैं शैतान के उन सभावालों को तेरे वश में कर दूंगा जो यहूदी बन बैठे हैं, पर हैं नहीं, बरन झूठ बोलते हैं—देख, मैं ऐसा करूंगा, कि वे आकर तेरे चरणों में दण्डवत करेंगे, और यह जान लेंगे, कि मैं ने तुझ से प्रेम रखा है। १० तू ने मेरे धीरज के वचन को थामा है, इसलिये मैं भी तुझे परीक्षा के उस समय बचा रखूंगा, जो पृथ्वी पर रहनेवालों के परखने के लिये सारे संसार पर आनेवाला है। ११ मैं शीघ्र ही आनेवाला हूं; जो कुछ तेरे पास है, उसे थामे रह, कि कोई तेरा मुकुट छीन न ले। १२ जो जय पाए, उसे मैं अपने परमेश्वर के मन्दिर में एक खंभा बनाऊंगा; और वह फिर कभी बाहर न निकलेगा; और मैं अपने परमेश्वर का नाम, और अपने परमेश्वर के नगर, अर्थात् नये यरूशलेम का नाम, जो मेरे परमेश्वर के पास से स्वर्ग पर से उतरनेवाला है और अपना नया नाम उस पर लिखूंगा। १३ जिस के कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है ॥

१४ और लौदीकिया की कलीसिया के दूत को यह लिख, कि,

जो आमीन, और विश्वासयोग्य, और सच्चा गवाह है, और परमेश्वर की सृष्टि का मूल कारण है, वह यह कहता है। १५ कि मैं तेरे कामों को जानता हूं कि तू न तो ठंडा है और न गर्म: भला होता कि तू ठंडा या गर्म होता। १६ सो इसलिये कि तू गुनगुना है, और न ठंडा है और न गर्म, मैं तुझे अपने मुंह में से उगलने पर हूं। १७ तू जो कहता है, कि मैं धनी हूं, और धनवान हो गया हूं, और मुझे किसी वस्तु की घटी नहीं, और यह नहीं जानता, कि तू अभागा और तुच्छ और कंगाल और अन्धा और नङ्गा है। १८ इसी लिये मैं तुझे सम्मति देता हूं, कि आग में ताया हुआ सोना मुझ से मोल ले, कि धनी हो जाए; और श्वेत वस्त्र ले ले कि पहिनकर तुझे अपने नङ्गेपन की लज्जा न हो; और अपनी आंखों में लगाने के लिये सुर्मा ले, कि तू देखने लगे। १९ मैं जिन जिन से प्रीति रखता हूं, उन सब को उलाहना और ताड़ना देता हूं, इसलिये सरगर्म हो, और मन फिरा। २० देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ। २१ जो जय पाए, मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठाऊंगा, जैसा मैं भी जय पाकर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठ गया। २२ जिस के कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है॥

४ इन बातों के बाद जो मैं ने दृष्टि की, तो क्या देखता हूं कि स्वर्ग में एक द्वार खुला हुआ है; और जिस को मैं ने पहिले तुरही के से शब्द से अपने साथ बातें करते सुना था, वही कहता है, कि यहां ऊपर आ जा: और मैं वे बातें तुझे दिखाऊंगा, जिन का इन बातों के बाद पूरा होना अवश्य है। २ और तुरन्त मैं आत्मा में आ गया; और क्या देखता हूं, कि एक सिंहासन स्वर्ग में धरा है, और उस सिंहासन पर कोई बैठा है। ३ और जो उस पर बैठा है, वह यशब और मानिक सा दिखाई पड़ता है, और उस सिंहासन के चारों ओर मरकत सा एक मेघधनुष दिखाई देता है। ४ और उस सिंहासन के चारों ओर चौबीस सिंहासन हैं; और इन सिंहासनों पर चौबीस प्राचीन श्वेत वस्त्र पहिने हुए बैठे हैं, और उन के सिरों पर सोने के मुकुट हैं। ५ और उस सिंहासन में से बिजलियां और गर्जन निकलते हैं और सिंहासन के साम्हने आग के सात दीपक जल रहे हैं, ये परमेश्वर की सात आत्माएं हैं। ६ और उस सिंहासन के साम्हने मानो बिल्लौर के समान कांच का सा समुद्र है, और सिंहासन के बीच में और सिंहासन के चारों ओर चार प्राणी हैं, जिन के आगे पीछे आंखें ही आंखें हैं। ७ पहिला प्राणी सिंह के समान है, और दूसरा प्राणी बछड़े के समान है, तीसरे प्राणी का मुंह मनुष्य का सा है, और चौथा प्राणी उड़ते हुए उकाब के समान है। ८ और चारों प्राणियों के छः छः पंख हैं, और चारों ओर, और भीतर आंखें ही आंखें हैं; और वे रात दिन बिना

विश्राम लिए यह कहते रहते हैं, कि पवित्र, पवित्र, पवित्र प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, जो था, और जो है, और जो आनेवाला है। ६ और जब वे प्राणी उस की जो सिंहासन पर बैठा है, और जो युगानुयुग जीवता है, महिमा और आदर और धन्यवाद करेंगे। १० तब चौबीसों प्राचीन सिंहासन पर बैठनेवाले के साम्हने गिर पड़ेंगे, और उसे जो युगानुयुग जीवता है प्रणाम करेंगे; और अपने अपने मुकुट सिंहासन के साम्हने यह कहते हुए डाल देंगे। ११ कि हे हमारे प्रभु, और परमेश्वर, तू ही महिमा, और आदर, और सामर्थ के योग्य है; क्योंकि तू ही ने सब वस्तुएं सृजीं और वे तेरी ही इच्छा से थीं, और सृजी गईं॥

५ और जो सिंहासन पर बैठा था, मैं ने उसके दहिने हाथ में एक पुस्तक देखी, जो भीतर और बाहर लिखी हुई थी, और वह सात मुहर लगाकर बन्द की गई थी। २ फिर मैं ने एक बलवन्त स्वर्गदूत को देखा जो ऊंचे शब्द से यह प्रचार करता था कि इस पुस्तक के खोलने और उस की मुहरें तोड़ने के योग्य कौन है? ३ और न स्वर्ग में, न पृथ्वी पर, न पृथ्वी के नीचे कोई उस पुस्तक को खोलने या उस पर दृष्टि डालने के योग्य निकला। ४ और मैं फूट फूटकर रोने लगा, क्योंकि उस पुस्तक के खोलने, या उस पर दृष्टि करने के योग्य कोई न मिला। ५ तब उन प्राचीनों में से एक ने मुझ से कहा, मत रो; देख, यहूदा के गोत्र का वह सिंह, जो दाऊद का मूल है, उस पुस्तक को खोलने और उस की सातों मुहरें तोड़ने के लिये जयवन्त हुआ है। ६ और मैं ने उस सिंहासन और चारों प्राणियों और उन प्राचीनों के बीच में, मानो एक बध किया हुआ मेम्ना खड़ा देखा: उसके सात सींग और सात आंखें थीं; ये परमेश्वर की सातों आत्माएं हैं, जो सारी पृथ्वी पर भेजी गई हैं। ७ उस ने आकर उसके दहिने हाथ से जो सिंहासन पर बैठा था, वह पुस्तक ले ली। ८ और जब उस ने पुस्तक ले ली, तो वे चारों प्राणी और चौबीसों प्राचीन उस मेम्ने के साम्हने गिर पड़े; और हर एक के हाथ में वीणा और धूप से भरे हुए सोने के कटोरे थे, ये तो पवित्र लोगों की प्रार्थनाएं हैं। ६ और वे यह नया गीत गाने लगे, कि तू इस पुस्तक के लेने, और उस की मुहरें खोलने के योग्य है; क्योंकि तू ने बध होकर अपने लोहू से हर एक कुल, और भाषा, और लोग, और जाति में से परमेश्वर के लिये लोगों को मोल लिया है। १० और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिये एक राज्य और याजक बनाया; और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं। ११ और जब मैं ने देखा, तो उस सिंहासन और उन प्राणियों और उन प्राचीनों की चारों ओर बहुत से स्वर्गदूतों का शब्द सुना, जिन की गिनती लाखों और करोड़ों की थी। १२ और वे ऊंचे शब्द से कहते थे; कि बध किया हुआ मेम्ना ही सामर्थ, और धन, और ज्ञान, और शक्ति, और आदर, और महिमा, और धन्यवाद के योग्य है। १३ फिर मैं ने स्वर्ग में, और पृथ्वी पर, और पृथ्वी के नीचे, और समुद्र की सब सृजी हुई वस्तुओं को, और सब कुछ

को जो उन में हैं, यह कहते सुना, कि जो सिंहासन पर बैठा है, उसका, और मेम्ने का धन्यवाद, और आदर, और महिमा, और राज्य, युगानुयुग रहे। १४ और चारों प्राणियों ने आमीन कहा, और प्राचीनों ने गिरकर दण्डवत किया ॥

६ फिर मैं ने देखा, कि मेम्ने ने उन सात मुहरों में से एक को खोला; और उन चारों प्राणियों में से एक का गर्ज का सा शब्द सुना, कि आ। २ और मैं ने दृष्टि की, और देखो, एक श्वेत घोड़ा है, और उसका सवार धनुष लिए हुए है: और उसे एक मुकुट दिया गया, और वह जय करता हुआ निकला कि और भी जय प्राप्त करे ॥

३ और जब उस ने दूसरी मुहर खोली, तो मैं ने दूसरे प्राणी को यह कहते सुना, कि आ। ४ फिर एक और घोड़ा निकला, जो लाल रंग का था; उसके सवार को यह अधिकार दिया गया, कि पृथ्वी पर से मेल उठा ले, ताकि लोग एक दूसरे को बध करें; और उसे एक बड़ी तलवार दी गई ॥

५ और जब उस ने तीसरी मुहर खोली, तो मैं ने तीसरे प्राणी को यह कहते सुना, कि आ: और मैं ने दृष्टि की, और देखो, एक काला घोड़ा है; और उसके सवार के हाथ में एक तराजू है। ६ और मैं ने उन चारों प्राणियों के बीच में से एक शब्द यह कहते सुना, कि दीनार* का सेर भर गेहूं, और दीनार का तीन सेर जव, और तेल, और दाख-रस की हानि न करना ॥

७ और जब उस ने चौथी मुहर खोली, तो मैं ने चौथे प्राणी का शब्द यह कहते सुना, कि आ। ८ और मैं ने दृष्टि की, और देखो, एक पीला सा घोड़ा है; और उसके सवार का नाम मृत्यु है: और अधोलोक उसके पीछे पीछे है और उन्हें पृथ्वी की एक चौथाई पर यह अधिकार दिया गया, कि तलवार, और अकाल, और मरी, और पृथ्वी के बनपशुओं के द्वारा लोगों को मार डालें ॥

९ और जब उस ने पांचवीं मुहर खोली, तो मैं ने वेदी के नीचे उन के प्राणों को देखा, जो परमेश्वर के वचन के कारण, और उस गवाही के कारण जो उन्हों ने दी थी, बध किए गए थे। १० और उन्हों ने बड़े शब्द से पुकार-कर कहा; हे स्वामी, हे पवित्र, और सत्य; तू कब तक न्याय न करेगा? और पृथ्वी के रहनेवालों से हमारे लोहू का पलटा कब तक न लेगा? ११ और उन में से हर एक को श्वेत वस्त्र दिया गया. और उन से कहा गया, कि और थोड़ी देर तक विश्राम करो, जब तक कि तुम्हारे संगी दास, और भाई, जो तुम्हारी नाईं बध होनेवाले हैं, उन की भी गिनती पूरी न हो ले ॥

१२ और जब उस ने छठवीं मुहर खोली, तो मैं ने देखा, कि एक बड़ा भुईंडोल हुआ; और सूर्य कम्मल की नाईं काला, और पूरा चन्द्रमा लोहू का सा हो गया। १३ और आकाश के तारे पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े जैसे बड़ी आन्धी से हिलकर अंजीर के पेड़ में से कच्चे फल झड़ते हैं। १४ और आकाश ऐसा सरक गया, जैसा पत्र लपेटने से सरक जाता है; और हर एक पहाड़, और टापू, अपने अपने स्थान से टल गया।

* देखो मत्ती १८ : २८।

१५ और पृथ्वी के राजा, और प्रधान, और सरदार, और धनवान और सामर्थी लोग, और हर एक दास, और हर एक स्वतंत्र, पहाड़ों की खोहों में, और चटानों में जा छिपे। १६ और पहाड़ों, और चटानों से कहने लगे, कि हम पर गिर पड़ो; और हमें उसके मुंह से जो सिंहासन पर बैठा है, और मेम्ने के प्रकोप से छिपा लो। १७ क्योंकि उन के प्रकोप का भयानक दिन आ पहुंचा है, अब कौन ठहर सकता है?

७ इसके बाद में ने पृथ्वी के चारों कोनों पर चार स्वर्गदूत खड़े देखे, वे पृथ्वी की चारों हवाओं को थामे हुए थे ताकि पृथ्वी, या समुद्र, या किसी पेड़ पर, हवा न चले। २ फिर में ने एक और स्वर्गदूत को जीवते परमेश्वर की मुहर लिए हुए पूरब से ऊपर की ओर आते देखा; उस ने उन चारों स्वर्गदूतों से जिन्हें पृथ्वी और समुद्र की हानि करने का अधिकार दिया गया था, ऊंचे शब्द से पुकारकर कहा। ३ जब तक हम अपने परमेश्वर के दासों के माथे पर मुहर न लगा दें, तब तक पृथ्वी और समुद्र और पेड़ों को हानि न पहुंचाना। ४ और जिन पर मुहर दी गई, में ने उन की गिनती सुनी, कि इस्राएल की सन्तानों के सब गोत्रों में से एक लाख चौआलीस हजार पर मुहर दी गई। ५ यहूदा के गोत्र में से बारह हजार पर मुहर दी गई; रूबेन के गोत्र में से बारह हजार पर; गाद के गोत्र में से बारह हजार पर। ६ आशेर के गोत्र में से बारह हजार पर; नप्ताली के गोत्र में से बारह हजार पर; मनश्शिह के गोत्र में से बारह हजार पर। ७ शमौन के गोत्र में से बारह हजार पर; लेवी के गोत्र में से बारह हजार पर; इस्साकार के गोत्र में से बारह हजार पर। ८ जबूलून के गोत्र में से बारह हजार पर; यूसुफ के गोत्र में से बारह हजार पर और बिन्यामीन के गोत्र में से बारह हजार पर मुहर दी गई। ९ इस के बाद में ने दृष्टि की, और देखो, हर एक जाति, और कुल, और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था श्वेत वस्त्र पहिने, और अपने हाथों में खजूर की डालियां लिए हुए सिंहासन के साम्हने और मेम्ने के साम्हने खड़ी है। १० और बड़े शब्द से पुकारकर कहती है, कि उद्धार के लिये हमारे परमेश्वर का जो सिंहासन पर बैठा है, और मेम्ने का जय-जय-कार हो। ११ और सारे स्वर्गदूत, उस सिंहासन और प्राचीनों और चारों प्राणियों के चारों ओर खड़े हैं, फिर वे सिंहासन के साम्हने मुंह के बल गिर पड़े; और परमेश्वर को दण्डवत करके कहा, आमीन। १२ हमारे परमेश्वर की स्तुति, और महिमा, और ज्ञान, और धन्यवाद, और आदर, और सामर्थ, और शक्ति युगानुयुग बनी रहें। आमीन। १३ इस पर प्राचीनों में से एक ने मुझ से कहा; ये श्वेत वस्त्र पहिने हुए कौन हैं? और कहां से आए हैं? १४ में ने उस से कहा; हे स्वामी, तू ही जानता है: उस ने मुझ से कहा; ये वे हैं, जो उस बड़े क्लेश में से निकलकर आए हैं; इन्हों ने अपने अपने वस्त्र मेम्ने के लोहू में धोकर श्वेत किए हैं। १५ इसी कारण वे परमेश्वर के सिंहासन के साम्हने हैं,

और उसके मन्दिर * में दिन रात उस की सेवा करते हैं; और जो सिंहासन पर बैठा है, वह उन के ऊपर अपना तम्बू तानेगा। १६ वे फिर भूखे और प्यासे न होंगे: और न उन पर धूप, न कोई तपन पड़ेगी। १७ क्योंकि मेम्ना जो सिंहासन के बीच में है, उन की रखवाली करेगा; और उन्हें जीवन रूपी जल के सोतों के पास ले जाया करेगा, और परमेश्वर उन की आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा॥

८ और जब उस ने सातवीं मुहर खोली, तो स्वर्ग में आध घड़ी तक सन्नाटा छा गया। २ और मैं ने उन सातों स्वर्गदूतों को जो परमेश्वर के साम्हने खड़े रहते हैं, देखा, और उन्हें सात तुरहियां दी गईं॥

३ फिर एक और स्वर्गदूत सोने का धूपदान लिए हुए आया, और वेदी के निकट खड़ा हुआ; और उस को बहुत धूप दिया गया, कि सब पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं के साथ उस सोनहली वेदी पर जो सिंहासन के साम्हने है चढ़ाए। ४ और उस धूप का धुआं पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं सहित स्वर्गदूत के हाथ से परमेश्वर के साम्हने पहुंच गया। ५ और स्वर्गदूत ने धूपदान लेकर उस में वेदी की आग भरी, और पृथ्वी पर डाल दी, और गर्जन और शब्द और बिजलियां और भूईंडोल होने लगा॥

६ और वे सातों स्वर्गदूत जिन के पास सात तुरहियां थीं, फूंकने को तैयार हुए॥

७ पहिले स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी, और लोहू से मिले हुए ओले और आग उत्पन्न हुई, और पृथ्वी पर डाली गई; और पृथ्वी की एक तिहाई जल गई, और पेड़ों की एक तिहाई जल गई; और सब हरी घास भी जल गई॥

८ और दूसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी, तो मानो आग सा जलता हुआ एक बड़ा पहाड़ समुद्र में डाला गया; और समुद्र का एक तिहाई लोहू हो गया। ९ और समुद्र की एक तिहाई सृजी हुई वस्तुएं जो सजीव थीं मर गईं, और एक तिहाई जहाज नाश हो गया॥

१० और तीसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी, और एक बड़ा तारा जो मशाल की नाईं जलता था, स्वर्ग से टूटा, और नदियों की एक तिहाई पर, और पानी के सोतों पर आ पड़ा। ११ और उस तारे का नाम नागदौना कहलाता है, और एक तिहाई पानी नागदौना सा कड़वा हो गया, और बहुतेरे मनुष्य उस पानी के कड़वे हो जाने से मर गए॥

१२ और चौथे स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी, और सूर्य की एक तिहाई, और चान्द की एक तिहाई और तारों की एक तिहाई पर आपत्ति आई, यहां तक कि उन का एक तिहाई अंग अन्धेरा हो गया और दिन की एक तिहाई में उजाला न रहा, और वैसे ही रात में भी॥

१३ और जब मैं ने फिर देखा, तो आकाश के बीच में एक उकाब को उड़ते और ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि उन तीन स्वर्गदूतों की तुरही के शब्दों के कारण जिन का फूंकना अभी बाकी है, पृथ्वी के रहनेवालों पर हाय! हाय! हाय!

९ और बज पांचवें स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी, तो मैं ने स्वर्ग से पृथ्वी पर एक तारा गिरता हुआ देखा, और

* यू० पवित्रस्थान।

उसे अथाह कुण्ड की कुंजी दी गई। २ और उस ने अथाह कुण्ड को खोला, और कुण्ड में से बड़ी भट्टी का सा धुआं उठा, और कुण्ड के धुएं से सूर्य और वायु अन्धयारी हो गई। ३ और उस धुएं में से पृथ्वी पर टिड्डियां निकलीं, और उन्हें पृथ्वी के बिच्छुओं की सी शक्ति दी गई। ४ और उन से कहा गया, कि न पृथ्वी की घास को, न किसी हरियाली को, न किसी पेड़ को हानि पहुंचाओ, केवल उन मनुष्यों को जिन के माथे पर परमेश्वर की मुहर नहीं है। ५ और उन्हें मार डालने का तो नहीं, पर पांच महीने तक लोगों को पीड़ा देने का अधिकार दिया गया: और उन की पीड़ा ऐसी थी, जैसे बिच्छू के डंक मारने से मनुष्य को होती है। ६ उन दिनों में मनुष्य मृत्यु को ढूंढ़ेंगे, और न पाएंगे; और मरने की लालसा करेंगे, और मृत्यु उन से भागेगी। ७ और उन टिड्डियों के आकार लड़ाई के लिये तैयार किए हुए घोड़ों के से थे, और उन के सिरों पर मानों सोने के मुकुट थे; और उन के मुंह मनुष्यों के से थे। ८ और उन के बाल स्त्रियों के से, और दांत सिंहों के से थे। ९ और वे लोहे की सी झिलम पहिने थे, और उन के पंखों का शब्द ऐसा था जैसा रथों और बहुत से घोड़ों का जो लड़ाई में दौड़ते हों। १० और उन की पूंछ बिच्छुओं की सी थीं, और उन में डंक थे, और उन्हें पांच महीने तक मनुष्यों को दुख पहुंचाने की जो सामर्थ थी, वह उन की पूंछों में थी। ११ अथाह कुण्ड का दूत उन पर राजा था, उसका नाम इब्रानी में अबद्दोन, और यूनानी में अपुल्लयोन है॥

१२ पहिली विपत्ति बीत चुकी, देखो, अब इस के बाद दो विपत्तियां और होनेवाली हैं॥

१३ और जब छठवें स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी तो जो सोने की वेदी परमेश्वर के साम्हने है उसके सींगों में से मैं ने ऐसा शब्द सुना। १४ मानो कोई छठवें स्वर्गदूत से जिस के पास तुरही थी, कह रहा है कि उन चार स्वर्गदूतों को जो बड़ी नदी फुरात के पास बन्धे हुए हैं, खोल दे। १५ और वे चारों दूत खोल दिए गए जो उस घड़ी, और दिन, और महीने, और वर्ष के लिये मनुष्यों की एक तिहाई के मार डालने को तैयार किए गए थे। १६ और फौजों के सवारों की गिनती बीस करोड़ थी; मैं ने उन की गिनती सुनी। १७ और मुझे इस दर्शन में घोड़े और उन के ऐसे सवार दिखाई दिए, जिन की झिलमें आग, और धूम्रकान्त, और गन्धक की सी थीं, और उन घोड़ों के सिर सिंहों के सिरों के से थे: और उन के मुंह से आग, और धुआं, और गन्धक निकलती थी। १८ इन तीनों मरियों; अर्थात आग, और धुएं, और गन्धक से जो उसके मुंह से निकलती थीं, मनुष्यों की एक तिहाई मार डाली गई। १९ क्योंकि उन घोड़ों की सामर्थ उन के मुंह, और उन की पूंछों में थी; इसलिये कि उन की पूंछे सांपों की सी थीं, और उन पूंछों के सिर भी थे, और इन्हीं से वे पीड़ा पहुंचाते थे। २० और बाकी मनुष्यों ने जो उन मरियों से न मरे थे, अपने हाथों के कामों से मन न फिराया, कि दुष्टात्माओं की, और सोने और चान्दी, और पीतल, और पत्थर, और काठ की मूरतों की पूजा न

करें, जो न देख, न सुन, न चल सकती हैं। २१ और जो खून, और टोना, और व्यभिचार, और चोरियां, उन्हों ने की थीं, उन से मन न फिराया॥

१० फिर मैं ने एक और बली स्वर्गदूत को बादल ओढ़े हुए स्वर्ग से उतरते देखा, उसके सिर पर मेधधनुष था: और उसका मुंह सूर्य का सा और उसके पांव आग के खंभे के से थे। २ और उसके हाथ में एक छोटी सी खुली हुई पुस्तक थी; उस ने अपना दहिना पांव समुद्र पर, और बायां पृथ्वी पर रखा। ३ और ऐसे बड़े शब्द से चिल्लाया, जैसा सिंह गरजता है; और जब वह चिल्लाया तो गर्जन के सात शब्द सुनाई दिए। ४ और जब सातों गर्जन के शब्द सुनाई दे चुके, तो मैं लिखने पर था, और मैं ने स्वर्ग से यह शब्द सुना, कि जो बातें गर्जन के उन सात शब्दों से सुनी हैं, उन्हें गुप्त रख *, और मत लिख। ५ और जिस स्वर्गदूत को मैं ने समुद्र और पृथ्वी पर खड़े देखा था; उस ने अपना दहिना हाथ स्वर्ग की ओर उठाया। ६ और जो युगानुयुग जीवता रहेगा, और जिस ने स्वर्ग को और जो कुछ उस में है, और पृथ्वी को और जो कुछ उस पर है, और समुद्र को और जो कुछ उस में है सृजा उसी की शपथ खाकर कहा, अब तो और देर न होगी †। ७ बरन सातवें स्वर्गदूत के शब्द देने के दिनों में जब वह तुरही फूंकने पर होगा, तो परमेश्वर का गुप्त मनोरथ ‡ उस सुसमाचार के अनुसार जो उस ने अपने दास भविष्यद्वक्ताओं को दिया पूरा होगा। ८ और जिस शब्द करनेवाले को मैं ने स्वर्ग से बोलते सुना था, वह फिर मेरे साथ बातें करने लगा; कि जा, जो स्वर्गदूत समुद्र और पृथ्वी पर खड़ा है, उसके हाथ में की खुली हुई पुस्तक ले ले। ९ और मैं ने स्वर्गदूत के पास जाकर कहा, यह छोटी पुस्तक मुझे दे; और उस ने मुझ से कहा ले इसे खा जा, और यह तेरा पेट कड़वा तो करेगी, पर तेरे मुंह में मधु सी मीठी लगेगी। १० सो मैं वह छोटी पुस्तक उस स्वर्गदूत के हाथ से लेकर खा गया, वह मेरे मुंह में मधु सी मीठी तो लगी, पर जब मैं उसे खा गया, तो मेरा पेट कड़वा हो गया। ११ तब मुझ से यह कहा गया, कि तुझे बहुत से लोगों, और जातियों, और भाषाओं, और राजाओं पर, फिर भविष्यद्वाणी करनी होगी॥

११ और मुझे लग्गी के समान एक सरकंडा दिया गया, और किसी ने कहा; उठ, परमेश्वर के मन्दिर और वेदी, और उस में भजन करने-वालों को नाप ले। २ और मन्दिर के बाहर का आंगन छोड़ दे; उसे मत नाप, क्योंकि वह अन्यजातियों को दिया गया है, और वे पवित्र नगर को बयालीस महीने तक रौंदेंगी। ३ और मैं अपने दो गवाहों को यह अधिकार दूंगा, कि टाट ओढे हुए एक हजार दो सौ साठ दिन तक भविष्यद्वाणी करें। ४ ये वे ही जैतून के दो पेड़ और दो दीवट हैं, जो पृथ्वी के प्रभु के साम्हने खड़े रहते हैं। ५ और यदि कोई उन को हानि पहुंचाना चाहता है, तो उन के मुंह से

---

* यू० उन पर छाप दे।

† या समय न होगा। ‡ यू० भेद।

आग निकलकर उन के वैरियों को भस्म करती है, और यदि कोई उन को हानि पहुंचाना चाहेगा, तो अवश्य इसी रीति से मार डाला जाएगा। ६ इन्हें अधिकार है, कि आकाश को बन्द करें, कि उन की भविष्यद्वाणी के दिनों में मेंह न बरसे, और उन्हें सब पानी पर अधिकार है, कि उसे लोहू बनाएं, और जब जब चाहें तब तब पृथ्वी पर हर प्रकार की आपत्ति लाएं। ७ और जब वे अपनी गवाही दे चुकेंगे, तो वह पशु जो अथाह कुण्ड में से निकलेगा, उन से लड़कर उन्हें जीतेगा और उन्हें मार डालेगा। ८ और उन की लोथें उस बड़े नगर के चौक में पड़ी रहेंगी, जो आत्मिक रीति से सदोम और मिसर कहलाता है, जहां उन का प्रभु भी क्रूस पर चढ़ाया गया था। ९ और सब लोगों, और कुलों, और भाषाओं, और जातियों में से लोग उन की लोथें साढ़े तीन दिन तक देखते रहेंगे, और उन की लोथें कब्र में रखने न देंगे। १० और पृथ्वी के रहनेवाले, उन के मरने से आनन्दित और मगन होंगे, और एक दूसरे के पास भेंट भेजेंगे, क्योंकि इन दोनों भविष्यद्वक्ताओं ने पृथ्वी के रहनेवालों को सताया था। ११ और साढ़े तीन दिन के बाद परमेश्वर की ओर से जीवन की आत्मा उन में पैठ गई; और वे अपने पांवों के बल खड़े हो गए, और उन के देखनेवालों पर बड़ा भय छा गया। १२ और उन्हें स्वर्ग से एक बड़ा शब्द सुनाई दिया, कि यहां ऊपर आओ; यह सुन वे बादल पर सवार होकर अपने बैरियों के देखते देखते स्वर्ग पर चढ़ गए। १३ फिर उसी घड़ी एक बड़ा भुईंडोल हुआ, और नगर का दसवां अंश गिर पड़ा; और उस भुइंडोल से सात हजार मनुष्य मर गए और शेष डर गए, और स्वर्ग के परमेश्वर की महिमा की॥

१४ दूसरी विपत्ति बीत चुकी, देखो, तीसरी विपत्ति शीघ्र आनेवाली है॥

१५ और जब सातवें दूत ने तुरही फूंकी, तो स्वर्ग में इस विषय के बड़े बड़े शब्द होने लगे कि जगत का राज्य हमारे प्रभु का, और उसके मसीह का हो गया। १६ और वह युगानुयुग राज्य करेगा, और चौबीसों प्राचीन जो परमेश्वर के साम्हने अपने अपने सिंहासन पर बैठे थे, मुंह के बल गिरकर परमेश्वर को दण्डवत करके। १७ यह कहने लगे, कि हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, जो है, और जो था, हम तेरा धन्यवाद करते हैं, कि तू ने अपनी बड़ी सामर्थ काम में लाकर राज्य किया है। १८ और अन्य-जातियों ने क्रोध किया, और तेरा प्रकोप आ पड़ा, और वह समय आ पहुंचा है, कि मरे हुओं का न्याय किया जाए, और तेरे दास भविष्यद्वक्ताओं और पवित्र लोगों को और उन छोटे बड़ों को जो तेरे नाम से डरते हैं, बदला दिया जाए, और पृथ्वी के बिगाड़नेवाले नाश किए जाएं॥

१९ और परमेश्वर का जो मन्दिर स्वर्ग में है, वह खोला गया, और उसके मन्दिर में उस की वाचा का सन्दूक दिखाई दिया, और बिजलियां और शब्द और गर्जन और भुइंडोल हुए, और बड़े ओले पड़े॥

१२ फिर स्वर्ग पर एक बड़ा चिन्ह दिखाई दिया, अर्थात् एक स्त्री जो सूर्य्य ओढ़े हुए थी, और चान्द उसके

पांवों तले था, और उसके सिर पर बारह तारों का मुकुट था। २ और वह गर्भवती हुई, और चिल्लाती थी; क्योंकि प्रसव की पीड़ा उसे लगी थी; और वह बच्चा जनने की पीड़ा में थी। ३ और एक और चिन्ह स्वर्ग पर दिखाई दिया, और देखो; एक बड़ा लाल अजगर था जिस के सात सिर और दस सींग थे, और उसके सिरों पर सात राजमुकुट थे। ४ और उस की पूंछ ने आकाश के तारों की एक तिहाई को खींचकर पृथ्वी पर डाल दिया, और वह अजगर उस स्त्री के साम्हने जो जच्चा थी, खड़ा हुआ, कि जब वह बच्चा जने तो उसके बच्चे को निगल जाए। ५ और वह बेटा जनी जो लोहे का दण्ड लिए हुए, सब जातियों पर राज्य करने पर था, और उसका बच्चा एकाएक परमेश्वर के पास, और उसके सिंहासन के पास उठाकर पहुंचा दिया गया। ६ और वह स्त्री उस जंगल को भाग गई, जहां परमेश्वर की ओर से उसके लिये एक जगह तैयार की गई थी, कि वहां वह एक हज़ार दो सौ साठ दिन तक पाली जाए।।

७ फिर स्वर्ग पर लड़ाई हुई, मीकाईल और उसके स्वर्गदूत अजगर से लड़ने को निकले, और अजगर और उसके दूत उस से लड़े। ८ परन्तु प्रबल न हुए, और स्वर्ग में उन के लिये फिर जगह न रही। ९ और वह बड़ा अजगर अर्थात् वही पुराना सांप, जो इब्लीस और शैतान कहलाता है, और सारे संसार का भरमानेवाला है, पृथ्वी पर गिरा दिया गया; और उसके दूत उसके साथ गिरा दिए गए। १० फिर मैं ने स्वर्ग पर से यह बड़ा शब्द आते हुए सुना, कि अब हमारे परमेश्वर का उद्धार, और सामर्थ, और राज्य, और उसके मसीह का अधिकार प्रगट हुआ है; क्योंकि हमारे भाइयों पर दोष लगानेवाला, जो रात दिन हमारे परमेश्वर के साम्हने उन पर दोष लगाया करता था, गिरा दिया गया। ११ और वे मेम्ने के लोहू के कारण, और अपनी गवाही के वचन के कारण, उस पर जयवन्त हुए, और उन्हों ने अपने प्राणों को प्रिय न जाना, यहां तक कि मृत्यु भी सह ली। १२ इस कारण, हे स्वर्गो, और उन में के रहनेवालो मगन हो; हे पृथ्वी, और समुद्र, तुम पर हाय! क्योंकि शैतान* बड़े क्रोध के साथ तुम्हारे पास उतर आया है; क्योंकि जानता है, कि उसका थोड़ा ही समय और बाकी है।।

१३ और जब अजगर ने देखा, कि मैं पृथ्वी पर गिरा दिया गया हूं, तो उस स्त्री को जो बेटा जनी थी, सताया। १४ और उस स्त्री को बड़े उकाब के दो पंख दिए गए, कि सांप के साम्हने से उड़कर जंगल में उस जगह पहुंच जाए, जहां वह एक समय, और समयों, और आधे समय तक पाली जाए। १५ और सांप ने उस स्त्री के पीछे अपने मुंह से नदी की नाईं पानी बहाया, कि उसे इस नदी से बहा दे। १६ परन्तु पृथ्वी ने उस स्त्री की सहायता की, और अपना मुंह खोलकर उस नदी को जो अजगर ने अपने मुंह से बहाई थी, पी लिया। १७ और अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ, और उसकी शेष सन्तान से जो परमेश्वर

---

*यू० इब्लीस।

की आज्ञाओं को मानते, और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं, लड़ने को गया। और वह समुद्र के बालू पर जा खड़ा हुआ ॥

१३ और मैं ने एक पशु को समुद्र में से निकलते हुए देखा, जिस के दस सींग और सात सिर थे; और उसके सींगों पर दस राजमुकुट, और उसके सिरों पर निन्दा के नाम लिखे हुए थे। २ और जो पशु मैं ने देखा, वह चीते की नाईं था; और उसके पांव भालू के से, और मुंह सिंह का सा था; और उस अजगर ने अपनी सामर्थ, और अपना सिंहासन, और बड़ा अधिकार, उसे दे दिया। ३ और मैं ने उसके सिरों में से एक पर ऐसा भारी घाव लगा देखा, मानो वह मरने पर है; फिर उसका प्राणघातक घाव अच्छा हो गया, और सारी पृथ्वी के लोग उस पशु के पीछे पीछे अचंभा करते हुए चले। ४ और उन्हों ने अजगर की पूजा की, क्योंकि उस ने पशु को अपना अधिकार दे दिया था और यह कहकर पशु की पूजा की, कि इस पशु के समान कौन है? ५ कौन उस से लड़ सकता है? और बड़े बोल बोलने और निन्दा करने के लिये उसे एक मुंह दिया गया, और उसे बयालीस महीने तक काम करने का अधिकार दिया गया। ६ और उस ने परमेश्वर की निन्दा करने के लिये मुंह खोला, कि उसके नाम और उसके तम्बू अर्थात् स्वर्ग के रहनेवालों की निन्दा करे। ७ और उसे यह अधिकार दिया गया, कि पवित्र लोगों से लड़े, और उन पर जय पाए, और उसे हर एक कुल, और लोग, और भाषा, और जाति पर अधिकार दिया गया। ८ और पृथ्वी के वे सब रहनेवाले जिन के नाम उस मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं गए, जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है, उस पशु की पूजा करेंगे। ९ जिस के कान हों वह सुने। १० जिस को कैद मे पड़ना है, वह कैद में पड़ेगा, जो तलवार से मारेगा, अवश्य है कि वह तलवार से मारा जाएगा, पवित्र लोगों का धीरज और विश्वास इसी में है ॥

११ फिर मैं ने एक और पशु को पृथ्वी में से निकलते हुए देखा, उसके मेम्ने के से दो सींग थे; और वह अजगर की नाईं बोलता था। १२ और यह उस पहिले पशु का सारा अधिकार उसके साम्हने काम में लाता था, और पृथ्वी और उसके रहनेवालों से उस पहिले पशु की जिस का प्राणघातक घाव अच्छा हो गया था, पूजा कराता था। १३ और वह बड़े बड़े चिन्ह दिखाता था, यहां तक कि मनुष्यों के साम्हने स्वर्ग से पृथ्वी पर आग बरसा देता था। १४ और उन चिन्हों के कारण जिन्हें उस पशु के साम्हने दिखाने का अधिकार उसे दिया गया था; वह पृथ्वी के रहनेवालों को इस प्रकार भरमाता था, कि पृथ्वी के रहनेवालों से कहता था, कि जिस पशु के तलवार लगी थी, वह जी गया है, उस की मूरत बनाओ। १५ और उसे उस पशु की मूरत में प्राण डालने का अधिकार दिया गया, कि पशु की मूरत बोलने लगे; और जितने लोग उस पशु की मूरत की पूजा न करें, उन्हें मरवा डाले। १६ और उस ने छोटे, बड़े, धनी, कंगाल, स्वतंत्र, दास सब के दहिने हाथ

या उन के माथे पर एक एक छाप करा दी। १७ कि उस को छोड़ जिस पर छाप अर्थात् उस पशु का नाम, या उसके नाम का अंक हो, और कोई लेन देन न कर सके। १८ ज्ञान इसी में है, जिसे बुद्धि हो, वह इस पशु का अंक जोड़ ले, क्योंकि वह मनुष्य का अंक है, और उसका अंक छः सौ छियासठ है॥

१४ फिर मैं ने दृष्टि की, और देखो, वह मेम्ना सिय्योन पहाड़ पर खड़ा है, और उसके साथ एक लाख चौआलीस हजार जन हैं, जिन के माथे पर उसका और उसके पिता का नाम लिखा हुआ है। २ और स्वर्ग से मुझे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया, जो जल की बहुत धाराओं और बड़े गर्जन का सा शब्द था, और जो शब्द मैं ने सुना; वह ऐसा था, मानो वीणा बजानेवाले वीणा बजाते हों। ३ और वे सिंहासन के साम्हने और चारों प्राणियों और प्राचीनों के साम्हने मानो, एक नया गीत गा रहे थे, और उन एक लाख चौआलीस हजार जनों को छोड़ जो पृथ्वी पर से मोल लिए गए थे, कोई वह गीत न सीख सकता था। ४ ये वे हैं, जो स्त्रियों के साथ अशुद्ध नहीं हुए, पर कुंवारे हैं: ये वे ही हैं, कि जहां कहीं मेम्ना जाता है, वे उसके पीछे हो लेते हैं: ये तो परमेश्वर के निमित्त पहिले फल होने के लिये मनुष्यों में से मोल लिए गए हैं। ५ और उन के मुंह से कभी झूठ न निकला था, वे निर्दोष हैं॥

६ फिर मैं ने एक और स्वर्गदूत को आकाश के बीच में उड़ते हुए देखा, जिस के पास पृथ्वी पर के रहनेवालों की हर एक जाति, और कुल, और भाषा, और लोगों को सुनाने के लिये सनातन सुसमाचार था। ७ और उस ने बड़े शब्द से कहा; परमेश्वर से डरो; और उस की महिमा करो; क्योंकि उसके न्याय करने का समय आ पहुंचा है, और उसका भजन करो, जिस ने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जल के सोते बनाए॥

८ फिर इस के बाद एक और दूसरा स्वर्गदूत यह कहता हुआ आया, कि गिर पड़ा, वह बड़ा बाबुल गिर पड़ा जिस ने अपने व्यभिचार की कोपमय मदिरा सारी जातियों को पिलाई है॥

९ फिर इन के बाद एक और स्वर्गदूत बड़े शब्द से यह कहता हुआ आया, कि जो कोई उस पशु और उस की मूरत की पूजा करे, और अपने माथे या अपने हाथ पर उस की छाप ले। १० तो वह परमेश्वर के प्रकोप की निरी मदिरा जो उसके क्रोध के कटोरे में डाली गई है, पीएगा और पवित्र स्वर्गदूतों के साम्हने, और मेम्ने के साम्हने आग और गन्धक की पीड़ा में पड़ेगा। ११ और उन की पीड़ा का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा, और जो उस पशु और उस की मूरत की पूजा करते हैं, और जो उसके नाम की छाप लेते हैं, उन को रात दिन चैन न मिलेगा। १२ पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु पर विश्वास रखते हैं॥

१३ और मैं ने स्वर्ग से यह शब्द सुना, कि लिख; जो मुरदे प्रभु में मरते हैं, वे अब से धन्य हैं, आत्मा कहता है, हां क्योंकि वे अपने परिश्रमों से विश्राम

पाएंगे, और उन के कार्य्य उन के साथ हो लेते हैं ॥

१४ और मैं ने दृष्टि की, और देखो, एक उजला बादल है, और उस बादल पर मनुष्य के पुत्र सरीखा कोई बैठा है, जिस के सिर पर सोने का मुकुट और हाथ में चोखा हंसुआ है। १५ फिर एक और स्वर्गदूत ने मन्दिर में से निकलकर, उस से जो बादल पर बैठा था, बड़े शब्द से पुकारकर कहा, कि अपना हंसुआ लगाकर लवनी कर, क्योंकि लवने का समय आ पहुंचा है, इसलिये कि पृथ्वी की खेती पक चुकी है। १६ सो जो बादल पर बैठा था, उस ने पृथ्वी पर अपना हंसुआ लगाया, और पृथ्वी की लवनी की गई ॥

१७ फिर एक और स्वर्गदूत उस मन्दिर * में से निकला, जो स्वर्ग में है, और उसके पास भी चोखा हंसुआ था। १८ फिर एक और स्वर्गदूत जिसे आग पर अधिकार था, वेदी में से निकला, और जिस के पास चोखा हंसुआ था, उस से ऊंचे शब्द से कहा; अपना चोखा हंसुआ लगाकर पृथ्वी की दाख लता के गुच्छे काट ले; क्योंकि उस की दाख पक चुकी है। १९ और उस स्वर्गदूत ने पृथ्वी पर अपना हंसुआ डाला, और पृथ्वी की दाख लता का फल काटकर, अपने परमेश्वर के प्रकोप के बड़े रस के कुण्ड में डाल दिया। २० और नगर के बाहर उस रस के कुण्ड में दाख रौंदे गए, और रस के कुण्ड में से इतना लोहू निकला कि घोड़ों के लगामों तक पहुंचा, और सौ कोस तक बह गया ॥

* यू० पवित्रस्थान।

१५ फिर मैं ने स्वर्ग में एक और बड़ा और अद्भुत चिन्ह देखा, अर्थात् सात स्वर्गदूत जिन के पास सातों पिछली विपत्तियां थीं, क्योंकि उन के हो जाने पर परमेश्वर के प्रकोप का अन्त है ॥

२ और मैं ने आग से मिले हुए कांच का सा एक समुद्र देखा, और जो उस पशु पर, और उस की मूरत पर, और उसके नाम के अंक पर जयवन्त हुए थे, उन्हें उस कांच के समुद्र के निकट परमेश्वर की वीणाओं को लिए हुए खड़े देखा। ३ और वे परमेश्वर के दास मूसा का गीत, और मेम्ने का गीत गा गाकर कहते थे, कि हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, तेरे कार्य्य बड़े, और अद्भुत हैं, हे युग युग के राजा, तेरी चाल ठीक और सच्ची है। ४ हे प्रभु, कौन तुझ से न डरेगा? और तेरे नाम की महिमा न करेगा? क्योंकि केवल तू ही पवित्र है, और सारी जातियां आकर तेरे साम्हने दण्डवत करेंगी, क्योंकि तेरे न्याय के काम प्रगट हो गए हैं ॥

५ और इस के बाद मैं ने देखा, कि स्वर्ग में साक्षी के तम्बू का मन्दिर खोला गया। ६ और वे सातों स्वर्गदूत जिन के पास सातों विपत्तियां थीं, शुद्ध और चमकती हुई मणि पहिने हुए छाती पर सुनहले पटुके बान्धे हुए मन्दिर से निकले। ७ और उन चारों प्राणियों में से एक ने उन सात स्वर्गदूतों को परमेश्वर के, जो युगानुयुग जीवता है, प्रकोप से भरे हुए सात सोने के कटोरे दिए। ८ और परमेश्वर की महिमा, और उस की सामर्थ के कारण मन्दिर धुएं से भर गया और जब तक उन सातों स्वर्गदूतों की

सातों विपत्तियां समाप्त न हुई, तब तक कोई मन्दिर में न जा सका ।।

१६ फिर मैं ने मन्दिर में किसी को ऊंचे शब्द से उन सातों स्वर्गदूतों से यह कहते सुना कि जाओ, परमेश्वर के प्रकोप के सातों कटोरों को पृथ्वी पर उंडेल दो ।।

२ सो पहिले ने जाकर अपना कटोरा पृथ्वी पर उंडेल दिया। और उन मनुष्यों के जिन पर पशु की छाप थी, और जो उस की मूरत की पूजा करते थे, एक प्रकार का बुरा और दुखदाई फोड़ा निकला ।।

३ और दूसरे ने अपना कटोरा समुद्र पर उंडेल दिया और वह मरे हुए का सा लोहू बन गया, और समुद्र में का हर एक जीवधारी मर गया ।।

४ और तीसरे ने अपना कटोरा नदियों और पानी के सोतों पर उंडेल दिया, और वे लोहू बन गए। ५ और मैं ने पानी के स्वर्गदूत को यह कहते सुना, कि हे पवित्र, जो है, और जो था, तू न्यायी है और तू ने यह न्याय किया। ६ क्योंकि उन्हों ने पवित्र लोगों, और भविष्यद्वक्ताओं का लोहू बहाया था, और तू ने उन्हें लोहू पिलाया; क्योंकि वे इसी योग्य हैं। ७ फिर मैं ने वेदी से यह शब्द सुना, कि हां हे सर्व्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, तेरे निर्णय ठीक और सच्चे हैं ।।

८ और चौथे ने अपना कटोरा सूर्य पर उंडेल दिया, और उसे मनुष्यों को आग से झुलसा देने का अधिकार दिया गया। ९ और मनुष्य बड़ी तपन से झुलस गए, और परमेश्वर के नाम की जिसे इन विपत्तियों पर अधिकार है, निन्दा की और उस की महिमा करने के लिये मन न फिराया ।।

१० और पांचवें ने अपना कटोरा उस पशु के सिंहासन पर उंडेल दिया और उसके राज्य पर अन्धेरा छा गया; और लोग पीड़ा के मारे अपनी अपनी जीभ चबाने लगे। ११ और अपनी पीड़ाओं और फोड़ों के कारण स्वर्ग के परमेश्वर की निन्दा की; और अपने अपने कामों से मन न फिराया ।।

१२ और छठवें ने अपना कटोरा बड़ी नदी फुरात पर उंडेल दिया और उसका पानी सूख गया कि पूर्व दिशा के राजाओं के लिये मार्ग तैयार हो जाए। १३ और मैं ने उस अजगर के मुंह से, और उस पशु के मुंह से और उस झूठे भविष्यद्वक्ता के मुंह से तीन अशुद्ध आत्माओं को मेंढकों के रूप में निकलते देखा। १४ ये चिन्ह दिखानेवाली दुष्टात्मा हैं, जो सारे संसार के राजाओं के पास निकलकर इसलिये जाती हैं, कि उन्हें सर्वशक्तिमान परमेश्वर के उस बड़े दिन की लड़ाई के लिये इकट्ठा करें। १५ देख, मैं चोर की नाईं आता हूं; धन्य वह है, जो जागता रहता है, और अपने वस्त्र की चौकसी करता है, कि नङ्गा न फिरे, और लोग उसका नङ्गापन न देखें। १६ और उन्हों ने उन को उस जगह इकट्ठा किया, जो इब्रानी में हर-मगिदोन कहलाता है ।।

१७ और सातवें ने अपना कटोरा हवा पर उंडेल दिया, और मन्दिर* के सिंहासन से यह बड़ा शब्द हुआ, कि 'हो चुका'। १८ फिर बिजलियां, और

* यू० पवित्रस्थान।

शब्द, और गर्जन हुए, और एक ऐसा बड़ा भुइंडोल हुआ, कि जब से मनुष्य की उत्पत्ति पृथ्वी पर हुई, तब से ऐसा बड़ा भुइंडोल कभी न हुआ था। १९ और उस बड़े नगर के तीन टुकड़े हो गए, और जाति जाति के नगर गिर पड़े, और बड़ा बाबुल का स्मरण परमेश्वर के यहां हुआ, कि वह अपने क्रोध की जल-जलाहट की मदिरा उसे पिलाए। २० और हर एक टापू अपनी जगह से टल गया; और पहाड़ों का पता न लगा। २१ और आकाश से मनुष्यों पर मन मन भर के बड़े ओले गिरे, और इसलिये कि यह विपत्ति बहुत ही भारी थी, लोगों ने ओलो की विपत्ति के कारण परमेश्वर की निन्दा की॥

१७ और जिन सात स्वर्गदूतों के पास वे सात कटोरे थे, उन में से एक ने आकर मुझ से यह कहा कि इधर आ, मैं तुझे उस बड़ी वेश्या का दण्ड दिखाऊं, जो बहुत से पानियों पर बैठी है। २ जिस के साथ पृथ्वी के राजाओं ने व्यभिचार किया; और पृथ्वी के रहनेवाले उसके व्यभिचार की मदिरा से मतवाले हो गए थे। ३ तब वह मुझे आत्मा में जंगल को ले गया, और मैं ने किरमिजी रंग के पशु पर जो निन्दा के नामों से छिपा हुआ था और जिस के सात सिर और दस सींग थे, एक स्त्री को बैठे हुए देखा। ४ यह स्त्री बैंजनी, और किरमिजी, कपड़े पहिने थी, और सोने और बहुमोल मणियों और मोतियों से सजी हुई थी, और उसके हाथ में एक सोने का कटोरा था जो घृणित वस्तुओं से और उसके व्यभिचार की अशुद्ध वस्तुओं से भरा हुआ था। ५ और उसके माथे पर यह नाम लिखा था, "भेद बड़ा बाबुल पृथ्वी की वेश्याओं और घृणित वस्तुओं की माता।" ६ और मैं ने उस स्त्री को पवित्र लोगों के लोहू और यीशु के गवाहों के लोहू पीने से मतवाली देखा और उसे देखकर मैं चकित हो गया। ७ उस स्वर्गदूत ने मुझ से कहा; तू क्यों चकित हुआ? मैं इस स्त्री, और उस पशु का, जिस पर वह सवार है, और जिस के सात सिर और दस सींग हैं, तुझे भेद बताता हूं। ८ जो पशु तू ने देखा है, यह पहिले तो था, पर अब नहीं है, और अथाह कुंड से निकलकर विनाश में पड़ेगा, और पृथ्वी के रहनेवाले जिन के नाम जगत की उत्पत्ति के समय से जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं गए, इस पशु की यह दशा देखकर, कि पहिले था, और अब नहीं; और फिर आ जाएगा, अचंभा करेंगे। ९ उस बुद्धि के लिये जिस में ज्ञान है यही अवसर है, वे सातों सिर सात पहाड़ हैं, जिन पर वह स्त्री बैठी है। १० और वे सात राजा भी हैं, पांच तो हो चुके हैं, और एक अभी है; और एक अब तक आया नहीं, और जब आएगा, तो कुछ समय तक उसका रहना भी अवश्य है। ११ और जो पशु पहिले था, और अब नहीं, वह आप आठवां है; और उन सातों में से उत्पन्न हुआ, और विनाश में पड़ेगा। १२ और जो दस सींग तू ने देखे वे दस राजा हैं; जिन्हों ने अब तक राज्य नहीं पाया; पर उस पशु के साथ घड़ी भर के लिये राजाओं का सा अधिकार पाएंगे। १३ ये सब एक मन होंगे, और वे अपनी

अपनी सामर्थ और अधिकार उस पशु को देंगे। १४ ये मेम्ने से लड़ेंगे, और मेम्ना उन पर जय पाएगा; क्योंकि वह प्रभुओं का प्रभु, और राजाओं का राजा है: और जो बुलाए हुए, और चुने हुए, और विश्वासी उसके साथ हैं, वे भी जय पाएंगे। १५ फिर उस ने मुझ से कहा, कि जो पानी तू ने देखे, जिन पर वेश्या बैठी है, वे लोग, और भीड़ और जातियां, और भाषा हैं। १६ और जो दस सींग तू ने देखे, वे और पशु उस वेश्या से बैर रखेंगे, और उसे लाचार और नङ्गी कर देंगे; और उसका मांस खा जाएंगे, और उसे आग में जला देंगे। १७ क्योंकि परमेश्वर उन के मन में यह डालेगा, कि वे उस की मनसा पूरी करें; और जब तक परमेश्वर के वचन पूरे न हो लें, तब तक एक मन होकर अपना अपना राज्य पशु को दे दें। १८ और वह स्त्री, जिसे तू ने देखा है वह बड़ा नगर है, जो पृथ्वी के राजाओं पर राज्य करता है।।

१८ इस के बाद मैं ने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा, जिस का बड़ा अधिकार था; और पृथ्वी उसके तेज से प्रज्वलित हो गई। २ उस ने ऊंचे शब्द से पुकारकर कहा, कि गिर गया बड़ा बाबुल गिर गया है: और दुष्टात्माओं का निवास, और हर एक अशुद्ध आत्मा का अड्डा, और एक अशुद्ध और घृणित पक्षी का अड्डा हो गया। ३ क्योंकि उसके व्यभिचार के भयानक मदिरा के कारण सब जातियां गिर गई हैं, और पृथ्वी के राजाओं ने उसके साथ व्यभिचार किया है; और पृथ्वी के व्योपारी उसके सुख-विलास की बहुतायत के कारण धनवान हुए हैं।।

४ फिर मैं ने स्वर्ग से किसी और का शब्द सुना, कि हे मेरे लोगो, उस में से निकल आओ; कि तुम उसके पापों में भागी न हो, और उस की विपत्तियों में से कोई तुम पर आ न पड़े। ५ क्योंकि उसके पाप स्वर्ग तक पहुंच गए हैं, और उसके अधर्म परमेश्वर को स्मरण आए हैं। ६ जैसा उस ने तुम्हें दिया है, वैसा ही उस को भर दो, और उसके कामों के अनुसार उसे दो-गुणा बदला दो, जिस कटोरे में उस ने भर दिया था उसी में उसके लिये दो-गुणा भर दो। ७ जितनी उस ने अपनी बड़ाई की और सुख-विलास किया; उतनी उस को पीड़ा, और शोक दो; क्योंकि वह अपने मन में कहती है, मैं रानी हो बैठी हूं, विधवा नहीं; और शोक में कभी न पड़ूंगी। ८ इस कारण एक ही दिन में उस पर विपत्तियां आ पड़ेंगी, अर्थात् मृत्यु, और शोक, और अकाल; और वह आग में भस्म कर दी जाएगी, क्योंकि उसका न्यायी प्रभु परमेश्वर शक्तिमान है। ९ और पृथ्वी के राजा जिन्हों ने उसके साथ व्यभिचार, और सुख-विलास किया, जब उसके जलने का धुआं देखेंगे, तो उसके लिये रोएंगे, और छाती पीटेंगे। १० और उस की पीड़ा के डर के मारे दूर खड़े होकर कहेंगे, हे बड़े नगर, बाबुल! हे दृढ़ नगर, हाय! हाय! घड़ी ही भर में तुझे दण्ड मिल गया है। ११ और पृथ्वी के व्योपारी उसके लिये रोएंगे और कलपेंगे क्योंकि अब कोई उन का माल मोल न लेगा। १२ अर्थात् सोना, चान्दी,

रत्न, मोती, और मलमल, और बैंजनी, और रेशमी, और किरमिजी कपड़े, और हर प्रकार का सुगन्धित काठ, और हाथीदांत की हर प्रकार की वस्तुएं, और बहुमोल काठ, और पीतल, और लोहे, और संगमरमर के सब भांति के पात्र। १३ और दारचीनी, मसाले, धूप, इत्र, लोबान, मदिरा, तेल, मैदा, गेहूं, गाय, बैल, भेड़, बकरियां, घोड़े, रथ, और दास, और मनुष्यों के प्राण। १४ अब तेरे मन भावने फल तेरे पास से जाते रहे; और स्वादिष्ट और भड़कीली वस्तुएं तुझ से दूर हुई हैं, और वे फिर कदापि न मिलेंगी। १५ इन वस्तुओं के व्योपारी जो उसके द्वारा धनवान हो गए थे, उस की पीड़ा के डर के मारे दूर खड़े होंगे, और रोते और कलपते हुए कहेंगे। १६ हाय! हाय! यह बड़ा नगर जो मलमल, और बैंजनी, और किरमिजी कपड़े पहिने था, और सोने, और रत्नों, और मोतियों से सजा था, १७ घड़ी ही भर में उसका ऐसा भारी धन नाश हो गया: और हर एक मांझी, और जलयात्री, और मल्लाह, और जितने समुद्र से कमाते हैं, सब दूर खड़े हुए। १८ और उसके जलने का धुआं देखते हुए पुकारकर कहेंगे, कौन सा नगर इस बड़े नगर के समान है? १९ और अपने अपने सिरों पर धूल डालेंगे, और रोते हुए और कलपते हुए चिल्ला चिल्लाकर कहेंगे, कि हाय! हाय! यह बड़ा नगर जिस की सम्पत्ति के द्वारा समुद्र के सब जहाजवाले धनी हो गए थे घड़ी ही भर में उजड़ गया। २० हे स्वर्ग, और हे पवित्र लोगो, और प्रेरितो, और भविष्यद्वक्ताओ, उस पर आनन्द करो, क्योंकि परमेश्वर ने न्याय करके उस से तुम्हारा पलटा लिया है!!

२१ फिर एक बलवन्त स्वर्गदूत ने बड़ी चक्की के पाट के समान एक पत्थर उठाया, और यह कहकर समुद्र में फेंक दिया, कि बड़ा नगर बाबुल ऐसे ही बड़े बल से गिराया जाएगा, और फिर कभी उसका पता न मिलेगा। २२ और वीणा बजानेवालों, और बजनियों, और बंसी बजानेवालों, और तुरही फूंकनेवालों का शब्द फिर कभी तुझ में सुनाई न देगा, और किसी उद्यम का कोई कारीगर भी फिर कभी तुझ में न मिलेगा; और चक्की के चलने का शब्द फिर कभी तुझ में सुनाई न देगा। २३ और दीया का उजाला फिर कभी तुझ में न चमकेगा और दूल्हे और दुल्हिन का शब्द फिर कभी तुझ में सुनाई न देगा; क्योंकि तेरे व्योपारी पृथ्वी के प्रधान थे, और तेरे टोने से सब जातियां भरमाई गईं थीं। २४ और भविष्यद्वक्ताओं और पवित्र लोगों, और पृथ्वी पर सब घात किए हुओं का लोहू उसी में पाया गया॥

१९ इस के बाद मैं ने स्वर्ग में मानो बड़ी भीड़ को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि हल्लिलूय्याह उद्धार, और महिमा, और सामर्थ हमारे परमेश्वर ही की है। २ क्योंकि उसके निर्णय सच्चे और ठीक हैं, इसलिये कि उस ने उस बड़ी वेश्या का जो अपने व्यभिचार से पृथ्वी को भ्रष्ट करती थी, न्याय किया, और उस से अपने दासों के लोहू का पलटा लिया है। ३ फिर दूसरी बार उन्हों ने हल्लिलूय्याह कहा: और उसके जलने का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा।

४ और चौबीसों प्राचीनों और चारों प्राणियों ने गिरकर परमेश्वर को दण्डवत किया; जो सिंहासन पर बैठा था, और कहा, आमीन, हल्लिलूय्याह। ५ और सिंहासन में से एक शब्द निकला, कि हे हमारे परमेश्वर से सब डरनेवाले दासो, क्या छोटे, क्या बड़े; तुम सब उस की स्तुति करो। ६ फिर मैं ने बड़ी भीड़ का सा, और बहुत जल का सा शब्द, और गर्जनों का सा बड़ा शब्द सुना, कि हल्लिलूय्याह, इसलिये कि प्रभु हमारा परमेश्वर, सर्वशक्तिमान राज्य करता है। ७ आओ, हम आनन्दित और मगन हों, और उस की स्तुति करें; क्योंकि मेम्ने का ब्याह आ पहुंचा: और उस की पत्नी ने अपने आप को तैयार कर लिया है। ८ और उस को शुद्ध और चमकदार महीन मलमल पहिनने का अधिकार दिया गया, क्योंकि उस महीन मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम है। ९ और उस ने मुझ से कहा; यह लिख, कि धन्य वे हैं, जो मेम्ने के ब्याह के भोज में बुलाए गए हैं; फिर उस ने मुझ से कहा, ये वचन परमेश्वर के सत्य वचन हैं। १० और मैं उस को दण्डवत करने के लिये उसके पांवों पर गिरा; उस ने मुझ से कहा; देख, ऐसा मत कर, मैं तेरा और तेरे भाइयों का संगी दास हूं, जो यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं; परमेश्वर ही को दण्डवत कर; क्योंकि यीशु की गवाही भविष्यद्वाणी की आत्मा है॥

११ फिर मैं ने स्वर्ग को खुला हुआ देखा; और देखता हूं कि एक श्वेत घोड़ा है; और उस पर एक सवार है, जो विश्वास योग्य, और सत्य कहलाता है; और वह धर्म के साथ न्याय और लड़ाई करता है। १२ उस की आंखें आग की ज्वाला हैं: और उसके सिर पर बहुत से राजमुकुट हैं; और उसका एक नाम लिखा है, जिसे उस को छोड़ और कोई नहीं जानता। १३ और वह लोहू से छिड़का हुआ वस्त्र पहिने है: और उसका नाम परमेश्वर का वचन है। १४ और स्वर्ग की सेना श्वेत घोड़ों पर सवार और श्वेत और शुद्ध मलमल पहिने हुए उसके पीछे पीछे हैं। १५ और जाति जाति को मारने के लिये उसके मुंह से एक चोखी तलवार निकलती है, और वह लोहे का राजदण्ड लिए हुए उन पर राज्य करेगा, और वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जल-जलाहट की मदिरा के कुंड में दाख रौंदेगा। १६ और उसके वस्त्र और जांघ पर यह नाम लिखा है, **राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु**॥

१७ फिर मैं ने एक स्वर्गदूत को सूर्य पर खड़े हुए देखा, और उस ने बड़े शब्द से पुकारकर आकाश के बीच में से उड़नेवाले सब पक्षियों से कहा, आओ, परमेश्वर की बड़ी बियारी के लिये इकट्ठे हो जाओ। १८ जिस से तुम राजाओं का मांस, और सरदारों का मांस, और शक्तिमान पुरुषों का मांस, और घोड़ों का, और उन के सवारों का मांस, और क्या स्वतंत्र, क्या दास, क्या छोटे, क्या बड़े, सब लोगों का मांस खाओ॥

१९ फिर मैं ने उस पशु और पृथ्वी के राजाओं और उन की सेनाओं को उस घोड़े के सवार, और उस की सेना से लड़ने के लिये इकट्ठे देखा। २० और वह पशु और उसके साथ वह झूठा

भविष्यद्वक्ता पकड़ा गया, जिस ने उसके साम्हने ऐसे चिन्ह दिखाए थे, जिन के द्वारा उस ने उन को भरमाया, जिन्हों ने उस पशु की छाप ली थी, और जो उस की मूरत की पूजा करते थे, ये दोनों जीते जी उस आग की झील में जो गन्धक से जलती है, डाले गए। २१ और शेष लोग उस घोड़े के सवार की तलवार से जो उसके मुह से निकलती थी, मार डाले गए; और सब पक्षी उन के मांस से तृप्त हो गए॥

२० फिर मैं ने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा; जिस के हाथ में अथाह कुंड की कुंजी, और एक बड़ी जंजीर थी। २ और उस ने उस अजगर, अर्थात् पुराने सांप को, जो इब्लीस और शैतान है; पकड़ के हजार वर्ष के लिये बान्ध दिया। ३ और उसे अथाह कुंड में डालकर बन्द कर दिया और उस पर मुहर कर दी, कि वह हजार वर्ष के पूरे होने तक जाति जाति के लोगों को फिर न भरमाए; इस के बाद अवश्य है, कि थोड़ी देर के लिये फिर खोला जाए॥

४ फिर मैं न सिंहासन देखे, और उन पर लोग बैठ गए, और उन को न्याय करने का अधिकार दिया गया; और उन की आत्माओं को भी देखा, जिन के सिर यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के वचन के कारण काटे गए थे; और जिन्हों ने न उस पशु की, और न उस की मूरत की पूजा की थी, और न उस की छाप अपने माथे और हाथों पर ली थी; वे जीवित होकर मसीह के साथ हजार वर्ष तक राज्य करते रहे। ५ और जब तक ये हजार वर्ष पूरे न हुए तब तक शेष मरे हुए न जी उठे; यह तो पहिला मृतकोत्थान है। ६ धन्य और पवित्र वह है, जो इस पहिले पुनरुत्थान* का भागी है; ऐसों पर दूसरी मृत्यु का कुछ भी अधिकार नहीं, पर वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे, और उसके साथ हजार वर्ष तक राज्य करेंगे॥

७ और जब हजार वर्ष पूरे हो चुकेंगे; तो शैतान कैद से छोड़ दिया जाएगा। ८ और उन जातियों को जो पृथ्वी के चारों ओर होंगी, अर्थात् याजूज और माजूज को जिन की गिनती समुद्र की बालू के बराबर होगी, भरमाकर लड़ाई के लिये इकट्ठे करने को निकलेगा। ९ और वे सारी पृथ्वी पर फैल जाएंगी; और पवित्र लोगों की छावनी और प्रिय नगर को घेर लेंगी: और आग स्वर्ग से उतरकर उन्हें भस्म करेगी। १० और उन का भरमानेवाला शैतान† आग और गन्धक की उस झील में, जिस में वह पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता भी होगा, डाल दिया जाएगा, और वे रात दिन युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे॥

११ फिर मैं ने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उस को जो उस पर बैठा हुआ है, देखा, जिस के साम्हने से पृथ्वी और आकाश भाग गए, और उन के लिये जगह न मिली। १२ फिर मैं ने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के साम्हने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गईं; और फिर एक और पुस्तक खोली गई, अर्थात् जीवन की पुस्तक; और जैसे

* या मृतकोत्थान।

† या इब्लीस।

उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, उन के कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया। १३ और समुद्र ने उन मरे हुओं को जो उस में थे दे दिया, और मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुओं को जो उन में थे दे दिया; और उन में से हर एक के कामों के अनुसार उन का न्याय किया गया। १४ और मृत्यु और अधोलोक भी आग की झील में डाले गए; यह आग की झील तो दूसरी मृत्यु है। १५ और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया॥

२१ फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा। २ फिर मैं ने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हिन के समान थी, जो अपने पति के लिये सिंगार किए हो। ३ फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते हुए सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उन के साथ रहेगा; और उन का परमेश्वर होगा। ४ और वह उन की आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; और इस के बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं। ५ और जो सिंहासन पर बैठा था, उस ने कहा, कि देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूं: फिर उस ने कहा, कि लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं। ६ फिर उस ने मुझ से कहा, ये बातें पूरी हो गई हैं, मैं अलफा और ओमिगा, आदि और अन्त हूं: मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते में से सेंतमेंत पिलाऊंगा। ७ जो जय पाए, वही इन वस्तुओं का वारिस होगा; और मैं उसका परमेश्वर होऊंगा, और वह मेरा पुत्र होगा। ८ पर डरपोकों, और अविश्वासियों, और घिनौनों, और हत्यारों और व्यभिचारियों, और टोन्हों, और मूर्तिपूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती है: यह दूसरी मृत्यु है॥

९ फिर जिन सात स्वर्गदूतों के पास सात पिछली विपत्तियों से भरे हुए सात कटोरे थे, उन में से एक मेरे पास आया, और मेरे साथ बातें करके कहा; इधर आ: मैं तुझे दुल्हिन अर्थात् मेम्ने की पत्नी दिखाऊंगा। १० और वह मुझे आत्मा में, एक बड़े और ऊंचे पहाड़ पर ले गया, और पवित्र नगर यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते दिखाया। ११ परमेश्वर की महिमा उस में थी, और उस की ज्योति * बहुत ही बहुमोल पत्थर, अर्थात् बिल्लौर के समान यशब की नाईं स्वच्छ थी। १२ और उस की शहरपनाह बड़ी ऊंची थी, और उसके बारह फाटक और फाटकों पर बारह स्वर्गदूत थे; और उन पर इस्राएलियों के बारह गोत्रों के नाम लिखे थे। १३ पूर्व की ओर तीन फाटक, उत्तर की ओर तीन फाटक, दक्खिन की ओर तीन फाटक, और पश्चिम की ओर

* या ज्योति देनेवाला।

तीन फाटक थे। १४ और नगर की शहरपनाह की बारह नेवें थीं, और उन पर मेम्ने के बारह प्रेरितों के बारह नाम लिखे थे। १५ और जो मेरे साथ बातें कर रहा था, उसके पास नगर, और उसके फाटकों और उस की शहरपनाह को नापने के लिये एक सोने का गज़ था। १६ और वह नगर चौकोर बसा हुआ था और उस की लम्बाई चौड़ाई के बराबर थी, और उस ने उस गज़ से नगर को नापा, तो साढ़े सात सौ कोस का निकला: उस की लम्बाई, और चौड़ाई, और ऊंचाई बराबर थी। १७ और उस ने उस की शहरपनाह को मनुष्य के, अर्थात् स्वर्गदूत के नाप से नापा, तो एक सौ चौआलीस हाथ निकली। १८ और उस की शहरपनाह की जुड़ाई यशब की थी, और नगर ऐसे चोखे सोने का था, जो स्वच्छ कांच के समान हो। १९ और उस नगर की नेवें हर प्रकार के बहुमोल पत्थरों से संवारी हुई थीं, पहिली नेव यशब की थी, दूसरी नीलमणि की, तीसरी लालड़ी की, चौथी मरकत की। २० पांचवीं गोमेदक की छठवीं माणिक्य की, सातवीं पीतमणि की, आठवीं पेरोज की, नवीं पुखराज की, दसवीं लहसनिए की, एग्यारहवीं धूम्रकान्त की, बारहवीं याकूत की। २१ और बारहों फाटक, बारह मोतियों के थे; एक एक फाटक, एक एक मोती का बना था; और नगर की सड़क स्वच्छ कांच के समान चोखे सोने की थी। २२ और मैं ने उस में कोई मन्दिर * न देखा, क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, और मेम्ना उसका मन्दिर हैं। २३ और उस नगर में सूर्य और चान्द के उजाले का प्रयोजन नहीं, क्योंकि परमेश्वर के तेज से उस में उजाला हो रहा है, और मेम्ना उसका दीपक है। २४ और जाति जाति के लोग उस की ज्योति में चलें फिरेंगे, और पृथ्वी के राजा अपने अपने तेज का सामान उस में लाएंगे। २५ और उसके फाटक दिन को कभी बन्द न होंगे, और रात वहां न होगी। २६ और लोग जाति जाति के तेज और विभव का सामान उस में लाएंगे। २७ और उस में कोई अपवित्र वस्तु या घृणित काम करनेवाला, या झूठ का गढ़नेवाला, किसी रीति से प्रवेश न करेगा; पर केवल वे लोग जिन के नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं॥

२२ फिर उस ने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की एक नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलकर, उस नगर की सड़क के बीचों बीच बहती थी। २ और नदी के इस पार; और उस पार, जीवन का पेड़ था: उस में बारह प्रकार के फल लगते थे, और वह हर महीने फलता था; और उस पेड़ के पत्तों से जाति जाति के लोग चंगे होते थे। ३ और फिर स्राप न होगा, और परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन उस नगर में होगा, और उसके दास उस की सेवा करेंगे। ४ और उसका मुंह देखेंगे, और उसका नाम उन के माथों पर लिखा हुआ होगा। ५ और फिर रात न होगी, और उन्हें दीपक

* यू० पवित्रस्थान।

और सूर्य के उजियाले का प्रयोजन न होगा, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा : और वे युगानुयुग राज्य करेंगे ॥

६ फिर उस ने मुझ से कहा, ये बातें विश्वास के योग्य, और सत्य हैं, और प्रभु ने जो भविष्यद्वक्ताओं की आत्माओं का परमेश्वर है, अपने स्वर्गदूत को इसलिये भेजा, कि अपने दासों को वे बातें जिन का शीघ्र पूरा होना अवश्य है दिखाए। ७ देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूं; धन्य है वह, जो इस पुस्तक की भविष्यद्वाणी की बातें मानता है ॥

८ मैं वही यूहन्ना हूं, जो ये बातें सुनता, और देखता था; और जब मैं ने सुना, और देखा, तो जो स्वर्गदूत मुझे ये बातें दिखाता था, मैं उसके पांवों पर दण्डवत करने के लिये गिर पड़ा। ९ और उस ने मुझ से कहा, देख, ऐसा मत कर; क्योंकि मैं तेरा और तेरे भाई भविष्यद्वक्ताओं और इस पुस्तक की बातों के माननेवालों का संगी दास हूं; परमेश्वर ही को दण्डवत कर ॥

१० फिर उस ने मुझ से कहा, इस पुस्तक की भविष्यद्वाणी की बातों को बन्द मत कर *; क्योंकि समय निकट है ॥

११ जो अन्याय करता है, वह अन्याय ही करता रहे; और जो मलिन है, वह मलिन बना रहे; और जो धर्मी है, वह धर्मी बना रहे; और जो पवित्र है, वह पवित्र बना रहे। १२ देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूं; और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिये प्रतिफल मेरे पास है। १३ मैं अलफा और ओमिगा, पहिला और पिछला, आदि और अन्त हूं। १४ धन्य वे हैं, जो अपने वस्त्र धो लेते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के पेड़ के पास आने का अधिकार मिलेगा, और वे फाटकों से होकर नगर में प्रवेश करेंगे। १५ पर कुत्ते, और टोन्हें, और व्यभिचारी, और हत्यारे और मूर्तिपूजक, और हर एक झूठ का चाहनेवाला, और गढ़नेवाला बाहर रहेगा ॥

१६ मुझ यीशु ने अपने स्वर्गदूत को इसलिये भेजा, कि तुम्हारे आगे कलीसियाओं के विषय में इन बातों की गवाही दे: मैं दाऊद का मूल, और वंश, और भोर का चमकता हुआ तारा हूं ॥

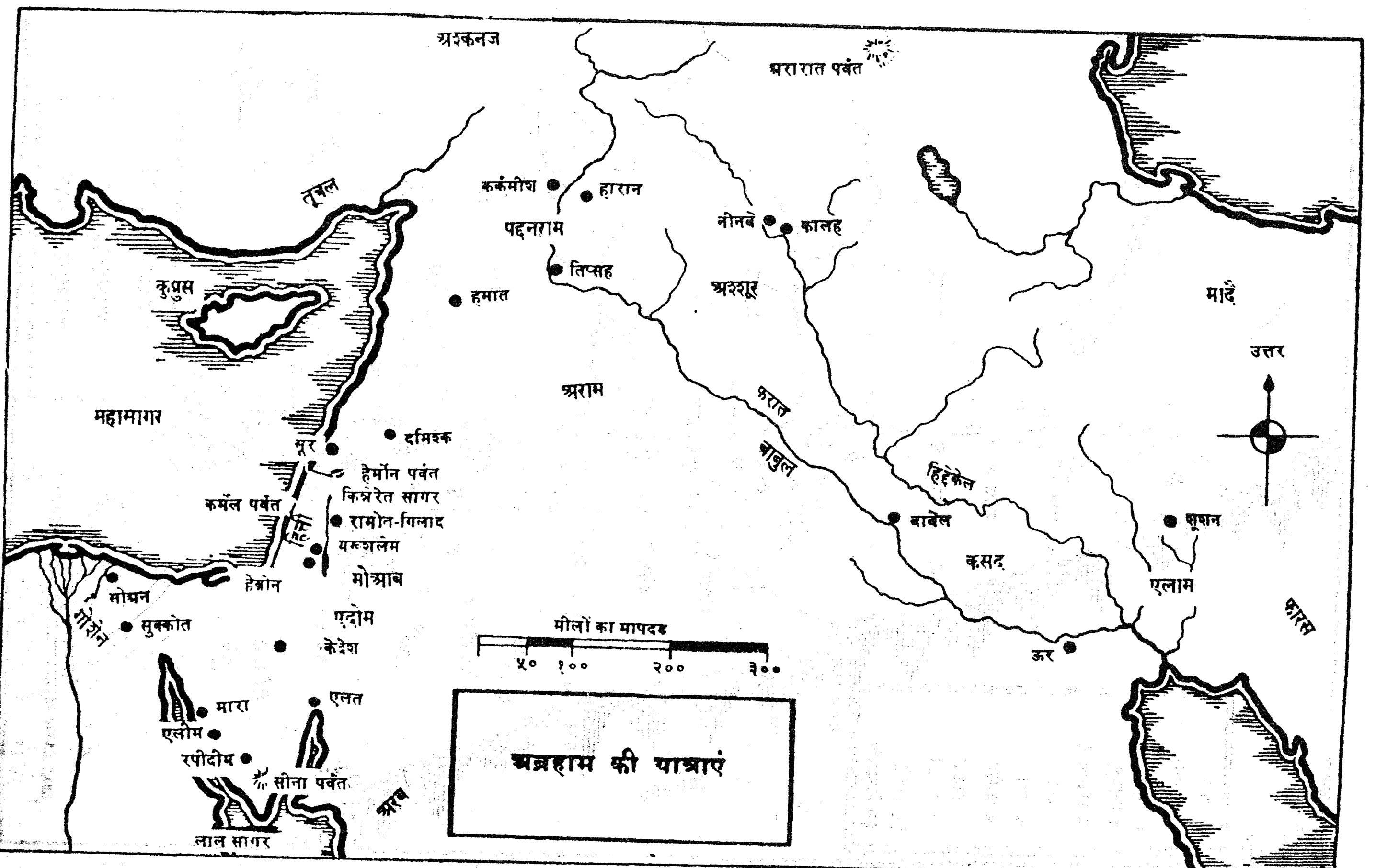
१७ और आत्मा, और दुल्हिन दोनों कहती हैं, आ; और सुननेवाला भी कहे, कि आ; और जो प्यासा हो, वह आए, और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंतमेंत ले ॥

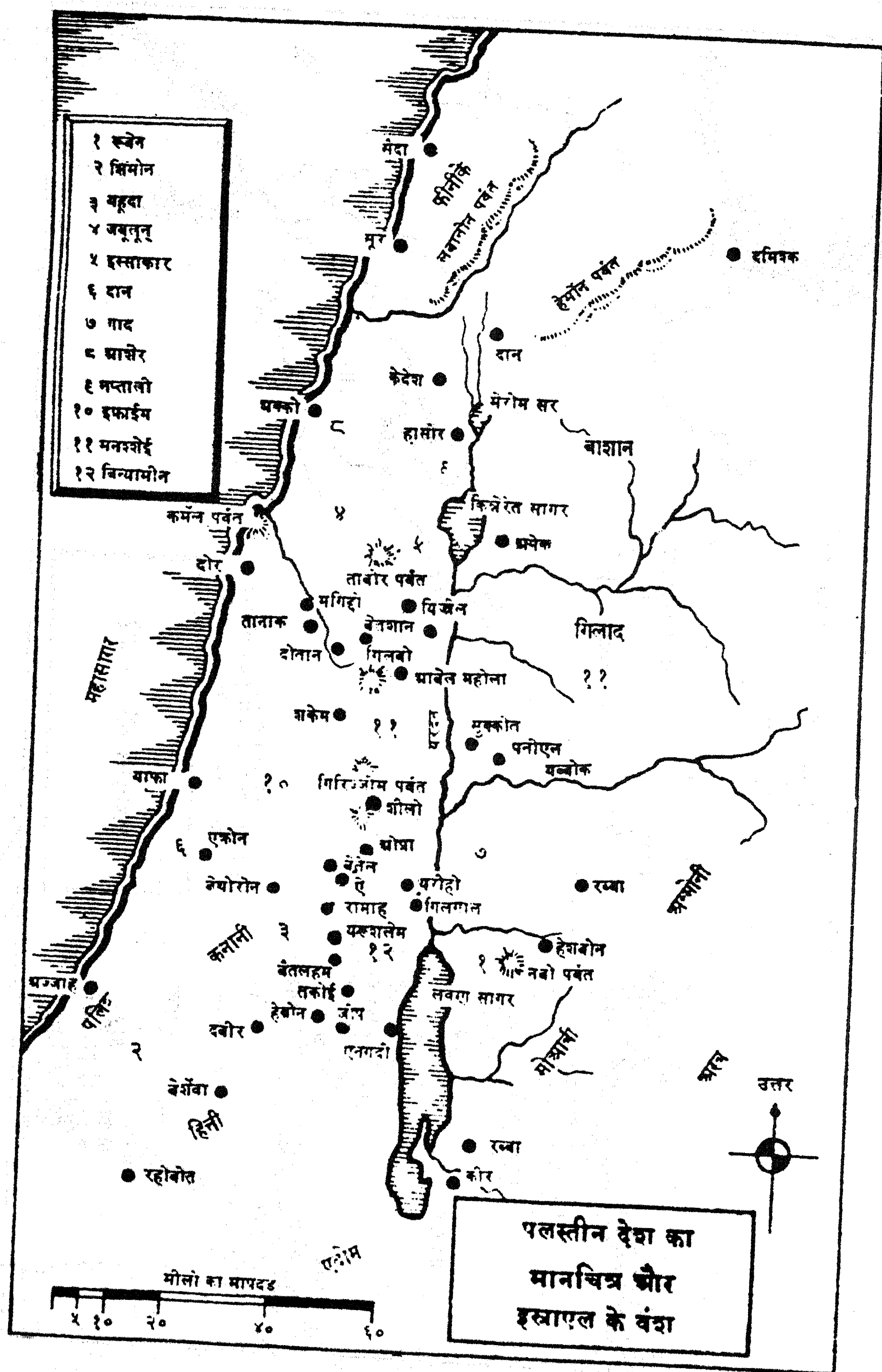
१८ मैं हर एक को जो इस पुस्तक की भविष्यद्वाणी की बातें सुनता है, गवाही देता हूं, कि यदि कोई मनुष्य इन बातों में कुछ बढ़ाए, तो परमेश्वर उन विपत्तियों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं, उस पर बढ़ाएगा। १९ और यदि कोई इस भविष्यद्वाणी की पुस्तक की बातों में से कुछ निकाल डाले, तो परमेश्वर उस जीवन के पेड़ और पवित्र नगर में से जिस की चरचा इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल देगा ॥

२० जो इन बातों की गवाही देता है, वह यह कहता है, हां, मैं शीघ्र आनेवाला हूं। आमीन। हे प्रभु यीशु आ ॥

२१ प्रभु यीशु का अनुग्रह पवित्र लोगों के साथ रहे। आमीन ॥

* या पर छाप न दे।


अब्राहाम की यात्राएं
अश्कनज
अरारात पर्वत
तूबल
कर्कमीश
हारान
पद्दनराम
तिप्सह
नीनवे
कालह
अश्शूर
मादै
कुप्रुस
हमात
अराम
उत्तर
महासागर
दमिश्क
सूर
हेर्मोन पर्वत
किन्नेरेत सागर
कर्मेल पर्वत
रामोत-गिलाद
यरूशलेम
मोआब
हेब्रोन
फरात
बाबुल
हिद्देकेल
बाबेल
शूशन
कसद
एलाम
फारस
ऊर
मोअन
गोशेन
सुक्कोत
एदोम
कादेश
मीलों का मापदण्ड
५० १०० २०० ३००
मारा
एलत
एलीम
रपीदीम
सीना पर्वत
अरब
लाल सागर



पलस्तीन देश का मानचित्र और इस्राएल के वंश